# विद्या ही प्रत्येक प्रगति का प्रथम पग है

ले.—प्रा भद्रसेन जी होशियारपुर

(गतांक से आगे)

जीवन विकास और सामाजिक उन्नति के एक आवश्यक रहस्य को बताते हुए आर्य समाज के अष्टम नियम में कहा है—

अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए। क्योंकि अविद्या ही हर प्रकार के दु ख क्लेश, कष्ट, सन्ताप, परेशानी और अशान्ति का कारण है। जैसे अन्धेरे मे ठोकरें ही लगती हैं या भय बना रहता है। वैसे ही अविद्या के कारण मनुष्य हर क्षेत्र मे सदा ठोकरें ही खाता है या भय, रोग, व बेचैनी को ही प्राप्त करता है।

आज जिस अशान्ति बेचैनी से हम परेशान हैं और चाहते हुए भी उसके जाल से निकल नही पाते इसका एक मात्र कारण अविद्या ही है। हम अविद्या ग्रस्त होने के कारण ही अशान्त बेचैन और दु खी हैं। अत एक न्याय दर्शनकार ने कहा है—

दु ख जन्म प्रकृति दोष मिथ्या ज्ञानानामुत्त रोत्तरपाये तदनन्तरापायादपवर्ग 1-1-2

अर्थात्—हमारे विविध प्रकार के दु खो का कारण जन्म है और जन्म शुभा-शुभ प्रवृति से होता है, प्रवृति दोषो से और दोषो का तथा सबका मूल कारण वस्तुत मिथ्य ज्ञान ही है। अविद्या का अर्थ यहा तभी उसके नाश का सकेत किया गया है, उल्टी विद्या है और उल्टे ज्ञान से व्यक्ति सदा असफल होने के कारण दु खी और निराश ही होता है। क्योकि हम प्रतिदिन अपने व्यवहार मे अनुभव करते हैं कि जब भी कार्य सही ढग से न करके उल्टे ढग से किया जाता है तो उसका विपरीत ही परिणाम होता है और हमे तब लाभ के स्थान पर नुक्सान ही उठाना पडता है। कई बार तो नासमझी (अविद्या) के कारण जान से भी हाथ धोना पडता है जैसे कि पेट के लिए नमक, कासी मिच हितकर है और सुरमा जस्त आख के लिए हितकर है। यदि ये दोनो उल्ट जाए तथा पेट की दवा का प्रयोग आखो मे और आख की पेट मे पहुच जाए तो ये एक दूसरे के लिए बहुत ही हानिकारक सिद्ध हो सकती है।

याग दर्शन मे विस्तार के साथ अविद्या का परिचय दिया है और अविद्या को ही हर प्रकार के अन्य क्लेशो दोषो की जड कहा है। अविद्या की परिभाषा बताते हुए वहा कहा है कि "अनित्याशुचि-दु खानात्मसु नित्यशुचि सुखात्मख्यातिर-विद्या 2 5।

अनित्य पदार्थों को नित्य अपवित्र को पवित्र दु ख को सुख और जड को चेतन समझना अर्थात् जैसी जो वस्तु है उसको वैसा न समझकर उससे उल्टा समझना अविद्या है। (विशेष विस्तार के लिए श्री दीवानचन्द्र जी लिखित दर्शन सग्रह का योग प्रकरण देखें)।

हर प्रकार के उल्टे ज्ञान (अविद्या) और उसके कारण होने वाले दु खो क्लेशो, दोषो से विद्या द्वारा ही छुटकारा पाया जा सकता है। इसीलिए ही साख्या दर्शन मे आधिदैविक आधिभौतिक और आध्यात्मिक दु खो से बचने का उपाय सही ज्ञान ही बताया है। तत्वज्ञानान्नि श्रेयसम् वैशेषिक और न्यायदर्शन मे भी तत्व ज्ञान से ही परम कल्याण की प्राप्ति बताई है तथा 'विद्ययाऽमृतमश्नुते' यजु-40-14 मे विद्या से हर प्रकार की मृत्यु के स्थान पर जीवन की प्राप्ति दर्शाई गई है। इसीलिए ही भारतीय साहित्य मे विद्या की इतनी अधिक प्रशसा मिलती है।

"विवेक भ्रष्टाना विनिपात शतमुख अविद्या अज्ञान अन्धविश्वास मे फस जाने पर व्यक्ति हर तरह से नीचे ही नीचे गिरता जाता है। क्योकि यदि हम ठण्डे दिल से विचार करें और अपने चारो ओर के व्यवहार को देखें तो अनुभव होता है कि बिना सोचे समझे (अविद्या जन्य) ऐसे अनेक रीति रिवाजो, प्रथाओ, विश्वासो को हमने अपना रखा है जो यथार्थ न होकर अयथार्थ हैं और इसके परिणाम स्वरूप हम दु खी हो रहे है न जाने कितने अनुपयोगी हानिकारक धूम-पान, अफीम गाजा चरस नशीली गोलिया, मद्यपान शराब, जुआ जैसे व्यसन समाज मे चिपटे हुए हैं। इसी प्रकार कोई भूत प्रेत से सताया हुआ है, तो कोई झाड-फूक से भूत रोग दु ख-दर्द ठीक करा रहा है और कहीं देवी गुरु, बाबा आदि उतरते हैं। कोई शुभा-शुभ दिन) जैसे कि शनि को मनाएगा, सदा सुख पाएगा, दे तेल की पली, फूल चढा टली, ग्रस को मनाएगा आदि। अमुक दिन अमुक कार्य नहीं करेगा, दिशा शूल अनुकूल-प्रतिकूल नक्षत्र, मुहूर्त राशि और उनके फल के चक्र में है तो कहीं शुभाशुभ वस्तु दर्शन, शकुन-अप-शकुन अर्थात् काली बल्ली बिल्ली के रास्ता काटने, छींकने और 13 सख्या का विचार चल रहा है। तो कोई बिना पुरुषार्थ ही भाग्य चक्र के कारण हस्त-रेखाओं के चक्कर्ती ही रहा है, तो कोई मिथ्या मुकद्दर की रट लगा रहा है।

कहीं फलित ज्योतिष की लाल-पीली रेखाओं का जाल बना पाया देखा जा रहा है तो कहीं उसके परिणाम स्वरूप पत्रे से शादियों की तिथि निश्चित की जा रही हैं, जिसके परिणाम स्वरूप एक साहे के कारण एक ही दिन मे एक ही नगर मे सैकडो बारातें होती हैं तो दूसरे दिन कोई भी दिखाई नही देती। कोई गण्डे, तबीज तन्त्र, मन्त्र से बिना परिश्रम के ही सारी कामनाओ की पूर्ति माने बैठा है, तो कही जो चाहोगे सो पाओगे, के दैनिक पत्रों मे बडे 2 विज्ञापन छप रहे हैं। इस प्रकार होशियार लोगो ने एक से एक बढकर धर्म के नाम पर ठगने के विचित्र विचित्र कारनामे बना लिए हैं और जनता की श्रद्धा का खूब लाभ उठा रहे हैं।

श्री सत्य प्रकाश जी भू पू, प्रिंसिपल डी ए वी, कालेज होशियारपुर ने बताया कि पहले मैं प्रतिदिन कालेज मे पढाने के लिए होशियारपुर से जालन्धर आया करता था, होली के दिनो मे गाडी के अन्दर बहुत भीड रहती है एक दिन प्रसगवश मैंने गाडी मे कहा कि यह मेला कब समाप्त होगा, तब एक सिख भाई ने कहा कि यह एक दिन के लिए और बढ गया है उनका क्या बिगडा, उन्हें तो एक लाख की आमदनी हो जाएगी। प्रसगवश मैंने कालेज मे यह घटना सुनाई। एक लडकी खडी हो गई और उसने बताया कि मेरे पिता जी की मेले पर नियुक्ति थी उन्होने मेले की समाप्ति पर एक दिन बातो मे ग्रन्थी से पूछा यह गुरु जी के हाथ का ठप्पा (पञ्जा) कैसे बन जाता है ? उत्तर मे ग्रन्थी जी ने कहा यह सब हमारी ही करामात है। इस प्रकार के अनेको करामाती दृष्टान्तो की भरमार लगी हुई है।

एक ने बताया मेरे पिता जी ने मन्त्रो से अग्नि जलाने की विद्या सीखने के लिए अपने गुरु जी की बहुत सेवा की परन्तु अन्त में यह परिणाम सामने आया कि सुखा हुआ धूप नीचे रखकर मन्त्रो से अग्नि जलाने का चमत्कार किया जाता है। ऐसे ही कोई धन, आभूषण को दुगने करने का दावा कर रहा है और कोई किसी बालक के खून से स्नान करा-कर या भभूत से पुत्र प्रदान कर रहा है तो कहीं तालाब, बांध आदि को पक्का करने या इष्ट देवी को सन्तुष्ट करने के लिए मानव तक की बलि दिलवाने का चक्र चल रहा है। इस प्रकार के सारे धन्धे मुलावे छलावो की अविद्या के अन्धकार ही लिए चालाते हैं"।

"[illegible] तेन [illegible] नाम्[illegible] विराजि[illegible] 1-1-4

"[illegible] से [illegible] यह भी ध्वनित होती है कि ज्ञान के अनुकूल व्यवहार करना चाहिए, अर्थात् विद्या की वृद्धि और अविद्या के विनाश के लिए सदा प्रयत्नशील रहना चाहिए। यह एक सुनिश्चित बात है कि हर प्रकार की अविद्या दु ख, क्लेश का कारण है और विद्या कार्य की सफलता का मूल है। अत अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

(क्रमश)

# पुस्तक समीक्षा

## समाजिक पद्धतियां

स्व महाशय मदनजित जी आर्य द्वारा लिखित पुस्तक समाजिक पद्धतिया का नया सस्करण जालन्धर के वेद प्रचार मण्डल ने प्रकाशित किया है। यह पुस्तक अब 219 पृष्ठो की बन गई। आठ पृष्ठ प्राक्कथन आदि के और चार पृष्ठ टाईटल के अलग है। कुल पृष्ठ सख्या 224 है। कागज बढिया और टाईटल पर महर्षि का चित्र।

इस पुस्तक मे 36 विषय हैं मुख्य रूप से प्रात काल के मन्त्र सन्ध्या सम्पूर्ण यज्ञ के मन्त्र अर्थ सहित दिए हैं। चोला जन्म दिवस, वाग्दान (सगाई) चुन्नी चढाना, दुकान की नींव, चूडा, मुकुट धारण मिलनी दत्तक पुत्र ग्रहण [illegible] व्यापार शुभ, अन्त्येष्टि क्रिया, पा[illegible] आदि की पद्धतिया दी गई है। स्नान करते समय पढने के मन्त्र भोजन समय पढने का मन्त्र, भोजन समाप्ति पर मन से बुरे विचार दूर करने की प्रार्थना का मन्त्र मार्ग चलते समय पढे व यात्रा मन्त्र रात्रि को सोते समय पढे जाने वाले मन्त्र अर्थ सहित दिए हैं। अन्त मे राष्ट्रीय प्रार्थना और सत्सगो [illegible] जाने वाले 12 भजन और बारह दवाओ के बहुत उपयोगी नुस्खे दिए हैं। पहले सस्करणो से यह सस्करण विशेष है। इस मे कई विषय और दिए हैं। यह पुस्तक बहुत उपयोगी है प्रत्येक आर्य समाज की लायब्रेरी मे अवश्य होनी चाहिए। इसका मूल्य चार रुपया रखा गया है। परन्तु वेद प्रचार मण्डल के अधिकारियों ने इसे तीन रुपए में लागत मात्र पर देने की घोषणा की है। यह पुस्तक श्री सुदेश कुमार जी मन्त्री वेद प्रचार मण्डल 35-बस्ती गुजां जालन्धर से पत्र व्यव-हार करके मगवाई जा सकती है।

# सम्पादकीय

## निर्वाण शताब्दी कहाँ होगी ?

जून का मास प्रारम्भ हो चुका है। छः मास बाकी रह गए हैं और अभी तक आर्य जनता को यह पता नहीं चला कि महर्षि निर्वाण शताब्दी कहा होगी और कब होगी ? पहले हम यह सुनते रहे हैं कि एक दिल्ली मे होगी और एक अजमेर में होगी। फिर यह सुनने मे आया कि नही दोनो ही अजमेर मे होगी। फिर यह भी सुनना मे पड़ा कि सम्भवत अजमेर मे हो और सम्मिलित हो। परन्तु आज तक किसी को यह नही पता कि क्या होना है और क्या नही होना ? यदि सार्वदेशिक सभा और परोपकारिणी सभा के अधिकारियो का ध्यान इस ओर दिलाया जाता है और उनसे कहा जाता है कि कोई अन्तिम निर्णय लो ताकि आर्य जनता को पता चल सके कि वास्तविक स्थिति क्या है ? तो उसका उत्तर वीरेन्द्र का बुद्धि विभ्रम के रूप मे मिल जाता है। परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि वीरेन्द्र का बुद्धि विभ्रम नही सार्वदेशिक सभा और परोपकारिणी सभा के अधिकारियो का बुद्धि विभ्रम है। क्यो नही वे बैठकर किसी निर्णय पर पहुचते और आर्य जनता को बताते कि स्थिति क्या है ? क्या यह अन्धेर नही कि इतना बड़ा समारोह होना है और अभी तक यह भी पता नही कि कब होना है और कहा होना है ? एक कार्यालय वहा परोपकारिणी सभा का अजमेर मे चल रहा है दूसरा अपना कार्यालय सार्वदेशिक सभा के प्रधान अजमेर जाकर खोल आए हैं। इसी के साथ यह भी प्रकाशित हुआ है कि यति मण्डल के सन्यासी वर्ग भी पद यात्रा करके अजमेर पहुचेंगे। उन्होने परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित शताब्दी के पक्ष मे निर्णय लिया है। यदि आर्य समाज के प्रतिष्ठित सन्यासी उस शताब्दी समारोह मे आए गे तो दूसरे शताब्दी समारोह मे कौन जाएगा ? इसी के साथ अभी तक यह भी पता नही चला कि इस शताब्दी के लिए जो धन एकत्रित होना है वह सार्वदेशिक सभा के पास जाएगा या परोपकारिणी सभा के पास। तात्पर्य यह कि इस समय तक सारी स्थिति अनिश्चित है। आर्य समाज एक इतना बड़ा समारोह करने जा रहा है और अभी तक यह भी पता नही चल रहा कि यह कहा होना है और कब होना है ? मैंने जब यह लिखा था कि आर्य समाज की मिट्टी खराब न करो तो मेरा यह विचार निराधार न था जो कुछ हो रहा है आर्य समाज की मिट्टी खराब नहीं हो रही तो क्या हो रहा है। मुझ इसमे कोई दिलचस्पी नही कि यह शताब्दी परोपकारिणी सभा मनाती है या सार्वदेशिक सभा मनाती है। आर्य जनता केवल यह चाहती है कि एक ही शताब्दी मनाई जाए। मैंने कोई अपराध न किया था जब यह कहा था कि एक ही शताब्दी मनानी चाहिए इस पर मुझ कहा गया कि मैं खेद प्रकट करू और क्षमा मागू। उसके पश्चात सार्वदेशिक सभा के अधिकारी दिल्ली से उठकर अजमेर पहुच गये। अब कोई उनसे पूछे कि जो कुछ वे कर रहे हैं उसके लिए वे खेद क्यो नही प्रकट करते और आर्य जनता से क्षमा क्यो नही मागते। आर्य समाज की प्रतिष्ठा और सम्मान के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है और जो उसके विरुद्ध अपनी आवाज उठाता है उसे कहा जाता है कि क्षमा मागो। स्थिति यह है कि 6 मास बाकी रह गए हैं और अभी तक हमे यह भी मालूम नही कि शताब्दी समारोह कब और कहा मनाया जाएगा। नेतागण आपस में बातचीत कर रहे हैं। यह फैसला करने के लिए कि शताब्दी कहा मनाई जाए। ऐसा प्रतीत होता है कि उनकी बातचीत नवम्बर 1983 तक चलेगी। उसके पश्चात यह फैसला होगा कि च कि कोई फैसला नही हो सका इसलिए इसे स्थगित कर दिया जाए। इसी से हम आर्य समाज के नेतृत्व के बौद्धिक स्तर का कुछ अनुमान लगा सकते हैं। गुरुकुल कागड़ी या उसकी फार्मेसी का कोई झगड़ा हो तो सार्वदेशिक के अधिकारी तुरन्त सक्रिय हो जाते हैं और उन्होने जो उचित अनुचित करना होता है कर देते हैं। परन्तु निर्वाण शताब्दी जैसा इतना बड़ा समारोह करना हो उसका वे कोई फैसला नही कर सकते कि कब करना है और कहा करना है ? मेरे विचार मे अब समय आ गया है जबकि आर्य जनता अपने सोये हुए नेताओ को जगाने के लिए उन्हे झझोड़े। यह केवल ऋषि निर्वाण शताब्दी का प्रश्न ही नहीं है। आर्य समाज की प्रतिष्ठा का प्रश्न है। साप्ताहिक सार्वदेशिक मे मेरे विरुद्ध जो लेख लिखा गया था उसमे मुझ याद दिलाया गया था कि महात्मा नारायण स्वामी जी ने क्या कुछ किया था और आचार्य रामदेव जी ने क्या कुछ किया था। मुझ वह सब कुछ याद है जो उन्होने किया था और मैं सार्वदेशिक सभा के अधिकारियो को याद दिलाना चाहता हू कि हमारे पूर्वजो ने आर्य समाज के लिए क्या कुछ किया था। उनके समय मे यह झगड़े न होते थे जो अब हो रहे हैं या करवाए जा रहे है। श्री महात्मा नारायण स्वामी का और श्री आचार्य रामदेव जी का आर्य समाज मे एक विशेष स्थान था। वे महानुभाव उस स्तर पर काम न करते थे जिस स्तर पर अब सार्वदेशिक सभा के कुछ अधिकारी कर रहे हैं। पिछले कुछ समय से परोपकारिणी सभा के मन्त्री श्री श्रीकरण शारदा और और आर्य समाज काकड़वाड़ी बम्बई के महामन्त्री कैप्टन देवरत्न के बीच एक विवाद चल रहा है। उस विवाद मे कितना समय और कितना धन नष्ट किया गया है। क्या सार्वदेशिक सभा के अधिकारी बीच मे पड़कर उस विवाद को समाप्त नही करवा सकते ? या यह समझा जाए कि वे ही यह सब कुछ करवा रहे हैं ? यदि ऋषि निर्वाण शताब्दी मनाई जानी है और उस स्तर की मनाई जानी है जिस स्तर की जन्म शताब्दी मनाई गई थी तो यह अत्यन्त आवश्यक है कि सार्वदेशिक सभा और परोपकारिणी सभा के अधिकारी बैठकर कोई अन्तिम निर्णय लें और आर्य जनता को बताए कि ऋषि निर्वाण शताब्दी कहा होनी है और कब होनी है ? अभी से यदि उसके विषय मे प्रचार होगा उसी स्थिति मे यह उतनी बड़ी शताब्दी मनाई जा सकेगी जितनी बड़ी मनाई जानी चाहिए। दूसरी सन्धि भी हम मे से किसी के भी इस जन्म मे नही आएगी। इसलिए मालूम नही कि सार्वदेशिक सभा के अधिकारी और परोपकारिणी सभा के अधिकारी किस लिए आपस मे लड़ रहे हैं ? कुर्सियो की लड़ाई तो बाद मे भी हो सकती है इस समय तो हमारे सामने केवल एक ही लक्ष्य रहना चाहिए और वह यह कि एक ही शताब्दी होनी चाहिए और वह अजमेर मे। सार्वदेशिक सभा और परोपकारिणी सभा यह दोनो मिल कर यह शताब्दी कर सकें तो और भी अच्छा है न कर सकें तो दोनो मे से एक को हट जाना चाहिए ताकि आर्य समाज की जगहसाई न हो।

—वीरेन्द्र

---

## आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित आर्य समाजो के लिए—

आर्य समाजो के सन 1983 (सम्वत 2040) के लिए वार्षिक निर्वाचन कराने तथा नियमानुसार उनकी ओर से आगामी 3 वर्षों (सम्वत 2040 2041 तथा 2042 के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब मे अपने प्रतिनिधि भेज सकने योग्य होने अथवा न होने के विषय मे निश्चय कर सकने के लिए आर्य समाजो की वास्तविक आवश्यक जानकारी प्राप्त करने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरग सभा द्वारा नियुक्त उप समिति की बनाई हुई एक प्रश्नावली की दो प्रतिया (परिपत्र सख्या 6 दिनाक 11 3 83 के रूप मे) सभा से सम्बन्धित सभी आर्य समाजो को भेज कर निवेदन किया था कि इस प्रश्नावली का उत्तर 31 3 83 तक सभा कार्यालय मे पहुच जाना अनिवार्य है। जो आर्य समाज इस प्रश्नावली का स्पष्ट उत्तर नही भेजेगी उनको सभा मे अपने प्रतिनिधि भेजने का अधिकार न होगा। यह परिपत्र आर्य मर्यादा द्वारा भी प्रसारित किया गया किन्तु नियत अवधि तक बहुत थोड़ी आर्य समाजो के उत्तर प्राप्त हुए।

पुन अन्तरग सभा के सम्मुख यह स्थिति रखी जाने पर दिनाक 13 4 83 के निश्चय द्वारा उक्त अवधि बढ़ा कर 15 5 83 तक कर दी गई थी और उसके अनुसार एक और परिपत्र सख्या 9 दिनाक 20 4 83 प्रश्नावली की एक और कापी सहित भेजा गया जो आर्य मर्यादा मे भी प्रकाशित कराया गया। किन्तु खेद है कि अब तक भी कुल मिला कर केवल 69 आर्यसमाजो के उत्तर प्राप्त हुए हैं जब कि कुल आर्य समाजो की सख्या पौने दो सौ के लगभग है।

परिणामत सभा के लिए प्रतिनिधियो के त्रैवार्षिक चुनाव का प्रश्न तो दूर रहा आर्य समाजो के वार्षिक निर्वाचनो के लिए नियत अवधि भी बीत गई और सभा की अन्तरग सभा दिनाक 23 1 83 द्वारा निश्चित किया गया कार्यक्रम क्रियान्वित नही हो सका। आर्य समाजो के वार्षिक निर्वाचनो को अनिश्चित अवधि तक रोके रखना भी उचित न था और सगठन की दृष्टि से भी लाभ प्रद न होता।

आर्यसमाजो की कार्य प्रणाली के इस भविष्य को दृष्टि मे रखकर सभा की कार्यकारिणी समिति दिनाक 28 5 83 ने निश्चय किया है कि आर्य समाज अपने सभा सदो की नियमानुसार घोषणा करके अपना वार्षिक निर्वाचन कार्य 31 7 83 तक सम्पन्न कर लें। तथा सभा द्वारा (परिपत्र स 6 दिनाक 11 3 83 और पुन भेजे गए परिपत्र सख्या 9 दिनाक 20 4 83 के साथ) भेजी गई प्रश्नावली का उत्तर अवश्य ही और तुरन्त भेजने का कष्ट कर जो कि अधिक से अधिक 21 जून 1983 तक सभा कार्यालय मे पहुच जावे। जिन आर्य समाजो के उत्तर 21 जून 1983 तक सभा को प्राप्त न होगे। उनको सन 1983 (सम्वत 2040) के सभा के वार्षिक अधिवेशन (निर्वाचन आदि की कार्यवाही) मे भाग ले सकने के लिए अपने प्रतिनिधि भेजने का अधिकार प्राप्त न रहेगा। यह सूचना भी परिपत्र सख्या 21 दिनाक 3 6 83 तथा आर्यमर्यादा मे प्रसारित की जा रही है। आशा है अब तक उत्तर न भेजने वाली आर्य समाजो के अधिकारी महानुभाव इस ओर विशेष ध्यान दे कर सगठन के प्रति अपनी निष्ठा के प्रमाण देंगे और इसे सुन्दर बनाएगें जैसा कि ऊपर वर्णन किया जा चुका है। प्रश्नावली की प्रतिया पूर्व ही आर्य समाजो को भेजी जा चुकी है।

निवेदक

वीरेन्द्र
सभा प्रधान

रामचन्द्र जावेद
सभा महामन्त्री

# ऋषिदयानन्दकी निर्वाणशताब्दी और परोपकारिणी सभा

ले—श्री डा भवानीलाल जी भारतीय सयुक्त मन्त्री सभा

पर्याप्त समय से समाचार पत्रो तथा वार्तालाप के प्रसगो मे ऋषि की निर्वाण शताब्दी अजमेर मे मनाय जाने के औचित्या नौचित्य को लेकर पर्याप्त तीखी कभी-कभी कटुता पूर्ण तथा यथाय से हटकर बातें लिखी और कही जा रही हैं। अनेक महानुभावो ने इस प्रसग मे सार्वदेशिक सभा और परोपकारिणी सभा को प्रतिद्वन्द्वी तथा एक दूसरे की स्पर्धा करने वाली सस्थाओ के रूप मे चित्रित करने का प्रयास भी किया है। वस्तुत महर्षि दयानन्द ने ससार के उपकार करने जैसे अत्यन्त व्यापक उद्देश्य को सामने रखकर आर्य समाज की स्थापना की थी परन्तु परोपकारिणी सभा के निर्माण मे उनका उद्देश्य नितान्त भिन्न था। इस सस्था को उन्होने अपनी उत्तराधिकारिणी सभा इस अर्थ मे बनाया कि उनके निधन के पश्चात् उनके ग्रन्थो के मुद्रण प्रकाशन तथा प्रचार प्रसार का दायित्व इसी सभा का होगा। इसके साथ ही उनके ग्रन्थो की पाण्डुलिपियो की देख-भाल, सुरक्षा तथा उनके द्वारा शास्त्र प्रचार की दृष्टि से स्थापित वैदिक यन्त्रालय जैसे सस्थान की व्यवस्था का दायित्व भी उन्होने परोपकारिणी सभा को ही सौंपा था। आय समाज के इतिहास का सुधी पाठक ही इस बात को जान सकता है कि सार्वदेशिक सभा की स्थापना (1908 ई) से पूर्व यद्यपि पजाब उत्तर प्रदेश तथा राजस्थान मे प्रान्तीय सभाए स्थापित हो गई थी किन्तु अखिल भारत की आय समाजो के पारस्परिक विचार विमर्श तथा नीति निर्माण का एक मात्र केन्द्र परोपकारिणी सभा ही था। यही कारण है कि इस सभा से विगत शताब्दी के अन्तिम दशको म हुए वार्षिक अधिवेशनो मे सुदूर प्रान्तो की आय समाजो के प्रतिनिधि सम्मिलित होते थे। तथा विचारो का आदान-प्रदान करते रहे।

परन्तु जब 1908 मे विधिवत सार्वदेशिक सभा की स्थापना हो गई तो परोपकारिणी सभा ने अपनी कार्य प्रवृत्तियो को ऋषि कृत ग्रन्थो के मुद्रण, प्रकाशन तथा प्रचार-प्रसार तक ही सीमित कर लिया। यह उचित भी था क्योकि आर्य समाज की व्यापक गतिविधियो के क्रियान्वयन के लिए प्रान्तीय एव सार्वदेशिक स्तर के सगठन के सफलता पूर्वक कार्य रहे थे। यह कहना और लिखना तो तथ्यो की अनदेखी करना ही है। कि परोपकारिणी सभा ऋषि कृत ग्रन्थो के मुद्रण व प्रकाशन के काय मे किसी भी प्रकार से कर्तव्यच्युत हुई अथवा इसने प्रमाद व शैथिल्य दिखाया। यो तो हर कार्य मे सुधार और तरक्की की गु जाईश होती है तथापि यह निर्विवाद भाव से कहना होगा कि अपने 102 वर्षों के इतिहास मे वैदिक यन्त्रालय ने परोपकारिणी सभा के निर्देशन मे ऋषि कृत ग्रन्थो के मुद्रण प्रकाशन का जो यत्न किया, वह पर्याप्त सन्तोषप्रद ही रहा।

1933 मे जब ऋषि के परलोक प्रस्थान को 50 वष हो गए, परोपकारिणी सभा को भी कापी राइट कानून के अन्तर्गत एक कठिनाई का सामना करना पडा। अब तक तो ऋषि कृत ग्रन्थो को प्रकाशित करने का पूर्ण अधिकार इसी सभा को प्राप्त था किन्तु लेखक की मृत्यु के 50 वर्ष पश्चात् कोई भी व्यक्ति उसके ग्रन्थो को छाप ले इस नियम का लाभ लेकर अन्य प्रकाशको ने भी ऋषि के ग्रन्थो को छापना आरम्भ कर दिया। सभा ने इस पर कभी कोई टीका-टिप्पणी नही की, यद्यपि यह सुविदित तथ्य है कि रामलाल कपूर ट्रस्ट आय साहित्य प्रचार ट्रस्ट आर्य साहित्य मण्डल आदि कुछ अपवादो को छोडकर अन्य प्रकाशको ने स्वामी जी कृत ग्रन्थो के मुद्रण एव प्रकाशन मे यथोचित सावधानी नही बरती जिसके फलस्वरूप महर्षि के ग्रन्थो के मुद्रण गेट अप आदि के स्तर की रक्षा नही हो सकी, ध्यान केवल इसी बात का रखा गया कि कम से कम मूल्य मे ग्रन्थ मिले, उनकी शुद्धता, पाठगत प्रमाणिकता आदि को सर्वथा ओझल कर दिया गया।

एक हल्ला यह मचाया गया कि परोपकारिणी सभा के ग्रन्थ भण्डार मे महर्षि द्वारा लिखित अनेक ग्रन्थ ऐसे पडे है जो अद्यापि अप्रकाशित हैं तथा सभा की लापरवाही से वे अभी तक प्रकाश मे न आ सके हैं। यह बात वही कहेगा जिसको वस्तुस्थिति का ज्ञान न होगा। इन पक्तियो का लेखक न केवल सभा का उत्तरदायी अधिकारी ही है उसकी विद्वत समिति का सयोजक होने के कारण सभा के प्रकाशनो की नीतियो का निर्माता भी है। मैं स्वय 12 वर्ष तक (1919 से 1930) अजमेर में रहकर वैदिक यन्त्रालय द्वारा प्रकाशित होने वाले सभी ग्रन्थो तथा सभा के ग्रन्थालय मे सुरक्षित ग्रन्थो, पाण्डुलिपियो आदि से सम्बन्धित तथ्यो की अपनी पूरी जानकारी के आधार पर आर्य जनता से प्रथम बार और स्पष्ट रूप से निवेदन करना चाहता हू कि वे ऋषि कृत ग्रन्थो की वास्तविकता से परिचित हो।

सभा के पाण्डुलिपि भण्डार मे दयानन्द कृत चतुर्वेद विषय सूची थी जिसे लगभग 10 12 वर्ष पूर्व ही प्रकाशित कर दिया गया। बहुत अधिक चर्चा इस ग्रन्थ के सम्बन्ध मे चलाई गई थी कि यह भावी वेद भाष्यकारो ने इस ग्रन्थ से कितनी सहायता ली है। आज भी यह ग्रन्थ बहुत कम बिकता है। जिन दो-तीन अन्य ग्रन्थो को प्रकाशित न किए जाने के सम्बन्ध मे चर्चा होती है वे है ऋग्वेद के प्रारम्भ के अनेक सूक्तो का विस्तृत भाष्य। यहा यह ज्ञातव्य है कि सभा के पाण्डुलिपि भण्डार मे इन पक्तियो के लेखक को ऋग्वेद के प्रारम्भिक 22 मन्त्रो का स्वामी कृत भाष्य उपलब्ध हुआ था वह भी लगभग 10 वर्ष पूर्व प्रकाशित किया जा चुका है। जहा तक 70 मन्त्रो के विस्तृत भाष्य का प्रश्न है उसकी अभी तलाश जारी है। मैंने व्यक्तिगत रूप से प युधिष्ठिर जी मीमासक से निवेदन किया था कि वे समय निकाल कर 70 मन्त्रो के इस भाष्य का सधान करें। गत नवम्बर मास के प्रारम्भ मे मेरे इसी अनुरोध पर श्री मीमासक जी ने ग्रन्थ की तलाश की। किन्तु पाण्डुलिपि नही मिली यदि निकट भविष्य मे मिलती है तो उसे प्रकाशित कर सभा प्रसन्नता अनुभव करेगी।

दूसरी अप्रकाशित पुस्तक जिसकी अधिक चर्चा है वह स्वामी जी द्वारा कराया कुरान का हिन्दी अनुवाद। इसे यदि केवल ऐतिहासिक दृष्टि से प्रकाशित कराया जाए जो पृथक बात है, अन्यथा आज कुरान के अच्छे से अच्छे अनुवाद उपलब्ध हैं। उस स्थिति मे इसका सभा द्वारा प्रकाशन क्या औचित्य रखता है यह विचारशील महानुभाव सोचें। मैं व्यक्तिगत रूपसे इसे प्रकाशित करने के पक्ष मे नहीं हू और यह भी बता दू कि स्वामी जी ने वैदिक यन्त्रालय को वेदादि सत्य शास्त्रो तथा अन्य आर्य ग्रन्थो के प्रकाशन का ही अधिकार दिया था। न कि सैमेटिक मजहब के धर्म ग्रन्थो के प्रचार का। अस्तु परोपकारिणी सभा के पाण्डुलिपि भण्डार मे कतिपय ऐसी नोट बुक्स हैं जो निरुक्त ब्राह्मण तथा अन्य शास्त्र ग्रन्थो की सूचियो के रूप मे हैं। इनकी सख्या पर्याप्त अधिक है। इन नोट बुक्स को स्वामी जी ने ग्रन्थ लेखन के समय उपयोग के लिए लिखा था न कि पुस्तकाकार प्रकाशन के लिए। जैसे मूल ग्रन्थ के छप जाने पर उसके प्रणयन मे सहायता करने वाले नोटस, टिप्पणियां आदि केवल सग्रहालय मे ही रखे जाने योग्य रहते हैं, वही स्थिति इन सभी ग्रन्थो की है। यदि इनका प्रकाशन स्वामी जी को अभिप्रेत होता, तो उनके मुख पृष्ठो पर वे लेखक रूप मे अपने नाम आदि का अवश्य निर्देश कर जाते।

उपर्युक्त तथ्यो को ध्यान मे रखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि जो लोग बार-बार जानकर या अनजाने मे प्रचार करते हैं कि सभा स्वामी जी के अनेक अप्रकाशित ग्रन्थो को प्रकाशित नही कर रही है। वे तथ्यो से पूर्णतया परिचित नही हैं। सभा ने स्वामी जी के ग्रन्थो के अतिरिक्त स्व प चिमनकर शर्मा दीवान बहादुर हरविलास शारदा तथा इन पक्तियो के लेखक की अनेक महत्वपूर्ण कृतियो को प्रकाशित किया है और भविष्य मे भी करेगी।

यह तो हुई ग्रन्थो के प्रकाशन की बात—एक अन्य भ्रान्ति जो आर्य [illegible] मे प्रचलित है वह है सभा की आर्थिक स्थिति को लेकर नाना प्रकार की आधार हीन कल्पनाए तथा अतिशयोक्ति पूर्ण कथन—यह कहा जाता है कि सभा के पास करोडो की सम्पत्ति है तथा उसके पास लाखों रुपए नकद हैं आदि। वस्तुस्थिति इसके विपरीत ही है। सभा की अचल सम्पत्ति मे दयानन्द आश्रम और वैदिक यन्त्रालय ऋषि उद्यान दयानन्द मार्कीट कर्मचारियो के मकान तथा कुछ पुराने मकान आदि हैं दयानन्द आश्रम और वैदिक यन्त्रालय मे तो सभा के कार्यालय, प्रेस आदि हैं जहा से इस सभा की प्रवृत्तियो का सचालन होता है मार्कट के किराये आदि की आय से सभा के कर्मचारियो का वेतन सभा कार्यालय की दैनन्दिन आवश्यकताए तथा सम्पत्तियो के रख-रखाव मुरम्मत आदि के कार्य होते हैं। यह तो परोपकारिणी सभा ही है जो किसी प्रकार के सार्वजनिक दान या राजकीय सहायता एव अनुदान को प्राप्त न करके भी लाखों रुपए मूल्य का आर्य साहित्य प्रति वर्ष मुद्रित और प्रकाशित करती है।

लेखक और साहित्यकार होने के [illegible] मैं अपने अनुभव के आधार पर कहता हूँ कि इस सभा से भिन्न सस्थाए यदि कोई प्रकाशन करती हैं, तो उसके लिए सार्वजनिक अपीलें कर धन सग्रह भी करती हैं। फलत उनके प्रकाशनो को किसी प्रकार की आर्थिक असुरक्षा अनुभव नही होती। आर्य समाज के अनेक लेखक भी अपनी रचनाओ के प्रकाशन के लिए अनेक धनी-मानी सज्जनो से दान लेते हैं और इस प्रकार उनके द्वारा प्रकाशित ग्रन्थ आर्थिक कठिनाई के शिकार नहीं होते। परोपकारिणी सभा की स्थिति बिल्कुल भिन्न है। इस सभा ने अपने सौ वर्ष के कार्यकाल में किसी ग्रन्थ के प्रकाशन अथवा मुद्रण के लिए एक पैसे का भी दान नहीं मांगा।

(क्रमश)

# हिन्दू राष्ट्रवाद तथा आर्यसमाज

ले —श्री प सत्यदेव जी विद्यालकार न्कारा

कुछ मास पहले जालन्धर से प्रकाशित होने वाले आय मर्यादा मे मैंने यह विचार प्रकट किए थे कि आय समाज हिन्दूवाद मे ग्रस्त होकर अपने स्वरूप को धूमिल कर रहा है तथा अपने काय को प्रभावहीन कर चुका है इस हिन्दूवाद अर्थात अपने को हिन्दू समाज का अभिन्न अग मानने की भावना से आय समाज मे व्यवहारिक रूप से जातिवाद तथा फलित ज्योतिष की भ्रान्तिया विवाह आदि कार्यों मे निश्चित दिनो के महत्व का मानना प्रचलित हो गया है। उपासना की दृष्टि से भी आय समाज मे ऋषि दयानन्द के दृष्टिकोण को छोडकर हठयोगादि की प्रवृत्तियों का प्रचार हो रहा है।

मैं हिन्दू समाज के विरुद्ध नही यह भी समझता हू कि हिन्दू समाज के ह्रास से वैदिक मान्यताओ का आधार क्षति ग्रस्त होता है पर देश, मनुष्य जाति तथा हिन्दू समाज के उत्कष के लिए भी आय समाज को अपना स्वरूप स्वच्छ करना चाहिए और अपनी मान्यताओ पर दृढ रहकर उनका प्रचार करना चाहिए। ऐसा करने से हिन्दू समाज अधिक प्राणवान होगा।

इसी हिन्दूवाद का एक उग्र रूप हिन्दू राष्ट्रवाद है। अर्थात भ रत को हिन्दू राष्ट घोषित किया जाए। अभि प्राय यह है कि भारत मे हिन्दू धम की मान्यताओ के अनुसार शासन चले दण्ड विधान हो तथा शासन की प्रक्रिया हिन्दू धर्म के प्रसार मे सहायक हो। स्वभावत इसका एक परिणाम हिन्दू धम को न मानने वालो को अपेक्षाकृत हीन स्थान दिया जाएगा।

अभी-अभी हिन्दू राष्ट्रवाद के समथक श्री बलराज मधोक का एक लेख प्रकाशित हुआ है उसमे विचार दिया गया है कि जो मुसलमान हिन्दू सस्कृति के अनुयायी न हो उनको वोट का अधिकार न दिया जाए। आज अगत के हिन्दू राष्ट अक मे भी उन्होंने लिखा था कि हिन्दू राज्य मे कोई सिख बौद्ध जैन या वैश्य बने इस की पूरी छूट होगी। परन्तु ईसाई या मुसलमान बनने की छूट नही दी जा सकती।

डा प्रशान्त विद्यालकार ने भी इसी अक मे लिखा था—देश के प्रति निष्ठा तथा मुसलमानो के मताधिकार पर रोक।

व्यक्तिगत रूप से किसी के यह विचार हो तो ठीक है पर आय समाज पर इनको क्यो लादा जाए। क्या देश के लिए बलिदान होने वाले आय शहीदो ला लाजपतराय, सरदार भगतसिह तथा श्रद्धानन्द तथा रामप्रसाद बिस्मिल आदि के यही विचार थे।

भारत वष की वतमान परिस्थितियो मे हिन्दू राष्ट की स्थापना न तो सम्भव है न व्यवहार्य है और न वाछनीय है।

सबसे पहली बात तो यह है कि जब भी किसी देश मे धम को राष्ट के साथ जोडा गया है सिवाय रक्तपात और कत्ल के और कोई उपलब्धि नही हुई आयर लैंड ईरान पाकिस्तान बगलादेश और वतमान पजाब इसके ज्वलन्त उदाहरण हैं। एक ईसाईमत के दो विभागो रोमन कैथोलिक तथा प्रोटेस्टेन्ट को लेकर बीसियो वष पहले आयरलैंड म जो भ्रात कलह प्रारम्भ हुआ था वह हजारो प्राणो की बलि लेकर भी अभी तक शान्त नही हुआ। ईरान का नरसहार मुसलमान मुसलमानो मे है। ईरान के धार्मिक शासक इमाम आयतुल्लाह खोमेनी के आदेश निर्देश मे जितने आदमियो का वध हुआ है उनकी सख्या हजारो मे है। बगला देश मे एक करोड के लगभग हिन्दू नारकीय दशा मे हैं। जैसा पजाब मे धम का नाम लेकर जो निर्दोष प्राणियो का सहार हो रहा है उसने सारे भारत मे वितृष्णा की लहर चला दी है। आने वाले बीसियो वर्षों तक पजाब का वातावरण शान्त और स्वाभाविक नही हो सकेगा।

## हिन्दू राष्ट बनना चाहिए या नही ? बन भी सकता है या नही ?

इस प्रश्न पर समय 2 पर कई प्रकार के विवाद चलते रहते है। आय समाज के समाचार पत्र और पत्रिकाओ मे भी इस विषय मे बहुत कुछ प्रकाशित होता रहता है। इस लेख मे आय समाज के एक विख्यात विद्वान श्री प सत्यदेव विद्या लकार के विचार प्रकाशित किए जा रहे हैं यह आवश्यक नही कि इन विचारो से हम भी सहमत हो। परन्तु हम चाहते हैं कि सब प्रकार के विचार जनता के सामने आए। इसलिए यह लेख प्रकाशित किया जा रहा है। यदि कोई महानु भाव इस विषय का दूसरा पक्ष भी प्रकाशित कराना चाहे तो हमे लेख भेज द। हम उसे भी प्रकाशित कर देंगे।

—सम्पादक

पाकिस्तान के विषय मे इण्डिया टुडे मई 15, 983 के पृष्ठ 20 पर श्री बलबीरसिंह सधू ने जो खालिस्तान का सविधान दिया है। उसकी एक बात यह है कि जो सिखो के अतिरिक्त लोग होंगे उनको सिख धम के अनुसार चलना होगा पर उन्हे शासन मे न्यायपालिकाओं में और प्रबन्ध की सभाओं मे कोई ऊचा स्थान नही मिलेगा।

सम्भवत ऐसी अवस्था मे कोई भी गैर सिख खालिस्तान मे नही रह सकेगा।

इस अशान्ति और कलह का एक मूल कारण है। धम विशेष कर जब मजहबी का धम मनुष्य के मन पर ऐसा प्रभाव डालता है कि वह स्वाभाविक मानवीय स्तर पर कुछ सोच ही नही सकता। 1947 के उभय पक्षी भयकर नर सहार मे पाकिस्तान की दृष्टि मे हिन्दुओ को मारने वाले सब मुसलमान गाजी थे। और हिन्दुओ के हाथो मरने वाले सब मुसलमान शहीद थे एक हिन्दू लडकी को बहका कर यदि कोई मुसलमान ले आता है तो उस लडकी के मा बाप और परिवार के दुख की किसी मुसलमान को परवाह न होगी सबको यही खुशी होगी कि लडकी ईमान के रास्ते पर आ गई। यही भावना हिन्दुओ की दृष्टि मे शुद्ध होने वाली मुसलमान लडकी के विषय मे होगी।

शासन के राज्य का आधार यदि धम होगा तो यही अन्धापन अवश्य आ जाएगा एक धार्मिक शासन के अन्तगत दूसरे धम के लोगो को न तो कभी बराबरी का दर्जा मिल सकता है और इतिहास साक्षी है कभी मिला भी नही।

सामान्यत हिन्दू धम और विशेषत वेद को धम मूल मानने वाले आयसमाज की स्थिति बिल्कुल अलग है। वेद विशुद्ध मानवता का ग्रन्थ है मानव धम का ग्रन्थ है। देश जाति सम्प्रदाय पीरी पगम्बरी रूढिया सबसे ऊपर वैदिक घोष है माता भूमि पुत्रोऽह पृथिव्या मानव मात्र की माता पृथ्वी है और मानव मात्र उसके पुत्र हैं समान रूप मे अधिकारी वतमान युग के वेद उद्घोषक ऋषि दयानन्द ने तो धम गुरुओ की आलोचना करके व्यक्तियो के नाम पर होने वाले धार्मिक वाद विवादो को निरस्त करने का प्रबल प्रयत्न किया है।

वैदिक धम तथा उसके आधार पर पल्वित हिन्दू धम मे ब्रह्म और क्षत्र दो अलग शक्तिया हैं। ब्रह्म अर्थात ब्राह्मण का सम्बन्ध धम से है तथा क्षत्र अर्थात क्षत्रिय का सम्बन्ध राजनीति से है। राजनीति शास्त्र अलग है धम शास्त्र अलग है। राजा सम्पूर्ण प्रजाओ को एक दृष्टि से देखने वाला है।

ब्राह्मण का उत्कृष्ट आदश संयासी है जो धम का उज्ज्वल स्वरूप है वह राजनीति के दलदल मे नही फसता।

इसके विरुद्ध ईसाई धम तथा इस्लाम मे पोप और खलीफा धम गुरु भी है और राज्य शक्ति के केन्द्र भी। इन धर्मों के राज्यो मे धम गुरु ही राजनैतिक गति विधियो का सचालन करते है ईसाई समाज के विकास म यह अवस्था गुजर चुकी है ईसाई देशो मे राजनीति राज नीतिज्ञो के हाथो म है पादरियो के हाथो म नही इसलिए शासन अपेक्षाकृत निष्पक्ष और स्वस्थ होता है पाकिस्तान जसे इस्लामी देशो मे नई धार्मिक प्रबल भावना मे शासन फिर मौलवियो के हाथो मे पकडा दिया है अब प्रणाली और स्वच्छ प्रणाली विकसित मानवीय विचार धाराओ स परे हटकर धम की रूढियो मे फस रही है

भारत म हिन्दू राष्ट का नारा लगाने वाले राजनीति को फिर साधु सयासियो के हाथो मे देना चाहते है। इनमे एक ओर तो सन्त और सयासी भ्रष्ट होंगे भक्ति का मद उन्ह वासनाओ म खीच लाएगा और दूसरी ओर राज नीति का आधार स्वच्छ दृष्टिकोण का चिन्तन न होकर अन्धी श्रद्धा होगा। आज कल पजाब का अकाली आन्दोलन इस बात का अच्छा उदाहरण है

इस देश का वतमान अवस्था मे हिन्दू राष्ट अर्थात देश मे हिन्दुओ का ही राज्य हो यह विचार देश के टुकडे टुकडे कर देगा। इस देश मे केवल हिन्दू ही नहीं बसते। करोडो अन्य धर्मों के लोग भी हैं प्रत्येक धम के लोग अपना अपना राष्ट माग मानेंगे। करोडो की सख्या की जनता को दबाया नही जा सकता। हिन्दू राष्ट मागने वाले खालिस्तान का विरोध कैसे कर सकते हैं।

भिन्न धर्मों के लोगो को मिलाकर एक राष्ट बनाने का उपाय तो केवल यही है कि धार्मिक भेदो की चर्चा न कर राष्ट का आधार केवल मानवीय मूल्यो को ही माना जाए। इसके बिना न राष्ट्र की एकता रहेगी न सेना का सामञ्जस्य रहेगा और न प्रशासन को साम्प्रदायिक पागलपन म बचाया जा सकेगा।

आय समाज की दृष्टि से ना हिन्दू राष्ट्रवाद भयकर रूप से घातक है हिन्दू नाम म जो समाज तत्व सामने आते है उनमे आय समाज का और उसके विचारो का क्या स्थान है ? धम निरपेक्षता को आधार मानकर राज्य चलाने वालो को आगे भी नास्तिको ने ज्योतिषियो ने साधुओ न सन्तो न तीर्थों ने मकबरो ने घेर रखा है। धम का नाम मुख्य होने पर तो न जाने कितने ही सिद्ध बाबाओ आचार्यों और गुरुओ की सेना राजनीति पर छा जाएगी इन धार्मिक पाखण्डभरी व्यवस्थाओ के नगाडो के शोर मे आय समाज की तुरही की आवाज कौन सुनेगा

(शेष पृष्ठ 7 पर)

# दीर्घ-जीवन में योग का स्थान

ले —श्री डा सत्यव्रत सिद्धान्तालकार का भाषण

आठ मई को राष्ट्रपति भवन मे गण्यमान्य जनता तथा दिल्ली के चिकित्सको के समक्ष गुरुकुल विश्वविद्यालय के तत्वाबधान मे राष्ट्रपति श्री जलसिंह ने डा डा सत्यव्रत सिद्धान्तालकार की नवीन अग्रजी पुस्तक फाम ओ ड एज टु यथ योग का विमोचन किया। उस अवसर पर डा सत्यव्रत सिद्धान्तालकार ने जो भाषण दिया वह यहा दिया जा रहा है—

महामहिम राष्ट्रपति जी

यह देश का सौभाग्य है कि आज से दो दिन पूव देशवासियो ने आपका 67वा जन्म दिन मनाते हुए आपके स्वस्थ तथा दीर्घ जीवन की कामना की और हम सब लोग जो यहा एकत्रित * उनका भी सौभाग्य है कि आपके जन्म दिन के दो दिन बाद इस शुभ अवसर पर हम आपको बधाई दे सकें। हम सब की परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है कि आप स्वस्थ रहे और चिरजीवी हो यह सयोग की बात है कि जिस समय देश के नेतागण तथा साधारण जनता आपके दीर्घ स्वस्थ तथा यशस्वी जीवन की कामना कर रही है उस समय आप एक ऐसी पस्तक का विमोचन करने जा रहे है जो दीर्घ तथा स्वस्थ जीवन पर लिखी गई है।

मेरा यह अभिप्राय नहीं है कि बढा किसी भी उपाय से जवान हो सकता है या आसनो अथवा योग साधन से बढ़े को युवा किया जा सकता है। कहावत प्रसिद्ध है कि जो जाकर न आए वह जवानी देखी और जो आकर न जाए वह बुढापा देखा। परन्तु इस बात मे सन्देह नही कि आसनो प्राणायाम तथा ब्रह्मचय से जो योग के अभिन्न अग हैं बुढापे के कष्टो का निवारण किया जा सकता है। एक युवा का ऐसा जीवन हो सकता है जो बुढापे स भी ब तर हो और योगासनो प्राणायाम तथा ब्रह्मचय द्वारा एक वृद्ध का ऐसा जीवन हो सकता है जिसे देखकर युवा व्यक्ति भी आख फाडते रह जाए।

बुढापा क्या है? बचपन और जवानी मे हमारे अग प्रत्यगो मे जो लचक होती है जो इलस्टिसिटी होती है उसका कम हो जाना या न रहना ही बुढापा है वृद्ध व्यक्ति के हाथ पर पाठ के जोड कड पड जाते है उनमे लचक नही रहती वह सहारे के बिना उठ बठ नही सकता सीधा खडा भी नही सकता। उसे सहारा लना पडता है ... पर क जोडो को घुटनो को पीठ को ... दद होने लगते है हमे समझ लेना चाहिए कि इन सबका इलाज दवाईया से क्षणिक हो सकता है जोडो के इन व्यायामो को एलोपथी मे फिजियो थरेपी कहा जाता है योग की परिभाषा मे इन्हे योगासन कहा जाता है परन्तु फिजियो थेरेपी और योगासनो मे भेद है। फिजियो थेरेपी तब की जाती है जब कष्ट सामने आ खडा हो योगासन तब किए जाते हैं जब कष्ट का कही नाम भी न हो। फिजियो थेरेपी को उपचारात्मक कहा जा सकता है योगासनो का उद्देश्य प्रतिरोधात्मक तथ उपचारात्मक दोनो है। हमारी सस्कृति मे योग के इन आसनो को जीवन का अग बना दिया गया है ठीक इस तरह जसे नित्य स्नान करना जीवन का अग है

जोडो के दर्द का मुख्य कारण जोडो मे यूरिक ऐसिड का जम जाना है। योगासनो से यह ऐसिड जमा नही होता। उदाहरणार्थ घुटनो के दद को लीजिए। पदमासन करने से घटनो का दद नही बन पाता बन जाए तो चला जाता है जोडो के दद का इलाज पदमासन है। एक दूसरे आसन से जिसका नाम सिद्ध पदमासन है प्रोस्टेट गलड बढने नही पाता। मैं स्वय पदमासन सिद्ध पदमासन आदि अनेक आसन प्रतिदिन करता हू और 86 वष की अवस्था मे न मुझ किसी जोड दद की शिकायत है न प्रोस्टेट की। आसनो द्वारा शरीर की लचक को बनाए रखना ही युवा बने रहने का गुर है। आसन तो सकडो हैं परन्तु सबके करने की जरूरत नही आठ दस आसनो से ही पूरा काम चल जाता है

यूरिक ऐसिड के अतिरिक्त जीवन का दूसरा शत्रु कोलेस्ट्रेरोल है। यह हमारे भोजन द्वारा पूरी पराठा मास अण्डा तले पदाथ घी आदि द्वारा नस नाडियो की दीवारो मे चिपक कर उन्हे सकुचित कर देता है जिससे रुधिर के प्रवाह मे तेजी आकर ब्लड प्रेशर हो जाता है या कोलेस्टेरोल का थक्का हृदय रोग उत्पन्न कर देता है। इसमे यौगिक जीवन बडा सहायक है। योगी व्यक्ति चटोरपन को छोड देता है। वह ऐसी वस्तुओ का सेवन करता है जो पौष्टिक तो हो परन्तु घसामय न हो। इसके अतिरिक्त शरीर के सब अगो का घषण या मर्दन कोलेस्टेरोल के निवासियो मे बहुत सहायक है जसे बाल्टी म देर तक पडा पानी बाल्टी के भीतर कलशियम आदि की परत छोड देता है उसे घिसा जाए तो वह परत छट जाती है आगे बढने नही पाती वसे प्रतिदिन शरीर को मालिश करने से नस नाडियो म कोलेस्टराल जमने नही पाती हाट अटक की शका कम हो जाती है शरीर की लचक बनी रहती है। मैंने जहा मालिश पर बल दिया है वहा भिन्न भिन्न भोजनो पर भी विस्तार से जानना आवश्यक है जिससे पता चले कि किस भोजन मे कोलेस्टेरोल है किस में नहीं है किस भोजन मे कितना कैलोरी है ताकि जो स्त्री पुरुष मोटापा दूर करना चाहते हैं पतला होना चाहते हैं वे अपने भोजन के पदार्थों तथा उनकी मात्रा का स्वय निश्चय कर सके। आयुर्वेद मे लिखा है तक्र शक्रस्य दुलभम् —तक्र या छाछ ऐसा दिव्य पदाथ है जो कोलेस्टेरोल को काट देता है आयु को बढाता है। यही कारण है कि पजाबी लोग जो चाय की जगह लस्सी के शौकीन है भारत मे सबसे अधिक तन्दुरुस्त हैं और दीर्घजीवी हैं। पजाबी के डील डौल को देखकर झट समझ आ जाता है कि इसने या इसके बाप-दादा ने खूब लस्सी का प्रयोग किया है। बिल्गेरिया के लोग सबसे अधिक दीर्घजीवी पाये गये हैं क्योंकि उनका मुख्य भोजन दही तथा लस्सी है। दही को वहा तथा यूरोप मे योगर्ट कहा जाता है।

प्रायः समझा जाता है कि आसन कर लेना योग है। यह भ्रान्ति है। योग के मुख्य अग आठ हैं। वे हैं—यम नियम आसन प्राणायाम प्रत्याहार धारणा ध्यान तथा समाधि। आसन तो योग का एक बटा आठवा (1:8) हिस्सा है। शरीर को युवा बनाए रखने के लिए जितना आसनो का महत्व है उससे अधिक महत्व प्राणायाम का है। आसन तथा प्राणायाम भारत के ऋषियो के वृद्धावस्था को दूर करने तथा युवावस्था बनाए रखने के अद्भुत आविष्कार थे। युवावस्था का गुर आसनो तथा प्राणायाम मे निहित है। लोग डाप ब्रीदिंग को प्राणायाम समझ लेते हैं। यह भ्रान्ति है। प्राणायाम की ऋषियो द्वारा आविष्कृत की हुई अपनी एक विधि है टकनीक है। इसमे पूरक कुम्भक रेचक तथा भ्रामरी प्राणायाम गिने जाते है। प्राणायाम का प्रभाव श्वास सस्थान तथा रक्त सचरण सस्थान पर पडता है। जिससे फफड़ तथा हृदय को बल मिलता है। कुम्भक प्राणायाम का प्रभाव पेट आतो तिल्ली गुर्दे आदि भीतर के सब अगो को बलशाली बनाता है। इसी सिलसिले में एक आसन है जिसे योग मुद्रा कहते हैं योग मुद्रा का उद्देश्य मस्तिष्क से लेकर सम्पूर्ण शरीर के प्रत्येक भीतरी अग को बल देना है।

डा के के दास जो अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के हृदय रोग विशेषज्ञ थे जिनका हाल ही मे 22 अप्रैल को देहान्त हो गया था उन्होने श्वासन का विदेशों मे इतना प्रचार किया कि बड बड डाक्टर श्वासन के भक्त हो गए। उन्होंने जो परीक्षण किए उनसे सिद्ध हो गया कि श्वासन से ब्लड प्रेशर मे कमी आ जाती है रोगी औषधी लेना छोड देते हैं परन्तु श्वासन का अर्थ मुर्दे की तरह लेट जाना नही मन को ध्यान मे लगाते हुए दुनियावी विचारो को दिमाग से निकाल कर लेटना है जिसे योग मे प्रत्याहार कहा है। लेटे-लेटे दुकानदारी करते रहने को श्वासन नही कहते।

आल इण्डिया मैडिकल इन्स्टीटयूट के हृदय रोग विशेषज्ञ डा भाटिया का कथन है कि यूरोप मे ट्रान्सेन्डटल मडीटेशन द्वारा हाई ब्लड प्रेशर को नियन्त्रित करने के सफल परीक्षण हो रहे हैं।

आसन तथा प्राणायाम के अतिरिक्त भारतीय ऋषियो ने युवावस्था बनाये रखने के लिए एक तीसरा आविष्कार किया था जिसे ब्रह्मचय कहा जाता था। वेद मे लिखा है—ब्रह्मचयण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत —ब्रह्मचर्य रूपी तप से मृत्यु पर विजय प्राप्त की जा सकती है।

इन सब बातो की विस्तृत चर्चा योग की इस पुस्तक मे की गई है। युवावस्था मे मनुष्य आसन न करने प्राणायाम न करने ब्रह्मचय पूवक न रहने से शरीर की लचक खो बैठता है। इन सब उपायो को योग द्वारा तथा होम्योपथिक औषधियो द्वारा शान्त किया जा सकता है।

# आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए विशेष दान

समय समय पर कुछ महानुभाव आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के लिए विशेष दान देते रहते हैं। आज कल जालन्धर में सभा के नए भवन का निर्माण हो रहा है। उसके लिए अभी बहुत अधिक धन की आवश्यकता है। इन दिनों मे इस समय तक जिन महानुभावो ने विशेष रूप से उसके लिए दान दिया है वे निम्नलिखित हैं—

1 मान्यवर श्री सत्यानन्द जी मुजाल हीरो साईकल लुधियाना—5000 रु।
2 आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना—11000 रु।
3 स्त्री आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार लुधियाना की सरक्षिका बहिन वेदवती जी। —7000 रु।
4 आर्य समाज अहमदगढ (संगरूर) —6000 रु।
5 सभा की सहायता फण्ड के लिए बहिन श्रीमती इन्द्र मोहनी (धर्म पत्नी श्री महेन्द्रपाल वर्मा) —2100 रु।
6 श्री जगदीश मित्र जालन्धर 500 रु।

वीरेन्द्र, प्रधान आ प्र नि सभा पजाब।

# आर्य बन्धुओं के विचारार्थ

**जो कुछ इस पत्र में लिखा गया है हम उससे सहमत नहीं हैं परन्तु आर्य बन्धुओं के विचारार्थ इस समस्या को उनके सामने रख रहे हैं यदि कोई महानु भाव इसके पक्ष में या इसके विरोध में कुछ लिखना चाहे तो वह हमें भेज दे हम उसे प्रकाशित कर देंगे यह पत्र सभकर के सभा मन्त्री जी के नाम आया है**

**—सम्पादक**

मान्यवर श्रीमान प्रिंसीपल रामचन्द्र जावेद साहब

सादर नमस्ते

मैं चाहता हूं कि आप तथा श्रीमान् वीरेन्द्र जी उदासीन तथा किम कर्तव्य विमूढ आर्य समाजी बहनों तथा भाइयों का इन विचारो पर अपना मार्ग दर्शन प्रदान करें

1 मैं समझता हूं कि आर्य समाज के विद्वान वक्ता अन्धविश्वास तथा मिथ्या ज्ञान को जड़मूल से मिटाते मिटाते आर्यों के मन व मस्तिष्को मे श्रद्धा को भी समाप्त कर बैठे हैं हम मानते हैं कि वेद ईश्वरीय ज्ञान तथा परम पिता परमात्मा की वाणी है परन्तु हम वेदो के आगे श्रद्धा व किसी मर्यादा से मस्तक झुकाने को तैयार नहीं हैं मेरा सुझाव है कि वेदो का कोई एक ऐसा सस्करण आर्य समाज पेश करे जिस मे सब वेदो के एक हजार प्रमुख मन्त्र अर्थों सहित दर्ज हो सस्करण का आकार व रूप रंग आदि सब श्री गुरु ग्रन्थ साहब जैसा हो

2 और आर्य परिवारो मे इस वेद ग्रन्थ का प्रकाश उसी तरह हो जिस तरह सिख भाई अपने परिवारो मे ग्रन्थ साहब का प्रकाश करते हैं तथा दो दिन पाठ कराते हैं और सब सम्बन्धियो व मित्रो को अपने परिवार मे आमन्त्रित करते हैं।

3 और सब आर्य भाई बहिन इस वेद प्रकाश ग्रन्थ पर श्रद्धा से धन दें जिस का समुचित भाग आर्य प्रतिनिधि सभाए वेद प्रचार पर खर्च करें और कुछ भाग स्थानीय आर्य समाज को परोहित की व्यवस्था करने के लिए मिले

4- और सब आर्य समाज मन्दिरो मे इस ग्रन्थ की व चारो सम्पूर्ण वेदो की सजधज के साथ स्थापना हो इन वेदो पर शीश झुकाना व धन भेंट करना एक रिवाज के रूप मे चालू किया जावे।

5 बच्चो के जन्म दिन तथा विवाह आदि सस्कार वैदिक रीति अनुसार करने कराने की पाबन्दी हर आर्य समाज पर डाली जाए भले ही वे पाठशालाओ स्कूलो को चलाए या न चलाए परन्तु सस्कारो का शुद्ध रूप अपने 2 नगरो मे पेश करने की व्यवस्था करें हर सस्कार की पुस्तिका ए आकर्षक व सक्षिप्त ढंग से अर्थ सहित हर आर्य मन्दिर मे उपलब्ध कराई जाए

4 किसी सम्बन्धी की मृत्यु पर सिख भाई घर मे श्री गुरु ग्रन्थ साहब का प्रकाश करते है और रोना पीटना स्यापा आदि काफी हद तक बन्द हो जाता है आर्य समाज भी वेदो के आधार पर कोई ऐसा ग्रन्थ सरल भाषा मे तैयार करे जिसकी कथा ऐसे अवसरो पर हर आर्य परिवार मे अनिवार्य हो

7 आर्य परिवारो मे रात्री 8 बजे से 11 बजे तक जगराता की परिपाटी चालू कराई जाए।

इस अवसर पर वैदिक धर्म की व्याख्या सुन्दर आख्यानो कथाओ तथा गीतो द्वारा की जा सके इस उद्देश्य के लिए सुन्दर व आकर्षक एवं रोचक पुस्तक तैयार कराई जाए तथा सब आर्य समाजो मे उपलब्ध कराई जाए

8 हर आर्य समाज को आदेश दिए जाए कि महीने मे कम से कम एक बार हरिजन बस्ती में वेद प्रचार अमृतसर टाईप पर अवश्य हो तथा सब आर्य बहिन व भाई वहा जलपान करें तथा वहा पर सम्मिलित प्रीति भोजो का आयोजन हो

9 हरिद्वार मे वैदिक रीति अनुसार अस्थि प्रवाह का कोई उचित प्रबन्ध नही है। आर्य समाज वहा पर इस तरह का उचित व सस्ता प्रबन्ध उपलब्ध कराए तथा इस प्रकार की व्यवस्था की उपलब्धि का खूब जोर शोर से प्रचार किया जाए।

10 सब नगरो में धनी परिवारो मे आर्य समाज का सरल भाषा मे साहित्य उपलब्ध कराए ताकि हिन्दू का धनाढय वर्ग जैनियो की गोद मे जाने से रुके

11 आर्य समाजो के पक्ष विभाग तथा महिला आर्य समाज घोषणा करें कि जिस स्थान पर दहेज की बली होगी वहां पजाब भर के आर्य बहन भाई पहुंचकर उस स्थान पर धरना देंगे उन पापियो को शीघ्र सजा दिलाने का यत्न करेंगे

मैं समझता हूं कि सारे प्रान्त मे केवल 10 जगहों पर इस प्रकार के रोष प्रदर्शन हो जाए तो यह कलक धुल जाएगा

12 आर्य परिवारो मे परस्पर रिश्ते नाते कराने का कोई समुचित प्रबन्ध होना चाहिए

—धर्मवीर म न 2082 भगवीन स्ट्रीट घ ी गेट अमृतसर

## महान् सत्यार्थ प्रकाश प्रभाव

दिनाक 27 मई से 29 मई 8 तक जिला आर्य युवक सभा फिरोजपुर द्वारा आर्य समाज लुधियान रोड फिरोजपुर छावनी मे सत्यार्थ प्रकाश के पाठ का आयोजन किया एव ईश कृपा से सम्पूर्ण हुआ इसमे फिरोजपर की सभी आर्य समाजो ने एव युवक समाजो ने अपना योगदान दिया प हित राममूर्ति जी ने इसमे विशेष उत्साह दिखाया इसी अवसर पर सत्यार्थ प्रकाश प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया जिसमे केवल ऋषि दयानन्द सरस्वती कृत सभी पुस्तक एव सत्यार्थ प्रकाश के विभिन्न भाषाओ मे अनुवाद आदि एव सत्यार्थ प्रकाश से सम्बन्धित सामग्री प्रकाशित की गयी

दिनाक 29 मई को एक सत्यार्थ प्रकाश वाक प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया जिसमे विभिन्न समुल्लासो से कुछ वाक्यो पर आधारित प्रश्न पत्र मे परीक्षार्थियो को यह बताना था कि यह वाक्य कौन से समुल्लास से सम्बन्धित है और वैदिक मत के अनुकूल है या नही इसके साथ ही उपस्थित सज्जनो को सत्यार्थ प्रकाश परीक्षाओ मे भाग बैठने के लिए प्रेरित किया गया जो कि केन्द्रीय आर्य युवक परिषद दिल्ली द्वारा आयोजित की जाती हैं पिछले तीन साल से यह परीक्षाए यहा आयोजित की जा रही है

देव राज दत्त सयोजक

जि आर्य युवक सभा फिरोजपुर

5 पृष्ठ का शेष

आर्य समाज को स्थिति बड़ी भी विचित्र है अपनी सस्थाओ के उत्सवो तथा जयन्तियो को मनाते समय हम शासन के स्तम्भो को लाकर मस्तक पर बिठाते हैं और उनको प्रसन्न करने के लिए बीस सूत्री और पाच सूत्री कार्यक्रमो से अपनी सहमति प्रकट करते हैं पर अपने समाचार पत्रो मे हिन्दू राष्ट्र के समर्थन मे लेख लिखते हैं यह दो रगी नीति कहा तक चलेगी

अत सिद्धान्तकी दृष्टि से राष्ट्र की व्यवस्था की दृष्टि से तथा व्यवहारिकता की दृष्टि से आर्य समाज को मानवतावादी राष्ट्रीय नीति का ही समर्थन करना चाहिए

## प्रो रामसिह जी चल बसे

आर्य जगत मे यह समाचार अत्यन्त दुख से सुना जाएगा कि आर्य समाज के एक पुराने महारथी प्रो रामसिह जी नई दिल्ली म स्वर्ग सिधार गए है आर्यसमाज और हिन्दू जाति के वे कर्णधार रहे आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान पद को भी कई वर्ष तक उन्होंने सुशोभित किया वे बड़े कर्मठ आर्य नेता और नई पीढी के लिए प्रेरणा स्रोत थे उनके निधन से हुई क्षति शीघ्र पूर्ण न हो सकेगी वे हिन्दू महासभा के प्रधान भी थे

परमात्मा से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को सद्गति प्राप्त हो और उनके वियोगी परिजनों को इस महान दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें

रामचन्द्र जावेद महामन्त्री

## श्रीमती वेदवती जी द्वारा सात्विक दान

श्रीमती वेदवती जी संस्थापिका आर्य समाज दयानन्द बाजार लुधियाना ने अपने पति स्वर्गीय श्री निरञ्जन नाथ जी रत्न की स्मृति मे सात हजार रुपया सभा भवन निर्माण कोष मे दान दिया है हम बहिन जी का बहुत 2 धन्यवाद करते है उन्होने यह सात्विक दान देकर सभा को अपना सहयोग दिया है आशा है वह और भी धन सभा को अवश्य देगी

हमारी और भी दानी महानुभावो से प्रार्थना है कि धन के अभाव मे कहीं भवन निर्माण का कार्य बन्द न हो जाए इसलिए दानी महानुभाव भवन निर्माण के लिए अधिक से अधिक धन भेजें ताकि यह कार्य निरन्तर चलता रहे

रामचन्द्र जावेद सभा महामन्त्री

## एक अच्छी शुरूआत मगर...

हमे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि केन्द्रीय गृहमन्त्रालय ने राज्य सरकारो को एक पत्र लिखकर यह सुझाव दिया है कि वे बलात प्रलोभन तथा अन्य अवैध तरीको से धर्म परिवर्तन करने वालो के विरुद्ध उड़ीसा और मध्य प्रदेश की तर्ज पर एक कानून बनाए ये कानून यदि राज्यो मे भी अपनी वैधता कायम रख सके सकता है मीनाक्षीपुरम तथा अन्य स्थानो मे पेट्रो डालरो के बल पर हुए सामूहिक धर्म परिवर्तनो ने केन्द्र की आख खोल दी है और उसे यह अहसास हो गया है कि धर्मान्तरण की इस मुहिम को स्वय उसकी स्वीकारोक्ति के अनुसार जमात ए इस्लामी हिन्द इण्डियन मुस्लिम लीग इशात-ए-इस्लाम सभा और तबलीग ए जमात द्वारा खाडी के देशो से प्राप्त अपार धन राशि के बल पर चलाई जा रही हैं समय रहते न रोका गया तो उसके गम्भीर दुष्परिणाम सामने आ सकते हैं ऐसे दुष्परिणाम जिनके कारण देश की एकता तथा अखण्डता तक भग हो सकती है

यह मन्त्रालय के इस पत्र मे यह रहस्योदघाटन भी किया है कि इन मुस्लिम सगठनो का लक्ष्य 1982 के अन्त तक दो लाख हरिजनो को मुसलमान बनाने का जिसमे उन्हे 1 000 को मुस्लिम बनाने मे तो सफलता मिल भी गयी है।

यह एक अच्छी शुरुआत है लेकिन सिर्फ कानून बनाने से इस समस्या का अन्त हो जाने वाला नही है। उसके बाद जरूरी कदम भी केन्द्र को उठाने होंगे प्रत्येक ऐसे विदेशी को जो मिशनो के धर्मान्तरण काम मे सक्रिय पाया जाए उसे तत्काल भारत छोडने को कहना होगा। भारत की एकता तथा अखण्डता तभी तक सुरक्षित है जब तक यहा हिन्दू बहुमत मे हैं। जिस दिन हिन्दू भारत मे बहुमत मे नही रहेगा उस दिन भारत टकडो 2 म विभाजित होकर नष्ट हो जाएगा।

(धर्म स्वातन्त्र्य समर्थन समिति की ओर से)

—

आर्य समाज दीनानगर में—

## वीर सावरकर का जन्म दिवस मनाया गया

29 मई रविवार को आर्य समाज दीना नगर के साप्ताहिक सत्सग के पश्चात् डा हरिदास प्रधान आर्य समाज की अध्यक्षता मे वीर सावरकर जी का जन्म दिवस मनाया गया जिसमे प्रिंसिपल माधव राज जी श्री धर्मदत्त जी जौहरी पण्डित राज जी जिज्ञासु ब्रह्मचारी शिवनारायण दयानन्द मठ ने विनायक दामोदर (सावरकर) जी के जीवन पर प्रकाश डाला और कहा कि यदि वीर सावरकर इस समय होते तो भारत की दशा को देखकर वह कभी भी चुप न बैठते इस उत्सव में आर्य ~~[illegible]~~ ने भी भाग लिया जिसमें अजय महाजन और बलदेव डोगरा ने भी वीर सावरकर जी के जीवन पर अपने विचार दिए। अन्त मे मिष्ठान भी सबको बाटा गया

मन्त्री

—

## आर्य समाज कलकत्ता का वार्षिक चुनाव

आर्य समाज 19 विधान सरणी कलकत्ता का वार्षिक साधारण अधिवेशन दि 15 मई 1983 को सम्पन्न हुआ जिसमें निम्नलिखित पदाधिकारी निर्वाचित हुए—

प्रधान—श्री रुलिया राम गुप्त उप प्रधान—श्री सुखदेव शर्मा श्री कबीर दास सभी श्री लक्ष्मण सिंह मन्त्री—श्री राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल उपमन्त्री, श्री अशोक कुमार सिंह श्री मनी राम आर्य श्री मनसा राम वर्मा कोषाध्यक्ष श्री रामचन्द्र आर्य लेखा परीक्षक—राम स्वरूप शर्मा पुस्तकाध्यक्ष—राधा कृष्ण ओझा पुस्तक विक्रय विभाग—श्री सुरेश अग्रवाल श्री देवदत्त के अधिष्ठाता आर्य युवक सगठन—श्री श्रीराम आर्य।

—

सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रेस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

वर्ष 16 अंक 10 5 आषाढ़ सम्वत् 2040 तदनुसार 19 जून 1983 दयानन्दाब्द 159 । एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपए

# वेदामृत

## ब्राह्मण और शूरवीर क्षत्रिय मिल कर कार्य सिद्ध करें

ओ३म यत्र ब्रह्म च क्षत्र च सम्यञ्चौ चरत सह ।
तम लोक पुण्य प्रज्ञेष यत्र देवा सहाग्निना ॥
यजुर्वेद 20।25

शब्दार्थ—हे मनुष्यो (यत्र) जहां (ब्रह्म) ब्राह्मण अर्थात विद्वानो का कुल (च) और (क्षत्रम) विद्या शौर्य आदि गुण युक्त क्षत्रिय कुल । दोनो (सह) साथ (सम्यञ्चौ) अच्छे प्रकार प्रीतियुक्त (चरत) मिल कर व्यवहार करते हैं । वहां सभी प्रकार का सुख रहता है और (यत्र) जिस प्रकार (देवा) दिव्य गुण वाले पृथिवी आदि लोक व विद्वान जन (अग्निना) बिजली रूप अग्नि के (सह) साथ बसते है वैसे ही (तम) उस (लोकम्) देखने के योग्य (पुण्यम) शुभ स्वरूप निष्पाप परमात्मा को (प्रज्ञेषम) तुम लोग जानो ।

इस मन्त्र में परमात्मा का उपदेश ब्रह्म और क्षत्र शक्ति के लिए विशेष रूप से है (ब्राह्मण) विद्वान और (क्षत्रि) शूरवीर के लिए उसका उपदेश है कि अच्छी प्रकार मिल कर आगे बढ़ो । 'सगच्छध्वम स वदध्वम मिल कर चलो मिल कर बोलो । अगर ऐसा करोगे तो जीवन मे सफलता ही सफलता है क्योंकि क्षत्रि के पास (शक्ति) अर्थात जोश तो है पर अगर (बुद्धि) होश भी साथ हो तो वह सभी क्षत्रों सफलता पा सकता है और स्वयं सुखी रहता हुआ दूसरो को भी सुखी बना सकता । सुख प्राप्त करना जीवन मे विजय प्राप्त करना यह मानव की इच्छा है । परन्तु अकेला मानव संसार मे सुख नही पा सकता उसे सुख प्राप्त करने के लिए विजय प्राप्त करने के दूसरो की सहायता की आवश्यकता है ।

इतिहास के दो बड़े उदाहरण हमारे सामने हैं । मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम बहुत शूरवीर थे परन्तु उनकी विजय का कारण क्या शूरवीरता ही है या कुछ और थी । रामायण को पढ़ने पर पता चलता है कि श्रीराम के पास महर्षि विश्वामित्र जी की बुद्धि थी । जिसके नियमानुसार उन्होने ताड़का को मारा मारिच और सबाहु खर दूषण और रावण आदि का वध किया । शक्ति के साथ 2 ऋषियो द्वारा दिया गया ज्ञान भी काम करता रहा वैसे तो उनमे बल और बुद्धि दोनो ही बराबर थे परन्तु बुद्धि के पीछे महर्षियो का हाथ था अगर राम और लक्ष्मण को महर्षि विश्वामित्र जी महाराज अपने साथ वन मे न ले जाते और उन्हे अस्त्र शस्त्र और ज्ञान विज्ञान न सिखाते तो सम्भवत राम इतनी बड़ी विजय को प्राप्त न कर पाते उनका ज्ञान और बल प्रत्येक विजय मे अच्छी प्रकार लक्षित होता ।

इतिहास का दूसरा उदाहरण है—महाभारत के महान योद्धा अर्जुन के पास बल की कोई कमी न थी परन्तु बुद्धि नही थी । तभी तो कौरव और पाण्डवो की जब दोनो सेनाए आमने सामने आकर खड़ी हुई और सारथी श्री कृष्णजी महाराज ने अर्जुन का रथ दोनो सेनाओ के मध्य मे लाकर खड़ा किया वह अपने ही कुछ लोगो को सामने खड़ा देखकर युद्ध करने से इन्कार कर देता है उसकी बुद्धि काम नही करती । श्री कृष्ण जी महाराज उसे उपदेश देते हैं । उनका उपदेश गीता ज्ञान के नाम से प्रसिद्ध है । महाभारत मे कौरवो के सभी योद्धा अर्जुन के हाथो ही युद्ध क्षेत्र मे मारे जाते है । क्या भीम कम बली था या दूसरे महारथी कम बली थे फिर ऐसा क्यों ? चारो तरफ अर्जुन ही अर्जुन की जय जयकार होती है पता चलता है उसके बल के साथ श्री कृष्ण जी महाराज का ज्ञान है । भीष्मपितामह को मारना अर्जुन के बस की बात नहीं थी । जिधर भी लड़ते हुए भीष्म जी महाराज निकल जाते थे युद्ध के मैदान मे लाश ही लाश बिछती चली जाती थी । परन्तु भीष्म जी के पास शक्ति तो थी श्री कृष्ण जैसा ज्ञानी सारथी नही था एक दिन अर्जुन बौखला उठा और बोला अगर पितामह जी ऐसे ही दो चार दिन और लड़ते रहे तो हमारा सभी का सफाया हो जाएगा श्री कृष्ण जी महाराज अपने बुद्धि बल से पाण्डवो को पितामह के पास ले जाते हैं और उनका मृत्यु का रहस्य बुद्धिमत्ता से पूछ आते हैं प्रातःकाल शिखण्डी को आगे करके जब युद्ध की घोषणा की गई तो पितामह ने हथियार डाल दिए और श्री कृष्ण ने अर्जुन की शक्ति और अपनी बुद्धि से पितामह को शर शय्या पर सुला दिया अर्जुन का गुरु द्रोणाचार्य क्या कम बली था परन्तु श्री कृष्ण की बुद्धि बल और अर्जुन की शक्ति के आगे उसे भी हार मानना पड़ी क्योंकि वहां ब्रह्म और क्षत्र का मेल था जिस का निर्देश वेद के इस मन्त्र मे दिया गया है ।

मध्यकाल मे चन्द्रगुप्त की शक्ति के साथ विद्वान चाणक्य का बुद्धि बल काम कर रहा था और देखते ही देखते चन्द्रगुप्त चारो ओर विजयी होता हुआ चला गया इस प्रकार ब्राह्मण और क्षत्रिय अगर दोनो का प्रीतिपूर्वक सम्मिलन हो जाए तो देश जाति और समाज मे चारो ओर सुख की सरिता बह उठे ब्राह्मण से वेद का अभिप्राय जाति विशेष से नही है बल्कि विद्वता और ज्ञान से है यह दोनो चीज एक व्यक्ति मे भी हो सकती हैं परन्तु अक्सर ऐसा कम ही देखने मे आया है अलग 2 यह दोनो शक्तिएं आम लोगो मे होती है परमात्मा इन दोनों शक्तियो को इकट्ठा रहने का उपदेश देता है

जिस देश मे उत्तम विद्वान ब्राह्मण विद्या सभा मे और शूरवीर क्षत्रिय राज सभा मे हो वह देश कभी पराजित नहीं हो सकता उसके सामने कोई शत्रु टिक नही सकता यह मिलकर राष्ट्र के सभी कामो को सिद्ध कर सकते हैं तभी तो परमात्मा ने आदेश दिया है—

यत्र ब्रह्म च क्षत्र च सम्यञ्चौ चरत सह—जहां ब्राह्मण और क्षत्रिय साथ साथ चलते है अर्थात मिलकर रहते हैं । वहां सभी प्रकार का सुख प्राप्त हो जाता है ।

आज पंजाब मे जो वातावरण बन रहा है पंजाब मे ही नही सारे देश में जो स्थिति पैदा हो गई है इस पर दोनो शक्तियो के द्वारा ही काबू पाया जा सकता है ब्राह्मण और क्षत्रिय इकट्ठे हो जाएं फिर हमारा कोई कुछ नही बिगाड़ सकता इस संकट को हम आज मिल कर निष्कंटक बना सकते हैं आज आवश्यकता है हम मिल कर एक हो जाएं ब्रह्म और क्षत्र इस शक्ति के साथ स्वयमेव ही मिल जाया करता है देश जाति और समाज का इस समय बचाने के लिए बुद्धि और शक्ति दोनो का प्रयोग करना नितान्त आवश्यक है अगर थोड़ी भी देर इस कार्य को करने मे की गई तो सभी कुछ इस द्वेष और उन्माद की अग्नि मे जलकर राख हो जाएगा भस्म हो जाएगा

इसके साथ ही मन्त्र का दूसरा चरण हमे एक और भी निर्देश कर रहा है (तम) जिस (लोक) पृथिवी के भाग पर या जिस देश मे यह मिलकर रहते है वहां के लोग (अग्निना सह) अग्नि आदि (देवा) देवो के द्वारा (पुण्यम) निष्पाप होकर पुण्य की तरफ बढ़ते हुए (अग्नि) इस प्रकाश स्वरूप प्रभु को (प्रज्ञेषम) अच्छी प्रकार से जान लेते हैं उसे प्राप्त कर लेते है

इस प्रकार यहां भी वेद ने स्पष्ट कर दिया कि अध्यात्म मार्ग मे भी विजय प्राप्त करने के लिए दोनो के मेल की आवश्यकता है क्योंकि शक्ति के साथ मे अगर ज्ञान न हो तो वह मानव को राक्षस बना देती है पापी बना देती है । बड़े 2 बलशाली पाप मे डूब जाते हैं । लेकिन बुद्धि व ज्ञान मानव को पाप से बचाता है निष्पाप और देवता बनाता है देवो के सम्पर्क से पापी भी निष्पाप हो जाते है कहने का भाव यह कि परमात्मा को पाने के लिए अग्नि आदि देवो से लाभ उठाने के लिए बुद्धि और ज्ञान की आवश्यकता है अग्निदेव बहुत लाभकारी है परन्तु निर्बुद्धि बलशाली उससे लाभ न उठाकर अपने आपको उससे जलाकर समाप्त कर सकता है (जल) जलदेव से मानव अपनी बुद्धि से सुख प्राप्त करता है स्नान बनाना प्यास बुझाना से लेकर खेती बाड़ी आदि के बहुत से कार्य सिद्ध कर लेता है । परन्तु एक बलशाली उसमे डूबकर अपने जीवन का अन्त भी कर सकता है ।

इस प्रकार वेद ने बुद्धि और बल को ब्राह्मण और क्षत्रिय को एक साथ रहने का उपदेश दिया है । —धर्मदेवाय

# आखिर विस्फोट हो ही गया

ले—डा पुष्पावती एम ए पी एच डी दर्शनाचार्य कन्या गुरुकुल नई बस्ती रामापुरा वाराणसी

श्री वीरेन्द्र ने आर्य समाज की वर्तमान स्थिति पर जो लेख लिखे है। उन की बहुत उत्साह जनक प्रतिक्रिया हुई है। इस सम्बन्ध मे कई लेख आय मर्यादा के कार्यालय मे प्राप्त हुए हैं। इस सम्बन्ध मे बहिन पुष्पावती जी का लेख भी आज प्रकाशित कर रहे है। —व्यवस्थापक

22 5 83 के सार्वदेशिक के सम्पादकीय मे श्री वीरेन्द्रजी का बुद्धि विभ्रम लेख पढ़ने को मिला। वीरेन्द्र जी के ये शब्द—

आय समाज मर गया उसकी अन्त्येष्टि करो उसकी अर्थी उठाई जाए। आय समाज के सामने कोई ऐसा काय क्रम ही नही जिसके आधार पर आगे बढ सके इस पर सार्वदेशिक का समा धान भी पढ़ा। जो लोग मनोरञ्जन आत्म ख्याति या आजीविका या किसी ऐसे ही उद्देश्य से आय समाज मे प्रविष्ट हुए हैं उनकी बात म नही कहती पर जो आय समाज को सच्चे मन से प्यार करते है और इसे ऋषि की भावनाओ व पुरुषार्थ का प्रतीक मानते हैं और इसके लिए अपने सवस्व की आहुति भी दे रहे है उनको कितनी मर्मान्तिक पीडा हुई होगी इस वे ही जान सकते हैं

प्रश्न है कि क्या सार्वदेशिक द्वारा प्रस्तुत समाधान प्रबुद्ध हृदयो को सन्तुष्ट कर सकेगा ? दोनो पक्ष अपने अपने स्थान पर ठीक हैं। आज आय समाज के संगठन का स्वरूप कुछ इस प्रकार का हो गया है कि इसम मिशनरी भावना स काम करने वालो को कोई स्थान नही मिलता यहा स्थिर स्वरूपो (इमेज) की मान्यता रह गई है। या तो कोई स्वरूप (इमेज) धारण कर पूजा कराओ या खुशामदी बन कर स्वरूप धारियो को प्रसन्न रखो या उनका उपेक्षित बनकर सड़ने दो। प्रगतिशील व्यक्ति जो विशुद्ध आय व के नाते आय समाज के सम्पक म आता है उसे विरोध न मिले उपेक्षा तक ही बात सीमित रहे तो भी गनीमत है। ऐसी अवस्था मे आय समाज की प्रगतिशीलता व सगठन की सदढता का स्वप्न दुराशा मात्र है।

काय करते करते व्यक्ति के गुण कम स्वभावानुसार उसका व्यक्तित्व अथवा व्यक्तित्वाकारस्वरूप स्वयमेव निर्धारित हो जाया करता है और तदानुकूल दूसरे पर उसका प्रभाव पड़ा करता है पर इमेज बनाने वालो के लिए काय व समाज के सगठन की परवाह नही होती उनको चिन्ता रहती है अपनी व्यक्तिगत प्रतिष्ठा व उच्च अवस्थता की जिसके कारण उनकी पूजा स्वागत अभ्यर्थना जय जयकार होती रहे। यह पूजा कई बार तो चरण स्पश तक की सीमा तक आ जाती है। इसके लिए विविध प्रकार के दाव पेच छलनाओ व प्रवञ्चनाओ का आश्रय लिया जाता है। इमेज बनाने वाला मे आत्म विज्ञापन की प्रवत्ति मुख्य होती है। वास्तविक समाज सेवी के लिए समाज पहले अपनी व्यक्तिगत प्रतिष्ठा प्रसिद्धि मान्यता व पदासीनता बाद मे होती है जब कि इमेज वालो के लिए व्यक्तिगत प्रतिष्ठा पहले और समाज बाद मे होता है। बस यही से उन विडम्बनामयी परिस्थितियो का आरम्भ होता है जिनसे ऊब कर आय समाज का एक वरिष्ठ नेता पंजाब जैसी प्रमुख आय प्रतिनिधि सभा का प्रधान मर्मान्तिक पीडा से आहत हो कर उपयुक्त कटु उद्‌गार जिन्हे सार्वदेशिक सभा ने अपमानजनक शब्द कहा हैं कह उठता है ये शब्द अपमान जनक अवश्य हैं यदि ये किसी को अप मानित करने की दृष्टि से कहे गए हो पर यदि ये आय समाज की घुटन से दुखी होकर कहे गए हैं तो अपमान जनक न होकर आत्म निरीक्षण के प्रेरक कहे जा सकते हैं।

कहना न होगा कि आज आज आय समाज मे अनेको प्रतिभाशाली व निष्काम समाज सेवी एव तप त्याग की भट्टी मे कुन्दन बने व्यक्ति इस घुटन का अनुभव कर रहे हैं पर कुछ नही पा रहे हैं। या तो आय समाज के प्रति प्यार होने के नाते वे इस के अशोभन भविष्य की बात सोच व कह ही नही पाते या वर्तमान आय प्रशासक वग का कोप का भाजन बन कर व्यथ के सघष मे अपनी शक्ति का अपव्यय न कर इसे आय समाज के निर्माण मे लगा देना ही श्रेयस्कर समझते हैं। वीरेन्द्र जी शायद इस कोप के लक्ष्य न बन पाए पर आय समाज का साधा रण सेवक (कायकर्ता) जिसने निस्वाथ रूप से केवल सेवा व्रत का पालन किया है और बदले मे कुछ लेना नही जाना या लेने की इच्छा ही नही की वह आय प्रशासक वग के कोप का भाजन बने बिना नही रह सकता वह एक बार कोप भाजन बन जाने पर इस अभिशाप से अपने को विमुक्त भी नही कर सकता क्योकि उसने तो शक्ति लगाई है समाज सेवा मे न कि सघष के उपकरण जुटाने मे।

वास्तव मे इस समय आय समाज कुछ चालाक अवसरवादी एव दाव पेच के खिलाडियो के हाथ मे खेल रहा है। सामान्य आय जनता ठीक है। उसमे उत्साह है प्रोत्साहन वधन की क्षमता है दान देने व कष्ट सहन की क्षमता भी है, पर चालाक आदमी उसका शोषण कर रहे हैं, और उसको उच्च आदर्शों की ओर प्रेरित नहीं कर रहे हैं अपितु ऐसी प्रदशन शीलता, आत्म विज्ञापन की प्रवृत्ति उत्पन्न कर दी गई है जिससे आर्य जनता का दृष्टिकोण अति सकुचित हुआ जा रहा है। इसका स्थूल रूप यह है कि यहा उसी को महत्व मिलता है जिसके पास ऊची ऊची अट्टालिकाए कार व वैभव के उपकरण एव धन देने की भारी क्षमता है जो कीमती वस्त्र पहन सकता है और जो भीड इकट्ठी कर सकता है। महत्वपूर्ण स्थिति की प्रक्रिया को अति सस्ता व महगा बना दिया है। धनी व्यक्ति महत्व को खरीद सकता है निधन व्यक्ति अपने आदर्शों व आत्माभिमान को तिलाजलि दे या अपने आदर्शों को त्यागे। दोनो स्थितिया उसके लिए बहुत महगी हैं अत वह इधर अभिमुख नही होता परिणामत प्रशासन व नेतृत्व अवसरवादी और चालाक धनी व्यक्तियो का एकाकी अधिकार बन गया है।

कितना अधिपाती सामाजिक व्यग्य है कि जो व्यक्ति समाज सेवा के लिए घर परिवार धन सपत्ति व पद ठकरा चुके हैं उनकी सेवाओ का मूल्याकन करते समय बिल्डिग बैंक मे जमा राशि उनके अनुयायियो की भीड व व्यक्तिगत जीवन स्तर को देखा जाता है। उनकी तपस्या योग्यता मानसिक शुद्धता एव सेवा साधना का कोई मूल्याकन नही होता। विपत्ति मे फस जाने पर वह दो शब्द महानुभूति के भी नही पा सकता कोई सरक्षण कोई सहयोग उसके लिए नही रहता। आय समाज के महनीय महानुभावो के सब द्वार उसके लिए बन्द रहते हैं। ऐसे समय मे वह कसाईखाने म बछडो के हाथो वधनीय गाय के समान अपने को अनुभव करता है। किसी से शिकायत से व्यवहार करने पर उसे सुनने को शब्द मिलते हैं, मै आपकी असुविधाओ के बीच कसे रह सकता हू सोचने नही दिमे पास कितनी आलीशान कोठी है जिसमे स्नानागार व शौचालय कमरो के साथ मे सलग्न हैं इत्यादि। ऐसे लोग बलिदान की घडियो मे एयर कण्डीशन्ड कोठी को छोडकर मध्याह्न की तपती धरती पर कैसे चल सकेंगे ? पर नेता का पद उन्हे जरूर चाहिए स्वागत के हार तथा जय-जयकार जरूर होनी चाहिए।

महर्षि के शब्द कि धर्मात्मा दुर्बल से भी डरे और दुरात्मा बलवान् से भी नहीं डरना चाहिए भुला दिए गए हैं। निर्वाचनो मे धन प्रयोग की बात सुनी जाती है (ईश कृपा से मैंने इन निर्वाचनों को प्रत्यक्षत नहीं देखा इसलिए यह सुनी हुई बात है) सो मूर्ख एक देव विद्वान के स्थान पर सौ विद्वान एक चालाक मूर्ख का नियम घटित हो रहा है। ऐसी अवस्था मे भविष्य की चिन्ता दुख नैराश्य व आक्रोश ही उत्पन्न करेगी। सार्वदेशिक मे समाधान के रूप मे आय समाज का विदेशो मे प्रसार एव लाखो के बैंक बैलेंस की बात कही गई है यह सब ठीक है पर इस घनीभूत भौतिकता मे प्राण शक्ति नही है यह घनीभूत भौतिकता पत्थर की नाव की तरह प्राण लेवा सिद्ध होगी। मुख्य ध्यान मूलभूत प्राण शक्ति के सरक्षण व परि वर्तन पर रहना चाहिए। देश के दुखद विभाजन के पश्चात हमने पजाबी सूबे का स्वर सुना और आज खालिस्तान की माग नगाड़े की जोरदार ध्वनि में कहा जा रही है। हमारा तो यह कहना है कि यदि आय समाज जाग्रत होकर चलता तो देश के विभाजन की तो दूर विभाजन की चर्चा भी नही चल सकती थी। वास्तव मे खालिस्तान भी अन्तिम विभाजन रेखा नही होगा। इसके बाद अवान्तर विभाजनो की पर परा चलने वाली है। अन्य पथकतावादी तत्व खालिस्तान के ऊट की करवट देख रहे हैं। खालिस्तानियो ने एक लाख सिह गो की भर्ती आरम्भ कर दी है। इनमे से कितने धर्मान्धता का बाना धारण किए आगे आ रहे हैं ? होना यह चाहिए था कि आर्य जन नगर नगर ग्राम ग्राम मे घूम जाते और जागरण गीत गा गाकर सबको उठाते और देश की सदृढ रक्षा पक्ति तैयार करते कि कोई एक इच भूमि भी देश की तोड नही सकेगा। प्रत्येक आय गृह की यज्ञ वेदी से पुकार उठती और सुदूर दिगन्त तक फैल जाती कि आर्यों के रहते आर्यावर्त्त का अंग भंग कोई नही कर सकता। यदि कोई ऐसा दु साहस करेगा तो उसे पहले आर्यों को इस धरती से समाप्त करना पड़ेगा। आर्यों के रक्त से धरा रंग जाएगी जिस रक्त मे देश द्रोहियो के दु स्वप्न बह जाएगे। देश के कोने कोने से यह सशक्त आवाज क्या नही उठ रही केवल भाषणो विरोध पत्रो व निन्दा प्रस्तावो की बोलियो से काम नहीं बनने वाला। आज हमारा रक्त ठण्डा पड चुका है। हमारे जोश को काई लग चुकी है हमारे हृदयो को घुन लग चुका है।

मेरा अभिप्राय किसी को दोष देना नही है। अब समय भी कहा है आरोप प्रत्यारोप का ? रक्त मेरी बह रही है। विदेशी ललकार रहे हैं मृत्यु सिर पर नाच रही है। हम अब भी दास करना

(शेष पृष्ठ 6 पर)

# सम्पादकीय

## आर्य समाज अब क्या करे ?

यह एक ऐसा प्रश्न है जो प्रत्येक आर्य समाजी के मन मस्तिष्क में एक विवाद का विषय बना हुआ है। प्राय सब आर्य समाजी यह अनुभव कर रहे हैं कि हम धार्मिक क्षेत्र में बहुत पिछड रहे हैं कोई समय होता था कि आर्य समाज सबसे आगे होता था। जिन उद्देश्यो को लेकर एक सौ वर्ष पहले महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की थी और जिन्हे आर्य समाज ने बहुत कुछ पूरा भी किया था आज वे सब प्राय समाप्त होते दिखाई दे रहे हैं आर्य समाज का सबसे अधिक प्रचार पाखण्ड और गुरुडम के विरुद्ध था। आज ये दोनो फिर से सिर उठा रहे हैं। इनका प्रचार पहले से बहुत अधिक हो गया है। जो नये 2 भगवान हमारे देश मे अब पैदा हो रहे हैं लोग उनके पीछे भागे जाते हैं उनकी सभाओ मे हजारो ही नही कई बार लाखो व्यक्ति सम्मिलित होते हैं चाहे वे सत्यसाई बाबा हो वह आचार्य रजनीश हो महेश योगी हो और इस प्रकार के और भी कई नये भगवान हमारे सामने आ गये हैं। पजाब मे निरकारियो राधा स्वामियो नामधारियो और इस प्रकार के कई और नये मत मतान्तरो का बहुत अधिक प्रचार हो रहा है। ब्रह्मकुमारियो ने भी अपने लिए एक बहुत बड़ा क्षेत्र बना लिया है। इस दृष्टि से जब हम देखते हैं तो निराशा होती है कि जिनके विरुद्ध हमने आज से सौ वर्ष पहले प्रचार किया था वे ही अब आगे बढते जा रहे हैं और हम पीछे हट रहे हैं। सबसे अधिक निराशाजनक बात यह है कि आर्य समाज के नेता बैठकर कभी गम्भीरतापूर्वक इस सारी समस्या पर विचार नही करते। वे अपने काल्पनिक ससार मे रहते हैं और उसी मे ही प्रसन्न रहते हैं। आर्य समाज के मुकाबला मे एक और सस्था भी काम कर रही है वह है विश्व हिन्दू परिषद। मीनाक्षीपुरम मे जो कुछ हुआ उसका श्रेय आर्य समाज ने भी लिया और विश्व हिन्दू परिषद ने भी लिया। उसके आधार पर विश्व हिन्दू परिषद ने 5 करोड से ऊपर रुपया भी एकत्रित कर लिया है और आर्य समाज के नेता अभी इसी विवाद मे पड़े हुए हैं कि महर्षि दयानन्द सरस्वती की निर्वाण शताब्दी कहा मनाई जाए ? मीनाक्षीपुरम मे आर्य समाज ने जो कुछ किया हमने उसका कोई लाभ नहीं उठाया। मैं जानता हू कि जो कुछ मैं लिख रहा हू आर्य समाज के कुछ नेता मुझ से नाराज होंगे। परन्तु इस स्थिति से हम इन्कार नही कर सकते कि मीनाक्षीपुरम आर्य समाज के लिए लक्ष्मण रेखा बनकर रह गया है। हमारे नेतागण जहा जाते हैं और जब भी भाषण देते हैं तो केवल मीनाक्षीपुरम की बात करते हैं। जैसे कि आर्य समाज के सामने मीनाक्षीपुरम ही एक ऐसा लक्ष्य था जो उसने पूरा करना था और वह कर लिया। इसके अतिरिक्त और कुछ करने की आवश्यकता नहीं। यह स्थिति आशाजनक नही। जब किसी सस्था के सामने कोई विशेष कार्यक्रम न हो और वह हाथ पर हाथ रखकर बैठ जाए तो वह धीरे धीरे जनता की दृष्टि से उतर जाती है। वे ही सस्थाए जीवित रहती हैं जो सघर्ष करती रहती हैं। आर्य समाज का सौ वर्ष का इतिहास साक्षी है कि यह लगातार सौ वर्ष तक सघर्ष करता रहा है और उस सघर्ष मे उसने कई 2 बलिदान दिए थे। अब ऐसा प्रतीत होता है कि उसके इतिहास का अन्तिम अध्याय लिखा जा रहा है। 1975 मे जब आर्य समाज की जन्म शताब्दी मनाई गई थी सारे देश की आर्य जनता इस प्रतीक्षा मे थी कि आर्य समाज का नेतृत्व देश की परिस्थितियो को सामने रखते हुए कोई नया कार्यक्रम जनता के सामने रखे लेकिन वह शताब्दी एक मेला बनकर रह गई और ऐसा प्रतीत होता है कि निर्वाण शताब्दी का अन्त भी वैसे ही होगा। मैं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का सदस्य हू इसका वार्षिक अधिवेशन डेढ़ दिन का होता है। जिसमें से आधा दिन बजट को स्वीकार करने मे लग जाता है कुछ अधिकारियों की रिपोर्ट पर विचार करने पर व्यतीत हो जाता है और मुश्किल से डेढ दो घण्टे मिलते हैं देश की वर्तमान परिस्थितियो पर विचार करने के लिए। लेकिन परिणाम उसका भी कुछ नही निकलता। सार्वदेशिक सभा के प्रधान यह तो बता देते हैं कि वे प्रधानमन्त्री से मिले और यह भी बता देते हैं कि प्रधानमन्त्री के साथ क्या पत्र व्यवहार हुआ परन्तु आर्य समाज को देश की वर्तमान परिस्थितियो पर क्या करना चाहिए ? इसके लिए उनके पास कोई कार्यक्रम नहीं है मैंने इगलैड मे भिन्न 2 देशो के ईसाई पादरियो को एक मास तक लगातार ईसाई सम्प्रदाय की समस्याओ पर विचार करते हुए देखा है दूसरी कई सस्थाए भी कई कई दिन अपनी समस्याओ पर विचार करती रहती हैं। आर्य समाज ही एक ऐसी सस्था है जिसकी कोई समस्या नही और जिस पर विचार करने की कोई आवश्यकता नही। यही कारण है कि आर्य समाज पिछड रहा है। जिस सस्था की केन्द्रीय सभा का वार्षिक अधिवेशन डेढ दिन मे समाप्त हो सकता है वह सभा आर्य जगत का क्या नेतृत्व कर सकेगी ? इसका अनुमान लगाना कठिन नही। मेरा यह विश्वास है कि देश की वर्तमान परिस्थितियो मे आर्य समाज ही केवल ऐसी सस्था है जो अपने देशवासियो को एक नया रास्ता दिखा सकती है महर्षि दयानन्द सरस्वती सत्यार्थ प्रकाश मे हमे इतना कुछ दे गए हैं कि उसके आधार पर आर्य समाज यदि कुछ करना चाहे तो देश का कायाकल्प कर सकता है कौन सा विषय है जिस पर कि महर्षि ने नही लिखा धर्म पर राजनीति पर शिक्षा पर राजतन्त्र पर आर्थिक समस्याओ पर भ्रष्टाचार को समाप्त करने के साधनो पर अर्थात जितनी समस्याये आज हमारे सामने हैं उन सब के विषय मे उन्होने अपने विचार दिए थे दूरदर्शी थे। इसलिए एक सौ वर्ष पहले ही उन्होने बहुत कुछ समझ लिया था और देख लिया था क्या आर्य समाज सत्यार्थ प्रकाश मे दिए गए महर्षि दयानन्द के विचारो के आधार पर देश के सामने कोई नया कार्यक्रम नही रख सकता यदि यह कार्यक्रम बनाया जाए और उसके आधार पर आर्य समाज को एक नया सघर्ष करना पड़े तो न केवल आर्य समाज मे नई जागृति आ जाए अपितु जनता मे भी एक नई प्रकार की जागृति दिखाई देने लग जाए हमारी सामाजिक समस्याए ही इतनी हैं जिनके विषय मे आर्य समाज यदि कुछ करना चाहे तो बहुत कुछ कर सकता है दहेज की प्रथा ही ले लो इसके कारण आज देश मे जो अनर्थ हो रहा है वह किसे मालूम नही ? हमारे देश मे इससे पहले कभी भी यह न हुआ था कि लड़कियो को जीवित ही जला दिया जाए क्या यह ऐसी समस्या नही जिसके विरुद्ध आर्य समाज एक अभियान प्रारम्भ करे हमारे नामधारी भाई दो या तीन रुपया मे एक विवाह कर लेते है और वे कभी भी अपनी किसी लड़की को नही जलाते क्यो नही आर्य समाज एक अभियान प्रारम्भ करता कि दहेज की प्रथा समाप्त होनी चाहिए क्यो नही आर्य समाज यह कहता कि विवाह पर जो फिजूलखर्ची होती है वह सब बन्द की जानी चाहिए। क्यो नही सार्वदेशिक सभा यह आदेश देती कि प्रत्येक आर्य समाजी अपने बच्चो का विवाह आर्य समाज मन्दिरो मे करवाया करे यदि ईसाई अपने बच्चो के विवाह अपने गिरजाघरो मे करवा सकते हैं तो आर्य समाजी अपने बच्चो का विवाह आर्य समाज मन्दिरो मे क्यो नही करा सकते ? यह उसी स्थिति मे सम्भव हो सकता है यदि आर्य जगत के नेता बैठ कर इन समस्याओ पर विचार करें और कोई नया कार्यक्रम बना कर जनता के सामने रखें। आज आर्य समाज के सामने कोई ऐसा कार्यक्रम नही है जिसके द्वारा जनता मे एक नया उत्साह पैदा किया जा सके जो कार्यक्रम लेकर 100 वर्ष पहले आर्य समाज ने अपना काम शुरू किया था उसे तो बहुत कुछ अब दूसरो ने भी अपना लिया। क्या अब समय नही आ गया कि आर्य समाज वर्तमान परिस्थितियो मे कोई नया कार्यक्रम देश के सामने रखे ? आर्य जनता ही नही देश की जनता भी देख रही है कि आर्य समाज कब उन्हे कोई नया रास्ता दिखाता है क्या हमारे नेता इस प्रश्न पर कभी बैठ कर गम्भीरता पूर्वक विचार करेंगे ? देश की परिस्थितिया पुकार पुकार कर कह रही हैं कि आर्य समाज को एक नया नेतृत्व देना चाहिए। परन्तु क्या हमारे नेता भी इस प्रकार सोचने को तैयार हैं ?

—वीरेन्द्र

# ऋषि दयानन्द की निर्वाण शताब्दी और परोपकारिणी सभा

ले—श्री डा भवानीलाल जी भारतीय संयुक्त मन्त्री सभा

( गताक से आगे )

न उसके पास कोई ऐसा लाखो रुपयो का स्थायी फण्ड है जिसे वह मात्र प्रकाशन मे ही व्यय करता रहे। सभा के प्रकाशनो का खर्च तो वैदिक यन्त्रालय के रोजमर्रा के कारोबार अथवा सभा के बिक्री विभाग से प्राप्त राशियो पर ही निर्भर है। यद्यपि सभा अपने प्रकाशनो से नगण्य मुनाफा ही कमाती है। किन्तु अपने प्रकाशनो के उच्च स्तर को बनाए रखने के कारण उसे प्रभूत मात्रा मे द्रव्य व्यय करना पड़ता है जिसके परिणाम स्वरूप ग्रन्थ तो कम बिकते हैं उलटे इनका स्टाक प्रतिवर्ष बढ़ता होता रहता है।

सभा के माननीय आलोचक यह नही सोचते कि सभा के अधिकारियो को आय कर भूमि कानूनो के मातहत उठाये गये मामलो तथा अचल सम्पत्ति विषयक विवादो को सुलझाने मे श्रम और शक्ति का कितना व्यय करना पड़ता है अन्य संस्थाओ के अधिकारी जहा नियमित पारिश्रमिक प्राप्त करने वाले वकीलो को ये मामले सौंप कर निश्चिन्त हो जाते हैं वहा इस सभा का मन्त्री स्वयं अदालतो मे उपस्थित होकर उन्हे भुगताता है।

अब मैं इस लेख के मुख्य मुद्दे पर आता हू जब से परोपकारिणी सभा ने ऋषि निर्वाण शताब्दी के प्रश्न को उठाया तब से ही उसका यह प्रयास रहा कि इस महान समारोह मे समस्त आर्य जगत का तथा विशेषतः हमारी शिरोमणी सभा का समर्थन सहयोग मार्ग दर्शन और आशीर्वाद प्राप्त रहे। यह सभा तो बार बार 1933 की अर्द्ध निर्वाण शताब्दी समारोह का दृष्टान्त उपस्थित करती रही जो परोपकारिणी सभा तथा सार्वदेशिक सभा के संयुक्त तत्वावधान मे महात्मा नारायण स्वामी (सार्वदेशिक सभा के तत्कालीन प्रधान) तथा राजाधिराज नाहरसिंह जी शाहपुराधीश एवं दीवान बहादुर हर बिलास शारदा (परोपकारिणी सभा के तत्कालीन प्रधान व मन्त्री) जैसे महापुरुषो द्वारा आयोजित किया गया था। अब बीती बातो को याद करने से क्या लाभ। तथापि यह अवश्य कहूगा कि यह आर्य जगत का दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि समन्वय का मार्ग नही निकल सका और परोपकारिणी सभा को अपने निश्चय पर दृढ़ रहना पड़ा। मैंने कहा जिससे किस प्रकार हुई इस पर अब कहना अभी समीचीन नही होगा।

अजमेर मे शताब्दी समारोहो के अवसर पर यात्रियो को उपलब्ध कराई कराई जाने वाली सुविधा असुविधाओ पर हमारे मित्रो ने पत्रो मे जमकर बहस की है। मैं आविरोध न्याय से मान लेता हू कि अजमेर मे पानी की कमी है आवास भी पूर्णतया सुखद नही है आदि? किन्तु क्या ऐसे भावना प्रधान समारोहो मे केवल हम अपनी भौतिक सुख सुविधाओ को ही मद्द नजर रखमे। यदि ये सुख सुविधाए ही चाहिए फिर तो कभी घर से बाहर ही मत निकलिए। गोस्वामी तुलसीदास के शब्दो मे अपने घर से बढ़कर सुख कहा मिलता है? तथापि हम बाहर जाते ही है। एक और बात है प्रति वर्ष विश्व के लाखो मुसलमान अरब जैसे शुष्क जलहीन तथा मरुस्थल प्राय देश मे हज के लिए जाते हैं। यदि उन्हे सुख सुविधा ही चाहिए तब तो उन्हे लन्दन पेरिस और न्यूयार्क की सैर करनी चाहिए न कि मक्का और मदीना की। निश्चय ही निर्वाण शताब्दी मनाने का औचित्य उसी नगर मे है जहा एक शताब्दी पूर्व हमारे आचार्य प्रवर ने अपनी भौतिक देह को त्यागा था।

इसी स्थान पर आने से ही आर्यों को उस भिनाय की कोठी के दर्शन होगे जहा ऋषि ने अपना पंच भौतिक चोला त्यागा। यही वह मलूसर श्मशान है जहा स्वल्प समय मे ही भगवान हुतात्मा ने उस तपोपूत काया को भस्मीभूत कर दिया था और सर्वोपरि बात तो यह है कि परोपकारिणी के संग्रहालय मे ही श्री महाराज के उत्तरीय उनका मसिपात्र धूपघड़ी कमण्डल खड़ाऊ हस्ताक्षरो की पीतल की सील तथा महाराज के हाथो से लिखे गये संशोधित किए ग्रन्थो के हस्तलेख आधुनिक उपकरणो) Micro Filming तथा Lamination से सुरक्षित की गई पाण्डुलिपिया आदि देखने को मिलेंगे। दिल्ली मे तो (आचार्य विश्वश्रवा जी क्षमा याचना सहित) क्योकि उन्ही के शब्दो को प्रयुक्त कर रहा हू। कुतुब की लाट और चांदनी चौक का नजारा ही देखने को मिलेगा।

अब कुछ अन्य बातें—इसी प्रसंग में हमारे कुछ मित्रो ने न जाने कितनी कहने और न कहने योग्य बातें कह डाली हैं। कुछ महानुभावो को तो परोपकारिणी सभा मे शायद एक भी भला आदमी दृष्टिगोचर नहीं हुआ। उनकी जानकारी के लिए बताना होगा कि इस सभा मे स्वामी ओमानन्द जी तथा स्वामी सत्य प्रकाश जी जैसे आर्य जगत के मूर्धन्य त्यागी, तपस्वी सन्यासी हैं डा सुधीर कुमार गुप्त तथा पं उदयवीर शास्त्री जैसे शास्त्र मर्मज्ञ विद्वान् हैं। महात्मा आर्य भिक्षु जी जैसे कर्मठ उपदेशक हैं प आनन्दप्रिय जी तथा प्रो शेरसिंहजी श्री वेदराज जी बहल जैसे नेता तथा श्री घनश्यामदास जी गोयल जैसे उदार मना दानी महानुभाव हैं। श्री रामनाथ सहगल जैसे जोशीले उत्साही तथा कर्मठ आर्य नेता हैं। अधिक क्या कहू स्वयं राजस्थान प्रान्तीय सभा के प्रधान श्री छोटूसिंह जी भी इस सभा के माननीय सदस्य है। (अपने बारे मे कुछ नही कहूगा यदि कहू तो वह आत्म श्लाघा ही समझी जाएगी) अतः आर्य जनता इस बात को अपने मन से निकाल दे कि श्री महाराज की उत्तराधिकारिणी सभा मे अवाछनीय तत्व हैं। यदि उपर्युक्त आर्य महानुभाव अवाछनीय हैं तो फिर वाछनीय की परिभाषा हमे बदलनी होगी।

अब आती हैं बात हमारी सभा के मन्त्री जी करण शारदा जी की। सर्व प्रथम तो आलोचक महानुभावो को यह सोचना चाहिए कि यह समारोह सम्पूर्ण आर्य जगत का है यह शारदा जी के घर का समारोह नही है अतः वैयक्तिक और अप्रासंगिक बातो को (जो वस्तुस्थिति से अपरिचय के कारण उत्पन्न होती है) इस अवसर पर उछालने से कोई लाभ नही। जो लोग यह भ्रम पाले हुए हैं कि शारदा जी के कारण सभा नष्ट भ्रष्ट हो रही है उसकी सम्पत्ति को वे हड़प रहे है। मैं शारदा जी को विगत दो दशको से भी अधिक समय से जानता हू। पूरे एक युग तक अजमेर मे उनके साथी तथा सहयोगी के रूप मे सभा का काम करने का अवसर मिला है। शारदा जी देश के धनकुबेर बिड़लाजी के निकट सम्बन्धी हैं। उनका स्वयं का लाखो का कारोबार है। वे सभा की सम्पत्ति या धन को हड़पने की कार्यवाही करेंगे यह वही व्यक्ति सोच सकता है जो उन्हें निकट से न जानता हो मनुष्य जन्य दुर्बलताए सब मे होती हैं मुझ मे भी हैं शारदा जी मे भी शायद आलोचको मे भी होंगी। परन्तु इसी कारण हम निर्वाण शताब्दी समारोहो को पलीता। (Sabotage) लगाने के लिए कृत संकल्प हो तो यह गुरुद्रोह मे कम नही होगा। इससे अधिक क्या लिखा जाए? शताब्दी के पुण्य अवसर पर वैयक्तिक चरित्र हनन की आज्ञा किसी को नहीं दी जा सकती।

उन कुछ-एक महानुभावो के लिए जिन्होंने यह आरोप लगाया है कि परोपकारिणी सभा ने ऋषि निर्वाण स्मारक भवन तथा श्मशान के विकास के लिए किसी योजना को स्वीकार नही किया है, अतः उसे सहयोग देना चाहिए। यह बात भी वही व्यक्ति कह सकता है जो अजमेर के तथ्यो से अपरिचित हो। परोपकारिणी सभा ने शताब्दी समारोह पर कुछ स्थायी कार्यक्रमो के क्रियान्वयन की योजनाए बनाई है जो इस प्रकार है—

1 ऋषि उद्यान मे सुन्दर एव भव्य यज्ञ शाला बनाई जा रही है।

2 स्वामी जी के ग्रन्थो के मुद्रण प्रकाशन तथा तत्सम्बन्धी शोध विषयक संस्थान तथा पुस्तकालय आदि का निर्माण।

3 इस अवसर पर तीन महत्वपूर्ण ग्रन्थ प्रकाशित किये जा रहे है जो इस समारोह की स्थायी उपलब्धि होगे।

(अ) दयानन्द ग्रन्थ माला का दो खण्डो मे प्रकाशन।

(आ) स्वामी जी की प्रामाणिक, अधिकृत शोधपूर्ण जीवनी का प्रकाशन यह ग्रन्थ इन पंक्तियो के लेखक ने तैयार किया है।

(इ) दयानन्द स्मारक ग्रन्थ—इसका सम्पादन स्वामी सत्यप्रकाश जी कर रहे हैं।

उपर्युक्त कार्यक्रमो के अतिरिक्त शताब्दी समारोह पर जो विभिन्न आयोजन होंगे वे निश्चय ही सामयिक होंगे परन्तु प्रचार की दृष्टि से उनकी उपयोगिता भी स्वीकार करनी ही होगी।

अब आपेक्षकर्ताओं की बातो पर ध्यान दें। जहा तक निर्वाण स्मारक भवन का सम्बन्ध है वह एक स्वतन्त्र पंजीकृत ट्रस्ट के अधीन है। उसके विकास की योजनाए उक्त ट्रस्ट ने स्वतन्त्र रूप से बनाई हैं और उसके उत्साही अधिकारी तथा ट्रस्टीगण (इन पंक्तियो का लेखक भी इस ट्रस्ट का ट्रस्टी है तथा उपप्रधान रह चुका है) इसके लिए कार्यरत भी हैं। इस स्थान पर औषधालय पुस्तकालय अतिथिशाला सत्संग आदि की उपयोगी प्रवृत्तिया संचालित की जा रही हैं और आर्य जगत मुक्तहस्त होकर इनकी सहायता भी कर रहा है। परोपकारिणी सभा यथा शक्ति इस न्यास को सर्वात्मना सहयोग करेगी। इसमे उसे कोई विप्रतिपत्ति नही है।

अब रही श्मशान के विकास की बात—पाठक क्षमा करें। यह बात कुछ समझ मे नही आई। मैंने जब एक महानुभाव से इसकी चर्चा की तो वे (शायद मजाक के मूड मे थे) कहने लगे श्मशान का विकास तो तब होगा जब अधिक से अधिक मुर्दे वहा फूके जाए। परन्तु मैं इस बात को इतने हल्केपन से नही लेता,

(शेष पृष्ठ 7 पर)

# मनुष्य जीवन भर विद्यार्थी रहता है

## आचार्य डा प्रज्ञादेवी जी का पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी मे दीक्षान्त भाषण

माननीय विद्वज्जन !

आर्य श्रेष्ठ मेरे भाईयो एव बहिनो !

तथा पीतपरिधानावेष्टित मेरी नव स्नातिका पुत्रियो ।

अपने जीवन के अबोध वय मे तमने मेरे साथ एक मन्त्र पढा था मम वाचमेक मना जुषस्व बृहस्पतिष्टवा नियनक्तु मह्यम । विद्याभ्यास रूपी तपश्चर्या मे निरत रहते हुए इस साधना स्थली मे जीवन के अनमोल 13 वर्ष व्यतीत करने पर तमने इस मन्त्र का व्यवहारिक तात्पर्यार्थ ह्रदयगत कर लिया है । मिट्टी से जडकर वक्ष अथवा वृक्ष से जुडकर पुष्प ने मिट्टी या वक्ष से क्या-क्या लिया एव मिट्टी या वक्ष ने उसे क्या क्या दिया ? दोनो के लिए यह बता पाना सुलभ नही किन्त जड रहना उसकी अमरता का सदेश एव उसकी सार्थकता की परिभाषा है इसे सभी जानते है । इस मानव जीवन के भी माता पिता आचार्य तीन खूटे है जिनसे प्रत्येक अबोध बालक जुडकर अपने जीवन के बहुमूल्य रहस्यो का विस्तार पाता है ।

वितिष्ठन्ता मातरस्या उपस्थाना नारूपा पशवो जायमाना इस वेद मन्त्र के अनुसार प्रत्येक माता पश रूप मे ही बालक को जन्म देती है जिसका क्रमश मानवीकरण एव दैवीकरण इन तीन खूटो से बध कर होता है । बन्धनो की दढता मे मेरा सदैव प्रगाढ विश्वास रहा है अत अब 13 वर्ष पूर्व कहलाए गए नियुनक्तु मह्यम वाक्य के द्वारा इस बन्धन को और दढ करती हुई मैं आज तम्हे विशेष कर्मस्थली से जोड रही हू ऐसा कह रही हू अपने यहा से ये स्नातिकाए निकाल रही हू ऐसा अनुहत वाक्य नही ।

प्रिय पुत्रियो ! मनुष्य जीवन भर विद्यार्थी रहता है और रहना चाहिए किन्तु विशेष परिश्रमसाध्य एव विशेष समयापेक्षित शिक्षा व्याकरण निरुक्त इन वेद के तीन अगो का अध्ययन तुमने मनोयोग पूर्वक कर लिया है । अब आपके स्वल्प समय साध्य जो छन्द कल्प ज्योतिष वेद के अग शेष है उनका अध्ययन करना है जिसके लिए तुम सब कृत निश्चय हो और प्रभु कृपा से वह पूर्ण होगा अत इस समय तुम्हारा कर्मभूमि मे प्रवेश से तात्पर्य आगम एव व्यवहार काल दोनो का साथ साथ चलाना है तथा इसी रूप में तुम्हारा यह उपाधिवितरणोत्सव दीक्षान्त समारोह हो रहा है ।

आज प्राय जननायको द्वारा विशेष अवसरो पर यह रटा रटाया वाक्य उच्चरित किया जाता है कि सस्कृति से प्राप्त परम्पराए नही रहेंगी तो स्थापित मूल्य बिखर जाए गे कितनी उपहासास्पद बात है कि जिनको वदिक सस्कृति का स्वल्प मात्र बोध ही नही है वे भी स्थापित मूल्यो की चर्चा करते है । यह सस्कृति की अवमानना नही तो क्या है ? शिक्षण सस्थानो मे जहा समूचा राष्ट बनता है उसे पुलिस प्रशासन की छाया मे चलाना पड ता आज यह कह देन होगा कि ऐसे विश्वविद्यालयो को बन्द कर देने की आवश्यकता है । विश्वविद्यालयो की महत्वपूर्ण उपाधिया जिस दिन से बिना श्रम किए ही राजनेताओ को दी जाने लगी शिक्षा का गला तो उसी दिन से मानो घोट दिया गया ! सम्भवत किसी शब्द का इतना निरर्थक दुष्प्रयोग आज तक नही हुआ होगा जितना आधुनिक युग मे दीक्षान्त का शब्द का हुआ है । कसी विडम्बना है कि जिसने वहा के शिक्षण शाला मे शाखा ली उन छात्रो का कोई दीक्षान्त समारोह नही होता और जिसन कभी वहा दीक्षा नही ग्रहण की उसका विशेष दीक्षान्त समारोह और फिर उन्ही का दीक्षान्त भाषण । स्थापित मूल्यो का विध्वस आज इन्ही विसङ्गतियो द्वारा हो रहा है जो शिक्षा जगत के लिए महती चिन्ता का विषय है ।

शिक्षण सस्थाओ की पवित्रता उसकी अपनी स्वायतत्ता मे है इसीलिए तो आचार्य सूर्यसम कहा गया है कि जिसके इर्द गिर्द ग्रह उपग्रहरूपी सम्पूर्ण मानव जीवनोपयोगी शक्षिक व्यवस्थाए अनुसञ्चालित होती हैं । विशुद्ध ज्ञानधारा की सुरक्षा एव जीवन की उज्जवलता इसी परम्परा के निर्वाह मे है । आज तम्हे कर्मभूमि से जोडते हुए मेरी तुमसे यही अपेक्षाए हैं ।

प्रिय स्नातिकागण जीवन की प्रथम अवस्था का मनुष्य जीवन मे वही महत्व है जो भवन के लिए नीव का होता है । इस प्रथम अवस्था के लिए वेद से लेकर उपनिषदो तक की ज्ञान राशि जिस कठोर तपश्चर्या का समर्थन करती है उस तपस्या को तुमने इस विद्या मन्दिर में इतने वर्ष व्यतीत करते हुए उपार्जित किया है इसमे कोई सन्देह नही । इस आधार पर तुम्हारा आगामी जीवन बन्धनामय जगत के व्यवहारो से निश्चय ही भिन्न रहेगा यह कहा जा सकता है । जिन विचारो को तम्हारे अन्तस्तल मे अब तक जाने अनजाने डालने का सतत प्रयत्न चलता रहा उनको किसी भी रूप मे पीछे छोड पाना अब तुम्हारे लिए असम्भव होगा यह मेरा विश्वास है मृत्पात्र कुम्भकार के आव मे जिस रक्तिम वर्ण को पा लेता है उस रक्तिम क्षण वर्ण को आवे से बाहर निकल कर भी अपने अन्तिम क्षण तक नही छोड पाता । चेतन मानव के सस्कारो के आधान की प्रक्रिया भी ठीक ऐसी ही है । य सब होने हुए भी जिसके द्वारा अपना आगामी पथ निरापद समझ लिया जाए यह उसकी भूल होगी पथ निरापद नही हो सकता किन्तु शुभ सस्कारो से सुवासित होने के कारण उस पर दढता से चलते रहने का तम्हारा साहस यथा पूर्व हो सकता है अनुभव के क्षेत्र ज्ञानार्जन से पृथक है अत दत्तिग्रहण अवसरो पर ऋषि महर्षियो के वचनो का सही प्रयोग करने से उचित दिशा तम्हे प्राप्त हो सकेगा यह निश्चित है ऐसे अवसरो पर समय समय पर गुरुजनो द्वारा तम्हारे लिए दिए गए उद्बोधन एव ताडन भी तम्हारे रक्षा कवच बनकर तम्हारा साहाय्य करगे । परन्तु स्वाध्याय तम्हारे जीवन का अभिन्न अग बना रहेगा तो जीवन के प्रलोभन नही सताए गे क्या कि वे तम सं तभी बात करगे जब तम बेकार होओगे पर तम्ह तो स्वाध्याय से अवकाश ही नही । जीवन की पावन प्रथम अवस्था मे जितनी कठोर तपश्चर्या कर ली जाती है आगामी जीवन का पथ उतना ही ऋजु बनता है इसे कभी न भलना चाहिए ।

तमने अभी ज्ञान अर्जित किया है किन्तु तम्हारे ज्ञान से समाज लाभान्वित हो इसके लिए सम्वेदनात्मक सम्प्रेषणीयता भी तम्हारे लिए अनिवार्य होगी जिसका पाठ अब कर्मभूमि के स्पर्श करने पर अनुभव की पाठशाला मे ही पढा जा सकेगा । मनुष्य प्राय कुछ आगे बढने पर अपनी पिछली अवस्था को भूल आने वाली पीढी को अपनी वर्तमान दशा पर तोलने लगता है इसमे वह दूसरो का मूढ बनाता स्वय अद्यतन प्रतिमानो के अनुसार एकपक्षीय मूल्य बन जाता है जीवन की यह अवस्था दूसरो को जगाने वाली एव स्वय मे अहकार जगाने वाली होती है अत ऋषियो के मार्ग का अवलम्बन करने वाले जन को दूसरो की अवस्था को समझकर परोपकार का बीडा उठाना चाहिए

राष्ट एव समाज मे व्याप्त अन्धकार के बादल गुम्फ उन्हे भिन्न करते हैं । तम ऋषिवर दयानन्द की बगिया से ऐसे सन्देश सम्भवत अब तक अनगिनत बार सुन चुके हो पर आज इस मगलमय वेला मे पुन उस पुरातन सन्देश को नई गुरुता के साथ दे रही हू कहना चाहूगी कि आज तम जो कुछ भी हो ऋषि कृपा से हो अन्यथा नारी जाति का मगकाल मे अस्तित्व ही क्या रह गया था बल्कि धर्म तम्हारा प्राण हो तुम्हारा रोम रोम उससे अनुप्राणित हो यही तम्हारे लिए मेरा आज का महत्वपूर्ण सन्देश है तुम्हे कर्म पथ पर अग्रसर होना है पर प्रतिदान की इच्छा से नही । प्रतिदान की इच्छा से स्वार्थ एव स्वार्थ से मनुष्य का पतन होता है । सर्वत्र मान की इच्छा भी मनुष्य को पथभ्रष्ट कर देती है । आज मैं परम पूज्यपाद पदवाक्यप्रमाणज्ञ गुरुवर्य श्री प ब्रह्मदत्त जिज्ञासु जी के अनुभवपूर्ण वाक्य भी तम्हे पुन सुना देना चाहती हू कि जिस बच्चे की घर पर ताडना होती रहती है वह बाहर मान प्राप्त करता है और जिसे घर पर अतिशय लाडप्यार मिलता है वह बाहर अपमानित होता है इस आधार पर मैं कह सकती हू कि तम्हे मान की इच्छा न भी रखना किन्तु वह तुम्हे स्वय बहुत अधिक मिलेगा

—

# आर्य समाज बस्ती मिट्ठू की गतिविधिया

श्री रामलुभाया जी नन्दा सरक्षक आर्य समाज बस्ती मिट्ठू जालन्धर ने एक वक्तव्य मे बताया कि यह समाज निरन्तर प्रगति कर रही है । हमने जगल मे यह समाज बनाई थी परन्तु अब वहा चारो ओर मगल ही मगल हो गया है । चारदिवारी एक कमरा गेट तो पहले ही बन चुका था अब हाल कमरा भी शीघ्र ही बनकर तयार हो जाएगा । इसके लिए दानी महानुभाव निरन्तर दान दे रहे है । श्री भीमसेन जी कक्कड (बस्ती नौ) ने 2100 रुपए दिया तथा 1000 और देने का वायदा किया । श्री हसराज जी महाजन ने 500 रुपये दिए हैं और भी महानुभाव दान दे रहे हैं ।

आर्य समाज की ओर से कालोनी मे पारिवारिक सत्सग रात्रि मे किए जा रहे हैं जिसका बहुत अच्छा प्रभाव जनता पर पड रहा है । इससे प्रचार के साथ आर्य समाज को धन भी मिल रहा है । श्री नन्दा जी ने यह भी बताया कि मैने इन दिनो मे लगभग 10 यज्ञ तथा सस्कार भी कराए हैं इनसे भी आर्य समाज को आय हो जाती है । इस प्रकार समाज का कार्य बडे अच्छे ढग से और सुचारू रूप से चल रहा है जिसकी कालोनी के लोग बडी सराहना कर रहे हैं ।

—

# धरती पर स्वर्ग-वैदिक कुटुम्ब निर्माण

ले —श्री रामस्वरूप जी गणेश कुटीर मेंदासाल, मार्ग अजमेर

प्रत्येक मनुष्य दूसरो के लिए सुमनन ही नहीं सुकृत् भी करता रहे, ऐसी चेतना जगाने के लिए कुटुम्ब एक महत्त्वपूर्ण साधन है। कुटुम्ब का आधार है (दम्पति) (पति और पत्नी) दम्पति मे मधुरता सगति हो तो उन्हे सुख ही सुख (स्वर्ग) नजर आएगा। दम्पति और सन्तानें मिल-कर परिवार बनाते हैं। किसी परिवार मे दम्पति कि पिछली पीढी पति के अभि-भावक व उनकी सन्तानें भी हैं तो तीन पीढियो का सगम बन गया जिसे कुटुम्ब कहा जाता है। कुटुम्ब परिवार आदि मे सम्बन्धो के अनेक जोड हैं। जैसे पति-पत्नी पिता माता- पुत्री-पुत्र, भ्राता-भगिनि भगिनि भ्राता सास-बहु, ननद भाभी, दादा-दादी पोती-पोता आदि 2 इन सबसे मधुरता सगति के लिए परस्पर अर्पण सवाद आदि होना आवश्यक है। परस्पर अर्पण से मधुरता सवाद से सगति बनती है। इनके अभाव से कटुता-विवाद होता है। जिसके शिकार प्राय कुटुम्बीजन होते हैं, तो परिणामत नर्क जैसा लगता है कुटुम्ब। यही कारण है कि विवाह हुआ कि नवदम्पति अलग रहने का उपक्रम आरम्भ करने लगते है। परन्तु अलग रहने के बाद भी देखा जाता है कि पति पत्नी मे आकडा 36 का ही है 63 का नही। 36 याने कटुता-विवाद 63 याने मधुरता सगति।

पाठक जानतेहैं कि वर्तमान समय मे वेद को मानने वाले वेद के आधार पर बने अन्य ग्रन्थो को मानने वाले वेद को अस्वीकार करने वा अन्य प्रकार के कुटुम्ब-परिवार-दम्पतियो मे परस्परार्पण सवाद का अभाव है। कुटुम्ब मे जो विभिन्न सम्बन्ध है उसके साथ मित्रता का भाव भी हो तो सब परस्पर व्यक्तित्व उत्थान मे सहयोगी हो सकते हैं। स्त्री के पुत्री भगिनी पत्नी-माता आदि रूप पुरुष के पुत्र भ्राता पति पिता आदि के रूप के साथ मित्रता हो तो तब कुटुम्बो मे स्वर्ग उतर सकता है। पत्नी पति मे मित्रता नही है पत्नी अपना कष्ट पति से नही कह पाती, भोगती रहती है दुष्परिणाम सन्तानो को पूरा पूरा वात्सल्य नही मिला होता है। तब सन्तानें अपराधी बनती हैं। धन-यौन सुख प्राप्ति में निकृष्टतम साधनों का उपयोग होने लगता है। आज पूरा समाज असुरक्षित महसूस करता है अपने को, इसका एक कारण प्रणय-वात्सल्य आदि का अभाव है।

अत आवश्यकता है इस प्रकार के प्रशिक्षण शिविरो के सतत आयोजन की। दाम्पत्य शिविर, परिवार शिविर, कुटुम्ब शिविर अलग 2 हो सकते हैं एक ही स्थान पर। 24 दम्पति या 12 परिवार या 6 कुटुम्बो का एक शिविर हो सकता है। किसी भी दम्पति-परिवार कुटुम्ब के लिए प्रथम जो शिविर है उसका पाठ्यक्रम पहले से ही भेजा जा सकता है हा, उसमे शिविर काल मे लचीलापन रहेगा। पाठक आप स्वयं भी दम्पति परिवार कुटुम्ब रूप में ही हैं। आप अन्यो से भी सम्पर्क कीजिए। जिस स्थान नगर आदि मे यथेष्ट मात्रा मे दम्पति आदि तैयार हो जाते हैं। वहीं शिविर पहले ही सकेगा।

जब अनेक स्थानो पर शिविर हो जाए गे तो हरेक स्थान के लिए एक पुरोहित को प्रशिक्षित कर लिया जाएगा। जो कुटुम्ब आदि शिविरो का सातत्य रखेगा।

—

# पाणिनि कन्या महा-विद्यालय वाराणसी का वार्षिकोत्सव

श्री जिज्ञासु स्मारक पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी का द्वादश वार्षिकोत्सव 27 से 29 मई को अति-भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। इस महो-त्सव मे भाग लेने हेतु सुदूर प्रान्तो चम्बा (हि प्र) हैदराबाद (आर्य प्रतिनिधि) बोम्बे, सिलीगुडी, दिल्ली, पानीपत, नाभीर मोगा, भरतपुर आदि स्थानो से भारी सख्या मे लाग पधारे तथा स्थानीय जनो के अतिरिक्त विशिष्ट नागरिको एव पत्रकारो ने भी अच्छी सख्या मे आकर उत्सव के कार्यक्रमो को बडी तन्मयता से देखा।

27 मई को कार्यक्रम प्रात यज्ञ से प्रारम्भ हुआ। यज्ञ के अनन्तर ओ३म् ध्वजात्तोलन विद्यालय के प्रधान श्री प शान्तिप्रकाश जी शास्त्रार्थ महारथी ने किया।

उत्सव मे श्री स्वामी नारायण मुनि चतुर्वेद (ज्वालापुर), श्री प रामप्रसाद वेदालकार (उपकुलपति गुरुकुल कागडी) श्री ओमप्रकाश जी वर्मा हरियाणा, श्री सत्यपाल जी पथिक पजाब, श्री सत्यमित्र जी शास्त्री गोरखपुर आदि विद्वानो के मनोहर उपदेश व प्रवचन हुए। इस अवसर पर छात्राओ की भाषण प्रतियोगिता हुई और छात्राओ को पारितोषिक दिए गए। उत्सव 29 मई रात्रि को कार्यक्रम के साथ सम्पन्न हुआ जो हर प्रकार से सफल और प्रभावशाली रहा।

## आखिर विस्फोट ही ही क्या

( 2 पृष्ठ का शेष )

छोडकर बलिदानी काम देखने को निकल पडें, तभी बचाव होगा। अब बलिदान की होड लगने की आवश्यकता है। घर में देर लगने से बात बनेगी नहीं। अभी तो भीरेन्द्र जी के विस्फोटक उद्गार आए हैं पर यदि अब भी आर्य समाज न चेता तो अनेक हृदय विद्रोही हो उठेंगे। जिन को आर्य समाज से प्यार है मातृ भूमि जिनकी आराध्य है वे आर्य समाज व देश की दुर्गति सहन नही कर सकेंगे केवल फोटो छपाने के धन्धे पर इमेजवादी नेताओ के लच्छेदार भाषण व स्वागत के जय-जयकार न उन्हें बचा सकेंगे, न देश व समाज को ही। इस विस्फोटक स्थिति को आर्य समाज के नेता हितचिन्तक व प्रकाशक वर्ग समय रहते सम्भाल लें तो अच्छा रहेगा।

मेरा यह भी अभिप्राय नही कि हम निराशावादी होकर रही सही शक्ति को भी खो बैठ और कर्म शक्ति को कुण्ठित कर लें। आर्य जनता के पास सब कुछ है। इस जनशक्ति का उपयोग इस समय सही दिशा में नही हो रहा है। उसका उपयोग राष्ट्र हित में समाज के उन्नयन में मोड दिया जाए तो देश की वर्तमान दशा मे एक बारगी सुधार आ सकता है तथा हमारी समस्याओ का सबसे प्रतिशत समाधान स्वय ही मिल सकेगा। देश के अराजक तत्त्व विदेशियों के हाथ की कठपुतली बने हैं। हमारे देश में धनशक्ति बाहुबल, बुद्धिबल की कमी नहीं है। आर्थिक स्रोत भी हमारे पर्याप्त हैं, विदेशी प्रभाव के कारण (महत्त्व के झूठे मान दण्ड के कारण जिसके अनुसार आवश्यकता वृद्धि का जाल फैल रहा है), ही उनसे लाभान्वित होने का प्रयास नहीं हो रहा है। भारतीय सस्कृति (वर्ण व्य-वस्था) के अनुसार यदि आचार सहिता बना दी जाए तो देश की अर्थ व्यवस्था सुदृढ हो जाएगी। सुविधा प्रियता से जन मानस को हटाकर पौरुष के मार्ग पर चला दिया जाए तो उत्पादन वृद्धि की स्वस्थ परम्परा चलेगी जो यहा से अभाव व निर्धनता को भगा देगी। यह सब धर्म आर्य समाज के माध्यम से बहुत सुन्दर रूप में हो सकता है।

साराश यह कि एक ओर तो हम देश द्रोहियो को खुली चुनौती दें कि देश का अनिष्ट करने की उन्हें अनुमति नहीं दी जा सकेगी, दूसरी ओर हम रचनात्मक कार्य की ओर लगें। वेद का अमित ज्ञान भण्डार जिनके पास है, वे अपने ही देश की समस्याओ का समाधान न खोज से सकें, यह आश्चर्यजनक ही है। आर्य समाज की अकर्मण्यता पर कोई महानुभाव आर्य समाज की भविष्य चिन्ता से व्यथित होकर कुछ तीखा व्यग्य या मर्मान्तक उद्गार कह उठे तो इससे घबराना नहीं चाहिए अपितु उससे वास्तविकता का अनुमान लगाकर सुधारात्मक कदम उठाना उचित है। बडे विस्फोट से बचें, इन छोटे 2 विस्फोटो को चेतावनी व कर्म-प्रेरणा के रूप ग्रहण करना चाहिए।

# गुरुकुल सिराथू (इलाहाबाद) में प्रवेश आरम्भ

बन्धुओ! यह प्रत्यक्ष देखा जा रहा है कि वर्तमान दूषित वातावरण से छोटे व बडे बालक प्रभावित होने से वचित नही रह पाते। इस दशा में आपको गुरु-कुलो की शरण लेनी चाहिए। इस समय गुरुकुल सिराथू भली-भान्ति आपके बालको व सामाजिक सेवाओं मे रत है। (जो 16 वर्षों से गुरुकुलीय पद्धति पर ब्रह्मचर्य आश्रम प्रणाली के अनुसार छात्रो का चारित्रिक शैक्षणिक एव बौद्धिक विकास कर रहा है गुरुकुल महाविद्यालय सिराथू (इलाहाबाद) से नि शुल्क नियमा वली मगाकर बालको का 1 जुलाई 83 से प्रवेश कराए। शिक्षा निशुल्क दी जाती है। स्थान सीमित है। मात्र भोजन शुल्क 70 रु प्रतिमास। शास्त्री आचार्य एव मध्यमा के छात्रों को भोजन शुल्क मे छूट।

—रमाशिव शास्त्री
प्राचार्य
गुरुकुल वैदिक सस्कृत महाविद्यालय
सिराथू (इलाहाबाद)

# कन्या गुरुकुल महा-विद्यालय देहरादून में प्रवेश आरम्भ

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय से सम्बन्धित अनिवार्य आवास पद्धति पर चलने वाली अखिल भारतीय शिक्षण सस्था है। प्रथम कक्षा से 14 कक्षा तक शिक्षा दी जाती है। उच्च प्रशिक्षित शिक्षिका वर्ग, पुस्त-कालय, नैतिक शिक्षा, चित्रकला सगीत, गृहविज्ञान, सास्कृतिक गतिविधि सस्था की आधारभूत विशेषताए हैं। विस्तृत खेल के मैदान आधुनिक सुविधाओ सहित बडे छात्रावास तीसरी कक्षा से सस्कृत एव अग्रेजी प्रारम्भ, निर्धन तथा सुयोग्य छात्राओ के लिए छात्रवृत्ति देने की भी सुविधा है। मैट्रिक एव इन्टर उत्तीर्ण कन्याए भी प्रथम वर्ष तथा तृतीय वर्ष में प्रविष्ट हो सकती हैं। शिक्षा नि शुल्क दी जाती है। 1 जुलाई से नवीन कन्याओं का दाखिला है। प्रवेश के इच्छुक महानु-भाव 5) रु, भेजकर नियमावली मंगा सकते हैं। —दमयन्ती कपूर आचार्या, कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून।

# कर्नल ब्रुक और महर्षि दयानन्द

ले—श्री धर्मवीर जी विद्यालंकार, पीली भीत

साधारणतया हम सुनते आए हैं कि महर्षि दयानन्द ने कर्नल ब्रुक से गोरक्षा के विषय में चर्चा की थी। कर्नल ब्रुक ने महर्षि के तर्कों से पराजित होकर गोवध निषेध स्वीकार कर लिया था। परन्तु यह कार्य कर्नल ब्रुक के सामर्थ्य में नहीं था। इसलिए उन्होंने स्वामी जी को सलाह दी कि वे भारत के गवर्नर जनरल (वायसराय) से मिलें। इस हेतु उन्होंने स्वामी जी को एक पत्र भी दिया।

महर्षि दयानन्द जैसे प्रतापी तेजस्वी विद्वान सन्यासी का कर्नल ब्रुक जो कि [illegible]राय का प्रतिनिधि है—से वार्ता [illegible]को—दो समान प्रतिष्ठा वाले महान व्यक्तियों की चर्चा मान लेने से इस घटना का वास्तविक महत्व छिप जाता है। उस समय की परिस्थितियो का अध्ययन करने से इसका जो रूप प्रगट होता है वह वस्तुत बड़ साहस और भय की वस्तु है।

कर्नल ब्रुक भारत के सब शक्ति सम्पन्न एकाधिराज वायसराय के राज्य स्थान मे एजेन्ट थे। व कलैक्टर नहीं थे डिप्टी कमिश्नर और कमिश्नर नहीं थे। जिनसे बड़ सेठ साहूकार महाराजा या राय बहादुर सुगमता से मिल सकते हो। इनके अतिरिक्त कर्नल ब्रुक को भगवा कपड़ पहिनने वालो से बेहद चिढ थी।

दूसरी ओर स्वामी दयानन्द मात्र संन्यासी थे। जो भगवा वस्त्र पहिनते थे। सन 1863 ई मे गुरु दक्षिणा देकर दीक्षा पाई थी। यह 1866 ई अर्थात दीक्षा [illegible] तीसरा वर्ष था। अभी वे मात्र बातचीत द्वारा मूर्तिपूजा आदि कुरीतियो तथा मत-मतान्तरो के ढोंगो का खण्डन करते थे। शास्त्रार्थ करते थे, धनसी को सच्चे शिव की उपासना बताया करते थे। उस शिव को स्वीकार नहीं करते थे, जिसकी पत्नी पार्वती है। गुरु विरजानन्द जी से शिक्षा पाकर संसार मे नए-नए उतरे थे। अभी उन्होंने व्याख्यान देना आरम्भ नहीं किया था। न ही उनकी ख्याति अधिक फैली थी। अभी उन्हे किसी ने महर्षि पद स विभूषित नहीं किया था।

फिर यह घटना किस प्रकार से घटी यह प्रसग भी बड़ा रोचक है। जैसे आजकल साधु महात्मा द्वार पर "अलख [illegible] जोते" की आवाज देकर द्वार पर [illegible] खड़े ही जजमान पर आशीर्वाद की [illegible] शुरू कर देते हैं। ऐसे नहीं हुआ।

एक दिन कर्नल ब्रुक स्वामी के निवास स्थान वसी लाल के बाग मे चले गए। स्वामी जी सामने बैठ थे। वृद्धि चन्द ब्राह्मण ने स्वामी जी से कहा—महाराज आप कुर्सी इधर कर ल।

ये साहब आप लोगो को देख कर क्रुद्ध होते हैं। स्वामी जी ने कहा कि हम तो यही चाहते हैं। स्वामी जी कुर्सी को और आगे बढ़ाकर बैठ गए। कर्नल ब्रुक स्वामी जी को देख कर झट अन्दर घुस गए। वृद्धि चन्द ने कहा—"महाराज मैं आपसे कहता था। आपने न माना। महाराज ने कहा—"कोई चिन्ता नहीं आने दो। स्वामी जी उठ कर टहलने लगे, ताकि कर्नल ब्रुक का स्वागत न करना पड़।

आश्चर्य!! कर्नल ब्रुक बाहिर आए। अपनी टोपी उतारी अपने हाथ मे ली, स्वामी जी से हाथ मिलाया और उनके सामने ही कुर्सी पर बैठ गए। काफी देर तक बातें करते रहे।

भारत के एकाधिपति वायसराय का प्रतिनिधि कर्नल ब्रुक, जो भगवा वस्त्र मात्र से चिढ़ता था, स्वामी जी के पास स्वय आया और ऐसा भक्त बना कि घन्टो बात करता रहा। इतना ही नहीं, अगले दिन अपनी सवारी भेज कर स्वामी दयानन्द को अपने बगले पर बुलाया। (साथ मे पण्डित रामरूप जोशी भी गए।) और पौने घण्टे तक चर्चाए हुई। वायसराय के नाम उन्होंने पत्र लिख दिया। इतना ही नहीं उन्होंने जयपुर के महाराजा रामसिंह जी को पत्र लिखकर खेद प्रकट किया कि आपने ऐसे उत्तम वेद वेत्ता के साथ कुछ बात चीत न की।

स्वामी जी ने कर्नल ब्रुक से गोरक्षा की चर्चा मनोवैज्ञानिक ढंग से आरम्भ की। स्वामी जी ने पूछा—आप धर्म का स्थापन करते हैं या खण्डन।

कर्नल ब्रुक 'धर्म का स्थापन करना तो हमारे यहा भी अच्छा है। परन्तु जिसमे लाभ हो वह करते हैं।

स्वामी जी—'आप लाभ की बात नहीं करते, हानि की करते हो।

कर्नल ब्रुक—' कैसे ?

स्वामी ने बताया एक गाय होती है उसका एक बछड़ा होता है। इस प्रकार उसकी कितनी वंश वृद्धि हो जाती है। फिर उससे कितने मनुष्यो का पालन होता है। तात्पर्य यह कि उन्होंने गोकरुणानिधि विधि से गोरक्षा के लाभ बताए। और फिर पूछा—

अब आप बताइए कि इसके वध से आपको लाभ है या हानि ?

कर्नल ब्रुक—होनी तो हानि है।

स्वामी जी—फिर आप गोवध क्यों करते हैं।

कर्नल ब्रुक ने बात स्वीकार की। अगले दिन बगले पर बुलाया और पौन घन्टा चर्चा की।

यह थी स्वामी जी की तेजस्विता ब्रह्मचर्य की महिमा और स्वाध्याय का प्रताप, कि सन्यासियो से चिढ़न वाला सर्वोपरि प्रभुता सम्पन्न शासक उस समय के साधारण से स्वामी दयानन्द का समर्थक क्या परम भक्त बन गया।

आइए पाठक वृन्द! आज हम उस महर्षि के ग्रन्थो का स्वाध्याय करने का व्रत लें। संसार से विशेषत भारत से अविद्यारूपी अन्धकार को दूर भगाए और और पदार्थो के सत्यस्वरूप को प्रकाशित करने मे उत्साहित हो।

—

(4 पृष्ठ का शेष)

अजमेर के मलूसर श्मशान जहा श्री महाराज की अन्त्येष्टि 31 अक्तूबर 1883 को की गई थी के विकास की महत्वाकांक्षी योजना हमारे बुजुर्ग नेता व शिक्षा शास्त्री प्रिंसिपल दत्तात्रेय जी ने लगभग 10 12 वर्ष पूर्व बनाई थी। उस समय मैं राजस्थान प्रान्तीय प्रतिनिधि सभा का मन्त्री था, मैं स्वय उस श्मशान सुधार समिति का भी सदस्य था। उस समय मान्यवर दत्तात्रेय जी के समक्ष भी एक कठिनाई आई थी कि यदि महाराज के श्मशान स्थल पर कोई आकर्षक स्मारक बना दिया जाता है तो इस बात की क्या गारन्टी कि आने वाले सालो म वहा कोई मेला न लगेगा और अज्ञानी लोग वहां मत्था टेकने न आने लगेंगे। पाठकों के मनोरंजन के लिए यह बता दूं कि शिव रात्रि के अवसर पर जब टंकारा के पारवर्ती शिव मन्दिर मे आर्य नर नारियो का जलूस पहुंचता है तो कोई श्रद्धालु (किन्तु अज्ञानी) माताएं वहा शिव पिण्डी के समक्ष प्रणिपात करने लगती हैं। इसी आशका को ध्यान मे रखकर श्री दत्तात्रेय जी ने तो आर्य समाज अजमेर के तत्वावधान मे मुख्य अन्त्येष्टि स्थल पर एक सुन्दर वेदी बनवा दी तथा उसे लौह तारो से आवेष्टित करवा दिया ताकि न तो उसे कुत्ते आदि अपवित्र कर और न किसी अन्य मृतक का दाह वहा किया जाए। मेरी विनम्र सम्मति म तो श्मशान का इतना ही विकास पर्याप्त था और वह श्री दत्तात्रेय जी के परामर्श एव उद्योग से किया जा चुका है।

अब बात रही उस श्मशान स्थली को और अधिक सुन्दर तथा भव्य बनाने की, तो यह ध्यान मे रहे कि श्मशान केवल आर्य समाज का नहीं हिन्दुओं का सार्वजनिक श्मशान है। यदि उसे जामनगर या बरेली (जहा महात्मा नारायण स्वामी जी की अन्त्येष्टि हुई थी) के श्मशान की भांति रम्य या दर्शनीय बनाना है तो अजमेर के हिन्दू नागरिकों से बात करिये तथा इसके लिए कोई सामूहिक उद्योग कीजिए। इस प्रसंग में परोपकारिणी पर अपना आक्रोश उतारना मुझे संगत नहीं है तो मित्रों इन पंगु तर्कों के आधार पर स्वामी महाराज की उत्तराधिकारिणी सभा से सहयोग न करना हमें दुर्भाग्यपूर्ण ही कहा जायेगा। इसी प्रसंग में पंजाब के आर्य नेता श्री वीरेन्द्र जी ने अपने सन्तुलित तथा सुलझे हुए विचार आर्य मर्यादा मे प्रस्तुत किए थे खेद है कि मान्यवर वीर जी के हार्दिक भावों को ठीक ठीक नहीं समझा गया। उन्होंने तो अपने हृदय की पीड़ा को व्यक्त करते हुए यही लिखा था कि यदि निर्वाण शताब्दी समारोह भी हम मिलकर नहीं मना सकते तब तो हम आर्य समाज की ही निर्वाण स्थिति को कबूल कर लेना चाहिए। यह तो उनकी पीड़ा के उद्गार ही थे न कि कोई प्रमाणात्मक कथन।

—

## गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार

आश्रम पद्धति से चलने वाले विद्यालय गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार में 6 से 10 वर्ष तक की आयु के नवीन ब्रह्मचारियों का प्रवेश 6 जुलाई 1983 से आरम्भ होगा स्थान सीमित शिक्षा निःशुल्क सभी विषयों की शिक्षा विशेष देख रेख सादा प्राचीन भारतीय आचार प्राकृतिक सुन्दर स्वास्थ्यप्रद वातावरण सात्विक भोजन, उपाधियां सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त विस्तृत जानकारी के लिए 5) रु मनी आर्डर द्वारा भेजकर सहायक मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल कांगड़ी (सहारनपुर पिनकोड 249404 से प्राप्त करें।

सहायक मुख्याधिष्ठाता

वर्ष 16 अंक 11, 12 आषाढ सम्वत् 2040, तदनुसार 26 जून 1983, दयानन्दाब्द 159। एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपए

# दयालु के दान अनन्त हैं

ले—आचार्य श्री सुभाषचन्द्र जी शास्त्री सभा महोपदेशक

इन्द्रमीशानमोजसाभि स्तोमा अनूषत।
सहस्र यस्य रातय उत वा सन्ति भूयसी ।
ऋ० 1-11 8

(स्तोमा) हमारे स्तोत्र, स्तवन प्रार्थना, भजनादि सकल गान (इन्द्रम्) परमैश्वर्यवान् परमात्मा को ही (अभि+अनूषत) सब प्रकार से दिखलाने वाले हों जो इन्द्र (ओजसा) बल और ज्ञान पूर्वक (ईशानम्) इस जगत का नियामक हो रहा है अर्थात जो बलपूर्वक इस सकल अचिन्त्य संसार को अपने नियम में रख कर शासन कर रहा है। हे मनुष्यो! (यस्य सहस्रम्) जिसके हजारों (रातयः) दान हैं अथवा (उत वा) उससे भी जिसके (भूयसी सन्ति) अधिक दान हैं।

हमारे सारे स्तोत्र, जपतपादि व्रत अनुष्ठान, गीत व सारी प्रार्थनाएं उस परमेश परमेश की ही होने चाहिए। जो लोग सर्वव्यापक अविनाशी परमात्मा को छोड़कर अन्य पाषाणादि धातुओं की मूर्ति बनाकर सारी रात भजन एवं उपासना के नाम पर चिल्लाते रहते हैं। वे अपना अपमान कर जीवन को बरबाद कर रहे हैं, ऐसे लोग मूर्ख मतिमन्द कभी भी धार्मिक नहीं हो सकते। सर्वान्तर्यामी प्रभु को न जानकर व न मानकर किसी मनुष्यकृत पथ के अनुयायी बनकर प्रभु के आदेश का उल्लंघन कर वे अनन्त दु:ख सागर में डूबे रहते हैं।

आज कल सारा धन, सारा बल व सारा ज्ञान किसी मनुष्य द्वारा चलाए हुए धर्मान्धता, वैमनस्य युक्त मिथ्या विश्वासों की रक्षा में व्यय हो रहा है। जितना बल धर्मान्धता, अज्ञानता की पुष्टि करने में या बनाने में तथाकथित धार्मिक मनुष्य व्यय कर रहा है। काश, आज का आदमी अपनी ज्ञान, बल धनादि शक्ति का दसवां हिस्सा भी अजर अमर, दयाधन दयालु प्रभु की उपासना में और उसके द्वारा प्रकाशित वेद ज्ञान के प्रचार एवं प्रसार में लगाये तो यह दुनिया निराली अनूठी और कितनी शान्त होती। फिर आनन्द स्वरूप प्रभु द्वारा निर्मित दुनिया में कितना आनन्द प्यार स्नेह उत्साह व निर्भीक शान्त वातावरण होता उसी सृष्टि ... मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी के काल के लोग हुआ करते थे। परन्तु ऐसा नहीं है आज दुनिया में इतना आक्रोश भय चिन्ता, क्लेश संघर्ष क्रूरता स्वार्थ पदलिप्सा, विषयलोलुपता व कलह आदि के कारण वातावरण अत्यन्त क्षुब्ध एवं अशान्त है। हमारी चेष्टाएं, हरकतें व क्रिया कलाप दैनिक व्यवहार धनादि के आय के तरीके और चिन्तन आदि में कहीं मनुष्यता दृष्टिगोचर नहीं पड़ती। डार्विन का जो सिद्धान्त कि—मानव सृष्टि बन्दर से हुई है। आज के मानव की बन्दर जैसा हर कतों को, चपलता को देखकर ही शायद डार्विन ने ऐसा कहा हो। ऐसा आभास होता है। और मनुष्यों ने प्रभु की इस सृष्टि को पर्याप्त बिगाड़ दिया है। इसने भूमि बिगाड़ दिया मनुष्यता को बिगाड़ दिया जल को बिगाड़ता है, वायु को बिगाड़ता है। प्रभु जो सृष्टि सचालन करते हैं इससे यह मनुष्य बिल्कुल विपरीत चलकर अपने जीवन को नष्ट कर रहा है।

वेद मन्त्र में बताया है कि यदि हम धरती को फिर से स्वर्ग बनाकर धरती को परमात्मा की कृति बताना चाहते हैं तो हम सच्चे दिल से सर्वनियन्ता कल्याण निधि सर्वव्यापक निराकार परमात्मा की प्रार्थना स्तुति व उपासना करें। प्राचीन काल में सब ऋषि, महर्षि ब्रह्मचारी योगी आदि सब उस अविनाशी प्रभु की एकान्त में अन्तःकरण पूर्वक उपासना किया करते थे जिसके फलस्वरूप उन्हें स्वस्थ एवं प्रचण्ड मेधावी बुद्धि का लाभ होता था जीवन में शान्ति उत्साह व शक्ति का संचार होता था जिससे वे बड़े 2 कामों को कर यश कमाते थे। स्तवन किसका करें? जो परमैश्वर्यवान परमात्मा अपने ओज तेज व बल के द्वारा सृष्टि का ही नहीं अपितु समस्त ब्रह्माण्ड का जो नियमन संचालन कर रहा है। जिसके आदेश से संकेत से सब कुछ नियम के अन्तर्गत या व्यवस्था में गतिमान हो रहा है। ... सूर्य का ... समय पर उदित व अस्त होना, पृथिवी और चन्द्रमा का सूर्य की परिधि पर घूमना वसन्तादि ऋतुओं का प्रति वर्ष नियत समय पर आना वृक्षादियों का उगना आदि सब यह प्रभु के संकेत से ही हो रहा है।

भयादस्याग्निस्तपति भयात्तपति सूर्य ।
भयादिन्द्रश्च वायुश्च मृत्युर्धा-वति पञ्चम ॥

इसके भय से अग्नि तपती है, गर्मी देती है इसके भय से, आदेश से सूर्य प्रकाश धरा पर फैलाता है इसकी आज्ञा से बादल गरजते हैं विद्युत चमकती है। वायु प्रवहमान होता है और पांचवी महाशक्ति मौत भी चेरी के समान इसके भय से आगे आगे चलती है।

गति प्राणिना पावन पावनानाम, प्रभु समस्त प्राणियों की गति है वह पवित्रों का भी पवित्रतम है सर्वातिशायी सर्वोत्कृष्ट महाप्रभु का यह सारा विश्व गान कर रहा है। वेद में कहा है—

'यस्येमे हिमवन्तो महित्वा यस्य समुद्र रसया सहाहु ।
यस्यमा प्रदिशो यस्य बाहू कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ यजु 15 ॥

पहाड़ अपने सिर को हिम (बर्फ) की सफेद चादर से ढापे हुए मानो प्रभु की भक्ति कर रहे हैं। जैसे समाधिस्थ योगी इन्द्रिय निरोध कर ईश्वर ध्यान में लीन हो जाता है। वैसे ही ये पर्वत प्रभु भक्ति में लीन हो रहे हैं। समुद्र भी उसी के भक्ति गीत गा रहा है। जैसे ईश्वर भक्त के हृदय में प्रेम की नाना प्रकार की तरंगे उठती हैं। वैसे ही समुद्र में परमात्मा की आकर्षण शक्ति के कारण लहरें और तरंगे चल रही होती हैं। मनुष्य भी इसी प्रकार प्रेम में मस्त होकर अपने अस्तित्व को भूल जाए। इस महापुरुष की कान्ति यह सकल ब्रह्माण्ड गा रहा है। पृथिवी अपने नम्र भाव से इसके चरणों में लीन है सूर्य अपने तेजोमय रूप से इसकी महानता को दर्शा रहा है। चन्द्रमा अपनी शीतल किरणों से इसी सौम्य परमेश्वर की कीर्ति गा रहा है। परमात्मा का यह सारा संसार है। जीवात्मा के लिए समस्त साधन प्रभु ने दान किए हैं। प्रभु के कितने दान हैं। 'सहस्र यस्य रातय उत वा सन्ति भूयसी इसके हजारों दान हैं इससे भी बहुत अधिक हैं अनन्त हैं। प्रभु स्वयं अनन्त है, अनन्त प्रभु के दान भी कैसे सान्त हो सकते हैं वे भी अनन्त दानी हैं। प्रभु ने जीवात्मा को इतना दिया हुआ है कि अनन्त जन्मों तक समाप्त नहीं हो सकता। प्रभु का एक 2 दान इतना सुन्दर एवं कल्याणकारी है, कितना सुन्दर एवं बुद्धि पूर्वक है यह लेखबद्ध या वचनबद्ध नहीं किया जा सकता। प्रभु का एक एक दिया हुआ दान ऐसा है कि पूर्ण है, समग्र है, उसमें किसी भी प्रकार का अधूरापन या त्रुटि-पूर्ण नहीं है।

पञ्च ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा भोगी जाने वाली कितनी विलास सामग्री है यह अनन्तजन्मों तक खत्म नहीं हो सकती। हमारा यह जो शरीर है सोचो कितना अद्भुत एवं सुविधापूर्ण है। इसकी रचना को देखकर बड़े 2 बुद्धिमान, वैज्ञानिकों का मस्तिष्क भी चक्कर खाने लगता है। इसमें कितनी शक्ति ऊर्जा भरी है, इस का आदि काल से आज तक कोई अन्दाज नहीं लगा सका है। इस एक मनुष्य शरीर को ही देखकर महर्षि व्यास के मुखारविन्द ने प्रभु की कृति के सम्बन्ध में उद्गार निकले थे। नहि किञ्चिदस्ति मानुषात् श्रेष्ठतरंहि। संसार में मनुष्य शरीर से अद्भुत व श्रेष्ठतर कोई भी नहीं। मनुष्य भी विधाता की अनुपम कृति है। यही नहीं उस निरुपम प्रभु की सारी कृति और सारा दान अनुपम है अनन्त है प्रभु का दान, अतः शक्ति सम्पन्न जगत् के नियन्ता ईश्वर के सन्निकट ले जाने वाले हमारे स्तोत्रादि हों क्योंकि उसके अनन्त दान हमारे लिए हैं।

28 जून को 55वीं वर्ष गाठ के अवसर पर—

# कलम के धनी डा. भवानीलाल भारतीय

ले—श्री यशपाल आर्य बन्धु आर्य निवास
चन्द्र नगर मुरादाबाद—32

आर्य जाति के गौरव अमर शहीद पण्डित लेखराम आर्य मुसाफिर जब ससार से विदा होने लगे तो जाते जाते आर्यो के नाम एक सन्देश दे गये। उस सन्देश के स्वर आज भी आकाश मे गूज रहे हैं किन्तु सुनाई उन्हे ही दे सकते है कि जिनके पास सुनने के लिए कान हैं। जिनके पास सुनने को कान ही नही या जिनमे सुनने की शक्ति ही नही तो वे भला शहीद के उस अन्तिम सन्देश को क्या सुन पाए गे ? जानते हैं शहीद का वह अन्तिम सन्देश क्या था ? वह था कि आर्य समाज से लेखन कार्य कभी रुकना नही चाहिए।

शहीद का यह सन्देश किसी व्यक्ति विशेष के लिए न होकर सम्पूर्ण आर्य जाति के नाम था। पर कितने लोग हैं कि जो इस आवाज को सुन पाए ? कितने लोग हैं कि जो इस पुकार पर खरे उतर स्यात चन्द ही लोग हैं कि वस्तुत कान वाले हैं अन्यथा लगता है कि सम्पूर्ण जाति ही बहरी हो चकी है। अतीत मे स्वामी दर्शनानन्द जी तथा पण्डित गगा प्रसाद जी उपाध्याय सरीखे चन्द एक प्रबुद्ध लोग ही इस सन्देश को सुन पाए थे। वर्तमान मे तो स्थिति और भी शोचनीय है। कारण कुछ भी हो पर यह सत्य है कि आर्य समाज साहित्य सृजन के क्षेत्र मे निरन्तर पिछड रहा है। ऐसी शोचनीय स्थिति मे भी चन्द एक ऐसे विद्वान हैं कि जो आशा की किरण बनकर चमके हैं। डाक्टर भवानीलाल भारतीय उनमे से एक प्रमुख है अहर्निश साहित्य साधना मे जुटा यह साधक वस्तुत कलम का जादूगर है। लगता है कि जैसे इस साधक ने अमर शहीद के सन्देश को अति निकट से सुना हो और वह सन्देश उनके मन और मस्तिष्क पर पूरी तरह छा गया हो और वह उनकी लेखनी के लिए एक अजय प्रेरणा स्रोत बन गया हो। उसी की सात्विक प्रेरणा के फलस्वरूप ही उनकी लेखनी मे एक अपूर्व प्रवाह और गतिशीलता आ सकी है और जाति को जगाने मे निरन्तर क्रियाशील हो रही है। उनकी लेखनी कितना कुछ लिख चुकी है इसकी कल्पना करना भी कठिन है।

डाक्टर भारतीय की साहित्य साधना की चर्चा करने से पूर्व यह बता देना भी उचित समझते हैं कि वे केवल कलम के ही धनी नहीं वाणी के भी जादूगर हैं। परम पिता परमात्मा ने अपनी असीम अनुकम्पा से उन्हे ऐसी प्रतिभा प्रदान का है कि जो विरल व्यक्तियो को प्राप्त हो पाती है। कुछ लोग बढ़िया लेखक होते हैं पर वक्ता नही जबकि कुछ लोग बढ़िया वक्ता होते हैं पर लेखक नही। पण्डित रामचन्द्र जी देहलवी उच्चकोटि के वक्ता थे पर लेखक नही। जबकि पण्डित गगा प्रसाद उपाध्याय एक उच्चकोटि के लेखक थे पर वक्ता नही। किन्तु डा भारतीय को यह सौभाग्य प्राप्त है कि वे एक प्रतिभासम्पन्न सलेखक भी हैं और सवक्ता भी। लेखनी और वाणी दोनो पर उनका समान अधिकार है। दोनो मे ओज है प्रवाह है और एक अदभुत चमत्कार है। लेखनी और वाणी दोनो का एक स्तर है कीर्तिमान है और एक अनोखी कला है।

डा भारतीय की साहित्य साधना—महर्षि दयानन्द और आर्य समाज की सस्कृत साहित्य को देन—

डा भारतीय जी की साहित्य साधना की चर्चा हम उनके शोध प्रबन्ध से प्रारम्भ कर रहे हैं। राजस्थान विश्व विद्यालय से हिन्दी और सस्कृत मे एम ए करने के पश्चात सन 1968 मे राजस्थान विश्वविद्यालय से ही आर्य समाज की सस्कृत भाषा और साहित्य को देन विषय पर अपना शोध प्रबन्ध प्रस्तुत कर पी एच डी की सम्मानजनक उपाधि अर्जित की। उनकी यह कृति महर्षि दयानन्द और आर्य समाज की सस्कृत साहित्य की देन के नाम से राम लाल कपूर ट्रस्ट बहालगढ सोनीपत से प्रकाशित हुई है। विश्वविद्यालय स्तर पर शोध वैसे ही महत्वपूर्ण हुआ करता है इस पर भी महर्षि दयानन्द और आर्य समाज के अनन्य भक्त की लेखनी ने इसमे कमाल कर दिखाया है। प्रस्तुत पुस्तक मे भारतीय जी ने सस्कृत साहित्य मे आर्य समाज के योगदान की ही चर्चा नही की आर्य समाज की भी एक अत्यन्त प्रभावोत्पादक झाकी प्रस्तुत की है। पुस्तक अत्यन्त उपयोगी एवम उपादेय है।

पुरस्कृत रचनाए—महर्षि दयानन्द और स्वामी विवेकानन्द-तुलनात्मक अध्ययन।

2 आर्य समाज अतीत की उपलब्धिया और भविष्य के प्रश्न—पण्डित लेखराम पुरस्कार से पुरस्कृत यह पुस्तक आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब से प्रकाशित हुई है।

3 ज्ञान-दर्शन—सत्यार्थ प्रकाश के एकादश समुल्लास के आधार पर लिखी पुस्तक।

4, आर्य समाज के वेद सेवक विद्वान—

इन पुरस्कृत रचनाओ के अतिरिक्त 1 आर्य समाज (लाला लाजपतराय कृत अग्रजी पुस्तक का हिन्दी अनुवाद)

2 आर्य समाज अतीत और वर्तमान।

3 विश्व धर्म कोष सत्यार्थ प्रकाश

4 श्री कृष्ण चरित (महात्मा कृष्ण का जीवन)।

5 अन्य जीवन चरित्र—जीवन चरितो की श्रृखला मे भारतीय जी ने स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती प गणपति शर्मा तथा आर्य समाज के शास्त्रार्थ महारथी एव देशभक्त कु वर चादकरण शारदा जैसे अत्यन्त महत्वपूर्ण तथा उपयोगी ग्रन्थ लिखे हैं। आर्य समाज के पत्र और पत्रकार उनकी एक अन्य महत्वपूर्ण तथा ऐतिहासिक महत्व की पुस्तक है। विस्तारभय से केवल नामोल्लेख ही कर रहे हैं।)

एक अत्यन्त महत्वपूर्ण शोध कार्य—

डा भारतीय ने जहा अनेक महत्वपूर्ण ग्रन्थ लिखे एव सम्पादित किए हैं, वहा उनकी महर्षि दयानन्द विषयक दस बीस वर्ष से भी अधिक अनवरत गवेषणा है। जिसे वे शीघ्र ही मूर्त रूप देने जा रहे हैं और इस प्रकार महर्षि दयानन्द की वैज्ञानिक आधार पर प्रामाणिक शोधपूर्ण जीवनी का जो अभाव खटक रहा था वह समाप्त होने जा रहा है और डा भारतीय की शोध लेखनी से प्रसूत महर्षि की जीवनी महर्षि निर्वाण शताब्दी तक प्रकाशित होने जा रही है। प्रस्तुत पुस्तक उनकी एक अदभुत एव अनुपम रचना सिद्ध होगी—ऐसा पूर्ण विश्वास है।

ऐसे कलम के धनी तथा वाणी के जादूगर आर्य जाति के विद्वतवर डा भवानीलाल जी भारतीय द्वारा अपने जीवन के 55 वर्ष पूरे करने पर हार्दिक अभिनन्दन करते हैं। तथा परम पिता परमात्मा से उनके दीर्घायुष्य तथा उत्तम स्वास्थ्य की कामना करते हैं। आर्य समाज को उनसे बहुत आशाए हैं। उन की लेखनी से अभी बहुत कुछ लिखा जाना है। प्रभु उनकी लेखनी तथा वाणी को सदैव सक्रिय रख ऐसी कामना है।

—

# समस्याओ के घेरे में घिरी हिन्दी

केन्द्रीय सरकार ने हिन्दी के प्रयोग को अधिकाधिक व्यापक बनाने के उद्देश्य से हाल ही म तीन सस्थाओ को जो आदेश जारी किए हैं, उनके लिए वह बधाई के पात्र है। वे हैं इन्स्टिट्यूट आफ चार्टड एकाउन्टेन्टस आफ इण्डिया इन्स्टीटयूट आफ कौस्ट एण्ड वर्क्स एकाउन्टेन्टस आफ इण्डिया और इन्स्टीटयट आफ कम्पनी सेक्रेटरीज आफ इण्डिया।

लेकिन हिन्दी विरोधी तत्व जो हिन्दी की प्रगति से ईर्ष्या करते हैं और उसके प्रगति पथ म सदा रोडे अटकाने को तैयार रहते हैं, इस निश्चय का विरोध इस आधारहीन तर्क पर कर रहे हैं कि चू कि ये सस्थाए सरकारी नियन्त्रण मे नही है इसलिए उन पर राजभाषा कानून लागू होता और सरकार इन सस्थाओ को हिन्दी के प्रयोग के लिए बाध्य नही कर सकती। वे यह बेतुका तर्क भी पेश कर रहे हैं कि हिन्दी के पास न इन विषयो की शब्दावली और पुस्तकें है न योग्य परीक्षक है।

इन तत्वो के दबाव मे आकर, इन्स्टीटयूट आफ चार्टड एकाउन्टेन्टस ने सरकार के हिन्दी सम्बन्धी आदेश का विरोध किया है, तथा अन्य दो सस्थाओ ने भी अधिक उत्साह नही दिखाया। लेकिन कम्पनी ला बोर्ड जिसके तत्वावधान मे ये दोनो सस्थाए काम करती हैं को चाहिए कि वे इन सस्थाओ के असहयोग [illegible] पर ध्यान न दे और [illegible] का निदेश सविधान मे दिया गया है [illegible] सस्थाओ को अपना सारा काम हिन्दी मे भी करने को बाध्य करे।

केन्द्र को उन कान्वेन्ट स्कूलो के विरुद्ध भी कड़े कदम उठाने पड़ेंगे जो न सिर्फ हिन्दी की सम्पूर्ण उपेक्षा करते चले आ रहे हैं वरन हिन्दी बोलने को एक अपराध मानते हैं। दिल्ली से प्रकाशित हिन्दी साप्ताहिक दिनमान के 19 25 दिसम्बर 1982 के अक मे जो एक पत्र छपा है उससे पता चलता है कि मध्य-प्रदेश जैसे हिन्दी भाषी राज्य के गुना नामक नगर के एक अग्रेजी स्कूल मे हिन्दी बोलने की सजा बच्चो को नीम खिलाकर दी जाती है। अपनी मातृ भाषा के प्रति प्रेम दिखाने वाले बच्चो का समर्थन न उनके अभिभावको ने किया, न सरकार या हिन्दी की किसी सस्था ने जो चिन्ता और शर्म की बात ?।

(महाराष्ट्र गोपालन समिति की ओर से)

—

# सम्पादकीय

## बुद्धि विभ्रम वीरेन्द्र की पुकार सुनी गई

### और आर्य नेता जाग उठे

मैंने महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी एक ही स्थान पर एक ही समय और एक ही मंच से मनाने की जो प्रार्थना की थी उससे सार्वदेशिक सभा के नेतागण मुझ से बहुत नाराज हुए थे और मुझे बुद्धि विभ्रम की पदवी से विभूषित किया गया था। साप्ताहिक सार्वदेशिक में जो लेख 22 मई 1983 को प्रकाशित हुआ था उसमें मुझ से कहा गया था कि मैंने जो कुछ लिखा है उसके लिए मैं क्षमा मांगू। यद्यपि यह साप्ताहिक सार्वदेशिक में तो प्रकाशित न हुआ था परन्तु सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों के निकटवर्ती सूत्रों का कहना था कि यदि मैंने क्षमा न मांगी तो हो सकता है मुझे आर्य समाज से निष्कासित कर दिया जाए। क्षमा मांगने के लिए कहा भी इसलिए गया था। मैंने उसके पश्चात् यह स्पष्ट कर दिया था कि क्षमा मांगने का कोई प्रश्न पैदा नहीं होता सार्वदेशिकसभा के अधिकारी मुझे आर्य समाज से निकालना चाहते हैं तो निकाल दें परन्तु वे आर्य समाज को मेरे दिल से नहीं निकाल सकेंगे आर्य समाज से निकलने के बाद भी मैं आर्य समाज की सेवा कर सकता हूं!

ऐसा प्रतीत होता है कि सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों ने यह सब कुछ लिखने के पश्चात और उसकी जो प्रतिक्रिया आर्य जगत में हुई थी उसे देखते हुए यही उचित समझा कि परोपकारिणी सभा के अधिकारियों के साथ बैठकर कोई ऐसी योजना बनाए कि निर्वाण शताब्दी मिलकर मनाई जाए। मुझे इस बात की हार्दिक प्रसन्नता है और इसके लिए मैं सारे आर्य जगत को बधाई देता हूं कि सार्वदेशिक सभा और परोपकारिणी सभा के अधिकारियों ने मिलकर अब एक ही स्थान पर एक ही समय में और एक ही मंच से ऋषि निर्वाण शताब्दी मनाने का निर्णय कर लिया है। इसके लिए एक योजना भी बना दी गई है। शताब्दी समारोह का समग्र कार्यक्रम श्री स्वामी ओमानन्द जी की अध्यक्षता में सम्पन्न होगा। मुख्य समारोह का उद्घाटन लाला रामगोपाल जी करेंगे। मैंने भी यही लिखा था कि यदि कुर्सियों का ही झगड़ा है तो आपस में बांट लो। जो निर्णय अब लिए गए हैं ये पहले भी लिए जा सकते थे। इनके कारण जो भ्रान्ति पैदा हुई है वह टल सकती थी। यदि समय पर ... लिए जाते तो यह परिस्थितियां पैदा न होतीं। परन्तु सुबह का भूला शाम को घर आ जाए, तो उसे भूला नहीं कहते। अब भी यदि हमारे नेताओं ने यह समझ लिया है कि इस प्रकार के समारोह उस तरह नहीं हो सकते जिस तरह कि वे करना चाहते थे तो सम्भव है भविष्य में वे गलती न करें जो वे पहले कर रहे थे। किसी भी संस्था के नेतृत्व के लिए बड़े दिल और बड़े दिमाग की आवश्यकता होती है। छोटे दिल और छोटे दिमाग बड़ी संस्थाओं का नेतृत्व नहीं कर सकते। आर्यसमाज एक बहुत बड़ी संस्था है। इस के नेता श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज, श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज श्री महात्मा हंसराज जी और दूसरे कई वे व्यक्ति हुए हैं जिन्होंने आर्यसमाज को एक नई दिशा दिखाई है। जिन महानुभावों ने मथुरा की अर्धशताब्दी देखी थी उन्हें याद होगा कि वह कितना बड़ा समारोह था। यदि इस बार यह निर्वाण शताब्दी देहली और अजमेर में होती जैसा कि पहले निर्णय लिया गया था तो आर्य समाज की जग हंसाई हो जाती। मैंने केवल यही लिखा था कि आर्यसमाज की मिट्टी खराब न करो। अब जबकि आर्यसमाज के नेताओं ने यह समझ लिया है कि शताब्दी समारोह एक ही स्थान पर एक ही समय में और एक ही मंच से होगा, तो जो कुछ मैंने लिखा था उसकी पुष्टि हो गई है और अब आर्य जगत बड़े गर्व से कह सकता है कि हम सब मिल कर इस महान समारोह को मनाने जा रहे हैं।

इसके साथ यह विवाद समाप्त समझना चाहिए। अब हमारे सामने असली प्रश्न यह है कि निर्वाण शताब्दी को किस प्रकार से एक ऐसा महत्वपूर्ण समारोह मनाया जा सकता है जिसे देखकर सारा देश आर्यसमाज को साधुवाद कहे। और आर्य समाज का संगठन भी अपने वास्तविक शक्तिशाली स्वरूप में जनता के सामने आ जाए। जैसा कि मैं पहले भी कई बार लिख चुका हूं। 1975 की जन्म शताब्दी की तरह निर्वाण शताब्दी एक मेला बन कर न रह जाए। आज देश के सामने जो परिस्थितियां पैदा हो रही हैं और जिधर हमारा देश जा रहा है उनकी यह मांग है कि आर्यसमाज देश का नेतृत्व करे। इसी के साथ यह भी देखने की आवश्यकता है कि आर्यसमाज में जो शिथिलता आ गई है उसे हम कैसे दूर कर सकते हैं? हमें यह न भूलना चाहिए कि महर्षि के निर्वाण के पश्चात जो परिस्थितियां उस समय देश में थीं आज वे नहीं हैं। आज का युग कुछ और है। आज का युग विज्ञान का युग है। हमें नए सिरे से यह विचार करना पड़ेगा कि हम अपना प्रचार कैसे करें? पुराने उत्सव पुराने प्रकार के उपदेश और भजन, पुराना साहित्य आज के युग में बहुत उपयोगी सिद्ध नहीं हो सकता। जो प्रश्न आज मानव जाति के सामने हैं विशेषकर हमारे देशवासियों के सामने हैं वे एक सौ वर्ष पहले न थे। हमारे सामने सब से बड़ी चुनौती उन नये प्रकार के मतमतान्तरों की है नये सन्तों महात्माओं और भगवानों की है जो मानवता को पथभ्रष्ट कर रहे हैं। जो कुछ आज हो रहा है उसे देखकर कई बार ऐसा प्रतीत होता है कि आर्य समाज ने सौ वर्ष में जो कुछ किया था उस पर पानी फिर गया है। लोग फिर से उस पाखण्ड की ओर भागे जा रहे हैं जिस पाखण्ड को समाप्त करने के लिए महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना की थी। इसलिए आज की परिस्थितियां एक प्रकार से आर्य समाज के लिए एक चुनौती का रूप धारण कर गई हैं। इस चुनौती का क्या उत्तर देना है? इसका फैसला करना आर्य जगत का काम है। परन्तु इसका नेतृत्व तो आर्य जगत के नेताओं ने करना है। इसलिए मेरा सार्वदेशिक सभा और परोपकारिणी सभा के अधिकारी महानुभावों से नम्र निवेदन है कि वे इस निर्वाण शताब्दी समारोह को एक मेला न बनाकर आर्य समाज के इतिहास में एक नए अध्याय का प्रारम्भ करें। जब आर्य समाजी लाखों की संख्या में अजमेर में इकट्ठे होंगे तो सारे देश की आंखें अजमेर की तरफ लग जाएंगी। केवल आर्य जगत की नहीं हमारे विरोधियों की भी यह जानने के लिए कि आर्य समाज क्या नया सन्देश देता है। महर्षि ने कहा था कि संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है। उस उपकार की मुख्य रूप रेखा क्या हो? इसका फैसला अजमेर में होना है। इसलिए अब जबकि आर्य नेताओं ने यह निर्णय ले लिया है कि महर्षि निर्वाण शताब्दी अजमेर में होगी एक ही समय में और एक ही मंच से होगी तो अब उन्हें बैठकर यह भी सोच लेना चाहिए कि आर्य जगत के सामने वह कौन सा नया कार्यक्रम रखेंगे जिसे क्रियान्वित करते हुए आर्य समाज एक शक्तिशाली संस्था बन सके और अपने देश का और सारे संसार का कल्याण कर सके।

—वीरेन्द्र

## ऋषि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समिति की आवश्यक बैठक सम्पन्न; अनेक महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए

अजमेर दिनांक 17 जून स्वामी दयानन्द की निर्वाण शताब्दी जो इस वर्ष 3 नवम्बर से 6 नवम्बर तक अजमेर में मनाई जा रही है इस सम्बन्ध में उच्च स्तरीय निर्णय लेने हेतु परोपकारिणी सभा सार्वदेशिक सभा तथा आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के अधिकारियों की बैठक सम्पन्न हुई। सर्वसम्मति से निर्णय किया गया कि इस अवसर पर भारत सरकार से प्रार्थना की जाएगी कि भिनाय की कोठी जहां स्वामी जी का निधन हुआ था उसे एक राष्ट्रीय स्मारक का रूप प्रदान करने के लिए इस सम्पूर्ण परिसर को केन्द्रीय सरकार अधिग्रहीत करे।

समारोह अजमेर में विश्राम स्थली पर मनाया जाएगा। इस अवसर पर चतुर्वेद पारायण यज्ञ एक मास तक सम्पन्न होगा जिसकी अध्यक्षता महात्मा दयानन्दजी तथा व्यवस्था यति मण्डल करेगा। मुख्य श्रद्धांजलि कार्यक्रम 4 नवम्बर को आयोजित किया जाएगा जिसमें विभिन्न मतावलम्बी महर्षि की स्मृति में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे।

शताब्दी समारोह का समग्र कार्यक्रम स्वामी ओमानन्द जी की अध्यक्षता में सम्पन्न होगा। मुख्य समारोह का उद्घाटन लाला रामगोपाल जी करेंगे। राजस्थान के मुख्यमन्त्री जी से इस समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित होने की प्रार्थना की जाएगी। शिक्षा सम्मेलन की अध्यक्षता श्री प्रो वेदव्यास जी तथा उद्घाटन श्री दत्तात्रेय जी आर्य करेंगे। समारोह के स्वागताध्यक्ष श्री छोटूसिंह जी तथा स्वागत मन्त्री श्रीकरण शारदा तथा स्वागत सहमन्त्री श्री रासासिंह नियुक्त किए गए। इस अवसर पर आर्य सम्मेलन वेद सम्मेलन युवक सम्मेलन महिला सम्मेलन आदि आयोजित किए जाएंगे।

बैठक में श्री रामगोपाल जी शालवाले श्री स्वामी ओमानन्द जी श्री छोटूसिंह जी श्री दत्तात्रेय जी आर्य श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी श्री डा भवानीलाल भारतीय श्री श्रीकरण शारदा, श्री चौधरी प्रतापसिंह श्री भामाराम जी आर्य आदि विशेष उल्लेखनीय थे।

—मन्त्री परोपकारिणी सभा

## स्वार्थ से उभरो—

# सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए

ले —प्रा आचार्य भद्रसेन जी होशियारपुर

जीवन और सामाजिक विकास का अन्तिम मूल मन्त्र है—प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट नही रहना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति मे अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

आप अपनी ज्ञान बल धन यश आदि से जितनी भी तरह से प्रगति कर सकते हैं जी सबके (बडी बाजी से) कीजिए पर आप उसी मे सन्तुष्ट न हो जाइए अपित इसके साथ दूसरो की प्रगति के लिए भी यत्न करना चाहिए क्योकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज मे ही वह जीवन और निर्वाह के साधन प्राप्त करता है। समाज के सहयोग से ही उसके सारे काम सम्पन्न होते हैं उसके जीवन का बहुत बडा भाग समाज पर ही आधारित तथा समाज के साथ बन्धा हुआ है। अत अकेले व्यक्ति की उन्नति उसको पूर्ण सुख नही दे सकती जब तक दूसरो की प्रगति न हो व्यक्ति जिस समाज मे रहता है उस मे एक का फल दूसरे को भी भोगना पडता है। आग प्रतिवेशी (पडोसी) के यहा भी पहुंच जाती है। गन्दगी मिर्चे आग से चारो ओर फैल जाती हैं तब उनकी गलती का दण्ड दूसरो को भी भोगना पडता है। अत जब तक समाज की प्रगति नहीं होती तब तक किसी व्यक्ति की प्रगति उसको पूर्ण सुख नही दे सकती।

प्राय देखा गया है कि एक मच्छली सारे तालाब को गन्दा कर देती है। ऐसे ही एक पिछडा हुआ सबको पीछे धकेल देता है और उसकी हानि दूसरो को भी उठानी पडती है। इस सम्बन्ध मे एक घटना आज बोध देने वाली है।

एक बार कुछ सज्जन मद्य पान से होने वाले दुष्परिणामो को सोचकर मद्य निवारक मण्डल के रूप मे काम करने लगे। सहयोग के लिए बम्बई के एक बड सेठ के पास एक दिन पहुंचा और उद्देश्य बताया। सेठ जी ने बड स्वाभिमान से कहा—यह सत्य है कि मद्य पान से बहुत ही दुष्परिणाम होते हैं परन्तु मैं जहा तक सोचता हू हमारे परिवार रिश्तेदारी और मित्र मण्डली मे से कोई नही पीता अत हमे इससे कोई हानि नही हो सकती, इसलिए मैं इस काम मे कोई सहयोग देने की आवश्यकता नहीं समझता। आगन्तुको ने कई ढंग से समझाया कि कई बार इनसे अतिरिक्त दूसरो से भी सम्पर्क पड सकता है। और तब उन का परिणाम दूसरे को भी भोगना पड सकता है। अत समाज की दृष्टि से आपको अवश्य सहयोग देना चाहिए। पर सेठ जी न पिघले अन्त मे आगन्तुको को निराश ही उठना पडा। वह मण्डल अभी भवन से बाहर ही निकल रहा था कि तभी एक व्यक्ति तार लेकर सेठ जी के पास पहुंचा पढते ही सेठ जी के पावो तले से धरती निकल गई और एक दम खाली हाथ लौटते हुए मण्डल को बुलाया। अपनी सारी सम्पत्ति का समर्पण पत्र मण्डल को सौंपने का विचार बताया। जब मण्डल ने इस परिवर्तन के रहस्य को कुरेदा तो पता चला कि अभी अभी तार और टेलीफोन आया है कि सेठ जी का इकलौता पुत्र जल जहाज से विदेश जा रहा था रास्ते मे मद्य पान के कारण मजदूरो मे झगडा हो गया उनको छुडाते हुए ही सेठ जी के सुपुत्र को गम्भीर चोट लग गई जिससे उसका प्राणान्त हो गया। अन्त मे सेठ जी ने कहा जिसके लिए यह सब कुछ था जब वह ही न रहा तो अब किसके लिए यह सब बचाकर रखा जाए। अत इस सम्पत्ति को आप स्वीकार करें। इस प्रकार की अनेको घटनाएं प्रतिदिन घटती हैं। जब एक का फल दूसरो को भोगना पडता है और दूसरो के पिछडेपन से उभरे हुओ को भी हानि उठानी पडती है। ऐसी स्थिति मे यह कहने से बचाव नही होता है—

> कबीरा तेरी झोपडी गल कटयन के पास।
> जो करनगे सो भरनगे
> तू क्यो भयो उदास।

या तुझ पराई क्या पडी अपनी निबेड तू अत समाज की उन्नति मे ही सब का भला है क्योंकि व्यक्ति जब समाज से जीवन एव निर्वाह के साधन प्राप्त करता है तो उसे सामाजिक ऋण से उऋण होने के लिए समर्थ होने पर यथाशक्ति दूसरो की उन्नति मे भरपूर सहयोग देना चाहिए।

इस नियम मे यह स्पष्ट होता है कि व्यक्ति जब अपनी उन्नति के साथ दूसरो की उन्नति का ध्यान नहीं रखता तो वह केवल अपना ही ध्यान रखने के कारण स्वार्थी हो जाता है। स्वार्थ मे अन्धा होकर व्यक्ति फिर कुछ भी नहीं सोचता और तब हर प्रकार का अनुचित से अनुचित अहितकर, प्रतिकूल कार्य करने से नहीं झिझकता। क्योकि स्वार्थवश वह पशु स्तर पर उतर आता है। तब उसको केवल अपना आपा ही दिखाई देता है। जिससे स्वार्थ के कारण लोभ का भूत व्यक्ति पर सवार हो जाता है तब अपने लोभ को पूरा करने के लिए व्यक्ति हर प्रकार का पाप कर लेता है। तभी तो आए दिन देखा जाता है कि अपना उल्लू सीधा करने के लिए कोई टोटके के रूप मे बच्चा पाने के लिए दूसरो के बच्चो के खून से नहा रहा है तो कोई किसी इच्छा की पूर्ति के लिए पशु-पक्षियो की तो क्या मनुष्यो की भी बलि दे रहा है। अपने गले की बला को टालने के लिए चौराहो पर कही कुछ रखा है तो कहीं कुछ अजीब ही दृश्य उपस्थित हो रहा है। इस तरह से जितने भी टोटके होते हैं सब स्वार्थ से ही किये जाते हैं। क्योकि स्वार्थी दोष न पश्यति स्वार्थवश व्यक्ति हानिकारक व्यवहार मे भी दोष नही देखता समझता इसीलिए ही कहते हैं—लोभ पापस्य कारणम—अर्थात लोभ पाप का बाप है। स्वार्थवश लोभ के चक्र मे पडा हुआ व्यक्ति ही मिलावट कम तोलना अधिक भाव लगाना चोरी डाका जेब काटना शोषण ब्लैक मार्किटिंग पगडी रिश्वत आदि हर प्रकार भ्रष्टाचार कर लेता है तभी तो भर्तृहरि जी ने कहा है—लोभश्चेद् गुणेन किम् (नीति 55) यदि लोभ की भावना है तो अन्य बुराईयों की क्या आवश्यकता। अर्थात् लोभ के होने पर अन्य सभी दोष स्वत आ जाते हैं। इसी लिए ही कहते हैं—लोभो मूलमनर्थानाम् सारी बुराईयो की जड लोभ ही है। क्योकि स्वार्थवश लोभी व्यक्ति यह चाहता है कि मेरी इच्छित वस्तु सदा ही मेरे पास रहे यदि वह उससे दूर होती है तो वह क्रोध का रूप धारण कर लेता है। जिसके परिणाम स्वरूप दूसरे दोष आ धमकते हैं। तभी तो मनुस्मृतिकार ने कहा है—

> द्वयोरप्येतयोर्मूलं यं सर्वे कवयो विदुः।
> तं यत्नेन जयेल्लोभं तज्जावेतावुभौ गणौ। 7 87।

काम (वासना) से उत्पन्न होने वाले दस और क्रोधजन्य आठ दोष हैं। इन दोनो तरह के दोषो की जड विद्वान लोग लोभ को ही मानते हैं। अत उसको सावधानी से जीते और लोभ के जीते जाने पर ही काम क्रोध अन्य दोष भी स्वत जीते जाते हैं।

---

## आर्य वीर प्रशिक्षण शिविर पलवल में सम्पन्न

पलवल गत एक सप्ताह से आर्य वीर दल हरियाणा के तत्वावधान मे चल रहे प्रशिक्षण शिविर का उद्घाटन स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती के कर कमलो द्वारा हुआ। इस अवसर पर प्रो उत्तम चन्द जी शरर (सचालक आर्य वीर दल हरियाणा) डा प्रशान्त कुमार जी वेदालंकार (प्राध्यापक दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली) श्री देवप्रकाश जी आर्य (उपमन्त्री आर्य वीर दल हरियाणा) आदि आर्य नेताओं के प्रवचन हुए तथा भारत विख्यात भजनोपदेशक श्री सोहनलाल जी पथिक एव श्री रामचन्द्र जी वेधड़क आदि के मनोहर भजन हुए)

प्रशिक्षण कार्य श्री सत्यपाल जी आर्य श्री प्रहलाद राम जी आर्य श्री भूपेन्द्र कुमार आर्य श्री बलवन्तसिंह योगाचार्य, तथा श्री प्रहलादसिंह जी आर्य शिक्षकों ने किया।

—मन्त्री

---

## रायकोट में आर्य समाज भवन का जीर्णोद्धार

के मेहनती सदस्यो ने आर्य समाज भवन रायकोट का जीर्णोद्धार करवाया जिसमे सभी सदस्यो ने यथायोग्य सहायता की। इस पनीत काम को उत्साह देने के लिए आर्य समाज रायकोट के प्रधान श्री भीम सैन जी ने सोलह सौ रुपया दान दिया।

इसी के साथ ही पारिवारिक सत्संग आरम्भ कर दिए गए हैं। गत दिनों लाला देस राज जी और श्री अर्जुन देव के घर पर पारिवारिक सत्संग हुए जो बड प्रभावशाली रहे श्री प्रमभिक्षु जी तथा श्री भीम सेन जी के उपदेश हुए तथा श्री वेद प्रकाश जी के मधुर भजन हुए।

---

## वेद पढ़ो और दूसरो को पढ़ाओ।

# आर्यसमाज और नारी

ले—श्री पण्डित जयगोपाल शास्त्री दसूहा

वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द के मतानुसार और भारतीय इतिहास का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि वैदिक संस्कृति की अधोगति महाभारत युद्ध के एक हजार वर्ष पूर्व ही आरम्भ हो चुकी थी। जहा वैदिक सिद्धान्तो की धज्जिया उडायी जा रही थी वहा स्त्री जाति के प्रति भी आदर भाव कम होता जा रहा था। इसका प्रमाण द्रोपदी का राज्य सभा में अपमान होना है। महाभारत के युद्ध के बाद नारी की और ही दयनीय स्थिति हो गयी। वाममार्ग का युग आया और नारी भी एक भोग की वस्तु समझी जाने लगी। मध्य काल के आचार्यों ने नारी के प्रति अपमानजनक शब्दो को अपने ग्रन्थो मे लिखा जैसे चार्वाक महात्मा बुद्ध आदि शंकराचार्य तुलसी ईसा मोहम्मद साहब आदि। स्त्रियो की स्थिति इतनी दयनीय हो गई कि किसी के यहा कन्या पैदा हो जाना एक अपराध समझा जाने लगा और पैदा होते ही मार दिया जाता था।

19वीं शताब्दी मे जगद्गुरु महर्षि दयानन्द का प्रादुर्भाव हुआ वहा देव दयानन्द ने भारत की अनेक परिस्थितियो को बडी सूक्ष्मता से देखा वहा स्त्री जाति की दुर्दशा पर दृष्टिपात किया और घोषणा कर दी कि नारी ही मनुष्य जाति के उत्थान का मुख्य कारण है। अपने ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय समुल्लास मे शतपथ ब्राह्मण का प्रमाण देते हुए लिखा कि वह कुल धन्य [illegible] विद्वान् हो। जितना माता से सन्तानो को उपदेश और उपकार पहुचता है उतना किसी से नही। जैसे माता सन्तानो पर प्रेम उनका हित करना चाहती है उतना कोई नही करता, आगे [illegible] समुल्लास मे लिखते हैं कि—

> यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।
> यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफला क्रिया॥ 3 57 मनु

जहा स्त्रियो की पूजा होती है वहा देवता निवास करते हैं। वहा कहीं भी लिखते बोलते समय अवसर आया वहा नारी के प्रति सम्मान ही प्रदर्शित किया। विशेष कर स्त्रियो को स्वामी दयानन्द का कृतज्ञ होना चाहिए जहा तक महर्षि के शुभ कार्यों उतना ही कम है।

वैदिक काल मे स्त्रियों का आदर वास्तव में कितना ऊचा था। सुलभा गार्गी, अनुसूया आदि विदुषी माताओं के नाम लेने से सिद्ध हो [illegible] होती है कौशल्या सीता कुन्ती आदि की याद शीतल दिमाग मे भी वीर रस एवं धर्म भाव को जागृत करने वाली है। पावन भूमि भारत के लिए अत्यन्त अपावन समय था जब स्वार्थ और मूर्खता के वश से अन्ध होकर मदोन्मत्त कुछ ब्राह्मणो ने तथा अन्यो ने स्वमाताओ बहनो स्त्रियो पुत्रियो के आगे विद्या मन्दिरो के सदा खुले किवाडो को बन्द कर दिया था उन दुष्ट व्यक्तियो के हृदय मे यह मन्त्र कहा से आया समझ में नही आता जिस माता ने प्राचीन काल मे याज्ञवल्क्य सरीखे विद्वान के छक्के छुडा दिये थे उसी की नाम लेवा भारत महिला मूक और पाव की जूती समझी जा रही थी।

महर्षि दयानन्द ने और आर्य समाज के प्रचारको उपदेशको ने अथक परिश्रम करके विद्यालय आदि खोलकर नारी जाति को उठाने का प्रयत्न किया जिसका परिणाम सामने है कि समाज के हर क्षेत्र मे पुरुषो के साथ ही खडी हैं किन्तु बडे दुःख के साथ कहना पडता है कि एक तो उठती न थी उठने उठते उठी तो उन्हे सम्भालना मुश्किल हो रहा है जहा आर्य समाज का उद्देश्य सीता और सावित्री की पुन याद ताजा करने की थी वहा स्त्रीयो ने अन्धाधुन्ध पाश्चात्य सभ्यता का अनुकरण करके अश्लीलता का आवरण ओढ लिया है आप को याद होगा कि गत वर्ष सिने जगत मे प्रख्यात नायिका [illegible] प्रिंस फिलिप के प्रिय पात्र का चुम्बन लेकर वासना का परिचय दिया था। समाज को ऐसी आशा नारी जाति से नही है। वह वैदिक संस्कृति सभ्यता के अनुसार अपना आत्मिक सामाजिक और शारीरिक उन्नति कर के संसार के लिए आदर्श उपस्थित करे। (क्रमश)

# आर्य मर्यादा के ग्राहकों से निवेदन

मेरी आर्य मर्यादा के सभी ग्राहको से प्रार्थना है कि वह अपना शुल्क शीघ्र अतिशीघ्र भेजने का कष्ट करें। ग्राहक महानुभावो की सेवा में कार्यालय से पत्र लिखे जा रहे हैं कि आपका शुल्क कितना शेष है पत्र मिलते ही शुल्क की सविशेष दें ताकि वह आपका साप्ताहिक पत्र निरन्तर आपकी सेवा करता रहे। मैं समझता हू कि ऐसा कोई ग्राहक नही होना चाहिए कि जिसका पत्र हमें शुल्क न आने के अभाव मे बन्द करना पड़े।

—सभा महामन्त्री

# आर्यसमाज बस्ती गुजां का वार्षिक निर्वाचन

आर्य समाज बस्ती गुजां जालन्धर का वार्षिक चुनाव निम्न प्रकार हुआ—

प्रधान—श्री वेद प्रकाशजी महेन्द्र उपप्रधान श्री ओमप्रकाश जी [illegible] श्री धर्मचन्दजी श्री धर्मेन्द्रसिंह सोढी तथा रघुनाथजी श्रीमती स्वर्णा भसीन महामन्त्री श्री सन्त कुमार जी उपमन्त्री श्री मदनसेन अरय श्री देवराज जी श्री विपिन शर्मा कोषाध्यक्ष श्री तिलकराज जी श्री बाबू देवराज जी रिटायर्ड पोस्ट मास्टर आडीटर व पुस्तकाध्यक्ष

अन्तरंग सदस्य

श्री दर्शनसिंह जी बिहारीलाल श्री सत्यपाल कोहली श्री मुंशीरामजी श्रीमती कौशल्यादेवी श्री सरदारीलाल प्रिंसि बाबू जगदीश नारायण भूतपूर्व नगर पिता श्री सुरेन्द्रनाथजी गुरुगोई श्रीमती लक्ष्मीदेवीजी श्री नारायणदास जी

—सदेश कुमार मन्त्री

# जिला लुधियाना आर्य सभा का चुनाव

देवराज खुल्लर प्रधान तथा श्री आशानन्द आर्य मन्त्री चुने गये

जिला लुधियाना की सब आर्यसमाजो एव स्त्री आर्य समाजो के प्रतिनिधियों की एक बैठक आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना मे श्री श्री महेन्द्रपाल वर्मा की प्रधानता में हुई जिसमे जिला आर्य सभा का चुनाव निम्न प्रकार हुआ यह सारा कार्य सभा मन्त्री श्री आशानन्द आर्य की देख रेख मे हुआ

प्रधान—श्री देवराज खुल्लर उपप्रधान—श्री बाबू कुन्दनलाल श्रीमती कमला आर्या श्रीमती शकुन्तला गौड महामन्त्री आशानन्द आर्य कोषाध्यक्ष—श्री सत्य भूषण बागिया उपमन्त्री—सर्वश्री विजय कुमार सरीन श्री नन्दलाल आहूजा श्री मूलचन्द भारद्वाज।

अन्तरंग सदस्य

सर्वश्री महेन्द्रपाल वर्मा श्री बलवन्त राय सूद श्री राजाराम श्री ओमप्रकाश महाजन श्री इन्द्रजीत गुप्ता श्री सत्य पाल सूद श्रीमती कौशल्यादेवी कक्कड़ रानी जी खुल्लर निर्मला जी बेरी विद्यावती जी सुशीला शर्मा श्री श्री यशपाल भगत श्री ज्ञानचन्द भगत श्री श्री राजेश भारद्वाज श्री प्रणति कुमार

आशानन्द आर्य मन्त्री

# सरकार डाक-सेवा की ओर ध्यान दे

गत रविवार को आर्य समाज मन्दिर भार्गव नगर जालन्धर में आर्य केन्द्रीय सभा जालन्धर की एक साधारण सभा कप्तान सिंह जी रोकेड की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुई जिसमे आर्य समाज के प्रचार के सम्बन्ध में और दहेज आदि कुरीतियों के सम्बन्ध मे विचार किया गया इसके अतिरिक्त एक प्रस्ताव पारित किया गया जो निम्नलिखित है—

आर्य केन्द्रीय सभा जालन्धर भारतीय सरकार से प्रार्थना करती है कि डाक वितरण का कार्य जो पहले चलता था उसी के अनुकूल होना चाहिए न कि जैसे अब चलने लगी है। पता चला है कि पहले चिट्ठी बांटने का विधान था जबकि अब जल्दी का समाप्त कर उसके अनुकूल डाक व्यवस्था कर दी गई है जिसके कारण चारों ओर से निराशा भी निराशा होनी आरम्भ हो गई है जैसे कि मीटिंग की सूचना का पत्र बाद में पहुचता है जबकि वह पहले ही हो जाती है मास का आदि हो चुका होता है बाद मे सूचना पत्र मिलता है राखी आदि के ठीक समय पर न पहुचने मे भाई बहिन में असन्तोष वातावरण उत्पन्न हो जाता है इसी प्रकार सब दुःख कोसने वालों का हाल हो रहा है अत यह आर्य केन्द्रीय सभा सरकार से अनुरोध करती है कि अभी डाक सेवा का विधान पुन चालू किया जाए और अनुकूल डाक व्यवस्था की जाए।

—सरदारीलाल मन्त्री केन्द्रीय सभा

# लुधियाना मे पारिवारिक सत्संग

स्त्री आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार (साबुन बाजार) के अन्तर्गत चल रहे मासिक सत्संग का 15 जून संक्रान्ति का यज्ञ एवं सत्संग श्रीमती यज्ञरानी भल्ला जी संस्थापक लाल बहादुर शास्त्री हाई स्कूल के यहा सिविल लाईन्स मे हुआ। दोनो समाजो की बहिनो ने भाग लिया। यज्ञोपरान्त बहिन विद्यावती शर्मा बहिन सुशीला जी शर्मा बहिन राजेश्वरीजी वर्मा ने प्रभु भक्ति एवं ऋषि गुण गान के भजनो से बहिनो को आनन्दित किया उपस्थिति अच्छी रही बहिन कमला जी आर्या ने एक वेद मन्त्र—

अग्ने व्रतपते... की सुन्दर व्याख्या की जिसका उपस्थित बहिनो पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा।

—रमा भार्या मन्त्री

## स्वास्थ्य सुधा—

# रोगों के कारण और उनका उपचार

ले—डा नारायणदत्त जी योगी एन डी

आर्य मर्यादा साप्ताहिक द्वारा हम आर्य जनता को अधिक से अधिक उपयोगी साहित्य देना चाहते हैं। हमने स्वास्थ्य सुधा एक कालम आरम्भ किया हुआ है जिसमे हम रोग और उनका उपचार भी देते हैं। जालन्धर के श्री नारायण दत्त जी योगी ने एक लेख माला लिखी है जिसमे उन्होने रोग और उनके होने का कारण तथा उपचार दिया है। उपयोगी समझते हुए इन लेखो को आर्य मर्यादा मे प्रकाशित किया जा रहा है।

—सह सम्पादक

रोगो के उत्पन्न होने के चार कारण हैं। निम्न विजातीय द्रव्य शरीर मे रहते है —

मूत्र टट्टी श्वास पसीना और थूक या बलगम ये सब विजातीय द्रव्य हैं। जिस शरीर मे ये एकत्रित रहते हैं वह शरीर रोगी रहता है। परन्तु जब ये सब विजातीय द्रव्य नाना प्रकार के उपचारो स निकाल दिए जाते हैं। शरीर नीरोग तन्दुरुस्त और स्वस्थ हो जाता है ये विजातीय द्रव्य नाना प्रकार के रोग उत्पन्न कर देते हैं। इन रोगो के निवारण करने के लिए प्राकृतिक चिकित्सा की विविध प्रयोग म लाकर रोगो को दूर करने औरइन विजातीय द्रव्यो को भिन्न 2 प्रकार के उपचारो द्वारा निकालने का प्रयत्न करते रहना चाहिए।

जल चिकित्सा धूप चिकित्सा योगिक आसन वज्ञानिक मालिश फल चिकित्सा आहार चिकित्सा उपवास चिकित्सा मिट्टी चिकित्सा कुंजर अनिमा जलनेति आदि भिन्न भिन्न चिकित्साओ द्वारा विजातीय द्रव्य निकाल दिया जाता है। इस प्रकार से बहुत प्रकार के उपचारो द्वारा विजातीय द्रव्य निकल जाने पर शरीर निरोग अर्थात स्वस्थ हो जाता है।

अत हमें लेख मे भिन्न प्रकार की बीमारियो को दूर करने के लिए विजातीय द्रव्यो को निकालने की विधिया लिखी गई हैं।

रोगियो को चाहिए कि वे अपने रोगो को निम्नलिखित विधियो से अपने शरीर से हटा देव और स्वास्थ्य प्राप्त कर सच्चा सुख और आनन्द प्राप्त कर।

### कब्ज

कब्ज सब बीमारियो की जड है। अर्थात सब बीमारिया का मूल कारण कब्ज है। इसलिए जब कभी भी कब्ज हो जाए इसका इलाज तुरन्त बिना किसी [illegible] चाहिए। वरना रोग दिन प्रतिदिन बढता जाएगा और [illegible] उसका दुष्परिणाम होता है कि रोगी का रोग असाध्य हो जाता है। इस लिए मैं बहुत स इलाज नीचे लिखता हू आप उनको करके अपनी कब्ज या बद्ध कोष्टता को दूर कर लेव।

1 सबप्रथम आपको बिना छने आटे की रोटी खानी चाहिए। छानस छलनी से छानकर फकना नही चाहिए किन्तु छानस की कीडी मक्खी मच्छर कक्कड मिट्टी अलग करके फिर उस छने आटे मे छानस डाल देना चाहिए। क्योकि छानस मे विटामिन होते हैं। यदि छानस फैंक दिया जाय तो विटामिन भी फैंके जायगे आटा मैदे के सामान बारीक हो जाएगा। जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होगा।

2 मैदे की पुरी, कचौरी हल्वा सुहाली, समोसे पूड पकौड कोई भी खाद्य पदार्थ नही खाने चाहिए। मैदा हजम नही होता है और कब्ज कर देता है।

3 प्रत्येक रोटी का टुकडा चबा कर खाना चाहिए। जल्दी रोटी खाना हानिकारक है और कब्ज कर देती है।

4 जल दूध पेय पदार्थ धीरे धीरे पीने चाहिए। जल्दी जल्दी नही पीने चाहिए।

5 बिना भूख रोटी नही खानी चाहिए इन उपायो से कब्ज नही होती है।

6 सारे दिन मे कम से कम 3 किलो पानी अवश्य पीना चाहिए। कम पानी पीने से कब्ज हो जाती है।

7 भोजन से पहले और दो घण्टे पश्चात पानी पीना कब्ज नहीं करता है। और हाजमा ठीक रखता है।

8 दिन मे दो समय से अधिक भोजन करना उचित नही है।

9 पालक बथुआ मेथी सरसो का साग कब्ज को खोल देते हैं।

10 अमरूद खरबूजा, पपीता, कुरमानी आडू आम कब्ज नहीं होने देते हैं।

11 अंगूर दो सौ ग्राम खाकर कब्ज दूर करें। दाख या किशमिश दो सौ ग्राम पानी मे भिगो देवें। प्रात उठ कर दाख खा लेवें और पानी पी लेवें।

12 मिटटी की पटटी पेट पर बांध कर सो जावे प्रात उठकर मिटटी उतार कर फैंक देवें पेट को जल से धो डाल या स्नान कर लेवें। यह कब्ज का अचूक इलाज है।

13- एक गिलास पानी मे निंबू। निचोड कर, बीज निकाल कर जल पी लेवें। कब्ज दूर हो जाएगी

(14) एनीमा करने से पेट साफ हो जाता है।

(15) योगिक आसन करने से कब्ज नहीं रहती है पवन मुक्तासन कब्ज निवारक आसन है इस आसन से कब्ज नही रहती है।

16 गलेसरीन की बत्ती गुदा मे रखा लेवें। कब्ज का अचूक इलाज है।

17 4 माशे त्रिफला चूर्ण पानी से या दूध से खा लेव। कब्ज हट जाती है।

18 ईसबगोल का छिलका भी कब्ज दूर करता है।

19 बडी हरड का छिलका और छोटी हरडें दोनो 50 50 ग्राम लेकर घी मे अधभुनी करके चूर्ण बना ल। इस चूर्ण मे सौ ग्राम खाड भी मिला दें। प्रतिदिन 10 ग्राम दवा गुनगुने पानी के साथ प्रयोग करें। कब्ज और बवासीर का नाम भी नही रहेगा।

20 छोटी हरड काली अथवा जगी हरड 2 3 प्रतिदिन चूसें। इस हरड को न तो भूनना है और न ही कटना है। धो कर या कपड से साफ कर लें। एक घण्टे मे घुल जाती है और कब्ज दूर कर देती है। यह जुलाबी करती है। इस लिए दूध या घी अवश्य प्रयोग करना चाहिए।

| 21 | सनाय की पत्ती | 50 ग्राम |
|---|---|---|
| | सौंफ | 100 ग्राम |
| | मिश्री | 200 ग्राम |

तीनो को कूट कर चूर्ण बना लें। रात को 6 ग्राम चूर्ण गरम पानी के साथ दें प्रात खुल कर दस्त होगा।

22 आसिन करने से भी कब्ज दूर जाती है।

23 खीरा, ककडी (तर) पालक, पातगोभी, टमाटर को काट कर इस में निंबू निचोड कर और थोड़ा नमक मिलाकर खाने से कब्ज दूर हो जाती है।

### बवासीर

बवासीर के रोगी को कब्ज का इलाज करना चाहिए।

2 बवासीर के रोगी को चोकर समेत आटे की रोटी देवें।

3- अमरूद बवासीर के रोगी के लिए लाभदायक है।

4 खाने को गेहू का दलिया चोकर समेत आटे की रोटी, हरी-हरी सब्जिया [illegible]

5 मूली, पपीता खरबूजा, पक्का केला सेब नाशपाती दूध आदि देवें।

पालक बथुआ, तरोई परवल, पात गोभी साग।

6 सूखे मेवे, दाख मुनक्का अंजीर नारियल बहुत लाभकारी है।

7 सवेरे नाश्ते मे पपीता खरबूजा या दूध और नाशपाती देवें।

8 दोपहर को दलिया [illegible] पालक, पातगोभी, परवल, मूली, बथुआ आदि देवें।

(9) शाम को रोटी तरकारी थोडा मुनक्का 100 ग्राम अंजीर 100 ग्राम, पानी मे रात को भिगो देवें प्रात शौच जाने के बाद खा लेवें।

10 बवासीर के रोगी को दो तीन सेर पानी प्रतिदिन पीना चाहिए।

11 ईसबगोल की भूसी तीन माशे पानी के साथ खानी चाहिए।

12 बवासीर के रोगी को गाढ़ा गर मिटटी घोल बना कर लगोट के सहारे गुदाद्वार पर बांधनी चाहिए पेट पर नाभी के लेकेर मूत्रेन्द्रिय तक मिटटी की पट्टी बांधनी चाहिए। आधा घण्टे तक [illegible] लगी रहे। इस प्रकार प्रात साय दोनों [illegible] करें।

[illegible] सुधार, सेर [illegible] रोगी भोजन प्रयोग से ठीक हो जाते हैं।

14 रोगी को तीन दिन का उपवास करना चाहिए। एक महीने के पश्चात एक सप्ताह का उपवास करें। हल्के गरम पानी का एनीमा लेकर लेवें।

15 आयुर्वेदिक इलाज बवासीर खूनी के लिए काली हरड 200 ग्राम घी मे भुन लें। और आवला सार गन्धक शुद्ध 10 ग्राम मिला कर बारीक कर लें। रात को 6 ग्राम दवा फाक कर ऊपर से गरम दूध पीने को द। मस्सों पर नीम का तेल लगावें।

16 प्रात साय काले तिल को भारी कूटकर 20 ग्राम मक्खन के साथ खावें। शीघ्र ही रोग नष्ट होगा।

17 कीकर की कच्ची फली क साया में सुखाकर कपडछान करके चूर्ण लें। इस चूर्ण की 6 ग्राम फांक कर ऊपर से ताजा पानी पीवें। खूनी बवासी और बादी बवासीर नष्ट हो जाती है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

# विश्व हितार्थ—आरोग्य विषय

यह सम्बन्धित विचारणीय विषय—'परमेश्वर के बाद अब विषय आरोग्य पढ़ें—

1 तन्दुरुस्ती हजार नियामत है। नातन्दुरुस्ती हजार मुसीबत है।

2 स्वास्थ्य नियमों से जाना होता है तो बीमारी का आना होता है।

3 बीमारी वह सजा है, जो कुदरत हमें स्वास्थ्य के नियमों के विरुद्ध चलने के एवज देती है।

4 बीमारी के हम खुद कसूरवार हैं सेहत के हम खुद जिम्मेवार हैं।

5 तन्दुरुस्ती वह उत्तम फल है जो प्रकृति हमें 'स्वास्थ्य नियमों के पालन करने के प्रदान करती है।

6 जवानी की बदपरहेजिया बुढ़ापे में दुख देती हैं।

7 मनुष्य जीवन को सफल बनाने के लिए सबसे जरूरी चीज स्वास्थ्य है। इसके बिना जीवन के किसी भी क्षेत्र में पूर्ण सफलता असम्भव।

8 ठीक भोजन ? प्राकृतिक भोजन जो स्वास्थ्य बल बुद्धि आचार आदि को सदा गुणकारी। अन्य भोजन अर्थात अप्राकृतिक खान पान हानिकर

9 जो मनुष्य प्राकृतिक भोजन खाने का अभ्यस्त है—खाना सादा व ताजा निश्चित समयपर खूब भूख लगने पर अच्छी तरह चबा कर खाता है उसके विचार सदा समान रहते हैं उसे कभी बुरी इच्छा नहीं सताती और विचार व आदत सदा शुद्ध पवित्र रहते है। जिसका परिणाम पूर्ण स्वास्थ्य और शान्ति होता है।

10 स्वास्थ्य नियम मेरे आर्जन स्वच्छता भीतरी व बाहरी शुद्ध वस्त्र (सादा व साफ) व्यायाम प्रतिदिन पूरी मुनासिब नींद हर तरह अच्छे मकान और ब्रह्मचर्य (सादा जीवन और ऊंचे विचार ब्रह्मचर्य और तप से विद्वान तो मौत को भी बाध कर रख देते हैं (अथर्व वेद) रात्रि को जल्दी सोना और प्रातः जल्दी उठना स्वस्थ धनवान और बुद्धिमान बनना है भोजन चबाना पहले पहले चबाने के अमल में कुछ दिक्कत वक्त बेशक लगे पर कुछ समय या कठिनाई आती रहती है और गुण असर अच्छा होता है।

दुनिया में उतने आदमी भूख से नहा मरते जितने ज्यादा खाने से मरते हैं दुग्धाहार फलाहार व हरे साग सब्जी अधिक (उचित मात्रा म) सेवन करने लाभदायक है।

12 खुराक का नुक्स वर्जिश स लापरवाही और चाल चलन की खराबी इन तीन कारणों से मनुष्य कमजोर बीमार और बूढ़ा होता है।

13 —कविदास हरनामदास दिल्ली उत्तम भोजन वह होता है जो हमार स्वास्थ्य को बढ़ाए शरीर को पुष्ट करे बुद्धि की तीव्र बनाए और मन को शान्ति दे। आरोग्य गोरखपुर

14 सप्ताह मे एक दिन पूर्ण उपवास रखने से सेहत हमेशा उमदा रहती है। प्रकृति नियम अनुसार जीवन व्यतीत करेगे तो निश्चय ही तन्दुरुस्त व उन्नत रहोगे।—श्री सज्जन कुलभम आस अ

—

# नेत्र रोग परीक्षण एवं आपरेशन शिविर

आर्य समाज सान्ताक्रूज द्वारा की गई सामाजिक एवं मानवीय सेवा के इतिहास में इस वर्ष हमने नेत्र रोग परीक्षण एवं आपरेशन शिविर का आयोजन कर एक नवीन एवं महत्वपूर्ण कड़ी को और जोड़ा है। पिछले वर्ष भी इसी प्रकार का आयोजन 'निःशुल्क चश्मा वितरण' के रूप में किया गया था।

पिछले लगभग 3 मास से समाज की राज वाहिका द्वारा सान्ताक्रूज उपनगर के आस पास के झोपड पट्टी इलाको में जाकर नेत्र रोगियो का परीक्षण कार्य एवं चिकित्सा कार्य होता रहा है इस कार्य का सफल संयोजक श्री स्वामी रामानन्द जी शास्त्री द्वारा किया गया एवं डाक्टर के रूप में श्री डा बी बी सिंह की सेवा प्राप्त होती रही। समाज की राज वाहिका चल चिकित्सालय के रूप में कार्य करती रही।

एक सप्ताह का शिविर बोरीवली जोगेश्वरी कादीवरी वरसोवा अन्धेरी एवं बान्द्रा उपनगरो के विभिन्न इलाको मे लगता रहा। इन शिविरो के दौरान 2200 रोगियो के नेत्रो का परीक्षण किया गया लगभग 2000 नेत्र दवा रोगियो को निःशुल्क बांटी गई। 30 चश्मे निःशुल्क 90 चश्मे आधी कीमत पर रोगियो को दिए गए इन शिविरो के दौरान लगभग 64 रोगी आपरेशन के योग्य पाये गये।

आपरेशन हेतु आर्य समाज मन्दिर में दिनांक 27 5 83 से 29 5 83 तक नेत्र रोग परीक्षण एवं आपरेशन शिविर लगाया गया। शिविर एवं आपरेशन थियेटर का उद्घाटन चरित्र अभिनेता एवं आर्य परिवार के सदस्य श्री मनमोहन कृष्ण ने किया। देवीरत्न आर्य मन्त्री

—

## गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार

# प्रवेश सूचना

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय मे निम्न कक्षाओ मे प्रवेश के लिए प्रवेश पत्र दिनाक 31 8 83 तक आमन्त्रित किए जा रहे हैं

1 विद्या विनोद (इन्टर)—प्रवेश योग्यता—संस्कृत सहित मैट्रिक या सम कक्ष अंग्रेजी सहित पूर्व मध्यमा विद्याधिकारी विशारद (पंजाब) अंग्रेजी सहित मैट्रिक विद्या रत्न।

2 अलंकार—बी ए—प्रवेश योग्यता—संस्कृत सहित इन्टर या सम कक्ष अंग्रेजी सहित उत्तर मध्यमा विद्या विनोद विशारद (पंजाब) अंग्रेजी सहित इन्टर।

3 बी एस सी प्रथम वर्ग—
कमिस्ट्री बोटनी जूलौजी
द्वितीय वर्ग—
कमिस्ट्री फिजिक्स गणित।

प्रवेश योग्यता इन्टर मीडिएट विज्ञान सहित तथा उसके समकक्ष।

6 एम ए—वेद संस्कृत दर्शन प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति तथा पुरातत्व हिन्दी अंग्रेजी मनोविज्ञान गणित

प्रवेश योग्यता—बी ए बी एस सी बी काम अलंकार विद्याभास्कर शास्त्री आचार्य संस्थित स्नातक मन्तिम तथा सनिक यथानियम रूप से परीक्षा न सकन है

5 पी एच डी—वेद संस्कृत हिन्दी प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति तथा पुरातत्व भारतीय दर्शन मे प्रार्थना पत्र दिनांक 31 8 83 तक सभी कार्य योग्य छात्रों के लिए छात्रवृत्ति उपलब्ध।

सुसज्जित प्रयोगशाला छात्रावास पुस्तकालय कार्य के विद्यार्थी की उपाधि सुविधाओं उत्तर प्रदेश उपाधि भारत सरकार तथा देश के प्रमुख विश्वविद्यालयों द्वारा मान्यता प्राप्त विद्या विनोद इन्टर तथा अलंकार बी ए कोर्स मे शिक्षा निःशुल्क है वेद विषयो मे सभी को छात्रवृत्तियां पी एच डी का आवेदनपत्र तथा नियमावली 5 रु अन्य व्यय प्रत्येक पाठ्यक्रम आवेदन पत्र सहित ) रुपए डाक व्यय।

( 6 पृष्ठ का शेष )

18 वर्षा के पत्ते 7 काली मिर्च 7 दाना मेथी को पीस कर ठण्डाई बना कर पीने से खूनी बादी सब प्रकार की बवासीर नष्ट हो जाती है।

19 पानी मे नीला थोथा और फिटकरी को भून कर की भांति पीसकर लगाओ। 8 10 दिन के प्रयोग से मस्से सूख जाते हैं।

20 बड़ी हरड का छिलका और छोटी हरड दोनो 50 50 ग्राम लेकर घी मे अच्छी प्रकार भूनकर चूर्ण बना लें इस चूर्ण में 100 ग्राम खांड मिला दें। प्रतिदिन दस ग्राम दवा गुनगुने पानी के साथ ठण्डाई की भांति बारीक घोट पीस कर प्रातःकाल पिया करें। कष्ट अधिक होने पर रात को भी पिला दें तीन दिन मे खून आना बन्द हो जाता है। दवा कम से कम सात दिन खाएं। यह सन्यासी का टोटका है।

21 कच्ची कली (हरी) के 7 8 हरे पत्ते और काली मिर्च 7 8 को 250 ग्राम पानी के साथ ठण्डाई की भांति बारीक पिस पीसकर प्रातःकाल पिला दें। कष्ट अधिक होने पर रात को भी पिला दें। 2 3 दिन मे खून आना बन्द हो जाता है। दवा कम से कम सात दिन खायें। यह एक सन्यासी का टोटका है।

22 रसौत 10 ग्राम मूली का रस 50 ग्राम दोनो को मिलाकर इतना घोटें कि मूली का पानी सूख जाए फिर जंगली बेर के बराबर गोलियां बना लें। एक गोली प्रातः एक गोली सायं ताजा जल के साथ खिलाएं। तीन दिन मे बवासीर का खून बन्द हो जाएगा।

23 सत निम्बू (सायट्रिक एसिड) मस्सों पर खूब रगड़ें। मस्सों से सफेद रंग का पानी निकलेगा। जब पानी सूख जाए तब घी से चुपड़ते रहें। तीसरे दिन खुरण्ड उतरेगा और मस्से सूख जाएंगे।

24 मसिल रीठे का छिलका हल्दी और हीरा कसीस चारों सम भाग लेकर अत्यन्त बारीक पीस। फिर इसमें करेले का रस डालकर 3 4 दिन खरल कर लें और जंगली बेर के बराबर गोलियां बना लें। आवश्यकता पड़ने पर बासी पानी में घिस कर मस्सों पर लेप कर। कुछ दिनों मे ही मस्से नष्ट हो जाएंगे। बवासीर के मस्सों को नष्ट करने वाला यह नुस्खा है।

25 मेंहदी के बीजों का क्वाथ बनाने में अथवा इस को दूध में औटा कर पीने से खूनी बवासीर का खून बन्द हो जाता है।

—

वर्ष 16 अंक 13, 26 आषाढ़ सम्वत् 2040 तदनुसार 10 जुलाई 1983 दयानन्दाब्द 159 । एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपए

# महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के बनाए तीन विधान

ले—श्री म म वेदाचार्य व्यास एम ए

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने अपने जीवन काल के तीन विधान बनाए हैं—

1 एक आर्य समाज का विधान।
2 परोपकारिणी सभा का विधान।
3 गोकृष्यादि रक्षिणी सभा का विधान।

ये तीनों विधान महत्वपूर्ण हैं। प्रान्तीय सभाओं और सार्वदेशिक का विधान अनुपलब्ध है। इसमें अमूल चूल परिवर्तन की आवश्यकता है।

(क) आर्य समाजों से चुनकर जो प्रतिनिधि प्रान्तीय सभाओं में जाते हैं उन की योग्यता का कोई स्तर होना चाहिए इसी प्रकार प्रान्तीय सभाओं से जो सार्वदेशिक के लिए प्रतिनिधि चुनकर जाते हैं उन सार्वदेशिक में जाने वाले प्रान्तीय प्रतिनिधियों की भी योग्यता का माप दण्ड होना चाहिए। इसी प्रकार सार्वदेशिक सभा के प्रधान आदि की भी कोई योग्यता निर्धारित होनी चाहिए।

आर्य समाज के विधान को भी लिख कर उसमें संशोधन करने को महर्षि ने लिखा है।

## तीनों विधानों की भिन्नता और वैशिष्ट्य निर्वाचित संस्था—

यद्यपि प्रान्तीय सभाओं और सार्वदेशिक सभा का विधान महर्षि का बनाया हुआ नहीं है तथापि इन को आर्य समाज के विधान के अनुसार मान लिया जाए क्योंकि ये सब निर्वाचित संस्थाएं हैं। इनकी रचना इस प्रकार की है कि यह भी सम्भव हो सकता है कि जो अब बैठे हैं अगले निर्वाचन में इनमें से एक भी न हो। [illegible] इनको सार्वदेशिक सभा में कई बार देखा।

## स्थिर संस्था—

महर्षि ने परोपकारिणी सभा को स्थिर संस्था बनाया, 23 व्यक्ति नियत कर दिए। किसी की मृत्यु हो जाने पर शेष 22 व्यक्ति 23 वें व्यक्ति को चुन लेंगे। अतः उस में अस्थिरता नहीं आती है। आज भी 23 व्यक्ति ही हैं। इसमें स्वार्थीपन हो सकता है।

## सामूहिक संस्था

एक तीसरा विधान गोकृष्यादि रक्षिणीसभा का बनाया इसका वशिष्ठ्य आर्यों ने नहीं समझा। आर्य समाज का सदस्य बनने के लिए बहुत सी शर्त हैं। आर्य समाज का सदस्य प्रत्येक व्यक्ति नहीं बन सकता। कई शर्तें हैं। ईश्वर को मानता हो वेद को ईश्वर कृत मानता हो इत्यादि

पर गो कृष्यादि रक्षिणी सभा का सदस्य बनने के लिए केवल एक ही शर्त है कि गोरक्षा चाहता हो।

(क) चाहे भारतीय हो या चीनी जापानी आदि।

(ख चाहे हिन्दू हो या मुसलमान ईसाई आदि।

(ग) आस्तिक हो या नास्तिक हो। वैदिक या अवैदिक हर धर्म जाति सयुक्त देश का व्यक्ति जो गोरक्षा चाहता है। उनका विधान संगठन विश्वव्यापी बनाओ। वह संगठन गोरक्षा कर सकता है। अकेला आर्य समाज इसके लिए पर्याप्त नहीं होगा। यह बहुत भयंकर युद्ध है। अकेला आर्य समाज इसमें सफल नहीं होगा। हां गोरक्षा का नाम लेकर कुछ लोग नेता अवश्य बन जाएंगे। गौ नहीं भी नहीं रहेगी।

जिस संस्था के संचालक की जो योग्यता होगी उसके स्तर से ऊपर वह संस्था नहीं उठ सकती है। ईसाइयों का पोप बाइबल का पूर्ण विद्वान्। इसी प्रकार मुसलमानों तथा बौद्धों, जैनों के आचार्यों को देख लो। शंकराचार्य करपात्री आदि की योग्यता पर दृष्टि डाल लो। और अपने नेताओं पर भी निगाह डाल लो।

शुद्धि का कार्य भी अब ऐसा ही है। पहले हिन्दू इसके विरोधी थे अतः अकेला आर्य समाज इससे जूझता था। अब आपके सब साथी हैं अतः शुद्धि का भी सब को लेकर विशाल संगठन बना कर शुद्धि का काम करना चाहिए। आज बड़े बड़े हिन्दू मठ महन्त तथा अन्य हिन्दू संगठन शुद्धि के कार्य को कर रहे हैं सब को साथ में ले लो और आर्य समाज के इस योग्यता के व्यक्ति उसका नेतृत्व करें क्योंकि यह योग्यता आर्य समाज में है ही।

आर्य समाज के संगठनों द्वारा उन कार्यों को करो जिन कार्यों को केवल आर्य समाज ही करेगा। अन्य व्यक्ति उस को नहीं करेंगे जैसे—

1 पाखण्ड खण्डन। 2 वैदिक सिद्धान्त प्रचार। 3 सही वेदों का भाष्य संसार की सब भाषाओं में 4 अन्य राष्ट्र के लोगों को वैदिक धर्मी बनाना। 5 शास्त्रार्थ के युग को प्रारम्भ कर सैद्धान्तिक विजय। 6 विरोधी साहित्य का उत्तर देना चाहे भारतीय विद्वानों के लिखे ग्रन्थ हों या पाश्चात्य विद्वानों के ग्रन्थ। विरोधी साहित्य बहुत है। 7 वेदों के आधार पर राष्ट्रों के संचालन पर ग्रन्थ लिखो। कार्लमार्क्स आदि ने अपने साहित्य प्रचार से संसार के मस्तिष्क पर प्रभाव जमा लिया फिर स्वयं क्रान्त होकर देश के देश कम्युनिस्ट हो गए।

उपर्युक्त योग्यता वाले व्यक्तियों के हाथों में आर्य समाज के संचालन का भार हो। इसके लिए उस योग्यता वाले व्यक्ति चाहिए जो वेदों के पूर्ण ज्ञाता हों संसार की भिन्न भिन्न भाषाओं के जानने वाले हों।

## एक आश्चर्य कहो या धोखा

हम संसार में घूमकर देखते हैं। हम सौ वर्ष से अधिक के इतिहास में किसी राष्ट्र के एक व्यक्ति को भी वैदिक धर्मी नहीं बना पाए। जबकि हमने रोम तक में देखा कि राधा कृष्ण सम्प्रदाय के मठ उस राष्ट्र के व्यक्तियों के हैं इटलियन लोग गले में गोनक डालकर माला पहन कर राधा कृष्ण बोलते रोम के बाजारों में घूमते हैं और आर्य समाज केवल दूसरे कुछ देशों में प्रवासी भारतीयों तक ही सीमित है। अतः पूर्वजों ने जिसको आप सार्वदेशिक सभा या इन्टरनेशनल सभा कहते हैं इसकी रजिस्ट्री आर्यावर्तीय प्रतिनिधि सभा नाम से ही कराई है। यह आज भी अन्ततः प्रवासी भारतीय संस्था है। इसको अन्तर्राष्ट्रीय कहना एक धोखा ही है। भारत से बाहर किसी राष्ट्र का व्यक्ति आर्य समाजी नहीं है।

## सार्वदेशिक नाम का परिवर्तन

सार्वदेशिक सभा में अस्तव्यस्त चला हमारी संस्था की रजिस्ट्री आर्यावर्तीय प्रतिनिधि सभा नाम से रजिस्ट्रार के आफिस में थी। कोई व्यक्ति सार्वदेशिक सभा नाम से अन्य संस्था की रजिस्ट्री करा सकता था मैं यह सब जानता था मैंने ही इधर ध्यान दिलाया तब दौड़ कर रजिस्टार के आफिस में जाकर नाम परिवर्तन कराया यह कुछ वर्षों की ही घटना है क्योंकि हम रजिस्टार आफिस में यह नाम न होते हुए भी व्यवहार हम बहुत काल से सार्वदेशिक नाम से ही कर रहे थे हमें अधिकार था ही।

## यह किस बात का परिणाम है

आज शुद्धि और इस्लामीकरण के रोकने का काम आर्य संगठनों के अकेले प्रयास से होने का परिणाम यह है कि यह कार्य भी जिस प्रगति से होना चाहिए नहीं हो पा रहा है और जिन व्यक्तियों की योग्यता केवल इन कार्यों के करने की है वे आर्य संगठनों पर हावी होकर गोरक्षा गोरक्षा इस्लामीकरण इस्लामीकरण के नारे लगाते रहते हैं। अन्य कामों को करने की योग्यता है नहीं। अन्य सब कामों को चौपट कर देते हैं और अपनी लीडरी इन बातों का दिखा दिखाकर बघारते रहते हैं आर्य जनता इस धोखे में रहती है कि कुछ कर तो रहे हैं। इस योग्यता के व्यक्ति लाखों रुपया इन पर तो व्यय कर देंगे पर वेद के काम के लिए इनके पास पैसा नहीं है।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

### दैनिक वीर प्रताप व प्रताप में बम विस्फोट

# आर्य प्र. नि. सभा पंजाब के प्रधान तथा दैनिक वीर प्रताप व प्रताप के संचालक श्री वीरेन्द्र की हत्या का असफल प्रयास

## दो कर्मचारियों की मृत्यु : एक गम्भीर रूप से घायल

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान तथा दैनिक वीर प्रताप व प्रताप के सचाल श्री वीरेन्द्र जी को पजाब के उग्रवादियो की ओर से अक्सर धमकी भरे पत्र आते रहते हैं और अब भी प्राप्त हो रहे हैं। गत वर्ष तो उन्हे अमृतसर से बम के कान पार्सल द्वारा भेजे गए थे, और अब अमृतसर से ही पार्सल द्वारा बम भेजा गया, सौभाग्य से श्री प्रधान जी उस समय वीर प्रताप कार्यालय मे उपस्थित नहीं थे और पार्सल को अन्य कर्मचारियो ने खोला, ज्यो ही पार्सल खुला, बम के फटने का एक जोरदार धमाका हुआ जिससे दीवारो को काफी क्षति पहुची और एक कर्मचारी श्री केवल कृष्ण मौके पर दम तोड गया जबकि दूसरा कर्मचारी श्री इन्द्रेश कुमार अस्पताल मे जाकर चार घण्टे जिन्दगी और मौत से सघर्ष करने के बाद अन्त मे वह भी दम तोड गया, तीसरा कर्मचारी सुनीलकुमार गम्भीर रूप से घायलावस्था मे अस्पताल में उपचाराधीन है, ये दोनों कर्मचारी बडे परिश्रमी, ईमानदार और कर्तव्य-परायण थे। इनकी आयु भी अभी तक 30 वर्ष से कम ही थी दोनो का एक एक बच्चा है यह दारुण दृश्य देखा नही गया।

इन कर्मचारियो ने अपना बलिदान देकर सभा प्रधान जी को बचा लिया, उग्रवादियो द्वारा प्रधान जी की हत्या का षड्यन्त्र तो असफल हो गया परन्तु दो नौजवानो को अपना बलिदान देना पडा।

यह समाचार सर्वत्र पजाब मे जगल की आग की तरह फैल गया। पजाब हिन्दू सगठन के 27 जून के पजाब बन्द के आह्वान पर समूचे पजाब मे पूर्ण हडताल रही, यहा तक कि रेहडी वाले व चाय विक्रेताओ ने भी दुकानें बन्द रखी। इसका प्रभाव पडोसी राज्यो हिमाचल और हरियाणा पर भी पडा। इस प्रकार की हडताल पहले कभी नहीं हुई थी।

पजाब की सभी आर्य समाजो ने इस बम काण्ड की कडे शब्दो मे निन्दा की है और पजाब सरकार तथा भारत सरकार से जोरदार माग की है कि आर्य समाज के इस महान् नेता सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी के जीवन की रक्षा की जाए और इन उग्रवादी तत्वो को जिन्होने पजाब मे गत दो वर्षों से अशान्ति पैदा कर रखी है, उन्हे अविलम्ब गिरफ्तार किया जाए। सरकार की कुछ ढिल-मिल नीति के कारण पजाब के अनेको बेकसूर निरपराध व्यक्ति इन उग्रवादियो के द्वारा मारे गए हैं और ये क्रम अभी जारी है पजाब की स्थिति अत्यन्त विस्फोटक हो चुकी है। सरकार को शीघ्रातिशीघ्र इस स्थिति को नियन्त्रित करना चाहिए।

आर्य समाज बस्ती गुजा, जालन्धर, आर्य समाज शास्त्रीनगर बस्ती मिटठू जालन्धर, अड्डा होशियारपुर ऋषि कृष्ण पक्का बाग मुहल्ला गोबिन्दगढ जालन्धर आर्य समाज दयानन्द बाजार लुधियाना, स्वामी श्रद्धानन्द बाजार लुधियाना आर्य समाज धूरी आर्य समाज पटियाला, आर्य समाज शक्तिनगर अमृतसर, श्रद्धानन्द बाजार अमृतसर आर्यसमाज गोशाला रोड फगवाडा, आर्यसमाज नवाशहर आर्य स फगवाड आय समाज बगा, आर्य समाज भटिण्डा आर्य समाज पठानकोट, आर्य समाज मोरिण्डा आयसमाज फिरोजपुर, आर्य समाज कपूरथला, आर्य समाज फरीदकोट, आय समाज चण्डीगढ आदि ने इस काण्ड की घोर निन्दा की है।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले, श्री छोटूसिंह एडवोकेट प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, प्रो शेरसिंह आर्य प्र. नि. सभा हरियाणा, श्री सुबोधानन्द प्रधान आर्य प्र नि सभा हिमाचल प्रदेश सनातन धर्म सभा के प्रधान श्री र मोहनलाल ने इस बम काण्ड की कडी निन्दा की और जोरदार शब्दो मे पजाब सरकार से माग की गई कि इस घृणित कार्य के दोषियो को तुरन्त गिरफ्तार करके सख्त से सख्त सजा दी जाए।

### सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले द्वारा राष्ट्रपति शासन की माग

अखिल भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने माग की है कि पजाब मे या तो राष्ट्रपति शासन लागू किया जाए या राज्य को सेना के हवाले किया जाए ताकि अकाली आन्दोलन से प्रभावशाली ढंग से निपटा जा सके।

एक प्रैस कान्फ्रैंस को सम्बोधित करते हुए श्री रामगोपाल शालवाले ने कहा कि पजाब मे स्थिति स्पष्ट रूप से मुख्यमन्त्री श्री दरबारासिंह के हाथो से निकल रही है और सरकार की कमजोरी के कारण उग्रवादी शक्तिशाली बन रहे हैं।

—

## एक ओर से अकाली दूसरी ओर से सरकार हिन्दुओं पर गोलियां बरसा रही है-वीरेन्द्र

(कार्यालय प्रतिनिधि)—करतारपुर मे श्री गुरु विरजानन्द स्मारक मे पजाब हिन्दू सगठन की विशेष बैठक प्रो॰ अमरनाथ शर्मा की अध्यक्षता में हुई। बैठक मे सोढल मन्दिर विवाद पर गहराई से विचार किया गया और चेतावनी दी गई कि यदि 15 दिन के अन्दर वहा से निशान साहिब न हटाया तो सासदो व विधायको का घेराव किया जाएगा।

बैठक मे अमृतसर, पटियाला, कपूरथला, जालन्धर लुधियाना, सगरूर व फिरोजपुर के बहुत से हिन्दू नेता शामिल हुए। दैनिक वीर प्रताप और प्रताप के सचालक तथा आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र ने अपने भाषण मे कहा कि पजाब के हिन्दू चारो ओर से घिर गए हैं। पहले मुकाबला अकालियो से था, परन्तु अब सरकार के साथ भी करना पड रहा है। एक ओर से अकाली और दूसरी तरफ से सरकार हिन्दुओ पर गोलिया बरसा रही है।

श्री वीरेन्द्र ने कहा कि अकाली हिन्दुओ के खिलाफ जो नही कर सके वह जालन्धर मे सरकार ने कर दिखाया। उन्होंने जालन्धर के हिन्दू युवको द्वारा किए गए सघर्ष की सराहना करते हुए कहा कि आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब को उन पर गर्व है।

हिंदुओ की परीक्षा की घडी आ गई है। अत सब हिन्दू एक होकर इसका मुकाबला करने के लिए तैयार हो जाए। श्री वीरेन्द्र ने कहा कि सरकार ने अपने सरक्षण' मे बाबा सोढल मन्दिर जालन्धर में निशान साहब गडवा दिया।

उन्होने कहा कि यह हिन्दुओं के लिए एक चुनौती है। श्री वीरेन्द्र ने इस सघर्ष मे शहीद हुए पाचो हिन्दू युवको को भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की व तत्पश्चात् 2 मिनट का मौन रखा गया।

---

1- सत्यार्थ प्रकाश, महाभाष्य तैयार कराने को पैसा नही था। हम यह चाहते हैं कि आय विद्वान् बिना साधन के इस काम को कर दें।

2- महर्षि को गालिया देने वाले ग्रन्थ वेदार्थ परिज्ञात के उत्तर पर हम एक हजार का पारितोषिक रिखाना चाहते हैं। ऐसी गालिया लिखो के गुरु को कोई देकर देश से उसकी लाश सडक पर पडी दिखाई देगी।

3- वेदो का ऋषिकृत भाष्य का अग्रेजी अनुवाद कराने को पसा नहीं है।

4- हिन्दी अनुवाद ·) महर्षि का

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

जो छापा वह उन कमकों के सुपुर्द कर दिया जो वेद का प्रसार नही चाहते थ महामूल्यता पूर्ण सस्करण छापा है।

5- यह अग्रेजी भी ससार के एक छोटे से टुकडे पर बोली जाती है। इटली के लोग अग्रेजी नही जानते वहा दुभाषं मे से हमे काम लेना पडता है। वहा के लोग उनकी भाषा मे वेद का अनुवाद चाहते हैं। इसी प्रकार अन्य देश भी।

6 शास्त्रार्थ समाप्त कर दिए यह मिथ्या प्रोपेगण्डा करके कि अब शास्त्रार्थ का युग नहीं है। [illegible] व्याख्यान रट लेते हैं। उत्सव तीन दिन ही होता है। बाकी पढ़ने की कोई आवश्यकता नही है।

7 दूसरे देशो में जाकर हमारे उपदेशक प्रवासी भारतीयो मे प्रचार करके लौट आते है।

यह सब इसी का परिणाम है कि गौ म'ता की जय। इस्लामीकरण का नारा लगाना हिन्दी भाषा अमर रहे हम से सारी बातें पीछे पड गई क्योंकि नेता जी की योग्यता उतनी ही है।

अब आर्य समाज के सगठनो द्वारा उन कामो को करो जिन्हे केवल आर्य समाज ही करेगा।

जिन बातो मे सारा देश सहयोग दे रहा है उनका गो कृष्णादि रक्षिणी सभा के समान विभाग सगठन बना कर काम वहा करो। हमारे व्यक्ति जो केवल इस योग्यता के ही हैं वे वहा जा कर नेतृत्व करें, आर्य समाज के सगठनों की जान छोड दें वहा उस योग्यता के व्यक्तियों को काम करने दें जो वेदों के पूर्णज्ञाता सिद्धातो के मर्मज्ञ और देश देशान्त की भाषाओ के जानने वाले हैं। इसी में महर्षि के मिशन का हित है।

—

# सम्पादकीय

## आवश्यकता है सरदार पटेल की

राजनीति बड़ी टेढ़ी चीज है। इसमें प्रत्येक व्यक्ति सफल नही हो सकता। राजनैतिक व्यक्तियो को भारतीय नीति शास्त्र अवश्य पढ़ने चाहिए। जो हमारे विद्वान महापुरुषो के जीवन अनुभव और प्रखर बुद्धि के द्वारा निर्मित हैं। आज की सभी समस्याओ का हल भारतीय नीति शास्त्रो में मिल जाता है परन्तु एक समस्या है आज के राजनैतिक लोग विदेशी भाषा अग्रेजी तो जानते हैं परन्तु उन्हे भारतीय भाषा हिन्दी व संस्कृत नहीं आती। अग्रेजी या दूसरी भाषाओ मे यह ज्ञान है नहीं। इसीलिए आज राजनैतिक लोग समस्याओ को सुलझाने के स्थान पर और उलझाते चले जा रहे हैं। भारत ऋषि मुनियो का देश है यहा अशान्ति पैदा नहीं हो सकती परन्तु आज तो भारत के नेता भारतीयता से दूर जा रहे हैं और विदेशियो की नीति फूट डालो और राज करो को ही अपनाकर अपने आपको तथा अपने देश को मलियामेट करने पर तुल हुए हैं।

पजाब मे क्या हो रहा है ? यहा कोई बहुत बड़ी समस्या नही है जिसे सुलझाया नही जा सकता। परन्तु राजनैतिक लोगों ने उसे इतना उलझा दिया है कि अब उसे सुलझाना कठिन हो गया है। जिस समय निरकारी और सिखो में सघर्ष आरम्भ हुआ तो सत्तारूढ दल ने उसे इसलिए सुलझाने का या दबाने का यत्न नही किया क्योकि इस लड़ाई मे उसको लाभ था उसको आशा थी कि इस फूट से उसका वोट पक्का हो रहा है। इसलिए निरकारियो का पजाब मे सरे आम कत्ले आम हो रहा है और आज तक किसी भी कातिल को पकड़ा नही गया। इसी के साथ हिन्दू और सिखो मे भी सघर्ष आरम्भ हो गया। निरकारियो के साथ हिन्दुओ को भी कत्ल किया जाने लगा। सरे आम बाजारो मे गोलिया बरसाई जाने लगी। निरपराध लोग मारे जाने लगे। सरकार के व्यक्ति ब्यान देते रहे कातिलो को मार दिया जाएगा कुचल दिया जाएगा कातिलो का सुराग लगा लिया गया वह शीघ्र ही पुलिस की पकड़ मे आने वाले हैं। पुलिस कातिलो के समीप पहुच गई। कुछ समय बीतने पर घोषणा हो जाती थी कातिल विदेशो मे भाग गए। गुरुद्वारो में छिप गए। हिन्दू और सिखो मे लगी आग आज भड़क कर शोला बन चुकी है। इसमे सभी कुछ जलकर नष्ट होने को है परन्तु न भारत सरकार को इसकी चिन्ता है और न पजाब सरकार को ? क्योकि आज तक की बम विस्फोट घटनाओ और गोली काण्डो मे या तो निरकारी मरे हैं या हिन्दू। हा, कुछ राजनैतिक लोगो के निवास स्थान आदि पर बम विस्फोट हुए हैं परन्तु उनमे मरा कोई नहीं। इसके पीछे क्या राज है यह समझ मे नही आता।

पजाब की समस्या दिन प्रतिदिन उलझती जा रही है परन्तु इससे न भारत सरकार चिन्तित दिखाई पड़ती है न पजाब सरकार। अगर चिन्तित है तो वह वर्ग है जो धार्मिक है। राजनैतिक वर्ग को इसकी कोई चिन्ता नही। वह अगर कही किसी ब्यान में चिन्ता प्रकट करते हैं तो केवल दिखावा मात्र है। क्योकि अगर भारत सरकार या पजाब सरकार को इसकी चिन्ता होती तो यह समस्या तुरन्त सुलझ जाती।

अब यह समस्या और भी दिन प्रतिदिन बढ़ती चली जा रही है। इन गोली काण्डो और बम काण्डो के साथ अब हिन्दुओ के मन्दिरो और धर्म स्थानो पर भी कब्जा किया जाने लगा। अब बमो से मन्दिरो को उड़ाने की धमकिया दी जा रही हैं। एक व्यक्ति को कत्ल करके भाले पर उसका सिर टाग कर घोड़ो पर चढ़कर निहग उसे बाजारों मे हिन्दुओ को डराते धमकाते हुए घूमते हैं इससे बढ़कर और क्रूरता क्या हो सकती है सरकार का नियन्त्रण कहा है। इन सारे दृश्यो को देख कर हैरानी होती है कि आखिर सरकार इससे अधिक और क्या चाहती है। पजाब विनाश के कगार पर खड़ा है। एक झटके के साथ सब कुछ नष्ट हो जाएगा। एक वर्ग बारूद और हथियार जमा करता जा रहा है। सरकार को इसकी पूरी जानकारी है। वह ट्रेनिंग देकर एक सेना तैयार कर रहा है। बैंको मे डाके पड़ रहे हैं बड़े 2 हिन्दू व्यापारियों के घरो पर व दुकानो पर डाके पड़ने आरम्भ हो गए हैं। यह सब कुछ जानते हुए और देखते हुए भारत सरकार क्यो चुप है कुछ समझ मे नही आता।

आज आवश्यकता है सरदार वल्लभ भाई पटेल जैसे महान राजनीतिज्ञ की जिसने भारतीय नीति शास्त्र को पढ़ा था। उन्होंने अपनी नीति के बल पर एक झटके के साथ ही सारे भारत की रियासतों को तोड़ कर एक कर दिया था। उनके सामने भी आज की तरह सिखो ने कहा था मुसलमानो को पाकिस्तान मिल गया हिन्दुओ को हिन्दुस्तान मिल गया। हमे क्या मिला। इसका जो मुह तोड़ उत्तर सरदार पटेल ने दिया था वह सारे देशवासी जानते हैं उसके बाद किसी को सिर उठाने की हिम्मत नही हुई। आज भारत सरकार को ऐसे राजनीतिज्ञो की आवश्यकता है निर्भीक और उत्साही नेता की आवश्यकता है जो पजाब की समस्या को दो दिन मे समाप्त कर दे। अगर पजाब की समस्या को भारत सरकार सुलझाना चाहे तो इसे सुलझाना कोई कठिन नही। केवल ऐसे नेता की आवश्यकता है ?

## क्या आप आर्य समाजी है ?

आज जो स्थिति पजाब मे पैदा हो गई है इसे देखकर कई आर्य बन्धु प्रश्न करते हैं ऐसी स्थिति मे आर्य बन्धुओ को क्या करना चाहिए ? पजाब जल रहा है आर्य समाज मौन होकर नही बैठ सकता। इसी लिए उसके सामने प्रश्न है कि हम इस समय क्या करें ?

जालन्धर मे गत दिनो बड़ा कड़ा कर्फ्यू लगा हुआ था लोग अपने घरो मे बन्द थे। परन्तु फिर भी अपनी गलियो मे इकट्ठे होकर पजाब मे पैदा हुई समस्याओ पर विचार करते थे। मैंने भी इसी विचार से अपने मोहल्ले और उसके बाद जहा तक जाया जा सकता था दूसरे मोहल्लो मे भी घूमना आरम्भ कर दिया। जहा कुछ लोग खड़े होते थे या बैठे होते थे मैं भी उनके पास खड़ा हो जाता। आवश्यकता पड़ने पर बैठ जाता और कोई बात छेड़कर लोगो के विचार लेता। कोई तो पुलिस वालो का रोना रोता था कि उन्होंने अमुक मोहल्ले के लोगो पर बड़े अत्याचार किए। बिना किसी बात के डण्डे बरसाए। परन्तु यह सब हिन्दुओ पर अत्याचार हुए किसी सिख को कुछ नही कहा कई लोग पुलिस द्वारा चलाई गई गोलियो और उनसे मरने वाले हिन्दू युवको की चर्चा भी अक्सर करते। कोई सरकार की कारगुजारी पर रोता कि यह सब कुछ सरकार करा रहा है और कर रही है। कोई अकालियो पर बरसता और कहता इन्होने पजाब मे अशान्ति पैदा कर दी है। मोहल्ले मे जो लोग वर्षों से रहते हुए भी एक दूसरे को नही जानते थे क्योकि प्रात होते ही सभी अपने कामकाज पर चले जाते और साय होने पर घर आते किसी से मिलने का और किसी से बात करने का किसी के पास समय न होता। परन्तु कर्फ्यू ने सभी को जहा घर बिठा दिया वहा एक दूसरे से अच्छी तरह मिला भी दिया।

एक स्थान पर ऐसे ही चर्चा चल रही थी जब मैंने उनके सामने विचार रखा कि हम लोग ऐसे बैठ कर गप्पे न हाके आगे कुछ करने का निश्चय करें। जो स्थिति पैदा हो गई है उसमे निपटने के लिए भी हमे कुछ विचार करना चाहिए। जो गरीब प्रतिदिन एक रुपया दो रुपया की चीज बाजार से खरीद कर प्रतिदिन की अपनी रोटी चलाते हैं उनके घरो मे भी चूल्हा जला या नही। यह हमे देखना चाहिए। किस के पास आटा नही है किसके पास दाल नही है हम कहा से और कैसे इसे दे सकते हैं। ऐसी बातो पर विचार करना चाहिए और साथ ही हिन्दुओ के सगठन को मजबूत बनाने के लिए कोई योजना बनानी चाहिए। इन दिनो ऐसे ही गप्प हाकना इधर उधर की बात करना ताश खेलना कोई लाभकारी नहीं। जो कीमती समय हमारा कर्फ्यू के लगने से बच गया है। इस समय की कीमत को समझते हुए इसको ऐसे ही न खोए।

एक सज्जन झट से बोल उठा। क्या आप आर्य समाजी हैं। क्योकि ऐसी बात आर्य समाजी ही करता है। आर्य समाजी को इतनी अपनी चिन्ता नही जितनी दूसरो की होती है। पाकिस्तान बनने से पहले पजाब मे आर्य समाज का बड़ा प्रचार था लाहौर आर्य समाज का गढ़ था। मैं भी लाहौर मे रहता था। वहा मैंने आर्य समाज के बड़े 2 नेताओ के भाषण सुने जिन्हे मैं आज तक भी नही भूला परन्तु अब लगता है आर्य समाज भी सो गया है। न वह प्रचार है न वह काम अब आर्य समाज कर रहा है जो इसे करना चाहिए। इसी प्रसग मे एक व्यक्ति और बोल उठा आर्यसमाज आज भी चुप नही बैठा है आज भी वह कार्य रहा है श्री वीरेन्द्र जी के लेखो ने पजाब मे अच्छी जागृति पैदा कर दी है। यह विचार थे उन लोगो के आर्य समाज के बारे मे।

बात तो बहुत होती रही परन्तु मैं आर्य बन्धुओ से एक बात कहना चाहता हू। आज भी हमारे ऊपर लोगो की बड़ी आस्था है। लोग आप से आशा रखते हैं कि हम उनकी रक्षा कर सकते हैं उन्हे एक अच्छी दिशा दे सकते हैं। विशेषकर पजाब के आर्य समाजियो को अब प्रत्येक नगर मे जनता का मार्ग दर्शन करना चाहिए और वर्तमान सकट का मुकाबला करने के लिए कमर कस लेनी चाहिए। तन मन धन से जनता की सेवा मे जुट जाए। आर्य समाज की जो छवि कुछ धूमिल सी हो गई थी उसे फिर निखार दें। आर्य समाज एक धार्मिक सस्था है और वर्तमान स्थिति मे धार्मिक लोग ही देश को बचा सकते हैं।

सह सम्पादक

# महाभारत कालीन दिव्यास्त्र : एक लघु विश्लेषण

ले —श्री महावीर जी नीर विद्यालंकार गु कु कांगड़ी

आज विज्ञान अपने चरमोत्कर्ष पर पहुचने को उत्सुक है। वह (पदार्थ विद्या) विज्ञान महान संहारक शक्ति का उत्पादन कर रहा है वही मनुष्य की सुख सुविधा के अनेक साधन जुटाने मे भी लगा है।

इतना होने पर भी आज विश्व मौत के कगार पर खड़ा है। मानव आधुनिक तम शस्त्रास्त्रो की विभीषिका से त्रस्त है। अमरीका द्वारा 'न्यूट्रोन बम बनाने की घोषणा ने तो सारी मानव जाति को भयाक्रान्त कर डाला है। हिरोशिमा और नागासाकी के भयकर दृश्य का स्मरण कर यकायक रोगटे खड़े हो जाते हैं। आज बटन दबाते ही भयकर विस्फोटक पदार्थों से लैस राकेट विमान शत्रुपक्ष का महाविनाश करने मे सक्षम हैं। आज सभी राष्ट पड़ोसी राष्ट की संहारक शक्ति का निर्माण करने मे जुटे हैं। एक दूसरे से भय और वैमनस्य का यह पिशाच ही विश्वशान्ति के लिए खतरा बना बैठा है। और मानवता के सभी आदर्श उसके सामने एक दम ओझल हो जाते हैं। पगु हो जाते हैं। इन विस्फोटक पदार्थों से समस्त ससार को तीन चार बार ध्वस्त किया जा सकता है। वस्तुत युद्धो की डरावनी छाया किसी के लिए भी कल्याणकारी नही हुआ करती। विनाश के पश्चात पश्चाताप की ज्वालाओ से मन का सकोमल तन्तु जला करता है।

आज से हजारो वर्ष पूर्व भी महाभारत के सग्राम की अतिम परिणति पश्चाताप मे ही हुई थी। विनाशकारी युद्धो का परिणाम ऐसा ही होता है। महाभारतीय इतिहास वास्तव मे एक गृह युद्ध का इतिहास है। कौरवो और पाण्डवो के इस भयानक युद्ध मे उनके अनेक सम्बन्धियो और उनसे स्नेह व मधुरता रखने वाले अनेक देशो के राजाओ ने साथ दिया। केवल दो वीर ऐसे थे (राजा रुक्मी और (बलराम) जो इस युद्ध से विरत रहे।

साधारण प्रजाजनो का अनुचित सहार न हो एतदर्थ कौरवो और पाण्डवो ने हस्तिनापुर से दूर कुरुक्षेत्र के मैदान मे पश्चिमाभिमुख और पूर्वाभिमुख होकर जब युद्ध की इच्छा से डेरे डाल दिए तब दोनो ही ओर के राज्य प्रत्याशियो ने अपनी अपनी वीर मण्डली के चुने हुए योद्धाओं से युद्ध प्रसग मे सभाए की। महाभारत के उद्योग पर्व मे वर्णित यह प्रसग इतना सटीक, इतना सुन्दर तथा उस समय के वीरो के चरित्र तथा वैज्ञानिक उन्नति का यह साकार चित्र प्रस्तुत करता है कि, पढ़ते ही बनता है।

## कौरव-पक्ष की रात्रिकालिन सभा

अपने अपने स्थानो पर विराजमान भीष्म पितामह, द्रोणाचार्य कृपाचार्य, अश्वत्थामा और कर्ण से महाराज दुर्योधन ने सामयिक एव सामरिक प्रश्न करते हुए कहाकि आप सभी महान पराक्रमी वीर हैं। दिव्यास्त्रो के ज्ञाता है। युद्ध विद्या मे निष्णात हैं मैं आपसे यह जानना चाहता हू कि आप कितने कितने समय मे पाडव पक्ष को युद्ध मे परास्त कर सकते हैं।

तब सबसे पूर्व वयोवृद्धभीष्मपितामह अपने बल एव शस्त्रास्त्र ज्ञान के आधार पर बोले कि मैं 1 मास मे पाडव पक्ष को परास्त कर सकता हू। तदनन्तर द्रोणाचार्य बोले मैं भी अपने बल एवं शस्त्रास्त्र ज्ञान के आधार पर दो मास मे पाडव वीरो को परास्त कर सकता हू। कृपाचार्य बोले राजन ! मैं भी दो ही मासो मे यह कार्य कर सकता हू। सुयोधन ने युद्ध वीर अश्वत्थामा से पूछा द्रोण पुत्र अश्वत्थामा ने अपने बल एव युद्ध ज्ञान के अनुसार 15 दिन मे पाडव पक्ष को मार गिराने की बात कही। अन्त मे कर्ण ने कहा सुयोधन मैं 5 दिन मे पाडवों सहित समस्त शत्रु पक्ष को यमालय भेज दू गा।

इस प्रकार कौरव वीरो के मध्य युद्ध प्रसग मे हुए इस विचार विमर्श का पता जब महाराज युधिष्ठिर को हुआ तो चिन्तित होकर उन्होने भी पाडव वीरो की सभा बुलाई।

## पाण्डव पक्षीय वीरसभा

अब पाडव पक्ष की वीर सभा को सम्बोधित करते हुए महाराज युधिष्ठिर ने समस्त वीरो के समक्ष कहाकि वीर वरो ! कल युद्ध होने वाला है। बताओ आप लोग कितने समय मे कौरव बल का सहार कर सकते हैं। युधिष्ठिर के ऐसा कहने पर पाडव वीर सभा स्तब्ध रह गयी। सब वीर एक दूसरे का मु ह ताकने लगे।

तब चारों ओर दृष्टिपात कर कुन्ती पुत्र अर्जुन खड़े हुए और इस प्रकार बोले 'राजन ! यदि आप मुझे विशेष आज्ञा दे, तो मैं एक क्षण मे समस्त भू-मण्डल को इन वीरो समेत नष्ट कर सकता हू। यह मैं क्यों कर सकता हू इस तथ्य का ज्ञान न तो पितामह भीष्म को है, न गुरु द्रोणाचार्य को और न ही कृपाचार्य को। फिर अश्वत्थामा और कर्ण को तो इस बात का पता कहा से होगा ? राजन् ! मेरे पास महाविनाशकारी पाशुपतास्त्र' है। राजन ! आपके मन की चिन्ता व सन्ताप दूर हो क्योकि —

'व्येतु ते मनस्ताप यथा सत्य ब्रवीम्यहम।
हन्यामेकरथेनैव वासुदेवसहायवान ॥
सामरानपि लोकास्त्रीन सर्वान स्थावर जङ्गमान।
भूत भव्य भविष्य च निमेषादिति मे मति ॥ उद्योग पर्व। अ 194
यत तद् घोर पशुपति प्रादादस्त्रं महन्मम।
कैराते द्वन्द्व युद्ध वु तदिदमपि वर्तते ॥ 14
तन्न जानाति गाङ्गेयो न द्रोणो न च गोतम।
न च द्रोण सुतो राजन कुत एव तु सूतज ॥ 15

अत युद्ध विधान के अनुसार विपक्षी जिस प्रकार के शस्त्रास्त्रो का प्रयोग करता है। उसी प्रकार के शस्त्रास्त्रों का प्रयोग करना अभीष्ट है। और युद्ध मे साधारणजनो को दिव्यास्त्र से मारना भी उचित नहीं। इसलिए जैसा शत्रु पक्ष युद्ध करेगा उसी के अनुसार लड़ाई होगी।

इस प्रसग को उद्धृत करने का अभिप्राय केवल इतना ही है कि महाभारत काल मे विज्ञान की महती उन्नति हो चुकी थी। इस भौतिक उन्नति का सबसे उत्कृष्ट नमूना वह भवन था जिसे देखकर दुर्योधन स्तब्ध रह गया था। उसे दरवाजे की जगह दीवार और जल के स्थान पर थल और थल के स्थान पर जल नजर आया था और जिसने सुयोधन की ईर्ष्या को और भी भड़का दिया था। उस समय युद्ध सुविधाओ के लिए विज्ञान ने जहा अनेक साधन जुटाये थे वहा आधुनिक एटम बम के समान उस समय पाशुपतास्त्र एव 'नारायणास्त्र का निर्माण हो चुका था। ये अस्त्र शत्रु सेनाओ को ही नही अपितु दूर दूर तक प्रदेशों को भी(भूत भव्य भविष्य)तबाह करने मे समर्थ थे। इन्ही अस्त्रो को उस समय 'दिव्यास्त्र कहा जाता था, क्योंकि साधारण शस्त्रास्त्रो की अपेक्षा इनकी सहारक शक्ति विलक्षण थी, दिव्य थी उत्कृष्ट थी। आज के 'एटम बम आदि भी साधारण अस्त्र नहीं हैं विलक्षण हैं, दिव्य हैं।

इन दिव्य-अस्त्रों के ज्ञाता को उस समय अप्रतिम वीर समझा जाता था। उनके आविष्कार को देवत्व कोटि मे समझा जाता था। राष्ट्र मे उनका सम्मान होता था। आज भी ऐसे विलक्षण कार्य करने वाले को सभी राष्ट विशिष्ट पुरस्कारों से सम्मानित करते हैं। अर्जुन के रथ का निर्माण करने वालो को देव कहा है। तथ्य लेख में आगे बताए गे। इन अस्त्रा स्त्रो की प्राप्ति भी कोई साधारण बात नही थी अपितु जिस प्रकार आज के वैज्ञानिक इ जीनियर दिन रात इसके लिए तपस्या करते हैं दूसरे देशो में जा कर टेक्नीक सीखते हैं वैसे ही उस भूत-काल मे भी जिज्ञासु ब्रह्मलोक विष्णुलोक इन्द्रलोक, पाताललोक आदि (लोक) राजाओं के राज्य (स्थान) मे जाकर इन दिव्यास्त्रो का ज्ञान प्राप्त करते थे। महाभारत मे आगामी युद्ध की आशका का ध्यान करके 'वन पर्व मे युधिष्ठिर अर्जुन और भीम को अस्त्र विद्या प्राप्ति के लिए भेजते है। महाभारत में दिव्यास्त्रों के विषय में निम्न श्लोक आता है —

'आग्नेयं वारुण सौम्यं वायव्यमथ वैष्णवम।
ऐन्द्र पाशुपत ब्राह्म पारमेष्ठ्य प्रजापते ॥121 40 4
धातुस्त्वष्टुश्च सवितुर्दिव्यमन्तकयापि वा ॥

इसी प्रकार एक दूसरे की काट करने वाले अस्त्रो का प्रयोग भी उस समय होता था। श्री मद भागवत् पुराण मे उनका इस प्रकार वर्णन है —

ब्रह्मास्त्रस्य च ब्रह्मास्त्र वायव्यस्य च पार्वतम।
आग्नेयस्य च पार्जन्य नैव पाशुपतस्य च ॥
मोहमित्वा तु मिहिर यन्त्रपास्तोष जृम्भितम् ॥
भाग स्क, 401 अ 73 श्लो 13।14

अर्थात ब्रह्मास्त्र की काट ब्रह्मास्त्र, आग्नेयास्त्र की काट पर्जन्यास्त्र वायव्यास्त्र की काट पार्वतास्त्र। पाशुपतास्त्र की काट नारायणास्त्र। इसके अतिरिक्त तिमिरास्त्र की काट भास्करास्त्र तथा मोहनास्त्र की काट प्रज्ञास्त्र थे।

उस समय दो वीर ऐसे थे जो इन अस्त्रो का सम्यक ज्ञान रखते थे। एक श्री कृष्ण दूसरे गाण्डिवधारी अर्जुन।

समाप्त

# आर्य बन्धुओं के विचारार्थ

## ले॰—आचार्य भद्रसेन जी के सुझाव

इस शीर्षक से 12 जून के आर्य मर्यादा में एक लेख प्रकाशित हुआ है। जिसके सम्बन्ध मे विचारणीय है कि—

1 श्रद्धा का अर्थ है, सत्य को ग्रहण करना सत्य के ग्रहण से ही हर एक का भला होता है। अत प्रत्येक हित चाहने वाले को सदा सत्य का ग्रहण करना चाहिए। हा यदि सत्य को छोड कर किसी बात मे विश्वास करने को श्रद्धा कहा जाए तो यह श्रद्धा शब्द का सही अर्थ नहीं है। इस स्थिति मे विचार शील खिन्न हो कर नास्तिकता को अच्छा समझने लगता है। अत दूर दर्शिता की मांग है कि सच्चाई को कभी भी हाथ से निकलने नही देना चाहिए।

2 वेद के एक हजार मन्त्रो का अर्थ सहित सुन्दर प्रकाशन हो। जिस में सरस सरल भाषा में बिना खींचतान के सर्वजन उपयोगी विचारो से सम्बद्ध मन्त्रो का सकलन हो। इस योजना को पूर्ण करने के लिए किसी विद्वान की सेवाए लेनी चाहिए। विदेह जी का वेदालोक इस दृष्टि से सहायक हो सकता है। 2 4 यहा तक उस के प्रकाश की बात है। ऐसा करने से आर्य समाज का मूल मन्तव्य ही समाप्त हो जाएगा। आत्मा की हत्या करके शरीर को सजाने का क्या लाभ? इस से धन तो प्राप्त हो जाएगा, पर मूल मन्तव्य हाथ से निकल जाएगा। आर्य समाज का मूल मन्तव्य है कि सर्वज्ञ परमात्मा की ही उपासना भक्ति प्रार्थना अवश्य करनी चाहिए। वह सर्वज्ञ होने से भक्त की भावना को समझता है। जो भक्त की भावना को नहीं समझता उसके प्रति उपासना प्रार्थना का व्यवहार सार्थक नहीं।

प्रणाम कर के शीश झुकाने और धन भेंट की प्रथा से अन्त में यही धन का एक मात्र रूप बन कर रह जाएगा। इसी को सब कुछ समझ कर भक्त सन्तुष्ट हो जाएंगे। जहां जहा ऐसा रूप है, वहा वहा यही व्यवहार स्पष्ट सामने आ रहा है। 5 वेद और सत्य के प्रचार के लिए विविध संस्कारों को सुन्दर ढग से आयोजित करना चाहिए। पर प्रत्येक ढग जड़ को सींचने वाला हो न कि पत्तो को पानी के समान आडम्बरपूर्ण।

6 मृत्यु विषयक एक ऐसी सरल-पुस्तक अवश्य प्रकाश में आनी चाहिए। जो इस अवसर पर दुखी व्यक्तियों के प्रति सहानुभूति के दो शब्द व्यक्त करें। जिस को पढ और सुन कर परिवार धैर्य से इस वियोग के असह्य दुख का सहन कर सके। जिस मे मृत्यु सम्बन्धी इस अवसर पर उभरने वाली बातों का हल भी आम जनता की दृष्टि में हो। इस दृष्टि से लेखक की ("वियोग वेदना) सहायक हो सकती है।

7 प्रचार की हर योजना सहायक हो सकती है। हा वह इतनी व्यावहारिक हो कि दूसरो के लिए बाधक जबरदस्ती थोपने वाली बात न हो। युक्ति सगत बात युक्ति सगत ढग से प्रस्तुत करना ही उचित है।

8 समाज के सभी वर्गों से सम्पर्क करना एक प्रचारक संस्था के लिए एक अच्छा सहायक काम है। और यह अपनाना चाहिए।

9 हरिद्वार में अस्थि प्रवाह जब वैदिक रीति नही है तो आर्य समाज उस की व्यवस्था कैसे कर सकता है। यह ठीक है कि देखा-देखी अब सब वहा जाने लगे हैं। इससे यह वैदिक और ऋषि भावना के अनुकूल तो नही हो सकता। ऐसी स्थिति मे सिद्धात विरुद्ध कार्य की प्रवृत्ति का क्या लाभ?

10 11 12 योजनाए उपयोगी हैं। आर्य समाज का ऐसा बहुत सारा साहित्य प्रकाशित भी है। जरूरत तो है कि ऐसे कुछ कर्मठ कार्यकर्त्ता आगे आए और इन योजनाओ को लागू करने के लिए कटिबद्ध हो। भाई धर्मवीर जी अपने कुछ साथियो को साथ लेकर स्थानीय समाज के सहयोग से पहल करें। लगन वाले व्यक्ति ही आगे आ कर पहल करते हैं। यही फिर समय के साथ सभी के पथ प्रदर्शक बनते हैं। ऐसे ही समय के साथ सही अगुआ सिद्ध होते हैं। इसी लिए सब से बड़ी जरूरत यही है कि कुछ कर्मठ कार्यकर्त्ता रचनात्मक कार्य पूर्ण करने के लिए हिम्मत से काम लें।

आर्य बन्धुओ के विचारार्थ इस शीर्षक से श्री धर्मवीर जी (सगरूर) का पत्र जो सभा महामन्त्री के नाम आया था 12 जून के अक मे प्रकाशित किया गया था। इस पत्र के उत्तर मे कई पाठको ने अपने विचार भेजे है। हम यहा आचार्य भद्रसेन जी और श्री मुलखराज जी प्रधान आर्य समाज भगत सिह कालोनी के विचार प्रकाशित कर रहे है।

—सह सम्पादक

## श्री मुलखराज जी के सुझाव

माननीय श्रीमान मन्त्री जी
आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब
सादर नमस्ते।

सेवा मे निवेदन है कि 12 जून 1983 का जो आर्य मर्यादा प्राप्त हुआ है उसमे आर्य बन्धुओ के विचारार्थ एक पत्र प्रकाशित हुआ है जिसका उत्तर लिखना आवश्यक हो गया है।

1 यह ठीक है कि आज आर्यसमाज म श्रद्धा बिल्कुल समाप्त होती जा रही है इसके लिए जो सुझाव है कि वेदो का कोई ऐसा सस्करण आर्य समाज प्रकाशित करे जिसमे चारो वेदो के एक हजार प्रमुख मन्त्र अर्थों सहित दिए गए हो सस्करण का आकार व रूप रग आदि सब गुरु ग्रन्थ साहिब जैसा हो। यह ठीक है।

2 दूसरे सुझाव पर भी हम यहा तक तो सहमत हैं कि आर्य परिवारो मे वेद का पाठ किया जाए। परन्तु उस तरह स नही जिस तरह सिख भाई अपने परिवारो मे ग्रन्थ साहिब का प्रकाश करते हैं तथा दो दिन पाठ करते हैं।

3 तीसरे हम इस पर सहमत नही हैं कि वेद का प्रकाश करके उसके द्वारा धन इकट्ठा किया जाए। हा यज्ञ के निमित्त लोग दान द तो कोई हानि नही चढावा न चढाया जाए।

4 चौथे यह तो ठीक है कि आर्य समाजो मे सज धज के साथ वेदो की स्थापना हो। सभी आर्य समाजो मे चारो वेद सजाकर रखे हो परन्तु इन वेदो पर शीश झुकाना धन भेंट चढाना ऐसा रिवाज डालना हानिकर है क्योकि इससे आर्य समाज के सिद्धान्तो का हनन होगा। फिर मूर्ति पूजा और इस वेद पूजा मे क्या अन्तर रह जाएगा। क्या महर्षि दयानन्द जी ने कहीं मूर्ति पूजा से कोई समझौता किया है? ऐसी परिपाटी से आर्य समाज का स्वरूप ही बदल जाएगा।

5 पाचवे सुझाव से हम पूर्णतया सहमत हैं आर्य परिवारो मे विवाह आदि संस्कार वैदिक रीति अनुसार ही होने चाहिए।

6 छटा सुझाव भी ठीक है कि मृत्यु के उपरान्त शोक सन्तप्त परिवार को सान्त्वना देने के लिए कोई पाठ के लिए वेद मन्त्रो के आधार पर अर्थ सहित ग्रन्थ तैयार किया जाए नारायण स्वामी जी द्वारा लिखित मृत्यु और परलोक पुस्तक भी पहले से प्रकाशित है इसका भी पाठ किया जा सकता है।

7 जगराते की परिपाटी ठीक नही पहले ही लोग जगराने वालो से परेशान है जो रात भर सोने नही देते।

8 महर्षि ने हरिद्वार मे अस्थि प्रवाह का निषेध किया है। आर्य समाजियो को उसके लिए कोई व्यवस्था वहा करना उचित प्रतीत नही होता।

9 इस सुझाव से हम सहमत हैं कि साहित्य आर्य समाज को सस्ते से सस्ता प्रकाशित कर बाटना चाहिए

10 ग्यारहवे और बारहवे सुझावो का हम स्वागत करते है। दहेज के विरुद्ध आर्य समाज प्रबल आन्दोलन करे और रिश्ते नाते भी आर्य परिवार आपस मे बिरादरी वाद को त्याग कर करें

—

## नैष्ठिक ब्रह्मचर्य मण्डल

वैदिक सिद्धान्तो का जीवन का सम्बल बनाकर एव महर्षि दयानन्द का आदर्श सम्मुख रखकर अनेको युवक अपने जीवन को नैष्ठिक ब्रह्मचर्य व्रत के कठोर बन्धन से पवित्र रखते हुए स्वान्त सुखमय एव राष्ट्रहित मे सलग्न दिखाई देते हैं परन्तु उनका सगठित रूप न होने से शक्ति का सदुपयोग नही हो पाता एव सगति न होने से जीवन मे मूल्यवान कलाओ का सकलन नही हो पाता जब कि पारस्परिक सहयोग महानुभूति से एक विचार वालो को अत्यन्त उत्साह एव जागृति प्राप्त होती है और अकेलेपन से विचारो मे शिथिलता एव निरुत्साह होना है

इन प्रमुख कारणो स सगठन की महती आवश्यकता अनुभव करते हुए नैष्ठिक ब्रह्मचर्य मण्डल का आवश्यक प्रारूप तपोवन आश्रम देहरादून मे यति मण्डल की बैठक के समय स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती की शुभ प्रेरणा से निर्धारित किया गया

सदस्यता हेतु निवेदन—देश विदेश मे जो भी नैष्ठिक ब्रह्मचर्यव्रती हैं उनसे निवेदन है कि इस मण्डल के सदस्य बन। उसकी सूचना शीघ्र प्रधान नैष्ठिक मण्डल को देने की कृपा कर। जिन आर्य सज्जनो के या आर्य समाजो के सम्पर्क मे कोई नैष्ठिक ब्रह्मचारी हो तो उनको प्रेरित करके मण्डल को सूचित कर। आगामी कार्यक्रम शीघ्र ही निश्चित करके सूचित किया जाएगा।

मन्त्री—ब्र॰ आर्य नरेश वैदिक प्रवक्ता 49 ज्ञान सदन माडल बस्ती। नई दिल्ली 5

## आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी के वक्तव्य से सारा पंजाब जाग उठा

# गाय की चर्बी के प्रयोग पर सरकार प्रतिबन्ध लगाए

### शीघ विशष कदम उठान पर विचार किया जाएगा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री वीरे द्र जी ने भटिण्डा और चण्डीगढ के कछ कारखानो में गाय की चर्बी के प्रयोग किए जाने की चर्चा अपने वक्तव्य मे करत हुए उन्होने कहा—मैंने स्वय भटिण्डा मे जाकर कई ट्रक चर्बी से भरे हुए देखे हैं और अब तो यह भी पता चला है कि चण्डीगढ मे भी यही कुछ हो र है कछ व्यापारी अवध ढग से रुपया कमाने के लिए गऊ भक्तो की भा से खिलवाड कर रहे हैं। इस स भी अधिक खेद इस बात का है कि सरकार यह सब कछ देख रही है और इ रख नगारो के विरुद्ध कोई काय वाही नही कर रही देश का विधान गऊ हत्या की अनुमति नही देता। जो व्यक्ति गऊ हत्या करके उसकी चर्बी अवध ढग से किसी भी काम मे लाते हैं उनका यह अपराध अक्षम्य है।

आग उन्होने कहा यदि सरकार ने इसे न रोका तो इसके विरुद्ध आय समाज को कडा पग उठाना पडगा। यदि शीघ सरकार ने कोई कायवाही नही की तो आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की आगामी अन्तरग सभा मे सारी स्थिति पर विचार किया जाएगा और यदि आय समाज को इसके विरुद्ध कोई मोर्चा लगाना पडा तो वह लगाएगा। मैं पजाब के गऊ भक्तो से विशेषकर आयसमाजियो से कहना चाहता हु कि वे सघष के लिए तयार रहे

इस वक्तव्य से सारे पजाब मे जागृति पदा हो गई है आय समाज इस चर्बी प्रयोग के विरुद्ध प्रस्ताव पारित कर पजाब सरकार और भारत सरकार को भेज रही हैं तथा उसकी प्रतिलिपि उन्होने सभा को भी भेजी है। कई आय समाजो द्वारा पारित प्रस्ताव हमे प्राप्त हुए हैं। आय समाज स्वामी दयानन्द बाजार लुधियाना मे निम्न प्रस्ताव पारित किया—

आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार लुधियाना के साप्ताहिक सत्सग की यह बैठक पजाब सरकार से माग करती है कि पजाब तथा चण्डीगढ मे गाय की चर्बी को वनस्पति घी के रूप मे बेचने और प्रयोग करने का जो गम्भीर अप राध जो जो व्यापारी भी कर रहे हैं तथा भारत के समस्त हिन्दुओ की धार्मिक भावनाओं को भक्त ठस पहुचा रहे हैं उनके विरुद्ध शीघ अतिशीघ कानूनी कार्यवाही की जावे और इन दुष्ट व्यापारियो को सख्त सजा दी जावे। यह सभा पंजाब सरकार से यह भी माग करती है कि गाय की चर्बी किसी भी मकसद के लिए प्रयोग करना तरत बन्द कराई जाय। और इसकी बिक्री के लाईसस शीघ कैंसल किये जाय। जिन अधिकारियों या अफसरो की मिली भगत से व्यापारी यह नीच काम कर रहे है उनके विरुद्ध शीघ कायवाही की जावे।

यदि पजाब और चण्डीगढ मे गाय की चर्बी का प्रयोग बन्द न किया गया तो सरकार के विरुद्ध हिन्दुओं को मिल करके एक आन्दोलन चलाने पर विवश होना पडेगा। इस प्रकार के प्रस्ताव और भी समाजो से प्राप्त हो रहे हैं। अमृतसर का प्रस्ताव इस प्रकार है—

दिनाक 19 6 83 रविवार को एक सब साधारण बठक में निम्नलिखित प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास हुआ और आर्य समाज माडल टाऊन ने यह निर्णय लिया

1 पजाब में किसी कारखाने अथवा किसी अन्य अदारो मे जो मास अथवा चर्बी के प्रयोग पर वा निकालने पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाया जावे और विरोध मे पजाब पुलिस को अधिकार दिए जावें कि वह पूर्ण हस्ताक्षप कर।

2 आय समाज के अधिकारीगण और अन्य हिन्दू सस्थाओ के सहयोग से ऐसे कारखानों का घराव पूर्ण शक्ति से करें। इन प्रस्तावो की प्रतिया सभी सस्थाओ को भेजी जाय।

---

### स्वप्न दोष

स्वप्न दोष हटाने के लिए कब्ज निवारक और सुपाच्य भोजन होना चाहिए। सवेरे फल दूध दोपहर और साय को चोकर समेत आटे की रोटी और हरि तरकारिया। नमक धनिया हल्दी जीरा य मसाला होना चाहिए

भोजन सोने से तीन घण्टे पहल खा लेना चाहिए जल भोजन के एक घण्टा पहले और दो घण्टे बाद पीना चाहिए। सवेरे उठते ही जल पीना लाभकारी है।

स्वप्न दोषी को मन पवित्र रखना चाहिए सब स्त्रियो को माता की दृष्टि से देखना चाहिए। सिनेमा पिक्चर बाईस्कोप कामोत्तेजक टेलीविजन ट्रांजिस्टर का प्रयोग हटा देना चाहिए।

सर करना टहलना व्यायाम करना यौगिक आसन करने चाहिए

तरना दौडना भ्रमण करना बहुत आवश्यक है। रात को पेट पर मिट्टी की पटटी बाध कर सो जाय प्रात उठकर मिटटी की पटटी और मिट्टी पेट स उतार द और पेट पानी से साफ कर ल

2 स्वप्न दोष का आयर्वेदिक इलाज नीचे लिखा जा रहा है—

( सतावर असगध और मसली प्रत्येक 50 50 ग्राम मिसरी 150 ग्राम पहल सतावर असगध और मसली को कट पीसकर कपडछान कर ल फिर मिसरी को कटकर मिला द दस ग्राम दवा दूध के साथ ल। स्वप्न दोष दूर हो जाएगा।

## स्वास्थ्य सुधा—

# रोगों के कारण और उनका उपचार

ले—डा नारायणदत्त जी योगी एन डी

(गताक से आगे)

2 इमली के बीजो को भट्टी मे थोडा सा भून ल। फिर उसके छिलके को अलग करके गिरियो को बारीक पीस ल। इस मे बराबर मिश्री मिला ल। 6 ग्राम दवा प्रात गोमूत्र के साथ ल। प्रमेह और स्वप्न दोष के लिए लाभदायक है।

3 बरगद(बट-वृक्ष) के वृक्ष की छाल को सुखाकर बारीक पीस ल। इस के बराबर मिश्री मिला ल। ग्राम प्रात साय गौ दूध से ल। स्वप्न दोष शीघ पतन धात स्राव और लिकोरिया के के लिए गुणकारी है।

4 छ ग्राम चिरौंजी को कटकर आग किलो गो दूध म औटाए जब दूध जल कर आधा रह जाए। तब रोगी को सोते समय पिला द तीन दिन मे रोग समाप्त हो जाएगा।

5 बनारसी आवला मोटा मुरब्बा एक प्रतिदिन पानी मे धोकर चबा कर खाए स्वप्न दोष के लिए बहुत अच्छा है

6 सोते समय 4 ग्रन कपूर मिश्री मे मिला कर लेने से कुछ दिनो मे स्वप्न दोष होना बन्द हो जाता है।

7 मुलहटी का चूर्ण 3 ग्राम को मधु (शहद) मे मिलाकर चाटने से स्वप्नदोष बन्द होता है।

8 मन को पवित्र रख। ब्रह्मचय का पालन करें। सत्सग कर। प्रसन्न रहे। साय केवल फल खाए। भोजन सोने से 3 घण्टा पूव खाय।

स्वप्न दोष रोगी का रात्रि को सोते समय स्त्रियो के सपने आकर वीयपात हो जाता है यह रोग नवयुवक पुरुषो तथा नवयुवती स्त्रियो को बहुत अधिक होता स्वप्न दोष रोग उत्पत्ति के कई कारण हैं जो विस्तार पूवक लिखे जाते हैं।

1 सर्व प्रथम कारण तो मन के बुरे विचार हैं मन को अत्यन्त शुद्ध पवित्र रख कर भले विचार पदा करने चाहिए। यजुवद अध्याय 34 मन्त्र 1 का मन्त्र अथ सहित नीचे लिखा जाता है।

ओ३म यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैव।
तदु सुप्तस्य तथैवैति।
दूर गम ज्योतिषा ज्योतिरेक।
तन्मे मन शिवसङ्कल्पमस्तु॥

अथ—जो दिव्य गुण वाला मन जागते हुए मनुष्य का दूर चला जाता है तथा सोए हुए मनुष्य का भी मन वैसे ही दूर जाता है। वह दूर दूर तक जाने वाला इन्द्रिय रूप ज्योतियो मे से प्रधान इन्द्रिय मेरा मन भले विचारो वाला होवे।

2 मन से बुरे विचार हटाने वाला मन्त्र।

ओ३म परोऽपेहि मनस्पाप किम शस्तानि शससि।
परेहि न त्वा कामये वक्षा वनानि सचर गृहेषु गोषु में मन॥
अथववेद 6।45।1

अथ—हे मन के पाप! तू दूर भाग जा। हे पापी मन क्यो निन्दित बातो को सोचता है। हट जा। हे पाप तुम को मैं नहीं चाहता वृक्षों और वनो मे विचर मेरा मन तो घर के काय व्यवहार मे तथा गौ आदि हितकारी पशुओ मे लगा हुआ है।

3 रात को सोते हुए उपरोक्त दो मन्त्रो का अथ सहित विचार करना चाहिए। इस प्रकार शुभ विचार करने से स्वप्न दोष रोगी भले विचार करने से शुभ विचारो वाला हो जाता है। स्वप्न दोष कष्ट भ्रष्ट हो जाता है।

क्रमश

## श्री डायरेक्टर महोदय दूरदर्शन जालन्धर तथा केन्द्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय से मांग

# दूरदर्शन पर हिन्दी में भी प्रोग्राम आने चाहिएं

गत दिनों आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने पत्रिका व समाचार पत्रों द्वारा दूरदर्शन टेलीविजन पर दिए जाने वाले प्रोग्रामों के सम्बन्ध में एक वक्तव्य जारी किया था। जिसमे स्पष्ट कर दिया था कि जालन्धर दूरदर्शन केन्द्र हिन्दी की अवहेलना कर रहा है। यह स्थिति अच्छी नही क्योंकि इस केन्द्र से दिए जाने वाले प्रोग्रामो को पंजाब के साथ 2 हरियाणा और हिमाचल में भी देखा जाता है। ऐसी स्थिति मे उन्होंने मांग की थी कि जालन्धर दूरदर्शन पर राष्ट्र भाषा हिन्दी को उसका पूरा स्थान मिलना चाहिए।

इस पर निम्न प्रस्ताव लगभग 30 आर्य समाजों ने पारित कर मन्त्री सूचना एवं प्रसारण मन्त्रालय भारत सरकार दिल्ली और डायरैक्टर दूरदर्शन केन्द्र जालन्धर को भेजा है और उसकी प्रतिलिपि सभा को भी भेजी है। प्रस्ताव निम्न प्रकार है।

### प्रस्ताव

हम पिछले कुछ समय से देख रहे हैं कि जालन्धर दूरदर्शन मे हिन्दी का कार्यक्रम लगभग समाप्त कर दिया गया है। सारा कार्यक्रम पंजाबी में ही होता है हम पंजाबी के विरोधी नही। न हम यह चाहते हैं कि पंजाबी का कार्यक्रम बन्द कर दिया जाए परन्तु हमारे लिए यह समझना कठिन है कि जालन्धर दूरदर्शन ने देश की राष्ट्र भाषा हिन्दी का बहिष्कार क्यो कर दिया है। आपके दूरदर्शन का कार्यक्रम पंजाब के अतिरिक्त हरियाणा हिमाचल और जम्मू कश्मीर के लोग भी सुनते हैं। ऐसी स्थिति में कोई कारण नही कि हिन्दी के कार्यक्रम का जालन्धर दूरदर्शन पर बन्द कर दिया जाए। कभी कभी कोई वार्ता हिन्दी में आ जाती है या समाचार हिन्दी मे आता है। बाकी कोई काम की बात हिन्दी में नही आती। समाचार द्वारा आप हमारे बच्चो को बिगाड रहे हैं। परन्तु यह आपकी नीति है। हिन्दी के विषय मे कोई नीति बनानी चाहिए और देश की राष्ट्रभाषा को जालन्धर दूरदर्शन पर उसका पूरा स्थान मिलना चाहिए।

कुछ आर्य समाजो व संस्थाओ के नाम निम्न प्रकार हैं। आर्य समाज दीनानगर मोहरी चौक बटाला नूर दादपुर गोबिन्दगढ जालन्धर रोपड दयानन्द आदर्श विद्यालय अहमदगढ आर्य समाज अहमदगढ आर्य हायर सैकण्डरी स्कूल दीनानगर शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर लाल बहादुर आर्य महिला कालेज बरनाला आर्य समाज बरनाला आर्य हा सैकण्डरी स्कूल लुधियाना आर्य समाज दाल बाजार लुधियाना एस एन आर्य हाई स्कूल तथा चौक पटियाला लुधियाना रोड फिरोजपुर आ रानी का तालाब फिरोजपुर ज्वालापुर इन्टर कालेज आर्य युवक सभा फिरोजपुर आ स बमा (जालन्धर) हबीब गंज लुधियाना आर्य बाल विद्या मन्दिर नवांशहर आ स धरो रायकोट फाजिल्का बस्ती टैंका वाली फिरोजपुर बस्ती मिट्ठू जालन्धर पक्का बाग जालन्धर बस्ती गुजा जालन्धर।

और भी बहुत से आर्य संस्थाओ व आर्य समाजो के अधिकारियो ने ऐसे प्रस्ताव डायरैक्टर दूरदर्शन केन्द्र जालन्धर को भेजे हैं।

—

## जिला आर्य सभा बठिण्डा का चुनाव

12 6 83 दिन रविवार को प्रात 10 बजे आर्य समाज मानसा मण्डी मे जिला आर्य सभा बठिण्डा का वार्षिक चुनाव निम्न प्रकार हुआ।

प्रधान—श्री बधीर चन्द जी बठिण्डा उप प्रधान—श्री बनारसी दास जी बी ए बरेटा मण्डी श्रीमती प्रवेश जी आर्य श्री रोशन लाल जी मानसा।

मन्त्री—ओम प्रकाश जी आर्य भान प्रस्थी बठिण्डा उप मन्त्री—श्री तरसेम कुमार जी एम ए बी एड गोनियाना मण्डी अन्तरंग सदस्य—श्री ओम प्रकाश जी शर्मा बुढलाडा श्री भगवान दास जी रामा मण्डी—श्री चरजी लाल जी गोनियाना श्रीमती कमला जी आर्य बठिण्डा, श्री कृष्ण कुमार जी बठिण्डा श्री वेद प्रकाश जी मानसा एव श्री राम चन्द्र जी बठिण्डा।

मन्त्री

# सुभाषित माला

### आचार्य सुभाष चन्द्र शास्त्री सभा महोपदेशक

यस्यै रसवती यस्य भार्या पुत्रवती सती।
लक्ष्मी दानवती यस्य सफल तस्य जीवितम् ॥

अथ—जिसकी जिह्वा मे रस है पत्नी ससन्तान वाली पतिव्रता है और जिसकी लक्ष्मी दानवाली अर्थात जो ऐश्वर्यसम्पन्न होकर दान करता है उस का जीवन धन्य है सफल है।

धर्मार्थ काममोक्षाणा यस्यकोऽपि न विद्यते।
अजाय लस्तनस्येव तस्य जन्म निरर्थकम् ॥

अथ—जिसने धम अथ काम और मोक्ष इन चारो मे से किसी को भी प्राप्त नही किया है जिस प्रकार बकरी के गले के थन व्यथभार होते हैं न उनमे दूध होता न कुछ उसका लाभ होता है ठीक उस व्यक्ति का जीवन भी निरर्थक भूभार मात्र है।

दाने तपसि शौर्य च यस्य न प्रथित यश।
विद्यायामर्थलाभे च मातुरुच्चार एव स

अथ—जिस व्यक्ति ने दान तपस्या शौर्य वीरता मे तथा विद्या व ऐश्वय सम्पन्नता मे यश को प्राप्त नही किया वह तो माता का पुत्र नही मल त्याग है।

यस्य जीवन्ति धर्मेण पुत्रा मित्राणि बान्धवा
सफल जीवित तस्य नात्मार्थे को हि जीवति ॥

अथ—जिस पुरुष के पुत्र मित्र एव बन्धु बान्धव रिश्तेदार भी धम का पालन करते हैं अर्थात सदाचारी एव परोपकारी हैं उसका जीवन धन्य है सफल है अपने लिए ससार मे कौन नही जीता

परोपकरण येषा जागर्ति हृदये सताम्।
विपदस्तेष नश्यन्ति सम्पद स्यु पदे पदे।

अथ—जिन सत्पुरुषो के हृदय मे परोपकार करने का भाव पदा होता है उनकी विपदाए आपत्तिया स्वयमेव नष्ट होती हैं और पद पद पर सम्पदाए प्राप्त होने की सम्भावनाए रहती हैं।

—

# माँ का नाम बदनाम न करो

अप्रैल 83 के नवरात्रो के दिनो मे चण्डीगढ के निकट मा मानसा देवी के मन्दिर तथा कथित धम भावना के नाम पर बकरे कटते देख कर अत्यन्त दुख हुआ। दुर्गा मा की स्तुति करते हुए हम उसका ध्यान सब भूतेषु मातृ रूपेण संस्थिता के रूप में करते हैं। जो मा है वह अपने ही बच्चो को अपने ही नाम पर कटता देख कर कसे प्रसन्न होगी अज्ञान एव अन्धविश्वास के भरे मे फसे कुछ बहन भाई अब भी देवी देवता के नाम पर जीव हत्या करते है।

उनका यह विश्वास है कि बलि चढाया गया जीव स्वग मे जाता है। मेरा उनसे निवेदन है कि बेचारे बकरे को स्वग का टिकट देने के स्थान पर वे स्वय ही क्यो न ले ल। ऐसे लोग अपने स्वाद की ओट मे धम एव देवी देवताओ के नाम को कलंकित करते हैं। कलकत्ता और गोहाटी के कुछ मन्दिरो में यह बुराई अभी अधिक है ही पर भारत का यह क्षेत्र जहा मनसा देवी मन्दिर है इन बुराईयो से मुक्त माना जाता है।

श्री मनसा देवी मन्दिर के प्रबन्धको से मेरी करबद्ध प्रार्थना है कि इस बुराई को अभी से रोक द। ममता मयी मा को मा ही रहने द उसके नाम पर जीव हत्या का कलक न लगाए

—प्रो लक्ष्मी कान्ता चावला
अमृतसर

वास्तव मे आज हिन्दू लोग मा का नाम कसे बदनाम कर रहे हैं उसका वास्तविक चित्र चावला जी ने दिया है।

वीर प्रताप से साभार

—

## कन्या की आवश्यकता

वदिक विचारो से ओत प्रोत प्रचारक भावना वाले 38 वर्षीय अरोडा एम ए बि बी लिब साइंस कद साढे 5 फुट आय चार अंको मे युवक के लिए सशील कन्या की आवश्यकता है। परित्यक्ता व विधवा पर भी विचार किया जा सकता है जाति व दहेज बन्धन नही।

—अशोक आर्य
आर्य समाज गिदडबाहा

—

## वार्षिक निर्वाचन

आर्य समाज सिदवबाहा का वार्षिक निर्वाचन श्री तोता राम की अध्यक्षता मे सर्वसम्मति से इस प्रकार सम्पन्न हुआ

संरक्षक—श्री तोता राम प्रधान म ईश्वर दास उप प्रधान डा नरेश गोयल श्री परमानन्द बसल मन्त्री श्री मदन लाल आर्य उप मन्त्री—श्री सुरेन्द्र गोयल कोषाध्यक्ष—श्री भाग चन्द व डा धर्मपाल गोयल प्रचार मन्त्री श्री रमेश सिक्का पुस्तकाध्यक्ष व सम्पत्ति अधिकारी श्री अशोक आर्य

—अशोक आर्य पत्रकार सिदवबाहा

## घिलोडी गट पटियाला का चुनाव

आर्य समाज घिलोडी गेट पटियाला का वार्षिक चुनाव 9 6 83 को सर्वसम्मति से सम्पन्न हुआ इसमे निम्न लिखित पदाधिकारी चुने गए

प्रधान—श्री शिव ओ३म गुप्ता
मन्त्री—श्री रत्न लाल सिंहल
उप प्रधान—डा राम लक्ष्मण दास
कोषाध्यक्ष—श्री कुलवन्त राय जी

## उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा का निर्वाचन

आर्य समाज बलांगीर मे 11 व 12 जून 83 को उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा का वार्षिक अधिवेशन एव निर्वाचन निम्न रूपेण अति उत्साहमय वातावरण मे सम्पन्न हुआ

प्रधान—स्वामी धर्मानन्द सरस्वती आचार्य महाविद्यालय गुरुकुल आमसेना

उप प्रधान—श्री मुकुन्द मिश्र आर्य समाज मन्त्री श्री चन्द्र सिंहल राय नागपुर म न्र गढ) श्री प्रफुल्ल कुमार एडवोकेट बलांगीर

मन्त्री इन्जीनियर प्रियव्रत दास भुवनेश्वर सयुक्त मन्त्री श्री निधि केतन शास्त्री नृसिंहनाथ

उप मन्त्री—श्री धनुर्धर महापात्र सम्बलपुर श्री सर्वोदर पट नायक फर्मी गुम्फा श्री ज्ञानेन्द्र आर्य कुमार अजलिया कटक

कोषाध्यक्ष श्री गोपालदास राठुल सम्बलपुर

मन्त्री

## २८० ईसाई परिवारो का वैदिक धर्म में प्रत्यागमन

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में सभा के प्रधान स्वामी धर्मानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में बलांगीर जिले के लोईसिंगा ब्लाक मे विशाल शुद्धि समारोह 13 जून को सम्पन्न हुआ इसमे 280 ईसाई परिवारो ने पुन अपने प्राचीन वैदिक धर्म मे अति श्रद्धा एव हर्ष के साथ यज्ञ में आहुति देकर श्री पृथ्वी राज शास्त्री सयुक्त मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली) के करकमलो से यज्ञोपवीत ग्रहण किए इनके सदस्यों की सख्या 800 थी संस्कार की विधि केतन शास्त्री श्री अभिषेक आचार्य श्री सुभाष चन्द्र शास्त्री ने कराई

इस कार्य मे प्रफुल्ल कुमार एडवोकेट बलांगीर का विशेष [illegible] उनके तथा स्वामी जी के विशेष आग्रह पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान के प्रतिनिधि के रूप में श्री पृथ्वी राज शास्त्री भी उपस्थित थे जिससे सभी को बहुत उत्साह मिला

निधिकेतन शास्त्री
मन्त्री

## आर्य समाज टाण्डा का वार्षिक उत्सव

आर्य समाज टाण्डा का वार्षिक 27 जून से 3 जुलाई तक मनाया गया जिसमे स्वामी वेदानन्द जी आचार्य [illegible] जी बी ए धर्मवीर जी एम. ए श्री [illegible] सिंह जी द्विजकर सम्मानपूर्वक भाग लिया।

3 जुलाई को विशेष कार्यक्रम हुआ। ध्वजारोहण यज्ञ की पूर्णाहुति सामूहिक यज्ञोपवीत संस्कार तथा [illegible] प्रचार सम्मेलन हुआ भारी संख्या में [illegible] सज्जनों ने पधार कर धर्म लाभ उठाये,

—[illegible], मन्त्री

## पाठक बन्धुओ को आवश्यक सूचना

[illegible] के कारण 3 7 83 का अंक प्रकाशित न हो सका। इसलिए यह अंक 3 जून व 10 जून 83 का सम्मिलित अंक प्रकाशित किया जा रहा है पाठक बन्धुओं को सूचनार्थ।

—व्यवस्थापक



श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रेस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

वर्ष 16 अंक 14 2 श्रावण सम्वत 2040 तदनुसार 17 जुलाई 1983 दयानन्दाब्द 159 । एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपए

# हे प्राणी अपने आत्मस्थ प्रभु को पा

न म विदाथ य इमा जजान अन्यद युष्माकं अन्तरं बभूव ।
नीहारेण प्रावृता जल्प्या चासुतृप उक्थशासश्चरन्ति ॥
ऋ 0 82 7 । यजु 17 31 ॥

विनय—हे मनुष्यो तुम उसे नहीं जानते जिसने कि यह सब भुवन बनाये हैं । यह बड़े आश्चर्य की बात है । तुम्हारा वह पिता है पर तुम अपने पिता से जुदा (अन्यत्) हो गए हो तुम्हारा उससे बहुत अन्तर पड़ गया है ओह कितना भारी अन्तर हो गया है । मनुष्य का तो उसके प्रभु के साथ अन्तर नहीं होना चाहिए वह प्रभु तो हम मनुष्यों की आत्मा की भी आत्मा है । उससे अधिक निकटतम वस्तु तो हम से और कोई है ही नहीं हो ही नहीं सकती सचमुच वे परम आत्मा हमारी आत्मा में भी व्यापक है । उससे निकट हमारे और कोई नहीं है । फिर वे हम से दूर क्यों है ? इसका कारण यह है कि हमारे और उनके बीच प्रकृति का पर्दा आ गया है । हम दो प्रकार के पर्दों से ढके हुए हैं जिससे कि इतना निकटस्थ भी हम से इतनी दूर हो गया है । एक प्रकार के तमोगुण बहुल लोग तो नीहार अज्ञान से ढके हुए हैं जिसकी वजह से इतने पास में भी उन्हें नहीं देख पाते दूसरे (रजो गुण बहुल) लोगों में चालाकी से विद्या के झूठे आडम्बर और पढ़ी लिखी मूर्खता से जिसे जल्पना के परदे से अपने आपको नहीं पहचानते । ये कितने भारी वक्ता लेखक और शास्त्रार्थकर्ता होते जाते हैं उतने ही ये बाह्य जल्प जाल में ऐसे उलझते जाते हैं कि अन्दर के देखने के अयोग्य होते जाते हैं अतः अन्दर के ढक लिया है ये दोनों प्रकार के मनुष्य अपनी अपनी दिशा में इतनी दूर बढ़ते गए कि प्रभु से दिनों दिन दूर होते गए हैं । नीहारावृत लोग तो संसार में असुतृप होकर विचर रहे हैं । ये खाते पीते मौज करते हुए निरन्तर अपने प्राणों के तर्पण करने में ही लगे हुए हैं । कामनाओं इच्छाओं का निवास मनुष्य के सूक्ष्म प्राण में ही है ये ज्यों-ज्यों अपनी बढ़ती जाती हुई अनगिनत कामनाओं को पुष्ट करते जाते हैं त्यों त्यों ये प्रभु से दूर होते हैं अर्थात संसार में बड़े बड़े शास्त्र पढ़कर वाद विवाद में चतुर होकर दूसरों को जोरदार शब्द जाल से ढके हुए हुन मनुष्य व्याख्यान देते फिरते हैं पर अपने आत्मस्थ प्रभु से दूर होते जाते हैं ।

इसलिए आओ हम लौटें । अपने अन्दर की तरफ लौटें और अपने उस आत्मा के आत्मा को पा लेवें जिसके साथ हमें निरन्तर जुड़ा रहना चाहिए ।

शब्दार्थ—हे मनुष्यो ! (त न विदाथ) तुम उसे नहीं जानते (य इमा जजान) जिसने कि इन सब (भुवनों) को बनाया है । (अन्यत्) तुम अन्य प्रकार के हो गए हो और (युष्माकं अन्तरं बभूव) तुम्हारा उससे बहुत अन्तर हो गया है । (नीहारेण) अज्ञान के कोहरे में (प्रावृता) ढके हुए और (जल्प्या च) झूठे और निरर्थक (असुतृप) प्राणतृप्ति में लगे हुए होकर या (उक्थशास) आडम्बर वाले बहुभाषी होकर (चरन्ति) भटकते हैं ।

(वैदिक विनय से)

# इन्द्र के दान कल्याणकारी है

ले —श्री आचार्य सुभाषचन्द्र जी शास्त्री महोपदेशक

भद्रा इन्द्रस्य रातय । ऋ 8 62 1

परमेश्वर बड़ा दयालु है वह दयाघन दयानिधि प्रभु सर्वत्र व्यापक है परमात्मा हम सबका माता और पिता है और हम उसके हैं पिता ने पुत्र (जीवात्मा) के लिए यह संसार बनाया है ताकि जीवात्मा इस रम्यम जगत का भोग कर अपवर्ग (मोक्ष) को प्राप्त कर सके जीवात्मा पूर्व जन्मगत वासनाओं के अनुसार योनि (शरीर) प्राप्त कर लेता है और यहां अपने कृत कर्मों के फलों को भोगता हुआ नूतन कर्म को कर अगला जन्म लेने की तैयारी भी साथ साथ करता है इस परिवर्तनशील संसार के वास्तविक स्वरूप को अविद्या के कारण नहीं समझता इसमें इतना आसक्त होता है कि जिस प्रयोजन से जगत में आया था उस बात को भूल जाता है अज्ञान भोगलालसा व कर्तव्य विमुखता के कारण अपने पिता के प्रभु के आदेश की परवाह न कर मनुष्यता को कर्तव्यता को छोड़ बैठता है और अविद्या में फंसकर उलटे कर्म करने लगता है इसके फलस्वरूप उसका सारा जीवन दुःखों से चिन्ता से और दुर्भाग्य से भर जाता है उसकी सत्यासत्य विवेचनात्मक विवेक बुद्धि खोने लगती है तब वह जीवन को ही दुःखों का कारण मानने लगता है, प्रभु की अपार कृपा से मिला हुआ यह मानव शरीर अमृत अमर आत्मा का मन्दिर उसे प्रतीत नहीं होता इससे घृणा करता है । वह प्रभु को भी कोसना शुरू कर देता है । सच्चिदानन्द आनन्दस्वरूप परमात्मा की सृष्टि में कोई भी वस्तु अच्छी नहीं लगती उसकी दृष्टि में घृणा भरी है तुच्छता है तिरस्कार है अतः प्रभु के इस प्रकृति अद्भुत सौन्दर्य को देखकर प्रसन्न होकर उसके फटे मुंह से उस दयालु दयाघन से प्रति एक भी धन्यवाद के वचन कोई शब्द नहीं निकलता है ।

वह इस दुनिया में कतिपय चीजों को प्रभु की निरर्थक व निष्प्रयोजन समझता है । वह उसके भ्रमित दिमाग की उपज है । ऐसा नहीं है भद्रा इन्द्रस्य रातय परमैश्वर्य सम्पन्न भगवान का सम्पूर्ण सृजन नितान्त कल्याणकारी है

ईश्वर की सम्पूर्ण सृष्टि अद्भुत सुन्दर एवं मंगल है वह आदित्यमान तेजोराशि सूर्य को देखो आह्लादकारक शान्तिप्रद चन्द्रमा की छटा को देखो धरती को देखो एक जैसी मिट्टी में से ही मीठे फलों वाले वृक्ष निकल आते हैं उसी में से नीबू जैसे खट्टे फलों व से कड़वा तीखे रस वाले सभी प्रकार के वृक्ष उगते हैं कैसी प्रभु की विचित्र कृति है सभी प्राणियों के शरीरों को देखो कैसा हड्डियों के साथ मांस जोड़ रखा है उनकी धमनीयां सूक्ष्म कितनी होती हैं हमारा यह मनुष्य शरीर अद्भुत शक्तियों के खजानों से भरा हुआ है

प्रभु का कोई ऐसा सृजन नहीं है जो कि पुत्रों के लिए हितकर न होता हो ? कुछ तथाकथित समझदार शंका कर सकते हैं कि प्रभु के समस्त वस्तुओं का दान कल्याणकारी नहीं है प्रत्युत अत्यन्त विनाशकारी भयप्रद भी है जैसे विषधारी भयंकर सर्प बिच्छू शेर आदि हिंसक एवं घातक प्राणियों का सृजन कल्याणकारी कैसे हो सकता है अगर ये समझदार व्यक्ति समझ से काम लें तो वे समझ जाएंगे कि वस्तुतः सांप आदियों का निर्माण भी कल्याणकारी है सांप जैसे जहरीले प्राणी वायुमण्डल में जो विषाक्त तत्व जा रहा होता है उसको सांप स्वयं सेवन करता है विषाक्त वातावरण को नष्ट कर जीने योग्य सन्तुलित वायुमण्डल को बना देता है इसी तरह सभी का वनस्पतियों का भी निर्माण प्रभु ने सप्रयोजन किया है निर्मल अन्तःकरण होने पर प्रभु की सारी कृति हमें कल्याणकारी प्रतीत होने लगेगी । अपने पुत्रों के लिए हानिकारक वस्तुओं का निर्माण प्रभु कैसे कर सकते हैं अज्ञानवश हम नहीं जानते किस वस्तु का क्या उपयोग है । जानेंगे तो हम फिर प्रभु को कोटि 2 धन्यवाद देते हुये कहते फिरेंगे कि —भद्रा इन्द्रस्य रातय । परमेश्वर के सभी दान भद्र हैं मंगल हैं ।

# सामाजिक सर्व हितकारी नियम पालने में सदा परतन्त्र रहें

ले —श्री भद्रसेन वेद दर्शनाचार्य होशियारपुर

आइए अब जीवन और सामाजिक व्यवस्था तथा सामञ्जस्य के मूलभूत सिद्धान्त को प्रकट करने वाले दसम नियम पर भी कुछ विचार कर लें। आज ससार विचारो की दृष्टि से दो भागो मे बंटा हुआ है। एक पक्ष व्यक्ति को ही प्रमुखता देता है उसकी दृष्टि मे व्यक्ति ही सब कुछ है, क्योकि व्यक्तियो से ही समाज बनता है। व्यक्ति से विकसित प्रगतिशील समद्ध हो पाता है। अत व्यक्ति एक ही प्रकार से सामाजिक नियम का केन्द्र बिन्दु है। उसी को सामने रख कर कहा है—आत्मार्थ पृथिवी त्यजेत—अर्थात जरूरत पड तो अपने लिए प्रदेश राज्य की तो बात ही क्या पृथ्वी को भी छोड दे। आत्मान सतत रक्षत दारैरपि धनैरपि—अपना हर तरह से बचाव करे चाहे वह पत्नियो या धनो के बलिदानो से भी क्यो न करना पड।

दूसरा पक्ष समाज को ही प्रमुखता देता है उसकी दृष्टि मे समाज से पृथक व्यक्ति का कोई सत्ता नही क्योकि वह समाज मे ही जन्म लेता है। और उसका हर प्रकार का पालन पोषण तथा निर्वाह भी समाज मे हो होता है। आज व्यक्ति की *अन्न वस्त्र भवन सुरक्षा यातायात* चिकित्सा शिक्षा सम्पर्क (डाक तार टेलीफोन रेडियो टेलीविजन) आदि मौलिक आवश्यकताओ की पूर्ति पर लाखो ही नही विश्व स्तर पर करोडो—अरबो व्यक्ति लगे हुए हैं। समाज के सहयोग से ही व्यक्ति सब कुछ प्राप्त करता है और अकेला व्यक्ति समाज से अलग होकर (कट कर) एक क्षण भी जी नही सकता। अत समाज ही केन्द्र बिन्दु है और उसके आधार पर ही हर निणय व्यवस्था एव नियम बनाना चाहिए।

इन दोनो प्रकार की (अपनी अपनी) विचारधाराओ के कारण हो पूजीवाद और समाजवाद या साम्यवाद के नाम से खीचातानी चल रही है। कई बार विचारो का यह सघष युद्ध के भयकर रूप को भी धारण कर लेता है और एक दूसरे के जानी शत्रु के रूप मे सामने आ जाते हैं।

वस्तुत ये दोनो एकागी दृष्टि से अधूरा देखते हैं। क्योकि व्यक्ति पन के स्वाथ मे जहा व्यक्ति स्वार्थी बनकर रह जाता है तो वहा दूसरी ओर व्यक्ति की वैयक्तिक स्थिति को भुला देने से वह केवल मशीन का पुर्जा बन कर आत्मिक गुणो—सहानुभूति दया क्षमा की भावना से शून्य होने पर परतन्त्र बन कर रह जाता है।

इन दोनो पक्षो का सामञ्जस्य और समाधान बताते हुए दसम नियम मे कहा है—

सब मनुष्यो को सामाजिक सब हितकारी नियम पालने मे सदा परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम मे सब स्वतन्त्र रहे। जितने भी सामाजिक काय हैं। जिन के करने से दूसरो पर सीधा प्रभाव पडता है। उनमें व्यक्ति को समाज के परतन्त्र रहना चाहिए।

परन्तु जिनका समाज पर सीधा प्रभाव नही पडता केवल व्यक्ति का अपने आप से ही सम्बन्ध है उनमे व्यक्ति स्वतन्त्र है। अत एव योग्य दर्शन मे अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचय और अपरिग्रह—यम के रूप मे सामाजिक व्यवस्था मे मर्यादाय हैं। जिनका पालन समाज मे ही होता है। शौच सन्तोष तप स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान रूपी वैयक्तिक नियम व्यवस्थाय मर्यादाय है जिनका सम्बन्ध व्यक्ति के वैयक्तिक जीवन से अधिक है। इन दोनो पहलुओ को ही सामने रख कर मनुस्मतिकार ने कहा है—

यमासेवेत सतत न नियमान्बुध ।
यमान्पतत्यकुर्वाणो नियमान्केवलान भजन ॥ 8 208 ॥

बुद्धिमान सदा सामाजिक व्यवस्थाओ (यमो) का पालन करे केवल वैयक्तिक कत्तव्यो (नियमो) का ही नही। जो सामाजिक व्यवस्थाओ का छोड कर केवल वैयक्तिक कत्तव्यो का पालन करता है। वह स्वार्थी हो जाने से पतित हो जाता है। यह ठीक है कि एक की कमजोरी सारे समाज को कई बार खराब कर देती है पुनरपि मनुष्य के चेतना शील प्राणी होने से उसको कुछ स्वतन्त्रता की भी जरूरत होती है। उस को केवल दण्ड से ही नही हाका जा सकता (हा इसके कुछ अपवाद भी मिल जायेंगे) वहा आत्मनियन्त्रण भी बहुत कार्य करता है।

इस नियम के "परतन्त्र रहना चाहिए शब्दों को सामान्य दृष्टि से देखने पर बडा आश्चर्य हो सकता है। क्योंकि सब का अनुभव है कि जो भी पराधीनता की बात है वही दुखो का घर है। जितने जितने अशो में जिस जिस बात मे हम पराधीन होते हैं, उतना उतना उस कार्य मे विवशता वश बेबसी, दुख ही भोगना पडता है। इसीलिए सारे शास्त्र एक स्वर से पराधीनता को बुरा बताते हैं और तभी मनुस्मृति मे कहा है—

सब परवश दुख सर्वमात्मवश सुखम ।
एतद विद्यात् समासेन लक्षण सुख दुखयो ॥4 160॥

अर्थात जो कुछ भी दूसरे के अधीन है वह दुखरूप और जो-जो अपने वश मे है, वही वही सुखदायक है। यही ही सुख दुख का सक्षप से लक्षण समझना चाहिए। यही तक ही नहा अपितु पराधीन सपने सुखनाही—तुलसी। भारतीय पराधीनता का इतिहास इस का साक्षी है कि कौन कौन सा अमानवीय अत्याचार भारतीयो पर नही ढाया गया। धन, सम्पत्ति छीनना और शारीरिक दण्ड देना तो साधारण बात थी। अपितु यहा तक कि पराधीनो से पशुओ से तो क्या ?

खिलौनो से भी बदतर व्यवहार किया गया। समस्त देश का नर-सहार और अत्याचार तो ताजी ही बात है। इसी लिए ही सभी सदा स्वाधीन स्वतन्त्र होना चाहते हैं क्योकि परतन्त्रता का बन्धन है जोकि दुखों की जड है और मौत से भी बदतर है। पुनरपि यहा परतन्त्रता की बात कही गई है। अत एव कुछ तो यहा तक भी कहते हैं कि सब मर्यादाए बन्धन हैं क्योकि इनसे व्यक्ति की स्वतन्त्रता छिनती है। अत ये खत्म होनी चाहिए।

नियम के शब्दो पर गहराई से विचार करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि यह बात ऊपर से जितनी सुन्दर लगती है विचारने पर उतनी ही थोथी अनुपयोगी और अनर्थकर सिद्ध होती है। क्योकि यह व्यक्ति के सामाजिक पक्ष को लेकर कहा गया है। मानव जीवन के वैयक्तिक पक्ष की तरह सामाजिक पक्ष भी अनिवार्य है मानव का जीवन तो पक्षी के दो परो या नदी के दो घाटो (किनारो) की तरह है। एक पर का पक्षी कभी उड नही सकता यदि हठ करेगा तो गिरकर अपना कोई नुक्सान ही कर बैठेगा। न ही एक किनारे की नदी हो सकती है दूसरा चाहे अदृश्य या कितनी दूर क्यो न हो ? ठीक इसी प्रकार जीवन के ये दोनो पहलू आवश्यक हैं। अत सामाजिक व्यवस्थाओं की दृष्टि से उसका पालन सर्वथा आवश्यक है।

यह कहना कि व्यक्ति की स्वतन्त्रता को छीनती है परन्तु सारी मर्यादाए खत्म होनी चाहिए, यह तो बात बालकपन की ही है। क्योंकि जैसे एक स्वतन्त्रता चाहता है वैसे ही दूसरे भी चाहते हैं। स्वतन्त्रता की परिभाषा भी यही है अपने जैसे विचार खान-पान रहन-सहन की आजादी सभी को देना। केवल अपने लिए ही चाहना तो कोई स्वतन्त्रता नहीं। अन्यथा एक की स्वतन्त्रता दूसरों के लिए बन्धन और दुख का कारण भी बन सकती है। यदि कहीं पर भी रोक टोक वाली बात न हो तो अनर्थ हो जाए जैसे सडक के नियम पालन से सभी सुखी और एक के भी अनियमित हो जाने पर तो अनेको को खतरा हो सकता है। अत सयम, अनुशासन के साथ सामाजिक नियमो का पालन करना चाहिए। इसी मे ही व्यक्ति और समाज का भला एव प्रगति है। क्योंकि जीवन के दोनो पहलुओ में सन्तुलन, समन्वय सामञ्जस्य होने पर ही जीवन में सुख शान्ति और सफलता की आशा की जा सकती है अर्थात् दोनो के सन्तुलन मे ही सुख और सफलता निहित है।

इस विवेचन से पूरी तरह यह सिद्ध होता है कि ये केवल आर्य समाज के नियम ही नहीं हैं जो उसकी केवल भव्यता को ही स्पष्ट करते हैं अपितु इसके साथ जीवन के सब विध विकास के मूल मन्त्र भी हैं। एक ऐसी चाबी है जिन से वैयक्तिक और सामाजिक जीवन के हर क्षेत्र मे विकास के बन्द द्वार या ताले को खोला जा सकता है। वह चाहे शरीर आत्मा के रूप में आध्यात्मिक पक्ष हो या शैक्षणिक आर्थिक सामाजिक, पारिवारिक पहलू हो सभी के लिए आधार स्तम्भ है। इनमे एक आदर्श जीवन की पूर्ण जीवनचर्या विकास पथ दर्शाया गया है। जीवन के हर क्षण एव स्थिति के ये पूर्ण पथप्रदर्शक आदर्श और प्रकाश स्तम्भ हैं जीवन विज्ञान का एक ऐसा सुनिश्चित, अनुभत आविष्कार है जिसका विज्ञान के आविष्कारो की तरह जीवन को सुखी समृद्ध बनाने के लिए बिना झिझक उपयोग करना चाहिए।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने बहुत ही सोच विचार के पश्चात लाहौर मे आर्य समाज की स्थापना पर बम्बई मे बनाए गए पूर्व नियमो को परिष्कृत करके इन नियमो का निर्माण किया। [illegible] इनका एक 2 शब्द महत्त्वपूर्ण है जो [illegible] आप मे बहुत ही भावगाम्भीर्य [illegible] हुए है। इन पर जितना भी विचार किया जाए उतना ही थोडा है। नमूने के रूप मे कुछ भाव दर्शाए हैं। इच्छा तो यह है कि सहयोग और समय मिलने पर इनका अनुसन्धान पूर्ण एक अनुशीलन किया जाए। जिसमे आज तक लिखी गई छोटी बडी सभी व्याख्याओ को सामने रखकर सम्पूर्ण साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन पूर्वक एक निष्कर्ष प्रस्तुत किया जाए।

देखिए सहयोग के हाथ कब आगे आते हैं ?

—

# सम्पादकीय

## आर्य समाज कब तक सोया रहेगा ?

अमर बलिदानी प लेखराम जी ने अपने देहान्त से पहले आर्य समाज को यह सन्देश दिया था कि उनके जाने के पश्चात साहित्य निर्माण का काम बन्द नही होना चाहिए और इसमे सन्देह नहीं कि बहुत समय तक वह बन्द नही हुआ। आर्य समाज के इतिहास में एक ऐसा युग भी आया है जब छोटे 2 ट्रैक्ट प्रकाशित हुआ करते थे और उनके द्वारा आर्य समाज का प्रचार हुआ करता था। प्राय देखा गया है कि बडी 2 पुस्तको को बहुत कम व्यक्ति पढते हैं। अब तो उनका मूल्य भी बहुत बढता जा रहा है। इसलिए जब कभी आर्य समाज के विद्वान बडी बडी किताब लिखते हैं। उनकी बिक्री उतनी नही होती जितनी कि होनी चाहिए। यदि हो जाए तो उनके विचारो का प्रचार एक सीमित क्षेत्र में ही होता है। जन साधारण तक आर्य समाज के विचार नही पहुचते। उसका एक कारण यह भी है कि अब छोटे-छोटे ट्रैक्ट बहुत कम प्रकाशित होते हैं। वास्तविक स्थिति यह है कि जब आर्य समाज में कोई भी योजनाबद्ध काम नही हो रहा, साहित्य प्रकाशन एक ऐसा कार्य है जिसके लिए कई बातें सोचनी पडती हैं। यह भी देखना पडता है कि किस विषय पर पुस्तक लिखी गई है। यह भी देखना पडता है कि वह ऐसी है या नही कि अधिक से अधिक व्यक्ति तक वह पहुच सकें। यह भी देखना पडता है कि वह सुन्दर ढग से प्रकाशित भी हुई है या नही। अब जो साहित्य प्रकाशित होता है। अच्छा कागज अच्छी छपाई उसका मुख्य पृष्ठ आकर्षक होना चाहिए। कहने का अभिप्राय यह कि जब तक आर्य समाज साहित्य निर्माण का अपना काम किसी योजनाबद्ध ढग से न करेगा उस समय तक आर्य समाज इस दिशा में बहुत पीछे रह जायेगा। हिन्दी मे कुछ साहित्य अब भी प्रकाशित होता है लेकिन अंग्रेजी में बहुत कम प्रकाशित होता है और यह अंग्रेजी का युग है। किसी भी विचार धारा के प्रचार के लिए अंग्रेजी का साहित्य आवश्यक है। विशेषकर विदेशो में प्रचार के लिए। हमारे अपने देश मे भी अंग्रेजी भाषा मे साहित्य अवश्य प्रकाशित होना चाहिए।

साहित्य भी दो प्रकार का होता है। एक रचनात्मक साहित्य जिसमे हम अपने सिद्धान्तों और अपनी विचारधारा को इस ढग से प्रकाशित करें कि पढने वाले पर इसका अच्छा प्रभाव पड। दूसरा साहित्य वह होता है, जिसमे आर्य समाज पर की गई आपत्तियो का उत्तर देना आवश्यक होता है। इस साहित्य मे हम बहुत पिछड गये हैं। मैंने कई बार देखा है कि समाचार पत्रो और पत्रिकाओ मे विशेषकर अंग्रेजी पत्रिकाओ और पत्रो मे आर्य समाज के विरुद्ध कई लेख होते हैं। कई पत्र प्रकाशित किये जाते हैं। परन्तु आर्य समाज की ओर से उनका कोई उत्तर नही दिया जाता। 1' जुलाई का देहली से प्रकाशित होने वाला अंग्रेजी दैनिक टाइम्स आफ इण्डिया' मैंने देखा है। उसमे आर्य समाज के विषय मे तीन चार पत्र प्रकाशित हुए हैं। कुछ उसके पक्ष में, कुछ उसके विरोध मे। आर्य समाज की ओर से इनका उत्तर प्रकाशित होना चाहिए। परन्तु हमारी ऐसी कोई व्यवस्था नही जो इस काम को कर सके। सार्वदेशिक सभा को साहित्य निर्माण के लिए और विशेषकर इस प्रकार के लेखो या पत्रों का उत्तर देने के लिए अंग्रेजी के ऐसे लेखक अपने पास रखने चाहिए, जो तुरन्त ऐसे लेखो का उत्तर दे सकें। परन्तु सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों को कई बार यह भी पता नही होता कि ऐसे कोई लेख प्रकाशित हुए हैं या नहीं। यही कुछ पुस्तको के विषय मे भी कहा जा सकता है। जिस संस्था का साहित्य निर्माण का कोई प्रबन्ध न हो, वह संस्था कोई प्रगति नहीं कर सकती। आज के युग में कई संस्थाए केवल अपनी विचार धारा के प्रचार के लिए लाखो और करोडो रुपये वार्षिक व्यय कर देती है। आर्य समाज एक ऐसी संस्था है, जिसका इस दिशा मे ध्यान नही जा रहा। यही कारण है कि आर्य समाज पिछड रहा है। आज बडी-बडी मूल्यवान् पुस्तको के प्रकाशित करने की इतनी आवश्यकता नही जितनी छोटी और कम मूल्य की पुस्तकों की, हम अधिक से अधिक जनता तक अपने विचारो को छोटी-2 पुस्तिकाओं के द्वारा जितना अधिक पहुचा सकेंगे, उतना ही हमारा प्रचार होगा। जब हम कुछ सिद्धान्तों को एक ऐसी भाषा में प्रस्तुत करते हैं जिसे साधारण व्यक्ति नहीं समझ सकते तो हमारा सारा प्रयास विफल जाता है। इसलिए आज आवश्यकता इस बात की है कि आर्य समाज साहित्य निर्माण के लिए अपनी एक योजना बनाए। और उसके अनुसार अधिक से अधिक ऐसा साहित्य प्रकाशित करे जिसे सर्वसाधारण पढ सके और उन पर उसका प्रभाव भी हो सके। जैसाकि मैंने ऊपर भी लिखा है, कुछ पुस्तकें बुद्धिजीवियो के लिए होती हैं और कुछ साधारण व्यक्तियो के लिए। आर्य समाज को दोनो प्रकार का साहित्य प्रकाशित करना चाहिए। परन्तु अधिक साहित्य सर्वसाधारण के लिए होना चाहिए। अब जबकि हम महर्षि निर्वाण शताब्दी मनाने जा रहे हैं सार्वदेशिक सभा या परोपकारिणी सभा को ऐसी योजना अवश्य बनानी चाहिए जिसके अनुसार भविष्य मे साहित्य निर्माण का काम सुचारु रूप से चल सके। समय समय पर आर्य समाज पर जो आक्षेप होते रहते है उनका भी अवश्य उत्तर मिलना चाहिए। सार्वदेशिक सभा और परोपकारिणी सभा यदि यह दोनो अपने अपने क्षेत्र मे स्वतन्त्र रूप से काम करना चाहे तो उसमे भी कोई आपत्ति नही है। आर्य समाज की कई और ऐसी संस्थाए हैं जो इस दिशा मे सराहनीय काम कर रही है। परन्तु वास्तव मे यह उत्तर दायित्व सार्वदेशिक सभा का है। उसे इस दिशा मे सोचना चाहिए कि साहित्य निर्माण के लिए क्या करना चाहिए और किस प्रकार अधिक से अधिक साहित्य प्रकाशित किया जा सके ताकि आर्य समाज का सन्देश एक छोटे 2 किसान और छोटे से छोटे मजदूर की झोपडी तक भी पहुच सके। उसी स्थिति मे आर्य समाज का वह प्रचार हो सकेगा जिसके लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इसकी स्थापना की थी।

—वीरेन्द्र

## धन्यवाद

24 जून को जालन्धर मे दैनिक प्रताप व वीर प्रताप के कार्यालय मे जो बम विस्फोट हुआ था और उसके द्वारा दो निर्दोष नवयुवकों की हत्या कर दी गई। उस पर मुझ कई आर्य समाजों के प्रस्ताव और कई आर्य व धुओ बहनो व भाईयो के पत्र प्राप्त हुए हैं। यह सम्भवत इसलिए कि वह बम का पार्सल मेरे नाम था। ऐसा प्रतीत होता है कि किसी व्यक्ति ने मेरी हत्या करने के लिए वह बम का पार्सल भेजा था। मुझ इससे कोई आश्चर्य नही हुआ। पिछले छह वर्ष से यह धमकियां दी जा रही थी कि यदि मैंने अकालियो और उग्रवादी सिखो के विरुद्ध लिखना बन्द न किया तो उसका परिणाम मेरे लिए अच्छा न होगा। फिर भी मैंने जो उचित समझा वह मैं लिखता रहा हू। आर्य समाज के जो दस नियम महर्षि दयानन्द हमे दे गये हैं उनमे एक यह भी है कि सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोडने के लिए हमे सदा ही तत्पर रहना चाहिए। आर्य समाज का इतिहास भी हमे यही बताता है कि जब एक आर्य समाजी सच्चाई के लिए लडता है तो वह यह नही देखता कि उसका परिणाम क्या होगा। वह प्रत्येक कष्ट के लिए तयार रहता है। इसी भावना से प्रेरित होकर मैं जो कुछ ठीक है वह लिख रहा हू। सच्चाई सदा ही कडवी होती है इसलिए बहुत थोड व्यक्ति एसे मिलते हैं जो उसे सहन करने की शक्ति रखते हैं ऐसा प्रतीत होता है कि पजाब मे अब बहुत से यह व्यक्ति पैदा हो गए हैं जो सच्चाई को सुन नही सकते। वह केवल उग्रवादी ही नहीं वे देशद्रोही भी हैं और धर्म के शत्रु भी हैं। कोई धर्म किसी दूसरे व्यक्ति को मारने की अनुमति नही देता। जो कुछ पजाब मे हो रहा है यह वे ही लोग कर रहे हैं जिन्हे अपने ही धर्म मे विश्वास नही है। इसलिए जो कुछ हुआ है उस पर किसी को आश्चर्य न होना चाहिए। मेरे लिए यह अत्यन्त सन्तोष का विषय है कि इतने भाईयो और बहनो ने मुझ सहानुभूति के पत्र भेजे हैं और इस बात पर भी सन्तोष व्यक्त किया है कि परम पिता परमात्मा की कृपा से हम बच गए। मैं समझता हू कि यह जहा एक ओर परमात्मा की कृपा का परिणाम है दूसरी ओर असख्य आर्य बहनो और भाईयो के आशीर्वाद और उनकी शुभ कामनाओ का परिणाम है। जिन आर्यसमाजो ने प्रस्ताव पारित करके भेजे ह और जिन्होने मुझ व्यक्तिगत यह पत्र लिखे हैं मैं उन सबका हृदयसे धन्यवाद करता हू इस आशा के साथ कि उन सबका आशीर्वाद मुझ और मेरे परिवार को भविष्य में भी इसी प्रकार मिलता रहेगा। ताकि मैं इसी प्रकार अपने देश, धर्म और समाज की सेवा करता रहू जिस प्रकार कि आज तक करता रहा हू।

—वीरेन्द्र

# महाभारतकालीन दिव्यास्त्र : एक लघु विश्लेषण

ले —श्री महावीर जी नीर विद्यालंकार गु कु कांगडी

(गतांक से आगे)

आज भी जिन राष्टो के पास विनाशकारी प्रलयकारी बम विद्यमान हैं वे उनका प्रयोग करने मे महान अनिष्ट की आशका से उतावली नही करते । क्योकि भस्मासुर की तरह वे स्वय भी भस्म हो सकते हैं । इसलिए जब भी किन्ही दो देशो मे युद्ध होता है तो वे देश इन भयकर (दिव्यास्त्रो) का प्रयोग न कर इन्द्रास्त्र मोहनास्त्र आग्नेयास्त्र आदि के रूप में हल्के सहारक बमो का ही प्रयोग करते हैं । किसी पुल तेल स्रोत हवाई पट्टी सामरिक महत्व की इमारत अथवा शत्रु पक्ष की आगे बढती आ रही विध्वस कारी फौज पर हवाई हमले द्वारा या टको द्वारा ऐसे गोले डाले जाते हैं ।

जो उन्हे तहस नहस कर डालते हैं महाभारत काल मे भी ऐसे अनेक उदाहरण प्राप्त हैं घटोत्कच के निकट विध्वस और मार काट को देखकर कर्ण द्वारा अमोघ शक्ति का प्रयोग जैसा उदाहरण हमारी जिज्ञासा को और भी बढा देता है । युद्ध के कुछ अपने नियम भी होते हैं इन्ही नियमो के अन्तगत दिव्यास्त्रो का प्रयोग भी उस काल मे उचित या अनुचित माना जाता था ।

महाभारत मे एक प्रसग आता है द्रोणाचाय जब युद्ध मे पाण्डव वीरो से तग आ गये तो उन्होने महा विनाशकारी शक्तिशाली अस्त्र का प्रयोग कर डाला । भयकर विनाश होने की आशका तो थी ही । तभी वहा युद्ध नियमो का उल्लघन करने के कारण द्रोण के विरोध मे कुछ वीरो ने कोलाहल मचा दिया ब्राह्मण होते हुए भी क्षत्रिय धम का मर्म्या न करते हुए भयकर अस्त्रो का प्रयोग करने हेतु लज्जित किया । तब द्रोण अपने शस्त्रास्त्र छोड रथ मे बैठ गए (धृष्टद्युम्न को ऐसे मे उनका वध करने का अवसर मिल गया जो और भी घोर जघन्य कम था) इस प्रकार ऐसे अस्त्रो का प्रयोग करने को उस समय ठीक नही समझा जाता था क्योकि युद्ध मे साधारण जनो को दिव्यास्त्रो द्वारा मारना कदापि उचित नही माना जाता था—यथा न त व्यक्त रण हन्त विव्यरस्त्र पथग् जनम इस प्रसग को श्लोको मे पढिए—

अधमत कृता युद्ध समयो निधनस्य ते ।
न्यस्तायुध रण द्रोण ।
समीक्षास्म्यमवास्थितान ।
ब्रह्मास्त्रण यथा दग्धा अनस्त्रज्ञानरा भुवि ।
यदेतदीदृश विप्रकृत कर्म न साधु तत । अ 190 39 द्रोणपर्व ।

अस्त्रास्त्रो की चर्चा करते हुए हमे उनके भेद को भी जानना आवश्यक है । अस्त्र वे हथियार हैं जो फक कर शत्रु पक्ष को हानि पहुचाते शस्त्र वे कहे जाते हैं जो हाथ मे पकड कर प्रयोग मे लाए जाते हैं । आधुनिक प्रक्षेपास्त्र अस्त्र कोटि मे आते हैं । आज समय की कैसी विडम्बना है कि एक ओर बड बड राष्ट निरस्त्रीकरण की आवाज बुल द करते हैं और दूसरी ओर प्रत्येक राष्ट प्रक्षेपास्त्रो को एक दूसरे की ओर ताने खडा है ।

वास्तव मे यह पाप वत्ति मनष्य मे आती क्यो है कि मैं सबसे बडा बन जाऊ उसे मार दू । उसे काट दू । समस्त पथ्वी पर मेरा राज्य हो जाए अर्थात दूसरे को सताकर मारकर समग्र रूप मे ऊचा बनने की वृत्ति क्यो मनुष्य मे उत्पन्न होती है ? यह एक प्रश्न है ? इसी प्रश्न को धनुधर अजु न ने कृष्ण से पूछा था कि यह मनुष्य पाप वत्ति की ओर क्यो आकृष्ट होता है । अर्थात पाप क्यो करता है दुर्योधन के पास सब कुछ था कि तु उसने फिर भी पाप वत्ति की ओर पग बढाए—धमज्ञ कृष्ण ने उन्हे यो उत्तर दिया—

काम एष क्रोध एष रजोगण समुद्भव
महाशनो महापाप्मा विद्धय नमिह वरिणम । 3 37 गीता ।

इन सब पाप वृत्तियो की जड लडाई झगडो की जड काम व क्रोध है । ये जुडवा भाई हैं । साथ साथ रहने वाले हैं । एक दूसरे की बडी सहायता करते हैं काम के आते ही क्रोध का आना स्वाभाविक है । काम आने पर क्रोध और क्रोध आने पर (ज्ञान लुप्त हो जाता है । इस प्रकार ये कामनाए ही वे विस्तारवादी प्रवत्तिया ही ससार मे भयकर रक्तपात खन खराबा कराती हैं । क्या बड बड राष्टो की कामनाओ पर अकुश लगाया जा सकता है ? चीन की कामना है मैं बडा बन जाऊ अमरीका और रूस चाहते हैं हम ही ससार के सिरमौर बन जाए । जर्मनी और फ्रास नई शक्ति बनने को उत्सुक हैं ब्रिटेन चाहता है दुनिया पर मेरा आधिपत्य बन जाए । तो ऐसे में दुनिया मे शान्ति कहा ? इन घातक अणु अस्त्रो महाएक हथियारों का निर्माण बन्द कहा ? आज नये 2 अस्त्रो का निर्माण जारी है उन्हें कम करने का या नष्ट करने का केवल दिखावा ही हो रहा है ।

अस्त्रास्त्रो के सम्बन्ध मे महाभारत व श्री मदभागवत मे बहुत कुछ आया है । विज्ञान यदि खोज कर तो बड बडे तथ्य प्राप्त हो सकते हैं । सब जानते हैं कि आग जलाने वाली गैसें आक्सीजन और पकाने वाली नाईट्रोजन होती है । उस समय के (पदाथ विद्या) विद्व इस तथ्य से अवगत थे आग्नेयास्त्र एव पर्जन्यास्त्र वायव्यास्त्र आदि अस्त्रो मे इन गैसो का महत्वपूर्ण स्थान रहा होगा । आज भी कारखानो मे आग बुझाने वाली गैस व सिलडर लटके मिलेंगे । योगिराज श्री कृष्ण के चक्र सुदर्शन को भी वैज्ञानिक दष्टि से परख तो तथ्य प्राप्त हो सकता है । वस्त (चक्र या चरे) की विलक्षणता यह है कि वह तीव्र गति से घूमकर वापिस आ जाता है । या अपनी धुरी पर तीव्र गति से घूमता है । यदि आपने सकस में गोल टोप अथवा रस्से को घुमाते हुए किसी व्यक्ति को देखा होगा तो आप इस के अन्दर छिपे रहस्य एव गति से अवगत हो सकते हैं । कोई भी विद्या हो वह सतत् साधना व अभ्यास से ही फलवती या सिद्ध होती है । अस्त्रास्त्रो के अभ्यास मे भी यही गुर विद्यमान है ।

बलराम जी को हलधर कहते हैं । हल क्या करता है धरती को खोदता है फाडता है । यह उन्हे जानने का एक इ गित या प्रतीक है । वस्तुत बलरामजी डायनामाइट विद्या के परम पारखी थे । आज भी सेना मे इस विद्या के जानकारो की टकडी अलग होती है । जो युद्ध काल मे या शान्तिपूर्ण कार्यों के लिए धरती मे विस्फोटक पदाथ रखकर किसी स्थान को उडाने या समतल करने मे सहयोग करती हैं । श्रीमदभागवत में आता है कि हस्तिनापुर नगरी को ध्वस्त करने के लिए बलराम जी ने जब अपने हल की नोक से खनन कर उसे खींचा (विस्फोट) किया तो हस्तिनापुर नगरी ऐसे डोल उठी जसे समुद्र मे ज्वार भाटे के समय नाव डोल उठती है । विस्फोट से धरती मे कम्पन साधारण सी बात है । भागवत के श्लोक पढिए व सुनिए और सगति परक अर्थ लगाइए—

अद्य निष्कौरवी पृथ्वीं करिष्यामी त्यमर्षित ।
गृहीत्वा हलमुत्तस्थौ दहन्निव जगत्त्रयम । अ 68 40 ।
लाङ्गलाग्रेण नगरमुद्विदार्य गजाह्वयम्
विचकर्ष स गङ्गायां प्रहरिष्यन्नमर्षित
अ 10-अ 68 41
जलयानमिवाघूर्ण गङ्गायां नगरं पतत्
आकृष्यमाणमालोक्य कौरवा जात सम्भ्रमा । 10 68 42 ।

इस प्रकार हमारी प्राचीन (पदार्थ विद्या) विज्ञान अनेक ग्रन्थों में बिखरा पडा है । ज्यो 2 आधुनिक विज्ञान हमारे सामने कोई आविष्कार करता है तो हमारी दृष्टि इन ग्रन्थों पर भी अनायास पड जाती है । वस्तुत यदि हम इन बातों को प्राचीन गपोडे न मानकर आधुनिक विज्ञान के बढते हुए प्रभाव काल में समझने की कोशिश करें तथा साथ ही सगतिपरक अर्थ लगाए तो बहुत कुछ प्रगति हो सकती है नहीं तो वे ग्रन्थ गठरियो के भीतर ही पड़े रह जाएंगे ।

सस्कृत साहित्य मे उत्तर राम चरित नाम का महाकवि भवभूति का नाटक है उसके लव द्वारा जृम्भकास्त्र का प्रयोग मिलता है । इस अस्त्र के प्रभाव से समस्त सेना स्थिर हो जम्भाई लेने लग जाती थी महाभारत मे और भागवत में इसे जम्भणास्त्र कहा है । विराट पव मे जब उत्तर ने कौरव सेना के विविध रग बिरंगे वस्त्र प्राप्त करने की बात कही तब अजु न ने मोहनास्त्र का प्रयोग कर सबको अचेत कर डाला । उत्तर ने र ग बिरंगे वस्त्र उतार लिए किन्तु अचेत करके शत्रु को कत्ल करने का विधान युद्ध मे नही था ।

इस प्रकार दिव्यास्त्रो की चर्चा के पश्चात महाभारत में रथो या वाहनों की दिव्यता व उत्कृष्टता का वर्णन है । पाण्डवो के अस्त्रो शस्त्रो व रथो आदि की उत्कृष्टता की बात सुनकर दुर्योधन भी कहता है कि मेरे यहा ऐसे वैज्ञानिक हैं जो जल वायु और पृथ्वी तीनो पर रथों का समान रूप से स्तम्भन कर सकते हैं । यथा—

स्तम्भितास्त्वप्सु गच्छन्ति मया रथ पदातय ।
देवासराणा मायानामहमेक प्रवर्तिता ।
उद्योग पव 61 14
गमीक्षितीर्भिवान् तेषान यामि कार्येण केनचित ।
तलाश्या मे प्रवर्तन्ते यत्र यत्राभिकामये । 15 ।

इसी प्रकार अजु न के विमान एव दिव्य रथ की चर्चा भी यहा करना अप्रासंगिक न होगा । आधुनिक युग मे इस शक्ति या पावर की तुलना करते हुए कहते हैं कि इसमे इतने (हॉर्स) पावर अर्थात घोडो की शक्ति है । शक्ति की तुलना घोडो की शक्ति से की जाती है । ऐसा ही कुछ यहां प्रतीत होता है । अर्जुन का रथ कोई साधारण रथ नहीं था यह और रथो से विशिष्ट था दिव्य था । जो जल थल व नभ में अप्रतिहत गति से जा सकता था

(शेष पृष्ठ 7 पर)

# सुभाषित माला 6

ले—आचार्य श्री सुभाषचन्द्र जी शास्त्री सभा महोपदेशक

परोपकार कर्तव्य प्राणै कण्ठगतैरपि ।
परोपकारज पुण्य न स्यात्क्रतुशतैरपि ॥

अर्थ—प्राण को सकट में डाल कर भी परोपकार अर्थात दूसरे का हित करना चाहिए परोपकार से मिला हुआ पुण्य अथवा श्रेय एक सौ बार हवन करने से भी अधिक है।

धनानि जीवितञ्चैव परार्थे प्राज्ञ उत्सृजेत् ।
तन्निमित्तो वर त्यागो विनाशे नियते सति ॥

अर्थ—धन वैभव एव जीवन बुद्धिमान व्यक्ति श्रेष्ठ कामो मे लगाए परोपकारादि पवित्र कर्मों के लिए किया हुआ धन व जीवन का विनियोग सर्वोत्तम है, क्योकि अन्त में इनका विनाश निश्चित है।

रविश्चन्द्रो घना वृक्षा नदी गावश्च सज्जना ।
एते परोपकाराय युगे दैवेन निर्मिता ॥

अर्थ—दयालु दयाघन प्रभुने सूर्य, चाद घने वृक्ष (वनस्पति जगत) नदिया गौए और सज्जन इनका सृजन युग के अन्दर परोपकार अर्थात दूसरो की भलाई के लिए किया है।

तृणञ्चाह वर मन्ये नरादनुपकारिण ।
घासो भूत्वा पशून्पाति भीरून्पाति रणाङ्गण ॥

अर्थ—मैं तो परोपकारहीन अपने पेट भरने की चिन्ता करने वाले स्वार्थी मनुष्य से तृण को अच्छा समझता हू जो घास होकर भी पशुओ की रक्षा करता है, समरभूमि मे कायर व्यक्ति की अपने मे छिपाकर रक्षा करता है।

परोपकारो देहेन भवेच्चेत्किमत परम् ।
देहिना करणीय स्याज्जात देहफल यत ॥

अर्थ—शरीर के द्वारा किया हुआ परोपकार से बढकर क्या हो सकता है। अत शुभ कर्मों को करना चाहिए, क्योकि यही आत्मा का देहफल है अर्थात् कर्मों के अनुसार ही आत्मा को शरीर या योनि मिलती है।

—

## पंजाब में तुरन्त राष्ट्रपति राज लागू किया जाए

प्रस्ताव—आर्य समाज हनुमान रोड नई दिल्ली की यह सभा पजाब मे अकाली आन्दोलन से उत्पन्न स्थिति को देश की एकता और अखण्डता के लिए चुनौती समझती है। यह सभा अकाली अकालियो द्वारा श्री वीरेन्द्र तथा प्रतापभवन जालन्धर मे बम फैंकने के आक्रमण को सारे आर्य जगत और हिन्दू समाज पर आक्रमण समझती है।

अत सरकार से माग करती है कि पजाब की गम्भीर स्थिति को देखते हुए वहा पर तुरन्त राष्ट्रपति शासन लागू किया जाए। पजाब के सम्बन्ध मे सरकार अकालियो से हर प्रकार की बात चीत तुरन्त बन्द करें।

सेवा मे—प्रतिलिपि

ज्ञानी जैल सिंह जी राष्ट्रपति भारत सरकार नई दिल्ली।

श्रीमती इन्दिरा गान्धी जी, प्रधान मन्त्री भारत सरकार नई दिल्ली।

श्री गहमन्त्री जी
भारत सरकार नई दिल्ली।

श्री मुख्यमन्त्री जी पजाब।

श्री वीरेन्द्र जी
दैनिक प्रताप जालन्धर। —सम्पादक

## आर्य समाज देव नगर दिल्ली का चुनाव

आर्य समाज (मुलतान) देव नगर का वार्षिक चुनाव रविवार दिनाक 29 मई 1983 को हुआ था। 1983 84 के लिए जो अधिकारी चुने गए हैं वह इस प्रकार है —डा श्याम देव प्रधान श्री महावीर जी स्नातक उप प्रधान, श्री टेक चन्द दीवान उपप्रधान श्री धनपाल ओबराय मन्त्री श्री राकेशदेवी उपमन्त्री श्री हरिपाल कोषाध्यक्ष श्री लालचन्द पुस्तकाध्यक्ष तथा श्री अशोक वर्मा लेखा निरीक्षक।

# जेल में दु:खी क्यों हो !

आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर की तथा आर्य जगत की उच्चकोटि की स्वामिनी पूज्य माता भीरामति जी 3 जुलाई को सहारनपुर की जेल मे गई। वहा पर उन्होने तीन सौ कैदियो के समक्ष अपना भाषण दिया। सबसे पहले उन्होने कैदियो से प्रश्न किया कि आप यहा पर सुखी हैं या दुखी हैं। उनमे से सबसे प्रथम पक्ति मे बैठ हुए कैदी तुरन्त बोल पड कि हम बहुत दुखी हैं। उनके इस उत्तर को सुनकर माता भीरामति जी ने कहा कि आप दुखी क्यो हुए इसका मूल कारण है कि आपने बुद्धिमता से काम नही किए अपितु दुष्कर्म किए हैं जिसके परिणाम स्वरूप आपको कारागार का कठिन दण्ड सहना पड रहा है। यदि आप पढते लिखते और योग्य बनते तो आप आज किसी दफ्तर मे या बैंक इत्यादि मे सर्विस करते यहा पर आपको कष्ट न होता अपितु कुर्सी पर बैठने और पखो की हवा लेते।

आप नवयुवक है आप मे बहुत शक्ति है आप अब भी अपने जीवन को बदल सकते हैं यदि आप जेल की सजा पूरी होने के पश्चात बाहर जाकर अच्छे अच्छे काम कर तो आपका जीवन बहुत ऊचा हो सकता है। जिस प्रकार पुरातन काल मे रत्नाकर डाकू का हुआ था। उसको नारद मुनि ने उपदेश दिया तो उसने डाका छोड दिया और अच्छे काम करने लग गया। आगे जाकर वह महर्षि की पदवी को पा गए और ससार मे प्रसिद्ध हुए। इस प्रकार बुरा आदमी भी अच्छा बन सकता है। इस प्रकार की बहुत उत्तम शिक्षा से भरपूर धार्मिक प्रवचन तीस मिनट तक देते हुए ओ३म प्रभु का सर्वोत्तम नाम की व्याख्या को समझा कर कैदियो को उसका जप करने को कहा। अन्त मे समस्त कैदियो ने हाथ खड करके प्रतिज्ञा की कि हम आगे को कोई बुरा काम नही करेगे। माता जी ने अपनी लिखी पुस्तक प्रेरणाप्रद कहानिया ईशमाला कष्टमोचन कैदियो को पढने को वितरण की।

अन्त मे जेलर साहिब ने पूज्या माता जी को बहुत 2 धन्यवाद देते हुए कहा कि इतनी भारी वर्षा मे आप कष्ट उठा कर आई हैं वास्तव मे ही आपका भाषण बहुत शिक्षाप्रद व लाभप्रद है। जिसका प्रभाव कैदियो पर बहुत अच्छा पडेगा।

हमारी आदरणीय माता जी को वेद प्रचार की बहुत लग्न है इसलिए आप स्थान स्थान पर जाकर वेद प्रचार के कार्य को करती हैं। अभी कुछ दिन पूर्व हरिद्वार मे प्रजापति सम्मेलन हुआ जिसमे बाहिर से हजारो की सख्या मे नर और नारी उपस्थित थे उसके महिला सम्मेलन मे भी आपका प्रभावशाली प्रवचन हुआ जिसकी लोगो ने भरपूर प्रशसा की। आपको एक हिन्दू भाई गोविन्दरामजी पाकिस्तान से वेद प्रचार के लिए निमन्त्रण दे गए हैं उसके लिए आप पासपोर्ट बनवाने का प्रबन्ध कर रही हैं ऐसी पूज्या माता जी के जीवन से आर्य भाई बहिनो को प्रेरणा लेकर काम करना चाहिए। —मन्त्री

( 4 पृष्ठ का शेष )

सकता था। उसके ध्वज मे जो एरियल लगा था वह बहुत बडा था। उसमे ऐसी दिव्यता थी कि उसे सारे ब्रह्माण्ड का ज्ञान रहता था। उसके इस रथ मे 100 अश्वो की शक्ति बराबर बनी रहती थी। उसके चलने की ध्वनि अलग ही थी उसमे से नीले पीले काले आदि विविध वर्ण वाला धुआ निकलता था। विद्वान पाठक निकाल पढ और विचार कर। यक्ति युक्त अर्थ लगाए—

देवहि सम्भनो दिव्यो रथो
गाण्डीव धन्वा।
न स ज या मुस्येभ भा स्म कृढध्व
मनो युधि ॥

उद्योग पर्व 56 आ 168

महा अर्जुन के रथ का निर्माण करने वालो को विलक्षण प्रतिभा के धनी देव कहा है। वस्तुत ये महान वैज्ञानिक थे। जिन तीन पृथ्वी जल व वायु पर चलने की क्षमता रथ मे पैदा की उन तीनो के नाम इस प्रकार हैं—विश्वकर्मा त्वष्टा व प्रजापति निरुक्त शास्त्र के अनुसार ये नाम अपने गुणो के अनुसार अर्थ देता है। ध्वजा वर्णन का वचन आगे पढिए—

ध्वजे हि तस्मिन् रूपाणि चक्रस्ते
देवमायया।
महाधनानि दिव्यानि महान्ति च
लघूनि च। उद्योग पर्व 56 अ
सर्वाश्चिशो योजनमात्रम तर स तिर्य
गूर्ध्व च रुरोध वै ध्वज।
न स सज्जेऽसौ तरुभि सवतोऽपि
तथाहि माया विहिता भौमनेन।
यथाग्निधूमो दिवमेति रुन्धन वर्णान
विभ्रन तैजसाश्चित्ररूपान।
तथा ध्वजो विहितो भौमनेन न वेद
भारो भविता नोपरोध।
श्वेतास्तस्मिन वातवेगा सदश्वा
दिव्याश्चित्ररथेन दत्ता
भ यर्ता म दिवि वा नरेन्द्र येषा
गतिर्हीयते नात्र सर्वा ॥
मन यन मत पूर्वते नित्य काले
हय हत दत्त वर पुरस्तात 113

इस प्रकार उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर महाभारतीय दिव्यास्त्रो व रथा के काल्पनिक स्वरूप को कुछ साकार कर दिया जा सकता है। अन्तर्दृष्टि से देखने पर भाव स्वय स्पष्ट होते चले जाते हैं अन्यथा साधारण पाठक उनमे उलझ कर ही रह जाता है। हाथ पल्ले कुछ नही पडता किन्तु सगतिपरक अर्थ लगा कर हम उसका अत्यन्त लाभ आनन्द उठा सकते हैं व कुछ प्राप्ति कर सकते हैं।

# अंग्रेजी प्रभुसत्ता को हिलाने वाली—
# कित्तूर की महारानी चेन्नाम्मा

ले श्री सुरे मोहन सनील विद्यावाचस्पति श्रीमती भाग्यवन्ती
सेवा सदन दिल्ली

आपको नाम पढ़कर आश्चर्य होगा किन्तु आश्चर्य न कर चेन्नाम्मा शब्द का अर्थ होता है—

सब समृद्धि और वीरता की देवी'

वीरांगना देवी चन्नाम्मा जब छात्रा अवस्था मे विद्यालय मे पढती थी उस समय इतिहास की पाठ्य पुस्तको मे अंग्रेजों की प्रशसा लिखी होती थी उसको पढ़कर उसका खून खौल जाता था वह बौखला उठती थी और ये शब्द कहती

दे निगोडी पुस्तक भी तो उनके गुण गाती नही थकती क्या हमारे देश मे वीर ही नही हुए थे हमारे देश मे एक से एक बढ़कर वीर पैदा हुए हैं रो कछ नही

र णा प्रताप छत्रपति शिवाजी वीर छत्रसाल इन सबको भल गए और केवल चार दिनो से जबरदस्ती घसे इन लटेरो की वीरता क सराहे यह कहां का न्याय है अहो जब मैं रानी बन गी तो इन अंग्रेजो के दांत खट्टे कर दू ी किशोरी जोश मे कह उठती

—लेखक

देश प्रेम की चिन्गारी सलगाने वाली प्रथम महिला कित्त की महारानी को भला कौन नही जानता

झासी की रानी लक्ष्मीबाई मे लगभग 24 वर्ष पूर्व इस नारीने स्वदेश की रक्षा के लिए अंग्रेजी प्रभसत्ता को चनौती दी थी उस समय देश का शासक ग अंग्रेजो की कूटनीति से भ ी प्रक परिचय नही हो पाया था

ईस्ट इण्डिया कम्पनी एक ब त एक राज्य को हडपती जा रही थी उसी समय उनकी दृष्टि 359 गाव और 2 किलो से पूर्ण कित्तर राज्य पर पडी

इसी समय कित्तर के मह राज म ल ज्ज का देहान्त हो गया और युवराज शिवलिंग खसज राजा बना

युवराज खसज मे ान्योचित बुद्धि क अभाव था जिससे वह लोभी और स्वार्थी दीवानो के हाथ की कठपुतली बन गया था सन् 1818 मे अंग्रेजो और पेशवाओ मे युद्ध हुआ

खसज ने रानी चेन्नाम्मा की सलाह को न मानकर युद्ध में अंग्रेजो की सहायता की

अंग्रेजो ने 3900 रुपये पुरस्कार स्वरूप कित्तूर रा य को देन तो स्वीकार किया किन्तु कित्तूर रा य को जो 1400 घुडसवार रखने का अधिकार था वह छीन लिया गया और उसके बदले मे उसने ही अब ज सनिक रखने का आदेश दिया गया रानी चेन्ना म ने जब यह सना तो उसे बहुत क्रोध आया उसने अंग्रेजो का आदेश मानने से इन्कार कर दिया इसी समय म राजा खसज की बीमारी ने भयकर रूप धारण कर लिया उ ने अपने अन्तिम समय मे एक बालक को गोद लेकर अपना उत्तराधिकारी घोषित किया

ध रवाड के तत्कालीन डिप्टी कमिश्नर थकरे को जब यह सूचना मिली तो उसने कम्पनी की पूर्व अनुमति के बिना पत्र गोद लेना आपत्तिजनक बताया

उसने रानी चेन्नाम्मा को राज्यभार दीवान के हाथो सौंप देने का आदेश दिया इस आदेश को सुनकर रानी चेन्नाम्मा की क्रोधाग्नि भडक उठी और उसने युद्ध की तयारियां शुरू कर दी

0 नवम्बर 824 को थकरे ने पाच सौ सनिक लेकर कित्तूर राज्य पर हमला किया अपनी सफलता न देख थकरे ने कूटनीति का सहारा लिया

रानी के पास सन्देश भेजा कि रानी ने अभी तक कम्पनी का रुपया अदा नहीं किया हम खुद वसूल करने तथा बालक पत्र के विषय मे बातचीत करने आए हैं रानी अंग्रेजो की चालाकी को समझ गयी और उसने तत्काल उत्तर दिया कि थैकरे से अब बातचीत युद्ध के मैदान में होगी

दोनो ओर से सेनाए मैदान मे आ डटीं रानी के अचक निशाने से थैकरे मारा गया और अंग्रेजी सेना भाग खड़ी हुई किन्तु अंग्रेजी सेना एक बार फिर दक्षिण के कमिश्नर चेपलेन के नेतृत्व मे आ पहुची

रानी का स्वार्थी दीवान अंग्रेजो से मिल गया और उसने किले का गुप्त द्वार अंग्रेजो को बता दिया

रानी को अंग्रेजों ने बन्दी बना लिया कित्तूर पर अंग्रेजो का अधिकार हो गया

रानी चेन्नाम्मा क पाच साल की कठिन यन्त्रणा के बाद 1829 30 के मध्य मे देहान्त हो गया

कहा जाता है कि रानी चेन्नाम्मा ने एक बार फिर महारानी लक्ष्मीबाई के रूप मे जन्म लेकर देश को अंग्रेजो के बन्धन से मुक्त करने का प्रयास किया जिसके फलस्वरूप अन्त मे 15 अगस्त 1947 के दिन उनका स्वप्न साकार हुआ

नारी हो तो रानी चेन्नाम्मा की तरह—

हे नारियों वीरांगना बनो अपनी देशभक्ति और साहस पैदा करो आज देश को जरूरत है रानी चेन्नाम्मा की तरह वीरांगना नारी की

किसी कवि ने ठीक ही लिखा है—

दुनिया में बेमिसाल थीं
भारत की नारियाँ

पहुँची नहीं न आज तक
उनकी सी आ तिसारियां।

कोई भी देश दसरा हो तो
जरा बताइए

ऐसी हो जिसकी गोद में
बाबो अजब दुलारियां

जिन्दा चिता मे जल गईं
हस हस के सर कटा दिए

करमो हवा की पर कभी उनकी
न सर पे लालिमा

जेवर भी पहनती थी
जो करती थी श्रृंगार भी

लेकिन सदा बन्धी रही
उनकी कमर में कटारियां

# आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित आर्य समाजो के लिए

आर्य समाजो के निर्वाचन तथा सभा के लिए सम्बत 2040 2041 और 2042 के लिए प्रतिनिधियो के निर्वाचन योग्य होने वाली आर्य समाजो का निश्चय करने के लिए सभा की ओर से अन्तरग सभा द्वारा नियुक्त उप समिति द्वारा बनाई गई प्रश्नावली दिनाक 11 3 83 को सब आर्य समाजो को भेजी गई थी परन्तु 31 3 83 तक बहुत थोडी आर्य समाजो के ही उत्तर प्राप्त होने के कारण प्रश्नावली के उत्तर आने की अवधि 31 मार्च के बजाए 15 मई कर दी गई थी जिसकी सूचना परिपत्र द्वारा सब आर्य समाजो को दे दी गई थी फिर भी आर्य समाजो ने उत्तर भजने मे तत्परता नहीं दिखाई अब अन्तरग सभा ने प्रश्नावली के उत्तर प्राप्त होने की अवधि 16 जुलाई 83 तक कर दी है साथ ही यह निश्चय किया है कि आर्य समाज जुलाई मास में अपने निर्वाचन करके और आगामी तीन वर्षों के लिए सभा के लिए प्रतिनिधियों का भी चुनाव करके 31 जुलाई 83 तक फार्म सभा कार्यालय मे पहुचा द तदर्थ प्रतिनिधि फार्म शीघ्र ही भेजे जा रहे हैं जिन आर्य समाजों से प्रश्नावली के उत्तर 16 7 83 तक प्राप्त न होंगे उन आर्य समाजो के प्रतिनिधि सभा के आगामी वार्षिक साधारण अधिवेशन में जो 28 अगस्त 83 को भठिण्डा में हो रहा है भाग नहीं ले सकेंगे

नोट —प्रतिनिधि फार्म प्राप्त होते ही तुरन्त भर कर सभा कार्यालय को भेज द ता कि निर्वाचित प्रतिनिधियों के नियमानुसार देखभाल समय पर की जा सके

भवदीय

वीरेन्द्र
सभा प्रधान

रामचन्द्र जावेद
सभा महामन्त्री

वर्ष 16 अंक 15, 9 श्रावण सम्वत् 2040, तदनुसार 24 जुलाई 1983 दयानन्दाब्द 159 । एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपए

# मैं अग्नि की स्तुति करता हूं

अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् ।
होतारं रत्नधातमम् । (ऋ म 1 सू 1 म 1)

यह ऋग्वेद के प्रथम मण्डल का प्रथम सूक्त का प्रथम मन्त्र है । इस मन्त्र की यहां यह विशेषता है कि यह पहला मन्त्र है । यहां यह भी है कि इस मन्त्र द्वारा मनुष्य ने परमात्मा की स्तुति की है । पहला स्तवन किया है । साथ ही यह मन्त्र देकर परमात्मा ने मनुष्य को उपदेश दिया कि वह स्तुति से ही ऊंचा उठ सकता है । मन्त्र का शब्दार्थ निम्न प्रकार है ।

शब्दार्थ मैं (पुर हित) हित को सामने रखकर (यज्ञस्य देव) यज्ञ के देव (ऋत इव) ऋतु इव (होतार) होता (रत्न धातम) रत्न धारक तम (अग्नि) अग्नि की (इळे) स्तुति करता हूं ।

पहला शब्द मन्त्र में अग्नि है शेष सभी अग्नि के ही विशेषण हैं उसकी विशेषता को बताने वाले हैं । अग्नि की महानता को दर्शाने वाले हैं । इस पहले मन्त्र मे परमात्मा को अग्नि कहकर पुकारा गया है । अग्नि संसार के प्राणियो का तथा सारे संसार का आधार है । सब व्यापक है । संसार की कोई ऐसी वस्तु नहीं जिसमे वह विराजमान न हो । जीवन का आधार है । अग्नि के सहारे ही मानव का जीवन चल रहा है । अग्नि से दूर रहकर या अग्नि की स्तुति किए बिना मानव सुखी नहीं हो सकता । स्तुति उसी की की जाती है जो सामने हो । वह महाग्नि भी हमारे समीप है । उसकी स्तुति से ही हमारा कल्याण हो सकता है । अन्यथा नहीं । इसीलिए कहा है—अग्नि (ईळे) मैं अग्नि का स्तवन करता हूं मैं अपने देव पूज्य महान् सुन्दर देव का स्तवन करता हूं । स्वागत करता हूं ।

मैं (पुरोहितम् ईळे) पुर का अर्थ है सामने हित का अर्थ है स्थित उपस्थित है उसकी स्तुति करता हूं । अर्थात जिसके सामने सदा जीवो का हित ही रहता है । जो कभी भी किसी भी प्राणी का अहित नही करता । जिसकी सभी प्राणियो पर एक सी नजर रहती है । जिसके लिए न कोई छोटा है न बड़ा है सब एक समान हैं । ऐसा वह पुरोहित सुन्दर देव स्तुति करने योग्य है मैं ऐसे देव की (ईळे) स्तुति करता हूं । मैं जिधर भी देखता हूं वह उसी ओर मेरे सामने विद्यमान है ।

(यज्ञस्य देव ईळे) मैं यज्ञ के देव की स्तुति करता हूं । देव का अर्थ दिव्यता का संचार करने वाला है । प्रकाश देने वाला है । वह महाग्नि प्रज्वलित होकर साधक के जीवन यज्ञ को प्रकाशित कर देता है । उस दिव्य देव से ही जीवन मे दिव्यता आती है । उसके बनाए अन्य देव भी अपनी दिव्यता चारो ओर बखेर रहे हैं । जहां हम यज्ञ के द्वारा अन्य देवो की पूजा करते हैं । क्योकि यज्ञ देव पूजा है । वहां इसी यज्ञ के द्वारा और देवो के साथ साथ उस महादेव का स्तवन करते हैं । यज्ञ देवो की पूजा (सत्कार स्तुति) का महान् साधन है । यज्ञ के करने वाला याज्ञिक उस महान् देव से अपने जीवन यज्ञ में दिव्यता उत्पन्न करने की प्रार्थना करता है और उसकी बुद्धि मेधा मन चित्त सब दिव्य हो जाते हैं । इसलिए मन्त्र में उसे यज्ञ का देव कहकर पुकारा गया है । वह भी अग्नि का विशेषण है अग्नि है तो यज्ञ है और अग्नि से ही यज्ञ के देव का महत्व है ।

(ऋतु इव अग्नि ईळे) मैं ऋत्विज अग्नि की स्तुति करता हूं । (ऋत इव) ऋत्विज ) जो ऋत मे मगन होता है । ऋतुओ द्वारा जिसकी सिद्धि होती है । अनेक ऋतुओ के बीतने पर जिसकी प्राप्ति होती है । उसे ऋत्विज कहते हैं । ऋतु इवम का दूसरा अर्थ यह भी है सारी ऋतुओ का निर्माण करने वाला ऋतुओं का निर्माता । उस महान् अग्नि ने छ ऋतुओ का निर्माण किया है । इन ऋतुओ के कारण से ही अन्न फल तथा सब्जियो आदि की उत्पत्ति होती है । एक ऋतु में फसल बोई जाती है दूसरी ऋतु मे पकती है और काटी जाती है ऐसे ही फल आदि भी अलग 2 ऋतुओ मे अलग अलग होते हैं । स्पष्ट हो गया है कि सारे संसार के अन्न आदि का उत्पन्न करने वाला वह महान ऋत्विज है । इस प्रकार ऋत्विज शब्द के अर्थ मे गहन भावना छिपी हुई है । इसलिए उस ऋत्विज की स्तुति करने के लिए मन्त्र मे कहा गया है । (होतार ईळे) मैं होता की स्तुति करता हूं । स्तवन करता हूं होता का सीधा सा अर्थ दाता है उसके दान मे सारा संसार चल रहा है वह महान दानी है । वायु अग्नि सूर्य चन्द्र जल तथा अन्य उसके द्वारा बनाए गए देव निरन्तर दान की वर्षा कर रहे हैं उसने कभी वायु का बिल नही भेजा जल (वाटर सप्लाई) का बिल नहीं मांगा प्रकाश का कभी बिल मांगा । उसका सभी यह दान सब प्राणियो के लिए है । वह प्रकाश स्वरूप (अग्नि) निरन्तर यज्ञ कर रहा है उसका यज्ञ निरन्तर चल रहा है वह इस यज्ञ का महान होता है ऐसे उस महान होता की मैं स्तुति करता हूं ।

(रत्न धा तम ईळे) मैं रत्न धारक उस परमात्मा का स्तवन करता हूं । वह रत्न धारक है । सभी प्रकार के रत्नो को धारण करने वाला है । संसार के जितने भी चमक पैदा करने वाले पदार्थ हैं उन सभी रत्नो को उसने धारण किया हुआ है और सभी रत्नो का वह उत्पादक भी है वह उत्पन्न करने वाला और उत्पन्न करके धारण करने वाला है । सभी प्रकार के धनो का वही स्वामी है । अगर मानव रत्न प्राप्त करना चाहता है धन प्राप्त करना चाहता है । उसे उस धनो के स्वामी के पास जाना ही पड़ेगा और उसकी स्तुति भी करनी पड़ेगी । दानी की स्तुति करना बहुत आवश्यक है । उसके स्तवन मे ही लेने वाले का भला है ।

इस मन्त्र मे परम पिता परमात्मा को अलग 2 नाम लेकर उसकी स्तुति की जाती है । उसका स्तवन किया जाता है । ऋग्वेद का यह पहला मन्त्र महान् प्रेरणा देने वाला है । महर्षि दयानन्दजी ने इस मन्त्र को यज्ञ के मन्त्रों मे स्वस्ति वाचन मे प्रथम मन्त्र के रूप मे देकर इस मन्त्र की महानता को दर्शाया है ।

—धर्म देवार्य

# ३१ जुलाई को याचना दिवस मनाए

पंजाब हिन्दू संगठन के कार्यकर्ताओ की 17 जुलाई को लुधियाना मे हुई बैठक मे निर्णय लिया गया कि 31 जुलाई को याचना दिवस मनाया जाए । इस दिन प्रात सभी मन्दिरो मे प्रार्थनाएं की जाएगी और बाद मे हिन्दू विधायको सांसदो को ज्ञापन प्रस्तुत किए जाएंगे कि वह हिन्दुओ के हितो की पंजाब मे रक्षा करें अगर वह रक्षा करने मे असमर्थ हैं तो अपने पदो से त्याग पत्र दे दें ।

इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने कार्यकर्ताओ की बैठक मे भाषण देते हुए बताया कि सरकार हमारी कोई भी बात मानने को तैयार नहीं है बल्कि टालमटोल कर रही है इसलिए पंजाब के हिन्दुओ को संगठित हो जाना चाहिए और नई पीढ़ी आगे आकर सही नेतृत्व मे काम करे तो पंजाब की समस्या का समाधान हो सकता है और हम अपनी रक्षा करने मे भी समर्थ हो जाएंगे ।

# हम सब वैदिक धर्मी है

## हमें जानना चाहिए कि—

1 वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है जो ईश्वर ने सृष्टि के आदि मे मनुष्यो के आध्यात्मिक सामाजिक चारित्रिक बौद्धिक शारीरिक और राजनैतिक आदि विषयक पथ प्रदर्शन और आचार प्रदान किया वेदो को पढने क अधिकार बिना भेद भाव के ससार के सब वर्णों सब जातियो एव सब देशो के स्त्री पुरुष को है

2 ईश्वर सच्चिदानन्द न्यायकारी अजन्मा सर्वव्यापक अनादि सृष्टिकर्ता कर्मफलदाता आदि गुण युक्त तथा मनुष्य मात्र का उपास्य देव है एक मात्र उसी की स्तुति प्रार्थना उपासना करनी चाहिए

3 वेदो मे ईश्वर का नाम ओ३म (परम रक्षक) भू (सबक प्राणाधार) भव सब दुःख नाशक स्व सब सुख दाता) एव माता पिता बन्धु इन्द्र अग्नि कई प्रकार से आया है

(क जड पदार्थों—अग्नि सूर्य जल वायु पृथ्वी ब्रह्म अश्वत्थ (पीपल) आदि के गणानुसार भी ईश्वर की सत्ता महत्त्व समझाने को वेद मे ईश्वर का नाम अग्नि सूर्य आदि आया है इससे भ्रम पदा होकर जड पदार्थों की पूजा भी कोई 2 करने लगे यह मान्य नही

(ख रोगो मे ज्वर प्रमुख है तुलसी और पीपल को शास्त्र मे ज्वर की प्रमुख औषधि माना है परन्तु उनसे लाभ उठाना तो रहा दूर हम उनकी परिक्रमा करते हैं सूत लपेटते हैं और उन्हे तुलसी भगवती तथा पीपल महादेव कहते हुए नमस्कार करते हैं कच्चा बिल्व (बिल गिरी) स ग्रहणी अति मधक मन्दाग्नि रोगो की उत्तम कल्याणकारी औषधि है पुराणो मे अलकार स उसे शिवजी क प्रिय फल लिखा है शिव का अर्थ कल्याणकारी न समझ कर शिवजी देवन के लिग प्रतिमा पर बिल्व फल और बिल्व पत्र चढाए जाते है

4 ईश्वर निराकार और सर्वव्यापक है उसकी मर्ति नहीं हो सकती ईश्वर के स्थान मे देवी देवताओ की कल्पित मर्तियो की पूजा वेदानुकूल नही मर्ति मे मे भक्ति भावना की युक्ति ठीक नहीं भावना का सीधा ही ईश्वर मे होना भक्त को सरलता से सुगमता से और शीघ्रता से प्रभु दर्शन प्राप्त कराता है

मन्दिर वही कहलाने योग्य है जहा नित्यप्रति ईश्वरोपासना धर्म धार्मिक जीवन और सत्कर्म का उपदेश मिले

5 जीव ब्रह्म से भिन्न है अद्वैतवादियो का अहं ब्रह्मास्मि (मैं ब्रह्म हू) कहना युक्तियुक्त नहीं यदि हम ब्रह्म हैं तो पूजन किसका ? प्रार्थना किसके आगे ? दुःख मे फिर आश्रय किसका ? सर्वसाधारण जनता को शास्त्रो की उक्तियों प्रतिमक्तियो मे न उलझा कर सनातन वैदिक धर्म का सरल स्वरूप उन के सम्मुख रखकर उन्हे पारब्रह्म परमेश्वर का भक्त बनाना हमारा परम धर्म है

जगत मिथ्या कहना भ्रमजनक वाक्य है जगत स्पष्टत इन्द्रिय गम्य है सत्य है हा इन्द्रियो के रसो मे और इनो पाजन मे सब मानना एव उस प्रकार के जीवन तक ही जगत को सीमित समझना निश्चय ही मिथ्या है जगत के प्रलोभनो विषय विकारो मे फसना मिथ्या आचरण है

6 हरिद्वार आदि को सत्संग के लिए जाना तो ठीक है परन्तु गंगा यमुना आदि मे स्नान मात्र हमे पापो के फल भोगने से छुडा सकते हैं ऐसा मानना तो विवेकी श्रीमानो को योग्य नही अच्छे कर्मों से सुख और बुरे कर्मों से दुःख भोगना अवश्यम्भावी है

तीर्थों पर जा मरने से सीधे स्वर्ग लोक जा पहुचने की भावना रखने वाले बद्ध स्त्री पुरुषो की मति विकृत हो चुकने का चिन्ह है सत्सग और एकान्त मे प्रभु चिन्तन योग भ्यास आदि के लिए भले ही जाय

7 मन्दिर जाकर घण्टा बजा दिया पैसा चढा दिया चरणामृत ले लिया इससे कुछ नही बनता यदि वहा जाकर बैठ नही उपदेश नही सुना जीवन मे और कमाई मे पवित्रता नही लाई व्यवहार मे सत्य और मधुरता नही लाए तो मन्दिर जाने के परम लाभ से वञ्चित रहे

8 स्वार्थी पण्डो महन्तो आश्रमो के लिए कुटियाओ के नाम पर धन चाहने वाले लोभियो ने हिन्दुओ के दान की प्रथा को बिगाड कर रख दिया है

सम्पत्तियो के मालिक गुरुओ के चेले चेली बनकर उनको धन माल अर्पण कर देना शास्त्र विरुद्ध है महाभारत के प्रमाण स्पष्ट है—धनिनो धन मा प्रयच्छ दरिद्रान भर कौन्तेय अर्थात धनियो को धन मत दो गरीबो अनाथो दुःखी दरिद्रो की पालना करो इसी प्रकार विद्यालयो चिकित्सको गुरुकुलो अस्पतालो राष्ट्र तथा धार्मिक नेताओं द्वारा सचालित परोपकार की परीक्षित सस्थाओं तथा धनहीन सच्चे त्यागी तपस्वी धर्म प्रचारको आदि को ही दान देना पुण्य है मुफ्तखोरो को दान देने से पाप लगता है

9 सूर्य ग्रहण तथा चन्द्र ग्रहण चलती हुई पृथ्वी की छाया है यह भूगोल विद्या पढ़-लिखे जानते है उन्हें राहु-केतु से ग्रस्त जाकर मानना ठीक नहीं। ग्रहण के समय कुरुक्षेत्र आदि तीर्थों पर जाकर स्नान करने में पुण्य मानना अन्धविश्वास है श्रीमानों को अब यह परम्परा से ऊपर उठना योग्य है

10 ईश्वर निराकार है और सर्व व्यापी है वह नस नाडी और हर्ष काल और कर्म के बन्धन से रहित है मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र तथा योगीराज श्री कृष्ण की आर्य समाज में उतनी ही मान्यता है जितनी इन दोनो के लिए अन्य किसी रामभक्त या कृष्ण भक्त की हो सकती है। रामनवमी तथा कृष्ण जन्माष्टमी पर्व आर्य समाजो मे पूर्ण उत्साहपूर्वक मनाए जाते हैं वैदिक धर्म के आधार पर सनातन धर्म और आर्य धर्म अत्यन्त निकट एव सहधर्मी हैं जरा सा मतभेद आर्य समाज की इस मान्यता के कारण है कि ईश्वर निराकार है और नस नाडी शोक हर्ष काल और कर्म के बन्धन से रहित है अत पंच भौतिक शरीर मे जन्म पाने से मर्यादा पुरुषोत्तम राम तथा योगीराज कृष्ण महापुरुष थे बहुत ही महान् परन्तु ईश्वर नही थे आर्य समाज की यह मान्यता श्रीमानो को शीघ्र समझ मे आ जानी चाहिए कि यदि वे दोनो महापुरुष ईश्वर का अवतार थे तो क्या सीधे ही सच्चिदानन्द परब्रह्म ईश्वर की पूजा ठीक है या उसके पंचतत्व शरीरधारी अवतारो की जड प्रतिमा की यह विचारणीय है आर्य जगत जैसा सम्मान अपने आचार्य महर्षि दयानन्द का करता है वैसा ही मर्यादा पुरुषोत्तम राम योगीराज कृष्ण आदि महान विभूतियो का भी करता है अपितु कुछ अधिक ही सम्मान करता है कम नहीं

ईश्वर कर्मों का फलदाता है और उसके न्याय नियम से कर्मों का फल अवश्य मिलता है कोई ईश्वर का अवतार खुदा का पैगम्बर या भगवान का बेटा दुष्कर्मों के फल भोग से अपने किसी अनुयायी को बचा नही सकता ऐसा मानना कि दुष्कर्मी के पाप वे क्षमा कर सकते हैं पाप को बढ़ावा देना है

82 स्वर्ग नरक कोई विशेष स्थान नही है सुख का नाम स्वर्ग और दुःख का नाम नरक है और वे भी इसी संसार मे तथा इसी शरीर में भोगे जाते हैं दरिद्रता भूख रोग शोक विषय विलासिता परिवार आदि में कलह मुकद्दमा बेरोजगारी सन्तान आदि की मृत्यु अथवा माता पिता पुत्रादि से वियुक्तता ये नरक हैं धर्मपरायणता सुख स्वास्थ्य सम्पत्ति सम्मान ऐश्वर्य अच्छे पति-पत्नी माता पिता सन्तान आदि सम्बन्धियो का होना तथा शुभ कर्म में रुचि होना ईश्वर की भक्ति शांति आदि यही स्वर्ग है। श्री ब्राह्मण, देश धर्म संस्कृति और राष्ट्र की रक्षा के लिए प्राण न्यौछावर करना जीवन की परम गति है स्वर्ग प्राप्ति है।

पुण्य दान ईश्वरभक्ति स्वाध्याय सत्संग सदाचार, माता पिता गुरुजनों तथा दीन दुःखी की सेवा काम क्रोध और विषय विलासिता का त्याग स्वर्ग है

13 माता पिता और आचार्य तीन गुरु होते हैं जीवित माता पिता और गुरुजनों की श्रद्धापूर्वक सेवा करना ही श्राद्ध है मृत पितरों के नाम पर श्राद्ध करना वेद विरुद्ध और निष्फल है सम्पत्ति और सत्संग का लाभ प्रदान करने वाले सदाचारी निःस्वार्थ विद्वान ब्राह्मणो की सेवा करना पुण्य है। श्राद्ध के विशेष दिन ब्राह्मण को खिलाया हुआ पदार्थ मृत माता पिता आदि को जा पहुँचेगा ऐसा मानना अज्ञानता और अन्धविश्वास मात्र है इस कट सत्य के लिए क्षमा करना वेद में 'श्राद्ध' का प्रतिपादन कोई नही दिखा सका वेद मे 'श्राद्ध' शब्द ही नही

14 वर्ण व्यवस्था गुण कर्म स्वभाव से है ब्राह्मण क्षत्रिय या वैश्य यदि धर्म आचार और विद्या से विहीन हो तो उसका शूद्र वर्ण हो जाता है जन्म से न कोई शूद्र है न ब्राह्मण कर्म से ही वर्ण व्यवस्था मानने योग्य है धर्मोपदेश और ब्राह्मण के कर्म मे संलग्न जन का ब्राह्मण सर्वश्रेष्ठ है

15 ईसाई और मुसलमानो के धर्म मे पुनर्जन्म नही माना जाता उनके पास इस प्रश्न का कोई युक्तियुक्त उत्तर नहीं कि क्यो कोई अगहीन जन्म अथवा अस्वस्थ या दरिद्री के घर पैदा होते हैं अथवा कोई सुन्दर स्वस्थ जन्मता है एव धनी घराने मे केवल वैदिक (हिन्दू आर्य वैदिक धर्म मे इसका उत्तर मिलता है कि पूर्व जन्म के पुण्य पाप के आधार पर यह जन्म निर्भर है ईसाई मुसल मान तो खुदा की मर्जी कहकर अपने खुदा को ही अन्यायी और निष्ठुर सिद्ध कर देते हैं कि उसी की मर्जी से दुःखी जन्मा

16 पशुओं के बलिदान से ईश्वर अथवा देवी-देवता प्रसन्न नही होते धर्म या मत के नाम पर मन्दिर आदि में पशु हिंसा करना घोर पाप है अपने बच्चो के सुख की कामना के लिए दूसरे पशुओ के बच्चे काटना निश्चय ही अपनी और देवी-देवताओ की बुद्धि का अपमान करना है

(क्रमश)

# सम्पादकीय

## आर्य समाज के सामने एक ज्वलन्त प्रश्न-क्या आर्य नेता इस पर विचार करेंगे ?

आय समाज के सामने इस समय कई समस्याए हैं। परन्तु सबसे बड़ी समस्या यह है कि आय समाज धीरे धीरे पिछड रहा है। जिन व्यक्तियो ने 947 से पहले का आय समाज देखा है वे जानते हैं कि उस समय आय समाज की लोकप्रियता कहां तक पहुची हुई थी और आज कहा है ? लाहौर में और देहली मे आय समाज के जो वार्षिक उत्सव होते थे उनमें हजारो व्यक्ति सम्मिलित हुआ करते थे। लाहौर की आर्य समाजों के वार्षिकोत्सव सदा ही एक मेला का रूप धारण कर लिया करते थे। एक ही समय में दो उत्सव हुआ करते थे। एक गुरुदत्त भवन मे दूसरा डी ए वी स्कूल मे। दोनो में ही हजारों की सख्या हुआ करती थी और बड 2 विद्वान उनमे भाषण किया करते थे। देहली मे जो उत्सव हुआ करता था उसमे भी बडी भीड हुआ करती थी। आज स्थिति यह है कि एक आर्य समाज के वार्षिकोत्सव मे अधिक से अधिक 5 7 हजार या दस हजार श्रोतागण इकट्ठ हो जाते हैं। बहुत कम आर्य समाजें ऐसी हैं जिनके वार्षिकोत्सवो मे इतने लोग भी इकट्ठ होते हैं। अब धीरे धीरे आय समाज अपने वार्षिकोत्सव बन्द कर रही हैं उसका एक कारण यह भी है कि अब उस उच्च स्तर के वक्ता और विद्वान नही मिलते जो हमें 1947 से पहले मिला करते थे। इसका यह अथ नही कि अब आय समाज मे विद्वान नही रहे। वे तो अब भी हैं और कई ऐसे भी हैं जिन पर आर्य समाज गव कर सकता है। कई बहुत उच्चकोटि के वक्ता भी हैं। परन्त उन मे से कई अब स्वतन्त्र रूप से काम करते हैं वे किसी अनुशासन मे रहकर काम करना नही चाहते। परन्तु यही एक ऐसा कारण नही जो आय समाज को पीछे ले जा रहा हो। दूसरा कारण यह भी है कि अब आय समाज के सामने जो ज्वलन्त प्रश्न है उनकी ओर वह ध्यान नही देता जो पहले दिया जाता था। इसलिए अब सर्वसाधारण की आय समाज मे रुचि कछ कम हो रही है।

पिछले एक लेख में मैंने आय समाज के नेताओ का ध्यान इस ओर दिलाया था कि आय समाज मे साहित्य प्रकाशन का काम दिन प्रतिदिन कम हो रहा है। कछ सस्थाए ऐसी हैं जो कछ न कछ साहित्य प्रकाशित करती रहती हैं अजमेर की परोपकारिणी सभा भी कछ साहित्य प्रकाशित करती है। देहली का दयानन्द सस्थान और अमृतसर का श्री रामलाल कपूर टस्ट यह दोनो सस्थाए इस दिशा मे सराहनीय काम कर रही हैं। रामलाल कपूर ट्रस्ट के मुख्य कार्यालय बहालगढ (सोनीपत) से जो साहित्य प्रकाशित हो रहा है वह बहुत ही उच्चकोटि का है। आदरणीय श्री प युधिष्ठिर जी मीमासक आय समाज की जो सेवा कर रहे हैं उसके लिए हम उनका जितना भी धन्यवाद कर कम है। गाजियाबाद मे श्री अमर स्वामी जी महाराज जी भी कुछ न कुछ लिखते रहते हैं। इसी प्रकार और कई सस्थाए हैं जो कछ न कुछ साहित्य प्रकाशित करती रहती हैं। कछ महानु भाव व्यक्तिगत रूप से पुस्तक लिखते रहते हैं। अजमेर के श्री दत्तात्रेय जी बल्ले ने अब जो म आर्य समाज के विषय मे जो पुस्तक लिखी है वह भी हमारे साहित्य मे एक विशेष स्थान रखती है। श्री डा दलीप वेदालकार ने वेदो मे मानववाद के शीषक से जो पस्तक प्रकाशित की है उस पर आर्य समाज गव कर सकता है। डा भवानीलाल भारतीय भी समय समय पर पुस्तक भी लिखते रहते हैं और लेख भी लिखते रहते रहते हैं। इस प्रकार और भी कई महानुभाव इस यज्ञ मे अपनी जो आहुति डाल सकते हैं वे डालते रहते हैं। फिर भी एक बहुत बडी कमी रह जाती है। वह यह कि आय समाज का दृष्टिकोण सवसाधारण तक नही पहुचता इसी के साथ भिन्न भिन्न व्यक्ति समय समय पर पुस्तको के द्वारा समाचार पत्रो के द्वारा आर्य समाज पर जो आक्षेप करते रहते हैं उनका भी कोई उत्तर नही मिलता। सबसे बडी कमी हमारी अब भी के बारे में है। कोई भी सस्था आज के युग मे अब भी साहित्य के बिना अपनी विचार धारा का प्रचार नही कर सकती। विशेषकर विदेशो में। मुझे 2 3 बार विदेशों में जाने का अवसर मिला है और वहां के आर्य समाजियों से विचार विमर्श करने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ है। यह कहना अत्योक्ति न होगी कि वे अंग्रजी मे प्रकाशित आर्य साहित्य के लिए तरस रहे हैं। हम और हमारी बडी 2 सस्थाए यह दावा तो करती हैं कि हम बडा प्रचार कर रहे हैं। परन्त स्थिति यह है कि अब हमारा प्रचार समाप्त हो गया है सार्वदेशिक सभा हमारी सबसे बडी सस्था है। इसका कोई ऐसा प्रचार विभाग नही जो समय समय पर ऐसा साहित्य प्रकाशित कर सके। जो देश विदेश मे भेजा जा सके। हमारे मुकाबला मे सिख ईसाई मुसलमान ये सब अपना साहित्य प्रकाशित करते हैं और मि शल्क बाटते हैं। परन्त हमारा कोई साहित्य प्रकाशित नही होत। वष भर मे एक या दो पस्तक प्रकाशित करना पर्याप्त नही है जिन सस्थाओ का मैंने ऊपर उल्लेख किया है वे कहीं अधिक साहित्य प्रकाशित करती हैं। परन्तु वे भी अंग्रजी का साहित्य उतना प्रकाशित नही करती जितना होना चाहिए और जिसकी आज आवश्यकता है यह प्रचार का युग है आज कल तो झूठ और पाखण्ड का प्रचार भी सफल हो रहा है रजनीश जसे व्यक्ति अपनी विचार धारा के प्रचार के लिए जितना साहित्य प्रकाशित कर रहे हैं उसी से हम अनुमान लगा सकते हैं कि वह किधर जा रहे हैं और आय समाज किधर जा रहा है।

यह तो हमारी समस्या का एक पक्ष है। दूसरा पक्ष यह है कि जिस पाखण्ड और गरुडम के विरुद्ध आय समाज पिछले एक सौ वष से लगातार प्रचार करता चला आ रहा है। आज वह ही गुरुडम बड जोर से आगे बढ रहा है रजनीश साई बाबा निरकारी नामधारी राधास्वामी ये सब दिन प्रतिदिन आगे बढ रहे हैं। इनमे से जिसका भी कोई वार्षिक अधिवेशन होता है तो वहा लाखो लोग पहुचते हैं इनके अनुयायियो की सख्या दिन प्रतिदिन बढती जा रही है और उनमे केवल अनपढ ही लोग नही हैं बहुत पढ लिखे शिक्षित तथा विद्वान लोग भी होते हैं। एक युग था जब आय समाज इस बात पर गव किया करता था कि हिन्दुओ का शिक्षित वग केवल आय समाज की तरफ ही आता है। आज वही व्यक्ति इन मठो की तरफ जाते हैं। निरकारियो और राधा स्वामियो इन दोनो मतो मे बहुत बडी सख्या हिन्दुओ की भी है। उनमे कई वे भी हैं जो उच्चतम न्यायालय के अवकाश प्राप्त न्यायाधीश भी हैं। रजनीश ने आज अमेरिका मे जाकर अपने झण्डे गाड दिए हैं। और एक शहर का शहर ही उसका शिष्य बन गया है हरे रामा हरे कृष्णा आन्दोलन के सदस्यो की सख्या एक करोड के लगभग जा पहुची है और वे विदेशो मे प्रचार कर रहे हैं। उनके प्रचार को देखकर हम यह नही कह सकते कि विदेशो मे रहने वाले व्यक्ति हमारी विचार धारा से सहमत नही हैं यदि हरे रामा हरे कृष्णा के द्वारा विदेशो मे गुरुकुल स्थापित हो सकते हैं वहा रहने वाले लोग धोतिया पहनकर और सिर पर चोटिया रखकर भगवान कृष्ण के गीत गा सकते हैं तो हम अपनी विचार धारा का वहा प्रचार क्यो नही कर सकते।

इसका एक ही उत्तर है कि जिन व्यक्तियो के हाथ मे आज आय समाज का नेतृत्व है उनके पास समय नही कि वे इन समस्याओ की ओर ध्यान देकर उन पर विचार कर सकें। मैं आर्य समाज के किसी भी नेता का अपमान करना नही चाहता। परन्त मुझे यह कहने मे कोई सकोच नही कि आय समाज ने सबसे अधिक प्रगति उस समय की थी जब इसका नेतृत्व श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज श्री महात्मा हसराज जी श्री महात्मा नारायण स्वामी जी श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज श्री आचार्य रामदेव जी श्री प विश्वम्भरनाथ जी महाराज श्री महाशय कृष्ण जी और श्री महाशय खुशहालचन्द जी जसे नेताओ के हाथ मे हुआ करता था आज आय समाज मे उनके जसे नेता नही मिलते पुराने नेता वे थे जो अपना सवस्व आय समाज के लिए न्यौछावर कर दिया करते थे। वे गृहस्थी रहकर भी आय समाज के लिए तन मन धन दिया करते थे और जो सन्यास आश्रम मे चले जाते थे वे तो अपना सारा जीवन और सब कछ आय समाज के अपण कर दिया करते थे आज आय समाज म उस स्तर के नेता कहीं दिखाई नही दे रहे यही कारण है कि आय समाज पिछड रहा है। इस समस्या के कछ और भी पक्ष हैं जिन पर आगामी अक मे अपने विचार पाठको के सामने रखूगा।

—वीरेन्द्र

## आवश्यक सूचना

सभा से सम्बद्ध आय समाजो से निवेदन है कि सभा का आगामी साधारण अधिवेशन दिनाक 27 28 अगस्त 83 शनिवार रविवार को भटिण्डा मे हो रहा है। अत आर्य समाज अपने प्रतिनिधियो का निर्वाचन करके प्रतिनिधि फाम तुरन्त सभा कार्यालय मे भेजने की कृपा कर। प्रतिनिधि फाम पूव ही भेजे जा चुके हैं। प्रतिनिधि फाम शीघातिशीघ सभा कार्यालय मे पहुचाने की व्यवस्था करके कृतार्थ करें।

—रामचन्द्र जावेद सभा महामन्त्री

## नारी जगत्—

# क्या नारी खिलौना है ?

ल—श्रीमती सुधा आर्य

हमारे देश की संस्कृति में महिलाओ को देवी कहकर सम्बोधित करते थे इन्हे लक्ष्मी सुखदा वरदा अन्नपूर्णा की संज्ञा से सम्मानित किया जाता था आत्म समर्पिणी ममतामयी शक्ति साहस और लज्जा की साकार प्रतिमा भारतीय नारी के त्याग वीरता और ममत्व के कारण ही भारत संसार के समक्ष धन्य और सिरमौर माना जाता है

परन्तु आज की नारी तुम्हे क्या हो गया है जो अपने ही निर्मित पुरुषो के हाथो की खिलौना बन गई हो ? विज्ञापनो में तथा चल चित्रो मे स्त्री का नग्न शरीर देखकर लज्जा से आख झुक जाती है आज कल अधिकतर विज्ञापनो मे नारी ही नारी दिखती है कलेण्डर मे सद्य स्नाता स्त्री के भीगे कपडो मे स्पष्ट सुडौल अग यह सब क्यो ? मैं तो इसे नारी जाति की कमजोरी ही मानती हू हिन्दी चलचित्र देखकर भरमाई लडकिया लडकिया ही क्यो ? प्रौढाए भी भान्ति भान्ति के वस्त्र पहनकर पुरुषो की कामनाओ को ललचाती और भडकाती है

आदम युग मे भी प्राय स्त्रिया कम वस्त्र पहनती थी लेकिन उनमे वासना नही थी आज भी देहात की काफी स्त्रिया बिना ब्लाऊज के रहती हैं परन्तु क्या मजाल है जो शरीर का कुछ अंग दिख जाए व्यापारी तो सौदागर होते हैं मौके का क्यो न लाभ उठाए ? वे लोग हर बिकाऊ चीज पर ऐसे ही लेबल लगा देते हैं जिसे देखकर आज का कामुक पुरुष कुछ न सही तो दिल बहलाने के लिए आख सेंकने के लिए इन चीजो को खरीदते है ।

इस प्रकार की भावना नारियो में जागने के कई कारण हैं सबसे बडा कारण है पैसे कमाने की होड अपने आप मे सेक्स सिम्बल कहलाने की ख्वाहिश और लोगो के मुख से अपने रूप की प्रशंसा सुनने की कामना मार्डलिंग का शौक इन्हीं कारणो का सरल रास्ता है जरा सी मेहनत और डर सा धन भाग्य चल जाए तो विश्व सुन्दरी बनकर बेशुमार ख्याति और धन दोनो हाथ लगें दूसरे चल चित्रो में भी चलने का मौका मा बाप भी सोचते हैं कि चलो बेटी नाम (चाहे बदनाम ही क्यो हो) और धन दोनो ही कमा रही है

काम कोई भी बुरा नहीं होता लेकिन उसकी भावना सात्विक हो परन्तु आज के समाज मे सात्विकता लुप्त हो गई है मेरी समझ मे प्रत्येक मा अपनी लडकियो या लडको मे शुरू से ही अच्छे संस्कार डाल धन को अधिक महत्वपूर्ण न समझ तो फिर वातावरण की यह गन्दगी अपने आप दूर हो जाएगी नारी जननी है प्रथम गुरु है अपनी बुद्धि और विवेक से यह समाज को बहुत कुछ बदल सकती हैं सृजन एव निर्माण नारी के गुण हैं बात कठिन जरूर है समाज के वर्तमान वातावरण को देखते हुए परन्तु असम्भव नही यदि महिला वर्ग इस सत्य को समझ ले

(आर्य विजय से)

# यज्ञ का जीवन मे महत्व

ले—श्रीमती सुशीला भगत आ स पक्का बाग जालन्धर

1 यज्ञ द्वारा मनुष्य मे विवेक उत्पन्न होता है

2 यज्ञ से सदा प्रसन्नता और परम शक्ति को प्राप्त होता है

3 यज्ञ से ही आत्मिक उन्नति होती है ।

4 यज्ञ से सदा मोक्ष सुखो की प्राप्ति होती है ।

5 यज्ञ करने वाले वाले नर नारी सदा रोग मुक्त होते हैं ।

6 यज्ञ से मनुष्य दीर्घायु प्राप्त करता है

7 यज्ञ द्वारा ब्रह्म तत्व का बोध होता है

8 यज्ञ द्वारा शिव सकल्प भावना जागृत होती है

9 यज्ञ द्वारा त्रैविधिक क्रोध पाप-ताप तथा अनेक रोगो की निवृत्ति होती है

10 यज्ञ से व्यक्ति धन धान्य से समृद्ध हो जाता है

11 यज्ञ करने से वाणी मे पवित्रता आ जाती है यज्ञ करने से प्रभु चरणो में स्नेह बढने लगता है ।

12 यज्ञ करने से मनुष्य का जीवन आदर्श सुसभ्य बन जाता है ।

13 यज्ञ करने से मनुष्य मृत्यु पर विजय प्राप्त कर लेता है

14 यज्ञ के करने से यजमान की कामनाए सिद्ध हो जाती हैं ।

15 यज्ञ करने से सब सुखो की प्राप्ति हो जाती है

16 यज्ञ करने वाले व्यक्ति का शरीर पुष्ट हो जाता है । मन में सन्तोष प्राप्त हो जाता है ।

17 यज्ञ करने वाले को उत्तम सन्तान प्राप्त होती है ।

18 यज्ञ करने वाले का हृदय निर्मल हो जाता है ।

19 यज्ञ करने से आत्मिक बल प्राप्त होता है ।

20 यज्ञ करने से प्राणों में बल आ जाता है

21 यज्ञ एक महान् दान है और सभी देवों की पूजा है ।

**यज्ञ जीवन का हमारे श्रेष्ठ सुन्दर कर्म है ।**

**यज्ञ का करना कराना आर्यों का धर्म है ।**

ऐ ! विश्व के नर-नारियो आओ जब जगत् नियन्ता जगदीश्वर की गोद में बैठकर नित्य यज्ञ करने का शुभ आरम्भ करें ।

# सद्व्यवहार तथा सदाचार

—श्री सज्जन जी कुसुम

सर्वेश्वर आरोग्य के बाद अब सद् व्यवहार विषय पढें—1 सद्व्यवहार ? अच्छा व्यवहार व सदाचार सद्विचार व शुभ विचार इन सबके आधार सर्वेश्वर सत्पुरुष सत्कृति—तीनो सद् उपजाव सुविचार बिना इन तीनो देख लो अशान्त आज सब ससार । 2 तन्दरुस्ती शक्ति बुद्धि बाढी शान्ति सबको सदा चार ही श्रेष्ठ भाव है । 3 आचार की सुन्दरता तथा उसकी उच्चता जवाहरात के वर्णो से श्रेष्ठ बढ कर है । शहाबारा देवम 4 परस्त्री को अपवित्र दृष्टि से मत देखो तुम्हारी भी बहन माता पुत्री को कोई देख तो तुम्हे कैसा लगेगा ? 5 सद्विचारो को सदा ग्रहण करते रहो और बुरे विचारों से हमेशा सावधान रहो और यह सब उक्त तीनो सत के ही प्रताप से सदा उप लब्ध रहे 6 शिष्टाचारहीन मनुष्य पशु समान चाहे वह भवन में इन्सान के ही क्यो न जिसमें बदन और हो किताबो से लदा फिरता वफर उस आदमी को हम तसव्वर बस कहते है 7 सदा सच बोलो कोई बुरा काम न होगा झूठ बोलेंगे तो सब बुरे काम होंगे 8 यदि तुम उपकार नही करते तो किसी का अपकार भी मत करो 9 विज्ञान (साईंस) ने हमे हवा में उडना सिखा दिया है लेकिन यह नहीं सिखाया कि हमें जमीन पर किस तरह रहना चाहिए ? (क) चिडियो की तरह हवा मे उडना और मछलियो की तरह पानी में तरना सीखने के बाद अब हमे इन्सानो की तरह जमीन पर चलना सीखना है डा राधा कृष्णन राष्ट्रपति भारत । 10 हमारे चार प्रधान अंग शरीर मन बुद्धि और आत्मा शरीर-आधार सुख मन व बुद्धि आधार शान्ति और आत्मा आधार आनन्द व परमानन्द । सुख के बावजूद शान्ति व आनन्द क्यो नहीं प्राप्त होते ? अपने को शरीर पूजा तक ही सीमित जो रखते शेष तीन अगो की परवाह ही नहीं जो करते । 11 सब प्राणी मुझे मित्र की दृष्टि से देखें मैं सब प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखता हू । हम सब एक दूसरे को आपस में मित्र की दृष्टि से देखें यजुर्वेद 36 18 । 2 आपस मे लडने झगडने वाले मौत के बजाए में गिरते हैं । अथर्व वेद 6 32 3 (क) सब जानदारो को यकसां समझने से झगडा और फिसाद मिट जाता है । सन्त कबीर 13 इन्सान का कुदरती तरीके जिन्दगी तो चबाल्त और अमन से रहना है लडाई करना हालते बद और बाहस शर्म है एडवर्ड जीमसम 14 बजाय इसके कि मैं धोखा बाज बन या जिन्दगी मे किसी को दुख दू बेहतर हो कि मैं आज ही मर जाऊ (ऋग्वेद 7 1(4 15) 15 अपने फायदे के लिए दूसरो का नुकसान मत करो (क) ऐसा सलूक दूसरो से न करना चाहिए जो अपने आप को बुरा और तकलीफदायक महसूस हो धर्मों और नीतियो का यही निचोड है । महा भारत अनुशासन पर्व) 16 ऐ गुरु के सिखो नफरत और क्रोध के भावों को अपने दिल से दूर कर दो

—

# गाय की चर्बी घी में मिलाने वालो को कडी सजा दी जाए

पजाब की बहुत सी आर्य समाजो की ओर से भटिण्डा तथा चण्डीगढ मे कुछ व्यापारियो द्वारा गाय की चर्बी घी मे मिलाए जाने के विरोध मे रोषपूर्ण प्रस्ताव हमे प्राप्त हुए हैं इस समाचार से सारे हिन्दू जगत में भारी रोष व्याप्त हो गया अपने प्रस्तावों में पारित कर आर्य समाजो के अधिकारियोंने मांग की है कि गाय की चर्बी घी में मिलाने वालो को कडी से कडी सजा दी जाए ।

आर्य समाज बस्ती शेख फगवाडा आर्य समाज शहीद भगतसिंह नगर जालन्धर (इस कालोनी के सनातनधर्मी भाईयोंने भी इस प्रस्ताव का समर्थन किया आर्य समाज जालन्धर छावनी आर्य समाज चौक पटियाला आर्य समाज हरी आर्य समाज बसा आर्य समाज साबुन बाजार (स्वामी श्रद्धानन्द बाजार लुधियाना और दूसरी कई आर्य समाजों से ऐसे प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं ।

# क्या मुर्गियों तथा बकरियों का आर्तनाद कोई सुनता है ?

ले —आचार्य श्री सत्यदेव विद्यालंकार जालन्धर

मैं सवेरे सवेरे जब सैर को जी टी रोड पर जाता हूं तो दस दस अथवा पन्द्रह पन्द्रह बकरियों के झुण्ड देखता हूं। मानो ...र से इन्हें शहर में लाया जाता है ...क में लोगों के पेट में पहुंच जाती है।

जब दोपहर को बाजार में जाता हूं तो जगह 2 मुर्गियों के ढेर लगे देखता हूं उनके पैर बंधे हुए। मानो फूल गोभी के ढेर लगे हों। दुकानदार कुछ कुछ कैं-कैं करती हुई इनमें से दस दस पांच पांच ठीक ऐसे ही उठाता है जैसे साग सब्जी का ढेर उठा रहा हो। दुकान के अन्दर ले जाता है और कुछ देर बाद लोग झ्यालो और थैलों मे भरकर निकलते हैं और खुशी से भरे घरों को जा रहे होते है।

हजारों आदमी इधर से उधर आ जा रहे होते हैं तो क्या इनका दर्द देखने वाला कोई नहीं।

हमारी सरकार मुर्गी पालना बकरी पालना सुअर पालना मछली पालना लाभदायक रोजगार गिनती है।

कबीर ने लिखा है—

कीड़ी के भी नेवर बाजे सो भी
साहिब सुनता है।

जो कीड़ी के पैर मे बन्धे नेवर की आवाज को भी सुन सकता है क्या वह इन निर्दोष पशुओं की चीत्कारों को नहीं सुन सकता।

अग्र जी के उपन्यास क्रिस्टी ने एक बड़ा सुन्दर विचार दिया गया है ईश्वर प्रत्येक व्यक्तिगत और सामूहिक कर्म को जानता है और उसका अवश्य सन्तुलित परिणाम उस व्यक्ति और समूह को भोगना ही पड़ता। तो इस महान् व्यक्तिगत और सामूहिक हिंसा का क्या परिणाम है।

योग शास्त्र मे पतञ्जलि ऋषि ने एक ...श्वरीय नियम का उल्लेख किया है, ...हिंसा प्रतिष्ठायां तत्सन्निधौ वैर ...

...य यह है कि अहिंसा की भावना के बढ़ने के साथ वैर भावना कम होती जाती है।

इसका उलट भी उतना ही सत्य है। हिंसा प्रतिष्ठायां तत्सन्निधौ वैर बन्धनम्, जहां हिंसा की वृद्धि होगी वातावरण में वैर द्वेष की वृद्धि होती जाती है।

वातावरण में बढ़ती वैर द्वेष की भावना से सारा संसार चिन्तित है दुःखी है मनुष्य विचित्र प्राणी है। हिंसा छोड़ना नहीं चाहता पर उसके परिणामों से बचना चाहता है। बच नहीं सकेगा।

अहिंसा का एक चमत्कारी उदाहरण भारतीय वर्तमान इतिहास की सम्पत्ति है सन सैंतालीस के विभाजन के प्रबन्ध के लिए पच्चास हजार सैनिक नियुक्त थे। सम्भवत जनरल रीस कमाण्डर थे उनके आधीन एक हिन्दू तथा एक मुसलमान आफिसर सहायक थे। इतनी बड़ी सेना होते हुए भी हजारों मनुष्य मारे गये हजारों स्त्रियां अपहरण कर ली गई हजारों बच्चों के निर्दयता पूर्ण कत्ल हुए पंजाब की तरह ही बंगाल के विभाजन के लिए भी पच्चास हजार की सेना थी पर अहिंसा की साक्षात मूर्ति गान्धी जी की उपस्थिति में उन पच्चास हजार सैनिको को अनावश्यक सिद्ध कर दिया। सब इतिहास लेखक इसे एक नैतिक चमत्कार मानते हैं।

महात्मा गान्धी के बाद देश का वातावरण क्रमश हिंसा से भरता जा रहा है। प्रत्येक आन्दोलन का नेता अपने आन्दोलन को शान्त कहता है पर गोलियों की सहायता लेता है।

पंजाब का वर्तमान अकाली आन्दोलन भी इसका एक अच्छा उदाहरण है। आन्दोलनकारी अपने आन्दोलन को शान्त बतलाते हैं पर सैकड़ो मनुष्यों की हत्या हो चुकी है।

पंजाब का वातावरण कुछ अपने ढंग का है यहां खाने मे हिंसा भाषा मे हिंसा बोल चाल में गर्मी और व्यवहार मे अभिमान।

भारतीय धर्म सम्प्रदायो में अहिंसा का आधारभूत महत्व है स्थान है। वैदिक विचार धारा हो जैन विचारधारा हो अथवा बौद्ध विचार धारा हो अहिंसा का आधार सबल है। यह ठीक है कि अहिंसा की भावना के भिन्न भिन्न स्तर है पर अहिंसा का विरोध कहीं नहीं।

इसके साथ ही किसी भी भारतीय धर्म के प्रचार के लिए तलवार कभी प्रयोग नहीं की गई। धर्म प्रचार का साधन ज्ञान आचरण त्याग तथा सेवा को माना गया।

इसकी तुलना के सभी धर्मों यहूदी ईसाई तथा इस्लाम मे अहिंसा का वह महत्व नहीं-साथ ही तलवार को भी धर्म प्रचार में साधन माना गया। यह नहीं कहा जा सकता कि इन सम्प्रदायों के ज्ञान-आचरण तथा सेवा का कोई महत्व नहीं। महत्व अवश्य है पर तलवार का भी महत्व है अत भारतीय और अभारतीय धर्म सम्प्रदायों मे यही स्पष्ट है।

आज भी जहां जहां इस्लाम, यहूदी धर्म अथवा ईसाई धर्म है धर्म प्रचार में गोली चलती है। किसी किसी को फांसी पर लटकाया जाता है। दुर्भाग्य से भारत मे भी कुछ लोग गोली को धर्म प्रचार का साधन मान रहे हैं।

इतिहास स्पष्ट रूप से साक्षी है कि गोली से शस्त्र से कभी कोई समन्वय नहीं हुआ स्थायी संधि नहीं हुई अलक्जेण्डर नेपोलियन तैमूर कैसर और हिटलर ने गोली की शरण की शक्ति को परखा देखा पर परिणाम सदा नकारात्मक रहा फिर भी संसार का एक बड़ा भाग हिंसा पर दृढ़ विश्वास जमाए बैठा है।

अनेकों प्राणियो का वध करके पेट भरने वाले प्राणियों के खून मे हिंसा समा गई है उनका चिन्तन बदल गया है। इस प्रकार से मरते प्राणियो के आर्तनाद ने उनकी बुद्धि को कल्याण मार्ग से हटा कर अकल्याण मार्ग पर स्थिर कर दिया है जो छुरी मुर्गी बकरी और गाय पर चलती है वह मनुष्य पर चलते हुए झिझकेगी भी नहीं चाहे वह मनुष्य उनके देश का हो विदेश का हो धर्म का हो विधर्म का हो मित्र हो शत्रु हो छुरी को तलवार को खून की प्यास है उसे खून मिलना ही चाहिए पराया न हो तो अपना ही सही।

ईश्वर सबका पिता मुर्गी और बकरी के आर्तनाद को भी सुनता है और वधिक के चिन्तन मे व्यवहार मे आमूल चूल परिवर्तन कर देता है।

पर ईश्वरीय न्याय को देखता कौन है ? संसार आंख मूंद कर अपने रास्ते चला जा रहा है

—सत्यदेव विद्यालङ्कार

---

## जन-जन में दीप जलाने

# धन्य-धन्य तू ऋषि महान्

रचयिता—श्री कविता गुप्ता जी एम ए कपूरथला

❀

जन जन मे दीप जलाने
पथ भ्रष्टों को मार्ग दिखाने
गायत्री मन्त्र का पाठ पढ़ाने
उदित हुआ नीले नभ पर
दया प्राण सा दया निधान
धन्य धन्य तू ऋषि महान

जनता पाखण्डों मे लिपटी थी
बुद्धि तक विहीन पड़ी थी
जगने की पावन वेला मे
पांवों मे जंजीर पड़ी थी
उन्हें पिलाया अमृत प्याला
बना दिया मार्ग आसान
धन्य धन्य तू ऋषि महान।

वाणी से रस निर्झर बहता
मुख मण्डल से तेज फुहार
कण्टक पथ पर तेज चला वह
योगी सा वह था अवतार
श्वास रुके, न रोके उसने
जिज्ञासों मे डाले प्राण
धन्य धन्य तू ऋषि महान ॥

# हरियाणा में दहेज के विरुद्ध आन्दोलन

ले —श्री ओमप्रकाश जी पत्रकार फरमाना सोनीपत

हरियाणा और देहली प्रदेश के साथ लगते हुए उत्तर प्रदेश की मेरठ तथा आगरा कमिश्नरी राजस्थान के भरतपुर अलवर चरू झुन्झन जयपुर तथा मध्य प्रदेश के ग्वालियर आदि क्षत्रो को मिला कर प्राचीन काल का हरियाणा कहा जाता है इस क्षत्र मे पिछल एक हजार वष पुरानी देहाती अदालत का नाम सवखाप पचायत है इस देहाती इलाके मे प्रचलित प्राचीन पचायती पद्धति अन सार कई गाव मिलकर एक तपा और कई तपे मिलकर एक खाप पाल और सब खापो के मिलने के बाद उसे सवखाप पचायत कहा जाता है तपे के मुखिया को तपदार और खाप तथा सवखाप के मुखिया को प्रधान कहा जाता है इनका चनाव प्राय सवसम्मति स ही होता है। सवखाप पचायत सामाजिक विवादो को पचायती ढग से निपटान के साथ साथ समाज मे व्याप्त प्रत्येक सामाजिक कुरीतियो के विरुद्ध समय समय पर बड नियम बनाकर उनका पालन करवाने की क्षमता रखती है ऐसा प्रतीत होता है कि हिन्दी तथा उदू साहित्य के सम्राट मुन्शी प्रमचन्द ने भी अपनी प्रसिद्ध कहानी ईश्वर पचो मे बसता है शायद सवखाप पचायत के क्रिया कलाप और इसके महत्वपूर्ण नियमो से प्रभावित होकर ही लिखी हो। अब सवखाप पचायत ने दहेज कुप्रथा के विरुद्ध अपने अभियान का बिगुल बजा दिया है जिस दहेज की बीमारी ने हमारे समाज को खोखला करके रख दिया है आज उसे समाप्त करना समय की माग है

हरियाणा के ऐतिहासिक नगर सोहाना मे क्षत्र के प्रमख रहिनया ने दिनाक 8 जन 1983 को सवखाप पचायत का आयोजन किया चौ सूरज मल एडवोकेट श्री कपिलदेव शास्त्री जमादार रिसाल सिह चौ शेरसिह प्रधान पिछडावग ठकेदार लाला रौनकराम लाल रामधन भक्त हसराज तथा श्री नारायणसिह प्रधान पिछडा वग आदि क सयोजन से प्रात दस बजे आय स्कूल के प्रागण मे पचायत की कायवाही प्रारम्भ हुई शामयाना लाऊडस्पीकर तथा ससज्जित मच के साथ प्रेस गलरी का विशेष प्रबध था। भोजन तथा पीने के पानी का प्रबन्ध पण्डाल के साथ स्थानीय कायकर्ताओ ने सम्भाल रखा था। दिल्ली हरियाणा उत्तर प्रदेश राजस्थान और मध्य प्रदेश आदि प्रान्तो में 56 खापो के प्रधान तपदार तथा पचो ने उक्त पचायत की कायवाही मे भाग लिया। दूर दूर से आए हुए लगभग बीस हजार पचायती महानुभाव नेताओ ने पचायत की कायवाही मध्य से प्रारम्भ की पचायत का एजण्डा एव कायक्रम पोस्टरो के रूप मे प्रत्येक सभासद को दिया गया।

लगभग आध घण्टे तक पचायत ने प्रधान के निर्वाचन पर विचार विमश किया पूरे सोच विचार के बाद सवखाप पचायत ने बलिदान स्मारक गुरुकुल झीन्ड के महान सन्यासी स्वामी कर्मपाल को सब सम्मति से सवखाप पचायत का प्रधान निर्वाचित किया तथा उन्हे सगठन का विधिवत गठन करने पचायत की कायवाही चलाने और आगामी भावी कायक्रम बनाने तथा निर्णय लेने का अधिकार दिया। स्वामी जी बलिदान स्मारक गुरुकुल मे आय समाज प्रचार केन्द्र के सचालक हैं मेरठ विश्वविद्यालय से एम एस सी पास होने के साथ उच्च कोटि के वक्ता और वेदो के ज्ञाता है।

स्वामी जी ने पचायत की कायवाही चलाने के लिए श्री कपिलदेव शास्त्री को मन्त्री नियुक्त किय और पचायत के सम्मख सुझाव रखा कि च कि पचायत मे सब बिरादरियो के प्रतिनिधि सम्मिलित है अत इस सवखाप पचायत को सव जातिय सवखाप पचायत का नाम दिया जाए जिसे सवसम्मति स सहष स्वीकार कर लिया गया। तत्पश्चात स्वामी जी द्वारा घोषित कायक्रम की घोषणा के बाद लगातार पाच घण्टे तक प्रस्तुत विषयो पर खलकर बहस हुई राजस्थान उत्तर प्रदेश दिल्ली हरियाणा आदि की 56 खापो के प्रधान और तपादारो के अतिरिक्त पचायत मे कछ अन्य प्रमख व्यक्ति भी सम्मिलित हुए जिनम इलाहाबाद हाई कोट के भतपूव न्यायाधीश चौ महावीर सिह उत्तर प्रदेश की सौरम खाप के मन्त्री चौ कबलसिंह हरियाणा सरकार के सिचाई मन्त्री चौ शमशेरसिह सुरजेवाला हरियाणा खाद्य एव आपूर्ति मन्त्री चौ राजेन्द्र सिह हरियाणा केन्द्र सरकार के भतपूव राज्य मन्त्री प्रो शेरसिह हरियाणा के भतपूव शिक्षा मन्त्री चौ माड सिह हरियाणा विधान सभा के विधायक व हरियाणा शिक्षा बोड के अध्यक्ष तथा हरिजनो के पचायत प्रतिनिधि श्री मसेराम हरियाणा विधानसभा मे लोकदल के विधायक चौ कुलवीरसिह तथा श्री किताबसिह मलिक आठ शिक्षा सस्थाओ के प्रधान चौ प्रियव्रत ब्राह्मण तथा विश्वकर्मा समाज के प्रधान पण्डित सुमेरचन्द शर्मा अग्रवाल सभा के प्रधान लाला रामधन पिछड़ा वग के प्रतिनिधि श्री नारायण सिह उल्लेखनीय हैं।

पचायत की बहस मे भाग लेने वाले वक्ताओं ने दहेज कुप्रथा की कड शब्दो मे निन्दा की और विवाह शादियो में कम खच करने बारे अपने अमूल्य सुझाव रखे स्वामी कमपाल ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे दहेज से समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार जसे नवविवाहित लड़कियों से ससुराल वालो द्वारा अधिक दहेज मागने के कारण उनके साथ अनेक प्रकार का अमानुषिक व्यवहार और उनकी तेल छिड़क कर विष देकर अथवा गला घोंट कर निर्मम हत्या कर दिए जाने तथा विवाहित सम्बन्ध विच्छेद किए जाने आदि के अनेक उदाहरण देकर दहेज कुप्रथा को तुरन्त समाप्त करने पर जोर दिया और विवाह शादियो मे कम खच करने के कई प्रस्ताव रखे जिन्हे सवसम्मति से स्वीकार कर लिया गया। उन्होने यह भी घोषणा की कि आज के पचायत मे लिए गए निणय दिनाक 13 जन 1983 से ही लागू समझ जाए गे स्वामी जी ने सवजातीय सवखाप पचायत के भावी कायक्रम की घोषणा करते हुए कहा कि आज की पचायत मे लिए गए निणयो का कडाई से पालन करवाने के लिए सगठन का विधिवत सगठन किया जाएगा और इस दहेज के विरुद्ध निरन्तर सघष के लिए सगठन मे अगले 6 महीनो तक पाच हजार अविवाहित नवयवक भर्ती किए जाएगे सगठन का शक्तिशाली कार्यालय स्थापित किया जाएगा। जिसके सगठन के माध्यम से एक साप्ताहिक समाचार पत्र का सचालन किया जाएगा जिसके द्वारा पचायत की प्रत्येक गतिविधि से सबको अवगत कराया जा सक और यह सगठन हजारो यवको के साथ आगामी वष के फरवरी मास मे देश के कोने कोने में सगठन के कायक्रम के प्रचाराथ एक ऐतिहासिक पद यात्रा द्वारा दहेज शराब चोरी तथा समाज मे उत्पन्न अन्य कुरीतिया और कुप्रथा के विरुद्ध व्यापक आन्दोलन चलाएगा

सवजातीय सवखाप पचायत न बैठक मे जिन नियमो को लागू करने की घोषणा का वह सक्षप तथा साराश मे इस प्रकार है —

1 यह कि लडके की सगाई टीका एक रुपए से किया जाएगा और शादी में लड़के को एक सौ एक रुपए से अधिक दान नहीं दिया जाएगा।

2, शादी में बारातियो की सख्या 5 से 25 व्यक्तियों से अधिक न होगी।

3 शादी के प्रत्येक प्रकार के दहेज पर पूण पाबन्दी लगा दी गई है।

4 बिना उचित कारणो के सगाई तथा विवाह का रिश्ता नहीं तोडा जाएगा।

5 शादी की खुशी में बजने वाले बाजे के आगे पीछे शराब पीकर झगडा करना, तथा नाच आदि पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगा दिया है।

6 उपरोक्त नियमो की उल्लघना करने वाले का सामाजिक बहिष्कार कर उस पर एक हजार रुपए से ग्यारह हजार रुपए तक जुर्माना किया जा सकेगा।

अन्त मे सभा प्रधान स्वामी कर्मपाल ने पचायत के सामने एक यह महत्वपूर्ण अपील प्रस्ताव के रूप मे रखी कि सन 1947 के पश्चात शुद्ध हुए उन मूले जाटो मुस्लिम राजपूतो अहीरो गुजरो तथा रोडो के रिश्ते स्वण हिन्दुओ के साथ तुरन्त स्थापित किए जाए तो पचायत सदस्यो ने उक्त प्रस्ताव का करतल ध्वनि से स्वागत किया और उसे सवसम्मति से पारित किया प्रस्ताव पारित होने के तरन्त बाद लगभग 50 स्वण हिन्दुओ ने उपरोक्त प्रस्ताव से प्रभावित होकर इसकी पुष्टि मे अपने अविवाहित लडके लडकियों के साथ मूले जाटो तथा शुद्ध हुए अन्य मुस्लिम बिरादरियो के लोगो के साथ रिश्तों के सम्बन्ध स्थापित करने की घोषणा की।

मोहाना की वतमान सव जातियो सवखाप पचायत को देखने वाला प्रत्येक साधारण व्यक्ति इसके कायक्रम इसकी भावना इसके महत्वपूर्ण निणयो और इसके पारित प्रस्तावो से प्रभावित होकर इसे केवल मात्र पचायत न कह कर इसे एक बहुत बडी सामाजिक क्रान्ति के सूत्रपात की सज्ञा द तो कोई अतिशयोक्ति न होगी।

स्वास्थ्य सुधा—

# पौष्टिक फल केला

ले—श्री वैद्य महता जयनन्दन जी उपप्रधान, जालन्धर

**केला युवती की सुन्दरता और स्वास्थ्य मे इस लिए अभिवृद्धि का कारण बनता है, क्योंकि यह अपेक्षतया शीघ्र शारीरिक धातुओ का रूप ग्रहण कर लेता है।**

युवक मे यौवन की उमंग आंखो में लालिमा किसी युवती के सौंदर्य का सार है। स्वस्थता जीवन की सबसे बड़ी पूंजी है और यही सुन्दरता का आधार भी है। पुरातन काल से ही सौंदर्य को एक बहुत बड़ी निधि का स्थान मिलता रहा है। ऋषियो मुनियो तपस्वियो की लम्बी 2 साधनाए रम्भा-मेनका उर्वशियो की मुस्कानो पर निष्फल होती आई है।

आयुर्वेद ने प्रत्येक वस्तु की उपयोगिता की परख उसके गुणो के आधार की है परन्तु दुनिया भर के शरीर-विज्ञान शास्त्री इस बात पर सहमत हैं कि खाद्य पदार्थों मे फलो का सर्वाधिक महत्व है। फल स्वयं सुन्दर लगते हैं और उनका उपयोग सुन्दरता मे वृद्धि करता है। मिर्च मसाले, अण्डे पौष्टिक नहीं हो सकते हां इनके खाने से किसी अंग विशेष मे मांसलता आ सकती है और कोई अंग कठोर भी हो सकता है परन्तु सुन्दरता का सबसे बड़ा गुण कोमलता है। किसी मांसाहारी युवती मे कोमलता नही आ सकती। फूल इसी लिए फूल कहे जाते हैं क्योंकि वे कोमल होते हैं। अतएव सुन्दरता की सार सम्भाल व सजावट मुख्यतया फलो के उपयोग से ही करनी चाहिए। निश्चय ही केला इन फलो मे सरदार है।

केला भारत का प्राचीनतम फल तो है ही इसी के साथ यह अपनी विशिष्टता के कारण पवित्र भी माना जाता है। केला मात्र यही एक फल है, जो किसी प्रकार के कीड़ो को अपने पास फटकने नहीं देता। केला गल सकता है परन्तु उसमें कीड़ नही पड़ सकते। इसी कारण भारतीयो के प्रत्येक मंगल-कार्यों और धार्मिक पर्वों मे कदली (केला) फल की प्रधानता रहती आई है। केले के पत्तों के मण्डप सजाए जाते है जो पवित्रता और कोमलता के प्रतीक हैं। ऋषियों-मुनियों के आश्रम कदलीफलो के वृक्षों से सज्जित रहते थे।

केला युवती की सुन्दरता और स्वास्थ्य में इसलिए अभिवृद्धि का कारण बनता है क्योंकि यह अपेक्षतया शीघ्र शारीरिक धातुओ का रूप ग्रहण कर लेता है। केला रुधिर को स्वच्छ, शुद्ध और तरल रखता है। केले का नियमित रूप से सेवन करने वाली युवती को रक्त विकार नहीं हो सकता। त्वचा की चमक-दमक मे नई आभा पैदा करने मे केला अद्वितीय है क्योंकि इसमें भरपूर मात्रा मे ऐसे तत्व हैं जो त्वचा की कोमलता को बनाए रखते हैं।

किसी ने केले को पर्दे मे लिपटा हुआ (भगवान का हलुआ) कहा है इसमे तनिक भी सन्देह नही कि मधुरता और स्वादिष्टता मे केला (हलुवे से कम नहीं। दो तीन पके हुए केले और एक पाव दूध मे सभी खाद्य तत्व समाए रहते हैं। जो युवतियां पतली दुबली हैं वे यदि प्रातः व सायं यही नाश्ता करें और उनमे मांसलता भी आएगी वक्ष प्रस्थल भी उभर मे और रंग रूप निखर जाएगा। जिन युवतियो के मोटापा प्रत बन कर लिपटना चाहता है उनके लिए भी केला और दूध उपयोगी है, बशर्ते उन्हे अन्य आहार कम करने पड़ेंगे।

जिन युवतियो के पेट मे कृमि पैदा हो गए हैं, उनके मुंह की छवी कभी नही निखरती और उनकी त्वचा पर प्राकृतिक चमक तो प्राय लुप्त हो जाता है। ऐसी अवस्था मे कच्चे केलो की सब्जी और पके केले खाने चाहिए। निरन्तर प्रयोग से निश्चित लाभ प्राप्त होगा।

जिन युवतियो को अक्सर कब्ज रहती है, उन्हे एक साथ केला नही खाना चाहिए बल्कि तीन चार केले एक साथ खाने चाहिए। इससे कब्ज दूर हो जाती है। केले की सब से बड़ी खूबी यह है कि इसके प्रयोग से पाचन तंत्र को शक्ति मिलती है और मांस पेशियो मे सिकुड़न नही आने पाती।

केलो का नियमित सेवन करने वाली युवतियो के चेहरे पर कभी झुर्रियां नही उभरती। केले का उपयोग आंखो और बालो को भी शक्ति प्रदान करता है। वैसे तो केले चाहे जितने भी खा लो कोई हानि नही पहुंचाते, परन्तु यदि केले खाने के बाद कुछ छाती पर भारीपन अनुभव हो तो दो तीन छोटी इलायचियां खा लेनी चाहिए।

नोट—जिन्हें कमर या घुटनो में दर्द की शिकायत रहती है, वे भी केले का कम ही प्रयोग करें तो अच्छा है।

—

बाल-जगत्—

# तुम मूर्ख रहना पसन्द करते हो या बुद्धिमान् होना ?

प्रेषक—श्री सुरेन्द्र मोहन सुनील दिल्ली

मेरे प्यारे बच्चो! तुम्हे क्या पसन्द है? मूर्ख रहना चाहते हो या बुद्धिमान होना? यदि बुद्धिमान होना चाहते हो तो ध्यान देकर पढ़ो। तुम्हें गरीब रहना अच्छा लगता है या पैसे वाला बनना? यदि पैसे वाला बनना अच्छा लगता हो तो प्रेम से पढ़ो। तुम अपमान पसन्द करते हो या मान पाना चाहते हो? यदि तुम्हे मान पसन्द है तो खूब मेहनत करके पढ़ो। तुम मजदूर रहना चाहते हो या मालिक बनना? यदि मालिक बनना चाहते हो तो दुःख उठाकर भी विद्या अभ्यास करो।

राजा तुम्हारी बात भी न सुने यह तुमको पसन्द है या तुम्हारी मर्जी के अनुसार तुम्हारे देश के कायदे कानून बनें यह तुम्हे पसन्द है? जिसमे तुम्हारी भलाई हो ऐसे कायदे कानून बनाने की इच्छा हो तो खूब पढ़ो। अपमान सहकर और मार खाकर तुम्हे दूसरो के आश्रय मे पड़ रहना पसन्द है या दूसरो को अपने आश्रय मे रखकर उनकी मदद कर सको यह पसन्द है? यदि दूसरो से मार न खानी हो और स्वतन्त्र रहना हो तो तुम खूब पढ़ो। तुम्हारे मां बाप तुमको नालायक समझ और टोका कर तुम्हे यह पसन्द है या तुम्हारे मां बाप तुम्हारी प्रशंसा कर और तुम्हारा मान कर यह पसन्द है? यदि तुम्हे मान पाना अच्छा लगता है तो तुम खूब पढ़ो। तुम को टूटा फूटा घर फटे पुराने कपड़े दरिद्र भरे झाड़ू मन्के फूहड़ स्त्री और मुर्दे जैसी रोनी सूरत वाले बच्चे अच्छे लगते हैं या घर गृहस्थी का सुन्दर भवन अच्छा लगता है यदि तुमको दरिद्रता अच्छी नही लगती और तुम वैभव चाहते हो तो तन मन से खूब मेहनत करके तथा मां बाप की शक्ति के अनुसार खूब पढ़ो तभी तुम सुखी हो सकोगे।

## पढ़ने से क्या होता है ?

याद रखो कि पढ़ने से ही सोने चांदी की खानो की खोज हुई है खूब पढ़ हुए लोग ही बड़े बड़े व्यापार और परो पकार के काम कर सकते हैं।

खूब पढ़ने से ही बड़े 2 पद मिल सकते हैं। खूब पढ़ने से ही समाज को लाभ पहुंचाने वाली नई नई खोज की जा सकी है और भांति भांति के कारखाने चल रहे हैं।

ये सब विद्या और कला के अभ्यास से ही हुए हैं। इसलिए तुम्हे ध्यान देकर अवश्य ही पढ़ना चाहिए।

(साभार बालको की बात)

# सम्पादक के नाम पत्र

## आर्य मर्यादा मे बहुत अच्छे लेख होते है

श्रीमान जी

सादर नमस्ते!

सेवा मे निवेदन है कि आर्य मर्यादा आपका मिलता रहता है, इसमे बहुत अच्छे लेख होते है। पढ़ने को काफी खुराक मिलती है आपने स्वास्थ्य सुधा का लेख लिखा है बहुत अच्छा है, कृपया आप हो सके तो शूगर की बीमारी के बारे मे लिखें। हमारी तरफ कोई चन्दा बकाया हो तो लिख।

धन्यवाद

भवदीय

त्रिलोचन

स्टील कार्पोरेशन आफ

टाण्डा रोड जालन्धर।

## पदाधिकारियो ने शपथ ली

आर्य समाज नया बांस दिल्ली के 63वें वर्ष के पदाधिकारियो एवं अन्तरंग सदस्यो को रविवार दिनांक 10 7 83 को स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती द्वारा अपने कर्तव्यो और दायित्वो का पूर्ण निष्ठा के साथ पालन करने की शपथ दिलाई गई। शपथ से पूर्व प्रो वीरपाल जी विद्यालंकार द्वारा यज्ञ सम्पन्न हुआ एवं यज्ञ शेष वितरण हुआ।

## पुरोहित की आवश्यकता है

एक वयोवृद्ध सुयोग्य अनुभवी पुरोहित की जो संस्कार कराने मे निपुण, अच्छा वक्ता एवं संगीत की जानकारी रखने वाला हो। वेतन 350 25 600 एवं दक्षिणा, आवास पानी बिजली की सुविधा सहित।

आवेदन पत्र पूर्ण विवरण सहित निम्न लिखित पते पर भेजें।

—मूलचन्द वर्मा

मन्त्री, आर्य समाज फाजिल्का (पंजाब)

## पंजाब की स्थिति पर सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग सभा की विशेष बैठक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा की विशेष बैठक पंजाब की वर्तमान राजनैतिक स्थिति पर विचारार्थ 10 जुलाई को दीवान हाल मे हुई। इसमे भारत के सभी प्रान्तो के आर्य प्रतिनिधि सम्मिलित हुए।

पंजाब मे अकाली दल द्वारा धर्म युद्ध के नाम पर जो आन्दोलन चलाया जा रहा है और उसी के कारण जिन परिस्थितियो से पंजाब के हिन्दू मात्र को जूझना पड रहा है उस पर गम्भीरता पूर्वक विचार करने के अनन्तर निम्न निश्चय हुआ कि —

1 उग्रवादी अकालियो द्वारा हिन्दुओ के प्रति जो दुर्व्यवहार और निर्मम अत्याचार हो रहा है उस सबकी पूरी जानकारी हेतु आर्य नेताओ का एक अध्ययन दल सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले के नेतृत्व मे पंजाब का वस्तुस्थिति की जानकारी हेतु भेजा जाए। इस दल द्वारा अध्ययन 15 दिन के अन्दर सभा मे प्रस्तुत करनी होगी जिसके आधार पर सभा का एक शिष्ट मण्डल प्रधानमन्त्री तथा राष्ट्रपति के समक्ष सारी वस्तु रखेगा।

2 यह भी निश्चय हुआ कि पंजाब की वर्तमान स्थिति को देखते हुए देश की आर्य समाजें तथा सभी हिन्दू संस्थाए 24 जुलाई 1983 को पंजाब सुरक्षा दिवस मनाए और उसमे यह प्रस्ताव पारित करें कि पंजाब की समस्याओ का समुचित समाधान शीघ्रातिशीघ्र किया जाए तथा अकालियो की पृथकतावादी मांगो को स्वीकार न करके हिन्दुओ की सुरक्षा भारत की अखण्डता और एकता को सुनिश्चित किया जाए।

— सच्चिदानन्द शास्त्री
संयुक्त मन्त्री

—

## स्त्री आ. समाज मुहल्ला गोबिन्दगढ़ जालन्धर का वार्षिक चुनाव

स्त्री आर्य समाज मुहल्ला गोबिन्दगढ़ जालन्धर का वार्षिक चुनाव 18 जून 83 शनिवार के साप्ताहिक सत्सग के पश्चात सर्वसम्मति से सम्पन्न हुआ जो इस प्रकार है—

प्रधाना—श्रीमती सत्यावती भारद्वाज उपप्रधाना—श्रीमती परमेश्वरीदेवी श्रीमती शान्तवन्ती अग्रवाल एव आनन्द पुरी मन्त्राणि—कृष्णा कोछड उप मन्त्राणि—श्रीमती सन्तोष धवन कोषाध्यक्ष—श्रीमती राज अरोड़ा, सह कोषाध्यक्ष—श्रीमती वेद सेठी एव कान्ता रानी, प्रचार मन्त्राणि—श्रीमती रक्षा शास्त्री एव कमला अरोड़ा। लेखा निरीक्षक—श्रीमती कान्ता अग्रवाल

अन्तरग सदस्य—श्रीमती इन्द्रदेवी, रमा महाजन, आशा शर्मा, ज्ञानदेवी सूद सत्यवती कोहली।

—कृष्णा कोछड मन्त्राणि

## जिला आर्य सभा गुरदासपुर का चुनाव

परम पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की अध्यक्षता मे जिला आर्य सभा गुरदासपुर का चुनाव निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ—

संरक्षक—श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज (दीनानगर) सयोजक—श्री स्वामी धर्मानन्द जी महाराज, प्रधान—श्री रामकिशन जी महाजन उपप्रधान श्री माता शान्तिमन्या श्री ज्ञानचन्द श्री महाजन श्री योगेन्द्र वोहरा श्री अश्विनी कुमार, महामन्त्री—श्री ओ स्वतन्त्र कुमार पठानकोट, उपमन्त्री—श्री ऐ लाल कालिया, श्री बलदेव कुमार ... श्री भूपिन्द्र श्री वेदप्रकाश शास्त्री, कोषाध्यक्ष—श्री धर्मचन्द दीनानगर लेखा निरीक्षक—श्री रामपूर्ति शर्मा पठानकोट।

—ओ स्वतन्त्र कुमार

## आ. स. सोहनगंज दिल्ली का वार्षिक चुनाव

आर्य समाज सोहनगंज दिल्ली का वार्षिक चुनाव दिनांक 3-7 83 को श्री प्रेमनाथ जी चावला जी की अध्यक्षता मे सर्वसम्मति से सम्पन्न हुआ। निम्न पदाधिकारी चुने गये—

प्रधान—श्री शिव प्रसाद गुप्त, उप प्रधान—श्री सुधीर कुमार, श्रीमती सुमित्रा शर्मा, मन्त्री—श्री प्रभाकर गुप्त, उपमन्त्री—श्री नारायण दास, श्री माता प्रसाद कोषाध्यक्ष—श्री नृपतिराज, पुस्तकाध्यक्ष—श्री वेद प्रकाश।

—



श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

वर्ष 16 अंक 16, 16 श्रावण सम्वत् 2040 तदनुसार 31 जुलाई 1983 दयानन्दाब्द 159 । एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपए

## वेद सुधा—

# जुआ मत खेलो, खेती ही करो

ले.—श्री स्वर्गीय प. गंगा प्रसाद जी उपाध्याय

अक्षैर्मा दीव्य कृषिमित् कृषस्व वित्ते रमस्व बहु मन्यमानः ।
तत्र गावः कितव तत्र जाया तन्मे विचष्टे सवितायमर्यः ।

(ऋग्वेद मण्डल 10 सू 34 मन्त्र 13)

अन्वय हे कितव ! अक्षैः मा दीव्य । कृषि इत् (एव) कृषस्व । बहु मन्यमानः (सन्) वित्ते रमस्व । तत्र (तस्यां अवस्थायां) गावः (सन्ति) । जाया (तत्र अस्ति) । अयं अर्य सविता (प्रेरक ईश्वर) मे तत् (इदं रहस्यं) विचष्टे (विविध व्याख्यातवान्) ।

अर्थ (हे कितव) हे जुआरी ! (अक्षैः मा दीव्य) पासे फेंक कर जुआ मत खेल, (कृषि इत् कृषस्व) खेती ही कर । (वित्ते रमस्व) धन का स्वामी होकर । (बहु मन्यमानः) सत्कार पाता हुआ । (तत्र) ऐसा करने पर (गावः) गौएं तेरी होंगी । (तत्र जाया) और उस अवस्था में तेरी स्त्री वास्तव में तेरी स्त्री होगी । (अयं अर्य सविता) यह प्रेरक ईश्वर (मे) मेरे लिए (तत्) इस गूढ़ रहस्य को (विचष्टे) [illegible] का वर्णन करता है ।

व्याख्या— इस मन्त्र में स्थूल रूप से दो उपदेश दिए गए हैं—पहला जुआ मत खेल, दूसरा केवल खेती कर । परन्तु [illegible] से विचार करने से बहुत सी [illegible] समस्याएं [illegible] [illegible] जुआ और खेती [illegible] की परस्पर विरोधी [illegible] का [illegible] करती हैं ।

[illegible] के लिए [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

आगे चलकर इतना भेद हो गया । वेद में मा दीव्य का अर्थ जुआ मत खेल । यहां दिवु धातु का प्रयोग हुआ है । दिवु धातु के धातु पाठों में इतने अर्थ दिए हैं—क्रीडा विजिगीषा-व्यवहार द्युति-स्तुति मोद मद स्वप्न कान्ति गतिषु । अर्थ इतने भिन्न भिन्न हैं कि अध्ययन करने वाला चक्कर में पड़ जाता है कि एक ही धातु के भिन्न भिन्न अर्थ कैसे हो गए ? जुआ खेलना और स्तुति करना एक ही बात तो नहीं है । परन्तु मनुष्य का मस्तिष्क अपने व्यवहार में किस प्रकार चक्कर लगाकर कहां से कहां पहुंच जाता है इसका समझना कठिन नहीं है । जिस दिवु धातु से दीव्यति शब्द बनता है उसी से देव, देवता, दिव्य आदि भी बन गए । एक ही धातु के अनेक अर्थ कैसे हो गये और क्यों हो गये ? आरम्भ में तो एक ही अर्थ रहा होगा ? सम्भव है दिवु या द्युति या 'चमकना' दिवु का मौलिक अर्थ था । चमकने वाली चीज मोहक भी रही होगी ।

अत [illegible] उसी धातु से हो [illegible] धीरे-धीरे जुआरी [illegible] में [illegible] [illegible] 'दीव्यति' [illegible] जुआ खेलने के अर्थ में [illegible] के अनेक [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] चलाने की चलनी है । अमुक लड़का बड़ा चालाक है । पुराना पैसा आज कल चाल नहीं है । यहां चालाक चालू चलन चलनी आदि जो शब्द बने वे अर्थों में भिन्न होते हुए भी व्युत्पत्ति में इतने भिन्न नहीं हैं । चाल को छोड़ने के लिए जिस स्त्री ने चलनी का प्रयोग किया उसकी क्रिया में चल धातु का वही अर्थ विद्यमान था जो चालाक चोर के सफलतापूर्वक चौर्य कर्म में । इसी दिव धातु का द्यूत शब्द भी बना और देव भी । देव अर्थात् विद्वान् मनुष्य ईश्वर को अपने कर्मों का दाता समझकर उस पर आश्रय करता है । द्यूत कर्म करने वाला जुआरी अपने कर्म की उपेक्षा करके यह देखना चाहता है कि देव ईश्वर क्या चाहता है । फल तो दोनों चाहते हैं परन्तु देव अपने कर्म के द्वारा और जुआरी बिना कर्म के ।

इसी प्रकार दार्शनिक विचारधाराएं भी भिन्न भिन्न हैं । एक तो कहते हैं कि सृष्टि की घटनाओं में कारण कार्य की शृंखला है । दूसरे कहते हैं कि कारण और कार्य कोई निश्चित परम्परा नहीं । सब कुछ आकस्मिक बात है । खेती करने वाला कारण कार्यवादी है । जुआरी आकस्मिकवादी है । स्यात् ऐसा ही स्यात् वैसा ही न जाने क्या हो यही है प्रवृत्ति जुआरियों की । यथा विधि परिश्रम का फल अवश्य मिलेगा यह प्रवृत्ति है किसानों की । वैदिक वचन किसानों का वचन है जुआरियों का वचन नहीं इसलिए वेद मन्त्र में भी यही शिक्षा दी गई कि किसान बन, जुआरी मत बन ।

शायद कोई ऐसी शंका करे कि जुआरी का जुआ खेलना भी तो एक उपाय है । जुआरी तो किसान से भी कहीं अधिक परिश्रम करते हैं । जिसे [illegible] की लत लग जाती है उसे नींद कुछ नहीं सताता परन्तु जुआरी का परिश्रम उसके दार्शनिक सिद्धान्तों का परिणाम नहीं है । यदि सब वस्तुएं आकस्मिक ही होती हैं तो [illegible] होने के लिए जुआ खेलने की भी आवश्यकता नहीं । ईश्वर छप्पर फाड़ कर देता है । 'अजगर करे न चाकरी पंछी करे न काम दास मलूका कह गए सबके दाता राम' परन्तु दास मलूक ने यह विचार नहीं किया कि अजगर और पंछी दिनभर अपनी जीविका के लिए काम करते हैं । नीतिकारों ने भी यह भी तो कहा है कि

न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः । जुआरी भाग्य को बनाता नहीं आजमाता है । किसान अपनी समस्त सुप्त शक्तियों को भीतर से खींच कर बाहर ले आता है । इसलिए उसके कृषस्व (खींचकर ले आ) ऐसा आ[illegible] प्रयुक्त हुआ है । वेदों में बहुधा कृष्टि शब्द पूर्ण विकसित मनुष्य के लिए आया है, हर मनुष्य को कृष्टि नहीं कह सकते जिसने अपनी अन्तर्निहित शक्तियों का पूर्ण विकास किया है वही कृष्टि या पूरा मनुष्य है । इसलिए कृषि या कृषस्व से केवल खेत जोतने वाले किसान से ही तात्पर्य नहीं है इन शब्दों के अनेक अर्थ व्यापक हैं । इस अर्थ में व्यापारी भी कृषक है क्योंकि व्यापारी केवल किसान का एजेंट मात्र है इसी प्रकार कला-कौशल करने वाले सभी उद्योगी पुरुष खेती से किसी न किसी प्रकार सम्बन्ध रखते हैं । कृषि मूल है । अन्य समस्त व्यवसाय शाखा मात्र हैं । आम की शाखा भी आम ही कहलाता है ।

कृषि और कृष्टि शब्द कितने महत्वपूर्ण और व्यापक हैं । इसका पता अंग्रेजी के कल्चर शब्द से होता है कल्चर के लिए संस्कृत में 'संस्कृति' शब्द है । कृषि और संस्कृति में थोड़ा सा ही भेद है । कल्चर का साधारण अर्थ है । एग्रीकल्चर या खेती । हिन्दी भाषा में खेती, खेतीहर किसान शब्दों के बहुत संकुचित अर्थ हैं । इसीलिए शायद कोई बड़ा आदमी खेतिहर या किसान कहलाने में संकोच करेगा [illegible] समाज का आधा भाग समझा जाता है । परन्तु संस्कृत का कृषि शब्द संस्कृति शब्द से भी अधिक उत्कृष्ट है । क्योंकि संस्कृति या संस्कार का अर्थ तो है केवल शोध देना या मल को दूर करना । चावलों से कंकड़ियों को बीनकर फेंक देना चावलों का संस्कार है । परन्तु कृषि का अर्थ है सुप्त शक्तियों का विकास करना । (क्रमशः)

# हिन्दू राष्ट्र ... और आर्यसमाज

ले —श्री ... आचार्य भद्रसेन होशियारपुर

गत दिनो आर्य ... प्रकाशित श्री सत्यदेव जी का ... शीर्षक वाला लेख हर तरह ... और विचारणीय है। विशेष ... आर्य समाज के नेताओ को इस लेख की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। अनेक बार आर्य समाज की महान शक्ति को नेतागण राजनीति मे ले जाने का प्रयास करते रहते हैं। जिस का परिणाम आर्य सभा के रूप मे भी सामने है। यदि आर्य समाज के नेता अब भी एक स्पष्ट धारणा बना ले तो बहुत अच्छा हो जिससे आर्य समाज का श्रम समय धन विद्या आर्य सभा की तरह फिर इधर उधर व्यय न हो

यह एक तथ्य है कि राज्य तन्त्र की अनेक पद्धतियो मे से प्रजातन्त्र अधिक उपयोगी है जिसका मूल आधार समता स्वतन्त्रता न्याय और सुरक्षा है इसी मे सभी का सहयोग सद्भाव प्राप्त हो सकता है आज कोई भी कहीं भी दो नम्बर का बनकर भेदभाव पूर्ण व्यवहार अपने साथ नही चाहता आज भारत मे करोडो की संख्या मे दूसरे धर्म के लोग हैं जिनकी उपेक्षा नही की जा सकती है और न ही राज्य के बल पर आज धर्म धारण की भावना साधक हो सकती है धर्म धारण प्रेम सद्भाव के प्रभाव से ही अधिक चिरस्थायी हो सकता है।

राज्य प्रशासन का अभिप्राय है कि सारी जनता का भला तो वह किसी वर्ग विशेष से जुडकर कैसे हो सकता है बिना भेदभाव के सभी के साथ समान व्यवहार की प्रशासन व्यवस्था अपनाने से ही सभी का सहयोग और सद्भाव प्राप्त किया जा सकता है प्रजातन्त्र का पहला गुण अपनत्व की भावना ही है एतदर्थ उनको अपने धर्म स्वातन्त्र्य का अधिकार मिलना ही चाहिए तभी सभी का सहयोग सद्भाव धर्म स्वातन्त्र्य (निरपेक्ष) के आधार पर ही सरलता से प्राप्त हो सकता है। धर्म स्वातन्त्र्य और देशद्रोह अलग अलग बात हैं। थोडी या अधिक संख्या मे भ्रष्टाचार समगलिंग दस्तावेज (विदेशियो को) बेचना आदि काम सभी धर्मों से सम्बन्धित व्यक्तियो मे प्राप्त होते हैं अत समस्या को समस्या के रूप मे हल करना चाहिए न कि धर्म से जोडना चाहिए।

धर्म से जुडे हुए राजनीतिक दल सीमित क्षेत्र मे कभी कभार ही सफल होते हैं और उनका प्रशासन सब के लिए सम्भव नही होता। जब आज मे दूसरे दलो से गठजोड करना ही है तो पहले धर्म स्वातन्त्र्य के रूप में जनता के हित की दृष्टि से राष्ट्रीय सिद्धान्तो के आधार पर ही साझा राजनीतिक दल क्यो न हो अन्यथा धर्म के नाम पर जो संकीर्णता उभारी जाती है। उसका श्री सत्यदेव जी ने बडा सुन्दर विश्लेषण कराया है। संकीर्णता से ईर्ष्या द्वेष वैर विरोध और भेदभाव ही सामने आता है इस सम्बन्ध मे विशेष विचारणीय बात यह है कि—

महर्षि दयानन्द के विचारो के अनुसार सारे मनुष्यो की एक ही मानव जाति है। महर्षि ने शास्त्र प्रमाण और युक्ति तर्क से इसको पुष्ट किया है इसी दृष्टि से सारे पारस्परिक व्यवहार करने चाहिए श्री सत्यदेवजी ने यह सोचा था कि सभी इस सत्य को समझेंगे और सच्चे अर्थों मे इसको स्वीकार करेंगे पर हम इतने उदार तथा सत्य के ग्रहण करने मे उत्सुक न हुए और परिवर्तन न आ सका हां अब पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव से और शहरीकरण के कारण कुछ अंश मे एक मानव जाति का कुछ व्यवहार चलने लगा है

जिस समय आर्य समाज का उदभव हुआ उस समय ईसाई मुस्लिम हिन्दू आदि जातियां मानी जाती थी। रोटी बेटी की दृष्टि से ये एक दूसरे से बिल्कुल अलग अलग रूप मे चलती थी ईसाई जाति के चाहे कैथोलिक प्रोटेस्टेंट आदि अनेक भेद हैं फिर भी ईसा और बाइबिल की दृष्टि से ये एक सूत्र मे जुड जाते हैं। ऐसे ही मुस्लिम जाति के शिया सुन्नी आदि अनेक भेद हैं और उनमे आपस मे समान रूप से चाहे रोटी बेटी का सम्बन्ध नही होता फिर भी ये सारे मुहम्मद और कुरान के कारण एक सूत्र मे जुड जाते हैं

हिन्दू जाति मे परस्पर अपनी अपनी उपजातियो मे रोटी बेटी का व्यवहार चलता है पर हिन्दू जाति को एक सूत्र मे जोडने वाला कोई भी स्पष्ट सूत्र नहीं है। धर्म भाषा विश्वास की दृष्टि से काफी अन्तर होने पर भी ये एक जाति के रूप मे चल रहे हैं। सामान्य रूप से रोटी-बेटी का सम्बन्ध ही किसी जाति की पहचान नही मानी चाहिए।

आर्य समाज का 108 वर्ष का इतिहास इस बात का साक्षी है कि जिस व्यक्ति को आर्य समाज की विचारधारा पसन्द आई वह इसको मानने लगा। उसकी अपने रिश्तेदारो से पहले की तरह ही रिश्तेदारियां रोटी-बेटी का सम्बन्ध चलता रहा। विचार भिन्नता के कारण पूर्व सम्बन्धो मे भिन्नता की कभी अपेक्षा नही हुई और न ही आर्य समाज ने इस बात का समर्थन किया। जैसे राधा स्वामी निरंकारी आदि होने पर रिश्तेदारियां चलती रहती हैं। परिवार में प्राय एक दो ही आर्य विचारी के बने। पुत्र पुत्रवधुओ पौत्रो सहित पूरा परिवार कोई विरला ही आकर्षित हुआ। अत आज तक व्यवहारिक रूपेण आर्य विचार वाले हिन्दू शब्द से ही सम्बन्धित रहे। जब कोई व्यक्ति आर्य समाज के विचारो को स्वीकार करता था तो उसका हिन्दू से मुस्लिम ईसाई बनने वालो की तरह अपने रिश्तेदारो से नाता टूटता नही था। पहले की तरह ही समान रूप से सम्बन्ध चलता रहता था। जिससे स्पष्ट सिद्ध होता है कि आर्य समाज की विचार धारा वाले हिन्दू जाति मे ही परिगणित होते हैं

विचारो की दृष्टि से सनातनी हिन्दुओ के साथ आर्य समाज की विचार धारा वालो का बहुत निकट का सम्बन्ध है। वैदिक साहित्य दोनो के लिए समान रूप से मान्य है केवल यज्ञ संस्कार वर्त वेद की व्याख्या मे अन्तर है। जैसे हिन्दुओ मे राधा स्वामी ब्रह्माकुमारी कबीरपंथी निरंकारी आदि अनेक भेद उपभेद है जो वैदिक साहित्य के प्रति कोई लगाव नही रखते हां जब तक मानव जाति मे निर्बाध रोटी-बेटी का व्यवहार गुण कर्मानुसार प्रारम्भ नही होता तब तक यही व्यवस्था अधिक अच्छी है आर्यों का परस्पर ही रोटी बेटी का सम्बन्ध हो ऐसी व्यवस्था से एक अलग जाति बनाने वाली बात होगी। एक मानव जाति की मूल मान्यता से भी यह बात विरुद्ध है और अब इस व्यवस्था को चलाना भी असम्भव तथा व्यवहारिक भी नही

लोकतन्त्र की दृष्टि से यहा हिन्दू राष्ट्र शब्द उससे विपरीत जाता है यहां लोकतन्त्र में भेदभाव का सूचक भी होगा। क्योंकि हिन्दू की कोई निश्चित परिभाषा नहीं है। यह तो केवल मान्यता और प्रचलन की ही बात है। हिन्दुस्तान के आधार पर यहा रहने से हिन्दू कहलाने पर हिन्दू जाति हिन्दू धर्म के साथ से हिन्दू शब्द हटाना होगा क्योंकि हिन्दुस्तान मे रहने वाले सारे इन दोनो बातों में सहमत नहीं हो सकते और न ही उनको ऐसी प्रेरणा उचित है। उनकी अपनी आस्था के अनुसार ही मुस्लिम-ईसाई चाहिए। हिन्दुस्तान- एवं हिन्दू और हिन्दू धर्म जाति का हिन्दू शब्द इन अलग अलग अर्थों में एक साथ लोक व्यवहार में प्रचलित होना कठिन है। इन दोनों भावनाओ के लिए अलग अलग शब्द होने चाहिए तभी सरलता तथा स्पष्टता रहेगी अन्यथा व्याख्या की सदा खींच तान चलती रहेगी।

यह सत्य है कि महर्षि ने हिन्दू के स्थान पर आर्य शब्द के प्रयोग का समर्थन किया है जोकि सारे भारतीय साहित्य इतिहास से समर्थित है और सुन्दर अर्थ को रखता है। पर जान-बूझकर आर्य शब्द चलने नहीं दिया गया अब आर्य समाजियो के लिए रूढ हो गया है अत अब व्यापक अर्थ में चलना कठिन है। सारे समुदाय के सहमत हुए बिना सामूहिक शब्द का परिवर्तन बहुत कठिन है।

हिन्दू शब्द से अभिप्रेत जाति मे भाषा वेश व्यवहार विश्वास की परस्पर काफी भिन्नता होने के कारण हिन्दू राष्ट्र के रूप मे एक मंच पर आना बहुत कठिन है इससे नये नये मतभेद सामने आएंगे। इसकी अपेक्षा धर्म निरपेक्ष (स्वातन्त्र्य) लोकतन्त्र अधिक उपयुक्त और आपस की सहमति का सरल साधन है समता स्वतन्त्रता न्याय सुरक्षा के मूल सिद्धान्तो पर चलाया गया प्रजातन्त्र अधिक सफल हो सकता है अत आर्य समाज को आज जनता और जन ज्ञान पत्रिका के प्रवाह की तरह अपनी सारी शक्ति इस अस्पष्ट और उलझन भरी बात पर नही लगानी चाहिए। अपने मूल सिद्धान्तो के प्रचार पर बल देना चाहिए। हां आज हिन्दू समाज के सामने अनेक समस्याए हैं जिनका प्रभाव आर्य समाज पर भी पडता है एतदर्थ हिन्दू जाति के अन्य नेताओ के साथ विचार करना चाहिए उनका ध्यान समस्या के मूल कारण की ओर दिलाना चाहिए जिसमे ठोस हल सामने आ सके।

## शोक प्रस्ताव पारित

विगत 25 जून को विश्ववेद परिषद् चण्डीगढ के तत्वावधान मे एक सार्वजनिक सभा हुई जिसमें सभी आर्य समाजोंके प्रतिनिधि सम्मिलित थे 24 जून को दैनिक प्रताप व वीर प्रताप के कार्यालय में बम विस्फोट से दो कर्मचारियों श्री कैलाश कृष्ण और इन्द्र ... की असामयिक दुःखद मृत्यु पर दुःख प्रकट किया गया उनके परिवारों से हार्दिक सहानुभूति प्रकट की गई। साथ ही श्री वीरेन्द्र प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के जीवन की दीर्घायु की कामना की गई। पंजाब में उग्रवादियो द्वारा मूल्यवान् जीवनों की हत्या किये जाने हेतु सारे भारत में अशांति की आग फैल रही है। सरकार से इस सम्बन्ध में कठोर कदम उठाने की मांग की गई। —... आर्य मन्त्री

# सम्पादकीय

## आर्य समाज के सामने एक ज्वलन्त प्रश्न-क्या आर्य नेता इस पर विचार करेंगे ? (2)

इस लेख माला के पिछले लेख मे मैंने लिखा था कि आर्य समाज ने एक सौ वर्ष में जो कुछ प्राप्त किया था वह आज समाप्त हो रहा है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने हिन्दू जाति में पैदा हुई जिन त्रुटियों को दूर करने के लिए आर्यसमाज की स्थापना की थी उनमें पाखण्ड और कुरहम भी एक थी। आर्य समाज 100 वर्ष तक इनके विरुद्ध लड़ता रहा और हम गर्व से यह कह सकते हैं कि आर्य समाज के इतिहास के बीच के काल में अर्थात् उसके जन्म से 20 25 वर्ष के पश्चात से लेकर 60 70 वर्ष तक के काल में पाखण्ड और कुरहम बहुत कुछ समाप्त हो गया था। आज यह दोनों वापस आ रहे हैं और बड़े जोर से आ रहे हैं। परन्तु आर्य समाज ने कभी बैठकर इस पर गम्भीरतापूर्वक विचार नहीं किया कि यह क्यो हो रहा है ? इस नवम्बर 1983 में महर्षि निर्वाण शताब्दी मनाने जा रहे हैं। उस समय हम अपने उस महान् नेता के चरणों में अपनी श्रद्धांजलि भेंट करेंगे और साथ ही यह भी सोचेंगे कि उन्होंने हमें जो मार्ग दिखाया था कहीं हम उससे भटक तो नहीं गए। आर्य समाज ने बड़े 2 नेता पैदा किए। बड़े 2 साहित्यकार इतिहासकार और पत्रकार पैदा किए। बड़े 2 राजनीतिज्ञ और बड़े 2 विधि विशेषज्ञ पैदा किए शिक्षा के क्षेत्र मे आर्यसमाज ने जो कुछ किया है वह किसी दूसरी संस्था ने नहीं किया। यह केवल इसलिए कि आर्य समाज का नेतृत्व उन लोगो के हाथ में था, जो दूसरो को कोई रास्ता दिखा सकें। जो देश की समस्याओं को समझ सकते थे और उनका कोई समाधान ढूंढ सकते थे। वे नेतृत्व करते थे रास्ता दिखाते थे और लोग उनके पीछे चल पड़ते थे। आज उस स्तर के नेता आर्य समाज मे नहीं मिलते। मैं यह नहीं कहता कि अब आर्य समाज में उस योग्यता और कर्तव्यपरायणता के व्यक्ति नहीं हैं। मेरा यह विश्वास है कि आज भी ऐसे योग्य, उच्चकोटि और उच्च स्तर के महानुभावो की आर्य समाज में कमी नही जो स्वयं प्रकाश स्तम्भ बनकर अपने देशवासियो को ठीक मार्ग पर ले जा सकते हों। जब हम देश की वर्तमान परिस्थितियो पर दृष्टिपात करते हैं तो इस परिणाम पर पहुंचते हैं कि आज देश को एक ऐसे नेतृत्व की आवश्यकता है जो देश की धूमिल छवि को बिल्कुल साफ करके उज्ज्वल बना सके। यह कार्य केवल आर्य समाज कर सकता है। उसके सिद्धान्त, उसका इतिहास उसकी परम्पराए ये सब देश की जनता का नेतृत्व कर सकती हैं। परन्तु उसी स्थिति में जब आर्य समाज का नेतृत्व उन व्यक्तियो के हाथ मे हो जो इन समस्याओ पर विचार कर सके और इनके समाधान का कोई रास्ता दिखा सके। जैसाकि मैं पहले भी लिख चुका हू कि आर्य समाज के नेताओ के पास इन समस्याओ पर विचार करने के लिए समय ही नहीं है। आर्य समाज की शिरोमणि सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का वार्षिक अधिवेशन एक वर्ष के बाद केवल कुछ दिन के लिए होता है। उसमे से आधा दिन सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग सभा के लिए रख लिया जाता है, बाकी के दिन में आधा दिन बजट पर विचार करने के लिए और बाकी का आधा दिन दूसरी समस्याओं पर विचार विमर्श के लिए। मैं कई वर्षों से सार्वदेशिक सभा का सदस्य चला आ रहा हू। मुझे एक बार भी सार्वदेशिक सभा के नेताओ के द्वारा इस समस्या पर विचार करते हुए देखने का अवसर प्राप्त नहीं हुआ। जब ये सोचें कि क्या कारण है कि लोग दूसरे और नए प्रकार के मतों की तरफ हजारों और लाखों की संख्या में जाते हैं परन्तु अब आर्य समाज की ओर नहीं आते। कभी इस बात पर भी विचार नहीं किया गया कि देश की वर्तमान परिस्थितियों में किस प्रकार के साहित्य की आवश्यकता है। कई दूसरी संस्थाओ को अपना साहित्य लाखों की संख्या मे प्रकाशित करते देखा है। आर्य समाज की कुछ संस्थाएं उच्चकोटि साहित्य अवश्य प्रकाशित करती हैं परन्तु सार्वदेशिक सभा नहीं। सार्वदेशिक सभा का कोई प्रकाशन विभाग नहीं। कोई लोक सम्पर्क विभाग नहीं है, क्या कोई व्यक्ति यह सोच सकता है कि आज के युग में कोई संस्था बिना प्रकाशन के और बिना लोक सम्पर्क विभाग के अपना प्रचार कर सकती है। पंजाब में अकाली आज जो कुछ कर रहे हैं। उनके विषय में मैं इस लेख में कुछ लिखना नहीं चाहता। परन्तु हर कोई जानता है कि जितने समाचार अकालियो के विषय में प्रकाशित होते हैं किसी दूसरी संस्था के विषय मे नहीं। अकाली दल के प्रधान का प्रत्येक वक्तव्य मोटे 2 अक्षरो मे समाचार पत्रो मे प्रकाशित हो जाता है। सार्वदेशिक सभा के प्रधान का कभी कोई वक्तव्य प्रकाशित नहीं होता। आर्य समाज के बाहर के लोगो मे किसी को यह भी मालूम नहीं कि सार्वदेशिक सभा के नाम की कोई संस्था है या नहीं। यह सब कुछ केवल इसलिए हो रहा है कि सार्वदेशिक सभा के अधिकारी किसी योजना के अनुसार आर्य समाज का काम नहीं चला रहे। इसलिए आर्य समाज पिछड़ रहा है। संन्यासियो का आर्य समाज मे एक विशेष स्थान है। श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज श्री स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज श्री स्वामी समर्पणानन्द जी महाराज श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज और कई दिवंगत संन्यासियो ने आर्य समाज की जो सेवा की थी उसे हम भूल नहीं सकते और उसके द्वारा आर्य समाज ने जो प्रगति की थी उसकी भी अवहेलना नहीं की जा सकती। आज भी आर्य समाज मे उच्चकोटि के विद्वान् संन्यासी हैं। किसी न किसी कारण उन्हें वह महत्व नहीं दिया जा रहा है जो देना चाहिए। और यह भी केवल इसलिए कि सार्वदेशिक सभा के अधिकारी संन्यासी वर्ग को सार्वदेशिक सभा से दूर रखना चाहते हैं। इसका जो परिणाम हो रहा है वह भी हमारे सामने है। मेरा यह लेख

(शेष पृष्ठ 6 पर)

## काँगड़ी ग्राम में, मैने क्या देखा ?

मैं जब कभी हरिद्वार जाता हू तो कई बार उस कांगड़ी ग्राम मे भी जाता हू, जिसके नाम पर श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने अपने गुरुकुल का नाम रखा था। वास्तविक स्थिति यह है कि गुरुकुल पहले बना फिर उजड़ा और फिर बन गया। परन्तु कांगड़ी ग्राम की ओर किसी का आज तक ध्यान नहीं गया था गुरुकुल कांगड़ी के नाम पर अब हरिद्वार मे कनखल के समीप एक विश्वविद्यालय और एक विद्यालय सुचारु रूप से चल रहा है वहां एक गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी भी है जो लुट रही है। आज जनता का ध्यान आज तक गुरुकुल कांगड़ी और गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की तरफ तो गया है परन्तु कांगड़ी ग्राम की तरफ न गया था। यह ग्राम देश के दूसरे ग्रामो की तरह गरीब जनता का पिछड़ा हुआ ग्राम बना रहा। परन्तु पिछले तीन वर्षों से गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति श्री बलभद्र कुमार हूजा के नेतृत्व मे गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के अध्यापको और छात्रो ने इस ग्राम को अपना लिया और वे इसके पुनरुत्थान के लिए लगातार प्रयत्न कर रहे हैं। पिछली 23 जुलाई को वहां जन्मोत्सव मनाया गया मैं भी इस अवसर पर वहां गया और मुझे देखकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि अब धीरे 2 उस ग्राम का रूप बदल रहा है। एक पक्की सड़क बन गई है। कुछ पक्के मकान भी बन गये हैं। बच्चो के लिए एक पाठशाला और एक पुस्तकालय भी खोल दिया गया है। जगह जगह नये वृक्ष भी लगाये गये हैं और इस बार मुझे यह देखकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि दो घरो मे गोबर गैस प्लान्ट लग गये हैं। जिस प्रकार हम अपने घरो मे गैस के द्वारा पानी गर्म करते हैं और अपना भोजन बनाते हैं उसी प्रकार उस ग्राम मे भी इन दो घरो मे गैस प्लान्ट से अब सारा काम होता है। दो बैंको ने इन्हें कुछ ऋण भी दे दिया है। इस प्रकार यह ग्राम जिसे हम बिल्कुल ही भूल चुके थे और जिसके हम इतने ऋणी हैं कि उसके नाम से गुरुकुल कांगड़ी का नाम सारे संसार मे पहुंचा है उस ग्राम मे अब नया जीवन दिखाई देने लगा है। यदि हम वहां जाएं तो एक सौ तीन वर्ष के वृद्ध श्री अर्जुनसिंह वहां आज भी मिलते हैं जो श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी के साथ मिलकर गुरुकुल कांगड़ी के भवन बनाने के लिए काम किया करते थे। अब उन्हें दिखाई नहीं देता। फिर भी स्वामी श्रद्धानन्द जी का नाम सुनकर उनके चेहरे पर एक नई चमक दिखाई देने लगती है। मेरे लिए यही बात हार्दिक सन्तोष और प्रसन्नता की है कि गुरुकुल कांगड़ी के अध्यापक और विद्यार्थी एक रचनात्मक काम कर रहे हैं। अब उत्तर प्रदेश की सरकार ने भी इसके लिए कुछ धन व्यय करने का फैसला किया है। इस से पहले आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब 5000 रुपये दे चुकी है। देहली आर्य प्रतिनिधि सभा भी 5000 रुपये दे चुकी है। वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर मे रहने वाले बुजुर्गों ने भी डेढ़ दो हजार रुपया इकट्ठा करके दिया है। आशा रखनी चाहिए कि यह ग्राम बहुत शीघ्र आदर्श ग्राम बन जाएगा और एक प्रकार से श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का एक नया स्मारक बन जाएगा। इसके लिए मै गुरुकुल के कुलपति श्री बलभद्र कुमार हूजा और उनके सहयोगियो गुरुकुल के अध्यापको और विद्यार्थियो को हार्दिक बधाई देता हू।

—वीरेन्द्र

# गृह-विज्ञान और उसकी आवश्यकता

ले—श्री मुक्तिनाथ प्रसाद एम ए

सुखी उन्नत शान्त और स्नेहपूर्ण जीवन यापन के लिए गृह विज्ञान में निपुणता और कौशल प्राप्त करना अत्यन्त आवश्यक है गृह विज्ञान के सफल प्रयोग का चमत्कार और कायनपुण्य हमें थोड़े खर्च में ही ज्यादा से ज्यादा आराम शान्ति तथा स्थिरता को बरदान देता है। आज इस बेतोड़ महंगाई और तंगी के जमाने में गृह विज्ञान की जानकारी अत्यन्त जरूरी है।

भारतीय समाज का निर्माण और संगठन कुछ ऐसा है जहा एक परिवार के सदस्यों में भाईचारे का नाता चलता है। पाश्चात्य वायुमण्डल और स्वतन्त्रता से प्रभावित हो भले ही भारत के कुछ शहरी या देहाती निवासी परिवार के संगठन को न मानते हो तथा अपनी पत्नी और बाल बच्चो के साथ परिवार से नाता तोड़ अलग घर बसा लें फिर भी अधिकांश भारतीय परिवार अभी भी इस विषैले

भौतिकवादी पाश्चात्य बवंडर से अछूता है और आज भी परिवारो मे प्रेम और सदव्यवहार की गंगा बहती है भारतीय पारिवारिक प्रेम और शान्ति को जन्म देने वाली पालन करने वाली और संहार भी करने वाली हमारी गृह देवियां ही होती है। भारतीय पुरुष का हाथ भी इस प्रेम को घटाने और बढ़ाने मे कम नहीं होता फिर भी भारतीय नारी के नियमो के अनुसार ही अधिकांश पुरुष चलते हैं इसका कारण यह है कि नारी के कन्धो पर ही गृह प्रबन्ध की गाड़ी चलती है। उसी के संकेत पर परिवार के प्रत्येक सदस्य के खान पान रहन सहन का चक्र चलता रहता है। घर का राजा घर की रानी की उपेक्षा नही कर सकता अत रानी के चरित्र पर ही पारिवारिक शान्ति और सुख निर्भर करता है अगर रानी निःस्वार्थ त्याग स्नेह ममता और करुणा की प्रतिमूर्ति हुई तो परिवार स्वर्ग बन जाता है अलौकिक संयम का सन्त्र स्थल हो जाता है। अगर रानी कुरानी निकली तो परिवार द्वेष कलह स्वार्थ और दलबन्दी का क्रीड़ा स्थल बन जाता है आपसी मतभेद का बाजार गर्म हो जाता है फल यह होता है कि परिवार संगठन की टांग टूट जाती है वह छिन्न भिन्न हो जाता है।

अत पारिवारिक समृद्धि और प्रेम के रक्षा हित घर की रानी को सुरानी बनाना ही पड़ेगा और सुरानी बनने का एक उत्तम उपाय है गृह विज्ञान की शिक्षा देना। गृह विज्ञान रूपी पारस मणि को पाकर यह रानी घर की मिट्टी को भी सोना मे बदल दे सकती है क्योंकि गृह विज्ञान विशारद नारी जो इन्तजाम दस रुपए मे करेगी वह इन्तजाम गृह विज्ञान मे मूढ़ नारी पचास रुपए मे भी नही कर सकती। पुरुषों को भी गृह विज्ञान की जानकारी रखना अत्यन्त जरूरी है फिर भी हमारे भारतीय समाज मे जहा हमारी देवियां ही गृह प्रबन्ध की संचालिका होती हैं गृह विज्ञान मे उन्हे चतुर और निपुण करना विशेष तौर पर जरूरी है।

हमारी समाज व्यवस्था हमारे गृहो पर ही निर्भर करती है। गृहो की सुव्यवस्था शान्ति और समृद्धि पर ही समाज का सुविकास निर्भर करता है। गृहो का सुपरिचालन गृह योग्य और सुसंस्कृत युवक और युवतियो पर ही अवलम्बित है। अत गृहो के युवक और युवतियां जितने ही निपुण गुणी और प्रवीण होंगे समाज उतना ही ज्यादा विकासोन्मुख और उन्नतिशील होगा। अयोग्य भ्रष्टाचारी युवक और युवतियो द्वारा गृहों में अनाचार और अशान्ति की वृद्धि होगी। उसका अनर्थकारी परिणाम समाज पर पड़ेगा। क्योंकि तब समाज ही भ्रष्टाचार और पतन का क्रीड़ास्थल बन जाएगा। समाज के पतन से राष्ट्रीय गौरव और विकास की गति रुक जाएगी। अतः राष्ट्रीय गौरव सामाजिक ऐश्वर्य आदि की रक्षा हेतु गृहों का सुपरिचालन अत्यन्त आवश्यक है।

वर्तमान काल का गृह विज्ञान भूत काल के गृह विज्ञान से भिन्न होगा। भूतकाल की चीजो के मूल्य जीवन स्तर मनोरंजन साधन कला-कौशल आदि वर्तमान काल से भिन्न थे। मानवी रुचियों में भी वैज्ञानिक विकासों के कारण क्रान्तिकारी परिवर्तन हुआ है। इसलिए आधुनिक काल का गृह विज्ञान आधुनिक आर्थिक, सांस्कृतिक और सामाजिक दृष्टिकोणों से प्रेरित होगा।

गृह विज्ञान दाम्पत्य जीवन के सफल निर्वाह और गृह प्रबन्ध के सफल मनोरथ की कला का परिचय देता है। सेवा स्वास्थ्य सिलाई मातृत्वकला पुष्टिकर भोजन व्यवस्था गृह अर्थ शास्त्र मनोविज्ञान शरीर विज्ञान शिशु विज्ञान आदि गृह विज्ञान के विषय हैं। इस विज्ञान के ज्ञाता होने के लिए इन विषयो को समझना अनिवार्य है। भारतीय संस्कृति और सभ्यता के अन्दर वैज्ञानिक धार्मिक राजनैतिक तत्वो की पवित्रता होने के बदले गृह विज्ञान वेत्ता सुगृहिणी का मान और आदर ज्यादा होना है पाश्चात्य संस्कृति तो आज भौतिकता की इतनी दासी बन गयी है कि वहा परिवार घर के संगठन की कड़ी बिल्कुल ढीली पड़ गई है। वहा के नर या नारी होटलो में खाना खाना और मनोरंजन करना गौरव की बात समझते हैं। हमारी भारतीय संस्कृति के अन्दर होटलो मे खाना पीना या रहना अच्छा नही समझा जाता। हमारी गृहदेवी घरो के भोजन और रहन सहन को ज्यादा महत्व देती है। हमारे गृह विज्ञान का आधार-स्तम्भ आध्यात्मिकता है जो असंयम अशिष्टता और अर्थहीनता को सहन नहीं कर सकती। भारतीय संस्कृति मर्यादा और नीति के अनुसार ही चलती है

ऐसे आध्यात्मिक वातावरण में आज और कल हमारा गृह विज्ञान एक खास स्थान रखता है। आध्यात्मिकता की मूर्ति भारतीय नारी गृह विज्ञान वेत्ता होते हुए भी सभी कार्यों मे नीति और धर्म की रक्षा करती है।

वर्तमान आर्थिक जटिलता और कठिनाइयो के कारण गृह विज्ञान का महत्व असाधारण हो गया है। भूतकाल मे अगर हम दस पांच सेर अन्न नष्ट भी कर देते थे तो कोई महत्वपूर्ण बात नही होती थी पर आज अन्न का एक दाना भी नष्ट करना व्यक्तिगत ही नही बल्कि राष्ट्रीय अपराध है। ऐसी समस्या पूर्ण परिस्थिति मे गृह देवियां गृह विज्ञान मे दक्ष होने पर बहुत कुछ हमारी चिन्ताओं को दूर कर सकती हैं।

[illegible] कौशल के [illegible] में ही वे हमें रोगमुक्त कर पूर्ण सुस्वास्थ्य प्रदान कर देती हैं। प्रेम परिचय, सहानुभूति और स्नेह सिंचित मधुर ओठों पर मन-मोहिनी मुस्कराहट की ज्योति-जगाती वह हमारे रोगों का विनाश कर डालती है। मातृत्व कला की दक्षिता होने पर मधुर वात्सल्य रस का मीठा पान करा हमें योग्य मानव बनने की शुभकामनी प्रेरणा देती है। पुष्टिकर भोजन व्यवस्था का संचालन कर हमें उम्र और आवश्यकता के अनुसार सन्तुलित भोजन दे हमारी शारीरिक वृद्धि मे योग देती है। मनोविज्ञान के द्वारा वह के सदस्यों के स्वभावों का अध्ययन कर उनकी विभिन्न शक्तियो को सन्तुष्ट करने की चेष्टा करती है। शिशु विज्ञान की दक्षता प्राप्त कर राष्ट्र के भावी कर्णधारों का निर्माण उत्तम रीति से कर राष्ट्र का अनुपम उपकार करती है। स्वास्थ्य शिक्षा की जानकारी द्वारा घर शरीर आदि की स्वच्छता और पवित्रता की रक्षा कर मानसिक शारीरिक और आत्मिक विकासों मे सहयोग देती है। गृह अर्थ शास्त्र की ज्ञाता होने पर और अर्थ का वैज्ञानिक परिचालन कर व्यय की बरबादी से रक्षा करती है। इस तरह गृह विज्ञान द्वारा नारी गागर में सागर भर देती है।

उक्त बातो को ध्यान मे रखते हुए यह आवश्यक मालूम होता है कि लड़कियो की शिक्षा व्यवस्था मे गृह विज्ञान का विषय अनिवार्य कर दिया जाए। इस विषय को भारत के सभी शिक्षा विद्यालयो मे अनिवार्य कर दिया जाए और इसकी उच्च से उच्च शिक्षा दी जाए। आशा है हमारी राष्ट्रीय सरकार इस विषय की तरफ ध्यान दे कुछ ठोस कदम उठाएगी। यह ऐसा विषय है जिसकी कुछ दिनों की भी उपेक्षा समाज को कितनी ही भावी लक्ष्मियो से वंचित कर शूपणखाओ और मन्थराओ का निर्माण कर देगी।

हमारी गृह देवियां परम्परा से ही पाक शास्त्र की [illegible] होती हैं। अगर गृह विज्ञान की शिक्षा का [illegible] ढंग पर [illegible] किया जाए सोने में सुगन्ध हो जाए। [illegible] नारी गृह की लक्ष्मी कहलाती [illegible] लक्ष्मी ऐश्वर्य और वैभव की दात्री होती है। गृह विज्ञान [illegible] नारी रूपी लक्ष्मी जहां रहती है वहा धन धमक समृद्धि और शान्ति की चान्दनी छिटकती रहती है। ऐसी नारी वैज्ञानिक रचनात्मक और सौन्दर्यमयी भावनाओं के द्वारा गृह समाज राष्ट्र और विश्वव्यापी रंगमंचों पर सफल अभिनय का प्रदर्शन कर आनन्द तृप्ति और विकास का वरदान दे हमें अच्छा मानव बनने की अद्वितीय प्रेरणा प्रदान करती है। ऐसी नारी मंगल और अनन्त वैभव की पूर्ति हेतु कामधेनु के समान कल्याणमयी हो जाती है।

इह दिनस्सिरातल मुस्तकीम् (फातिहा 5)

.ए अल्लाह ! हम को सीधे मार्ग पर चला।

# भारत के मुसलमानों, जरा सोचो !!!

—श्री ए एन बिस्मिल बी सी- आर ई जामिया मिलिया यूनिवर्सिटी नई दिल्ली का भारत के मुसलमानो के नाम सन्देश

सुख और खुशहाली के लिए भारत मे रह रहे मुसलमानो को यह चाहिए कि वे संगठित होकर भारत के प्रति सच्ची वफादारी का परिचय दें। सब प्रकार की अफवाहों से दूर रहकर वे विदेशी शक्ति तथा धन पर इशारा कर भारत वर्ष के प्रति गद्दारी की भावना रखने वाले कम सिरफिरे मुसलमानो से सदा दूर रहें।

इस प्रकार के तथाकथित मुसलमान नेता शान्ति के साथ खुशहाली की ओर बढ़ रहे सच्चे मुसलमानों के सच्चे दुश्मन हैं। ऐसे नेता मात्र अपनी कुर्सी के लोभ मे दूसरे लोगो के घरो को आग लगाकर अपने हाथ सेकना ही जीवन का मुख्य उद्देश्य समझते हैं।

मेरे प्यारे मुसलमान भाईयो ! आज हमे भारत जैसे हिन्दू प्रधान देश में रहते हुए जिस स्वतन्त्रता के साथ अपने मजहबी असूलो के अनुसार चलने अर्थात मुस्लिम यूनिवर्सिटिया खोलकर अपने बच्चो को उर्दू माध्यम से शिक्षा देने अपनी रीति रिवाज के अनुसार एक साथ अनेक स्त्रियो से विवाह करने निर्भीकता से मजहबी जलसे जलूस निकालने भारत सरकार की ओर से अपने ईद आदि त्योहारो की छुट्टिया पाने यहा अपने नाम पर मन पसन्द जमीनें खरीदने बे रोक टोक व्यापार करने इच्छा के अनुसार अधिक से अधिक मस्जिदें बनाकर इस्लाम का प्रचार करने अल्पसंख्यक होने के नाते कालेजो चुनावो सरकारी नौकरियो में विशेष सीटें प्राप्त करने और यहा तक कि भारत वर्ष की राजनीति मे भाग लेकर राष्ट्रपति तक बनने की जितनी छूट यहा इस गैर मुस्लिम देश हिन्दुस्तान में प्राप्त है उतनी दुनिया के दूसरे किसी भी गैर मुस्लिम देश में प्राप्त नहीं है। यथा—चीन में कोई भी मुसलमान भाई एक से अधिक पत्नी नहीं रख सकता तथा न ही दो से अधिक बच्चे ही पैदा कर सकता है। सिंगापुर में तमाम कबरों को तोड़ कर ——— मुर्दों को जलाया जाता है। जापान के मुसलमानो को अपने मुर्दों के लिए कबरें बनाने की आज्ञा नहीं। इस राष्ट्र आदि देशों में कोई मुसलमान अपने मजहब का प्रचार नही कर सकता। नेपाल आदि देशो में कोई मुसलमान किसी भी प्रकार से किसी हिन्दू का मजहब बदल कर उसे मुसलमान नही बना सकता ऐसा करने वाले को कठोर दण्ड मिलता है।

साथियो ! आज इस हिन्दू धर्म प्रधान देश मे रहते हुए हम मुसलमानो को जितनी सुविधाए प्राप्त हैं उन सबका एक अंश भी इन सिख, जैन तथा बौद्ध आदि हिन्दुओ को किसी भी मुस्लिम देश मे प्राप्त नही है।

अरब ईराक, ईरान अथवा पाकिस्तान आदि मुस्लिम देशो मे कोई भी सिख जैन तथा बौद्ध आदि हिन्दू सरकार की सहायता से वहां धार्मिक सामाजिक अथवा राजनैतिक स्वतन्त्रता या सुविधा प्राप्त नही कर सकता। यथा—

1 कोई भी सिख जैन तथा बौद्ध आदि हिन्दु मुस्लिम देशो मे अपने धर्म एव भाषा के अनुसार न तो कोई विद्यालय अथवा विश्वविद्यालय ही खोल सकता है। और न ही भारत मे चल रहे हमारे अलीगढ तथा जामिया आदि विश्वविद्यालय की तरह हिन्दी माध्यम से पढने की सुविधा ही पा सकता है।

2 हिन्दुस्तान मे उर्दू माध्यम से चल रहे आम विद्यालयो तथा मस्जिदो मे चल रहे हमारे मजहबी पाठशालाओ की तरह न तो वहा उन मुस्लिम देशो मे ऐसा कोई संस्कृत वेद विद्यालय ही खोल सकता है और न ही किसी सरकारी विद्यालय मे अपने धर्म के अनुसार हमारे जुम्मे की तरह मनमानी छुट्टी ही कर सकता है।

3 कोई भी हिन्दू वहा पर न तो हिन्दी भाषा मे कोई काम काज ही कर सकता है और न ही किसी को सरकार की ओर से ईद आदि की तरह श्री रामनवमी श्री कृष्णाष्टमी दशहरा अथवा दीपावली की छुट्टी ही मिल सकती है।

4 हिन्दी अथवा संस्कृत माध्यम से कोई हिन्दू उन मुस्लिम देशो मे किसी प्रकार का रेडियो अथवा टी वी कार्यक्रम नहीं सुन सकता। रामनवमी आदि धार्मिक प्रोग्रामों को सुनना या देखना तो दूर अपितु प्रतिदिन आने वाले साधारण समाचार भी अपनी भाषाओ मे नहीं सुन सकता।

5 हम मुसलमानो की तरह अपना राष्ट्रपति चुनना तो दूर अपितु वहा हिन्दुओं के अल्पसंख्यक होने के नाते न तो उन्हे राजनीति मे भाग लेने की आज्ञा है और न ही कोई चुनाव लड़ने की। यहा तक कि अल्पसंख्यक के नाम पर किसी स्कूल या कालेज मे भी सीट नही ले सकता।

6 वहा रह रहे हिन्दुओ के द्वारा उन मुस्लिम देशो मे अपने धर्म या संस्था के नाते पर किसी अलग हिन्दुस्तान की मांग करना तो दूर अपितु वे हिन्दू होने के नाते एक छोटी सी सरकारी नौकरी भी प्राप्त नही कर सकते।

7 भारत मे सरकारी कार्यालयो मे लगे हुए मुस्लिम राष्ट्रपति के चित्र को तरह अथवा उन देशो मे शेख के चित्र की तरह कोई भी भारतीय अपने हिन्दू नेता का कोई चित्र नहीं लगा सकता।

8 भारत के राष्ट्रपति भवन मे पाकिस्तान के जनरल जिया उलहक के नमाज पढने की तरह कोई भी हिन्दू किसी सामान्य सरकारी स्थान पर यज्ञ हवन नही कर सकता।

9 अपने हिन्दू धर्म के अनुसार बड बाजे बजाकर न तो कोई हिन्दू जलसा जलस ही निकाल सकता है और न ही हमारे यहा ताजियो की तरह अपने धर्म का वहा खुला प्रचार ही कर सकता है।

10 किसी हिन्दू के द्वारा इन मुस्लिम देशो मे खुलेआम अपने धर्म की किताब वेद शास्त्र, रामायण अथवा गीता तथा अन्य कोई किताब छापना या बेचना तो दूर अपितु किसी दुकान पर इन ग्रन्थो को केवल रख भी नही सकता। और आर्य समाजियो के सत्यार्थ प्रकाश पर तो पूर्ण प्रतिबन्ध है।

11 मैं भारत मे अपने बहुत से मुस्लिम भाईयो की कबरो कहीं ... तो बड बड राजकीय मार्गों को रोका हुआ देखता हू पर उन मुसलमानी देशो मे कोई हिन्दू किसी एकान्त जगह मे अपने धर्म के नाम पर मन्दिर मठ अथवा गुरुद्वारे के नाम पर एक ईंट भी नही लगा सकता।

12 कोई भी हिन्दू उन अरबादि देशों मे धोती पहनकर अथवा गले मे किरपाण लटका कर काय नही कर सकता। बाहर तो क्या इस न तो वह अपने घर पर भी डरता होगा। आपको यह भी पता होना चाहिए कि सऊदी अरब म कोई हिन्दू खालसा अर्थात सिख आज भी प्रवेश नही पा सकता।

13 कोई हिन्दू चाहे वह पण्डित हो या सिख मिलेट्री अथवा पुलिस मे तो नौकरी पाना दूर अपितु अन्य सरकारी कार्यालयो मे भी नौकरी नही पा सकता

14 कोई हिन्दू वहा पर अपनी फैक्टरी व व्यापार के लिए जमीन नही ले सकता किसी। व्यापार नही कर सकता। कोई भी हिन्दू उसी हालत मे वहा व्यापार कर सकता है जबकि वह अपना दसग पार्टनर किसी स्थानीय मुसलमान को बना कर उसे 51 प्रतिशत का हिस्सेदार बनाए।

15 हिन्दुस्तान की आजादी के बाद हमारे और हिंदुओ के बीच अनेक बार गोहत्या के सवाल पर झगड़ हो चुके हैं। झगड कभी भी किसी वर्ग के लिए लाभ दायक नही होते सऊदी अरब मे गोहत्या करने वाले को मौत की सजा मिलती है ऐसी स्थिति मे भी यहा बिना गाय काटे मुसलमानो की शादिया पूर्ण सफल होती हैं। यदि हमारे मुसलमान भाई सऊदी की तरह यहा भी गाय को न मारने का दृढ निश्चय कर लें तो भारत मे हिन्दू तथा मुसलमान अमन से जी सकते हैं।

16 देश के कुछ गद्दार लोग हम मुसलमानो को यह कहकर भी दंगो के लिए भड़काते हैं कि हिन्दुस्तान मे इस्लाम मजहब सुरक्षित नही है एक मुसलमान होने के नाते मैं यह समझता हू कि इस बात से बड़ा कोई दूसरा सफेद झूठ नही हो सकता। इस अफवाह की असलीयत का तो इसी से पता चलता है कि 1947 के पश्चात हिन्दुस्तान मे हजारो नई मस्जिद हजारो नए उर्दू माध्यम के स्कूल तथा अलीगढ जामिया तथा देव बन्द जैसी मुस्लिम यूनिवर्सिटियां बेखौफ चल रही हैं। जबकि दूसरी ओर पाकिस्तान मे हिन्दुओ के अंगुलियो पर गिने जाने वाले दो चार धर्म स्थान ही बचे हैं। पाकिस्तान मे हिन्दुओ से ऐसा व्यवहार होते हुए भी यहा पर अनेको मुसलमान स्थानो को नया बनाना तो वास्तव मे मुसलमानो के साथ भारत सरकार के उत्तम भाईचारे के व्यवहार का ही प्रतीक है न कि अत्याचार का।

इन उपरोक्त सब बातो को ध्यान में रखते हुए सब मुसलमानो को चाहिए कि अपनी सर्वांगीण उन्नति के लिए हिन्दुस्तान के प्रति वफादार बनकर रहे। भारत सरकार की हम पर बहुत बड़ी कृपा है कि उसने 1947 मे हमे अपने मुसलमान धर्म के अनुसार पाकिस्तान देश अलग दे देने पर भी यहा हिन्दुस्तान मे अपने मजहब के अनुसार चलने की सब सुविधाए दे रखी हैं।

प्रिय भाईयो ! आज जो कथित मुसलमान नेता विदेशो के इशारे पर नाचकर अपनी कुर्सी या धन के लिए मेरठ मुरादाबाद बड़ौदा अहमदाबाद कश्मीर केरल अथवा असम मे जातीय दंगे करवा रहे हैं वे वास्तव मे मुसलमान मजहब को धब्बा लगाकर देश म गद्दार बनकर यहा हमारे लिए काटो को बो रहे हैं। उनसे हमे दूर रहना चाहिए।

मेरो सभी मुसलमान भाईयो को यह अनुरोध है कि वे इस पर्चे को अधिक से अधिक उर्दू इंगलिश तथा हिन्दी मे छपवा —— सब मुसलमानो तक पहुंचाने क —— कर। जिससे कि भारत मे शान्ति से रहते हुए मुसलमान लोग तथा मुसलमान मजहब शान्ति से उन्नत हो सकें और आपस मे झगडो के होने पर हमे बड़ा से

# सुख व मोक्ष प्राप्ति के साधन

ले—श्री नारायणदत्त योगी जालन्धर

ओ३म् का जाप। ओ३म् के अर्थ हैं कि भगवान सर्व रक्षक हैं। वे भगवान् सब व्यापक है। अर्थात वह सब जगह मौजूद है। वहां भगवान सब से महान है। भगवान से बढ़ कर संसार में कोई नहीं भगवान् महान् है उसको वेदोंमें महान कहा गया है जो पुरुष महान भगवान के महान उपदेशो के अनुसार अपना जीवन व्यतीत करता है वह भी महान् बन जाता है। जसे महर्षि दयानन्द जी महाराज ने महान् भगवान् के महान् उपदेशो को पढ़ा और उनके उपदेशो के अनुसार अपना जीवन क्रियात्मिक बनाया तो स्वामी दयानन्द जी महान् ऋषि बन गए। जो सारे संसार में महर्षि दयानन्द के नाम से प्रसिद्ध हैं। भगवान उपदेश करते हैं।

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छत समाः।
एवंत्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे॥

यजुर्वेद अध्याय 40 मन्त्र 2॥

भावार्थ—मनुष्य आलस्य को छोड़ कर सब देखने हारे न्यायाधीश परमात्मा और करने योग्य उसकी आज्ञा को मान कर शुभ कर्मों को करते हुए और अशुभ कर्मों को छोड़ते हुए ब्रह्मचर्य के सेवन से विद्या और अच्छी शिक्षा को पाकर उपस्थ इन्द्रिय के रोकने से पराक्रम को बढ़ा कर अल्प मृत्यु को हटाव युक्त आहार विहार से सौ वर्ष की आयु को प्राप्त होवें जैसे जैसे मनुष्य सुकर्मों में चेष्टा करते हैं वैसे वैसे ही पाप कर्म से बुद्धि की निवृत्ति होती है और विद्या अवस्था और सुशीलता बढ़ती है।

(महर्षि दयानन्द जी महाराज)

## मनुष्य जीवन का उद्देश्य

मनुष्य जीवन का उद्देश्य यह है कि धर्म अर्थ काम मोक्ष को प्राप्त करे।

धर्मात्मा कौन है और धर्म के क्या लक्षण हैं? जो नर या नारी धर्म के दस लक्षणो को धारण किए हुए है वह धर्मात्मा है

धृति क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रिय निग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम्।

मनुस्मृति अध्याय 6 श्लोक 98।

अर्थ—धैर्य क्षमा करना मन को वश में करना चोरी न करना पवित्रता इन्द्रियो को वश में करना बुद्धि (अच्छे बुरे का ज्ञान) विद्या (ईश्वर सम्बन्धी ज्ञान) सत्य क्रोध का न होना ये दस धर्म के लक्षण हैं॥

## आर्य कौन हैं?

जो श्रेष्ठ स्वभाववाला है धर्मात्मा है सत्यवादी है परोपकारी है और सदा से आर्य वर्त देश के रहने वाला है। उस को आर्य कहते हैं।

महर्षि दयानन्द जी महाराज ने उपरोक्त व्याख्या आर्य शब्द की आर्योद्देश्य रत्नमाला में की है। जो धर्मात्मा है वह आर्य है और जो आर्य है वह धर्मात्मा है। आर्य और धर्मात्मा में कोई भेद नहीं है।

1 अर्थ वह है जो धर्म पूर्वक परिश्रम से कमाया जावे।

2 काम वह है जो धार्मिक इच्छाओ को पूरा कर।

3 सब प्रकार के दुःखो से छूट जाने को मोक्ष कहते हैं। दुःख तीन प्रकार के होते हैं।

1 आधिदैविक—देवता सम्बन्धी होने वाला दुःख।

2 आधिभौतिक—शेर बगरा जीवो से होने वाला दुःख।

3 आध्यात्मिक दुःख—आत्मा सम्बन्धी दुःख। शोक मोह फिकर आदि का होना।

जो मनुष्य मोक्ष को प्राप्त कर लेता है वह इन तीनो दुःखो से छूट जाता है।

मोक्ष सब एक प्रान्तकाल के लिए होता है। तैतालीस लाख बीस सहस्र वर्षों की एक चतुर्युगी दो सहस्र चतुर्युगियो का एक अहोरात्र ऐसे तीस अहोरात्रो का एक, महीना ऐसे बारह महीनो का एक वर्ष ऐसे शत वर्षों का एक प्रान्तकाल होता है।

## मोक्ष प्राप्ति का साधन

विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते।

यजुर्वेद अध्याय 40 मन्त्र 14॥

भावार्थ—जो मनुष्य ज्ञान और कर्म इन दोनो को साथ 2 जानता है वह कर्म से मृत्यु रूपी दुःख को पार कर जाता है और ज्ञान से मोक्ष प्राप्त करता है

## ज्ञान कैसे प्राप्त होता है

ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद सब सत्यविद्याओ की पुस्तक हैं इन से सत्य ज्ञान प्राप्त होता है। ऋग्वेद से सामान्य ज्ञान प्राप्त होता है। यजुर्वेद से शुभ कर्मों का ज्ञान प्राप्त होता है साम वेद से प्रार्थना का ज्ञान प्राप्त होता है। अथर्ववेद से विज्ञान प्राप्त होता है। चारो वेद ज्ञान के भण्डार हैं। 6 दर्शन, 11 उपनिषदों और मनुस्मृति से भी ज्ञान की प्राप्ति होती?।

कर्म दो प्रकार के होते हैं एक कर्तव्य कर्म दूसरे त्याज्य कर्म।

यम और नियम पालन करना कर्तव्य कर्म है॥

यम पांच हैं। अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य अपरिग्रह सर्व प्रकार से सबकाल में किसी को भी दुःख न देना अहिंसा है।

2 सत्य जैसा आत्मा में हो वैसा ही मन में वाणी में कर्म में करना सत्य है।

3 अस्तेय मन वाणी और क्रिया किसी से भी चोरी न करना और न चोरी की भावना रखना।

4 ब्रह्मचर्य—शरीर में उत्पन्न हुए रज वीर्य की रक्षा करते हुए वेदों का अध्ययन करना और पराई स्त्री को माता के समान समझना ब्रह्मचर्य है।

5 अपरिग्रह—लोभ दृष्टि से विषयों के परित्याग का नाम अपरिग्रह है।

---

## आर्य समाजो के अधिकारियो से एक निवेदन

# प्रतिनिधि फार्म शीघ्र भेजिए

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का वार्षिक चुनाव 27 28 अगस्त को आर्यसमाज चौक किशनपुरा में होना निश्चित हुआ है। सभा से सम्बन्धित आर्य समाजों को प्रतिनिधि फार्म भेजे जा चुके हैं इसलिए हमारा उन सभी आर्यसमाजोंके अधिकारियो की सेवा में निवेदन है प्रार्थना है कि अपनी आर्य समाज का फार्म भर कर शीघ्र प्रतिनिधि सभा कार्यालय में भेजने की व्यवस्था कर।

—रामचन्द्र ज-वेद सभा महामन्त्री

---

## आर्य समाज (अड्डा होशियारपुर) स्वामी श्रद्धानन्द बाजार जालन्धर का वार्षिक चुनाव

आर्य समाज श्रद्धानन्द बाजार अड्डा होशियारपुर जालन्धर का वार्षिक चुनाव सर्वसम्मति से 17 जुलाई 83 साय चार बजे सम्पन्न हुआ आर्य समाज के निम्न पदाधिकारी सर्वसम्मति से चुने गये—

प्रधान—श्री रामनाथ यादव उप प्रधान—श्री अमृतलाल खन्ना महामन्त्री—श्री सेठ योगेन्द्रपाल मन्त्री—श्री सोहनलाल कोषाध्यक्ष—श्री राजेन्द्र अग्रवाल पुस्तकाध्यक्ष—श्री सुभाष सहगल आडीटर—श्री सुदर्शन लाल आनन्द

अन्तरग सदस्य

सर्वश्री डा दीवानचन्द प्रकाशचन्द कालड़ा दुनीचन्द थापर और कृष्णलाल अग्रवाल

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रतिनिधि सर्वश्री योगेन्द्रपाल सेठ श्री अमृत लाल खन्ना और श्री रामचन्द्र जावेद।

दयानन्द महाविद्यालय हाई स्कूल जालन्धर की प्रबन्ध कमेटी के निम्न सदस्यो का सर्वसम्मति से चुनाव हुआ—सर्वश्री योगेन्द्रपाल सेठ रामनाथ यादव नवल किशोर सेठ राजेन्द्र अग्रवाल दुनीचन्द थापर कृष्णलाल अग्रवाल हंसराज वर्मा सुभाष सहगल प्रकाशचन्द कालड़ा डा दीवानचन्द और प्रि अमृतलाल खन्ना।

आर्य समाज स्कूल सम्पत्ति और शिक्षा प्रचार समिति के सदस्यों का चुनाव सर्वसम्मति से इस प्रकार हुआ—सर्वश्री योगेन्द्रपाल सेठ, रामनाथ यादव सेठ चमनलाल अग्रवाल अमृतलाल खन्ना प्रकाशचन्द कालड़ा देसराज सेठी हंसराज भाटी मदनलाल सेठ डा दीवानचन्द अमृतलाल बजाज एडवोकेट कृपालसिंह एडवोकेट सुखदेवजी(विक्टर ट्रस्ट) अमृत लाल सहगल, (कन्या इण्डस्ट्रीज) तथा भगवानदास गुप्ता जी।

—योगेन्द्रपाल सेठ मन्त्री
आर्य समाज श्रद्धानन्द बाजार
अड्डा होशियारपुर जालन्धर

---

(१ पृष्ठ का शेष)

कुछ लिखने का अभिप्राय केवल यह है कि मैं यह समझता हूं कि अब वह समय आ गया है जब अगर आर्य समाज ने एक जीती जागती संस्था रहना है तो उसे किसी निश्चित योजना के अनुसार आगे चलाना पड़ेगा। आज का युग वह युग नहीं जो 100 वर्ष पहले था। जो पूंजी हमारे पूर्वजों ने 100 वर्ष पहले आर्य समाज के लिए एकत्रित की थी वह तो हमने सारी खा ली है। अब आगे के लिए हम कोई नई पूंजी एकत्रित कर सकते हैं या नहीं इस पर विचार करने की आवश्यकता है। लेकिन कौन करेगा? आर्य समाज के नेताओं के पास इसके लिए समय नहीं है परन्तु प्रत्येक वह व्यक्ति जिसे आर्य समाज के भविष्य में कुछ दिलचस्पी है और जो यह अनुभव करता है कि आर्य समाज ही एक ऐसी संस्था है, जो देश को बचा सकती है। उसका यह कर्तव्य है कि वह आर्य समाज के नेताओं को झकझोरने का प्रयास करे। अगर यह उनकी बात सुनने को तैयार हो जाएं और उस पर विचार करना भी मान लें तो अभी भी आर्य समाज बच जाए। नहीं तो इसका भी वही हाल होगा जो ब्रह्मसमाज प्रार्थना समाज और देव समाज का हुआ है।

(समाप्त)

—वीरेन्द्र

# हम सब वैदिक धर्मी हैं

## हमें जानना चाहिए कि—

(गताक से आगे)

17 भूत, प्रेत जादू टोना, ताना, तावीज मन्त्र तन्त्र झाड़ फूक सब मूर्खों को बहकाने ठगने को है। ज्योतिषियों के परामर्श से "रुपए देकर कष्ट निवारण के लिए किसी दूसरे से जाप कराना, अपने आपको धोखा देना है। स्वयं ही अर्थ विचार कर यहा मृत्युञ्जय गायत्री मन्त्र आदि का शुभ कर्मों मन कर जाप करें और फिर प्रभु की कृपा का साक्षात प्रादुर्भाव देखें।

18 बिना किसी स्वार्थ के सदाचार का उपकार करना, सज्जनता, आस्तिकता और कुप्रथाओं का नाश करना पीछे लगने वाले रीति रिवाजों की फिजूल खर्चियों से गरीबों को बचाना सदाचरण और ब्रह्मचर्य धारण करना कराना मनुष्य के जीवन में प्रसन्नता माधुर्य और मृदुता लाते हैं।

19 आपद धर्म के रूप मे सब विधवाओं का पुनर्विवाह होना चाहिए। कुकर्म अधर्म अपवाद अपयश और पश्चाताप से बचना चाहे तो सब विधवा का पुनर्विवाह कर द।

20 शूद्रो या अपने से भिन्न जाति के साफ-सुथरे स्त्री पुरुषो द्वारा पकाए हुए भोजन से धर्म भ्रष्ट नही होता। परन्तु अधर्म अन्याय घूस ब्लैक मिलावट आदि पाप कर्मों से प्राप्त हुए धन से खरीदे हुए अन्न के खाने से अवश्य धर्म भ्रष्ट होता है। (आत्माभिमानी जन हृदय पर हाथ धरकर अपनी-अपनी कमाई और जीविका को इस कसौटी पर परखे)। जाति अभिमानी धनी ब्राह्मणो व्यवसायी महाजनों द्वारा ब्राह्मण रसोइए के हाथ का बना भोजन करने मे धर्म पालन और धर्म मानना ब्राह्मण जाति का परम तिरस्कार और घोर पाप है।

21 वैदिक धर्म में सनातन धर्म और आर्य समाज कोई अलग सम्प्रदाय नही। आर्य का अर्थ श्रेष्ठ सदाचारी सुशील उदार आस्तिक ईश्वर विश्वासी है। इन गुणो से युक्त वैदिक धर्मी जनो का सगठन आर्य समाज है। वेदानुसार उपरोक्त गुण धारण करने वाले सभी व्यक्ति श्रेष्ठ हैं आर्य हैं चाहे वे किसी सम्प्रदाय के हो। आर्य समाज सम्प्रदाय वाद को स्वीकार नही करता।

22 विद्या श्रमण शोभते अधर्मी कर्तव्यहीन चरित्रहीन स्वार्थरत तथा खाने पीने और मन की मौज तक जिस का जीवन सीमित हो ऐसे किसी भी दुगुण युक्त ग्रेजुएट एव डबल ग्रेजुएट शास्त्री आदि को विद्वान कहना अशोभनीय है। विद्या की शोभा शुभ कर्म और पवित्र जीवन ही से है।

23 सन्ध्या प्रार्थना अग्निहोत्र यज्ञ स्वाध्याय पूजा पाठ नित्य कर्म करते हुए यदि किसी व्यक्ति मे सदाचार दान पुण्य पवित्र कमाई शुद्ध आहार सत्य व्यवहार नहीं तो वे कर्म काण्ड और धार्मिक होम यज्ञ सन्ध्या वन्दन पूजा जप तप तीर्थाटन दान पुण्य आदि कर्म निरर्थक हैं। इसलिए सभी लोग मन वचन कर्म से आर्य अर्थात श्रेष्ठ बनें और उपरि वर्णित नित्य कर्मों को साधक बनाए और जीवन को सफल बना तथा भगवान के कृपा पात्र बनकर सच्चे आनन्द का उपभोग कर। यही आर्य समाज की मान्यता है यही वैदिक धर्म का सन्देश है।

—स्व कविराज हरनामदास बी ए

—

# गृहस्थाश्रम-साधना शिविर सम्पन्न

गत दिनो स्वामिक वेद संस्थान दिल्ली में 27 से 3 जुलाई तक गृहस्थाश्रम साधना शिविर सम्पन्न हुआ। इसमे आय प्रदेश उत्तर प्रदेश, दिल्ली पजाब, राजस्थान हरियाणा के लगभग 70 नर नारी पूरे समय रहे। शिविर के विभिन्न कार्यो क्रमों में दिल्ली नगर के नागरिक भी श्रोता रूप में पधारते रहे।

शिविर का लक्ष्य था गृहस्थ की समस्याओं पर विचार और समाज मे इस की महत्ता और मर्यादा की पुन स्थापना ताकि हमारे गृह सुख और शान्ति के धाम और आदर्श मानवता की निर्माणशाला बनें।

... रामानन्द शर्मा की "गृहस्थाश्रम का शास्त्रीय विवेचन" का पठन ... वैदिक गृहस्थ का व्यक्तित्व ... चौहान की गृह मे चरित्र निर्माण।

... दयानन्द की गृहमे राष्ट्रसाधना ये चार प्रवचन मालाए और स्वामी विदेह की पद्य रचना दयानन्द चरितामृत के चुनीदा स्थलों की श्री सुधीन्द्र नाथ आचार्य द्वारा सगीतमय प्रस्तुति शिविर की विशेषताए थी।

प्रात मौन प्रशिक्षण, 'स्वस्ति साथ म दयानन्द के उपदेश, और रात्रि ... सत्यदेव के वेद प्रवचन रसपूर्ण होते रहे अन्तिम दिन पूर्णाहुति और प्रतिभोज के साथ शिविर समापन हुआ। इसी अवसर पर 14 से 20 नवम्बर तक होने वाले दूसरे तप साधना शिविर की घोषणा की गई जिसके लिए आवेदन पत्र शिविर से प्राप्त होंगे।

—

# प्रचारिका बनाने हेतु कन्याए भेजें

आर्यसमाज ने अनेक शिक्षण सस्थाए चलायी और स्वर्गीय श्री मेहरचन्द की महाजन की रिपोर्ट से हमे अवगत हुआ कि आर्य समाज तीन करोड़ रुपया वार्षिक अपनी शिक्षण सस्थाओ पर खर्च कर रही है। आर्य समाज के सैकडो स्कूल कालेज और गुरुकुल हैं परन्तु आज इन सस्थाओ को सम्भालने वाले कार्यकर्ता और कार्य कर्त्रीता का अभाव है।

इस कमी को पूरी करने के लिए हमारे आर्य कन्या महाविद्यालय के अन्त गत नए सत्र से हम सस्कृत के साथ मैट्रिक उत्तीर्ण अथवा उसके समकक्ष योग्यता वाली कन्याओ को जिनका लक्ष्य कौमार्य व्रत धारण करके सेवा करने का हो ऐसी कुछ कन्याओ को कार्यकर्त्री और प्रचारिका बनाने का आयोजन कर रहे हैं।

वार्षिक रुपए 2500) देने पर हम कार्यकर्त्री तैयार होने वाली कन्या को दो वर्ष मे तैयार कर देगे और प्रचारिका को तीन वर्ष मे तैयार होने पर परीक्षा ली जाएगी और उसमे उत्तीर्ण होने पर सस्था अपनी ओर से प्रचारिका बनने पर 500 रुपए मासिक और प्रचार खर्च 150 रुपये दिया जाएगा

कन्याओ को शिक्षा मे सगीत सचालन औषधोपचार आर्य समाज के सिद्धान्तो मे प्रवेश तथा आयुर्वेद बायोकेमिक व एक्यूप्रेशर पद्धतियो का ज्ञान रोगी सेवा तथा बाल मनोविज्ञान का इन सभी विषयो का ज्ञान दिया जाएगा।

प्रतिनिधि सभाए आर्य समाज ऐसे योग्य विद्यार्थियो को भेज सकती हैं और स्वय अपनी इच्छा से आने वालो का प्रबन्ध हमारी सस्था करेगी।

आनन्दप्रिय पण्डित
आर्य कन्या महाविद्यालय
आत्माराम पथ।
करेली बाग बडौदा।

# सर्वखाप पचायत के महत्वपूर्ण निर्णय

12 जून को गोहाना (हरियाणा) मे हुई सर्वखाप पचायत में जहा विवाह आदि पर खर्च रोकने के लिए विशेष निर्णय लिए गए वहा मुसलमान बने उन हिन्दुओ को अपने मे मिलाने के लिए भी निर्णय लिए गए जो किसी समय किसी विवशता मे मुसलमान बन गए थे

1 शुद्ध हुए मले जाट मुस्लिम गुजर अहीर रोड राजपूत आदि जातियो से रोटी बेटी का सम्बन्ध स्थापित किया जावे।

2 सभी ग्राम पचायत अपने अपने ग्राम व अचल स शराब के ठेके हटवाने के लिए अपनी सरकारो को प्रस्ताव भेज शान्तिपूर्ण ढग से शराब के ठेके हटवाने का प्रयत्न कर।

3 यह पचायत अनुभव करती है कि सर्वजातीय सर्वखाप पचायत के सगठन व इसके कार्यक्रम को सुचारु रूप से चलाने के लिए विवाह आदि शुभ अवसरो पर अपनी श्रद्धा के अनुसार पाच रुपये से इक्कीस रुपए तक दान द।

सभी खाप तपे तथा इलाके अपने 2 सम्बन्धित क्षेत्रो की पचायत बुलाकर जल्दी स अपनी 2 स्थानीय पचायतो समितिया (कमेटी) बनाए तथा उनकी सूचना मेरे पते पर अथवा सर्वजातीय सर्वखाप पचायत क कार्यालय गोहाना भेजिए जिससे कि सर्वजातीय सर्वखाप के नीय समिति शीघ्र बनाई जा सके।

5 इन फैसलो को ज्यो का त्यो अपनाकर अपनी खाप तपे व इलाको मे भेजिए

—स्वामी कर्मपाल
प्रधान सर्वजातीय सर्वखाप पचायत
पता—बलिदान स्मारक गुरुकुल
जीन्द (हरियाणा)

—

# आर्य समाज किशन गज (मिल एरिया) दिल्ली का वार्षिक चुनाव

आर्य समाज किशन गज (मिल एरिया) देहली का वार्षिक चुनाव दिनाक 29 5 83 को निम्न प्रकार हुआ—

प्रधान—श्री सोहनलाल तुली उप प्रधान—श्री चमनलाल मदान श्रीमती प्रकाशवती वशिष्ठ मन्त्री—श्री जे पी ... पाठक उपमन्त्री—श्री प्रेम कुमार भाटी कोषाध्यक्ष—श्री पूर्णचन्द साहनी लेखा निरीक्षक—श्री कृष्णलाल सचदेव पुस्तकाध्यक्ष—श्रीमती सुदर्शन साहनी।

अन्तरग सदस्य

श्रीमती पद्मावती कपूर श्रीमती शान्ति देवी शर्मा श्रीमती विद्यावती मदान श्री ठाकुर भूपसिंह श्री आर ... मिश्रा।

—सोहनलाल तुली
प्रधान

वर्ष 16 अंक 17, 23 श्रावण सम्वत् 2040 तदनुसार 7 अगस्त 1983 दयानन्दाब्द 159 । एक प्रति 40 पसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपए

# इन्द्र के शत्रु कौन ?

ले—श्री सुरतराम शर्मा शास्त्री दर्शनाचार्य

उलूकयातुं शुशुलूकयातुं जहि श्वयातुमुत कोकयातुम् ।
सुपर्णयातुमुत गृध्रयातुं दृषदेव प्र मृण रक्ष इन्द्र ॥

ऋग्वेद 7 104-22

प्रस्तुत वेद मन्त्र मे वेद ने मानव मात्र के कल्याणार्थ कुछ पशुओ की चाल (आचरण) को त्यागने का बहुत उत्तम शैली द्वारा सारगर्भित उपदेश किया है। इस निन्दनीय आचरण वाले पशु प्रवृत्ति रूप शत्रुओ का सर्वथा नाश करने का इन्द्र (जीवात्मा) के लिए उपदेश है मन्त्र का अर्थ है—

हे इन्द्र इन्द्रियो के स्वामी जीवात्मन् ! तू उलूक यातु (उल्लू की चाल को) (शुशुलूक यातु) भेड़िए की चाल को कुत्ते की चाल को और चिड़िया की चाल को छोड़ दे। (सुपर्ण यातु) गरुड़ की चाल को और (गृध्रयातु) गीध की चाल को छोड़ दे। इतना ही नही वेद ने यहा तक जीवात्मा के लिए निर्देश कर दिया कि हे (इन्द्र) शक्ति शाली ऐश्वर्यवान् जीवात्मन् ! तू इन दुष्ट आचरण वाले पशुओं के आचरण को देखते ही मसल डाल और सर्वथा अपनी रक्षा कर।

अब विचारना यह है कि उल्लू भेड़िया कुत्ता चिड़िया गरुड़ और गीध आदि पशुओ में कौन से ऐसे दोष व निन्दनीय आचरण हैं जिनसे मनुष्य को सावधान रहने की आवश्यकता है।

अत सक्षेप में हम इन शब्दो के अभिप्राय को स्पष्ट करते हैं (उलूक यातु) उल्लू के समान आचार को छोड़ने का यहां स्पष्ट आदेश है। उल्लू के आचरण में मोह अर्थात् मूर्खता का लक्षण विशेषकर पाया गया है। उल्लू को हमेशा अन्धकार प्रिय होता है। वह कभी प्रकाश में आना पसन्द नही करता। अत यह आचरण मानव के लिए सर्वथा अनिष्टकारक है। मनुष्य का लक्ष्य तो—तमसो मा ज्योतिर्गमय के अनुसार अन्धकार से प्रकाश की ओर चलना है। शुशुलूक यातु अर्थात् भेड़िये की चाल से अभिप्राय भेड़िए का कुत्सित आचरण क्रूरता है। जिसके कारण वह क्रोध के वशीभूत होकर कई निर्दोष प्राणियो को अनावश्यक मार डालता है। मनुष्य के लिए यह आचरण भी सर्वथा त्याज्य है। अत इस निन्दनीय आचरण को छोड़ने का भी स्पष्ट निर्देश है।

(श्वयातु) कुत्ते की चाल को छोड़ने का अभिप्राय कुत्ते के स्वभाव मे एक विशेष अवगुण मत्सर या द्वेष भाव है। जो किसी और से न होकर अपनी ही जाति के दूसरे कुत्तो पर रहता है। कहावत भी है—

कुत्ते का कुत्ता बैरी अर्थात् कुत्ता कभी दूसरे कुत्ते को देखकर प्रसन्न नहीं होता अपितु अनायास ही उससे ईर्ष्या द्वेष करने लग जाता है। यह पशु प्रवृत्ति भी मनुष्य के लिए सर्वथा हानिकारक तथा त्याज्य है। (कोक यातु) कोक यातु का अभिप्राय कबूतर अथवा चिड़िया आदि पक्षियो मे पाया जाने वाला कामुक वृत्ति है। वह अमर्यादित काम भी मनुष्य के लिए अनिष्टकारक है अत उस काम रूपी शत्रु को भी नष्ट करने अथवा वश मे करने का निर्देश है। (सुपर्णयातु) का अभिप्राय गरुड़ पक्षी के कुत्सित आचार को छोड़ने का स्पष्ट संकेत है। गरुड़ पक्षी मे अपने रूप सौन्दर्य पर अहंकार पाया जाता है वह अपनी सुन्दरता पर फूला नही समाता। यह दुर्गुण रूपी शत्रु भी नष्ट करने योग्य है। मनुष्य के लिए यह अहंकार अथवा घमण्ड सर्वथा इसके विनाश का ही हेतु है। अत गरुड़ पक्षी के मुख्य से अभिमान रूपी शत्रु को दूर हटाने का निर्देश है। (गृध्र यातु) का आशय गीध पक्षी में एक विशेष दुर्गुण लालच पाया जाता है जिसके कारण वह मृत प्राणियो के शवो पर गीध दृष्टि रखते हुए अतिशीघ्रता से उन पर टूट पड़ता है।

यह गीध की चाल अर्थात् लालच रूपी शत्रु भी मनुष्य का सर्वथा नाश करने वाला है। जो उसे मनुष्यता से गिराकर राक्षस कोटि मे पहुचा देता है। अत लोभ व लालच के रूप से अन्त करण मे छिपे हुए इस गीध रूपी शत्रु को भी वश में करने अथवा इसे दूर हटा देने का स्पष्ट निर्देश है।

साराश में वेद के इस मन्त्र मे उल्लू भेड़िए कुत्ते चिड़िया गरुड़ और गीध आदि पशु पक्षियो के माध्यम से जिनके कुत्सित आचरण काम क्रोध लोभ मोह अहंकार और मत्सर अथवा द्वेष के रूप मे सदा हमारे अन्त करण मे विद्यमान रहते हैं इन काम क्रोधादि शत्रुओ को नष्ट करने अथवा दूर भगाने का स्पष्ट उपदेश किया गया है। इन शत्रुओ को दूर हटाकर ही यह जीवात्मा वास्तव मे अपनी रक्षा करते हुए इन्द्र कहला सकता है और तभी यह (इन्द्र) जीवात्मा अपने अभीष्ट लक्ष्य को प्राप्त करने मे समर्थ हो सकता है।

# सुभाषित माला

ले—आचार्य श्री सुभाषचन्द्र जी शास्त्री सभा महोपदेशक

1 परोपकारशून्यस्य धिकमनुष्यस्य जीवितम् ।
धन्यास्ते पशवो येषां चर्माप्युपकरिष्यति ।

अर्थ—परोपकार शून्य स्वार्थी मनुष्य के जीवन को धिक्कार है धन्य है वे पशु जिनका मृत्यु के पश्चात चमड़ा भी परोपकार करता है। परन्तु मनुष्य का कुछ काम नही आता।

2 जीवितान्मरणं श्रेष्ठं परोपकृति वर्जितात् ।
मरणं जीवितं मन्ये यत्परोपकृति क्षमम्

अर्थ—परोपकार रहित होकर केवल अपनी उदर पूर्ति के लिए जीने से मैं मर जाना उचित समझता हू उस व्यक्ति को मरने के पश्चात भी जीवित मानता हू जो निरन्तर दूसरो की भलाई मे लगा हुआ था।

3 चलं वित्तं चलं चित्तं चले जीवित यौवने
चलाचलमिदं सर्वं कीर्तिर्यस्य स जीवति ॥

अर्थ—मन चञ्चल है धन वैभव अस्थिर ? जीवन और जवानी भी सदा न रहने वाली है यहा सब अनित्य अस्थिर है परन्तु जिसकी कीर्ति है वही व्यक्ति जीवित है उसकी यश काया सदा रहती है। मरने पर नष्ट नही होती।

4 सज्जना परोपकार शरा वस्त्र धनं कृपणा ।
कुलस्त्रियो मंगलं प्राणान्ते एव मुञ्चति ।

अर्थ—सज्जन पुरुष मे परोपकारादि शुभ कर्मों का शरवीर से पवन वस्त्रो का कञ्जूस व्यक्ति के धन का और कुलीन पतिव्रता स्त्रियो से पातिव्रत्य का छूटना मृत्यु के पश्चात ही होता है

5 पिबन्ति नद्यः स्वयमेव नाम्भः
स्वयं न खादन्ति फलानि वृक्षाः ।
नादन्ति सस्यं खलु वारिवाहाः ।
परोपकाराय सतां विभूतयः ॥

अर्थ—नदियां स्वयं कभी पानी नही पीती वृक्ष अपने आप कभी फल नही खाते बादल (वर्षा करने वाले) स्वयं अनाज पैदा कर नही खाते। ठीक इसी प्रकार सन्तो की विभूतियां दूसरो की भलाई के लिए ही हुआ करती हैं।

# कर्म और भोग

ले॰—[illegible]

मनुष्य के स्वाभाविक [illegible] [illegible] है। एक है ज्ञान और दूसरा प्रयत्न (कर्म)। [illegible] [illegible] [illegible] प्रयोग करता है। पांच ज्ञानेन्द्रियां हैं जिनसे मानव ज्ञान प्राप्त करता है और शेष पांच हैं कर्मेन्द्रियां जिनसे मानव कर्म करता है।

मनुष्य कर्मों का फल प्राप्त करता है और यह परमात्मा की व्यवस्था से प्राप्त होते हैं। कहा जाता है कि कर्म इसीलिए भोग से बड़ा है कि वह भोग की उपलब्धि में साधन रूपी कारण है। किन्तु हमें यह भी तो विचारना होगा कि क्या कर्म बिना भोग के ही बन गया था हो गया। भोग से परमात्मा की व्यवस्था में मनुष्य को जाति मिलती है अर्थात शरीर मिलता है जिससे मनुष्य कर्म व भोग दोनों को ही करता है। मनुष्य को उस शरीर में कर्म से पहले भोग करना पड़ता है जो भोग रूपी कर्म द्वारा किया जाता है। उदाहरणत बालक इतना छोटा है कि कर्म नहीं कर सकता अर्थात किसी की हानि या लाभ नहीं पहुंचा सकता परन्तु नैसर्गिक कर्म तो करता ही है जैसे सांस लेना आंख मींचना और खोलना भोजन करना और दूध पीना आदि ये सब भोग रूपी कर्म कहे जा सकते हैं। वह कुछ बड़ा होने पर भोग के अतिरिक्त कर्म भी करने लगता है। जैसे अपने भोजन में से दूसरे को भी खिला देता है और अपने खिलौने से दूसरे बालक को भी खेलने के लिए देकर उसे प्रसन्न करता है या दूसरे बालक की किसी वस्तु को छीनकर उसे परेशान करता है ये सब ही कर्म बन जाते हैं। बालक का अपना खाना भोग था खिलौने भोग थे। वही भोग दूसरे को खिलाकर साधन रूप कर्म का कारण बन गए। इस तरह भोग से मनुष्य को जन्म (शरीर) मिला। इस शरीर का उपभोग करने के लिए अर्जित मिली धन मिला और अनेक वस्तुएं भोग को मिलीं। ये सभी भोग हैं इसी भोग में मनुष्य कर्म करता है। मनुष्य में शक्ति न हो तो किसी की सहायता नहीं कर सकता। यदि धन न हो तो दान व यज्ञ आदि शुभ कर्म नहीं कर सकता। शरीर न हो तो कुछ हो ही नहीं सकता। जिससे स्पष्ट हुआ कि भोग ही कर्म कराता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि भोग की अवहेलना नहीं की जा सकती अथवा नहीं की जानी चाहिए।

"[illegible] [illegible] '[illegible] [illegible] [illegible]' राग व [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] मोक्ष का राग न हो तो क्या कोई सांसारिक या मुमुक्षु कुछ कर्म करेगा? डाकू को दूसरों का माल लूटने या किसी की हत्या करने में प्रवृत्ति तभी होती है जब अविद्या के वशीभूत उसमें विभिन्न वस्तुओं से मिलने वाले सुख का राग होता है

संसार का प्रत्येक प्राणी भोग के कारण ही पाप व पुण्य करता है अर्थात कर्म करता है अतएव भोग भोगो परन्तु वेद की आज्ञानुसार तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा भोग पर ही सारा कर्म निर्भर करता है मनुष्य संसार में कर्म करता है भोग प्राप्त करने के लिए ही फिर वह चाहे सेवक हो या अधिकारी। सभी अपने भोग की प्राप्ति हेतु काम करते हैं। व्यापारी के व्यापार करने का आधार भी यही है तो किसान को खेती करने की प्रेरणा स्रोत का भी यही यहां तक कि चोर द्वारा की जाने वाली चोरी और उपदेशक द्वारा किए जाने वाले उपदेश के लिए भी प्रेरक यह भोग की प्राप्ति ही है दूसरा पग जो मनुष्य उठाता है वह है भोग भोगने का। किसी वस्तु को प्राप्त करके ही उसका भोग किया जा सकता है। जिस प्रकार मनुष्य भोग की प्राप्ति हेतु पाप व पुण्य करता अर्थात झूठ मक्कारी तथा असत्य बोलकर भी धन प्राप्त करता है उसी प्रकार भोग के भोगने में भी पाप पुण्य करता है। उदाहरणत —एक रिक्शा चालक दिन भर का कठोर परिश्रम करके बीस रुपये कमाता है तो और भोग भोगने के लिए शराब की दुकान पर जाता है या सिनेमा गृह में जाता है। वहां स्वयं शराब पीता है या अपने मित्रों को पिलाता है अथवा अपने मित्रों के साथ फिल्म देखने में अपने द्वारा अर्जित धन लगाता है तो करता तो भोग ही है। यद्यपि यह है पाप कर्म। यह भोग उसके जीवन के लिए अच्छा न होगा। क्योंकि यदि वह इस कमाई से अपने परिवार के लोगों का पोषण करता अथवा किसी अपंग को भोजन कराता या उसकी किसी अन्य आवश्यकता की पूर्ति के लिए अपने द्वारा उपार्जित राशि लगाता तो पुण्य का भागी हो जाता।

[illegible] तीसरा पग है [illegible] [illegible] [illegible] कि [illegible] लिए [illegible] दूसरों के वास्ते में [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के लिए [illegible] [illegible] मोहन बीमार [illegible] [illegible] उसे [illegible] में [illegible] [illegible] हुआ कि मेरा मित्र बीमार होकर अस्पताल में है तो राम [illegible] [illegible] कार्य बताया। राम ने उसके लिए किया और लगातार एक सप्ताह नित्य नियम से सेवा करता रहा। मोहन स्वस्थ हो गया। घर लौट आया। अतः आप विचार कीजिए कि राम ने कष्ट उठाया। क्या उसे बिना किसी कर्म (कारण) के कष्ट हुआ और उसका अब भाव हुआ। उसके पूर्व जन्म के कर्म का वह फल था। जो कष्ट हुआ वह इस जन्म में भोग की रीति थी कि उसने अपने भोग का किस प्रकार का भोग किया। जिससे उसका अपना पाप भी समाप्त हो गया और मोहन का रोग जो पाप का परिणाम था [illegible] और राम का भविष्य के लिए [illegible] [illegible] [illegible] प्रयास करें [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] क्या हो? [illegible] नहीं तीन काम [illegible] [illegible] भोग का [illegible] [illegible] कि जिससे [illegible] [illegible] [illegible] भावी जीवन के लिए कर्म भी बनाता है जो भोग कर्म का रचयिता है वह अवहेलना की वस्तु नहीं। कर्म पर जितनी दृष्टि रखी जाती है उससे उस का कुछ भोग पर भी नहीं रखनी चाहिए एक रोचक तथ्य यह भी है कि भोग ही कर्म को समाप्त करता है। परमात्मा मनुष्य के शरीर त्याग के दिन संचित कर्मों से ही कर्मों का प्रारब्ध बनाकर आत्मा को देता है जो जाति आयु और भोग के रूप में होते हैं। अतः भोग भी कर्म के समान ही आवश्यक है।

(जन ज्ञान से)

लघु पुस्तिका

## क्या सिख हिन्दू नहीं है ?

सभा ने पंजाब की वर्तमान स्थिति पर सभा प्रधान जी द्वारा लिखित लघु पुस्तिका क्या सिख हिन्दू नहीं है? प्रकाशित की है। इस पुस्तिका में ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर इस प्रश्न का उत्तर दिया गया है कि सिख हिन्दू हैं या नहीं।

इस लघु पुस्तिका की सबल प्रशंसा हो रही है। कई पत्रिकाओं ने इसकी समीक्षा बहुत अच्छी प्रकार प्रकाशित की है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुख पत्र आर्य सन्देश में यह सारी पुस्तिका ही प्रकाशित की हुई है।

आशा है आप जनता इसे पढ़ कर उस भ्रान्ति को दूर करने का प्रयत्न करेगी जो अकाली पैदा कर रहे हैं। आर्य समाज ने प्रत्येक संकट में अपने देश वासियों का मार्ग प्रदर्शन किया है यह पुस्तिका भी उसी दिशा में एक प्रयास है।

## आर्य समाज नवांशहर दोआबा का वार्षिक चुनाव

आर्य समाज नवांशहर का वार्षिक चुनाव दिनांक 17 7 83 को आर्य समाज मन्दिर नवांशहर में श्री वेद प्रकाश जी सरीन प्रधान आर्य समाज की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

1 सब सम्मति से लाला वेद प्रकाश सरीन आर्य समाज नवांशहर के आगामी वर्ष के लिए प्रधान चुने गए।

2 ला वेद प्रकाश जी सरीन को सर्व सम्मति से बाकी सभी अधिकारी व आर्य समाज की अन्तरंग सभा के सदस्य चुनने का अधिकार दिया गया। प्रधान महोदय ने निम्नलिखित पदाधिकारी घोषित किए।

श्री [illegible] उप प्रधान, श्री मोहन लाल उप प्रधान श्रीमती कौशल्या [illegible] उप प्रधान श्री धर्म प्रकाश दत्त मन्त्री श्रीमती इन्दुमति गौतम उप मन्त्री, श्री [illegible] कुमार कोषदी उपमन्त्री श्री श्री [illegible] सरीन प्रचार मन्त्री श्री [illegible] मोहन लेखपाल कोषाध्यक्ष श्री वेद प्रकाश प्रकाश शर्मा पुस्तकाध्यक्ष

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए निम्नलिखित प्रतिनिधि चुने गए। श्री वेद प्रकाश सरीन श्री प [illegible] कुमार जी श्री धर्म प्रकाश दत्त श्री वेद प्रकाश शर्मा, श्री [illegible] मोहन [illegible]।

—

सम्पादकीय—

# आर्य समाज के सामने एक ज्वलन्त प्रश्न-क्या आर्य नेता इस पर विचार करेंगे ? (3)

दिसम्बर 1975 में हमने आर्य समाज की स्थापना शताब्दी मनाई थी और इस वर्ष नवम्बर मे हम ऋषि निर्वाण शताब्दी मना रहे हैं। जब आर्य समाज की स्थापना शताब्दी मनाई गई थी तो वह समय था जब पिछले एक सौ वर्ष के इतिहास पर दृष्टि डालते हुये हम देखते कि हम कहा कहा फिसलते रह हैं और कहा-कहा पिछड गये हैं। उसके आधार पर हमे आगे के लिए एक नया कार्यक्रम जनता के सामने रखना चाहिए था। आर्य समाज का पिछला एक सौ वर्ष का इतिहास बहुत गौरवमय है। जो कुछ आर्य समाज ने किया है, किसी दूसरी संस्था ने नही किया, परन्तु परिस्थितिया बदल गई है और उनकी यह माग है कि जनता के सामने अब आर्य समाज एक नया कार्यक्रम रखे। जो कार्यक्रम आर्य समाज ने एक सौ वर्ष पहले प्रारम्भ किया था, वह कुछ पूरा भी हो गया है और बहुत कुछ दूसरी संस्थाओ ने भी उसे अपना लिया है। अब एक नया युग प्रारम्भ हो चुका है। यह उससे बिल्कुल ही भिन्न है। जो उस समय था जब एक सौ वर्ष पहले महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की थी। उस समय की परिस्थितियो को आज की और परिस्थितियो को देखकर आर्यसमाज के नेताओ का यह कर्त्तव्य था कि वह जनता के सामने एक नया कार्यक्रम रखते और उसे एक नई दिशा दिखाते। लेकिन 1975 मे स्थापना शताब्दी एक मेला बनकर रह गई। 10-15 लाख व्यक्ति देहली मे इकट्ठे हुए। बडे 2 वक्ताओ के व्याख्यान भी सुने। कुछ प्रस्ताव भी पास किए गए। परन्तु कोई नया और ठोस कार्यक्रम जनता के सामने न रखा गया। इस लिहाज से लोगो को निराशा हुई और यह प्रश्न किया जाने लगा कि शताब्दी का इतना बडा सम्मेलन किस लिए किया गया था ?

क्या अब 1983 मे भी पुराने इतिहास की पुनरावृत्ति होगी ? क्या यह सम्भव नही कि जो कुछ हम 1975 मे नही कर सके वह इस बार कर दें ? सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने इस पर विचार करने के लिए एक उपसमिति भी बनाई हुई है उसके संयोजक श्री दत्तात्रेय बाव्ले ने कुछ सामग्री भी इकट्ठी की है। परन्तु अभी कोई सुनिश्चित नई योजना आर्य समाज के सामने नही आई। निर्वाण शताब्दी मे अब केवल तीन मास बाकी रह गए है। इस समय तक नई योजना आर्य जनता के सामने आ जानी चाहिए थी, ताकि उस पर विचार हो सके और जब आर्य समाजी अजमेर पहुचें उस समय तक उन्हें पता हो कि इस बार उन्होंने वहा किस प्रकार के निर्णय लेते हैं। शताब्दी के प्रारम्भ मे यदि उन्हे बताया गया कि योजना क्या है, उस समय उनके पास इतना समय भी न होगा कि उस पर विचार कर सके। प्राय देखा गया है कि जब भी इस प्रकार की कोई योजना बनाई जाती है, तो उसकी प्रारम्भिक रूप रेखा जनता के सामने रखी जाती है। उस पर आपस मे कुछ विवाद भी होता है। विचार विमर्श भी होता है और जब वह किसी सार्वजनिक सभा मे प्रस्तुत की जाती है तो उस समय तक जन साधारण तैयार होकर आते हैं कि उन्होने इस योजना के विषय मे वहा क्या कहना है ? कोई भी योजना उस समय तक सफल नही हो सकती जब तक वह साधारण से साधारण व्यक्ति को भी यह अनुभव नही कराय जाता कि वह उसके लाभ के लिए है और यदि वह इसे स्वीकार करें और इसे क्रिया-न्वित करने का प्रयास करें, तो उसकी कई समस्याओ का समाधान हो सकता है। हमने देखा है कि भारत सरकार जब कोई पचवर्षीय योजना पेश करती है तो कई मास उस पर विवाद होता रहता है। कई बडे 2 विद्वान् उसकी चीर-फाड करते हैं। उसके प्रत्येक पक्ष पर अपने विचार प्रस्तुत करते हैं। फिर कही जाकर उसे अन्तिम रूप दिया जाता है। आर्य समाज की जिस नई योजना के विषय मे मैं लिख रहा हू वह तो आज से छ मास पहले जनता के सामने आ जानी चाहिए थी। सार्वदेशिक सभा को चाहिए था कि वह देश की प्रत्येक आर्य समाज मे कहती कि वह इस पर विचार करे और यदि किसी व्यक्ति को कही मतभेद है, तो वह सार्वदेशिक सभा को लिखे और जब सार्वदेशिक सभा की उपसमिति के सामने वे सब विचार आ जाते तो उनके आधार पर इस नई योजना को एक अन्तिम रूप दिया जाता। परन्तु वह नही किया गया। जब मैं यह कहता हू कि हमारे नेताओ के पास समय ही नही कि वे आर्य समाज की समस्याओ की ओर ध्यान दे सकें तो मेरे खिलाफ शिकायत पैदा होती है। परन्तु मैं तो वास्तविक स्थिति को जनता के सामने रख रहा हू।

अब हमारे सामने सब से बडा और महत्वपूर्ण प्रश्न केवल यह है कि क्या निर्वाण शताब्दी भी उसी प्रकार एक मेला बन कर रह जाएगी जिस प्रकार कि आर्य समाज स्थापना शताब्दी बन कर रह गई थी या यह शताब्दी देश की जनता का नया मार्ग दर्शन करेगी ? जैसा कि मैं कई बार लिख चुका हू कि देश की परिस्थितिया बदल गई है। एक नया युग प्रारम्भ हो गया है जो 100 वर्ष पूर्व के युग मे भिन्न है। नई नई समस्याए हमारे सामने आ रही हैं और सब से बडी समस्या यह कि जिस पाखण्ड और गुरुडम को समाप्त करने के लिए आर्य समाज ने इतना कुछ किया था वह फिर से सिर उठा रहा है। अब तो हमारे देश मे इतने भगवान् हो गए हैं कि उनकी गिनती करना भी कठिन हो रहा है। इसी लिए कई बार यह प्रश्न भी किया जाता है कि आर्य समाज कहा है ? यह प्रश्न केवल आर्य समाजी ही नही करते दूसरे भी करते हैं। और कई बार आर्य समाज के विरोधी करते हैं। वे भी यह अनुभव करते हैं कि जो कुछ आर्य समाज करता रहा है किसी और ने नही किया और आज भी देश को ठीक दिशा दिखा सकता है तो वह आर्य समाज ही है। मैं समझता हू कि अजमेर मे जो ऋषि निर्वाण शताब्दी हो रही है, जो लोग इसमे सम्मिलित होने के लिए वहा आएगे वे भी इस आशा के साथ ही आएगे कि उन्हे वहा कोई नया प्रकाश दिखाई देगा। और वे किसी नए मार्ग पर चल सकेंगे। इस लिए आर्य समाज के नेताओ का यह कर्त्तव्य है कि वे समय की पुकार को सुनते हुए और जो समस्याए इस समय हमारे सामने हैं। उन्हें सामने रखते हुए आर्य आर्य समाज के लिए कोई ऐसा नया कार्यक्रम बनाए जो ऋषि निर्वाण शताब्दी पर सारा आर्य जगत् अपना ले और उसके अनुसार चलते हुए अपना अपने देश का और सारे ससार का कल्याण कर सके ? आर्य समाज से उसके देशवासियो को अब भी बहुत आशाए हैं। कही यह न हो कि एक बार फिर वह आशा निराशा मे बदल जाए।

—वीरेन्द्र

ऋषि निर्वाण शताब्दी मे अजमेर पहुचे

## पंजाब के आर्य बन्धुओं से निवेदन

पजाब के आर्य बन्धुओ को यह जानकर हर्ष होगा कि 3 से 6 नवम्बर 1983 को अजमेर मे होने वाली महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी के लिए पजाब से स्पेशल बसे व ट्रेन चलाने का प्रबन्ध किया जा रहा है। यह बस लुधियाना से चलेगी जिसका सारा ब्यौरा आर्य बन्धुओ को शीघ्र भेज दिया जाएगा। यह भी प्रयत्न किया जा रहा है कि एक स्पेशल ट्रेन लुधियाना से चले। इस विषय मे रेलवे विभाग के अधिकारियो से पत्र-व्यवहार किया जा रहा है।

हमारी पजाब के सभी आर्य बन्धुओ से प्रार्थना है कि पजाब आर्य समाज का गढ रहा है और है। इस प्रकार के जितने भी समारोह आज तक हुए हैं उनमे पजाब के आर्य बन्धुओ ने बढ चढकर भाग लिया है। इसलिए आर्य बन्धु अभी से महर्षि दयानन्द सरस्वती की निर्वाण स्थली के दर्शन करने के लिए अजमेर जाने की तैयारी मे जुट जाए। जो आर्य भाई और बहिने जाना चाहते हैं वह जालन्धर मे सभा कार्यालय के पते पर और लुधियाना मे श्री आशानन्द जी आर्य 49-63 हरपाल नगर लुधियाना के पते पर पत्र व्यवहार करें।

# वेद : ईश्वरीय ज्ञान

ले—श्री पण्डित वीरसेन जी वेदश्रमी

## अग्निनाग्नि समिध्यते (ऋ 1।12।6)

वेद ने बताया कि अग्नि से अग्नि प्रदीप्त होती है। यह एक शाश्वत नियम है। इसी आधार पर ज्ञानाग्नि सम्पन्न गुरु से शिष्य मण्डली रूप अनेक ज्ञान दीप्तिया प्रदीप्त होती है। ज्ञान सत्य ज्ञान शाश्वतज्ञान निर्भ्रान्ति ज्ञान वेद है। यह शाश्वत ज्ञान जिससे निस्सारित होता है—जिससे प्रकट होता है वह भी शाश्वत है। उसे परमात्मा कहते हैं। शाश्वत रहने से उसे एष पूर्वेषा मपि गुरु कालेनानवच्छेदात (योगदर्शन 1।26) अनवच्छिन्न काल से सदा वर्तमान काल्वा वच्छिन्न शरीरधारी सभी का गुरु कहा गया है। अत वेदो को मानवकृत मानना सगत नहीं है। मानव रचित वेदो के न होने से उनका समय निर्धारण करना भी असगत है। वेद ने स्पष्ट शब्दो मे कहा है—तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋच सामानि जज्ञिरे छन्दासि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत (यजु 31।7) अर्थात उसी परमात्मा से ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद तथा अथर्ववेद ये चारो प्रकट हुए।

## बृहस्पते प्रथम वाचो अग्र यत्प्रैरत नामधेय दधाना । (ऋ 10।71।1

वेद गुरु परमात्मा ही वेदाधिष्ठाता वाणी के स्वामी होने से इस गुण वैशिष्ट्य के कारण बृहस्पति हैं। उस परमात्मा अर्थात बृहस्पति ने जिस वाणी की प्रेरणा सर्वप्रथम सृष्टि के प्रारम्भ के मानव ऋषियो मे की है उसमे पदार्थों के नाम उनके उपयोग का ज्ञान विज्ञान भरा हुआ था भद्रैषा लक्ष्मीर्निहिता धिवाचि (ऋ 10 71 2) इस परमात्मा प्रेरित वाणी वेद मे कल्याणी लक्ष्मी का वास था। इस वेद वाणी मे विविध ज्ञानमय देवी माया थी। सृष्टि के प्रारम्भ मे जिन ऋषियो मे यह प्रेरित वेदवाणी प्रविष्ट हुई अवतरित हुई या प्रकट हुई उसने अन्य मनुष्यो को गुरु शिष्य परम्परा से पढाकर उसे अविछिन्न याथातथ्य रूप मे सुरक्षित रखा। अत मनुष्य पहले सर्गारम्भ मे अबोध जगली विवेक शून्य था और कालान्तर मे अनेक शताब्दियो के व्यतीत होने पर क्रमश ज्ञान का विकास हुआ यह वैदिक दृष्टि से अमान्य है।

## तमितिहासश्च पुराण च गाथाश्च नाराशसीश्चानु व्यचलन् । (अथर्व 15।6।11

वेद के प्रकट होने पर मनुष्यो को अपना कर्तव्य बोध हुआ। कर्म आरम्भ हुए। इस प्रकार वेदो के प्रकट होने पर इतिहास पुराण गाथा नाराशसी उसके पीछे कालक्रम से बनने लगे। इति कर्तव्यता के आधार पर जीवन सचालन से सचित कर्म इतिहास का स्वरूप ग्रहण करता गया। वेद के पश्चात जो इतिहास मनुष्यो का बनता है उसका वेद मे वर्णन करना असगत है। बुभुक्षार ग्याव वत् प्रयास है। वेद मे व्यक्तिगत या जाति विशेष का इतिहास नही है। परन्तु इतिहास का मूल तत्व जिसके आधार पर किसी का उज्ज्वल इतिहास बनता है उन कर्मों का उन आदर्शों उपदेशो का वेद में अस्तित्व है। इसके अतिरिक्त तम आसीत् तमसा गूढ मग्र (ऋ 10।129।3) आदि मन्त्र मे सृष्टि निर्माण प्रक्रिया रूप जो वर्णन है वह एक स्थायी रचना क्रम है जो प्रति सर्गारम्भ मे होता है। इसी प्रकार सूर्याचन्द्रम सोधाता यथा पूर्वमकल्पयत्। (ऋग्वेद 10।190।3) यज्ञेन यज्ञमयजन्त (यजु 31।16) ऋच सामानि जज्ञिरे (यजु 31।7) आदि मन्त्रो मे इस सृष्टि के प्रारम्भ या इसके पूर्व किसी वर्ग की सृष्टि का इतिहास नही है अपितु स्थायी क्रम है। जो होता था और होगा का वर्णन है। अर्थात शाश्वत सृष्टिक्रम सिद्धान्त है।

## वेदो मे मानवी इतिहास नही

यदि वेद मे किसी जाति के व्यक्तियो का इतिहास होता तो मनु इस बात को अवश्य प्रकट करते। सर्व वेदात्प्रसिध्यति मनु के इस वाक्य के आधार पर वेद मे मानव इतिहास की कल्पना करना ऐसा ही है जैसे मेघमाला में पर्वत गज हाथी मनुष्य सिंह अश्व नगर का एक स्थूल क्षणिक स्वरूपाभास जान असत स्थिति को स्थायी एव सत्य समझना। वेदो से ऐसे इतिहास की कल्पना करना और उसके लिए श्रम करना मिथ्याज्ञान युक्त मिथ्या प्रयास ही है। यदि सर्व वेदात्प्रसिध्यति की प्रतिज्ञा पर आरूढ कुछ प्रतिपादन वेद से करते रहेंगे तो—अधेन्वा चरति माययैष वाचशुश्रुवाँ अफलामपुष्पाम् (ऋ 10।71।5)निरर्थक प्रयास तथा विपरीत प्रयास होती जाएगी। सर्व वेदात् प्रसिध्यति—की अतिव्याप्ति के अर्थों में पशुहिंसा मास मदिरा, अनाचारादि का भी प्रतिपादन किया जाने लगा जो इसे अभीष्ट नहीं अत सर्व वेदात् प्रसिध्यति का अर्थ सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं वेद से ज्ञात होते हैं यह ग्रहण करना चाहिए। सब से प्रजापति (शतपथ) मे भी बताया गया है अर्थात् परमात्मा का ज्ञान भी वेद से प्रकट होता है ऐसा भाव ग्रहण कर सत्य विद्याओं का सत्य पदार्थ विज्ञान का तथा परमात्मा के सत्य स्वरूप को प्रकट करने का प्रयत्न करना चाहिए।

## वेदार्थ ज्ञान के लिए षडगो की आवश्यकता

वेद मे मिथ्याज्ञान किसी प्रकार का नहीं। सत्य मे असत्य नहीं। असत्यज्ञान, मिथ्या ज्ञान आदि तो जीव मे ही सम्भव है। इसलिए वेद को जानने के लिए उसके वास्तविक ज्ञान को प्राप्त करने के लिए अनेक प्रकार की योग्यताओं का उल्लेख कालक्रम के साथ अपेक्षित होता गया। उन अनेक योग्यताओ मे से ऋषि देवता, छन्द स्वर विनियोग तथा पद ज्ञान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। मन्त्रो के इन षडगो के ज्ञान के बिना—उतत्व पश्यन न ददर्श वाचम (ऋ 10।71।14 की स्थिति बनी रहती है। इन षडगो के ज्ञान साथ वेद मे प्रवेश करने के लिए शिक्षा कल्प व्याकरण निरुक्त, छन्द और ज्योतिष वेद के इन षडगो का भी ज्ञान आवश्यक है। जो इन षडगो के ज्ञान के बिना ही वेद मे प्रवेश करता है वह वेद की रक्षा नहीं करता अपितु उससे वेद की हिंसा ही होती है। बिभेत्यल्पश्रुता द्वेदो मामय प्रहरिष्यति—यह वाक्य ऐसे ही व्यक्तियो के लिए कहा गया है जो वेदार्थज्ञान प्राप्ति की उपरोक्त योग्यता से रहित है।

## ऋषिभि सम्भृतोरसम् (ऋ 9।67।31)

वेदार्थ ज्ञान में निर्धारित लक्ष्य की ओर प्रगति विशिष्ट होने के लिए मन्त्र के ऋषि का ज्ञान आवश्यक है तभी ऋचाओं मे जो गूढ अर्थ है उसका दर्शन होता तथा ऋचाओं में जो रस आनन्द भरा हुआ है वह प्राप्त होता है। इस रहस्य को पावमानीर्यो अध्येत्यृषिभि सभृत रसम। सर्व स पूतमश्नाति स्वदित मातरिश्वना (ऋ 9।67।32) बताया गया कि हमें पवित्र करने वाले हैं। हमारे ज्ञान को पवित्र करने वाले हैं उन का अध्ययन जो ऋषियों आर्य तर्कणा से करता है तथा परमात्मा की विविध प्रज्ञा के द्वारा उसमे जो रस भरा हुआ उसके साथ अध्ययन करता है—उसे वेदवाणी रूपी गौ का अमृतमय क्षीर का भी सार तत्व, दोनो का सार माधुर्य तथा अक्षय अर्थात मोक्ष सुख प्राप्त होता है। अत मन्त्रार्थ दर्शन में ऋषि ज्ञान आवश्यक है।

## मन्त्रार्थ मे ऋषि ज्ञान का महत्व

मन्त्रों के शब्दों के अनेक अर्थ हैं। उन अर्थों मे से किस अभिप्राय के अर्थ को ग्रहण करना चाहिए इसका भाव दर्शन मन्त्र के ऋषि से होता है। अथवा इस प्रकार भी समझ सकते हैं कि एक पदार्थ के अनेक गुणो में से किस गुण के कारण उसका ग्रहण करना चाहिए—यह ज्ञान मन्त्र का ऋषि प्रकट करता है। उदाहरण के लिए ऋग्वेद का प्रथम मन्त्र अग्नि मीले है। अग्नि दाहक है भस्म करने वाला है। परन्तु अग्नि मे यह गुण भी गूढ रूप से विद्यमान है कि वह अपक्व खट्ट कठोर आम के फल को पका देता है। उसके खट्टे रस को मधुर रस मे परिणत कर देता है। उसके कठोर गूदे को रस रूप में परिवर्तित कर देता है। फलो अन्नादिको पका कर रसवान मधुर स्वादिष्ट बना देता है। कडवी निबोली के पकने पर उसमे भी माधुर्य सचार कर देता है और हमारे लिए हितकारी परिणाम भी उत्पन्न करता रहता है। यह उसका पुरोहित कर्म है। अग्नि के इसी माधुर्य उत्पादक माधुर्य प्रसादात्मक एव माधुर्य प्रसारक कार्य को माधुर्य का कार्य या धर्म माना गया। इस महत्वपूर्ण एव गूढ गुण का ज्ञान एव उपयोग करने का ज्ञान मन्त्र के ऋषि नाम से ज्ञात होता है। अत अग्नि मीले—इस मन्त्र का ऋषि मधुच्छन्दा है। इस आशय के अनुकूल मन्त्र के अग्नि देवता का अर्थ चिन्तन सबके हित के लिए होगा तभी मधुच्छन्दा नाम सार्थक होगा।

## देवता ज्ञान की आवश्यकता

मन्त्र का देवता निर्देश भी मन्त्रार्थ मे अत्यन्त महत्वपूर्ण है। देवता ही मन्त्र का प्रधान विषय है। बिना देवता ज्ञान के मन्त्रार्थ रहस्य ज्ञात नही हो सकता। मन्त्र के देवता का ज्ञान मन्त्र से ही सुगमता से प्रकट होता है। प्रश्न वर्ग का नाम निर्देश मन्त्र में स्पष्ट रूप से होता है। उसको लक्ष्य करके ही अर्थ करना चाहिए। परन्तु अग्नि देवता के मन्त्र से ज्ञाता प्रजापति या ज्ञाता देवी नाम के किसी राजा, व्यक्ति आदि को मानकर उस व्यक्ति में अर्थ को घटाना वेद का उपहास मात्र है।

# पंजाब दिवस पर

रचयित्री—डा पुष्पावती एम ए पी एच डी, दर्शनाचार्य मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल वाराणसी

पंजाब दिवस मनाने चली आज आर्यों की टोली।
जो जला देगी दस्यु दल के दु स्वप्नों की होली।
वेद गीता का अमृत पिए हैं, क्या कर लेगी दस्यु गोली ?
बच न सकेगा कस कराल दूर दिमाग मे श्यामा बोली
। 1 ।

जसराम सेठी का क्या भूलेंगे हम बलिदान
डीरेल पर बम बरसते, आर्यों क्या सो गए हैं प्राण ?
जिस दिन आर्य वाहिनी कर जाएगी रण प्रयाण।
हवा हो जाएगी होश दस्यु के हवा होगा खालिस्तान ।2।

नहीं चलेगी नहीं फलेगी चालाकी खालिस्तान की,
मिट जाएगी हट जाएगी नाम खालिस्तान की।
मिटने न देंगे हम लाज पूज्य गुरुओं के बलिदान की।
नही हटोगे तो दुन्दुभि बजेगी इधर भी महा प्रयाण की।
। 3 ।

मेरे भारत को तोड़ने का नही किसी को अधिकार,
मेरे प्राणों के रक्त बूंद की जब होगी बौछार।
दु साहसी दल के प्रयत्न होंगे सभी बेकार
बह जाएंगे स्वप्न तुम्हारे भागोगे करके चीत्कार ।4।

छुड़ा नही सके सीमा चीन पाकिस्तान से,
मुह मोड़ लड़ने चले अपने ही हिन्दुस्तान से।
सीख नही ली गुरु तेग अर्जुन के बलिदान से।
निज भोग पिपासा मिटाने चले चले सपने से खालिस्तान के
। 5 ।

रुक जाओ जहा भी हो तुम,
आज वीर हृदय ने ललकारा है।

मत बढना पग एक भारत कन्याओ ने धिक्कारा।
तुम्हें लाज नहीं आई गुरु गोविन्द रक्षित भी को सहारा

छीन रहे हो हम से गुरु नानक का ग्रन्थ साहब प्यारा । 6 ।
गुरु नानक हमको प्यारे,
हम करते उनका अभिनन्दन।
बलिवेदी की राह दिखाते हमें गुरुओं के जीवन्त वचन।
नकाब उतारो सिख धर्म की
छिप न सकेगा कभी बदन।
क्या समझकर तुम धमकी दिखाते,
क्या वेद ग्रंथियो के खाये हैं अन । 7 ।

## मोती सीप के

— बुद्धिमान् मनुष्य अपने अनुभवो से सीखता है। अधिक बुद्धिमान दूसरो के अनुभव से सीखता है। —चीनी कहावत

— आहिस्ता चलने से नही सिर्फ चुपचाप खडे रहने से डर है। चीनी कहावत

अगर तुम्हारे पास दो पैसे हैं तो एक से तुम रोटी खरीदो दूसरे से फूल। रोटी तुम्हें जिन्दगी देगी और फूल तुम्हें जीने की कला सिखाएगा। — चीनी कहावत

अनैतिक धंधे से चोरों की वृद्धि अच्छी है। —अज्ञात कहावत

—ओमकार शर्मा जी सियाली

# पंजाब में राष्ट्रपति शासन लागू किया जाए

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे दिल्ली की समस्त आर्य समाजो के प्रतिनिधियो की एक विराट सार्वजनिक सभा आर्य समाज मन्दिर हनुमान रोड नई दिल्ली मे उग्रवादी अकालियों द्वारा पंजाब मे हुआ काण्ड तथा अलगाववादि देशद्रोही तत्वो द्वारा उत्पन्न अराजकता का विरोध करने के लिए सम्पन्न हुई। इस सभा की अध्यक्षता करते हुए स्वामी विद्यानन्द सरस्वती ने पंजाब मे उत्पन्न भीषण समस्या का समाधान करने हेतु भारत सरकार से मांग करने के लिए सभी आर्य समाजी बन्धुओ को प्रेरणा दी। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान लाला राम गोपाल शालवाले ससद सदस्य आचार्य भगवानदेव और श्री जयरामदास तथा धर्मी ने अपने विचार प्रस्तुत किये।

इस अवसर पर सर्वसम्मति से निम्न लिखित प्रस्ताव पारित किया गया

### प्रस्ताव

यह सार्वजनिक सभा पंजाब मे उग्रवादी अकालियो तथा पृथकतावादी देश द्रोही लोगो द्वारा बेगनाह लोगो की हत्या करने और राज्य मे अराजकता उत्पन्न करने के प्रयत्नो की घोर निन्दा करती है तथा भारत सरकार से मांग करती है कि पंजाब का शासन सुचारु रूप से चलाने के लिए वहा राष्ट्रपति शासन तुरन्त लागू किया जावे। किसी प्रकार के विवाद को निपटने से पहले भारत सरकार को गैर अकालियो निरकारियो पंजाब हिन्दू रक्षा समिति तथा आर्य समाज के प्रतिनिधियो से विचार विमर्श करने के पश्चात ही अकालियो से बात करनी चाहिए इस वार्ता मे अन्य सम्बद्ध राज्यो के प्रतिनिधियो को भी सम्मिलित किया जाए इन देशद्रोही तत्वो को मताधिकार से वंचित किया जाए। धार्मिक स्थानो का राजनीतिक और हिंसात्मक कार्यों के लिए प्रयोग तत्काल बन्द किया जाए। पंजाब के निवासी हिन्दुओ तथा अन्य अल्पसंख्यको की सुरक्षा का प्रबन्ध किया जाए। जिससे इसकी प्रतिक्रिया अन्य प्रदेशो मे प्रारम्भ न होने पाए।

—सरदारी लाल वर्मा
सभा प्रधान

वैदिक नैष्ठिक मण्डल की ओर से—

# विचार गोष्ठि शिविर

राष्ट्र के प्राचीन गौरव को पुन स्थापित करने के लिए व समाज मे वैदिक संस्कृति व सभ्यता का प्रचार प्रसार करने के लिए सम्पूर्ण जीवन की आहुति देने वाले नवयुवको की गोष्ठी का आयोजन किया गया है। 1 से 6 अगस्त तक स्थान आर्य समाज कर्ण नगर श्रीनगर जम्मू कश्मीर।

नोट—इस गोष्ठी मे केवल नैष्ठिक ब्रह्मचारी ही भाग ले सकते हैं भोजन तथा निवास निःशुल्क।

—ब्र आर्य नरेश
संयोजक व मन्त्री
49 ज्ञान सदन माडल बस्ती
दिल्ली

# आर्य समाज ग्रीन पार्क कालोनी जालन्धर का वार्षिक चुनाव

आर्य समाज ग्रीन पार्क कालोनी जालन्धर का वार्षिक चुनाव सर्वसम्मति से निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ—

प्रधान—श्री अश्विनी कुमार शर्मा एडवोकेट वरिष्ठ उपप्रधान श्री वेद प्रकाश भारद्वाज हैडमास्टर उपप्रधान—श्री आर डी शर्मा, मैनेजर श्री अशोक कुमार शर्मा प्रोफेसर महामन्त्री—श्री रामकुमार शर्मा हैडमास्टर उपमन्त्री—श्री नरेश कुमार जी श्री जगदीशराजजी, पुस्तकाध्यक्ष—श्रीमती प्रोमिला जी, कोषाध्यक्ष—श्रीमती उषा शर्मा जी आडीटर—श्रीमती शारदा जी

अन्तरंग सदस्य

श्री श्याम कुमार श्री दिलबागराय, श्री अश्विनी कुमार भारद्वाज श्री राजेश श्री रामप्रकाश।

सभा प्रतिनिधि—

श्री अश्विनी कुमार शर्मा एडवोकेट श्री रामकुमार शर्मा हैडमास्टर।

—रामकुमार शर्मा
मन्त्री

# 'द्वारं किमेकं नरकस्य नारी'

लेखिका—बहिन सावित्री देवी शर्मा वेदाचार्या 10 केलाबाग सामित्री सदन बरेली (उ प्र)

जगद गुरु स्वामी शंकराचार्य जी द्वारा रचित श्लोक का यह चरण प्राय उपदेशको द्वारा जन सभाओ मे नारी निन्दा के प्रसग मे उद्धृत किया जाता है। देश की महिलाए भी स्वामी शंकराचार्य को नारी जाति के निन्दक एव शत्रु के रूप मे देखती है। किन्तु आज मैं इस श्लोक चरण के पक्ष मे एक नया समाधान प्रस्तुत कर रही हू। जो विद्वज्जनानुमोदित तथा महिला मण्डल को अत्यन्त प्रिय होगा। प्रथम तो स्वामी जी ने यह बात सन्यासी के हित मे लिखी थी। ब्रह्मचारी सन्यासी वानप्रस्थादि तीनो वर्गों के लिए भी यही उचित है कि स्त्री सम्पर्क से दूर रहे जैसा कि पौराणिक सम्प्रदायो मे प्राय ही गुरु शिष्या आदि के प्रसग मे अशोभनीय घटनाए सुनने मे आती है जो आदश समाज के लिए धम के नाम पर कलकित है महात्मा बुद्ध ने भी अपने अनुभव के बाद यही निष्कष निकाला कि बौद्ध श्रमण सघ मे यदि स्त्रियो का प्रवेश रहा तो यह सघ शीघ्र ही प्रतिष्ठा खो बठेगा। युग प्रवतक महर्षि दयानन्द ने सवदा देवियो को यही उपदेश दिया पति ही तुम्हारा आराध्य गुरु है। वह महात्मा साधु पुरुषो का सग करे वही तुम्हारा उपदेशक होगा। अलग से स्त्रियो को किसी पुरुष को गुरु बनाने की आवश्यकता नही है। सामान्य सभाओ मे स्त्रियो ने ऋषिवर के भाषण सुने किन्तु एकान्त मे कभी भी उन्होने देवियो को उपदेश नही किया। इसी आदश की गम्भीरता को लेते हुए स्वामी शंकराचार्य जी ने लिखा द्वार किमेकं नरकस्यनारी अर्थात सन्यासी ब्रह्मचारी वानप्रस्थादि के लिए नारी का अतिशय साहचय नरक की ओर ले जाता है। उन्हे यह नारी सम्पक कर्तव्य पथ मे बाधक होता हुआ अपयश का भागी बनाता है। समाज का उच्च आदश गिर जाता है। अत इस दृष्टि से यह श्लोक चरण आक्षेप योग्य नही है। (2) इस श्लोकाश से एक दूसरी ध्वनि भी सुस्पष्ट प्रतीत हो रही है जिसमे किसी भी दृष्टि से शिक्षित वग को आपत्ति नही होगी वाक्याथ का अन्वित स्वरूप इस प्रकार है नरकस्य एक द्वार किम ? नारी। अर्थात नरक का एक मुख्य द्वार क्या है ? उत्तर मिला नारी नरक का एक मात्र द्वार है अब आप इस अथ पर सावधान से विचार कर। किसी भी भवन का द्वार उसमे रहने वालो के लिए या नवीन आगन्तुको के लिए प्रवेश द्वार भी है और निष्कासन द्वार भी है। द्वार से प्रवेश और निगमन दोनो ही काम होते है। यदि ध्यान से देखा जाए तो न जाने कितने इन्द्रिय लोलुप दुराचारी पुरुषो को नारी ही नरक से निकालने वाला निष्कासन द्वार बनी है। हमारा समस्त सस्कृत हिन्दी साहित्य नारी के इन दिव्य सुपावन आचरणो से सुशोभित है महात्मा मुन्शीराम जी (सन्यासाश्रम मे स्वामी श्रद्धानन्द) ने अपनी आत्म कथा कल्याण माग का पथिक मे अपनी सुशीला धम पत्नी को नारकीय जीवन की कीचड़ मे निकाल कर कल्याण माग मे पूण सहयोगिनी स्वीकार किया है वस्तुत शराबी जुआरी मासाहारी पतियो को नरक से निकाल कर सन्माग दिखाने वाली देवियो का इतिहास आज भी साक्षी है। सवदा धम पथ की प्रदर्शिका होने के कारण ही उसे पत्नी के रूप मे 'माता निर्मात्री' कहा गया है। इसलिए नारी वास्तव मे नरक का निष्कासन द्वार है और स्वग सदन का प्रवेश द्वार है। यदि विषयासक्त विमूढ जनो को वह नरक का प्रवेश द्वार दीखती है तो ऐसे कुमाग गामी लोगो को सुधार के कारण कल्याण माग का दशन भी कराती है। पापमय घोर नरक से बचाती है। कठोर तपस्या पवित्र जीवन की साधना से ही वह अपने जीवन साथी को प्रिय पुत्रो को शुभाचरण की शिक्षा देकर दिव्यलोको का अनुभव कराती है। स्वामी जी के श्लोकमय वाक्य का यही अर्थ है। भयकर यातनाओसे भरे हुए नरक रूपी घर से निकालने वाला नारी ही एक मात्र द्वार है। महाकवि तुलसीदास को अपयश का रहस्य बताने वाली रत्नावली देवी ने कितने सुन्दर शब्दो मे उपदेश किया

अस्थि चममय देह मम तासो ऐसी प्रीति।

होती जो श्री रामसो दूर होय भवभीति।

इस शिक्षा से तुलसी को नरक से मुक्त करने वाली रत्नावली नारी ही द्वार बनी। बिल्व मगल को चाक्षुष पापरूपी नरक से निकालने वाली देवी ही थी जिसके प्रभाव से वही बिल्व मगल भक्त शिरोमणि सूरदास महाकवि के रूप में अमर हो गया। अज्ञानता के गत से निकालकर विश्वविख्यात महाकवि कालिदास को कवि कुल कुमुद दिवाकर बनाने वाली विद्योत्तमा नारी ही थी। असख्य उदाहरण नारी की इस उदात्तता के लिए दिए जा सकते हैं अत सुशिक्षित महिलाए इस पक्ति को अपनी निन्दा न समझकर स्वामी शंकराचार्य की मातृ भक्ति के प्रति सदभावना पूर्ण प्रशसोक्ति ही समझें। यह उनकी मातृ मन्दिर मे सादर समर्पित सुभाषित श्रद्धाजलि है

द्वार किमेकं नरकस्य नारी।

(आत्म पथ से)

## वेद सुधा—

# जुआ मत खेलो, खेती ही करो

ले—श्री स्वर्गीय प गगा प्रसाद जी उपाध्याय

(गताक के प्रथम पृष्ठ से आगे)

जैसे बरगद के छोटे बीज मे निहित शक्तियो का इस प्रकार प्रादुर्भाव होता कि बरगद का बड़ा वृक्ष हो जाए। जैसे बरगद के बीज मे बरगद की शक्तिया निहित हैं इसी प्रकार हर मनुष्य के भीतर भी अनेक अदभुत शक्तिया निहित हैं। जैसे बरगद का बीज घड़े के भीतर पड़ा पड़ा वृक्ष नही हो सकता जब तक कि उसकी कृषि न की जाए इसी प्रकार मनुष्य की शक्तिया बिना कृषि का विकास के बाहर नही आती।

माता पिता आचाय समाज सरकार—ये सब वस्तुत कृषक हैं जो मानवी शक्तियो को खीचकर बाहर लावें और मनुष्य को साधारण पशु से सुसस्कृत सविकसित तथा कृष्टि बना देवें। आप जो आधुनिक विज्ञान का चमत्कार देख रहे हैं वह वस्तुत मनुष्य जाति के विकास का चमत्कार है। जमनी इग्लैंड, अमेरिका आदि देशो के बच्चो और अशिक्षित नीग्रो आदि के बच्चो में शारीरिक भेद तो नाम मात्र है। भेद केवल कृष्टि या शिक्षा का है और आगे चलकर परिणाम कितना अधिक हो जाता है। एक देश के बच्चे आकाश मार्ग मे उड़ने वाले अनेक प्रकार के विचित्र यान बना डालते हैं दूसरे बच्चे एक सुई भी नही बना सकते हैं।

इस प्रकार वेद मन्त्र मे सबस बड़ी शिक्षा यह दी गई कि जुआरियो के समान अपने भोगो के लिए दैव के आश्रय न रहो। ये भोगो का साधन भी सम्पादित करगी और विकास भी करेंगी। जुआरी जुए मे जीतकर भी भोग तो भोगता है परन्तु उन्नति नही करता और यह भी नहीं है कि सदा भोगो को भोगने में सफल ही हो जाए। यदि हम सृष्टि के नियमो का निरीक्षण करें तो ज्ञात होता है कि सफल जुआरी की अपेक्षा सफल कृषक की सफलता के उदाहरणो का अनुपात अधिक है। असफल किसान भी कुछ तो कमाता ही है। असफल जुआरी तो कहीं का नहीं रहता यदि दुनिया ही जुआरी हो कृषक न हो तो जुआ खेलने वाले भी नष्ट हो जाए और दुनिया भी। जुए से अन्न तो नही उत्पन्न होता। अब उन लाभों पर दृष्टि डालिए जो कृषक को प्राप्त हैं—जुआरी को नहीं। जुआरी का कौन मान करता है ? उसने परिश्रम ही क्या किया ? महाराज युधिष्ठिर जुए के लिए बदनाम हो गए।

गीता मे कृष्ण ने अर्जुन को यह उपदेश नही दिया कि जुआ खेल स्यात तेरा गया हुआ राज्य फिर लौट आवे। वहा तो यही उपदेश है कि कम कर। दुनिया भर की सरकारें जुआरी को अपराध समझती है और साथ ही उन लोगो को भी जो जुआरी के समान निठल्ले रहकर दैव के आश्रित बैठ रहते हैं।

दूसरी चीज है वित्त या धन। कृषक धन को पैदा करता है। जुआरी पैदा किए हुए धन को छीनता है। वह उत्पादक नही अपितु वचक है। अभागा है वह जुआरी जो जुए मे हार जाता है। परन्तु उससे भी अभागा है वह जुआरी जो जुए मे जीत जाता है। भारत मे दीप मालिका के त्यौहार के साथ जुए की प्रथा का सम्बन्ध जोड़ देना महा अधम की बात है। यह लक्ष्मी पूजा नही लक्ष्मी निन्दा है। धन का मुख्य साधन तो कृषि ही है।

तीसरा लाभ है 'गाय'। गोधन सब से बड़ा धन है, क्योकि इससे कृषि भी होती है। गाय साधन भी है और साध्य भी। कृषि साध्य और साधन दोनों के लिए उपादेय है।

चौथा लाभ है जाया। जाया का अर्थ है बच्चो की मा—जायायास्तद्धि जायात्व यदस्या जायते पुन (मनु 1 8) अर्थात स्त्री में मनुष्य अपने अनुरूप सन्तति को उत्पन्न करता है।

जुआरी की स्त्री और कृषक की स्त्री की तुलना कीजिए। कृषक की स्त्री तो अपने पति के साथ काम करके अपना भी विकास करती है और अपने पति के विकास मे उसकी सहायक होती है। जुआरियो की स्त्री कभी सुखी नही रहती इसका प्रसिद्ध उदाहरण है द्रौपदी। यो तो ऐसे उदाहरण हर स्थान पर मिलेंगे।

अन्त में मन्त्र कहता है कि सविता (प्रसविता) अर्थात धर्म मे प्रेरणा करने वाले प्रभु ने ऐसी आज्ञा दी है। जो इस आज्ञा का पालन करेगा उसका कल्याण होगा जो उपेक्षा करेगा उसे दुख मिलेगा।

# पंजाब का हिन्दू अनाथ नहीं : सारे हिन्दू उनके साथ हैं

24 जुलाई रविवार को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली की अपील पर पंजाब सुरक्षा दिवस देश भर की आर्य समाजों में मनाया गया। दिल्ली तथा पंजाब की अनेकों आर्य समाजों ने भी प्रस्ताव पारित करके प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी को भेजे हैं उनकी प्रतिलिपि हमें भी भेजी है। कुछ आर्य समाजों के नाम इस प्रकार है—

आर्य समाज 15 हनुमान रोड नई दिल्ली आर्य समाज न्यू मोतीनगर दिल्ली आर्य समाज निजामुद्दीन नई दिल्ली आर्य समाज बदरपुर दिल्ली, आर्य समाज अशोकनगर दिल्ली आर्य केन्द्रीय सभा गुरदासपुर आर्य केन्द्रीय सभा रोपड़ आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार लुधियाना आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार लुधियाना आर्य समाज मोरिण्डा केन्द्रीय सभा लुधियाना आर्य समाज हबीब गंज लुधियाना आर्य समाज स 22 चर्चहिल मजीठिया बाजार अमृतसर।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मन्दिर मार्ग दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश महर्षि दयानन्द मार्ग सुलतान बाजार हैदराबाद आर्य युवक परिषद दिल्ली

इसके अतिरिक्त पंजाब हरियाणा हिमाचल प्रदेश जम्मू कश्मीर उत्तर प्रदेश की अनेकों समाजों में यह दिवस मनाया।

24 7 83 को पारित आर्य समाज हनुमान रोड नई दिल्ली का प्रस्ताव निम्न प्रकार है। ऐसे प्रस्ताव अन्य समाजों ने भी भेजे हैं।

## प्रस्ताव

आर्य समाज हनुमान रोड में आयोजित यह सार्वजनिक सभा पंजाब में उग्रवादी [illegible] तथा पृथकतावादी देशद्रोही लोगों द्वारा बेगुनाह लोगों की हत्या करने और राज्य में अराजकता उत्पन्न करने की प्रवृत्ति की घोर निन्दा करती है और रोष प्रकट करती है। यह सभा भारत सरकार से मांग करती है कि—

1 पंजाब का शासन सुचारु रूप से चलाने के लिए वहां राष्ट्रपति शासन तुरन्त लागू किया जाना चाहिए।

2 पंजाब में अकाली समस्या में अब उन्हें भारत सरकार को कोई बातचीत नहीं करनी चाहिए, किसी भी प्रकार के विचार को निपटाने से पहले [illegible] और [illegible], निरंकारियों, पंजाब हिन्दू सुरक्षा समिति तथा आर्य समाज के प्रतिनिधियों के साथ भी विचार विमर्श करना चाहिए। इस प्रकार की बातचीत में अन्य सम्बद्ध राज्यों के प्रतिनिधियों को भी शामिल किया जाना चाहिए।

3 यह सभा यह सुझाव भी देती है कि उग्रवादी एवं पृथकतावादी देशद्रोही तत्वों को मताधिकार से भी वंचित किया जाना चाहिए।

4 धार्मिक स्थानों का राजनैतिक और हिंसात्मक कार्यों के लिए प्रयोग करने पर तत्काल प्रतिबन्ध लगाया जाना चाहिए यदि धार्मिक स्थानों पर अपराधियों और असामाजिक तत्वों को शरण दी जाती है अथवा इन स्थानों में हथियार और अस्त्रशस्त्र एकत्र किए जाते हैं तो इन कार्यवाहियों को तुरन्त रोकने के लिए पुलिस को धार्मिक स्थानों में जाने के आदेश दिये जाने चाहिए।

पंजाब के निवासी हिन्दुओं तथा अन्य अल्पसंख्यकों की सुरक्षा के लिए तुरन्त प्रबन्ध किए जाने चाहिएं ताकि देश के अन्य भागों में पंजाब की घटनाओं की प्रतिक्रिया प्रारम्भ न होने पाए।

—मन्त्री

प्रतिलिपि सेवा में उचित कार्यवाही अर्थ—

1 माननीय ज्ञानी जैलसिंह जी राष्ट्रपति भारत सरकार नई दिल्ली।

2 माननीय श्री प्रकाशचन्द्र सेठी गृहमन्त्री भारत सरकार नई दिल्ली

3 श्री वीरेन्द्र जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर।

4 श्री मन्त्री जी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन नई दिल्ली 2।

5 श्री मन्त्री जी दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा हनुमान रोड नई दिल्ली।

# गुरु पूर्णिमा पर प्राचीन गुरुओं की महिमा

दिनांक 24 7 83 को विश्ववेद परिषद् चण्डीगढ़ के तत्वावधान में गुरु पूर्णिमा तथा व्यास जयन्ति का सांस्कृतिक पर्व श्री कुलदीप प्रकाश भण्डारी एडवोकेट के निवास सै 18 में मनाया गया। इस अवसर पर गुरु पूजा के महत्व का निरूपण करते हुए महर्षि दयानन्द अनुसंधान पीठ पंजाब विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डा भवानीलाल भारतीय ने महर्षि वसिष्ठ विश्वामित्र सान्दीपनी व्यास चाणक्य आदि उन महान् गुरुओं के व्यक्तित्व तथा कार्यों का धार्मिक विश्लेषण किया, जिन्होंने अपने अपूर्व शास्त्र ज्ञान के साथ साथ राष्ट्र की रक्षा के लिए राम कृष्ण अर्जुन तथा चन्द्रगुप्त जैसे महापुरुषों को समय समय पर सतत उत्तेजक प्रेरणा दी थी।

आशुराम आर्य मन्त्री

# आर्य विद्या परिषद् पंजाब द्वारा आयोजित धर्म प्रवेशिका परीक्षा परिणाम

इस वर्ष आर्य विद्या परिषद पंजाब जालन्धर द्वारा आयोजित धर्म प्रवेशिका परीक्षा में उत्तीर्ण होने वाले छात्र एवं छात्राओं के रोल न नीचे दिए जा रहे हैं। इस बार धर्म प्रवेशिका परीक्षा का परिणाम 88 63 प्रतिशत रहा है समस्त परीक्षा में प्रथम द्वितीय एवं तृतीय आने वाले परीक्षार्थियों का विवरण निम्न प्रकार है।

| स्थान | रोल न | नाम व स्कूल | प्राप्तांक |
|---|---|---|---|
| प्रथम | 3033 | सुनीता सुपुत्री श्री सरदारीलाल<br>वैदिक कन्या पाठशाला बटाला | 77 |
| द्वितीय | 2474 | सीमा सुपुत्री श्री मोहनलाल<br>आर्य गर्ल्ज हा स स्कूल मोगा | 75 |
| तृतीय | 2422 | भारती सुपुत्री श्री देवीदयाल<br>आर्य कन्या हाई स्कूल बस्ती नौ जालन्धर | 74 |

रामचन्द्र जावेद
सभा मन्त्री

अश्विनी कुमार शर्मा
रजिस्टार

## उत्तीर्ण परीक्षार्थी

2001 से 2048 तक 50 से 55 तक 57 से 80 तक 8? से 2110 तक 12 से 70 तक 72 से 77 तक 79 81 से 87 तक 90 से 94 तक 97 2199 2201 से 5 तक 7 से 24 26 से 30 32 से 38 40 42 44 से 55 58 से 82 84 से 89 92 से 98 2300 से 2301 3 6 11 12 16 17 21 से 2423 2425 से 38 40 से 66 68 से 72 74 से 2516 2518 से 44 55 से 2603 2605 से 14 तक 16 17 20 22 से 24 26 से 34 37 38 40 43 से 51 तक 53 से 55 58 से 69 71 73 से 2710 तक 2751 से 62 तक 65 से 73 77 78 80 से 2810 तक 2813 से 16 18 19 21 27 32 33 38 से 46 48 49 51 53 से 71 73 76 से 87 89 93 से 2905 तक 2907 से 18 तक 20 से 37 39 से 49 52 से 67 तक 69 से 77 79 84 89 से 93 96 से 3003 3005 से 11 तक 13 15 से 43 तक 46 से 55 तक

# आर्य समाज हबीब गज लुधियाना का वार्षिक चुनाव

आर्य समाज हबीब गंज (अमरपुरा) लुधियाना का वार्षिक चुनाव 4 7 83 रविवार सत्संग के पश्चात श्री यशपाल जी की प्रधानता में सर्वसम्मति से हुआ।

संरक्षक—श्री आशानन्द आर्य श्री महिंगा राम भगत।

प्रधान—श्री यश पाल भगत उप प्रधान—श्री राम सरन जी श्री राज कुमार जी मन्त्री—मा वेद प्रकाश महाजन उपमन्त्री—श्री धर्मपाल [illegible] श्रीमती राजरानी कोषाध्यक्ष—मा ज्ञान चन्द भगत इसके अतिरिक्त अंतरंग सदस्य प्रधान जी को चुनने का अधिकार दिया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए निम्नलिखित व्यक्ति तीन वर्ष के लिए प्रतिनिधि चुने गए।

1 श्री आशानन्द आर्य
2 श्री महिंगा राम भगत
3 श्री मा वेद प्रकाश महाजन
4 श्री मा ज्ञान चन्द भगत
5 श्री मुन्ना लाल आर्य
6 ज्ञान चन्द बतरा

—वेद प्रकाश महाजन
मन्त्री

## आवश्यक सूचना

वेद प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष रमेश चन्द्र वानप्रस्थी एक वर्ष की धर्म दीक्षा यात्रा से वापिस आ गए हैं 40 पैसे में 20 पुस्तक मंगाने वाले सज्जन पुस्तक मंगाकर धर्म प्रचार में सहयोग दें।

वेद प्रचारक मण्डल
नई दिल्ली

वर्ष 16 अंक 18 30 श्रावण सम्वत् 2040, तदनुसार 14 अगस्त 1983 दयानन्दाब्द 15 के ... 40 स ... 0 रुपए

# 15 अगस्त 1947 को भारत आजाद हुआ—तो-इनके कारण ?

राम प्रसाद बिस्मिल

स दार भगतसिंह

असफाक उल्ला

राजगुरु

सुखदेव

15 अगस्त को सारे भारत वर्ष म वत त्रन दिवस मनाया जा रहा है प्रति वर्ष यह दिन आ त है और हम इस दिन को पर्व के रूप मे प्रति वर्ष मनाते हैं इस दिन को देखने के लिए हमने बहुत कष्ट झले अनेकों यातनाए सही और अनेको रण बांकुरों ने अपना बलिदान दिया र मप्रसाद बिस्मिल चन्द्रशेखर आजाद अशफाक उल्ला खा राजगुरु सुखदेव भगतसिंह, उधमसिंह आदि इन शहीदो को हम कभी भी भुला नही सकते जिनके बलिदान से आज हमे यह दिन देखने को मिल रहा है

इस दिन को देखने के लिए अनेको माताओ ने देश की आजादी की बलिवेदी पर अपने लाल दिए अनेकों बहिनो ने अपने भाई दिए अनेकों देवियों ने अपने पति दिए। अनेको पिताओं ने अपने बेटे दिए यह दिन हमे बहुत कुछ खोकर मिला है। इसलिए इस दिन की कीमत आकी नहीं जा सकती इसके लिए हमें बहुत अधिक मूल्य चुकाना पड़ा है। इस दिन की प्राप्ति की खातिर रोंगटे खड़े कर देने वाली है इसलिए इस दिन की कीमत को समझकर इस पावन दिन को मनाए। इस दिन का मनाते हुए अगर इन अमर शहीदो को हमने याद नही किया तो यह दिन मनाना सफल नही होगा

भूमि मेरी माता है और मैं उसका पुत्र हू माता भूमि पुत्रो अहं पृथिव्या (अथर्व) की प्रेरणा वेद ने दी महर्षि दयानन्द जी महाराज ने देशभक्ति की प्रेरणा देते हुए कहा कोई कितना ही करे जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि होता है आगे कहा माता और पिता के समान कृपा न्याय दया के साथ विदेशियो का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नही है महर्षि की प्रेरणा और वेद के आदेश को मानते हुए भारतीय नवयुवकों ने विदेशी राज्य की जड़ से उखाड़ कर फेंक दिया ऋषि ने स्वराज्य की महत्ता को बताते हुए विदेशी दासता की जंजीरो को तोड़ डालने का आह्वान किया

## वेद मे राष्ट्रभक्ति

ओ३म उपस्थ ने अनमीवा अयक्ष्मा अस्मभ्य सन्तु पृथिवि प्रसूता दीर्घ न आयु प्रतिबुध्यमाना वयं तुभ्य बलिहृत स्याम अ 262

शब्दार्थ हे मातृ भूमि ... गो मे उत्पन्न हुए हम सब निरोग बलवान और स्वस्थ हो तेरी ... छाया म आनन्द पूर्वक रहते हुए हम दीर्घायु को प्राप्त करें व हम सब आय ज्ञान और विज्ञान से युक्त हो हम सब जागरूक हो सावधान रहते हुए तेरी रक्षा व हित करने मे सदा ही तत्पर रहे हे मात तेरे ऊपर जब कभी संकट उपस्थित हो तब हम सब तेरे भक्त अपने आत्म बलिदान के द्वार तेरी रक्षा व दुष्ट शत्रुओ से स्वतन्त्र करने के लिए कटिबद्ध रहे

## एक जीवन परिचय—
# आचार्या डा. कु. पुष्पावती जी

ले—श्री प आसुराम आर्य पुरोहित चण्डीगढ

आचार्या जी का जन्म पंजाब अन्तगत पटियाला नगर के अति समृद्ध परिवार मे 15 10 1925 का हुआ था। वैदिक सस्कृति एव आय समाज के प्रति निष्ठा इनको पैतृक धन के रूप मे मिली है। उच्च उदार नैतिक वश परम्पराओ के द्वारा इनके मानस का निर्माण हुआ है। इनके पूज्य पिता जी ने सरकारी सेवा मे रहत हुए भी कई आय समाजो की स्थापना की थी। आय समाज मानसा धूरी आदि उनकी धवल कीर्ति की पताका है।

ग्यारह वष की आयु मे आय समाज धूरी मे इनका प्रथम प्रवचन हुआ तभी से आपकी आय समाज की सेवाओ का सूत्र पात हुआ। ग्यारह वष की आयु मे ही आपने स्त्री समाज की स्थापना की और आप उसकी मन्त्रिणी बनी। तब से दजनो स्त्री आय समाजो की आप स्थापना कर चुकी हैं और हजारो सम्मेलनो मे भाषण दे चुकी हैं। चौदह वष की आयु मे आपने आजीवन अविवाहित रह कर आय समाज की सेवा एव वेद प्रचार का सकल्प ले लिया था।

इन्होने घर पर ही बी ए किया। श्री प ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु से सम्पूण अष्टाध्यायी महाभाष्य तथा निरुक्त का कछ भाग पढा। काशी हिन्दू विश्व विद्यालय से The Methods of the Interpretat on of the Vedas विषय पर पी एच डी की तथा वाराणसीय सस्कृत विश्वविद्यालय स वशना काय के पश्चात वदिके च तान्त्रिके च साहित्य सन्दाय सम्बन्ध विषय पर विर। वारिधि की हिन्दी साहित्य रत्न की उपाधि प्राप्त की। अब दयानन्द के वेद भाष्य पर टिप्पणी लिखने का प्रयास है। दिल्ली मे आयोजित वेद गोष्ठियो मे आपने निरुक्त और वेदाथ वेदाथ और ब्राह्मण ग्रन्थ ओ३म् का भौतिक स्वरूप विषय पर विद्वतापूण निबन्ध पढे। इन की सैकडो हस्तलिखित कविता कहानिया एकाकी नाटक व निबन्ध आदि हैं। इन की बहुमुखी प्रतिभा है।

निधन व पिछड वग की जनता से इन्हे विशेष स्नेह है। घर पर बहुत छोटी (चौदह वष की आयु) मे ही आप अपने वेतन से अनुसूचित जाति के बच्चो की पाठशाला चलाती थी। लाहौर मे भी इन्होने (1946 47 मे) नि शुल्क हरिजन पाठशाला चलाई थी तथा स्थानीय कृष्ण नगर के आर्य समाज के माध्यम से अनुसूचित जातियो की झोपडियो मे सत्सग लगाती थी। अन्त मे 1960 से वाराणसी मे मातृ मन्दिर का सचालन कर रही है। इसके लिए वाराणसी का पिछडा हुआ क्षेत्र ही चुना है जिससे यहा के पिछडे वग मे भी शिक्षा की आलोक किरण फल सके।

आपको शिक्षा क्षेत्र का भी व्यापक अनुभव है कन्या गुरुकुल हाथरस आय महिला डिग्री कालेज वाराणसी आय कन्या इटर कालेज इन्की म आप अध्यापन कर चुकी हैं। डी ए वी गल्र्ज डिग्री कालेज यमुनानगर मे आप प्रिसिपल पद पर थी। पिछड वग मे आय समाज व वदिक धम के प्रचार की लगन आपको वाराणसी खीच लाई। आप उपयुक्त प्रिसिपल पद त्याग कर मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल वाराणसी के माध्यम स आय समाज की भावी पीढी के निर्माण मे पूण समर्पित भाव स जुटी हैं। मातृ मन्दिर की शिक्षा की कुछ विशेषताए है जो अन्यत्र दुलभ हैं यहा पर पूण वात्सल्य भाव ध्येय निष्ठा शुद्ध चारित्रिक एव बौद्धिक विकास की सुन्दर योजना है।

मौलिकता वाणी मे ओजस्विता निर्भीकता वाग्मिता प्रभावशीलता निश्छलता व्यवहार की सरलता नि स्वाथ सेवा भाव छात्राओ के प्रति उदार सहानुभूति गहन दाशनिक चिन्तन आध्यात्मिक अभिरुचि देशानुराग क्षमा शीलता सहनशीलता विश्व प्रेम आदि आचार्या जी के व्यक्तित्व एव लेखनी की विशेषताए है।

आध्यात्मिक अभिरुचि निरभिमानता एव नारी सुलभ सकोच के नीचे इनकी लोकषणा की प्रवृत्ति दब गई है। कई बार नोचालाक लोग इनसे अन्याय व छल करके इनके परिश्रम व कार्यो का श्रेय स्वय ले लेत हैं इनके प्रतिभावान विचारों व योजनाओ को अपना कहकर प्रचारित करते हैं। पर ये ईश्वर अर्पित भाव से मुस्कराती हुई आगे बढती चलती रहती हैं।

निजन एकाकी प्रदेश म उगे हुए पुष्प की भान्ति आचार्या जी का जीवन केवल एव मातृ मन्दिर है। पर कहना न होगा कि वैदिक सस्कृति का यही सच्चा प्रकाशस्तम्भ एव प्रकाश स्तम्भ है, जिससे सकट के तिमिराच्छन्न क्षणो मे समस्त मानवता एक नया आशा प्रकाश का सम्बल प्राप्त करेगी।

आपका आरम्भ से ही सघर्षो से सामना रहा है। मातृ मन्दिर की स्थापना के साथ तो सघर्षों की बाढ ही आ गई है पर ये ईश्वर विश्वास का आधार लिए एकाकिनी सघर्षों से जूझकर विजय प्राप्त करती रही है। मातृ मन्दिर को वदिक सस्कृति का उज्ज्वल केन्द्र बना देने का इनका लक्ष्य है और उस ओर इनका अविरल पग बढ रहा है। मातृ मन्दिर मे इस समय कन्या गुरुकुल कन्या सस्कृत पाठशाला शिशु कक्षा एव प्राईमरी कक्षाए सस्कृत प्रचार समिति आदि चल रही हैं पाठयक्रम मे वेद वेदाङ्गो के साथ 2 सगीत विज्ञान भूगोल इतिहास गणित आदि विषय हैं। यहा की स्नातिकाओ का भविष्य अति उज्ज्वल है।

जिसने त्याग तपस्या चरित्र निर्माण ईश विश्वास विद्वत्ता वात्सल्य एव भावी भारत के उज्ज्वलतम रूप की झांकी देखता हो वह आचार्या पुष्पावती जी तथा उनके प्राण सिंचित मातृ मन्दिर को देख स। आचार्या जी की नसो मे दिव्य प्रतिभा है इनके पास अनेक मौलिक योजनाए हैं जिनके कार्यान्वयन पर आय समाज व देश का भविष्य गौरवमय बन सकेगा।

# स्वतन्त्रता दिवस

ले—श्री रामलाल पुण्डीर पत्रकार श्रीनगर गढवाल

स्वतन्त्रता है मन्त्र हमको
हम इस का हो किस तरह
जिस तरह शिशु पालती मा
मातृ भाव होता जिस तरह ॥

हम मे उदय हो प्रेम का
सहमति हो सम्मान हो
हो एकता का भाव हम मे
हित अहित का ज्ञान हो ॥

जिस देश मे यह देह पलती
क्या यही कम है कहो ?
स्वच्छन्द हो कर हम विचरते
सरसक है देश कितना अहो ।

देश भारत है विस्तृत हमारा
मानवता का लक्ष इतना ही बडा
द्वष रखना है न देखो ?
नित दाव पर दुश्मन खडा ॥

पन्द्रह अगस्त हमारा पर्व है
आजाद झण्डे देश म इस दिन उठ
अब हमारी योग्यता है शक्ति है
सगठित रहे उन्नत बन अरु शिर उठ ॥

# आर्य समाज सैक्टर २२-ए, चण्डीगढ

आय समाज चण्डीगढ सैक्टर 22 का वार्षिक निर्वाचन 3 7 83 को निम्न प्रकार से सम्पन्न हुआ।

सरक्षक—चौधरी रूप चन्द्र जी एड वोकेट प्रधान—श्री सतराम जी अग्रवाल उपप्रधान—सव श्री देवी दास जी सेठी श्री केसर दास, श्री श्री देवराज मित्तल, मन्त्री—श्री इन्द्र राज जी शर्मा उपमन्त्री सर्व श्री कृष्ण लाल तपदेव, वेद प्रकाश प्रभाकर धमपाल कपूर कोषाध्यक्ष—श्री वेद प्रकाश महाजन पुस्तकाध्यक्ष—श्री देस राज थापर तथा श्री राम कुमार गुप्ता सहायक पुस्तकाध्यक्ष—श्री सुभाष आय तथा श्री देवी दयाल जी। लेखानिरीक्षक आय वीर दल—श्री प्रेम चन्द्र जमना।

—वेदप्रकाश प्रभाकर
उपमन्त्री

## सम्पादकीय–

# भारत के स्वतन्त्रता-संग्राम में आर्य समाज का योगदान

हम प्रति वष 15 अगस्त को स्वाधीनता दिवस मनाते है। उस दिन हमने पहली बार 1947 म वहली के लाल किला पर अपना राष्ट्र ध्वज फहराई थी। मैं पहला बार इसलिए कहता हू कि शताब्दियो की पराधीनता क पश्चात 15 अगस्त 1947 को वह दिन आय था जब प्रत्येक भ रतवासी बड गव के साथ कह सकता था कि हम आजाद है। जब हम अपने उस सघष को याद करते है जो हमने अपने देश की स्वाधीनता के लिए किया था, तो कई व्यक्तियो और कई सस्थाओ का नाम याद आ जाता है। इसमे सन्देह नही कि आखिरी लडाई महात्मा गाधी के नेतृत्व मे और राष्ट्रीय काग्र स के अनुशासन म लडी गई थी। परन्तु यदि हम अपने इतिहास को देख तो इस परिणाम पर पहुचगे कि इस महान यज्ञ की पहली आहुति महर्षि स्वामी दयान द जी सरस्वती ने उस समय डाली थी जब उन्होने यह कहा था कि दूसरो का राज्य चाहे कितना भी अच्छा क्यो न हो फिर भी स्वराज्य के बराबर नही हो सकता। इस प्रकार व पहल महापुरुष थे जिन्होने हमे स्वराज्य का माग दिखाया था। उनके विषय म यह भी कहा जाता है कि उन्होने सन 1857 के विद्रोह मे भी सक्रिय भाग लिया था। अग्र ज इसे विद्रोह कहते रहे परन्तु कुछ देशभक्तो न इसे स्वाधीनता की पहली लडाई कहा था। इस समय उस विवाद मे पडने का कोई लाभ नही कि 1857 मे क्या हुआ और क्यो हुआ? हम 15 अगस्त को अपना स्वाधीनता दिवस इसलिए मनाते हैं कि उस दिन हम पूणतया स्वाधीन हो गए थे। अग्र ज यहा से चला गया था और राज्य सत्ता हमारे देशवासियो के हाथ मे आ गई थी। इसलिए आज के दिन हम न केवल दिल्ली के लाल किला पर अपना झण्डा लहराते हैं परन्तु सारे देश मे कई प्रमुख स्थानो पर यह झण्डा लहराया जाता है और उस दिन हम अपने देशवासियो को यह याद दिलाते हैं कि किस प्रकार हमने अग्र ज के हाथ से सत्ता छीनी थी और हम स्वतन्त्र हो गए थे।

जब हम अपने इस सघष के इतिहास को पढते है तो उसमे आय समाज का हमे एक विशेष स्थान दिखाई देता है। कठिनाई केवल यह है कि हमारे देश वासियों ने आय समाज को इसका वह श्रेय नही दिया जो देना चाहिए था। सम्भवत इसमे हमारा अपना भी दोष है। हम स्वय अपने देशवासियो का ध्यान इस ओर नहीं दिलाते। आर्य समाज का यह कत य है कि वह अपने देशवासियो के साथ मिलकर स्वाधीनता दिवस मनाए और उस दिन उन्हे बताए कि देश के स्वाधीनता सग्राम मे आय समाज और आय समाजियो ने क्या कुछ किया है। यदि हम उस समय की अग्र जो की लिखी हुई पुस्तक या उस समय की रिपोट देखें तो उनमे जगह-जगह आय समाज का नाम आता है। कई अग्र ज लेखको ने तो यह भी लिखा था कि भारत की जनता मे अग्र ज सरकार के विरुद्ध विद्रोह की जो भावना पैदा हुई थी, बहुत कुछ आय समाज के कारण थी। जिस समय महात्मा गाधी ने असहयोग और सत्याग्रह का आन्दोलन आरम्भ किया था तो सब से अधिक जेल जाने वाले आय समाजी ही थे। कई बड 2 आय समाजियो ने उस सघष मे अपना सक्रिय योगदान दिया था। श्री लाला लाजपतराय श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज आचाय रामदेव भाई परमानन्द, डा सत्यपाल, श्री महाशय कृष्ण जी और दूसरे कई आर्य समाज के नेता गाधी जी के आन्दोलन मे सक्रिय भाग लेकर जेल जाते रहे हैं। यदि कभी यह जानने का प्रयास किया जाता कि कितने आर्य समाजी जेल गये हैं तो उनकी संख्या हजारो नही, लाखो तक पहुच जाती और आर्य समाज ने केवल कुछ व्यक्तियो को केवल जेल मे ही नही भेजा था। कई आय युवक फासी पर भी चढ गए थे। क्रान्तिकारी आन्दोलन के एक महान नेता प श्यामजी कृष्ण वर्मा महर्षि दयानन्द सरस्वती के शिष्य थे। महर्षि ने ही उन्हे आगे शिक्षा प्राप्त करने के लिए इग्लैंड भेजा था। उनके प्रभाव मे श्री विनायक दामोदर सावरकर क्रान्तिकारी बन गए। श्री सावरकर पर भी आय समाज और महर्षि दयानन्द का बहुत प्रभाव था। उनके पश्चात प राम प्रसाद बिस्मिल सरदार भगतसिंह और सुखदेव इन शहीदो का भी आय समाजी परिवारो के साथ बहुत सम्बन्ध था। श्री राम प्रसाद बिस्मिल ना क्ना न र कि व जो कृष्ण था उन्हे आय समाज और सत्याथ प्रकाश के कारण । उन हे सरदार भगतसिंह के दादा सरदार अजीतसिंह एक बहुत निष्ठावान आय समाजी थे।

इसलिए इस बात म इन्कार नही किया जा सकता कि देश के स्वाधीनता सग्राम म आय समाज ने बहुत बडा योगदान दिया था। इस सघष मे जितने भी गव कर कम है परन्तु दुख है कि आज समाज क लोग इसके आ र न नही इन कुछ हमारे मन मे ऐसा प्रतीत होता है कि आज आय समाज । अपने पथ क रूप म मनाना चाहिए उनम स्वाधीनता दिवस भी एक है। जिस दिन प राम प्रसाद बिस्मिल और स भगत सिह । कभी भी यह नही वह नि भी आज समाज को र ट स्तर पर मनाना चाहिए आय समाज की प्रत्येक मस्था मे इस दिन बच्चो को यह बताना चाहिए कि श्री राम प्रसाद बिस्मिल कौन थे और स भगत सिह कौन थ? जो सस्था या जाति अपने इतिहास के निर्माण की ओर ध्यान नही देती वह कभी प्रगति नही कर सकती। यह कत्तव्य आय समाज ही है जो इस ओर ध्यान नही देता यदि हम यह तथा इस दिशा म कुछ कर नही चाहते या कर नही सकते तो इसका अथ यह नही कि म भ र न र जब हम इस बात पर गव करते है और हमारे इतिहास इस बात का साक्षी है कि देश की आजादी क लिए आय समाज ने सबसे बडा योगदान दिया था तो आय समाज और आय समाजी क्यो न इसका प्रचार करे और क्यो न अपने देश वासियो को बताए कि आय समाज इस दिशा म क्या कर रहा है। इसलिए मे सब आय समाजो के अधिकारियो से यह प्राथना है कि वे इस वष 14 अगस्त को अपने साप्ताहिक सत्सग म स्वाधीनता सग्राम मे आय समाज के योगदान के विषय मे लोगो को बताए सस्थाए वही जीवित और सक्रिय रहता है जो अपने इतिहास को नही भूलता और उसमे प्र रणा लेकर आगे बढती है। हम 15 अगस्त के स्वाधीनता से बहुत कुछ सीख सकते है। आय समाज ने उस दिन के लिए बहुत कुछ किया था। कोई कारण नही कि हम अपने प्रत्येक देश वासी को न बताए कि आय समाज ने देश की स्वतन्त्रता के लिए क्या कुछ किया था।

—वीरेन्द्र

# सारा आर्य जगत् पंजाब के हिन्दुओं के साथ

24 7 83 को सारे भारत वष म पजाब सुरक्षा दिवस मनाया गया। गत सप्ताह भी हमने कुछ आय समाजो और आय प्रतिनिधियो सभाओ द्वारा भेजे रोष पूण प्रस्ताव तथा समाचारो को प्रकाशित किया था। इस अक मे भी कुछ नाम दे रहे हैं।

1 आय समाज मन्दिर सब्जी मण्डी देहरादून मे हुई विशाल सभा मे सरकार से माग की गई उपासना गहो को अपराधियो के अड्डे मत बनने दो।

2 आय प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश शिमला।

3 मध्य भारतीय आय प्रतिनिधि सभा तात्या टोपे नगर भोपाल।

4 आय समाज बुढलाडा (पजाब)

5 वेद प्रचार मण्डल स्वामी श्रद्धा नन्द नगर नाना।

6 वैदिक कन्या महा विद्यालय मनीमाजरा (चण्डीगढ)।

7 आय समाज लोवर बाजार शिमला।

8 आय समाज कोटला मुबारकपुर नई दिल्ली।

9 आय समाज गाधी नगर दिल्ली।

10 आय समाज पखा रोड सी ब्लाक जनकपुरी दिल्ली।

11 आय समाज हरिनगर घण्टाघर नई दिल्ली।

12 आय समाज शाहपुरा (भील वाडा राजस्थान)।

13 आयसमाज फूलपुर आजमगढ (उ प्र)।

14 आय केन्द्रीय सभा फरीदाबाद।

15 आय समाज कृष्ण नगर भिवानी (हरियाणा)।

16 आय समाज सैक्टर 22 चण्डीगढ।

इन सभी आय समाजो व सस्थाओ ने पजाब मे हिन्दुओ पर हाए जा रहे अत्याचार लूट पाट व हत्याओ को रोकने के लिए भारत सरकार को अपनी आय समाजो मे पारित कर प्रस्ताव भेजे हैं।

## "आर्य समाजो में होने वाले यज्ञ"

# नियमता अनियमता विचार

ले—म म वेदाचार्य वि श्र व्यास एम ए बरेली

❋

आर समाजो के वार्षिकोत्सवो आय महा सम्मेलनो जयन्ती शताब्दियो पर तथा स्वतन्त्र रूप से बड़े बड़े यज्ञ हुआ करते है उनमे कुछ बातो पर विशेष ध्यान देना चाहिए—

1 समाचार पत्रो मे प्रकाशित होता है कि अमुक स्थान पर यज्ञ हुआ उसके ब्रह्मा अमुक थे। यह मर्यादा विरुद्ध है। कोई अकेला यज्ञ कराने वाला ब्रह्मा नही कहा जा सकता है। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी की परिभाषा इस प्रकार है—

(क) यदि एक ही व्यक्ति यज्ञ कराने वाला है तो उस का नाम परोहित हो सकता है ब्रह्मा नही।

(ख) यदि यज्ञ कराने वाले दो व्यक्ति हैं तो उनके नाम ऋत्विक और परोहित होगे ब्रह्मा फिर भी नही।

(ग) यदि तीन व्यक्ति यज्ञ कराने वाले है तो उनके नाम ऋत्विक पुरोहित और अध्यक्ष होगे ब्रह्मा नही।

(घ) हा यदि चार विद्वान यज्ञ कराने वाले हो तब उनके नाम 1 होता 2 अध्वयु 3 उदगाता और ब्रह्मा होग अत जिस यज्ञ म होता अध्वयु उदगाता नही अकेला व्यक्ति यज्ञ करा रहा है और अपने आप को यज्ञ का ब्रह्मा कहता है पर सब मयादातिक्रमण है। एक व्यक्ति स्कम खोलकर पढाने अकेला बैठ जावे और अपने आपको हैडमास्टर लिखे उसका अज्ञान ही है। इसके लिए श्रद्धाल आयजन सस्कार विधि सामान्य प्रकरण ऋत्विग वरण देख। अत कभी अकेले पण्डितजी को ब्रह्मा मत कहना पहले यह घोषित करो कि तुम्हारे यज्ञ मे होता कौन है, अध्वयु कौन है उदगाता कौन है तब किसी को ब्रह्मा कहो

2 यज्ञ कराने का अधिकार केवल गृहस्थ पुरोहित को है। ब्रह्मचारी वानप्रस्थ सन्यासी यज्ञ मे पुरोहित नही हो सकते। देखो ऋषिवर का लेख—पुरोहित धर्मात्मा शास्त्रोक्तविधि को पूण रीति से जानने हारा विद्वान सदधर्मी कुलीन निर्व्यसनी सुशील वेदप्रिय पूजनीय सर्वोपकारी गृहस्थ की पुरोहित सज्ञा है। (सस्कार विधि जातकम सस्कार)।

(ख) ऐसा ही समस्त शास्त्रो मे विधान है कि यज्ञ का कराने वाला विद्वान गृहस्थ होना चाहिए।

(ग) ऐसा ही सावदेशिक सभा का सवसम्मत निणय है।

(घ) तपोमूर्ति स्वामी आत्मानन्द सरस्वती जी महाराज यज्ञो का आयोजन करते थे। अथ व्यवस्था प्रब ध व्यवस्था सब करने पर भी वे कभी स्वय ब्रह्मा आदि नही बनते थे। विद्वानो को बुलाते थे। प रामावतार शर्मा चतुवद तीथ प उदयवीर शास्त्री साख्याचाय आदि को बुला कर पुरोहित बनाते थे।

हम लोगो मे से किसी को होता किसी को अध्वयु किसी को उदगाता किसी को ब्रह्मा बनाते थ व केवल प्रवचन करते थे।

3 सावदशिक सभा की स्वण जयन्ती रामलीला मैदान दिल्ली मे जो हुई वहा प्रसिद्ध विशाल यज्ञ हुआ था उस पर दस हजार रपया व्यय हुआ। वैसा यज्ञ करपात्री और शकराचाय भी दिल्ली मे नही कर सके उसका मैं सचालक था हमने सब गहस्थ पुरोहितो ही का वरण किया था। उस समय आय समाज के सब ही विद्वान जीवित थे। प ब्रह्मदत्त जिज्ञासु भी उसमे आए उन को उच्च आसन पर सत्कार पूवक बठाया पर वे पुरोहित नही बने। क्योकि व ब्रह्मचारी थे गहस्थ नही। अत किसी सन्यासी आदि को विज्ञापन नही करना चाहिए। कि मैं वहा के यज्ञ का ब्रह्मा हू इत्यादि। यदि कही ऐसा होता हुआ आयजन देख कि कोई सन्यासी यज्ञ करा रहा है और अपने आप को ब्रह्मा कहता है तो उसको आदश या उदाहरण न समझ।

3 महर्षि लिखते हैं कि पुरोहित शास्त्रोक्त विधि को पूण रीति से जानने हारा होना चाहिए। सब कृत्यो मे यज्ञ सब से कठिन है। बहुत अध्ययन करना पडता है। साधारण पढा व्यक्ति यज्ञ की विधियो को समझता नही है और कराने बैठ जाता है। यदि उसको कोई समझावे तो वे लडने को तैयार हो जावेगा। अत जब कभी मैं कही आय समाज के वार्षिकोत्सव सम्मेलन शताब्दी आदि पर जाता हू। बस केवल व्याख्यान देकर चला आता हू। यज्ञ मे जो हो सो हो। (क्रमश)

# आर्य विद्या परिषद् पंजाब द्वारा आयोजित धर्माधिकारी परीक्षा परिणाम

इस वष आय विद्या परिषद पजाब जालन्धर द्वारा आयोजित धर्माधिकारी परीक्षा मे उत्तीण होने वाले छात्र एव छात्राओ के रोल न नीचे दिए जा रहे है। समस्त परीक्षा मे प्रथम द्वितीय एव ततीय आने वाले परीक्षार्थियो का विवरण निम्न प्रकार है।

| स्थान | रोल न | नाम व स्कूल | प्राप्ताक |
|---|---|---|---|
| प्रथम | 4096 | सुरेन्द्रपाल सुपुत्र श्री रामसुभाया एम डी ए एस हा सै स्कूल मोगा | 114 |
| द्वितीय | 5101 | कमलकिशोर सुपुत्र श्री सतपाल आय हा सै स्कूल लुधियाना | 111 |
| तृतीय | 4270 | कुमारी मनजीत सुपुत्री श्री करनार्गसिंह शिवदेवी गर्ल्ज हाई स्कूल जालन्धर | 109 |

समस्त परीक्षा मे प्रथम द्वितीय एव तृतीय आने वाले परीक्षार्थियों को यथापूव पारितोषिक दिया जाएगा।

रामचन्द्र जावेद
सभा महा मन्त्री

अश्विनी कुमार शर्मा
रजिस्ट्रार

## उत्तीर्ण परीक्षार्थी

4001 से 4033 तक (परिणाम बाद मे) 4034 से 37 तक 39 से 45 तक 47 से 50 तक 53 से 56 तक 58 से 63 तक 65 से 81 तक 83 85 87 से 89 तक 91 से 99 तक 4101 3 से 7 तक, 10 से 12 तक 14 15 17 से 20 तक 24, 26 27 29 से 32 तक 35 से 43 तक, 45 से 48 तक 50 से 55 तक 57 से 77 तक 79, 81 से 89 तक, 91, 92 94 से 99 तक, 4201 से 7 तक 10 से 13 तक, 15 से 36 तक 37 से 56 तक (परिणाम बाद मे) 57 से 61 तक 63 स 72 तक 74 से 98 तक 4302 से 12 तक 14 से 17 तक, 22 से 26 तक 28 से 31 तक 35 36 38 40 से 42 तक 44 47 से 53 तक, 55 57 62, 63 66 से 71 तक, 75 76 78 81, 84, 86 88 से 94 तक, 96, 98 से 4403 तक 5 7 9 से 11 तक 13, 15, 16 19, 21 से 23 तक, 27 29 30 32 34, 35 39 से 43 तक, 47 4448 से 4572 तक (परिणाम बाद मे) 4573 से 4633 तक, 35 से 71 तक, 73 से 99 तक, 4701 से 13 तक 15 से 30 तक, 32 से 34 तक 36 38 से 43 तक 45 से 52 तक 54 से 59 तक, 63, 65 से 4818 तक 4820 से 22 तक, 24 26 से 34 तक 36 से 61 तक 63 से 67 तक, 69 से 72 तक, 74 से 82 तक 84 से 92 तक 97 से 4303 तक 4906 से 8 तक, 10 12 15 21, 4937 से 49 तक, 52 54 से 58 तक 60 से 68 तक, 70 से 72 तक, 76 से 78 तक 80 81 85 से 5004 तक 5006 से 24 तक 26 29, 30, 32 से 41 तक 43 से 49 तक, 51 से 54 तक 56 से 58 तक, 60 61 64 से 67 तक 69 से 71 तक 73 से 92 तक 94 से 96 तक, 98 से 5122 तक, 5124 26 30 31 33 से 38 तक, 40 से 52 तक 56 से 86 तक 88 से 5213 तक, 5215 से 25 तक 28 से 30 तक 32 से 34 तक, 37, 38 40 से 49 तक, 51 से 54 तक, 56, 60, 63, 64 66 69 72 से 74 तक 81 82, 84 88, 90 से 99 तक।

# सुन्दरता के शत्रु मुंहासे और उनका उपचार

ले—वैद्य महता जयनन्दन उषापति जालन्धर

त्वचा सुन्दरता का दर्पण है। रक्षा और पूरी साज सम्भाल रखना हर महिला का पहला कर्तव्य है। त्वचा की सुन्दरता के चार स्तम्भ हैं—स्वच्छता कोमलता उजली और निखार। मुंहासे इन सभी को धराशायी कर के रख देते हैं। ये रूप की बगिया का एक एक फूल नोच डालते हैं। चाव से सुन्दर चेहरे पर इन का घिनौना हमला सुन्दरता का सब से बड़ा शत्रु सिद्ध होता है और फिर सुन्दरता अपने रूप रंग को उम्र भर के लिए तरसती रह जाती है।

आयुर्वेद में मुंहासों को युवक पीडिकाए कहा जाता है और एलोपैथी में एक्नी वलजेरिस। यह युवावस्था में होने वाला शोथयुक्त चर्म रोग है। इसमें नवयुवतियों के मुंह पर कील (फुंसियां) निकल आते हैं जो आगे चल कर सख्त हो जाते है। उनमें पीव पड़ जाती है। कभी 2 पीव निकलने के बाद वहां पर व्रण या धब्बे रह जाते हैं। मुंहासे से ग्रस्त नवयुवतियों का चेहरा प्राय: कड़ा भद्दा और कुरूप हो जाता है। यह रोग एक घोर चिन्ता का विषय बन जाता है। मुंहासों के अनेक प्रकार है।

## रोग के कारण

मुंहासे 13 से 30 वर्ष की आयु के बीच होते हैं। यह वसाग्रन्थियों में विकास उत्पन्न होने के कारण होते हैं। युवतियों में डिम्ब के अन्तःस्राव के विकास से यह रोग होता है। पेय पदार्थों का अधिक सेवन भी इसका कारण हो सकता है। इसके उत्पत्ति के कारणों में त्वचा में तैलीय अंग की अधिकता कोष्ठ बद्धता (कब्ज) और मासिक स्राव की अनियमितता प्रधान है। कई बार त्वचा पर गर्द जमा होकर रोमकूप बन्द हो जाते है और उनमें मैल के कारण काले कांटे उभर आते हैं। मानसिक क्षोभ और चिन्ता के कारण भी कई बार यह रोग हो जाता है।

## सामान्य चिकित्सा

मुंहासों की शिकार नवयुवती को अपने आहार विहार की समुचित व्यवस्था करनी चाहिए। उसके लिए मास मसाले मिर्च खटा चाकलेट आदि पदार्थ निषिद्ध हैं। दूध दही सब्जियों फलों आदि का अधिक सेवन करना चाहिए। इस रोग में रक्त का शुद्धि करण भी बहुत जरूरी है। यह शुद्ध आहार विहार से ही सम्भव हो सकता है। आंतों को प्रतिदिन साफ रखें और हमेशा आवश्यकतानुसार मृदु रेचक औषधियां लेनी चाहिए। इसके अतिरिक्त शुद्ध वायु में भ्रमण (प्रातः काल) धूप का उचित सेवन और हल्का व्यायाम बहुत ही उपयोगी है। मुंहासों को दबाना नहीं चाहिए। इससे चिन्ह बन सकते हैं।

## आयुर्वेद उपचार

आयुर्वेद में मुख्यतः मुंहासों के उपचार के लिए पीडिकाशमन वटी का प्रयोग किया जाता है। प्रातः सायं एक एक गोली ताजे जल के साथ खाने से एक मास के अन्दर ही मुंहासे दूर हो जाते हैं। जिन नवयुवतियों की त्वचा में ताजगी और कोमलता नष्ट हो गई हो वह भी पीडिका शमन वटी का प्रयोग करें इस से उनका चेहरा निखर आएगा और चेहरे के किसी प्रकार के भी धब्बे दूर हो जाए गे। इसके अतिरिक्त मुंहासों के निवारण के लिए अन्य उपचार इस प्रकार है—

(1) अमलतास के वृक्ष की छाल अनार की छाल आम्बा हल्दी और नागरमोथा—इन सब को सिरके में पीस कर मुंहासों पर लगाएं। ऐसा दिन में दो बार करें। एक घण्टे तक यह लेपन लगा रहना चाहिए। इसके बाद कोसे जल से धो डालें।

(2) लोध धनिया वच का चूर्ण बनाकर रख लें। थोड़ा सा पानी में घोलकर मुंहासों पर लगाएं।

(3) गोरोचन काली मिर्च बराबर की मात्रा से लेकर दूध के साथ पीसकर लेप करें।

(4) अर्जुन वृक्ष की छाल सिरके में बारीक पीसकर लेप करें।

(5) सरसों भूनी सन्तरे का सूखा छिल्का चिरौंजी को सम भाग में पीस कर इसको उबटन के रूप में चेहरे पर लगाएं।

मुंहासों के निवारण के लिए लोह भस्म और लोहासव का प्रयोग भी किया जा सकता है। इसकी मात्रा और अनुपात विधि के लिए चिकित्सक से परामर्श अवश्य लेना चाहिए।

—

## बाल—जगत्

# बालकों के अच्छे काम

प्रेषक—सुरेन्द्र मोहन सुनील हसनपुर दिल्ली—92

हमारे देश में कुछ वर्ष पहले स्वामी विवेकानन्द नाम के एक बड़े महात्मा हो गए हैं। उनके सद्गुण उनका ज्ञान और उनकी परोपकार वृत्ति देख कर योरुप तथा अमेरिका में भी अनेकों स्त्री पुरुष उनके शिष्य बनकर हिन्दू धर्म का पालन करने लगे थे। उन में से एक बहिन ने तो अपना नाम भी हिन्दू निवेदिता बहिन रख लिया था। बंगाल में इस बहिन ने गरीबों की बड़ी सेवा की है वह गरीबों के मुहल्ला में चली जाती और हाथ से बजाने वाला बड़ा बाजा बजाने लगती। बाजा सुनने के लिए बहुत लड़के इकट्ठे हो जाते तब वह बहिन उनसे कहती—

मेरे प्यारे लड़को। यहां आओ मैं तुम को खाने को दूंगी और मजे की बात सुनाऊंगी जो लड़के अच्छी अच्छी भरी बात सुनेंगे उन सबको मैं एक एक सेव दूंगी और जो इन बातों को याद रखकर जो फिर मुझको सुनाएगा उसे यह सुनहला उपदेश नाम की पोथी इनाम दूंगी। इस कारण बहुत से लड़के उस भली बहिन की बात सुनने के लिए वहां खड़े रहते। उनके सामने वह बहिन कहती—

हम भले बनें तो हमारे मां—बाप प्रसन्न होते हैं। हम भले बनें तो हमारे शिक्षक हम पर कृपा रखते हैं। हम भले बनें तो हम पर हमारे मित्र बहुत प्रेम रखते हैं। हम भले बनें तो हमारी इज्जत बढ़ती है। हम भले बनें तो हमें बहुत सुख मिलता है। इस लिए हमें भला बनना चाहिए। फिर भला बनने के लिए हमको भले विचार रखने और अच्छा ज्ञान करने के साथ साथ अच्छे काम भी करने चाहिए।

तुम अभी छोटे हो तो तुम्हें इस समय छोटे छोटे से ही भलाई के काम करने चाहिए। क्योंकि यदि तुम्हें अभी से छोटा छोटा अच्छा काम करना आ जाएगा तो जब तुम बड़े होओगे तब भलाई के बड़े बड़े काम भी कर सकोगे।

किसी लड़के की पेन्सिल खो जाए और तुम्हारे पास अधिक हो अथवा उस समय पेन्सिल की तुम्हें जरूरत न हो तो तुम्हें चाहिए कि तुम अपनी पेन्सिल उसे लिखने के लिए दे दो।

किसी लड़के की स्याही दवात ढुल गयी हो अथवा किसी कारणवश का लड़का अपनी दवात विद्यालय में न ला सका हो तो तुम्हें चाहिए कि अपनी दवात से उसे लिखने दो। किसी कारण से तुम्हारे कक्षा का कोई लड़का कभी विद्यालय न जा सका हो और वह तुम से पूछे कि कौन सा पाठ चल रहा है तो इस बारे में तुम्हें जो कुछ मालूम हो उसे बता देना चाहिए। तुम्हारे पास पीने का पानी हो और किसी लड़के को प्यास लगी हो तो तुम उसे पानी दे देना चाहिए। कोई लड़का भूल गया हो और तुम उसका घर या रास्ता जानते हो तो उसे घर तक पहुंचा देने की भलाई करनी चाहिए। तुम्हारे पड़ोस में कोई अपंग लंगड़ा लूला बीमार या दुखी आदमी हो और वह तुम से बन सकने लायक कोई सहज काम करने को कहे तुम उसे कर देना चाहिए। किसी गरीब लड़के के पास किताब न हो और वह किताब तुम्हारे पास पिछले दर्जे में पढ़ लेने पर बेकार पड़ी हो तो उसे उसको दे देना चाहिए।

(बालकों की बातों से)

—

# आ.स.श्रद्धानन्द बाजार अमृतसर मे वेद प्रचार

आर्य समाज श्रद्धानन्द बाजार अमृतसर की ओर से 24 से 31 जुलाई तक वेद प्रचार का विशेष आयोजन किया गया इस अवसर पर भिन्न 2 स्कूलों तथा आर्य समाज में वेद प्रचार होता रहा। सभा की ओर से श्री पण्डित निरञ्जन देव जी कार्य करते रहे। 31 जुलाई को ऋषिलंगर का विशेष प्रबन्ध किया गया तथा प्रसाद रूप में लोगों को आर्य समाज का साहित्य बिना मूल्य भेंट किया गया लोगों पर इस आयोजन का बहुत अच्छा प्रभाव रहा। सभा को 501 रु. वेद प्रचारार्थ दिया गया। समाज के अधिकारी बधाई के पात्र हैं।

## स्वास्थ्य सुधा–

# आँखों की चिकित्सा तथा मोटापा

ले —श्री नारायण दत्त जी योगी जालन्धर

विटामिन ए की खान है पालक सलजम की पत्ती सकरकंद दूध मक्खन पातगोभी मटर

विटामिन बी चोकर चोकर समेत आटा सोयाबीन दूध मटर नारंगी केला समेत चावल पालक पात गोभी गाजर अननास।

विटामिन सी हरी मिर्च नींबू का रस मटर का रस सरसों का साग पालक करेला पपीता गाठ गोभी टमाटर आम आवला।

विटामिन डी ताजा दूध प्रातः कालिक धूप

### आंख का दर्द

सूर्योदय से पहले आंखो में बड का दूध डालने से तुरन्त मिट जाएगा।

### आखो के अनेक रोगो पर

यदि आख मे दर्द खुजली जाना लाला हो मोतिया बिन्द उतरना आरम्भ हो गया हो तो प्रतिदिन गाय का ताजा दूध 2 3 बूंद चालीस दिन तक आख मे डाले। मोतिया बिन्द बिना आपरेशन के कट जाता है।

### आख दुखना

फिटकरी को बारीक पीस कर गुलाब जल मे मिला ले। इस दवा को 2 3 बूंद दिन मे कई बार आखो मे डालने से आराम होता है।

### मोटापा

मोटापे का कारण है आलस्यमय जीवन परिश्रम वाले कार्यों को न करना

मोटापा भगाने के लिए दो प्रकार के प्रयत्न करे। पहला भोजन पर संयम और दूसरा उचित कसरत दुबला होने के लिए टमाटर लौकी खीरे का रस बहुत लाभदायक है। लौकी और खीरे का रस मे नींबू का रस और एक तोला शहद मिला कर शर्बत बनता है। अधिक भूख लगे तो खीरा ककडी टमाटर आदि भी खाया जा सकता है। दुबला होने के लिए कसरत और भोजन पर नियन्त्रण काफी है कटि स्नान प्रातः सायं किया जाए तो अच्छा है

1 प्रातः काल चावलों का गर्म गर्म माड नमक मिला कर पिया करे।

2 प्रतिदिन पानी मे शहद मिलाकर पिया करे

3 हरी सब्जिया खाव। फल खाव चोकर वाले आटे की रोटी खाव। भोजन के साथ जल न पीवे। परन्तु एक घण्टे के बाद थोडा 2 जल पीवे।

4 25 ग्राम नींबू के रस मे 1 5 ग्राम पानी मिला कर और मधु मिला कर शर्बत बना कर पिला दे।

5 त्रिफला 10 ग्राम 20 ग्राम शहद मे मिला कर चटाए। 20 ग्राम शहद का शर्बत बना कर पिला दे। 40 दिन पिलाए मोटापा को कम करता है।

6 मूली के बीजो को बारीक पीस कर प्रतिदिन 6 ग्राम चूर्ण 20 ग्राम शहद मे मिला कर चटाए 20 ग्राम शहद का शर्बत बना कर पिला दे। 40 दिन पिलाए मोटापा कम करता है।

7 नींबू का रस 25 ग्राम लेकर 250 ग्राम पानी मे मिलाए फिर इस मे 20 ग्राम शहद मिला कर पिला दे। शरीर मे चाहे कसी भी चर्बी बढ गई हो 2—3 मास सेवन करने से चर्बी घट जाती है। और शरीर सुडौल बन जाता है।

—

# जिला आर्य सभा गुरदासपुर के निर्णय

रविवार 31 7 83 को जिला आर्य सभा गुरदासपुर की एक बैठक दयानन्द मठ दीनानगर मे हुई। जिसमे निम्नलिखित निर्णय लिए गए।

1 जिला के लिए एक स्वतन्त्र उपदेशक की नियुक्ति की जावेगी। जो सारे जिले की समाजो मे प्रचार करेगा।

2 आर्य समाज से सम्बन्धित सभी स्कूलो व कालेजो से आग्रह किया गया है कि वे साप्ताहिक हवन यज्ञ का आयोजन कर तथा उसके लिए सहायता स्थानीय आर्य समाज स प्राप्त करें।

3 सभी स्कूलो मे यहा धर्म शिक्षा चल रही है। उसे सुचारु रूप से चलाने का आग्रह किया गया। तथा संस्कृत को सभी शिक्षा संस्थाओ मे लागू करने की प्रार्थना की गई और यह संकल्प किया गया कि इस वर्ष तक जिले की सभी आर्य संस्थाओ मे संस्कृत विषय लागू करवा दिया जाएगा।

गाय की चर्बी स्कैंडल बटाला के बारे मे सभी सदस्यो ने रोष प्रकट किया तथा जिला अधिकारी से जोरदार शब्दो मे माग की कि अपराधियो को कडी से कडी सजा दी जाए।

—प्रो स्वतन्त्र कुमार महामन्त्री

# शराब एक भयंकर विष है

ले —श्री ब्रह्म नारायण आर्य दयानन्द मठ दीनानगर

शराब एक प्रकार का विष है। जिस को अलकोहल कहते हैं। यह मनुष्य के स्वास्थ्य और सदाचार को नष्ट करती है किसी ने कहा भी है कि मृत देह को शराब मे रखने से उसकी रक्षा होती है और शराब को शरीर मे रख देने से शरीर का नाश होता है

अतः शराब स्वास्थ्य का नाश करती है जिससे मनुष्य की पाचन शक्ति खराब हो जाती है और नाना प्रकार के रोगो को जन्म देती है। आमाशय से भोजन का रस बहुत सी रगो के द्वारा हृदय मे पहुंचता है। हृदय उस भोजन के रस को पचा कर पित्त उत्पन्न करता और खून बनाता है। परन्तु शराब पीने से उसके महीन पुर्जे थोड़े समय मे निकम्मे हो जाते हैं हृदय सिकुड़कर बहुत छोटा हो जाता है। वह किसी काम का नही रहता और जलोदर क्षय आदि रोगो मे फंसकर तथा नाना दुःखो को सहन करता है और अन्त मे अपने जीवन से हाथ धो बैठता है अतः मृत्यु को प्राप्त हो जाता है।

अतः डाक्टरो का कहना है कि शराब स्वास्थ्य को नष्ट करने वाली मादक वस्तु है।

डा म्योरे का कथन है कि शराब पीने वाले व्यक्तियो की शारीरिक क्रियाएं शिथिल पड़ जाती हैं और शराब की गर्मी से दिमाग खराब हो जाता है और वीर्य पतला होकर निकल जाता है वह व्यक्ति निर्बल हो जाता है और वह लकडी की तरह सूख जाता है। गा इसेटी लिखते है कि शराबी लोग शराब न पीने वाले लोगो से अधिक संख्या मे मृत्यु को प्राप्त होते है। अतः कहने का तात्पर्य यह है कि उनकी आयु शराब के कारण नष्ट हो जाती है और शीघ्र दुःखो द्वारा मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं।

डाक्टर ने लिखा है कि जो पदार्थ मनुष्य की बुद्धि का नाश करते हैं उनको मदकारी कहते हैं जैसे शराब अफीम गांजा चरस इत्यादि इन सब वस्तुओ को मनुष्य को छोड देना चाहिए। अतः कहने का तात्पर्य यह है कि मनुष्यो को मादक वस्तु कभी भी ग्रहण नहीं करनी चाहिए। क्योंकि यह सब मादक वस्तुए दुःखो का भण्डार है। अतः शराब तो सभी दुःखो तथा रोगो की जननी है। यदि मानव को अपने जीवन का सच्चा सुख तथा आनन्द पाना है तो वह शराब तथा अन्य नशीली वस्तुओ का त्यागकर दे। अतः शराब मनुष्यो की प्रबल शत्रु है। इससे छुटकारा पाकर ही सुखो का अनुभव करता है। अन्यथा यह वस्तु मनुष्यो के प्राण लेकर जाती है। कहने का तात्पर्य यह है कि मनुष्यो को दुष्ट व्यसनो मे नही फसना चाहिए। अतः शराब पीने वालो से मेरा अनुरोध है कि वह शराब जैसी मादक वस्तु का व्यसन छोड दे और अपने आगामी जीवन को सुखमय व्यतीत करें।

—

# मोती सीप के

ले —श्री उपकार वर्मा जी भिवानी

1 खुदा कहता है आज शैतान कहता है कल। जर्मन कहावत

2 दानशीलता देकर दयावान बनती है। तृष्णा संग्रह करके गरीब बनती है। „

3 विवाह स्वर्ग और नरक है।

4 सोचो चाहे कुछ कहो वही जो तुम्हें कहना है। फारसी कहावत

5 सूर्य यद्यपि ठहरा रहता है दिन नही ठहरता।

6 जो एक ज़रा इशारा लेने से नही समझ सकता वह लाख बार कुछ समझाने से भी नही समझेगा। अरबी कहावत

7 पुस्तक जेब मे रखा हुआ बगीचा है। अफ्रीकी कहावत

8 विवाह एक घिरा हुआ किला है। बाहर वाले उसके अन्दर आना चाहते हैं, और अन्दर वाले बाहर आना चाहते हैं। अरबी कहावत

9 जब दोनो झगडते हैं तो वे गलती पर होते हैं। डच कहावत

10, औरत बड़ी बला है लेकिन देखना कोई इस बला से मुकाबिल होने से बचने न पाये। -इरानी कहावत

# आर्य समाजों के वार्षिक निर्वाचन

## आर्य समाज जालन्धर छावनी का वार्षिक चुनाव

दिनांक 24 7-83 ई को श्री मदन लाल समरवाल जी की अध्यक्षता मे हुआ । इसमे निम्नलिखित अधिकारी सब सम्मति से निर्वाचित किए ।

प्रधान—श्री मधु सूदन लाल सेठी जी, वरिष्ठ उप प्रधान—श्री कृष्ण लाल गुप्ता जी उप प्रधान—श्री चमन प्रकाश नन्दा जी मन्त्री—श्री काशी राम अग्रवाल जी उपमन्त्री—श्री अशोक कुमार आबेद जी श्री कश्मीरा सिंह जी, कोषाध्यक्ष—श्री रामनाथ मलिक जी पुस्तकाध्यक्ष—श्री राम चन्द्र जी

लेखा निरीक्षक—श्री बलदेव राज शर्मा जी ।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए श्री इन्द्रसेन मलिक एवं श्री चमन प्रकाश नन्दा जी प्रतिनिधि निर्वाचित किए गए ।

अन्तरंग सभा बनाने का अधिकार अधिकारियो को दिया गया । उन्होंने सब सम्मति से निम्नलिखित सदस्य अन्तरंग सभा मे लिए ।

श्री मदन लाल समरवाल जी श्री बलदेव राज शर्मा जी श्री हरिराम जी श्री ज्ञान चन्द महाजन जी, श्री जनक राज महाजन जी ।

मन्त्री

—काशी राम अग्रवाल

—

## आर्य समाज रानी का तालाब फिरोजपुर का वार्षिक चुनाव

आर्यसमाज रानी का तालाब फिरोजपुर शहर का वार्षिक चुनाव सब सम्मति से 24 7 83 रविवार प्रात 10 बजे सम्पन्न हुआ है ।

प्रधान—श्री जगदीश चन्द्र आर्य मन्त्री—श्री सुशील महता उप प्रधान—श्री ओ३म प्रकाश भवन श्री अनन्त राम सचदेवा उप मन्त्री—श्री मोहन लाल मलहोत्रा श्री वेद प्रकाश बजाज, कोषाध्यक्ष—श्री जगदीश राज मलहोत्रा, पुस्तकालयाध्यक्ष—श्री मनोहर लाल प्रबन्ध लेखा निरीक्षक—श्री प्र म महता,

—सुशील महता
मन्त्री

—

## आर्यसमाज शहीद भगतसिंहनगर जालन्धर का वार्षिक चुनाव

आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर का चुनाव 31 7-83 को निम्न प्रकार हुआ ।

सर्व सम्मति से श्री मुलखराज जी आर्य को प्रधान चुन लिया गया और अन्य अधिकारी चुनने का उनको अधिकार दे दिया गया उन्होंने निम्न अधिकारी चुने ।

प्रधान—श्री मुलखराज आर्य उप प्रधान—डा जे के लखन पाल, मन्त्री श्री रणजीतकुमार आर्य, उपमन्त्री ओम प्रकाशजी, कोषाध्यक्ष श्री सुखदेवजी आर्य, पुस्तकाध्यक्ष—श्री नरेश जी शास्त्री सभा प्रतिनिधि—श्री मुलखराज आर्य ।

—

## आर्य समाज फाजिल्का का वार्षिक निर्वाचन

आर्य समाज फाजिल्का का वार्षिक चुनाव श्री जमना दास जी छाबड़ा की अध्यक्षता मे सर्व सम्मति से निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ—

प्रधान—श्री सरदारी लाल उप प्रधान—श्री बनवारी लाल अनेजा एड वोकेट और श्री लीला राम खरे । मन्त्री श्री मास्टर मूल चन्द वर्मा उपमन्त्री—श्री विनोद कुमार गुप्ता और श्री महेन्द्र लाल वर्मा कोषाध्यक्ष—श्री ओम प्रकाश आर्य पुस्तकाध्यक्ष—श्री मास्टर खामलाल आर्य निरीक्षक—श्री मुरारी लाल आर्य आडीटर—श्री बाब न्याकृष्ण जी चावला एडवोकेट प्रचार मन्त्री—श्रीमान गिरधारी लाल नागपाल ।

—

## आर्य समाज बंगा रोड फगवाड़ा का वार्षिक निर्वाचन

आर्य समाज बंगा रोड फगवाड़ा का वार्षिक निर्वाचन 24 जुलाई 83 को सब सम्मति से सम्पन्न हुआ । निम्न लिखित अधिकारी निर्वाचित हुए—

प्रधान—महाशय बनारसीदास मन्त्री—श्री देशबन्धु चोपड़ा एम ए कोषाध्यक्ष—श्री देशराज स्त्री आर्य समाज बंगा रोड—प्रधाना—श्रीमती विमला ओबराय एम ए फगवाड़ा मन्त्राणी—श्रीमती चांद भल्ला आर्य युवक समाज बंगा रोड फगवाड़ा—प्रधान श्री अरुण कुमार, मन्त्री—श्री सुरेन्द्र कुमार ।

—

## जिला आर्य सभा पटियाला का वार्षिक चुनाव

दिनांक 31 7 83 को जिला आर्य सभा पटियाला का वार्षिक चुनाव हुआ । इसमें निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गए —

प्रधान—श्री पंजाब रत्न जी, उप प्रधान—बहन कौशल्या जी श्री सत्यपाल लोचन, मन्त्री—श्री रत्न लाल सिहल, उप मन्त्री—श्री वेद प्रकाश जी, कोषाध्यक्ष—श्री बारे लाल नारंग अन्तरंग सभा सदस्य—श्री जगपती चोपड़ा, रमेश कुमार मास्टर मोहन लाल अशोक कुमार बलभद्र मल्होत्रा जसवन्त राय जी श्री रमेश चन्द्र जी ।

—रत्न लाल सिहल
मन्त्री

—

## आर्यसमाज संगरूर का वार्षिक चुनाव

आर्य समाज का संगरूर का वार्षिक चुनाव निम्न प्रकार हुआ

संरक्षक श्री निरञ्जनदास गुप्त प्रधान-श्री सुरेश कुमार जी उपप्रधान श्री भीमसेन जी श्री महाशय मोतीराम जी मन्त्री श्री शिवराम महाजन उप मन्त्री श्री राजेन्द्र आर्य कोषाध्यक्ष और पुस्तकाध्यक्ष मनजर विद्यालय श्री सुरेन्द्रपाल गुप्त उपमन्त्री मेहरचन्द जी ।

—

## आर्यसमाज ओहरी चौक बटाला का वार्षिक चुनाव

आर्य समाज ओहरी चौक बटाला का वार्षिक चुनाव 26 6 83 को सब सम्मति से निम्न प्रकार हुआ—

प्रधान—श्री विजय कुमार अग्रवाल उपप्रधान—श्री हरबसलाल सरीन श्री चन्द्र नगेश बागी मन्त्री—श्री सतीशचन्द्र महता उपमन्त्री—श्री करमबीर मरवाह श्री जसवन्तराय मरवाह कोषाध्यक्ष—श्री सन्तराम बग्गी प्रचारमन्त्री एव अडीटर—श्री ब्रह्मदत्त जी गौड़ा

—

## आर्य समाज तपा का चुनाव

आर्य समाज तपा का वार्षिक चुनाव श्री हरबसलाल गोयल की अध्यक्षता मे 27 7 83 को सम्पन्न हुआ । जिसके निम्नलिखित पदाधिकारी सर्वसम्मति से से निर्वाचित हुए—

प्रधान—श्री ग राजकमार शर्मा मन्त्री—श्री चन्दराम आर्य एम ए, कोषाध्यक्ष—श्री कृष्णलाल सिंगला

—चन्दराम आर्य मन्त्री

—

## आर्य समाज भटिण्डा का वार्षिक चुनाव

आर्य समाज भटिण्डा का वार्षिक चुनाव निम्न प्रकार हुआ —

प्रधान श्री वजीरचन्द जी उप प्रधान श्री अमरनाथ जी मन्त्री श्री रोशनलाल जी उपमन्त्री श्री बलदेवराज जी कोषाध्यक्ष—श्री बाबराम जी लेखा निरीक्षक श्री ओमप्रकाश मगला आर्य प्रतिनिधि—श्री कृष्ण कुमार जी सदस्य—श्री ओमप्रकाश जी वानप्रस्थ श्रीमती कमला जी भाटिया ।

—मन्त्री

—

## आर्य समाज नवाशहर के चुनाव के समय लिया गया चित्र

चित्र मे बाय से दाय सबश्री लाला देवी दास श्री धर्म प्रकाश दत्त (मन्त्री) प देवेन्द्र कुमार वेदप्रकाश सरीन (प्रधान) प वेद प्रकाश शर्मा (पुस्तकाध्यक्ष) ला श्रीराम लडोईया धर्मवीर मारकण्डा अनिल शर्मा राजेन्द्र कुमार प्रेमी तथा सुरेन्द्र मोहन तेजपाल (कोषाध्यक्ष)

## दिल्ली आर्य प्र. नि. सभा का वार्षिक चुनाव

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वर्ष 1983 84 के अधिकारी वर्ग व अन्तरंग सदस्य निर्वाचित हुए—

प्रधान श्री सरदारीलाल वर्मा 15 हनुमान रोड नई दिल्ली, उपप्रधान—श्री विद्या प्रकाश सेठी सेठी बिल्डिंग विजय चौक कृष्णानगर दिल्ली 31 श्री तीर्थराम बाहुजा 30 पार्क एरिया, करोल बाग नई दिल्ली 5 श्री प्रो भारत मित्र ए 239-गुलमोहर पार्क नई दिल्ली 15 मन्त्री श्री प्राणनाथ वर्मा डी 5 कैलाश कालोनी नई दिल्ली 48 उपमन्त्री श्री धर्मपालआर्य ए एच 16शालीमार बाग दिल्ली 33 श्री हरिदेव आर्य सी पी 212 प्रीतमपुरा दिल्ली 34, कोषाध्यक्ष श्री बलवन्तराय खन्ना ए 67 सावन इस्टेट आर 2 नई दिल्ली 14, पुस्तकाध्यक्ष श्री वृन्दावन आर्य गली कोठी हाउस दरियागंज, नई दिल्ली 2

# इस्लामी देशो में गैर-मुस्लिमो के साथ अत्याचार

दिल्ली से प्रकाशित होने वाले टाइम्स आफ इण्डिया दैनिक मे य एन आई सूत्रो के हवाले से 11 जुलाई (पृष्ठ 1 कालम 4) के अंक मे प्रकाशित समाचार के अनुसार रमजान के महीने म सऊदी अरेबिया की सरकार ने उपवास के समय पानी पीने या खाना खाने वाले गैर मुस्लिमो को 40 40 कोड़े लगाने की सजा दी है एक ओर तो सऊदी अरेबिया ने विश्व के मुसलमानो से कुरान की परम्परा और एवं धमाचारों में अपील की है भारत मे भी नीग्रोक जकरिया जी बख्त अहमद आदि ने भी इस सम्बन्ध म समाचार पत्रो मे अनेक लेख लिखे हैं एक अन्य समाचार पत्र हिन्दुस्तान टाइम्स ने भी सम्पादकीय लेख म इन प्रश्नो पर मुस्लिम पसनन्द नेता म सशोधन पर जोर दिया है परन्तु अधिकांश यहा तक कि 95 प्रतिशत मुस्लिम आज भी अपने आपको हिन्दा (अरबी) और नक विरुद्ध नामो से जोड चले आ रहे है देश के राजनैतिक नेता व दल वोट सग्रह के लिए इन अन्धविश्वासो को दूर करने के लिए और उनको भारतीय विरासत की पहचान अपनाने के लिए सकोच करते हैं।

मैने इस सम्बन्ध मे एक प्रसिद्ध मुस्लिम साहित्यिक रडियन्स (दिल्ली) का ध्यान इस ओर खीचकर पूछा कि यदि मुस्लिम देशो मे गैर मुस्लिमो को धर्म व म कृति का जबरदस्ती पालन कराया जाता है तो यदि गैर मुस्लिम प्रधान देशो मे भी इस्लाम की परम्पराए जोकि सार्वभौमिक न होकर सऊदी अरबिया एव जगत से जुडी हुई उनको त्यागने के लिए विवश किया जाए तो व कैसा अनुभव करेगे ? और उनको वहा रहने का नैतिक हक नही बनता सुयोग्य सम्पादक ने हमारी आपत्ति को सौजन्य पूवक प्रकाशित किया परन्तु उनका अन्तिम स्पष्ट उत्तर था कि कुरान ह मुस्लिम के लिए अन्तिम सत्य है। (उसम अक्ल को दखल नही है) उल्लेखनीय है कि

उपवास के समय मे कुरान की आज्ञानुसार मंजन पेस्ट भी मुंह मे न करके केवल उगली से किया जा सकता है सभी धर्मों मे उपवास का महत्व होने पर भी किसी एक सम्प्रदाय को दूसरो पर उसे थोपने का अधिकार किसी तरह नही दिया जा सकता।

—ब्रह्मदत्त स्नातक

## हरियाणा आर्य वीर [illegible] सम्मेलन

फिर न मिलगे वे दीवाने फिर न मिलेगा इनका त्याग।
जल उठ जल उठ अरी भभक उठ प्रलय क्रान्ति की भीषण आग ॥

24 25 सितम्बर 1983 दिन शनिवार एव रविवार को प्रसिद्ध औद्योगिक एव सांस्कृतिक नगर भिवानी के नगरपालिका पार्क मे समारोह पूवक हो रहा है। इसमें देश के गणमान्य आर्य नेता श्रद्धेय सन्यासीगण एव आर्य वीर राष्ट्र की वर्तमान समस्याओ पर अपने विचार प्रस्तुत करेगे। इन सामयिक समस्याओ के समाधान मे नवयुवको का सहयोग अति आवश्यक है। हरियाणा के आर्य वीर पुन अंगड़ाई लेकर एक दृढ सकल्प के साथ आगे बढ़ हैं। अत देश के उज्ज्वल भविष्य के लिए इन को तन मन धन से सहयोग दीजिए।

सम्मेलन म आर्य वीरों की भव्य रैली व्यायाम प्रदर्शन आर्य वीरों की शाखा एव गोष्ठी तथा विचारो का मन्थन विशेष आकर्षण के केन्द्र होगे आप सभी इस कार्यक्रम मे सपरिवार इष्ट मित्रो सहित सादर निमन्त्रित हैं कृपया उत्सव मे पधार तथा आर्य वीरो को आशीर्वाद देकर अपने पुनीत कर्तव्य का पालन कर।

बढने वालो के लिए आप आशीष तो द दोस्तो इस से ही तकदीर सवर सकती है

उत्तमचन्द शरर
सचालक आर्य वीर दल हरियाणा
कार्यालय आर्य समाज श्रद्धानन्द नगर
(न्यू कालोनी) पलवल 121102
(फरीदाबाद)



श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रेस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

# आर्य मर्यादा

जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 16 अंक 19, 5 भाद्रपद सम्वत् 2040 तदनुसार 21 अगस्त 1983 दयानन्दाब्द 159 । एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपए

## २३ अगस्त को श्रावणी उपाकर्म पर्व (रक्षा बन्धन) मनाए —

# देखना कहीं रक्षा के बन्धन ढीले न पड़ जाएं

भारत वर्ष एक ऐसा देश है जहा छः ऋतुएं हैं। भारत के जलवायु के समान और किसी देश का जलवायु नही है। सारे देश को ऋषियो ने पर्वों के द्वारा बान्धा हुआ है। यह पर्व कुछ ऋतुओ से सम्बन्धित बनाए गए हैं और कुछ विशेष घटनाओ से सम्बन्धित हैं। श्रावणी उपाकर्म (रक्षा बन्धन) का पर्व चिरकाल से सारे देश मे मनाया जा रहा है। वास्तव मे यह स्वाध्याय पर्व है। वर्षा अधिक होने के कारण ऋषि मुनि महात्मा तथा सन्यासीगण जंगलो तथा पर्वतो मे बने अपने आश्रमो को छोड़कर नगरो तथा ग्रामो के बाहिर बने धर्म स्थानो मे आ जाते थे और इस दिन मे वह अपने ज्ञानामृत की वर्षा के द्वारा उसी प्रकार जनता को तृप्त करते थे जैसे बादल वर्षा बरसा कर जल धाराओ के द्वारा अन्नो तथा वनस्पतियो आदि के पौधो व जीव जन्तुओ को तृप्त करते है। चार मास जो वर्षा के माने गए है जिसे चौमासा भी कहा जाता है ज्ञानामृत पान करने के दिन हैं। यह पर्व आकर हमे इसकी याद दिलाता है कि हम इसके लिए प्रयत्न करें।

इसके साथ ही इस पर्व के साथ चिरकाल से रक्षा के धागे बांधने का भी प्रचलन हो गया। यह प्रचलन कब से हुआ इसका ठीक से तो पता नही चलता परन्तु इसकी महत्ता मुगल काल मे भी सामने आती है जब एक हिन्दू देवी ने राखी के धागे अपनी रक्षा के लिए मुगल सम्राट हुमायू को भेजे थे और वह उस राखी को पाकर उसकी रक्षा के लिए मैदाने जंग मे आ डटा था।

इस अवसर पर यह प्रचलित है कि पुरोहित अपने यजमानो को रक्षा बन्धन (राखी) बांधते है और बहिनें अपने भाईयो को। रक्षा बन्धन सुख का आधार माना गया है। विद्वान् पुरोहित और यजमान अगर आपस मे बन्धे रहे मिले रहे तो कल्याण ही कल्याण है। विद्वान पुरोहित का बन्धन आज अपने यजमानो पर ढीला पड़ गया है इसीलिए अनाचार भ्रष्टाचार दुराचार घृणा द्वेष कलह रात दिन बढ़ते जा रहे है। न विद्वान ही गृहस्थो को उपदेश सुनाने के लिए उनके पास जाते है और न गृहस्थ ही उपदेश सुनने के लिए विद्वानो के पास आते हैं। जिससे अशान्ति फैल रही है जिससे यह बन्धन ढीला पड़ गया है जिसे अब फिर मजबूती से बांधने की आवश्यकता है। फिर से यजमानो मे श्रद्धाभाव पैदा करने की आवश्यकता है। कमी दोनो तरफ आ गई है न श्रद्धाभाव यजमानों मे ही रहा है और न पुरोहितो मे ही रहा।

इस प्रकार दूसरा बन्धन बहिन अपने भाईयो को बांधती है। इस पर्व पर बहिन अपने भाईयो को राखियां भेजती है और बांधने के लिए स्वयं भी भाईयो के घरो में जाती है। इसके पीछे भी यह रहस्य है कि बहिन और भाई का अटूट सम्बन्ध है परन्तु जब बहिन का विवाह हो जाता है बहिन भाई के घर से दूसरे घर मे चली जाती है। जबकि मा और बेटे भाई और भाई साथ ही रहते है। बहिन इस पर्व पर भाईया के घर आकर यही प्रदर्शित करती है कि मैं अब भी उसी परिवार से बन्धी हुई हू जहा मेरा जन्म हुआ है। भले ही मैं दूर रहती हू मेरा मन व दिल तो अपने भाईयो से पूर्व की भान्ति बन्धा हुआ है। वह अपने बन्धन को प्रति वर्ष सुदृढ़ करती आती हैं और यही कहती है। मेरे भाई यह ठीक है अब मेरा पति मेरा रक्षा करने वाला है परन्तु मैं पति के साथ 2 अपने भाईयो से भी रक्षा चाहती हू। इसीलिए बहिन की रक्षा भाई प्राण देकर भी करता आया है और करता रहेगा।

अब बहिन और भाई का बन्धन भी कुछ ढीला पड़ने लगा है। वह स्नेह और प्यार लुप्त होता जा रहा है जो पहले था। यहा भी द्वेष और कलह अपना 2 स्थान बनाते जा रहे हैं। आज भाईयो के सामने बहिनो की लाज लुट रही है। उनको अपमानित किया जा रहा है। गली और चौराहो पर लड़के बदमाश मनमानी कर रहे हैं भाई बहिन को अपमानित होती देखकर भी आंख बन्द करके चला जा रहा है। यह स्थिति भी चिन्ताजनक है।

आज मैं देखता हू यह रक्षा के बन्धन ढीले पड़ने जा रहे है अर्थात पुरोहित यजमान को राष्ट्र रक्षा के लिए राखी का बन्धन बांधता है और बहिन नारी जाति की रक्षा के लिए भाईयो को राखी का बन्धन बांधती है। यह पर्व हम 23 अगस्त को मना रहे हैं। पुरोहित भी राखियां यजमानो को बांधेंगे और बहिन भी भाईयो को बांधेंगी। क्या इतना करना ही इस पर्व का उद्देश्य है यही इस के मनाने का ढंग है? यह विचारणीय प्रश्न है?

प्यार का बन्धन एक ऐसा बन्धन है जो बहुत सख्तकारी है। इस बन्धन मे जब किसी को बांध दिया जाता है या जो बन्ध जाता है वह छूट नही पाता। तभी तो किसी ने कहा है—

बन्धन ऐसा बांध कि बन्धन टूट न पाए<br>
सीवन ऐसा सीव सीवन छूट न पाए।

आज इस बन्धन की अति आवश्यकता है प्यार का दरिया सारे देश मे बहा देने की आवश्यकता है। पहले परिवार को प्यार के सूत्र मे बांधा जाए फिर समाज को और फिर देश को आज धर्म और मजहब के नाम पर परिवार भी बंट पड़े है और जाति के नाम पर परिवार भी बटा पड़ा है और समाज तो उससे भी अधिक बंटा हुआ है। सम्प्रदाय धर्म और मजहब बने हुए हैं। सभी एक दूसरे को खा जाना चाहते हैं। प्यार व स्नेह नाम की वस्तु को द्वेष घृणा और स्वार्थ के अजगर निगल गए है। यह नाग अब आर्य बन्धुओ को भी डसने लगे हैं। इनमे भी विघटन पैदा होने लगा है। वेद के अनुयायी स्वाध्यायशील आर्यों को सावधान हो जाना चाहिए यह पर्व सावधान करने के लिए ही प्रति वर्ष आता है। राखि धागो की नही चमकीली और रंगीली नही अपितु बान्धनी है तो प्यार की बांधो बहनो और भाईया का प्यार पुरोहित और यजमानो का माता पिता और बेटे बेटियो का प्यार भाई भाई का का प्यार पति पत्नी का प्यार राजा और प्रजा का प्यार नौकर और मालिक का प्यार एक जाति का दूसरी जाति से प्यार जतलाने को यह पर्व आता है इस पर्व की गरिमा को बनाए रखे।

आज देश पर संकट के बादल छाए हुए हैं भाई भाई का शत्रु बन बैठा है। एक जाति दूसरी जाति वालो को हड़प जाना चाहती है। देश मे अराजकता के बादल मण्डरा रहे है चारो ओर विघटन ही विघटन है पारिवारिक व सामाजिक सभी बन्धन ढीले पड़ गए है। ऐसी स्वतन्त्रता आई कि सभी कुछ स्वतन्त्र हो गया। आज बेटा भी स्वतन्त्र है बेटी भी स्वतन्त्र है बहिन भी स्वतन्त्र है मैं अगर यहा तक कहू तो अत्युक्ति नही होगी कि पिता भी स्वतन्त्र है और माता भी स्वतन्त्र है मालिक भी स्वतन्त्र है नौकर भी स्वतन्त्र है सभी बन्धन आज ढीले पड़ गये हैं बल्कि ढीले ही नही पड़ टूटने जा रहे है। यह बड़ी चिन्ता का विषय है। अगर इन बन्धनो को बांधा न गया तो सभी कुछ द्वेषाग्नि मे जलकर नष्ट भ्रष्ट हो जाएगा।

आओ आज इस पवित्र पर्व को मनाते हुए व्रत लें कि हम स्वाध्याय करेंगे अपना अध्ययन करेंगे कि हम किधर जा रहे हैं हमारा क्या कर्त्तव्य है अपने प्रति अपने देश व जाति के प्रति तथा समाज के प्रति। देश मे विघटन पैदा करने वाले तत्वो का डटकर मुकाबला करें। देश के टुकड़े करने वाले शत्रुओ को मुंह तोड़ कर उत्तर दें। सारे देश को एक सूत्र मे बांधने के लिए भरपूर प्रयत्न करें। इस दिशा मे आगे आकर जनता का मार्गदर्शन करें। देखना कहीं रक्षा के बन्धन ढीले न पड़ जाएं।

—

# आर्य समाज का मूलाधार वेद ही क्यों ?

ले—श्री यशपाल आर्य बन्धु आर्य निवास
चन्द्र नगर मुरादाबाद

उन्नीसवी शताब्दी के सर्व प्रमुख जन आन्दोलन आर्य समाज का मूलाधार वेद है उसके संस्थापक ने इसे वेद के प्रचार प्रसार के लिए ही स्थापित किया था और ऐसा ही घोषणा पत्र उस समय रजिस्टार के सम्मुख उपस्थित किया गया था महर्षि की घोषणा थी कि— मेरा कोई नवीन कल्पना व मतमतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नही है किन्तु जो सत्य है उस को मानवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना—छुड़वाना मझको अभीष्ट है (देख स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश) और— जो वेदादि सत्य शास्त्र और ब्रह्मा से लेकर जैमिनि मनि पर्यन्तो के माने हुए ईश्वरादि पदार्थ हैं जिनको कि मैं भी मानता हू सब सज्जन महाशयो के सामने प्रकाशित करता हू तात्पर्य यह कि महर्षि ने आर्य समाज के मूल मे अपनी कोई कपोल कल्पित बात नही रखी अपितु वेद को ही उसका आधार बनाया स्वर्गीय श्री प्रकाश वीर शास्त्री ने ठीक ही लिखा है कि— मानव शरीर के प्रत्येक ऐच्छिक काम कलाप का आधार जैसे कोई मानसिक प्रक्रिया होती है उसी प्रकार से ससार के प्रत्येक सामाजिक सगठन का भी कोई दार्शनिक आधार होता है और उसकी सम्पूर्णता के अनुपात से कार्य करण सरणी द्वारा कार्य की पूर्ति होती है उदाहरण के ससार के प्रत्येक मत और सम्प्रदाय— हिन्दू मुसलमान ईसाई कम्युनिस्ट आदि के दार्शनिक आधार पुराण कुरान बाईबिल आदि ग्रन्थ हैं उनके ग्रन्थ बोधो के अनुसार ही उनके अनुयायी भी होते है आर्य समाज का मूल धार वेद है जो ससार के प्राचीनतम ग्रन्थ माने जाते हैं और जो बाह्य साक्षी मे मतभेद तथा संशय होने पर भी अन्तःसाक्षी के अनुसार मानवी सृष्टि के आदि से वर्तमान है (आर्य मित्र आर्य समाज 12 अप्रैल 1964) महर्षि दयानन्द की समस्त मान्यताए वेद पर ही आधारित है। उन्होने अपनी ओर से कोई नवीन मान्यता अथवा सिद्धान्त खड़ा नही किया श्रीयत क्षितीश वेदालकार ठीक ही लिखते हैं कि आर्य समाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने कोई नई बात नही कही प्रत्युत ब्रह्मा से लेकर जैमिनि पर्यन्त प्राचीन ऋषि मुनि जो कुछ कहते आए काल क्रम से उन पर पड़े आवरण को हटाकर उन्होंने उसी उद्घोष को दुहराया और वेद प्रतिपादित शाश्वत सत्य सनातन धर्म की रक्षा के लिए ही आर्य समाज की स्थापना की। इस दृष्टि से आर्य समाज को कोई पृथक मत मजहब या सम्प्रदाय न मानकर एक ऐसा आन्दोलन कहना चाहिए जो बुद्धिवाद का आश्रय लेकर धर्म के शुद्ध स्वरूप को जनता के सामने उपस्थित करता है। इस लिए यदि आर्य समाज को समझना हो तो वेदादि सत्यशास्त्रो मे प्रतिपादित सचाइयो को समझना पर्याप्त है। (आर्य समाज की विचार धारा पृष्ठ 3) अत सिद्ध है कि आर्य समाज का मूलाधार वेद ही है। वेद के प्रचार प्रसार के लिए ही आर्य समाज की स्थापना की गई थी महर्षि ने आर्य समाज के आधार मे अपने ग्रन्थो को न रख कर वेद को ही रखा था और अपने अनुयायियो के लिए वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना-सुनाना निश्चित किया था न कि स्वरचित ग्रन्थो का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना

## वेद ही मूलाधार क्यो ?

प्रश्न उठता है कि महर्षि दयानन्द ने वेद को ही आर्य समाज का मूल धार क्यो बनाया ? और वेद का ही पढ़ना पढ़ाना तथा सुनना सुनाना आर्यो का परम धर्म क्यो नियत किया ? यह इस लिए कि वेद और केवल वेद ही नित्य निर्भ्रान्त ईश्वरीय ज्ञान है फिर सर्वश्रेष्ठ ईश्वरीय शाश्वत ज्ञान को छोड कर मानव कृत ग्रन्थो को आर्य समाज का मूलाधार क्या बनाया जाता ? स्वत प्रमाण वेद ग्रन्थ को छोड कर परत प्रमाण ऋषिकृत ग्रन्थो को मूलाधार बनाने मे क्या तुक थी फिर वह व्यक्ति जो सभी प्रकार की एषणाओ से ऊपर उठा हुआ हो वह लोकैषणा के वशीभूत होकर अपने किसी ग्रन्थ को आधार में क्यो रखता ? दूसरे यह कि वेद का स्थान कोई अन्य ग्रन्थ ले भी नही सकता क्योकि वही एकमात्र ईश्वरीय ज्ञान है। यहा फिर प्रश्न उठता है कि वेद ही एक मात्र ईश्वरीय ज्ञान क्यों है। वह इस लिए कि ईश्वरीय ज्ञान की कसौटी पर वही खरा उतरता है। वे कसौटियाँ कौन सी हैं ? आइये उन पर विचार करें।

## ईश्वरीय ज्ञान की कसौटियाँ

1 ईश्वरीय ज्ञान की पहली कसौटी यह है कि वह सृष्टि के आरम्भ में हो।

3 वह कि [illegible] एव निर्भ्रान्त हो [illegible] के भी पूर्वापर [illegible] की कोई बात [illegible] रहे।

3 यह कि वह ज्ञान सृष्टिक्रम के अनुकूल हो।

4 उस ज्ञान मे किसी देश काल तथा व्यक्ति विशेष की चर्चा न हो अर्थात वह ज्ञान मानवीय इतिहास से रहित हो।

5 वह ज्ञान मानव मात्र के लिए हो न कि किसी देश अथवा स्थान या जाति विशेष के लिए।

6 वह ज्ञान ईश्वर के गुण कर्म स्वभाव के अनुकूल हो

7 उस ज्ञान मे मानव की लौकिक एव पारलौकिक उन्नति की सम्पूर्ण योजना हो।

8 वह ज्ञान सभी ज्ञान विज्ञान का मूल हो

उपरोक्त कसौटियो पर रखने से यही सिद्ध होता है कि वेद और केवल वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है। ज्ञान का बीज सृष्टि के आदि मे दिया जाता है अत धर्म का मूल स्रोत वही हो सकता है कि जिसका प्रादुर्भाव मानव के प्रादुर्भाव के साथ हुआ हो आज तक किसी अन्य पुस्तक के सृष्टि के आदि मे होने का दावा किसी ने नही किया। महर्षि दयानन्द का इसमें तर्क है कि यदि सृष्टि के आदि मे परमात्मा जो वेदों का उपदेश न करता तो आज पर्यन्त किसी मनुष्य को धर्मादि पदार्थों की यथार्थ विद्या प्राप्त होती (ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका वेदोत्पत्ति विषय) यदि सृष्टि उत्पत्ति के चिरकाल बाद की किसी पुस्तक को ईश्वरीय ज्ञान माना जाए तो फिर यह प्रश्न उठता कि ईश्वर ने उन असख्य लोगो को उस ज्ञान से वंचित क्यो रखा ? इस प्रकार ईश्वर अन्यायी एव पक्षपाती ठहरता है जो ईश्वर के गुण कर्म स्वभाव के विपरीत है। अत ईश्वरीय ज्ञान सृष्टि के आरम्भ मे ही दिया जाना उचित है स्पष्ट है कि वेद ही एकमात्र ऐसा ग्रन्थ है जो सृष्टि के आदि मे दिया गया ज्ञान है।

ईश्वरीय ज्ञान के सम्बन्ध मे महर्षि दयानन्द का कथन है कि— जो ईश्वर पवित्र सब विद्यायुक्त शुद्ध गुण कर्म स्वभाव न्यायकारी दयालु आदि गुण वाला है वैसे जिस पुस्तक में ईश्वर के गुण कर्म स्वभाव के अनुकूल कथन हो वह ईश्वरकृत अन्य नहीं। और जिसमें सृष्टिक्रम प्रत्यक्षादि प्रमाण आप्तों के और पवित्रात्मा के व्यवहार से विरुद्ध न हो [illegible]। जैसा ईश्वर का [illegible] पुस्तक में भ्रान्ति-रहित ज्ञान [illegible] और जैसा [illegible] ही ईश्वर सृष्टि [illegible] प्रतिपादन [illegible] वह परमेश्वरोक्त पुस्तक होता है और जो प्रत्यक्षादि प्रमाण विषयो से [illegible] गुणो के स्वभाव से विरुद्ध न हो इसी प्रकार के वेद है। अन्य बाईबिल कुरान आदि पुस्तक नही। (सत्यार्थ प्रकाश सप्तम समुल्लास) और आगे इस कथन की पुष्टि में कहा अक्षर वर्ण और सम्बन्ध वेदो मे है इसी प्रकार से पूर्व कल्प मे थे और आगे भी होंगे क्योकि जो ईश्वर की विद्या है सो नित्य एक सी बनी रहती है। उनके एक अक्षर का भी विपरीत भाव कभी नहीं होता। सो ऋग्वेद से लेके चारों वेदों की संहिता अब जिस प्रकार की है इन मे शब्द अर्थ सम्बन्ध पद और अक्षरो का जिस क्रम से वर्तमान है इसी प्रकार का क्रम सब दिन बना रहता है क्योकि ईश्वर का ज्ञान नित्य है उसकी वृद्धि क्षय और विपरीतता कभी नही होती। (ऋग्वेदादि भा भू )।

आर्य समाज के सस्थापक वेदो वाले ऋषि ने ससार भर के ग्रन्थो को इस पर कसकर देखा था और सुनिश्चित किया था कि वेद और केवल वेद ही ईश्वरीय ज्ञान कहलाए जाने का अधिकारी है। तभी उस महामानव ने आर्य समाज के मूलाधार के रूप मे वेद को अपनाया था महर्षि ने वेदो को आर्य समाज का मूलाधार ही नही बताया वेद विषयक सभी भ्रान्तियों को दूर करने का भरसक प्रयत्न किया। महर्षि के आगमन मे पूर्व वेदो को गडरियो के गीत तथा जगल प्रलापो की पुस्तक तक कह दिया गया था। वेद के सही अर्थो से अनभिज्ञ लोगो ने उन्हे भाण्ड धूर्त और निशाचरो की कृति कह डालने का दुस्साहस कर डाला था। आर्य समाज के सस्थापक ने वेद के सही रहस्यो को खोलकर सर्वसाधारण की भाषा मे उसका अर्थ कराया और इस प्रकार वेद सम्बन्धी सभी प्रकार के भ्रामक विचारो का सफलता पूर्वक निराकरण कर दिखाया आर्य भाषा मे वेदो का सर्वप्रथम भाष्य महर्षि का मानवता पर अमिट उपकार है लाला लाजपतराय तो इसे उनके जीवन का सर्वाधिक साहसपूर्ण कार्य बतलाते हैं क्योंकि इससे पूर्व इस प्रकार का प्रयास कभी नही किया गया था। (देख लाला लाजपतराय कृत आर्य समाज पृष्ठ 106 का हिन्दी रूपान्तर) महर्षि दयानन्द ने संसार को वेदो की ओर दिखाया। उन्ही ने वेदों के रहस्यो को खोलकर समझाया।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

सम्पादकीय—

# अजमेर चलने की तैयारी करो

3 नवम्बर से 6 नवम्बर 1983 तक अजमेर मे महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी मनाई जा रही है और उसकी तैयारी भी हो रही है। यद्यपि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा और परोपकारिणी सभा के अधिकारियो ने मिलकर सयुक्त रूप से यह शताब्दी मनाने का निश्चय लिया था। परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि यह सारा भार परोपकारिणी सभा को ही उठाना पडेगा और परोपकारिणी सभा मे भी श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती जी इसके लिए दिन रात दौड धूप कर रहे हैं। हमारे लिए यह किसी विवाद का विषय नहीं है कि इस निर्वाण शताब्दी का प्रबन्ध कौन कर रहा है। यही पर्याप्त है कि महर्षि निर्वाण शताब्दी हो रही है अजमेर में हो रही है और 3 नवम्बर से 6 नवम्बर तक हो रही है। उसका जो पूरा कार्यक्रम बनेगा और वह जब हमे प्राप्त होगा, तो आर्य जनता को उसके विषय में पूरी जानकारी दे दी जाएगी। अभी तक मैं केवल यही कहना चाहता हू कि यह शताब्दी हो रही है और हमें अधिक से अधिक सख्या मे वहा पहुचना चाहिए। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की अन्तरग सभा ने यहा से जाने का प्रबन्ध करने के लिए एक उपसमिति बना दी है। सभा के मन्त्री श्री आत्मानन्द इसके सयोजक हैं और वे जाने की सारी योजना बना रहे हैं। जाने का प्रबन्ध या तो रेल गाडी द्वारा होगा या बसो के द्वारा होगा। देहली से भी विशेष बस चलाने का प्रबन्ध हो रहा है। जो भाई सीधे वहा जाना चाहते हैं वे देहली पहुच कर वहाँ से जो बस जा रही हैं उनमे जा सकते हैं। बसें कहा से चलगी कब चलगी और उनका क्या किराया होगा इसके विषय में सारी जानकारी महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समिति के उपकार्यालय आर्य समाज मन्दिर मार्ग नई दिल्ली 1 से मिल सकती है। परन्तु हम भी प्रबन्ध कर रहे हैं कि अजमेर मे जो कुछ किया जा रहा है उसकी पूरी जानकारी समय समय पर आर्य जनता को देते रहे। मैंने स्वय इस विषय में श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी महाराज को लिखा है कि अजमेर मे जो प्रबन्ध हो रहा है, उसके विषय मे हमे सूचित करते रहे ताकि हम पजाब की आर्य जनता को भी बता सकें कि अजमेर में क्या हो रहा है? अब केवल अढाई मास बाकी रह गए हैं। समय थोडा है काम बहुत अधिक है। जब यह समाचार प्रकाशित हुआ था कि सार्वदेशिक और परोपकारिणी सभा सयुक्त रूप से यह शताब्दी मनाएगी तो हमने समझा था कि यह एक बहुत बडी शताब्दी होगी जैसा कि देहली मे 1975 में मनाई गई थी। परन्तु यह आर्य समाज का दुर्भाग्य है कि इसके नेतागण किसी भी महत्वपूर्ण विषय पर मिलकर नहीं चल सकते। इस समय इस शताब्दी का जो प्रचार हो रहा है वह भी अधूरा है और अब तो कई [illegible] यह सन्देह भी प्रकट कर रहे हैं कि जिस प्रकार की यह शताब्दी होनी चाहिए वह होगी भी या नहीं। मेरे विचार मे आर्य जनता को इसकी चिन्ता नही करनी चाहिए कि हमारे नेता क्या करते हैं या अजमेर मे उचित प्रबन्ध होता है या नही। प्रबन्ध जैसा भी हो हमे वहा अधिक से अधिक सख्या में पहुचना चाहिए। आर्य जनता की जानकारी के लिए मैं यह भी बता दू कि प्रत्येक वर्ष अजमेर में मुसलमानो का एक मेला होता है। पाकिस्तान से भी मुसलमान वहा पहुचते हैं और लगभग तीन चार लाख मुसलमान वहा पहुच जाते हैं। हमारा तो यह वहा पहला मेला है और हम सबके जीवन मे यह अन्तिम मेला होगा। दूसरी शताब्दी तो किसी के जीवन मे न आएगी। इसलिए प्रबन्ध चाहे जैसा हो और कोई बडा या छोटा नेता इसे सफल बनाने के लिए अपना सहयोग दे या न दे। आर्य जनता को तो अपना पूरा सहयोग देना चाहिए। हम वहा किसी नेता विशेष के दर्शन करने नही जा रहे। हम तो अपने आचार्य और युगद्रष्टा महर्षि दयानन्द सरस्वती के चरणो में अपनी श्रद्धाजलि भेंट करने जा रहे हैं। इसलिए मैं पजाब हरियाणा हिमाचल और जम्मू कश्मीर की आर्य जनता से विशेष रूप से कहना चाहता हू कि वह अजमेर जाने की तैयारी आरम्भ कर देनी चाहिए। आर्य प्रतिनिधि सभा ने जो उपसमिति बनाई है उसकी तरफ से भी समय समय पर पूरी जानकारी दी जाएगी। परन्तु यह भी आवश्यक है कि प्रत्येक नगर के आर्य समाजी अभी से यह फैसला करें कि उन्होंने वहा कब जाना है और कैसे जाना है। यह शताब्दी तीन नवम्बर से प्रारम्भ हो रही है। हमें 2 नवम्बर तक वहा पहुच जाना चाहिए। पजाब से गए आर्य भाईयो और बहिनो की सुगमता के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा अपना एक उपकार्यालय भी वहा खोल देगी। जो भी आर्य बन्धु पजाब से जाए वे पहले उसी कार्यालय मे पहुच। वहीं से उन्हे पता चल जाएगा कि उन्होने कहा ठहरना है? अभी अढाई मास बाकी हैं। वहा जो भी प्रबन्ध होगा, उसके विषय मे निर्वाण शताब्दी समिति की ओर से हमे जो जो सूचना मिलती रहेगी वह भी हम समय समय पर आर्य मर्यादा के द्वारा या विज्ञप्तियो के द्वारा आर्य जनता तक पहुचाते रहेगे। परन्तु मैं सब आर्य समाजो के अधिकारी महानुभावों से यह निवेदन करूगा कि अब उन्हे भी सक्रिय हो जाना चाहिए और उनके नगर से जिन 2 आर्य बन्धुओ ने बहिनो और भाईयो ने अजमेर जाना है उनकी सूचिया भी अभी से बननी शुरू हो जानी चाहिए और पजाब के सारे आर्य जगत मे अब एक ही आवाज सुनाई देनी चाहिए। चलो अजमेर।

—वीरेन्द्र

अन्तरग सभा का निर्णय—

## सभा का वार्षिक साधारण अधिवेशन २६-२७ नवम्बर को होगा

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब का वार्षिक साधारण अधिवेशन 28 अगस्त 1983 को आर्य समाज चौक भटिण्डा से होना था। परन्तु 14 8 83 की अन्तरग सभा मे इस पर पुन विचार किया गया। विचार विमर्श के पश्चात इन तिथियो मे परिवर्तन कर दिया गया। अब अन्तरग सभा ने इसकी तिथि 28 8 83 से बढाकर 26 27 नवम्बर कर दी है। इसलिए सभा का अब यह अधिवेशन 26 27 नवम्बर 1983 को आर्य समाज चौक भटिण्डा मे होना निश्चित हुआ है। सभी आर्य समाजो व प्रतिनिधियो की सूचनार्थ।

—रामचन्द्र जावेद
सभा महामन्त्री

## उत्सव और वेद सप्ताह मनाइए

सभा से सम्बन्धित आर्य समाजो से निवेदन है कि वह अपने उत्सव और वेद सप्ताह मनाए। कई आर्य समाजें ऐसा समझती है कि वेद सप्ताह केवल रक्षा बन्धन से जन्माष्टमी तक ही मनाया जाना चाहिए। ऐसी कोई बात नही वर्षा के इन चार मासो मे किसी भी समय वेद सप्ताह रखा जा सकता है। वेद कथा के लिए कोई भी सुविधाजनक सप्ताह निश्चित कर ले जिसमे सभा को भी प्रबन्ध करने की सुविधा हो और समाज को भी। सभा के पास स्टाफ सीमित है। इस लिए एक ही समय मे सभी आर्य समाजो के वेद सप्ताह का रक्षाबन्धन व जन्माष्टमी पर प्रबन्ध करना वैसे ही कठिन है। वैसे भी अगर सभी आर्य समाजें एक ही समय मे वेद सप्ताह मना लेगी तो उसके बाद प्रचारार्थ उपदेशक महानुभावो को किन आर्य समाजो मे भेजा जाए। प्रचार का कार्य तो निरन्तर चलते रहना चाहिए और यह तभी हो सकता है अगर आर्य समाजें इस ओर ध्यान दें। जुलाई अगस्त सितम्बर अक्तूबर इन चार महीनो मे अक्सर वेद सप्ताह मनाए जाते हैं। इसलिए सितम्बर और अक्तूबर मे जो आर्य समाज अपने वेद सप्ताह रखना चाहती हैं वह सभा से पत्र व्यवहार करके तिथिया वेद प्रचार विभाग की सुविधा अनुसार निश्चित करा लें।

उत्सवो के लिए आर्य समाजो को अभी से समय रहते लिखना चाहिए जो भी आर्य समाजें सभा को दो मास पूर्व उत्सव के लिए लिखेगी हम उनका पूरा प्रबन्ध करेंगे। परन्तु एक दम लिखने से सभा को प्रबन्ध करने मे कठिनाई होती है आशा है आर्य समाजें इस ओर ध्यान देंगी।

—रामचन्द्र जावेद, महामन्त्री

# जल, स्थल आदि तीर्थ नहीं

ले—प्रा श्री रमाकान्त दीक्षित भिवानी

मानव की महत्ता उसके चरित्र एव शुभ कर्मों से आकी जाती है। उसके सद असद कर्म उसके विवेक पर आधारित होते हैं। इसी से वह एक को ग्रहण करता है और दूसरे का त्याग करता है। अन्यथा वह भी पुच्छ विषाण हीन पशु तुल्य ही है। वह समाज के परिवेश मे कुछ सीखता है और कुछ सिखाता है। यह आदान प्रदान समाज सरचना को उत्तरोत्तर विकास के अवसर प्रदान करता है।

हमारे ऋषि मुनियो ने मानव जाति को चार वर्णों मे विभाजित किया है और साथ ही चार आश्रमो का विधान भी किया है। वर्ण एव आश्रम व्यवस्था की सफलता के लिए मनुष्य के सामने कुछ लक्ष्य रखे गए हैं। जीवन के इन लक्ष्यो को धर्म अर्थ काम और मोक्ष नाम से अभिहित किया है।

जो अपना इहलोक और परलोक सुधारना चाहते हैं और आत्म सुधार के आकांक्षी हैं वे आत्म शुद्धि पर बल देते हैं। जप करना छापा लगाना तिलक लगाना माला फेरना तपस्या करना व्रत रखना तीर्थाटन के लिए जाना आदि बात आज ढोंग और दिखावा अधिक लग रही हैं।

यहा इस सन्दर्भ मे वह प्रसग दृष्टव्य है—एक बार बीरबल ने अकबर को माथे पर चन्दन लगाए हाथ मे माला लिए हिन्दू वेश मे देखा। उसका माथा ठनका पर कहा कुछ नही। कुछ दिन बाद बीरबल कही से एक गधा पकड लाया और वह उसे गगा मे डुबकिया लगवाने लगा। उसी समय अकबर उधर से गुजरा। उसने देखा कि बीरबल एक गधे को गगा मे डुबकिया लगवा रहा है। उससे न रहा गया डुबकिया लगवाने का कारण पूछा उसने कहा उत्तर दिया—इसे गगा जल मे डुबकिया इसलिए लगवा रहा हू जिससे कि यह गधे से गाय बन जाए। अकबर हसा और बोला—कही गगा मे नहलाने से गधा भी गाय बनता है? इस पर बीरबल बोला—जब यह असम्भव है तो आपका मन की शुद्धि के बिना हिन्दुओ जसी वेश भूषा का बाह्य आडम्बर करना भी क्या ठीक है।

और अकबर को बीरबल की यह बात सुनकर चुप रह जाना पडा। इसी लिए तो कहा गया है—

अद्भिर्गात्राणि शुद्ध्यति मन सत्येन शुद्ध्यति।

विद्या तपोभ्यामतात्मा बुद्धिर्ज्ञानेन शुद्ध्यति

अर्थात्—जल से शरीर की शुद्धि होती है सत्य से मन की शुद्धि होती है तपस्या से विद्या की शुद्धि होती है और ज्ञान से बुद्धि की शुद्धि होती है।

तीर्थाटन प्रेमियो के गगा तथा अन्य नदियो के जल मे स्नान करके अपने पापो को धोने के मनसूबे पहले भी कोरी कल्पना ही थे और आज भी वही स्थिति है। यदि गगा नदी अथवा अन्य तीर्थ स्थलो के जल मे स्नान कर पापो को धोया जा सकता तो आज धरती पर न पापी होते और न भ्रष्टाचार ही होता। सब धर्मात्मा या पवित्रात्मा होते और धरती पर राम राज्य होता।

आज अन्य देशो की भान्ति भारत मे भी शहरीकरण एव औद्योगीकरण हो रहा है। गगा यमुना तथा अन्य बहुत सी नदियो के किनारे उद्योग स्थापित हो गए हैं और भी हो रहे हैं। इनमे रात दिन इतना मल मूत्र गन्दगी कडा कर्कट बहाया जाता है जिससे कि जल प्रदूषण की समस्या ने विकराल रूप धारण कर लिया है।

गगा नदी के जल प्रदूषण की एक झलक उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा कराए गए एक सर्वेक्षण के अनुसार इस प्रकार देखी जा सकती है—

हरिद्वार के बाद वाराणसी आने से पहले तक गगा मे 16500 नदी नाले आकर मिलते हैं और 1 85000 छोटे बड उद्योगो के कचरे इसमे प्रवाहित होते हैं। वाराणसी मे प्रति वर्ष 30 000 मुर्दे जलाए जाते हैं जिसके लिए 15000 टन लकडी की आवश्यकता होती है। इस प्रकार 3000 टन राख एव 110 से 115 टन के लगभग जले हुए शवो के अवशेष गगा मे प्रवाहित होते हैं।

जिन स्थानों पर मुर्दे जलाए जाते हैं वहा के जल का तापमान 3 से 5 सटीग्रेड बढा हुआ पाया गया। इससे 30 से 50 प्रतिशत घुलित आक्सीजन मे कमी होती है।

गगाजल के प्रदूषण के विषय के विषय मे ही काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के सिविल इन्जीनियर श्री नारायण स्वामी ने एक सगोष्ठी मे बतलाया कि विदेशो मे प्रति सौ सी सी मे 200 जल जीवाणुओ वाले जल को स्नान योग्य माना जाता है उसके मुकाबले भारत में सौ सी सी मे लाखो जीवाणुओं की पहुच हो चुकी है। इसलिए उसका जल अब स्नान योग्य भी नही रह गया है।

अत गगा जल में स्नान कर पवित्र होने अथवा पापो को धोने की बात कितनी बचकाना है यह अब तीर्थाटन प्रेमियों के सोचने-समझने का विषय है। गगा के समान अन्य नदियों का भी यही हाल है।

प्राय देखा गया है कि हर वर्ष हजारो लाखो की सख्या मे हिन्दू लोग तीर्थ करने के लिए देश के एक कोने से दूसरे कोने तक जाते हैं। परन्तु वे लकीर के फकीर बनकर ही अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझ लेते हैं। कुछ का उद्देश्य सैर-सपाटे और मनोरजन तक ही सीमित होता है। तीर्थाटन अथवा देशाटन का उद्देश्य देश की विभिन्नता मे एकता के दर्शन करने के साथ-साथ स्वय को इस एकता की माला का मोती समझना है पर ऐसा आज हो नही रहा। आज तो प्रान्तवाद और सम्प्रदायवाद पनप रहा है असम, पजाब और लंका जैसी समस्याए प्रश्न चिन्ह बनी हुई हैं।

जो लोग साधन सम्पन्न नही, उनके लिए तो तीर्थाटन करना ही दुस्तर है। वास्तव मे धनी गरीब सभी के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती के शब्दो मे तीर्थ वह है—जिससे दुःख सागर से पार उतरें कि जो सत्य भाषण विद्या सत्सग यमनियमादि योगाभ्यास पुरुषार्थ विद्या दानादि शुभ काम हैं। आगे उन्होने कहा—इसी को तीर्थ समझता हू इतर जल स्थल आदि को नही। तीर्थ का अर्थ ही पार उतरना है। कबीर के अनुसार भी भगवान् काबे कैलाश अथवा काशी में नही है। वह तो अपने हृदय मे ही छिपा है। उसे खोजने भर की देर है।

—

## अजमेर चलो, अजमेर चलो

रचियता—कवि बनवारीलाल जी शादा प्रधान मॉडल बस्ती नई दिल्ली 5

अजमेर चलो अजमेर चलो।
यदि जीवन सफल बनाना है।
सौ साल बाद यह दिन आया।
हमे अवसर यह न गवाना है।
तीन से छ नवम्बर तिरासी।
पुष्कर रोड मे मनाना है।
सब काम छोड कर अपने अब।
निर्वाण उत्सव मे जाना है।
दान दिये धन नाहि घटता।
बूद बूद से घट भरता है।
दानी बन दिल खोल दान दो।
बस दान काम यह आना है।
जो सोये रहे गफलत में।
उन्हे हाथ पकड उठाना है।
अजमेर चलो अजमेर चलो।
यह अवसर नही गवाना है।
आपस के मतभेदो को।
शीघ्र से शीघ्र मिटाना है।
निर्वाण उत्सव को, धूम धाम से।
तन मन धन लगा मनाना है।
आर्य जगती के जन जन को।
फिर से यह याद दिलाना है।
ऋषि दयानन्द जहा स्वर्ग सिधारे।
उस पुण्य भूमि पर जाना है।

—

# श्रावणी पर्व

ले — श्री आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री

आर्यों के सामाजिक और वैयक्तिक जीवन मे पर्वों का सदा से स्थान रहा है। धरा पर सभी मानव जातिया किसी न किसी प्रकार का पर्व मनाती ही हैं। पर्व शब्द का अर्थ पूरक भी है और ग्रन्थि भी है। यह जहा आनन्द से पुरित करता है वहा ग्रन्थि होने से धारक भी है। ईख के दण्ड को ईख की ग्रन्थि सुरक्षित रखती है और बास आदि की वक्रता को उसकी गाठ स्थिर रखती है। इसी प्रकार शरीर की स्थितिस्थापकता शरीर की ग्रन्थियो द्वारा सुरक्षित है।

श्रावणी आर्यों के प्रसिद्ध पर्वो मे से एक महान पर्व है। यह पर्व वैदिक पर्व है। इसका सीधा सम्बन्ध वेद के अध्यापन और अध्ययन करने वालो से है। गृह्यसूत्रो के अनुसार इस पर्व का सीधा सम्बन्ध वेद और वैदिको से दिखलाया गया है। यह पर्व जहा पर्व है वहा यह एक गृह्य कर्म भी है गृह्यसूत्रो के अनुसार श्रावणी कर्म भी इसी अवसर पर होता है और उपाकर्म वेदाध्ययन का प्रारम्भ होता है। चार मास वर्षा के होते हैं। इनमे बराबर वेदाध्ययन चलता रहता था और पौष मे जाकर उत्सर्ग किया जाता है। इसी आधार को लेकर आर्य समाज ने वेद सप्ताह क .. .र आयोजन किया। वेद के अध्ययन के मार्ग को आचार्य महर्षि दयानन्द सरस्वती ने प्रशस्त किया अत उनके द्वारा स्थापित वेद प्रचारक आर्य समाज का यह कर्तव्य ही है कि वह वेद के प्रचार को बढावे।

श्रावणी नाम इस पर्व का क्यो है? .. ..र यह है कि श्रवण नक्षत्र से युक्त पूर्णिमा को यह पर्व होता है अत यह श्रावणी है। इसी श्रावणी पूर्णिमा के आधार पर ही इस मास का नाम श्रावण मास है। इस श्रावणी की भी विधि है और वह गृह्यसूत्रो और हमारी पर्व पद्धति मे लिखी है—जो प्रत्येक आर्य और आर्य समाज को करनी चाहिए।

यह सब होने पर भी कुप्रथाओ और सुप्रथाओ के बीच मे चलने वाले आर्यों में भी श्रावणी के वास्तविक स्वरूप के विषय में कहीं कहीं पर अनभिज्ञता ही दिखाई पडती है। हमारे पत्र पत्रिकाओ मे भी ऐसी बातें कभी कभी निकल जाती है। दीपावलि के विषय मे राम की लका विजय के बाद की दीपावली कारण बताई जाती है और होली के विषय मे प्रह्लाद का सम्बन्ध जोडा जाता है। ये दोनो ही कल्पनाए भ्रान्त और गलत हैं। वस्तुत ये दोनो ही गृह्य कर्म हैं इसी प्रकार रक्षा बन्धन पर्व के अतिरिक्त और कुछ नही समझा जाता है। रक्षा बाधने की प्रथा बीच मे किसी समय प्रारम्भ हुई। परन्तु श्रावणी तो वैदिक गृह्य कर्म है। यह बहुत पहले भी था और अब भी है।

एक दिन एक आर्य सज्जन कहने लगे कि श्रावणी के दिन ही चारो वेदो का ज्ञान सृष्टि के प्रारम्भ मे मिला था इसलिए यह श्रावणी पर्व मनाया जाता है। मुझ बडा ही आश्चर्य हुआ। क्योकि जहा तक मेरा ज्ञान है मैंने ऐसी बात कही नही पढी हैं। यह सम्भव नही ऐसी ऐसी अनेक कल्पनाए लोग बना लेते हैं। मेरे कहने का तात्पर्य यही है कि श्रावणी के विषय मे ऐसी कल्पनाओ को आधार नही बनाना चाहिए। उसके शुद्ध स्वरूप को समझना चाहिए। रक्षा बन्धन का लौकिक और सामाजिक कृत्य भी इसी दिन पडता है। यह ठीक है परन्तु वह प्रथा इस पर्व का कारण नही।

## श्रावणी और स्वाध्याय

.. ..र कहा गया है वेदाध्ययन का इस पर्व से सीधा सम्बन्ध है। श्रावणी मनाने का एक उत्तम तरीका यह है कि वेदादि सच्छास्त्रो का स्वाध्याय इस पर्व से अवश्य चालू किया जावे। स्वाध्याय जीवन का अग होना चाहिए। परन्तु ऐसे पर्वों के अवसरो से प्रेरणा लेकर ही यदि हम इस प्रवृत्ति को बढावे तो अच्छा हो।

आर्यों के जीवन .. अग है। स्वाध्याय मे प्रमाद का हमारो शास्त्रो मे निषेध है। स्वाध्याय का ज्ञान के परिवर्धन मे बहुत बडा महत्व है। शतपथ ब्राह्मण 11 5 7 1 मे स्वाध्याय की प्रशसा करते हुए लिखा गया है कि स्वाध्याय करने वाला सुख की नीद सोता है युक्तमना होता है अपना परम चिकित्सक होता है, उसमें इन्द्रियो का संयम और एकाग्रता आती है और प्रज्ञा की अभिवृद्धि होती है।

यहा पर ब्राह्मण ग्रन्थ का प्रत्येक शब्द महत्व से भरा हुआ है। पुन उसी ब्राह्मण में 11 5-7 10 मे कहा गया है कि स्वाध्याय न करने वाला अब्राह्मण हो जाता है अत प्रतिदिन स्वाध्याय करना चाहिए और ऋक यजु साम अथर्व आदि को पढना चाहिए जिससे वृत का भग न होवे। ब्राह्मण ग्रन्थ स्वाध्याय को अन्य व्रतों की भान्ति एक व्रत बतला रहा है। शतपथ 11 5 6 2 मे इस स्वाध्याय को ब्राह्मण कहा गया है और आगे चलकर बताया गया है कि इस यज्ञ की वाणा जुहू है। मन उपभृत है चक्षु ध्रुवा और मेधा स्रुवा है और सत्य इस । अवभृथ है। इस प्रकार स्वाध्याय की शास्त्रो मे महती महिमा गाई गई है। ऋग्वेद मे स्वय इसका सुन्दर वर्णन है। वर्षाकाल मे मेढक बोलते है। एक की बोली को दूसरा दुहराता है। यह उपमा ऋग्वेद मे वेदपाठी ब्राह्मण की दी गई है। क्योकि इस चातुर्मास्य के समय मे वेद को पढते हैं। वस्तुत वेद का मण्डूक शब्द और यह उपमा निदर्शन का मह .. निग है। इसस मन्त्र सम्मिश्रण वेदवाणी मण्डूक की वाणी और मानसून मघस्य वाणी का और कब हो सकता है? इस वर्षा की ऋतु म वेदज्ञ के मुख मे निकली वेदवाणी मानसून की गडगडाहट से निकली मध्यमा वाणी और मेढको की अनिरुक्त अव्यक्त वाणी परा पश्यन्ती मध्यमा और बखरी के अनिरुक्त रूप की प्रतीक है और इस वर्षा की ऋतु मे इन सबका समन्वय हो जाता है। अत स्वाध्याय की प्रवृत्ति को प्रत्येक आर्य को बढाना चाहिए—यही यहा पर मेरा निवेदन है।

## यज्ञोपवीत और श्रावणी

श्रावणी के साथ नये यज्ञोपवीत के धारण और पुराने के छोडने की भी प्रथा जुडी हुई है। इसका भी प्रधान कारण है। गृह्य सूत्रो मे विभिन्न कर्मों के समय विभिन्न प्रकार से यज्ञोपवीत के धारण करने का विधान है। निवीति उपवीति प्राचीनावीति आदि सज्ञाए इसी आधार पर हैं। यह भी एक गृह्य सूत्रो के आधार पर परिपाटी है कि प्रत्येक प्रधान उत्तम यज्ञ याग आदि कर्मों के समय नया यज्ञोपवीत धारण किया जावे। उसी आधार की पोषिका यह श्रावणी पर यज्ञोपवीत बदलने की प्रथा भी है। यज्ञोपवीत का आर्यो के सस्कार और कर्म काण्ड मे बडा ही महत्व है यज्ञोपवीत के तीन धागे गले म पडते ही वह पितृऋण देवऋण और ऋषि ऋण आदि कर्तव्यो से अपने को बधा हुआ समझने लगता है। यज्ञ- उपनयन यज्ञोपवीत व्रतबन्ध आदि पद इस सम्बन्ध मे विशेष मन्तव्य के हैं। आचार्य कुल मे विद्यार्थी लाया जाता है। इसी क्रमपूर्वक अन यह उपनयन है। यज्ञ और उत्तम कर्मों के लिए विद्यार्थी इसमे प्रतिज्ञात और अ.. त होता है अत यज्ञोपवीत है। इसमे अनुशासन और व्रतो के पालन की प्रतिज्ञा मे बद्ध होता है अत यह व्रतबन्ध है। वेदो मे भी इस यज्ञोपवीत धारण का वर्णन है। उसी को लेकर अन्य शास्त्रो मे इसका वर्णन किया गया है। ऋग्वेद 10 57 2 मन्त्र म कहा गया है कि—जो तन्तु यज्ञोपवीत तन्तु यज्ञो का प्रसाधक है और विद्वानो मे आतत है उसको हम धारण करे। यद्यपि इस मन्त्र मे बहुत से तथ्य छिपे हैं परन्तु .. म मे यहा प .. नही किया जा रहा है।

(पर्व पद्धति से)

(2 पृष्ठ का शेष)

आर्य समाज ने वेद को मूलाधार इसलिए बताया कि वह स्वत प्रमाण हैं। जैसे सूर्य के प्रकाश को देखने के लिए किसी .. नही रहती इसी प्र.. के लिए किसी अन्य प्रमाण की आवश्यकता नही रहती। जिसकी प्रामाणिकता दूसरे पर आधारित हो अर्थात जो परत प्रमाण हो और अनिश्चित हो उसको मूलाधार म क्यो रखा जाए। महर्षि के शब्दो मे जो स्वय प्रमाण रूप है कि जिनके प्रमाण होने मे किसी अन्य ग्रन्थ की अपेक्षा नही। जैसे सूर्य व प्रदीप अपने स्वरूप से स्वत प्रकाशक और पृथिव्यादि के भी प्रकाशक होते हैं। (स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश) ऐसे वेद ज्ञान को छोडकर अन्य किसको मूलाधार के रूप मे रखा जा सकता था। वेद शाश्वत सत्य का पुस्तक है अत आर्य समाज के मूलाधार मे शाश्वत सत्य को प्रतिष्ठित कर महर्षि दयानन्द ने जो स्वय सत्य के अनन्यतम उपासक थे अपनी अनोखी सूझ बूझ तथा वेद ज्ञान के प्रति अपनी अपार निष्ठा का ही परि.. .. है। प सत्यकाम विद्यालकार के शब्दो मे महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना शाश्वत सत्य वेद वाणी की नीव पर की है .. ज शाश्वत सत्य की नीव पर प्रतिष्ठापित हो उसे ईश्वर की ओर से शाश्वत जीवन का वरदान मिला होता है। यदि हम आर्य समाज को शाश्वत जीवन देना चाहते हैं तो शाश्वत सत्य वेद का प्रचार करना अनिवार्य है और वेद का प्रचार तभी हो सकता है कि जब हम स्वय वेद को पढने पढावने सुनने सुनावेंगे। आइए वेद प्रचार सप्ताह एव श्रावणी के पर्व पर वेद के पढने पढाने और सुनने सुनाने का व्रत ले और प्रतिज्ञा करे कि हम सर्वदा वेदानुकूल आचरण करेंगे। वेद विरुद्ध नही।

—

## वेदामृत—

# मातृ भूमि से दुष्टों को झाड़ कर परे फैक दो

ओम अश्व इव रजो दुधुवे वितान जनान्य आक्षियन्पृथिवी याद जायत।

मन्द्राग्रत्वरी भुवनस्य गोपा वनस्पतीना गृभिरोषधीनाम।

अथर्ववेद भूमि सूक्त 15 57

शब्दार्थ—(अश्व) घोड़ा (इव) जिस प्रकार (रज) धूल को धूल कणों को (विदधुवे) उत्कम्प्य दूरप्रक्षिपति धूल कम्पने निटि रूपम) झाड़कर फेंक देता है। उसी प्रकार (ये) जो लोग (पार्थिवीम) हमारी इस मातृ भूमि को (आक्षियन) क्षीण करते हैं हानि पहुंचाते हैं (तान) उन (जनान) लोगों को (यात) जब से (अजायत) बनी है तभी से यह भूमि हमारी मात भूमि (विदधुवे झाड़ कर परे फेंक देती है उन्हें सधारती और दण्डित करती है यह हमारी मात भूमि (मन्द्रा) हर्षित करने और हर्ष देने वाली है (अग्रत्वरी) आगे की ओर उन्नति की ओर शीघ्रता से बढ़ने वाली है। (भुवनस्य) समस्त उत्पन्न होने वाले पदार्थों की (गोपा) रक्षा करने वाली है (वनस्पति नाम) वनस्पतियों का और (औषधीनाम औषधी अनाजों का (गृभि) ग्रहण करने वाली धारण करने वाली है

आचार्य प्रियव्रत जी ने अपने इस मन्त्र की व्याख्या करते हुए लिखा है मात भूमि के इस वर्णन द्वारा वेद ने उपदेश दिया है कि जो लोग राष्ट्र को क्षीण करते हैं उसे हानि पहुंचाते हैं उन्हें सुधार कर अथवा दण्डित करके राष्ट्र को हानि के कर्म से पृथक रखना चाहिए दुष्ट प्रवृत्ति के लोगों को राष्ट्र की हानि करने वाले कर्मों से अलग रखने का यह कर्म सदा होता रहना चाहिए इसमें कभी ढील नहीं होनी चाहिए राष्ट्र निवासियों को उन्नति के मार्ग पर आलस्य छोड़ कर शीघ्रता से आगे बढ़ने वाला बनना चाहिए

इस मन्त्र पर गम्भीरता से विचार करने पर पता चलता है परमात्मा ने वेद ज्ञान के द्वारा सृष्टि के आरम्भ में ही उपदेश दे दिया है कि किसी भी राष्ट्र मे देश मे कुछ लोग ऐसी मनोवृत्ति वाले भी पैदा हो जाएंगे जो उस राष्ट्र को देश को क्षीण करना चाहेंगे जिनकी मनोवृत्ति अपने राष्ट्र व देश के प्रति दुष्टता वाली होगी क्योंकि जहां किसी राष्ट्र मे धार्मिक प्रवृत्ति के लोग देशभक्त देश रक्षक देश की उन्नति चाहने वाले होते हैं वहां कुछ लोग देशद्रोही चोर डाकू राष्ट्र को कमजोर करने वाले विघटन पैदा करने वाले तथा अराजकता फैलाने वाले भी पैदा हो जाते हैं। ऐसे लोगों को दण्डित कर कारागार मे डाल कर उनका सुधार कर उन लोगों से देश की रक्षा करनी चाहिए

वेद ने एक उदाहरण दिया कि घोड़ा जिस प्रकार अपने शरीर पर लगी धूल उसके कणों को अपने शरीर को हिला कर दूर कर देता है घोड़ा एक उपयोगी पशु है जब वह थक जाता है उस थकान को दूर करने के लिए और पुन साहस बटोरने के लिए वह भूमि पर लेट जाता है दो तीन बार उलटबाजियां सी खाता है और फिर खड़ा हो जाता है। जब वह खड़ा होता है तो उसके सारे शरीर पर धूल के कण आदि लगे होते हैं वह सावधानी से खड़ा होकर अपने शरीर को ऐसे जोर हिला देता है कि वह धूल कण आदि सब भूमि पर गिर पड़ते हैं एक भी कण उसके शरीर के साथ लगा नहीं रहता उस धूल को झाड़कर जैसे घोड़ा ताजगी आदि अनुभव करता है और फिर सफर के लिए तयार हो जाता है

ऐसे ही जब किसी राष्ट्र या देश की भूमि पर दुष्ट मनोवृत्ति के लोग अधिक पैदा हो जाते हैं। जो देश जाति और समाज की उन्नति मे रोड़ा अटकाते हैं उन्हें दूर करने के लिए उस राष्ट्र को देश को झकझोरना हिलाना आवश्यक पड़ता है जैसे घोड़ा अपने शरीर को हिलाता है उसका एक एक रोम रोम हिल उठता है और एक 2 रोम खड़ा हो जाता है

इसलिए आज भारत भूमि पर भी कुछ दुष्ट मनोवृत्ति के लोग पैदा हो गए हैं जो भारत भूमि से चिपट गए हैं यहां रहते हैं यहां का अन्न खाते हैं और यहां का जल पीते हैं गीत विदेशों के गाते हैं जो इस भारत भूमि के टुकड़े 2 कर देना चाहते हैं। इन दुष्ट मनोवृत्ति के लोगों को दूर करने के लिए राष्ट्र के शरीर को हिलाना आवश्यक है जन जन को जागृत करना आवश्यक है।

पंजाब तो हिल उठा ही है परन्तु साथ ही साथ सारा भारत हिल उठा है और राष्ट्र देश के टुकड़े करने की भावना वाले अलग कौम का अलाप अलापने वाले विघटनकारी तत्वों को शीघ्र ही धूलि कणों के समान झाड़कर दूर फेंक देना

इस समय सारे देश मे क्रान्ति पैदा करने की आवश्यकता है दुष्टों की दुष्टता से हर व्यक्ति को सावधान करने की आवश्यकता है देश भक्तों को राष्ट्र प्रेमियों को मातृ भूमि की रक्षा के लिए मैदान मे आ डटना चाहिए और दुष्टों को इस भूमि से दूर कर देना चाहिए।

जिस भूमि ने हमें खाने के लिए अन्न दिया पीने के लिए अमृतमय जल दिया तरह 2 के फूल फल और औषधियां दी हैं जो हमें धारण कर रही हैं उस की मिट्टी से हमारा पावन शरीर बना है उसका एक 2 प्रदेश एक एक नगर एक एक ग्राम एक एक चप्पा हमें प्यारा है यह मात भूमि हमें प्राणों से भी प्यारी है इसकी दुष्टों से रक्षा करना हमारा धर्म है कर्तव्य है। इस प्यारी मातृ भूमि पर हम आगे बढ़ यह हमें आगे बढ़ाने वाली है हम आगे बढ़ें और दुष्टों को झाड़कर दूर फैंक द।

—धर्मदेवार्य

## अनुकरणीय

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने जो सहायता कोष खोला हुआ है उसके लिए माननीय सभा प्रधान श्री वीरेन्द्रजी की अपील पर लुधियाना के दानवीर आर्य भाई श्री सत्यानन्द जी मुंजाल ने एक हजार रुपया भेजा था। वे यथा समय भिन्न भिन्न अवसरों पर आर्य समाज और उसकी संस्थाओं के लिए आर्थिक सहायता करते रहते हैं

लगभग दो मास पूर्व श्री सभा प्रधान जी लुधियाना पधारे थे। उस समय भारत हौजरी सिल्क मार्ज लुधियाना के मालिक श्री महेन्द्रपाल जी वर्मा की धर्म पत्नी जी ने सहायता कोष के लिए उन्हें दो हजार रुपया भेंट किया था तत्पश्चात श्री वर्मा ने अपनी दानशीलता का परिचय देते हुए वचन दिया है कि वे सभा के सहायता कोष के लिए पांच सौ रुपया प्रति मास भेजते रहेंगे उनकी यह दानशीलता अनुकरणीय है

अन्य दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि वे भी इनका अनुकरण करते हुए सभा के सहायता कोष मे अधिक से अधिक राशि भेजने का कष्ट कर

—रामचन्द्र जावेद
सभा महामन्त्री

## आर्य जगत् के लिए एक शुभ सूचना

स्वाध्याय प्रेमियों को यह जानकर अत्यधिक हर्ष होगा कि श्री प गंगाप्रसाद उपाध्याय कृत वेद प्रवचन जो बहुत दिनों से अप्राप्त था छपकर बिक्री के लिए आ चुका है इसमें 53 वेद मन्त्रों पर लगभग आठ 2 दस 2 पृष्ठों में प्रवचनों का संग्रह है जोकि सरल भाषा मे होने से साधारणजनों के लिए बहुत उपयोगी है, जिससे सामान्य मनुष्य भी वेद के आशय को आसानी से समझ सकता है पुस्तक का मूल्य 20 रुपये है। किन्तु स्वाध्याय प्रेमीजनों को 20 प्रतिशत कमीशन दिया जाता है पुस्तक सीमित संख्या में ही छपी है जनसाधारण की व्यापक मांग को दृष्टिगत रखते हुए हमें यह छपवाने को विवश होना पड़ा

—सत्यप्रिय शास्त्री एम ए आचार्य
दयानन्द ब्राह्ममहाविद्यालय हिसार (हरियाणा)

## केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली का चुनाव

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान मे आर्य युवक कार्यकर्ताओं का सम्मेलन आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग में श्री क्षितीश वेदालंकार की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ सन 1983 84 के लिए परिषद् के निम्न अधिकारी चुने गये

अध्यक्ष—श्री महाराजसिंह आर्य उपाध्यक्ष—श्री हरिदेव आचार्य श्री धर्मवीर व्यायामाचार्य महामन्त्री श्री अनिलकुमार आर्य उपमन्त्री श्री विश्वनाथ आर्य श्री गुलाबसिंह राघव पुस्तकाध्यक्ष श्री जयप्रकाश आर्य प्रचार मन्त्री श्री प रामदेव शास्त्री कार्यालय मन्त्री—श्री चन्द्र मोहन आर्य संगठन मन्त्री श्री देव शर्मा शास्त्री प्रधान व्यायाम शिक्षक—श्री मनमोहन आर्य व्यायाम शिक्षक—श्री रविदेव आर्य बौद्धिकाध्यक्ष—श्री प्रेम प्रकाश शास्त्री कोषाध्यक्ष प्रवीण कुमार सहकोषाध्यक्ष—श्री वीरेन्द्र कुमार।

चन्द्रमोहन आर्य

## गुरुविरजानन्द स्मारक समिति की बैठक

गुरु विरजानन्द स्मारक ट्रस्ट की अन्तरंग सभा की बैठक वार्षिकोत्सव आदि के सम्बन्ध में विचार करने के लिए 21 8-83 रविवार को दोपहर बाद तीन बजे होनी निश्चित हुई है। अत सभी अधिकारी गण व सदस्य समय पर करतारपुर पधारने का कष्ट कर।

—विश्वनाथ
प्रधान

# मास जुलाई 83 तक सभा के नया भवन निर्माणार्थ प्राप्त दान का विवरण

### आर्य समाजो से प्राप्त

| | |
|---|---|
| आर्य समाज शक्तिनगर अमृतसर | 1000 00 |
| आर्य समाज औड़ (जालन्धर) | 5 00 |
| आर्य समाज महलपुर द्वारा श्री सत्य प्रकाश जी | 1173 70 |
| ,, श्रद्धानन्द बाजार अमृतसर | 1100 00 |
| ,, नवांशहर दोआबा | 1100 o0 |
| ,, धर्मकोट रन्धावा | 130 00 |
| ,, मॉडल टाउन जालन्धर द्वारा श्री रामकुमार जी मुख्याध्यापक | 2100 00 |
| आर्य समाज सैक्टर 22 ए चण्डीगढ़ | 1100 00 |
| बरनाला (संगरूर) | 5000 00 |
| सुलतानपुर लोधी द्वारा श्री डा लालचन्द पसरीचा | 500 00 |
| धूरी | 500 00 |
| बीवाला रोड फगवाड़ा द्वारा म हरिराम चोपड़ा प्रधान | 1100 00 |
| बंगारोड फगवाड़ा | 1100 00 |
| मोहल्ला गोविन्दगढ़ जालन्धर | 1100 00 |
| रोपड़ | 1001 00 |
| जिला आर्य सम्मेलन अहमदगढ़ | 5100 00 |
| आर्य समाज मैकफील्डगंज लुधियाना | 2100 00 |
| महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना | 11000 00 |
| स्त्री आर्य समाज श्रद्धानन्द बाजार लुधियाना | 2500 00 |
| आर्य समाज तलवाड़ा टाऊनशिप | 201 00 |
| जवाहर नगर लुधियाना | 251 00 |
| योग | 39 061 70 |

### शिक्षण संस्थाओ से प्राप्त

| | |
|---|---|
| प्रिंसीपल बी एल एम गर्ल्ज कालेज नवांशहर | 2100 00 |
| गान्धी आर्य हाई स्कूल बरनाला | 110^ 00 |
| आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल बस्ती नौ जालन्धर | 3100 00 |
| प्रि आर्य हा सै स्कूल लुधियाना | 1100 00 |
| प्रि डी ए एन कालेज आफ एजुकेशन नवांशहर दोआबा | 5100 00 |
| प्रि आर के आर्य कालेज नवांशहर | ?100 00 |
| प्रि आर्य गर्ल्ज हा सै स्कूल लुधियाना | 2100 00 |
| आर्य हाई स्कूल बस्ती गुजां जालन्धर | 1000 00 |
| प्रि आर्य माडल स्कूल फगवाड़ा | 1100 00 |
| प्रि लाल बहादुर शास्त्री आर्य महिला कालेज बरनाला | 900 00 |
| श्री राम कुमार जी मुख्याध्यापक आर्य हाई स्कूल बस्ती गुजां जालन्धर | 1000 00 |
| योग | 20 700 00 |

### व्यक्तिगत रूप से प्राप्त

| | |
|---|---|
| श्री देव शर्मा जी दीनानगर | 500 00 |
| विभिन्न व्यक्तियो से | 32 00 |
| प्रि अश्विनी कुमार जी दीनानगर | 1100 00 |
| श्री हरिचन्द जी कपूरथला | 1000 00 |
| सुश्री सुषमावति जी जम्मू | 1000 00 |
| भिन्न भिन्न प्राप्तियां द्वारा श्री हरवंसलाल जी शर्मा | 2100 00 |
| श्री ज्ञान देवी जी सुजानपुर | 101 00 |
| श्री रणवीर जी भाटिया लुधियाना | 1100 00 |
| श्री यशपाल भाटिया बरनाला | 1100 00 |
| मा अमर चन्द जी ई—सू 132 जालन्धर | 2000 00 |
| श्री डा सन्तराम जी धूरी | 1100 00 |
| श्री कृष्ण लाल प्रेम प्रकाश धूरी | 1100 00 |
| श्री कश्मीरा जी आर्य लुधियाना | 1100 00 |
| डा भगत राम जी अग्रवाल | 21 00 |
| श्री मा राम प्रसाद जी लुधियाना | 1100 00 |
| श्री घनश्याम दास जी चूटाना (सोलन) | 101 00 |
| श्री हीरा चन्द जी 12 इस्लामाबाद अमृतसर | 500 00 |
| मै मुस्कान सेल्ज कारपोरेशन लुधियाना | 2500 00 |
| मै मुकाश कास्टिंग लुधियाना | 2500 00 |
| श्रीमती वेदवती (पत्नी स्वर्गीय श्री निरंजन नाथ) स्त्री आर्य समाज दयानन्द बाजार लुधियाना | 7000 00 |
| योग | 27 055 00 |

| | |
|---|---|
| कुल योग | 39 161— 0 |
| | 20 700—00 |
| | 27 055—00 |
| | 86 916—70 |

—रामचन्द्र जावेद महामन्त्री

# ऋषि निर्वाण शताब्दी के सम्बन्ध में यतिमंडल के महत्वपूर्ण निश्चय

सार्वदेशिक आर्य वानप्रस्थ मण्डल का एक नैमित्तिक बैठक ज्वालापुर के वानप्रस्थ आश्रम में 30 31 जुलाई को हुई। जिसमे यति मण्डल के सदस्यो ने भी भाग लिया यति मण्डल की एक विशेष बैठक पहली और दूसरी अगस्त को हुई प्रसन्नता की बात है कि समस्त सन्यासी वानप्रस्थी एवं नैष्ठिक ब्रह्मचारियों का संगठन महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी मे सक्रिय भाग लेने के लिए तैयार हो गया है। सार्वदेशिक संन्यासी मण्डल के अध्यक्ष वयोवृद्ध अमर स्वामी जी महाराज ने सन्यासी मण्डल की ओर से निर्वाण शताब्दी के कार्य के लिए 5111 रुपय देने का वचन दिया और इतनी वृद्ध अवस्था होने हुए भी अजमेर पधार कर समारोह की शोभा बढ़ाने की स्वीकृति दी है।

इस शताब्दी के अवसर पर अमर स्वामी जी महाराज का प्रमाण समुच्चय नामक वृहद ग्रन्थ पूरा हो जाने की आशा है। वानप्रस्थ मण्डल के अध्यक्ष श्री आर्य भिक्षु जी ने आश्वासन दिया कि यज्ञ शाला तैयार करने का पूर्ण उत्तरदायित्व वे अपने ऊपर ले रहे हैं। स्वामी दीक्षानन्द जी और आर्य भिक्षु जी यति मण्डल की इस बैठक में सम्मिलित होने के लिए कलकत्ता से आए थे। उन्होने बताया कि कलकत्ता में भी बड़े उत्साह से अजमेर शताब्दी मे सम्मिलित होने की तैयारी हो रही है और वहां से भी शताब्दी के लिए प्रचुर धनराशि का वचन मिला है। यति मण्डल के सदस्यो ने भी आपस मे बैठकर आर्थिक स्थिति पर विचार किया और दस लाख रुपये के लगभग निर्वाण शताब्दी के लिए भेंट करने का निश्चय किया। चतुर्वेद पारायण यज्ञ का समस्त भार और विशेष अतिथियों वानप्रस्थियों सन्यासियों के भोजन का प्रबन्ध भी यति मण्डल की ओर से होगा। इस कार्य मे अजमेर का यति मण्डल व्यवस्था में पूरा सहयोग देगा। बड़े पैमाने पर सार्वजनिक ऋषि लंगर का भी प्रबन्ध किया जा रहा है। जिससे अधिक से अधिक लोगो को ऋषि लंगर में भोजन की सुविधा मिल सके। यति मण्डल ने उन मण्डलियो के मार्ग भी निश्चित कर दिए जिन मार्गों से सन्यासियो मुनियों की टोलियां लगभग एक सौ मील की पद यात्रा करके अजमेर मे प्रवेश करेंगी

शताब्दी के अवसर पर एक विशाल प्रदर्शनी भी लगेगी जिसमे सत्यार्थ प्रकाश के समस्त समुल्लास ताम्र पत्र पर अंकित सत्यार्थ प्रकाश ऋषि दयानन्द द्वारा व्यवहृत समस्त सामग्री और ऋषि दयानन्द का व्यक्तिगत पुस्तक भण्डार भी प्रदर्शनी मे रखा जाएगा। बैठक में भाग लेने वालो मे स्वामी सर्वानन्द जी स्वामी ओमानन्द जी स्वामी सत्यानन्द जी स्वामी विद्यानन्द जी स्वामी जगदीश्वरानन्द जी सत्य प्रकाश जी तथा हरियाणा पंजाब और हिमाचल प्रदेश के प्रतिष्ठित सन्यासी उपस्थित थे शताब्दी सम्बन्धी कार्यक्रमो का अभिनन्दन के लिए अजमेर मे 14 15 अगस्त को विभिन्न व्यक्तियो की एक बैठक बुलाई गई है।

शताब्दी के अवसर पर एक भव्य स्मारिका निकालने का निश्चय किया गया और उसके सम्पादन का भार प्रसिद्ध और अनुभवी पत्रकार श्री क्षितीश वेदालंकार को सौंपने का निश्चय हुआ। यति मण्डल के सदस्यो से कहा गया कि वे इस स्मारिका के लिए सब प्रकार का सहयोग दें।

शताब्दी के प्रेरणाप्रद समारोह मे एक ऐसा कार्यक्रम रखने का निश्चय किया गया जिसमे देश विदेश के उन विशिष्टजनो का स्वागत किया जाएगा जिन्होने अपने जीवन का बहुमूल्य भाग आर्य समाज की सेवा मे लगाया है।

एक दो तीन या चारों वेद कण्ठस्थ करने वालो को भी पुरस्कृत करने की योजना है।

## राजा भिनाय की कोठी आर्यसमाज को सौंपने के आदेश

सार्वभौमिक सभा के द्वारा भारत सरकार से मांग की गई थी कि राजा भिनाय की कोठी जिसमे महर्षि दयानन्द जी का देहावसान हुआ था वह आर्य समाज को सौंप दें तो बहुत अच्छा है। केन्द्रीय गृहमन्त्री श्री प्रकाशचन्द्र सेठी ने यह प्रार्थना स्वीकार करते हुए राजस्थान के मुख्यमन्त्री जी के नाम निम्न पत्र लिखा है।

श्री शिवचरण जी माथुर
मुख्यमन्त्री राजस्थान (जयपुर) दिनांक
378

महर्षि दयानन्द सरस्वती का जिस जगह देहावसान हुआ है उसके बाहिर एक छोटा सा मकान है और एक पटोल पम्प भी है। वह पटोल पम्प हटाकर और उस मकान को एक्वायर करके उस स्थान को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को दे दिया जाए तो मैं अनगृहीत होऊंगा। मैं टेलीफोन से भी इस सम्बन्ध में आप से चर्चा करूंगा राष्ट्रपति जी ने भी उन्हें वचन दिया है और वे भी सम्भवतः आप से टेलीफोन से चर्चा करेंगे।

सादर आपका
प्रकाशचन्द सेठी

## आ. स. अड्डा होशियारपुर जालन्धर में वेद कथा

आर्य समाज अड्डा होशियारपुर श्रद्धानन्द बाजार जालन्धर में 22 अगस्त 1983 सोमवार से 28 अगस्त रविवार तक श्रावणी उपाकर्म के उपलक्ष में वेद सप्ताह मनाया जाएगा जिसमें दैनिक प्रातः साढ़े सात से आठ बजे तक स्वस्ती यज्ञ हुआ करेगा तथा साढ़े आठ से 9 बजे तक श्री हरिवंश लाल जी महता लखनऊ वाले वेद उपदेश किया करेंगे तथा रात्रि साढ़े सात से साढ़े आठ बजे तक श्री एरन्नारीलाल प्रज्ञाचक्षु के भजन हुआ करेंगे तथा साढ़े आठ से साढ़े 9 बजे तक श्री हरिवंशलाल जी महता वेद मनीषी वेद कथा किया करेंगे। धर्म प्रेमी सज्जनों को सूचित किया जाता है कि वह श्री महता जी के रोचक प्रवचनों को सुनने के लिए पधारें।

—योगेन्द्रपाल सेठ मन्त्री

## हरियाणा के शुद्धि समाचार

हरियाणा में हिन्दू शुद्धि संरक्षणीय समिति सभालखा (करनाल) के तत्वावधान में इन दिनों ग्राम बोहड़िया (जीन्द) में तुल्ला मूले जाट के परिवार के 24 सदस्यों ने आर्य समाज द्वारा किए गए यज्ञ में आकर आहुतियां डाली तथा यज्ञोपवीत धारण कर वैदिक धर्म (हिन्दू धर्म) को स्वीकार किया। ग्राम फरमाना (सोनीपत) में भी मूले जाटों के परिवारों के 44 सदस्यों ने भी हिन्दू धर्म को स्वीकार किया। शुद्ध हुए एक लड़के को दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार में दाखिल करा दिया।

## अजमेर का छात्र राजस्थान बोर्ड में प्रथम

आर्य समाज अजमेर के अन्तर्गत संचालित डी ए वी हायर सैकेण्डरी स्कूल अजमेर की दसवीं कक्षा का छात्र संजीव कुमार जैन माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान की सैकेण्डरी वाणिज्य परीक्षा में समस्त राजस्थान में प्रथम पोजीशन से उत्तीर्ण हुआ राज्य स्तरीय योग्यता सूची में प्रथम स्थान प्राप्त किया है।

—रामसिंह प्रधानाध्यापक
डी ए वी उच्च माध्यमिक विद्यालय
अजमेर (राजस्थान)





श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

वर्ष 16 अंक 20 12 भाद्रपद सम्वत् 2040 तदनुसार 28 अगस्त 1983 दयानन्दाब्द 159 । एक प्रति 40 पसे (वार्षिक ल्क रुपए

## ३१ अगस्त १९८३ को जन्माष्टमी के पावन पर्व पर—(स्व पिण्डीदास ज्ञानी द्वारा लिखित विशेष लेख)

# श्री कृष्ण-चरितामृत

ले—स्व श्री पिण्डीदास ज्ञानी

## गोपालक-गोसेवक योगीराज श्री कृष्णचन्द्र महाराज

आज विक्रमी सम्वत 2040 मे 5108 वर्ष पूर्व द्वापर तथा कलियुग की सन्धि वेला मे मथुरा नरेश आततायी कंस के कारागार में आजीवन बन्दी दम्पति वसुदेव-देवकी की काल कोठरी मे भाद्रपद कृष्णाष्टमी की अर्द्ध रात्रि के समय एक विचित्र शिशु का प्रादुर्भाव हुआ जिसके जन्म लेते ही माता पिता की दृढ़ साङ्कल मानो अनायास ही छिन्न भिन्न हो गई प्रहरियो पर घोर निद्रा व्याप्त हो गई और वसुदेव के हृदय मे घनघोर घटाच्छादित नभोमण्डल के नीचे तमोमयी अवर के समय बाढ़ ग्रस्त कालिन्दी (यमुना) की उत्ताल तरङ्गो को चीरते हुए अपने नवजात विचित्र शिशु को नदी के परले पार गोकुल ग्राम निवासी अपने परम स्नेही गोपबन्धु नन्द के गृह मे सद्योत्पन्न उसकी कन्या के साथ परिवर्तित कर लाने का अदम्य उत्साह जाग उठा यही अदभुत अनूठा अनोखा विचित्र शिशु कालान्तर मे द्वारकाधीश योगीराज योगेश्वर सोलह कला सम्पूर्ण आनन्द भगवान श्री कृष्णचन्द्र के नाम से भारत के आकाश मण्डल पर देदीप्यमान नक्षत्रवत् नक्षत्र की भान्ति चमका वहां दिशाओ को अपने अद्वितीय आलोक से आलोकित किया और देश के इतिहास एव राष्ट्र की ख्याति को समुज्ज्वल करने वाला अद्वितीय नर रत्न सिद्ध हुआ

आपके आबाल्यमान् जीवन अथवा चाव चरित्र की अनेकानेक घटनाए प्रति दिन कथा वाचक (विद्वानो के मुखारविन्द से श्रवण करने का सौभाग्य प्राप्त करके सतरा हम अपने नीरस से मानव जीवन मे अलौकिक आह्लाद एव रमणीय रस की छबीली छटा के असीम आनन्द की अनूठी अनुभूति कर के अपने सौभाग्य की श्लाघा करते अघाते नहीं हैं इस अद्वितीय प्रेम रस से आप्लावित हमारे मन मन्दिरों में यह तथ्य दृढ़ता पूर्वक अंकित हो जाता है कि नन्द नन्दन भगवान् श्री कृष्णचन्द्र का सर्वांग सम्पूर्ण लीलामय जीवन मिश्री की एक डली है बूंद की एक बेड़ी है जिसका रसास्वादन किसी भी समय किसी भी परिस्थिति मे किसी भी दशा और किसी भी दिशा मे किया जाए वह मधु सा मीठा मधुर प्रतीत होगा

समस्त संसार के महा पुरुषो की जीवनियों का गम्भीर अध्ययन करने पर यह तथ्य सुस्पष्ट दृष्टिगोचर हो जाता है कि किसी महानुभाव मे कोई एक गुण विद्यमान है किसी मे कोई दूसरा कोई विविध विद्याओ मे पारङ्गत है किसी ने योगानुष्ठान एव तपश्चर्या द्वारा अष्ट सिद्धियो और नवनिधियो की उपलब्धि के फलस्वरूप भगवत्प्राप्ति कर ली है किसी के बीच शौर्य और धैर्य का डंका चहुदिश बज रहा है कोई वसुधैव कुटम्बकम् के मन्त्र के निरन्तर क्रियात्मक जपानुष्ठान द्वारा विश्वबन्धुत्व का मूर्तिमान प्रतीक बन पाया है किसी ने मन्त्र याग के पुण्य प्रताप से ख्याति उपलब्ध कर ली है किसी ने दीन हीन अभावग्रस्त मानव समुदायो नि स्वार्थ सेवा शुश्रूषा करके उच्चतम पद प्राप्त कर लिया है—परन्तु भगवान श्री कृष्णचन्द्र की विशेषता यह है कि आप सर्वगुणनिधान समस्त गुणागार समन्वय गुण सम्पन्न और सक्षम प्रतिष्ठा संयुक्त थे यही कारण है कि जगती तल की प्राचीनतम आर्य जाति ने जोकि सर्गारम्भ से ही वीर पूजा मे अग्रगण्य स्वीकार की जाती चली आ रही है जितनी अनन्य भक्ति और जितना प्रेम प्यार आज तक समस्त वीर वर मनियो व विख्यात महानुभाव विश्व विजेता महारथियो शस्त्रास्त्र रचयिता ऋषि मुनियो विज्ञानवेत्ता विद्वान एव अध्वर प्रवीण याजक को अर्पित न किया है उतना और कदाचित उससे भी कहीं अधिक हृदय तथा मस्तिष्क की कोमलतम भावनाए एकमात्र भगवान श्री कृष्णचन्द्र के चारु चरण कमलो पर न्योछावर करके अपने आपको धन्य धन्य मानते हैं

यो तो भगवान का जीवन चरित्र कम्म पद्म ब्राह्म ब्रह्मवैवर्त भागवत वामन वायु विष्णु और स्कन्द आदि पुराणो मे सविस्तर अङ्कित है परन्तु उन पुराण लेखको ने अपनी श्रृंगार रस प्रधान मनोवृत्ति भद्दी भाषा भाव भरित अश्लील शैली के अनुरूप ऐसे भद्दे भोंडे भयङ्कर ढंग से महाराज जी की परम पुनीत जीवन लीलाओ को अति रञ्जित एव अत्यन्त वीभत्स रूप मे प्रस्तुत किया है कि पढ़ने सुनने वालो को शर्म को भी मारे लाज के अपना मुंह छिपाने पर विवश होना पड़ता है उनकी स्वाभाविक लज्जा को भी पानी पानी होना पड़ता

(शेष पृष्ठ 2 पर)

## सम्पादकीय—

# योगेश्वर श्री कृष्णचन्द्र जी महाराज

भगवान कृष्ण का हमारे इतिहास मे एक विशेष स्थान है। यह कहा जाए तो अनुचित न होगा कि महाभारत के पश्चात् हमारे इतिहास मे बार 2 जितना वर्णन श्री कृष्णजी महाराज का आया है किसी दूसरे महापुरुष का नही आया। इसका एक परिणाम यह भी हुआ है कि उनके विषय में कई प्रकार की काल्पनिक कथाएं भी प्रसिद्ध हो गई हैं। क्योंकि वह आज भी सर्वप्रिय हैं। इसलिए उन्हें लोग कई नामों से याद करते हैं। भगवान कृष्ण, योगीराज कृष्ण कमयोगी कृष्ण चक्रधारी कृष्ण, योगेश्वर कृष्ण, इस प्रकार उन्हें कई नामो से पुकारा जाता है। यदि उन्हें याद करने का यह क्रम यहीं समाप्त हो जाता तो उस पर किसी को आपत्ति न होती। श्रद्धा से प्यार से किसी व्यक्ति को कई नामो से पुकारा जाता है। इसलिए यदि श्री कृष्ण जी महाराज के कई नाम लिए जाते हैं तो उस पर न किसी को आश्चर्य होना चाहिए न कोई आपत्ति होनी चाहिए। उनके भिन्न 2 नाम उनकी सर्वप्रियता के ही प्रतीक हैं। इसलिए हम उन्हे चाहे किसी नाम से याद करें उसमे कोई अन्तर नही पडता, जब तक हम भगवान कृष्ण को समझने का प्रयास नही करते और यह जानने का प्रयत्न नही करते कि वह कौन थे, क्या चाहते थे और क्या कारण है कि 5 हजार वर्ष व्यतीत हो जाने पर भी आज उन्हें याद करके हमारा सिर श्रद्धा से झुक जाता है। श्री कृष्ण के नाम से ही मनुष्य के मन-मस्तिष्क मे उनके लिए एक विशेष आकर्षण पैदा हो जाता है। सबसे बड़ा कारण यह है कि गीता के द्वारा उन्होंने पहली बार मनुष्य जीवन का रहस्य हमारे सामने रखा था यह नही कि उससे पहले इस रहस्य को कोई नही जानता था वेद अनादिकाल से चले आ रहे हैं उनके द्वारा मनुष्य जीवन के भिन्न 2 पक्ष और उनके रहस्य हमारे सामने आते रहे हैं। परन्तु उनको सरल भाषा मे और ऐसे रूप मे कि साधारण से साधारण व्यक्ति उन्हे समझ सकें, श्री कृष्ण चन्द्र महाराज ने ही गीता के द्वारा हमारे सामने रखा था। जो कुछ वेदो मे लिखा गया है वही हमे सक्षिप्त रूप मे उपनिषदों मे मिल जाता है और उसे ही कुछ सक्षिप्त रूप में भगवान श्री कृष्ण ने गीता द्वारा मनुष्य मात्र को समझाने का प्रयास किया था। इसीलिए तो यह कहा गया है कि सब उपनिषदो को विचार करके और उनका गहरा अध्ययन करके श्री कृष्ण जी ने गीता मानव मात्र के सामने रखी थी। उपनिषद गऊ है कृष्ण जी ग्वाला है अर्जुन बछड़ा है और गीता दूध है। यह गीता रूपी दूध ही है जिसके आधार पर हम पिछले पाच हजार वर्ष से चले आ रहे हैं। आज यदि हमारे अन्दर कुछ शिथिलता पैदा हो रही है तो उसका एक कारण यह भी है कि जो कुछ भगवान श्रीकृष्ण गीता के द्वारा हमे बता गए थे हम उसका अनुसरण नहीं करते। कई बार यह प्रश्न भी किया जाता है कि हिन्दू जाति निर्बल और शिथिल क्यो हो रही है? इसका एक ही कारण है वह यह कि गीता में भगवान कृष्ण ने हमे जो उपदेश दिये हैं हम उनके अनुसार अपने जीवन को ढालने का प्रयास नही करते। उनका सबसे बड़ा उपदेश जो उन्होंने अर्जुन को दिया था वह यह है कि मनुष्य का शरीर तो मर सकता है उसकी आत्मा नहीं मर सकती। जीवात्मा न जन्मता है न कभी मरता है। न ही उसके विषय मे यह कहा जा सकता है कि एक बार होकर फिर नहीं होगा। यह तो शरीर के मारे जाने पर भी मरता नही। न जीवात्मा को शस्त्र काट सकते हैं न आग जला सकती है न जल गला सकता है, न वायु सुखा सकती है। वह न कटने वाला है, न जलने वाला, न गलने वाला और न सूखने वाला है, वह नित्य स्थिर अचल और सनातन है।

यह उपदेश देने के पश्चात् ही भगवान कृष्ण ने अर्जुन से कहा था कि यदि तू इस युद्ध मे मारा गया तो तुझे स्वर्ग प्राप्त होगा। यदि जीत गया तो इस पृथ्वी को भोगेगा। यह है वह उपदेश जो आज की परिस्थितियो मे भी हमे याद रखना चाहिए। जिस जाति में आत्म विश्वास और स्वाभिमान नही होगा वह जीवित नही रह सकती हमारे अन्दर भी यही सब से बडी कमी आ रही है। हम श्री कृष्ण जी को समझने का प्रयास ही नही करते। इसलिए कई बार उनके साथ बहुत अधिक अन्याय भी करते हैं और उनके विषय म पूर्णतया निराधार मिथ्या और भ्रामात्मक कहानिया कहने लगते हैं। जितना अन्याय हमने श्री कृष्ण जी से किया है किसी और जाति ने अपने किसी महापुरुष के साथ उतना अन्याय नही किया होगा। उनके और गोपियो के सम्बन्ध के विषय मे जो अश्लील बातो का प्रचार किया जाता है उसी से पता चल जाता है कि उनके साथ कितना अन्याय हो रहा है। भगवान कृष्ण हमारे उन महापुरुषो मे से हैं जिन पर हम जितना भी गर्व करें थोडा है। राम और कृष्ण यह दो नाम हैं जिनके गिर्द हमारी सस्कृति घूमती है। यदि यह दोनो नाम हमारे इतिहास मे से निकाल दिए जाए तो कुछ भी बाकी नही रहता। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भगवान कृष्ण को इन शब्दो म अपनी श्रद्धांजलि भेंट की थी—

'श्री कृष्ण जी का इतिहास महाभारत मे अत्युत्तम है। उनका गुण कर्म स्वभाव चरित्र आप्त पुरुषो के सदृश है जिसमे कोई अधर्म का आचरण श्री कृष्णजी ने जन्म से मरण पर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो ऐसा नही लिखा।

इससे अधिक प्रशसा श्री कृष्ण जी महाराज की और क्या हो सकती थी उन की जन्माष्टमी पर यदि हम उन्हे और उनके उपदेश को समझने का प्रयास कर तो हमारी जाति और हमारे देश का कल्याण हो सकता है।

—वीरेन्द्र

# अजमेर पहुंचने की तैयारी करें

3 से 6 नवम्बर 1983 तक अजमेर मे महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी मनाई जा रही है। जिसमे भाग लेना प्रत्येक आर्य बहिनो तथा भाईयो का कर्तव्य बनता है क्योंकि प्रत्येक आर्य समाजी महर्षि का ऋणि है उनका ऋण हम जीवन भर प्रयत्न करने पर भी चुका नही सकते। उन उपकारो को चुकाने की दिशा मे हम कुछ कार्य अवश्य कर सकते हैं। इसलिए प्रत्येक आर्य बन्धु का अजमेर पहुचना परम कर्तव्य बन जाता है।

महर्षि को हमारे से बिछुड़े 100 वर्ष होने वाले हैं। इन सौ वर्षों मे हम उनके अनुयायी उनके बताए रास्ते पर कितने आगे बढ़े हैं। जो उन्होंने शरीर छोडने से पहले आदेश दिया था कि सभी मेरे पीछे आ जाओ उसका हमने कहा तक पालन किया है। उन्होने जो कार्य हमारे जिम्मे लगाया था उसको हमने कहा तक पूरा किया है। इत्यादि अनेकों बातो पर विचार करने के लिए 3 से 6 नवम्बर तक अजमेर अवश्य पहुचें।

पजाब के आर्य बन्धु आर्य समाज का कार्य करने मे सदा अग्रणी रहे हैं हमे आशा है कि इस निर्वाण शताब्दी मे भाग लेने के लिए अब भी पजाब के आर्य बन्धु पीछे नही रहेगे। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने इसके लिए एक प्रबन्ध समिति बना दी है जो बसो आदि की सारी व्यवस्था करेगी। इस समिति के सदस्य हैं—श्री आशानन्द जी आर्य सभा मन्त्री श्री देवराज जी बुल्लर लुधियाना श्री वेदप्रकाश जी सरीन नवांशहर।

पजाब से हजारो बन्धुओ के अजमेर पहुचने की पूरी आशा है सभी नगरो से समाचार आ रहे है कि आर्य बन्धु अजमेर पहुचने की तैयारिया कर रहे हैं। बसें कब और किस 2 तिथि को चलेगी कितना किराया होगा कौन सा जाने का रास्ता होगा। यह सारा समाचार शीघ्र प्रकाशित कर दिया जाएगा।

—सह सम्पादक

# ज्योतियों की ज्योति

ले—श्री सुरेशचन्द्र जी वेदालकार एम ए एल टी
175 जाफरा बाजार गोरखपुर

यज्जाग्रतो दूर मुदैति दैव तदु
सुप्तस्य तथैवैति ।
दूर गम ज्योतिषा ज्योति रेक तन्मे
मन शिव सकल्पमस्तु ॥

(यत) जो (जाग्रत) जाग्रतअवस्था में (दूर उदैति) दूर-दूर भागता है और (सुप्तस्य) सोए हुए का (तथा एव) उसी प्रकार प्रकार ही (एति) जाता है (तत) वह (दूर गमम) दूर दूर तक जाने वाला ज्योतिषाम) प्रकाशको अर्थात ज्ञान कराने वाली इन्द्रियो का (ज्योति) प्रकाशक अर्थात ज्ञान साधक (दैव) दिव्य शक्ति सम्पन्न (एकम) एक ही है(तत मे मन ) वह मेरा मन (शिव सकल्पमस्तु) शुभ सकल्पो वाला (अस्तु) हो।

हमारे शरीर के सम्पूण कार्यों का सचालक मन है। यह मन जागते हुए सोते हुए सभी समयो पर हमारे कार्यों का सचालन करता है। वास्तव मे आत्मा का स्थूल स्वरूप मन और मन का स्थूल स्वरूप तथा बाह्य स्वरूप शरीर है। शरीर और मन का पारस्परिक सम्बध है। मन जागते हुए और सोते हुए दौड लगाता रहता है कभी शान्त नही होता। अथव वेद के 10 7 37 मन्त्र मे कहा गया है कच न रमते मन मन तो कभी दम नही लेता। परन्तु यदि मन को स्थिर कर लिया जाए तो मनुष्य बड से बड और कठिनतम कार्यों को कर लेता है। ऋग्वेद मे कहा गया है —

स्थिर मनश्चकृष जात इन्द्र ।
वेषीदको यूथमे भयसश्चित्त ।
ऋ 5 30 4

भगवान इन्द्र की इच्छा करने वाले यदि तू समथ होकर मन को स्थिर करे तो तू अकेला ही बहुतो (अनेक विघ्न बाधाओ तथा विषयो) को युद्ध मे जीत सकता है।

डिमास्थनीज इगलड का ही नही यरोप का प्रमुख वक्ता था। बचपन मे ही नही युवावस्था मे भी ततलाकर बोलता था। हकलाता था। एक दिन किसी व्यक्ति का भाषण सुना और उसने अपने मन मे वक्ता बनने का निश्चय किया। हकलाने वाला एक नवयुवक वक्ता बनेगा ? यह तो हसी उडाने लायक बात थी ही। अत सब उसका मजाक उडाने लगे पर उसने वक्ता बनने की ओर अपना मन स्थिर कर लिया था। अब उसका लक्ष्य उससे चिपट गया था। उसने किसी की परवाह नही की और अपने लक्ष्य पर दीवाना हो गया। समुद्र के किनारे निजन प्रदेश मे मुख मे ककडिया भरकर भाषण देने के अभ्यास मे जुट गया और देखते देखते वह ससार का सवश्रष्ठ वक्ता बन गया।

डिसरेली इगलड का प्रधानमन्त्री था। उसका प्रारम्भिक जीवन अत्यन्त कष्टमय था। वह अपने साथ दुर्भाग्य लेकर आया था। गरीब और असहाय निराश्रय और असहाय। इस व्यक्ति के लिए प्रधान मन्त्री बनने की कामना भी अत्यन्त दुष्कर थी। पर प्रधानमन्त्री बनने के लिए उसने अपने मन को स्थिर किया और दढ सकल्प का फल यह हुआ कि सचमुच डिसरैली इग्लैड का प्रधानमन्त्री बना। डिसरैली का उल्लेख करते हुए नेहरू जवाहरलाल ने विश्वविद्यालय के छात्रो से कहा था विजय उसी की होती है जो विजयी होने का सकल्प और साहस करता है।

मेरे एक नवयुवक गुरु थे गुरुकुल कागडी मे। नाम था उनका चन्द्रगुप्त वेदालकार। मुलतान गुरुकुल से कक्षा दसवी के बाद आए थे। शरीर से पतले दुबले प्रभावहीन। वाणी भी अत्यन्त दीन और प्रभाव रहित। उन्होने तैरने दौडने, भाषण देने और पढने मे मन को स्थिर किया। एक वष बाद पचपुरी तैराकी प्रतियोगिता मे वे पुराने सभी रिकार्डों को तोडते हुए प्रथम आए। दौडने की बिजनौर जिले की प्रतियोगिता मे उन्होने रिकाड तोडते हुए गुरुकुल कागडी का नाम चमकाया। भाषण देने की प्रतियोगिताओ मे बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय इलाहाबाद विश्वविद्यालय और भारत मे कही भी होने वाली पचीसो प्रतियोगिताओमे गुरुकुल कागडी का प्रथम स्थान रखा और इतना ही नही स्वतन्त्रता युद्ध मे गिरफ्तार होने के बाद वे जब जेल से छूट कर दिल्ली पहुचे तो दिल्ली की जनता ने जो उनका स्वागत किया वह तो अविस्मरणीय था ही वहा पर जिन्होने उनका भाषण सुना वे लाला लाजपतराय विपिनचन्द्रपाल बाल गगाधर तिलक और वीर सावरकर से उनकी तुलना करने लगे। जहा तक अध्यापक का प्रश्न है गुरुकुल कागडी के प्रमुख विद्वान और प्रोफसर डा सत्यकेतु विद्यालकार डा सत्यव्रत सिद्धान्तालकार और श्री जयचन्द्र जी विद्यालकार की श्रेणी मे उनका नाम था। वे लोकप्रिय थे। जो यहा जनता का प्यारा होता है, उसे भगवान भी जल्दी बुला लेते हैं वे नही रहे। पच्चीस तीस वर्ष की अवस्था मे चल बसे। यह है मन को स्थिर करने का फल।

आप प्रश्न करेंगे कि मन तो अत्यन्त चचल है। जागते हुए सोते हुए सभी समयो मे वह तेजी मे रहता है। वह ससार के तेज से तेज चलने वाले पदार्थों से भी अधिक गति वाला है और वह इस लोक परलोक देश विदेश और बहुत दूर दूर तक यात्राए करता है। तेज से तेज यान भी सूर्य तक पहुच नही सकते और पहुचने में उन्हे बहुत समय लगेगा पर मन को वहा पहुचने मे जरा भी समय नही लगता। वह मन राजाओ के दरबार पहाड की अगम्य चोटियो समुद्र के अगाध अन्तस्तल नदी की दुगम धाराओ अद्भुयपश्य राजधानियो की गुप्त कोठियो वेद की गहन ऋचाओ दशनो की सूक्ष्म पक्तियो व्याकरण की उलझी हुई गुत्थियो दूर दूर के देशो स्थानो और कल्पना द्वारा प्रसूत अलख लोक लोकान्तरो तक वह मन क्षणो और पलो मे पहुच जाता है। कोई भी अन्य पदाथ इतनी तेजी से और इतनी दूर नही जा सकता। विद्युत की चचलता प्रसिद्ध है परन्तु उसकी भी चमक देखी जा सकती है परन्तु मन की क्रिया तो इतनी तीव्र होती है कि इसका देखना तो दूर सोचना भी कठिन है। यह देखिए अभी आप एकान्त मे बैठकर सन्ध्या कर रहे हैं ईश्वर भक्ति की बातें चल रही हैं गुरु जी वचन का पाठ पढा रहे हैं मास्टर साहब गणित की समस्या सुलझा रहे हैं पर मन एक दूर निकल गए हैं। वे तो हलवाई की दुकान पर मीठी-मीठी गुलाब जामुनो का स्वाद ले रहे हैं वह सिनेमा की अभिनेत्रियो की रूप सुधा का पान कर रहे हैं। वे दूसरो के धन को हडपने की योजना बना रहे हैं और ईश्वरभक्ति के स्थान पर विषयासक्ति की योजनाए बना रहे हैं। यह है मन की करामातें। भला कहा गई वह भक्ति ?

हिन्दी के एक कवि ने मन की चचलता का वणन करते हुए लिखा है—

गति मन की अति चचल
यह तिरछी चाल चलता है।
कभी गमगीन हो रोता कभी
हस कर मचलता है।
कभी विषयो मे बह जाता,
कभी गुण प्रभु के है गाता।
कभी कायर कभी सूरा,
कभी गिरकर सम्भलता है।
कभी करुणा सहित होकर
दया का सिन्धु बन जाता।
कभी क्रोधी व कामी हो
गले गैरो के पलता है।
कभी वैराग्य के रग मे
कभी वेश्या के आगन मे।
कभी निन्दा व चुगली कर,
खुशी मे आ उछलता है।
कभी है दीन बन जाता
कभी है मानकर जाता।
कभी कृपण बने पूरा
कभी दे दान फलता है।
है पारावत गति इसकी
थका इसका नहीं कोई।
इसी के फर मे देखो
यह जग सारा भटकता है।
यह चचल है कवि जैसा जो प्रभी
सम्भल जाना तू।
ऋषि मुनियो व सतियो के
यह नाना रग बदलता है।

यह है इस जागत मन की चचलता बडा हठीला है इसका स्वभाव। साधु सन्यासी वानप्रस्थी गहस्थी सबका मन दौडता फिरता है।

(क्रमश)

## जिला गुरदासपुर में वेद प्रचार

आय प्रतिनिधि सभा पजाब के महो पदेशक श्री प निरञ्जनदेव जी इतिहास केसरी तथा श्री प रामनाथ जी सि वि श्री श्यामसिंह जी हितकर मण्डली तथा श्री रामनाथ यात्री के द्वारा 8 से 21 अगस्त तक जिला आय सभा गुरदासपुर के तत्वावधान में सारे जिले की आय समाजो मे प्रचार किया गया।

प्रो स्वतन्त्र कुमार जी मन्त्री जिला सभा ने सूचित किया है कि प्रचार बहुत ही प्रभावशाली रहा। जनता पर इसका बहुत अच्छा प्रभाव रहा।

## वैदिक साधनाश्रम गुरदासपुर का उत्सव

गत वर्षों की भान्ति इस वष भी 5 से 11 सितम्बर तक वैदिक साधनाश्रम गुरदासपुर का वार्षिकोत्सव बडी धूमधाम से मनाया जा रहा है। जिसमे आचाय सत्यप्रिय शास्त्री एम ए (हिसार) स्वामी सर्वानन्द जी सरस्वती श्री प रामनाथजी सि वि महोपदेशक श्री प सत्यपाल जी पथिक, प्रसिद्ध गायक पधार रहे हैं। इनके अतिरिक्त और भी विद्वान् महानुभावो के पधारने की आशा है। धम प्रेमी सज्जन पधार कर धर्म लाभ उठावें।

—प्रकाशानन्द जी सरस्वती

# जरासन्ध व कंस मिलते हैं पर कृष्ण-अर्जुन अलग क्यों हैं ?

लेखिका—डा पुष्पावती दर्शनाचार्य विद्यावारिधि कन्या गुरुकुल रामापुरा वाराणसी

आज देश मे पृथकतावादी तत्व उभर कर सामने आ गए हैं और बडी धृष्टता व अधिकार से खडे हो रहे हैं। जरासन्ध व दुर्योधन का मिलन भी कभी ऐसे ही हुआ होगा पर आज उनका प्रतिरोधी घटक कृष्ण व पाण्डव दल कहा है ? हिन्दुओ मे अपने ही विनाश के प्रति तटस्थ बना है। उन पर नीद छा रही है या अन्त चेतना लुप्त हो गई है या प्राण शक्ति मूर्छित हो गई है समझ नही पड रहा प्रतिदिन के बम विस्फोटो की गजन ध्वनियो मे भी हिन्दू हृदय जाग नहीं रहा है। सीमान्त की आग बुझाने के प्रति सीमान्तवासियो का ही उत्तर दायित्व समझा जा रहा है। सीमान्त से दूरवर्ती लोगो को बिल्कुल भी चिन्ता नही है। वे उसी मस्ती से चल फिर रहे हैं मौज मना रहे हैं और अपनी तिजोरिया भरने मे व्यस्त हो रहे हैं। बहुत हुआ तो कही एक निन्दा प्रस्ताव पास कर दिया। क्या इसी से देश रक्षा व राम राज्य का स्वप्न साकार हो सकेगा ? क्या इसी के बल पर दयानन्द की कल्पनाए मूर्त रूप ले सकेंगी ? गौतम कणाद की तपोभूमि को खण्ड खण्ड करके नष्ट करने की योजनाए नगाड की चोट के साथ प्रस्तुत की जा रही हैं, पाणिनी पातजलि की ज्ञान धारा को मिटाने का प्रयास जारी है रामानन्द रामानुज के दशन का नाम शेष करने का बिगुल बज रहा है तुलसी सूर का भक्ति आलोक मेघाच्छन्न हुआ जा रहा है। निरपराधियो के रक्त की धारा से रजित हो धरा व्यथा के आसू बहा रही है और कृष्ण पाण्डव दल मौन बैठा है राष्ट्रीय सुरक्षा मे हमारा क्या योगदान हो इस विषय पर चर्चा चलते ही मुह फर लेता है। या एक वाक्य सुनने को मिलता है आप लोग तो कुछ सोच ही रहे हैं सीमान्तवासी कुछ कर ही रहे हैं आपके रहते हमें क्या चिन्ता ? आह ! निर्जीव हृदयो का यह अकर्मण्यता भरा उत्तर सुनकर बरबस एक नि श्वास निकल जाता है एक बेबस टीस उठती है, जिनमे आज जाति की वतमान अकमण्यता का तिरस्कार भरा होता है।

महाभारत काल का शोषित व पीडित व्यक्ति कम से कम कराह तो देता था उसम आततायी पर आक्रोश व्यक्त करने का दम तो था पर आज का पीडित व्यक्ति उफ तक नही करता मानो आततायी का अत्याचार उसके लिए उपहार रूप ही है और आततायियो के हाथो शीतल हत्या करा कर स्वग (मुक्ति लाभ) होगा।

ऐसे व्यक्तियो को न तो अपनी बहू बेटियो की रक्षा का ध्यान है न धम और सस्कृति की रक्षा का विचार है न ही अपने पूवजो के गौरव की तडप है। उन का रोटी कपडा और मकान सुरक्षित रहना चाहिए बस ऐसा स्थिति मे इस जाति के नागरिको की रक्षा कसे हो जाएगी वे कितने दिन जीवित रह सकगे ? धरती पर उनका स्वत्व कितनी घडियो का है ? जीवित शव के समान वे चल फिर रहे हैं यदि ऐसा न होता क्या पजाब व आसाम की जलती हुई सीमाओ को देखकर वे निष्क्रिय बैठ सकते थे ? क्या नित्य प्रति के बम विस्फोटो मे बखबरी की नीद सो सकते थ ? क्या उनके पूवजो के सस्कारो से अनुप्राणित रक्त एक बारगी उफान न लेता ? क्या आततायी उनके सम्मुख मस्त गति से घूम सकता था ? श्री जगतराम सेठी जैसे भारत के नौनिहालो के प्राण हरण को क्या क्षमा कर दिया जा सकता था ? क्या भारत माता के अगो को काटने की प्रस्तावनाओ योजनाओ पर वे नर नाहर फुकार न उठते ? तूफानी झझावातो मे देशद्रोहियो को अदृश्य न कर देते ? आज प्यारे ऋषियो की थाती हम से छीनी जा रही है और तो और गुरु नानक व गुरु गोविन्द के आदर्शों मान्यताओ व तपस्या और साधना को मिटाया जा रहा है।

आर्यो ! राम कृष्ण की सन्तानो अपने अन्त करण मे झाक कर देखो। वहा वशी रव के साथ गाण्डीव की टकार भी है वहा कन्दरागत समाधि ग्रहण के साथ मरण भीत निनादित रण भू का भी दृश्य है। वहा क्षमा दान के साथ आततायी के दु स्वप्नो का विनाश भी है। तुम्हारे पूवजो का सन्देश वीर भो या वसुन्धरा है न कि कायर हृदय विलासिता है ? तुम्हारा शास्त्रो का आदेश म योर्मा अमृत गमय है न कि अमत विहाय कायरता रूप मृत्यो वरणम है ? अत्याचार करना पाप है तो अत्याचार सहना महा पाप है मनु उक्ति यह क्यो भुला दी गई है ?

मेरा अभिप्राय यह नही कि हम भी पशु बल के समान बहककर रक्त की धारा बहा द अपितु हम एक सत्र मे बध कर देश की सन्ढ रक्षा शक्ति बन जाए कि किसी भी देश द्रोही को किसी प्रकार के दु साहस की हिम्मत न हो। यह रक्षा शक्ति केवल हिन्दुओ का ही उत्तरदायित्व नही है अपितु प्रत्येक देश प्रेमी यवन ईसाई व सिख का भी उत्तरदायित्व है। यदि देश प्रेम से भरपूर सभी हृदय दृढ सकल्प के साथ कटिबद्ध हो जाए तो खालिस्तान ईसाईस्तान व अन्य स्तानी (जो एक प्रकार से शैतान के ही रूप है) के स्वप्न एक बारगी ही ध्वस्त हो जाएगे।

देखना है कि देश प्रेम का राग अलापने वाले चुनौती की इस घडी मे परीक्षा मे कितना खरा उतरते हैं।

—

## श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर

ले—श्रीराम पथिक छुटमुलपुर (सहारनपुर)

लोग कहते हैं कि धन्य श्याम आते नही।
मैं कहता हू आप सब उन्ह बलाते ही नही।
यहा वह आने को अब भी बेकरार हैं मगर
हम तुम ही उन्ह बलाने के साधन जुटाते नही॥
वह चाहते हैं सुदामा अर्जुन के से मित्र हो।
हम चाहते हैं दुर्योधन शकुनी कस शिशुपाल हो।
वह चाहते हैं भारत मे बहे दूध की नदिया।
हम चाहते है यहा बन जाय शराब की नदिया।
अब भी चाहो तो कृष्ण आने को तयार है।
प्यारी बन्सी की धुन सुनाने को तयार हैं।
सुनने वाले कहा है यहा अर्जुन स गीता को।
सुनने वाले यहा बहुत है नरगस सुरया को॥
रास लीला मे नचाते हो नकली कृष्ण को मद पिला के।
नचाया था कृष्ण ने सबको अपने हृदय से प्रेम रस पिला के
यहा अब राधा के नाम पर उन्हे बदनाम करते है।
पथिक को रोना आता है राम कृष्ण के भारत पर।

—

## पुरुषार्थी बनो और लक्ष्मी प्राप्त करो

चन्द्रमा अप्स्वन्तरा सुपर्णो धावते दिवि।
रयि पिशङ्ग बहुल पुरुस्पृह हरिरेति कनिक्रदत ॥ 33 90

पदार्थ—हे मनुष्यो तुम लोग जस (सुपर्ण) सुन्दर चालो से युक्त (चन्द्रमा) शीतकारी चन्द्रमा (कनिक्रदत) शीघ्र शब्द करते हिसते हुए (हरि) घोडो के तुल्य (दिवि) सूय के प्रकाश मे (अप्सु) अन्तरिक्ष के (अन्त) बीच (आ धावते) अच्छे प्रकार शीघ्र चलता है और (पुरुस्पृहम) बहुतो के चाहने योग्य (बहुलम) बहुत (पिशङ्गम) सुवर्णादि के तुल्य वर्ण युक्त (रयिम) शोभा कान्ति को (एति) प्राप्त होता है वैसे पुरुषार्थी हुए वेग से लक्ष्मी को प्राप्त होओ।

भावार्थ—इस मन्त्र मे वाचकलुप्तोपमालकार है। हे मनुष्य जसे सूय से प्रकाशित चन्द्र आदि लोक अन्तरिक्ष मे जाते आते हैं जैसे उत्तम घोडा शब्द करता हुआ शीघ्र भागता है वसे हुए तुम लोग अत्युत्तम अपूव शोभा को प्राप्त होके सबको सुखी करो।

—

# शूलों को भी फूल करो

ले—कविराज श्री बनवारी लाल शादा दिल्ली

हिन्दुओ देखो देश दशा को।
समय न व्यर्थ बरबाद करो॥
शील सादगी सदाचार ला।
देश को फिर आबाद करो॥

बहुत दिवस गफलत मे सोए।
अब ना ऐसी भूल करो॥
असत अविद्या अनाचार मिटा।
शूलों को भी फूल करो॥

वेदो के बन कर अनुयायी।
देश का फिर उत्थान करो॥
दयानन्द लेख श्रद्धानन्द सम।
तन मन धन का त्याग करो।

अवसर समझो मंजिल जानो।
तिमिर भ्रान्ति का नाश करो।
सदाचार फिर फैले जग मे।
वेदो का प्रकाश करो॥

घस घूस जड खोद रहे हैं।
शुद्धी का प्रचार करो॥
कण कण मे प्रभु रमा हुआ है।
हर दम उसका ध्यान धरो॥

देश रक्षाहित जियो मरो तुम।
धर्म के हर दम काम करो॥
सत्य के पालक बन बलिदानी।
शादा जग मे नाम करो॥

—

# सुभाषित माला

ले—आचार्य श्री सुभाषचन्द्र जी शास्त्री सभा महोपदेशक

1 श्रोत्रं श्रुतेनैव न कुण्डलेन दानेन पाणिर्न तु कंकणेन।
विभाति कायः खलु सज्जनानां परोपकारेण न चन्दनेन॥

अर्थ मनुष्य कुण्डलादि आभूषणों से सुशोभित नहीं हुआ करता उसकी शोभा क्या है? कान की शोभा कुण्डल नहीं है वेदादि सत्य शास्त्र वचनों का सुनना है। हाथ का भूषण सुवर्ण कङ्कण अथवा घड़ी नहीं है, योग्य व्यक्तियो को धनादि का दान करना यही हाथ का भूषण है। सज्जन सत्पुरुषों की काया चन्दनादि लेपन से शोभायमान न होकर परोपकारादि शुभ कर्मों से होती है।

2 अचिन्त्यरूपो भगवान्निरञ्जनो, विश्वम्भरो ज्ञानमयश्चिदात्मा।
विचिन्तितो येन हृदि क्षणं नो वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम्॥

अर्थ जिस पुरुष ने एकान्त मे बैठकर अचिन्त्य रूप निराकार निरञ्जन विश्व का पालन कर्ता ज्ञान स्वरूप सच्चिदानन्द भगवान का चिन्तन क्षण भर भी अन्तःकरण मे नही किया उस व्यक्ति का जीवन निष्फल गया।

3 आनन्दरूपो निजबोधरूपो दिव्यस्वरूपो बहुनामरूपः।
तपः समाधौ कलितो न येन वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम्॥

अर्थ आनन्दस्वरूप सर्वज्ञ स्वप्रकाशक दिव्यस्वरूप बहुतो का बहुरूप अव्यक्त प्रभु दर्शन के लिए जिसने तपस्या पूर्वक समाधि को सिद्ध न किया उस आदमी का जीवन व्यर्थ है।

4 इदं शरीरं परमार्थ साधनं धर्मस्य हेतु बहुपुण्यलब्धम्।
लब्धापि यो नो विपरीत कर्म वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम्।

अर्थ यह शरीर सर्वोत्कृष्ट अर्थ अर्थात परमात्मा प्राप्ति का साधन है जो पुष्कल पुण्य के द्वारा धर्मानुष्ठान के हेतु से मिला हुआ। फिर भी जो व्यक्ति धर्म का पालन नहीं करता वह अमूल्य जीवन को व्यर्थ गंवा देता है।

5 धर्मार्थ कामानपि मोक्षपुण्यैर्ददाति या शुभ्रतराञ्च कीर्तिम्।
सा येन विद्याऽधिगता न यत्नतो वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम्।

अर्थ जो धर्म अर्थ काम और मोक्ष को प्राप्त करा देती है, इसके अतिरिक्त चन्द्रमा के समान धवल यश कीर्ति से युक्त करती है उस विद्या को जिस ने प्रयत्न पूर्वक प्राप्त नही किया उसका जीवन निष्फल वृथा है।

—

(14 अगस्त से आगे)

## यज्ञ में कठिनाईया

1 जो यज्ञ कराने वाला व्यक्ति जिस प्रकार यज्ञ कराने का अभ्यस्त हो गया है। वह अपने अनुसार संस्कार विधि के सामान्य प्रकरण की व्याख्या करता है।

सार्वदेशिकसभा मे मैं धर्मार्य सभा का दस वर्ष प्रधान मन्त्री रह चुका हू उस समय की धर्मार्यसभा मे कई सुयोग्य विद्वान हुआ करते थे वहा बहुत विचार के पश्चात स्वामी जी की संस्कार विधि की यज्ञ पद्धति की व्यवस्था निर्णीत की गई। वह पद्धति छपी हुई है बस उसके अनुसार सब बड यज्ञ भी करने चाहिए यदि सार्वदेशिक सभा मे वह पद्धति समाप्त हो गई हो तो कोई भी आर्य उसका फोटो प्रिन्ट छाप ले उसी के अनुसार अगली शताब्दियो पर यज्ञ करें।

2 बड यज्ञो मे घृत के साथ कई मन कई बोरे सामग्री की आहुति देना भी गलत है। यज्ञो मे प्रतिदिन घी की आहुति के साथ दूध की आहुति फलो की

## "आर्य समाजो में होने वाले यज्ञ"

ले—श्री म म वेदाचार्य वि श्र व्यास एम ए बरेली

आहुति शहद की आहुति मेवा की आहुति खीर की आहुति हलवा आदि की आहुतिया होनी चाहिए उसके साथ ही सामग्री की भी आहुति चलती रहे। केवल सामग्री की आहुति नही। उपर्युक्त सामान स्विष्टकृत आहुति के लिए है यह मिथ्या है। स्विष्टकृत के लिए भात या घी है। खीर हलवा मेवा आदि नहीं।

आरम्भ मे केवल घृताहुतियाँ चलती हैं और यहा से ऋषि ने शाकल्य डालने का विधान प्रारम्भ किया है। उसी समय से सब सामान खीर हलवा मेवा आदि डालना प्रारम्भ कर देना चाहिए। हमें पूर्ण अनुभव है उपर्युक्त सामान से अग्नि कभी नहीं बुझती है।

3 स्विष्टकृत आहुति पेडा बताशा लड्डू से देना भी अज्ञान की पराकाष्ठा है।

4 यज्ञ मे जो समिधाएं डाली जाती हैं वे कुल्हाडी से फाडी हुई न हो। यदि बडी हो तो कुल्हाडी से काटी जा सकती है पर कुल्हाडी से बीच से फाडी नहीं जा सकती। इसके लिये वल्कल सहित डंड खरीदने चाहिए। घटटी मे झोकने वाली लकडी और होती है। यज्ञ की और।

5 मन्त्र के अन्त मे ओम् बोलना मूर्खता की पराकाष्ठा है।

6 जिस मन्त्र के आदि मे ओम बोलना चाहिए जिसके नहीं यह सब संस्कार विधि का सामान्य प्रकरण द्वितीय संस्करण मे ही देखो। आगे तो पण्डितों ने अपनी अपनी चलाई है। अतः संस्कार विधि का प्रत्येक संस्करण प्रामाणिक नहीं हो सकता है।

7 यज्ञ की समाप्ति पर स्विष्टकृत मन्त्र बोलकर आहुति देना भी पद्धति को न समझना ही है। जहां दयानन्दजीने संस्कार विधि में है वहीं स्विष्टकृत की आहुति दो अन्त मे नहीं।

8 यज्ञ के अन्त मे शान्ति मन्त्र बोलना अशुद्ध है। अन्त मे वामदेव्य गान गाया जाता है। ओ शान्ति तो आरम्भ में बोलने के लिए है। जहां स्वस्ति वाचन शान्ति प्रकरण बोला जाता है शान्ति का अर्थ समाप्ति नहीं है।

9 यज्ञ कुण्ड पर घृत गर्म नहीं करना चाहिए। हो भी नहीं सकता। उसके लिए दक्षिणाग्नि कुण्ड की व्यवस्था करो वहा घी तपाया जावे।

10 यज्ञशाला में यज्ञ की समाप्ति पर कोई प्रवचन न हो यही अच्छा है। यदि पुरोहितों में योग्यता है तो एक मास भी यज्ञ यदि दोनो समय चले तो केवल यज्ञ विषय के ही प्रवचन हो यह नहीं कि यज्ञ की समाप्ति पर पाकिस्तान खालिस्तान का रोना लेकर नेता अभिनेता बैठ जायें यह सब राष्ट्रि के हवाले में ही करना। यज्ञशाला में केवल यज्ञ विषय पर ही प्रवचन हों अन्य धार्मिक विषय भी न लिए जायें सब को अन्य समय में करो, अभी हम और आगे बताए गे।

# आर्य विद्या परिषद् पंजाब द्वारा आयोजित धर्म ज्ञानो परीक्षा परिणाम

इस वर्ष आर्य विद्या परिषद पंजाब जालन्धर द्वारा आयोजित धर्म ज्ञानी परीक्षा मे उत्तीर्ण होने वाले छात्र एव छात्राओ के रोल न नीचे दिए जा रहे है। समस्त परीक्षा मे प्रथम द्वितीय एव तृतीय आने वाले परीक्षार्थियो का विवरण निम्न प्रकार है।

| स्थान | रोल न | नाम व स्कूल | प्राप्तांक |
|---|---|---|---|
| प्रथम | 5127 | कु नीलम सुपुत्री श्री कस्तूरीलाल आर्य मल्ट हाई स्कूल भटिंडा | 115 |
| द्वितीय | 5226 | कु रजनी सुपुत्री श्री रामजन वैदिक कन्या हाई स्कूल मनीमाजरा | 113 |
| तृतीय | 5055 | कु रीना सभवाल सुपुत्री श्री सुरेन्द्र सभवाल शिवदेवी मल्ट हाई स्कूल जालधर | 112 |

समस्त परीक्षा मे प्रथम द्वितीय एव तृतीय आने वाले परीक्षार्थियो को यथापूर्व पारितोषिक दिया जाएगा।

रामचन्द्र जावेद
सभा महा मन्त्री

अश्विनी कुमार शर्मा
रजिस्ट्रार

## उत्तीर्ण परीक्षार्थी

5001 से 11 तक 13 से 15 तक, 19 21 से 26 तक 28 से 65 तक, 68, 70 से 92 तक 94 96 से 5106 तक, 9 से 17 तक, 19 से 57 तक 59, 61 से 80 तक, 82 से 87 89 से 5213 तक 15 से 5314 16, 17, 19, 22 24 27 से 32 तक 34 से 36 तक 41 से 45 तक 52, 55 58 से 68 तक 70 72 से 79 तक 81, 84 से 86 तक 90 से 94, 96 5398 से 5406 तक, 8, 13, 19, 21 33 35, 38 से 40 तक 43, 44 46 47 49 से 51 तक, 54 56 59 से 68 तक 70 से 88 तक 90 से 93 तक 95 से 97 तक, 99, 5501 2 4 से 7 तक, 9 से 11 तक 17 से 20 तक 22 23 29 34, 37 से 39 तक 41 44 46 47 49 से 54 तक, 57 से 60 तक 63, 64 69 93 5603 5 7 से 9 तक 12, 14 से 16 18 से 22 तक 25 से 5681 तक 83 से 87 तक 89 से 92 तक 5694 से 5711 तक, 13 14 16 से 18 तक, 20 24 25 35 36, 40 5744 से 49 परिणाम बाद मे घोषित किया जाएगा।

## श्री तेजराम जी महाजन का देहावसान

आर्य समाज बस्ती शेख जालन्धर के भू पू प्रधान श्री तेजराम जी महाजन का देहावसान 16 8 83 को उनके निवास स्थान तेज मोहन नगर (जालन्धर) मे हो गया। वह कुछ दिन से बीमार चले आ रहे थे। श्री तेजराम जी आर्य समाज के एक अच्छे कर्मठ कार्यकर्ता थे उन्होंने आर्य समाज की बड़ी सेवा की है वह [illegible] सभा पंजाब के [illegible] भी रहे हैं। उनके चले जाने से आर्य समाज को बड़ी क्षति हुई है। परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे और उनके सारे परिवार को इस वियोग का सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—सरदारीलाल सभा मन्त्री

## आर्य बन्धु अजमेर पहुंचें

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह दिनांक 3 4, 5, 6 नवम्बर 1983 को अजमेर में मनाया जा रहा है जिसकी सूचना आपको भिन्न भिन्न माध्यमों से दी जाती रही है। अखिल भारतीय आर्य यति मण्डल ने यह निश्चय किया है कि सन्यासी गण चारो दिशाओ से पद यात्रा करते हुए इस यज्ञ मे सम्मिलित होगा। हमारा सभी विद्वानो उपदेशको भजनोपदेशको तथा आर्य समाज से सम्बन्धित सभी संस्थाओ संगठनो एव सज्जनो से नम्र निवेदन है कि आर्थिक भार तथा अनेक कठिनाईयो को हल करके भी इस यज्ञ मे अवश्य सम्मिलित होवें।

हमारे जीवन मे ऋषि के प्रति श्रद्धा भक्ति अर्पित करने का दूसरा अवसर नहीं आएगा। सब ही आगन्तुक महानुभावो के आवास एव भोजन की व्यवस्था यथा शक्ति स्वागत समिति द्वारा की जाएगी। कृपया अपने पहुचने की सूचना 15 अक्तूबर तक अवश्य भिजवाय ताकि व्यवस्था मे सुविधा रहे।

निवेदक
स्वामी ओमानन्दजी प्रधान परोपकारिणी सभा, स्वामी सर्वानन्द जी प्रधान यति मण्डल स्वामी प्रकाशानन्द अधिष्ठाता समारोह छोटूसिह जी एडवोकेट स्वागत अध्यक्ष श्री करण शारदा मन्त्री परोपकारिणी सभा एव स्वागत मन्त्री।

(2 पष्ठ का का शेष)

रक्षा (स्त्री 12) (29) युधिष्ठिर को भीष्म के पास लेजाकर धर्म नीति युद्ध नीति राजनीति आदि का उपदेश दिलाना (शान्ति 46 52) (30) अश्वमेध-यज्ञ की युधिष्ठिर को प्रेरणा (आश्व 71) (31) दुर्योधन के मारे जाने पर दीन चित्त तथा चिन्ता मग्न पाण्डवो को भगवान श्री कृष्ण ने समझाया—

नैव शक्योऽति शीघ्रास्त्रस्ते
च सर्व महारथा।
ऋजु युद्धेन विक्रान्ता हन्तु
युष्माभिराहवे ॥
यदि नैव विधं जातु कुर्यां
जिह्ममहं रणे।
कुतो वा विजयो भूयः
कुतो राज्यं कुतो धनम् ।64।
ते हि सर्वे महात्मानश्चत्वारो
ऽतिरथा भुवि।
न शक्या धर्मतो हन्तु
लोकपालैरपि स्वयम् ।65।
न च वो हृदि कर्तव्यं यदयं
घातितो रिपु।
मिथ्यावध्यास्तथोपायैर्बहव
शत्रवोऽधिका ।67।

भावार्थ—यह दुर्योधन अत्यन्त शीघ्रता पूर्वक अस्त्र चलाने वाला था अत इसे कोई जीत नही सकता था और ये भीष्म द्रोण आदि महारथी भी बड़ पराक्रमी थे उन्हे बिना माया कौशल (उस्तादी) के धर्मानुकूल सरलता पूर्वक युद्ध के द्वारा आप लोग नही मार सकते थे। यह राजा दुर्योधन अथवा वे भीष्मादि सभी महाधनुर्धारी महारथी कभी सरल धर्म युद्ध के द्वारा नही मारे जा सकते थे। आप लोगों का हित चाहते हुए मैंने ही बार बार माया (बुद्धि) का प्रयोग करके अनेको उपायो के द्वारा युद्ध स्थल मे उन सबका वध किया। यदि कदाचित युद्ध में मैं माया कौशल पूर्ण कार्य नही करता तो फिर आपको विजय कैसे प्राप्त होती, राज्य कैसे हाथ मे आता और धन कहा मिल सकता था? भीष्म कर्ण द्रोण और भूरिश्रवा ये चारो महामना—इस भूतल पर अतिरथी के रूप मे विख्यात थे। साक्षात लोकपाल भी धर्म युद्ध करके उन सबको नही मार सकते थे। यह गदाधारी धतराष्ट्र पुत्र दुर्योधन भी युद्ध मे थकता नही था इसे दण्डधारी काल भी धर्मानुकूल युद्ध के द्वारा नही मार सकता था। इस प्रकार जो ये शत्रु मारा गया है इसके लिए तुम्हे अपने मन मे विचार नही करना चाहिए। बहुतेरे अधिक शक्तिशाली शत्रु नाना प्रकार के उपायो और कूट नीति के प्रयोगो द्वारा मारने के योग्य होते हैं।

पाठक वृन्द! आइए! नीति निपुण नन्द-नन्दन भगवान श्री कृष्ण जी के चार चरित्र अथवा स्वाभिमान जीवन से शिक्षा ग्रहण करते हुए झूठी दया अकर्मण्यता रूप अहिंसा एव भयावह भीरुता को तिलांजली देकर धर्म ध्वसको देश-द्रोहियो राष्ट्र विरोधियो संस्कृत नाशको परम्परा द्रोहियो और अपनी आन बान शान के शत्रुओ पर यथायोग्य शासन करने का दृढ व्रत धारण कर। महामानवो एव युग प्रवर्तक महात्माओ के पद चिन्हों पर चलकर धर्म जाति राष्ट के अभ्युत्थान मे प्रयत्नशील रहना ही उन वीरो की पूजा प्रतिष्ठा की उच्चतम उत्कृष्टतम श्रेणी है। वनपति परमेश्वर हमारी सबल सहायता कर।

## लूधियाना में पारिवारिक सत्संग

स्त्री आर्य समाज (साबुन बाजार) स्वामी श्रद्धानन्द बाजार लुधियाना के तत्वावधान मे 17 अगस्त को सक्रान्ति के दिन श्रीमती विनो कालड़ा के निवास स्थान 476 सिविल लाईन्ज मे हुआ। यज्ञ तथा भजनो के उपरान्त बहिन कमला आर्या का प्रभावशाली प्रवचन हुआ जिसमें बहिन जी ने एक वेद मन्त्र की व्याख्या करते हुए षड रिपुओ को कैसे दमन किया जा सकता है। इसकी व्याख्या की। कार्यक्रम बड़ा प्रभावशाली रहा।

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य मर्यादा
जालन्धर
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

[illegible] अंक 21 19 भाद्रपद सम्वत् 2040, तदनुसार 4 सितम्बर 1983 दयानन्दाब्द 159। एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपए

# अन्तर्राष्ट्रीय महर्षि दयानन्द सरस्वती निर्वाण शताब्दी

## महोत्सव का सादर निमन्त्रण

मान्यवर

आगामी दीपमाला के शुभ पर्व पर महर्षि का निर्वाण हुए 00 वर्ष पूरे हो रहे हैं। यह एक महान् अवसर है जब सारे संसार के अनुयायी लोगों को सिंहावलोकन के साथ आगामी कार्य की योजना भी बनानी है।

इसी लिए महर्षि दयानन्द की निर्वाण स्थली अजमेर में एक अन्तर्राष्ट्रीय आयोजन आर्य जगत् की मान्य संस्थाएं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा परोपकारिणी सभा एवं राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त रूप से कर रही हैं।

यह महान आयोजन 3 4 5 6 नवम्बर को सम्पन्न हो रहा है। इस अवसर पर एक मास पूर्व से चतुर्वेद पारायण महायज्ञ का प्रारम्भ होगा। समारोह में विशाल शोभा यात्रा 5 नवम्बर को एवं वेद सम्मेलन आर्य सम्मेलन राष्ट्र रक्षा-सम्मेलन महिला सम्मेलन आर्य युवक-सम्मेलन दलित सम्मेलन व हरिजन स्नेह सम्मेलन आदि महत्वपूर्ण सम्मेलन होने वाले हैं। देश विदेश के अतिथियों के स्वागत सत्कार की व्यवस्था प्रारम्भ की जा चुकी है। आप आज ही सपरिवार इष्ट मित्रों सहित आने का संकल्प लीजिए। अभी से अजमेर पहुंचने की प्रेरणा दीजिए, आप सादर आमन्त्रित हैं। स्वयं पधारिए तथा दूसरों को भी लाइए।

इस भव्य आयोजन की सफलता आपके तन मन धन से पूर्ण सहयोग पर निर्भर है।

अपना सहयोग दीजिए—
सम्मेलन को सफल बनाइए
अपने आने की सूचना शीघ्र भेजिए
निवेदक

स्वामी ओमानन्द सरस्वती प्रधान परोपकारिणी सभा श्रीकरण शारदा मन्त्री परोपकारिणी सभा रामगोपाल शालवाले प्रधान सार्वदेशिक सभा ओम् प्रकाश पुरुषार्थी मन्त्री सार्वदेशिक सभा महात्मा आर्यभिक्षु अध्यक्ष वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर स्वामी सर्वानन्द अध्यक्ष, स्वामी ब्रह्म मुनि दीनानगर, स्वामी सत्य प्रकाश सरस्वती सम्पादक निर्वाणशताब्दी स्मृति ग्रन्थ प्रो वेद व्यास प्रधान, डी ए वी मैनेजिंग कमेटी कीर्तिसिंह एडवोकेट स्वागताध्यक्ष राजा सिंह सह स्वागतमन्त्री फूलचन्द आर्य संयोजक अन्न समिति पन्नालाल पाहूजी संयोजक महर्षि नगर समिति देवराज बहल मन्त्री महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समिति दिल्ली प्रो धर्मवीर प्रचार मन्त्री निर्वाण शताब्दी समिति डा भवानीलाल भारतीय सयुक्त मन्त्री परोपकारिणी सभा कमलचन्द गुप्त कोषाध्यक्ष परोपकारिणी सभा

सभा के कार्य उद्देश्य संघटना आदि में नियम और प्रावधान स्पष्ट कर दिए थे कालान्तर मे सभा का कार्यालय विभिन्न स्थानो पर रहा और अन्तत सन 893 से सभा का मुख्यालय पावन नगरी अजमेर मे जहा महर्षि को निर्वाण प्राप्त हुआ स्थापित हुआ

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने कार्य की अधिकता और लक्ष्य की व्यापकता को दृष्टिगत रख कर वेदो और आर्ष ग्रन्थ के प्रचार प्रसार के लिए वैदिक यन्त्रालय की स्थापना फरवरी सन 880 को काशी (बनारस) मे की बाद मे उसे प्रयाग इलाहाबाद) स्थानान्तरित किया गया क्रमश 89 को इसे पुन अजमेर मे स्थानान्तरित किया गया स्वतन्त्रतापूर्व वैदिक यन्त्रालय की गणना राष्ट्र के प्रमुख प्रेस मे होती थी

महर्षि दयानन्द सरस्वती सन् 883 मे अजमेर मे रुग्ण शय्या पर

महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन का एक मात्र लक्ष्य था—विश्व का कल्याण करना उन्होंने इसका सामाजिक उत्तरदायित्व आर्य समाज—जिस का इस संसार का उपकार करना मुख्य उद्देश्य है—के माध्यम से दिया अपना व्यक्तिगत उत्तराधिकार और प्रबन्ध उन्होंने परोपकारिणी सभा को प्रदान किया परोपकारिणी सभा का गठन 6 अगस्त 1880 को मेरठ में महर्षि के द्वारा एक स्वीकार पत्र के माध्यम से हुआ इसका पुनर्गठन महर्षि ने स्वयं 24 फरवरी 1883 को उदयपुर मे किया महर्षि ने अपने स्वीकार पत्र में परोपकार के कार्य आदि के अतिरिक्त

महर्षि का निर्वाण भिनाय कोठी मे दीपावली 883 को हुआ उनकी अन्त्येष्टि पहाडगज स्थित श्मशानघाट मे पूर्ण वेदोक्त रीति से हुई महर्षि की अस्थियां एवं भस्मी अवशेष उनकी इच्छानुसार आनासागर के रमणीय तट पर स्थित शाहपुरा के महाराजा के सुरम्य उद्यान में विसर्जित की गई बाद मे यह उद्यान शाहपुराधीश ने परोपकारिणी सभा को दान में दे दिया और इसे तब से ही ऋषि उद्यान के नाम से जाना जाने लगा सन 1933 में महर्षि निर्वाण अर्ध शताब्दी यहीं पर मनाई गई इस अवसर पर उद्यान मे यज्ञशाला का निर्माण किया गया निर्वाण शताब्दी के उपलक्ष्य मे उपरोक्त यज्ञशाला का विस्तार कर उसे और अधिक भव्य बनाया जा रहा है

ऋषि उद्यान में सरस्वती भवन भी स्थित है जिसमें एक विशाल प्रवचन कक्ष है इसी भवन मे महर्षि के जीवन की प्रमुख घटनाओं का चित्रांकन भी किया गया है इसी भवन के एक कक्ष मे महर्षि दयानन्द सरस्वती के निजी उपयोग की वस्तुएं महर्षि के वास्तविक चित्र और महर्षि के हस्तलेख तथा महर्षि से सम्बन्धित ऐतिहासिक सामग्री का संग्रहालय है जो श्रद्धालु दर्शनार्थियों के लिए प्रतिदिन खुलता है

यहा पर अतिथियों के ठहरने के लिए कई अतिथि कक्ष बने हुए हैं

सन् 933 मे महर्षि दयानन्द सरस्वती के निर्वाण की अर्ध शताब्दी महात्मा नारायण स्वामी तथा सुप्रसिद्ध आर्य नेता हरविलास शारदा के नेतृत्व मे परोपकारिणी सभा एवं सार्वदेशिक सभा के संयुक्त तत्वावधान मे अजमेर मे ऋषि उद्यान मे मनायी गई अर्ध शताब्दी समारोह 933 आर्य समाज के इतिहास में अपनी विशालता भव्यता और दिशा-बोधत्व के लिए गौरवमय अध्याय है इस समारोह मे आयोजित विभिन्न सम्मेलनो मे लिए गए निर्णयों प्रस्तावो तथा योजनाओं ने समूचे आर्य समाज आन्दोलन को नई चेतना दिशा और गति प्रदान की जिसका तत्कालीन राष्ट्रीय और सामाजिक प्रभाव भी परिलक्षित हुआ

ऋषि उद्यान स्थित नवनिर्मित भव्य यज्ञशाला में 6 अक्तूबर 1983 से चतुर्वेद पारायण यज्ञ महान वैदिक विद्वान् वेद पाठियों द्वारा सम्पन्न होगा जिसकी पूर्णाहुति रविवार 6 नवम्बर 983 को अन्तर्राष्ट्रीय महर्षि निर्वाण शताब्दी महोत्सव के समापन के साथ होगी

—

# वेदामृत—

# ज्योतियों की ज्योति

ले—सुरेशचन्द्र वेदालकार एम ए एल टी 175
जाफरा बाजार गोरखपुर

(गताक से आगे)

मन की चचलता का उल्लेख गीता में किया गया है और वहा बतलाया गया है।

चञ्चल हि मन कृष्ण प्रमाथि
बलवद्दृढम ।
तस्याह निग्रह मन्ये वायोरिव
सुदुष्करम ॥
—गीता 6।34

हे कृष्ण ! यह मन बडा चचल है। बहुत शक्तिशाली है मनुष्य को मथ डालता है अत इसका निग्रह मझ ऐसा कठिन प्रतीत होता है जसे वायु को मुट्ठी मे बाधना ।

अर्जु न की इस बात को सुनकर कृष्ण भगवान कहते हैं—

असशय महाबाहो मनो दुर्निग्रह
चलम् ।
अभ्यासेन कौन्तेय वैराग्येण च
गृह्यते ॥
—गीता 6।35

अर्थात हे पराक्रमी अर्जु न ! सच मुच यह मन बडा चचल है बडी कठिनाई से वश में आता है परन्तु हें कुन्ती के पुत्र अर्जु न ! घबराने की बात नही अभ्यास तथा वैराग्य से इसे वश मे किया जा सकता है। इसी तरह का योग वाशिष्ट उत्पत्ति प्रकरण मे 118 4 मे आया है। वहा भगवान राम आतुरता से वशिष्ट महाराज से कहते हैं—

क्षणमस्याति लोलस्य वेगोवेगक
कारणम ।
चलतो मन सो ब्रह्मन्सतो
विनिवार्यते ॥

हे भगवान् ! अति चचल जो यह मन है उसका वेग सम्पूर्ण वेगों का मुख्य कारण है उसे बलपूर्वक कसे निवारण किया जाए ? गुरु वशिष्ट राम की बात का समर्थन करते हुए कहते हैं—

नेह चचलता हीन मन क्वचन
दृश्यते ।
चचलत्व मनो धर्मो वह्नेर्धर्मो
यथोष्णता ।

हे राम ! इस ससार मे चचलता से रहित मन कही नही दिखाई देता। चचलता मन का ऐसा धम है जसे अग्नि का धम उष्णता है।

यहा तक ही नही योग्य वाशिष्ट मे तो यह भी कह डाला है कि—

अप्यब्धि पानान्महत सुमेरून्मूल
नादपि ।
अपि वह्न्यशनात साधो
विषमश्चित्त निग्रह ॥

समुद्र को पी जाना सरल है सुमेरु पवत को उखाडकर फक देना आसान है दहकते हुए अगारो को सटक लेने मे कोई कठिनाई नही परन्तु साधन ! इस मन का वश मे करना बडा ही कठिन है।

भागवत के 11 व स्कध मे मन के विषय मे कहा गया है—

नाय जनो मे सुख दु ख हेतु न
देवतात्माग्रह कर्मकाल
मन पर कारणमामनन्ति ससारचक्र
परिवर्तयेद्यत ॥
22 43

अर्थात मेरे सुख दु ख का कारण ये लोग नही हैं देवता और आत्मा भी नही है ग्रह कम और काल भी नही हैं जो ससार चक्र को चलाता है उस मन को ही सुख द ख का कारण कहते हैं।

भागवत मे आया है—

मन सृजति वै देहान्गुणान्कर्माणि
चात्मन ।
तन्मन सृजते माया ततो जीवस्य
ससृति ॥
12 5 6

एक मात्र मन ही इस आत्मा के लिए देह गुण तथा कर्मादि की रचना करता है और उस मन को माया रचती है। उस माया रूप उपाधि के कारण ही जीव को जन्म मरण रूपी ससार प्राप्त करता है।

मन इतना शक्तिशाली है। वश मे करना कठिन है। फिर भी क्या उससे घबराने से काम चलेगा। नही घबराने की उदास निराश और हताश होने की आवश्यकता नही। इस मन को वश में करने का उपाय है। गुरु वशिष्ठ ने इस का उपाय बतलाते हुए कहा है—

मन एव समर्थ वो मन सो
दृढ निग्रहे

मन ही मन को वश मे करने मे समर्थ हैं। यह तो हुई आतुर मन की चचलता की चर्चा। आइए जरा सोते हुए मन की यात्रा की अवस्था के विषय में भी सोच।

मन के दो हिस्से हैं। एक बाहरी और एक भीतरी। बाहरी हिस्सा वह है जिसे हम जानते हैं जिससे हम परिचित हैं। यह जाग्रत अवस्था का मन है। इसे हम बहिर्मन भी कह सकते हैं। बहिर्मन के स्वरूप के विषय में हक्सल साहब का कहना है बाहरी ससार का ज्ञान प्राप्त करने का काम बहिर्मन भिन्न करता है। भिन्न भिन्न पदार्थों के स्वरूप जानने के लिए उक्त मन सभी ज्ञानेन्द्रियो का उपयोग करता है। मनुष्य की नाना प्रकार की आवश्यकताओ के कारण इस मन की वृद्धि हुई है और हो रही है। अपने चारो ओर की परिस्थिति अपने जीवन के अनुकूल बना लेने के लिए जीव अथवा मनुष्य लगातार प्रयत्न कर रहा है। इस प्रयत्न मे यह मन उसका मार्ग दशक होता है। इस मन का महत्व पूर्ण धर्म है विवेक शक्ति।

बहिर्मन के जितने भी कार्य होंगे उनमे व्यक्ति की दृष्टि से तर्क या हेतु अवश्य होगा। हम बहिर्मन के महत्व का निम्न रूप मे उल्लेख कर सकते हैं—

1 मनुष्य के विकास का कारण बहिर्मन है। यह प्राणियों को सभव या असभव की विचार करने की प्रेरणा देता है जसे एक टापू मे जहा मनुष्य नही रहते थे। जब सबसे पूर्व मनुष्य बन्दूक लेकर पहुचा तो पक्षी डरे नहीं। पर जब उसने पक्षियों को बन्दूक से मारा तो मनुष्य उसकी बन्दूक और बन्दूक की मार को देखकर डरना प्रारम्भ कर दिया।

2 यह बहिर्मन या जागृतावस्था का मन नई परिस्थिति से मुकाबला करने की शक्ति उत्पन्न करता है।

3 यह बहुत दूर दूर तक की यात्राए करता है। अनेक स्थानों पर जाता है।

4 अन्तर्मन को नाना प्रकार की सूचनाए और प्रेरणाए भेजता है।

5 यह अन्तर्मन को शिक्षा देकर उसमें नई प्रवृत्तिया उत्पन्न करने का काम किया करता है।

जिस प्रकार बहिर्मन दूर-दूर तक जाता है वैसे ही अन्तमन या अचेतन मन भी दूर दूर तक जाता है और वह सुप्तावस्था में भी कार्य करता है। यह अचेतन या अन्तमन क्या है। मनुष्य के तन मे कुछ प्रबल इच्छाए उत्पन्न होती है। उन इच्छाओ को वह समाज परिवार या बदनामी के डर से पूरा नही कर पाता है या किसी कार्य मे उसे ऐसा धक्का लगता है कि वह गहरे दुख मे पड जाता है तो वे अतृप्त या अपूर्ण इच्छाए उसके अचेतन मन मे चली जाती हैं और वह अनजाने रूप मे ऐसी हरकतें करता है कि उससे उसे ही हानि पहुचती है। आपने कभी-कभी किसी व्यक्ति को विभिन्न तरह से बार बार गर्दन हिलाते आख मटकाते या नाक सिकोडते या कधा झटकते देखा होगा। कभी सोचिए वे ऐसा क्यो करते हैं ? मनोवैज्ञानिक प्रयत्न करके उनकी इन चेष्टाओं का कारण जानने का प्रयत्न करते हैं। और उनसे उन्हें मुक्त करते हैं। एक व्यक्ति को मैं जानता हू कि जब वह दूसरे के साथ सडक पर चलता है तो दूसरे को धकेलता जाता है और सडक के दूसरे किनारे पर ले जाता है। उसे इसका पता नहीं चलता है। मैंने एक मनो विज्ञान की पुस्तक में पढा था कि एक व्यक्ति अपना अंगूठा और अपनी तीन की अगुली रगडता रहता था। उसने अपनी एक कापी में कई बार एक रुपए, कई बार दस रुपए और कई बार सौ सौ रुपए के नोट भी रगड दिए। यह क्रिया उसका अन्तर्मन करता था। इसकी मानसिक चिकित्सा कराने पर उसे पता चला कि कभी एक दस्तावेज पर अगूठे का निशान लगाने से उसे पर्याप्त हानि उठानी पडी थी। वह वही बाते उसी कालिमा को मिटाया करता था। यह क्रियाए अचेतन मन की होती हैं और इसका कुछ भी पता करने वाले को नहीं होता है।

यही अचेतन या अन्तमन की क्रिया स्वप्न में भी होती है। कुछ पुस्तक लिखीथी वह सोए हुए का मन भी उसी प्रकार गति करता है। [illegible] समय चेतन मन की शक्ति चेतना के कार्य मे खर्च होती है पर सोते समय वह अचेतन मन में ही संचित रहती है। चेतना का क्रियाओ को बन्द कर देने से अचेतन मन का कार्य प्रबल हो जाता है। उस समय भी वह मन दूर दूर की यात्राए प्रारम्भ कर देता है। कभी कभी जब मनुष्य अपनी प्रबल इच्छा को अपनी जागृतावस्था मे तृप्त नहीं कर पाता तो वह उसे अपनी स्वप्नावस्था में तृप्त रूप से तृप्त करता है। शेक्सपियर के मेकबेथ नामक नाटक मे लेडी मेकबेथ की कहानी अग्रेजी जानने वाले लोगो मे प्रचलित है। लेडी मेकबेथ सुप्तावस्था में उठ कर हाथ धोती थी। वह अपने हाथों को रक्त रंजित देखती थी। वह अपनी दासियो से पानी साबुन मगवा कर हाथ साफ करती थी। फिर पर भी उनमे खून लगा दिखाई देता था। इस महिला ने अपने घर आए अतिथि राजा डन्कन को किसी अपराध में राज्य के लोभ वश अपने पति द्वारा मरवा दिया था। जब से उसने ऐसा किया उसे इस तरह के स्वप्न आया करते थे। (क्रमश)

## सात हजार रुपया सभा भवन के लिए प्राप्त

आर्य समाज चौक भटिण्डा की ओर से सभा भवन के निर्माणार्थ 7000 रुपया प्राप्त हुआ है। जैसा कि सभी आर्य बन्धुओं को पता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के कार्यालय का नया भवन बन रहा है। और यह पूरी तरह से तभी बन सकेगा अगर पजाब की सभी आर्य समाजें इसके लिए धन भेजें। आर्य समाज चौक भटिण्डा ने 7000 रु भेजा है अगर इसी प्रकार दूसरी आर्य समाजें भी भेजें तो यह कार्य शीघ्र हो सकता है। —सभा मंत्री

## सम्पादकीय—

# स्वर्गीय बख्शी टेकचन्द जी

26 अगस्त को उनकी जन्म शताब्दी मनाई गई। एक सौ वर्ष पहले 26 अगस्त 1883को जन्माष्टमी की रात को हिमाचल के एक शहर नूरपुर में उनका जन्म हुआ था। उस समय नूरपुर पंजाब में ही शामिल था। पहले नूरपुर में फिर धर्मशाला में बख्शी जी ने प्रारम्भिक शिक्षा ग्रहण की थी। उसके पश्चात वह लाहौर में डी ए वी कालेज में दाखिल हो गए। यहीं उन पर श्री महात्मा हंसराज जी का प्रभाव पड़ा। बी ए पास करने के पश्चात उन्होंने एल एल बी की परीक्षा पास की और उसके पश्चात अपनी वकालत शुरू कर दी। उनके पिता बख्शी जगसी राम भी एक बहुत बड़े आर्य समाजी थे। और बहुत बड़े दानी थे। डी ए वी कालेज के लिए उन्होंने बहुत दान दिया था। लाहौर में वकालत की परीक्षा पास करने के बाद बख्शी जगसीराम जी अपने बेटे को आगे शिक्षा दिलाने के लिए इंग्लैंड भेजना चाहते थे। लेकिन बख्शी जी ने अपने देश में रह कर ही काम करने का निश्चय किया और उन्होंने लाहौर में अपनी वकालत शुरू कर दी।

यह हमारा अत्यन्त दुर्भाग्य है देश का भी और जाति का भी कि हमारी नई पीढ़ी बख्शी टेकचन्द के बारे में अधिक नहीं जानती। नई पीढ़ी का रोना क्या पुरानी पीढ़ी भी उन्हें भूल गई है। उनकी जन्म शताब्दी सारे पंजाब में मनाई जानी चाहिए थी। क्योंकि पंजाब पर उनके जो एहसान हैं उन्हें आसानी से भुलाया नहीं जा सकेगा। 1920 से 1960 तक जो सक्रिय भूमिका बख्शी जी ने पंजाब की राजनीति में निभाई थी उसे कोई भी इतिहासकार भूल नहीं सकता। वह डी ए वी कालेज आन्दोलन की जान थे। डी ए वी कालेज कमेटी के सचिव भी रहे और प्रधान भी रहे। 1919 में जब पंजाब में मार्शल ला लागू किया गया तो बख्शी टेकचन्द जी उस समय कांग्रेस के मन्त्री थे। पंजाब पर जो अत्याचार हुए थे उनकी जांच के लिए कांग्रेस ने अपनी जो कमेटी बनाई थी बख्शी जी उसके भी मन्त्री थे। और जब उन्होंने अपनी वकालत शुरू की तो धीरे धीरे वह एक वकील के रूप में लोकप्रिय होते गए। फिर वह समय आया जब उनकी गणना पंजाब के चोटी के वकीलों में होने लगी। दूर दूर से लोग लाहौर उनके साथ परामर्श करने के लिए आया करते थे। फिर वह दिन आया जब उन्हें पंजाब हाईकोर्ट का जज नियुक्त किया गया। जैसे कि आजकल भी कई बार होता है, उन दिनों भी जिसे जज नियुक्त करते थे उसकी नियुक्ति शुरू में अस्थाई होती थी। जब तत्कालीन सरकार बख्शी जी को अस्थाई रूप से जज बनाने को तैयार हुई तो बख्शी जी ने इन्कार कर दिया। उन्होंने कहा कि यदि उन्हें अन्य जजों की तरह स्थाई जज नहीं बनाया जा सकता तो वह जज बनना नहीं चाहते। इस पर सरकार ने उन्हें स्थाई रूप से हाईकोर्ट का जज बना दिया और उसके थोड़ी ही देर बाद वह पंजाब हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश भी बना दिए गए जब देश के विभाजन का प्रश्न आया और विभाजन के लिए सरकार ने रैड क्लिफ आयोग नियुक्त किया, श्री बख्शी टेकचन्द और श्री मेहर चन्द महाजन इन दोनों ने भरसक प्रयास किया कि लाहौर भारत को मिले। किन्तु उसमें वह सफल न हुए। फिर भी वह जो कुछ ले सकते थे उन्होंने अपने देश के लिए ले लिया। स्वाधीनता के पश्चात जब देश का नया संविधान बनाने के लिए संविधानसभा का गठन हुआ तो बख्शी टेकचन्द उसके भी सदस्य बनाए गए और संविधान का प्रारूप तैयार करने के लिए कुछ कानून व संविधान विशेषज्ञों की जो समिति बनाई गई थी। बख्शी टेकचन्द जी उसके भी सदस्य थे। जब पाकिस्तान से आए शरणार्थियों के पुनर्वास का प्रश्न पैदा हुआ तो पंडित जवाहर लाल नेहरू इस मामले में बख्शी टेकचन्द जी से परामर्श किया करते थे। इसके अतिरिक्त जब कभी उन्हें किसी संवैधानिक अथवा कानूनी नुक्ते पर कोई बात करनी होती थी तो बख्शी टेकचन्द जी को बुला लिया करते थे। उन पर पंडित नेहरू को पूरा भरोसा था। इस लिए उनसे सलाह आदि कर लिया करते थे।

बख्शी टेकचन्द जी के बारे में मैं लिखने लगूं तो कई लेख लिख सकता हूं जिस उच्चकोटि की योग्यता और नैतिकता के वह स्वामी थे बहुत कम लोग ऐसे आपको आज मिलेंगे। हालांकि एक समय ऐसा आया था जब पंजाब में उनकी वकालत सब से अधिक थी। फिर भी वह बहुत सादा जीवन व्यतीत करते थे। अन्तिम समय तक भी उन्होंने अपनी पगड़ी नहीं छोड़ी। मैंने ऊपर श्री मेहरचन्द महाजन और बख्शी टेकचन्द दोनों का उल्लेख किया है। दोनों ही हिमाचल की अपने देश को एक बहुत बड़ी देन थे। दोनों वकील थे और दोनों ही जज बनाए गए। एक को पंजाब हाईकोर्ट का मुख्य न्यायाधीश बनाया गया दूसरे को सर्वोच्च न्यायालय का मुख्य न्यायाधीश बनाया गया। स्वाधीनता के बाद यदि बख्शी टेकचन्द भी वकालत करते तो निःसन्देह वह भी सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश बन जाते। मेरे लिए तो गर्व की बात यह भी है कि दोनों ही बड़े कट्टर आर्य समाजी थे। हमारे परिवार के साथ दोनों का बहुत गहरा सम्बन्ध था।

आज जबकि बख्शी टेकचन्द जी की जन्म शताब्दी है मैं उन्हें श्रद्धा के कुछ फूलों के अतिरिक्त क्या भेंट कर सकता हूं। बहुत निकट से उन्हें देखने का मुझे अवसर मिला है इसलिए उनका महत्त्व केवल मैं ही समझ सकता हूं। खेद है तो केवल इस बात का कि हम पंजाब के इस सपूत को भूल रहे हैं। बख्शी टेकचन्द जी का जीवन आज के नौजवानों के लिए एक प्रकाश स्तम्भ का काम कर सकता है। उससे हम बहुत कुछ सीख सकते हैं। लेकिन हम अपने उन पुराने बुजुर्गों को भूलते जा रहे हैं जो हमारे लिए आज भी प्रकाशपुंज बन सकते हैं।

—वीरेन्द्र

# सरकार द्वारा श्रीमती राकेश-रानी पर चलाए गए मुकद्दमे वापिस लिए जाएं

इस समय देश में साम्प्रदायिकता बढ़ती चली जा रही है। साम्प्रदायिक शक्तियां सिर उठा कर देश को विघटन की ओर ले जा रही हैं। हमारा शासन भी इन्हीं साम्प्रदायिक शक्तियों की मदद कर रहा है।

दुर्भाग्य से शासन ने आर्य समाज के व्यक्तियों पर सब से अधिक प्रहार किया है। दिल्ली की धार्मिक संस्था दयानन्द संस्थान जिन्होंने चारों वेदों का प्रकाशन तथा लगभग चार सौ अन्य धार्मिक पुस्तक प्रकाशित कर वेद प्रचार का सराहनीय कार्य किया है कुछ पुस्तक साम्प्रदायिक तत्वों के विरुद्ध प्रकाशित की और अपनी जन ज्ञान मासिक पत्रिका में इस सम्बन्ध में कुछ लेख भी लिखे जिस के कारण जन ज्ञान की सम्पादक व दयानन्द संस्थान की अध्यक्ष पण्डिता राकेश रानी पर 22 मुकद्दमे 153 ए तथा 295 ए के अन्तर्गत शासन ने चला रखे हैं। शासन पंजाब में सिखों की देश द्रोही पूर्ण गतिविधियों पर मौन है। उनके विरुद्ध कुछ भी करने में संकोच करता है लेकिन एक देश भक्त धार्मिक आर्य समाजी महिला पर 25 25 मुकद्दमे कर रहा है हिंदुओं को दबाना चाहता है। शासन का यह पग समस्त हिन्दू समाज के लिए विशेषकर आर्य समाजियों के लिए एक चुनौती है। मैं स्वयं श्रीमती राकेश रानी जी से मिला था और उनसे सारी परिस्थितियां ज्ञात की थी। मैं समझता हूं कि सभी आर्य समाजियों को हिन्दू संस्थाओं को इस सम्बन्ध में प्रस्ताव पारित कर प्रधानमन्त्री गृह मन्त्री को भेजना चाहिए और जोरदार शब्दों में सभी मुकद्दमे वापिस लेने की मांग करनी चाहिए।

—वीरेन्द्र

# माताएं ! बच्चों का सुधार करें

ले —श्री सुरेन्द्र मोहन सुनील विद्यावाचस्पति साहित्यलंकार
श्रीमती भाग्यवन्ती सेवासदन हसनपुर दिल्ली—

✻

शिशु का शैशवकाल उसके जीवन का आधार स्तम्भ है घर मे जिस प्रकार से माता पिता व्यवहार करते हैं उसके अनुसार ही सन्तान बनता या बिगडता है। बच्चो को बनाना या बिगाडना आप के हाथो मे है सारा दोष सन्तानो पर ही न डालें जिस प्रकार का आप का आचार व्यवहार व खान पान बोल चाल या रहन सहन होगा ठीक उसी के अनुरूप आपके सन्तान गुण या अवगुण को ग्रहण करेगा।

शास्त्रीय दृष्टिकोण से तो बच्चो के तीन ही गुरु (शिक्षक) हैं जिनका असर सन्तान पर पडता है परन्तु मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से बच्चो मे सस्कार डालने वाले चार गुरु (शिक्षक) हैं।

1 माता 2 पिता 3 पडोसी 4 शिक्षा देने वाला (अध्यापक) परन्तु इन चारो पहलुओ मे ही माता का स्थान सर्वप्रथम है। अत यह सकेत मिलता है कि—

माता निर्माता भवति

माता ही बच्चो को निर्माण करने वाली है।

माता सस्कार दा भवति

माता ही बच्चो मे अच्छे बुरे विचारो की सस्कार दात्री है घर उसका सबसे पहला विद्यालय है। (अपना घर ही आदमी को इन्सान और इन्सान से देवता बनाता है घर एक शिक्षण केन्द्र है। वास्तव मे इतिहास साक्षी है कि ससार मे जितने भी महान पुरुष हुए हैं उनको बनाने वाली गुणवती माताए ही थी।

बच्चो का दूसरा गुरु उसका पिता है जिस तरह की आचरण विचार व स्वभाव आदि पिता के होगे उन्ही का प्रभाव बच्चे प अवश्य पडता।

बच्चो का हृदय सफेद कागज की भान्ति एव कुम्हार के मिट्टी की लोदे के सदृश्य होता है।

मा बाप जिस किस्म के शब्दो का कार्य कलापो का प्रयोग बच्चो के सामने करते वैसा ही बच्चो के मानस पटल पर चिन्ह की तरह खिच जाता है।

मेरा यह जीवन का कटु अनुभव है इसलिए मैं दावे के साथ कह सकता हू कि—

माता पिता के गलतियो से ही सन्तान बिगडते हैं। अत बच्चो के सुधार के लिए पहले स्वय सुधरो उसके समक्ष किसी भी प्रकार से गलत व्यवहार मत करो। बहुत से माता पिता अपने तीक्ष्ण बुद्धि बालक को भी यह कहकर कि तुम मूर्ख हो तुम तो सुस्त हो तुम तो कुछ भी नही कर सकते इस तरह कहकर उसकी सजन शक्ति का क्षीण कर देते हैं इस प्रकार बालक का स्वाभाविक रूप से विकास नही हो पाता। बालक समझ लेता है कि वह वास्तव मे मूर्ख है तरक्की नही कर पाता साथ ही बच्चो को ज्यादा मा ने पीटने से भी उसका विकास नही हो पाता। बहुत से तो बेवकूफ माता पिता अठारह बीस वर्ष के भी जवान लडके पर हाथ छोड देते हैं और बदले मे जब वह मारता पीटता या गाली देता है तो कहते है कि— कलियुग आ गया है। अपना जन्माया हुआ बच्चा भी कहना नही मानता मुझ गाली देता या मारता है।

इस सम्बन्ध मे चाणक्य नीति का उपदेश प्रत्येक गृहस्थी को अपनाना चाहिए।

लालयेत्पचवर्षाणि दश वर्षाणि ताडयेत।
प्राप्ते तु षोडशे वर्षे पुत्र मित्र वदाचरेत।

पुत्र को पाच वर्ष तक प्यार करें फिर दस वर्ष तक ताडना करें सोलह वर्ष के होते ही पुत्र को मित्र के समान समझें।

एक स्त्री ने बिना मारे पीटे अथवा धमकाए अपने बच्चे को बडा विनम्र एव सच्चरित्र बनाया। लोगो का उक्त स्त्री से यह कहना था कि प्यार से ये बालक बिगड जाए गे परन्तु उस स्त्री ने फिर भी प्यार मे कमी न की।

परिणाम यह हुआ कि उन बच्चो के स्वभाव का अदभुत विकास हुआ।

डडे मे यकीन करने वाले पडोसी बच्चो के व्यक्तित्व से इतने प्रभावित हुए कि उन्हे अपना राय बदलनी पडी और उन्हे मानना पडा कि वास्तव में प्रेम पूर्ण व्यवहार ही बच्चो के पालन पोषण मे सहायक सिद्ध हो सकता है तथा प्रेम पूर्ण व्यवहार से किसी के भी चरित्र को कुन्दन बनाया जा सकता है। यह माता जी हैं गाधी कालोनी मुजफ्फरनगर की श्रीमती कौशल्यादेवी जी जो प्रतिदिन प्रात साय बच्चो को बैठा कर अपने परिवार मे नित्य प्रति हवन यज्ञ भी किया करती हैं घर के बच्चो पर बडा ही सुन्दर प्रभाव पड रहा है सारे बच्चे सध्या हवन व गायत्री मन्त्र का पाठ करते हैं।

बच्चो को डरपोक नही साहसी और वीर बनाओ—

बहुत से मूर्ख माता पिता अपने बच्चो को हौआ इत्यादि अनेकानेक प्रकार के काल्पनिक भय से भयभीत किया करते हैं। ऐसा करने से आपका अभिप्राय यह होता है कि रोते हुए बच्चे चुप हो जाए परन्तु आप को यह नही पता कि इस प्रकार आप अपने बच्चो का घोर अहित कर रहे है। इस तरह भयभीत होकर बालक भविष्य मे डरपोक हो जाता है।

बच्चो के सामने विजय सफलता उत्साह व उन्नति आदि की बात किया कर। इससे उनको आत्मिक बल मिलेगा और उनका मन सदा हर्ष एव उत्साह से हरा भरा और प्रफुल्लित बना रहेगा।

बच्चो के उन्नत भविष्य अथवा कल्याण के लिए ऐसे ही विचार आवश्यक हैं। इस प्रकार के विचार से बालक कभी भी असफल अथवा दुखी नही हो सकता इसके विपरीत आचरण करने वाले बच्चो का मन मलिन हो जाता है उनका भविष्य भयावह और अन्धकारमय हो जाता है। जिस बालक का मन शुरू से ही ईर्ष्या द्वेष क्रोधादि दुर्गुणो की ओर आकर्षित हुआ रहता है उनका जीवन कसे उन्नत हो सकता है वे कैसे महान बन सकते हैं भविष्य तो उज्ज्वल उन बच्चो का होगा जो सदा सत्य शिव सुन्दरम् के प्रभाव में रहेगे। जिनके मन में हीनता आदि के भाव पैदा नहीं होगे।

बच्चो के विकास में पूर्ण योग देने के लिए यह भी आवश्यक है कि आप उनके सामने किसी की ऐब अथवा कमजोरी का जिक्र छेडें बल्कि उनके एबो अथवा असदाचरण के जिक्र की की बजाए उन्हे सत्य शिव सुन्दरम की याद दिलाए उनके साथ सहानुभूतिपूर्ण एव प्रेममय व्यवहार करें तो निश्चित जान लीजिए कि कैसा भी असदाचरण करने वाला बालक हो वह ठीक राह पर आ जाएगा और उसके मन मे वह दिव्य प्रकाश पैदा होगा कि फिर वह आयु भर कोई भी बुराई नही कर सकेगा।

---

बच्चो द्वारा कहना न मानना।

---

बहुत से माता पिताओ के सामने उनके बालको का उनके कहने में न चलना भी एक समस्या बनी हुई है। क्या आपका बच्चा कहना नही मानता है वह अवश्य मानेगा परन्तु क्या कभी आपने सोचा कि ऐसा क्यो होता है आप से कार्यवश मिलने के लिए कोई आया आप घर पर ही हैं परन्तु बच्चो द्वारा कहलवा देते हैं कि—

कह दो पिता जी घर पर नही हैं,
कह दो माता जी घर पर नही है।

यह सब झूठ बोलने की आदत किस ने डाली ? आप माता पिता का ही झूठ बोलने का प्रभाव सन्तान पर पडता है जो वह भी झूठ बोलकर अपना काम बनाना सीख जाता है। बच्चा ऊधम मचा रहा है आपने कहा बेटे सो जाओ सोकर उठोगे तो मिठाई दूगी परन्तु आपने अपने वायदे के अनुसार बच्चे के सोकर उठने पर अमुक वस्तु को नही दिया।

आपने तो सोचा कि बच्चा इन बातो को भूल गया होगा परन्तु ध्यान रहे इन्ही छोटी-छोटी गलतियो के कारण बच्चो पर गलत प्रभाव पडता है बच्चा सब समझता है वह जान जाता है कि मेरे माता पिता झूठ हैं छली हैं कपटी हैं इसलिए वह आपके कहने को नही मानता।

वह भी चालाकी से अपना काम बनाकर आपको बातो टाल देता है। यह दोष बहुत ही आसानी से छुडाया जा सकता है। बात यह है कि अपनी जवानी के दिनो मे प्रत्येक मनुष्य मे जीवन शक्ति पूरे वेग से सचरित होती है। जिसके कारण बच्चे भान्ति भान्ति उपद्रव करते रहते हैं। ऐसे बालको के माता पिता को चाहिए कि वे अपने उन बालको पर इतनी ही सावधानी रख कि वे किसी दुष्कृत्य की ओर न बढ़ अन्यथा बालकों को सब काम मे स्वतन्त्रता देनी चाहिए आप उसके समक्ष कभी भी झूठ न बोलें छल फरेब न कर, जो कहे उसके अनुसार अमुक वस्तु उसे लाकर अवश्य दें फिर देखेंगे कि वह सन्तान आपका कहना अवश्य मानेगा।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

# बुद्धिमान् कौन ?

ले —श्री रामप्रसाद वेदालकार आचार्य एव प्रोवाइसचासलर
गुरुकुल कांगडी हरिद्वार

बुद्धिमान मनुष्य इसलिए भी अपने धन का अभिमान नही करता, अभिमान करने से उसका स्वभाव बिगड जाएगा स्वभाव बिगड जाने से सबके साथ फिर उसका व्यवहार बिगड जाएगा बात बात मे मुख से हीन स्तर से गिरे हुए शब्द निकलने लगेंगे खाने पीने में रहन सहन मे, बोल चाल मे बैठने उठने मे देखने सुनने मे, सोचने विचारने मे आदि आदि सब कार्यों मे अन्तर आ जाएगा । अर्थात इन सब अवस्थाओं मे इन सब प्रवृत्तियो मे उसमे एक अकड सी काम करती रहेगी जिससे कि उसका लोक बिगड जाएगा लोक ही नही उसका परलोक ही बिगड जाएगा । अत यह सब विचार कर वह बुद्धिमान कहता है कि—जो धन का अभिमान मेरा इतना बिगाड कर सकता है । उस धन अभिमान के ज्वर से मुझ अपने आपको बचाए रखने का पूर्ण प्रयास करते रहना चाहिए और सचमुच वह सदा ऐसा प्रयास करता भी रहता है ।

## बुद्धिमान् मनुष्य विद्या का अभिमान भी नही करता

क्योकि वह जानता है कि विद्या की दृष्टि से भी एक से एक बढकर जगत् मे विद्यमान हैं । तो मैं फिर इस पर भी क्यो अभिमान करू । यदि समझू कि मैं चार भाषाओ को जानता हू तो ससार मे ऐसे ऐसे विद्वान है और हुए है जो 22 22 भाषाओ के और 32 32 भाषाओ के ही नही वरन इनसे भी अधिक भाषाओ के ज्ञाता ससार मे हैं और हुए हैं । यदि मैं अपने को आग्ल भाषा हिन्दी का सस्कृत का श्रेष्ठ लेखक या वक्ता समझता हू तो एक ही समय मे अपने चहु ओर विद्वानो को बिठा बिठा कर भिन्न भाषाओ के ग्रन्थ लिखवाने वाले और अद्वितीय वक्ता और लेखक इस धरती पर उत्पन्न हुए और हो रहे हैं । यदि मैं अपनी स्मृति पर गर्व करू यह विचार कर कि मुझ अष्टाध्यायी धातु पाठ गण पाठ निघण्टु निरुक्त आदि आदि याद हैं तो इस जगत् में चारो वेदो की मूल सहिताओ को नानाविध पाठो के रूप मे स्मरण रखने वाले और निरन्तर अबाध गति से उच्चारण करने वाले हुए हैं और हो रहे है और आज भी विद्यमान है । इतना ही नहीं कि केवल सहिता मात्र को वरन अन्य भी शाखाओ के स्मृतिकर्ता मौजूद हैं । मैं अपनी विद्या पर क्या गर्व करू इतना विद्वान होने पर जब मुझ आयुर्वेद के विषय मे पूछा जाता है तो मुझ उस विषय मे मूकवत मौन धारण करना पडता है मनोविज्ञान विज्ञान फिर उनकी भी शाखा प्रशाखाओ के विषय मे अकगणित बीजगणित रेखा गणित अर्थशास्त्र विद्युत विज्ञान भूगर्भ विज्ञान भूगोल खगोल गन्धर्व विज्ञान नागविद्या सर्पविद्या पशु विज्ञान आदि आदि विद्याओं को तो मैं क्या जान सकता हू उन विषय मे तो मैं बिल्कुल कोरा हू । उन विद्याओ को जानना तो दूर रहा उसके नाम और परिभाषा मात्र से भी मैं अपरिचित ही हू । क्या कहू ससार रूप इस महती पाठशाला मे अनन्त विद्याए हैं । 84 लाख योनिया प्राय कही जाती हैं पर किसी ने इसकी खोज मे जब अपना जीवन लगा दिया तो वह इस करोड से भी आगे बढ गए हैं ऐसा सुना जाता है । पर यह खोज करने पर भी कोई यह नही कह सका कि उसने सब योनियो का पार पा लिया है आखिर मैं किस किस को जान सकता हू । इस विशाल ससार मे से मैंने अपने बुद्धि रूप सागर मे कुछ थोडा बहुत भर लिया है 10 20 मन्त्र श्लोक या दोहे आदि याद कर लिए है उस पर भी यदि मेरी बुद्धि बिगड जाए तो मैं फिर कही का भी तो नहीं रहता न घर का न ग्राम का न नगर का फिर तो बस मेरा स्थान यदि कही होता है तो वह भी पागलखाना आदि ही होता है । अत मेरे साथ कहा यह शोभा पाता है कि मह अभिमान करू कि मैं दो-चार अक्षर पढ गया हू मैं एम ए हू या एम ए पी एच डी और डी लिट आदि हू न जाने इस धरती माता के कितने लाल ऐसे हुए हैं जिनके चरणो मे बैठकर अब भी मैं वर्षों बहुत कुछ सीख सकता हू कितनो की विद्या और गुण कर्म स्वभावो को देखकर अब भी हृदय से मेरा सिर सहज ही उनके प्रति झुकने को उद्यत हो जाता है । भले ही गर्व मे आकर अकड कर खडा रहू । तो धरती पर यह देख जान कर भला मैं कब अपनी सम्पूर्ण विद्या पर गर्व कर सकता हू । शास्त्र भी कहता है कि विद्या ददाति विनयम —विद्या मनुष्य को विनमता बनाती है । अब अगर विद्वान होकर भी यदि मुझ में विनम्रता नही आई तो समझो कि या तो वह विद्या वास्तव में विद्या नही वरन अविद्या है या मुझ पात्र मे कही त्रुटि है ।

इस विद्या पर बुद्धिमान मनुष्य अभिमान करे भी तो कैसे करे क्योकि जब वह अपनी आखो से ऐसे दृश्य देख लेता है कि सहस्रो और लाखो मे बोलने वाले और वह भी इतना सुन्दर और युक्तियुक्त कि दूसरे मन्त्र मुग्ध हो जाए पर उन्ही के पास बुढापे मे यदि कोई उपदेश लेने जाता है तो वे कहते हैं कि अब सब कुछ भूल गया हू । अति आग्रह करने पर भी जब वे बहुत सोचते विचारते रहे तो उन्हे केवल इतना ही स्मरण हो पाया कि—आचार परमो धर्म और साधना करनी है तो दृढता से यमनियम का पालन करो । क्योकि यह यमनियम साधना के आधार हैं । श्रद्धालु उस महान विद्वान से इतना ही प्रसाद पाकर भी अपने को कृतार्थ अनुभव करते हैं । परन्तु वह मध्य वाला व्यक्ति सोचता है कि कभी ये ऐसे विद्वान थे जो हर शका का बडी अच्छी प्रकार से समाधान करते थे पर वह विद्या अब शरीर के विकृत हो जाने पर अब साथ नही दे पा रही है यह सब देख भाल कर वह व्यक्ति कहता है कि यह आवश्यक नही कि जिस विद्या पर आज मुझ अभिमान है क्या है वह कल भी मेरे पास बनी रहे । मेरे चाहने पर भी वह मुझ से विदा हो सकती है । अत यह सोच कर वह बुद्धिमान व्यक्ति अपनी विद्या पर कभी भी अभिमान नही करता वरन वह तो सदा नम्र ही बना रहता है और अपनी विद्या के लिए प्रभु कृपा एव अपने पूज्य माता पिता तथा आचार्यों को ही सदा श्रेय दिया करता है ।

बुद्धिमान व्यक्ति सोचता है कि इस विद्या पर मैं क्या अभिमान करू जो केवल मेरे मस्तिष्क एव वाणी तथा पुस्तको को ही अलकृत कर रही है और मुझ स्थान स्थान पर स्नेह सम्मान और यश का भागी बना रही है । इस विद्या का वास्तव मे लाभ तो तभी होगा जब यह मेरे हृदय को—मेरे आत्मा को जगा दे—ज्योतिर्मय बना देवे मेरे सोए हुए आत्मा को जगा दे और मुझ इस ससार का ऐसा सदुपयोग करना सिखा दे कि जिससे यहा यह लोक सखमय बन सके प्रभु का भी यहा साक्षात्कार हो सके (सा विद्या या विमुक्तये) अर्थात वास्तव मे विद्या वह है जो मेरे लोक-परलोक को सफल बनाने का मुझ पाठ पढा दे । जब जब इस विद्या से वस्तुत मैं यह सब पा सकू तो तब ही मुझ इस विद्या पर गर्व करना शोभा देता है । पर फिर वहा गर्व कहा होगा ? किसके सामने होगा किसको दिखाने के लिए होगा ? उस समय तो फिर मेरे सम्मुख जो होगा उस प्राणो से प्यारे प्रभु पर मुग्ध होकर तो मैं तब अपना सर्वस्व लुटा चुका हुआ हूगा और तब तो फिर मै बिल्कुल ही निरभिमान अर्थात अत्यन्त नम्र हुआ अनूठा आनन्द अनुभव कर रहा हूगा ।

बुद्धिमान यह भी जानता है कि विद्या धर्मेण शोभते विद्या धर्म के साथ शोभा पाती है । अर्थात धार्मिक जीवन के साथ अर्थात आचरण के साथ विद्या शोभा पाती है । तो फिर ऐसी विद्या पर जोकि आचरण मे अभी नही है उस विद्या पर मैं क्या गर्व करू ? क्योकि वह तो दीगरा नसीहत खुद रा फजीहत है और विद्या के अनुसार जब मेरा आचरण हो जाएगा तो फिर वैसे ही अभिमान करना मूर्खता प्रतीत होने लगेगी । इस प्रकार यह सब सोचकर भी वह बुद्धिमान मनुष्य कभी अभिमान नही करता ।

बुद्धिमान यह भी जानता है कि जिस विद्या पर मैं अभिमान करता हू वह मेरे पास गुरुओ की कृपा से आई है यदि वे मुझ पर कृपालु होकर मुझे प्यार से न पढाते न फिर भला मै कहा से इतना विद्वान हो जाता ? और गुरु जन पढाते पर मेरे पूज्य माता पिता आदि अभिभावक जन मेरे खाने पीने रहने सहने आदि की व्यवस्था न करते तो मै कहा यह सब कुछ कर पा सकता ? फिर यह सब कुछ होते हुए भी प्राणो से प्यारा और सब जग से न्यारा वह प्रभु देव बुद्धि सद्बुद्धि न देता तो मैं कैसे अन्य नाना प्रकार के व्यवहारो से अपने आप को पृथक कर विद्या मे लगा पाता ? अत मुझ किसी भी सूरत मे इस विद्या पर अभिमान करना शोभा नही देता । मुझ तो चाहिए कि मैं इस विद्या को अपने माता पिता गुरु (आचार्य) और परम गुरु परमेश्वर का अनुपम प्रसाद समझकर इससे स्वय को सदा प्रसन्न करू और इससे अन्यो का भी प्रसन्नता मे विकास करता रहू ।

## आर्य स्त्री समाज चौक पटियाला का चुनाव

आर्य स्त्री समाज चौक पटियाला का वार्षिक चुनाव दिनाक 10 7 83 को सदभावना पूर्ण वातावरण मे साप्ताहिक सत्सग के बाद हुआ बहिन सत्यवती चोपडा को सर्वसम्मति से प्रधाना चुना गया और शेष सदस्य मनोनीत करने का अधिकार भी बहिन सत्यवती को दे दिया निम्न अधिकारी निर्वाचित हुए—

प्रधाना —श्रीमती सत्यावती उपप्रधाना श्रीमती शकुन्तला वीर श्रीमती लक्ष्मीदेवी मन्त्राणी कैलाश रानी उपमन्त्राणी श्रीमती सुशीलादेवी श्रीमती शान्तिदेवी श्रीमती यशवन्ती देवी कोषाध्यक्षा श्रीमती सवित्री देवी टण्डन लेखा निरीक्षक श्रीमती उमा खोसला । —कैलाश रानी वीर मन्त्राणी

## स्वास्थ्य सुधा—

# वैद्यराज मिट्टी

ले—श्री डा नारायणदत्त योगी एन डी

मिट्टी एक अद्भुत लाभकारी वस्तु है। बड़ी बड़ी मूल्यवान औषधियों का प्रयोग करने की बजाय यदि साधारण मिट्टी को प्रयोग किया जाए तो आश्चर्यजनक लाभ होता है। यह प्राय भारत के सब स्थानो मे सुगमता से उपलब्ध होती है मिट्टी के विषय मे प्राकृतिक चिकित्सकों का विचार है कि मिट्टी सर्वरोगहारी है अर्थात् कोई ऐसा रोग नही है जिसको मिट्टी ठीक न कर सके। मैं कुछ अनुभव मिट्टी के बारे मे नीचे लिखता हू आप स्वय मिट्टी का प्रयोग करके लाभ उठावें। मिट्टी के प्रयोग करने से पहले कुछ विशेष बात लिख देना अत्यन्त आवश्यक है—

1 मिट्टी साफ सुथरे स्थान से खोद कर लानी चाहिए। एक मीटर जमीन खोद कर मिट्टी साफ होगी। किसी ऐसे स्थान से मिट्टी न ली जाय जहा टट्टी पेशाब या गन्दगी पड़ी हो। क्योंकि गन्दी मिट्टी दूषित होती है वह रोग नाशक नही होती है। मिट्टी रेतीली भी न होनी चाहिए। यदि मिट्टी मे कंकड़ पत्थर के टुकड़ मिले हुए हो तो उसको छलनी से छान लेना चाहिए। रात को मिट्टी को भिगो दव प्रात काल उठकर मिट्टी को प्रयोग करें। मिट्टी को हाथ नही लगाना चाहिए किन्तु उस को चम्मच या कड़छी से मिलाना चाहिए।

2 आखो के रोगो के लिए किसी मोटे कपड़ पर मिट्टी को फैला देव और आखो पर कपड़ा रखना चाहिए मिट्टी कपड़ पर हो आखो पर मिट्टी रखने से मिट्टी आखो मे प्रवेश करेगी जो बजाय लाभ के हानि करेगी। आध घण्ट तक मिट्टी की पट्टी आखो पर रख। आध घण्टे के पश्चात आखो पर से पट्टी उतार ल ऐसा करने से आखो के रोग दूर हो जाते हैं। आखो का द खना आखो से पानी आना मोतिया बिन्द का होना आदि रोग दूर जाते हैं। ल ा ा दो तीन मास तक प्रयोग करक देख। प्रात सायं दोनो समय इस मिट्टी का प्रयोग लाभकारी था।

2 पेट का कब्ज के लिए भी मिट्टी का प्रयोग बहुत लाभकारी है। आपको कड़वी कसैला नशीली विषली औषधियो के खाने की आवश्यकता न होगी मिट्टी की पट्टी से अवश्य कब्ज दूर ही जाएगी। कब्ज से सब बीमारिया हो जाती हैं। इसलिए कब्ज को दूर करने के लिए पेट पर आध घण्टे के लिए पट्टी बाध कर लेट जावें तो कब्ज हट जाएगी। जितना लम्बा-चौड़ा पेट हो उतना टाट का टुकड़ा लेकर उस पर मिट्टी फैला दें और रोगी के पेट मे गिली मिट्टी की पट्टी रखकर ऊपर से टाट का टुकड़ा रख देवें। आध घण्टे के पश्चात मिट्टी की पट्टी को उतार दें और पेट को एक गीले तौलिये से साफ कर लेवें। यदि आखो मे तकलीफ हो तो आखो पर पट्टी रखे और पेट पर भी। दोनो पट्टियो को आध घण्टे के पश्चात उतार लेव। ऐसा करने से आखो और पेट दोनो का लाभ होगा। जिस रोगी को बहुत अधिक कब्ज रहती हो उस रोगी को रात को सोते समय पेट पर मिट्टी की पट्टी बाध लेनी चाहिए। प्रात उठकर उस पट्टी को उतार कर पेट गीले तौलिये से साफ कर लेना चाहिए। इस प्रकार से कई रातो को पेट पर मिट्टी का प्रयोग किया जाए तो कब्ज से छुटकारा हो सकता है।

महात्मा गान्धी जी का अनुभव है कि उनको कब्ज रहने पर मिट्टी की पट्टी बहुत उपयोगी सिद्ध हुई। गान्धी जी ने लिखा है कि उनको कब्ज दूर करने के लिए फ्रूटसाल्ट लेना पड़ता था परन्तु डा प्राण जीवन महता के बताने से लोह (डायलाइज्ड आयरन) और नक्सवोमिका लेने लगे परन्तु इस से लाभ नही हुआ। अत वे पेडू पर मिट्टी की पट्टी रख कर सोने लगे। रात को यह मिट्टी की पट्टी पेट पर बाध लेते प्रात उठकर पेट साफ कर लेते इससे उनकी कब्ज हट गई और पेट साफ होने लगा। गान्धी जी ने इस अनुभव से सैकड़ो लोगो पर मिट्टी की पट्टी का प्रयोग किया और कब्ज से छुटकारा पाया।

महात्मा गान्धी जी को अधिक परिश्रम करने के कारण रक्त चाप बढ जाता था व मिट्टी की पट्टी सिर पर बाध लेते थ। उनको आराम हो जाता था।

(1) अजीर्ण—पेडू पर मिट्टी की पट्टी एक घण्टा लेकर हल्के गरम पानी का एनीमा लेव। तुरन्त लाभ होगा।

(2) पागलपन—सिर और रीढ पर मिट्टी की पट्टी लम्बे समय तक लगावें। एनिमा देकर पेट साफ करते रहें।

(3) पीलिया—प्रात गरम पानी 104 डिग्री फा हा का एनिमा देकर पेट साफ कर रखने के तुरन्त बाद कुल पेट पर मिट्टी की पट्टी 1 1 घण्टे के लिए बाधें।

(4) रक्तमूत्र—मूत्र में रक्त की उपस्थित मे रोगी को केवल फलों के रस पर ही रखें। मूत्राशय तथा सीवन पर मिट्टी की पट्टी लगावें।

(5) निमोनिया—छाती पर गरम सेक देवें और मिट्टी की पट्टी का प्रयोग करें। इस मे ग्लेसरीन मिला लेवें।

(6) धड़कन—रोग के कारणो को दूर करें। स्थानीय मिट्टी की पट्टी का प्रयोग धड़कन और घबराहट को आराम करता है।

(7) दमा—मिट्टी की पट्टी इस रोग को ठीक कर सकती है। रोगी को नमक और शक्कर न खाना चाहिए।

(8) मस्से बवासीर के—प्रात रात को सोते समय पेडू पर व गुदा स्थान पर मिट्टी की पट्टी लगाव जो कम से कम दो घण्टे तक लगी रहे। रात की पट्टी रात भर लगी रहनी चाहिए।

(9) नपुसकता—जननेन्द्रिय पर मिट्टी की पट्टी रात को सोते समय लग व गरम और ठण्डा स्नान भी देव।

(10) रसौली—पेट की रसौली मिट्टी की पट्टी बाधने से घुल जाती है। पट्टी का प्रयोग 2 घण्टे तक होना चाहिए और दिन में 3-4 बार दुहराना चाहिए। पट्टी खोलने के बाद कटि स्नान लेवें।

(11) कील मुहासे—चेहरे पर नींबू का रस लगा कर मिट्टी की पट्टी लगावें। पट्टी उतार कर हल्के गरम जल से चेहरा धो डालें।

(12) साप का काटना—एक लड़की को घास काटते समय एक जहरीले साप ने डस लिया। वह लड़की बेहोश हो गई, हाथ भी सूज गया। पैर सूजने लगे और उसे बहुत पीड़ा हुई। उसके बाप ने उसको बाग में एक गड्ढा खोद कर लड़की को गले तक नग्न करके गाड़ दिया। चौबीस घण्टे के बाद निकालने पर लड़की अच्छी पाई गई।

बिजली का झटका लगने पर अथवा बिजली गिरने से बेहोश हो जाने वालो के लिए भी यह ही तरीका काम पड़ जाता है।

अगर मिट्टी का प्रयोग [illegible] किया जाए और एक घण्टे तक मिट्टी बदली जाती रहे तो सर्प विष का सारा असर जाता रहता है।

(13) कुत्ते के काटने का घाव खतरनाक होता है। ऐसी दशा मे घाव को ठण्ड पानी से तर करके गीली मिट्टी की पट्टी लगानी चाहिए और उसे बदलते रहना चाहिए। शीघ्र ही घाव भर जाएगा। मिट्टी जख्म के द्वारा सारे शरीर के विकृत पदार्थ को खीच लेती है। इस लिए जहरीले जख्मो मे जैसे, साप कुत्ता, बिल्ली आदि के काटने पर लाभदायक होती है।

---

## लन्दन के वन्दे मातरम् भवन से राष्ट्रीय गीत की गूंज

आर्य समाज लन्दन के तत्वावधान में आज यहा भारतीय स्वतन्त्रता दिवस बड़ उल्लासपूर्वक मनाया गया। वन्दे मातरम भवन मे आयोजित इस कार्यक्रम में लन्दन तथा निकटवर्ती नगरो के प्रवासी भारी सख्या मे उपस्थित थे। इस अवसर पर यज्ञ के ब्रह्मा थे श्री गिरीश चन्द्र खोसला तथा यजमान आसनो पर आर्य बालक तथा बालिकाए ही थी। यज्ञोपरान्त बच्चो द्वारा राष्ट्रगान जन गण मन का सुमधुर ध्वनि से सारा हाल गूज उठा। एक स्वर एक ताल, एक लय पर गाए गए राष्ट्रगान से सम्पूर्ण वातावरण गुर भित हो गया। तत्पश्चात युवकों द्वारा सगठित सरगम ग्रुप के कलाकारों ने रगारग गीत गाए तथा श्रोताओं का मनोरजन किया। सरगम के नायक श्री आदित्य पाठक के उत्साह की सराहना की गई।

हिन्दू युवा सभा स्लाओ ब्रैडफोर्ड के सदस्यो ने भारतीय सास्कृतिक तथा धार्मिक जीवन पर स्लाइडें दिखाईं। सुप्रसिद्ध आर्य नेता श्री सत्यदेव भारद्वाज नैरोबी वालो ने कार्यक्रम की भूरि-भूरि प्रशसा करते हुए बच्चो को पारितोषिक वितरण किए।

—गिरीश चन्द्र खोसला

---

## आर्य स .द. बाजार लुधियाना में वेद सप्ताह

आर्य समाज तथा स्त्री आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना की ओर से वेद सप्ताह तथा कृष्ण जन्माष्टमी का पवित्र त्योहार 30 अगस्त से 4 सितम्बर तक बड़ उत्साह से मनाया जा रहा है, जिसमें वेद व्याख्याता प मदनमोहन जी विद्यासागर हैदराबाद वाले यज्ञ करा रहे हैं तथा उपदेश दे रहे हैं। आर्य समाज के विद्वान पुरोहित श्री सुरेन्द्र कुमार जी शास्त्री भी वेद पाठ करते रहे तथा आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की भजन मण्डली के मनोहर भजन होते रहे पूर्णाहुति 4 9 83 रविवार 9 30 बजे प्रात होगी। जन्माष्टमी 31 8 83 बुधवार को मनाई गई जिसमें प्रात 6 30 से 8-30 बजे तक यज्ञ हुआ और उसके पश्चात् भजन तथा योगीराज श्री कृष्ण जी की जीवनी पर प्रकाश डाला गया। सारा प्रोग्राम हर प्रकार से सफल रहा।

# दहेज समस्या और उसका समाधान

ले —श्री ओमप्रकाश पत्रकार फरमाणा सोनीपत

समाज में उत्पन्न समस्याओं के समाधान की जिम्मेवारी सरकार तथा सामाजिक नेताओं पर होती है भले पुरुषो के लिए समाज सुधारकों के प्रवचन एव पंचायती दबाव और दुष्ट लोगो के लिए सरकार न्यायिक दण्ड ही सामाजिक कुरीतियों तथा समय समय पर पैदा होने वाली समस्याओ की रोकथाम का वास्तविक हल है। सरकार द्वारा बनाये गये कानून और सामाजिक बन्धनो की सार्थकता नियमों के पालन करवाने के बाद सिद्ध होती है। 1976 में हरियाणा सरकार ने विवाह शादियो पर कम खर्च करने बाल विवाह तथा दहेज कुप्रथा के विरुद्ध कानून बनाया परन्तु सरकार के ढीले प्रशासन के कारण दहेज के भूखे भेडियो ने इसे पैरों तले रौंद दिया और सरकार का कानून मजाक बनकर रह गया। धार्मिक तथा सामाजिक सम्मेलनो मे दहेज के विरुद्ध पारित प्रस्तावो की खिल्ली उड़ाई जाती है। दहेज समस्या के विकराल रूप से आज समाज का प्रत्येक वर्ग भयभीत है। दहेज के कारण दिन प्रतिदिन होने वाली महिलाओ की हत्याओं ने समाज और सरकार को दहला दिया है आकाशवाणी दूरदर्शन तथा समाचार पत्रों में दहेज के कारण घटने वाली दुखद घटनाए आम चर्चा का विषय बन गई हैं। यहा तक कि विधान सभा ससद में भी दहेज समस्या बहस का खास मुद्दा बना हुआ है । 17 अगस्त को प्रश्नोत्तर काल के दौरान ससद मे पूछे गये सवाल के जवाब से पता चला कि अकेले दिल्ली शहर मे पिछले एक मास मे दहेज के कारण 80 महिलाओ को मौत के घाट उतार दिए जाने की सूचना प्राप्त हुई है। केवल इस दहेज की आफत ने सारे देश को चौंका दिया है। सरकार तथा सामाजिक नेता उक्त समस्या का समाधान खोजने के लिए प्रयत्नशील हैं।

पिछले दिनो केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल ने दहेज विरोधी कानूनी मसविदे को स्वीकृति दी जो संसद के वर्तमान वर्षाकालीन अधिवेशन में पारित किया जाना सम्भावित है। कानून के प्रारूपानुसार भारतीय दण्ड संहिता में संशोधन कर दहेज विरोधी कानून प्रक्रिया को और कड़ा करना विचाराधीन है।

इसी प्रकार पिछले दिनों हरियाणा के नगर गोहाना में दहेज विरोधी विषय को लेकर सर्वखाप पचायत का आयोजन किया गया। दिल्ली, उत्तर प्रदेश राजस्थान तथा हरियाणा की 56 खापों तथा सैकड़ों गावों के मुखियाओं ने बैठक मे भाग लिया। विभिन्न प्रदेशो के बीस पच्चीस हजार प्रमुख व्यक्तियो ने विवाह शादियों मे कम खर्च करने तथा दहेज के विरुद्ध अनेक महत्वपूर्ण निर्णय लिए उस दिन पचायत के निर्णयो पर सन्देह की दृष्टि से टिप्पणी करते हुए एक सम्वाद दाता ने कहा था कि पचायत ने हर सारे निर्णय तो ले लिए परन्तु सवाल तो इन्हे लागू करने का है। यदि इन पर अमल न हुआ तो यह सम्मेलन भी फारसी की यह कहावत बनकर रह जाएगा कि नशस्तन गुफ्तन व बरखास्तन (बैठक हुई और बातचीत के बाद समाप्त हो गई) परन्तु हमने देखा कि उक्त पचायत की एक जबरदस्त प्रतिक्रिया हुई। सर्व खाप पचायत के प्रधान स्वामी कर्मपाल ने उस दिन के पश्चात की एक मिनट विश्राम नही किया और जिला हिसार तथा जीन्द की खाप और तपो की बैठक बुलाकर अब तक 299 गाव में दहेज विरोधी समितियो का गठन करके लोगो से सर्वखाप पचायत के निर्णय लागू करने का वचन लिया है। सर्वखाप पचायत के कार्यालय बलिदान स्मारक गुलकनी जिला जीन्द मे पचासो पत्र प्रतिदिन प्राप्त हो रहे हैं कि अमुक गाव मे दहेज विरोधी समिति का गठन कर निर्णय लागू कर दिए गये हैं। उनकी सभाओ हजारो की उपस्थिति इस बात का सबूत है कि लोग कितने विश्वास हृदय से पचायत के निर्णय कर अपना घातक दहेज कुप्रथा से छुटकारा चाहते हैं। उत्तर प्रदेश तथा राजस्थान से आये आमन्त्रण पत्र यह जाहिर करते हैं कि लोग दहेज कुप्रथा को समाज से कितनी तुरन्त हटाना चाहते हैं। आज वातावरण की गर्मी को देखते हुये हम यह कह सकते हैं कि लोग सुधरना चाहते हैं उन्हे सुधारने वाला चाहिए।

केन्द्रीय सरकार का कानून और सर्व खाप पचायत की दहेज विरोधी समितियों को ही इस विकराल समस्या का वास्तविक हल कहा जाए तो अनुचित न होगा। क्योंकि हमने समाज मे घुलकर देखा है कि लोग दहेज कुप्रथा से बेहद दु:खी हैं और उसे रोकने के उपाय खोजना चाहते हैं। यदि आज धार्मिक तथा सामाजिक नेता महर्षि दयानन्द और राजा राममोहन राय की भांति मैदान में कूद कर स्वामी कर्मपाल को सहयोग दें तो निश्चित ही इस सामाजिक कुप्रथा से छुटकारा पाया जा सकता है।

# तुम्हें जवानों—

ले —डा श्री राजेन्द्र प्रसाद आर्य मन्त्री आर्य समाज फूलपुर आजमगढ (उत्तर प्रदेश)

तुम्हे जवानो भारत के सम्मान की रक्षा करनी है
मात भूमि के गौरव की अभिमान की रक्षा करनी है
देखो दुश्मन तुम्हे चुनौती देते हैं सीमाओ पर
मत घबडाओ बढते जाओ घडी घडी हर पहर पहर
दयानन्द गांधी सुभाष के अरमान की रक्षा करनी है
तुम्हे जवानो भारत के सम्मान की रक्षा करनी है
राम राज्य का स्वप्न तुम्हारा कैसे पूरा हो पाएगा
नकल विदेशो की करके क्या खोया गौरव मिल जाएगा
अपना अतीत देखो तो उसके ज्ञान की रक्षा करनी है
तुम्हें जवानो भारत के सम्मान की रक्षा करनी है
भारत वीरो कहा गया त्याग तपस्या शौर्य तुम्हारा ?
आर्य बनाए सारी धरती भूल गये क्या वह नारा
देश धर्म संस्कृति के गौरव गान की रक्षा करनी है
तुम्हे जवानो भारत के सम्मान की रक्षा करनी है

—

(4 पृष्ठ का शेष)

कुछ माता पिता बालक की रुचि नहीं पहचानते और उसे उसकी रुचि के कार्य मे लगा देते हैं।

उदाहरणार्थ—बच्चे की रुचि डाक्टरी पढने मे है किन्तु मा बाप उसे सिखाना चाहते हैं दुकानदारी बालक चाहता नही है परन्तु माता पिता की आज्ञानुसार उसे दुकानदारी सीखने की चेष्टा करनी पडती है। इससे उसका भविष्य अन्धकारमय हो जाता है उसकी प्रतिभा का विकास नही हो पाता।

अत माता पिता को अपने बालक की रुचि का पूर्ण अध्ययन करने के पश्चात् ही उसे किसी काम मे लगाना चाहिए फिर सन्तान आपका बेडापार अवश्य करेगा।

युग प्रवर्तक महर्षि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती थे तो बाल ब्रह्मचारी उन्होने गृहस्थाश्रम का उपभोग नही किया परन्तु फिर भी वह स्त्रियो का स्वामी जी ने सत्यार्थ प्रकाश मे बड ही सुन्दर ढग से बच्चो के सुधार के लिए मार्ग दर्शन किया है वह भी स्वामी जी का एक जीवन का अनुभव ही था

बच्चो के सुधार के लिए जो विचार महर्षि स्वामी दयानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय व तृतीय समुल्लास मे दिया है वह अनुकरणीय है जो प्रत्येक गृहस्थी को हृदयगम करना चाहिए।

उदाहरणार्थ—महर्षि स्वामी दयानन्द जी के ही शब्दों में कुछ विचार प्रस्तुत हैं-

बालको को माता सदा उत्तम शिक्षा करे जिससे सन्तान सभ्य हो और किसी अग से कुचेष्टा न करने पावे

जब बोलने लगे तब उसकी माता बालक की जिह्वा जिस प्रकार कोमल होकर स्पष्ट उच्चारण कर सके वैसा उपाय करे कि जो जिस वर्ण का स्थान प्रयत्न अर्थात प इसका ओष्ठ स्थान और स्पष्ट प्रयत्न दोनो ओष्ठो को मिलाकर बोलना ह्रस्व दीर्घ प्लुत अक्षरो को ठीक ठीक बोल सकना आदि आदि शिक्षा दे

माता पिता आचार्य अपने सन्तान व शिष्यो को सदा सत्य उपदेश करें और यह भी कहें जो जो हमारे धर्म युक्त कर्म हैं उन उनका ग्रहण करो और जो जो दुष्ट कर्म हो उनका त्याग कर दिया करो

(सत्यार्थ प्रकाश द्वितीय समुल्लास)

सन्तानो को उत्तम विद्या शिक्षा गुण कर्म और स्वभाव रूप आभूषणो का धारण कराना मात पिता आचार्य और सम्बन्धियो का मुख्य कर्म है। सोने चान्दी हीरा माणिक मोती मूगा आदि रत्नो से युक्त आभूषणो के धारण कराने से मनुष्य की आत्मा सुभूषित कभी नही हो सकता

जो अध्यापक पुरुष या स्त्री दुष्टाचारी हो उनसे शिक्षा न दिलावें

माता पिता व अध्यापक लडका लडकियो को अर्थ सहित गायत्री मन्त्र का उपदेश कर तत्पश्चात सन्ध्योपासना विधि (नित्य कर्म) भी सिखलावें

(सत्यार्थ प्रकाश तृतीय समुल्लास)

वर्ष 16 अंक 22 26 भाद्रपद सम्वत् 2040, तदनुसार 11 सितम्बर 1983 दयानन्दाब्द 159 । एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपए

वेदामृत—

# हमें कोई दास नहीं बना सकेगा ?

ले —श्री प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति

यो नो द्वेषत् पृथिवि य पृतन्यायोऽभिदासान्मनसा यो वधेन।
त नो भूमे रन्धय पूर्वकृत्वरि ॥

शब्द—(पृथिवि) हे हमारी मातृ भूमि (य) जो (न) हम से (द्वेषत्) द्वेष करे (य) जो हम पर (पृतन्यात) सेना से आक्रमण करे (य) जो (मनसा) मन से और (य) जो (वधेन) शस्त्र से (अभिदासात) हम को दास बनाना चाहे अथवा क्षीण करना चाहे (त) उसको (पूर्वकृत्वरि)

हमारे मनोरथ को पूर्ण करने वाली (भूमे) हे हमारी मातृ भूमि ! (रन्धय) तू राख दे नष्ट कर दे।

हे मातृ भूमि ! हम तेरे निवासी किसी अन्य राष्ट्र और उसके निवासियो से द्वेष नहीं करते हैं। हम तो सबके साथ प्रेम पूर्वक मित्र भाव से रहना चाहते हैं। इस पर भी यदि कोई अन्य राष्ट्र हम से द्वेष करता है और उसके निवासी हमारे राष्ट्र के प्रति दुर्भावना रखते हैं उनके उस द्वेष और दुर्भावना को हे मातृ भूमि ! तु सहन मत करना यदि द्वेष और दुर्भावना से प्रेरित होकर कोई दूसरा राष्ट्र हम पर सेना लेकर आक्रमण करना चाहता है और हमें अपने अधीन करके अपना दास बनाना चाहता है तो हे मातृ भूमि ! तू उस आक्रमणकारी का डटकर मुकाबला करना और उसके दांत खट्टे कर देना।

दुष्ट बुद्धि के राष्ट्र दूसरे राष्ट्रों पर आक्रमण करके उन्हें दो तरह से अपना दास बनाया करते हैं। एक शस्त्र से और दूसरे मन से। पराजित राष्ट्र ... पराजित राष्ट्र में शरीर की शक्ति रहती है, जब-जब अवसर पर वे पराजित राष्ट्र के लोगों की हत्या कर डालते हैं। जिस किसी ने उनकी नृशंसता का विरोध किया जिस किसी ने उनकी गुलामी के पंजे से निकलने का प्रयत्न किया उसी की गर्दन धड़ से अलग कर दी जाती है या उसे लम्बे समय के लिए जेलों और काल कोठरियों में डाल दिया जाता है अथवा उसकी धन-सम्पत्ति छीनकर कंगाल और दर दर का भिखारी बना दिया जाता है। उनका विरोध करने वालो की कभी कोड़ों की मार से चमड़ी उधेड़ दी जाती है या कोई और क्रूरता पूर्ण दण्ड दिए जाते हैं। इस प्रकार शस्त्र के बल से दबाकर वे पराजित राष्ट्र के लोगो को अपने अधीन रखकर अपना दास बनाए रखना चाहते हैं।

पराजित राष्ट्र को अपना गुलाम बनाए रखने का उनका दूसरा साधन मानसिक होता है। वे पराजित राष्ट्र के लोगो को मन से अपना दास बनाए रखने का प्रयत्न करते हैं। जब तक पराजित राष्ट्र के लोगों के केवल शरीर ही विजेता राष्ट्र के गुलाम बने हैं परन्तु उनके मन स्वतन्त्र हैं—उनके मन विजेता की पराधीनता स्वीकार नहीं करते हैं, तब तक यह आशा और सम्भावना रहती है कि किसी न किसी दिन वे प्रयत्न करके अनुकूल अवसर पाते ही विजेता राष्ट्र के जुए को अपने कन्धे पर से उतार कर फैंक देंगे और अपनी खोई हुई स्वतन्त्रता को फिर से प्राप्त कर लेंगे। इसलिए विजेता राष्ट्र के लोगों के मन को ही दास बनाने का प्रयत्न करते हैं। वे पराजित राष्ट्र के निवासियों में उनकी भाषा और उनके साहित्य का पठन पाठन बन्द करके उनके स्थान में अपनी भाषा और अपने साहित्य का पठन-पाठन आरम्भ कर देते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि पराजित राष्ट्र के लोग धन धनै अपनी भाषा अपने इतिहास अपनी वीर गाथाओं अपने दर्शन शास्त्रों अपने काव्यों अपने धर्म ग्रन्थो और अपनी सारी ही चिन्तनाओं और विचार परम्पराओ को भूल जाते हैं। उनके स्थान मे उन्हे विजेता राष्ट्र की भाषा उसके साहित्य उसके इतिहास उसकी वीर गाथाओ उसके दर्शन शास्त्रो उसके काव्यो उसके धर्म ग्रन्थो और उसकी चिन्तनाओ और विचार-परम्पराओ का ही ज्ञान रह जाता है। विजेता राष्ट्र की ये चीज ही उनकी अपनी चीज बन जाती हैं। उन्हें विजेता की इन चीजो से प्रेम हो जाता है। विजेता राष्ट्र अपनी भाषा द्वारा चतुराई से तैयार किया हुआ ऐसा साहित्य भी प्रयत्न से पराजित राष्ट्र के लोगो को पढ़ने को देता है जिसमे पराजित राष्ट्र के भूतकाल की निन्दा की होती है इस प्रकार के साहित्य को पढ़ने से पराजित राष्ट्र के लोगो के मन मे अपनी पुरानी चली आ रही परम्पराओ और जीवन के तरीको से घृणा हो जाती है। इस सब का परिणाम यह होता है कि पराजित राष्ट्र के लोगों को विजेता राष्ट्र की सभी बात अच्छी और अपनी सभी बात बुरी लगने लगती हैं। विजेता की भाषा ही उनकी भाषा हो जाती है उसका इतिहास उनका इतिहास उसके वीर पुरुष उनके वीर पुरुष उसके कवि उनके कवि उसके दर्शन शास्त्र उनके दर्शन शास्त्र उसका धर्म उनका धर्म उसकी चिन्तना और विचार परम्परा उनकी चिन्तना और विचार-परम्परा उसकी वेशभूषा उनकी वेशभूषा उसका खान पान उनका खान पान उसके वेष उनके वेष—एक शब्द में उसका सारा ही रहन सहन उनका रहन-सहन हो जाता है। उनकी चमड़ी का रंग भले ही न बदल सकता हो वे और सब बातो मे बदल जाते हैं और विजेता जैसे बन जाते हैं। उनका मन पूर्ण रूप से विजेता का पुजारी बन जाता है। पुजारी से भी आगे उनका मन विजेता का गुलाम बन जाता है। इसके फलस्वरूप उनके मन मे विजेता का विरोध करने की भावना नही रह जाती विजेता की पराधीनता का जुआ उतार कर फैंक देने की उनकी क्षमता और आतुरता नष्ट हो जाती है। वे विजेता के शासन मे अपने को सुखी और उसी मे अपना कल्याण समझने लगते हैं। पराजित राष्ट्र के लोगो मे मन की यह पराधीनता और दासता उत्पन्न हो जाने पर वहा विजेता की प्रभुता अटल हो जाती है। पराजित राष्ट्र के लोग कभी उसका विरोध भी कर सकते यह भय ही उसे नही रह जाता। यह मन की दासता शस्त्र की दासता से कही अधिक भयंकर है—यह दासता तो राष्ट्र का आत्मघात कर देती है।

हे मातृ भूमि यदि कोई दूसरा राष्ट्र द्वेष और लोभ लालच आदि की दुर्भावना से प्रेरित होकर तुझ पर आक्रमण करे और शस्त्र या मन से तेरे निवासियो को दास बनाकर शारीरिक आत्मिक दृष्टि से उन्हें क्षीण करना चाहे तो तूने उसका वह सामना करना कि उसे लोहे के चने चबाने पड़ जाए हे हमारे सब मनोरथो को पूरा करने वाली हमारी मां उस समय आततायी का तेरा विरोध साधारण छोटा मोटा विरोध न हो उस समय आततायी का तेरा विरोध तेरी समग्र शक्ति से तेरी शक्ति के अणु-अणु को संचित करके किया हुआ विरोध हो उस समय तू अभेद्य चट्टान का रूप धारण कर लेना जिससे टकराकर आततायी का चूरा निकल जाए। उस समय तू अपना अभय रूप दिखाना। उस समय न शत्रु को धूल मे मिला देना मलियामेट कर देना राख देना—उसे बता देना कि तेरी ओर टेढ़ी आंख करके देखने का क्या परिणाम होता है।

भक्त के मुख से मातृ भूमि से की गई इस प्रार्थना द्वारा वेद ने यह उपदेश दिया है कि हमें अपने राष्ट्र को सदा इतना शक्तिशाली बनाकर रखना चाहिए कि कोई दूसरा राष्ट्र द्वेष और दुर्भावना से प्रेरित होकर उस पर आक्रमण करने का उसे दास बनाने का और इस प्रकार उसे क्षीण करने का साहस न कर सके। और यदि कभी कोई गर्वित राष्ट्र इस प्रकार दुश्चेष्टा कर ही बैठे तो हमें उसका पूरी शक्ति से मुकाबला करना चाहिए और उस समय उसे धूल मे मिला कर ही दम लेनी चाहिए। हमें अपने राष्ट्र की स्वतन्त्रता की पूर्ण रूप से रक्षा करनी चाहिए। (वेद का राष्ट्रीय गीत से)

# विश्वरत्न महर्षिदयानन्द के जीवन की शिक्षाप्रद घटनाएं

—लेखक श्री सज्जन कुलयम जालन्धर

1 महर्षि द्वारा कोई त्रुटि बतावे जाने पर पादरी ने कुछ कर उनसे कहाकि ऐसी खण्डन पूर्ण बातो से आप किसी समय कारावास की हवा खायगे। महर्षि ने मस्कराते हुए कहा सत्य के लिए कारावास कोई लज्जाजनक वार्ता नही है। धर्म पथ पर आरूढ होकर मैं ऐसी बातो से सवथा निभय हो गया हू। मैं अपने प्रतिपक्षियो की अकल्याण कामना भी कभी नही करूगा। पादरी जी मैं लोगो के डराने से सत्य को नही छोड सकता। ईसा को भी लोगो ने फासी पर लटका ही तो दिया था।

2 कर्णवास गाव मे एक दिवस एक बनिया ने स्वामी जी से सविनय पूछा—महाराज कोई ऐसी विधि भी है जिससे मुझ जसे अज्ञानी जीव का भी कल्याण हो जावे। स्वामी जी ने उसे ओ३म का जप करने का आदेश दिया और कहाकि व्यवहार मे सच्चे रहो जितनी रुई कोई तुम्हे बुनने को दे उसे उतनी ही रुई धन कर लौटा दो इसी से तम्हारा कल्याण हो जाएगा।

3 एक रोज प नन्द किशोर उपाध्याय ने महर्षि दशनाथ जाते हुए एक खेत से सेम की फलिया तोडी। और महर्षि जी के पास पहुच कर वे सेवा मे रख दी। परन्तु महर्षि जी ने कहा—नन्द किशोर जी तम ये फलिया चोरी करके लाये हो अत हम ग्रहण नही करगे यह सनकर न द किशोर बोले—महाराज मैंने किसकी चोरी की है? महाराज ने ह सकर कह—सच कहिये क्या आप ये फलिया खेत के स्वामी की आज्ञा से तोड कर लाये हैं? ये श द सन कर पंडित जी बहुत लज्जित हुए और पश्चाताप किया।

4 सोरो मे एक दिन साधु माया राम ने कहा—दयानन्द जी आप हम खण्डन मण्डन के झमेले मे क्यो पड गये। हमारी तरह आनन्द से खा पी कर सख मे रहा करो। क्यो वर बढ त हो? महर्षि जी ने उत्तर दिया—हम तो ब्रह्मानन्द म रहते हैं और जो आनन्द वेद प्रचार मे आता है वह तो तलनातीत है।

5 कासगज मे एक दिन कछ ईसाई स्वामी जी के निवास पर आये और पास मे ऊची जगहो पर बठ गए। स्वामी भक्तो ने इसे अच्छा न समझा। लेकिन स्वामी जी ने कथन किया किसी के ऊचे स्थान पर बैठ जाने से दूसरा नीचा नहीं हो जाता। यदि इसी मे बडप्पन हो तो पक्षी सब से ऊचे स्थान पर बैठते हैं। पादरियो के प्रश्नोत्तर मे स्वामी जी ने कहा पाप क्षमा नही होते।

6 फरूखाबाद मे एक नाई स्वामी जी के लिए श्रद्ध प्र म से भोजन लाया। स्वामी जी ने उस भोजन को प्रसन्नता पूवक सेवन किया। इस पर ब्राह्मण लोग असन्तोष प्रकट करने लगे—स्वामी जी आप तो नाई का भोजन करके भ्रष्ट हो गये। आप का ऐसा करना कदापि उचित नहीं था। स्वामी जी ने ह सते हुये कहा—अन्न दो प्रकार से दूषित होता है। एक तो तब जब दूसरे को द ख देकर प्राप्त किया जाए और दूसरे तब जब कोई मलिन वस्त उस पर अथवा उसमे पड जाये। इन लोगो का अन्न परिश्रम के पैसे का है और पवित्र है। इसलिए इसके ग्रहण करने मे लेश भी दोष नही है।

7 एक और साधु ने महर्षि जी से प्रश्न किया—मनुष्य को क्या करना चाहिए? महर्षि जी ने उत्त र दिया—जसे ईश्वर दयालु है मनष्य को भी सब पर दया करनी चाहिए। जसे ईश्वर सत्य है मनष्य को भी सत्य मानना बोलना औ करना चाहिए।

8 प्रयाग मे एक दिन एक साधु न महर्षि जी ने शास्त्राथ करते समय उनके व्याख्यान मे निम्न शब्द कहे—

*क्रियात्मक जीवन ही शभ जीवन है।* स रा दृश्यमान जगत अपनी नित्य क्रिया मे निरन्तर प्रवत्त है हमारे शरीर भी इस विशाल सष्टि के अशमात्र है —जो लोग स्वोपदेश श्रवा और लोक हित के कार्यों को छोड कर अपने को परम निष्क्रिय मानते हैं उन से भी देह का भरण पोषण नही छट सकता—यो ही तीर्थों पर घमते फिरते हैं। सच तो यह है कि सत्य और पर कल्याण के लिए अपने स च का त्यागना जीवन तक को लगा देना ही सर्वोत्तम त्याग है। परोपकार के बिना नर जीवन मृग जीवन से उच्च नही है। सोचिये तो सही इन (साम्प्रदायिक साधु लोगो) में और मगो मे भेद ही क्या है। इस जीवन का लाभ ही क्या है? यह तो पशु पक्षियो को सहज ही से उपलब्ध है।

(क्रमश)

# भारत की जन-भाषा हिन्दी

ले—श्री गगा प्रसाद रस्तोगी

भारत मा के भव्य भाल पर चमक रही बन बिन्दी,
इसके सकेतो पर ही भारत की जन भाषा है हिन्दी,
कहने लिखने बूझने मैं भी एक रूप जो रहती
भारत के अतीत गौरव की गाथा है यह कहती।
भक्ति मीरा की भाव प्रवर्तक यह ही सदा रही है,
मीराबाही के युग मे भी इसने विपद सही है।

ज्ञान इसी में भाव इसी में कमवीर नित बढते
प्राण हथेली पर रखकर सुत युद्ध भमि में लडते।
मा की ममता उर मे लेकिन नयनो मे मधु आशा।
भारत की जन मे हो उन्नति रखकर नव अभिलाषा।
उर भावो को कहती सबसे जन जन की कल्याणी।
इसीलिए हिन्दी कहलाती है देवो की वाणी।

काश्मीर हरियाणा हो पजाब हिमाचल यू पी
हो बिहार बगाल उडीसा केरल हो मा सी पी।
राजस्थान मद्रास आन्ध्र या बगाल तेलगाना
महाराष्ट्र गुजरात या होवे प्रा त सौराष्ट्र सुहाना।
एक सूत्र मे बाध सभी को मा पूजन को लाय
अतएव रा ट भ ा की पदवी हिन्दी ने है पाई।

इसकी पूजा व दन मे ही जग कल्याण निहित है
राष्ट्र भक्ति की प्र रक हिन्दी की उन्नति मे हित है।
वात्सल्य की प्रतिमा हिन्दी आओ पुष्प चढाए
कर प्रयोग प्रतिपल हिन्दी का उसको सफल बनाए।
श्रद्धा पष्प समर्पित सादर नत मस्तक मा हिन्दी।
भारत मा की प्रकट रूप भारत जन भाषा हिन्दी॥

—

14 सितम्बर को हिन्दी दिवस पर—

# राष्ट्र गौरव—हिन्दी

\+ यदि आप प्रा त प्रान्त के झगड समाप्त करना चाहते हैं।

\+ यदि आप सम्मानपूवक जीना चाहते हैं।

\+ यदि आप भारत को विश्व अग्रणी बनाना चाहत हैं।

\+ यदि आप राष्ट को भावात्मक दृष्टि से एक सूत्र में पिरोना चाहते हैं।

तो

—चैक बैंकों एव हर प्रकार के व्यवहारिक पत्रो पर हिन्दी मे हस्ताक्षर कर।

—निमन्त्रण पत्र हिन्दी मे छपवाएं।

—तार हिन्दी मे प्र षित कर।

—विज्ञापन हिन्दी मे छपवाए।

—हिन्दी के समाचारपत्र पत्रिकाओ को प्रमुखता दें।

—मूल्य सूची मूल्य पुस्तिका, बिल-पत्र इत्यादि हिन्दी में छपवा कर वितरित करें।

—अपनी दुकान कार्यालय व्यवसाय एव अन्य प्रतिष्ठानो के नाम हिन्दी मे रख।

—व्यक्तिगत एव दुकानो प्रतिष्ठान नाम पट्ट हिन्दी मे लिखवाए।

—रसीद वाउचर तथा बीजक इत्यादि हिन्दी मे छपवाए।

—बैंक रेलवे तार विभाग तथा बीमा कम्पनियो इत्यादि से हिन्दी में पत्र व्यवहार कर।

—व्यापार सम्बधी एवं अन्य बधाई काड हिन्दी मे भेज।

—दूरभाष निदेशिका (टलीफोन डायरैक्टरी) यहा हिन्दी मे उपलब्ध हो हिन्दी मे ही ल।

—आयकर बिक्रीकर विवरणी एव अन्य सम्बन्धित पत्र हिन्दी मे भरें।

**आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब**
**गुरुदत्त भवन चौक कृष्णपुरा**
**जालन्धर**

सम्पादकीय—

# आर्यसमाज का प्रचार कैसे किया जाए ?

कोई इससे सहमत हो या न, परन्तु यह एक विचार धीरे 2 सर्वत्र फैल रहा है कि आर्य समाज की शक्ति कम हो रही है और उसका संगठन शिथिल हो रहा है। जो व्यक्ति यह कहते हैं वे आर्य समाज की तुलना 25 30 वर्ष पहले की आर्य समाज से करते हैं। तब उसके उत्सवों की संख्या भी बहुत हुआ करती थी और उत्सवों में वे लोग भी आया करते थे, जिनका आर्य समाज के साथ कोई सीधा सम्बन्ध न था। उनका आर्य समाज की किसी सभा उत्सव या सम्मेलन में आने का एक कारण यह भी हुआ करता था कि आर्य समाज में कई बड़े धुरन्धर विद्वान थे और कई प्रभावशाली वक्ता थे। जिन दिनों 1947 से पहले लाहौर में आर्य समाज का उत्सव हुआ करता था, तो सारे पंजाब के आर्य समाजी वहां पहुंच जाया करते थे। वह उत्सव एक बहुत बड़े मेला का रूप धारण कर लिया करता था और उस समय व्याख्यान देने वाले आचार्य रामदेव जी प चमूपति जी प लोकनाथ जी, स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी स्वामी वेदानन्द जी और दूसरी तरफ प्रि दीवानचन्द महाशय खुशहालचन्द जी कवर सुखलाल और इस प्रकार के कुछ और वक्ता हुआ करते थे। मैंने कई बार स्वर्गीय श्री आचार्य रामदेव जी को भाषण देते हुए देखा और सुना था। वे जब भाषण देने किसी मंच पर पहुंचते थे उनके साथ पुस्तकों से भरा एक ट्रंक हुआ करता था। उनके व्याख्यान प्रारम्भ करने से पहले वे सब पुस्तकें एक मेज पर रख दी जाती थी और वे अपने व्याख्यान के समय एक एक पुस्तक को उठाकर पढ़ा करते थे और बताया करते थे कि दूसरे देशों में और दूसरे धर्मावलम्बी विद्वान हमारे विषय में क्या कहते हैं। श्री आचार्य रामदेव जी अंग्रेजी के बहुत बड़े विद्वान थे और उन्हें पढ़ने का बहुत अभ्यास था। जो कुछ पढ़ते थे उसे जनता के सामने रख दिया करते थे। प चमूपति जी उर्दू और हिन्दी के बड़े विद्वान् थे और उच्चकोटि के कवि भी थे वह भी जब बोलते थे तो लोगों पर बहुत प्रभाव होता था। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज सिख इतिहास और सिख धर्म के बारे बहुत जानकारी रखते थे। श्री स्वामी वेदानन्द जी वेदों के विद्वान् थे। प बुद्धदेव जी वेदों के और शास्त्रों के भी विद्वान् थे एक कवि भी थे और बहुत प्रभावशाली गायक भी थे। कहने का तात्पर्य यह कि आर्य समाज का वह युग था जब आर्य समाज अपने ऐसे उच्चकोटि के विद्वान जनता के सामने लाता था जिनके मुखारविन्द से निकला एक एक शब्द जनता पर अपना प्रभाव डालता था। प लेखराम के पश्चात् श्री प रामचन्द्र जी देहलवी और उनके साथ श्री प शान्ति प्रकाश जी ऐसे विद्वान हुए हैं जो इस्लाम के विषय में बहुत कुछ जानते थे। प शान्ति प्रकाश जी तो आज अपने स्वास्थ्य और आयु की शिथिलता के कारण उतना प्रचार तो नहीं कर सकते, जितना पहले किया करते थे फिर भी उनकी गणना आज भी आर्य समाज के उन विद्वानों में होती है, जिन पर कि हम गर्व कर सकते हैं।

परन्तु अब स्थिति बिल्कुल बदल रही है। उस स्तर के विद्वान् बहुत कम आर्य समाज में रह गए हैं। इसीलिए आर्य समाज का वह प्रचार नहीं हो रहा जो पहले हुआ करता था। परन्तु इन विद्वानों के अतिरिक्त प्रचार का एक और साधन भी था जो आर्य समाज ने उस समय अपनाया था और जो वह आज छोड़ चुका है। वह था साहित्य। जो प्रकार का साहित्य प्रकाशित होता रहा है। कई बड़े 2 ग्रन्थ भी प्रकाशित होते रहे हैं, परन्तु प्रचारार्थ छोटे 2 ट्रैक्ट बहुत प्रकाशित हुआ करते थे उनके द्वारा आर्य समाज का सन्देश सर्वसाधारण तक पहुंच जाता था। छोटे ट्रैक्ट जिनका मूल्य भी बहुत कम होता था एक व्यक्ति एक या दो घण्टे में पढ़कर समाप्त कर देता था। जिस विषय पर वह ट्रैक्ट होता था उसकी सारी जानकारी उस ट्रैक्ट के पाठक को मिल जाती थी, इसी प्रकार के ट्रैक्टों के प्रकाशित होने का एक परिणाम यह भी होता था कि आर्य समाज का छोटे से छोटा कार्यकर्त्ता दूसरे धर्मावलम्बी लोगों के साथ शास्त्रार्थ करने को हमेशा तैयार रहता था। आज वह भी समाप्त हो चुका है। स्थिति यह है कि आर्यसमाज का वह साहित्य जिसके द्वारा हम सर्वसाधारण तक पहुंच सकते हैं, बहुत कम प्रकाशित हो रहा है। कुछ बड़े 2 विद्वान् अपने ग्रन्थ प्रकाशित करते हैं। प्रत्येक व्यक्ति उन्हें खरीद नहीं सकता। अब तो ऐसे ग्रन्थों का मूल्य भी दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है इसलिए आर्य समाज का प्रचार भी सीमित हो रहा है दूसरी तरफ इस्लाम ईसाईयत और सिख धर्म का प्रचार अधिक हो रहा है उनका साहित्य भी बहुत प्रकाशित होता है। इसलिए प्रचार के क्षेत्र में भी आर्य समाज पिछड़ रहा है।

इस परिस्थिति में मेरा यह सुझाव है कि सार्वदेशिक सभा को अब अपना सारा प्रयत्न ऐसे साहित्य के प्रकाशन में लगा देना चाहिए जो सर्वसाधारण तक पहुंच सके। महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी के उपलक्ष में ऐसे ट्रैक्ट प्रकाशित करने कठिन नहीं होने चाहिए। आज के युग में एक व्यक्ति के सामने जितने प्रश्न उत्पन्न होते हैं उन सबका उत्तर एक एक ट्रैक्ट के रूप में यदि प्रकाशित कर दिया जाए तो यह प्रचार का एक बहुत बड़ा साधन बन सकता है। उदाहरणार्थ ईश्वर केवल निराकार है या साकार भी हो सकता है? यह एक ऐसा प्रश्न है जिस पर आर्य समाजियों और सनातनधर्मियों में कई बार विवाद रहता है आर्यसमाज अपना पक्ष क्यों न जनता के सामने रखे कि ईश्वर निराकार है उसे साकार समझ कर हम एक ऐसी भ्रान्ति में फंस जाते हैं जो हमारे लिए कई प्रकार की कठिनाईयां पैदा कर सकती है। मांस भक्षण उचित है या अनुचित? वर्ण व्यवस्था का वास्तविक उद्देश्य क्या है? इस्लाम ईसाईयत और वैदिक धर्म में क्या अन्तर है? इस प्रकार के कई प्रश्न समय-समय पर हमारे सामने आते रहते हैं महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश के अन्त में स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश अध्याय में जो कुछ लिखा है उसके कई छोटे छोटे ट्रैक्ट तैयार हो सकते हैं। महर्षि ने इसमें 51 विषयों पर अपने विचार दिए हैं। एक एक पर एक एक ट्रैक्ट बनाया जा सकता है। सरल भाषा में सुन्दर कागज पर और सुन्दर ढंग से प्रकाशित थोड़े मूल्य पर प्रकाशित इस प्रकार के ट्रैक्ट बहुत बड़े प्रचार का साधन बन सकते हैं। इसी के साथ आज कल कैसेटस बनने प्रारम्भ हो गये हैं। उनके द्वारा भी प्रचार हो सकता है। बहुत पहले आर्य समाज में मैजिक लालटेन से प्रचार हुआ करता था अब वह भी समाप्त हो गया है

मेरा यह सब कुछ लिखने का अभिप्राय केवल यह है कि महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी के साथ आर्य समाज के इतिहास का एक और युग समाप्त हो रहा है। एक युग उस समय समाप्त हुआ था जब हमने 1975 में आर्य समाज की जन्म शताब्दी मनाई थी। मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं यद्यपि दुःख बहुत है कि हमने वह समय नष्ट कर दिया था। वह शताब्दी केवल एक मेला बन कर रह गई थी। आर्य समाज के द्वारा वह संसार को कोई नया सन्देश न दे सकी। उसके बाद पिछले आठ वर्षों में भी हम कुछ नहीं कर सके। और एक और युग समाप्त हो रहा है। क्या यह सम्भव नहीं कि 1983 के बाद जो नया युग हो वह केवल आर्य जनता के लिए ही नहीं सारे संसार के लिए एक नया सन्देश लेकर आए। यह उसी स्थिति में सम्भव है यदि आर्य समाज के नेता विशेषकर उसकी शिरोमणी सभा सार्वदेशिक सभा प्रचार के क्षेत्र में आर्य समाज का नेतृत्व करे। कोई ऐसी योजना बनाई जाए जो पिछले अनुभव के आधार पर आर्य समाज को एक नया मार्ग दिखा सके और महर्षि का जो ऋण हमारे ऊपर है हम उसे उतार सकें। सार्वदेशिक सभा के नेताओं तक यदि मेरी कमजोर आवाज पहुंच सके तो उनसे निवेदन करूंगा कि उन्हें इस बात की चिन्ता नहीं करनी चाहिए कि अजमेर में क्या होता है या क्या नहीं होता? उन्हें अपना सारा ध्यान आर्य समाज के प्रचार के लिए एक नई योजना बनाने की तरफ लगा देना चाहिए। सार्वदेशिक सभा पर एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी है दुर्भाग्य से उसके नेता उसे नहीं समझ रहे, इसलिए उनसे यह प्रार्थना करना चाहता हूं कि जिस प्रकार आर्य समाज की जन्मशताब्दी बिना किसी नए निर्णय और कार्य प्रणाली के आई और चली गई कहीं महर्षि निर्वाण शताब्दी भी इसी तरह आ कर न चली जाए और कहीं यह शताब्दी आर्य समाज के इतिहास का अन्तिम अध्याय प्रमाणित न हो। स्थिति अत्यन्त गम्भीर है। आज आर्य समाज के जीवन और मरण का प्रश्न हमारे सामने है। ऐसे ही समय में नेताओं की परीक्षा हुआ करती है। क्या आर्य जनता आर्य समाज की शिरोमणी सभा सार्वदेशिक सभा से यह आशा रख सकती है कि महर्षि निर्वाण शताब्दी के उपलक्ष में वह आर्य जनता का मार्ग प्रदर्शन करेगी। और जो शिथिलता आर्य समाज में आ रही है, उसे रोकने के लिए कोई सक्रिय पग उठाएगी।

—वीरेन्द्र

# "तिस्रो रात्री: यदवात्सी: गृहे मे"

लेखक श्री सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

उपनिषदों मे कई रहस्यमय बातो को उपाख्यानो मे समझाया गया है कहीं कहीं रहस्यो को पहेलियो में उलझा दिया गया है ऐसी ही एक रहस्यमय उलझन कठोपनिषद मे नचिकेता के उपाख्यान मे बनी पड़ी है कहते हैं कि नचिकेता के पिता मुक्ति की कामना के लिए धन धान्य से अपना सम्बन्ध मोड रहे थे सब कुछ दान में दे रहे थे ऐसा सकता है कि वे भी आजकल के वानप्रस्थियो तथा सन्यासियो की तरह थे जो न धन छोडते हैं न घर-बार छोडते हैं न दुकान छोडते हैं परन्तु वानप्रस्थियो या सन्यासियो का बाना पहन लेते हैं और घोषणा कर देते हैं कि वानप्रस्थी हो गए या सन्यासी हो गए अपने पिता को ढोंग करते देखकर कि वे छोडने का दिखावा कर रहे हैं छोड कुछ भी नहीं रहे क्रोध आया और पित को ललकारा कि मुक्ति की कामना से सब छोडना है तो मुझ छोडकर दिखलाओ तुम तो घर गृहस्थी के बन्धन मे पड हुए हो दिखावा क्यो क ते हो ऐसे व्यक्ति को जब चलज किया जाता है तब वह और जोर से दिखावे को सच दिखाने की कोशिश करत है नचिकेत का पिता भी पुत्र की तरफ से चलज आता देखकर उबल पडा औ कह बठा हा तुझ भी छोडत हू इतना छोडना हू कि तुझ मौत के हवाले क ने को तयार हू कठोपनिषद मे लिख है कि लोलप वानप्र थी पित ने तो उसे क्य छोडना था नचिकेत स्वय ऐसे ढोंगी वानप्रस्थी पि को छ ड कर म'य के द्वा पर पहुचा मत्य घर पर नही था वह तीन रात बिना खाये पीये म'य दशन की प्रतीक्ष करत रहा

यह कहानी के रूप मे एक रहस्यमय गुत्थी है ऐसी घटन नही हुई इस घटना की रचना करके उपनिषत्कार ने एक वदिक हस्य को कछ शब्द तथा तथ्यो मे बाध दिया है उन्हीं पर हमे विच र करना है

पहला शब्द है वाजश्रवस यह नचिकेत के पिता का नाम है वाज का अर्थ है अन्न यह व्यक्ति बडा समद्ध था अन्न का इसके पास भण्डार थ इस अन्न धन धा य के भण्डार के कारण ही इसे श्रवस कहा जाता था श्रवस का अर्थ है जिसका सब जगह नाम सुना जाता है उसके नाम की तारीफ होती है नाम की धूम मचती है वह प्रसिद्धि का भखा था अपने नाम का डका सब जगह बजता हुआ सुनना चाहता था ठीक ऐसे जैसे आज के नेता सब जगह अखबारो में मीटिंगो मे कौडी जितना काम करके हाथी जितना भारी भरकम बनना चाहते हैं श्रवण तथा श्रवस भाई-बहन हैं

दूसरा शब्द है नचिकेत किति सज्ञा ने धात से केता शब्द बना है नचि का अथ है नही जो समझता है कि वह कछ नही जानता और जानना चाहत है उसे नचिकेता अर्थात जिज्ञासु कहते हैं यहा नवयवक पुत्र ही पित के रग-ढग को देखकर जिज्ञासा में पड गया हमारे समाज मे बड बड ढोंगी अपने को नेता कहते हैं और क्योंकि सभी किसी न किसी ढोग के शिकार होते हैं सब एक दूसरे की नेता गिरी पर तालिया पीटते हैं दिल मे सोचते हैं तम महात्मा हो तो हम भी महा मा क्यो नही नचिकेता ऐसा नहीं था वह हर बात में सोच समझ से काम लेता था पित तक को नही छोडत था

तीसर शब्द है यम यम का अथ है म'य वेदो मे आचाय को म'य कहा गया है आचार्यो व म'य नचिकेता यमाचाय के निवास स्थान पर पहुचा इसक सीधा अथ है कि नचिकेता ने आचाय के सम्मख ज क अपने को म डाल आचाय को यम कहना और नचिकेत को अपने आप को म'य के हवाले क देना इसमे वदिक संस्कृति का एक महान हस्य छिपा है वह ह य क्या है बालक जब ज'म लेत है तब अपने तथा माता पिता के सस्कारो को साथ लेकर आता है बालको को आचाय के सम्मुख आने के लिए उन सस्कारो को मिटा देन होग ताकि आचाय कल के सस्कार उसके चित्त पटल पर पड इन संस्कारो को आसानी से नही मिटाया जा सकत आचाय जब मृत्यु रूप हो जाता है संकल्प कर लेता है कि बालक के पुर ने सस्कार मिटा कर उस मे नवीन संस्कारो का आधान करेगा तभी आचाय मृत्यु का रूप धारण करता है और तभी उसे मृत्यु कहा जा सकता है और बालक के पूर्व संस्कारो की मृत्यु हो जाती है

अब रही चौथी बात आचार्य के कल में तिस्रो खाए-पीये तीन रात बिताना तिस्रो रात्री इसका क्या अर्थ है तीन रात कहा तीन दिन और तीन रात नही कहा यहा तीन रात क मतलब तीन रात्रियों से नहीं है। बालक जब आचाय के पास जाता है तब उसका जीवन अन्धकार मय होता है वह मानो अपना जीवन रात्रि में अन्ध कार मे बित रहा होता है वे तीन अन्धकार कौन 2 से है शारीरिक विकास का न होना—यह पहला अन्धकार या पहली रात्रि है जब तक वह शारीरिक दृष्टि से पूर्ण पुष्ट तथा पूर्ण स्वस्थ नही होता तब तक उसके जीवन की पहली रात है शारीरिक के बाद उसक जीवन की दूसरी मानसिक अज्ञान है जब तक वह मानसिक दृष्टि से पूर्ण ज्ञान मय नही बात सब विद्याओ का अध्ययन नही कर लेता तब तक उसके जीवन की दूसरी रात है मानसिक अज्ञान के बाद उसके जीवन की तीसरी रात्रि आध्या त्मिक है जब तक आध्यात्मिक दृष्टि से वह आ म ज्ञान नहीं प्राप्त कर लेता तब तक उसके जीवन की तीसरी रात है तिस्रो रात्री यदवात्सी गृहे मे इस का यह अथ नही है कि नचिकेत मत्य के घर तीन रात तक भखा प्यासा बठा रहा इसका रहस्यमय अथ यह है कि बालक को आचाय कल मे जा कर समझ लेना चाहिए कि वह अपने तई मर गय वह अन्धकार में है औ आचाय के सम्पक मे आकर उसे म'य से अमत की तरफ जाना है शारीरिक मा सिक तथा अध्या मिक अन्धक र मे से निकल क प्रकाश की तरफ जान है आच य कल मे तीन रात्रिया बित देने क यही अथ है

इसके अतिरिक्त आचार्य कल मे तीन रात्रिय बित देने का वदिक सस्कृति की दष्टि से एक और अथ भी है बालक आचार्य कल मे ब्रह्मचारी बनकर आत है ब्रह्मचय की तीन अवस्थाए कही गई हैं वसु रुद्र तथा आदित्य वसु ब्रह्मचारी 24 वष का होता है रुद्र 36 या 40 वष का और आदित्य ब्रह्मचारी 48 वष का होता है यमाचार्य के कल में भी बालक तीन अन्धकार अर्थात् वसु रुद्र व आदित्य की रात्रि के जीवन बिता कर जब जाता है वह आदित्य ब्रह्मचारी बनकर निकलता है आदित्य का काम प्रकाश देना है 48 वष से पहले क जीवन इस प्रकार का अन्धकार का रात्रि का जीवन है ब्रह्मचारी यमाचार्य के कल में इन तीन रात्रियों को बिता देने के बाद प्रकाश के जगत मे आने का अधिकारी है तिस्रो रात्री यदवात्सी गृहे मे का यह भी अर्थ है—तभी तो उस परिष्कृत ब्रह्मचारी को देखने के लिए 'समस्तास्ति देवा अर्थात देवता भी उसके दर्शन के लिए उमड आते हैं

सक्षेप में अपने वाजश्रवस नाम के लोलुप पिता से विदाई लेने के बाद आचाय के सम्मुख अपने सारे सस्कार मार कर तीन रात तक पडे रहने के बाद सूय के समान आदित्य ब्रह्मचारी के रूप मे प्रकट होने की रहस्यमय पहेली को ऋषि ने कठोपनिषद मे एक उलझन के रूप मे लिखा है बिना खाए पीए तीन रात्रियो को बिता देने का अथ है कि शारीरिक मानसिक तथा आध्यात्मिक अन्धकार मे से वसु रुद्र तथा आदित्य की स्थिति मे पहुचने तक ब्रह्मचारी को तपस्यामय जीवन मे से गुजरना पडता है इसी तपस्या को प्यास तथा भख के साथ रहना कहा गया है— ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्यु मुप घ्नत मे तपसा का यही अर्थ है— तप —अर्थात भूख प्यास की परवाह न क ते हुए अन्धकार से निकल कर प्रकाश मे पहुच जाना

---

## आर्य समाज हबीब गञ्ज लुधियाना का उत्सव

गत दिनो आय समाज हबीब ग लुधियाना क वार्षिकोत्सव बड़े उत्साह से मनाया गया सभा के महोपदेशक श्री प निरञ्जन देव जी इतिहास केसरी तथा श्री श्याम सिंह जी हितकर भजन मण्डली के उपदेश तथा मनोहर भजन हुए इसके अतिरिक्त और भी विद्वानो के प्रवचन व भजन हुए उत्सव हर प्रक र से सफल रह जिसमे लुधियाना की लगभग सभी आर्य समाजों के सदस्यो ने सैंकडो की सख्या मे भाग लिय

—आत्मानन्द आर्य

—

## वेदामृत—
# ज्योतियों की ज्योति

ले—सुरेशचन्द्र वेदालंकार एम ए एल टी 175 आफरा बाजार गोरखपुर

(गतांक से आगे)

स्वप्न में मन की गति की कई घट नाएं हैं। एक सेठ जी कपड़े का व्यापार करते थे उन्हें रात्रि में कपड़ा नपवाने और बेचने के स्वप्न आया करते थे। रात को स्वप्न में ग्राहक ने उन्हें कपड़े के थान दिखाने को कहा। सेठ जी ने उनको थानों का ढेर लगा दिया। ग्राहक ने एक थान पसन्द किया और उसका दाम पूछा। भाव तय होने के बाद सेठ जी ने कपड़ा नापा और कपड़ा फाड़ने लगे। कपड़े की जगह अपनी धोती को थान समझ कर उसे फाड़ने लगे। जब उसकी आवाज से पत्नी की नींद खुली और उसने धोती फाड़ते देख कर पूछा क्या करते हो? धोती क्यो फाड़ रहे हो? सेठ जी बोले तुम्हें कितनी बार कहा है कि मेरे व्यापार के काम में दखल मत दिया करो।

मैं गुरुकुल कुरुक्षेत्र मे पढ़ता था। मेरा एक साथी अर्जुन—जिसने आगे चलकर निराश होकर आत्म हत्या कर ली—सोते हुए ही नीम के पेड़ पर चढ़ जाता था और स्वयं ही उतर भी आता था। कभी बाल्टी और रस्सी लेकर कुए से पानी भर लाता था। वह होस्टल के चक्कर दो तीन दिन में एक बार अवश्य लगा लेता था। गुरुकुल बैद्यनाथ धाम (बिहार) मे मैं आचार्य था। एक बालक प्राय बिस्तरे पर पेशाब कर देता था। अध्यापक उसे डांटते और मारते भी थे। मेरे पास शिकायत आई। मैंने अध्यापक महोदय से कहा जरा सोचिए इसमें उसका क्या अपराध है। यह जान कर तो करता नहीं। मैंने उसके प्रति सहानुभूति दिखाई। उससे कारण पूछा उसने कहा आचार्य जी मैं जानबूझ कर ऐसा नहीं करता। मुझे नींद मे लगता है कि पेशाब लगा है और मैं नाली मे कर रहा हूं। जब गर्म गर्म पैर से लगता है तो मुझे बिस्तर पर पेशाब करने का बोध होता है। स्वप्न दोष भी तो इसी प्रकार होता है। मैंने सहानुभूति पूर्ण उपाय से इन दोषों से कइयो को मुक्त किया है। वेद मे कहा गया है—

> पर्यावर्ते दुःष्वप्न्यात् पापात्
> स्वप्न्याभूत्याः।
> ब्रह्माहमन्तरं कृण्वे परा स्वप्न
> मुखाः शुचः॥
> —अथर्व 7।100।1

मैं बुरे स्वप्न से उत्पन्न पाप से परे रहूं और अनिष्ट के संकल्प से उत्पन्न पाप से भी परे रहूं। मैं दोष और अपने बीच परमात्मा को कवच बना लेता हूं। इससे बुरे स्वप्नो से उत्पन्न होने वाली प्रवृत्तियां जो हमें कष्ट देती हैं—दूर हो जाती हैं।

इसके अतिरिक्त इस मनके और भी गुण हैं। दैवम यह मन दिव्य गुण युक्त है। और यह मन ज्योतियों का ज्योति है। अर्थात यह बाहरी प्रकाश तो केवल इन्द्रियों को ही प्रकाशित करता है यदि मन न हो तो यह बाहरी प्रकाश किसी वस्तु को प्रकाशित नहीं कर सकता। हमारी त्वचा जो स्पर्श दुःख सुख जलन कटाव को अनुभव करती है। अगर हमारा मन कहीं और गया हो तो उस समय इन सबका हमें अनुभव नहीं होता। हाकी खेलते हुए पैर मे कभी चोट से बहते हुए खून का ज्ञान हमें तब होता है जब हमारी नजर घण्टो बाद उस पर पड़ती है। इसी प्रकार कई बार कोई आदमी जोर जोर से आवाज देकर हमें बुला रहा होता है पर हम उसे नहीं सुन पाते क्योंकि हमारा मन किसी गम्भीर चिन्तन मे रत रहता इसी प्रकार आंखो के सामने से बड़ी-बड़ी सेनाएं गुजर जाती हैं पर सामने बैठे व्यक्ति को उसका कुछ पता ही नहीं चलता। हिन्दू विश्वविद्यालय के स्वर्गीय प्रोफेसर श्री गणेश प्रसाद जिस समय इंग्लैंड मे गणित का अध्ययन करते थे उस समय उनके जीवन मे ऐसी अनेक घटनाएं घटित हुईं उनके सामने एक बार राज्याभिषेक जैसे शोर का उत्सव सम्पन्न हो गया पर उन्हें उसका ज्ञान भी नहीं हुआ। इसका कारण यही है कि यदि हमारा किसी काम में मन न लगा तो उस विषय का इन्द्रिय के साथ सम्पर्क होने पर भी हमें ज्ञान नहीं हो सकता। बाहर का केवल रूप का प्रकाश ही नहीं किन्तु शब्द स्पर्श गन्ध आदि प्रकाश भी हमें जिन बाह्य करणों, साधन या इन्द्रियो द्वारा हो रहा है उन सब इन्द्रिय रूपी ज्योतियो का ज्योति मन है। यह अन्दर का करण है। साधन है। उनके सब ज्ञान के साधन इस अमर ज्योति मे—इस मन मे एक हो जाते हैं। यह मन प्रज्ञावान है दिव्य ज्योतिमय है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

# मथुरा में वैदिक मिशनरी निर्माण केन्द्र

—लेखक श्री राधाशरण अग्रवाल

आप सब को भली प्रकार ज्ञात है कि आज वैदिक धर्म और आर्य (हिन्दू) जाति पर महान संकट है। इसे जड़ से मिटाने को खाड़ी के अरब देशो ने कमर कस ली है। जैसा कि आप एशिया के मानचित्र मे देखेंगे समस्त अरब देश और इनके बाद अफगानिस्तान पाकिस्तान आदि मुस्लिम बाहुल देश हैं और इसी प्रकार मलेशिया इण्डोनेशिया आदि देशो मे भी मुसलमानो का बहुमत है बीच मे केवल भारत ही हिन्दू प्रधान देश है। यह उनको कांटे की भांति निरन्तर खटक रहा है अत वे किसी भी प्रकार भारत मे भी मुस्लिम बनाकर इस पूरी पट्टी को मुस्लिम प्रधान बनाना चाहते हैं इसके लिए ये खाड़ी के देश इतनी संख्या मे रुपया भेज रहे हैं कि हम और आप कल्पना भी नहीं कर सकते आपको विश्वास नहीं होगा कि इन देशो मे इस्लाम स्वीकार करने पर एक व्यक्ति को सरकार की ओर से कम से कम 1000 दीनार या 31000 रु0 मिलते हैं यह राशि कम से कम है अधिकारी चाहे तो इसे बढ़ाकर दो हजार या तीन हजार दीनार अर्थात 83000 रु तक कर सकता है। इतना ही नहीं इस्लाम स्वीकार करने वाले का प्रेस इण्टरव्यू लिया जाता है और अन्य महत्वपूर्ण व्यक्तियो की भांति उसे देश के समस्त समाचार पत्रो मे छापा जाता है

प्रकट है कि यदि हम कुछ और समय तक इस खतरे के प्रति जागरूक नहीं हुए तो निकट भविष्य मे ही भारत मे भी मुसलमानो का बहुमत हो जायगा और तब महमूद गजनवी तैमूर लंग व औरंगजेब के शासन के वे काले दिन हमें फिर देखने पड़ेंगे जब हमें मन्दिरो मे जाने यज्ञ और वेदपाठ करने तथा धार्मिक संस्कारो को करने की स्वतन्त्रता न होगी और न हमारी बहू बेटियां की इज्जत सुरक्षित होगी

इस धर्मान्तरण ने इतना भीषण रूप धारण कर लिया है कि केन्द्रीय सरकार भी इसके घातक परिणाम देखकर सिहर उठी है। उसे भी सब प्रादेशिक सरकारो को निर्देश देना पड़ा कि लाभ लालच देकर किये जा रहे धर्मान्तरण को तुरन्त रोका जावे। किन्तु ये देश-द्रोही और अराष्ट्रिय तत्व अराजकता फैलाने पर उतारू हैं। मेरठ मुरादाबाद बड़ोदरा एवं सिकिम के हाल के दंगे इस तथ्य के परिचायक हैं। हिन्दू जनता पर ही नहीं पुलिस पर भी जो संगठित हमले हुए हैं सिद्ध करते हैं कि एक योजनाबद्ध षड्यन्त्र के अधीन पुलिस व सरकार को प्रभावहीन बनाकर पड़ोसी देश के साथ सांठ गांठ कर भारत पर आक्रमण करने का मार्ग प्रशस्त किया जा रहा है।

स्पष्ट है कि इन राष्ट्र द्रोही तत्वो का सामना करने के लिए हमें भी नींद त्याग अपने पैरो पर खड़ा होना है। जन जागरण द्वारा आत्म रक्षा (स्वदेश रक्षा) और धर्मान्तरण को रोकने के लिए वैदिक मिशनरियो की एक सेना ही हमें खड़ी करनी होगी। इस्लाम और ईसाई दोनो मतो में इस प्रकार के कार्यकर्ता निरन्तर तयार किए जाते हैं। ईसाई मिशनरियो के कार्य तो आप देखते ही हैं इस्लाम में भी देवबन्द तथा सिवान आदि मे इस प्रकार के हजारो युवक तयार किए जा रहे हैं जो भारत के इस्लामीकरण के लिए कटिबद्ध हैं।

उपर्युक्त तथ्यो को देखते हुए हमने भी वैदिक मिशनरी निर्माण केन्द्र के रूप में योगीराज कृष्ण की जन्म भूमि और युग पुरुष महर्षि दयानन्द की दीक्षा भूमि मथुरा केन्द्र में निर्वाण शताब्दी वर्ष में ऐसे कर्मठ एवं वैदिक धर्म पर सर्वस्व निछावर करने वाले कार्यकर्ता तयार करने का संकल्प किया है।

## कार्य प्रणाली—

1 इन कार्यकर्ताओ को वैदिक धर्म के सिद्धान्तो के साथ ही अन्य अवैदिक मत के ग्रन्थो का इतना गहन अध्ययन कराया जायेगा जिससे वे जनता के समक्ष वैदिक धर्म की श्रेष्ठता सिद्ध कर के न केवल अपने (हिन्दू) भाइयो को ही धर्मान्तरण से रोकने मे समर्थ हों किन्तु अन्य मतावलम्बियो को भी वैदिक धर्म की ओर मोड़ सकें।

2 जीवन दानी कार्यकर्ता सदैव त्याग और बलिदान के लिए तत्पर रहें इसके लिए समुचित सम्मान और पूर्ण आर्थिक निश्चिन्तता प्रदान की जावेगी साथ ही गमन सार कार्य क्षेत्र भी।

3 ये कार्यकर्ता या मिशनरी पूर्ण नियन्त्रित और अनुशासन बद्ध होंगे जिससे वे किसी भी दशा मे कर्त्तव्य पथ से विचलित नहीं हों। ईसाई मिशनरियो की

शेष पृष्ठ 7 पर)

# आचार्य गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार 1984

सवद विद्या सभा ट्रस्ट जयपुर द्वारा निर्धारित एक हजार रुपये का आचार्य गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार प्रतिवर्ष गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय द्वारा दिया जाता है। गत तीन वर्षों में यह पुरस्कार क्रमश प्रो रामप्रसाद वेदालंकार आचार्य एव उपकुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय डा भवानीलाल जी भारतीय अध्यक्ष महर्षि दयानन्द अनुसन्धान पीठ पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ तथा सयुक्त मन्त्री परोपकारिणी सभा अजमेर एव श्री विश्वनाथ विद्यालंकार विद्यामार्तण्ड को वेद प्रचार तथा सामाजिक सेवाओं के लिए प्रदान किया गया।

## चयन सम्बन्धी नियम

1 श्री गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार उन्हीं सज्जनो एव सभाओ को दिया जा सकेगा जो वेद उपनिषद् दर्शन शास्त्र आदि आर्ष साहित्य का प्रचार एव प्रसार जन-सामान्य तक कर।

2 उक्त विषय पर शोध कार्य करने वाले व्यक्ति संस्थान भी उक्त पुरस्कार पाने के अधिकारी हो सकते हैं।

3 उक्त विषयों पर सगीत काव्य तथा नाटक रचकर अथवा नाटक को रंगमच पर दिखलाने वाले व्यक्ति या नाटक मण्डली भी इस पुरस्कार के लिए आमन्त्रित किए जा सकते हैं।

4 उक्त विषयों पर आकाशवाणी या दूरदर्शन पर प्रचार एव नाटक आदि के माध्यम से जन सामान्य को उदात्त वदिक भावना से आप्लावित करने वाले व्यक्ति या संस्था को उक्त पुरस्कार पाने हेतु [illegible]मन्त्रित किया जा सकेगा।

5 उक्त विषयो का ग्राम ग्राम मे जाकर मैजिक लालटेन पुतली प्रदर्शन अथवा भजनों द्वारा प्रचार करने वाले व्यक्ति या मण्डली सभा भी उक्त पुरस्कार पाने हेतु प्रार्थी हो सकते हैं हो सकती हैं।

6 आधुनिक युग में विज्ञान और आध्यात्मिकता का समन्वय करने हेतु अथवा सन्तुलित व्यक्तित्व के विकास हेतु योग की उपयोगिता सम्बन्धी सरल साहित्य जो सामान्य जनमानस को प्रभावित कर सके लिखने अथवा प्रकाशित करने वाले व्यक्ति सभा और प्रकाशक आदि को भी पुरस्कार पाने वालो मे भी सम्मिलित किया जा सकता है।

7 उक्त पुरस्कार चयन नियमो को परिवर्तित एव परिवर्धित करने का अधिकार सवद विद्या सभा ट्रस्ट जयपुर को होगा।

आपसे निवेदन है कि यदि आपकी दृष्टि में कोई महानभाव अथवा संस्था आगामी वर्ष (1984) के लिए इस पुरस्कार के योग्य हो तो उसका पूर्ण विवरण पत्र मे निम्न पतो पर 31 10 83 तक भेजने की कृपा कर।

1 श्रीमती सावित्री कवरिया उप सचिव सवद विद्या सभा ट्रस्ट सी 211 ए ज्ञानमार्ग तिलकनगर जयपुर

2 डा जबरसिंह सगर कुलसचिव गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार

—डा जबरसिंह सगर
कुलसचिव

—

## (ज्योतियो की ज्योति)

(5 पृष्ठ का शेष)

हमारा जिस कार्य में मन नही लगता वह सरल कार्य होने हुए भी हमे अच्छा नहीं लगता। हमे वह वस्तु अच्छी लगती है जिस पर हमारा ध्यान केन्द्रित रहता है यह ध्यान का केन्द्रीयकरण यदि शिक्षा क्षेत्र मे प्रयोग में लाया जाए तो हम पढ़ने मे कमजोर व्यक्तियो को अधिक शिक्षित बना सकते हैं। कक्षा मे प्रायः देखा जाता है कि जो विद्यार्थी जोड़ घटाव गुणा भाग मे कठिनाई अनुभव करते हैं वे ही क्रिकेट के खेल की किसी व्यक्ति की प्रारम्भ से की गई अब तक की रनो का पूर्ण योग सफलता से बता सकते हैं। ध्यान को केन्द्रित करने की जो शक्ति होती है वह अवधान कही जाती है। यही कारण है कि शिक्षा मे उस समय जब बार बार चेतावनी देते रहने पर भी बालक का ध्यान अध्यापक के विद्वता पूर्ण व्याख्यान पर नही जाता है पर सामने ही होने वाले माल के नाच सिनेमा के विज्ञापन के जनाजोर गम की मधुर ध्वनि का सुनना पसन्द कर रहा होता है अध्यापक इसीलिए उसके कान मलकर डाट डपटकर दण्ड देकर उसके कर्तव्य की ओर उसका ध्यान आकृष्ट करता है उसका शिक्षा मे कब और कितना उपयोग किया जा सकता है यह शिक्षा शास्त्रियो से पूछिए

देखिए मन जिस कार्य मे लगता है उसके प्रति हम कितना आकृष्ट होते हैं कत्ता बिल्ली वृक्ष पर बैठी चिड़िया को देखते हैं मनमोहक फल को नही इसी मन की ज्योति का फल था कि अर्जुन को मछली की आख ही दिखाई दी दूसरी वस्तुए नहीं छपी पुस्तक मे हम अपना नाम बड़ी जल्दी दिखाई देता है सोता हुआ व्यक्ति अपना नाम सुन कर जाग जाता है यद्यपि उसके चारो ओर भजने वाला शोर उसकी निद्रा मे जरा भी बाधक नहीं होता मा बीमार बच्चे की हल्की आवाज से जाग जाती है मोटर का ड्राईवर इजिन की हल्की भर्राई आवाज से आकृष्ट हो जाता है कुशल डाक्टर रोगी के शरीर पर सूक्ष्म चिन्हो को देख लेता है कुशल गायक गान के हल्के से आरोह और अवरोह को पकड़ लेता है कहा जाता है कि यदि एक कंजूस गहरी नींद मे सो रहा हो तो उसे जगाने का सबसे सरल तरीका उसके हाथ मे रुपया रख देना है इस प्रकार हम देखते हैं कि मन हमारे कार्यों का प्रकाशक है यह मन जिससे सम्पर्क बना लेता है वे कार्य सरल हो जाते है

इसी मन के द्वारा वेद की ऋचाओ का प्रकाश हुआ है इसी मन के द्वारा वाल्मीकि वेदव्यास कालिदास तुलसी दास कबीर पन्त निराला प्रसाद और महादेवी वर्मा ने कविताए लिखी हैं इसी मन की ज्योति से गौतम कपिल कणाद आदि दार्शनिक उत्पन्न किए इसी मन की ज्योति ने मृत्यु के भय से राम प्रसाद बिस्मिल राजगुरु भगतसिंह सुखदेव को दूर किया इसी ज्योति ने केवल साढ़े तीन महीने मे स्वामी दयानन्द को अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश रचने की प्रेरणा दी इसी मन की ज्योति ने स्वामी श्रद्धानन्द को मुन्शीराम से श्रद्धानन्द बनाया इसी मन की ज्योति ने नास्तिक गुरुदत्त को आस्तिक बनाया इसके प्रकाश का हम की ज्योति का कहा तक वर्णन कर यह तो ज्योतियो की ज्योति है इसके बिना शरीर की कोई इन्द्रिय कार्य नही कर सकती आओ हम उसकी शक्ति को बढाय।

—

(८ पृष्ठ का शेष)

[illegible] का हम [illegible] अनुसरण करग। [illegible] है बदलती हुई परिस्थितियो मे इन कार्यकर्ताओ की कार्य विधि मे आवश्यक सशोधन परिवर्तन करने के लिए समय समय पर विशेष प्रशिक्षण (Refresher Course) का आयोजन भी किया जाएगा।

5 अन्य मतो द्वारा दिए गये विविध प्रकार के प्रलोभनो को प्रभावहीन करने के लिए कभी कभी सयुक्त रूप से आर्थिक सहायता भी आवश्यक हो जाती है केन्द्र इसकी भी समुचित व्यवस्था करेगा।

आदरणीय भाई और बहिनो! उक्त महान कार्य आपके सक्रिय सहयोग तथा अधिकतम सहायता के बिना पूरा नहीं हो सकता है सब ही हम यह भी स्पष्ट कर द कि अब वह स्थिति आ गयी है जब कि अभी नही तो फिर कभी नही वाली कहावत चरितार्थ हो रही है। यदि हम इस समय नही चेते तो बाद मे चेत कर भी कुछ नहीं कर पायग अत आपसे सानुरोध करबद्ध विनय है कि आप हमको इस पवित्र एव महान कार्य के लिए दिल खोलकर सहयोग एवं सहायता दें। इस पुनीत कार्य मे आर्थिक एव शारीरिक दोनो ही सहयोग वाछनीय है। अत निम्न प्रकार से से सहायता करने की कृपा कर—

1 आर्थिक—जैसा कि आप भी मानेगें इस महान कार्य के लिए विपुल राशि की आवश्यकता है। आरम्भ में हमारा लक्ष्य तुरन्त दस लाख की एक स्थायी निधि स्थापित कर उसके ब्याज से यह कार्य चलाना था है अत आप स्वय इस राष्ट्र रक्षा व संस्कृति रक्षा महायज्ञ मे अधिकतम आहुति प्रदान कर और अपने मित्र सहयोगी सम्बन्धी आदि को प्रेरित कर अधिक से अधिक आर्थिक सहायता भिजवाय

2 यदि आप स्वय अपने जीवन या जीवन के कुछ वर्ष इस पुनीत कार्य को दे सक तो अत्यन्त ही श्रेयस्कर होगा। इसकी सर्वाधिक आवश्यकता है और यह सर्वोपरि सहयोग है।

3 यदि आप स्वय को अथवा अपने किसी मित्र रिश्तेदार सहयोगी पड़ोसी की एक कार्यकर्ता अथवा एक से अधिक कार्यकर्ताओ का व्यय सहन करने को तैयार कर सक तो बहुत अनुकम्पा होगी एक कार्यकर्ता का मासिक व्यय औसतन 500 रुपया मासिक होगा।

4 यदि आप की दृष्टि मे इस कार्य के लिए उपयुक्त कुछ युवक अथवा वानप्रस्थी हो जो इस योजना मे कार्यकर्ता बन सक तो उन्हे हमारी पूरी योजना समझाए और उनका पता हमको लिख

5 आप जब भी जब कभी किसी अवसर पर औरो से मिल हमारी इस योजना की उपयोगिता के बारे मे अवश्य बताय। इससे अनभिज्ञ भाइयो को वास्तविक खतरे का आभास होगा। हो सकता है कि वे तुरन्त कुछ सक्रिय सहयोग न द पर कम से कम हमारी योजना के अनुकूल वातावरण बनेगा और हो सकता है बाद मे वे सब अपना अमूल्य सहयोग हमे द।

वर्ष 16 अक 23 2 आश्विन सम्वत 2040 तदनुसार 18 सितम्बर 1983 दयानन्दाब्द 159 । एक प्रति 40 पैस (वार्षिक शुल्क 20 पए

## आर्य समाजो में यज्ञ—
# नियमता अनियमता विचार

ले —श्री महामहोपाध्याय वेदाचार्य विश्वश्रवा जी व्यास एम ए

नोट—यज्ञ के विषय मे वेदाचार्य श्री विश्वश्रवा जी का यह लेख इस भावना से पुन प्रथम पष्ठ पर दिया जा रहा है ताकि यज्ञ के करने कराने मे होने वाली अनियमितताओ का सभी आर्य बन्धुओ को पता चल सके । —सम्पादक

1 महर्षि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती का आदेश है कि यज्ञ मे आरम्भ मे प्रार्थना के पाठ मन्त्रो को एक ही व्यक्ति बोले वह भी अर्थ सहित बोले ।

पर प्रथा यह पड गई है कि जितने व्यक्ति यज्ञ करने बैठते हैं सब बोल चलते है और मन्त्रो के अर्थ नही बोलते ।

2 महर्षि का आदेश है कि स्वस्ति वाचन आदि मन्त्रो को यजमान ही बोले ।

पर प्रथा यह पड गई है कि मन्त्र यज्ञ सस्कार कराने वाले पण्डित बोलते हैं ।

मैं एक दो मन्त्रो के अर्थ लिखता हू जिससे पता चल जाएगा कि इन मन्त्रो को [illegible] बोल ही नही सकता है ।

[illegible] को न स्तोम राधति [illegible] युजोवथ ।

अर्थ—यजमान पण्डितो की प्रशसा करता है कि हे मननशील विद्वानो आप [illegible] को बनाना जानते हो और आप लोग यज्ञ की प्रक्रिया को ठीक ठीक जानते हो जो यज्ञ हमे पापो से पार कर देगा ।

### (ख) येभ्यो होता प्रथमा मायेजे मनु ।

अर्थ—हे विद्वानो प्रथम मैं स्वय पहला यज्ञ किया था उसको आप लोग समझते हो । आप लोग हम भय रहित कल्याण प्रदान करो और हमारे अच्छे [illegible] को सुगम बना दो ।

इन मन्त्रो को पुरोहित कैसे बोल सकता है । इसके अतिरिक्त ईश्वर की प्रार्थना भी यदि पुरोहित करेगा यजमान नहीं तो उसका फल पुरोहित को मिलेगा । यजमान को नहीं जो यज्ञ कराने वाले व्यक्ति मन्त्रो के अर्थों को नही समझते वे ही मन्त्रो को बोलने बैठ जाते हैं ।

3 जल सिंचन मे देव सवित प्रसुव यज्ञ मन्त्र बोलने [illegible] और [illegible] जल [illegible]

ठीक विधि यह है कि [illegible] हो जावे तब [illegible] और [illegible] ।

4 यज्ञ प्रारम्भ करने से पूर्व ही कुण्ड मे समिधा चयन कर देते हैं और आरम्भ मे ही दीपक जलाकर रख देते हैं ।

विधि महर्षि की [illegible] कि आरम्भ मे न समिधाए सजाई जाव न दीपक जलाया जावे । जब अग्न्याधान करने का समय आवे पूर्व की सब क्रियाओ को करके तब ही समिधाए रख और तब ही दीपक जलाव ।

5 अग्न्याधान कपूर से ही किया जाता है ।

पर आय लोग गोले की [illegible] रूई की बत्ती और बम्ने की कोई तक स अग्न्याधान करते हुमने देखे हैं ।

6 प्रत्येक मन्त्र के आदि मे ओ३म लगाते हैं और कोई कोई तो मन्त्र के अन्त मे ओम बोलते लगाने नही हैं ।

विधि यह है कि ऋषि के आरम्भिक कुछ ग्रन्थो मे जहा ओ३म् बोलना चाहिए । [illegible] ओ३म छपा है सबके आदि मे नही पर आज कल के सस्कार विधि छपने वालो ने सब मन्त्र छाप रखा है । यज्ञ की सभिधा काटी जाती हैं फाडी नही जाती ।

पर आज कल लोग यज्ञ म जो लकडिया डालते हैं वही होती हैं जो भट्टी या चूल्हे में जलाई जाती है कुल्हाडी से फाडी हुई ।

8 आचमन क्यू किया जाता है । इसका ज्ञान नही है ।

9 जितने व्यक्ति यज्ञ करने बठ हो चाहे वे सौ हो सबका अपना अपना जल पात्र हो कोई किसी दूसरे का पात्र न ल । पर अब केवल चार हा आचमन पात्र रखते हैं । जो कुविधि है ।

10 यज्ञ के अन्त म जो शान्ति सब बोलते हैं जो असगत है

11 वाम देव्यगान बोलना बिल्कुल छोड दिया है ।

12 यदस्य कमणो—मन्त्र से प्रायश्चित आहुति सबके अन्त म देते हैं यह नितान्त असगत है

13 अग्न आयूषि पवस वा और तन्नोअग्न मन्त्रो की आहुतिया आरम्भ मे [illegible] हैं

14 [illegible] करने पर [illegible] अग्नये प्राणाय [illegible] मम बोल [illegible] चाहिए

15 [illegible] मन्त्रो पवित्र [illegible] बोलते हुए [illegible] है

16 आघारावाज्य भा [illegible] अग्नये स्वाहा [illegible] पनये स्वाहा इन्द्राय स्वाहा को दो बार नही बोलने एक ही बार बोलते ।

17 समिदाधान के मन्त्रो मे स [illegible]

मन्त्र मे स्वाहा और इद न मम नही बोलते

18 यदस्य कमणो मन्त्र की आहुति पेडा बताशा आदि देते हैं जबकि स्विष्टकृत आहुति भात या घी की ही होती है ।

19 घी सामग्री मे यज्ञ करते है यह भी गलत है सामग्री का विधान ऋषि मे [illegible] यज्ञ मे खीर हलवा फल [illegible] आदि डालना लिखा है कुछ [illegible] आहुति के रूप म [illegible] सामग्री का भाग रख तो पर केवल सामग्री का यज्ञ ऐसा ही है जैसे केवल [illegible] दावत

9 जब तक पण्डित यज्ञ कराने वाले हो तब उनका वरण पहले हो [illegible] कात्यायन श्रौत सूत्र मे [illegible] है पर कोई पूरी [illegible] भी नही पढता [illegible] कोन पढ । जब [illegible] किसी प्रकार भी [illegible] ।

---

वेदामृत—

## हम यज्ञिक मार्ग को न छोड़ें

मा प्रगाम पथो वय मा यज्ञादिन्द्र सोमिन ।
मान्त स्थुर्नो अरातय (ऋ 10 57 1)

शब्दार्थ—हे (इन्द्र) परमेश्वर (वयम) हम (पथो मा प्रगाम) सन्मार्ग को छोडकर न चले (सोमिन) ऐश्वय युक्त होते हुए (यज्ञात) हम यज्ञ को (मा प्रगाम) छोड कर न चल (अरातय) अदान भाव (न अन्त मा स्थु) हमारे अन्दर न ठहर ।

इस मन्त्र मे परमात्मा से प्रार्थना की गई है कि प्रभु हम (सोमिन) ऐश्वय से युक्त हो । हमारे पास सभी प्रकार के ऐश्वय हो धन सम्पत्ति आदि किसी प्रकार की भी हमार पास कमी न हो पर न उस ऐश्वय को पाकर हम (अरातय) कजूस न बन जाए स्वार्थी न बन जाए । कजूसी का भाव कभी भी हमारे हृदय में न ठहरे हम जीवन म दानी बनकर आगे बढ हम कभी भी तेरे मार्ग को न छोड। तेरी भक्ति का मार्ग और यज्ञ का मार्ग ही हमारे जीवन का अग बना रहे । हम सदा यज्ञीय मार्ग पर परोपकार के मार्ग पर चलते रह ।

इस मन्त्र मे ऐसी प्रार्थना इसलिए की गई है कि ऐश्वय पाकर अक्सर लोग प्रभु का नाम लेना और दान देना भूल जाते हैं । अच्छे मार्ग को छोडकर गलत मार्ग पर चल पडते हैं इसीलिए मन्त्रमे कहा गया कि हे देव हमारा मार्ग सदा श्रेष्ठ ही मार्ग हो । यज्ञ करते हुए दान देते हुए हम जीवन मे सुख प्राप्त करने रह ।

# हमारा मन शिव संकल्प वाला हो ?

ले —सुरेशचन्द्र वेदालकार एम ए एल टी 175
जाफरा बाजार गोरखपुर

(गताक से आगे)

मन की विशेषताओ को बताते हुए मन्त्र ने बतलाया कि मन दिव्य गुणवाला है एक है ज्योतियो का ज्योति है जागते सोते दूर दूर तक जाता है। इस को वश मे करना राम कृष्ण अर्जुन और वशिष्ठ ने भी बडा दुष्कर माना है तो क्या हम निराश हो कर बैठ जाए। यह मन कसे वश मे किया जा सकता है।

मनुष्य के सामने एक रास्ता है पुण्य का सच्चाई का ईमानदारी का त्याग का तपस्या का इस माग को श्रेय माग कहते हैं और इसके विपरीत सासारिक भोग विलासो को प्राप्त करने के लिए किसी भी तरह के अनाचार को करने से न डरना अर्थात न हिचकना प्रेय माग कहलाता है। प्रेय माग के साधनो मे पाप के साधन भी हैं और वे श्रेय माग के साधनो की अपेक्षा सरल है अत मनुष्य का झुकाव उधर हो जाता है। यह पाप का माग भी लोग बतलाते है।

पाप के अवसान के प्रयत्न मे ही परम पवित्र प्रभु की पूजा का प्रारम्भ है। पाप प्रबल है। पाप सैन्य पर विजय पा सकना सरल नही। प्रलोभनो को ठुकरा सकना सतत अभ्यास और साधना चाहता है। पुण्यता के लिए प्रयत्नशील पुरुष भी पग पद पर पाप सैन्य से परास्त होता है। जिस समय काम क्रोध लोभ मोह इत्यादि शत्रु अपनी सेना सजाकर आक्रमण करते हैं। उस समय मैदान मे डट कर लोहा लेना किसी वीर और धीर का काम है। स्वामी श्रद्धानन्द ने यह युद्ध लडा था। अर्जुन ने भी यह युद्ध लडा था। अर्जुन के सामने एक माग दशक कृष्ण थे। अर्जुन ने उनसे पूछा—

अथ केन प्रयुक्तोऽयं पाप
चरति पुरुष ।
अनिच्छन अपि वार्ष्णेय ।
बलादिव नियोजित ॥

अर्थात न जाने कौन सी शक्ति है जिससे कि मनुष्य न चाहते हुए भी जबरन पाप मे प्रवृत्त किया जाता है। परन्तु मुशीराम के सामने कोई माग दशक नही था। वे शराब पीकर मस्त हो कर रात को बारह एक बजे घर लौटते हैं दरवाजे पर आकर गिर पडते हैं धमशीला पत्नी बिना खाए पिए पडी है। पति को उस अवस्था मे देख कर उठाती है बैठाती है, सेवा करती है और ठीक होने पर भोजन के लिए पूछती है। मुशीराम कहते हैं देवि ! मैं भोजन नही करूगा। क्या तुमने अभी तक नही खाया ? मुशी राम के मन मे देवी के इस वाक्य ने कि मैं आपके बिना खाना कैसे खा सकती हू। एक प्रेरणा जगा दी है और स्त्री के भोजन करने के बाद वे उसे बुलाते हैं और अपने मास मदिरा आदि के सभी पात्रो को तोड फोड देते है। और उस दिन से जीवन मे नई प्रेरणा नई चेतना और नई जागति आ जाती है। यह है पाप से लडने का एक तरीका।

हमारे जीवन की प्रत्येक क्रिया गति और चेष्टा मन के द्वारा ही उत्पन्न होती है। मन के बिना कोई काय नही किया जाता और नही किया जा सकता है। आत्मा के जीवन व्यापार या उसकी यात्रा मे सब कुछ निर्देश करने वाला यह मन है। मन मे आया मुशी राम का जीवन परिवर्तित हो गया। सच मुच मन ही सम्पूर्ण कर्मों का नियामक है। इसीलिए कहा गया है—

यस्मान्न ऋते किंचन कर्म क्रियते ।
यजु 34 3

इस मन के बिना कोई कर्म नही किया जा सकता है वेद ने लिखा है। कच न रमते मन अथव 10 7 37 मे लिखा है मन तो कभी दम नही लेता। श्रीमद्भागवत मे कहा गया है—

मन सजति वै देहान्गुणा कर्माणि
चा मन ।
तन्मन सजते माया ततो जीवस्य
ससति 12 5 6 ॥

एक मात्र मन ही इस आत्मा के लिए देह गुण तथा कर्मादि की रचना करता है और उस मन को माया रचती है उस माया रूप उपाधि के कारण ही जीव को जन्म मरण रूपी ससार प्राप्त होता है। भागवत के 11 व स्कन्ध मे कहा गया है—

नाय जनो मे सुख दु ख हेतुन
देवतात्माग्रह कम काल ।
मन पर कारण मामनन्ति ससार
चक्र परिवतयेद्यत 21 43

मेरे सुख दु ख का कारण ये लोग नहीं है देवता और आत्मा भी नहीं है, यह कम और काल भी नहीं है ससार चक्र को चलाने वाला मन ही सम्पूर्ण कार्यों का कारण है। यह मन चचल है इसको वश मे करना आसान नहीं तो यह कैसे वश मे किया जा सकता है ? इसके लिए हमे वशिष्ठ जी की यह बात कि मन एव समथ यो मनसो दृढ निग्रहे मन ही मन को वश मे करने मे समर्थ हो सकता है ध्यान रखना चाहिए। यह कैसे सम्भव है ? मन का लक्षण न्याय दशन मे किया गया है। युगपज्ज्ञानानुत्पत्ति मनसो लिङ्गम मन एक समय मे एक ही काम सकता है दो नही। चरक सहिता शरीर स्थान मे भी मन का यही लक्षण किया गया है—

वहा लिखा है—

लक्षण मनसो ज्ञानस्याभावो भाव एव वा। (16)

ज्ञान होना और न होना मन का लक्षण है। अर्थात एक काल मे एक वस्त का ज्ञान होना और दूसरी का न होना या इस प्रकार कहिए कि दो ज्ञानो का एक ही काल मे उत्पन्न न होना मन का लक्षण है। इसलिए मन के अशिव विचारो को दूर करने के लिए शिव विचारो को लाना चाहिए। योग-दर्शन मे पाप पर आक्रमण का उपाय बतलाया गया है। 'वितर्क बाधने प्रतिपक्ष भावनम' योग दर्शन (2 33) अर्थात् वितर्क अर्थात् पाप, अशिव विचार जब आक्रमण करे तब प्रतिपक्ष की भावना करनी चाहिए। यम नियमो के विरोधी हिंसा झूठ, चोरी, विश्वासघात इत्यादि वितर्क कहाते हैं। जब यह आक्रमण करें तो इनके प्रतिपक्ष (विरोधी सद्गुणो) का चिन्तन करना चाहिए। उदाहरणार्थ जब काम (सैक्स) सतावे तो ब्रह्मचर्य का चिन्तन करे। यह ठीक है कि जब काम की आधी उठे तो कुछ देर विचार के लिए ठहर सकना सहज नहीं। काम आधी के समान उडाए ले जाता है परन्तु जिसे युद्ध मे विजय करनी है उसे तो इस आधी मे भी दृढ सकल्प से स्थिर रहना होगा, कुछ देर ठहरना होगा, विचार और चिन्तन करना होगा। काम का परिणाम शक्ति और बल का विनाश स्वास्थ्य और सौन्दय का ह्रास तथा पश्चाताप और आत्मग्लानि है। दूसरी ओर काम पर विजय अथवा ब्रह्मचय का परिणाम विजय का उल्लास अजीबो गरीब मस्ती तथा अनिर्वचनीय आत्म प्रसाद है। यह है मन मे शिव सकल्प की स्थापना।

(क्रमश)

---

15 16 अक्तूबर को दयानन्द मठ दीनानगर मे शिविर

## आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित आर्य समाजो के अधिकारी महानुभावो की सेवा में

पजाब की राजनैतिक स्थिति एक गम्भीर रूप धारण कर रही है और यह कहना कठिन है कि निकट भविष्य मे वह किस रूप मे हमारे सामने आएगी। दूसरी तरफ हिन्दुओ की भी कोई ऐसी सस्था नही जिसका कोई सगठन हो और जो इन परिस्थितियो का सामना कर सके। आय समाज एक ऐसी सस्था है जिस मे वह साहस भी है। और वह जागति भी है कि काय क्षेत्र मे खडी हो कर परिस्थितियो का मुकाबला कर सके। परन्तु आय समाज का सगठन आज उतना शक्तिशाली नही जितना कि होना चाहिए। हमे अपनी समस्याओ पर बैठकर विचार करना चाहिए और उनका कोई समाधान ढूढना चाहिए। हम एक वष मे एक ही बार सभा के वार्षिक अधिवेशन के समय इकट्ठे होते हैं और चुनाव कर के घरो को आ जाते है। उसके पश्चात कभी बैठ कर अपनी समस्याओ पर विचार नहीं करते।

इसलिए अब यह निणय लिया गया है कि 15,16 अक्तूबर 1983 को दो दिन के लिए दीनानगर मे एक शिविर आयोजित किया जाए। प्रत्येक आय समाज अपने 5 या कम प्रतिनिधि उस शिविर मे भेज दें। हम दो दिन वहीं रहेंगे और अपनी समस्याओ पर विचार करते रहेंगे। श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज और आय समाज दीनानगर के सदस्य और अधिकारी महानुभाव इस शिविर का प्रबन्ध करेंगे। यह शनिवार 15 अक्तूबर को प्रात 11 बजे प्रारम्भ हो जाएगा और रविवार 16 अक्तूबर को दोपहर के 3 बजे तक समाप्त हो जाएगा। हम 28 घण्टे वहा इकट्ठे रहेंगे। अपनी समस्याओ पर विचार करेंगे और उनका कोई समाधान ढूढने का प्रयास करेंगे।

इसलिए आपसे प्राथना है कि आप अपनी आर्य समाज के प्रतिनिधि इस शिविर मे अवश्य भेजे। हमारे सामने क्या प्रश्न हैं और क्या समस्यायें हैं, इनके विषय मे एक नोट तैयार करके शीघ्र ही आपको भेज दिया जाएगा ताकि आपके जो प्रतिनिधि वहा जाए वे उनके विषय मे अपने विचार वहा रख सकें। अगले 15 20 दिन के अन्दर इस शिविर के सम्बन्ध मे आपको 2 3 विज्ञप्तिया और भी भेज दी जाएगी जिससे आपको पता चल सके कि इस शिविर का वास्तविक उद्देश्य क्या है ? इस सूचना द्वारा आपको केवल यह सूचित किया जा रहा है कि 15 16 अक्तूबर 1983 को आर्य समाज का जो शिविर हो रहा है आप अपने प्रतिनिधि उसमें अवश्य भेजें।

भवदीय

—वीरेन्द्र (सभा प्रधान)

## सम्पादकीय—

# क्या महर्षि का स्वप्न साकार होगा

यह वर्ष महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी वर्ष है। दीपावली पर महर्षि को हमारे बीच में से गए सौ वर्ष पूरे हो जाएंगे। उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज की शताब्दी 1975 में मनाई जा चुकी है अब अजमेर में उनकी निर्वाण शताब्दी मनाई जाएगी। महर्षि ने अपने गुरु विरजानन्द जी को जब गुरु दक्षिणा में कुछ लौंग भेंट किये थे तब गुरु ने लौंगो के स्थान पर उनका सर्वस्व मांग लिया और कहा यह सारा जीवन उस ज्ञान और विद्या के प्रचार और प्रसार में लगा दो जो तूने बड़े परिश्रम से तुम्हें पढ़ाए हैं। सारे संसार में वेदों का डंका बजा दे भूले हुए वेद ज्ञान को फिर घर 2 पहुंचा दे सारे संसार में कृण्वन्तो विश्वमार्यम का जय घोष चारो तरफ गुंजा दो। महर्षि ने तथास्तु कहकर गुरु की आज्ञा शिरोधार्य कर ली और फिर न दिन देखा न रात देखी सारे भारत वर्ष में स्थान 2 पर घूम 2 कर चारो तरफ वेदों का डंका बजा दिया। अपने ज्ञान और वाणी के तीरों से [illegible] बड़े 2 दुर्गों को धराशायी कर दिया। सारे भारत में एक क्रान्ति पैदा हो गई सारा देश एक दम जाग उठा। भारतवासी अपने को महान समझने लगे अपनी शक्ति को पहचानने लगे और देश की प्रत्येक रूढ़ि को समाप्त करने के लिए महर्षि के साथ कन्धे से कंधा मिलाकर चलने लगे। महर्षि को अब लग रहा था कि वह गुरु की आज्ञा पालने में सफल हो गए वह शीघ्र ही सारे संसार को आर्य बना देंगे। उन्होंने विदेशों में प्रचार के लिए श्री श्यामजीकृष्ण वर्मा जैसे अपने शिष्यों को भेजना आरम्भ कर दिया। उन्होंने हर पाखण्ड के गढ़ पर हमला किया अपने तर्क के तीरों से उसे बेध कर छलनी कर दिया। प्रत्येक सामाजिक कुरीति के विरुद्ध अपनी आवाज उठाई बाल विवाह स्त्री शिक्षा छुआछूत विधवा विवाह अनाथ रक्षा गोरक्षा आदि अनेक विषयों पर जनता में अपने विचार रख कर उन्हें एक नई प्रेरणा दी। सारे संसार को जगाकर 1883 में महर्षिवर संसार से विदा हो गए।

महर्षि दयानन्द का स्वप्न क्या था वह क्या करना चाहते थे यह सभी आर्य बन्धुओं को पता है। महर्षि के बहुत से स्वप्न तो साकार हो गये जैसे वह भारत को आजाद देखना चाहते थे जाति पाति के बखेड़ों को मिटाना चाहते थे छुआछूत मूर्तिपूजा आदि अनेकों कुरीतियों को दूर करना चाहते थे। इन कार्यों में से बहुत कुछ तो हो गये हैं। परन्तु कृण्वन्तो विश्वमार्यम का जो उनका स्वप्न था वह अभी पूरा नहीं हुआ। हां इस दिशा में कुछ कार्य अवश्य हो रहा है। आज कई अन्य देशों में भी अब आर्य समाज का प्रचार हो रहा है परन्तु जैसे यह कार्य तेजी से होना चाहिए था वैसा नहीं हो रहा। छोटे 2 सम्प्रदाय विदेशों में बढ़ते जा रहे हैं। सारे भारत में भी फैलते जा रहे हैं। परन्तु आर्य समाज का धर्म वेद प्रचार का कार्य तेज नहीं हो रहा।

आर्यो क्या महर्षि का स्वप्न साकार नहीं होगा? जो उन्होंने अपना शरीर छोड़ने से पहले लिया था उन्होंने कहा था सभी खिड़कियां दरवाजे खोल दो सभी मेरे पीछे आ जाओ। क्या देश के मन्दिरों व दूसरे धर्म स्थानों के दरवाजे सबके लिए खुल गए? अभी 2 समाचार छपा है कि भारत की प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गान्धी को पुरी के जगन्नाथ मन्दिर में प्रवेश की आज्ञा नहीं मिली क्योंकि उसके प्रबन्धकों ने घोषित कर दिया कि श्रीमती गांधी हिन्दू नहीं है वह पारसी है और जगन्नाथ मन्दिर में केवल हिन्दुओं को ही प्रवेश मिल सकता है गैर हिन्दू को नहीं।

क्या यह सब आर्य समाज के प्रचार की ढील का कारण नहीं है मन्दिर के दरवाजे सबके लिए आज भी नहीं खुले। आर्यो महर्षि के सच्चे अनुयायी बन उनके स्वप्नों को साकार करने के लिए अपना तन मन धन लगा दो। आओ इस निर्वाण शताब्दी पर उन्हें साकार करने का व्रत लें।

# गुरुकुल करतारपुर पहुंचें

पंजाब का ऐसा कौन आर्य समाजी होगा जो गुरुकुल करतारपुर (जालन्धर) को न जानता होगा। पंजाब में एक मात्र छोटे बच्चों का यह गुरुकुल है। जिसमें चौथी श्रेणी से विद्यावारिधि दसवीं तक तथा शास्त्री तक की शिक्षा दी जाती है। गुरुकुल करतारपुर महर्षि दयानन्द सरस्वती के गुरु स्वामी विरजानन्द जी सरस्वती की स्मृति में बनाया गया एक स्मारक है। गुरु विरजानन्द जी महाराज पंजाब के रहने वाले थे। पंजाब की इस भूमि ने गुरु विरजानन्द जी को जन्म देकर उन्हें ऐसा सामर्थ्य प्रदान किया था कि वह अपने शिष्य स्वामी दयानन्द को इतना योग्य बना पाए कि जिसने सारे संसार को एक बार झकझोर कर रख दिया। जो विद्या उन्होंने गुरु चरणों में बैठकर प्राप्त की थी उससे अपना तो कल्याण किया ही है परन्तु उसके साथ 2 सारे संसार का महान कल्याण कर गए। यह वर्ष महर्षि दयानन्द की निर्वाण शताब्दी का वर्ष है। अजमेर में 3 से 6 नवम्बर तक यह शताब्दी मनाई जा रही है जहां लाखों की संख्या में आर्य बहन और भाई सारे देश विदेश से पहुंचेंगे। परन्तु उससे पहले 2 से 9 अक्तूबर गुरु विरजानन्द स्मारक ट्रस्ट और गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय करतारपुर का वार्षिकोत्सव हो रहा है सभी आर्य बन्धुओं विशेषकर पंजाब के आर्य बहनों और भाईयों का कर्तव्य बनता है कि वह इस उत्सव में अवश्य पधारें। पंजाब में करतारपुर ही केवल ऐसा स्थान है जहां पंजाब के सभी आर्य बहन और भाई इकट्ठे होकर अपने संगठन का परिचय दे सकते हैं। वैसे तो प्रति वर्ष आर्य बन्धु यहां पधारते ही हैं परन्तु इस वर्ष विशेष रूप से सभी आर्य बहनों और भाईयों को करतारपुर अवश्य पधारना चाहिए ताकि वहां इकट्ठे होकर पंजाब की वर्तमान स्थिति पर भी सभी बन्धु विचार कर सकें और महर्षि निर्वाण शताब्दी में अजमेर पहुंचने के लिए भी कोई ठोस कार्यक्रम बना सकें।

इसलिए हमारी सभी आर्य बन्धुओं से प्रार्थना है कि वह इस उत्सव में अवश्य पधारें।

# कदम आगे बढ़ाओ

आर्य का अर्थ है। जिसके जीवन में सभी प्रकार की श्रेष्ठताएं हों वही आर्य है। और श्रेष्ठों को सदा आगे बढ़ते रहना चाहिए। जब कोई मानव तेजी से आगे बढ़ता है तो दूसरे उसका रास्ता स्वयमेव ही छोड़ देते हैं। अक्सर हम प्रतिदिन देखते रहते हैं सभी तेज चलने वाले वाहन को दूसरे सभी वाहन चालक रास्ता देते चले जाते हैं। एक दिन मैं जालन्धर से अम्बाला जाते हुए एक बस में सवार हुआ बस का ड्राईवर बस बड़ी तेजी से चला रहा था। अम्बाला तक पहुंचते 2 उसने सैंकड़ों ट्रकों और दूसरे वाहनों को तो पीछे छोड़ा ही था साथ ही अनेकों बसों को भी वह पीछे छोड़ कर आगे बढ़ता गया और दूसरी बसों के सभी ड्राईवर उसे रास्ता देते चले गए। मैंने विचार किया कि देखो इस बस के ड्राईवर में और दूसरी बसों के ड्राईवरों में कोई अन्तर नहीं है। परन्तु वह पिछड़ गए और यह सब से आगे निकल गया। मुझे यह रहस्य समझ में आया कि जो आगे बढ़ना चाहता है वह अवश्य ही एक दिन आगे बढ़ जाता है। परन्तु उसके मन में आगे बढ़ने की भावना निरन्तर कार्य करती रहनी चाहिए।

अगर एक विद्यार्थी यह दृढ़ निश्चय कर लेता है कि मैंने अपनी कक्षा में सर्व प्रथम आना है और वह अगर इस दिशा में निरन्तर अपने कदमों को आगे ही बढ़ाता रहता है तो वह अवश्य ही सर्व प्रथम आ जाता है।

समाज का कोई भी क्षेत्र हो सभी क्षेत्रों में सफलता का राज दृढ़ संकल्प और दृढ़ता से कदम आगे बढ़ाना ही है। एक आर्य समाजी समाज के हर क्षेत्र में आगे आ सकता है। वह सारी समाज का नेतृत्व कर सकता है। उसके आगे बढ़ते हुए कदमों को न कोई नदी नाला रोक सकता है न कोई बड़ा समुद्र और न कोई हिम आच्छादित ऊंचा पहाड़ ही रोक सकता है वह सभी विघ्न बाधाओं को पार करता हुआ कुचलता मसलता हुआ आगे बढ़ता रहता है।

आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द जी ने ज्ञान प्राप्ति के लिए सच्चे शिव को पाने के लिए दृढ़ता से अपने कदमों को घर से बाहिर बढ़ाया फिर क्या था। उनके मार्ग को न माता पिता ममता बहन भाईयों का प्यार और न कोई धन का लोभ लालच रोक सका। आगे चल कर कई दुष्टों ने भी उनका रास्ता रोकना चाहा नदी नालों और घने जंगलों तथा जंगली जानवरों आदि ने भी उनके रास्ते में रुकावट डाली परन्तु कोई भी उनका रास्ता रोक न सका जो कदम आगे बढ़ाये थे वह फिर कभी जीवन भर पीछे न हटने पाए। अगर कांटों से पांव छलनी हो गए तो भी कदम रुके नहीं आगे ही बढ़ते रहे और एक दिन वह सारे संसार के एक महा मानव बन कर सामने आए। किस किस का वर्णन करूं जिसने भी कदम आगे बढ़ाए वह एक दिन महान नेता महान सुधारक महान मार्ग दर्शक बन कर आगे आया।

आर्यो महर्षि की निर्वाण शताब्दी पर निश्चय करो कि हमारे कदम भी अपने गुरु की भान्ति निरन्तर आगे ही बढ़ते रहेंगे और हम आगे बढ़ कर समाज के सभी वर्गों का नेतृत्व करेंगे। फिर देखो कैसे सफलता आपके कदमों को चूमती है। निराशा को पास न फटकने दें निराशा मौत है। आर्यों को कभी भी निराश न होना चाहिए।

कदम चूम लेती है खुद आकर मंजिल
अगर राही अपनी हिम्मत न हारे।

—सहसम्पादक

# विश्वरत्न महर्षिदयानन्द के जीवन की शिक्षाप्रद घटनाएं

—लेखक श्री सज्जन कुलभम जालन्धर

(गतांक से आगे)

9 जनवरी 1873 में कलकत्ता के वाइसराय नार्थब्रुक ने स्वामी जी से अन्य प्रश्नो के अलावा अंतिम प्रश्न यह भी किया यदि ऐसा ही है तो क्या आप अपने देश में अंग्रेजी शासन द्वारा उपलब्ध उपकारो का भी वर्णन किया करेंगे ? और अपने व्याख्यानो के आरम्भ में जो ईश्वर प्रार्थना आप किया करते उसमें देश पर अखण्ड अंग्रेजी शासन के लिए प्रार्थना भी किया करेंगे स्वामी दयानन्द ने उत्तर में कथन किया— मैं ऐसी बात को मानने में असमर्थ हूं क्योंकि यह मेरा दृढ विश्वास है कि मेरे देश वासियो को अबाध राजनैतिक उन्नति और संसार के राज्यो में समानता का दर्जा पाने के लिये शीघ्र पूर्ण स्वतन्त्रता मिलनी चाहिये श्रीमान जी ईश्वर से नित्य सायं प्रात उसकी अपार कृपा से इस देश की विदेशियो की दासता से मुक्ति की ही मैं प्रार्थना करता हूं शासक ने बातचीत यहीं बन्द कर दी और लन्दन को लिखा कि इस बागी फकीर पर सतर्क दृष्टि रखने की आवश्यकता है

10 मथुरा में एक दिन कुछ दुष्टो ने एक दुराचारिणी स्त्री को प्रलोभन से बहका कर स्वामी जी के पास आने को कहा परन्तु स्वामी जी के परम पवित्र व तेजस्वी मुख को देखकर ही शुद्ध भाव प्रकट हो गई और मन में कहने लगी मैंने मन में इस महात्मा को कलंकित करने की कल्पना की है यह मुझ से घोरतम पातक हुआ यह विचार कर वह अत्यन्त व्याकुल हुई स्वामी जी के निकट जाकर क्षमायाचना करने लगी और उन दुष्ट के षड्यन्त्र का भेद खोल कर भेजने की सारी कथा सुना दी तब स्वामी जी महाराज ने उसे सान्त्वना और आशीर्वाद दिया देवि जाओ ईश्वर करे कि तुम्हारी इस समय की सम्मति स्थिर बनी रहे

11 एक बार प्रयाग में गंगा तट पर एक बहुत वृद्ध महात्मा ने महर्षि जी से मिलते समय कहा — बच्चा यदि आप पहले से ही निवृत्ति मार्ग पर स्थिर रहते परोपकार के झगड़े में न पड़ते तो इसी जन्म में मुक्ति हो जाती अब तो आपको एक और जन्म धारण [illegible] महर्षि जी ने कहा— महात्मन अब मुझ अपनी मुक्ति का कुछ भी ध्यान नहीं है जिन लाखो मनुष्यो की मुक्ति की चिन्ता मेरे चित्त को चलायमान कर रही है उनकी मुक्ति हो जाये मुझ भले ही कई जन्म क्यो न धारण करने पड़े दुःखो के त्रास से दीन दशा में और दुर्बल अवस्था से परमपिता के पुत्र को मुक्ति दिलाते मैं आप ही आप मुक्त हो जाऊंगा

12 एक बार सूरत में कवि नर्मदा शंकर द्वारा व्यवस्था से उनके घर के आगे महर्षिजी का भाषण हुआ प इच्छा शंकर भाषण ही में बाधा हो कुछ प्रश्न देने लगा तब स्वामी जी के उत्तर से वह निरोत्तर हो मौन हो गया परन्तु उसी समय साम्प्रदायिक लोग शोर करने लग और ईंट पत्थर व धूल फैंकने लगे समर्थको ने स्वामी जी को व्याख्यान बन्द कर देने की प्रार्थना की किन्तु महर्षि जी ने कथन किया— अपने भाइयो के फेंके हुए ईंट पत्थर मेरे लिए पुष्प वर्षा हैं व्याख्यान तो मैं समय ही पर समाप्त करूंगा और उन्होंने अपने इस कथन को पूर्ण ही किया

13 एक दिन स्वामी जी के भ्रमण समय अनेक युवक विद्यार्थी उनके साथ जा मिले स्वामी जी ने उन विद्यार्थियो को दूध दही आदि पौष्टिक भोजन करने और मादक वस्तुओ से बिल्कुल परे रहने की शिक्षा के अतिरिक्त व्यायाम की शिक्षा भी इस प्रकार दी व्यायाम स्नान पान की तरह नित्य करना चाहिये बलवान युवक सुखी और सुप्रसन्न रहते हैं निर्बल मनुष्य का जीवन सार रहित रोगो का घर और नरकधाम बन रहता है स्वामी जी के इस सद्व्यवहार का विद्यार्थियो पर अत्यन्त ही प्रभाव पड़ा

14 भड़ौच में एक दिवस प कृष्ण राम इच्छाराम के मुख हो जाने पर जब स्वामी जी उनके पास जाकर उनका सिर दबाने लगे तब पंडित जी ने कहा— भगवन आप ऐसा न कीजिये मैं आप से सेवा कराना नहीं चाहता स्वामी जी महाराज ने कहा— इसमें कोई दोष नहीं है एक दूसरे की सहायता और सेवा करना तो मनुष्य का धर्म ही है यदि छोटो की सेवा न कर तो छोटो में सेवा का भाव आ ही नहीं सकता

15 आर्य समाज लाहौर के साधारण अधिवेशन में महाशय शारदा प्रसाद जी ने प्रस्ताव किया कि महर्षि को आर्यसमाज के संस्थापक की पदवी से विभूषित किया जाए महर्षि जी ने हंस कर कहा— मैंने कोई नया पन्थ चलाकर गद्दी या मठ नहीं बनाया है मैं तो लोगो को मतवादियो के मठ से स्वतन्त्र करना चाहता हूं ऐसी पदवियो से अन्त में हानियां ही हुआ करती हैं

16 गजरा वाला में एक दिन ब्रह्मचर्य के महत्व पर प्रकाश डालते हुए स्वामी जी ने कहा — सरदार हरिसिंह जी जो इतने वीर हुए हैं इसका प्रबल कारण यही था कि वे पच्चीस वर्ष तक ब्रह्मचारी रहे थे यद्यपि मेरी आयु इस समय पचास वर्ष से ऊपर है परन्तु कोई भी बलिष्ठ व्यक्ति सामने आये मैं उस का हाथ पकड़ता हूं वह छुड़ा कर दिखलाये अथवा मैं भुजा अकड़ाता हूं कोई उसे झुकाकर दिखाये तब उस समय आये हुए अनेक महा मल्लो में किसी ने भी आगे आने का साहस न किया

17 जालन्धर में एक दिन स्वामी जी जब ब्रह्मचर्य के अद्भुत बल का प्रकाश कर रहे थे तब सरदार विक्रम सिंह जी स्वामी जी से बोले— महाराज आप भी तो ब्रह्मचारी हैं परन्तु आप में कोई विशेष बल तो प्रतीत नहीं होता महाराज ने अभी उत्तर देना उचित न समझा थोड़ी देर बाद सरदार साहब की दो घोड़ो की बग्गी एक हाथ से रोक ली तब सरदार साहब बग्गी से उतर कर देखने लगे स्वामी जी के अपूर्व बल को देख कर उन्हे नतमस्तक होना पड़ा स्वामी जी ने कथन किया कि ब्रह्मचर्य के बल का प्रमाण आपको मिल गया

18 एक दिन एक पादरी साहब ने स्वामी जी से कहा— आओ हम और आप मिल कर एक ही मेज पर भोजन कर इकट्ठे खाने से प्रीति बढ़ती परन्तु स्वामी जी ने उत्तर दिया— शीया और सुन्नी मुसलमान एक ही बर्तन में खाते हैं इसी प्रकार रूसी और अंग्रेज आप और रोमन कैथोलिक ईसाई एक ही मेज पर भोजन कर लेते हैं परन्तु आप जानते हैं कि इन में परस्पर कितना वैर विरोध है यह सुन कर पादरी साहब कुछ न बोल सके

19 एक दिन महर्षि जी अपने निवास स्थान के एक कमरे में बैठे पण्डितो से वेद भाष्य लिखवा रहे थे कि बीच में एकाएक उठ खड़े हुए और आदेश दिया कि पुस्तक आदि सभी उपकरण झट-पट इस कमरे से बाहर निकाल दो कर्मचारियो ने उनके इस आदेश का पालन तो किया परन्तु मन ही मन यह कहते रहे कि स्वामी जी ने यह कष्ट व्यर्थ ही दिया है जब सारे उपकरण दूसरे कमरे में पहुंच गए तो पहले कमरे की छत धड़ाम से नीचे गिर पड़ी उस समय कर्मचारियो को महर्षि जी की आज्ञा की उपयुक्तता का निश्चय अति विस्मय के साथ हुआ

20 मुरादाबाद [illegible] में एक वकील स्वामी जी के निकट बैठा अंग्रेजी में बातचीत कर रहा था तो स्वामी जी ने कहा— महाशय अपनी भाषा में वार्तालाप करना ही उत्तम है स्वदेशियो में बैठकर विदेशियो की बैठक विदेशी भाषा में बोलने लग जाना भला प्रतीत नहीं होता प्रत्युत ऐसा करना भद्दा लगता है और इससे [illegible] प्रकट होता है यदि छिपा कर बात करने का प्रयोजन हो तो ठीक नहीं यहां अंग्रेजी समझने वाले अनेक बैठे हैं किसी से छिपा कर कानाफूसी करना धर्म विरुद्ध चोर कर्म है

21 दानापुर में एक दिन स्वामी भक्त गलब चन्द्र साह ने स्वामी जी से प्रार्थना की महाराज मुसलमानो के विरुद्ध कुछ न कहियेगा ये लोग झटपट बिगड़ उठते हैं और लड़ाई झगड़े पर उतर आते हैं स्वामी जी उस समय मौन रहे व्याख्यान में मुसलमान मत पर बोले— छोकरे मुझ कहते हैं कि मुसलमान मत का खण्डन न कीजिए मैं सत्य को कैसे छिपा सकता हूं जब मुसलमानो की बस्ती थी उन्होंने हमारा खण्डन खड्ग से किया परन्तु अंग्रेज [illegible] है कि आज मृदु वचनो द्वारा खण्डन करने से भी रोका जाता है भला म [illegible] की पोल खोलने से मैं कैसे रुक सकता हूं ?

22 मसूदा में एक देसी ईसाई ने कहा कि स्वामी जी आप राजो महाराजो को ही उपदेश देते हैं परन्तु निर्धनों में जाकर उन्हे नहीं समझाते इस पर उन्होंने कथन किया— मैं सब पर्यटन करता हूं मेरे व्याख्यान भी सर्व साधारण के लिए होते हैं इनमें छोटे से छोटा मनुष्य किसी रुकावट और प्रतिबन्ध के बिना आ सकता है वैसे तो कुएं के पास प्यासे ही आया करते हैं न कि कुआ प्यासो के पास आया करता

23 उदयपुर में एक दिन श्री मोहन लाल विष्णु लाल ने सविनय कहा भगवन् भारत का पूर्ण हित कब होगा ? यहां जातीय उन्नति कब होगी ? महर्षि जी ने उत्तर में कथन किया— एक धर्म एक भाव और लक्ष्य बनाये बिना भारत का पूर्ण हित और जातीय उन्नति का होना दुष्कर कार्य है

## स्वास्थ्य सुधा—

# फलों के गुण और उनसे चिकित्सा

ले —श्री डा नारायणदत्त योगी एन डी जालन्धर

प्राचीन काल मे भारतवासी लोग जगलो मे रहा करते थे। योगी तपस्वी महात्मा ऋषि महर्षि साधु सन्त ईश्वर भक्त वनों में रहकर तपस्या और योगा भ्यास किया करते थे। उनके जीवन का उद्देश्य मोक्ष सुख प्राप्ति था। वे महात्मा जन पुत्रैष्णा वित्तैषणा और लोकेषणा से पृथक रहते थे। और वे इस जीवन मे ही विदेह मुक्त जीवन मुक्त हो जाते थे। धर्मात्मा राम ने चौदह वर्ष तक अपना जीवन व्यतीत किया था। वे फलो को खाकर अच्छा स्वास्थ्य और निरोग रहे।

2 योगीराज श्री कृष्ण जी महाराज जगलो मे गाए चराया करते थे वे मक्खन खाते थे और बडी मस्ती से योगाभ्यास करके अपना धार्मिक जीवन व्यतीत करते थे।

रामायण काल अब से आठ लाख वर्ष पूर्व हुआ था और महाभारत काल अब से पाच हजार वर्ष पूर्व हुआ था। हिन्दुओ और आर्यों के ये दोनो महापुरुष अपने धर्म और वीर कारनामो के कारण जगत विख्यात हैं। और भविष्य मे भी रहेंगे।

प्यारे पाठको मैं आपको फलो के अदभुत रोगनाशक और स्वास्थ्य दायक गुण विस्तार पूर्वक लिखता हू। आप इस लेख को पढ़ कर अपने जीवन मे फलो को खा कर स्वास्थ्य और निरोग बनाव।

### डाक्टर सेब

डाक्टर सेब सब फलो का राजा है। इसके अनेक गुणो को इस के खाने से प्राप्त कर सकते है। सेब को छिलको समेत खाना चाहिए क्योकि इसके छिलको मे विटामिन बहुत अधिक पाए जाते हैं। सेब को खाली पेट पाच नग प्रात काल खा कर ऊपर से दूध पी लेवे तो मनुष्य जीवन और शक्तिशाली अनुभव करता है।

(2) सेब खाली पेट खाया जाए तो पाचन शक्ति को बढाना है। रात को सोने से पहले और प्रात काल स्नान करने के पश्चात चार पाच सेब खाना कोष्टबद्धता को दूर करता है। इसमे फासफोरस बहुत पाया जाता है। फासफोरस मस्तिष्क रोगो और हड्डियों के लिए पुष्टिकारक है।

3 डाक्टरो का कहना है कि सेब को छिलके समेत चबा चबाकर खाना चाहिए।

4 सेब तपेदिक खासी और कफ रोगो मे खाना चाहिए। सेब खाली पेट खाने से कब्ज हटाता है और भोजन के पश्चात खाने से कब्ज करता है।

5 सुन्दरता प्राप्त करने के लिए सेब से बढकर कोई फल नही है। गरदे और आन्तो की बीमारियो मे सेब बडा लाभकारी होता है। नवयवको और नव युवतियो को सुन्दर बनने के लिए सेब का प्रयोग करना चाहिए।

6 सेब का मुरब्बा खूनी दस्तो को रोक देता है और पुष्टि कारक है।

7 सेब हृदय मस्तिष्क जिगर और मेदे का बल देता है। कफ खासी यक्ष्मा (तपेदिक हृदय रोग मे सेब का रस देना चाहिए।

8 बहुमूत्र रोग मे सेब के बीज तथा सधा नमक बराबर लेकर गरम पानी के साथ प्रात काल सेवन करना चाहिए।

### अगूर

अगूर का रस रक्त को बनाने वाला है। प्रतिदिन 10 औस अगूर का रस पीने से रक्त की कमी दूर होती है।

2 बवासीर मे अगूर के बीज पीस कर खाने से रक्त निकलना बन्द हो जाता है।

3 मुनक्का और मिश्री को एक साथ पीसकर शहद मिलाकर चाटने से अजीर्ण दूर होता है।

4 दूध के साथ मुनक्का को पकाकर उसके साथ मक्खन और शहद मिलाकर खाने से शरीर के वजन मे वृद्धि होता है।

5 अगूर के बीज तीन रत्ती को मात्रा मे घोटकर दूध मे मिलाकर पीने से सब प्रकार की पथरी रोग मे लाभ होता है।

6 अगूर दस्तावर ठण्डा तथा पेशाब के उतारने वाला होता है। इसका छिलके समेत प्रयोग करने से आन मजबूत होती हैं। अगर यकृत को शक्ति देता है जिस से भूख अच्छी लगती है।

7 अगूर कब्ज खोलने वाला है। शक्ति दायक है। हृदय मस्तिष्क मेदा फफड़ और अतडियो को शक्ति प्रदान करता है। रक्त बहुत पैदा करता है।

8 मगी की दवा—मीठा अगूर लेकर उसका रस निकाल लें। हर रोज दिन मे तीन बार पाच पाच तोला पिला द। मगी के लिए लाभदायक है।

9 बादाम की गिरी एक तोला मुलठी चूर्ण एक तोला मुनक्का एक तोला तीनो को मिलाकर चूर्ण कर लेव इसकी चने के बराबर गोलिया बनाकर मुख मे रखने से खासी हट जाती है।

### डाक्टर अमरूद

अमरूद पेट को साफ करता है। कई दिनो से कब्ज हो बहुत जोर लगाकर टटटी आना पडता हो बदबूदार टटटी आती हो रक्त दूषित होने के कारण फोड़ फुसिया हो रही हो तो अमरूद जरूर खाना चाहिए।

2 बवासीर मे भी अमरूद लाभ कारी है।

3 अमरूद पागलपन को भी दूर करता है। अमरूद को निमक मे अमृत फल कहते है।

4 हैजा मे अमरूद बहुत ही उप योगी है। इसमे विटामिन सी अधिक होता है

3 पाव या डेढ पाव अमरूद खाईए दूसरे दिन पेट साफ हो जाएगा। सब फलो को छिलके समेत खाना चाहिए।

### डाक्टर खरबूजा

1 खरबूजे मे विटामिन सी पाया जाता है।

2 पका हुआ खरबूजा भोजन के बाद खाना चाहिए। खरबूजा खाकर ऊपर से शक्कर का सर्बत पी लेव तो एक दो महीने मे वजन बढ जाता है।

3 कब्ज मूत्र और पसीने की रुकावट मे खरबूजा लाभदायक है। खाली पेट या बहुत भरे पेट खरबूजा नही खाना चाहिए।

### डाक्टर पपीता

1 पपीता कब्ज करता है।

2 पपीते को लगातार प्रतिदिन खाया जाए तो कब्ज खूनी बवासीर को हटाता है पाचन शक्ति को बढाता है।

3 पपीता आयु को बढाता है पपीता खाकर मनुष्य एक सौ वर्ष जीवित रहता है।

4 पपीते मे विटामिन ए बी सी डी सब होते हैं।

### डाक्टर केला

केला ठण्डा और तर है। शक्ति दायक है। मास और रक्त पैदा करता है। केला ब्रह्मचर्य का रक्षक है। स्त्रियो के श्वेत प्रदर रक्त प्रदर रोगो मे उत्तम है केला पुरानी पेचिस दस्त और सग्रहणी के रोगो के लिए बहुत उपयोगी है। यदि केला दूध के साथ खाया जाए तो शक्तिशाली होता है। इसमे विटामिन ए बी सी बहुत होते है।

केला कब्ज करता है परन्तु पाच या छ केले खाने से कब्ज हट जाती है। केला स्वादु सर्वप्रिय और पौष्टिक फल है। इसमे चूना लोहा फासफोरस मैग्नीशियम ताबा होता है। बच्चो के लिए केले का प्रयोग बहुत उत्तम है।

### डाक्टर जामुन

जामुन मधुमेह खून के दस्त और पेचिस के लिए उत्तम दवा है।

2 जामुन की गुठली को पीसकर एक माशा चूर्ण हर रोज तीन बार पानी से खाव। मधुमेह को हटाता है। जामुन पेशाब के अधिक आन को रोकता है।

3 जामुन की गुठली का चूर्ण बना ल। पानी से चूर्ण खाव। पेचिस दूर हो जाएगी।

जामुन ठण्डा रुक्ष है। यह रक्त और पित्त के दोषो को दूर करता है। भूख लगाता है। कुछ कब्ज करता है। तिल्ली जिगर और मेदे को बल देता है। इसकी गिरी का चूर्ण प्रमेह और मूत्राशय की दुर्बलता के लिए लाभदायक है। जामुन म नमक मिलाकर खान से अपच दूर हो जाता है जामुन का फल मधुर कसला शीतल रुचिकारक वातकारक तथा कफ पित्त नाशक है।

जामुन की गुठली बहुमूत्र रोग दूर करने मे अत्यन्त लाभदायक है। यह पेशाब से शकरा को कम करती है तथा प्यास मिटाती है।

### टमाटर

टमाटर मे विटामिन ए बी सी तीनो ही अधिक मात्रा मे पाये जाते है। टमाटर भूख बढाता है पाचन शक्ति को बढाता है। हृदय दौर्बल्य मे टमाटर बहुत लाभदायक है।

2 नेत्र विकार रतौंधी तथा अल्प दृष्टि आदि रोग टमाटर के रस के सेवन से दूर हो जाते है।

3 टमाटर का प्रयोग मस्त जिगर का इलाज करता है और मन्दाग्नि मे लाभदायक है।

4 टमाटर न गर्म न सर्द है भूख लगाता है भोजन पचाता है कब्ज करता है। अफारा को दूर करता है कच्चा या कच्चे का रस बहुत अच्छा है।

### डाक्टर आम

आम गरम तर शक्ति और तृप्ति दायक है मन पसन्द मन को बसने वाला ससार आम अधिक मधुर पाच्य गुणकारी और पेट को शक्ति देने वाला होता है पका हुआ आम रक्त पैदा करता है। इसके ऊपर दूध पिया जाए तो अधिक शक्तिप्रद होता है आम के ऊपर दूध की लस्सी पी जाए तो गर्मी का

(शेष पृष्ठ 6 पर)

# आर्य समाज का इतिहास

## एक अन्य भाग प्रकाशित

डा सत्यकेतु विद्यालंकार के सम्पादकत्व में आर्य समाज का जो विस्तृत इतिहास सात भागों में तैयार किया जा रहा है उसका प्रथम भाग सन 1982 के मई मास में प्रकाशित हुआ था। अब उसका एक अन्य भाग प्रकाशित हो गया है जिसमें शिक्षा के क्षेत्र में आर्य समाज के कार्य कलाप का विशेष रूप से विवरण दिया गया है पिछली एक सदी में जो शिक्षण संस्थाए आर्य समाज ने स्थापित की हैं। उनकी संख्या दो हजार से भी अधिक है। गुरुकुलों की स्थापना द्वारा आर्य समाज ने भारत की प्राचीन शिक्षा प्रणाली का पुनरुद्धार किया है और डी ए वी स्कूलों कालिजों के तथा आर्य स्कूलों कालिजों के रूप में ऐसे शिक्षणालय कायम किए हैं। जिन में सामान्य शिक्षा के साथ साथ छात्र छात्राओं को अपने धर्म तथा संस्कृति से भी परिचित व प्रभावित करने का प्रयत्न किया जाता है। स्त्री शिक्षा के लिए आर्य समाज ने जो प्रयत्न किया है वह अत्यन्त महत्त्व का है। आर्य समाज का इतिहास के इस नए भाग में शिक्षा विषयक आर्य समाज के कार्य का विवरण देने के साथ साथ उसका मूल्यांकन भी किया गया है और यह भी प्रदर्शित किया गया है कि भारत में शिक्षा के प्रसार में आर्य समाज के योगदान का क्या स्वरूप है। पुस्तक में बड़े आकार के 720 पृष्ठ हैं और आर्ट पेपर पर छापे 100 के लगभग चित्र हैं बढ़िया कागज सुन्दर छपाई कपड़े की पक्की जिल्द और तिरंगा आवरण। मूल्य केवल सौ रुपए आर्य समाजों तथा आर्य संस्थाओं के लिए 20 प्रतिशत दिया जाएगा। स्थानीय आर्य स्वाध्याय केन्द्र।

ए—1/32 सफदरजंग एन्क्लेव
नई दिल्ली—29

# गुरु विरजानन्द संस्कृत महाविद्यालय करतारपुर (जालन्धर) को अपना सहयोग दे

आपको यह ज्ञात ही है कि श्री गुरु विरजानन्द स्मारक समिति ट्रस्ट ने दण्डी विरजानन्द जी की स्मृति को वास्तविक रूप देने के उद्देश्य से सम्वत 2027 में श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय करतारपुर का शुभारम्भ किया था जो कि अपने उद्देश्यों में सफलता प्राप्त करता हुआ वैदिक संस्कृति एवं संस्कृत के प्रचार प्रसार में योगदान देता हुआ 14वें वर्ष में पदार्पण कर रहा है। यह विद्यालय विद्याधिकारी (मैट्रिक) परीक्षा तक के लिए गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार से मान्यता प्राप्त है। असम्बद्ध रूप में शास्त्री कक्षाएं भी गत वर्ष से आरम्भ कर दी हैं। शीघ्र ही शास्त्री श्रेणी के लिए गुरु नानक विश्वविद्यालय अमृतसर से स्थायी रूप में सम्पर्क सूत्र जोड़ लेने का विचार है।

इस समय विद्यालय में 60 विद्यार्थी पूर्ण वैदिक रीति से विद्या अध्ययन कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त प्रातः सायं यज्ञ सन्ध्या हवन शारीरिक कार्यक्रम तथा संस्कारित जीवन के लिए यथा समय विद्वानों के प्रवचन और श्रम शिक्षा का अध्ययन इन सबका पूर्ण प्रबन्ध है। सच्चे अर्थों में यहां निरन्तर विद्वान उत्पन्न करने का कार्य हो रहा है और हमें यह सूचित करते हुए गौरव अनुभव हो रहा है कि इस विद्यालय के आठवीं श्रेणी के छात्र चारों वेदों में से किसी भी ऋचा का सहज भाव से पाठ कर लेते हैं। छात्रों में शुद्ध संस्कृत उच्चारण की परम्परा छात्रों की प्रतिभा एवं विद्यालय के श्रम की प्रबल प्रतीक है।

इस विद्यालय का वार्षिक व्यय लगभग 1 00 000 रुपये (एक लाख रुपये) से अधिक है जिसमें छात्रों का भोजन व्यय यज्ञशाला व्यय अध्यापकगण एवं दूसरे कर्मचारियों का वेतन तथा अतिरिक्त फुटकर व्यय सम्मिलित हैं। नित्य बढ़ती हुई महंगाई के कारण यह व्यय भी निरन्तर बढ़ता जा रहा है। जबकि इस विद्यालय की आय का कोई भी स्थायी साधन नहीं है और आप जैसे दानी महानुभावों के दान से ही यह पुण्य कार्य चल रहा है।

अतः आप से विनम्र निवेदन है कि आप भी इस विद्या रूपी यज्ञ में अधिक से अधिक यथाशक्ति मासिक वार्षिक दान देकर इस विद्यालय को उन्नति पथ पर अग्रसर करने में सहायक हों।

विशेष—धनराशि ड्राफ्ट चैक श्री गुरु विरजानन्द स्मारक समिति ट्रस्ट या श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय करतारपुर के नाम का ही बनवाएं या मनीआर्डर द्वारा उपर्युक्त पते पर भेजकर या नकद देकर रसीद प्राप्त करें।

निरन्तर आपके पावन सहयोग की प्रतीक्षा में—

प्रधान—शिवचन्द अग्रवाल अधिष्ठाता प्रिं रामचन्द्र जावेद आचार्य नरेशकुमार शास्त्री मन्त्री बलदेव मित्तल।

—

# मातृ मन्दिर (कन्या गुरुकुल) का समारोह

गत दिनों मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल रामापुरा वाराणसी में राखी समारोह संस्कृत दिवस समारोह एवं राष्ट्र सरक्षा सम्मेलन के अध्यक्ष पद से बोलते हुए ऋग्वेद और अथर्ववेद के उर्दू भाष्यकार चण्डीगढ़ विश्ववेद परिषद के मन्त्री श्री प आसाराम जी आर्य ने कहा कि आश्चर्य है आज के युग में जबकि देश विदेश में बहु ओर संस्कृत के प्रचार प्रसार पर क्रियात्मक रूप से बल दिया जा रहा है महाराष्ट्र की सरकार ने अपने स्कूलों में संस्कृत को बन्द करने का आदेश देकर सम्पूर्ण भारतवासियों के हृदय पर आघात पहुंचाया है जिसके लिए वहां प्रान्त के मुख्यमन्त्री को पुनर्विचार करना चाहिए वहां देश की केन्द्रीय सरकार को भी इस तरफ ध्यान देकर इस अश्रेयपूर्ण पग को तुरन्त रोकना चाहिए। संस्कृत भारत की नहीं अपितु विश्व की प्राचीन व शुद्ध सरल और प्राकृतिक भाषा है और संसार की तमाम भाषाओं की जननी एवं भारतीय संस्कृति का प्राण है राखी समारोह की पृष्ठभूमि को बतलाते हुए आपने कहा कि श्रावणी पूर्णिमा प्राचीन काल से बहुत ... और वेद शास्त्र के स्वाध्याय ... जिसमें भारतीय ... होकर वेदाध्ययन ... ।

सभा में उपस्थित भूतपूर्व राष्ट्रपति ... राजेन्द्र प्रसाद के संस्कृत अध्यापन गुरु 92 वर्षीय श्री प भरत मिश्र ... राष्ट्रपति पुरस्कार पाये हुये हैं उनका अभिनन्दन किया गया जिसके उत्तर में उन्होंने कहा कि यह मेरा अभिनन्दन नहीं अपितु संस्कृत देव भाषा का सम्मान है। जो संस्कृत पढ़ना है देव सम्मान है संस्कृत अत्यन्त सरल व स्वाभाविक भाषा है जिसकी देवनागरी लिपि ही पूर्णतया वैज्ञानिक है।

मातृ मन्दिर गुरुकुल की आचार्या डा पुष्पावती जी ने सबके लिए आभार प्रकट करते हुये सम्पूर्ण राष्ट्र को उत्तेजना पूर्वक प्रेरणा देते हुए यह कहा कि पृथकतावादी तत्वों को शक्ति से कुचल कर राष्ट्र की अखण्डता को सदा के लिए सुरक्षित कर दिया जाए

इस समारोह से पूर्व एक सप्ताह पूर्व यजुर्वेद परायण यज्ञ होता रहा और स्वतन्त्रता सेनानी श्री गोरखनाथ शास्त्री वानप्रस्थ की वेद कथा गुरुकुल में होती रही।

## आर्य समाज तलवाड़ा में वेद सप्ताह

आर्य समाज तलवाड़ा में 22 से 28 अगस्त तक वेद सप्ताह बड़े उत्साह से मनाया गया 23 8 83 को श्रावणी रक्षा बन्धन का पर्व विशेष रूप में मनाया श्री प निरञ्जनदेव जी इतिहास केसरी प्रभाकर जी वेद कथा करते रहे और श्री ... नाथ जी यात्री के भजन होते रहे अन्य जनता ने भारी संख्या में पहुंच कर कार्यक्रम को सफल बनाया। सभा को वेद प्रचारार्थ 351 रुपये दिया गया।

—मनोहरलाल मन्त्री

(6 पृष्ठ का शेष)

प्रभाव कम होता है। आम खाने से शरीर मोटा हो जाता है। कब्ज दूर होता है। मल खुलकर आता है। शरीर में स्फूर्ति आती है। आम बुढ़ापे को रोकता है। पतले रस के आम और दूध पर ही दो मास रह जाना संग्रहणी और मन्दाग्नि की परम औषधि है खट्टा आम कभी नहीं खाना चाहिए।

आम विटामिन सी से भरा हुआ एक सेब की अपेक्षा इसमें कई गुना विटामिन सी पाया जाता है

1 दूध के साथ खाया हुआ आम वात पित्तनाशक रुचकारी पुष्टिदायक बलदायक वीर्यवर्धक स्वादिष्ट भारी मधुर तथा शीतल है।

2 आम के छिलके को दूध में पीस कर थोड़ा शहद मिलाकर पीने से खूनी पेचिस में लाभ होता है।

3 आम की गुठली की गिरी के तेल की मालिश करने से पुराने से पुराना गठिया का दर्द दूर होता है।

4 आम की पिसी गुठली 15 रत्ती की मात्रा शहद के साथ चाटने से श्वास तथा खांसी में आराम होता है।

6 आम और जामुन के फलों का रस समान भाग लेकर और मिलाकर कुछ दिनों तक सेवन करने से मधुमेह रोग में अत्यन्त लाभ होता है।

6 आम की गुठली का चार रत्ती चूर्ण ताजे पानी में मिलाकर चाटने से बच्चों की मिट्टी की आदत छूट जाती है।

6 दम का इलाज—आम की गुठली की मींग छः माशे प्रतिदिन निहार मुंह प्रातः काल दम के रोगी को देने से दमा दूर हो जाता है।

8 पके आम का रस पाव तोला लेकर उसमें एक तोला शहद मिलाकर हर रोज रोगी को पिलाने तिल्ली दूर हो जाएगी और रोगी को आम का आचार रोगी के साथ खाना चाहिए।

—

## दिल्ली में श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर अनेक कार्यक्रम

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान में श्री कृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव पर अनेक कार्यक्रम धूम धाम से सम्पन्न हुए।

आर्य समाज अशोक विहार मे आयोजित सभा की अध्यक्षता करते हुए केन्द्रीय आर्य युवक परिषद दिल्ली प्रदेश के अध्यक्ष ब्रह्मचारी राजसिंह आर्य ने योगीराज श्री कृष्ण को श्रद्धाजलि देते हुए उन्हे महा मानव व राष्टीय अखण्डता का अग्रगण्य बताया।

महाभारत से पूर्व उन्होने विभिन्न राजनैतिको से मिलकर प्रयास किया था कि कौरवो व पाण्डवो का यह भयकर युद्ध टल जाए। परन्तु अभिमानग्रस्त कौरवो का गर्व चूर करने के लिए महाभारत का युद्ध हुआ। श्री कृष्ण ने अपनी नीति से तत्कालीन राष्ट्रो मे सामजस्य स्थापित कर आदर्श प्रस्तुत किया था श्री आर्य ने कहा आर्य समाज श्री कृष्ण को सयमी सदाचारी नीति निपुण योगीराज मानता है युवको व विद्वानजनो को उनके महान जीवन पर चलकर राष्ट्र को शक्तिशाली बनाना चाहिए

आर्य समाज सफदरजग एनक्लेव द्वारा आयोजित विशाल शोभा यात्रा मे केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के युवको ने व्यायाम प्रदर्शन व शस्त्र सचालन के कार्यक्रम दिखाए। दक्षिण दिल्ली की आर्य समाजो के अतिरिक्त स्त्रीयो महिला सगठनो ने श्री कृष्ण जन्माष्टमी के उपलक्ष्य मे यह जलूस निकाला था।

आर्य समाज कबीर बस्ती मे आर्य नेता श्याम सुन्दर आर्य की अध्यक्षता मे यज्ञ हुआ तथा अनेक हरिजन बन्धुओ को यज्ञोपवीत दिए गए विद्वानो ने श्री कृष्ण के चरित्र पर प्रवचन हुए। कर्म योगी श्री कृष्ण के महान जीवन पर चित्र प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया

परिषद के धर्माचार्य प ब्रह्म प्रकाश वागीश ने आर्य समाज सरोजिनी नगर मे श्री कृष्ण के आदर्शोन्मुख जीवन से प्रेरणा लेन का आह्वान किया

बिड़ला लाइन्स गुरु तेग बहादर नगर विक्रम नगर बुराड़ी गाव गुरुकुल खेड़ा खद इन्द्रप्रस्थ गौतम नगर मे श्री जन्माष्टमी पर्व मनाया गया

## आर्य समाज लुधियाना रोड फिरोजपुर छावनी का चुनाव

आर्य समाज लुधियाना रोड फिरोज पुर छावनी का 1983 84 के लिए चुनाव निम्न प्रकार हुआ—

प्रधान—सरदारी रामचन्द्र आर्य उपप्रधान—श्री द्वारका नाथ वर्मा श्री अमरनाथ मन्त्री—श्री मनोहर आर्य उप मन्त्री—श्री सुरेन्द्र गुप्ता श्री जितेन्द्र ठाकर कोषाध्यक्ष—श्री धर्मपाल तनेजा निरीक्षक—श्रीसुखदयाल पुस्तकाध्यक्ष—श्री देवराज दत्ता वस्त्र भण्डारी—श्री किशोरचन्द आर्य।

—मन्त्री

## आर्य समाज टाण्डा (होशियारपुर) का चुनाव

आर्य समाज टाडा का वर्ष 1983 84 के लिए वार्षिक चुनाव श्री प्राणनाथ जी तलवाड़ की प्रधानता मे सम्पन्न हुआ। जिसमे निम्न पदाधिकारी सर्वसम्मति से चुने गये —

प्रधान—श्रीमती प्रवीन स्याल उपप्रधान—श्री मिलखीराम जी बिरमानी मन्त्री—श्री सतपाल जी बिरमानी कोषाध्यक्ष—श्री आनन्द किशोर जी तलवा

—सतपाल मन्त्री

## हिन्दू शुद्धि सरक्षणीय समिति हरियाणा समालखा जिला (करनाल) का चुनाव

28 8 83 को हिन्दू शुद्धि सरक्षणीय समिति समालखा की जनरल मीटिंग एक बजे दोपहर श्री ओमप्रकाश प्रधान की अध्यक्षता मे हुई चुनाव सर्वसम्मति से इस प्रकार हुआ

प्रधान श्री ओम प्रकाश आर्य समालखा मडी उप प्रधान—चौ प्रियव्रत जी ने 16( राजोरी गार्डन नई दिल्ली

मास्टर राम चन्द जी आर्य नई मडी करनाल महामन्त्री—श्री धर्म रत्न सिंह जी आर्य समालखा मडी मन्त्री प चन्द्र स्वरूप आर्य गाव टिटोली जिला रोहतक

श्री ज्ञानी राम आर्य गाव भोरा रसूलपुर जि सोनीपत

श्री देवव्रतजी आर्य गाव पावटी त पानीपत कोषाध्यक्ष—चौ दयाल सिंह गाव बडोली डा बाबरपुर त करनाल पुस्तकाध्यक्ष—श्री रणवीर शास्त्री दया नन्द मठ रोहतक

—ओम प्रकाश
प्रधान

## जालन्धर छा. में श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व

श्री योगीराज कृष्ण का जन्म दिन 31 8 83 को आर्य समाज जालन्धर छावनी मे बड़े उत्साह से मनाया गया प्रात यज्ञ तथा उपदेश श्री प रामनाथ जी सि वि ने कराया और रात्रि श्री प सुखदेव जी स अधिष्ठाता वेद प्रचार ने योगीराज श्री कृष्ण जी के जीवन पर प्रभावशाली प्रकाश डाला। समाज मे तीन दिन का विशेष यज्ञ तथा रात्रि वेद कथा वेद सप्ताह के रूप मे मनाया गया समाज ने 300 रु वेद प्रचारार्थ दिये गया।

—काशी राम
मन्त्री

## ग्राम माजरी सियालबा मे पारिवारिक सत्सग

ग्राम माजरी (सियालबा) जि रोपड मे ठा लाभ सिंह आर्य के निवास स्थान पर 31 4 83 को योगीराज भगवान कृष्ण चन्द्र जन्म अष्टमी के अवसर पर सत्सग हुआ काफी बहनो ने सत्सग मे भाग लिया। पहले हवन यज्ञ श्रीमती चन्द्रकान्ता जी ने कराया तत्पश्चात सम्मिलित भजनो द्वारा श्रोताओ को मुग्ध किया। तत्पश्चात श्रीमती चन्द्र कान्ता आर्य ने भगवान कृष्ण चन्द्र की पवित्र जीवनी पर प्रकाश डाला और जो गन्दे गीत भगवान कृष्ण के जीवन के सम्बन्ध मे अक्सर गाए जाते हैं और जो लाछन योगीराज कृष्णजी पर लगाए जाते है उन की निंदा करते हुए बहनो को बताया कि श्री कृष्ण बहुत महान थे

## आर्यसमाज अशोक बिहार दिल्ली मे वेद सप्ताह

लगभग 8 वर्ष से स्थापित इस आर्य समाज का वेद सप्ताह प्रथम बार 23 से 31 अगस्त तक मनाया गया आचार्य दीनानाथ जी सिद्धान्तालकार के यज्ञ तथा उपदेश होते रहे और श्री प्रकाश जी व्याकुल के भजन होते रहे। वेद कथा श्री प प्रकाशचन्द्र जी वेदालकार करते रहे। श्री प्रकाश नाथ जी प रामचन्द्र शर्मा डा श्री वास्तव जी श्री राजेन्द्र कुमार श्री रामशरण दास जी श्री खरनीलाल जी श्री हरबसलाल श्री प्रद्युम्नलाल श्री रामप्रकाश जी आर्य ने इस आयोजन को सफल बनाने मे पूरा 2 सहयोग दिया

—हरिकृष्णलाल मन्त्री

## वेदप्रचार मडलजालधर द्वारा जन्माष्टमी पर्व

जालन्धर के नेता जी पार्क के खुले मदान मे वेद प्रचार मण्डल की ओर से योगीराज श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पर्व बड़ उत्साह से मनाया जिसमे आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के महोपदेशक श्री प निरञ्जन देव जी इतिहास केसरी ने योगीराज श्री कृष्ण के जीवन पर महत्व पूर्ण प्रकाश डाला। कार्यक्रम बड़ा सफल हुआ

—सुरेश कुमार
मंत्री

## फिरोजपुर में जन्माष्टमी

आर्य समाज न्याल मण्डी फिरोज पुर छावनी मे कृष्ण जन्माष्टमी बड़ ही उत्साह पूर्वक मनाई गई जिसमें पुरोहित प राम शास्त्री तथा राम चन्द्र शास्त्री जी ने लोगो को बताया कि कृष्ण जन्माष्टमी का विशुद्ध रूप क्या होना चाहिए। हमे कृष्ण जैसे कर्मयोगी बन कर कर्म करने चाहिए और उनके फल की इच्छा नही करनी चाहिए।

मन्त्री

## आर्य समाज चोलथूरा जिला मडी में जन्माष्टमी समारोह

आर्य समाज चोलथरा जिला मडी (हिमाचल प्रदेश) मे श्री कृष्ण जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में हवन यज्ञ किया गया जो विधि पूर्वक वेद मन्त्रो द्वारा सम्पन्न किया गया। यज्ञ के यजमान श्री नन्दलाल आर्य थे। हवन यज्ञ के पश्चात उपस्थित महानुभावो ने श्री कृष्ण के जीवन पर महाभारत के दृष्टि कोण से प्रकाश डालते हुए उनके चरणों मे श्रद्धाजलिया अर्पित की और अपील की गई कि सवसाधारण को श्री कृष्ण के गीता उपदेश के अनुसार अपना आचरण बनाना चाहिए। इसी से वर्तमान परिस्थितियो पर मानव काबू पा सकता है। अन्त मे शान्ति पाठ से समारोह को समाप्त किया गया।

—गोबिन्द राम आर्य

## स्त्री आर्य समाज स्वा. श्रद्धानन्द (साबुन बाजार) लुधियाना में वेद सप्ताह

स्त्री आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार में वेद सप्ताह एवं कृष्ण जन्माष्टमी का पावन पर्व 0 अगस्त 1983 से 3 सितम्बर तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। वेदों के प्रसिद्ध विद्वान श्री प मदनमोहन जी वेदाचार्य हैदराबाद वालों की अध्यक्षता में यज्ञ हुआ पूज्य प जी ने अथर्व वेद के पवित्र मन्त्रों से यज्ञ कराया तथा बहुत ही सुन्दर ढंग से वेद मन्त्रों की व्याख्या की इन दिनों में 50 से अधिक भाई बहनों ने यजमान बनने का सौभाग्य प्राप्त किया। 3 सितम्बर शनिवार को पूर्णाहुति पर सुन्दर ढंग के अर्थों सहित गायत्री यज्ञ कराया तथा गायत्री की महिमा बतलाई। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के भजनोपदेशक श्री रामनाथ जी शास्त्री की मण्डली के सुन्दर भजन होते रहे।

31 अगस्त बुधवार को कृष्ण जन्माष्टमी का पवित्र पर्व मनाया गया जिस में आर्य गर्ल्ज हायर सकेण्डरी स्कूल की पुत्रियों के योगीराज भगवान कृष्ण के जीवन पर सुन्दर भजन हुए उपाध्याय राधामन जी ने भी योगीराज कृष्ण के जीवन सम्बन्धी उपदेश किया उपस्थिति आशातीत रही। स्थानीय सभी स्त्री आर्य समाजों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को वेद प्रचार के लिए 501 रुपये भेंट किये।

—निर्मला देवी मन्त्राणी
लुधियाना

## शिविर आर्य वीर दल

क्षेत्रीय आर्य समिति महापुराबाद (हरिद्वार) आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर एवं व्यवस्थापक गुरुकुल फार्मेसी हरिद्वार के सहयोग से आर्य समाज फेरुपुर इस वर्ष 14 से 23 अक्तूबर तक योग व्यायाम ब्रह्मचर्य शिविर लगा रहा है आचार्य देवदत्त तथा ब्रह्मचारी सत्यवीर शास्त्री अलवर (राज) छात्रों को व्यायाम प्रशिक्षण तथा धार्मिक बल देंगे न्यूनतम शैक्षिक योग्यता आठवीं पास न्यूनतम आयु 14 वर्ष तथा अविवाहित। इच्छुक छात्र प्रवेशार्थ मन्त्री आर्य समाज फेरुपुर पो गुरुकुल महाविद्यालय जि सहारनपुर से पत्र व्यवहार करें।

## महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी के लिए रादौर से बसें चलेंगी

रादौर जिला कुरुक्षेत्र में जिला स्तर का कार्यक्रम 14 से 18 सितम्बर 83 को आयोजित किया गया है। अजमेर यात्रा सम्बन्ध तथा विशेष कार्यक्रम आर्य मन्दिर में सम्पन्न होंगे। अजमेर के लिए विशेष डीलक्स बस की जाए गी जिनका किराया 135 रुपये होगा, धर्म प्रेमी सज्जन पधार एवं यात्रा के लिए सम्पर्क कर या पूरी जानकारी के लिए पत्र व्यवहार कर

—सत्यकाम आर्य प्रधान

## परोपकारिणी सभा के मंत्री का पत्र सभा मंत्री के नाम

महोदय

सादर नमस्ते महर्षि दयानन्द शताब्दी समारोह अवसर हेतु धन संग्रह के लिए सर्व विश्वस्त महानुभावों द्वारा ज्ञात हुआ है कि उत्तर प्रदेश बिहार भोपाल [illegible] आदि सुदूर प्रान्तों से अनधिकृत व्यक्ति ऋषि निर्वाण के नाम पर अवैध धन संग्रह कर रहे हैं? आप [illegible] [illegible] सम्मेलन हेतु परोपकारिणी सभा [illegible] रसीद बुक एवं अधिकार पत्रों एवं टिकटों को उपस्थित करने वाले व्यक्ति को ही दान देवें। अन्य किसी व्यक्ति को न दें।

भवदीय
मन्त्री परोपकारिणी सभा अजमेर (राज)

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जगजीत प्रिंटिंग प्रेस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ओ३म्

# आर्य मर्यादा

जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 16 अंक 24, 9 आश्विन सम्वत् 2040, रविवार 25 सितम्बर 1983 दयानन्दाब्द 159 । एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपए

वेदामृत— 27.9.83

## उपासना का आनन्द

ले—श्री डा रामनाथ जी वेदालंकार

उप त्वाग्ने दिवे दिवे दोषावस्तर्धिया वयम् ।
नमो भरन्त एमसि ॥ ऋ 1 1 7

अर्थ—(अग्ने) हे तपस्वी पथ प्रदर्शक प्रभो, (वयम्) हम सब (दिवे दिवे) प्रतिदिन (दोषावस्त) सायं प्रातः (धिया) ध्यान द्वारा (नमो भरन्त) नमस्कार की भेंट लाते हुए (त्वा) तेरी (उपएमसि) उपासना करते हैं।

ऋग्वेद के इस मन्त्र में भक्तजन भगवान् के प्रति अपने हृदयोद्गार प्रकट करते हुए कह रहे हैं कि हे प्रभो हम प्रतिदिन सायं प्रातः आपकी उपासना करते हैं। 'उपासना का अर्थ है समीप बैठना (उप समीप, आसन बैठना)। अतः प्रभु की उपासना का अर्थ हुआ प्रभु के समीप बैठना। हम सभी मनुष्य कभी न कभी प्रभु के समीप बैठने की स्थिति में होते हैं। प्रयत्न से ऐसी स्थिति भी लाई जा सकती है कि हम जब चाहें तब तक प्रभु के समीप बैठ जाएं। मैं यहां दार्शनिक पक्ष नहीं खोल रहा। दार्शनिक दृष्टि से तो प्रभु सदा ही हमारे समीप हैं और हम उसके समीप हैं क्योंकि वह सर्वव्यापक है। परन्तु यदि हम उसके सान्निध्य का अनुभव नहीं करते तो वह समीप होता हुआ भी हमसे दूर है। इसीलिए तो उपनिषद् के ऋषि ने कहा है—'तद् दूरे तद्वन्तिके'—वह दूर भी है और समीप भी है।

विद्वान् लोग कहा करते हैं कि उपासना योग की समाधि अवस्था में होती है और वे ठीक ही कहते हैं। पर मैं उनकी बात का खण्डन न करता हुआ भी सर्वसाधारण से यह कहना चाहता हूं कि उपासना को योगियों के लिए ही सीमित न समझिए। आप और मैं सभी उपासना का आनन्द ले सकते हैं, भले ही हम योग-समाधि की उच्च स्थिति तक न पहुंचे हों।

हम सब प्रतिदिन प्रातः सायं सन्ध्योपासना करते हैं, जब हम मिलने का प्रयत्न करते हैं। सर्वप्रथम गायत्री मन्त्र द्वारा शिखा बांधते हुए प्रभु से मिलने की भावना को अपने अन्दर दृढ़ करते हैं। फिर आचमन द्वारा हृदय को पवित्र करते हैं। फिर जल से अंगस्पर्श करते हुए एक-एक इन्द्रिय को निमन्त्रण देते हैं कि प्रभु मिलन में तुम सहायक होना बाधक नहीं। फिर मार्जन मन्त्र से सिर नेत्र कण्ठ हृदय आदि सब अवयवों के दोषों को बुहार कर साफ कर देते हैं। फिर प्राणायाम द्वारा बुहारे हुए दोषों को जला कर पवित्रता सम्पादन करते हैं फिर अघमर्षण मन्त्रों से यह भावना जागृत करते हैं कि प्रभु के पदार्पण के लिए स्वच्छ किए हुए हमारे इस देव मन्दिर में यदि कोई पाप घुस आयेगा तो उसका हम डटकर मुकाबला करेंगे। फिर मनसा परिक्रमा द्वारा सब दिशाओं की परिक्रमा कर हम देखते हैं कि कहीं कोई वस्तु हमें अपवित्र करने के लिए तथा प्रभु मिलन में बाधक होने के लिए घात लगाए तो नहीं बैठा है। यदि कोई ऐसा पाप वस्तु दीखता है तो उसे हम उस दिशा के अधिपतियों रक्षकों और इषुओं के शिकंजे में कस कर चकना चूर कर देते हैं। इस प्रकार सर्वांगतः अपने आपको प्रभु मिलन के लिए तैयार कर उपस्थान मन्त्रों से हम प्रभु के सान्निध्य का अनुभव करते हैं। आनन्द विभोर हो हम पुकार उठते हैं—

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् ।
पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतम् ।
शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतम्
अदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः
शतात् । यजु 36 24

अहा यह सूर्यसम प्रकाशक प्रभु मेरे अन्दर उदित हो गया है। मैं वैसे ही उसकी समीपता का अनुभव कर रहा हूं जैसे सामने स्थित वस्तु की समीपता का कोई अनुभव करता है। इस ज्योति के प्रति मैं मुग्ध हूं इसके प्रकाश में मैं सौ वर्षों तक देखता रहूं सौ वर्षों तक जीता रहूं सौ वर्षों तक सुनता रहूं सौ वर्षों तक प्रवचन करता रहूं सौ वर्षों तक अदीन बना रहूं। सौ ही क्यों सौ से भी अधिक वर्षों तक जीवन की सब क्रियाएं करता रहूं। केवल मैं अकेला नहीं हम सभी सौ और सौ से भी अधिक वर्षों तक इन कार्यों को करते रहें।

फिर हम गायत्री मन्त्र का पाठ करते हैं और प्रार्थना करते हैं कि उपासना की इस बेला में हमने प्रभु के जिस अद्भुत तेज की झांकी पाई है वह तेज हमारी बुद्धियों को नया मोड़ देवे नई दिशा में प्रेरित कर देवे। फिर हम आनन्द विह्वल हो प्रभु के चरणों से लिपट जाते हैं—

नमः शम्भवाय च मयोभवाय च ।
नमः शङ्कराय च मयस्कराय च ॥
नमः शिवाय च शिवतराय च ॥
यजु 16 41

यह है हमारी वैदिक उपासना का ब्यौरा। पर यहां प्रश्न यह उपस्थित होता है कि हम प्रभु की उपासना क्यों करें।

वह माता पिता है—

बालक स्वभावतः अपने माता पिता के पास बैठने में सुख मानता है। बालक पढ़ रहा है भोजन कर रहा है पर वह मां को अपने पास से हिलने देना नहीं चाहता। मां कहती है तू तो कहानी पढ़ रहा है मैं यहां बैठी क्या करूं मैं कुछ और काम कर लेती हूं। पर बालक उसे पकड़ कर बैठा लेता है नहीं तुम यहीं बैठी रहो। बड़ा सुहावना दिन है बादल छाए हुए हैं कहीं घूमने जाने की योजना बनती है। पर जब बालक को पता चलता है कि पिता जी नहीं जा रहे तो वह कहता है मैं तो पिता जी के बिना नहीं जाता। बात क्या है? माता पिता का सान्निध्य बालक को क्या देता है। आखिर कुछ तो बालक को मिलता ही है तभी तो वह उनके बिना व्याकुल होता है। इसी प्रकार भक्तों को भी भगवान् के सान्निध्य से कुछ मिलता है। भगवान् भक्तों की माता है भक्तों का पिता है।

त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता
शतक्रतो बभूविथ ।
अधा ते सुम्नमीमहे ॥ ऋ 8 38 11

हे शतक्रतो इन्द्र हे सैकड़ों कर्म करने वाले प्रभो हे निवासक तू ही हमारा पिता है तू ही माता है। इसलिए हम तुझ से सुख की याचना करते हैं।

भक्त को भगवान से क्या मिलता है यह वेद के शब्दों में सुनिए। भक्त को भगवान से मिलता है सोम रस जिसके लिए वेद गाते हैं—

स्वादुः किलायं मधुमाँ उतायं
तीव्रः किलायं रसवाँ उतायम् ।
उतो न्वस्य पपिवांसमिन्द्रं
न कश्चन सहत आहवेषु । ऋ 6 47 1

जिसने प्रभु से मिलने वाले आनन्द रस को पा लिया है उसके मुख से सहसा उद्गार निकल पड़ते हैं— आह यह कैसा स्वादु है! कैसा मधुर है! कैसा तीव्र है! कैसा रसीला है! जिसने इसे पी लिया उसे देवासुर संग्रामों में कोई असुर परास्त नहीं कर सकता। इसी रस का एक बार स्वाद लेकर भक्तजन आतुरता के साथ पुकार उठते हैं—

स्वादिष्ठया मदिष्ठया पवस्व सोम धारया ।
इन्द्राय पातवे सुतः ॥ साम पू 5 9 2

हे प्रभु से झरने वाले आनन्द रस तुम अपनी स्वादुतम धारा के साथ मेरे अन्दर झरो तुम अपनी अतिशय मस्ती लाने वाली धारा के साथ मेरे अन्दर झरो। तुम शुद्ध आत्मा के पान करने के लिए प्रस्तुत होते हो।

उपासना करने पर प्रभु भक्त को अपने साथ आनन्द सागर की तरंगों में झुलाता है।

परि प्रासिष्यदत् कविः
सिन्धोरूर्मावधिश्रितः ।
कारुं बिभ्रत् पुरुस्पृहम् ॥
साम पू 5 10 10

कवि प्रभु स्वयं आनन्द-सागर की लहरों पर उतर रहा है। जब भक्त उपासना करता हुआ उसके समीप पहुंचता है तब वह उस अतिशय प्यारे अपने उपासक को (कारु को) अंगुलि पकड़ कर अपने साथ तैराने लगता है और लहरों में झुला झुला कर कृतकृत्य कर देता है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

# तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु

ले —सुरेशचन्द्र वेदालकार एम ए एल टी 175
जाफरा बाजार गोरखपुर

(गताक से आगे)

हमारे हृदय मे जो आशा भरी तरगे उठा करती है हमारी आत्माओ मे जिन महत्वकाक्षाओ का जन्म होता। हमारे मन मे जिन उत्तम भावनाओ का उदय होता रहता है क्या वे खरगोश के सींग के समान असत्य हैं वे व्यर्थ हैं व्यर्थ हैं फिजूल हैं नही! नही! वे जीवन प्रद हैं सत्य हैं मजबूत जडवाली हैं प्रबल हैं प्रभावोत्पादक हैं हमारी शक्ति की सूचक और हमारे बड़प्पन की उच्चता की मापक हैं हमारे काय शक्ति के परिमाण के द्योतक हैं। मन वचन और काया को एक करके जिस आदश की सष्टि होगी वह अवश्य ही हमारे सामने सत्य के रूप मे प्रकट होगा। यही शिव सकल्प है।

हमारे शरीर मे इन्द्रियो और आत्मा से भिन्न एक वस्तु मन है। शारीरिक ऐन्द्रियिक और मानसिक सुख मन की स्वच्छता स्वस्थता सत्य सकल्प पर निभर है। वह मन ही शरीर रूपी यन्त्र का मुख्य पुर्जा है। इसके ठीक रहने से सब अग ठीक रहते हैं और बिगडने से बिगडते हैं। अत प्राचीन काल के विद्वान और आधुनिक काल के मनो वैज्ञानिक मन को शिव सकल्पो वाला बनाने का प्रयत्न करते हैं मन मे एक समय एक ही विचार रह सकता है अत यदि शिव सकल्प होगे तो अशिव विचारो का वहा स्थान न होगा। सकल्प का मतलब है प्रबल और साधिकार इच्छा का होना। और यदि हम इस सकल्प का पुन पुन आवतन कर तो मनोवैज्ञानिक भाषा म इसे आवेश कहते है। तन की सब प्रथम गति सकल्प है अपितु सकल्प ही मन का सार है और उसके विकास का कारण भी। वेद मे सकल्प और कामना को आतरिक जीवन की मूर्ति और बाह्य जीवन की मूर्ति माना गया है। अथववेद 19 52 1 मन्त्र म कहा गया है—

कामस्तदग्रे समवतत मनसो रेत
प्रथम यदासीत।
स काम कामेन बृहता सयोनी रायस्पोष
यजमानाय धेहि।

इस मन्त्र का भाव यह है कि मनुष्य मैं काम या सकल्प सबसे पूव उत्पन्न होता है। यह सकल्प मन का प्रथम सार है। वह सकल्प पुन पुन उठ हुए सकल्प के साथ एक व्रत अर्थात मन मे एकत्र होकर यजमान स्वरूप आत्मा के लिए ऐश्वर्य धन, स्वास्थ्य, शक्ति तथा बल देता है। इस मन के कार्यों को प्रकट करने का क्रम वही होता है जो बिजली के प्रकट होने का। अर्थात धन और ऋण दो प्रकार की बिजलिया होती हैं। धन और धन तथा ऋण और ऋण विद्युत आपस मे नही मिलती। ऋण और धन विद्युत के मिलने से काय शक्ति प्रज्वलित होती है। इसी प्रकार मन मे भी दो तरगें होती है उन्हें बोध और प्रति बोध नाम से कहा जाता है। सकल्प शब्द का तात्पय है कि इसके द्वारा हम अभीष्ट वस्तु की प्राप्ति करते हैं और विकल्प द्वारा अनभिष्ट निवारण। सकल्प और विकल्प एक दूसरे के पूरक है। यदि विकल्प नही होता तो सकल्प मे आने वाली कठिनाईयो का हमे ज्ञान न होता। उदाहरण के लिए मैं निश्चय या सकल्प करता हू कि मैं कभी असत्य भाषण नही करूगा परन्तु इस सकल्प मे यह बाधा हो सकती है कि चोर मेरी छाती के सामने पिस्तौल लेकर खडा हो जाए और मुझ से मेरा धन पूछे उस समय सकल्पानुसार तो मझ झूठ नही बोलना चाहिए पर विकल्प उठकर अनभिष्ट को निवरण करने का माग बतलाएगा। इस प्रकार सकल्प का अथ हुआ प्रबल तथा साधिकार इच्छा।

सकल्प शक्ति को दृढ बनाकर मनुष्य ससार के महान कार्यो मे सफलता प्राप्त कर सकता है। वास्तव मे मन ही सब व्यक्तियो को काय मे लगाने वाला होता है। हम समझते हैं कि हम शरीर द्वारा काय करते हैं परन्तु सब अगो के ठीक रहने पर भी यदि मन वहा न हुआ तो काय मे सफलता सदिग्ध ही नही असभव हो जाएगी।

दुनिया उस मनुष्य के लिए खुला रास्ता दे देती है जो दृढ तपस्वी आत्म विश्वासी और दृढ ग्राही है जो इस बात को जानता है कि ससार मे ऐसी कोई वस्तु नही ऐसी कोई विपत्ति नही जो मेरी शक्ति का रास्ता रोक सके। कायर मनुष्य इनसे डर सकता है रास्ते म इन्हे पाकर पथभ्रष्ट हो सकता है पर मैं तो इन पर पूरी पूरी विजय पा सकता हू। यह शिव सकल्प हमारे सम्पूर्ण मनोरथो को पूर्ण कर सकता है।

एक वेदान्त ज्ञानी के घर मैं एक दिन एक व्यक्ति आया। गृह स्वामी बाहर गए थे। जब वे लौटे तो आगन्तुक ने पूछा हे वेदान्ती! तू बूझती क्या कि परमात्मा क्या है? महात्मा ने इस प्रश्न का सीधा उत्तर न दिया और उसने अपने नौकरों को डाट कर कहा इस आगन्तुक को क्यो बैठने दिया? इसे घर से धक्का देकर निकाल दो। आगन्तुक घबरा गया वह अपने स्थान से झट से खडा हो गया दूसरी ओर वेदान्ती गद्दी पर बैठ गया और गम्भीरता तथा शान्ति से अपनी ओर सकेत करके कहा यह ईश्वर है। और फिर अपने यहा आए व्यक्ति से कहा तुम मनुष्य हो। उसने कहा 'यदि तुम्हारे मन मे दृढता होती तुम भयभीत न होते यदि तुम गद्दी पर डटकर बैठे रहते तुम्हारी स्थिरता दृढ रहती तुम्हारे मुह का रग न उडता तो तुम परमेश्वर थे। परन्तु भय से काप उठना अपने मन को कमजोर बना लेना ही ईश्वर से विमुख होना है। अर्थात मन मे वह शक्ति है कि वह सकल्प से मनुष्य को ईश्वर बना देता है।

स्काटलैंड का एक बालक वहा के अनाथालय से दौडकर लन्दन आया और वहा के लार्ड मेयर के बगीचे मे पहुच कर खेलने लगा। वहा एक बिल्ली आई। उसने बिल्ली की पूछ पकडी और उससे कहने लगा—

What does the mod bell say ?

Ton ! Ton !! Ton !!!
Whittington Whittington
Lord Mayor of London

अर्थात यह पागल घण्टी क्या कह रही है टन! टन!! टन!! विहटींगटन, विहटींगटन लार्ड मेयर आफ लन्दन। अचानक उसी समय लार्ड मेयर बाहर आया। बालक का खेल देखा। उसने बालक को अपने घर रखा। उसे विद्यालय भेजा और अपने दृढ निश्चय सकल्प और कर्म विहटीगटन लन्दन का लार्ड मेयर बना।

इसलिए कभी मत सोचिए मैं दीन हीन हू। मैं तुच्छ हू क्षुद्र हू। क्योकि आप अपने को यदि दीन हीन मानते तो आपके चेहरे पर भी ऐसा ही भाव झलकने लगेगा। यदि आप अपना सम्मान करेंगे तो आपका चेहरा इसकी गवाही देगा।

लोग व्यसनो से भयभीत रहते हैं। कोई कहता है कि बीडी की आदत पड गई है किसी को शराब का व्यसन है, किसी को वेश्याओ के पास जाने की लत है और कोई आवश्यक रूप मे दूसरो की वस्तुओ का अपहरण करने मे आनन्द लेता है। यदि कोई उसे समझाता है तो वह कहता है कि क्या करें बीडी पीना छोड़ना तो चाहते हैं पर कमबख्त छूटती नहीं। अरे मूर्ख! क्या बीड़ी तुझसे शक्तिशालिनी हो गई है कि उसने तुझे पकड़ रखा है, वेदालंकार से क्या तुझे अपने को बचाने की शक्ति नहीं है। ब्लैक मार्केटिंग, चोर बाजारी, रिश्वत और दूसरे अनाचार क्या तुझ से अधिक शक्तिशाली है क्या उन्होंने तुम्हे पकडा है? ये नहीं पकड सकते, जरा मार के डाट तो दो। ये भग जाए तो कहो—

परोऽपेहि मनस्पाप किमशस्तानि शससि।
परे हि न त्वा कामये वृक्षा वनानि सचर
गृहेषु गोषु मे मन। अथर्व 6 45 1

अरे! मन के पाप! चल दूर हट मेरे पास से क्यो तू निन्दित और गन्दी सलाह दे रहा है। चल लम्बा बन यहां से, वृक्षो से जाकर टकरा जगलो मे भटकता फिर। मुझ फुरसत कहा है जो तेरा स्वागत करू? मेरा मन तो गृह कार्यों मे और गोसेवादि शुभ कार्यों मे लगा है।

कैसी आत्म विश्वास भरी वीरता पूर्ण और सजीव उक्ति है। क्या ऐसे सतर्क और साहसी व्यक्ति के मन मे पाप कभी डरा डाल सकता है? अपने सकल्प बल को जागत करता हुआ व्यक्ति कहता है—

अहि व काम मम ये सपत्ना,
अन्धा तमोस्यव पादयतान।
निरिन्द्रिया अरसा सन्तु सर्वे
मा ते जीविषु कतमच्चनाह।
अथव 9 2 10

जाग जाग ओ मेरे सकल्प बल तू जाग! राक्षसो को मार गिरा, उन्हे घोर अन्धकार मे धकेल दे। वे आततायी निरिन्द्रिय और निर्वीय हो जाए, एक दिन को भी जीवित न बचने पावें।

Let us fight in every field
ever win and never yield

अर्थात विश्वा पृतना जयेम अर्थात सम्पूर्ण विश्व पर हम विजय करें। अपने मन मे विजय की आकाक्षाए रखें किसी बुराई के आगे नत मस्तक न हो। वह दृढ सकल्प हमे ससार के सभी कार्यों मे सफलता प्रदान करेगा। याद रखिए विजय जीवन है और पराजय मृत्यु। सकल्प से विजय प्राप्त होती है।

कृत मे दक्षिण हस्ते जयो मे सव्य आहित।

गोजिद भूयासमश्वजिद धनञ्जयो हिरण्यजित॥

मैं हाथ पर हाथ धर कर बैठने वाला नही हू। मेरे दाहिने हाथ में कर्म है और बाए हाथ मे विजय रखी है। इस कर्म रूपी जादू की छडी हाथ मे लेते ही घी घोडे, धन धान्य सोना चादी जो चाहूगा वो मेरे आगे हाथ बाध कर खडा हो जाएगा।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

## सम्पादकीय—

# क्या इन्दिरा गान्धी हिन्दू नहीं हैं ?

प्रकाशित हुआ है कि पिछले दिनों जब श्रीमती इन्दिरा गान्धी उड़ीसा गई थी और वहां वह जगन्नाथपुरी मन्दिर में जाना चाहती थी तो उन्हें जाने की अनुमति न दी गई क्योंकि उन का विवाह एक पारसी के साथ हुआ था। इस लिहाज से वह भी पारसी हैं और किसी गैर हिन्दू को इस मन्दिर में जाने की इजाजत नहीं दी जाती।

यदि यह समाचार सही है तो मेरी राय में निन्दनीय है। यह सही है कि श्रीमती इन्दिरा गान्धी की शादी एक पारसी के साथ हुई थी और यह भी सही है कि वह वैदिक रीति से हुई थी। जिसके अर्थ हैं कि विवाह के समय में भी उन्होंने अपना धर्म नहीं छोड़ा था। हमारे शास्त्रों के अनुसार शादी के बाद पत्नी की भी वह जात या गोत्र हो जाता है जो उसके पति का होता है। लेकिन हम इस खेदजनक वास्तविकता को भी अनदेखा नहीं कर सकते कि इन्दिरा जी के पति को स्वर्गवास हुए अब 23 वर्ष होने लगे हैं। इस दौरान इन्दिराजी ने जहां तक सम्भव हो सका है हिन्दू धर्म की परम्पराओं को कायम रखने की हर सम्भव कोशिश की है। हमारे देश में कोई दूसरा राजनीतिक नेता ऐसा नहीं जो इतने मन्दिरों में जाता हो जितने मन्दिरों में इन्दिराजी जाती हैं। जब कभी वह किसी दौरे पर जाती हैं। रास्ते में कोई बड़ा मन्दिर आ जाए वह उसमें पूजा के लिए या दर्शनों के लिए अवश्य जाती हैं। इसके अतिरिक्त जब भी कभी उन्हें अवसर मिलता है किसी शंकराचार्य या किसी धार्मिक नेता के पास चली जाती और उनका आशीर्वाद लेने की कोशिश करती हैं। निष्कर्ष यह कि एक पारसी के साथ शादी के बावजूद हिन्दू धर्म में उनकी आस्था कम नहीं हुई और इस समय तक उन्होंने कोई ऐसा काम नहीं किया जिसे हिन्दू धर्म के विरुद्ध समझा जाए। इसलिए अब उन पर यह पाबन्दी लगाना मेरी राय में किसी भी तरह मुनासिब नहीं है जिन लोगों ने यह किया है उन्होंने हिन्दू धर्म की सेवा नहीं की।

इस समस्या का एक और पहलू भी है। हमारे देश में यदि छुआछूत की बीमारी इतनी बढ़ गई है तो वह भी इसलिए। आज तो बड़े-बड़े शंकराचार्य कह रहे हैं कि छुआछूत खत्म होनी चाहिए। यह अब तो आर्य समाज को और उसके संस्थापक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती को मिलना चाहिए कि आज से कोई डेढ़ सौ वर्ष पहले उन्होंने यह कहना शुरू किया था कि छुआछूत खत्म होनी चाहिए। जन्म के आधार पर किसी को अछूत समझने की हमारा धर्म अनुमति नहीं देता। जब महर्षि दयानन्द ने यह कहा था तो लोग उनको पत्थर मारने को तैयार हो गए थे। आज डेढ़ सौ वर्ष के बाद सारा देश यह मान रहा है कि छुआछूत खत्म होनी चाहिए। हमारे संविधान में छुआछूत एक जुर्म करार दे दी गयी है।

ऐसे हालात में किसी भी व्यक्ति पर इसलिए किसी मन्दिर के दरवाजे बन्द कर दिए जाएं कि उसकी अमुक व्यक्ति के साथ शादी हो गयी है किसी भी स्थिति में उचित करार नहीं दिया जा सकता। देखने वाली बात तो यह है कि जो व्यक्ति एक मन्दिर में पूजापाठ या किसी देवता के दर्शनार्थ जाता है। वह कौन है। उसका अपना चरित्र क्या है? उस आधार पर यदि किसी को मन्दिर में जाने से रोक दिया जाए तो वह समझ में आ सकता है। लेकिन मात्र इसलिए कि उसने एक विशेष व्यक्ति से विवाह किया है इस लिए उसे मन्दिर में जाने की इजाजत नहीं है किसी भी तरह मुनासिब नहीं है और अब तो उस विवाह को खत्म हुए भी 23 वर्ष हो गए हैं। कई बार प्रश्न होता है कि क्या कारण है कि हिन्दुओं की संख्या कम हो रही है और मुसलमानों की संख्या बढ़ रही है। जो व्यवहार इन्दिरा गान्धी के साथ किया गया है वह इस प्रश्न का उत्तर है। एक तरह तो वह मुसलमान भी है जो हिन्दुओं की कई बातों को मानते हैं और कई हिन्दू देवी देवताओं की पूजा भी करते हैं। बरेली में एक मुसलमान ने अपने रुपया से कृष्ण मन्दिर बनवाया है। 1947 से पूर्व लाहौर में अल्लाबख्श नाम का एक चित्रकार था। वह सिवाए भगवान कृष्ण के किसी दूसरे का चित्र न बनाया करता था और वह कृष्ण महाराज का इतना भक्त था कि उसने मांस खाना भी छोड़ दिया था। निष्कर्ष यह कि केवल जात बिरादरी के कारण मन्दिर के दरवाजे बन्द कर दिए जाएं यह कोई अक्लमंदी नहीं है। गान्धी जी ने जब 1933 में व्रत रखा था तो उसके बाद कई मन्दिरों के दरवाजे हरिजनों के लिए खोल दिए गए थे हालांकि इससे पूर्व वह बन्द रहते थे। क्या यह आश्चर्यचकित करने वाली बात नहीं कि एक हरिजन तो मन्दिर में जा सकता है लेकिन देश की प्रधानमन्त्री नहीं जा सकती जब कि वह हिन्दू धर्म में विश्वास रखती है और हिन्दू परम्पराओं के अनुसार चलने का प्रयास करती है। इसलिए यह समझना मुश्किल हो रहा है कि जगन्नाथ मन्दिर के पुजारियों ने इन्दिरा गान्धी के लिए अपने मन्दिर का दरवाजा क्यों बन्द किया था। इन्दिरा जी का कसूर सम्भवतः यह था कि वह देश की प्रधान मन्त्री हैं और जब प्रधानमन्त्री कहीं जाती हैं तो सब को पता चल जाता है कि इन्दिरा जी आई हैं। यदि वह प्रधानमन्त्री न होती फिर शायद उन्हें इस मन्दिर में जाने से कोई न रोक सकेगा। मैंने जगन्नाथपुरी मन्दिर के द्वार खुलते देखे हैं। एकदम सैकड़ों लोग अन्दर दाखिल हो जाते हैं। किसी को यह पता नहीं चलता कि अन्दर जाने वाला कौन है। दक्षिण भारत में जो मन्दिर हैं उनमें जाने के लिए दो बातें जरूरी होती हैं। एक तो नंगे पांव जाना पड़ता है। जहां तक पुरुषों का सम्बन्ध है धोती पहन कर ही अन्दर जा सकते हैं। अपने शरीर पर कोई और कपड़ा नहीं रख सकते। उस समय भी कई ऐसे लोग अन्दर चले जाते हैं जो हिन्दू नहीं होते हैं। स्त्रियों के लिए अवश्य कठिनाई होती है। भारतीय नारियां तो साड़ी के साथ अन्दर चली जाती हैं। यूरोपीय नारियों की शक्ल से ही पता चल जाता है कि वे कौन हैं। इसलिए जब उन्हें अन्दर जाने से रोक लिया जाता है तो उन्हें निराशा होती है। हजारों मीलों से चल कर आए और मन्दिर में न जा सके क्योंकि वह हिन्दू नहीं है तो इसका उनके मन मस्तिष्क पर क्या प्रभाव होगा इसका अनुमान लगाना कठिन नहीं।

यदि प्रधानमन्त्री को स्वामी जगन्नाथ मन्दिर में जाने से रोक दिया गया तो मैं अपने सनातन धर्मी भाईयों से कहूंगा कि वह तनिक गम्भीरता से इस समस्या पर ध्यान देवें। इसी प्रकार के रस्मो रिवाज कई बार यह पाबन्दियां लगा देते हैं जो किसी भी धर्म के प्रसार में एक बाधा खड़ी कर देती हैं। यदि एक मुसलमान भी हमारे किसी मन्दिर में आता है और वह बाहर खड़ा होकर देवी या देवता की मूर्ति के दर्शन करता है उस पर कोई प्रभाव होता है तो इसमें लाभ ही है। मैं अपने सनातन धर्मी भाइयों को एक पुरानी बात याद दिलाना चाहता हूं। यह 1919 की घटना है अमर शहीद श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी को दिल्ली की जामा मस्जिद में बुलाया गया और उसके मंच पर बैठ कर उपदेश देने के लिए कहा गया जहां से उस मस्जिद का शाही इमाम कुरान शरीफ का पाठ किया करता था। मुसलमानों ने यह नहीं देखा था कि यह संन्यासी आर्य समाजी है और स्वामी श्रद्धानन्द जी के वहां जाने पर इस्लाम का कोई अपमान नहीं हुआ न इससे पहले जामा मस्जिद में किसी हिन्दू को उपदेश देने के लिए कहा गया और न उसके बाद। यह एक मात्र उदाहरण है जबकि एक हिन्दू संन्यासी को और वह भी आर्य समाजी को जिसे जामा मस्जिद के मंच से उपदेश देने के लिए कहा गया था। एक तरफ तो हमारे सामने यह उदाहरण है और दूसरी तरफ यह स्थिति है कि देश की प्रधानमन्त्री जिन्हें अपने धर्म में पूरी आस्था है एक मन्दिर में नहीं जा सकती क्योंकि उनकी शादी किसी गैर हिन्दू से हुई थी।

—वीरेन्द्र

# एक कर्मठ आर्य समाजी की कर्त्तव्य परायणता

आज कल आर्य समाज में ऐसे कर्मठ व्यक्ति बहुत कम मिलते हैं जो इसके लिए अपना तनमन धन सब लगा देते हैं। परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि अभी भी ऐसे महानुभाव मिल जाते हैं जो निष्काम भाव से आर्य समाज की सेवा करते हैं। जालन्धर के श्री रामलुभाया नन्दा ऐसे ही कर्मठ और निष्काम सेवी हैं। कुछ समय हुआ जब उन्होंने अपने घर के पास एक नयी समाज बनाने का निश्चय किया था। समाज का कोई मन्दिर न था। दिन रात श्रम 2 कर उन्होंने कुछ धन इकट्ठा किया और थोड़ी सी भूमि खरीद ली। उसके पश्चात उस पर आर्य समाज का भवन बनाना शुरू कर दिया। अब उसकी चार दिवारी बन गई है। छतें पड़ गई हैं। पिछली 18 सितम्बर 83 को वहां उन्होंने महर्षि दयानन्द सिलाई निःशुल्क स्कूल भी शुरू कर दिया है। इस प्रकार धीरे 2 वह अपनी समाज को प्रगति की ओर आगे ले जा रहे हैं अपनी योजना के अनुसार वह एक बहुत सुन्दर भवन बनाना चाहते हैं मैं यह तो नहीं कहता कि यह सब केवल वह अकेले ही कर रहे हैं। उनके और भी कई सहयोगी हैं परन्तु सबके पीछे प्रेरणा श्री राम लुभाया नन्दा की है। वह घूमते रहते हैं काम करते रहते हैं जिससे भी आर्य समाज के लिए मांगें उन्हें मिल जाता है। एक व्यक्ति यदि दृढ़ निश्चय से एक काम में लग जाए तो वह बहुत कुछ कर सकता है। मैं श्री रामलुभाया नन्दा को बधाई देता हूं उनकी निष्काम सेवा को देख कर दूसरों को भी प्रेरणा मिलती है। यदि हम सब उनकी तरह ही आर्य समाज की सेवा में लग जाएं, तो आर्य समाज एक शक्तिशाली संस्था बन सकती है मैं आर्य समाज शास्त्री नगर के सब सदस्यों को बधाई देता हूं कि उन्होंने जो कुछ किया है वह हम सबके लिए प्रेरणा दायक है और हम सब आशा करते हैं कि दूसरे आर्य समाजी भी इसी प्रकार अपनी समाज की सेवा करते रहेंगे।

—वीरेन्द्र

# मेरा कसूर क्या है ?

सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने गत दिनों अपने दैनिक पत्र 'प्रताप' वीर प्रताप मे एक लेखमाला लिखी थी उसके कारण गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के सचिव सरदार भान सिंह ने उन्हें नोटिस दिया है कि वह उनसे क्षमा मांगें। उनके पत्र के उत्तर मे श्री वीरेन्द्र जी ने अपने विचार निम्न प्रकार प्रकट किए हैं। स0

'गुनहगारों मे शामिल हैं गुनाहों से नहीं वाकिफ,
सजा को जानते हैं खुदा जाने खता क्या है

मैंने पिछले दिनों वीर प्रताप व 'प्रताप' मे एक लेखमाला लिखी थी जिसका शीर्षक था—'जी चाहता है तोड दू शीशा फरेब का' उसमे मैंने पंजाब की वर्तमान स्थिति का उल्लेख करते हुए यह भी लिखा था कि हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए तीन महापुरुषों श्री छत्रपति शिवा जी, महाराणा प्रताप व गुरु गोबिन्द सिंह ने तलवार उठाई थी। यह लिखते हुए मैंने न एक ऐतिहासिक सत्य को प्रस्तुत किया था बल्कि देश के इन तीन महापुरुषों के प्रति अपनी श्रद्धा भी व्यक्त की थी। अकाली चाहे कुछ कहते फिरें मैं गुरु गोबिन्द सिंह को हिन्दू धर्म का रक्षक समझता हू। उन्होंने अपने पूज्य पिता को बलिदान देने के लिए कहा था तो इसलिए, अपना सम्बन्ध भगवान राम से जोडा था तो इसलिए नैना देवी मे जाकर यज्ञ कराया था तो इसलिए। उन्होंने राम अवतार कृष्ण अवतार और चण्डी चरित्र जैसी कविताए लिखी थी तो इसी लिए। उन्होंने अपनी आत्म कथा विचित्र नाटक मे यह लिखा कि चारो वेद ब्रह्मा ने बनाए है तो इसीलिए निष्कर्ष यह है कि वह इतना कुछ लिखकर छोड गए हैं जिससे हम अनुमान लगा सकते हैं कि हिन्दू धर्म के लिए उनके मन मे कितनी श्रद्धा थी। यह सही है कि उनके समय भी हिन्दू के नाम पर बहुत कुछ वह भी कहा जाता था जो वांछित नही था। इसलिए उन्होंने खालसा पंथ सजाया लेकिन यह हिन्दुओं का विरोध करने के लिए नही इनका सहारा बनने के लिए। इसलिए यदि मैंने यह लिख दिया कि श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए तलवार उठाई तो मैंने कोई अपराध नही किया।

लेकिन अकालियों को इस पर शिकायत पैदा हुई है। वह कहते हैं कि मैंने गुरु गोबिन्द सिंह का नाम शिवाजी महाराणा प्रताप के साथ क्यों जोडा है। इन की राय मे शिवाजी और महाराणा प्रताप मामूली राजे थे जिनका कोई ऐतिहासिक महत्व न था और श्री गुरु गोबिन्द सिंह परमात्मा के अवतार थे। इन्हें शिवाजी व महाराणा प्रताप के साथ जोडना गुरु महाराज का अपमान है। इस लिए शिरोमणी गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के सचिव सरदार भान सिंह ने मुझे नोटिस दिया है कि मैं क्षमा मागू या मेरे विरुद्ध इस्तगासा दायर किया जाएगा।

क्षमा मागने का प्रश्न पैदा नही होता। मैंने गुरु साहब की शान मे कोई गुस्ताखी नही की जिसके लिए मैं क्षमा मागू। छत्रपति शिवा जी और महाराणा प्रताप के लिए मेरे दिल मे बहुत इज्जत है। महापुरुषों का इतिहास मे अपना अपना स्थान होता है। कोई व्यक्ति उसे उनसे छीन नही सकता। भगवान राम और भगवान कृष्ण का अपना स्थान है गुरु गोबिन्द सिंह का अपना है। छत्रपति शिवाजी और महाराणा प्रताप का अपना स्थान है शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के सचिव ने छत्रपति शिवाजी और महाराणा प्रताप के बारे जो आपत्ति जनक शब्द लिखे हैं मैं उन्हें यहा नकल करके हिन्दुओं की भावनाओं को ठेस नही पहुचाना चाहता। लेकिन अगर महाराष्ट्र के मराठा और राजस्थान के राजपूतों को पता चल जाए कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी शिवाजी और महाराणा प्रताप का क्या सम्मान है तो उनकी जो प्रतिक्रिया होगी उसे समझना कठिन नही है मैं आग लगाना नही चाहता आग बुझाना चाहता हू इसलिए शिरोमणि कमेटी के सचिव ने उन दोनों महापुरुषों के सम्बन्ध मे जो शब्द प्रयोग किए है उन्हें अपने सीना मे छिपा लेता हू। ऐसा न हो कि शिरोमणि कमेटी के सचिव की इस गलती से एक और आग भडक उठे।

बाकी रहा प्रश्न श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी महाराज को अवतार मानने का। मैं अवतारवाद मे विश्वास नही रखता। भगवान राम और भगवान कृष्ण को भी अवतार नही मानता। जहा तक गुरु गोबिन्द सिंह जी का सम्बन्ध है वह तो स्वयं कह गए है कि उन्हें कोई अवतार न कहे। अकालियों की सबसे बडी मुश्किल यह है कि वह गुरु साहबान के लिखे हुए साहित्य को पढ़ते नही। विशेषकर जब वह हिन्दी मे लिखा गया हो। इसलिए यह भटक जाते है लेकिन उनकी जानकारी के लिए मैं गुरु गोबिन्द सिंह जी के अपने शब्द पेश करता हू। अपनी आत्मकथा मे उन्होंने लिखा था—

जो हमको परमेश उचरि है ते सभी नरक कुंड महि परहि।

गुरु महाराज ने कहा था कि जो मुझे परमेश्वर कहेगे वे सब नरक कुंड मे जाएगे। जो अकाली श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी को अवतार कहते है वे अगर नरक कुंड मे जाना चाहते है तो शौक से जाए। इसलिए जो कुछ गुरु महाराज कह गए है मैं उसका उल्लंघन करने को तैयार नही हू। इसीलिए मैंने लिखा है कि क्षमा मागने का प्रश्न पैदा नहीं होता और शिरोमणी कमेटी के सचिव को यह भी समझ लेना चाहिए कि उनसे क्षमा मागने वाले और कई हैं—'प्रताप' परिवार ने अंग्रेजों से डर कर कभी किसी से क्षमा नही मांगी।

रहा प्रश्न मेरे विरुद्ध मुकद्दमा दायर करने का। इसके सम्बन्ध मे मैं केवल यह ही कहूगा—

'सर तस्लीम खम है जो मिजाज यार मे आए

शिरोमणी कमेटी मेरे विरुद्ध मुकद्दमा दायर करना चाहती है तो यह शौक भी पूरा कर ले। यह एक दिलचस्प मुकद्दमा होगा। यह केवल मेरे लेखो तक ही सीमित न रहेगा। सारा इतिहास सामने आएगा। शिवाजी और महाराणा प्रताप कौन थे। यह भी सामने आएगा। देश के कानूनो के इतिहास मे यह अपनी तरह का एक विशेष मुकद्दमा होगा। इसलिए अगर शिरोमणी कमेटी यह मुकद्दमा चलाना चाहती है तो शौक से चलाए मैं इस के लिए तैयार हू

लेकिन मैंने अपना मुकद्दमा दायर कर दिया है। मेरी अदालत प्रैस कौंसिल है। इसकी अध्यक्षता सुप्रीमकोर्ट के एक जज कर रहे हैं। देश के चोटी के पत्रकार और कानूनदान लोकसभा और राज्यसभा के प्रतिनिधि इसके सदस्य हैं। मैंने उनके सामने यह मामला रख दिया है और उन पर छोड दिया है कि वह निर्णय करें कि शिरोमणि कमेटी के सचिव ने मेरे ऊपर जो आरोप लगाया है वह कहा तक सच है। साथ ही वह यह भी निर्णय करें कि जो आपत्तिजनक शब्द शिरोमणि कमेटी के सचिव ने छत्रपति शिवाजी और महाराणा प्रताप के सम्बन्ध मे प्रयोग किए हैं वह कहा तक उचित हैं। प्रैस कौंसिल का जो भी फैसला होगा वह मुझे स्वीकार होगा। मैं शिरोमणि कमेटी के सचिव को अपना सुप्रीमकोर्ट नही मानता कि उनके कहने पर क्षमा मागू। प्रैस कौंसिल कहेगी कि मैंने गलती की है तो क्षमा माग लूगा।

यह तो हुई चर्चा उस नोटिस की जो मुझे शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी की तरफ से प्राप्त हुआ है। इस बहस को अब मैं छोडता हू। लेकिन यह लेख तो मैंने एक और उद्देश्य से लिखा है। मैंने तो केवल यह लिखा था कि गुरु गोबिन्द सिंह ने हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए तलवार उठाई थी। और अकाली मुझ से नाराज हो गए है। लेकिन मैं पाठकों के सामने कुछ ऐसी बाते पेश करना चाहता हू जिससे पता चल जाएगा कि अकाली गुरु साहबान को किस रूप मे दुनिया के सामने पेश करते हैं। कोई हिन्दू भी गुरु साहबान की शान मे गुस्ताखी नही करता अकाली शिवाजी और महाराणा प्रताप का अपमान कर सकते हैं। हम किसी भी गुरु साहब के विरुद्ध अपनी जबान से एक शब्द भी नही निकालते। लेकिन अकाली राज मे अकालियों के माध्यम से गुरु साहबान और उनके साथ सिख इतिहास को किस शर्मनाक ढग से पेश किया गया है।

मैं ऊपर भी लिख चुका हू कि अकाली दूसरों की किसी अपमानजनक बात को भी सहन नही करते लेकिन स्वय उन बातों का समर्थन करते है जो अक्षम्य है और कई बार कुछ ऐसी बात भी करते है जिनके पास कोई उत्तर नही होता और जिसके कारण इन का सिर शर्म से झुक जाना चाहिए।

मैंने श्री गुरु गोबिन्द सिंह के नाम के साथ छत्रपति शिवाजी और महाराणा प्रताप का नाम जोड दिया कि मैं क्षमा याचना करू वरना मेरे विरुद्ध मुकद्दमा दायर किया जाएगा। इसका उत्तर मैं ऊपर दे चुका हू लेकिन आज अकालियों के सामने एक प्रश्न उठाने लगा हू। यदि अकालियों को अपने कर्तव्य और उत्तरदायित्व का तनिक भी अहसास है और गुरु साहिबान के लिए इनके दिल मे श्रद्धा है तो इन्हें सारे खालसा पंथ से क्षमा मागना चाहिए।

हाल ही मे मुझे दो किताबें पढ़ने का अवसर मिला। ये दोनों किताब अंग्रेजी मे लिखी गई है। आज से सौ डेढ़ सौ वर्ष पूर्व लिखी गई थी। एक किताब मे लडाई का जिक्र है जो अंग्रेजो व सिखों मे हुई थी। चूकि यह लडाई आज से लगभग डेढ़ सौ वर्ष पूर्व हुई थी ऐसा मालूम होता है कि उस समय के कुछ अंग्रेजो को यह मालूम न था कि ये सिख कौन है जिनके विरुद्ध वह लड रहे हैं। अतः एक जगह सवाल किया गया है कि सिख कौन है इसका जवाब भी इस किताब मे प्रकाशित किया गया है। वह जवाब क्या है और सिख की क्या परिभाषा की गई है यह लिखना मेरी कलम की शक्ति से बाहर है। क्योंकि मैं इससे बिल्कुल सहमत नही हू। इस किताब के बारे मे केवल यही लिखना चाहता हू कि इसमे सिख भाइयों के बारे मे अत्यधिक अपमानजनक शब्द लिखे गए हैं। मैंने जो दूसरी किताब पढ़ी है एक सौ वर्ष पुरानी है और एक अंग्रेज का लिखी है। यह सिख इतिहास से सम्बन्धित है। इसमे गुरु साहिबान की जिन्दगी की घटनाए ब्यान की गई हैं, साथ ही इनके बारे अपनी राय भी दी गई है। यहा भी मेरे लिए फिर वही कठिनाई

(शेष पृष्ठ 6 पर)

# महर्षि दयानन्द निर्वाण स्मारक न्यास अजमेर का महत्वपूर्ण निश्चय

## आर्य जनता सादर आमन्त्रित है

महर्षि दयानन्द निर्वाण स्मारक न्यास अजमेर की साधारण सभा की 20 मार्च 1983 दिनांकित बैठक मे सब सम्मति से यह निर्णय किया गया था कि जिन तारीखो (3 4 5 तथा 6 नवम्बर 83) मे परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित शताब्दी महोत्सव अजमेर मे हो उन्हीं तारीखो मे महर्षि दया द निर्वाण भवन मे भी निर्वाण शताब्दी महो सव मनाया जाए। परोपकारिणी सभा के शताब्दी महोत्सव के कायक्रमो से किसी प्रकार का टकराव न हो इस दृष्टि से यह निश्चय किया गया कि निर्वाण भवन मे महोत्सव का आयोजन सक्षिप्त एव प्रतीका मक हो।

महर्षि दयानन्द निवाण भवन मे शताब्दी महोत्सव के रूप मे निम्नलिखित कायक्रमो का आयोजन होगा।

1 ैनिक बहृद यज्ञ—

यह निर्वाण भवन मे प्रतिदिन प्रात काल ोन व मे यज्ञ का कछ विस्तार रूप होगा ौर इसमे चा े वेदो का सम्पि पारायण चलगा

2 गोष्ठियां—म याह्न म नि न लिखित विषयो पर गोष्ठि ा होगी।

1 आय समाज सविधान गोष्ठी 2 वेद प्रचारक गोष्ठी 3 पुरोहित गोष्ठी 4 कायकर्ता गोष्ठी।

सविधान गोष्ठी मे मुख्यतया यह विचार किया जाएगा कि आय समाज को कायकत्त प्रधान सगठन बनाने की दृष्टि से आ य समाज क सविधान मे क्या क्या परिवतन किय जाने चाहिए। वेद प्रचारक तथा प ोहित गोष्ठिया दोनो वर्गों के विद्वानो एव विद्यियो को अपने भाषणो सगीना उ ेशा तथा पौराहि य कम का अधिकाधिक प्रभावोत्पादक बनाने के लिए क्या क्या करना चाहिए इस पर विचार करगी। कायकर्ता गोष्ठी मे बैठकर पुरुष एव म िला कायकर्ता यह विचार करगे कि आय समाज क काय का क्या स्वरूप होना चाहिए कय कर्ता प्रमगवश वार्षिकोत्सवो तथा पर्वो त्सवो व आयोजन के स्वरूप पर भी विचार करग।

3 रात्रि म कोई क यक्रम नही होगा जिसम सभी भ ई और बहन परोपका रिणी सभा द्वारा आयोजि शता ्दी कायक्रमा म भाग ले सक

4 यास के म मिक पत्र (वे मार्ग) पत्र का शानदार विशेषाक का प्रक शन। यत्न किया जाएगा कि निर्वाण भवन मे पधारने वाले प्रत्येक भाई बहन को विशेषाक की एक प्रति प्रसाद के रूप मे भेंट की जा सके।

5 महर्षि चित्रावली वह हाल, जिसमे महर्षि का देहावसान हुआ था महर्षि जीवन चित्रो से सुसज्जित किया जाए।

6 महर्षि नगर वैदिक धम के प्रचार मे लगे हुए सन्यासियो वान प्रस्थियो तथा ब्रह्मचारियो के लिए बिना मूल्य भोजन व्यवस्था की जाए।

मह ष दयानन्द निर्वाण स्मारक न्यास अजमेर के अधिकारी एव कायकर्त्ता इस पशो पेश मे पड़ हुए थे कि जब परोपकारिणी सभा महर्षि निर्वाण शताब्दी का आयोजन कर ही रही है तब न्यास को महर्षि निर्वाण भवन मे शताब्दी महो सव आयोजन करना चाहिए या नही। बहुत सोच विचार के बाद न्यास ने शताब्दी महो सव के आयोजन का निश्चय कर लिया है। इस विषय मे यास का चिन्तन यह है कि जिस स्थान पर महर्षि ने अ तिम श्वास लिए थ उस स्थान पर कछ न कछ कायक्रम अवश्य होना चाहिए पर वह होना इस प्रकार चाहिए कि परोपकारिणी सभा के काय क्रम से न्यास के कायक्रम का टकराव न हो।

न्यास का चि तन यह भी है कि अपना कायक्रम आय समाज को पुनरु ज्जीवन तथा नई दिशा निर्देश देने वाला भी होना चाहिए केवल भीड़ भड़क्का इकट्ठा कर लेना न्यास को उचित नही प्रतीत होता है ऐस कायक्रमो से काय कर्त्ता थकान स भर जाते हैं पर आय समाज आगे नही बढ़ता है। न्यास ने बहुत सोच विचार कर उपयोगी काय क्रम ही बनाया है आशा है कि सभी क्षेत्रो मे इस निश्चय का स्वागत किया जाएगा।

आय भ ईयो तथा बहनो से सादर अनुरोध है कि वे अभी से शताब्दी आयोजना को सफल बनाने के लिए अजमेर पधारने की तयारी करना आरम्भ कर द और इस समय तयारी क लिए न्यास को अधिक से अधिक सहायता नीचे लिखे पत पर भे ने की कृपा कर। यदि असम्भव न हो तो प्रत्येक आय को इस शताब्दी महो सव मे अवश्य सम्मि लित होना च हिए क्योंकि द्वितीय शता ब्दी महोत्सव मे सम्मिलित होने का सौभाग्य सम्भवत हम म से किसी को नही मिलेगा।

प्रधान—नारायणदास मै कटारिया
मन्त्री भूदेव शास्त्री।

—

( 4 पृष्ठ का शेष )

पैदा हो रही है वो पहली किताब को लेकर हुई है। गुरु अर्जनदेव जी, गुरु तेग बहादुर जी गुरु गोबिन्द सिंह जी तीनों के बारे कुछ ऐसी बातें लिखी गई हैं जिन्हें मेरी कलम नही लिख सकती इसलिए मैं उन्ह यहा नकल के रूप मे भी दे नहीं सकता। इस किताब के माध्यम से सिख इतिहास के एक अत्यधिक गौरवमय श्री गुरु तेग बहादुर के बलिदान की घटना को बहुत ही भद्दे एवं अपमानजनक ढग से प्रस्तुत किया गया है। और मेरी कलम उसे यहा दे नही सकती क्योंकि मेरे दिल मे गुरु साहिबान के बारे मे अपार श्रद्धा है मगर इस किताब के माध्यम से सिख इति हास की मिट्टी पलीद की गयी है। इस किताब मे जो कुछ गुरु साहिबान के बारे लिखा गया है वह अक्षम्य है

अब मैं इस लेख के असली उद्देश्य की ओर आता हूं। मेरे अकाली दोस्त ध्यान से सुन ले। ये दोनो किताबें जिनका मैंने जिकर किया है पजाब सरकार के भाषा विभाग ने प्रकाशित की है और उस समय प्रकाशित की गई है जब पजाब में अकाली राज था। उस समय पजाब भाषा विभाग के डायरेक्टर पजाब के एक महान अकाली ज्ञानी लाल सिंह थे। ज्ञानी लाल सिंह आज भी सिख इतिहास के महान विशेषज्ञ और सिख मर्यादाओ व परम्पराओ के एक बहुत बड़ प्रवक्ता समझे जाते हैं। ज्ञानी लाल सिंह ने इन दोनो किताबो की जो भूमिका स्वयं लिखी है उस मे इस गव को व्यक्त किया गया है कि वह सिख इतिहास का एक नया रूप पेश कर रहे हैं यह दास प्रवृति का ही प्रतीक है कि ऐसी किताब प्रकाशित करायी जाती हैं जो सिख धम व सिख इतिहास के गौरवमय पक्ष के प्रतिकूल हैं और एक व्यक्ति जो अपने आप को पक्का सिख कहता है। टकसाली सिख कहता है वह इन किताबो के प्रकाशन पर गव महसूस करता है। क्योंकि यह अग्र जो की लिखी हुई हैं।

पाठकगण मैंने एक ही समस्या के दोनो पक्ष आपके सामने रखे है। मैंने जो लेख लिखा था वह भी आपके सामने है। जो साहित्य अकाली राज म एक बहुत बड़ अकाली न प्रकाशित किया था और जिसमे गुरु साहेबान का अपमान किया गया है वह भी आपके सामने है। जिन दो किताबो का मैंने इस लेख मे जिकर किया है वह एक सौ वर्ष वर्ष पहले दो अग्र जो ने लिखी थी। इनमे क्या लिखा गया है यह किसी को मालूम न था। अकाली राज्य मे एक अकाली ने यह पुस्तकें प्रकाशित करके सिख इति हास के वह पहलू दुनिया के सामने रख दिए हैं जो सरासर पूर्णतया निराधार है।

मुझ खेद है कि यह सब रहस्योद्घाटन करने पड़ हैं लेकिन जब किसी चीज की अति हो जाए तो उसका कोई न कोई जवाब देना ही पड़ता है। अकाली दोस्त मेरे खिलाफ मुकद्दमा चलाना चाहते हैं। मैं भी इसके लिए तैयार हू। मुझ अवसर मिलेगा कि मैं भी सिद्ध कर सक कि अकालियो ने स्वय गुरु साहेबान का कितना अपमान किया है और सिख इतिहास को कितने गलत रूप मे पेश किया है। गुरु साहिबान के बारे अकाली शासन के दौरान प्रकाशित इन दो किताबो में मे जो अपमानजनक शब्द इस्तेमाल किए गए हैं और जिनका इस लेख मे जिक्र नही किया गया वह भी अदालत मे पेश किया जाएगा और अदालत ही फैसला करेगी कि गुरु गोबिन्द सिंह का अपमान मैंने किया है या उन अकालियो ने जिनके राज मे और जिनकी इजाजत से यह किताब प्रकाशित की गई। यह किताबें सौ वष पूव प्रकाशित हुई थी लोग उन्हे भूल गए थे अब नई पीढ़ी के सामने यह सब रखने की क्या जरूरत थी? यदि इनमे गुरु साहिबान की प्रशसा की गई होती और अकाली सरकार उसे प्रकाशित करती तो समझ आ सकता था। अकाली कह सकते हैं कि एक सौ वष पहले अग्र जो ने गुरु साहिबान के हक मे जो कछ लिखा था वह हम अपनी नई पीढ़ी के सामने पेश कर रहे हैं लेकिन वास्तव मे पक्ष नह कुछ किया गया है जिसे सिख भाई तो एक ओर हिन्दू तक भी सहन नही करते।

पाठक गण ! इस लेख मे मैंने अपनी सफाई पेश कर दी है। किसी दूसरी अदालत की अपेक्षा जनता की अदालत को मैं प्राथमिकता देता हू। इस लिए अब जनता पर छोड़ता हू वह ही फैसला करे मेरा कसूर क्या है?

—वीरेन्द्र

## बाल जगत्—

# बच्चो ! मेहनती बनो, हिम्मत न हारो

ले —सुरेन्द्र मोहन 'सुशील' श्रीमती भाग्यवन्ती
सेवा सदन हसनपुर दिल्ली—92

बहुत समय पहले की बात है कि पाटली पुत्र (पटना) में चन्द्रगुप्त नाम का राजा राज्य करता था। वह गरीबो पर बड़ी दया करता था। वह गाव मे लोगो का हाल चाल पूछने के लिए महीने मे एक चक्कर जरूर लगाया करता था। एक बार वह गाव मे लोगों का हाल चाल पूछ रहा था और उनके कामो के बारे मे भी पूछ रहा था। लेकिन पास ही एक झोंपड़ी मे राजू नाम का गरीब लड़का और उसकी माँ रहती थी उसके मन मे भी यह बात थी कि एक बार राजा उसका भी हाल चाल पूछे।

राजा अपने नगर मे वापिस चला गया। उसके मन मे बार बार यही बात खटकती कि राजा उसका भी हाल चाल पूछे उसने यह बात अपनी मा को बताई मा ने कहा कि हम छोटे और गरीब लोग हैं हमको कौन पूछेगा लेकिन उसने हठ कर लिया था कि राजा उसका हाल चाल पूछे। वह बिना बताए ही घर से निकल पड़ा और रास्ते मे उसे एक महात्मा मिले उसने प्रणाम किया। महात्मा ने आशीर्वाद दिया और कहा कि—तुम अपने काम मे सफलता प्राप्त करो लेकिन उसने महात्मा से भी यही बात पूछी कि मैं चाहता कि एक बार राजा मेरा भी हाल चाल पूछे महात्मा उसकी इस बात पर गौर करते हुए बोले— बच्चा अभी तू नादान है छोटा है लेकिन राजू ने अपनी जिद पकड़ रखी थी उसके बार बार कहने पर महात्मा ने कहा कि एक उपाय है वह यह कि तुम भी उन मजदूरो के साथ काम करो जहा राजा के मजदूर एक महल बना रहे हैं। तुम वहा बहुत मेहनत से काम करना और जब मजदूरी लेने का समय आए तो तुम वहा से चुपके से निकल आया करना। उसके बाद तेरी बात स्वय ही बन जाएगी। राजू जल्दी ही महात्मा को प्रणाम कर वहा से चल दिया। उसने भी उन मजदूरो के साथ काम करना शुरू कर दिया। वह सबसे पहले काम पर आता सबसे आखिर मे जाता वह बड़ी सख्त मेहनत करता और जब पसे लेने का समय आता तो वहा से खिसक जाता।

जब पसे देने वाले ने देखा कि वह छोटा सा बालक सबसे ज्यादा काम करता है और मजदूरी लेते समय वह नजर नही आता। उसने यह बात राजा को जाकर बतलाई। तो राजा ने कहा कि कल से वह स्वय ही पैसे बांटेगा। सुबह सब काम मे लगे हुए थे साथ मे राजू नाम का वह बच्चा भी मजदूरी कर रहा था शाम को जब पैसे लेने के लिए सभी मजदूर इकट्ठ हुए तो वह बालक वहा से खिसकने ही वाला था कि एक मजदूर ने उसको बाह से पकड़ लिया और राजा के पास ले आया और राजा ने कहा कि— मैंने तेरी शिकायत सुनी है कि तुम सबसे अधिक मेहनत करते हो और मजदूरी नही लेते क्या बात है और तुम्हारा क्या हाल चाल है उसने सुना कि राजा उसका हाल चाल पूछ रहा है तो वह बहुत खुश हुआ उसने राजा से कहा—मैंने आज वह चीज प्राप्त कर ली जिसके लिए मैंने इतनी मेहनत की लेकिन राजा के समझ मे उसकी बात न आई तो राजा ने पूछा—आखिर बात क्या है? राजू ने शुरू से लेकर सारी बात बता दी इससे राजा बहुत खुश हुआ कि एक छोटे से गरीब बालक ने इस बात पर इतनी मेहनत की।

इस बात से खुश होकर राजा ने उसको अपनी सेना मे भर्ती कर लिया और उसको रहने के लिए अच्छा मकान दिया। उसके बाद राजा गाव मे सभी गरीबो का हाल पूछने लगा।

अत बच्चो कभी हिम्मत न हारो।

कैसे कैसे वीर और हिम्मत वाले हमारे देश मे बालक थे सो चन्द्र कवि के काव्य को पढ़कर जानो

छोटी उम्र से जिन बच्चो ने
श्रम की शिक्षा पाई।
आखिर तक फिर श्रम न छोड़ा
थी ऐसी बड़ाई।
जिसने शिक्षा पाई श्रम की मन मे
किया विश्वास
सौतेली मा की आज्ञा से राम गए
वनवास।
कहो भरत की कितनी उम्र थी
जिसने छोड़ा राज।
यह कह गद्दी के मालिक
हैं रामचन्द्र महाराज
अपना धर्म न छोड़ा सत्य सनातन
ज्ञान
ग्यारह वर्ष का बाल हकीकत दे गया
अपने प्राण।
दस और बारह वर्ष के बच्चे थे
ऐसे धर्म वीर।
दीवारो मे चुने गए दिखला तो
ऐसी नजीर।
चन्द्र कवि कहु छोटी उम्र थी जिस
की देखो माया।
चौदह वर्ष के थे भूलकर
जिसने हमे बचाया।

## आर्य समाज पंचपुरी गढ़वाल का वेद प्रचार सप्ताह

गढ़वाल के अन्तर्गत थीरोखाल विकास खण्ड में स्थित आर्य समाज पंचपुरी का प्रतिवर्ष की भान्ति इस वर्ष भी ऋषि तर्पण 23 अगस्त से जन्माष्टमी 31 अगस्त 83 तक वेद प्रचार सप्ताह का रोचक कार्यक्रम विकास खण्ड की चार ग्राम सभाओं और पाच छोटे बड़े विद्यालयो मे समारोह पूर्वक मनाया गया।

इस वर्ष प राम चन्द्र शर्मा भजनो पदेशक बिजनौर से बुलाए गए अत प्रचार काय मे और भी रोचकता रही। प्रचार सभाओ से पव वहद यज्ञ हवन होता रहा। गढ़वाल के अन्तराल मे यह समाज सव साधारण की दृष्टि मे एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

—

(2 पृष्ठ का शेष)

सकल्प शक्ति को बढ़ाने के लिए निराशा कमजोरी हीनता और दीनता की भावना को मिटाने के लिए वेद मे उत्साहमयी प्रार्थनाए की गई है। यजुर्वेद मे आया है—

तेजोऽसि तेजोमयि धेहि वीर्यमसि वीर्यमयि धेहि बलमसि बल मयिधेहि मन्युरसि मन्युमयि धेहि सहोऽसि सहो मयि धेहि

हे परमात्मन तू तेज स्वरूप है मुझ मे तेज धारण करा हे परमात्मन तू पराक्रम रूप है मुझ मे पराक्रम धारण करा हे परमात्मन तू बल स्वरूप है मुझे बल दे ओज दे साहस दे शक्ति दे क्रोध दे और सहिष्णुता दे

सकल्प शक्ति जहा मनुष्य की अपनी उन्नति के लिए आवश्यक है वहा इसका सचार दूसरो मे भी किया जा सकता है असत्यवादी को स्वाभाविक निद्रा या अर्ध निद्रा मे लेजाकर उसे सकल्प शक्ति द्वारा सत्य की ओर उन्मुख किया जा सकता है उसे आदेश दीजिए—

तुम्हे झूठ बोलने की आदत है वह बुरी है बहुत बहुत बुरी। झूठ बोलना पाप है। महानाश का कारण है तुम दूसरो की दृष्टि मे गिर जाओगे अत इस अशिव या दूषित प्रवृत्ति को दूर करो। शिव सकल्प रूप सत्य को धारण करो इसको दूर करना जरा भी कठिन नही करके देखो। सफलता तुम्हे मिलेगी

सकल्प की दृढ़ता के प्रयोगो का हमे स्वय भी अनुभव है गुरुकुल महाविद्यालय बैद्यनाथ धाम (बिहार) मे मैं अध्यापक और आचार्य भी रहा हू वहा मैंने मा बाप के पसे चुराने वाले जुआ खेलने वाले और दूसरे व्यसनो मे फसो को इससे बचाया है अध्ययन मे जरा भी रुचि न रखने वालो का शिव सकल्प के प्रयोगो द्वारा उत्साहित किया है। स्वप्न दोष हीनता की भावना और हिस्टीरिया से पीड़ित स्त्रियो को लाभ पहुचाया है शिव सकल्प की महिमा महान है इसीलिए इस मन्त्र मे कहा गया है तन्मे मन शिव सकल्पमस्तु वह मेरा मन शिव सकल्प वाला हो।

आज हर्ष का है उद्रेक
रगा गया जन्म भूतल को
अन्तरिक्ष को नभ के तल को।
स्थावर जगम सबके मन को
बन मृदिमा नई अनेक।
आज हर्ष का है उद्रेक
मना सखी आज मगल है
यह उत्सव है प्रिय कल्प कल है।
मेरा शुभ सकल्प अचल है
होगा नूतन अभिनय एक।
आज हर्ष का है उद्रेक
रसो निधि बहन बनकर
चढ़ा भावना की चोटी पर।
त्रिमल रसो से स्वर्ण कलश भर
रता है मेरा अभिषेक।
आज हर्ष का है उद्रेक

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

अत आइये हम भी उस प्रभु की उपासना करे

अम्भो अमो महः सह इति त्वोपास्महे वयम
अम्भो अरुण रजत रज सह इति त्वोपास्महे वयम
उरु पृथु सुभू भुव इति त्वोपास्महे वयम
प्रथो वरो व्यचो लोक इति त्वोपास्महे वयम
—अथर्व 13 4 50—33

हे प्रभो आप (अम्भ) रसमय है ज्ञानस्वरूप है (अम) बली हैं (मह) महिमाशाली हैं (सह) साहसी हैं (इति त्वा उपास्महे वयम) इस कारण हम आपकी उपासना करते है।

हे प्रभो आप (अम्भ) हम प्यासो के पानी हैं (अरुण) प्रकाशमय है (रजत) हम गरीबो की चादी है (रज) हम निर्बलो का रक्त है इस कारण हम आपकी उपासना करते है

हे प्रभो आप (उरु) सब शक्तिमान है (पृथु) सर्वव्यापक है (सुभू) सत्स्वरूप है भव चित्स्वरूप है इस कारण हम आपकी उपासना करते है

हे प्रभो आप (प्रथ) प्रख्यात हैं (वर) वरणीय हैं वर देने वाले हैं (व्यच) निस्सीम है (लोक) सर्वद्रष्टा हैं इस कारण हम आपकी उपासना करते है

आपकी उपासना हमे रस प्रदान करे ज्ञान प्रदान करे सद्गुणो का प्रवाह प्रदान करे

नमस्ते अस्तु पश्यत
पश्य मा पश्यत अथर्व 13 4 55

हे सबदर्शी आपको नमस्कार हो हे सबदर्शी मुझ भी देखो। (पुष्पाञ्जलि से)

वर्ष 16 अंक 25 16 आश्विन सम्वत् 2040, तदनुसार 2 अक्तूबर 1983, दयानन्दाब्द 159 । एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपए

वेदामृत—

# राष्ट्रोन्नति के मूल सात तत्व

ले—श्री आचार्य प प्रियव्रत जी वेद वाचस्पति

सत्य बृहदृतमुग्र दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञ पृथिवी धारयन्ति ।
सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरु लोक पृथिवी न कृणोतु ॥1॥

अर्थ—(बृहत्) महान् (सत्य) सत्य (बृहत) महान (ऋत) ऋत (उग्र) उग्रता अर्थात क्षात्र शक्ति (दीक्षा) दीक्षा (तप) तप (ब्रह्म) ब्रह्म शक्ति और (यज्ञ) यज्ञ, ये सात पृथिवी) पृथिवी को अर्थात हमारे राष्ट्र को (धारयन्ति) धारण कर रहे हैं (न) हमारे (भूतस्य) भूतकाल की और (भव्यस्य) भविष्यकाल की (पत्नी) रक्षा करने वाली (सा) वह (पृथिवी) हमारी मातृभूमि (न) हमारे लिए (उरु-) विस्तृत (लोक) प्रकाश और स्थान (कृणोतु) करे ।

हमारी मातृभूमि की—हमारे राष्ट्र की—महिमा निराली है । सात महा शक्तिए हैं—बृहत सत्य बृहत ऋत, क्षात्र शक्ति दीक्षा, तप ब्रह्म शक्ति और यज्ञ । इन सात महाशक्तियो के आधार पर ही कोई राष्ट्र बड़ा हो सकता है टि [illegible] सकता है आगे बढ़ सकता है और सब प्रकार की उन्नति कर सकता है । जिस राष्ट्र में ये सातों महाशक्तिया नहीं रह जाती वह स्थिर नही रह सकता आगे नहीं बढ़ सकता और किसी प्रकार की उन्नति नही कर सकता । हमारी मातृभूमि के लोगो मे ये सातो महा शक्तिया पूर्ण मात्रा मे विद्यमान हैं । इस लिए हमारे राष्ट्र का धारण—उसकी सत्ता—आदर्श कोटि का है । यह बढ़ है अवेद है आगे बढ़ रहा है और सब दिशाओ म भरपूर और निरन्तर उन्नति कर रहा है । अहं ! हमारी मातृभूमि कितनी गौरवशालिनी है जिसे ये सात महाशक्तिए धारण कर रही हैं ।

इन सातो महाशक्तियो से धारित है हमारी मातृभूमि ! तू हमारे भूतकाल की रक्षिका (पत्नी) भी है और हमारे भविष्यकाल की रक्षिका भी । हमारे राष्ट्र का भूतकाल बड़ा सुनहरा और गौरव शाली रहा है । भूतकाल मे हमारे राष्ट्र ने सब क्षत्रो मे खूब उन्नति की है । हमारे राष्ट्र के लोगो का जीवन भूतकाल मे सब दृष्टियो से आदर्श रहा है । हमारे पूर्वजो की चाली हुई ऊंची परम्परायें आज भी हे हमारी मातृभूमि ! तुझ मे अक्षुण्ण चल रही है । हम तेरे निवासी आज भी उनकी रक्षा कर रहे हैं । हे मा ! तेरा भूतकाल इसलिए महिमामय रहा है कि तेरे निवासी हमारे पूर्वजों के जीवन में इन सातो महाशक्तियो का निवास रहता है । हे मा ! हमारे भूत काल की भांति तू हमारे भविष्य की भी रक्षा करेगी । हमारे राष्ट्र का भविष्य भी बड़ा उज्ज्वल और चमकीला रहेगा । तुझ पर रहते हुए हम भविष्य मे भी सब क्षत्रो मे निर्बाध उन्नति करते रहेंगे । भविष्य में भी ये सातो महाशक्तिए [illegible] को सदा धारण करेंगी ।

इन सातो महाशक्तियो से धारित हे मातृभूमि ! तू हमें विस्तृत प्रकाश प्रदान कर और इस प्रकार जीवन के प्रत्येक क्षत्र मे अपने लिए खुला स्थान बनाने मे हमारी सहायता कर । मा तेरे निवासियो मे इन सातो महाशक्तियो क स्थित रहने का म० तो स्वाभाविक प र णाम होगा ही कि उन्हे विस्तृत प्रकाश प्राप्त हो जाए उनके चम [illegible] जाए उन्हें उन्नति के सब मार्ग दीखने लगें और उन्नति के सब साधनो का उन्हें बोध हो जाए । यह विस्तृत प्रकाश मिलने पर हे मा ! हम तेरे निवासी अपने लिए जीवन के प्रत्येक क्षत्र मे खुला स्थान तो बना ही लेंगे ।

मातृभूमि का वत्सल भक्त उसकी महिमा के गीत गाते हुए अपने राष्ट्र के लोगो मे विद्यमान जिन सात महाशक्तियो का उल्लेख वेद कर रहा उनके भाव को जरा स्पष्टता के साथ समझ लेना चाहिए ।

(क) सत्यम—राष्ट्र के अधिवासियो को सत्यप्रिय होना चाहिए । उन्हे असत्य से दूर होना चाहिए सत्य क्या है यह जानने के लिए उन्हे सदा तत्पर रहना चाहिए । सत्य तक पहुंचने के लिए शास्त्र गम्भीर अध्यवसायी सहानुभूति पूर्ण और कष्टसहिष्णु वृति और घटनाओ की तह तक जाने वाली सूक्ष्म बुद्धि की आवश्यकता होती है वह उनमे होनी चाहिए । और जब सत्य क्या है यह उन्हे पता लग जाए तो उसके अनुसार मन वचन और कर्म से उन्हे आचरण करने वाला होना चाहिए । मन्त्र मे सत्य के साथ बृहत यह विशेषण दिया गया है । बृहत का अर्थ होता है—महान ! इस विशेषण का भाव यह है कि राष्ट्र के अधिवासियो मे महान सत्य रहना चाहिए । उनके जीवन मे कोई भी क्षण ऐसा नही रहना चाहिए जिस मे वे सत्य से परे हो जाए । सत्य का आचरण उन के जीवन का अङ्ग हो जाना चाहिए ।

(ख) ऋतम—ऋत का अर्थ होता है—सत्य ज्ञान । अपने सामान्य प्रयोग मे सत्य और ऋत ये दोनो शब्द पर्याप्त के [illegible] आचरण करने को सत्य कहते हैं । परन्तु यह आवश्यक नहीं कि मेरा आचरण सत्य होगा तो मेरा ज्ञान भी अवश्य सत्य होगा । किसी बात का मेरा ज्ञान असत्य भी हो सकता है । परन्तु मैं असत्य ज्ञान को ठीक समझता हुआ उसके अनुसार आचरण कर सकता हूं । इस आचरण मे जहां तक मेरी बात का सम्बन्ध है [illegible] मैं सत्य पर हूं । परन्तु मेरा [illegible] ज्ञान वास्तव मे ठीक नहीं है इसलिए वह ऋत नहीं है । और इसलिए उस गलत ज्ञान पर आश्रित मेरा आचरण भी ऋत नहीं है । मेरा ज्ञान अनृत है और अनृत ज्ञान पर टिका होने के कारण मेरा आचरण भी अनृत ही है । सत्य बताता है कि [illegible] किसी बात को मैंने [illegible] समझा है वैसा ही मैंने समझा है वैसा ही मैंने आचरण भी किया है परन्तु मेरे ठीक समझने से ही तो कोई बात ठीक नही हो सकती । ऋत यह बताता है कि मैंने किस चीज को जैसा समझा है वह वास्तव मे है भी वैसी ही । ऋत इस प्रकार ज्ञान की सत्यता को द्योतित करता है । वेद मे यह शब्द सत्य ज्ञान का बोधक होता हुआ जगत के सत्य नियमो का बोधक भी हो जाता है । क्योकि जगत मे चल रहे सत्य नियमो के सही बोध पर ही हमारे ज्ञान की सत्यता अव लम्बित होती है । फलत ऋत विश्व मे चल रहे सत्य नियमो का उनके सत्य ज्ञान का और तदनुसार सत्य आचरण का द्योतक हो जाता है ।

राष्ट्र के लोगो में ऋत होना चाहिए इस कथन का भाव यह है कि उन्हे विश्व-ब्रह्माण्ड मे काम कर रहे भौतिक और आत्मिक नियमो का सच्चा ज्ञान होना चाहिए । उन्हे भौतिक और आत्मिक विद्याओ का पण्डित होना चाहिए । और इस ज्ञान एव इन विद्याओ के अनुकूल उनके आचरण होने चाहिए ।

मन्त्र म प्रयुक्त 'बृहत विशेषण जिस प्रकार सत्य के साथ सम्बद्ध होता है उसी प्रकार वह ऋत के साथ भी सम्बद्ध हो सकता है । क्योकि वह मन्त्र मे सत्य और ऋत शब्दो के मध्य मे प्रयुक्त हुआ है । उसका सम्बन्ध सत्य से भी जोड़ा जा सकता है और ऋत से भी [illegible] ऋत रहना चाहिए । उन्हे भौतिक और आत्मिक विद्याओ का आविष्कार और ज्ञान प्राप्त करने मे बहुत प्रयत्नशील होना चाहिए तथा इस ज्ञान के अनुसार आचरण करने मे भी उन्हे पूर्ण तत्पर रहना चाहिए ।

(ग) उग्रम उग्र शब्द उदग्र शक्ति और तेज व से क्षत्रिय का वाचक है । [illegible] यह पद [illegible] मे प्रयुक्त हुआ है और क्षत्रिय के तेज और शक्ति को द्योतित करता है । राष्ट्र के लोगो मे उग्रता रहनी चाहिए । उनमे तेज और बल रहना चाहिए । सामान्य प्रजा मे भी उग्रता होनी चाहिए और उग्रता के विशेष [illegible] क्षत्रिय लोग भी राष्ट्र मे बड़ी सख्या [illegible] रहना चाहिए ।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

# घृत और मधु से भी अधिक स्वादु मीठा बोलो

# कहनी—कथनम्

ले —स्वर्गीय स्वामी स्वतन्त्रानन्द सरस्वती जी महाराज

श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज वैदिक धर्म की एक बहुमूल्य विभूति थे। युवावस्था मे विरक्त होकर तुरीयाश्रम की दीक्षा लेकर देशाटन के साथ स्वाध्याय भी करते रहे। आपका स्वाध्याय अत्यन्त गम्भीर था। आप नित्य प्रति नियम से वेद का स्वाध्याय करते थे। स्वामी जी दयानन्दमठ दीनानगर और रोहतक के संस्थापक थे। उनका लिखा यह अमूल्य लेख पाठको के लिए उपयोगी समझते हुए दिया जा रहा है।

—सहसम्पादक

मनुष्य बोलने वाला—व्यक्तवाक प्राणी है अत प्रत्येक मनुष्य बोलता है। कई ऐसे होते हैं जो अपनी वाणी से अपना काम बिगाड लिया करते हैं। और अनेक ऐसे हैं जो बिगडे हुए काम को भी अपनी वाणी से सम्भाल लेते हैं बना लेते हैं। बोलते सभी हैं। किन्तु यह कहना कठिन है कि उनमे से कितने ऐसे हैं जिनको ठीक बोलना आता है। बोलने वाले को इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि वह ऐसा बोले जो उचित हो।

वेद मे बोलने के सम्बन्ध मे अनेक निर्देश हैं उनमे से कुछ एक पाठको की भेंट किए जाते हैं जिससे वे वेद की शिक्षाओ से लाभ उठा सकें।

## जैसा देखे वैसा कहे—

यादृगेव ददृशे तादृगुच्यते

(ऋ 5 44-6)

जैसा देखा जाता है वैसा कहा जाता है।

इस मन्त्र मे वक्ता को आज्ञा है जैसा देखो वैसा ही कहो। परन्तु कठिनता यह है कि अनेक बार मनुष्य देखता [illegible] कहेगा, तो उसका देखना भ्रमयुक्त होने से उसका कथन भी भ्रमयुक्त होगा, अत यथार्थ—सत्य ठीक बोलने के लिए यथार्थ जानना भी आवश्यक है। इस विषय मे वेदादेश इस प्रकार है—

2 ऋतं वदन्नृतद्युम्न सत्यं वदन्त्सत्यकर्मन्

(ऋ 9।113।4)

ऋत का—यथार्थ ज्ञान का कहने वाला ऋत से चमकता है। सत्य बोलने वाला कर्म भी सत्य अर्थात तदनुसार करे।

ऋत का अर्थ है जो वस्तु जैसी है उसे वैसा कहना। अर्थात् प्रथम जानते समय ऐसा यत्न करना चाहिए कि यथार्थ ही ज्ञान मिले। वह ज्ञान भ्रम युक्त न हो। ज्ञान के साधनो को निर्दोष करने से ही यथार्थ ज्ञान प्राप्त हो सकता है। जब कोई मनुष्य किसी विषय मे यथार्थ ज्ञान प्राप्त कर लेता है तभी वह ठीक कह भी सकता है अन्यथा नहीं। इसी प्रकार वह जैसा कहे वैसा करे भी। जो इस प्रकार ठीक जान कर तदनुसार यथार्थ कहता है और कथन के अनुसार करता है वर्तता है वही सदा सदाचारी है।

3—बोलते समय वक्ता की वाणी कैसी होनी चाहिए। इस विषय मे वेद का यह आदेश है—

घृतात्स्वादीयो मधुनश्च वोचत

ऋ 8।24।20

घृत और मधु से भी अधिक स्वादु—मीठा बोलो।

संसार मे मधु अत्यन्त स्वादु माना जाता है। और मधुमक्षिकाओ द्वारा प्रत्येक पुष्प के सार रूप मे ग्रहण किया जाता है इसी प्रकार मनुष्य का बोलना भी सारवान होना चाहिए। बोलते समय वाक्य को ठीक जानकर उसके तत्व को समझ कर जो बोला जाएगा वह मधुवत होगा।

घृत भी अत्यन्त स्वादु होता है। इसके सम्बन्ध मे पंजाब मे एक कथा है घी बनावे सालना बडी बहू का नाम अर्थात साग बनाते समय बडी बहू गृह मे मुख्य होने से इच्छापूर्वक स्वतन्त्रता से घृत डाल देती है इसस शाकादि अच्छा बन जाता है। छोटी बहू परतन्त्र होने से संकोचवश उतना घृत नही डालती अत उसका बनाया शाक स्वादु नही बन [illegible] बहू की ख्याति होती है कि बडी बहू शाक उत्तम बनाती है। वास्तव मे शाक का स्वादुपन घृत के कारण है। बडी बहू का उसमे विशेष कौशल नहीं है। इस दन्त कथा से घृत का महत्व स्वादुपन सिद्ध है। मनुष्य का बोल घृतवत स्वादु एवं स्निग्ध—प्रेममय होना चाहिए। इतना ही नहीं मधु और घृत दोनो की अपेक्षा से अधिक स्वादु होना चाहिए।

4 बुद्धि पूर्वक वाणी का व्यवहार करते हुए उसकी रक्षा करनी चाहिए—

ता जुषस्व गिरं मम वाजयन्तीमवा धियम्। वधूयुरिव योषणाम्॥

(ऋ 3।62।8)

उस ज्ञान देने वाली वाणी का सेवन कर जो बुद्धि की रक्षा करने वाली है। उसकी रक्षा ऐसे कर जैसे वधू की कामना करने वाला मनुष्य स्त्री की रक्षा करता है।

इस मन्त्र में भगवान उपदेश देते हैं कि मनुष्य को अपनी वाणी की रक्षा सावधानी से करनी चाहिए। पति अपनी वधू की रक्षा अपनी पूरी शक्ति से करता है। इसी प्रकार मनुष्य को अपनी वाणी का सदुपयोग ही करना चाहिए। दुरुपयोग नही। आवश्यकता पडने पर ही बोलना चाहिए अनावश्यक या व्यर्थ नहीं।

5—कुछ अन्य आवश्यक निर्देश—

सूक्तेभिर्वो वचोभिर्देवजुष्टैरिन्द्रा न्वग्नी अवसे हुवध्यै। उक्थेभिर्हि ष्मा कवय सुयज्ञा आविवासन्तो मरुतो यजन्ति।(ऋ 5।45।4

हे भगवन! जैसे ठीक ठीक जानते हुए मेल मिलाप दान सत्कार करने वाले विद्वान मनुष्य भली प्रकार कथन किए हुए विद्वानो से सेवित और प्रशंसनीय उत्तम वचनो द्वारा राजा तथा राजकर्मचारी ब्राह्मण क्षत्रिय तथा अन्य लोगो को शीघ्र ही अपनाने को मिलते हैं वैसे ही हम भी हो।

वचन बोलते समय जिन बातो का ध्यान रखना उचित तथा आवश्यक है उन आवश्यक बातो का इस मन्त्र मे उल्लेख है। यथा—।

(क) विद्वानो से सेवित—अर्थात शिष्ट भाषा मे बातचीत करो। गवारी या मूर्खों की रीति का अवलम्बन अच्छा नही होता। (ख) अच्छे वचन—अर्थात भद्दे बुरे वचन नही बोलने चाहिए। (ग) ब्राह्मणादि सब मनुष्यो के हितकारी—अर्थात सब के कल्याण की कामना से प्रेरित हो कर बोलना चाहिए। (घ) प्रशंसनीय जो भी सुने वह उनकी प्रशंसा करे तथा (ङ) ठीक ठीक जान कर तदनुसार बोलने चाहिए।

हमने इस लेख में केवल ऋग्वेद के ही मन्त्र दिए हैं। अन्य वेदो में भी इस विषय के प्रत्यक्षपात अनेक मन्त्र हैं। स्मृतियो तथा नीतिग्रन्थो में भी इस विषय के अनेक श्लोक मिलते हैं। किन्तु विस्तार भय से उन जानबूझ कर छोड दिए गए हैं।

कहनी के सम्बन्ध मे हमें एक घटना स्मरण हो आयी है। उसे हम यहा लिख देते हैं जिससे यह बोध होता है कि जो अवसरानुसार बोलना जानता हो वह किस प्रकार अपने पक्ष की पुष्टि करके अभीष्ट सिद्धि कर लेता है। हम उस घटना के सब पहलुओ से सहमत नही हैं। तथापि घटना के यथार्थ और शिक्षा प्रद होने से उसका यहा उल्लेख करते हैं।

सुन्दरपुरी तथा तोतापुरी नाम के दो साधु थे। दोनो को धूम्रपान का व्यसन था। घूमते फिरते वे एक बार पटियाला नगर में पहुंचे। रात्रि को किसी स्थान मे उन्होने आसन किया। दैवयोग से उनका तमाकू समाप्त हो गया। रात्रि को वे विवश होकर सो गए। दूसरे प्रात काल उठकर सुन्दरपुरी जी ने अपने साथी से कहा तमाकू शेष हो गया है। चलो पास की कोठी वाले सरदार से तमाकू के लिए धन मांगें। तोतापुरी ने कहा—पटियाला सिख राजा की राजधानी मे और उसमे सिख सरदार से तमाकू के लिए धन मांगना तिरस्कार को बुलाना है। धन तो क्या मिलेगा। हा जूतो या गालियो से सत्कार अवश्य होगा।

सुन्दरपुरी ने कहा—तू घबरा मत मेरे साथ चल तू पीछे ही रहियो। मांगू गा मैं तू न मांगना। न मिलेगा तो लौट आएंगे। जूते मिलने लगें तो तू वहा से भाग आना।

इस पर वह सहमत हो गया। दोनों सिख सरदार की कोठी मे गए। तोतापुरी पीछे ही रहे। आगे न बढे। सुन्दरपुरी जी ने आगे आ कर, नौकर से कहा सरदार जी कहा हैं? नौकर ने उत्तर दिया अन्दर हैं। साधु ने कहा जाकर कहो बाहर महात्मा खडे हैं आप से मिलना चाहते हैं। नौकर ने अन्दर जा कर साधुओ का सन्देश जा सुनाया। सरदार जी सुनकर बाहर आ गए। और नमस्कार करके कहा महाराज क्या आदेश है? सुन्दरपुरी ने कहा सरदार जी! हमारा तमाकू समाप्त है। उसके लिए पैसे चाहिए। यह सुनते ही सरदार जी बिगड खडे हुए और लगे कहने—आप साधु हैं, घृत मांगिए, दूध मांगिए बादाम, मांगिए मीठा मांगिए, तो प्रसन्नता से दिया जाए। आपको लज्जा नहीं आती कि मुख से तमाकू मांगते हैं।

सरदार जी के मुख से घृत दूध की बात सुन कर सुन्दरपुरी बिगड पडा और कहने लगा। ऐसे लोग ही साधुओ को बिगाडते हैं। पहले उन्हे घी दूध खिलाते हैं और पीछे कहते हैं कि साधु खराब हो गए हैं। साधु इन पदार्थों को खाएं तो खराब न होगा तो क्या होगा?

सुन्दरपुरी इसी प्रकार की बातें द्वारा प्रवाह कहने लगे, चुप होने में ही न आए। सरदार ने अपनी जेब से रुपया निकाल कर उन्हे दिया और कहा यहां से चले जाओ। सुन्दरपुरी ने रुपया उठाया और चल दिया। बाहर आकर अपने साथी तोतापुरी से कहा देख रुपया मिला या नही तू वैसे ही डरता था।

उस साधु को अवसरानुकूल कहना आता था। उसके बल पर ही एक सिख सरदार से तमाकू के लिए धन ले सका।

वैदिक धर्म के उपदेशको तथा प्रचारको को बात करने का ढंग सीखना चाहिए। यदि न सीखोगे तो प्रचार में सफलता दुष्कर है।

—

## सम्पादकीय—

# आर्यसमाज—एक नेतृत्वहीन संस्था

श्रद्धेय श्री महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना 1875 में की थी। अब उसे 108 वर्ष होने लगे हैं। पिछली एक शताब्दी में आर्य समाज ने जो कुछ किया है, वह इतिहास में स्वर्णमय अक्षरों में लिखा जाएगा। प्रत्येक आर्य समाजी उस पर गर्व कर सकता है। आर्य समाज ने धार्मिक, सामाजिक राजनैतिक और शिक्षा की दिशा में केवल अपने देशवासियों को नहीं, दूसरे देशों को भी एक नया मार्ग दिखाया है। जो वैचारिक क्रान्ति आर्य समाज ने पैदा की थी, कोई दूसरी संस्था नहीं कर सकी। राजनैतिक संस्थाएं तो अपने किसी लक्ष्य को सामने रख कर काम करती हैं। आर्य समाज ने जो कुछ भी किया है, निस्वार्थ भावना से किया है। इसलिए देश की प्रगति व उन्नति में उसका योगदान अत्यन्त सराहनीय रहा है।

परन्तु आज 108 वर्ष के पश्चात विशेषकर उसकी एक शताब्दी के पश्चात हम उसका जो रूप देख रहे हैं, वह अत्यन्त ही निराशाजनक है। नवम्बर के प्रथम सप्ताह में अजमेर में हम महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी मनाने जा रहे हैं। आज जब कि अब उसमें केवल डेढ़ मास बाकी रह गया है, आर्य जगत में कोई उत्साह दिखाई नहीं देता। अजमेर में इस शताब्दी की जो तैयारी हो रही है उसके विषय में भिन्न 2 प्रकार की बातें सुनने को मिल रही हैं। कई समाचार पत्र जो कुछ लिख रहे हैं उसे पढ़ कर दिल बैठ जाता है और ऐसा प्रतीत होता है कि अजमेर में वह सन्तोषजनक प्रबन्ध न हो सकेगा जो कि ऐसे समय में होना चाहिए। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा किसी कारण से इस समय तटस्थ है और वह अजमेर शताब्दी के प्रबन्ध में कोई सक्रिय भाग नहीं ले रही। ऐसा प्रतीत होता है कि परोपकारिणी सभा के अधिकारी भी सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों का सहयोग नहीं चाहते। इसलिए दोनों में आपस में कोई तालमेल नहीं है। इस का जो परिणाम निकल सकता है वह भी धीरे धीरे सामने आ रहा है। जहां तक परोपकारिणी सभा का सम्बन्ध है उसके अधिकारियों में भी आपस में वह सहयोग नहीं जो होना चाहिए। इस समय इस शताब्दी को सफल बनाने का सारा बोझ श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी महाराज ने और कुछ दूसरे महानुभावों ने अपने ऊपर ले रखा है। इस समारोह का केन्द्रीय कार्यालय अजमेर में न हो कर देहली में प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय में बना हुआ है। उस सभा के मन्त्री महोदय और दूसरे अधिकारी जो कुछ उनसे हो सकता है वह कर रहे हैं। इसका यह परिणाम है कि सारा प्रबन्ध दो भिन्न भिन्न स्थानों पर हो रहा है दिल्ली में और अजमेर में। और यह पता नहीं चल रहा कि अन्त में किसका उत्तरदायित्व इसे सफल बनाएगा। इस शताब्दी के लिए जो धन एकत्रित होना चाहिए था वह भी नहीं हो रहा। निश्चित रूप से अभी कहना कठिन है कि अजमेर में कितने व्यक्ति पहुंचेंगे। उनकी संख्या दो तीन लाख तक पहुंच सकती है और हो सकता है कि इससे भी अधिक हो जाए। उन सब के ठहरने और खाने पीने का प्रबन्ध कैसे होगा। इसके विषय में भी अभी कुछ कहना कठिन है। यह तो निश्चित समझना चाहिए कि लोग वहां पहुंच जाएंगे। पहुंचने के पश्चात वहां क्या होगा? यह सोचने वाली बात है।

अब यह भी प्रकाशित हुआ है कि स्वामी इन्द्रवेश और अग्निवेश दिल्ली में एक अलग समारोह कर रहे हैं। इसके लिए उन्होंने कुछ धन इकट्ठा कर भी लिया है कुछ और कर लेंगे। उनकी ओर से एक ज्ञापन भी प्रकाशित हुआ है, जिसमें 100 से अधिक व्यक्तियों के नाम दिए गए हैं। अब पता चल रहा है कि कुछ लोगों से बिना पूछे ही उनके नाम दिए गए हैं। उस शताब्दी समारोह के लिए भी जो प्रचार हो रहा है, उसका कुछ न कुछ प्रभाव तो अजमेर की शताब्दी पर भी पड़ेगा। यदि एक ही शताब्दी होती तो लोग बहुत अधिक अजमेर पहुंचते इसीलिए सार्वदेशिक सभा ने अपने पहले निर्णय को बदल कर अजमेर में ही शताब्दी करने का फैसला किया था। यदि सार्वदेशिक सभा के अधिकारी और परोपकारिणी सभा के अधिकारी ये दोनों मिल कर अजमेर की शताब्दी करते तो आज जनता में उत्साह का ठाठें मारता समुद्र दिखाई देता। अब स्थिति यह है कि अजमेर शताब्दी में सार्वदेशिक सभा कोई रुचि नहीं ले रही। परोपकारिणी सभा के अधिकारियों का भी आपस में वह सहयोग नहीं जो होना चाहिए और उसी के साथ एक और शताब्दी की भी तैयारी हो रही है।

यह है आर्य समाज का रूप जो हम आज देख रहे हैं। 1975 में आर्य समाज की स्थापना शताब्दी दिल्ली में हुई थी। एक ही शताब्दी हुई थी और एक ही संस्था के अधीन हुई थी। इसलिए वहां लाखों लोग पहुंच गए थे अजमेर की शताब्दी का वह रूप न बन सकेगा। जो दिल्ली शताब्दी का बना था। इसका एक कारण यह भी है कि आज आर्य समाज एक नेतृत्वहीन संस्था बन गई है। हम प्रायः उन संस्थाओं पर आपत्ति करते हैं और उनकी निन्दा भी करते हैं जो अपने एक गुरु के अनुशासन में चलती हैं। वहां एक व्यक्ति का आदेश चलता है। लाखों लोग उसका पालन करते हैं। आर्य समाज में न तो कोई अनुशासन चल सका है न ही वह कोई ऐसा नेता पैदा कर सका है, जिसके कहने पर लोग बड़े से बड़ा त्याग करने को तैयार हो जाएं। आर्य समाज पहले ऐसे नेता पैदा करता रहा है। यही उसकी उन्नति का रहस्य था। उसके नेताओं की प्रतिभा उनकी योग्यता और उनके तप त्याग का जनता पर इतना प्रभाव हुआ करता था कि वे जो कुछ चाहते थे करते थे। जब किसी एक विशेष व्यक्ति का महत्व समाप्त हो जाता है तो उसके बाद कई बार किसी संस्था का महत्व बन जाता है। आर्य समाज ने कभी भी गुरुडम का समर्थन नहीं किया इसलिए आर्य समाज में कोई गुरु पैदा नहीं हुआ। परन्तु आर्य समाज ने बड़े बड़े नेता पैदा किए थे और उनके सहारे ही आर्य समाज आगे बढ़ता रहा। आज हमारी स्थिति यह है कि न तो कोई ऐसा नेता है न हमारी कोई ऐसी संस्था है जो नेतृत्व कर सके। इसी शताब्दी के विषय में बहुत देर तक सार्वदेशिक सभा और परोपकारिणी सभा में विवाद चलता रहा। यदि यह दोनों मिल कर इस समारोह को सफल बनाने का प्रयत्न करतीं, तो परिणाम कुछ और रहता। परन्तु आज इनमें से एक तटस्थ हो गई है दूसरी इस योग्य नहीं कि इतने बड़े समारोह का अकेली ही आयोजन कर सके। इसलिए यह कहना कठिन हो गया है कि अजमेर में क्या होगा? लोग कई प्रश्न करते हैं और पूछते हैं कि वहां क्या होगा इसका उत्तर आज किसी के पास नहीं। इससे ही मेरे इस विचार की सम्पुष्टि होती है कि आर्य समाज एक नेतृत्वहीन संस्था बन गया है। इसका कोई नेता होता, कोई आज श्रद्धानन्द या महात्मा हंसराज होता कोई महात्मा नारायण स्वामी होता तो सम्भव है कि यह स्थिति पैदा न होती। 1975 तक सार्वदेशिक सभा इस स्थिति में थी कि वह आर्य समाज की शताब्दी दिल्ली में मना सके। आज उसकी वह स्थिति नहीं रही। परोपकारिणी सभा को कभी भी इस बात पर जोर देने की आवश्यकता न रहती कि शताब्दी वही मनाएगी और अजमेर में ही मनाएगी अगर सार्वदेशिक सभा का आज भी वही सम्मान गरिमा और प्रतिष्ठा होती जो 1975 में थी। सार्वदेशिक सभा के शिथिल होने के कारण आर्य समाज को बहुत अधिक हानि पहुंची है। जहां प्रभावशाली व्यक्ति नहीं होते वहां संस्थाएं उस कमी को पूरा करती हैं। आज आर्य समाज में यह दोनों नहीं हैं। यही कारण है कि आर्य समाज किसी गिनती में नहीं है। तीन वर्ष हुए मीनाक्षीपुरम में आर्य समाज ने एक अभियान प्रारम्भ किया था। उसका सारे देश पर प्रभाव पड़ा था। यद्यपि अन्त में उसका श्रेय भी कुछ दूसरे व्यक्ति ले गए थे। मीनाक्षीपुरम के पश्चात आर्य समाज बिल्कुल ही सो गया है। इसलिए आज यह भी कहना कठिन हो रहा है कि अजमेर में जो शताब्दी मनाने जा रहे हैं वह कितनी सफल होगी। फिर भी उसे मनाना है। किसी व्यक्ति विशेष या संस्था विशेष के लिए नहीं मना रहे अपने आचार्य और गुरु के चरणों में अपनी श्रद्धांजलि भेंट करने के लिए यह शताब्दी मना रहे हैं। इसी के साथ हमने यह भी सोचना है कि जिस मार्ग पर हमें महर्षि दयानन्द छोड़ गए थे, हम उससे कहां तक भटक गए हैं।

—वीरेन्द्र

# "क्या आर्य समाज एक सम्प्रदाय है ?"

ले श्री प जयगोपाल शास्त्री विद्यावाचस्पति आर्य समाज दसूहा

मैंने अपने इस लेख का शीर्षक क्या आर्य समाज एक सम्प्रदाय है इसलिये रखा है क्योंकि प्राय लोग ऐसा ही प्रश्न किया करते हैं। लेखक से भी बहुतों ने ऐसा ही किया है। इस विषय पर प्राय आर्य समाज के विद्वानों ने प्रत्युत्तर भी दिए हैं फिर भी मैंने आर्य समाज को जहा तक समझा है मैं आर्य समाज को सम्प्रदाय कहने वालो से सहमत नही हू। हा यह तो मै महसूस करता हू कि आर्य समाज मे कुछ ऐसे व्यक्ति भी प्रवेश कर गये हैं जिन्होंने आर्य समाज को एक सम्प्रदाय बनाने का प्रयत्न किया है किन्तु अब तक आर्य समाज के नियम व आद्य गुरु महर्षि दयानन्द के ग्रन्थ उपस्थित हैं। वे ऐसा करने मे सफल नही हो सकते। इस विषय मे कुछ महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचार देना चाहता हू। स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश मे स्वामी जी अपने विचार व्यक्त करते हुए लिखते हैं कि 'मेरा कोई नवीन कल्पना व मत मतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नही है किन्तु जो सत्य है उसको मानना मनवाना और जो असत्य है उस को छोड़ना और छुड़वाना मुझको अभीष्ट है। यदि मैं पक्षपात करता तो आर्यावर्त्त मे प्रचलित मतो मे से किसी एक मत का आग्रही होता किन्तु जो जो आर्यावर्त्त व अन्य देशो मे अधर्म युक्त चालचलन है उनका स्वीकार और जो धर्म युक्त बातें हैं उनका त्याग नही करता न करना चाहता हू क्योंकि ऐसा करना मनुष्य धर्म से बहि है। ये शब्द महर्षि दयानन्द की भावना का प्रतिबिम्ब करते हैं। और इसी मे आगे लिखते हैं कि 'जो वेदादि सत्य शास्त्र और ब्रह्मा से लेकर जैमिनी मुनि पर्यन्तो के माने हुए ईश्वरादि पदार्थ हैं जिनको मैं भी मानता हू। सब सज्जन महाशयो के सामने प्रकाशित करता हू। मैं अपना मन्तव्य उसी को मानता हू। स्वय कोई मत चला कर महर्षि को गुरु या आचार्य बनना मान्य न था। प लेखराम कृत महर्षि दयानन्द जीवन चरित्र (पृ 475) मे भक्तो द्वारा पूछे जाने पर कि हम अपना धर्म क्या बताये महर्षि का समुचित आदेश था कि तुम अपना धर्म वेद ही बताओ। मुरादाबाद मे महर्षि ने अपने व्याख्यान मे कहा था कि तुम सबका वेद मत है। यदि ऐसा कहोगे कि हम दयानन्द स्वामी के मत मे हैं। तो कोई तुम से प्रश्न करेगा कि स्वामी दयानन्द और उनके गुरु किस मत के मानने वाले थे। तो तुम उत्तर नही दे सकोगे'।

आर्य समाज के सस्थापक के उपर्युक्त विचारो एव लेखो से आर्य समाज सम्प्रदाय नही बल्कि एक आदोलन है। जो समाज मे फैल कुरीतियो अन्ध विश्वासो एव अधर्म युक्त बातो को जड़मूल से उखाड़ फैंकने के लिए स्थापित किया गया था।

सम्प्रदाय अपने महापुरुषो के लिखे ग्रन्थो पर आधारित होते है जैसे ससार के प्रत्येक मत और समुदाय हिन्दू मुसलमान ईसाई कम्युनिस्ट आदि के दार्शनिक आधार बोपदेव के पुराण मोहम्मद साहब की वाणी कुरान ईसामसीह की बाइबिल और कालमार्क्स का कैपिटल आदि ग्रन्थ हैं किन्तु आर्य समाज मे ऋषि दयानन्द का सत्यार्थ प्रकाश मुख्य न होकर ईश्वर प्रदत्त वेद ही इसका आधार है। महर्षि स्वय को भी वैदिक धर्म का ही उपदेशक एव प्रचारक मानते थे। 19 मार्च सन 1877 को कर्नल अल्काट के नाम अपने पत्र मे लिखते हैं कि "मैं अपने सामर्थ्य के अनुसार वेद का उपदेश करता हू। सिवाय उपदेश के मैं कुछ अधिकार नही चाहता। तुम मुझ को कहीं सभासद लिख देते हो। मैं कुछ बड़ाई और प्रतिष्ठा नही चाहता। (दयानन्द सिद्धान्त भास्कर पृ 34)

यह ऋषि दयानन्द का ऋषिपन था, जिन लोगो को मौका मिला वे पैगम्बर और रसूल बनने मे नही कतराये। जिन्हें इतनी बड़ी हिम्मत न हुयी वे आचार्य व नबी बन गये। ऋषि का ही हृदय था कि आचार्य गुरु व परम सहायक तक के पदो को न स्वीकार किया। कारण यही था कि ऋषि दयानन्द अपने को परमात्मा के वेद ज्ञान का प्रचारक सत्य का साधन मात्र समझते थे। इससे अधिक कुछ नहीं। वहा न बड़प्पन की चाह थी न गुरुपन की बू। वहा तो एक ईश्वर पर विश्वास था और सत्य पर अटल श्रद्धा थी। यही कारण था कि इस वीर की एक ही गरज मे सदियो के जड़ गुम्बद के गढ़ हिल जाते थे और झुक जाते थे।

अत आर्य समाज एक आदोलन है न कि सम्प्रदाय। सम्प्रदाय के विरुद्ध बहुत कुछ लिखा जा सकता है। जिज्ञासु व्यक्ति ऋषि दयानन्द कृत सभी ग्रन्थो को स्वाध्याय करें तो सज्जन व्यक्तियो को आर्य समाज या वैदिक धर्म के ध्वज के नीचे ही आना होगा।

# गुरु विरजानन्द संस्कृत महाविद्यालय करतारपुर की आवश्यकताएं

1 अभी तक छात्रों तथा आचार्यों के लिये पर्याप्त मात्रा में कमरे आदि नही हैं। इसके लिए दानी सज्जनो की आवश्यकता है जो कि पूरे कमरे या उसके कुछ भाग का व्यय दे सकने में समर्थ हो।

2 पजाब में गुरु विरजानन्द जी का यह एक ही स्मारक है तथा गुरुकुल पद्धति पर शिक्षा देने वाला सम्भवत सस्कृत विद्यालय भी एक ही है। सभी धर्म स्थानो के मुख्य द्वार भव्य एव विशाल होते हैं और आप भी चाहेंगे कि इस स्मारक स्थल का मुख्य द्वार भी सुन्दर हो परन्तु इसके लिए भारी मात्रा मे धन की आवश्यकता है। नक्शा तैयार हो चुका है, दानी महानुभाव दान देकर हाथ बटाये।

3 हमें विद्यालय के व्यय को चलाने के लिए हर वर्ष हाथ फैलाना पड़ता है। कई बार व्यापारिक क्षेत्रों की आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी नही होती। ऐसी अवस्था मे दान मिलने मे भी बड़ी कठिनाई रहती है और पजाब का यह एक मात्र सस्कृत विद्यालय भी लड़खड़ाने लगता है। विद्यालय के दैनिक व्यय तथा वेतन आदि के भुगतान मे भी काफी कठिनाई होती है अत इसके समाधान के लिए स्थिर-निधि की आवश्यकता है जिससे कि ब्याज रूप मे ये खर्च पूरे होते रहें।

4 उच्चस्तर पर सस्कृत का अध्ययन करने वाले छात्रो को नियमित रूप में छात्रवृत्ति देने के लिए छात्रवृत्तिकोष की आवश्यकता है जिससे कि छात्र उत्साह एव सहायता प्राप्त कर अधिक उन्नति कर सकें। इस कोष मे आप अपने किसी इष्ट की स्मृति मे राशि दे सकते हैं। कोष का मूलधन सुरक्षित कर केवल ब्याज रूप मे प्राप्त धन की ही छात्रवृत्तिया प्रदान की जायेंगी।

5 अतिथि भवन तथा नि शुल्क चिकित्सालय की भी आवश्यकता है जो कि आपके द्वारा प्राप्त धन से ही बनाये तथा चालू किये जा सकते हैं।

6 ट्रस्ट एव विद्यालय द्वारा सुन्दर छपाई एव अच्छे कागज पर भव्य आकार प्रकार मे प्रति वर्ष सितम्बर अक्तूबर माह मे प्रकाशित होने वाली वार्षिक पत्रिका 'स्मारिका के लिए विज्ञापनो की आवश्यकता है। स्मारिका का आकार 7"—9 "है। पूरा पृष्ठ एक रगा की दर 500 है।

आप द्वारा दिए जा रहे प्रत्येक प्रकार के योगदान की हम सदैव बड़ी व्यग्रता से प्रतीक्षा करेंगे।

शिव चन्द — प्रधान

चतुर्भुज मित्तल — मन्त्री

# मानव सेवाश्रम छुटमलपुर का सेवा कार्य

छुटमलपुर जि सहारनपुर मे रुड़की रोड पर श्री श्रीराम जी पथिक के पुरुषार्थ से एक मानव सेवाश्रम कई वर्ष से कार्य कर रहा है। वहा असहाय और रोगियो तथा अनाथो की सेवा का कार्य निरन्तर किया जा रहा है। जिस रोगी को वह नहीं सम्भाल पाते उसे जालन्धर अमृतसर और दूसरे ऐसे स्थानो पर पहुचा दिया जाता है जहा उनका इलाज ठीक से हो सके। इस आश्रम का उद्देश्य प्राणी मात्र की सेवा करना है। अभी यह आश्रम अपने शैशव काल मे अगर जनता का सहयोग इस आश्रम को इसी प्रकार मिलता रहा तो आगे चल कर यह एक बहुत बड़ा सेवा का केन्द्र बन जाएगा। इसके सचालक श्री श्रीराम जी पथिक एक निष्काम तथा लगनशील कार्यकर्ता हैं जो वर्षों से अपने जीवन का उद्देश्य लोक सेवा बनाए हुए हैं और अपना सर्वस्व इसी सेवा कार्य को अर्पण किया हुआ है।

अब इस आश्रम मे एक धर्मार्थ होमियोपैथिक दवाखाना नि शुल्क खोल दिया गया है। डा कजान चन्द कपूर (रजि) एम एच एम डी एस इस दवाखाना को अपना पूरा 2 सहयोग देंगे, प्राकृतिक चिकित्सा तथा चुम्बक चिकित्सा भी श्रीराम जी एन.डी स्वय करेंगे इस प्रकार आश्रम का सेवा कार्य चल रहा है। दानी महानुभाव इस आश्रम को सहयोग दें और जरूरतमन्द लोग लाभ उठाये।

साराश रूप मे आश्रम के निम्न उद्देश्य हैं।

1 वृद्ध नर नारियो तथा विकलांग या अन्धे, बहरे गूगे व्यक्तियो को जो भिक्षा वृत्ति त्याग कर, स्थायी रूप से नियत स्थान पर जीवन सदाचार पूर्वक बिताना चाहें उन्हे बाहर के किसी अन्य विश्वस्त आश्रम मे भिजवाने का प्रयास करना।

2 अनाथ एव निर्धन छात्र छात्राओं को अपने नगर या ग्राम के किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति तथा अपने विद्यालय के मुख्य अध्यापक का पत्र लाने पर, शिक्षा सम्बन्धी यथा सम्भव सहायता करना।

3 पात्र युवक युवतियो को योग्य जीवन साथी ढूढने मे सहायता करना। इसके लिए विशेष नियमों की जानकारी जवाबी पत्र व्यवहार से करें।

4 प्राकृतिक तथा चुम्बक उपचारादि उपचारो के सम्बन्ध मे परामर्श देना।

5 8 दिन पूर्व सूचना देने पर यज्ञ (हवन) संस्कार व कथा का प्रबन्ध करना।

6 होमियोपैथिक दवाओं की सेवाए।

—धर्म देवार्य

स्वास्थ्य सुधा—

# फलों के गुण और उनसे चिकित्सा

ले —श्री डा नारायणदत्त योगी एन डी जालन्धर

(11 सितम्बर के अक से आगे)

## अनार

एक तोला मीठा अनार के रस मे बराबर भुना हुआ जीरा और गुड मिला कर दिन में तीन बार लेने से हर प्रकार कब्ज़ मे गुणकारी है।

2 अनार का छिलका बारीक करके च ...ाला ताजा पानी के साथ दिन मे दो बार दस दिन तक देने से मसाने की गर्मी तथा पेशाब बार बार आना ठीक होता है ।

3 मीठ अनार का छिलका बारीक छ माशे प्रात साय पानी के साथ 10 दिन तक खाने से खूनी बवासीर मे लाभदायक है।

4 अनार का छिलका छाया मे सुखाकर बारीक करके मजन की तरह मलने से खून बन्द तथा दात मजबूत होते हैं।

मीठा अनार ठण्डा और तर है। मीठा अनार ही खाना उत्तम है। इस से मेदे की दुबलता सग्रहणी दस्त और क (वमन) जल्दी दूर हो जाते हैं।

5 दस्त—अनार को छिलके समेत कट कर पानी निकाल ल। दस्तो के रोगी को तीन से पाच तोला तक पिलावें दस्त बन्द हो जावेंगे।

6 पेट दर्द —अनार के दाने निकाल कर इन पर नमक और काली मिच का चूण लगा कर चबाव। पेट दद दूर हो जाता है।

7 यदि भूख कम लगती हो तो अनार के दानो पर नमक मिच का चूण लगा कर खावें। भूख लगेगी ॥

## बादाम

बादाम दो प्रकार के होते हैं। मीठा तथा कडुआ। मीठा बादाम गर्म स्निग्ध वीर्य वद्धक तथा दिमाग को बढाने वाला है। इस मे विटामिन ए तथा बी बहुत पाये जाते हैं। बादाम स्वा स्थ्य तथा शक्ति को बना कर वृद्धावस्था को दूर करता है।

1 बादाम का सर्वोत्तम रूप बादाम दूध है। बादाम बारीक पीस कर दूध मे पकावें। उस मे घी, शकर मिला कर सेवन करने से मस्तिष्क शक्ति एव वीय की वृद्धि होती है।

2 बादाम बहुमूत्र के रोगियो के लिए अत्यन्त लाभदायक है।

3 बादाम के छिलके की राख तथा सधा नमक को मिला कर मजन करने से दात मजबूत होते हैं।

4 बादाम भिगो कर छिलका उतारा हुआ बादाम ठण्डा और तर है। चर्बी और रक्त उत्पन्न करता है। मस्तिष्क और नेत्रो के लिए अनुपम पदार्थ है मक्खन और मिश्री मिलाकर खाने मे शरीर मोटा होता है। स्मरण शक्ति बढाता है।

## गाजर

गाजर मधुर तिक्त रसयुक्त तीक्ष्ण अग्नि दीपक मल ग्राही रक्त पित्त अश ग्रहणी कफ तथा वात को दूर करने वाली है।

आख के प्राय बायोज ए की कमी से हो जाया करते है। गाजर मे प्राय बायोज ए सब से ज्यादा पाया जाता है। इसलिए आख के किसी भी रोगी को आप गाजर का रसाहार कराव। चिकित्सा मे पट एव आखो पर मिटटी की पटटी उष्ण पानी का एऐनिमा तथा आख की करसत करना अति आवश्यक है।

## खीरा

खीर ठण्डा होता है। इस मे विटामिन बी और सी भी होते हैं। प्यास को बुझाता है। मूत्र बहुत लाता है। खारे को नमक मिरच का चूण मिला कर खाव।

खीरा कब्ज को दूर करता है। खीरा खाने के एक घण्टा पहले या दो घण्टे पीछे ही पानी पी सकते हैं। अन्यथा हैजा होने का भय है।

## नारियल

सूखा नारियल गरम तर कच्चा न गरम न ठण्डा। मूत्राशय और गुर्दे की दुबलता मे लाभदायक है। मूत्र साफ लाता है। शरीर को मोटा करता है। कच्चा विशेष लाभदायक है। सूखा नारियल कुछ कब्ज करता है। खासी और दमे मे नही खानी चाहिए। नारियल का पानी पुष्ठ और मूत्रल है भूख लगाता है।

हरा नारियल के पानी के दो तीन गिलास जलोदर के रोगी को जिसके पेट मे पानी पड गया हो प्रतिदिन पिलाते रहने से कुछ दिनो मे जलोदर दूर हो जाता है।

(क्रमश)

# आर्य प्रतिनिधिसभा पंजाब से सम्बन्धित आर्यसमाजो के अधिकारियो की सेवा में

कुछ दिन हुए जब मैंने आपको लिखा था कि हम दीनानगर मे दो दिन के शिविर का प्रबन्ध कर रहे हैं। पजाब मे इस समय जो परिस्थितिया हैं उनमे आय समाज को क्या करना चाहिए और आय समाज के सगठन को किस प्रकार शक्तिशाली बनाया जा सकता है इन सब समस्याओ पर विचार करने के लिए यह शिविर आयोजित किया जा रहा है यह पहली बार है कि सभा द्वारा इस प्रकार के शिविर करने का प्रबन्ध हो रहा है। पिछले पत्र मे आपको लिखा था कि यह शिविर 15 16 अक्तूबर 83 को दीनानगर मे होगा। परन्तु 16 अक्तूबर को विजय दशमी है। इसलिए अब नई तिथिया 22 23 अक्तूबर 83 की रखी गई है। इस शिविर के विषय मे विस्तत रूप से सारी जानकारी तो आपको आगे चल कर दी जाएगी। इस समय केवल आपसे यही निवेदन करना चाहता हू कि आप अपनी आय समाज स 5 प्रतिनिधि या इससे कम अवश्य भेज। प्रतिनिधियो के ठहरने का प्रबन्ध आय हायर सकण्डरी स्कल दीनानगर म होगा। आप जिला आय सभा के प्रधान श्री रामकृष्ण जी महाजन द्वारा दयानन्द मठ दीनानगर (गुरदासपुर) को अवश्य सूचित कर द कि आपकी आय समाज से कितने प्रतिनिधि वहा आ रहे हैं? ताकि उनके ठहरने का उचित प्रबन्ध किया जा सके। यह शिविर शनिवार 22 अक्तूबर 83 को 11 बजे प्रात आरम्भ होगा। और 23 अक्तूबर को दोपहर का तीन बजे समाप्त हो जाएगा। जो महानुभाव वापस आना चाह वह आ सकते है

आपको यह भी मालूम है कि 3 नवम्बर से 6 नवम्बर 83 तक अजमेर मे महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी हो रही है पजाब मे जो महानुभाव जाना चाह उन्हे ले जाने के लिए विशेष बसा का प्रबन्ध किया जा रहा है। लुधियाना से डिलक्स बस का किराया दो सौ रुपया प्रति सवारी तथा साधारण बस का डढ सौ रुपया प्रति सवारी होगा। जो महानुभाव जाना चाहते हो तो वे 15 अक्तूबर तक अपने किराये की राशि सभा कार्यालय मे भेज द। वापसी पर यह बस जयपुर और पुष्कर मे भी ठहरगी। सभा यह भी प्रबन्ध कर रही है कि खाने पीने का सामान भी साथ ले चल। सम्भव है अजमर म प्रबन्ध ठीक न हो इस लिए उसकी तयारी करके आना चाहिए।

एक और विशेष बात की ओर आपका ध्यान दिलाना चाहता हू। कुछ व्यक्ति निर्वाण शताब्दी के लिए पजाब मे धन एकत्रित कर रहे हैं। यह मेरे विचार मे उचित नही है पजाब की आय समाज की तरफ से हम वहा एक थैली भट करना चाहते हैं इसलिए सब आय समाज अपना धन सभा को भेज। हमने प्रत्येक आय समाज के जिम्मे कछ राशि लगा दी है हम आशा करते हैं कि प्रत्येक आय समाज अपनी राशि अवश्य सभा को भेज देगी। यह राशि हमे 20 अक्तूबर 83 तक अवश्य भिजवा द। हम चाहते है कि पजाब की तरफ से एक बहुत बडी राशि वहा दी जाए।

—वीरेन्द्र

सभा प्रधान

# गुरुकुल करतारपुर मे यज्ञ के ब्रह्मा प्रसिद्ध विद्वान् प राजगुरु जी शर्मा होगे

2 अक्तूबर से गुरु विरजानन्द स्मारक टस्ट सस्कृत महा विद्यालय करतारपुर म आरम्भ होने वाले यज्ञ के ब्रह्मा आय जगत के प्रसिद्ध विद्वान पण्डित राज गुरु जी शर्मा होगे। उनकी स्वीकृति आ गई है वह समय पर आकर यज्ञ आरम्भ करा देगे। 2 अक्तूबर से जो यज्ञ आरम्भ होगा उसकी पूर्णाहुति 9 अक्तूबर को प्रात 9 बजे होगी। 8 तथा 9 अक्तूबर को विशेष उत्सव तथा शोभा यात्रा आदि के कायक्रम होगे। इस अवसर पर आय जगत के उच्च कोटि के विद्वान तथा आय नेता करतार पुर पधार रहे हैं पजाब के धम प्रमी सज्जन पधार कर उत्सव की शोभा बढाए।

# पंजाब के राज्यपाल को प. आशुराम जी द्वारा वेद की प्रति भेंट

श्री प आशु राम जी आर्य ने यजुर्वेद का उर्दू लिपि मे अनुवाद किया है ताकि उर्दू जानने वाले भी वेद पढ सके पंजाब के राज्यपाल श्रीमान अजीत प्रसाद शर्मा ने उन्हे इस पर निम्न बधाई पत्र लिखा। जो निम्न प्रकार है—

मुझे यह जानकर अतीव हर्ष हुआ है कि विश्व वेद परिषद चण्डीगढ (शाखा) ने यजुर्वेद का उर्दू लिपि मे अनुवाद उर्दू भाषा जानने वाले वेद प्रेमियो के लिए एक बहुत बडा काम किया है। जिससे न केवल भारत के ही अपितु विश्व भर मे उर्दू भाषा जानने वाले लोगो को इस अद्वितीय ग्रन्थ के अध्ययन का सौभाग्य प्राप्त होगा।

मैं इस ग्रन्थ के अनुवादक श्री आशु राम आर्य मन्त्री विश्व वेद परिषद चण्डीगढ (शाखा) को उनके अनथक परिश्रम के लिए बधाई देता हू।

श्री प आशुराम जी आर्य ने राज्यपाल को ऋग्वेद की एक प्रति भेट की जिसे उन्होने बडी प्रसन्नता से ग्रहण कर लिया। (अ प्र शर्मा)

# स्त्री आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार लुधियाना की ओर से पारिवारिक सत्संग

स्त्री आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार लुधियाना की ओर से 17 9 83 को साप्ताहिक सत्संग कुमारी सत्या जी आर्य के गृह शान्ति भवन डा वन्दावन रोड सिविल लाईन्ज मे हुआ बहिनो के उपदेशात्मक सुन्दर भजन हुए तत्पश्चात श्रीमती रमना जी आर्य ने सत्संग समिति महत्व हस्त सकिरा पर अपने विचार दिए जिसमे सभी बहिनो ने लाभ उठाया उपस्थिति बहु संख्या मे थी। परिवार को गायत्री मन्त्र का चित्र एव आर्य साहित्य भेट किया गया। सारे कार्यक्रम से प्रभावित एक अन्य बहिन ने अगला सत्संग अपने गृह पर करने को सादर निमन्त्रण दिया देवी जी के यज्ञ शेष बलने से सभी बहिनो का सत्कार किया गया

—निमला शर्मी
मन्त्राणी

# पठानकोट में संस्कृत अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता

आज देश मे संस्कृत के उत्थान विकास और प्रचार के महत्व पर सभी विद्वान और शिक्षा शास्त्री बल दे रहे हैं इस संस्थान ने इस विषय पर विचार कर बच्चो को संस्कृत के अधिक से अधिक श्लोक याद हो इस के लिए बच्चो को उत्साह के साथ तयार कराय तथा संस्कृत के विकास को प्रोत्साहन द सभी बच्चो को पुरस्कार दिए जायगे। बाहर से आने वाले बच्चो के लिए भोजन चाय और रहने की व्यवस्था रहेगी एक टीम म चार सदस्य भाग ले सकेंगे स्वीकृति शीघ्र भजने की कृपा कर

—कार्यक्रम—

दिनांक 2 अक्तूबर रविवार 1983
समय 2 बजे (बाद दोपहर)
स्थान आर्य समाज मन्दिर
मेन बजार पठानकोट

नोट मान्यता विद्यालयो का अतिरिक्त केवल स्कूल के छात्रो क सुविधा के लिए उसी स्वर अथवा व्यंजन पर बोलने के स्थान पर उस वर्ग पर बोलने की भी छूट है क्रमानुसार विभाजन इस तरह किया गया है। अ से अ कवर्ग चवर्ग टवर्ग त प यवर्ग आदि।

—प्रो स्वतन्त्र कुमार
मन्त्री

# अमृतसर में हिन्दी दिवस

आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार अमृतसर मे 18 9 83 रविवार को प्रात 10 30 बजे से 12 30 बजे तक बड समारोह स हिन्दी दिवस मनाया गया। जिसमे अमृतसर के आर्य बन्धु तथा हिन्दी प्रेमियो न सकडो की संख्या मे भाग लिया हिन्दी के प्रचार और अधिक से अधिक काय करने की जनता को प्रेरणा दी गई पत्र व्यवहार से लेकर विवाह आदि के कार्य सभी हिन्दी मे प्रकाशित काय किया जाए कार्यक्रम बहुत सफल रहा।

# हरपालनगर लुधियाना मे पारिवारिक सत्संग

18 9 83 रविवार प्रात 7 बजे स 8 30 बजे तक श्री वेद प्रकाश जी अग्रवाल हरपालनगर के घर पारिवारिक सत्संग मे प राम देव जी प्रभाकर ने यज्ञ कराया और वेद मन्त्रो की सुन्दर व्याख्या की सकडो बहन भाईयो ने लाभ उठाया 19 9 83 सोमवार डा जिन्दल जी हरपालनगर के घर पर पारिवारिक सत्संग हुआ हवन यज्ञ के पश्चात श्री प्रेम प्रकाश जी वानप्रस्थी ने अमृत वर्षा की जनता पर बहुत अच्छा प्रभाव पडा। —आत्मानन्द आर्य

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

(च) दीक्षा—किसी कार्य को दृढ संकल्प पूर्वक हाथ मे लेने को दीक्षा कहते हैं। राष्ट्र के लोगो मे दीक्षा होनी चाहिए उनकी शिक्षा ऐसी होनी चाहिए उनके शरीरो और मनो की साधना ऐसी होनी चाहिए कि जब वे भली भाति सोच विचार कर किसी काम को हाथ मे ले ल तो फिर उसे पूर्ण कर के ही विश्राम ल। विघ्न बाधाओ से घबरा कर अपने संकल्पित कामो को वे बीच मे ही छोड देने वाले न हो। एक बार किसी काम को करने का संकल्प कर लेने पर वे न तो किसी कष्ट और विपत्ति से विचलित हो और न ही किसी प्रकार के लोभ और लालच से डगमगाए। जिस दृढ निश्चय श्रद्धा और पवित्रता की भावना से यजमान यज्ञ मे दीक्षित होता है उसी भावना से राष्ट्र निवासियो को अपने सब काम करने चाहिए। यज्ञ दीक्षा का भंग होने पर यजमान जैसे अपने आप पापिष्ठ अनुभव करता है वैसे ही राष्ट्र निवासियो को अपने प्रारम्भ कार्यों को बीच मे ही छोड देने पर अपने आप को पापिष्ठ अनुभव करना चाहिए

(ड) तप —जीवन म कष्टसहिष्णुता और सरलता—सादगी की वृत्ति को तप कहते है राष्ट्र के लोगो मे तप रहना चाहिए उनका जीवन सरल और सादा रहना चाहिए उन्हे बीच बीच मे भाति भाति के कष्टो को स्वेच्छापूर्वक सहने का अभ्यास करते रहना चाहिए। सरल और सादा जीवन रखने तथा बीच बीच मे कष्टो को सहने का अभ्यास करते रहने का परिणाम यह होगा कि जब कभी उन्हे वयक्तिक अथवा सामाजिक कर्त्तव्यो का पालन करते हुए कष्टो का सामना करने का अवसर प्राप्त होगा तो वे उन कष्टो से घबरायगे नही। वे उन को वीरता से सहन करेगे जिनके जीवन मे सरलता सादगी और कष्ट सहने का अभ्यास नही होता। जो लोग ठाठ बाट बनाव साज सिंगार और विलास के जीवन मे रहते हैं—वे लोग कर्त्तव्य पालन मे कष्टो का सामना आ पडने पर उनको सहन नही कर सकते। वे अभ्यास न होने के कारण कष्टो से घबरा कर कर्त्तव्य से च्युत हो जाते हैं। इसलिये राष्ट्र के लोगो का जीवन तपस्वी होना चाहिए

(च) ब्रह्म —ब्रह्म ब्राह्मण को कहते हैं। ब्रह्म वेद को भी कहते हैं और भाति भाति के विद्या विज्ञानो को भी कहते हैं। वेद और विद्या विज्ञानो को पढते रहने के कारण ही ब्राह्मण को भी ब्रह्म कहते हैं। राष्ट्र मे ब्रह्म रहना चाहिए। उसमे वेद का प्रचार रहना चाहिए और वेदो पलक्षित भाति भाति के विद्या विज्ञानो के अध्ययनाध्यापन की व्यवस्था रहनी चाहिए सारी प्रजा मे ही वेद और विद्या विज्ञानो का भरपूर प्रचार रहना चाहिए। परन्तु इस के साथ ही राष्ट्र में ब्राह्मण नाम के विशेष व्यक्तियो की भी यथेष्ठ संख्या रहनी चाहिए। वैदिक शास्त्र मे अनेक स्थानो में कहा गया है इन ब्राह्मणो के जीवन का वेद और भाति भाति के विद्या विज्ञानो का अध्ययन और अध्यापन विशेष उद्देश्य होता है वे त्यागी तपस्वी संयमी परोपकार प्रिय और आत्मजयी लोग होते हैं। इन तत्वदर्शी लोगो के जीवन का एकमात्र उद्देश्य अपनी विद्या और संयम की ज्योति को सर्वसाधारण प्रजा मे निःस्वार्थभाव से फैलाते रहना होता है। ऐसे ब्राह्मण राष्ट्र मे सदा बडी संख्या मे रह सके इसका पूर्ण प्रबन्ध होना चाहिए।

(छ) यज्ञ—जब हम किसी समुदाय योगक्षेम को कल्याण को लक्ष्य में रख कर उस समुदाय का अंग होकर किसी काम को करने लगते है तो हमारा वह काम यज्ञ कहलाता है सामुदायिक योगक्षेमसमुद्दिश्य समुदायाङ्गतया क्रियमाण कर्म यज्ञ यज्ञ शब्द यज धातु से बनता है जिसका एक अर्थ संगतीकरण होता है। हमारे जो कार्य संगत होकर मिल कर किए जाते हैं वे सब यज्ञ कहलाते हैं। राष्ट्र के लोगो मे यज्ञ होने चाहिए। उन मे यज्ञशील की वृत्ति रहनी चाहिए। उन्हे राष्ट्र के कल्याण की भावना से परस्पर मिलकर काम करने की आदत होनी चाहिए राष्ट्र के लाभ और भलाई के लिए यदि उन्हे वयक्तिक लाभ और सुख छोडना पड तो वे उसके लिए भी सहर्ष उद्यत रहे। इस परोपकारमयी भावना से काम करने की वृत्ति को यज्ञ की वृत्ति कहते हैं। राष्ट्र के लोगो मे यह यज्ञ की भावना सदा स्थिर रहनी चाहिए।

जिस राष्ट्र के लोगो मे ये सातो महाशक्तिए विद्यमान रहेगी। जिस राष्ट्र के लोगो मे ये सातो गुण जीवन का अंग बन जाए गे वह राष्ट्र सदा धारित रहेगा वह सदा बना रहेगा। उसकी सदा उन्नति होती रहेगी। वह सदा ऊचा ही ऊचा उठता चला जाएगा और उसकी महिमा गौरव और श्री वृद्धि का कोई अन्त नही रहेगा। राष्ट्रो की उन्नति के विशाल भवन का मूल आधार होने के कारण ये सातो गुण वास्तव मे सात महाशक्तिए हैं।

वेद का मातृभूमि का अनन्य भक्त अपनी मातृभूमि की महिमा के गीत गाते हुए सात्विक अभिमान मे भर कर कह रहा है कि मेरे राष्ट्र के लोगो मे ये सातो गुण ये सातो महाशक्तिए विद्यमान है और इसीलिए मेरा राष्ट्र सब सर्वोन्नत है। मातृभूमि के भक्त द्वारा उसकी महिमा के गीत गवा कर भगवती श्रुति ने मनोहर कवितामय ढग मे राष्ट्रो की उन्नति के मूलभूत तत्वो का कितना मार्मिक वर्णन कर दिया है

वह दिन कितना स्वर्गीय होगा जब धरती के राष्ट्रो का प्रत्येक निवासी वेद के स्वर मे स्वर मिला कर अपनी मातृभूमि की महिमा मे अभिमान से भर कर गा सकेगा कि उसके देश के अधिवासियो मे सत्य आदि इन सातों तत्वों का पूर्ण निवास है। (जन-ज्ञान से साभार)

# नादान भुगत करनी अपनी ओ पापी पाप में चैन कहां ?

ले—श्री प रणवीर चन्द कुर्मा बस्ती सिकन्दराबाद

यह संसार कर्म भूमि अथवा कुरुक्षेत्र कहलाता है और बड़ी ही न्यारी इस कर्म की गति यहां कही गई है यहां व्यष्टि तथा समष्टि रूप मे जीव कर्म के फल को भोगता है कालान्तर अथवा जन्मान्तर मे परन्तु एक कर्म ऐसा है जिसका फल तत्काल होता है, ऐसे कि जैसे इस हाथ दे उस हाथ ले और वह है अग्निहोत्र रूपी यज्ञ कर्म जैसे इस अग्निहोत्र रूपी परम यज्ञ कर्म का फल बड़ा परोपकारी तथा तत्काल होता है वैसे ही गोवध रूपी जघन्य पाप का फल अति शीघ्र और घोर विनाशकारी होता है। कलियुग मे इस तमोगुणी वायुमंडल को आज इस संसार मे होने वाले गोवध ने और तमोगुणी आसुरी विनाशकारी बना दिया है यह अति विकृत प्रकृति नित्य अतिवृष्टि अनावृष्टि आदि द्वारा सूखा बाढो तूफानो आदि प्रकोपो उपद्रवो और क्लेशो को प्रकट करती हुई विनाश का आह्वान कर रही है और इसी हेतु अब यहां अन्न आदि का अत्यन्त अभाव होता जाएगा और उसका आयात भी तब न हो पाएगा।

हा! जिस पुण्य भूमि भारत पर संसार की पावन यज्ञशाला थी आज इस अधम संसार की घृणित गोवधशाला बनी हुई है। सारे यवन तथा अंग्रेजी काल मे इतना गोवध नहीं हुआ होगा जितना आज एक ही दिन मे स्वतन्त्र होने पर नित्य हो रहा है और यह गोवध ही निश्चय इस सारी अशान्ति अवनति अभाव, विनाश और भावी महाविनाश का मूल कारण तथा हेतु है। आज इस संसार के कुछ बचाव का एक ही रास्ता है कि यह गोवध अविलम्ब बन्द हो गोपूजा गोसंवर्धन हो और गोघृत के यज्ञो का सघन अनुष्ठान हो परन्तु वैसा कुछ भी यहां होता नहीं। यह पाप रूपी काटो का वन सघन अब बसना है और इसके चलते बिना फूलो का बाग बन नहीं सकता।

कै अब भयकरता मे परिणत हो गया है और अब यहां इस समूचे भारत मे सब प्रकार के विद्रोह विप्लव भड़क उठेंगे वे बन्द, हड़ताल राजनैतिक दलो के दबे पृथक् प्रान्तवाद का विष (किस स्थान के प्रश्न पर सिखो मे परस्पर फूट विनाश) और हिन्दू मुस्लिम फसाद सर्वत्र भड़केगा और भारी अराजकता फैलेगी। सबत्र लूटमार और अग्नि काण्ड होंगे और रक्त की धारा बहेगी और विश्व युद्ध अग्नि मे गोहत्यारा पिशाच संसार जलकर भस्म रह जाएगा चीन ईरान तथा अरब आदि यवन देश महान् क्षति को प्राप्त होंगे। (इस्लाम की चौदहवीं सदी भी अब पूरी हो रही है।) संसार के अनेक भूखण्ड जलों द्वारा दग्ध, लाल काले विषकुण्ड बन जाएंगे। बड़ा कठिन वह काल होगा। तब सब विद्वानों तथा वैज्ञानिकों का यह एक ही मत होगा कि गाय के गोबर मूत्र के बिना न तो यह दग्ध भूखण्ड विष रहित और पुन उपजाऊ बन सकते हैं और न ही गोघृत के यज्ञो के बिना यह आकाश मे भरा विष छन छट सकता है। तब अत्यन्त गोभक्ति जागृत होगी और योजनाबद्ध गोसंवर्धन यज्ञो का सघन अनुष्ठान प्रतिष्ठान होगा।

ऐसी सुलगती हुई दिशा मे संसार को वृहद् वैदिक अनुसंधान समिति दिल्ली द्वारा पूज्य ब्रह्मचारी कृष्ण दत्त जी महाराज के अनुपम प्रवचनो का पुस्तक रूप मे संग्रह संकलन सन्मार्ग प्रदान करेगा। अतीत के अद्भुत विज्ञान वैदिक ज्ञान विज्ञान के गोपनीय तथ्यो और इतिहास की वास्तविक वार्ताओ और कथाओ आदि की बड़ी प्रतिभाशाली सरल भाषा मे प्राप्त कर संसार आनन्द विभोर हुआ मननशील बना आहार व्यवहार की शुद्धता में यज्ञ और योग की ओर प्रवृत्त होता जाएगा और इसके प्रति करुणानिधान प्रभु का अतिशय धन्यवाद करेगा। युग पुरुष स्वामी शंकराचार्य और स्वामी दयानन्द के अद्भुत कार्य को भी संसार तब समझेगा और उनकी जय जयकार करेगा। यहां पूर्ववत संस्कृत और वेद-वेदांगो का पठन पाठन होगा अर्थात यह बैठा जाता हुआ (चार पाद वाला) धर्म रूपी बैल अपने एक पाद को कुछ सीधा करेगा। इस प्रकार विज्ञान और विवेक मे पारंगत होता हुआ यह आर्यावर्त (भारत) पुन संसार का शिरोमणि देश कहलायेगा। इतिहास मे आज का गोवध भरा यह कलंकित काल सदा काले अक्षरों मे लिखा जाएगा।

हम सब इस गोहत्या के पाप के भागी हैं इस गोवध के विरोध मे गोमहिमा और भावी विनाश के प्रति पण्डित जवाहरलाल से लेकर अद्यपर्यन्त कई मार्मिक पत्र सरकार को लिखे और काले झण्डो द्वारा प्रदर्शन प्रलाप भी किये परन्तु कुछ प्रभाव प्रतिफल न हुआ। गोरक्त से सिंचवा कर अब यह पिशाच संसार बच नहीं सकता। संसार की कर्मस्थली पर कर्म का फल भोगे बिना छुटकारा नहीं और पुन वही बात कहनी पड़ती है 'नादान भुगत करनी अपनी ओ पापी पाप मे चैन कहां।

## गऊ चर्बी खाद्य पदार्थों घी आदि में मिलाना घोर पाप है। तथा गोवध महा पाप है।

# "अजमेर चलो"

ले — श्री राधश्याम आर्य विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना सुलतानपुर (उ प्र)

ऋषि के जीवन से अनुपम सी चलो प्ररणा लने
चलो सपूतो! एक नए मग को उत्प्ररणा देने
वसुधरा यह आज तुम्हारी ओर निहार रही है
आर्य बनाओ इस जगती को कहती आज मही है

वेद ज्योति बिखराओ जग म तिमिर कठोर दलो।
ऋषिवर की निर्वाण शती है यह अजमेर चलो॥

उठता आज चतुर्दिक भू पर मानवता का क्रन्दन
दानवता का होता प्रतिपल अब ता नाडव नतन
रहा नहीं है सत्य धर्म का समरसता स्पन्दन
आर्य पुत्र ही आज कर रह रावण का अभिनन्दन

उठो शक्ति ले तुम अजय अब वृत्ति दानवी कुचलो।
ऋषिवर की निर्वाण शती है यह अजमेर चलो

ऋषिवर दयानन्द का सपना क्या कर पड़ा अधूरा
दयानन्द क सैनिक तुम ही उठो करो अब पूरा
ईर्ष्या द्वेष तथा मन के सब तुम दुराव अब छोड़ो
शपथ तुम्हे है दयानन्द की अनचित बन्धन तोड़ो

बन्ध कर एक सूत्र मे वीरो विश्व विजय को निकलो।
ऋषिवर की निर्वाण शती है यह अजमेर चलो॥

वही वही पर ऋषिवर ने था, अपना अन्तिम सांस लिया
स्वयं बुझ पर महिमण्डल को नूतन दिव्य प्रकाश दिया
उसी धरा पर आय सपूतो। चलो तुम्हे लेना संकल्प
आर्य बनो सब आर्य बनाओ शेष न कोई अन्य विकल्प

सर्वनाश की ज्वालाओ को शान्त अमर धारा मे बदलो।
ऋषिवर की निर्वाण शती है यह अजमेर चलो

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी पर

# प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी अजमेर आएंगी

निर्वाण शताब्दी समिति के कार्यवाहक प्रधान श्री प्रोफैसर शेरसिंह जी तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान लाला राम गोपाल शालवाले ने श्रीमती इन्दिरा गांधी को निर्वाण शताब्दी के अवसर पर अजमेर आने का निमंत्रण दिया। श्रीमती गांधी आगामी 3 से 6 नवम्बर को मनाई जाने वाली शताब्दी पर एक दिवस के लिए अजमेर आएंगी। इस अवसर पर श्रद्धाजलि समारोह के साथ ही आर्य सम्मेलन, दर्शन सम्मेलन, महिला सम्मेलन युवा सम्मेलन तथा एक मास का चतुर्वेद पारायण यज्ञ भी हो रहा है। जिसमें देश विदेश के लाखो आर्य नर नारी भाग लेंग।

मंत्री

# शताब्दी समारोह में सहायकों के प्रति निवेदन

शताब्दी समारोह मे सहायता करने के लिए स्थान स्थान पर सज्जन अपना योगदान कर रहे हैं। इस सहयोग मे दान दाता और संग्रहकर्ता दोनो ही हैं। शताब्दी समय मे थोडा समय रह गया है। सभी कार्य अब साध्य है। 18 सितम्बर की बैठक में अनेक समितिया समारोह को सफल बनाने के लिए गठित की गई। प्रत्येक समिति अपने रूप मे पूर्ण है। और आवश्यक है। अब कुछ समितियो के कार्य का विवरण सुना गया, तो उसके लिए पर्याप्त राशि के संचय की आवश्यकता प्रतीत हुई।

अत दान दाता जो भी दान देना अभीष्ट समझते हैं। शीघ्र ऐसे दानी अपना दान संग्रहकर्ता को देवे (जिनके पास दयानन्द आश्रम केसर गंज अजमेर की रसीद है) या सीधा ही यहां कार्यालय में भेजें।

संग्रह करने वालो से भी निवेदन है कि वे संग्रहीत राशि साथ साथ भेजते रहे जिससे यहा प्रणीत समितिया अपना काम सुचारू रूप से करने में सफल हो। और अपनी समस्त रसीद बुक 1 अक्तूबर तक वापिस लौटा दें जिससे उनका उत्तरदायित्व समाप्त हो जावे।

मैं यहां कार्यालय मे यतिमण्डल के प्रतिनिधि रूप मे आया हूं। एक सूचना परोपकारी मे निकल गई कि समारोह पर शुभागमन करने वाले बस यात्री और रेल यात्री अपने साथ आटा दाल चावल इत्यादि लेते आवें जो व्यावहारिक सिद्ध नहीं हुई। यदि यह खाद्य सामग्री पहले पहुंच जाती है तो उसका उपयोग सम्भव है।

उत्तम यही है कि उस सामग्री को वहीं बेच दिया जावे और वे रुपए तुरन्त यहां भेज दिए जावे यहां खरीद कर साफ करा के पिसवा कर रख लिया जावेगा तब यहा विश्वास जावेगा कि अब हम यात्रियो को आते ही भोजन दे सकेंगे? इस कार्य मे आप जितनी देर करेंगे यहा उतनी ही कठिनाई बढ़ेगी।

—वेदानन्द वेदवागीश
(यति मण्डल)

—

# पण्डिता राकेशरानी के विरुद्ध अभियोग वापिस लिए जाएं

गत दिनो आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार लुधियाना का वेद सप्ताह बड़े उत्साह से मनाया गया। श्री प० मदन मोहन जी विद्या सागर हैदराबाद वालो की वेद कथा होती रही और श्री रामनाथ जी शास्त्री के भजन होते रहे सभा को 701 रु० वेद प्रचार दिया गया इसी अवसर पर निम्न प्रस्ताव 4 9 83 को पारित किया गया।

आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार लुधियाना की यह सार्वजनिक सभा प० राकेशरानी सम्पादिका जन ज्ञान मासिक तथा अध्यक्ष दयानन्द संस्थान दिल्ली के विरुद्ध सरकार द्वारा किए गए अभियोगों की कड़ी निन्दा करती है। प० राकेश रानी हिन्दू समाज की प्रतिष्ठित लेखिका है। उन्होंने मुसलमानो तथा ईसाईयो द्वारा हिन्दू धर्म पर किए गए प्रहारो के उत्तर रूप मे जो साहित्य लिखा है। उसके कारण उन पर लगभग 25 अभियोग चलाए गए हैं। सरकार की यह मुसलमान तथा ईसाई तुष्टीकरण की नीति है।

यह सभा भारत सरकार तथा दिल्ली प्रशासन से जोरदार शब्दों मे मांग करती है कि उन पर चलाए गए सभी अभियोग शीघ्र अतिशीघ्र वापिस लिए जाए अन्यथा ऐसा न किया गया तो सारे हिन्दू समाज को सोचना पड़ेगा कि अपने धर्म की रक्षा के लिए उन्हें क्या पग उठाने चाहिए।

—मंगलदास पाल
मन्त्री

# लुधियाना में पारिवारिक सत्संग

आर्य समाज लुधियाना पश्चिम 180 माडल टाउन लुधियाना की ओर से श्री रमेश चन्द्र कश्यप के निवास स्थान दुर्गापुरी हैबोवाल कलां लुधियाना मे 25 9 83 को पारिवारिक सत्संग हुआ। हवन यज्ञ भक्ति संगीत के बाद प्रो० सुखदेव जी स्नातक का प्रवचन हुआ।

—



श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रेस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

ले—प्रा श्री भद्रसेन जी (होशियारपुर)

✻

भारतीय परम्परा मे अधिकतर महापुरुषो के जन्म दिन मनाये जाते हैं। परन्तु जिन महापुरुषो की मृत्यु किसी विशेष घटना के रूप में घटित हुई है उनके शहीदी दिवस भी समारोह पूवक सम्पन्न होते हैं। महर्षि दयानन्द की मत्यु स्वाभाविक नहीं थी वह अपने पीछे एक विशेष पृष्ट भूमि रखती है। जैसे कि यह बात पूणत स्पष्ट है अन्तिम दिनो मे महर्षि के सारे शरीर पर फफोल पड गए थे और उन्हे बहुत बडी सख्या मे दस्त भी आये थे। डाक्टर के इलाज से रोग उलटा बढा था। उन दिनो की सारी घटनायें महर्षि की मत्यु को एक योजना बद्ध षडयन्त्र सिद्ध करती हैं। जब महर्षि को जोधपुर से लाया जा रहा था तो माग मे एक डाक्टर (श्री लक्ष्मण) अकस्मात मिले पता लगने पर उसने इलाज किया जिस से कुछ लाभ हुआ। उसने महर्षि के पास रह कर उपचार करना चाहा पर न तो उसका अवकाश स्वीकार किया गया और न ही त्याग पत्र।

महर्षि ने अपने जीवन के अन्तिम दिनो रियसतो के राजाओ को नियमित पढाकर जिस प्रकार प्रभावित करन प्रारम्भ किया और भारतीय जनता पर महर्षि के प्रचार का विशेष प्रभाव होने लगा। जिसके परिणाम स्वरूप नव जाग रण के साथ भारतीयो को एक सूत्र मे पिरोने का प्रयास प्रारम्भ हो गया। वह तात्कालिक विदेशी सरकार को नही सुहाया। तब महर्षि के विरुद्ध एक षडयन्त्र रचा गया जोकि उनके निधन का कारण बना। अत महर्षि की मत्यु की घटना शहीदी पव की तरह अविस्म रणीय है। इसी लिए अत्याधिक समारोह के साथ इस प्रथम निर्वाण शताब्दी का आयोजन होना चाहिए।

महर्षि के मत्युकाल का वह घटना चक्र अपने आप मे एक अनठा प्रसग है क्योकि महर्षि को देखने वाले साधारण जन ही नही अपितु बड-बड डाक्टर भी दग थे। इतना अधिक शारीरिक कष्ट होने पर भी महर्षि ने बडी शान्ति और धैय स इसे सहन किया तथा स्वय सहष मरण को स्वीकार किया। जिस स्थिति को देख कर मनीषी गुरुदत्त एम ए नास्तिक से आस्तिक बनकर मह ष के लक्ष्य को पूण करने मे अनवरत त पर हो गए।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन विचार एव काय भी अपने आप मे एक अनुपम उदाहरण है। उन्नीसवी शताब्दी मे महर्षि ने एक वचारिक क्रान्ति की। महर्षि के विचार व्यावहारिक प्रगति शील जीवन्त तक सगत ही नही अपितु भारतीय शास्त्रो से प्रमाणित भी थे। क्योंकि जो भारतीय साहित्य और संस्कृति सहस्रो वर्षों से विद्यमान थी परन्तु कुछ ने उसके समग्र स्वरूप को सामने न रख कर उसका एकागी रूप ही प्रचलित कर दिया। जिसके परिणाम स्वरूप एक ईश्वर के स्थान पर अनेक देवी देवताओ का पूजन जन्मना ऊचा-नीचापन सामाजिक छुआछूत, स्त्री शिक्षा का विरोध और अनमेल विवाह आदि मान्यताय भारतीयो मे प्रचलित हो ही गई थी। महर्षि दयानन्द ने भारतीय शास्त्रो के प्रमाणो से ही उपयुक्त रूढियो का निरा करण करके जीवन का एक तक सगत जीव त रूप दर्शाया। जिसका साक्षात प्रमाण आज भी स याथ प्रकाश उपस्थित कर रहा है।

निर्वाण शब्द जहा जन्य अनेक अर्थों मे आता है वहा सुख आनन्द पूणता सफलता भी इस का अथ है। जैसे कि लब्ध नेत्र निर्वाणम अभिज्ञान शाकु त लम। महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन क पूणता, और सफलता की दृष्टि से यह आयोजन भव्य रूप मे होना ही चाहिए। महर्षि ने विशेष रूप से जीवन के अन्तिम पन्द्रह वर्षों मे जो कार्य किया है वह उनकी सफलता और पूणता का प्रत्यक्ष प्रमाण है। तभी तो आज भार तीय मान्यताओ और परम्पराओ मे अनेक परिवतन आए हैं।

महर्षि दयान द सरस्वती ने वेदो के प्रचार समाज सुधार भारतीय सस्कृति के पुनरुत्थान राष्ट्रभाषा हिन्दीके विस्तार, क्रातिकारी विचारो के प्रसार से भारत मे एक नई जागति ला दी थी। महर्षि द्वारा रचित वेदभाष्य वेदभाष्य ऋग्वेदा दिभाष्य भूमिका और स याथ प्रकाश आदि बड-छोटे ग्र थ उनके मह व को आज भी उजागर कर रहे हैं। इस सब के साथ मानव जाति के हिताथ इन कार्यों को सदा प्रवहमान रखने के लिए ही महर्षि ने आय समाज की स्थापना की। वस्तुत आय समाज की स्थापना ही महर्षि के जीवन तथा काय का पूर्ण सार है अत महर्षि के स्वप्नो को साकार करने का सारा का सारा उत्तरदायित्व आय समाज पर ही है। क्योकि आज और वेद की ज्योति सदा प्रज्वलित करने के लिए ही महर्षि ने आय समाज की स्थापना की थी।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के कार्य का उत्तराधिकारी होने से इस प्रथम निर्वाण शताब्दी के आयोजन को भव्य और सफल बनाने का उत्तरदायित्व आज के आय समाज के अधिकारियो पर आता है। क्योकि महर्षि ने अपने काय को पूण

# क्या नेता; मात्र-औपचारिकता नहीं निभा रहे ?

—स्वामी अग्निवेश

अभी सार्वदेशिक साप्ताहिक में शिरोमणि सभा के अध्यक्ष श्री राम-गोपालशाल वाले का आर्य जनता के नाम एक सन्देश छपा कि अजमेर मे नवम्बर 5 से 6 तक मनाए जा रहे महर्षि दया नन्द निर्माण शताब्दी से पूव कोई भी सस्था सम्मेलन न करें। बात कहीं अच्छी है। अनुशासन की बात है इसमे एक रूपता आनी चाहिए। इसके बाद सारा वष सभी सभाए, समाज तथा सस्थाए मनाना प्रारम्भ करेंगी। अभी तक जिस शताब्दी की गू ज जो अजमेर के माध्यम से होनी चाहिये थी वह नहीं हो पाई। जो सहयोग आर्थिक दृष्टि से मिलना था वह उसे नही मिला। इसका कारण स्पष्ट है कि अधिकतर छपी विज्ञप्तिया घोषणाए मात्र औपचारिक हैं दिखाना हैं थोथी है ऊपर से कुछ हैं अन्दर मे कुछ हैं। लोग सामूहिक रूप मे जोर नही लगा रहे। इनका जोर लगेगा जरूर किन्तु वहा लगेगा जहा इनका वर्चस्व होगा। नाम चाहे वे अन्तर्राष्ट्रीय रखें ब्रह्माण्डीय स से कुछ फर्क नही पडता। मैं बनारसी दास जी के विचारो से शत प्रतिशत सहमत हू कि आज समाज मे नारायण स्वामी जी के पश्चात वचस्वी तेजस्वी पुरुष नही रहे। लोगो मे ऋषि दयान द के प्रति श्रद्धा कम नही। वे श्रद्धावश सब जगह जायगे किन्तु उनमे भावी प्र रणा का सञ्चार कौन करेगा। सब के जत्थे आम जनता देख चुकी है। दो सम्मेलनो के समथको की सूचिया प्रसारित हुई हैं वह एक दूसरे से बढकर एक मे सौ के लगभग ता दूसरे मे तीन सौ के करीब 139 नाम तो ऐसे हैं जो एक घर म से ही तीन तीन घर वालो के नाम हैं। यह छल नही तो इसे और क्या कहा जाना चाहिए। मात्र यश के बाद तोतारटन्त यशरूप प्रभो। हमारे भाव उज्ज्वल कीजिये। छोड देवें छल कपट को मानसिक बल दीजिये। यह कब तक होता रहगा। कईयो को तो फर्ज करने के लिए ही आय समाज की स्थापना की थी। अत आज समाज के अधिकारी बनने का सीधा सा भाव है इस उत्तरदायित्व को सम्भालना। इस लिए प्रत्येक नगर के अधिकारियो को अपने कत्तव्य का अनुभव करते हुए अपने स्तर पर इस आयोजन को भव्य रूप देने प्रयास करना चाहिए और मिलजुल कर एक सुन्दर कायक्रम उपस्थित करना चाहिए।

—

वर्षों के पश्चात् इस [illegible] है। [illegible] सन्देह नहीं वह मात्र अपना ढोल पीटने के सिवाय उनका राग अब जारी रहेगा इससे अपनी भूख की पूर्ति के लिए। पयूष बल्ब से रोशनी कौन कब तक लेगा। फटे हुए कारतूसों से तुम किसी को कब तक डराओगे। दुबक टटोलकर तो देखो दयानन्द का नाम है भी किसी कोने मे व्यावहारिक रूप से तो नहीं है गोष्ठियो की तो चर्चाए हमने सुनी है दयानन्द को तुम आउट आफ डेट मानते हो इन लोगो को कुम्हार की तरह से किसी को पडोस बनाकर और किसी को वैसे हाथ फर कर एक स्थान पर इकट्ठा तो कर लेवे किन्तु उन मे प्र रणा की अग्नि कहा से फू केंगे तुम्हारी सम्मत सभी घोषणाए तब तक समाप्त हो गई होगी। मेरे विचार मे कोई भी नया खास पुराने विकारियो का मिश्रण रहेगा। लोग आयेंगे किन्तु मु ह लटका कर मात्र चेहरा दिखाने के लिए वे न अपनी थैली खोलेंगे न नारो का जवाब देंगे क्योकि यह सब अन्दर से होता है बाहर से नही। वक्ता अपनी वाचालता से परस्पर के पुल बाधगे।

उष्ट्राणा विवाहेषु गीतम गायन्ति गर्दभा।
परस्परम प्रशसन्ति अहो रूपम
अहो ध्वनि॥

इस से एक दूसरे के सम्मेलन मे हाजरी तो बढगी क्योकि अनेको सूबेदारो के इनमे नाम है अपने भाषण के पीछे जयकारे के लिए वे सौ पचासो का जुगाड तो करके ही ले आए थे।

ये सब औपचारिकताए किस काम आयेंगी सगठन मे दिखावे का भी महत्व है किन्त वह केवल और केवल दिखावा ही हो यह महत्वहीन हो जाता है। सगठन का निर्माण वही गम्भीरता सच्ची लगी से होता है। बात तो तब है जैसे दयान द के बलिदान के पीछे बलिदानी पैदा हुए जिसके नाम पर आय समाज अपने सौ वष पूरे कर सका क्या बलि-दान शताब्दी पर भी कुछ लोग ऐसे सकल्पी निकलेंगे जो दयान द की विचार धारा के लिए अपने को झोकेंगे। यदि ऐसा हुआ तो आयोजकों का प्रयास सफल माना जाएगा अन्यथा ये सब औपचारिकता होगी। जो आर्य समाज के लिए घातक और बाधक सिद्ध होगी। अत इन नेताओ को चाहिए इन औपचारिकताओं मे कुछ वास्तविकता का समिश्रण कर दें जिससे पूरा लाभ न तो कुछ तो लाभ हो। इस के लिए एकान्त मे बैठ कर अपना सर्वेक्षण कर लीजिए कि मैं एक बार सब को धोखा दे सकता हू किन्तु सब को सदा धोखा देता रहू यह नितात असम्भव है।

## सम्पादकीय

# गुरुविरजानन्द स्मारक सम्मेलन

गत वर्षों की तरह इस बार भी गुरु विरजानन्द स्मारक सम्मेलन 8 और 9 अक्तूबर को गुरु जी के स्मारक करतारपुर में आयोजित होगा। इसी के साथ गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय का वार्षिकोत्सव भी होगा वास्तव में यह सम्मेलन 2 अक्तूबर से ही शुरू हो चुका है। उस दिन हमारे देश के वेदों के बहुत बड़े पंडित और आर्य समाज के प्रसिद्ध नेता पंडित राजगुरु जी शर्मा ने यजुर्वेद पारायण यज्ञ शुरू कर रखा है। यह प्रतिदिन सुबह 6 30 से 8 30 बजे तक और शाम को 4 30 से 6 30 बजे तक होता है और इसकी पूर्णाहुति 9 अक्तूबर को सुबह 9 बजे डाली जाएगी

श्री स्वामी विरजानन्द जी महाराज का हमारे देश के धार्मिक इतिहास में एक विशेष स्थान है। पिछले एक सौ वर्षों में देश ने धार्मिक और सामाजिक क्षेत्र में जो प्रगति की है और देश की स्वाधीनता के लिए जो संघर्ष किया है उसका बहुत कुछ श्रेय आर्यसमाज को मिलना चाहिए। लेकिन आर्य समाज की भी स्थापना न होती यदि महर्षि दयानन्द सरस्वती न आते और महर्षि दयानन्द भी उस शिखर पर न पहुंचते यदि गुरु विरजानन्द के चरणों में बैठकर उन्होंने शिक्षा ग्रहण न की होती। इसलिए जो सुधार हमारे देश में धार्मिक व सामाजिक क्षेत्र में हुए हैं वह न हुए होते। इसका श्रेय बहुत कुछ स्वामी विरजानन्द को ही मिलना चाहिए। वह एक स्रोत थे जहां से शिक्षा तथा ज्ञान की लहर निकलनी शुरू हुई और वही फलती फूलती समस्त देश में फैल गई। कुछ लोगों का तो यह भी विचार है और इसका प्रमाण भी मिलता है कि 1857 में हमारा जो पहला स्वाधीनता संग्राम शुरू हुआ था उसके पीछे भी गुरु विरजानन्द का हाथ था।

गुरु जी महाराज का जन्म करतारपुर के निकट एक गांव गंगापुर में हुआ था। कुछ लोग कहते हैं कि उनका जन्म 1779 में हुआ था कुछ कहते हैं कि 1797 में हुआ था। अभी वह 6 वर्ष के ही थे कि जब उनकी नेत्र ज्योति जाती रही। इसके बावजूद वह पढ़ते रहे। और उन्होंने सारा ध्यान संस्कृत पढ़ने में लगा दिया। वह समझते थे कि संस्कृत के बिना हम अपने देश के अतीत का कुछ अनुमान नहीं लगा सकते। अपने धर्म को समझने के लिए भी आवश्यक है कि हम संस्कृत पढ़ें।

इस लिए नेत्र ज्योति चले जाने के बावजूद उन्होंने संस्कृत पढ़नी शुरू की। और अपनी मेहनत तथा लग्न से वह अपने समय के संस्कृत के बहुत बड़े विद्वान समझे जाते थे। कहते हैं कि एक बार वहां गंगा के किनारे खड़े होकर संस्कृत में कुछ मंत्र बोल रहे थे अलवर के महाराजा विनयसिंह वहां से गुजरे गुरु विरजानन्द को देख कर वह खड़े हो गए और स्वामी जी के उनके मुख से निकल रहे मंत्रों को सुनते रहे। जब गुरु जी मंत्र पढ़ने का काम समाप्त कर चुके और महाराजा उनके पास गया और हाथ जोड़ कर कहने लगा कि वह उसके साथ अलवर चलें और वहीं रहें क्योंकि वह उनसे संस्कृत सीखना चाहता है गुरु जी उसकी बात मान गए लेकिन इस शर्त के साथ कि महाराजा 3 घंटे प्रतिदिन उनके पास आकर बैठेगा और वह जो कुछ उसे पढ़ाना चाहते हैं वह पढ़ेगा। महाराजा उनकी बात मान गया और गुरु विरजानन्द जी उसके साथ अलवर चले गए वहां महाराजा ने उन्हें अपने राजमहल में रहने के लिए स्थान दे दिया। और वह प्रतिदिन 3 घण्टे उनके पास आकर बैठ जाया करता था। किसी कारण वह एक दिन न आया। इस पर गुरु जी वहां से चल दिए। महाराजा अलवर ने उन्हें बहुत मनाने का प्रयत्न किया लेकिन वह न माने। अलवर से चल कर वह भरतपुर पहुंचे। वहां महाराजा बलवन्त सिंह ने 6 मास उन्हें अपने पास रखा। जब वह वहां से चलने लगे महाराजा ने उन्हें एक गांव दान और 400 रुपए भेंट किए उन्होंने वह भी लेने से इन्कार कर दिया और यह कह कर चले गये कि एक साधु संन्यासी को इन चीजों की आवश्यकता नहीं होती। उसके बाद कुछ समय इधर उधर घूमते हुए वह मथुरा पहुंचे और वहीं रहने लग गए। यहीं महर्षि दयानन्द सरस्वती उनके पास शिक्षा ग्रहण करने और वेद पढ़ने आए। गुरु विरजानन्द उन दिनों एक छोटी सी कुटिया में रहा करते थे जब महर्षि दयानन्द वहां पहुंचे तो कुटिया का द्वार बन्द था। महर्षि ने दरवाजा खटखटाया। अन्दर से आवाज आई तुम कौन हो? दयानन्द ने उत्तर दिया कि मैं यही तो जानने के लिए आया हूं कि मैं क्या हूं। उसके पश्चात वह वहीं रहने लगे और लगभग 3 वर्ष गुरु विरजानन्द के पास रहते हुए उन्होंने उनसे वेद तथा अन्य शास्त्र पढ़े। जब वह अपने गुरु से विदा होने लगे तो कुछ लौंग और इलायची लेकर उनके पास पहुंच गए तथा कहने लगे कि मेरे पास इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं जो मैं आपको गुरु दक्षिणा के रूप में दे सकूं इस पर गुरु विरजानन्द ने उत्तर दिया कि मुझे इसकी आवश्यकता नहीं है तुमसे केवल एक वचन लेना चाहता हूं। संसार में इस समय जो अन्धकार फैला हुआ है उसे मिटाने के लिए वेदों का प्रचार करो। मैंने तुम्हें जो कुछ सिखाया है वह घर घर पहुंचा दो ताकि हमारे देशवासी भी यह समझ सकें कि वेदों के रूप में हमारे पास कितना बड़ा खजाना है महर्षि दयानन्द ने उनके समक्ष सिर झुका दिया और यह वचन देकर अपने गुरु के चरण छू कर चले गए कि जो कुछ आपने कहा है वही होगा।

करतारपुर में गुरु विरजानन्द का जो स्मारक चल रहा है वहां बच्चों को संस्कृत पढ़ाई जाती है और यह कोशिश की जाती है कि गुरु विरजानन्द और महर्षि दयानन्द इन दोनों की विचार धारा को कार्यान्वित करने के लिए कुछ लड़के तैयार किए जाएं और मुझे यह कहने में अत्यन्त खुशी होती है कि यह विद्यालय उन आदर्शों को पूरा करने का प्रयास कर रहा है जिनके लिए यह स्थापित किया गया था।

8 और 9 अक्तूबर को जो सम्मेलन होगा उस में महिला सम्मेलन आर्य सम्मेलन और श्रद्धांजलि सम्मेलन के अतिरिक्त इस गुरुकुल के ब्रह्मचारी अपने व्यायाम के करतब भी दिखाएंगे 9 अक्तूबर को प्रातः 1 30 बजे पंजाब के मन्त्री श्री सरदारी लाल कपूर की अध्यक्षता में संस्कृत विद्यालय का वार्षिक अधिवेशन होगा इसके अतिरिक्त श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज श्री श्याम जी पराशर महात्मा वेदभिक्षु जी पंडिता राकेश रानी जी श्री चिन्तामणि जी और महन्त रामप्रकाश दास जी इन दो दिनों में वहां आकर अपने विचार जनता के समक्ष रखेंगे।

मैं अन्त में इस संस्कृत विद्यालय और विरजानन्द स्मारक ट्रस्ट के प्रधान श्री शिव चन्द्र अग्रवाल तथा मन्त्री श्री चतुर्भुज मित्तल को हार्दिक बधाई देना चाहता हूं कि दोनों की अनथक मेहनत और निरन्तर की लग्न से यह संस्था सफलतापूर्वक चल रही है और जिस उद्देश्य से यह शुरू की गई थी उसे यह पूरा कर रही है

—वीरेन्द्र

# जिला आर्यसभा गुरदासपुर का सराहनीय कार्य

हम आर्य समाजी इस बात पर तो गर्व करते हैं कि संस्कृत हमारी मातृभाषा है और यह सब भाषाओं का आधार है। हमारे सब धार्मिक ग्रन्थ संस्कृत में ही लिखे हुए हैं परन्तु हम संस्कृत की ओर कोई ध्यान नहीं देते। किसी और से क्या कहें आर्यसमाजी भी इधर ध्यान नहीं देते हमारी आर्यसमाजों में तो कई अधिकारी ऐसे भी हैं जो हिन्दी भी नहीं जानते। उनसे यह भी आशा नहीं की जा सकती कि वे संस्कृत पढ़ेंगे या उसका कोई प्रचार करेंगे। इसका यह परिणाम हो रहा है कि संस्कृत दिन प्रति दिन नीचे जा रही है और उसका जो प्रचार होना चाहिए वह नहीं हो रहा।

जिला आर्य सभा गुरदासपुर हम सब की बधाई और धन्यवाद की पात्र है कि उसने संस्कृत की ओर कुछ ध्यान दिया है। दो अक्तूबर को आर्यसमाज मन्दिर मेन बाजार पठानकोट में बच्चों की संस्कृत अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता हुई। और जो बच्चे उसमें सफल हुये उन्हें पारितोषिक भी दिया गया। इस समारोह का एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम यह भी था कि इसका निमन्त्रण पत्र भी संस्कृत में ही प्रकाशित किया गया। इस निमन्त्रण पत्र को देख कर मुझे यह विचार आया कि यदि सब आर्य समाज अपने उत्सव या किसी और समारोह के निमन्त्रण पत्र संस्कृत में प्रकाशित किया करें तो संस्कृत के प्रचार में यह बहुत बड़ा योगदान होगा आज तो संस्कृत पढ़ने वाले बहुत कम व्यक्ति मिलते हैं। यदि हम धीरे धीरे संस्कृत का अपने व्यवहार में प्रयोग करना शुरू कर दें तो संस्कृत का बहुत प्रचार हो जायेगा। यदि संस्कृत का हम अपने दिन प्रति दिन के कामकाज में अधिक प्रयोग करना आरम्भ कर दें तो देश की भाषा समस्या का भी समाधान हो जाये

मैं जिला आर्यसभा गुरदासपुर के अधिकारियों विशेषकर उसके महामन्त्री प्रो० स्वतन्त्र कुमार और संस्कृत श्लोक-अन्त्याक्षरी संयोजक श्री राम दत्त शर्मा को बधाई देता हूं कि उन्होंने हम सब का इस दिशा में मार्ग दर्शन किया है।

—वीरेन्द्र

# "हिन्दू राष्ट्र—आर्यों का चक्रवर्ति राज्य"

लेखक-म म वेदाचार्य व्यास एम ए बरेली

❋

हिन्दू राष्ट्र बनना चाहिये या नही। इस विषय पर विवाद चल रहा है। एक लेख प सत्यदेव जी विद्यालकार का इस से पहले आर्य मर्यादा मे प्रकाशित हो चुका है। उस के उत्तर मे आज आचार्य विश्वश्रवा वेदाचाय व्यास का लेख प्रकाशित कर रहे है। यदि कोई औरमहानुभाव इस विषय पर लिखना चाहे तो वह भी प्रकाशित कर दिया जाएगा।

—सम्पादक

आय मयादा मे प सत्यदेव विद्या लकार टकारा का एक लेख छपा—जिस का सराश यह है कि अब भी धम वालो के हाथो मे राज्य की बागडोर रही खन की नदिया बहा यदि मानिये हिन्दू राष्ट होगा तब भी वही होगा जैसा मुसलमानो और ईसाइओ का इतिहास साक्षी है।

इस का अथ यह हुआ कि भारत मे हिन्दू रा ट नही होना चाहिय मिली जुली सरकार हि दू मुसलमान ईसाईयो की भारत म है ऐसा ही रहना चाहिये। फिर तो भारत भी हिन्दुओ का देश नही रहना चाहिय। मुसलमानो के अनेक देश हैं। ईसाइओ के भी अनेक देश हैं। सारा योरोप अमेरिका आदि ईसाई देश हैं मुसलमान तो एक प्रतिशत भी किसी देश मे अधिक होते है उस को भी मुस्लिम राष्ट घोषित कर देते हैं। पर हिन्दू इतनी बडी सख्या मे वह भी अपने देश मे जहा सष्टि के आदि से रह रहे हैं उसको हिन्दू हिन्दू राष्ट न बनाय यह सलाह विद्यालकार जी की है। इस लेख को जिसने पढा होगा चकित ही रह गया होगा।

ऐसी स्थिति मे आर्यों के चक्रवर्ति राज्य क बात तो अब प्रलय के बाद ही सोची जावेगी जो महर्षि स्वामी दयानन्द की हृदय पीडा थी कि आर्यों का चक्रवर्ति राज्य था वह नही रहा अब कैसे हो।

(सत्यदेव जी को मिथ्या भ्रान्ति)

जो मुसलमानो और ईसाइयो ने किया वही हिन्दू करेगे यह विद्यालकार जी को मिथ्या भ्राति है। बगला देश के युद्ध मे पाकिस्तानी सनिक हजारो कुमारी बगाली मुसलिम कन्याओ को बलात्कार करके गभवती बना आये पर भारतीय सनिको ने किसी स्त्री को आख उठाकर नही देखा। शिवाजी का इतिहास प्रसिद्ध है कि उसके सनिको ने परम सुन्दरी रोशन आरा मुस्लिम लडकी लाकर शिवा जी को दी थी उस का पुत्री वत सत्कार करके शिवा जी ने उस वापिस उसके घर आदर के साथ भिजवाया। यहा मझ पाकिस्तान से पूव की घटना स्मरण आती है।

स्व स्वामी वदानन्द तीथ कराची से लाहौर को रेल से आ रहे थे एक मुसलमान अपनी सुन्दर लडकी का लिए कराची स्टेशन पर इधर उधर देख रहा था वह अपनी लडकी को अकेली लाहौर जाने को बठाने आया था और यह तलाश कर रहा था कि किसी के सुपुद कर दू जो लाहौर जा रहा हो। वह स्वामी वदानन्द तीथ जी के पास आकर पूछने लगा कि आप क्या लाहौर जा रहे है स्वामी जी ने कह हा तब वह मुसल मान बोला कि मेरी इस लडकी को आप अपने साथ ले जाइए और लाहौर उतरने पर इसको घर जाने क लिए टागा कर दीजिय आप की मेहरबानी होगी। स्वामी जी ने उस से पूछा कि क्या ट्रेन मे कोई मुसलमान लाहौर नही जा रहा है? उस ने कहाकि मैं हिन्दू पर विश्वास करता हू मुसल्मान पर नही। स्वामी जी ने लाहौर पहुच कर उसे उस के घर तक पहुचा दिया।

आर्यों के चक्रवर्ति राज्य का भी यह अथ नहा है कि चरण सिह जी अमेरिका के राष्टपति बनाये जायगे और बाजपेयी चीन के और राजीव गाधी जापान के राष्टपति होगे। यह हिन्दू वह जाति है जिस ने रावण को मार कर विभीषण को राजा बनाया बालि को मार कर सुग्रीव को गद्दी पर बठाया और जरासन्ध को मार कर उसके ही पुत्र सहदेव को राज्य सौंपा। यह जाति वह नही है कि बाप को जेल मे डालकर बेटा गद्दी पर बैठे। हिन्दू का इतिहास है कि अपने अपने देश मे सब अपने राजा हो। यही महर्षि ने सत्याथ प्रकाश मे लिखा है। धर्मात्मा युधिष्ठिर किसी देश मे राज्य करने नही गये पर सब उन्हे चक्रवर्ति राजा मानते थे और कारण यह बताते थे कि —

अस्य जम प्रकृतस्य पार्थिवस्य चिकीषन प्रयच्छाम करान सव

अर्थात सब देश के राजा युधिष्ठिर को चक्रवर्ती राजा इस लिए मानते थे क्योंकि वह पूर्ण धार्मिक था। उस के चक्रवर्ती राजा होते कही अधर्म नहीं हो सकता गये गुजरे जमाने मे भी देख लो। पाकिस्तान और बगला देश मे कितने शासक मौत के घाट उतारे गये पर भारत मे किसी की चुहिया भी नही मरी अत कश्मीर तभी तक सुरक्षित है जब तक भारत के हाथो मे है। अन्यथा फारूख अब्दुल्ला भी उसी रास्ते उतारे जा सकते हैं।

(आर्य और हिन्दू)

आर्य हिन्दुओ से कोई अलग नहीं है। स्वामी जी का कहना केवल इतना ही है कि इस देश के लोगों का नाम आर्य है हिन्दू नाम विरोधियो ने इस का घृणा के रूप मे रख दिया है वेद से लेकर तुलसी रामायण तक कही हिन्दू नाम नही है। शब्द का विवाद है। आर्य कहो चाहे हिन्दु बात एक ही है।

'पूर्व कृतस्यनसोऽवयजनमसि

(यजुर्वेद)

अर्थात बुजुर्गों की भूल का प्रायश्चित औलाद को करना पडता है। भारतीय इतिहास महाभारत से लेकर आज तक का इसका ज्वलन्त उदाहरण है। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के काल मे बर्मा तक और पश्चिम में काबुल रोड तक भारत ही भारत था। हमारे 70 वष के कायकाल के पश्चात भारत का यह भाग आजाद हुआ भारत बच आजाद हो गया यह मूर्खों की भाषा है। क्या लाहौर रावलपिण्डी कराची बिलो चिस्तान आदि भारत नही है यह कहा आजाद हुआ।

(महर्षि की स्कीम)

महर्षि की स्कीम यह थी कि जो भारत का भाग ऐसा है जिसमे हिन्दू बहुमत मे नही उसको हिन्दू बहुमत बनाया जावे तब अग्रज की विदा हो। 70 वष म हम यह काम कर सकते थे पर हम दयानन्द औषधालय दयानन्द वाचनालय दयानन्द माडल स्कूल बनाने मे शक्ति को लगाते रहे। मिशनरी सस्था को परोपकार सस्था या राटरी क्लब बना दिया। प्रधान काम नही किया। अन्यथा पाकिस्तान का जन्म ही न होता। वेदातिरिक्त वेद न मानने वाले पाखण्डो का खण्डन करके उन्हे बढने से नही रोका और यह प्रचार किया सब का मिलकर रहना चाहिए। क्या स्वामी जी की भल थी जो शास्त्राथ पाखड खडन करते रहे और हमे वैसा करते रहने का आदेश दे गये। ऋषि की इस बात पर हमने हडताल कर दी कि जब तक भाषा एक धम एक सस्कृति नही होगी तब तक देश मे शान्ति नही रहेगी। यदि हमने इस पर अमल किया होता तो पजाब की यह स्थिति न होती।

(मिथ्या भ्रांतियां हम ने फैलाई)

हम ने कुछ मिथ्या भ्रातिया ठकुर सुहाती बात करने के लिए फैलाई कि स्वामी जी हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाना चाहते थे यह सरासर मिथ्या है महर्षि सस्कृत को राष्ट्रभाषा बनाना चाहते थे। उत्तर दाक्षिण भारत का विवाद ही न होता 36 वष मे सब की संस्कृत भाषा हो गई होती।

(अब क्या करें।

हे स्नातक जी! 'क्षुद्र हृदय दौबल्य त्यक्त्वोत्तिष्ठ परन्तप

अर्थात कायरता छोडकर अब भी महर्षि के बताये पथ पर चलो भारत हिन्दू राष्ट होगा फिर चक्रवर्ती साम्राज्य होगा जो औषध सत्ययुग मे लाभ करती रही वह कलियुग मे भी लाभ करेगी। महर्षि के काल मे जो प्रतिशत मुसलमान ईसाई बौद्ध सिखो का था वह हमारे सौ वष के कायकाल मे घटने की अपेक्षा कही अधिक बढ गया। पाकिस्तान में बिल्डिगे बनाते रहे छोड कर चले आये अब यहा भी बिल्डिगें बनाते रहो फिर यहा से भी बिल्डिगे छोड कर चले जाना। पर कोई जगह तो जाने को बच रही नही जाओगे कहा। हा बडे बडे पिरामिड बनाने वाली मिश्र जाति जहा गई वही तुम भी जा सकते हो। तुम ने यह समझ लिया कि किसी के भी साथ दयानन्द लगादो तो वह काम आर्य समाज का हो जाता है।

स्वामी दयानन्द बख्शी टेक चन्द धर्मार्थ औषधालय।

स्वामी दयानन्द ला ऊधो चन्द धर्मार्थ वाचनालय।

स्वामी दयानन्द लाला पूरण चन्द गर्ल्स स्कूल।

स्वामी दयानन्द लाला भूरेमल इग्लिश मीडियम स्कूल।

अरे दयान द के वीर सैनिको तुम्हारी ऋषि भक्ति का कहा तक वणन करू। शास्त्राथ बन्द कर दिये पाखण्ड खण्डन बन्द कर दिये। विरोधी ग्रन्थो के उत्तर देने बन्द कर दिये ऋषि को गाली देने वाले ग्रन्थ वेदार्थ पारिजात का आज तक उत्तर नही दिया। जैसे वोट के लोभ मे राजनीतिज्ञ सही बात नही कहते। उन्ही के तुम शिष्य हो गए।

(भावी प्रोग्राम)

राष्टीकरण के द्वारा भारत के इस भूभाग को आर्यों का देश बनाओ चाहे पाच सौ वष लगें। तुम उस [illegible] नही देखोगे जिन्होने काग्रेस को आरम्भ मे चलाया उन्होने स्वराज्य अपने जीवन काल मे नही देखा। बिल्डिंग की नीव की ईट ऊपर बनी बिल्डिंग को नही देख पाती है। जो लोग ऐसी स्कीम बनाते हैं कि कल भी हम भोग ले वे नेता नही अभिनेता तो हो सकते हैं। यह बात सदा याद रखना कि सोसाइटी के सब से बड नेता की जो योग्यता होगी उससे ऊपर वह सस्था नही उठ सकती। अत आर्य समाज की बागडोर उच्च शिक्षा प्राप्त व्यक्ति के हाथो दो अन्यथा तुम ऋषि हत्यारे और देश हत्यारे बनोगे। इतिहास तुम्हे क्षमा नही करेगा अब भी फिर सब कुछ हो सकता है।

शिवो योग प्रतीक्ष्यताम्।

# जय जवान-जय किसान के उदघोषक लाल बहादुर शास्त्री

अक्तूबर मास के आरम्भ होते ही हमे दो ऐसे महापुरुषो की याद प्रति वर्ष आ जाती है। जिसका जीवन त्याग तप और परिश्रम की साक्षात मूर्ति था। श्री लाल बहादुर शास्त्री व महात्मा गान्धी। लाल बहादुर शास्त्री एक निर्धन परिवार मे पैदा हुए परिश्रम करके शिक्षा प्राप्त की और छोटे छोटे पदो से लेकर अपने परिश्रम सेवाभाव और त्याग तप के बल पर भारत के प्रधान मन्त्री तक का पद प्राप्त किया। इस महा मानव को किसी भी पद का कभी भी कोई लोभ जीवन भर नहीं हुआ। आज के लोग पदो के पीछे पीछे घूमते हैं परन्तु 'पद' इस महामानव के पीछे पीछे स्वय घूमते रहे। उन्हे किसी पद की चाह नही थी किंतु पद स्वय उन्हे चाहते थे।

जब वह भारत के प्रधान मन्त्री बने सारे देशवासियों की आख उन पर टिक गई। कौन जानता था ऐसा प्रतिभावान व्यक्ति सहसा भारत वर्ष को इस पद के लिए मिल जाएगा। उन के हाथ मे थोड़ा समय देश की बागडोर रही लेकिन जितने समय भी वह प्रधानमन्त्री रहे वह काल स्वर्णाक्षरों मे लिखने लायक है। कही अगर उन्हे अधिक समय मिल जाता तो आज का भारत कुछ और ही होता।

श्री शास्त्री जी का मुख्य जय घोष था 'जय जवान जय किसान' क्योंकि वह चाहते थे कि किसान खेत मे अधिक से अधिक अन्न पैदा करके भुखमरी पर विजय प्राप्त करे और जवान देश की सीमाओ की रक्षा करके शत्रुओ पर विजय प्राप्त करे। देश अन्दर से बाहिर से रक्षित रहे।

इस महामानव ने सिद्ध कर दिया कि एक सस्कृत पढा लिखा व्यक्ति विदेशी भाषाओ के जानने वालो से देश की रक्षा कही अधिक अच्छे रूप मे कर सकता है। ऐसी बात नही की शास्त्री जी केवल सस्कृत या हिन्दी ही जानते थे वह विदेशी भाषाओ के महान ज्ञाता थे। परन्तु जो साहित्य भारत के ऋषि मुनियो का लिखा हुआ ज्ञान उन्होने सस्कृत भाषा मे पढा था वह किसी और भारत के प्रधानमन्त्री को पढ़ने के लिए नही मिला सम्भवत न आगे मिल सके। क्योंकि अब तो सरकार ही स्वय सस्कृत का भट्टा घोट रही है।

अपने थोड़े से सेवा काल मे उन्होने वह ख्याती प्राप्त की है कि भारत के लोग उन्हे कभी भी भूल नहीं सकते। वह सौम्य मूर्ति माथा विशाल उन्नत ललाट आज भी उनके जन्म दिवस पर भारत के लोगो के सामने आ जाता है। उनका नाम भारत वर्ष मे ही नही सारे ससार मे फैल चुका है।

उनका जीवन एक प्रेरणा प्रद जीवन है। जो एक साधारण से साधारण विद्यार्थी को भी प्रेरणा देता है कि अगर वह परिश्रम करे साहस से आगे बढ़े कभी विपदाओ के आगे न झुके कभी भी जीवन मे न घबराए और न निराशा को अपने पास आने दे। दृढता से अपने कदम आगे बढाता रहे। वह एक दिन जीवन मे आगे बढ कर सारे ससार पर छा सकता है। एक साधारण विद्यार्थी भी अपनी मेहनत से भारत का प्रधान मन्त्री तक का पद प्राप्त कर सकता है।

उन का जन्म दिन मनाते हुए हम उस महान तपस्वी के जीवन से प्रेरणा ले किसी कवि ने कहा है।

भारत मा के लाल बहादुर, शास्त्री
वीर जवान थे।

स्वतन्त्रता के अमर सेनानी शान्ति
के दूत महान् थे।

वेदामृत—

# सत्य के महात्म्य को पहचानों

✻

ऋतस्य हि शुरुध सन्ति पूर्वी ऋतस्य धीतिर्वृजिनानि हन्ति।
ऋतस्य श्लोको बधिरा ततर्द कर्णा बुधान शुचमान आयो॥

ऋ 4 23 8।

विनय प्यारे सत्य के महात्म्य को देखो सत्य मे वे सनातन ऐश्वर्य व बल हैं जिनसे शोक रुक जाता है। एक बार सत्य ज्ञान होने पर ससार के सब शोक घोर दुःख—क्लेश भागने लगते हैं। अनादि काल से जो भी कोई शोक के पार हो गए हैं उन सबको किसी न किसी तरह सत्यज्ञान की ही प्राप्ति हुई थी किसी भी वर्जनीय वस्तु मे—पाप से छुटकारा चाहते हो तो सत्य का सहारा लो। सत्य को धारण करते ही मनुष्य मे और कोई बुराई नही ठहर सकती। जितने हद तक हम मे सत्य की कमी होती है, उतनी ही मात्रा मे हमारे अन्दर बुराई को रहने की जगह होती है। जो पूरा सत्य है उसमे बुराई ठहर ही नही सकती। बस केवल इतना आग्रह रखो कि हम सत्य का ही पालन करेंगे तो इस से हमारे अन्दर की सब वर्जनीय वस्तुएं आखिर ये वस्तुए पाप ही है और कुछ नही—स्वय नष्ट हो जाएगी।

और यदि हम सच्चे हैं तो हमारी बात प्रतिद्वन्दी को भी जरूर सुननी पड़ती है हमारी सच्चाईका उस पर जरूर असर होता है। यह ही नही हो सकता कि असर न हो। सच्ची आवाज शुचमान होती है उसमे एक तेज होता है। अतएव वह जगाने वाली प्रधान होती है। इस तेज के सामने स्वार्थी मनुष्य को (जो कि अपनी स्वार्थ हानि के डर से सचाई को अनसुनी करना चाहता है) अपने कानो के द्वारो को खोलना पड़ता है। सचाई ऐसी जगाने वाली शक्ति होती है कि जो अज्ञान के कारण अभी तक समझ नही रहा है उस मे चेतना और जागृति पैदा कर देता है। सच्ची आवाज सीधी हृदय मे जा पहुचती है। जहा सत्य की सुनाई होना पहले असम्भव पता लगता है उसे भी अन्त मे सत्य को मानना पड़ता है सचमुच ही सच्चाई बहरे कानो को भी बेध कर घुस जाती है

शब्दार्थ (ऋतस्य हि) सत्य की (शुरुध) शोक निवारक सम्पत्तिया (पूर्वी सन्ति) सनातन हैं। (ऋतस्य धीति) सत्य का धारण करना (वृजिनानि) पापो का, वर्जनीय वस्तुओ का (हन्ति) नाश कर देता है (ऋतस्य) सत्य की (बुधान) जगाने वाली और (शुचमान) दीप्यमान (श्लोक) आवाज (बधिरा) बहिरे (आयो) मनुष्य के (कर्ण) कानो मे भी (आततर्द) जबरदस्ती पहुच जाती है।

(वैदिक विनय से)

---

# आर्य समाज रोपड़ का वार्षिक चुनाव

गत दिनो आर्य समाज रोपड का चुनाव निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ।

सर्वसम्मति से नीचे लिखे पदाधिकारी चुने गये।

श्री प्रेम नाथ सूद—प्रधान मास्टर दित्ता राम—उप प्रधान श्री सत्यव्रत—मन्त्री श्रीमती सुधा रानी—उपमन्त्री, श्रीमती कमला देवी—सहायक मन्त्री श्री मास्टर गौरी शकर शर्मा—कोषाध्यक्ष श्री प्रवीण कुमार—वेद प्रचार मन्त्री श्री ला बाबू राम जी—सदस्य श्री दुर्गा दास—स्टोर कीपर, श्रीमती राकेश—पुस्तकालय अध्यक्ष।

—

## बाल जगत्–

# महर्षि दयानन्द चरित प्रश्नोत्तर में

ले —प्रो ओम प्रकाश जी वैद अमृतसर

1 शंकराचार्य के बाद वदिक धम का प्रचार एव पुन जीवित करने वाले कौन थे ?

महर्षि दयानन्द जी सरस्वती।

2 महर्षि दयानन्द का जन्म स्थान कौन सा है ?

गुजरात प्रान्त का टंकारा नामक गाव।

3 महर्षि दयानन्द का जन्म कब हुआ ?

12 फरवरी 1825 को(मोर्वीराज्य) टंकारा मे

4 महर्षि दयानन्द का बचपन का नाम क्या था ?

मूल जी अथवा दयाराम जी

5 इनके पिता का नाम क्या था ?

श्री कर्षन जी तिवारी।

6 प इन्द्र जी ने इनके पिता का नाम अम्बाशंकर लिखा है क्या यह ठीक नही ?

नही।

7 मूल जी के पिता किस के भक्त थे।

शिवजी के।

8 1837 की शिवरात्रि का मूल जी के जीवन मे क्या महत्व है ?

रात्रि जागरण समय मूर्ति पर चूहे को घूमते देखा मन मे बोध हुआ कि यह सच्चा शिव नही।

9 किन घटनाओ से मूल जी को वैराग्य हुआ ?

छोटी बहन तथा चाचा की मृत्यु से।

10 मूल जी ने कितनी आयु मे घर त्याग दिया ?

1846 मे जब इक्कीस वर्ष की आयु थी

11 मूल जी ने सन्यास की दीक्षा किस से ली ?

महात्मा दण्डी स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती जी से दीक्षा ग्रहण कर दयानन्द सरस्वती का नाम धारण किया

12 सन्यास लेने से पहले इन का क्या नाम था ?

शुद्ध चैतन्य ब्रह्मचारी

13 स्वामी दयानन्द के गुरु कौन थे ?

स्वामी विरजानन्द जी सरस्वती।

14 स्वामी जी विद्याध्ययन के लिए मथुरा म दण्डी स्वामी विरजानन्द जी के पास कब गए ?

14 नवम्बर 1860 को।

15 स्वामी जी ने घर त्यागा सन 1846 को और दण्डी जी के पास पहुचे सन 1860 मे मध्य के 15 वर्ष के क्या करते रहे ?

जिज्ञासु बनकर भारत भ्रमण और अनुभव प्राप्त करते रहे ?

16 स्वामी विरजानन्द जी का जन्म स्थान कौन सा है ?

पंजाब मे करतारपुर के समीप गगा पुर नामक ग्राम।

17 स्वामी विरजानन्द जी के पिता का क्या नाम था ?

श्री पंडित नारायण दत्त।

18 स्वामी विरजानन्द जी की आंख किस आयु मे खराब हुई और कसे हुई।

पांच वर्ष की आयु मे चेचक रोग के कारण

19 नेत्रहीन विरजानन्द जी को घर क्यो छोडना पडा ?

उनके माता पिता की मृत्यु के बाद भाई और भाभी ने उन्हे बोझ समझ कर सताना आरम्भ किया। अत उन्हे घर छोडना पडा।

20 दण्डी स्वामी विरजानन्द जी के गुरु कौन थे ?

स्वामी विरजानन्द जी के गुरु वही दण्डी स्वामी पूर्णानन्द जी थे जिन से दयानन्द जी ने सन्यास की दीक्षा ली थी।

21 स्वामी विरजानन्द जी किस विषय के विद्वान थे ?

स्वामी विरजानन्द जी संस्कृत व्याकरण के प्रकाण्ड विद्वान थे

22 दण्डी जी को सबसे अधिक कौन सा व्याकरण ग्रन्थ पसन्द था ?

पाणिनी मुनि का अष्टाध्यायी। इसी ग्रन्थ ने उन्हे अन्य सब कौमुदी आदि व्याकरण ग्रन्थो से उपराम सा कर दिया।

23 क्या स्वामी विरजानन्द जी से किसी राजा ने भी पढने का प्रयत्न किया था ?

हां अलवर के महाराजा ने अष्टाध्यायी पढाने के लिए उनसे प्रार्थना की थी। स्वामी जी ने यह शर्त रखी थी कि तीन घण्टे प्रतिदिन पढना होगा परन्तु राजा विलासी था। कुछ दिनो के बाद वह पढने नही आया। इसलिए स्वामी जी नाराज होकर मथुरा वापिस चले आए।

24 मथुरा के कलेक्टर महोदय ने श्रद्धाभाव से दण्डी स्वामी विरजानन्द जी से जब कोई सेवा पूछी तो उन्होने क्या उत्तर दिया था ?

यदि मेरी इच्छा पूरी करना चाहते हो तो महोजिदीक्षित के जितने ग्रन्थ हैं उन सब को इकट्ठा कर के जला दो क्योकि उनके व्याकरण ग्रन्थ आर्ष ग्रन्थो की मनमानी व्याख्या करते थे।

25 स्वामी जी ने दण्डी जी से शिक्षा कब समाप्त की ?

सन 1863 मे।

26 स्वामी दयानन्द जी को दण्डी जी ने गुरु दक्षिणा लेते समय क्या कहा था ?

देश का उपकार करो।
सत्य शास्त्रो का उद्धार करो।
मत मतान्तर की अविद्या को मिटाओ
और वदिक धर्म फैलाओ।

27 स्वामी जी अपने गुरु के उपकारो को कसे याद किया करते थे ?

जब भी हाथ पर लगी चोट को स्वामी जी देखते तो उन्हे अपने गुरु के उपकार याद आ जाते थे क्योकि स्वामी जी ने उन्हे एक बार छडी से इतना पीटा था कि एक हाथ पर निशान पड गया

28 आज व्याकरण का सूर्य अस्त हो गया है ? ये शब्द किस ने किस के विषय मे कहे थे ?

दण्डी स्वामी विरजानन्द जी का देहावसान सुनकर स्वामी दयानन्द जी ने ये शब्द कहे थे।

29 उस समय कौन कौन से मत मतान्तर फले हुए थे ?

उस समय इस देश मे तीन बड़े सम्प्रदाय थे वैष्णव शव शाक्त। दूसरे ईसाई और इस्लाम विदेशी सम्प्रदायो में प्रमुख थे।

स्वामी जी ने पाखण्ड खण्डनी पताका कब और कहा गाडी थी ?

सन 1867 ई के अप्रैल मास में होने वाले हरिद्वार के कुम्भ के मेले पर सप्तस्रोत म गंगा की रेती मे पताका गाडी थी

31 स्वामी जी हरिद्वार कुम्भ के मेला पर कब कब पधारे ?

पहली बार सन 1855 मे पुन 1867 म और तीसरी बार 17 फरवरी 1869 मे।

32 1855 म हरिद्वार कुम्भ मे सम्मिलित होने के लिए स्वामी जी किस रास्ते से गए ?

जयपुर से आबू अजमेर मारवाड अलवर दिल्ली से होते हुए हरिद्वार के लिए गए

33 क्या रास्ते मे किसी विशेष व्यक्ति से भेंट हुई ?

नही साधारण नर-नारी झुण्ड वाले देखे या साधुओ की मण्डलियां देखी।

34 सैनिकों द्वारा जिस क्रान्ति ने स्वामी जी को चौंका दिया वह क्या थी ?

मेसोर (दक्षिण) तथा बारिकपुर (बगाल) की घटनाएं विशेष रूप से चौंका देने वाली थी।

35 वे घटनाए क्या थी ?

लार्ड बैंटिक मद्रास के गवर्नर थे। उनकी आज्ञा से सेनापति फ्रैडिक ने देसी सैनिको को आदेश दिया कि सभी मूछ और चोटी चोटी सफा कर द कन्धे पर जनेऊ धारण नही कर और तिलक नहीं लगाए विश्राम के समय सन्ध्या नहीं कर जनता ने आज्ञा न मान विद्रोह कर दिया।

36 इसका परिणाम क्या निकला ?

स्थानीय अधिकारी बकाट ने विद्रोह दबाने की ओर आज्ञा न मानने वालो को हथकडियां लगा कर दो दिन भूखा रखा। उसके बाद जीवित शरीरो पर से खाल खींच ली गई। चमहीन नग्न मृत देहो का ठगी पर छकनी पर से जलूस निकाला। उन पर आसू बहाने वालो को गोलियो से भून डाला

37 बारिकपुर मे क्या हुआ ?

देसी सिपाहियो को हथकडियां और बेडियां पहना कर खड़ा करके उन्हे गोलियां से उडा दिया। मृत शरीर खुले आकाश मे कुत्तो और गिद्धो के खाने के लिए फक दिए।

38 स्वामी जी हरिद्वार मे कहां ठहरे ?

नील पर्वत चण्डी मन्दिर मे जहा के पुजारी ब्रह्मानन्द जी थे।

39 क्या मन्दिर मे किसी अन्य व्यक्ति से भी स्वामी जी की भट हुई ?

स्वामी जी को 5 अज्ञात व्यक्ति तीन दिन बाद मिले और पूछा कि आबू पर्वत से आने वाले महात्मा दयानन्द जी आप ही हैं और अपना परिचय देते हुए कहा कि मैं नाना साहिब हूं और ये मेरे साथी श्री बाला साहिब श्री तात्या टोपे बाबू कुंवर सिंह और अज्जी मुल्लाखां।

40 इन नेताओ और स्वामी जी के वार्तालाप का प्रमुख विषय क्या था ?

प्रमुख विषय था होने वाले व्यापक स्वतन्त्रता संग्राम के विषय मे उनकी सम्मति और आशीर्वाद लेना।

41 स्वामी जी महाराज ने उन्हे क्या सम्मति दी ?

यदि धर्म की भित्ती पर यह आन्दोलन खड़ा रहा तो इसी बार सफलता मिलेगी नहीं तो पूर्ण स्वराज्य प्राप्ति तक संघर्ष जारी रखना होगा।

(क्रमश)

स्वास्थ्य सुधा—

# फलों के गुण और उनसे चिकित्सा

ले —श्री डा नारायणदत्त योगी एन डी जालन्धर

( गताक से आगे )

## आडू

आडू ठण्ड होते हैं। इस मे विटामिन ए और सी पाए जाते हैं। इसके सेवन से भूख लगती है। मीठा आडू कब्ज हटाता है। आडू कफ पित्त प्रकृति के लिए विशेष रूप से हित कर है।

1 कब्ज मन्दाग्नि तथा पुरानी आंतो सम्बन्धी गडबड मे आडू एक अच्छी औषधि का काम करता है।

2 इस में लोहा होने के कारण रक्त की कमी मे यह बहुत लाभदायक लोहा फासफोरस विटामिन ए तथा बी पाए जाते हैं।

## सन्तरा

सन्तरा या नारंगी—ठंडा तर मन को प्रसन्नता देने वाला है। हृदय और पाचन शक्ति को बलदायक है। ज्वर प्यास घबराहट और जी मिचलाने को दूर करता है। छाती को साफ करता है। श्वास के तीव्र वेग को ठीक करता है मीठा सन्तरा उत्तम होता है।

1 सन्तरा रात को सोते समय और प्रात उठ कर एक या दो सन्तरे और दोपहर मे भी सन्तरा खाना कब्ज के लिए लाभदायक है।

2 सन्तरा प्यास को हटाता है ज्वर मे सन्तरे का रस बडा उपयोगी है।

3 सन्तरे का रस भख लगाने वाला है। खासी हटाता है।

4 बाल अमृत—बालक और बालक की माता को पके हुए सन्तरे के रस का प्रयोग करना चाहिए। वे रोगो से सुरक्षित रहेंगे।

5 सन्तरे के रस मे अंगूर का रस मिला कर सेवन करने से बालको के सूखा रोग में लाभदायक है।

6 सन्तरे के रस मे शहद मिला कर सेवन करने से गर्भवती स्त्री को कब्ज दस्त आदि मे लाभ होता है।

7 नारङ्गी के छिलको को पीस कर शरीर पर मलने से खुजली मे बहुत लाभ होता है। सन्तरे मे विटामिन सी बहुत पाया जाता है। इस में शक्कर

आयुर्वेद के अनुसार सन्तरा रुचि कारक स्वादिष्ट बलवर्द्धक रक्तवर्द्धक हृदय को लाभकारी पाचक तथा वीर्य वर्द्धक है।

## नीबू

आयुर्वेद के अनुसार नीबू हल्का गर्म खट्टा नेत्र को हितकारी कफ वात वमन खासी क्षय पित्त शूल अरुचि कृमि रोग को दूर करने वाला है।

1 नीबू को दूध मे मिला कर पाने से खूनी दस्त तथा पेचिश मे लाभ होता है।

2 खुजली और मच्छरो के काटने पर नीबू का रस मलने से आराम होता है

3 चेचक के दागो पर मुरदा सग को नीबू रस मे घिसकर लेप करने से चेचक के दाग धीरे धीरे मिट जाते हैं

4 हैजा फलने के समय प्रतिदिन दो नीबुओ का रस पीना मिमा कर पीने से लाभ होता है।

5 एक तोला नीबू का रस दस तोला गरम पानी मे मिला कर पीने से मोटापा धीरे धीरे दूर हो जाता है।

6 भोजन से पहले अदरक तथा सधा नमक के चूर्ण के साथ मिला कर पीने से अजीर्ण रोग दूर हो जाता है

7 नीबू का अर्क मलेरिया ज्वर मे अत्यन्त लाभदायक है।

8 नीबू के रस मे आंवला पीस कर लगाने से बालो के सभी रोग दूर हो जाते हैं।

9 बिजौरा नीबू के दो तोला रस मे छ माशा शहद और तीन माशा काला नमक मिला कर सेवन करने से हिचकी दूर हो जाती है

10 दातो के रोग मे सरसो के तेल मे महीन पिसा नमक और नीबू का रस मिला कर दातो पर मलने से दात मजबूत हो जाते हैं।

—

# "दिवाली की शाम"

ले —स्वामी स्वरूपानन्द जी सरस्वती दिल्ली

ऋषि निर्वाण शताब्दी को तन मन धन से सफल बनाए
ऋषि के पद चिन्हो पर चल ध्रुव सम दृढ सकल्प बनाए।

यह वही है अति पावन स्थल वह भवन हमे जो प्राप्त हुए
उस तप पूत शुचि क्रान्ती दूत के अन्तिम स्वास समाप्त हुए।

हे प्रभु तेरी इच्छा हो पूर्ण यह अमर निशानी छोड गए।
आई जब शाम दिवाली की इस दुनिया से मुख मोड गए

हैं धन्य स्वजन वह ऋषि भक्त अजमेर नगर मे आयेंगे।
स्वामी जी की वस्तुओ के आकर के दर्शन पाए गे

यह सौ वर्षों के बाद याद को आई है पावन बेला।
अजमेर नगर मे धमधाम से होय निर्वाण शताब्दी मेला।

चलो आर्यो जय गुजा दो दयानन्द के नाम की
याद दिला दो दुनिया भर को दीवाली की शाम की

# गो-वसा (चरबी) से निर्मित 'शुद्ध' वनस्पति

वनस्पति जिसका उपयोग देश के करोडो उपभोक्ता प्रतिदिन करते हैं का वनस्पति के निर्माण मे उपयोग अब उस सीमा तक पहुच गया है कि उसे खतरनाक स्थिति की सज्ञा दी जा सकती है। इस खतरनाक स्थिति मे यह सोचना ही है कि गो प्रेमी हिन्दू एक प्रकार से गो वसा(चरबी) से निर्मित वनस्पति का उपभोग करने को बाध्य से हो गए हैं क्योकि सरकार ने अभी तक इस खतरनाक स्थिति का सामना करने की दिशा मे कछ अधिक नही किया है और चू कि वनस्पति निर्माता सरकार की इस निष्क्रियता से भलीभांति परिचित हैं इसलिए वे बडी निर्भयता से गो वसा (चरबी) से निर्मित वनस्पति का उत्पादन करके करोडो नफा मे कमा रहे हैं उपभोक्ताओ का धर्म बिगाड रहे हैं।

और यह देखकर बडी शर्म और ग्लानि होती है कि आजकल कुछ बड़े वनस्पति निर्माता इस शर्मनाक कुकर्म मे लिप्त हैं छोटे वनस्पति निर्माता अब इस क्षेत्र से हट गए हैं पिछले दिनो शुद्ध वनस्पति के निर्माताओ को जो हमे यह बताते हुए बडी लज्जा आती है कि जन हैं दो करोड तीस लाख की गो वसा (चरबी) आयात करते हुए बम्बई के कस्टम अधिकारियो ने पकडा। इस आयात का रहस्योद्घाटन सर्वप्रथम एक पुरस्कार विजेता पत्रकार ने अपने पत्र मे किया था

इस कम्पनी के मालिको पर अपने एक मालवाहक जहाज को डुबाकर बीमेका 24 करोड की रकम डकारने की कोशिश करने का भी आरोप लगाया गया है और इन्ही मे शुद्ध वनस्पति का उत्पादन करने वाले इन अशुद्ध मालिको का एक और घिनोना कारनामा सामने आया है होने एक बैंक के उच्च अधिकारियों के साथ गठबंधन कर13 10 करोड का लेटर आफ क्रेडिट गैर कानूनी ढंग से प्राप्त करने की कोशिश की थी

हम रे मत्रिगण हमेशा यह घोषणा करते रहते है कि वे देश मे भ्रष्टाचार को जडो सहित समाप्त करने के प्रयास मे जुटे है उनकी इन घोषणाओ और प्रयासो मे कितनी सच्चाई है और वे कितनी प्रभावकारी हैं इसका पता इसी बात से लग जाता है कि इन घोषणाओ और प्रयासो के बावजूद शुद्ध वनस्पति के निर्माता जैसे अन्य निर्माता लोगो और सरकार दोनो की आंखो मे धूल झोंककर लाखो करोडो धर्म परायण हिन्दुओ को गो वसा (चरबी) मिश्रित वनस्पति खिला कर उनका धर्म बिगाड रहे हैं।

—सदाजीवत लाल भटनागर

—

वर्ष 16 अंक 27 1 कार्तिक सम्वत् 2040, तदनुसार 16 अक्तूबर 1983, दयानन्दाब्द 159 । एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपए

## १६ अक्तूबर को विजय दसवीं दशहरा का पर्व मनाएं

# धर्म की सदा विजय होती है और अधर्म का नाश

16 अक्तूबर को विजय दसवी का पर्व सारे देश मे मनाया जा रहा है। प्रति वर्ष यह पर्व आता है और इस अवसर पर रावण मेघनाथ और कुम्भकरण के पुतले बनाकर जलाए जाते हैं और रामलीला करने वाले व्यक्ति जो राम तथा लक्ष्मण और उसकी सेना की भूमिका निभा रहे होते हैं वह राम वेशधारी उन पुतलो के चारो ओर घूमते रहते हैं कुछ देर बाद रावण आदि के पुतलो को आग लगा दी जाती है बड 2 धमाको के साथ [illegible] भर मे [illegible] जाते हैं।

चिरकाल से ऐसा चला आ रहा है कि प्रति वर्ष रावण को जलाया जाता है परन्तु रावण फिर पैदा हो जाता है। वर्ष भर रावण बढता रहता है और दशहरे पर उसे मार कर जला दिया जाता है। लेकिन हजारों वर्ष बीत गए यही सिलसिला चला आ रहा है। रावण मरने मे ही नही आता। क्या कभी इस रावण से पीछा छुडाया जा सकेगा ? कभी यह सदा के लिए मारा जा सकेगा ? लगता है ऐसा नही हो सकता क्योकि उस युग मे तो एक रावण था जिसे आसानी से भगवान राम ने मार दिया था। परन्तु आज तो चारो ओर रावण ही रावण रावण हैं। राम तो कही देखने को भी नही मिलता पता नहीं आज का राम किस कोने मे छिपा बैठा है। अगर राम मैदान में डट जाए तो रावण को आज भी मारा जा सकता है। परन्तु आज तो राम भी आराम प्रस्त हो गया है कन्दमूल खाने वाला तपस्वी जीवन बिताने वाला जगंलो की खाक छानने वाला क्षत्रिय का पुत्र राम कहा है ?

रावण शराब पीता था, मांस खाता था, निर्दयी दुष्ट और क्रूर था। पर-स्त्री का अपहरण करने वाला दुराचारी था। परन्तु आज समाज मे रावण से भी बदतर आचरण वाले लोगो को आप क्या सज़ा दगे। रावण ने सीता का अपहरण तो किया था परन्तु उसके शील को भग नही किया राक्षस होते हुए भी उसकी कुछ मर्यादाए थी परन्त आज के मानव की कोई मर्यादा नही है प्रति दिन कितनी ही महिलाओ का अपहरण हो रहा है। उनकी इज्जत लूटी जा रही है कोई दिन ऐसा नही होता जिस दिन समाचार पत्रो मे इन रावणो की करतूत प्रकाशित नही होती। जो स्वय रावण जैसे काम कर रहे हैं वह ही विजय दसवी के दिन रावण को जलाने के लिए इकट्ठ हो जाएगे।

आओ बन्धुओ इस पर्व के ठीक पहलू पर विचार कर। वास्तविकता तो यह है कि अगर वाल्मीकि रामायण को पढ तो स्पष्ट पता चलता है रावण को दशहरे वाले दिन नही मारा गया। सारी वर्षा ऋतु तो राम ने किष्किन्धा के पर्वतो पर विश्राम किया और वर्षा ऋतु बीत जाने पर सीता की खोज आरम्भ हुई। खोज करने मे और युद्ध मे कई मास व्यतीत हो गए। परन्तु यह पर्व तो वर्षा ऋतु के तुरन्त बाद आ जाता है। इन दिनो मे तो राम ने सीता की खोज आरम्भ की थी। परन्तु हम आज इस विवाद मे पडना नही चाहते हम तो पर्व की महत्ता पर विचार करना चाहते हैं।

आपको पता ही है कि भारत वर्ष कृषि प्रधान देश है और कृषि से सम्बन्धित हमारे देश मे कई पर्व मनाए जाते हैं। इस पर्व पर धान मक्की आदि की फसल तैयार होकर किसान के घर मे आ जाती है या पक कर तैयार हो जाती है वास्तव मे यह किसान की खुशहाली पर विजय है। खेत और खलियान पर विजय है, बुराई पर अच्छाई की विजय है, पाप पर पुण्य की विजय है। राक्षसो पर देवो की विजय है। प्रत्येक मानव के अन्दर भी राक्षसी और दैवी विचार धाराए काम कर रही हैं। देश जाति और समाज के शत्रुओ से अपने अन्दर के शत्रु अधिक खतरनाक होते हैं बाहिर की विजय से अपने अन्दर की विजय का अधिक महत्व है। अपने मन पर विजय प्राप्त करना अपने अन्त करण मे बैठे गन्दे विचारो पर विजय प्राप्त करना है। यह प्रत्येक मानव के लिए आवश्यक है यही इस पर्व का सबसे बडा सन्देश है।

प्रत्येक इन्सान के अन्दर जो रावण बैठा है उस रावण को मारना अति आवश्यक है और उसे तो प्रति वर्ष ही नही प्रतिदिन मारना चाहिए। अपने अन्दर के राक्षसी विचारो को कभी भी पनपने न द। उन्ह कुचलते मसलते रहे। यही ऐसा रावण (राक्षस) है जो बार 2 मरने पर भी पैदा हो जाता है और जिसे हर बार मारना अति आवश्यक है।

अधर्म को पनपने न दें नही तो यह धर्म पर हावी हो जाएगा। राम धर्म का पालन करने वाला था उसने अधर्मी रावण पर विजय प्राप्त कर ली। धर्म की सदा विजय होती है और अधर्म का नाश।

आज सारे संसार मे अधर्म बढता चला जा रहा है। प्रत्येक व्यक्ति अर्थ और अधिकार के पीछे पड़ा हुआ है और उसे पाने के लिए बड से बडा पाप करने मे जरा भी हिचकचाता नही। अपनी अर्थ और अधिकार की सिद्धि के लिए अगर किसी का कत्ल भी करना पड तो ये एक साधारण सी बात है।

क्या आज बन्धु विजय दसमी का पर्व मनाते हुए यह चिन्तन और मनन कर ये कि इस पर्व को मनाने का क्या महत्व है। जहा इस दिन भगवान राम के शौर्य और गुणो का गान गाया जाए। राम के चरित्र को जीवन मे धारण करने की प्रेरणा ली जाए। वहा अपने जीवन को श्रेष्ठ (आर्य) बनाने का भी प्रयत्न करना चाहिए।

राम का जीवन एक आदर्श श्रेष्ठ और आर्य जीवन था। वह पुत्र के रूप मे भाई के रूप मे पति के रूप मे एक योद्धा के रूप मे एक राजा के रूप मे एक श्रेष्ठ मित्र के रूप मे संसार के सामने अपने महान आदर्श छोड गए हैं। माता पिता की आज्ञा से वह हसते हसते जगल की खाक छानने के लिए चले गए और भाई उन्हे प्राणो से प्यारे थे। लक्ष्मण के मूर्छित हो जाने पर राम ने जो विलाप किया उसमे उनका भ्रातृ प्रेम प्रत्यक्ष दिखाई पडता है। आदर्श पति के रूप मे जब उन्हे हम देखते हैं तो वह सीता जी की जी जान से सेवा व रक्षा करते हुए दिखाई पडते हैं। आदर्श मित्र के रूप मे जब हम उन्हे देखते हैं तो वह अपने मित्र सुग्रीव और विभीषण दोनो मित्रो को किष्किन्धा और लंका का राजा बनाकर अपनी मित्रता को अच्छी प्रकार निभाते हैं। आदर्श राजा के रूप मे जब हम उन्हे देखते हैं तो वह एक ऐसे राजा थे जिसके राज्य की आज तक उपमा दी जाती है राम का राज्य सारे संसार में प्रसिद्ध है। वह रात्रि को घूम 2 कर गुप्तचरो की भान्ति अपनी प्रजा के दुख सुख को स्वय देखा करते थे। वह सारी प्रजा के प्रिय थे। सभी उनके गुणो का गाते थे।

जब हम उन्हे योद्धा के रूप मे देखते हैं तो ताडका से लेकर खर दूषण मारिच आदि राक्षसो से युद्ध करते हुए तथा लंका मे जाकर शत्रु के घर मे अपने शत्रु का मुंह मोडते हुए नजर आते हैं। अकेले ही राक्षसो के सामने डट जाते हैं और जिस भी मैदान मे डटे वहा विजय ही प्राप्त की कही भी पराजित नही हुए। ऐसा सभी क्षेत्रो मे विजय प्राप्त करने वाले राम के जीवन का हम विजय दसवीं पर चिन्तन कर तभी यह पर्व मनाना सफल होगा।

—धर्मदेवार्य

# आर्य समाज का विगत कार्य और वर्तमान स्थिति में उसका दायित्व

ले—श्री प वीरसेन जी वेदश्रमी वेद सदन महारानी पथ इन्दौर

## क्राति के सूत्राधार के रूप मे आर्य समाज का अवतरण

विगत एक शताब्दी के इतिहास मे आय समाज ने अनेक क्रातिकारी कार्य किये। अविद्यान्धकार मे ग्रस्त तथा अनेक प्रकार से पीडित एव कुण्ठित मानव जाति का उद्धार करने वाला सवतोमुखी विकास का एक मात्र नेता आय समाज ही था। उसी की शरण मे आकर उस की चिन्तनधारा एव कार्यों से हमारे देश मे अनेक नेताओ का उदय हुआ—अनेक महात्मा हुए योगी और ऋषि महर्षि पद को भी प्राप्त हुए।

## आर्यसमाज एक सर्वागीण क्राति

आय समाज के क्रान्तिकारी काय एकागी नही थे। सामाजिक धार्मिक, आर्थिक शारीरिक शैक्षणिक राजनीतिक सास्कृतिक सदाचार राष्ट भाषा स्व राज्य स्वाधीनता रूढिवादिता क विनाश तथा सबकी उन्नति आदि का सचालन आय समाज के द्वारा ही हुआ था और उसस प्र रणा प्राप्त जनो से हुआ।

## आर्य समाज की विचारधारा का मूल सोत वेद

आय समाज की विचारधार को महर्षि दयानन्द ने दिया था और उसको मूत रूप एव व्यापक रूप आय समाज ने दिया। आय समाज के प्रवत्तक महर्षि दयानन्द ही थ। महर्षि दयान द को प्र रणा परमा मा के द्वारा एव वेदादि शास्त्र तथा आर्ष ग्रन्थो से प्राप्त हुई। अत आय समाज मे वेद एव आर्ष ग्रन्थो की प्रतिष्ठा हुई और वेद क पढना पढाना तथा सनना सनाना परम धम घोषित किया गया।

## आर्य समाज द्वारा सदबुद्धि का उदय

वेद का अथ ज्ञान है अत आय समाज म ज्ञान की प्रधानता है। तक वितक विवक आय समाज के प्राण रूप हैं। आय समाज मे जो भी सम्प्रदाय का व्यक्ति आय उसम तकनाशक्ति की जागति सत्यासत्य का विवक जागत होना स्वा भाविक ही है। सद्बुद्धि का उद्बोधन आय समाज द्वारा प्राप्त होता है। यह आय समाज की परम विशेषता है

## आर्य समाज अर्थात प्राणिमात्र का त्राता

प्रत्येक देश एव जाति मे किसी न किसी रूप मे क्रान्ति आय समाज की विचारधारा के प्रभाव से उत्पन्न हुई। एक नय प्रकाश नया सन्देश भारत की जनता को विशेष रूप से आय समाज के द्वारा ही प्राप्त हुआ। विविध क्षत्र के नेताओ का प्रादुर्भाव आय समाज की विचारधारा एव कायकर्त्ता से ही हुआ। क्योंकि आय समाज की विचारधारा मे अन्धविश्वास रूढिवादिता जातिवाद शोषणवाद दास्यभाव तथा व्यक्तिगत स्वभाव नही था—अपितु सम्पूण मानव जाति के उत्थान तथा प्राणिमात्र के परोपकार की भावना का समुद्र हिलोरे मार रहा था।

## सब प्रकार की दासता से मुक्तिदाता आय समाज

ज्यो ज्यो आय समाज के विविध क्रातिकारी विचारो का प्रसार होता गया अविद्या अज्ञान अन्धविश्वास रूढिवाद भूत प्र त ढोग धम के नाम पर अना चार व ठगी के गढ ध्वस्त होने लगे और आय समाज सूय की भाति सबका सन्माग दशक बन गया ब्रिटिश शासनकाल मे तथा स्वराज्य प्राप्ति के पश्चात आय समाज की अनेक बातो को जनता और शासन ने स्वीकार कर लिया।

## अनेक लक्ष्य प्राप्ति के पश्चात

स्वराज्य प्राप्त होने पर तथा शासन द्वारा आय समाज के कार्यो को स्वीकार कर लने के उपरान्त आय समाज मे एक प्रकार के विश्राम की भावना उत्पन्न होने लगी और क्राति का केन्द्र बिन्दु आय समाज शान्ति शून्यता म परिणत होने लगा। स्वार्थीजन उन कार्यों के सचालक बनने लगे और जिस लक्ष्य की ओर देश को ले जाना था उसमे व्यवधान उत्पन्न हो गए।

## स्वराज्य के पश्चात देश की दुर्दशा

भारत को स्वराज्य प्राप्त हुए 37 वर्ष हो गये। स्वराज्य से पूर्व राष्ट्रभाषा हिन्दी का जितना प्रचार था आज 37 वर्ष में हम हिन्दी को राष्ट भाषा बना नहीं सके। एक राष्ट्रीयता की जो भावना स्वराज्य से पूर्व आय समाज ने उत्पन्न की थी आज वही राजनैतिक स्वार्थों के कारण अनेक राष्ट्रीयता के रूप मे देश को विखण्डित करने के लिए उभारी जा रही है। आय समाज समाज मे जिस जातिवाद को निमू ल करने का प्रबल किया था—स्वराज्य प्राप्ति के पश्चात उसी जातिवाद को सवर्ण, असवर्ण हरि जन आदिवासी पिछडी जाति नामो द्वारा प्राथमिकता अयोग्य होने पर भी योग्यता प्रदान करने आदि द्वारा भडकर विद्व ष रूप प्रतिशोधात्मक रूप मे जागृत किया गया।

## जातिगत विद्वष वृद्धि एव भ्रष्टाचार

अनेक जातिया जो जन समाज मे नाची मान्य की जाति थी आय समाज के प्रभाव से वे उच्च वर्णों मे प्रतिष्ठित हो गई थी। जातिगत राजकीय प्रलोभनो के कारण उसने अपने को पुन दलित घोषित करवाया। शासन ने जातिगत विद्व ष उत्पन्न करके विषमता एव सामा जिक उत्थान पर कुठाराघात किया। इस प्रकार शासन पर अवलम्बित होकर जो आशा हम कर रहे थे कि देश प्रगति पर अग्रसर होगा। वे सब आशाए धूमिल हो गई और सवत्र भ्रष्टाचार तथा चरित्रहीनता का साम्राज्य व्याप्त हो गया।

## राष्ट्र भाषा हिन्दी का भविष्य और आर्यसमाज की आवश्यकता

राष्ट भाषा हिन्दी अनेक प्रान्तो मे तिरस्कृत है और उसका स्कूलो मे पठन अनिवाय नही हो सका। इसके विपरीत भारत के एक कोने से दूसरे कोने तक प्रत्येक शहर, कस्बे मे अग्रजी मीडियम के स्कूल जलकुम्भी की तरह छा गय है। उनमे शिक्षित बालक जब बड होकर शासन करेंगे तो हिन्दी के ज्ञान के अभाव मे राष्ट भाषा अग्रजी ही देश पर हावी रहेगी। अग्रजी माध्यम के स्कूलो से शिक्षित विद्यार्थियो मे सदा अग्रजी भाषा साहित्य व अग्रजी सभ्यता के प्रति प्र म और अग्रजो को अपना आदश मानने के दृढ भाव होगे तथा भारतीय भाषा धम सस्कृति व अपने पूवजो के प्रति अनादर भाव तथा घृणा ही उत्पन्न होती रहेगी। इस प्रकार अग्रजो की मानसिक दासता भारत पर विद्यमान रहेगी। आय समाज ने जो स्वराज्य प्राप्ति से पूव राष्ट्रीय प्र म व चेतना उदित की थी उसे प्रान्तीय भावना साम्प्रदायिक भावना विविध भाषाओ की सरक्षण की नीति के कारण विध्वस कर दिया। इन सबके प्रतिकार के लिए आर्य समाज को पुन क्रान्ति का शखनाद करना होगा।

## हिन्दी का प्रचार विदेशों मे बढाना आवश्यक है

... के पक्ष के राजनीति ... से भारतीय सभ्यता सस्कृति के प्राण नष्ट हो रहे हैं। भ्रष्टा चार के सर्वत्र व्यापी असुर के विनाश के लिए आर्य समाज को ही अग्रसर होना पड़ेगा। राष्ट्र भाषा हिन्दी का प्रचार विदेशो में बढ़ाकर इसे विश्व की प्रमुख भाषा के रूप में स्थापित करने का काम आर्य समाज को ही करना होगा जिससे भारतवासी राष्ट भाषा हिन्दी को सहर्ष ग्रहण करें।

## ब्रह्मचय और वेदो का सन्देश

आज राष्ट सह शिक्षा को प्रश्रय देकर और सांस्कृतिक कार्यों को विशेष सबल महत्व देकर ब्रह्मचय के आदर्श को भुला रहा है। ब्रह्मचय का सन्देश सिवाय आर्य समाज के कौन देगा। वेदों के अध्ययन अध्यापन का कार्य आर्य समाज को ही करना है। वेद के वैज्ञानिक स्वरूप का अनुसधान आय समाज ने ही करना होगा। आर्ष ग्रन्थो के सरक्षण, प्रकाशन तथा अध्ययनाध्यापन का कार्य आय समाज को ही करना है।

## पर्यावरण शोधन के लिए यज्ञ केन्द्रो का स्थापन

यज्ञ के विधान द्वारा पर्यावरण के शोधन का महत्वपूर्ण कार्य आर्य समाज को ही करना होगा और प्राणि मात्र को जीवन और प्राण प्रदान करना होगा। विकराल रूप से अहर्निश दूषित हो रहे पर्यावरण को यज्ञ द्वारा शोधन करके प्रत्यक्ष लाभ अनुभव कराकर यज्ञ की प्रयोगशालाए देश देशान्तरो में स्थापित करने का सुनहरा अवसर है। यज्ञ का जीवन से निकट सम्बन्ध है। आयु और आरोग्यता के लिए यज्ञ सर्वोत्तम सुगम उपाय है। इसको व्यवहारिकता प्रचलन करने का आय समाज के लिए सुअवसर है। अब भारत ही नही समस्त भू-मण्डल और ब्रह्माण्ड का क्षत्र आय समाज का क्षत्र है ऐसा समझकर कार्य करना होगा।

## आधी तूफान बाढ सूखा का निवारण यज्ञो से सम्भव

आज भू मण्डल के विभिन्न भागो में कही आधी चक्रवात आदि से विनाश लीला होती है तो कही तूफान से, बाढो से कही अवर्षा से। इन प्रकृतिक विप त्तियो का निवारण यज्ञ से सुगमता से सम्भव है। श न पजन्यो भवतु—शनोवात पवता आदि वेद वाक्यो को अपने अनुकूल बनाने का कार्य यज्ञ से ही सम्भव है। इस काय को सफल बना कर संसार को बता देने से वेद के विज्ञान की प्रसिद्धता कराने का महान् काय आर्य समाज के सामने चैलेंज रूप से है। सारे वैज्ञानिक वेद की शरण मे आ जाएगे।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

सम्पादकीय—

# विजय दशमी का महत्व

विजय दशमी का यह पर्व हम सब के लिए विशेष महत्व रखता है। यह कब और कैसे प्रारम्भ हुआ इस विषय में निश्चित रूप से कुछ कहना कठिन है परन्तु हम यह अवश्य जानते हैं कि इसका सम्बन्ध रामायण काल से है। कहते हैं कि जब भगवान राम और रावण के बीच युद्ध हुआ, रावण अन्त मे हार गया और श्री रामचन्द्र जी विजयी हो गए। उसके पश्चात उसी दिन से विजय दशमी का त्योहार मनाया जाने लगा। हमारे कुछ भाई इसे दशहरा भी कहते हैं। बंगाल में इन्हीं दिनो मे दुर्गा पूजा का त्योहार भी मनाया जाता है। बंगाली उसे भी वही महत्व देते हैं जो उत्तर भारत में विजय दशमी को दिया जाता है। दुर्गा का भी हमारी संस्कृति में एक विशेष स्थान है। उसे भी शक्ति का एक रूप समझ कर कुछ लोग उसकी पूजा करते हैं, और विजय दशमी पर भी श्रीराम चन्द्र जी ने अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया था, इसलिए दुर्गा पूजा हो या विजय दशमी हो दोनो में शक्ति का प्रदर्शन और शक्ति पूजा का एक विशेष महत्व है। विजय दशमी भी एक ऐतिहासिक पर्व है क्योंकि रामायण को कुछ व्यक्ति अपना धार्मिक ग्रन्थ समझते हैं। और भगवान राम को अवतार समझते हैं। इसलिए विजय दशमी को भी एक धार्मिक पर्व के रूप में मनाया जाता है। मेरे विचार मे यह धार्मिक पर्व इतना नहीं है जितना कि ऐतिहासिक पर्व है। परन्तु जब हम इसकी पृष्ट भूमि को देखते हैं तो इसके धार्मिक महत्व की भी अवहेलना नही की जा सकती। श्री राम और रावण का आपस का युद्ध केवल सीता माता के अपहरण के कारण ही न हुआ था परन्तु उनका अपहरण उस युद्ध का एक कारण अवश्य बन गया था। रावण का व्यक्तित्व भी हमे कई बार एक उलझन मे डाल देता है। उसके विषय मे यह भी कहा जाता कि वह बहुत बड़ा वेदो का प्रकाण्ड पण्डित था। यह तो उसके रूप का एक पक्ष है। दूसरा धूमिल पक्ष यह है कि उसने परस्त्री का अपहरण कर लिया। यदि एक क्षण के लिए हम यह भूल भी जाए कि सीता माता भगवान राम की पत्नी थी फिर भी रावण को क्षमा नही किया जा सकता था क्योंकि उसने एक ऐसी नारी का अपहरण किया था जिसके साथ उसका कोई सम्बन्ध नही था। हमारी संस्कृति मे नारी का एक विशेष स्थान है और यदि सहस्रों वर्ष व्यतीत हो जाने पर भी हमने आज तक रावण को क्षमा नही किया तो यह भी इस विचार धारा की सम्पुष्टि करता है कि वैदिक संस्कृति मे नारी का एक विशेष महत्वपूर्ण स्थान है और जो भी व्यक्ति चाहे वह कितना बड़ा या कितना विद्वान् क्यो न हो, नारी के सम्मान उसकी प्रतिष्ठा और उसके आदर को किसी भी प्रकार से कम करने का प्रयास करेगा तो समाज उसे कभी भी क्षमा नही करेगा।

इस प्रकार यह विजय दशमी हमारी संस्कृति के प्राचीन रूप को हमारे सामने रखती है। जब हम आज की स्थिति को देखते हैं तो हमे पता चलता है कि हमारे चरित्र मे कितनी गिरावट आ गई है। आज केवल स्त्रियो का अपहरण ही नही होता जरा-जरा सी बात पर उनकी हत्या भी कर दी जाती है। इसके लिए केवल पुरुषों को अपराधी नही कहा जा सकता स्त्रियों का भी कुछ अपराध है। हमे यह स्वीकार करना पड़ेगा कि आज स्त्री और पुरुष दोनों ही अपने अपने कर्तव्य और अपने-अपने उत्तरदायित्व क्यो नही समझ रहे, यही कारण है कि दिन प्रतिदिन कई प्रकार की समस्याए पैदा होती रहती हैं। विजय दशमी का पर्व हमारा ध्यान उन समस्याओं की ओर दिलाता है। साथ ही हमे यह भी याद दिलाता है कि भगवान राम और भगवती सीता हमारे इतिहास मे यह दोनो एक आदर्श जोड़े के रूप मे हमारा मार्ग दर्शन करते रहते हैं। एक व्यक्ति आया जिस का नाम रावण था उसने इनके सम्बन्ध को बिगाड़ने का प्रयास किया। न भगवान राम ने न भगवती सीता ने उसे इसकी अनुमति दी और भगवान राम ने उसका सर्वनाश कर दिया। वह त्रेता युग था अब कलयुग है। आज की परिस्थितिया बदल चुकी हैं हमारे विचार बदल चुके हैं। दृष्टिकोण बदल चुके हैं परन्तु विजय दशमी का पर्व हमें प्रत्येक वर्ष यह सन्देश दे जाता है कि हमारा कल्याण उसी संस्कृति मे है जो सहस्रों वर्ष पहले हमारे देश मे थी जिसने रावण को केवल इस लिए नष्ट कर दिया था कि उसने एक नारी का अपहरण करके उसे अपमानित करने का प्रयास किया था। यदि हम विजय दशमी के इस महत्व को समझ ले। तो हमारी समाज का कल्याण हो सकता है और हमारा देश अपनी उस खोई हुई प्रतिष्ठा को फिर से प्राप्त कर सकता है जो रामायण काल मे हमे प्राप्त थी। भगवान् राम और योगीराज श्री कृष्ण इन दोनो महापुरुषो के मिद हमारी सारी संस्कृति पनपती रही है। अब भी यदि उसके पुरान इतिहास को याद करके उसके अनुसार अपनी जीवन पद्धति को बनाने का प्रयास करें तो अपने इस डूबते हुए देश को फिर बचाया जा सकता है।

—वीरेन्द्र

# आर्य प्र. नि. सभा पंजाब से सम्बन्धित आर्य समाजों के अधिकारी महानुभावों की सेवा में

तीन नवम्बर से छ नवम्बर 83 तक अजमेर मे महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी मनाई जा रही है। वहा क्या प्रबन्ध किया जा रहा है। इसके विषय मे अभी तक हमारी सभा को न तो परोपकारिणी सभा की ओर से और न किसी और दूसरी सभा की ओर से कोई सूचना मिली है। इस डर से कि कही वहा जाकर पंजाब के आर्य समाजी अव्यवस्था के कारण दुखी न हो, हमने इस विषय मे अभी तक कोई सक्रिय पग न उठाया था। परन्तु यह समझकर कि हमने वहा महर्षि दयानन्द के प्रति अपना ऋण चुकाने के लिए जाना है। स्वतन्त्र रूप से वहा जाने का प्रबन्ध करना प्रारम्भ कर दिया है। इस समय एक व्यवस्था आर्य समाज शक्तिनगर अमृतसर की ओर से हो रही है, उन्होंने जनता एक्सप्रेस मे दो डिब्बे सुरक्षित करवा लिए हैं और प्रत्येक यात्री से 225 रुपय लेकर उन्हे अजमेर ले जाए गे। दूसरी व्यवस्था लुधियाना के श्री देवराज खुल्लर और आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री आशानन्द जी कर रहे हैं। उन्होंने बसो का प्रबन्ध किया है प्रत्येक यात्री को 200 रुपये किराया देना पड़ेगा। जो महानुभाव रेलगाड़ी के द्वारा जाना चाहे वे आर्य समाज शक्तिनगर से सम्पर्क स्थापित करें। जो बसो के द्वारा जाना चाहे वे लुधियाना मे श्री देवराज खुल्लर आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार लुधियाना और आशानन्द जी द्वारा 49162 हरपालनगर लुधियाना से सम्पर्क पैदा करें।

हम यह भी चाहते थे कि पंजाब की सारी आर्य समाजो की ओर से धन एकत्रित करके एक थैली के रूप मे अजमेर मे जाकर भेंट करें। इसलिए हमने सब आर्य समाजो को परिपत्र भेजा है और प्रत्येक आर्य समाज के जिम्मे कुछ राशि लगा दी है। अब मुझे पता चला है कि श्री प्रेम प्रकाश वानप्रस्थी धूरी वाले और श्री ओमप्रकाश वानप्रस्थी भठिण्डा वाले स्वतन्त्र रूप से धन इकट्ठा कर रहे हैं। इन दोनो महानुभावो ने न तो हमारी सभा से अनुमति ली है और न ही हमे सूचना दी है कि कहा कहा से और किस किस व्यक्ति से कितना-कितना धन एकत्रित किया है। मुझे इस बात पर बहुत आपत्ति है कि दोनों महानुभावो ने सभा से पूछे बिना ही आर्य समाजो से रुपया इकट्ठा करना शुरू कर दिया है। यदि वे आर्य समाज क्षेत्र से बाहर कुछ इकट्ठा करते तो उसका कुछ लाभ भी होता। आर्य समाजो मे जाकर उनसे रुपया ले लेना और किसी को यह बताना भी नहीं कि कहा से कितना लिया है सर्वथा अनुचित और आपत्तिजनक कार्यवाही है, जो दोनो कर रहे हैं। किसी संस्था मे इसी प्रकार अनुशासनहीनता फैलती है और उसका संगठन शिथिल होता है। मेरी पंजाब की सब आर्य समाजो से प्रार्थना है कि जिस जिस ने जो भी राशि भेजनी है, वह आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के द्वारा ही भेजें। हम चाहते हैं कि सारे पंजाब की ओर से एक बहुत बड़ी राशि वहा दी जाती परन्तु इन दोनो महानुभावो के द्वारा हमारी सारी योजना नष्ट-भ्रष्ट कर दी गई है। फिर भी आर्य समाजो के अधिकारियो से मेरा यही निवेदन है कि वे अपनी अपनी राशि सभा कार्यालय मे भेज दें।

—वीरेन्द्र

# आर्यसमाज के अधिकारियों से

ले —प्रा श्री भद्रसेन जी होशियारपुर

महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचार सारी मानव जाति के हित की दृष्टि से सावकालिक सावभौमिक और साव जनिक हैं। मानव जाति को ऐसे भव्य विचार देने के लिए ही महर्षि ने आर्य समाज की स्थापना की थी जिसका प्रबल प्रमाण आय समाज के नियम हैं नियमो के एक-एक शब्द मे मानव जीवन के सर्वांगीण विकास का पूण चित्रण है जसे आज कल बड बड भवनो का नक्शा बनाते हुए उसका एक छोटा सा माडल (आदश) भी बनाया जाता है जिसमे उस भव्य भवन का एक एक अश चित्रित होता है। ऐसे ही आय समाज के इन नियमो मे जीवन सफलता के भव्य भवन की पूण रूप रेखा है लेखक द्वारा लिखित आय समाज के नियमो का एक अनशीलन पुस्तक से इसको समझा जा सकता है

आय समाज से पूव भारत मे अनेक प्रचारक सस्थाए थी। पुनरपि महर्षि ने आर्य समाज की स्थापना की महर्षि जिस लक्ष्य को सिद्ध करना चाहते थे वह पूववर्तियो से न हो सकता था। क्योंकि कछ सस्थाए ऐसी थी जो पूरे के पूरे सस्कृत साहित्य को परम प्रमाण मानती थीं तो दूसरी तरफ कुछ सस्थाए पूरी तरह से सस्कृत साहित्य की उपेक्षा करती थी कुछ केवल अध्यात्म तक सीमित थी तो कछ केवल भौतिक जीवन तक इन सब स्थितियो को सामने रखकर जीवन और समाज के सर्वांगीण विकास की दष्टि से महर्षि ने समन्वित पथ को ही अपनाया जिसे उन्होने आय शब्द से व्यक्त किया है। आयत्व अक्षेपन के सम्पादन के लिए जो भी आय रूप है उसी का महर्षि ने ग्रहण सरक्षण और सवधन किया यक्ति तथा प्रमाण के आधार पर ही इसका निणय किया। अत महर्षि ने जीवन के प्रत्येक क्षत्र मे स्पष्ट सरल सिद्धान्त प्रस्तत किए

महर्षि दयानन्द के विचारो और कार्यों का पूण रूप ही आय समाज है आज देश विदेश मे हजारो आय समाज हैं इनमे से कछ धन और कायकर्ताओ की दष्टि से समथ हैं तो कछ सामान्य स्थिति के हैं सभी आय समाजो को महर्षि की प्रथम निर्वाण शताब्दी के अवसर पर महर्षि के स्वप्नो को साकार करने के लिए पूण प्रयास से काम आरम्भ करना चाहिए निर्वाण शब्द के जहा अन्य अनेक अथ हैं वहा सस्कृत नेत्र निर्वाणक के अनुसार पूणता सफलता सुख भी अर्थ है महर्षि ने अपने विचारो और कार्यों से जहा अपनी सफलता पूणता स्पष्ट सिद्ध की है वहा आय समाज के अधिकारियो को अपने उत्तराधिकार को पूर्ण करने के लिए इस प्रथम निर्वाण शताब्दी के अवसर पर एक सुन्दर सुन्दर कायक्रम बनाना चाहिए।

सभी आय समाओ के अधिकारियो को चाहिए कि इस निर्वाण शती के अवसर पर अपने अपने प्रिय आय समाज मन्दिर के भवन की अच्छी तरह सफाई मुरम्मत कराकर अच्छी प्रकार से सफेदी कराई जाए। कार सेवा की तरह आय समाज के सभी सदस्य इस सफाई मे सहयोग द तो सोने मे सुहागे वाली बात होगी। यह सफाई भवनो के साथ अन्य समाज से सम्बद्ध प्रत्येक वस्त की होनी चाहिए जसे कि सभी प्रकार के वस्त्र पुस्तकालय की पुस्तक पत्रिकाए बतन फर्नीचर चित्र माटो आदि सभी चीजो की अच्छी तरह से हो। सयोग से यह निर्वाण शती दीपावली पर्व पर है। भारतीय परम्परा मे इस अवसर पर सफाई सफेदी रग रोगन होता ही है। एक पन्थ दो काज की तरह सफाई सफेदी का काय प्रत्येक आय समाज मे अच्छी तरह अवश्य होना चाहिए। कोई भी ऐसा आय समाज नही रहना चाहिए जहा यह सफाई अभियान न चल। इसके साथ आय समाज मन्दिर की बाहर की दिवारो पर महर्षि दयानन्द प्रथम निर्वाण शताब्दी वाक्य सुन्दर अक्षरो मे लिखवाए जाए

दीपावली वाले दिन प्रत्येक आय समाज मन्दिर मे हवन यज्ञ अवश्य होना चाहिए जो आय समाज समद्ध हैं उन को इन कार्यों के साथ अपने यहा अपने सामथ्य के अनसार प्रचार का कार्य कराना चाहिए। यह निर्वाण शताब्दी महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन की सफलता पूणता का भव्य आयोजन है इसलिए इस अवसर पर आय समाज के अधिकारियो को ऋषि जीवन और आय समाज के सम्बन्ध मे छोटी छोटी पुस्तक लिखवा कर छपवानी चाहिए अथवा यथा शक्ति खरीद कर बटवानी चाहिए।

जिन नगरो मे कई कई आय समाज हैं उन्हे मिल जलकर एक एक दिन बारी बारी सभी आय समाजो मे कार्यक्रम आयोजित करने चाहिए कारोबार से निपट कर रात को 9 से 10 बजे तक सक्षिप्त समारोह एक सप्ताह भर सरलता से चलाया जा सकता है। अनेक आय समाज अच्छी समद्ध हैं उन्हे आस-पास की आर्य समाजो की इस अवसर पर आथिक सहायता करनी चाहिए। अपने यहा किसी न किसी आय विद्वान् का अभिनन्दन अवश्य करना चाहिए। उस की सेवाओ का लाभ उठाकर उसके प्रवचन कराए जाए तथा कोई पुस्तक लिखवा कर बटवानी चाहिए। इस शताब्दी पर कम से कम एक सौ वृद्ध आर्य विद्वानो प्रचारको का अभिनन्दन अवश्य होना चाहिए।

देख! कितनी समद्ध आर्य समाजें आगे आकर महर्षि दयानन्द के स्वप्नो को साकार करनेके लिए कटिबद्ध होती हैं।

विगत दिनो आय हायर सकेण्डरी स्कल लुधियाना मे विशेष समारोह मनाया गया इसकी अध्यक्षता स्कल की प्रबन्ध समिति के उपप्रधान श्री महेन्द्रपाल जी वर्मा अन्तरग सदस्य आय प्रतिनिधि सभा पजाब ने की राष्टीय गान मे भाग लेते हुए चित्र मे उनके साथ श्री ओमप्रकाश जी टण्डन प्रिंसीपल व श्री मुलखराज जी अध्यापक एव बच्चे खड हैं।

स्कल के बच्चे देशभक्ति के गीत प्रस्तत करते हुए

आय हायर सकेण्डरी स्कल लुधियाना के श्री विपन जन जो दसवी कक्षा मे 645 अक लेकर स्कल मे प्रथम जिला भर मे तीसरा स्थान प्राप्त कर मरिट लिस्ट मे स्थान प्राप्त किया।

## महर्षि दयानन्द की स्मृति में १ लाख ट्रैक्ट प्रकाशित

अन्तर्राष्ट्रीय महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी के सन्दर्भ मे केन्द्रीय आय युवक परिषद दिल्ली प्रदेश ने आर्य नेता व परिषद सरक्षक श्री श्याम सन्दर धव के सहयोग से महर्षि दयानन्द के सचित्र आकषक प्रेरक जीवन पर आधारित घटनाओ पर 20 पृष्ठीय लघु पुस्तिका प्रकाशित कराई है।

प्रचार हेत उक्त ट्रैक्ट लेने के इच्छुक महानुभाव सम्पक कर।

चन्द्र मोहन आर्य कार्यालय मन्त्री
केन्द्रीय आय युवक परिषद दिल्ली प्रदेश आय समाज मार्ग कबीर बस्ती दिल्ली

# मन की गति अबाध है

(ले० सुरेशचन्द्र वेदालंकार एम ए एल टी गोरखपुर)

येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीरा ।
यदपूर्व यक्षमन्त प्रजाना तन्मे मन शिव सकल्पमस्तु ।

—यजु 34 2

हे प्रभो ! (येन) जिस मन से (अपस) कर्मनिष्ठ या पुरुषार्थी (धीरा) धीर और (मनीषिण) मनस्वी या मनन शील पुरुष (यज्ञ) उत्तम और (विदथेषु) युद्धादि मे भी (कमधि) दृष्ट कर्मों को (कृण्वन्ति करते हैं और (यत) जो (अपूवम) अपूव है (प्रजानाम्) प्राणियों के (अन्त) (भीतर यक्षम) पूजनीय है या मिला हुआ है (तत्) वह (मे) मेरा (मन) मन (शिव सकल्पमस्तु) शिव सकल्पो वाला हो।

बहुत से मनुष्य जिन्हे सदा असफलता और पराजय ही हाथ लगती है अपने को सब चिन्ता, दरिद्रता आचारी अनेक बीमारी तथा निराशा के विचारो मे पड रहते है और जीवन दु खमय हो जाता है। यह मन कहता है अरे मानव ! तू क्यो नैराश्य युक्त पडा है ? क्या तुझ पता नहीं कि तुझ मे अपूव शक्ति सम्पन्न मन विद्यमान है । यह मन ही है जो विभिन्न बिखरी पडी हुई वस्तुओ को एकत्र करता है। हे वीर त हारा हुआ क्यो पडा है ? तुझ मे तो ससार की अनन्त शक्ति प्रवाहित हो रही है । तेरे मस्तिष्क में ज्ञान का सूय चमक रहा है। तेरे मन मे अपूव शक्ति है। तू क्या नही कर सकता है उठ ।

तू अपने को दीन समझ रहा है। अपने आपको दीन समझेगा तो दीन बनेगा हीन समझेगा तो हीन बनेगा। याद रखो कि तुम ससार मे सब से आवश्यक मनुष्य हो। अपने मन मे हीनता के विचार मत लाओ आत्मा को गिराओ मत। दीनता और हीनता को अपने पास मत फटकने दो। सध्या के इस मत्र को अपनी बैठक मे लिख कर टाग दो अदीना स्याम शरद शतम् यजु 36-24 हम सौ वर्ष तक अदीन होकर रहे ।

विजय अथवा सफलता अपने मन की वैज्ञानिक क्रिया से प्राप्त होती है। जो व्यक्ति समृद्धिशाली या शक्तिशाली या विद्वान् बन जाता है, उसका अध्ययन कीजिए उसे वह पूण रूप से विश्वास रहता है कि वह समृद्धि शाली है बलवान् है विद्वान् है। वह कभी सदेह और अकालीन मन से अपने काय को नही प्रारम्भ करता है, अपने को कमजोरी निर्बलता और गरीबी की बातो मे अपने को नही लगाता और न अपने मार्ग पर लडखडाता हुआ चलता है। उसकी समस्त शक्ति उस ओर मुड जाती है जिसकी प्राप्ति के लिए वह निरन्तर प्रयत्न कर रहा है।

चिन्ता मत कीजिए यदि आपके काय में बाधायें या कठिनाइया या असफलता प्रतीत हो रही है। बहुत से मनुष्य यह सोचते हैं कि मैं यह नही कर सकता मैं वह नही कर सकता। मैं राम कृष्ण प्रताप शिवा जी और दयान द जैसा नही बन सकता। मैं तुम्हे विश्वास दिलाता हू कि जो तम्हारे पूवज कर गए हैं वह तुम भी कर सकते हो। एक व्यक्ति सारे ससार को अपनी ओर आकर्षित कर शक्ति का केन्द्र बन सकता है। भतृ हरि जी कहते हैं —

एकेनापि हि शूरेण पादाक्रान्त महीतलम् ।
क्रियते भास्करेणेव परिस्फुरित तेजसा ॥

अर्थात जैसे एक सूय सारे जगत को प्रकाश मान कर देता है उसी प्रकार एक शूरवीर सारी पृथ्वी को अपने वश मे कर सकता है।

मनुष्य विचारो का पुतला है वह जैसा सोचता है वैसा ही बन जाता है। अपनी भावनाओ को महान बनाओ। मैं सब लोगो को मैं मूख खल कामी कृपा करो भर्ता मैं मूख हू खल दुष्ट और कामी हू प्रभो ! मुझ पर कृपा करो प्रार्थना सुनता हू तो मुझ समझ मे नही आता कि परमात्मा क्या कृपा करे ? क्या वह हमे और भी अधिक दुष्ट मूख और कामी बना दे। ऐसी प्रार्थनाओ वाली जाति कभी शक्तिशाली नही हो सकती। अत आप ऐसी प्रार्थना किया कीजिए —

अहमिन्द्रो न पराजिग्य इद्धन न मृत्यवेऽवतस्थे कदाचन ।

—ऋग्वेद

अरे मेरी शक्ति का क्या पूछना ! मैं इन्द्र हू। मैं अपनी धन्यता को कभी हार नही सकता। मैं तो मृत्यु के सामने भी कभी झुक नही सकता। अथर्ववेद के अनुसार जोरदार आवाज मे कहिए —

आकूति देवी पुरोधे

अर्थात् सकल्प की देवी को आगे रखकर कर कायक्षेत्र मे बढ़ो सफलता मिलेगी, अवश्य मिलेगी।

प्रस्तुत मत्र इसी भावना को उपस्थित कर रहा है। इस विश्व मे दो प्रकार के कार्य हैं एक प्रकार के काय बौद्धिक या यज्ञादि के काम है और दूसरे प्रकार के काम भौतिक या यज्ञादि के काय है और दूसरे प्रकार के कार्य व्यवहारिक या युद्धादि के काय हैं। इन दोनो प्रकार के कार्यो को करने के लिए मनुष्य मे एक विशेष प्रकार की भावना चाहिए और यह भावना मन के द्वारा आ सकती है। बिना मन की शक्ति के कोई कार्य नही हो सकता। मन यदि किसी कार्य को करने के लिए तत्पर हो जाए तो ससार की कोई शक्ति नही कि जो उसे उस कार्य को करने से रोक सके। इतिहास इस बात का साक्षी है।

अटक नदी चढी हुई थी और भयकर लहर उठ रही थी। महाराजा रणजीत सिंह न फौज से कहा अटक के पार जाओ। फौज ने उत्साह नही दिखाया। महाराजा रणजीत सिंह से उन के सेनापति ने कहा महाराज ! देखो ऊची लहर नदी मे उठ रही है। बाढ का प्रलय कारी दृश्य है। सेनाओ का पार जाना असभव है। यदि पठान इस ओर आ जायेंगे तो भारत पराजित हो जाएगा और यदि सिख और हिंदू सैनिक उस ओर पहले पहुच जाते हैं तो वहा भारत का झण्डा महाराजा रणजीत सिंह के नेतृत्व मे गाड दिया जाएगा। सेनापति की बात सुनकर सफेद दाढी के बीच अग्नि के समान चमकते हुए चेहरे पर मस्कराहट लाकर कुछ मुस्कराते हुए कहा सेनापति असभव शब्द मेरे कोष मे नही है। वे बोले —

सबै भूमि गोपाल की या मे अटक कहा ?
जाके मन मे अटक है सोई अटक रहा ॥

महाराज ने अपनी मानसिक शक्ति प्रकट की। अपना घोडा दरिया मे डाल दिया। कहा जाता है कि इस अपूव मन की शक्ति को देखकर नदी सूख गई और सेनाओ ने उधर जाकर शत्रु सैन्य को पराजित कर दिया। अपनी शक्ति को पहचानो अपने को कमजोर मत समझो —

मैं जीवन का भीषण युद्ध
प्रलयकर तूफान लिए हू ।
अपने दिल मे मर मिटने का
मैं स्वर्णिम अरमान लिए हू ।
जिसको सुन रिपु का दिल टूटे
मैं वह भैरव गान लिए हू ।
मुझ मत्यु आ अरे हथेली पर
मैं अपनी जान लिए हू ।

दिन कर के शब्दो मे अपनी शक्ति को पहचानो —

तुम एक अनल कण हो केवल
छप्पर तक जा सकते उड कर ।
जीवन की ज्योति जमा सकते
अम्बर मे आग लगा सकते ।
ज्वाला प्रचण्ड फैला सकती है
छोटी सी चिन्गारी भी ।

(क्रमश)

---

## आगामी 4 नवम्बर 1983 दीपावली के दिन महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी देश विदेश मे धूमधाम से मनाई जावे

## सार्वदेशिक सभा का आदेश

यद्यपि निर्वाण शताब्दी का मुख्य आयोजन 3 नवम्बर से 6 नवम्बर 1983 तक अजमेर मे हो रहा है सभी आयजन उसमे भाग ल। जो लोग वहा न पहुच सक उन्हे सार्वदेशिक सभा की ओर से आदेश दिया जाता है कि वे दीपावली के दिन निर्वाण शताब्दी म० सब अपने अपने ग्राम नगर और कस्बो मे बड उत्साह पूवक मनाव।

प्रात प्रभात फेरिया निकाली जाए आयजन अपने घरो मे ओ३म ध्वज फहराने का विशेष कायक्रम रख सार्वजनिक सभाए की जाव और महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित साहित्य बडी सख्या मे बाटा जाय

सामूहिक यज्ञ तथा यज्ञोपवीत परिवतन कायक्रम किए जाव। आय जनता अपने अपने क्षत्रो मे यह सब काय धूम धाम से सम्पन्न कर।

—रामगोपाल शालवाले प्रधान
सार्वदेशिक आय प्रतिनिधि सभा दिल्ली

---

## आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का चुनाव

आय प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश लखनऊ का वार्षिक अधिवेशन (निर्वाचन) दिनाक 4 9 83 को सम्पन्न हुआ जिस मे श्री कलाश नाथ सिंह भ पू शिक्षा मत्री पुन अध्यक्ष निर्वाचित हुए।

पदाधिकारियो की सूची निम्न है

| | |
|---|---|
| श्री कैलाशनाथ सिंह | अध्यक्ष |
| श्रीमती सन्तोष कुमारी | उपाध्यक्ष |
| श्री प्र म चन्द्र शर्मा | |
| श्री देवेन्द्र आय | ,, |
| श्री कपूर चन्द आजाद | |
| श्री इन्द्रराज | मन्त्री |
| श्री जगनारायण अरुण | उपमन्त्री |
| श्री मनमोहन तिवारी | , |
| श्री क्षेम सिंह आय | |
| श्री वीरेन्द्र रत्नम | |
| श्री विद्यासागर | कोषाध्यक्ष |
| श्री वीरेन्द्रपाल शर्मा | सह |
| श्री विनय कुमार | पुस्तकाध्यक्ष |
| श्री राजकुमार आय | सह पुस्तकाध्यक्ष, |

क्षेम सिंह आय

धरती पर स्वर्ग—

# मन्दिर, मस्जिद, गिरजा, गुरुद्वारा सब में मानवता का पाठ पढ़ाया जाए

ले स्वामी वेदानन्द सरस्वती वैदिक साधु आश्रम रूपनगर पजाब

विज्ञान के वर्तमान युग मे यातायात के द्रुतगामी साधनो से पृथ्वी छोटी सी बन गई है । ससार भर के लोगो मे आज कल परस्पर मल मिलाप आना जाना एक दूसरे को समझने की चाह बढ़ रही है । एक दूसरे के धर्मों सस्कृतियो सभ्यताओ रहन सहन, रीति रिवाजो को जानने मे बडी सुविधा हो गई है पुनरपि गहराई से एक दूसरे को समझना सरल नही है । ससार की साधारण जनता इतना भी न जानती है कि अमुक यहूदी है अमुक पारसी है यह ईसाई है यह मुसलमान है अमुक सिख है अमुक हिन्दू है इत्यादि इत्यादि । प्राय लोग ग्रन्थो को धर्म समझते हैं और सस्कृति के विषय मे भ्रान्त होने से कभी 2 भय कर हानि उठाते हैं । सम्प्रदायो के घोर जगल मे मानव बुरी तरह से उलझा हुआ है उसकी विवेक शक्ति नष्ट हो गई । कतिपय सम्प्रदायो का तो सम्पूर्ण इतिहास ही खून से रगा है

इस वैज्ञानिक युग की सुविधाओ का लाभ उठाते हुए प्रयत्न यह होना चाहिए कि सब सम्प्रदायो के उन विचारो को जाना जाए जो सबको एकता की ओर ले जाने वाले हो । उन सब मे ऐसे कौन से .. हैं जिन पर सब इकटठ हो सके । महर्षि दयानन्द सरस्वती ने एक बार यह अदभुत प्रयत्न किया था । इतिहास मे वह दिन अपना अद्वितीय स्थान रखता है । महारानी विक्टोरिया की ताजपोशी के उपलक्ष मे लार्ड लिटन द्वारा आयोजित दिल्ली दरबार के अवसर पर महर्षि के निमन्त्रण पर कई व्यक्ति उनके डेरे पर एकत्र हुए बाबू केशवचन्द्र सैन, बाबू नवीनचन्द्र राय, (ब्रह्मसमाज) सर सय्यद अहमद का मुन्शी कन्हैयालाल अलख धारी (पजाब) बाबू हरिश्चन्द्र चिन्तामणि (आर्य समाज बम्बई) मन्त्री इन्द्रमणि और महर्षि स्वय । विभिन्न पन्थो के सुयोग्य नेताओ का यह सम्मेलन दुर्भाग्य से सफल न हो सका । अन्यथा उसी दिन धरती पर स्वर्ग स्थापित हो जाता । अन्तत महर्षि दयानन्द ने स्वयमेव सम्पूर्ण ससार के उपकारार्थ सार्वभौम सत्य सनातन वैदिक धर्म युक्त सिद्धान्तो के प्रचारार्थ अनथक प्रयास किया जिससे धरती स्वर्ग मे परिणत हो सके ।

कैसी विडम्बना है कि ससार के किसी भी गिरजा घर में देखो बाईबिल का ही उपदेश सुनाया जा रहा होगा । वेद गीता कुरान गुरुवाणी आदि मे वही उपदेश हो तो कोई भी गैर ईसाई उपदेशक या मौलवी अपने मन्त्रो श्लोको आयतो से गिरजाघर मे इन ग्रन्थो के नाम से न सुन सकेगा । वहा मे केवल बाईबिल ही चलेगी । इसी प्रकार मस्जिदो मे बाईबिल वेद धम्मपद के उपदेश नही सुनेंगे केवल कुरान ही चलेगी । यही दशा अन्य धर्म स्थानो की है । एक ही बात को पृथक पृथक स्थानो पर दूसरो से न सुनने की आदत पड चुकी है । यह अदभुत प्रकार की छुआछूत का रोग है । ससार के सब स्कूलो मे सब सम्प्रदायो के विद्यार्थी एकत्र होकर पढ सकते है परन्तु धर्म स्थानो मे सब एकत्र होकर नही सुन सकते । वहा धर्म गुरुओ और जनता की छुआछूत जारी है इससे सम्प्रदायो की तगदिली का परिचय मिलता है । यदि गिरजाघरो और मस्जिदो की वेदी से कोई हिन्दू पारसी या बौद्ध अपने ग्रन्थो के आधार पर विश्व प्रेम का उपदेश कर दे तो क्या बुराई है ? इस भान्ति अन्य धर्म स्थानो मे अन्यो द्वारा किये गये उपदेश भी हो यदि धर्मोपदेशक परस्पर मिलकर सभी धर्म स्थानो मन्दिरो गुरुद्वारो गिरजाघरो आदि को साझा मानकर साझा प्रचार या उपदेश कर एक ईश्वर सदाचार प्रेम भाव दया भ्रातृभाव और सहानुभूति सहयोगादि की बात करें तो ससार का साझा धर्म उभर कर आवेगा तो एक ईश्वर एक ससार एक धर्म एक भावना एक राजनीति एक प्रकृति और एक (समान) पुरुष और एक झडा लेकर सब जीवन पथ पर चलेंगे । तब कैसी शान्ति, कितना सुख सन्तोष और कैसी समृद्धि होगी यह समझना कठिन नही है ।

साझे धर्म की साक्षी विचारधारा के स्वरूप की महान विधि निर्माता मनु ने मानवता के रूप में [illegible] —

"विद्वद्भि सेवित सद्भि नित्यमद्वेषरागिभि ।

हृदयेनाभ्यनुज्ञातो यो धर्मस्तन्निबोधत ॥"

अर्थात सदाचारी राग द्वेष से रहित सहृदय विद्वान् लोग जिसे अपने व्यवहार अपनाते हैं प्रत्येक व्यक्ति का हृदय जिस की गवाही दे कि यह अमुक है उसे धर्म जानो ।

आत्मवत् सर्वभूतेषु य पश्यति स पश्यति ।

अर्थात वही सच्चा ज्ञानी है जो सब लोगो को अपने समान देखता है ।

आत्मन प्रतिकूलानि परेषा न समाचरेत —दूसरो के द्वारा किया गया जो व्यवहार अपने को आप अच्छा न लगे वह व्यवहार स्वय भी दूसरो के साथ न करो ।

'सर्वार्थे य सुहृन्नित्य सर्वेषा च हिते रत ।

[illegible] वेद [illegible] ।

अर्थात् जो [illegible] सबसे मित्रता करता है और मन, वचन, कर्म से सबकी भलाई में लगा रहता है वही धर्म को जानता है, अन्य नहीं ।

श्रूयता धर्म सर्वस्व श्रुत्वा चैवावधार्यताम ।

पृथिवी भ्रातृभावेन भुज्यता विज्वरो भव ॥

ससार के लोगो ! धर्म का सार सुनो और सुनके ही धारण कर लो । सब भाई चारे से रहो और सम्पूर्ण पृथ्वी को मिल कर भोगो । इससे सब कष्ट दूर होकर शान्ति होगी ।

अन्त मे उपनिषद का सब हृदय ग्राह्य उपदेश भी सुनो—

'सत्य वद धर्मचर स्वाध्यायान मा प्रमद । अर्थात सत्य बोलो सबके लिए उपकार के काम करो और स्वाध्याय मे प्रमाद मत करो । इससे धरती पर स्वर्ग स्वत स्थापित हो जाएगा ।

## आर्य समाज समाना का उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज समाना जिला पटियाला का वार्षिकोत्सव 25 26 27 सितम्बर को बड़ उत्साह से मनाया गया । जिसमे आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के महोपदेशक श्री प निरजन देव जी इतिहास केसरी श्री राम नाथ जी शास्त्री तथा श्री राम ने भाग लिया तथा इनके अतिरिक्त श्री प जयदेव जी वेदालकार गुरुकुल कागडी हरिद्वार, आर्य समाज स 7 के पुरोहित तथा उनकी धर्म पत्नी जयदेव जी जठोई वालों ने मण्डली सहित भाग लिया ।

उत्सव मे सगरूर पटियाला तथा राजपुरा के आर्य बन्धुओ ने भी भाग लिया शोभा यात्रा बडी प्रभावशाली रही ।

सभा को 600 रुपया वेद प्रचार दिया गया ।

## २२, २३ अक्तूबर को दीनानगर में शिविर

22 23 अक्तूबर को जो शिविर दीनानगर मे लगाया जा रहा है उसमे सम्मिलित होने वाले सज्जनो का रहने का प्रबन्ध आर्य हायर सैकेण्डरी स्कूल दीनानगर मे होगा जो राज मार्ग के पास म ही है सब सज्जन स्कूल मे ही पहुचने का कृपा कर हमारे पास बहुत से पत्र ऐसे आ रहे हैं जिन मे यह पूछा गया है कि हमने कहा ठहरना है ।

ऋतु अनुसार बिस्तर साथ लाने का कष्ट करें ।

—रामकिशन महाजन प्रधान
आर्य केन्द्रीय सभा दीनानगर गुरदासपुर

## डा. भगवानदास जी का निधन

आर्य जगत मे यह समाचार गहरे दुख के साथ सुना पढा जाएगा कि आर्य समाज जालन्धर छावनी के भूतपूर्व प्रधान डा भगवानदास जी अग्रवाल दिनाक 8 अक्तूबर को स्वर्ग सिधार गए हैं डा साहब एक कुशल चिकित्सक तथा आखो के रोगो के विशेषज्ञ थे । आपको आर्य समाज की लग्न उस समय लगी, जब वे सन 1923 24 मे मैडीकल कालेज मे छात्र के रूप मे आर्य विद्यार्थी आश्रम गुरुदत्त भवन लाहौर में निवासार्थ प्रविष्ट हुए । आर्य कुमार सभा के सक्रिय सदस्य रहे । फिर जीवन पर्यन्त आर्य समाज उन के अग-सग रहा । वे केवल 2 3 मास से चिकित्साधीन रुग्ण चले आ रहे थे । परन्तु विधि का विधान अटल है अच्छी से अच्छी चिकित्सा भी उन्हें और जीवन न दे सकी । हम अपने पारिवारिकजनों के साथ इस दुख मे गहरी सहानुभूति प्रकट करते हुए हम परमात्मा से उनकी आत्मा की सदगति की प्रार्थना करते हैं उनका अन्तिम शोक दिवस (रस्म पगडी) दिनाक 20 अक्तूबर बृहस्पतिवार को मध्याह्नोत्तर 3 बजे उनके गृह 1 हरदयाल रोड जालन्धर छावनी में होगा । जुगलकिशोर

(2 पृष्ठ का शेष)

## प्राणिमात्र के त्राण का कार्य

ससार पुन अनेक मिथ्या मत मतान्तरो और नकली भगवानो के प्रचार मे अन्धविश्वासों के कारण भ्रमों में फस गया है । राजनीति और अर्थनीति के कुचक्र मानवता को नष्ट कर युद्ध की विभीषिकाए खडी करके मनुष्य को आतकित कर ससार को नरक बना रहे हैं । इस स्थिति में आर्य समाज ही अमर्त्य गन्तव्यपथ दिखा न सर्वा आशा मय मित्रं भवन्तु—का वेद का सन्देश जागृत करके संसार को स्वर्ग बना सकता है —अन्य कोई नहीं कोई नहीं ।

नारी जगत्—

# सास, बहू हों तो ऐसी-

ले—श्री सुरेन्द्र मोहन सुनील विद्यावाचस्पति दिल्ली

एक शहर मे बृजलाल नाम का एक सेठ रहता था, उसके पास बहुत धन था घर मे पाच भैंसें भी थीं जिसके दूध का मक्खन व घी तैयार करते थे। पूरे शहर में उनकी प्रतिष्ठा थी मन के उदार थे। उनका एक ही पुत्र था जिसका विवाह एक अच्छे कुटुम्ब की सुशील कन्या से कर दिया। एक दिन सास और बहू घी निकाल रही थी जब घी तैयार हो गया तो सास ने कहा—बेटी कमरे मे तेरे ससुर हैं तुम्हें घूघट करके जाना होगा कहीं गिर न जाए मैं रख आती हू।

बहू ने कहा—नहीं माता जी—मैं घूघट करके ही रख आऊगी। जब बहू घूघट करके घी रखने के लिए ज्यो ही कमरे मे गई उसका साडी का पल्ला अचानक पैर के नीचे आ गया वह गिर गई। घी सारा का सारा बिखर गया।

ससुर ने देखा, जोर से बोला—बेटी क्या हुआ। इनकी आवाज सुनकर सास रसोई से भागी आई और बहू को उठाया और बाहो मे लिए कहा—बेटी कहीं चोट तो नही लगी बेटी तू इसकी बिल्कुल चिन्ता मत कर बेटी तुम्हें तो कुछ नहीं हुआ ? बेटी तू घी की चिन्ता मत कर घी तो और आ जाएगा। इतना सुनकर बहू सास के पैरो मे गिर गई। भाव विभोर हो गई उसकी पलकें भीग गईं। बहू सास के परो मे गिरकर क्षमा मागते लगी—बहू बोली माता जी—माफ कर दो भूल हो गई सास ने कहा—बेटी रो मत घी तो मेरी लडकी से भी गिर सकता था तू मेरे घर की बहू नही लडकी है। आखिर मनुष्य से ही तो गलती हो जाया करती है कोई बात नही रो मत।

बहू सोचने लगी मेरी सास तो मेरी मा से बढकर है अगर मेरे से पिहर मे इतना नुकसान हुआ होता तो मेरी मा डाटती मारती उलाहना देती और य मेरी सास जिसन घी की परवाह न करके मुझ बाहो मे ले लिया। मैं तो भगवान से यही प्रार्थना करूगा कि ऐसी बहू और ऐसी सास काश ! सबको मिल जाए तो घर स्वर्ग बन जाए। वेद मे भी यही आदेश है

ननान्दु सम्राज्ञ्येधि सम्राज्ञ्युत श्वश्र्वा

ननद की दृष्टि मे रानी हो सास की दृष्टि मे रानी हो।

स्योना भव श्वशुरेभ्य स्योना पत्ये गृहेभ्य

श्वसुर को सुख दे पति को सुख दे घर के अन्य सब लोगों को सुख दे।

वह परिवार धन्य है वह सौभाग्य शालिनी बहुए हैं जिनके घरो में शुद्ध पवित्र वातावरण है रोजमर्रा की छोटी 2 बातो पर कचकच बकबक न होता हो।

शिक्षा—बहू सास की आज्ञा माने सास बहू को प्यार दे।

—

जिनका प्रथम अक्तूबर को हृदय गति रुकने से देहावसान हो गया

# श्री प्रीतमलाल एक प्रतिभा-वान युवक

आर्य समाज मन्दिर भार्गव नगर जालन्धर के मन्त्री श्री प्रीतम लाल जी का प्रथम अक्तूबर को हृदय गति रुकने से देहावसान हो गया। श्री प्रीतम जी मृत्यु से पूर्व प्रथम अक्तूबर को सारा दिन अपना काम छोड कर

आर्य समाज मन्दिर आर्य नगर के उत्सव के लिए धन संग्रह करते रहे। सायकाल चार बजे सबको कहा कि अब कुछ थकान हो गई है सब आराम कर क्योंकि रात्रि को आर्य समाज आर्य नगर जालन्धर मे संगीत सम्मेलन है और सभी ने वहा पधारना है। सभी मेरे घर पर आ जाए इकट्ठे यहा से चल पडेंगे। घर पर आए और अपनी धर्म पत्नी श्रीमती कान्ता जी से कहा कि मेरे पेट मे कुछ दर्द है थकान से अजवाईन ले आओ। वह ऊपर छत पर बने अपने एक कमरे के बाहिर चारपाई पर लेटे ही थे कि दिल का दौरा पड गया और धर्मपत्नी के बाजार से लौटने से पहले ही शरीर छोडकर चले गये।

जब उनके छोटे बच्चे ने ऊपर जाकर देखा कि पिता जी बोल नहीं रहे उसने एक और बडे बच्चे को बताया कि पिता जी को पता नहीं क्या हो गया धर्मपत्नी भी बाजार से आ गई लोग इकट्ठे हो गए डाक्टर को बुलाया गया परन्तु अब वहा प्रीतम जी नहीं थे सारे भार्गव नगर मे यह समाचार जगल की आग की तरह फैल गया। 2 अक्तूबर को जब उनकी शव यात्रा निकली तो लगभग दो हजार स्त्री पुरुष उसके पीछे पीछे चल रहे थे। कहा जा रहा था कि इस नगर मे आज तक इतने लोग किसी के निधन पर इकट्ठे नहीं हुए।

श्री प्रीतम जी 6 वर्ष की आयु से ही आर्य समाज के सम्पर्क मे आ गए थे 8 वर्ष की अवस्था मे बडे उत्साह से आर्य समाज के कार्यक्रमो मे आकर ढोलकी बजाकर भजन गाने वालो को उत्साहित करते रहते थे तथा स्वय भी भजन गाते थे और धीरे धीरे आर्य समाज के सभी कार्यों मे रुचि लेने लगे। विद्यार्थी काल से लेकर अन्तिम समय तक वह आर्य समाज की जी जान से सेवा करते रहे। वह सर्जीकल का कार्य करते थे अगर वह पूरा समय अपने काम को देते तो बहुत कुछ कमा सकते थे। परन्तु उनका ध्यान आर्य समाज की सेवा की ओर लगा रहता था आर्य समाज के कार्य के लिए वह अपना धन्धे का कार्य बन्द कर देते थे। अपनी आर्य समाज के लिए तो वह समय देते ही थे। अन्य भी जो छोटी आर्य समाज है आर्य समाज आर्य नगर गान्धी नगर बस्ती बावा खेल बस्ती दानशमन्दा माडल हाउस और गढा से उनका विशेष स्नेह था और उनके कार्यक्रमो मे भी बढ चढकर भाग लेते थे। नगर की आर्य समाजो के उत्सवो तथा अन्य विशेष कार्यक्रमो मे भी वह अवश्य पहुचते थे।

वह आर्य समाज भार्गव नगर जालन्धर के कई वर्ष तक मन्त्री रहे। इस समय भी वह इस समाज के मन्त्री थे। वह आर्य समाज का कार्य बहुत दिल लगाकर करते थे। आर्य समाज का कार्य करते हुए वह अपने बच्चो की भी चिन्ता नही करते थे। अभी उनकी आयु लगभग बत्तीस वर्ष थी उनके छोटे 2 चार बच्चे हैं तीन लडकिया और एक लडका। बडी लडकी लगभग आठ वर्ष की है शेष सभी बच्चे छोटे हैं। श्री प्रीतमलाल जी आर्य समाज की सेवा करते करते चले गये। उनके पिता श्री वेलीराम जी माता करतारीदेवी धर्मपत्नी कान्ता को उनके चले जाने का अतीव दुख है।

उनके चले जाने का दुख उनके परिवार को तो है ही परन्तु आर्यसमाज के अधिकारियो व संस्था को भी कम नहीं है। क्योंकि आर्य समाज का एक ऐसा कार्यकर्ता उनके हाथ से चला गया जो अब मिलना कठिन है। सभी से स्नेह व प्यार करने वाला सभी की इज्जत व मान करने वाला बड़े प्यार से बोलने वाला, सुरीला गाने वाला जब बाजा पकड गाने लगता था तो जनता को मुग्ध कर देता था और जब ढोलक पकड कर बजाने लगता था तो गायक उसकी प्रशसा करते रहते थे। वह समाज का मन्त्री होते हुए भी समाज का छोटे से छोटा काम करने मे सबसे आगे रहता था। परमात्मा उस पवित्र आत्मा को सदगति प्रदान करे और उनके परिवार को इस असहाय दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

# पठानकोटमें सस्कृतपाठ की मेधावीप्रतियोगिता

हमारे देश मे सस्कृत की ओर वह ध्यान नहीं दिया जा रहा जो देना चाहिए। आर्य समाज को चूकि सस्कृत की उन्नति मे दिलचस्पी है इसलिए उसकी तरफ से कुछ न कुछ कोशिश होती ही रहती है। पिछले दिनो आर्य समाज पठानकोट का वार्षिक उत्सव था। इस अवसर पर सस्कृत के छात्रो मे आपस मे प्रतियोगिता कराई। एक विद्यार्थी एक श्लोक पढता था उसका जो अन्तिम अक्षर होता था उसके आधार पर अगले विद्यार्थी को नया श्लोक बोलना पडता था। इस मुकाबले मे नौ सस्थाओ के विद्यार्थियो ने भाग लिया जिनमें गुरुकुल कागडी हरिद्वार, दयानन्द मठ दीनानगर, दयानन्द मठ चम्बा के छात्र एव छात्राओं ने सनातन धर्म संस्कृत विद्यालय चम्बा गुरु विरजानन्द सस्कृत विद्यालय करतारपुर और दातारपुर व पण्डोरी के संस्कृत विद्यालय और आर्य स्कूल स्कूल पठानकोट के छात्रों ने भाग लिया। लगभग 40 विद्यार्थी इस प्रतियोगिता के लिए आए। तीन बडे पुरस्कार शील्ड के रूप मे दिए गए। इनके अतिरिक्त सब को बढिया कुर्ता पजामा का कपडा भी दिया गया। सब से पहला पुरस्कार गुरुकुल कागडी के विद्यार्थियो को दूसरा दयानन्द विद्यालय चम्बा के विद्यार्थियो को और तीसरा पुरस्कार दयानन्द मठ दीनानगर के विद्यार्थियो को दिया गया। इस कार्यक्रम को सारे शहर मे बहुत ही पसन्द किया गया। विशेष कर गुरुकुल कागडी के विद्यार्थियो ने जो कुछ कहा किया। उसे देखकर दो परिवारो ने अपने बच्चे गुरुकुल कागडी मे दाखिल करवाने का फैसला कर लिया है और वह अपने बच्चे अब हरिद्वार भेज रहे हैं। इस सारे समारोह का पठानकोट शहर के लोगो पर बहुत ही अच्छा प्रभाव पडा है।

फिजी से प्राप्त एक विशेष समाचार—

## हिन्दी की रक्षा स्वामी दयानन्द ने की

सुवा (फिजी) स्वामी दयानन्द ने वही काम किया जो कभी भगवान श्री कृष्ण ने किया था। यदि फिजी और अन्य मुल्को मे हिन्दी और हिन्दू संस्कृति है तो यह महर्षि दयानन्द की सर्वोत्तम देन है। कलियुग मे स्वामी दयानन्द ने अवतार किया और हिन्दी की रक्षा की।

ये शब्द फिजी के सनातन धर्म सभा के प्रधान और भूतपूर्व मन्त्री माननीय विवेकानन्द शर्मा ने सुवा मे एक समारोह मे कहे हैं। हाल मे उनका इस आशय का एक पत्र 27 8 83 का फिरोजाबाद में आदरणीय प बनारसीदास चतुर्वेदी के पास आया है (यह पत्र श्री चतुर्वेदी जी ने इस सभा को भेज दिया है) व विवेकानन्द जी को हाल मे ही सरदार वल्लभ भाई पटेल यूनिवर्सिटी गुजरात से हिन्दी मे पी एच डी की उपाधि मिली है।

स्मरण रहे कि फिजी की स्वाधीनता के दस वर्ष पूरे होने पर शाही प्रतिनिधि की उपस्थिति मे जो राजकीय समारोह 1980 म हुआ था वहा ईसाईयो के चार मन्त्रियो के 2 बहाई कबीरपंथी और सिक्खो के एक एक सगठन ने अलग अलग ईश प्रार्थना की थी परन्तु आर्य समाज और सनातन धर्म समाजो की ओर से सम्मिलित रूप से ही ईश्वर प्रार्थना वैदिक मन्त्रो के द्वारा हुई थी जिसका हिन्दी व अंग्रेजी अनुवाद भी फिजी सरकार ने प्रकाशित कराया था। भारत से फिजी गए भारतीय विद्वान व राजदूत स्नातक ने श्री विवेकानन्द शर्मा के साथ मिलकर समारोह मे भाग लिया था जिस की सराहना फिजी के सब पत्रो ने मुख पृष्ठ पर समाचार व फोटो देकर की।

—सच्चिदानन्द शास्त्री

## आर्य वीर महासम्मेलन भिवानी सम्पन्न

पलवल आर्य वीर दल हरियाणा का प्रान्तीय महासम्मेलन भिवानी मे डा स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती की अध्यक्षता मे अपूर्व सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। ला रामगोपाल शालवाले प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने आर्य वीरो की भव्य शोभायात्रा मे भाग लिया तथा उन्हे सम्बोधित किया।

श्री बाल दिवाकर जी हस, प्रधान संचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल डा देवव्रत जी सहसचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती डा प्रशान्त कुमार वेदालंकार स्वामी ओमानन्द जी महाराज प सत्यप्रिय जी आदि विद्वान वक्ताओ ने विभिन्न सम्मेलनो मे ओजस्वी भाषण दिए। आर्य वीरो का व्यायाम प्रदर्शन बहुत ही प्रभावशाली रहा।

## कुराली में आर्यसमाज की स्थापना

जिला रोपड़ के प्रमुख नगर कुराली में आर्य समाज की विधिवत स्थापना हो गई है। श्री ईश कुमार जी प्रधान तथा श्री हरीराम जी सहोता मन्त्री नियुक्त किए गए हैं। इस उपलक्ष मे वहा पर डा प्रमनाथ सेठी के गृह स्थान पर एक यज्ञ किया गया जिसमे मोरिंडा खरड़ और रोपड़ के आर्य समाजो ने भी भाग लिया। जिला आर्य सभा के प्रधान श्री ओमप्रकाश महिन्द्र जी ने बताया कि जिला के अन्य स्थानो पर भी आर्य समाजें स्थापित की जा रही हैं।

—ओम प्रकाश महिन्द्र, प्रधान
जिला आर्य सभा रोपड़

## आर्य समाज मॉडल टाउन... का चुनाव

आर्य समाज गुलजीमेंट शाखा का चुनाव निम्न प्रकार सर्वसम्मति से हुआ।

प्रधान—श्री बाबूराम जी उपप्रधान—श्री गोवर्धनदास जी मन्त्री—श्री रघुवरदास जी उपमन्त्री—श्री ... जी कोषाध्यक्ष—श्री रमेश कुमार जी पुरोहित व पुस्तकाध्यक्ष—श्री रामदेवजी, अन्तरग सदस्य—श्री मनोहरलाल, श्री गोविन्दराम, श्री कीर्ति मोहन गुप्ता, श्री श्रीमती रवी ... मुख्याध्यापिका, श्रीमती शकुन्तला देवी श्री ... अग्रवाल श्री ... जी।

## वार्षिक निर्वाचन

आर्य युवक सभा गुरुकुल विभाग फिरोजपुर छावनी का वार्षिक चुनाव निम्न प्रकार हुआ।

प्रधान—श्री सुरेन्द्र गुप्ता एडवोकेट उपप्रधान—श्री देवराज दत्ता व श्री मनो ... आर्य मन्त्री—श्री जितेन्द्र ... कोषाध्यक्ष—श्री बलराज खुराना उपकोषाध्यक्ष—श्री सुधीर आर्य वस्तु भण्डारी व पुस्तकाध्यक्ष—श्री राकेश कुमार आडीटर—श्री राजेन्द्र कुमार गुप्ता प्रचार मन्त्री—श्री विजयानन्द। — मन्त्री



श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

वर्ष 16 अंक 28, 8 कार्तिक सम्वत् 2040, तदनुसार 23 अक्तूबर 1983, दयानन्दाब्द 159 । एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपए

## २१ अक्तूबर १९८३ को जिनकी जयन्ती मनाई जा रही है—महर्षि बाल्मीकि

# बाल्मीकि रामायण जिनकी भारत वर्ष को महान् देन है

महर्षियो मे महर्षि बाल्मीकि का नाम भी कम ऊचा न ही है। उन्होंने भारत वर्ष को वह रचना प्रदान की जो प्रत्येक मानव को प्रेरणा देने वाली है। ऋषि ने राम का चरित्र लिख कर जहा सारे संसार मे राम को प्रख्यात कर दिया और युग बीत जाने पर भी बरसो वर्ष व्यतीत हो जाने पर भी ऐसा लगता है जैसे यह घटना कल ही घटी हो। जिससे भारत वर्ष का बाल-वृद्ध सब सभी परिचित हैं। छोटे बालक से लेकर वृद्ध व्यक्ति तक सभी बाल्मीकि के राम को जानते हैं। यह रचना रचकर बाल्मीकि ऋषि ने राम के साथ 2 अपना नाम भी अमर कर दिया।

मुनि ने एक व्याध द्वारा छोड़े गए तीर द्वारा एक क्रौंच पक्षी को घायल होकर भूमि पर गिर कर तड़पते देखा और उनके मन मे वहा एक दया का भाव पैदा हुआ वहा कविता रूप मे कुछ शब्द उनके मुख से निकल पड़े। वह अपने आश्रम में आए और उनके मन में विचार आया कि मैं इस कविता में किसी ऐसे व्यक्ति का जीवन चरित्र रचू जो सभी प्रकार के गुणो से सम्पन्न हो। उन्होंने वेदों के विद्वान् तप और स्वाध्याय मे तत्पर प्रसिद्ध मुनि नारद से पूछा जो सारे देश में घूम 2 कर प्रचार करते थे। इस पर बाल्मीकि रामायण मे एक प्रसिद्ध श्लोक है—

> तप स्वाध्याय निरत तपस्वी
> वाग्विदा वरम्।
> नारद परि पप्रच्छ बाल्मीकि
> मुनि पुंगवम्॥
> कोन्वस्मिन साम्प्रत लोके गुणवान
> कश्चवीर्यवान्।
> धर्मज्ञश्च कृतज्ञश्च सत्य वाक्यो
> दृढव्रत॥
> चारित्रेण च को युक्त सर्वभूतेषु
> को हित।
> विद्वान् क क समर्थश्च कश्चैक
> प्रिय दर्शनम्॥

यहा इस पहले श्लोक मे नारद मुनि जी को महर्षि बाल्मीकि स्वाध्याय मे तत्पर तपस्वी वेदो को जानने वाले श्रेष्ठ मुनि कह कर सम्बोधित करते हैं। जबकि मुनिवर नारद के बारे लोक में बड़ा भ्रम फैलाया हुआ है कि वह कोई झगड़ा फैलाने वाले मुनि थे जबकि वह धारणा बिल्कुल गलत है। वह उनसे पूछते हैं कि कौन इस समय लोक मे गुणवान शक्तिमान धर्मज्ञ कृतज्ञ सत्य वादी सत्य व्रती चरित्रवान प्राणी मात्र का हितैषी, विद्वान्, समर्थ अद्वितीय सबको प्यारा लगने वाला, क्रोध को जीतने वाला कान्तिवाला युद्ध मे शत्रुओ को कम्पा देने वाला कौन पुरुष है उसका वर्णन कर।

'श्रुत्वा चैतत् त्रिलोकज्ञो बाल्मीके नारदो वच' तीनो लोको को जानने वाले नारद जी ऋषि बाल्मीकि के वचन को सुनकर कहते हैं।

> इक्ष्वाकु वंश प्रभवो रामो नाम
> जनै श्रुत।
> नियतात्मा महावीर्यो द्युतिमान
> धृतिमान वशी।

इक्ष्वाकु वंश में प्रकट हुए राम नाम से लोको मे विख्यात स्थिर मनवाला बड़ी शक्तिवाला कान्तिवाला धैर्यवाला और अपने आप को वश मे करने वाला हुआ है।

यहा मुनिवर नारद जी ने कई श्लोको मे भगवान राम के गुणो का वर्णन किया है। एक श्लोक मे उन्हें अन्य कह कर भी सम्बोधित किया गया है। वह कहते हैं—

> सर्वदाभिगत सद्भि समुद्र
> इवासिन्धुभि।
> आर्य सर्वसमश्चैव सदैव प्रिय दर्शन।

नदियो से समुद्र की तरह सदा भले मनुष्यो से घिरा हुआ सच्चा आर्य (यह एक आर्य का आदर्श जीवन है जो इस श्लोक मे वर्णन किया है) सब मे सम एक जैसा बरतने वाला सदा ही प्यारे दर्शन वाला है। इस प्रकार मुनि जी ने पूरा परिचय राम का दिया।

इस प्रकार नारद मुनि जी से राम का परिचय पाकर महर्षि बाल्मीकि ने रामायण महाकाव्य की रचना की थी। बाल्मीकि जी आदि कवि माने जाते हैं। उनकी ही यह पहली रचना छन्दोबद्ध कविता व श्लोको मे मिलती है। इस लिए वह कवियो मे शिरोमणि कवि हैं और ऐसे काव्य के स्रष्टा हैं जो सभी प्रकार के रसो से परिपूर्ण है। इस काव्य मे वात्सल्य आदि सभी रस विद्यमान हैं। इसके साथ ही ऋषि ने मानव का ऐसा कोई गुण नहीं छोड़ा जो राम के जीवन द्वारा वर्णित न किया हो।

श्रीराम चन्द्र सीता, लक्ष्मण और भरत की जीवन कथा स्वत ही जगत को पवित्र करने वाली है फिर भी बाल्मीकि मुनि के वर्णन ने सोने मे सुगन्ध उत्पन्न कर दी है तभी तो किसी कवि ने कहा था—

> पयसा कमलं कमलेन पय पयसा
> कमलेन विभाति सर।
> मणिना वलय वलयेन मणि
> मणिना वलयेन विभाति कर।

अर्थात जल से कमल कमल से जल और जल और कमल से सरोवर जैसे शोभा पाता है मणि से चूड़ी और चूड़ी से मणि और दोनो से जैसे सुन्दरी का हाथ शोभा पाता है। ठीक इसी प्रकार सीता पति राम चन्द्र जी की कथा और मुनिवर बाल्मीकि का वर्णन इन दोनो के मेल से रामायण बड़ी शोभा वाली बन गई है। जिसकी भारत के बाहिर के लोगो ने भी मुग्ध होकर प्रशंसा की है। प्रोफैसर ग्रिफ्त साहेब अपने ग्रंथ की अनुवाद मे लिखते हैं— जगत मे पद्य रचना की पुस्तकें बहुत हैं परन्तु आचरण की पवित्रता को और सुन्दर छन्द रचना को और कोई कवि ऐसी दृढ़ता मनोहरता और रसिकता से नहीं बांध सका। इस प्रभावशाली ढंग से धर्म की शिक्षा देना रामायण ही का काम है। केवल यही एक कविता है जो हमारे दिलो मे ऐसी उत्तमता से सच्चाई का प्यार उत्पन्न कर देती है। हम रामायण को पढ़ कर कुछ के कुछ बन जाते हैं। वह गुण जो मनुष्य की उत्कृष्टता के आभूषण हैं हमारे सामने आकर खड़े हो जाते हैं। सत्य का आचरण पुत्रो मे पितृ भक्ति पतिव्रत धर्म पति का कर्तव्य, पिता माता का स्नेह विनय धैर्य दयालुता आदि मनुष्य गुणो की कौन सी तस्वीर है जिस का असली चित्र जादू भरी कलम से कवि ने इसमे नही खींचा।

इस प्रकार भारत से बाहिर के भी सभी विद्वानो ने रामायण महाकाव्य की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है। वास्तव में इस काव्य मे बाल्मीकि ऋषि का ऋषि पन स्थान 2 पर लक्षित हो रहा है। उनकी महानता का पता चल रहा है। जीवन के हर एक पहलू पर उन्होंने बड़े ही अनूठे ढंग से प्रकाश डाला है।

यह ठीक है कि आज हमे जो रामायण मिल रही है उसके सम्बन्ध मे यह कहना कठिन है कि बाल्मीकि रामायण जैसी बाल्मीकि के मुख से निकली थी ज्यो की त्यो हमारे पास पहुंच गई है क्योंकि कई बातें ऐसी भी आज उसमे लिखी मिलती हैं जो बाल्मीकि जैसा ऋषि नही लिख सकता। इसीलिए उस मे मिलावट प्रतीत होती है। परन्तु प्रक्षिप्त भाग को छोड़कर अगर रामायण का अध्ययन किया जाए तो ऋषि की महानता स्थान 2 पर दृष्टिगोचर होती है।

किसी कवि ने इस महाकाव्य के प्रति एक श्लोक मे इस प्रकार लिखा—

> कूजन्त रामरामेति मधुर
> मधुराक्षरम्।
> आरुह्य कविता शाखा वन्दे
> बाल्मीकि कोकिलम्॥

अर्थात्—जो कविता की शाखा पर चढ़कर राम राम ऐसी मधुर अक्षरो वाली कू कू सुनाते हुए बाल्मीकि कोयल की वन्दना करता हू। (शेष पृष्ठ 6 पर)

# मन की गति अबाध है

(ले0 सुरेशचन्द्र वेदालकार एम ए एल टी गोरखपुर)

✱

( गतांक से आगे )

स्वामी दयानन्द को मैंने क्यो श्रद्धा और प्यार से देखा ? उन्ह घर बार छोड कर वैराग्य लेने से प्यार नही किया ? उन्ह बालब्रह्मचारी होने के कारण प्यार नही किया। मैंने उन्हे घने जगलो मे शेर और चीतो से भरे वन मे अकेले भटकते रहने के कारण प्यार नही किया परन्तु उन्ह गगा की रेत पर बैठ हुए अपने सद्य मृत पुत्र को गगा मे बहा कर और निर्धनता ग्रस्त होने के कारण कफन के कपड को फाडकर लाती हुई और विलाप करती हुई भारतीय माता के विलाप से दुखी मन हो आसू बहाते दयानन्द को प्यार किया है । जिससे प्रेरित हो उस दिन से भारतीय जनता के लिए उन्होने अपना उद्घोष घोषित किया । हे प्रभो ! सुख सब को दु ख मुक्त को । सर्वे भवन्तु सुखिन सर्वे सन्तु निरामय और सचमुच इस मानसिक भावना ने विश्व की सेवा का व्रत लिया और वह काय किया जो इतिहास का उज्ज्वल पृष्ठ बन गया ।

दुनिया मे युद्ध के सामान जमा हैं। लाखो आदमी मरने मारने को तैयार हैं। गोलिया पानी की बून्दो की तरह मूसलाधार बरस रही हैं। यह देखो वीर को जोश आया । उसने कहा होल्ट तमाम फौज निस्तब्ध होकर वहीं की वही रुक गई । आल्प्स के पर्वतो पर चढना फौज ने असम्भव समझा त्यो ही वीर ने कहा (आल्प्स है ही नहीं । नैपोलियन की इस ललकार से फौज को निश्चय हो गया कि आल्प्स नही है और सब पार हो गए ।

जोन द आर्क नाम की एक सोलह वर्ष की फ्रांसीसी लडकी जो भेड चराने वाली थी अपनी तलवार से इगलैंड की आगे बढती हुई सेनाओ का उसने जिस बहादुरी से सामना किया उसका फल हुआ कि फ्रास पराजय से बच गया उस की स्वतन्त्रता कायम रही ।

यदि आप मन की शक्ति का चमत्कार जानना चाहते हैं तो पिछले दो महायुद्धो मे अग्रेजों की विजय के कारणो पर विचार कीजिए । जर्मनी के भयकर आक्रमणो से जब ब्रिटिश सेनाए ग्रस्त होती जाती थी तब भी अग्रेज अपने समाचार पत्रो एव चर्चों मे अपनी विजय का ढिढोरा पीटते थे । किसी कवि ने लिखा है —

> जर्मन जमन के बढते हैं,
> फतह ब्रिटिश की होती है ।

कारण यह था कि हार के समाचारो से कही जनता का मन टूट न जाए और परिणाम यह होता था कि हारती हुई भी ब्रिटिश सेनाए जीत जाती थी । इतना ही जीवन सग्राम मे भी मनुष्य मन के हारने पर हार जाता है । विद्यालयो मे पढने वाले बच्चे कमजोर और वज्र हो जाते हैं । जिनके मन पर यह बैठ जाता है कि हमे पढना आ नही सकता । अत शिक्षको को यह बात ध्यान रखने की है ।

यज्ञ या परोपकार के लिए स्वामी दयानन्द ने देश मे फसे हुए दु ख से दु खी मानवो को अज्ञान ग्रस्त लोगो को देख कर उनके अन्ध विश्वासो और रूढियो को दूर करने के लिए स्वामी दयानन्द के मन मे भावना आई और अकेले होते हुए भी स्त्रियो अछूतो दीनो दु खियो और अज्ञानियो के उद्धार के लिए निकल पड और भटको को उसका माग बतला कर ही दम लिया ।

महात्मा गान्धी ने मानसिक शक्ति के बल से अफ्रीका के पीडित भारतीयो का उद्धार किया ।

तिलक महाराज ने इसी मन की शक्ति से भारतीयता का सम्मान सिखाया राजनीति को अवकाश के क्षणो और भाषणो से निकाल कर सक्रिय स्वतन्त्रता के सग्राम की ओर मोडा । उन्होंने अनेक शारीरिक यातनाए सही तथा अनेक बार जेल गए ।

वीर सावरकर ने अपनी मानसिक शक्ति को यहा तक बढा लिया कि समुद्र की उत्तु ग तरग भी भारतीय नागरिको को स्वतन्त्र करने की भावना का दमन न कर सकी । क्योकि उन्होने यह देख लिया था कि परतन्त्रता भारत के दु खो का मूल कारण है । ये भूखे नगे अस्वस्थ भारतीय तभी दु खो से छुटकारा पाएगे जब वे स्वतन्त्र होंगे ? अत वीर सावरकर मन की शक्ति से जल जहाज के शौचालय से समुद्र मे कद गए । अग्रेजों का भरी सभा मे निडरता के साथ खड होकर उन्होने भारतीय स्वतन्त्रता का समथन किया और आजन्म कारावास सहा । काले पानी में रहे ।

स्वामी श्रद्धानन्द का जीवन मानसिक निर्भयता, सेवा, त्याग और बलिदान का जीवन मन की शक्ति का उदाहरण है ।

यह मन केवल मनुष्यो में ही नही पशु पक्षियो और सभी प्राणियो और जगत मे विद्यमान है । कभी कभी मनुष्य उन्हें अपने से भिन्न मानता है । वह समझता है कि पशु, पक्षी बोल नहीं सकते अत उन्ह कष्ट नहीं होता, यह बात ठीक नही । परिणाम यह होता है कि बड-बड मानवतावादी मछली माम बकरे और अण्ड खाना नैतिक धम समझने लग जाते हैं । जब बिल्ला बिल्ली के नर बच्चो को मार डालता है तो क्या कई दिन तक घर में आकर रोने वाली बिल्ली को आपने विलाप करते नही सुना ? क्या मरी हुई सन्तान को अपने पेट से चिपकाने वाली बन्दरी का मानसिक दु ख आपने उसकी आंखों मे नही अनुभव किया ? क्या वेद के वत्सोजात मिव धुनया उत्पन्न हुए बच्चे को गाय जिस प्रकार प्यार करती है वैसे एक दूसरे को प्यार करो यह वैदिक नाद क्या आप की मानसिक शक्ति का द्योतक नही ? अत इस मन्त्र मे कहा गया है यद पूर्व यक्षमन्त प्रजानाम अर्थात् अदभुत मन केवल मनुष्य मे ही नही अपितु सभी जीवित प्राणियो में विद्यमान है । यह मन चीटी मे है शेर मे है हाथी मे है मछली मे है । साप और कबूतर मे हैं । उनसे प्रेम करो उन्ह मत सताओ । उनका शाप मत लो । तुम्हारे लिए दिन रात सेवा करने वाले पशुओ का हाहाकार तुम्हारा कल्याण नही करेगा । गाय बकड कुत्ते और बिल्लिया कितनी प्रसन्न होती हैं ? वे तुम्हारी आवाज सुनते रभाने लगती हैं । तुम्हारा स्पर्श पाते नाचने लगते हैं । मालिक के वियोग में खाना पीना तक छोडने वाले पशुओ को क्या आपने नहीं देखा ? सूर ने यशोदा के मुख से कृष्ण को यही तो सन्देश भिजवाया था कि कृष्ण ! तुम्हारे वियोग मे गाए बहुत दुखी हो गई हैं इनको एक बार आकर देख भर तो लो ।

> ऊधो इतनो कहियो जाय
> अतिकृश गात भई ये तुम बिन परम दुखारी गाय ।
> जल समूह बरसत दोऊ नयनन
> हूकति लीन्हें नाऊ ।
> जहाँ जहा गो दोहन कीन्हो
> सू घति सोई ठाऊ ।

इसी प्रकार कौशल्या ने भी राम को घोडो की दशा बताते हुए सन्देश दिया है और कहा है —

> राघौ एक बार फिरि आवो ।
> ये वर बाजि बिलोकि आपने बहुरो बनहिं सिधाओ ।

क्या जानवरों मे मन के बिना इन भावनाओ का उदय होना संभव है ? इसीलिए धर्म का लक्षण किया गया है —

> श्रूयतां धर्म सर्वस्वं श्रुत्वा
> चैवावधार्यताम् ।
> आत्मन प्रतिकूलानि परेषां न
> समाचरेत ॥

अर्थात धर्म का सर्वस्व यही है कि अपनी आत्मा के विरुद्ध कोई कार्य दूसरो के प्रति कभी न करो ।

मन की अपूर्वता का कहा तक उल्लेख कर । यह मन सोते जागते दूर दूर की यात्रा करता है । यह एक है यह ज्योतियो की ज्योति है । यह मन इतना चचल है कि राम कृष्ण और अर्जुन को भी इसकी चचलता माननी पडी मन की गति अबाध है । इसको हिमालय नही रोक सकता समुद्र इसे डुबा नही सकता यह चीन जापान अमेरिका इण्डोनेशिया रूस और पोलैंड सबल क्षण भर मे घूम आता है । यह अत्यन्त शक्तिशाली है गुरु विरजानन्द के मन की करामात तो आप जानते ही होंगे उन्होंने एक बार सुन कर अष्टाध्यायी कण्ठस्थ कर ली । महर्षि दयानन्द, लाला हरदयाल का भी यही हाल था । यह मन मित्र भी बनाता है । यह सम्पूर्ण ज्ञानों का कोष है । इस मन्त्र का इसीलिए यह भाव है —

हे कमवीर ! उठो । अपने मन की शक्ति को समझो । तुम्हारे लिए ससार का काय क्षेत्र खुला है तुम जिस काय को करोगे वह महत्वपूर्ण हो जाएगा । तुम दीनो का उद्धार करने आए हो । तुम मे महान् शक्ति निहित है किन्तु पवन सुतको ज्ञान नही कि वह इस सागर को लाघ सकता है । भारत भूमि रत्नो-ज्ञान स ज्ञान ! उठो जागो समस्त ससार तुम्हारे सामने और इस पुण्य भूमि से ज्योति प्राप्त करने की प्रतीक्षा में है । सूर्य के समान तेजस्वी पुरुष तू अपने पर भरोसा कर और अपनी तपो पूत मन रूप अपूर्व और प्रज्ञाओ मे सम्माननीय मानसिक शक्ति से ससार का अज्ञान दूर कर और कल्याण विस्तृत कर ।

> नौजवान उठ करवट बदले तो
> इतिहास बदल सकता है ।
> केवल भुजा उठाने से युग का
> विश्वास बदल सकता है ।
> तेरी आशाओ में जगकी आशा
> जगती और सोती है ।
> एक हाथ मिल जाए सभी का
> तो आकाश बदल सकता है ।

—

## सम्पादकीय—

# आर्य समाज कब तक सोया रहेगा

मैं जब आय समाज के नेताओ को झंझोडता हू और उन्हे जगाने का प्रयास करता हू तो वह मुझ से नाराज होते हैं। कभी वह भी सोचते है कि मुझ आय समाज से निकाला जाए। मेरी कठिनाई यह है कि मुझ एक पत्रकार होते हुए आर्य समाज से बाहिर की दुनिया के विषय मे भी समय समय पर बहुत कुछ पता चलता रहता है। जब मैं दूसरो की गतिविधियो की ओर देखता हू और आर्य समाज के वतमान रग ढग को देखता हू तो निराश होता हू और फिर दुखी हो कर अपने दिल की तडप अपने लेख द्वारा आय समाज के सामने रखता हू तो आय समाज के नेता मुझसे बिगडते हैं। फिर भी अपना कतव्य समझते हुए जो ठीक समझता हू वह लिख देता हू। यही कुछ हमने महर्षि दयानन्द जी से सीखा है सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोडने के लिए सदा तत्पर रहना चाहिए।

कुछ दिन हुए मुझ आचाय रजनीश, जिन्हे उनके शिष्य भगवान रजनीश कहते हैं के एक अनुयायी का पत्र प्राप्त हुआ और उसके साथ रजनीशवाद पर एक लेख भी था। रजनीश ने ससार के भविष्य के विषय मे एक भविष्यवाणी की है। इस लेख मे उसका भी उल्लेख था और यह प्रमाणित करने का प्रयास किया गया था कि जो कुछ रजनीश ने कहा है वह दस पन्द्रह वष के पश्चात प्रमाणित हो जाएगा।

मैं रजनीश को किसी भी रूप मे प्रोत्साहन देना नही चाहता। इसलिए मैंने वह लेख अपने समाचार पत्रो मे प्रकाशित करने से इन्कार कर दिया था और जिस ने वह लेख मुझ भेजा था उसको लिख दिया कि मैं रजनीश की विचार धारा से सहमत नही हू इसलिए मैं यह लेख प्रकाशित नही कर सकता। परन्तु उसी के साथ मेरे मन मे यह विचार भी उठा कि हमारे देश के सामने समय समय पर कई समस्याए उठती रहती हैं। कुछ वह भी हैं जिनका सीधा सम्बन्ध आय समाज से है परन्तु आय समाज के नेता उनके विषय मे न कुछ बोलते हैं न कुछ लिखते हैं। रजनीश हो साई बाबा हो महेश योगी हो। इन व्यक्तियो की ओर से इतना प्रचार होता है कि यह ससार के कोने कोने तक पहुच गए हैं। आय समाज किसी भी विषय पर नही बोलता और कई बार यह भी अनुभव होता है कि आय समाज नाम की इस सस्था का अब कोई अस्तित्व नही है। कुछ दिनो तक हम महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी मनाने जा रहे है। यह समय था जबकि हम महर्षि दयानन्द की विचार धारा के भिन्न भिन्न पक्ष न केवल अपने देशवासियो के सामने अपितु बाहर की दुनिया के सामने भी रखने चाहिए थ। कौन सा विषय है जिस पर महर्षि दयानन्द ने अपने विचार प्रस्तुत नही किए। धम राजनीति, समाज शास्त्र शिक्षा शास्त्र वर्णाश्रम जातिवाद, अवतारवाद सब इन प्रकार के विषयो पर उन्होने कुछ न कुछ लिखा है। हमे एक एक विषय को लेकर उस पर उसी प्रकार साहित्य प्रकाशित करना चाहिए था जिस प्रकार रजनीश साई बाबा महेश योगी और दूसरे महानुभाव कर रहे हैं। परन्तु आज आय समाज के नेता सो रहे है किसी के पास इन बातो पर विचार करने के लिए समय ही नही है। मैंने पिछले दिनो लिखा था कि आय समाज एक नेतृत्वहीन सस्था है। वतमान परिस्थितिया इसकी सम्पुष्टि कर रही हैं।

पिछले कुछ समय से दो-तीन ऐसी समस्याए हमारे सामने आई है जिनके विषय मे आय समाज को अपने देश वासियो का वैचारिक नेतृत्व करना चाहिए था। प्रत्येक व्यक्ति जानता है कि पिछले दिनो हमारी प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी, जगन्नाथ पुरी के मन्दिर को देखने के लिए गई परन्तु उन्हे मन्दिर मे जाने की अनुमति न दी गई, क्योकि उनका विवाह एक पारसी के साथ हुआ था। यह विवाह वैदिक रीति से हुआ था और विवाह के पश्चात भी श्रीमती इन्दिरा गाधी ने हिन्दू परम्पराओ के अनुसार मन्दिरो मे जाना हवन यज्ञ करना मूर्ति की पूजा करना यह सब नही छोडा। परन्तु कुछ व्यक्ति उन्हे अछूत समझ कर मन्दिर मे नही जाने देते। यह एक ऐसा प्रश्न था जिस पर कि आय समाज को अपना दृष्टिकोण जनता के सामने रखना चाहिए था। हमारे देश मे यदि छूत छात की बिमारी बढ रही है तो इसीलिए आय समाज उसके विरुद्ध सघष कर रहा है। उस लडाई मे यह एक नई चीज हमारे सामने आ गई। क्या यह आवश्यक न था कि इस विषय मे आय समाज अपना दृष्टिकोण जनता के सामने रखता। आय समाज मे ऐसे नेताओ की कमी नही जो श्रीमती इन्दिरा गाधी के गिर्द चक्कर काटने मे गव अनुभव करते हैं। वह सबके सब चुप बैठे हैं। क्या आय समाज अब एक निर्जीव सस्था हो गई है कि देश की किसी भी समस्या के विषय मे उसकी कोई भी प्रतिक्रिया नही होगी? क्या कारण है कि न तो सावदेशिक सभा और न परोपकारिणी सभा दोनो मे से कोई भी इस विषय मे नही बोला। और अगर वह यह समझते हो कि यह एक ऐसी समस्या नहीं जिसके विषय मे आय समाज कुछ करे तो और बात है।

एक और समस्या है जिसने सारे देश को झंझोड कर रख दिया है वह है गऊ की चर्बी का प्रयोग। क्या कारण है कि आय समाज ने इसके विरुद्ध आन्दोलन नही चलाया। कहा हैं आय समाज के वह नेता जो गोवध को रोकने के लिए अनशन करने की धमकिया दिया करते थ। इस विषय मे अपने विचार विस्तार पूवक आगामी अक मे प्रस्तुत करूगा।

—वीरेन्द्र

# अजमेर में शताब्दी समारोह पर यज्ञ का शुभारम्भ

आय जनता को यह जानकर प्रसन्नता होगी की महर्षि निर्वाण शताब्दी समारोह का शुभारम्भ 6 अक्तूबर को प्रात साढ पाच से यजुर्वेद पारायण महा यज्ञ के द्वारा विधिवत आरम्भ हो गया है। इस महायज्ञ के ब्रह्मा महात्मा दयानन्द जी वानप्रस्थ हैं उनके नेतृत्व मे यह यज्ञ निरन्तर दोनो समय प्रात व साय 6 नवम्बर तक चलता रहेगा। यज्ञ के पश्चात आय विद्वान आचाय विश्वश्रवा जी, स्वामी सत्य प्रकाश जी व अन्य विद्वान अपने प्रवचनो से आर्यों के तृप्त कर रहे हैं। सैकडो नरनारी बाहिर से इस यज्ञ स्थली पर पहुच चुके हैं और निरन्तर पहुच रहे हैं।

भिन्न भिन्न स्थानो से अजमेर के लिए पद यात्राए प्रारम्भ हो चुकी हैं। कई टोलिया साईकलो पर तथा कई पैदल ही वैदिक धम का प्रचार करते हुए अजमेर की ओर बढ रही हैं। देश विदेश से भी बहुत से आय बन्धुओ के अजमेर मे पहुचने के समाचार प्राप्त हो रहे हैं।

अब शताब्दी मे बहुत कम समय रह गया है। हमे शीघ्र अतिशीघ्र अजमेर पहुचने की तैयारी करनी चाहिए। पजाब मे कई स्थानो से बस चल रही है। सभा के प्रबन्ध मे भी लुधियाना से बस चल रही हैं। जिसकी सूचना पूव भी दी जा चुकी है।

पजाब से अधिक से अधिक आय बन्धुओ को अजमेर पहुचना चाहिए। क्योकि पजाब इस प्रकार के कार्यों म सदा आगे रहा है। बसो मे या गाडी मे समय पर अपनी सीटें बुक करा ल ताकि पहुचने म सुविधा रहे।

आय प्रतिनिधि सभा पजाब की ओर से डीलक्स बस लुधियाना से अजमेर तक चलाई जा रही हैं यह बस 2 नवम्बर को प्रात 7 बजे आय हायर सैकेण्डरी स्कूल पुरानी सब्जी मण्डी लुधियाना से चलगी और वहा से 7 नवम्बर को वापिस आएगी इन्ही बसो मे जयपुर पुष्कर और अजमेर की सैर कराई जाएगी। आने जाने का किराया प्रति यात्री केवल 200 रुपए है जिन बन्धु भाईयो ने इस निर्वाण शताब्दी मे सम्मिलित होना है वे अपनी सीट 23 अक्तूबर से पहले पहले निम्न-लिखित पते पर बुक करवा लें। ऐसा न हो कि आपको सीट न मिल सके क्योंकि शेष बहुत कम सीट रह गई हैं। —आत्मानन्द आय

49-6२, हरपाल नगर, लुधियाना फोन—38021

## महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी अजमेर के अवसर पर

# राष्ट्रीय एकता के सूत्राधार महर्षि दयानन्द

(ले श्रीराम कृष्ण आर्य एम ए कोटा (राज)

महर्षि दयानन्द को केवल भारतीय राष्टीय एकता या पुनर्जागरण का सूत्राधार मानना उनकी महानता मे कुछ कमी कर देना है। यह भारतीय चीनी अमरीकी और आफीकी है। यह भेद महर्षि की दृष्टि मे न था उनके लिए तो सम्पूण ससार एक राष्ट था क्योकि महापुरुष किसी राष्ट विशेष की सिमाओ से परे होते हैं। वेदो मे सकीण राष्ट वाद के लिए कोई स्थान नही है क्योकि वेद मनुष्य मात्र के लिए है। किसी स्थान विशेष या सीमा विशेष से वेद बन्ध हुए नही हैं। फिर यह कैसे मान ल कि महर्षि का राष्ट्रीय एकता से आशय केवल भारतीय राष्टीय एकता या हिन्दू एकता से था। वे तो मनुष्य मनुष्य और राष्ट राष्ट मे एकता चाहते हैं।

परन्तु इस सत्य से भी तो इन्कार नही किया जा सकता कि जिस आर्यावत या भारत राष्ट की भूमि पर जन्मे पले और बड हुए उनका उससे कोई प्यार नही था? ऐसी बात नही सत्याथ प्रकाश आदि ग्रन्थो मे आर्यावत (भारत) की दुदशा पर असीमित दद प्रकट किया है।

जब आपस मे भाई भाई लडते हैं तभी तीसरा विदेशी आकर पच बन बैठता है। क्या तुम महाभारत की बात जो पाच सहस्र वष पहले हुई थी उनको भी भल गए? देखो आपस की फट से कौरव और पाण्डव और यादव का सत्यानाश हो गया। (स याथ प्रकाश एकादश समु)

सष्टि मे लेकर महाभारत पयन्त चक्रवर्ती राजा सावभौम आय कुल मे ही हुए थे। अब इनके सन्तानो का अभाग्योदय होने से राजभ्रष्ट होकर विदेशियो के पादाक्रान्त हो रहे हैं (सत्या समुल्लास 11)

आर्यावत मे भी आर्यों का अखण्ड स्वतन्त्र स्वाधीन और निभय राज्य इस समय नही है जो कुछ भी है सो भी विदेशियो के पादाक्रान्त हो रहा है। (स प्र समु 10)

परदेशी स्वदेश मे व्यवहार व राज्य करे तो बिना दरिद्रय और दुख के कुछ भी नही हो सकता। (स प्र समु)

कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशिय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है प्रजा पर पिता माता के समान कृपा न्याय दया के साथ विदेशियो का राज्य भी पूण सुखदायक नही है। (स प्र समु)

बरेली मे महात्मा मुन्शीराम के घर पर महर्षि ठहरे थे एक दिन आधी रात को वे जाग पड। महर्षि की व्याकुलता को देख कर घर वालो ने वैद्य को बुलाने के लिए कहा। लेकिन महर्षि ने कहा 'मरा दुख औषधि से दूर नही होगा मेरी पीडा भारत के परिश्रमी लोगो की दुदशा के चिन्तन से चित्त मे उत्पन्न हुई है। मैं अब चाहता हू जाति को एक उद्देश्य रूपी सुदृढ सूत्र मे बाध दू।

हम और आप को अति उचित है कि जिस देश के पदार्थों स अपना शरीर बना अब भी पालन होता है आगे भी होगा उसकी उन्नति तन मन धन से सब मिल कर प्रीति से कर। (स प्र समु)

यू तो इस भारत भूमि मे सकडो महापुरुष साधु सन्त और गुरु हुए हैं जिन्होने भारत मे राष्टीय एकता को उत्पन्न करने का प्रयत्न किया है। परन्तु महर्षि दयानन्द के राष्टीय एकता के सिद्धान्त सबसे भिन्न हैं। उन्होने समस्या के मूल को पकडा है। वृक्ष को हरा भरा रखने के लिए टहनो और डालियो पर पानी न देकर मूल को सीचने का प्रयास किया है। महर्षि दयानन्द ने सन 1862 63 से लगा कर सन 1883 तक लगभग 20 वर्षों तक राष्टीय एकता के लिए प्रयत्न किया था। महर्षि दयानन्द को राष्ट्रीय एकता का वह गुरु से आशीर्वाद मे मिला था।

महर्षि दयानन्द की दृष्टि मे राष्ट्रीय एकता के तीन सूत्र हैं। उदयपुर मे महर्षि से एक भक्त ने इसी विषयक पूछा था 'महाराज! भारत का पूण हित कब होगा। महर्षि ने उत्तर दिया-एक धम एक भाषा और एक समाज बनाए बिना भारत का पूण हित और जाति की उन्नति होना कठिन है।'

सत्याथ प्रकाश मे लिखते हैं- भिन्न भिन्न भाषा पृथक पृथक शिक्षा अलग अलग व्यवहार का विरोध छूटना अति दुष्कर है बिना इसके छूटे परस्पर पूरा उपकार और अभिप्राय सिद्ध होना कठिन है।

## एक धर्म

महर्षि दयानन्द का राष्टीय एकता का पहला आधार धर्म निरपेक्ष नही धम सापेक्ष या एक धम था। जो धम के वास्तविक स्वरूप को समझ नही पाए हैं वे साम्प्रदायिकता के आधार पर धम की व्याख्या कर धम निरपेक्षता की बात करते हैं। महर्षि दयानन्द ने धम के वास्तविक स्वरूप को स्पष्ट किया। उनके मत मे मतो और विचारो का नाम धम नही किसी कम काण्ड या उपासना पद्धति विशेष का नाम धम नही और न विशेष वेश भूषा आदि धम है। अपितु धम वह सावभौम सत्य है जिस की परिभाषा ससार के जन जन के लिए एक समान हो। धम देश काल की सीमा मे नहीं बाधा जा सकता। धम केन्द्रिय तत्व ईश्वर है। ईश्वर रहित राष्टीय एकता के वे पक्षधर नही थे।

ईश्वर एक है ईश्वर का निज नाम 'ओ३म है गुण कर्मानुसार ईश्वर के अनेक नाम हो सकते हैं। पृथक पृथक नाम पर पृथक पृथक ईश्वर मानना व्यथ है। एकेश्वरवाद की स्थापना कर महर्षि ने धम और ईश्वर के नाम पर हो रहे विवादो का समाप्त कर धार्मिक एकता उत्पन्न करने का प्रयत्न किया।

दूसरी बात जो महर्षि ने बताई वह यह कि ईश्वर की आज्ञा वेद ही धम का मूल है। मनु के शब्दो मे वेदोऽखिलो धम मूलम् वेद ही धम का मूल है। स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश मे धम और अधम की परिभाषा मे इस तथ्य को स्पष्ट किया है।

जो पक्षपात रहित न्यायाचरण सत्य भाषणादि युक्त ईश्वराज्ञा वेदो से अविरुद्ध है उसको धम और जो पक्षपात सहित अन्यायाचरण मिथ्या भाषणादि वेद विरुद्ध है उसको अधम मानता हू।

वेद ही धम का मूल है इस पर महर्षि ने अनेक शास्त्राथ किए और यह सिद्ध किया कि वेद मनुष्य का मूल ज्ञान है। परमात्मा ने मनुष्य की उत्पत्ति के साथ साथ ही इसको उत्पन्न किया है। धम और अधम की प्रामाणिक व्याख्या वेद मे ही है। अत धर्म के मामले मे वेद को ही प्रमाण मान कर वैदिक धम को अपनाना चाहिए तभी एकता उत्पन्न हो सकती है।

धम सख्या मे एक है अनेक नही अत सब धम समान हैं का नारा व्यथ है। सत्याथ प्रकाश के एकादश समुल्लास मे प्रश्न उत्तर के रूप मे महर्षि कहते हैं।

'प्रश्न—आप सब का खण्डन ही करते आते हो परन्तु अपने अपने धम मे सब अच्छे हैं खण्डन किसी का न करना चाहिए।

उत्तर—धम सब का एक होता है न अनेक? जो कहो अनेक होते हैं तो एक दूसरे के विरुद्ध होते हैं व अविरुद्ध? जो कहो कि विरुद्ध होते हैं तो एक के बिना दूसरा धम नही हो सकता और जो कहो अविरुद्ध है तो पृथक पृथक होना व्यथ है। इसलिए धम और अधम एक ही हैं अनेक नही।

महर्षि दयानन्द मत मजहब पन्थ सम्प्रदाय को न तो धम मानते थे न इसके आधार पर एकता चाहते थे। महर्षि दयानन्द के एकता के भावो को स्पष्ट करते हुए साधु टी एल वास्वानी अपनी पुस्तक ज्योतिमय मे कहते हैं महर्षि दयानन्द सम्पूण हृदय से एकता चाहते थ वे कहते थे कि मुझ मतो के पारस्परिक झगडो से घृणा है क्योकि उनके कारण वह अपने हृदय पूण भावो और महद् विचारो को धर्म के नाम पर प्रकट करते हैं। दयानन्द ने कहा कि बुराइयो का नाश करना मेरे जीवन का उद्देश्य है। परन्तु वह असत्य से मेल करके बाहरी एकता को मोल लेने के लिए तैयार न थे उनका काम चलाऊ एकता स्थापित करने मे विश्वास नही था। इस प्रकार महर्षि दयानन्द ने राष्ट्रीय एकता का मूल आधार धार्मिक एकता और सब का धम वैदिक धम बताया।

## एक भाषा

राष्टीय एकता का दूसरा मूल आधार भाषा मे एकता होना स्वीकार किया। यद्यपि महर्षि की मातृ भाषा गुजराती और पठन पाठन की भाषा सस्कृत थी परन्तु उन्होने हिन्दी को राष्ट्र भाषा स्वीकार कर उसका प्रचुर प्रचार किया। हिन्दी को वे आय भाषा के नाम से सम्बोधित करते थे। बगला, तामिल, तेलगू मराठी गुजराती आदि सभी भाषा आय भाषाए हैं परन्तु इनमे हिन्दी पढने पढाने, लिखने लिखाने, बोलने और

(शेष पृष्ठ 6 पर)

# आर्य समाज : आज के सन्दर्भ में

—प्रश्नावली—

1 आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द की निर्वाण शताब्दी देश विदेश में मनायी जा रही है। इस अवसर पर आप कैसा अनुभव कर रहे हैं ?

2 महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म टंकारा में हुआ शिक्षा दीक्षा मथुरा में और निर्वाण अजमेर में। इन तीनों स्थानों पर महर्षि के स्मारकों का निर्माण हुआ है। क्या आप इन स्मारकों की वर्तमान स्थिति से संतुष्ट हैं अथवा चाहते हैं कि इन स्थलों पर कुछ ऐसी गतिविधियां भी प्रारम्भ की जायें जिनसे आगामी पीढ़ियां प्रेरणा ले सकें और आर्यसमाज के सिद्धान्तों के प्रचार प्रसार में सहायता मिल सके। इस सम्बन्ध में आपके क्या सुझाव हैं ?

3 महर्षि दयानन्द के जीवन की दो प्रमुख घटनाएं हैं—शिवलिंग के ऊपर चूहे का चढ़ना तथा चाचा व भगिनी की मृत्यु। इन घटनाओं के फलस्वरूप उनके जीवन का लक्ष्य ही बदल गया था। उन्होंने उसी दिन से मृत्यु को जानने और मृत्युञ्जय बनने की बात को मन में ठान लिया था। क्या महर्षि दयानन्द अपने उद्देश्य में सफल हो सके और अपनी विचारधारा फैलाकर जगत का कल्याण कर सके ?

4 महर्षि दयानन्द 1883 में दीपावली के दिन निर्वाण से पूर्व पर्याप्त समय तक रुग्ण रहे थे। क्या आप समझते हैं कि उनको उचित औषध और पथ्य न मिल सके इसके पीछे कोई षड्यन्त्र था ? क्या महर्षि के अनुयायियों ने अपने कर्त्तव्य पालन में कोई ढील बरती थी ? आपका इस सम्बन्ध में क्या विचार है ?

5 स्वामी दयानन्द के निर्वाण को सौ वर्ष पूरे हो रहे हैं। इन सौ वर्षों में दुनिया बहुत बदल गयी है। मन में यह सवाल उठता है कि सौ वर्ष पहले की परिस्थितियों में जो आर्य समाज साधक और उपयोगी था वह आज की परिस्थितियों एवं वैज्ञानिक उत्थान के काल में किस प्रकार उतना ही साधक एवं उपयोगी हो सकता है ?

6 महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों का आपके व्यक्तिगत जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा है ? इन ग्रन्थों के माध्यम से देश विदेश में आर्य समाज के प्रचार प्रसार में कितनी सहायता मिली है ? आर्य समाज के अनुयायी सम्पूर्ण विश्व में फैले हुए हैं ? इन ग्रन्थों को सभी देशों तक पहुंचाने के लिए क्या करना चाहिए ? क्या इन ग्रन्थों में कुछ ऐसे स्थल हैं जिन्हें आप हटाना चाहेंगे ?

7 आप एक पक्के आर्यसमाजी हैं ? हम जानना चाहते हैं कि आप अपने जीवन एवं व्यवहार में आर्यसमाज के सिद्धान्तों को कितना अपना सके हैं ? अपने जीवन के सन्दर्भ में बताएं कि आर्यसमाज के सिद्धान्त आज कितने व्यावहारिक एवं उपयोगी हैं।

8 कृपया बतायें कि आपके परिवार में आपके बाद आने वाली नयी पीढ़ी आर्य समाज के सिद्धान्तों में कितनी आस्था रखती है तथा वह उन्हें अपने जीवन में किस प्रकार उतारना चाहती है ? कृपया अपने पुत्र पुत्री के उल्लेख के साथ अपनी बात स्पष्ट करें।

9 वेद किसी देश काल अथवा जाति विशेष के लोगों को अधिक महत्व देते हैं अथवा उन्हीं के कल्याण की बात करते हैं। आपकी राय में ऐसे कौन से कारण हैं जिनकी वजह से लोग वेदों से विमुख होते जा रहे हैं ? आप बतायें कि किस प्रकार वेदों की वाणी को आज जन जन तक पहुंचाया जा सकता है ?

10 वेदों में स्त्रियों को सामाजिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। आर्य समाज ने भी स्त्री शिक्षा के प्रचार से उन्हें सम्मान एवं उचित स्थान दिलाने का बड़ा ही महत्वपूर्ण कार्य किया है। आज पाश्चात्य सभ्यता के फलस्वरूप स्त्री स्वातन्त्र्य की बात बड़े जोरों पर है। इस सम्बन्ध में आर्यसमाज की भूमिका क्या होनी चाहिए ?

11 संगच्छध्वं की वेद विहित धारणा आज की धर्म निरपेक्षता एवं विश्व शान्ति का सन्देश देती है ? यदि वर्तमान विश्व इस मन्त्र का पालन करे तो क्या विश्व समाज का निर्माण नहीं हो सकता ? आपका क्या विचार है ?

12 विश्व के अन्य विकासशील देशों के समान भारत में भी पश्चिमी सभ्यता अपने पैर जमाती चली जा रही है। आज भारत अपनी अस्मिता खोता चला जा रहा है और विसंस्कृतिकरण की भयावह समस्या सामने आ खड़ी हुई है। ऐसी परिस्थिति में वैदिक संस्कृति कैसे बचाई जा सकती है ? आप इसके लिए स्वयं क्या कर रहे हैं और दूसरों को क्या करने का सुझाव देते हैं

13 आर्यसमाज के पहले दो नियम ईश्वर के सम्बन्ध में अगले तीन नियम अपने स्वयं के सम्बन्ध में तथा अंतिम पांच नियम अन्य लोगों के सम्बन्ध में कर्त्तव्य का विधान करते हैं ? इन नियमों में इतनी सामग्री मौजूद है कि इनके ऊपर आचरण करने से व्यक्ति और समाज दोनों कल्याणकारी स्थिति को प्राप्त कर सकें। क्या आप अपने जीवन में इन नियमों का पालन करते हुए इस स्थिति को प्राप्त कर सके हैं ?

14 आज भारत जिन समस्याओं से घिरा है उनसे हम सभी परिचित हैं। ये समस्याएं हैं—क्षेत्र भाषा एवं धर्म की संकीर्णता राष्ट्रीय चरित्र का अभाव अनैतिकता एवं भ्रष्टाचार जनसंख्या का विस्फोट बेकारी तथा युवा पीढ़ी की दिशाहीनता स्वार्थी राजनेताओं के हाथ में सत्ता का अधिकार प्रजातन्त्र का दुरुपयोग गरीबी एवं अशिक्षा का विस्तार सामाजिक कार्यों के प्रति उदासीनता और स्वार्थों का जमघट आदि। एक आर्यसमाजी के रूप में आप इन समस्याओं का किस प्रकार समाधान करना चाहेंगे ?

15 आर्य समाज ने भारत की अनेक प्रमुख समस्याओं के समाधान में सदैव दिशानिर्देश किया है आज भारत में दूषित वर्ण व्यवस्था अस्पृश्यता पाखण्ड एवं भ्रष्टाचार राष्ट्रद्रोह एवं विघटनकारी प्रवृत्तियां तथा बलात धर्मान्तरण आदि समस्याओं का जाल फैला हुआ है। कृपया बतायें इन समस्याओं को समूल समाप्त करने के लिए आप क्या करना चाहेंगे ? देश में अस्पृश्यता की समस्या सरकारी और गैर सरकारी तौर पर काफी कुछ करने के बाद भी भयावह बनी हुई है। आर्य समाज को इस समस्या का निराकरण करने के लिए क्या करना चाहिये ?

16 आर्यसमाज ने भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है। राष्ट्र के विकास के लिए आर्य नेता सर्वत्र तत्पर रहे ? आज राष्ट्र एवं राष्ट्रीयता की भावना के विकास के लिए आर्यसमाज क्या करे ? प्र

17 सम्पूर्ण भारत में हिन्दी का प्रयोग हो और इसे राष्ट्रभाषा का दर्जा प्राप्त हो इसके लिए आर्यसमाज ने क्या किया है ? आज हम विश्व हिन्दी सम्मेलन मनाने जा रहे हैं विदेशों में हिन्दी के प्रचार प्रसार में आर्यसमाज की क्या भूमिका रही है विश्व में हिन्दी को उचित स्थान दिलाने के लिए आर्यसमाज को क्या करना चाहिए ?

18 यदि आज महर्षि दयानन्द सरस्वती जीवित होते तो देश की वर्तमान परिस्थितियों पर उनकी क्या प्रतिक्रिया होती ?

19 आज देश विदेश में आर्य समाज की जो स्थिति है तथा आर्य नेता और उनके अनुयायी जिस प्रकार आर्य समाज को चला और अपना रहे हैं क्या आप उससे संतुष्ट हैं ? आर्य समाज में नित्य नया जीवन आना चाहिए इसके लिए आप क्या सुझाव देना चाहेंगे ?

20 आपके अनुसार आर्यसमाज क्या है और आर्यसमाज को विश्व कल्याण के लिए मानव जाति के कल्याण के लिए क्या क्या कार्यक्रम अपने हाथ में लेने चाहिए ?

(सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधिसभा दिल्ली)

## डा. सूर्यदेव शर्मा नहीं रहे

आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान प्रख्यात साहित्यकार डा सूर्यदेव शर्मा का निधन 5 अक्तूबर को स्वर्गवास हो गया। आप की आयु 83 वर्ष की थी। आप गत दिनों से अस्वस्थ थे।

पं सूर्यदेव शर्मा का जन्म उत्तरप्रदेश में हुआ परन्तु आपका कार्यक्षेत्र अजमेर रहा। यहां डी ए वी माध्यमिक विद्यालय के प्राय बीस वर्ष तक प्रधानाध्यापक रहे। आपके समय में यह शिक्षण संस्था यहां के शिक्षाक्षेत्र में अपना एक विशिष्ट स्थान रखती थी। सेवा निवृत्त होने के पश्चात वर्षों तक आप आर्य समाज केसरगंज के मन्त्री रहे।

आपने अपने जीवन में मितव्ययी बनकर परिश्रम से अर्जित की गई धनराशि को समाज के कल्याण के लिए दान कर दिया। आपने अपने जीवन में दो लाख से अधिक रुपये आर्य संस्थाओं को दान स्वरूप प्रदान किए। ऋषि उद्यान की नवनिर्मित यज्ञशाला में भी आपने 5 हजार रुपये का अपना सात्विक दान प्रदान कर शताब्दी समारोह की सफलता की कामना की। ऐसे योग्य सेवक के उठ जाने का दुःख आर्य समाज को भुलाना सम्भव नहीं होगा। आर्य मर्यादा व सभा की ओर से परिजनों के लिए सम्वेदना एवं आत्मा की सद्गति के लिए ईश्वर से प्रार्थना है।

—

## शोक समाचार

यह समाचार बड़े दुःख के साथ पढ़ा जाएगा कि बस्ती पठाना के प्रसिद्ध आर्य समाजी श्री वैद्य सावन राम का 20 सितम्बर को देहान्त हो गया था। पगड़ी की रसम 2 अक्तूबर को उनके गृह पर हुई यज्ञ सभा के महोपदेशक श्री पं रामनाथ सिद्धान्त विशारद ने प्रभावशाली ढंग से कराया और उपदेश दिया। श्री वैद्य जी ने पचास हजार रु व्यय करके अभी 2 लोगों की भलाई के लिए आयुर्वेदिक औषधालय खोला था।

# महर्षि दयानंद निर्वाण शताब्दी का कार्यक्रम—कुछ विचार

ले प्रो जयदेव जी आर्य—सस्कृत विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय

9 अक्तूबर 1983 के आयजगत मे निर्वाण शताब्दी का विस्तत कायक्रम प्रकाशित किया गया है। उस क यक्रम के देखने और विचार करने मे कछ प्रश्न जो मन मे उभरे है उन्हे इस सम्मेलन के आयोजको के विचाराथ यहा प्रस्तुत कर रहा हू। आ शा है वे इन पर विचार कर यथासम्भव समुचित कायवाही करेगे।

प्रथम बात यह है राजनीतिज्ञो को सम्मेलन मे बु ाने की। दि ली की एक मीटिंग मे कुछ लोग दावा कर रहे थे कि वे ऐसा नही ह ने दगे। तभी इस दावे पर मैंने विश्वास करने से इ कार कर दिया था अस्तु अब उन्हे न बुलाने की बात कहना नि थक प्रतीत होन है परन्तु यह बात अब भी कही जा सकती है कि आम त्रित राजनीतिज्ञो की सूची देखकर य स मेलन काग्रसियो का सम्मेलन उगन लगता है जिनकी नीतियो की हमारे पत्रो मे और मच से निरन्तर आलोचना होनी रहती है। (शायद केवल आय जनता का मन बहलाने के लिए)। जब हिन्दुओ का खून बहाने वाले दरबारा सिह तक को आमन्त्रित किया जा सकता है तो फिर गरकाग्र सी मुख्यमन्त्रियो और राजनताओ ने क्या बिगाडा है कि उनमे से चौ चरणसिह जी को छोड कर और किसी को भी नही बुलाया गया है। कम से कम एन टी रामाराव सी रामचन्द्रन करूण निधि तथा हेगड को तो अवश्य ही बुलाया जाना चाहिए था जिनके राज्यो मे अभी आयसमाज का विस्तार होना है वय अ य भी गैरकाग्र सी मुख्य म त्रियो और नताओ को बुलाया जाना चाहिए था ताकि आ यसमाज की छवि लोगो म एक राजनीतिक दल विशेष की अथवा सत्तारूढ दल की पिटठ सस्था के रूप म न हो। आ य समाज का हित इसी मे है कि उसे दलगत राजनीति की दल दल से सवथा पृथक रखा जाए।

दूसरी बात कुछ अ य विशिष्ट राजनीतिज्ञो को आम त्रित करने की भी है इतने वर्षो मे भारत मे ह ए सम्मेलनो मे हमने नत्र अ य कार्य विशेष सम्पर्क नहीं किया है नेपाल तथा थाई लैड के नरेशो श्री लका तथा बर्मा के राष्ट्राध्यक्षो राजकुमार सिह नरव इडो नेशिया के श्री मन्त्री तथा इजराइल के प्रधानमन्त्री आदि उन सभी राजनेताओ को यथासम्भव देश विदेश मे सम्पन्न होने वाले सम्मेलनो मे आमन्त्रित किया जाना चाहिए। जिनका किसी भी रूप मे भारत या भारतीय सस्कृति से सम्बन्ध है जो कटटर साम्प्रदायिक नही हैं या ईसाइयो और मुस्लिमो आदि की साम्प्र दायिकता से लोहा ले रहे हैं। उनके राज नयिको मिशनो आदि से निरन्तर सम्पक रखने की व्यवस्था होनी चाहिए।

तीसरा बात विदेशी विद्वानो की। साम्यवादी दशो के विद्वानो से सम्पक पर विशेष ध्यान देना चाहिए। चैकोस्लो वाकिया के श्री आडोलल स्मैकल भार तीय सस्कृति के विशेष भक्त हैं। इसके कई विद्वानो को मैंने यहा आय समाज विषयक कछ साहि य भट किया था जिन मे हि दी के प्रसिद्ध विद्वान श्री वलिशेव विशेष उ लखनीय है जिनसे मैं दो तीन बार मिला हू। यदि दि ली विश्वविद्या लय के आ ध नक यूरोपियन भाषाओ के विभाग मे से कछ जने हगरी के श्री बीजन्लिा रूमानिया के श्री आज अका तथा पोलड आदि के प्राध्यापको को यहा ले आने की और उन्हे हि दी सस्कृत तथा अग्र जी का साहित्य भट करने की व्यवस्था की जाए तो बहुत अच्छा हो। इन तीनो महानुभावो और चीनी विभाग की एक महिला प्रोफसर (सत्याथ प्रकाश का चीनी अनवाद करने वाले प्रोफैसर सम्भवत उनके श्वसुर थे) को मैंने आय समाज विषयक साहि य भट किया था और उनसे चर्चा भी की थी। इस बात को विशेष प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

3 नवम्बर को महिला सम्मेलन की शायद ही कोई उपयोगि ता हो वहा भाषण नही विचार के पश्चात निणय होना चाहिए कि सभी सभाओ म एक मन्त्रि के अधीन महिला प्रचारिका पुरोहित विभ ग हो जो नारियो मे प्रचार करे। इस विभाग की स्थापना और सदन्ना के बिना भी आयसमाज का कोई भविष्य नहा है। औ नेत ओ से उसकी स्थापना की अपेक्षा करना भी सम्भवत एक दुराशा मात्र है। फिर भी प्रबद्ध आर्यों को इस पर विचार करना चाहिए। यह अधिक अच्छा होता कि महिलाओ के विभिन्न सगठनो की प्रतिनिधि महिलाओ को इस सम्मेलन मे आमन्त्रित किया जाता (मुस्लिम ईसाई बहाई आदि भी) और उन्हे आयसमाज और नारी विष यक साहित्य भी दिया जाता।

आर्य युवक सम्मेलन का लक्ष्य विश्व विद्यालय स्तर पर एक आय छात्र सग ठन एक अशकालीय दिक्षित प्रचारक सघ अ पकालिक प्रचारक पाठयक्रम आदि विषयो पर विचार कर उसे क्रिया न्वित करना च हिए।

शोभा यात्रा मे प्रथम स्थान यति मण्डल को और दूसरा स्थान विद्व मण्डल को दिया जाना चाहिए। फिर पुरोहित प्रचारक आदि को और तब अन्य नेताओ आदि को शिक्षा सम्मेलन मे शायद किसी भी प्रदेश क शि क्षामन्त्री को नही बुलाया गया है जिनर अ य शिक्षाविद गम्भीर विचार वि मर्श कर सुधार की कछ प्र रणा देते।

इ ी प्रक र अ य सम्मेलनो को भी भाषण स्थ ी न होकर विचार वि ाम के पश्चात ठोस निणय लेने और प्रतिनिधि समिति का निर्माण कर उसे क्रियात्मक रूप देने का साधन बनाना चाहिए।

—

( 4 पृष्ठ का शेष )

लिखने लिखाने मे सबसे सरल है।

सन 1870 मे महर्षि दयानन्द पजाब के भ्रमण पर थे लोगो के आग्रह किया आप अपने ग्रन्थो का अनुवाद उर्दू फारसी मे कर द तो बहुत लाभ उठा सकेगे। महर्षि ने उत्तर दिया अनुवाद तो विदेशियो के लिए हुआ करते हैं दयानन्द के नेत्र तो वह दिन देखना चाहते हैं कि जब काश्मीर से कन्या कुमारी तक और अटक से कटक तक हिन्दी अक्षरो का प्रचार होगा। मैंने आर्यावत भर मे भाषा का एक सम्पादन करने के लिए ही अपने सफल ग्रन्थ आय भाषा में लिखे और प्रकाशित किए हैं।

हिन्दी भाषा के अतिरिक्त और कोई ऐसी भाषा नही है जो एकता उत्पन्न कर सके। हिन्दी की अपनी विशेषता है कि हिन्दी मे जो लिखा जाए वही बोला जा सकता है और जो बोला जाए वही लिखा जा सकता है साथ मे लिखने बोलने एव सीखने मे यह और भाषाओ से बहुत सरल है।

## एक समाज या सस्कृति

एक समाज या सस्कृति से स्वामी जी का आशय यह था कि एक राष्ट म भले ही विभिन्न विचारधाराओ के व्यक्ति रहते हो परन्तु उन का राष्ट्रीय स्तर पर एक समाज या खान पान, रहन सहन, रीति रिवाज आदि सब एक होने चाहिए मत मजहब के विभिन्न सामाजिक नियम न रह कर राष्ट्र का एक सामाजिक कानून या आचार सहिता होना चाहिए। उदाहरणाथ यदि एक पत्नी रखना उचित है तो सबके लिए एक ही पत्नी रखने का कानून होना चाहिए। कहने का तात्पर्य यह है कि धम (मत) मजहब पन्थ और सम्प्रदाय या किसी जाति विशेष या अल्पसख्यकता के आधार पर किसी को कोई छूट नही मिलनी चाहिए अपितु सम्पूण राष्ट में एक सामाजिक आचार सहिता लागू होना चाहिए। आय समाज की स्थापना का मुख्य उद्देश्य ही महर्षि की दष्टि मे यही था कि आय समाज ससार को आर्य बना कर आर्यों का एक विशाल मानव समाज का निर्माण करे।

ये तीन सूत्र एक धम एक भाषा और एक समाज या सस्कृति राष्ट्रीय एकता उत्पन्न करने के साधन हैं महर्षि की दष्टि मे इसके अतिरिक्त और कोई माग नही था और न है।

ऐसे रा ट्रीय एकता के सूत्रधार महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म गुज रात के टकारा गाव मे सन 1824 मे और मृत्यु अजमेर (राज ) मे सन 1883 को दीपावली के दिन हुई थी। जिस की शताब्दी दि 3 4 5 एव 6 नवम्बर को अजमेर मे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मनाई जा रही ह।

—

( प्रथम पष्ठ का शेष )

हम बाल्मीकि ऋषि के ऋणि हैं जिन्होने ऐसा महाकाव्य भारत को दिया जो अमत का एक कलश है। अगर कही ऋषि की इस कृति का घर 2 मे पठन पाठन हो जाए और जन समाज इससे प्र रणा लेकर अपने जीवनो का निर्माण कर ले तो आज फिर भारत मे राम राज्य हो सकता है।

इसलिए हम महर्षि बाल्मीकि जी के जन्म दिवस पर ऋषि के प्रति कृत ज्ञता प्रकट करते हैं। क्योकि अगर मुनि वर न आते तो हमे भगवान राम के इतिहास का भी पता न चलता। इस लिए सभी आय सम ज म उनका यह दिन मनाया जाए और उनके गुणो का गान गाया जाए।

—

# मकान गिर रहा है

रचयिता—श्री महावीर जी विद्यालंकार गु कु कांगड़ी

वह मकान
जो तुम्हारी मा ने
तुम्हारे पिता ने
वर्षों की साधना से
ईश्वर की आराधना से
निर्मित किया था।
क्या!
तुम जानते हो
जब तुम नन्हें थे
उन्होंने सारी रात
जाग कर
देखभाल कर
इस मकान को
दुष्टो की नजरो से
बचाया था
सजाया था
सवारा था
नीले आकाश के नीचे
दुलारा था।
तुम्हे!
जीवन का भेद
बताया था।
दुनिया मे रहने का
तरीका सिखाया था।
और—
जब दात न थे।
तब दूध पियो
जब दात दिए
तो अन्न चबाओ।
बताया था।
नदी की धार से
प्रीत की उठान से
जगत के काटो से
हिंसक पशुओ से
निपटना सिखाया था।
जीवन की हर आपदा से
टकराना सिखाया था।
उत्साह से
रहना बताया था।
परिश्रम का पथ
दिखाया था—
तमसो मा ज्योतिर्गमय
असतो मा सद् गमय
वृहदारण्यक की ऋचा का
अर्थ समझाया था
नास्तिक से आस्तिक
बनाया था
और
तुम्हारे नन्हें से दिल में
स्नेह का पौधा
लगाया था।
सच
वह त्याग व तप से
पिता ने
यह मकान
बनवाया था।

अब तुम्हें
ज्ञात है
ध्यान है
तुम्हारा यह मकान
भौतिक व दैविक
तापो से
संतापो से
गिर रहा है
स्नेह का पौधा
झुलस रहा है।
धूप से—
जल से
धूए से
वर्षा से
सर्दी से
आंधी से
व्याधि से
दु ख से
द्वन्द्वो से
छल छन्दो से
दुनियावी धन्धो से
कटिल हुए कन्धो से
जर्जरित हो चुका है
हताहत हो चुका है
फिर भी—
रहे चले आते हो
सास लिए जाते हो
इस मकान में।
कभी तो
मन से
सोच लेते
यदि
यह गिर गया
तो
क्या होगा।
इसलिए
इसकी
मरम्मत पर
हिफाजत पर
बनावट पर
सजावट पर
संस्कृति पर
सभ्यता पर
परम्परा पर
मर्यादा पर
दृष्टिपात तो करो
और देखो—
इसमे रह कर चले गए
वह मुखिया की तस्वीर को
देखो—
तुम्हारे ऊपर
दीवार पर
टगी है।
तस्वीर से झांकती
दो आंखें
तुम्हें कुछ कहती हैं।

टूटे फूटे
इस जर्जरित मकान की
व्यथा कहती है।
आओ।
उसकी आशाओ को
अभिलाषाओ को
आकांक्षाओ को
मान्यताओ को
अरमानो को
बचाए हैं
उत्थान व
गति नहीं
प्रगति दें।
क्योंकि—
बाहर का ही नहीं
अन्दर का भी
मौसम खराब है।
हर आदमी के मुह पर
पड़ी नकाब है
खाने के और
दिखाने के और
इनके दांत है
बाहर से शांत
अन्दर से अशांत है।
इसलिए—
मकान की ओर देखो
बाहर ही नहीं
अन्दर भी देखो।
मकान गिर रहा है
सच—
आदमी का शारीरिक ढांचा ही
मकान है
और
अन्दर आदमीपन हो—
उसकी संस्कृति है।
सभ्यता है।
इसलिए कहता हू
आज मकान गिर रहा है
आदमी गिर रहा है।

—

# आर्य विद्या परिषद् पंजाब द्वारा आयोजित धर्म रत्न परीक्षा परिणाम

इस वर्ष आर्य विद्या परिषद पंजाब जालन्धर द्वारा आयोजित धर्म रत्न परीक्षा मे उत्तीर्ण होने वाले छात्र एवं छात्राओ के रोल न नीचे दिए जा रहे हैं समस्त परीक्षा मे प्रथम द्वितीय एवं तृतीय आने वाले परीक्षार्थियो का विवरण निम्न प्रकार है।

| स्थान | रोल न | नाम व स्कूल | प्राप्तांक |
|---|---|---|---|
| प्रथम | 523 | कु रानी देवी सुपुत्री श्री जगनन्न गोयल लाल बहादुर शास्त्री आर्य महिला कालेज बरनाला | 127 |
| द्वितीय | 585 | कु मीनाक्षी सुपुत्री श्री योगेश्वर दत्त बी एल एम गर्ज कालेज नवांशहर | 121 |
| तृतीय | 633 | रविन्द्र शर्मा सपत्र श्री कल भूषण शर्मा आर्य कालेज लुधियाना | 120 |

समस्त परीक्षा मे प्रथम द्वितीय एव तृतीय आने वाले परीक्षार्थियो को यथापूर्व पारितोषिक दिया जाएगा।

रामचन्द्र जावेद
सभा महा मन्त्री

अश्विनी कुमार शर्मा
रजिस्ट्रार

## उत्तीर्ण परीक्षार्थी

508 से 512 तक 514 522 से 525 तक 527 से 529 तक 536 538 540 546 548 549 551 557 577 579 से 591 तक 593 597 603 से 605 तक 610 611 614 617 619 621 से 626 तक 628 629 631 से 633 तक 635 637 से 661 तक

वर्ष 16 अंक 29 15 कार्तिक सम्वत् 2040 तदनुसार 30 अक्तूबर 1983 दयानन्दाब्द 159। एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपए

## ३ से ६ नवम्बर तक होने वाले महर्षिदयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह पर अजमेर चलो

# अजमेर में आपको क्या-क्या देखने को मिलेगा

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी पर 3 से 6 नवम्बर 1983 को अजमेर चलो। वहा आपको महर्षि के कुछ स्मरणीय दृश्य देखने को मिलेंगे

1 सर्व प्रथम जब आप बस या रेल द्वारा अजमेर नगरी में प्रवेश करेंगे तब आपको स्मरण आएगा कि मेरे महर्षि जोधपुर मे विष देने के बाद बाद मे रह कर इस नगरी मे अपने जीवन की अन्तिम घड़िया पूरी करने आए थे।

2 कुछ आगे बढ़ने पर आपको भिनाय कोठी नजर आयेगी जिसमें महर्षि ने अपना अन्तिम श्वास लेकर मोक्ष को प्राप्त कर लिया। उपस्थित जन देखते हाथ मसलते रह गए। वह पलंग जिस पर महर्षि अन्तिम समय रहे अभी वैसा ही सुरक्षित रखा है तथा अन्य सामान भी।

3 क्या तुम्हे कुछ महर्षि की प्रयोग की हुई वस्तुए देखने को मिलेंगी। किसी समय सारा सामान पृथिवी मे सुरक्षित गाड़ दिया गया था। फिर श्रीमान बहादुर हर बिलास शारदा ने उसे निकलवाया। इस सबकी विशेष रूप से चार व्यक्ति जानते हैं। दो का स्वर्गवास हो गया। श्री प. ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु और प. भगवद्दत्त रिसर्च स्कालर। दुम दो व्यक्ति अभी जीवित हैं। श्री प. युधिष्ठिर जी मीमांसक और मैं—आचार्य विश्व श्रवा व्यास।

4 फिर आगे बढ़ने पर तुम्हे वह स्थान मिलेगा यहा अनासागर पर स्थित उद्यान में महर्षि की अस्थिया गिराई गई यहा जब निमित यज्ञशाला मे यज्ञ हो रहा होगा।

5 महर्षि की प्रयोग की हुई वस्तुओं में सर्व प्रथम महर्षि की खड़ाऊ देखो जो छोटे साइज की है। जिससे प्रतीत होता है कि मेरे महर्षि के पैर छोटे थे। बड़े आदमी के लक्षणो में एक यह भी लक्षण है कि पैर छोटे हों।

९ कि

सर बड़ा भरतार का

पैर बड़ गवार के

वाराणसी संस्कृत विश्वविद्यालय के वाइस चासलर डा मंगल देव जी शास्त्री को जब मैंने ये खड़ाऊं दिखाई तो उन्होंने उन खड़ाऊओ को अपने सिर पर रखा और कहा कि इस पर महर्षि के पग रखे जाते होंगे फिर कुछ देर भाव विभोर हो कर रोते ही रहे। महर्षि के वस्त्रो को देखने से प्रतीत होता है कि उनकी भुजाए लम्बी थीं। भगवान राम के बारे मे वाल्मीकि रामायण मे लिखा है कि राम आजान बाहु थे—अर्थात राम की भुजाए उनके घुटनो तक लम्बी थी। ठीक उसी प्रकार के महर्षि के भी भुज दण्ड रहे होंगे

6 महर्षि के समय जिस प्रकार की धूप घड़िया हुआ करती थी महर्षि जिस के द्वारा समय का ज्ञान करते थे वह भी सुरक्षित है

7 महर्षि के प्रयोग किए पात्र, मग्गा आदि तथा वस्त्रादि दुशाले प्रभृति वह प्रदर्शनी मे देखने को मिलेंगे

8 महर्षि ने जो वेद भाष्य आदि ग्रन्थ लिखाए व उनकी तीन तीन प्रतिया महर्षि के हाथो से शोधी हुई वहा आप जा कर देखेंगे महर्षि जब भी वेद भाष्य लिखाते थे फिर उसको अपने हाथ से शुद्ध करते थे फिर लिखा जाता था। दुबारा तिबारा फिर महर्षि स्वय देखकर शुद्ध करते थे परोपकारिणी सभा ने इन की रक्षा तीन प्रकार से की है—

क सबके फोटो करा के।

ख—सबको फिल्म बनाकर

ग—फिर उन असली कागजो पर भी औषध लगा सुरक्षित किया गया है।

9 महर्षि के लगभग 26 छोटे बड़े ग्रन्थ हैं जो अभी एक बार भी नही छपे जो इस शताब्दी को मनाकर प्रकाशित किए जायगे। धनिक जन एक एक ग्रन्थ छपने मे सहयोग देवे

10 महर्षि की संस्कृत मे लिखी डायरी देख जिसमे सर्वप्रथम उन्होंने लिखा है कि एक एक वेद पर भाष्य करने में सौ सौ वर्ष लगेंगे। जो मैं करूंगा। फिर उनको पता चल गया कि मेरी आयु सौ वर्ष भी नहीं है तब भी उन्होंने लिखा है। महर्षि के भक्तो यह सब तुम्हे अजमेर निर्वाण शताब्दी पर देखने को मिलेगा।

अत सब काम छोड़कर अजमेर—चलो—अजमेर—चलो—अजमेर चलो।

नो यह स्मरण रहे कि उन बाल ब्रह्मचारी की चार सौ वर्ष आयु होती है जिसका अगला जन्म होता है पर जिस का अन्तिम जन्म होता है वह कर्म समाप्त होने पर मोक्ष पाता है। उसकी आयु चार सौ वर्ष नहीं हो सकती। महर्षि ने अपने एक पत्र मे ऐसा लिखा है कि मुझे मोक्ष प्राप्त हो चुका है तुम्हारे कल्याण के लिए मेरी कुछ दिन जीवन यात्रा और है

—आचार्य विश्वश्रवा व्यास

# आर्य समाज का प्रचार कैसे किया जाए ?

(ले0 सुरेशचन्द्र वेदालंकार एम ए एल टी गोरखपुर)

11 सितम्बर के आर्य मर्यादा के अंक मे सम्पादकीय लिखते हुए पजाब प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने आर्य समाज का प्रचार कैसे किया जाए ? विषय पर लेख लिखा है लेख मे उन्होने भतकाल के विद्वानो की प्रशसा के बाद सार्वदेशिक सभा के अधिकारियो को ट्रस्ट प्रकाशित करने का सुझाव दिया है उससे पहले भी उन्होने आर्य समाज की शिथिलता दूर करने को इसी पत्र मे कुछ लेख लिखे थ उनके लेखो से क्रुद्ध होकर कुछ सार्वदेशिक सभा के व्यक्तियो ने उन्हे आर्य समाज से निकालने की धमकी दे दी धन्य हो आर्य समाज के कर्णधारो जरा सोचो आर्य समाज के लोग ही अपनी वास्तविक स्थिति नही बतलायगे तो क्या दूसरे लोग आपको सचेत करगे मैं श्री वीरेन्द्र जी की प्रशसा करूगा कि उन्होने अकालियो से देश की अखण्डता को नष्ट करने वाले आन्दोलन के विरोध मे हिन्दुओ मे चेतना और आत्म सम्मान की भावना ही न जागत की परन्तु उन्हे हिन्दू मच पर ला कर खड़ा कर दिया जिसका श्रेय आर्य समाज को भी मिला

परन्तु विद्वानो की कमी से आर्य समाज के कार्यों मे कमी आई मैं यह मानने को तयार नही हू उस समय के विद्वान तो महान विद्वान थ ही परन्तु उनकी विद्वतापूर्ण वक्तताए उतना प्रभाव नही डालती थी जितना कि आर्य समाज के अधिकारियो के प्रयत्न और आदर्श चरित्र तथा उपदेशको की विद्वता के साथ उनका त्याग निःस्वार्थ लगन और प्रेरणादायक व्यक्तित्व आचार्य राम देव जी विद्या के सागर या चलते फिरते पुस्तकालय थे परन्तु विद्वता के साथ साथ उनका सरल जीवन निष्कपट मन और शिष्यो के प्रति एक दृष्टि उनके प्रभाव का कारण था पूज्य श्री सत्य व्रत वेदालकार मेरे सहाध्यायी थे। उनकी पूज्या माता जी ने उन्हे एकान्त मे मिठाई खिला दी 5 आचार्य जी को पता लगा गरुकुल मे तो समानी प्रपा सह वोऽन्नभाग चलता था आचार्य जी ने उन्हे उसी समय आदेश दिया कि सब विद्यार्थियो को वह मिठाई मगवा कर खिलाओ । हमे मिठाई मिली। आचार्य जी ने भी सत्यव्रत की मा से कहा कि सत्यव्रत ही नही यह सब मेरे बच्चे है फिर एक से मोह क्यो ? ममता क्यो ? क्या यह चरित्र प्रभाव नही डालेगा ? आचार्य वसुपति जी का पुत्र भी सौभाग्य से मेरे साथ पढ़ता था—धर्मेन्द्र कुमार यदि उसके लिए कुछ आता था तो बट कर सबके पल्ले पड़ता था लोग उनकी विद्वता भाषण कला और काव्य रचना से प्रभावित होकर नही आते थे वे उन महान आत्माओ के दर्शन करते आते थे स्वामी स्वतन्त्रानन्द का वह विशाल और महान व्यक्तित्व क्या हजार व्यक्तियो के लिए दर्शनीय नही था क्या महात्मा नारायण स्वामी की चिन्तनशील मुख मुद्रा और वृद्ध अवस्था की चमक दर्शको को प्रभावित नही करती थी ? पूज्य प्रेमानन्द जी का वह हसमुख चेहरा उनके हृदय की उदारता उच्च चरित्र और सबके प्रति मित्रता और स्नेह की भावना जनता के आकर्षण का केन्द्र न बनती थी ? जहा उपदेशको का और सन्यासियो तथा सन्यासियो का यह रूप था वहा उस समय के अधिकारी भी आकर्षण के केन्द्र थे ? उनके चरित्र बल पर प्रचार का काम करते थे तब उत्सवो मे इतनी भीड उमड़ा करती थी । साल भर चर्चा हुआ करती थी गोरखपुर के श्री मिश्रीलाल और श्री दुधमनारायण आर्य समाज के उत्सव के अपनी थोड़ी आमदनी में भी कभी कोई किसी समय आए बिना भोजन के लौट नही सकता था । मेरा मन्तव्य है आर्य समाज के उपदेशक और अधिकारियो को स्वय को उदाहरण बनाना होगा ।

उत्तर प्रदेश प्रान्तीय प्रतिनिधि सभा समाज मे एक महान उपदेशक कहा वे अपने को समझते हैं पर उन्होने दक्षिणा तय नही की क्योंकि यदि तय करते तो वह आर्य समाज उन्हे बुलाती नही उन्होने प्रत्येक भाषण का 100 मांगा 6 भाषण का 3 सौ रुपया उनको देखा देखी भजनोपदेशक ने भी वही माग की और आर्य समाज के अधिकारियो ने दे दिया अब उपदेशको की शिकायत है कि भाग नही की दक्षिणा मे भारी कटौती हुई ?

सन्यासियो और वानप्रस्थियो का हाल यदि सुनाऊ तो लोग अप्रसन्न हो जाएगे । श्री वीरेन्द्र जी ने जब आदर्श सन्यासियो की चर्चा की है तो मे आर्य सन्यासियो की दो एक बात तो कहा ही ह । आर्य समाज के एक सन्यासी हैं वे प्रथम श्रेणी का आने जाने का व्यय मांगते हैं। और आशा करते हैं द्वितीय श्रेणी के रिज़र्वेशन वाले डिब्बे मे और मच से चरित्र निर्माण की चर्चा और सरकारी कर्मचारियो के भ्रष्टाचार की पोल खोल कर रख देते हैं। वे आने के साथ ही डाट डपट वह नहीं कह कर अधिकारियों को परेशान कर देते हैं। एक बार उनसे मेरा भी पाला पड़ा। आते ही उन्होंने ... के चुनाव को भी मात करने वाले हथकण्डे से वे क्या जनता को अपनी ओर आकर्षित करेंगे ?

इस प्रसंग मैं आधुनिक युग के आर्य सन्यासियो वानप्रस्थियों और उपदेशको तथा भजनोपदेशकों की चर्चा करना चाहता हू। उपदेशक को आर्य समाज के प्रचार से केवल रुपयों से मतलब है ? आर्य समाज के उपदेशको तथा भजनोपदेशको को रुपया पर्याप्त देना चाहिए परन्तु यदि रुपए की माग के परिणाम आर्य समाज का प्रचार ही बन्द हो जाए ऐसा नही होना चाहिए। आज कल तो चलते समय आर्य समाज के उपदेशको और अधिकारियो मे मारपीट गाली गलौच की स्थिति आ जाती है और आवश्यकता अगले वर्ष का उत्सव स्थगित कर देता है । प्रचार रुक जाता है क्या यह हम उपदेशको के लिए चिन्तनीय बात नही ? एक छोटी आय ... उन्होंने कहा मुझे लिखने को कागज और एक फाउन्टेनपेन चाहिए। मैं तो उस दिन से लिखने में ... न था। उन्होंने मुझे ... दिया तो बाजार में उसकी कीमत 15-16 रुपए निकली। इसके साथ ही एक सुगन्धित तेल की शीशी (नाम याद नहीं) एक बढ़िया साबुन और शेव आदि 30 35 रुपए का नुस्खा बतला दिया। शेव क्या करेंगे ? उनके एक भी बाल न था।

दूसरे सन्यासी हैं वे तो और गर्व कर हैं और वे सब इन्दिरा गान्धी विरोधी के अच्छे ज्ञाता हैं। उनका भाषण इन्दिरा गान्धी को गालियो से भरा होता है। एक दिन वेद प्रवचन वेद मन्त्र से प्रारम्भ किया और उसकी समाप्ति सूप से हुई ? उनका भोजन का खर्च 60 65 रुपए रोज का है। आर्य समाज मे एक ऐसा वर्ग है जो पढ़ता लिखता नही मुसलमानो और ईसाइयो को गालियां सुनने मे मजा लेता है और इसमे राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के व्यक्ति जिनका आर्य समाज से कोई सम्बन्ध नही होता ऐसे भाषणों को बढ़ावा देते हैं

कई वानप्रस्थी और सन्यासी जाति वाद से प्रभावित हो अपनी जाति के व्यक्तियो से आश्रमादि के लिए रुपए लेते हैं। तो मैं पूछता हू कि आप क्या इनसे प्रचार की आशा करते हैं ?

श्री वीरेन्द्र जी ने सार्वदेशिक सभा से अपील की है कि वह आर्य समाज के प्रचार के लिए साहित्य प्रकाशन का काम कर और साहित्य प्रकाशन मे ट्रस्ट को उन्होने सहायक माना है एक दो वर्ष पहले की बात है। मेरे कहने पर श्री वीरेन्द्र जी ने मेरी दो पुस्तक प्रकाशित करने के लिए देखने को मगाई। चार मास बाद जब मैंने उन्हें स्मरण पत्र लिखा तो उन्होने उन्हें लौटाया और खेद के साथ लिखा कि उन्हें प्रमाण के लिए गए वेद मन्त्रो के लिए प्रूफ रीडर नहीं मिला। मैंने उन्हें लिखा कि हम लोग धन्य हैं कि सौ वर्ष में वेद मन्त्रो का प्रचार तो दूर प्रूफ रीडर भी न बना सके। मेरी वह पुस्तक नवम्बर प्रथम और हम वीर हैं नाम से आर्य कुमार सभा किंग्सवे रोड दिल्ली मे प्रकाशित की हैं और उन्हे आर्य जनता ने सरस तथा प्रेरणादायक पाया है । अब मैं इसलिए उनके ट्रस्टो का मतलब नहीं समझ पाया।

लेखक के सब विचारो से हम सहमत नही हैं। फिर भी इस लेख को प्रकाशित कर रहे हैं ताकि दूसरो के विचार भी सामने आ सक। कोई और महानुभाव भी इस विषय मे कुछ लिखना चाह तो हम उसका स्वागत करगे। केवल आर्य समाज के सिद्धान्तो के विरुद्ध आर्य मर्यादा मे कुछ प्रकाशित नही हो सकता। —सम्पादक

( शेष पृष्ठ 8 पर )

## सम्पादकीय—

# आर्य समाज कब तक सोया रहेगा (2)

इसी क्रम के पिछले लेख में मैंने आर्य जनता का ध्यान इस ओर दिलाया था कि देश के सामने इस समय जो समस्याए पैदा हो रही हैं, आर्य समाज उनकी तरफ से इस समय बिल्कुल उदासीन है। कुछ समस्यायें ऐसी हैं जिनका आर्य समाज से सीधा सम्बन्ध है। उनके विषय मे आर्य समाज को एक निश्चित नीति बना कर सक्रिय रूप से आन्दोलन करना चाहिए। परन्तु आर्य समाज के नेता बिल्कुल सो रहे हैं। जिसका एक परिणाम यह भी हो रहा है कि इस समय आर्य समाज का कही भी नाम नहीं लिया जा रहा। मैंने पिछले लेख मे लिखा था किस प्रकार रजनीश साई बाबा, महेशयोगी और दूसरी तरफ निरकारी नामधारी, अकाली ये सब अपने अपने विचार धारा के लिए साहित्य भी तैयार कर रहे हैं और अपना प्रचार भी कई तरह से कर रहे हैं। जिन भाईयो को पंजाब की वर्तमान स्थिति का कुछ पता है वे जरनैल सिंह भिण्डरांवाला का नाम सुन चुके हैं। वह अमृतसर के गुरुनानक निवास मे रहता है और वहीं से समय-समय पर भाषण भी देता रहता है। आजकल उसके भाषणो के कैसेट तैयार कर के पंजाब के देहात में बांटे भी जा रहे हैं और बेचे भी जा रहे हैं, इस प्रकार उसका प्रचार सिखो के घरों तक पहुंच रहा है। क्या कभी आर्य समाज के नेताओ ने इस पर भी विचार किया है कि जो नवीन उपकरण तैयार हो रहे हैं उन्हे आर्य समाज के प्रचार के लिए कैसे प्रयोग किया जा सकता है? इन सब बातो पर उसी समय विचार हो सकता है, यदि किसी को आर्य समाज की चिन्ता हो। कुछ व्यक्तियों को अपनी तो चिन्ता है आर्य समाज की नही इसका यह परिणाम है कि आर्य समाज पिछड रहा है और उसका कहीं नाम नही लिया जा रहा।

पिछले अंक में मैंने जगन्नाथपुरी के मन्दिर में प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के प्रवेश पर जो प्रतिबन्ध लगाया गया है, उसके विषय मे लिखा था। मैं समझता हू कि आर्य समाज को प्रधानमन्त्री के पक्ष मे अपनी आवाज उठानी चाहिए थी। यह ठीक है कि उनका विवाह एक पारसी के साथ हुआ था। परन्तु वह वैदिक रीति के अनुसार हुआ था। उसके बाद भी श्रीमती इन्दिरा गांधी प्रायः हिन्दू मन्दिरो मे जाती रहती हैं। वे कई हिन्दू सन्तों और महात्माओं के पास भी जाती हैं। यह उसी स्थिति में हो सकता है, यदि उनके दिल में हिन्दू धर्म या हिन्दू जाति के लिए कुछ सम्मान हो। ऐसी स्थिति मे उन पर यह प्रतिबन्ध लगाना किसी प्रकार भी उचित नहीं। इसी प्रकार के प्रतिबन्ध पहले और आज भी हमारे उन भाईयो पर लगते हैं जिन्हे अब हरिजन कहा जाता है। और यदि वे लोग हम से दूर जा रहे हैं तो इसका एक कारण यह भी है कि कई मन्दिरो के दरवाजे उनके लिए बन्द कर दिए गए हैं। ऐसी स्थिति मे आर्य समाज का यह कर्तव्य था कि जो प्रतिबन्ध प्रधानमन्त्री पर लगाया गया है, उसके विरुद्ध आर्य समाज अपनी आवाज उठाता। परन्तु खेद का विषय है कि किसी ने उस तरफ ध्यान नहीं दिया।

दूसरा विषय जिसकी ओर मैं आर्य जनता का ध्यान दिलाना चाहता हू वह यह कि कई खाने की चीजो में गऊ की चर्बी मिलाई जाती है। अब यह कोई छुपी हुई बात नहीं। सारा देश इसे जानता है। आर्य समाज को इसके विरुद्ध भी एक आन्दोलन चलाना चाहिए था। गऊ की चर्बी केवल वनस्पति घी मे ही नही पडती और भी कई चीजो मे पडती है, क्यों न आर्य समाज यह आन्दोलन प्रारम्भ करे कि जिस प्रकार सिगरेट के ऊपर लिखा जाता है कि इसे पीने से स्वास्थ्य को हानि पहुचती है, उसी प्रकार जिन वस्तुओं मे वह खाने पीने की हो या साबुन तेल हो या कुछ और चीज हों उसके साथ यह लिखा जाना चाहिए कि इसमे गऊ की या किसी और पशु की चर्बी है। ताकि जो व्यक्ति उसे खरीदें वह किसी भ्रम मे पडे न खरीद ले। यदि जनता पर पता चल जाए कि इस मे चर्बी है, तो बहुत से लोग वे चीजें नहीं खरीदेंगे। आर्य समाज के कई नेता गऊ हत्या पर प्रतिबन्ध लगाने के लिए बहुत कुछ कहते और करते रहे हैं। सार्वदेशिक सभा के प्रधान तो एक बार स्वर्गीय आचार्य विनोबा भावे से यह आज्ञा लेने भी गए थे कि उन्हें गऊ हत्या रोकने के लिए अनशन करने दिया जाए। आचार्य विनोबा ने उन्हें रोक दिया और वे रुक गए। परन्तु मेरे लिए यह आश्चर्य का विषय है कि सारे देश मे गऊ की चर्बी के प्रश्न पर इतना शोर हुआ और आर्य समाज की शिरोमणी सभा सार्वदेशिक सभा इस विषय मे अभी तक चुप है। देश के सामने और भी कई समस्यायें हैं, जिनके विषय में आर्य समाज अपने देशवासियों का नेतृत्व कर सकता है। आर्य समाज तो तब करे, यदि कोई उसका नेतृत्व करने वाला हो और उसे बताया जाए कि इस विषय पर आन्दोलन करो। जनता सब कुछ करने को तैयार है। यदि उसे कोई बताने को तैयार हो कि वह क्या करे।

इसी प्रकार हिन्दी का प्रश्न है। देहली में विश्व हिन्दी सम्मेलन हो रहा है। इसमें आर्य समाज का कोई योगदान नहीं। हालांकि सब से पहले आर्य समाज ने ही हिन्दी का झण्डा उठाया था। क्यो न आर्य समाज हिन्दी के प्रश्न पर एक अखिल भारतीय सम्मेलन करे। आर्य समाज यदि चाहे तो अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन भी कर सकता है। लेकिन आज परिस्थिति तो यह है कि किसी भी प्रश्न पर आर्य समाज नही बोल रहा। संस्कृत सम्मेलन हो जाए। हिन्दी सम्मेलन हो जाए। कोई और सम्मेलन हो जाए। आर्य समाज का कही जिक्र नही आता। यह स्थिति अत्यन्त शोचनीय है। अजमेर मे जो ऋषि निर्वाण सम्मेलन हो रहा है, उसमे आर्य जनता के सामने कोई नया कार्यक्रम रखा जाएगा या नही, मेरे लिए इसके विषय मे कुछ कहना कठिन है। परन्तु यह समय था, जब आर्य समाज के सामने एक नया कार्यक्रम रखा जाता। 1975 मे आर्य समाज की शताब्दी भी इसी प्रकार चली गई थी और अब 1983 मे ऋषि निर्वाण शताब्दी भी इसी प्रकार चली जाएगी। मैं समय समय पर अपने विचार आर्य जनता के सामने रख देता हू लेकिन उर्दू की एक कहावत प्रसिद्ध है कि—

नक्कार खाना मे तूती की आवाज कौन सुनता है। मेरी आवाज भी कोई नही सुनता। परन्तु जब तक मैं कह सकता हू, कहता जाऊंगा। कोई सुने या न सुने। आर्य समाज के नेता तो नही सुनते आर्य जनता तो सुनेगी।

—वीरेन्द्र

# आर्य प्र.नि.सभा पंजाबसेसंबंधित अधिकारी महानुभावों की सेवामें

23 अक्तूबर को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सभा की जो बैठक जालन्धर मे हुई थी, उसमें यह निर्णय लिया गया है कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का वार्षिक अधिवेशन जो 26-27 नवम्बर 83 को भटिण्डा मे होना था, वह अभी स्थगित कर दिया जाए। जनवरी मे पंजाब की सारी स्थिति को देखने के पश्चात यह फैसला किया जाए कि वार्षिक अधिवेशन कब और कहा करना है इसी के साथ मैं यह भी निवेदन कर देना चाहता हू कि जिन आर्य समाजो ने अभी तक अपने प्रतिनिधि नही भेजे वे दिसम्बर के अन्त तक भेजने का कष्ट करें। जनवरी मे यदि स्थिति सामान्य हुई तो वार्षिक अधिवेशन की तिथि और स्थान निश्चित कर दिया जायेगा। उससे पहले-पहले प्रतिनिधियो की सूची पूरी कर ली जाएगी। इसलिए जिन आर्य समाजो ने अभी तक अपने प्रतिनिधि निर्वाचित नही किये वे उनका निर्वाचन करके सभा को सूचित कर दें।

2 जैसाकि आपको मालूम है कि महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी 3 नवम्बर से 6 नवम्बर तक अजमेर मे मनाई जा रही है। पंजाब से लगभग पांच-छः सौ के लगभग महानुभाव, बहन और भाई वहां जा रहे हैं। जो नही जा रहे उनका भी कुछ कर्तव्य है। इसलिए मेरा यह सुझाव है कि 4 नवम्बर 83 को दीपावली के दिन जिस दिन महर्षि का देहान्त हुआ था, सब आर्य समाजो मे बहुत बडा यज्ञ किया जाए और यह यज्ञ एक सप्ताह तक यानि 10 नवम्बर तक चलता रहे। 10 नवम्बर को इसकी पूर्णाहुति डाली जाए। इसी बीच जहा जहा सम्भव हो सके आर्य समाजें अपने निर्धन भाईयो को बुला कर कम्बल गर्म कपड़े रजाईयां और दूसरी वस्तुएं जिनकी आवश्यकता है वह बांटें। साथ ही आर्य समाज का साहित्य भी निःशुल्क बांटा जाए। कहने का अभिप्राय यह कि 4 नवम्बर से 10 नवम्बर का सप्ताह ऋषि निर्वाण सप्ताह मनाया जाए उस दिन जहा-जहा सभाएं हो सकती हैं, सभाएं करके महर्षि दयानन्द सरस्वती ने देश के नव-निर्माण मे अपना जो योगदान दिया था, वह जनता के सामने रखा जाए। यह सप्ताह एक प्रकार से प्रचार का सप्ताह बना दिया जाए। यज्ञ करने आवश्यक हैं। कोई आर्य समाज ऐसी नही रहनी चाहिए जिसमे सात दिन यह यज्ञ न किया जाए। इस यज्ञ मे दूसरे भाईयो को भी आमन्त्रित किया जाए और जहा जहा सम्भव हो, बुद्धिजीवियो को बुलाकर गोष्ठियां भी की जाए। यह मैं इसलिए लिख रहा हू कि जो भाई अजमेर नहीं जा रहे वे अपने-अपने शहरो मे रहकर महर्षि दयानन्द की याद को और इस देश के ऊपर उनके जो उपकार हैं उन्हे जनता तक पहुंचाने का पूरा प्रयास करें।

मैं आपका ध्यान इस ओर भी दिलाना चाहता हू कि जालन्धर मे आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के कार्यालय गुरुदत्त भवन का जो भवन बन रहा है उसकी 11 दुकानें बन चुकी हैं। अब यज्ञशाला सभा भवन, पुस्तकालय और अतिथि भवन बनाने हैं। इन सबके लिए धन की आवश्यकता होगी। प्रत्येक आर्य समाज को अपने-अपने जिम्मे कुछ न कुछ राशि अवश्य लेनी चाहिए। जो भाई या जो आर्य समाजें इसके लिए दान देंगी, उन सबके नाम पत्थर पर लिख दिए जाएंगे।

आशा है मैंने इस लेख मे जो-जो निवेदन किए हैं आर्य समाजो के अधिकारी उनकी ओर ध्यान देंगे।

—वीरेन्द्र
सभा प्रधान

# कौन तेरे वेद का पावन संदेशा ले के आया ?

लेखक—श्री यशपाल जी आर्य बन्धु चन्द्र नगर मुरादाबाद

वेद ईश्वरीय ज्ञान है जोकि सृष्टि के प्रारम्भ मे सृष्टि के रचयिता परब्रह्म परमात्मा ने मानव मात्र के कल्याण के लिए प्रदान किया था। वैदिक ऋषियो ने इस पुनीत थाती एव पावन ज्ञान को अक्षुण्ण रखने तथा उसके प्रचार प्रसार के लिए अपने जीवनो को ही खपा दिया था और उस पर भी उनकी यही लालसा बनी रहती थी कि आगामी जीवन भी इसी पुनीत कार्य मे बिताया जाए। ऋषियो की यह परम्परा सृष्टि के प्रारम्भ से महाभारत के काल तक अनवरत रूप से चलती रही। किन्तु दुर्भाग्य से महाभारत के पश्चात यह ऋषि परम्परा लुप्त हो गई जिससे वेद का ज्ञान भी लोप हो गया। और सर्वत्र घोर अन्धकार छा गया तथा पाखण्ड मत मतान्तर फैलने लग गये। जब तक ऋषियो की परम्परा रही यह देश जगत गुरु कहलाता था और वेद का पावन सन्देश ससार भर को निरन्तर सुनाता रहा। पर जब वेदवेत्ता ऋषि नहीं रहे तब वेद का प्रचार फिर कैसे रह सकता था ? परिणाम स्वरूप देश पतन की ओर उन्मुख हो गया। पतन का एक युग ऐसा भी आया कि जब वेद के कर्मकाड के नाम पर यज्ञो मे पशु बलि जैसी नितात घिनौनी प्रथा का प्रचलन हो गया और निरीह तथा मूक प्राणियो का निर्ममता पूर्वक वध होने लग गया। अविद्या अधकार भरे ऐसे युग मे एक महामानव भारत वर्ष मे उत्पन्न हुआ और उसने निरीह तथा मूक प्राणियो की रक्षा का बीड़ा उठाया। उस महामानव का नाम गौतम बुद्ध था। महात्मा बुद्ध ने पशु बलि का प्रबल विरोध किया। किन्तु दुर्भाग्य से इनकी गति भी वेदो तक नही थी और ऐसा न होने से देश का बहुत बडा अहित हुआ। जब महात्मा बुद्ध ने यज्ञो मे पशु हिंसा का विरोध किया और अहिंसा का प्रचार करना प्रारम्भ किया तो दम्भी पाखण्डी एव धूर्त लोगो ने वेदो की दुहाई दे देकर पशु बलि का समर्थन करना प्रारम्भ कर दिया। गौतम बुद्ध ने बजाये इसके कि स्वय वेदाध्ययन कर यह सुनिश्चित करते कि क्या वस्तुत वेद पशु बलि का समर्थन करता है या नही उन्होने यह कह कर वेद को ही मानने से इन्कार कर दिया कि जिस वेद मे पशु बलि का विधान हो, मैं उसे मानने को तैयार नही। और जब पाखण्डियो ने अपने ब्राह्मणो से यह व्यवस्था दिलायी कि वेद तो ईश्वरीय वाणी है अत उसको मानना प्रत्येक आस्तिक के लिए आवश्यक है, तो महात्मा बुद्ध ने तब यह कहकर ईश्वर की भी अवमानना कर डाली कि जिस ईश्वर का ऐसा आदेश है, तो मैं उसे भी मानने के लिए तैयार नही। मिथ्यावादियो के मिथ्या कथन को मानकर गौतम बुद्ध ने ईश्वर की अवमानना की थी। जबकि चाहिये यह था कि वे स्वय यह सुनिश्चित करते कि वस्तुत वेद मे ऐसा कोई विधान है भी कि नही ? और वेद मे इस प्रकार का विधान न पाने पर मिथ्यावादियों का डट कर विरोध करते पर वे ऐसा नही कर सके।

सौभाग्य से नास्तिकता के इस घोर युग मे आचार्य शकर का जन्म हुआ। उन्होने बौद्धो से अनेकश शास्त्रार्थ कर वैदिक धर्म की पुनर्स्थापना का प्रबल उद्योग किया। यद्यपि नास्तिक मत के प्रभाव को दूर करने मे उन्हें आशातीत सफलता प्राप्त हुई तथापि वेदो की वास्तविक प्रतिष्ठा फिर भी प्राप्त नही हो सकी। नास्तिक मत के उन्मूलन एव आस्तिक मत के प्रचार हेतु उनकी सेवाओ का कृतज्ञतापूर्वक स्मरण करते हुए भी जहा तक वेद का प्रश्न है हमें तो कुछ ऐसा लगता है कि या तो उनकी वेदो तक पूर्ण पहुच नही थी या फिर वेद की इयत्ता को वे समझ ही नही पाये। यदि ऐसा न होता और वेदो तक उनकी पूर्ण पहुच होती तो ब्रह्मवाद जीवेश्वर ऐक्य वाद और जगत के मिथ्यात्व जैसे वेद विरुद्ध वादो का प्रतिपादन एव प्रचलन वे न करते। साथ ही हम यह भी देखते हैं कि अपनी मान्यताओ की पुष्टि मे वे वेद का नाम तो स्थान स्थान पर लेते हैं पर प्रमाण प्राय वेदेतर ग्रन्थो का ही देते हैं। अपने मत के समर्थन मे स्थान स्थान पर इति श्रुति कह कह कर भी प्रमाण श्रुति का नही देते। यदि श्रुति का प्रमाण दिये होते तो स्त्री शूद्रोनाधीयताम इति श्रुते यह वेद विरुद्ध प्रमाण क्यो देते ?

महीधर सायण आदि वेदो के भाष्यकार अवश्य हुए हैं। पर उन्होने वेद का जितना अहित किया है स्यात इतना किसी अन्य ने किया हो। उन्होने अर्थ का अनर्थ कर दिया। परिणाम स्वरूप लोग वेदो से कोसो दूर हो गये। सूर तुलसी आदि कवियो तथा पुराण की रचयिता सस्कृत कवियो मे से कोई भी वेदो की बात कहने वाला नही था। सब वेद की दुहाई देते थे पर बात इधर उधर की ही करते थे। अत वेदो का पावन सन्देश कोई भी नही ला सका था।

आधुनिक सुधारकों मे राजा राम मोहन राय का नाम सर्वप्रथम आता है। भारत के सामाजिक तथा सास्कृतिक पुनरुत्थान के वे जनक माने जाते हैं। वेद विरुद्ध मूर्ति पूजा आदि के विरुद्ध उन्होने कुछ आवाज भी उठाई थी और सती प्रथा के अभिशाप को भी दूर करने का सराहनीय प्रयत्न किया था। पर उन के इन सब कार्यों का यथार्थ मूल्याकन करते हुए एव उनके प्रति नतमस्तक होते हुए भी जहा तक वेदों का प्रश्न है हम तो इसी निष्कर्ष पर पहुचे हैं कि वेदो के प्रति उन्होने कुछ श्रद्धा अवश्य दिखाई थी पर वेद की इयत्ता के सम्बन्ध मे वे प्राय भ्रान्तियों के ही शिकार रहे। उपनिषदो को ही वेद समझते रहे एव उन्ही के अध्ययन अध्यापन को ही प्रोत्साहन देते रहे। बात यदि उपनिषदो के अध्ययन के प्रोत्साहन तक ही सीमित रहती तो भी कुछ बुराई नही थी। पर जब हम उन्हें वेदाध्ययन के विरोध मे सचेष्ट देखते हैं तो उसे वेद के प्रति उनकी अनास्था ही कह सकते हैं ब्रिटेन के सग्रहालय मे फ्रडरिक रोजन द्वारा ऋग्वेद की हस्तलिपि की नकल करने को हेय दृष्टि से देखना और उसे समय नष्ट करना बताना और उसके स्थान पर उपनिषद के अध्ययन की प्रेरणा देना हमारी बात की पुष्टि करते हैं। (देखें डा राम प्रकाश कृत वेद विमर्श पृष्ठ 2?) जहा मनु जी का यह आदेश हो कि जो द्विज वेद को न पढकर अन्यत्र श्रम करता फिरता है वह अपने पुत्र पौत्र सहित शीघ्र ही शूद्रत्व को प्राप्त हो जाता है वहीं आधुनिक सुधार आदोलनो का जनक यह महामानव वेद के अध्ययन को समय नष्ट करना बताता है। उनकी शिष्य परम्परा मे भी कोई वेद की बात नही कह सका।

जहा तक स्वामी विवेकानन्द जी का प्रश्न है हमे तो ऐसा लगता है कि वेदो तक उनकी गति तो क्या वेद किन ग्रन्थो का नाम है एव उनमे क्या है वे इस विषय मे भी व्यामोह का ही शिकार रहे। वे वेद के प्रति अपना कोई सुनिश्चित मत भी व्यक्त नही कर सके। उनके विभिन्न ग्रन्थो एव व्याख्यानो मे वेद विषयक परस्पर विरोधी विचारो का ही बाहुल्य दृष्टिगोचर होता है। कही तो वे वेदो को अपौरुषेय ईश्वरीय ज्ञान बताते हैं तो कही विभिन्न कालो मे विभिन्न ऋषियो द्वारा सचित ज्ञान राशि। कहीं तो वेदो को समस्त ज्ञान का भण्डार बताते है तो कहीं निरा ज्ञान विहीन शुष्क कर्मकाड। वेद के सहिता भाग को केवल कर्मकाड परक मानने के कारण वे सर्वत्र उन्हें उपेक्षित दृष्टि से देखते रहे और उपनिषदों को ज्ञानकांड अलग कर मानने के कारण उनको अपेक्षाकृत अधिक गौरव देते रहे। उनकी मान्यताओं के सूक्ष्म अध्ययन से पता चलता है कि वे केवल संहिता भाग को ही वेद नहीं मानते थे अपितु ब्राह्मण ग्रन्थों एवं उपनिषदो को भी वेद की कोटि में रखते थे। यदि वे इसी पर ही बस करते तो कोई बात नही थी, पर दुख तो तब होता है कि जब हम उन्हें ये बाईबिल कुरान और अन्य तथाकथित धार्मिक ग्रन्थ समूह को भी ईश्वरीय ग्रन्थ के विभिन्न पृष्ठ बतलाते हुये पाते हैं। उनकी मान्यता है कि ईश्वर का ग्रन्थ अभी समाप्त नही हुआ और न कभी समाप्त होगा ही। उसके तो असख्य पृष्ठ अभी भी अप्रकाशित पडे हैं। दुख और आश्चर्य तो तब होता है कि जब वे वेद के कर्मकाड के द्वारा मुक्ति की सम्भावनाओ से इन्कार करते दिखाई देते हैं। जिस वेद के सम्बन्ध में [illegible] भी महर्षि एक स्वर से कह रहे हो कि वेद अभ्युदय एव नि श्रेयस की सिद्धि की सम्पूर्ण विद्या एव निधि अपने गर्भ में समेटे हैं, उस के सम्बन्ध मे स्वामी विवेकानन्द यह कह रहे हैं कि वेद के कर्मकाड द्वारा मुक्ति की कोई सम्भावना नही क्योंकि उनके मत मे वेद शुष्क कर्मकाड के ग्रन्थ हैं उनमे ब्रह्मविद्या का लेशमात्र भी नही और ज्ञान के बिना मुक्ति होती ही नही। उपनिषद चूकि ज्ञान के भण्डार हैं अत वे ही मुक्ति के परम सोपान हैं। फिर जो उपनिषद स्वय 'सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति' का उद्घोष कर के वेदो मे ब्रह्मविद्या की ओर सकेत कर रही हो, फिर भी उसकी बात को न मानना कहा तक युक्ति सगत है।

महर्षि दयानन्द ही एकमात्र ऐसे महामानव हुए हैं कि जो वेदो मे ब्रह्म विद्या का न केवल प्रतिपादन ही करते हैं अपितु इस मिथ्या धारणा का भी युक्तियुक्त खण्डन करते हैं कि वेद मे ब्रह्म विद्या नही। महर्षि का [illegible] निश्चित मत है कि— परमेश्वर ही वेदो का मुख्य अर्थ है और उससे पृथक जो यह जगत है सो वेदो का गौण अर्थ है। और इन दोनो मे से प्रधान का ही ग्रहण होता है। इससे क्या आया कि वेदो का मुख्य तात्पर्य परमेश्वर ही के प्राप्ति कराने और प्रतिपादन करने मे है। (ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका वेद विषय विचार) महर्षि तो यहा तक कहते हैं कि वेद सब सत्य विद्याओ का आदि मूल है। और वेद से ही ब्रह्म विद्या उपनिषदों मे गई है।

महर्षि का तर्क है कि यदि 'वेदो मे पराविद्या न होती तो केन आदि उपनिषदों में कहा से आती ? मूल नास्ति

(शेष पृष्ठ 6 पर)

# उपासना से लाभ

लेखक—यशपाल शास्त्री विद्यावाचस्पति आर्य समाज दसूहा

आज विश्व का प्रत्येक आस्तिक समाज परमात्मा को किसी रूप मे स्वीकार करता हो किन्तु परमात्मा की सत्ता से इन्कार नहीं कर सकता है। संसार में ईश्वर की सत्ता को मानने वालो की संख्या अधिक है। और सभी परमात्मा की भक्ति भी अपनी मान्यता के अनुसार करते हैं। कोई मन्दिर मे कीर्तन, पूजन कोई गुरुद्वारे मे ग्रन्थ साहब का पाठ आदि, कोई चर्च में, कोई नमाज अदा करके कोई संध्या इत्यादि से प्रभु भक्ति करते हैं। अगर विश्व के प्रत्येक मतमतान्तरो के अनुयायिओं से प्रश्न किया जाता है कि प्रभु भक्ति से हमे क्या फायदा होता है तो उनका केवल मात्र एक ही उत्तर होता है कि प्रभु भक्ति से वह हमारे अपराधो एवं गुनाहो को माफ कर देता जो हम जाने अन्जाने मे करते हैं। और हम सीधे बैकुंठ धाम स्वर्ग में चले जायेंगे। अतः निश्चित तो यह है कि ईश्वर के प्रति गलत विचार इतना नास्तिक नही फैलाते जितना आस्तिको के द्वारा भ्रान्त धारणायें फैलाई जाती हैं। इन वास्तविक नास्तिको की ऐसी बात सुनकर ही ईश्वर के सम्बन्ध मे अन्य तटस्थ लोगो को भ्रान्ति तथा संशय हो जाता है। जोकि आगे चलकर नास्तिकता को जन्म देता है। वास्तव मे आज संसार मे धर्म और ईश्वर के विरोध मे उठ रही आवाज को जन्म व बल देने का श्रेय इन्ही ईश्वर एवं धर्म के ठेकेदार भक्तो को है। सत्यता है कि उपासना भक्ति, योग समाधि पापो के क्षमा के लिये नहीं प्रत्युत आत्म सुधार के लिए होती है। परमात्मा हमारे गुनाहो को माफ नही करता बल्कि हम गुनाहो से बच जाते हैं। प्रत्येक आस्तिक समाज यही कहता है कि हम अपराधो से बच जाते हैं किन्तु हमारा तो मतभेद उस स्थान पर होता है कि जब हम पूछते हैं कि किन अपराधो से तो वह कहते हैं कि जो कर लिये हैं करते हैं, और करेंगे। किन्तु वैदिक मान्यता है कि वर्तमान मे जो कर रहे हैं भूत मे जो कर चुके उन से बचना असम्भव है। हां! भविष्य के अपराधो से बच सकते हैं। मतभेद का यहा कारण ईश्वर है यह सभी कहते हैं लेकिन वह क्या है, क्या करता है कैसा है इत्यादि बातो पर ही मतभेद है

उपासना के मुकुट मणि शिरोमणि योग दर्शन के प्रणेता महर्षि पतञ्जली साधनपाद में लिखते हैं कि 'हेयं दुःखमनागतम् (2 16) भविष्य में होने वाले दुःख हेय हैं। त्याज्य हैं न कि भूत के दुःख। गीता मे योगीराज कृष्ण भी कहते हैं कि 'अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्' शुभ अशुभ कर्मों के फल को भोगना ही पड़ता। जिस खेत मे गेहू बोया है। उस से गेहू का ही पौधा उगेगा चने का नहीं। हां! जिसमे बोने का विचार किया है। उसे बदला जा सकता है। भगवान मे जो चाहे बो सकते हैं अथर्ववेद मे कहा गया है कि —

न किल्बिषमत्र नाधारो अस्ति न यन्मित्रैः समममान एति।
अनूनं पात्रं निहितं न एतत् पक्तारं पक्वः पुनरा विशाति॥
(12 3 48 अथर्व वेद

यदि कुछ देर के लिए मान भी ले कि पाप क्षमा हो जाते हैं। तो हम गुनाहो से बचने का प्रयास नही करते। और निर्भय होकर कुकृत्य करते। पापो के करने मे हिचकिचायेंगे नहीं। ईश्वर न्यायकारी है हमें कर्मों का फल तो अवश्य ही देगा अन्यथा अन्यायकारी हो जायेगा। पाप के विपाक को देकर सुधारने का प्रयास करता है बशर्ते मनुष्य उस के सूक्ष्म संकेत को समझ ले। इस सूक्ष्म संकेत को समझने के लिये बुद्धि का पवित्र होना अत्यावश्यक है जिसके लिये सबका पवित्र की संगति की जाती है। उपासना का उद्देश्य उस परम पिता परमात्मा जोकि सबका पवित्र व सत्य है कि संगति करके उसके गुणो को जीवन में धारण करते जाना ही है। इसके तीन विभाग हैं।

1 स्तुति—परमात्मा के गुणो का कीर्तन भजन के माध्यम से गुणगान करना स्तुति कहलाती है। इसके साथ ही अपने गुण, कर्म स्वभाव को उसके अनुकूल करना भी है

2 प्रार्थना—परमेश्वर मे उत्तम गुण कर्म स्वभाव तथा श्रेष्ठ विचार एवं आचार को अपने जीवन मे धारण करने की शक्ति योग्यता और प्रसन्न की याचना करना है। इसमे भी नियम है कि जैसी प्रार्थना कर स्वयं भी जीवन मे वैसा प्रयत्न करें। पुरुषार्थ एवं प्रार्थना एक दूसरे के पूरक हैं

प्रार्थना से निरभिमानता उत्साह और सहाय का मिलना है। हम परमात्मा को ध्यान करके यदि कर्म रूप मे परिणीत नहीं करते तो सफल कभी नहीं हो सकते हैं।

3 उपासना—उपासना का अर्थ है पास मे बैठना।

अब आप सोचने कि ईश्वर तो कण कण एवं अणु अणु मे व्याप्त है तो पास बैठना कैसा। संसार मे दूरी तीन प्रकार की होती है। स्थान व देश की दूरी काल की दूरी ज्ञान की दूरी। निम्न लिखित दूरियो मे हमारे ईश्वर के मध्य अज्ञान की ही दूरी है। अत अष्टांग योग से परमात्मा के समीपस्थ होने और उसे सब व्यापी सर्वान्तर्यामी रूप मे अनुभव करने के लिए जो जो कर्म करना होता है। वह सब काम करना चाहिए परमात्मा के गुणो एवं स्वरूप मे स्वयं को मग्न कर देना ही उपासना है उपासना का फल लिखते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के सातवें समुल्लास पृष्ठ 183 मे लिखते हैं कि जैसे शीत से आतुर पुरुष का अग्नि के पास जाने से शीत निवृत हो जाता है वैसे परमेश्वर के समीप प्राप्त होने से सब दोष दुःख छूट कर परमेश्वर के गुण कर्म स्वभाव के सदृश जीवात्मा के गुण कर्म स्वभाव पवित्र हो जाते हैं। इस लिए परमेश्वर की स्तुति प्रार्थना उपासना अवश्य ही करनी चाहिए। इससे इसका फल पृथक होगा परन्तु आत्मा का बल इतना बढ़ेगा वह पर्वत के समान दुःख प्राप्त होने पर भी न घबराएगा और सबको सहन कर सकेगा।

क्या यह छोटी बात है।

इन आर्ष वचनो से सिद्ध है कि उपासना का फल जीव के गुण कर्म स्वभाव परमात्मा के समान होना है। अर्थात उसके स्वरूप मे मग्न होना है।

किए हुए कर्मों का फल ईश्वर भक्त भी पाता है फर्क केवल इतना है कि वह सहज सहन करता जाता है घबराता नही जबकि साधारण व्यक्ति व्याकुल हो जाता है।

# डा. सूर्यदेव जी की स्मृति में

ले—श्री दयानन्द आनन्द आर्य 252 बी, बिहारी गंज, गली—4 अजमेर

चिलचिलाती धूप मे
गली से गुजर रहा था
सुना—
सूर्य चला गया
मैं—
अचम्भित सा रह गया
देखा—
देखा व्योम की ओर
जैसे—
सूर्य हंस रहा है
और—
त्याग तप दान—
सेवा भाव का सन्देश
दे रहा है—
देखा! मुझ को
कितना तप हूं
फिर भी—
नित—
नया का नया हूं।
ऐसा—
अनूठा ज्ञान स्रोत
बीता है—
नहीं, कोई मौत।
शनै शनै—
आर्य योद्धाओं की
शृंखला का—
एक एक मोती
खण्डित हो रहा है
नही मालूम—
क्या और उपजेंगे भी
ऐसे—
सच्चे मोती ?
नजर दौड़ाता हू
आर्य समाज के
तम प्रकाश मे
किन्तु—
नजर आते हैं,
वही—
अग माला के
मुट्ठी भर मोती।
—

# आर्य समाज को छोड़ कर काम करो

हमारी आर्य समाज के इस बच के उत्सव पर कार्यकर्ता गोष्ठी को सम्बोधित करते हुए श्री अग्निवेश जी ने लोगो को संकेत किया कि मैं तो आर्य समाज से पूर्ण निराश हू और यदि तुम भी गरीबो के हित मे काम करना चाहते हो तो आर्य समाज को छोड़ कर काम करो।

हमे इस बात का अत्यन्त आश्चर्य है कि एक तरफ तो छद्म वेशी लोग आर्य समाज मे निराशा फैलाकर उसे महान हानि पहुंचा रहे हैं और दूसरी ओर वे लोग व्यक्तिगत राजनैतिक स्वार्थों की सिद्धि के लिए आर्य समाज और महर्षि दयानन्द का चोगा पहन कर शताब्दी का ढोंग रचा रहे हैं। आर्य समाज तथा ऋषि दयानन्द मे श्रद्धा रखने वाले लोगो को अब विशेष करके युवकों को इन से सावधान रहना चाहिए।

अन्य राजनैतिक लोगो की निन्दा करने वाले लोग पार्टियो मे अपनी प्रतिष्ठा को तोड़ कर और आर्य समाज को धोखा देकर आज स्वयं राजनीति मे जा पहुंचे हैं।

—आचार्य नरेश

# अकाली नेता हत्या काण्डों के दायित्व से नहीं बच सकते

## आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब का प्रस्ताव

गत दिनो यहा पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरग सभा की बैठक मे पजाब की वर्तमान स्थिति पर विचार किया गया। बैठक मे निम्नलिखित प्रस्ताव पारित किया गया।

यद्यपि पजाब की परिस्थितिया पिछले दो वर्षों से निरन्तर बिगड रहीं है परन्तु उन्होने जो भयकर रूप अब धारण किया है इससे पहले न किया था। ऐसा प्रतीत होता है कि कुछ व्यक्ति पजाब की राजनैतिक धार्मिक और सामाजिक व्यवस्था को अस्त व्यस्त करने पर तुले हुए हैं और इसके लिए उन्हे जितने निर्दोष व्यक्तियो का खून बहाना पडे वे उसके लिए भी तैयार हैं। ढिल्लवा मे एक बस से छ हिन्दुओ को निकाल कर जिस प्रकार गोली से उडाया गया था वह इतना अधिक निन्दनीय था कि अब मण्डी गोबिन्दगढ के पास एक रेल दुर्घटना मे हुआ है वह पजाब मे आतकवाद और उग्रवाद की सब सीमाए लाघ गया है और ऐसा प्रतीत होता है कि आगे चल कर इससे भी अधिक भयानक स्थिति सामने आने वाली है।

जो कुछ पजाब में हो रहा है अकाली नेता उसके उत्तरदायित्व से नही बच सकते। उनका धर्म युद्ध एक अधम युद्ध का रूप धारण कर गया है और ऐसा प्रतीत होता है कि पजाब मे चाहे कितने व्यक्तियो की हत्या कर दी जाए अकाली नेताओ को इससे कोई चिन्ता न होगी। उन्होने जो मार्ग अपना लिया है, उससे हटने को तैयार नही है। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि आगे चल कर पजाब मे क्या कुछ होने वाला है। मण्डी गोबिन्दगढ की दुर्घटना एक सोची समझी योजना के अनुसार पूरी की गई है। पिछले कुछ समय से अकाली नेता यह कहते चले आ रहे थे कि बिहार और उत्तर प्रदेश से जो लोग मजदूरी करने के लिए आते है उन्हे यहा आने से रोका जाए, चू कि उनकी बार बार की चेतावनी का कोई परिणाम नही निकला रेल की दुर्घटना करा बाहर से आने वाले श्रमिको को यह चेतावनी दी गई है कि यदि उन्होने पजाब मे आना बन्द न किया, तो उनके साथ यही व्यवहार होगा जो 20 अक्तूबर को मण्डी गोबिन्दगढ के समीप हुआ है। जो कुछ पजाब मे हो रहा है उसकी प्रतिक्रिया किसी न किसी रूप मे दूसरे प्रातो मे भी अवश्य होगी। पिछले दिनो हरियाणा हिमाचल देहली और उत्तर प्रदेश के कुछ शहरो मे हडताल हुई है उससे अनुमान लगाया जा सकता है कि पजाब के बाहर पजाब की दुर्घटनाओ की क्या प्रतिक्रिया हो रही है।

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब हरियाणा, हिमाचल, देहली और दूसरे प्रान्तो के अपने उन भाईयो का धन्यवाद करना चाहती है, जिन्होने इस विपत्ति के समय पजाब के हिन्दुओ के साथ अपनी सहानुभूति का प्रदर्शन किया। इसी के साथ यह सभा अपने उन भाईयो की आत्माओ के सद्गति के लिए परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करती है, जो पहले ढिलवा और कुछ दूसरे स्थानो पर और अब मण्डी गोबिन्दगढ मे मौत के घाट उतार दिए गए हैं। इसी के साथ अकाली दल और उसके सरक्षण में काम करने वाले उग्रवादियो को भी यह चेतावनी देना चाहती है कि पजाब मे जो नरसहार हो रहा है, यदि वह बन्द न किया गया तो उसकी जो प्रतिक्रिया दूसरे प्रान्तो मे होगी उसकी सारी जिम्मेदारी पजाब के अकालियो पर होगी। अपनी राजनैतिक मागो को मनवाने के लिए अकाली दल अहिंसात्मक आन्दोलन कर सकता है परन्तु अब जो कुछ हो रहा है वह मानवता शालीनता, सद्भाव की जडो को काटने के बराबर है।

यह सभा पजाब के हिन्दुओ से यह सविनय अपील करना चाहती है कि यदि उन्होने इस प्रान्त मे आदर और सम्मान के साथ रहना है, तो उन्हे भी अपने सगठन को शक्तिशाली बनाकर इन परिस्थितियो का सामना करना चाहिए। आर्यसमाज अपनी पूरी शक्ति से अपने भाईयो की सुरक्षा के लिए तन मन और धन से अपना योगदान देने को तैयार है। जो कुछ पजाब मे हो रहा है, यह हर उस व्यक्ति के लिए एक चुनौती है, जो इस देश की स्वाधीनता और एकता मे विश्वास रखता है और उसकी सुरक्षा करना चाहता है।

यह सभा आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब सम्बन्धित सब आर्यसमाजो को यह आदेश देती है कि वे रविवार 30 अक्तूबर को सुरक्षा दिवस मनाए उस दिन जहा ढिलवा मण्डी गोबिन्दगढ और दूसरे स्थानो पर मारे जाने वाले अपने भाईयो की आत्माओ की सद्गति के लिए प्रार्थना करें वहा पजाब की जनता को उन गम्भीर परिस्थितियो से भी पूरी तरह अवगत करवाए, जो अकालियों के धर्म युद्ध द्वारा पजाब मे पैदा हो रही हैं। और जिनका परिणाम आगे चलकर हमारे लिए अत्यन्त भयकर हो सकता है।

—

# गुरुकुल करतारपुर का उत्सव सम्पन्न

श्री गुरु विरजानन्द स्मारक के अन्तर्गत वैदिक सस्कृत महाविद्यालय करतारपुर का वार्षिक सम्मेलन प्रत्येक वर्ष की भाति इस वर्ष भी 2 अक्तूबर रविवार 1983 से 9 अक्तूबर रविवार तक बडी धूम धाम से मनाया गया। इसमें प्रतिदिन 2 से 9 अक्तूबर तक सुबह 6 30 बजे से 8 30 बजे तक तथा साय को 4-30 से 6-30 तक विशाल यजुर्वेद पारायण महायज्ञ होता रहा। उस महायज्ञ के ब्रह्मा आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान् पंडित राजगुरु जी शर्मा थे। यज्ञ में वेद पाठ गुरुकुल के ब्रह्मचारियो ने किया।

जिसमे 8 अक्तूबर शनिवार को यज्ञ के पश्चात विशाल महिला सम्मेलन हुआ। इस सम्मेलन की अध्यक्षता पूज्या सुपर्णा जी यति—(जम्मूतवी) ने की। इसमे मुख्य वक्ता श्रीमती पडिता राकेश रानी जी देहली, बहन कमला जी आर्य लुधियाना श्रीमती शान्ता जी गौड ब्रह्मचारिणी मीरा जी यति आदि थीं जिन्होने महिलाओ की सामयिक समस्याओ पर अपने-अपने विचार प्रस्तुत किए। सम्मेलन की अध्यक्षा सुपर्णा जी यति ने इस बात पर बल दिया कि अब नारियो को अपने पर्स मे शृगार की सामग्री न रखकर उनमे सुरक्षा के लिए शस्त्र रखने चाहिए। आर्य कन्या हाई स्कूल करतारपुर की छात्राओ ने दहेज की वर्तमान बढती समस्या पर एक सफल नाटक का अभिनय किया जिसे दर्शको ने अत्यन्त पसन्द किया।

दोपहर भोजन के पश्चात् 2 बजे से पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी महाराज (दीनानगर) के कर कमलो द्वारा ध्वजा रोहण का कार्यक्रम हुआ तत्पश्चात प राजगुरु जी शर्मा आदि के प्रवचन सुनने को मिले उन्होने भी ओ३म ध्वजा के महत्व एव उसकी सुरक्षा पर विशेष बल दिया। ठीक 4 30 बजे नगर कीर्तन-शोभा यात्रा स्मारक भवन से आरम्भ हुई। यह शोभा यात्रा करतारपुर के फर्नीचर बाजार, किला चौक तथा मुख्य (मेन) बाजार से गुजरती हुई पुन स्मारक भवन में आकर सम्पन्न हुई।

8 अक्तूबर को रात्रि तथा 9 अक्तूबर प्रात यज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात सम्मेलन हुए जिनमे महात्मा वेद भिक्षु जी, श्रीमती राकेश रानी, महात्मा श्याम जी पराशर जी गुरुकुल के आचार्य नरेश श्री वीरेन्द्र जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब प राजगुरु शर्मा सुपर्णा यति बहन कमला आर्य, श्री शिवानन्द भजनमण्डली के भजन हुए तथा इनके अतिरिक्त और भी महानुभावों ने अपने विचार रखे।

तत्पश्चात गुरुकुल के ब्रह्मचारियो ने बौद्धिक एव शारीरिक कार्यक्रम रखा जो बहुत ही प्रभावशाली था। व्यायाम स्तूप बनाना लोहे के सरिए गले से मोडना, चूडिया बनाना, छाती चीरना, सगल तोडना हाथों से कांच पीसना आदि श्री सुखदेवराज स अधिष्ठाता के नेतृत्व मे हुआ।

—

# स्त्री आर्यसमाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना का शरदपूर्णिमा सत्संग

स्त्री आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना का शरदपूर्णिमा का सत्सग बडी धूमधाम से मनाया गया। बहिनो ने सुन्दर 2 भजनो के अतिरिक्त ओंकार स्तोत्र का सम्मिलित रूप से पाठ किया जिसमें बहुत तन्मयता पाई गई। बडे उत्साह से बहिनों ने इस सत्सग मे भाग लिया।

—शान्ता गौड वानप्रस्थ

(4 पृष्ठ का शेष)

कृत आता ? या जो परमेश्वर अपने कहे वेदो मे अपनी स्वरूप विद्या का प्रकाश न करता तो किसी ऋषि मुनि का सामर्थ्य ब्रह्म विद्या के कहने में कभी हो सकता था ? क्योंकि कारण के बिना कार्य होना सर्वथा असम्भव है। (ऋ. भूमिका)

उपर्युक्त विवरण के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि वेदो का पावन सदेश लाने वाले एक मात्र ऋषि यदि कोई थे, तो आधुनिक युग में महर्षि दयानन्द सरस्वती थे। उस समय जबकि कोई उपनिषद की बात कह रहा था तो कोई गीता की कोई रामायण की बात कह रहा था तो कोई महाभारत की कोई पुराण की तो कोई कुरान की कोई इजील की तो कोई बाईबिल की एक महामानव ऐसा भी आया कि जो प्रभु के पावन सदेश वेद की बात ही सर्वत्र एव सर्वदा कहता फिरता था। वस्तुत वही वेद का पावन सदेश लेकर आया था वही वेदो वाला ऋषि था। वही वेदो के यथार्थ तक पहुच सका था और ससार को वेद पथ पर डाल गया। धन्य है ऐसे महापुरुष को जो वेदों का पावन सदेश लेकर आया था।

बाल जगत—

# क्या माता-पिता का ऋण चुकाया जा सकता है ?

ले—श्री सुरेन्द्र मोहन सुनील विद्यावाचस्पति दिल्ली

आप बालक हैं इससे आप में अभी बुद्धि थोड़ी है परन्तु आप मे तो अभी बुद्धि थोड़ी है परन्तु आपके मा बाप आप से बहुत बड़े हैं बुद्धिमान हैं और तुम्हारे सुख के लिए बहुत ध्यान रखते हैं। इस लिए तुम्हें अपने मा बाप का कहना मानना चाहिए।

अपना भला किसमे है यह आप अभी नहीं समझते। पर आप के मा बाप समझते हैं इस लिए आपको उनका कहना मानना चाहिए। आप के मा बाप आप को खाना पीना देते हैं पहनने के लिए कपड़ा देते हैं अपने घर में रहने देते हैं और आप को सुखी रखने के लिए वह तरह तरह के दुख उठाते हैं। इसलिए आपका उनका कहना मानना चाहिए। सारे जगत के भले आदमी अपने अपने मा बाप का कहना मानते हैं यही नही बल्कि शास्त्र की भी आज्ञा है।

मात देवो भव पितृ देवो भव

माता ही पूज्यनीय है पिता ही पूज्यनीय है। मा बाप को प्रसन्न रखने से ईश्वर भी प्रसन्न होता है। इस लिए हमें मा बाप का कहना मानना चाहिए उनको नित्य नमस्ते (प्रणाम) करना तथा उनकी सेवा चाकरी करनी चाहिए। उनका सम्मान करना चाहिए और वही काम करना चाहिए जिससे वे प्रसन्न रहें। उन्होंने आपके ऊपर इतना उपकार किया है कि किसी प्रकार भी हम उसका बदला नहीं चुका सकते। इस लिए उन को प्रसन्न रखने के लिए और उनके आशीर्वाद से आपका भला हो, इसलिए भी हमें उनका कहना मानना चाहिए।

फिर आपको यह भी सोचना चाहिए कि यदि आप के मा बाप बाल्यकाल में अपने घर में नहीं ठहरने देते जन्म देकर घर से निकाल देते तो कैसी बुरी हालत होती आपको खाना न देते तो आप क्या कर सकते थे? जब आप बचपन मे बिमार पड़ होंगे चोट लगी होगी ऐसी स्थिति में दवा आदि न करवाते, हस्पताल न ले जाते तो क्या हालत होती, यदि आपको पढ़ने लिखने मे मदद नहीं करते तो ही जगली पशुओं की तरह मारे 2 फिरते ऐसे ही हर बात मे यदि वे मदद न करते तो आप की कितनी बुरी हालत होती इन सब बातो पर आप विचार करेंगे तो ऐसा आप को स्वयं अनुभव होगा कि हमारे सुख के लिए ही उनको बहुत प्रकार के दुख उठाने पड़े हैं जैसे कि आप का पालन पोषण करने के लिए ही उनको रोजगार धधो मे अधिक मेहनत करनी पड़ी है। आप सुखी रह सके इसी लिए ही उनको अनेको वर्षों मे गरीबी सहनी पड़ी है। आप का भला करने के इरादे से ही उनको तरह तरह के कष्टो को सहना पड़ता पड़ा। क्योंकि आप के ऊपर उनका बहुत ही स्नेह है। आप बड़ होकर भी उनके इस स्नेह वा उपकार का बदला नही चुका सकते। आपके मा बाप इतने दयालु हैं कि वे आप से कुछ नही मागते केवल इतने से ही प्रसन्न हो जाते हैं कि आप उनका कहना मान ले। इस लिए आप उनका कहना न मानने से बहुत खराब लड़के कहलाएंगे। जिन्होंने आप पर इतने अधिक उपकार किए हों जो आप के लिए दिन रात तड़पते रहे हो और जिनसे आपकी भलाई हुई हो उनका भी कहना आप न माने तो इससे बढ़कर नालायकी और क्या हो सकती है? इस लिए आप को अपने मा बाप का कहना जरूर मानना चाहिए। प्यारे बच्चो!

श्री कश्यप देव जी वानप्रस्थी के शब्दों मे शिक्षा लो।

चलना मगर इस बात को मत भूलना।
कर्जा बड़ा सिर पर तेरे मा बाप को मत भूलना ॥1॥

मलमूत्र मे गन्दे किए मा बाप के कपड़े सभी।
धो पूछ कर छाती लगाया आराम ना पाया कभी ॥
उस मा की ममता को कभी तुम भूलकर मत भूलना ॥2॥

मा ने सिखाया बैठना अगुली पकड़ चलना तुम्हे।
बोलना तुमको सिखा खाना सिखाया फिर तुम्हे ॥
जीवन दिया मा बाप ने इस बात को मत भूलना ॥3॥

दुख दर्द से तुम को बचाया हर मुसीबत मे तुम्हे।
नौ मास तक बोझा उठाए पेट मे रखा तुम्हे
खून का पानी किया इस बात को मत भूलना 4

मिल जाएगा सब कुछ तुम्हें मा बाप मिलने को नही।
दौलत तुम्हें मिल जाएगी पर प्यार मिलने का नही ॥
कहे नन्द कश्यप भक्त श्रवण को कभी मत भूलना ॥5॥

है वही सन्तान जो न दूध माता का लजाए।
धिक्कार है जो आखरी दम मा बाप के न काम आए ॥
है धर्म तो सच्चा यही इस धर्म को मत भूलना ॥6॥

## दयानन्द मठ जालन्धर का वार्षिक उत्सव

महर्षि दयानन्द मठ दन मोहल्ला जालन्धर का वार्षिकोत्सव 24 से 30 अक्तूबर तक मनाया जा रहा है। 28 29 30 अक्तूबर को विशेष उत्सव होगा। स्वामी विज्ञानन्द जी स्वामी सत्यानन्द जी प भूदेव जी शास्त्री बहिन प्रभावती श्री वीरेन्द्र जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब श्री प ओम प्रकाश जी आर्य, महात्मा श्याम जी पराशर, प्रो उत्तम चन्द जी शरर श्री जोरावर सिंह जी भजनोपदेशक श्री बूटाराम जी, श्री मनोहारी लाल जी आर्य रत्न चतुर्भुज मित्तल, प्रि कमला वान्ना प्रि सन्तोषपुरी जी बहन शान्ता जीह, श्रीमती कृष्णा तथा अन्य विद्वान व नेतागण पधार रहे हैं।

## लुधियाना में पारिवारिक सत्सग

स्त्री आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार की ओर से 17 10 83 सोमवार को सत्रानी का मासिक सत्सग श्रीमती सीमा जी के गृह पर सिंडीकेट के सामने सिविल लाईनज मे हुआ। यज्ञोपरान्त बहिनों के सुन्दर भजनो द्वारा कार्यक्रम की शोभा बढ़ी। श्रीमती कमला आर्य प्रधान समाज ने यज्ञ की क्रियाओं का आचमन मन्त्र अंग स्पर्श प्रार्थना मन्त्रो का साराश बहिनो को बताया। श्रीमती यशवती जी भल्ला उपमन्त्री समाज ने श्री प अपने अत्यन्त विचार दिए परिवार के सदस्यों का चित्र एव आर्य साहित्य भेट किया गया। उपस्थित बहिनो रानी सभी बहिनो का जलपान एव प्रसाद से सत्कार किया गया। कार्यक्रम से प्रभावित हो कर दो परिवारो ने अपने गृह पर सत्सग कराने का निमन्त्रण दिया

—निर्मला वेरी
मन्त्री

वर्ष 16 अक 30 22 कार्तिक सम्वत 2040 तदनुसार 6 नवम्बर 1983 दयानन्दाब्द 159 । एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपए

# महर्षि दयानन्द सरस्वती का निर्वाण दिवस--दीपावली

## देश-विदेश के महापुरुषो की महर्षि के चरणो मे श्रद्धाजलिया

स्वामी दयानन्द जी सरस्वती ने हिन्दू धर्म के सुधार का बडा काम किया और जहा तक समाज सुधार का सम्बन्ध है वह बडे उदार हृदय थे। वे अपने विचारों को वेदो पर आधारित और उन्हे ऋषियो के ज्ञान पर अवलम्बित मानते थे। उन्होने वेदो पर बडे-बडे भाष्य किए जिससे मालूम होता है कि वे पूर्ण विज्ञ थे। उनका स्वाध्याय बडा व्यापक था।

—मैक्समूलर

यह निश्चित है कि शकराचार्य के पश्चात दयानन्द से अधिक सस्कृतज्ञ गम्भीर अध्यात्मवेत्ता, प्रभावजनक वक्ता और बुराई का निर्भीक प्रहारक भारत को प्राप्त नहीं हुआ।

—मैडम ब्लैवेटस्की

मैं स्वामी दयानन्द सरस्वती को सदैव गत शताब्दी के उन महापुरुषो मे से एक समझता रहा हू जिन्होने परम हस रामकृष्ण और स्वामी विवेकानन्द जैसे महान पुरुषो की तरह नवीन हिन्दू धर्म की गहरी और दृढ नीव डाली है और इसे पौराणिक भ्रान्तियो से शुद्ध कर दिया।

—एस एल माइकेल

यह स्वीकार करना पडेगा कि भारत के सास्कृतिक व राष्ट्र के नव जागरण मे स्वामी दयानन्द का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है उनकी मान्यताओ और सिद्धान्तो ने एक बार तो हीन भाव ग्रस्त इस जाति को अपूर्व उत्साह से भर दिया।

—एमसन

ऋषि दयानन्द ने भारत के शक्ति शून्य शरीर मे अपनी दुर्धर्ष शक्ति, अचलता तथा सिह पराक्रम फूक दिया है।

ऋषि दयानन्द उच्चतम व्यक्तित्व के पुरुष थे। यह पुरुष उनमे से एक था जिन्हे यूरोप प्राय उस समय भुला देता है जबकि वह भारत के सम्बन्ध मे अपनी धारणा बनाता है किन्तु एक दिन यूरोप को अपनी भूल मानकर उसे याद करने के लिए बाधित होना पडेगा क्योकि उनके अन्दर कर्मयोगी विचारक और नेता के उपयुक्त गुण प्रतिभा का दुर्लभ सम्मिश्रण था। दयानन्द ने अस्पृश्यता व अछूतपन के अन्याय को सहन न किया और सबसे अधिक उनके अपहृत अधिकारो का उत्साही समर्थक दूसरा कोई नही हुआ। भारत मे स्त्रियो की शोचनीय दशा को सुधारने मे भी दयानन्द ने बडी उदारता व साहस से काम लिया। वस्तुत राष्ट्रीय भावना और जन जागृति के विचार को क्रियात्मक रूप देने मे सबसे अधिक प्रबल शक्ति उसी की थी। वह पुनर्निर्माण और राष्ट्रीय सगठन के अत्यन्त उत्साही पैगम्बरो मे से थे।

—फ्रेंच दार्शनिक रोमा रोलाँ

मेरा सादर प्रणाम हो उस महान गुरु दयानन्द को जिसकी दृष्टि ने आध्यात्मिक इतिहास मे सत्य और एकता को देखा और जिसके मन ने भारतीय जीवन के सब अगो को प्रदीप्त कर दिया। जिस गुरु का उद्देश्य भारत वर्ष को अविद्या आलस्य और प्राचीन ऐतिहासिक तत्व के अज्ञान से मुक्त कर सत्य और पवित्रता की जागृति मे लाना था उसे मेरा बारम्बार प्रणाम है। मै आधुनिक भारत के मार्ग दर्शक उस दयानन्द को आदरपूर्वक श्रद्धाजलि देता हू जिसने देश की पतितावस्था मे भी हिन्दुओ को प्रभु की भक्ति और मानव समाज की सेवा के सीधे व सच्चे मार्ग का दिग्दर्शन कराया।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

महर्षि दयानन्द तपोमूर्ति थे। उन्होने भारत मे दिव्य ज्योति प्रकाशित की थी। उन्होने हिन्दू समाज को पुनर्जन्म देने के सब प्रयत्न किये थे व भारत को स्वतन्त्र तथा दिव्य देखना चाहते थे। आर्ष काल को पुन लाने के लिए वे प्रयत्नशील रहे। उन्होने मृतप्राय हिन्दू जाति मे पुन प्राण सचार किया था। वे हिन्दू सस्कृति की अप्रतिम प्रतिमा तथा भारत के अमूल्य पुत्र थे

—मदनमोहन मालवीय

उनकी मृत्यु से भारत ने अपने योग्यतम पुत्रो मे से एक को खो दिया। हमारा स्वामी जी से मित्र व्यवहार होता था। सचमुच वे एक भला इन्सान ही नही फरिश्ता थे।

—कर्नल अलकाट

कृण्वतो विश्वमार्यम

# स्वयं आर्य बनो और दूसरों को बनाओ

ले —श्री नारायण दत्त जी एन डी जालन्धर

सब प्रथम स्वय आय धर्मात्मा बनो। पुन अपने परिवार पुत्र पुत्री पौत्र माता पिता भ्राता सम्बधी और अय रिश्तेदारो को आय बनाओ। फिर अपने मित्रो और अन्य परिचित व्यक्तियो को आय बनाओ। फिर अपने सत्य उपदेशो द्वारा ससार के सब नर नारियो को आय बनाओ।

## आय अनाथालय के बालको को आर्य बनाओ

आय अनाथालय फिरोजपुर मेरठ बरेली और अजमेर आदि अनाथ लडके लडकियो को आय बनाओ। सत्याथ प्रकाश ततीय समुल्लास मे लिखित पठन पाठन विधि के अनुसार शिक्षा देव। मातमान् पितमान आचायवान पुरुषो वेद।

यह शतपथ ब्राह्मण का वचन है। जब माता पिता और गुरु ये तीन उत्तम शिक्षक होगे तो मनुष्य ज्ञानवान होता है। माता पिता तो शिक्षा नही देते हैं स्कल कालिजो मे भी धार्मिक शिक्षा नही दी जाती है इस लिए सब विद्यार्थी और अध्यापक धमहीन होकर पशु के समान जीवन व्यतीत करते है। अनाथ आलयो पर भारत सरकार का कोई कन्टोल या अधिकार नही है। सब अनाथ बालक बालिकाओ का आय पुरुषो के दान से पालन पोषण होता है। इस लिए इन बच्चो को महर्षि दयानन्द जी महाराज की लिखित पठन पाठन विधि से धार्मिक शिक्षा दी जाना चाहिए जब ये बालक 25 वष के पश्चात शिक्षा समाप्त करके धार्मिक विद्वान बन जाव तो इन को परोहित अध्यापक सम्पादक लेखक अथवा उपदेशक बना कर ससार मे वदिक धम का प्रचार और प्रसार किया जावे। अनाथ लडकिया भी इसी प्रकार उपदेशक अध्यापक सम्पादक पुरोहित और पुस्तक लेखक देश विदेश मे वदिक धम का प्रचार कर और आय प्रतिनिधि सभा पजाब आदि अय सब प्रान्तो की सभाओ मे उनको उपदेशक बनाकर प्रचार काय कराव।

2 जितनी विधवा आश्रमो मे विधवाए है उनको भी पठन पाठन विधि के अनुसार विदुषी बनाव। वे भी प्रचारिका उपदेशिका अध्यापिका, लेखिका पुरोहित बन कर सब आर्य समाजो मे घूम घूम कर वेद प्रचार कर।

3 अछूत उद्धार—और दलित उद्धार आश्रमो के बच्चे भी विद्वान बन कर वैदिक धम का प्रचार कर आय समाज उन के पढाने का ठीक से प्रबन्ध करे।

4 जितनी कन्या पाठशालाए भारत मे है उन मे धार्मिक शिक्षा दी जावे।

5 सब वदिक पुत्री पाठशालाए और कन्या महाविद्यालयो मे धार्मिक शिक्षा का प्रबन्ध निम्नलिखित रीति से किया जावे। प्रथम और दूसरी कक्षा मे केवल सध्या कण्ठस्थ कराई जावे। तीसरी कक्षा मे गोकरुणानिधि और आय उद्देश्य रत्न माला पढाई जाव। चौथी श्रेणी मे सत्याथ प्रकाश के पहले तीन समुल्लास पढाए और समझाए जाव। पाचवी कक्षा तक छ समुल्लास तक सत्याथ प्रकाश के पढाए जाव। छटी कक्षा मे दस समुल्लास तक सत्याथ प्रकाश पढाया जाव। सातवी कक्षा मे दो 11 12 समुल्लास पढाए जाव आठवी श्रेणी मे सम्पूण सत्याथ प्रकाश दोहराया जावे। नवी और दसवी श्रेणी मे पुन सत्याथ प्रकाश पढाया जावे। ग्यारहवी कक्षा मे ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका पढाई जावे बारहवी कक्षा मे सत्याथ प्रकाश और ऋग्वदादि भाष्य भूमिका दोहराई जावे।

तेहरवी कक्षा मे यजवद पढाया जाव। चौदहवी कक्षा मे अथववेद प्रथम भाग पढाया जावे पन्द्रहवी कक्षा मे अथववेद का द्वितीय भाग पढाया जावे। सोलहवी कक्षा मे ऋग्वेद प्रथम भाग पढाया जावे। इस प्रकार से वदिक शिक्षा द्वारा कालिजो म कन्या महाविद्यालयो मे शिक्षा दी जावे। किसी भी कन्या कालिज या लडको के डी ए वी कालिज मे सह शिक्षा न दी जावे। ये धम के विरुद्ध काय है और दुराचार फैल कर पाप बढता है। महर्षि दयानन्द जी महाराज ने कन्या पाठशाला से 5 कोस की दूर पर लडको की पाठशाला लिखी है। डी ए वी कालिजो मे तथा आय कालिजो मे हजारो लडके लडकिया पढती हैं यदि ये सब वैदिक साहित्य को पढकर आय बन जावें तो निश्चित रूप से ससार मे वैदिक धम का प्रचार हो जाएगा।

## भगवान का उपदेश

यथेमा वाच कल्याणीमावदानि जनेभ्य। ब्रह्मराजन्याभ्या शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय। यजुर्वेद ॥

पदाथ—हे मनुष्यो! मैं ईश्वर जैसे (ब्रह्मराजन्याभ्याम) ब्राह्मण क्षत्रिय (अर्यात) वैश्य (शूद्राय) शूद्र (च) और (स्वाय) स्त्री सेवक आदि (च) और अरणाय) और उत्तम लक्षणायुक्त प्राप्त हुए अन्त्यो के लिए (च) भी (जनेभ्य) इन उक्त सब मनुष्यो के लिए (इह) इस ससार मे (इमाम) इस प्रगट की हुई (कल्याणीम) सुख देने वाली (वाचम्) चारो वेद रूप वाणी का (आवदानि) उपदेश करता हू वैसे आप लोग भी अच्छे प्रकार उपदेश करें।

भावाथ—परमात्मा सब मनुष्यो के प्रति इस उपदेश को करता है कि यह चारो वेद रूपी कल्याणकारिणी वाणी सब मनुष्यो के हित के लिए मैंने दी है। आप भी इस वेद वाणी को ससार के हित के लिए सब नर नारियो को भली प्रकार देव। ये वेद सब सत्य विद्याओ के पुस्तक है। ससार के सब नर नारी ब्राह्मण क्षत्रिय शूद्र वैश्य सब मनुष्य पढ पढाव सुने सुनाव और सब क्रियात्मक जीवन व्यतीत करके अपने जीवन को धार्मिक बनाव। कुछ भाई कहते हैं कि वेद शूद्र और नारी न पढ। ये वेद विरुद्ध बात है क्योकि परमात्मा ने ससार के सब नारियो के लिए वेद पढने का उपदेश किया है।

दयानन्द एग्लो वैदिक कालिज नाम रख कर वेदो को न पढाना सवथा धम विरुद्ध है। इस लिए डी ए वी कालिजो मे सब बालको को वेद अवश्य पढाना चाहिए। जो अध्यापक वेद नही पढाते हैं व धमहीन है। इसलिए वेद का पढाना अत्यन्त आवश्यक है।

डी ए वी कालिज निम्नलिखित उद्देश्यो के लिए स्थापित किया गया था—

(क) हिन्दू साहित्य के अध्ययन को प्रोत्साहित उन्नत तथा लागू करना।

(ख) प्राचीन सस्कृत और वेद के अध्ययन को उत्साहित और प्रचलित करना।

(ग) अग्रेजी साहित्य सैद्धान्तिक तथा क्रियात्मक विज्ञान को उत्साहित और प्रचलित करना।

(घ) दयानन्द एग्लो वैदिक कालिज सस्था के साथ तकनीकी शिक्षा देने के साधन प्रदान करना जहा तक होवे प्रथम उद्देश्य की पूर्ति मे बाधक न हो।

उपरोक्त उद्देश्य डी ए वी कालिज विषय मे प गुरुदत्त विद्यार्थी जीवन एव व्यक्तित्व पुस्तक से उद्धत किए गए हैं। लेकिन अब इन उद्देश्यो को भुला दिया है। उद्देश्य (ख) की ओर तो बिल्कुल ध्यान नही दिया जा रहा है मेरी प्रबन्धको से प्राथना है इस ओर ध्यान द।

—

## ऋषिवर! अर्पित कोटि नमन

ले —श्री राधश्याम आर्य विद्यावाचस्पति मुसाफिर खाना सुलतानपुर (उ प्र)

मा के अचल मे तमने आशा की किरण बिखेरी।
तेरी सनकर सिंह गजना बाज उठी रण भेरी।
नव जागति के अग्रदूत पुरोधा तुम से ज्योतित जन मन।
ऋषिवर! अर्पित कोटि नमन।

दयानन्द ऋषिराज तम्ही ने मानवता का मन्त्र दिया।
फसे तिमिर के विषम जाल मे मानव कोटि स्वतन्त्र किया।
तेरी ललकारो से गुजित अभी धरा है तथा गगन।
ऋषिवर अर्पित कोटि नमन ॥

अपौरुषय वेदो की पावन-तमने ज्योति जलाई।
बाज उठी फिर महिमण्डल पर, सत्य धम शहनाई।
वैदिक धम ध्वजा अम्बर मे—लहरी हर्षित जन जन।
ऋषिवर! अर्पित कोटि नमन ॥

त्याग तथा बलिदानो का तुमने अभियान चलाया।
तिमिराच्छादित वसुन्धरा को नया विहान दिखाया।
ज्योतिमय उर किया समर्थक किया दानवी वृत्ति हनन।
ऋषिवर! अर्पित कोटि नमन ॥

## सम्पादकीय—

# आधुनिक भारत के ज्योति स्तम्भ -महर्षि दयानन्द सरस्वती

भगवान कृष्ण ने गीता में अर्जुन को उपदेश देते हुए कहा था कि जब-जब धर्म पर कोई संकट आता है तो धर्म की रक्षा करने और दुष्टों का नाश करने के लिए मैं जन्म लिया करता हूं। जो कुछ उन्होंने कहा था उसका वास्तविक अभिप्राय केवल यह था कि जब कभी धर्म पर संकट आता है, तो उसकी रक्षा करने और मानव को सन्मार्ग दिखाने के लिए न कोई महापुरुष जन्म लेकर धर्म और मानवता की रक्षा करता है।

हमारा इतिहास साक्षी है कि हमारे देश में समय-समय पर ऐसे महापुरुष पैदा होते रहे हैं जो अपने समय की परिस्थितियों को सामने रखकर उस अन्धकार को मिटाने के लिए जो जनता के मन मस्तिष्क पर छाया होता है। ज्योति स्तम्भ बनकर मनुष्य मात्र को एक नया मार्ग दिखाते हैं। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ऐसे ही महापुरुषों में से एक थे। पिछली एक शताब्दी में जिन-जिन धार्मिक नेताओं ने इस देश के इतिहास पर अपनी छाप छोड़ी है, महर्षि दयानन्द उनमें अग्रणी थे। अपनी विचारधारा से उन्होंने केवल अपने देश में ही नहीं, देश से बाहर भी एक वैचारिक क्रान्ति पैदा कर दी थी। आज हम अपने देश के वातावरण में जो सुखद परिवर्तन देखते हैं, इसका श्रेय महर्षि दयानन्द सरस्वती को ही मिलना चाहिए। महर्षि दयानन्द का जन्म 1824 में मोरवी राज्य के एक नगर टंकारा में हुआ था और उनका देहान्त दिवाली के दिन 1883 को अजमेर में हुआ था। यहां आज कल उनकी निर्वाण शताब्दी मनाई जा रही है। उनका जन्म का नाम मूलशंकर था। छोटी आयु में ही उनके मन में विचार उठा कि जिस शिव की शिवरात्री को पूजा की जाती है। वह शिव है क्या? उसका रूप क्या है? उसकी शक्ति क्या है? यह प्रश्न बार बार उनके मन में उठ रहा था। उसी शिव की तलाश में वह अपने घर से निकल पड़े। जंगलों, पहाड़ों, बयाबानों से गुजरते हुए वह 1859 में मथुरा पहुंचे, जहां चार वर्ष तक अपने गुरु स्वामी विरजानन्द जी के चरणों में बैठकर पहले संस्कृत पढ़ी, फिर वेद पढ़े। जब अपनी शिक्षा समाप्त करके वह वहां से चलने लगे, तो उन्होंने अपने गुरु को गुरुदक्षिणा देने के लिए कुछ लौंग भेंट किए और कहा कि गुरु देव मेरे पास आपको देने के लिए और कुछ भी नहीं है। इस पर गुरुवर स्वामी विरजानन्द ने कहा, अगर मुझे सच्ची गुरुदक्षिणा देना चाहते हो तो मुझे यह वचन दो कि तुम वेद का प्रचार करोगे और वेद का सन्देश घर-घर पहुंचाओगे। दयानन्द जी ने अपने गुरु के चरणों में अपना सिर झुका दिया और कहा कि ऐसा ही होगा।

इसके पश्चात महर्षि दयानन्द ने अपना सारा जीवन वेद प्रचार में ही लगा दिया और वेद का सन्देश घर-घर पहुंचाने के लिए अपने आपको अर्पित कर दिया, महर्षि दयानन्द का यह निश्चित मत था कि वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना सब का परम धर्म है। संसार के पुस्तकालय में वेद सबसे पुराना धार्मिक ग्रन्थ है। इसलिए यह मनुष्य मात्र के लिए जिस युग में और जिस काल में वेद लिखे गए थे उस समय मनुष्य जाति का विभाजन देशकाल और समय के अनुसार न हुआ था। उस युग में मनुष्यों की एक ही जाति, एक ही सम्प्रदाय एक ही राष्ट्र हुआ करता था। जो भेद-भाव आज दिखाई देते हैं, यह सब बाद में के हैं। इसलिए मनुष्य जाति को एकता के सूत्र में बांधने के लिए यह आवश्यक है कि वेद का सन्देश घर-घर पहुंचाया जाए, जिससे मनुष्य जाति में जो भेद भाव उत्पन्न हो रहे हैं वह दूर हो सकें। चूंकि महर्षि दयानन्द की यह धारणा थी कि वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। इसलिए समय समय पर हमारे देश के सामने जो समस्याएं आती रही हैं, उनका समाधान भी वह वेद के आधार पर ही अपने देशवासियों के सामने रखते रहे हैं। यही कारण था कि जब हमारे देश में कोई स्वराज्य या स्वाधीनता का नाम भी न लेता था उस समय महर्षि दयानन्द ने कहा था कि दूसरों का राज्य चाहे कितना अच्छा क्यों न हो। वह स्वराज्य अर्थात अपने राज्य से अच्छा नहीं हो सकता। वह हमारे देश के पहले नेता थे जिन्होंने स्वराज्य का विचार हमारे सामने रखा था। उन्होंने इसे ही पर्याप्त न समझा था। इसलिए उन्होंने हमें यह भी बताया था कि स्वराज्य कैसे प्राप्त किया जा सकता है और उसके बाद क्या करना चाहिए। उन्होंने ही सबसे पहले यह कहा था कि स्त्री शिक्षा अनिवार्य होनी चाहिए और नारी जाति को पुरुषों के समान अधिकार मिलने चाहिए। उन्होंने छूत-छात के विरुद्ध अभियान प्रारम्भ किया और कहा था कि यदि जन्म के आधार पर छूत-छात समाप्त न की गई तो देश की एकता के लिए एक बहुत बड़ा संकट पैदा हो जायेगा। वह गऊ रक्षा के बहुत बड़े पक्षधर थे क्योंकि वह समझते थे कि देशवासियों के स्वास्थ्य और हमारी कृषि की रक्षा के लिए गोरक्षा अत्यन्त आवश्यक है। वह स्वयं जन्म से गुजराती थे और अपनी सारी शिक्षा उन्होंने संस्कृत में प्राप्त की थी। फिर भी वह देश के सबसे पहले महामानव थे, जिन्होंने कहा था कि हिन्दी ही इस देश की राष्ट्र भाषा हो सकती है। हमारे भूतपूर्व प्रधानमन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री ने तो 1965 में जय जवान जय किसान का नारा लगाया था। परन्तु महर्षि दयानन्द सरस्वती ने तो कोई डेढ़ सौ वर्ष पहले कह दिया था कि किसान राजाओं का भी राजा है। उसके बिना कोई देश नहीं चल सकता। वह अनिवार्य शिक्षा के पक्ष में थे और उन्होंने यहां तक कह दिया था कि जो माता-पिता अपने बच्चों को शिक्षा न दें, उन्हें राज्य शासन की ओर से दण्ड मिलना चाहिए। किसी राज्य में भ्रष्टाचार किस प्रकार समाप्त किया जा सकता है इसका सुझाव देते हुए उन्होंने लिखा था कि जो राज्य कर्मचारी जितना बड़ा है भ्रष्टाचार के लिए उसे उतनी अधिक सजा मिलनी चाहिए।

महर्षि दयानन्द ने अपने जीवन में धर्म के नाम पर जो पाखण्ड फैलाया जा रहा था। उसका भी बड़े जोरदार शब्दों में खण्डन किया था। इस पर कुछ लोग उनके दुश्मन बन गये। उनके समय की सरकार ने उनसे कहा कि यदि वह चाहें तो रक्षा के लिए उनका अंगरक्षक नियुक्त कर दिया जाए और जो लोग उनका विरोध कर रहे हैं, उन्हें कैद कर लिया जाए। तब महर्षि ने कहा था कि इसकी आवश्यकता नहीं है। वह संसार को कैद कराने नहीं आए, लोगों को कैद से रिहा कराने आए हैं।

महर्षि दयानन्द ने अपने देशवासियों और दूसरे देशों के बुद्धिजीवियों को किस प्रकार प्रभावित किया था। इसका अनुमान उन श्रद्धांजलियों से लगाया जा सकता है जो उनके देहान्त के बाद संसार भर के प्रमुख बुद्धिजीवियों ने उन्हें भेंट की।

फ्रांस के विश्वविख्यात दार्शनिक रोमां रोलां ने उनके निधन पर लिखा था-

महर्षि दयानन्द उच्चतम व्यक्तित्व के पुरुष थे। वह उन पुरुषों में से एक थे, जिन्हें योरुप प्राय उस समय भुला देता है, जबकि वह भारत के विषय में अपनी धारणा बनाता है किन्तु एक दिन योरुप को अपनी भूल मानकर उन्हें याद करने पर बाधित होना पड़ेगा। उनके अन्दर कर्मयोगी विचारक और नेता के उपयुक्त प्रतिभा का दुर्लभ सम्मिश्रण था। दयानन्द ने अस्पृश्यता व अछूतपन के अन्याय को सहन न किया था। और उनसे अधिक अछूतों के अधिकारों का इतना उत्साही समर्थक दूसरा कोई न था। भारत में स्त्रियों की शोचनीय दशा को सुधारने में भी दयानन्द ने बड़ी उदारता व साहस से काम लिया था।

राष्ट्रीय भावना और जन-जागृति के विचार को क्रियात्मक रूप देने में सब से अधिक प्रबल शक्ति उन्हीं की थी।

बर्तानिया के भूतपूर्व प्रधान मन्त्री श्री रैमजे मैकडानल्ड ने उनके विषय में कहा था आर्य समाज समस्त संसार को वेदानुयायी बनाने का स्वप्न देखता है। स्वामी दयानन्द ने उसे जीवन और सिद्धान्त दिया था। उनका विश्वास था कि आर्य जाति चुनी हुई जाति है। भारत चुना हुआ देश है और वेद चुनी हुई धार्मिक पुस्तक है।

संस्कृत के प्रसिद्ध जर्मन विद्वान् प्रोफेसर मैक्समूलर ने स्वामी जी के विषय में लिखा था—

स्वामी दयानन्द ने हिन्दू धर्म के सुधार का बड़ा कार्य किया था और जहां तक समाज सुधार का सम्बन्ध है वह बड़े उदार हृदय थे। वह अपने विचारों को वेदों पर आधारित और उन्हें ऋषियों के ज्ञान पर अवलम्बित मानते थे। उन्होंने वेदों के बड़े बड़े भाष्य किये थे। जिससे मालूम होता है कि वह पूर्ण विज्ञ थे उनका स्वाध्याय बड़ा व्यापक था—

महान कवि गुरुदेव रविन्द्रनाथ टैगोर ने अपनी श्रद्धांजलि देते हुए कहा था-

मेरा सादर प्रणाम है, उस महान गुरु दयानन्द को, जिसकी दृष्टि ने भारत के आध्यात्मिक इतिहास में सत्य और एकता को देखा और जिसके मन ने भारतीय जीवन के सब अंगों को प्रदीप्त कर दिया। जिस गुरु का उद्देश्य भारत वर्ष को अविद्या आलस्य और प्राचीन ऐतिहासिक तत्व के अज्ञान से मुक्त कर सत्य और पवित्रता की जागृति में लाना था। उसे मेरा बारम्बार प्रणाम है। मैं आधुनिक भारत के मार्ग दर्शक उस दयानन्द को आदर पूर्वक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

कुछ लोग कहते हैं कि महर्षि दयानन्द मुसलमानों के विरोधी थे। परन्तु अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के संस्थापक और प्रसिद्ध मुस्लिम नेता सर सैयद अहमदखां ने इन शब्दों में उन्हें अपनी श्रद्धांजलि भेंट की थी—

निहायत अफसोस की बात है कि स्वामी दयानन्द साहिब ने जो संस्कृत के बड़े आलम थे और वेद के बड़े मुहक्किक थे। 30 अक्तूबर को सात बजे शाम के अजमेर में इन्तकाल किया—इलावा इल्मो फज़ल के निहायत नेक और दरवेश सिफ्त आदमी थे। उनके मोतकिद उन्हें देवता मानते थे और बेशक वह इसी

(शेष पृष्ठ 6 पर)

# महर्षि और आर्य समाज का गौरव–गान

ले —श्री कृष्णादत्त, भू पू प्रिंसीपल, हिन्दी महाविद्यालय, हैदराबाद

महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज ने भारत एवं द्वारा प्रतिपादित धर्म तथा मानव कल्याण के लिए जो कार्य किया है उसके सम्बन्ध में अनेक दिशाओं से प्रशंसात्मक विचार प्राप्त होते रहते हैं। हम यहां कुछ ऐसी सम्मतियां प्रस्तुत कर रहे हैं जो विभिन्न ज्ञान-कोशों और इन्सायक्लोपेडिया में प्रकाशित हुई हैं और जो सामान्य जनों के अवलोकन या अध्ययन में प्राय नहीं आती। महर्षि तथा आर्य समाज द्वारा धार्मिक सामाजिक, राष्ट्रीय तथा राष्ट्र भाषा हिन्दी सम्बन्धी कार्यों का इन में गौरवगान किया गया है।

मराठी में भारतीय संस्कृति कोश जो अनेक खंडों में प्रकाशित हुआ है और जिसका सम्पादन महाराष्ट्र के सुप्रसिद्ध विद्वान् प वामन शास्त्री जोशी ने किया है। उसके खण्ड 4 में सत्यार्थ प्रकाश और महर्षि के कार्यों का उल्लेख इन शब्दों में किया गया है— आधुनिक काल में वैदिक धर्म के पुनरुज्जीवन के सम्पादन में इस ग्रन्थ (सत्यार्थ प्रकाश) का बहुत बड़ा भाग है। (भा स कोश खंड 4 पृष्ठ 289)

'हिंदी भाषा का अखिल भारतीय स्वरूप में प्रयोग करके उसको राष्ट्र-भाषा की प्रतिष्ठा प्राप्त करवाने का (महर्षि ने) पहला प्रयत्न किया। (वही पृष्ठ 290)

ईसाई तथा इस्लाम धर्म के आक्रमणों के विरुद्ध उत्तर भारत के हिन्दुओं में जागृति उत्पन्न करने का श्रेय दयानन्द को ही प्राप्त है। उनके आगमन से पूर्व हिन्दू जैसे असहाय से बने हुए थे कोई भी उन्हें आतंकित करे उनके धर्म के चाहे जितनी निन्दा-भर्त्सना करे, उनके देवताओं को खंडित करे या विध्वंस करे इतना ही नहीं उनके जीवन सम्पत्ति और श्रद्धा पर प्रहार करके उन्हें बल-पूर्वक अपने धर्म में सम्मिलित कर ले, तब भी हिन्दू ये सभी अन्याय चुपचाप सहन करते थे। परन्तु दयानन्द ने हिन्दुओं के स्वाभिमान को जागृत करने का भगीरथ प्रयत्न किया और हजारों हिन्दुओं के हृदयों में धर्म रक्षा के लिए अवसर आने पर प्राण तक उत्सर्ग करने की भावना को स्थापित किया।

(वही पृष्ठ 290)

उसी भारतीय संस्कृति कोश प्रथम खंड के पृ 484 और 487 पर यह लिखा गया है "आर्य समाज, इस पंथ की स्थापना स्वामी दयानन्द सरस्वती ने 10 अप्रैल 1875 को बम्बई में की। ईसाई और इस्लाम, इन दो धर्मों के आक्रमणों से हिन्दू धर्म की सुरक्षा के लिए आर्य समाज ने जितने संकटों का सामना किया उतने संकटों का अन्य किसी संस्था ने सामना नहीं किया। सत्य तो यह है कि उत्तर भारत के हिन्दुओं को जागृत करके उन्हें प्रगतिशील करने का सम्पूर्ण श्रेय आर्य समाज को प्राप्त है।

The cultural Heritage of India के खण्ड 4 पृ 639 पर महर्षि दयानन्द के सम्बन्ध में लिखा गया है वे (म दयानन्द) एक ओजस्वी (Dynamic) संत थे। उन्होंने उत्तराधिकार में अपनी सम्पूर्ण प्रभावकारी शक्ति आर्य समाज को प्रदान की, जिसने उनकी अनन्त तथा अपरिमेय आध्यात्मिक कल्पना शक्ति को प्रवाहित तथा प्रसारित करने वाले स्रोत का काम किया।

The Ilustrated columbia Encyclopadia के खण्ड 18 के पृ 550 पर म दयानन्द के सम्बन्ध में ये पंक्तियां मिलती हैं वे भारतीय धर्म सुधारक और आर्य समाज आन्दोलन (Movement) के संस्थापक थे। वे एक गुजराती ब्राह्मण थे, किन्तु वे 13 वीं शताब्दी के प्रमुख प्रवक्ता या प्रतिनिधि थे। उन्होंने हिंदुओं का पुनरुद्धार किया और वे वेदों के बेजोड़ अधिकारी थे। जिस काल में ईसाइयत के बढ़ते हुए प्रभाव से हिन्दुओं की सामाजिक रीतियों की आलोचना हो रही थी स्वामी जी ने देश का ध्यान मूर्ति-पूजा की अनीश्वरता, बाल विवाह, समाज में नारी की निम्न स्थिति की ओर आकर्षित किया और यह स्पष्ट किया कि ये सभी वैदिक सिद्धान्तों के अनुकूल नहीं हैं। वेदों के नवीन रूप से प्रतिपादित सिद्धान्तों का प्रचार करने के लिए सन 1875 में उन्होंने बम्बई में आर्य समाज (श्रेष्ठों का समाज) की स्थापना की। यद्यपि वे राजनीति से दूर ही रहे तथापि उनके सन्देश ने परम्परावादी हिन्दुओं में जागृति का संचार किया।"

Encyclopadia Britainca के 1971 के संस्करण के द्वितीय खण्ड के पृ 558 पर महर्षि और आर्य समाज के कार्यों के सम्बन्ध में लिखा है, 'आर्य समाज आधुनिक हिन्दुत्व का सुधारवादी एक तेजस्वी संगठन है। इसकी स्थापना स्वामी दयानन्द सरस्वती (1824-1883) ने सन 1875 में बम्बई में की। उन्होंने वेदों को ईश्वरीय ज्ञान दर्शाया और बाद के सभी भाष्यों को अमान्य किया और मिथ्या बतलाया। स्वामी जी ने जिस पद्धति से वेदों का भाष्य किया वही आर्य समाज का धर्म दर्शन है। उनके अनुसार उस में समस्त तत्व और सम्पूर्ण ज्ञान का भंडार है। वे मानते थे कि वेद में बीज रूप में वर्तमान विज्ञान भी है। आर्य समाज मूर्ति—पूजा का पूर्णत विरोधी है कट्टर एकेश्वर वादी है और यह पुरोहित पुजारियों के अधिकारों के हस्तक्षेप को अमान्य करता है। यह संगठन एक तरह से प्रोटेस्टेंट धर्म का सहज स्मरण कराता है।

आर्य समाज जन्म पर आधारित जाति प्रथा को अवैदिक मानता है। गुण कर्म स्वभाव पर आधारित जाति (वर्ण) को स्वीकार करता है। उसके प्रभावी सुधार कार्यों में बाल विवाह और छूआ-छूत का विरोध भी सम्मिलित है। इसका संगठन तन्त्र इस प्रकार है—स्थानीय समाजें, उनके प्रतिनिधियों की प्रादेशिक सभा और फिर अखिल भारतीय सभा प्रत्येक आर्य समाज अपने पदाधिकारियों को प्रजातन्त्रात्मक पद्धति पर चुनती है। 1931 के आंकड़ों के अनुसार आर्य समाज के (भारत में) पांच लाख सदस्य थे। बाद के विश्वस्त आंकड़े अप्राप्त हैं।

आर्य समाज ने हिन्दू जाति में नव-चेतना और आत्मविश्वास की भावना पैदा की। हिन्दुओं में राष्ट्रीय स्वाभिमान पैदा किया। उच्च स्तरीय स्कूलों और कालेजों (डी ए वी) कालेजों) का जाल बिछाया, जिन में वैदिक शिक्षा के साथ आधुनिक वैज्ञानिक विषय भी पढ़ाए जाते हैं। इसने प्रचारक वर्ग (मिशनरी) अनाथालय, विधवाश्रय स्थापित किए और अकाल व बाढ़-पीड़ितों की सेवा तथा औषधी प्रचार का कार्य भी हाथ में लिया।'

विवेकानन्द केन्द्र मद्रास द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'Arise and Awake के छठे संस्करण के पृ 4 पर महर्षि दयानन्द और आर्य समाज के कार्यों का उल्लेख इन शब्दों में किया गया है,—'1875 में एक शक्तिशाली धार्मिक आन्दोलन आर्य समाज के नाम से आरम्भ हुआ है। स्वामी दयानन्द ने बम्बई में इसकी शुरुआत की। स्वामी दयानन्द की वेदों पर अटूट श्रद्धा थी। ईसाई धर्म के कुत्सित आक्रमणों का उन्होंने मुंहतोड़ उत्तर दिया। उस काल का हिन्दू समाज जमूद बना हुआ था। कोई भी उसके देवी-देवताओं की खिल्ली उड़ा सकता था, दीर्घकाल से प्रचलित उसके श्रद्धा भक्ति-भाव का मजाक कर सकता था फिर भी उसमें उत्तेजना पैदा नहीं होती थी। उसकी स्थिति को देखकर कभी-कभी यह सन्देह होता था कि क्या उसमें जीवन और कर्मठता का कोई लक्षण भी है। दयानन्द और उनके आर्य समाज के प्रादुर्भाव ने हिन्दू जाति को झकझोर रख दिया।

इस धार्मिक आन्दोलन ने सामाजिक और धार्मिक रीति रिवाजों में क्रांतिकारी परिवर्तन लाए। जातिप्रथा का धार्मिक महत्व समाप्त हो गया। वेदों पर ब्राह्मणों के एकाधिकार का अन्त हो गया। नारी जाति अनेक बन्धनों से मुक्त हो गई। साथ ही व्यापक लोकहितकारी कार्यों के प्रति लोगों में उत्साह पैदा हुआ तथा शिक्षा के प्रचार तथा अन्य ऐसे ही अनेक उल्लेखनीय हितकारी कार्यों को आर्य समाज ने प्रारम्भ किया।

'हिन्दी विश्वकोश के भाग 5 के पृ 503 पर महर्षि के कार्यों का गौरव इन शब्दों में किया गया है। उनके (दयानन्द)के सभी काम राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करने वाले थे।

ग्रन्थम, रामबाग, कानपुर द्वारा प्रकाशित 'आधुनिक हिन्दी गद्य और गद्यकार के लेखक डा वैकट पी आर्जन ने अपने ग्रन्थ के पृ 153 पर हिन्दी गद्य शैली के निर्माण में महर्षि दयानन्द के योगदान का उल्लेख इन शब्दों में किया है—"स्वामी दयानन्द और उनके आर्य समाज के प्रभाव के फलस्वरूप फिर संस्कृत निष्ठ गद्य शैली को प्रश्रय मिला। परिणाम-स्वरूप 1883 से 1900 तक धार्मिक पत्रों ने मुख्य रूप से इसी शैली को अपनाया। भारत दशा प्रवर्तक (1878) आर्य मित्र (1890) आर्य दर्पण (1880) और उसी प्रकार के अनेक प्रकाशन इसी के फलस्वरूप हुए।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने हिन्दी को राज-भाषा या सरकारी कार्यालयों की भाषा बनाने के लिए लाखों व्यक्तियों के हस्ताक्षर प्राप्त करके सरकार के पास मैमोरेण्डम भेजने का आन्दोलन चलाया था। महर्षि पहले व्यक्ति थे जिन्होंने वेदों का भाष्य हिन्दी में किया। महर्षि पहले व्यक्ति थे जिन्होंने हिन्दी में आत्म चरित्र लिखा। उन्होंने लेखन कार्य सन् 1874 से आरम्भ किया और जो कुछ लिखा हिन्दी में लिखा सन् 1883 में दीपावली के दिन ही स्वामी जी महाराज स्वर्ग सिधारे। इस प्रकार स्वामी जी महाराज का लेखन कार्य केवल दस वर्ष चलता रहा। इस अवधि में उन्होंने साढ़े नौ इंच × 6 इंच आकार की 15000 पृष्ठों की लिखित सामग्री हिन्दी में हमें दी।

# वेद के दो गूढ़ प्रश्न : उनके सरल उत्तर

लेखक—स्वर्गीय स्वामी विश्वेश्वरानन्द सरस्वती

बालादेकमणीयस्कमुतेक नैव दृश्यते ।
तत परिष्वजीयसी देवता सा मम प्रिया ॥
(अथर्व 10।4।18)

एक तत्व है जो बाल से भी सूक्ष्म है और एक ऐसा है जो दिखाई देता ही नहीं। परन्तु जो बाल से भी सूक्ष्म मेरा प्यारा देवता है वह उसका आलिंगन किए हुए है।

यह बाल से भी सूक्ष्म तत्व क्या है? वह दूसरा कौन सा है जो है परन्तु दिखाई नही देता? और वह बाल से भी सूक्ष्म प्यारा देवता उसका आलिंगन किस प्रकार किए हुए है? यह त्रिमुखी समस्या है जिसका समाधान हम करना चाहते हैं। मन्त्र मे आए दो मे से एक की जानकारी होने पर दूसरे का जानना सलभ होगा। उपनिषद मे एक का वर्णन आया है।

बालाग्रशतभागस्य शतधा
कल्पितस्य च ।
जीवो भाग स विज्ञेय
स चानन्त्याय कल्पते ॥

बाल के अग्रभाग के सौ टुकड़ करो और उनमे से एक टुकड़ के सकड़ो भाग करो। उस अत्यन्त सूक्ष्म भाग को जीव की परिभाषा समझो और इस प्रकार के जीव हैं भी असख्य और हैं भी अविनाशी।

उपनिषद के इस मन्त्र न अथर्व वेद के मन्त्र मे आए हुए बाल से भी सूक्ष्म तत्व का नाम सुनते ही हमे इसके उस साथी का नाम जानने मे कोई कठिनाई न होगी जिसे वेद ने न दीखने वाला कहा है और जिसका यह आलिंगन किए हुए है।

यह उसका आलिंगन तो किए हुए है, परन्तु उसे देख नही पाता। यह एक विचित्र समस्या है। जीव का प्रकृति के साथ भी सम्बन्ध है परन्तु यह उसको देखता भी है और उसका उपभोग भी करता है।

नयोरन्य पिप्पल स्वाद्वत्ति ।

उन दोनो में से एक उस प्रकृतिरूपी वृक्ष के कर्मफलरूप फलो का उपभोग करता है। परन्तु इसमें प्रकृति का नही एक ऐसे तत्व का वर्णन किया जा रहा है, जिसका कि यह आलिंगन अवश्य किए हुए है परन्तु न तो उसके रस का आस्वादन कर पाता है और न उसे देख पाता है। उपनिषदों मे प्रकृति के स्वादु फल का वर्णन किया है। इसके अतिरिक्त एक दूसरे रसवान तत्व का भी वर्णन किया है—

रसो वै स । रस ह्येवाय
लब्ध्वा आनन्दी भवति ।

(वह रसरूप है इसको प्राप्त करके यह जीव आनन्दी होता है।)

उपनिषत्कार ने ब्रह्म आनन्दरस रूप तत्व का नाम लिया है नित्य विज्ञानमय आनन्द ब्रह्म (नित्य विज्ञान रूप आनन्दरूप ब्रह्म है।) इस वाक्य मे आनन्द का सम्बन्ध ब्रह्म से जोड़ा गया है जिस प्रकार आत्मा के कर्मों का एक फल प्रकृतिरूपी वृक्ष के अनेक फलो का उपभोग है इसी प्रकार ब्रह्मानन्द रूपी फल की प्राप्ति भी उसके कुछ विशिष्ट कर्मों का फल मानी गई है। यह वह ही ब्रह्मतत्व है जिसका आलिंगन तो जीव ने किया हुआ है परन्तु उसके आनन्द रूप फल का उपभोग तो दूर की बात है अभी तो वह उसका दर्शन करने मे समर्थ नही हो पाया है। हमने यह जान लिया कि इस मन्त्र मे बाल से भी सूक्ष्म जिसे कहा गया है वह जीव है। और वह जिसे न दीखने वाली शक्ति कहा गया है वह ब्रह्म व्यापक है और जीव एक देशी है इसलिए इस एक देशी का व्यापक ब्रह्म के साथ सयोग अर्थात आलिंगन भी अनिवार्य ही है। अब प्रश्न यह ही शेष है कि जब यह उससे सयुक्त ही है तो उसे देख क्यो नही रहा? समस्या के इस एक अश का समाधान रूप ही हम एक दूसरी समस्या को उपस्थित करना चाहते हैं। वह समस्या निम्नलिखित है

पचवाही वहत्यग्रमेषा पृष्ठयो
युक्ता अनु स वहन्ति ।
अयातमस्य दृश्ये न यात
पर नेदीयो अवर दवीय ॥
(अथर्व का अ 4 स 8)

(एषाम) इन गाड़ियो मे से (अग्रम) प्रधान इजनरूप गाड़ी (पचवाही वहति) पाच शक्तियो के समुदायरूप गाड़ी को खींच जा रहा है। (पृष्ठ्यो युक्ता) पीछे चलने वाली गाड़ी जुड़ी हुई (अनु स वहन्ति) इसके पीछे पीछे भार लिए जा रही है। इसका न तो चलना दिखाई देता है और न चलना (पर नेदीय अवर दवीय) इतना अवश्य है कि जो परे था वह समीप आ रहा है और जो समीप था वह दूर हो रहा है।

यह है वह दूसरी समस्या जिसमे अपना भी और पहली समस्या का भी समाधान है। हमारा प्रधान अन्त करण रूप इजन पाच ज्ञान इन्द्रियो से गाड़ी को लिए जा रहा है। कर्मेन्द्रिया और पाच प्राण रूप गाड़िया इनके पीछे जुड़ी हुई पीछे पीछे चल रही हैं इनका चलने और न चलने का कुछ भी पता नही चल रहा। इतना अवश्य है कि जो दूर था वह समीप आ रहा है और जो समीप था वह दूर जा रहा है। वेद मे जिस आलिंगन की हुई गाड़ी का वर्णन किया गया है पचवाही शब्द के सामने आते ही उस गाड़ी का पता लगाने मे कोई कठिनाई नही होती। इसका वर्णन ऊपर के भावार्थ मे हम कर ही आए है अब शेष रह जाती हैं दो बात। एक तो यह कि उसके चलने और न चलने का कुछ पता ही नही चलता। और दूसरी यह कि दूर वाले समीप आ रहे है। चलती हुई गाड़ी के चलने और न चलने का पता न लगाने मे केवल यह ही कारण हो सकता है कि गाड़ी हमारी आखो से ओझल हो। हमारी यह आलकारिक गाड़ी आध्यात्मिक गाड़ी है और आध्यात्मिक गाड़ी की चाल का पता लगाने मे आख तो समर्थ हैं नही। आखो का काम भौतिक पदार्थों का देखना है आध्यात्मिक पदार्थों का देखना उसका काम नही है।

ज्ञान आदि आध्यात्मिक पदार्थ उनकी पहुच से बाहर हैं। हमारी आन्तरिक आख अन्त करण की आख हैं। परन्तु मन्त्र के भाव से प्रगट है कि वह भी इस जान और आयात का देखने मे असमर्थ हैं क्योंकि यदि देख सकता होता तो मन्त्र मे "नव दृश्यते (नही दिखाई देता) ऐसा न कहा जाता। इस समस्या को सुलझाने वाला वाक्य मन्त्र मे आगे पढ़ा गया है—

पर नेदीयो अवर दवीय

दूर वाले समीप आ रहे हैं और समीप वाले दूर जा रहे हैं।

इस वाक्य का यदि हम सीधा सा अर्थ ले लें कि दूर के पदार्थ समीप आ रहे हैं और समीप वाले दूर जा रहे हैं तो गाड़ी की चाल का पता लगाना हमारे लिए कठिन न रह जायेगा। क्योंकि गाड़ी यदि चलती होती तो जो पदार्थ आगे दूर थे वे समीप आ ही जाते हैं और जो हमारे पास थ वे पीछ दर रह ही जाते हैं। फिर तो इसके आने जाने का पता नही लग रहा। इस वाक्य का मूल्य भी न होगा। इसलिए पर नेदीयो अवर दवीय। दूर के समीप आ रहे है और समीप के दूर जा रहे है। इस वाक्य का भाव कुछ और ही है। वह ही इस मन्त्र की ओर पहले मन्त्र की भी समस्या का समाधान है। प्रकृति का जीव से भोग्य और भोक्ता का सम्बन्ध है परन्तु गौण सम्बन्ध है। जीव का चेतन गुण है और प्रकृति का जड़ है। इसलिए प्रकृति से जीव का गुण की समता वाला सम्बन्ध नही है। जिस प्रकार प्रकृति से उसका सम्बन्ध है उसी प्रकार जीव का ब्रह्म से से भी सम्बन्ध है परन्तु ब्रह्म से उसका गुण के द्वारा सम्बन्ध है ब्रह्म भी चेतन है और जीव भी। ब्रह्म ज्ञान का भण्डार है और जीव अल्प ज्ञान वाला है। ज्ञान की शक्ति उसे ब्रह्म से ही मिल सकती है प्रकृति से नही। जीव की वास्तविक गति है उसका ब्रह्म की ओर जाना उसके इन्द्रिय प्राण मन आदि उसे ब्रह्म की ओर ले जा रहे हैं तब तो समझो कि उस की गाड़ी चल रही है परन्तु यहा तो स्थिति ही और है। हम अपने एक मात्र साधन अन्तकरण के ऊपर प्रकृति के अनेक चित्र खीचते चले जा रहे हैं। इसलिए पाठ यह ना पढ़ रहे है पर नेदीय जो प्रकृति गुण से हम से सर्वथा दूर है वह ही संस्कारो के रूप मे हमारे अन्तकरण मे इकट्ठी होती जा रही है और हम प्रकृति का पर्दा पड़ जाने से हमारी समीपी ब्रह्म सत्ता हमारे अन्त करण की आखो से ओझल होती जा रही है। यही कारण है कि इस प्रकृति अथवा अज्ञान के पर्दे के कारण हम अपने ज्ञान की गाड़ी की चाल का पता नही लग रहा। जिस प्रकार हम अन्धेरे मे कुछ नही देख सकते इसी प्रकार अज्ञान के अन्धकार मे भी कुछ नही देख सकते। इसलिए अपनी गति को देखने के लिए हमे प्रकृति के प्रभाव को दूर कर ब्रह्म के प्रभाव की छाप अन्त करण पर लगानी होगी।

पहले मन्त्र की समस्या का इस मन्त्र मे यह वाक्य समाधान है। ब्रह्म का हमारे साथ सम्बन्ध है। उसके साथ जीव का ज्ञानी होने के कारण सयोग है परन्तु अब जीव ने अपने चारो ओर अन्तकरण मे प्रकृति के संस्कारो का जाल बिछा दिया है इसलिए इस अज्ञान के अन्धकार के कारण वह अपने पास होते हुए भी ब्रह्म के स्वरूप को नही देख पाता उसे देखने के लिए हमे अविद्या के संस्कारो से पिण्ड छुड़ाकर ब्रह्म की ओर जाना होगा।

( वेद प्रकाश से साभार )

# अमृतदान और विषपान

ले — स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती दिल्ली

गुरुदेव दयानन्द आकर के सत्य मार्ग पर चला गया।
होकर के विदा दिवाली को घर घर मे दीपक जला गया॥
देखा जो सूखा जो बाग पड़ा कुम्हलाई थी डाली डाली।
इस बाग का माली बन कर के जीवन भर कीनी रखवाली॥
सरसब्ज किया आकर फिर से वह पुष्प चमन मे खिला गया।
होकर के विदा दिवाली को घर घर मे दीपक जला गया॥
इस देश की नारी जाति को जूती सम समझा जाता था।
कहकर शूद्र की अधिकारी अपमान कराया जाता था।
नारी को वेद पढ़ाकर के वह ऊंचा दर्जा दिला गया।
होकर के विदा दिवाली को घर घर मे दीपक जला गया।
मानव से मानव वंचित कर दूर-दूर चिल्लाते थे।
जो बने विधर्मी सम न्याय चोटी अपनी कटवाते थे॥
वह उनको शुद्ध करा करके भाई से भाई मिला गया।
हो करके विदा दिवाली को घर घर मे दीपक जला गया॥
छल कपट से भोली जनता को जो लूट लूट कर खाते थे।
गुरुडम भगवती का पाठ पढ़ा पूजा अपनी करवाते थे॥
अज्ञान मिटा कर के सारा वह जड़ पाखण्ड को हिला गया।
होकर के विदा दिवाली को घर घर मे दीपक जला गया॥
था दया का सागर दयानन्द दया अन्त मे दिखलाई
प्राणो के घातक जगन्नाथ को भी धन की पकड़ाई॥
कहे स्वरूपानन्द जो ऋषि को जहर दूध मे पिला गया।
हो करके विदा दिवाली को घर घर मे दीपक जला गया॥

# महर्षि दयानन्द के प्रति

ले —श्री रमाकान्त दीक्षित

हे आर्य प्रवर युग द्रष्टा
युग गिरि—गौरव के स्रष्टा
अर्पित तुम को भाव कुसुम

तुमने तम को सहारा
धरती का चित्र सवारा

दीनो की थे आशा तुम
अर्पित तुमको भाव कुसुम!

आजादी का जय दिया
पाप पंक को दूर किया

दुग्ध मे जहर पचाकर तुम
अर्पित तुमको भाव कुसुम

गोधन के थे उपकारी
तुमने पूजी थी नारी

पथ मे बिखराया कुमकुम
अर्पित तुमको भाव कुसुम

जगती का हित करते थे
नही किसी से डरते थे

रहते पाखण्डी गुमसुम
अर्पित तुमको भाव-कुसुम

शूलो का तो खुद झेला
लाए फूलो का मेला

रहे सदा पर हित मे गुम!
अर्पित तुमको भाव कुसुम!

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी के लिए—

# आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर के कार्यालयमें प्राप्त धन की सूची

| | | |
|---|---|---|
| 1 | श्री रामलुभाया जी मल्हा प्रधान आर्य समाज भार्गवनगर (बस्ती मिट्ठ) जालन्धर शहर | 300 रु |
| 2 | कोषाध्यक्ष आर्य समाज तलवाड़ा टाउनशिप | 200 रु |
| 3 | श्रीमती ज्ञानदेवी सोनी प्रधान आर्य समाज सुजानपुर | 275 रु |
| 4 | श्री सत्य प्रकाश जी उप्पल प्रधान आर्य समाज महलपुर | 50 रु |
| 5 | श्री रतनपाल जी प्रसाद आर्य समाज धमाल | 100 रु |
| 6 | आर्य समाज मोहल्ला गोविन्दगढ़ जालन्धर शहर | 300 रु |
| 7 | आर्य समाज सुल्ह्रीगेट नाभा | 1100 रु |
| 8 | श्रीमती सशीला भगत मन्त्राणी स्त्री आर्य समाज पक्का बाग (महर्षि भवन) जालन्धर शहर | 101 रु |
| 9 | आर्य समाज रानी का तालाब फिरोजपुर शहर | 500 रु |
| 10 | आर्य समाज मौलाना रोड फगवाड़ा | 250 रु |
| 11 | आर्य समाज नवांशहर द्वाबा | 500 रु |
| 12 | स्त्री आर्य समाज श्रद्धानन्द बाजार (साबन बाजार लुधियाना (यज्ञशाला पर नाम लिखे जाने के लिए) द्वारा बहन कमला जी आर्य। | 1100 रु |
| 13 | आर्य समाज जण्डियाला गुरु (अमृतसर) | 150 रु |
| 14 | आर्य समाज बरनाला द्वारा श्री बल भाटिया जी मन्त्री | 1100 रु |
| 15 | आर्य समाज श्रद्धानन्द बाजार अमृतसर | 2000 रु |
| 16 | आर्य समाज संगरूर | 100 रु |
| 1 | स्त्री आर्य समाज संगरूर | 50 रु |
| 18 | मन्त्री आर्य समाज फरीदकोट | 500 रु |
| 19 | लेडी डाक्टर विद्यावती प्रधाना आर्य स्त्री समाज अड्डा होशियारपुर जालन्धर शहर | 501 रु |
| 20 | श्रीमती सत्यवती चोपड़ा प्रधाना आर्य स्त्री समाज चौक पटियाला | 150 रु |
| 21 | आर्य समाज श्रद्धानन्द बाजार (अड्डा होशियारपुर जालन्धर | 1000 रु |
| 22 | आर्य समाज जालन्धर छावनी | 500 रु |
| | | 10828 |

इसके अतिरिक्त आर्य समाज खरड़ से 250 रु तथा आर्य समाज नया नगल से 501 रु के ड्राफ्ट निर्वाण शताब्दी तथा परोपकारिणी सभा अजमेर के नाम के सभा कार्यालय मे प्राप्त हुए हैं।

—रामचन्द्र जावेद महामन्त्री

(3 पृष्ठ का शेष)

लायक थे। वह ज्योति स्वरूप निराकार के सिवा दूसरे की पूजा जायज नहीं समझते थे। हम से और स्वामी दयानन्द मरहूम से बहुत मुलाकात थी। हम उनका निहायत अदब करते थे। हर एक मजहब वाले को उनका अदब लाजम था। बहरहाल वह ऐसे शख्स थे जिनकी मिसाल इस वक्त हिन्दुस्तान में नहीं है। हर शख्स को इनकी वफात का गम करना लाजमी है कि ऐसा बेनजीर शख्स उनके दरमियान से जाता रहा है।

यह थे महर्षि दयानन्द सरस्वती जिन्हें जहर देकर मार दिया गया था जो आज की रात यह कहते हुए इस नश्वर संसार से विदा हो गए थे। हे दयामय हे सर्वशक्तिमान ईश्वर ये तेरी यही इच्छा है सचमुच तेरी ही इच्छा है। परमात्मा देव तेरी इच्छा पूर्ण हो—

अहा मेरे परमेश्वर तूने अच्छी लीला की।

महर्षि का देहान्त राजस्थान मे हुआ था। वह उन दिनो राजस्थान के राजे महाराजाओ को भारत की स्वतन्त्रता के लिए लड़ने के लिए तयार कर रहे थे। उनके देहान्त के साथ उनकी वह योजना अधूरी रह गई। लेकिन वह रास्ता दिखा कर गए थे। इसलिए उनकी मृत्यु के 54 वर्ष पश्चात् उनका देश आजाद हो गया। और उनके देशवासियो ने उनके इस सिद्धान्त को क्रियान्वित कर दिया कि विदेशियों का राज्य चाहे कितना अच्छा क्यो न हो वह स्वराज्य से अच्छा नहीं हो सकता।

—वीरेन्द्र

# दान की महिमा

लेखक—श्री प्रेम भिक्षु श्री वानप्रस्थी अहमदगढ

ओ३म्

दान का बडा भारी महत्व है। दान देना एक बडा ही उत्तम तथा प्रशसनीय गुण है। इससे जहा जनता सुखी होती है वहा दानी को इससे यश, कीर्ति मान व सम्मान और भगवान भी प्राप्त होता है। धम शास्त्रों मे धन दौलत की तीन गतिया लिखी हैं। दान भोग और नाश।

1 या तो दान करो अर्थात अपने पैसे को अच्छे व श्रेष्ठ कार्यों व परोपकार के [illegible] मे लगाओ। आम जनता के लाभ के लिए अपनी दौलत को खच कर दो जैसा कि एक प्रसिद्ध कवि हजरत जौक ने कहा है —

नाम मजूर है तो फैज के असबाब बना।
पुल बना चाह बना मस्जिदो तालाब बना ॥

2 धन दौलत का दूसरा उचित प्रयोग ये है कि आप अपनी सामर्थ्य व ताकत के अनुसार अपना खान पान व पहरान और मकान अच्छा व सुदर रखो। अपने जीवन को सुखी सुथरे और शानदार ढग से गुजारो और सदा प्रसन्न रहो। परन्तु इसका मतलब ये हरगिज नही कि खाओ पियो और मौज उडाओ / यानि

धन दौलत से अपने बच्चो को अपनी सन्तान को ऊची शिक्षा दिलवाओ उनका जीवन उच्च व सुदर बनाओ और उनको समाज व सोसाइटी का एक आदरणीय अग और सम्मान योग्य व्यक्ति बनाओ ताकि आपका व आपके परिवार का मा[illegible]र स्थान पर उज्ज्वल हो।

3 अब जो आदमी न तो कुछ दान कर न ही कुछ अच्छा खाने पीने बल्कि कजूस मक्खीचूस बन कर अपने धन पर साप बन कर उसका पहरा ही देता रहे और अपने जीवन को सुखी बनाने के लिए उसे कदापि काम मे न लगावे तब फिर इस सूरत व हालत मे उसके धन की तीसरी गति अवश्य प्राप्त होती है अर्थात् उसकी दौलत बीमारी चोरी चकारी या आग या मुकद्दमाबाजी आदि मे ही नष्ट भ्रष्ट हो जाती है। या उस कजूस आदमी के नालायक बच्चे बाप के कमाये हुए धन जायदाद को मद्यपान मुडामर्दी आवारागर्दी और जुएबाजी आदि गन्दी आदतो मे पडकर बिल्कुल बर्बाद कर देते हैं।

अत दान करना ही दौलत का सबसे उत्तम प्रयोग है जोकि श्रेष्टतम कार्यों मे जावे। हमारे पवित्र वेदो व शास्त्रो मे यज्ञ को सवश्रेष्ठ काय माना गया है जिस से सारे ससार को सैकडो लाभ हैं इस उत्तम शुभ काय से तो तमाम प्राणी मात्र को, मित्र व शत्रु हमसाये व प्यारे अपने व पराये विरोधी व हमदद हरेक को पूरा लाभ पहुचता है। इसलिए इसे सर्वोत्तम काय कहा गया है। ऐसे ही कार्यों के लिए दान देना श्रेष्ठ दान कहलाता है।

देही मे ददामि ते

अर्थात ईश्वर का आदेश है कि तू मुझ देता जा और मैं तुझ देता जाऊगा। हाथो व दौलत की शोभा तो दान से है और वाणि की शोभा ईश्वर भजन व मीठ व मधर वचनो से है।

सितारो की चमक तो बस सहर तक है
दिये व दान की रोशनी महशर तलक है

इसलिए दान दिल खोलकर देना चाहिए कि —

पड रह जायगे सदूक हीरो के जमीनो पर।
जमाना मस्करायेगा बखीलो के दफीनो पर।
न खद खायगे ये कजूस न खरात मे दगे।
अदम को चल बसगे रख के खाली हाथ सीनो पर

# पुस्तक समीक्षा

## कामनापैथी एफिशएन्सी का कोस

प्रस्तुत पुस्तक हिन्दी भाषा मे श्री अशोक किशोराणी सम्पादक आय माग द्वारा लिखी गई पुस्तक कामयाब जिन्दगी अजा राजए ग्मज (सफल जीवन के रहस्य और करनाए) का हिन्दी अनुवाद है। कामनापैथी मे दिए गए व्यवहारिक व क्रियात्मक सुझावो पर आचरण करके प्रत्येक काय मे सफलता प्राप्त की जा सकती है। इस पुस्तक मे हर पेशे जसे व्यापारी कारखानेदार सेल्समन दुकानदार वकील डाक्टर इन्जीनियर अध्यापक उपदेशक विद्यार्थी सरकारी या प्राईवेट नौकरी करने वाले मजदूर किसान कामगार मिल मालिक इत्यादि सभी के लिए अपने काय की दक्षता और कुशलता से करने के अनूठ उपाय दिए गए हैं।

पुस्तक पढने पर ऐसा प्रतीत हुआ कि लेखक ने पर्याप्त परिश्रम करके इस को तयार किया है पुस्तक का जो मूल्य 25 रुपए रखा गया है वह पुस्तक म दी गई सामग्री की तुलना म कम भी है परन्तु पृष्ठ सख्या केवल 128 है इस दृष्टि स मूल्य अधिक है

इस पुस्तक के लेखक श्री अशोक किशोराणी तथा अनुवादक प्रकाशचन्द्र किशोराणी वेदालकार है पृष्ठ 128 आकार डिमाई (बडा) कागज उत्तम और आवरण आकषक है।

प्रकाशक

मसार साहित्य मण्डल 141 253 मुलुण्ड कालौनी बम्बई है।

# उपनिषदों में ओम् जप की महिमा

लेखिका—श्रीमती सन्तोष वर्मा जालन्धर

ओ३म परमात्मा का मुख्य नाम है। ओ३म जाप की महिमा बृहदारण्यक उपनिषद मे विस्तार स दी गई है। इसका जाप मनुष्य को ससार रूपी भव सागर से पार करवाने के लिए नौका का काम देता है। ससार म सवत्र अशान्ति फली हुई है। इसलिए अशान्ति के धय रूपी बादलो से सारा ससार ढका हुआ है। क्या इन अशान्ति रूपी बादलो से मानव का सतप्त मन सुख रूपी वर्षा का आनन्द ले सकता है? अर्थात कभी नही।

इसलिए इस ससार रूपी वाटिका मे विचरण करने के लिए मानव मन को काम क्रोध लोभ मोह तथा द्वेश के विकारो की [illegible] म अपनी रक्षा करनी चाहिए इसीलिए तो किसी कवि ने क्या ही अच्छा कहा है—

ओ३म जपो ओ३म जपो
ओ३म जपो बावरे।
धार भव नीर नि[illegible] नाम जाप बावरे

अपने मन म मनुष्य को यह निश्चय कर लेना चाहिए कि परम पिता परमात्मा अपने आप मे पूर्ण है इस पूर्णता का आभास हमे अपने वेदो मे सकलित मन्त्रो से मिलता है वेद क्या कहते हैं

बिन पग चल सुने बिन काना
कर बिन कम करे विधि नाना।

इसलिए जप मे मनुष्य की निष्ठा अवश्य होनी चाहिए जाप साधना अपने आप मे एक पूर्ण साधना है। इस साधना के द्वारा हमे मन बुद्धि तथा पाचो ज्ञान इन्द्रियो पर कन्ट्रोल रखना चाहिए। हम जाप किसका करना चाहिए? य तो कोई किसी का जाप करता है कोई राम का। परन्तु हमारे वेदो म ईश्वरीय ज्ञान है उनमे किसी भी एतिहासिक पात्रो का चित्रण नही है। यू राम का अभिप्राय कई भक्त जन रोम 2 मे रमा हुआ मानते है। परन्तु राम शब्द हमारे वेदो मे कही नही आया है। कई भक्त मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी को अपने जाप का साधन मानते हैं। परन्तु राम चन्द्र को नाम जाप का साधन मान जाप करना अपनी आत्मा को धोखा देना है। क्योकि रामचन्द्र जी हम प्राणियो की तरह विशेष गुण लेकर भारत भूमि पर अवतरित हुए थे। वह एकदेशीय है। सब व्यापी सत्ता नही हैं। यदि सवव्यापी होते तो उन्हे सीता माता को ढूढने के लिए सुग्रीव और हनुमान जी का सानिध्य प्राप्त न करना पडता।

हमारे वेदो मे कई मन्त्रो मे ओ३म शब्द आता है जिसका अभिप्राय है रक्षक ओम प्रभु का मुख्य नाम है शिव विष्णु ब्रह्मा आदि उसके गौण नाम है। ओ३म जाप से चिन्तारूपी चुहा नही सताता तथा हार्ट अटैक जैसी बिमारियो की रक्षा करता है। ससार एक सघष स्थली है जाप इसके द्वारा लगने वाले थपेडो से रक्षा करता है। इसलिए किसी कवि ने क्या ही सच कहा है—

एक साध सब सध जाए
जो तू सीचे मूल को फूले
फले अघाय

इसीलिए तो गुरु नानकदेव जी कहते है—नाम खुमारी नानका
चढी रहे दिन रात

इसलिए हम अपनी बुद्धि के अन्दर ज्ञान भक्ति तथा वैराग्य के प्रकाश को जगाने के लिए ओम जाप का सहारा अवश्य लेना चाहिए।

## वेद प्रचार मण्डल हिमाचल प्रदेश मुख्य कार्यालय वेद मन्दिर परमाणु

गत दिनो आर्य समाज शिमला के वार्षिकोत्सव पर पू ज्यपाद स्वामी सुरेन्द्रा न द जी महाराज की अध्यक्षता मे वेद प्रचार मण्डल की स्थापना की गई। इस मण्डल म उन सभी स न्यासी महात्माओ व स्नातको को सम्मिलित किया गया है, जिनका सम्बन्ध दयान द मठ दीनानगर (पजाब) एव दयानन्द मठ चम्बा (हि प्र) से रहा है तथा जो हिमाचल प्रदेश म काय कर रहे हैं। इस सगठन के उद्देश्य निम्नलिखि त है—

1 वैदिक धम का प्रचार करना।

2 आय समाज का संगठन करना।

3 युवको मे चरित्र निर्माण की भावना को जागत करना।

4 यह सगठन आय प्रतिनिधि सभा के अधीन काय करेगा।

वेद प्रचार मण्डल हिमाचल प्रदेश इस अपने प्रदेश मे सुचारू रूप से काय कर सके अत इस तरह के सगठन की अत्यन्तावश्यकता को देखते हुए पूज्य स्वामी सर द्रान द जी म राज ने मन्दिर परमाणु को इस मण्डल का मुख्य कार्यालय बनाने के लिए स्वीकृति प्रदान की तथा सवप्रथम 501 रुपए वेद प्रचार मण्डल के कोष मे देने की घोषणा की तथा निणय लिया गया कि सभी स यासी विद्वान एव स्नातक 101 सदस्य शुल्क तथा प्रति मास 10 रुपये शुल्क सरक्षक वेद प्रचार मण्डल हिमाचल प्रदेश वेद मन्दिर परमाणु के नाम पर भेजा कर। मन्त्रालय का सारा धन इस प्रदेश म वेद प्रचाराथ ही व्यय किया जाएगा। सभी स्नातक इस सगठन को सफल बनाने मे अपना सहयोग तन मन-धन से दें। इस सगठन की कार्यकारिणी का भी चुनाव इसी दिन कर लिया है जो निम्नलिखित है—

सरक्षक—श्री पूज्यपाद स्वामी सुरेन्द्रानन्द जी प्रधान—श्री सुमेधानन्द जी महामन्त्री—श्री आचाय रामानन्दजी उपमन्त्री—श्री आचाय मनोहर लाल जी प्रचारमन्त्री—श्री आचार्य महावीर सिंह जी एव आचाय कर्मसिंह जी। कोषाध्यक्ष पूज्यपाद स्वामी सुबोधानन्द जी।

## फेरुपुर (हरिद्वार) में आर्यवीर दल का शिविर सम्पन्न

क्षत्रीय आय समिति बहादराबाद (हरिद्वार) ने आय समाज फेरुपुर के सहयोग से आय वीर दल का शिविर 14 से 23 अक्तूबर तक सम्पन्न किया। दीक्षान्त समारोह पर प बाल दिवाकर जी स प्रधान सचालक आर्य वीर दल दिल्ली ने अध्यक्षता की। दीक्षान्त भाषण प्रो कैलाशनाथ सिंह प्रधान आय प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश लखनऊ ने दिया। शिविर में 70 नवयुवको ने (व्यायाम, लाठी, तलवार आसन, प्राणायाम सन्ध्या यज्ञ मलखम्भ बौद्धिक विषय) डा देवव्रत आचार्य उपसचालक साव देशिक आर्य वीर दल दिल्ली ने सिखाया सभी नवयुवको ने यज्ञ वेदी पर प फूल सिंह जी आय तथा प, बाल दिवाकर जी के स के सम्मुख अडा मास भग इत्यादि चीज न खाने का सकल्प लिया।

—भूषणलाल आय

## अमृतसर मे महर्षि बाल्मीकि प्रगटोत्सव

आय समाज श्रद्धानन्द बाजार अमृतसर मे महर्षि बाल्मीकि का प्रगटोत्सव (धार्मिक सम्मेलन 30 10-83 को मनाया गया। जिसमे श्री ... जी ... श्री ओकारनाथ जी बहल, श्री आर सी भाटिया, महात्मा पूनमिर्जी ... श्री ... राही श्री नन्दलाल जटठी श्री राजकुमार ... डा राजकुमार मित्र, श्री ... लाल एण्ड पार्टी बीबा एण्ड पार्टी, श्री वैद्य ओमप्रकाश जी आदि महानुभावों ने महर्षि बाल्मीकि के सम्बन्ध मे अपने विचार व भजन रखे। उत्सव हर प्रकार से सफल रहा। जिसमें नगर के बहुत से भाई बहिनो ने भाग लिया

—रामपाल
मन्त्री

—

**आर्य मर्यादा में विज्ञापन देकर लाभ उठाएं**

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रेस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

वर्ष 16 अंक 31, 29 कार्तिक सम्वत् 2040, तदनुसार 13 नवम्बर 1983, दयानन्दाब्द 159 । एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुप

## वेदामृत—

# पवित्र वाणी में कल्याणी लक्ष्मी का वास है

सक्तुमिव तितउना पुनन्तो यत्र धीरा मनसा वाचमक्रत
अत्रा सखाय सख्यानि जानते भद्रैषा लक्ष्मीर्निहिताधि वाचि।

ऋ 10 71 2।

(यत्र धीरा) जहां धीर पुरुष (तित उना सक्तुम इव) चलनी से सत्तुओ के समान (मनसा पुन त) मन से पवित्र करते हुए (वाचम अक्रत) वाणी को पवित्र करते हैं अर्थात बोलते हैं (अत्र सखाय सख्यानि जानते) वहां मित्र मित्रता को भली-भान्ति जानते हैं अर्थात अनुभव करते हैं (एषाम अधिवाचि) उनकी वाणी मे (भद्रा लक्ष्मी नि्हिता) कल्याणकारिणी लक्ष्मी निवास करती है।

मन्त्र मे बतलाया गया है जहां धीर पुरुष चलनी से छाने गये सत्तुओ के समान अपने मनन द्वारा पवित्र की गयी वाणी को बोलते हैं वहीं पर मित्र अपनी मित्रता का अनुभव करते हैं और उनकी वाणी मे कल्याणकारिणी लक्ष्मी निवास करती है।

प्रभु का उपदेश है कि मनन रूपी चलनी से छान कर वाणी का प्रयोग करो जैसे सत्तुओ को चलनी से छानकर स्वच्छ सुन्दर खाने योग्य बनाया जाता है वैसे ही मनुष्य को चाहिए कि वह अपने मन द्वारा सोच विचार कर वाणी को शुद्ध पवित्र एव प्यारी बनावे और फिर उस वाणी का प्रयोग करे। सत्य और प्रिय वाणी मे मोहिनी शक्ति होती है। मनुष्य अपनी प्यारी हृदयग्राहिणी बोली द्वारा उन कार्यों को दूसरों से सरलता से करा लेता है। जिनके लिए पर्याप्त धन समय और श्रम की आवश्यकता होती है। देखा जाता है कि मधुर भाषी अल्पभाषी दूसरों को जल्दी अपनी ओर आकर्षित कर लेता है और उन्हें अपना स्वामी भक्त बना लेता है।

जो मनुष्य भली भान्ति विचार कर मापक पवित्र एव मधुर वाणी का प्रयोग करते हैं उनके काम एव मनोरथ बहुत अच्छी सिद्ध होते है और जो बिना विचार असत्य एव अप्रिय वाणी का प्रयोग करते हैं वे दूसरो को अपना शत्रु बना लेते है तथा बडी विपत्तियो मे फस जाते हैं। यह बात सदा ध्यान मे रखनी चाहिए कि बाणा की अपेक्षा वाणी के बाण अत्यन्त विषाक्त एव दुष्परिणाम वाले होते हैं। इसलिये हमेशा सोच समझ कर वाणी का प्रयोग करो और कभी भी ऐसी वाणी का प्रयोग मत करो जिससे दूसरो को दुःख पहुंचे।

वेद आदेश देता है—

यद्वदामि मधुमत्तद्वदामि ।

अथर्व 12 15 8।

मैं जो बोलू वह मधुर हो वही बात। मनु महाराज ने ठीक कहा है—

सत्य ब्रूयात् प्रिय ब्रूयान्न—
ब्रूयात्सत्यमप्रियम् ।
प्रिय च नानृत ब्रूयादेष धर्म
सनातन । मनु 4 138।

सत्य बोलो पर प्रिय बोलो सत्य को भी अप्रिय रूप मे मत कहो और प्रिय भी झूठ मत कहो यही सनातन धर्म है।

यदि वास्तव मे देखा जाए तो मनुष्य का सच्चा आभूषण उसकी सुसस्कृत प्रिय वाणी ही है जैसा कि कहा है—

केयूरा न विभूषयन्ति पुरुष हारा
न चन्द्र ज्वला
न स्नान न विलेपन न कुसुम
नालकृता मूर्धजा ।
वाण्येका समल करोति पुरुष
या सस्कृता धार्यते,
क्षीयन्ते खलु भूषणानि सतत
वाग्भूषण भूषणम ॥

केयूर मनुष्यो को विभूषित नहीं करते न चन्द्र के समान उज्ज्वल हार ही विभूषित करते हैं और न स्नान, विलेपन, कुसुम और सजाए हुए बाल ही अलकृत करते हैं केवल सोच विचार कर पवित्र की गई सुसस्कृत वाणी ही मनुष्य का अलकृत करती है अन्य आभूषण तो नष्ट हो जाते हैं केवल वाणी का आभूषण ही आभूषण है।

सत्य एव प्रिय वाणी तो सचमुच मनुष्य की कामधेनु है जिससे उसके सारे मनोरथ पूर्ण होते हैं। कहा भी है

कामान दुग्ध विप्रकर्षत्यलक्ष्मी कीर्ति सूते दुष्कृत या हिनस्त ।

ता चाप्येता मातर मगलाना धेनु धीरा सूनृता वाचमाहु

धीर पुरुषो ने सूनृता वाणी को कल्याणो की जननी कामधेनु कहा है जो कि कामनाओ को पूरा करती है और अलक्ष्मी अशोभा को दूर करता है तथा कीर्ति को देती है और दुष्कृत अर्थात बुराईयो का नाश करती ?।

अथर्व वेद मे आता है—

इय या परमेष्ठिनी वाग् देवी
ब्रह्मशसिता ।
ययैव ससृजे घोर तयैव
शान्तिरस्तु न ।

अथर्व 19 9 3।

यह जो परमेष्ठिनी अत्यन्त समुन्नत वाणी है वह ब्रह्म ज्ञान द्वारा सस्कृत हुई देवी बन जाती है। जिस वाणी से ही घोर भयकर अनर्थ हो जाते हैं उससे ही हमारे लिये शान्ति हो।

इसलिए मनुष्य को चाहिए कि वह वाणी के महत्व को दर्शाने वाले वेद के सन्देश को कभी न भूले और सदा मनन द्वारा पवित्र की गई मधुर वाणी का ही प्रयोग करे ध्यान रखो—

भद्रैषा लक्ष्मीर्निहिताधि वाचि

मधुर एव पवित्र वाणी बोलने वालो की वाणी मे ही कल्याणकारिणी लक्ष्मी का निवास है।

—रामश्वर शास्त्री सिद्धान्त शिरोमणि एम ए

# अजमेर में महर्षि दयानन्द को विदेशी बन्धुओ ने भी श्रद्धाजलिया अर्पित की

4 नवम्बर 83 को महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी के अवसर पर आयोजित श्रद्धाजलि सम्मेलन मे भारतीय विद्वानो के अतिरिक्त विदेशी महानुभावो ने भी महर्षि को अपनी श्रद्धाजलिया अर्पित की। डनमार्क के निवासी [illegible] (ब्रह्मचारी) चीन के [illegible] लंका के निवासी [illegible] आस्ट्रेलिया के निवासी डा [illegible] और श्री आर एस [illegible] (पादरी) ने हिन्दी मे बोलते हुए हिन्दी के महत्व पर प्रकाश डाला तथा हिन्दी की महिमा का गान किया और महर्षि का गुणगान करते हुए उन्हे श्रद्धाजलि भेट की। मारिशस के प्रधानमन्त्री ने भी इस सम्मेलन मे भाग लेना था परन्तु वह किसी कारण से न आ सके उनके द्वारा भेजा गया श्रद्धाजलि सन्देश सम्मेलन की सयोजिका श्रीमती प्रभात शोभा ने पढ़कर सुनाया इस सम्मेलन की अध्यक्षता राजस्थान के मुख्यमन्त्री श्री शिवचरण माथुर ने की।

# आर्य मर्यादा का विशेषांक

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी के उपलक्ष मे शिवरात्रि पर आर्य मर्यादा साप्ताहिक का एक आकर्षक और विशेष सामग्रीसे परिपूर्ण विशेषांक शिवरात्रि पर प्रकाशित हो रहा है। लेखक महानुभाव अपनी रचनाए और लेख भेजें तथा आर्य समाजें अपने आर्डर भेजें।

# तोबा और प्रायश्चित

ले—श्री बी पी श्रीवास्तव धार (म प्र)

अर्जुन—इच्छा न होते हुए भी मनुष्य पाप कैसे कर लेता है ?

भगवान—इच्छा है इसलिये करता है। (महाभारत)

ससार म जितने प्रकार के कुकर्म है उनमे सबसे बडा वह है जिसका कर्त्ता अपनी वास्तविकता छिपाकर विपरीत कर्म करे।

योऽन्यथा सन्तमात्मान मन्यथा सत्सुभाषते।

स पाप कृत्तमो लोके स्तेन आत्मा पहारक।

(मनु 4 255)

जो जैसा है उसके विपरीत अपने आपको प्रकट करता है वह सबसे बडा पापी है वह चोर और आत्मघाती है

पाप पहले मजेदार लगता है फिर वह आसान हो जाता ? फिर उससे सुख होने लगता है फिर वह बार बार किया जाता है फिर वह स्वभाव बन जाता है फिर आदमी गुस्ताख बन जाता है और कभी न पछताने का निश्चय कर लता है और फिर वह तबाह हो जाता है। (लीटन)

O s n ! What hast than done to th s fa r earth

(R H Dana)

जो दिल म खटके वह पाप है। (हजरत महम्मद)

मरते समय तक क्या चुभता है ?

ग न पाप। (शकराचार्य)

जो पाप मे फस जाता है वह मानव है जो उस पर खेद प्रकट करता है वहदेवता है जो उस पर घमण्ड करता है दानव है। (टामस फलर)

नाधर्मश्चरितो लोके सद्य फलति गौरिव।

शनैरावर्तमानस्तु कर्तुर्मूलानि कृन्तति।

(मनु 4 172)

इस लोक म किया गया अधम त काल फल नही देता। जैसे कि बोई हुई पृथिवी त काल फल नही देती। वह (अधम) क्रमश पक कर (बार बार करने से) कर्त्ता की जड (आधार स्वरूप) तक को काट डालता है।

महर्षि स्वामी दयानन्द के शब्दो मे किया हुआ अधम निष्फल कभी नही होता परन्तु जिस समय अधम करता है उसी समय फल भी नहीं होता इसलिए अज्ञानी लोग अधर्म से नही डरते तथापि निश्चय जानो कि वह अधर्माचरण धीरे धीरे तुम्हारे सुख के मूलो को काटता चला जाता है।

किसी भी कार्य को करते समय देखिए कि इससे आप के आत्मा का उत्थान होगा या पतन ? आत्मा ऊपर उठगा या नीचे गिरेगा। यदि नीचे गिरेगा तो लाखो नही करोडो रुपये का लाभ होता हो तो भी उसे मत कीजिए। यदि आत्मा ऊपर उठता है तो लाभ दिखाई दे या न दे उसे अवश्य कीजिए।

(महात्मा आनन्द स्वामी

स्वेट माडन के शब्दो मे जो काम अन्त करण के विरोध के बाद भी किया जाता है वह हमारी सारी प्रकृति को गिराने वाला होता है।

यथा यथा नरोऽधर्म स्वय कृत्वानु भाषते।

तथा-तथा त्वचेवाहिस्तेनाधर्मेण मुच्यते ॥ (मनु 11 228)

अपने किये पाप को जितना ही पापी लोगों मे प्रसिद्ध करता है—उतना ही वह उससे उत्पन्न अधर्म से ऐसे मुक्त होता है जैसे कि साप केंचुली से।

'अपने पापो पर परदा डालना अपने भविष्य पर परदा डालना है (अनाम)

भगवान बुद्ध ने उपदेश दिया था ढके हुए को खोल दो छिपे हुए को प्रकाशित कर दो तो तुम अपने पापो से मुक्त हो जाओगे।

यथा-यथा मनस्तस्य दुष्कृत कर्म गर्हति।

तथा तथा शरीर तत्तेनाधर्मेण मुच्यते

(मनु 11 229)

अर्थात पापी का मन ज्यो ज्यो दुष्कर्म की निन्दा करता है त्यो त्यो उस का शरीर उस पाप से छटता जाता है।

कृत्वा पाप हि सन्तप्य तस्मात्पापात प्रमुच्यते।

नव कुर्या पुनरिति निवृत्या पूयतेतु स

(मनु 11 230)

पाप करने के पश्चात यदि तप(व्रत) कर ले तो पाप से मुक्त हो जाता है। मैं अब फिर ऐसा नहीं करूगा। इस प्रकार की निवृत्ति से शुद्ध हो जाता है।

यस्मिन्कर्मण्यस्य कृते मनस स्यादलाघवम्।

तस्मिस्तावत्तप कुर्याद्यावत्तुष्टिकर भवेत। (मनु 11 203

अर्थात् जिस काम के करने पर मन मे जितना भारीपन अप्रसन्नता-दुख) आवे उस कर्म के लिए उतना ही तप (प्रायश्चित) करे कि जितना करने से मन सन्तुष्ट हो जाए कि मैं अब शुद्ध हू।

और निश्चय क्षमा करने वाला हू वास्ते उस मनुष्य के तोबा का और ईमान लाया और कर्म किए अच्छे फिर मार्ग पाया।

(म 4 सि 16-सू 20 आ 82)

समीक्षक—जो तोबा से पाप क्षमा करने की बात कुरान मे है वह सबको पापी करवाने वाली है, क्योकि पापियो को इससे पाप करने का साहस बहुत बढ जाता है। इससे यह पुस्तक और इसका बनाने वाला पापियो को पाप करने मे हौसला बढाने वाला है। इससे यह पुस्तक परमेश्वर कृत और इसमे कहा हुआ परमेश्वर भी नही हो सकता।

(सत्यार्थ प्रकाश)

पाप के साथ ही दण्ड के बीज बो दिए जाते हैं। (हेसिमोड)

गगा गङ्गेति यो ब्रू गङ्गनाना शतैरपि।

मच्यते सवपापेभ्यो विष्णुलोक सगच्छति।

अर्थात जो सहस्त्रो कोष दूर से भी गगा कहे तो उसके पाप नष्ट होकर विष्णु लोक अर्थात बैकुण्ठ को जाता है।

2 हरिहरति पापानि हरिरित्यक्षर द्वयम

हरि इन दो अक्षरो का नामो च्चारण सब पापो को हर लेता है।

समीक्षक—नाम स्मरण मात्र से कुछ भी फल नही होता। जैसाकि मिश्री 2 कहने से मुह मीठा और नीबू नीबू कहने से कडवा नहीं होता किन्तु जीभ से चखने ही से मीठा व कडवापन जाना जाता है।

फिर परमेश्वर मूसा से यह कह के बोला यदि वह अभिषिक्त किया हुआ परचक लोगो के पाप के समान पाप करे तो वह अपने पाप के कारण जो उसने किया है अपने पाप की भेंट के लिए निसखोट एक बछिया परमेश्वर के लिए लावे और बछिया के सिर पर अपना हाथ रखे और बछिया को परमेश्वर के आगे बलि करे।

(तौ ल्य तौ प 4 आ 1 3 4)

समीक्षक—अब देखिए ! पापों के छुड़ाने के प्रायश्चित स्वय पाप करे। गाय आदि उत्तम पशुओ की हत्या करे और परमेश्वर करवावे धन्य है ईसाई लोग कि ऐसी बातो के करने कराने हारे को भी ईश्वर मान कर अपनी मुक्ति आदि की आशा करते हैं। (सत्यार्थ प्रकाश)

'जिस तरह आग-आग को समाप्त नहीं कर सकती उसी तरह पाप पाप का शमन नहीं कर सकता।

(टालस्टाय)

'जब कोई अज्ञान पाप करे तब वह बकरी का निसखोट नर मेम्ना अपनी

(शेष पृष्ठ 7 पर)

## "गऊ माता"

ले—श्री हकीम यूसुफ हुसैन यूसुफ कुरेशी

अक्ल हैरान है इक गाय को क्या कहिए।
याग का दान का माता का सरापा कहिए।
सगमरमर से तराशी हुई मूरत जैसे
या करिश्मा किसी फनकार के फन का कहिए।
इसकी आखो को जो उपमा भी कोई दी जाए
एक को गगा तो फिर एक को जमुना कहिए।
इसकी बातो की लडी को कहे गीता के श्लोक।
या इसे कहिए तो फिर वेदा की रिचा कहिए
दोनो सीगो की फबन इन्द्र धनुष का मजर।
इन मे हर एक को या दूज का चन्दा कहिए।
मोहनी शक्ल को इसकी हम अगर चाद कहे
सर के कगूरो को फिर चाद का हाला कहिए
दूध की शक्ल मे अमृत ये पिला देती है
क्यू न फिर इसको जमाने का मसीहा कहिए।
हमने पाई है वो ईसार की दौलत इससे
जिसको ससार का अनमोल खजाना कहिए।
इसके अनुराग को लफजो म जाहिर कीजे
प्यार ही प्यार का बहता हुआ दरया कहिए।
इसके दर्शन मे नजर आते है दर्शन कितने
नूर ही नूर इसे जल्वा ही जल्वा कहिए।
अपने शब्दो मे इसे कैसे दिखाए यूसफ
कल्पना मे जो कवी का है वो रचना कहिए।

(प्रस्तुति—श्री रमाकान्त दीक्षित भिवानी हरि)

## सम्पादकीय–

# आर्य समाज और लाला लाजपतराय

17 नवम्बर को पंजाब केसरी लाला लाजपतराय का बलिदान दिवस है। यह अत्यन्त खेद का विषय है कि हम अपने दिवंगत नेताओं को विशेष कर उन्हें जिन्होंने धर्म या देश के लिए अपना बलिदान दिया हो भूल जाते हैं। ऐसे बलिदानियों से ही हमें अपने कर्त्तव्य पालन की प्रेरणा मिलती है परन्तु जब हम उन्हें याद ही नहीं करते तो प्रेरणा कैसे मिलेगी ? आर्य समाज बहुत सौभाग्यशाली संस्था है कि उसने कई ऐसे अमर बलिदानी पैदा किए हैं जिन्होंने देश के इतिहास में अपने लिए एक विशेष स्थान प्राप्त किया है। पंजाब केसरी लाला लाजपतराय भी उनमें से एक थे। आर्य समाज के साथ उनका विशेष सम्बन्ध था। अपने प्रारम्भिक सार्वजनिक जीवन को उन्होंने आर्य समाज की सेवा में ही व्यतीत किया था। पंजाब में डी ए वी आन्दोलन चला था उसे चलाने वाले तीन ही महानुभाव थे। पं गुरुदत्त विद्यार्थी महात्मा हंसराज जी और लाला लाजपतराय। इन तीनों ने मिलकर डी ए वी कालेज प्रारम्भ किया और उसके पश्चात धीरे 2 कई स्थानों पर डी ए वी कालेज और डी ए वी स्कूल बनते गये। यह वह युग था जब हमारे देशवासी अपनी स्वाधीनता के लिए भी एक संघर्ष कर रहे थे लाला जी ने उसमें भी अपना योगदान दिया था और अन्त में सरकार ने उन्हें पहले पकड़ कर बर्मा की माण्डले जेल में बन्द कर दिया और उसके पश्चात देश से निष्कासित कर दिया। वे कांग्रेस के भी प्रधान बने थे परन्तु गांधी जी के साथ उनकी मुस्लिम पोषक नीति के कारण मतभेद पैदा हो गये थे इसलिए उन्होंने कांग्रेस छोड़ दी थी। 17 नवम्बर 1928 को जब उनका देहान्त हुआ उस समय तक वे लगातार देश की आजादी के लिए संघर्ष करते रहे थे।

मैंने ऊपर लिखा है कि आर्य समाज के साथ उनका विशेष सम्बन्ध था। इसका कुछ अनुमान उनके उन शब्दों से लगाया जा सकता है जो वह समय समय पर आर्य समाज के विषय में लिखते रहे हैं। आज के आर्य समाजी लाला लाजपतराय को भूल गये हैं परन्तु जो कुछ उन्होंने आर्य समाज के विषय में लिखा था यदि हम आज भी उसे याद करें और जिस प्रकार आगे वे समाज बनाना चाहते थे, उसके अनुसार चलें तो आर्य समाज आज भी एक शक्तिशाली संस्था बन सकती है। हिन्दू धर्म और आर्य समाज का आपस में क्या सम्बन्ध है ? इसके विषय में अपने विचार लिखते हुए उन्होंने कहा था—

हिन्दू धर्म का भविष्य आर्य समाज के भविष्य पर निर्भर है। आर्य समाज द्वारा प्रतिपादित वेदों का धर्म ही वास्तविक हिन्दू धर्म है। इसलिए आर्य समाज हिन्दुओं के हित में कार्य करता है और विधर्मी आक्रमणों से भी उसकी रक्षा करता है।

फिर आगे चलकर उन्होंने एक और जगह कहा था— मैं जहां यह चाहता हूं कि आर्य समाज सबसे पहले हिन्दुओं के लिए कार्य करे और बाद में अन्य संसार के लिए वहां मैं यह भी कभी नहीं चाहूंगा कि आर्य समाज हिन्दू धर्म के विशाल समुद्र में विलीन हो जाए। हिन्दू धर्म या और अन्य किसी में उसके विलीन हो जाने पर मुझे बड़ा खेद होगा। आर्य समाज का स्वतन्त्र अस्तित्व उसकी उपयोगिता के लिए आवश्यक है।

और फिर आर्य समाज की आन्तरिक स्थिति पर अपने विचार प्रकट करते हुए उन्होंने लिखा था —

सबसे पहले आर्य समाज को अपने घर की सुरक्षा के लिए अधिक से अधिक प्रयत्न करना चाहिए। आर्य समाज के शत्रु बड़े चतुर हैं वे उस पर खुला और सामने से आक्रमण करने के स्थान में उसे कमजोर करने और नष्ट करने के लिए बगल बगल से आक्रमण कर सकते हैं। इसलिए आर्य समाजी अपनी कार्य प्रणाली या दृष्टिकोण आदि में समझौता भले ही कर लें किन्तु सिद्धान्तिक बातों में दृढ़ता न छोड़ें। ऐसी दृढ़ता के बिना वास्तविक प्रगति सम्भव नहीं है। हमें कभी यह न भूलना चाहिए कि आर्य समाज का अपना एक विशेष उद्देश्य या लक्ष्य है जिसको पूरा करना अपने आप में एक महान और ऊंचा कार्य है। चाहे इसके लिए हमें कितनी ही बाधाएं और कठिनाईयों का सामना क्यों न करना पड़े। बलिदान देकर और कष्ट सहन करके ही हम अपने विश्वासों की शक्ति सिद्ध कर सकते हैं। अपने सिद्धान्तों के लिए हमें खतरे और त्याग से नहीं घबराना चाहिए।

आर्य समाज के दस नियमों के विषय में लाला जी ने लिखा था —

इन दस नियमों को स्वीकार करना आर्य समाज के सदस्यों के लिए अनिवार्य है। इन नियमों में जो सिद्धान्तिक बातें हैं वे प्रथम तीन नियमों में ही आ गई हैं। जो आर्य समाज ईश्वर विषयक धारणाओं तथा वेदों के प्रति उसके उपदेश का उल्लेख करते हैं। निश्चय ही यह नियम धार्मिक विचारणा की दृष्टि से अत्यन्त सरल हैं जिन पर विश्वास लाने में किसी भी हिन्दू को कोई कठिनाई नहीं हो सकती।

पाठकगण मैंने लाला जी के जो विचार आपके सामने प्रस्तुत किए हैं उनसे आप अनुमान लगा सकते हैं कि उन्हें आर्य समाज के लिए कितनी श्रद्धा थी। फिर भी आर्य समाज उन्हें भूल गई है। आज के इस लेख द्वारा मैं आर्य समाज को उसके उस महान नेता की याद दिलाना चाहता हूं जिन्होंने अपने जीवन में तन मन धन से आर्य समाज की सेवा की थी।

—वीरेन्द्र

# आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित अधिकारी महानुभावों की सेवा में

जैसा कि आपको मालूम है कि 17 नवम्बर को पंजाब केसरी स्वर्गीय लाला लाजपतराय का बलिदान दिवस है। लाला जी का आर्य समाज के साथ विशेष सम्बन्ध था। वे आर्य समाज को अपनी मां कहा करते थे। पंजाब में डी ए वी कालेज आन्दोलन को सफल बनाने के लिए उन्होंने श्री महात्मा हंसराज और पं गुरुदत्त विद्यार्थी के साथ मिलकर बहुत काम किया था। और उसके पश्चात् देश की स्वतन्त्रता के लिए उन्होंने जो संघर्ष किया था वह भी भारत के इतिहास में स्वर्णमय अक्षरों में लिखा जाएगा। हम अपने बलिदानी शहीदों को भूल जाते हैं यही कारण है कि लाला जी की ओर भी हमारा ध्यान नहीं जाता। पंजाब की आज की परिस्थितियों में लाला जी के बताए हुए मार्ग पर चल कर हम अपना कल्याण कर सकते हैं। इसलिए मेरी आपसे प्रार्थना है कि 17 नवम्बर को सब आर्य समाजों में लाला लाजपतराय का बलिदान दिवस मनाया जाए। इसके अतिरिक्त आर्य समाज से सम्बन्धित सब शिक्षा संस्थाओं में भी लाला जी का स्मृति दिवस मनाया जाए। हमारे उस दिवंगत नेता ने देश के लिए जो कुछ किया था उसकी तरफ आज ध्यान दिलाने की आवश्यकता है। इसलिए मेरी आपसे प्रार्थना है कि 17 नवम्बर को पंजाब केसरी दिवस मनाने का अभी से प्रबन्ध करें।

इसी के साथ आपका ध्यान इस ओर भी दिलाना चाहता हूं कि अब सर्दियां शुरू हो गई हैं। यह समय है जब हमें उन भाईयों की कुछ सहायता करनी चाहिए जिनके पास पहनने को या ओढ़ने के लिए कोई गर्म कपड़ा नहीं है। आप अपनी आर्य समाज की ओर से गर्म कपड़े बांटें यदि रजाईयां दे सकें तो वह दें कम्बल दे सकें वह दें। बच्चों के लिए स्वेटर या दूसरे गर्म कपड़े दे सकें तो वह दें। ऐसे दानी महानुभाव ढूंढने कठिन न होने चाहिएं जो इस काम के लिए कुछ न कुछ अपनी तरफ से दे सकते हैं। आर्य समाज को देश की निर्धन और पिछड़ी हुई जनता की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। इसलिए आपसे यह निवेदन है कि अपने पीड़ित भाईयों की आवश्यकताओं को समझते हुए उनके लिए जो कुछ कर सकते हैं करने का कष्ट करें।

—वीरेन्द्र
सभा प्रधान

# महिला–शिक्षा : एक अनिवार्यता

ले—श्री सीताराम जी सरस्वती जी

नारी शिक्षा के महत्व पर विचार करने से पूर्व यह आवश्यक है कि मानव जीवन मे नारी के महत्व पर विचार किया जाए। सच पूछिए तो नारी मानव जीवन रूपी वाटिका मे सुन्दरतम और सुगन्धित सुमन के सदृश है। मानव जीवन मे नारी का स्थान बहुत ही महत्वपूर्ण और दायित्वपूर्ण है। सच मे नारी के बिना मानव सृष्टि की कल्पना नही की जा सकती है। यह कथन ईश्वर के पश्चात हम सर्वाधिक ऋणी नारी के हैं अक्षरश: सत्य है। नारी के बिना मानव का जीवन अधूरा होता है तभी तो पुराणो मे उन्हे अर्द्धांगिनी अर्थात आधा अंग कहा गया है। जीवन रथ के दो पहियो मे एक पुरुष है तो दूसरा नारी। महिलाओ के बिना सभ्य सुन्दर संगठित और शिक्षित समाज की कल्पना असम्भव है। परिवार और समाज के सुव्यवस्थित संचालन मे महिलाओ का अहम स्थान है। महा कवि जयशंकर प्रसाद ने ठीक ही कहा है—

नारी तुम केवल श्रद्धा हो
विश्वास रजत नग पगतल मे।
पीयूष स्रोत सी बहा करो
जीवन के सुन्दर समतल मे

श्री सुमित्रानन्दन पन्त ने भी कुछ कम नही कहा है—

तुम्हारे रोम रोम से नारी।
हमे है स्नेह अपार।

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ने तो यहा तक कहा है—

पवित्र नारी सृष्टिकर्त्ता की सर्वोत्तम कृति होती है वह सृष्टि के सम्पूर्ण सौन्दर्य को आत्मसात किये रहती है।

जहा तक नारी शिक्षा का प्रश्न है वह इतना ही महत्वपूर्ण है जितना खाना पीना और सास लेना। कौन नही जानता शिक्षा के बिना जीवन अधूरा रह जाता है? क्या शारीरिक विकास के साथ साथ मानसिक विकास आवश्यक नही है? यदि किसी देश की महिलाए अशिक्षित रह जाती हैं तो वे अपने दायित्वो को भली भान्ति न तो समझ पाती हैं न उसे निभा पाती हैं। अत नारी शिक्षा अत्यन्त आवश्यक है इसे इन्डीपैंसेबल कहे तो अत्युक्ति न होगी। सच पूछिये तो एक पुरुष को शिक्षित करना सहज एक अदद इन्सान को पढाना है जबकि एक लडकी को शिक्षित करने का आशय है एक पूरे परिवार को शिक्षित करना। आज रूस अमेरिका ब्रिटेन जापान तथा विश्व के अन्य प्रगतिशील देशो की प्रगति का एक यह भी कारण है कि वहा की शतप्रतिशत महिलाए शिक्षित हैं अपनी सभ्यता संस्कृति और देश की समस्याओ को अच्छी तरह समझती हैं महसूस करती हैं। वे देश के विकास मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

एक छोटा सा उदाहरण लें—एक शिक्षित परिवार मे आप जाए तो वहा के बच्चो को अनुशासित पाएगे। वे अतिथि के आते ही उठ खडे होते हैं और अभिवादन करते हैं। वे किसी तरह की शरारत नही करते और ध्यान से बडो की बात सुनते हैं उनमे बहुत कुछ सीखते हैं। दूसरी ओर एक अशिक्षित परिवार मे जाए तो आप वहा देखगे कि कही कोई बच्चा शोर मचा रहा है तो कोई घर के सामान को तोड फोड रहा है। बडो के आने जाने से उनकी गतिविधियो मे कोई अन्तर नही पडता। कुल मिला कर वहा अनुशासनहीनता का दृश्य देखने को मिल जाएगा। यदि परिवार की महिलाए शिक्षित है तो वह बचपन से ही बच्चो को रहन सहन का ढग बातचीत करने उठने बैठने का तौर तरीका सिखा देती हैं। अनुशासित वातावरण मे पले यही बालक आगे चलकर समाज और देश का नाम रोशन करते हैं।

आज जब विश्व की प्रगति दिन दूनी रात चौगुनी बढ रही है नारी शिक्षा के महत्व को नजर अदाज नही किया जा सकता है एक शिक्षित नारी अपने अधिकार और कर्तव्यो को जितनी गहराई से समझ सकती है उतनी एक अनपढ महिला से कभी अपेक्षा नही की जा सकती है। एक शिक्षित समझदार और सच्चरित्र नारी जिन्दगी रूपी सफर के लिए बहुत अच्छा हमसफर साबित होती है। वह युग बीत गया है जब महिलाए पर्दे के अन्दर घरो मे कैदियो की तरह कैद रहते हुए घुट घुट कर जीवन व्यतीत करती थी। आज वक्त का तकाजा यह है कि वे पुरुषो का साथ द जीवन पथ पर कदम से कदम मिला कर चल। जीवन के सभी क्षेत्रो मे उन का सहयोग अपेक्षित है। यह तभी सम्भव है जब वे शिक्षित होगी। एक शिक्षित महिला अपने पति के मनोभावो को अच्छी तरह समझ सकती है वह अपने परिवार की आर्थिक स्थिति के अनुरूप अपने परिवार का कुशल संचालन कर सकती है। सच पूछिए तो एक शिक्षित महिला दो तीन से ज्यादा बच्चे पैदा करने की हिम्मत नही कर सकती है क्योंकि उसे बढती आबादी तथा अन्य समस्याओ की जानकारी होगी। अनपढ महिला भला जनसख्या विस्फोट की बात क्या जाने? अब बारी बारी से शहरो और गावो मे नारी शिक्षा की स्थितियो पर विचार करेंगे।

## शहरो मे नारी शिक्षा की स्थिति

शिक्षा का जिक्र करते हुए डब्ल्यू व्हाईट ने लिखा है— अर्थात शिक्षा का अर्थ है सुषुप्त प्रतिभाओ को प्रगट करना यह तभी सम्भव है जब माताए शिक्षित हो परिवार मे सुन्दर शैक्षणिक वातावरण हो। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात शिक्षा के प्रचार और प्रसार पर पूरा पूरा ध्यान दिया गया। परिणाम भी कुल मिला कर अच्छे हुए। धीरे धीरे शिक्षितो की सख्या बढ रही है। शहरो मे स्कूलो और कालेजो की बहुतायत के कारण वहा नारी शिक्षा की स्थिति सतोषजनक है। आज जीवन के हर क्षेत्र मे महिलाओ का प्रवेश है चाहे वह अध्ययन अध्यापन का हो अथवा साहित्य कला और सगीत का। चिकित्सा विज्ञान और विभिन्न सरकारी सेवाओ (जैसे पुलिस प्रशासनिक तथा अन्य सेवाओ) मे भी महिलाओ ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है।

शहरो मे नारी शिक्षा का अच्छा प्रचार और प्रसार हुआ है। इसका एक मुख्य कारण यह भी है कि शहरो मे लडकियो के माता पिता बचपन से ही उनके मानसिक विकास की ओर ध्यान देते हैं वे उन्हे स्कूल और कालेजो मे भेजने से हिचकिचाते नही हैं। कुल मिलाकर शहरो मे नारी शिक्षा का भविष्य उज्ज्वल है।

## गावो मे नारी शिक्षा की स्थिति

गाव जहा भारत की आत्मा निवास करती है आज भी अशिक्षा के अन्धकार मे भटक रहा है। इसके अनेकानेक कारण हैं—गावो मे स्कूलो की अच्छी व्यवस्था नहीं है। आज भी बहुत से ऐसे गाव हैं जहा प्राईमरी स्कूल भी नही हैं। लेकिन धीरे धीरे स्कूलो की सख्या बढ रही है जो एक अच्छा लक्षण है। सरकार भी इस तरफ ध्यान दे रही है।

गाव के लोगो मे एक कमजोरी यह है कि वे लडकियो को पढाना नही चाहते हैं। बहुत हुआ तो उनको चिट्ठी पत्री लिखने पढने का ज्ञान करा देते हैं। इस प्रकार उनका समुचित मानसिक विकास नही हो पाता है। बहुत सी लडकिया पढना चाह कर भी नही पढ पाती है क्योंकि परिवार और समाज बाधक बन जाते हैं। गाव के लोगो की सकीर्ण मानसिकता एक बुरी चीज है जिसका उन्मूलन आवश्यक है। जब तक सकीर्ण विचारो की कचुली उतार कर नहीं फैक देगे तब तक गावो का समुचित विकास असम्भव है।

गाव के बूढ-बुजुर्गों को जो लडकियो को स्कूल और कालेजो मे जाने से रोकते हैं उन्हे समझना चाहिए कि देश की प्रगति मे शिक्षा का कितना बडा योगदान है। आज जबकि दूसरे देशो के लोग चाद और तारो पर पहुच रहे हैं हम अशिक्षा के कारण अपनी सभ्यता और सस्कृति से भी अपरिचित रह जाते हैं। क्या यह चिन्ता का विषय नही है? कोटि कोटि लोग अनपढ ही मर जाते? वे मानव जीवन का महत्व और इसके महान उद्देश्यो से अपरिचित ही रह जाते हैं। इससे देश का बडा अहित हो रहा है आज स्वतन्त्रता प्राप्ति के साढे तीन दशको के पश्चात् भी हमारे गाव अशिक्षा और जहालत के केन्द्र बने हुए हैं।

इसलिये हर कीमत पर सकीर्ण मानसिक विचारो को दूर करना जरूरी है। ऐसे समय मे देश के नवयुवको का यह कर्तव्य हो जाता है कि वे गाव गाव जाकर शिक्षा के महत्व को समझाए। नारी शिक्षा को न केवल प्रोत्साहित किया जाए वरन अधिकाधिक छात्रवृत्तियो की भी व्यवस्था की जाये ताकि उनमे पढने की रुचि जागे और वे अज्ञान के अन्धकार से ज्ञान की रोशनी मे जीवन के महत्व को समझ देश और समाज के विकास मे अपना योगदान दे सके।

एक कहावत है—जब जागे तभी सवेरा। अत जब से शिक्षा की चेतना हम मे जाग तभी से उसकी ओर ध्यान देना चाहिए। हमारा परम कर्तव्य है कि हम नारी शिक्षा के महत्व को समझ और उसके प्रसार मे सहयोग दें। यदि असभव सा हो तो ईच वन टीच टन का अनुसरण अवश्य ही होना चाहिए। इसी मे देश का कल्याण निहित है। इसी प्रयास से भारत अपनी प्राचीन गरिमा दूसरे शब्दो मे सीता और सावित्री के आदर्शों को जीवित रख सकेगा।

हमारे हृदय मे महिलाओ के प्रति असीम श्रद्धा होनी चाहिए तभी यह सम्भव हो सकेगा। परस्पर सहयोग की भावना से हम शिक्षा का प्रसार कर देश को विश्व का सिरमौर बना सकते हैं •

(विश्व ज्योति से)

## स्वास्थ्य सुधा—

# कब्ज से कैसे मुक्ति पाएं

ले —श्री सदानन्द जी

कब्ज की शिकायत करने वाले लोग सारी दुनिया मे मिलेंगे। जीवन मे किसी न किसी समय सभी को इस कष्ट का भुक्तभोगी होना ही पड़ता है। एलोपैथी मे इसका शास्त्रीय नाम 'कास्टिनेशस' है। पर सच पूछा जाए तो यह स्वय कोई रोग नहीं है। मात्र एक लक्षण है। यदि कब्ज की शिकायत जीर्ण हुई तो इसका अर्थ यह हुआ कि आंतो के निचले भाग की सक्रियता घट गयी है। उसमे सवण की मलोत्सर्जन की क्षमता घट गयी है और उस क्षत्र की मासपेशिया, पूर्णत सशक्त नही रह गई हैं। मासपेशिया पुन सशक्त हो और ठीक ठीक काम कर सकें इसके लिए नाडी मण्डल को स्वस्थ और सशक्त बनाना होगा। दूसरे शब्दो मे कहे कि वर्षों पुराने जीर्ण कब्जी से मुक्ति के लिए नाडी मण्डल को स्वस्थ और सक्रिय बनाना होगा और रक्त का शोधन करना होगा।

आदमी जो भी ऐसा काम करता है जिनमे नस नाडी मण्डलीय शक्तिया अपेक्षा से अधिक व्यय हो उनसे शरीर की साधारण क्रियाशीलता प्रभावित हुए बिना नही रहती। अस्वस्थता का अर्थ है आगामक क्रियाशीलता का घटना और स्वास्थ्य का अर्थ है सहजता तथा आराम की स्थिति। कब्ज के कुछ प्रमुख लक्षण हैं अजीर्ण भोजन ठीक ठाक न पचना सिर दर्द पेट मे गैस बनना, श्वास मे दुर्गन्ध, जुबान गन्दी बनी रहना जीर्ण ... दिल धड़कना और निश्चय ही इन सबके साथ साथ पेट साफ न होना।

कब्ज के लिए निम्नलिखित बातें कारण रूप हो सकती हैं।

1 व्यक्ति मे शक्ति क्षीणता 2 आतो की मासपेशिया शक्ति मे कमी। 3 सवण और मलोत्सर्जन की क्षमता की कमी, 4 पाचन प्रणाली का सदोष होना 5 चिकनाई लाने वाले तरल (श्लेष्मा) की कमी तथा 6 अति लम्बे अरसे तक दस्त लाने वाली दवाओ का प्रयोग। दस्त लाने वाली ये दवाए अति संवेदनशील श्लेष्मा झिल्लियो मे प्रदाह उत्पन्न करती है और उन झिल्लियो से सम्बद्ध रक्तशिराओ को कमजोर करती हैं।

भिन्न भिन्न व्यक्तियों मे कब्ज के रूप भी नाना विध मिलते हैं, किसी का कष्ट हलका फुलका होता है तो किसी की मलोत्सर्जन की क्षमता अति क्षीण हुई रहती है।

### दस्त लाने वाली दवाए आतो को कैसे प्रभावित करती है

जब व्यक्ति इस सार्वभौम रोग को सही परिपेक्ष्य मे देखता है तब वह समझ जाता है कि बिना कारण का निवारण किए इससे मुक्ति पाने के उपाय के रूप मे कोई दवा या किसी खाद्य पदार्थ की सिफारिस करना बड़ी भारी भूल है

इस अति संवेदनशील अंग को बलात किसी दवा के द्वारा मलोत्सर्जन के लिए बाध्य करना मात्र उसे कमजोर बनाना है और स्वतः निर्बल हुए अंग पर अतिरिक्त दाब तथा तनाव लाना है। इन क्रियाओ की उपमा थके घोड़े को चाबुक की मार से और तेज चलने के लिए बाध्य करने से दी जा सकती है। इन दवाओ के सम्बन्ध मे एक बात और समझ लेने की है। ये दवाए निष्क्रिय (इनर्ट) और निष्प्राण (डड) होती है। निष्प्राण चीज सजीव ऊतक पर अपना कोई प्रभाव नही डाल सकती। यदि किसी मुर्दे को दस्त की दवा दी जाए तो उस पर उसका कोई प्रभाव नही पड़ेगा। जीवित आदमी को हम चाहे जितना सशक्त रेचक दे सकते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि मल निष्कासक अंग सजीव हैं और क्रियाशीलता की उसमे क्षमता है। दवा देने से मलोत्सर्जन तेज होने का कारण मात्र यह है कि शरीर उस दवा को विजातीय अपने से परे पदार्थ मान लेता है और उस विषाक्त पदार्थ को जीवनद्रोही स्वीकार कर लेता है। सजीव शरीर तीव्र मलोत्सर्जन के द्वारा आतो से उसे यथाशीघ्र निकाल फैंकना चाहता है। उसकी इच्छा यही रहती है कि वह शरीर को हानि पहुचा पाने से पूर्व शरीर से बाहर निकल जाए। यह सजीव शरीर की प्रक्रिया है दवा का प्रतिफल नही है। मानव शरीर की वास्तविकता की हर प्रक्रिया सजीव ऊतको के परिणाम हैं—दवा का नही ?

### कब्ज का कारण

कब्ज का एक प्रमुख कारण शौच की इच्छा होने पर भी शौच न जाना है। बराबर शौच जाना टाले जाने से शौच की इच्छा वाली प्रवृत्ति ही समाप्त होने लगती है। वर्षों तक ऐसा करते रहने से मलाशय (रेक्टम) प्रशस्त हो जाता है और मल से भर आता है और निरन्तर मलाशय के प्रशस्त और रक्त संकुलता (एनगोजमेंट) के फलस्वरूप ही व्यक्ति अशक्ता शिकार हो जाता है।

कब्ज का दूसरा कारण अपेक्षा से अधिक भोजन है। शरीर एक मात्रा भर आहार का उपयोग और अवचूषण कर सकता है और अतिरिक्त आहार जिसका अवचूषण नही हुआ रहता सड़ने लगता है और उसको विषाक्तता से गैस्ट्रोइन्टेस्टाइन ट्रैक को अति उत्तेजना मिलती है। इस प्रदाह के फलस्वरूप कैन्सर सूजन हो जा सकती है और वह एपैंडिसाइटिस के लिए कारण रूप होता है इसका दुष्प्रभाव पाचन प्रणाली पर भी पड़ता है और आदमी पेट तथा आतो के नाना प्रकार के कष्टो का भुक्त भोगी हो जाता है।

अतिरिक्त आहार के किण्वन (खमीर उठने) और सड़ने से आदमी गैस के कष्ट का भुक्त भोगी हो जाता है। लोग यह गलत सोचते है कि अमुक चीज खाने से उन्हे गैस बनती है वह असल मे अपने आहार का प्रतिफल है।

आध्मान (डिस्टेंशन) और पीड़ा शिथिल अंगो को सक्रिय करने के प्रयास है और इन अंगो की क्रियाहीनता ही कब्ज की स्थिति का प्रारम्भ है।

कब्ज का एक अन्य कारण शारीरिक श्रम न करना है।

### कब्ज का उपचार

इस सार्वभौम रोग से मुक्ति का एकमात्र उपाय यह है कि उसके कारण को दूर किया जाए और सही खान पान के द्वारा पाचन प्रणाली को ठीक किया जाए। आप समझ ही गये होगे कि किसी भी कष्ट से मुक्ति का उपाय सही जीवन अपना कर उन आदतो को छोड़ना है, जिसके फलस्वरूप वह कष्ट हुआ हो।

त्वचा शरीर का सबसे बड़ा अंग है वह मल निष्कासक भी है। अत उसे खूब साफ रखना चाहिए। इसके लिए घर्षण स्नान तथा स्पंज बड़े ही महत्वपूर्ण हैं।

दूसरा आवश्यक काम अपेक्षा से अधिक न खाना है—विशेष रूप से गलत ढंग के आहार। अपेक्षा से अधिक खाना अनेक प्रकार के कष्टो को आमन्त्रण देना है। गलत आहार की सूची मे सर्वप्रथम स्थान श्वेतक्षार और सफेद चीनी का है आहार परिवर्तन की दृष्टि से व्यक्ति को मौसम मे मिलने वाले फलो सब्जियो और सलाद को सर्वोच्च स्थान देना चाहिए।

यदि कब्ज जीर्ण हो तो व्यक्ति को कोई ऐसी चीज नही लेनी चाहिए जो उत्तेजना देने वाली हो। चाय, काफी कोको शराब, तम्बाकू नमक, मिर्च सिरका, मसाले ये सभी चीज इसी श्रेणी मे आती है।

दूसरी महत्व की बात यह है कि जो भी खाय उसे खूब चबा चबाकर खाए। जो लोग जल्दी जल्दी खाते है और नेवाले को पानी के सहारे गले मे नीचे उतारते हैं। वे वस्तुत नाडी विकार (नवसनेस) और उत्तेजना के शिकार होते है। जल्दी जल्दी बिना खूब चबाये खाने से आहार पूरा पूरा पच नही पाता। फलत पाचन प्रणाली रुग्ण होती है और श्लेष्मा झिल्लियो मे प्रदाह उत्पन्न होता है और इसके फलस्वरूप आदमी कब्ज का शिकार होता है।

भोजन के साथ दूध पीने की आदत भी एक गलत आदत है। पाचन के लिए वह बड़ा भारी पड़ता है। दूध स्वत एक बड़ा जटिल आहार है और जब इतना मिश्रण अन्य आहारो के साथ होता है तो पाचन के लिए बड़ा दुष्कर काम हो जाता है। सही तरीका यह है कि दूध अकेले पिया जाये।

अत्यधिक मात्रा मे रोटी खाना भी कब्ज उत्पन्न करता है इसके साथ ही यह बात भी ध्यान मे रखनी चाहिए कि भोजन के साथ बर्फ का पानी या फ्रिज मे रखा अति ठण्डा पानी न पीना चाहिए अति ठण्डा पानी पेट का तापमान कम कर देगा और इसके फलस्वरूप पाचन प्रणाली कमजोर हो जाएगी।

एक महत्व की बात ध्यान मे रखने की यह है कि जब तक भूख न लगे कुछ भी खाना नहीं चाहिए। भोजन तभी कर जब आपका मन पूर्णत शान्त हो और शरीर मे कोई कष्ट न हो। जब मानसिक दृष्टि से उद्विग्न रहता है या अति थका रहता है तब उस समय किया गया भोजन क्लेशकारी होता है। चाहे आहार कितना ही स्वास्थ्यकर अथवा सन्तुलित क्यो न हो मन के उद्विग्न होने पर वह विष सिद्ध हो सकता है।

रेचक दवाए लेना पूर्णत बन्द कर दे। रेचक दवा कब्ज के कारण का निवारण नही कर सकती है। दस्त लाने वाली दवाओ के निरन्तर प्रयोग से खतरा इस बात का रहता है कि श्लेष्मा झिल्लियो मे प्रदाह उत्पन्न होने के फलस्वरूप उनमे सूजन आ सकती है। वर्षों तक दस्त लाने वाली दवाओ के लेने से श्लेष्मा झिल्लिया सूख जाती है और कड़ी हो जाती है ऐसी स्थिति उत्पन्न होने पर आतो मे कोई भी भयकर विकृति उत्पन्न हो सकती है।

इन नियमो का पालन कीजिए। बलात पेट साफ करने का प्रयास मत कीजिए। आहार सम्बन्धी भूलो के सुधारने के बाद जब आते स्वय सशक्त हो जाएगी पेट साफ रहने लगेगा।

—

# देश एवं विदेशों में यज्ञ-विज्ञान के प्रति रुचि

ले —श्री प वीरसेन जी वेदश्रमी वेद विज्ञानाचार्य वेद सदन महारानी रोड इन्दौर

## यज्ञ से पृथ्वी स्वग बनेगी

वेदो की अपूव देन यज्ञ है किसी समय स्वगकामो यजेत—इस घोषणा के आधार पर स्वग की कामना के लिए यज्ञ किये जाते थे। उस समय स्वग कपना की अदष्ट परिधि मे था। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने उसे दृष्ट परिधि मे स्थित कर दिया और कहा कि इसी जीवन मे इसी पथ्वी पर सुख विशेष का नाम ही स्वग है और दख विशेष की घोर अनुभूति ही नरक है। ऐसी स्थिति मे स्वगकामो यजेत—का अथ साथक हो जाता है। हम अपने चारो ओर स्वगमय लोक स्वग का मण्डल व परिधि यज्ञ के अनष्ठाना से निर्मित करके पथ्वी को स्वग बना सकते हैं।

## यज्ञ का विदेशो मे प्रयोग

आज पथ्वी एव अन्तरिक्ष के आभय से अनक सख साधना का विस्तार विज्ञान ने किया है—परन्त उसकी प्रतिक्रिया के रूप मे अनेक नारकीय दुखो और विपदाओ की वद्धि भी क्रमबद्ध रूप मे स्व भावत व्याप्त हो रही है। ऐसी स्थिति में विदेशो मे यज्ञ के प्रति कुछ आकषण उत्पन्न हुआ और यज्ञ का प्रयोगात्मक अनुसधान काय अमेरिका व जमनी मे तथा योरुप के अन्य राष्टो मे प्रारम्भ हुआ परिणाम स्वरूप यज्ञ की उपयोगिता उत्तरोत्तर उनको ज्ञात होने लगी। यह परिणाम महर्षि दयानन्द के वेद भाष्य यज्ञ करने की प्र रणा और आय समाज द्वारा यज्ञ परम्परा को प्रचलित करने म हुआ।

## विविध सस्थाओ द्वारा यज्ञ अनुसन्धान कार्य

आज देश विदेश मे कतिपय सस्थाए यज्ञ का कृषि पर रोगो के निवारण पर पर्यावरण शोधन भूमि को उवरा बनाने कृत्रिम खाद के बजाय यज्ञ के धूम व भस्म का प्रसारण फसलो पर करके तथा वेद मन्त्रो की ध्वनि का कृषि की उत्पत्ति मे 10 से 20 प्रतिशत वद्धि तथा कही तो कई गुना अधिक लाभ अनुभव कर रही हैं इनम फ रको पाथ वाशिगटन की शाखा म य वे आश्रम खोना वाला स यत्रम प्रच र मा नाश्रम भोपाम आदि सस्थाए यज्ञ की व्यवहारिक उपयोगिता का अनुसन्धान कर रही हैं। कतिपय अय व्यक्ति भी तथा श्री नाना साहेब काले अग्निहोत्री आदि भी परीक्षारत हैं।

## वाशिगटनमे अग्निहोत्र यूनिवर्सिटी

फाइव फोल्ड पाथ ने तो वाशिगटन मे अग्निहोत्र यूनिवर्सिटी स्थापित करके अमेरिका जमनी मे तथा कतिपय अन्य देशो मे तथा भारत मे यज्ञ के परीक्षण किये हैं एव अखण्ड यज्ञो के परिणामो को अयुत्तम अनुभव कर रहे हैं। क्या ही अच्छा होता कि यदि आय समाज अपनी भी शक्ति वेदो के प्रचार एव यज्ञ के व्यवहारिक यज्ञ को ससार के उपकार के लिए प्रमाणित करने मे अग्रसर होता।

## आर्यसमाज यज्ञो के अनुसन्धान कार्यों को महत्व द

आय समाज रूढिवादी पारायण यज्ञो के प्रदशनो मे उलझ गया और यज्ञ जो वद के विज्ञान को जानकर वेदो के विद्वानो के द्वारा होने थे व साधु ब्रह्मचारी सन्यासी महात्माओ के लिए स्वप्रतिष्ठा अपने चेले निर्माण तथा धनोपाजन का उपाय बन गए। उनके अशुद्ध मन्त्र पाठ को निर्दोष प्रमाणित कर अज्ञान का ही प्रचार किया और यज्ञ के वैज्ञानिक अनुसधान का माग अवरुद्ध कर दिया यज्ञो मे व्यथ की बकवास के तथा रोचक शब्दो द्वारा जनता को प्रसन्न करने मात्र को प्रोत्साहन देकर वद मन्त्रो के शुद्ध और सस्वर पाठ को तिरस्कृत कर दिया अत अन्य सस्थाए यज्ञ काय मे आगे बढ गई है।

## अन्य सस्थाओ तथा विदेशियो द्वारा यज्ञ काय मे बढना हमारी अकमण्यता के लिए चैलज

2 वष पूव अमेरिका के फाइव फोल्ड पाथ यज्ञ दान तप कम और स्वाध्याय के एक सदस्य इन्दौर मे कालेजो मे तथा अन्य सस्थाओ मे यज्ञ पर व्याख्यान देने आए। मेरे यहा आकर उनमे ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के प्रथम सूक्त तथा त्र्यम्बकयजामहे आदि मन्त्र सस्वर तथा ऋग्वेद शैली से ही सुनाए उनके उच्चारण मे अत्यन्त शुद्धता थी। या हमारे लिए यह चैलेंज नही है। उनका तांबें का कुण्ड उनके साथ था। दोनो समय उदय और अस्तकाल मे यज्ञ करते थे। मेरे यहा भी उन्होने यज्ञ किया, ये महानुभाव यज्ञ का मनोवैज्ञानिक प्रभाव इस पर अनुसधान कर रहे हैं और यज्ञ द्वारा अनेक मानसिक रोगो पर अच्छा प्रभाव अनुभव प्राप्त किया।

## वेद एव महर्षि दयानन्द की विचारधारा ही स्वच्छ वैज्ञानिक नेतृत्वदाता है

3 4 वष पूव अग्निहोत्र यूनिवर्सिटी वाशिगटन के सस्थापक तथा यज्ञ प्रचारक भारत आए हुए थे। उनका तार मुझ प्राप्त हुआ कि अमुक तारीख को मैं इन्दौर आपसे मिलने आ रहा हू। नियत दिन वे आए तथा उन्होने मेरा वह सब काम जो वेद का अनेक रूप मे किया है उसे देखा। भारत सरकार द्वारा यज्ञ से वर्षा काय के करने तथा वष्टि यज्ञ की पद्धति जो मैंने भारत सरकार को सन् 19 6 मे भेजी थी। उसकी एक एक प्रति ले गए। इसके अतिरिक्त वष्टि विज्ञान का मेरा उपलब्ध साहित्य वदिक सम्पदा की प्रति भी ले गए तथा उनसे जो परिणाम यज्ञ के कृषि पर अमेरिका के परीक्षणो से ज्ञात किए उसके आधार पर यज्ञ की कृषि के लिए उपयोगिता के 5 परिपत्र (बुलेटिन) मुझ दी। इस भट के बाद भी वे भारत मे आते रहे और मेरे जो यज्ञ सम्बधी लेख मैंने उनके गुरु भाई श्री डा एस एम सुपेकर एम एम सी पी एच डी को पूना भेजे थे व उनस ले गए।

## जर्मनी मे यज्ञ विज्ञान के प्रति उत्सुकता

पश्चिम जमनी के एक जमन बर्थोल्ड मालिकाजेहले यज्ञ की भस्म को अनेक रूप मे चिकित्सार्थ प्रयोग करने का प्रचार करते हैं। मैंने यज्ञ सम्बन्धी अपनी एक अग्रेजी की लघु पुस्तक वीमेन करेन्ट प्राब्लम्स एण्ड देयर सोल्यूशन व साइन्स आफ यज्ञ—लगभग 2 वष उन्हें भेजी थी। उनका पत्र अभी दि 27 अगस्त 1983 को प्राप्त हुआ उन्होने लिखा कि उक्त पुस्तक का जमन भाषा मे अनुवाद करने की आज्ञा प्रदान कर। जिससे कौंसिल आफ योरुप की योरुप कौंसिल तक। इसके पश्चात मेरे एक यज्ञ सम्बन्धी लेख का जो अगस्त मे मैंने भेजा था उसके जमन भाषा के अनुवाद की भी प्रति भेजी। वह मेरा लेख था यज्ञ ए वैदिक प्यूरीफिकेशन प्रोजेक्ट आफ कास्मिक एटमोस्फियर। इसके पश्चात अभी अक्तूबर मास मे अपने दो लेख जो इन्जीनियर्स इण्डिया की पत्रिका के विशेषांको छपे थे उनका भी अग्रेजी अनुवाद कराकर भेजा है तथा एक और भी लेख भेजा है—जिनके निम्न शीषक हैं (1) साइन्स आफ प्यूरीफिकेशन आफ एन्वायनमेंट इन एनशेन्ट इण्डिया (2) यज्ञ रिसोर्स टु ए रिजेनरेटरी वे आफ इन एग्रीकल्चर (3) पासीबिलिटी आफ कन्ट्रोल ओवर स्टार्म विन्ड्स स्टाम फ्लड्स एण्ड ड्राटस।

## यज्ञो के प्रचार का सुअवसर—आर्य समाज आगे बढे

दिनांक 16 सितम्बर 1983 को जमनी के श्री बर्थोल्ड का पत्र आया कि मैं सम्भवत दिसम्बर मास मे भारत आऊगा तब इन्दौर आकर यज्ञ के परीक्षणो तथा परिणामो को जानना चाहूगा। अर्थात आज योरुप अमेरिका जापान तथा पथ्वी के सभी भागो मे यज्ञ की व्यवहारिकता के प्रचलन करने से वेद और यज्ञ का प्रचार का अयुत्तम अवसर है। आय समाज देश विदेश मे अपनी यज्ञ की प्रयोगशालाए स्थापित कर ससार को प्रत्यक्ष लाभान्वित करने का महोपकार कम करने मे अग्रसर हो तो आसुरी विचारो का भी दमन होगा और सवत्र सुख शान्ति होगी। पर्यावरण शोधन का अतिवृष्टि अनावृष्टि आधी तूफान आदि उपद्रवो की शान्ति का एकमात्र उपाय यज्ञ ही है। यज्ञ से ही द्यौ शान्ति होगी यज्ञ से ही आप शान्ति होगी यज्ञ से ही अन्तरिक्ष शान्ति होगी तथा पथिवी शान्ति होगी और स्वशान्ति होगी। तभी शान्तिदेव शान्ति की अनुभूति होगी और सामा शान्ति दि अपने मे भी शान्ति होगी अन्यथा नही।

30वें संस्करण से उपरोक्त मूल्य देय होगा।

# आर्यों की अजमेर में विशाल और अपूर्व शोभायात्रा

3 से 6 नवम्बर तक होने वाले महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह के उपलक्ष में 5 नवम्बर को अजमेर मे आर्यों ने एक शोभा यात्रा निकाली यह शोभा यात्रा बडी अपूर्व थी । जिसमे लाखो लोगो ने भाग लिया जिसका आरम्भ प्रात 9 बजे हुआ और समापन दोपहर बाद लगभग 3 बजे हुआ बसे शोभा यात्रा के लिए दयानन्द नगर मे केसर गंज अजमेर गए लोग सायं चार बजे तक वापिस दयानन्द नगर मे पहुचते देखे गए यह शोभा यात्रा केसर गंज परोपकारिणी सभा के कार्यालय से आरम्भ हुई और महर्षि उद्यान मे समाप्त होनी थी परन्तु क्योंकि अधिक लोग दयानन्द नगर पुष्कर रोड सम्मेलन स्थल से इस शोभा यात्रा मे गए थे इसीलिए महर्षि उद्यान मे समापन होने पर भी इसका पूर्णत समापन दयानन्द नगर मे जाकर हुआ ।

इस अवसर पर आर्यों मे अपार उत्साह देखा गया पांच घण्टे तक लगातार छोटे 2 बच्चे और बडे स्त्री पुरुष भी थक जाने पर भी पैदल चलते रहे अजमेर मे यह ठाठ मारता हुआ समुद्र था ।

इस शोभा यात्रा मे सारे भारत वर्ष के प्रान्तो के लोग अपने झण्डे माटो हाथो मे लिए हुए चल रहे थे इसमे भारत के लगभग सभी गुरुकुलो के विद्यार्थी व कन्या गुरुकुलो की कन्याए बहुत से स्कूल कालेजो के विद्यार्थी भी सम्मिलित थे । गुरुकुलो के छोटे 2 बच्चे भी मस्ती से गाते बजाते साथ 2 चल रहे थे इस शोभा यात्रा मे सबसे आगे संन्यासी मंडल था संन्यासी और वानप्रस्थी सैकडो की संख्या मे आगे 2 चल रहे थे उनके साथ ही परोपकारिणी सभा के अधिकारी व सदस्य थे । उसके पश्चात ऊंट तथा घोडो पर आर्य वीर दल के कुछ सैनिक तथा कन्याए थी । उसके पीछे गाते बजाते हुए सारे देश के नगरो से आए हुए आर्य बन्धु अपनी 2 टोलियां बनाकर चल रहे थे । इनमे अधिक संख्या हरियाणा के लोगो की थी । मैंने एक स्थान पर दो मुसलमानो को आपस मे बात करते हुए सुना एक कह रहा था ऐसा जलूस आज तक अजमेर मे नही निकला न ही शायद कभी आगे निकले दूसरे ने कहा—ऐसा लगता है हरियाणा मे सारे आर्य समाजी ही रहते हैं सबसे अधिक हरियाणा के नगरो के नामो के माटो दिखाई पड रहे हैं ।

इस शोभा यात्रा मे पंजाब के आर्य बन्धुओं का भी अपना विशेष महत्व था, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के माटो के पीछे जालन्धर लुधियाना फिरोजपुर गुरदासपुर दीनानगर पठानकोट अमृतसर फगवाडा संगरूर धूरी अबोहर मलोट फाजिल्का कोटकपूरा बसूह होशियारपुर तलवाडा गुरुकुल करतारपुर टाण्डा उडमुड बरनाला भटिण्डा कपूरथला सुलतानपुर लोधी पटियाला नाभा और चण्डीगढ आदि से गए आर्य बन्धु अपनी 2 आर्य समाजो के माटो तथा ओ३म के झण्डे हाथ मे लिए चल रहे थे

पंजाब के कुछ नगरो के नाम तो मैंने दे दिए हैं परन्तु सभी नगरो के नाम दे पाना कठिन है शोभा यात्रा मे चल रहे सभी स्थानो के नाम लिए जाए तो उन्ही से कई पृष्ठ भर जाएगे यह शोभा यात्रा आर्यों का ठाठ मारता हुआ समुद्र दिखाई पड रहा था

अजमेर के लोगो ने आर्यों के स्वागत मे सारे नगर को सजाया हुआ था स्थान 2 पर स्वागत द्वार बने हुए थे स्थान 2 जलूस पर फूलो की वर्षा की जा रही थी आर्य वीर दल के युवक जलूस को नियन्त्रण मे चला रहे थे महारानी झांसी ब्रिगेड की कन्याए भी जलूस के नियन्त्रण मे सहयोग देती हुई चल रही थी महर्षि दयानन्द की जय स्वामी श्रद्धानन्द की जय गुरु विरजानन्द की जय वैदिक धर्म की जय के नारो से आकाश गूंज रहा था

केवल अजमेर ही नही राजस्थान के सभी लोगो पर इस शोभा यात्रा का बहुत प्रभाव पडा शोभा यात्रा को देखने के लिए अजमेर की जनता सडक के दोनो किनारो पर भारी संख्या मे खडी हुई थी एक स्थान पर कुछ महिलाए खडी कह रही थी यह जलूस तो लगता है समाप्त ही नही होगा खडे 2 टांगे थक गई हैं हम सवेरे 10 बजे से खडी हैं 1 30 बज गये हैं वास्तव मे यह शोभा यात्रा बहुत प्रभावशाली थी जिस का जितना वर्णन किया जाए उतना थोडा है ।

इस अवसर पर अजमेर मे लाखो आर्य बन्धु पधारे हुए थे । सारे अजमेर नगर के होटल रेस्टोरेन्ट स्कूल कालेज धर्मशालाए सभी वहां से आए लोगो से खचाखच भरे हुए थे दयानन्द नगर मे हजारो तम्बू लगाए हुए थे जो सभी आर्य बन्धुओ से भरे हुए थे । फिर भी बहुत से लोग रहने के स्थान के अभाव मे पण्डाल मे जहां प्रोग्राम चलता था । प्रोग्राम की समाप्ति पर वहीं उपदेश सुनने के बाद सो कर रात्रि गुजारते देखे गए । —धर्मदेव

---

# आर्य वीर बनो सब निर्भय

ले—प नन्दलाल निर्भय भजनोपदेशक
ग्राम बहीन (फरीदाबाद)

आर्य वीरो सकल विश्व मे वैदिक नाद गुंजानी है
सदाचार ब्रह्मचर्य का दुनिया को सीख सिखानी है
जगत गुरु ऋषि दयानन्द की जग को याद दिलानी है
ओ३म ध्वजा धरती के कोने कोने मे लहरानी है 1

वैदिक पथ को भूल चुकी थी विकल थे जनता सारी
अन्धकार मे भटक रहे थे सब जगत के नर नारी
फैला था पाखण्ड गए थे बन ढोंगी अत्याचारी
सड मस्टड मस्त मगन थे विज्ञान की थी रवारी

धर्म समझ कर पशु बलि नर बलि नित्य दी जाती थी
जग जननी नारी जाति जग की पैरों की जूती थी
बाल विवाह अनमेल विवाह की रीति मन को भाती थी
छुआछूत की जन्म जाति की सबको बात सुहाती थी 3

होकर दुखी अनेक यवन ईसाई मत अपनाते थे
गऊ मात की गर्दन पर नित छुरी चलाते थे
लाश हमारी सुनो फकत दफन बन्द उठाते थे
मद्य मांस का खान पान कर धर्म की हसी उडाते थे 4

स्वामी हुई परमेश्वर की तब महर्षि दयानन्द आए
वेदो का प्रचार किया दिन रात न किंचित घबराए
पोप पुजारी मुल्ला मौलवियो से निर्भय होकर टकराए
जग को वैदिक धर्म सिखाया स्वयं हुए विष खाए 5

गुरुवर की निर्वाण शताब्दी पर मिल करके प्रण करो
करो भलाई तजो बुराई दुष्टो से मन कभी डरो
धर्म हित पर भय तज दो सब उनकी खातिर जियो मरो
आर्य वीर बनो सब निर्भय दीन दुखी की पीर हरो 6

---

(4 पृष्ठ का शेष)

धर्म के लिए नव और उस पर मेम्वर व अग्नि बलि करे यह पाप की भेट है

(तौरेत लैव्य 4 आ 22 23 24)

समीक्षक—वाह जी वाह यदि ऐसा है तो इनके अध्यक्ष अर्थात न्यायाधीश सेनापति आदि पाप करने से क्यो डरते होगे आप तो यथेष्ठ पाप करे और प्रायश्चित के बदले मे गाए बछिया बकरे आदि के प्राण लेवे तभी तो ईसाई लोग किसी पशु या पक्षी के प्राण लेने मे शकित नही होते सुनो ईसाई लोगो अब तो इस जंगली मत को छोड के सुसभ्य वेद मत को स्वीकार करो कि जिससे तुम्हारा कल्याण हो

(सत्यार्थ प्रकाश)

मन वचन की पश्चाताप और प्रार्थना से पापो की निवृत्ति मानने से इसी न तरह ...ए हैं क्योकि पौराणी लोग तीर्थादि यात्रा से जैनी लोग भी नव काट मन्त्र जाप और तीर्थादि से ईसाई लोग ईसा के विश्वास से मुसलमान लोग तोबा करने से पाप का छूटना बिना भोग के मानते हैं

(स्वा दयानन्द)

इस प्रकार अपने सामर्थ्यानुकूल कर्म करने मे जीव स्वतन्त्र परन्तु जब वह पाप कर चुकता है तब ईश्वर की व्यवस्था मे पराधीन होकर पाप के फल भोगता है इसलिए कर्म करने मे जीव स्वतन्त्र और पाप के दुख रूप फल भोगने मे परतन्त्र होता है

(प्रश्न) ईश्वर अपने भक्तो के पाप क्षमा करता है या नही

(उत्तर) — नही क्योकि जो पाप क्षमा करे तो उसका न्याय नष्ट हो जाय और सब मनुष्य महापापी हो जाए क्योकि क्षमा की बात सुन ही के उनको पाप करने की निर्भयता और उत्साह हो जाए ।

(महर्षि दयानन्द)

मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम् मा नो वधी पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः

(यजुर्वेद अ 16 म 15)

हे रुद्र (दुष्टो को पाप के दुख स्वरूप फल को देके रुलाने वाले परमेश्वर) आप हमारे छोटे बडे जन माता पिता और प्रिय बन्धु वर्ग तथा शरीरो का हनन करने के लिए प्रेरित मत कीजिए ऐसे मार्ग से हम को चलाइए जिससे हम आप के दण्डनीय न हो ।

(आर्य सेवक से साभार)

## पुस्तक समीक्षा

### वैदिक और लौकिक सस्कृत में स्वर सिद्धान्त

वैदिक और लौकिक सस्कृत मे स्वर सिद्धान्त नामक पुस्तक पढ़ने को मिली जिसके लेखक सोम देव जी शास्त्री है और प्रकाशक आर्य समाज सान्ताक्रुज बम्बई है। यह पुस्तक स्वाध्यायशील व्यक्तियो गुरुकुलो मे अध्ययन करने वाले छात्र छात्राओ एव स्नातकोत्तर कक्षाओ म स्वर का अध्ययन करने वालो के लिए अति उपयोगी है।

श्री आचार्य सोम देव जी शास्त्री ने इस पुस्तक मे स्वरो का स्वरूप उनके भेद स्वर का अर्थ पर प्रभाव वेद भाष्यकारो द्वारा स्वर का मूल्यांकन आदि विविध विषयो पर प्रकाश डाला है।

इस पुस्तक का मूल्य 25 रु है। जो इस पुस्तक म दी गई सामग्री को देखते हुए अधिक नही है। पृष्ठ सख्या 115 है साईज डिमाईज है।

—

## आर्य समाज गढ़ा जालन्धर में ऋषि निर्वाण उत्सव

आर्य समाज गढ़ा जालन्धर मे प्रथम नवम्बर से 4 नवम्बर दीपावली तक वार्षिकोत्सव व ऋषि निर्वाण उत्सव मनाया गया। इस आर्य समाज की स्थापना भी दीपावली पर ही हुई थी यह दिन इस आर्य समाज का स्थापना दिवस भी है।

इस अवसर पर श्री प निरञ्जन देव जी इतिहास केसरी के उपदेश तथा श्री प रामनाथ जी यात्री संगीत रत्न के भजन होते रहे। इनके अतिरिक्त और भी कई वक्ताओ ने महर्षि को श्रद्धा जलियाँ अर्पित की। उत्सव हर प्रकार से सफल रहा

## सुशीला कोछड़ का निधन

स्त्री आर्य समाज राजौरी गार्डन दिल्ली की भूतपूर्व प्रधाना श्रीमती सुशीला कोछड़ का निधन एक डी टी सी की बस द्वारा एक्सीडैंट मे हो गया, आर्य समाज राजौरी गार्डन को उनके निधन से एक बड़ा धक्का लगा है। प्रभु से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्‌गति प्रदान करें तथा शोक सतप्त परिवार को असहाय दु ख को सहन करने की शक्ति द।

—शिवराज शास्त्री
स मत्री

## आर्य समाज वेद मन्दिर भार[illegible] जालन्धर [illegible]

[illegible] आर्य नगर जालन्धर मे वेद सप्ताह 7 से 13 नवम्बर तक मनाया जा रहा। इस अवसर पर सभा के महोपदेशक श्री प धर्म देव जी आर्य स वेद प्रचार अधिष्ठाता तथा श्री रामनाथ जी यात्री सगीतरत्न श्री प मनोहर लाल जी, श्री सरदारी लाल जी आर्य रत्न म त्री आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री बूटा राम जी श्री डा ज्ञान चन्द जी तथा अन्य विद्वान गण पधार कर मच को सुशोभित करेंगे और अपने विचार रखेंगे।

## आर्य समाज जालन्धर छावनी में दीपावली उत्सव

आर्य समाज जालन्धर छावनी में ऋषि निर्वाण उत्सव दीपावली पर्व 4-11 83 को बड़ समारोह से मनाया गया। प्रथम नवम्बर से 3 नवम्बर तक प्रात प्रभात फेरिया निकाली गई। जिनमें सभी आर्य बहनो तथा भाईयो ने भाग लिया। प्रभात फेरी का छावनी की जनता पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। 4 11-83 को प्रात यज्ञ और उसके बाद विशेष कार्यक्रम हुआ। जिसमें स्कूल व कालेज की छात्राओं ने भी भाग लिया। कार्यक्रम बड़ा प्रभावशाली रहा।

—[illegible]
मन्त्री

## आर्य मर्यादा में विज्ञापन देकर लाभ उठाएं



श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

वर्ष 16 अंक 32 6 मघर सम्वत् 2040, तदनुसार 20 नवम्बर 1983, दयानन्दाब्द 159 । एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपए

वेदामृत—

# मनुर्भव यथार्थ मनुष्य बनो

ले —श्री रामेश्वर शास्त्री सिद्धान्त शिरोमणि एम ए

तन्तु तन्वन् रजसो भानुमन्विहि ज्योतिष्मत पथो रक्ष धिया कृतान ।
अनुल्बण वयत जोगुवामपो मनुर्भव जनया दैव्य जनम ॥

ऋ 10।53 6॥

(रजस तन्तु त वन्) ससार के सूत्र का विस्तार करता हुआ (भानुम अन्विहि) प्रकाश का अनुसरण कर (धिया कृतान) बुद्धि से बनाये गये (ज्योतिष्मत पथ रक्ष) प्रकाशयुक्त मार्गों की रक्षा कर (जोगुवाम अप) ज्ञानपूर्वक कर्म करने वालो के कर्मों को (अनुल्बण वयत) बिना रुकावट के विस्तृत करो (मनु भव) मननशील मनुष्य बन (दैव्यम् जनम् जनया) देवो के हितकारी जन को उत्पन्न कर ।

मन्त्र मे प्रभु आज्ञा देते हैं कि ऐ मानव ससार के सूत्र का विस्तार करता हुआ प्रकाश का अनुसरण कर और बुद्धि द्वारा निर्मित प्रकाशयुक्त मार्गो की रक्षा कर । ज्ञानपूर्वक कर्म करने वालो के कर्मों का बिना रुकावट के विस्तार कर यथार्थ मननशील मनुष्य बन और देवो के हितैषी जन का उत्पन्न कर ।

मनुष्य वही है जो मननपूर्वक काम करे । निरुक्तकार ने मनुष्य का अर्थ करते हुए कहा है—मत्वा कर्माणि सीव्यन्ति जो विचार कर कर्मों को करते हैं वे मनुष्य हैं । महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने मनुष्य की परिभाषा करते हुए कहा—जो बिना विचारे किसी काम को न करे वह मनुष्य कहलाता है ।

सृष्टि मे मनुष्य का स्थान सब प्राणियों मे सर्वोपरि है । मनु महाराज कहते हैं—

भूताना प्राणिन श्रेष्ठा प्राणिना बुद्धिजीविन ।

बुद्धिमत्सु नरा श्रेष्ठा नरेषु ब्राह्मण स्मृता

ब्राह्मणेषु च विद्वांसो विद्वत्सु कृतबुद्धय ।
कृतबुद्धिषु कर्तार कर्तृषु ब्रह्मवेदिन ।
मनु अ 1 96-97 ।

भूतो मे प्राणी श्रेष्ठ हैं और प्राणियो मे बुद्धिजीवी अर्थात बुद्धि से जीने वाले बुद्धिमानो मे मनुष्य और मनुष्यो मे ब्राह्मण अर्थात ब्रह्म की ओर जाने वाले श्रेष्ठ हैं । ब्राह्मणो म विद्वान अर्थात सद सदविवेकी विद्वानो मे कृत-बुद्धि अर्थात काय करने का निश्चय करने वाले कर्त्तव्य निर्णायक कृत बुद्धियो मे कर्ता अर्थात कर्त्त व्यानुष्ठान करने वाले और कर्त्ताओ मे ब्रह्मवेत्ता श्रेष्ठ हैं ।

मनुष्य अपने ज्ञान एव कर्त्तव्यानुष्ठान से उन्नति करते करते ब्रह्मवित हो जाता है और ब्रह्म के आनन्द को प्राप्त कर शाश्वत शान्ति को उपलब्ध कर लेता है । भगवान वेद व्यास ने मनुष्य की महत्ता अनुभव करते हुए सार रूप मे कहा नहि मानुषाच्छ्रेष्ठतर हि किंचित् मनुष्य से श्रेष्ठ और कुछ नही ।

मनुष्य मे अपूर्व शक्तिया निहित हैं वह उनको विकसित करके समुन्नत हो सकता है परन्तु उनका विकास सही दिशा मे होना चाहिए, अन्यथा उनका पतन हो जाता है और वह मनुष्य की कोटि से नीचे गिर जाता है । बड़े सौभाग्य से मनुष्य जन्म प्राप्त होता है परन्तु इसे प्राप्त करके भी वह यदि नीचे गिरता है तो इससे बढ़कर उसके लिए दुर्भाग्य क्या हो सकता है । इसलिए प्रभु उसे सावधान करते हुए दिव्य सन्देश देते हैं—

मनुर्भव जनया दैव्य जनम

ऐ मनुष्य तू यथार्थ मनुष्य बन और दिव्य जन को उत्पन्न कर अर्थात मानव का निर्माण कर । परन्तु आज के मनुष्य तो वेद के इस दिव्य सन्देश को भूलकर ससार के अन्य ही विविध निर्माणो में लगे हुए हैं और उन्हें ही अपनी उन्नति का चरम लक्ष्य समझते हैं । जिधर देखो उधर बड़ बड़ कल कारखानो का निर्माण हो रहा है । आवश्यकताओ की पूर्ति के नाम पर दिन दूनी और रात चौगुनी नयी नयी आवश्यकताओ को बढ़ाया जा रहा है । जीवन के साधन उत्तरोत्तर सुलभ होते जा रहे हैं लेकिन चांदी सोने की चमक दमक दिन दूनी रात चोगुनी बढ़ रही है जो मनुष्य को अन्धा बनाकर पथ भ्रष्ट कर रही है । मनुष्य मनुष्य का रक्षक न होकर भक्षक बन रहा है । परमाणु धम एव उदजन बम जैसे भयकर तथा विषाक्त अस्त्रो के निर्माण से करोड़ो निर्दोष प्राणियो का सहार हो रहा है । शान्ति के नाम पर अशान्ति का बोल बाला ? मानवता के ऊपर दानवता छा रही है । प्रजातन्त्र के नाम पर दलबन्दी का राज्य है । कर्त्तव्य को भुलाकर कोरे अधिकार की चाह है । शिक्षा का दृष्टिकोण ही बदल चुका है । तप त्याग और सादगी को ढोंग समझा जाता है माता पिता गुरु और बड़ो के प्रति आदर की भावना दिन पर दिन घट रही है और अनुशासनहीनता बढ़ रही है । इस प्रकार व्यक्ति एव समाज का पतन बड़ी तेजी से हो रहा है इन सबसे बचने के लिए हमे वेद के सनातन सन्देश को मनसा, वाचा कर्मणा अपनाना चाहिए और अन्य निर्माणो की अपेक्षा मानव निर्माण पर विशेष बल देना चाहिए । मन्त्र मे पाच आज्ञाए दी गयी हैं ।

1 ससार के सूत्र का विस्तार करते हुए प्रकाश (ज्ञान) का अनुसरण करो ।

2 बुद्धि द्वारा सोच विचार कर बनाये गये प्रकाशयुक्त मार्गों की रक्षा करो ।

3 ज्ञानपूर्वक काम करने वालो के कर्मों को बिना किसी रुकावट के आगे बढ़ाओ ।

4 मननशील मनुष्य बनो ।

5 देवो के हितकारी जनो को उत्पन्न करो ।

आर्ष प्रणाली के अनुसार जब ब्रह्मचारी आचार्य से विद्या ग्रहण कर स्नातक बनने लगता है तो आचार्य उसे जीवन मे मननशील एव कर्त्तव्यपरायणता बने रहने के लिए कुछ आदेश एव उपदेश देता हुआ प्रतिज्ञाए कराता है—

सत्य वद धर्मचर स्वाध्यायान्माप्रमद
सत्य बोलो धर्म करो स्वाध्याय मे कभी प्रमाद न करो ।

जब स्नातक इन तीनो वचनो का स्वीकारात्मक उत्तर देता हुआ प्रतिज्ञा कर लेता है तो आचार्य उसे फिर आदेश देता है—

आचार्याय प्रिय धनमाहृत्य प्रजातन्तु माव्यवच्छेत्सी

आचार्य के लिये प्रिय धन लाकर अर्थात दक्षिणा देकर प्रजातन्तु का विच्छेद मत कर

मन्त्र कहता है मनुर्भव जनया दैव्य जनम यथार्थ रूप मे मनुष्य बनो और दिव्यजन का उत्पन्न करो अर्थात माता पिता आचार्य अतिथि आदि विद्वानो का हित करने वाली कर्त्तव्य परायण सुसन्तान का निर्माण करो । सब प्रथम मनुष्य को मनुष्य बनने का आदेश इसलिये दिया गया कि मननपूर्वक कर्त्तव्याकर्त्तव्य को समझकर स्वय कर्त्तव्यानुष्ठान द्वारा अपना निर्माण करके ही अपनी सन्तान का निर्माण कर सकता है । जिसका जीवन स्वय नही बना वह दूसरे का जीवन कैसे बना सकता है । कहा भी स्वय नष्ट परान नाशयति जो स्वय नष्ट है वह दूसरो का भी नाश करता है । इसलिए मनुष्य को पहले अपना निर्माण करना चाहिए ।

मनुष्य बनने के लिए मन्त्र मे प्रथम तीन बातो का निर्देश किया गया है ।

1 ससार सूत्र का विस्तार करते हुए प्रकाश (ज्ञान) का अनुसरण करना ।

2 बुद्धि द्वारा परिष्कृत प्रकाश युक्त मार्गों की रक्षा करना ।

3 ज्ञानपूर्वक कर्म करने वालो के कर्मों को बिना रुकावट आगे बढ़ाना ।

देखा जाता है कि पट निर्माण के लिये तन्तुओ का ताना बाना प्रकाश मे ही फैलाया जाता है अन्धकार मे नही । अन्धकार ताना बाना पूरने से पट का निर्माण ही नही होने पाता यदि हो भी गया तो वह सुन्दर नही होता । इसी प्रकार मनुष्य अपने कार्यरूपी वस्तुओं से अपने शरीर एव सन्तान रूपी संसार का निर्माण करता है । इसके सुन्दर निर्माण के लिये उसे ज्ञानरूपी प्रकाश का अनुसरण करना चाहिये । ज्ञानियो के सम्पर्क

(शेष पृष्ठ 7 पर)

# आर्य समाज कब तक सोया रहेगा ?

ले—श्री सुरेशचन्द्र वेदालकार एम ए एल टी
175 जाफरा बाजार गोरखपुर

कभी कभी व्यक्ति इतिहास को बदलने का प्रयत्न करता है विशेष कर यदि वह शासक हो। अभी 30 अक्तूबर के आर्य मर्यादा के अक मे अपने सम्पादकीय लेख मे श्री वीरेन्द्र जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने आर्यसमाज कब तक सोया रहेगा ? शीर्षक लेख प्रकाशित किया है। सचमच उनके लेख या विचार उद्बोधक होते हैं। आर्य समाज मे मेरे विचार से ऐसे लेख पढने तक का आर्य समाज के नेताओ को समय नही है। 3 से 6 नवम्बर तक अजमेर मे महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी मनाई गई है मझ तो ऐसा लगता है कि कहीं महर्षि के निर्वाण के साथ साथ आर्य समाज का भी निर्वाण न हो जाए ? आर्य समाज के नेताओ ने महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी या दयानन्द मत्य दिवस क्या मनाया आज कल मत्य के एक वर्ष बाद बरसी मनाने का रोग आर्य समाज के शरीर मे प्रविष्ट कर गया और बहुत से व्यक्तियो की बरसी मनाई जाने लगी इसलिए मेरा पहला विचार तो यह है कि यह निर्वाण शताब्दी नाम न रखकर यदि इसका बलिदान शताब्दी रखा गया होता तो अधिक उत्तम होता वर इस विषय पर तो मैं अलग लिखूगा परन्तु ऊपर जो शीर्षक श्री वीरेन्द्र जी ने सम्पादकीय मे लिखा है और जिन बातो की ओर ध्यान दिलाया है वह आर्यसमाज के लोगो को और विशेषकर नेताओ को पता ही नहीं अभी दिल्ली मे तृतीय विश्व हिन्दी सम्मेलन मनाया गया शायद उसका उदघाटन भाषण भारत की प्रधानमन्त्री ने दिया मेरे पास उनका पूरा भाषण तो नही पर जो समाचार पत्रो में आया है और जो रेडियो से प्रसारित हुआ है उसमे अहिन्दी भाषियो मे हिन्दी की सेवा करने वालो के नाम गिनाते हुए उन्होंने लोकमान्य तिलक महात्मा गाधी प मोतीलाल नेहरू और प जवाहर लाल नेहरू का नाम लिया परन्तु हिन्दी गद्य के निर्माता गुजराती जिनकी मातृ भाषा थी और जो सस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान थे परन्तु [illegible] की एकता [illegible] हिन्दी को आर्य भाषा नाम दिया [illegible] अपने सभी ग्रन्थ हिन्दी (आर्य भाषा) मे लिखे। इतना ही नही हिन्दी भाषा के गद्य का विकास कैसे हुआ इस पर हिन्दी के विकास के इतिहास को जानने वालो से पूछिए तो आप आश्चर्य मे पड जाएगे कि एक ओर जहा भारतेन्दु जी हिन्दी गद्य का साहित्यिक क्षेत्र मे निर्माण कर रहे थे वहा धार्मिक और दार्शनिक क्षेत्र मे तथा व्याख्यानो मे सरल हिन्दी गद्य का निर्माण महर्षि दयानन्द कर रहे थे। भारतेन्दु जी आयु में दयानन्द से छोटे थे और उनकी मृत्यु भी पहले हो गई और दयानन्द लेखो पुस्तको तथा व्याख्यानों से हिन्दी गद्य को फला रहे थे उनकी व्यवहार भानु तथा एकादश आदि समुल्लासो मे दिए गए दृष्टान्त उनके परिपक्व गद्य के सूचक हैं। उस महर्षि दयानन्द का न तो प्रधानमन्त्री के भाषण मे उल्लेख था और न सारे विश्व हिन्दी साहित्य सम्मेलन मे। मुझ तो कभी कभी ऐसा प्रतीत हो रहा था कि दिल्ली के तथा अन्य आर्य नेताओ को यह भी पता था या नही कि दिल्ली मे हिन्दी विश्व सम्मेलन भी हो रहा है या नही ? यदि हो रहा है तो उसमे कभी आर्य समाज या महर्षि की भी भूमिका रही है या नही ? दयानन्द बलिदान (निर्वाण) शताब्दी के समय एक अलग से अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन या अखिल भारतीय सम्मेलन करना चाहिए था और उसमे मारिशस रूस आदि के कुछ हिन्दी विद लोगो को आमन्त्रित करना चाहिए था। अब तो जो हो चुका वह हो गया पर मैं आर्य समाज के नेताओ से विश्व आर्य भाषा (हिन्दी) सम्मेलन आर्य समाज की ओर से बुलाने का सुझाव देना चाहता हू [illegible] जी के इस सुझाव का [illegible] होना चाहिए

दूसरी बात देखिए। अभी वन स्थली विद्या पीठ मे भारत की वर्तमान प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी इतिहास को बदलना चाहती [illegible] महात्मा गाधी का [illegible] सत्यार्थ प्रकाश मे महर्षि दयानन्द ने स्त्रियो की शिक्षा का बड़ा समर्थन किया है जोरदार शब्दो मे उसकी वकालत की है वहा उन्होंने स्त्री शूद्रो नाधीयताम स्त्री शद्रो को नहीं पढाना चाहिए इस बात का भी खण्डन किया और यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता जहा स्त्रियो का आदर होता है वहा देवता निवास करते हैं का समर्थन किया है। महात्मा गाधी के स्त्रियो की शिक्षा आदि के कथन से पूर्व प्राय सभी शहरो और कस्बो मे उत्तर भारत मे कन्या विद्यालय या आर्य कन्या पाठशालाए खुल चुकी थी। एक बार स्त्रियो की शिक्षा को देखने के लिए अग्रेजों के समय आकड एकत्र किये (आज कल नहीं गाधी जी के समय) गवर्नमैंट के कन्या विद्यालयो से आर्य समाज की सस्थाओ की सख्या बहुत अधिक थी। कन्या गुरुकुल देहरादून से पहले जालन्धर में कन्या महाविद्यालय खुल चुका था और लाला लाजपतराय लाला हसराज और लाला देवराज आदि आर्य बन्धु बालिकाओ के चरित्र निर्माण शिक्षा और सम्मान के लिए प्रयत्नशील थे। पर धन्य है भारत की प्रधानमन्त्री श्रीमती गाधी को जिन्होने स्त्रियो की शिक्षा और उत्थान का प्रथम और मुख्य श्रेय गाधी जी को दिया। बुरा न मानिए गाधी जी सत्य के पक्षपाती थे परन्तु गाधी वादियो और काग्रेसियो ने जिस प्रकार गाधी जी के लिए यह प्रचारित कर दिया कि गोली लगने के बाद उन्होने बड शान्तभाव से हे राम ! कहते हुए प्राण दे दिये। यह एक सर्वथा असत्य बात है। उन्हे तो गोली लगने के बाद यह कहने का अवसर ही नहीं मिला। वे हे राम ! कहते भी कैसे ? इसी तरह प्रधानमन्त्री कुछ काग्रेसी गाधीवादी सत्य से हटकर स्त्री शिक्षा का मुख्य श्रेय गाधी जी को देना चाहती है—यह असत्य है। इसका विरोध भी हमें आकडों के साथ करना चाहिए।

घी मे गाय की चर्बी और डालडा सूअर की चर्बी मिलाने के विरुद्ध हमारे चरणसिंह और लोकदल वाले तो आवाज उठा रहे हैं। पर क्या सार्वदेशिक सभा प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओ या आर्य समाज के उपदेशको और भजनोपदेशको ने इस विषय में आन्दोलन खड़ा किया है। गो हत्या बन्द हो का नारा सम्पूर्ण गोभक्तो सन्तो महन्तो धर्माचार्यों साधुओ जनियो सिक्खो सनातनियों और आर्य समाजियो ने लगाया था। पर चर्बी वालो को विना मारे तो मिलेगी नहीं। उसके लिए सबल आन्दोलन की आवश्यकता है। क्या आर्य नेता इस विषय में सोचेंगे ?

मैं पजाब प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी के सुझाव साहस तथा निर्भीक विचारों को प्रकट करने का स्वागत करता हू पर एक निवेदन करूगा कि जिस तरह आपने पजाब मे हिन्दू मुसलमानों हिन्दू एकता की ओर कदम बढाया है वैसे ही स्त्री शिक्षा हिन्दी सम्मेलन आदि की ओर भी कदम बढाइये ईश्वर आपको सफलता देगा ?

—

# राजनेता पजाब की स्थिति पर ध्यान दें

आर्य समाज देहरादून के वार्षिकोत्सव पर आयोजित धर्म रक्षा सम्मेलन मे निम्नलिखित प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया गया है—

आर्य समाज देहरादून के 104वे वार्षिकोत्सव पर आयोजित इस आर्य सम्मेलन की सर्वसम्मत राय मे यह बात अत्यन्त घृणित और क्षोभकारक है कि सरकार से आयात लाईसैंस प्राप्त करके अपराधी वृत्ति के लोगो ने गो की चर्बी आयात की और उसे वनस्पति में मिलाकर इस देश की गोभक्त जनता की भावनाओं को भीषण ठेस पहुचाई और उन्हे अनजाने मे अभक्ष्य खाने को बाध्य किया यह सम्मेलन सरकार से माग करता है कि उक्त अपराध मे लिप्त लोगो को ऐसा कठोर दण्ड दे कि भविष्य मे किसी को ऐसा अपराध करने का दुस्साहस न हो। यह सम्मेलन शासन से माग करता है कि भोजन बनाने वालो को भी कानून द्वारा बाध्य किया जाये कि यदि उनके उत्पादन मे पशुओ की चर्बी डाली गई हो तो उस पर स्पष्ट रूप से इसे अकित कर।

देश की अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर पजाब प्रदेश मे जो भयानक स्थिति निर्मित कर दी गई है उसके बारे मे इस सम्मेलन का स्पष्ट मत है कि इसका कारण हिन्दुओ के हितो का बलिदान करके शासन द्वारा अन्य वर्गों को प्रसन्न करने की नीति ही रही है। किसी भी उपासना गृह को हत्यारो और अपराधियो का अभेद्य दुर्ग बनने देना शासन के अस्तित्व को नकारना है। यह सम्मेलन सरकार पर स्पष्ट करना चाहता है कि जब तक पजाब के 48 प्रतिशत हिन्दुओं को सरकारी सेवाओ मे न्याय अनुपात मे उनका अधिकार नहीं दिया जाता और उनकी भाषा को सविधान सम्मत अधिकार पजाब मे नही दिया जाता तब तक पजाब की समस्या का समाधान असम्भव है। यह सम्मेलन राजनतिक लोगो को चेतावनी देता है कि पाकिस्तान का निर्माण भी विघटनवादियो के तुष्टिकरण की नीति मे ही कराया था और यदि राजनेताओं ने इस कुनीति का अविलम्ब त्याग न किया तो देश को खड खड होने से बचाया न जा सकेगा। देश प्रेमी जनता से यह सम्मेलन माग करता है कि वह राजनेताओ को बाध्य कर दे कि वह इस तथ्य को शीघ्र स्वीकार कर लें।

—देवव्रतआर्य

## सम्पादकीय—

# ओ३म का झण्डा क्यों उतारा गया ?

3 नवम्बर से 6 नवम्बर तक अजमेर मे महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी मनाई गई थी इसके लिए पजाब से भी सैकडो आर्य समाजी गए थे। जिन्होने जाना था वह पहली या दूसरी नवम्बर को वहा से चल पडे थे। अमृतसर से एक रेल गाडी मे दो डिब्बे सुरक्षित करा लिए गये थे। लुधियाना से पाच बसें 2 नवम्बर की सुबह रवाना हुई थी। एक बस नवांशहर से और एक दीनानगर से भी चली थी। इसके अतिरिक्त कुछ लोग अपनी कारो मे या विमान द्वारा वहा गए थे। जो बसें गई उन सब पर ओ३म् के झण्डे लगे हुए थे। जो पाच बसें लुधियाना से रवाना हुई थीं और जिनमे से एक मे मैं भी सवार था उनमें बैठ हुए सब भाई और बहिनें रास्ते मे गाते हुए और नारे लगाते हुए गये थे। जब हमारा काफिला अजमेर पहुचा तो वहा की आर्य समाज मे अपनी दयानन्द की स्कूली छात्राए हमारे स्वागत के लिए सडक के दोनो ओर खडी कर रखी थी उन सबके हाथ में ओ३म का एक-एक झण्डा था। जब हम वहा पहुचे तो वे गा भी रही थीं और नारे भी लगा रही थी। वहा शहर के और भी कई लोग खडे थे। लुधियाना से लेकर अजमेर तक न तो किसी ने हमारी बसों को रोका न किसी ने इस बात पर आपत्ति की कि इन पर ओ३म् के झण्डे क्यो लगाए गए हैं। हर बस पर दो दो तीन तीन झण्डे लगे थे। किसी ने इस पर आपत्ति नही की। अब पता चला है कि डी ए वी कालेज जालन्धर की एक बस जब सगरूर पहुची तो उसके झण्डे को देखकर एक पुलिस अधिकारी ने उसे रोक लिया और पूछा कि यह क्या है और बस कहा जा रही है। डी ए वी कालेज के प्रिंसिपल भी उसमे सवार थे। उन्होने बताया कि बस कहा जा रही है और यह झण्डा क्या है। लेकिन जनाब इन्स्पैक्टर साहब बहादुर की सन्तुष्टि न हुई उन्होने इस बात पर जोर दिया कि यह झण्डा उतार दिया जाए और उस बस को तब तक आगे न चलने दिया जब तक कि वह झण्डा नहीं उतार दिया।

इस घटना के दो पहलू हैं। पहला तो यह कि झण्डा उतारने के लिए क्यो कहा गया ? पजाब सरकार की यह नीति नही है कि ओ३म का झण्डा उतारा जाए यदि यह सरकार का निर्णय होता तो शेष बसो पर जो झण्डे लगे थे उन्हे भी उतारने के लिए कहा जाता। लेकिन चू कि यह सरकार की नीति नहीं थी इस लिए किसी ने भी नही कहा कि यह झण्डा उतार दो। यह एक सिरफिरे इन्स्पैक्टर के दिमाग की उपज थी जो उसने ओ३म् का झण्डा उतरवा दिया। मैं इसे केवल आर्य समाज का ही नही बल्कि समूचे हिन्दू जगत का अपमान समझता हू। ओ३म किसी भी एक वर्ग का झण्डा नही है। ओ३म नाम परमात्मा का है। हमारे सिख भाई उसे ओंकार कहते हैं। इसलिए जो कुछ किया गया है। वह सब का अपमान है और पजाब सरकार को इस बात का पता लगाना चाहिए कि यह क्यो किया गया है।

लेकिन मेरे लिए इस घटना का दूसरा पहलू अधिक महत्व रखता है। वह यह कि वह झण्डा उतारा क्यो गया। इन्स्पैक्टर चाहे कुछ कहता वह किसी भी रूप मे उतारा नहीं जाना चाहिए था यदि वहा गोली भी चल जाती तो भी वह झण्डा नही उतरना चाहिए था। कोई भी स्वाभिमानी व्यक्ति यह सहन नही कर सकता कि उसका झण्डा इस तरह उतार दिया जाए, विशेष रूप से एक धार्मिक झण्डा। मुझ खेद सहित यह कहना पडता है कि जो लोग उस बस मे सवार थे उन्होने उस इन्स्पैक्टर का आदेश मान कर सारे आर्य जगत का अपमान किया है। क्या हम इस सीमा तक स्वाभिमान खो चुके हैं कि एक दो कौडी का पुलिस इन्स्पैक्टर हमारे झण्डे को उतरवा दे और हम उसके आदेश का पालन करे ? झण्डे के लिए तो लोग अपने खून की नदिया बहा दिया करते हैं। हम सब अजमेर उस महापुरुष की निर्वाण शताब्दी मनाने जा रहे थे जिसने कभी किसी के आगे सिर नहीं झुकाया था। लेकिन हमारे इन भाईयो ने अपनी कार्य पद्धति से यह सिद्ध कर दिया है कि इन्हें ऋषि दयानन्द के अनुयायी होने का अधिकार नही है।

कुछ लोगो की दृष्टि मे यह शायद एक साधारण घटना होगी। मैं इसे बहुत अधिक महत्व देता हू। इस प्रकार की घटनाए किसी सस्था को बनाती हैं। कई घटनाए छोटी होती हैं लेकिन उनका महत्व बहुत अधिक होता है। प्रश्न यही उठता है कि जो अपने झण्डे की भी रक्षा नहीं कर सकते। उनसे किसी और तरह की आशा कैसे की जा सकती है। यह घटना अब जनता के समक्ष आई है। अजमेर में हजारो लोग एकत्रित हुए थे। देश देशान्तर से आए थे। वहा यदि यह बताया जाता कि इस प्रकार की घटना हुई है, तो सम्भव है वहीं आर्य समाज के नेता यह निर्णय कर लेते कि इसका क्या उत्तर देना है। ओ३म के झण्डे के सम्मान के लिए तो हमारे कई भाई हैदराबाद में शहीद हो गये थे। लोहारु मे उन्होने पुलिस की लाठियां खाई थीं और कई अन्य स्थानो पर भी कई प्रकार के अत्याचार सहे। क्या हम सगरूर मे कुछ भी नही कर सकते थे ? काश जिन लोगो ने ओ३म के झण्डे का यह अपमान कराया है, वह यह समझते कि यह केवल एक झण्डे का अपमान नही है समूचे हिन्दू जाति का अपमान है। ओ३म का झण्डा केवल आर्य समाज का ही झण्डा नही है समूचे हिन्दू मात्र का है।

—वीरेन्द्र

## गृहमन्त्री भारत सरकार के नाम—

# श्री वीरेन्द्र जी सभा प्रधान का पत्र

मान्यवर श्री सेठी जी नमस्ते !

आजकल सारे देश मे गऊ की चर्बी के विषय मे जो विवाद चल रहा है, आपको उसके विषय मे सारी स्थिति का पता है। यह हमारा दुर्भाग्य है कि हमारे देश म जहा गऊ की पूजा होती है कुछ व्यक्ति अपने स्वार्थ के लिए गऊ की चर्बी का उन वस्तुओ मे प्रयोग करते हैं जो प्रतिदिन हमारे काम मे आती हैं। भारत सरकार ने अब गऊ की चर्बी के प्रयोग पर प्रतिबन्ध लगा दिया है इसके लिए मैं आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की ओर से भारत सरकार का धन्यवाद करता हू। परन्तु हमारी सभा यह भी समझती है कि यह प्रतिबन्ध पर्याप्त नहीं है। कई वस्तुओ मे फिर भी गऊ की चर्बी का प्रयोग हो सकता है इसलिए आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की अन्तरग सभा ने यह प्रस्ताव पारित किया है कि भारत सरकार से कहा जाए कि वह यह आदेश दे कि जिस प्रकार सिगरेट पर लिखा जाता है कि यह स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है उसी प्रकार जिस जिस चीज मे गऊ की चर्बी डाली जाए उसके ऊपर यह भी लिखा जाए कि इसमे गऊ की चर्बी पडी है। हमारी सभा के विचार मे किसी भी वस्तु मे गऊ की चर्बी नही पडनी चाहिए परन्तु यदि सरकार इस विषय मे कोई ढील दे रही हो तो पहली बात यह देख लेनी चाहिए कि खाने वाली वस्तु मे गऊ की चर्बी नही पडनी चाहिए, जो भी व्यक्ति या जो भी उद्योगपति इसका उल्लघन करे उसके विरुद्ध कार्यवाही होनी चाहिए। इसके अतिरिक्त यदि कोई और ऐसी वस्तु हो, जिसमे चर्बी डाली जाए चाहे वह गऊ की हो या किसी और पशु की उसके ऊपर यह अवश्य लिखा जाना चाहिए कि इसमे चर्बी डाली गई है ताकि कोई व्यक्ति अजाने मे उसका प्रयोग न करे। आशा है भारत सरकार हमारी सभा क इस सुझाव को स्वीकार करते हुए इसे क्रियान्वित करने का प्रयत्न करगी। मैं फिर यह स्पष्ट कर देना चाहता हू कि हमारी सभा का यह निश्चित मत है कि चर्बी चाहे किसी भी प्रकार की हो, खाने पीने की किसी चीज मे नही पडनी चाहिए। आशा है भारत सरकार इस दिशा मे शीघ्र ही कोई ऐसा सक्रिय पग उठाएगी जिसके द्वारा चर्बी के प्रयोग पर पूरा प्रतिबन्ध लग सके और हमारे देश मे भविष्य मे कोई भी व्यक्ति खाने-पीने की किसी वस्तु मे किसी भी पशु की चर्बी न डाल सके। जनता मे यह भावना पैदा करने के लिए आर्य समाज अपनी सेवाएं भारत सरकार को देने को तैयार है। हमारा जो भी सहयोग आपको इस दिशा मे चाहिए उसके लिए हम आपके आदेश अनुसार कार्यवाही करगे।

भवदीय

श्री प्रकाश चन्द्र सेठी
गृहमन्त्री भारत सरकार
नई दिल्ली

—वीरेन्द्र
सभा प्रधान

# ऋषि दयानन्द व स्वामी विवेकानन्द का ईसाई मत के प्रति दृष्टिकोण

ले —श्री जयगोपाल जी शास्त्री विद्यावाचस्पति आर्यसमाज दसूहा

ईसाई मत के विषय मे आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश का त्रयोदश समुल्लास लिखा स्वामी दयानन्द की ईसाई मत पर समीक्षा बाईबिल पर आधारित है। वैसे उन्होने अपने व्याख्यानो में भी ईसाई मत की मिथ्या भ्रान्तिपूर्ण एवं अवैज्ञानिक सिद्धान्तो की समालोचना की। ऋषि दयानन्द ही वे पहले व्यक्ति थे जिन्होने ईसाई मत की शास्त्रीय समीक्षा की। क्योकि ईसाई मत के प्रचारक अपनी सत्ता के मद मे चूर होकर भारतीयो को ईसाई मत मे दीक्षित कर रहे थे। वहा पादरी हिन्दू धर्म की कपोल कल्पित मान्यताओ की खिल्ली उडा रहे थे और ईसाई मत की श्रेष्ठता बतला रहे थे वहा स्वामी दयानन्द ईसाई मत के खोखलेपन को प्रकट कर यह स्पष्ट कह देना चाहते थे कि स्वयं शीशे के महलो मे बैठकर दूसरे पर पत्थर फेंकना अच्छा नही है। ऋषि दयानन्द ने बाईबिल की समालोचना बड़े स्पष्ट शब्दो में की। स्वामी विवेकानन्द ने सम्भवत बाईबिल पर कोई पृथक ग्रन्थ नही लिखा किन्तु यदा कदा भाषणो मे पत्रो मे एवं पुस्तको मे थोडी बहुत समीक्षा की है। स्वामी विवेकानन्द के विचारो को पढकर यह नही कहा जा सकता कि वास्तव में ईसाई मत के विषय मे स्वामी जी का दृष्टिकोण क्या था। हम इस अल्प लेख मे दोनो महापुरुषो के विचारो को पाठको के समक्ष रखेंगे।

स्वामी विवेकानन्द को अखिल विश्व धर्म सम्मेलन मे सम्मिलित होने का अवसर प्राप्त हुआ और वहा अपने भाषण मे ईसाई मत का बड़े जोरदार शब्दो मे खण्डन किया कि ईसाईयत ही विश्व धर्म है और कालान्तर मे सारा विश्व इसे स्वीकार करेगा उन्होने कहा कि जो सौ। इस सभा की कार्य प्रणाली का निरीक्षण करने के बाद भी हृदय मे इस प्रकार की भावना रखते कि कोई विशेष धर्म ही ईश्वर प्राप्ति का एक मात्र उपाय है या समय पाकर जगत का एक मात्र धर्म हो जाएगा और दूसरे धर्म भ्रान्त हैं वे लोग वास्तव मे दया के पात्र हैं। (विवेकानन्द चरित्र पृ 194) यहां पर स्पष्ट ही ईसाईयत की यूनिवर्सिटी पर कटाक्ष किया है। ईसाईयो की सार्वजनिक उदारता का पर्दाफाश करते हुये धर्म रहस्य पृ 34 पर लिखते हैं कि ईसाई भी सार्वजनिक भ्रातृ भाव की बात करते हैं किन्तु जो ईसाई नहीं है उनके लिये अनन्त नरक का द्वार खुला है। स्वामी विवेकानन्द ने यह दर्शाया था कि ईसाई धर्म ग्रन्थो मे भी हिन्दू धर्म की भ्रान्ति मिथ्या कपोल कल्पित पौराणिक पहेलिया हैं। फिर हिन्दुओ के मत की खिल्ली उडाना कहा तक न्याय संगत है। स्वामी जी ने प्रमयोग पृ 73 पर लिखा है कि —ईसाई लोग कहते हैं कि ईश्वर भेड के रूप मे आया तब तो ठीक था पर यदि ईश्वर गाय के रूप मे आता है जैसा हिन्दू लोग मानते हैं तो यह बिल्कुल गलत और मिथ्या विश्वास है। ईसाईयो की यह मान्यता है कि ईसा ईश्वर का इकलौता बेटा है किन्तु वे अब ईश्वर पुत्र तक ही सीमित नही। वे ईसा को साक्षात ईश्वर का अवतार मानते हैं। पिता पुत्र का प्राचीन भेद मिट गया है। लेखक को दसूहा मे ईसाई प्रचारको द्वारा वितरित दो पृष्ठो का पेपर प्राप्त हुआ जिसमें ईसा को ईश्वर का अवतार माना गया है। अन्धविश्वासी लोगो को ईसा का यही रूप प्रिय है जिस प्रकार पौराणिक राम कृष्ण को ईश्वर का अवतार मानते हैं। स्वामी विवेकानन्द भी उसी भावुकता में ईसा को ईश्वर के रूप मे स्वीकार करते हैं। देव वाणी पृ 40 में लिखा कि ईश्वर ने ईसा होकर जन्म धारण किया। आगे चलकर लिखते हैं कि ईसा बुद्ध राम कृष्ण आदि के समान अवतार पुरुष ही धन दे सकते हैं। वे दृष्टि मात्र अथवा स्पर्श मात्र से ही दूसरो मे धर्म की शक्ति का संचार कर सकते हैं

ईश दूत ईसा नामक लेख मे उन्होने लिखा कि इसी महापुरुष ने कहा—किसी भी व्यक्ति ने ईश्वर पुत्र के माध्यम बिना ईश्वर का साक्षात्कार नहीं किया और यह कथन अक्षरश सत्य है। (ईश दूत ईसा पृ 3) उपर्युक्त कथन से स्पष्ट होता है कि स्वामी विवेकानन्द ईसा को ईश्वर के रूप मे देखते थे वे इसी लेख मे पृ 17 पर लिखते हैं कि यदि एक प्राच्यदेशीय के रूप मे मैं नाजरथ निवासी ईसा की उपासना करू तो मेरे लिये ऐसा करने की केवल एक ही विधि है और वह है कि उसकी ईश्वर के समान आराधना करना। भावुकता वश स्वामी विवेकानन्द ईसा की मृत्यु और उसके पुन जीवित होने की बात को भी सत्य मान बैठे। विवेकानन्द जी से वार्तालाप पृ 126 मे लिखा है कि ईसा तो ईश्वर अवतार थे लोग उनकी हत्या नही कर सकते थे। उन्होने जिसे क्रोस पर लटकाया था। वह तो उनकी छाया मात्र थी मृगतृष्णा जैसी भ्रान्ति मात्र थी। यह तो वैसा ही प्रसंग है जैसा पौराणिक लोग रावण द्वारा हरण की जाने वाली सीता वास्तविक न होकर छाया मात्र थी ऐसा मानते हैं।

स्वामी विवेकानन्द जी के उपर्युक्त लेख ईसामसीह को ईश्वर सिद्ध करते हैं वहा उन्होने ही ईसा को मनुष्य की संज्ञा दी और यहा तक असंस्कृत गवार भी कह दिया। देव वाणी पृ 89 मे लिखते हैं कि—ईसा हम लोगो के समान मनुष्य प्रकृति सम्पन्न थे। इसी देव वाणी पृ 86 मे लिखा कि ईसा मसीह मनुष्य थे इसलिए वे जगत मे अपवित्रता देख पाते थे स्वामी जी ईसा को मनुष्य ही नही अपूर्ण भी मानते थे। ईसा मसीह असम्पूर्ण थे क्योकि उन्होने जिस आदर्श का प्रचार किया और सर्वोपरि बात तो यह है कि उन्होने नारी जाति को पुरुष के तुल्य अधिकार नही दिया (देव वाणी पृ 165) प्रेम योग मे पृ 52 मे लिखा कि ईसा मसीह की जो शक्तियां उनके चमत्कारो मे और आरोग्य प्रदानो मे दीख पडती हैं वे यथार्थ मे क्या थी? वे तो तुच्छ गवारी, असंस्कृत त्याज्य चीज थी। और वे इन्हें किए बिना नहीं रह सकते थे क्योकि वे असंस्कृत मनुष्यो के बीच रहते थे। इन पूर्वा पर विरुद्ध बातो को देख कर पाठक सहज ही अनुमान कर सकते हैं कि स्वामी विवेकानन्द का मत क्या था।

स्वामी दयानन्द ने ईसाई मत की जो समालोचना की है वह उन्होने बाइबिल के हिन्दी व संस्कृत भाषान्तर को पढकर की है सत्यार्थ प्रकाश के 13 वे समुल्लास मे ईसा के जन्म के विषय में बुद्धिवाद का प्रदर्शन किया है। इञ्जील मे ईसा के जन्म के विषय मे पहली ही आयत मे लिखा है कि ईसा कुमारी मरियम से उत्पन्न हुआ। ईसा की माता मरियम की यूसुफ से मंगनी हुई थी पर इकट्ठे होने के पहले ही वह देख पड़ी कि पवित्र आत्मा से गर्भवती है। परमेश्वर ने उसको स्वप्न मे कहा कि हे दाऊद के सन्तान यूसुफ तू अपनी स्त्री मरियम को यहां लाने से मत डर क्योकि उसको जो गर्भ रहा है सो पवित्र आत्मा से है।

इसकी समीक्षा लिखते हुए स्वामी दयानन्द कहते हैं कि इन बातों का मानना मूर्ख मनुष्य जंगलियो का काम है। सभ्य विद्वानो का नही। जो परमेश्वर का नियम है। उसको कौन तोड सकता है है जो परमेश्वर भी नियम को उलटा पलटा करें तो उसकी आज्ञा को कोई न माने और वह भी सर्वज्ञ व निभ्रम न रहे ऐसे तो जिस जिस कुमारी के गर्भ रह जाए तब सब कोई ऐसे कह सकते हैं कि परमेश्वर के दूत ने हमें स्वप्न मे कह दिया है कि गर्भ परमात्मा की ओर से है। जैसा यह असम्भव प्रपंच रचा है। वैसा ही सूर्य से कुन्ती का गर्भवती होना भी पुराणो में असम्भव लिखा है—यह ऐसी बात हुई होगी कि उसने या किसी दूसरे ने ऐसी असम्भव बात उड़ा दी होगी कि इसमे गर्भ ईश्वर की ओर से है।

ऋषि दयानन्द के लिखने का मतलब यह है कि ईसाई ईसा के जन्म विषय पर ऐसा मानते हैं तो कुन्ती को क्यो नहीं जारज पुत्र के उत्पन्न मे ईश्वर पर दोषारोपण है। यहां इतनी गुंजाईश नही है कि मत्ती रचित इंजिल की समीक्षा के विषय में विस्तृत लेख लिखे। संक्षेप मे ऋषि दयानन्द की ईसा के प्रति आलोचना इस प्रकार है।

ईसा ईश्वर का बेटा नहीं था और न उसमे कुछ करामात थी। ईसा ने एक नवीन मत चलाया। ऋषि दयानन्द के अनुसार यीशु उस समय के जंगली मनुष्यो मे कुछ अच्छा था। न वह करामाती है न ईश्वर का पुत्र और न विद्वान था क्योकि जो ऐसा होता तो ऐसा दुःख क्यो भोगता (सत्यार्थ प्रकाश पृ 668) मत्ती की एक आयत जिसमे ईसा भी अपने को ईश्वर कहलाना पसन्द न करता था। हर एक जो मुझ प्रभु कहता है स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नही करेगा यह लिख कर स्वामी दयानन्द जी लिखते हैं कि अब विचारिये बड़े बड़े पादरी बिशप साहेब और कृश्चीन लोग जो यह ईसा का वचन सत्य है ऐसा समझें तो ईसा को प्रभु अर्थात ईश्वर कभी न कहें।

इस प्रकार हम देखते हैं कि महर्षि दयानन्द ने ईसा के विषय मे जो कुछ लिखा वह उन्हीं के ग्रन्थों के आधार पर प्रमाण सहित लिखा। जो कुछ भी लिखा स्पष्ट और निस्संकोच भाव से।

ईसा व ईसायत के विषय में दो महापुरुष के विचार पाठको के समक्ष रखे। इसका निर्णय पाठक स्वयं ही करें।

—

# महर्षि दयानन्द निर्वाणशताब्दी अजमेर के समाचारों की झलकियां

गत अंक में भी मैंने अजमेर में हुई निर्वाण शताब्दी के समाचार दिए थे विस्तार से इस अंक में दिए जा रहे। लुधियाना और जालन्धर से श्री लाला जैन्द जी आर्य मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रबन्ध में पांच बसें चली। इन बसों के प्रबन्ध का उनको ही श्रेय जाता है। पंजाब के अन्य स्थानों से आर्य सज्जन रेल से बसें करके या गाड़ी से अजमेर पहुंचे। लुधियाना से 2 नवम्बर को प्रात चलकर जब बसें खन्ना पहुंची तो खन्ना के आर्य बन्धुओं ने सभी यात्रियों का फलों आदि से बड़ा स्वागत किया। वहां से चल कर कर्णं झील पर करनाल भोजन करने के बाद बसें रात्रि में आर्य समाज आदर्श नगर जयपुर में रुकी।

## आर्य समाज आदर्श नगर जयपुर का सराहनीय कार्य

आर्य समाज आदर्श नगर जयपुर के अधिकारियों का जितना भी धन्यवाद किया जाए उतना थोड़ा है। पंजाब से आने वाले सभी आर्य बन्धुओं का बड़ा स्वागत किया रात को एक बजे तक लंगर चलता रहा ठहरने का उचित प्रबन्ध था। इधर से जाते हुए भी और अजमेर से आते हुए भी हजारों यात्री इस समाज के प्रबन्ध में ठहरे। आर्य समाज के अधिकारी दो नवम्बर को सारी रात आर्य समाज में ही रहकर प्रबन्ध करते देखे गए। 6 नवम्बर की रात को भी समाज के मन्त्री प्रबन्ध के लिए दो बजे तक आर्य समाज में ही रहे। इस समाज के अधिकारी बड़े उत्साही है और बड़े कर्मठ कार्यकर्ता हैं।

जयपुर से चल कर हमें केसर गंज में एक इस्लामिया स्कूल में ठहरने का स्थान दिया गया। इस स्कूल के प्रबन्धकों का भी मैं धन्यवाद करना चाहता हूं। जिनके प्रबन्ध में स्कूल के खिड़किया दरवाजे टूटे हुए होने पर भी सभी यात्रियों का सामान सुरक्षित रहा। स्कूल के प्रिंसीपल ने सामान की देखभाल के लिए विद्यार्थियों को तैनात किया हुआ था यहां स्थान इत्यादि की कुछ तंगी तो हुई परन्तु इतने अधिक लोगों के ठहरने के प्रबन्ध में अक्सर ऐसा हो ही जाता है।

पंजाब के कुछ लोग दयानन्द नगर में जन पंजाब के लिए टैन्ट लगाए हुए थे वहां की व्यवस्था भी अच्छी ही थी।

## सम्मेलन मे क्या-क्या देखा, सुना

3 नवम्बर को इस सम्मेलन का उद्घाटन भारत की प्रधानमन्त्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने किया। यह ठीक है कि उन्होंने महर्षि को श्रद्धाञ्जलि देते हुए मंच से राजनैतिक चर्चा भी आरम्भ कर दी जिसको कुछ लोगों ने पसन्द नहीं किया। उन्होंने अपने भाषण में गो-चर्चा के विषय का भी वर्णन किया।

इस समारोह का समापन केन्द्रीय उद्योग मन्त्री नारायण दत्त तिवारी के भाषण से 6 नवम्बर रविवार को हुआ। उन्होंने अपने भाषण में कहा कि देश में सामाजिक क्रान्ति लाना ही दयानन्द के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। इस प्रकार इस सम्मेलन का उद्घाटन और समापन कांग्रेस के नेताओं द्वारा ही हुआ। 4 नवम्बर को श्रद्धांजलि सम्मेलन भी राजस्थान के मुख्यमन्त्री श्री शिवचरण माथुर की अध्यक्षता में हुआ। परन्तु उन्होंने अपने अध्यक्षीय भाषण में महर्षि की महानता का ही वर्णन किया जिसकी सभी श्रोताओं ने सराहना की।

कांग्रेसी नेताओं के अतिरिक्त समय समय पर कुछ आर्य नेताओं ने भी अपने विचार जनता के सामने रखे। मंच का कंट्रोल लगभग प्रो शेर सिंह जी और स्वामी ओमानन्द के हाथ में ही रहा। शनिवार को आयोजित सोमवस्त्र सम्मेलन में उन लोगों को मंच से नहीं बोलने दिया। जिनको वह नहीं चाहते थे। माईक छीनने तक की नौबत स्टेज पर आ गई।

इस सम्मेलन मे भिन्न-2 समय पर भाषण देने वाले विद्वानों में श्री शिव कुमार जी शास्त्री के भाषण की बड़ी सराहना की जा रही थी, स्वामी सत्य प्रकाश स्वामी ओमानन्द प्रो शेर सिंह जी श्री रामगोपाल जी शाल वाले, डा सत्यकेतु विद्यालंकार श्री बलराज मधोक सांसद आचार्य भगवान देव जी, व आचार्य नरेश जी, श्री दत्तात्रेय वाब्ले, श्री छोटू सिंह स्वागताध्यक्ष, श्री श्रीकरण जी शारदा समारोह समिति के मन्त्री, पं राजगुरु जी शर्मा, आदि आर्य विद्वानों ने भी समय-2पर मंच से जनता को सम्बोधित किया। कुछ विदेशों से आए हुए बन्धुओं ने अपने विचार रखे।

इस शताब्दी समारोह के मंच से कोई नया कार्यक्रम आर्य समाज के लिए घोषित नहीं किया। जब कि इस अवसर ऐसा होना चाहिए था ऐसा लगता था कि अधिक आर्य बन्धु यहां कुछ सुनने के लिए नहीं बल्कि महर्षि के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट करने के लिए गए थे। बहुत से लोग प्रोग्राम के समय भी अपने डेरों में बैठ देखे गए।

## अजमेर मे सम्मेलन स्थल पर जेब कतरे

दयानन्द नगर में जेब कतरों ने कई यात्रियों की जेबें साफ कर दी, ऐसा लगता है कि जेब कतरे दर्शनों की संख्या में आए हुए थे और मौके का लाभ उठाकर उन्होंने लगभग सौ व्यक्तियों के 15000 रुपये से अधिक राशि पर हाथ साफ कर दिया। आर्य वीर दल के स्वयं सेवकों ने सतर्कता बरतते हुए प्रधान संचालक बाल दिवाकर हंस के नेतृत्व में कार्य करते हुए लगभग 20 जेब कतरों को पकड़ कर पुलिस के हवाले किया।

## 14 व्यक्तियों को स्वर्ण पदक दिए गये

6 नवम्बर रविवार को आयोजित सत्कार सम्मेलन में 14 व्यक्तियों को स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया। 16 विद्वानों को आर्य रत्न की उपाधि तथा 20 व्यक्तियों को चौधरी प्रतापसिंह पुरस्कार से सम्मानित किया गया। दयानन्द महाविद्यालय में आयोजित इस समारोह में भू पू राज्यपाल श्री धर्मवीर एवं श्री वेदव्यास जी ने इन विभूतियों को सम्मानित किया। 14 व्यक्तियों में से 8 भारत के प्रसिद्ध वैज्ञानिक हैं और शेष विदेशी विद्वान् हैं।

## महर्षि के स्मारको को दर्शनीय बनाने की योजना

अजमेर मे यह भी निर्णय लिया गया कि महर्षि के सभी स्मारकों को दर्शनीय बनाया जाए। महर्षि के जन्म स्थान टंकारा के भी जीर्णोद्धार के लिए धनसंग्रह अभियान शुरू कर दिया है। टंकारा को भी विश्व दर्शनीय बनाने की योजना तैयार की गई। अजमेर में आना सागर झील के किनारे पर स्थापित ऋषि उद्यान जहां स्वामी जी की भस्मी का छिड़काव किया गया था उसे और भी दर्शनीय बनाने पर विचार किया गया।

## पुस्तको और दवाईयो के स्टाल

इस समारोह के अवसर पर पण्डाल से कुछ दूरी पर दयानन्द नगर में मेन गेट के साथ ही पुस्तकों आदि की बाजार मार्केट बनाई हुई थी जहां आर्य समाज का साहित्य, आर्य समाज के भजनों आदि के कैसेट महर्षि के चित्र तथा देसी दवाईयां मिल रही थी। हवन सामग्री व हवन कुण्ड भी एक दुकान पर बिक रहे थे। परन्तु मैं सभा के लिए चारों वेद मूल खरीदना चाहता था किसी भी स्टाल पर चारों वेद मूल नहीं मिले केवल यजुर्वेद और सामवेद दो ही वेद मूल थे। केवल जन ज्ञान प्रकाशन वालों के स्टाल पर चारों वेदों के भाष्य की कुछ प्रतियां थी वह भी 4 नवम्बर को समाप्त हो गई थी। इस सम्मेलन में सत्यार्थ प्रकाश हजारों की संख्या में आर्य बन्धुओं ने खरीदा।

## चारो वेदो के यज्ञ की पूर्णाहुति

6 अक्तूबर मे आरम्भ हुए चारों वेदों के पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति 6 नवम्बर रविवार को ऋषि उद्यान में बनी यज्ञशाला में हुई, जिसमें हजारों लोगों ने आहुतियां दीं। यह यज्ञ महात्मा दयानन्द जी की देख रेख में चलता रहा।

## दो महिलाओ ने सन्यास व वानप्रस्थ की दीक्षा ली

इस अवसर पर दक्षिणी अफ्रीका में रहने वाली (मूल निवासी भारत की) महिला विद्यावती जी ने सन्यास की दीक्षा ली और सुश्री प्रभावती ने वानप्रस्थ आश्रम की दीक्षा ली। दक्षिण अफ्रीका से बीस सदस्यों का एक प्रतिनिधि मण्डल शताब्दी में आया हुआ था। यह दोनों महिलाएं भी दक्षिणी अफ्रीका से आई थी।

इस प्रकार बड़े हर्षोल्लास के साथ महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह सम्पन्न हुआ। आर्य बन्धुओं ने इस बार दीपावली का पर्व अजमेर में ही मनाया। देश विदेश से आए लोग 5 और 6 नवम्बर को अपने 2 घरों को रवाना हो गये।

## जयपुर के दर्शनीय स्थान

पंजाब के यात्रियों की इच्छा थी जयपुर के सभी दर्शनीय स्थान देखे जाएं। एक गाईड को साथ लेकर हम बस द्वारा ही पहले गलता तीर्थ को देखने गए। यहां गोमुख बना कर ऊपर पहाड़ से आ रहे जल की धारा उसमें से एक कुण्ड में डाली गई जिसकी गहराई अथाह है। कहा जाता है कि यहां गल्वा ऋषि ने तपस्या की थी और उनके तप से इस शुष्क पहाड़ में जल धारा बह उठी। यहां कई मन्दिर भी बने हैं पहाड़ के बीच में यह स्थान है। बन्दरों की यहां बहुतायत है यात्री लोग चने लेकर बन्दरों को डालते हैं और बन्दर चीख मार-2 कर सभी बन्दरों को इकट्ठा कर लेते हैं। अगर किसी यात्री ने खाने की कोई वस्तु हाथ में पकड़ी हो तो बन्दर इतने निडर हैं आंख बचा कर उसे छीन ले जाते हैं। यह स्थान पिछले दिनों पहाड़ गिरने से दब गया था अब बाहिर निकाला हुआ है। यहां एक बहुत बड़ा यज्ञ कुण्ड भी देखने को मिला। (शेष आगामी अंक में)

—धर्मदेव

# आर्यसमाज की उन्नति के उपाय

ले—श्री रामनाथ जी सि विशारद आर्य महोपदेशक

क्या आप आर्य समाज की उन्नति चाहते हैं ? यह कभी सम्भव नही हो सकता कि कोई महर्षि दयानन्द जी सरस्वती का नाम लेवा आर्य समाज की उन्नति न चाहता हो। पर उन्नति चाहने से तो केवल उन्नति नहीं हो सकती जब तक कि उन्नति के मार्ग पर हम नहीं चलेंगे।

अब प्रश्न यह है कि वह उन्नति का मार्ग कौन सा है जिस पर चलने से आर्य समाज मे बसन्त आ जाए।

वह उन्नति का मार्ग यह है कि क्या आप आर्य समाज के प्रधान हैं ? यदि आप आर्य समाज के प्रधान हैं, तो आप अपने को अफसर मत समझिए बल्कि सेवक समझिए। मैंने आज से पच्चीस तीस वर्ष पूर्व की आर्य समाजो के उत्सव देखे हैं जब नगर कीर्तन होता था तो मुख्य अधिकारियो के कन्धो पर चपरास का पटका पहना हुआ होता था। जिस पर आगे लिखा होता था आर्य सेवक जैसे कि तहसील के चपरासियो के कन्धो पर अब भी पहना होता है।

यदि आप आर्य समाज के मन्त्री हैं तो आप अपने आपको छोटा सेवक समझिए। क्योंकि मन्त्री का पद आर्य समाज के प्रधान से छोटा पद होता है।

आर्य समाज के कोषाध्यक्ष का पद प्रधान और मन्त्री दोनो पदो से छोटा है। जितना बड़ा पद उतना बड़ा सेवक जितना छोटा पद उतना छोटा सेवक।

यह मनुष्य की निर्बलता है कि यदि कोई ऊंचे पद पर पहुंच जाए तो कइयो के पेट मे मरोड उठने लग जाते हैं कई अङ्गारो पर लोटने लग जाते हैं और कई विरोध करने लग जाते हैं इस विरोध को शान्त करने का सरल ढंग यही है कि हम नम्रता ग्रहण करें। पुन कोई विरोध नही होगा जब विरोध नही होगा आर्य समाज मे एकता होगी तो आर्य समाज की उन्नति होगी।

आर्य समाज के अधिकारी तो अपने आपको सेवक ही समझें परन्तु आर्य समाज के सदस्य आर्य समाज के प्रधान को ज्ञानी जैलसिंह जी राष्ट्रपति से किसी प्रकार भी कम न समझें क्योंकि यह आर्य समाज जैसी सभ्य सोसायटी के प्रधान हैं। आर्य समाज के मन्त्री को श्रीमती इन्दिरा गान्धी से कम न समझें क्योंकि वह सभ्य समाज का मन्त्री है आप चुनाव मे मन्त्री तथा प्रधान को मत न देकर बदल तो सकते हैं पर यह उचित नहीं कि उनका सम्मान न किया जाए।

## जब आर्य समाज का अधिवेशन हो

आर्य समाज का अधिवेशन प्राय रविवार को होता है। शान्ति पाठ से पूर्व (यह इसलिए कि शान्ति पाठ तक लोग आते रहते हैं) आर्य समाज का प्रधान सभी अधिकारियो पर दृष्टि मारे कि क्या सभी अधिकारी उपस्थित हैं ? आर्य समाज के सभी अधिकारी महानुभाव यह देखें कि कौन 2 से अन्तरंग सदस्य नहीं आए हैं और अन्तरंग सदस्य यह देखें कि कौन 2 से सभासद आज अधिवेशन मे उपस्थित नहीं हैं। यदि कोई अधिकारी या अन्तरंग सदस्य अथवा सभासद आर्य समाज मे दिखाई नही दिया तो सम्भव हो तो सभी नही तो मुख्य अधिकारी न आने वाले आर्य महानुभाव के घर जाए वह देखें कि क्या वह बाहर गये हुये हैं ? बाहर गये हुये हैं तो आ जाएंगे चिन्ता की बात नही है क्या वह रूठ हुये हैं ? यदि रूठ हुए हैं तो उनका आधा क्रोध आपके उसके घर जाने से शान्त हो जाएगा। आधा क्रोध आप अपनी प्रेम भरी बातचीत से समाप्त करें। यह कहना उचित नही कि हम रूठ हुये के घर क्यो जाएं ? हम उसको क्यो मनाएं ? क्या हमारे लिए आता है। किसी के आर्य समाज मे न आने से या रूठ जाने से विरोध करने से आर्य समाज मे कमजोरी आएगी आर्य समाज का कोई सदस्य अथवा उसके परिवार का कोई सदस्य यदि रुग्ण है पुन बार बार उसके गृह पर जाने की आवश्यकता है इससे उस आर्य सभासद की आर्य समाज पर श्रद्धा बढ़ेगी यदि वह रुग्ण है अथवा उसके परिवार का कोई रुग्ण है ठीक होने पर आर्य समाज मे अवश्य आएगा। यदि आर्य समाज का सभासद रोगी भी है और निर्धन भी तो उसकी धन से सहायता करने की आवश्यकता है चाहे वह सहायता मत लें परन्तु आर्य समाज के सभासद अथवा अधिकारी अपनी ओर से पूरी सहानुभूति दिखाएं आर्य समाज का छठा नियम तो कहता है कि—संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्योद्देश्य है पुन यह तो अपना आर्य बन्धु है। यदि हम आर्य समाज की उन्नति चाहते हैं तो निराभिमानता तथा सहानुभूति ही पर्याप्त नहीं है कुछ और भी सुधार की भी आवश्यकता है। कइयो का स्वभाव जिद्दी होता है। मेरा ही कहना माना जाए। मेरी ही चले ऐसा स्वभाव आर्य समाज की उन्नति मे बाधक है साधक नही है आपको अपनी सम्मति देने का अधिकार है। औरो की भी जिन की भी बात ठीक है उनकी मान ली जाए इसी से आर्य समाज की उन्नति सम्भव है। कई महानुभाव कहते तो यही हैं कि हम सत्य कहते हैं परन्तु वाणी कठोर होने से दूसरे को उसकी बात चुभती है। हम सत्य भाषण तो करें पर सत्य ब्रूयात प्रियं ब्रूयात। सत्य बोलें पर प्रिय सत्य बोलें आर्य समाज की उन्नति के लिए यह कुछ विचार मैंने लिखे हैं। आर्य समाज की उन्नति से ही देश की तथा विश्व की उन्नति सम्भव है। आर्य समाज की उन्नति आपस में प्रेम तथा सहानुभूति मधुर भाषण से ही सम्भव है किसी भी आर्य सभासद को कोई भी ऐसा कार्य करना उचित नहीं जो दूसरे को अखरने वाला हो। प्रत्येक सभासद का अपनी वाणी पर पूरा कन्ट्रोल होना चाहिए क्योंकि सब्से अधिक झगड़े तो जुबान चोरी से ही होते हैं।

तुलसी धागा प्रेम का मत तोड़ो चटकाए
टूटे पाछे न मिले मिले गांठ पड़ जाए।

—

महर्षि स्वामी दयानन्द निर्वाण शताब्दी पर

## स्त्री आर्य समाज मोगा की ओर से भव्य उत्सव

स्त्री आर्य समाज मोगा तिथि 15 नवम्बर से 20 नवम्बर सन 1983 दिनांक मंगलवार से रविवार तक महर्षि स्वामी दयानन्द निर्वाण शताब्दी पर एक भव्य उत्सव तथा विश्व शान्ति महा यज्ञ का आयोजन आर्य समाज मन्दिर गली न 2 मोगा मे कर रही है।

इस शुभ अवसर पर बड़े बड़े साधु महात्मा सन्यासी प्रकाण्ड पण्डित वेद पाठी तथा संगीताचार्य पधार रहे हैं। आने वाले महानुभावों में निम्नलिखित नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। विश्व विख्यात सन्यासी स्वामी दीक्षानन्द जी महाराज महान वेदाचार्य डाक्टर प्रज्ञा देवी जी अधिष्ठाता कन्या महाविद्यालय बनारस वेदो के प्रकाण्ड पण्डित आचार्य रामप्रसाद उपकुलपति गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार पंजाब केसरी शिरोमणि श्री वीरेन्द्र जी एम ए मालिक अखबार प्रताप तथा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब मोगा गौरव स्वामी वेदान्तानन्द जी महाराज संस्थापक परम धाम आश्रम हरिद्वार तथा गीता भवन मोगा स्वामी सहज प्रकाश जी एम ए श्रीमति सावित्री देवी जी रायबरेली गायनाचार्य श्री सत्यपाल जी पथिक तथा श्री यादव जी। आप से सानुरोध प्रार्थना है कि अपने परिवार तथा इष्ट मित्रो सहित सम्मिलित होकर लाभ उठाएं तथा यज्ञ के भागी बनें। —श्यामा सूद मन्त्री

## वेदों वाले ऋषिवर तेरी शान का-

ले—श्री प सत्यपाल जी पथिक अमृतसर

तर्ज—बहरे तबील

वेदो वाले ऋषिवर तेरी शान का सारी दुनिया मे कोई बशर न मिला।
हमने इन्सान देखे सुने हैं बड़े कोई इन्सान तुझ सा मगर न मिला।
तू दया और आनन्द ही सब जगह सच्चा हमदर्द बन के लुटाता गया।
चुन लिए तूने कांटे सभी राह के फूल ही फूल इस पर बिछाता गया।
वेद मार्ग हमें तूने दिखला दिया तेरे जैसा कोई राहबर न मिला।
वेदों वाले ऋषिवर तेरी शान का——

कितना पानी है यह जानने के लिए मैं समुन्दर मे गोता लगाऊं तो क्या।
या दिखाने को सूरज चमकता हुआ एक छोटा सा दीपक जलाऊं तो क्या।
तेरी तारीफ कैसे करूं मैं बयां मेरी वाणी को ऐसा असर न मिला।
वेदो वाले ऋषिवर तेरी शान का——

तू ने दरिया बहाया है जो ज्ञान का वह प्रलय तक निरन्तर बहेगा सदा।
कोई ताकत उसे रोक सकती नही दिन प्रतिदिन वह बढ़ता रहेगा सदा।
जो प्रभावित न हो तेरे उपकार से देश भर मे कोई एक घर न मिला।
वेदो वाले ऋषिवर तेरी शान का——

धर्म की राह पर मुस्कराते हुए जिन्दगी मौत का खेल खेला गया।
तेरी हिम्मत हिमालय से ऊंची बड़ी तू हजारो के अन्दर अकेला गया।
न झुका हो पथिक जो तेरे सामने कोई दिल न मिला कोई सर न मिला।
वेदो वाले ऋषिवर तेरी शान का——

—

## नारी-जगत्-

# "मातृ कर्त्तव्य"

ले—श्री सुरेन्द्र मोहन सुनील" विद्यावाचस्पति

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने बच्चे के व्यावहारिक जीवन में बड़ी सावधानी बरतने के लिए लिखा है। बच्चा बड़ी कोमल भावनाओं से बनता है। उसके लिए समय के अनुसार ही अपनी भावनाओं से काम लें, बच्चे स्वभाव से चंचल होते हैं। उन्हें सही रास्ते पर डालने में बड़ी सूझबूझ से काम लेना चाहिए। बच्चे की छोटी छोटी गलतियो पर माता पिता को अधिक क्रोध नहीं करना चाहिए। इससे बच्चे ढीठ हो जाते हैं। तब माता पिता कहते हैं कि बच्चे सुनते ही नही बच्चे जिज्ञासु होते हैं उन्हें सरलता से, कहानियो प्रहसनो कथाओ से अच्छी बातें बतलायें प्राचीन काल मे माताए बच्चे को लोरिया सुनाया करती थी यह सब प्रथा खत्म सी हो गयी है। बच्चो को शिक्षा प्रद विचारो द्वारा रास्ते पर लाए। आप उनका पथ प्रदर्शक बनें सिर्फ सन्तान जन्म देने से नही होती, उसके जीवन का सुधार करना भी आप का ही कर्त्तव्य है। रविन्द्रनाथ टैगोर के शब्दो मे—

"बच्चा सिर्फ माता पिता का ही नही बरन समस्त समाज की सम्पत्ति है।

अत बच्चो का सुधार कर कुशल नागरिक बना कर राष्ट्र को दें यही आप का परम कर्त्तव्य है।

आप कही बाहर बाजार रिश्तेदार या गोष्टी में जाए तो बच्चो को साथ लेते जाए, नौकर आया के जिम्मेवारी पर मत छोडो वे बच्चो को गन्दी आदतें और गालिया देना सिखला देते हैं।

बच्चे कच्चे मिट्टी के बरतन होते हैं उन पर जैसे 2 निशान आप डालेंगे वैसे ही परिपक्व अवस्था मे भी निशान पक्के पड जाएगे। प्रेम से बच्चे को उत्तर दें—झिड़कने की प्रवृति छोड़ दें।

मुझ दुख के साथ लिखना पड रहा है कि आजकल की माताए अपने बच्चे को अपने स्तन का दूध भी पिलाना नही चाहती कहती हैं इससे रोग हो जाता है दूध के हर डिब्बे पर हिन्दी अंग्रेजी संस्कृत उर्दू पजाबी व बगला भाषा मे लिखा होता है—

'मातृ क्षीर तु अमृत सिधुम्न

मा का दूध बच्चे के लिए सबसे उत्तम है। फिर भी माताए बच्चे को अपने स्तन की दूध नही पिलाती। शर्म की बात है कि माताए तो फिल्मी एक्टर पैदा कर रही हैं क्योकि आजकल की माताए बहिन फिल्मी चित्र देखती हैं और धार्मिक गीतो से कोसो दूर हैं। माताओ! आज समय की माग है—वीर शिवा जी महाराणा प्रताप श्रद्धानन्द दयानन्द जैसे पुत्रो को पैदा करो।

'जननी जैण्या जनम

हे जननी! दिव्य सन्तान पैदा कर गीतिकार ने ठीक ही कहा है—

'नारी जने तो भक्त जन या
दाता या शूर।
नही तो रहिए बाझरी—
काहे गवाए नूर।।

माताओ! एकश्चन्द्र स्तमोहन्ति न च तारागणोऽपिच एक ही श्रेष्ठ सन्तान कुल को तार देता है श्रेष्ठ सन्तान ही प्रकाश फैला सकेगा। बहुत से तारागणो से अन्धकार दूर नही होता।

—

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

एव उनके सदुपदेशो द्वारा अपनी बुद्धि को आलोकित करके कर्त्तव्य कर्मों को पहिचानना चाहिये और फिर श्रद्धापूर्वक उन का अनुष्ठान करते हुए अपने संसार को आलोकमय बनाना चाहिये।

मार्गों को बिना रुकावट चलने योग्य बनाने के लिये उन पर यथा स्थान प्रकाश की व्यवस्था करनी होती है और फिर उनकी सुरक्षा का भी विशेष प्रबन्ध किया जाता है। परम पिता परमात्मा ने मनुष्य के जीवन पथो को आलोकित करने के लिये सत्य सनातन वेद ज्ञान दिया और ऋषि मुनि साधु सन्त महात्मा एव आप्त पुरुषों ने समय समय पर ब्राह्मण आरण्यक, उपनिषद स्मृति दर्शन गीता रामायण आदि अनेक पथ प्रदर्शक प्रकाश स्तम्भो निर्माण कर उन्हे बे रोक टोक चलने योग्य बनाया। इन ज्ञानालोकित मार्गों पर चलना और उनकी रक्षा करना अपना कर्त्तव्य समझना चाहिये। ज्ञानपूर्वक कर्म करने वाले महापुरुषो के बतलाये हुये यज्ञ अध्ययन दान अहिंसा सत्य, अस्तेय ब्रह्मचर्य अपरिग्रह शौच सन्तोष तप स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान आदि कर्त्तव्य कर्मों को अपने श्रेष्ठ उपदेश एव व्यवहार द्वारा अधिक से अधिक फैलाना चाहिये। इन्ही को अपनाकर मनुष्य मनुष्य बनते और अपनी सन्तानो को सुशिक्षा एव सदाचरण द्वारा अच्छा बनाते हुये आदर्श समाज का निर्माण कर ससार को सुखमय बना सकते। प्रेम, श्रद्धा और भक्ति से माता पिता एव आचार्यों को सन्तुष्ट करने वाले तपस्वी त्यागी पुत्र ही सच्चे पुत्र हैं। वे ही समाज मे अपने ज्ञान व्यवहार एव आचरण से सुख शान्ति की समद्धि करते हैं। मानव निर्माण की विशेष जानकारी के लिए वैदिक वाङ्मय के सार ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय एव तृतीय समुल्लास को पढना चाहिये।

हमे चाहिए कि हम सब मिलकर राष्ट्र मे ऐसी शिक्षा एव दीक्षा का प्रबन्ध करें जिससे लोगो मे मानवता के मूल तत्व धर्म के प्रति आस्था परमेश्वर मे विश्वास, प्राणीमात्र के कल्याण की भावना अधिकार की अपेक्षा कर्त्तव्य के प्रति दृढ निष्ठा परस्पर मैत्री एव सहानुभूति का व्यवहार तथा माता एव गुरुजनो के प्रति श्रद्धा का आविर्भाव हो और लोगो मे सच्ची राष्ट्रीयता आवे।

अन्त मे हमारी प्रभु से यही कामना है कि मनुष्य यथार्थ मे मनुष्य बनें और आपकी पवित्र वाणी वेद के आदेशानुसार—

पुमान पुमांस परिपातु विश्वत।
ऋ 6 75 14।

मनुष्य मनुष्य की सब प्रकार से रक्षा करे।

# विद्यार्थियों से—

ले—प्रिंसीपल सन्तोष सूरी देवराज गर्ल्ज हा सै स्कूल जालन्धर

आजकल फैशन चलता है
डिस्को बजता है
अर्थ हीन
हा हा हू हू ही ही
बाबा उडी बाबा उडी
उठते—बैठते—
सोते जागते—
पहरो गुनगुनाते हैं।
भटके बादल की तरह
इधर से उधर
उधर से इधर
पारे से
ढुलक जाते हैं।
दिन भर रेडियो
रात को टी वी
कॉमिक्स या फिर
मैगजीन हल्की सी
नही तो कामेन्ट्री
शोर शराबा
मारा मारी
हम कैसे हो गए हैं
हर पल हर दम
अपना उल्लू बनाते हैं।
पैसे को दान्त से पकड
टेलिफोन पर बतियाए
सूखे सरोवर मे सपने छोड
बैठ ही बैठ उड जाए
फैशन की पेपर की उडान
जिससे मुख का बोझ उठाए
क्या हो गया है हमे—
इस मे
उस मे
लिपट लिपट
चिटक छिटक
पुरान कैलण्डर बनते जाते हैं।
कब तक
बेतहाशा
अन्धी दौड के
हम थके सिपाही बनेंगे?
क्यो न हम
कुछ बन्द कर द
कुछ अस्वीकार द
कुछ नकार द।
बीन बीन बहार द
और
स्वय का सम्भाल लें
हमार प्रयास हो
हमारे अहसास हो
हमारा इतिहास हो
कम से कम हम
अपना पता तो जान ल।
सूरज उठगा
प्रात होगी।
यह क्या? धरती पर
जो हम करने मे नही समर्थ
बन सीधे सरल सबल
जीए जीवन साधक
मील का पत्थर न बन कर
मजिल बनेंगे हम

—

# तामपत्रों पर सत्यार्थ प्रकाश

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी के अवसर पर प्रदर्शनी मे जहा स्वामी जी की प्रयोग की जाने वाली वस्तुए, कमण्डलु खड़ाऊ शाल पीतल की मोहर जेब घड़ी तथा एक दूसरी घड़ी जिसका स्वामी जी प्रयोग मे लाते थे चाकू और हस्तलिखित पत्र व ग्रन्थ आदि देखने को मिले वहा महर्षि की अमर कृति सत्यार्थ प्रकाश ताम्रपत्रो पर देखने को मिला। तांबे के 430 पत्रो पर सत्यार्थ प्रकाश को खुदवाया गया है। सम्पूर्ण सत्यार्थ प्रकाश का वजन लगभग 30 मन बताया जाता है। ढाई लाख रुपया खुदवाने का खर्च बताया जाता है। महर्षि की यह अमर कृति सदा के लिए अमर हो गई। ताम्र पत्रो मे इसे चिरकाल तक सुरक्षित रख दिया गया। यह कार्य करने का श्रेय परोपकारिणी सभा के प्रधान श्री स्वामी ओमानन्द जी महाराज को है। इस सत्यार्थ प्रकाश का विमोचन राजस्थान के मुख्यमन्त्री श्री शिवचरण जी माथुर ने 4 नवम्बर को श्रद्धाजलि सम्मेलन के समय अजमेर मे किया।

# ऋषि लगर जिसमें लाखों व्यक्ति प्रतिदिन भोजन करते थे

अजमेर मे 3 से 6 नवम्बर तक दयानन्द नगर मे वृहद ऋषि लगर चलता रहा। ऋषि लगर तीन भागो मे बटा हुआ था। उपदेशको विद्वानों, सन्यासियो और दूसरे प्रतिष्ठित लोगो के लिए लगर का अलग से प्रबन्ध था। हरियाणा के बन्धुओ का लगर अलग से उसी स्थान पर चल रहा था जहा हरियाणा के लोगो के ठहरने की व्यवस्था थी और तीसरा आम ऋषि लगर था। इन मे पूडी, चावल, रोटी, सब्जी का वृहद प्रबन्ध था। इन लगरो मे लाखो व्यक्ति प्रतिदिन भोजन करते थे। परन्तु क्योकि आर्य बन्धु अजमेर मे बहुत बडी सख्या में पधारे हुए थे इसलिए फिर भी सभी लोग ऋषि लगर में भोजन नही कर पाते थे। दयानन्द नगर में कई होटल नुमा भोजनालय भी खुले हुए थे जहा आम बन्धु पैसे देकर भोजन कर लेते थे।

भोजन की व्यवस्था अच्छी थी। आयु और वय के युवक और युवतिया ऋषि लगर मे भोजन परोसने का काय करते थे जो बड उत्साह व कर्तव्य परायणता से कार्य कर रहे थे। इतने लोगो के लिए भोजन की व्यवस्था करना भी एक बहुत बडा काय था।

धर्मदेवार्य

## श्री डा. वेदी राम जी शर्मा कीनिया में

डा वेदीराम जी शर्मा जालन्धर के डी ए वी कालेज मे हिन्दी विभाग के अध्यक्ष रहे हैं। वहा से रिटायर होने के बाद कीनिया (पूर्वी अफ्रीका) मे भारतीय दर्शन और संस्कृति के प्रवक्ता के रूप म दो वर्ष के लिए गए हैं।

श्री वेदीराम जी एक प्रतिभावान प्रभावशाली वक्ता हैं। सुलझे हुए विद्वान हैं। सच्चे आर्य समाजी हैं। उनके विदेश मे जाने से आर्य समाज के प्रचार मे विदेशो मे वृद्धि होगी।

—

# आर्य हाई स्कूल बस्ती गुजां जालन्धर के छात्र ने स्वर्ण पदक प्राप्त किया

पजाब स्तरीय मिनी स्कूल नेशनल कुश्ती प्रतियोगिता विगत दिनो मोगा मे सम्पन्न हुई।

इसमे जिला जालन्धर के छात्र देवानन्द 31 किलो के मुकाबला मे तथा सुभाष चन्द्र 38 किलो के मुकाबला मे पजाब भर मे प्रथम रहे। ये दोनो छात्र आर्य हाई स्कूल बस्ती गुजा जालन्धर के हैं। देवान द आठवी कक्षा के छात्र हैं विगत वर्ष मिर्जापुर मे अखिल भारतीय मिनी स्कूल मुकाबला मे भी प्रथम स्थान प्राप्त कर स्वर्ण पदक भी प्राप्त किया था।

आर्य हाई स्कूल बस्ती गुजा जालन्धर के मुख्याध्यापक श्री राम कुमार शर्मा के नाम नेता जी सुभाष नैशनल इन्स्टीच्यूट आफ पटियाला ने स्कूल के मेधावी छात्र देवानन्द के लिए 900 रुपए का ड्राफ्ट भेजा है।

स्कूल की प्रबन्ध समिति स्टाफ एव मुख्याध्यापक महोदय एव कोच श्री श्याम सिंह भी इस छात्र को पूरी लग्न से आगे ले जाने के प्रयास मे हैं।

—

## आर्य समाज शकूरबस्ती दिल्ली का निर्वाचन

आर्य समाज दयानन्द मार्ग (रेलवे रोड) शकूरबस्ती, दिल्ली 34 की साधारण सभा की वार्षिक बैठक आर्य समाज के पूर्व प्रधान डा भारत भूषण की अध्यक्षता मे हुई और निम्न प्रकार से निर्वाचन आदि की कार्यवाही सर्वसम्मति के साथ सम्पन्न हुई—

प्रधान—सर्वश्री वेदी राम जी गुप्ता पूर्व उपशिक्षा निदेशक दिल्ली राज्य वरिष्ठ उप प्रधान प्रिंसिपल श्री व वेद प्रकाश जी त्यागी, उप-प्रधान-श्रीमती सुमित्रा देवी जी मन्त्री डा भारत भूषण उपमन्त्री श्री मानक चन्द जी कोषाध्यक्ष— [illegible] राम जी [illegible] श्री राजपाल जी आर्य श्री आर्य भूषण कु सुषमा शर्मा बी ए श्रीमति कृष्णा देवी अन्तरग सदस्य तथा आर्य महिला सत्सग सयोजिका, श्रीमती शकुन्तला देवी जी श्रीमती कृष्णा प्यारी जी प्रतिष्ठित श्री बनारसी दास जी वानप्रस्थी।

—भारत भूषण मन्त्री



श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

वर्ष 16 अक 33 12 मार्गशीर्ष सम्वत् 2040, तदनुसार 27 नवम्बर 1983, दयानन्दाब्द 159 । एक प्रति 40 पैस (वार्षिक शुल्क 20 रुपए

वेदामृत—

# देवों को यज्ञ से जगाओ

ले—श्री रामेश्वर शास्त्री सिद्धान्त शिरोमणि एम ए

उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवान यज्ञन बोधय ।
आयु प्राण प्रजा पशूम कीर्ति यजमान च वधय ॥
अथव 19 63 1 ॥

(ब्रह्मणस्पते उत्तिष्ठ) हे ब्रह्मणस्पति उठ (देवान यज्ञ न बोधय) देवो को यज्ञ से जगा (आयु प्राणम प्रजाम पशन कीर्तिम यजमानम च वधय) और आयु प्राण प्रजा पशु कीर्ति और यजमान को बढा ।

मन्त्र में ब्रह्मणस्पति को सम्बोधित करते हुए कहा गया है कि हे ब्रह्मणस्पत उठो यज्ञ से देवो को जगाओ और आयु प्राण प्रजा पशु कीर्ति और यजमान को बढाओ ।

मन्त्र का भाव भली भान्ति हृदयगम करने के लिए सर्व प्रथम हमे ब्रह्मणस्पति देव और यज्ञ इन तीन शब्दो के अर्थो पर ध्यान देना चाहिए ।

ब्रह्मणस्पति के अथ जानने के लिए ब्रह्मण और पति इन दोनो पदो के अथ जानने की आवश्यकता है क्योकि ब्रह्मण पति अर्थात् ब्रह्म का पति ब्रह्मणस्पति होता है । ब्रह्मन शब्द से षष्ठी विभक्ति के एक वचन मे ब्रह्मण पद बना है । ब्रह्म शब्द वेद ज्ञान यज्ञ ब्राह्मण अन्न और परमेश्वर आदि अनेक अर्थो मे प्रयुक्त होता है । सामान्यतया बृहत्वान ब्रह्म बडा होने या वर्धक होने से ब्रह्म कहलाता है । पति के अथ स्वामी रक्षक तो प्रसिद्ध ही हैं । इस प्रकार ब्रह्मणस्पति के अर्थ वेद रक्षक ज्ञान रक्षक यज्ञ रक्षक अन्न रक्षक आदि के हुए और साथ ही सज्जन करने वाले महापुरुषो के रक्षक एव स्वामी के भी समझने चाहिए ।

देव शब्द के भी अनेक अर्थ होते है जैसाकि पहले देव शब्द पर विचार करते हुए प्रकट किया जा चुका है । साधारणतया दिव्य गुण जिनमे हो या जो दूसरो को ज्ञान, धन, बल, प्रकाश आदि देते हो उन्हे देव कहते हैं । इस प्रकार भौतिक एव अभौतिक दोना प्रकार के पदाथ देव कहे जाते हैं । सूय अग्नि वायु चन्द्र इन्द्र वरुण मित्र विद्वान आदि के लिए देव शब्द का प्रयोग देखा जाता है ।

मन्त्र मे प्रयुक्त यज्ञ शब्द विशेष महत्व रखता है । यज्ञ शब्द सस्कृत की प्रसिद्ध यज देव पूजा सगतिकरणदानेष धातु से बना है जिसके तीन अथ हैं देव पूजा सगतिकरण और दान । यज्ञ वह कम है जिसमे देवो की पूजा हो और साधु सन्त महात्माओ की सगति प्राप्त हो या पदार्थो की विषमता को दूर कर उनमे साम्यता अनुकूलता उत्पन्न की जावे तथा कत्तव्य भावना स दूसरो की सहायताथ जीवनोपयोगी पदार्थो को दिया जावे । साधारणतया परोपकार के जितने कम हैं वे सब यज्ञ कहलाते हैं परन्तु विशेष रूप मे यज्ञ शब्द का प्रयोग अग्नि होत्र से लेकर अश्वमेध पयन्त किये जाने वाले अग्नि कर्मो के लिए ही होता है क्योकि अग्नि को ही यज्ञ का पुरोहित देव और दूत कहा गया है । इन सभी यज्ञो मे अग्नि को नियमानुसार प्रज्वलित किया जाता है और उसमे सुगधित रोगनाशक पुष्टिकारक तथा मिष्ट पदार्थो की आहुतियां शास्त्रीय विधान के अनुसार ही दी जाती हैं और श्रद्धापूवक यज्ञ कर्त्ताओ साधु सन्त एव विद्वानो का अ न वस्त्र धनादि दान द्वारा यथायोग्य सत्कार किया जाता है । इसका उद्देश्य जलवायु और अ तरिक्ष को विशुद्ध बनाते हुए प्राणीमात्र की भलाई करना है और वेदज्ञ महात्माओ के सम्पर्क एव उपदेश से अपनी दिव्य शक्तियो को जगाकर अभीष्ट सुखो के अधिकारी बनकर उन्हे प्राप्त करना । यजुर्वेद के प्रथम मन्त्र में इष त्वोर्जेत्वा कहकर यज्ञ को अन्न तथा रस का उत्पादक बतलाया है और ये दोनो जीवन के लिए अनिवार्य हैं । शतपथ ब्राह्मण ने 'यज्ञो वै श्र ष्ठतम कम कहकर यज्ञ को श्र ष्ठतम कम बतलाया है । यज्ञ मे जिन पदार्थो की आहुतियां दी जाती हैं वे अग्नि द्वारा अत्यन्त सूक्ष्म रूप को प्राप्त होकर अन्तरिक्ष मण्डल मे फैल जाते है और अन्तरिक्ष जलवायु का भली भांति शोधन कर उन्हे सुगधित एव पुष्टिकारक बनाता है । इस जलवायु के योग स पृथ्वी की उवरा शक्ति बढती है और रोगनाशक एव पुष्टिकारक औषधि वनस्पति अन्न रस फल फूल आदि की पदावार अधिक हो जाती है । पदावार अधिक हो जाने से मनुष्य पशु पक्षी कीट पतग आदि सभी प्राणियो का जीवन निर्वाह सरलता से हो जाता है । खिलाने पिलाने की अपेक्षा यज्ञ के द्वारा अधिक उपकार होता है क्योकि इस की अग्नि मे आहुत हुए पदार्थो का लाभ अधिक से अधिक लोगो को प्राप्त होता है और त्याग भाव से किया गया यह दान शत्रु मित्र निरपेक्ष होने से मानव मात्र के लिए कल्याण का कारण होता है । ऋषि मुनि स्थूल की अपेक्षा सूक्ष्म मे अधिक शक्ति मानते हैं और स्थूल की अपेक्षा सूक्ष्म का प्रभाव व्यापक होता है । यह कभी नही सोचना चाहिए कि यज्ञ की अग्नि मे आहुत हुए पदार्थो का नाश हो जाता है बल्कि यह सोचना चाहिए कि किस प्रकार अग्नि पदार्थो को सूक्ष्म कर उनके प्रभाव को बढा कर अधिक दूर तक पहुचा देती है । इसी बात को समझाते हुये मनु महाराज ने कहा—

अग्नौ प्रास्ताहुति सम्यगादित्यमुपतिष्ठते ।

आदित्याज्जायते वृष्टिर्वृष्टेरन्न तत प्रजा । मनु 3 76 ।

अग्नि म डाली हुई आहुति आदित्य (सूय) को प्राप्त होती है और आदित्य से वर्षा होती है । वर्षा से अन्न और अन्न से प्रजा उत्पन्न होती है ।

योगिराज भगवान श्री कृष्ण ने भी गीता मे कहा है—

अन्नाद भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसम्भव ।

यज्ञाद भवति पर्जन्यो यज्ञ कम समुद्भव । गीता 3 14 ।

प्राणी अन्न से उत्पन्न होते हैं । अन्न की उत्पत्ति वर्षा से होती है । वर्षा यज्ञ से होती है और यज्ञ कम से होता है ।

शतपथ ब्राह्मण मे कहा है—

अग्ने वैं धूमो जायते धूमादभ्रमभ्राद वृष्टि शतपथ 5 3 ।

अग्नि से धूम उत्पन्न होता है धूम से मेघ और मेघ से वृष्टि उत्पन्न होती है इस प्रकार अग्नि मे आहुत हुए पदाथ नष्ट नही होते बल्कि अत्यन्त सूक्ष्म रूप होकर प्राणिमात्र के कल्याण का कारण होते हैं ।

मन्त्र मे प्रभु आदेश देते है—

उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पत देवान यज्ञ न बोधय

हे ब्रह्मणस्पते उठो और सावधान होकर यज्ञ से देवो को जगाओ ।

मनुष्य को सम्बोधन करते हुये यहा ब्रह्मणस्पते ! कहा गया है । इसका अभिप्राय है कि मनुष्य ब्रह्मणस्पति बन सकता है और प्रभु का आदेश है कि वह ब्रह्मणस्पति बने पर यह तभी हो सकता है जब कि वह अपने मे ब्रह्मणस्पति बनने का भाव ले आये । उसमे इस भाव को जगाने के लिये ही उसे ब्रह्मणस्पते कहकर सम्बोधित किया गया है । मनुष्य स्वभाव से ही महत्वाकांक्षी हैं केवल उधर उसके ध्यान को आकृष्ट करने की आवश्यकता है लोक मे भी हम देखते हैं कि लोग अपने सगी साथियो को ऊचा उठाने के लिये उन्हे प्रारम्भ से ही डाक्टर वकील बरिस्टर नेता आदि अनेक नामो से पुकारते हैं और कालान्तर मे वे उन्नति करते करते वसे बन भी जाते हैं ।

वदिक सस्कृति मे नामकरण सस्कार का बहुत बडा महत्व है । बालक का नाम बहुत सोच समझ कर रखने का विधान है जिसस वह अपने नाम से प्रेरणा प्राप्त कर आगे चलकर अपने आपको वैसा बना सके ।

मन्त्र मनुष्य को चेतावनी देता है कि ऐ मनुष्य तेरे मे अनन्त दिव्य शक्तियां छिपी हुई हैं तू उनके विकास से अपने का समुन्नत कर और अन्न धन ज्ञान आदि का स्वामी एव रक्षक बनकर सच्चा ब्रह्मणस्पति बन । उत्तिष्ठ उठ बठ और सावधान होकर यज्ञ मे अथात परोपकार के उत्तमोत्तम कर्मो द्वारा अपनी सोयो हुई दिव्य शक्तियो को जगा और उनकी सगायन से कल्याण ... हाता हुआ

(शेष पृष्ठ 7 पर)

# मन उत्कृष्ट ज्ञान का साधन है ?

ले—श्री सुरेशचन्द्र वेदालकार एम ए एल टी
175 जाफरा बाजार गोरखपुर

यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतप्रजासु ।
यस्मान्न ऋते किचन कर्म क्रियते तन्मे मन शिव सकल्पमस्तु ॥
यजु 34।3

(यत) जो (मन) मन (प्रज्ञानम) उत्कृष्ट ज्ञान का साधन (उत) और (चेत) दूसरे को चिताने वाला (च) तथा (यत, जो (प्रजासु) प्रजाओ के (अन्त) अन्दर (अमृतम) अमृत (ज्योति) ज्योति है और (यस्मात) जिसके (ऋते) बिना (किचन) कुछ (कम) काम (न) नही (क्रियते) किया जाता है (त मे मन) वह मेरा मन (शिव सकल्प मस्तु) शिव सकल्पो वाला हो।

सफलता न भविष्य के गर्भ में छिपी हुई है न वह असम्भव है। वह आपके निकट है, आपकी पकड के भीतर है। बस उसे आपके लेने भर की देर है। सुअवसर आने वाला नही है, वह आ गया है। स्वर्ग और कही नही वह आपके हृदय मे, मन मे छिपी हुई वस्तु है।

मन सकल्पो का केन्द्र है। सकल्प ही वह शक्ति है जिसके द्वारा मनुष्य इस विश्व मे अनेक प्रकार के चामत्कारिक काय कर सकता है। ससार का प्रज्ञान प्रकृष्ट ज्ञान प्राप्त करने का साधन यह मन है। विद्यालयो मे प्राप्त की जाने वाली विद्या या शिक्षा मन का विषय है। आज का मनो वैज्ञानिक इसके लिए अनेक परीक्षण मन पर कर रहा है, प्राचीन मनो वैज्ञानिको ने परीश्रम करके ज्ञान का आधार मन को माना है। प्रज्ञान का अर्थ करते हुए महर्षि दयानन्द ने लिखा है 'प्रजानाति येन तद बुद्धि स्वरूपम प्रकृष्ट ज्ञान का साधन बुद्धि मन का जो भाग मस्तिष्क मे रहता हुआ काम कर रहा है उसे प्रज्ञान अथवा बुद्धि कहते हैं। बुद्धि का लोक मन का प्रकाश मय लोक है। ज्ञानेन्द्रियो के द्वार जो विषय प्रकाश मे आते हैं कसौटी पर घिस कर उनकी परख मन के इसी लोक मे होती है। निदिध्यासन की सभी क्रियाए मन के इसी भाग से सम्बन्धित हैं।

साहित्यिक भौतिक एव आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति मन बिना असम्भव है। ज्ञान और कम दोनो मन के द्वारा ही हो सकते हैं। ज्ञान की प्राप्ति के लिए जब हम अपना मन किसी विषय विशा म लगाते हैं तो हमारा ध्यान सामारिक विषयो से भी हट जाता है। भोग के साधन विद्यमान रहते हैं परन्तु मनुष्य उनका भोग नही करता, उसका मन ज्ञान मे रमता है।

एक घटना कही पढी थी। यह घटना इस प्रकार विख्यात है कि बगाल के एक भट्टाचार्य महोदय ने ज्ञान प्राप्त करने के बाद चारो वेदो के भाष्य का सकल्प किया। वे भाष्य मे मग्न गये। धन, दौलत सन्तान तथा युवावस्था के भोगो से उनका मन हट गया। घर मे सन्तान आनी तो दूर की बात हो गई, धन के बिना माता को कष्ट होने लगा। मा ने अपने अनुसार एक उपाय सोचा और उनकी सगाई कर दी। विवाह हुआ। पत्नी आई। युवावस्था थी। वेदो के भाष्य या ज्ञान सग्रह मे लगे इस युवक को अपनी पत्नी की ओर ध्यान देने का अवसर तक न मिला। सौभाग्य से उसकी पत्नी भी इतनी योग्य निकली कि उनके वेद भाष्य के काय मे उनका सहयोग दिया। 62 वष की अवस्था के बाद जब वेद भाष्य पूरा हुआ तो उन्होने सुख की सासें ली। चान्दनी रात थी। स्त्री पास मे सो रही थी। वेद भाष्य हो चुका था। ज्ञान प्राप्ति के समय काम की जिस वासना का उनको अनुभव तक न हुआ था, चादनी के समान सफद उज्ज्वल बालो वाली पत्नी को देखकर इस वृद्धावस्था मे काम ने प्रेरणा दी। पर, पत्नी ने कहा 'प्रियवर भाष्य तो हो गया पर अभी वेद प्रचार बाकी है। आइए अब हम उस दिशा की ओर बढ़ें। सचमुच उन्होने वेद प्रचार का कार्य प्रारम्भ किया। दोनो दो दिशाओ म गए और ब्रह्मचय का पालन करते हुए उन्होंने अन्त मे एक दिन एक ही स्थान पर अपने प्राणो का विसजन किया। यह घटना इस बा[illegible] है। कि ज्ञान प्राप्त करने के लिए मन को ज्ञान मे लगाना आवश्यक कार्य हो जाता है। इसीलिए मन को ज्ञान का आधार कहा गया है।

पढा हुआ ज्ञान व्यथ है। यदि इस ज्ञान पर हमने चिन्तन न किया इसका मन। न किया और इसको काय रूप प्रयोग मे न लिया तो यह ज्ञान कम के बिना लगडा हो जाएगा।

पढा हुआ ज्ञान व्यर्थ है। यदि इस ज्ञान पर हमने चिन्तन न किया इसका मनन न किया और इसे कर्म के रूप मे प्रयोग मे न लिया तो यह ज्ञान कम के बिना लगडा हो जाएगा। इसलिए ज्ञान का उपयोग चिन्तन है। यह चिन्तन साहित्य का निर्माण करता है, यह चिन्तन विज्ञान के आविष्कार करता है, यह मन नई नई कलाओ का निर्माता है, चित्रो का सृष्टा है। भवनो का रचयिता है मूर्तियो का अधिष्ठाता है। यह सब मन की चिन्तन शक्ति का ही परिणाम है कि वेद व्यास हुए, वाल्मीकि ने रामायण लिखी गौतम, कपिल कणाद ने दर्शनो का विस्तार किया। स्वामी दयानन्द ने अपने चिन्तन द्वारा सत्यार्थ प्रकाश किया सुकरात ने इसी मन की चिन्तन शक्ति की बदौलत अपने का भुलाकर यूनान मे सत्य का मार्ग दिखलाया। सुकरात चिन्तन करते समय भोजन आच्छादन सब कुछ भूल जाता था। सुना है कि उसकी पत्नी बिना उसे भोजन कराये भोजन न करती थी। एक दिन की बात है कि चिन्तन मे रत सुकरात को जब वह भोजन के लिए कहती हार गई तो लाचार होकर उन पर बिगडने लगी। उसका भी जब अपने चिन्तन मे लगे हुए सुकरात पर कोई प्रभाव न पडा तब उसने पानी से भरा सम्पूण घडा उन पर उडल दिया चिन्तनशील सुकरात हसा और उसने कहा—आज मुझ चिन्तन का एक नया फल मिला है। वह यह कि आज तक मैं सोचता था कि जो गरजते हैं वे बरसते नही पर तुम इसका अपवाद हो। तुम गर्जती भी हो और बरसती भी। यह है चिन्तन शक्ति का फल।

धैय भी मन का ही गुण है। मृत्यु भयावनी होती है परन्तु वह कायरो को भयभीत करती है धैर्यशाली बहादुर मृत्यु से भयभीत नही होते। कबीर ने कहा है, मरने से ही पायो पूरन परमानन्द मन मे धैर्य आ जाने पर ही वन्देमातरम का जप करते करते छोटे 2 बच्चे भी हस-हसकर कोडे खा लेते थ। भारत माता की जय बोलते बोलते शहीद फासी के तख्ते पर चढ जाते थे। इसी मन के कारण स्वामी दयानन्द और आय समाज के [illegible] श्रद्धानन्द और न जाने कितने व्यक्तियो ने अपने प्राणो को बलि दे दी, इसी मन के कारण महात्मा गाधी की जय बोलते हुए स्त्रिया भी अपने सिर पर लाठी का प्रहार सहन करने लगी। रोशनलाल और शचीन्द्र ने फासी का रस्सी को चूमा। यतीन्द्र बटुकेश्वर दत्त और भगतसिंह ने 60 60 दिन तक अनशन किया। इसी मन की शक्ति से यह देखने के लिए कि मैं अपने को कितना सयम मे रख सकता हु, राजगुरु वेश्या के पास गए, रात भर रहे तथा मन मे किसी प्रकार का कोई विकार न लाए, इसी मन की शक्ति से अपनी दृढ़ता की परीक्षा के लिए सुखदेव ने हसते हसते जलती मोमबत्ती से अपनी बाँह जला दी और उफ तक नही किया, इसी मन की शक्ति से इन्कलाब जिन्दाबाद के नारो के साथ क्रान्तिकारी लोग गोलियो के सामने सीना तान कर खडे हो जाते थे। धैय भी मन से होता है। इसका विकास इस प्रकार होता है—

ससार के अधिकाश मनुष्य साधारण जीवन यापन के कार्यों मे सलग्न रहते हैं भोजन उपार्जन करना, सन्तान का पालन करना इनके लिए धन सग्रह करना धन सग्रह मे बाधा डालने वालो से लडना, तथा उसमे सहायता देने वालों से [illegible] करना आदि कार्य प्रत्येक व्यक्ति करता है। मनुष्य स्वभाव की यह विशेषता है कि वह सभी पदार्थों और क्रियाओ का मूल्य आकता है और वह उस काय मे अपने को लगाता है जिसे वह मूल्यवान समझता है। यह मूल्याकन अपने बौद्धिक दृष्टिकोण पर निर्भर करता है। यह बौद्धिक विचार ही उसकी विभिन्न क्रियाओ मे एकता लाता है। जिस व्यक्ति के दार्शनिक विचार बौद्धिक दृष्टिकोण जितना ही गम्भीर और ठोस होगा वह अपने कार्यों मे उतनी ही लग्न और कार्य क्षमता प्रदर्शित करेगा। कहने का तात्पर्य यह है कि बुद्धि ही कर्मों की जननी है। यह बुद्धि या विचार शक्ति कैसे उत्पन्न होती है इसको समझने के लिए हमे मन के पास पहुचना पडगा। मनोवैज्ञानिक मन मे सचय, सप्रयोजनता और सम्बद्धता नामक तीन शक्तिया मानते हैं। इनमे से सचय शक्ति के द्वारा हम अपने अनुभवो के सस्कार को सचित करते हैं और यह अवशिष्ट ससार हमारे वतमान आचरण को प्रभावित करता है। सचय श प्राणिमात्र मे होती है। स्मृति उच्च वग के जीवनधारियो विशेषत मनुष्यों मे पाई जाती है। विचार कल्पना आदि जितनी बौद्धिक क्रियायें हैं मानव वैशिष्ठ्य की बोधक है, उन सबका आधार स्मृति है। हम जो अनुपस्थित व्यक्तियो के विषय मे बातचीत करते हैं अतीत की घटनाओ की आलोचना करते हैं,

जिस भूतकाल के आधार पर निर्मित करते हैं वह सब स्मृति का फल है। मनुष्य जीवन में स्मृति का बहुत बडा महत्व है। ज्ञान विज्ञान, साहित्य कला का आधार स्मृति है। स्मृति मन की मूल शक्ति सचय के कारण होती है अत बौद्धिक कार्यों का या बुद्धि का उत्पादक मन है।

(क्रमश)

सम्पादकीय—

# निर्वाण शताब्दी या बलिदान शताब्दी

महर्षि दयानन्द की निर्वाण शताब्दी तो मने गई। कैसी हुई है इसके विषय में भिन्न भिन्न विचार प्रकट किये जा रहे हैं। जहा तक साधारण आय जनता का सम्बन्ध है उन्होंने अपने कत्तव्य को पूरा कर दिया। हजारों की सख्या मे वहा नर नारी पहुच गये जो अव्यवस्था और कुप्रबन्ध वहा देखा गया उससे सब को कष्ट हुआ है परन्तु जो लोग वहा गये थे, यह जानते हुए गये थे कि सम्भवत वहा प्रबन्ध ठीक न होगा। फिर भी महर्षि दयानन्द के प्रति उनके दिलो मे जो श्रद्धा है वह उन्हे वहा खीच कर ले गई। मैं इस समय उस समारोह के प्रबन्ध और उसकी अव्यवस्था के विषय मे कुछ लिखना नही चाहता। इसका कोई परिणाम भी न निकलेगा। हम इतना ही कह सकते है कि जहा तक प्रबन्धको का सम्बन्ध है उन्होने अपना कत्तव्य नही निभाया जहा तक आय जनता का सम्बन्ध है उन्होने महर्षि दयानन्द के प्रति अपनी श्रद्धा का प्रदशन करने के लिय जो कुछ उनसे हो सकता था उन्होंने कर दिया। कई बार देखा गया है कि कई बड़ी बड़ी सस्थाओ का सत्यानाश केवल अयोग्य और दिशाहीन नेतृत्व के कारण हो जाता है। यही कुछ हमने अजमेर मे भी देखा है। आय समाज की आज जो स्थिति है उसका एक अत्यन्त ही धूमिल पक्ष हमारे सामने अजमेर मे आया है। जितने लोग वहा गये थे और जितना रुपया खच हुआ है उसका यदि सदुपयोग किया जाता तो यह आय समाज के इतिहास का एक गौरवमय अध्याय बन जाता। परन्तु अजमेर भी उसी प्रकार एक मेला बनकर रह गया जिस प्रकार 1975 मे दिल्ली की शताब्दी एक मेला बन कर रह गई थी। न 1975 मे आय समाज के सामने कोई नया कायक्रम रखा गया था न अब 1983 मे रखा गया है। देश के कोने कोने से लोग अजमेर पहुचे थे। वे खाली हाथ गये और खाली हाथ वापिस आ गये। यदि कुछ सन्तोष उन्हे हो सकता है तो केवल यह कि उन्होने उस स्थान के दशन कर लिये जहा उनके आचाय ने अपनी जीवन लीला समाप्त की थी। इससे अधिक अजमेर मे हमे कुछ भी नही मिला। यही हम कह सकते है कि शताब्दी समारोह हो गया लेकिन क्या हुआ और क्या नही यह एक और प्रश्न है। आय समाज मे जो दलबन्दी चल रही है इसका लज्जा जनक प्रदशन वहा भी हुआ। जिन महानुभावो के हाथ मे इस समारोह का प्रबन्ध था और जो इसके कार्यक्रम की सारी व्यवस्था कर रहे थे यदि वे दलबन्दी से ऊपर उठकर एक विशाल हृदय से इस समारोह को मनाते तो सम्भव है आर्य समाज का एक विशाल और उज्ज्वल रूप ससार के सामने आ जाता। अब तो कुछ भी ऐसा नही जो हम दूसरो के सामने पेश कर सकें। हम वहा गये अवश्य और अपने आचाय के चरणो मे अपनी श्रद्धाजलि भेंट करके वापस आ गये। हमे यह नही पता चला कि आय समाज के नेतागण अब इस महान् सस्था को कौन सी दिशा देना चाहते हैं। कुछ समय हुआ मैंने लिखा था कि आय समाज एक नेतृत्वहीन और दिशाहीन सस्था है। अजमेर शताब्दी ने मेरे इस विचार की सम्पुष्टि कर दी है।

परन्तु आज तो मैं एक और प्रश्न की ओर आय जनता का ध्यान दिलाना चाहता हू। आय समाज के विख्यात विचारक श्री प युधिष्ठिर जी मीमासक ने एक प्रश्न उठाया है। वह यह कि जो शताब्दी अभी मनाई गई है वह दयानन्द निर्वाण शताब्दी थी, अथवा बलिदान शताब्दी। उनका कहना है कि आय समाज मे बहुत से शब्दो का प्रयोग बिना सोचे समझे किया जाता है उनमे एक शब्द निर्वाण भी है। उसके क्या अर्थ हैं, इस पर अपने विचार प्रकट करते हुये उनका कहना है कि 'दयानन्द निर्वाण शब्द का प्रयोग दयानन्द का मोक्ष अर्थ मे होता है। उनके विचार मे भारतीय सस्कृति के अनुसार महापुरुष का जन्म दिवस ही मनाया जाता है न कि मृत्यु दिवस। मृत्यु दिवस मनाने की परम्परा अनार्यों की है। जो निर्वाण आदि तत्व को नही मानते हैं आय समाज जन्म दिन पव ही मनाती रही है। जिस प्रकार आर्यों मे राम कृष्ण आदि महापुरुषो आदि के जन्म दिन पव के रूप मे मनाये जाते हैं उसी प्रकार जिन महापुरुषो ने धम देश और जाति की रक्षा के लिये अपने प्राणो तक दिये उन महान व्यक्तियो के आत्मोत्सर्ग की स्मृति को बनाये रखने और उससे प्रेरणा प्राप्त करते रहने के लिए हम उन महापुरुषो के बलिदान दिवस भी मनाते हैं।

श्री मीमासक का यह निश्चित मत है कि हमे निर्वाण शताब्दी नही मनानी चाहिए थी बलिदान शताब्दी मनानी चाहिए थी। वे लिखते है कि—बलिदान शताब्दी शब्द से दयानन्द का जो गौरव साधारण मनुष्य के सामने आना है वह निर्वाण शताब्दी शब्द से प्रकट नही होता।

श्री युधिष्ठिर मीमासक जी ने जो कुछ लिखा है उसकी अवहेलना नही की जा सकती। यह दूसरी बात है कि जो शताब्दी मनानी थी वो मनाई जा चुकी है। परन्तु श्री मीमासक जी ने जो प्रश्न उठाया है इस पर पहले विचार करने की आवश्यकता थी। निर्वाण शताब्दी तो सब मनाते हैं। बलिदान शताब्दी का एक और महत्व है। यही शताब्दी यदि बलिदान शताब्दी के रूप मे सामने आती तो मानव के उद्धार के लिए महर्षि दयानन्द ने जो प्रयास किए थे और अन्त मे उन्हे उसका जो मूल्य देना पड़ा वह सब सामने आ जाता। एक और लिहाज से भी यह बलिदान शताब्दी थी क्योंकि पिछली एक शताब्दी मे आय समाज ने धार्मिक राजनतिक और सामाजिक क्षेत्र मे कई बलिदान दिए हैं। प लेखराम श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज महाशय राजपाल जी और दूसरे कई महानुभावो ने अपना बलिदान देकर अपने खून से आय समाज के पौधा को सींचा था। दूसरी तरफ राम प्रसाद बिस्मिल भगतसिंह और सुखदेव जी जसे आय समाजी नवयुवको ने देश के बलिदान के लिए अपना सवस्व न्यौछावर कर के आय समाज के नाम को उज्ज्वल किया था। इसलिए यदि हम इसे निर्वाण शताब्दी न कह कर बलिदान शताब्दी कहते तो लोगो पर उसका कुछ और प्रभाव होता और भविष्य मे आने वाले इतिहासकार इस शताब्दी को एक और रूप मे इतिहास मे स्थान देते। परन्तु यह सब कुछ आर्य समाज की वतमान परिस्थिति का एक अत्यन्त धूमिल रूप हमारे सामने रखता है। श्री प युधिष्ठिर जी मीमासक जैसे आय समाज के एक महान सेवक ने तो इस पर विचार कर लिया परन्तु जिन्हें करना चाहिए था उन्होने नही किया। और ऋषि निर्वाण शताब्दी मनाने के लिए पहले बढ़कर कोई विचार नहीं किया गया पर [illegible] हम उस पर गव नही कर सकते।

—वीरेन्द्र

# एक अनुकरणीय दान

पिछले दिनो एक परिपत्र के द्वारा मैंने पजाब की सब आय समाजो से यह निवेदन किया था कि अब जब कि सर्दी का मौसम शुरू हो गया है हमे अपने उन भाईयो की सहायता करनी चाहिए जो आर्थिक रूप मे समृद्ध नही है और जिनमे से कईयो के पास अपने तन को ढापने के लिए गम कपड़ा भी नही है। इसलिए मैंने कहा था कि आय समाजें को ऐसे पिछड़े वग के भाईयो को रजाईया कम्बल और स्वैटर आदि गम कपड़े देने चाहिए। मेरी इस अपील पर हसराज कन्या महाविद्यालय जालन्धर की प्राचार्या बहन कमला सना ने मुझे 11 नए कम्बल भिजवा दिए है और कहा है कि इन्हे उन बहनो या भाईयो को दे दिया जाए जिनके पास सर्दियो मे ओढ़ने के लिए कोई कपड़ा नही है। इसके लिए मैं बहन कमला का धन्यवाद करता हू। उन्होने आय समाजियो के सामने एक अच्छा उदाहरण रखा है। यदि हम सब उनके पद चिन्हो पर चलते हुए अपने आर्थिक रूप से पीड़ित भाईयो की कुछ सेवा कर सकें तो यह आय समाज की एक बहुत बड़ी सेवा होगी।

—वीरेन्द्र

# स्वराज्य प्रवर्तक एवं देश भक्त स्वामी दयानन्द सरस्वती

ले —प्रिंसीपल विमला छाबडा बरनाला

जगत गुरु स्वामी दयानन्द जी, ि हे वेदो द्धारक आय समाज सस्थापक समाज सधारक तथा महान ऋषि के रूप मे तो आज सारा विश्व जानता है। परन्तु वह स्वराज्य प्रवतक भी थे और उ होने 1857 के स्वत त्रता सग्राम मे मे क्रियात्मक योगदान दिया था इस तथ्य से बहुत कम लोग परिचित हैं। लोगो की कल्पना मे एक सन्यासी धम के क्षत्र मे ईश्वर भक्ति सत्य त्याग एव समाज सुधार आदि की बात तो कर सकता है परन्तु वह राजनीति मे भी अपना क्रिया त्मक योगदान दे सकता है यह असभव है। स्वामी दयानन्द जी स्वराज्य के प्रवतक थ। यह बात उन्हे अतिशयोक्ति पूण तथा ऋषि भक्तो द्वारा उनके सम्मान को बढाने के लिए कही गई प्रतीत होती है उनकी दृष्टि मे 1857 मे स्वराज्य प्रवतम स्वतन्त्रता सेनानी मराठा नेता नाना धधूपन्त पेशवा तथा झासी की रानी थ तथा आधुनिक काल मे महात्मा गान्धी तथा प नेहरू जी थे। वस्तुत सत्य यह है कि महर्षि दयानन्द जी नाना धु धु पन्त तथा झासी की रानी लक्ष्मीबाई के समकालीन थे। वह बड विद्वान तथा शक्तिशाली थे। उनके हृदय मे देश की करुणा जनक स्थिति को देख कर असीम पीडा थी तथा उनका तत्कालीन राजाओ के साथ पर्याप्त सम्पक था। वे समय समय पर उ हे प्रे रित करते रहते थे। इसके अतिरिक्त भारत सदव साध सन्या सियो के प्रति आस्थावान रहा है। जिस प्रकार आधुनिक काल मे भारत की प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा ग धा जो कि आज विश्व की सर्वाधिक शक्ति शालिनी महिला प्रशासिका मानी जाती हैं जिन्हे कोई दुर्गा तथा कोई झास की रानी की सज्ञा देते हैं वह भी हमेशा चुनावो से पूव या सकटकालीन स्थिति मे आशीर्वाद तथा माग दशन प्राप्त करन के लिए कभी किसी साधु के पास जाती है तो कभी किसी स यासी क पास इसी प्रकार पहले भी जितन राज महाराज हुए है व भी सकट कालीन अवस्था म साधु सन्तो व ऋषियो महर्षियो के पास जाया करते थ तथा उनसे शिक्षा दीक्षा प्राप्त क ते थे तथा अपने राज्य हित सम्बन्धी उपाय पूछा न े म भ रत काल मे व पा व सवदा कमजोगी श्री कृष्ण जी विदुर जी व भीष्म पिता मह के पास परामश के लिए आया करत थे। महाराज दशरथ राजर्षि विश्वामित्र तथा महर्षि वसिष्ट जी से माग दशन प्राप्त करते थे। भारत सम्राट चन्द्रगुप्त बाल ब्रह्मचारी महात्मा चाणक्य के माग निर्देशन मे काय किया करते थे। ठीक इसी प्रकार सन 1857 मे जब ब्रिटिश सत्ता के उन्मूलन के लिए सब प्रथम स्वतन्त्रता सग्राम हुआ तब भारतीय शासक सन्यासियो से माग दशन एव आशीर्वाद प्राप्त करने आया करते थे। 1857 के स्वतन्त्रता सग्राम सेनानी। (1) नाना धु धुपन्त राव पेशवा (2) श्री बाला साहब (3) श्री अजीमुल्लाखा (4) श्री तात्या टोपे (5) श्री बाबू कुवर सिह (जगदीशपुर के जिमीदार) (6) झासी की रानी आदि जिन्होने स्वतन्त्रता सग्राम मे प्रत्यक्ष रूप मे योगदान दिया उनकी पृष्ठ भूमि मे भी उनके निर्देशक सन्यासी गण ही थे स्वामी दयानन्द जी उन्ही माग दशको मे से एक थे।

स्वामी दयानन्द जी ने सन 1848 मे 24 वष की अवस्था मे नमदा तट वासी स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती से सन्यास की दीक्षा ली। तत्पश्चात वे जयपुर आबू अजमर मारवाड अलवर व देहली आदि स्थानो मे होते हुए सन् 1855 मे कुम्भ के मेले पर हरिद्वार पधारे। इन्ही आठ वर्षो मे साधु मण्डली के साथ रहते हुए आपको भारत की राजनीतिक शोचनीय अवस्था का मार्मिक परिचय प्राप्त हुआ जिसने उन्हे भारत की स्वतन्त्रता के सम्बन्ध मे चिन्ता करने के लिए विवश कर दिया। उदाहरणाथ देहली मे यमुना तट पर हरिद्वार जाने वाल साधओ के साथ जब स्वामी जी की भट हुई वहा निकट खड एक छोटे से बालक ने जो बात कही उसन उनकी आख खोल दी। वह बालक अलिगढ के स हसी योद्धा दयाराम का बेटा था। उस के पितामह अपने हाथरस स्थित दुग की रक्षा करत हुए लाड हेस्टिग्ज की गोला बारी मे शहीद हो गए थे। उस बच्चे ने साधु मण्डली के प्रति घणा प्रकट करते हुए अपनी मा से कहा— माता जी! हमारा देश और धम ईसाई अग्रेज शासको एव पादरियो क अत्याचारो के कारण नष्ट हो रहा है। और ऐसे लाखो साधु बाबा केवल पेट पूजा मे ही मस्त हैं। देश और धम के बारे कुछ भी चिन्ता नही करते। इनके लिए पेट ही भगवान है पेट ही सब कुछ है। उस बच्चे की बात सुन कर अन्य साधु तो क्रुद्ध होकर उसे शाप देने लगे परन्तु सत्य के पुजारी स्वामी दयानन्द जी ने उसे सान्त्वना देते हुए कहा—

बच्चे! तेरी सब बातें यथार्थ हैं। इनसे मेरी तो आख खुल गई हैं।

इसके बाद जब स्वामी जी साधु मण्डली के साथ लाल किले के सम्मुख बठे थे तब एक महाराष्ट्र निवासी साधु ने एक मार्मिक बात कह दी— आइये आप हरिद्वार के कुम्भ पर स्नान करके पवित्र हो जाइये परन्तु जब तक हमारे देश और धम को विदेशी राहु ने ग्रस रखा है और धीरे धीरे हमारी सुख शान्ति शिक्षा सभ्यता सस्कृति सम्पदा व ऐश्वय को हजम किए जा रहा है जब तक विदेशी ईसाई पादरी हमारे भाई बहिनो को धमच्युत करके उन्हे देश द्रोही बनाए जा रहे हैं और जब तक राहु केतु रूपी विदेशी सत्ता और विधर्मियो के पजे से देश और धम पूणत विमुक्त नही करा लिया जाता तब तक हम गगा स्नान से शुद्ध होने मे विश्वास नही करते।

ये शब्द भी स्वामी जी के मन मस्तिष्क पर दृढता पूवक अकित हो गए।

इसी यात्रा के मध्य मे कुछ साधुओ से स्वामी जी को मेलोर (दक्षिण) और बारिकपुर (बगाल) के सनिक विद्रोह और उसे दबाने के लिए अग्रजो द्वारा किए गए अत्याचारो की करुण कथाए भी सुनने को मिली। जिन्हे सुनकर उनके रोगटे खड हो गए। मेलोर विद्रोह के समय लाड बैंटिक मद्रास के गवनर थे। उनकी अनुमति से फैडरिक नाम के सेनापति ने देशी फौजी सिपाहियो के लिए निम्न सैनिक आदेश प्रसारित किए।

(1) सब फौजियो को कम्पनी द्वारा दी गई टोपिया पहननी होगी। (उस टोपी के ऊपर गाय का चमडा और भीतर सूअर का चमडा लगा हुआ था।)

(2) सभी को दाढी मूछ और चोटी सफा करा दनी होगी।

(3) मस्तिष्क पर तिलक लगाना कन्ध पर जनेऊ धारण करना या गले मे माला अथवा तस्वीर पहनना निषिद्ध होगा।

(4) कोई हिन्दू सिपाही सन्ध्या और और मसलमान नमाज नही पढ सकेगा और परमात्मा या खुदा का नाम ले सकेगा।

यह आदेश भारतीय सैनिको पर अत्याचार की हद थी। इस आदेश का जब सनिको ने कडा विरोध किया तो उन्हे हथकडिया लगाकर दो दिन तक भूखा प्यासा रखा। उसके बाद उनके नेताओ के जीवित शरीरो पर से खाल खीच ली गई और चमहीन मृत देहो को ठलो मे डाल कर जलूस निकाला गया तथा शेष विद्रोहियो को मार्शल ला के आधीन गोलियो से भून दिया गया।

इसी तरह का अत्याचार बैरकपुर (बगाल) मे सन् 1821 22 मे किया गया। जिन सैनिको ने ब्रह्मा मे जाकर लडने से इन्कार किया उन्हे गोलियो से उडा दिया और उनकी लाशो को पूरे सप्ताह प्रदशनी के रूप मे गगा तट पर रखा गया वहा हिंस पशु पक्षियो ने उन का मास नोच डाला। तत्पश्चात लाशो को गगा म बहा दिया।

इन कथाओ ने स्वामी जी के हृदय में गहरे घाव कर दिए। फलस्वरूप उन्होने भारत की इस दारुण अवस्था पर चिन्तन करना आरम्भ किया।

कुम्भ के मेले पर स्वामी दयानन्द जी ने हरिद्वार मे चण्डी मन्दिर मे निवास किया। वहा पर सन 1855 मे देश के स्वतन्त्रता सेनानी धु धुपन्त (नाना साहब) श्री बाला साहब श्री अजीमुल्ला खा श्री तात्या टोपे तथा बाबू कुवर सिह उनसे मिलने आए व उनसे माग दशन प्राप्त किया। श्री नाना साहब ने उनसे पूछा— विदेशी विधर्मी अग्रज आकर हमारे देश और धम को कैसे ग्रस रहे हैं और इन्हे कसे रोका जाए।

स्वामी जी न उत्तर दिया— किसी विदेशी राजा को किसी विदेश पर हकूमत चलाने का हक नही है। हिंस पशुओ की भाति हम पर जबरदस्ती शासन चला रहे हैं। भारत को पद दलित करना उनके लिए पाप है। और उस अत्याचार को सहन करते चले जाना हमारे लिए घोर अपराध है महा पाप है।

यह थी स्वामी जी की स्वराज्य के लिए पहली हुकार। इसके बाद बाला साहब ने पूछा— महाराज, हममे क्या दोष है जिस कारण हमारी यह दुदशा हो रही है?

स्वामी जी ने उत्तर दिया— भाई से भाई का विरोध ही सर्वनाश का कारण होता है। मुगलो और मराठो की परस्पर कलह का लाभ उठा कर अग्रज यहा जम गया है। यह अनेकता और परस्पर विरोध ही हमारा सब से बडा दोष है।

इस दूरदर्शिता पूण उत्तर ने बाला साहब को सन्तुष्ट ही नही किया अपितु प्रेरित भी किया।

तत्पश्चात श्री अजीमुल्ला खा ने पूछा— स्वामी जी भारत के व्यापक प्रजा विद्रोह के सम्बन्ध मे आपकी क्या क्या सम्मति है?

(क्रमश)

# महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह

# आर्य समाज का भावी कार्यक्रम

विषय पर डा सत्यकेतु विद्यालंकार का भाषण

गत एक शताब्दी में आर्य समाज ने जो प्रगति की है, वह वस्तुत असाधारण है महर्षि के देहावसान के समय सन 1883 मे आर्य समाजो की कुल संख्या 90 से भी कम थी। आज यह पांच हजार से भी अधिक है। भारत का कोई भी राज्य ऐसा नहीं है जहां आर्य समाज न हो। विदेशो मे भी सात सौ के लगभग आर्य समाज विद्यमान हैं। सन् 1883 मे एक भी ऐसी शिक्षण संस्था नहीं थी। आर्य समाज द्वारा जिसका संचालन किया जाता हो। आज दो हजार से भी अधिक शिक्षणालय आर्य समाज के तत्वावधान मे स्थापित हैं। हैं। महर्षि के देहावसान के पश्चात आर्य समाज मे एक भी ऐसा विद्वान् नहीं था जो वेदो का भाष्य कर सके। गत शताब्दी मे कितने ही ऐसे आर्य विद्वान हुए जो न केवल वेद वेदांगो के प्रकाण्ड पण्डित ही थे, अपितु जिन्होने वेदो के भाष्य व विभिन्न लोक भाषाओ मे उनके अनुवाद किए। आर्य समाज के कारण संस्कृत भाषा तथा वेदशास्त्रो का पठन पाठन केवल ब्राह्मणो तक ही सीमित नही रह गया सभी जातियो—यहां तक कि अछूत समझे जाने वाले लोगो मे भी वेद वेदांगो के अध्ययन अध्यापन की परम्परा प्रारम्भ हुई। और आज ब्राह्मणेतर जातियो के भी सकडो ऐसे नर नारी विद्यमान है जिन्हे वेद शास्त्रो का समुचित ज्ञान है। स्त्री शिक्षा के लिए आर्य समाज ने अनुपम कार्य किया है। इसके द्वारा सकडो पुत्री पाठशालाए, बालिका विद्यालय महिला महाविद्यालय और कन्या गुरुकुल स्थापित हैं। इनमे शिक्षा प्राप्त कर हजारो महिलाए संस्कृत तथा वेद शास्त्रो मे पाण्डित्य प्राप्त कर चुकी हैं। बाल विवाह परदा दहेज प्रथा मृतकभोज आदि सामाजिक कुरीतियो के निवारण, पाखण्ड के खण्डन अछूतोद्धार विधर्मियो के वैदिक धर्म मे प्रत्यावर्तन और हिन्दी भाषा के प्रचार के लिए आर्य समाज ने जो कार्य किया है, सभी उसकी सराहना करते हैं। आर्य समाज का कार्य अब किसी एक जाति या प्रदेश तक ही सीमित नहीं है। धनी निर्धन छूत अछूत किसान मजदूर—जनता के सभी वर्गों के लोग उसके सदस्य हैं। वह एक सशक्त जन आन्दोलन है जो अब सार्वभौम रूप प्राप्त करने लग गया है। गत शताब्दी में भारत का जो पुनर्जागरण हुआ है अन्धविश्वासो और सामाजिक कुरीतियो को दूर कर जो यह उन्नति के मार्ग पर अग्रसर हुआ है स्वराज्य, स्वदेशी देश प्रेम और राष्ट्रीयता की जो भावना इस देश मे उत्पन्न हुई है और आज जो यह देश स्वतन्त्र है उसका प्रधान श्रेय आर्य समाज को ही दिया जाना चाहिए। आर्य समाज का संगठन भी अनुपम है। देश विदेश के हजारो समाज एक केन्द्रीय संगठन के अंग है। लोकतन्त्र पर आधारित इतना सशक्त संगठन किसी भी अन्य समाज या संस्था का नही है।

आर्य समाज के इस कायकलाप एव प्रगति पर सचमुच संतोष व गर्व अनुभव किया जा सकता है पर अभी बहुत कुछ करना शेष है। ससार के उपकार और मानव मात्र के हित कल्याण के जिस महान उद्देश्य को सम्मुख रखकर महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की थी उसकी पूर्ति के लिए अभी बहुत काम करना होगा। अगली एक शताब्दी मे हमे क्या कुछ करना है और हमारा कार्यक्रम क्या होना चाहिए इस विषय पर मैं भी कुछ सुझाव प्रस्तुत करना चाहता हू—

(1) वेद सब सत्य विद्याओ की पुस्तक है यह तथ्य आज जनता मे भली भान्ति प्रचारित हो चुका है। अनेक लोक भाषाओ मे वेदो के भाष्य व अनुवाद भी हो चुके है के कारण सर्वसाधारण लोगो के लिए भी अब वेदो का ज्ञान प्राप्त कर सकना सम्भव हो गया है पर न केवल विदेशो के अपितु भारत के भी बहुसख्यक विद्वानो तथा बुद्धिजीवियो में वेदो के सम्बन्ध मे अब तक की वही धारणाए सुदृढ रूप से विद्यमान हैं जिनका प्रतिपादन सायण उवट महीधर प्रभृति मध्यकालीन विद्वानो के वेद भाष्यो के आधार पर पाश्चात्य विद्वानो ने किया था। वैदिक शब्दो को रूढि अर्थ मे लेना वैदिक ऋषियो को वेद मन्त्रो का कर्ता मानना और इन्द्र मित्र वरुण आदि को ईश्वर के विभिन्न नाम न मानकर विविध देवता मानना—ये तथा कितनी ही अन्य ऐसी बात हैं जो महर्षि के मन्तव्यो के विरुद्ध हैं पर जिन्हे बहुसख्यक आधुनिक विद्वान अब तक भी सत्य के रूप मे स्वीकार करते हैं। भारत के विश्वविद्यालयो की संस्कृत की पाठ विधि में वेद व्याख्या का जो ढाचा नियत है जो पाठ्य पुस्तक पढाई जाती हैं उनमे यही मन्तव्य प्रतिपादित हैं और उनका अध्यापन करने वाले प्राध्यापको मे भी अच्छी बडी संख्या आर्य विद्वानो की है हमे इस दशा मे परिवर्तन लाना होगा। हमे वेद विषयक इस प्रकार के उच्चकोटि के ग्रन्थ तैयार करने होगे जो प्राचीन भारतीय ज्ञान के अनुशीलन व शोध की आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति से लिखे गए हो, और जिन्हे पढकर देश विदेश के विद्वान व बुद्धिजीवि महर्षि दयानन्द सरस्वती के वेद विषयक मन्तव्यो की सचाई व युक्तियुक्तता को स्वीकार करने के लिए विवश हो जाए। तभी हमारे विश्वविद्यालयो मे भी इन ग्रन्थो को स्थान प्राप्त होगा। और देश के बुद्धिजीवियो की भी ईश्वरीय ज्ञान वेद के प्रति आस्था उत्पन्न हो सकेगी। आर्य समाज के जो अनेक विश्वविद्यालय उच्च शिक्षा की शिक्षण संस्थाए शोध पीठ व संस्थान विद्यमान हैं उन्हे इस महत्वपूर्ण कार्य के लिए प्रेरित करना होगा और यदि आवश्यकता समझी जाए तो इसी प्रयोजन से नए संस्थानो की भी स्थापना करनी होगी। आज सिख पन्थ के इतिहास व मन्तव्यो तथा श्री गुरुग्रन्थ साहब के अनुशीलन के लिए संस्थान विद्यमान है और सरकार से भी उन्हे अनुदान प्राप्त होता है यही बात अनेक अन्य सम्प्रदायो व धर्मों के सम्बन्ध मे भी है इसी प्रकार के संस्थान हम वेदो व पञ्चयज्ञो के विषय मे महर्षि के जो मन्तव्य हैं उनके प्रतिपादन व समर्थन के लिए स्थापित करने होगे

2 प्राचीन भारतीय इतिहास के विषय मे महर्षि दयानन्द सरस्वती के जो मन्तव्य थे उनकी पुष्टि मे पण्डित भगवद्दत्त एव आचार्य रामदेव सदृश विद्वानो ने जो महत्वपूर्ण कार्य किया था उसे आगे बढाने की आवश्यकता है। अन्य देशो का तो प्रश्न ही क्या भारत के स्कूलो और कालिजो मे भी भारत का जो इतिहास पढाया जाता है वह महर्षि के मन्तव्यो के विरुद्ध है। उनमे ऋग्वेद का काल 1500 ईस्वी पूर्व महाभारत का काल 800 ईस्वी पूर्व और राजा विक्रमादित्य का समय पांचवी सदी ईस्वी लिखा होता है। प्राचीन समय मे भूमण्डल के प्राय सभी देशो मे आर्य संस्कृति का प्रचार था और कितने ही देशो मे आर्यों के उपनिवेश भी विद्यमान थे इस तथ्य का उनमे उल्लेख ही नहीं होता। हमे यह यत्न करना होगा कि प्राचीन भारतीय इतिहास मे शोध कर वैज्ञानिक विधि से ऐसे इतिहास ग्रन्थ लिखे जाए जिन से महर्षि के मन्तव्यो की पुष्टि हो और जिन द्वारा उन भ्रमात्मक धारणाओ को दूर किया जा सके जो प्राचीन इतिहास के सम्बन्ध मे शिक्षित लोगो मे प्रचलित है।

(3) आर्य समाज का प्रचार अभी प्रधानतया हिन्दी भाषा भाषी प्रदेशो तक ही सीमित है। अब हमे यह यत्न करना होगा कि वैदिक धर्म के प्रचारार्थ ऐसे विद्वानो व प्रचारको को तैयार किया जाए जो तमिल असमिया आदि भारतीय भाषाओ तथा फ्रेञ्च जर्मन चीनी जापानी स्पेनिश पोर्तुगाल रशियन अरबी तुर्की फारसी आदि विदेशी भाषाओ मे निष्णात किया जाए ताकि वे विविध प्रदेशो मे जाकर वहां के नागरिको व निवासियो मे वैदिक धर्म का प्रचार कर सके। प्राय सभी विदेशी भाषाओ को सीखने की सुविधाए दिल्ली आदि नगरो मे विद्यमान है। समुचित छात्रवृत्तिया दे कर योग्य आर्य युवको को इन भाषाओ मे निष्णात करने विदेशो में प्रचार के लिए भेजना होगा ताकि आर्य समाज के कार्यकलाप का विस्तार सम्पूर्ण ससार मे किया जा सके।

(4) वर्तमान समय में आर्य समाज का कार्य प्रधानतया नगरो मे केन्द्रित है और वहां भी मध्य वर्ग के लोगो तक ही सीमित है। अब हम देहातो मे आर्य समाज के कार्यकलाप के विस्तार पर विशेष ध्यान देना होगा और दलितो मजदूरो किसानो जनजातियो तथा अन्य पिछडे हुए वर्गों मे प्रचार का काम करना होगा

(5) समाज संगठन का जो स्वरूप महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रतिपादित है उसके आधार वर्णाश्रम व्यवस्था है इस व्यवस्था मे ब्राह्मणो और संन्यासियो का स्थान सबसे ऊंचा है आज आर्य समाज मे गुण कर्म विहीन जन्मगत जातियो तथा पुरोहितो की क्या स्थिति है जो गुण कर्म स्वभाव के अनुसार ब्राह्मण हो पर न सामाजिक जीवन मे आज न आर्य समाज के संगठन मे उन्हे वह उच्च व सम्मानास्पद स्थान प्राप्त है जो ब्राह्मणो को दिया जाना चाहिए आर्य समाज का संचालन व नेतृत्व प्राय एसे व्यक्तियो के हाथो मे है जिन्हे गुण कर्मानुसार वैश्य कहना उचित होगा। आर्य समाज मे प्रचारक परोहित सच्चे ब्राह्मण वर्ग को समुचित स्थान प्राप्त कराने के लिए यह आवश्यक है कि समाज के प्रधानमंत्री आदि पदाधिकारी अपने कार्यक्षेत्र को सम्पत्ति की देखभाल तथा प्रबन्ध व्यवस्था तक ही सीमित रखें और वैदिक धर्म का प्रचार शिक्षण संस्थाओ का सचालन आदि अन्य सब कार्य उन व्यक्तियो के हाथो मे रहे जो गुणकर्मानुसार ब्राह्मण हो। स्थानीय आर्य समाजो तथा प्रतिनिधि सभाओ सदृश अन्य संगठनो के संविधान मे भी ऐसे परिवर्तन करने आवश्यक हैं जिनसे संन्यासियो पुरोहितो प्रचारको और विद्वानो को प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त हो सके और आर्य समाज का नेतृत्व उन्ही के हाथो मे आ जाए।

(क्रमश)

# 'वैदिक संस्कृति में अतिथि यज्ञ की महिमा'

ले —श्री हर्षवर्धन मिश्र शास्त्री एम ए

वेदो मे जो अतिथि यज्ञ की महत्ता पर प्रकाश डाला गया है उस अतिथि यज्ञ के स्वरूप से आज का मानव अनभिज्ञ सा प्रतीत होता हो रहा है क्योकि वह अतिथि के स्वरूप को नही जानता यही कारण है कि आज के इस युग मे अतिथियो का सत्कार नही किया जाता है।

इस विषय पर विचार करने से पूर्व आप का ध्यान आचार्य यास्क के निरुक्त पर आकृष्ट करना चाहता हू आचार्य यास्क अपने निरुक्त ग्रन्थ मे अतिथि शब्द की व्युत्पत्ति करते हुए लिखते है-- 'अतिथिरभ्यतितो गृहा-भवति अभ्येति तिथिषु परकुलानिलिवा अर्थात अतिथि इधर उधर घरो मे पहुचता रहता है या पौर्णमासी आदि तिथियो मे वह पर गृह या परकुला मे जाता है। इसके अतिरिक्त अथर्व वेद के निम्न दो मन्त्र भी हमे अतिथि के स्वरूप अतिथि सत्कार का स्पष्ट सकेत कर रहे हैं —

तद्यस्यैव विद्वान्व्रात्योऽतिथिर्गृहाना-गच्छेत ।1।

स्वयमेनमभ्युदेत्य ब्रूयाद्व्रात्य क्वाऽ-वात्सीर्व्रात्योदक व्रात्यतर्पयन्तुव्रा यथा ते प्रिय यथास्तु व्रात्य यथा तेवशस्तथास्तु व्रात्य यथा ते निकामस्तथास्त्विति ।

2-अ का 15 सू 11।

इन मन्त्रो में अतिथि के स्वरूप की ओर सकेत है कि जो पूर्ण विद्वान परोपकारी, जितेन्द्रिय धार्मिक सत्यवादी छल-कपट रहित नित्य भ्रमण करने वाले मनुष्य होते हैं उनको अतिथि कहते है और जो घर म पूर्वोक्त गुणयुक्त विद्वान् उत्तम गुण विशिष्ट सेवा करने के योग्य अतिथि आवे तथा जिसके आने जाने की कोई भी तिथि निश्चित न हो अचानक आवे और जावे जब इस प्रकार का अतिथि गृहस्थों के घर में प्राप्त हो। तब उसको गृहस्थ अत्यन्त प्रेम से उठकर नमस्कार करके उत्तम आसन पर बैठाकर उससे पूछे आपको जल व किसी अन्य वस्तु की इच्छा हो तो कहिए इस प्रकार उसको प्रसन्न कर और स्वय प्रसन्नचित्त होकर अतिथि से पूछे कि हे व्रात्य ! उत्तम पुरुष आपने आने से पूर्व कहा वास किया था। हे अतिथि ! यह जल लो तथा हम अपने प्रेम से आपको तृप्त करते हैं और सब हमारे मित्र लोग आपके उपदेश से विज्ञान युक्त होकर सदा प्रसन्न रहे। जिससे आप और हम लोग परस्पर सेवा और सत्सग पूर्वक विद्या वृद्धि से सदा आनन्दमय हो।

इस प्रकार इन मन्त्रो मे अतिथि के स्वरूप एव स्वागत सत्कार का विधान है। आपस्तम्ब धर्म सूत्र के द्वितीय प्रश्न के तृतीय पटल मे भी अतिथि का लक्षण बताते हुए कहा है कि—

अग्निरिव ज्वल-अतिथिरभ्या गच्छति

अर्थात अतिथि प्रज्वलित अग्नि के समान ही घर मे आता है।

गृहस्थ और अतिथि—

यदि सूक्ष्म दृष्टि से विचार किया जाए तो गृहस्थ और अतिथि का घनिष्ट सम्बन्ध माना जाता है क्योकि गृहस्थाश्रम (विवाह सस्कार) मे ही सर्वप्रथम मधुपर्कादि विधि से जो वर का स्वागत किया जाता है वह अतिथि सत्कार का ही सकेत करता है जिस प्रकार से वर का स्वागत वधू के द्वारा किया जाता है उसी प्रकार गृहस्थो को चाहिए कि वह भी अतिथि का सम्मान तथा सत्कार विधि पूर्वक करें इसकी पुष्टि के लिए मनु महाराज जी भी मनुस्मृति के श्लोक मे लिखते हैं

स प्राप्ताय त्वतिथये प्रदद्यादासनोदके ।
अन्नं चैव यथा शक्ति सत्कृत्य विधि पूर्वकम ।

म अ, 3 श्लो 99

अपने आप घर आये हुए अतिथि का विधि पूर्वक सत्कार करके आसन, चरण धोने के लिये जल और यथा शक्ति अन्न व्यजन आदि दें। गृहस्थाश्रम ही एक ऐसा आश्रम है जिस आश्रम के आधार पर ही ब्रह्मचर्य वानप्रस्थ सन्यास तथा अनेक व्यवहार सुचारु रूप से चलते हैं—

यथा नदी नदा सर्वेसागरे यान्ति सस्थितम ।
तथैवाश्रमिणा सर्वे गृहस्थे यान्ति सास्थितम् । मनु अ 6 श्लो 90

महाराज मनु लिखित मान्यता मे गृहस्थाश्रम को कितना महत्व प्रदान किया है। जिस प्रकार नदी नद तब तक भ्रमते ही रहते हैं जब तक कि वे किसी समुद्र का आश्रय नहीं लेते उसी प्रकार तीनो आश्रम तथा अतिथि भी गृहस्थ मे ही आश्रय लेते हैं।

(क्रमश)

# हैदराबाद सिकन्दराबाद के साम्प्रदायिक उपद्रव

## आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश की अन्तरग सभा तथा साधारण सभा द्वारा पारित प्रस्ताव

अभी कुछ दिनो पूर्व हैदराबाद सिकन्दराबाद मे साम्प्रदायिक उपद्रव हुए थे, जिनमे निर्दोष नागरिकों की आर्थिक और प्राणो की हानि हुई। पर्याप्त दिनो तक वातावरण विक्षुब्ध रहा। आतकवाद का बोल-बाला रहा। इस दुर्भाग्य पूर्ण स्थिति पर इस सभा की दि 23-10-83 की अन्तरग सभा और साधारण सभा ने निम्न प्रस्ताव पारित किया है। जो आपकी सेवा मे ज्ञातव्य तथा उचित कार्यवाही हेतु प्रेषित है इस पर सहानुभूति पूर्वक विचार कर योग्य कार्यवाही से अनुगृहीत करे।

(रामचन्द्रराव कल्याणी)
सभा प्रधान

प्रस्ताव सख्या 1, महर्षि दयानन्दजी द्वारा सन 1875 मे स्थापित आर्यसमाज सदा एक सशक्त, अविभाज्य स्वतन्त्र भारत का समर्थक रहा है। उसका जो योगदान स्वाधीनता से पूर्व स्वतन्त्र्य सग्राम में और स्वाधीनता के पश्चात राजनीतिक स्थिरता और सर्वागीण उन्नति के लिए रहा है, वह सदैव अविस्मरणीय रहेगा।

इन दिना विघटनकारी शक्तिया इस देश को टुकड टुकडे करने के प्रयत्न मे लगी नजर आ रही हैं। इस बात के लिए पर्याप्त प्रमाण है कि विदेशो से चोरी-छुपे रूप मे इन तत्वो को आर्थिक सहायता प्राप्त हो रही है। इससे देश की सुस्थिरता को एक भयानक सकट बन गया है।

सन 1947 मे जिन्ना के द्विराष्ट्रवाद के परिणाम स्वरूप देश का विभाजन हुआ इस घटना के 36 वर्ष के बाद भी हम आज एक विचित्र चीज देख रहे हैं। जमाअते इस्लामी हिन्द इस बात को प्रतिपादित कर रहा है कि दुनिया के मुसलमान चाहे वे किसी भी देश के नागरिक हों एक ही इस्लामी उम्मत के घटक हैं। वह भारत की सयुक्त सस्कृति के पक्ष मे नही हैं। वे इस बात का विश्वास व्यक्त करते हैं कि एक न एक दिन भारत मे रहने वाले सभी गैर मुस्लिम इस्लामी जीवन पद्धति का अनुसरण करने लगेंगे। इस लक्ष्य के पूर्ति अर्थ पैसे का प्रलोभन तथा अन्य आकर्षणो एव बल प्रयोग आदि के माध्यम से मुस्लिमऐतरजनो का सामूहिक रूप मे इस्लामीकरण किया जा रहा है। अकाली सिखो का एक वर्ग जो विदेशियो के हाथ का कठपुतला है। अपने लिये पृथक तथा राज्य खालिस्तान की माग कर रहा है।

इन तमाम बुराइयो के साथ-साथ प्रादेशिकता का विष भी फैलाया जा रहा है। इस प्रदेश के मुख्यमन्त्री जी द्वारा इस बात की घोषणा की कि केन्द्र एक कपोल कल्पना सम्बन्धी मिथ्या स्वरूप है, इस लिए इसके तत्वाधान में केवल 4 ही विषय रहे—अर्थ, विदेशी व्यवहार, रक्षा तथा यातायात। यदि वह यथार्थ है तो बडे ही दुर्भाग्य की बात है। इस माग मे निजामी महत्वाकांक्षा की दुर्गन्ध आती है जो 35 वर्ष पूर्व सितम्बर 1948 मे पुलिस एक्शन से पूर्व अभिव्यक्त हुई थी।

आर्य समाज द्वारा भूतकाल मे भी ऐसे विचार वाले शासको का दृढता से विरोध किया गया है। समाज यह आशा व्यक्त करता है कि इस प्रदेश के मुख्यमन्त्री पर सदपरामर्श का प्रभाव होगा और ऊप अङ्कित दर्शाए गए विचारो का खण्डन करेंगे।

प्रस्ताव सख्या 2 गत दशक मे आर्य प्रतिनिधि सभा इस बात को देखती आयी है कि देश मे साम्प्रदायिकता पुन एक बार सिर उठा रही है। सभा को इस बात का अत्यन्त खेद है कि आन्ध्र प्रदेश भी इस साम्प्रदायिकता के नगन ताण्डव से अपने को अलिप्त नही रख सका है। इस विष को नगरद्वय हैदराबाद और सिकन्दराबाद में प्रस्फुटित होकर कई नागरिको की प्राण हानि हुई है और कई लोग घायल हुए हैं। नगरद्वय के इतिहास में 'रजाकार काल मे भी इतनी बडी सख्या मे लोग नही मरे थे। आन्ध्र प्रदेश की आर्य प्रतिनिधि सभा सार्वदेशिक सभा दिल्ली से माग करती है कि वह अपने तत्वावधान मे इस विष के शमन के के लिए राष्टीय स्तर पर एक सभा का आयोजन नवम्बर के तीसरे सप्ताह में हैदराबाद नगर मे करें।

# श्री पं. मेलाराम जी का देहावसान

आर्य समाज मुकेरिया के कर्मठ कार्यकर्ता वयोवृद्ध श्री प मेलाराम जी का देहावसान 6 नवम्बर को हो गया। उन के चले जाने से आर्य समाज की भी क्षति हुई है। पुराने कार्यकर्ता धीरे धीरे जा रहे हैं नए कार्यकर्ता आगे नही आ रहे यह अत्यन्त सोचनीय विषय है परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वह मेलाराम जी की आत्मा को सद्गति प्रदान करें और उनके सारे परिवार को इस असहाय दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

# देव गुरु वो प्यारा

ले —श्री वीरेन्द्र कुलदीप साथी

आर्य समाज बना के ऋषि ने दूर किया अभियाग
क्या गाए हम ऋषि की महिमा देव गुरु वो प्यारा
सबका प्यारा ऋषि प्यारा—।

मथुरा नगरी में वेदो का मूल ने ज्ञान था पाया
गुरु विरजानन्द के चरणो मे अपना शीश निवाया
अपना शीश निवाया योगी बन दिखलाया
वेदो के प्रचार की खातिर घूमा भारत सारा
सब का प्यारा—ऋषि प्यारा—।

भारत में था पाखण्डियो ने भारी जाल बिछाया
दूर किया भ्रम जाल ऋषि ने सबको समान बनाया
सब को समान बनाया वैदिक ध्वज लहराया
पाखण्डियो के पोल खोल दे दिया ओ३म का नारा
सब का प्यारा—ऋषि प्यारा—।

ईट पत्थर खाये ऋषि ने फिर भी न घबराया
आप जहर का पान किया पर अमृत हमे पिलाया
अमृत हमें पिलाया सच्चा राह दिखाया
आया था उपकार ही करने देव गुरु वो प्यारा
सब का प्यारा—ऋषि प्यारा—।

केवल एक ही दीपक ने थे लाखो दीप जलाये
धर्म जाति और देश की खातिर अपने प्राण गवाए
अपने प्राण गवाए हम बलिहारी जाए
दुनिया भर का सच्चा साथी देव गुरु था प्यारा
सब का प्यारा ऋषि प्यारा—।

—

## पंजाब की आर्य समाजो को चेतावनी

# पंजाब पुलिस द्वारा ओ३म् की पताका का अपमान

ऋषि निर्वाण शताब्दी पर अजमेर जा रही डी ए वी कालेज जालन्धर की एक बस जिस पर ओ३म् की पताका लगी हुई थी जब बस लक्कड़ नगर से निकल कर चौक महता गई तो एक पुलिस पार्टी जिसकी रहनुमाई इन्सपैक्टर कर रहा था उसने बस को रोक लिया और कहा गया कि बस से ओ३म के झण्डे उतारने के पश्चात् ही जाने या सकते हैं। प्रिंसिपल श्री आर एल महता ने कहा कि यह ओ३म का झण्डा धार्मिक है परन्तु वह किसी भी कीमत पर मानने को तैयार न हुए तो प्रिंसिपल जी ने हथियार डाल दिए। चाहिए तो यह था कि उस समय सारी बस शहीद भी हो जाती परन्तु ओ३म की पताका न उतारी जाती यह ओम के झण्डे का अपमान किया गया है इसको किसी भी कीमत पर सहन नही किया जा सकता पजाब के आर्यो आपको यह चेतावनी दी गई है इसको स्वीकार करो पुलिस ओम पताका का अपमान तो कर सकती है परन्तु और प्रकार के झण्डे कारो पर लगे होते हैं उनका कुछ नही बिगाड़ सकती। इसलिए पजाब के राज्यपाल श्री पाण्डे जी से प्रार्थना है कि इसकी पूरी पूरी जाच कराई जाए और उस पुलिस इन्सपैक्टर को कड़ी से कड़ी सजा दी जाए।

—सुखदराज आर्य
प्रधान आर्य समाज शहीद भगतसिंहनगर
जालन्धर

—

## बाल-जगत्-

# पिता और पुत्र

ले —सुरेन्द्र मोहन सुनील विद्यावाचस्पति

अनुव्रत पित पुत्रो
पुत्र पिता का आज्ञाकारी हो

प्यारे बच्चो अथर्व वेद की इस सूक्ति से शिक्षा लेते हुए उक्त कहानी को पढो समझो और जीवन मे लाओ एक जवान बाप अपने छोटे पुत्र को गोद मे लिये बैठा था। कही से उड़कर एक कौआ उनके सामने खपरैल पर बैठ गया पुत्र ने पिता ने पूछा— यह क्या है ?

पिता—कौआ है।

पुत्र ने फिर पूछा—यह क्या है।

पिता ने फिर कहा—कौआ है ?

पुत्र बार बार पूछता—यह क्या है।

पिता स्नेह से बार बार कहता था—कौआ है

कुछ वर्षों मे पुत्र बड़ा हुआ और पिता बूढा हो गया एक दिन पिता चटाई पर बैठा था घर मे कोई उसके पुत्र से मिलने आया पिता ने पूछा—कौन आया ? पुत्र ने नाम बता दिया थोड़ी देर मे कोई और आया और पिता ने फिर पूछा—इस बार झुझलाकर पुत्र ने कहा—आप चुपचाप पड़े क्यो नही रहते आपको कुछ करना धरना तो है नही। कौन आया ? कौन गया ? इससे आपको क्या मतलब सिर्फ टाय टाय दिन भर क्यो लगाये रहते हैं पिता ने लम्बी सास खीची हाथ से सिर पकड़ा बड़े दुःख भरे स्वर मे धीरे धीरे वह कहने लगा—अरे एक बार पूछने पर अब तुम क्रोध करते हो और तुम बचपन मे सैकड़ो बार पूछते थे एक ही बात यह क्या है वह क्या है ? मैंने तुम्हे कभी नही झिड़का मैं बार बार तुम्हे बताता था—यह कौआ है कौआ है कौआ है। परन्तु अब तुम मेरी बातो से चिढते हो। यह समय का फेर है समय सदा एक सा नही रहता।

शिक्षा—अपने माता पिता को तिरस्कार करने वाले ऐसे लड़के बुरे माने जाते हैं तुम सदा इस बात का ध्यान रखो कि माता पिता ने तुम्हारे पालन पोषण मे कितना कष्ट उठाया है और तुम से कितना स्नेह किया है

—

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

अपनी आयु प्राण प्रजा पशु अन्न और धन आदि की अभिवृद्धि कर साथ ही उत्तम कर्म करने वाले यजमान का भी सम्वर्धन कर

इस प्रकार मन्त्र से हमे शिक्षा मिलती है कि हम यज्ञ द्वारा न केवल अपनी आयु को ही बढा सकते हैं बल्कि अपने प्राण प्रजा पशु कीर्ति धन दौलत इन सबको भी बढा सकते हैं यज्ञ करने वाले का सम्पर्क वेदज्ञ विद्वानो से होता है। जिनके उपदेश एव आचरण उसके जीवन को कर्तव्यपरायण बनाते हैं। उसकी दिनचर्या नियमानुसार व्यवस्थित हो जाती है। उसके आहार विहार खान पान सोना जागना आदि सब नियमित हो जाते हैं इनका नियमित होना ही आयुवर्धक एव प्राण सस्थापक होता है। जब मनुष्य स्वस्थ रहता है तो उसे अपने उत्तरोत्तर प्रयास से धन दौलत सन्तान पशु कीर्ति आदि सभी वस्तुए आसानी से प्राप्त हो जाती हैं। उत्तम कार्य की भावना वाला सदा ही उत्तम कर्म करने वाले दूसरे की सहायता करने को तत्पर रहता है क्योकि बिना सहयोग एव सहायता के उत्तम कार्यों का विस्तार नही होता।

यज्ञ श्रेष्ठतम कर्म है इसमे विशेष रूप से सामूहिक उत्थान की भावना सन्निहित है इसलिए यह हमे प्रेरणा करता है कि समाज मे जो अपने से अधिक ज्ञानवान हैं उनकी पूजा कर अपने को गौरवान्वित करो और जो बराबर के हैं उनका सहयोग प्राप्त करो और जो कमजोर हैं उनकी सब प्रकार से सहायता करो। जब मनुष्य बड़ो की पूजा छोटो की सहायता और बराबर वालो का सहयोग करने लगता है तब उसकी दिव्य शक्तिया जग जाती हैं और वह वास्तव मे ब्रह्मणस्पति महान् हो जाता है

इसलिए महान बनने की इच्छा रखने वालो को परोपकार के श्रेष्ठतम कर्म यज्ञ द्वारा अपनी दिव्य शक्तियो को जगा कर महान बनना चाहिए और प्रभु की सनातन वेदवाणी द्वारा दूसरो को महान बनने की प्रेरणा करनी चाहिए।

उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवान यज्ञेन बोधय।

हे ब्रह्मणस्पते उठो और यज्ञ से अपने दिव्य भावो को जगाओ

## मुरादाबाद में रामप्रसाद बिस्मिल नगर का शिलान्यास

मुरादाबाद म प रामप्रसाद बिस्मिल नगर का शिलान्यास करते हुए श्री राम गोपाल शालवाले ने कहा कि शहीद प रामप्रसाद बिस्मिल ने अपनी भरी जवानी में जब से महर्षि दयानन्द की वैदिक विचार धारा को अंगीकार किया तभी से उन्होंने देश धर्म और समाज के लिए सब से बड़ा बलिदान करने का दृढ़ निश्चय कर लिया था। उनके नाम पर बसाई जा रही यह आर्य नगरी शहीद बिस्मिल से अन्य युवकों के निर्माण करने की क्षमता प्राप्त करेगी तभी महर्षि दयानन्द के स्वप्न साकार होंगे। सभा प्रधान जी ने आर्यजनों को सम्बोधित करते हुए कहा कि आज आवश्यकता है कि आर्य समाजी भाई आपस में मिल जुलकर काम करें। आपसी झगड़ों में पड़ने से आर्य समाज कमजोर हो रहा है। यदि आर्य बन्धु संगठित होकर काम करें तो इस अजेय सेना का सामना कोई भी विरोधी ताकत नहीं कर सकती।

श्री राम मोहन आर्य ने श्री शालवाले का स्वागत करते हुए कहा कि आज इस नगरी के शिलान्यास समारोह पर मुरादाबाद जनपद की जनता आपका हार्दिक स्वागत करते हुए यह स्पष्ट करना चाहती है कि आज से चार वर्ष पूर्व जब मुरादाबाद मुसलमानों के अत्याचारों के घेरे में आ चुका था तब आपने ही यहां की हिन्दू जनता को कहा था कि यदि मुरादाबाद को बचाना है तो नगर के चारों ओर हिन्दू कालोनियां बसानी होंगी। आपके उसी आदेश पर यहां के आर्य भाईयों ने दयानन्द कालोनी और रामप्रसाद बिस्मिल कालोनी को बसाने का निर्णय किया। श्री राममोहन जी ने बताया कि सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल जी शालवाले के प्रयत्नों से ही सरकार द्वारा यहां फौजी छावनी की स्थापना हो गई है तथा अरबिक यूनिवर्सिटियों का निर्माण रोक दिया है।

श्री जयनारायण और प सच्चिदानन्द शास्त्री ने भी रामप्रसाद बिस्मिल नगर के शिलान्यास के अवसर पर प रामप्रसाद बिस्मिल को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए प्रभावशाली भाषण दिए। सभा संचालन प्रसिद्ध आर्य बन्धु हरिश्चन्द्र जी ने किया। प देवपाल आर्य ब ध ने यज्ञ के अनन्तर आर्य समाज के महान कार्यों की चर्चा की।

## आर्य युवकोका दिग्-विजय अभियान सफल

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद दिल्ली प्रदेश ने डेढ़ वर्ष पूर्व अन्तर्राष्ट्रीय महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी अजमेर में 1 000 युवकों की सेवा देने का जो संकल्प किया था उसे पूर्ण कर लिया। इतने अल्पकाल में 900 युवकों की तैयारी व शताब्दी पर्व के दौरान स्थापित केन्द्रीय आर्य युवती परिषद की 125 वीरांगनाओं का पथ संचालन व सेवाएं देना आर्य समाज के इतिहास में अनोखी घटना है।

ऐतिहासिक दिवाली की रात में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य युवक [illegible] जिसकी अध्यक्षता करते हुए श्र आर्य नरेश ने युवकों को आगे बढ़कर समाज व राष्ट्र में फैली कुरीतियों के विरुद्ध लड़ने का आह्वान किया। देश की एकता अखण्डता विरोधियों को चुनौती दी गई। सुरीनाम गायना अमेरिका नेपाल लन्दन के युवा प्रतिनिधियों ने विदेशों में तीव्र गति से वेद प्रचार पर बल दिया।

## हिन्दू लड़का मुसल-मान होने से बचाया

गांव राजपुर जि सोनीपत में श्री मुख्त्यार पुत्र बिहारी राठी ने किसी मौलवी के पीर का डर दिखाने पर नीले कपड़े धारण करके इस्लाम धर्म के अनुसार रहना आरम्भ कर दिया था और गांव के लोगों ने भी इस कार्य के विरोध में इससे सम्बन्ध विच्छेद कर लिया था, जब इस बात का पता हिन्दू शुद्धि संरक्षणी समिति समालखा के महामन्त्री स्वामी देवानन्द को लगा वह गांव में पहुंचे। 10 11 83 को सामूहिक यज्ञ हवन के [illegible] राठी को यज्ञोपवीत धारण कराया तथा और उन्हें मौलवी के इस कार्य के चंगुल से मुक्त कर दिया इस कार्य की प्रशंसा की जा रही है।

—ओमप्रकाश
पंच न शुद्धि सभा

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रेस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

वर्ष 16 अंक 36 3 पोष सम्वत् 2040, तदनुसार 18 दिसम्बर 1983, दयानन्दाब्द 159 । एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपए

## वेदामृत—

# प्रभु हमें श्रेष्ठ धन दे

ओ३म् इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहि चित्तिं दक्षस्य सुभगत्वमस्मे ।
पोष रयीणामरिष्टिं तनूनां स्वाद्मानं वाचः सुदिनत्वमह्नाम् ।

ऋ 2 21 6 ॥

शब्दार्थ—(इन्द्र !) हे सर्वेश्वर ! (अस्मे श्रेष्ठानि द्रविणानि दक्षस्य चित्तिम सुभगत्वम रयीणा पोषम तनूनाम अरिष्टिम वाच स्वाद्मानम अह्ना सुदिनत्व धेहि) तू हमे श्रेष्ठ धन दक्ष चतुर बुद्धिमान् मनुष्य की कर्म करने की योग्यता सम्यक ज्ञान प्राप्त करने की सामर्थ्य सौभाग्य अर्थात सर्वविध ऐश्वर्य धनो की पुष्टि अर्थात ऐश्वर्यों की अभिवृद्धि शरीरो की आरोग्यता वाणी की मिठास वाणी का माधुर्य दिनो का सुदिनत्व (अर्थात दिवसो का सुख पूर्वक व्यतीत होना) प्रदान कर ।

हे प्रभो ! हमे धन दे पर श्रेष्ठ पवित्र धन दे । हमे सम्यक ज्ञान प्राप्त करने की सामर्थ्य दे पर ऐसी दे जैसी कि—

दक्षस्य चित्तिम चतुर मनुष्य की चित्ति ।

चतुर मनुष्य की सावधानता कर्म करने की योग्यता सामर्थ्य ।

बुद्धिमान् मेधावी जन मे होती है । हमे सौभाग्य दे ताकि हम उससे सब प्रकार की उन्नति कर सकें । हमे धन दे, पर ऐसा दे जो सुभग हो उत्तमोत्तम ऐश्वर्य हो । हमे धनो ऐश्वर्यों की अभिवृद्धि चाहते है। हमें शरीरो की आरोग्यता देना जिससे हम निर्विघ्नता पूर्वक अपने सब विध कार्यों का सम्पादन कर सकें । हमे वाणी का रस दे वाणी का मिठास दे माधुर्य दे हम दिनो का सुदिनत्व दे अर्थात् इन सर्वैश्वर्यों की उपलब्धि के परिणाम स्वरूप हमारे दिन सुदिनो मे बदल जाए ।

अपने दिनो को सुदिनो-सुखद दिनो में परिवर्तित करने के लिए आवश्यक है कि मनुष्य के पास धन हो बुद्धि हो, उत्तमोत्तम ऐश्वर्य हो फिर दिनो दिन ऐश्वर्यों की अभिवृद्धि हो शरीरो की आरोग्यता हो, वाणी का माधुर्य हो । इसलिए हमे चाहिए कि हम जहां इन सबके लिए प्रभु से अभ्यर्थना कर वहां स्वयं भी इनकी उपलब्धि के लिए हृदय से परिश्रम करें ताकि हमारे दिन सुदिनो मे बदल सकें ।

इस मन्त्र मे परम पिता परमात्मा से धन मांगा गया है क्योंकि धन के बिना कोई भी मनुष्य सुखी नही हो सकता । श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहि—परमात्मा से प्रार्थना है कि वह हमे श्रेष्ठ धनों को दे । यह श्रेष्ठानि तथा द्रविणानि दोनो ही बहुवचन है । इससे पता चलता है कि धन किसी एक ही वस्तु का नाम नही है वह कई प्रकार का है । आज का मनुष्य केवल रुपया या सोना आदि को ही धन मानता है और उसे प्राप्त करने के लिए जायज नाजायज सभी तरह के तरीके अपनाता है । किसी का गला काटकर धन मिले या डाका डालकर चोरी करके मिलावट व किसी के साथ धोखा करके धन मिले धन मिलना चाहिए चाहे वह कैसे भी क्यो न मिले भला इन सभी तरीको से प्राप्त धन मनुष्य को क्या सुखी बना सकता है ?

आज के युग मे इस प्रकार के धन को बहुत महत्व दिया जा रहा है । आज का मानव एक दिन मे गलत तरीको से धन कमा कर लूट खसूट करके लखपति बनना चाहता है । इस धन से सुख पाना चाहता है । इस प्रकार के धन मे सुख कहा । ऐसा धन तो और भी दुखदायी है । इसीलिये मन्त्र मे परमात्मा से धन तो मांगे गए हैं । परन्तु श्रेष्ठ धनो को मांगा गया है ।

मन्त्र पर विचार करने से पता चलता है कि कौन 2 से धन हमारा कल्याण कर सकते हैं कौन 2 से धनो से हमे सुख मिल सकता है ।

1 दक्षस्य चित्तम्—चित्त की दक्षता श्रेष्ठ धन है अर्थात बुद्धि रूपी धन मानव के लिए सुखकारी है । श्रेष्ठ बुद्धि के द्वारा मानव दुखो को भी सुखों में बदल लेता है । चित्तिम श्रेष्ठ—हे प्रभु हमारा चित्त भी सदा श्रेष्ठ रहे ।

2 सुभगत्वम सौभाग्य भी एक धन है अर्थात् प्रभु से प्रार्थना है कि ऐश्वर्य के सभी साधन हमे प्रदान कर और वह सभी साधन श्रेष्ठ ही हमारा कल्याण करने वाले हो ।

3 रयीणाम पोषम—धनो की पुष्टि हो अर्थात हमारा रुपया पैसा सोना आदि भी बढ़ परन्तु श्रेष्ठ तरीको से बढ़ पवित्र कमाई से बढ़ । हमारे धन मे श्रेष्ठता हो । जीवन मे कभी भी धन का अभाव न हो परन्तु वह जो हमे प्राप्त हो हमारा कल्याण करने वाला हो ।

4 तनूनाम अरिष्टिम—स्वास्थ्य धन भी हमे प्राप्त हो हमारे शरीरो मे आरोग्यता हो शरीर बलवान और बलिष्ठ हो । अगर मानव के पास करोडो रुपया भी है तो भी वह सुख नही पा सकता अगर उसका शरीर निरोग न हो शरीर की निरोगता भी एक धन है । सुख देने वाली है । इसलिए परमात्मा से श्रेष्ठ शारीरिक बल मांगा है । क्योंकि शारीरिक बल पाकर भी किसी को दुख न पहुचाए स्वयं भी सुखी रहे । दूसरो को भी सुखी रख ।

5 वाच स्वाद्मानम—वाणी का माधुर्य भी एक धन है । परमात्मा से प्रार्थना है कि प्रभु हम इस श्रेष्ठ धन से भी धनी रहे । हमारी वाणी मे सदा माधुर्य रह । क्योंकि श्रेष्ठ वाणी ही सुख देने वाली है ।

6 अह्ना सुदिनत्व धेहि—जीवन मे आने वाले प्रत्येक श्रेष्ठ दिन भी एक धन हैं । जीवन के सभी धन रूपी दिन जो हम हमारे कर्मानुसार मिले है वह भी श्रेष्ठ हो सुख पूर्वक व्यतीत हो ।

7 सन्तान भी धन है । गृहस्थी के पास धन सम्पति सुख के सभी साधन हो परन्तु उसकी सन्तान श्रेष्ठ न हो तो वह कोई भी सुख नही पा सकता सन्तान का श्रेष्ठ होना भी अति आवश्यक है । जैसे मन्त्र मे बताया गया है । श्रेष्ठानि द्रविणानि—सभी धन श्रेष्ठ हो तभी पूर्ण सुख मिल सकता है एक धन के बिगड़ जाने से भी सुख मे कमी आ जाती है । मानव का जन्म सुख प्राप्ति के लिए हुआ है । केवल एक मानव का चोला ही ऐसा चोला है जिस में जीवपूर्ण सुखो की प्राप्ति कर लेता है । यही एक चोला है जिसके द्वारा मानव मोक्ष को प्राप्त कर सकता है । धर्म अर्थ काम और मोक्ष की प्राप्ति के लिए यह ही चोला है ।

मानव अपने जीवन मे सभी प्रकार के ऐश्वर्यों को प्राप्त कर लेता है और महानता की चरम सीमा को पा लेता है । परन्तु तभी सुखो को पा सकता है अगर सभी सुखी करने वाले धन श्रेष्ठ हो गृहस्थी के सभी धनो की श्रेष्ठता आवश्यक है और धनो के साथ 2 गृहस्थी की सन्तान भी श्रेष्ठ हो उत्तम योग्य और लायक हो योग्य सन्तान धन हीन व्यक्ति को भी धनी और दुखो से ग्रस्त गृहस्थी को दुखो से छुडा कर सुखी बना देती है । और सभी प्रकार के ऐश्वर्यों को अपने माता पिता के चरणो मे न्योछावर कर देती है । अश्रेष्ठ अर्थात नालायक सन्तान माता पिता के सभी प्रकार के ऐश्वर्यों को धन तथा सम्पत्ति को नष्ट कर देती है । और उनके जीवन मे सुखो के स्थान पर दुखो को पैदा कर देती है ।

इस लिए सन्तान रूप में जो धन हमे प्राप्त हो वह श्रेष्ठ होना आवश्यक है । सन्तान का श्रेष्ठ होना मानव के अपने ऊपर निर्भर है । जैसे अन्य ऐश्वर्यों के प्राप्त करने मे मानव परिश्रम और त्याग करता है । उनकी प्राप्ति मे अपना तन मन लगाता है । उसी प्रकार सन्तान के निर्माण मे भी मानव को परिश्रम करना चाहिए । इसके लिए परिश्रम इस लिए भी आवश्यक है क्योंकि इसी एक धन ऐश्वर्य से उसके सभी ऐश्वर्य उसको सुखी बनाने वाले है । अह्ना सुदिनत्व उस के सभी जीवन के दिन सुदिन श्रेष्ठ होते हैं अर्थात उसके जीवन के सभी दिन सुख पूर्वक व्यतीत होते जाते हैं । रयीणा पोषम उसका धन उसकी पुष्टि करने वाला होता है । तनूनाम अरिष्टिम उसके शरीर को निरोग रखने वाला है । अर्थात जो माता पिता सन्तान की ओर से निश्चिन्त हैं अपनी सन्तान के कार्यों से तथा व्यवहार से प्रसन्न रहते हैं उनका मन सदा प्रसन्न रहता है वह निरोग रहते हैं स्वस्थ्य धन उनका श्रेष्ठ धन बन जाता है । वाच स्वाद्मानम उनकी वाणी मे भी मिठास आ जाती है और उनकी वाणी सुख देने वाले वचन बोलती है । आशीर्वाद भरे शब्द बोलती है ।

इस प्रकार इस मन्त्र मे प्रभु से श्रेष्ठ धनो की प्रार्थना की गई है । वह प्यारा प्रभु हमें श्रेष्ठ धन दे ।

## जिनका बलिदान दिवस १९ दिसम्बर को है काल कोठरी के सींखचों के पीछे से—

# शहीद बिस्मिल का नवयुवकों को ब्रह्मचर्य सन्देश

ब्रह्मचारी रामप्रसाद जी ने भारत के नवयुवकों की चरित्र सम्बन्धी दशा से खिन्न होकर नवयुवकों को मार्ग दर्शन के लिए फांसी से दो दिन पहले अपनी आत्मकथा के अन्दर ही एक सन्देश भेजा था। जिसमें नवयुवकों की आचारहीनता का वर्णन किया है। जब तक देश के नवयुवकों का चरित्र ऊंचा नहीं होता तब तक देश की उन्नति असम्भव है। ...य की शिक्षा देते हुए उन्होंने ब्रह्मचर्य के साधनों का भी वर्णन किया है। पाठकों के लाभार्थ उस सारे उद्धरण को मैं यहां उन्हीं के शब्दों में लिखता हूं—

—सहसम्पादक

### ब्रह्मचर्य

'वर्तमान समय में इस देश की कुछ ऐसी दुर्दशा हो रही है कि जितने धनी और गण्यमान्य नेता हैं, उनमें 99 प्रतिशत ऐसे हैं जो अपनी सन्तान रूपी अमूल्य धन राशि को अपने नौकर तथा नौकरानियों को सौंप देते हैं उनकी जैसी इच्छा होवे उसे बनावें। मध्यम श्रेणी के व्यक्ति भी अपने व्यवसाय तथा नौकरी इत्यादि में रहने के कारण सन्तान की ओर अधिक ध्यान नहीं दे सकते। सस्ता काम चलाऊ नौकर या नौकरानी रखते हैं और उन्हीं पर बाल बच्चों का भार सौंप देते हैं। ये नौकर बच्चों को नष्ट कर देते हैं। यदि कुछ भगवान की दया हो गई और ये बच्चे सेवकों से बच गये तो मुहल्ले की गन्दगी से बचाना बड़ा मुश्किल है। बाकी रहे सहे स्कूल में पहुंच कर पारंगत हो जाते हैं। कालेज पहुंचते पहुंचते आज कल के नवयुवकों के सोलहों संस्कार हो जाते हैं। कालेज में पहुंचकर ये नवयुवक समाचार पत्रों में दिये हुए औषधियों के विज्ञापन देख देखकर दवाइयों को मंगा-मंगाकर धन नष्ट करना आरम्भ करते हैं। 95 प्रतिशत की आंख खराब हो जाती हैं। कुछ को शारीरिक दुर्बलता तथा कुछ को फैशन से ऐनक लगाने की बुरी आदत पड़ जाती है। शायद ही कोई विद्यार्थी ऐसा हो जिसकी प्रेमकथाएं प्रचलित न हों। ऐसी विचित्र बातें सुनने में आती हैं कि जिनका उल्लेख करने में भी ग्लानि होती है। यदि कोई विद्यार्थी सच्चरित्र बनने का प्रयत्न भी करता है और स्कूल या कालेज में उसे अच्छी शिक्षा भी मिल गई तो परिस्थितियां जिनमें उसे निर्वाह करना पड़ता है उसे सुधरने नहीं देतीं। वे विचारते हैं कि थोड़ा सा इस जीवन का आनन्द ले लें। यदि कुछ खराबी पैदा हो गई तो औषध का सेवन कर या पौष्टिक पदार्थों से उसे दूर कर लेंगे। किन्तु यह उनकी भूल है। अंग्रेजी की कहावत है—Only for once and for ever तात्पर्य यह है कि यदि एक समय कोई बात पैदा हुई मानो सदा के लिए रास्ता खुल गया। ... कोई लाभ नहीं पहुंचातीं। अण्डों का जूस मछली का तेल, मांस आदि पदार्थ भी व्यर्थ सिद्ध होते हैं। सबसे आवश्यक बात चरित्र सुधारना ही होता है। विद्यार्थियों तथा उनके अध्यापकों को उचित है कि देश की दुर्दशा पर दया करके अपने चरित्र को सुधारने का प्रयत्न करें। संसार में ब्रह्मचर्य ही सारी शक्तियों का मूल है। बिना ब्रह्मचर्य व्रत पालन किए जीवन नितान्त शुष्क और नीरस है। विद्या बल तथा बुद्धि सब ब्रह्मचर्य से ही प्राप्त होते हैं। संसार में जितने बड़े आदमी हुए हैं उनमें से अधिकतर ब्रह्मचर्य के प्रताप से ही बड़े बने और सैकड़ों हजारों वर्ष बाद भी उनका यशोगान करके मनुष्य अपने आपको कृतार्थ करते हैं। ब्रह्मचर्य की महिमा यदि जाननी हो तो परशुराम, राम लक्ष्मण कृष्ण, भीष्म जैमिनी ईसा, बन्दा बैरागी रामकृष्ण दयानन्द तथा राममूर्ति की जीवनियों का अध्ययन करो।

जिन विद्यार्थियों को बाल्यावस्था में किसी बुरे कुटेव की आदत पड़ जाती है या जो बुरी संगत में पड़कर अपना आचरण सुधारने का यत्न करते हैं परन्तु वे सफल नहीं होते। उन्हें निराश नहीं होना चाहिए। मनुष्य जीवन अभ्यासों का एक समूह है। मनुष्य के मन में अनेक प्रकार के विचार तथा भाव उत्पन्न होते हैं। उनमें जो उसे रुचिकर होते हैं वे प्रथम कार्य रूप में परिणत होते हैं। क्रिया के बार बार होने से उसमें से ऐच्छिक भाव निकल जाता है और उनमें तत्कालीन प्रेरणा हो जाती है। इन तात्कालिक प्रेरक क्रियाओं की जो पुनरावृत्ति का फल है उसे अभ्यास कहते हैं। मानवीय चरित्र इन्हीं अभ्यासों द्वारा बनता है। अभ्यास से तात्पर्य आदत स्वभाव बान है। अभ्यास अच्छे और बुरे दोनों प्रकार के होते हैं। यदि हमारे मन में निरन्तर अच्छे विचार उत्पन्न हों तो उनका फल अच्छे अभ्यास होंगे और यदि मन बुरे विचारों में लिप्त हो तो निश्चय रूपेण अभ्यास बुरे होंगे। मन इच्छाओं का केन्द्र है। उन्हीं की पूर्ति के लिए मनुष्य को प्रयत्न करना पड़ता है। अभ्यासों के बनने में पैतृक संस्कार अर्थात माता पिता के अभ्यासों के अनुसार अनुकरण ही बच्चों के अभ्यास का सहायक होता है दूसरे जैसी परिस्थितियों में निवास होता है वैसे अभ्यास भी पड़ते हैं। तीसरे प्रयत्नों से अभ्यास होता है। यह शक्ति इतनी प्रबल हो सकती है कि इसके द्वारा मनुष्य पैतृक संस्कार तथा परिस्थितियों को भी जीत सकता है। हमारे जीवन का प्रत्येक कार्य अभ्यासों के आधीन है। यदि अभ्यासों द्वारा हमें कार्य में सुगमता प्रतीत न होती तो हमारा जीवन बड़ा दुःखमय प्रतीत होता। लिखने का अभ्यास वस्त्र पहनना पठन-पाठन इत्यादि इसके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। यदि हमें प्रारम्भिक समय की भान्ति सदैव सावधानी से काम लेना हो तो कितनी कठिनता प्रतीत होती। इसी प्रकार बालक का चलना और खड़ा होना भी है। उस समय वह कितना कष्ट अनुभव करता है किन्तु एक मनुष्य मीलों पैदल चला जाता है। बहुत लोग तो चलते चलते भी नींद ले लेते हैं। जैसे जेल में बाहरी दीवार पर घड़ी में चाबी लगाने वाले जिन्हें बराबर छः-छः चाबी देनी पड़ती हैं वे चलते चलते सो लेते हैं।

मानसिक भावों को शुद्ध रखते हुए अन्तःकरण को उच्च विचारों से बलपूर्वक सम्पन्न करने का अभ्यास करने से सफलता अवश्य होगी। प्रत्येक विद्यार्थी नवयुवक को जो कि ब्रह्मचर्य व्रत के पालन की इच्छा रखता है उचित है कि अपनी दिनचर्या अवश्य निश्चित करे। खान-पान का विशेष ध्यान रखें। महात्माओं के जीवन चरित्र सम्बन्धी पुस्तकों का अवलोकन करें। प्रेमालाप तथा उपन्यासों में समय नष्ट न करें। खाली समय अकेला न बैठे। जिस समय कोई विचार उत्पन्न हो तुरन्त शीतल जल पीकर घूमने लगे या अपने से किसी बड़े के पास जाकर बातचीत करें। अश्लील गजलों शेरों तथा गानों को न पढ़ें और न सुनें। स्त्रियों के दर्शन से बचता रहे। माता तथा बहन से भी एकान्त में न मिलें। सुन्दर सहपाठियों या अन्य विद्यार्थियों से स्पर्श तथा आलिङ्गन की आदत न डाले।

विद्यार्थी प्रातःकाल सूर्योदय से एक घण्टा पहले (प्रातः चार बजे लेकर) शैय्या त्याग कर शौचादि से निवृत्त हो व्यायाम करें या वायु सेवनार्थ बाहर खुली हवा में जाए। सूर्योदय से 5 10 मिनट पूर्व स्नान से निवृत्त होकर यथा विश्वास परमात्मा का ध्यान करें। सदैव कुएं के ताजे जल से स्नान करे। यदि कुएं का जल प्राप्त न हो तो जल को थोड़ा सा गुनगुना कर लें। गर्मियों में शीतल जल से स्नान करे। स्नान के पश्चात् एक खुरदरे तौलिया या अंगोछे से शरीर को खूब मले। उपासना के पश्चात् थोड़ा सा जल पान करे। कोई फल शुष्क मेवा दुग्ध अथवा सबसे उत्तम यह है कि गेहूं का दलिया रखा कर यथा रुचि मीठा या नमक डालकर खावें। फिर अध्ययन करें और दस बजे से ग्यारह बजे के मध्य में भोजन कर लेवें। भोजन में मांस, मछली चटपटे खट्टे, गरिष्ट, बासी तथा उत्तेजक पदार्थों का त्याग करें। प्याज लहसुन, लाल मिर्च, आम की खटाई और अधिक मसालेदार भोजन कभी न खावे। सात्विक भोजन करे। शुष्क भोजनों का भी त्याग करे। जहां तक हो सके सब्जी अर्थात् साग खूब खावे। भोजन खूब चबा-चबा कर करे। अधिक गर्म ... भोजन भी वर्जित है। स्कूल अथवा कालेज से आकर थोड़ा सा आराम करके एक घण्टा लिखने का काम करके खेलने के लिए जावें। मैदान में थोड़ा सा घूमें भी, घूमने के लिए चौक बाजार की गन्दी हवा में जाना ठीक नहीं। स्वच्छ वायु का सेवन करे। सायंकाल भी शौच जावे, थोड़ा सा ध्यान करके हल्का सा भोजन कर ले। यदि हो सके तो रात्रि को केवल दूध पीने का अभ्यास करे या फल खा लिया करे। स्वप्नदोषादिक व्याधियां केवल पेट के भारी होने से ही होती हैं। जिस दिन भोजन भली भान्ति नहीं पचता उसी दिन विकार होता है या मानसिक भावनाओं की अशुद्धता से निद्रा ठीक न आकर स्वप्नावस्था में वीर्यपात हो जाता है। रात्रि के समय साढ़े दस बजे तक पठन-पाठन करें पुनः सो जावें। सोना खुली हवा में चाहिए। बहुत मुलायम और चिकने बिस्तर पर भी न सोना चाहिए। जहां तक हो सके लकड़ी के तख्त पर कम्बल या गाढ़े की चद्दर बिछा कर सोवें। अधिक पाठ करना हो तो साढ़े नौ या दस बजे सो जावें। प्रातः साढ़े तीन या चार बजे उठकर कुल्ला करके शीतल जलपान करे और शौच से निवृत्त होकर पठन पाठन करे। सूर्योदय के समय फिर नित्य की भान्ति व्यायाम या भ्रमण करे। सब व्यायामों में दण्ड बैठक सर्वोत्तम है। जहां जी चाहा, व्यायाम कर लिया। यदि हो सके तो प्रोफेसर राममूर्ति की विधि से दण्ड तथा बैठक करे। प्रोफेसर साहब की रीति विद्यार्थियों के लिए बड़ी लाभदायक है। थोड़े समय में ही पर्याप्त परिश्रम हो जाता है। दण्ड बैठक के अलावा शीर्षासन और पद्मासन का भी अभ्यास करना चाहिए और अपने कमरे में वीरों और महात्माओं के चित्र रखने चाहिए।' रामप्रसाद जी के यह अमूल्य विचार नवयुवकों को सदा प्रेरणा देते रहेंगे।

—धर्मदेवार्य

## सम्पादकीय—

# शहीदों की याद

दिसम्बर मास के आरम्भ होते ही हमें शहीदों की याद ताजा हो जाती है। इसी मास में 19 दिसम्बर को शहीद रामप्रसाद बिस्मिल का बलिदान दिवस और 23 दिसम्बर को अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का बलिदान दिवस है। आगामी अंक में हम उनके जीवन पर विस्तार से प्रकाश डालेंगे, परन्तु इस अंक से भी कुछ विचार पाठकों के सामने रखना चाहता हूं। एक दोहा किसी कवि का बहुत प्रसिद्ध है जिसको अक्सर विद्वान् लोग बोलते हैं —

> शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर वर्ष मेले।
> धर्म पर मरने वालों का यही बाकी निशां होगा ॥

आज विचारणीय प्रश्न है क्या सचमुच आज शहीदों की चिताओं पर मेले लगते हैं? उनके बलिदान दिवस मनाए जाते हैं? उनको याद किया जाता है? मालूम होता है कि अब हम उन शहीदों को भूलते चले जा रहे हैं जिनकी कृपा से हमें यह आजादी मिली थी। जिनके बलिदानों ने अंग्रेज सरकार की जड़ों को कुल्हाड़ा बनकर काट डाला था। जिनकी हुंकारों से अंग्रेज सरकार कांप उठी थी और अपना बोरिया-बिस्तरा गोल करके अंग्रेज भारत को स्वतन्त्र घोषित करके यहां से चले गये थे।

आज नींव के पत्थरों को भुलाया जा रहा है, न सरकार ही उन्हें याद करती है और न जनता ही। शहीदों की चिताओं पर मेले तो क्या लगने थे उन्हें याद भी नहीं किया जाता। यह स्थिति शोचनीय है। शहीद किसी भी जाति के प्रेरणा स्रोत होते हैं। समय 2 पर उनकी याद करके जनता उनसे प्रेरणा लेती रहती है। परन्तु अगर उन्हें याद ही नहीं किया जाएगा तो प्रेरणा कैसे ले सकेंगे। इसीलिए आज देश के प्रति जो हमारा कर्तव्य है उसे हम अच्छी प्रकार से नहीं निभा रहे। आज देश की चिन्ता न करके लोग अपने स्वार्थों को पूरा करने में लगे हैं। उनका अपना स्वार्थ पूरा होना चाहिए, देश जाए भाड़ में, उन्हें इसकी कोई चिन्ता नहीं। आसाम में, पंजाब और दूसरे कई राज्यों में स्वार्थी लोग जो कुछ कर रहे हैं इससे यह स्पष्ट हो रहा है कि अपने स्वार्थ के लिए लोग देश के साथ गद्दारी करने पर उतारू हैं यहां तक कि मिलट्री के रिटायर्ड अधिकारी अपने देश के गुप्त दस्तावेज बाहिर के लोगों को कुछ पैसों के लालच में सौंप रहे हैं। यह इसी-लिए हो रहा है कि हम अपने उन शहीदों को भूलते जा रहे हैं जिन्होंने इस देश की आजादी के लिए अपना जीवन तक हंसते-हंसते न्योछावर कर दिया था।

अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल भी उनमें से एक थे। जिन्होंने हंसते-हंसते आजादी की बलिवेदी पर अपने जीवन को भेंट चढ़ा दिया था। रामप्रसाद एक कट्टर आर्य समाजी थे। देश भक्त और आर्य समाजी दोनों शब्द उस समय एक दूसरे के पर्यायवाची शब्द थे। जो आर्य समाजी होता था वह क्रान्तिकारी भी होता था।

रामप्रसाद जी ने जब सत्यार्थ को पढ़ा और महर्षि दयानन्द के देशभक्ति के विचारों को पढ़ा तो देश प्रेम का समुद्र उनके हृदय में ठाठें मारने लगा। प्रारम्भ में रामप्रसाद जी ने आर्य कुमार सभा के माध्यम से देश जाति और समाज की सेवा आरम्भ की। शाहजहांपुर की आर्य कुमार सभा बड़ी गतिशील संस्था थी और इसके संस्थापकों तथा संचालक रामप्रसाद जी ही थे। लखनऊ में उस समय कांग्रेस के अधिवेशन में जो भारतवर्षीय कुमार सम्मेलन हुआ था उसमें इसी सभा के माध्यम से रामप्रसाद जी ने भाग लिया था और पुरस्कार प्राप्त किये थे।

रामप्रसाद एक सच्चरित्र सदाचारी, कर्मठ नवयुवक थे, उनका शरीर बड़ा हृष्ट पुष्ट तथा गठीला था वह बड़े बलवान् और बलिष्ठ थे और इस सबका कारण आर्य समाज था। वह आर्य समाजी बनने से पहले कुछ व्यसनों से घिर गये थे, परन्तु आर्य समाजी बनते ही सभी व्यसन उनसे दूर भाग गए।

रामप्रसाद जी यज्ञ के बड़े प्रेमी थे। उनका यज्ञ कुण्ड आज भी गुरुकुल कांगड़ी में सुरक्षित रखा हुआ है। वह कट्टर आस्तिक थे। ईश्वर पर उनका अटूट विश्वास था। गिरफ्तार हो जाने पर जेल में भी वह दोनों समय सन्ध्या करते रहे। व्यायाम नियमित करते रहे। उनको मौत का किंचित् मात्र भी भय नहीं था। वह जेल में भी वैसे ही रहते थे जैसे वह जेल से बाहिर रहते थे।

उनके ऊपर केस चला और उन्हें फांसी की सजा हो जाती है, जिनको फांसी की सजा हो जाती है उनकी नींद हराम हो जाती है परन्तु रामप्रसाद जी अपने कार्यक्रम में व्यस्त रहते थे और आराम से सोते थे। हैरानी की बात यह है कि इन दिनों में उनका वजन घटने के स्थान पर और बढ़ गया। क्योंकि देशभक्त मौत से डरते नहीं हंसते-हंसते उसका आलिंगन करते हैं। हम इस शहीद को काल कोठरी में भी हंसता हुआ पाते हैं।

19 दिसम्बर 1926 को प्रातः साढ़े छः बजे उन्हें फांसी होनी थी। वह इसके लिए पहले से ही तैयार थे। सन्ध्या वन्दना नित्यकर्म से निवृत्त होकर वेद मन्त्रों का पाठ करते हुए उन्होंने फांसी के फन्दे को गोरखपुर की जेल में अपने गले में डाल लिया था।

उनसे पूछा गया कि उनकी अन्तिम इच्छा क्या है? उत्तर था 'मैं ब्रिटिश साम्राज्य का विनाश चाहता हूं। यह शहीद की अन्तिम इच्छा थी और 15 अगस्त 1947 को 21 वर्ष बाद ब्रिटिश साम्राज्य का अन्त हो गया और शहीद की यह इच्छा पूर्ण हो गई।

देश तो आजाद हो गया परन्तु जिन शहीदों के बलिदान के स्वरूप हमें यह आजादी मिली है आज हम उन शहीदों को भूलते जा रहे हैं। राम प्रसाद बिस्मिल के नाम सरकार ने कोई स्मारक नहीं बनाया न ही उनके बलिदान दिवस को सरकारी तौर पर मनाया जाता है। परन्तु आर्य समाजी भी इस शहीद को भूलते जा रहे हैं। आर्य समाज को तो अपने इस नवयुवक का बलिदान दिवस अवश्य मनाना चाहिए। 19 दिसम्बर को शहीद राम प्रसाद बिस्मिल का और 23 दिसम्बर को अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस अवश्य मनाएं।

# इस धर्मान्तरण को रोका जाए

भारत में इस्लाम धर्म के विस्तार के लिए अरब खाड़ी के देशों का धन आ रहा है। गत वर्षों में मीनाक्षी पुरम् की घटना ने सारे भारत को झकझोर कर रख दिया था। अब इसकी पुनरावृत्ति रामनाथ पुरम में होने जा रही है। गत 27 अक्तूबर को 19 हरिजन परिवारों को 86 व्यक्तियों ने सायपुर में इस्लाम स्वीकार कर लिया है इन्हीं के नजदीकी रिश्तेदार 999 परिवारों से 3000 व्यक्ति शीघ्र ही इसका अनुसरण करने वाले हैं। ऐसा समाचार पत्रों में छपा है। यह स्थिति बहुत भयानक है इस प्रकार के धर्मान्तरण पर सरकार की ओर से तुरन्त प्रतिबन्ध लगना चाहिए।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री राम गोपाल जी शाल वाले ने प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी से मिलकर रामनाथ पुरम में अरब देशों में नौकरी देने के प्रलोभन से 3000 हरिजनों को मुसलमान बनाने की योजना से और धर्म परिवर्तन के इस देश व्यापी षड्यन्त्र से उन्हें अवगत कराया है और कहा कि सरकार को इस मामले में हस्तक्षेप करना चाहिए। प्रधानमन्त्री ने इस सम्बन्ध में चिन्ता तो व्यक्त की है परन्तु इससे अधिक कुछ नहीं।

आर्य बन्धुओ इस कार्य में सरकार तो शायद कुछ न कर सके परन्तु आर्य समाज कर सकता है। यह ठीक है कि आज का मानव धन की चकाचौंध में अन्धा हो रहा है और उसे यह अगर अपना, धर्म, ईमान सभी कुछ बेच कर भी प्राप्त हो तो वह इस में कोई लज्जा अनुभव नहीं करता। यही कारण है गरीबी में पीस रहे कुछ हरिजन अरब देशों में नौकरी प्राप्त करने के लिए या अरब देशों के द्वारा दिए जाने वाले धन को प्राप्त करने के लिए अपने हिन्दू धर्म को छोड़ने के लिए तैयार हो रहे हैं। आर्य समाज धर्म प्रचार के द्वारा उन्हें मुस्लिम होने से बचा सकता है। आज हमें स्वामी श्रद्धानन्द और पं लेखराम जैसे दीवानों की आवश्यकता है। जो सिर पर कफन बांध कर इस धर्म परिवर्तन को रोकने के लिए मैदान में आ डटें। धर्म परिवर्तन को रोकने के लिए पायापायल में गाड़ी न रुकने पर पं लेखराम जी ने अपने जीवन की परवाह न करते हुए चलती गाड़ी से छलांग लगा दी थी। आज भी हमें इसी प्रकार के दीवानों की आवश्यकता है।

पंजाब हिमाचल और हरियाणा में तो हरिजनों की कोई समस्या नहीं है परन्तु उत्तर प्रदेश और दूसरे कुछ इलाकों में आज भी हरिजनों में बहुत गरीबी है और कई स्थानों पर हरिजनों के साथ अच्छा व्यवहार भी नहीं किया जा रहा। वहां आर्य समाज का भी प्रचार बहुत कम है। इस लिए सार्वदेशिक सभा इस धर्मान्तरण को रोकने के लिए प्रयत्न कर रही है। आर्य बन्धुओं को इस कार्य में पूरा-पूरा सहयोग देना चाहिए।

—सह-सम्पादक

# दीर्घ जीवन की प्राप्ति के साधन

ले.—श्री रघुनन्दन शर्मा

लोक की अभिलाषा रखने वाले समस्त प्राणियो की अन्तिम सम्मति यही है कि कोई कभी न मरे और परलोक की अभिलाषा रखने वालो की भी यही सम्मति है कि एक बार मर कर फिर न पैदा होना पडे। अर्थात् वर्तमान जिन्दगी से लेकर मरने की जिन्दगी के बाद तक दीर्घ जीवन की-कभी न मरने की-अविच्छिन्न जीवनेच्छा समस्त प्राणि समुदाय में एक समान विद्यमान है और सब इसी इच्छा की पूर्ति मे लगे रहते हैं कि हम कभी न मरें। अतएव इस सर्वसम्मति से स्वीकृत सिद्धान्त के अनुसार की शिक्षाओ में केवल वेदो की ही शिक्षा उपयोगी ठहरती है। क्योंकि वही शिक्षा इस लोक मे सबको दीर्घ जीवन प्राप्त करने का उपाय बतलाती है और वही शिक्षा परलोक मे भी सबको अनन्त जीवन प्राप्त करने का उपाय बतलाती है। इसलिए अब देखना चाहिए कि दोनो लोको मे दीर्घ जीवन प्राप्त करने के लिए वह शिक्षा क्या उपाय बतलाती है। दोनो लोको मे अनन्त जीवन प्राप्त करने के लिए वैदिक आर्य सभ्यता सात्विक आहार, उत्तम जल वायु और उचित श्रम का सेवन ब्रह्मचर्य का पालन चिन्ता का त्याग, सदाचरण सगीत और प्राणायाम आदि सात उपायो की शिक्षा देती है, जो सर्वमान्य है। इसलिए हम यहा केवल इनका थोडा-थोडा वर्णन करके बतला देना चाहते हैं कि ये सातो उपाय किस प्रकार सबको समान रूप से दीर्घ जीवन प्राप्त कराने वाले हैं।

सबसे पहला उपाय सात्विक आहार है। सात्विक आहार मे दूध दहि घृत, फल, फूल और हविष्यान्न की गणना है। अब देशी और विदेशी सभी वैद्यो और डाक्टरो ने मान लिया है कि इन पदार्थों के आहार से मनुष्य बीमार नही होता, सदैव तरोताजा रहता है और दीर्घजीवी होता है। इसके सिवाय इन सात्विक आहारो से बल, कांति, मेधा रूप स्मृति और धारणा आदि अनेक दैवी शक्तियों की भी प्राप्ति होती है। इसलिए दीर्घ जीवन प्राप्त करने वालो को सदैव दूध और फलो का सेवन करना चाहिए।

भोजन के बाद दीर्घ जीवन से सम्बन्ध रखने वाली दूसरी चीज हवा पानी और मेहनत है। हवा पानी शहरो का अच्छा नही है। इस लिए शहरो से बाहर जगल मे साद और साफ घरो मे रहना चाहिए और फल तथा दूध उत्पन्न करने वाले श्रम को मर्यादा के साथ करना चाहिए। ये पदार्थ वाटिकाओ और चरागाहो के द्वारा गौवो से प्राप्त हो सकते हैं, इस लिए वाटिकाओं के लगाने और चरागाहों के ही बनाने मे श्रम करना चाहिए, दण्ड बैठक हाकी क्रिकेट आदि मे नहीं।

दीर्घ जीवन की सहायक तीसरी बात चिन्ता की निवृत्ति है। जो मनुष्य सदा चिन्ता ग्रस्त रहते हैं उनका स्वास्थ्य नष्ट हो जाता है। किसी कवि ने सत्य ही कहा है कि—

चिता चिन्ता द्वयोर्मध्ये चिन्ता नाम गरीयसी।
चिता दहति निर्जीवं चिन्ता दहति जीवितम्॥

अर्थात् चिन्ता और चिता मे चिन्ता ही बडी है क्योंकि चिता केवल मुर्दों को ही जलाती है पर चिन्ता तो जिन्दा मनुष्यो को जलाकर भस्म कर देती है। इसलिये दीर्घ जीवन की इच्छा रखने वालो को सदैव चिन्ता का त्याग ही करना चाहिए। जब खाने के लिए बगीचो से फल और गौवो से दूध मिलता है, तब चिन्ता किस बात की? चिन्ता तो केवल आहार की है पर 'का चिन्ता मम जीवने यदि हरिर्विश्वम्भरो गीयते' अर्थात् जो परमात्मा मनुष्यो और पशुओ को प्रदान करके सारे विश्व का भरण पोषण करता है उसके राज्य मे अपने जीवन की क्या चिन्ता? चिन्ता तो कामी लोभी और ईर्षा द्वेष रखने वाले लोगो को होती है। पर जिसने अर्थ, काम और मान के व्यर्थ पाखण्ड को छोड दिया है, उसके लिये चिन्ता करने की आवश्यकता नही। क्योंकि चिन्ता से शोक और शोक से दौर्बल्य प्राप्त होता है और अन्त मे जीवन नष्ट हो जाता है इसलिए दीर्घ जीवन की इच्छा करने वालो को कभी चिन्ता न करना चाहिये।

दीर्घ जीवन का चौथा उपाय ब्रह्मचर्य है। योगशास्त्र मे लिखा है कि "ब्रह्मचर्य प्रतिष्ठायां वीर्य लाभः" अर्थात् ब्रह्मचर्य से वीर्य प्राप्त होता है और 'वीर्य बाहुबल' अर्थात वीर्य से बल प्राप्त होता है। बलवान मनुष्य ही वाटिकाओ के लगाने और पशुओ के लिए चरागाह बनाने मे श्रम कर सकता है और वीर्यवान ही सदैव चिन्ता से मुक्त रह सकता है। क्योंकि वीर्य मे सबसे बड़ा गुण यह है कि वह मनुष्य को सदैव आनन्दित रखता है। वीर्य मे एक खास प्रकार की मस्ती होती है जो मनुष्य को सदैव प्रसन्न रखती है और चिन्तित नही होने देती। इसके सिवाय ब्रह्मचारी ही बहुसन्तान के दुखो से भी बच सकता है और वही अमोघ वीर्य होकर आवश्यक और उत्तम सन्तान को उत्पन्न कर सकता है, तथा वही दीर्घातिदीर्घ जीवन प्राप्त कर सकता है। वेद में लिखा है कि "ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमुपाघ्नत" अर्थात विद्वान लोग ब्रह्मचर्य से ही मृत्यु को हटा सकते हैं। इसलिए दीर्घजीवन अनुष्ठान करने वालों को अवश्य ब्रह्मचर्य की आवश्यकता है।

दीर्घ जीवन का पांचवा उपाय सदाचार है। जो मनुष्य चोरी, व्यभिचार, असत्य भाषण, मद्य मास का सेवन, कलह, लडाई और अन्य अनेकों प्रकार की असभ्यता, अशिष्टता तथा ईर्षा द्वेष आदि अनाचारो को करता है और सयम धृत इन्द्रियनिग्रह आदि नहीं करता, उस की आयु क्षीण हो जाती है। परन्तु जो मनुष्य सदाचार रत है—आचरणशील है—चरित्रवान है, दीर्घायु होते हैं इसमें सन्देह नहीं। मनु भगवान कहते हैं कि "सदाचारेण पुरुषः शतवर्षाणि जीवति" अर्थात् सदाचार से मनुष्य सौ वर्ष जीता है। इसका कारण यही है कि जो सदाचार के नियमो मे बन्धे होते हैं वे मर्यादित और धृतयुक्त होते हैं। अत वे अवश्य ही दीर्घजीवी होते हैं। इसलिए दीर्घजीवन चाहने वालो को सदैव सदाचारी होना चाहिए।

दीर्घ जीवन का छठा उपाय सगीत है। सगीत के सदृश चित्त को प्रसन्न करने वाली और कोई वस्तु ससार मे नहीं है और न प्रसन्नता के समान-आनन्द के समान-जीवनदान देने वाली कोई औषधि ही है। अतएव दीर्घ जीवन देने वाले सगीत का अभ्यास करना प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है। आर्यों ने अपने प्रत्येक कार्यों मे जो वेदो के सस्वर पाठ का जो क्रम रखा है उसका यही कारण है। आर्य लोग दिन भर किसी न किसी वैदिक यज्ञ के अनुष्ठान मे ही रहते थे और कोई न कोई वेद मन्त्र गाया ही करते थे परन्तु आजकल विद्वानो ने स्वर ज्ञान को खो दिया है। इस लिए वेदो का पाठ उतना आनन्द नही देता जितना सगीत के साथ देता था। इसलिए दीर्घजीवन चाहने वाले प्रत्येक आर्य को उचित है कि वह परमात्मा की स्तुति, प्रार्थना और उपासना से सम्बन्ध रखने वाले वेद मन्त्रों को सदैव स्वरो के साथ कायदे से गाने का अभ्यास करे। वैदिक गान से हृदय को आनन्द और मस्तिष्क को उच्च ज्ञान प्राप्त होगा, जिससे उसको अपने समस्त कामो को नियमपूर्वक करने की सूचना मिलती रहेगी और वह दीर्घ जीवन के उपायो से कभी विचलित न होगा।

दीर्घ जीवन का अन्तिम और सातवा उपाय प्राणायाम है। क्योंकि प्राणियो की आयु प्राणो पर ही अवलम्बित है। जो प्राणी जितने ही कम श्वास लेता है, वह उतना ही अधिक जीता है। कछुवा सबसे कम श्वास लेता है इसलिए वह सबसे अधिक जीता भी है। प्राणायाम से दूसरा लाभ प्राणप्रद वायु का सग्रह है। प्राणप्रद वायु के अन्दर जाने से रक्त मे रहने वाले मलो की शुद्धि हो जाती है। इसलिए मनु भगवान ने कहा है कि—जिस प्रकार अग्नि धातुओ के मलो को जला देती है, उसी तरह प्राणायाम से इन्द्रियो के मल नष्ट हो जाते हैं, मलों के नष्ट होते ही शरीर निरोग हो जाता है और दीर्घ जीवन प्राप्त होता है। प्राणायाम की ये खूबियां अब पश्चिम के विद्वानों को भी मालूम होने लगी हैं। इसलिए वहां अब प्राणायाम का खूब प्रचार हो चला है। वहा वालो को प्राणायाम से दीर्घजीवन प्राप्ति के अनेकों प्रमाण मिल चुके हैं। हमारे देश मे तो अपने बनाने मे प्राणायाम का बहुत ही अधिक प्रचार था। प्रत्येक आर्य को सायं प्रात प्राणायाम करना ही पडता था। यही कारण है कि यहा प्राणायाम की अन्तिम सीमा समाधि तक लोगो की पहुच हो गई थी। पंजाब केसरी राजा रणजीत सिंह के समय मे हरिदास वैरागी ने श्वास रहित होकर और चालीस दिन तक जमीन में गडकर दिखला दिया था कि किस प्रकार बिना श्वास के मनुष्य जी सकता है यह चमत्कार उस समय जिन अंग्रेजो ने अपनी आखो से देखा था, वह उन्होंने इतिहास मे लिख रखा है। इसी तरह मद्रास के एक योगी ने आकाश मे उडकर और कलकत्ता के भूमिकैलाश के एक योगी ने बिना श्वास के मृतवत् होकर कितने ही योरुप निवासियो को चकित किया है। इसलिए आर्यों की प्राणायाम विद्या बिलकुल ही सिद्ध दीर्घजीवन बनाने का यह उनका अन्तिम उपाय है। इस उपाय से वे इस लोक में दीर्घ जीवन प्राप्त करते थे और इसी से समाधिस्थ होकर परमात्मा का दर्शन करके परलोक का दीर्घातिदीर्घ जीवन मोक्ष भी प्राप्त करते थे। कहने का अभिप्राय यह है कि इन सातो उपायो से दीर्घ जीवन प्राप्त हो सकता है। पूर्व काल मे इन्ही के द्वारा आर्यों ने दीर्घ जीवन प्राप्त किया था और इस समय भी प्राप्त किया जा सकता है।

इन दीर्घ जीवन के उपायो मे यद्यपि इस लोक के ही दीर्घ जीवन के उपाय दिखलाई पडते हैं पर यदि विचार से देखा जाए तो यही उपाय परलोक का दीर्घ जीवन—मोक्ष—भी प्राप्त करा सकते हैं। मोक्ष प्राप्ति के साधन भी तो यही हैं। फलाहार, सदाचार, अखण्ड ब्रह्मचर्य वेदपाठ और प्राणायाम (समाधि) ही तो मोक्ष प्राप्ति के भी उपाय हैं। मोक्ष प्राप्ति भी तो इन्ही उपायो से होती है। इसका कारण यही है कि दोनो लोको का उद्देश्य दीर्घ

(शेष पृष्ठ पाच पर)

# महात्मा मुन्शीराम जिज्ञासु द्वारा—आर्यों, हिन्दुओं, मोहम्मदियों, ईसाईयों एवं शिक्षित भारतीयों को आह्वान

ले.—श्री धर्मवीर जी विद्यालंकार

श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपने समय में अनेकों क्रान्तिकारी कार्य, जिनकी प्रेरणा उन्हें महर्षि दयानन्द से मिली थी, किए, जैसे कि स्वराज्य आन्दोलन अछूतोद्धार, शुद्धि आन्दोलन, जन्मगत जात-पात का खण्डन, गुरुकुल कांगड़ी एवं हिन्दू महासभा की स्थापना आदि। ये समस्त कार्य उनके बाद आने वाली पीढ़ियों में भी चलते रहे। एक कार्य ऐसा है, जिसका अनुकरण आज तक कोई न कर सका। वह है दिल्ली की जामा मस्जिद में उनका प्रवचन। वे वहां अचानक नहीं पहुंचे थे। उन्हें मुसलमानों के कर्णधार नेताओं ने मुस्लिम जनता की ही मांग पर बड़े आग्रह, आदर एवं सत्कार से आमन्त्रित किया था। स्वामी जी में ऐसा कौन सा जादू था जो मुसलमानों के सिर पर चढ़ चुका था। वे शुद्धि आन्दोलन (मुसलमान बने हिन्दुओं को पुन हिन्दू परिवर्तन) के संस्थापक एवं कट्टर समर्थक थे। कांग्रेस की मुस्लिम तुष्टिकरण नीति से असन्तुष्ट होकर जिस कांग्रेस के वे अध्यक्ष भी रहे थे, उन्होंने हिन्दू महासभा की स्थापना की थी। ऐसे स्वामी श्रद्धानन्द जी के 'जादू' को खोजना परम आवश्यक है। इस जादू की आज के सन्दर्भ में बड़ी आवश्यकता है। स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा धीर-गम्भीर वाणी में किए गए भाषण सरल हृदयग्राही भाषा में लिखे गए लेख लोक हितकारी कार्यों को सम्पादन करने का आकर्षक एवं विश्वसनीय कार्य पद्धति को खोज निकालने की प्रबल इच्छा है। इसी सन्दर्भ में मुझे स्वामी जी का एक लेख मिला है, जिसे मैं पाठकों की सेवा में प्रस्तुत कर रहा हूं।

यह लेख सन् 1897 में लिखा गया था। तब स्वामी श्रद्धानन्द अभी सन्यासी नहीं बने थे। गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना के बाद वे 'श्रद्धानन्द' बने थे और यह लेख गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना से साढ़े चार वर्ष अथवा गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना से अढ़ाई वर्ष पूर्व लिखा गया था। इस लेख से 24 वर्ष पूर्व महर्षि दयानन्द का निर्वाण हो चुका था और प. लेखराम की बलिदानी सम्भवत ताजा था। मुन्शीराम एडवोकेट से मुन्शीराम जिज्ञासु हुए थे। हिन्दू जाति की दुर्दशा का तड़प इस लेख में स्पष्ट है। आज के सन्दर्भ में यह लेख सर्वथा उपयोगी है। मुन्शीराम जिज्ञासु के उस 'जादू' को समझने में सहायता देता है जिसके कारण स्वामी श्रद्धानन्द जी ने जामा मस्जिद की वेदी से अपना प्रवचन गायत्री मन्त्र से आरम्भ किया था और जिसकी पुनरावृत्ति आज तक नहीं हो सकी।

उस लेख का अविकल रूप प्रस्तुत है—

## ब्राह्मण धर्मियो से निवेदन

आर्य पुरुषो! सोचो कि वे कौन से सिद्धान्त थे जिन्होंने एक लंगोट बन्द साधु को वह शक्ति प्रदान की थी जो इस समय महाराजाओं में भी दिखाई नहीं देती। पता लगाओ कि आर्य समाज के स्थापित करने से ऋषि का क्या प्रयोजन था? दयानन्द की जीवन यात्रा के मार्ग पर पथ प्रदर्शक के लिये चिन्हों की खोज करो और जिस समय तुम्हें उन्नति का शिखर बड़ा ऊंचा और भयावना प्रतीत हो, उस समय इस ज्योति स्तम्भ की ओर टकटकी लगाकर ऊपर चढ़ते जाओ। फिर देखो, कितनी सरलता से मार्ग समाप्त हो जाता है।

मेरे प्यारे हिन्दू भाईयो! ब्राह्मण धर्म का अभिमान करने वालो! तुम्हारे लिए महर्षि दयानन्द के जीवन का अध्ययन अत्यन्त आवश्यक है। तुम पुराणों में सुनते आए हो कि कलियुग में भी सतयुग की लड़ी वर्तमान रहेगी। अपने हृदय से पूछो कि सतयुग किस प्रकार आ सकता है। तुम्हें बतलाया जाता है कि दयानन्द ने तुम्हारे धर्म का नाश कर दिया है। सुनी हुई बातों पर कुछ समय के लिए त्याग करके घटनाओं के आधार पर जरा विचार तो करो कि दयानन्द ने धर्म का नाश किया है या कि तुम्हारे बिछुड़े हुए धर्म को तुम्हें फिर मिलाने की चेष्टा की है। क्या तुम्हारा हृदय साक्षी देता है कि—

वेदों का प्रकाश करने वाला दयानन्द
वेदों के प्रेम में पागल कहलाने वाला दयानन्द
आर्ष ग्रन्थों में रुचि रखने वाला दयानन्द
ऋषियों की निन्दा सहन न करने वाला दयानन्द।

कभी भी धर्म को हानि पहुंचा सकता है। क्या तुम अस्वीकार कर सकते हो कि दयानन्द ने तुम्हें उन वेदों का पता दिया जिनका कि चिरकाल से तुमने दर्शन तो क्या, श्रवण भी नहीं किया था। जाओ, प्रकाश के एकाएक प्रगट हो जाने पर चुंधिया मत जाओ। सावधान होकर दृष्टि डालो। यह प्रकाश तुमको अविद्या रूपी गर्त से निकालने वाला है। प्रकाश का पता देने वाले के जीवन को दीर्घ दृष्टि से पढ़ो, ताकि तुम्हें प्रकाश से लाभान्वित होने का ज्ञान प्राप्त हो सके।

## बिछुड़े भाईयो से अपील

हे मेरे बिछुड़े हुए मोहम्मदी और ईसाई मित्रो! अविद्या की अन्धकारमयी रात्रि में जब कि हाथ पसारा नहीं दीखता था तुमने भाईयो के हाथ छोड़कर अन्यों के हाथ में अपना हाथ दे दिया। जब क्रियात्मक रूप में तुम्हें विदित हो गया कि तुमने मूर्खता की है और तुम्हारी आत्माओं ने साक्षी दी है कि तुम निज गृह से दूर जा रहे हो, तो तुमने व्याकुल होकर आतुर चक्षुओं से अपने भाईयो की ओर देखा। तुम्हारे भाई उस समय स्वयं देखने योग्य न थे। फिर तुम्हारा हाथ क्योंकर पकड़ते परन्तु अब अन्धकार दूर हो गया है। वेद रूपी सूर्य का प्रकाश हो गया है। जीवन के उद्देश्य को समझो और अपने उस भाई के जीवन को पढ़ो जिसने कि तुम्हारे लिए—नहीं नहीं, केवल तुम्हारे लिए ही नहीं परन्तु सत्य की खोज करने वालों के लिए—

अपनी जान को हेय समझा,
सांसारिक सुख तथा आनन्द को हेय समझा,
और परमेश्वर के अटल नियम के आगे,
सिर को झुकाए हुए अपने मिशन को पूरा किया।

हे शिक्षा प्राप्त भाईयो! इतिहास का सूक्ष्मदृष्टि से अध्ययन करने वालो! उन्नीसवीं शताब्दी में ऋषि जीवन क्या एक अचम्भा नहीं है? मतवादियों के अद्भुत चमत्कारों से बढ़ कर क्या यह ऋषि जीवन एक अद्भुत और आश्चर्यमय चमत्कार नहीं है।

हे दयालु पिता! प्रत्येक मनुष्य को चाहे वह किसी वर्ण स्वभाव जाति अथवा सम्प्रदाय का हो, सामर्थ्य दे कि वह दयानन्द का जीवन पढ़ते हुए और उसके मिशन पर विचार करते हुए उन सिद्धान्तों को दयानन्द से पृथक करके उन पर विचार करने की शक्ति प्रदान कर जिन के प्रचार के लिए तूने दयानन्द को विशेष शक्तियां प्रदान की थी।

ओ३म् शान्ति शान्ति शान्ति।

—

# मौलवी—महबूब महेन्द्रपाल आर्य बने

गत दिवस बरवाला मौलवी महबूब अपनी पत्नी व पांच बच्चों सहित वैदिक धर्म को सर्वश्रेष्ठ मानते हुए एक विशाल समारोह में मुस्लिम मत त्याग कर आर्य बने। शुद्धि उपरान्त वे महेन्द्रपाल आर्य पत्नि नूरजहां से शान्ति देवी तथा बच्चे क्रमश नरेन्द्रपाल, सुरेन्द्रपाल, वीरेन्द्र, पाल देवेन्द्रपाल व बच्ची सावित्री बनी। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में आयोजित यह शुद्धि समारोह यज्ञ व वेद मन्त्रों के पाठ के साथ प्रारम्भ हुआ। इसके दीक्षा गुरु स्वामी शक्ति वेश संचालक गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ व पुरोहित श्री धर्मवीर जी थे। इस अवसर पर महेन्द्रपाल ने मौलवी रहते हुए अपने अनुभवों के आधार पर कुरान व मुस्लिम ने सम्प्रदाय की संकीर्णताओं व बुराईयों पर प्रहार करते हुए वैदिक धर्म की विशालता व श्रेष्ठता को सिद्ध किया। स्वामी शक्तिवेश जी स्वामी शिवानन्द जी व ग्राम प्रमुखों ने नव दीक्षित दम्पत्ति को आशीर्वाद दिया। इस अवसर पर श्री अनिल कुमार आर्य महामन्त्री केन्द्रीय आर्य युवक परिषद दिल्ली प्रदेश भी उपस्थित थे। अन्त में एक सहभोज का भी आयोजन किया गया। गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के भी ब्रह्मचारी भारी संख्या में सम्मिलित हुए। सक्रिय कार्यकर्ता श्री कृष्णसिंह आर्य ने सारी व्यवस्था की।

—चन्द्रमोहन आर्य
कार्यालय मन्त्री

(4 पृष्ठ का शेष)

जीवन ही प्राप्त करना है। यहां भी लोग दीर्घजीवन प्राप्त करना चाहते हैं और वहां से भी कभी मरने के लिए नहीं आना चाहते। यह इच्छा केवल मनुष्यों की ही नहीं है, प्रत्युत प्राणीमात्र का यही उद्देश्य है कि सबको दीर्घातिदीर्घ जीवन प्राप्त हो। इसलिए लोक व परलोक में सम्बन्ध रखने वाले दोनों दीर्घ जीवन एक ही प्रकार के उपायों से मिल सकते हैं। जो उपाय दोनों प्रकार के दीर्घ जीवन प्राप्त करने के लिए बतलाए गए हैं इन उपायों का व्यवहार करने से न किसी प्राणी की आयु और भोगों में अन्तर पड़ता है और न मनुष्यों में असमानता ही उत्पन्न होती है प्रत्युत सबको एक समान दीर्घातिदीर्घ जीवन प्राप्त होता है और सब शान्ति के साथ मोक्षाभिमुखी हो जाते हैं।

इस लोक और परलोक की अमर जीवन धारा एक में मिलाने के लिए और अनन्त जीवन प्राप्त करने के लिए उपर्युक्त जिन सात उपायों का वर्णन किया गया है वे समस्त उपाय सारे मनुष्य समाज को सरलता से तभी मिल सकते हैं जब संसार में आर्य सभ्यता का प्रचार हो।

'वैदिक सम्पत्ति से)

# जीवन कैसे जीयें ?

लेखक—श्री यशपालजी आर्य बन्धु आर्य निवास
चन्द्र नगर, मुरादाबाद—

मरना कोई नही चाहता पर फिर भी मरना ही पड़ता है। जीना सभी चाहते हैं पर जी नही पाते। कभी न चाहते हुए भी मृत्यु का ग्रास बनना पड़ता है और कभी जीवित रहना चाहते हुए भी हम जी नहीं पाते। कैसी विवशता है? न अपनी मरजी से मौत न अपनी मरजी से जीवन कैसी बेबसी है प्राणीमात्र की? दूसरी ओर जीना सभी चाहते हुए भी जीने का ढग नही जानते और मरना न चाहते हुए भी मर जाते हैं इसीलिये जिन्दगी के लिए और उनका जीना भी कोई जीना है, इसीलिये जिन्दगी ने जिनको मारा है। कुछ लोग इसीलिये जिन्दगी के इतने मारे हैं कि वे ढग से जी भी नही पाते। स्वामी सत्य प्रकाश जी ने ठीक ही लिखा है कि—अर्थात कुछ लोग मृत्यु से इतने भयभीत रहते हैं कि वे जीवन जीना प्रारम्भ ही नही कर पाते।

प्रश्न उठता है कि हम कैसे जीयें? भौतिकवादी तो यही कहेंगे कि यावद् जीवेत सुखं जीवेत ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत् भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमन कुत अर्थात् जब तक जीयो सुख से जीयो ऋण से लेकर घी पीयो भस्म होने वाले शरीर का पुनरागमन कहा होता है। तात्पर्य यह कि खाओ पियो और मौज उड़ाओ। यहा फिर प्रश्न उठता है कि यदि जीवन खाने के लिए है तो फिर यह खाना पीना किस के लिए है? क्या केवल खाना पीना और मौज उड़ाना ही हमारे जीवन का ध्येय है? यदि नही तो कहना होगा कि जिन्दा रहने के लिए खाना आवश्यक है। प्रश्न फिर भी बना रहा कि यदि खाना जीवन के लिए है तो फिर जीना किस के लिए है। प्रश्न समाधान चाहता है और हमें इसका समाधान ढूढना ही होगा।

यह सत्य है कि जीवित रहने के लिए खाने की आवश्यकता है। खाना हमे केवल खाने के लिए नही जिन्दा रहने के लिए है। पर क्या जिन्दा इसीलिए रहे कि हमे यह जिन्दगी या जीवन मिला है और हमे जैसे तैसे इसे काटना ही है? यदि ऐसा होता तो जीवन से मोह न होता। जिन्दा रहने की लालसा न सताती पर हम देखते हैं कि जीने की तमन्ना प्राणीमात्र मे समान रूप से पाई जाती है। प्राणी मात्र की यह प्रबल अभिलाषा सदैव बनी रहती है कि मैं सदा जीवित रहू कभी मृत्यु का ग्रास न बनू हमारे सारे क्रिया-कलाप जीवित रहने के उद्देश्य से प्रेरित हैं। हम अपने अन्तिम श्वास तक मृत्यु से जूझते हैं उसे परे धकेलने का प्रयत्न किया करते हैं। यह और बात है कि हम उसमे सफल हो पाते हैं कि नही पर प्रयत्न अवश्य यही करते रहते हैं कि जैसे भी हो मृत्यु को अपने से सदा सदा के लिए दूर रखें। जीने की यह अभिलाषा प्राणीमात्र मे पाई जाती है। जिजीविषा और अभिनिवेश कमोवेश सभी मे समान रूप से पाई जाती है। पर किसी किसी मे जीने की लालसा अत्यधिक प्रबल हो उठती है। यहा तक कि जीवित रहने के लिए सभी उचित अनुचित उपायो का अवलम्बन भी वह करने लग जाता है। जीने की इच्छा उसे पथ भ्रष्ट कर देती है। यहा तक कि वह अन्धविश्वासो का दरवाजा खटखटाने तक को बाध्य हो उठता है। आस्ट्रेलिया के एक राजा के बारे मे ऐसा ही प्रसिद्ध है कि जीने की लालसा उसमें अत्यन्त प्रबल हो उठी थी जबकि उसके पेट मे कैंसर जैसा भयकर रोग था और उसके बचने की आशा अत्यन्त धूमिल हो चुकी थी। फिर भी ओझाओ के कुचक्र मे फस कर वह ऐसे कुकृत्य कर बैठा कि जिसकी कोई कल्पना भी नही कर सकता। ओझाओ ने उसे अपने नौजवान बेटे का कलेजा निकाल कर एव भूनकर खाने को कहा था। जीवन के मोह मे फसा वह राजा अपने इकलौते बेटे का कलेजा निकालकर खा गया। पर मौत किस के टाले टली है। न राजा रहा न उसका बेटा। यह विवेक शून्यता नही तो और क्या है? विवेकशील व्यक्ति का चिन्तन कुछ और ही होता है। इतिहास साक्षी है कि मुनिवर गुरुदत्त विद्यार्थी को जब क्षय रोग ने आ घेरा था तब लोगों ने उन्हे मास के भक्षण का परामर्श दिया। किन्तु उस महामनीषि का कथन था कि क्या मास खाने पर फिर कभी भी मृत्यु नही आएगी न? भला ऐसा आश्वासन कौन दे सकता था अत उन्होने यह कहकर उनके प्रस्ताव को ठुकरा दिया कि यदि मरना ही है तो फिर यह सोच भी नही सकता कि मैं ऐसा घिनौना कुकृत्य कभी स्वप्न मे भी कर सकू गा।

बरनार्ड शा को भी लोगो ने मास सेवन का परामर्श दिया था जिसे उन्होंने यह कहते हुए ठुकरा दिया, मैं अपने प्राणों की रक्षा के लिए अन्यो के प्राण नहीं लेना चाहता और यहा तक कि उन्होंने अपनी वसीयत लिखी कि जब मेरा देहान्त हो जाए तो मेरे जनाजे के साथ भेड़ बकरियो तथा ऊटो आदि के रेवड़ चलें ताकि लोग जान सकें कि बरनार्ड शा ने अपने प्राणो की रक्षा के लिए इन मूक तथा निरीह प्राणियो का वध नही होने दिया। गुरुदत्त विद्यार्थी और बरनार्डशाह जैसे इने गिने महामानव इतिहास के पन्नो पर अवश्य मिल जाएगे कि जिन्हें अपने जीवन से मोह नही होता किन्तु अधिकाश लोग ऐसे ही हैं कि जिन्हे अपने जीवन से अत्यधिक मोह है। वे दूसरो के प्राणो को हरने मे कोई सकोच नही करते दूसरो के जीवनो से खेलकर जीना भी कोई जीना है। ऐसे जीने से तो मर जाना निश्चय ही श्रेष्ठ है। दूसरो के प्राणो को हरना तो दूर विवेकशील व्यक्ति तो अन्यो के प्राणो की रक्षा के लिए अपने प्राणो तक की आहुति दे देता है। वस्तुत जो औरो के काम न आ सके वह जिन्दगी किस काम की है।

जीने का मजा इसी मे है कि हम जीयें और दूसरो को जीने दें। यह तभी सम्भव है कि जब हम आत्मवत सर्वभूतेषु के स्वर्णिम सिद्धान्त को आत्मसात कर लगे। ऐसा हो जाने पर तो फिर व्यक्ति यही कहता है कि—

न करो किसी से सुलूक ऐसा,
जो कोई तुम से करे,
तुम्हे नागवार गुजरे।

वस्तुत अपने लिए जीना भी कोई जीना नही। जीना तो यही है कि जो औरो के लिए जीये। जीवन की सफलता इसमे नही कि केवल मैं ही जीवू अपितु इसमें है कि मैं भी जीवू और भी जीयें।

## कैसे जीए

वेद जीने की कला सिखाता है। उस का सुस्पष्ट आदेश है कि सौ वर्ष तक कर्म करते हुए जीने की इच्छा करो। (यजु 40 2) वस्तुत कर्म करने का नाम ही जीवन है। कर्मशील व्यक्ति को ही आय सज्ञा दी गई है। अकर्मा व्यक्ति को तो दस्यु कहा गया है। स्पष्ट है कि यह जीवन हमे कर्म करने के लिए मिला है खाने पीने और मौज उड़ाने के लिए नही पर कर्म भी कैसे? वहा कर्म जो मनुष्य के लिए बन्धन का कारण न बनें। जिन कर्मों मे कर्ता लिप्त होकर न रह जाए। जो कर्म उसे ऊचा उठाने वाले हो नीचे गिराने वाले न हों। अर्थात यज्ञ परोपकार आदि श्रेष्ठतम कर्म। ऐसे कर्म करने के लिए विवेक की आवश्यकता है। मनुष्य है ही विवेकशील है प्राणी। मनुष्य की परिभाषा ही यही है कि मत्वा कर्माणि सीव्यति इति मनुष्य अर्थात् जो विचार पूर्वक कर्म करता है, वही मनुष्य है। महर्षि दयानन्द सरस्वती का कथन है कि मनुष्य उसी को कहना कि मननशील हो कर स्वात्मवत् अन्यो के सुख-दुःख और हानि-लाभ को समझे। विवेक और मननशीलता ही ऐसे दो गुण हैं कि जो कर्मों की श्रेष्ठता पर विशेष रूप से बल देते हैं। विवेक कर्म से पूर्व और मनन कर्म के पश्चात। अर्थात् कर्म करने से पूर्व विवेक के द्वारा हम उसके औचित्य-अनौचित्य की पड़ताल करते हैं और कर्म कर सकने के पश्चात् मनन द्वारा हम उस कर्म के ठीक से सम्पादित होने की पड़ताल करते हैं और यह भी देखते हैं कि वह कर्म हमारे विवेक के अनुकूल भी हुआ है कि नही। यदि हमारा विवेक उस कर्म की स्वीकृति नही देता और फिर भी हम वह कर्म कर जाते हैं तो मनन एव चिन्तन तथा आत्म निरीक्षण द्वारा हम आगे को वैसा कर्म पुन न करने का सत्सकल्प लेते हैं। हम आत्म-निरीक्षण द्वारा देखें कि हमारे कर्म मानवता को कलकित करने वाले तो नहीं। वे हमारी वासना के वशीभूत होकर तो सम्पादित नही हुए। यदि हमारी वासना पर विवेक का आधिपत्य होगा तो कर्म विवेक द्वारा नियन्त्रण कर सकेंगे और यदि वासना को उच्छृखल छोड़ दिया गया तो कर्मों मे भी उच्छृखलता आ जाएगी। अत हमे नित्य प्रति यही पड़ताल करनी है कि हमारे कर्म विवेक पूर्वक हो रहे हैं कि नहीं। कहीं हम पतन की ओर उन्मुख तो नही हो रहे। इसीलिए चेतावनी दी गई है कि हम नित्य प्रति अपनी पड़ताल करें एव देखें कि हम मानव ही तो हैं न कहीं पशु तो नही बनते जा रहे हैं। यथा प्रत्यह प्रत्यवेक्षेत् नरश्चरितमात्मन किन्तु मे सत्पुरुषरिति।

बाईनरैण्ड एक स्थान पर लिखता है कि 'जिन्दगी एक कर्ज है जिसे खरीदना होता है, और चिन्तन ही एक ऐसा नफीस सिक्का है जो उसे खरीद सकता है। (देखें अमृता प्रीतम कृत "कौन सी जिन्दगी, कौन सा साहित्य? पृष्ठ 9) वस्तुत चिन्तन के बिना जिन्दगी की कद्र को खरीदा नही जा सकता। अत यदि जिन्दगी की खरीदनी है तो चिन्तन का सिक्का पास में होना आवश्यक है। चिन्तन मनन, निदिध्यासन से जिन्दगी निखर उठती है। अत यदि जिन्दगी में निखार लाना है तो इन्हें अपनाना ही होगा। आत्म-निरीक्षण आत्मिक शुद्धि का एक अमोघ अस्त्र है। आत्मिक शुद्धि का इससे बढ़िया साधन मानव अभी तक खोज नही पाया, फिर भी यदि हम इसका सदुपयोग न करें तो दोष किसका है। अत यदि जीवन को चमकाना है तो हमे कर्मशील बनना होगा और कर्मशील बनने के लिए हमें विवेकशील और मननशील बनना होगा। हमे चिन्तन और आत्म-निरीक्षण का अवलम्बन लेना होगा। तभी हमारा जीवन चमक सकता है। तभी हम यथार्थ जीवन जी सकते हैं। यही जीने की कला है, यदि हम अपना सकें तो?

## जीवन में संस्कारों का महत्व

# सीमन्तोन्नयन संस्कार

ले.—श्री प. शालिगराम जी शास्त्री, आर्योपदेशक भिलाई नगर

**संस्कारो का जीवन मे बहुत बडा महत्व है। श्री प सालिगराम जी शास्त्री आर्योपदेशक ने सीमन्तोन्नयन संस्कार पर इस लेख मे बहुत अच्छा प्रकाश डाला है। संस्कारो के द्वारा ही मानव को मानव बनाया जा सकता है। —सहसंपादक**

यह संस्कार गर्भाधान के बाद तीसरा संस्कार है। इससे पूर्व पुंसवन संस्कार का वर्णन है। सीमन्त+उन्नयन इस प्रकार यह यौगिक शब्द है। इसका अर्थ है केशों का विन्यास या मांग काढना। देखना यह है कि इस शब्दार्थ का उक्त संस्कार में वर्णित विषय से क्या सम्बन्ध है। महर्षि ने लगभग पूरी विधि बताने के बाद लिखा है कि पति-पत्नी के पीछे बैठकर पति अपने हाथ से स्वपत्नि के केशो मे सुगन्धित तेल डाल कन्धे से सुधार गूलर की कोमल टहनी शाही के काटे या कुशा से बालो को साफ कर, पट्टी निकाल पीछे की ओर सुन्दर जूडा बांधे। पुन यज्ञवेदी पर आकर पत्नी से पूछे कि क्या देखती हू। इससे पूर्व पुंसवन संस्कार में पत्नी को बड की जटा या पत्तो को सुंघाने तथा गिलोय या ब्राह्मी खिलाने का विधान किया है। गर्भाधान संस्कार मे हवन के समय पात्र मे संचित (स्रुवा से टपके) घी से वधू के लिए नख से चोटी तक अच्छी तरह मालिश करके स्नान करना लिखा है। इन तीनो संस्कारो मे शुद्ध आहार विहार तथा कुछ काष्टादि औषधियो का सेवन नितान्त आवश्यक बताया है।

प्रश्न है कि क्या यह विधि मात्र है या इन बातो का गर्भस्थ शिशु के निर्माण से कोई सम्बन्ध है। जहा तक गर्भिणी के बालो में तेल डालने या चोटी आदि करने की बात है वह अपने हाथ से स्वय पत्नी या अन्य स्त्री भी यह काम कर सकती है तो इस काम को पति महोदय ही क्यो करें। वास्तव मे पत्नी की भावना और परिस्थिति को जितना पति समझ सकता है उतना और कोई नही समझ सकता। पति के मन में पत्नी के प्रति जितना प्रेम होगा उतना दूसरो के मन में नहीं हो सकता। पति द्वारा की गई सेवा पत्नी के लिए अभूतपूर्व प्रेरणा और प्रेम का प्रतीक होगी। उसका मन प्रसन्नता से खिल उठेगा। परस्पर प्रेम बढ़ेगा। मनोमालिन्य दूर होगा। इससे आयुर्वेद मे कथित 'दोहद' वाली गर्भवती की इच्छा पूर्ति तथा उसके साथ अच्छे व्यवहार से सदा प्रसन्न रहने वाली सन्तान प्राप्ति की ओर संकेत है। जब क्रुद्ध व्यक्ति के एक बूंद रक्त से कुत्ते की मृत्यु हो सकती है तो अच्छे विचार और प्रसन्न तथा आनन्दमय वातावरण मे निर्मित रक्त से अच्छी सन्तान का होना असंभव नही माना जा सकता। यह ऋषियो की दिव्य दृष्टि की देन है कि उन्होने ऐसी वैज्ञानिक विधियो का आविष्कार किया। इन तीनो संस्कारो मे पति पत्नी का सामीप्य सर्वत्र दृष्टिगोचर होता है। पति का कर्तव्य है कि वह पत्नी के लिए उपयुक्त वातावरण का निर्माण करे और दोनो उस पर आचरण करें। मनोवांछित सन्तान प्राप्ति के लिए दाम्पत्य जीवन का सौहार्द पूर्ण होना अति आवश्यक है।

गूलर की टहनी कुशा बड की जटा पत्ती गिलोय या ब्राह्मी आदि का उपयोग भी निरर्थक नही है। आयुर्वेद मे सर्पविष के लिए नागदमन का अपना महत्व है। पुत्र प्राप्ति के लिए लक्ष्मण या पुत्रय (पुत्रजीवक) औषध प्रसिद्ध है। मक्खी की पीठ पर जाना नही पक सकता किन्तु मछली विशेष की पूछ से निकलने वाले विद्युत प्रवाह से तार जोड देने से बल्ब जलने लगते हैं। एवमेव कुशादि वनस्पतियों से जो इन संस्कारो मे प्रयुक्त होती हैं। कुछ शक्ति अवश्य प्रवाहित होती होगी। इसलिए पूर्व ऋषियो ने इन का प्रयोग करना बताया है। आयुर्वेदानुसार—

ब्राह्मी वचा शुण्ठि शतावरी च गुडूच्यपामार्गविडङ्ग शङ्खिनी।

घृतेन लीढा समभाग चूर्णिता क्षिपि-र्विलैर्ग्रन्थ सहस्र धारणम्।

अर्थात्—ब्राह्मी वच, सोठ, शतावर गिलोय, अपामार्ग वायविडग तथा शख पुष्पी का समान भाग चूर्ण एक दो माशा प्रात घृत के साथ चाटने से स्मृति बढ़ना बताया गया है। अत कुशादि औषधियो के स्पर्श मात्र से भी कुछ लाभ या क्रिया होना सम्भव है। लाजवन्ती बूटी छूते ही सिकुड जाती है। बिच्छूबन्द स्पर्श मात्र से शरीर से जलन पैदा करती है लेकिन बिच्छू का जहर उतार देती है। वृश्चिक दंश पर नीला थूथा या ग्लीसरीन लेप मात्र से लाभ होता है। नीलमणि के बाहर का वस्त्र कतई नही जलता किन्तु भीतर मणि गर्म हो जाती है। (आग जलाने से भी अनुभूत है) तेल मलना या जल से नहाना भी शरीर मे कुछ क्रिया अवश्य लाता है। इसी प्रकार आहुति च्युत घृत से वधू का नख शिख मालिश करना भी महत्व का है। आयुर्वेद के अनुसार बकरियो के मध्य मे रहना उनका दूध पीना उसकी लेंडी मूत्रादि से मालिश करना टी बी, (क्षयरोग) नाशक है। कीटाणु नष्ट होकर शरीर स्वस्थ व तेजस्वी होता है। हवन का भी औषधियो के सार तत्व वेद मन्त्रो की श्रेष्ठ भावना तथा शुद्ध विचारो से तेजस्वी होता है। उसका उपयोग निरर्थक नही हो सकता। गुग्गल, शक्कर, घी सरसो आदि को अलग-अलग जलाकर धुआ लेना भी उत्तम माना गया है। (दीर्घ रोग नाशाय) सरसो तेल का दीपक जलाना रोग निवारण मे सहायक है। इसीलिए प्रसव के बाद सरसो भी आहुति मे स्वीकार किया गया है। आज कल ये तीनो संस्कार बहुत कम कराए जाते हैं। कुछ लोग कराते भी है तो कुशादि सबल प्राप्य साधारण द्रव्यो का उनका महत्व न समझ कर बहिष्कार किया जाता है।

भावी शिशु पर इन रीति रिवाजो का प्रभाव होता है या नही। इस पर विचार अवश्य करना चाहिए।

(विद्याकर्मणी समन्वारभेते तथा ना स्याद्वाधावित कुले भवति)

उपनिषद के अनुसार मृत्यु और जन्म काल मे ज्ञान तथा कर्म के संस्कार जीव के साथ रहते हैं जो बाद मे विकसित होते हैं। धार्मिक व्यक्ति के कुल मे नीच अधार्मिक सन्तान पैदा नही होती। संस्कार शब्द का अर्थ है किसी काम को अच्छी तरह सांगोपांग करना। बालक का उचित निर्माण करना एक संस्कार है। जिस मूल द्रव्यो से शिशु के मस्तिष्क व शरीर का निर्माण होता है। वे द्रव्य माता पिता द्वारा खाए पिए पदार्थों से उत्पन्न रजवीर्य मे मौजूद रहते है। जिन विचारो मे वे मूल तत्व निर्मित होते हैं व तत्व अपने साथ पूर्वपोषक विचार परमाणुओ को ले जाते हैं और ऐसे विचारो से शिशु का मस्तिष्क प्रभावित रहता है। इसी लिए गर्भाधान के पूर्व से लेकर आगे तक शिशु के लिए इन तीन संस्कारो के बाद वेदाध्ययन तक संस्कार किए जाते हैं।

एक विदेशी सभ्य महिला ने किसी दार्शनिक से 5 वर्षीय बच्चे की शिक्षा आरम्भ करने का समय पूछा तो दार्शनिक ने कहा कि वह 5 वर्ष देर कर चुकी है। उसका अभिप्राय यही हो सकता है कि जब से शिशु पेट से बाहर आया। बाहरी वातावरण उसे प्रभावित करने लगा। जन्म काल से ही स्वस्थ वातावरण निर्मित करना था शिशु के लिए वह अज्ञान किन्तु महत्वपूर्ण शिक्षा होती। परन्तु वैदिक ऋषि इससे आगे तक का अनुभव बताते हैं। ये तीनो संस्कार तथा रानी मदालसा की कहानी इस उदाहरण हैं जो ईश्वर भक्त अच्छा मनुष्य है। उसके कुल मे दुष्ट सन्तान नही होती। यह आदर्श इन्ही संस्कारो पर आधारित है। विचारो की शक्ति अपार है। विचारो से निर्मित सन्तान अवश्य विचारो के अनुकूल होगी। विचारो का वायु मण्डल बच्चे के मस्तिष्क को शीघ्र प्रभावित करता है। एक सज्जन ने बताया कि उन का पुत्र बिगड रहा था। लगातार ट्यूशन रखने के बावजूद भी तीसरी कक्षा मे दो साल तक फेल होता रहा लेकिन आम सेना (उडीसा) गुरुकुल मे आने के बाद 6 मास मे ही उसमे हुए शारीरिक बौद्धिक तथा आदत सम्बन्धी परिवर्तनो से देखने वाले हैरान रह गए वह बालक सुधर गया। पढाई मे भी कमाल करने लगा। यह वहा के वातावरण विचार तथा संस्कार की निमग्नता का प्रभाव है।

संस्कार कराते समय संक्षेप मे संस्कार के महत्व अवश्य समझाना चाहिए। यो तो संस्कार सभी क्रिया प्रधान होते हैं। तथापि कुछ मन्त्रो का अर्थ या सरल व्याख्या अवश्य करनी चाहिए। तभी वायुमण्डल मे संस्कार के (निर्माता) विचार फैलेंगे। ये तीनो संस्कार निर्माण के विशेष संस्कार हैं। विधि वस्तु तथा समय का ध्यान रखना भी महत्व का है। जल्दी-जल्दी उल्टा सीधा संस्कार करा देने से उद्देश्य लाभ पूरा नही हो सकता।

## कनखल के वैद्य धर्मदत्त नहीं रहे

कनखल के सुप्रसिद्ध विद्वान लोकप्रिय वैद्य श्री धर्मदत्त जी आयुर्वेदाचार्य का दिनांक 20 नवम्बर को रात्रि 2-30 बजे हृदयगति रुक जाने से 89 वर्ष की आयु मे देहावसान हो गया। आप गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के पुराने स्नातको मे से थे तथा कई वर्ष आप उक्त विश्वविद्यालय के आयुर्वेद महाविद्यालय मे प्रिंसिपल भी रहे। आप आयुर्वेद विषयक अनेक ग्रन्थो के लेखक हैं, जिनमें आधुनिक चिकित्सा शास्त्र तथा त्रिदोष संग्रह ग्रन्थो ने आयुर्वेद जगत मे विशेष ख्याति अर्जित की है। आपकी सेवाओ एव योग्यता से प्रभावित होकर गुरुकुल विश्वविद्यालय ने आपको विद्यामार्तण्ड की पूज्योपाधि से पुरस्कृत किया था तथा अभिनन्दन ग्रन्थ द्वारा आपका सम्मान किया गया था। आपके अभाव से आयुर्वेद जगत को बडी भारी क्षति पहुची है। 1 दिसम्बर को कनखल मे आपके निवास स्थान पर शान्ति यज्ञ सम्पन्न हुआ जिसमें पंचपुरी के अनेक प्रेमीजन एव गण्यमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। जिन्होने मुक्त कण्ठ से आपकी सेवाओ को सराहा।

—रामनाथ वेदालंकार

## धर्मान्तरण को अवैधानिक करार दिया जाए

रामनाथ पुरम (तामिलनाडु) में बहुसंख्य हरिजनों को रुपए का लोभ देकर धर्मान्तरित कर उन्हें मुसलमान बनाना समाचार प्रकाशित हुआ है।

देहरादून आर्य समाज की यह सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली से प्रार्थना करती है कि इस सम्बन्ध में उचित कार्यवाही करे और इस के लिए हम तन मन धन सब सहयोग सभा के लिए अर्पित करने को हम उद्यत हैं।

भारत सरकार से तथा तमिलनाडु सरकार से यह सभा मांग करती है। कि लोभ लालच के बल पर धर्मान्तरण करना अवैधानिक और मानवता के सिद्धान्तों के विरुद्ध है। गरीब की गरीबी का अनुचित लाभ उठाना दानवता है।

सरकार तन्त्र को गतिशील होना चाहिए और इस प्रकार के कुकृत्य करने वालों को सख्ती से दमन किया जाना चाहिए।

—बलराज मन्त्री

## महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी अजमेर हेतु ५१०० रु. की राशि दी गई

आर्य समाज दयानन्द मार्ग (रेलवे रोड) मकूरबस्ती दिल्ली 34 ने महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी अजमेर के अवसर पर 5100 रुपये (पांच हजार एक सौ) की नकद राशि श्री भारतभूषण मन्त्री आर्य समाज ने अजमेर पहुंच कर श्री कृष्ण जी शारदा मन्त्री परोपकारिणी सभा के द्वारा शताब्दी कार्यालय में जमा करवा कर रसीद प्राप्त की।

परोपकारिणी के कार्यालय ने रसीद पर यह भी वचन लिख दिया कि इस आर्य समाज के द्वारा एकत्रित इस 5100 रुपये की नकद राशि की शिला भी लगवा दी जाएगी। इस समाज के दस सदस्य अजमेर पहुंचे।

-भारत भूषण मन्त्री

—

## आर्यसमाज (अनार[illegible]कली) बाजार मन्दिर मार्ग नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव 9 10 एवं 11 दिसम्बर 83 को मनाया गया। स्वामी सत्यप्रकाश जी महाराज द्वारा वेद कथा एवं नित्य प्रातः 7 से 8 बजे तक श्री पं. जैमिनी जी शास्त्री एवं पं. श्री दयाराम जी शास्त्री द्वारा गायत्री महायज्ञ करवाया गया। शुक्रवार 9 दिसम्बर को स्त्री समाज का वार्षिकोत्सव शनिवार 10 दिसम्बर को प्रातः दस बजे से 2 बजे तक स्कूली बच्चों का सांस्कृतिक कार्यक्रम हुआ, जिसकी अध्यक्षता हीरो साईकिल प्रा. लि. के डायरेक्टर श्री सत्यानन्द जी मुंजाल ने की। उसी दिन सायंकाल 7 बजे से अजमेर में मनाई गई महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह के बारे में तैयार की गई फिल्म दिखायी गई। रविवार 11 दिसम्बर को यज्ञ की पूर्णाहुति हुई। 10 बजे से 1 बजे तक विशेष उपदेश एवं प्रवचनों का कार्यक्रम हुआ। एक बजे से [illegible] और उसके पश्चात सायं 5 बजे तक केन्द्रीय आर्य युवक परिषद का सम्मेलन हुआ।

—रामनाथ सहगल मन्त्री

—

## चण्डीगढ़ सै. 40 में आर्य समाज की स्थापना

दिनांक 27 11 83 रविवार को पं. बाबूरामजी आर्य (मन्त्री जिलावेद परिषद चण्डीगढ़) की अध्यक्षता में सै 40 चण्डीगढ़ में आर्य समाज की स्थापना हुई। जिसके निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये—

प्रधान—श्री एच सी गुलाटी, उप प्रधान—श्री रामनाथ शर्मा श्रीमती सुमित्रा आर्या, मन्त्री—श्री सुरेन्द्रकुमार आचार्य उपमन्त्री—श्री उदय भानु जी [illegible] कोषाध्यक्ष—श्रीमती सत्यवती आर्या।

—कृष्णचन्द्र गुलाटी

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रेस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

वर्ष 16 अंक 37 10 पौष सम्वत् 2040, तदनुसार 25 दिसम्बर 1983, दयानन्दाब्द 159 । एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपए

जिनका बलिदान दिवस २३ दिसम्बर को है ।

# ○ बलिदानी संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द जी का गरिमा गान

महान् बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द जी का गुणगान जितना करे उतना थोडा है । 23 दिसम्बर का दिन आकर प्रतिवर्ष उन की याद को ताजा कर जाता है । उस हुतात्मा के बलिदान पर अबाल वृद्ध अनेकों नर नारियो के नेत्र सजल हो उठ थे । उन की शहादत ने अनेको जीवनो को नव प्रेरणा दी थी । सारे देश मे स्थान 2 पर उनके समकालीन नेताओ ने उनके गुणों का गान गाते हुए उन्हें श्रद्धाजलिया समर्पण की थी । उन मे से दो श्रद्धाजलिया यहा प्रस्तुत हैं ।

## नव भारत का पथ प्रवर्तक—

राष्ट्रपति श्री राजेन्द्र प्रसाद

स्वामी श्रद्धानन्द जी से प्रथम परिचय का सौभाग्य मुझे भागलपुर मे हिंदी साहित्य सम्मेलन के समय प्राप्त हुआ । उस समय तक स्वामी जी ने सन्यास नहीं लिया था और महात्मा मुन्शीराम जी के नाम से ही प्रसिद्ध थे । गुरुकुल की स्थापना करके राष्ट्रीय पद्धति से शिक्षा देना उन्होंने बहुत पहले ही आरम्भ कर दिया था और गुरुकुल का काम धाम से चल रहा था । आप के हिन्दी प्रेम और हिन्दी सेवा को देखकर ही सम्मेलन ने सभापति के पद पर आपका निर्वाचन किया था । सम्मेलन को जिस उत्तमता के साथ आपने निभाया, वह हमें आज भी अच्छी तरह याद है । पर स्वामी जी के गुणो को भारत वर्ष ईसवी सन 1919 और उसके बाद ही पूरी तरह से जान सका । स्पष्टवादिता और निर्भीकता साहस व स्पष्टवादिता के गुणो को तब जी सरकार अच्छी प्रकार जानती थी । परन्तु इन गुणो को उनके ... सहयोगी कार्यकर्ता भी तीव्रता से अनुभव करते थे । जो लोग काले कानून के विरोधी अन्दोलन के समय दिल्ली के चादनी चौक मे मौजूद थे उनके हृदय का निर्भीकता तथा उच्चता का प्रत्यक्ष उदाहरण उपस्थित किया । उनकी उस शुद्ध तथा उच्च भावना ने जामा मस्जिद के मिम्बर पर से उपदेश करवाया और हिन्दू मुस्लिम ऐक्य का मनोरम दृश्य दिखलाया और उसी दृढता सत्यनिष्ठा, स्पष्टवादिता और निर्भीकता के कारण आततायी के हाथों से शहादत प्राप्त की । भारत के आधुनिक इतिहास मे स्वामी जी का स्थान प्रथम सांस्कृतिक पथ प्रवर्तक का है । जिनको स्वामी जी के साक्षात दर्शन का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ, उनके लिए स्वामी जी के जीवन वृत्तान्त को पढना ही मनुष्य को उन्नति के मार्ग पर अग्रसर करने वाला है । स्वामी जी ने गुरुकुल की स्थापना करके ब्रह्मचारियों के शिक्षण का ही प्रबन्ध नहीं किया, प्रत्युत उनका सारा जीवन ही देश के लिए एक महान् गुरुकुल का काम कर रहा है और करता रहेगा ।

## निर्भीकता और साहस का पुञ्ज

श्री जवाहरलाल नेहरू

1926 के अन्त मे यह वर्ष एक भारी दुःखद दुर्घटना से सदा के कारण हो ... भारत वर्ष रोष व घृणा से काप उठा । इस घटना से पता चलता है कि साम्प्रदायिक जोश हम लोगो को कितना नीचे गिरा सकता है । रोगशय्या पर पडे हुए स्वामी श्रद्धानन्द जी की एक धर्मान्ध युवक द्वारा हत्या कर दी । जिस वीर पुरुष ने गोरखो की संगीनो के सामने अपनी छाती खोल दी थी और जो उनकी गोलियो का मुकाबिला करने के लिए आगे बढकर खडा हो गया था उस वीर पुरुष की ऐसी मृत्यु ? लगभग आठ वर्ष पूर्व आर्य समाज के इस प्रमुख नेता ने देहली की शानदार जामा मस्जिद की वेदी पर खडे होकर हिन्दुओ तथा मुसलमानो के सम्मिलित विशाल जन-समुदाय को हिन्दू मुस्लिम एकता तथा भारत-वर्ष को स्वतन्त्रता का सन्देश दिया था और उस विशाल समुदाय ने भी हिन्दू मुसलमानो की जय के नारो से उनका स्वागत किया था तथा मस्जिद से बाहर देहली की गलियो मे हिन्दू व मुसलमान दोनो ने उसको अपने खून से अधिक सपुष्ट किया था । आज उनकी अपने देश भाई द्वारा हत्या कर दी गई । वह धर्मान्ध व्यक्ति निःसन्देह यह समझता था कि वह एक ऐसा पुण्य काय कर रहा है जो उसे स्वर्ग मे पहुचा देगा ।

विशुद्ध शारीरिक साहस का अथवा किसी भी शुभ काम के लिए शारीरिक कष्ट सहन करने एव उस काम के लिए मृत्यु तक की परवाह न करने वाले गुणो का मैं सदा से प्रशसक रहा हू । मैं समझता हू कि हम सभी व्यक्ति ऐसे अदभुत साहस की प्रशसा करते ही हैं । स्वामी श्रद्धानन्द मे इस प्रकार का निर्भीकतापूर्ण साहस आश्चर्यजनक मात्रा मे विद्यमान था । वृद्धावस्था मे भी उनकी उन्नत सीधी आकृति तथा सन्यासी वेश मे उच्च भव्यमूर्ति लम्बा कद शाहाना शकल, चमकती हुई अन्तर्भेदिनी आंख और कभी कभी दूसरो की निर्बलताओ पर मुख पर आ जाने वाली मुस्कराहट की झलक इस सजीव मूर्ति को मैं कैसे भूल सकता हू ? प्राय यह तस्वीर मेरी आखो के सामने आ जाती है ।

## १९ दिसम्बर १९२६ को जिनका बलिदान हुआ—

# अमरशहीद रामप्रसाद विस्मिल

19 दिसम्बर सन 1926 दिन सोमवार तदानुसार पौष कृष्णा एकादशी सम्वत 1984 को प्रात 6 30 बजे गोरखपुर की जेल मे भारत मा के इस वीर सपूत को अग्रेज सरकार ने फासी दे दी थी। फासी की सजा सुन कर भी उन्हे अत्यन्त प्रसन्नता हुई भी फासी की कोठरी मे रहते हुए भी उनका वजन पाच पौंड बढ गया था उनको मृत्यु का तनिक भी भय नही था। फासी की कोठरी म ही उन्होने अपनी आत्मकथा लिखी थी। राम प्रसाद एक सच्चे आर्य नवयुवक थे उनकी आर्य समाज के ऊपर अगाध श्रद्धा थी। वेद मन्त्रो का पाठ करते हुए उन्होने फासी के फन्दे को गले मे डाल लिया था।

भारत वर्ष को आजाद कराने के लिए हमे अनेको रणबाकुरो का बलिदान देना पडा। सैंकडो नवयुवक हसते हसते फासी के फन्दो को चूम गए। अमर शहीद राम प्रसाद बिस्मिल भी उनम से एक थ। इनका जन्म शाहजहापुर मे ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी सम्वत 1954 को श्री मुरलीधर जी के घर हुआ। जिस कुल मे इनका जन्म हुआ था यह कुल शूर वीरता और साहसिक कार्यों म पूर्व से ही प्रसिद्ध था।

राम प्रसाद जी का बचपन अधिक खेलकूद और उदण्डताओ मे बीता। इन के माता पिता खूब दूध पिलाया करते थे और यह बहुत हृष्ट पुष्ट थे। बचपन मे इन पर कुछ कुसग का प्रभाव भी पडा परन्तु शीघ्र ही परमात्मा की कृपा से यह कुटेवो से बच गए।

मुन्शी इन्द्रजीत जी जो एक आर्य समाजी थे ने इस होनहार बालक को मन्दिर मे पूजा पाठ करते देख कर इन्हे सन्ध्या करने की प्रेरणा दी और साथ ही सत्यार्थ प्रकाश भी पढने के लिए दे दिया। बस फिर क्या था ज्यो ज्यो सत्यार्थ प्रकाश यह पढते गए त्यो-त्यो महान चरित्रवान तथा देशभक्त बनते गए। आर्य समाज के प्रति आपकी इतनी आस्था हो गई कि पिता जी ने एक बार आपको आर्य समाज म जाने से रोका आप न रुके तो पिता जी ने घर से निकल जाने का आदेश दे दिया। राम प्रसाद ने घर छोड दिया परन्तु आर्य समाज को नही छोडा।

### देश सेवा का व्रत

सन 1916 में लाहौर षडयन्त्र का अभियोग चला भाई परमानन्द जी भी उसके एक अभियुक्त थे। राम प्रसाद जी की उनमे बडी श्रद्धा थी सारा केस समाचार पत्रो मे प्रकाशित होता था जिसे राम प्रसाद जी बडी रुचि और सावधाना से पढते थे। अन्त मे केस का निर्णय हुआ भाई परमानन्द जी को फासी की सजा सुना दी गई। यह समाचार पढ कर राम प्रसाद जी का रक्त उबलने लगा। बस उसी दिन प्रतिज्ञा कर ली की 'भाई परमानन्द पर होने वाले अत्याचारो का बदला लूगा और जीवन भर अग्रेजी राज्य के नाश के लिए प्रयत्नशील रहूगा इसके पश्चात राम प्रसाद जी का क्रान्तिकारी जीवन आरम्भ हो जाता है

राम प्रसाद जी अपने दल के एक कुशल नेता थे। ए [illegible] म न [illegible] के [illegible] गया। हथियार खरीदे गए सभी प्रकार के साधन जुटाए गए धन के अभाव मे सरकारी खजाना को लूटा जाने लगा। काकोरी रेलवे स्टेशन पर रेल गाडी मे जाता हुआ सरकारी खजाना राम प्रसाद जी के नेतृत्व मे लूटा गया। इस काकोरी रेलवे डकैती से सरकार काप उठी और पुलिस पर्याप्त सचेत हो गई और इसी के परिणाम स्वरूप शाहजहांपुर मे ही एक दिन राम प्रसाद जी की गिरफ्तारी हो गई। साथ ही इनके साथी राजेन्द्र नाथ लाहिडी श्री रोशन सिंह और अशफाक उल्ला को भी गिरफ्तार कर लिया गया। अभियोग चला अन्त मे इन्हे फासी की सजा सुना दी गई।

### काल कोठरी या साधना गृह

बिस्मिल जी को फासी का दण्ड मिल चुका था। अत इन्हे गोरखपुर जेल मे अलग एक कोठडी मे डाल दिया गया। सरकार के एकमात्र कोप भाजन बिस्मिल जी बने हुए थे। बाहर से डोरी किन्तु अन्दर से कामी कर सरकार उन को घोट घोट कर मारना चाहती थी। जिससे आगे से कोई देश प्रेमी पैदा न ही न हो। इस लिये ग्रीष्म ऋतु मे साढे तीन महीने तक राम प्रसाद जी को खुले मैदान मे बने हुए इस जेलखाने में भूना गया जहा पर सूर्य भगवान भी 8 बजे से 5 बजे तक अपनी तीक्ष्ण किरणो के दण्डो को सीधा बरसाता हुआ बिस्मिल जी के जख्मी हृदय को तडपाता रहा।

यह कोठडी 9 फीट चौडी थी और 9फुट लम्बी थी और 6फुट चौडा केवल एक द्वार था। भूमि से 8 9 फीट की ऊचाई पर एक खिडकी 2 फीट लम्बी 1 फीट चौडी थी। कोठडी के पास कोई किसी प्रकार की छाया नहीं थी। सूर्य की गर्मी से दिन भर कोठडी तपती रहती थी। चारो ओर भूमि भी रेतली थी अत शीघ्र गर्म हो जाती थी।

रामप्रसाद जी को इस कोठडी में भोजन स्नान मल मूत्र त्याग तथा शयन करना पडता था। मच्छर भी आस पास और कोई शरण न पाकर इसी कोठडी मे विश्राम किया करते थे और राम प्रसाद जी को अपने मधुर गीत सुना कर प्रसन्न किया करते थे। वे ही उनके साथी थे। मच्छर मित्र थोड दिन का साथ समझकर रात को भी उन को बातें सुनाते रहते और सोने न देते। यदि रामप्रसाद जी उन से मुह फेर कर सो भी जाते तो भी प्रेमी मित्र मीठी रागिनी सुना कर प्रेम की चुटकी से उन्हे जगा देते।

मुहब्बत मे यह लाजिम है कि जो कुछ हो फिदा कर दे।

ऐसी अवस्था मे कठिनता से 3-4 घण्टे सो पाते थे। कभी कभी तो दो घण्टे ही सोकर सन्तोष करना पडता। भोजन भी मिट्टी के पात्रो मे ही दिया जाता था। एक कम्बल ओढने को और एक बिछाने को मिला हुआ था। मृत्यु क्षण प्रतिक्षण निकट आ रही थी। राम प्रसाद जी परम तप त्याग एव वैराग्य की साधना का जीवन व्यतीत कर रहे थे।

अन्तिम समय भगवान की याद के सारे साधन अनायास जुडे जुटाये मिल गये। रामप्रसाद जी इस साधना के विषय मे अपनी आत्म कथा मे लिखते हैं—

'मुझ तो इस कोठरी मे बडा आनन्द आ रहा है। मेरी इच्छा थी कि किसी साधु की गुफा पर कुछ दिन निवास करके योगाभ्यास करू। अन्तिम समय वह इच्छा भी पूरी हो गई साधु की गुफा न मिली तो क्या साधना की गुफा तो मिल ही गई।

फासी आने से दो दिन पहले 17 दिसम्बर सन 1926 को उन्होने अपने विषय मे बतलाते हुवे लिखा है 'मेरे लिए यह मेरा दृढ निश्चय है कि मैं उत्तम शरीर धारण कर नवीन शक्तियों सहित अति शीघ्र ही पुन भारत वर्ष में ही किसी निकटवर्ती सम्बन्धी या इष्ट मित्र के गृह मे जन्म ग्रहण करूगा। क्योकि मेरा जन्म जन्मान्तरो मे भी यही उद्देश्य रहेगा कि मनुष्य मात्र को सभी प्राकृतिक पदार्थों पर साम्याधिकार प्राप्त हो। कोई किसी पर हुकूमत न करें। सारे ससार में जनतन्त्र की स्थापना हो। वर्तमान समय में भारत वर्ष की बडी शोचनीय है। अत एक कई जन्म इसी देश मे ग्रहण होने और जब तक कि भारत वर्ष के सम्पूर्ण नरनारी सर्वथा स्वतन्त्र न हो जायें। परमात्मा से मेरी यही प्रार्थना होगी कि मुझे वह इसी देश में जन्म दे ताकि मैं उसकी पवित्र वाणी वेदवाणी का अनुपम घोष मनुष्यमात्र के कानो तक पहुचाने मे समर्थ हो सकू।

## सम्पादकीय–

# स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान

अपने जीवन को देश जाति और समाज के लिए बलिदान कर देना यह आर्य समाज के कार्यकर्त्ताओं की परम्परा रही है। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने सबसे पहले अपना बलिदान देकर इस रास्ते को प्रशस्त किया था। इसके पश्चात् तो बलिदानियों की एक लम्बी सूचि बनती चली गई।

स्वामी श्रद्धानन्द जी का जीवन तप, त्याग और निर्भीकता की साक्षात् मूर्ति था। उनके जीवन को इस श्रेष्ठ रास्ते पर लाने मे उनकी माता जी पिता जी और उनकी धर्म पत्नी का बहुत बड़ा हाथ था। अगर मुन्शी राम को धार्मिक माता पिता के साथ-2 धर्म परायण पत्नी न मिलती तो वह कभी भी इस रास्ते पर न आ सकते। वह कभी भी इस कल्याण मार्ग के पथिक न बनते। शराबी कबाबी मुन्शी राम को महात्मा मुन्शी राम और फिर स्वामी श्रद्धानन्द बनाने मे आर्य समाज और महर्षि दयानन्द के साथ-साथ उनकी धर्म पत्नी का भी महान् योगदान था।

उनका जीवन त्याग से आरम्भ हुआ था। सबसे पहले उन्होंने शराब-कबाब और दुराचार का त्याग किया और आगे चलकर अपनी वकालत धन-सम्पत्ति, कोठी, बंगला यहां तक कि अपने बच्चों व परिवार का भी त्याग कर दिया। केवल आर्य समाज का प्रचार ही उनके जीवन का उद्देश्य बन गया। वह केवल देश, जाति और समाज के होकर रह गये। अन्त म उन्होंने उस गुरुकुल कांगड़ी को भी त्याग दिया जो अपना खून-पसीना एक करके निर्मित किया था।

कुछ राजनैतिक कार्यों में भाग लेने से और गान्धी जी आदि राजनैतिक नेताओं के साथ सम्पर्क होने से उनके सामने एक समस्या आई वह थी हिन्दु-मुस्लिम की। वह समझते थे कि जब तक हिन्दू और मुसलमान एक न होंगे तब तक न तो देश आजाद हो सकता है और न ही इस देश का उद्धार हो सकता है। इसलिए वहां हिन्दू मुस्लिम एक्य करने के लिए वह दिल्ली की प्रसिद्ध जामा मस्जिद में मुसलमानों को यह बताने के लिए विराजमान हुए कि तुम सब कभी हिन्दू ही थे और हमारे भाई हैं, याद रखो हम सब भाई-भाई ही हैं। वहां उन्होंने शुद्धि के कार्य को भी तेज कर दिया था। असगरी बेगम नाम की एक मुसलमान महिला की शुद्धि जो असगरी बेगम से शान्तिदेवी बनी थी का मुकद्दमा तक चला उसमें उन्हे विजय तो मिली, लेकिन उसे कुछ लोगो ने ऐसा समाचार पत्रों आदि के द्वारा ऐसे गलत तरीके से उछाला कि कुछ धर्मान्ध मुसलमान स्वामी के शत्रु बन बैठे।

स्वामी जी दिन-रात कार्य करने से अस्वस्थ हो गए। आप सन् 1926 मे बनारस के प्रचार के बाद दिसम्बर के आरम्भ में दिल्ली लौटे तो आपको सर्दी, जुकाम लगा हुआ था, इस जुकाम और सर्दी लगने से निमोनिया का रूप धारण कर लिया। आप सख्त बीमार हो गए। आपको कुछ आराम तो हो गया परन्तु अब शरीर को छोड़ देना चाहते थे। इस बीमार अवस्था मे आपने अपने पुत्र इन्द्र जी तथा दूसरे कई अपने मित्रों के सामने ऐसे विचार प्रकट किए। लेकिन एक योद्धा जो सदा प्रत्येक मोर्चे पर दृढ़ता से लड़ा हो, बुराईयो के मोर्चे पर गुरुकुल के मोर्चे पर, असहयोग के सत्याग्रह, दलितोद्धार, राष्ट्रीयता के संग्राम दिल्ली के चान्दनी चौक में गोरो की संगीनो के सामने, तथा शुद्धि के मोर्चे पर जहां भी वह योद्धा अड़ा वहां विजय प्राप्त कर आगे ही बढ़ता रहा। ऐसा योद्धा भला बीमार होकर कैसे मर सकता है उसे एक योद्धा की मौत चाहिए थी और वह उन्होंने स्वयं वरण कर ली।

23 दिसम्बर 1926 को दोपहर बाद साढ़े तीन बजे नया बाजार (स्वामी श्रद्धानन्द बाजार) लाहौरी गेट के पास सार्वदेशिक भवन मे जहां स्वामी जी बिमारी की हालत मे विश्राम कर रहे थे अब्दुल रशीद नाम का एक मुसलमान अचकन पहने हुए सीढ़ियो से ऊपर चढ़ा। उसने स्वामी जी की सेवा में रत धर्मसिंह को कहा कि मैं स्वामी जी से कुछ मजहबी बातचीत करना चाहता हूं।

धर्मसिंह ने कहा कि स्वामी जी बीमार हैं और डाक्टरो ने उनको आराम करने को कह रखा है। अत तुम फिर किसी दिन आकर मिल लेना। इस समय नहीं। सीढ़ियों के ऊपर उन दोनों की बातें स्वामी जी ने सुन ली और कहा कि 'धर्मसिंह कौन है' इनको आने दो यथा आदेश धर्मसिंह ने उन्हें कमरे के भीतर आने दिया। दूसरे शब्दो में स्वामी जी ने अपनी मौत को स्वयं अपने पास बुला कर बैठा लिया। अब्दुल रशीद फर्श पर बैठ गया। स्वामी जी से कुछ बातचीत हुई। अब्दुल रशीद ने धर्मसिंह को स्वामी जी से अलग करने के लिए बहाने से पीने के लिए पानी मांगा। धर्मसिंह दूसरे कमरे मे पानी लेने गया और उस धर्मान्ध ने स्वामी जी के सीने मे तीन गोलियां दाग दी। धर्मसिंह ने आकर उसे पकड़ना चाहा। उसने धर्मसिंह जी पर भी गोली दाग दी। इतने मे साथ के कमरे में सोये हुए प धर्मपाल जी गोली की आवाज को सुनकर आ गए और उन्होंने हत्यारे को दबोच लिया। प धर्मपाल जी बड़े साहसिक और बलशाली व्यक्ति थे उनकी पकड़ से हत्यारे का छूटना कठिन था। उन्होंने उस धर्मान्ध के सिर को जमीन मे गाड़ कर उसे औन्धा डाल कर पिस्तौल वाले हाथ को एक हाथ से पकड़कर अपने नीचे तब तक दबाए रखा जब तक पुलिस न आ गई।

पुलिस दल आ गया उसने घेर लिया और आतंक के हाथ से पिस्तौल छुड़ा कर उसे पकड़ कर हथकड़ी लगा कर अपने अधिकार मे कर लिया। और प धर्मपाल जी तथा धर्म सिंह जी और दूसरे लोगो के ब्यान लेखनी बद्ध किए। तब तक वहां सैकड़ो लोग इकट्ठ हो गए थे और सभी प धर्मपाल जी के उस धैर्य बल और साहस को देख आश्चर्य चकित हो रहे थे।

डाक्टरो ने स्वामी को देख कर कहा कि गोली सीधी हृदय मे लगी है। इसलिए यह गोली लगते ही शहीद हो गए।

यह घटना प्रचण्ड अग्नि की भान्ति सारे शहर मे फैल गई और देखते ही देखते हजारो लोग वहां पहुंच गए। यह समाचार सारे देश मे बड़ी तीव्रता से फैल गया। स्थान-2 पर श्रद्धाञ्जलि सम्मेलन हुए। हिन्दू-मुस्लिम एकता का महान समर्थक कट्टर पक्षपाती इस प्रकार एक धर्मान्ध की गोली से शहीद हो गए। उन्होंने अपनी शहीदी स पूर्व उस समय गोहाटी मे होने वाले अखिल भारतीय राष्ट्रीय महा सभा के अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष को एक तार द्वारा उनका तार आने पर सन्देश दिया था कि—

'भारत का भावी सुख हिन्दु-मुस्लिम एकता पर आश्रित है।

अगर वह और जीवित रहते तो इसके लिए और प्रयास करते। गत अंक मे जैसे स्वामी जी के अपने लेख से श्री धर्मवीर जी विद्यालंकार ने सिद्ध किया कि स्वामी जी अपने भाई हिन्दुओं ब्राह्मणो तथा मुसलमानो सभी को यही सन्देश देते थे कि हम एक हैं अलग 2 नहीं हैं। महर्षि दयानन्द ने हमें विचार शक्ति दे दी है कि हम अपनी छोटी-2 बातो पर बैठ कर विचार करें जिनके कारण हम एक दूसरे से दूर हो रहे हैं और अपने मतभेदो को भुला कर एकता के सूत्र मे बन्ध कर अपने देश को आजाद कराए। परन्तु कुछ स्वार्थी, धर्मान्ध तथा राजनैतिक लोगो को इससे खतरा पैदा हो गया था कि अगर यह शुद्धि का दौर इसी प्रकार चलता रहा तो उनकी चौधरी समाप्त हो जाएगी इसीलिए उन्होंने धर्मान्ध लोगो को भड़का कर स्वामी जी का शत्रु बना दिया था और इसी के परिणामस्वरूप स्वामी जी को जीवन की भेंट चढ़ानी पड़ी।

सच्चाई यह कि वास्तव मे समझदार मुसलमान स्वामी जी के विरोधी नहीं थे बहुत से मुसलमान स्वामी जी के प्रति बड़ी श्रद्धा रखते थे। इसी लिए तो उन्हे दिल्ली की जामा मस्जिद मे उपदेश के लिए बुलाया था। जहां न उस से पहले और न उसके बाद आज तक कोई गैर मुसलमान उस गद्दी पर बैठ सका, वहां स्वामी जी को बैठाया था। सच्चाई है कि कुछ स्वार्थी लोगो का यह षड्-यन्त्र था जिसके परिणाम स्वरूप स्वामी जी को अपना बलिदान देना पड़ा। वह जीवन भर देश समाज जाति को एकता के सूत्र मे बान्धते रहे। फूट डाल कर राज्य करने वाले लोग इसे सहन न कर सके।

उस महान् शहीद का बलिदान दिवस मनाते हुए हमे उस त्यागी-तपस्वी के जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए। उन्होंने आर्य समाज के लिए तथा वेद के प्रचार और प्रसार के लिए देश जाति तथा समाज के लिए अपना सभी कुछ न्योछावर कर दिया था। हम भी कुछ तो उनकी राह पर चलें। घर-बार का त्याग न सही, वानप्रस्थ व सन्यास न सही अपने जीवन का कुछ समय तो आर्य समाज के लिए दें। उतना धन तो न सही जितना उस दानी ने गुरुकुल आदि के लिए दिया था, कुछ तो धर्म के कार्यों के लिए आर्य समाज के कार्यों के लिए दें। उनके पद् चिन्हों पर चलते हुए एकता के लिए कुछ तो करें। यही उन्हे सच्ची श्रद्धाञ्जलि होगी।

—सह-सम्पादक

# अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी के

# बलिदान का कारण

ले —श्री धर्मवीर विद्यालंकार 5 अशोक नगर पीलीभीत

आर्य समाज के इतिहास में 23 दिसम्बर 1926 का दिन बहुत बुरा सिद्ध हुआ। उस दिन एक धर्मान्ध मुसलमान अब्दुल रशीद ने स्वामी जी को तीन गोलियां मार उनके प्राण हर लिए उस समय रोग ग्रस्त थे और शय्या पर लेटे हुए थे।

हमें बताया जाता है कि अब्दुल रशीद धर्मान्ध था। उसने बिना सोचे समझे मात्र धर्म की अन्धी भावुकता से स्वामी जी की हत्या की थी। स्वामी जी उन दिनों मुसलमान बने हिन्दुओं को फिर से हिन्दू बनाने वाले आन्दोलन—शुद्धि आन्दोलन—का बड़े उत्साह और तत्परता से कार्य कर रहे थे। इससे मुसलमान उद्वेलित तथा उद्विग्न हो उनके प्राणों के प्यासे हो गए थे। अन्त में स्वामी जी की हत्या हो गई।

यह तथ्य और तर्क हम आर्यों को यथेष्ट प्रतीत हुआ है और हम आज तक इस पर विश्वास करते आ रहे हैं। मुझे इस पर विश्वास नहीं हो पा रहा। उसके निम्न कारण हैं।

1 स्वामी जी कांग्रेस के प्रधान रहे उस समय जलियांवाला काण्ड हो चुका था। कांग्रेस का मनोबल गिर चुका था कोई भी व्यक्ति प्रधान बनना नहीं चाहता था। तब स्वामी श्रद्धानन्द जी ने प्रधान पद सम्भाला था। कांग्रेस में नया जीवन डाला था। फिर शीघ्र ही कांग्रेस की मुस्लिम तुष्टीकरण नीति के कारण इतना मतभेद हुआ कि कांग्रेस छोड़ हिन्दू महासभा की स्थापना कर डाली। कांग्रेस हिन्दुओं को मुसलमान बनाने के कार्य का समर्थन करने लगी थी। इस कारण स्वामी श्रद्धानन्द जी का शुद्धि आन्दोलन का समर्थन बढ़ाना आवश्यक था।

2 उन्हें मुसलमानों ने बड़े आदर के साथ जामा मस्जिद में बुलाया था। उन से मार्ग निर्देश करने की प्रार्थना की थी। स्वामी जी ने गायत्री मन्त्र से अपना प्रवचन प्रारम्भ किया। उस समय स्वामी जी ने मुसलमानों को क्या उपदेश दिया यह उपलब्ध नहीं। इस घटना से लगभग 20 22 वर्ष पूर्व सन 1897 ई में लिखे उनके लेख के निम्न अंश पढ़ने समझने की आवश्यकता है —

हे मेरे बिछड़े हुए मोहम्मदी और ईसाई मित्रो! अविद्या की अन्धकारमयी रात्रि में जब हाथ पसारा नहीं सूझता था तुमने भाईयों के हाथ छोड़ कर अन्यों के हाथ में अपना हाथ दे दिया। जब क्रियात्मक रूप में तुम्हें विदित हुआ कि तुमने मूर्खता की है और तुम्हारे आत्माओं ने साक्षी दी कि तुम निज गृह से दूर जा रहे हो तो तुमने व्याकुल होकर आतुर नयनों से अपने भाईयों की ओर देखा तुम्हारे भाई उस समय स्वयं देखने योग्य न थे। फिर तुम्हारा हाथ क्यों कर पकड़ते? अब अन्धकार दूर हो गया वेद रूपी सूर्य का प्रकाश हो गया। जीवन के उद्देश्य को समझो और अपने उस भाई के जीवन वृत्तान्त को पढ़ो जिसने कि तुम्हारे लिए—नहीं नहीं केवल तुम्हारे लिए नहीं—प्रत्युत सत्य की खोज करने वालों के लिए

अपनी जान को हेय समझा
सांसारिक सुख तथा आनन्द को
हेय समझा।
और परमेश्वर के अटल नियम के आगे
सिर झुकाए हुए,
अपने मिशन को पूरा किया।

इस लेख का लेखक निरन्तर 20 22 वर्षों तक अपने बिछुड़े भाईयों में आत्मीयता उत्पन्न करने की आतुरता लिए कितना प्रयत्नशील रहा होगा और बिछुड़े मित्र भाई उसके हृदय की वेदना और उन कठोर सत्यों को समझ कर आपस में मिलने को कितने आतुर हुए होंगे यह कल्पना कर सकते हैं।

हिन्दू मुसलमान-ईसाइयों में मिलकर एक हो जाने की टीस किस सीमा तक उजागर हो चुकी होगी। यही टीस थी जिसके कारण मुसलमानों ने स्वामी जी को जामा मस्जिद में बुलाया था। भारत के इतिहास में यह पहली और अंतिम घटना है।

बिछुड़े हृदय किस प्रबल आतुरता से मिलने लगे होंगे। यह बताने वाला आज हमारे मध्य कोई नहीं है। ये सब बातें तथा साहित्य कहां दबा दिया गया है? किसने नष्ट कर दिया है? यह एकता किसके लिए हानिकारक थी प्राण घातक थी है हमने आज तक ध्यान नहीं दिया। वह अवश्य अपराजेय शक्ति होगी अनुपमेय बुद्धि चातुर्य होगा विलक्षण कूटनीति होगी।

कौन हो सकता है वह, सिवाय अंग्रेजों के उन्हें अपना साम्राज्य अस्त होता हुआ प्रतीत हुआ होगा।

3 अब्दुल रशीद की हरकतों से ऐसा प्रतीत नहीं होता कि उसके हृदय में स्वामी श्रद्धानन्द जी के प्रति द्वेष ईर्ष्या जलन अथवा प्रतिशोध की आग जल रही हो। ऐसा व्यक्ति बहादुरी के साथ प्रकट होता है, वीरता से काम करता है वीरता से ही लौटता है और अन्तिम क्षण तक अपने कर्म से प्रसन्न रहता है। उस की आत्मा उसे कहती है कि दुनिया चाहे कुछ कहे उसकी आत्मा को इस कार्य से सन्तुष्टि है। धर्म और देश की वेदी पर बलिदान होने वालों को हमने ऐसा ही पाया है। उन्होंने पुनर्जन्म लेकर फिर यही कार्य करने की शपथ फांसी के तख्ते पर ली है। उन्होंने हंसते 2 फांसी का फन्दा चूमा है।

अब्दुल रशीद ने ऐसी कोई हरकत नहीं की। जब स्वामी श्रद्धानन्द जी के पास आया तो घबराया हुआ था। पौष मास की सर्दी में उसे प्यास लगी थी। वह पूरा 2 गिलास पानी पी गया। फिर गोली मार कर भाग न सका। अपने को छुड़ा न सका। उसके चेहरे पर प्रसन्नता का लेशमात्र न था। वह आत्म ग्लानि से तड़पता रहा। वह अपने वक्तव्यों में जोश व सन्तोष प्रदर्शित न कर सका। वह फांसी के फन्दे पर जाते हुए भयभीत था।

क्या यह सम्भव नहीं कि उसे लालच में अथवा दबाव में यह घृणित कार्य करने को मजबूर किया गया था और उसे अपने कुकृत्य का अन्तिम समय तक पछतावा था।

उसे अपने कर्म का पछतावा क्यों था? वह अवश्य दबाव किस का था? इस पर हमने सोचा नहीं। वह असली हत्यारा इतना समझदार है कि अपने पर किसी को शक होने का अवसर नहीं देता समाचारों के प्रसारण में—पत्रकारिता में—वह अत्यन्त कुशल है।

4 अब स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन की उन घटनाओं की ओर ध्यान दीजिए जो अंग्रेजों की दृष्टि में परम घातक थीं —

(क) जामा मस्जिद में स्वामी जी का भाषण जो अंग्रेजों की कूटनीति—फूट डालो और राज्य करो, को समाप्त करने वाला था।

(ख) चांदनी चौक में जलूस का नेतृत्व करते हुए फौज की संगीनों के सामने छाती खोल कर निर्भीक खड़ा सन्यासी एक अद्भुत दृश्य तो है ही। अपने इस साहस से जनता में साहस का संचार किया फौज को अपने कर्तव्य परायणता का बोध हुआ और अंग्रेज को भविष्य का भय हुआ। अंग्रेज की फौज में क्रान्ति की आशंका हुई। जिन गोरखों ने गोली चलाने के आदेश को नहीं माना उनका कोर्ट मार्शल हुआ। परन्तु उन्हें सजा नहीं दी गई। अंग्रेज 1857 की पुनरावृत्ति नहीं चाहता था। यह मामूली सी दिखने वाली घटना का परिणाम बहुत भयंकर था। इसे जब अंग्रेज ने समझा होगा तो स्वामी जी के प्रति उन की धारणा हिंसक अवश्य हुई होगी।

(ग) गुरुकुल की स्थापना से अंग्रेज भयभीत थे। वहां पर क्रान्तिकारी थे। वहां पर क्रान्तिकारी आश्रय लेते थे। जंगल में अभ्यास भी करते थे। अफवाह थी कि वहां पर बम बनाये जाते हैं। एक बार वायसराय वहां जा पहुंचे। कितना महत्वपूर्ण यह स्वप्न समझा गया होगा। उनका गुरुकुल में स्वागत हुआ। प्रत्येक कोना दिखाया गया। बम नहीं मिले। वायसराय ने पूछा कि बम कहां हैं स्वामी श्रद्धानन्द जी ने ब्रह्मचारियों को आगे कर दिया। वायसराय महोदय मुस्करा दिए और हमारे मन भी प्रसन्न हुए। हमने इसके आगे नहीं सोचा। जैसे अंग्रेज ने सोचा। बम तो एक बार धमाका बोलता है। ये जीवित सचेत कर्मठ, निष्ठावान ब्रह्मचारी जीवन में कितने धमाके बोलेंगे उनका भविष्य में क्या परिणाम और प्रभाव होगा यह विचार अंग्रेज ने अवश्य किया।

(घ) गुरुकुल शिक्षाप्रणाली मैकाले की शिक्षा प्रणाली के प्रभाव को समाप्त कर रही थी और गुरुकुल के स्नातक संसार में आ चुके थे। उनके गुण कर्म स्वभाव को अंग्रेज भय से और भारत की जनता आशा और उत्साह से स्वागत कर रही थी

ऐसा सन्यासी अंग्रेजों के लिए बहुत खतरनाक था, हमने ऐसा कभी नहीं सोचा।

(ङ) स्वामी जी द्वारा प्रकाशित साप्ताहिक समाचार पत्र सद्धर्म प्रचारक और विजय के लेखों से जनता जागरूक हो गई थी। धर्म और देशभक्ति पर्यायवाची शब्द बन गये थे। इन अखबारों के कार्यालयों में क्रान्तिकारी कुछ दिन काम करते थे। सी आई डी के कर्मचारी उनके पीछे जाते थे। कई क्रान्तिकारियों ने स्वामी जी से सही दिशा व ज्ञान लिया था ये तथ्य सरकार से छिपे हुए नहीं थे।

स्वामी जी की मृत्यु पर हिन्दू मुस्लिम ईसाई सभी शोक से सन्तप्त हुए अपने हृदय के उद्गार सभी ने व्यक्त किए उनके कार्यों की, गुणों की प्रशंसा की है।

अतः यह तथ्य प्रतीत नहीं होता कि धार्मिक भावना के वशीभूत अन्धे होकर एक व्यक्ति ने अपने द्वेष, ईर्ष्या और जलन से प्रतिशोध लिया है। अपितु स्वामी श्रद्धानन्द जी अंग्रेजों की योजनाबद्ध कूटनीति के शिकार हुए।

गुरुकुल डी ए वी कालेजों एवं अन्य विश्वविद्यालयों के स्नातकोत्तर शोध छात्र इस ओर शोध करें तो बहुत सामग्री मिल सकती है तथा आश्चर्यजनक तथ्य सामने आ सकते हैं।

प्रभु हमें बुद्धि एवं सामर्थ्य प्रदान करें कि हम स्वामी श्रद्धानन्द जी के पद् चिन्हों पर चलते हुए देश, धर्म एवं मनुष्य जाति का कल्याण कर सकें।

—

## श्रद्धानन्द बलिदान दिवस—

# उस पावन माटी को शत् शत् प्रणाम

ले—श्री धर्मदेव जी चक्रवर्ती 19 मा ल बस्ती दिल्ली

पंजाब की वीर प्रसू धरती ने जिसमे आज कल का हरियाणा एव हिमाचल प्रदेश भी सम्मिलित थे। उन्नीसवी और बीसवी सदी मे एक से एक बढकर धीर वीर गम्भीर अखिल भारतीय नेता उत्पन्न किए है जो आज भी भारतीय आकाश मे सूर्य बनकर चमक रहे है और अपने उज्ज्वल प्रकाश तप त्याग एव शौर्य के प्रचण्ड ताप से जन मानस की दीन हीन क्षीण नसो मे हिन्दी हिन्दू और हिन्दुस्तान के उत्थान के लिए नयी उमग नया जोश और नयी जवानी का नया खून प्रवाहित करने मे समर्थ है।

### पंजाब की माटी

इसी धरती ने एक कौपीनधारी सन्यासी महर्षि दयानन्द सरस्वती के आह्वान पर पंजाब के नगर नगर मे सर्वाधिक आर्य समाजो का जाल बिछाकर सामाजिक कुरीतियो अन्धविश्वासो छुआछूत के रोगो एव जात पात के कोढ से हिन्दू और हिन्दुस्तान को मुक्त कराने का दृढ सकल्प लिया था। इसी ने महर्षि से प्रेरणा लेकर गौ की रक्षा के लिए हिन्दू जाति के अविभाज्य अग नामधारियो को बम्बो की आग उगलती तोपो के दहानो के आगे खड होकर अपने शरीरो के पुरखचे उडवाने और हस-हसकर आत्म बलिदान करने की अनुपम शक्ति दी थी।

जब जब हिन्दुस्तान और हिन्दू धर्म की जडो पर कुठाराघात करने का दुस्वप्न विदेशी विधर्मियों ने देखने की भूल की तब तब इसी धरती की माटी ने ऐसे ऐसे वीर पुरुष मैदान मे उतारे जिन्होने अपने शौर्य साहस एव बलिदानो के अनूठे जौहर दिखाकर उन विधर्मियो के सपने चूर चूर करके रख दिए तथाकथित विश्वविजेता सिकन्दर महान की अजेय समझी जाने वाली विजय वाहिनी के छक्के छुडाने वाला पौरव नरेश इसी माटी की पैदावार था। उसके बाद टिड्डी दलो की तरह बार बार भारतवर्ष पर आक्रमण करने वाली मुसलमान फौजो के सामने हर बार सीना तान कर खडे होने वाले भी इसी माटी के सजग प्रहरी थ।

### कर्मवीर श्रद्धानन्द

पंजाब की धरती के अनुपम बलिदानियो की श्रृखला मे एक बलिदानी वह भी हुआ है जो अपने अनूठे तप-त्याग शौर्य साहस, बुद्धि कौशल राजनीतिक सूझ-बूझ एव अद्भुत प्रतिभा के बल पर भारतीय आकाश पर सूर्य बनकर चमका इनका नाम है अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द।

स्वामी श्रद्धानन्द का पूर्व नाम मुन्शी राम था यह कुल 34 वर्ष के जब इनकी धर्म पत्नी का देहान्त हो गया। मक नके पास पुर्नविवाह के लिए एक से एक बढकर रिश्ते य र िन इन्होने स म मना कर ि या और अपने अबोध बच्चो के लिए स्वय को माता के स्थान पर रखने का निश्चय कर लिया यह निश्चय इनके तप याग का प्रथम सोपान था और उसके बाद तो वह ऊपर ही ऊपर चढते चले गय।

मुन्शीराम जी ने महर्षि दयानन्द के प्रवचन सने ये हिन्दू जाति मे व्याप्त अनेकानेक कुरीतियो कुसस्कारो एव अन्धविश्वासो के विरुद्ध म ाव द्वारा प्रस्तुत शास्त्र सम्मत तर्को स प्र ि मर प्रभावित होकर मुन्शीराम जी महर्षि दयानन्द क परमभक्त एव आर्य समाज के प्रचारक बन गए। मास मदिरा का सर्वथा परित्याग कर दिया तथा स्वय को देश धर्म और समाज के सेवक के रूप मे समर्पित कर दिया देश धर्म और समाज की सेवारत मुन्शीराम जी न सब प्रथम अपने भीतर झाक कर देखा उन्होने पाया कि अग्रजी शिक्षा से प्रभावित होने के कारण उनमे मास मदिरा सेवन का व्यसन घर कर गया है अपने पूर्वजो के प्रति हीन भावना पैदा हो गई है। देश धर्म और हिन्दू समाज के प्रति घृणा के अकुर उन के मन मे फूट पड है।

अपने देश अपने धर्म एव अपने समाज के प्रति इस घोर अवमानना को हिन्दू मानस मे आमूल नष्ट करने का एक मात्र उपाय उन्होने यह सोचा कि पाश्चात्य शिक्षा को तिलाजलि दी जाए और उसके स्थान पर गुरुकुल शिक्षा प्रणाली स्थापित की जाए। उन्होने तत्कालीन पत्रिकाओ मे इस सम्बन्ध मे लेख लिखे। गुरुकुल शिक्षा पद्धति का विवरण पढते ही कुछ ने मुह बिचकाए। कुछ ने नाक भो सिकोडी कुछ ने पीठ फर ली। कुछ हस दिए और कुछ ने यह कहते हुए माथा पीट लिया अब हिन्दू जाति का बेडा डूबा कि डूबा" मुन्शीराम का दिमाग फिर गया लगता है। भला कही जगलो म भी पढाईया हुई है। छि छि !

किन्तु मुन्शीराम इस उपहास स तनिक भी विचलित नही हुआ। वह सकल्प का धनी था वह अकेला ही मैदान मे कूद पडा उसने गुरुकुल खोलने के लिए 1898 म घोषणा कर दी घर त्याग दिया और यह भीष्म प्रतिज्ञा की कि जब तक गुरुकुल के लिए तीस हजार रुपया एकत्र न कर लूगा मैं घर न लौटूगा।

लगभग दो वर्ष मे मुन्शीराम ने गुरुकुल के लिए अपने दृढ सकल्प पर चालीस हजार रुपया इकट्ठा कर लिया और अपने घर जालन्धर लौट आया वहा से अपने मित्रो को मिलने लाहौर गया वहा मुन्शीराम का अभूतपूर्व स्वागत हुआ। जो लोग मुह बिचकाते फिरते थे वही मुन्शीराम की बलया लेने लगे नाक भौं सिकोडने वाले झुक झुक र अभिवादन करने लगे पीठ फेरने वाले गले मिलने लगे उपहास करने वाले मुन्शीराम के साहस के गीत गाने लगे और गुरुकुल शिक्षा पद्धति का नाम सुनते जिन्होने माथा पीट लिया था वह उनके आगे नत मस्तक हो गये सच कहा है किसी ने कि चढते सूरज की सभी पूजा करते है

और हर कोई हर कोई गुरुकुल खोलने के लिए इस चढते सूरज की झोली भरने लगा किसी ने अन्न दान किया किसी ने वस्त्र दान किसी ने पुस्तकें और एक सम्पन्न कृषक तो इस मनचले पर इस कदर रीझा कि उसने गुरुकुल बसाने के लिए अपना कागडी नामक गाव ही इस का भेंट कर दिया। इस सदी के प्रथम चरण मे चन्द अपने दो पुत्रो का साथ लेकर मुन्शीराम ने हिंस्र पशुओ वाले घने जगलो के मध्य उसे कागडी गाव की पुण्य भूमि मे पुण्य सलिला भागवती गगा के पूर्व मे गुरुकुल की स्थापना करके अपने महान गुरु दिव्य दयानन्द के सपनो को साकार किया गुरुकुल का यह अकुर धीरे धीरे वट वृक्ष के समान फलने फूलने लगा देश विदेश से सैकडो ब्रह्मचारी शिक्षा प्राप्त करने यहा आने लगे। सब की एक सी वेषभूषा एक सा खान पान और एक सा रहन सहन। क्या गरीब क्या अमीर क्या गोरे क्या काले क्या ऊचे क्या नीचे बिना किसी जात पात एव घृणा द्वेष के सब एक साथ उठने बैठने और पढने लिखने लगे जहा कभी हिंस्र पशुओ की दिल दहला देने वाली दहाडे सुनाई दिया करती थी वहा प्रात साय ब्रह्मचारियो के एक स्वर मे वेद मन्त्रो की पवित्र सगीत लहरिया गूजने लगी चहु ओर शुभ्र शात वातावरण देख लगता था जैसे स्वर्ग धरातल पर उतर आया।

गुरुकुली शिक्षा प्रणाली की सर्वाधिक विशेषता थी वहा के विद्यार्थियो का चरित्र निर्माण की भट्टी मे तपकर वहा का प्रत्येक ब्रह्मचारी साधारण सोना से कुन्दन बनकर निकलने लगा और अपनी निर ली चमक दमक से पुरातन रूढियो म जर्जरित मानव समाज के पुनर्निर्माण मे जुट गया। गुरुकुल न देश को राष्ट्र नेताओ समाज सुधारको अध्यापको उपदेशको एव विचारको के रूप मे एक से एक बढकर अनमोल मोती भेंट किए। परिणाम स्वरूप सारे देश मे देशभक्ति की समाज सुधार की नारी शिक्षा की छुआछूत के विरोध की जात पात के उन्मूलन की और सब म बढकर वैदिक सस्कृति के शुद्ध स्वरूप के प्रचार प्रसार की ऐसी लहर चली जिसन मृत प्राय आर्य हिन्दू जाति को नया जीवन दिया।

हिन्दू जाति पर गुरुकुलीय शिक्षा द्वारा किए गए इस महान उपकार के पुरस्कार स्वरूप जनता अन न न ना ा मुन्शीराम को महात्मा मुन्शी म और फिर अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द न ि या

### बलिदान

यह विचि ि म्बना है कि इस ससार म जो भ न म न समाज के हित के लिए न न मन धन और सब कुछ नुान है म ज न किसी न किसी रूप म ि म ा ा और म नव द्वार ी ाता है त्र म त्र के उपकारी महर्षि दयानन्द का ज न उनके प्रथम सेवक द्वारा जह म आ और दया म के स्वप्नो ा म र न वाले मुसलमानो क न ा ा पश्चिम ि ली की ि त्र प खड कर एक गर मस्लिम क रूप मे मुसलमानो को िआ के स थ म भाव म रहन का म ायोग न न मन नद स्वामी

के ि ा क न मा ा पुन ीत ग ि र म आ

आ न न न का पार्थिव श र मार य न सहा। किन्तु उनक अमर आ म आज भी म सबको म प र ा ा है अमर हुतात्मा म मा श्रद्धानन्द का जन्म देन वाली ा ा का धरती हमारा शत शत म उन मर स ेश वाहिनी ग कर ा की पवित्र भूमि को हमारा शत न प्रणाम और एक धर्मान्ध मुसल मान की गोलि ा म क्षत विक्षित श्रद्धानन्द की ढाती मे निकल खून को श्रद्धा पूर्व अपन मस्तक पर धारण करने वाली दिल्ली के पावन माटी को हमारा शत शत प्रणाम

—

## लुधियाना मे श्रद्धानन्द बलिदान दिवस, जिला आर्य समाज की ओर से

23 24 25 दिसम्बर को आर्य समाज कचहरी नगर मे स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस जिला आर्य सभा लुधियाना की ओर से बड समारोह से मनाया जा रहा है और आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का ओर से श्री प धर्म देव जी स अधिष्ठाता वेद प्रचार विभाग तथा प राममनाथ यात्री भजनोपदेशक पधार रहे है इन के इलावा बहुत से विद्वान और नेता श्री स्वामी जी को श्रद्धाजलिया भेंट करेगे।

—आशानन्द आर्य
मन्त्री

# क्या आज के गुरुकुलोंके आचार्य महात्मा मुन्शीराम जी से कोई शिक्षा ग्रहण करेंगे?

## मुन्शीराम पिता के रूप मे—

महात्मा मुन्शी राम गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार के आचार्य ही नहीं विद्यार्थियो के पिता भी थे। उन्होने इस दृढ़ निश्चय के साथ गुरुकुल की स्थापना की थी। वह कहा करते थे कि— जिन माता पिता ने अपने लाडले बच्चो को घर से इतनी दूर जगल मे मेरे हाथो मे सौंपा है। मैंने उन बच्चो के जन्मदाता माता पिता के अभाव को दूर करना है। माता पिता ने पवित्र भावना से ही प्रेरित होकर किसी विशिष्ट उद्देश्य की दृष्टि से ही त्याग किया है। अन्यथा 14 वर्ष के लिए कौन अपनी सन्तान को हिंस्र पशुओ से इन भरपूर घने जगलो मे भेजता है। इस लिए मैं ही उनमे से प्रत्येक बच्चे के माता पिता के स्नेह अभाव की पूर्ति करूंगा वह यह भी कहते थे कि— अगर किसी बच्चे पर पैतृक वियोग या पारिवारिक सकट आया हो तो क्या उस का माता पिता होने से मेरा यह दायित्व नही है कि मैं उसकी शिक्षा निर्विघ्न चलाने की व्यवस्था करू? अगर मैं उसे गुरुकुल से निकाल कर घर भेज दू तो क्या मैं उस व्रत भग का अपराधी नही होऊंगा जो मैंने इस सस्था को प्रारम्भ करते समय परमपिता प्रभु के समक्ष पुनीत यज्ञाग्नि को साक्षी करके व्रत लिया था।

महात्मा मुन्शी राम जी अपने विद्यार्थियो का उसी प्रकार ध्यान रखते थे जैसे घर में माता पिता रखते हैं। किसने भोजन किया है या नहीं किया। अगर बच्चे ने भोजन नही किया तो क्यो नही किया। प्रत्येक विद्यार्थी के पठन पाठन रहन सहन खान-पान का पूरा ध्यान रखते थे। उस समय गुरुकुल मे लगभग 300 ब्रह्मचारी थे। आचार्य मुन्शीराम जी को प्रत्येक विद्यार्थी के जन्म स्थान कुल और पारिवारिक स्थिति की पूरी जानकारी थी। गुरुकुल के प्रत्येक छात्र के स्वास्थ्य शिक्षा स्वभाव आचरण इत्यादि पर उनकी दृष्टि सदा रहती थी जहां वह त्रुटि देखते थे तत्काल उस त्रुटि का निराकरण कर देते थे।

आचार्य मुन्शीराम रात्रि मे उस समय जाग कर सारे विद्यार्थियो को देखा करते थे जब सब विद्यार्थी आराम से गाढ़ी निद्रा में सोया करते थे। जैसे माता पिता रात्रि में अपने बच्चों को देखते है कि सर्दी मे कहीं बच्चा नगा तो नही हो गया। बच्चा ठीक से सो रहा है या नही यह देखते हैं। इसी प्रकार आचार्य जी प्रत्येक विद्यार्थी को देखते थे। यहा तक कि केवल विद्यार्थियो का ही नही वह अध्यापक वर्ग का भी उस समय ध्यान रखते थे जब सब सोए हुए होते थे।

कुछ घटनाओ के द्वारा यह स्पष्ट हो जाता है एक घटना इस प्रकार है गुरुकुल के आस पास जगल था और वर्षा ऋतु मे यहा वर्षा भी अधिक होती थी। एक बार जब महात्मा जी रात को आश्रम का चक्कर लगा रहे थे तो उन्होंने एक दृश्य देखा कि एक ब्रह्मचारी तख्तपोश से नीचे लुढ़का बेसुध सोया पड़ा है। उसकी एक टाग जमीन पर और दूसरी घुटने के बल खड़ी हुई है। और उस खड़ी हुई टाग के नीचे एक पनियर काला साप बैठा हुआ है। महात्मा जी साप और छात्र किस ओर पहले ध्यान दे इस दुविधा मे पड गए डर था कि कहीं जरा भी कोई चेष्टा की साप बिगड़ कर छात्र को न डस ले। महात्मा जी तत्क्षण वहा से चुपके से पीछे हट गए और कक्षा के अधिष्ठाता को सोते हुए उठाया सारी स्थिति समझाई और जैसा निश्चय किया था उसके अनुसार महात्मा जी ने अत्यन्त सावधानी से साप के सिर पर अपनी लाठी रख कर उसे दबोच लिया और अधिष्ठाता जी ने छात्र को उठाकर बड़ी सावधानी से आराम से तख्तपोश पर लिटा दिया। इस प्रकार बाद मे उस विषधर काले नाग को मार कर अपने विद्यार्थी को बचा लिया। अगर आचार्य जी रात्रि मे छात्रो को न देखते तो जरा पैर आदि की चोट पड़ने पर साप छात्र को काट सकता था।

महात्मा जी आधी रात मे उठ कर सारे आश्रम के सब कमरो का चक्कर लगाते थे। कई बार ब्रह्मचारी नींद मे तख्त से नीचे गिर जाते थे उन्हे उठा कर ऊपर सुला देते थे किसी की रजाई आदि गिर गई तो उसे ब्रह्मचारी के ऊपर उढा देते थे। अगर कोई ब्रह्मचारी बीमार हो जाता था तो आप स्वयं उस का ध्यान रखते थे। उसकी कुशल क्षेम का ध्यान रखते थे।

एक बार एक ब्रह्मचारी सिर दर्द से बेचैन था महात्मा जी उसके पास बैठ गए और पर्याप्त समय तक उसके सिर को दबाते रहे तेल आदि की मालिश करते रहे।

एक बार एक ब्रह्मचारी ज्वर ग्रस्त था। उसकी देख रेख महात्मा जी करते रहे। जब रात्रि म उसके पास गए तो उसे जोर से वमन (उल्टी) आ गई। महात्मा जी पास खड़े थे महात्मा जी ने उस वमन को अपने हाथो में ले लिया क्यो कि वहा कोई चिलमची या बर्तन आदि पास न था और अगर महात्मा जी ऐसा न करते तो रोगी का सारा बिस्तरा खराब हो जाता और रोगी को अधिक कष्ट होता। परन्तु महात्मा जी ने कोई ग्लानि न करते हुए वमन (उल्टी) को हाथों में लेकर बाहिर डाल दिया और अपने उस पीत वस्त्र से उसका मुख आदि पौंछ दिया जिसे वह सदा अपने गले में धारण करके रखते थे। बाद में हाथ तथा पीत वस्त्र आदि साफ करके रोगी की सेवा मे बैठ गए। उसे आराम से लिटा दिया और तब तक वहीं बैठ रहे जब तक अस्पताल के कार्यकर्ता व डाक्टर जी वहा न आ गए।

श्री सोमदत्त जी विद्यालंकार ने एक घटना और लिखी है कि मैं उस समय गुरुकुल कांगड़ी की पांचवीं कक्षा में पढ़ता था। गुरुकुल का वार्षिकोत्सव था। उत्सव मे सब के पिता आ गए बच्चो को माता पिता के आने का बड़ा चाव होता था। मेरे मित्र विजय के पिता नहीं आए। भोजन की घन्टी बजी सब ब्रह्मचारी भोजन करने चले गए विजय धोती मे मूंह छिपा कर रोता रहा। आचार्य मुन्शी राम जी ने जब कमरे मे आकर देखा कि एक छात्र रो रहा है तो पूछा तबीयत तो ठीक है। आचार्य ने विजय के सिर को सहलाया आंसू पोछे रोने का कारण पूछा विजय ने बताया मेरे पिता नहीं आए और सब के आ गए। महात्मा जी ने समझाया अरे अभी तो उत्सव का पहला दिन है। आज शाम तक या कल आ जाएंगे। समझाने पर विजय भोजन करने चला गया।

अभिभावक कार्यालय से आज्ञा पत्र लेकर अपने बच्चो को ले जाने लगे कुछ समय बाद एक सेवक विजय के लिए भी आज्ञा पत्र लेकर आश्रम मे आया। विजय प्रसन्नता पूर्वक उसके साथ गया। सेवक उसे सीधा महात्मा जी के पास ले गया। विजय ने पूछा मेरे पिता जी कहा हैं। महात्मा जी ने प्यार से उसे बाहो में भर कर कहा। क्या हम तुम्हारे पिता नहीं हैं। उसे प्यार से बिठा कर अपने हाथो से फल तथा मिठाई खिलाई।

महात्मा मुन्शीराम जी अपने विद्यार्थियो के केवल आचार्य ही नहीं थे बल्कि उनको माता और पिता का प्यार भी देते थे। वह पिता के तुल्य ब्रह्मचारियों की पालना करते थे। वह सभी ब्रह्मचारियों को अपने पुत्र वत समझते थे। अपने पुत्रों और विद्यार्थियों में उनके लिए कोई अन्तर नहीं था क्या आज के गुरुकुलो के आचार्य महात्मा मुन्शीराम जी से उनके बलिदान दिवस पर अपने ब्रह्मचारियों को पुत्र वत समझने की प्रेरणा लेंगे। क्या उनके गुणो को धारण करके गुरुकुलों को उनके अनुरूप चलाएंगे।

—प्रथम देवार्य
स अधिष्ठाता वेद प्रचार

## बाल जगत्—एक कहानी

# जीवन में वाणी की महानता

ले—श्री सुरेन्द्र मोहन सुनील विद्यावाचस्पति दिल्ली

❋

वाच वदत भद्रया'

भद्र वाणी बोलो।

प्यारे बच्चो! अथर्ववेद की इस सूक्ति से शिक्षा लेते हुए उक्त कहानी को पढ़ो समझो और जीवन मे लाओ।

एक किसान था।

उसके खेत मे इस वर्ष अनाज नहीं हुआ था और राजा को कर देने के लिए उसके पास पैसा नही था। उसने सोचा कि राजा से मिल कर प्रार्थना करू कि कर माफ कर दें। वह राजा से मिलने गया।

राजा ने किसान से पूछा क्या चाहते हो? मेरे पास किस लिए आए हो?

बहुत ही विनम्रतापूर्वक किसान बोला महाराज मैं विधवा हो गया हू।

राजा जोर से हस पड़ा! पूछा तुम विधवा हो गए हो इसका क्या मतलब?

किसान ने कहा आपके पिता मर जाए तो आपकी मा विधवा हो जाएगी न उसी तरह।

यह उत्तर सुनकर राजा को क्रोध आ गया। उसने किसान को कारागार मे डलवा दिया। उसका अपराध था अशुभ वचन कहना।

यह बात किसान के घरवालो को मालूम हुई। किसान का बड़ा भाई बोला छोटा भाई मूर्ख है। राजा को ऐसे नही कहना चाहिए था। उसे बात कहने का तरीका नहीं आता। मैं उसे छुड़वा लाता हू।

बड़ा भाई राजा के पास गया।

राजा ने उससे पूछा, क्या चाहते हो? मेरे पास किस लिए आए हो?

किसान का बड़ा भाई बोला, महाराज मेरे छोटे भाई को आपने कारागार मे बन्द कर रखा है। वह मूर्ख है। बोलने का तरीका नहीं मालूम। ऐसे मूर्ख को क्षमा कर देना चाहिए क्यो कि मूर्ख को सजा देने वाला भी मूर्ख समझा जाता है।

राजा को फिर गुस्सा आ गया। इसने मुझ मूर्ख कहा। किसान के बड़े भाई को भी राजा ने कारागार मे डलवा दिया। उसका अपराध था—राजा को मूर्ख कहना। किसान के बड़े भाई का पुत्र बोला मेरे पिता जी को और चाचा जी को बोलने का तरीका नही मालूम। राजा को ऐसा नही कहना चाहिए था। मैं जाकर दोनो को छुड़वा लाता हू।

और वह राजा के पास गया।

उसने राजा से बड़ी विनम्रतापूर्वक कहा महाराज—मेरे पिता जी और चाचा जी आपके कारागार मे बन्द हैं। उन्हें बात कहने का तरीका नही आता। जैसा आदमी हो वैसी बात कहनी चाहिए राजा बाबा और बन्दर चिढ़ाने से चिढ़ते है यह बात वह भूल गए।

इस बार फिर राजा को गुस्सा हो आया। इस लड़के को भी राजा ने कारागार मे डलवा दिया। उसका अपराध था—उसने राजा की तुलना बाबा और बन्दर से की थी।

अब सारा गाव जमा हुआ

मुखिया ने कहा उन मूर्खों को राजा ने कारागार मे बन्द करवा दिया है। अब हम राजा से प्रार्थना करें कि उन मूर्खों को छोड़ दे

गाव के लोग तैयार हुए।

गाव मे एक अध्यापक रहते थे वह समझ गए कि इस गाव के सभी लोग वैसी ही मूर्खता करेंगे और उन सब को राजा कारागार मे डलवा दे। अध्यापक ने गाव वालो को समझाया कि आप लोग राजा के पास न जाए। कहीं ऐसा न हो कि आप सभी कारागार मे बन्द हो जाए। मैं जाता हू और राजा को समझाकर सबको छुड़वा लाता हू।

और अध्यापक महोदय राजा के पास पहुचे। राजा ने पूछा क्या चाहते हो? मेरे पास किस लिए आए हो? अध्यापक ने कहा महाराज! हमारे गाव के तीन किसान आपके कारागार मे बन्द हैं। वह तीनो ही मूर्ख हैं। उन्हें मौत की सजा दी गई होती तो भी कम समझी जाती। लेकिन राजा प्रजा का पालक माना जाता है। प्रजा बालक के समान है। बालक बहुत बार गलती करता है तब बड़े उन्हें प्रेम से समझाते हैं। एकाध थप्पड़ भी कभी लगा लेकिन फिर प्यार दुलार भी करते है घर से निकाल नही देते। उन तीन को अपनी भूल का थप्पड़ लग गया है आप बड़े हैं वह तीनो मूर्ख बालक के समान है। तीनो को आप छोड़ दें यही मेरी आपसे प्रार्थना है। राजा को बात अच्छी लगी और उसने तीनो को छोड़ देने की आज्ञा दे दी।

शिक्षा—माता पिता तथा गुरुजनो एव अपने से बड़ो के समक्ष मीठी वाणी बोलिए जिससे वे बड़े खुश हो और आशीर्वाद दें।

# स्वामी श्रद्धानंद जी

ले—श्री सत्यकाम विद्यालंकार

स्वामी श्रद्धानन्द आपका नाम रहेगा सदा अमर।
प्राण आपने किए समर्पित भारत मा के चरणो पर।
हे दयानन्द ऋषि की सेना के महा यशस्वी सेनानी
राम यज्ञ मे प्राण समर्पण करने वाले बलिदानी।

हे गुरुकुल के संत तपस्वी वेदो के अ ानु महान।
आर्य संस्कृति के संरक्षक हि[illegible] जा ति के प्रेरक प्राण।
जब देखा भारत के बालक अंग्रेजो के बने गुलाम
भूल गए ऋषियो की शिक्षा योरुप का [illegible] लन न म।
फिर से वेद शास्त्र की, शिक्षा का संकल्प किया।
गंगा की लहर फिर झूमी वेद ऋचाओ की लय पर।
ऋषियो के युग की य ा स आग उठ सपने म र
स्वामी श्रद्धानन्द आपका नाम रहेगा सदा अमर।
प्राण आपने किए समर्पित भा त ा के चरणो पर।

देश मे फिर जब आजादी के धर्म यज्ञ का बिगुल बजा।
दिल्ली की गलियो मे आहत भक्तो का जब रक्त बहा।
केसरिया बाना पहने तब कूद पड़े रण आगन मे
नए जोश की लहर जगाई लाखो लाखो के मन मे
दिल्ली के घण्टा घर नीचे संगीनो की नोको पर।
खोल दिया तुमने सीना था हंसते हंसते यह कहकर।
अगर निहत्थे लोगो का भी रक्त बहाने की ठानी
पहिले गोली दागो मुझ पर कर लो अपनी मनमानी
जादू था वाणी मे ऐसा शात हो गई बन्दूक
दूर हुआ आतंक भय का मन मे सारी जनता के।
दिल्ली की जामा मस्जिद मे गूजा था वेदो का स्वर
हिन्दू मुस्लिम एक साथ सब चले आपके कदमो पर
स्वामी श्रद्धानन्द आपका नाम रहेगा सदा अमर।
प्राण आपने किए समर्पित भारत मा के चरणो पर।

[illegible] हिन्दू सावधान कर [illegible] जगाया
[illegible] के भेद भुला कर [illegible] अपनाया
[illegible] दरवाजे [illegible]
विधवाओ का [illegible] सब [illegible]
बहुत हुआ अन्याय आज तक कर [illegible] पश्चात्ताप।
मा बहनो के तिरस्कार से [illegible] है पाप।
मा की गोद मिली न जिनको उनको अपना प्यार दिया
खोले आश्रम बिना सहारा [illegible] जो उन्हें उभार लिया
ऐसे ही अनगिन बच्चो को आश्रम घर परिवार दिया।
योग्य बनाया सभी रीति से जीने का अधिकार दिया।
वीर पुरुष थे वीरो की ही भाति मृत्यु का वरण किया
अन्त समय भी ऋषि दयानन्द का सच्चा अनुकरण किया
स्वामी श्रद्धानन्द आपका नाम रहेगा सदा अम[र]
प्राण आपने किए समर्पित भारत मा के चरणो प[र]।

## आर्य समाज बस्ती मिट्ठू जालन्धर का सिलाई स्कूल

आर्य समाज बस्ती मिट्ठू जालन्धर में महर्षि दयानन्द निःशुल्क सिलाई स्कूल बड़ा सराहनीय कार्य कर रहा है। इस स्कूल में 12 सिलाई मशीन हैं और लगभग 40 लड़कियां सिलाई की शिक्षा पा रही हैं। श्री तिलक राज बहल न्यू बहादुर नगर जालन्धर ने जो मूलतः बस्ती गुजां के निवासी हैं और रिटायर्ड इन्फोर्समेंट आफिसर हैं ने श्रीराम सुभाष की कन्या प्रधान आर्य समाज की प्रेरणा पर 6 सिलाई मशीनें दान में दीं बहन राजरानी जी सदस्य आर्य समाज पक्का बाग ने दो मशीनें दीं श्रीमती स्वर्णा अधीन प्रधाना स्त्री समाज बस्ती गुजां ने अपने सुपुत्र के विवाह के अवसर पर एक सिलाई मशीन दी श्रीमती उमा और श्रीमती प्रभा बराना बहार बाग जालन्धर ने एक एक सिला॰ मशीन दा बहन रक्षा चोपड़ा पति श्री डा योगराज चोपड़ा ने एक निधन लड़की वीणा को सिलाई मशीन दी और श्री वीरदेव जी अग्रवाल न्यू बहादुर नगर जालन्धर ने एक निधन कन्या कु चमन शर्मा को एक सिलाई मशीन दी और शिक्षका श्रीमती मीना जी को एक सौ रुपया पारितोषिक दिया।

आर्य समाज में प्रचार का कार्य भी निरन्तर चल रहा है। 4 12 83 को श्री प शालिग्राम की कथा और 11 12 83 को श्री प यशराज जी आर्य प्रसिद्ध भजनोपदेशक का प्रवचन तथा उपदेश हुआ।

## भ्रष्टाचार का विकराल स्वरूप

आज हमारे राष्ट्र में भ्रष्टाचार अपनी चरम सीमा पर पहुंच रहा है। चपरासी से लेकर राष्ट्र नायकों तक इस दानवी वृत्ति के घेरे में फंस गए हैं। न्यायालय से लेकर सचिवालय तक, आकण्ठ इस भ्रष्टाचार के गढ में डूबे हुए हैं। राजनीति जो कभी सेवा करने की नीति थी, आज मात्र भ्रष्टाचार के माध्यम से धन कमाने की नीति बन गयी है। इस समय ऐसा लग रहा है कि भ्रष्टाचार की रोक थाम करना असम्भव हो गया है। ऐडी से चोटी तक भ्रष्टाचार का बोल बाला है। छोटी-बड़ी नौकरियों में उम्मीदवारों से मुंह मांगा धन नेता तथा उच्च अधिकारी लेते हैं। इस स्थिति में नवनियुक्त कर्मचारी से यह आशा रखना कि वह ईमानदारी से काम करेगा निरी मूर्खता है। भ्रष्टाचार इस समय एक ऐसा रूप धारण किए हुए है जिस को मिटाना सम्भव नहीं लगता। क्या भारत के नेता पत्रकार, बुद्धिजीवी साहित्यकार इस दिशा में कुछ सोचेंगे ? —राधेश्याम आर्य एडवोकेट सुलतानपुर (उ प्र)

## हिमाचल में आदर्श वैदिक विवाह

श्री गोविन्द राम आर्य भूतपूर्व मुख्याध्यापक की सुपुत्री शान्ता आर्या का शुभ विवाह पूर्ण वैदिक रीति के साथ मास्टर रूप लाल के सुपुत्र श्री राजपाल के साथ धूमधाम के साथ वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। दहेज प्रथा का पूर्ण रूप से परित्याग किया गया। संस्कार साधु आश्रम होशियारपुर के आचार्य श्री महाशय जी द्वारा सम्पन्न हुआ। उन्होंने वेद मन्त्रों की सुन्दर ढंग से व्याख्या की जिसे सुन कर श्रोतागण बहुत प्रभावित हुए। मन्त्री

## श्री विश्वबन्धु जी नहीं रहे

परिषद के कर्मठ अधिकारी आर्य समाज शान्ता क्रुज बम्बई के कर्मठ भूतपूर्व मन्त्री और आर्य युवक सभा महीयत के प्रधान श्री विश्व बन्धु जी के असामयिक एवं आकस्मिक निधन पर 2 12 83 को वृहद् शान्ति यज्ञ के साथ उनके गृह निवास तथा आर्य समाज मन्दिर सेक्टर 19 में नगर की सभी आर्य समाजों के प्रतिष्ठित आर्य नर नारियों ने उनकी निष्काम सेवाओं का भरपूर वर्णन करते हुए उन्हें भाव भीनी श्रद्धांजली अर्पित की। वोनिस हैग्रोविन्स तथा मारकीट कमेटी के मन्त्री होने के नाते उनके शोक में 2 दिन मारकीट भी बन्द रही।

—साधु राम आर्य



श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रेस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इस की स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

वर्ष 16 अंक 39, 24 पोष सम्वत् 2040 तदनुसार 8 जनवरी 1984 दयानन्दाब्द 159 । एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपए



वेदामृत—

# सब मेरे मित्र हों, मैं सबका मित्र होऊं

ले—प्रसिद्ध विद्वान स्वर्गीय श्री पं गंगाप्रसाद जी उपाध्याय

दृते दृंह मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम् । मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे । मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजु 36-18

अन्वय—(हे) दृते मा (मा) दृंह । सर्वाणि भूतानि मा (माम) मित्रस्य चक्षुषा समीक्षन्ताम । अहं मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे (वयं) मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ।

अर्थ—(दृते) हे सर्वाधार परमात्मन (सर्वाणि भूतानि) समस्त प्राणी वर्ग (मा) मुझको (मित्रस्य चक्षुषा) मित्र की आंख से (समीक्षन्ताम) देखें । (अहं) मैं (सर्वाणि भूतानि) सब प्राणियो को (मित्रस्य चक्षुषा) मित्र की दृष्टि से (समीक्षे) देखता हू या देखू । (वयं समीक्षामहे मित्रस्य चक्षुषा) हम सब लोग एक दूसरे को मित्र की दृष्टि से देखें ।

व्याख्या करने के लिए तो इस वेद मन्त्र में अत्यन्त साधारण बात का उपदेश दिया गया है । अर्थात् सब लोग मेरे मित्र हो और मैं सबका दोस्त होऊं । परन्तु तथ्य यह है कि यद्यपि सृष्टि के आरम्भ से अब तक सब विद्वान् और महात्मा इसी का उपदेश करते आये परन्तु मनुष्य को अपने जीवन मे यदि कोई कठिन बात मालूम हुई तो यह कि वह दूसरो का मित्र नहीं बन सकता और दूसरे उसके मित्र नहीं बन सकते । परन्तु इसी के साथ हर मनुष्य का यह भी अनुभव है कि जब तक वह दूसरों का मित्र नही बनता और दूसरे उसके मित्र नहीं बनते उसका काम नही चलता ।

आज लोग सोचा करते हैं कि हम को स्वतन्त्र होना चाहिए । परतन्त्रता बुरी चीज है । एक मन्त्र में प्रार्थना है कि 'अदीना स्याम शरद शतम्' हम आयु पर्यन्त अदीन रहें । अर्थात् न कोई हमारा दीन हो और न हम किसी के दीन हो । परन्तु दीनता और परतन्त्रता मे भेद है । परमात्मा ने हमको न स्वतन्त्र उत्पन्न किया और न स्वतन्त्र रहने के लिए बनाया । इसी प्रकार यह भी कहा जा सकता है कि परमात्मा ने हम को न परतन्त्र रहने के लिए बनाया । यदि मैं सर्वथा स्वतन्त्र हो जया और ससार के समस्त प्राणी भी मेरे समान स्वतन्त्र हो गए तो न मुझे उनसे कुछ लेना है न उन को मुझ से । फिर मेरा दूसरो का मित्र होना या दूसरो का मेरा मित्र होना कोई अर्थ नही रखता और यदि मैं दूसरो के तन्त्र के आधीन हू तो मेरी उनकी मित्रता कैसी ? कोई दास किसी स्वामी का मित्र नही होता न स्वामी दास का । इस प्रकार दोनो अवस्थाओं मे मित्रता नही हो सकती और मन्त्र में प्रतिपादित आकांक्षाएं व्यर्थ हो जाती हैं ।

तो क्या मित्र होने के स्थान मे शत्रु बनें ? बनने का यत्न तो करते है । शत्रुता की भावना ससार से दूर नही है । हर प्राणी किसी न किसी के लिए वैर भाव रखता है । परन्तु रख नही पाता । शत्रुता मित्रता से भी कठिन है । शत्रुता दुधारी तलवार है जिससे अपने हाथ के कट जाने का बराबर भय बना रहता है । शत्रुता रखने वाले का जीवन हर समय कष्टमय होता है । शत्रुता की आग पहले तुमको जलाएगी । फिर तुम्हारे शत्रु को । तुमको तो अवश्य जलाएगी । तुम्हारे शत्रु को जलाने में कभी कभी सन्देह भी हो सकता है ।

तो क्या न शत्रुता हो और न मित्रता । हम उदासीन रहे ? रहिये यत्न कीजिए परन्तु रह न सकेंगे । क्योंकि सृष्टि क्रम यह घोषणा करता है कि हम न स्वतन्त्र होने के लिए बनाए गए हैं और न परतन्त्र होने के लिए । सृष्टि का निर्देश है परस्परतन्त्रता, अर्थात मैं आपके तन्त्र के आधीन रहू और आप मेरे तन्त्र के । मेरा और आपका दोनो का तन्त्र एक हो जिसको मैं अपना तन्त्र कह सकू और आप अपना । मेरे और आपके तन्त्रो मे द्वैधीभाव न हो । इसका नाम है मित्रता ।

स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश मे मित्र शब्द का यह अर्थ किया है—(ञिमिदा स्नेहने) इस धातु से औणादिक क्त प्रत्यय के होने से मित्र शब्द सिद्ध होता है । मेद्यति स्निह्यति स्निह्यते वा स मित्रः जो सबसे स्नेह करने और सबको प्रीति करने योग्य है । इससे परमेश्वर का नाम मित्र है ।

और हर जीव को परमेश्वर के गुणो को धारण करना चाहिए, इसलिए हर जीव को भी मित्र होना आवश्यक है । गायत्री मन्त्र मे प्रार्थना भी है कि हम परमात्मा के गुणो को धीमहि अर्थात धारण करें । मित्रता परमात्मा का एक महान गुण है । मित्र मे स्नेह अर्थात चिकनापन होता है । तेल स्नेह है, घी स्नेह है । जल स्नेह है । स्निग्ध पदार्थों मे तरलता होती है । उसके कण अलग रहना नही चाहते । रह नही सकते । पत्थर का टुकड़ा ठोस है । दो पत्थर के टुकड़ो को कहीं रख दीजिए । वहीं ठहरे रहेंगे । एक दूसरे से मिलने के लिए आतुर न होंगे । परन्तु जल या तेल के कणो को आप इस प्रकार अलग नहीं रख सकते उनकी प्रकृति मे है दौड़कर दूसरे सजातीय कणो से मिल जाना इसलिए यदि आप उनको मिलने से रोकना चाहे तो बोतल आदि किसी ऐसे पात्र मे रखना पड़ता जिसकी दीवारो को वे तरल कण तोड़ न सकें ।

प्राणियो की प्रकृति मे भी तरलता है । हर प्राणी की प्रकृति मे । मेरी प्रकृति में और आपकी प्रकृति में । आप चाहते हैं कि दूसरों से मिलें दूसरे चाहते हैं कि आप से मिलें । मिलना हमारे स्वभाव मे है । दूर रहना नैमित्तिक है । कारणवश होता है ।

ऊपर कहा जा चुका है कि सृष्टि क्रम के अनुसार प्राणी परस्परतन्त्र बनाए गए हैं । हमारे शरीर के सब अंग एक दूसरे के परस्परतन्त्र हैं । कोई अकेला काम नही कर सकता । आंख पैर की आकांक्षा रखती है और पैर आंख की । पैर के नख और सिर की शिखा दोनो को एक दूसरे की अपेक्षा है । यह अपेक्षा हर मनुष्य को प्रत्यक्ष न होती हो परन्तु शरीर विज्ञान वेत्ता इसको भली प्रकार जानते हैं । यह तो हुई शरीर के अंगो की परस्परतन्त्रता । अब आप अपने शरीर और दूसरो के शरीरो के सम्बन्धों पर विचार कीजिए । एक मनुष्य दूसरे मनुष्य के बिना नही रह सकता । मनुष्य जाति दूसरे प्राणियो के बिना नही रह सकती । क्या कोई ऐसा देश है जहा केवल मनुष्य ही रहते हो । अथवा प्राणियो की केवल एक ही जाति हो । इससे हमे पता लग जाता है कि हमे एक दूसरे की ओर तरल पदार्थों के समान खिंचने की कितनी आवश्यकता है । प्राय स्वतन्त्रता और परतन्त्रता के सघर्ष मे हम परस्परतन्त्रता के आवश्यक तत्त्व को सर्वथा भुला देते हैं । यदि हम इस मूल मन्त्र को समझ सकें तो हमें न केवल परहित के लिए अपितु आत्म हित के लिए भी दूसरो की भलाई का विचार करना होगा । सह अस्तित्व का यही सिद्धान्त है जिस पर सृष्टि की स्थिति है । परन्तु जीव अल्प है अर्थात् अल्पज्ञ है । वह अपनी अल्पज्ञता को भी भूल जाता है । कहावत है कि मनुष्य दूसरो के धन को अपने धन से अधिक और दूसरो की बुद्धि को अपनी बुद्धि से कम समझता है । बच्चा समझता है कि उसमे उसके पिता या गुरु की अपेक्षा अधिक बुद्धि है । पागल समझता है कि ससार मे केवल वही बुद्धिमान है अन्य पागल हैं । इसलिए मनुष्य को सबसे पहला पाठ यह पढ़ना चाहिए कि मैं अल्पज्ञ हू और अल्प शक्ति भी हू । मुझे अपनी इस अल्पज्ञता का अनुभूति होनी चाहिए तभी मेरी उन्नति सम्भव हो सकेगी । जब यह अनुभूति नही होती तो मनुष्य स्वार्थी होकर दूसरो से स्नेह करना छोड़ देता है । शत्रुता यही से आरम्भ होती है, इससे बचने के लिए स्थिरता की आवश्यकता होती है ।

(शेष पृष्ठ 4 पर)

# "नया वर्ष हो मंगलमय"

ले—श्री राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ. प्र.)

आए भू पर नवल विहान,
जागे त्याग तथा बलिदान,
ऐश्वर्यों से पूरित हो सब—
खेत-बाग-घर-वन-खलिहान,

जगती तल का कण-कण हो—
फिर, सुखी शान्त तथा समृद्धिमय।
नया वर्ष हो मंगलमय ॥

दानवता का सर्वनाश हो,
स्वार्थ वृत्ति का पूर्ण नाश हो,
तिमिर धरा का दूर भगे अब—
सत्य-धर्म का फिर प्रकाश हो,

क्षत विक्षत हो पूर्ण रूप से—
धरती का अन्याय—अनय।
नया वर्ष हो मंगलमय ॥

ओज-तेज साहस हो जागृत,
शुभ मनुजता का हो हित,
सम्मुख मानवता के सारा—
मानव भू का बने विनत

जन-गण-मन मे, निर्भय होकर—
जागे सुचिरतम भाव अभय।
नया वर्ष हो मंगलमय ॥

फैले नयी उषा-अरुणायी,
जागे जवानो की तरुणायी,
अत्याचारो के विरोध मे—
युवा शक्ति ले फिर अंगड़ाई

करे सुगन्धित दिक मण्डल को—
स्वच्छ सुशीतल वायु मलय।
नया वर्ष हो मंगलमय ॥

# महर्षि ने कहा था—

'सदा प्रिय सत्य दूसरे का हितकारक बोले, अप्रिय सत्य अर्थात काणे को काना न बोले, अनृत अर्थात् झूठ दूसरे को प्रसन्न करने के अर्थ न बोले। सदा भद्र अर्थात सबके हितकारी वचन बोला करे, शुष्क वैर अर्थात् बिना अपराध किसी के साथ विरोध वा विवाद न करे। जो जो दूसरे का हितकारक हो और कोई बुरा भी माने तथापि कहे बिना न रहे।

इस ससार मे दूसरे को निरन्तर प्रसन्न करने के लिए प्रिय बोलने वाले प्रशसक लोग बहुत हैं परन्तु सुनने मे अप्रिय विदित हो और वह कल्याण करने वाला वचन हो उसका कहने और सुनने वाला पुरुष दुर्लभ है। क्योंकि सत्पुरुषो को योग्य है कि मुख के सामने दूसरे का दोष कहना और अपना दोष सुनना परोक्ष मे दूसरे के गुण सदा कहना और दुष्टो की यही रीति है कि, सम्मुख मे गुण कहना और परोक्ष मे दोषो का प्रकाश करना। जब तक मनुष्य दूसरे से अपने दोष नही कहता तब तक मनुष्य दोषो से छूट कर गुणी नही हो सकता।

जो गुणो मे दोष, दोषो मे गुण लगाना वह निन्दा, और गुणो मे गुण दोषो मे दोषो का कथन करना स्तुति कहाती है अर्थात् मिथ्या भाषण का नाम निन्दा, और सत्य भाषण का नाम स्तुति है।

(—सत्यार्थ प्रकाश 4था समुल्लास)

# ईशावास्यम् इदम् सर्वम्

ले,—श्री प. रामनाथ "सिद्धान्त विशारद" आर्य महोपदेशक

**ईशावास्यमिद सर्वम् यत् किञ्च जगत्या जगत्।**
**तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः मागृध कस्य स्विद्धनम् ॥**

शब्दार्थ—(इद सर्वम्) यह सब (यत् किञ्च) जो कुछ (जगत्या जगत) ब्रह्माण्ड मे लोक हैं वे सब के सब (ईशावास्यम्) उस प्रभु से पूर्णतया व्याप्त है (तेन) इस लिए हे जीव! तूने इस ससार का (त्यक्तेन) त्याग भाव से (भुञ्जीथा) उपभोग करना (मागृध) लालच न करना (कस्य स्वित् धनम) भला यह धन किस का है?

यह ऊपर का मन्त्र यजुर्वेद के चालीसवे अध्याय का पहला मन्त्र है। यजुर्वेद का चालीसवा अध्याय मामूली से परिवर्तन के साथ ईशोपनिषद् के नाम से प्रसिद्ध है। उपनिषद उस ब्रह्म ज्ञान को कहते हैं कि जो गुरु के समीप बैठ कर प्राप्त किया जाता है। वेदो की शाखाओ के अनुसार उपनिषदो की सख्या भी 1127 थी। शाखाओ के साथ उपनिषदे भी लुप्त हो गईं। एक सौ आठ तो अब भी मिलती है। एक सौ आठ मे से भी 11 प्रमाणिक हैं उन्ही को पढ़ना चाहिए अलबरूनी ने भी उपनिषदो का पढा। उस पर उपनिषदो के स्वाध्याय का ऐसा प्रभाव पडा कि वह आनन्द विभोर हो गया। हाजी इब्राहीम सरहदी ने 1596 ई मे उपनिषदे पढी, अकबर की सम्मति से उनका तर्जुमा किया। अकबर उनको सुनकर दम बखुद रह जाया करता था।

शहजादा दारा शिकोह को जब आध्यात्मिक प्यास लगी तो वह बड़े-बड़े विद्वानो से मिला। तौरेत जबूर अजील कुरआन पढा पर शान्ति न मिली। उपनिषदो का पता लगा। कश्मीर गया, वहा पण्डितो से सस्कृत पढी और मूल उपनिषदो को पढा जिस से वह गद् गद हो गया। उसने उपनिषदो का अनुवाद फारसी भाषा मे किया जिसका नाम है 'सिर्रे अकबर (बडा रहस्य) उसी फारसी तर्जुमे का अनुवाद फ्रांसीसी भाषा मे हो कर लैटिन भाषा मे हुआ। लैटिन भाषा के अनुवाद को पढ कर जर्मन का प्रसिद्ध शोपन हार उछल पडता है जैसे अन्धे को आख मिल गई हो बहरे को कान मिल गए हो गूगे को जबान, लगड़े को टाग मिल गई हो। वह कहता है कि समस्त ससार मे मूल पदार्थ वेदो को छोड कर किसी अन्य विद्या का ज्ञान इतना लाभदायक और हृदय को ऊचा उठाने वाला नही है जितना उपनिषदो का। उसने मेरी आखें खोल दी मेरे अशान्त जीवन को शान्ति प्रदान की है। ग्यारह उपनिषदें यदि न पढ सकें तो ईशोपनिषद तो अवश्य ही पढनी चाहिए। ईशोपनिषद कहती है कि हे मनुष्य! तू इस बात को स्मरण रख कि तूने अपने जीवन का लक्ष्य ईश प्राप्ति को ही बनाना है। हम इसे लक्ष्य बनाए या न बनाए लक्ष्य तो यही है। यहा पहुचेंगे तो यात्रा पूरी होगी अन्यथा अधूरी रह जाएगी। और फिर जन्म धारण करना ही पडेगा। तृप्ति तो ईश प्राप्ति मे ही है। उस प्रभु को सर्वव्यापक रूप मे देखेंगे तो तभी पापो से निवृत्ति होगी। पूर्ण शुद्ध जीवन वाले बन सकेंगे। वकील बनना इन्जीनियर बनना या प्रोफैसर बनना अथवा बडा भारी व्यापारी बनना जीवन का ध्येय नही हैं। जीवन यात्रा को चलाने के लिए कुछ न कुछ तो काम करना ही पडता है, यदि इन कार्यों के बिना जीवन यात्रा चल सके तो यह सब कर्म अनावश्यक है। प्रभु मत जीवन मे योग भ्रष्ट को श्रीमता के गृह मे जन्म इसलिए देता है कि वह धन कमाने मे व्यर्थ समय न लगाकर योग मार्ग पर आगे बढें।

यदि ईशोपनिषद भी न पढी जा सके तो ईशोपनिषद् के पहले तीन मन्त्र तो अवश्य ही पढ लेने चाहिए। यदि ईशोपनिषद् के पहले तीन मन्त्र जो कि बहुत ही महत्वपूर्ण हैं और सारी ईशोपनिषद का सार है भी न पढ सके तो ईशोपनिषद् का पहला मन्त्र तो ईशावास्य... पढना ही नही बल्कि अर्थ सहित स्मरण कर लेना चाहिए। इस मन्त्र पर बार-बार मनन चिन्तन करना चाहिए। क्योंकि इसमे विश्व की कई समस्याओं का समाधान है। मन्त्र की शिक्षाओ पर अगले लेख मे विचार होगा।

—

सम्पादकीय—

# आर्य समाज और साम्प्रदायिकता (2)

भारत की सारी राजनीति दो ही शब्दों के इर्द-गिर्द घूम रही है 'साम्प्रदायिकता और धर्मनिरपेक्षता।' परन्तु कोई नहीं जानता कि इन दोनो शब्दो का वास्तविक अर्थ क्या है? और कभी किसी ने यह बताने का कष्ट नहीं किया कि धर्म निरपेक्षता कहां समाप्त होती है। यह राजनैतिक नेताओ के हाथ मे है वह जिसे साम्प्रदायिक कहना चाहें वह कह दें और जिसे धर्म निरपेक्ष या राष्ट्रवादी कहना चाहें वह कह दें। यह बहुत कुछ इस बात पर निर्भर होता है कि जिस व्यक्ति के विषय मे वह कुछ कह रहे हैं, वह है कौन और उसका उनके साथ क्या सम्बन्ध है। अधिकतर इसके विषय मे वह उस समय सोचते जब चुनाव का समय समीप आता है। उन्होने वोट लेने होते हैं, इसलिए जो व्यक्ति उनके जैसे काम आता हो, उसे वैसा ही घोषित कर देते हैं। वर्तमान परिस्थिति का सबसे अधिक दिलचस्प पक्ष यह है कि जब हमारे देश का विधान बनाया गया था उस समय हमारे नेताओ ने यह चिन्ता न की थी कि साम्प्रदायिकता क्या होती है और धर्म निरपेक्षता क्या होती है? यही कारण है कि हमारे विधान मे यह दोनो शब्द नही मिलते। यह तो लिखा गया है कि सब नागरिको के साथ एक जैसा व्यवहार होना चाहिए। परन्तु कही यह नही लिखा कि जो मुसलमान हैं या ईसाई हैं उनके साथ कुछ विशेष व्यवहार किया जाए या उन्हे कुछ विशेष अधिकार दिए जाए। अल्पसंख्यको के अधिकारो की रक्षा के लिए तो अवश्य कहा गया है। परन्तु ऐसी स्थिति पैदा नही की गई कि हिन्दू, सिख, मुसलमान या ईसाई आपस में विशेष अधिकारो के लिए झगड पडें और देश मे कुछ ऐसी परिस्थितियां पैदा हो जाए जिसके कारण सारी व्यवस्था ही नष्ट-भ्रष्ट हो जाए। आज देश के सारे राजनैतिक दल साम्प्रदायिकता और धर्म निरपेक्षता के नाम पर एक दूसरे की टांग खींचने का प्रयास कर रहे हैं। हमारे राजनैतिक नेता किस प्रकार अपने आपको भी धोखा देते हैं और अपने देशवासियो को भी इसका अनुमान हम इससे लगा सकते हैं कि केरल मे मुस्लिम लीग के साथ सारी पार्टियां समझौता करने को तैयार हो जाती हैं। जबकि मुस्लिम लीग एक विशेष सम्प्रदाय की पार्टी है। दूसरी तरफ राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के साथ यह कहकर बात करना नहीं चाहते कि यह साम्प्रदायिक संस्था है। क्योकि यह केवल हिन्दूओ की संस्था है। इससे पता चल जाता है कि साम्प्रदायिकता और धर्म निरपेक्षता के नाम पर देश की जनता से किस प्रकार धोखा किया जा रहा है।

आर्य समाज न साम्प्रदायिकता का समर्थक है न धर्म निरपेक्षता का। एक राष्ट्रवादी संस्था होने के कारण यह केवल मानवता में विश्वास रखता है। इस देश मे रहने वाला कोई भी व्यक्ति हो, हिन्दू हो मुसलमान हो, सिख या ईसाई हो। जब तक वह वह अपन इस देश के प्रति पूरी निष्ठा रखता है और कोई भी ऐसा कार्य नहीं करता जो देश के हित के विरुद्ध हो उस समय तक आर्य समाज का उसके साथ कोई मतभेद नहीं होता। सन 1919 मे जब श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज देहली की जामा मस्जिद मे जाने और अपने विचार मुसलमानो के सामने रखने को तैयार हो गए थे, तो केवल इसलिए कि वह हिन्दू और मुसलमान मे कोई भेदभाव न रखते थे। परन्तु फिर एक मुसलमान के हाथो ही उनकी हत्या की गई। ऐसी स्थिति मे जब यह कहा जाता है कि सब धर्म एक समान हैं तो उसे समझना कठिन हो जाता है। कुछ मत ऐसे भी हैं जिनका आधार हिंसा है। वह न केवल हिंसा को सहन करते हैं अपितु अपने समर्थको या भक्तों को हिंसा के लिए तैयार भी करते हैं। आर्य समाज के तीन शहीद प० लेखराम जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी और महाशय राजपाल जी। ये तीनो मुसलमानो के हाथों मारे गये। ऐसी स्थिति में जब यह कहा जाता है कि सब धर्म समभाव का आदर्श हमें अपने सामने रखना चाहिए तो आर्य समाज इसे स्वीकार नहीं करता। वह मनुष्यों में कोई भेदभाव नहीं रखना चाहता, क्योकि उसके जो दस नियम हैं वह उसकी सारी कार्य पद्धति के आधार हैं उनमे छटे नियम में कहा गया है कि—"संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है और सातवें नियम मे यह कहा गया है कि—'सबसे प्रीति पूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिए। इन दो नियमो के बाद आर्य समाज न तो साम्प्रदायिकता का समर्थक हो सकता है और न धर्म निरपेक्षता का। यह केवल राष्ट्रवाद या मानव वाद का ही समर्थक हो सकता है और उसे इसके लिए ही प्रचार करना चाहिए।

आर्य मर्यादा के पिछले अंक में, मैंने इसी विषय पर लिखते हुए उस सम्मेलन का भी उल्लेख किया था जो 17-18 दिसम्बर को हैदराबाद मे हुआ है। आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश ने यह सम्मेलन करके पहली बार आर्य समाज का ध्यान एक ऐसी समस्या की ओर दिलाया है जो आज हमारे देश मे अत्यन्त ही गम्भीर स्थिति पैदा कर रही है। जैसाकि मैंने ऊपर लिखा है। साम्प्रदायिकता और धर्मनिरपेक्षता का वास्तविक अर्थ क्या है? इस तरफ किसी का ध्यान नही जाता। परन्तु इन दोनो शब्दो को लेकर हम अपनी सारी राजनीति मे एक ऐसे विष का संचार कर रहे हैं जो आगे चल कर हमारे लिए कई प्रकार की कठिनाईयां पैदा कर देगा। आन्ध्र प्रदेश की आर्य प्रतिनिधि सभा ने इस विषय को उठाकर देश की बहुत बडी सेवा की है। आवश्यकता आज इस बात की है कि सारे देश की आर्य समाजें इस आन्दोलन को प्रारम्भ करे और यह प्रचार करें कि आर्य समाज न साम्प्रदायिकता मे विश्वास रखता है और न धर्म निरपेक्षता मे। वह केवल मानववाद और राष्ट्रवाद मे ही विश्वास रखता है, उसी के लिए वह काम करता आया है और आगे भी करता जाएगा।

—वीरेन्द्र

# सभा का वार्षिक चुनाव 19 फरवरी को फगवाड़ा में होगा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सभा मे जो 1-1-84 को कन्या महाविद्यालय जालन्धर मे हुई थी निर्णय किया है कि सभा का वार्षिक चुनाव (वार्षिक अधिवेशन) 19-2-84 रविवार को फगवाडा मे किया जाएगा।

जिन आर्य समाजो ने अभी तक अपने प्रतिनिधि फार्म भर कर सभा को नही भेजे हो वह शीघ्र अति शीघ्र सभा कार्यालय मे दशांश वेद प्रचार की राशि सहित अपने फार्म भेज दें ताकि उनके प्रतिनिधि भी चुनाव मे भाग ले सकें। और समय पर उन्हे एजण्डा आदि भेजा जा सके।

अन्तरंग सभा मे यह भी निर्णय किया गया कि महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी के उपलक्ष मे एक समारोह अन्य प्रान्तो की तरह पंजाब मे भी किया जाए। यह समारोह लुधियाना मे किया जाना स्वीकार हुआ जिसकी तिथि की घोषणा आगे कर दी जाएगी।

# यज्ञशाला और अतिथि भवन का निर्माण कार्य आरम्भ

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के भवन का नव निर्माण कार्य आरम्भ हो चुका है। पहले 12 दुकानें बनकर तैयार हो गई है, अब अतिथि भवन और यज्ञशाला बननी आरम्भ हो चुकी है। यज्ञशाला के पिल्लर और अतिथि भवन की दीवारें बन रही हैं। परन्तु महगाई के कारण हर वस्तु महगी है। यह सारा कार्य धन के बिना नही हो सकता। इसलिए मेरी सभी धनी और दानी महानुभावो से प्रार्थना है कि वह यज्ञशाला और अतिथि भवन निर्माण के इस पुण्य कार्य के लिए सभा को धन भेजें। दानी महानुभाव दिल खोल कर इस पवित्र कार्य मे धन का सहयोग दें।

—सभा महामन्त्री

# तव शरीरं पतयिष्णु अर्वन्

ले—श्री अर्जुनदेव स्नातक, आगरा

कितना सुन्दर ससार है। वनो, उपवनो, तडागो, भूमि एव आकाश में सर्वत्र इसकी रमणीयता अनुपम है। ये असंख्य ग्रह उपग्रह, शशि, रवि सभी सुन्दर अति सुन्दर हैं। प्रश्न है—यह सब किसके लिए हैं ?

इसका उपयोग प्राणिमात्र करते हैं। अत यह सब समस्त प्राणियो के लिए है। ससार के इन रमणीय पदार्थों का उपभोग पशु एव मानव दोनो ही करते हैं किन्तु इनमे मानव शरीर को श्रेष्ठ कहा जाता है। सन्त तुलसीदास ने इस को इन शब्दो मे कहा है—

'बड़े भाग मानुष तन पावा'

तो यह मानव शरीर बड़े भाग्य से से प्राप्त हुआ है। तभी सभवत आज के इस वैज्ञानिक युग का मानव इसके लिए बड़े प्रयत्नो से नाना प्रकार के भौतिक साधनो को एकत्रित करने मे लगा हुआ है। आज मानव के जितने क्रिया-कलाप हैं सब इस शरीर के लिए ही हैं। प्रात से साय तक, साय तक ही नही रात्रि भर भी इसी के लिए अनेक साधन एकत्रित किए जा रहे हैं। इसको गर्मी लगी तो पखा, कूलर आदि बना लिए सर्दी लगी तो अनेक प्रकार के ऊनी कपडो के इर के अतिरिक्त रूमहीटर आदि का निर्माण हुआ। भूख-प्यास लगी तो अनेक खाद्य और पेय पदार्थ इसकी सेवा मे तैयार खड़े हैं।

यह सब शरीर के लिए है। किन्तु शरीर कैसा है ? इसका भी तो चिन्तन करना चाहिए। वेद ने जिस ओर सकेत किया वह कितना सत्य है, प्रयोग सिद्ध एव प्रत्यक्ष सिद्ध है कि—

तव शरीर पतयिष्णु अर्वन

अर्थात हे जीवात्मन ! तेरा यह शरीर पतनशील है मरण धर्मा है।

ससार की सभी वस्तुए मनुष्य अपनी इच्छानुसार प्राप्त करने का प्रयत्न करता है। सब बातो की तैयारी वह करता है किन्तु 'मृत्यु ऐसा तत्व है जिस की अभिलाषा ही न हो आप उसकी तैयारी करें या न करें आएगी अवश्य आती है—समान रूप से आती है। राजा और रक दोनो का ही शरीर पतनशील है मृत्यु का ग्रास बन जाता है। वेद की उक्त सूक्ति इसी तथ्य को जागृत कर मानव को मृत्यु से न डरने की अनुपम प्रेरणा देती है किन्तु मानव तो इस मृत्यु से बहुत डरता है। लेकिन क्या डरने से यह न आएगी या इससे बच सकेंगे ? नीतिकार तो स्पष्ट शब्दो म कहते हैं कि—

मृत्योर्बिभेषि किं बाल। न स भीत विमुञ्चति।
अद्य वाब्द शतान्ते वा मृत्युर्वै प्राणिना ध्रुव ॥

शरीर पतनशील है मृत्यु अवश्यम्भावी है। फिर मृत्यु से भय क्यों ? इसका शोक क्यो ? योगीराज श्री कृष्ण ने गीता मे इस शोक की व्यर्थता इन शब्दो मे व्यक्त की है—

जातस्य हि ध्रुवो मृत्यु ध्रुव जन्म मृतस्य च।
तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्व शोचितुमर्हसि ॥

इस प्रकार वेद की सूक्ति मानव मात्र को यह प्रेरणा देती है कि शरीर पतनशील है इसके विनाश पर भय शोक न करो।

इस सूक्ति का और मनन करें तो एक बात की और प्रेरणा प्राप्त होती है। शरीर तो विनाशशील है। अत इसके लिए एकत्रित किए गए भौतिक साधन बाह्य साधन बाहरी ठाट-बाट भी तो नश्वर हैं। अतिम समय मे तो इनमे से कोई भी नही जाता फिर अनुचित साधनो से इनका सग्रह क्यो ? इनके प्रति आसक्ति क्यो ? इनके साथ इतनी ममता क्यो ? आज मानव यह भूल गया है कि ससार की समस्त वस्तुए साधन हैं शरीर भी साधन है किन्तु आज विपरीत स्थिति है। ये साध्य बन गए हैं। सभी का लक्ष्य इन्ही को प्राप्त करने मे है। इसीलिए सब दुखी हैं। इनमे से तो कुछ भी साथ नही जाता है। फिर साथ जाता क्या है ? महाभारतकार कहते हैं—

मृत शरीर मुत्सृज्य काष्ठलोष्ठ सम क्षितौ।
विमुखा बान्धवा यान्ति धर्मस्तमनुगच्छति ॥

बन्धु बान्धव सब यही रह जाते हैं केवल धर्म ही साथ जाता है। इस आधार पर इन नश्वर पदार्थों के प्रति हमारी आसक्ति क्या उचित है ? धन के अम्बार एकत्रित कर लीजिए लेकिन साथ देने वाले ये भी नहीं है—

सुसञ्चितैर्जीवनवत्सुरक्षितै
र्निजेऽपि देहे न नियोजित क्वचित्।
पुसो यमान्त व्रजतोऽपि निष्ठुरै—
रेतैर्धनै पञ्चपदी न दीयते ॥

आज भौतिक सम्पति के लिए जो दौड लग रही है धन के लिए जो पारस्परिक वैमनस्य की अग्नि जल रही है उसके लिए उक्त तथ्यो का चिन्तन करना चाहिए। यह सब तो पतनशील हैं, नश्वर है, क्षण भगुर है। अत इसका सग्रह व्यर्थ है। फिर प्रश्न है इस ससार मे क्या सग्रह योग्य है ?

उत्तर के लिए किसी कवि के वचन ध्यान मे रखने योग्य हैं—

धनानि भूमौ पशवश्च गोष्ठे
नारी गृहे द्वार सखा श्मशाने।
देहश्चितायां परलोक मार्गे
कर्मानुगो गच्छति जीव एक ॥

इस ससार मे अन्तिम समय मे न धन न पशु न पत्नी, न मित्र और न ही यह शरीर साथ जाता है। साथ जाने वाले शुभ कर्म नही किए तो फिर कब करेंगे। इसलिए सच्चे अर्थों मे मानवीय गुणो का विकास कर हम मानव बनें। शुभ कर्म करते हुए इस नश्वर देह को सार्थक करें। यह शरीर भले ही जाए लेकिन शुभ कर्म करने वाले का यश तो बना ही रहता है। क्योंकि—

—'कीर्तिर्यस्य स जीवति'

—

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

वेद मन्त्र मे ईश्वर को 'दृति कहकर पुकारा गया है। लौकिक भाषा मे दृति नाम है चमड़े के थैले का है जिसको उर्दू मे मशक कहते हैं। दृति में तरल पदार्थ भरा जाता है। दृति चमड़े का वह थैला भी होता है जिसको आधार बनाकर तैराक लोग तैरना सीखते हैं। सायणाचार्य ने ऋग्वेद मण्डल 4, सूक्त 45 के प्रथम मन्त्र का भाष्य करते हुए लिखा है—'रस द्रव्याधार पदार्थश्चर्ममयो दृतिरित्युच्यते। अर्थात् चमड़े का वह पात्र जिसमे रस द्रव्य रखा जाता है। यह दृति का लौकिक अर्थ है। सायण के समय मे 'दृति का केवल यही प्रयोग होता। मन्त्रो को विशेष अवसरो पर विशेष विनियोग मे लाने के लिए शब्दो के अर्थों को भी उनकी तरलता कम करने के लिए योगरूढि बनाना पड़ा। इसलिए उव्वट, महीधर आदि भाष्यकारो ने गृह्य या कल्प सूत्रो के आधार पर दृति' आदि शब्द भी विशेष अर्थ मे प्रयुक्त किये। यज्ञ की भाषा मे दृति एक ग्रह अर्थात पात्र होता है जिसे महावीर ग्रह बोलते हैं यहा पाठको को याद रखना चाहिए कि 'ग्रह का अर्थ नक्षत्र या तारा नही है। यज्ञ मे यज्ञ के आवश्यक पदार्थ सोमरस आदि रखने के लिए कई छोटे-बड़े पात्र होते हैं उनका नाम ग्रह होता है। महावीर भी वैसा ही एक ग्रह है।

मैं समझता हू कि दृति मे मूल भाव आधार की है। इसलिए दृति का अर्थ है ईश्वर जो सबका मूलाधार है। 'दृह शब्द का अर्थ है हमको दृढ बना आधार पाकर आश्रय मे दृढता आ जाती है। मनुष्य मे भी परमात्मा के आधार होने पर विश्वास करके धैर्य और स्थैर्य के गुण प्राप्त हो जाते हैं। कभी कभी स्वार्थ वश हम दूसरो की मित्रता को तोड बैठते है। यह अपनी निबलता के कारण होता है। दो मित्र परस्पर शत्रु कैसे बनते हैं ? क्या आपने कभी विचार किया है है हर घर मे ऐसे उदाहरण मिलेंगे कि आदि मे मित्र थे कुछ दिनो में शत्रु हो गये। जिन स्त्री-पुरुष युगल ने अत्यन्त प्रेम से विवाह किया था वे एक दूसरे का मुह नहीं देखना चाहते। जो जातिया एक-दूसरे की मित्र हैं कब घोर शत्रु बन जाती हैं, यह परिवर्तन एक क्षण में कभी नहीं होता। इसके लिए समय लगता है, परन्तु मनुष्य को इसकी अनुभूति नही होती। अनुभूति का अभाव अनुभूत वस्तु के अभाव का प्रमाण नहीं है। हम एक बालिश्त के शरीर से साढ़े तीन हाथ के हो जाते हैं। पता नहीं लगते कि किस दिन कितने बढ़े। एक क्षण में तो नहीं बढ गए। एक और उदाहरण लीजिए। आपने दोपहर को 12 बजे खाना खाया। दो बजे आपसे कोई कहे कि क्या आप भूखे हैं ? आप कहेंगे नहीं ? [illegible] को आठ बजे आप कहेंगे मुझे बहुत भूख लगी है। यह बहुत भूख आपके शरीर [illegible] एकाएकी कब घुस गई ? वस्तुतः भूख तो खाना समाप्त करने के पश्चात ही आरम्भ हो गई थी। इतनी भूख लगना कि आप अनुभव कर सकें—इसमे आठ घण्टे लग गए। इसी प्रकार मित्रता का हाल है। पहले एक छोटी सी बात पैदा होती है। इससे कुछ ठेस सी लगती है। फिर यह ठेस बढ जाती है। मन मुटाव इसी का नाम है। फिर खींचातानी आरम्भ होती है और दो मित्र शत्रु बन जाते हैं। यदि हम परस्पर दृढता के नियम को दृष्टि मे रखें तो छोटी-छोटी बातो मे अपने पैरो को स्थिर रख सकते हैं और मित्रता दृढ रह सकती है। मित्र मित्र की हिंसा नही करता। शत्रु सदा हिंसा की ही बात सोचता रहता है। गरम युद्ध से पूर्व शीतल युद्ध बना रहता है। इस प्रकार वातावरण सदा द्वेष पूर्ण रहता है।

बहुत से लोग हैं जो मनुष्य के साथ प्यार करने का उपदेश करते हैं। परन्तु मनुष्य से बाहर उनका प्रेम नही जाता कभी सोचते ही नही कि पशु पक्षियो मे भी जीव हैं। उनके साथ तो सदा क्रूरता का ही व्यवहार होता है। कुछ लोग अपने देशवासियो तक ही मित्रता के भाव को सीमित रखते हैं। कुछ छोटी-छोटी बिरादरियो तक ही प्रेम करना सिखाते हैं। परन्तु वेद ने सर्वाणि भूतानि [illegible] प्राणिमात्र के साथ मित्रता का [illegible] दिया है। इस उपदेश पर श्रद्धा रखने वाला मनुष्य मासाहारी नही हो सकता। क्योंकि बिना पीडा दिए मास प्राप्त नही हो सकता। वह चोरी नहीं कर सकता क्योंकि चोरी करने से दूसरो को कष्ट पहुचता है।

इतना ही नही, मित्र का तो मित्र के लाभ की बात भी सोचते रहना चाहिए इसलिए महात्मा लोग दूसरों को कष्टो से बचाने में भी सदा यत्नशील रहते हैं। परोपकाराय सता विभूतय। वह ससार कितना अच्छा ससार होगा जिस मे सब मुझे मित्र की दृष्टि से देखें और दूसरे मुझको 'मा विद्विषावहै। हम में से कोई किसी के साथ शत्रुता न करे।

# यज्ञ का एक वैज्ञानिक विश्लेषण

ले—श्री डा सहदेव वर्मा

### यज्ञो वै श्रेष्ठतम कर्म

भारत में जब से यज्ञ का नियमित प्रचलन समाप्त सा हुआ है तब से देश अभावो कष्टो व अनेक दैवी आपदाओ से ग्रस्त है। कहीं अति वृष्टि कहीं सूखा कहीं महामारियां कहीं मानसिक आधि व्याधियां देशवासियों को आक्रान्त कर रही हैं। शारीरिक सुख के बाहरी साधन तो बढ रहे हैं भौतिक सम्पदा की तो भरमार हो रही है। मानव मात्र आपा धापी में ग्रस्त है पर आत्मिक शान्ति और आनन्द का नाम नहीं।

वायु प्रदूषण की समस्या अन्न का अभाव जल का सकट असन्तोष की आग आज के मानव को बेचैन किए हुए हैं। विज्ञान के इस युग में मनुष्य भौतिक सुखो की चाह मे दो कदम आगे बढता है तो आत्मिक आनन्द के अभाव मे चार कदम पिछड जाता है।

कदम कदम पर फक्टरियो और मिलो की कानफोडू आवाज रेलो हवाई जहाजो व बम विस्फोटो की दिल दहलाने वाली गड गडाहट धरती से आकाश तक चारो तरफ मशीनो वाहनो तथा आवागमन के असख्य साधनो द्वारा चौबीसो घण्टो धूल धुआ उडाकर जीवित प्राणियो को बलात सा देता हुआ वायु बीय विष भटकती गरीबी सुरसा के मुह सरीखी बढती बेरोजगारी रिकार्ड तोड जनसख्या आदि समस्याए मुह बाये प्राणि मात्र को निगलने के लिए तैयार खडी हैं।

इसमे कोई सन्देह नही कि भारत स्वतन्त्रता के पश्चात उन्नति के पथ पर अग्रसर हुआ है किन्तु यह गति सन्तोष जनक नहीं कही जा सकती। राजनीतिक दृष्टि से तो राष्ट्र को उन्नत करने की दिशा मे एडी चोटी तक का जोर लगाया जा रहा है— किन्तु चरित्र निर्माण मानव उत्थान मानसिक विकास तथा स्वस्थ राष्ट्र सेवी नागरिक बनाने की ओर किसी राष्ट्र निर्माता का ध्यान आकर्षित नही हो रहा है। आज का मानव दूसरे की खोज मे तो लगा है। उसने आकाश की ऊचाई, सागर की गहराई और धरती के विस्तार को तो नाप लिया किन्तु वह अपने को भूल रहा है। वह अतुलित धन सम्पत्ति का स्वामी होना चाहता है। आधुनिक विज्ञान का सहारा लेकर धरती आकाश और सागर को अधिकार मे करना चाहता है। आज की राजनीति भी अराजकता की पर्याय बन चुकी है। विज्ञान विनाश की ओर अग्रसर है। कर्त्ती के आकर्षण ने त्याग की भावना सर्वथा नष्ट कर दी है। हर व्यक्ति अधिकार हथिया कर दूसरो की सेवा का दम भरता है। कवि की निम्नलिखित उक्ति ऐसे ही व्यक्तियो पर चरितार्थ होती है—

> पद लोलुपता और त्याग का
> एकाकार नही हो सकता।
> दो नावो पर पग रखने से
> सागर पार नही हो सकता।

आखिर यह सब क्यों हो रहा है? इसलिए कि देश से वे सन्तुलित कल्याण कारी परम्पराए लुप्त हो गई जो त्याग सेवा व उपकार का पाठ सिखाती थी। जिनमे यज्ञ की प्रथा सबसे महत्वपूर्ण व मानवोपयोगी थी और आज भी है। न जाने हम क्या हो गया है। सदियो मे परतन्त्रता की पीडा सहन करने पर भी हमे अपनी अज्ञानता का ज्ञान नही होता। हम आज भी हलाहल को अमृत और अमृत को विष समझ रहे हैं। वास्तविकता सामने आने पर भी हम अनजान से बन जाते हैं। अब यह भली भान्ति समझ लेना चाहिए कि जब तक हम उन महान परम्पराओ को नही अपनाते जिन के कारण भारत जगद्गुरु कहलाता था तब तक राष्ट्र का वास्तविक उत्थान नही हो सकता।

उन महती परम्पराओ मे सर्वाधिक उपयोगी एव कल्याणकारी तथा प्राणिमात्र की उद्धारक है— यज्ञ परम्परा है। यज्ञ क्या है—

यज्ञ शब्द के भीतर छिपी भावना इतनी गहन तथा विस्तृत है कि इस पर विशाल ग्रन्थ लिखा जा सकता है यज्ञ की इसी पुनीत गम्भीर भावना को लेकर इस लघु पुस्तिका मे कुछ विचार प्रकट किए गए हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश के तीसरे समुल्लास मे लिखा है— जब तक होम करने का प्रचार रहा तब तक आर्यावर्त देश रोगो से रहित और सुखो से पूरित था अब भी प्रचार हो तो वैसा ही हो जाए। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि रोग नाशक तथा सुखो का कारक यज्ञ कितना लोकोपकारी है।

यज्ञ को अग्निहोत्र होम हवन याग यज्ञ आदि नामों से भी पुकारा जाता है। सामान्यतया मन्त्रोच्चारण के साथ घी सामग्री एवं सुगन्धित पदार्थों की आहुति देकर यह क्रिया सम्पन्न की जाती है इससे समस्त वातावरण सुगन्धित एव पावन हो उठता है। इसका सीधा प्रभाव स्वास्थ्य तथा मन पर भी पडता है। भीतरी तथा बाहरी दूषित वातावरण पवित्र हो जाता है। वायुमण्डल मोहक एव स्वास्थ्यप्रद हो जाता है। अनेक असाध्य रोगो पर यज्ञ का सीधा तथा प्रभावोत्पादक परिणाम देखने मे आता है यज्ञ करना प्रत्येक मनुष्य के लिए आवश्यक है। यदि हर घर मे यह प्रक्रिया प्रचलित हो जाए तो समस्त विश्व मे सुख शान्ति आरोग्य तथा आनन्द का वातावरण हो सकता है।

यह बात भी समझ लेनी चाहिए कि यज्ञ का अर्थ केवल अग्नि मे आहुति देना ही नही है यद्यपि यह उसका प्रमुख रूप है। शतपथ ब्राह्मणकार कहते हैं— यज्ञो वै श्रेष्ठतम कर्म अर्थात प्रत्येक श्रेष्ठ कार्य ही यज्ञ है। इस दृष्टि से सेवा परोपकार सत्य दान आदि भी यज्ञ मे ही सम्मिलित हैं।

यज्ञ शब्द यज धातु से बना है जिसका अर्थ है देवपूजा सगतिकरण और दान। सर्व प्रथम इसी अर्थ पर विचार करना उचित होगा।

देव पूजा क्या है? देव शब्द का अर्थ है दिव्य गुणो से युक्त अथवा जिसमे विशेष गुण हो इस दृष्टि से देव दो प्रकार के हुए—प्रथम जड देवता दूसरे चेतन देवता। जड देवता उन्हे कहते है जिसमे गुण विशेष तो हो—शक्ति तो हो परन्तु उन गुणो अथवा शक्ति का वे स्वेच्छा से उपयोग न कर सके क्योकि जड वस्तु मे गुण तथा शक्ति होते हुए भी इच्छा नही होती अत वे जान-बूझकर किसी का न कुछ बिगाड सकती है न कुछ बना सकती है। यह बुद्धिमान मनुष्यों पर निर्भर करता है कि इनका उपयोग और लाभ किस प्रकार प्राप्त कर सूर्य चन्द्र अग्नि जल वायु पृथिवी आदि के साथ साथ प्राय सभी वृक्ष वनस्पतियां तथा इनमे भी तुलसी पीपल नीम चन्दन आदि मानव जीवन की उपयोगिता की दृष्टि से महत्वपूर्ण जड देवता माने जा सकते हैं।

सभी जानते हैं कि सूर्य अग्नि वायु जल आदि मे दिव्य शक्ति है। किन्तु इस का सदुपयोग करना विचार पूर्वक इनका लाभ उठाना मनुष्य का काम है। सूर्य से धूप सेकनादि अग्नि से भोजनादि जल से पिपासा शान्ति व शरीर शुद्धि के साथ साथ कृषि सिंचाई विद्युत निर्माण जैसे यथोचित रूप मे उपयोग किये जा सकते हैं। इनके गुणो व शक्ति को ध्यान न जाने देना आवश्यकतानुसार उनका सेवन करना समय एव परिस्थिति के अनुसार इनका रक्षण करना नीम तुलसी आदि वृक्षो व पौधो का औषध आदि के रूप मे सदुपयोग करना इनका पूरा 2 लाभ उठाना सर्दी गर्मी से इनकी सुरक्षा खाद पानी आदि से पोषण कर फल फूल छाल पत्तियो आदि का पूरा पूरा लाभ उठाना यही इन जड देवताओ की पूजा है। सूर्य चन्द्र तुलसी पीपल नीम नदी तालाब आदि के सामने हाथ जोडकर खडे होना सिर झुकाना रोली चावल चन्दन का टीका करना जल चढाना इन की उचित पूजा नही वरन इनकी सुरक्षा का यथा योग्य प्रबन्ध कर जीवन को लाभान्वित करना ही जड देवताओ की सच्ची पूजा है इस रूप मे यही यज्ञ है।

अब चेतन देवताओ को लें स्पष्ट है कि जिसमे सोच विचार करने की बुद्धि पूर्वक कार्य करने सन्मार्ग पर चलने चलाने की सेवा परोपकार आदि सद्गुणो मे प्रवृत्त हो दूसरो को भी इस ओर प्रवृत्त करने कराने की शक्ति सामर्थ्य और क्षमता हो वही चेतन देवता है। इस दृष्टि से परम पिता परमेश्वर सर्वश्रेष्ठ अनुपम तथा उपासनीय देवता है वह देवो का भी देव है इसीलिए उसका एक नाम महादेव भी है उसकी उपासना स्तुति अवश्य करना चाहिए उसके अतिरिक्त भी चेतन देवता है ये चेतन देवता वे हैं जो अनेक गुणो से युक्त योग्य सदाचारी धार्मिक विद्वान् व परोपकारी होते हैं इनकी विशेषता यह है कि जान बूझकर किसी का सुधार तो कर ही सकते हैं किन्तु रुष्ट होने पर बिगाड भी कर सकते हैं

माता पिता गुरु आचार्य सन्त महात्मा सन्यासी सदुपदेष्टा धर्म प्रचारक आदि चेतन देवता की कोटि में आते हैं इनकी सेवा श्रद्धा व निःस्वार्थ भाव से करनी चाहिए ये सब यदि प्रसन्न व सन्तुष्ट रहे तो व्यक्ति का समाज का राष्ट्र का और अन्ततोगत्वा विश्व का कायापलट हो सकता है— कल्याण हो सकता है किन्तु ये रुष्ट और अप्रसन्न हो जाए तो जीवन के विनाश का कारण भी बन सकते हैं। अत इनकी यथायोग्य पूजा सेवा सत्कार करना ही उचित है यही देव पूजा है। इस प्रकार यह भी यज्ञ ही है।

यज्ञ का दूसरा अर्थ है सत्सगति करना, स्पष्ट है कि सत्सगति करना जीवन के उत्थान का कारण है। किसी कवि ने ठीक ही कहा है—सत्सगति कथय किं न करोति पुसाम अर्थात् सत्सगति मनुष्य को महान बना देती है। इसके विपरीत कुसगति पतन का कारण है। यज्ञ मे सगति करण की यही भावना निहित है। न जाने कितने व्यक्तियो ने अपने जीवन को सत्सगति के यज्ञ से सुधार लिया।

क्रमश

# भारत की ऐतिहासिकता

ले.— स्वामी वेदमुनि जी परिव्राजक
अध्यक्ष वैदिक संस्थान नजीबाबाद, बिजनौर

(गतांक से आगे)

इतिहास विषय पर लेखनी उठाने, मुह खोलने और खोज करने से पहले— इतिहास ग्रन्थ कौन हो सकता ? ? यह जान लेना परमावश्यक है जिसे इतिहास के लक्षण ज्ञात न हो, वह इतिहास ग्रन्थो को समझने की योग्यता नही रखता। इतिहास वेत्ता होना तो दूर की बात है।

जिस ग्रन्थ मे वंशावली हो वह काल्पनिक कदापि नही हो सकता। अपितु वह वास्तविक अर्थों मे इतिहास है। काल्पनिक ग्रन्थो, उपन्यासो आदि मे वंशावलिया नही होती तथा जिस ग्रन्थ का उसके पश्चात लिखे गये ग्रन्थो मे इतिहास के रूप मे वर्णन हो और जिसके उदाहरण दे देकर ऐतिहासिक दृष्टि से ही उसे अन्य ग्रन्थो से चित्रित किया गया हो वह काल्पनिक ग्रन्थ कदापि नही हो सकता।

महाभारत के विषय मे यह दोनो बातें शतप्रतिशत ठीक हैं महाभारत मे वंशावली वर्णित है और महाभारत काल के पश्चात के भारतीय साहित्य के सहस्र ग्रन्थो मे—चाहे वह ऐतिहासिक ग्रन्थ पुराणादि हो अथवा ऐतिहासिक साहित्य-महाभारत का इतिहास के रूप में ही उद्धृत व वर्णित किया गया है। लेख का कलेवर अधिक न बढ़ जाए इस कारण उन सब प्रमाणो का यहा प्रस्तुत नही कर रहे। जिन्हें हमारी उक्त बातो की सत्यता जाननी हो वह इन दोनो आधारो को महाभारत और उसके पश्चात के पांच सहस्र वर्ष तक लिखे गये भारतीय साहित्य में देख लें।

इसके अतिरिक्त इतिहास की सत्यता स्थानो से प्रमाणित हुआ करती है। महाभारत से सम्बन्धित समस्त प्रमुख स्थान अब भी भारत भू पर विद्यमान हैं।

खाण्डव वन को काटकर इन्द्रप्रस्थ नाम से महाराज युधिष्ठिर ने जो राजधानी बसायी थी उसका स्थान वर्तमान समय मे भी दिल्ली मे इन्द्रप्रस्थ नाम से ही जाना जाता है। दिल्ली स्थित पाण्डवो का दुर्ग आज भी पाण्डवो द्वारा इन्द्रप्रस्थ बसाए जाने का परिचय अपने भग्न अस्तित्व के द्वारा दे रहा है। कुरुवंश की पुरानी राजधानी हस्तनापुर, उत्तर प्रदेश के मेरठ जनपद मे गंगा के किनारे और उसके निकट ही गंगा के दूसरे तट पर बिजनौर जनपद स्थित विदुर कुटी आज भी है अभिमन्यु के पुत्र परीक्षित द्वारा बसाया हुआ परीक्षित गढ़ और कौरवो द्वारा पाण्डवो का लाक्षागृह मे जलाए जाने के सस्थान बरनावा मेरठ जनपद मे अवस्थित हैं। तो काशीपुर नगर जिला नैनीताल मे द्रोण सागर भी है और बिजनौर जनपद के नगर नजीबाद से उत्तर मयूरापुर और हाल्ट रेलवे स्टेशन के निकट महाभारत कालीन मयूर ध्वज (मोर ध्वज) राजा के दुर्ग के अवशेष अब भी हैं और तो और स्वय महाभारत युद्ध का मैदान कुरुक्षेत्र भी हरियाणा प्रदेश मे दिल्ली अमृतसर लाइन पर करनाल और अम्बाला के मध्य मीलो तक विस्तृत रूप मे आज भी अपनी उपस्थिति का परिचय दे रहा है। जहा पर प्रसिद्ध कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय और कुरुक्षेत्र रेलवे जंक्शन अवस्थित ?।

आधुनिक युग के महान सुधारक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने महान ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास के अन्त मे आर्य राजाओ की एक लम्बी सूची दी है। इस सूची का प्रारम्भ उन्होंने कुरुवंश के पाण्डु पुत्र महाराजा युधिष्ठिर के नाम से किया है। सत्यार्थ प्रकाश मे स्वनाम धन्य महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने महाभारत को ऐतिहासिक घटना न मानने वाले और महाभारत ग्रन्थ को काल्पनिक ग्रन्थ बताने वाले डा डी सी, सरकार के जन्म से बहुत पहले लिखा है सन 1875 मे इस ग्रन्थ का पहला संस्करण प्रकाशित हो गया था डा, सरकार और उनके विचारो के समर्थक ध्यान दे इस ग्रन्थ के उस स्थल को पढ़े। अब सन 1983 मे इस ग्रन्थ को छपे हुए एक सौ आठ वर्ष बीत रहे हैं। इस सूची मे महर्षि दयानन्द ने महाराजा युधिष्ठिर की तीन पीढ़ियो का राज्य करना दर्शाया है। युधिष्ठिर से लेकर क्षेमक पर्यन्त तीस राजाओ के नाम तो दिए ही हैं, साथ ही उनमे से प्रत्येक के नाम के साथ दिया है कि इन सबका राज्यकाल 1770 वर्ष 11 मास 10 दिन का है। इनमे से अन्तिम तीसवें राजा क्षेमक को मारकर उसका प्रधान राज्याधिकारी विश्रवा राजा बन बैठा था।

इस सूची में महाभारत का काल निर्णय करने मे भी बड़ी सहायता मिल्ती है। यह सम्पूर्ण सूची महाराजा युधिष्ठिर से महाराजा यशपाल पर्यन्त 4157 वर्ष 9 मास 1- दिन के दीर्घकाल की है। यह यशपाल पृथिवीराज चौहान की पाचवी पीढ़ी मे वर्णित है। यदि महाराजा यशपाल के राज्यकाल को बीते हुए एक सहस्र वर्ष भी मान लिए जाए तो भी महाभारत से वर्तमान काल पर्यन्त 5160 वर्ष के लगभग महाभारत का युद्ध हुए बीत चुके हैं। लगभग 800 वर्ष मुसलमान बादशाहो ने यहा राज्य किया। इस से भी यह अवधि एक सहस्र वर्ष की हो जाती है। उपर्युक्त वर्णित महाराजा युधिष्ठिर से महाराजा यशपाल पर्यन्त के 4157 वर्ष को मुस्लिम और अंग्रेजी शासन काल के लगभग एक सहस्र वर्ष में युक्त कर देने से भी यही 5100 वर्ष का समय महाभारत काल का सिद्ध होता है।

हमारे विचार से डा सरकार और उन भारतीय इतिहास से सर्वथा अपरिचित और पश्चिम का आधार लेकर भारतीय इतिहास विषयक भ्रान्त विचारो के प्रचारको के विषय में विचारक यह समझ लें कि अब से लगभग 5200 वर्ष पूर्व कौरवो और पाण्डवो में भीषण युद्ध हुआ था और महाभारत नामक ग्रन्थ में उसी युद्ध का सत्य वर्णन है तथा महाभारत आर्य जाति का महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक ग्रन्थ है।

(प्रसाद न फूल से आभार)

स्वास्थ्य सुधा—

# ब्लड कैंसर साध्य है

ले—श्री वैद्य रामसिंह जी गोहिल, विछीया, जि राजकोट

विदेशी विज्ञान वालो ने ब्लड कैंसर के बारे मे रोगियो को बहुत ही भयभीत किया है। दुनिया मे इसका सही इलाज नही है ऐसा विदेशी कैंसर रक्त रक्षक डा लोग बोलते रहते हैं।

हकीकत कुछ और है किसी भी प्रकार का रोग क्यो न हो उसका वर्णन आयुर्वेद मे है। फिर भी जो अभाव आता है उनका इलाज किया जाता है। कारण मिटाए बिना कार्य रोग कभी नहीं मिटता यह सनातन सिद्धान्त है। उपद्रव कार्य्य केवल मिटाने से रोग कभी नही मिटता।

## ब्लड कैंसर क्या है ?

खास तौर पर ब्लड कैंसर बिगड़ा हुआ कैंसर है आयुर्वेद मे बुखार 30 प्रकार के हैं, सबसे लम्बे समय तक चलने वाला बुखार विदोष ज्वर है। जो 21 दिन तक जारी रहता है। 21 दिन से आगे बुखार चालू रहा तो समझ लेना कि बुखार बिगड़ गया है। बिगड़ा हुआ बुखार या तो विषम ज्वर या जीर्ण ज्वर बनेगा।

### जीर्ण ज्वर का उपद्रव ही ब्लड कैंसर है।

ब्लड कैंसर मे प्लिहा (स्पीलीन) तथा यकृत (लिवर) नाम की आत सूजी ग्रन्थी बढ़ जाती है। (एनलाज) जिससे अपना व्यापार नही कर सकती और रस धातु का रग (लाल कलर) नहीं बनता जिसमे रक्त का श्वेत कण बढ़ जाता है और रक्त कण कम हो जाता है।

बुखार से जठराग्नि का स्थान भ्रष्ट हो जाता है। जिससे रस धातु को परिपक्व करके सौम्य रक्त मे परिवर्तित नही कर सकता और रक्त अपना कलर बदल देता है।

ब्लड कैंसर के रोगी को असुख रहता है बुखार चालू रहता है, दौर्बल्य आ जाता है तथा चेहरा फीका पड़ जाता है, भूख नहीं लगती नींद नही आती और सब आदतें अनियमित होती है।

बुखार जब आगे बढ़कर रक्त धातु मे प्रवेश करता है तब बगल मे कर्णमूल मे जंघमूल में, ग्रन्थिया होने लगती हैं इस समय रोग बहुत बढ़ गया होता है, फिर भी आयुर्वेदिक इलाज मे सफलता जरूर मिलती है।

बुखार सही अर्थ मे उतारने का तरीका पश्चिमी विज्ञान के पास नही है, इसी कारण स सीधा सादे रोगो से भारी गड़बड़ हो जाती है।

शान्तिरासा स्येत्माना व्यधिना लघनक्रिया।
ज्वरस्येकस्यचाप्येका शक्तिलघन मुच्यते।

आमाशय स्टमक मे उत्पन्न होने वाले रोगो की शान्ति के लिए एक मात्र लंघन ही सही उपाय है।

बुखार के रोगी को लघन कराने से बुखार जल्द और सही तरीके से उतरता है। इसमें अन्य ज्वर युक्त बनकर बिमारी होने की सम्भावना नहीं रहती है।

बुखार का औषध लंघन ही है बुखार उतरने से ब्लड कैंसर मिट सकता है।

—

# बच्चों के झगड़े कैसे निपटाएं

ले—श्री सुरेन्द्रमोहन जी सुनील विद्यावाचस्पति दिल्ली

माताए अपने मातृ कर्तव्य को कभी शान्ति समझ नहीं होगी। हा! तो सन्तान जन्मने के पश्चात सन्तान से तंग न आएं। इसके लिए आप बाल मनोविज्ञान को समझने का कष्ट करें। छोटे बच्चो का पालन पोषण करना सरल नही। परन्तु खेद है कि इस कार्य की गुरुता हमारे देश के माता पिता ठीक ढंग से नहीं समझते। यही कारण है कि बच्चे अयोग्य दिखलाई पड़ते हैं। माता पिता तथा अन्य बड़ो को बालको के सम्मुख आदर्श पूर्ण व्यवहार रखना चाहिए क्योकि बालक उनके गुण तथा अवगुणो को बड़ी शीघ्रता से अनुकरण करता है। बालक का भावी वैयक्तिक तथा सामाजिक जीवन कैसा होगा यह उसके शैशव के वातावरण पर निर्भर करता है।

बालक उसी हद तक विकास कर सकेगा जहा तक उसकी शारीरिक तथा मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओ को पूरा किया जाएगा। बालक भविष्य मे सबल बनेगा या दुर्बल साहसी होगा या डरपोक पढ़ाई मे रुचि होगी या अरुचि आदि बातें उसके कौटुम्बिक तथा निकट के सामाजिक वातावरण पर निर्भर करती है। शैशव में ही हम इच्छित परिवर्तन बालक के अन्दर ला सकते हैं। जब वह बड़ा हो जाता है तब हम उसके अन्दर उसी प्रकार परिवर्तन नहीं ला सकते जिस प्रकार पानी मिट्टी के बर्तन के पक जाने पर उसमे कोई परिवर्तन नही लाया जा सकता।

बच्चे तो आखिर बच्चे ही हैं। आप कितने भी ध्यान से उनका लालन पालन करें किसी न किसी बात पर एक दूसरे से उलझते ही रहेगे। उस समय यदि आप थोड़ी चतुराई से काम लें तो बच्चो का क्रोध मेल मे परिवर्तित हो सकता है। आपस की उलझन एक दूसरे को समझने समझाने का माध्यम भी बन सकता है। एक चतुर मा का उदाहरण लीजिए।

मधू और राजू एक दूसरे पर चिल्लाते घर मे घुसे।

मधु—माता जी राज ने मुझ मारा है।

मा—तू झूठी है।

राजू—माता जी इसने मेरी सारी चौक लेट खा ली।

तो यह मेरी साईकल पर क्यो चढ़ा? शिकायतो का अम्बार लग रहा था। हमेशा की तरह मा दोनो को एक जोरदार डाट लगाकर चुप कराने ही वाली थी कि उसे एक तरकीब सूझी सुनो सुनो—तुम लोग एक दूसरे से नाराज हो न? तो लो यह कागज पैंसिल अब एक दूसरे की खूब खराब तस्वीर बनाओ—देखें कितना नाराज हो तम।

बच्चो को अपना क्रोध दिखाने का एक अनोखा तरीका मिल गया।

मधू—कुछ ही देर मे—देखिये मा राज की नाक ऐसी है बिल्कुल बैगन जैसी।

राज—और ये तो देखिये ये मधु की आंख हैं। टेढ़ी 2 दोनो हंसी से दोहरे हुए जा रहे थे।

खेल खेल मे बच्चे दो बात सीख गए। एक तो यह कि बिना झगड़ा किए भी गुस्सा उतारा जा सकता है दूसरे गुस्सा एक दूसरे की जगह वस्तुओ पर उतारा जा सकता है। साथ साथ समय के मूल्य पर और क्रोध की निरर्थकता पर भी यदि माता पिता जोर देते जाए तो बच्चे जल्दी ही समझदार हो जायेंगे।

हास्य भी एक ऐसा तत्व है जो क्रोध की गर्मी को शान्त कर देता है। जब बच्चे तू तू मैं मैं कर रहे हो तो आप बीच मे पड़कर उनको एक दूसरे की नकल करने को कहिये फिर झगड़ा झगड़ा न रहकर नाटक बन जाएगा और साथ साथ बच्चे एक दूसरे को समझ जाएंगे।

जब एक बार का सिखाया पाठ बच्चे भूलकर फिर वही गलतियां करने लगते हैं तो अक्सर माता पिता बड़े निराश हो जाते हैं। हमेशा याद रखिए कि गलतियां करना उनका स्वभाव है। बच्चो के सुधार और परिमार्जन में प्रगति धीरे धीरे होती है। दो कदम यदि आगे बढ़े तो एक कदम पीछे भी हटना पड़ेगा। हर समस्या का हल यहां एक सा नही होगा। यदि आप सदा यह याद रखेगी कि बच्चो की भीषण से भीषण लड़ाई केवल किन्ही अन्तर्निहित कारणो की अभिव्यक्ति भर है और क्षण भर के लिए है तो बिना घबराए या विचलित हुए अपने बच्चो के सम्पूर्ण विकास में सहायक हो सकेगी।

—

# भिन्न-२ आर्य समाजो मे स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया

## आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार(साबुन बाजार) लुधियाना

आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार(साबुन बाजार) लुधियाना मे 23 से 25 दिसम्बर तक आर्य समाज के महान क्रांतिकारी संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द महाराज जी का बलिदान दिवस बड़ी श्रद्धापूर्वक एवं बड़ी धूमधाम से मनाया गया है। 10 30 बजे रविवार 25 12 83 को यज्ञ की पूर्णाहुति हुई। श्री सरदारी लाल [illegible] एम एल ए डा बाल कृष्ण जी पी एच डी प्रि एम एल आनन्द, डा सुरेश शर्मा पी एच डी प्रि जय गणश शास्त्री प्रो, वेदव्रत विद्यालंकार प वेद प्रकाश शास्त्री, डा शामिया प्रिंसी [illegible] टण्डन श्री रामधन आर्य वैद्य कुन्दन लाल [illegible] डा राम स्वरूप श्री ज्ञान प्रकाश शर्मा प राम कुमार शास्त्री श्रीमती कमला आर्या श्रीमती निर्मला बेरी ने स्वामी जी के प्रति अपनी अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की।

—राजाराम
प्रधान

## आर्य समाज दीनानगर (जिला गुरदासपुर)

23 12 83 को आर्य समाज दीना नगर मे स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का बलिदान दिवस स्वामी सर्वानन्दजी महाराज भूतपूर्व प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश की अध्यक्षता मे मनाया गया। सब प्रथम आर्य समाज के सदस्यो के साथ पूज्य स्वामी सर्वानन्दजी महाराज तथा मठ के छात्रो ने नगर मे प्रभात फेरी के पश्चात 9 बजे से 12 बजे तक श्रद्धाञ्जलि समारोह हुआ जिसमे श्री [illegible] प्रिंसीपल आर्य हायर सैकेण्डरी स्कूल दीनानगर श्री [illegible] श्री मनोहर [illegible] श्री रघुनाथसिंह [illegible] श्री तथा [illegible] स्वामी सोमानन्दजी महाराज आर्य हायर सैकेण्डरी स्कूल के छात्रो तथा मठ के छात्रो ने स्वामी जी महाराज को गीतो और कविताओ द्वारा श्रद्धाञ्जलि दी तत्पश्चात स्वामी सर्वानन्दजी महाराज ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे लोगो को स्वामी जी महाराज द्वारा किए गये कार्यों की ओर ध्यान दिलाया और उन पर चलने की प्रेरणा दी।

—

## आर्य समाज तपा

आर्य समाज तपा की ओर से एस एन आर्य हाई स्कूल तपा मे स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस बड़ी धूम धाम के साथ मनाया गया। सब प्रथम हवन यज्ञ किया। तत्पश्चात समाज के भूत पूर्व प्रधान श्री हरबंस लाल जी गोयल की अध्यक्षता मे कार्यक्रम का आयोजन किया गया। स्कूल के विद्यार्थियो ने जय जय श्रद्धानन्द महान आदि गीतो से श्रोताओ को मन्त्र मुग्ध किया।

चन्दराम जी आर्य ने स्वामी जी के त्याग व कार्यों का वर्णन करते हुए अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की तथा बच्चो को उनके उच्चे मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। सभी वक्ता विद्यार्थियो को पैन पैंसिलें वितरित की गई।

मन्त्री

—

## आर्य समाज अजमेर

आर्य समाज अजमेर मे 23 दिसम्बर 83 को स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस श्री दत्तात्रय जी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प्रो कृष्णपाल सिंह जी प्रो देव शर्मा जी तथा आचार्य गोविन्द सिंह जी आदि वक्ताओ ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के प्रेरणादायी जीवन एवं उनके देशभक्ति पूर्ण सेवा कार्यों पर प्रकाश डाला। श्री पन्नालाल जी पीयूष के मधुर भजन हुए।

श्री दत्तात्रय जी आर्य ने इस अवसर पर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी की शहादत निर्भीकता स्वाधीनता संग्राम मे उनके अमूल्य योगदान पर प्रकाश डालते हुए कहा कि महात्मा गाधी जी स्वामी श्रद्धानन्द जी का अपना बड़ा भाई कह कर सम्बोधित करते थे। मिस्टर गाधी से उन्हे महात्मा गाधी गुरुकुल कांगड़ी मे आयोजित स्वागत समारोह मे ही स्वामी जी द्वारा प्रयुक्त किया गया था। ऐसे निर्भीक शहीदो का जीवन सदैव राष्ट्रवासियो के लिए प्रेरणादायी बना रहेगा।

—आचार्य गोविन्द सिंह
उप मन्त्री

वर्ष 16 अंक 40 2 मार्गशीर्ष सम्वत् 2040, तदनुसार 15 जनवरी 1984, दयानन्दाब्द 159। एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपए

# आर्यसमाज और समाज सुधार

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने गत दिनों आकाशवाणी जालन्धर से महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी के उपलक्ष मे अपने जो विचार प्रस्तुत किए थे वह यहां प्रकाशित किए जा रहे है—

भगवान कृष्ण ने गीता मे अर्जुन को उपदेश देते हुए कहा था कि जब जब धर्म पर कोई संकट आता है तो धर्म की रक्षा करने और दुष्टो का नाश करने के लिए मैं जन्म लिया करता हू। जो कुछ उन्होने कहा था उस का वास्तविक अभिप्राय केवल यह था कि जब कभी धर्म पर संकट आता है तो इसकी रक्षा करने और मानव को सन्मार्ग दिखाने के लिए कोई न कोई महापुरुष जन्म लेकर धर्म और मानवता की रक्षा करता है।

हमारा इतिहास साक्षी है कि हमारे देश मे समय समय पर ऐसे महापुरुष पैदा होते रहे हैं जो अपने समय की परिस्थितियो को सामने रखकर उस अन्धकार को मिटाने के लिए जो जनता के मन मस्तिष्क पर छाया होता है। ज्योति स्तम्भ बनकर मनुष्य मात्र को एक नया मार्ग दिखाते हैं। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ऐसे ही महापुरुषो मे से एक थे। पिछली एक शताब्दी मे जिन धार्मिक नेताओ ने इस देश के इतिहास पर अपनी छाप छोडी है महर्षि दयानन्द उनमें अग्रणी थे। अपनी विचार धारा से उन्होने केवल देश में ही नहीं, देश के बाहर भी एक वैचारिक क्रान्ति पैदा कर दी थी। आज हम अपने देश के वातावरण में जो सुखद परिवर्तन देखते हैं इसका श्रेय महर्षि दयानन्द सरस्वती को ही मिलना चाहिए, महर्षि दयानन्द का जन्म 1824 में मोरवी राज्य के एक नगर टंकारा में हुआ था और उनकी देहान्त दीवाली के दिन 1883 को अजमेर में हुआ था जहां आज कल उनकी निर्वाण शताब्दी मनाई गई। उनका जन्म का नाम मूल शंकर था। छोटी आयु में ही उनके मन में विचार उठा कि शिव की शिवरात्रि को पूजा की जाती है वह शिव है क्या? उसका रूप क्या है? उसकी शक्ति क्या है? यह प्रश्न बार बार उनके मन मे उठ रहा था। उसी शिव की तलाश मे वह अपने घर से निकल पडे। पहाडो बियाबानो से गुजरते हुए वह 1859 मे मथुरा पहुचे जहा चार वर्ष तक अपने गुरु स्वामी विरजानन्द के चरणो मे बैठकर पहले संस्कृत पढ़ी, फिर वेद पढ़े। जब अपनी शिक्षा समाप्त करके वह वहां से जाने लगे तो उन्होंने अपने गुरु को गुरुदक्षिणा देने के लिये कुछ लौंग भेंट किए और कहा कि गुरुदेव मेरे पास आपको देने के सिवा और कुछ नही है। इस पर गुरुवर स्वामी विरजानन्द ने कहा अगर मुझे सच्ची गुरुदक्षिणा देना चाहते हो तो मुझे यह वचन दो कि तुम वेद का प्रचार करोगे और वेद का सन्देश घर घर पहुचाओगे। दयानन्द जी ने अपने गुरु के चरणो मे अपना सिर झुका दिया और कहा कि ऐसा ही होगा।

इसके पश्चात महर्षि दयानन्द ने अपना सारा जीवन वेद प्रचार मे ही लगा दिया और वेद का सन्देश घर घर पहुचाने के लिए अपने आप को अर्पित कर दिया। महर्षि दयानन्द का यह निश्चित मत था कि वेद सब सत्य विद्याओ की पुस्तक है। वेद का पढना पढाना सब का परम धर्म है। संसार के पुस्तकालय मे वेद सबसे पुराना धार्मिक ग्रन्थ है। इसलिए यह मनुष्य मात्र के लिए जिस युग मे और जिस काल मे वेद लिखे गए उस समय मनुष्य जाति का विभाजन देश काल और समय के अनुसार न हुआ था उस युग मे मनुष्यो की एक जाति एक ही सम्प्रदाय एक ही राष्ट्र हुआ करता था। जो भेद भाव आज दिखाई देते हैं वे सब बाद के हैं। इसलिए मनुष्य जाति को एकता के सूत्र मे बांधने के लिए यह आवश्यक है वेद का सन्देश घर घर पहुचाया जाए जिससे मनुष्य जाति मे जो भेदभाव उत्पन्न हो रहे हैं वे दूर हो सकें। चूंकि महर्षि दयानन्द की यह धारणा थी कि वेद सब सत्य विद्याओ की पुस्तक है। इसलिए समय समय पर हमारे देश के सामने जो समस्याएं आती रही हैं उनका समाधान भी वह वेद के आधार पर ही अपने देशवासियो के सामने रखते रहे हैं। वह काल था कि जब हमारे देश मे कोई स्वराज्य या स्वाधीनता का नाम भी न लेता था उस समय महर्षि दयानन्द ने कहा था कि दूसरो का राज्य चाहे कितना अच्छा क्यो न हो वह स्वराज्य अर्थात अपने राज्य से अच्छा नही हो सकता। वह हमारे देश के पहले नेता थे जिन्होने स्वराज्य का विचार हमारे सामने रखा था। उन्होने इसे ही पर्याप्त न समझा था। इसलिए उन्होने हमे यह भी बताया था कि स्वराज्य कैसे प्राप्त किया जा सकता है। और उसके बाद क्या करना चाहिए। उन्होने ही सबसे पहले यह कहा था कि स्त्री शिक्षा अनिवार्य होनी चाहिए और नारी जाति को पुरुषो के समान अधिकार मिलने चाहिए। उन्होने छूत छात के विरुद्ध अभियान प्रारम्भ किया और कहा था कि यदि जन्म के आधार पर छूतछात समाप्त न की गई तो देश की एकता के लिए एक बहुत बडा संकट पैदा हो जाएगा। वह गऊ रक्षा के बहुत बड़े पक्षधर थे क्योकि वह समझते थे कि देशवासियो के स्वास्थ्य और हमारी कृषि की रक्षा के लिए गोरक्षा अत्यन्त आवश्यक है। वह स्वयं जन्म से गुजराती थे और अपनी सारी शिक्षा उन्होने संस्कृत मे प्राप्त की थी। फिर भी वह देश के सबसे पहले महापुरुष थे जिन्होने कहा था कि हिन्दी ही इस देश की राष्ट्र भाषा हो सकती है। हमारे भूतपूर्व प्रधानमन्त्री लालबहादुर शास्त्री ने तो 1975 मे जय जवान जय किसान का नारा लगाया था, परन्तु महर्षि दयानन्द सरस्वती ने तो कोई सौ वर्ष पहले कह दिया था कि किसान राजाओ का भी राजा है, उसके बिना कोई देश नही चल सकता। वह अनिवार्य शिक्षा के पक्ष में थे और उन्होने यहां तक कह दिया था कि जो माता पिता अपने बच्चो को शिक्षा न दें उन्हें राज्य शासन की ओर से दण्ड मिलना चाहिए। किसी राज्य मे

(शेष पृष्ठ ५ पर)

# हिन्दुत्व के रक्षक, वेदमानव महात्मा वेदभिक्षु

ले—श्री अनिल जी अजमेर

किसी नवीन सजना के लिए जो सृष्टि की समष्टि मे अपने विशिष्ट व्यक्तित्व को विलीन कर दे, जो युग की छाती पर पैर रख कर सत्य के लिए सिंह गर्जना करे जो समय की चुनौतियो के आगे सीना खोलकर खड़ा हो जाए और इतिहास के पृष्ठो पर अपने पद चिह्न छोड़ जाए ऐसे पद चिह्न जो अपने आप मे एक अनुकरणीय आदर्श बन जाए इतिहास बन जाए वही विराट व्यक्तित्व नवयुग निर्माता होता है युग पुरुष कहलाता है।

ऐसे ही एक थे युग पुरुष महात्मा वेद भिक्षु (पूर्वनाम श्री भारतेन्द्रनाथ) थे जिन्होंने 14 मार्च 1928 को भूय से अपनी जीवन यात्रा प्रारम्भ की और सत्य व संघर्ष को जीवन मूल्य मानते हुए घर घर वेद भाष्य पहुचाने हिन्दुत्व पर आए सकट का सामना करने का साहस पैदा कर हिन्दू समाज को जगाने और भारतीय संस्कृति पर विदेशी विकृति के आक्रमण का मुकाबला करने के अपने उद्देश्य की पूर्ति के यज्ञ मे अपना सर्वस्व होम करने के बाद 21 दिसम्बर 83 को अनन्त शून्य मे विलीन हो गए।

महात्मा वेद भिक्षु अपने आप मे एक संस्था थे जिन्होंने साधन हीनता के पत झड़ मे भी अपनी साधना से विशाल दयानन्द संस्थान विराट वेद मदिर व अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति जैसे पौध लगा डाले जिनमे फूल खिलने ही लगे थे खुशबू अभी महकी ही थी कि माली महा प्रयाण कर गया। जनज्ञान मासिक पत्रिका प्रकाशित कर सोते हिन्दू समाज को जगाया और अब वह हमेशा के लिए सो गए।

लगभग पच्चास हजार घरो मे वेदो का हिन्दी भाष्य पहुचा कर वेद वाणी को घर घर में गुजा कर स्वय वेदो के पास चले जाने वाले इस व्यक्ति को क्रांति का मन्त्र क्रांतिकारी पिता प भारत की प्रथम महिला मजिस्ट्रेट श्रीमती विद्यावती भारत म जन्म के साथ ही घुट्टी मे मिला था।

अग्निपथ के पथिक माता पिता ने बालक भारतेन्द्रनाथ के मन को देशभक्ति के रग मे कुछ इस तरह रग दिया कि इनका बचपन खिलोनो और काच की गोलियो से खेलने की बजाय अग्रेज हुकूमत के खिलाफ असली पिस्तौल व गोलिया से खेलने मे बीता। उनकी शिक्षा दीक्षा पजाब जेहलम गुरुकुल मे हुई सन 1942 मे जब देश के कोने कोने में अग्रेजो भारत छोड़ो का सिंहनाद सुनाई पड़ने लगा। तब 14 वर्षीय बालक ने हस्त लिखित अखबार निकाला स्वराज। उसकी कार्बन कापिया स्वय वितरित कर कभी सूर्यास्त न देखने वाले साम्राज्य की गुलामी के अन्धेरे के खिलाफ अपना एक नन्हा सा दीप जलाया। बालक अग्निपथ का पथिक हो अगारो से जलने लगा जो शासन की आख की किरकिरी बन गया। जब पुलिस की दृष्टि पड़ने को थी तब उन्होने स्वामी योगेश्वरानन्द जी के आश्रम मे भूमिगत होकर कार्य करने के साथ साथ योग साधना भी की। तत्पश्चात गुरुकुल जेहलम मे अध्यापन कार्य के साथ स्वातन्त्र्य यज्ञ मे योगदान के व्रत को निभाते रहे। इसी समय बम्बई मे पत्रकारिता सम्बन्धी कार्य का नियुक्ति पत्र प्राप्त हुआ परन्तु उन्होने 250 रुपये प्रति माह व बगले गाड़ी की सुविधायुक्त इस नौकरी की बजाय 61 रुपये प्रति माह पर उपदेशक बनकर वेद प्रचार का कार्य पसन्द किया।

उनकी प्रतिभा का प्रकाश चतुर्दिक फैलता गया। वाणी के साथ ही वे लेखनी के भी धनी थे। परिणामत आर्य मित्र और आर्योदय आदि अनेक साप्ताहिक पत्रिकाओ को उन्होने अपने सफल सम्पादन से नया निखार दिया।

इसी बीच प्राय 1950 का वह वर्ष जब भारतेन्द्र जी की जीवन यात्रा मे एक नया मोड़ आया और उन्होने प राकेशरानी को अपनी सहचरी के रूप म पाया जिन्होने जिन्दगी के हर सघर्ष मे कन्धे से कन्धा मिलाकर अपने पति का साथ निभाया। आज भी वे दयानन्द संस्थान की अध्यक्ष और जनज्ञान पत्रिका की सम्पादक हैं।

एक वर्ष अनेक सघर्षों के मध्य भी लखनऊ से दैनिक आर्य मित्र का सम्पादन तथा प्रकाशन भी उन्हीं की कल्पना का परिपाक था। 1969 के गोहत्या विरोधी आन्दोलन मे न केवल प्रचार प्रसार के काम मे उन्होने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई बल्कि सपरिवार तिहाड़ जेल भी गये।

बीसवी सदी के इस भौतिकवादी युग मे जहा सुविधा जीवी समझौतावादी कायर किन्तु चालाक व दोहरे आचरण युक्त नेतृत्व मे हमारे समाज को अपने बाहुपाश में जकड़ कर पगु किया है वहा अपनी बात के पीछे मर मिटने की भावना अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए सब कुछ लुटा देने की चाहना और एक योद्धा की तरह अपने मूल्यो की लड़ाई लड़ने की कामना लेकर चलने वाले लोग चिराग लेकर ढूढने पर भी नहीं मिलते।

महात्मा वेदभिक्षु उन विरले लोगो मे से एक थे जो तमाम उम्र सजना की अर्चना करते रहे।

उन्होंने 1967 मे जन ज्ञान मासिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया हिन्दू समाज मे जीवन ज्योति का प्रसार कर रही जनमन मे विश्वास बो रही इस यशस्वी पत्रिका का हर अक विशेषाक सा होता था परन्तु इसके वेद ज्योति अक वैदिक गीता अक योग जीवन अक महान हिन्दू विशेषाक जैसे विशेषाक पाठको के लिए चिरस्मरणीय रहेगे। इन विशेषाको को आज भी पुस्तक के रूप मे खरीदा पढ़ा जाता है।

उन्हे केवल जन ज्ञान पत्रिका के प्रकाशन से सन्तोष न हुआ। वेद व वेदोक्त विचारधारा के प्रचार अज्ञान अभाव व अन्याय पर प्रहार तथा सत्य न्याय मानवता जैसे जीवन मूल्यो पर आधारित साहित्य के प्रसार के लिए उन्होने एक से अधिक पत्रिकाओ तथा स्वतन्त्र पुस्तको के प्रकाशन की आवश्यकता अनुभव करते हुए 1972 मे नई दिल्ली में दयानन्द संस्थान की स्थापना की। संस्थान की स्थापना के बाद लगभग पाच सौ से भी अधिक ग्रथों का प्रकाशन किया परन्तु चारो वेदो का हिन्दी भाष्य उपलब्ध न होना उनके हृदय को चीरता रहा। वे सोते जागते केवल इसी चिन्ता में मग्न रहते कि कैसे चारो वेदो का हिन्दी भाष्य प्रकाशित करके हर हिन्दू के घर मे पहुचाया जाए। उद्देश्य बहुत बड़ा था पर इतने साधन नहीं हैं। साधन तो आवश्यक थे—सपने थे आकाश से पर मह महामानव आकाश से विशाल ऊचे स्वप्न लेकर आकाश मे नहीं उड़ा वरन ठोस धरातल पर खड़ा होकर इस महती कार्य के यज्ञ मे अपनी आहुति देने को तत्पर हो गया।

उन्होने चारो वेदो का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य प्रकाशित कर अत्यन्त कम मूल्य मे जन जन को उपलब्ध करवाने के सकल्प को लेकर अन्न नमक व मीठा का त्याग कर दिया।

दो वर्ष तक अन्न नमक व शक्कर खाए बिना सतत प्रयत्नशील होकर चारों वेदो के हिन्दी भाष्य सुन्दर सस्ते सुलभ कराए तथा उसके बाद अन्न ग्रहण किया

इसी अन्न त्याग ने उनके जीवन को खराब कर दिया जो अन्तत उनकी प्राण लेवा बीमारी बन बैठा। इस तरह वेदों को घर घर पहुचाने के महान् यज्ञ में अपने प्राणो की आहुति देकर इस वेद मानव ने लगभग 50 हजार घरों में वेद पहुचाए।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के अलावा व उनके बाद वेदों के प्रचार प्रसार का काम इतने बड़े स्तर पर सर्वस्व समर्पण के साथ किसी ने नहीं किया। यह एक सयोग ही है कि महर्षि दयानन्द का दैहिक अवसान 1883 में हुआ और महात्मा वेद भिक्षु का ठीक सौ वर्ष बाद 1983 मे।

वेदों के प्रकाशन के ही दौरान उन्होने राजधानी मे एक विशाल वेद मदिर बनाने की योजना बनाई और 1973 में इस कार्य को भी प्रारम्भ कर दिया। प्रकृति के सौंदर्य की पृष्ठ भूमि मे, यमुना के किनारे ग्राम इब्राहिम पुर के निकट बनाए गए इस वेद मदिर का निर्माण अभी अधूरा है। अधूरा वेद मदिर उसकी अधूरी मनोकामना और उसका अधूरा प्रवेश द्वार हमे उस महात्मा का स्मरण ही नही करवाते वरन उसके सपने को साकार करने हेतु इस अधूरेपन को पूर्णता मे परिवर्तित करने के कर्तव्य का बोध भी कराते हैं।

वेदो के प्रकाशन के साथ साथ दयानन्द संस्थान के माध्यम 500 से भी अधिक पुस्तको का प्रकाशन कर उन्होने अज्ञान अभाव व अन्याय के विरुद्ध अपनी लड़ाई जारी रखी। इनमे जहा एक ओर वैदिक सम्पत्ति वेदाञ्जलि वेद ज्योति, महाभारत रामायण भाष्यो की सख्या मे सत्यार्थ प्रकाश महर्षि दयानन्द का जीवन चरित्र आदि पुस्तकें हैं वही दूसरी ओर हिन्दुत्व को चुनौतियो पर अनेक विचारोत्तेजक पुस्तकें भी केवल लागत मूल्य पर प्रकाशित हुई।

हाल ही मे प्रकाशित दि हिस्ट्री आफ असैसिन्स यानी हत्यारो का इतिहास और प्रकाशनाधीन पुस्तक 'इन साइड दी कावस सम्पूर्ण राष्ट्र की उनकी चिरस्मरणीय देन कही जाएगी।

वैदिक साहित्य व संस्कृति के प्रचार प्रसार के दौरान उन्होने अनुभव किया कि हिन्दुत्व पर सकट है। उन्हे धर्म परिवर्तन साम्प्रदायिक उत्पीड़न व हिंसक आक्रमणो से बचाने के लिए साहित्य की नही सगठन की आवश्यकता है ताकि हर स्तर पर लड़ाई लड़ी जा सके। सचमुच जन खाड़ी के धन से इस्लामीकरण और यूरोपीय अमेरिका के पैसे से ईसाईकरण का दौर चल रहा था, वे उन दिनो मेरठ मुरादाबाद अलीगढ़, कोसरा हैदराबाद खुरजा देहली आदि स्थानो पर हुए साम्प्रदायिक दगो मे निडर होकर पहुचें निर्भीक होकर विचार व्यक्त किए। हिन्दुओ का हौसला बढ़ाया उनके आसू पोंछे और उनकी सहायता की। इन दगो मे हिन्दुओ के शोषण और उत्पीड़न ने उन्हे उद्वेलित कर दिया और

(शेष पृष्ठ 7 पर)

## सम्पादकीय—

# आर्य समाज का नया साहित्य

तीन से छ नवम्बर 1983 तक अजमेर मे जो महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी हुई थी उसकी कोई ऐसी प्रतिक्रिया नही हुई कि जिसका आर्य समाज गर्व कर सके वास्तव मे वह एक अव्यवस्थित मेला था। महर्षि दयानन्द के भक्त वहा बहुत भारी सख्या मे पहुचे थे परन्तु वहा से कोई नया सन्देश लेकर न आये थे। मेरी कठिनाई यह है कि मैं कई बार स्पष्टवादिता से काम करता हू इस लिए जो ठीक समझता हू वह कह देता हू। इस कारण कई लोग मुझ से नाराज भी हो जाते हैं। मैंने इस शताब्दी से कई दिन पहले लिख दिया था कि दिसम्बर 1975 मे दहली मे जो शताब्दी हुई थी वह भी एक मेला बनकर रह गई थी कही यह न हो कि यह निर्वाण शताब्दी भी एक मेला बनकर रह जाए। मुझे जिस बात का डर था वही हुआ है। जो लोग वहा गए थे वह भी पूछते हैं कि यह शताब्दी क्यो की गई थी। इस विवाद मे अब पडने से कोई लाभ नही है। इस लिए आर्य जनता का ध्यान इस शताब्दी के एक उज्ज्वल पक्ष की ओर दिलाना चाहता हू ताकि यह भी पता चल सके कि आर्य समाज मे अभी भी कई लोग ऐसे मिल सकते है जो एक महत्वपूर्ण समय पर ऐसा साहित्य भी तैयार कर सकते हैं जो आर्य समाज के दृष्टिकोण को भिन्न भिन्न रूप मे जनता के सामने रख सके और जिस वर्ग को अभी तक हमारे सिद्धान्तो के विषय मे पूरी जानकारी नही है उन्हे कुछ पता चल सके कि महर्षि दयानन्द सरस्वती कौन थे और जिस आर्यसमाज की उन्होंने स्थापना की थी वह क्या है?

सबसे पहले मैं आर्य जनता का ध्यान एक अंग्रेजी की पुस्तक की तरफ दिलाना चाहता हू अंग्रेजी पुस्तक की ओर इस लिए कि प्राय यह शिकायत रहती है कि आर्य समाज का साहित्य अंग्रेजी मे बहुत कम प्रकाशित होता है। परन्तु इस शुभ अवसर पर एक ऐसा ग्रन्थ प्रकाशित हुआ है वह भी अंग्रेजी मे जिसके द्वारा महर्षि दयानन्द का विशाल व्यक्तित्व ससार के सामने आता है। गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के भूतपूर्व कुलपति डा गगाराम गर्ग ने महर्षि दयानन्द विषय के मे अंग्रेजी मे एक पुस्तक प्रकाशित की है जिसमे भारत और बाहर के देशो के बड बड विद्वानो ने महर्षि दयानन्द के विषय मे अपने अपने विचार दिए हैं। इस पुस्तक को पढकर ही हमे पता चलता है कि ससार ने महर्षि दयानन्द को किस रूप मे देखा है। बड बड यूरोपीय विद्वानो ने महर्षि की विचार धारा उनके सिद्धान्तो और उनके व्यक्तित्व के विषय मे बड सुन्दर लेख लिखे हैं। प्राय सब ने इस बात पर बल दिया है कि महर्षि ने वेदोद्धार के लिए जो कुछ किया है वह किसी और ने नहीं किया। इन विद्वानो के अतिरिक्त इस पुस्तक मे भारत के कई प्रसिद्ध विचारको और विद्वानो ने महर्षि दयानन्द को अपनी [illegible] की है। देश की प्रधानमन्त्री और उपराष्ट्रपति श्री हिदायतुल्ला जी [illegible] अपने विचार दिए है। मैं श्री हिदायतुल्ला जी द्वारा दी गई श्रद्धाजलि को इसलिए भी अधिक महत्व देता हू क्योकि यह समझा जाता है कि मुसलमान महर्षि दयानन्द के विरुद्ध हैं। इसमे सन्देह नही कि श्री हिदायतुल्ला जी एक राष्ट्र भक्त व्यक्ति हैं इस लिए वह सकुचित विचार नही रखते। जो दूसरे कई मुसलमान रखते हैं फिर भी इस अवसर उनकी तरफ से श्रद्धाजलि एक विशेष महत्व रखती है।

इस पुस्तक की भूमिका एक अमेरिकन प्रो श्री कैनथ जोन्ज ने लिखी है वह इस से पहले आर्य समाज के विषय मे एक पुस्तक भी लिख चुके हैं इस लिए उन्हे महर्षि के विषय मे कुछ न कुछ तो पहले भी मालूम था। इस पुस्तक का उन्होंने भी स्वागत किया है। मेरा लिखने का अभिप्राय केवल यह है कि महर्षि निर्वाण शताब्दी के सम्बन्ध में जो साहित्य प्रकाशित हुआ है उसमे डा गगाराम जी गर्ग की इस पुस्तक का एक विशेष स्थान है। डा गगाराम गर्ग अब आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर (हरिद्वार) में रहते हैं और वहीं वैदिक साहित्य का स्वाध्याय भी करते हैं।

दूसरी पुस्तक जिसकी ओर मैं पाठको का ध्यान दिलाना चाहता हू वह गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार द्वारा प्रकाशित महर्षि दयानन्द की साधना और सिद्धान्त पुस्तक है। यह भी एक बहुत ही महत्वपूर्ण पुस्तक है। यह एक प्रकार से गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के प्राध्यापक वर्ग की ओर से महर्षि दयानन्द को पुष्पाञ्जलि भेंट की गई है। भिन्न 2 विषयो के विषय मे महर्षि के जो विचार थे उन्हे विस्तार से इस पुस्तक मे जनता के सामने रखा गया है हम कई बार देखते हैं कि जब कभी किसी विषय विशेष के सम्बन्ध मे महर्षि के विचार जानना चाहते हैं तो हमे कई पुस्तक देखनी पडती हैं परन्तु जो पुस्तक गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय ने प्रकाशित की है उसके पढने से [illegible] को भी पुस्तक को देखने की आवश्यकता नही रहती। डा गगाराम गर्ग का भी गुरुकुल के साथ विशेष सम्बन्ध रहा है। इसलिए अंग्रेजी मे लिखी गई उनकी पुस्तक और गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के प्राध्यापक वर्ग की तरफ से यह पुस्तक एक प्रकार से गुरुकुल कागडी की ओर से महर्षि के चरणो मे श्रद्धाजलि के रूप मे प्रस्तुत की गई हैं। यद्यपि गुरुकुल को चलाने वाले तो श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज थे परन्तु इसके पीछे प्रेरणा तो महर्षि दयानन्द की ही थी। इसलिए यह आवश्यक था कि उनकी निर्वाण शताब्दी पर गुरुकुल की तरफ से भी उन्हे किसी न किसी रूप मे कोई श्रद्धाजलि भेंट की जाती। यह दो पुस्तक उसी रूप मे प्रकाशित की गई हैं।

इस अवसर पर कुछ और साहित्य भी प्रकाशित किया गया है उसके विषय मे अगले सप्ताह के लेख मे अपने विचार पाठको के सामने रखूगा।

—वीरेन्द्र

# पंजाब में महर्षि दयानंद निर्वाण शताब्दी की तैयारी करो

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरग सभा ने अपनी पिछली बैठक मे यह निर्णय लिया था कि महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी पंजाब मे भी मनाई जाए और वह भी लुधियाना मे। लुधियाना के आर्य भाईयो ने इस बोझ को उठाना स्वीकार कर लिया था। आर्य जनता को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि उन्होने इसकी तयारी भी प्रारम्भ कर दी है। 8 जनवरी को लुधियाना की सब आर्य समाजो के अधिकारियो की एक बैठक आर्य समाज [illegible] गज मे हुई थी। वही पर यह फैसला किया गया है कि यह समारोह मई के पहले सप्ताह मे किया जाए। उससे पहले यह सम्भव न था क्योकि पहले स्कूलो और कालेजो के विद्यार्थी अपनी 2 परीक्षाओ मे व्यस्त होते है। इस कारण वह इस शताब्दी मे सक्रिय भाग न ले सकते जो हम चाहते है कि ले वह ले इसलिए मई के पहले सप्ताह मे यह समारोह बडा किया जाएगा। यह काम बहुत बडा है। यह प्रान्तीय सम्मेलन होगा जिसमे सारे प्रान्त की आर्य जनता अपना योगदान देगी पंजाब की वर्तमान परिस्थितियो को देखते हुए यह और भी आवश्यक है कि इस सम्मेलन को एक बहुत विशाल सम्मेलन का रूप दिया जाए इसके लिए सबसे अधिक आवश्यकता इस बात की है कि पंजाब के सब आर्य समाजी उनका सम्बन्ध चाहे कालेज विभाग से हो या गुरुकुल विभाग से इस शताब्दी को सफल बनाने के लिए जो कुछ वह कर सकते हैं करें इसी के साथ यह भी प्रयास होना चाहिए कि पंजाब की सारी हिन्दू जनता इस सम्मेलन मे पहुचे ताकि हम अपने सगठन का प्रभावशाली प्रदर्शन कर सकें। लुधियाना मे एक समिति बना दी गई है। शताब्दी समारोह का एक कार्यालय लुधियाना मे रहेगा एक जालन्धर मे सभा के कार्यालय मे। इस प्रकार यह दोनो कार्यालय मिलकर सारा प्रबन्ध करेंगे। परन्तु कोई भी प्रबन्ध तब तक नही चल सकता, जब तक सर्वसाधारण अपना योगदान न दे। इसलिए मैं पंजाब की आर्य जनता से यह निवेदन करना चाहता हू कि वह अभी से इस समारोह को सफल बनाने की तैयारी शुरू कर दें और समय 2 पर उन्हे जो आदेश मिलते रहें, उन्हे पूरा करने का प्रयास करते रहें।

—वीरेन्द्र

आकाशवाणी नजीबाबाद से प्रसारित वार्ता—

# बदलते मूल्य, बदलते रिश्ते और पीढ़ी का अन्तराल

ले — श्री बलभद्रकुमार हूजा कुलपति गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार

यह ठीक है कि बदलते जमाने के साथ सामाजिक मूल्य भी बदलते हैं। लेकिन यह स्वीकार करना होगा कि समाज केलिए कुछ मूल्य शाश्वत हैं जिनके त्यागने से समाज मे अव्यवस्था पैदा हो जाती है।

आज कल पीढ़ियो के अन्तराल की बात चलती है। मैं इस विचार को एक मिथ अथवा मिथ्या की संज्ञा देता हू। लगता है कि नई और पुरानी पीढ़ी मे अन्तराल है लेकिन जो कुछ भी हो रहा है वह सामाजिक विकास की ही तो प्रतिक्रिया है।

यदि सही दृष्टि से देखा जाए तो स्पष्ट है कि एक पीढ़ी सड़क बनाती है तो दूसरी उस सड़क पर चलती हुई आगे बढ़ती है। या दूसरी उपमा दी जाए तो यह कहना होगा कि नई पीढ़ी के कन्धो पर चढ़कर क्षितिज की नई दूरियो को झांकती है। इसलिए नई पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी मे अन्तर प्रतीत होता है। लेकिन यह सत्य है कि अनन्त की खोज ही साधना है।

जो आज बूढ़ा है वह कल नवयुवक था और उस वक्त उसने अपनी पूर्व की पीढ़ी को चुनौती दी थी जैसे कि आज की नई पीढ़ी उसको चुनौती देती है। बुजुर्गों को यह बात अखरती तो है लेकिन उनको जब अपनी जवानी की याद दिलाई जाए तो वह स्वीकार करेंगे कि उन्होने भी ऐसी ही हरकत की थीं, जो उनके बुजुर्गों की नापसन्द रही होंगी इन्हे हरकतो की सज्ञा देना भी गलत होगा। यह हरकत तो दैवी जिज्ञासा का क्रियात्मक रूप है जिन्हे महात्मा गांधी ने सत्य के प्रयोग कहा है।

अन्त मे क्या मिलेगा यह तो कहा नही जा सकता ? लेकिन इतना निश्चय है कि जब से मानव का इस पृथ्वी पर अवतरण हुआ है तब से यह खोज जारी है और अन्त काल तक जारी रहेगा।

यह ठीक है कि आज मानव जिस दिशा मे जा रहा है वह इतनी भयानक है कि उसका अन्त प्रलय हो सकता है। लेकिन फिर मानव मे आत्म रक्षा की जो भावना है उस पर विश्वास करते हुए कहा जा सकता ? कि मानव मे सद्बुद्धि की प्रेरणा प्रबल होगी और वह विनाश से बचता रहेगा।

जैसाकि मैं ऊपर कह चुका हू केवल आज की ही युवा पीढ़ी पुरानी पीढ़ी से विद्रोह करती हो ऐसी बात नही है। विद्रोह करना और नई लकीरो पर चलना तो तरुणाई का सदा से ही स्वभाव रहा है।

प्रहलाद भी इसी तरह का एक क्रान्तिकारी युवक था। उसके पिता हिरण्यकश्यप ने जब चाहा कि उसका पुत्र उसे भगवान के रूप मे स्वीकार करे तो प्रहलाद ने उसके विरुद्ध विद्रोह किया फलस्वरूप हिरण्यकश्यप ने प्रहलाद को भांति भांति की यातनाए दी। कभी ऊंचे पहाड़ से नीचे गिराया कभी होलिका के साथ उसे जलती हुई आग मे बिठाया और कभी गरम खम्बे के साथ बांधा लेकिन प्रहलाद सत्य पर अडिग रहा।

इसी प्रकार उपनिषदो मे नचिकेता का प्रसंग आता है। जब उसके पिता ने ब्राह्मणो को बूढ़ी गाए देकर टालना चाहा तो नचिकेता ने कहा कि मुझ किस को दान मे दोगे। बालक के बार-बार आग्रह करने पर उसका पिता क्रुद्ध होकर बोला तुझे यमराज को दूंगा। पिता क्रोध मे कह तो गया किन्तु पिता की प्रतिज्ञा भंग न हो इस हेतु नचिकेता यमराज के पास चला गया। आगे अलग प्रसंग शुरू होता है लेकिन कहने का तात्पर्य यह है कि युवक अपने बूढ़ो की हर बात पर हर हरकत पर नजर रखते हैं और यदि वृद्ध चाहते हैं कि उनमे अन्तराल न हो तो उन्हे सदैव सजग रहना होगा सदाचरण करना होगा।

वास्तव मे यह तरुणाई का गुण है कि वह अन्याय अज्ञान, अभाव के विरुद्ध युद्ध करती है और इसी मे समाज और राष्ट्र का हित निहित है।

वक्त आने पर तरुणाई का जोश शिथिल हो जाता है। फिर नई तरुणाई अंगड़ाई लेती है और इस प्रकार समाज आगे बढ़ाने मे अपना योगदान देती है।

आज के युग मे हम जो नाटक देखते है वह भी कुछ इसी प्रकार का है। जब युवा पीढ़ी को व्यवहारिकता के नाम पर सत्य के मार्ग से हटते डिगते देखती है उसकी आत्मा को कष्ट होता है और वह विद्रोह करती है। यदि इस अवस्था मे उसको सही मार्ग दर्शन मिल जाए तो यही युवा शक्ति समाज और देश की उन्नति मे लग जाती है, अन्यथा यही शक्ति समाज के लिए घातक सिद्ध होती है।

मेरी पीढ़ी भाग्यशाली थी कि उसे दयानन्द, श्रद्धानन्द गोखले, तिलक गांधी, लाजपतराय सुभाष, टैगोर और नेहरू जैसे उच्च आदर्शों वाले कर्मठ नेताओ का नेतृत्व प्राप्त था। उनके नेतृत्व मे उस वक्त की तरुण पीढ़ी ने समृद्ध ब्रिटिश साम्राज्य से जिसके शासन मे कभी सूर्य अस्त नही होता था, न केवल टक्कर ली, अपितु देश को उससे मुक्ति भी दिलाई और उसके फलस्वरूप विश्व भर मे आजादी की ऐसी लहर फैली कि कुछ ही वर्षों मे विश्व के अनेक राष्ट्र साम्राज्यवाद के चंगुल से मुक्त हो गये।

हमारी पीढ़ी के सामने गरीबी के दानव से छुटकारा पाने की समस्या थी। इसके समाधान हेतु पंचवर्षीय योजनाए बनी। जिसके फलस्वरूप कुछ प्राप्ति हुई। भारत मे बिजली नहर योजनाए बनी हरित क्रान्ति हुई कारखाने लगे। भारत की गणना संसार के अग्रणी देशो मे होने लगी। लेकिन जन साधारण की गरीबी की समस्या आज भी ज्यो की त्यो बनी है।

निःसन्देह इसके हल के लिए पुरानी और नई पीढ़ी दोनो को सोचना होगा। इसी सन्दर्भ मे शासन ने 20 सूत्रीय कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार की है।

इसके अन्तर्गत गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय ने कांगड़ी ग्राम को प्रयोगशाला के रूप मे अपनाया है और विश्वविद्यालय के अधिकारी जिला अधिकारी एवं बैंक के अधिकारी मिलकर यदा कदा यहां ग्राम सभाओ का आयोजन करते हैं जिसमे बड़े बूढ़े सब मिलकर उन्नति के पथ की खोज करते हैं और इसका यह परिणाम है कि जहां आज से दो वर्ष पहले अभाव और अन्धेरा था आज उस गांव के अन्दर पक्की सड़कें कूड़ा निर्मल आवास पुस्तकालय गोबर गैस आदि सुविधाए प्राप्त हैं। न्यू बैंक आफ इण्डिया एवं स्टेट बैंक आफ इण्डिया ने ग्रामवासियो की आर्थिक उन्नति के लिये लगभग 1 00 000 ऋण दिया है और परिणामस्वरूप आज उनमे से कईयो की 30 40 प्रतिदिन तक आमदनी बढ़ी है।

अलबत्ता हम एक महत्वपूर्ण काम मे सफल नही हो पाए और वह है वृक्षा रोपण। इसका कारण चकबन्दी होना बताया जाता है। क्योंकि ग्रामवासियो का यह निश्चय नही था कि भूमि का कौन सा टुकड़ा किसके हिस्से मे आएगा और कौन सा किसके। फलतः उन्हें वृक्षारोपण में दिलचस्पी नही रही।

एक और दिशा मे भी हमे पर्याप्त सफलता नही मिल पाई। और वह है ग्रामीण महिलाओं में नव चेतना का जागरण। इसका कारण हमारे पास महिला कार्यकर्ता का अभाव था।

शुरू मे ग्रामवासी अचम्भित थे कि यह क्या हो रहा है। लेकिन अब उनमें विश्वास पैदा हो रहा है। उनकी आखों में चमक नजर आती है। गांव में उक्त जितनी सफलतायें प्राप्त हुई उनमें गांव के नवयुवक दल का सक्रिय सहयोग रहा। कहने का अभिप्राय यह है कि युवा शक्ति और वृद्ध शक्ति पारस्परिक समन्वय से ही यह सब सफलताए प्राप्त हुई हैं।

इसी सम्बन्ध मे उपनिषद मे एक और कथा याद आती है—

एक जंगल में एक अन्धा और एक लंगड़ा बैठे हुए थे। जंगल मे आग लग गई। एक देख नहीं सकता था तो दूसरा चल नही सकता था। दोनो ने अपनी 2 शक्तियो का समन्वय किया। लंगड़ा अन्धे के कन्धे पर बैठकर उसे रास्ता बताने लगा और कुछ ही देर मे वे जंगल की आग पहुंच से बाहर हो गए।

यही रिश्ता वृद्ध पीढ़ी और तरुण पीढ़ी का है।

यह तो निर्विवाद है कि टकराव चाहे पीढ़ियो का हो व्यक्तियो का हो चाहे राष्ट्रो का हो, वह तभी होता है, जब आपसी स्वार्थ टकराते हैं। टकराव चाहे एक ही पीढ़ी का हो या विभिन्न पीढ़ियो का हो अन्तराल तो पैदा होगा ही।

हमारे आजकल के बुजुर्ग नेताओ का ही उदाहरण लीजिए। सभी एक ही पीढ़ी के हैं लेकिन उनमे वैचारिक और मानसिक अन्तराल सर्वविदित है।

इसके विपरीत गांधी जी और नेहरू दो विभिन्न पीढ़ियो के थे लेकिन उनमे कोई टकराव नही था।

सत्य ही कहा कि पुत्र और शिष्य की उन्नति देखकर हरेक माता पिता और गुरु को गर्व होता है और सभी माता पिता और गुरु चाहते हैं कि उनके पुत्र तथा शिष्य उनसे भी आगे बढ़ें और उन मे किसी प्रकार का टकराव न हो।

इसीलिए तो हमारे वैदिक ऋषियो ने वानप्रस्थ की व्यवस्था की थी ताकि गृहस्थ आश्रम की समाप्ति पर प्रबुद्ध नागरिक सांसारिक  पीढ़ी के हवाले करते हुए वानप्रस्थ मे प्रवेश ले।

इसके साथ यह भी अपेक्षित था कि वानप्रस्थी ही गुरुकुलो को चलाए जिससे वे अपने लम्बे तजुर्बे का उपयोग गुरुकुलो मे कर सकें। दादा और पोते का, साठ और आठ का सहयोग गुरुकुलो मे ही सम्भव हो सकता है।

इसी प्रसंग मे यह भी जिक्र करना चाहूंगा कि जब शिष्य गुरुकुल में प्रवेश करता था तो उसे 3 रात्रि गुरु के गर्भ मे व्यतीत करनी होती थी।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

### तामिलनाडू के रामनाथपुरम मे हरिजनो के साथ क्या हुआ

# सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्ययन दल की रिपोर्ट

तमिलनाडु के रामनाथपुरम जिले के गावो मे हरिजनो के इस्लाम मजहब मे सामूहिक रूप से धर्मान्तरण की खबर पाकर इस सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश के प्रमुख नेता श्री अमरेश आर्य को मौके पर जाकर वस्तु स्थिति की जानकारी लेने के लिए नवम्बर 1983 मे वहा भेजा। श्री अमरेश धर्म परिवर्तन की गतिविधियो से प्रभावित समस्त गावो मे पहुचे और उसके बाद उन्होने विस्तार पूर्वक जाच करके एक प्रारम्भिक रिपोर्ट भेजी। इस रिपोर्ट से स्थिति की गम्भीरता का पता चला और इसलिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने इस मामले की और अधिक जानकारी लेने के लिए एक उच्चस्तरीय कमेटी भेजने का निश्चय किया। दिसम्बर 83 के प्रथम सप्ताह मे निम्न सदस्यो का दल वहा पहुचा—

दिल्ली से—श्री रामगोपाल शालवाले श्री ओम प्रकाश त्यागी,

हैदराबाद से श्री वन्देमातरम रामचन्द्र राव श्री अमरेश आर्य प्रमुख नेता आन्ध्र प्रदेश

मद्रास से—श्री दयानन्द मल्होत्रा

यह दल रामनाथपुरम जिले मे गया और धर्मान्तरण की गतिविधियो से प्रभावित समस्त गावो मे पहुचा और गहराई से जाच करने के बाद उसने अपनी यह रिपोर्ट सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को दी—

### अध्ययन दल की राज्यपाल तथा अन्य अधिकारियो से मुलाकात व चर्चा

रिपोर्ट—अध्ययन दल ने उचित समझा कि सरकार के प्रतिनिधियो से मिलकर उनके कथन को बाद मे श्री अमरेश आर्य की प्रारम्भिक रिपोर्ट के साथ मिलाकर जाचा जाए।

अध्ययन दल ने सर्व प्रथम तमिलनाडू के राज्यपाल श्री खुराना से भेंट की और लगभग आध घन्टे तक उनके साथ वार्तालाप किया। इसके बाद दल ने मद्रास आर्य समाज के अधिकारियो तथा सामाजिक एव धार्मिक सगठनो के प्रमुख कार्यकर्ताओ के साथ मुलाकातें की। मदुरै में अध्ययन दल ने कानून और व्यवस्था के जिम्मेदार अधिकारियो के साथ जिनमे जिलाधीश श्री निवासन तथा पुलिस सुपरिन्टैडैन्ट श्री रामलिंगम भी शामिल थे से भेंट की।

### सैयालूर पहुचे

इसके बाद यह दल इस्लाम मे धर्मान्तरण की कारवाइयो से प्रभावित क्षेत्र मे पहुचा। प्रभावित क्षेत्रो के प्रतिनिधि रामनाथपुरम पहुचे हुए थे। दल ने उन सबसे भेंट की। उनका कथन था

यहा हिन्दू और मुस्लिम भाई भाई की तरह रहते चले आए हैं। यहा के मुस्लिमो की भाषा वेषभूषा और रस्मो रिवाज सब हिन्दुओ से मिलते जुलते है परन्तु कुछ दिनो से बाहर के लोग कुछ मुकामी लोगो को साथ लेकर हमारे इलाके मे घूम रहे हैं। ये लोग अपनी सभाए करते है और हरिजनो अथवा हरिजन बहुल गावो मे घर घर पहुचते हैं। उनके साथ सरकारी अधिकारी भी घूमते हैं। इसके बाद इजतमा नाम पर चलायी जा रही इन सभाओ का जिक्र किया। यह केवल मुसलमानो का सम्मेलन है। इनमे सरकारी अधिकारी भी भाग लेते हैं। उनमे से प्रमुख लोग हैं—फिरोजखा आर डी ओ, डी एन एच मुहम्मद घौस डी एस ओ रामनाथपुरम अब्दुल कादिर डिविजनल इन्जीनियर (राजमार्ग) 29 30 सितम्बर व 1 अक्तूबर को इस प्रकार का एक इजतमा किया गया। इसकी स्थली रामनाथपुरम का हायर सैकेण्डरी स्कूल था। इसमे केरल तमिलनाडु और पास के श्रीलका मे आए हुए मुस्लिमो ने बडी सख्या मे भाग लिया। इस स्कूल का सम्वाददाता एक गा अब्दुल है। वह काग्रेस कर्मी के रूप मे घूम घूम कर इस क्षेत्र के हरिजनो का धर्म परिवर्तन करने मे लगा हुआ है। यह शिक्षा सस्था जूनियर कालेज स्तर तक शिक्षा देती है और इसे सरकार से सहायता प्राप्त होती है। इस इजतमा के बाद सैयालूर गाव के पच्चार हरिजनो को २८ अक्तूबर को मुसलमान बनाया गया। यह स्थान रामनाथपुरम मे उत्तर कोसामनकलम के निकट है। राजमार्ग स 49 से मुडकर जाने वाला रास्ता यहा पहुचता है। यहा मोटर या अन्य सवारी नही मिलती और 4 मील तक पैदल चलकर ही पहुचा जा सकता है। हम लोग बडी कठिनाई से कार द्वारा गाव के बाहर एक मील की दूरी तक पहुच पाए और बाद मे पैदल पहुचे।

सैयालूर में 161 परिवार हैं जिनमे से 97 हरिजन परिवार हैं। 38 पुरुष 35 महिलाए 9 कन्याए और 7 लडके मुसलमान एजैंटो के अनुसार इन सबने इस्लाम स्वीकार कर लिया है। इन धर्मान्तरित लोगो मे 7 10 लडके व लडकिया भी हैं। हम इनमे से एक दस साल के समझदार लडके से मिले। मनोहरन नामक इस लडके का मुस्लिम नाम धर्मान्तरण के बाद अब्दुल रहमान रखा गया है। रामनाथपुरम के जो लोग मिले उन्होने भारी दुख प्रकट किया कि अब तक तो यह क्षेत्र शान्त था अब उसमे साम्प्रदायिक तनाव पैदा हो गया है। इन मे से कुछ लोगो ने अध्ययन दल से पूछा—

महोदय एक क्षण के लिए सोचिए कि यदि हम खाडी के मुस्लिम देश मे जाए और हम वहा जाकर यहा के मुस्लिम भाईयो की तरह उनका धर्मान्तरण कर दें तो हमारा क्या हाल किया जाएगा? हमे निर्दयता पूर्वक मार डाला जाएगा। अपनी दुर्दशा पर शोक प्रकट करते हुए उन्होने कहा—

हमारे गाव रामेश्वरम से लगे हुए हैं जो मुसलमानो के लिए मक्का की भान्ति हमारे लिए पवित्र है। यहा मुसलमान लोग हिन्दुओ को इस्लाम मे धर्म परिवर्तित कर रहे हैं। सरकार और कल्याणकारी सस्थाए चुपचाप यह सब देख रही हैं और हम लोग चुपचाप इन अत्याचारो को सहन कर रहे हैं।

हमारे पास इसका कोई जवाब नहीं था। बाद मे अध्ययन दल को पता चला कि कुछ हिन्दू वाहुल राजनतिक पार्टिया भी पच्चार हरिजन का धर्मान्तरण करने वालो से धन पाते हैं। यहा यह अफवाह है कि पौंगल पर हरिजन सामूहिक रूप से इस्लाम ग्रहण करेंगे।

(क्रमश)

---

# वैदिक कन्या महाविद्यालय मनीमाजरा

वैदिक कन्या महाविद्यालय मनीमाजरा (चण्डीगढ़) मे गत दिनो विद्यालय का स्थापना दिवस व स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया जिसमे स्त्री आर्य समाज और अन्य समाज के सभी बहिन भाईयो ने भाग लिया। इनके अतिरिक्त विद्यालय की छात्राओ ने भी भाग लिया और स्वामी श्रद्धानन्द जी को श्रद्धाजलिया भेंट की।

—

---

(4 पृष्ठ का शेष)

सुविख्यात मनीषी डा सत्यव्रत सिद्धान्तालकार के अनुसार रात्रि का अभिप्राय अन्धेरे से है। वेद कहता है तमसो मा ज्योतिर्गमय। मुझे अन्धेरे से प्रकाश की ओर ले चलो गुरुप्रकाश है। ब्रह्मचारी तीन प्रकार के अन्धेरे से घिरा है, शारीरिक मानसिक और आध्यात्मिक जब गुरु के कुल मे उसका प्रवेश होता है तो गुरु उसका उक्त तीन प्रकार का अन्धेरा दूर करने का प्रयत्न करता है।

गुरु को यम अर्थात मृत्यु भी कहा है। ऊपर मैंने नचिकेता का यमाचार्य के पास जाने का जिक्र किया। जब शिष्य यम के पास जाता है तो मर जाता है अर्थात उसके सब प्रकार के पूर्व सस्कारो का अन्त हो जाता है वह अपने पूर्वाग्रह समाप्त करके नए सस्कार ग्रहण करने को उद्यत होता है एव पूर्णतया गुरु के अकुश मे रहता है। हा इसके साथ गुरु का उत्तरदायित्व भी बढ जाता है। गुरु को सच्चे मार्नों मे गुरु आचार्य सदाचारी बनना होता। तभी वह शिष्य को सर्वांगीण शिक्षा दे पाएगा। अब आप सोचिए कि जो शिष्य 16 17 वर्ष तक गुरु के समक्ष रहे तो उस शिष्य और गुरु मे अन्तराल कैसा?

आज यदि अन्तराल के लक्षण यत्र तत्र दिखाई देते हैं तो उसका एकमात्र कारण यह कि गुरु अपने शिष्य को समस्त नहीं करता उससे शिष्यवत व्यवहार नही करता। पिता अपने पुत्र से पुत्रवत व्यवहार नही करता। गुरु एव अपने पिता अपने शिष्य एव पुत्र को अपने से बेहतर समझते हैं। पिता अपने व्यवसाय मे तल्लीन न रह कर अपने पुत्र की देखभाल के लिए समय नहीं निकाल पाता। अत पिता और पुत्र में, गुरु शिष्य मे अन्तराल तो होगा ही।

प्राचीन काल में पिता अपने पुत्र को आर्शीवाद देता था—

अगादगाद सम्भवसि हृदयादधि जायसे
आत्मव पुत्र नमासि त्वम जीव शरद शतम्।

अर्थात—हे पुत्र तू मेरे अंग-अंग से बना है मेरे हृदय से पैदा हुआ है। तू मेरे जैसा ही है। तू सौ वर्ष जी।

आज की पीढ़ी के सम्मुख राष्ट्र निर्माण की गरीबी हटाने की चुनौती विद्यमान है। इसके लिए भागीरथ पुरुषार्थ की और आपसी सहयोग की आवश्यकता है। यह तभी सम्भव है जब ब्रह्मचारी वानप्रस्थ सन्यासी ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य शूद्र अपने कर्म का सेवा सहित और यथा शक्ति पालन करें।

हमारे ऋषियो ने वर्णाश्रम व्यवस्था की स्थापना ही इसीलिए की थी कि समाज के सभी अग सकल्पपूर्वक मेल मिलाप की भावना से काम करें। उनमें आपसी टकराव की कोई सम्भावना ही न रहे।

# आर्य समाज वेद मन्दिर भार्गव नगर जालन्धर द्वारा वेद प्रचार कार्य

25 12 83 रात्रि 8 बजे से 10 बजे तक श्री सजान चन्द जी भार्गव नगर निवासी के घर मे वेद प्रचार हुआ। प बलराज जी प मनोहर लाल जी ने अपने विचार रखे आर्य समाज को 100 रु दान मिला

2 1 1 84 प्रात 10 बजे श्री बन्सी लाल स्टोर कीपर आर्य समाज वेद मन्दिर भार्गव नगर की पोती का नामकरण प मनोहर लाल जी ने वदिक रीति से कराया बच्ची का नाम आशाकिरण रखा गया।

3 श्री धर्म पाल जी ने अपने पिता की बरसी पर सत्सग कराया प बलराज जी प सत राम जी वीरा देवी जी ने अपने विचार व भजन रखे

4 श्री दिवान चन्द ने भी अपनी माता जी की बरसी के रूप मे सत्सग कराया जिसमे प बलराज जी प सत राम जी वीरा देवी जी प मनोहर लाल जी ने अपने 2 विचार और भजन रखे

—कमल किशोर
मन्त्री

## केन्द्रीय आर्य स्त्री समाज (अड्डा होशियारपुर) जालन्धर का उत्सव

केन्द्रीय स्त्री आर्य समाज अड्डा होशियारपुर जालन्धर का वार्षिकोत्सव 2 1 84 को बड़ी धूमधाम से श्रीमती बहिन रमा आर्या की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। ठिठुरती सर्दी के बावजूद सभी शहर की समाजो की बहिने सम्मिलित हुई अजय ... दानव के प्रश्न पर प्रधाना ... विद्यावती पडित निरजन देव जी बहिन कमला जी आर्या ... माता कमारी मनोज जी मूरी प्रिंसीपल ... ने अपने विचार प्रकट किये ... के बाद पाच बजे शान्ति पाठ के ... कार्यक्रम समाप्त हुई

## आर्य समाज बस्ती दानिसमन्दा का उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज वेद मन्दिर बस्ती दानिसमन्दा जालन्धर मे श्रद्धानन्द बलिदान दिवस 19 12 83 से 25 12 83 तक ... धूमधाम से मनाया गया जिस मे पण्डित बलराजजी लगातार प्रतिदिन वेद प्रचार करते रहे 25 12 83 का समारोह ... 10 बजे हवन यज्ञ से आरम्भ हुआ इसके बाद श्रद्धाजलि समारोह मे श्री प बलराज जी श्री बनवारी लाल जी अमर ... श्री कमल चन्द जी माली प ... विद्यालकार प उमेश कमार जी श्री ... राम जी ... प मनोहर लाल जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी को श्रद्धाजलिया अर्पित की और बाद मे ऋषि लगर के द्वारा इस समारोह की समाप्ति हुई

—फकीर चन्द
मन्त्री

30वें सस्करण से उपरोक्त मूल्य देय होगा।

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

भ्रष्टाचार किस प्रकार समाप्त किया जा सकता है इसका सुझाव देते हुए उन्होने लिखा था कि जो राज्य कर्मचारी जितना बड़ा है भ्रष्टाचार के लिए उसे उतनी अधिक सजा मिलनी चाहिए।

ऋषि दयानन्द ने अपने जीवन मे धर्म के नाम पर जो पाखण्ड फलाया जा रहा था उसका भी बड़ जोरदार शब्दो मे खडन किया था इस पर कुछ लोग उनके दुश्मन बन गए। उनके समय की सरकार ने उनसे कहा कि यदि वह चाहे तो रक्षा के लिए उनका अगरक्षक नियुक्त किया जाए और जो लोग उनका विरोध कर रहे हैं उन्हे कैद कर लिया जाए इस पर महर्षि ने कहा था कि इसकी आवश्यकता नही है वह ससार को कैद कराने नही आए लोगो को कैद से रिहा कराने आए है

महर्षि दयानन्द ने अपने देशवासियो और दूसरे देशो के बुद्धिजीवियो को किस प्रकार प्रभावित किया था इसका अनुमान उन श्रद्धाजलियो से लगाया जा सकता है जो उनके देहान्त के बाद ससार भर के प्रमुख बुद्धिजीवियो ने उन्हे भेट की

फ्रास के विश्वविख्यात दार्शनिक रोमा रोला ने उनके निधन पर लिखा था—

ऋषि दयानन्द उच्चतम व्यक्तित्व के पुरुष थे। वह उन पुरुषो मे से एक थे जिन्हे यूरोप प्राय उस समय भुला देता है जब कि भारत के विषय मे अपनी धारणा बनाता है किन्तु एक दिन यूरोप को अपनी भूल मानकर उन्हे याद करने पर बाधित होना पड़ेगा उनके अन्दर कर्मयोगी विचारक और नेता के उपयुक्त प्रतिभा का दुर्लभ सम्मिश्रण था दयानन्द ने अस्पृश्यता व अछूतपन के अन्याय को सहन न किया था और उनसे अधिक अछूतो के अधिकारो का उत्साही समर्थक दूसरा कोई न था भारत मे स्त्रियो की शोचनीय दशा का सुधारने मे भी दयानन्द ने बड़ी उदारता व साहस से काम लिया था। राष्ट्रीय भावना और जन जागृति के विचार को क्रियात्मक रूप देने मे सबसे अधिक प्रबल शक्ति उन्ही की थी

सस्कृत के प्रसिद्ध जर्मन विद्वान् प्रोफेसर मैक्समूलर ने स्वामी जी के विषय मे लिखा था—

स्वामी दयानन्द ने हिन्दू धर्म के सुधार का बड़ा काम किया था और जहा तक समाज सुधार का सम्बन्ध है वह बड़ उदार हृदय थे। पर अपने विचारो को वेदो पर आधारित और उन्हे ऋषियो के ज्ञान पर अवलम्बित मानते थे। उन्होने वेदो के बड़ बड़ भाष्य किए थे जिससे मालूम होता है कि वह पूर्ण विज्ञ थे उन का स्वाध्याय बड़ा व्यापक था।

महान कवि गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने अपनी श्रद्धाजलि देते हुए कहा था—

मेरा सादर प्रणाम है उस महान गुरु दयानन्द का जिस की दृष्टि ने भारत के आध्यात्मिक इतिहास मे सत्य और एकता को देखा और जिसके मन ने भारतीय जीवन के सब अगो को प्राप्त कर लिया। जिस गुरु का उद्देश्य भारत वर्ष को अविद्या आलस्य और प्राचीन ऐतिहासिक तत्व के अज्ञान से मुक्त कर सत्य और पवित्रता को जागृति मे लाना था। उसे मेरा बार-बार प्रणाम है। मैं आधुनिक भारत के मार्गदर्शक उस दयानन्द को आदर पूर्वक श्रद्धाजलि अर्पित करता हू।

कुछ लोग कहते हैं कि महर्षि दयानन्द मुसलमानो के विरोधी थे। परन्तु अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के सस्थापक और प्रसिद्ध मुस्लिम नेता सयद अहमद खा ने इन शब्दो में उन्हे अपनी श्रद्धाजलि अर्पित की थी—

निहायत अफसोस की बात है कि स्वामी दयानन्द साहिब ने जो सस्कृति के बड़ आलिम थे और वेद के बड़ मुहक्किक थे 30 अक्तूबर को सात बजे शाम के अजमेर मे इन्तकाल किया इलावा इल्मो फजल के निहायत नेक और दरवेश सिफत आदमी थे उनके मोतकिद उन्हे देवता मानते थे और बेशक वह इसी लायक थे वह ज्योति स्वरूप निराकार के सिवा दूसरे की पूजा जायज नही समझते थे। हम से और स्वामी दयानन्द मरहूम से बहुत मुलाकात थी हम उनका निहायत अदब करते थे। हर एक मजहब वाले को उनका अदब लाजिम था। बहरहाल वह ऐसे शख्स थे जिनकी मिसाल इस वक्त हिन्दुस्तान मे नही है। हर शख्स को इनकी वफात का गम करना लाजिमी है कि ऐसा बेनजीर शख्स उनके दरमियान से जाता रहा है

यह थे महर्षि दयानन्द सरस्वती जिन्हे जहर देकर मार दिया गया था और जो आज की रात यह कहते हुए इस प्रकार ससार से विदा हो गए थे—

हे सर्वशक्तिमान ईश्वर तेरी यह इच्छा है सचमुच तेरी ही इच्छा है परमात्मा देव तेरी इच्छा पूरी हो आज मेरे परमेश्वर तूने अच्छी लीला की।

महर्षि का देहान्त राजस्थान मे हुआ था। वह उन दिनो राजस्थान के राजे महाराजाओ को भारत की स्वतन्त्रता के लिए लड़ने के लिए तैयार कर रहे थे। उनके देहान्त के साथ उनकी यह योजना अधूरी रह गई। लेकिन वह रास्ता दिखा कर गए थे। इसलिए उनकी मृत्यु के 54 वर्ष पश्चात देश आजाद हो गया और उनके देशवासियो ने उनके इस सिद्धान्त को क्रियान्वित कर दिया कि विदेशियो का राज्य चाहे कितना अच्छा क्यो न हो वह स्वराज्य से अच्छा नही हो सकता।

—

## बाल जगत्–

# अपनी जानकारी बढ़ाइए

1 टेलीविजन का आविष्कार जी के एल बेयड ने किया था।
2 दुनिया में सबसे ऊंचा पठार पामीर (तिब्बत) है।
3 भारत में क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा राज्य मध्य प्रदेश है।
4 विश्व भर के देशों में सबसे अधिक डाकघर भारत में हैं।
5 जापान को उगते सूर्य का देश कहा जाता है।
6 इटली व तुर्की के सिक्कों का नाम लीरा है।
7 भारत में (शायद विश्व में भी) जामा मस्जिद सबसे बड़ी मस्जिद है।
8 संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना 24 अक्तूबर 194 को हुई थी।
9 अन्तरिक्ष आयोग की स्थापना जून 1972 में हुई थी।
10 विश्व का सबसे ऊंचा बांध भाखड़ा नांगल (भारत) में है जिसकी ऊंचाई 1 000 फुट है।
11 विश्व का सबसे लम्बा बांध हीराकुण्ड उड़ीसा (भारत) में है।
12 विश्व की सबसे बड़ी दूरबीन सोवियत संघ में है।

## माता-पिता के प्रति सन्तान का कर्त्तव्य

13 माता पिता का ऋण जीवन भर कोई भी सन्तान नहीं चुका सकती।
14 तुम सब कुछ भूल जाना परन्तु अपने मां बाप की सेवा करना कभी न भूलना।
15 उनके तुम पर असंख्य उपकार हैं अपना सुन्दर जीवन बिताने के लिए उन्हें निरन्तर याद रखना।
15 जो माता पिता सन्तान से सेवा की आशा करते हो सन्तान को योग्य बनाने का हर सम्भव प्रयत्न करना उनका कर्त्तव्य है
17 भूखे प्यासे रहकर भी अपने मुंह का ग्रास तुम्हारे मुंह में देकर जिन्होंने तुम्हें पाला पोसा है उनके प्रति तुम कभी कठोर व्यवहार न करना
18 भले ही तुम लाखों रुपए कमाते हो यदि माता पिता की आत्मा को तुमने अपने सद्व्यवहार से तृप्त नहीं किया तो तुम्हारे कमाए हुए लाखों रुपए कूड़ के ढेर के समान ही हैं।
49 तुम माता पिता के प्रति कुछ भी करोगे उसका शुभ फल तुम्हें अपने जीवन में अवश्यमेव मिलेगा।
20 माता पिता या अन्य बुजुर्गों ने तुम्हारे मार्ग में सदा प्रेम पुष्प बिछाए हैं। उनके मार्ग में कभी कांटे न बिछाना।
21 माता पिता का सेवक निर्धनता में भी सुखी है सेवा न करने से धनी होते हुए भी दुःखी ही हैं।
22 जो माता पिता की सेवा तथा आज्ञा पालन नहीं करता उसे बजुर्गों का शुभाशीर्वाद कदापि नहीं मिल पाता।
23 जो माता पिता को सुख-शान्ति नहीं देते उन्हें जीवन भर मानसिक क्लेश सहने पड़ते हैं।
24 जो माता पिता का अनादर करता है वह परिवार समाज और इष्ट मित्रों से भी आदर प्राप्त नहीं कर सकता।
25 यदि आप अपने माता पिता पर श्रद्धा नहीं रखते तो प्रभु भक्ति करना पाखण्ड ही है।
26 जो माता पिता पर श्रद्धा नहीं रखता वह आस्तिक नहीं वरन नास्तिक ही है।

## च्यवनप्राश

स्वामी स्वतन्त्रानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट मौही (जिला लुधियाना) के द्वारा निर्मित शुद्ध च्यवनप्राश तैयार किया गया है जो रु 28 रुपए प्रति किलो की दर से निम्न पता पर मिल सकता है।

1 श्री आशानन्द जी आर्य सभा मन्त्री
49।63 हरपाल नगर लुधियाना

2 श्री ओम प्रकाश जी पाठी
बी—2—6९9 मानी गंज लुधियाना

(2 पृष्ठ का शेष)

उन्होंने 1980 में अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति का गठन कर दिया। वर्षों से फूट रहे असंगठित जड़ और कायर हो चुके हिन्दुओं में प्राण फूंके आत्म विश्वास जगाया और स्थान स्थान पर हिन्दू रक्षा समिति की शाखाएं खोलकर कार्य प्रारम्भ किया।

यह एक ऐसा पौधा था जिसे उन्होंने जिगर की बीमारी और दिसम्बर 19 9 में हुई जून की उलटियों के कारण डाक्टरों द्वारा दी गई पूर्ण विश्राम का सलाह के बावजूद लगाया और चिकित्सकों की चेतावनी की परवाह किए बिना देश के कोने कोने में घूमकर धुआंधार भाषण देकर इसे अपने खून से सींचा और एक ऐसा वृक्ष बना दिया जिसकी आज 1600 शाखाएं और लाखों सदस्य हैं जब जब भी उनके परिजनों मित्रों ने डाक्टरों की चेतावनी स्मरण कराई तब तब ही उन्होंने गर्व से कहा— मेरे बचे हुवे जीवन के एक क्षण को भी मैं आराम में क्यों गवाऊं ? मैं उसका उपयोग सोये हुये हिन्दू समाज को जगाने में ही करूंगा तब यह हिन्दू समाज का सौभाग्य था कि उसे एक जाबाज योद्धा महात्मा वेद भिक्षु का नेतृत्व मिला। मीनाक्षीपुरम काण्ड के बाद तो देश की सभी हिन्दू संस्थाएं क्रियाशील हो उठी थी किन्तु बहुत कम लोग जानते होंगे कि महात्मा जी इससे दो वर्ष पूर्व से ही हिन्दू समाज को झकझोर रहे थे। वे किसी के रोकने से रुके नहीं टोकने झुके नहीं।

एक ऐसा योद्धा जो कभी किसी चुनौती के आगे नहीं डिगा जो कभी किसी धमकी से नहीं डरा जो क्षुद्र राजनैतिक महत्वाकांक्षाओं से दूर अपनी सपाट व बेबाक वाणी से अपने कर्मों से क्रियाकलापों से सारी जिन्दगी निर्भीक होकर अपनी लड़ाई लड़ता चला गया उस महान योद्धा को शाब्दिक श्रद्धांजलि देना कोई अर्थ नहीं रखता अगर अपने कर्म से हम उन्हें श्रद्धांजलि न दें।

किसी भी योद्धा को सच्ची श्रद्धांजलि उसकी लड़ाई को जारी रखकर ही दी जा सकती है उनकी जलाई मशाल को जलाए रखना उनके द्वारा प्रारम्भ किए गए कार्यों को आगे बढ़ाना उनकी योजनाओं को साकार अंजाम देना उनकी कल्पनाओं को साकार करना ही सच्ची श्रद्धांजलि हो सकती है इसके लिए प्रयत्नशील होना हम सभी का कर्त्तव्य है

(रवि न पी के पृष्ठ 55)

24-25 मार्च को किदवई नगर में नई दिल्ली मे

## आर्य महा सम्मेलन का विराट् आयोजन

नई दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने भारत की राजधानी दिल्ली के समस्त क्षत्रों से व्यापक जन सम्पर्क करने के लिए एक व्यवस्थित योजना बनाई है। इसके अनुसार पूर्व वर्षों मे जमना पार के शाहदरा के दिल्ली के पूर्ववर्ती क्षत्रो और उत्तरी दिल्ली के माडल टाऊन मुखराजाद क्षत्रो मे दो वृहद शानदार महासम्मेलन हो चुके हैं। दोनो ही महा सम्मेलन बहुत अधिक यशस्वी एव सफल हो चुके हैं। उसी स्वस्थ परम्परा के अनुरूप आगामी 24 25 मार्च 1984 के दिनों मैडिकल इन्स्टीच्यूट के पास किदवई नगर के समीप दशहरे के मैदान में विराट आर्य महा सम्मेलन होगा। इस अवसर पर रविवार 18 मार्च 84 को विराट शोभा यात्रा का भी आयोजन किया जाएगा और सभा के प्रचार वाहन द्वारा दक्षिण दिल्ली की प्रत्येक कालोनी एव ग्राम मे प्रचार एव लघु साहित्य वितरण द्वारा जन जागरण करके जनता को देश और धर्म की वर्तमान विस्फोटक स्थिति के प्रति जागरूक किया जाएगा। दिल्ली भर की समस्त समाजों विशेषत दक्षिणी दिल्ली क्षत्र की 50 के लगभग आर्य समाजों तथा अन्य आर्य सस्थाओ का उत्तरदायित्व है कि इस आर्य महा सम्मेलन को आर्थिक एव दूसरी सहायता देने की व्यवस्था करेंगे।

—प्राणनाथ मई मन्त्री

## लुधियाना में गायत्री यज्ञ

स्त्री आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना में 14 जनवरी सक्रान्ति से 13 फरवरी 84 तक [illegible] एक गायत्री महा यज्ञ होगा। यह यज्ञ दोपहर बाद साढ़े तीन से सायं साढ़े चार बजे तक प्रति दिन होगा इसकी पूर्णाहुति 13 फरवरी को होगी लुधियाना की बहने इस यज्ञ मे पधार कर पुण्य की भागी बने।

—कमला आर्य
प्रधाना

## शहीद भगत सिंह नगर का उत्सव

जालन्धर गत दिनों आर्य समाज शहीद भगतसिंह नगर में वार्षिकोत्सव बड़े उत्साह से मनाया गया। शोभा यात्रा मे जालन्धर के दयाराम प्राइमरी स्कूल आर्य हाई स्कूल बस्ती गुजा सिंह माडल स्कूल भगत सिंह नगर दुर्गा समिति माडल स्कूल आर्य माडल स्कूल गुरुकुल करतार के ब्रह्मचारियो तथा अन्य स्त्री पुरुषो ने भाग लिया।

ध्वजारोहण श्री कैलाश जी अग्रवाल ने किया तथा समाज को 1100 रु दान भी दिया।

उत्सव मे श्री प निरञ्जन देव जी श्री प. [illegible] जी सि सि श्री प. धर्मदेव जी [illegible] के प्रचार श्री रामनाथ जी शास्त्री सि सि श्री सेठ योगेन्द्र पाल जी, श्री प मनोहर लाल जी श्री आनन्द सागर जी श्रीमती कमला आर्य (लुधियाना) श्री देवेन्द्र जी गोयल ने भाग लिया।

राष्ट्र रक्षा सम्मेलन श्री सरदारी लाल जी आर्य र न की अध्यक्षता मे हुआ तथा उन्होंने बच्चो को पारितोषिक दिए

## भूले जाटों की शुद्धि

हिन्दू शुद्धि सभा की शाखा [illegible] करनाल के तत्वावधान मे दो गावों में भूले जाटो ने स्वेच्छा से हवन-यज्ञ के पश्चात् (हिन्दू) वैदिक धर्म को स्वीकार किया।

ग्राम ताहरपुर (करनाल) में श्री वीर प्रकाश जी की अध्यक्षता में यज्ञ हुआ। इस अवसर पर तीन परिवारो के 28 सदस्यों ने स्वेच्छा से (हिन्दू) वैदिक धर्म स्वीकार किया।

ग्राम बोहुआ (सोनीपत) मे भी सूबे सिंह जी तथा स्वामी [illegible] जी की अध्यक्षता में यज्ञ हुआ। इस ग्राम के चार परिवारों के 18 सदस्यों ने (हिन्दू) वैदिक धर्म स्वेच्छा से स्वीकार किया। [illegible] से इनका पानी रोटी-बेटी का सम्बन्ध जोड़ा गया और बिरादरी में (जाने में) इज्जत दिलाई गई।

उत्सव हर प्रकार से सफल रहा अन्त मे श्री मुल्कराज जी आर्य प्रधान ने सबका धन्यवाद किया।

—रणजीत कुमार
मन्त्री



श्री वीरेन्द्र सम्पादक [illegible] प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा [illegible] आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

वर्ष 16 अंक 41, 9 माघ सम्वत् 2040, तदनुसार 22 जनवरी 1984 दयानन्दाब्द 159 । एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपए

# भारत का गणतन्त्र दिवस 26 जनवरी

15 अगस्त 1947 को भारत आजाद हुआ और 26 जनवरी 1950 को भारत एक गणतन्त्र राज्य घोषित किया गया था। 34 वर्ष से हम प्रति वर्ष सारे भारत वर्ष में इस दिन को राष्ट्रीय स्तर पर मनाते चले आ रहे हैं।

इस दिन से भारत वर्ष ने गुलामी से मुक्त होकर नया जीवन जीना शुरू किया था और साथ ही लोकतान्त्रिक गणराज्य की नींव रखी गई थी भारत के लोगों ने चिरकाल की गुलामी के बाद सुख की सांस ली थी।

पहले हम मुसलमानों के अधीन रहे और सैकड़ों वर्ष अंग्रेजों के अधीन रहे। परतन्त्रता में कुछ नहीं, हमने गुलामी में घुटन महसूस की और फिर आजादी के लिए संघर्ष आरम्भ कर दिया। 1857 से लेकर 1947 तक तो लगातार यह संघर्ष चलता रहा। हां कभी संघर्ष धीमा हो गया और कभी तेज। आखिर 15 अगस्त 1947 को हम पूर्ण स्वाधीन हो गए। अंग्रेज को यहां से अपना बिस्तरा बोरिया समेट करके विवश हो कर जाना पड़ा।

इस आजादी के लिए अनेकों माताओं ने अपने बेटे दिए अनेकों स्त्रियों ने अपने पति दिए और अनेकों बहनों ने अपने भाई दिए। देश के वीर जवानों ने अपना रक्त बहा कर यह स्वाधीनता प्राप्त कर ली। यह आजादी की लड़ाई किसी वर्ग विशेष ने नहीं लड़ी थी। उस समय भी भारत में कई राजा थे परन्तु वह भी अंग्रेजों के गुलाम बने हुए थे उन्होंने इस आजादी के लिए कोई . . . . . . . . . . . . . . . . . . . . . .

प्रथम स्वराज्य का उद्घोष किया था और भारतीय जनता में देश प्रेम का शंखनाद चहुं ओर गुंजाया था। प्रत्येक आर्य समाजी ने इस आजादी के लिए अपना योगदान दिया था। 1857 के स्वतन्त्रता युद्ध में भी महर्षि दयानन्द की प्रेरणा कार्य कर रही थी। स्वामी जी ने स्थान 2 पर घूम घूम कर क्रान्ति का शंखनाद किया था।

इंग्लैंड में क्रान्तिकारियों का संगठन करने वाले महान क्रान्तिकारी श्याम जी कृष्ण वर्मा को स्वामी का आशीर्वाद प्राप्त था। उन्हीं की प्रेरणा से वह वहां गए थे और उनके नेतृत्व में इंग्लैंड में क्रान्तिकारियों ने महान् कार्य किए थे। जिससे अंग्रेज सरकार घबरा उठी थी उधम सिंह ने भरी सभा में अंग्रेज को अपनी गोली का निशाना बनाकर वीरता का परिचय दिया था।

भारत में भी क्रान्तिकारी संगठनों की स्थान 2 पर स्थापना हो चुकी थी राम प्रसाद बिस्मिल शहीद भगत सिंह राजगुरु सुखदेव शहीद जगदीश चन्द्रराय चन्द्र शेखर आजाद लाला लाजपतराय स्वामी श्रद्धानन्द और ऐसे सैकड़ों आर्य समाजियों ने इस आजादी के लिए अपना तन मन धन न्योछावर किया था।

आजादी की लड़ाई में आर्य समाज का महान् योगदान रहा है। आर्य समाजी जन्म से ही देश भक्त रहा है और आज भी है और आगे भी रहेगा। आर्य समाजी देश का प्रहरी है। वह भारत मां के लिए अपने प्राण तक न्योछावर करता रहा है और करता रहेगा।

हमने आजादी की लड़ाई मिल कर लड़ी हिन्दू मुस्लिम सिख जैनी तथा आर्य समाजी सभी ने अपना योगदान दिया था। भारत का बच्चा 2 क्रान्ति कर उठा था। तभी तो अंग्रेज भयभीत हो उठा था और यह सोचने पर विवश हो गया कि अब उसके लिए भारत पर राज्य करना कठिन है। हर भारतीय विद्रोही बन गया था। भारतीय जन शक्ति के आगे अंग्रेज ने घुटने टेक दिए और भारत को भारतीयों के हवाले कर दिया।

भारत आजाद होने पर प्रश्न पैदा हुआ कि देश की शासन प्रणाली कैसी हो। इसलिए देश के नेताओं ने मिल कर निश्चय किया कि अब देश में राजशाही नहीं चलेगी। जिस देश की स्वाधीनता एक लम्बे समय तक संघर्ष करके उस देश की जनता ने प्राप्त की है। उस देश में शासन भी जनता का ही होना चाहिए। इस लिए गणतन्त्रीय शासन व्यवस्था कायम की गई और 26 जनवरी 1950 को उसकी विधिवत घोषणा कर दी।

यह 26 जनवरी का दिन इस लिए चुना गया क्योंकि इस दिन का अपना एक विशेष महत्त्व है।

26 जनवरी 1930 में मोम्मीहरी बिहार में एक विशाल सभा हुई जिसमें स्वतन्त्रता दिन मनाया गया वहां गोली चली अनेकों लोग मारे गए। एक छात्र ने गोली खाकर गिरते हुए यह शब्द कहे कि मैं स्वराज्य के लिए मर रहा हूं

इसके बाद 26 जनवरी स्वतन्त्रता दिवस के रूप में मनाई जाने लगी एक ऐसी ही 26 जनवरी को श्री सुभाष चन्द्र बोस को निर्दयता पूर्वक पीटा गया था यही नहीं जब वह अंग्रेज की कैद से भारत छोड़कर विदेश गायब हुए उस दिन भी 26 जनवरी 1942 का दिन था। इस प्रकार 26 जनवरी के दिन का 1950 से पूर्व भी बड़ा महत्त्व रहा है। और इस दिन भारतीय नेताओं ने गणतन्त्र की घोषणा करके इसके महत्त्व को और भी बढ़ा दिया।

इस घोषणा के बाद छोटे बड़े सभी राजाओं को तिरंगे झण्डे के नीचे आना पड़ा और सभी पर भारतीय संविधान जो इस दिन घोषित किया गया था लागू कर दिया गया।

आज उस शुभ दिन को पूरा हुए 34 वर्ष हो गए हैं। हम बड़े गर्व से कह सकते हैं कि हम न केवल स्वाधीन हैं बल्कि आज हमारे देश में प्रजा का अपना शासन है। आज प्रजा की वोटों से ही नेता लोग चुने जाते हैं यह ठीक है कि आज वोटों के जोर पर कई गलत व्यक्ति भी चुन कर आगे आ जाते हैं जिससे देश का अहित भी हो रहा है। परन्तु फिर भी चुनती तो जनता ही है।

अगर जनता बुद्धिमत्ता से काम ले और योग्य व्यक्तियों को चुनकर भेजे तो जो समस्याएं आज खड़ी हो रही हैं और जिनसे देश को खतरा पैदा हो रहा है वह न हों। जो हमें वोट का अधिकार मिला है उसका ठीक प्रयोग करें।

आज फिर देश पर संकट के बादल मंडराने लगे हैं। कुछ भारतीय भी लोभ लालच और स्वार्थ के वशीभूत होकर देश के साथ गद्दारी कर रहे हैं देश को कमजोर किया जा रहा है। विदेशी अपना कुचक्र धन के बल पर भारत में चला रहे हैं। देश प्रेमियों का इस ओर ध्यान देना चाहिए और अपने देश के प्रति अपने कर्तव्य को निभाना चाहिए।

इस आजादी के लिए अनेकों आर्य बन्धुओं ने अपना बलिदान दिया। देश के लिए सारा जीवन न्योछावर किया। अब इसकी रक्षा के लिए भी आर्य बन्धुओं को मैदान में आ जाना चाहिए।

आज प्रजातन्त्र खतरे में पड़ता नजर आता है अरब देशों के धन के बल पर भारत के निर्धन वर्ग विशेष कर हरिजनों को तमिलनाडु आदि प्रदेशों में धड़ाधड़ मुसलमान बनाने में लगे हुए हैं। सैकड़ों ऐसे लोगों को गत दिनों रामनाथ पुरम में मुसलमान बनाया जा चुका है। तथा और भी बनाने का कुचक्र चलाया हुआ है। इधर ईसाइयों की संख्या भी देश में बढ़ती चली जा रही है और हिन्दुओं की संख्या दिन प्रतिदिन घटती चली जा रही है। इन 34 वर्षों का अगर लेखा जोखा किया जाए तो इन में मुसलमान और ईसाई बहुत बढ़ गए हैं। अगर यह वृद्धि निरन्तर इसी प्रकार होती रही और देश प्रेमियों व देश के नेताओं ने इस ओर ध्यान न दिया तो इस आजादी को कायम रखना कठिन हो जाएगा। इस लिए सभी बन्धु देश की रक्षा का व्रत लें तभी यह दिन मनाना सफल होगा।

# प्रार्थना कब प्रार्थना बनती है

ले.—श्री यशपाल जी आर्य बन्धु मुरादाबाद

ओ३म्

हर प्रार्थना, प्रार्थना नही होती—इस तथ्य को बहुत कम लोग जानते हैं। सभी प्राय लोगो की शिकायत रहती है कि हमारी प्रार्थना की सुनवाई ही नही होती। तब लोगो का ईश्वर विश्वास डगमगाने लगता है और नास्तिकता पनपने लगती है। पर हम भूल जाते हैं कि हमने यथार्थ प्रार्थना की ही नही, क्योकि हर प्रार्थना प्रार्थना नही होती। यथार्थ प्रार्थना तो वही है कि जिसमे प्राकृतता है उत्कण्ठा एव व्यग्रता है। यदि हमारी प्रार्थना मे प्रकर्षता व्यग्रता एव उत्कण्ठा नही तो वह अर्चना तो हो सकती है पर प्रार्थना नही। प्रार्थना शब्द मे प्र उपसर्ग इसी बात का द्योतक है। प्र उपसर्ग पूर्वक अर्थ धातु से प्रार्थना शब्द की सिद्धि होती है। ऐसा व्याकरण मानते हैं। 'प्र' का अर्थ है—प्रकर्षेण अर्थात् तेजी से, विशेष उत्कण्ठा से, तीव्रता से और अर्चना का अर्थ है चाहना (न कि मागना) चाहने और मागने मे जो अन्तर है वह भी जान लेना आवश्यक है मागने में मागने वाले को स्वय कुछ भी नही करना होता। केवल मागना भर होता है जबकि चाहने में केवल मागना नही स्वय भी पुरुषार्थ करना होता है। मांगने मे इच्छा शक्ति जिसे अंग्रेजी भाषा में (विल पावर) कहते हैं का उपयोग हो नही पाता। याचक को केवल अपनी याचना अथवा माग प्रस्तुत करने के अतिरिक्त और कुछ करना नहीं होता परन्तु चाहने मे जहा प्रभु से सहायता की की इच्छा की जाती है, वहा स्वय भी पूर्ण पुरुषार्थ करना पड़ता है। साथ ही याचना मन में ठीक भाव उत्पन्न करती है जबकि चाहना आत्म गौरव एव आत्म विश्वास। तभी कविवर रहीम को कहना पड़ा कि—

> रहिमन याचकता गहे,
> बड़े छोटे हुवै जात।

अर्थात मागने से बड़ा व्यक्ति भी छोटा हो जाता है। महर्षि दयानन्द और महात्मा गाधी आदि प्रार्थनापरायण महात्माओ ने प्रार्थना को याचना के रूप मे कभी नहीं लिया। यह है भी ठीक, क्योकि प्रार्थना का अर्थ भी प्रकृष्ट अर्थ अर्थात् उत्कृष्ट प्रयोजन है और उत्कृष्ट प्रयोजन के लिए पुरुषार्थ सदैव अपेक्षित हुआ ही करता है। तभी महर्षि दयानन्द ने लिखा कि—अपने पूर्ण पुरुषार्थ के उपरान्त उत्तम कर्मों की सिद्धि के लिए परमेश्वर या किसी सामर्थ्य वाले मनुष्य में सहाय लेने को प्रार्थना कहते हैं।' (आर्योद्देश्य रत्नमाला) और महात्मा गाधी का कहना है कि—प्रार्थना करना याचना करना नही वह तो आत्मा की पुकार। पडित चमूपति जी ठीक ही लिखते हैं कि—उपासको की परिभाषा मे प्रार्थना और प्रतिज्ञा पर्याय है। हाथ पसारे हैं तो हाथ हिलाने भी स्वय होगे। (देखें-सन्ध्या रहस्य पृष्ठ 25) इसी प्रकार पण्डित लेखराम आर्य मुसाफिर अपनी सुप्रसिद्ध पुस्तक 'कुलियात आर्य मुसाफिर मे लिखते है कि—सच्ची प्रार्थना को सकल्प कहते हैं और सकल्प शुभ गुणो को धारण करने की इच्छा को कहते हैं।' वस्तुत प्रार्थना अपने हृदय के उद्‌गारो को अपने प्रभु के सम्मुख रखने की एक पवित्र वैदिक प्रणाली है। श्री नित्यानन्द पटेल के अनुसार—'व्याकुलता भरे अन्त करण से जो पवित्र पुकारे उठती हैं उन्हे ही प्रार्थना कहते हैं। (देखें प्रार्थना दीप, पृष्ठ 17)।

प्रार्थना कर्म का प्रतीक है। जिसमें पुरुषार्थ नही वह प्रार्थना भी नही। अत प्रार्थना सदैव पुरुषार्थ पूर्वक की जानी चाहिए। पुरुषार्थहीन प्रार्थना प्राय निष्फल जाती है। महर्षि दयानन्द तो पुरुषार्थ को प्रार्थना से अधिक महत्व देते हैं। उनका कथन है कि—जो मनुष्य जिस बात की प्रार्थना करता है, उसका वैसा ही वर्तमान भी करना चाहिए अर्थात् जैसे सर्वोत्तम बुद्धि की प्राप्ति के लिए परमेश्वर की प्रार्थना करे, उसके लिए जितना अपने से प्रयत्न हो सके उतना किया करेगा अर्थात् अपने पुरुषार्थ के उपरान्त प्रार्थना करनी योग्य है। क्योकि जो कोई कहे गुड मीठा है, ऐसा कहता है, उसको गुड प्राप्त व उसका स्वाद प्राप्त कभी नहीं होता और जो यत्न करता है, उसको शीघ्र वा विलम्ब से गुड मिल ही जाता है। इतना ही नहीं महर्षि तो यहा तक लिखते हैं कि—जो परमेश्वर के भरोसे आलसी होकर बैठे रहते हैं वे महामूर्ख हैं क्योकि जो परमेश्वर की पुरुषार्थ करने की आज्ञा है उसको जो कोई तोडेगा वह सुख कभी न पाएगा। (सप्तम समुल्लास) स्पष्ट है कि प्रार्थना मे बढ़े दो हाथों की अपेक्षा पुरुषार्थ में लगा एक हाथ भी श्रेयस्कर ही है। अत प्रार्थना तभी प्रार्थना है कि जब वह पुरुषार्थपूर्ण की जाती है

प्रार्थना के सम्बन्ध मे एक अन्य आवश्यक बात भी समझ लेनी चाहिए। वह यह है कि प्रार्थना सदैव हृदय से होनी चाहिए। वस्तुत हृदय की तडपन ही सच्ची प्रार्थना है। यदि हृदय में तड़प नही तो फिर प्रार्थना कभी प्रार्थना नहीं। ध्यान रहे कि प्रार्थना मे हृदय शून्य शब्दो की अपेक्षा शब्द शून्य हृदय श्रेष्ठ है। क्योकि ईश्वर केवल वही सुनता है कि जो हृदय बोलता है। यदि ऐसा न होता तो गूगे, तुतले, तथा अबोध बालक एव मूढ जन उसे अपनी बात कैसे सुना सकते थे। याद रखे। यदि आपका हृदय मूक है तो आप प्रभु को अपनी बात सुना ही नही सकते। वाणी के मूक होने पर भी ईश्वर मन के भावो को जान लेता है, पर मन मे भाव ही नहीं तो ईश्वर कैसे जानेगा ? अत स्पष्ट है कि प्रार्थना का मुख्य केन्द्र वाणी नही हृदय है। इस सम्बन्ध मे डा, राधा कृष्ण ठीक ही लिखते हैं कि—

'The principal center of spiritual life is the heart By inward prayer we enaple the heart to participate in the union with God (Recovery of faith page 149)

अर्थात्—आध्यात्मिक जीवन का मुख्य केन्द्र हृदय है। आन्तरिक अर्थात् मान प्रार्थना से हम हृदय को ईश्वर के साथ मेल के योग्य बनाते हैं। प्रार्थना के स्वर जब हृदय से उठते हैं तो प्रार्थी के अन्त करण मे एक अद्‌भुत मस्ती सी छा जाती है और वह स्वयं को भूलकर प्रभु के चरणों में तल्लीन हो जाता है। जिस प्रकार प्रेमातिरेक में प्रेमी मूक हो जाता है, वैसे ही ईश्वर के प्रेम में उन्मत्त व्यक्ति भी मूक हो जाता है। यहा होंठ नहीं हिलते, मुख नहीं बोलता वरन् हृदय मुखरित हो उठता है। तब विश्वात्मा से आत्मा का अनुपम वार्तालाप होता है। हृदय का यह काम होठो से कभी भी नहीं हो सकता। क्योकि—

> दिल की हर बात नहीं लफ्जों में,
> होती है बया,
> हर तमन्ना नहीं ममनूने बयां
> होता है।'

निष्कर्ष यह कि प्रार्थना हृदय से की जानी योग्य है तभी वह फलवती होती है तभी वह प्रार्थना है। प्रार्थना सम्बन्धी उपर्युक्त विवेचन से यह नहीं समझ लेना चाहिए कि हम बोल कर प्रार्थना कर ही नही सकते। हम चाहे तो बोलकर भी प्रार्थना कर सकते हैं। हमारा तो केवल इतना ही कहना है कि जैसे भी प्रार्थना करे, आपके हृदय का उसमे पूर्ण सहयोग होना चाहिए, प्रार्थना तभी प्रार्थना है कि जब हृदय के भाव स्वत ही बनने लग जायें। जो शब्द हमारे हृदय को न छूमें वे किस काम के अत प्रार्थना के लिए न सुन्दर शब्दो की आवश्यकता है, न चमत्कारिक प्रयोगो की। अस्त व्यस्त भाव टूटी-फूटी भाषा में जब हृदय से फूट पड़े, प्रार्थना तभी प्रार्थना है। काश ! हम कर पायें ऐसी प्रार्थना। (क्रमश)

## नया साल आया

रचयिता—श्री बनवारीलाल जी 'सादा' वैद्य

नया साल आया चौरासी, मिलकर मगल गान सुनाए।
बीते साल की याद भुलाकर अपना देश महान् बनाए।
बीते भी जिसका दुनिया मे, जीवन जब श्मशान रहा हो
या कोई भूखा दुखियारा, खाक राह की छान रहा हो।
दीन-दुखी हर निर्बल जन को आओ नव इन्सान बनावें।
नया साल आया चौरासी आओ———
जो कोई जीवन के रण में, थक कर, हिम्मत हार गया हो।
या कुसमय की प्रबल लहर में, बेड़ा फस मझधार गया हो।
सगठन बल से पार कर नैया, हर मंजिल आसान बनावें।
नया साल आया चौरासी आओ———।
द्वेष-भाव छल कपट व्यथा का, जग से नाम निशान मिटाकर।
हर मानव के मन-मन्दिर मे, वेद धर्म की ज्योति जलाकर।
सत्य, अहिंसा न्याय, प्रीति से, जन-जन को विद्वान् बनावें।
नया साल आया चौरासी, आओ———।
नया साल नई बहार लाये वह विध्वसक आग बुझा दे।
नफरत के काटो को छाटे, सबको प्रीति राग सुना दे।
आओ प्यारे प्रिय स्वदेश को, 'सादा' फिर बलवान् बनावें।
नया साल आया चौरासी, आओ मगल ———।

सम्पादकीय—

# आर्य समाज का नया साहित्य (2)

इस विषय पर लिखते समय मुझे एक ऐसे महानुभाव की याद आ रही है जिन्होंने आर्य समाज को नया साहित्य देने में अत्यन्त सराहनीय काम किया था। वह थे स्वर्गीय श्री वेदव्रत जी जिन्हें हम पहले श्री भारतेन्द्र नाथ के नाम से याद करते रहे हैं। उन्हें आर्य समाज के लिए इतनी अधिक लगन थी कि वह एक प्रकार से उसके दीवाने थे। अमर बलिदानी धर्मवीर पं लेखराम जी ने अपने देहान्त से पहले एक वसीयत की थी कि आर्य समाज में साहित्य निर्माण का काम बन्द नहीं होना चाहिए। वैसे तो और भी कई व्यक्तियों ने इसे कार्यान्वित करने का प्रयास किया था लेकिन जो कुछ भारतेन्द्र नाथ जी ने किया था किसी दूसरे ने नहीं किया। अकेले एक व्यक्ति ने जितना साहित्य प्रकाशित किया था उतना बहुत कम व्यक्ति कर सके। इसमें उन्हें उनकी सुयोग्य धर्म पत्नी श्रीमती पण्डिता राकेशरानी का भी सहयोग मिलता रहा। दोनों ने मिलकर हजारों की संख्या में लेख प्रकाशित किए और उन्हें उन लोगों तक पहुंचाया जिन्होंने पहले वेद न देखे थे। जब भी आर्य समाज के साहित्य का इतिहास लिखा जाएगा श्री भारतेन्द्रनाथ का नाम स्वर्णमय अक्षरों में लिखा जाएगा

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी के उपलक्ष में उन्होंने वैदिक सम्पत्ति नाम का एक वृहद ग्रन्थ प्रकाशित किया था इसमें वेदों की आपौरुषेयता और उनकी शिक्षा का विस्तृत वर्णन किया गया और इन दोनों बातों को स्पष्ट करने के लिए कई प्रमाण भी दिए हैं हम आर्य समाजी प्रायः अपने ग्रन्थों तक ही अपने आप को सीमित रखते हैं और यह जानने का प्रयास नहीं करते कि हम जो कुछ कहते हैं उसके विषय में दूसरे क्या कहते हैं। हम जानते हैं कि दूसरे धर्मावलम्बी या वह व्यक्ति जिन्हें वैदिक धर्म के विषय में अधिक जानकारी नहीं है वह हमारे विरुद्ध क्या कहते रहते हैं यदि हम इसको समझ लें और जो आक्षेप हमारे ऊपर किये जाते हैं उनका उत्तर भी हमें आता हो तो हमारे धर्म प्रचार का मार्ग प्रशस्त हो जाएगा। इस विषय में समय 2 पर जो साहित्य प्रकाशित होता रहता है वह हमारे लिए बहुत लाभदायक सिद्ध हो सकता है दयानन्द संस्थान की ओर से प्रकाशित वैदिक सम्पत्ति को भी हम उसी प्रकार के साहित्य में रख सकते हैं जिस के द्वारा धर्म प्रचार हमारे लिए आसान हो जाए।

आर्य समाज ने समय 2 पर कई वेदों के और दर्शन शास्त्रों के बड़े 2 विद्वान पैदा किए हैं जिन्होंने अपने अनुसंधान से उस उच्चकोटि का साहित्य तैयार किया है जिस पर कि हम जितना गर्व करें कम है। मेरे विचार से ऐसे विद्वानों में आदरणीय श्री पं युधिष्ठिर जी मीमांसक का स्थान बहुत ऊंचा है महर्षि दयानन्द उनके साहित्य और उनकी विचार धारा के विषय में जो अनुसंधान श्री पंडित युधिष्ठिर जी मीमांसक ने किया है बहुत कम व्यक्तियों ने किया होगा। जब हमने आर्य समाज की जन्म शताब्दी मनाई थी उस समय भी युधिष्ठिर जी मीमांसक ने सत्यार्थ प्रकाश का एक नया संस्करण भी प्रकाशित किया था। सत्यार्थ प्रकाश के और भी कई संस्करण प्रकाशित हुए हैं। परन्तु जितना परिश्रम पण्डित युधिष्ठिर जी ने अपने संस्करण में किया है मैं नहीं समझता कि किसी और ने इससे पहले किया हो। पहली बार सत्यार्थ प्रकाश का इतिहास इस पुस्तक द्वारा हमारे सामने आया है। इस महान ग्रन्थ को लिखने में महर्षि दयानन्द के मार्ग में कितनी कठिनाईयां आई थी इसका अनुमान सत्यार्थ प्रकाश के इस शताब्दी संस्करण को पढ़कर ही लगाया जा सकता है। हम कई बार बहुत अधिक चिन्तित होते हैं कि आर्य समाज का वह साहित्य प्रकाशित नहीं होता जो होना चाहिए। परन्तु मेरे विचार में अधिक चिन्तित होने की आवश्यकता नहीं जब तक आर्य समाज के पास पंडित युधिष्ठिर जी मीमांसक जैसे अनमोल रत्न मौजूद हैं आर्य समाज के साहित्य का काम चलता रहेगा। उनसे पहले स्वर्गीय श्री पण्डित भगवद्दत्त जी ने भी बहुत काम किया था। महर्षि दयानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन नामक पुस्तक के दो भाग प्रकाशित किये थे उसके लिये उन्होंने कितना परिश्रम किया होगा इसका अनुमान उनकी उस पुस्तक को देखकर ही लगाया जा सकता है। उसमें उन्होंने कोई 930 महर्षि के लिखे पत्र प्रकाशित किये हैं इसके अतिरिक्त महर्षि के कई लेख भी और कुछ और सामग्री भी दी गई है कुल पत्र और विज्ञापन आदि एक हजार से भी ऊपर इसमें जमा कर दिए गए हैं सत्यार्थ प्रकाश का शताब्दी संस्करण और महर्षि दयानन्द जी सरस्वती के पत्र और विज्ञापन इन दोनों ग्रन्थों को पढ़ लेने से महर्षि के विषय में इतनी जानकारी प्राप्त हो जाती है कि फिर कोई यह नहीं कह सकता कि हमें पता नहीं कि महर्षि दयानन्द सरस्वती क्या थे और वह क्या चाहते थे जो सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशित किया गया उसकी एक विशेषता यह भी है कि जहां 2 किसी विषय पर कोई मत भेद बताया गया है उसके सम्बन्ध में स्पष्टीकरण साथ 2 कर दिया गया है सत्यार्थ प्रकाश लिखते समय जिन व्यक्तियों ने उसका स्वरूप बिगाड़ने का प्रयास किया था। उन सबका भी इस पुस्तक में वर्णन मिलता है लिखने का अभिप्राय यह है कि पहले स्व श्री पं भगवद्दत्त जी ने और अब उनके पश्चात पं युधिष्ठिर जी मीमांसक ने आर्य समाज के साहित्य निर्माण में जो अपना योगदान दिया है वह अद्वितीय है।

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी के अवसर पर उन्होंने उस प्रकार का कोई वृहद ग्रन्थ प्रकाशित तो नहीं किया जैसा कि आर्य समाज की जन्म शताब्दी के समय सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशित किया था फिर भी अपनी मासिक पत्रिका वेद वाणी का जो दयानन्द विशेषांक प्रकाशित किया है उस में भी बहुत उच्चकोटि के लेख हैं इस विशेषांक और कुछ दूसरे ग्रन्थों और पत्र पत्रिकाओं के विषय में आगामी अंक में अपने विचार पाठकों के सामने रखूंगा इस समय केवल यही कहना चाहता हूं कि आर्य समाज का साहित्य तो बहुत प्रकाशित होता रहता है परन्तु किसी न किसी कारण वह जनता के सामने उतना नहीं आता जितना कि दूसरी धार्मिक संस्थाओं का आता है यही कारण है कि कई लोग यह समझ रहे हैं कि आर्य समाज इस क्षेत्र में पिछड़ रहा है मैं नहीं समझता कि हम पिछड़ रहे हैं हमारी एक ही त्रुटि है कि अब हम में वह स्वाध्याय की प्रवृत्ति नहीं रही जो पहले हुआ करती थी। इस ओर सभी आर्य बन्धुओं को विशेष ध्यान देना चाहिए। साहित्य निर्माण का कोई लाभ नहीं यदि उसका प्रचार न हो। शेष आगामी सप्ताह के अंक में।

—वीरेन्द्र

# पंजाब के हिन्दी प्रेमियों को सरकार की चुनौती

प्रकाशित हुआ है कि पंजाब के सरकारी स्कूलों में अब कोई विद्यार्थी हिन्दी के माध्यम से परीक्षा नहीं दे सकेगा यानी सरकारी स्कूलों में अब धीरे धीरे हिन्दी का सफाया कर दिया जाएगा। कोई विद्यार्थी किसी भाषा में कितनी प्रवीणता प्राप्त करता है यह इस बात पर निर्भर होता है कि वह कौन सी भाषा को अपनी शिक्षा का माध्यम बनाता है। यदि सरकारी स्कूलों के विद्यार्थी हिन्दी को अपनी शिक्षा का माध्यम नहीं बना सकते और इसके माध्यम से परीक्षा नहीं दे सकते तो हिन्दी में वे वह प्रवीणता प्राप्त नहीं कर सकेंगे जिसकी आगे चल कर उन्हें आवश्यकता पड़ेगी। इस समय भारत सरकार भी यह प्रयास कर रही है कि इसके सभी विभागों में हिन्दी धीरे धीरे अंग्रेजी की जगह ले ले। अतः रेल का बहुत सा काम इस समय हिन्दी में हो रहा है सभी रेलवे स्टेशनों पर हर चीज अंग्रेजी के साथ साथ हिन्दी में लिखी जाती है। अब तो सरकारी बैंकों और कई दूसरे सरकारी दफ्तरों में भी हिन्दी का प्रयोग पहले से अधिक होता है। ऐसी स्थिति में जो विद्यार्थी सरकारी स्कूलों में शिक्षा प्राप्त करेंगे शिक्षा प्राप्ति के बाद उनके लिए आगे बढ़ने के सभी दरवाजे बन्द हो जाएंगे। पंजाबी तो पहले ही केन्द्रीय कार्यालयों में अन्य प्रदेशों से कम हैं केवल फौज में वह दूसरे प्रदेशों से आगे रहते हैं। अब फौज का भी बहुत सा काम हिन्दी में शुरू हो गया है। परेड के समय सभी आदेश अब

(शेष पृष्ठ 5 पर)

# भारतीय सत्ताधीशों से

ले—श्री आचार्य डा मित्र जीवन जी

भारत मे ही नही विश्व के किसी भी तल पर लोक आराधना के अभाव मे लोकतन्त्र जीवित नहीं रह सकता है। लोकतन्त्र अर्थात व्यापक लोक आराधना विस्तृत व्यक्ति रचना अर्थात लोक श्रम का लोक श्रम द्वारा और लोक श्रम के ही लिए तन्त्र जहा लोक श्रम द्वारा निर्वाचित व्यक्ति किंचित भी शासक न होकर समग्र रूपेण लोक श्रम के लिए समर्पित सेवक होता है। व्यापक लोक रचना ही जहा उस सेवक विशेष की अन्त लोक साधना होती है और वही उसका अतिम साध्य भी वही लोकतन्त्र होता है

लोक आराधना का सीधा सीधा अर्थ है—राष्ट मे व्यक्ति व्यक्ति के स्व की उसके गौरव की एवम उसकी गरिमा की पूर्ण सरक्षणा। व्यक्ति व्यक्ति को राज्य की ओर से नि शुल्क समुचित न्याय का विकास के अवसरो की तथा जीवन सुरक्षा का स्पष्ट अर्थ है लोकतन्त्र मे व्यक्ति का अपना सुनिश्चित भाग उसका अपना स्वत्व एवम् अपना अभीष्ट अर्थात सामाजिक आर्थिक और राजनैतिक क्षत्रो मे व्यक्ति समग्र व्यक्ति स्वातन्त्र्य की पूर्ण गारन्टी। लोकतन्त्र एक मात्र व्यक्ति व्यक्ति का तन्त्र है। जिसका मूल आधार व्यक्ति-व्यक्ति है। व्यक्ति-व्यक्ति ही जिसमे सर्वोच्च सत्ताधीश हैं। जन प्रतिनिधि जो जन सकेत पाकर ही जन-सेवा के क्षत्र मे उतर कर आता है उसके लिए जन आराधना तथा जन रचना ही सर्वोपरि है लोकतन्त्र मे जन जीवन की उपेक्षा और उस उपेक्षागत जन जीवन का क्षरण लोकतन्त्र के भव्य भवन की ईटो का खिसकना है। जो लोकतन्त्र की आधार भूत निबलता का द्योतक तथा अविलम्ब ही उसके राख हो जाने का स्पष्ट लक्षण हैं।

भारतीय मनीषा मे शासक को लोक रजक कहा गया है और वह इसलिए कि शासक सेवक से भी ऊपर प्रजा का पितवत नही प्रत्युत मातृवत पालन करता है प्रजा मे जन जन की पीड उसकी निज पीडा होती है प्रजा के व्यापक हित के लिए जीना और उसके लिए मर भी जाना उसका अभीप्सित लक्ष्य होता है। प्रजा रूपी वेदी पर वह अपने समग्र स्व को एक पवित्र समिधा के रूप मे अर्पित किये रहता है।

लोक आराधक सेवक (शासक) यह मानता है कि जब तक प्रजा का एक जन भी भूखा है उसे अन्न ग्रहण करने का अधिकार नही। एक भी जन वस्त्रहीन और छप्पर विहीन है उसे मूल्यवान वस्त्रो के प्रयोग का तथा ससज्जित विशाल भवनो मे रहने का अधिकार नही। चू कि लोकतन्त्र मे यह मानवीय गरिमा का मौलिक प्रश्न है। जिस लोकतन्त्र मे रोटी और आश्रय हासिल करने के लिए मा अपने बच्चो का गला घोट देती हो। जेल से बाहर रोटी और आश्रय के अभाव मे जहा व्यक्ति को किसी भी प्रकार जेल मे जाने का मार्ग चुनना पडता हो। जहा नारी को महज रोटी और आश्रय की खातिर अपने नारीत्व के एहसास को दफन कर जघन्य अपराध की दिशा लेनी पडती हो। ऐसे लोकतन्त्र को तथा उस लोकतन्त्र के धारको और वाहको का क्या सज्ञा दी जाए।

ध्यान रहे राष्ट्र की सम्पूर्ण सम्पत्ति जनाधन की है और जनाधन जनता के रूप मे साकार है। कैसी विडम्बना है कि लोकतन्त्र का स्वामी भूखा नगा और आश्रय विहीन हो अन्धेरे गली-कूचो मे मारा मारा फिरता हो और उसके सेवक वैभव का जीवन जीते हो। ये भूखे नगे और आश्रय विहीन स्वामी अपने जन प्रतिनिधियो (सेवको) से यह कहने का अधिकार तो रखते ही है कि भले ही ये सेवकगण भव्य भवनो के वैभव मे बने रहे किन्तु कम से कम हम दरिद्रो को एक जून की मोटी रोटी काले तर्ना की शर्म को ढकने के लिए एक जोडी मोटा कपडा तथा कही सिर छिपा लेने के लिए फूस की झोंपडी तो मिलनी ही चाहिए। ऐसी व्यवस्था भी होनी चाहिए कि हमारे काले कलूटे मटियारी बच्चे जो कल के भारत के कम से कम नागरिक तो हैं ही उन्हे किसी कदर पेट भरने को खाने जैसे चन्द टुकड़े बटोर सकने के लिए आस्था की अधेरी तग गलियो मे तथा नगर के चाल चौराहो पर फेके गए झूठ पत्तो व कूडे कर्कट के सड ढेरो के पास जाने के लिये मजबूर न होना पड़े।

सुदूर अतीत में भारत के विधायको ने इस भूखण्ड पर वरणोत्तम-व्यवस्था दी थी। इस व्यवस्था के अन्तगत आने वाले प्रत्येक व्यक्ति को भोजन वस्त्र आवास की गारन्टी प्राप्त थी। इसी व्यवस्था के साफल्य ने ही इस भूखण्ड को भारत सज्ञा से विभूषित कर देने को विवश किया था। प्लेटो ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक रिपब्लिक मे सुझाया है कि सरकार सब से अच्छी वह है जो कम से कम शासन करें कम से कम "कर" लगाये और अपनी प्रजा को उत्कृष्ट आसाधारण नागरिक भाव से अधिक से अधिक प्रशिक्षित करें। विगत छत्तीस वर्षों मे भारतीय लोकतन्त्र के तल पर इसके बिल्कुल ही विपरीत हुआ है। अधिक से अधिक शासन की कुभावना ने अधिकांश जन जीवन को पीस कर रख दिया है। अधिक से अधिक "करो" के भार मे जीवन को पूरी तरह दबोच कर रख दिया है। जन जीवन के शोषण के लिए सरकारी विभागो का मुह विभिन्न आकार प्रकारो मे सुरसा के समान खुलता ही चला जाता है और उत्कृष्ट आसाधारण नागरिक भाव तो आरम्भ से ही शून्य है साथ ही जीने के अवसर और सुरक्षा के भाव दिन प्रतिदिन किसी अतल गर्त मे खोते ही चले जाते हैं यही कारण है कि समग्र राष्ट एक अखण्ड विवकशील व्यक्ति के रूप मे अब तक खड़ा होने मे असमर्थ है।

भारतीय लोकतन्त्र के सरकारी तन्त्र की सर्वोच्च वाहिका श्रीमती इन्दिरा गाधी हैं। जो विश्व मे न्याय तथा लोकतन्त्र की सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध हैं। साथ ही वह किन्ही कमजोरो की विशेष सहायता के लिए भी वचनबद्ध हैं। क्या श्रीमती गाधी से यह पूछने का दुस्साहस किया जा सकता है उनके निकट कमजोर की क्या परिभाषा है। न्याय के क्या अर्थ हैं देश के सामान्य जीवन की सामान्य समस्याओ से आखे हटाकर विश्व तल पर न्याय और लोकतन्त्र के प्रतिबद्धता की बात तथा दुनिया के कमजोरो की खाली सहायता क्या दीपक तले अन्धेरे की कहावत के साथ साथ अपने ही यथार्थ से मुह मो कर ससार के समक्ष केवल आदर्श का ढोल पीटना नही है श्रीमती गाधी और सत्ता सरोवर मे आपाद मस्तक डूबे उनके सहयोगी क्या यह नहा जानते कि ठीक चमकते हुए सत्ता शिखरो से लेकर नीचे धूल भरे मैदानो तक सम्पूर्ण देश मे आज व्यक्ति न्याय का घोर अभाव है। और यह अभाव इसलिए है कि इस भूमि पर सत्य की प्रतिष्ठापना आचरण रूप मे कभी नही उत्तर पायी है।

सत्य की स्थिति निरी सदिग्ध है। देश का समग्र परिवेश ही झूठमय हो गया है बनावटी हो गया है। सत्य सन्देहो के मातहत और सघन अन्धेरो के घेरो में घिर चुका है। बिना सत्य के जीवन तल पर न्याय का उद्घाटन असम्भव है। और जहा न्याय नहीं पनप पाता वहा लोकतन्त्र टिक पायेगा यह कहना बहुत कठिन है।

लोक आराधना की परिणति इससे कम कभी नहीं हो सकती कि सम्पूर्ण शासन तन्त्र चरित्रवान ही उसके वाहक तप, त्याग और दीक्षा के उच्च आचरण बल से राष्ट्र का गौरव बढाने वाले हो और समाज के समक्ष अपने उदात्त निष्ठायुक्त दीक्षा का परिचय देने वाले हो। शासन यदि मानवीय उच्च चरित्र और उदात्त निष्ठा से किसी भी दशा मे चूकता है और मूल्यो का क्षरण होने देता है तो इस अवस्था मे न केवल राज्य का ही क्षरण होगा बल्कि समूचा समाज भी उससे उत्प्रेरित होकर पथभ्रष्ट हो जाएगा। भारतीय राजनीति के काली क्षितिज पर मडराने वाले इन नक्षत्रो ने दिशा विहीन खोखली राजनीति के नाम पर अपनी ढापली बजा कर भारत की वास्तविक छवि को धूमिल किया है। जन सेवा के नाम पर केवल सत्ता और सम्पत्ति के लोलुपो ने इस देश में टका सस्कृति को अपनाया है। त्याग तप और दीक्षा जो इस भूमि के जीवन का मूल आधार है वह इन्हे छू तक नही गया है। उसे हर दशा और दिशा मे मिटाने का सकल्प लेकर इन्होने भावना से लेकर सामान्य राशन तक के क्षत्र को विकृत अव्यवस्था से भर दिया है। अरबी धन की सहायता से देश के किन्हीं क्षत्रो मे झोपडो को गिराकर और उनके स्थान पर पक्के आवास खड़ करने का निश्चय लेकर इन्होने राष्ट के स्वाभिमान को परकीयो के हाथ बेच देने का षडयन्त्र रचा है।

स्थिति बडी भयावह है सम्पूर्ण देश की धमनियो मे सत्य न्याय तप त्याग और दीक्षा और उनसे अन्वित नैतिकता की घोर उपेक्षा है। यह उपेक्षा न केवल किसी भी तन्त्र को बल्कि किसी भी देश समाज और सस्कृति को परी तरह ध्वस्त कर देने मे पूर्ण समर्थ है।

(भारत कस्याण मच की ओर से)

## अजमेर शताब्दी के सेवाव्रती कार्यकर्ता सम्मानित होगे

नई दिल्ली, अजमेर शताब्दी के सेवाव्रती कार्यकर्ताओ का अभिनन्दन समारोह रविवार 22 जनवरी दोपहर 2 बजे आर्य नेता श्री राम चन्द्र विकल की अध्यक्षता मे आर्य समाज अनारकली (मन्दिर मार्ग) मे होगा।

दिल्ली शताब्दी समिति व केन्द्रीय आर्य युवक परिषद दिल्ली के सयुक्त तत्वावधान मे आयोजित इस कार्यक्रम में श्री दरबारी लाल श्री राम लाल मलिक श्री सर्व पाल श्री क्षितीश वेदालकार, श्री देवराज बहल श्रीमति प्रकाश महेन्द्रु श्री सभा को सम्बोधित करेंगे।

—चन्द्र मोहन आर्य

बाल जगत्–

# बच्चों के झगड़े कैसे निपटें

ले—श्री सुरेन्द्र मोहन सुनील विद्यावाचस्पति दिल्ली

( गताक से आगे )

सभी बच्चे एक जैसे होते हैं। जब आपस मे खेलते हैं तो उन्हे अपना धम जाति अमीर-गरीब का भेद भाव नही रहता, वे तो बस अपने खेल मे मगन रहते हैं। बाल मनो वैज्ञानिको के अनुसार आपस मे खेलते समय बच्चो मे झगडा हो जाना अत्यन्त स्वाभाविक प्रक्रिया है लेकिन बच्चो के झगड हम बड़ो जैसे नहीं हुआ करते।

बच्चे झगडा करने के कुछ मिनटो बाद हसने खेल जाते हैं और जिससे उन्होने अभी अभी झगडा किया है उसे फिर से मित्र बनाते उन्हे देर नही लगती। बच्चे लडाई झगडो का तनाव झसने की पीडा से सवथा मुक्त हैं इसलिए कहा जाता है कि बचपन आदमी को भगवान की अनूठी देन है। लेकिन मूल झगडा वहा आरम्भ होता है जब बच्चो के झगडो मे बड अनावश्यक हस्तक्षप करने लगते हैं।

बच्चो के झगडो मे प्राय माता पिता अपने बच्चे का ही पक्ष लेते हुए हस्तक्षप करते हैं और बच्चे को लेकर पडौसी से झगडा मोल ले लेते हैं ऐसा नहीं करना चाहिए।

भोले—भाले बच्चो के निश्छल झगडो को बहुत खूबसूरती से निपटाने के अनेक तरीके हैं जिन्हे सभी अभिभावको को अपनाना चाहिए।

एक दिन हमारी पडोसिन का शरारती लडका भागता हुआ आया और अपनी माँ की ओट मे छुपने लगा। पडोसिन कुछ माजरा समझ पाती इससे पहले ही एक महिला गुस्से मे बेहिसाब गालिया बकती हुई अपने बच्चे को लेकर पडोसिन के पास आई।

महिला के बच्चे के सिर से खून बह रहा था। दरअसल पडोसिन के लडके ने खेल खेल मे उसके सिर पर पत्थर दे मारा था। पडोसिन ने फौरन उसके बच्चे को गोद में उठा लिया और आवाज देकर घर से टिचर तथा डैटोल मगवाया। घाव को साफ कर डैटोल और टिचर लगा कर उसके पटटी बाधी और बहुत आत्मीयता से बच्चे के सिर पर हाथ फर कर उसे प्यार किया। गालिया बने वाली महिला अब चुप हो चुकी थी और पडोसिन का आभार मान रही थी। पडोसिन ने उसके लडके से बड स्नेह भरे शब्दो मे कहा— बेटा आज इसके पापा को आने दो। इसकी वो पिटाई कराऊगी कि सब शरारत भूल जाएगा।

इस मृदु व्यवहार से लडके की मा पर इतना असर हुआ कि वह पड सिन से आग्रह करती हुई बोली— बहिन यह तो बच्चे हैं खेल खेल मे चोट लगती ही रहती है। आप अपने पति से इसका जिक्र न करना नही तो नाहक वह आप के बच्चे को पीटगे।

देखा आपने यह है आत्मीयतापूर्ण व्यवहार से बच्चो के झगडो को आसानी से निपटाने का सरल और समझदारी पूर्ण तरीका।

यदि इसी तरह से माताओ बहनो मे समझदारी आ जाए तो घर स्वग बन जाए।

अन्यो अन्यमभिहयत

वेद कहता है। एक दूसरे से ऐसे प्रेम करो जैसे गाय अपने नव जात बछड से प्यार करती है। गाय और बछड का प्यार बडा प्रसिद्ध प्यार है।

पास पडोस मे भी एक दूसरे से प्यार करो और बच्चो को भी प्यार करना सिखाओ।

# आर्य प्रान्तीय महर्षि निर्वाण शताब्दी समिति का चुनाव

प्रधान—श्री सत्यानन्द मुञ्जाल। उपप्रधान—सर्वश्री तुलसी दास, जेठवानी श्री महेन्द्रपाल शर्मा मनोहर लाल आनन्द दीवा। राजेन्द्र कुमार स्वरूपनारायण बजाज शान्तिलाल हस।

महामन्त्री—श्री आशानन्द जी आर्य।

मन्त्री—श्रीमती कमला आर्या श्रीमेहता देवराजश्री श्री ओमप्रकाश पासी।

कोषाध्यक्ष—श्री ओम प्रकाश डावरवार।

उप मन्त्री—सव श्री देवराज कुमार, सत्य भूषण वालिया सत्यपाल सूद कृष्ण कुमार मंगल मदन मोहन अग्रवाल, ज्ञान प्रकाश वोहरा रणवीर भाटिया एम सी भारद्वाज बैद्य बैनी, प्रसाद वेद प्रकाश श्रीमती प्रकाश वती—श्रीमती कान्ता मीर।

लेखा निरीक्षक—श्री अयोध्या प्रकाश।

भण्डारी—प्रि ओम प्रकाश टण्डन—श्री रामजी दास।

( 3 पृष्ठ का शेष )

हिन्दी में दिए जाते हैं। ऐसी स्थिति मे यदि पजाब मे हिन्दी का गला घोटने का प्रयास किया गया तो फौज म भी पजाबियो की संख्या कम होती जाएगी।

जब हम यह कहते हैं कि हिन्दी को शिक्षा का माध्यम बनाने पर कोई पाबन्दी न लगायी जाए तो हम केवल यही नही कहते कि केवल हिन्दी को ही शिक्षा का माध्यम बनाया जाए। हम मानते हैं कि कुछ लोग अपने बच्चो का माध्यम पजाबी बनाना चाहते हैं। वास्तविकता तो यह है अब अग्रेजी को शिक्षा का माध्यम बनाने का रिवाज बढ गया है। अब तो बड बड पजाबी समथक अपने बच्चो को अग्रेजी म शिक्षा दिला रहे हैं। कई बड बड अकाली घरानो म बच्चों के साथ बातचीत अग्रेजी मे होती है। यह केवल इसलिए कि जो लोग कहते हैं कि उनकी मात भाषा पजाबी है उन्हे भी मालम है कि पजाबी के माध्यम म उनके बच्चे प्रगति नही कर सकते। अपने बच्चो को वह हिन्दी पढाना नही चाहते। इसलिए अग्रेजी को शिक्षा का माध्यम बनाकर उन्हे पढाते हैं। इसलिए हम कहते हैं कि शिक्षा के माध्यम पर पाबन्दी नही होनी चाहिए। जो पजाबी को शिक्षा का माध्यम बनाना चाहते हैं शौक से बनाए। हमे इस पर कोई आपत्ति नही। लेकिन जो हिन्दी को अपनी शिक्षा का माध्यम बनाना चाहते हैं उन पर कोई पाबन्दी क्यों लगाई जाए।

इस सन्दभ मे यह तथ्य भी उल्लेखनीय है कि सुप्रीम कोट भी यह फसला दे चुका है कि पजाब मे ऐसे लोग मौजूद है जिनकी भाषा हिन्दी है चाहे वह फसला आय समाजियो के हक म दिया गया था। लेकिन हिन्दुओ के प्रश्न पर सभी हिन्दू एक है और वह सभी हिन्दी को ही अपनी मात भाषा समझते हैं। पजाबी इनकी बोली जरूर है भाषा नही है। इसलिए जरूरी नही है कि वह उनकी शिक्षा का माध्यम भी हो।

सरकार की इस नई नीति का केवल एक ही परिणाम होगा कि हिन्दी प्रेमी अपने बच्चो को स्कलो से निकाल ल और उन स्कलो म दाखिल द जहा शिक्षा माध्यम हिन्दी है। यदि पजाब मे ऐसे कुछ स्कल चल रहे हैं तो सुप्रीम कोट के फैसला के कारण। जहा तक सरकार का सम्बन्ध है वह काग्रेस की हो या अकाली दल की। हिन्दी के बारे मे सब का दृष्टिकोण एक ही है। जहा तक हिन्दी का सम्बन्ध है तो दोनो तरह की सरकारें हिन्दी की जड काटने का प्रयास करगी।

यदि पजाब क हिन्दी प्रेमी चाहते हैं कि इनके बच्चो की प्रगति के सभी द्वार खल जाए तो उन्हे चाहिए कि सरकारी स्कलो मे से अपने बच्चे निकाल लें और उन्हे प्राईवेट स्कूलो मे डाल दें जहा शिक्षा माध्यम हिन्दी है। इसलिए हिन्दी स्कलो मे पढने के बाद भी एक बच्चा दोनो भाषाए पढ सकेगा हिन्दी भी और पजाबी भी। चूकि पजाब मे हिन्दी को मिटाने के लिए एक सनियोजित षडयन्त्र हो रहा है इसलिए जरूरत है कि हिन्दी प्रेमी सरकार की इस चनौती को स्वीकार करें और उसे स्वीकार करने का एक तरीका यह भी है कि सरकारी स्कूलो का बहिष्कार कर दिया जाए आए और कोई भी हिन्दी प्रेमी अपने बच्चो को किसी ऐसे स्कल मे दाखिल न कराए जहा शिक्षा माध्यम हिन्दी न हो। हिन्दी प्रेमियो का यह अधिकार 1969 मे ही स्वीकार कर लिया गया था जब सच्चर फामूला बनाया गया था। हाल ही मे सन्त लौंगोवाल ने भी यह कहा है कि वह सच्चर फामूला मानने को तयार हैं। यदि ऐसा हो जाए तो पजाब की सारी समस्या ही हल हो जाए।

बहरहाल जहा तक सरकार के इस फसले का सम्बन्ध है कि सरकारी स्कूलों मे हिन्दी को शिक्षा माध्यम नही बनाया जा सकता। यह तो एक पल के लिए स्वीकार नही किया जा सकता। इसके जवाब मे हिन्दी प्रेमी केवल यही कर सकते हैं कि वे अपने बच्चो को सरकारी स्कलो से निकाल कर वहा डाल दें जहा शिक्षा माध्यम हिन्दी हो।

—वीरेन्द्र

# लुधियाना में मकर संक्रान्ति पर्व

आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार (साबुन बाजार) लुधियाना मे मकर सक्रान्ति का पर्व 14 1 84 को प्रात 8 30 बजे से धूमधाम से मनाया गया। यज्ञ के यजमान श्री बलदेव राज शर्मा परिवार सहित बने। यज्ञ प रामकुमार जी शास्त्री ने यज्ञ करवाया।

श्री गर्खैन आर्य डा वालिया, श्री राधा राम सरीन जी ने मकर सक्रान्ति के सम्बन्ध मे अपने 2 विचार दिए।

—डा वालिया
मन्त्री

## पंजाब में हिन्दी का गला घोंट दिया

# महात्मा गांधी का हिन्दी प्रेम

माता-पिता बचपन से ही बच्चो मे हिन्दी बोलने की आदत डाले तभी भारत वास्तविक रूप मे एक राष्ट्र बन सकेगा।

—इण्डियन आपीनियन (दक्षिणी अफ्रीका)
18 8 1906

मैं सब भाईयो मे टूटी फूटी हिन्दी बोलता हू क्योकि अग्रेजी बोलते मुझे ऐसा मालूम पड़ता है मानो मुझ इससे पाप लगता है। —अखिल भारतीय भाषा सम्मेलन लखनऊ
29 12 1916

जिस हिन्दी से महात्मा गांधी जी का इतना प्यार था। जो हिन्दी बोलना पुण्य और अग्रेजी बोलना पाप समझते थे। जो भारत को वास्तविक राष्ट्र बनाने में हिन्दी को मुख्य स्थान देते थे।

जो माता पिता से अपील करते हैं कि बचपन मे बच्चो को हिन्दी बोलने की आदत डालें तभी राष्ट्र समृद्ध होगा। आज उनका नाम लेवा सरकार हिन्दी का गला घोट रही है। अब पजाब मे काग्रेस की सरकार है और वह भी हिन्दी को समाप्त कर रही है।

सुविज्ञ क्षत्रो से ज्ञात हुआ है कि पजाब सरकार का एक परिपत्र स्कूलो कालेजो को प्राप्त हुआ है जिसमे कहा है कि (राजकीय) स्कूलो का कोई छात्र अब हिन्दी माध्यम से परीक्षा नही दे सकेगा। न हिन्दी माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने का इच्छुक बालक किसी राजकीय (सरकारी) स्कूल मे दाखिल किया जाएगा। सरकारी स्कूलो में केवल पजाबी माध्यम से पढने वाले बच्चो को ही प्रवेश दिया जाएगा।

पजाब के हिन्दी प्रेमियो मे उक्त परिपत्र से भारी रोष पाया जाता है। हिन्दी पजाब के हिन्दुओ की मातृ भाषा तथा प्रयाग की भाषा है और देश की राष्ट्र भाषा है। हिन्दी पर इस प्रकार का किया गया प्रहार पजाब के हिन्दू सहन नही करेंगे।

## २६ जनवरी गणतन्त्र दिवस पर—

# 'माँ ने तुम्हें पुकारा है'

ले—श्री राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना सुलतानपुर (उ प्र)

भारत की हिल रही धरा है आधी और तूफानों से,
रिक्त हुई है भारत धरणी त्यागी से बलिदानो से,
बुझा ज्ञान का दीपक छाया चारो ओर अधेरा है
दानवता के पद चिन्हों का आज लगा यह डेरा है
अट्टहास कर रहा, मनुजता बध करके हत्यारा है।
उठो सपूतो! नवल शक्ति से मा ने तुम्हें पुकारा है॥

पाखण्डो के चिन्ह अमर हो क्यो कर बढते जाते है,
घोर उलट कर सत्य धर्मो को निर्भय आज दिखाते हैं
नाम मात्र को रही न समता, छायी घोर विषमता है,
मनुष्यता मर गयी धरा पर, आज यही सब कहता है,
किसकी आज चुनौती आयी यह किसने ललकारा है।
उठो सपूतो! नवल शक्ति से मा ने तुम्हे पुकारा है॥

आज हिमालय के प्रागण मे, सोती क्यो तरुणाई है ?
नष्ट हुई क्यो आज धरा पर नव ऊषा अरुणाई है ?
महगाई भुखमरी गरीबी, का होता ताडव नर्तन,
राम—कृष्ण का देश सो रहा चिर निद्रा मे आज चिरन्तन
दया प्रेम परहित के भावो पर चल रहा कुठारा है।
उठो सपूतो! नवल शक्ति से, मा ने तुम्हे पुकारा है॥

विकृत हुए मस्तिष्क हमारे निश्चय यही अब ज्ञान से
भ्रष्ट पथो पर ही चलते हैं हम सब क्यो अभिमान से
फैल रही है आज चतुर्दिक घोर तिमिर की क्यो छाया ?
राणा तथा शिवा के पुत्रो ने कैसा पथ अपनाया ?
धर्म हमारा मनुष्यता का प्राणो से भी प्यारा है।
उठो सपूतो! नवल शक्ति में, मा ने तुम्हें पुकारा है॥

# सभा भवन निर्माणार्थ दान

सभा के नये भवन का काम आरम्भ हो चुका है दानी महानुभाव अतिथि भवन तथा यज्ञशाला निर्माणार्थ धन भेजे। निम्न दानी महानुभावो ने इस अवसर पर निम्न धन भेजा है।

स्त्री आर्य समाज श्रद्धानन्द बाजार (साबुन बाजार) लुधियाना ने 2500 रु पहले दिया था, अब 2500 रुपया बहिन कमला जी आर्या द्वारा सभा के कार्यालय जालन्धर मे प्राप्त हुआ है।

श्रीमती सुशीलादेवी जी मन्त्राणी आर्य समाज बस्ती पठाना ने 501 रुपये श्री पूर्णचन्द जी वानप्रस्थी द्वारा भिजवाया है।

अन्य बहिनो और भाईयो को भी इस पुण्य काम मे अपनी आहुति डाल देनी चाहिए।

आशा है और महानुभाव भी सभा को इसी प्रकार अपना सहयोग देगे।

—रामचन्द्र जावेद सभा महामन्त्री

# २७ से २९ फरवरी तक टंकारा में ऋषि मेला

आर्य जनता को सूचित किया जाता है कि महर्षि दयानन्द जन्म स्थली टंकारा मे ऋषि मेला आगामी 27 से 29 फरवरी को शिवरात्रि पर्व पर हर वर्ष की भान्ति इस वर्ष भी आयोजित किया जा रहा है। ऋषि मेले से एक सप्ताह पूर्व से वेदपारायण यज्ञ आरम्भ हो जाएगा। ऋषि मेले पर तीनो दिन पधारे हुए संन्यासी एव विद्वानो के उपदेश होंगे। टंकारा मे पधारने वाले समस्त ऋषि भक्तों के आवास एव भोजन का निःशुल्क प्रबन्ध ट्रस्ट द्वारा किया जाएगा। समस्त आर्य जनता से अनुरोध है कि इसके लिए अभी से तैयारी आरम्भ कर दें।

—रामनाथ सहगल
मन्त्री

# विडियो द्वारा निर्वाण शताब्दी प्रदर्शन

विडियो जो आज एक फिल्म का विषय बना हुआ है। उसके सदुपयोग से काफी धर्म प्रेमियो ने अजमेर में मनाई गई ऋषि दयानन्द निर्वाण शताब्दी का व्यापक रूप अपनी आखो से देखा इस सगठन और शक्ति को देख कर सभी आर्यजन हर्षित हुए। यह कार्यक्रम आर्य समाज लुधियाना रोड फिरोजपुर छावनी में रविवार और सोमवार को दिखाया गया।

कोई भी आर्य समाज यदि यह कार्यक्रम अपनी समाज में दिखाना चाहे तो कृपया श्री रामचन्द्र आर्य, प्रधान, आर्य समाज मन्दिर लुधियाना रोड, फिरोजपुर छावनी से सम्पर्क करें। पत्र आने पर वहां की आर्य समाज में दिखाने की व्यवस्था की जा सकती है।

मन्त्री
आर्य समाज

## तमिलनाडू के रामनाथपुरम मे हरिजनो के साथ क्या हुआ

# सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्ययन दल की रिपोर्ट

(गतांक से आगे)

### अध्ययन दल द्वारा नए बने मुसलमानो से मुलाकात

अध्ययन दल ने कतिपय इन नये बने हुए मुसलमानो से मुलाकात की। सबसे पहले एक मुस्लिम प्रचारक (मौलवी) से मिले। उसने अपना नाम मोहम्मद शरीफ बताया बाद मे उसने बताया।

वह श्री लंका से लौटकर आया है। वहा की राजधानी कोलम्बो मे उसका जन्म हुआ और पला। वह मकान न 29-5 मुकम्बाल रोड पेटटा मे रहता था, 1973 मे वह भारत आया। उसने कहा कि जन्म से वह सरवाई जाति का हिन्दू है और उसका हिन्दू नाम शक्ति ठगिवा है।

मुहम्मद शरीफ के कथनानुसार लंका में मुस्लिमो की जनसख्या 12 प्रतिशत है और वहा के शासन पर उनका जबरदस्त प्रभाव है। उसके विचार से सिंहली लोग स्वभावत मुस्लिम पक्षपाती हैं। श्री लंका में भी मुस्लिम लीग है। मोहम्मद शरीफ पत्रकार था और उसकी रुचि पुस्तक लेखन में थी। उसने बैंग्लोर के अरबी मदरसे मे अरबी को पढा और इस्लामी साहित्य को अरबी से तमिल मे अनुवाद किया।

जब अध्ययन दल के एक सदस्य ने उससे पूछा कि क्या इस्लामी गतिविधियो को वहा भारत के दक्षिण मे फैलाने का केन्द्र कोलम्बो है? तो मुहम्मद शरीफ ने इसका समर्थन या विरोध कुछ भी नही किया। परन्तु अन्त मे उसने इतना जरूर कहा कि खाडी देशो से प्राप्त धन को श्री लंका के रास्ते भारतीय मुसलमानो के बीच पहुचाया जाता है। विदेश से भारत में धन आने का यह (श्री लंका) प्रमुख रास्ता है। उसने यह भी बताया कि रामेश्वर में धर्मान्तरण का कार्य 1981 मे शुरू हुआ। धर्मान्तरण का क्रम, सबसे पहले मैसेमैंडे जिला रामनाथपुरम के कांग्रेस अध्यक्ष श्री एम एम के मोहम्मद इब्राहीम ने 25 मई 1981 को शुरू किया था। इसके अढाई महीने बाद तिरुनालवेली जिले के मीनाक्षीपुरम में सामूहिक रूप से इस्लामीकरण हुआ। इस सम्बन्ध मे कूरचाकूट निवासी श्री एस के वेलू ने कारण बताते हुए कहा—

पल्लार हरिजनो के एक परिवार मे इसके फलस्वरूप घर मे साम्प्रदायिक झगड शुरू हुए। पुलिस कार्यवाही के बाद यह मामला एकदम बढ गया और बहुत सारे व्यक्ति गिरफ्तार किए गए। यह अप्रैल 1981 की बात है। इन गिरफ्तार लोगो को मदुरै के कारागार मे विचाराधीन कैदी के रूप मे रखा गया। वहा पर सुल्तान नामक एक मुस्लिम कैदी आजीवन कारावास की सजा भुगत रहा था। वह जेल का वार्डन था और अपने दो अन्य साथियो स मिलकर इन विचाराधीन कैदियो से मिलता रहता था। एस के वेलू के कथनानुसार इनकी सख्या तीन सी थी। सुल्तान इन लोगो के बीच इस्लाम का प्रचार करता था और कहता था कि हिन्दुस्तान पर मुसलमानो ने राज्य किया है और यहा फिर मुस्लिम देश बन कर रहेगा। एक बार तुम हरिजन लोग हमसे मिल जाओ तो हिन्दुस्तान की हकूमत मे हिस्सेदार बन जाओगे। इस बात के बारम्बार कान मे पडने पर इन विचाराधीन लोगो पर असर हुआ। इन में से गोविन्दन नामक एक व्यक्ति की मदुरै के केन्द्रीय कारागार के अधीक्षक के साथ घनिष्टता थी। कम से कम यह बात फैलाई तो जरूर गई। इस बीच कुछ चालाकी चलकर गोविन्दन को मदुरै के सरकारी अस्पताल मे पहुचा दिया गया। वहा पर वह तीन महीने रहा और उसके बाद उसको शर्त पर रिहा कर दिया। गोविन्दन को उसके कुछ मित्र जो सम्भवत मुसलमान थे उसे मद्रास मे गये। वह वहा छह महीने रहा और इस दौरान मुसलमानो ने उसको खरीद लिया। हम से मिलने वाले गाव के निवासियो ने बताया कि गोविन्दन कुछ दिनो मे ही मालामाल हो गया।। 27 जून 1981 को वह खुल्लमखुल्ला मुसलमान बन गया और उसका नाम मोहम्मद सलीम हो गया। मौके पर जा करके और गवाही तथा प्राप्त सूचनाओ के आधार पर इन प्रभावित गावो मे औरो के अलावा निम्नलिखित मुसलमान धर्मान्तरण कार्य मे लगे हुए हैं। इनके नाम हैं—जुनावर मुस्तफा एम ए बी टी किलाकराई मे अध्यापक सैय्यद नरसिंह होम मदुरै के डाक्टर अब्दुल्ला। डा बलराज एम बी बी एस, जिसने बाद मे मुसलमान बनकर अपना नाम मोहम्मद इब्राहीम रख लिया।

श्री जलील तिरुनलवेली जिले में तेनकाशी के निकट जावनगर का ए के रिफाई। साबुल हमीद एम, एम ए तेनकाशी तमिलनाडू। इसी तिरुनलवेली जिले के कमौदा कुल्ची निवासी पीर मुहम्मद। तिरुनलवैल्ली जिले के पयासपत्तनम का निवासी अब्दुलहसन। मदुरै की सवन साई टेक्सटाइल्स कम्पनी का मोहउद्दीन पाशा। मदुरै के म्युनिसिपल काउन्सलर अफजार हुसैन। मदुरै मे नाथ बैली स्टीट का चूने का व्यापारी कमालद्दीन हाजिया (इस आदमी का नाम नेतू एलबू मुस्तफा भी है) यह व्यक्ति सुन्नत करता है और कराने वाले को पाच सौ रुपया भी देता है। मदुरै मुस्लिम लीग का अध्यक्ष बी एल यूसुफ। तोहीद जमात के मुख पत्र मासिक तौहीद का सम्पादक शकूर रहमान। इस्लामिक प्रचार सभा का मन्त्री कमाल उल्ल जायस दरवेश मोहउद्दीन। मद्रास मे लिंगचैटटी स्टीट स्थित बिस्मिल्ला ट्रेडिंग कम्पनी का मालिक नूर मुहम्मद जो इस क्षेत्र मे ससद सदस्य हैं समदु इत्यादि।

लगभग पाच महीने पहले काला धन रखने के अपराध मे नूर मुहम्मद गिरफ्तार हुआ था और उसे अगले दिन ही छोड दिया गया था। उसकी रिहाई इतनी जल्दी होने के पीछे कोई न कोई चमत्कार है। धर्मान्तरण की कार्यवाहियो के लिए निम्न संस्थाओ से धन प्राप्त होता है।

1 किलाकरै की ईस्टकोस्ट कस्ट्रक्शन कम्पनी —इसका मालिक बेकाबापा है।

2 स्लोब ट्रेडिंग कम्पनी का मालिक —ए एस एम शाहुल हमीद हाजिया है न 4 मौरिस स्ट्रीट मद्रास। उसकी कम्पनी की शाखा बम्बई मे भी है।

3 रामनाथपुरम का इण्डिया सिल्क हाऊस।

### विदेशो से माल की अफरा-तफरी के केन्द्र निम्न गावो मे है

1 चित्तरकोटै 2 पुडवालासे, 3 पर्मकुल्लम, 4 अलमन कुल्लम 5 स्तमकरै।

ये गाव रामनाथपुरम के उत्तर मे स्थित हैं और वहा मुस्लिम बहुमत है। रामनाथपुरम के दक्षिण मे निम्न गाव भी इस प्रकार की कार्यवाही के केन्द्र है।

1 सकारियाकोटै, 2 कारिकूटम्म किलाकुरै, 3 ईरवाडी 4 मक्काकुडी (इस गाव मे 15 अगस्त 1947 को पाकिस्तानी झण्डा लहराया गया था।

5 स्वलन गुलाम।

इनमे से किलाकरै तस्करो के छिपने के लिए स्वर्ग जैसा है। इस इलाके के चोटी के तस्कर सब मुसलमान हैं।

### अध्ययन दल का निष्कर्ष

नए मुसलमान बने लोगो सहित सब वर्गों से बातचीत करने और सर्वेक्षण करने के बाद अध्ययन दल इस परिणाम पर पहुचा है—

1 अपने धन के द्वारा धर्मान्तरण की कार्यवाही को बिना झिझक मुस्लिम वहा चला रहे हैं। ऐसा लगता है कि इस इलाके मे किसी का शासन नही है और हिन्दु और विशेषतया हरिजन पल्लारों को सामूहिक रूप से मुसलमान घोषित कर दिया जाता है। इन नव मुसलमों ने पूछने पर बताया।

(अ) उन्हे केवल इतना मालूम है कि उन्हे अच्छी दावत दी गई और एक हजार से लेकर चार हजार रुपया नकद दिया गया और उनके मुसलमान होने की घोषणा कर दी गई।

(क) इस्लाम ग्रहण करने के लिए क्या विधि की जाती है? इसका भी उन्हें पता नही है।

(ख) विवाहित स्त्रियो पर से इस्लाम ग्रहण करने से पहले ताली (मगलसूत्र) हटा लिया जाता है।

(2) इन नव मुस्लिमो से जब उनके नाम पूछे गए तो एकदम उनके मुह से पुराने हिन्दू नाम निकल पड़े। अपने मुस्लिम नामो को ठीक तरह से उच्चारण भी वे नही कर सकते।

(3) इन हरिजनो पल्लारो को मुसलमान बनाने में राजपत्रित मुस्लिम सरकारी नौकर भी शामिल हैं।

( ) मुसलमान बनाने के लिए कोलम्बो होकर खाडी का धन भारत में तस्करो द्वारा लाया जाता है।

(5) धर्मान्तरण नाम की किसी चीज की व्याख्या भारतीय संविधान में नहीं दी गई है। भारतीय संविधान की धारा 25 मे धर्मान्तरण का कोई प्रसग ही नही है। यह धारा अपने धर्म के अनुपालन प्रचार और आचरण करने की आजादी देती है। प्रचार का अर्थ धर्मान्तरण नहीं है। धारा 46 कमजोर वर्गों विशेषतया अनुसूचित जातियो और वर्गों को आश्वस्त करती है कि सब प्रकार के शोषण से उनकी रक्षा की जाएगी। वर्तमान मे इन नव मुस्लिमो को निम्न श्र णिया हैं—

(क) निर्धन, (ख) अज्ञानी (ग) बच्चे।

इनमे से गरीब वर्गों को धन के द्वारा और खाडी देशो मे रोजगार के आश्वासन से फसाया जाता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि अनुसूचित जातियों के बच्चो की अपरिपक्वता, गरीबी अज्ञान और नाजुक उम्र का फायदा मुसलमानों के असामाजिक तत्व उठाते हैं। ये लोग विदेशी ताकतो के दलाल का काम करते हैं।

(शेष पृष्ठ 8 पर)

## देहरादून में महात्मा वेदभिक्षु जी के लिए शोक

दयानन्द संस्थान नई दिल्ली के संस्थापक तथा बडी संख्या मे आर्य साहित्य प्रकाशित करने वाले वानप्रस्थी वेदभिक्षु जी के निधन पर शोक प्रस्ताव पारित कर आर्य समाज देहरादून ने दिवंगत के परिवार से संवेदना तथा सहानुभूति प्रकट की है।

### वृद्धतम आर्य का निधन

देहरादून—यहा के वरिष्ठतम आर्य समाजी महाशय कृष्णलाल जी का निधन 108 वर्ष की अवस्था मे हो गया।

आप दो दशक पहले अपने सर्राफे के व्यापार से अवकाश प्राप्त कर योगाभ्यास में निरत रहने लगे थे।

शव यात्रा मे आर्य समाज के पदाधिकारी तथा सदस्य और अन्य प्रतिष्ठित नागरिक बडी संख्या मे सम्मिलित हुए आर्य समाज मन्दिर मे प्रस्ताव पारित कर उन्हे श्रद्धांजलि दी गई।

—बलराज मन्त्री

## अमृतसर मे सामवेद महायज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज लारेंस रोड अमृतसर मे गत दिनो सामवेद महायज्ञ सम्पन्न हुआ जिसमे प शिवन रमण जी शास्त्री प सत्य स्वरूप आर्य सनिक ने वेद पाठ किया तथा प तेजपाल जी शास्त्री के प्रवचन हुए श्री अरुण महाजन की प्रेरणा से नवयुवको ने भी यज्ञ मे भाग लिया। सारा कार्यक्रम बडा सफल रहा।

—देवराज मन्त्री

## संस्कृत पढिए

दयानन्द मठ दन मोहल्ला जालन्धर मे प्रतिदिन साय 4 से 5 बजे तक श्री शास्त्री सालिगरामजी पराशर निःशुल्क संस्कृत पढाया करेगे और साथ ही वेद मन्त्रो का शुद्ध उच्चारण सिखाया करेंगे वेद पाठ करना भी प्रतिदिन सिखाया जाएगा। किसी भी आयु के सज्जन पढने के लिए आ सकते है।

इसलिए पढने के इच्छुक महानुभाव समय पर दयानन्द मठ जालन्धर मे पधारें

प्रबन्धक

(7 पृष्ठ का शेष)

## सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्ययन दल की रिपोर्ट

इनके उद्देश्य निम्न मालूम पडते है—

(1) भारत मे मुसलमानो की संख्या मे इजाफा करना है।

(2) इन क्षत्रो मे अपने बसे इरादे के लोगो के सहयोग से शान्ति और स्थिरता को दूर करना

(3) साम्प्रदायिक दगा उकसा कर हरिजन पल्लारो को हिन्दुओ से अलग करना।

(4) इन कार्यवाहियो को पैसा देने वाली व्यापारिक फर्में बुरे इरादो को छिपाने के लिए लगभग सभी राजनैतिक दलो को चन्दा देती हैं जिससे वे लोग चुप्पी साध रहे और इन लोगो की गर कानूनी कार्यवाही के विरोध मे अपनी आवाज न उठा सके।

सार्वदेशिक सभा के अध्ययन दल की राय

1 स्थिति और ज्यादा बिगडने से पहले तुरन्त प्रभावशाली कार्यवाही की जावे।

2 अज्ञानी लोगो के सामूहिक और बच्चो के धर्मान्तरण पर रोक लगा दी जावे।

(3) हरिजन पल्लार जैसे कमजोर वर्गों के धर्मान्तरण मे खाडी स्थित देशो मे रोजगार का आकर्षण काम करता है। नव मुस्लिम अपने परिवारो को यहा धन भेज रहे हैं जिसकी रकम हर औसत नव मुस्लिम एकमुश्त पच्चीस हजार रुपया है। सरकार को चाहिए कि धर्म के मामले मे इस प्रकार का आकर्षण तरन्त रोक दिया जाए।

(4) जो व्यापारी फर्में व्यक्ति तथा सरकारी कर्मचारी तस्करी और हरिजन पल्लारो को मुसलमान बनाने मे लगे हुए हैं उनको गिरफ्तार करके कडी सजाए दी जाय।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के इस अध्ययन दल की राय है कि हालात इतने बिगड चुके हैं कि इस मामले मे और देरी करने मे स्थिति काबू से बाहर हो जाएगी।

(क्रमश)



श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इस की स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

# आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 16 [illegible] 42, [illegible] माघ सम्वत् 2040 तदनुसार 29 जनवरी 1984 दयानन्दाब्द 159। एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपए

## [illegible] के अग्रदूत श्याम जी [illegible]

[illegible] जी [illegible] प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

कुछ लोग क्रान्ति की उपज होते हैं और कुछ लोग क्रान्ति के उत्प्रेरक होते हैं और कुछ लोग वे होते हैं जो क्रान्ति पैदा करने की कोशिश करते हैं। कई बार आस पास की घटनाएं भी एक व्यक्ति को प्रभावित करती हैं और वह अपने आपको उसी तरह ढालने का प्रयत्न करता है।

श्याम जी कृष्ण वर्मा उन लोगों में से थे जिन पर एक क्रान्ति ने न केवल प्रभाव ही डाला था अपितु जिन्होंने क्रान्तियों की चिन्गारियों को हवा भी दी थी। उनकी यह मान्यता थी कि देश गांधी जी के बताए हुए रास्ता पर चल कर स्वतन्त्र नहीं हो सकेगा। वह मानते थे कि देश को स्वतन्त्र कराने के लिए हर ढंग अपनाना उचित है। चूंकि वह अपने समय के एक उच्चकोटि के विद्वान थे और उन्होंने विश्व के कई दार्शनिकों की कृतियों का अध्ययन किया था, वह उनके विचारों से [illegible]

[illegible] तरह के [illegible] पश्चिमी [illegible] हर्बर्ट स्पेंसर ने उनको [illegible] किया था कि [illegible] का विरोध करना हर दृष्टि से केवल उचित ही नहीं है बल्कि अनिवार्य भी है। इस [illegible] विरोध न करने से केवल व्यक्ति की प्रतिष्ठा को ही ठेस नहीं पहुंचती बल्कि यह [illegible] के लिए भी घातक सिद्ध होता है।

अपनी इस आस्था को क्रियान्वित करने के लिए उन्होंने ब्रिटेन में न केवल इण्डिया होम रूल सोसाइटी की स्थापना की बल्कि ऐसे नौजवान भी तैयार किए जो अपने देश के लिए बड़े से बड़ा उत्सर्ग [illegible] को तैयार रहते थे। विनायक दामोदर सावरकर मदनलाल ढींगरा लाला हरदयाल और भाई परमानन्द उन्हीं में से थे। इस लिहाज से श्याम जी कृष्ण वर्मा इन सबके गुरु थे। वह न केवल अपने नौजवान साथियों में अंग्रेज के विरुद्ध भावना पैदा करते थे बल्कि वह उन्हें देश की आजादी की शमा के परवाना बनकर मरने के लिए तैयार भी करते थे। वह स्वयं अंग्रेजी व संस्कृत दोनों भाषा के ज्ञाता थे इसलिए वह आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में पढ़ाते भी रहे और जब उन्होंने वहां से विदा ली तो इस विश्वविद्यालय के कई प्राध्यापकों ने उनको श्रद्धांजलियां भी अर्पित की और कहा कि इस कोटि के योग्य व्यक्ति बहुत कम मिलेंगे।

**श्याम जी कृष्ण वर्मा संस्कृत व अंग्रेजी के विद्वान् उच्च कोटि के वकील कई भारतीय रियासतों के मन्त्री और भारत के स्वतन्त्रता-आन्दोलन [illegible] सूत्र थे।**

श्याम जी कृष्ण वर्मा का जन्म 4 अक्तूबर 1857 को कच्छ जिला के [illegible] [illegible] कृष्ण वर्मा [illegible] जी के पिता थी एक [illegible] स्तर के आदमी थे। वह अपने हाथों से मेहनत करके अपना और अपने परिवार का पेट पाल रहे थे। श्याम जी का जन्म 1857 में हुआ था और लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का जन्म इससे एक वर्ष पहले। यह वही समय था जब हमारे देश में पहली बार अंग्रेजों के विरुद्ध सेना ने क्रान्ति की थी। अंग्रेज इतिहासकारों ने इसको गदर का नाम दिया लेकिन हमारे देशभक्तों ने इसे आजादी की पहली लड़ाई कहा। चूंकि 1857 के बाद सैनिक क्रान्ति की जगह-जगह चर्चा होने लगी। इसलिए ज्यों-ज्यों श्याम जी बड़े होते गये वह भी यह कहानियां सुनते गये और उन पर भी इनका असर होता गया। उन दिनों जो किताबें स्कूलों में पढ़ाई जाती थीं उनमें 1857 के गदर की कहानियां लिखी गई थीं। जो भी लिखता था अपने दृष्टिकोण के अनुसार। इस तरह पढ़ने वाले बच्चों पर भी इनका प्रभाव होता था। 19वीं शती ने भारत को कई महान पुरुष व चोटी के देशभक्त और विद्वान् दिए थे।

दादा भाई नारोजी का जन्म 1825 में हुआ था। महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म इनसे कुछ समय पूर्व हुआ था। फिरोजशाह मेहता का जन्म 1845 में हुआ था। बाल गंगाधर तिलक 1856 में और श्याम जी कृष्ण वर्मा 1857 में पैदा हुए थे महात्मा गांधी 1869 में गोपाल कृष्ण गोखले 1866 में लाला लाजपतराय 1865 में, योगी अरविन्द 1872 में रवीन्द्रनाथ टैगोर 1861 में मोतीलाल नेहरू 1861 में और स्वामी श्रद्धानन्द 1857 में पैदा हुए थे।

अर्थात 1825 से लेकर 1875 तक [illegible] वर्ष हमारे देश में इतने प्रख्यात देशभक्त पैदा हुए थे जितने न इनसे पहले और न बाद में। इसी बीच 1857 का विद्रोह हुआ। इन्हीं दिनों श्याम जी वर्मा पैदा हुए। जब वह बड़े हुए तो इन्हें एक स्कूल में भर्ती करा दिया गया श्याम जी इस कदर तीव्र बुद्धि के थे कि वह तेज गति से शिक्षा के मैदान में बढ़ने लगे। इसलिए उन्हें एक और स्कूल में डाल दिया गया वहां वह अंग्रेजी भी पढ़ सके। उन्हीं दिनों उन पर मुसीबत का एक पहाड़ भी टूट पड़ा उनके पिता भी पहले इस स्थिति में न थे कि उन का सहारा बन सके। उनकी मां ही उनकी देखभाल करती थी लेकिन वह अभी दस वर्ष के थे कि उनकी मां स्वर्गवास हो गई। उनके पिता बम्बई में मजदूरी कर रहे थे। इस लिए उनका पोषण करने वाला कोई न था। सौभाग्य से उनकी नानी ने उन्हें सम्भाल लिया और उन्हें इस योग्य बना दिया कि वह अपनी शिक्षा जारी रख सके।

उस समय श्याम जी कृष्ण वर्मा को अपना भविष्य बहुत धूमिल दिखाई देता था। उनकी सहायता करने वाला कोई न था। एक तो वह उस शहर में रहते थे जो बहुत पिछड़ा हुआ था और वहां आगे बढ़ने के सभी रास्ते बन्द थे लेकिन कई बार व्यक्ति को स्वयं पता नहीं होता कि उसके भाग्य में क्या लिखा है। न ही श्याम जी को न ही उन के किसी समीपी सम्बन्धी को या किसी समीपी साथी को यह ख्याल आया होगा कि यह लड़का जो बड़ी कठिनाई से एक स्कूल में अपनी शिक्षा प्राप्त कर रहा है आगे चलकर किसी दिन संस्कृत अंग्रेजी का एक चोटी का विद्वान पहला भारतीय जो आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से एम ए पास करेगा और एक बैरिस्टर बनेगा एक के बाद एक कई भारतीय रियासतों का मन्त्री नियुक्त होगा 1905 से लेकर 1914 तक अपने देश को आजाद कराने का एक ऐसा आन्दोलन पहले लन्दन फिर पेरिस में चलाएगा जिसकी गूंज सारी दुनिया में सुनाई देगी।

श्याम जी वर्मा के पास कुछ न था सिवाय उनकी तीव्र बुद्धि के उसकी मेहनत उसकी ईमानदारी के वह एक छोटे से कस्बा एक गांव में रहता था। उसका सहारा केवल उसकी नानी थी। पिता बम्बई में एक छोटी सी दुकान चला रहे थे [illegible] की कोई सहायता न कर सकते थे।

लेकिन श्याम जी अपना [illegible] निश्चित करने का प्रयत्न कर रहा था। उसे स्वयं भी मालूम न था कि एक दिन वह शिक्षा प्राप्त करने के लिए लन्दन के सबसे बड़े विश्वविद्यालय में पहुंच जाएगा और फिर अपने देश का क्रान्तिकारी बन जाएगा

यह सब कुछ कैसे हुआ इसकी भी एक रुचिकर कहानी है उसके पिता ने अभी तक उसकी ओर ध्यान न दिया था लेकिन उन्हें यह मालूम था कि उनका बेटा अत्यधिक तीव्र बुद्धि लिए है। वह उस पर गर्व भी करता था इसी बातचीत ने श्याम जी कृष्ण वर्मा के भाग्य का द्वार खोल दिया वह कैसे? यह आगामी अंक में पढ़ें।

(क्रमश)

# प्रार्थना कब प्रार्थना बनती है (2)

ले —श्री यशपाल जी आर्य बन्धु मुरादाबाद

(गताक से आगे)

गत लेख मे हमने यह बताया था कि प्रार्थना तब प्रार्थना बनती है कि जब यह पुरुषार्थ पूर्वक की जाती है। साथ ही यह भी कि प्रार्थना हृदय से की जाती है तभी वह यथार्थ प्रार्थना बनती है। इस सबध मे आगे यह कहना है कि प्रार्थना तब प्रार्थना बनती है कि जब हम निष्पाप होकर प्रार्थना करते हैं। क्योकि हमारा पापो मे लिप्त होकर प्रार्थना करना सर्वथा बेईमानी एव निरर्थक है। हा पापो से बचने तथा पापमय जीवन से उभरने के लिए प्रार्थना का सहारा लेना उचित एव समीचीन है। पापमय जीवन से उभरने एव पापो से बचने के लिए ईश्वर से सहाय की इच्छा न की जाएगी तो फिर और किससे की जाएगी? किन्तु यदि हम प्रार्थना तो निष्पाप होने के लिए करें पर स्वय पापो को छोडें नहीं तो हमारी प्रार्थना प्रार्थना नहीं होगी। वह तो एक लोक दिखावा अथवा छल प्रपच ही होगा। वस्तुत प्रार्थना है ही निष्पाप होने के लिए। यदि प्रार्थना करते हुए भी हम निष्पाप नहीं हो रहे तो निश्चय ही हमारी प्रार्थना अथवा हमारा आचरण दोषपूर्ण है। अपने दुर्गुणो एव दोषो को जितना हम स्वय जानते हैं उतना शायद कोई और नहीं। अत अपने दुर्गुणो एव दोषो की सम्यक पडताल करते हुए उन्हे छोडने के लिए स्वय दृढ प्रतिज्ञ एव कटिबद्ध होते हुए यदि हम ईश्वर से प्रार्थना सहाय की इच्छा करके प्रार्थना करते हैं तो प्रार्थना वास्तविक प्रार्थना बन जाती है। ऐसी प्रार्थनाए हमारी पाप वासनाओ एव वृत्तियो का शोधन कर हमारे दुर्गुण एव दोषो को हटाती है कहा भी है—

विषय का विषधर जब डसे
तू ओम जडी को चबा।
है ना दमन यह औषधि
तू ढूढन और न जा।

और

जब ही नाम हृदय धरियो
भयो पाप को नाश।
जैसे चिनगारी आग की
परे पुरानी घास।

जिन प्रार्थनाओ मे हम स्वय को पतित एव पापी कह कहकर प्रभु को पतित पावन सिद्ध करने का यत्न करते रहते हैं वे प्रार्थनाए भी वास्तविक प्रार्थनाए नही। क्योकि जैसा कि प चमूपति जी का कथन है कि—जिन प्रार्थनाओ मे जीव अपने आपको पतित तथा पापी कहे और परमात्मा को पतित पावन और नित्य प्रति एक ही से शब्दो मे गिडगिडा कर कहा करे हे भगवन! तू मुझ ऊपर उठा पर स्वय उठने का यत्न न करे वह प्रार्थनाए निरर्थक हैं। यदि आज भी मैं उतना ही पापी हू जितना कल था तो ईश्वर ने मेरी प्रार्थना नही सुनी और मेरा यह भ्रम है कि वह पतितोद्धारक है निर्मूल सा है। (देखें सन्ध्या रहस्य पृष्ठ 15) वस्तुत पाप का स्मरण पश्चाताप के लिए होना चाहिए। अपने आपको यो ही पापी कहते रहना कोई अच्छी बात नही। हमे सोचना चाहिए कि यदि हम हमेशा पापी ही हैं तो फिर उस निष्पाप प्रभु से हमारी मित्रता कैसे सम्भव है और ऐसी स्थिति मे उसकी सहाय की आशा भी कैसे कर सकते हैं? इसीलिए किसी कवि ने यथार्थ कहा है कि—

का मुख ले विनती करू
लाज आवत है मोहे।
तुम देखत अवगुण करे,
कस पाऊ तोहे।

स्पष्ट है कि प्रार्थना एव निष्पापता का अति घनिष्ठ सम्बन्ध है। अत प्रार्थना तभी प्रार्थना है कि जब वह निष्पाप होकर की जाती है।

प्रार्थना तभी प्रार्थना है कि जब वह विवेक पूर्वक की जाती है। अविवेकपूर्वक की गई प्रार्थना प्रार्थना नही। अत हमे प्रार्थना सदैव विवेकपूर्वक करनी चाहिए। अविवेक पूर्वक की गई प्रार्थना तो प्रार्थना का उपहास मात्र है। हमे असम्भव एव अस्वाभाविक बातो के लिए प्रार्थना कभी नही करनी चाहिए। महर्षि दयानन्द का कथन है कि—ऐसी प्रार्थना कभी न करनी चाहिए और न परमेश्वर उसको स्वीकार करता है कि जैसे हे परमेश्वर! आप मेरे शत्रुओ का नाश मुझको सबसे बडा मेरी ही प्रतिष्ठा और मेरे अधीन सब हो जाए इत्यादि, क्योकि जब दोनो शत्रु एक दूसरे के नाश के लिए प्रार्थना करें तो क्या परमेश्वर दोनों का नाश कर दे? जो कोई कहे कि जिसका प्रेम अधिक उसकी प्रार्थना सफल हो जावे तब हम कह सकते हैं कि जिसका प्रेम न्यून हो उसके शत्रु का भी न्यून नाश होना चाहिए। ऐसी मूर्खता की प्रार्थना करते करते कोई ऐसी भी प्रार्थना करेगा हे परमेश्वर! आप हमको रोटी बनाकर खिलाइए मकान मे झाडू लगाइए वस्त्र धो दीजिए और खेती बाडी भी कीजिए (देख स प्र सप्तम समुल्लास) इतना ही नही महर्षि का तो यहा तक कथन है कि—परमेश्वर भी सबके उपकार करने की प्रार्थना मे सहायक होता है हानि कारक कर्म मे नही। अत प्रार्थना तभी प्रार्थना है कि जब वह विवेक पूर्वक की जाती है।

प्रार्थना करते समय इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि हमारी प्रार्थना उलाहनो आदि से सर्वथा रहित हो। क्योंकि उसे निर्दयी निष्ठुर तथा बेरहम आदि उलाहने देने से क्या वह हम पर मेहरबान अथवा दयालु हो जाएगा? साथ ही हमें प्रार्थना सदैव विश्वासपूर्वक करनी चाहिए। विश्वास रहित प्रार्थना से प्रार्थना न करना ही अच्छा है। अत प्रार्थना तभी प्रार्थना है कि जब वह उलाहनों से रहित एव विश्वास से पूरित है। जब हम पुरुषार्थ पूर्वक निष्पाप होकर विश्वास के साथ विवेक पूर्वक हृदय से प्रार्थना करते हैं तब हमारी प्रार्थना सच्ची प्रार्थना बन जाती है। तब वह हृदय की तडपन एक सच्ची पुकार बन जाती है कि जिसमे कर्म और ज्ञान दोनों का सच्चा मेल होता है। हमारे कर्म हमारी प्रार्थना के अनुकूल होते हैं। हम स्वय प्रयत्न करते हुए प्रभु से सहाय की इच्छा करने लगते हैं। यही प्रार्थना का चरम उत्कर्ष एव यथार्थ विधि है। यदि हम कर पाये तो।

—

# सभा से सम्बन्धित आर्यसमाजों के अधिकारियों की सेवा में

जैसाकि आपको सभा कार्यालय की ओर से सूचित किया जा चुका है कि सभा का वार्षिक साधारण अधिवेशन 19 2 84 को फगवाडा मे हो रहा है। उसी दिन सभा के अधिकारियो और अन्तरग सभा का निर्वाचन भी होगा। पिछली परम्परा के अनुसार प्राय नव निर्वाचित प्रधान का यह अधिकार दे दिये जाते हैं कि वह अधिकारियो और अन्तरग सदस्यो को मनोनीत कर दे।

मैं पिछले कुछ समय से यह अनुभव कर रहा हू कि केवल वही अधिकतर व्यक्ति सभा के काम मे रुचि लेते हैं जो सभा प्रधान द्वारा मनोनीत हो जाते हैं शेष सदस्य महानुभाव सभा की ओर से उदासीन रहते हैं। यह स्थिति सन्तोषजनक नही है। इसलिए मेरा सुझाव यह है कि जो जिलावार 14 सदस्य अन्तरग सभा में लिए जाते हैं वह इस बार अपने अपने जिला के प्रतिनिधि सदस्यो द्वारा निर्वाचित किए जाए। इस प्रकार प्रतिनिधियो मे सभा की व्यवस्था मे अधिक रुचि हो जाएगी और जो इस प्रकार से निर्वाचित होकर आयेंगे उनका उत्तर दायित्व भी बढ जाएगा। वैसे तो सभा के सदस्य महानुभावो का अधिकार है कि यदि वे चाहे तो सब अधिकारियो अन्तरग सदस्यो और सार्वदेशिक सभा के लिए प्रतिनिधियों का निर्वाचन स्वय कर सकते हैं। किन्तु उसमे समय अधिक लग जाता है। इसलिए यह सारे अधिकार सभा प्रधान को दे दिए जाते हैं।

परन्तु मैं समझता हू कि सभा को अधिक सक्रिय बनाने के लिए कुछ सदस्यो महानुभाव अपने दूसरे सहयोगियो का भी समर्थन प्राप्त करके अन्तरग सभा के सदस्य बन। इसलिए प्रत्येक जिला से जो प्रतिनिधि इस बार निर्वाचित होकर आये हैं उनमे से जो निर्वाचन के द्वारा अन्तरग सभा मे आना चाहते हैं वह अपने जिला के किसी एक प्रतिनिधि द्वारा अपना नाम प्रस्तावित कराके और किसी दूसरे प्रतिनिधि द्वारा अनुमोदन करवा कर 9 फरवरी 1984 तक रजिस्टर्ड पत्र द्वारा सभा के कार्यालय मे भेज द। जिस दिन साधारण सभा का अधिवेशन होगा प्रत्येक जिला के प्रतिनिधियो की अलग अलग सूची उन महानुभावो को दे दी जाएगी जिनके प्रस्तावित नाम सभा के कार्यालय मे पहुच चुके होंगे वे अपने अपने जिले के प्रतिनिधियो से अपने पक्ष मे लिखवा लें और सभा को दे देंगे। एक से अधिक प्रत्याशी होने की अवस्था मे जिन्हे अधिक मत प्राप्त होंगे उनके नामो की घोषणा अधिवेशन के बाद एक सप्ताह के अन्दर कर दी जाएगी। परन्तु एक जिला से केवल एक ही व्यक्ति निर्वाचित हो सकेगा।

इस प्रकार मेरे विचार में सभा के प्रतिनिधियों मे एक नया उत्साह पैदा होगा और सभा पहले से अधिक सक्रिय हो जाएगी। —वीरेन्द्र सभा प्रधान

सम्पादकीय—

# आर्य समाज का नया साहित्य (3)

इसी क्रम के पिछले लेख मे मैंने उस सत्यार्थ प्रकाश का वर्णन किया था जो आर्य समाज की जन्म शताब्दी के अवसर पर श्री प युधिष्ठिर जी मीमासक ने रामलाल कपूर ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित किया था। इस सम्बन्ध मे श्री युधिष्ठिर जी का जो पत्र मुझे प्राप्त हुआ है उसे मैं नीचे दे रहा हू ताकि पाठक महानुभावो को पता चल सके कि आर्य साहित्य के निर्माण मे आर्य जनता की ओर से कोई प्रोत्साहन नहीं मिल रहा। सत्यार्थ प्रकाश के शताब्दी संस्करण के विषय मे सारी स्थिति का वर्णन करते हुए श्री प युधिष्ठिर जी मीमासक लिखते हैं—

रामलाल कपूर ट्रस्ट ने आर्य समाज शताब्दी के अवसर पर जो सत्यार्थ प्रकाश छपवाया था उस संस्करण की भी आर्य समाज शताब्दी समारोह मे केवल 125 प्रतियां बिकी थी दो हजार छपवाया गया था। कमीशन काटकर लागत मूल्य से भी कम पर बिक्री का विज्ञापन दिया गया। परन्तु गत आठ वर्षों मे इसकी केवल एक हजार या ग्यारह सौ प्रतियां ही निकली हैं अभी भी लगभग 900 प्रतियां स्टाक मे पड़ी हैं।

जो कुछ पण्डित युधिष्ठिर जी ने लिखा है वह अत्यन्त निराशा जनक है और उन्होंने जो कुछ लिखा है ठीक ही लिखा है। इसमे सन्देह नही कि आर्य जगत मे स्वाध्याय की प्रवृत्ति दिन प्रतिदिन कम हो रही है। इसे आप वर्तमान परिस्थितियो की विडम्बना कहें कि अब जब कि आर्य समाज के साहित्य के प्रकाशन का स्तर कुछ ऊंचा हो रहा है तो आम लोगो मे स्वाध्याय की प्रवृत्ति कम हो रही है। इसलिए जो लोग कुछ लिखते हैं तो उनका उत्साह भी समाप्त हो जाता है यह एक ऐसा विषय है जिस पर गम्भीरतापूर्वक विचार होना चाहिए इस पर मैं आगे चलकर अपने विचार आर्य जनता के सामने रखूंगा।

श्री रामलाल कपूर ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका वेदवाणी के दयानन्द विशेषांक की ओर भी मैं पाठको का ध्यान दिलाना चाहता हू इसमें कई विद्वानो के लेख हैं और महर्षि दयानन्द के हस्तलिखित कई पत्र भी प्रकाशित किए गए हैं साथ ही महर्षि दयानन्द सरस्वती कहां और कब इस शीर्षक से प्राय उनकी सारी डायरी दे दी गई है। इसी के साथ ईस्वी, सन मास तिथि और विक्रमी सम्वत मास और तिथि का तुलना पत्र दिया गया है। मैंने एक बार पहले भी लिखा था कि श्री प युधिष्ठिर मीमासक वैदिक धर्म आर्य समाज और महर्षि दयानन्द सरस्वती इनके विषय मे जो यह साहित्य प्रकाशित करते हैं उसके लिए वह जो परिश्रम करते हैं बहुत कम व्यक्ति करते होंगे। उच्चकोटि के ग्रन्थ लिखने वाले तो और भी कई मिल जाएंगे परन्तु अनुसन्धान के द्वारा ऐतिहासिक घटनाओ को जनता के सामने रखना यह पंडित युधिष्ठिर जी मीमासक का ही काम है। इसके लिए न केवल वह परन्तु श्री रामलाल कपूर ट्रस्ट के सदस्य महानुभाव भी आर्य जनता के धन्यवाद के पात्र हैं।

एक और संस्था जो समय 2 पर आर्य समाज और विशेष कर महर्षि दयानन्द के विषय मे साहित्य प्रकाशित करती रहती है वह है होशियारपुर का विश्वेश्वरानन्द वैदिक संस्थान। इस संस्था की ओर से विश्व ज्योति नाम की एक पत्रिका प्रकाशित होती है। स्वर्गीय आचार्य विश्व बन्धु जी शास्त्री ने इसे प्रारम्भ किया था। यह समय समय पर कई प्रकार के विशेषांक प्रकाशित करते रहते हैं। दयानन्द निर्वाण शताब्दी के सम्बन्ध मे इन्होंने विश्व ज्योति के दो अंक निकाले हैं और दोनो ही दो दो सौ ढाई ढाई सौ पृष्ठो के हैं इनमें भी बड़े 2 विद्वानो के लेख दिए गए हैं। प्राय सबका सम्बन्ध महर्षि दयानन्द और आर्य समाज से है। इससे पहले भी भिन्न 2 विषयो पर इस संस्था की ओर से विशेषांक प्रकाशित होते रहे हैं। आर्य समाज के सम्बन्ध उच्चकोटि के ग्रन्थ तो और भी कई संस्थाओ ने प्रकाशित किए हैं परन्तु इतनी बड़ी बड़ी पत्रिकाएं विश्वेश्वरानन्द संस्थान ने ही प्रकाशित की है सारे देश मे सब प्रान्तो मे प्रतिनिधि सभाएं हैं परन्तु किसी भी सभा ने इस प्रकार का साहित्य प्रकाशित नही किया जैसा कि रामलाल कपूर ट्रस्ट और विश्वेश्वरानन्द संस्थान ने किया है। कुछ और साहित्य भी प्रकाशित किया गया है इसके विषय मे आगामी अंक मे लिखूंगा। परन्तु जिस चिन्ताजनक स्थिति की ओर मैं आर्य जनता का ध्यान दिलाना चाहता हू वह यह कि आर्य समाज का नया साहित्य तो बनाने का प्रयास हो रहा है। बड़े बड़े विद्वान और कई संस्थाएं इसमे लगी हुई हैं। परन्तु यह साहित्य उतना बिकता नहीं जितना बिकना चाहिए। इस विषय में आगे चल कर विचार किया जाएगा। परन्तु यदि आर्य मर्यादा के पाठक इस विषय में अपने विचार हमे भेजें तो हम उन्हें सहर्ष प्रकाशित करेंगे। प्रश्न यही है कि आर्य समाज के साहित्य का प्रचार कैसे किया जाए?

—वीरेन्द्र

# महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी

महर्षि दयानन्द सरस्वती का देहान्त नवम्बर 1883 मे अजमेर मे हुआ था। इसलिए उनकी निर्वाण शताब्दी 3 नवम्बर से 6 नवम्बर तक अजमेर मे मनाई गई थी। लेकिन आर्य समाज एक अन्तर्राष्ट्रीय संस्था है। इसलिए जहां 2 भी उसकी कोई शाखा है वहां निर्वाण शताब्दी मनाई जाएगी। यह क्रम दो वर्ष तक चलता रहेगा और दिसम्बर 1985 मे दिल्ली मे महर्षि की बलिदान शताब्दी मनाई जाएगी।

इसी सिलसिले मे अब पंजाब, हिमाचल और हरियाणा मे भी बड़े पैमाने पर शताब्दी सम्मेलन किए जा रहे हैं। हरियाणा तथा हिमाचल मे तो जून मे ये सम्मेलन होंगे। लेकिन पंजाब मे 11 12 और 13 मई को लुधियाना मे महर्षि निर्वाण शताब्दी मनाई जाएगी। यद्यपि यह शताब्दी मनाने का निर्णय आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने किया था लेकिन यह शताब्दी सारे आर्य जगत की ओर से मनाई जाएगी अर्थात पंजाब मे आर्यसमाज की दोनो सभाएं मिलकर इसे मनाएंगी हमारी यह भी कोशिश है कि यह केवल आर्यसमाज का ही समारोह न रहे सारे हिन्दुओ का साझा सम्मेलन बन जाए। इस सम्बन्ध मे मैं पंजाब सनातन धर्म सभा के नेताओ से बात कर चुका हू। और उन्होंने अपना पूरा सहयोग देने का हमें विश्वास दिलाया है। इसके बाद जैन सभा और अन्य सभाओ के अधिकारियो से भी हम मिलेंगे। हमारी यह विशेष रूप से कोशिश होगी कि जितनी भी हरिजन संस्थाएं हैं वे बाल्मीकि हों रविदासी हों या कोई और हम चाहेंगे कि सब इस मे शामिल हों। दलित उद्धार का बीड़ा सबसे पहले महर्षि दयानन्द ने ही उठाया था। और उन्होंने ही कहा था कि जन्म के आधार पर किसी को अछूत नही समझना चाहिए। प्रत्येक मनुष्य अपने कर्म से ही सब कुछ बनता है इस लिए जन्म के आधार पर छूतछात या जातपात समाप्त होना चाहिए। पिछत एक सौ वर्ष मे हम बहुत आगे निकल आए हैं। अब तो हमारे संविधान मे भी छूतछात को एक अपराध घोषित किया गया है। आर्य समाज किसी को हरिजन नहीं समझता किसी को अछूत नहीं समझता। हरिजन का सही अर्थ लिया जाए तो परमात्मा का जो बेटा है वही हरिजन है। इस दृष्टिकोण से हम सब हरिजन हैं। यही कारण है कि आर्य समाज इस भेदभाव को नही मानता। इन परिस्थितियो मे यह और भी आवश्यक हो जाता है कि जो भाई अपने आप को हरिजन कहते हैं वे महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी मे शामिल होकर उस महापुरुष के चरणो मे अपनी श्रद्धाञ्जलि भेंट करें जिनकी बदौलत हमारे भाई छूतछात की बुराई से मुक्त हो सके हैं।

लुधियाना मे इस शताब्दी का सारा प्रबन्ध करने के लिए एक प्रारम्भिक समिति बना दी गई है। श्री सत्यानन्द मुञ्जाल इसके अध्यक्ष बनाए गए हैं। वर्तमान परिस्थितियो मे उनसे बेहतर हमें इस काम के लिए और कोई नही मिल सकता था उनका इस समिति का अध्यक्ष बनाना शताब्दी समारोह की सफलता का आश्वासन है लेकिन यह प्रारम्भिक समिति है स्वागत समिति बहुत बड़ी बनाई जाएगी। हम चाहते हैं कि इसमे आर्य समाज के अतिरिक्त दूसरे भाई भी लिए जाएं। पंजाब की वर्तमान परिस्थितियो की यह मांग है कि हम अपने छोटे बड़े मतभेदों को भूल कर अपने संगठन को इतना मजबूत बनाएं कि कोई शक्ति हमारी ओर आंख उठाकर भी न देख सके इसलिए इस शताब्दी सम्मेलन को सफल बनाने के लिए भी यह आवश्यक है कि उसकी जो भी स्वागत समिति बनाई जाए उसमे सब विचारो के भाई लिए जाएं।

यद्यपि अभी विश्वास से तो नही कहा जा सकता कि इस सम्मेलन मे कौन कौन आएगा हां इतना अवश्य कह सकता हू कि देश के सारे राज्यो से लोग आएंगे। कइयों से बात हो भी चुकी है। पंजाब से बाहर रहने वाले हमारे भाई पंजाब के बारे मे बहुत चिन्तित हैं। इस अवसर पर वह पंजाब आकर देखना भी चाहते है कि यहां क्या हो रहा है। इसी के साथ पंजाब मे रहने वालों को यह विश्वास भी दिलाना चाहते हैं कि सारा देश उनके साथ है।

लेकिन यह शताब्दी समारोह सफल नही हो सकता यदि हम पंजाब वाले ही इसके लिए अपना तन मन धन न लगा दें। यह एक बहुत बड़ा सम्मेलन होगा जिसमे हजारों नहीं लाखों लोग शामिल होंगे और इसमें हम पंजाब के भविष्य के बारे मे कई निर्णय भी करेंगे इसलिए हम अभी से इसकी तैयारी शुरू करनी है। मुझे यह पूर्ण विश्वास है कि मेरे माननीय भाई श्री सत्यानन्द मुञ्जाल के नेतृत्व मे यह शताब्दी समारोह अद्वितीय सम्मेलन बन जाएगा। लेकिन इसका यह अभिप्राय नहीं कि

(शेष पृष्ठ 4 पर)

## कठोपनिषद् में-

# आचार्य यम का मुख्य उपदेश

ले —श्री डा भवानीलाल भारतीय अध्यक्ष दयानन्द पीठ चण्डीगढ़

आचार्य यम ने अपने उपदेश के अंतिम अंश का आरम्भ करते हुए मनुष्य शरीर की उपमा एक ऐसे अश्वत्थ वृक्ष से दी, जिसकी जड़ ऊपर की ओर तथा शाखा नीचे की ओर है। यह शरीर ही अश्वत्थ (कल ही कल ठहरने वाला है) और सनातन भी है। अर्थात मनुष्य का शरीर यो तो नश्वर है किन्तु मानव योनि के रूप मे सनातन है। इस शरीर रूपी वृक्ष का रचयिता ईश्वर ही शुक्र, ब्रह्म और अमृत है। उसी मे सारे लोक स्थित हैं। इस परमेश्वरीय सत्ता का उल्लंघन करने की सामर्थ्य किसी मे नही है।

यह जो कुछ जगत है वह परमात्मा मे ही गतिमान है और उसी से उत्पन्न है वही परमात्मा अन्यायी और अत्याचारी व्यक्तियो के लिए हाथ मे वज्र धारण करने वाले के तुल्य महान भय उत्पन्न करने वाला है। जो मनुष्य इस परमात्मा को उपर्युक्त प्रकार से जानते हैं, वे अमृतत्व को प्राप्त करते हैं।

उसी ब्रह्म के भय (अनुशासन तथा सर्वोपरि सत्ता) से अग्नि तपती है सूर्य भी तपता है, वायु तथा इन्द्र रूपी विद्युत भी अपना अपना कार्य करते हैं पांचवी मृत्यु भी दौड़ती है तथा प्राणियो को अपना ग्रास बनाती है। ब्रह्म ज्ञान आदि शरीर के नष्ट होने के पूर्व ही हो जाए तो ठीक है अन्यथा परमात्मा द्वारा रचित विभिन्न लोको मे जीव को पुन पुन शरीर धारण कर जन्म लेना पड़ता है।

शुद्धान्त करण वालो को परमात्मा उसी प्रकार दिखाई देता है, जैसे किसी व्यक्ति की आकृति दर्पण मे दिखाई देती है। जिस प्रकार स्वप्न मे कोई वस्तु दीख पड़ती है उसी प्रकार पितृ लोक (सकाम कर्म से दुःख रहित मनुष्य योनि प्राप्त करना) वालो को ईश्वर दिखाई देता है जैसे जलो मे आकृति दीखती है उसी प्रकार गन्धर्व लोक वासियो निष्काम काम करने वाले उत्तम पुरुष को वह परमात्मा दिखाई देता है। जिस प्रकार छाया से प्रकाश भिन्न होता है। उसी प्रकार ब्रह्म लोक मुमुक्षु को भगवान का स्पष्ट साक्षात्कार होता है।

जो मनुष्य इन्द्रियो से आत्मा के पार्थक्य को भली भान्ति जान लेता है और जो यह भी समझता है कि पृथक् पृथक इन्द्रियो के पृथक पृथक विषय (भाव) ही उत्पन्न और समाप्त होते रहते हैं वह धीर पुरुष इस विषय को भली भान्ति जानकर शोक नही करता।

पुन इन्द्रियो से लेकर ईश्वर तक के विभिन्न पदार्थों का क्रमपूर्वक उल्लेख करते हुए आचार्य ने कहा—इन्द्रियो से मन सूक्ष्म है मन से बुद्धि श्रेष्ठ है। बुद्धि से महतत्व और महतत्व से अव्यक्ति प्रकृति सूक्ष्म है। इस अव्यक्त प्रकृति से भी सूक्ष्म पुरुष परमात्मा है जो व्यापक तथा अलिंग (चिन्ह रहित) है। इसी परमात्मा को जानकर प्राणी दुःखो से छूटता है और अमृतत्व (मोक्ष) प्राप्त करता है।

इस ब्रह्म के समक्ष कोई तेजस्वी रूप नही ठहरता और न कोई इसे अपने नेत्रो से ही देख सकता है। यह परमात्मा तो हृदयस्थ मनन करने वाली बुद्धि से ही प्रकाशित होता है। इस रहस्य को जानने वाले ब्रह्म ज्ञाता अमरत्व प्राप्त करते हैं। वह मोक्ष रूपी परमावस्था क्या है इसका उत्तर है जब पांचो ज्ञानेन्द्रियो मन के साथ स्थिर हो जाती हैं और बुद्धि भी चेष्टाहीन होकर स्थिर हो जाती है तब उस स्थिति को परमगति (मुक्तावस्था) कहना चाहिए।

स्थिरता पूर्वक इन्द्रियो को रोकने को ही योग कहा गया है। तुलनीय योगश्चित्तवृत्ति निरोध) तब योगी अप्रमादी होता है और निश्चय ही ऐसा योगी शुभ सस्कारो को उत्पन्न करने वाला और अशुभ सस्कारो का अन्त करने वाला होता है।

वह ईश्वर न तो वाणी से न मन से और न नेत्रो से ही ग्रहण करने योग्य है पुन वह है भी ऐसा ही हम कहते हैं तब प्रश्न होता है कि वह कैसे प्राप्त होगा ? इसका स्पष्ट है। एक ओर तो ईश्वर को मन वाणी और नेत्रो से परे कहते हैं साथ ही उसका अस्तित्व भी स्वीकार करते हैं, तब वह कैसा है तो इसका उत्तर है कि ईश्वर को लेकर ससार में अस्ति और नास्ति के दो विचार प्रचलित है इनमें अस्ति विचार रखने वाला आस्तिक ही श्रद्धालु है। जब पुरुष के हृदय मे स्थित समस्त वासनायें समाप्त हो जाती हैं तब वह मर्त्य (मरणधर्मा) पुरुष अमर हो जाता है और ब्रह्म को प्राप्त होता है। जब हृदय की समस्त गाठ खुल जाती है तब वह मनुष्य अमरत्व प्राप्त करता है, यही शास्त्र का उपदेश है।

मुक्तजीव का आत्मा इसी प्रकार मूर्धा से निकलने वाली सुषुम्ना नाड़ी को भेद कर शरीर से निकलता है, इसका उल्लेख करते हुए यम ने कहा—मनुष्य के हृदय मे 101 नाड़िया होती हैं इनमे एक नाड़ी मस्तिष्क की ओर जाती है। उस मूर्धा की ओर उन्मुख नाड़ी से जिस व्यक्ति के प्राण निकलते हैं वह मोक्ष प्राप्त करता है। अन्य नाड़ियो से प्राणों को त्याग करने वाला व्यक्ति विविध गतियो को प्राप्त करता है। वह शरीर के भीतर रहने वाला जीव हृदयाकाश में अंगुष्ठ मात्र स्थान में रहता है वही मनुष्यो के हृदयो में सन्निविष्ट है। प्राणान्त के समय इस जीव को सावधानी पूर्वक जो शरीर से खरबूजे की भाति पृथक् कर देते हैं उन्हे ही अमर मानना चाहिए।

अन्त मे फलश्रुति के रूप में उपनिषदकार कहते हैं आचार्य यम द्वारा कही गई ब्रह्म विद्या को प्राप्त कर तथा समस्त योग विधि को जानकर ब्रह्मचारी जिज्ञासु नचिकेता स्वय ब्रह्म को प्राप्त कर सका। वह निर्मल अवस्था को प्राप्त कर मृत्यु भय को जीत सका। अन्य साधक एव उपासक जन भी इसी विधि से अध्यात्म शास्त्र को जानकर अमृत पद प्राप्त कर सकते हैं।

# उर्दू को दूसरी राजभाषा बनाने का कड़ा विरोध

आर्य समाज देहरादून ने अपने साप्ताहिक अधिवेशन मे निम्नलिखित प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया है—

इस प्रस्ताव से कि उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री श्रीपति मिश्र उर्दू को इस प्रदेश की द्वितीय राजभाषा घोषित करने का विचार कर रहे हैं सभी राष्ट्रप्रेमियो को क्षोभ हुआ है।

इस सभा की सम्मति में जो लोग उर्दू को इस प्रदेश की दूसरी राज भाषा बनवाना चाहते हैं मुख्यत वे हैं जिन्होने 1946 मे मुस्लिम लीग को वोट देकर भारत विभाजन का समर्थन किया था। इनमे से अधिकाश लोग 1947 मे पाकिस्तान नहीं गए और आज वे तथा इनकी सन्तति भारत मे एक नये 'पाकिस्तान के निर्माण के लिए षडयन्त्र कर रहे हैं और सब सिद्धान्तो को ताक पर रखकर मुस्लिम वोटो की प्राप्ति की अदूरदर्शितापूर्ण आकांक्षा वाले राजनीतिक लोग इनके षडयन्त्रो मे सहायक बन रहे हैं।

यह सभा उत्तर प्रदेश सरकार को चेतावनी देती है कि वह उत्तर प्रदेश में उर्दू को दूसरी राज भाषा बनाने के षडयन्त्र से बचे अन्यथा राष्ट्र भक्त जनता उसे सहन नही करेगी। उर्दू को दूसरी राज भाषा बनाने वाले राजनीतिक दल को भी समझ लेना चाहिए कि राष्ट्र की एकता की समर्थक बहुसख्यक जनता के वोटो से वह अवश्य ही वंचित हो जाएगा।

—बलराज मन्त्री

# लुधियाना में पारिवारिक सत्संग

स्त्री आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार (साबुन बाजार) में 14-1-84 का पारिवारिक सत्संग श्रीमती कमला आर्या प्रधान समाज के आर्य समाज मन्दिर मे कराया। मकर सक्रान्ति के इस पर्व पर सभी समाजों की बहिनों ने भाग लिया। श्री वेद प्रकाश जी शास्त्री (माडल टाऊन) का सक्रान्ति पर सार गर्भित उपदेश हुआ। बडी सुन्दरता से उन्होने इस पर्व का महत्व बताया। श्रीमती सुशीला जी आर्या ने ओम नाम की महिमा का सुन्दर भजन सुनाया। कार्यक्रम हर दृष्टि से सफल रहा।

स्त्री आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार की ओर से शास्त्री महा यज्ञ भी 14 जनवरी से नित्यप्रति दोपहर साढ़े तीन बजे से साढ़े चार बजे तक सफलता पूर्वक चल रहा है। जिसकी पूर्णाहुति 13 फरवरी सक्रान्ति को पडेगी।

—निर्मला देवी मन्त्राणी

(3 पृष्ठ का शेष)

हम हाथ पर हाथ रख कर बैठ जाए। हम में से प्रत्येक का यह कर्तव्य है कि अगले साढे तीन महीने हम में से कोई भी अब आराम से न बैठे। और घर घर हम यह सदेश पहुंचाए कि चलो लुधियाना।' हम सब मिल कर इस सम्मेलन को सफल बना दें तो यह पजाब के इतिहास मे एक नए युग का प्रारम्भ सिद्ध हो सकता है।

—वीरेन्द्र

# राजा दशरथ का राज्य कैसा था ?

ले —श्री नारायण दत्त जी जालन्धर

1 जिस समय राजा दशरथ अयोध्या मे राज्य करते थे, उस समय वहा के ब्राह्मण वेद पढने वाले दान देने वाले और दान लेने से सकोच करने वाले हर समय यज्ञो के कर्त्ता तथा पूर्ण जितेन्द्रिय थे।

2 उस समय कोई भी वेदो के छ अगो को न जानने वाला आलसी, व्रतहीन, दीन दु खी और रोग वाला न था।

3 वहा कोई नर व नारी लक्ष्मी रहित और राजा मे भक्ति न रखने वाला देखने को भी नही मिलता था।

4 उस समय कोई भी नास्तिक, झूठा थोडा जानने वाला वेद निन्दक असमर्थ और मूर्ख न था।

## राजा दशरथ का धार्मिक राज्य

5 उस समय कोई पुरुष कामी, क्रोधी घातक व क्रूर, कृपण (कजूस) थोडी विद्या वाला तथा वेद निन्दक न था।

6 सब स्त्री पुरुष ऋषियो की तरह अपने आचार व्यवहार से शान्त तथा सन्तुष्ट थे।

7. उस समय हर एक पुरुष दाता तथा भोक्ता होने के साथ आत्मवेत्ता था।

8 उस समय हर एक आदमी यज्ञ हवन करने वाला, चुराता और पराए द्रव्य से बचने वाला, कुलीन तथा पूर्ण जितेन्द्रिय था।

शिक्षा—राजा दशरथ की प्रजा जैसे धार्मिक पुरुषार्थी बन कर आप भी धार्मिक, रोग रहित और सुखी बनो।

## राम राज्य कैसा था ?

राम के प्रशासन मे विधवाए न रोती थी, हिंसु प्राणी का भय न था। व्याधि से उत्पन्न भय न था, प्रजाजन चोर डाकुओ से रहित थे, कोई किसी के प्रति अनर्थ या पाप न करता था, बूढे बडों के सम्मुख बालको का देहान्त न होता था, सब प्रसन्न थे. सब धर्म परायण थे, राम को देखते हुए परस्पर हिंसा नहीं करते थे। अनेक पुत्र-पौत्रो से युक्त वहा सहस्रों वर्षों तक चलते अर्थात् किसी का भी वध सेवन न होता था। प्रजाजन रोग और शोक से अलग थे।

(वाल्मीकि रामायण युद्ध काण्ड 128।98-101)

शिक्षा—सब सासारिक नर-नारियो को यह शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए कि राम राज्य की प्रजा जैसी हम सब धर्मात्मा बन कर सुखी होवे।

## धर्मात्मा रामचन्द्र जी यजुर्वेद धनुर्वेद और वेदागो मे प्रवीण थे

हनुमान जब अशोक वाटिका मे गए तो सीता जी से भेंट होने पर कहने लगे मैं रामदूत हू, आपकी खोज मे श्री रामचन्द्र जी की आज्ञा से यहा आया हू तब सीता जी के पूछने पर हनुमान जी ने श्री रामचन्द्र जी का वर्णन उन्हे सुनाया, उन्होने कहा कि—

यजुर्वेद विनीतश्च वेद विदभि सुपूजित ।
धनुर्वेद च वेदे च वेदागेषु च निष्ठित ॥

(वाल्मीकि रामायण सुन्दर काण्ड सग 35)

अथ—श्री राम चन्द्र जी यजुर्वेद मे पारगत हैं और बडे बडे ऋषि भी इसके लिए उनको मानते हैं।

शिक्षा—जैसे धर्मात्मा राम चन्द्र जी वेद धनुर्वेद और वेदागो को पढे हुए थे वैसे सब राम भक्तो को वेद, वेदाग और धनुर्वेद पढ कर धार्मिक विद्वान होना चाहिए।

## धर्मात्मा राम वेद वेदागो के विद्यार्थी थे

हम राम भक्त हिन्दुओ का वेद, वेदाग पढने चाहिए।

सर्वे वेद विद शूरा सर्वे लोकहिते रता ।
सर्वे ज्ञानोप सम्पन्ना सर्वे समुदिता गुणै ॥
तेषामपि महातेजा रामो रतिकर पितु ।
...

(वाल्मीकि रामायण बालकाण्ड सर्ग 18)

अर्थ—बाल्य काल मे ही वे सब वेद विद्या के जानने वाले शूरवीर सब का हित करने वाले सब प्रकार के ज्ञानो से सम्पन्न हो गए। वे सब पापो से लज्जा करने वाले पुण्य की कीर्ति करने वाले दूरदर्शी, पिता माता की आज्ञा मानने और उनकी सेवा करने वाले, तथा सब प्रकार की शस्त्र अस्त्र की विद्या मे निपुण हो गए।

## पुष्पक विमान

पुष्पक विमान पर बैठ कर सुग्रीव के साथ अनेक बीती हुई बाते करते हुए नन्दिग्राम पहुचे।

पुष्पक विमान को हवाई जहाज कहते हैं। आज स आठ लाख वर्ष पूर्व रामायण का समय था। आज हवाई जहाज को देख कर लोग चकित होते हैं और कहते हैं कि विज्ञान अर्थात साईस ने बडी भारी उन्नति कर ली है परन्तु यह हवाई जहाज तो आठ लाख वर्ष पूर्व भी मौजूद थे। जिसको हमारे पूर्वज पुष्पक विमान कहते हैं। पुष्पक विमान द्वारा महात्मा राम अपने सुहृद वर्ग के साथ अयोध्या को गए।

5 धर्मात्मा राम चन्द्र जी का यह जीवन चरित्र परम पवित्र है। जो नर या नारी इसको पढ कर तदनुसार अपने जीवन मे आचरण करे तो वह भी पवित्र हो जाता है।

श्री राम भक्त प्यारे हिन्दू भाईयो! जैसे राम लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न चारो भाईयो ने सब वेद वेदाग और धनुर्वेद पढ उसी प्रकार से ससार के सब लोगो को चारो वेद, मनुस्मृति वाल्मीकि रामायण, गीता महाभारत 11 उपनिषद और छ शास्त्रो को पढ कर धार्मिक विद्वान बनना चाहिए।

वेद स्मृति सदाचार स्वस्य च प्रियमात्मन ।
एतच्चतुर्विध प्राहु साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम् ॥

मनुस्मृति अध्याय 2 श्लोक 12

अर्थ—वेद, स्मृति, सदाचार और अपने आत्मा का प्रिय ये चार प्रकार के धर्म के लक्षण हैं।

वैदिक मनुस्मृति या शुद्ध मनुस्मृति पढनी चाहिए।

अर्थ कामेष्वसक्ताना धर्म ज्ञान विधीयते ।
धर्म जिज्ञासमानाना प्रमाण परम श्रुति ॥

मनुस्मृति 2 अध्याय श्लोक 13

अथ—अर्थ और काम म जो आसक्त नही है उनके लिए धर्म कहा गया है। धर्म के जानने की इच्छा करने वालों को वेद ही उत्तम प्रमाण हैं।

## वेद न पढने वाला शूद्र होता है

योऽनधीत्य द्विजो वेदमन्यत्र कुरुते श्रमम् ।
स जीवन्नेव शूद्रत्वमाशु गच्छति सान्वय ॥

मनुस्मृति अध्याय 2 श्लोक 168

अथ—जो ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य वेद को न पढ कर दूसरे शास्त्रो में श्रम करता है वह इसी जन्म मे शीघ्र ही परिवार सहित शूद्र योनि को प्राप्त होता है।

# आर्य युवक सभा फाजिल्का की उपलब्धियां

आर्य युवक सभा फाजिल्का मे 1-1-84 के दिन आर्य समाज मन्दिर मे प्रीति भोज का आयोजन किया, जिसमे आर्य समाज, स्त्री आर्य समाज अन्य सज्जन वृद्ध, युवको ने उत्साह पूर्वक कार्य करके अपना आगामी कार्यक्रम उपस्थित किया। सभी ने युवक सभा के कार्यकर्त्ताओ को शुभाशीर्वाद और शुभ कामनाए उपस्थित की।

आर्य युवक सभा ने पारिवारिक सत्सग की प्रचार द्वारा योजना पर बल देते हुए मासिक सत्सग आरम्भ किया। पहला सत्सग मास्टर शामलाल आर्य के घर बहुत बडी सख्या मे सम्पन्न हुआ।

आर्य युवक सभा का निर्वाचन—प्रधान श्री विनोद कुमार गुप्ता, उपप्रधान—श्री मास्टर शामलाल आर्य, मन्त्री—श्री विनोद कुमार बु गर, कोषाध्यक्ष—श्री महेन्द्रलाल वर्मा व्यायामशालाध्यक्ष—श्री अशोक कुमार वर्मा।

लोहडी का उत्सव—आर्य युवक सभा ने लोहडी का पर्व बडी धूमधाम से उल्लास के साथ आर्य समाज मन्दिर में मनाया। पूज्य माता चन्द्रवती ने अग्नि प्रज्वलित की। सभी को रेवडिया और मू गफली प्रसाद के रूप मे बाटी गई। आये हुये सज्जनो ने युवको को उत्साहित करने हेतु युवक सभा को दान भी दिया।

—

# जिला आर्य सभा फिरोजपुर का चुनाव

जिला आर्य सभा फिरोजपुर का चुनाव श्री चान्दीराम जी वर्मा की अध्यक्षता मे सर्वसम्मति से सम्पन्न हुआ—

प्रधान—श्री मास्टर मूलचन्द जी वर्मा (फाजिल्का) उपप्रधान—श्री हस राज आर्य, (अबोहर) श्री हवनलाल महता (फिरोजपुर शहर) मन्त्री—श्री विनोद कुमार गुप्ता, (फाजिल्का) उप मन्त्री—श्री मनोज कुमार आर्य (फिरोजपुर छावनी) श्री मुकन्दलाल छाबडा (जलालाबाद) कोषाध्यक्ष—श्री ओम् प्रकाश झांब (फाजिल्का) निरीक्षक—श्री जगदीशचन्द्र (फिरोजपुर शहर)।

—मूलचन्द वर्मा-प्रधान

# स्वामी दयानंद के पत्र श्याम जी कृष्ण वर्मा के नाम

श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा

आनन्द रहो ।

विदित हो कि हमने सुना है कि आपका इरादा संस्कृत पढ़ने के लिए इंग्लैण्ड जाने का है सो यह विचार बहुत अच्छा है परन्तु आपको पहले भी लिखा था और अब भी लिखते हैं कि जो हमारे पास रहकर वेद और शास्त्र के मुख्य 2 विषय देख लेते तो अच्छा होता अब आपका उचित है कि अब जन्म भाव जो आपने अध्ययन किया है उसी में वार्तालाप कर और कह देव कि मैं कुल वेद शास्त्र नहीं पढ़ा कि मैं तो आर्यावर्त देश का एक छोटा सा विद्यार्थी हूं और कोई बात वा काम ऐसा न हो जिस से अपने देश का ह्रास हो क्योंकि वे लोग संस्कृत पढ़ाने वाले भी अत्यन्त इच्छा रखते हैं इसलिए आपके पास सब तरह के पुरुष मिलने और बातचीत करने के कारण आवेंगे सो जो कुछ उनके मध्य में आप कहे समझकर कहना और इस चिट्ठी का उत्तर हमारे पास भेज देव और श्री मोहनलाल विष्णुलाल पण्डित जी को हमारा आशीर्वाद कह दीजिए हम बहुत आनन्द में हैं ।

—हस्ताक्षर

दयानन्द सरस्वती अमृतसर

15 जुलाई 1879

## दूसरा पत्र

अब की बार भी वेद भाष्य के ऊपर देवनागरी नहीं लिखी गई । जो कहीं ग्राम में अंग्रेजी भाषा पढ़ा न होगा तो अब वहां कैसे पहुंचते होंगे और ग्रामों में देवनागरी पढ़े बहुत होते हैं । इसलिए तुम बाबू हरिश्चन्द्र चिन्तामणि से कहो कि अभी इसी पत्र के देखते ही देवनागरी जानने वाला एक मुन्शी रख लेव । जिस से कि काम ठीक ? से हो नहीं तो वेद भाष्य के लिफाफे पर किसी रजिस्टर के अनुसार ग्राहकों का पता किसी देवनागरी जानने वाले से नागरी में लिखाकर टपाल लिया कर ।

दयानन्द सरस्वती

अक्तूबर 1878

## तीसरा पत्र

अमरीका वालों से अति प्रेम से हमारा नमस्कार कहना और उनसे कुशलता पूछना कि लाहौर आदि के समाज में आप लोगों के लिए तैयारी कर चुके हैं वहां कब तक जावेंगे । उन्होंने संस्कृत पढ़ना का प्रारम्भ किया है वा नहीं और जो कुछ वे हमारे विषय में कहा करें सो लिखा करना और हम नहीं लिखें तो भी उनकी कुशलता आदि सदैव लिखते रहें यहां मेला अब तक साधुओं का ही है गृहस्थ लोग तो कम आए हैं । हमने एक पत्र कर्नल अल्काट साहब को 2 तारीख को और दिया है तुम उनसे उत्तर लिखवाना श्यामलाल कृष्ण को नमस्ते

हस्ताक्षर

दयानन्द सरस्वती

चैत्र सुदी 4 नवम्बर 1936

26 मार्च 1879 हरद्वार

# नेता जी सुभाषचन्द्र बोस

ले—श्री प बृजपाल जी शास्त्री

भारत देश को स्वतन्त्र कराने वाले वीर क्रान्तिकारियों की एक बहुत बड़ी लिस्ट है । इस देश को स्वतन्त्र कराने के लिए न जाने कितने वीर शहीद हुए ? कितनों ने गोलियां खाईं ? कितने देश भक्तों ने लाठियां डण्डे खाए ? जेल की अत्यन्त कष्टप्रद एवं भयंकर यातनाएं भोगी तब कहीं यह देश आजाद हुआ । प्रत्येक देशभक्त शहीद का अपना स्थान है । परन्तु जैसी लोकप्रियता सुभाषचन्द्र बोस को मिली उसकी मिसाल मिलना मुश्किल है यह सौभाग्य बहुत कम व्यक्तियों को हासिल होता है कि वे सभी लोगों के प्रिय बन सकें कुछ व्यक्तियों को यह लोक उनके कार्यों से प्रसन्न होकर उपाधि प्रदान कर देते हैं—यथा प जवाहरलाल नेहरू से प्रसन्न होकर चाचा नेहरू के नाम से पुकारा गया गान्धी जी के त्याग तप से प्रभावित होकर बापू और महात्मा गांधी कहकर सम्मानित किया किसी को शहीद कहा किसी को सरदार कहा इसी प्रकार सुभाष को भारत की जनता ने नेता जी की उपाधि से अलंकृत किया यह उपाधियां यूं ही नहीं मिल जातीं अपितु लोक सेवा के मूल्यांकन में मिलती हैं सुभाषचन्द्र बोस की यह उपाधि भी ऐसी सेवा का प्रतीक है देश को स्वतन्त्र कराने की दिशा में दो विचार धाराएं कार्य कर रही थीं एक शान्ति से देश को स्वतन्त्र कराने की दूसरी क्रान्ति से आजादी प्राप्त करने की पहली विचार धारा के सूत्राधार म गान्धी एवं उनके सहयोगी नेहरू आदि थे । दूसरी विचार धारा के सूत्राधार सुभाषचन्द्र बोस व चन्द्रशेखर भगतसिंह रासबिहारी बोस रामप्रसाद बिस्मिल आदि अनेक देशभक्त थे ।

किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करने के दो मार्ग होते हैं । एक शान्ति का दूसरा क्रान्ति का शान्ति का मार्ग महात्माओं का मार्ग होता है जैसे महात्मा गान्धी का मार्ग था । क्रान्ति का मार्ग बहादुर और वीरों का मार्ग होता है जैसे सुभाष चन्द्र आदि वीरों का । यद्यपि महात्मा गान्धी के शान्ति मार्ग से भी देश को आजाद कराने में बहुत बड़ी सहायता मिली है तथापि यदि क्रान्तिकारी बम्बों और गोलियों की भरमार से अंग्रेजों का दिल न दहलाते तो खाली शान्ति के मार्ग से देश आजाद होना बहुत मुश्किल था । सुभाषचन्द्र बोस को जो नेता जी का पद दिया गया तथा आज तक भारत की जनता नहीं भूल पाई इस लिए कि उस अकेले व्यक्ति ने ऐसी सरकार के विरुद्ध जिस के राज्य में सूर्य अस्त नहीं होता था अपनी आजाद हिन्द सेना व अपनी सरकार की स्थापना करके एक बहुत बड़ी क्षमता कुशलता देश भक्ति व साहस का परिचय देकर देश विदेश के प्रत्येक व्यक्ति का तन मन धन अपनी ओर खींच लिया । भारत का बच्चा बच्चा चाहे वह देश में था अथवा विदेश में नेता जी की एक ही आवाज पर मैं तुम्हें आजादी दूंगा तुम मुझे खून दो

धन तो लुटाने के लिए तैयार था ही अपितु खून भी अपना बलिदान भी देने के लिए हर समय तैयार था इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है । आजाद हिन्द सेना । परन्तु यह इस देश का दुर्भाग्य रहा कि नेता जी को पूर्ण सफलता नहीं मिली । अन्यथा भारत का इतिहास दूसरे प्रकार का इतिहास होता । भारत की वर्तमान स्वतन्त्रता प्राप्त देश की अवस्था भी आज की अवस्था से भिन्न होती मेरा यह मत है कि यदि सुभाषचन्द्र बोस की क्रान्ति सफल हो जाती वह स्वतन्त्र भारत के प्रथम व्यवस्थापक होते तो न देश में गरीबी होती न बेरोजगारी होती न भ्रष्टाचार न अराजकता और न दुराचार होता अपितु सच्चे अर्थों में यहां रामराज्य होता ।

# आभार प्रकट

सविनय निवेदन है कि मेरे कनिष्ठ भ्राता चालीस वर्षीय आचार्य श्री रामवीर शर्मा शास्त्री का गत 25 दिसम्बर 83 रविवार को प्रातः 7 बजे हृदय गति रुक जाने से देहावसान हो गया था । जो शाहदरा दिल्ली में एक राजकीय उच्चतर विद्यालय में अध्यापन कार्य करते थे । आर्य समाज हापड़ के कर्मठ कार्यकर्ता और पुस्तकालयाध्यक्ष थे । संस्कृत व्याकरण के धुरन्धर विद्वान थे ।

इस सम्बन्ध में अनेकों विद्वानों संन्यासी मित्रों एवं सगे सम्बन्धियों के शोक सम्वेदना पत्र प्राप्त हुये हैं । मैं उन सभी का सहृदयता से आभारी हूं । जिन्होंने मेरे दुःख में सम्वेदना सहानुभूति प्रकट की ।

जगदीशचन्द्र वसु

पानीपत (हरियाणा)

# आचार्य चाहिए

महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा के लिए आचार्य की तुरन्त आवश्यकता है । आचार्य पद के लिए महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों का गहरा अध्ययन तथा दर्शन व्याकरण व अंग्रेजी की विशेष योग्यता आवश्यक है । प्रौढ़ सज्जनों को प्राथमिकता दी जाएगी ।

4 फरवरी 1984 को 3 बजे अपने आवेदन पत्र एवं पत्रों के साथ आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग नई दिल्ली—110001 में साक्षात्कार के लिए स्वयं मिलें । वेतन एक हजार रुपया मासिक एवं आवास तथा अन्य सुविधाएं ।

रामनाथ सहगल, मन्त्री टंकारा ट्रस्ट

आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग नई दिल्ली 110001

तमिलनाडू के रामनाथपुरम मे हरिजनो के साथ क्या हुआ

# सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्ययन दल की रिपोर्ट

(गताक से आगे)

## परिशिष्ट

श्री मुहम्मद शरीफ पता न 75 ए आर कोयल स्टीट वैस्ट मन्नासम मद्रास 33, आयु लगभग 43 साल का बयान वह पहले हिन्दू थे और उनका पहला नाम शक्ति तामिया था उसके पिता का नाम के मू किया था। वह हिन्दुओ की भसेगी जाति का है।

मैं श्री लका द्वीप से 1973 मे भारत आकर बसा हू। सभावासी तमिल के रूप मे कोलम्बो मुकन्दर रोड पेटटा मकान नम्बर 29 5 मे रहता था। मैं लका में पैदा हुआ और वही बडा हुआ हू। मुझ वहा की नागरिकता नही मिला इसलिए मैं भारत लौट आया। एस डब्ल्यू आर डी भण्डारनायके (सोलोमन राइटरिजवे डायस भडारनायके) ने 1955 मे श्रीलका फीडम पार्टी का गठन किया। इस पार्टी का एक सदस्य मजूर मौलाना था। भण्डारनायके की सरकार मे श्री एम एच, मोहम्मद, प्रसारण और सचार विभाग के मन्त्री थे और मकाम मरिकार और अब्दुल रसफूर जैसे बड हीरे के व्यापारियो ने 1956 मे भडार-नायक की पार्टी की सरकार बनाने मैं मदद दी। श्रीलका मे मुस्लिम लीग भी है। चावल की कीमता के बढाने के सवाल पर भण्डारनायके के खिलाफ आम हडताल हुई जिसको टोटस्कीवादी और लेनिनवादियो ने सगठित किया था इस कारण दूडले सेनानायक ने इस्तीफा दे दिया और भण्डारनायके सत्ता मे आ गई। लका फीडम पार्टी के नेता भण्डार नायके मुस्लिम पक्षपाती थ क्योकि उसे मसलमानो ने और कम्युनिस्ट समथको ने मदद दी थी। श्रीलका के वतमान राष्ट पति श्री जयवर्द्धने भी मुस्लिम पक्षपाती हैं वैसे आम सिहली मुसलमानो का समथक है।

कोलम्बो में अनेक मुस्लिम शिक्षण सस्थाए हैं—सुम्मनवोटपल्ली (मस्जिद को पल्ली कहा जाता है) और जाहिरा कालेज। इन सस्थाओ को खाडी देशो से आर्थिक सहायता मिल्ती है। श्रीलका की मुस्लिम आबादी का कुल 12 प्रतिशत है, इन मुसलमानो को खाडी देशो मे जाने की खुली छूट है। मुस्लिम बनाने के लिए कोलम्बो एक केन्द्र है। यही से वे लोग दक्षिण भारत मे फैलते हैं।

22 दिसम्बर 1980 को मैंने इस्लाम ग्रहण किया था। इस काम मे सदर्न साई टिफिक कम्पनी (जो डाक्टरी औजारो का व्यापार करती है) का मालिक मोदीन पाशा और जमायत उल्माए हिन्दी मदुरै स्थित शाखा इस्लामिक सैंटर का सैक्रटरी रहमानी मुख्य रूप से जिम्मेदार थे। क्योकि मुझ गलत बताया गया था। इसलिए मैं मुसलमान हो गया। मुझ बताया गया था कि हिन्दू धम से इस्लाम सामाजिक समानता का प्रचारक होने के कारण बेहतर है। उन लोगो ने मुझ आर्थिक सहायता भी दी। ऋण के रूप मे मैंने उनसे धन लिया और लौटाया भी नही है। इस ऋण का पैसा मुम मदुरै के कपड के व्यापारी वापसनस के मालिक ने दिया था। वह मुसलमान सरहसन ग्रुप का अध्यक्ष है। इस सज्जन को मैं पहले नही जानता था।

दक्षिण भारत मे निम्न मुस्लिम सस्थाए काम कर रही हैं,

1 जमायते इस्लामो हिन्द (मद्रास) 2 इस्लामिक सैन्टर मदुरै (पुस्तकालय के रूप मे काम कर रहा है) 3 साउथ इण्डिया इशातुल इस्लाम सभै (रहमानिया बिल्डिंग तिरुनलवेल्ली जक्शन) 4 जमालिया कालेज त्रिची (यहा हिन्दू छात्रो को मुसलमान बनाया जाता है) 5 इस्लामिक सैंटर रामनाथकम पत्यान मुसलमान आज कल इसे रहमतपाल कहते हैं। यह मैलौर जिला नाथ अरकाट मे स्थित है।

मैंने अरबी शिक्षा मैलौर क इस केन्द्र मे ही पाई थी। इसके अलावा कुछ और भी सस्थाए हैं जो उपरोक्त सगठनो से छोटी परन्तु सहायक अग है। इन सबको यथा सम्भव सारी सहायता दी जाती है।

नम्बूचेटटी स्टोट मद्रास के निवासी एच. के. एस मौलाना पसूनकादिर नाम से एक मासिक पत्रिका निकालते है। तामिल के इस शब्द का अथ ज्ञान की कोपले हैं। वह किलाकरे का रहने वाला है। यह पत्रिका हिन्दू सगठनो के खिलाफ मुसलमानो को उकसाती है। जुम्मे की नमाजो मे बयान किए जाने वाले भाषणो मे उत्तेजनात्मक भाषण दिए जाते हैं।

एम के एस मौलाना एक बहुत प्रमुख मुस्लिम नेता हैं। तिरुनलवेली जिले का एक बहुत प्रमुख मुस्लिम नेता है। तिरुनवेली जिले मे तेनकासी के निकट भावनवरम निवासी ए के रिफाही तेनकासी का एस एम ए सावूल हमीद तिरुनलवेली जिले के कलैडकुरचि क टी एन पीर मोहम्मद, सम्भत मीनाक्षी पुरम निवासी उमर शरीफ तिरुनेलवेली के क्यासप चनमू को अब्दुल हसन मदुरै के सदन साई टिफिक कम्पनी का मोहिद्दीन पाशा, मदुरै का म्युनिसिपल कमिश्नर अफजार हुसैन, नाथ वैली स्टीट मदुरै का चूने का व्यापारी कमालद्दीन हाजियार जिसे यहा उलुधु मुस्तफा नाम से भी पुकारा जाता है (क्योकि उसके सक्षिप्त नाम मे आठ अक्षर हैं इसलिए उसे यह कहकर पुकारा जाता है। वह मुसलमान बनने पर सुन्नत की रस्म को करता है। जिसके अन्तगत मूत्रेन्द्रिय की ऊपरी खाल काटो जाती है) और इसके बदले 500) रुपये देता है।

वी, एस यूसुफ मदुरै मुस्लिम लीग का प्रधान, तौहिद जुमा सस्था का तौहीद पत्रिका का सम्पादक सैंबूर रह मान और इस्लामिक प्रोपगण्डा एसो सियशन (इस्लामिया प्रचार सभै) का मन्त्री कमालउन वायस वर्वेमी मोहिद्दीन ये नेता मुख्य रूप से धर्मान्तरण का काय चला रहे हैं। मैं प्रचारक था पर अब इस्लाम का प्रचार कर रहा हू। मैं इस्लाम सम्बधी पुस्तकें तामिल मे अनु वाद करता हू। लिगीचेटटी स्टीट मद्रास की बस्मिल्ला टडिंग कम्पनी का मालिक नर मुहम्मद इन मुसलमान बनाने की कायवाहियो के लिए आर्थिक सहायता देता है। पाच महीने पहले काले धन को रखने क कारण उसे गिरफ्तार किया गया था। पर अगले दिन उसे छोड दिया गया था।

मेरा अनुभव है कि भारत के मुसल मानो की दिलचस्पी इस्लाम के प्रचार मे नही है, परन्तु उनकी दिलचस्पी राज-नैतिक शक्ति को अपना मुट्ठी म करने के लिए अपनी सख्या बढाने म है। इस बात को सोचकर और इन लोगो की राष्ट्रीय गतिविधियो को देखने के बाद मैं अपने पूर्वजो के धम म वापस लौट रहा हू।

—

## अन्तर्जातीय विवाह सम्पन्न

आर्य समाज अजमेर के तत्वावधान मे सोमवार दिनात 16-1 84 को भीलवाडा निवासी श्री अजयकुमार गुप्ता का शास्त्री नगर भीलवाडा निवासनी अजना देवी (कायस्थ) के साथ सामाजिक रूढियो को तोडकर अत्यन्त सादगीपूर्ण वातावरण मे आर्य समाज मन्दिर मे आचार्य गोविन्दसिंह जी के पुरोहित्य मे अन्तर्जातीय विवाह सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर उपस्थित आर्य समाज के पदाधिकारियो ने वर वधू को मगलमय जीवन की शुभ कामना करते हुये आर्य साहित्य भेंट किया।

—रासासिंह मन्त्री

## अजमेर में पौरोहित्य प्रशिक्षण शिविर

आर्य समाज के क्षेत्र में पुरोहितों की संख्या कम होती जा रही है जो थोड़े लोग मिलते भी हैं उनमे बहुत कम लोग ऐसे हैं जिन्हे अपने कार्य मे दक्ष कहा जा सकता है इस कमी को पूरा करने के लिए महर्षि दयानन्द निर्वाण स्मारक न्यास अजमेर ने पुरोहितो को प्रशिक्षण देने का एक कार्यक्रम चलाने का निश्चय किया है इस प्रशिक्षण कार्यक्रम मे ऐसे लोग भाग ले सकते हैं जो पौरोहित्य का कार्य कर रहे हैं अथवा जो पौरोहित्य का कार्य करना चाहते हैं। इसमे सन्ध्या हवन तथा जात कर्म नामकरण अन्न प्राशन चूडा कर्म उपनयन और विवाह संस्कारो का प्रशिक्षण दिया जाएगा जो व्यक्ति इस प्रशिक्षण मे भाग लेंगे उनको नियत समय तक प्रशिक्षण स्थल पर पहुंचना होगा और जब तक प्रशिक्षण समाप्त न हो जाए तब तक निश्चित दिनचर्या के अनुसार निष्ठापूर्वक प्रशिक्षण प्राप्त करना होगा। उनके भोजन और निवास की सम्पूर्ण व्यवस्था न्यास की ओर से होगी परन्तु मार्ग व्यय तथा स्टेशनरी का भार उनको स्वयं या उनको भेजने वाली संस्था को वहन करना होगा यह प्रशिक्षण सर्वथा निःशुल्क होगा परन्तु अभ्यार्थियो को पंजीकरण शुल्क के रूप मे मात्र दो रुपए प्रशिक्षण के पहले दिन कार्यालय मे जमा कराने होंगे

आपसे निवेदन है कि आप अपने क्षेत्र मे पुरोहित कर्म करने वाले अथवा पौरोहित्य कर्म करने के इच्छुक व्यक्तियो को इस प्रशिक्षण कार्यक्रम मे भाग लेने की प्रेरणा देने की कृपा करें। यह और अधिक अच्छा होगा कि आप कुछ व्यक्तियो को आर्य समाज की ओर से भी प्रेषित करें आपके यहां से जितने व्यक्ति यहां आ रहे हो उनके नाम तथा संख्या 31 जनवरी 1984 तक हमारे पास अवश्य भेज दें जिससे उनके निवास आदि की समुचित व्यवस्था की जा सके प्रशिक्षण कार्यक्रम 1 2 84 को आरम्भ हो जाएगा और दिनांक 20 2 84 तक चलेगा आशा है कि आप इस पत्रक की ओर विशेष ध्यान देकर उचित कार्यवाही करने की कृपा करेंगे

नोट—प्रशिक्षण मे पधारने वाले महानुभाव निम्नांकित वस्तुएं अपने साथ अवश्य लाएं।

1 ओढने बिछाने का बहुत अनुकूल पूरा सामान 2 लोटा वाली कटोरी 3 दो दो सौ पेज की तीन कापियां और बाल पेन। —सदेव शास्त्री मन्त्री

## श्री पं रघुनन्दन जी शर्मा का निधन

हरदोई—आर्य समाज के कर्मठ नेता स्वतन्त्रता संग्राम के प्रथम पंक्ति के सेनानी का 9 मास की बीमारी के बाद 7 1 84 को प्रातः सरकारी चिकित्सालय मे देहावसान हो गया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सयुक्त मन्त्री श्री पं सच्चिदानन्द शास्त्री पूज्य पिता की सेवा मे 9 मास से उनके पास थे। सरकार की ओर से समुचित व्यवस्था होने के बाद भी वह बच न सके आयु से 86 वर्ष मे चले रहे थे मृत्यु का समाचार सारे शहर मे बिजली की तरह दौड़ गया और स्कूल कालिज बन्द हो गए हजारो श्रद्धालु भक्तजन अस्पताल को भाग खड़े हुए

जिलाधीश—श्री त्रिवेदी जी तथा राजनीतिक नेताओं ने उन को राजकीय सम्मान दिया। कांग्रेस आफिस पर स्वागत तथा जेल व गान्धी भवन पर आर्य समाज के झण्डे झुका दिए गए कचहरी कार्यालय बन्द कर दिए गए शवयात्रा अस्पताल से कांग्रेस भवन जेल फाटक गान्धी भवन फिर आर्य समाज होकर उनके पैतृक स्थान मे वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ

ऐसी अन्तिम विदाई आज तक किसी भी राजनैतिक सामाजिक नेता की नहीं की गई उनकी सेवाओं की चर्चा जन जन मे व्याप्त है। आर्य कन्या इन्टर कालेज मे शान्ति यज्ञ तथा श्रद्धाञ्जलि समारोह के आयोजन मे हजारों नर-नारियों ने उनको कर अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की। वह अपने पीछे पत्नी-3 पुत्र दो पुत्रियां छोड़ गए हैं। बड़ा बेटा हैदराबाद सत्याग्रह मे शहीद हो गए थे। श्री शर्मा जी कांग्रेस आन्दोलन मे 8 बार जेल गए साथ ही उनके परिवार के 8 व्यक्ति स्वतन्त्रता संग्राम में जेल गए साथ हैदराबाद सत्याग्रह हिन्दी आन्दोलन गोरक्षा आन्दोलन मे भी भाग लिया। सामाजिक सुधार कार्यों में अछूतोद्धार मद्य निषेध विधवा विवाह बाल विवाह दहेज आदि के कार्यों म जीवन दिया। ऋषि दयानन्द के वह कट्टर उपासक थे। कर्म कान्डी सच्चे ब्राह्मण थे। उन्होंने अपने परिवार के बच्चो को संस्कृत शिक्षा हेतु गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर मे प्रवेश दिला कर स्नातक बनाया सभी समाज की सेवा मे तत्पर हैं। श्री शर्मा जी ने अपनी सारी सम्पत्ति शिक्षा संस्थान को दान कर कालेज बनाया है। उनका सारा जीवन महान था दिवंगत आत्मा के प्रति जनता मे विशेष चर्चा है।



श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इस की स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

वर्ष 16 अंक 43, 23 माघ सम्वत् 2040, तदनुसार 5 फरवरी 1984, दयानन्दाब्द 159 । एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपए

# क्रान्ति के अग्रदूत श्याम जी कृष्ण वर्मा

ले —श्री वीरेन्द्र जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

(गतांक से आगे)

इस शृंखला के पिछले लेख में श्याम जी कृष्ण वर्मा के प्रारम्भिक जीवन के बारे में लिखते हुए उनकी गरीबी पर रोशनी डाली थी और किस तरह एक अत्यधिक गरीब परिवार में पैदा हुए थे। वह अभी बहुत छोटी आयु के थे जब उन की मां का स्वर्गवास हो गया था। उनके पिता बम्बई में नौकरी करते थे, फिर एक छोटी सी दुकान शुरू कर ली। श्यामजी प्रारम्भ से ही तीव्र बुद्धि लिए थे, इसलिए लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लेते थे और कई लोग इनकी आर्थिक परिस्थिति को देखकर इनकी सहायता करने को तैयार हो जाते थे।

श्री श्यामजी के पिता श्री कृष्णजी जिन दिनों बम्बई में एक मामूली दुकान चलाया करते थे उनका सम्बन्ध भाटिया बिरादरी के प्रतिष्ठित व्यापारियों के साथ पड़ गया। भाटिया बिरादरी व्यापार में सबसे आगे थी। इसलिए बहुत सम्पन्न थी। उनके पास चूंकि धन की कोई कमी न थी इसलिए सार्वजनिक कल्याण कार्यों के लिए भी बहुत धन खर्च करते थे। इनमें से एक भाटिया श्री मथुरादास लवजी थे। भाटिया बिरादरी में इनकी एक प्रतिष्ठित जगह थी। एक दिन उन्होंने श्याम जी के बारे में सुना कि वह लड़का बहुत होशियार है लेकिन अपनी आर्थिक स्थिति के कारण किसी अच्छे स्कूल में शिक्षा नहीं प्राप्त कर सकता। कुछ दिन बाद श्री मथुरादास अपने किसी कार्यवश कच्छ गए वहां उन्होंने श्याम जी का पता लिया, उनसे मिले, उनके साथ संक्षिप्त सी बातचीत के बाद उससे इस तरह प्रभावित हुए कि वह श्याम जी व उनकी नानी को अपने साथ बम्बई में ले आए। कुछ देर श्यामजी को बम्बई के विल्सन स्कूल में दाखिल करा दिया और उसकी शिक्षा का खर्च अपने जिम्मे ले लिया।

कच्छ एक छोटा कस्बा था, उसके मुकाबले में बम्बई एक बहुत बड़ा शहर था। आज की तरह उस जमाने में भी वह भारत की पहली नगरी मशहूर थी। इन हालात में जब एक बच्चा एक पिछड़े कस्बा से एक बहुत बड़े नगर में आ जाए उसे कुछ समय तो लग जाता है अपने चारों ओर के वातावरण को समझने व अपने को उसके अभ्यस्त बनाने में। श्याम जी के लिए भी यह कठिनाई पेश आई। लोग समझते थे कि नये स्कूल में उसे अपनी जगह बनाने में कुछ समय लगेगा लेकिन स्कूल वालों के आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब श्याम जी अपनी कक्षा में प्रथम स्थान पर आए।

**प्रतिभा अभावग्रस्त हो तो उसे संघर्ष की भट्ठी में तपना ही पड़ता है फिर उसको उसका पारखी अवश्य मिलता है।**

इस बरस में श्याम जी के जीवन में एक मोड़ और भी आया। अपनी कक्षा में प्रथम आने के स्थान को पाने के कारण वह कई लोगों के आकर्षण का केन्द्र बन गए। श्री मथुरादास जी की रुचि उनमें और भी बढ़ने लगी। इस लड़के में उन्हें कई खूबियां दिखाई देने लगी। वह सोचने लगे कि यदि इसे सहारा दिया जाए तो यह कई ऊंचाइयों तक पहुंच सकता है। इसके साथ उन्होंने यह भी सोचा कि केवल अंग्रेजी की पढ़ाई ही इसके लिए काफी नहीं है।

इसलिए उसे संस्कृत पढ़ने के लिए एक पाठशाला में दाखिल कराया गया। श्याम जी अपने स्कूल में अंग्रेजी पढ़ा करते थे और शाम को पाठशाला में जाकर संस्कृत पढ़ा करते थे। भाटिया बिरादरी के पुरोहित पण्डित विश्वनाथ शास्त्री यह पाठशाला चला रहे थे। श्री मथुरादास के कहने पर उन्होंने श्याम जी को संस्कृत पढ़ाना शुरू कर दिया। धीरे धीरे वह संस्कृत में भी प्रवीणता प्राप्त करने लगे। 18 वर्ष की आयु में वह बड़ी आसानी से संस्कृत में बोलने लग गए। मिडल स्कूल में अपनी कक्षा में प्रथम रहने के कारण उनकी लोकप्रियता पहले ही स्कूल से बाहर जा चुकी थी। अब जो प्रवीणता उन्होंने संस्कृत में प्राप्त कर ली थी उससे उनकी लोकप्रियता को और भी चार चांद लग गए और वह चारों ओर से कई प्रकार लोगों के ध्यान का केन्द्र बन गए। इसका एक परिणाम यह भी हुआ कि शीघ्र ही इन्हें एक छात्रवृत्ति भी मिलने लगी और इनकी आर्थिक कठिनाई कम होने लगी। जो छात्रवृत्ति इन्हें मिली थी इसके माध्यम से उन्हें एक और स्कूल, एल्फिंस्टन हाई स्कूल में प्रवेश मिल गया। यह वह स्कूल था जिसमें बड़े बड़े धनिकों के बच्चे पढ़ा करते थे। श्याम जी यहां भी अपनी मेहनत से अपनी कक्षा में प्रथम आ गए और इसके साथ उनके भाग्य ने पलटा खाया जिसकी उन्हें कभी उम्मीद न थी और जिसने उनकी जिन्दगी का कांटा ही बदल दिया।

जिस स्कूल में श्याम जी पढ़ा करते थे, वहां एक बहुत बड़े सरमायादार सेठ छबीलदास लालूभाई का बेटा रामदास भी पढ़ा करता था। एक दिन सेठ छबीलदास ने पूछा तुम्हारी कक्षा में सर्वाधिक होनहार लड़का कौन है? रामदास ने श्याम जी का नाम लिया। इस पर छबीलदास ने कहा कि वह श्याम जी को अपने घर क्यों नहीं लाता। कुछ दिन बाद श्याम जी सेठ छबीलदास के घर आए और उनके घर में श्याम जी का नियमित रूप से आना-जाना शुरू हो गया। सेठ छबीलदास श्याम जी के व्यक्तित्व से प्रभावित हुए। वह सोचते कि यह लड़का इतना गरीब है फिर भी इतनी तीव्र बुद्धि लिए है। जिस परिश्रम व साधना से श्याम जी अपनी शिक्षा पूरी कर रहे हैं इसका सेठ जी पर विशेष प्रभाव पड़ा और आखिर वह समय भी आया जब सेठ छबीलदास ने अपनी 13 वर्षीय बेटी भानुमति की शादी श्याम जी कृष्ण वर्मा के साथ करने का फैसला कर लिया। चूंकि श्याम जी भी इस घर में प्रायः आते जाते रहते थे। इसलिए उन्होंने भी भानुमति को कई बार देखा हुआ था। उनके दिल में भी भानुमति के लिए प्यार व श्रद्धा का मधुर स्नेह जमने लगा था। सेठ छबीलदास ने अपनी बेटी की इच्छा जाननी चाही तो उसने अपनी सहमति व्यक्त कर दी और अन्ततः 1875 में श्याम जी वर्मा का विवाह भानुमति के साथ हो गया।

सेठ छबीलदास व श्याम जी वर्मा की सामाजिक व आर्थिक स्थिति में धरती आकाश का अन्तर था। श्याम जी वर्मा एक बहुत गरीब लड़का था सेठ छबील दास एक बहुत बड़े धनी व्यापारी थे। श्याम जी के पास सिवाए प्रखर प्रतिभा व योग्यता के कुछ न था। सेठ छबील दास ने ऐसे व्यक्ति के हाथ में अपनी लड़की क्यों दी। यह प्रश्न कई दिन तक बम्बई के सामाजिक क्षेत्रों में बहस का विषय बना रहा। सेठ छबीलदास एक व्यापारी थे। वह समझते थे कि इस कदर बुद्धिमान और प्रतिभा सम्पन्न लड़का किसी समय बहुत ऊंचा जा सकता है। इसलिए उन्होंने अपनी बेटी का भाग्य दाव पर लगा दिया और एक ऐसे नौजवान के हाथ में दे दिया जो दूसरों के सहारे चल रहा था और जिसका अपना कुछ भी न था। लेकिन सेठ छबीलदास के परिवार में शामिल होने का श्यामजी को एक फायदा भी हुआ कि बम्बई के सामाजिक क्षेत्रों में उनकी चर्चा होने लगी। इस समय तक श्याम जी संस्कृत भी बहुत कुछ पढ़ चुके थे और इसलिए उन की गणना संस्कृत के बड़े बड़े विद्वानों में होने लगी। 1875 तक बम्बई के शिक्षा

(शेष पृष्ठ 7 पर)

## वेदामृत—

# हमारी राष्ट्रीय प्रार्थना

ले—श्री रामेश्वर शास्त्री सिद्धान्त शिरोमणि एम ए

आ ब्रह्मन ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्र
राजन्य शूरऽ इषव्योऽतिव्याधी महारथो
जायता दोग्ध्री धनुर्वोढानड्वानाशु सप्ति
पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठा सभयो युवास्य
यजमानस्य वीरो जायता निकामे निकामे न
पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधय पच्यन्ता
योगक्षेमो न कल्पताम ।। यजु 22 22

(ब्रह्मन) महान सब बधक प्रभो (राष्ट)हमारे राष्ट मे(ब्रह्मवर्चसी ब्राह्मण) ब्रह्म ज्ञान वाले तजस्वी ब्राह्मण—नेता (आजायताम) सब ओर से उत्पन्न हो (इषव्य) बाण आग्नि अस्त्र शस्त्रो के चल ने मे निपुण (अतिव्य धी) दूर तक निशाना बीधने वाले (महारथी (शर) शरवीर रणधीर राजन्य) क्षत्रिय रक्षक (आजायताम) सब ओर से उत्पन्न हो (दोग्ध्री धनु) दूध देने वाली ५धार गाय उत्पन्न हो (वोढा अनड्वान) सब प्रक र भार उठाने मे समथ बल उत्पन्न हो (आशु सप्ति) तेज चलने वाले घोड उ पन्न हो (पुरन्धि योषा) नगरो की रक्षा करने वाली स्त्रिया उत्पन्न हो (अस्य यजमानस्य इस यजमान के अर्थात राष्ट सबी सर्वोत्तम कायकर्त्ता के जिष्ण ) विजय करने वाले (रथेष्ठा) रथारोही (सभेय) सभाओ मे जाने योग्य (युवा वीर) नव युवक बलवान पुत्र (आयताम) उत्पन्न हो (न) हमारी (निकामे निकामे) कामनानुसार (पर्ज य वर्षत) बादल वष्टि कर (न ओषधय) हमारी औ षिया अर्थात अन्न (फलव य पच्यन्ताम) फल वाले होकर पक (न योगक्षेम क प ताम) हमे अप्राप्त ऐश्वय की प्राप्ति रूप योग और प्राप्त ऐश्वय की रक्षा रूपी क्षम प्राप्त हो।

मन्त्र मे राष्ट के अभ्युत्थान के लिए सर्वोपरि विराजमान सब बधक परमेश्वर से प्राथना की गई है हे ब्रह्मन हमारे राष्ट मे ब्राह्मण (नेतागण) ब्रह्म तेजधारी हो और राज य क्षत्रिय (रक्ष गण) धनुर्विद्या मे निपण अस्त्र शस्त्रो से सुसज्जित अचक निशान बीधने वाले श वीर मह गी हो तथ हमारे राष्ट मे दुध र गाय भार उठाने मे समथ बल तेज चलने वाले घोड और नगरो की रक्षा करने वाली महिलाय हो। इस राष्ट के सुत्र सर्वोत्तम क यकर्त्ता यज मानो रन प्रज जन के पत्र बलवान विज ो और सभ्य ो जब जब हम च हे तब-तब राष्ट मे वर्षा हो और हमारे अनाज फल वाले होकर समय पर पक हे प्रभो। हम सब राष्टियो को योग क्षम अर्थात अप्राप्त ऐश्वय की प्रा ति और प्राप्त ऐश्वय की रक्षा प्राप्त हो

किस र ष्ट की उन्नति का एव अव नति उसके नायक और रक्षक काय कर्त्ताओ पर ही निभर होता है जिसके नेता तपस्वी ्यागी दूरदर्शी और रक्षक धनुर्विद्या मे निपुण अस्त्र शस्त्रो से सुसज्जित निभय शरवीर एव कर्तव्य परायण होत हैं वह राष्ट्र सब प्रकार से फलता फलता और समृद्धि को प्राप्त होता है परन्त जिसके नेता एव रक्षक स्वार्थी दम्भी एव कर्त्तव्यहीन होते हैं उसका शीघ्र पतन हो जाता है इसलिए मन्त्र मे सब प्रथम जगदीश्वर से यही प्राथना की गयी है कि हमारे राष्ट मे ब्राह्मण अर्थात प्रजाजन को आगे बढाने वाले नेतागण ब्रह्मतेज से युक्त हो और राजन्य अर्थात् प्रजाजन भी अ दर तथा बाहर से रक्षा करने वाले क्षत्रिय रक्षक गण शरवीर अस्त्र शस्त्रो से सुस ज्जत निर्भीक एव कर्तव्य परायण हो।

मन्त्र मे प्रयुक्त ब्राह्मण शब्द राष्ट की बधक ब्रह्म शक्ति का द्योतक है और राजन्य श द व्यवस्थापक रक्षक क्षात्र शक्ति का द्योतक है जिस र ष्ट की ब्र ह्म शक्ति और क्षात्र शक्ति दोनो ही परस्पर एक दूसरे की पोषक होती हैं उसकी प्रजा निभय होकर अपनी उ नति करती जाती है ब्रह्मवर्चस्वी नेताओ की प्र णा से और निर्भीक रक्षको की सह यता से राष्ट के निर्माण काय मे लगी हु प्रजा अपनी कामना रूप राष्ट की अभिवृद्धि करती है और दुधार ग यो मजबूत बलो तथा शीघ्रगामी अश्व आदि उपयोगी पशुओ को उत्पन्न कर अपने मम न ही उनकी रक्षण व्यवस्था करती ैर उनकी सहायता से दूध अ न फल न वनस्पति आदि बल वीय एव आरोग्य वधक पदार्थों का उत्पादन बढा कर देश को समृद्ध बनाती है।

ब्राह्म शक्ति राष्ट्र का मुख और क्षात्र शक्ति राष्ट्र की बाहुए हैं अथवा ये दोनो राष्ट्र रूपी शरीर के आश्चर्यकर्त्ता प्राणापान हैं। बिना इन दोनो के राष्ट जीवित नही रहता। इसलिए श्र ष्ठ राष्ट बनाने के लिए तेजस्वी ब्राह्म शक्ति और निर्भीक क्षात्र शक्ति चाहिए। दोनो के सामञ्जस्य से ही राष्ट्र मे स्थिरता और शक्ति उत्पन्न होती है। यजुर्वेद के बीसव अध्याय मे इसी सच्चाई की स्पष्ट घोषणा की गई है—

यत्र ब्रह्म च क्षत्र च सम्यञ्चौ
चरत सह
त ल्लोक पुण्य प्रज्ञेष यत्र देवा
सहाग्निना।
यजु 20।25।

जहा ब्रह्म अर्थात् ब्राह्म शक्ति और क्षात्र अर्थात क्षात्र शक्ति दो ो साथ ? मिली हुई काय करती हैं और जहा देव (विद्वान) अग्नि कर्मों से युक्त होत हैं उस देश को ज्ञान विज्ञान और अन्न से भर पूर पवित्र देश जानना चाहिए

मनुस्मति मे भी इसी बात को स्पष्ट कहा गया है—

नाब्रह्म क्षत्रम ्नोति नाक्षत्र ब्रह्म
वर्धते।
ब्रह्म क्षत्र च सम्पृक्तमिह चामुत्र
वर्धते।।
मनु 9।322।

बिना ब्रह्म शक्ति क क्षात्र शक्ति बढती नही और न बिना क्षात्र शक्ति के ब्राह्म शक्ति ही बढत है बल्कि दोनो समन्वित होने से ही लोक और परलोक मे बढती हैं।

जिस राष्ट की ब्राह्म शक्ति और क्षात्र शक्ति सदा जागरूक रहती हैं उसका नागरिक निर्भय होकर अपनी तथा राष्ट की उन्नति करता है। वहा ही माताए न केवल अपनी सन्तान को ही सब प्रकार से हृष्ट पुष्ट सुयोग्य एव कर्त्तव्य परायण बनाती हैं अपितु स्वय अपने को आत्म बना कर नगरो की रक्षा करने में समथ होती हैं। जैसा कि मन्त्र में आया पुरन्धि शब्द स्पष्ट कर रहा है। स्वतन्त्र एव आदर्श राष्ट की महिलाय राष्ट्रोन्नति के कार्यों मे कभी पीछे नही रहती बल्कि आगे बढ़कर अपने उत्तर दायित्व को भली भाति निभाती हैं।

जो प्रजाजन परोपकार के उत्तमोत्तम क र्मों को करत हुए राष्ट रूपी महान यज्ञ के सफल बनाने मे लगे हुए हैं वही राष्ट के सच्चे सूत्रधार यजमान हैं उनके लिए प्रत्येक नागरिक शभ कामना करता है कि उनके पुत्र वीर युवा विजयी साहस सम्पन्न और सभ्य हो जो सदा राष्ट का क याण करते रहे।

मन्त्र के अन्तिम भाग मे रा॰ अभ्युदय की कामना करते हुए प्र की गयी है कि हे ब्रह्मन हमारे राष्ट मे यथा समय वर्षा हो औषधिया एव वन स्पतिया यथा समय पक कर फल देने वाली हो हम सब प्रकार से योग क्षम हो हमारी ब्राह्म शक्ति हमे सब प्रकार से अप्राप्त ऐश्वर्यों की प्राप्ति कराए और क्षात्र शक्ति समस्त प्राप्त ऐश्वर्यों की रक्षा करे।

मन्त्र मे प्राथना द्वारा सक्षप से मे राष्ट का आदर्श स्वरूप उपस्थित किया गया जिसे अपना कर प्रत्येक राष्ट आदर्श रा ट बन सकता है और जिसके तपस्वी ्यागी नेता एव शासक अपने प्रजाजनो की भावनाओ का आदर करते हुए उनका वास्तव मे योग क्षम कर सकते हैं।

अ त मे प्रभ से हमारी प्रार्थना है कि वह हमे शक्ति एव बल दे कि हम राष्ट के प्रति अपने कर्तव्यो को समझते हुए अपने राष्ट मे आदर्श प्रजातन्त्र राम राज्य स्थापित कर सक जिससे—

योग क्षमो न कल्पताम

हम सब प्रजाजनो का योग क्षम कल्याण हो

—

## आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द अमृतसर में गणतन्त्र दिवस मनाया गया

आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द अमृतसर मे गणतन्त्र दिवस समारोह पूर्वक और बडी धूमधाम से मनाया गया है।

प्रात काल बृहद यज्ञ के पश्चात साढ नौ बजे श्री ओंकारनाथ जी बहल डी ए एस एम डी मनेजर श्रद्धानन्द महिला महाविद्यालय और दयानन्द मल्टी हायर सकेण्डरी स्कल अमृतसर ने उपरोक्त व अन्य शिक्षा सस्थानो की छात्राओं व समाज के सदस्यो और नगर के प्रतिष्ठित शहरियों की उपस्थिति में राष्ट्रीय झण्डा फहराया। राष्ट्रीय गीत का गान भी हुआ। इसके बाद सभा हुई जिसकी अध्यक्षता श्री ी डी मेहरा राष्टीय सुरक्षा समिति अमृतसर व प्रधान पीस मूवमेंट ऐसोसिएशन ने की जिसमें गणतन्त्र दिवस पर गणमान्य लोगो ने विचार रखे व छात्राओ ने गणतन्त्र व देशभक्ति का गुणगान किया।

श्री सुभाष भाटिया प्रधान आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द ने अध्यक्ष महोदय व उपस्थित बन्धुओ का धन्यवाद किया और शान्ति पाठ पश्चात् सभा विसर्जित हुई।

वीरेन्द्र देवगण महामन्त्री

## सम्पादकीय—

# आर्य समाज का नया साहित्य (4)

इसी क्रम के पिछले लेखों में मैंने उस साहित्य के विषय में कुछ जानकारी दी थी जो आर्य प्रतिनिधि सभाओं के अतिरिक्त दूसरी कई संस्थाओं ने ऋषि निर्वाण शताब्दी के सम्बन्ध में प्रकाशित किया है। उसमें विशेषकर मैंने तीन संस्थाओं का नाम लिया। देहली का दयानन्द संस्थान, बहालगढ़ का श्री रामलाल कपूर ट्रस्ट और होशियारपुर का विश्वेश्वरानन्द संस्थान। इन तीनों के साहित्य को देखकर यह आशा अवश्य बन्ध जाती है कि आर्य समाज के साहित्य का भविष्य अन्धकार में नहीं है। जिन महानुभावों ने इन संस्थाओं को शुरू किया था जो अब तक चलाते रहे हैं, उनमें से दो तो अब इस संसार में नहीं हैं आचार्य विश्वबन्धु जी और महात्मा वेदभिक्षु जी। मैं इसे आर्य समाज का परम सौभाग्य समझता हूं कि श्री पं. युधिष्ठिर मीमांसक जैसे विद्वान् और उच्चकोटि के लेखक अभी हमारे बीच में हैं। श्री युधिष्ठिर मीमांसक की विशेषता यह है कि वह समय 2 पर महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन की विशेष घटनाओं के विषय में अनुसन्धान करते रहते हैं। आर्य जनता को उसके विषय में जानकारी देते रहते हैं। मेरे विचार में आचार्य विश्वबन्धु, स्वर्गीय पं. भगवद्दत्त जी और पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के विषय में जो अनुसन्धान किया किसी और ने नहीं किया। सत्यार्थ प्रकाश का जो शताब्दी संस्करण प्रकाशित किया गया था वह एक ऐसी पुस्तक है जो प्रत्येक आर्य समाज और आर्य समाज की प्रत्येक शिक्षा संस्था के पुस्तकालय में रहनी चाहिए। परन्तु यह एक अत्यन्त निराशाजनक स्थिति है कि इस ग्रन्थ की दो हजार प्रतियों में से इस समय तक केवल 1100 सौ की बिक्री हुई है और 900 सौ अभी तक भी बाकी पड़ी हैं। इसका एक कारण मैं यह भी समझता हूं कि रामलाल कपूर ट्रस्ट का किसी सभा से कोई सम्बन्ध नहीं, इसलिए सत्यार्थ प्रकाश के इस संस्करण का वह प्रचार भी नहीं हुआ जो होना चाहिए था और यही कारण है जो इसकी बिक्री नहीं हुई।

निर्वाण शताब्दी के अवसर पर कुछ प्रतिनिधि सभाओं ने भी अपनी पत्रिकाओं के विशेषांक निकाले हैं, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुख पत्र 'आर्य सन्देश' ने बहुत ही उच्चकोटि के लेखों से भरा अपना विशेषांक निकाला, केवल उसकी छपाई की ओर वह ध्यान नहीं दिया गया जो देना चाहिए था परन्तु लेखों का स्तर बहुत ऊंचा रहा है। आर्य समाज कलकत्ता ने अपनी पत्रिका आर्य संसार का जो विशेषांक निकाला है वह भी उसी उच्च स्तर का है। इसके सम्पादक श्री पं. उमाकान्त उपाध्याय हैं। उनका इस पत्रिका का सम्पादक होना ही इसकी सफलता का एक प्रमाण है। परोपकारिणी सभा ने भी अपनी पत्रिका 'परोपकारी' का विशेषांक निकाला, लेख इसमें भी बहुत उच्चकोटि के हैं परन्तु यह एक प्रकार से निर्वाण शताब्दी की रिपोर्ट है। इसका भी अपना एक महत्व है इस प्रकार के विशेषांक साहित्यकारों और इतिहासकारों के लिए बहुत उपयोगी होते हैं, क्योंकि इनमें जो सामग्री इकट्ठी कर दी जाती है वह आगे चलकर एक संस्था का इतिहास लिखने में बहुत काम आ सकती है। ऋषि निर्वाण शताब्दी के इस अवसर पर 'ऋषि दयानन्द और मानव एकता' इस नाम की एक छोटी सी पुस्तिका भी प्रकाशित हुई इसके सम्पादक श्री रामस्वरूप हैं और इसमें ऋषि दयानन्द की विचार धारा के भिन्न 2 पक्ष पेश किए गए हैं। जो व्यक्ति महर्षि दयानन्द की विचार धारा को समझना चाहते हैं उनके लिए यह पुस्तक बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

ऋषि निर्वाण शताब्दी के अवसर पर साहित्य तो और भी प्रकाशित हुआ है, जो पुस्तक या पत्रिकाएं मेरे पास आई हैं या हमारी सभा के कार्यालय में आई हैं। उनके विषय में, मैंने अपने संक्षिप्त विचार पाठकों के सामने रख दिए हैं। इसका यह अर्थ नहीं कि इसके अतिरिक्त और कोई पुस्तक या पत्रिका प्रकाशित नहीं हुई। आर्य समाज का क्षेत्र बहुत विस्तृत है और महर्षि दयानन्द के अनुयायियों और समर्थकों का क्षेत्र भी कुछ कम नहीं है। निर्वाण शताब्दी के अवसर पर कई और महानुभावों ने भी कुछ न कुछ प्रकाशित किया होगा। आवश्यकता इस बात की है कि निर्वाण शताब्दी के सम्बन्ध में जो भी साहित्य प्रकाशित हुआ है उसका एक विवरण प्रकाशित किया जाए जो लोग आर्य समाज के विषय में अनुसन्धान करते हैं उन्हें प्राय यह शिकायत रहती है कि उन्हें सारी जानकारी नहीं मिलती और यह है भी ठीक। आर्य समाज का कोई भी ऐसा पुस्तकालय नहीं, जहां एक व्यक्ति को आर्य समाज का सारा साहित्य मिल सके, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में अब महर्षि दयानन्द सरस्वती और आर्य समाज से सम्बन्धित साहित्य इकट्ठा किया जा रहा है, परन्तु वहां भी वही साहित्य मंगवाया जाता है जिसके विषय में पता चल जाता है। जो पुस्तकें या पत्रिकाएं प्रकाशित हों और उनका पता ही न चले तो विश्वविद्यालय वाले उन्हें कैसे मंगवा सकते हैं।

श्री पं. युधिष्ठिर जी मीमांसक ने आर्य साहित्य की बिक्री को अत्यन्त निराशाजनक बताया है। मैं उनसे सहमत हूं, आवश्यकता इस बात की है कि एक ऐसी केन्द्रीय संस्था बनाई जाए, जो समय 2 पर आर्य समाज के साहित्य की सूची तैयार करके आर्य समाजों और आर्य शिक्षा संस्थाओं को भेजती रहे और वह उसके अनुसार अपने 2 पुस्तकालय के लिए साहित्य मंगवाते रहें, यह काम या तो सार्वदेशिक सभा कर सकती है या परोपकारिणी सभा। परन्तु दोनों का इस तरफ अभी तक ध्यान नहीं गया। इसका यह परिणाम है कि साहित्य के क्षेत्र में आर्य समाज बहुत पिछड़ गया। इसके पास उच्चकोटि के लेखकों की कमी नहीं, केवल उनकी रचनाओं को जनता तक पहुंचाने का कोई प्रबन्ध नहीं है। यदि यह हो जाए तो आर्य समाज के प्रचार का क्षेत्र बहुत बढ़ सकता है।

—वीरेन्द्र

# कुछ गुरुकुल काँगड़ी के विषयमें

पिछले कुछ समय से कुछ व्यक्ति यह प्रचार कर रहे हैं कि गुरुकुल कांगड़ी और गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी को सरकार के हवाले करने की योजना बनाई जा रही है। मुझे इस विषय में कुछ पत्र भी आए हैं और कई महानुभावों ने इस विषय में अपनी चिन्ता भी व्यक्त की है। मैंने उन सबको लिख भी दिया है, परन्तु आर्य मर्यादा के द्वारा सारी आर्य जनता को यह विश्वास दिलाना चाहता हूं कि इस समय ऐसी कोई योजना विचाराधीन नहीं है और न गुरुकुल कांगड़ी या गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी सरकार को दी जाएगी। इन दोनों संस्थाओं के प्रबन्ध में समय 2 पर कुछ कठिनाईयां अवश्य आती रहती हैं। उनके कारण इन्हें सरकार के हवाले करने की बात कभी नहीं हुई और न कभी होगी। आर्य जनता निश्चिन्त रहे, यह दोनों संस्थाएं उसकी हैं और उसकी ही रहेंगी। इनमें सरकार को हस्तक्षेप करने की कभी भी अनुमति नहीं दी जाएगी।

—वीरेन्द्र

## स्मरण पत्र

## साधारण सभा के सदस्यों की सेवा में

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर की वार्षिक साधारण सभा का अधिवेशन रविवार 19 फरवरी 84 तदानुसार (7 फाल्गुन 2040) को आर्य माडल स्कूल, सीवाला रोड, फगवाड़ा में होना निश्चित हुआ है। कार्यवाही दस बजे प्रातः आरम्भ होगी। कृपया नियत समय पर सम्मिलित होकर कृतार्थ करें।

विचारणीय विषय (एजेण्डा)

(1) गत साधारण सभा दिनांक 8 अगस्त 82 की कार्यवाही सम्पुष्ट करना।

(2) सभा के विभिन्न भागों की सम्वत 2039 (82 83) की वार्षिक रिपोर्ट।

(3) सभा का सम्वत् 2039 का आय व्यय तथा सम्वत् 2040 (83-84) का बजट स्वीकार करना।

(4) अन्तरंग सभा द्वारा आर्य समाजों के नाम लगाई गई वार्षिक धनराशि की स्वीकृति।

(5) पंजाब की वर्तमान स्थिति व समस्याओं पर विचार।

(6) सभा के नए भवन निर्माण के लिए धन संग्रह।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

# क्या स्मरण शक्ति बढ़ सकती है ?

ले—श्री डा देवव्रत जी आचार्य स चालक
सार्वदेशिक आर्य वीर दल दिल्ली

यद्यपि बुद्धि की वद्धि होना सम्भव नही है। क्योंकि यह अधिकतर वश परम्परा से ही मिलती है। परन्तु उचित खान पान और वातावरण तथा अभ्यास द्वारा इसकी कार्य शक्ति को बहुत सीमा तक प्रभावित किया जा सकता है। छान्दोग्य उपनिषद मे बहुत स्पष्ट रूप से इस का समर्थन किया है।

आहार शुद्धौ सत्व शुद्धि
सत्व शुद्धौ ध्रुवा स्मृति ।
स्मृति लम्भ सर्व ग्रन्थीना
विप्रमोक्ष (76)

अर्थात भोजन के शुद्ध होन पर सत्व (बुद्धि) शुद्ध रहती है। बद्धि के शुद्ध रहने पर स्मरण शक्ति स्थिर हो जाती है कोई बात विस्मत नहीं रहती। स्मति के दृढ रहने पर अज्ञान की सभी ग्रन्थिया खुल जाती हैं और व्यक्ति का मोक्ष हो जाता है। आयर्वेद मे भी इसीलिए बुद्धि वधक औषधियो का विधान किया गया है। सात्विक पदार्थ स्वय ही बुद्धिवधक हैं यह पहले कहा जा चका है। यहा कुछ बद्धि की काय शक्ति और स्मरण शक्ति के बढाने वाले योग और प्रक्रियाओ का वणन किया जाएगा।

1 ब्रह्मचय का पालन उचित खान पान नियमित दिनचर्या दढ सकल्प अपने विषय के प्रति रुचि होना ये सभी स्मरण शक्ति की वृद्धि करते हैं।

० साय काल 10 गिरि बादाम तथा 5-7 काली मिच काच चीनी अथवा मिटटी के पात्र मे भिगो दें प्रात काल नित्यकर्मों (शौच स्नानादि) से निवत्त होकर इन्हे कुण्डी या सिल बटटे पर छिलका उतार कर घोटे। खब घटाई होने के बाद 250 ग्राम जल मिलाकर साफ कपड से छान ल। इनमे मिश्री या खाड इच्छानुसार मिलाकर पीव। सर्दी मे पानी के स्थान पर दूध मिलाया जा सकता है अथवा दो तोला चून गम करके उसमे छौक कर सेवन कर और ऊपर से दूध पी ल। यह योग मस्तिष्क के लिए अत्युत्तम है। बादाम का सेवन सीधा मस्तिष्क को बल प्रदान करता है।

3 ब्राह्मी बूटी 3 ग्राम (सूखी 1 ग्राम) 10 काली मिर्च मिलाकर घोटे और जल मे मिलाकर (मीठा भी मिला सकते हैं) पी लें

4 ब्राह्मी की पत्ती 8 10 शखपुष्पी 2 3 माशा काली मिच 5 7 सबको घोट पीस पानी मे मिलाकर मीठा मिलाय यह शबत ग्रीष्म ऋतु मे बहुत लाभदायक है।

5 शखपुष्पी को छाया मे सुखा लें इसका कपडछान चूण करके मिश्री मिला कर 1 चम्मच प्रतिदिन दूध के साथ ल।

6 वच का चण 1 ग्राम लेकर गो दुग्ध पीव।

इनके अतिरिक्त सारस्वत चूण सारस्वतारिष्ट अश्वगधारिष्ट ब्राह्मी बटी तथा स्मति सागर रस का सेवन भी उपयोगी है।

## यौगिक अभ्यास

7; प्राणायाम द्वारा बुद्धि पर छाया हुआ अन्धकार का पर्दा दूर हो ज्ञान का प्रकाश होता है। महर्षि स्वामी दयानन्द जी सत्याथ प्रकाश मे प्राणायाम की महिमा लिखते हैं कि प्राणायाम से बुद्धि इतनी तीव्र और सूक्ष्म हो जाती है कि कठिन से कठिन सूक्ष्म विषयो को बहुत शीघ्र ग्रहण कर लेती है। प्राणायाम मे बाह्य कुम्भक और नाडी शुद्धि विशेष लाभदायक है।

8 शीर्षासन का नियमित अभ्यास करना उपयोगी है। इससे मस्तिष्क को अधिक मात्रा मे शुद्ध रक्त मिलकर उसके 12 ज्ञान केन्द्र सजग रहते हैं।

9 जलनेति प्रतिदिन करने से मस्तिष्क की अनावश्यक गर्मी एव नजला जुकाम नेत्रो की लाली इत्यादि विकार दूर होते है।

10 प्रात काल ब्रह्ममुहूर्त में उठकर शौचादि नित्यकर्मों मे निवत्त होकर भ्रमण करना घास पर चलना तथा दीघ श्वास प्रश्वास करना और आसन मस्तिष्क को बल देते हैं।

11 किसी बाग बगीचे मे जाकर किसी पुष्प (अधिक लाल न हो) के सामने 3 4 फुट की दूरी पर बठिए। पुष्प आखों की सिधाई मे रहे। अब आसन लगाकर शान्तचित्त हो उसे 1 मिनट तक देख। पश्चात आख बन्द कर ल और उसी पुष्प को वहीं पर देखने का प्रयत्न कर कुछ समय तक पुष्प दिखलाई देगा पश्चात् उसकी कुछ अनुमानिक आकृति दीखती रहेगी जब उसका प्रतिबिम्ब दिखलाई न पड तब पुष्प आख खोलकर पुष्प को देख और पहले के समान अभ्यास कर ऐसे 3 चक्र से प्रारम्भ करके 11 चक्र तक धीरे 2 अभ्यासो को बढावें। अभ्यास हो जाने पर बहुत समय तक पुष्प की आकृति दीखती रहेगी। जब यह आकृति 2 3 मिनट तक बनी रहे तो समझो काफी प्रगति हो गई है। पुष्प न मिल सके तो कृत्रिम पुष्प या हरे पत्तो पर ध्यान केन्द्रित किया जा सकता है। इसी प्रकार मोमबत्ती का दीपक पर ध्यान टिका कर उसके प्रतिबिम्ब को आख बन्द करके भृकुटी में देखने का अभ्यास करना चाहिए। इस अभ्यास से मस्तिष्क के निष्क्रिय ज्ञान तन्तु सक्रिय होकर स्मरण शक्ति बढ सकती है।

12 सायकाल बिस्तर पर जाने के पश्चात प्रात काल से लेकर सायकाल तक के कार्यों का सूक्ष्म निरीक्षण कर। धीरे धीरे अभ्यास बढने पर पिछले दिन के कार्यों का चिन्तन किया जा सकता है।

18 गायत्री मन्त्र का जप प्रतिदिन 101 बार करने तथा अर्थ चिन्तन करने से भी मन बुद्धि एकाग्र हो जाती है।

(क्रमशः)

# शान्ति की सुमधुर चांदनी

ले—श्री डा रमाकान्त दीक्षित त्रिपाठी

शांति की सुमधुर चांदनी छाने दो,
पक्षी को प्रभाती—सन्ध्या गाने दो
युद्ध के बादल मडराते बद करो
जन गण मन मे प्रेम नया आने दो
लोगे जब आज ऐसा काम करो।

तुम मानवता को
मत बदनाम करो,

अब तुम हार-जीत की बात न छेडो
अब काली नागिन सी रात न छेडो
व्यथा की बारूद सुलगती बद करो
अब किसी उर—वृन्त के पात न छेडो
तुम धरो धीर अपना सरनाम करो।

तुम मानवता को,
मत बदनाम करो

यह नभ मण्डल उदार देखो ऊपर
करते रग रलिया जड चेतन भू पर,
खुले पशुता के दरवाजे बद करो
छोड मस्त सुगन्ध क्यो जाते भू पर
हलाहल को भी अमत का जाम करो

तुम मानवता को
मत बदनाम करो

सत्य शिव सुन्दरम के फूल न तोडो
तम जीवन सरिता के कूल न तोडो
अब हा हा कार भय कातर बंद करो
समझो कुछ सस्कृति का मूल न तोडो
तुम सुख पाने आराम हराम करो

तुम मानवता को
मत बदनाम करो,

# ओ३म् ओ माली ओ३म्

ले—कविवर "प्रणव" शास्त्री, एम ए महोपदेशक

बन उपवन में आग लगी है, जलने लागे पात रे।
ओमाली! मदहोशी त्यागो सुनो हमारी बात रे॥

सींचा तात्या टोप नाना विरजानन्द वरदानी ने।
जिसे जफर, श्री कुमर सिंह ने झांसी वाली रानी ने॥

बिस्मिल शेखर भगत बोस की मस्ती भरी जवानी ने।
जिसको सींचा लाल, लाजपत, ऊधमसिंह बलिदानी ने॥
आज उसी पर दुष्ट द्रोह ने डाली अपनी घात रे॥1॥

गुरुओं का गुरु ध्येय भुलाकर रूठ रहा गुरुद्वारा है।
बन्दा, गुरुगोविन्द सिंह की रूठ रही असिधारा है॥

हरिसिंह नलुआ का पौरुष रूठा करे किनारा है।
महाराज रणजीत सिंह का रूठा गौरव प्यारा है॥
आज शहीदों के रक्तों की रूठ चली सौगात रे॥2॥

अफसोस कल अबरबाद पाक का झुकने लगा सलामी को।
जो कि बुलाया सज्जत मे था ले सहयोग इमामी को।

यह प्रतिवेशी छल प्रपञ्च ने नागी निज पैनाई है।
जो सौहार्द, स्नेह प्यार की फसल काटने आई है।
अमृतसर मे जहर घुला है, वातावरण विषाक्त रे॥3॥

भूल गए ननकाना साहब सीस मञ्ज गुरुद्वारे को।
गो ब्राह्मण वेदों की रक्षा भूले ग्रन्थ उचारे को॥

फतह सिंह जोरावर भैया के सरहिन्दी मारे को—
भूल, लिए बट भार भावना तुम मचले बटवारे को।
दिशाहीन हो चली आज गुरुओं की शिष्य जमात रे॥4॥

क्या न देश की चिन्ता तुमको बस अपनी ही चिन्ता है।
अरे दलों के दल-दल वासी क्या वोटों की चिन्ता है॥

पार्टी का अस्तित्व न बिखरे क्या इसकी ही चिन्ता है।
जन-मानस एक मन होवे तुष्टिकरण की चिन्ता है।
तुम्ही बनाते रहे इसलिए बात-बात मे बात रे॥5॥

उधर देख लो दक्षिण मे पश्चिम से आई आंधियां।
पैंटो डासर डेरा डाले लिए विदेशी व्याधियां।

फसा स्वर्थ के पिंजरे मे जयहिन्द तुला नहि तोलेगा।
प्रजातन्त्र का पावन शुक यह कल्पा अकबर बोलेगा।
आज अब तलक पगड़ी बाध पहुचे दूर बरात रे॥6॥

तुम निष्पक्ष निडर, निर्द्वन्द्वी नीति नहीं अपनाओगे।
'शासन तो दृढ़ता से चलता' रीति नहीं अपनाओगे।

प्रिय पञ्जाब के सौंह आज के कफन नहीं बुन पाओगे।
काल चुनौती आज दे रहा जो न इसे सुन पाओगे।
बिगड़ी जाती बनी-बनाई बात-बात में बात रे॥7॥

अभी घोंसले बने हुए हैं फलती सुखनी आम रे।
व्याकुल पक्षी चहक रहे हैं बचे न चन्दन बाग रे।

नहीं सूखने पावे जन-मन-गण का त्याग तड़ाग रे।
'प्रणव' जगाता माली प्यारे! जाग जाग रे जाग रे।
तुम एकत्व विचार वारि की बरसाओ बरसात रे॥8॥

—

बाल-जगत्

# आलसी नहीं कर्मशील बनो

ले—श्री सुरेन्द्र मोहन सुनील" विद्यावाचस्पति दिल्ली

दुर्गादास था तो धनी किसान किन्तु बहुत आलसी था। वह न अपने खेत देखने जाता था न खलिहान। अपनी गाय भैंसों की भी खोज खबर नहीं रखता था और न अपने घर के सामानों की देख भाल करता था।

सब काम वह नौकरों पर छोड़ देता था। उसके आलस और कुप्रबन्ध से उस के घर की व्यवस्था बिगड़ गयी। उसको खेतों मे हानि होने लगी। गायों के दूध घी से भी उसे कोई अच्छा लाभ नहीं होता था।

एक दिन दुर्गादास का मित्र हरिश्चन्द्र उसके घर आया। हरिश्चन्द्र ने दुर्गादास के घर का हाल देखा उसने समझ लिया कि समझाने से आलसी दुर्गादास अपना स्वभाव नहीं छोड़ेगा। इसलिए उसने मित्र दुर्गादास की भलाई करने के लिए उसने कहा—मित्र। तुम्हारी विपत्ति देखकर मुझे बड़ा दुःख हो रहा है। तुम्हारी दरिद्रता को दूर करने का एक सरल उपाय मैं जानता हूं।

दुर्गादास—'कृपा करके वह उपाय तुम मुझे बता दो।

मैं उसे अवश्य करूंगा।

हरिश्चन्द्र—सब पक्षियों के जागने से पहले ही मान सरोवर पर रहने वाला एक सफेद हंस पृथ्वी पर आता है। वह दोपहर दिन चढ़े लौट जाता है। यह तो पता नहीं कि वह कब कहां आवेगा, किन्तु जो उसका दर्शन कर लेता है उसको कभी किसी बात की कमी नहीं होती।

दुर्गादास—कुछ भी हो मैं उस हंस के दर्शन अवश्य करूंगा।

हरिश्चन्द्र चला गया। दुर्गादास दूसरे दिन बड़े सबेरे उठा। वह घर से बाहर निकला और हंस की खोज मे खलिहान मे गया। वहां उसने देखा कि एक आदमी उसके ढेर से गेहूं अपने ढेर मे डालने के लिए उठा रहा है। दुर्गादास को देखकर वह लज्जित हो गया और क्षमा मांगने लगा।

खलिहान से वह घर लौट आया और गोशाला मे गया। वहां का रखवाला गाय का दूध दुहकर अपनी स्त्री के लोटे मे डाल रहा था। दुर्गादास ने उसे डांटा।

घर पर जलपान करके हंस की खोज मे वह फिर निकला और खेत पर गया। उसने देखा कि खेत पर अब तक मजदूर आए ही नहीं थे। वह वहां रुक गया।

जब मजदूर आए तो उन्हें देर से आने का उसने उलाहना दिया। इस प्रकार वह जहां गया वहीं उसकी कोई न कोई हानि होती उसको दिखाई दी।

सफेद हंस की खोज मे दुर्गादास प्रतिदिन सवेरे उठने और घूमने लगा। अब उसके नौकर ठीक काम करने लगे। उसके यहां चोरी होना बन्द हो गयी।

पहले वह रोगी रहता था, अब उस का स्वास्थ्य ठीक हो गया। जिस खेत से उसे दस मन अन्न मिलता था उससे अब पच्चीस मन मिलने लगा।

गोशाला से दूध पहले से अधिक आने लगा। एक दिन फिर दुर्गादास का मित्र हरिश्चन्द्र उसके घर आया।

दुर्गादास ने कहा—मित्र! सफेद हंस तो मुझे अब तक नहीं दीखा किन्तु उसकी खोज मे लगने से मुझे लाभ बहुत हुआ है।

हरिश्चन्द्र हंस पड़ा और बोला—परिश्रम करना ही वह सफेद हंस है। परिश्रम के पंख सदा उजले होते हैं—जो परिश्रम न करके अपना काम नौकरों पर छोड़ देता है वह हानि उठाता है और जो स्वयं परिश्रम करता है तथा जो स्वयं नौकरों की देखभाल करता है, वह सम्पत्ति और सम्मान पाता है। मित्र परिश्रम करो मेहनती बनो आलसी नहीं।

## २७ से २९ फरवरी तक टंकारा में ऋषि मेला

आर्य जनता को सूचित किया जाता है कि महर्षि दयानन्द जन्म स्थली टंकारा मे ऋषि मेला आगामी 27 से 29 फरवरी को शिवरात्रि पर्व पर हर वर्ष की भान्ति इस वर्ष भी आयोजित किया जा रहा है। ऋषि मेले से एक सप्ताह पूर्व से वेदपारायण यज्ञ आरम्भ हो जाएगा। ऋषि मेले पर तीनों दिन पधारे हुए सन्यासी एवं विद्वानों के उपदेश होंगे। टंकारा मे पधारने वाले समस्त ऋषि भक्तों के आवास एवं भोजन का निःशुल्क प्रबन्ध ट्रस्ट द्वारा किया जाएगा। समस्त आर्य जनता से अनुरोध है कि इसके लिए अभी से तैयारी आरम्भ कर दें।

—रामनाथ सहगल
मन्त्री

# सभा द्वारा आर्य समाजों के नाम वेद प्रचार के लिए निश्चित की गई राशि

सभा के अधिकारियों ने यह अनुभव किया है कि कुछ आर्य समाज अपने उत्सव कथाएं आदि नहीं रखती जिसके कारण सभा को वेद प्रचारार्थ आवश्यक धन राशि प्राप्त नहीं होती। कतिपय आर्य समाजों से उनकी सामर्थ्य से कम राशि सभा को मिलती है। परिणामतः वेद प्रचार विभाग में निरन्तर घाटा चला आ रहा है। सभा के लगभग सभी विभाग घाटे में चल रहे हैं जो स्थिति अनिश्चित काल तक नहीं चल सकती

इसको दृष्टि में रखकर सभा की दिनांक 26 6 83 की अन्तरंग सभा ने आर्य समाजों को कम से कम राशि वार्षिक निश्चित कर दी है जिसकी सूची साधारण सभा की स्वीकृति अर्थ नीचे दी जा रही है

—रामचन्द्र जावेद महामन्त्री

## जिला जालन्धर

1 आर्य समाज अड्डा होशियारपुर जालन्धर—3000) 2 अपरा 500) 3 भोगपुर—500) 4 नवांशहर दोआबा —1000) 5 करतारपुर—500) 6 जालन्धर छावनी—1000) 7 मुहल्ला गोविन्दगढ़ जालन्धर—1000) 8 ऋषि कुञ्ज पक्का बाग जालन्धर—1000) 9 राहों—500) 10 बस्ती शेख जालन्धर—500) 11 प्रीतनगर जालन्धर 500) 12 बस्ती गुजां जालन्धर—1000) 13 किशनपुरा मुहल्ला जालन्धर—500) 14 बस्ती दानिशमन्दां जालन्धर नगर—500) 15 माडल टाऊन जालन्धर—500) 16 नूरमहल 500) 17 फिल्लौर 1000) 18 बंगा—500) 19 मॉडल नगर जालन्धर—1000) 20 स्त्री आर्य समाज पक्का बाग जालन्धर—1000) 21 बस्ती मिट्ठू जालन्धर—1000) 22 गांधी नगर नं 1—500) 23 गांधी नगर 2 500) 24 बस्ती दानिशमन्द जालन्धर—500) 25 बड़ा कूप जालन्धर—1000) 26 बस्ती बावा खेल जालन्धर 500) 27 शहीद भगतसिंह कालोनी जालन्धर—500) 28 आर्य समाज आदर्श नगर जालन्धर 500) 29 आर्य समाज वेद मन्दिर बड़ा कूप 500) 30 आर्यसमाज आर्य नगर जालन्धर नगर—500) ग्रीन पार्क जालन्धर—1000)

## जिला गुरदासपुर

1 स्त्री आर्य समाज गुरदासपुर 1000) 2 सुजानपुर 1000) 3 सेवाराम नगर कादियां 1000) 4 फतेहगढ़ चूड़ियां—500) 5 मेन बाजार पठानकोट—500) 6 गुरुकुल विभाग गुरदासपुर—1500) 7 माडल टाऊन पठानकोट—1500) 8 चौहरी चौक बटाला—1500) 9 दीनानगर 1000) 10 डेरा बाबा नानक—500) 11 श्री हरगोबिन्दपुर—500) 12 स्त्री आर्य समाज दीनानगर—500)

## जिला पटियाला

1 स्त्री आर्य समाज पाण्डुसर नाभा 500) 2 पाण्डुसर नाभा—500) 3 समाना 500) 4 चौक पटियाला 1000) सरहिन्दी गेट पटियाला —500) 6 स्त्री आर्य समाज बस्सी पठाना 500 7 तिलौकीगेट पटियाला 500) 8 सरहिन्द 1000) 9 दलही गेट नाभा 1000 10 राजपुरा टाऊनशिप 1500) 11 स्त्री आर्य समाज पटियाला 500) 12 राजपुरा शहर 1000) 13 गोविन्दगढ़ मण्डी 1000) बस्सी पठाना 500) बनूड़ 500)

## जिला होशियारपुर

1 गढ़शंकर 500) 2 मुकेरियां 1000) 8 तलवाड़ा टाऊनशिप 500)

## जिला लुधियाना

1 बकरी बाजार लुधियाना 1000) 2 रायकोट 500) 3 आर्य समाज जगरांव 500) 4 दाल बाजार लुधियाना 3000 5 श्रद्धानन्द बाजार लुधियाना 1000) 6 हजूरीगंज लुधियाना 500) 7 जवाहरनगर लुधियाना 500) 8 स्त्री आर्य समाज दाल बाजार लुधियाना 1000) 9 स्त्री आर्य समाज श्रद्धानन्द बाजार लुधियाना 1000)

## फरीदकोट

1 कोटकपूरा 1000) 2 मलोट 500) 3 मोगा 2000) 4 फरीदकोट 2000)

## जिला कपूरथला

1 कपूरथला 1000) 2 बंगा रोड फगवाड़ा 1000) 3 गऊशाला रोड फगवाड़ा 1000) 4 सुलतानपुर लोधी 1000)

## चण्डीगढ़

1 सैक्टर 22 चण्डीगढ़ 2000) 2 सैक्टर 19 सी चण्डीगढ़ 1000) 3 सैक्टर 35 चण्डीगढ़ 1000)

## जिला संगरूर

1 संगरूर 1000) 5 स्त्री आर्य समाज संगरूर 500) 3 तपा 500 4 मलेरकोटला 500) 5 बरनाला 3000) 6 धुरी 1000) 7 अहमदगढ़ मण्डी 1000) 8 श्रद्धानन्दनगर बरनाला 500)

## भटिण्डा

1 मानसा मण्डी 500) 2 बुढलाडा 500) 3 चौक भटिण्डा 1500)

## जिला फिरोजपुर

1 गुरुकुल विभाग राणी का तालाब फिरोजपुर 1500) 2 बस्ती टैंकावाली 1500) 3 फाजिल्का 1500) 4 अबोहर 1500) 5 लधियाना रोड फिरोजपुर छावनी 1500)

## जिला अमृतसर

1 शक्तिनगर अमृतसर 3000) 2 पुतलीघर अमृतसर 500) 3 मजीठा 500) 4 अटियाला गुरु 500) 5 बाजार श्रद्धानन्द अमृतसर 3000) 6 माडल टाऊन अमृतसर 1000) 7 दयानन्द नगर फतहगढ़ रोड अमृतसर 500)

## जिला रोपड़

1 बाबी चौक रोपड़ 1000) 2 नया नंगल 1000) 3 खरड़ 1000) 4 मोरिण्डा 1000) 5 नंगल टाऊनशिप 1000)।

# आर्य समाज दीनानगर में स्वामी स्वतन्त्रानन्द दिवस मनाया गया

18 1 84 को आर्य समाज दीनानगर में स्वामी सर्वानन्द जी महाराज आचार्य श्री महानन्द मठ दीनानगर की अध्यक्षता में स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का जन्म दिन बड़ी धूमधाम से मनाया गया जिसमें स्वामी नित्यानन्द जी महाराज स्वामी सोमानन्द जी महाराज स्वामी सर्वोधानन्द जी महाराज भूतपूर्व प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश सत्यपाल जी शास्त्री विनयसिंह जी शास्त्री श्री त्रिलोकचन्द्र जी वानप्रस्थी आदि महानुभावों ने स्वामी जी के जीवन पर प्रकाश डाला श्री पृथ्वीराज जी जिज्ञासु ने कहा कि आज आर्य समाज में स्वामी जी जैसे नेता की आवश्यकता है स्वामी नित्यानन्द जी महाराज ने कहा कि आज आर्य जाति दिन प्रतिदिन प्रमाद में डूबी चली जा रही है स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज साहस की साक्षात मूर्ति थे और आलस्य उनके पास तक नहीं पहुंच सका अन्त में स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने कहा स्वामी जी महाराज अपने नियम के बड़े दृढ़ थे एक बार जिस बात का निश्चय कर लिया फिर पीछे नहीं हटते थे वह दृढ़ ईश्वर विश्वासी थे देश की स्वतन्त्रता में स्वामी जी ने जो कार्य किए उनका बहुत कम लोगों को पता है। राजनीति के वह बहुत बड़े पण्डित थे अत ऐसे सन्यासियों की समाज में कमी होती जा रही है हम सब को उनके मार्ग पर चलना चाहिए

—मन्त्री आर्य समाज

(3 पृष्ठ का शेष)

7 2040 (1983 84) के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अधिकारियों अन्तरंग सदस्यों निवा सभा के सदस्यों न्याय सभा और राजार्यसभा के सदस्यों तथा सार्वदेशिक सभा के लिए प्रतिनिधियों का निर्वाचन।

नोट—(1) कृपया यह ध्यान रखें कि आर्य समाजों के वे प्रतिनिधि ही अधिवेशन में भाग ले सकेंगे जिनके निर्वाचन करने वाली आर्य समाजों ने सभा के नियम सं 5 के अनुसार वेद प्रचार की राशि तथा नियम संख्या 17 (क) के अनुसार चन्दा दि या नक़द या किसी भी माध्यम से प्राप्त वर्ष भर की आय का दशांश भाग (दशांश) सभा को दिया हो

(2) आर्य मर्यादा का चन्दा भी अवश्य भेजें

(3) वार्षिक रिपोर्ट आर्य समाजों के नाम लगाई गई राशि का विवरण तथा संवत् 2040 का बजट (जिसमें संवत् 2039 की आय व्यय की राशियों का वर्णन भी होगा) तथा प्रवेश पत्र पृथक भेजे जाएंगे।

—रामचन्द्र जावेद
महामन्त्री

# चार उत्तरी राज्यों में दहेज विरोधी अभियान

ले —श्री ओम्प्रकाश पत्रकार फरमाना सोनीपत

✻

पिछले कई वर्षों से दहेज कुप्रथा के जिन भयकर परिणामो ने समाज मे एक भारी हलचल मचा रखी है उस दहेज की लानत के विरुद्ध अब लोग उठ खड़ हुए हैं। समाज मे एक नई चेतना एव जागृति ने जन्म लिया है। पहले किसी युवती को मारने पीटने तथा जलाने आदि से जब उसका करुण क्रन्दन सनाई देता था तो पास पड़ोस के लोग उसे छुड़वाने की बजाए यह कहकर अपने दरवाजे बन्द कर लिया करते थे कि ये सब दूसरो के घर का निजी मामला है परन्तु अब दिन प्रतिदिन परिस्थितिया बदल रही हैं। अब पड़ोसी खुले आम पुलिस को सूचना देने तथा अदालतो मे उस अत्याचार के विरुद्ध गवाही देने का साहस कर रहे हैं। जिस अत्याचार के दुष्प्रभाव से किसी बेगुनाह युवती की जान ले ली जाती है अथवा मारने का प्रयत्न किया जाता है। वहा भारत सरकार ने ससद के गत अधिवेशन मे दहेज विरोधी कानून प्रक्रिया को मजबूत बनाकर भारतीय दण्ड सहिता मे सशोधन करने की मजूरी देकर दहेज कुप्रथा के विरुद्ध लोगो के हौसले बुलन्द कर दिए हैं। वहा समाज मे भी इस कुरीति के विरुद्ध स्थान स्थान पर सभाओ तथा पचायतो का आयोजन किया जा रहा है।

जिस प्रकार दिल्ली के दो केसो मे पड़ोसी गवाह जालिमो को सजा दिलवा चुके हैं इसी प्रकार हरियाणा के सिरसा पजाब के जालन्धर और उत्तर प्रदेश के मेरठ कांडों में भी पड़ोसी व प्रत्यक्षदर्शी लोग अदालतों मे अत्याचारियो के विरुद्ध गवाहिया देकर उन्हे सजा करवाने के लिए कटिबद्ध हैं।

दूसरी ओर सामाजिक ढग से भी दहेज की इस ज्वलन्त समस्या के विरुद्ध वातावरण गर्म होता जा रहा है। गोहाना सोनीपत, मेरठ पलवल महम और अब जीन्द में हुई पचायतो ने उक्त समस्या पर प्रतिबन्ध लगाने के लिए भारी सभायें करके एक सुनियोजित कायक्रम प्रारम्भ किया है। लोगों मे दहेज के विरुद्ध भारी रोष है। वे इसे समाज से तुरन्त समाप्त करवाना चाहते हैं। आर्य समाज के कर्मठ नौजवान संन्यासी स्वामी कमपाल ने सवजातीय सवखाप पचायत के माध्यम से इस अभियान को गति दी है। जिससे उत्तरी भारत के चार राज्यो हरियाणा राजस्थान दिल्ली तथा उत्तर प्रदेश प्रभावित हुए हैं।

दिनाक एक जनवरी 1984 के दिन जिला जी द के गाव गलकनी मे बलिदान स्मारक के प्रागण मे स्वामी जी ने सव खाप पचायत की एक और ऐतिहासिक बैठक करके एक प्रकार से सारे समाज को दहेज कुप्रथा के विरुद्ध पूरा आ दोलित कर दिया है। हरियाणा राजस्थान दि ली और उत्त र प्रदेश के आए लोगो के लगभग चालीस हजार के भारी इकट्ठ ने दहेज न लेने और न देने का प्रण किया वहा इन चारो राज्यो के बीचोबीच हजारो लोगो के साथ जन जागरण हेत माच के प्रथम सप्ताह मे एक विशाल पद यात्रा निकालने का भी फसला किया है।

सवजातीय सवखाप पचायत की इस सभा को वहा बुद्धिजीवी वकील प्राध्यापकों, आई ए एस स्तर के अधिकारियो एव समाज सेवी नेताओ ने सम्बोधित किया वहा केन्द्रीय राज्य मन्त्री श्री दलबीर सिंह जैसे प्रबुद्ध राजनेताओ ने भी बैठक मे अपने सझाव रखे तथा पचायत को सरकार का पूरा समथन देने का वचन दिया। सवजातीय सवखाप पचायत के प्रधान स्वामी कमपाल ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे विश्वास प्रकट करते हुए यह घोषणा की कि यदि इस प्रकार जनता तथा सरकार का सहयोग मिलता रहा तो उपरोक्त चारो राज्यों से दहेज की इस लानत को एक वष के भीतर ही समाप्त किया जा सकता है। इस दहेज के विरुद्ध जन जागरण हेत पद यात्रा का विवरण देते हुए स्वामी जी ने बताया कि माच के प्रथम सप्ताह में राजस्थान के झजनू नगर से प्रारम्भ होकर चारो प्रदेशो के बीचोबीच एक हजार मील लम्बी इस पदयात्रा मे हजारो की सख्या में लोग सम्मिलित होंगे स्वामी जी के कथनानुसार पद यात्रा के सहयोग हेतु उपरोक्त चारो प्रदेशो के मुख्य मन्त्रियो को लिखा जा चुका है।

# आर्य पर्व सूची 1984

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा आर्य समाजो की सूचना के लिए स्वीकृत आर्य पर्वों की सूची प्रति वष प्रकाशित ~~किया~~ करती है सन 1984 की सूची इस प्रकार है—

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1 मकर सक्रान्ति | पोष शु 11 | 2040 | 14 1 1984 |
| 2 बसत पचमी | माघ श 5, | | 7 2 1984 |
| 3 सीताष्टमी | फा कृ 8 | „ | 24 2 1984 |
| 4 दयानन्द बोधरात्रि (शिवरात्रि) | फा कृ 13 | | 29 ? 1984 |
| 5 वीर लेखराम ततीया | फा श 3 | , | 5 3 1984 |
| 6 नव सस्येष्टि (होली) | फा श 15 | | 17 3 1984 |
| 7 नव सवसरोत्सव (आर्यसमाज स्थापना दिवस) | चैत्र शु 1 | 2041 | 2 4 1984 |
| 8 रामनवमी | चत्र श 9 | | 10 4 1984 |
| 0 हरितृतीया | श्रावण श 3 | | 23 7 1984 |
| 10 श्रावणी उपाक्रम | श्रा श 15 | | 11 8 1984 |
| 11 श्री कृष्ण जन्माष्टमी | भाद्र कृ 8 | | 20 8 1984 |
| 1? विजय दशमी | आश्वि श 10 | , | 4 10 1984 |
| 13 गुरु विरजानन्द दिवस | आश्वि श 15 | | 9 10 984 |
| 14 ऋषि निर्वाण दिवस (दीपावली) | कार्तिक कृ 15 | , | 14 10 1984 |
| 15 श्रद्धानन्द बलिदान दिवस | पोष शु 1 | | 23 12 1984 |

टिप्पणी—इन पर्वों को वदिक धम के प्रचार और वदिक सस्कृति के प्रसार का महान साधन बनाना चाहिए।

देशी तिथियो के घट बढ जाने पर अग्रेजी तिथियो मे परिवतन हो सकता है।

(प्रथम पष्ठ का शेष)

सतो मे श्याम जी के बारे जो चर्चा होने लगी इसका एक कारण यह भी था कि वह सस्कृत मे भाषण करने लग गए थे। जब किसी विषय पर बहस होने लगती तो वह इसमे बढ चढकर हिस्सा लेते। इनके सस्कृत के प्रवाह ने उन्हे कहा से कहा पहुचा दिया। इसका अनमान लाला लाजपतराय के उन विचारो से मिल सकता है जो उन्होने श्याम जी की भाषण कला के बारे मे व्यक्त किए थे। उन्होंने लिखा था —

वह सस्कृत मे बोलते थे। क्योंकि सस्कृत ही शिक्षाविद लोगो की भाषा समझी जाती थी। वह जहा भी बोलते थे एक तरह का तहलका मचा दिया करते थे। कुछ लोग उनके उत्साहपूर्ण भाषणों से भी खुश थे और उनके विरुद्ध भी हो जाते थे। कुछ लोगा ने उन्हे जान से मार डालने की धमकी भी दी लेकिन वह साहस और निर्भीकता से अपने विचार व्यक्त करते रहे। वह लोगो पर इस तरह प्रभाव डालते थे कि उनके विरोधी भी उनके प्रशसक बन जाते थे। वह अधिकतर पुरानी रूढियो पर चोट करते थे और अपने तर्कों से उनकी धज्जियां उड़ाकर रख दिया करते थे। कई बार ऐसा लगता था कि वह बोल नहीं रहे, आग उगल रहे है। इसका यह परिणाम हुआ कि आम लोग उन्हे एक नया रास्ता दिखाने और उनकी समस्या हल करने के लिए कोई मसीहा आकाश से उतरा है ऐसा समझने थे।

वह समय था जब उनकी महर्षि दयानन्द से पहली मुलाकात हुई।

(शेष आगामी अक मे)

उम्मीद की जा सकती है कि जिस प्रकार इस सामाजिक बुराई के खिलाफ सामाजिक ढग से निपटा जा रहा है वह अवश्य समाप्त होगी। पचायत के कड़े बधन सरकार का कानून और उस कुरीति के विरुद्ध जन आक्रोश यह सिद्ध करता है कि वतमान सामाजिक बुराई के अन्तिम समाप्ति की ओर जा रहे हैं। आशा और विश्वास के साथ हमे यह स्वीकार करना चाहिए कि रीति रिवाजो से समाज मे पैदा होने वाली कुप्रथाओ के उन्मूलन का इलाज भी सामाजिक तरीके से ही किया जा सकता है।

—

# हैदराबाद में साम्प्रदायिक दंगो का वार्षिक क्रम

पिछले 8 वर्षों से हैदराबाद के पुराने शहर में हर साल नियमित रूप से साम्प्रदायिक दंगे होते चले आ रहे हैं और इसका श्रेय वहा की कट्टर धर्मान्ध संस्था इत्तहादुल मुसलमीन नामक संगठन को जाता है यह संगठन संकीर्ण मानसिकता से ग्रस्त है और इस देश की मुख्य धारा से पृथक होकर एक ऐसी अलग धारा बनाना चाहती है जो इस देश के लिए अपरिचित है और जिसका इस देश की माटी से कोई सम्बन्ध नही है

हाल ही में हैदराबाद मे जो दंगे हुए उनमे कुल मिलाकर 50 के करीब व्यक्ति मरे जो अपने आप मे एक कीर्तिमान है विशेष रूप से इसलिए कि एक वर्ष मे हैदराबाद मे यह तीसरा दंगा है

यह एक दुर्भाग्यपूर्ण तथ्य है कि श्री रामाराव उस हैदराबाद बन्द की गम्भीरता को नही समझ पाये जो 9 सितम्बर को इत्तहादुल मुसलमीन के आह्वान पर किया गया था संगठन के नेता सलाहुद्दीन ओवैसी के अनुसार बन्द शान्तिपूर्ण होने वाला था और श्री रामाराव ने उनकी इस बात पर ओलेपन के साथ विश्वास कर लिया शायद इस लिए कि चुनाव मे इस संगठन ने उनका साथ दिया था आज की राजनीति इतनी पतित हो गयी है कि राजनेता वोट की खातिर अपने धर्म अपने सिद्धांतो अपनी संस्कृति सबका समझौता करने को तैयार हो जाते हैं

इत्तहादुल मुसलमीन निजाम के काल के रजाकारो के मेल से ही बना संगठन है और बीसियो साम्प्रदायिक दंगो औ सैकड़ो निर्दोष व्यक्तियो की हत्या के लिए जिम्मेदार है इस पर प्रतिबन्ध लगाने मे न राज्य सरकार को कोई दिलचस्पी है और न केन्द्रीय सरकार को लेकिन दोनो सरकार ही राजनीति की जकड में आकर नपुंसकता की सीमा तक कायर बन गयी हैं

ऐसी स्थिति मे देश भर के हिन्दुओ को हैदराबाद के उन मन्दिरो की जो हर वर्ष इस धर्मान्ध संगठन की क्रूरताओ के शिकार हुए हैं रक्षा का बीड़ा उठाना होगा और आस्तीन के इस सांप को पूरी तरह समाप्त करके ही दम लेना चाहिए ऐसे तत्वो को जो इस देश का नमक खा कर इसी देश मे रहने वाले बहुसंख्यको का उत्पीड़ित करना अपना जन्म सिद्ध अधिकार समझते हैं इस देश को उनकी कोई आवश्यकता नहीं है वे अपने उस देश मे जाए जहा औरतो की हालत गुलामो से भी बदतर है जो मामूली अपराधो के लिए अपराधी पर हन्टर बरसाये जाते हैं और वहा वे एक से ज्यादा शादी नहीं कर सकते

सदाशिवत लाल चन्दूलाल
धर्म स्वातन्त्र्य संघर्ष समिति बम्बई

## बरनाला में वेद प्रचार

आर्य समाज बरनाला में 25 से 29 जनवरी 1984 तक वेद प्रचार सप्ताह बड़े उत्साह से मनाया गया तथा के महोपदेशक श्री प० हर्षदेव जी आर्य व वेद प्रचार अधिष्ठाता और श्री प० राम नाथ जी शास्त्री सि० सि० भजनोपदेशक के उपदेश तथा भजन होते रहे दयानन्द केन्द्रीय विद्या मन्दिर और गान्धी आर्य हाई स्कूल में भी प्रचार हुआ तथा परिवा रो में पारिवारिक सत्संग हुए पारिवारिक सत्संग तथा वेद कथा बहुत प्रभावशाली रही सभी लोग इसकी सराहना करते रहे सभा को आर्यसमाज की ओर से 500 रुपये गान्धी आर्य हाई स्कूल की ओर से 101 रुपये दयानन्द केन्द्रीय विद्या मन्दिर की ओर से 5 रुपये कुल योग 65 रुपये वेद प्रचार राशि दी गई आर्य बन्धुओ ने आग्रह किया कि फिर इसी प्रकार सर्दी निकल जाने पर वेद प्रचार इन्हीं विद्वानो को बुला कर किया जाए

यशपाल भाटिया
मन्त्री आर्य समाज



श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रेस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इस की स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

## क्रान्ति के अग्रदूत श्याम जी कृष्ण वर्मा (४)

# हर आशा टूटती गई फिर भी हिम्मत का दामन न छूटा

ले.—श्री वीरेन्द्र जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

(गत अंक से आगे)

इस लेखमाला के पिछत लेखो में से मैंने लिखा था कि श्यामजी कृष्ण वर्मा आक्सफोर्ड जाना चाहते थे वहां से उन्हें निमन्त्रण मिल चुका था किन्तु उनके आर्थिक साधन ऐसे न थे जो उन्हें इंग्लैंड जाने की अनुमति देते। उनकी शादी एक बहुत बड़े उद्योगपति की लड़की से हुई थी। वह श्यामजी की सहायता भी कर सकते थे लेकिन श्यामजी उसके लिए तैयार नहीं थे। वह किसी दूसरे के आगे हाथ फैलाना नहीं चाहते थे। चाहे वह उनका ससुर ही क्यों न हो। इसलिए उन्होंने महर्षि दयानन्द से परामर्श किया कि क्या किया जाए। महर्षि ने उन्हें सलाह दी कि इंग्लैंड जाने से पहले वह अपने देश को अच्छी तरह समझ लें ताकि जब वह विदेश जाएं अपने देश का सही चित्र दूसरे लोगों के सामने रख सकें। स्वामी जी ने उनसे कहा कि बेहतर होगा यदि वह पहले अपने देश के बड़े बड़े शहरों का दौरा करें। और विभिन्न विचार धाराओं के लोगों से मिलें। ताकि उन्हें वास्तविक परिस्थितियों का पता चल सके।

स्वामी जी के इस परामर्श पर चलते हुए श्यामजी कृष्ण वर्मा पहले नासिक गए। उसके बाद पूना गए। और फिर अहमदाबाद के लिए रवाना हो गए। प्रत्येक स्थान पर वह संस्कृत में ही भाषण देते थे। उनकी आयु उस समय अभी 25 वर्ष की भी नहीं थी किन्तु जिस धारा प्रवाह से वह संस्कृत में बोलते थे और जिस विषय पर बोलते उसके पक्ष में अथवा विरुद्ध अपने जो तर्क प्रस्तुत करते उन्हें सुनकर लोग इतने प्रभावित होते कि उनके सम्बन्ध में यह कहा जा सकता है कि वह जहां भी जाते लोगों का दिल जीत लेते। अहमदाबाद में उन्होंने जो भाषण दिया उसे सुनकर स्वामी भोलानाथ शास्त्री ने कहा कि संस्कृत में इतना उच्च कोटि का और तर्कयुक्त भाषण उन्होंने पहले कभी नहीं सुना था। यही स्वामी भोलानाथ आगे चलकर शंकराचार्य भी बन गए। उन्होंने श्यामजी के सम्बन्ध में जो कुछ कहा लोगों पर उसका बहुत प्रभाव हुआ। श्यामजी का सब से बड़ा गुण यह था कि वह जिस भी विषय पर बोलते उसके दोनों पक्ष हक में भी और विरोध में भी पूरे तर्कों के साथ प्रस्तुत करते। इस लिए कई लोग उनका भाषण सुन कर हैरान होते कि इस छोटी सी आयु में यह ऐसा भाषण संस्कृत में कैसे कर सकते हैं।

अहमदाबाद से श्यामजी बड़ौदा गए। वहां से बड़ौदा और फिर सूरत चले गए। वहां से लौटने के बाद उन्होंने बम्बई के एक हाई स्कूल में मैट्रिक के लड़कों को पढ़ाना शुरू कर दिया। उनके जीवन की यह एक दिलचस्प घटना थी कि जो व्यक्ति स्वयं मैट्रिक की परीक्षा पास नहीं कर सका था उसे मैट्रिक की परीक्षा देने वाले विद्यार्थियों को पढ़ाने के लिए कहा जाए। और जब उन्होंने यह काम छोड़ा तो उस स्कूल के प्रबन्धकों ने उन्हें यह प्रमाणपत्र दिया कि वह उनके काम से बहुत खुश हैं क्योंकि जिन विद्यार्थियों को उन्होंने पढ़ाया है उनका परिणाम बहुत अच्छा निकला है।

इसी दौरान आक्सफोर्ड के प्रोफेसर मोनीयर विलियम का यह पत्र भी प्राप्त हो गया कि यदि श्याम जी 1877 के आखिर या 1878 के शुरू में आक्सफोर्ड पहुंच जाएं तो उन्हें काम पर लगा दिया जाएगा। उसने श्यामजी के सामने एक नई कठिनाई पैदा कर दी। वह आक्सफोर्ड जाने के लिए धन कहां से लाएं। उन्हें आक्सफोर्ड पहुंच कर वेतन की जो पेशकश की गई थी वह भी उन के लिए काफी नहीं थी। इसलिए वह किसी ऐसे व्यक्ति की तलाश में निकल पड़े जो उनकी आर्थिक सहायता कर सके। पहले वह इधर उधर घूमते रहे बाद में उन्होंने सोचा कि क्यों न अपने पैतृक शहर कच्छ में जा कर कोशिश करें। इस विचार से वह एक दिन कच्छ पहुंच गए। वहां के राज दरबार में मि. गीब्सन नाम का एक अंग्रेज काम करता था। वह स्कूल में शिक्षा प्राप्त करते समय कुछ समय के लिए श्यामजी का शिष्य रहा था। वह उन की योग्यता और व्यक्तित्व से अच्छी तरह परिचित था। उसने अपने उच्चाधिकारियों को सिफारिश करते हुए लिखा कि यदि उनकी सरकार ने कोई ऐसा व्यक्ति इंग्लैंड भेजना है जो वहां जाकर अपने देश का नाम उज्ज्वल कर सके तो श्याम कृष्ण वर्मा से बेहतर और कोई नहीं मिल सकता। वह उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं। उनको दी गई आर्थिक सहायता एक ऐसे व्यक्ति को दी जाएगी जो उसका हर तरह से अधिकारी है। किन्तु इसका कोई अनुकूल परिणाम नहीं निकला। श्याम जी ने फिर भी हिम्मत न हारी। आखिर उन्होंने अपनी रियासत के दीवान का दरवाजा खटखटाया। कच्छ पहुंच कर उन्होंने प्रमुख नागरिकों के समक्ष फिर संस्कृत में एक भाषण दिया। उसमें उन्होंने हिंदू दृष्टिकोण के अनुसार बताया कि एक मनुष्य के कर्तव्य क्या हैं। साथ ही इस बात पर भी जोर दिया कि हिन्दू समाज में सुधार की अत्यन्त आवश्यकता है। और बताया कि इस सिलसिले में हिन्दुओं को क्या क्या करना चाहिए। कच्छ के लोगों ने पहली बार किसी व्यक्ति को संस्कृत में इस तरह भाषण करते सुना था। उन्हें अधिक खुशी और गर्व इस बात का था कि यह भाषण करने वाला उनकी धरती का ही बेटा था।

श्याम जी का कच्छ में जो स्वागत हुआ उसके कारण उनका उत्साह और भी बढ़ गया। कच्छ के बाद वह एक दो और शहरों में भी गए। वहां भी वह लोगों के दिल पर अपनी छाप बैठाते गए।

कुछ देर बाद उन्होंने एक ऐसे व्यक्ति के साथ सम्पर्क पैदा कर लिया जिसका सम्बन्ध कई शैक्षणिक संस्थाओं से था। वह थे डाक्टर वटसन कु हा। 1878 के शुरू में श्याम जी ने उन्हें संस्कृत पढ़ाई हुई थी। उनका कहना था कि श्याम जी कृष्ण वर्मा के लिए उनके दिल में प्यार तथा श्रद्धा है। और उन्हें यह विश्वास है कि श्याम जी का नाम किसी दिन बहुत चमकेगा इसलिए उन्होंने श्याम जी की हर तरह से मदद करने का विश्वास दिलाया।

किन्तु यह भी काफी नहीं था। उन्हें आक्सफोर्ड जाने के लिए धन की आवश्यकता थी। जिस वह उन्हें कहीं से नहीं रहा था। पहले उन्हें अपनी रियासत के राज दरबार से कुछ आशा थी वहां भी उन्हें निराश होना पड़ा। तब तक उनकी प्रशंसा सब कर रहे थे समाचार पत्रों में भी उनके बारे में बहुत कुछ प्रकाशित हो रहा था। लेकिन आर्थिक सहायता की उन्हें आवश्यकता थी वह उन्हें नहीं मिल रही थी। चारों ओर से निराश होकर वह फिर स्वामी दयानन्द के पास पहुंचे और उनसे पूछा कि वह क्या करें। स्वामी जी के अपने पास धन नहीं था। जो वह श्याम जी को दे सकते। उनके पास संस्कृत का बहुत बड़ा भण्डार था। जिसमें से वह श्याम जी को बहुत कुछ दे सकते थे। उन दिनों स्वामी जी वेद भाष्य लिख रहे थे। उन्होंने सुझाव दिया कि श्याम जी स्वामी के पास रहें और वेद भाष्य को प्रकाशित कराने में उनकी मदद करें। उनके पास रहने से वह संस्कृत भी पढ़ लेंगे और वेद भी। स्वामीजी ने यह भी कहा कि जो कुछ श्यामजी चाहते हैं वह तो उन्हें नहीं दे सकेंगे लेकिन उन्हें वेदों के ऐसे विद्वान बना देंगे कि सारी दुनिया उन्हें उस विषय का बहुत बड़ा विशेषज्ञ समझेगी। पहले तो श्यामजी इसके लिए तैयार हो गए लेकिन उनका भाग्य उन्हें [illegible] नहीं दे रहा। स्वामी दयानन्द के पास एक पंडित चिंतामणि रहा करते थे। वह स्वामी जी के वेद भाष्य को प्रकाशित करने में उनकी सहायता किया करते थे। स्वामीजी को दक्षिणा के रूप में रुपया मिलता था वह पंडित चिंतामणी को दे दिया करते थे ताकि उसका निर्वाह हो सके। जब उसे पता चला कि स्वामी जी श्यामजी कृष्ण वर्मा को भी अपने पास रखना चाहते हैं तो स्वामीजी का जो धन उसके पास एकत्रित था वह लेकर वह भाग गया और इंग्लैंड चला गया। इसके साथ श्याम जी की अंतिम आशा भी समाप्त हो गई।

किन्तु वह दिल हारने वाले नहीं थे इसलिए आखिर में वहां पहुंचे जो उनकी अन्तिम जरूरतकी थी। उन्होंने अपनी पत्नी से कुछ रुपया लिया और कुछ मित्रों से कर्ज लिया और मार्च 1879 के आखिर में वह लन्दन के लिए रवाना हो गए। उस समय उनकी आयु 26 वर्ष की थी। वह अपने देश में भी नाम पैदा कर चुके थे और उनकी ख्याति इंग्लैंड तथा अमेरिका में भी पहुंच चुकी थी।

इसके बाद क्या हुआ—यह अगामी अंक में पढ़ें।

—

## सम्पादकीय—

# हमारे शहीद हमें क्या सिखाते हैं

6 मार्च को अमर बलिदानी धर्मवीर पण्डित लेखराम जी का शहीदी दिवस है। आर्य समाज को इस बात का गौरव प्राप्त है कि हिन्दुओं मे दूसरी किसी धार्मिक संस्था ने अपने धर्म की रक्षा के लिए इतने शहीद पैदा नहीं किए जितने कि आर्य समाज ने। एक प्रकार से यदि देखा जाए तो महर्षि दयानन्द सरस्वती भी एक शहीद ही थे। उन्हें भी विष देकर ही मारा गया था। वह भी इस लिए कि कुछ व्यक्तियों को उनकी विचारधारा से मतभेद था। मनुष्यों विशेष कर बड़े 2 अधिकारियों के चरित्र का जो मूल्य उन्होंने निश्चित किया था वह कुछ व्यक्तियों को स्वीकार न था इसलिए उन्होंने महर्षि दयानन्द की जुबान हमेशा के लिए बन्द करने के लिए उन्हें विष दे दिया था। महर्षि की जुबान तो बन्द हो गई परन्तु जिस विचारधारा को कुछ लोग समाप्त करना चाहते थे। वह फलती गई और आज आर्य समाज के रूप में वह एक अन्तर्राष्ट्रीय शक्ति बन गई है।

महर्षि दयानन्द के पश्चात धर्म वीर पण्डित लेखराम जी पूज्य श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज श्री महाशय राजपाल जी और कई और आर्य समाजी ऐसे हुए हैं जिन्हें अपने धर्म भक्ति का बहुत बड़ा मूल्य देना पड़ा था। पण्डित लेखराम का हमारे इतिहास मे एक विशेष स्थान है। वह पहले आर्य समाजी थे जिनकी हत्या की गई। उससे पहले उन्हें बार 2 यह चेतावनी दी गई कि जिस विचारधारा का वह प्रचार कर रहा है उसे बन्द करें नहीं तो उन्हें इसकी बहुत अधिक सजा मिलेगी। पण्डित लेखराम पर इसका कोई प्रभाव न हुआ वह अपना काम करते गए और अन्त में एक दिन वह भी आया जब उनकी हत्या कर दी गई। अपने बलिदान से कुछ समय पहले उन्होंने एक वसीयत की थी कि आर्य समाज में साहित्य निर्माण का काम बन्द नहीं होना चाहिए और इस मे सन्देह नहीं कि वह नहीं हुआ। साहित्य निर्माण तो होता ही रहता है। परन्तु हमें यह भी स्वीकार करना पड़ता कि उसका जो प्रचार होना चाहिए वह नहीं हो रहा। आज भी आर्य समाज के पास बड़े 2 ऐसे विद्वान हैं जो बहुत अच्छा साहित्य तैयार कर रहे हैं। मैंने पिछले दिनों इसी विषय पर कई लेख लिखे थे जिनमें उन महानुभावों का वर्णन किया था जिन्होंने आर्य समाज के साहित्य निर्माण मे अपना योगदान दिया है और उस समय भी मैंने यही लिखा था कि साहित्य तो प्रकाशित हो रहा है परन्तु उसका वह प्रचार नहीं हो रहा जो होना चाहिए। मेरा सम्बन्ध भी समाचार पत्रों से है। इसलिए दूसरी धार्मिक संस्थाओं का साहित्य समय 2 पर मेरे पास आता रहता है उसे देख कर मैं कई बार यह अनुभव करता हूं कि हम इस क्षेत्र मे बहुत पिछड़ रहे हैं। आर्य समाज के साहित्य का सबसे उज्ज्वल पक्ष यह है कि वह कुछ अकाट्य सिद्धान्तों पर आधारित होता है। वेदों की सबसे अधिक विशेषता और महानता यह है कि उनमें कोई बात ऐसी नहीं जिस पर कोई आपत्ति कर सके। इस्लाम ईसाईयत बौद्ध जैन सिख और इस प्रकार के और भी कई मत वेदों से बहुत पीछे प्रारम्भ हुए हैं। उनके प्रवर्तकों ने कुछ नए विचार तो दिए हैं परन्तु वेदों का खण्डन नहीं किया। गुरु ग्रन्थ साहब मे बार 2 वेदों का वर्णन आता है कुरान बाईबिल और दूसरे इस प्रकार के ग्रन्थों मे वह भी नहीं आता। इस लिए आर्य समाज का साहित्य अधिकतर वैदिक सिद्धान्तों पर ही आधारित होता है। इसलिए मैं कहता हूं कि जो स्तर आर्य समाज के साहित्य का है किसी और का नहीं कई विद्वानों ने तो बहुत परिश्रम किया है अभी पिछले दिनों गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के प्रख्यात स्नातक आचार्य प्रियव्रत जी का एक ग्रन्थ प्रकाशित हुआ है जिस मे उन्होंने वेदों में राजनैतिक सिद्धान्तों की व्याख्या की है। मैं इस ग्रन्थ को बहुत महत्व देता हूं न केवल इसलिए कि इसके लेखक महोदय ने इसे लिखने मे दस पन्द्रह वर्ष लगा दिए अपितु इसलिए भी कि हमारे देश की वर्तमान परिस्थितियों मे इसकी बहुत आवश्यकता है। हम बहुत अधिक भटक रहे कभी रूस की तरफ देखते हैं कभी अमेरिका की तरफ कभी इंगलैंड की तरफ और हम यह भूल जाते हैं कि हमारे पास कितना बड़ा खजाना पड़ा है। हजारों वर्षों के अतीत का पर्दा उस खजाने पर पड़ा हुआ है उस पर्दे को हटाने का उत्तरदायित्व आर्य समाज पर है। आचार्य प्रियव्रत ने उस पर्दे को हटाने का प्रयत्न किया है उनसे पहले पं. सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार पं. युधिष्ठिर जी मीमांसक स्वर्गीय पं. भगवद्दत्त जी और स्वर्गीय आचार्य विश्वबन्धु जी ने भी अपने 2 समय मे इस पर्दे को कुछ न कुछ हटाया है। परन्तु हमें यह भी स्वीकार करना पड़ेगा कि उनके इन प्रयत्नों का जो फल निकलना चाहिए था वह नहीं निकला।

पण्डित लेखराम ने कहा था कि आर्य समाज के साहित्य निर्माण का कार्य बन्द नहीं होना चाहिए वह बन्द तो नहीं हुआ परन्तु उसका जो प्रचार होना चाहिए था वह भी नहीं हो रहा। इस पर गम्भीरता पूर्वक विचार करने की आवश्यकता है। हमारी कठिनाई यह है कि हम अपनी समस्याओं की ओर वह ध्यान नहीं देते जो देना चाहिए। इसका परिणाम यह है कि समस्याएं बढ़ती जा रही हैं। पहली समस्याएं समाप्त नहीं होतीं नई खड़ी हो जाती हैं साहित्य निर्माण और साहित्य प्रचार मे भी यही कठिनाई हो रही है। छः मार्च को हम पण्डित लेखराम को याद करेंगे उन्होंने जो कुछ किया था और जो कुछ लिखा था उसे भी हम देखेंगे। परन्तु क्या उनके प्रति इस तरह हमारा कर्तव्य पूरा हो जाएगा? शहीदों का जीवन हमें एक ही शिक्षा देता है वह यह कि जब एक व्यक्ति अपने सामने एक लक्ष्य रख लेता है तो उसका यह भी कर्तव्य हो जाता है कि उस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए वह जो कुछ भी कर सकता है करे अन्त मे उसे अपना बलिदान भी देना पड़े तो वह भी दे दे। पण्डित लेखराम जी ने यही कुछ किया था। यदि उनकी स्मृति को हमेशा जीवित रखना चाहते हैं तो हमें भी अपने आपको उस सांचे मे ढालना पड़ेगा जो एक चुनौती बनकर हमारे सामने आ रहा है। आर्य समाज एक विशेष उद्देश्य को लेकर कार्य क्षेत्र मे उतरा था पिछले एक सौ वर्षों से वह लगातार आगे ही बढ़ता आ रहा है। हमें यह न भूलना चाहिए कि हमने अभी बहुत कुछ और करना है हमारे शहीदों का बलिदान हमारे लिए प्रेरणा का स्रोत है। उससे कुछ सीख कर यदि हम आगे बढ़ सकें तो यही उन्हें हमारी सबसे बड़ी श्रद्धांजलि होगी।

—वीरेन्द्र

# आर्य मर्यादा के लेखकों से

समय समय पर लेखक महानुभाव अपनी 2 रचनाएं भेजकर आर्य मर्यादा को अपना सक्रिय सहयोग दे रहे हैं हम सभी लेखक महानुभावों का बहुत 2 धन्यवाद करते हैं। श्री पं. सुरेशचन्द्र जी वेदालंकार श्री पं. धर्मवीरजी वेदालंकार, श्री यशपाल जी आर्य बन्धु श्री पं. वीरसेन जी वेदश्रमी श्री प्रा. भद्रसेनजी वेदव्याख्याचार्य श्री सुरेन्द्र मोहन सुनील श्री रमाकान्त जी दीक्षित श्री पं. सत्यदेव जी विद्यालंकार श्री राधेश्याम जी आर्य तथा दूसरे कई लेखक महानुभाव अपनी 2 रचनाएं निरन्तर भेजकर अपनी इस पत्रिका की सेवा कर रहे हैं। हम अपने सभी लेखक महानुभावों का पुनः बहुत धन्यवाद करते हैं और इसके लिए उनके आभारी हैं कि वह हमें अपना सहयोग बिना किसी पारिश्रमिक के दे रहे हैं और हमें विश्वास है कि इन लेखक महानुभावों का जो हमें सहयोग मिलता ही रहेगा। परन्तु और भी लेखक महानुभाव अपनी अमूल्य रचनाएं भेजकर इस हिन्दी पत्रिका को उन्नत करने में हमें सहयोग देंगे।

हमने पहले भी प्रार्थना की थी कि हम चाहते हैं कि इस पत्रिका मे एक पृष्ठ स्त्री शिक्षा सम्बन्धी महिला जगत के कालमों मे और एक पृष्ठ बालकों व विद्यार्थियों की शिक्षा सम्बन्धी बाल जगत के कालमों मे निरन्तर प्रकाशित होता रहे। हमें वेदामृत के लिए तो श्री पं. सुरेशचन्द्र जी वेदालंकार लगभग निरन्तर लेख भेजते रहते हैं परन्तु महिला जगत और बाल जगत के लिए हमें रचनाएं कम मिल रही हैं। हमारी यह भी इच्छा है कि बहुत ही प्रभाव शाली जीवनोपयोगी सामग्री हम इस पत्रिका के माध्यम से पाठकों को दें यह तभी हो सकेगा अगर आर्य मर्यादा के लेखक इन विषयों पर अपनी अमूल्य रचनाएं हमें निरन्तर भेजते रहें। हम पुनः अपने सभी लेखक महानुभावों का धन्यवाद करते हैं। और आशा करते हैं कि इन विषयों पर भी उनकी रचनाएं हमें अवश्य मिलेंगी।

सह सम्पादक

# आर्य समाज के दीवाने अमर शहीद धर्मवीर पंडित लेखराम

( प्रथम पृष्ठ का शेष)

बाबा फकीरी दूर है जैसे कि
लम्बी खजूर।
चढ़ तो चखे (चूसे) प्रेम रस
गिरे तो चकनाचूर॥
वा बाग हुस्ने नही चीज कैसी
जब कलियां या इकलता हुस्का।
लेख राम बस बठ के नाम पर तो
नहीं मन्न देखो उदास हुस्का।

प लेखराम जी अपने चाचा गण्डा राम जी के पास पेशावर मे मुसलमान शिक्षकों से पढते रहे। अध्यापक उन पर इस्लाम का प्रभाव डालने का यत्न करते और लेखराम अपनी शकाओ से उन्हें परेशान करते। 16 वष की आयु मे 21 दिसम्बर 1875 मे पुलिस विभाग मे प्रविष्ट हुए। सिख सिपाही के सत्सग से ईश्वर भजन ब्रह्म मुहूर्त मे ही स्नान गीता पाठ समाधि अभ्यास किया फिर बहुत भाषा का रग चढा। कृष्ण के भक्त हुए। वृन्दावन जाने की ठानी। विवाह के नाम से भी क पकडते। रास लीला की ओर प्रवृत्ति हुई। सस्कृत पढ़ने की रुचि हुई। मन भटकने लगा। सत्य की खोज थी। इस्लाम की ओर भी झुके। मित्र कृपाराम के प्रश्न पर झट स्वीकार कर लिया कि इस्लाम में सत्य मिले तो मुसलमान हो जाए थे। वे उस समय सच्चे जिज्ञासु थे। बिना परखे कुछ भी करने को तैयार न थे। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने प लेखराम को मुन्शी कन्हैया लाल जी अलखधारी जो उस समय अन्ध परम्पराओ से पीडित आर्य सन्तान को बचाने का काम कर रहे थे का शिष्य बताया है। श्री अलखधारी को स्वामी दयानन्द के व्याख्यानो और लेखो से सफलता मिली। उनके सभी शिष्य स्वामी दयानन्द की शरण मे आए और आर्य समाज के उत्साही सदस्य बने। प लेख राम ने बहुमूल्य ग्रन्थ मगाए। स्वाध्याय किया और ऋषि से पत्र व्यवहार किया परिणामत सम्वत 1936 में पेशावर मे आर्य समाज की स्थापना कर दी और एक दिन 11 मई 1881 को पेशावर से प्रस्थान किया। लाहौर अमृतसर मेरठ प्रस्थान स्थानो पर आर्य समाजो मे ठहरते हुए 16 मई 1881 को अजमेर पहुचे। 17 मई को ऋषि के दर्शन किए। समस्त शकाओ का निवारण हुआ चित्त प्रसन्न हो गया। अभूत पूर्व शान्ति मिली। उस समय उन्होने जो प्रश्न किए उनमें से एक प्रश्न अन्य मत के मनुष्यो को शुद्ध करना भी था 28 मई 1881 तक प जी ऋषि चरणो में आनन्द रहे। और चित्त स्वस्थ अष्टाध्यायी की एक प्रति अपने साथ लेकर चले आए। यह विवरण प जी ने स्वय लिखा है।

वे उत्कट मेधावी और प्रकाण्ड विद्वान् तो थे ही। हृदय की सरलता और कठोरता के लिए भी प्रसिद्ध थे। आर्य सन्तानो की दुर्दशा से उनका हृदय द्रवित रहता था। उनको सुखी बनाने के लिए जीवन भर प्रयत्न करते रहे। उनके लिए आक्रान्ता मुसलमानो और ईसाईयों से डटकर मुकाबला दृढता से करते रहे शास्त्रार्थों मे तो विजयी हुए ही लाठी भी और बन्दूको से भी कभी नहीं डरे उन के लेखो और व्याख्यानो की जाच की गई कि कहीं कोई आपत्तिजनक शब्द या वाक्यांश मिले तो मुकद्दमा किया जाए। ऐसा कुछ नही मिला। वे विपक्षी को परास्त करने मे जितने दृढ उत्साही एव कठोर थे वहा कोई कठोर अपशब्द उनके लेखो अथवा वाणी से नही निकला। ऐसे हृदयो के लिए कहा है—

वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि

उनके व्याख्यानो मे मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र और हकीकतराय आदि के दृष्टान्त हृदय को द्रवित कर देते थे। पत्थर दिलो को भी मोम बना आठ आठ आसू रुलाया करते थे।

उस समय के पंजाब मे आज का हरियाणा हिमाचल पजाब (भारतीय एव पाकिस्तानी) तथा उत्तर पश्चिमी सीमा प्रान्त थे। इन सभी स्थानो मे अनेको आर्य समाजों की स्थापना का श्रेय प लेखराम जी को है। पौराणिक और मुस्लिम गढो मे उन्होने आर्य समाज स्थापित की। जैसे कि सतारा कादियां भेरा (पाकिस्तान) पेशावर करतारपुर गगोह (सहारनपुर) आदि। कई समाजो की स्थापना के समय मन्त्री भी उन्हे ही बनना पडा। अर्थात उनका काम विधि पूर्वक चल सके उसके लिए मन्त्री बनना पडा। उनकी विद्वता जोशपूर्ण ओजस्वी व्याख्यानो मे उनके हृदय की तडप एव अग्नि प्रकट होती थी। इसी का परिणाम होता कि वे जहा जाते आर्य समाज की स्थापना होती और हजारो लोग भक्त अनुयायी बन जाते।

सन 1894 ई मे महात्मा मुन्शीराम और प लेखराम के पुरुषार्थ से करतारपुर (स्वामी विरजानन्द की जन्म स्थली) मे आर्य समाज की स्थापना हुई। उस समय पं लेखराम जी के व्याख्यान के समय पौराणिको ने पत्थर बरसाए। प जी ने पगडी उतार दी और कहा मुझ पे पत्थर आने में क्या आनन्द आ रहा है। ऐसा भी समय आएगा, जब मेरे मिशन के प्रचारकों पर लोग फूल बरसाएंगे। करतारपुर निवासी महाशय चिरंजीलाल जी प्रेम ने वर्णन किया—

मुझे धर्म वेद से है निसा
सदा इस तरह का प्यार है।
कि न मोड़ू मुह कभी उससे मैं
कोई चाहे सर भी उतार दे।
वह कलेजा राम को जो दिया,
वह जिगर जो बुद्ध को अता किया।
वह फराख दिल दयानन्द का
वही बर मुझे भी उतार दे।

दिन रात उन्हें प्रचार की ही चिन्ता रहती थी। एक बार 1889 ई में वे महता जैमिनी के साथ कमालिया में प्रचार करने गये। प्रचार रात्रि को होना था। तो दिन मे वहा से चार मील दूर ग्राम बाकडिया चले गये। पीपल के पेड के नीचे खड़े होकर डेढ घण्टा ईश्वर भक्ति पर व्याख्यान दिया। बड़ा प्रभावशाली रहा। वहा न तो व्याख्यान की व्यवस्था थी न भोजन की। चना चबाकर भूख का निवारण किया और प्रसन्न चित्त हो रात्रि को कमालिया मे व्याख्यान दिया। इसी बात को किसी कवि ने कहा है

सन्देश देश-देश मे वेदो का दे सुना

प जी इस बात के लिए प्रयत्नशील रहते थे कि आर्य समाज के सदस्यो मे छात्र अध्यापक वकील दुकानदार हर वर्ग का व्यक्ति हों। वे चाहते थे कि आर्य गो पालन करें। बाजार का दूध पीना उन्हे अखरता था।

जब वे ईश्वर के स्वरूप और एक ईश्वर पर व्याख्यान देते तो कट्टर से कट्टर मुसलमान भी प्रभावित हुए बिना न रहते थे। उनका मण्डन हृदय मे न स्थिर हो रहा था और खण्डन अज्ञान और भ्रान्तियों को उखाड रहा था। वे जीवित रहते तो अवश्य ईरान आदि देशो में वेद का एक ईश्वर वाद लेकर जाते। वे स्वय लिखते हैं इस्लाम के अनुयायी मुझ से अकारण रुष्ट होते हैं और मुझे कष्ट देना चाहते हैं। वे बिना कारण मुझ से द्वेष करते हैं तथा केवल भूल से मुझे अपना शत्रु समझते हैं। तथा यह है कि मेरे हृदय में उनके लिए जितना प्रेम है अन्य किसी के लिए नहीं। मेरी प्रबल इच्छा है कि जो जो मिथ्या विश्वास उनके हृदयो मे घर गये हैं वे उनको विद्वत्ता ज्ञान बुद्धि युक्ति व तर्क से ठीक कर दूँ।

प जी के मानव हित के प्रेम समर्पण के भाव को मुसलमान समझ न सके और उनके कट्टर विरोधी होते थे। कादियां के मिर्जा गुलाम मोहम्मद अहमदिया उनके कट्टर शत्रु बन गए सम्भवत उन्हीं की प्रेरणा से दुराचारी ने उन्हें धोखे से छुरा मारा। यह दृश्य भी देखने और चिन्तन योग्य है। कुछ दिन विश्वास पात्र बना रहा दुराचारी का प जी के घर में आना जाना बेरोक था। इस दिनों में उसने प जी का स्वभाव रहन-सहन, गतिविधियां और आने जाने के समस्त मार्गों उपायों का अध्ययन कर लिया था। उसने पंडित जी के पेट में छुरा बड़ी तत्परता और क्रूरता से घोंपा। घोंप कर सोक हृदय को दुखाने का प्रयत्न किया। छुरे को घुमाकर आन्तड़ियां काट दी और बाहिर निकाल दीं। उनकी वीर पत्नी ने उस घातक हत्यारे को पकड़ने का प्रयत्न किया। उसे भी घायल कर भाग।

और धर्म प्राण वीर पुरुष मृत्यु की शय्या पर पड़ा भी अपनी अपनी पत्नी की चिन्ता नहीं करता। उसे चिन्ता है धर्म प्रचार की। और उसकी अन्तिम इच्छा है—आर्य समाज से तहरीर का काम बन्द न हो। धन्य हो वीर लेखराम! तुम्हारी वीरता तुम्हारी धर्म निष्ठा अनुपम है! तुम सच्चे धर्म-वीर हो हमें तुम से ईर्ष्या है। हे प्रभु हमे ऐसी ही मृत्यु मिले। प जी के परम मित्र सखा एक प्राण सहायक और उनके साथ धर्म प्रचार के निकट अर्थों मे सदा साथ रहकर कार्य करने वाले उनकी मृत्यु से ईर्ष्या करने वाले स्वामी श्रद्धानन्द अनुकरण करते हुए 29 वर्ष बाद लगभग उसी प्रकार बलिदान हुए।

आज तक उनकी अन्तिम इच्छा लेख बन्द न हो को करता ही रहा है। उनकी अन्य इच्छाओ के प्रति भी प्रयत्नशील रहा है। उनकी भिन्न ज्ञात इच्छाएं थीं—

(1) विधवा विवाह का प्रचलन और अन्य साधनों का प्रयोग जिससे स्त्रियां विधर्मी न हो।

नोट—स्त्री शिक्षा पर पहली पुस्तक कुमारी भूषण प लेखराम जी ने ही लिखी थी। यह उनकी स्त्री शिक्षा के प्रति प्रबल इच्छा का द्योतक है।

(2) बाल विवाह रोकना।

(3) वेद प्रचार निधि की स्थापना यह निधि सुयोग्य उपदेशको के निर्माण के लिए प्रयुक्त हो।

(4) शुद्धि निधि—जिससे सब वैदिक धर्मी लोगों को वैदिक धर्म में लाया जा सके।

(5) सब भाषाओं में आर्य साहित्य का सृजन किया जावे। वेद विरुद्ध विज्ञान की बातों पर विचार करके समाधान करना।

(6) धर्म प्रचार के लिए साधु संन्यासी और अवैतनिक उपदेशकों को कार्य पर लगाना। वर्तमान मे जो साधु है वे सब धर्म प्रचार करें।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

# टंकारा विकास तथा सम्भावनाएं

ले.—श्री आचार्य सत्यदेव जी विद्यालंकार

टंकारा, गुजरात-सौराष्ट्र प्रान्त में राजकोट तथा मौर्वी नगरो के राजमार्ग पर बसा एक छोटा सा पांच हजार के लगभग आबादी का नगर आर्य समाज के इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। परमहंस ऋषि दयानन्द ने सन्यास धर्म का पालन करते हुए किसी को अपने जन्म तथा बाल स्थान की पूर्ण निश्चित सूचना नहीं दी थी। सन् 1883-84 में उनके निर्वाण के पश्चात् जब उनके अनुयायियों ने ऋषि जीवन के सम्बन्ध मे अनुसन्धान प्रारम्भ किया तो अनेक वर्ष इस तथ्य के खोजने में लग गए कि ऋषि का बट वृक्ष तथा जन्म स्थान कौन से थे। अनेक आर्य विद्वानो के परिश्रम से, जिसमे धर्मवीर प लेखराम तथा ऋषि भक्त बाबू देवेन्द्रनाथ मुख्य थे, जन्म स्थान तथा बट वृक्ष का निश्चय हुआ।

सन् 1926 मे स्वामी श्रद्धानन्द जी, स्वामी शकरानन्द जी तथा श्री विजय शकर, मूल शकर आदि नेताओं के अध्यवसाय से टंकारा मे महर्षि दयानन्द अर्ध-शताब्दी महोत्सव मनाया गया तब से यह स्थान लगातार आर्यजनो के आकर्षण का केन्द्र बन गया। इस महोत्सव के बाद पहले टंकारा मे आर्य समाज की स्थापना हुई। जिसके मुख्य कार्यकर्ता श्री गिरधर लाल, गोविन्द मेहता तथा श्रीमती चचल बहिन थे।

इसके कुछ वर्ष बाद टंकारा ट्रस्ट का निर्माण हुआ और अनेक प्रवृत्तिया प्रारम्भ हुई।

10-1-59 को मोर्वी महाराज के महल को जिसे श्रेष्ठवर श्री कानजी कालिदास मेहता ने दो लाख रुपए के लगभग दान से खरीदा और सवारा। अग्र-महल के बाद प्रति वर्ष उत्सव की शानदार परम्परा प्रारम्भ हो गई जो अब तक अबाध्य रूप से चल रही है। इस ही महल मे टंकारा ट्रस्ट के आधीन कार्यकलापों का सूत्रपात हो गया।

सन् 1965 में श्रद्धेय श्री मेहरचन्द जी महाजन के नेतृत्व में जिन के प्रमुख सहयोगी कर्मवीर प आनन्दप्रिय जी लाला दीवानचन्द जी तथा श्री नरारान जी मेहता आदि थे, यह निश्चय किया कि टंकारा मे मुख्य कार्य ऋषि दयानन्द के सिद्धान्तो के प्रचार-प्रसार के लिए प्रचारक अनुसन्धान कर्ता तथा उपदेशक विद्वान् उत्पन्न करना होगा। आवान्तर कार्यों मे विद्यालय गोसम्वर्धन केन्द्र, प्रचार केन्द्र तथा कृषि विकास आदि को भी स्थान दिया गया।

इन सबके साथ वार्षिक उत्सव टंकारा के जीवन का एक महत्त्वपूर्ण अग बन गया। इसी परम्परा मे जिसका प्रारम्भ सन 1959 मे हुआ, 27-28-29 फरवरी 1984 को ऋषि बोधोत्सव (शिवरात्रि) महोत्सव मनाया गया।

इस समय ट्रस्ट के प्रमुख कार्यकर्ता अधिकारी श्री हंसराज जी गुप्त प आनन्द प्रिय जी श्री रतन चन्द जी सूद, श्री ओकारनाथ जी आदि हैं। सम्पूर्ण कार्यक्रम के प्राण श्री रामनाथ जी सहगल ट्रस्ट के मन्त्री हैं। जिनका पुरुषार्थ ट्रस्ट के प्रत्येक कार्य में प्रतिबिम्बित हो रहा है।

टंकारा मे आर्य समाज के गौरव को कुछ कम करने वाली बात एक यह है कि ऋषि दयानन्द के जन्म गृह का मुख्य भाग श्री कानजी भक्तू भाई के अधिकार में है, उनके मकान का एक भाग है। सन् 1975 में भारत की प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी जी टंकारा पधारी। जन्म स्थान को देखकर उन्होने कहा कि किसी महापुरुष का जन्म स्थान किसी एक व्यक्ति की सम्पत्ति नहीं हो सकती। वह राष्ट्र की सम्पत्ति होता है। उनके विचार के अनुसार वहां उपस्थित कर्मठ संसद सदस्य श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री ने दिल्ली जाकर भारत की संसद के 80 के लगभग सदस्यों के हस्ताक्षर से एक ज्ञापन प्रधानमन्त्री को दिया। उस पर सरकारी ढंग से कार्यवाही भी आरम्भ हुई पर श्री प्रकाश वीर जी शास्त्री के आकस्मिक निधन से यह कार्य शिथिल हो गया। उसके कुछ समय बाद भारत के गृह मन्त्री श्री चौधरी चरण सिंह जी टंकारा आए। उन्होने अपने साथ आए हुए गुजरात के मन्त्री श्री केशो भाई आदि को इस कार्य के पूरा करने की प्रेरणा दी। इसी तरह जब श्री अटल बिहारी जी वाजपेयी टंकारा आए थे तो उन्होने भी जन्म स्थान की दुर्दशा को देखकर बहुत क्षोभ व्यक्त किया तथा आर्य समाज को शक्तिहीन कहा था।

पर सरकारी काम अपनी गति से चलते है। अभी तक यह कार्य निष्पन्न नहीं हो सका। टंकारा ट्रस्ट ने तो इस स्थान के सरकार द्वारा निश्चित मूल्य धन देने की इच्छा भी लिखित रूप मे दे दी थी।

सम्भवत इसका एक मुख्य कारण गुजरात प्रान्त मे ऋषि के महत्त्व के प्रति उपेक्षा की भावना है। गुजरात सरकार सामान्य गुजराती नेताओ तथा स्वर्गीय महापुरुषो के स्मारकों के प्रति बहुत रुचि दिखाती है, पर ऋषि दयानन्द के प्रति धार्मिक सकीर्णता के कारण प्राय उपेक्षा का भाव रहता है।

टंकारा ट्रस्ट तथा समस्त आर्य जगत् के लिए यह एक चुभने वाली बात है। इस दिशा में प्रबल प्रयत्न अवश्य होना चाहिए।

टंकारा में दूसरा महत्त्व का काम ऋषि के सिद्धान्तो का प्रचार केन्द्र बनाना है। उपदेशक विद्यालय इस दिशा मे छोटा सा कदम है। यह टंकारा ट्रस्ट के प्रयत्न से पिछले 17-18 वर्षों से सफलता पूर्वक चल रहा है। पर यह अभी पूर्णतया विकसित तथा पर्याप्त नही है। इसका बहुत विस्तार अपेक्षित है। अधिक विद्वान चाहिए अधिक विद्यार्थी चाहिए और सबसे आवश्यक बात तो यह है कि आर्य जनता के मन मे यहां से शिक्षा प्राप्त किए बच्चो को सम्मानजनीय जीवन देने की लालसा चाहिए। वह अभी तक नही पनप सकी। सम्भवत आर्य समाज अपने उपदेशक पुरोहितो को सम्मान की दृष्टि से देखता भी नही। अत जो बच्चे इस कार्य मे आते हैं शीघ्र ही कामो को हाथ लगा देते हैं। इस महगाई के जमाने में आर्य समाजें अपने पुरोहितो को 150-200 के शानदार ग्रेड देती है तो कौन पुरोहित बनना चाहेगा या अपनी सन्तान को इस कार्य म लगाना चाहेगा।

टंकारा केन्द्र के विकास मे सबसे अधिक पानी की समस्या है। सौराष्ट्र की पूर्णतया भूमि वर्षा पर आश्रित है। मनुष्य पशु और खेती का आधार वर्षा है। टंकारा मे प्राय आधा वर्ष स्वच्छ जल का अभाव रहता है। बिना पुष्कल जल के कोई आश्रम कैसे पनप सकता है।

टंकारा ट्रस्ट के कर्मठ कर्मचारियो, ट्रस्टियो के सामने और भी अनेक समस्याए हैं। जिनके समाधान के लिए वे लगातार प्रयत्न कर रहे हैं। पर ऊपर जिन तीन समस्याओ का उल्लेख किया गया है उन्होने इस महान कार्य की प्रगति को पगु बना दिया है। आर्य जनता महर्षि के जन्म स्थान टंकारा के कार्य की महानता से अच्छी तरह परिचित है। प्रति वर्ष ऋषि बोध रात्रि के अवसर पर जो महोत्सव होता है उसमे प्रखर ऋषि भक्त श्री आर्य भिक्षु जी के शब्दो मे सहस्रो नर-नारी टंकारा मे अपने हृदयो मे ज्ञान ज्योति को प्रदीप्त करने आते हैं। इस ज्ञान ज्योति का मूल ऋषि जीवन है जिसका टंकारा का एक छोटा सा नगर प्रतीक है और सदा रहेगा।

आशा है इस बार होने वाले महोत्सव पर आर्य जनता तथा ऋषि भक्त एव ट्रस्ट के ट्रस्टी इन समस्याओं का कुछ समाधान अवश्य ढूढ निकालेंगे। ताकि अगले वर्ष होने वाला स्वर्ण जयन्ती महोत्सव पूरी सफलता पूर्वक मनाया जा सके।

---

(4 पृष्ठ का शेष

(7) दान को व्यवस्था ठीक करना, अर्थात् दान की दुर्गति न हो। ये कार्य-क्रम आज भी महत्त्वपूर्ण हैं जितने उस समय थे।

आर्य समाज इन कार्यों को करता हुआ, यश और पुण्य का भागी बना है। वर्तमान में जो शिथिलता आ गई है उसे दूर करना हम सभी का कर्तव्य है। शास्त्रार्थों की परम्परा समाप्त हो चुकी है। ईसाई और मुसलमान इस विषय में आर्य समाज के सामने आने का साहस नही करते। परन्तु अदृश्य रूप से अपने कुटिल कर्म मे प्रवृत्त हैं। ईसाई अपनी बौद्धिक कुटिलता से तथा मुसलमान भय, लोभ तथा धन (पैट्रोडालर) से हमारे आर्यजनो मे जो दलित हैं आर्थिक दृष्टि से कमजोर हैं, सामाजिक समानता जिन्हें मिल नहीं पाई ऐसे आर्यों (हिन्दुओं) का धर्म परिवर्तन कर रहे हैं। इधर आप (सार्वदेशिक सभा) भी और पौराणिक भी, अपने बिछुड़े भाईयो को पुन वापिस लाने का प्रयास कर रहे हैं।

आर्य पथिक, धर्मवीर, प लेखराम जी के प्रति सच्ची श्रद्धाजलि यही है कि हम शुद्धि के कार्य को प्रमुखता दे। मात्र वापिस लाने का ही कार्य न करें। ऐसी परिस्थितिया उत्पन्न करे ऐसा ज्ञान का प्रचार करें कि विधर्मियो का कुचक्र न चल सके। प्रभो! हमे शक्ति एव सामर्थ्य दीजिए कि अपने श्रद्धेय धर्म प्राण वीर बलिदानी प लेखराम के पथ का अनुसरण करते रहे, वैदिक धर्म के विरोधियो को ज्ञान प्रकाश देकर सन्मार्ग पर ला सकें और अपने बिछुड़े भाईयो को गले लगाने में सदा तत्पर रहे।

ले—श्री धर्मवीर विद्यालंकार

# शिव—शंकर दयानन्द

ले—श्री प वीरसेन जी वेदश्रमी वेदविज्ञानाचार्य
वेदसदन महारानी रोड इंदौर

( गतांक से आगे )

महर्षि को शिवरात्रि मे बोध हुआ। वह मगलमयी शिवरात्रि है। महाशिव रात्रि है। निःसन्देह वह महाशिवरात्रि अपने नाम के अनुसार अत्यन्त कल्याण कारिणी और मङ्गलमयी भी सिद्ध हुई। यदि महर्षि दयानन्द सरस्वती को इस रात्रि में बोध न हुआ होता तो वह शिवरात्रि नहीं अपितु अ शिवरात्रि ही रह जाती और मानव जाति महान अन्धकार के गर्त मे ही निमग्न रह जाती।

मगलमयी कल्याणकारिणी यह शिवरात्रि दयानन्द की बोध रात्रि है। आज मे समस्त उनके ज्ञान जन्मदिवस को जनता बड उल्लास से मनाती है। मैंने भी सबको प्रसन्न मुद्रा देख कर पूछना आरम्भ किया कि— महर्षि दयानन्द क्या थे ? जनता ने तुमुल घोष मे कहा

वह महर्षि महान था ! महानतर था ! महानतम था !!!

उस महान घोष की ध्वनि वृक्ष वन पर्वत कन्दराओ और अन्तरिक्ष में व्याप्त हो गई और उनमे से प्रतिध्वनित होकर बार बार सकल दिग दिगन्तो मे व्याप्त होती और पुन प्रतिध्वनित होने लगती मैं आनन्द विभोर हो उठा मुझे ऐसा जान पडा मानो सारा जड जगत भी मुझ से बोल रहा है। ऋषि के बारे में मुझ से कुछ कहना चाहता है। प्रकृति को प्रसन्न मुद्रा मे देखकर मैंने एक-एक से पूछना प्रारम्भ किया।

जगल के पेड और पौधो से पूछना प्रारम्भ किया लता और गुल्मो से भी पूछा तुमने उस महर्षि को देखा था। तुमने अपने शीतल हवा के झोको से उन का स्वागत किया था ? तुमने उस महर्षि की क्षुधा निवृत्ति के लिए फल फूल एव पत्र भी भेंट किए थे। रात्रि मे इन निर्जन वनो मे जब वे एकाकी विचरण करते थे तब तुम्ही उनके एकमात्र साथी थे और प्रहरी भी थे। तुम्हारे ही अव्यक्त शब्दों की वे सुना करते थे और उन्होंने तुम्हें अपना गम्भीर प्रणवयुक्त प्रभर न द प्रभु का निज नाम ओ३म सुनाया था। तुमने उन्हे योग साधन मैं रत देखा था तुमने उनको समाधिस्थ भी देखा था। कण्टकाकीर्ण झाडियो से घिरे हुए स्थानों में जहा कोई भी मार्ग नहीं था उनमे अपना मार्ग निकाल कर जाते हुए उस महर्षि के शरीर को काटो से भी बींधा था और उनके दिव्य शरीर को रक्त रंजित भी किया था। इस प्रकार से तुमसे अनेक वन लतादि उनके रक्त से सिंचित एव परिवर्धित भी हुए थे। कहीं तुमने उनको मार्ग भी दिया था और कही तुम उस महर्षि का मार्ग रोक कर भी खड खड थे। कभी तुमने उनको धूप से आतप्त होने पर छाया मे सुख पूर्वक विश्राम भी दिया था। इसलिए तुम बताओ कि वह महर्षि क्यों महान् थे ?

मेरी बात सुनकर वे पेड पौध, गुल्म एव लताए सिहर उठ हो गई। तीव्र हवा के झोको से कोई नत मस्तक हुए, कोई इधर उधर झूमने लगें और कोई शब्द करने लगें। एक ने कहा कि वे हमसे ञ् थे दूसरे ने कहा, तीसरे ने कहा और सब ही जय घोष करने लगे। फल वाले वृक्षो ने फल गिराकर पुष्प वृन्दो ने पुष्प और पराग विकीर्ण करके अपनी स्वीकृति प्रकट की। फिर वे सब कहने लगे कि— उस महर्षि ने हमारा जीवन सफल कर दिया। तुमने मनुष्य जीवन लेकर भी उनके उपदेशो को भुला दिया। उनके परम तेजस्वी एव देदीप्य मान शरीर को देखकर भी उन्हे विस्मृत कर दिया। परन्तु जिन घने वनों मे पवन का झकोरा भी नही पहुचता था, जहा रवि की रश्मिया भी न पहुच पाती थीं और जहा मानव के दर्शन करने की स्वप्न में भी सम्भावना न हो सकती थी, जहा कोई ऐसा स्थान नही था कि एक पग भी रखा जा सके ऐसे दुर्गम अमेद्य एव कण्टकाकीर्ण स्थलो मे आकर उन्होंने पथ का निर्माण किया और हमारे मध्य मे मानव के आगमन का मार्ग प्रशस्त किया। हम मानव के दर्शन के लिए सैंकडो और हजारो वर्षों स लालायित थे। उस महर्षि ने हमें दर्शन देकर हमारी तपस्या फलीभूत की और मानव जाति से हमारे सम्पर्क का म म सन्त के लिए खोल दिया।

वह महर्षि सबके अवरुद्ध मार्गों को खोलने के लिए आया था। यह क्या उस परम कृपालु महर्षि की हमारे प्रति दया नही थी ? इस प्रकार उन्होंने हमारा उद्धार किया। इसलिए हम उन्हे महान मानते हैं। पूज्य मानते हैं और श्रद्धा से नत मस्तक होते हैं।

पास के फल से मैंने पूछा तुम बड महक रहे हो। अनेक अलिवृन्दों के वसन्त गीत तुमने सुने हैं। अनेक सुन्दर उषाओं के साथ तुमने परिहास किया है। क्या तुमने भी मेरे उस महर्षि को देखा था।

वह पुलकित एव स्मित वदन हो किंचित् अधोमुख से ऊर्ध्वमुख हुआ और अपनी ग्रीवा लम्बी करके समीप के पुष्पो को निहारने लगा। मैंने पूछा क्यो चुप हो। वह बोला—मेरा मौन क्यो भग करते हो ? तुम्हारी वाणी ने मेरी मूक समाधि भग कर दी है। मैं तो महर्षि की उस ध्वनि को सुनकर अलि-वृन्दो के उन प्रणव गीतो को भुला चुका था। प्रभु की जो वह वाणी मानवो को भी दुर्लभ थी वह हमे जड जीवन में भी उन्ही की कृपा से सुनने को मिली थी। क्या करें ? हम तो निष्क्रिय हैं साधनहीन हैं। तुम्हारे सदृश हम मे ज्ञान एव कर्मेन्द्रियां नहीं हैं। हमारे पास तुम्हारी सी विवेक बुद्धि नही है और हमारे पास तुम्हारे सदृश पुरुषार्थ के साधन नहीं हैं।

हम अधोमूल होकर जड हुए हैं। चल फिर नही सकते थे और उछल कर उनके गले मे लिपट नहीं सकते थे। नहीं तो हम उस महर्षि के साथ चल देते और उनसे शिक्षा प्राप्त कर उपदेश ग्रहण कर ससार को पुष्पवाटिका के तुल्य सुन्दर और सौरभ युक्त बना देते। ससार में अपना प्रेम पराग फैलाकर प्रभु के प्रेम मे सबको विभोर कर देते और अपने मधु की मधुरिमा से—'मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव ग्न' इस ऋचा को चरितार्थ कर देते।

तुम तो मानव हो। साधन सम्पन्न हो। विवेक युक्त हो। तुमने अवश्य उन से मनोहारी साम सुने होंगे। एक बार फिर से उन सामो को सुना कर उनके साथ तन्मय होकर नृत्य करने दो। एक बार फिर उस प्रभु के आदि नाम ओ३म का घोष करके हमारे जीवन को सफल कर दो और प्रसन्नता से मुकुलित होने दो।

मैं क्रम से चल दिया। मैं साम मन्त्रो का उच्चारण करना नही जानता था और प्रभु का नाम लेना भी न आता था। कुछ दूर चलकर पीछे मुडकर मैंने देखा तो वह पुष्प निराश होकर अधोमुख हो कर गिर पडा था। उसके अन्य साथियो का क्या हाल हुआ मैं नहीं जान सका। परन्तु कानो मे धिक्कार की आवाज सुनाई पड रही थी। फिर वह सुन्दर वाटिका रही या उजडी इसका पता लगाने का साहस न हुआ।

कुछ आगे चला नर्मदा नदी मिली। विशाल पवन झको के साथ आलिंगन करती हुई नाचती और नाचती रेती में रमण करती हुई प्रमत्त सी वह चली जा रही थी। मैंने कहा—नर्मदे ! जरा ठहर, अपना कल्लोल बन्द कर। तेरी परिक्रमा उस महर्षि ने की थी। तीन वर्ष वे मेरे साथ रहे। तेरी अमर और अनादि सगीत धारा के साथ उन्होंने दिव्य साधना की थी। तेरा आदि मध्य और अन्त छू लेने की तपस्या में उन्होंने अनेको कष्ट सहे। अनेक सिंह व्याघ्रादि पशुओं के झुण्डो में भी निर्भय होकर तेरी साधना मे रहते रहे। अनेक पर्वतो को लाघते हुए अगाध स्थानो से भी तेरी साधना में वे लीन बने रहे।

तेरी लम्बाई चौडाई और गहराई बहुत अज्ञात है। क्या तूने उस महर्षि की महानता नापी थी ?

वह बोली मेरी मूक सेवा में सैंकडो वर्षों से सहस्रों देव और दानव लगे हैं। ऋषि महात्माओं को भी आश्रय देती हूं और चोर डाकू तथा हिंस्र प्राणियों को भी। दोनो ही मेरे अमृतमय जल से जीवन प्राप्त करते हैं। नित्य मेरे पास आते हैं। उनका प्रतिबिम्ब मुझ में पडता है और महान नील आकाश का भी पडता है। इससे मैं सबकी महानता के माप दण्ड बन रही हूं।

मैं उस महर्षि के दिव्य शरीर को शीतल जल से नित्य स्नान कराती थी। उनके पवित्र शरीर मे अपनी रज को अनुलिप्त किया करती थी। उनको स्वच्छ निर्मल जल पिलाती थी। अनेक योग क्रियाओ के साधन के लिए सुरम्य स्थान एव साधन प्रदान किया करती थी। उन की तपस्या को परिपक्व करने के लिए अनेक सिद्ध योगी जनो से उनकी भेंट कराती थी। मैं उनकी तपस्या मे प्रसन्न थी। उनके विचारो से गर्वित थी और उनकी ब्रह्मचर्य व्रत साधना से उन्नत भाल कर रही थी। पांच सहस्र वर्ष पश्चात् ऐसे महात्मा सिद्ध एव महर्षि को मैंने देखा था। अनेक साधु सन्यासी महात्मा मेरी सेवा में आए कोई केवल विद्वान था कोई ज्ञानी ही था। कोई केवल योगी ही था और कोई केवल तपस्वी ही था। परन्तु ज्ञान तप एव योग से वर्चस्वी और उन्नत बल पुष्ट सम्पन्न परोपकारी तथा प्राणि मात्र का हितैषी महर्षि के सिवाय कोई भी दृष्टि गोचर नही हुआ इसी से मैंने उसे महान माना। निस्सन्देह वह महान ही था।

नर्मदा के दोनो किनारों पर खड सजग प्रहरी अमरकटक और विन्ध्य पर्वतों से भी मैंने पूछा कि तुमने भी मेरे गुरुदेव को अपनी गुहाओ और कन्दराओ मे आश्रय दिया था। उनको तुमने अनेक तत्वज्ञानियो एव योगियो से मिलाया था। अनेक बार समाधि की साधना में निमग्न करने के लिए ऋषि, महर्षियो की तपस्याओ से परिपूर्ण स्थलो को तुमने प्रदान किया था। तुम्हारे उत्तुङ्ग शृङ्गों पर आरूढ कर उस महर्षि ने चतुर्दिक विस्तृत वसुन्धरा के सौंदर्य का निरीक्षण किया था और उस छवि मे प्रभु के दर्शन किए थे। प्रभु के दर्शन की मस्ती में मस्त होकर मेरे महर्षि निर्भय होकर तुम्हारी उपत्यकाओ मे विचरण करते फिरते थे। क्या तुम उनके बारे में आज अपना मौन भग करते हुए कुछ बतलाओगे कि वह महर्षि क्यों महान् थे ?

( क्रमश )

# आर्य बन्धुओं से

ले—श्री भद्रसेन जी वेद दर्शनाचार्य होशियारपुर

ओ३म्

महर्षि गुरु विरजानन्द की सच्ची की प्रेरणा पर महर्षि दयानन्द सरस्वती भारत भर में प्रचार करते रहे। गुरु की आर्य ज्योति को सदा प्रज्वलित रखने के लिए महर्षि ने विधिवत 1875 में आर्य समाज की स्थापना की। इन दिनो नारी शिक्षा का अभाव ही नहीं पूरी तरह से इसका विरोध होता था। आर्य समाज की प्रेरणा और कार्य के कारण आज ऐसी संस्थाओ द्वारा भी महिला विद्यालय महाविद्यालय चलाए जा रहे हैं जो कल तक इस का प्रबल विरोध करती थी। आर्य समाज ने जब कार्य आरम्भ किया उस समय नारी केवल शिक्षा से ही वंचित न थी अपितु धार्मिक सामाजिक अधिकारो से भी वंचित थी। यह ठीक है कि आज नारी को शिक्षा प्राप्ति के अवसर के साथ धार्मिक सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्र में समान अवसर प्राप्त है। पर मुख्य बात तो यह है कि नारी को पुरुष की अपेक्षा हल्का समझने के कारण ही पहले उसके लिए शिक्षा धर्म समाज और अर्थ के क्षेत्र में द्वार बन्द थे। आज चाहे शिक्षा आदि क्षेत्रो में नारी को अधिकार प्राप्त हो गया है पर नारी को हल्का समझने की भावना में पूरी तरह से परिवर्तन नहीं आया। तभी तो आधुनिक दहेज प्रथा का कोढ़ नारी जाति के लिए अभिशाप बन रहा है। शिक्षा समाज धर्म अर्थ आदि क्षेत्रो में आए इन सामाजिक परिवर्तनो में आर्य बन्धुओं को विशेष रूप से इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि ये परिवर्तन अभी ऊपर 2 की स्तर में हैं। इन साधारण परिवर्तनो के साथ जड़ की ओर ध्यान नहीं तभी तो समाज में पूर्ण परिवर्तन की बात अब पूरा नहीं हो सकती क्योंकि पत्तो को पानी देने से पेड़ हरा भरा नहीं होता अपितु जड़ को सींचने से ही हरा भरा हो सकता है। नारी से होने वाले इन अन्यायो की जड़ उसे हल्का समझना है।

अतः अनमेल विवाह दहेज प्रथा नारी शिक्षा धर्म समाज आदि में सुधार लाने के लिए नारी के सम्मान और गौरव के भाव को उभारना चाहिए।

आज भी नारी के साथ होने वाले अन्याय अनमेल विवाह दहेज प्रथा अपहरण बलात्कार आदि अनेक प्रकार के अन्याय अत्याचार को दूर करने के लिए इन बीमारियो की जड़ को समझना होगा। तभी इन सभी समस्याओ को सुखी बनाया जा सकता है। सम्भवतः इसी लिए ही कहा जाता है कि चोर को नहीं चोर की मा को पकड़िए जिस से रोग का बड़ सहित उपचार हो सके। नारी के प्रति होने वाले सभी अन्यायो का मूल कारण है नारी को हल्का समझना इस के निवारण के लिए सब प्रथम महिला जाति को आत्मविश्वास अपने अन्दर भर कर इस हल्केपन की भावना को बाहर निकालना होगा इस के साथ नारी सम्बन्धी समस्याओ के समाधान चाहने वालो को भी सब प्रथम इस ओर ध्यान देना चाहिए। इसी लिए ही महर्षि दयानन्द सरस्वती ने समस्या के मूल कारण को सामने रख कर स्थायी समाधान की दृष्टि से अपने सारे साहित्य में नारी वर्ग को गौरव पूर्ण सम्मान स्थान देने का विधान किया है

ऐसे ही आर्य समाज ने जब कार्य आरम्भ किया तो भारतीयो में यह विश्वास था कि समुद्र यात्रा एवं विदेश गमन से व्यक्ति पतित हो जाता है। इसलिए उन दिनो ऐसे व्यक्तियो का सामाजिक बहिष्कार और खान पान के सम्बन्ध का विच्छेद वहा होता था वहां उनके विरुद्ध जलूस निकाले जाते प्रस्ताव पास किए जाते थे जब तक ऐसे व्यक्ति इस का प्रायश्चित नहीं कर लेते थे। उन दिनो की इन भावनाओ को ही सामने रखकर ही इस सम्बन्ध में महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है— (प्रश्न) आर्यावर्त देशवासियो का आर्यावर्त देश से भिन्न भिन्न देशो में जाने से आचार नष्ट हो जाता है वा नहीं? (उत्तर) यह बात मिथ्या है क्योंकि जो बाहर भीतर की पवित्रता करनी सत्यभाषणादि आचरण करता है वह कहीं जाकर भी आचार और धर्म भ्रष्ट कभी न होगा और जो आर्यावर्त में रह कर भी दुष्टाचार करेगा वही अधर्म और आचार भ्रष्ट कहावेगा। (10 225)

जो मनुष्य देश देशान्तर और द्वीप द्वीपान्तर में जाने आने में शंका नहीं करते वे देश देशान्तर के अनेक विध मनुष्यो के समागम रीति भांति देखने अपना राज्य और व्यवहार बढ़ाने से से निर्भय शूरवीर होने लगते और अच्छे व्यवहार का ग्रहण कर बुरी बातो के छोड़ने में तत्पर होके बड़े ऐश्वर्य को प्राप्त होते हैं। 10 226

सज्जन लोगो को रोग द्वेष अन्याय मिथ्या भाषण आदि दोषो को छोड़ निर्वैर, प्रीति, परोपकार, सज्जनता आदि का धारण करना उत्तम आचार है। और यह भी समझ लो कि धर्म हमारे आत्मा और कर्तव्य के साथ है जब हम अच्छे कर्म करते हैं तो हम को देश देशान्तर और द्वीपान्तर जाने में कुछ भी दोष नहीं लग सकता। दोष तो पाप के करने में है। 10 226—7

इन उद्धरणो को पढने से स्पष्ट होता है कि महर्षि ने बात की तह में जा कर मूल तत्व की ओर ध्यान दिलाया है। इन उद्धरणो से यह भी सिद्ध होता है कि धर्म आचरण का नाम है न कि केवल कर्म काण्ड का कर्म काण्ड तो केवल व्यक्ति को अच्छे आचरण की प्रेरणा देने के लिए होता है। आज कर्म प्राय कर्म काण्ड पर अधिक बल दिया जा रहा है अतः उसका तो फल व हो रहा है पर धर्म का फल सुख सामने नहीं आ रहा अतः धर्म के फल सुख को प्राप्त करने के लिए हमें अच्छे आचरण की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए

ऐसे ही छुआ छूत और जात पात के कारण जो विषमता अन्याय शोषण का चक्र चल रहा है उसका मूल कारण मानव जाति की एकता को स्वीकार न करना है आर्य समाज ने अपने आरम्भिक दिनो में इस समस्या का हल निकालने केलिए अपने मन्दिरो और स्कूलो में सब के साथ समता का व्यवहार किया। सबके लिए एक ही जल व्यवस्था बैठने की व्यवस्था की इसके लिए हर प्रकार का विरोध सहा पर आज इन को एक अलग हरिजन नाम दे दिया गया है इनके लिए अलग धर्मशालाए और बस्तिया बसाई जा रही हैं इस तरह राजनीतिक स्वार्थ ने इनको औरो से अलग थलग ही कर दिया है यदि महर्षि की भावना के अनुरूप मानव जाति की एकता को सामने रख कर सब के लिए एक समान व्यवस्था की जाए तो अधिक अच्छा रहे विशेष आरक्षण की अपेक्षा पिछड़ो की शिक्षा योग्यता सफाई की आदत और अच्छे संस्कार लाने के लिए विशेष प्रबन्ध होने चाहिए समान व्यवहार से ही एकता पनपती है

अतः आर्य बन्धुओ से प्रार्थना है कि आर्य समाज के प्रारम्भिक काल के समान लकीरो रूढ़ियो से दबी हुई जनता को उभारने के लिए समस्या को जड़ से हल करने के लिए प्रयास करें जिससे एकेश्वरवाद मानव जाति की एकता धर्म अच्छे आचरण का नाम है जैसे आर्य समाज के आधारभूत मूल मन्तव्य चरितार्थ हो सकें तभी समाज अत्याचार से रहित होकर सुखी हो सकता है।

—


रजिस्ट्रेशन आफ न्यूज पेपर सेंट्रल रूल 1965 के अनुसार स्वामित्व व अन्य विवरण ब्यौरा— फार्म न 4 (रूल न 8)

साप्ताहिक आर्य मर्यादा जालन्धर

| | | |
|---|---|---|
| 1 | प्रकाशन का स्थान | ——जालन्धर |
| 2 | प्रकाशन क्रम | ——साप्ताहिक |
| 3 | मुद्रक का नाम | ——वीरेन्द्र एम ए |
| | राष्ट्रीयता | ——भारतीय |
| | पता | ——साप्ताहिक आर्य मर्यादा द्वारा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर। |
| 4 | प्रकाशक का नाम | ——वीरेन्द्र एम ए |
| | राष्ट्रीयता | ——भारतीय |
| | पता | ——साप्ताहिक आर्य मर्यादा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर। |
| | सम्पादक का नाम | ——वीरेन्द्र एम ए |
| | राष्ट्रीयता | ——भारतीय |
| | पता | ——द्वारा साप्ताहिक आर्य मर्यादा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर |
| 6 | उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हो तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हो। | आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर |

मैं वीरेन्द्र एम ए एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी और विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

ह—वीरेन्द्र
प्रकाशक

हिन्दी साप्ताहिक आर्य मर्यादा
जालन्धर।

## आर्य समाज कोटक-कपुरा का चुनाव

आर्य समाज कोटकपुरा का निर्वाचन श्री वीरेन्द्र कुमार शर्मा की अध्यक्षता में निम्न प्रकार हुआ —

प्रधान—श्री वीरेन्द्र जी शर्मा उप प्रधान—श्री रवि राज बेदा मन्त्री श्री महिन्द्र पाल मैंनी उपमन्त्री—श्री मिठ राम चक्रवर्ती कोषाध्यक्ष श्री बसन लाल मग

अन्तरंग सभा सदस्य पदाधिकारी

श्री राजिन्द्र कुमार बेदा श्री रिखी राम मोगा श्री अमृतलाल मगी श्री महिन्द्र पाल मलहन श्री प्रेम कुमार शर्मा श्री महेश कुमार उप्पल श्री राजिन्द्र प्रसाद बेदा श्री महाजन केहर सिंह श्री गुरदयाल सिंह कटारिया

आर्य माडल मिडल स्कूल प्रबन्धक कमेटी

प्रधान—श्री वीरेन्द्र कुमार शर्मा मन्त्री—श्री महिन्द्र पाल मैंनी मैनेजर—श्री राजिन्द्र कुमार बेदा

सदस्य—श्री महिन्द्र पाल मलहन श्री जगन्नाथ मगी श्री बलपाल बेदा श्री रविराज बेदा

महिन्द्र पाल मैंनी
मन्त्री

## आर्य समाज कठूआ का चुनाव

5 2 1984 को आर्य समाज कठूआ का वार्षिक चुनाव श्री भारत भूषण महाजन जी की अध्यक्षता में किया गया जिसके निम्नलिखित अधिकारी चुने गए

संरक्षक—लाला राम रत्न जी तथा श्री भारत भूषण जी महाजन

प्रधान—डा कुलदीप जी उप प्रधान—श्री अमरनाथ जी श्रीमती किरण जी मन्त्री मास्टर देस राज जी उपमन्त्री श्री कुल भूषण जी महाजन कोषाध्यक्ष श्री बई लाल जी प्रचार मन्त्री श्री कृष्ण महाजन जी बिल्डिंग इन्चार्ज डा मदन लाल जी पुस्तकालयाध्यक्ष—श्री राम जी शास्त्री लेखा निरीक्षक—डा देसराज जी चड्डा स्टोरकीपर श्री ललित कुमार जी

मन्त्री

## वार्षिक निर्वाचन

आर्य युवक परिषद् (रजि) दिल्ली का वर्ष 1984 के लिए निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ

प्रधान—श्री देवव्रत धर्मेन्दु आर्य उपदेशक उपप्रधान श्री नवनीत मल एडवोकेट एवं श्री ज्ञानचन्द गुप्ता प्रधानमन्त्री श्री प्रो ओम प्रकाश एम एस सी उपमन्त्री—श्री मूल चन्द गुप्ता परीक्षा मन्त्री डा धर्मपाल एम ए प्रचार मन्त्री—श्री कमल किशोर आर्य कोषाध्यक्ष सुरेन्द्र दिल्ली

—कमल किशोर आर्य
प्रचार मन्त्री

## जिला आर्य सभा लुधियाना

जिला आर्य सभा लुधियाना द्वारा 29 2 84 को ऋषि बोध उत्सव प्रातः 9 बजे से 2 बजे बाद दोपहर तक आर्य हायर सकेण्डरी स्कूल (निकट पुरानी सब्जी मण्डी) में बड़े समारोह से मनाया गया इस समारोह में कई विद्वानों व महोपदेशकों के प्रभावशाली उपदेश हुए

बाबानन्द आर्य मन्त्री

## महात्मा हंसराज दिवस समारोह १५ अप्रैल को दिल्ली में मनाया जाएगा

त्याग मूर्ति महात्मा हंसराज जी का जन्म दिवस समारोह हर वर्ष की भान्ति इस वर्ष भी रविवार 15 अप्रैल को प्रातः 10 बजे से 2 बजे तक ताल कटोरा गार्डन के इन्डोर स्टेडियम में मनाया जाएगा गत वर्ष भी यह समारोह इसी स्टेडियम में मनाया गया था जिसकी सफलता के लिए समस्त आर्य जगत ने प्रशंसा की इस अवसर पर अनेक माननीय मन्त्रीगण एवं प्रसिद्ध आर्य नेता एवं सन्यासी महात्मा हंसराज जी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे इसके अतिरिक्त महात्मा हंसराज माडल स्कूल पंजाबी बाग हंसराज माडल स्कूल अशोक विहार एवं अन्य डी ए वी पब्लिक स्कूलों के छात्र छात्राओं द्वारा अत्यन्त आकर्षक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाएंगे मेरी समस्त आर्य समाजों एवं स्त्री समाजों के अधिकारियों से प्रार्थना है कि वे उस दिन अपनी समाज में कोई भी कार्यक्रम न रखें एवं रविवारीय साप्ताहिक सत्संग स्थगित करके अधिक से अधिक संख्या में इस समारोह में सम्मिलित होवें

रामनाथ सहगल



श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रेस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इस की स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

वर्ष 16 अंक 49 5 चैत्र सम्वत् 2040 तदनुसार 18 मार्च 1984 दयानन्दाब्द 159 । एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपये

# आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित आर्य समाजों के अधिकारी महानुभावों की सेवा में

पंजाब में जो परिस्थितियां इस समय पैदा हो रही हैं । आप उन्हें अच्छी प्रकार जानते भी हैं और समझते भी हैं । इसका एक परिणाम यह भी हो रहा है कि पंजाब में आर्य समाजों के उत्सव प्रायः समाप्त हो गए हैं । पिछले दिनों हम जब सभा का वार्षिक अधिवेशन करने लगे थे वह भी इसी कारण न हो सका कि कई स्थानों पर कर्फ्यू लगा हुआ था । अभी भी स्थिति सुधरी नहीं है और यह भी कहना कठिन है कि आगे चलकर यह सुधरेगी या बिगड़ेगी । इसलिए हमें अपना कार्यक्रम उसी के अनुसार बनाना चाहिए । यदि आर्य समाजें अपने उत्सव नहीं कर सकतीं तो इसका यह अर्थ नहीं कि वे कुछ भी न करें और हाथ पर हाथ रख कर बैठी रहें । मैं चाहता हूं कि हमें कोई ऐसा कार्यक्रम बनाना चाहिए जिससे कि आर्य समाज में कुछ न कुछ गतिविधि चलती रहे और आर्य समाज का जनता के साथ सम्पर्क भी बना रहे ।

इस सम्बन्ध में मेरी आप से यह प्रार्थना है कि आप अपनी आर्य समाज में 19 मार्च से लेकर 25 मार्च तक शान्ति यज्ञ करें । प्रातः और सायं प्रतिदिन यज्ञ किया जाए और पंजाब में शान्ति की स्थापना के लिए प्रार्थना की जाए । जो आर्य समाज 7 दिन का अखण्ड यज्ञ कर सकें अर्थात् वेद पाठ भी साथ साथ होता जाए वह ऐसा करने का प्रयास करें जो न कर सकें वे प्रातः और सायं दोनों समय यज्ञ किया करें । यह भी प्रयत्न होना चाहिए कि आर्य समाज के सभासद महानुभाव दोनों समय इस यज्ञ में स्वयं भी आएं और अपने दूसरे मित्रों और सम्बन्धियों को भी लाएं । यज्ञ के द्वारा भी हम प्रचार कर सकते हैं और जैसा कि देखा गया है, यज्ञ के लिए लोगों में बहुत श्रद्धा होती है । इसलिए इस दिन सब आर्य समाजों में यज्ञ होना चाहिए और दोनों समय पंजाब में शान्ति और पारस्परिक सद्भावना के लिए प्रार्थना होनी चाहिए । यदि कोई अच्छा वक्ता आपके पास हो तो उसके द्वारा कथा कराना चाहें तो वह करवा लें । उसका व्याख्यान करवाना चाहें वह करवा लें ।

शुक्रवार 23 मार्च अमर बलिदानी सरदार भगतसिंह श्री राजगुरु और श्री सुखदेव का बलिदान दिवस है । सरदार भगतसिंह और श्री सुखदेव का आर्य समाज के साथ एक विशेष सम्बन्ध था वह दोनों एक आर्य परिवार में पैदा हुए थे और दोनों के पैतृक सम्बन्धी आर्य समाज में विशेष रुचि रखते थे । 23 मार्च को प्रत्येक आर्य समाज मन्दिर में सरदार भगतसिंह श्री सुखदेव और श्री राजगुरु को श्रद्धांजलि भेंट की जाए रविवार 25 मार्च को पूर्णाहुति के समय सब मिलकर निम्नलिखित प्रतिज्ञा करें —

इस यज्ञ वेदी पर बैठकर परम पिता परमात्मा के चरणों में नमस्कार करते हुए हम सब यह प्रतिज्ञा करते हैं कि अपनी मातृ भूमि भारत की स्वाधीनता अखण्डता और प्रभुसत्ता की रक्षा के लिए सदा तत्पर रहेंगे और इसके लिए मन वचन और कर्म से जो कुछ भी हम कर सकते हैं करने का प्रयास करेंगे । देश की स्वाधीनता और रक्षा के लिए बड़ा बड़ा से बड़ा बलिदान देने के लिए भी तैयार रहेंगे । पंजाब हमारा ही प्रान्त है इसकी रक्षा करना भी हमारा कर्तव्य है । इसलिए हम यह संकल्प करते हैं कि जो विघटनकारी शक्तियां पंजाब की एकता और संगठन को छिन्न भिन्न करने का प्रयास कर रही हैं अपनी पूरी शक्ति से उनका मुकाबला करेंगे । इस देश में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति को हम अपना भाई समझते हैं । प्रत्येक नर नारी हमारे आदर और सम्मान के पात्र हैं । इसलिए इस देश की स्वाधीनता और अखण्डता की सुरक्षा के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि हम अपने सब भेदभाव समाप्त करके अपने इस महान प्राचीन देश को उन्नति के पथ पर आगे ले जाने के लिए प्रयास करें आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सबसे पहले स्वराज्य का मन्त्र हमें दिया था इसलिए अपने राष्ट्र और अपनी प्रभुसत्ता की रक्षा करना हमारा परम कर्तव्य हो जाता है । प्रत्येक आर्य समाजी को इसकी रक्षा के लिए अधिक से अधिक प्रयत्न करना चाहिए और हम सब आज इस यज्ञ वेदी पर बैठकर यह संकल्प करते हैं कि अपने देश की स्वाधीनता और अखण्डता की रक्षा के लिए बड़े से बड़ा बलिदान देने के लिए सदा तत्पर रहेंगे ।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का कार्यालय इस प्रतिज्ञा पत्र को पर्याप्त संख्या में छपवा रहा है । जिन आर्य समाजों को इसकी आवश्यकता हो वे बांटने के लिए सभा कार्यालय से मंगवा सकते हैं । मेरी आप से फिर प्रार्थना है कि शान्ति यज्ञ का अधिक से अधिक प्रचार किया जाए और अन्तिम दिन पूर्णाहुति के समय सब आर्य समाजियों को यह प्रतिज्ञा लेनी चाहिए ।

वीरेन्द्र
सभा प्रधान

## क्रान्ति के अग्रदूत श्याम जी कृष्ण वर्मा (५)

# अल्प समय में उन्होंने क्या कुछ अर्जित किया

श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा ने अपने जीवन में जो भी प्रसिद्धि की थी उसका आधार संस्कृत पर असाधारण निपुणता थी । आज हमारे देश में संस्कृत का कोई महत्व नहीं है, एक सौ वर्ष पहले था । वास्तव में तब अंग्रेजों का इतना महत्व न था जो आज है । अंग्रेजी या तो अंग्रेज जानते थे या ... पिट्ठू जो उन्हें खुश करने के लिए अंग्रेजी पढ़ते थे और बोलते थे । श्याम जी ने अपनी प्रतिभा का सहारा लिया । चूंकि वह संस्कृत के बहुत बड़े विद्वान् थे इसलिए उनकी चर्चा चारों ओर होने लगी और सबसे अधिक ब्रिटेन और यूरोप में । 1883 में श्याम जी कृष्ण वर्मा ने बी ए की परीक्षा पास की लेकिन इससे पूर्व उनकी ख्याति यूरोप में पहुंच चुकी थी । 1881 में उन्हें पहली बार रायल ऐशियाटिक सोसायटी में संस्कृत में भाषण देने के लिए आमन्त्रित किया गया । उनके भाषण का यह प्रभाव हुआ उन्हें उस सोसायटी का मानद सदस्य बना लिया गया । उस समय तक सरकारी क्षेत्रों के बाहर श्याम जी का चर्चा हो रहा था । अब उनका नाम सरकारी क्षेत्रों में भी चर्चित होने लगा और सरकार यह महसूस करने लगी कि अब उन्हें अनदेखा नहीं किया जा सकता । इसलिए ब्रिटेन के तत्कालीन भारत सम्बन्धी मन्त्री ने श्याम जी को बर्लिन में अपना लेख पढ़ने के लिए

(शेष पृष्ठ 2 पर)

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

भेजा। वहां उन्होंने जो लेख पढ़ा उसका शीर्षक था "भारत की जीवन भाषा संस्कृत" अपने विचारों को स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा था।

"आर्यों की यह पवित्र भूमि विश्व भर मे प्रसिद्ध थी इसमें न केवल बड़े-बड़े विद्वान जन्म लिया करते थे बल्कि कई ऋषि-मुनि भी यहां हुए थे। सारा विश्व उनका सम्मान करता था। इस भूमि के क्षत्रीय अपनी शक्ति से इसकी सुरक्षा करते थे और बाहर से जो आक्रमण होते थे उनका डट कर मुकाबला करते थे। यह भूमि निर्धनता से ग्रस्त हो गई है क्योंकि इसकी सम्पदा मुसलमान आक्रमणकारी लूट कर ले गए हैं। मेरी मां भारत माता अब रोना बन्द करो, शांत हो जाओ, व्यास जैसे तुम्हारे बेटे सदा के लिये अमर हो गये हैं।'

श्याम जी के आचार्य महर्षि दयानन्द ने उन्हें जो कुछ बताया था उसी के अनुसार उन्होंने संस्कृत की गरिमा का उल्लेख करते हुये कहा था

"मैं यह दावा कर सकता हूं कि संस्कृत आज भी एक जीवित भाषा है। भारत में आज भी ऐसे लोगों की कमी नहीं जो अपने पत्र व्यवहार में संस्कृत का भरपूर प्रयोग करते हैं। मेरे देश मे शिक्षित वर्ग की भाषा संस्कृत ही है जो यूरोपीय व इतालवी लोग कुछ समय के लिए मेरे देश मे रह कर आये हैं वह मेरे इस विचार की पुष्टि करेंगे। भारत के विभिन्न प्रदेशों मे मेरे कई ऐसे मित्र हैं जो मेरे साथ केवल संस्कृत मे ही पत्र व्यवहार करते हैं। हमारे देश मे कई भाषाएं और कई बोलियां हैं। यदि संस्कृत एक जीवित भाषा न हो तो विभिन्न क्षेत्रों के लोगों को आपस में सम्पर्क रखना कठिन हो जाए।'

श्याम जी कृष्ण वर्मा ने तो जो कुछ कहना था कह दिया। बहुत कम लोगों को उस समय यह आभास हुआ होगा कि इस नौजवान के दिल में देश प्रेम की जो ज्योति जल रही है। वह उसे कहां ले जाएगी। वह अपने देश, अपनी भाषा के लिए श्रद्धा थी जिसने श्याम जी को बार-बार अपनी भाषा संस्कृत का पक्ष लेने के लिए विवश किया। संस्कृत को वह देश की गरिमा का आधार समझते थे। इसलिए उन्होंने केवल स्वयं ही संस्कृत नहीं पढ़ी, दूसरों को भी पढ़ाई और इसके लिए वह आक्सफोर्ड गए और उन्होंने यूरोप मे जगह-जगह संस्कृत का गुणगान किया। श्याम जी के भाषण से जो प्रवाह हुआ करता था उससे वह श्रोताओं का मनमोह लिया करते थे। जब उनकी गति-विधियों के समाचार तत्कालीन भारत सम्बन्धी मन्त्री को पहुंचने लगे तो वह उनसे इस तरह प्रभा-वित हुए कि उन्होंने इस युवक को 1883 में एक और अवसर में भाग लेने के लिए भेजा।

उन दिनों लन्दन में एक इम्पायर क्लब नाम की संस्था हुआ करती थी। इसमें ब्रिटेन के सुदूर क्षेत्रों से प्रमुख लोग आकर सदस्य बना करते थे। पहले तो इसका राजनीति से कोई सम्बन्ध न था लेकिन इसमे अधिकतर वह ही लोग आते थे जो अंग्रेज का ढोल पीटते थे। भारत के कई भूतपूर्व वायसराय और गवर्नर भी इसके सदस्य थे। कई सरकारी अफसर और जनरल भी इसके सदस्य थे। इस क्लब के माध्यम से ब्रितानवी साम्राज्य का एक चित्र सामने आ जाता था।

जब श्याम जी को इस क्लब का सदस्य मनोनीत किया गया तो उन्होंने पहले तो सोचा कि वह इसके सदस्य बनें या नहीं। बाद मे वह इस विचार से इसके सदस्य बन गए कि उन्हें इससे कई प्रख्यात एवं प्रभावशाली नेताओं व सरकारी अधिकारियों से मिलने का अवसर मिलेगा। इससे वह आगे चलकर फायदा उठा सकेंगे। चूंकि इस क्लब के कुछ सदस्य बड़े-2 लोग थे इस-लिए इसकी सदस्यता काफी महंगी थी। किसी आमन्त्रित भोज पर जाएं तो भी कुछ न कुछ देना पड़ता था। इसी बीच श्याम जी की चर्चा लन्दन के शिक्षा क्षेत्रों मे होने लगी। अक्तू-बर 1882 में लन्दन विश्व विद्यालय के एक कालेज के प्रिंसिपल ने उन्हें आने के लिए आमन्त्रित किया। इससे उनका उत्साह और भी बढ़ गया। उन्होंने इस कालेज मे संस्कृत के प्राध्यापक की जगह के लिए आवेदन पत्र दे दिया लेकिन उन्हें वहां से कोरा जवाब मिल गया। उनके आवेदन पत्र के उत्तर मे उन्हें सूचित किया गया कि अभी दो वर्ष के लिए इस कालेज मे संस्कृत का प्रोफसर रखने की कोई योजना नहीं है।

जब श्याम जी को लन्दन व आक्सफोर्ड मे निराशा का मुंह देखना पड़ा और उन्होंने समझ लिया कि अभी कुछ समय के लिए उन्हें कोई ऐसा काम न मिलेगा जिसके माध्यम से वह अपनी रोजी कमा सके तो उन्होंने अपने देश मे लौटने का फैसला कर लिया। और 1883 के अन्त मे वह अपने देश के लिए रवाना हो गए।

जब जब पूर्व वह इंग्लैंड गए थे। उस समय उनके पास कुछ भी न था जिस के बल पर वह आगे बढ़ें। न कोई डिग्री था न कोई पैसा, न कोई सर्टीफिकेट था। कुछ अपने साहस और कुछ योग्यता व आत्म बल का विश्वास था। इसके सहारे वह आए थे और जब वह वापस जाने लगे तो इंग्लैंड के कई प्रमुख शिक्षाविद मन्त्री, प्रोफैसर और कई विश्व विद्यालयों के प्रोफैसरों की ओर से लिखे गए उन के प्रशंसा पत्र थे। वह खाली हाथ आए थे लेकिन बहुत कुछ लेकर जा रहे थे। अब उनकी गणना संस्कृति के महान पंडितों उच्च कोटि के वक्ता और दूरदर्शी लोगों मे होने लगी। जो भी उन से मिलता वह धारणा बना कर जाता कि यह नौजवान एक दिन बहुत ऊंचे जाएगा। लन्दन से रवाना होने से पहले जर्मन के प्रख्यात संस्कृत विद् प्रोफैसर मैक्स मूलर ने इन्हें जो प्रशस्ति पत्र दिया उस में लिखा था कि श्याम जी कृष्ण वर्मा उच्च कोटि का चरित्र लिए हैं। संस्कृत के महापण्डित और अपने हर विषय के विशेषज्ञ हैं। उन की गणना अब विश्व के बड़े बड़े संस्कृत के विद्वानों मे हुआ करेगी।

आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के उप कुलपति ने भी ने उन को लिखकर दिया कि उन्होंने अनपेक्षित योग्यता और अपने विषय पर पूर्ण अधिकार प्राप्त करने का प्रयास किया है। उन्होंने आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय मे थोड़े ही समय में इतना कुछ प्राप्त कर लिया है जो सफलता लोग पूर्व समय तक मेहनत के बावजूद प्राप्त नहीं कर सके हैं। उनका भविष्य उज्ज्वल है और वह बड़े से बड़े पद पर काम करने की योग्यता लिए हैं।

इतने सर्टिफिकेट अर्जित करने के बाद 1883 मे श्याम जी स्वदेश लौट आए लेकिन यहां वह अधिक देर तक नहीं ठहरे। उदयपुर मे उन का एक लेक्चर हुआ। वह जल्द वापस जाना चाहते थे। उन्हें कानून की एक और परीक्षा अभी देनी थी। इसके बाद वह विधिवत वकालत करना चाहते थे। इसलिए वह 1884 में वह फिर इंग्लैंड के लिए रवाना हो गए। इस बार वह अपनी पत्नी भानुमती को भी साथ ले गए थे। अंततः वह दिन आ गया जिसके लिए वह इतना कठोर परिश्रम कर रहे थे। उन्हें 1884 में विधिवत रूप में बैरिस्टर भर्ती कर लिया गया। इसके साथ ही उन्हें भारत के एक भूतपूर्व वायसराय लार्ड नार्थ ब्रूक का भी एक पत्र मिला जिसमें उन्हें इस सफलता के लिए बधाई दी गई जो उन्होंने कुछ समय मे प्राप्त की थी। लार्ड नार्थ ब्रूक ने भारत सरकार को यह सिफारिश भी की कि पंडित श्यामजी कृष्णवर्मा को किसी उच्च पद पर नियुक्त किया जाए।

श्यामजी कृष्णवर्मा तीव्र गति से आगे बढ़ रहे थे। इसलिए सबकी दृष्टि उन पर केन्द्रित थी। कई अंग्रेज भी विशेष प्रयोजन के लिए उनका उपभोग करना चाहते थे। सबसे बड़ा प्रयोजन तो यह था कि वह अब जब अंग्रेजीयत के किसी तरह उदघोषक बन जाए। साथ ही उन पर इसाई प्रभाव डालने का प्रयास भी किया गया। इसका मुका-बला उन्होंने कैसे किया वह आगामी अंक मे पढ़िए।

—श्री वीरेन्द्र जी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

## आर्य समाज नंगल टाऊनशिप में ऋषि बोधोत्सव

आर्य समाज नंगल टाऊनशिप मे (ऋषि बोधोत्सव) दिनांक 23-2-84 से 29 2-84 तक बड़े उत्साह पूर्वक मनाया गया। इस सप्ताह में यजुर्वेद-पारायण यज्ञ समाज के पुरोहित श्री नरेन्द्र जी वेदालंकार की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। दिनांक 29-2 84 को बच्चों की भाषण प्रतियोगिता हुई जिसमे विषय इस प्रकार थे।

कक्षा 7-8 के लिए—महर्षि दया-नन्द के जीवन की मुख्य घटनाएं।

कक्षा 9 10 के लिए—राष्ट्रवादी दयानन्द

कक्षा 11 12 तथा ऊपर—आर्य संस्कृति का रक्षक दयानन्द।

तीनों ग्रुपों में प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय रहने वाले बच्चों में साहित्य वितरण किया गया तथा आकर्षक पुरस्कार भी बांटे गए। सभी बच्चों को सान्त्वना पुरस्कार दिये गये।

—इन्द्र कुमार शर्मा प्रचार मन्त्री

## आर्य समाज अबोहर का वार्षिक चुनाव

आर्य समाज अबोहर का वार्षिक चुनाव दिनांक 26 2 84 को श्री चांदी-राम जी वर्मा की अध्यक्षता तथा फिरोज-पुर से आए हुए श्री हुकमलाल जी मेहता की उपस्थिति में सुसम्पन्न हुआ। जिसमें सर्वसम्मति से श्री कुलवन्तराय खांब जी को प्रधान चुना गया एवं समाज की कार्यकारिणी सभा बनाने की पूर्ण अधिकार उनको प्रदान किया गया।

पश्चात् प्रधान श्री कुलवन्तराय जी खांब नेकार्यकारिणी सभा के लिए निम्न-लिखित पदाधिकारी तथा अन्तरंग सभा के सदस्यों के नाम घोषित करते हुए उपस्थित सभी आर्य सज्जनों से निवेदन किया कि वे सब समाज की उन्नति में तन मन-धन से उनका पूर्ण सहयोग दें।

संरक्षक—श्री चांदीराम वर्मा प्रधान श्री कुलवन्तराय खांब उपप्रधान-श्री कृष्ण लाल सेतिया श्रीमती कान्ता जी-मन्त्री-श्री केवलकृष्ण सेतिया, सर्वार्थ वेद प्रचार उपमन्त्री—श्री रामशरण दास कुमार, कोषाध्यक्ष-श्री कबीरचन्द्र भाखड प्रचार मन्त्री-श्री कुलवन्तराय अग्रवाल, लेखा निरीक्षक-श्रीमुकुन्दलाल जुनेजा। आरस्वार्थेट—श्री देशराज वर्मा (डी-ए वैदिक स्कूल+आर्य पुत्री पाठशाला) मैनेजर—श्री बूटाराम चुघ,(डी एव वैदिक स्कूल) मैनेजर-श्री लालचन्द भारद्वाज (आर्य पुत्री पाठशाला) उपमैनेजर-श्री शिवकुमार गुलाब मैनेजर- मा विशनदास जी (उत्तमचन्द शिशु विद्यालय) सम्पत्ति संरक्षक-श्री नानकचन्द, पुस्तकाध्यक्ष-श्री सुरेश जुनेजा।

सम्पादकीय—

# आर्य समाज का शान्ति यज्ञ

आर्य समाज राजनीतिक संस्था नहीं है। लेकिन इसे देश की राजनीति में पूरी दिलचस्पी है। यह इसलिए कि वह समझती है कि धर्म की रक्षा के लिए राष्ट्र की रक्षा आवश्यक है। और राष्ट्र की रक्षा के लिए धर्म की रक्षा आवश्यक है। यदि किसी समय धर्म पर या राष्ट्र पर कोई विपत्ति आ जाए तो आर्य समाज खामोश नहीं रह सकता। उसे उस प्रकार की सक्रिय राजनीति में भी कोई दिलचस्पी नहीं जिसके द्वारा कुछ लोग और संस्थाएं राजनैतिक सत्ता के लिए लड़ाई लड़ती हैं। आर्य समाज ने आज तक किसी विधानसभा या संसद के लिए चुनाव नहीं लड़ा। यह केवल इसलिए कि राजनीति में उसे जो भी दिलचस्पी है, वह निस्स्वार्थ है किसी से कुछ लेने के लिए नहीं। हमारे अकाली दोस्त कहते हैं कि उनके धर्म को राजनीति से अलग नहीं किया जा सकता आर्य समाज भी यही कहता है। लेकिन एक अन्तर के साथ। अकाली अपनी राजनीति के लिए अपने धर्म का प्रयोग करते हैं। आर्यसमाज अपने धर्म की रक्षा के लिए राजनीति का प्रयोग कर सकता है। लेकिन राजनीति की रक्षा के लिए धर्म का प्रयोग नहीं करता। धर्म उसकी दृष्टि में राजनीति से बहुत ऊंचा है। इसलिए वह धर्म तथा राजनीति को मिलाने की कोशिश नहीं करता। जहां तक सम्भव हो वह धर्म के द्वारा अपनी राजनीति पर प्रभावी होने की कोशिश करता है।

पंजाब में जो कुछ हो रहा है उसे देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि इस समय हमारा धर्म और हमारी राजनीति दोनों खतरे में हैं। कुछ लोग धर्म को एक ओर रख कर अपनी राजनीति के द्वारा इन समस्याओं को हल करना चाहते हैं। आर्य समाज अपने धर्म के माध्यम से उन पर प्रभावी होना चाहता है ताकि राजनीति किसी ठीक मार्ग पर चल सके। आर्यसमाज धर्म तथा साम्प्रदायिकता में भी अन्तर समझता है। साम्प्रदायिकता पर राजनीति खड़ी हो सकती है धर्म पर नहीं। इसलिए आर्यसमाज साम्प्रदायिकता का सहारा लेना नहीं चाहता। केवल धर्म का सहारा लेना चाहता है।

पंजाब की वर्तमान परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए यह निर्णय किया गया है कि आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब से सम्बन्ध रखने वाले सभी आर्य समाज 18 से 25 मार्च तक पूरा एक सप्ताह अपने मन्दिर में शान्ति यज्ञ करेंगे अर्थात् सुबह और शाम दोनों समय यज्ञ किया जाएगा और परमात्मा से प्रार्थना की जाएगी कि पंजाब में जो आग लगी हुई है उसे बुझा दिया जाए। आर्यसमाज देश की एकता स्वाधीनता और प्रभुसत्ता और स्वायत्तता में पूरा विश्वास रखता है और इसकी रक्षा के लिए वह बड़े से बड़ा बलिदान देने को तैयार है। आर्यसमाज ने देश की स्वाधीनता के लिए यदि कई शहीद दिए थे तो केवल इसलिए कि वह अपने देश को केवल अंग्रेज से स्वाधीन ही नहीं कराना चाहता था वह इसकी एकता अखण्डता और स्वायत्तता की भी रक्षा करना चाहता था आज जबकि इन सब के लिए कुछ लोग खतरा पैदा कर रहे हैं तो आर्यसमाज के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वह भी अपनी आवाज उठाए और स्पष्ट कर दे कि किसी भी रूप में देश की स्वाधीनता अखण्डता तथा स्वायत्तता को आंच नहीं आने दी जाएगी। 18 से 25 मार्च तक जो यज्ञ किया जाएगा उसमें इस बात पर जोर दिया जाएगा इसमें देश के संगठन सूक्त तथा वैदिक राष्ट्रगान का भी पाठ किया जाएगा।

23 मार्च को सरदार भगत सिंह श्री सुखदेव तथा श्री राजगुरु इन तीनों शहीदों का बलिदान दिवस है। उस दिन इस यज्ञ के बाद इन तीनों शहीदों को श्रद्धांजलि भेंट की जाए और आज के नौजवानों को बताया जाएगा कि किस तरह इन तीनों ने देश की स्वाधीनता के लिए प्राण न्योछावर किए थे। और आज जब उस स्वाधीनता के लिए कुछ लोग एक खतरा पैदा कर रहे हैं तो सबका यह कर्त्तव्य बन जाता है कि उस स्वाधीनता के लिए बड़े से बड़ा बलिदान देने को तैयार हो जाएं।

25 मार्च को उस यज्ञ की पूर्णाहुति डाली जाएगी उस दिन यज्ञ वेदी में बैठकर सब लोग यह प्रतिज्ञा करेंगे कि अपने देश की स्वाधीनता अखण्डता और प्रभुसत्ता की रक्षा के लिए जो भी बलिदान उनसे मांगा जाएगा वह देंगे। आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सबसे पहले हमें स्वराज्य का मन्त्र दिया था। इस लिए यदि आज कुछ लोग हमारे स्वराज्य के लिए खतरा पैदा कर रहे हैं तो उनकी प्रत्येक योजना को विफल करना हमारा कर्त्तव्य बन जाता है। आर्य समाज किसी को अपना दुश्मन नहीं मानता। इस देश में रहने वाले सब लोग हिन्दू मुसलमान सिख ईसाई जब तक देश के हितों के विपरीत कोई काम नहीं करते वह हमारे भाई हैं। लेकिन जो भी व्यक्ति वह चाहे हिन्दू ही क्यों न हो देश की एकता अखण्डता और प्रभुसत्ता पर कुल्हाड़ी चलाने की कोशिश करेगा, उसे हम सहन नहीं करेंगे। भारत माता का सम्मान हमेशा और हर मूल्य पर होना चाहिये। उसका अपमान उन शहीदों से गद्दारी होगी जिन्होंने इसके लिए अपना खून दिया था।

18 से 25 मार्च तक का जो कार्यक्रम बनाया गया है उसकी रूप रेखा मैंने प्रस्तुत कर दी है। पंजाब में 150 से अधिक आर्य समाजें हैं। उन सब के पदाधिकारियों से मेरा यह निवेदन है कि 18 से 25 मार्च का सप्ताह शान्ति यज्ञ के रूप में मनाएं। हम गोली का उत्तर गोली से देना नहीं चाहते। गोली का उत्तर यज्ञ और सुभाषण से देना चाहते हैं। इसलिये मैंने कहा है कि एक सप्ताह यज्ञ किया जाये और प्रार्थना की जाये कि हमारे इस प्यारे पंजाब में शीघ्र से शीघ्र शान्ति तथा सद्भावना का वातावरण पैदा हो जाए।

—वीरेन्द्र

# पंजाब में अशान्ति बढ़ती जा रही है

लगभग दो वर्ष से अकालियों के मोर्चे के साथ 2 पंजाब में अशान्ति बढ़नी आरम्भ हुई थी और यह निरन्तर बढ़ती जा रही है सारा पंजाब जल रहा है किसी को आज इसकी चिन्ता नहीं। दो वर्ष से जो हत्याओं का सिलसिला चल रहा है उसमें लगभग दो सौ से अधिक व्यक्ति मारे गए और इससे कहीं अधिक लोग घायल हुए। ऐसा समाचार सभी दैनिक समाचार पत्रों में प्रकाशित हुआ। यह सिलसिला यहां ही रुक गया हो ऐसी बात नहीं यह सिलसिला अभी भी चल रहा है। प्रतिदिन एक दो हत्याएं हो जाती हैं और कुछ लोग घायल हो जाते हैं। पंजाब में काम करने वाली सभी राजनैतिक पार्टियां यह सब देखते हुए भी खामोश हैं। यहां तक कि सत्तारूढ़ सरकार और उसके बाद गवर्नर राज में भी इसके लिए कभी 2 चिन्ता तो प्रकट की जाती है परन्तु इसकी रोकथाम के लिए जो कार्य किए गए हैं और किए जा रहे हैं उनसे जनता और अधिक परेशान हुई है। ज्यों 2 दवा की जा रही है। मर्ज बढ़ता चला जा रहा है। आज पंजाब में रहने वाला प्रत्येक व्यक्ति अपने आपको असुरक्षित समझता है। साधारण लोगों की तो बात छोड़िए। भूतपूर्व मुख्यमन्त्री और दूसरे बड़े राजनैतिक और धार्मिक नेता भी अपने आपको सुरक्षित नहीं समझते उनके ऊपर भी गोलियां बरसाई जा रही हैं। पंजाब में चारों तरफ अशान्ति फैलाई जा रही है। हिन्दुओं और सिखों के सम्बन्धों में दरार पैदा करने का प्रयास किया जा रहा है। यह दरार पैदा कुछ कर भी दी है। परन्तु अभी यह गहरी नहीं हुई है अभी समय है इसे भरा जा सकता है परन्तु अगर यह अधिक गहरी हो गई तो फिर भरनी अवश्य कठिन हो जाएगी।

कहा जाता है मोर्चा सरकार के विरुद्ध है परन्तु मारा एक वर्ग विशेष के लोगों को जा रहा है जिनका सरकार से कोई सम्बन्ध नहीं और न ही वह मोर्चे में किसी प्रकार की रुकावट डालते हैं। मालूम होता है कुछ शरारती तत्व पंजाब में अफरा तफरी मचाना चाहते हैं चाहे वह संविधान की धारा 25 को लेकर आन्दोलन करें या कुछ धार्मिक और राजनैतिक मांगों को लेकर कार्य करें।

पंजाब की सारी स्थिति भारत सरकार के सामने है परन्तु वह इस पर अभी तक नियन्त्रण नहीं पा सकी। अब यह खून की होली बन्द होनी चाहिए। पंजाब में शान्ति स्थापित करने के लिए सभी राजनैतिक दलों और धार्मिक संगठनों को पूरा 2 प्रयास करना चाहिए।

—सह सम्पादक

# अजमेर—दर्शन

ले—श्री अमरनाथ आर्य एम ए (साहित्य रत्न)
सैक्टर न 4 तलवाड़ा टाऊनशिप (पंजाब)

(गतांक से आगे)

उन्होंने अपना ओम रूपी विजयी रण तूर्य बजा, एक सत्य निष्ठ निर्भीक दक्ष सेनापति की भांति, वैचारिक रण क्षेत्र मे उतर बुराईयों के विरुद्ध अपना मोर्चा सम्भाल लिया।

ऐसे मे मानसिक दासता और चिर परतन्त्रता के दृढ पाश तोड़ने मरोड़ने और अज्ञान को भगाने हेतु शारीरिक बल प्रयोग का समय नही था परन्तु अब तर्क और विचार की सूक्ष्म एव शक्ति शाली शमशीर की आवश्यकता थी।

अब उस दिव्य सन्यासी ने यह भाप लिया था कि अब समय आ गया है जब बासुरी और सुदर्शन चक्र के गम्भीर सामरिक सगीत और धनुष एव तेज तलवार की अन्तिम झनझनाहट के बाद अब ससार को सुधारस भीगी वेदवाणी की ओजस्वी वीणा की आवश्यकता अनुभव हो रही है। अत समग्र मानवता कल्याण हेतु अपने अलौकिक बौद्धिक सन्देश प्रसारण का दृढ व्रत धारण कर महर्षि अकेले ही कटिबद्ध हो मैदान मे उतर पड़े।

और समय की उसी अनिवार्य माग को ध्यान मे रखते हुए राष्ट्र को पुनर्जीवन देने और उसके सुमुज्ज्वल भविष्य निर्माण हेतु उस युग पुरुष ने आध्यात्मिक पृष्ठ भूमि मे बौद्धिक स्तर पर विचार अनुशीलन का एक अदभुत देश व्यापी अभियान चलाया और निष्ठा पूर्वक अपने कर्त्तव्य पथ पर अग्रसर होते हुए उसके अभ्युदय हेतु कोई कोर कसर उठाए न रखी।

तत्कालीन प्रबलतम शक्ति से खाली हाथ टकराते हुए अपने सर्वहितकारी आदर्शों की सत्यता पर पूर्ण विश्वस्त घोर विरोधताओं मे भी अविचलित एव अडिग रहते हुए उन्होंने निस्सत्वो एव शताब्दियो से आत्म गौरव खोये देशवासियो मे नए जीवन आशा और उत्साह का एक अजस्र स्रोत बहा दिया।

समय पाकर उस नि स्वार्थ तपस्वी की तपस्या रग लायी और वेद वीणा की अमृतमयी सशक्त झकृति से सदियो से सोए भारत केसरी के जीर्ण शरीर में नव चेतना और स्फूर्ति की एक प्रबल लहर दौड़ गई और फिर अपनी मान्द मे घुस आए स्यार पर दहाड़ने से पूर्व उसने एक जोरदार अगड़ाई ली।

इधर अब विदेशी साम्राज्य को यह विदित होने लग पड़ा था कि भारत में अब उसके दिन गिने चुने ही रह गए हैं।

और उधर वह सत्यदर्शी योगी यह जानते हुए कि अन्तिम विजय सत्य और अच्छाई ही की होती है अपने पथ पर द्रुत गति से अग्रसर चल रहे थे। अब उनके सशक्त कर कमलो में भी समर्थ लेखनी पावन हृदय मे था विभु ओम का अनहद नाद और अमोघ वाणी पर था, महा वाक्य सत्यमेव जयते।

ऐसे इस युग प्रवर्तक महा पुरुष की बलिदान शताब्दी समारोह मे सम्मिलित की सौभाग्य प्राप्ति हेतु हमारी टोली प्रथम नवम्बर 1983 को अपनी बस्ती से बस द्वारा अजमेर के लिए प्रस्थान करती है।

मार्ग कुछ अनौपचारिक वार्तालाप के सिवा अन्य कोई विशेष बात नही हुई सामान्यत गतिशील बस की गतिमय शोर मे हम चुपचाप अगले दिन की जिज्ञासापूर्ण यात्रा के विषय मे सोचते रहे।

अतत लगभग आठ बजे हम लुधियाना स्थित पूर्व निश्चित रात्रि विश्राम स्थल, 'पुरानी मण्डी आर्य हायर सैकेण्डरी स्कूल मे पहुचे। स्कूल का यह भवन बड़ा सुन्दर और पुराने ढग का बना है जिसका निर्माण 1890 मे किया गया था।

यहा अपने से पूर्व पहुचे तथा बाद मे आए परिचित अपरिचित एव अर्ध परिचित विभिन्न स्थानो से आए आर्य बन्धुओ से मिलकर हमे बड़ी प्रसन्नता हुई। परस्पर सादर नमस्ते के आदान प्रदान के पश्चात हम एक दूसरे की कुशल क्षेम पूछते और प्रसन्न होते हैं। यहां आगन्तुक यात्रियो हेतु लुधियाना के आर्य बन्धुओ की ओर से सादर एक अच्छे लगर का आयोजन भी किया गया था। एव रात्रि विश्राम हेतु स्कूल के सभा भवन मे गर्म बिस्तरो का सुप्रबन्ध भी किया गया था जहा लगभग दो सौ यात्री उपस्थित थे।

सह भोजनोपरान्त हम थोड़ी देर सामान्य वार्तालाप मे सलिप्त हो जाते हैं और फिर रात्रि के बढ़ने के साथ-साथ हाल का कोलाहल क्रमश शान्त होने लगता है और अतत सारे वातावरण में एक निस्तब्धता छा जाती है और सभी यात्री दूसरे दिन की उमंग भरी यात्रा के चिन्तन से उत्सुक हो निद्रा की सुखमयी गोद में समर्पित हो जाते हैं। अब एक प्रशान्त स्तब्धता व्याप्त हो जाती है।

आज जब मानसिक घाटी मे धीरे-धीरे हरकत लगी है और तभी जब मेरे मन मे एक विचार सिर उठाता है कि इस समय यहा सोए सैकड़ों व्यक्तियों में जिन मे आबाल-वृद्ध, नर-नारी सम्मिलित हैं जो विभिन्न आयुओ अवस्थाओ और स्थानो से सम्बन्धित हैं और जो एक परिवार की भान्ति प्रेम पूर्वक एक ही छत के नीचे अपने सारे भेदभाव भूलकर मधुर निद्रा का आनन्द कैसे ले रहे हैं? इस समय सभी प्रकार के विरोध विषमता और मतभेद कहा है? मेर तेर और छोटे बड़े की घातक भावना कहा है और आखिर, ससार मे इतना बौद्धिक एव भौतिक सघर्ष क्यो है? क्या इन्हे मिटा कर वसुधैव कुटुम्बक की पुरातन आर्य विचार धारा का पुनर्स्थापन नही हो सकता?—इसी प्रकार के न जाने कितने अनुत्तरित प्रश्नो की भूल भुलैयो मे उलझा मेरा मन न जाने कब नींद की सुनहली डोरी मे बधने लगा था। परन्तु नींद की प्रगाढ़ता से पूर्व मन की अधेरी गुहा से एक क्षीण एव अस्पष्ट सी उत्तरात्मक ध्वनि उभरी कि विषमता विरोध का यह साम्राज्य सत्य ज्ञान के अभाव और मात्र अज्ञान की अधिकता के ही कारण है। यदि आज मानव अपनी खोयी हुई उस सब भूतेषु आत्मवत की ज्ञानमयी बौद्धिक सपत्ति को पुन ढूढ सके तो मानव समानता एव समृद्धि का वह दिव्य स्वप्न जो कभी महर्षि दयानन्द ने देखा था साकार हो सकता है।

इसी ऊहापोह मे न जाने आख कब लग गई और खुली तब जब सुबह के चार बज चुके थे।

इस प्रात का शुभारम्भ हम परस्पर नमस्ते तथा वेद ऋचाओ से करते हैं। सभी उल्लसित हैं और उत्साह का एक पारावार ठाठ मार रहा है क्योंकि हमारी वास्तविक अजमेर यात्रा आज ही प्रारम्भ होनी है।

स्नानादि से निवृत एवं सुव्यवस्थित हो अपना सामान आदि बाध रुचिपूर्ण प्रातराश ग्रहण करते हैं जो वहीं विधिवत तैयार किया गया था।

अब यात्री बसों के सरक्षक यात्रियो के बैठने आदि का प्रबन्ध करते हैं और यात्री अपने सामान आदि को ठीक ढग से रख अपनी-अपनी सीटें ग्रहण करते हैं। यह सुबह अपेक्षाकृत ठण्डी और कुमा-च्छादित थी।

पूरे सात बजे, वैदिक ध्वनि और महर्षि दयानन्द के जय जयघोषो से यात्रा का शुभारम्भ किया जाता है और इसके साथ ही बसों के पहिए अपनी यात्रा की ओर हरकत में आ जाते हैं।

अब हमारी बस के अन्दर का वातावरण वैदिक सन्ध्या की पवित्र ऋचाओं से गु जायमान हो उठता है। तब प्रार्थना की जाती है और फिर देश-प्रेम एवं भक्ति रस पूर्ण सुरीले भजनो का एक लम्बा दौर शुरू हो जाता है जिससे सारा वातावरण शुद्ध एव आह्लादित हो उठता है। पुन भजनों के सुरीले कैसट्स लगाए जाते हैं जिनसे पूर्णत भावकता आ जाती है। और फिर कैसटो का दौर खत्म होते ही हम मे से एक वृद्ध सज्जन उठकर बड़े आकर्षक अन्दाज मे यह भजन प्रारम्भ करते हैं —

इन्सानी कदरें रहती हैं—
इन्सान बदलते रहते हैं।
दरबार लगा ही रहता है—
दरबान बदलते रहते हैं।
लेकिन जो इकरारो के पक्के हैं—
इकरारो पर मिट जाते हैं।
जो बातो के बादूनी हैं—
वो ऐलान बदलते रहते हैं।

परन्तु—

दिल। शकर कुछ सोच जरा—
क्यो नाज होता है परवानो पर।
बलिदान ही जिन्दा रहते हैं—
बरदान बदलते रहते है

गीत वातावरण के अनुकूल था अत इसका एक एक शब्द रेत मे पड़ते पानी की भान्ति सीधा दिल में उतरता गया। तथा अन्तिम छन्द को सुनकर मेरी चिन्तन धारा एक नया मोड़ लेती है और एक यह विचार उत्पन्न होता है कि गीतकार ने इतने सादे ढग से कितनी बड़ी बात कह दी है। ठीक ही तो है कि आज युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द आर्य मुसाफिर प लेखराम, अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द हुतात्मा महात्मा हसराज राष्ट्र पिता महात्मा गाधी लौह पुरुष पटेल और कर्म वीर लालबहादुर शास्त्री के नाम अमर हैं तो केवल इसीलिए कि उन्होंने सम्पूर्ण मानवता कल्याण उत्थान हेतु अभूतपूर्व बलिदान दिए थे देश और धर्म की बलिवेदी पर अपना सर्वस्व लुटने के बाद सब कुछ पा भी गए अर्थात् सदैव के लिए अमर हो गए।

यह भाव-तारतम्य तब टूटता है जब बसें खन्ना में पहुचती हैं। हमारे पहुचने से पूर्व ही यहा आर्य हायर सैकेण्डरी स्कूल तथा अन्य डी ए वी शिक्षा सस्थाओ के अध्यापको सहित सैकड़ो आर्य बालक बालिकाएं शुभ्र परिधान पहनें हाथो में ओम का झण्डा और विभिन्न वैदिक आदर्श वाक्य पटटों को लिए महर्षि के जयघोष करते हुए हमारी हार्दिक स्वागत करते हैं। तथा यात्री भी उनका उत्साहपूर्वक प्रत्युत्तर देते हैं और सारा वातावरण वैदिक नारो से गु जरित हो उठता है। (क्रमश)

# शिव—शंकर दयानन्द

ले —श्री प वीरसेन जी वेदश्रमी, वेदविज्ञानाचार्य
वेदसदन महारानी रोड, इदौर

(गताक से आगे)

पाच सहस्र वर्षों से हम दोनो का शुद्ध स्वरूप नष्ट हो गया था। लोग याह्‌वाग्निशाग्नि को भूल गये थे। हमे सुगन्धित, पुष्टिकारक, एव आरोग्य वर्धक आहुतियां तथा यथेष्ठ केशर कस्तूरी युक्त पान करने को पूर्व काल मे प्राप्त होती थी। नाना प्रकार के मिष्ठान मोहन भोग व स्वादी पाक से हम दोनो को तृप्त किया जाता था जिससे हम दोनो परिपुष्ट होकर विश्व को आरोग्यता सवृष्टि एव सवैश्वर्य मे सम्पन्न कराते रहते थे। परस्पर भावयन्त श्रेय परमवाप्स्यथ यह हमारी अमोघ प्रतिज्ञा थी और आशीर्वाद था। उस समय भोजन से पूर्व हमारे द्वारा बलिवैश्व देव यज्ञ होता था और बिना हमें आहुति दिए कोई भोजन ग्रहण नही करता था। बिना यज्ञ का भोजन चोरी और पाप का समझ कर आग्रह य समझा जाता था। पूर्व काल मे ऐसी हमारी प्रतिष्ठ और पूजा थी।

परन्तु जब से, उपरोक्त प्रकार से हमारी पूजा अर्थात सेवा नष्ट हो गई तो हमे भोजन मिलना बन्द हो गया और हमारा परिपालन नष्ट हो गया इसके विपरीत अभक्ष्य मांसादि की आहुतियां दी जाने लगी। इस प्रकार हमें अपवित्र कर दिया गया था। परिणाम स्वरूप विश्व महामारी प्लेग और क्षयादि रोगो एव अकाल अवृष्टि आदि से आक्रान्त हो गया। ऐसे समय मे महर्षि ने आकर याह्‌वाग्नीय स्वरूप को यह करना सबका अधिकार घोषित करके पुन हमारी प्रतिष्ठा कराई और वायु को भी शुद्ध होने का अवसर दिया। इस प्रकार हम दोनो का महर्षि ने उद्धार किया। क्या यह उसकी महानता न थी।

यह देखो नगाधिराज हिमालय शुभ्र हिम से आच्छादित जब से सृष्टि उत्पन्न हुई है खडे हैं। उन्होने सबको देखा है और देख भी रहे हैं। हमारे वायु के झोंके यहा विलीन हो जाते हैं। अग्नि यहा शीतल पड जाती है। आदि सृष्टि में यहा मानव ने जन्म लिया है। इन्द्र और शिव विष्णु और नारद यहीं विहार करते थे। ऋषि-मुनि यहीं वेदों की ऋचाओ का साक्षात्कार करते थे। मुनि और तपस्वी यहीं अपने तप की साधना करते थे। वह महर्षि यहा भी तपस्या करने गया था उनसे भी पूछो।

यह सुन मैं उनके भी पास गया और पूछा—हे नगाधिराज! तुमने अपनी शरण मे अनेक ऋषि मुनियो को रखा। क्या तुम मेरे महर्षि को अधिक काल तक न रख सके। तुमने अलकनन्दा को पार करते हुए उस तपस्वी को अपने हिम खण्डो के प्रहारों से छार छार क्यो कर दिया था तुमने अपने मार्ग शून्य कटकाकीर्ण सिंह, व्याघ्रादि पशुओ से सयुक्त निर्जन वनो मे उसे क्यो भटकाया था तुमने क्षुधा और तृष्णा से व्याकुल कर उसे मूर्छित करके उसके प्राण लेने का क्यो प्रयत्न किया था।

हिमालय बोला—मैं शा त हू। मुझ मैं क्रोध नही। द्वेष नही। सृष्टि के प्रारम्भ से ही सबको अपनी गोद मे लिए बैठा हू। उनकी सब प्रकार की भोज्य सामग्री दे रहा हू। तप के लिए मेरा शा त शीतल स्थान सदा से विख्यात है। महर्षि दयान द भी अन्यो की भांति तपस्या करने आए थे। उनकी तपस्या के तेज से मेरी शीतलता नष्ट होने की प्रतीक्षा मे थी। मेरा हिम परिधान शुष्क होने की सम्भावना मे था। मैंने धर्मराज युधिष्ठिर को भी अपने हिम में विलीन कर दिया था। महाबलिष्ठ भीम को भी हिमावृत करके सदा के लिए शान्त कर दिया था। अत्यन्त पराक्रमी अर्जुन को भी हिमसात कर दिया था। अलकनन्दा के हिम प्रवाह मे मेरा और उनका तपस्या मे सामुख्य था। मैं अपनी महानता के आगे किसी को नही मानता था। इसलिए अलकनन्दा मे मैं उन्हे विलीन कर देना चाहता था।

परन्तु वे मेरे प्रहारों को सहते ही रहे और मुझ अपनी पराजय स्वीकार करनी पडी। इसी से मैं कहता हू वे महान् थे। भूमण्डल पर आज तक ऐसा पुरुष नही हुआ। ससार आज माने या न माने परन्तु आने के युगो मे मानव उसके महत्व को समझेगा। मैंने तो उन्हे अपना आशीर्वाद निम्न शब्दो मे दिया है।

यावद्गिरिवस्तपन्ति यावद्भ्राजति चन्द्रमा।

यावद्वायु प्रवहति तावज्जीव जया जय।

इसलिए देखो—कलकल निनादिनी गगा और यमुना, झेलम और रावी, सिन्धु और ब्रह्मपुत्र नदियां उसी का यशोगान करती हुई भारत भू पर विचरण कर रही हैं। तुमने उनसे महर्षि के बारे मे पूछा। वनों में पक्षीगण अपने कलरवों से उसी महर्षि का यशोगान कर रहे हैं। तुम उनसे महर्षि के बारे में पूछो नगर-नगर, प्रान्त-प्रान्त देश विदेश में आर्य समाजें अपना उन्नत मस्तक किए हुए उनकी धवल कीर्ति दिग्दिगन्त मे व्याप्त कर रही हैं।

मैं गंगा के पास गया। वह तीव्र गति से बही जा रही थी। हजारो लोग उसकी स्तुति कर रहे थे। पर वह किसी की भी कुछ न सुनती हुई अपने ही नाद मे मस्त थी।

मैंने कहा—हे गगे! तू उनको शीतलता देने वाली है पवित्र करने वाली है अमृतरूपा है मुझको भी शीतलता प्रदान कर। तृप्त कर और पवित्र कर। पृथ्वी पर्वत नदी ताल वृक्ष सब पवित्र देखें इतने पवित्र कि उनकी देवता तुल्य पूजा और सत्कार हो रहा है। परन्तु मानव का हृदय मानव की बुद्धि अपवित्र और अन्धकारमयी ही बनी हुई है। हजारो वर्षो से तुम बह रही हो, तुम पापनाशिनी कहा जाता हो। तुम्हारी स्तुति पुराणो म सब देवता करते सुने गए हैं। क्या तुमने अभी तक इस मानव जाति को नही तारा? इसके हृदय को पवित्र नही किया। इसकी बुद्धि को निर्मलता प्रदान नही की?

गगा बोली—भक्त सब आते हैं, मुझ मे स्नान करके चले जाते हैं। उसी से अपने को कृतकृत्य समझते हैं और मुक्त मानते हैं। कोई ज्ञान पिपासा वाला आवे तो मैं उसको मार्ग बताऊ कि इस धरा पर एक ज्ञान गगा भी व्यापक विष्णु रूपी परमात्मा से वेद के रूप मे प्रादुर्भूत हुई है और उसका इस युग मे शिव शकर दयानन्द ने अपने शिर पर धारण कर मर्त्यलोक के उद्धार और इनके जीवो की मोक्ष साधना के हित उस धरा पर प्रवाहित कर दिया है। उसमे मज्जन करने से जन्म जन्मान्तरो के अविद्याजन्य कुसस्कार अधम, अज्ञानरूपी पापो का नाश होकर इससे मोक्ष तत्काल प्राप्त होता है और जीव आनन्द मे विचरण करने लगता है। उस ज्ञान गगा ने हजारो और लाखो को तारा है। तू भी तर जा। चिर शान्ति चिर आनन्द चिर मोक्ष दायिनी वह वेद रूपी ज्ञान गगा है। मुझ से तो क्षणिक भौतिक शीतलता और तृप्ति प्राप्त होगी अत उसी ज्ञान गगा मे मज्जन कर और गोते लगा। उसी शिव शकर दयानन्द की जय बोल। उसकी ज्ञान रूपी वेद गगा की जय बोल। एक बार अपने उद्धार के लिए उस सच्चे शिव-शकर की ज्ञान गगा में गोता लगा ले और जोर से उस महर्षि की जय बोल।

मैंने तुरन्त ही महर्षि दयानन्द की जय के घोष लगाए।

प्रसन्न होकर गगा पुन बोली—सब देव ऋषि पितर साधु मुनि यति, योगी जीवित अवस्था मे मेरी शरण में, आते हैं। मरने के पश्चात् भी उन्हे मेरी शरण मे आना पड़ता है अत उनके स्थूल एव सूक्ष्म शरीर मन और आत्मा मे प्रविष्ट होकर उनसे परिचित हू। सहस्रो योगी यती ऋषि, मुनियो ने मेरे प्रवाह मे खड होकर मन्त्रो की साधना एव तपस्या की है। महर्षि दयानन्द के गुरु विरजानन्द जी ने भी मेरे प्रवाह मे खड होकर गायत्री की उपासना की थी और महर्षि दयानन्द ने भी अनेक प्रकार मे मेरे साथ रहकर तप का अनुष्ठान किया है। इस मेरी रेत को ब्रह्मचर्य स दीप्त योग से पवित्र एव तेजस्वी शरीर पर लगाते थे। आसन लगाकर वे मेरी धारा मे गम्भीर जल मे नीचे के तल मे बैठकर ध्यान मग्न होते थे। मैं उन पर से प्रवाहित होती रहती थी। मेरे तीव्र प्रवाह मे कौन ठहर सकता था? पर त वह बाल ब्रह्मचारी मेरे हिम सदृश शीतल और तीव्र प्रवाह के आघातो को सहने मे अद्वितीय था। वह महर्षि ब्रह्मनिष्ठ अनुपम था। अप्रतिम ब्रह्मतेज धारी था। वह इस युग का ब्रह्मा था। व्यास था शकर था। आचार्यों का आचार्य था। योगी ईश्वर था। आनन्दकन्द दयामय आनन्द स्वरूप था। वही एक म त्र सत्पथ का प्रवर्तक था। उसी की शरण मे आओ। उसी का उपदेश ग्रहण करके धर्म अर्थ काम और मोक्ष का वदिक सन्मार्ग प्राप्त करो।

यद्यपि आज महर्षि दयानन्द का वह भौतिक शरीर नही है तथापि उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज और उनके सभासद् ससार मे उनकी कीर्ति को अमर करने मे सदा अग्रसर होते रहेंगे और ऋषि दयान द का यश सर्वत्र व्याप्त होता रहेगा।

महर्षि स्वामी दयानन्द की जय।

—

# गुरुकुल कुरुक्षेत्र का वार्षिकोत्सव

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित विद्या विहार गुरुकुल कुरुक्षेत्र का 73वा वार्षिकोत्सव 6 6 7-8 अप्रैल को कुरु भूमि मे उत्साहपूर्वक मनाया जाएगा। उत्सव पर राज्य स्तरीय भाषण एव वाद विवाद प्रतियोगिता विशाल दगल तथा राज्य स्तरीय मऊ प्रदर्शनी के अतिरिक्त 100 ट्रैक्टरो मोटर साईकिलो का ऐतिहासिक जलूस मुख्य आकर्षण होंगे।

—सत्यदेव

# मानव जीवन का मूल्य-जननी

ले०—डा० सरस्वती कुमारी पण्डित बी ए एम एड पी एच डी व्यायामाचार्या मानद शिक्षण सलाहकार आर्य कन्या महाविद्यालय बडोदरा (गुजरात)

'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी'

अर्थात् जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी महान है। क्यो ? यह हम देखें—

माता बालक को संस्कारी बनाती है और जन्मभूमि संस्कृति व सभ्यता देती है। संस्कारो पर आधारित संस्कृति और सभ्यता देश का गौरव बनते हैं। माता बालक को ज्ञान पूर्वक और विचार पूर्वक संस्कार दे सकती है जिसका वर्णन सोलह संस्कारों मे आ जाता है। इन संस्कारो का व्यवस्थित रूप संस्कार चन्द्रिका तथा संस्कार विधि पुस्तको मे मिलता है।

आदि मनुष्य धीरे धीरे सभ्य बनता गया। नित नए आविष्कारो ने दुनिया के देशो को वैभवशाली बना दिया। विज्ञान ने असम्भव को सम्भव कर दिया और आज मनुष्य उसके प्रभाव मे दौड़ा चला जा रहा है। इस दौड़ का विश्लेषण करने पर हम पाते हैं कि मनुष्य ने भौतिक सम्पत्ति को ही जीवन का मूल्य बना लिया है। मनुष्य जीवन का संस्कारी हिस्सा जैसे अन्तर्धान हो गया है। शरीर और मन का तादात्म्य नहीं रहा। जीव और शरीर को चलाने वाला ईश्वर—वह शक्ति कहा है क्यों है इसे सोचना हमने छोड़ दिया है। वेदो पर आधारित सम्पूर्ण मानवी जीवन की रचना इतनी सुयोजित और स्वाभाविक है कि उसे अपनाने पर हम श्रेष्ठ समाज का निर्माण कर सकते हैं।

एक अच्छी माता सौ शिक्षको के बराबर है,—इसीलिए यह माताओ का कर्तव्य है कि वे अपने बालको को ऐसे संस्कार ऐसी शिक्षा दें कि वे राष्ट्र का गौरव कहला सकें। जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त जिन अवस्थाओं मे से मनुष्य को गुजरना है उसका ज्ञान कर्म काण्ड द्वारा कराया जाता है। इसका प्रभाव मन पर पड़ता है और अनुभव के साथ साथ बालक उसे तुलनात्मक दृष्टि से देखने लगता है। समय आने पर उसका सदुपयोग करता है इसलिए सारे संस्कार विधि पूर्वक होने चाहिए। यह विधि जीवन का सोपान है। उस पर समझकर कैसे चढ़ना चाहिए यह हमे सीखना है और उसके लिए मन मे संकल्प करना होगा।

एक बार एक अन्धा हाथ मे लालटेन लिए हुए रास्ते पर जा रहा था। सामने से आते हुए भाई ने यह देखा तो उसे विस्मय हुआ। उसने अन्धे को रोक कर पूछा सूरदास जी ! आप लालटेन लेकर क्यो चल रहे हैं ? आपको तो दिखाई नहीं देता है।

सूरदास जी ने उत्तर दिया जी ! यह लालटेन आपके लिए है। आप जैसे लोग देखते हुए भी मुझ से टकरा जाते हैं।

कितना तथ्य है इस घटना मे।

अन्धा देख नहीं सकता और हम देखते हुए भी अन्धे हैं। वेद का प्रकाश हमे राह दिखा रहा है फिर भी हम टकराते हैं क्यो—

जिन्दगी की चकाचौंध मे हम कहा गिरेंगे और हमारा क्या होगा ? पेट भरने के लिए खाना पीना दिन में सोना रात को जागना, इसकी नकल, उसकी नकल यही सब करके समझना कि यह मेरा व्यक्तित्व है। अपनापन खोकर दूसरो की चाल ओढ़ कर अभिमान कर लेना गौरव की बात नहीं है। जिस भूमि पर जन्म लिया हो उसकी संस्कृति, उसकी परम्परा और सभ्यता की विशेषता जरूरी होती है। अपने पूर्वजो को भुलाकर खोखले दिखावे में रम जाना कहां तक उचित है। समाज की नींव जिस परम्परा पर आधारित है उसी पर उसके अनुरूप आचरण-व्यवहार होना चाहिए। दूसरे के अच्छे गुणो को अपने आप मे मिलाना चाहिए। यदि शिक्षा-दीक्षा की परिपाटी पर नूतन आविष्कारों का ज्ञान जोड सकेंगे तो यह हमारा गौरव पूर्ण होगा कि अन्य राष्ट्र हमे सम्मानपूर्वक देखेंगे। इस प्रकार का परिवर्तन अत्यन्त जरूरी है। सोचे-समझे बिना शिक्षा को अनिवार्य बनाकर हमने अपने पांव पर आप कुल्हाड़ी मारी है। बड़ा होकर मनुष्य अपने आपको शिक्षित कहलाना चाहता है वह सुखी होना चाहता है। जीवन मे शान्ति चाहता है। यह सब उसे नहीं मिलता तो वह तड़पता है। जीवन उसके लिए समस्या बन जाता है। धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का' ऐसी उसकी अवस्था हो जाती है। ऐसा क्यों ?

जीवन का अर्थ केवल पैसा बन गया है। हमने शरीर को पोषण दिया पर मन भूखा ही रह गया। धर्म के साथ उपासना भूल गये हैं। हमें याद रखना होगा कि भौतिक सुख शरीर को पुष्ट करेगा वैसे ही उपासना मन को पुष्ट करेगी। पुष्ट मन शरीर की इच्छाओ पर काबू पा सकेगा। इसलिए शरीर और आत्मा का मेल बुद्धिपूर्वक करना बहुत ही जरूरी है।

विवेक व बुद्धि का सदुपयोग करना मानवो की विशेषता है। किसी बात के लिए संकल्प करना सरल है किन्तु उसे निभाना अत्यन्त कठिन है। विवेक बुद्धि से शिव संकल्प को समझना चाहिए। चोर चोरी करने का संकल्प करता है और सफल होता है तो उसके आनन्द की सीमा नहीं रहती। उसी समय जिसके घर चोरी होती है उसके दुःख की सीमा नहीं। दुःखी मनुष्य संकल्प करता है कि वह चोर को ढूंढकर ही छोड़ेगा। समाज चोर की भर्त्सना करता है और चोर ढूंढने वाले की प्रशंसा करता है। यहा हम देख सकते हैं कि काम, कार्य में भेद है। चोरी करना बुरा है और चोर को पकड़ना अच्छा है। इस अच्छे बुरे को समझना बुद्धिमानो का काम है। इसी को जीवन का मूल्य समझना चाहिए। जीवन देने वाला उसे बनाने वाला और चलाने वाला कौन है। यह ज्ञान लेने के बाद मन में जो आस्था उत्पन्न होती है उसी के आधार पर संकल्प किया जाता है। शान्तचित्त से उपासना के मन्त्रो का जाप करने पर आस्था उत्पन्न होती है। रत्नो के समान वेदो के मन्त्र समय समय पर हमारी चेतना को जागृत करते हैं।

हम इस मन्त्र को देखें—

> स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव।
> पुनर्ददताऽघ्नता जानता संगमेमहि। ऋ 5 51 15

अर्थात सूर्य और चन्द्र की भांति हम कल्याणकारी मार्ग पर चलें और दानी अहिंसक तथा विद्वान पुरुषो का साथ करें।

वेद का आदेश है कि कल्याणकारी मार्ग पर चलने का हम प्रयत्न करें। जिस प्रकार सूर्य चन्द्र अपनी निश्चित स्थिति पर रहते हुए पृथ्वी पर दिन और रात का सृजन कर जीव मात्र का कल्याण करते हैं उसी तरह हमें भी नियमित जीवन के द्वारा दूसरो का कल्याण करना चाहिए।

सूर्य और चन्द्र का प्रकाश पाने के लिए पृथ्वी गति करती है। मार्ग मे कहीं नहीं रुकती। उसे किसी बात का प्रलोभन नहीं इसलिए वह ईश्वर की कृपा से दिन और रात का वरदान पाकर जीव मात्र का कल्याण करती है।

नारी धरित्री के समान है। उसे मोह और प्रलोभनो से दूर रहकर बच्चों को नियमित जीवन की आदत डालनी चाहिए। क्योंकि लालसा और मोह मन को चलित कर देते हैं और हम प्रलोभनो के घेरे में बन्द हो जाते हैं। उस समय आत्मा आवाज भी अवश्य करेगी काम बुरी बात को पहले सुनेंगे और मन को हिचकिचाहट हुआ करता है कि जिस मार्ग पर तुम जा रहे हो वह गलत है फिर भी हम गलत काम करते हैं गलत व्यवहार करते हैं। महर्षि स्वामी दयानन्द ने तीर्थ स्थानो में, मन्दिरों मे, मठो में तथा समाज में ऐसे गलत कार्य होते देखे तब उन्होंने पाखण्ड खण्डिनी पताका लेकर अन्ध श्रद्धा का भण्डा फोड़ा और ईश्वर का सच्चा स्वरूप बताकर निराकार की पूजा का महत्व समझाया। मनुष्य काम तभी कर सकता है जब उसका व्यक्तित्व, स्वस्थ और सुन्दर हो। माता बालक का लालन पालन करके उसे महान बनाने के स्वप्न देखती है। उन स्वप्नों को वह तभी सच कर सकती है जब वह यजुर्वेद के इस मन्त्र का जाप प्रतिदिन करे।

> तेजोऽसि तेजो मयि धेहि। वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि।
> बलमसि बलं मयि धेहि। ओजोऽसि ओजो मयि धेहि।
> मन्युरसि मन्युं मयि धेहि। सहोऽसि सहो मयि धेहि। यजु 19-9

(क्रमशः)

# होली के त्योहार

ले—श्री राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति

देते हो तुम हर बस्ती को सदा प्रेम सन्देश,
मानवता के तत्वों का तुम देते हो उपदेश
तुम में भरा हुआ जन-मन का, सुचितर प्यार विशेष,
तेरी गरिमा से बचना है नहीं घृणा अवशेष।
मधु ऋतु का तेरे ही स्वागत मे नतन है।
होली के त्योहार! तुम्हारा अभिनन्दन है॥

सस्यापूरित धरती लेती अंगड़ाई है सततचिरन्तन
होने वाला है वैभव का भव्य नया प्रत्यावर्तन,
दूर क्षितिज से झांक रहा है स्वर्णिम सापरिवर्तन
हर्षित होकर उछल रहा है आज यहां जन मन
वसुन्धरा के कण कण में नव स्पन्दन है।
होली के त्योहार! तुम्हारा अभिनन्दन है॥

नए वर्ष में, नयी किरण की ज्योति जगाने वाले हो
जन मन मन से द्वेष घृणा के भाव भगाने वाले हो,
ऐक्य-भावना महामन्त्र के दृढ़तर तम उदगाता हो
धन्य तुम्ही तो सदवृत्तियों के निश्चय भाग्य विधाता हो।
तेरे पद पर नव विहान का आज यहां अभिनन्दन है।
होली के त्योहार! तुम्हारा अभिनन्दन है॥

# आया होली का त्योहार

ले—कविवर श्री बनवारीलाल जी शादा वैद्य

कहता होली का त्योहार।
दिल के वैर विरोध मिटाओ मन पै रहे न भार।
कालस दिल की धो डालो उमड़े वह आनन्द।
जिसकी विमल धार में मिलते से, हृदय के दुख द्वन्द्व।
सुखी जगत् में रहे सभी जन, हो सुख का विस्तार। कहता
फूल फलों से शोभित धरती सबको हर्षित करती।
मन्द सुगन्ध बसन्त हवाएं खुशियों से मन भरती।
गले मिलो सब सच्चे मन से, सारे वैर बिसार। कहता
नई उमंगें नई आशा का, आज करो संचार।
दुख सुख में हम संगी बन कर, उन्नति करें अपार॥
गले मिलें हम सच्चे मन से, सारे वैर बिसार। कहता—
एक बने हैं चेहरे जैसे, ऐसे मन हों एक।
सभी दुश्मनी दूर भगा दें, सीखें ज्ञान विवेक।
एक रहे हैं एक रहेंगे रखें एक विचार। कहता—
कड़वाहट के बिना सरल हों, मिलकर सभी समाज।
प्रेम भाव सब रखें मन में, दृढ़ता से सारे काज॥
उज्ज्वल सारी दुनिया बाए, सारा अपना कर प्यार।
आया होली का त्योहार।

## ऋषि बोधोत्सव

आर्य समाज व स्त्री आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना ने ऋषि बोधोत्सव (शिवरात्रि) को बड़ी श्रद्धा एवं धूमधाम से सम्पन्न किया इस उपलक्ष मे चारो वेदो के शतको का यज्ञ 24 2 84 से 28 2 84 तक किया गया जिसके ब्रह्मा प सुरेन्द्र कुमार जी शास्त्री थे। उन्होंने बड़ सुन्दर ढंग से मन्त्रो की व्याख्या की और यज्ञ के रहस्य को बताया, यज्ञ प्रात साय दोनो समय ही होता रहा और उपस्थिति भी बहुत सख्या मे रही यजमानो ने भी बड़ी श्रद्धा के साथ यज्ञ मे भाग लिया। प्रति दिन यज्ञ के बाद श्रीमती शान्ता पीड के मधुर भजन ऋषि जीवन पर होते रहे। 28 2 84 साय चार बजे यज्ञ की पूर्णाहुति हुई। भारी सख्या मे नर नारियो ने यज्ञ लाभ उठाया और ऋषि के बताए मार्ग पर चलने का सकल्प किया। अन्त मे शान्ति पाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ और आर्य समाज के प्रधान देसराज जी मेहता ने सब भाई बहिनो का धन्यवाद किया।

—मदनलालचन्द मन्त्री

## लुधियाना में ऋषि बोधोत्सव

29 2 84 बुधवार प्रात मात्र 8 बजे से 1 बजे तक आर्य हा सैकेण्डरी स्कूल लुधियाना मे बड़ समारोह से मनाया गया इसमे नगर की सब आर्य समाजो स्त्री समाजो, आर्य शिक्षण सस्थाओ के हजारो बहन भाई शामिल हुए। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के माननीय प्रधान श्री वीरेन्द्र जी क समारोह मे पहुचने पर उनका भव्य स्वागत किया गया, उन्होंने लगातार एक घण्टा तक ऋषि जीवन पर अपने विचार रखे और जनता को उनके उपदेशो पर चलने का आह्वान किया, आर्य गर्ल्स हायर सैकेण्डरी स्कूल की छात्राओ ने सुरीले भजन पेश किए।

—आत्मानन्द आर्य मन्त्री

## जालन्धर बस्ती मिट्ठू में शिवरात्रि पर्व

आर्य समाज बस्ती मिट्ठू जालन्धर मे (शिवरात्रि) ऋषि बोध पर्व बड़ समारोह से मनाया गया। जिसमे श्री प. ओम प्रकाश जी आर्य के प्रभावशाली प्रवचन हुए। इस अवसर पर निर्धन लड़कियो का सिलाई मशीनें आर्य समाज बस्ती गुजां के प्रधान श्री वेद प्रकाश जी महेन्द्र के कर कमलो द्वार वितरित की गई।

निम्न सज्जनो ने मशीन दान दी—माता ताराबन्ती निझावन ने 2 मशीनें, श्री आनन्द महाजन दो मशीनें तथा एक मशीन उनके रिश्तेदार ने दी। बबली बिस्कुट फैक्ट्री बस्ती गुजा श्री सुभाषजी धर्मपत्नी श्री कपिलदेव सूरी ने एक-एक मशीन दी।

इसी आर्य समाज मे सन्त रविदास जी का जन्म दिवस बड़ समारोह से मनाया गया जिसमे निकटवर्ती हरिजन भाईयो को विशेष रूपमे आमन्त्रित किया गया।

श्री प धर्मदेवजी आर्य सह सम्पादक आर्य मर्यादा एव सह वेद प्रचाराधिष्ठाता आर्य प्रतिनिधिसभा पजाबने हवन के पश्चात बड़ सुन्दर व प्रभावशाली ढग से सन्त रविदास बारे अपने विचार रखे। जनता पर विशेषकर हरिजनो पर अच्छा प्रभाव रहा।

—मन्त्री

## बस्ती गुजा मे ऋषि बोधोत्सव

आर्य समाज बस्ती गुजा जालन्धर में ऋषि बोधोत्सव पर्व उत्साह से मनाया गया। इस उपलक्ष में श्री प धर्मदेवजी सह अधिष्ठाता वेद प्रचार आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब श्री रामनाथ जी सि. वि महोपदेशक के सुन्दर प्रवचन होते रहे। प्रात यज्ञ एव उपदेश भी हुए। श्री रामनाथ शास्त्री भजनोपदेशक के सुन्दर भजन होते रहे। श्री प ओमप्रकाश जी आर्य भी विशेष रूप से इसमें सम्मिलित हुए तथा उन्होंने भी ऋषि जीवन पर व्याख्यान दिया।

—मन्त्री

## क्रान्ति के अग्रदूत श्याम जी कृष्ण वर्मा (७)

# वे दो महामन्त्र जो उनके पथप्रदर्शक बन गए

(गतांक से आगे)

डिग्री की परीक्षा पास करने के बाद श्यामजी कृष्ण वर्मा के सामने प्रश्न उठा कि इसके बाद वह क्या करें। जब वह भारत आए थे तो लार्ड नार्थ ब्रुक ने भारत सरकार के नाम उन्हें एक पत्र दिया कि उन्हें किसी सरकारी पद पर लगा दिया जाए। वास्तव में श्यामजीकृष्णवर्मा का जिस 2 अंग्रेज के साथ किसी प्रकार का सम्पर्क हुआ उसकी यह इच्छा और कोशिश थी कि श्यामजी को किसी तरह अपने काम मे लाए। वे सब जानते थे कि यह एक बहुत योग्य तथा होनहार नौजवान है। यदि उस पर अंग्रेजी रंग विचार का रंग चढ़ जाए तो वह अंग्रेज के बहुत काम आ सकता है। इस कोशिश ने श्यामजी के सामने एक नई कठिनाई पैदा कर दी ? तब तक वह महर्षि दयानन्द के प्रभाव में थे। उन्होने ही श्याम जी को इंग्लैंड भेजा था। वह चाहते थे कि इंग्लैंड जा कर श्याम जी अपने देश के पक्ष मे आवाज उठाए। महर्षि दयानन्द ने उन्हे "स्वधर्म' और "स्वराज्य" के दो मत्र दिए थे। वह चाहते थे कि श्याम जी इंग्लैंड जा कर वहा उच्च शिक्षा प्राप्त करें। वह 'स्वधम" और 'स्वराज्य" का सन्देश भी दें। उनके जो देशवासी वहा रहते थे उन्हें बताए कि "स्वधम" और "स्वराज्य" का क्या अर्थ है ? जो दूसरे लोग हैं अर्थात इंग्लैंड मे रहने वाले अंग्रेज, उन्हे पता चले कि जब भारत मे रहने वाले लोग "स्वधर्म" और 'स्वराज्य की बात करते हैं तो वे क्या चाहते हैं।

एक ओर तो महर्षि दयानन्द का उनपर प्रभाव था दूसरी ओर आक्सफोर्ड के प्रोफसर मोनियर विलियम और लार्ड नार्थ ब्रूक जैसे लोगो का भी था। वे श्याम जी कृष्ण वर्मा को अपने रग मे रगना चाहते थे जो स्वामी दयानन्द के रग से बिल्कुल भिन्न था।

ऐसे समय मे एक तीसर व्यक्ति भी बीच मे आ गई। अमेरिका के एक पादरी कर्नल अलकाट स्वामी दयानन्द से प्रभावित हो चुके थे। उन्होने अमेरिका मे थ्योसोफिकल सोसाइटी नाम से एक सस्था स्थापित कर रखी था जिस की विचारधारा आर्यसमाज के साथ बहुत मिलती जुलती थी। कर्नल अल्काट स्वामी दयानन्द से मिलने भारत आए थे और श्याम जी से भी मिले थे। जब श्याम जी आक्सफोर्ड मे थे तो कर्नल अलकाट ने उन्हे एक पत्र भी लिखा जिसमे उन्हे उस खतरे से सावधान किया जो आगे चलकर उनके लिए पैदा हो सकता है। अपने पत्र मे उन्होने लिखा था—

"जब आप दूसरी बार आक्स [illegible] रोका था। [illegible] चाहता हूं कि [illegible] [illegible] तक हो [illegible] [illegible] किसी ओर को नहीं [illegible]। लेकिन मैं यह भी महसूस करता हू कि अब आपके लिए पहले से कहीं अधिक खतरा पैदा हो गया है। आपको इससे बचना चाहिए। इंग्लैंड में रहते हुए आप बहुत ऊचे चले गए हैं।
23 वर्ष की आयु में आप इतने विद्वान हो गए हैं कि इतनी आयु मे बहुत कम होते हैं। इसलिए अब कई लोगो की नजरें आपकी ओर लगी हुई हैं। मुझ डर है कि कुछ चापलूस लोग आपको गुमराह न कर दें और कहीं आप मे जो शराफत और विनम्रता है वह गायब न हो जाए। मुझ अत्यन्त प्रसन्नता होगी यदि आप इंग्लैंड में अपनी शिक्षा पूर्ण करने के बाद एक बैरिस्टर बनने और संस्कृत का एक बहुत बड़ा पंडित कहलाने के बाद अपने देश मे वापिस आए और कोई आपकी ओर अंगुली भी न उठा सके। मैं चाहता हू कि आप उसी तरह वैसा वापिस आए जिस तरह आप गए थे। इसी के साथ श्याम जी ! अपने देश को न भूलो और उन निर्देशो को न भूलो जो आपके स्वामी जी ने आपको दिए थे। और न ही आप इस समाज सुधार के आदर्शों को कभी भूलो जिसके लिए स्वामीजी इतना सघर्ष कर रहे हैं।'

प्रोफैसर मानियर विलियम्स ने श्यामजी को जो पत्र लिखा था उस का उल्लेख करते हुए कर्नल अलकाट ने अपने पत्र में लिखा था —

"प्रोफसर मोनियर विलियम ने स्वामी जी के बारे में जो कुछ लिखा है, मुझ वह पसन्द नहीं आया। उसने स्वामी जी को एक ईसाई प्रचारक प्रकट करने की कोशिश की है। हालाकि "स्वामी जी की सारी कोशिश है कि हिन्दुओ पर ईसाइयत का जो भी प्रभाव कभी दिखाई दे उसे समाप्त कर दिया जाए। उनकी सभी गतिविधिया हिन्दुओं को ईसाइयत के प्रभाव से मुक्त कराने मे लगी हुई हैं।'

कर्नल अलकाट को यह खतरा इसलिए नजर आ रहा था कि क्योकि इस युग मे ब्रह्म समाज नाम का एक आंदोलन चल रहा था। राजा राममोहन राय और श्री केशव चन्द्र इसके नेता थे। ईसाई मिशनरियो ने न केवल इन की प्रशसा शुरू कर दी बल्कि साथ ही यह कहना भी शुरू कर दिया कि ब्रह्म समाज ईसायित के बहुत समीप है। इसका एक परिणाम यह हुआ कि ब्रह्म समाजी ईसायित की ओर झुकने लगे। वे अपनी ब्रह्म समाज [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हुआ कि [illegible] [illegible] लोगों मे [illegible] रह [illegible] [illegible] [illegible] उन्होंने स्वामी दयानन्द जी और अपना ध्यान केन्द्रित किया और यह प्रचार करने लगे कि स्वामी दयानन्द भी ईसाई प्रचारक हैं और उनके विचार भी ईसायित से बहुत मिलते हैं। इस चाल में वह श्यामजी को भी फसाना चाहते थे। उनकी संस्कृत से लाभ उठाकर स्वामी जी की विचारधारा को इस रूप मे पेश करना चाहते थे कि जिस के विरुद्ध स्वामी जी लड रहे थे लेकिन जब उन्होंने देखा कि स्वामीजी इनके काबू मे नहीं आ रहे तो स्वामी जी के विचारों की व्याख्या इस ढंग से करनी शुरू कर दी जिससे स्वामीजी के बारे मे कुछ भ्रांति पैदा हो जाए। लेकिन इस में वह सफल न हुए। स्वामी जी अपने विचारानुकूल वेदमन्त्रो की व्याख्या करते गए। और एक धर्म और स्वराज्य का दृष्टिकोण अपने देशवासियो के आगे रखते चले गये।

प्रोफैसर विलियम और कुछ दूसरे अंग्रेजो को यह पसन्द न था विशेष रूप से महर्षि दयानन्द का 'स्वधम' व स्वराज्य' पर इतना जोर देना।

इसी दृष्टिकोण ने आगे चल कर 1857 में क्रान्ति का बीज बो दिया था जिन दिनो श्यामजी इंग्लैंड मे थे उनके अपने देश में एक नई हवा चल रही थी। अन्दर ही अन्दर लोगों मे बेचैनी पैदा हो रही थी। साथ ही साथ कुछ लोग सरकार को यह महसूस कराने का भी प्रयास कर रहे थे कि यदि वह बेखटक राज करना चाहती है तो उसे कुछ प्रमुख भारतीयो को भी अपने साथ लेना चाहिए। जो लोग यह सुझाव पेश किया करते थे वह साथ ही यह भी कह दिया करते थे कि वह अंग्रेज के राज से इतने खुश हैं कि वह हमेशा ही इस देश में रहे। साथ ही वह यह भी महसूस करते थे कि आम लोगो में जो बेचैनी पैदा हो रही है उसे दूर करने केलिए भी कुछ करें। इस सिलसिला मे उन का एक प्रस्ताव यह भी था कि

अंग्रेज कुछ भारतीयो का सहयोग लेने का भी प्रयास कर ताकि वह लोग सरकार के और आम लोगों के बीच एक पुल का काम कर सकें और देश मे अंग्रेज के खिलाफ कोई आन्दोलन शुरू न हो। यह सुझाव पेश करने का एक कारण था। ज्यों ज्यो लोगो मे शिक्षा का प्रसार होने लगा, आम लोगो ने विशेष रूप से नवयुवकों ने विदेशो के इतिहास का अध्ययन शुरू कर [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के विरुद्ध क्रान्ति कर दी तो इसमें भी [illegible] [illegible] [illegible] उन दिनों लार्ड लिटन इस देश के वायसराय थे उन्होंने अफगानिस्तान के साथ लड़ाई शुरू कर दी क्योंकि वह इसके कुछ क्षेत्र पर कब्जा करना चाहते थे। साथ ही दिल्ली के कुछ बड़ दरबार की [illegible] रिया भी शुरू कर दीं। आम लोग यह महसूस कर रहे थे कि उन्हें खाने को नहीं मिल रहा और इनकी सरकार इन पर असहनीय बोझ डाल रही है। इसलिए अन्दर ही अन्दर बेचैनी की चिनगारियां सुलग रही थीं।

ऐसे समय में कलकत्ता के दो प्रख्यात वकीलो आनन्द मोहन बोस व सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी ने इण्डियन एसोसियेशन नाम की एक सस्था स्थापित की। सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी इससे पहले सरकार के कर्मचारी थे। उन्हें सर की उपाधि भी प्राप्त थी। बाद मे उन्होने सरकारी सेवा छोड दी थी और वह अपने देशवासियों की सेवा में लग गए।

1880 में लार्ड लिटन चले गये और उनकी जगह लार्ड रिपन भारत के वायसराय बन कर आए। उन्होने एक नयी नीति पर अमल करना शुरू कर दिया। पहली बार देश में नगर पालिकाएं गठित की गयीं। इन के माध्यम से जनता के साथ सम्पर्क पैदा करने की कोशिश की गयी। आम लोगो के लिए यह एक नयी चीज थी। इस लिए यह ख्याल पैदा होने लगा कि अंग्रेज भारतीय को कुछ अधिकार देने लगा है। इसलिए चारों ओर से लार्ड रिपन की प्रशंसा के पुल बांधे जाने लगे और यह धारणा पैदा होने लगी लार्ड रिपन के रूप में कोई मसीहा ऊपर से उतरा है।

श्यामजी कृष्ण वर्मा भी इन दिनो अभी इंग्लैंड में थे और उन पर भी कुछ प्रभाव हुआ। इस ख्याल से कि वह अपने देश मे जाकर स्वय देखें कि वहा क्या हो रहा है। वह जनवरी 1885 मे स्वदेश आ गए। वह समय था जब देश मे इंडियन नैशनल कांग्रेस का आधार रखने की तैयारियां की जा रही थी इस के बाद क्या हुआ यह आगामी अंक में देखें।

—श्री वीरेन्द्र जी, प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब

सम्पादकीय—

# स्वराज्य प्राप्ति के लिए बलिदान

संसार के जितने भी राष्ट्र परतन्त्र थे उन्हें स्वतन्त्र कराने के लिए उस राष्ट्र के वीरों ने अपना बलिदान दिया है। इसी प्रकार भारत के वीरों ने भी अपना बलिदान देकर स्वराज्य प्राप्त किया। आज हम जिस सुख और आनन्द को प्राप्त कर रहे हैं। इसका हमने बहुत बड़ा मूल्य चुकाया है। स्वराज्य संग्राम में आर्य समाज ने भी अपनी विशेष भूमिका निभाई है और अपना बहुत बड़ा भाग डाला है। स्वाधीनता यज्ञ के प्रारम्भ करने वाले महर्षि दयानन्द जी सरस्वती थे। स्वराज्य शब्द का उपयोग भी उन्होंने ही सर्व प्रथम किया था। भारत की जनता में स्वराज्य पर पूर्व 2 कर उन्होंने इस मन्त्र को पुनर्जागरित किया था। उन्होंने ही भारतवासियों के हृदय में पराधीनता से छूटने और स्वाधीनता को प्राप्त करने की अभिलाषा को जन्म दिया था। इसके लिए उन्होंने तीन उपाय किए थे। भारतवासियों के हृदय में अपने देश और धर्म के लिए स्वाभिमान उत्पन्न करना। जिस समय यह कार्यक्रम में संलग्न हुए उस समय पाश्चात्य सभ्यता और इंग्लैंड की शक्ति का प्रवाह बह रहा था। ऋषि ने भारतवासियों को स्वदेशाभिमान सिखाया और अपने उपदेशों में प्राचीन भारत का स्वर्णिम चित्र खींचकर बताया "कि यह आर्यावर्त देश ऐसा है कि जिसके सदृश भूगोल में दूसरा देश नहीं है। आर्यावर्त देश ही सच्चा पारसमणि है कि जिसको लोहे रूपी विदेशी छूते ही सवर्ण अर्थात धनाढ्य हो जाते हैं इसके साथ ही वह एक स्थान पर लिखते हैं—

जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना है अब भी पालन होता है और आगे भी होगा उसकी उन्नति तन-मन धन से सब मिलकर प्रीति से कर।

यह तो केवल उदाहरण के लिए मैंने लिखा है सच्चाई यह है कि महर्षि के शब्दों में स्वदेशाभिमान और स्वदेशभक्ति कूट कूट कर भरी है। उन्होंने उस समय राजाओं और दूसरे शासकों को झकझोरते हुए सत्यार्थ प्रकाश में लिखा—

सृष्टि से लेके पांच सहस्र वर्षों से पूर्व समय पर्यन्त आर्यों का सार्वभौम चक्रवर्ती अर्थात भूगोल में सर्वोपरि एक मात्र राज्य था। अन्य देशों में माण्डलिक अर्थात छोटे 2 राजा रहा करते थे क्योंकि कौरव पांडव पर्यन्त यहां के राजा और राज्य शासन में सब भूगोल के सब राजा रहते थे।

भारत के लोगों को यह अनुभव कराना था कि वह एक दिन बहुत शक्ति सम्पन्न थे और स्वाधीन थे और यह प्रयत्न करें तो अब भी स्वाधीन हो सकते हैं यह ऋषि का पहला कदम था।

दूसरा उपाय उन्होंने किया था कि राष्ट्र से उन कारणों को दूर कर जिन्होंने उसे पराधीन बनाकर पुराने गौरव से गिराया है। विचार करने पर पता चला कि मानसिक दासता ही इसका कारण है। क्योंकि यह माना हुआ सत्य है कि मानसिक स्वाधीनता के बिना सामाजिक स्वाधीनता और सामाजिक स्वाधीनता के बिना राजनैतिक स्वाधीनता सम्भव नहीं। महर्षि ने स्वदेश भक्ति के साथ 2 मानसिक स्वाधीनता के मार्ग पर राष्ट्रवासियों को डाल दिया। तीसरा उपाय उन्होंने किया कि राष्ट्र वासियों के सामने सच्चे स्वराज्य का स्वरूप रखा। महर्षि ने स्वराज्य प्राप्ति से लगभग 70 वर्ष पूर्व सत्यार्थ प्रकाश के अष्टम समुल्लास में उसका विस्तृत वर्णन किया। यह सच्चाई है कि जिस स्वाधीनता यज्ञ को महर्षि दयानन्द जी महाराज ने प्रारम्भ किया उसी की पूर्णाहुति 15 अगस्त 1947 के दिन हुई।

महर्षि दयानन्द और आर्य समाज की प्रेरणा से आर्य बन्धुओं ने अपने आप को इस यज्ञ की समिधा बनाकर कष्ट सहन किए और सामग्री बनाकर इस यज्ञ में होम दिया। श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा जिन्होंने इंग्लैंड में रहकर स्वाधीनता संग्राम को बहुमूल्य सहयोग दिया। वह स्वामी जी के प्रमुख शिष्यों में से थे। वीर सावरकर भाई परमानन्द जी ला. लाजपतराय, स्वामी श्रद्धानन्द और दूसरे अनेक बन्धुओं तथा आर्य समाज की संस्थाओं ने स्वराज्य प्राप्ति के लिए महान कार्य किया। डी ए वी स्कूल डी ए वी कालेज, आर्य स्कूल आर्य कालेज गुरुकुल और लाहौर के इंटरनेशनल कालेज में पढ़े विद्यार्थी ही स्वराज्य प्राप्ति के लिए आगे आए।

भाई बालमुकन्द रामप्रसाद बिस्मिल सरदार भगतसिंह और सुखदेव तथा अन्य कई आर्य युवकों ने स्वराज्य प्राप्ति के लिए हंसते 2 फांसी का फन्दा अपने गले में डाला था। 23 मार्च 1931 को लाहौर की सैंट्रल जेल में सुखदेव राजगुरु और भगतसिंह को क्रूर अंग्रेज ने फांसी दे दी थी। सुखदेव और भगतसिंह के परिवार कट्टर आर्य समाजी थे। सुखदेव जी के पिता जी ताया जी और चाचा जी तथा भगतसिंह के पिता जी और दादा जी ने आर्य समाज के लिए बड़ा कार्य किया था और उनके सुपुत्रों ने देश की स्वाधीनता के लिए कार्य किया यह दोनों पंजाब के रहने वाले थे और नेशनल कालेज लाहौर के विद्यार्थी थे जिस कालेज के प्रबन्धक महान् क्रान्तिकारी भाई परमानन्द जी और देशभक्त पंजाब केसरी लाला लाजपतराय जैसे व्यक्ति थे उस कालेज के विद्यार्थी क्यों न देशभक्त हों यहां से ही सुखदेव और भगतसिंह की गतिविधियां चलती रहीं। लाहौर क्रान्तिकारियों का एक गढ़ था जिसके साथ देश के अन्य क्रान्तिकारी भी जुड़ हुए थे। राजगुरु महाराष्ट्र के और चन्द्रशेखर आजाद तथा रामप्रसाद बिस्मिल उत्तर प्रदेश के तथा देश के दूसरे सभी प्रान्तों के क्रान्तिकारी मिलकर आजादी की लड़ाई को लड़ रहे थे।

इस प्रकार स्वराज्य प्राप्ति के लिए आर्य समाज ने महान बलिदान दिए हैं और यह सभी बलिदान निःस्वार्थ दिए हैं।

आर्य समाजियों ने अपने देश की स्वाधीनता के लिए जितने बलिदान दिए हैं उसके पीछे कोई स्वार्थ नहीं था। कोई राजनैतिक या आर्थिक लाभ उठाना न था अपित केवल धर्म था। आर्यजन देश के प्रति अपना कर्तव्य तथा धर्म समझकर कार्य करते रहे हैं और आज भी कर रहे हैं

23 मार्च के दिन इन शहीदों की याद मनाते हुए इनसे प्रेरणा लें और निश्चय कर कि देश जाति और समाज पर आने वाले संकट का मुकाबला करने के लिए हम अग्रसर रहेंगे। इसके लिए अपने प्राण भी चले जाएं इसकी हमें कोई चिन्ता नहीं। क्योंकि इन शहीदों ने जान हथेली पर रखकर कार्य किया और अन्त में स्वाधीनता यज्ञ में अपने प्राणों की आहुति दे दी।

आज फिर कुछ लोग स्वार्थवश आजादी के लिए खतरा पैदा कर रहे हैं। इस समय भी आर्य समाज को चुप नहीं बैठना चाहिए। जो सदा से अग्रणी रहे हैं उन्हें फिर आगे आ जाना चाहिए।

# पंजाब में शान्ति यज्ञ

पंजाब में उग्रवादियों द्वारा जो निर्दोष और निरपराध व्यक्तियों की हत्याएं दिन प्रतिदिन की जा रही हैं और जिसमें लगभग 200 से अधिक व्यक्तियों को उग्रवादियों ने अपनी गोली का निशाना बनाया। चाहे वह बसों में से उतार कर मारे गए हों या बाजार व दुकानों व घरों पर गोलियां बरसाकर मारे गए हों वह सब या तो निरंकारी थे या नर सिख थे। यह सिलसिला बन्द नहीं हुआ अभी भी चल रहा है। पंजाब में रहने वाले हिन्दू अपने आपको यहां असुरक्षित समझने लगे हैं और इससे सारे पंजाब में अशान्ति पैदा हो गई है इस अशान्ति को देखते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने यह घोषणा की थी कि 18 से 25 मार्च तक सभी धर्म स्थानों व आर्य समाज मन्दिरों में बड़े 2 शान्ति यज्ञ किए जाएं। सभा कार्यालय में आई सूचनाओं के अनुसार लगभग पंजाब की सभी आर्य समाजों में शान्ति यज्ञ हो रहे हैं और इनकी पूर्णाहुति 25 मार्च रविवार को होगी

आर्य समाज ऋषि कुल पक्का बाग जालन्धर में प्रातः सायं दोनों समय यज्ञ चल रहा है इसी प्रकार रेलवे आर्य समाज अड्डा होशियारपुर जालन्धर बस्ती गुजां आर्य समाज जालन्धर छावनी आदमपुर बंगा फगवाड़ा और दूसरी कई आर्य समाजों से इस सम्बन्ध में पत्र आए हैं कि वहां शान्ति यज्ञ आरम्भ हो रहे हैं जिनमें आर्य बहन भाई बड़ी भारी संख्या में भाग ले रहे हैं।

इस अवसर पर 23 मार्च व 25 मार्च को सुखदेव राजगुरु और भगतसिंह का बलिदान दिवस भी मनाया जा रहा है। इन्होंने अपने देश जाति समाज के लिए तथा स्वराज्य प्राप्ति के लिए अपना बलिदान दिया था।

—सह सम्पादक

# अमर शहीद बलिदानी सुखदेव

ले—श्री प ओम प्रकाश जी आर्य

वीर बलिदानी सुखदेव का नाम प्रथम पंक्ति मे लिखने योग्य है। सुखदेव का जन्म लुधियाना मे 15 मई 1907 ई को ला रामलाल थापर जी के घर हुआ इनकी माता का नाम रल्ली देई था। सुखदेव के जन्म के समय ला रामलाल लायलपुर मे रहते और कारोबार करते थे वहां 1910 ई मे उनका देहान्त हो गया। सुखदेव का लालन पालन पोषण और शिक्षण इनके ताया श्री चिन्तराम थापर द्वारा हुआ। लाला जी अपने समय के महान् देशभक्त वैदिक धर्मी और ऋषि दयानन्द के सच्चे अनुयायी थे सामाजिक राजनैतिक और धार्मिक क्षेत्र मे सक्रिय रहने वाले ला चिन्तराम की राष्ट्रीयता की तीव्र भावना ने बालक सुखदेव को अत्यधिक प्रभावित किया। ला चिन्तराम लुधियाना से लायलपुर आकर स्थायी रूप से बस गए यहां उन्हे महता जैमिनी तथा मास्टर मरलिता मल जैसे कर्मठ कार्यकर्ताओ के साथ मिलकर काम करने का अवसर मिला।

महर्षि दयानन्द की विचार धारा दोहरा प्रभाव डालती थी एक ओर यहां अन्धविश्वास रूढियो और पाखण्डो तथा भ्रमों का भण्डाफोड़ कर सत्य का ज्ञान कराती थी वहां दूसरी ओर देश की परतन्त्रता की बेडियो को काटकर उसे स्वतन्त्र स्वाधीन निर्भय और सबल बनाने की प्रबल प्रेरणा देकर तप त्याग तथा संयम का भाव अपनाने की ओर अग्रसर करती थी। यही कारण है कि जब सन 1907 ई मे सरकार ने नया कालोनी ऐक्ट पास किया तो सरकार के इस अत्याचार और अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाने वालों मे प्रमुख व्यक्ति आर्य समाजी विचार धारा के लोग ही थे। ला लाजपतराय और सरदार अजीतसिंह दोनो ही आर्य समाजी थे इन के पुरुषार्थ से ही लायलपुर मे भारत माता सोसायटी की स्थापना की गई थी इस सोसायटी की स्थापना में सूफी अम्बा प्रसाद जी का भी सहयोग इन्हें प्राप्त था 22 मार्च 1907 ई को लायलपुर मे इस सोसायटी की ओर से आयोजित विशाल सभा मे ला बांकेलाल ने अपना जोशीला पजाबी गीत पगडी सम्भाल ओ जट्टा पगडी सम्भाल ओए का पाठ आरम्भ किया था—अस्तु

## माता का प्रभाव

सुखदेव की माता रल्ली देई घर के सभी बच्चो को राष्ट प्रेम और देश भक्ति की कहानियां सुनाया करती थी। इन सबको सुखदेव बडे मनोयोग से सुना करते और सदा सोचा करते कि मैं भी बडा होकर वीर सिपाही और देशभक्त बनूंगा। उनका मन पढने लिखने मे खूब लगता था परन्तु खेल कूद में विशेष रुचि न थी दिवाली के त्योहार पर घर के सभी बच्चो को आतिशबाजी तथा मिष्ठान खरीदने के लिए पैसे मिला करते थे सुखदेव को छोडकर शेष सभी महा पुरुषो की तस्वीर खरीदा करते थे परन्तु

सुखदेव केवल झांसी की रानी की तस्वीर ही खरीदा करते थे। यह तस्वीर पाकर उनकी छाती तन जाती चेहरा एक अनजाने गर्व से चमकने लगता। माताजी को तस्वीर दिखाकर बड़े उत्साह से कहा करते हैं मा—देख यह झांसी की रानी लक्ष्मीबाई है इसने अंग्रेजो से लोहा लिया था। कितनी बहादुर है यह! पीठ पर बच्चा बंधा है। एक हाथ में घोडे की लगाम ? और दूसरे हाथ मे तलवार।

झांसी की रानी उनके लिए देश भक्ति साहस और शक्ति की प्रतीक थी।

## भेद भाव के प्रति विद्रोह

लाला चिन्तराम आर्य समाज की विचार धारा का क्रियात्मक प्रचार करने वाले कर्मठ व्यक्ति थे मानव मात्र के प्रति उनके हृदय मे प्रेम और सहानुभूति का पवित्र भाव था। जन्मगत जाति पाति के भेदभाव को दूर करने में अपने साथियो समेत सदा तत्पर रहते थे उनके इस क्रियात्मक जीवन का अभीष्ट प्रभाव सुखदेव पर पडना स्वाभाविक था सुखदेव ने मैट्रिक तक शिक्षा सनातन धर्म स्कूल लायलपुर मे प्राप्त की थी परन्तु अपने ताया जी के वैदिक विचारों के प्रभाव के कारण उनमे ऊंच नीच और छूत छात की कोई बात न थी। लायलपुर के पास हरचरणसिंह पुरा ग्राम में जाकर सुखदेव ने अपने जेब खर्च से हरिजनों को पढाना प्रारम्भ कर दिया।

## निर्भीक तथा साहसी वीर

15 अप्रैल 1919 को सारे पंजाब में मार्शल ला लागू कर दिया गया था। 13 अप्रैल 1919 को जलियां वाला बाग अमृतसर में निहत्थे भारतीयों को जनरल डायर ने गोलियां चलवाकर भून डाला था उसी के विरोध में व्याप्त जनता के रोष को कम करने तथा जन-साधारण को आतंकित करने के लिए अत्याचारी विदेशी सरकार ने मार्शल ला लगाया था। सनातन धर्म स्कूल लायलपुर मे एक अंग्रेज फौजी अफसर नियुक्त किया गया उसने एक निश्चित समय पर परेड करने तथा सलामी देने की घोषणा कर दी। सुखदेव भी स्कूल का विद्यार्थी था परन्तु इस वीर ने अंग्रेज फौजी को सलाम करने से साफ इन्कार कर दिया। इस पर इन्हे काफी मार पीट हुई परन्तु वह वीर भारत मां का लाडला अपने व्रत पर अडा रहा।

## जन सेवा की ओर

सन 1918 मे लायलपुर में महामारी फैल गयी। सुखदेव के चाचा बली राम ने जन-सेवा समिति का गठन करके रोगियो की सेवा प्रारम्भ कर दी सुखदेव ने भी अपने चाचा जी के देखा देखी 20 25 बच्चो की एक बाल समिति बनाकर जन सेवा का कार्य करना शुरू कर दिया उनको इस बात की रत्ती भर चिन्ता न थी कि महामारी एक भयानक रोग है। सेवा की प्रबल भावना उनमें अन्त तक बनी रही।

## नैशनल कालेज लाहौर मे

सनातन धर्म स्कूल लायलपुर मे सन् 1922 में हाई स्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात सुखदेव के ताया ला चिन्तराम इन्हें डी ए वी कालेज लाहौर मे प्रविष्ट कराना चाहते थे परन्तु सुखदेव ने ला लाजपतराय द्वारा संस्थापित नैशनल कालेज लाहौर में पढना ठीक समझा। इस कालेज का एक मात्र उद्देश्य था—भावी पीढी को राष्ट्रीय नेतृत्व के लिए तयार करना। कालेज के प्राचार्य श्री जुगलकिशोर थे और प्राध्यापक थे महान देशभक्त राजनीतिक विद्रोह के कारण काले पानी की सजा काट कर लौटे हुए देवता स्वरूप भाई परमानन्दजी तथा उनके साथ ही इतिहास के प्रामाणिक विद्वान् गुरुकुल कांगडी के सुयोग्य स्नातक श्री प जयचन्द्र जी विद्यालंकार। इस कालेज का पाठयक्रम ही ऐसा रखा गया था जिसके पढने से छात्रो का मन और मस्तिष्क राष्ट्र की स्वतन्त्रता के प्रति समर्पित हो जाता था। लाला लाजपतराय जी का जीवन अपने आप मे ही सभी की प्रेरणा का स्रोत था और पं जयचन्द्र विद्यालंकार सोने पर सुहागे का काम कर रहे थे।

सुखदेव को भगतसिंह जैसा वीर मस्ताना भी इसी कालेज में मिल गया था। दोनों एक ही विचार सरणी में स्नान किया करते और देश की परतन्त्रता की बेडियों को काटने के विविध उपायों पर विचार करते रहते

## देश सेवा का व्रत

जीवन भर क्रान्ति का अपनाव करने वाले और देशभक्त वीरो के संगठन को दृढ से दृढतर बनाने मे सदा योगदान देने वाले बन्दी जीवन के प्रसिद्ध लेखक श्री शचीन्द्रनाथ सान्याल प्राय लाहौर आकर श्री प जयचन्द्र विद्यालंकार के पास ठहरा करते थे दोनोंमें घनिष्ठ मित्रता थी। श्री सुखदेव तथा भगतसिंह जी ने भी श्री सान्याल के दर्शन प्रो जयचन्द्र विद्यालंकार के माध्यम से ही किए। श्री सान्याल का व्यक्तित्व बडा आकर्षणशील और प्रभावी था। उनकी योग्यता सूझबूझ तथा देश के प्रति उनकी प्रबल भक्ति भावना सभी को अपनी ओर आकृष्ट कर लेती थी। फिर सुखदेव और भगतसिंह तो जन्म जात देशभक्त थे। दोनो का जन्म और सम्पर्क आर्य समाजी घरानो से था जिन की विचार धारा मे देशभक्ति कूट 2 कर भरी हुई थी। अत दोनो वीर हथेली पर सिर रखकर कार्यक्षेत्र मे उतर पडे।

श्री भगतसिंह के अतिरिक्त लाहौर मे ही सुखदेव जी को श्री भगवती चरण जी जैसा एक घनिष्ठ देश भक्त साथी मिल गया। तीनो ने मिलकर सन् 1926 में नौजवान भारत सभा का गठन किया था। इस सभा के अध्यक्ष जय गोपाल रामकिशन मन्त्री भगतसिंह और प्रचार मन्त्री भगवती चरण इस सभा का उद्देश्य अपने विचारो को जन सामान्य तक पहुंचा कर उनमें उग्र राष्ट्रीय भावना जागृत करना था श्री केदारनाथ सहगल सैफुद्दीन किचलू कामरेड फिरोजचन्द लालचन्द फलक और अनेक महानुभावों से इस सभा को सहयोग मिलता रहा। 1926 तक यह सभा चलती रही परन्तु इसके कार्य से स्वयं कार्यकर्ता ही पूरी तरह सन्तुष्ट न थे अत 1928 के सितम्बर मास में दिल्ली के फिरोजशाह कोटला मैदान के खण्डहरो में बैठकर नवयुवकों ने एक केन्द्रीय समिति बनाई उसी पार्टी का नाम हिन्दोस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी रखा गया। इसके पश्चात् सुखदेव को पंजाब प्रान्त का प्रमुख संगठन कर्ता मनोनीत किया गया।

सुखदेव अपने साथियो की हर छोटी से छोटी आवश्यकता का भी पूरा ध्यान रखते थे और कष्ट के समय उनके पास जाते थे। देश की लौ रही आस्था को जगाने के लिए किसी बड काम को करना आवश्यक हो गया था। इधर आर्थिक संकट इन क्रान्तिकारी वीरों को घेरे रखता था, परन्तु इन वीरों ने हिम्मत न हारी और

(शेष पृष्ठ 6 पर)

# राजगुरु से मेरा पहला परिचय

—श्री शिव वर्मा जी की अपनी लेखनी से लिखा एक लेख

छोटा दल छोटे साधन इतना बड़ा निश्चय। काम के पूरा करने की चिन्ता ने बहुत बड़ा रूप धारण कर रखा था। हम एक व्यक्ति की मौत की गोली देनी थी क्योंकि वह देश में जहर फैला रहा था। एक दिन शाम को एक साथी ने आकर खबर दी कि बनारस के एक साथी अकेले ही इस काम को करना चाहते हैं।

अकेले—मैंने कुछ ताज्जुब से आकर पूछा।

हां अकेले—वे अपने साथ किसी को भी लेना नहीं चाहते।

पहले सोचा कि किसी नए साथी ने जोश में आकर ही उपयुक्त बातें कही होंगी किन्तु बाद में उन्हें कानपुर बुला कर उनसे मिल लेना ही ठीक समझा गया।

उपयुक्त घटना के चार पांच दिन बाद एक दिन किसी ने आकर कहा—तुम से कोई मिलना चाहता है। उठकर बाहर आया। एकहरा बदन, खादी खद्दर की पोशाक, मामूली कद जो दुबला होने के कारण कुछ लम्बा जान पड़ता था। शरीर दुबला होने पर भी कमजोर न था, उसमें गठन थी और उस पर कसरत अखाड़े की पूरी छाप नजर आती थी चेहरे पर की उभरी हुई हड्डियां और मराठी टोपी उसके मरहट्टा होने का सबूत दे रही थी।

आप अकेले ही उस काम को करना चाहते हैं? निश्चित संकेत पा चुकने के बाद मैंने पूछा।

हां!

उसमें जान जाने का खतरा है।

जानता हूं।

जेल मार-पीट अत्याचार अपमान सोचा है?

खूब सोचा है।

किन्तु उस व्यक्ति ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा? तुम उसकी जान लेने के लिए इतने उतावले क्यों हो? बात घुमाते हुए मैंने पूछा—आगन्तुक साथी मेरी बात पर जोर से हंस पड़ा किन्तु शीघ्र ही उसकी हंसी आवेश की गम्भीरता में विलीन हो गई। एक तीखी निगाह से मेरी ओर देखते हुए उसने कहा—आप मुझ पर अविश्वास करते हैं। बातें करना मुझे नहीं आती, मैं तो काम करना जानता हूं और परीक्षा वह चुनाव से नहीं हुआ करती उसके भी कुछ तरीके हैं।

अविश्वास परीक्षा। मैं स्वयं ही लज्जित हो पड़ा, मानो चोरी करते पकड़ा गया हूं। राजगुरु से मेरा यह

अमर शहीद राजगुरु

पहला परिचय था। यह अक्तूबर 1926 की बात जिस बात के लिए हम दोनों मिले थे उसके बारे में अधिक कुछ कहने का समय अभी नहीं आया। हां, इतना अवश्य कहा जा सकता है कि इसके बाद वह हमारे दल के एक प्रमुख सदस्य गिने जाने लगे। उनके साहस तथा कार्य क्षमता पर सबको पूरा विश्वास था भरोसा था। उनके रहते दल का शायद ही कोई ऐसा काम हुआ हो जिसमें उन का हाथ न रहा हो। भगतसिंह तो हर काम में उन्हीं को अपने साथ ले जाने का आग्रह किया करते थे। उन्होंने केवल एक ही ऐसा काम किया था जिसमें राजगुरु उनके साथ न थे। असेंबली में बम फेंकते समय, वह अन्त तक भगतसिंह से इस बात की शिकायत करते रहे।

क्रांतिकारी दल में आने से पहले वह हिन्दू महा सभा के समर्थकों में से थे। संस्कृत के विद्यार्थी तथा बाबा सावरकर के शिष्य होने के नाते वह आरम्भ में कट्टर हिन्दू थे। कुश्ती लाठी तथा कवायद आदि की शिक्षा आपने अमरावती तथा बनारस के हिन्दू महा सभा के अखाड़ों में ही पाई थी। इस समय वह भारत में हिन्दू राज्य स्थापित करने के पक्षपाती थे। जिन दिनों आप बनारस में संस्कृत का अध्ययन कर रहे थे, उस समय उनका परिचय उत्तर भारत के कुछ क्रान्तिकारियों से हुआ। यह 1927 के पहले की बात है। इन क्रान्तिकारियों के संसर्ग में आने से उनके विचारों में बहुत कुछ परिवर्तन हो गया था। 'हिन्दू राज्य के विचारों का स्थान पाया विस्तृत भारतीय प्रजातन्त्र के स्वप्न ने। इस स्वप्न में ईश्वर भक्ति, भारतीय साम्राज्य आदि बातें भी प्रबल थीं। तबदीली के नाते मुसलमानों का स्थान अंग्रेजों ने और हिन्दू राज्य का स्थान भारतीय प्रजातन्त्र, ने ले लिया था।

राजगुरु का जन्म खेड़ा, जि पूना में 1909 में हुआ था। वह कलगानि वशी राज गुरु परिवार के महाराष्ट्रीय ब्राह्मण थे और उनका पूरा नाम शिवराम हरि राजगुरु था। बचपन में ही घर वालों से कुछ अनबन हो जाने के कारण वह भाग कर बनारस आ गए थे और तब से उनके जीवन का अधिक समय यहीं काशी में संस्कृत, लाठी कुश्ती आदि सीखने में बीता। कुछ दिन हिन्दू महा सभा के अखाड़े में, उसके बाद हिन्दुस्तानी सेवा दल में और अन्त में बनारस के एक म्युनिसिपल स्कूल में लाठी तथा ड्रिल के शिक्षक भी रहे थे। वह हिन्दी मराठी गुजराती और संस्कृत अच्छी तरह जानते थे। अंग्रेजी तो उन्होंने आठ महीने में ही सीख ली थी, और वह भी फरारी की अवस्था में। असेम्बली बम केस के समय तक वह अंग्रेजी प्रायः नहीं के बराबर जानते थे किन्तु आठ महीने बाद जब उन्हें पकड़ कर लाहौर-केस में लाया गया उस समय अंग्रेजी में अच्छी तरह बातचीत कर सकने के अलावा वह समाचारपत्र तथा टाल्स टाय आदि की पुस्तक भी बगैर किसी की सहायता से पढ़ कर समझ लेते थे। सबसे के छोटे से जीवन में वह दल में आए। अपने अ पको सबसे आगे तूफान में फेंका और अन्त तक उसी अगली कतार में तूफान का सामना करते रहे। साहस वश की बात का दुहराना फिजूल होगा अस्तु यहां पर भूख हड़ताल की ही एक बात कह देता हूं। लाहौर षड्यन्त्र की पहली भूख हड़ताल में यतीन्द्र दास की बलि ले लेने के बाद भी सरकार ने अपने रवैये को नहीं छोड़ा। वादे वादे ही रहे कमेटी आदि की सभी बातें धरी ही रह गई और भूख हड़ताल समाप्त होने के बाद से सारा काम आम की भांति चलने लगा। तंग आकर जनवरी 1930 में अभियुक्तों ने फिर हड़ताल आरम्भ कर दी। इस समय तक राजगुरु भी पकड़ जा चुके थे। हड़तालियों के कमजोर पड़ते ही जबरन दूध पिलाने का काम आरम्भ हुआ। पन्द्रह—बीस तगड़े पठान, डाक्टर और रबड़ की नली।

राजगुरु का ही नम्बर पहले आया। कुश्ती शुरू हुई। किन्तु दस दिन के भूखे का पन्द्रह जवानों से भला कब तक मुकाबला हो सकता था। एक बार काबू आते ही डाक्टरों ने अपनी नली दे मारी एक बार दो बार, तीन बार कोशिश की उस दिन वे लोग उन्हें दूध न पिला सके दूसरे दिन फिर वही नाटक डाक्टरों ने चैलेंज दिया—'आज दूध पिला कर ही छोड़ेंगे, डाक्टरों का चैलेंज पूरा हुआ, किन्तु पेट में दूध डाल कर नहीं फफड़ों में। थोड़ी ही देर बाद उन्हें निमोनिया हो गया। मौत पास आने लगी। सरकार ने घबराकर सारी मांग मान ली। इस भूख हड़ताल की कामयाबी का सेहरा उन्हीं के सिर रहा। यहां पर भी वह सब से आगे थे।

देश की हजार मिन्नतों के बावजूद भी ब्रिटिश साम्राज्यशाही को ये मुट्ठी भर हड्डियां इतनी खतरनाक जान पड़ीं कि वह उन से अपना प्रतिरोध लिए बगैर न रह सकी। लाहौर में सैंटल जेल में 23 मार्च 1931 को भगत सिंह सुख देव राजगुरु तीनों रस्सी एक झटका और बस।

न होकर भी जो आज जीवित है अमर है उन थोड़े दिनों के अपने साथी की स्मृति अब भी ठीक उसी प्रकार नई होकर सामने आती है। वे दिन वे साथी तुलात होने पर भी वे मधुर है, प्यारे हैं।

—

# लुधियाना में गायत्री सम्पन्न महायज्ञ

स्त्री आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बजार (सावन बाजार) लुधियाना में गत दिनों गायत्री महायज्ञ एक महिना तक स्त्री आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार में बड़ी धूमधाम से चलता रहा। पूर्णाहुति सोमवार तेरह फरवरी सप्तमी को बहुत सुन्दरता से सम्पन्न हुई। चारों स्त्री आर्य समाजों की बहिनों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया। प्रतिदिन जो बहिनें यजमान पद को सुशोभित करती रहीं उनका संख्या 60 से ऊपर रही। सभी यजमानों को आर्य साहित्य फल एवं गायत्री महामन्त्र के अर्थ सहित छपे हुए सुन्दर कार्डों से सम्मानित किया गया। इस यज्ञ में सारी सामग्री का व्यय श्री देवराज जी धुल्लर ने दिया तथा घृत का सारा व्यय श्रीमती विद्यावती जी देवगन श्रीमती भगवती जी भल्ला एवं श्रीमती स्नेह जी सूद ने किया।

फल जो यजमानों को दिए उन का सारा व्यय श्रीमती कौशल्या जी वर्मा ने दिया। पूरे माघ मास का गायत्री महायज्ञ हर दृष्टि से सफल रहा। प्रति सक्रान्ति को इस समाज की ओर से पारिवारिक सत्संग किए जाते हैं जिनमें बहनें बड़े उत्साह से भाग लेती हैं।

—निर्मला देवी मन्त्री

# वैदिक विज्ञान के प्रसार से ही विश्व वेदों को अपनाएगा

ले.—श्री प. वीरसेन जी वेदश्रमी, वेद विज्ञानाचार्य वेद सदन महारानी पथ, इन्दौर

## प्रारम्भिक प्रयत्न

वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है-यह आर्य समाज की स्थापना है। अत वेदो का पढना-पढ़ाना सब आर्यों का परम धर्म मान्य किया गया। यदि मानव जाति वेद नहीं पढेगी तथा वेदा-तिरिक्त वा अवैदिक पुस्तको का अध्ययन करेगी तो मानव जाति को सत्य विद्याओं का ज्ञान भी नही होगा। वैदिक सत्य विद्याओ के आधार पर विज्ञान का विकास होने से मानव जाति की उन्नति होगी। अन्यथा अवैदिक विद्याओ के प्रसार से जो विज्ञान विकसित होगा उससे मानव जाति का सर्वनाश भी सम्भव है। अत वेद प्रचार के प्रथम सोपान के रूप में कम से कम दैनिक कार्यों मे प्रयुक्त मन्त्रो का शुद्ध एव सस्वर अभ्यास अनिवार्य है। यह कार्य आयजनो मे वेद को प्रति-ष्ठित करने वाला है।

## वेद विज्ञान अनुसन्धान केन्द्रो की स्थापना हो

वेदो को केवल आर्यजनो तक ही सीमित रखने से 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' लक्ष्य प्राप्त नही होगा। वेद के विज्ञान की आवश्यकता सवसाधारण को बतानी होगी। उसकी उपयोगिता, लाभ, मानव मात्र में प्रकट करना होगा और साथ ही वेद के विज्ञान को सर्वसाधारण ग्राह्य, सुलभ एव व्यवहारिक बनाना होगा। अन्यथा वेदो का प्रचार प्रसार व अगी-करण कार्य मानव मात्र मे न ही होगा और न उसका अध्ययन-अध्यापन प्रचलित होगा। अत वद विज्ञान के अनुसन्धान केन्द्रो की स्थापना अत्यावश्यक है। सर्व-प्रथम आर्य समाजो एव उसकी संस्थाओ मे ही अनुसन्धान केन्द्र स्थापित करके वेद सत्य विद्याओ का पुस्तक है और उसका विज्ञान अति सुगम तथा ससार के लिए महान लाभदायक है यह परीक्षणो द्वारा सिद्ध करना होगा। अन्यथा वेद सम्बन्धी भ्रान्त धारणाओ की वृद्धि होती ही रहेगी।

## वैदिक विज्ञान के लिए ऋषित्व एव वैज्ञानिक भाव जागृति

एक समय था जब तक का युग था अब विज्ञान का युग है। तक और विज्ञान दोनों से विरुद्ध मान्यता धर्म या शिक्षा का अब मानव जीवन मे कोई स्थान नही मनु ने घोषित किया था-यस्तर्केणानुसन्धत्ते स धर्मं वेद नेतर—। यास्क मुनि ने घोषित किया—तर्क ऋषि प्रावन्धन्-इसके द्वारा तर्क को वेदार्थ एव वेद के विज्ञान का द्रष्टा, ऋषि मान्य किया। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने मानव मात्र मे आर्य बुद्धि, ज्ञान दृष्टि के जागरण के लिए सत्यार्थ प्रकाश प्रदान किया और वेद एव उसके सब विज्ञान कोतर्क सगत तथा वैज्ञानिक प्रतिपादन करने के लिए ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका की रचना की। इन दोनो ग्रन्थो के अध्ययन से जो प्रतिभा जाग्रत होगी उस विज्ञान के संसार का कल्याण होगा।

## विज्ञान का सार्वभौम प्रभुत्व एव वर्चस्व

आज विज्ञान का युग है। वेद ज्ञान विहीन विज्ञान का प्रसार है। इसकी उन्नति अनुसन्धान परीक्षण आदि कार्यों ऋग्वेद ज्ञान विहीन हजारो वैज्ञानिक लगे हुए है। सैकडो विश्वविद्यालयो में उनकी शिक्षा दीक्षा की व्यवस्था है। उसका प्रभाव हमारी जीवन प्रणाली शिक्षा सभ्यता पर प्रतिक्षण होता है। यदि इसके विपरीत वेद के दैवी विज्ञान का प्रबन्ध होगा तो ससार की जीवन प्रणाली शिक्षा एव सभ्यता वैदिक ही हो जाएगी। अत अधिकाधिक वैदिक विज्ञान प्रयोग-शालाए स्थापित करके वैदिक विज्ञान का प्रचार आर्य समाज को करना चाहिए और विज्ञान पर अपना आधिपत्य स्था-पित करना चाहिए। इस निमित्त वैदिक विज्ञान की सुलभता उत्पन्न करनी चाहिए और उसकी उपयोगिता तथा व्यवहारिकता प्रकट करनी चाहिए तभी कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' लक्ष्य पूर्ण होगा एव वेदो का सार्वभौम प्रचार हो सकेगा।

## विज्ञान के स्रोत वेद

ससार के किसी भी धार्मिक वा साम्प्रदायिक ग्रन्थ मे विद्या एव विज्ञान नही है। यदि कहीं है तो वेदो में ही उपलब्ध है। वेद के एक मन्त्र में स्पष्ट कहा है। महो अर्णः सरस्वती प्रचेतयति केतुना धियो विश्वा विराजति (ऋग्वेद (1 3-12) वेद विद्याओ का महान् समुद्र है, जो ज्ञान विज्ञान को प्रेरित करता है उसमे समस्त बुद्धि कर्म व प्रयोग शोभायमान रूप से विद्यमान है। अत वेद की विद्याओ और उसके विज्ञान का अनुसन्धान और प्रचार करना चाहिए। उदाहरणार्थ आयुर्विज्ञान वेद का प्रधान एव अत्यन्त विस्तृत विज्ञान है। आयु-विज्ञान से सम्बन्धित वेद में अनेक विज्ञान है। जीवेम शरदः शतम् (यजुर्वेद अध्याय 36-24) हम सौ बरस पर्यन्त जीवें। यह छोटा-सा वेद वाक्य ब्रह्माण्ड के तत्वों उनके रहस्यो का पृथक्-पृथक् और समष्टि रूप का हमारे जीवन से सम्बन्धो का ज्ञान, उनकी उपयोगिता एव व्यवहारिकता के विज्ञान में अग्रसर होने की प्रेरणा दे रहा है।

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

अदालत में दोपहर के विश्राम के समय सम्बन्धियो को अभियुक्तो से मिलने की छूट रहती थी। पास के कमरे मे मिलने वालो को बिठा दिया जाता था। हम लोग मिल-मिलाकर कुछ ऐसा क्रम निकाल लेते थे कि जो जिससे मिलना चाहता था, मिल लेता था। जिस दिन मुझे सरदार या किसी और से मिलना होता था, उस दिन उनके किसी रिश्तेदार को साथ में ले लिया जाता था और मुलाकात के समय सब इकट्ठे बैठ जाते थे। उस समय खाने पीने का सामान देने पर भी कोई प्रतिबन्ध नही था। केवल शर्त यह थी कि वह सामान जेल के भीतर नही ले जाया जा सकता था। मैं हर रोज बदल बदल कर खाने का कुछ ऐसा सामान ले जाती थी, जो जेल में सुलभ न होता था और सरदार तथा अन्य साथियों की रुचि का होता था। अधिकतर तो उनकी ओर से ही कह दिया जाता था कि अमुक सामान लाना चाहिए। जेल जीवन के अनुभवी लोगो से यह छिपा नहीं है कि वहा कोई विशेष काम न होने से भूख कुछ बढ जाती है और तरह तरह की भोज्य सामग्री के लिए तबियत चलती रहती है मुकद्दमा चलने के दिनो मे ऐसा होना अधिक स्वाभाविक होता है। दही-बडे का सबको विशेष शौक था। सरदार को केक बहुत पसन्द थे। इसका उन्हें बडा शौक था कि जो कुछ वे खाए दूसरो के मुह मे भी उसे अपने हाथ से डालें। मुझे केक से परहेज था फिर भी उनके लिए केक और दही-बडे घर मे स्वय बनाकर ले जाया करती थी। एक दिन मेरे मुह मे केक डालने को उन्होने बडा आग्रह किया परन्तु मुझे पराजित न कर सके। अदालत विश्राम का वह घण्टा पौन घण्टा बड़ा ही आमोद-प्रमोद में कट जाता था।

मृत्यु जिनके सिर पर खेल रही थी और आजीवन काले पानी की सजा जिनकी किस्मत में लिखी जा चुकी थी उनका वह आमोद-प्रमोद देखते ही बनता था। भारत मा के उन लाडलो को अपनी मौत के साथ अदालत के कटघरे में खिलवाड करते देख दांतों तले अगुली दबा लेनी पडती थी। अदालत के प्रति उनका उपेक्षा और मुकद्दमे की कार्यवाही के प्रति उनकी उदासीनता कुछ ऐसी थी, जैसे कुछ हो ही न रहा हो। केवल मजाक के तौर पर सरदार कभी-कभी कुछ फुलझडी छोड दिया करते थे और ऐसा अटपटा सवाल उठा देते थे कि मैजिस्ट्रेट भी चकरा जाते थ। सबसे अधिक भावना पूर्ण मोहक और आकर्षक दृश्य होता था मैजिस्ट्रेट के अदालत में प्रवेश करने के समय का। जैसे ही मैजिस्ट्रेट अदालत में आकर कुर्सी पर बैठते, अदालत का कमरा 'क्रान्ति चिरजीवी हो' के नारो और शहीद बिस्मिल के इस अमर क्रान्ति गीत से गूज उठता था।

सरफरोशी की तमन्ना,
अब हमारे दिल में है।
देखना है जोर कितना,
बाजुए कातिल में है।

उन आठ-दस मिनटों में चारों ओर निस्तब्धता छा जाती थी। मैजिस्ट्रेट सिर नीचा किए मूर्ति बने बैठे रहते थे, सिपाहियो और सरकारी वकीलों तक का हिलना-डुलना एक दम बन्द हो जाता था जो जहा होता था, वह वहीं बुत बनकर रह जाता था। सरकारी-गैरसरकारी सभी उपस्थित लोग, अभियुक्तो की तरह ही मन्त्रमुग्ध हो जाते थे और सारी अदालत ऐसी लगती थी जैसे कि 'अदालत के ही रग मे रंग गई हो। उस समय के लिए तो सरदार और उनके साथी अदालत पर पूरी तरह हावी हो जाते थे। वह अनोखा दृश्य भी मैं कभी भूल नहीं सकती।

गान्धी इरविन समझौते के बाद जब मे रिहा होकर हम लोग कांग्रेस के अधि-वेशन में शामिल होने के लिए कलकत्ते से दिल्ली होते हुए कराची जा रहे थे कि शाम को दिल्ली स्टेशन पहुचते ही पता चला कि सरदार, राजगुरु और सुखदेव को लाहौर जेल मे फासी दे दी गई। आशा यह की जा रही थी कि समझौते के फल स्वरूप वायसराय फासी की सजा रोक देंगे और अधिक से अधिक आजीवन काले पानी की सजा में परिणत कर देंगे, वैसा न हुआ। कराची पहुचते-पहुचते पता चला कि तीनो शहीद युवकों के शव लाहौर के पास कहीं ले जाकर उनकी अन्त्येष्टि क्रिया पुलिस अधिकारियो द्वारा अज्ञातरूप में कर दी गई।

(4 पृष्ठ का शेष)

प्रत्येक स्थिति का सामना करते रहे। लाहौर मे षड्यन्त्र केस सहारनपुर की बम फैक्टरी असेम्बली काण्ड, लाहौर की बम फैक्टरी सभी में सुखदेव की प्रमुख रूप से भाग लेते रहे अथवा ऐक्शन को सफल बनाने में सहयोग देते रहे, अन्त में सुखदेव, भगतसिंह और राजगुरु आदि को पकड लिया गया। दस जुलाई 1929 ई को लाहौर षड्यन्त्र का मुकद्दमा चल चुका था। प्रथम मई 1930 को गवर्नर जनरल लार्ड इरविन ने लाहौर षडयन्त्र केस आर्डिनेन्स जारी किया। इस अध्यादेश के अनुसार तीन जजो का स्पेशल ट्रिब्यूनल बनाया गया। 8 अक्तूबर 1930 को फैसला सुना दिया गया इसमे सुखदेव, भगतसिंह और राजगुरु को फासी और किशोरीलाल रत्न महावीरसिंह, विजय-कुमार सिन्हा, शिव वर्मा, गया प्रसाद, जयदेव कपूर, कमलनाथ त्रिपाठी का आजन्म कारावास का दण्ड दिया गया।

23 मार्च 1931 वाले दिन तीनों को फांसी दे दी गई। फासी के फन्दे को तीनों ने अपने हाथों से गले में डाला, मिलकर गीत गाया और वन्दे मातरम् का जयघोष करते हुए भारत मा के अर्पण जीवन कर दिया।

# आर्यसमाजों के वार्षिक निर्वाचन

### आर्य समाज माडल हाऊस जालन्धर का वार्षिक चुनाव

आर्य समाज माडल हाऊस जालन्धर का वार्षिक चुनाव श्री अमरनाथ जी की अध्यक्षता में निम्न प्रकार सर्वसम्मति से सम्पन्न हुआ।

प्रधान—श्री अमरनाथ उपप्रधान—श्रीमती राजकुमारी मन्त्री—श्री रविन्द्र नारायण उपमन्त्री—श्री वीरेन्द्र चमन श्री अशोक कुमार श्री गुरुदास श्री गिरधारी लाल भाटिया कोषाध्यक्ष—श्री चमनलाल निरीक्षक—श्री कस्तूरी लाल।

### आर्यसमाज ज्वालापुर का वार्षिक चुनाव

आर्य समाज ज्वालापुर का वार्षिक चुनाव दिनांक 28 2 84 मंगवार को श्री वेमचन्द जी आर्य की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ जिसमें निम्न प्रकार से पदाधिकारी सर्वसम्मत निर्वाचित हुए

प्रधान श्री कृष्णदत्त जी शर्मा उप प्रधान श्री सत्यपाल जी आर्य सचिव श्री जगदीशचन्द्र विरमानी उपसचिव श्री भरतराम जी आर्य कोषाध्यक्ष—श्री वेदराज जी पुस्तकालयाध्यक्ष श्री हरदत्त जी शर्मा

जगदीशचन्द्र मन्त्री आर्य समाज

### आर्यसमाज परवाणु जिला सोलन का वार्षिक चुनाव

संरक्षक—श्री स्वामी सरेशानन्द प्रधान—श्री मस्तराम उपप्रधान—श्री कन्हैयालाल शर्मा श्री इन्द्रजीत भाटिया मन्त्री श्री गुरुदत्त आर्य उपमन्त्री—श्री नन्दकिशोर मेहता श्रीमती चान्द रानी शर्मा प्रचार मन्त्री कोषाध्यक्ष—श्रीमती कौशल्या श्री स्वतन्त्र कुमार लेखा निरीक्षक—

—गुरुदत्त आर्य मन्त्री

## आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर

कच्छाल जिला की सभी आर्य समाजो के मुख्यालय वेद प्रचार मण्डल द्वारा 20 मार्च से 8 अप्रैल 1984 तक एक योग शिविर का आयोजन गुरुकुल कच्छाल हरियाणा में सार्वदेशिक आर्य वीर दल के सहायक प्रधान सचालक स्वामी डा देव व्रत जी आचार्य के निर्देशन मे आयोजित किया जा रहा है जिसमें जूडो कराटे आसन प्राणायाम लाठी छुरी बर्छी भाला आदि का सैनिक प्रशिक्षण दिया जाएगा।

—अर्यदेव विद्यार्थी सयोजक

## उर्दू उत्तर प्रदेश में दूसरी भाषा क्यो ?

उत्तर प्रदेश की सरकार ने अल्प सख्यकों को तुष्ट करने के उद्देश्य से उर्दू को राज्य की दूसरी भाषा बनाने से सबन्धित जो विधेयक विधान सभा के अधिवेशन मे रखने का दुर्भाग्यपूर्ण और अविवेकपूर्ण निश्चय किया है उसका विरोध स्वय सत्तारूढ दल के अधिकाश विधायक ही कर रहे हैं राज्य और आज मन्त्री श्री बाबू देवसिंह ने तो मुख्यमन्त्री को यहा तक कह दिया है कि यह विधेयक सविधान की भावना के खिलाफ है और उर्दू को दूसरी भाषा की माग करने वाले लोग धर्मनिरपेक्षता के विरोधी हैं और उनका मस्तिष्क वर्गवाद व जातिवाद की भावनाओ से ग्रस्त है

हमे पूरी आशा है कि मुख्यमन्त्री श्री श्रीपति मिश्र इस मामले में जल्दबाजी से कोई निर्णय नहीं लेगे और लोगो को इस निष्कर्ष पर पहुचने का अवसर नही देगे कि यह विधेयक मुस्लिम मतदाताओ को पटाने के उद्देश्य से प्रेरित होकर ही विधानसभा मे प्रस्तुत किया जा रहा है उन्हें इस सम्बन्ध मे न केवल अपने दल के विधायकों अपितु अन्य पार्टियों की रायो का भी आदर करना होगा।

उर्दू की समस्या वस्तुत उत्तर प्रदेश ही नहीं सारे देश की समस्या बनी हुई है, और कुछ राजनीतिज्ञों ने इसे राजनीति का एक मोहरा बना रखा है। यही कारण है कि यह समस्या मुस्लिम राष्ट्रीयता और साम्प्रदायिकता की पहचान की समस्या बन कर रह गई है। इन अवसरवादी राजनीतिज्ञों ने ही मुसलमानो के मन मे यह धारणा स्थापित कर दी है कि उर्दू की उपेक्षा करके उन की भाषा और सास्कृतिक धरोहर को समाप्त करने का प्रयास किया जा रहा है उर्दू को राजनीति का एक मोहरा बन जाने के कारण ही उर्दू भाषा और मुस्लिम राष्ट्रीयता की सकीर्णता और साम्प्रदायिकता भी बढ़ी है और अब यह स्थिति उत्पन्न हो गई है कि सारे देश के मुसलमान उर्दू भाषा को अपने अस्तित्व और अपनी अस्मिता का प्रश्न समझने लगे हैं।

उर्दू को उत्तर प्रदेश बिहार या अन्य राज्यों की दूसरी भाषा बना देने से उर्दू की समस्या हल नही हो सकेगी उल्टे और उलझ जाएगी क्योंकि अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के लोग उर्दू के समान दर्जा प्राप्त करने का आन्दोलन करेंगे और उर्दू के बीच सघर्ष का परिणाम साम्प्रदायिक दंगे फसादो के रूप में सामने आता रहेगा।

—सदाजीवत लाल

—

मुसलमानो की बढती हुई जनसख्या देश के लिए एक खतरा

## मुस्लिम बहुल जिलो की सख्या निरन्तर बढ रही है

बगला देश से आए मुसलमानो की घुस पैठ अभी तक असम व बगाल तथा बिहार के कुछ जिलों तक ही सीमित थी लेकिन ताजा समाचारों के अनुसार अब वे उत्तर प्रदेश तक बढ़ आए हैं पूर्वी उत्तर प्रदेश के बस्ती गौंडा बहराइच तथा गोरखपुर जिलो में बगलादेशी मुस्लिम बस्तियो की निर्मिती बड़े पैमाने पर जारी है

सरकारी आकडों के अनुसार जिन सात राज्यों व एक केन्द्र शासित प्रदेश के 17 जिलो मे मुसलमानो की संख्या 21 से 30 प्रतिशत के बीच है उनमें सबसे पहला नबर उत्तर प्रदेश का ही आता है जिसमे 6 जिले ऐसे हैं जिनमे 1971 और 1981 के बीच में क्रमश 37 017 2 12 822 792 620 और 26 0 बगलादेशी घुस-पैठियो का आगमन हुआ था।

मगर ये तो सरकारी आकडे हैं बगलादेशियो की प बगाल मे घुसपैठ से सम्बन्धित गैर सरकारी आकडे अधिक विश्वसनीय और अधिक चौकाने वाले हैं इन आकडो के अनुसार प बगाल के जिन तीन जिलो में 1971 व 1981 के बीच मे क्रमश 332 193 467 306 और 536 619 बगलादेशी घुसपैठिए आकर स्थायी रूप से बस गए हैं उनके नाम हैं—प दिनाजपुर माल्दा (जो रेलमन्त्री श्री अब्दुल गनी खां चौधरी साहब का चुनाव क्षेत्र है) और मुर्शिदाबाद। सरकार ने 28 अप्रैल 1983 को ससद में स्वीकार किया है कि जहा 50 प्रतिशत से अधिक जनसख्या है वे जिले बारामूला व राजौरी (जम्मू व कश्मीर) और मुर्शिदाबाद (प बगाल) हैं। प बगाल का माल्दा और असम का ग्वालपाडा वे जिले हैं जहा मुसलमानो की सख्या 41 से 50 प्रतिशत है 31 से 40 प्रतिशत मुस्लिम आबादी वाले जिले हैं—बिहार की पूर्णिया तथा पश्चिमी बगाल का प दिनाजपुर।

इस प्रकार देश के 104 जिले ऐसे हैं जहा 11 प्रतिशत से लेकर 50 प्रतिशत से अधिक मुस्लिम जनसख्या निवास करती है और इन 104 जिलो मे भी 13 जिले ऐसे हैं जहा घुसपैठ का खतरा सदा विद्यमान रहता है। उधर बगलादेश ने शायद भारत के 'अहसान' का बदला चुकाने के उद्देश्य से एक ऐसा निर्णय निकाला है जिसके कारण बगला देश में रहने वाले लाखो हिन्दुओ के बेघरबार होने की नौबत आ गयी है और यदि अन्य देशो से भारत आने वाले मुसलमानों के अतिक्रमण को न रोका गया तो वह दिन दूर नहीं जब स्वयं भारत में रहने वाले हिन्दू भी बेघर-बार हो जाएगे।

—सदाजीवत लाल धमूलाल

—

## आ स फगवाडा में शान्ति यज्ञ

आर्य समाज बंगा रोड फगवाडा मे 18 से 25 मार्च तक प्रात तथा साय दोनो समय आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी के आदेशानुसार शान्ति यज्ञ आरम्भ हो गया जिसकी पूर्णाहुति 25 3 84 रविवार को होगी इस अवसर पर श्री प रामनाथ जी सि वि आर्योपदेशक के यज्ञ के उपरान्त दोनो समय उपदेश होंगे इस यज्ञ मे फगवाडा के सभी आर्य बन्धुओं तथा अन्य धर्म प्रेमियो को आमन्त्रित किया गया है इस अवसर पर भगतसिंह राजगुरु और सुखदेव अमर शहीदो का बलिदान दिवस भी मनाया जाएगा

—बनारसीदास प्रधान

—

## आर्यसमाज वेद मदिर भार्गवनगर जालन्धर का वार्षिकोत्सव

गत वर्षों की भान्ति इस वर्ष भी आर्य समाज वेद मन्दिर भार्गवनगर जालन्धर का वार्षिकोत्सव 26 से 29 फरवरी तक बड़ समारोह से मनाया गया इस अवसर पर श्री प सत्यीराम जी महोपदेशक तथा श्री प बलराज जी गायक के भजन होते रहे इनके अतिरिक्त श्री प मनोहरलाल श्री सरदारीलाल जी आर्य रत्न श्री बूटा रामजी श्री प अमरनाथ जी तथा बस्ती बावा खेल की भजन मण्डली तथा दयाराम की आर्य प्राईमरी स्कूल के बच्चों ने इसमें भाग लिया उत्सव हर प्रकार से सफल रहा 29 2 84 को वृहद् ऋषि लगर हुआ जिसमें सैकडो बन्धुओं ने भोजन किया

—

## हिमाचल में महर्षि बलिदान शताब्दी समारोह

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उप सभा तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश सम्मिलित रूप से महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी समारोह 1, 2, 3 जून 1984 को कांगड़ा में व्यापक स्तर पर मना रही हैं। इसके विधिवत कार्यालय का उद्घाटन डी ए वी कालेज कांगड़ा के परिसर में किया गया।

यह स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती ने किया। इस अवसर पर प्रि रमेशचन्द्र जीवन, प विद्याधर जी डा सुरेन्द्रकुमार शर्मा श्री मनोहरलाल, श्री तिलकसिंह शास्त्री तथा अन्य अधिकारीगण उपस्थित थे।

शताब्दी समारोह के संयोजक प्रिंसिपल रमेशचन्द्र जीवन के अनुसार यह समारोह लीक से हटकर आर्य समाज को नई दिशा और नए कार्यक्रम प्रदान करेगा। इस त्रिदिवसीय समारोह में प्रचार योजना सम्मेलन वैदिक सिद्धान्त सम्मेलन वर्णाश्रम व्यवस्था सम्मेलन नारी जागृति सम्मेलन, युवा निर्माण सम्मेलन वैदिक संगीत सम्मेलन स्वदेश स्वसंस्कृति रक्षा सम्मेलन आदि का आयोजन किया जाएगा। बैठक में समारोह से पूर्व हिमाचल प्रदेश के गांवों में उपदेशकों द्वारा वेद प्रचार और जन जागरण की भी व्यवस्था की गई है। ताकि लोग आर्य संस्कृति के वास्तविक स्वरूप को समझ सकें। इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए दूसरे प्रदेश के उपदेशकों से भी सम्पर्क किया जा रहा है। एक मास पूर्व आर्य वीर दल तथा योग साधना शिविर भी लगाने की योजना है। समारोह के प्रथम दिन भव्य शोभा यात्रा का कार्यक्रम रखा गया है।

आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री चमनलाल शर्मा के अनुसार समारोह में पधारने के लिए कई आर्य विद्वानों और आर्य नेताओं की स्वीकृति मिल चुकी है।

इस अवसर पर एक भव्य स्मारिका निकाली जाएगी। यह अपने ढंग की अनूठी कृति होगी। इसमें अनेक अनुभाग होंगे जिनमें वैदिक सिद्धान्तों तथा आर्य समाज की मान्यताओं का समग्र दर्शन होगा।

—रमेश जीवन

## अग्निहोत्र की बढ़ती हुई लोकप्रियता

वैदिक काल में वैदिक अनुष्ठान, वैदिक क्रियाओं-कर्मकाण्ड के क्रम में अग्निहोत्र जैसे अनुष्ठानों के पीछे जो पवित्र भावना थी वह यह थी कि जन मानस में प्रेम और सद्भाव से रहें। सारे वैदिक अनुष्ठान, विश्व बन्धुत्व तथा विश्व शान्ति की उदात्त भावनाओं को जगाने में सहायक होते थे।

किन्तु आज विदेशी वैज्ञानिकों की जो रुचि अग्निहोत्र नामक अनुष्ठान में जागृत हुई है उसके पीछे वह भावना काम नहीं कर रही है। उन्होंने प्रयोगों और अनुसन्धानों से मालूम किया है कि जहां अग्निहोत्र होता है, वहां वायु प्रदूषण नहीं होता इसके अतिरिक्त, अग्निहोत्र द्वारा अनेक रोगों का नाश होता है। यही कारण है कि अग्निहोत्र तथा अन्य यज्ञों के प्रभाव का आयुर्वेद में भी उल्लेख है।

जर्मन वैज्ञानिकों को प्रयोगों से पता चला है कि खेत के जिस भाग में अग्निहोत्र सम्पन्न होता है वह भूमि अधिक उर्वर हो जाती है। महाराष्ट्र की अंगूर उत्पादक संस्था के [illegible] का कहना है कि अग्निहोत्र वाली भूमि पर बीज छः महीने के स्थान पर 21 दिन में ही अंकुरित हो जाता है।

प्रख्यात मानव रोग विशेषज्ञ बैरी रथनर का कथन है कि होमाथेरेपी (अग्निहोत्र के लिए उनके द्वारा दिया गया वैज्ञानिक नाम) से मन्द बुद्धि बच्चों के मानसिक विकास में बड़ी सहायता मिलती है।

अग्निहोत्र की भस्म स्वयं में एक चमत्कार है। जर्मनी के [illegible] ने इस भस्म से अनेक दवाईयां तैयार की हैं, जिनका सफल प्रयोग [illegible] रोगों में करते हैं। एक अमरीकी वैज्ञानिक ने इस भस्म को 'क्षयरोग विनाशक' माना है। भारत के नामी रोगाणु विशेषज्ञ डा अरविन्द मोडकर प्रयोगों से इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि अग्निहोत्र की भस्म में रोगाणुओं को नष्ट करने की शक्ति है।

आज यूरोप व अमरीका में अग्निहोत्र की लोकप्रियता निरन्तर बढ़ रही है। वहां हजारों अग्निहोत्री प्रतिदिन यज्ञ करते हैं। —



श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जगदीश प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इस की स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

वर्ष 16 अंक 51 19 चैत्र सम्वत् 2040, तदनुसार 1 अप्रैल 1984 दयानन्दाब्द 160 । एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपये

## क्रान्ति के अग्रदूत श्याम कृष्ण वर्मा (9)

# स्वदेश लौटने पर अगली राह की तलाश

—श्री वीरेन्द्र जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

श्याम जी कृष्ण वर्मा 1885 में अपने देश में वापस आ गए। यह वह वक्त था जब भारत के अन्दर ही अन्दर बेचैनी की आग सुलग रही थी। दो विभिन्न एवं विरोधी लहरें इस समय चल रही थीं और परस्पर टकरा रही थीं। एक ओर वह लोग थे जो यह कहते थे कि अंग्रेज जैसी अच्छी सरकार हमें इस से पहले कभी नहीं मिली। दूसरी ओर वह लोग थे जो कहते थे कि अंग्रेज सरकार ठीक तो है लेकिन जनता का भी कोई अधिकार है या नहीं। जनता के प्रतिनिधियों को भी किसी रूप में सरकार के साथ सम्बन्धित करना चाहिए। इस तरह दो तरह से आन्दोलन देश में चल रहे थे लेकिन कोई भी ऐसा न था जो उस समय सरकार के साथ टक्कर लेने की बात सोच रहा हो। ऐसे समय में श्याम जी अपने देश लौट आए। इससे पहले वह जितना समय इंग्लैंड में रहे विभिन्न क्षेत्रों में उनका सम्पर्क होता रहा। आक्सफोर्ड में रहते हुए व इसके बाद लन्दन के कई क्षेत्रों में उनसे सम्पर्क स्थापित करते हुए श्याम जी कृष्ण वर्मा ने अपनी यह धारणा पैदा कर दी थी कि वह एक विद्वान व्यक्ति हैं। चूंकि संस्कृत व अन्य भाषाओं पर उनका विशेष अधिकार था इसलिए वह भारत में उन लोगों के बहुत काम आ सकता था। [illegible]

[illegible]

के पक्ष में उनका समर्थन कर दिया। इस तरह श्यामजी कृष्ण वर्मा और उस समय की अंग्रेज सरकार के बीच परस्पर सहयोग का सिलसिला शुरू हो गया।

इन दिनों श्री ह्यूम नाम के एक अंग्रेज सरकारी सेवा से निवृत हो चुके थे। वह कुछ देर से देख रहे थे कि इस देश का शिक्षित वर्ग स्थिति से सन्तुष्ट नहीं है। अभी उस में इतना साहस न था कि खुल कर सरकार के सामने आ सके लेकिन अन्दर ही अन्दर आग सुलग रही थी। श्री ह्यूम ने कलकत्ता विश्वविद्यालय के कुछ प्रोफेसरों को पत्र लिखा और देश की तत्कालीन परिस्थितियों के बारे उनकी राय मांगी। साथ ही यह भी लिख दिया कि जो बेचैनी की आग अन्दर ही अन्दर सुलग रही है उसे रोकने का प्रयास न किया गया तो बहुत बड़ा [illegible] होगा जिस के असर देश के लिए हितकर नहीं रहेगा। इन पत्रों के उत्तर में श्री ह्यूम को जो पत्र प्राप्त हुए उन से उनको बहुत प्रोत्साहन मिला। अन्ततः उन्होंने एक संस्था गठित करने का फैसला किया जो देश की जनता व सरकार के बीच सम्पर्क सूत्र बन सके। जनता की शिकायतें संवैधानिक तरीके से सरकार तक और सरकार का जो उत्तर हो वह जनता तक पहुंचाए।

श्री ह्यूम ने अपने पत्र में यह भी लिखा कि जिनके हाथ में तलवार की ताकत है [illegible] के साथ कोई [illegible] नहीं है। [illegible]

[illegible]

अतएव 1882 में श्री ह्यूम ने इण्डियन नेशनल यूनियन की एक संस्था गठित की और यह ही 1885 में इण्डियन नेशनल कांग्रेस के नाम से राजनीतिक मैदान में उतरी।

इस सम्बन्ध में यह बात भी उल्लेखनीय है कि जब श्री ह्यूम ने इण्डियन नेशनल यूनियन कायम की उनका उसे राजनीतिक रंग देने का कोई इरादा नहीं था लेकिन कुछ समय बाद जब वह तत्कालीन वायसराय लार्ड डफरिन से मिले और उन्हें बताया कि उन्होंने इण्डियन नेशनल यूनियन क्यों कायम की है तो लार्ड डफरिन ने उन्हें सुझाव दिया कि वह इसका नाम इण्डियन नेशनल कांग्रेस रख दें इसे कुछ राजनीतिक रंग भी दें ताकि इस देश की जनता को अपनी शिकायतें सरकार तक पहुंचाने का कोई जरिया मिल सके और अन्दर ही अन्दर जो बेचैनी पैदा हो रही है वह दूर हो सके।

इस तरह आज की इण्डियन कांग्रेस को कायम करने वाले दो अंग्रेज थे यदि उन्हें उस समय पता होता कि यह कांग्रेस किसी दिन अंग्रेज के हाथ से सत्ता छीन लेगी तो वह इसका आधार ही न रखते।

1883 में श्याम जी इंग्लैंड से अपनी शिक्षा समाप्त करने और बैरिस्टर बनने के बाद अपने देश लौट आए तो उस समय कांग्रेस का दौर शुरू हो चुका था। इस लिए उनके सामने यह सवाल भी आया कि वह उस में शामिल हों या न हों। उस समय भी आम [illegible] की बातें हो रही थीं। [illegible] कृष्ण वर्मा ने [illegible] कानून [illegible] भी [illegible] पर भी [illegible] श्याम जी [illegible] के अन्दर [illegible] था कि स्वामी जी [illegible] आये थे। [illegible] उस समय तक देश से बाहर न गए थे। श्री तिलक के सामने भी यह प्रश्न आया कि वह इसके बाद क्या करें। उस समय की राजनीति उनके लिए भी आकर्षण रखती थी लेकिन उन्होंने अपना सारा ध्यान शिक्षा की ओर परिवर्तित कर दिया। उन्होंने शिक्षा के प्रचार के लिए एक संस्था गठित की और साथ ही मराठा और केसरी साप्ताहिक भी [illegible] कर दिए। इस तरह श्याम जी सोच ही रहे थे कि क्या करें कि श्री बालगंगाधर तिलक ने पहला कदम उठा लिया।

जब श्यामजी वापस आए उस समय उनके गुरु महर्षि दयानन्द इस संसार से विदा ले चुके थे। [illegible] लेने से पहले उन्होंने श्री श्यामजी को परोपकारी सभा का ट्रस्टी बना दिया था। वह सभा महर्षि की उत्तराधिकारी थी। उनकी छोड़ी हुई तमाम चीजों की जिनमें उनकी लिखी किताबें भी शामिल थीं परोपकारी सभा इनकी मालिक बन गई। श्यामजी स्वामी जी की विचारधारा का प्रचार करते रहे लेकिन उन्होंने स्वामीजी द्वारा स्थापित आर्यसमाज में कोई रुचि ही नहीं ली जो स्वामी जी चाहते थे।

जनवरी 1883 में देश वापस आने पर श्याम जी ने बम्बई हाई कोर्ट में अपना नाम वकील के रूप में दर्ज करवा लिया। उन्होंने सोचा वकालत करके रुपया भी कमा लें और नाम भी पैदा कर लें लेकिन किसी कारण से वह वकालत करने के लिए तैयार न हुए। वह अपने लिए किसी काम की तलाश में थे इस लिए वह अपने एक पुराने सरपरस्त और रियासत रतलाम के दीवान [illegible] के पास पहुंच गए। [illegible] हो गए थे और [illegible] छोड़ना चाहते थे। वह श्यामजी को रतलाम रियासत के राजा के पास ले गए। वह श्यामजी को मिलकर बहुत खुश हुए और उन्होंने

(शेष पृष्ठ [illegible])

# मानव जीवन का मूल्य-जननी

ले—डा सरस्वती कुमारी पण्डित बी ए एम एड पी एच डी व्यायामाचार्या मानद शिक्षण सलाहकार आर्य कन्या महाविद्यालय बडोदरा (गुजरात)

(पिछले से आगे)

तेजोऽसि तेजोमयि धेहि। वीर्यमसि वीर्यमयि धेहि।
बलमसि बल मयिधेहि। ओजोऽसि ओजोमयि धेहि
मन्युरसि मन्यु मयि धेहि। सहोऽसि सहो मयि धेहि यजु 19 9

अर्थात प्रभु तू तेज है मेरे अन्दर तेज स्थापित कर। तू वीर्य जीवनी शक्ति है मेरे अन्दर जीवनी शक्ति स्थापित कर तू बल है मेरे अन्दर बल की स्थापना कर। तू ओज है मेरे अन्दर ओज स्थापित कर। तू पवित्र क्रोध है मेरे अन्दर भी इसे स्थापित कर। तू सहनशक्ति है मेरे अन्दर भी सहनशक्ति की स्थापना कर।

कितनी सुन्दर प्रार्थना है। जो कुछ हमारे अन्दर प्रकृति से भरा हुआ है उसी को हम ईश्वर से मांगते हैं। मांगे बिना तो मां भी नही देती। सच्चे दिल से मांगने पर चीज मिल ही जाती है हमारे अन्दर इतनी शक्ति होने पर भी हम उसे स्वयं नही पहचान पाते उसका मूल्य नही जानते और बाहर खोज करते हैं बल तेज जीवन शक्ति और पवित्रता पाने के लिए औषधियो का सेवन करते हैं आरम्भ से ही शरीर की शक्तियो का बढोकरण किया जाए—नियमित जीवन बनाया जाए तो हम यह सब कुछ पाकर व्यक्तित्व को अनुपम बना सकते हैं प्रात काल उठना शौचादि से निवृत होकर दातन का उपयोग करना शीतल जल से स्नान और आसन—प्राणायाम फफडो को मजबूत बनाना शुद्ध वायु मे भ्रमण करना पौष्टिक आहार का सेवन करना सन्ध्या वन्दन करके मन को स्वच्छ करना ईश्वर को स्मरण कर स्वाध्याय करना और कार्य मे जुट जाना हमारा नियक्रम होना चाहिए।

ऐसा करने पर [illegible] तेजस्वी बनेगा। [illegible] सम्पादक तथा प्र...

भीत रहता है। उसे मृत्यु से भय लगता आस पास के लोगों से भय लगता है और वह भयताग्नि से पीडित होकर दुखी रहता है। मन की ऐसी पीडा शरीर का रोग बन जाती है और जीवन का आनन्द लुप्त हो जाता? इससे बचने के लिए अथर्ववेद के मन्त्र को देख।

अभय मित्रादभयममित्रादभय ज्ञातादभय परो य ॥

अभय नक्तमभय दिवा न सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु अथव 19 15 6

अर्थात हम मित्रो से अभय हो शत्रुओ से अभय हो जाने हुए परिचितो से अभय हो और जो आगे आने वाले हैं अपरिचित हैं उनसे भी अभय हों रात्रि और दिन मे हम निर्भय रहें। समस्त दिशाएं हमारे मित्र रूप मे हो

वेद के इस महान मन्त्र को हम अपने सामान्य जीवन के अन्दर प्रतिदिन के कार्यों मे किस तरह उपयोग मे लें यह [illegible] बलवान तथा निर्बल को दबाता है इसलिए हम भयभीत रहते हैं। शरीर की निर्बलता से अधिक मन की निर्बलता मनुष्य को निष्क्रिय बना देता है। महात्मा गान्धी जी का शरीर दुबला था किन्तु मनोबल इतना बलवान था कि वे कभी किसी से डरे नही। इसलिए मन की निर्बलता दूर करने के लिए उपासना करनी चाहिए।

प्रत्येक को आगे बढने का मोह रहता है—उन्नति करने की अभिलाषा और मनोवांछित प्राप्त प्राप्त करने की लालसा जीवन को अदम्य उत्साह से भर देती है ईश्वर सृष्टि का स्वामी बनकर नित नए आविष्कार करने की उत्कट अभिलाषा असम्भव को सम्भव बना देती है।

आज दुनिया इसी मार्ग पर अग्रसर हो रही है। अनन्य सुख-साधनों का उत्पादन कर मनुष्य अहंकार से चारों ओर देखकर विजय के उन्माद में मस्त हो जाता है। किन्तु जिस दिन बिजली बन्द हो जाती है पंखा बन्द हो जाता है तब वह पसीने से परेशान होकर बावला हो जाता है। उसे लगता वह मर जाएगा। उसका क्रोध अकारण चारों ओर अशान्ति भर देता है। इस समय वातावरण में कहीं से समीर का शीत झोंका लहरा उठता है तो वह पीडित व्यक्ति सुख चैन की सांस लेकर कहता है वाह ईश्वर तेरी हवा की बलिहारी है। तू नही होता तो मर गए होते।

उस समय उसे ईश्वर की रचना की महत्ता दिखाई देती है। वह गरीबों को याद करता है कि वे इसी पृथ्वी पर जी रहे हैं। वह भूल गया था कि ईश्वर का भण्डार अटूट है। उस पर किसी का नियन्त्रण नही है। उसकी कृपा असीम है कहीं रोक-टोक नहीं है। सृष्टि के आरम्भ से लेकर आज तक ईश्वर का बनाया यन्त्र नही बिगडा इसलिए हमे समझना चाहिए कि ऐसे ईश्वर की वन्दना उपासना करना प्रत्येक का धर्म है। श्रम पूर्वक जीवन जीने के लिए हम गीता के इस श्लोक को देखें—

1 अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्र करुण एव च।
निर्ममो निरहङ्कार समदुखसुख क्षमी
2 सन्तुष्ट सतत योगी यतात्मा दृढ निश्चय
मय्यर्पितमनो बुद्धिर्यो मद्भक्त स मे प्रिय। गीता 12 13 14

अर्थात—1 जो किसी से द्वेष नही करता जो प्राणिमात्र का मित्र है दयाशील है जो ममता और अहंकार से रहित है जिसके लिए सुख और दुख दोनो समान हैं जो क्षमावान् है।

3 जो सदा सन्तुष्ट स्थिरचित्त संयमी तथा दृढ निश्चयी है और जिसने मन और बुद्धि मुझे अर्पण कर दिए हैं ऐसा मेरा भक्त मुझे प्रिय है।

इन श्लोको द्वारा भगवान् श्री कृष्ण कहते हैं द्वेष मत करो मित्र भाव रखो उन्हे वह व्यक्ति प्रिय है जिसने मन और बुद्धि उनको अर्पण कर दिए हो। इसका तात्पर्य यही है कि सत्य में श्रद्धा और कर्म मे भक्ति हो। बुद्धिवाद को छोडकर जीवन में स्थिरता लाने के लिए सिद्धान्तो में श्रद्धा और कार्य मे भक्तिभाव होना जरूरी है। यही बात इस मन्त्र में पाई जाती है जब गुरु अपने शिष्य से कहते हैं—

ओम मम व्रते ते हृदयं दधामि मम चित्तमनुचित्तं तेऽस्तु।
मम वाचमेकमना जुषस्व बृहस्पति ष्ट्वा नियुनक्तु मह्यम्।

[illegible] 3।

अर्थात् हे बालक! तेरे हृदय को मैं अपने अधीन करता हूं। तेरा चित्त मेरे चित्त के अनुकूल सदा रहे और तू मेरी वाणी को एकाग्र मन हो प्रीति से सुनकर उसके अर्थ पर ध्यान दिया कर।

इस तरह का उपदेश जीवन को अच्छा बनाने वाले कर्मों को करने के लिए कहता है जिसे हम संस्कार कहते हैं। महर्षि स्वामी दयानन्द जी ने मानव जाति के कल्याण के लिए वेदो के आधार पर वर्णाश्रम धर्म सोलह संस्कार और पञ्चमहायज्ञ का महत्व बताया था।

संसार की विपदाएं आती रहेंगी। उनको बुद्धि पूर्वक सुलझाने के लिए कटिबद्ध होना होगा। यजुर्वेद के इस आदेश को—

'मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे'

अर्थात् हम सब परस्पर एक दूसरे को मित्र की दृष्टि से देखें। यह बात हमारे जीवन का लक्ष्य है और उसकी प्राप्ति जीवन का मूल्य है।

ईर्ष्या और द्वेष विनाश का कारण है मन को विजित करके हमें सकल्प भाव धारण करना चाहिए। श्रेष्ठ पुरुषो के गुणों को ग्रहण कर उनके जैसा बनने का सकल्प करना चाहिए। जीवन को सुचारु रूप से चलाने के लिए वैदिक धर्म के मर्म को समझना चाहिए। यह तभी हो सकता है जब हम प्रतिदिन सन्ध्या उपासना कर शिव सकल्प करेंगे और श्रम का उपयोग समतापूर्वक करेंगे—तब शिव कर्म के बन्धन बन्धन नहीं लगेंगे। कार्य की सफलता और असफलता हमे सकल्प से चलित नहीं करेगी। मन का मानसिक भाव हमे सन्तोषी बनाता रहेगा और तब यजुर्वेद के इस तत्त्वपूर्ण मन्त्र को स्मरण कर हम शान्ति अनुभव कर सकेंगे—

यस्मिन् सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभूद्विजानत
तत्र को मोह क शोक एकत्वमनुपश्यत। यजु 40 7।

अर्थात जिस अवस्था में एकता का दर्शन करने वाले पुरुष को सब प्राणियो मे आत्मतत्व ही प्रतीत होने लगता है उस अवस्था में उसे मोह और शोक नही रहता। नारी का जीवन इसी वेद के पीछे गरिमामय बन जाता है। माता के रूप मे बालक को पत्नी के रूप मे पति को और बहन के रूप मे भाई को वह सम्भालती है सुख देती है और हर्षित होती है देने में सुख है इस उक्त को चरितार्थ करना बडा कठिन है परन्तु जिस दिन अकाल ने सबको दुखी कर दिया था दिन भर के स्वामी भूखे थे वो कुटी वापस ले आए। वह और उनके तन उनके भोजनों को खाने के लिए उनके। छोटे मुन्ने ने हाथ मार कर कुछ चना मुट्ठी में भर लिए तब मां ने उसको चपत जड दिया। मुन्ना की मुट्ठी खुल

(शेष पृष्ठ 8 पर)

सम्पादकीय—

# गुरुकुल काँगड़ी का वार्षिकोत्सव

गुरुकुल कांगड़ी का वार्षिकोत्सव सदा ही आर्य जनता के लिए एक विशेष आकर्षण का विषय रहा है। जब से यह गुरुकुल प्रारम्भ हुआ है, इसके वार्षिकोत्सव पर आर्य जनता विशेषकर पंजाब की आर्य जनता हजारो की संख्या में वहां पहुंचती रही है। पिछले कुछ समय से और कई कारणो से लोगो का उत्साह कुछ कम हो गया था। उसका एक कारण यह भी था कि वहां कुछ ऐसी परिस्थितियां बन गई थी, जिनके कारण आर्य जनता वहां जाना नहीं चाहती थी। परन्तु निराशा और अव्यवस्था के सब बादल अब छट चुके हैं और गुरुकुल का वातावरण अब बहुत स्वच्छ और शान्तमय है। पिछले वर्ष राष्ट्रपति इसके वार्षिक उत्सव पर आए थे इस बार हम किसी राजकीय व्यक्ति को नहीं बुला रहे। दीक्षान्त भाषण श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी महाराज देंगे और उनके अतिरिक्त और कई बड़े 2 विद्वान और सन्यासी वहां पहुंचेंगे। गुरुकुल के विद्यार्थी भी अपना कार्यक्रम प्रस्तुत करेंगे। इसलिए मेरी पंजाब की आर्य जनता से यह प्रार्थना है कि वह अधिक से अधिक संख्या मे वहां पहुंचे। उन दिनो वैसे भी हरिद्वार मे बहुत रौनक होती है। बैसाखी के दिन सारे देश से लोग वहां पहुंचते हैं। मैं यह भी चाहूंगा कि यदि सम्भव हो सके तो प्रत्येक नगर से कम से कम एक एक बस यात्रियो की वहां जरूर पहुंचे। पूरी बस के द्वारा जाने से अधिक व्यय नहीं होगा। वहां बाहर से आए अतिथियो के ठहरने का पूरा प्रबन्ध किया जा रहा है। हमारे दूसरे धर्मावलम्बी भाई अपने तीर्थ स्थानो पर जाते हैं। गुरुकुल आर्य समाज के लिए भी एक तीर्थ स्थान है। श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज और उनके सहयोगियों श्री आचार्य रामदेव जी, प विश्वम्भरनाथ जी प चमूपति जी और दूसरे आर्य समाजियो ने इस संस्था को बनाने के लिए अपना सब कुछ दे दिया था। आज भी जिनके हाथ मे इसका प्रबन्ध है वे भी सब पंजाब के ही आर्यसमाजी हैं। आर्य जनता को यह सुनकर भी हार्दिक प्रसन्नता होगी कि श्री स्वामी श्रद्धानन्दजी महाराज के दोहता श्री प सत्यकामजी विद्यालंकार गुरुकुल कांगड़ी के आचार्य नियुक्त किए गए हैं। उन्होने वेदो पर कई पुस्तकें लिखी हैं। वेदो का अंग्रेजी मे भी अनुवाद किया है और वेदो को सस्वर गाने की कैसट भी बनवाए हैं। उनके गुरुकुल मे आने से आशा की एक नई किरण दिखाई देने लगी है। परन्तु वह भी उसी स्थिति मे सफल हो सकते हैं यदि आर्य जनता उन्हे प्रोत्साहन दें और अपना सहयोग दें। वे गुरुकुल के बच्चो को अपने ढग से ऐसी शिक्षा देने का प्रयत्न कर रहे हैं, जिसके द्वारा वे आगे चलकर अपने देश धर्म और समाज की सेवा कर सकें। इसलिए जो भाई और बहिनें इस बार गुरुकुल आएंगी, वे वहां अपनी इस प्यारी संस्था का एक नया रूप देखेंगी। इसलिए मेरी सबसे यह प्रार्थना है कि वे अधिक से अधिक संख्या मे गुरुकुल जाएं और इसके वार्षिकोत्सव को सफल बनाने के लिए जो कुछ उनसे हो सकता है करने का कष्ट करें।

—वीरेन्द्र

## आर्य बन्धु इस ओर भी ध्यान दें

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के नव भवन का निर्माण आरम्भ है। पहले इसकी एक ओर की 12 दुकानें बनकर तैयार हो चुकी हैं। अब अतिथि गृह और यज्ञशाला आरम्भ है। तीन कमरे अतिथि गृह के बनकर तैयार हो रहे हैं। छतें पड़ चुकी हैं पलस्तर आदि हो रहा है। लकड़ी तथा फर्श का कार्य ही शेष है। यज्ञशाला की छत पड़ने वाली है और उसका ऊपर का गुम्बद बनने वाला है। यह कार्य चलता रहे रुके न? इसलिए इसके लिए धन की अति आवश्यकता है। कुछ आर्य बन्धुओ और आर्य समाजो ने सभा के इस कार्य मे कुछ सहायता की है परन्तु इस कार्य के लिए कई लाख रुपया चाहिए। आर्य बन्धु अगर सभा की निरन्तर सहायता करते रहें तो यह काम हो सकता है। इसलिए मेरी सभी आर्य बन्धुओ व आर्य समाजो और शिक्षण संस्थाओ के अधिकारियो से प्रार्थना है कि वह श्रद्धा पूर्वक इस कार्य के लिए धन निकालें और सभा को शीघ्र भेजें दानी महानुभाव इस ओर विशेष ध्यान दें। जिन आर्य समाजो ने इस भवन निर्माण यज्ञ मे अभी तक अपनी आहुति नहीं डाली, वह शीघ्र अपनी आहुति डालें ताकि यह यज्ञ चलता रहे।

—रामचन्द्र जावेद, महामन्त्री

# आर्य मर्यादा के सभी पाठकों को नव-वर्ष की बधाई

हम आर्य मर्यादा के सभी पाठको को नव-सम्वत् 2041 की बधाई देते हैं और परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि यह वर्ष सभी पाठको के लिए मंगलकारी हो।

भारतीय नव वर्ष चैत्र शुक्ल एकम् को प्रारम्भ होता है, जिसे नव-सम्वत कहा जाता है। इस बार भी यह नव सम्वत् चैत्र सुदी प्रतिपदा तदनुसार 2 अप्रैल सोमवार को मनाया जा रहा है। परन्तु अंग्रेजो का नया वर्ष प्रथम जनवरी से मनाया जाता है किन्तु हमारी सरकार का वित्त वर्ष प्रथम अप्रैल से और कृषि और राजस्व का वर्ष जुलाई से माना जाता है। ज्योतिष (सूर्य और चन्द्र की गति) से इसका कोई सम्बन्ध नहीं।

अंग्रेजी नव वर्ष प्रथम जनवरी के अनुसार न तो हमारा वित्तीय वर्ष शुरू होता है न ही हमारे विद्यालयो और महाविद्यालयो मे उस दिन कक्षाएं शुरू होती हैं। न ही हम उसे अपना व्यापारिक वर्ष मनाते हैं और न ही उसके अनुसार व्यापारिक खाता शुरू करते हैं। न ही पारस्परिक एव सांस्कृतिक दृष्टि से उसे हम अपने परिवारो मे मनाते हैं और न अंग्रेजो के चलाए गए, नये वर्ष के दिन हम अपने धर्म स्थलो पर विशेष पूजा पाठ आदि का आयोजन करते हैं। उस दिन का उत्सवादि हमारी मानसिक गुलामी ही है। अत हमें सदैव अपना नव-सम्वत् ही मनाना चाहिए। यह हमारे राष्ट्रीय और धार्मिक गौरव का भी प्रश्न है। विदेशी शासन गया, उनके इस गुलामी के बोझ को हम कब तक ढोयेंगे? अंग्रेजी वर्ष हमारे जीवन से मेल नहीं खाता। शिक्षा वर्ष और सरकार का आर्थिक वर्ष भी जनवरी से शुरू नहीं होता है। इसलिए गुलामी के प्रतीक अंग्रेजी नव वर्ष के स्थान पर भारतीय नव वर्ष ही मनाना श्रेयस्कर है।

चैत्र शुक्ल के पखवाड़े से निम्न महापुरुषो विशेष सम्बन्ध है—

1 सम्राट विक्रमादित्य जी जिन्होंने क्रूर शकों पर विजय प्राप्त की।

2, मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम।

3 आर्य समाज के संस्थापक वेदो के पुनरुद्धारक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती।

4 राष्ट्रीय स्वय सेवक संघ के संस्थापक व संचालक डा हेडगेवार।

5 सत्य और अहिंसा के अग्रदूत भगवान महावीर।

6 राम भक्त वीर हनुमान।

7 द्वितीय पातशाही श्री गुरु अंगददेव जी।

8 नामधारी कूका आन्दोलन के प्रवर्तक सतगुरु रामसिंह जी।

0 दशम गुरु श्री गोविन्दसिंह जी महाराज।

10 आर्य समाज स्थापना दिवस।

11 ज्ञानदायिनी सरस्वती।

12 झांसी की रानी लक्ष्मीबाई।

13 1919 मे बैसाखी के दिवस पर जलियां वाला बाग मे गोली काण्ड के मुखिया क्रूर ओ-डायर को ठिकाने लगाने वाले शहीद ऊधमसिंह।

और भी अनेक महान विभूतियो से यह नव सम्वत पखवाड़ा सम्बन्धित ही नहीं विभूषित और गौरवान्वित है।

आइए इस वर्ष प्रतिपदा चैत्र शुक्ल एकम सम्वत् 2041 को उल्लास-पूर्वक मनाएं और नव वर्ष की प्रथम प्रभात वेला मे हम अपने पूर्वजो का स्मरण कर विश्व के प्राणि मात्र के प्रति शुभ हार्दिक मंगल कामना करें।

हमें उन सभी लोगो को बताना चाहिए जो प्रथम जनवरी को नव वर्ष मानते हैं कि इस दिन हमारा भारतवासियो का नव वर्ष आरम्भ नहीं होता। यह तो ईसाईयो अर्थात् अंग्रेजो से सम्बन्धित है। भारतीय नव वर्ष (नव सम्वत) चैत्र सुदी प्रतिपदा से आरम्भ होता है और यह बात सभी को बताएं यह दिन दो अप्रैल 1984 सोमवार को है। इस दिन को बड़े उत्साह से मनाएं।

# डाक्टर वेदीराम जी शर्मा का पत्र—श्री वीरेन्द्र के नाम

**पजाब के विख्यात विद्वान् डी. ए वी. कालेज जालन्धर के भूतपूर्व हिन्दी के प्राचार्य व आर्य समाज के प्रसिद्ध कार्यकर्ता श्री डाक्टर वेदीराम जी आज कल नैरोबी मे वैदिक धर्म के प्रचारार्थ गए हुए हैं। वहा से उन्होने आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी को जो पत्र लिखा है वह आर्य जनता की जानकारी के लिए प्रकाशित किया जा रहा है। श्री वीरेन्द्र ने उन्हे पूर्वीय अफ्रीका किसुमु मे प्रचारार्थ भेजा था। वहा से वह नैरोबी चले गए हैं। वहा से उन्होने यह पत्र लिखा है।**

**—सम्पादक**

आदरणीय भाई श्री वीर जी

सादर नमस्ते !

आपका दिनाक 28-2-84 का कृपा पत्र आज ही प्राप्त हुआ। हृदय गद्‌गद् हो उठा। आपने अपने व्यस्त जीवन से कुछ क्षण निकाल कर मुझे स्मरण किया इस के लिए हार्दिक रूप से कृतज्ञ हू। आशा है पूर्व प्रेषित मेरा पत्र भी मिल गया होगा। मैंने लिखा है कि मैं नैरोबी आ गया हू। यहा आकर मैंने सर्व प्रथम नैरोबी यूनिवर्सिटी मे अध्ययनरत युवको का एक सगठन (आर्यन यूथ फोरम) के नाम से पुनर्गठित किया और अफ्रीका के सर्वोच्च पहाड पर अभियान कर वैदिक धर्म का 'ओ३म ध्वज गाड कर अफ्रीका निवासी सभी लोगो को सुखद आश्चर्य मे डाल दिया। इस अभियान मे 10 युवक और चार युवतिया थी। यहा के सभी समाचार पत्रो मे यह सूचना प्रकाशित हुई तथा आर्य समाज मन्दिर मे इन युवक युवतियो का भारी स्वागत हुआ।। इन्हे यज्ञ करके आशीर्वाद के साथ ही भेजा गया था अब अप्रैल की छुट्टियो मे छ दिन का एक आध्यात्मिक शिविर नैरोबी से लगभग 400 मील दूर किटाली के पर्वत प्रदेश पर लगाया जा रहा है। इस शिविर मे लगभग 100 युवक युवतिया भाग ले रहे हैं। आर्य समाज और आर्य स्त्री समाज के वरिष्ठ सदस्या की भी एक टोली इनके मार्ग दर्शन तथा प्रबन्ध मे सहायता के लिए जाएगी। यह शिविर मेरे द्वारा ही सचालित होगा और इसमें खेलो, व्यायाम के साथ और Seminars और discussions के लिए विषय निर्धारित कर दिए गए हैं इसमे तीन विभाग किए गए हैं। 10 से 17 वर्ष के बच्चो का वर्ग, 18 से 25 वर्ष के युवको का वर्ग और 25 से ऊपर के युवको का वर्ग। उसी के अनुसार खेल, व्यायाम और Seminars के विषय दिए गए हैं। युवक स्वयं विषय तैयार करेंगे और मैं प्रत्येक सेमिनार को close करके अपनी धारणाए दूगा।

आपकी सद्भावनाओ और प्रेरणाओ का ही परिणाम है कि मैं इतनी दूर आकर देव दयानन्द के कार्य मे लीन हो सका हू। यद्यपि नैरोबी समाज मे भयानक मतभेद और परस्पर झगडे हैं किन्तु मुझे सभी चाहते हैं। मैं सभी से समान व्यवहार रखता हू। अपने कार्य से ही सम्बन्ध रखकर चल रहा हू। यहा मुझे वेतन भी अच्छा मिला है किसुमू में 2000 से अधिक देने की सामर्थ्य नही थी। नैरोबी समाज ने मुझे 5060 पर नियुक्त किया है साथ ही परिवार का हवाई जहाज का किराया भी देना स्वीकार किया है। यहा दो वर्ष के स्थान पर मुझे तीन वर्ष का परमिट मिल गया है। अब मैं इस परमिट से फरवरी 1987 तक अफ्रीका मे कार्य कर सकूगा अगली टर्म की सम्भावना हो सकती है। इसके लिए मैं आपका सदैव ऋणी रहूगा। क्योकि रिटायरमेंट के बाद इतना अच्छा प्रोजैक्ट भारत मे मिलना कठिन था। मकान, बिजली, पानी और कार सभी मिलाकर 12 हजार से ऊपर ही पडता है। समाज ने मुझे मोटर कार ड्राईवर के साथ भी दी है। मैं इसका प्रयोग प्रचारार्थ खूब करता हू। प्राय स्कूल और कालेज यूनिवर्सिटी तथा Black Natives की सस्थाओ मे ही अधिक जाता हू। भाषा अग्रेजी का ही प्रयोग होता है। ये सभी लोग स्वाहिली के साथ अग्रेजी खूब अच्छी तरह जानते हैं लेकिन स्वाहिली भी बोल लेता हू।

यहा (नैरोबी) मे आकर एक काम मैंने और किया है कि यहा की सरकार ने धार्मिक और नैतिक हिदायतें सारे देश मे प्रथम श्रेणी से यूनिवर्सिटी स्तर तक अनिवार्य कर दी हैं। मैंने देखा कि इस्लाम और इसाइयो ने अपना स्लेबस और पाठ्य पुस्तकें सरकार को दे दी तथा उन्होने स्वीकार भी कर ली। हिन्दुओं के धर्म को पढाना भी सरकार ने सिद्धान्त रूप से स्वीकार कर लिया था। किन्तु स्लेबस बनाकर कौन दे? हिन्दुओं मे वैदिक धर्म सनातन धर्म, जैन धर्म, बौद्ध धर्म, सिख सभी लोग चुप बैठे थे। मैं जिस भी कालेज या स्कूल मे गया वहाँ मुसलमान मौलवी और पादरी (ईसाई) ही मिले मैं भी अपना परिचय देता और कहता हू कि मैं आर्य समाज नैरोबी मे वैदिक धर्म का मिशनरी तथा मुख्य प्रचारक हू। किन्तु इससे कुछ बनता नहीं था। मेरी बात कोई सुनता नही था। मैंने आर्य समाज मे शोर मचाया। ये लोग मेरे साथ एजूकेशन विभाग मे नए मिनिस्टर से मिले शिक्षा विभाग के डाइरैक्टर से मिले और अब उन्होने कहा है कि आप अपना स्लेबस एक महीने के अन्दर दे दें तो वह भी लगा दिया जाएगा। इसलिए आज कल सभी हिन्दुओ का एक कॉमन स्लेबस तैयार करने में व्यस्त हू और आपके आशीर्वाद से शीघ्र ही तैयार हो जाएगा। लेकिन फिर समस्या पढाने वाले अध्यापको की और पुस्तको की आएगी। मुसलमानों ने सऊदी अरब से 200 अध्यापक ट्रेंड मगा लिए हैं और ईसाईयो के पास अध्यापक सदा तैयार रहते हैं। उनके कुरान और बाईबिल दो ही धर्म ग्रन्थ हैं जिससे सभी पढाया जा सकता है। किन्तु हमारे लिए पुस्तको की भी समस्या है। वह भी अब तैयार करनी होगी और अग्रेजी और स्वाहिली दोनो भाषाओ मे तैयार करनी होगी। इसके बाद अप्रैल मे इन पुस्तको को पढाने के लिए हिन्दुओ के स्कूलो से 20 अध्यापको को भी इस स्लेबस की पुस्तकें पढाने के लिए ट्रेंड करना आवश्यक है। आर्य समाज मुझ हर प्रकार का सहयोग देने को तैयार है। समाज के पास धन की भी कमी नहीं है यह समाज ससार की सभी आर्य समाजों में सर्वाधिक धनवान् समाज है। कार्य कर रहा हू। कुछ कठिनाईया भी हैं। विशेषत भोजन की समस्या है। मैं तो प्याज भी नहीं खाता। इसलिए एक नौकर रखा है, वह ब्लैक नेटिव है। कच्चा-पक्का ही बना देता है। दूध और डबल रोटी पर ही चल रहा हू। अस्तु।

आपने पजाब की समस्या का व्यापक रूप प्रस्तुत किया है। यहा कुछ भी पता नहीं होता। इण्डियन हाई कमीशन अभी नया आया है। वह गुजराती है। मैं उससे मिलता रहता हू। लेकिन वहा से भी बहुत कम मालूम होता है। पजाब के लगभग सभी समाचार पत्रो के मगाने के लिए उन्हे लिखा है। उन्होने ट्रिब्यून का आर्डर तो दे दिया है। और प्रताप आदि भी आने लगेंगे। तभी कुछ सूचना प्राप्त हो सकेगी।

मैंने आर्य समाज नैरोबी के सदस्यो से पजाब समस्या पर बातचीत की है। वे सभी कहते हैं कि आप बताइए, वे क्या सहायता कर सकते हैं? आपका पत्र आने पर वे सद्भावना और सहानुभूति पूर्वक विचार करने को तैयार हैं। दक्षिणी अफ्रीका से भी मैं कुछ सम्पर्क स्थापित कर सकता हू। आपका आदेश आने पर ही विस्तार से बात करूगा।

आप अपनी रक्षा का ध्यान रखिए। क्योकि आप पर ही सारा पजाब आश्रित है।

मेरे योग्य सेवा से सूचित कीजिए।

धन्यवाद सहित सादर

आपका भाई वेदीराम शर्मा

पो बाक्स 40243 नैरोबी, कीनिया

पूर्वी अफ्रीका।

## लुधियाना में पारिवारिक सत्संग

स्त्री आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार (साबुन बाजार) मे 14 3-84 को मासिक पारिवारिक सत्सग श्रीमती विनोद जी सोई के गृह पर सती सूखा स्ट्रीट मे हुआ। यज्ञ श्रीमती कमला जी आर्या ने सम्पन्न कराया श्रीमती सुशीला जी शर्मा, श्रीमती कमला जी उप्पल ने उपदेशात्मक भजन सुनाए, श्रीमती भगवती जी भल्ला ने शान्ति पाठ के मन्त्र पर सुन्दरता से प्रकाश डाला। पास-पडोस की बहिनो की उपस्थिति अच्छी रही। सभी बहिनो ने इस कार्यक्रम की सराहना की तथा अपने गृह पर सत्संग कराने का निमन्त्रण दिया। सभी आई हुई बहिनो का चाय मिठाई आदि से सत्कार किया गया शान्ति पाठ के बाद कार्यक्रम समाप्त हुआ।

2 इन सर्दियो में स्त्री आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार ने बच्चो को 22 गर्म स्वैटर तथा दस सूट बहिनों को दिए।

—मन्त्री निर्मला बेरी

## महात्मा वेद भिक्षुजी का जन्म दिवस

दिल्ली—14 मार्च को दयानन्द सस्थान और हिन्दू रक्षा समिति के सस्थापक स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षु जी का 55वा जन्म दिवस था। उनके जीवन काल मे हम उनका जन्म दिन चुपचाप ही मना लिया करते थे। क्योकि वे सदा ही अपने काम मे व्यस्त रहते थे। इस बार उनके प्रशसक और परिचित मित्र इब्राहीमपुर स्थित वेद मन्दिर में एकत्र हुए और उन्होने अपने अपने ढग से महात्मा जी को स्मरण किया।

प्रात काल हवन यज्ञ और बाद में स्वामी सत्यप्रकाश जी का प्रवचन हुआ यह कार्यक्रम साढे ग्यारह बजे तक चला, सार्वजनिक स्मृति सभा हिन्दू रक्षा समिति की ओर से आयोजन का समय दोपहर बाद दो बजे था। बीच के समय में प्रीति भोज और गोष्ठी के कार्यक्रम चलते रहे हैं।

# आर्य समाज क्या है ?

ले.—श्री यशपाल आर्य बन्धु, आर्य निवास मुरादाबाद

आर्य समाज क्या है ? यह जानने के लिए प्रथम उन शब्दों तथा उनके अर्थों को जान लेना आवश्यक है कि जिनके मेल से शब्द आर्य समाज संस्कृत भाषा के दो शब्दो आर्य और 'समाज' के योग से बना है। मोटे तौर पर आर्य का अर्थ श्रेष्ठ पुरुष तथा समाज का अर्थ समूह है। इस प्रकार आर्य समाज श्रेष्ठ पुरुषों के समूह का नाम हुआ। किन्तु यदि तात्विक विवेचन पूर्वक देखा जाए तो आर्य समाज केवल श्रेष्ठ पुरुषों का समूह ही नहीं, इसके अतिरिक्त भी बहुत कुछ और भी है। क्योंकि न तो शब्द आर्य ही केवल श्रेष्ठ पुरुष तक ही सीमित है और न समाज ही मात्र समूह तक। फिर ये क्या है ? यही समझाना है आइए इस पर थोड़ा विचार करें।

कोषकारो ने इस आर्य शब्द के अनेक अर्थ बताए हैं शब्द कल्पद्रुम के अनुसार आर्य शब्द के अर्थ मान्य उदार चरित शान्त चित्त न्याय पथावलम्बी प्रकृताचार शील सतत कर्तव्य कर्मानुष्ठाता आदि है और अमर कोष के अनुसार जो आकृति-प्रकृति, सभ्यता-शिष्टता, धर्म-कर्म ज्ञान-विज्ञान आचार-विचार तथा शील स्वभाव में सर्वश्रेष्ठ हो उसे आर्य कहते हैं। शास्त्रोक्त उत्तम मार्ग पर चलने वाला पूज्य तथा श्रेष्ठ—यह अर्थ शब्द रत्नावली नामक संस्कृत कोष मे बतलाए हैं। एक अन्य कोषकार के अनुसार आर्य वह है कि जिसके विश्वास और आचरण मे परस्पर विरोध न हो। निरुक्तकार के अनुसार आर्य का अर्थ ईश्वर पुत्र है। तात्पर्य यह कि ईश्वर के आज्ञाकारी सच्चे पुत्र को आर्य कहा गया है। एक पिता के अनेक पुत्र होते हुए भी उसकी आज्ञा पर चलने वाला पुत्र ही सच्चा पुत्र अथवा विशेष स्नेहपात्र पुत्र माना जाता है। आर्य ऐसा ही ईश्वर पुत्र है।

वेद व्रतशील को आर्य की संज्ञा देते हैं। आर्या व्रता विसृजन्तो अधि क्षमि (ऋ 10-65-11) के अनुसार आर्य वे कहलाते हैं जो इस पृथ्वी पर सत्य अहिंसा परोपकार पवित्रता आदि उत्तम व्रतो को विशेष रूप से धारण करते हैं। वेद भाष्यकार महर्षि दयानन्द के अनुसार, 'आर्या श्रेष्ठ गुण, कर्म, स्वभाव युक्ता मनुष्या अर्थात् जो श्रेष्ठ गुण, कर्म स्वभाव वाले मनुष्य हैं वे ही आर्य संज्ञा के भागी है।' व्याकरण के अनुसार आर्य शब्द ऋगतौ धातु से सिद्ध होता है जिसके अर्थ ज्ञान, गमन और प्राप्ति है। कोषी अरविन्द आर्य शब्द की व्याख्या करते हुए लिखते हैं कि 'आर्य शब्द से एक सामाजिक तथा नैतिक आदर्श का, एक मर्यादित जीवन का, उदारता नम्रता सभ्यता सरलता साहस, सौजन्य पवित्रता मानवता निर्बलो की सहायता सामाजिक कर्तव्यो का अनुष्ठान, ज्ञान प्राप्ति की उत्कण्ठा इत्यादि गुणो का बोध होता है।

वस्तुत मानवीय भाषा मे अन्य कोई शब्द नहीं जिसका इतिहास इस शब्द से उज्ज्वल हो।

तात्पर्य यह कि आर्य वह श्रेष्ठ अथवा महान शब्द है जो सभी मानवीय सद्गुणो का सामुच्चय है। इसमे सभी मानवीय सद्गुणो का समावेश है। यह आर्य शब्द ऐसा अनुपम तथा बेजोड है कि इसकी उपमा का कोई भी शब्द ससार की किसी भाषा मे कही नहीं मिलता।

आर्य शब्द उतना ही पुराना है कि जितने कि स्वय वेद। पर वेदों की भान्ति ही लोग आर्य शब्द को भी भूल चुके थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ही ससार को इस भूले बिसरे शब्द की याद दिलाई उन्होंने भारतवासियो से स्पष्ट शब्दो मे कहा कि गुण भ्रष्ट तो हम हुए नाम भ्रष्ट तो न हो और इस प्रकार अपने प्रस्तावित सगठन का नाम आर्य समाज रखा। देशभक्त ऋषि ने आर्य शब्द वेदो से लिया है और वेद का शब्द गुण वाचक है, जाति वाचक नही। जिस व्यक्ति के आचरण मे आर्यत्व अथवा श्रेष्ठता होगी वह चाहे विश्व के किसी भी भू भाग मे जन्मा अथवा निवास करता हो। वह आर्य ही है। हिन्दू मुस्लिम सिख, ईसाई आदि की भान्ति आर्य शब्द साम्प्रदायिक नही। यह विशुद्ध मानवता वादी शब्द है। यह शब्द मत मजहब सम्प्रदाय एव जाति, देश, काल आदि की सकुचित सीमाओ से सर्वथा उन्मुक्त है। इस प्रकार आर्य एक श्रेष्ठ, सभ्य, कुलीन धर्मशील व्रतशील प्रगतिशील, उदार तथा धार्मिक व्यक्ति का नाम है। आर्यते सतत यातें के अनुसार आर्य वह है कि जो पीडितो की सहायता को सदा पहुच जाता है वह आर्य है। आराद यानि इति आर्य के अनुसार जो द्वेष से दूर जाता है वह आर्य है। आर्य एव आर्य के अनुसार जितेन्द्रिय ही आर्य है।

आर्य शब्द की भान्ति ही समाज शब्द भी केवल एक समूह मात्र नही। समाज का तात्विक अर्थ तो व्यवस्थित समूह है। अव्यवस्थित समूह को भीड भले ही कह लें, समाज नहीं कहा जा सकता। इस प्रकार आर्य समाज प्रगतिशील एव व्रतशील श्रेष्ठ पुरुषों का एक व्यवस्थित समूह है जो नियमो से बन्धा है।

यद्यपि आर्य समाज का सामान्य अर्थ श्रेष्ठ पुरुषो का समूह है तथापि यहा विवेचनीय आर्य समाज से तात्पर्य महर्षि दयानन्द द्वारा सस्थापित समाज विशेष से ही है। जैसा कि आदर्श हिन्दी संस्कृत शब्द कोष मे लिखा है कि—महर्षि दयानन्द सस्थापित समाज विशेष। अब हम महर्षि द्वारा सस्थापित आर्य समाज (समाज विशेष) के विषय में चर्चा करते हैं। आर्य समाज क्या है ? इसका उत्तर देने के पूर्व हम यह बता देना आवश्यक समझते हैं कि आर्य समाज कोई मत, मजहब सम्प्रदाय अथवा पन्थ नही। क्योंकि इसके सस्थापक ने कोई नया मत न चलाकर उसी प्राचीन सत्य सनातन वैदिक धर्म को ही फिर से प्रतिष्ठापित किया था। अत आर्य समाज वैदिक धर्म का प्रतिनिधि, रक्षक, प्रचारक एव प्रतीक है। वेद की रक्षा तथा उसकी शिक्षाओ एव विद्याओ के प्रचार-प्रसार एव विस्तार के लिए ही महर्षि ने आर्य समाज की स्थापना की थी। अत आर्य समाज उस महान आन्दोलन का नाम है जो वेद के पावन सन्देश को धरती के नगर-नगर की डगर डगर तक पहुचाने को कृतसकल्प है। आर्य समाज वह विचार धारा है अन्धविश्वासो पाखण्डो, मिथ्या आडम्बरो एव कुरीतियो कुप्रथाओं, अनाचारो को जड से उखाड कर युक्तियुक्त तर्कसगत एव विज्ञान सम्मत बुद्धिवादी मान्यताओ को प्रचारित करता है। आर्य समाज एक बैंक है जहा सदविचारो की पूजी का विनिमय होता है। यह एक ऐसी खान है जहा श्रेष्ठ नर रत्न उत्पन्न किए जाते हैं आर्य समाज वह आन्दोलन है जो ऊच नीच के भेद-भाव को समाप्त कर समता मूलक समाज की सरचना करना चाहता है। आर्य समाज वह आन्धी है कि जो अन्धविश्वासो का कूडा करकट उडा ले जाता है। आर्य समाज वह विचारधारा है कि जो मानव को मानव बनाने के लिए चिन्तन देता है। आर्य समाज वह सगठन है जो बिछुडे हुओ को गले लगाता है। आर्य समाज वह आग है जो ससार भर के अज्ञान अन्धकार एव पाखण्ड पापाचार को भस्मीभूत कर रहा है। आर्य समाज वह रोशनी का मीनार है जो भूले-भटके मानव को वेद की सीधी सच्ची निष्कण्टक राह दिखाता है। आर्य समाज वह नदी है जिस आशाओ की खेती लहलहा उठती है। यह वह जोश है जो अपना होश कभी नही खोता। यह वह क्रान्ति है जो रक्तपात और खूनखराबे मे विश्वास न रखते हुए तीव्रतर सामाजिक परिवर्तन ला रहा है। वस्तुत आर्य समाज वह गरिमा है जो अपनी पहचान आप है। यह वह तरु है जिसकी शीतल छाया में दीन-दुःखी एव सन्तप्त जन विश्रान्ति पाते हैं। यह वह जागृति है जो आलस्य अकर्मण्यता एव प्रमाद की तन्द्रा को समाप्त करने मे लगा है। यह वह सवेरा है जिसमे आशाओ की किरणें स्वागत को उत्सुक रहती हैं। यह वह चाबी है जो मस्तिष्क के बन्द ताले को खोल देता है। आर्य समाज वह जीवन दर्शन है जो हमे जीने का ढग सिखाता है, यह वह जयघोष है जो वेदो का स्वर गूंजा रहा है वह वह कीर्ति है जो अपनी धवल पताका विश्व भर मे फहरा रही है,

आर्य समाज प्रेम का प्रेरक द्वेष
दम्भ का नाशक है।
वैदिक धर्म दिवाकर का यह
उज्ज्वल ज्ञान प्रकाशक है।
आर्य समाज सभी से सब जन,
प्रेम करें सिखलाता है।
आर्य समाज गिरे बिछुडो को
बढकर गले लगाता है।
आर्य समाज सभी का साथी,
सबको एक बनाता है

आवश्यकता इस बात की है कि आर्य समाज को ठीक से समझा जाए और फिर उसके साथ मिलकर उसी के उद्देश्यानुसार सहयोग प्रदान किया जाए। तभी हम सबका कल्याण है।

—

## जालन्धर छावनी में शान्ति यज्ञ

आर्य समाज जालन्धर छावनी में 18 से 25 मार्च तक निरन्तर यज्ञ होता रहा। 23 मार्च को शहीद सुखदेव व राजगुरु और भगतसिंह को श्रद्धाजलि भेंट की गई। इस अवसर पर प धर्मदेव जी स वेद प्रचार अधिष्ठाता ने तीनो शहीदो के जीवन पर प्रकाश डालते हुए बताया कि सुखदेव और भगतसिंह दोनो ही कट्टर आर्य समाजी परिवारो से थे हमे उनके जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए।

— काशीराम मन्त्री

## बिना दहेज के विवाह

आर्य समाज श्रद्धानन्द बाजार अमृतसर के मन्त्री श्री प्रवीण महाजन का विवाह गत दिनो बिना दहेज, बिना बारात तथा बहुत ही सादा ढग से वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। इस विवाह की सभी आर्य बन्धुओ ने बडी सराहना की।

—वीरेन्द्र देवगण
मन्त्री

## लुधियाना मे सत्सग

स्त्री आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार का पारिवारिक सत्सग श्री अयोध्या-प्रसाद जी मगल दीपक सिनेमा रोड के घर पर हुआ। हवन-यज्ञ सुश्री शान्ता सौद ने करवाया। बहिनो ने सुन्दर 2 भजन बोले। परिवार वालो ने श्रद्धायुक्त होकर जलपान करवाया। सत्सग का बहुत अच्छा प्रभाव हुआ। -जनकरानी

# ईश्वर का वैदिक स्वरूप

ले—श्री विजय भारती जी शास्त्री आर्य हाई स्कूल बरनाला

कोई परदा नजर नही आता
फिर भी जलवा नजर नहीं आता
सब खुदा बन गए जमाने मे
कोई बन्दा नजर नहीं आता

वेदो द्वारा प्रतिपादित ईश्वर का स्वरूप बहुत ही उच्च पवित्र एव ध्यान देने योग्य है। वेदो के अनुसार ईश्वर का वास्तविक स्वरूप आर्य समाज के दूसरे नियम से ज्ञात होता है ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप निराकार सर्वशक्तिमान न्यायकारी दयालु अजन्मा अनन्त निर्विकार अनादि अनुपम सर्वाधार सर्वेश्वर सर्वव्यापक सर्वान्तर्यामी अजर अमर अभय नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है उसी की उपासना करनी योग्य है। वेद मे सभी विशेषणो से युक्त परमेश्वर को विश्वास के योग्य बताया। परन्तु दुनिया ऐसे ईश्वर के स्वरूप को नहीं समझ सकी और उस सर्वव्यापक की मूर्तिया बना ली तथा ईश्वर को जो निराकार है उसे एक मन्दिर मे सीमित कर दिया और पूजा शुरू कर दी। वेद ने न तस्य प्रतिमा अस्ति का पाठ पढाया परन्तु हम इन्सान भी न बन सके। इसीलिए एक कवि ने लिखा था—

'गू जना हो जिसे वह गीत बनें गान बनें
पूजना हो जिसे वह प्रीत बन प्राण बन।
विश्व से कह दो वह पत्थरो पर सर न पटके।
ढू ढता है भगवान जिसे, वह इन्सान बन।

मुहम्मद गजनवी जैसे यवनो ने जब इनके ईश्वर की मूर्तिया तोडी। अत्याचार किए तब इनका ईश्वर क्या करता रहा, क्या अपनी बेइज्जती कराता रहा?

ससार मे कुछ ऐसे भी लोग हैं जो कहते हैं ईश्वर जन्म लेता है परन्तु सर्वव्यापक ईश्वर जन्म नही लेता। क्योकि वह अजन्मा है। वह बिना जन्म लिए ही दुष्टो का सहार करता है जब वह दुष्टो को पैदा करता है तो क्या उनको मारने की शक्ति नही रखता। अवश्य रखता है। जितने भी महापुरुष हुए सबने ईश्वर को सर्वव्यापक माना। ऋषिवर दयानन्द की विचारधारा सुनिए—जब परमेश्वर सर्वत्र व्यापक है तो किसी एक वस्तु मैं परमेश्वर भावनाकी करना अन्यत्र न करना यह ऐसी बात है कि जैसे चक्रवर्ती राजा को सब राज्य की सत्ता से छुडाके एक छोटी सी झोपडी का स्वामी मानना। देखो यह कितना बडा अपमान है। वैसे तो तुम ईश्वर का भी अपमान करते हो सब व्यापक मानते हो तो वाटिका मे से पुष्प पत्र तोड कर क्यो चढाते हो? चन्दन घिस के क्यो लगाते हो? धूप्दा जडियास साक्ष पत्थरो को लकडी से कूटना पीटना क्यो करते हो? तुम्हारे हाथो मे है क्यो जोडते हो? सिर मे है क्यो नवाते हो? जल मे है क्यो स्नान कराते हो?

एक और विडम्बना देखिए। सतयुग के चार अवतार त्रेता के तीन द्वापर के दो और कलियुग मे अभी तक एक भी अवतार नही हुआ। इन्ही लोगो के अनुसार कलियुग सबसे बुरा है। अत कलियुग मे सबसे अधिक अवतार होने चाहिए थे और सतयुग मे जहा धर्म ही धर्म था वहा एक भी अवतार नहीं होना चाहिए था। एक और मजेदार बात राम और परशुराम दोनो अवतार एक ही समय मे हो गए। दोनों युद्ध करने के लिए तैयार हो गए। अवतार अवतार को न पहचान सका। हमारा वेद कहता है। वह ईश्वर नस एव नाडी के बन्धन से रहित है।

15 अगस्त 1947 को भारत दो खण्डो मे विभाजित हुआ। उस समय जिस दानवता का ताण्डव नृत्य हुआ उसे कहते हुए जिह्वा थर्राती है छोटे 2 दुधमु हे बच्चो को बेसन लपेट कर तेल के खौलते हुए कडाहो में डाला गया। स्त्रियो के साथ अनैतिक व्यवहार हुए। युवतियो की लाज पिता के सामने उतारी गई। यह सब कुछ हुआ पर ईश्वर ने अवतार नही लिया ऐसी भीषण परिस्थिति मे ईश्वर ने अवतार नही लिया। अब भी पजाब मे निर्दोष लोगो की प्रतिदिन हत्याए हो रही हैं। अब भी उस का अवतार नहीं हुआ तो फिर उसका अवतार कब होगा।

खुदा के नाम पर
दुनिया समेटने वालो
तुम्हे तमाम खुदाई मिली
खुदा न मिला।
अगर यह भी कि खुदाई मिले
खुदा न मिले।
गरज यह है कि खुदाई मिली
खुदा न मिला।
क्या तुर्फा है खूबी मेरे
महबूब की देखो।
दिल मे तो वह आता है
समझ में नहीं आता।

—

# वैदिक विज्ञान के प्रसार से ही विश्व वेदों को अपनाएगा

ले—श्री प वीरसेन जी वेदश्रमी वेद विज्ञानाचार्य वेद सदन महारानी पथ इन्दौर

(गतांक से आगे)

## पर्यावरण निर्माण वेद का प्रमुख विज्ञान है

हमारे जीवन का एक आधार तत्व वायु है जो हमारे चारो ओर विद्यमान है उसके बिना हमारा जीवन अस्तित्व विहीन हो जाता है। सोते जागते सभी अवस्थाओ मे उसकी हमे आवश्यकता बनी रहती है। उसी के पर्यावरण मे सब प्राणियो का जीवन प्रवाह बना हुआ है। वृक्ष वनस्पतियो का भी जीवन उसी पर निर्भर है। भूमि जल अग्नि एव वायु का भी अस्तित्व उसी पर है। हमारे वायवीय पर्यावरण मे पच तत्वो की स्थूल सूक्ष्म, सूक्ष्मतर एव सूक्ष्मतम स्थिति क्रमश हमारे ऊपर के क्षेत्र मे विद्यमान रहती है। उन सब का प्रभाव दृष्ट एव अदृष्ट रूप से हमारे जीवन पर पडता है। अत आयुर्विज्ञान के लिए इस मे इच्छित एव अनुकूल परिवर्तन का ज्ञान इसे शुद्ध एव परिपुष्ट करने का क्रियात्मक विज्ञान विकसित करना चाहिए। अथर्ववेद काण्ड 8 सूक्त 2 मन्त्र 25 मे कहा है सर्वो वै तत्र जीवति गौरश्व पुरुष पशु यत्रेद ब्रह्म क्रियते परिधि र्जीवनाय कम अर्थात जहा वेद मन्त्रो के यज्ञ विज्ञान के द्वारा सुख पूर्वक जीवन के लिए पर्यावरण बनाया जाता है उस पर्यावरण मे प्राणि मात्र जीवन प्राप्त करता है। अत पर्यावरण निर्माण विज्ञान की प्ररूपणा वेद बताता है।

## जीवन रक्षा एव वृद्धि के लिए पर्यावरण का निर्माण

पर्यावरण मण्डल मे प्राणतत्व प्रधान है। इसी प्राण मण्डल मे यदि जीवनीय तत्व प्रधान होगे तो हमारा जीवन पुष्ट होगा और जीवेम शरद शतम—को प्राप्त कर सकेंगे। इस प्राण मे अपमिश्रण होने से जीवन शक्ति का ह्रास होता है और विविध प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं। अत पर्यावरण के निर्माण और शोधन का काम वैदिक यज्ञ विज्ञान से करके ससार को जीवन प्रदान करना चाहिए और रोगो से मुक्त कराना चाहिए। रोगो से मुक्तकरान के वैदिक विज्ञान को भैषज्य यज्ञ कहते हैं।

## यज्ञ द्वारा रोग निवारण कार्य

यज्ञ द्वारा मानव जाति की अनेक समस्याओं का समाधान हो सकता है। अनावृष्टि अतिवृष्टि तूफान आदि प्राकृतिक प्रकोपो का शमन यज्ञ द्वारा सम्भव है। यदि वैदिक विज्ञान के द्वारा ससार को लाभान्वित किया जाये तो ससार वेदो की शरण मे अवश्य आयेगा। इस कार्य को आर्यजनों एव आर्य समाज को ही करना होगा। अन्य कोई नही करेगा। सम्प्रति भैषज्य यज्ञो के कार्यक्रम से वैदिक विज्ञान को प्रचारित करना चाहिए। ससार विविध प्रकार के रोगो से आक्रान्त है। सर्वसाधारण को रोगो से यज्ञ द्वारा सुगमता से आरोग्यता प्राप्त होने पर वे यज्ञ को अपना लगे। आर्य समाजो मे अन्य चिकित्सा प्रणाली से रोगमुक्त का प्रयत्न करेगे तो उसी चिकित्सा प्रणाली का प्रचार होगा। वेद एव यज्ञ का कुछ भी प्रचार नहीं होगा। अत वेद के प्रचार के लिए वेद के विज्ञान को व्यावहारिक बनाने के लिए भैषज्य यज्ञो का कार्य करना चाहिए।

## यज्ञ चिकित्सा प्रणाली अति सुगम है

भैषज्य यज्ञ प्रक्रिया एक अति सरल पद्धति है। सामान्य व्यक्ति भी उसके द्वारा चिकित्सा करने मे समर्थ हो सकता है। भैषज्य यज्ञ पद्धति का ज्ञान 3 दिन मे भी हो सकता है। आर्य वानप्रस्थो को इसका ज्ञान अवश्य प्राप्त करके सर्व मान्य जनो को लाभान्वित करना चाहिए, इससे वेद का प्रचार और उपयोगिता बढगी। भयकर रोगों में भी तथा बहुत सा धन व्यय करने के पश्चात् भी जो लाभ नहीं होता वह यज्ञ के माध्यम से अतिशीघ्र हो जाता है। अत व्यापक रूप से प्रत्येक आर्य समाज में यज्ञ चिकित्सा का प्रारम्भ करना चाहिए। सर्व सामान्य जनो को यज्ञ चिकित्सा से अवगत करना चाहिए। इस प्रकार वेद को वैज्ञानिक क्षेत्र में प्रतिष्ठित करा सकते है। बिना वैज्ञानिक क्षेत्र में प्रविष्ट हुए वेद का आधिपत्य विश्व मे नहीं होगा।

## स्त्री आर्यसमाज अड्डा होशियापुर की ओर से शान्ति यज्ञ

आर्य समाज अड्डा होशियारपुर (स्वामी श्रद्धानन्द बाजार) जालन्धर की ओर से 21 मार्च से प्रथम अप्रैल तक शान्ति यज्ञ का आयोजन किया गया है। साय 3 से 5 बजे तक निरन्तर यज्ञ हो रहा है जिसमें सभी बहिनें भाग ले रही हैं। इस अवसर पर प्रथम अप्रैल को आर्य समाज स्थापना दिवस भी मनाया जाएगा। जिसमें सभी आर्य बहिनों को निमन्त्रित किया गया है।

विद्यावती प्रधाना

# आर्य समाज दीवान हाल दिल्ली के ९९वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर 'पंजाब सुरक्षा सम्मेलन' में पारित सर्वसम्मत प्रस्ताव

पंजाब में हो रहे अमानवीय नर संहार लूटपाट हत्याकाण्ड और निर्दोष हिन्दुओं तथा पुलिस अधिकारियों के विरुद्ध उग्रवादियो से मिलकर किए जा रहे षडयन्त्रों पर यह सम्मेलन गम्भीर चिन्ता व्यक्त करता है। उग्रवादी अकालियो ने धर्म युद्ध के नाम पर जो राजनैतिक आन्दोलन छेड़ रखा है। उस ने हिंसा का रूप धारण करके सत्याग्रह के पवित्र नाम को कलंकित किया है।

मुस्लिम लीग पाकिस्तान जरब लीग तथा इमाम अब्दुल्ला बुखारी के साथ गठजोड करके खालिस्तान के नाम पर जो घृणित कार्य किए हैं उसकी यह सभा घोर भर्त्सना करती है। अकालियों द्वारा देश को विखण्डित करने वाले अराष्ट्रीय व विदेशी तत्वो के साथ मिल कर तथा भारतीय संविधान को खुले रूप से जलाकर भारतीय प्रभु सत्ता को चुनौती देना है।

इस प्रकार हिंसा का आश्रय लेकर खालिस्तान का स्वप्न देखना इसे कोई भी सरकार व कोई भी देशभक्त सहन नहीं कर सकता। इस हिंसक आन्दोलन ने पंजाब के सम्पूर्ण व्यापार व बड़े बड़े कारखानों व उद्योगपतियों से लेकर सर्व साधारण मजदूर को भी भयकर बेकारी में धकेल कर अर्थ व्यवस्था की समस्या खड़ी कर दी है तथा पंजाब के छोटे-छोटे गावो से लोग बडी सख्या में आश्रय हेतु बाध्य हो रहे हैं तथा गावो को छोड रहे हैं।

स्वर्ण मन्दिर तथा गुरुद्वारो मे विदेशी शस्त्रो व गोला बारूद के भण्डार इकट्ठे करके भारत सरकार के रक्षा मन्त्रालय को खुली चुनौती दी जा रही है। भयकर अपराधी धर्म स्थानो की आड लेकर भड़काने वाले वक्तव्य दे रहे हैं। ऐसी भयानक स्थिति में यह सम्मेलन भारत सरकार से आग्रह पूर्वक निवेदन करना अपना परम कर्तव्य मानता है कि—

देश की अखण्डता को नष्ट करने वाले विदेशियों के इशारे पर राष्ट्रीय एकता को नष्ट करने वालो के साथ नरमी का व्यवहार करना देशवासियो तथा राष्ट्रीय सरकार के साथ ही नही अपितु भारतीय सविधान के साथ भी विश्वास घात करना है। अत इन अपराधियो के मुकद्दमे सिविल अदालत से हटाकर सैनिक अदालतो को सौपे जाए।

1 पंजाब मे चल रहे वर्तमान अकाली आन्दोलन और अकालियो की भावी योजना को दृष्टिगत कराना।

2 यह सम्मेलन सरकार से अनुरोध करता है कि—जहा जहा पर अकाली उग्रवादियो ने अपने अड्डे बना रखे हैं उन समस्त स्थानो की स्थानीय पुलिस को अन्यत्र स्थापित करके सारा प्रबन्ध सेना के हवाले किया जाए।

3 यह सम्मेलन समस्त राजनैतिक दलों से अनुरोध करता है कि पंजाब के उग्रवादियो व अकालियो द्वारा अपनाए जा रहे इस दुर्भावना पूर्ण खूनी एव अराष्ट्रीय आन्दोलन का किसी भी रूप मे अपनी राजनैतिक स्वार्थ पूर्ति हेतु प्रयोग न करें। अन्यथा देश की समस्त राष्ट्र प्रेमी जनता तथा देश का 25 प्रतिशत बहुसंख्यक हिन्दू समुदाय उन्हें कभी भी क्षमा नही करेगा।

4 यह सम्मेलन कश्मीर से कन्या कुमारी तक तथा अटक से कटक तक समस्त वर्गों एव हिन्दू समुदाय की अपील है कि पंजाब मे हो रहे निरन्तर भयकर रक्तपात एव अमानवीय अत्याचारो को ध्यान में रखते हुए इस वर्ष सम्पूर्ण देश मे होली का त्योहार नही मनाया जाये अर्थात रग गुलाल नही खेला जाए। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान लाला रामगोपाल शाल वाले महापौर महेन्द्रसिंह आर्य ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

—आर्य समाज दीवान हाल दिल्ली

# आर्यसमाज ऋषिकुंज पक्का बाग जालन्धर में शान्ति यज्ञ सम्पन्न

स्त्री आर्य समाज और आर्य समाज ऋषि कुंज पक्का बाग जालन्धर की ओर से 19 से 25 मार्च तक शान्ति यज्ञ का आयोजन किया गया जिसकी पूर्णाहुति 25 मार्च को साढ़े चार बजे हुई। इस अवसर पर शान्ति मन्त्रों से तथा गायत्री मन्त्र से विशेष आहुतियां प्रतिदिन दी गईं। बहनों ने काफी संख्या में प्रतिदिन पहुंच कर यज्ञ को सफल बनाया। [illegible] शाही की बहनों तथा [illegible] की बहनें भी इस यज्ञ में पधारीं। प्रतिदिन तीन या चार बहनें यजमान बनती रहीं यज्ञ के उपरान्त बहनो के भजन तथा पं० धर्मदेव जी व अधिष्ठाता वेद प्रचार के प्रवचन प्रतिदिन होते रहे।

23 मार्च को शहीद सुखदेव राजगुरु और भगतसिंह का बलिदान दिवस मनाया गया तथा इन शहीदों को श्रद्धा अंजलि दी गई। प्रधाना कमला शर्मा, और कृष्णा सेठ तथा दूसरी सभी बहनों के विशेष सहयोग से यज्ञ हर प्रकार से सफल रहा। —सुशीला भगत मन्त्राणी

# ऋषि बोधोत्सव-ऋषि जन्म भूमि टकारा में

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी ऋषि बोधोत्सव महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टकारा के तत्वावधान में सोल्लास मनाया गया। परम्परागत रूप से इस वर्ष भी 23 2 84 से 29 2 84 तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ श्री हरिओम सिद्धान्ताचार्य (आचार्य उपदेशक विद्यालय टकारा) के ब्रह्मत्व मे हुआ।

इस वर्ष पंजाब और हरियाणा मे भीषण मारकाट होने के बावजूद भी आर्यों की उपस्थिति आश्चर्यजनक थी। आर्यों में उत्साह उल्लास एव ऋषि प्रेम कूट कूट कर भरा हुआ था। इस पर्व के कारण टकारा जैसा छोटा सा ग्राम भी सम्वरता से जगमगा रहा था प्रथम दिवस उपदेशक महाविद्यालयके विद्यार्थियो द्वारा ऋषि भक्तो का स्वागत किया गया

इस वर्ष आर्य जगत के महान् विद्वान प्राध्यापक राजेन्द्र जिज्ञासु अबोहर आचार्य वीरेन्द्र मुनि जी अध्यक्ष विश्ववेद परिषद लखनऊ स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती योगेन्द्र पुरुषार्थी महात्मा आर्य भिक्षु हरिद्वार स्वामी सत्यपति व आर्य जगत के महान भजनोपदेशक श्री पन्ना लाल पीयूष माता शिवराजवती व उपदेशक विद्यालय टकारा के स्नातक श्री मोहन कुमार चमन बापू व शिवव्रत इत्यादि महानुभावो ने अपने सारगर्भित भाषणो व भजनो से आर्य जनता को कृतार्थ किया।

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

उन्हें देशमुख की जगह रियासत का दीवान नियुक्त कर दिया। इस समय श्याम जी की उम्र केवल 28 वर्ष की थी। उन्होने सात सौ रु० प्रति मास पर रियासत के दीवान के पद पर काम करना शुरू कर दिया। इस नयी नियुक्ति के साथ उनके कंधो पर नया बोझ आ पडा। उस के साथ उनकी प्रसिद्धि भी चारो ओर फैल गयी। रियासत रतलाम कोई बहुत बडी रियासत नही थी लेकिन थी तो एक रियासत ही। उसका दीवान एक तरह से उसका मालिक समझा जाता था। उसके साथ उनका उल्लेख रजवाड़ा शाही हल्को मे भी होने लगा। उस समय अंग्रेज सरकार भी उन से प्रभावित थी एक तो उन्होने विदेश मे रहते हुए अपने देश का नाम रोशन किया था। अब वह छोटी उम्र मे एक रियासत के दीवान बन गए थे। रतलाम का राजा श्याम जी के काम से इतना खुश हुआ कि उसने एक डेढ़ वर्ष के अन्दर उनके साथ एक अनुबन्ध किया। जिसके अन्तर्गत न केवल उनके वेतन मे एक सौ रु० प्रतिमास की वृद्धि कर दी गई बल्कि यह भी फैसला हुआ कि यदि वह दस वर्ष तक रियासत की सेवा करते रहेंगे तो दस वर्ष के बाद वह काम छोडना चाहें तो उन्हें पेंशन भी मिलेगी।

प्रश्न किया जाएगा कि जब श्याम जी को अपना भविष्य बहुत उज्ज्वल नजर आ रहा था और उन्हें एक छोटी सी रियासत के दीवान से बडा पद मिल सकता था तो उन्होने रतलाम का दीवान बनना क्योंकर स्वीकार किया। वह चाहते तो उस समय भारत सरकार या ब्रिटानवी सरकार मे कोई अच्छी नौकरी प्राप्त कर सकते थे। उनकी योग्यता के कारण अंग्रेज उनका सम्मान करते थे बल्कि कई लोगो ने यह सिफारिश भी की थी कि श्याम जी कृष्ण वर्मा की सेवाओ से फायदा उठाना चाहिए। इस पर भी श्याम जी वर्मा ने एक छोटी सी रियासत का दीवान बनना मंजूर किया तो क्यो। इस उत्तर के लिए आगामी अंक की प्रतीक्षा कीजिए।

# रग भरी होली नहीं मनाई गई

16 मार्च को आर्य समाज मन्दिर दयानन्द मार्ग बीकानेर (राज) मे वासन्ती नवसस्येष्टी (होली) के पर्व का आयोजन प्रति वर्ष की भान्ति किया गया

यज्ञ के पश्चात् वक्ताओ ने इस पर्व की सांस्कृतिक पृष्ठ भूमि आज के समय मे उसकी उपयोगिता तथा उसके विकृत रूप मे सुधार की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए पंजाब की नृशंस घटनाओ का उल्लेख किया और अपील की कि इस बार लोग रंग और उत्सव न मनाये। साथ ही उन्होने अकालियो को सम्बोधित करते हुए कहा कि वे समय रहते हुए देश और राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्य को पहचानें तथा ऐसे हालात न पैदा करें कि राष्ट्र में इसकी प्रतिक्रिया आरम्भ हो जावे

—जवनलाल आर्य उपमन्त्री

# आवश्यकता है

श्री गुरुविरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय करतारपुर जालन्धर मे दो अध्यापको की आवश्यकता है। निम्न योग्यता रखने वालो के आवेदन पत्र आमन्त्रित हैं।

1 किसी राज्य बोर्ड या विश्वविद्यालय की मैट्रिक या इसके समकक्ष कोई अन्य परीक्षा उत्तीर्ण तथा वाराणसेय या किसी अन्य विश्वविद्यालय की शास्त्री परीक्षा या बी ए परीक्षा उत्तीर्ण।

2 गणित तथा अंग्रेजी सहित बी एस सी परीक्षा उत्तीर्ण स्नातको तथा प्राचीन संस्कृति मे आस्था रखने वालो को प्राथमिकता दी जाएगी।

वेतन योग्यतानुसार दिया जाएगा।

—आचार्य—नरेश कुमार शास्त्री

वेदामृत—

# मन के बिना कोई कार्य नहीं हो सकता

ले,—श्री सुरेशचन्द्र जी वेदालंकार एम ए एल टी
बोदरा मिर्जापुर

यत प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योति रन्तरमृत प्रजासु ।

यस्मान्न ऋते किञ्चन कर्म क्रियते तन्मे मन शिव सकल्पमस्तु ।

शब्दार्थ—(यत्) जो मन (प्रज्ञान) प्रकृष्ट ज्ञान (चेत) चिन्तन (उत) और (धृति) धैर्य से युक्त है (यत) जो (प्रजासु) प्रजाओ के (अन्त) अन्दर (अमृतम) अमृत (ज्योति) ज्योति है और (यस्मात) जिसके (ऋते) बिना (किंचन) कुछ (कर्म) काम (न) नहीं (क्रियते) किया जाता है (तन्मे मन शिव सकल्पमस्तु) वह मेरा मन शिव सकल्पो वाला हो ।

सफलता न भविष्य के गर्भ में छिपी हुई है, न वह अगम्य है । वह आपके निकट है, आपकी पकड के भीतर है । बस उसे आपके लेने भर की देर है । सुअवसर आन वाला नहीं है, वह आ गया है । स्वर्ग और कहीं नहीं, वह आप के हृदय मे, मन में छिपी हुई वस्तु है ।

मन उत्कृष्ट ज्ञान का साधन है । ज्ञान से मनुष्य के मन मे सकल्प उत्पन्न होते हैं । महर्षि दयानन्द के अनुसार 'प्रज्ञानम शब्द का अर्थ है 'प्रज्ञानाति येन तद बुद्धि स्वरूपम अर्थात मन का जो भाग मस्तिष्क में रहता हुआ काम कर रहा है उसे प्रज्ञान या बुद्धि कहते हैं । बुद्धि शरीर रूपी रथ का सारथी है और मन में सकल्प उत्पन्न करता है । मन मे जब सकल्प आते हैं तो मनुष्य काम मे प्रवृत्त होता है । यह मन सकल्पो का केन्द्र है । सकल्प ही शक्ति है जिसके द्वारा मनुष्य इस विश्व में अनेक प्रकार के चमत्कारिक काम करता है । ससार का प्रधान प्रकृष्ट ज्ञान प्राप्त करने का साधन यह मन है । विद्यालयो मे प्राप्त की जाने वाली शिक्षा मन का विषय है । आज का मनोवैज्ञानिक इसके लिए मन पर परीक्षण कर रहा है, प्राचीन मनो वैज्ञानिको ने प्रयोग करके ज्ञान का आधार मन को माना था ।

आध्यात्मिक, भौतिक एव साहित्यिक ज्ञान की प्राप्ति मन के बिना असम्भव है । ज्ञान और कर्म दोनो ही मन के द्वारा ही हो सकते हैं । ज्ञान की प्राप्ति के लिए जब हम अपना मन किसी विशेष दिशा मे लगाते हैं तो हमारा ध्यान सासारिक विषयो से भी टूट जाता है । भोग के साधन विद्यमान रहते हैं परन्तु मनुष्य उनका उपभोग नहीं करता है । उनका मन ज्ञान मे रमता है ।

बगाल मे एक भट्टाचार्य महोदय की एक घटना विख्यात है । उन्होने ज्ञान प्राप्त करने के बाद चारो वेदो के भाष्य का सकल्प किया । वे भाष्य में रम गए । धन, दौलत सन्तान और युवावस्था के भोगों से उनका मन हट गया । घर मे सन्तान का आना तो दूर की बात हो गई, धन के बिना माता को कष्ट होने लगा । मा ने एक उपाय सोचा और उन की सगाई कर दी । विवाह हुआ । पत्नी आई । युवावस्था थी । वेदो के भाष्य मे ज्ञान के समुद्र में लगे इस युवक का अपनी पत्नी की ओर ध्यान तक न गया और सौभाग्य से पत्नी भी इतनी योग्य निकली कि उसने उनके वेद भाष्य के कार्य मे सहयोग दिया । 62 वर्ष की अवस्था मे जब वेद भाष्य पूरा हुआ तो उन्होने सुख की सास ली । चादनी रात थी । स्त्री पास मे सो रही थी । वेद भाष्य पूरा हो चुका था । ज्ञान की प्राप्ति के समय काम की जिस वासना का उन को अनुभव तक न हुआ था चादनी के समान सफेद उज्ज्वल बालो वाली पत्नी को देखकर इस वृद्धावस्था में उन्हे काम' ने प्रेरणा की । पर पत्नी ने उन्हें कहा प्रियवर, भाष्य तो हो गया पर अभी वेद प्रचार बाकी है । आइए अब हम उस दिशा की ओर बढें और सचमुच उन्होने प्रचार का कार्य प्रारम्भ किया । दोनो दो दिशाओ मे गए और ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए उन्होने अन्त मे एक दिन एक ही स्थान पर अपने प्राणो का विसर्जन किया यह घटना इस बात की द्योतक है कि ज्ञान प्राप्त करने के लिए मन का ज्ञान मे लगाना आवश्यक कार्य हो जाता है । इसीलिए मन को ज्ञान का आधार माना गया है ।

पढा हुआ ज्ञान व्यर्थ है यदि इस ज्ञान पर हमने चिन्तन न किया उसका मनन न किया और उसे कर्म रूप मे प्रयोग मे न लिया तो वह ज्ञान कर्म के बिना लगडा हो जाएगा । इसलिए ज्ञान का उपयोग चिन्तन है यह चिन्तन नई-नई कलाओ का निर्माता है चित्रो का सृष्टा है, भवनो का रचयिता है मूर्तियो का अधिष्ठाता है । यह सब मन की चिन्तन शक्ति का ही परिणाम है कि वेद व्यास हुए, वाल्मीकि ने रामायण लिखी गौतम कपिल कणाद ने दर्शनो का विस्तार किया । स्वामी दयानन्द और उनके गुरु स्वामी विरजानन्द ने अन्ध-कार अभाव और अज्ञान मे भटकते देश वासियो को इनसे निकालने का प्रयत्न किया और दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश की रचना की । इसी चिन्तन शक्ति की बदौलत सुकरात ने अपने को भुलाकर यूनान मे सत्य का उद्घाटन किया । सुकरात चिन्तन के समय भोजनादि करना भी भूल जाता था । कहते हैं उस की पत्नी उसे भोजन कराए बिना कभी भोजन न करती थी । एक दिन की बात है कि चिन्तन में रत सुकरात को जब वह भोजन के लिए कहती कहती थक गई तो लाचार होकर वह उन पर झिडकने लगी । चिन्तन को कागज पर उतारते हुए सुकरात के ऊपर जब झिडकने का कुछ प्रभाव न पडा तब उसने पानी से भरा सम्पूर्ण घडा उन पर उडेल दिया । उस समय चिन्तनशील सुकरात हस । उसे हसते देख वहां शिष्यों को आश्चर्य हुआ और उन्होंने स्त्री को बुरा भला कहा और अपने गुरु से हसने का कारण पूछा । सुकरात हसते हुए ही बोले—आज मुझे चिन्तन से नया फल मिला है । वह यह कि आज तक मैंने यह सुना था कि जो गरजते हैं वह बरसते नहीं । पर यह तो अपवाद है । यह गरजती भी है और बरसती भी । यह चिन्तन शक्ति का फल ।

धैर्य भी मन का ही गुण है । मृत्यु भयावनी होती है परन्तु वह कायरों को भयभीत करती है धैर्यशाली बहादुर मृत्यु से भयभीत नहीं होते । कबीर ने लिखा है । मरने से ही पाया पूरन परमानन्द । मन मे जब धैर्य आ जाता है तो वन्दे-मातरम का गान करते-करते छोटे-छोटे बच्चे हस हस कर कोडे खा लेते थे । भारत माता की जय, बोलते-बोलते शहीद फांसी के तख्ते पर चढ जाते थे । इसी मन के कारण स्वामी दयानन्द ने विष का प्याला पीने के बाद कष्ट को कष्ट नहीं माना । लेखराम धोखा खा कर शुद्धि के लिए निकल पडे और छुरा खाकर हसते-हसते मर गए स्वामी श्रद्धानन्द ने सीने पर तीन गोलिया खा कर अपने को बलिदान कर दिया । ला० लाजपतराय ने लाठिया झेली । रामप्रसाद ने अपने प्राण न्यौछावर कर दिए । सुमेर सिंह ने लोहे के छडों की मार से अपने प्राणों का विसर्जन किया इसी मन की शक्ति से महात्मा गाधी जनता की जय जयकार करती हुई अपने सिर पर लाठी का वार सहन करने लगी । इसी मन की शक्ति से इन्कलाब जिन्दाबाद के नारे के साथ क्रान्तिकारी लोग गोलियों के सामने सीना खोलकर खडे हो जाते थे । धैर्य भी मन से ही हो सकता है ।

(क्रमश)

## वेद-सुधा

आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्य शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशु सप्ति पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठा सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम् निकामे निकामे न पर्जन्यो वर्षतु फल वत्यो न ओषधय पच्यन्ता योगक्षेमो न कल्पताम ।

(यजु अ 22 मन्त्र 22)

अर्थ—हे परमेश्वर हमारे राष्ट्र में विद्वान तेजस्वी ब्राह्मण हों, (शत्रुओं को) हराने वाले धनुर्धारी क्षत्रिय और महान् योद्धा हों बहुत दूध देने वाली गायें, भार ढोने वाले बलवान् बैल और तेज दौडने वाले घोडे हो, (युद्ध के समय) बुद्धिमती नगर की रक्षा करने वाली और युद्धस्थ पर चढ युवक विजयी हो, इस यजमान का पुत्र सभ्य और वीर हो जरूरत और इच्छा होने पर हमारे लिए बादल बरसें हमारे लिए पेड पौधे फलों और फूलों से भरपूर हों, इस तरह सब का कल्याण हो ।

व्याख्या—ब्राह्मण राष्ट्र के नेता होते हैं । वे जन्म से नहीं, गुण कर्मों और वृत्ति से ब्राह्मण बनते हैं । उन में ज्ञान की विशेषता होनी चाहिए । त्याग-तपस्या और ऊचा चरित्र उन्हें आदर दिलाता है । क्षत्रियों का सब से बडा गुण वीरता है । वे राष्ट्र की रक्षा करते हैं । दुष्टों के दमन से शान्ति और शान्ति क्षत्रिय ही स्थापित कर सकते हैं । बहुत दूध देने वाली गौए, तेज दौडने वाले घोडे और अन्य पशुधन देश के वैश्य ही सुरक्षित रखा करते हैं । खेती, व्यापार अन्न और फल फूल उन्हीं के कारण बढते हैं और सब के जीवन को कायम रखते हैं । इस प्रकार सभी सुखी रहते हैं । सच्चे ब्राह्मणो क्षत्रियो और वैश्यों से राष्ट्र का कल्याण होता है ।

—गिरीश चन्द्र खोसला
आर्य समाज जम्मू

## सम्पादकीय—

# पंजाब में आर्य समाज की परीक्षा की घड़ी

आजकल पंजाब जिन परिस्थितियों में से निकल रहा है उनके विषय में कुछ कहने की आवश्यकता नहीं। पंजाब में जो आग लग रही है उसकी चर्चा तो अब दूसरे देशों में भी होने लग गई है। और ऐसा प्रतीत होता है कि पंजाब एक अन्तर्राष्ट्रीय समस्या बन गया है। जब किसी देश में इस प्रकार की स्थिति हो तो वहां स्थायी रूप से कोई काम भी नहीं हो सकता। यही कुछ आज पंजाब में हो रहा है। यहां का उद्योग और व्यापार सब नष्ट भ्रष्ट हो गए हैं। कल तक पंजाब कृषि के क्षेत्र में सब से आगे था अब ऐसा प्रतीत होता है कि यह इस में भी पिछड़ जाएगा। प्रत्येक वर्ष जब गेहूं की फसल की कटाई का समय आता था तो दूसरे प्रान्तों से लाखों की संख्या में यहां मजदूर आते थे और वे फसल कटवाने में किसानों और जिमींदारों की सहायता किया करते थे। इस बार केवल वे आ ही नहीं रहे परन्तु जो यहां हैं वे भी जा रहे हैं। इस कारण कृषि और विशेष कर किसानों के लिए कई प्रकार की समस्यायें खड़ी हो रही हैं।

परन्तु आर्य समाज के सामने सब से बड़ा प्रश्न तो यह है कि आर्य समाज बच भी सकता है या नहीं। और उससे जो आशायें हमारे देशवासियों को रहती हैं हम उन्हें पूरा कर सकते हैं या नहीं। यह एक ऐसी समस्या है जिस पर पंजाब के आर्य समाजियों को गम्भीरतापूर्वक विचार करना चाहिए। हमारे सामने किस प्रकार की समस्यायें हैं इसका अनुमान हम इसी से लगा सकते हैं कि हम तीन बार सभा का वार्षिक चुनाव करवाने का निश्चय कर चुके हैं। परन्तु जिन दिनों चुनाव होना होता है कोई न कोई ऐसी घटना हो जाती है जिस के कारण चुनाव स्थगित करना पड़ जाता है। पिछली बार जब फरवरी में चुनाव होना था तो उन्हीं दिनों भिन्न भिन्न शहरों में कर्फ्यू लगा हुआ था इसलिए उसे स्थगित करना पड़ा था। अब फिर यह प्रश्न सभा के अधिकारियों के विचाराधीन है कि चुनाव कब और कहां करवाए जाएं। कुछ भाईयों ने यह सुझाव भी दिया है कि चुनाव कुछ समय के लिए पूर्णतया स्थगित कर दिया जाये। यह सम्भव न होगा। सभा के विधान की अवहेलना नहीं की जा सकती। उसके अनुसार अगस्त 1984 से पहले चुनाव अवश्य हो जाना चाहिए। एक बार चुनाव हो जाए और एक वर्ष व्यतीत हो जाए तो दूसरा चुनाव होना चाहिए। परन्तु सभा को यह अधिकार है कि वह एक वर्ष और बिना चुनाव के चल सकती है। इस आधार पर जो चुनाव अगस्त 1982 में हुआ था वह अधिक से अधिक अगस्त 1984 तक चल सकता है और उसके पश्चात् नये अधिकारी ही सभा का काम चला सकते हैं। इसलिए हम चाहें या न चाहें हमें चुनाव कराना ही पड़ेगा। मैं इसलिए भी चाहता हूं कि चुनाव करवाया जाए क्योंकि अधिकारियों में परिवर्तन की बहुत अधिक आवश्यकता है। 1982 में जब विधान में संशोधन किया गया था और अधिकारियों की संख्या कुछ बढ़ा दी गई थी तो मैंने यह समझा था कि अब आर्य समाज का काम पहले से अधिक उत्साह के साथ चलाया जाएगा। परन्तु मुझे बहुत निराशा हुई है कि कई व्यक्ति जो अधिकारी बन गए थे उन्होंने कोई काम नहीं किया। इसलिए भी यह आवश्यक है कि नये अधिकारी निर्वाचित किए जाएं जो सभा को सक्रिय कर सकें और इसके सामने जो समस्याएं हैं उनका समाधान करने में कुछ रुचि ले सकें। परन्तु चुनाव हो सकेगा या नहीं इसके विषय में अभी भी कुछ कहना कठिन है। चुनाव की तिथि और स्थान निश्चित करना तो कठिन नहीं है। परन्तु चुनाव के समय कहीं कोई ऐसी घटना हो जाए, जिसके कारण सब सदस्य चुनाव के लिए न पहुंच सकें, इसकी सम्भावना से इन्कार नहीं किया जा सकता।

मैंने यह सब कुछ केवल इसलिए लिखा है कि आर्य बन्धुओं को यह पता चल जाए कि हम आज किस संकट में से गुजर रहे हैं। ऐसी स्थिति में हमारे लिए यह सोचना और भी अधिक आवश्यक हो जाता है कि जिस परीक्षा की घड़ी में से आज हम गुजर रहे हैं उसमें हमें क्या करना चाहिए। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के पास अब उस उच्चकोटि के उपदेशक और भजनीक नहीं हैं जो पहले हुआ करते थे। हम अपने उत्सवों पर कई बाहर के विद्वान बुलाया करते हैं अब वे भी आने से घबराते हैं। जब किसी से कहा जाए कि वे पंजाब आएं तो पहला प्रश्न किया जाता है कि पंजाब की स्थिति क्या है? क्या वहां जाना सुरक्षित रहेगा? हम लोग जो पंजाब में रह रहे हैं हम तो फिर भी इधर उधर जाते रहते हैं और कई बार ऐसा भी प्रतीत होता है कि जिस प्रकार एक जंगल में भीषण आग लगी हो उसमें से गुजरना कठिन हो जाता है। इसी प्रकार पंजाब में भी एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना कठिन हो जाता है। आर्य समाजें अब अपने उत्सव नहीं कर रहीं। इसमें उनका भी दोष नहीं है। हमारे उत्सव प्रायः प्रातः दोपहर और सायं तीनों समय हुआ करते थे। अब कोई सायं काल को अपने घर से निकलना पसन्द नहीं करता। ऐसी स्थिति में उत्सव कैसे हो सकते हैं और यह केवल आर्य समाज की स्थिति नहीं सब संस्थाओं का यही हाल है। इसलिए प्रचार के साधन सीमित होते जा रहे हैं इसी कारण मैं कहता हूं कि अब आर्य समाजियों को बैठकर गम्भीरतापूर्वक सोचना चाहिए कि जिस अग्नि परीक्षा में अब उन्हें डाल दिया गया है उसमें वह क्या कर सकते हैं? एक बात बिल्कुल स्पष्ट है कि दूसरे प्रान्तों में रहने वाले हमारे आर्य भाई हमारी कोई सहायता न कर सकेंगे। उन्हें हमारे साथ सहानुभूति तो है परन्तु किसी प्रकार की सक्रिय सहायता की हम उनसे आशा नहीं कर सकते। एक प्रकार से जिस संकट में से आर्य समाज इस समय गुजर रहा है पंजाब से बाहर की आम जनता का व्यवहार निराशाजनक है। जब कि पंजाब में आग लग रही है और यह स्पष्ट दिखाई दे रहा हो कि जो कुछ हो रहा है यह केवल चण्डीगढ़ या नहरी पानी की लड़ाई नहीं है इसके पीछे एक बहुत बड़ा अन्तर्राष्ट्रीय षड्यन्त्र है जिसके द्वारा हमारे देश के और टुकड़े कराने का प्रयास हो रहा है। एक प्रयास पहले किया गया था जब पाकिस्तान बना था अब खालिस्तान बनाने के लिए यह सब कुछ हो रहा है। इस में अमेरिका पाकिस्तान, चीन और कुछ दूसरे राष्ट्र भी अपने अपने ढंग से आग पर तेल छिड़क रहे हैं। इसलिए हमें किसी भ्रान्ति में न रहना चाहिए और गम्भीरतापूर्वक विचार करना चाहिए कि हमारे देश के टुकड़े-करने का जो षड्यन्त्र हो रहा है उसमें आर्य समाज क्या कर सकता है? पंजाब से बाहर के आर्य समाजों के विषय में तो हम कुछ नहीं कह सकते परन्तु पंजाब की आर्यसमाजों को तो इस विषय में सोचने की आवश्यकता है। अब जब कि हमारे प्रचार का पहला साधन भी बदल रहा है हमें यह भी सोचना चाहिए कि हम प्रचार कैसे कर सकते हैं और जनता के साथ आर्य समाज का सम्पर्क भी कैसे रह सकता है? जैसा कि मैंने ऊपर लिखा है स्थिति अत्यन्त गम्भीर है। इसलिए यह और भी आवश्यक है कि हम बैठ कर सोचें कि हम क्या कर सकते हैं? समस्या के इस पक्ष पर आगामी अंक में अपने विचार पाठकों के सामने रखूंगा।

—वीरेन्द्र

## श्री ब्रह्मदत्त जी शर्मा वेद प्रचार अधिष्ठाता मनोनीत

सभा में चिरकाल से वेद प्रचार अधिष्ठाता का पद रिक्त था। सभा की कार्यकारिणी ने इस पद के लिए आर्य समाज गोबिन्दगढ़ जालन्धर के मन्त्री श्री ब्रह्मदत्त जी शर्मा को मनोनीत किया है। श्री शर्मा जी एक लगनशील और कर्मठ कार्यकर्ता हैं। हमें आशा है कि उनकी देख रेख में वेद प्रचार का कार्य सुचारु रूप से चलता रहेगा। हमारी सभी आर्य समाजों के अधिकारियों से प्रार्थना है कि वह उन्हें अपना पूरा 2 सहयोग दें।

—रामचन्द्र जावेद, सभा महामन्त्री

# गुरुकुलों की समस्याओं का एक ही हल है

ले—श्री सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार विजिटर (परिद्रष्टा)
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार

स्वतन्त्रता प्राप्ति से पहले गुरुकुलों की बाढ़ सी आ गई थी जगह जगह गुरुकुल खुल रहे थे। कोई राज्य ऐसा नहीं था जिसमे गुरुकुल नाम की कोई न कोई संस्था नहीं थी। महात्मा गांधी प जवाहरलाल नेहरू श्री राजेन्द्र प्रसाद ये सब राष्ट्रीय चेतना का केन्द्र अगर कहीं देखते थे तो उनकी दृष्टि गुरुकुलो की तरफ जाती थी। नाम चाहे गुरुकुल हो चाहे विद्या पीठ हो सबका मतलब एक ही था—राष्ट्रीयता भारतीयता इस देश की संस्कृति मे प्रेम। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद यह स्वाभाविक था कि इन संस्थाओ का सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त होती क्योकि देश के अन्धकार के युग मे ये ही राष्ट्रीयता भारतीयता तथा देश की संस्कृति को बनाए रखने वाले केन्द्र थे जिन्होने विदेशी संस्कृति के इस देश की संस्कृति पर हो रहे आक्रमण का डटकर मुकाबला किया था।

स्वतन्त्रता आयी और सरकार ने 1962 मे गुरुकुल पद्धति के मूल स्रोत गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय को मान्यता प्रदान की। यह मान्यता इस कारण नहीं दी गयी थी कि जहां गुरुकुल स्थापित था उसके आस पास अंग्रेजी गणित फिलासफी सोशियोलोजी आदि की उच्च शिक्षा देने वाली संस्थाएं नही थी। स्कूल कालेज जगह-जगह शहर शहर मे खुले हुए थे जहां प्रचलित शिक्षा पद्धति के अनुसार जो चाहता शिक्षा प्राप्त कर सकता था। गुरुकुल को विश्वविद्यालय के रूप मे मान्यता देने का लक्ष्य यह था कि जिन सिद्धान्तो को लेकर गुरुकुलो की स्थापना हुई थी उन सिद्धान्तो को सुरक्षित रखा जाए। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के कुछ आधारभूत सिद्धान्त हैं। उदाहरणार्थ ब्रह्मचर्य तपस्या का सादा जीवन गुरु-शिष्य का दिन रात का सम्बन्ध आश्रम व्यवस्था प्रातःकाल उठकर संध्या हवन करना, संस्कृत तथा वैदिक संस्कृति का ज्ञान एवं उसे जीवन मे उतारना सह-शिक्षा का न होना जन्म की जात पात को न मानना इत्यादि ये गुरुकुल शिक्षा पद्धति के आधारभूत सिद्धान्त हैं। इन सिद्धान्तों का यह अर्थ नही है कि गुरुकुल मे पढ़े बालको को वर्तमान विज्ञान से वंचित रखा जाए। जब गुरुकुल कांगड़ी अपने यौवन पर था तब वहां के विद्यार्थी उक्त सिद्धान्तो को जीवन मे घटाते हुए शिक्षा के क्षेत्र मे आधुनिक विज्ञान का पूर्ण ज्ञान रखते थे साथ ही संस्कृत के भी पूर्ण पण्डित होते थे। थोड़े शब्दों मे कहा जाए तो कहा जा सकता है कि गुरुकुल के विद्यार्थी प्राचीन भारतीय संस्कृति मे ओत प्रोत होने के साथ साथ पूर्व तथा पश्चिम के विज्ञान के भी निष्णात होते थे और इसी सम्मिश्रण को गुरुकुल शिक्षा पद्धति का नाम दिया गया था। 1962 से जब गुरुकुल कांगड़ी को सरकार द्वारा विश्वविद्यालय को मान्यता तथा आर्थिक सहायता दी जाने लगी तब गुरुकुल का यही चित्र सरकार के सामने था यही उसका स्वप्न था। यह मान्यता गुरुकुल विश्वविद्यालय को नही परन्तु गुरुकुल कांगड़ी जैसा भी वह था उसे दी गयी थी।

दुर्भाग्यवश अब स्थिति वह नही है अब जो छात्र विश्वविद्यालय की कक्षाओ में पढ़ते हैं उन्हे गुरुकुल की परम्पराओ का न तो ज्ञान है न उन परम्पराओ को जानने की उनमे उत्सुकता है। अब गुरुकुल के विद्यालय विभाग में तो वह परम्परा मौजूद है परन्तु गुरुकुल विश्वविद्यालय विभाग मे अपनी वह विशेषता नही रही रही जिसके कारण इस संस्था को विश्वविद्यालय की पदवी दी गई थी। 9 10 मार्च 84 को यूनिवर्सिटी ग्रान्ट्स कमीशन की एक विजिटिंग कमेटी गुरुकुल विश्वविद्यालय की कुछ आर्थिक योजनाओ का अध्ययन करने वहां गई थी। मैं भी उनके साथ गुरुकुल गया था। बातचीत के दौरान इस कमेटी के एक मुख्य सदस्य ने मुझ कहा कि सुना है वहां यज्ञशाला मे कोई यज्ञ नहीं करता वह सूनी पड़ी रहती है। मैंने उन्हें कहा कि जो असली गुरुकुल है छोटे बच्चो का गुरुकुल जिसमे बाल्यावस्था मे बच्चे लिए जाते हैं उसमे तो प्रात सायं दोनो समय सन्ध्या हवन होता है। जब हम लोग गुरुकुल पहुंचे रात को सोने के बाद उठने पर प्रात 4 बजे ब्रह्मचारी वेदो के मन्त्रो का उच्चारण कर रहे थे और 5 बजे के लगभग शौचादि से निवृत्त होकर योगासन कर रहे थे। यह सब कमेटी के सदस्यों को दिखलाया गया। यह सब देखकर कमेटी के सदस्य प्रभावित अवश्य हुए, परन्तु मेरा मन कहता रहा कि दिखाते हुए इन बच्चो के गुरुकुल को और इसका नाम मिलता है गुरुकुल के उस भाग को जिसमें न गुरुकुलीयता है न गुरुकुलीय संस्कृति है और जिसमे गुरुकुल—इस नाम के सिवाय ऐसा कुछ भी नहीं है जिसे यथार्थ रूप मे गुरुकुल कहा जा सके ऐसा गुरुकुल जो गुरुकुलीय सिद्धान्तो पर आधारित हो।

मैंने यह सारी समस्या कमेटी के सामने नग्न रूप मे रखी। गुरुकुल को अनुदान के रूप मे जो मान्यता मिलती है वह उसके गुरुकुलीय रूप को गुरुकुलीय संस्कृति को कायम रखने के लिए मिली है परन्तु इस ग्रान्ट से लाभ मिल रहा है गुरुकुल केवल नाम को वहां गुरुकुलीय रूप या गुरुकुलीय संस्कृति नहीं है। होना तो यह चाहिए था कि गुरुकुल विश्वविद्यालय मे वे विद्यार्थी दिखलायी देते जो अन्य शिक्षा संस्थाओ से अपनी विशेषता के कारण भिन्न हैं परन्तु हो यह रहा है कि इसका विकास अन्य चालू शिक्षा संस्थाओ का प्रतिबिम्ब होता जा रहा है। उसी के लिए लाखो रुपयो की मांग हो रही है और उसी के लिए यू जी सी लाखो दे रही है। इस संस्था मे वे विद्यार्थी भरती हो रहे हैं जो गुरुकुलीयता या गुरुकुलीय संस्कृति से शून्य होते हैं अधिकांश संख्या उन्हीं लोगो की है। इस समस्या का हल ढूंढना आवश्यक है क्योकि अगर यह समस्या हल हो जाती है तो भारत भर के सब गुरुकुलो की समस्या इस विश्वविद्यालय का विकसित अंग होने के कारण हल हो जाएगी। इस समय वृक्ष का तना बढ़ता जा रहा है उसकी जड़ सूखती जा रही है। गुरुकुलीयता या गुरुकुलीय संस्कृति को पनपने के लिए उसकी जड़ में पानी देना होगा ताकि अपने ढंग का यह वृक्ष हरा भरा हो इस के पत्तो मे चमक हो, फूलो मे सुगन्ध हो और फलो मे रस हो।

कमेटी के सदस्यो में से एक सज्जन ने जिन्होने शंका की थी कि वहां की यज्ञशालाएं सूनी पड़ी रहती हैं इस समस्या का हल सुझाया था। उन्होंने कहा कि गुरुकुल को विश्वविद्यालय की मान्यता उसकी अपनी विशेषता के कारण दी गयी थी। यह विशेषता वहां से शुरू होती है जहां से बालक गुरुकुल में प्रवेश करता है। गुरुकुल का विद्यालय विभाग उसी प्रकार विश्वविद्यालय का अंग है जिस प्रकार गुरुकुल का कालेज विभाग अंग है या जिस प्रकार पैर सम्पूर्ण शरीर का अंग है। गुरुकुल विश्वविद्यालय को दी जाने वाली ग्रान्ट के लिए आपको यह प्रयत्न करना चाहिए कि गुरुकुल का विद्यालय विभाग तथा कन्या गुरुकुल इन दोनों को गुरुकुल विश्वविद्यालय का अभिन्न अंग माना जाए ताकि दोनों विभागों को आर्थिक अनुदान दे इनको उच्च स्तर पर लाया जा सके जिस कारण आपके गुरुकुल के वातावरण में पढ़ हुए छात्रो तथा छात्राओ से सारा विश्वविद्यालय भर जाए और आपको बाहर से छात्र लेने की आवश्यकता न रहे इसी प्रकार आप अपनी संस्कृति तथा अपनेपन को कायम रख सकते हैं अन्यथा बाहर से छात्र भरती करते करते किसी समय आप नाम मात्र के गुरुकुल कहलाए गे, आपका अपनापन नष्ट हो जाएगा अनुदानों से आप एक बड़ी यूनिवर्सिटी बन जाएंगे, परन्तु भीतर से खोखले हो जाएंगे।

इस सिलसिले मे उन्होने अलीगढ़ यूनिवर्सिटी तथा जामिया मिलिया का दृष्टान्त दिया। ये संस्थाएं स्वतन्त्र रूप से केन्द्र द्वारा शासित हैं। इनके विद्यालय विभाग भी केन्द्र द्वारा विश्वविद्यालय को प्रदत्त अनुदानो से चलते हैं। इनकी अपनी अपनी विशेषता है जिसे प्रजातान्त्रिक राज्य में बनाये रखना राजनीतिक सिद्धान्त है राजनीति में अल्प संख्यक लोगो या संस्थाओ को राज्य से पूर्ण संरक्षण प्राप्त होता है। गुरुकुल पद्धति मे लड़के लड़कियों का एक साथ रहकर पढ़ना निषिद्ध है। यह हमारे सिद्धान्त का अंग है। इसमें किसी को दखल देने का अधिकार नहीं है। इसलिए अगर गुरुकुल के संचालक सिद्धान्त के आधार पर लड़कियों को गुरुकुलो के एक अन्य परिसर मे रखते हैं तो इस आधार पर उन्हें निरन्तर मिलने वाली सरकारी सहायता से वंचित नहीं किया जा सकता। गुरुकुल विश्वविद्यालय का सैद्धान्तिक रूप से एक यूनिट मानकर उसे विद्यालय विभाग, कन्या गुरुकुल विभाग तथा कालेज विभाग के तौर पर यूनिवर्सिटी ग्रान्ट कमीशन से अथवा केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय से अन्य केन्द्रीय विद्यालयो की तरह गुरुकुलीय पद्धति की शिक्षा तथा जीवन विधि को ध्यान में रखते हुए भरपूर आर्थिक सहायता मिलनी चाहिए ताकि भारत भर के गुरुकुल एक दृढ़ नींव पर खड़ होकर एक सूत्र में बंध सकें। गुरुकुल विश्वविद्यालय के लिए हमारे फीडिंग गुरुकुल सहायक होंगे ताकि हमारा विश्वविद्यालय उन गुरुकुलों मे शिक्षा प्राप्त छात्रो से इतना भर जाए कि हमें बाहर से छात्रों को लेने की आवश्यकता ही न रहे।

इस दिशा में गुरुकुल के संचालकों को सक्रियता से, तत्परता से तथा बार-बार आवेदन पत्र देकर और मिलने जुलने से प्रयत्न करने की आवश्यकता है ताकि गुरुकुल शिक्षा पद्धति शिक्षा के जगत में अपना स्थिर स्थान बना सके। इस समस्या को हल करने के लिए एक सा-धिकार कमेटी बन देनी चाहिए जो सिर्फ इस समस्या को हल करें क्योंकि गुरुकुलों के अध्यापकों का असन्तोष दूर करने का यही एक मार्ग है कि उन्हें विशेष पद्धति का अनुसरण करने के कारण गुरुकुल विश्वविद्यालय के यूनिट का अंग स्वीकार किया जाए।

# अपने स्वरूप को पहचानो

ले —श्री विजय कुमार शर्मा विद्यावाचस्पति साहित्याचार्य
एम ए आर्य समाज पठानकोट

हमें परमात्मा ने अपनी कृपा से मनुष्य चोला देकर कर्म करने में आजाद बनाया है। इससे बढ़कर यह कृपा कर दी कि मनुष्य अपने स्वरूप को पहचान सके। उसने अनित प्रयत्न की जोकि सम्पूर्ण कलाओं की कला सम्पूर्ण ज्ञानों का ज्ञान आधार संसार का सार प्रकाशों का प्रकाश है ताकि मनुष्य जान सके कि वह कौन है ?

नामकरण संस्कार करते समय पुरोहित बालक के पिता से कहलवाता है कि ऐ बालक ! कोऽसि कतमोऽसि तू कौन है ? बहुतों के बीच कौन सा है ? इस प्रश्न का उत्तर जाने बिना बालक इस संसार से चला जाता है। इस प्रश्न का उत्तर न उसे माता पिता से प्राप्त हुआ और न ही पुरोहित ने उसे दिया। समाज भी उसको इस प्रश्न का जीवन भर उत्तर न दे सका और वह अपना जीवन समाप्त करके नए लोक को चला गया। सवाल बिना हल किए हुए रह गया। मनुष्य अपने आपको परमात्मा की कृपा से पहचान सकता है। जिज्ञासु घूम-घूमकर हार गए। परन्तु प्रयत्न करने वाले किसी और दरवाजे से कुछ पा न सके। आखिर उसने जिसने अपना दरवाजा खटखटाया और अपने आप से पूछा तब उसने अपने प्रश्न का उत्तर पाया। इस प्रश्न का उत्तर अपने आप में पा लेना ही अकलमन्दी है। इसी प्रश्न का उत्तर पाने के लिए कितने ही मनुष्य साधु सन्त और योगियों के पास जाते हैं। इस प्रश्न का उत्तर भगवान् बुद्ध के कथानक से इस प्रकार मिलता है—

भगवान बुद्ध के पास एक भक्त आया। उसने प्रार्थना की कि उसे बरसों ठोकरें खाते हुए हो गए हैं। कई सन्तों से प्रार्थना की कि उसके प्रश्न का उत्तर दें कि मैं कौन हूं ? बहुतों के बीच कौन सा हूं ? पर उनके उत्तर उसकी जिज्ञासा का उचित समाधान न कर सके और यह प्रश्न उसे सताए जा रहा है। भक्त की इच्छा भगवान् बुद्ध ने जान ली और भक्त को कहा कि वह एकान्त स्थान में एक साल के लिए बैठ जाए। इन प्रश्नों का उत्तर अपने आप से पूछे। अगर साल भर में उसे इन प्रश्नों का उत्तर न मिला तो अगले साल मैं इस जगह पर आऊंगा और आपकी कामना पूरी करूंगा। भक्त-ध्यान मग्न और तदनुसार तपस्या में जुट गया। अगले साल जब भगवान बुद्ध वहां आए भक्त से सवाल के बारे में पूछताछ की। तब भक्त ने कहा कि अब प्रश्न, प्रश्न ही नहीं रहे। मजे की बात है कि अपने स्वरूप में मैं कौन हूं। बहुतों के बीच कौन सा हूं ? कहां से आया हूं। का मजमून इतना नाजुक, सगीन गहरा और हकीकत का है कि कोई गैर इसका जवाब देने के योग्य ही नहीं। महर्षि दयानन्द भी तो स्वामी विरजानन्द से यही सवाल पूछने गए थे कि मैं कौन हूं ? किसी ने ठीक ही कहा है कि सवाल अपना और पूछना किसी से ? इसमें परदा भी है व्याज भी है उद्घाटन भी है और उसूल भी है। जो यह जान जायें कि हम कौन हैं ? वे इतने निडर हो जाते हैं कि मौत भी उनके लिए कोई डर नहीं रखती धन दौलत का तो कहना ही क्या ? मौत का भय उनसे इस तरह पलायन कर जाता है जिस तरह कि अंधेरा रोशनी से।

मनुष्य अपने में मस्त हो जाए तो इस पृथ्वी पर न तो इतना सुन्दर कोई फूल है जैसा कि मनुष्य और न ही कोई चमकता हुआ सितारा है न ही मनुष्य जैसा कोई सुन्दर गीत गाता हुआ झरना है न ही ऐसी कोई चांदनी रात है न कोई समुद्र की लहर इतने आनन्द से भरी है जितना मनुष्य है परन्तु प्राय मानव सोया हुआ बेहोश है जब कि ऐसा मनुष्य जगा हुआ होश में है। समझदार व्यक्ति स्वयं जानना चाहता है कि वह कौन है ? यह मौलिक उत्तर भगवान की कृपा से प्राप्त होता है मैं कौन हूं इस रहस्य को जानने का सामर्थ्य प्रभु से प्राप्त होता है। परम गुरु हमें दीक्षा प्रदान करते हैं ताकि हम जानें कि हम कौन हैं ? सुकरात मर रहा है अन्तिम क्षण हैं जहर पीसा जा रहा है उसे मारने के लिए। वह बार बार पूछता है कि बड़ी देर हो गई है जहर कब तक पिसेगा ? उसके मित्र रो रहे हैं और कह रहे हैं कि आप पागल हो गए हैं। हम चाहते हैं कि थोड़ी देर और जी लो हमने जहर देने वालों को रिश्वत दी है। उन्हें समझाया है कि थोड़ा धीरे धीरे पीसना। सुकरात बाहर पहुंच जाता है और जहर पीसने वालों से पूछता है कि बड़ी देर कर दी है बड़े अकुशल प्रतीत होते हो यह पीसने वाले बोले कि हम चाहते हैं कि तुम कुछ अधिक जी लो तुम्हें इतनी जल्दी क्यों है ? सुकरात कहता है कि उसे बड़ी जल्दी है मरने की क्योंकि वह देखना चाहता है कि मौत क्या है। सुकरात ने यह भी कहा कि वह यह भी देखना चाहता है कि मौत के बाद वह फिर भी बचता है कि नहीं और अगर वह नहीं बचता तो सारी बात ही समाप्त हो जाती है और यदि उसका नाम रह जाता है तो फिर मौत ही समाप्त हो जाती वास्तव में मौत की घटना में वह देखना चाहता है कि मौत मरेगी या सुकरात। सुकरात को जहर दे दिया गया। सारे मित्र छाती पीट पीट कर रो रहे थे पर सुकरात होश में है वह कहता है कि अब उसके पैर मर गए हैं। जहर धीरे धीरे घुटनों तक चढ़ रहा है तब भी वह जिन्दा है। सुकरात अनुभव कर रहा है और कह रहा है मित्रो रोओ मत तुम्हें एक मौका मिला है देखो एक व्यक्ति मर रहा है और तुम्हें खबर दे रहा है कि वह फिर भी जिन्दा है। हो सकता है थोड़ी देर में तुमको खबर देने को न रह जाऊं लेकिन तुम यह न समझ लेना कि मैं मिट गया शरीर इतना मिट जाने पर भी मैं नहीं मिटा मैं हूं और रहूंगा। सो वह है यह रस शक्ति नित्य सत्ता जो अमर है। इस अमर आत्मा को जानना ही मुक्ति है। जानना ही जीत बन जाता है यही ज्ञान की शक्ति है मुक्ति है यही ज्ञान विजय है जीवन का जो मन्दिर है उसकी दीवार पर मृत्यु की छाया के चित्र खड़े हैं मौत के नक्शे बने हुए हैं और हम मौत से भागने के कारण जीवन के मन्दिर से भी भागते जा रहे हैं। जीवन का देवता है और मन्दिर की दीवार है शरीर की दीवार है और आत्मा का देवता अन्दर विराजमान है। जीवन एक कदम है मौत दूसरा कदम है और यदि हम उतर जाएं भीतर तो यही जीवन का दर्शन हो जाता है। महान सन्तों ने इस सत्य का साक्षात्कार कर लिया है केवल कमी हमारे न मानने की है।

अपने स्वरूप को पहचाने बिना व्यक्ति न तो इस लोक का निर्माण कर सकता है और न ही परलोक का। महर्षि याज्ञवल्क्य ने गार्गी के एक प्रश्न के उत्तर में कहा था कि जो आदमी इस अजर अमर आत्मा को जाने बिना इस संसार से चला जाता है वह बड़ा भाग्यहीन है। राजा जनक याज्ञवल्क्य से प्रश्न करते हैं कि महाराज यदि सूर्य लुप्त हो जाए तो मानव कौन सी ज्योति का आश्रय ले। उत्तर मिला चन्द्रमा से। फिर पूछा यदि चन्द्रमा लुप्त हो जाए तो किस शक्ति से, उत्तर मिला अग्नि से। फिर प्रश्न किया कि अग्नि लुप्त हो जाए तो किससे उत्तर मिला वाणी के अवलम्ब से। फिर पूछा यदि वाक् शक्ति नष्ट हो जाए तो किससे उत्तर मिला कि आत्म दीप से। यह स्वयं प्रकाश वाली सत्ता जो अपने में ही परिपूर्ण है। जिन्होंने निज आत्म प्रकाश प्राप्त नहीं किया उनका जीवन अधूरा रह जाता है। स्वयं को जानने का प्रयत्न करना चाहिए क्योंकि स्वयं को जाने बिना सत्य का दर्शन न हो पाएगा। देवी-देवताओं को छोड़कर अपनी अन्तरात्मा में नेकी तलाश करना ही शुभ कर्म है। स्वामी विवेकानन्द कहा करते थे कि कि उन्होंने कई वर्ष अनेक देवी देवताओं को पुकारा परन्तु जब समझ आ गई तो सिवाय स्वयं को पुकारने के कुछ रह ही न गया। उनके अनुसार वास्तविकता यह है जिसे अपने आप में विश्वास नहीं ज्ञान नहीं। स्वयं का ज्ञान लेना एक महान प्राप्ति है। लेकिन मनुष्य अपने स्वरूप को न पहचान कर अपनी उलझन बढ़ाता है और यह स्वयं से ही भाग जाता है। अपनी उलझनों के विस्तार करने के कारण मनुष्य जीता कम तथा मरता ज्यादा है जीवन का अर्थ वही समझ सकता है जो अपनी उलझन कम करे। जो स्वयं के प्रति जागता है। स्वयं होना बड़ी साधना है। एक आदमी को अपनी छाया तथा निज पद चिन्हों से चिढ़ लगती थी दोनों से मुक्ति पाने के लिए वह दौड़ पड़ा पागलों की तरह। भागते भागते वह थक कर गिर पड़ा और मर गया। उसे मालूम न था कि छाया में जा बैठने से परछाईं नहीं बनती और न दौड़ने से पदचिन्ह भी नहीं बनते हैं। सब लोग इसी तरह अपने से भाग रहे हैं। अपनी वास्तविकता से अपनी परछाईं में अपने व्यक्तित्व से छाया में कोई बैठ और सोचे कि वह क्या है ? क्या कोई तट पर खड़ा जंजीरों में जकड़ा हुआ सागर की यात्रा कर सकता है। पर हम सत्य से इन्कार करते हैं। प्रत्येक की धारणा यह बनी हुई है कि वह नहीं मरेगा। प्रत्येक यह समझता है कि उसे ही सुखी होने का अधिकार प्राप्त है। इसलिए मानव धोखा खा रहा है मनुष्य पीड़ा में है। क्योंकि वह स्वयं के विरोध में है। जन्म हर कोई चाहता है पर निर्माण कोई नहीं चाहता है मनुष्य जैसे जैसे स्वयं को खोता जा रहा है वैसे ही अपने आपको बन्धन में डाले जा रहा है।

अत मनुष्य को अपने स्वरूप को जानने के लिए अपने प्रति उन्मुख होना चाहिए। व्यक्ति के स्वरूप को जानने पर सब कुछ उसके हाथ में हो जाया करता है। यह अनुभूति कि मैं हूं स्वयं में एक प्रगति है। जीने की इच्छा रखने वाले व्यक्तियों को अपने स्वरूप को पहचानने का प्रयास करना चाहिए जिससे परलोक का निर्माण कर सकें।

—

# राम तुम्हारा शत अभिनन्दन

ले —श्री राधश्यामजी आर्य विद्या वाचस्पति

राष्ट्र पुरुष थे विश्व विजेता मर्यादा पुरुषोत्तम
महामनस्वी थे सत्य शिव सुन्दर से भी सुन्दरतम,
रविकुल के रवि बनकर तुमने नष्ट किया था तमस्तम
युग स्रष्टा हे युग परिवर्तक तुम उत्तम से भी उत्तम,

आर्य पुत्र हे देव पथिक भारत सुत ! हे दशरथ नन्दन !
राम तुम्हारा शत अभिनन्दन ॥

महिमण्डल की असुर शक्तियों का तुमने संहार किया
आर्य धर्म की मर्यादा रख जगती का उपकार किया
अन्यायी रावण का वध कर धरती का उद्धार किया
मानवता की गरिमा से भारत भू का श्रृंगार किया

विश्व प्रभु सुर सन्तों में भर दिया अमरता स्पन्दन ।
राम ! तुम्हारा शत अभिनन्दन ॥

न्याय धर्म का दया प्रेम का तुमने तान वितान दिया
यम नियमों की गरिमा को तुमने सक्षम सम्मान दिया
जगती के जन जन को तुमने पुरुषोचित अभिमान दिया
कर सर्वस्व निछावर अपना काम सभी निष्काम किया

नष्ट किया तुमने निर्भय हो इस धरती का दानव क्रन्दन ।
राम ! तुम्हारा शत अभिनन्दन ॥

—

# देश बरबादी के आसार नजर आते हैं

प्रस्तुतकर्ता—श्री कविराज छाजूराम शर्मा शास्त्री दिल्ली

आज मतलब के ही सब यार नजर आते हैं ।
बिना मतलब के बस दो चार नजर आते हैं ।

सुनता कोई नहीं फरियाद गरीबों की यहां ।
अब तो लाखों दुःखी परिवार नजर आते हैं ।

शान्ति मिलती थी जिन सन्तों के वचनों से कभी ।
खौफ भरे उनके अब दीदार नजर आते हैं ।

पूछा मैंने ये क्या है तो बोले अखबार है इसमें ।
देखा तो पिस्तौल और कटार नजर आते हैं ।

सन्त का नाम भी बदनाम हो रहा जग में ।
उनके पापों से भरे अखबार नजर आते हैं ।

देशभक्ति का सदा जो दम भरते थे कभी ।
वे ही अब देश के गद्दार नजर आते हैं ।

देश में मन्त्री हैं प्रधान और पुलिस भी है
उनके हथियार भी बेकार नजर आते हैं ।

करेंगे कैसे वे बीमार का इलाज भला ।
जो खुद ही हर तरह बीमार नजर आते हैं ।

है बिगड़ा सब जगह माहौल छाजूराम यहां ।
देश बरबादी के आसार नजर आते हैं ।

—

# गुजरात की चिट्ठी जीप यात्रा फर.-मार्च 1984

प्रेषक—ब्रह्मचारी आर्य नरेश यति मण्डल वैदिक प्रवक्ता

बीत गए पुराने दिन
हो रहे हैं हरे रंग ।

महाराष्ट्र के अध्यात्मपूर्ण वातावरण की घुटन से निकल कर हम गुजरात की ओर बढ़े । गुजरात महर्षि दयानन्द, बापू पटेल के कारण सम्पूर्ण विश्व में प्रसिद्ध है ।

श्री कल्याण जी भाई वेलाणी जिनके सहयोग से गुजरात में बड़े बड़े वैदिक यज्ञों की शुरुआत कर पाये थे तथा श्री बापू साहेब वाघमारे (स्व. श्री आनन्द मुनि जी के छोटे भाई) भी इस यात्रा में साथ थे । बम्बई-सूरत मार्ग पर स्थित हम प्रसिद्ध बापी नगर में रुके । यहां के शिव शक्ति सा मिल ने हमारा भावभीना स्वागत किया । उन्होंने दुःखित हृदय से बताया कि हम सब गुजराती व्यापारियों के देखते ही देखते यहां के गरीब से दिखाई देने वाले मुसलमानों ने हम से भी बढ़ी बोली देकर बहुत सी भूमि खरीद ली है श्री पटेल जी ने स्थानीय स्थिति पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यहां की पुरानी मस्जिदों को मुरम्मत करवा कर हरा रंग करवा दिया गया है और नई खरीद की गई भूमि पर चन्द दिनों में एक विशाल मस्जिद भी बना दी गई है ।

इस बात में कोई संशय नहीं रह जाता कि गुजरात का मुसलमान भी पेट्रो डालर के बल पर बाढ़ की तरह आगे बढ़ रहा है । कच्छोली, सूरत आर्य समाज ज्ञानदीप हाउसिंग सोसायटी व स्नातक हाल में वैदिक धर्म की दुन्दुभी बजाते गुरुकुल सूपा के वार्षिक उत्सव में सम्मिलित हुए । गुरुकुल सूपा अमर शहीद श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज द्वारा संस्थापित गुरुकुलों में से एक विशाल गुरुकुल है । इस गुरुकुल में भोजन शिक्षा व निवास की इतनी अच्छी व्यवस्था है कि अच्छे 2 परिवारों के लोग अपने बच्चों को यहां प्रविष्ट करवाने में प्रतीक्षारत रहते हैं । गुरुकुलों का वातावरण बालकों के चरित्र तथा शारीरिक विकास के लिए अद्भुत है । बच्चों के रोग ग्रस्त होने पर उत्तम अस्पताल की व्यवस्था है । दैनिक यज्ञ व सन्ध्या का अनुष्ठान होता है ।

एक खेद जनक बात यह है कि यह गुरुकुल स्थानीय आर्य प्रतिनिधि सभा के हाथों से शिथिलता के कारण निकल कर । गत वर्षों से स्वामी नारायण सम्प्रदाय के हाथ में जा चुका है । दूसरे इस गुरुकुल में वैदिक सिद्धान्त व गुरुकुलीय संस्कृत शिक्षण अब नहीं चल रहा । गुजरात आर्य सभा सम्भवत इस को बचाने का कुछ प्रयास कर रही है । गुजरात की समाजों में धन की प्रायः कमी नहीं पर लगभग सभी समाजें विवाह संस्कार शालाएं बनकर रह गई है । कच्छगुप में गत वर्षों प्रचार करने से मुझ प्रसन्नता हुई कि वे साथ अच्छे उत्साही हैं । उसकी जानकारी मैं आपको गई मास की यात्रा में दूंगा ।

सूपा के पश्चात बड़ोदा, करणवती (अहमदाबाद) के विभिन्न स्थानों तथा अंबोली बाट में श्री भावी भाई वेलाणी के सहयोग से धूम-धाम से प्रचार हुआ । गुजरात के पश्चात् विदेशी पादरियों द्वारा आक्रान्त मध्य भारत के भावेर्ली देवगढ़ बावली व बामनेदा के आदिवासी लोगों कुछ स्थानों पर श्री रामकिशनजी आर्य की सहायता से प्रचार हुआ । आगे में ग्वालियर तथा अन्य समाजों में राष्ट्रीय एकता सम्मेलन करता दिल्ली लौटा ।

# आर्य समाज दारासलाम के मन्त्री का पत्र —सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र के नाम

माननीय प्रधान श्री वीरेन्द्र जी नमस्ते !

आपका पत्र दिनांक 1 3 84 का मिला पढ़कर अति प्रसन्नता हुई । हमारे दारासलाम आर्य समाज का सम्पर्क अब आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के साथ जुड़ गया है । मैं आशा करता हूं कि हमें प्रतिनिधि सभा पंजाब की तरफ से स्वामी दयानन्द के मिशन को आगे बढ़ाने में पूरा सहयोग मिलता रहा करेगा ।

महर्षि निर्वाण शताब्दी 4 11 83 को धूमधाम से मनाई गई । हर रोज प्रातः काल हवन आर्य समाज में होता है हर शनिवार साय काल साढ़े 5 से पौने 8 बजे तक हवन भजन, प्रवचन होता है आर्य समाज में गेस्ट रूम है जिसमें मेहमान बाहर से आकर ठहरते हैं हर त्योहार धूमधाम से मनाया जाता है जिस में हमारे भारत के हाई कमीश्नर महोदय का भी पूरा सहयोग मिलता रहता है पुरोहित के लिए जो शर्तें हैं हम आपको साथ के पत्र पर भेज रहे हैं ।

कृपा करके हमें 1984 की आर्य डायरी की लिस्ट भेजने का कष्ट करें । साथ एक भजनों की पुस्तक, जैसे हम छोटी आयु उमर में पढ़ता था तब हम-गाया करते थे जैसे कि —आई फौज दयानन्द वाली

हम रक्षा कर लियो वाली ।
हमारे बाल तथा बालनी हैं हम चाहते हैं
हमारे बच्चे भी ऐसे भजन सीखें ।

मेरे लिए कोई सेवा हो तो लिखें सब आर्य बहिनों और भाईयों को मेरा सादर प्रणाम कहें ।

आपका शुभचिन्तक
प्र मनाथ सैनी मन्त्री आर्यसमाजदारासलाम

# लन्दन से हमारी भारत यात्रा-1

ले,—श्री गिरीशचन्द्र खोसला लन्दन

जनवरी 1983 की मेरी भारत यात्रा के दौरान महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह के सम्बन्ध में चर्चा स्थान-स्थान पर हो रही थी। शताब्दी ऐतिहासिक महत्व स्थान को दिया जा रहा था। एक ही आवाज सुनाई दे रही थी दिल्ली या अजमेर। नेताओ, सभाओं के मत विभिन्न तथा विवादित थे। आर्य समाचार पत्रों मे उनके वक्तव्य तथा प्रेस नोट बराबर प्रकाशित हो रहे थे पर कहीं भी स्थिति स्पष्ट नहीं दिखाई दी। 14 फरवरी 1983 को मैं लन्दन वापिस आ गया। भारत से आने वाला प्रत्येक व्यक्ति स्वदेशी समाचारों से भर पूर होता है। मेरे से भी शताब्दी की तैयारियो के बारे मे बड़ी उत्सुकता पूर्वक पूछा गया लेकिन मैं कोई सन्तोष जनक उत्तर न दे सका।

अन्ततोगत्वा यह निश्चय हो ही गया कि शताब्दी अजमेर मे ही हो। हम लोगो के मन मे इस समारोह के प्रति अपूर्व उत्साह था। 51 वर्ष पूर्व अजमेर में मनाई गई अर्द्ध शताब्दी के भव्य प्रति रूप की गाथाए अब तक मन को भाती हैं। हमने निश्चय किया कि हम उसमे अवश्य ही सम्मिलित होंगे। थोड़े ही दिनो पश्चात समारोह समिति के अध्यक्ष स्वामी सत्यप्रकाश जी का पत्र आया कि आर्य समाज लन्दन के प्रधान प्रो सुरेन्द्रनाथ जी भारद्वाज को वैदिक धर्म की अभूतपूर्व सेवाओ के फलस्वरूप 'आर्य रत्न' की उपाधि से विभूषित किया जाएगा। यह समाचार सुनते ही सब ओर प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। प्रो भारद्वाज अपने विशिष्ट गुणों कारण इतने लोकप्रिय हैं कि उनका प्रत्येक परिचित इस शुभ समाचार फला न समाता हुआ स्वयं को सम्मानित होने का अनुभव कर रहा था। हमने निश्चय किया कि शताब्दी समारोह पर आर्य समाज लन्दन की गतिविधियो का दिग्दर्शन प्रदर्शनी के माध्यम से किया जाए। भारत जाने की तैयारिया होने लगीं। निर्वाण शताब्दी मे भाग लेने के लिए आर्य समाज लन्दन के प्रतिनिधि मण्डल के सदस्यो के नाम इस प्रकार थे। श्री सुरेन्द्रनाथ भारद्वाज श्रीमती निर्मला भारद्वाज। श्रीमती शारदा बेन पटेल। श्रीमती प्रभा बेन मकवाणी। गिरीशचन्द्र खोसला। हमने परोपकारिणी सभा से अजमेर में आवास के लिए टूरिस्ट बंगला पुष्कर में स्थान आरक्षित करवा लिए थे तथा प्रदर्शनी के लिए भी परोपकारिणी सभा के मन्त्री श्री श्रीकरण शारदा से स्थान बुक करवा लिया था।

23 अक्तूबर 1983 आखिर वह चिर प्रतीक्षित दिन आ ही गया। सुबह से ही यात्रा की शुभकामनाओं के टेली फोन आने लगे कई लोग स्वयं भी मिलने आए कई सज्जनों ने भारत मे अपने सम्बन्धियो को देने के लिए उपहारो तथा सन्देशों से हमारे सामान को बढ़ा दिया जिसके फलस्वरूप एक मोटी राशि हमें एयर लाईन्स वालो को अतिरिक्त देनी पड़ी लन्दन हीथरो हवाई अड्डे पर प्रो सुरेन्द्रनाथ भारद्वाज श्रीमती निर्मला भारद्वाज तथा मुझे विदाई देने के लिए काफी लोग पहुचे थे। लन्दन से प्राग तक डेढ़ घण्टे की उड़ान चैक एयरवेज द्वारा बहुत ही आरामदेह रही। प्राग मे चैकोस्लोवाकिया के जहाज से उतर कर अफगान एयर लाईन्स के जहाज में प्रवेश करते ही बहुत परिवर्तन लगा। प्रत्येक देश के हवाई जहाज पर वहा की सांस्कृति परम्पराओ का दिग्दर्शन सहज मे हो जाता है। अफगानी तरीके से अंग्रेजी बोलती हुई एयर होस्टेस अपनी व्यापारिक मृदुल मुस्कान से सेवा कर रही थी। जहाज मे अधिकतर यात्री पंजाबी ही थे ऐसा लग रहा था कि हम हवाई जहाज मे नहीं साउथाल मे लन्दन ट्रांसपोर्ट की किसी बस मे बैठ हैं। पूरा पंजाबी वातावरण था यात्री जहाज मे उपलब्ध कर मुफ्त शराब का फायदा उठाते हुए आनन्द ले रहे थे। अफगान एयरलाइन मे यह हमारी पहली यात्रा थी। शायद इसलिए हमें बहुत अजीब सा लग रहा था लेकिन लगता था जहाज का स्टाफ इस वातावरण का अभ्यस्त हो चुका था। मदिरा के सरूर के रस मे डूबे हुए बड़े सरदारों व अफगान एयरहोस्टेसो के तमाशाई कारनामे अनोखा दृश्य उत्पन्न कर देते थे। प्राग से चलकर जहाज मास्को थोड़ी देर रुक कर काबुल पहुचा वहा से पंजाब वाले यात्रियों की सुविधा के लिए एक उड़ान अमृतसर जाती है। माईक से घोषणा हुई कि अमृतसर जाने वाले यात्री उतर कर दूसरे जहाज मे बैठ जाए। जाते जाते एक मनचले सरदार ने फब्ती कस के सबका ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। इण्डिया वाले बैठ रहो असी ते जा रहे हैं। कुछ लोगो ने रोष से कुछ ने मजाक से उसकी तरफ देखा तो वह सीढ़िया उतर रहा था। सारे जहाज मे खालिस्तान आन्दोलन की चर्चा होने लगी। दो घण्टे बाद जहाज दिल्ली पहुचा स्वदेश पहुचने पर मातृ भूमि का स्पर्श ही यात्रा की सम्पूर्ण थकान को एक ही क्षण मे उतार देता है तथा मन मे एक एक आनन्दित अनुभूति बहुत ही सुख देती है लेकिन दूसरे क्षण ही कस्टम सम्बन्धी समस्याए मन मे भय पैदा करती हैं। सब कुछ अधिकारियों के मूड पर ही निर्भर करता है कि वह किसे कर मुक्त समझे तथा किस पर सीधा शुल्क लगाए। और अभी तो सामान जहाज से उतरना था।

# अपनत्व का आनन्द

ले—श्री धर्मवीरजी विद्यालंकार

मित्रस्याहम चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे।
मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।

अर्थ—मैं समस्त प्राणियो को मित्र समझू सब प्राणी मुझे अपना मित्र समझे और हम सब परस्पर मित्रता का आनन्द प्राप्त करें।

किसी वस्तु को पाकर अपनापन अनुभव कर अतीव प्रसन्नता होती है। कोई वस्तु अपने पास न होने पर तथा दूसरे के पास होने की अनुभूति होने पर ईर्ष्या द्वेष उत्पन्न होता है। शारीरिक कष्ट न होने पर भी मानसिक सन्ताप होता है।

सर्वात्मभाव मे विश्वास करने वाले मनुष्य सबको अपना बना लेते हैं। किसी को अपना कहने का परम सुख है। अपने पराए का भेदसमाप्त करना उच्चकोटि की साधना है। महात्मा कबीर की मृत्यु पर हिन्दू उनको अपना मान कर उनके शव को जलाना चाहते थे। जबकि मुसलमान उन्हे अपना मानकर दफनाना चाहते थे। ये लोग अपनत्व के आनन्द का अनुभव कर रहे थे।

सन्त सबको अपना समझता है। सब के हित मे समान रूप से प्रयत्नशील होता है। उसने सबको अपना मान, अपना बना लिया। इसके साथ ही आम जनता ने भी उसे अपना हितैषी माना। यह उस सन्त की साधना थी। आज यह उदार दृष्टिकोण नहीं रहा। आज एक सम्प्रदाय के अनुयायी अपने सन्त को मात्र उनका ही हित साधक मानता है यह दृष्टिकोण संकुचित है।

भारत ऋषि मुनियो सन्तो महन्तो एवं सन्नारियो की जन्म भूमि एवं कर्म भूमि रहा है। राम कृष्ण शंकर मात्र हिन्दुओ के हितचिन्तक नहीं थे गुरु गोविन्द सिंह मात्र सिक्खों के गुरु नहीं थे महर्षि दयानन्द मात्र आर्यों के हितैषी नहीं थे महात्मा गांधी मात्र कांग्रेस के नेता नहीं थे वे मानव मात्र के हितैषी यह दृष्टिकोण उदार है व्यापक है परस्पर मित्रता बढ़ाने वाला है। समाज और राष्ट्र की एकता को दृढ़ करने वाला है। किसी (महात्मा) को अपना मान लेना आत्मीयता के सुख की आनन्दमयी अनुभूति है। इसके साथ यह भी मान लेना कि वह महात्मा समस्त प्राणियो का हितैषी था उनका भी भला चाहता था उत्कृष्ट अनुभूति है। सात्विक आनन्द प्रदान करना है इसी अनुभूति का परिणाम है सबका भला चाहने की अपनी प्रवृत्ति का विकास सबके साथ भ्रातृत्व (अपनत्व) जोड़ने का आनन्द। हम अपने आनन्द को घटाए नहीं अपितु उत्तरोत्तर बढ़ाए और अपने पड़ोसियो को भी इसी प्रकार की प्रेरणा दें। वे भी इस अपनत्व के आनन्द को पा सके।

—

# स्वामी दयानन्द पर फीचर फिल्म न बनाई जाए

कुछ एक पत्रो मे स्वामी दयानन्द पर फीचर फिल्म बनाए जाने का प्रयास किसी आचार्य भगवानदेव जी द्वारा किए जाने का समाचार पढ़ने को मिला। इस प्रकार के कार्य के लिए स्वयं महर्षि दयानन्द के विचार उनके ग्रन्थ के अनुसार निम्नलिखित हैं—

आपके सम्मुख आपके पूज्य पुरुषाओ के रूप भर कर मलिन मनुष्य आते हैं और आप बैठ देखा करते हैं। उस समय आप लोगो को लज्जा नहीं आती। किसी साधारण पुरुष के माता पिता का रूप भर के कोई नचावे तो उसे कितना बुरा लगता है। परन्तु आप कुलीन लोग अपने मान्य महापुरुषों के स्वांग भरते हैं और प्रसन्न होते हैं।

ज्ञात हुआ है कि आर्य जगत की शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली ने भी अपनी एक बैठक मे ऐसी फिल्म के बनाए जाने की अनुमति दिया जाना उचित नहीं समझा।

आर्य समाज मोहल्ला गोबिन्दगढ़ जालन्धर मे प्रातः सत्संग उपरान्त महर्षि दयानन्द पर फिल्म बनाए जाने के प्रश्न पर विचार किया गया और ऊपरिलिखित महर्षि दयानन्द के विचारो एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्णयानुसार यह निश्चय हुआ कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली एवं आचार्य भगवानदेवजी से सानरोधपूर्वक प्रार्थना की जाए कि इस फिल्म का बनाना तुरन्त रोक दें और भविष्य में भी ऐसे विचार को तिलांजलि दे दें क्योंकि अभी तो यह कार्य प्रारम्भिक चरण मे है कोई हानि विशेष नहीं होगी। यदि यह फिल्म तैयार हो गई तो सम्भव है आर्य जगत का रोष उग्र रूप धारण कर जाए और अधिक हानि उठानी पड़े।

—ब्रह्मदत्त शर्मा
मन्त्री आर्य समाज गोबिन्दगढ़
जालन्धर

वर्ष 16 अंक 5 24 बैसाख सम्वत् 2041, तदनुसार 6 मई 1984, दयानन्दाब्द 160 । एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपये

## क्रान्ति के अग्रदूत श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा (11)

# विदेश में रहकर स्वतन्त्रता संग्राम के लिए आन्दोलन

—श्री वीरेन्द्रजी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

इसी सिलसिला के पिछले लेख में उस षडयन्त्र का उल्लेख किया जा चुका है जो मैकोनोची नाम के एक अंग्रेज ने अपने कुछ साथियों के साथ मिलकर श्यामजी कृष्ण वर्मा के विरुद्ध रचा था और उन्हें नवाब जूनागढ़ से बर्खास्त कर दिया। उस समय वह इस रियासत के दीवान थे। उनके विरुद्ध जो षडयन्त्र रचा गया था उसमें कुछ और अंग्रेज अफसर भी शामिल थे। जब श्याम जी को जूनागढ़ से निकाल दिया गया तो महाराणा उदयपुर ने उन्हें अपने पास रख लिया। कुछ अंग्रेज अफसर फिर भी उनके पीछे पड़ रहे। और महाराणा उदयपुर को श्याम जी के विरुद्ध भड़काने की कोशिश करते र श्यामजी ने नवाब जूनागढ़ से अपना कुछ बकाया वेतन भी लेना था। जब उन्होंने नवाब से उसके लिए कहा तो अंग्रेज अफसरों ने नवाब से कहा कि जब तक श्याम जी उन से क्षमा नहीं मांगे, उन्हें कुछ न दिया जाए नवाब भी कुछ सीमा तक उसके लिए तैयार हो सके। लेकिन उन शब्दों में क्षमा मांगने को तैयार न थे जो नवाब के सलाहकार और विशेष रूप से उसके अंग्रेज अफसर चाहते थे। उस समय कुछ ऐसा दिखाई दे रहा था कि कुछ अंग्रेज अफसर श्याम जी से ईर्ष्या कर रहे थे। [illegible] चाहते थे कि एक हिन्दुस्तानी [illegible] योग्यता से उस पद पर आ जाए [illegible] उन्होंने उन्हें गिराने की कोशिश

[illegible] श्याम जी पर [illegible] उन्होंने समझा [illegible] एक हिन्दुस्तानी [illegible] इंग्लिस्तान क्यों [illegible] है। [illegible]

इस सिहाज से परेशान थे क्योंकि उसे जूनागढ़ में एक बहुत ऊंचा पद दिलाने के लिए उन्होंने बहुत कोशिश की थी। वह जब वहां एक बड़ा शासक बन गया तो वह श्याम जी की ही जड़ काटने लग गया। कर्नल वाटसन भी एक बहुत ही घटिया किस्म का अंग्रेज था। वह भी किसी हिन्दुस्तानी की बरीयता सहन न कर सकता था

इन सभी हालात का श्याम जी पर बहुत असर हुआ उन ही दिनों दो और ऐसी घटनाएं हो गई जिन्होंने श्यामजी कृष्ण वर्मा को और भी अधिक परेशान कर दिया और उन्होंने अपने देश को छोड़ने का निश्चय कर लिया क्योंकि वह इस परिणाम पर पहुंच गए थे कि भारत में अंग्रेज के शासन में किसी हिन्दुस्तानी के लिए तरक्की करने की कोई आशा नहीं।

1884 में कांग्रेस का पहला अधिवेशन हुआ और 1897 में श्याम जी इंगलैंड के लिए रवाना हो गए जहां से वह फिर कभी वापस न आए 12 वर्ष दे श्याम जी ने अपने देश की राजनीति के कई उतार चढ़ाव देखे। वह कांग्रेस में शामिल न हुए लेकिन दूर से ही उसकी सरगर्मियों का जायजा लेते रहे उस समय तक कांग्रेस और श्याम जी दोनों ही एक ही राह पर चल रहे थे। दोनों का ही विचार था कि भारत में अंग्रेजी शासन इस देश के लिए बहुत लाभप्रद है। इसलिए सरकार के साथ सहयोग करके ही चलना चाहिए। श्याम जी ने क्योंकि अपने जीवन का बहुत सा समय इंगलैण्ड में ही व्यतीत किया था। वहां [illegible] उन्होंने शिक्षा भी प्राप्त की थी। [illegible] शासन के लिए उनके दिल में [illegible] पैदा हो गई थी जब [illegible] कर्नल वाटसन जैसे अंग्रेजों ने उन्हें अच्छी तरह झटका नहीं दिया वह उस पर कायम रहे।

दूसरी तरफ उस समय की कांग्रेस भी अंग्रेज के लिए अपनी वफादारी का प्रदर्शन करने में अपनी पूरी शक्ति लगा रही थी कांग्रेस की स्थापना उस समय के वायसराय लार्ड डफरिन के सुझाव पर ह्यूम नाम के एक अंग्रेज ने की थी। जब कभी कांग्रेस का अधिवेशन हुआ करता था शुरू में उस समय की ब्रिटेन की महारानी विक्टोरिया से पूरी वफादारी की घोषणा के साथ शुरू होता था। प्रत्येक अधिवेशन में महारानी विक्टोरिया को यह सन्देश भेजा जाता था कि भारत की जनता उनकी पूरी वफादार है और उनकी लम्बी आयु के लिए दुआ करती है दूसरी तरफ सरकार भी इस वफादारी से खुश होकर कह देती है कि वह जनता के आराम का पूरा ध्यान रखेगी जब कांग्रेस का दूसरा अधिवेशन हुआ तो उस समय के वायसराय लार्ड डफरिन ने कांग्रेस के प्रतिनिधियों को चाय पर बुलाया और जब कांग्रेस का अधिवेशन मद्रास में हुआ तो वहां के गवर्नर ने भी प्रमुख कांग्रेसियों को चाय की दावत दी उसे इन लोगों ने बहुत बड़ा सम्मान समझा। ह्यूम को जो कि एक अंग्रेज था कांग्रेस का पहला मुख्य सचिव नियुक्त किया गया और एक के बाद एक तीन अंग्रेजों को कांग्रेस के प्रधान बनाया गया ये तीनों ब्रिटिश शासन के वफादार थे। और सरकार भी समझ रही थी कि वह कांग्रेस के माध्यम से लोगों के दिल जीत लेगी

लेकिन हालात कुछ बदल रहे थे। कांग्रेस की बागडोर उस समय उन लोगों के हाथ में थी जो न केवल तत्कालीन सरकार के पिट्ठू थे बल्कि इस देश की जनता से भी बहुत दूर थे उन्हें यह अहसास न था कि जो समुद्र ऊपर से शांत नजर आ रहा है वह नीचे किस सीमा तक बेचैन हो रहा है। उसके किनारे बैठे लोग यह न समझ रहे थे कि इस शांत समुद्र में जल्द एक तूफान उठने वाला है।

यह वह हालात थे जब महाराष्ट्र में एक विद्वान देशभक्त और अपने देश की आजादी का स्वप्न लेने वाला और एक निडर नेता मैदान में निकल आया उनका नाम था बाल गंगाधर तिलक। वह कांग्रेस को उन लोगों के हाथों से छीनना चाहते थे जो उसके माध्यम से देश की गुलामी की जंजीरों को और भी मजबूत बना रहे थे तिलक उनके लिए एक चुनौती के रूप में मैदान में निकल आए सबसे पहला काम उन्होंने यह किया कि एक स्कूल कायम किया। जिसमें बच्चों को देश प्रेम का पाठ सिखाया जाता था उसमें पढ़ाने वालों को भी यह संकल्प लेना पड़ता था कि वह अपना जीवन देश के लिए दे देंगे। इस स्कूल के माध्यम से वह कोई कमाई नहीं करते बल्कि जो कुछ अपने देश के लिए वह दे सकते हैं देंगे लोकमान्य तिलक का यह विचार था कि जब तक पढ़ाने वाले स्वयं अपने शिष्यों के सामने कोई ऐसा उदाहरण पेश न करें जिससे वह कोई सबक सीख सकें उस समय तक शिक्षा बेकार हो जाती है इसलिए वह पढ़ाने वाले अध्यापकों में त्याग की भावना पैदा करना चाहते थे

दूसरा काम जो तिलक ने किया वह यह था कि उन्होंने केसरी नाम की मराठी में एक साप्ताहिक पत्रिका और मराठा नाम की एक अंग्रेजी की पत्रिका निकाली इन दोनों के माध्यम से वह अपने विचारों का प्रचार करने लगे। श्री तिलक श्याम जी कृष्ण वर्मा की तरह संस्कृत के बहुत बड़े विद्वान थे। आगे चलकर जब अंग्रेज सरकार ने

(शेष पृष्ठ 7 पर)

# हा ! आर्यवर्त्त देश अराजक देश क्यों बन गया

लेखक—श्री प रामनाथ सि विशारद महोपदेशक

यह एक प्रश्न है जो याद आते ही मुझ परेशान करता है।

प्रश्न—आप अराजक राष्ट किस मानते हैं ?

उत्तर—अराजक राष्ट वह है कि जिस देश का काई राजा न हो या फिर राजा तो हो पर न होने के बराबर हो। की ऐसी ही अवस्था नही देख रहे ?

देश का राष्टपति [illegible] ैल जी हैं और प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी पुन वह अराजक [illegible] मैंने निवेदन कर दिया है कि जिस शासक की चलती ही नही है वह भी न होने क बराबर ही होता है। आइए आज हम आपको अराजक राष्ट बताए कि अराजक राष्ट के लक्षण क्या हाते हैं पुन आप स्वय विचार कर ल कि आज वर्त्त देश अराजक राष्ट है अथवा नहीं ? जिस आर्य वर्त्त देश के राजा महाराजा अपना हाथ ऊचा करके कहा करते थे कि न मे स्तनो जनपदे कदर्यो न मद्यप कि मेरे राष्ट मे कोई चोर कजूस और शराबी नहीं है वही आर्य वर्त्त देश आज चोरों डाकुओ शराबियो भ्रष्टाचारियो से भर गया है। ऐसा लगता है कि देश में कोई शासन नही है। इसलिए मैं इसे अराजक राष्ट कहता हू कहा जाता है [illegible] जब रघुकुल महाराज दशरथ का देहान्त हो गया तो मार्कण्डय मौदगल्य वामदेव कश्यप कात्यायन गौतम और महा यशस्वी जाबालि महर्षि वसिष्ठ के पास गए और कहा कि महा राज दशरथ का देहान्त हो गया है। राम लक्ष्मण सीता सहित वन को चले गए हैं। लक्ष्मण और भरत ननहाल मे हैं तुरन्त ही इक्ष्वाकवशी राज कुमारो मे से किसी को आज ही राजा नियुक्त किया जाए क्योकि बिना राजा के अराज कता का शासन होकर राज नष्ट हो जाता है।

(1) जहा कोई राजा नहीं होता ऐसे जनपद मे विद्युन्मालाओं से अलकृत महान् गर्जन करने वाला मेघ पृथिवी पर दिव्य जल की वर्षा नहीं करता।

वेद कहता है निकामे निकामे न पर्जन्यो वर्षतु। इच्छानुसार वर्षे पर्जन्य ताप शोक। या तो वर्षा नहीं तो भी हानि है। बिजली अथवा तेल का प्रयोग किसानो को करना पड़ता है तब कहीं खाने के लिए फल और अनाज होता है। परन्तु जब यह हमारा देश आर्य वर्त था तब समय 2 पर वर्षा हुआ करती थी किसानों को न बिजली का प्रयोग करना पड़ता था न डीजल ही जलाना पड़ता था। यह अराजक राष्ट का पहला लक्षण है। वर्षा होती है तो इतनी कि बाढ़ आ जाती है

(2) जिस जनपद का कोई राजा नही वहा के खेतो मे मुट्ठी के मुट्ठी बीज नहीं बखेरे जाते। राजा से रहित देश में पुत्र पिता और स्त्री पति के वश मे नही होते।

जब वर्षा ही न होगी तो खेतों मे बीज कैसे बखेरा जाएगा ? बखेर भी दिया तो उगेगा कैसे ? आजकल यह काम वर्षा से न हो कर बिजली या डीजल से होता है जिस से किसानों को अनाज या फल उत्पन्न करने के लिए बहुत व्यय करना पड़ता है जिससे वह चिल्लाते रहते हैं कि अनाज का भाव बढ़ना चाहिए। भाव बढ़ाया जाता है तो साथ और वस्तुओ के भाव बढ़ जाते हैं लेखा जोखा बराबर हो जाता है।

अराजक राष्ट मे राजा का कहना प्रजा नहीं मानती गुरु का कहना शिष्य नही मानते जरा सा कोई काम शिष्यो की इच्छा के अनुकूल न हो तो तुरन्त आग लाल पीली कर लेते हैं स्कूलो कालेजो के शीशे तोड़ देते हैं।

फर्नीचर तबाह कर देते हैं कई बार शान्ति करने के लिए पुलिस बुलानी पड़ती है गोलिया चलती हैं जिनके लगती हैं वह मर भी जाते हैं। क्या यही कुछ इस अराजक राष्ट मे नहीं हो रहा ? राजा की आज्ञा का यह हाल है विधान तक बना दिया गया पत्नी पति की आज्ञा का उल्लघन करती है। कहना नहीं मानतीं यहां तक भी कि पति को मार दें, आप न मार सकें तो किसी से मरवा देती हैं। प्रतिफल धन पर कब्जा कर उड़ गया है। यदि पति भी पुत्र पत्नी के साथ बुरा सलूक करते हैं वह भी बुरा है। वह बुरा भी होता है। माता पिता का कहना सन्तानें नहीं मानती जिन बच्चों का माता पिता ने कष्ट सह कर पालन-पोषण किया। उन को अगूठा दिखाते हैं। क्या यही कुछ आज नहीं हो रहा है ?

3 राजहीन देश मे धन अपना नहीं होता है। बिना राजा के राज्य में पत्नी भी अपनी नहीं रह जाती है। राजा रहित देश में यह महान भय बना रहता है। जब वहा पति पत्नी आदि का सम्ब सम्बन्ध नहीं रह सकता। तब फिर कोई दूसरा सत्य कैसे रह सकता है ?

क्या आप नही देख रहे जनपद मे रहने वालो की कोई भी वस्तु नहीं है। और लोगो का तो कहना ही क्या है बैंक लूटे जा रहे हैं पर पत्ता तक नहीं हिला। गाड़ियो को उलटने का काम भी चल रहा है। बम बरस रहे हैं। बसें और गाड़िया लूटी जा रही हैं स्त्रियो और बच्चों को मारा जा रहा है देखते ही देखते स्त्रियो के जेवर ले जाते हैं। सामने कार स्कूटर छीने जा रहे हैं पुलिस कर्मचारियो से हथियार छीन कर ले जाते हैं और उनको गोलियो से भून देते हैं। जिस राष्ट का कोई शासक हो उसका क्या ऐसा हाल होता है ? नहीं कदापि नहीं। स्त्री पुरुष के सत्य सम्बन्ध बिगड़ते जा रहे हैं। गिरावट दोनो में आ रही है।

4 बिना राजा के राज्य मे कोई मनुष्य पचायत भवन नही बनवाता रमणीय उद्यान का भी निर्माण नहीं करता। तथा हर्ष और उत्साह के साथ पुण्य गृह (धर्मशाला मंदिर आदि) भी नहीं बनवाते।

धनी व्यक्ति सदा सुरक्षित स्थान पर रहना चाहता है जहा उसके धन को हानि पहुचने का भय न हो इसी लिए वह पुण्य स्थान भी नहीं बनवाता कहीं चोरो डाकुओ को पता चल जाए कि यह धनी है उस पर आक्रमण ही न कर दिया जाए।

अब कभी कारखाने फैक्ट्रियां नहीं कोई बनवाएगा जो बढ़िया मजदूर बेकार हो जाएंगे और भूखे मरेंगे। ऐसे अराज- कता राष्ट में धनी अपने धन पुन दुर्बल नहीं करते यहां तक कि [illegible] राष्ट में से खिसकने का यत्न करते हैं।

5—जहां कोई राजा नहीं उस जन पद में स्वाध्यायशील तथा [illegible] व्रत और कठोर व्रत का पालन करने वाले जितेन्द्रिय ब्राह्मण उन बड़े-बड़े यज्ञों का अनुष्ठान नहीं करते जिन में सभी ऋत्विज और सभी यजमान होते हैं। अराजक राष्ट में एक प्रकार से धर्म का प्रचार यज्ञादि सब बन्द हो जाते हैं। जब धर्म का प्रचार न होगा तो अधर्म ही बढ़ेगा ही जहा अधर्म होगा वहां सुख और शान्ति कहां ?

6 राज रहित जन पद में कदाचित् महायज्ञों का आरम्भ हो भी तो उन मे धन सम्पन्न व्यक्ति भी ब्राह्मण ऋत्विजो को पर्याप्त दक्षिणा नहीं देते उन्हें भय रहता है कि लोग हमें धनी समझ कर लूट लें। अराजक राष्ट में ब्राह्मणों का निर्वाहार्थ दक्षिणा न मिलेगी तो वह वेद प्रचार का काम छोड़ पेट पूर्ति के लिए कोई और धन्धा करेंगे।

अराजक राष्ट के यह छ लक्षण मैंने लिखे हैं। यह लक्षण मेरे नहीं किए हुए महर्षि वाल्मीकि के किए हैं और आज से भी लाख साल हुए तब किए थे। आजकल के वातावरण को देख कर ऐसा लगता है कि यह लक्षण आज ही लिखे गए हैं। साधारण व्यक्तियों और ऋषियो मे यही अन्तर होता है कि भविष्य की बात वह पहले ही सोच लेते हैं कि आगे क्या होगा। पजाब मे तो किसी की जान माल सुरक्षित नहीं है। न यहा कोई राज दृष्टि गोचर है न कोई कानून है। समय मिलने पर पुन और लिखूगा।

—

## महर्षि स्वामी दयानन्द जी की फिल्म किसी भी कीमत पर न बनने दी जाए

समाचार द्वारा ज्ञात हुआ है कि स्वामी दयानन्द जी की फिल्म आचार्य भगवान देव जी बना रहे हैं यह आज समाज के लिए एक चुनौती है यह स्वामी जी के विचारो से बिल्कुल उलट है यह किसी भी कीमत पर बनने न दी जानी चाहिए ऐसे आचार्य को आर्य समाज से निकाल देना चाहिए जो आर्य समाज के सिद्धान्तों के विपरीत जाता हो। यदि इसको रोका न गया तो सारे आर्य जगत् मे हलचली मच जाएगी। इस लिए हम आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब तथा सार्वदेशिक आर्य प्रति निधि सभा दिल्ली से अनुरोध करते हैं कि इस पर पूरा-पूरा ध्यान देने का कष्ट किया जाए।

—मुलखराज आर्य
प्रधान,
आर्य समाज महर्षि दयानन्द [illegible]
नगर जालन्धर

—

# पंजाब में आर्य समाज क्या करे

ले —श्री पण्डित सत्यदेव विद्यालंकार

महाशिवरात्रि का प्रसाद तो अमृतसर के एक बम विस्फोट के रूप में मिला जिस में 4 5 व्यक्तियों ने प्राण दिए तथा 50 के लगभग घायल हुए।

बोधरात्रि के उत्सव पर प्रायः आर्य समाजो मे ऋषि दयानन्द के बोध के विषय मे भी चर्चा हुई थी। पंजाब की वर्तमान अवस्था का भी उल्लेख किया गया। ऐसा होना स्वाभाविक ही था। सम्भवतः पंजाब से बाहर रहने वाले लोग उस वातावरण के विष का अनुमान कर ही नहीं सकते, जिसे पंजाब के लोग प्रतिदिन पी रहे हैं। एक आतंक और निराशा का वातावरण है। पिछले 2 वर्ष के समय के लगभग दो सौ से कुछ कम निर्दोष व्यक्ति मारे जा चुके हैं सैकड़ो घायल हो चुके हैं। विलक्षण बात तो यह है कि एक भी मामले पर अदालत ने विचार नहीं हुआ—सम्भावना भी कम ही है कि ये मामले कभी निपट पाएंगे। सरकार सम्भवतः बहुत कुछ सोच रही है और कर भी रही है—पर लोगो में विश्वास नहीं रहा, भरोसा नही रहा सुरक्षा की भावना नहीं रही।

पंजाब के हिन्दुओ ने चार युग देखे हैं एक मुगल शासन का युग, दूसरा सिख शासन का छोटा सा युग, तीसरा अंग्रेजी शासन का युग और चौथा वर्तमान स्वाधीनता का युग। साधारण लोगो की धारणा यह है कि इन चारो युगों मे, हिन्दुओं मे सुरक्षा की भावना की दृष्टि से, अंग्रेजी शासन का युग सबसे अच्छा रहा, जब कि दिल्ली से लेकर क्वेटा और पेशावर तक हिन्दू-सिख सुरक्षित रूप से जीवन यापन कर सकते थे। मैं समझता हूं यह उस युग की बहुत बड़ी उपलब्धियों में से एक थी।

अब प्रश्न तो आर्य समाज का है कि इस बोध रात्रि के समय पंजाब में उसकी क्या अवस्था है। क्या यह आने वाले वर्षों मे ऐसी ही रहेगी या कभी उसका स्वाभाविक विकास सम्भव होगा। एक बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए कि जब धार्मिक उन्माद एक बार फूट पड़ता है तो उसका एक स्थायी प्रभाव हो जाता है। हो सकता है कि कुछ समय बाद उस उन्माद का उग्र रूप न रहे पर पहले की सी अवस्था कभी नहीं आती। प्रश्न यह है—और यह एक बहुत बड़ा प्रश्न है कि क्या आर्य समाज सम्मान पूर्वक पंजाब मे अपना विकास कर सकता है या नही। इस प्रश्न का उत्तर देने से पहले कुछ परिस्थितियों का रूप समझ लेना चाहिए।

1 पंजाब में जितनी विचार धाराओं के लोग रहते हैं, उनमे संख्या की दृष्टि से आज समाज का महत्व अधिक नही। आधे से कुछ अधिक सिख मत के अनुयायी हैं। आधे से कुछ कम हिन्दू तथा अन्य धर्मों के लोग हैं—आर्य समाज इस भाग का एक छोटा सा अंग है।

2 पंजाब की वर्तमान परिस्थितियो ने स्पष्ट कर दिया है कि संगठन की दृष्टि से—युवको के संगठन की दृष्टि से, तथा नेतृत्व की दृष्टि से आर्य समाज का पंजाब के जीवन में प्रभावी स्थान नहीं।

3 धार्मिक विवादों और उपद्रवों में शासन किसी दुर्बल जन समूह की रक्षा प्रभावी ढंग से नहीं कर सकता। रक्षा करने की प्रबल इच्छा तो शासन में अवश्य है पर अकाली निरंकारी विवाद में तथा अकाली-हिन्दू विवाद में सरकार रक्षा नहीं कर सकी। इसके अनेक कारण हो सकते हैं।

4 इसकी कोई सम्भावना नहीं कि वर्तमान धार्मिक विवाद कभी स्थायी रूप से हल हो सकेंगे।

इन परिस्थितियों को ध्यान मे रखते हुए आर्य समाज को जो एक भारत व्यापी प्रबुद्ध संगठन है पंजाब में अपनी संस्थाओं, अपनी विचारधारा तथा अपने संगठन की रक्षा के लिए क्या करना चाहिए? इस प्रश्न का महत्व इसलिए भी बढ़ गया है क्योंकि यह 2 3 वर्ष पंजाब के जीवन में उथल पुथल के हैं। ऐसे समय ही अपनी शक्ति और दुर्बलता का पता लगता है। कभी-2 टीलियो विजन पर तेल की मालिश करने वाला और सैकड़ों दण्ड पेलने का प्रदर्शन करने वाला पहलवान भी अखाड़े में दिल हार जाता है, और अपेक्षाकृत दुबला-पतला पहलवान भी दिल की मजबूती से बाजी जीत लेता है।

मैं आर्य समाजो के उत्सवों तथा जलसो में प्राय जाता हूं। उपदेशको और भजनीकों के गर्म-गर्म व्याख्यान और चौपाईयें भजन सुनता हूं पर उनका परिणाम कहीं अनुभव नही कर पाता। पिछले लगभग 40-45 वर्ष से पंजाब से सम्बन्ध रखते हुए यह अनुभव हुआ कि सामाजिक जीवन का उत्साह बहुत कम हो गया है। जिन समाजों के उत्सवों में सैकड़ो की उपस्थिति होती थी, अब इने गिने लोग आते हैं। इनके उत्सव पहले विशाल पंडालो में आयोजित किए जाते थे। अब मन्दिरों के अन्दर भी भीड़ नही दिखाई देती। शोभा यात्राएं जलूस तो अब समाप्त प्राय हैं। आर्य समाजों और आर्य संस्थाओं के सम्बन्ध भी प्रायः विच्छिन्न हो गए हैं। जालन्धर शहर में कोई ऐसा पुस्तकालय नहीं जहां आर्य समाज सम्बन्धी नया-पुराना साहित्य अध्ययन के लिए मिल सके। कोई ऐसा वाचनालय भी नहीं जिसमें आर्य समाज के दस-पन्द्रह समाचारपत्र पढ़ने को मिल सकें।

यहां इतना अवश्य कहना चाहता हूं कि नई उभरती समाजों-माडल टाऊन कैम्प बस्ती मिट्ठू, बस्ती दानिश मण्डा-अमरसिंह नगर आदि के उत्सव अब भी शामियानों के नीचे होते हैं—जलूस भी निकलते हैं। और सबसे बड़ी बात यह है कि इन मे केवल सफेद बालो वाले बूढ़ों के ही दर्शन नहीं होते बच्चो और बच्चो के भी दर्शन होते हैं।

पर पुरानी सब समाजें बूढ़ों से भरी हैं। बूढ़ी हो गई हैं। प्रतिनिधि सभा का आधार यही समाजें हैं।

ऋषि दयानन्द ने एक स्वप्न देखा था। विश्व के जीवन को कम से कम भारतीय जीवन को विशुद्ध और प्राणवान बनाने का। अपने जीवन भर की साधना और प्रयत्न से उन्होंने सब धर्मों के परिष्कार के लिए एक वैचारिक क्रान्ति को जन्म दिया। इस क्रान्ति का एक लक्ष्य धार्मिक उन्माद को कम करना है। आस्था श्रद्धा-प्रधान धर्म मनुष्य की विचार शक्ति को शून्य कर देते हैं। जैसे ही रोहण की गोली खाते ही मनुष्य कल्पना लोक की लहरो मे लहराने लगता है। वैसे ही धर्म की प्रबल आस्था से मस्त मनुष्य को मरने और मारने दोनों में स्वर्ग दिखाई देता है—

> हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं
> जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम् ॥

चिन्तन शक्ति का बुद्धि का विकास ही इस उन्माद को रोक सकता है।

महर्षि दयानन्द ने धर्म की प्रत्येक बात को बुद्धि की कसौटी पर कसने का विचार देकर मानव मात्र के कल्याण की दिशा में एक बहुत बड़ा काम किया है। आर्य समाज को महर्षि के इस सन्देश को प्रति व्यक्ति तक पहुंचाने का महान् कार्य विरसे में मिला है। जहां आर्य समाज का ठीक प्रचार हो वहां धर्मोन्माद पनपना ही नहीं चाहिए।

ऐसा नहीं कि विश्व के अन्य धर्म मानवता के कल्याण की बात नहीं सोचते सम्भवतः सब धर्मों के मूल में यह भावना विद्यमान है—और प्रारम्भ काल में यह भावना प्रबल होती है। पर धीरे-धीरे धर्म साम्प्रदायिक होते जाते हैं, सम्प्रदायों के जाल में फंसता जाता है। मूल रूप नष्ट हो जाता है। [illegible] पाखण्डमय रूप प्रबल हो जाता है। आस्था प्रधान सम्प्रदाय ही विनाश फैलाने का कारण है। धर्म के नाम पर [illegible] इन मूर्ति के साथ [illegible] लेफ्टिनेंट आकर बैठ तथा पंजाब जाने न जाने कितने देवों की पेर रहा है।

पंजाब की वर्तमान परिस्थितियों में जिनका प्रभाव शीघ्र समाप्त होने वाला नहीं, आर्य समाज को यदि जीवित रहना ही तो निम्न बातों की ओर ध्यान देना आवश्यक है।

1 सबसे मुख्य बात तो आर्य समाज की विचारधारा का प्रचार है। जो अधिक से अधिक होना चाहिए। ऋषि का साहित्य पंजाब के कोने-2 में फैलना चाहिए। पंजाब में आर्य साहित्य पंजाबी में भी अवश्य होना चाहिए। केवल पंजाबी में ही नहीं अन्य प्रान्तीय भाषाओं में भी होना चाहिए। सत्यार्थ प्रकाश का संक्षिप्त संस्करण हिन्दी तथा पंजाबी में लाखों की संख्या में वितरण करना चाहिए। यह सत्य ज्ञान का दीपक है। आर्य समाज के प्रचार में प्रचलित पर्वों का पंजाबी संस्करण भी होना चाहिए।

अभी 16-17 वर्ष गुजरात के निवास के समय मैंने अच्छी तरह अनुभव किया कि गुजराती में जो आर्य समाज का साहित्य है उसका अधिक प्रभाव है। गुजरात में हिन्दी का कोई विरोध नहीं पर स्वाभाविक रूप से गुजराती में आर्य समाज का विचार घर-घर पहुंचता है।

2 आर्य समाज का संगठन अधिक प्रबल और विस्तृत होना चाहिए। विस्तृत से अभिप्राय यह है कि इसमें समाज के प्रत्येक स्तर के और प्रत्येक आयु के व्यक्ति सम्मिलित होने चाहिए। आर्य आर्य समाज के कार्यक्रम में बूढ़ों का युवकों का बच्चों का, स्त्रियों का उचित महत्वपूर्ण स्थान है। 1826-27 मे जब मैं क्वेटा समाज में जाया करता था, वहां समाज के मैदान में युवकों के लिए व्यायाम के साधन देते थे, अखाड़ा भी था रस्सा खींचना, भार उठाना आदि कई साधन थे। उस समाज की रस्से की टीम भी प्रसिद्ध थी युवक मण्डली भी थी जो आर्य समाज के प्रत्येक कार्य में सहायक थी। गुजरात की समाजों में भी ऐसा ही देखा था।

यदि आर्य समाज के पर्वों का इस दृष्टि से बाट लिया जाए तो विविधता भी होगी और कार्य में उत्साह भी अधिक होगा। धार्मिक उत्सवों पर प्रतियोगिताए भी हो सकती हैं।

3 प्रतिवर्ष केन्द्रीय सभा अथवा आर्य समाजों की ओर स्वयं यह जांच होनी चाहिए कि उत्सवों में उपस्थिति बढ़ी या नहीं।

( क्रमश )

## बाल जगत्—

# बच्चों में अनुशासन कितना नियन्त्रण, कितनी आजादी

ले—आशा रानी वोहरा

( पिछले अंक से आगे )

करते बना होता है। किशोरावस्था मे तो फिर निषेध का उलटा ही असर होते देखा गया है। इसलिए प्रारम्भ से ही बालक की सहज शक्ति विकसित करने पर ध्यान देना होगा कि उसे कम से कम निषेधात्मक आदेश देने पड़ें। उसमें संकेत ग्रहण करने की आदत पड़े इसके लिए उसे सकारात्मक सुझाव देना चाहिए। यह मत करो। कि जगह विकल्प ही बताएं कि यह करो। मध्य वर्ग में विशेष रूप से बड़ा आज कल आकांक्षाएं ज्यादा बढ़त है और उनकी पूर्ति की सम्भावनायें बहुत कम, माताओं को विशेष ध्यान रखना है कि बच्चे असम्भव कल्पनाओं के शिकार न हों और मानसिक तनाव मे कम से कम सताए हों। इसके लिए उन्हें अपनी सीमाओं के भीतर चलने की आदत शुरू से ही डालनी चाहिए और उनकी महत्वाकांक्षाओं को न दबाते हुए उन्हें प्राप्त सुविधाओं मे ही राह देने की कोशिश करनी चाहिए। इस तरह वे अपने भीतर से ही आत्मानुशासन पैदा करेंगे। न कुंठित होंगे न हीनता या निराशा से घिरे स्वभाव की विकृतियां पैदा करेंगे। यह अनुशासन ही व्यक्तित्व की सुदृढ़ आधार-शिला है जिस पर एक अच्छे समाज की आधारशिला रखी जा सकती है। यह सब करने के बाद भी यदि आप देखें कि आप बच्चे मे असामान्य व्यवहार की समस्या पैदा हो रही है और स्थिति काबू से बाहर हो रही है तो मनोवैज्ञानिक या जरूरत के अनुसार मनश्चिकित्सक की सहायता लेने में संकोच नहीं करना चाहिए।

### दण्ड और पुरस्कार मे सन्तुलन

आज के बालक पहले से कही अधिक सचेत हैं। किसी बन्धी बंधाई लीक पर चलने को वे तैयार न होंगे। पर छूट या आजादी की भी एक सीमा होती है। सीमा से बाहर जाते ही यह उच्छृंखलता का पर्याय बन जाता है। स्कूलों में शिक्षा के क्षेत्र भी ज्यादातर तो हटी क्योंकि शारीरिक दण्ड आज नहीं दिया जाता। पर एक सीमा से अधिक छूट यहा भी कहीं विकासोन्मुख नहीं है तो कहीं ध्वंसात्मक। इसलिए बच्चो को आजादी के साथ सही वक्त के निषय के लिए संकेतात्मक निर्देश भी अवश्य मिलने चाहिए कि गलत रास्ते से वे स्वयं ही मुंह मोड़ लें। इस दृष्टि से दण्ड व पुरस्कार का महत्व आज भी उतना ही है जितना कि पहले था। केवल दण्ड के स्वरूप में सन्तुलन स्थापित होना चाहिए।

### रिश्वत और पुरस्कार मे अन्तर

आज कल प्राय माताएं विशेष रूप से नई रोशनी की शिक्षित माताएं मनोविज्ञान की दुहाई देकर बच्चे को कुछ भी मनचाहा करने कहने की छूट देती हैं उनका विकास अवरुद्ध न हो, इस गलत फहमी मे उन्हें किसी भी बात से मना करना या कुछ अनुचित करने पर दण्ड देना ठीक नहीं समझती और पुरस्कार के नाम पर चाहे अनजाने उन्हें रिश्वत लालच जैसी आदत डालती रहती हैं बच्चे बेटे स्कूल के लिए तैयार हो जाओ तुम्हें चार टाफियां मिलेंगी, उठो नहा लो नहा कर आओगे तो दूध की जगह गरमागरम चाय मिलेगी, छोटे भइया को फलां वस्तु दे दोगे तो तुम्हें फला चीज और लाकर दूंगी घर में आए मेहमान को पोईम सुनाओगे तो फलां वस्तु मिलेगी आदि। और लाडले बच्चे का हर तथा कथित अच्छा काम करने के लिए मां से रिश्वत लेने की आदत पड़ जाती है।

इसी तरह यह बात बुरी है केवल इतना कहने से ही आज के तत्कालिक बच्चो को समझाया नहीं जा सकता। अब जिन्दगी में गम और खुशियां दोनों ही हैं आपके बच्चे को हर स्थिति का सामना करना है आज नहीं तो कल तो क्यों न शुरू से ही उसे ऐसी आदत डालें कि वह अच्छे बुरे में स्वयं भेद करना सीखे और बुराई से केवल बच निकलने की पलायन वादी प्रवृत्ति न अपनाकर उससे टकराने और टकराकर अपनी राह निकालने की आदत स्वयं में विकसित करे।

(दोई व मार्ई ड से साभार)

—

# पंजाब में धर्म युद्ध के नाम पर नग्न हिंसा

## आर्य समाज चित्रगुप्तगंज लश्कर ग्वालियर मे राष्ट्र रक्षा सम्मेलन मे पारित प्रस्ताव

दिनांक 3 अप्रैल 1984 को यह सम्मेलन देश की अखण्डता को नष्ट करने वाले भारतीय संविधान का अपमान करने वाले और विदेशियों के इशारे पर राष्ट्रीय एकता को नष्ट करने वालो के षडयन्त्रो पर गम्भीर चिन्ता व्यक्त करता है। धर्म युद्ध के नाम पर नग्न हिंसा के सहारे चलाए जा रहे राजनीतिक आन्दोलन को सत्याग्रह कह कर इस पवित्र नाम को कलंकित करने वालो की भर्त्सना करता है।

यह सम्मेलन सरकार से अनुरोध करता है कि पवित्र धर्म स्थानो मे अपराधियो को शरण देने तथा विदेशी शस्त्रो तथा गोला बारूद के भण्डार इकट्ठा करने के कामो के विरुद्ध सख्त कार्यवाही की जाए।

यह सम्मेलन समस्त राजनीतिक दलो से भी यह अनुरोध करता है कि वे उग्रवादियो तथा राष्ट्र की एकता के विरोधियो के दुर्भाग्यपूर्ण तथा अराष्ट्रीय आन्दोलन का किसी भी रूप मे अपनी राजनीतिक स्वार्थपूर्ति के लिए प्रयोग न करें।

आर्य समाज का यह विशाल राष्ट्र रक्षा सम्मेलन समस्त देशवासियो से आग्रह पूर्वक अनुरोध करता है कि वे राष्ट्रीय अखण्डता को सर्वोपरि स्थान दें तथा कश्मीर से कन्या कुमारी तक के सम्पन्न देश महान आर्यावर्त्त की अखण्डता की रक्षा मे तन मन धन से बलिदान के लिए सदा तत्पर रहे और राष्ट्र की अखण्डता मे बाधक विचार धारा को समाप्त करने मे सदा प्रयत्नशील रहे।

नोट—राष्ट्र रक्षा सम्मेलन की अध्यक्षता प्रो वेदसिंह जी भतपव केन्द्रीय मन्त्री ने की।

—किशोरीलाल गौतम मन्त्री

प्रतिलिपि—आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित

1 महामहिम श्री ज्ञानी जैलसिंहजी, राष्ट्रपति भारत सरकार नई दिल्ली।

2 माननीय श्रीमती इन्दिरा गांधी प्रधान मन्त्री भारत सरकार नई दिल्ली।

3 माननीय श्री प्रकाशचन्द्र जी सेठी गृहमन्त्री भारत सरकार नई दिल्ली।

4 श्री भरतदत्त पाण्डेय राज्यपाल पंजाब प्रदेश चण्डीगढ़।

# आर्य समाज बम्बई का उत्सव

110 वर्ष पूर्व चैत्र शुक्ला प्रतिपदा के दिन महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित आर्य समाज बम्बई का वार्षिकोत्सव दिनांक 30 मार्च से 2 अप्रैल 1984 तक बड़े धूम और उत्साह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर आर्य जगत के तपस्वी सन्यासी महात्मा नारायण स्वामी क्रान्तिकारी बरली की विदुषी श्रीमती सावित्री देवी जी शास्त्री गुरुकुल एटा के आचार्य श्री रामदत्त जी शर्मा एवं वेद पाठी ब्रह्मचारियो व भजनोको तथा स्थानीय विद्वानो के भाषण भजन एवं वैदिक ऋचाओ का सस्वर पाठ हुआ।

2 अप्रैल को साय बम्बई की समस्त आर्य समाजो ने सम्मिलित रूप से आर्य समाज स्थापना दिवस समारोह मनाया। समारोह की अध्यक्षता महाराष्ट्र राज्य के सिंचाई एवं विधि मन्त्री श्री शिवाजीराव पाटिल ने की आपने अपने अध्यक्षीय भाषण मे कहा कि सरकार ने जिन योजनाओ को तीस पैंतीस वर्षों मे अपनाया स्वामी दयानन्द जी ने लगभग 125 वर्ष पूर्व ही उनकी घोषणा कर दी थी। वे महान दूरदर्शी थे एवं भारत की स्वाधीनता के प्रणेता थे।

—ओमप्रकाश आर्य प्रधान

—

# गुरु विरजानन्द स्मारक गुरुकुल करतारपुर के लिए दान

श्री गुरु विरजानन्द स्मारक की आवश्यकता को ध्यान मे रखते हुए इस संकल्प को साकार रूप दिया गया कि स्मारक के लिए 100 चादरें आलमारियां तथा 100 गिलास दिए जाएं। इस महान यज्ञ मे लुधियाना की बहिनो ने प्राथमिकता प्राप्त की। स्थानीय स्त्री आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार स्त्री आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार तथा स्त्री आर्य समाज बैंक कोलेज नगर की बहिनों ने अपनी सात्विक कमाई का भाग डाला। समाज के अतिरिक्त भी बहिनो ने इसमें सहयोग दिया। स्मारक के अन्तर्गत चल रहे गुरुकुल के भोजनालय के लिए 22 लीटर का एक प्रैशर कूकर भी दिया गया। सभी दान देने वाली बहिनो का हार्दिक धन्यवाद है।

निर्मला बेरी मन्त्राणी
स्त्री आर्य समाज
श्रद्धानन्द बाजार लुधियाना

## आर्यसमाज स्थापना दिवस

आर्य समाज भटिण्डा में आर्य समाज स्थापना दिवस 2 अप्रैल 1984 को उत्साह पूर्वक प्रथम आर्य पद्धति के अनुसार यज्ञ हवन से आरम्भ हुआ। पश्चात कृष्ण कुमार और श्री ओमप्रकाश वानप्रस्थी ने आर्य समाज के कार्यों पर प्रकाश डाला सौभाग्य से इसी दिन आर्य समाज के उत्साही कार्यकर्ता एवं शुभचिन्तक श्री कृष्ण कुमार जी व लाला सुन्दरलाल जी सर्राफ का जन्म दिवस भी था अत दोनो महानुभावों के हार्दिक स्वागत सत्कार के पश्चात परमात्मा से दोनो के लिए शुभ कामनाएं एवं चिरायु के लिए प्रार्थना की गई इस अवसर पर लाला सुन्दरलाल जी ने आर्य समाज की संस्थाओं को 500) रुपये दान दिया। साथ मे आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल की जो छात्रा हाई स्कूल की परीक्षा मे मैरिट मे प्रथम स्थान प्राप्त करेगी उसे हर वर्ष छात्र वृत्ति देने की घोषणा की। लाला जी का धन्यवाद किया गया।

श्री राकेश शर्मा विंग कमांडर जो आर्य समाज एवं स्वामी दयानन्द के अनुयायी हैं अन्तरिक्ष यात्री के रूप में चन्द्र यात्रा पर उन्हें हार्दिक बधाई दी गई —कबीरचन्द

## बम्बई में आर्यसमाज चौक

महानगर पालिका बम्बई द्वारा जुहू गार्डन्स उद्यान में आयोजित विट्ठलभाई पटेल रोड (लिंकिंग रोड) और पुलिस स्टेशन सान्ताक्रूज (प) के समीप जुहू मार्ग के संगम पर स्थित चौक को आर्य समाज चौक घोषित कर उसका नामकरण समारोह सम्पन्न किया। समारोह का निमन्त्रण श्रीमती कुन्दा कदम महानगर पालिका उपायुक्त (परिमण्डल 4) की ओर से भेजा गया। समारोह की अध्यक्षता आर्य नेता सेठ प्रताप सिंह शूर जी ने की आर्य समाज चौक का उद्घाटन राज्य सभा सदस्य श्री रमेश देसाई ने किया

इस अवसर पर महानगर पालिका के भूतपूर्व महापौर सबश्री मनमोहनसिंह बेदी एव प्रभाकर पाई के अतिरिक्त भूतपूर्व नगर निगम पार्षद श्री प्राणनाथ सहगल प्रभाकर वैद्य डा एस मजूमदार एवं वार्ड आफिसर श्री एस एस दुबे भी उपस्थित थे

उपरोक्त महमानो के अतिरिक्त श्री जगदीशचन्द्र मल्होत्रा श्री प्रकाशचन्द्र मुना के भाषण भी हुए। आर्य समाज के महामन्त्री डा प्र भवानी दियाल ने धन्यवाद किया। आर्य विद्या मन्दिर की बालिकाओं ने समारोह के प्रारम्भ मे ईश प्रार्थना गाई व अन्त मे राष्ट्रीय गीत के साथ समारोह की समाप्ति हुए। —प्रकाशचन्द्र मुना

## लुधियाना में रामनवमी पर्व

आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार लुधियाना मे राम नवमी का महोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया जिसमें प्रात यज्ञ के पश्चात कई विद्वानों ने मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम जी के जीवन पर प्रकाश डाला। प सुरेन्द्रकुमार जी शास्त्री ने श्री रामचन्द्र जी के आदर्शों पर चलने को कहा 13 4 84 को बसाखी का पर्व भी बड़ उत्साह से मनाया गया। इन दो पर्वों पर काफी संख्या मे भाई-बहनों ने भाग लिया बसाखी पर यज्ञ के बाद श्री जगदीश जी चड्ढा श्री देसराज जी मेहता प्रधान श्री हरे कृष्ण जी श्री ज्ञानप्रकाश जी वर्मा ने बड़े ओजस्वी विचार रखे। बहन राजेश्वरी जी ने बहुत सुन्दर भजन सुनाए। कार्यक्रम 7 से 9 30 बजे तक चलता रहा अन्त में शान्ति पाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न किया। —मतवाल चन्द मन्त्री

## आर्यसमाज पंचपुरी गढ़वाल का वार्षिक निर्वाचन

18 3 84 को आर्य समाज पंचपुरी का वार्षिक निर्वाचन इस प्रकार सम्पन्न हो गया—

प्रधान—श्री छिद्दूराम जी आर्य उपप्रधान श्री कालूरामजी पथिक श्री चन्द्रलाल जी (सहायक समिति दिल्ली) मन्त्री श्री वासुदेव जी अध्यापक उप मन्त्री श्री गंगा प्रसाद जी श्री विश्वबन्धु जी भास्कर (सहायक समिति दिल्ली) कोषाध्यक्ष—श्रीजसवन्तसिंह जी रावत सहायक कोषाध्यक्ष—श्री खुशहालसिंहजी पुस्तकाध्यक्ष—श्री चन्द्रमणि जी अध्यापक लेखा निरीक्षक—श्री योगेश्वरप्रसाद जी

श्री दयानन्द शारदीय स्मारक भवन पंचपुरी के सेवा कार्यों के लिए श्री शांति प्रकाश जी प्रम व्यवस्थापक मनोनीत किए गए है। —वासुदेव मन्त्री

—



श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इस की स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

(राज न वा वे एस 50)

वर्ष 16 अंक 6 1 ज्येष्ठ सम्वत् 2041, तदनुसार 13 मई 1984 दयानन्दाब्द 160। एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपये

## क्रान्ति के अग्रदूत श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा (१२)

# देश में नए संगठन व विदेश में एक संघर्ष की शुरूआत

—श्री वीरेन्द्रजी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा 1892 में दूसरी बार इंग्लैंड चले गए और फिर वापस न आए। उनके जाने के दो कारण थे। एक तो वह षड्यन्त्र था जो कुछ अंग्रेज अफसरों ने उनके विरुद्ध खड़ा किया था दूसरा कारण तत्कालीन परिस्थितियां थीं जिन्होंने इन पर असर किया और जिनके कारण वह समझ गए थे कि भारत में रहकर न तो वह कोई प्रगति कर सकेंगे और न अपने देश की सेवा। यह वह समय था जबकि बाल गंगाधर तिलक और गोपाल कृष्ण गोखले दो नए देश भक्त मैदान में निकले थे। दोनों देश भक्त थे और दोनों के दृष्टिकोण में धरती व आकाश का अन्तर था। गोखले यह समझते थे कि अंग्रेज के विरुद्ध लड़कर हम कुछ प्राप्त नहीं कर सकते। इसलिए उसके साथ सहयोग करना चाहिए। वह जो कुछ हमें दे वह लेते जाना चाहिए और बाकी के लिए कोशिश जारी रहनी चाहिए। इसके विपरीत लोकमान्य तिलक समझते थे कि कोई शासक स्वयं सत्ता नहीं छोड़ना चाहता वह हमेशा उससे छीननी पड़ती है। इसके लिए हमें देश को तैयार करना चाहिए। लोकमान्य छत्रपति शिवाजी के पुजारी थे। वह उनके पद चिह्नों पर चलना चाहते थे इस लिए उन्होंने अपना कार्यक्रम बनाया जिसके आधार पर शिवाजी के नाम पर मराठे नौजवानों के दिल में देश भक्ति व धर्म प्रेम की भावना पैदा की जा सके। श्यामजी कृष्ण वर्मा लोकमान्य से सहमत थे। इसलिए उनका झुकाव उनकी तरफ हो गया। वह भी यह समझने लगे कि यह लड़ाई भारत में रहकर न लड़ी जा सकेगी। यह संघर्ष उसे आजादी के द्वारा देना। इस के लिए उन्होंने यूरोप की राजधानी पैरिस को चुना लेकिन वहां जाने से पहले वह लन्दन जाना चाहते थे जो ब्रिटानवी साम्राज्य की राजधानी थी। उनका ख्याल था कि यदि वह किसी तरह शासक वर्ग को यह अहसास करा सकें कि वह भारत के साथ इन्साफ नहीं कर रहे तो सम्भव है कि इसका कोई उचित परिणाम निकल सके। इस लिए उन्होंने अपनी गतिविधियों का केन्द्र बम्बई से लन्दन स्थानान्तरित करने का फैसला कर लिया। इसके लिए वह 1897 में लन्दन के लिए रवाना हो गए। उस समय उनकी उम्र केवल 40 वर्ष थी।

यह ही वह समय था जब लोकमान्य तिलक भी अपनी गतिविधियां तेज कर चुके थे। उस समय तक कांग्रेस को कायम हुए दस बारह वर्ष हो चुके थे लेकिन इस पर अंग्रेज का प्रभाव कायम था। लोकमान्य समझते थे कि जब तक कांग्रेस अंग्रेज के पंजे से मुक्त नहीं होती देश का कुछ नहीं बन सकेगा उन्होंने कांग्रेस के अन्दर और बाहर एक नया संघर्ष शुरू कर दिया कांग्रेस को वह अंग्रेज परस्त हाथों से मुक्त कराना चाहते थे और उसे देश की आजादी के तैयार करना चाहते थे। जब वह सोचने लगे कि यह कैसे हो सकता है तो पहला ख्याल उन्हें यह आया कि भारत एक धर्म प्रधान देश है। यहां धर्म के नाम पर आम लोगों को जितना आकर्षित किया जा सकता है इतना किसी दूसरे ढंग से नहीं। इसलिए उन्होंने देश वासियों के दिल में देश भक्ति की भावना पैदा करने के लिए उस का सहारा लिया। 1893 में पहली बार उन्होंने गणपति पूजा का आन्दोलन चलाया। गणपति की महाराष्ट्र में एक देवता की तरह पूजा होती है लेकिन लोग इसे अधिकतर अपने घरों में ही करते हैं। लोकमान्य ने इसे एक जन आन्दोलन बना दिया और यह घरों से बाहर मैदानों में की जाने लगी। इसका एक परिणाम यह हुआ कि इसके साथ हिन्दू संगठन का आन्दोलन भी शुरू हो गया। गणपति की पूजा हिन्दू ही करते थे और अपने घरों में ही करते थे। अब यह पूजा बड़े बड़े मैदानों मन्दिरों व हालों में होने लगी। इस तरह हिन्दू संगठन एक नया रूप धारण करने लगा इसका प्रभाव महाराष्ट्र के जन जीवन पर भी पड़ा। इस का कुछ अनुमान रौलट एक्ट कमेटी की रिपोर्ट से भी लगाया जा सकता है। गणपति पूजा पर इस कमेटी की रिपोर्ट में कहा गया—

1894 में गणपति पूजा के अवसर पर सार्वजनिक गणपति पूजन का आन्दोलन शुरू किया गया। घरों के बजाए अब यह पूजा मेला के रूप में होने लगी इसके अलावा नवयुवकों का लाठी तलवार चलाने का प्रशिक्षण व अन्य व्यायाम भी आने लगे जो नौजवान इस तरह प्रशिक्षण प्राप्त करते थे वह लाठियां लेकर इस तरह गाने गाते हुए बाजारों में घूमा करते थे वह हिन्दुओं से कहते कि वह लाठी चलाना सीखें। यह सारा आन्दोलन एक तरह से सरकार के व मुसलमानों के विरुद्ध था हिन्दुओं से कहा जाता था कि वह मुसलमानों का मुकाबला करने के लिए भी तैयार रहें जिस तरह शिवाजी ने किया था। लोकमान्य अपने देश के और विशेष रूप से हिन्दुओं के इतिहास को अच्छी तरह जानते थे। वह इस से फायदा उठाना जानते थे। पहले उन्होंने गणपति पूजन से हिन्दुओं का संगठन बनाने का प्रयास किया और फिर छत्रपति शिवाजी के नाम पर हिन्दुओं में जाति प्रेम पैदा करने की कोशिश की। वह जानते थे कि महाराष्ट्र के घर घर में छत्रपति शिवाजी की पूजा होती है। इसलिए उन्होंने शिवाजी के नाम पर लोगों को संगठित करने की और अपने देश की आजादी के लिए तैयार करना शुरू किया। उनके विचार में शिवाजी साहस शौर्य और उच्चतम देश भक्ति के प्रतीक थे इसलिए इनके पद चिह्नों पर चलने की कोशिश की जानी चाहिए लोकमान्य तिलक जिन्हें लोग भगवान तिलक भी कहने लगे थे। जब 12 जून 1894 को शिवाजी का राजतिलक पहली बार मनाया उस अवसर पर भाषण करते हुए कहा था क्या अफजल खान को मार कर शिवाजी ने कोई पाप किया था। इस का उत्तर हमें महाभारत में मिलता है भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है कि यदि आवश्यकता पड़े तो अपने गुरु व सम्बन्धी तक को भी क्षमा न करो फल की कामना के बिना जो कर्म किया जाता है उसकी सजा नहीं मिल सकती शिवाजी ने निजी स्वार्थ से प्रेरित होकर कोई काम नहीं किया था शिवाजी ने उन विदेशियों को निकालने के लिए सब कुछ करना चाहते थे। जो हमारे देश पर आधिपत्य जमा बैठे थे यह देश हमारा है किसी दूसरे का नहीं सरकार के कानून की परवाह न करो गीता के उपदेशों को समझो जो हमारे महापुरुष कहते रहे हैं वह ही करो।

तिलक के भाषणों ने सारे महाराष्ट्र में आग लगानी शुरू कर दी। इस पर उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और 18 मास की सजा दी गई। यह वे परिस्थितियां थीं जिनसे श्याम जी कृष्ण वर्मा ने अपना देश छोड़ दिया। इंग्लैंड में इन की गतिविधियां क्या रहीं यह आप आगामी अंक में पढ़ें।

वेदामृत—

# मन के बिना कोई कार्य नहीं हो सकता

ले.—श्री सुरेशचन्द्र वेदालकार एम ए एल टी,
9 ए इ 1, ओबरा (मिर्जापुर)

## धैर्य का विकास इस प्रकार होता है—

ससार के अधिकाश मनुष्य साधारण जीवन यापन के कार्यो मे सलग्न रहते हैं। भोजन उपार्जन करना, सन्तान का पालन करना, इन सब कार्मों के लिए धन सग्रह करना धन सग्रह मे बाधा डालने वालो से लडना तथा उस मे सहायता देने वालो से मेल करना आदि कार्य प्रत्येक व्यक्ति करता है। मनुष्य स्वभाव की यह विशेषता है कि वह सभी पदार्थों एव क्रियाओं का मूल्य आकता है और वह उस काम में अपने को लगाता है जिसे वह मूल्याकन बौद्धिक दृष्टिकोण पर निर्भर करता है। यह बौद्धिक विचार ही उसकी विभिन्न क्रियाओ मे एकता लाता है। जिस व्यक्ति के दार्शनिक विचार बौद्धिक दृष्टिकोण जितना ही गम्भीर और ठोस होगा वह अपने कार्यो मे उतनी ही लग्न और कार्य क्षमता प्रदर्शित करेगा। कहने का तात्पर्य यह है कि बुद्धि ही कार्यों की जननी है। यह बुद्धि या विचार शक्ति कैसे उत्पन्न होती है? यह बात समझने के लिए हमे मन के पास पहुचना पडगा। मनोवैज्ञानिक मन मे सचय, सम्प्रयोजनता और सम्बद्धता नाम की तीन शक्तियो का निवास मानते हैं। इन में से सचय शक्ति के द्वारा हम अपने अनुभवो के सस्कार को सचित करते हैं और यह अवशिष्ट सस्कार हमारे वर्तमान आचरण को प्रभावित करता है। सचय शक्ति प्राणि-मात्र मे होती है स्मृति उच्च वर्ग के प्राणियो विशेषत मनुष्यो मे पाई जाती है। विचार कल्पना आदि जितनी बौद्धिक क्रियायें मानव वैशिष्ट्य की बोधक हैं उन सबका आधार स्मृति है। हम जो अनुपस्थित व्यक्तियो के विषय मे बातचीत करते हैं अतीत की घटनाओ की आलोचना करते है भविष्य की कल्पना जिस भूतकाल के आधार पर निर्मित करते हैं वह सब स्मृति का बहुत अधिक महत्व है। ज्ञान, विज्ञान, साहित्य कला सगीत का आधार स्मृति है। स्मृति मन की मूल शक्ति सचय के कारण होती है। अत बौद्धिक कार्यों का या बुद्धि का उत्पादक मन है।

बुद्धि या ज्ञान उत्पन्न होने पर मन मे चैतन्य आता है। धैर्य उत्पन्न होता है। सचय शक्ति की वृद्धि से स्मृति बढती है। समृति को बढाने के लिए स्वास्थ्य प्रद वस्तुओ का भोजन करना चाहिए। स्मृति की वृद्धि के लिए समा-नता, वैपरीत्य सहकारिता इन तीनो नियमो का ध्यान रखते हुए स्मृति शक्ति को बढाना चाहिए। जिस बालक ने बब्बर नही देखा उसे रूप साम्य के कारण घोड़ का स्मरण हो जाता है। साधु पुरुष को देख कर दुष्ट की स्मृति हो जाती है। अत, विचार शक्ति की तीव्रता के लिए स्मृति की आवश्यकता होती है। इसीलिए इस मत्र मे कहा गया है कि मन ज्ञान चेतना और धृति का कारण है। यत्प्रज्ञान मुत चेतो धृतिश्च अर्थात मन बुद्धि का उत्पादक (उत) और (चेत) स्मृति का साधन और (धृति) धैर्य स्वरूप है।

इसके बाद का मन्त्र का भाग है। यज्ज्योति रन्तरमृत प्रजासु, जो प्रजाओ मे अमृत और ज्योति है जो नाश रहित और प्रकाश स्वरूप है। मन के काम जीवित अवस्था मे चेतन मन के साथ तो विद्यमान रहते ही हैं। चेतन मन को पार करके अचेतन मे चले जाते हैं और उनके सस्कार तो हमेशा बने रहते हैं इसलिए मन को अमृत कहा है। यह नाश रहित होता हुआ हमारे जीवन के सब कार्यों पर प्रकाश डालता है अत इसे ज्योति स्वरूप भी कहते हैं। मनुष्य के मन मे अदभुत शक्ति है परन्तु साधारणतया हमे इसका ज्ञान नही होता क्योकि ये शक्तिया बिखरी रहती हैं। यदि शक्तिया सगठित हो कर काम करन लगे तो मनुष्य आश्चर्य जनक कार्य करने लगता है।

कई बार यदि किसी मनुष्य को बहुत अधिक कष्ट होता है और इस कष्ट के समय अपने किसी प्रिय को याद करता है तो उसकी सूचना उसे मिल जाती है। मेरी बहन की एक लडकी स्वर्गीय ऊषा थी। वह जौनपुर में अपने पिता माता के साथ रहती थी। जिस दिन उसकी मृत्यु हुई ठीक उसी समय गोरखपुर मे उसकी मामी अर्थात् मेरी पत्नी को उसका पता चल गया। वह दोपहर को घर साफ कर रही थी। उन्होने मु ह विचकाया जैसे कोई घृणा-जनक वस्तु देखी हो और झाड़ू फेंक दिया। मैंने कारण पूछा तो पहले वह चुप रहीं और बाद में उन्होंने कहा कि मुझे अचानक कफन में लिपटी प्यारी ऊषा की लाश दिखाई दी है और उनकी आखो में आसू आ गए। यह दिन के डेढ बजे की बात है। आश्चर्य तो तब हुआ जब अगले दिन तार द्वारा उसकी मृत्यु की सूचना हमें मिली। कहना न होगा कि वह हमारे यहा बहुत रही है उसकी मां मेरी बहन होते हुए भी मुझ से आयु मे बहुत छोटी है मैंने उसे बेटी की तरह प्यार किया है। ऊषा ही दिन भर मामी-मामा की रट लगाए रहती थी। जब उसे जाते थी वे पर मैं और मामी कभी नहीं। मुझे पूरा विश्वास है कि उसने मामी को मरते समय तक याद किया था।

वेदो के प्रसिद्ध विद्वान श्री पूज्य दामोदर सातवलेकर जी का पुत्र गुरु-कुल इन्द्रप्रस्थ का विद्यार्थी था। वह अस्वस्थ हुआ। उसकी बीमारी बढी। श्री सातवलेकर जी का तार आया कि मुझे लगता है कि मेरा पुत्र सख्त बीमार है सूचना दीजिए। इससे पहले तार जा चुका था कि 'दीर्घदर्शी इल कमबून' सख्त बीमार है, तुरन्त आइये। इसके बाद उनका तार आता है कि मुझे लग रहा है कि वह मर गया। सचमुच उन का तार मिलने से पहले ही एक्सपायर्ड का तार जा चुका था। क्या यह मन की ज्योति के बिना सम्भव है।

—

# आर्य समाज के सिक्ख साहित्य-कार बाबा अर्जुनसिंह

ले—डा श्री भवानीलाल भारतीय चण्डीगढ

बाबा अर्जुनसिंह बाबा छज्जूसिंह के छोटे भाई थे। आर्य समाज लाहौर की साप्ताहिक अग्रेजी पत्रिका आर्य पत्रिका के प्रथम सम्पादक थे। बाबा अर्जुनसिंह भी अपने अग्रज की भाति अग्रेजी के सुलेखक थे। इन्होने स्वामी दयानन्द के अनेक लघु ग्रन्थों का अग्रेजी अनुवाद किया था। 1901 में उनका निधन हो गया। बाबा अर्जुनसिंह के साहित्यक कार्य का विवरण इस प्रकार है —स्वामीदयानन्द कृतग्रन्थो के आग्ल अनुवाद—

1 आर्योद्देश्य रत्नमाला—अग्रेजी अनुवाद के साथ साथ प्रत्येक मन्तव्य पर स्वतन्त्रता रूप से टिप्पणी भी लिखी गई है। प्रारम्भ मे यह अनुवाद आर्य पत्रिका मे धारावाही रूप से दी जारलैंड आफ दी जेम आफ दी आर बीलीफ्स—शीर्षक से छापा। पुन वैदिक यत्रालय से पुस्तक रूप मे छापा। अब तक सस्करण प्रकाशित हुए हैं।

2 वेदान्तिध्वान्त निवारण —स्वामी दयानन्द कृत नवीन वेदान्त की समा-लोचना मे लिखित यह ग्रन्थ नीयू वेदान्त रिफूटड शीर्षक से अनुदित हुआ है। यह भी पहले आर्य पत्रिका में प्रकाशित हुआ था। अनुवाद के प्रारम्भ मे बाबा जी ने सात पृष्ठो की एक एक विद्वता पूर्ण भूमिका के अन्त मे दी गई तिथि से ज्ञात होता है कि अनुवाद का कार्य जुलाई 1899 में पूरा हुआ था। पुस्तक रूप में इसे वैदिक यत्रालय अजमेर ने प्रकाशित किया।

3- व्यवहार भानु—बालको के लिए लिखे गए इस ग्रन्थ को बाबा अर्जुन सिंह ने अनूदित किया। अग्रेजी का यह सुन्दर अनुवाद पजाब प्रिंटिंग वर्क्स लाहौर मे मुद्रित हो कर—दि आर्यन प्रिंटिंग पब्लिशिंग एण्ड जनरल ट्रेडिंग कम्पनी लि लाहौर से प्रकाशित हुआ—

4- सत्य धर्म विचार-(मेला चादा-पुर) स्वामी जी के इसाई पादरियो और मुसलमान मौलवियों से हुए प्रसिद्ध शास्त्रार्थ का अग्रेजी अनुवाद बाबा अर्जुनसिंह ने किया था। बाबा छज्जू-सिंह ने ग्रन्थ का सशोधन किया तथा उपर्युक्त प्रकाशक ने इसे प्रकाशित किया था।

5- पच महायज्ञ विधि—कर्मकाण्ड के इस ग्रन्थ का अग्रेजी अनुवाद।

दयानन्द सरस्वती-फाउण्डर आफ दी आर्य समाज।

अपने मित्र पडित चरनदास बी ए. के आग्रह पर बाबा अर्जुन सिंह ने स्वामी दयानन्द का यह लघु जीवन चरित्र लिखा था, जो पजाब प्रिंटिंग वर्क्स लाहौर 1901 मे प्रकाशित हुआ। इस द्वितीय संस्करण एस एस प्रकाशन नई दिल्ली ने 1979 में प्रकाशित किया है।

बाबा अर्जुनसिंह के बडे भाई बाबा छज्जूसिंह ने भी आर्य समाज को उच्च-कोटि का अग्रेजी साहित्य प्रदान किया है। उन्होंने स्वामी दयानन्द की अग्रेजी भाषा में बृहद् जीवनी लिखी। इसके अतिरिक्त आर्य समाज सम्बन्धी अनेक विवेचनापूर्ण ग्रन्थ अग्रेजी में लिखे।

## सम्पादकीय—

# वेदों के राजनीतिक सिद्धान्त-2

जो कुछ मैंने वेदों के सम्बन्ध में पिछले लेख में लिखा था उससे यह तो स्पष्ट हो जाता है कि वेद दुनिया में सबसे पुराने धार्मिक ग्रन्थ हैं। बाईबल और कुरान तो वेदों के बहुत बाद आए हैं। इसलिए इन्सान को मुक्ति का जो रास्ता वेद दिखा सकते हैं कोई दूसरा नहीं दिखा सकता है। दुनिया का सारा इतिहास पढ़ जाएं उसमें एक बात और स्पष्ट हो जाती है। इस्लाम और ईसाईयत के प्रचार के लिए तलवार का प्रयोग किया गया लेकिन वैदिक धर्म के प्रचार के लिए कभी हिंसा का सहारा नहीं लिया गया। सम्भवत यह भी कारण था कि वेदों का वह प्रचार नहीं हुआ जो कुरान या बाईबल का हुआ है। ये दोनो तलवार के बल से भारत में भी आए थे और यहां आकर उन्होंने वेदों को मिटाने की कोशिश भी की। लेकिन उसमें वे सफल नहीं हो सके। आज भारत की जनता का बहुत बड़ा बहुमत वेदो को ही अपने धर्म ग्रन्थ मानता है और उनके अनुसार चलने की कोशिश करते हैं। वेदों में जो कुछ लिखा हुआ है उसकी व्याख्या के सम्बन्ध में मतभेद हो सकता है और कई जगह है भी लेकिन कोई हिन्दू इस वास्तविकता से इन्कार नहीं करता कि वेद हमारे धर्म का आधार हैं। वेदों के आधार पर ही उपनिषद बने और उनके आधार पर भगवान कृष्ण ने गीता का उपदेश दिया। रामायण और महाभारत हमारे दो ऐसे ग्रन्थ हैं जो धार्मिक भी हैं और ऐतिहासिक भी। महाभारत को हुए तो अभी पांच हजार वर्ष हुए हैं। उसी समय भगवान कृष्ण ने गीता का उपदेश दिया था। उस युग में बड़े-बड़े राजाओं और महाराजाओं के राजकुमार वेद पढ़ने के लिए गुरुकुल में जाया करते थे। स्वयं भगवान कृष्ण अपने भाई बलराम के साथ गुरुकुल में गए थे। भगवान राम तो भगवान कृष्ण से बहुत पहले हुए हैं। वह भी अपने तीनों भाईयो के साथ महर्षि विश्वामित्र के आश्रम में चले गए थे और श्रीराम के दोनो बेटे लव और कुश पैदा ही महर्षि वाल्मीकि के आश्रम मे हुए थे। जो भी राजकुमार ऋषियो के आश्रम मे भेजे जाते थे वे वहां जाकर वेद ही पढ़ा करते थे। उनके माध्यम से उन्हें कुछ राजनीतिक सिद्धान्त पढ़ाए और सिखाए जाते थे और उसी के आधार पर अपना शासन चलाया करते थे। जब हम कई बार यह कहते हैं कि प्राचीन काल मे हमारे देश मे लोग अधिक सुखी हुआ करते थे यहां भी दूध की नदियां बहा करती थी तो उसका एक कारण यह था कि उस युग के राजे महाराजे वेदो की शिक्षा के अनुसार शासन किया करते थे। वे आज कल के शासको की तरह शासन को निजी स्वार्थ के लिए न चलाते थे। बल्कि अपनी प्रजा की सेवा के लिए उसका उनकी प्रजा पर भी प्रभाव होता था। इसीलिए यह कहावत मशहूर है 'यथा राजा तथा प्रजा' अर्थात जैसा राजा होगा वैसी प्रजा होगी। चूंकि आज के राजे महाराज लुटेरे बन जाते हैं। इसलिए उनकी प्रजा भी वह ही कुछ करने लगती है।

अगर हम कहें कि आज भी वेद के राजनीतिक सिद्धान्तों के अनुसार चल तो यह तो सम्भव न होगा जिस प्रकार की दुनिया मे हम रह रहे हैं इसमें वेदो को कौन समझेगा और कौन उन पर आचरण करेगा। लेकिन वेद एक ऐसी पूंजी है जो हमें धरोहर के रूप मे मिली है। यूरोप के लोग आज भी जब वेदो को पढ़ते हैं तो उन्हें हैरानी होती है कि एक उच्च किस्म का एक ग्रन्थ मौजूद है और उन्होंने उसकी तरफ ध्यान नहीं दिया। यूरोप मे वेदो का कितना सम्मान किया गया है उसका अनुमान हम इससे लगा सकते हैं कि 150 वर्ष पूर्व जर्मनी में वेद पढ़ने वाले लोग मौजूद थे। उस समय की जर्मनी की राजधानी बर्लिन से प्रकाशित हुआ एक वेद मेरे पास भी पड़ा है। यह इसका प्रमाण है कि उस समय जर्मनी मे वेद पढ़ने वाले मौजूद थे। आज भी जर्मनी के रेडियो से कई बार संस्कृत मे भाषण कराए जाते हैं।

वेदों की एक विशेषता और भी है। वह किसी व्यक्ति विशेष के साथ नहीं बंधे हुए। इस्लाम हजरत मुहम्मद के गिर्द घूमता है। ईसाईयत ईसा के गिर्द घूमती है। वेद केवल परमात्मा को ही अपना सहारा मानते हैं जिसके बन्दे हैं कि इस दुनिया में जितने लोग हैं वेद सबको एक नजर से देखते हैं और वेदो में जो विचारधारा व सिद्धान्त स्पष्ट किए गए हैं वे सबके लिए हैं। जब वेद रचे गए थे तो इन्सान न तो धर्म के नाम पर बंधे हुए थे न जात बिरादरी के नाम पर। न किसी दल के नाम पर। उस युग में कोई साम्प्रदायिकता का झगड़ा न था। चूंकि वेदो की दृष्टि मे सब मानव एक जैसे हैं जो भी सिद्धान्त स्पष्ट किए गए थे वे सबके लिए थे और चूंकि किसी भी व्यवस्था को कायम रखने के लिए किसी कायदा कानून की जरूरत होती है इसलिए उसका नाम राजनीति रख दिया गया अर्थात राज या शासन कैसे चलाया जाए उसके सम्बन्ध में भी कुछ सिद्धान्त स्पष्ट कर दिए गए थे।

राजनीति का आधार चूंकि राजा होता है इसलिए वेदो में पहले इसी बात पर जोर दिया गया है कि राजा कैसा होना चाहिए। वेद खानदानी राजाशाही को कतई तौर पर रद्द करते हैं। वह राजनीति का आधार लोकतन्त्र-लोकतान्त्रिक या प्रजातन्त्र को मानते हैं। इसलिए उनका कहना है कि देश का या राष्ट्र का राजा राष्ट्रपति को उसकी प्रजा मनोनीत करे और राष्ट्रपति पर उस की प्रजा का पूरा नियन्त्रण होना चाहिए।

वेद प्रजा को यह अधिकार भी देते हैं कि अगर राष्ट्रपति अयोग्य बेईमान और अत्याचारी साबित हो तो प्रजा उसे गद्दी से उतार सकती है। दूसरे शब्दों मे वेद प्रजा को राजा पर अधिमान देते हैं। वेद की सारी व्यवस्था अच्छी तरह चलानेके लिए एक राजा का होना जरूरी है लेकिन राजा वह होना चाहिए जो अपनी प्रजा की भलाई के लिए काम करे। जो राजा इसमें असफल हो वेद कहते हैं कि उसे तत्काल हटा देना चाहिए। यदि हम आज के हालात पर नजर डालें तो जो कुछ वेद कहते हैं वह एक क्रान्तिकारी बात समझी जाएगी। वेद राजा पर प्रजा को न केवल प्राथमिकता देते हैं बल्कि प्रजा को यह अधिकार भी देते हैं कि यदि राजा इसके हित में काम न करे तो उसे फौरन हटा दिया जाए। यदि हम आज के मन्त्रियों को वेद के स्तर पर आंकें तो एक भी उस पर पूरा नहीं उतर सकता और अपने पद पर बना रह सकता है। वेदो ने राष्ट्रपति कार्यकाल की अवधि भी सुनिश्चित कर रखी थी। आज कल राष्ट्रपति या प्रधानमन्त्री का जो चुनाव होता है वह पांच वर्ष के लिए होता है। कई बार एक ही व्यक्ति बार बार निर्वाचित हो जाता है। कोई दस वर्ष शासन करता है तो कोई पन्द्रह वर्ष। वेद इस परम्परा के विरुद्ध हैं। उनका कहना है कि राष्ट्रपति एक ही बार निर्वाचित किया जाए और वह भी अपने दूसरे देशवासियो की तरह उतनी देर ही काम करेगा जितना कोई और व्यक्ति करता है वेदो ने हर व्यक्ति के जीवन को चार पड़ावो मे बांटा है। ब्रह्मचर्य आश्रम गृहस्थ आश्रम वानप्रस्थ आश्रम और संन्यास आश्रम। वेद के अनुसार हर व्यक्ति गृहस्थ आश्रम के बाद वानप्रस्थ की ओर जाता है। इसका अर्थ यह है कि जब कोई व्यक्ति गृहस्थ छोड़ कर वानप्रस्थ की ओर जाए तो उसके रिटायर होने का समय आ जाता है एक तरह से वह दुनिया को छोड़ने की तयारी शुरू कर देता है। जो कमी वानप्रस्थ मे रह जाती है वह संन्यास आश्रम मे जाकर पूरी हो जाती है। जब एक व्यक्ति संसार छोड़ने लगता है तो उसे उस समय कोई दुःख कष्ट नहीं होता क्योंकि वह उस समय तक हर प्रकार की पाबन्दियो से स्वतन्त्र हो चुका होता है।

वेद राजा और प्रजा मे इस लिहाज से कोई अन्तर नहीं करते। उनका कहना है कि यदि प्रजा के लोग गृहस्थ आश्रम के बाद वानप्रस्थ में जाते हैं तो कोई कारण नहीं कि राजा भी न जाए। जब वेद यह कहते हैं कि एक राष्ट्रपति को आजीवन के लिए निर्वाचित करना चाहिए यदा कदा राष्ट्रपति को बदलना उचित नहीं तो इसका अर्थ यह है कि जब तक राष्ट्रपति गृहस्थ आश्रम मे हैं वह शासन चलाता रहे जिस दिन उसका वानप्रस्थ मे जाने का समय आ जाए वह गद्दी छोड़ दे। उससे पहले यदि वह किसी समय ऐसा काम करे जो उसकी प्रजा के हित मे न हो तो उसकी प्रजा को यह अधिकार है कि उसे हटा दिया जाए। राष्ट्रपति अपनी प्रजा का सेवक बनकर ही रह सकता है उसका शासक बनकर नहीं।

—वीरेन्द्र

# गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार में श्री स्वामी सत्याप्रकाश जी का दीक्षान्त भाषण

( 29 अप्रैल से आगे)

स्वामी दयानन्द जब यज्ञ का अथ समतिकरण करते हैं तो उनका अभिप्राय रसायन विद्या धातु विद्या शिल्प भौतिकी आदि से होता है।

आर्य जगत में स्वतन्त्रता के बाद जब हम यज्ञशालाओं के भवन तयार करने की परिकल्पना उठी तो हमने देश देशान्तर मे भव्य और रमणीक यज्ञशालाएं बना डाली मन्दिर मस्जिद और गिरजे भी बहुत बने परन्तु आर्य समाज की प्रेरणा से स्वामी दयानन्द के अभिप्राय की एक भी यज्ञशाला नही बनी। किन्तु भारत राष्ट्र तो इसकी उपेक्षा नही कर सकता था। आज हमारा आर्य समाज झुक गिरकर हिन्दू बनता जा रहा है किन्तु यह अच्छा हुआ कि भारत राष्ट्र बना न मुस्लिम राष्ट्र। हमारा राष्ट्र अभी तक आर्य भारतीय) राष्ट्र बना हुआ है आज हमारे देश मे 100 के लगभग विभिन्न कार्यों की राष्ट्रीय प्रयोगशालाएं हैं। सैकडो कारखाने हैं चिकित्सा कृषि शिल्प और विज्ञान को प्रोत्साहन देने वाली यज्ञशालाएं हैं। इन पर हमे गर्व है। ये संस्थान और संस्थाएं राष्ट्रीय यज्ञस्थली हैं किन्तु रूढिग्रस्त हिन्दुत्ववादी आर्य समाज आज भी इन्हें उपेक्षा की दृष्टि से देख रहा है।

मैं अपने आज के स्नातकों से आग्रह पूर्वक संकेत करूंगा कि आपकी शिक्षा दीक्षा आर्य जगत के सर्वश्रेष्ठ शिक्षा संस्थान मे हुई है इसके लिए आपको बधाई है आपके कुलपति और कुलाधिपति और अधिकारियो से भी कहूंगा कि आप अपने अन्तेवासियो को दयानन्द के सपनो को पूरा करने की प्रेरणा दें। इन्हे राष्ट्रवादी बनाए। ये राष्ट्रीय संस्थानो मे यशस्वी स्थान प्राप्त करें

इस सम्बन्ध मे एक घटना का उल्लेख करू कई वर्षों की बात है मैं गृहस्थी था अपनी पत्नी के साथ स्पेन के प्रसिद्ध नगर बार्सिलोना गया वहा मरियम के नाम पर एक गिरजा घर कई दशको से बन रहा है आयोजको की कल्पना है कि वह संसार का सबसे ऊंचा गिरजा घर होगा अभी केवल आगे की ऊंची दीवार तैयार हुई है। गिरजे के जिस मठ में पादरी ने मुझ गिरजा घर घुमा कर दिखाया उसने वेदना भरे भावक शब्दो मे कहा—आज लोग वैज्ञानिक संस्थाओं को तो धन देते हैं किन्तु भगवान के नाम पर बनने वाले गिरजो के लिए नही। यही तो ईसाईयत है मुसलमान भी ऐसा ही समझता है अधोगति प्राप्त हिन्दू की भी यही मनोवृत्ति है और आर्य समाज का व्यक्ति भी इसी मनोवृत्ति मे साथ दे रहा है। यह सम्प्रदाय वादिता है और आर्य समाज को इसी से बचाना है। स्वामी दयानन्द इसी मनोवृत्ति से हमे बचाना चाहते थे। वैदिक धर्म यथार्थ जीवन का है यज्ञमय जीवन का निर्माण वेद की शिक्षा है। उन्नीसवें शतक मे वेद के परमोद्धारक ऋषि दयानन्द एक मात्र ऐसे धर्माचार्य थे जिन्होने यूरोप मे विकसित ज्ञान विज्ञान एवं नए शिल्प का स्वागत किया। आज का यूरोपीय या अमरीकी विज्ञान बाईबल की दुहाई नही देता। उसका ज्ञान विज्ञान मनुष्य मात्र के कल्याण के लिए हैं। ईसाईयो ने वैज्ञानिको का विरोध किया मुसलमानो ने भी विरोध किया। पौराणिक हठाग्राहियो ने भी विरोध किया। हम मे से भी कुछ रूढिवादी हिन्दू आर्य समाजियो ने भौतिकतावाद की भर्त्सना विज्ञान और शिल्प मे पापी पर विज्ञान के चरण आगे बढते गए वेद वेदांग उपवेद सबका मिलाकर वर्तमान नाम विज्ञान है। विज्ञान ही मानव मात्र का समान धर्म है। विज्ञान प्रतिपादित अपौरुषेयत्व मे निष्ठा रखना ही सच्ची आस्तिकता है और इसी अपौरुषेय के प्रति नतमस्तक होना मनुष्य का सहज स्वाभाविक धर्म है अपौरुषेय सृष्टि मे विराट पुरुष का दर्शन करना और इस पुरुष के साक्षात्कार से व्यक्ति और समाज को शाश्वत नैतिकता की ओर अग्रसर करना मनुष्य का स्वाभाविक सहज धर्म है। हम अपने विगत मध्य कालीन इतिहास मे हिन्दू गणित ग्रीक ज्योतिष अरब की रसायन इन संकुचित भावनाओ के शब्दों का प्रयोग करते थे किन्तु आज मानव मात्र का एक गणित है एक रसायन है एक शिल्प शास्त्र है ऋषि दयानन्द ने इसी प्रकार की एक कल्पना तथाकथित धर्म के क्षेत्र में की थी वे समस्त मानव को एक धर्म मञ्च पर एक आस्तिकता पर और एक नैतिकता पर लाना चाहते थे। आपके गुरुकुल के स्नातको से भी इस दिशा मे काम करने की पूरी आशा हमें थी हम कभी कभी आपको ही लक्ष्य करके आवेश मे कवियों के साथ गाया करते थे कि गुरुकुल का ब्रह्मचारी अरब देश में वेद घोष से जावेगा भारत से दूर वेद का प्रचार करेगा। इस सबका एक आर्य धार्मिक राष्ट्र और विश्व की जाति पांति को प्रथक देगा सभी देशो के अन्धविश्वासो और अज्ञानो का दूर करेगा।

हम 22 24 वय के वटु ब्रह्मचारी से बहुत आशा नहीं करते। आप सब स्नातक जीवन मे प्रवेश करने जा रहे है। आप वैवाहिक गृहस्थ जीवन मे रह और आजित्य ब्रह्मचारी बनने की चेष्टा करें। ज्ञान के विस्तारक का नाम ब्रह्मचारी है। ब्रह्म और वेद शब्द समानार्थक हैं। सृष्टि ज्ञान का नाम ही विद्या है। इसके दो भेद हैं परा और अपरा। मूर्त सम्बन्धी ज्ञान सृष्टि का नाम अपराविद्या है। अपराविद्या ईश्वर में विश्वास उत्पन्न करती है किन्तु पराविद्या समष्टि से हमें उसका उपकार बुद्धि रचयितात्मक से जाते हैं। अमूर्त सृष्टि का ज्ञान [illegible] पराविद्या के पाच अध्याय हैं। पाचों के विषय अमूर्त हैं पहले अध्याय का विषय इन्द्रिय है दूसरे का प्राण तीसरे का मानस अथवा अन्तःकरण चौथे का जीवात्मा और पांचवें का विराट् पुरुष या ब्रह्म। ये पराविद्या के अध्ययन के दीपक हैं। उपनिषदो मे इसी विद्या का उल्लेख है। ये पाचो तत्व निराकार हैं।

(क्रमश)

## आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की साधारण सभा के सदस्यो की सेवा में

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर की वार्षिक साधारण सभा का अधिवेशन रविवार 10 जून 1984 को आर्य समाज मन्दिर अड्डा होशियारपुर जालन्धर शहर मे होना निश्चित हुआ है। कार्यवाही 11 बजे प्रातः आरम्भ होगी, कृपया नियत समय पर सम्मिलित होकर कृतार्थ करें।

### विचारणीय विषय (एजैण्डा)

1 गत साधारण सभा दिनांक 8 अगस्त 82 की कार्यवाही सम्पुष्ट करना।

2 सभा के विभिन्न विभागी की सम्वत 2039 तथा 2040 की वार्षिक रिपोर्ट।

3 सभा का सम्वत 2039 तथा 2040 का आय व्यय तथा सम्वत 2041 (84 85) के लिए बजट स्वीकार करना।

4 पंजाब की वर्तमान स्थिति व समस्याओ पर विचार।

5 अन्तरङ्ग सभा द्वारा आर्य समाजो के नाम लगाई गई वार्षिक धनराशि की स्वीकृति।

6 सभा के भवन निर्माण के लिए धन संग्रह।

7 2041 (1984 85) के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अधिकारियो अन्तरङ्ग सदस्यो विद्या सभा के सदस्यो न्याय सभा और राजार्य सभा के सदस्यों तथा सार्वदेशिक सभा के लिए प्रतिनिधियों का निर्वाचन।

नोट—1 कृपया यह ध्यान रखें कि आर्यसमाजो के वही प्रतिनिधि अधिवेशन मे भाग ले सकेंगे जिनके निर्वाचन करने वाली आर्य समाजो ने सभा के नियम संख्या 5 के अनुसार वेद प्रचार की राशि तथा नियम संख्या 12 (क) के अनुसार चन्दा किराया तथा अन्य किसी भी माध्यम से प्राप्त वर्ष भर की आय का दशांश भाग (दशांश) सभा को दिया हो।

2 आर्य मर्यादा का चन्दा भी प्राप्त होना अनिवार्य है

5 सम्वत 2041 का बजट (जिसमें सम्वत 2039 तथा 2040 के आय व्यय की राशियो का वर्णन भी होगा) तथा प्रतिनिधियो के लिए प्रवेश पत्र पुन भेजे जाएंगे।

4 सभा के विधान की धारा 21 (क) के अनुसार सभा की अन्तरङ्ग सभा के 41 सदस्यों में से 14 सदस्य जिला सभाओं के प्रतिनिधि होंगे। तदर्थ मनोनीत किए जाने वाले महानुभावो के नामों का सूचना प्रस्तावक तथा अनुमोदक के हस्ताक्षर सहित 31 मई 84 तक सभा के कार्यालय में रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा अवश्य भिजवा देवें। साधारण सभा के अधिवेशन के दिन प्रत्येक जिला के प्रतिनिधियो की अलग अलग सूची उन महानुभावो को दे दी जाएगी जिनके प्रस्तावित नाम सभा कार्यालय को दे देंगे। एक से अधिक प्रत्याशी होने की अवस्था में जिन्हें अधिक मत प्राप्त होंगे उनके नामो की घोषणा अधिवेशन के पश्चात् एक सप्ताह के अन्दर कर दी जाएगी। परन्तु एक जिला से केवल एक ही व्यक्ति निर्वाचित हो सकेगा।

वीरेन्द्र
सभा प्रधान

रामचन्द्र जावेद
महामन्त्री

## हमारा गौरवमय इतिहास

# रामायण-महाभारत

ले —श्री ईश्वरदत्ताजी शास्त्री प्रभाकर प्रीत विहार नई दिल्ली

देश भर में और विशेषतया पंजाब में हिन्दुओं की दुर्दशा देखकर बहुत दुःख होता है। अनन्त काल से संसार में शासन करने वाली आर्य जाति पहले मुगलों की गुलाम बनी और बाद में अंग्रेजों के जूते चाटती रही। विदेशियों की कूटनीति से हमारी भाषा छीन ली गई पुनः विदेशी प्रचार से आर्य संस्कृति का लोप हो गया।

आर्य जाति को जीवित रखने वाला उसका पुराना इतिहास लुप्त होते ही उसने अपना गौरव खो दिया, अब भी यदि हम अपने प्रभावशाली इतिहास का ठीक प्रचार करें श्रीराम और श्री कृष्ण की सच्ची कथा सुनें-सुनाएं तो वह पहला स्वर्ण युग लाया जा सकता है। हमारा बहुमूल्य इतिहास मुगलों ने जला दिया था। शेष बचे महाभारत और रामायण में अनेक झूठी दूषित कहानियां जोड़ दी गई जिन्हें पढ़कर हिन्दुओं का उनसे विश्वास उठ गया है।

रामायण में अश्वमेध यज्ञ में कौशल्या की अश्व सेवा शृंगी ऋषि के यज्ञ में प्रकट हुई खीर के खाने से दशरथ के पुत्रों की एक साथ उत्पत्ति और समका-लीन विवाह हनुमान जी को बानर सिद्ध करना और गर्भवती सीता को बिना अपराध धोखे से वनों में छोड़ देना श्री राम द्वारा निरपराध शूद्रक की हत्या लिखकर रामायण के प्रति अश्रद्धा पैदा किया गया। रावण के दस शीश व बीस भुजाओं की गप्प हांक कर रामायण कथा को कपोल कल्पित बना दिया है।

इसी प्रकार द्रौपदी का यज्ञ कुण्ड से उत्पन्न होना पांच पतियों से विवाह करना कर्ण का सूर्य पुत्र होना और द्रोणाचार्य का द्रोण कुण्ड से पैदा होना लिख कर महाभारत को दूषित किया गया है।

अब आवश्यकता है कि वाल्मीकि रामायण और महाभारत के प्रक्षिप्त भागों को अलग करके शुद्ध रूप में प्रकाशित किया जाए, जिससे आर्य जाति अपना प्राचीन गौरव समझकर अपने पैरों पर खड़ी हो सके।

हिन्दुओं में दो बड़ी-बड़ी संस्थाएं आर्य समाज और सनातन धर्म हैं। यदि यह छोटे-मोटे भेद भाव मिटाकर एक झण्डे के नीचे खड़े हो जाएं तो शेष छोटी मोटी संस्थाएं स्वयं आ मिलेंगी। आरम्भ में मूर्ति पूजा अवतारवाद और श्राद्ध पर शास्त्रार्थ होते रहे हैं अब लोगों में जागृति आ गई है वे झूठ पाखण्डियों के जाल में नहीं फंसते। मूर्ति जड़ है उसे केवल स्मारक का साधन बनाया जा सकता है उसकी पूजा व्यर्थ समझी जा रही है। व्यापक परमेश्वर किसी शरीर में समा नहीं सकता हां ईश्वरी शक्ति विशेष धारण करने वाले महापुरुष (मुक्त आत्माएं) ही धरती पर जन्म लेकर पापियों का हनन करके पुनः धर्म की स्थापना करते हैं जैसे श्रीराम और श्री कृष्ण थे। रही श्राद्ध की बात पाखण्डी अनपढ़ ब्राह्मणों को अब कौन पूछता है। हां यदि हिन्दू जनता अपने स्वर्गवासी पिता महात्माओं के निर्वाण दिवस पर घर में पकवान बनाकर बच्चों को खिलाएं और उन्हें अपने पूर्वजों के गुण बता कर उनके प्रति श्रद्धा भाव पैदा करें तो कोई दोष नहीं। आज आर्य सज्जनों ने अपने बड़ों के फोटो लगाए और बच्चों के सामने अपने जीवित पिता माता की सेवा कर तो बच्चों में बड़ों के प्रति घृणा न पैदा हो। यदि कोई श्रद्धा पूर्वक अपने बड़ों की स्मृति में दान देता है तो उसे सच्चा श्राद्ध मानना चाहिए।

लेखक ने आयु भर बड़े परिश्रम से स्वाध्याय करके वाल्मीकि रामायण और महाभारत का संक्षिप्त शुद्ध रूप तैयार किया है। विविध विषयों—सीता त्याग द्रौपदी के पांच पति आदि पर काफी लेख प्रकाशित करवाए हैं। आवश्यकता इस बात की है कि आप महानुभाव मेरे प्रयत्न को औचित्य की छाप लगाने की कृपा करें और ये पुस्तक प्रकाशित हो जाएं तो सभी बुद्धिमान हिन्दू अपने प्राचीन गौरवमय इतिहास रूपी दर्पण में अपना चेहरा देखकर सच्चे आर्य बन सकते हैं।

इस पवित्र कार्य को आर्य समाज की छत्र छाया में सम्पन्न किया जा सकता है अतः स्वाध्यायशील सज्जनों को आगे आना चाहिए।

—

# खालिस्तान न बनने देंगे

रच —खाजूराम शर्मा शास्त्री दिल्ली

ऋषि मुनियों की पुण्य भूमि यह भारत वर्ष हमें प्यारा है।<br>
देकर सच्चा ज्ञान जिन्होंने दूर किया यहां अंधियारा है।<br>
इसी भूमि पर राम कृष्ण और दयानन्द से ऋषि पधारे।<br>
विविध कष्ट सह कर जीवन में आर्य जाति के बने सहारे॥<br>
नानक गुरु गोविन्द सिंह दश गुरुओं ने यहां जन्म लिया था।<br>
देश भक्ति और आर्य संगठन का सबने संदेश दिया था॥

वेदी कुल के थे गुरु नानक कह गए वेद पढ़ो तुम सारे।<br>
एक ईश्वर की भक्ति करो और एक ओंकार जपो तुम प्यारे॥<br>
आज जिन्हें हिन्दू कहते हैं दुःख संकट में उन्हें बचाया।<br>
दुष्टों से टक्कर लेने को यहां एक सिख पंथ बनाया॥<br>
गौ ब्राह्मण सन्तों की रक्षा करने का संकल्प लिया था।<br>
देश जाति की रक्षा के हित अपने को बलिदान किया था॥<br>
वे थे आर्य वीर भारत के त्याग तपस्या उनकी भारी।<br>
अत्याचारों के आगे वे कभी झुके नहीं हिम्मत हारी॥<br>
उनका जन्म दिवस मनाना हम सबका यह महा पर्व है।<br>
लख वीरता सीख कर उनकी हमें आज भी बड़ा गर्व है॥<br>
उन गुरुओं और महर्षियों का रक्त हमारे अन्दर बहता।<br>
हिन्दू सिख सब एक जाति है। पृथक है ऐसा कौन है कहता॥<br>
एक वृक्ष की दो शाखा हैं किन्तु सभी का एक मूल है।<br>
सिक्ख जाति एक पृथक जाति है ऐसा कहना महा भूल है॥<br>
एक हैं हम सब एक रहेंगे मिल कर देश का काम करेंगे।<br>
भाई भाई का रक्त बहा कर जाति को नहीं बदनाम करेंगे।<br>
ग्रन्थ साहब में नहीं लिखा मानव मानव का दमन करें।<br>
किसी निरपराध व्यक्ति को निर्भय लूटें अथवा हनन करें॥<br>
गुरुओं का आदेश जिन्होंने ठुकरा कर यह पाप किया है<br>
ग्रन्थ साहब का जो सेवक अपमान भी अपने आप किया है॥<br>
अपने को हिन्दू न बता कर क्या कुछ अच्छा सबक सिखाया।<br>
संविधान को जला फाड़ कर राष्ट्र द्रोह प्रत्यक्ष दिखाया॥<br>
क्षमा नहीं इतिहास करेगा सदा सदा बदनाम रहेंगे।<br>
यह कलंक धोया न जाएगा इसका भी परिणाम सहेंगे॥<br>
उग्रवाद या पृथकवाद उनका षड्यन्त्र अधूरा होगा।<br>
भारत को खंडित करने का उनका स्वप्न न पूरा होगा॥<br>
'खाजू राम' देश अपने का हम न कभी अपमान सहेंगे।<br>
आर्य वीर भारत के अन्दर खालिस्तान न बनने देंगे॥

—

## पाणिनी कन्या महा-विद्यालय वाराणसी का १३वां वार्षिकोत्सव

आप सबको यह जानकर महती प्रसन्नता होगी कि पाणिनि कन्या महा विद्यालय वाराणसी का 13वां वार्षिकोत्सव 1, 2, 3 जून तदनुसार ज्येष्ठ शु 2 3 4 शुक्र शनि रवि को बड़ी धूमधाम के साथ मनाया जाना निश्चित हुआ है। प्रति वर्ष की भांति कार्यक्रम अत्यन्त ही रोचक चित्ताकर्षक एवं मनोहारी होंगे। इस अवसर पर अनेकों महात्मागण और विद्वज्जन पधार रहे हैं।

कृपया इस महोत्सव में पधार कर सुअवसर का लाभ उठाएं तथा तन मन धन से सहयोग कर पुण्य के भागी बनें।

—माधुरी तर्कप्सका

# बाल जगत्—
# बच्चा डरपोक है तो क्यों ?

ले—श्री राकेश जैन

कुछ दिन पहले की बात है। हम एक मित्र से मिलने उनके घर गए। जब हम वहां पहुंचे तो रात के लगभग 8 बजे होंगे। वे लोग हमारी प्रतीक्षा कर ही रहे थे। घर मे कदम रखते ही अनुराधा भाभी ने बड़े तपाक से हमारा स्वागत किया। किन्तु इससे पहले कि वह कुछ कहती मैंने स्वयं कहा भाभी पहले पानी पिलाओ। गर्मी के मारे बुरा हाल हो गया है।

भाभी ने पास ही खड़ी अपनी बिटिया मीरा को सम्बोधित करते हुए कहा जा रसोई मे जाकर अंकल के लिए ठण्डा पानी ले आ

मीरा सहमी सी खड़ी रही, उसने कोई उत्तर नही दिया। फिर क्या था। भाभी लगी झुंझलाने अरे खड़ी क्या देख रही है? जाती क्यों नहीं? अन्धेरा कुछ खा थोड़े ही जाएगा।

मीरा फिर भी वहीं खड़ी रही तो भाभी ने अपने लड़के को सम्बोधित करते हुए कहा जा बेटा तू ले आ पानी इस की तो जान निकलती है। 12 वर्ष की हो गई लेकिन अब भी इस अन्धेरे से डर लगता है। भगवान जाने आगे इसका क्या होगा?

यह समस्या केवल मीरा की ही नहीं अनेक बच्चो की है। क्या कभी हमने यह जानने का प्रयत्न किया है कि आखिर ऐसा होता क्यो है? बच्चे डरपोक क्यो बन जाते हैं?

छोटी आयु में विशेषकर जन्म के बाद कुछ महीनो तक बच्चे तेज आवाजो से बहुत डरते हैं। रेल की तेज सीटी हो या मिल का भोंपू बादलो की गड़गड़ाहट हो या जोर का धमाका इन्हें सुनकर बच्चा भयभीत हो जाता है और जोर जोर से रोने लगता है। यदि उस समय उसके पास परिवार का कोई बड़ा सदस्य न हो तो हो सकता है कि वह काफी देर तक रोता रहे और उसके मन मे यह भय सदा के लिए घर कर ले ऐसी घटना होने पर माता को चाहिए कि वह तुरन्त बच्चे के पास जाए और उसे छाती से लगा ले ताकि असुरक्षा का भय उसके मन में न बैठने पाए अच्छा यह रहता कि उसके तुरन्त बाद बच्चे को गोद मे लेकर या कुछ बड़ा हो तो साथ लेकर वही आवाज उसे बार बार सुनाए और उसे बताए कि यह अमुक चीज की आवाज है। उदाहरण के लिए यदि वह रेल की सीटी सुनकर डरा हो तो उसे रेलवे स्टेशन पर ले जाकर चलती हुई गाड़ी दिखाए और रेल की सीटी सुनवाए ऐसा करने से बच्चे के मन का भय निकल जाएगा और वह उसे स्वाभाविक रूप मे लेने लगेगा। परन्तु किसी कारण वश यदि उस समय उसकी उपेक्षा कर दी तो वह भय गहरी जड़ें धारण कर लेगा।

यदि बच्चा किसी प्रकार के धमाके के कारण डरा हो तो भी उसका वह भय दूर किया जा सकता है। ऐसा करने के लिए आप उसे अपने साथ खिलाए और खेल खेल में कागज के लिफाफे मे हवा भर कर उस बच्चे के सामने तोड़ें। इस प्रकार बार बार धमाके करने से बच्चे के मन से धमाके का भय निकल जाएगा और उसे इस खेल में भी मजा आने लगेगा।

बच्चे अक्सर कुत्ते के जोर जोर से भौंकने की आवाज से भी डर जाते हैं और यह डर भी कई बार उनके मन में गहरी जड़ें जमा लेता है। अत इस सम्बन्ध में भी सावधानी बरतना जरूरी होता है। इसके लिए अच्छा यह रहता है कि बच्चे को ऐसे मित्र के घर ले जाए जिन्होंने कुत्ता रखा हो बच्चे को धीरे 2 कुत्ते से परिचित कराए तथा उसे छूने और उस के साथ खेलने का मौका दें। कुछ ही दिनो बाद वह कुत्ते को अपना मित्र और साथी समझने लगेगा तथा उसके मन से भय दूर हो जाएगा। यदि कोई बच्चा किसी स्थिति विशेष मे डरने लगे तो उस का तिरस्कार नहीं करना चाहिए। ऐसा करने से उसमें हीन भावना पैदा हो जाती है। अक्सर मां-बाप ऐसी हालत मे उस बच्चे की तुलना किसी दूसरे बच्चे से करने लगते हैं। इसका बच्चे के विकास पर बड़ा बुरा प्रभाव पड़ता है हमें उसको हतोत्साह करने की अपेक्षा उसके मन से भय दूर करना चाहिए।

वास्तव मे देखा जाए तो बच्चे जन्म से डरपोक या भीरू नही होते। भय की यह भावना बाद मे पनपती है और इसके मूल मे कोई न कोई कारण अवश्य होता है। कई बार तो ऐसा देखने में आता है कि इसका मूल कारण स्वयं माताएं हैं अक्सर घरो मे यह देखा जाता है कि माता बच्चे से अपना मनचाहा काम कराने के लिए उसे तरह-तरह के भय दिखाती हैं। यदि बच्चा दूध नहीं पीता हो तो कहेगी जल्दी से पी ले नहीं तो म्याऊ खा जाएगी या बाबा उठाकर ले जाएगा और ऐसा करते समय वह उसे अन्धेरे मे ले जाती ? और भयभीत करने का प्रयत्न करती है। उस समय बच्चा भय के कारण उसकी आज्ञा का पालन अवश्य कर देता है परन्तु उसके मन में अन्धेरे का या म्याऊ का ऐसा डर बैठ जाता है जो बाद मे प्रयत्न करने पर भी दूर नहीं होता। ऐसे बच्चे दब्बू और संकोची बन जाते हैं और साहस का कोई काम नहीं कर पाते। कई बार तो यह भी देखने में आया है कि ये बच्चे जवान होने पर यहां तक कि स्वयं माता पिता बन जाने पर भी बचपन मे प्राप्त की हुई इस प्रवृत्ति से छुटकारा पाने मे सफल नहीं होते।

एक बार की बात है। मैं एक मित्र के घर बैठा था। मित्र अभी अपने कार्यालय से लौटे नहीं थे। उनकी पत्नी चाय बनाने रसोई मे चली गई। इसी बीच वर्षा शुरू हो गई। कुछ देर बाद वर्षा तेज हो गई और बादल जोर जोर से गरजने लगे। उसी समय मुझे बड़ी जोर की चीख सुनाई दी। मैं रसोई की ओर गया तो यह देखकर स्तम्भित रह गया कि मित्र की पत्नी भय से कांप रही थीं। मेरे पहुंचने पर कुछ आश्वस्त होते हुए उन्होंने कहा कोई खास बात नहीं है। बादलो की गड़गड़ाहट से मैं अक्सर डर जाया करती हूं। मैं असमंजस में पड़ गया बातचीत करने पर मुझे पता चला कि उनके इस भय का सम्बन्ध उनकी बचपन की ही एक घटना से था।

उपर्युक्त उदाहरण से समस्या का एक दूसरा रूप हमारे सामने आता है। जब मां बाप स्वयं डरपोक होंगे तो बच्चा भला कैसे सुरक्षित अनुभव कर सकता है। आज भी ऐसा देखने में आता है कि अनेक महिलाएं किसी न किसी प्रकार के भय का शिकार हैं। कोई सांप से डरती है तो कोई अकेला रहने से। कोई अन्धेरे से डरती है तो कोई आग से। अत मां बाप स्वयं प्रयत्न करके पहले अपने मन से भय को दूर करें। इसके लिए अभ्यास करना होगा।

बच्चा छोटी आयु में सुरक्षा चाहता है और वह इस के लिए मां-बाप की ओर निहारता है। यदि मां बाप उसे अपेक्षित सुरक्षा न प्रदान कर पाए तो उसके मन में अज्ञात भय जन्म लेने लगते हैं। अत मां बाप को यह ध्यान रखना चाहिए कि बच्चे को आयु के अनुसार सुरक्षा प्रदान की जाए। इस सम्बन्ध में पिता की अपेक्षा माता का दायित्व कहीं अधिक होता है। क्योंकि अधिकांश समय बच्चा उसी के पास रहता है। माता को चाहिए कि वह समय समय पर बच्चे को वीरता के किस्से और कहानियां सुनाए जिससे वह भीरू और कायर बनने की बजाय निर्भीक तथा साहसी बने। महान् पुरुषों के जीवन की प्रेरक घटनाएं इस सम्बन्ध में बड़ी उपयोगी सिद्ध होती हैं। कहते हैं शिवाजी की माता उन्हें बचपन से ही युद्धो के प्रसङ्ग और वीरों की शौर्यपूर्ण कथाएं सुनाया करती थीं। सम्भवत यही कारण था कि शिवाजी इतने वीर और साहसी बने।

(प्रोईम मार्ईज से साभार)

---

## सम्पादक के नाम पत्र

## पंजाब में आत्मसुरक्षा के लिए कुछ सुझाव

श्री सम्पादक जी सादर नमस्ते !

यदि हम अपने अङ्ग रक्षक की रक्षा का प्रबन्ध प्रथम करें तो हमारी रक्षा हो सकेगी।

जिन लोगों को अङ्ग रक्षक मिले हुए हैं वह घर मे उनके मकान के बाहर बैठे होते हैं या उन की दुकान के बाहर बैठे होते हैं जितने भी आक्रमण हुए हैं उग्रवादियो ने सर्व प्रथम अङ्ग रक्षक को ही गोली मारी है इसी प्रकार बैंको मे भी जो गनमैन होता है वह गले मे बन्दूक डाले साधारण रूप मे बैंक के कमचारियों या ग्राहकों का कार्य करता फिरता देखा जाता इसका परिणाम दैनिक समाचार पत्रो मे पढ़ते हैं। यदि वह बैंक के अन्दर ही किसी सुरक्षित स्थान पर बन्दूक लिए या लोहे की गुलेल या तीर कमान या ईंट पत्थर लेकर भी बैठा हो तो उस बैंक मे डाका नहीं डाला जा सकता। भूल केवल इतनी ही है कि हम अपनी रक्षा के साधन बुद्धि पूर्वक नहीं करते स्टनगन पकड़े व्यक्ति मे भी एक सिंह या साहसी व्यक्ति उससे गन छीन कर भाग सकता है। यदि वह साधारण रूप मे खड़ा होगा।

—योगेन्द्र पाल मन्त्री
आर्यसमाज [illegible] होशियारपुर जालन्धर

## आर्यसमाज स्थापना अंक "गागर में सागर"

सम्पादकजी सादर नमस्ते !

सभा के साप्ताहिक पत्र आर्य मर्यादा का आर्य समाज स्थापना दिवस के अवसर पर प्रकाशित विशेषांक आर्य समाज के मन्तव्य पुस्तक के रूप मे प्राप्त हुआ। वास्तव मे यह विशेषांक सराहनीय एवं पठनीय था। लघु पुस्तिका होते हुए भी काफी उपयोगी है। इसे पढ़कर काफी ज्ञान वृद्धि हुई तथा जीवन में एक नई प्रेरणा भी मिली। वास्तव में यह पत्र सामाजिक धार्मिक तथा आध्यात्मिक लेखों का एक प्रमुख पत्र है। जो स्वतन्त्र एवं निर्भीक रूप मे जनता की सेवा कर रहा है आपने यह विशेषांक निकाल कर सचमुच गागर मे सागर भर दिया है इसके लिए आपका कोटिशः धन्यवाद।

—राम कुमार आर्य पुस्तकाध्यक्ष सोनीपत

# विश्व में त्रिविध शान्ति यज्ञ से ही सम्भव

ले.—श्री पं. वीरसेन जी वेदश्रमी, वेद विज्ञानाचार्य वेद सदन महारानी रोड इन्दौर

1. शिव संकल्पमस्तु (यजु 35-1)

आज विश्व मे सर्वत्र अशान्ति ही अशान्ति उत्तरोत्तर बढ़ रही है। अशान्ति का मूल कारण मन तत्व से है। यह अशान्ति स्वार्थ, द्वेषादि दुर्भावनाओं अर्थात् अमगल विचारोसे उत्पन्न है। अत मानव के मन तत्व मे शिव सकल्प का उदय होना आवश्यक है। समान मन सहचित्त-मेषाम् (ऋग्वेद) की भावना का प्रयत्न करना चाहिए।

(2, मन से स्वाहा (यजु 22-23)

पृथिवी मे बीजो के बोने से पृथिवी हरी भरी अन्न फलादि से पूर्ण हो जाती है। उसी प्रकार समष्टि मन तत्व में यदि द्वेष भाव प्रसारित होता है तो अशान्ति एव युद्ध का उन्माद उत्पन्न हो जाता है। यदि शान्ति के सद् विचारो का, प्रेम के विचारों का प्रसारण किया जावेगा तो विश्व में शान्ति और प्रेम का व्यवहार उत्पन्न होगा। अत दुरितानि परासुव-दुष्ट भावो, विरोधी कार्यों का त्याग करना आवश्यक है।

3 मनो यज्ञेन कल्पताम्
(यजु 18-29)

यह कार्य सामूहिक सकल्प शक्ति प्रार्थना द्वारा सफल होता है परन्तु जब इसमे यज्ञ द्वारा पर्यावरण को शुद्ध और पुष्ट करने के लिए वेद मन्त्रो की ध्वनि शक्ति के साथ आहुति शक्ति सयुक्त हो जाती है तो उसका प्रभाव शीघ्र विश्व-व्यापी हो जाता है जिससे सा मा शान्ति रेधि-मानव मात्र में शान्ति की वृद्धि होने लगती है।

4 वसो पवित्रमसि द्योरसि (यजु 1-2)

यज्ञ पवित्रकर्ता है तथा हजारो प्रकार से पवित्र कर्ता है। जिस प्रकार से द्युलोक में सूर्य प्रकाशित होकर सर्वत्र प्रकाश को उत्पन्न करता है उसी प्रकार यज्ञ भी सूर्य समान प्रकाशित होकर सर्वत्र प्रभाव उत्पन्न करता है। अत निसकोच भाव से, श्रद्धापूर्वक दृढ सकल्प से, विश्व शान्ति के लिए यज्ञ का अनुष्ठान करना चाहिए। अवश्य विश्व शान्ति होगी।

5 परमेण धाम्ना दृहस्व मा ह्वा
(यजु 1-2)

यह यज्ञ विश्व के उत्कृष्ट मण्डल परिधियों मे अन्तरिक्ष की विविध कक्षाओ म स्थित होकर समस्त पृथिवी मण्डल के मानस तत्व एव भौतिक पदार्थों को प्रभावित करता है—जैसे आज कल पृथिवी से भू-उपग्रह निकल दूरी की अन्तरिक्ष कक्षाओ मे स्थिर करके उससे प्रतिक्षण लाभ की प्राप्ति की जाती है।

उसी प्रकार यज्ञ भी अन्तरिक्ष और द्युलोक की कक्षाओ, परिधियो म स्थापित होकर उसका प्रसारण भू-मण्डल के चेतन एव जड जगत् को प्रभावित करता है। अत मा-ह्वा (यजु 1-2) उस यज्ञ का त्याग कभी मत करो। उसका अनुष्ठान अवश्य करो। यह विश्व को आयु और जीवन प्रदान करेगा (यजु 1-4)

6 गायत्रेण त्वा छन्दसा सादयामि
(यजु 13 53)

यज्ञ गायत्री मन्त्र के छन्दो के त्रिष्टुप छन्दो के मन्त्रो से, जगती छन्द के मन्त्रो से, अनुष्टुप छन्द के मन्त्रो से अन्तरिक्ष और द्युलोक की विविध कक्षाओ मे स्थापित किया जाता है। वेद का यज्ञ-विज्ञान स्पष्ट निर्देश दे रहा है कि विश्व शान्ति के लिए यज्ञो का अनुष्ठान करें। अवश्य सफलता प्राप्त होगी। अवश्य ही सफलता प्राप्त होगी। राजनीतिक साम्प्रदायिक जाति मूलक, राष्ट्रगत विद्वेष मन मे शिव सकल्प के उदय होने से ही शान्त होंगे। पूर्ण शान्त होंगे तो प्राकृतिक प्रकोप आन्धी तूफान बाढ, सूखा आदि भी यज्ञ के प्रभाव से स्वत शान्त होंगे। सर्वत्र शान्ति ही शान्ति उत्पन्न होगी। मा विद्विषाव है। द्वेष भावो का उन्मूलन होगा अतिरेक शान्ति सर्वत्र शान्ति ही शान्ति प्रसारित होगी।

—

# पंजाब में आर्यसमाज क्या करे

ले.—श्री पण्डित सत्यदेवजी विद्यालकार

(गताक से आगे)

यदि न बढ़ी हो तो कारणों की पडताल होनी चाहिए और अधिकारियो मे अवश्य परिवर्तन होना चाहिए।

4 18 मार्च के आर्य मर्यादा पत्र में आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान श्री माननीय वीरेन्द्र जी का एक निर्देश प्रकाशित हुआ है। आर्य समाजों मे यज्ञो और कीर्तन को विशेष महत्व दिया जाए, उन्होंने एक सप्ताह का यह कार्यक्रम चलाने को कहा है। वास्तव मे भजन-कीर्तन धर्म को रुचि कर और प्रभावी बनाने का प्रबल साधन है। पर आर्य समाज मे इसका विकास नहीं हुआ। तुलना की दृष्टि की बहुत कम विकास हुआ।

आर्य समाज का गीति साहित्य राग भाषा सौन्दर्य, काव्य सौन्दर्य तीनो ही दृष्टियो से बहुत पीछे है। वैष्णव धर्म तो इस दृष्टि से अपार समृद्ध है। इस्लाम और सिख साहित्य भी हमसे कही आगे है। आर्य समाज अभी तक इस मूल मत सच्चाई का अनुभव नही कर पाया जाो इन्द्रिया जहा आसक्ति मे सहायक है वहा मानसिक एकाग्रता और उदारता के भी सहायक हैं। मन्दिर की महानता और सौन्दर्य, सजीव सुगन्ध, कीर्तन की मधुरता आसन की सुखदता, और मधुर यज्ञ प्रसाद आकर्षण और उपयुक्त वातावरण उत्पन्न करते हैं।

यज्ञ और कीर्तन का धार्मिक दृष्टि से उतना ही महत्व है जितना की उभय उपदेश का।

5 प्रत्येक आर्य समाजी को मिल कर वाचनालय तथा पुस्तकालय अच्छे स्तर पर बनाने चाहिए। प्रत्येक बड़े नगर कम से कम 2 3 तो ऐसे पुस्तकालय होने चाहिए जहा अध्ययन के लिए नए पुराने वैदिक साहित्य का आर्य समाज मे विशेष का सग्रह हो। आर्य समाजो के बहुत समाचार पत्र निकल रहे हैं। उनके लिए केन्द्र अवश्य बनाने चाहिए।

6 सब से बडी बात तो यह है कि आर्य नेताओ और महात्माओ तथा सन्यासियो के द्वारा कठोर तप और त्याग द्वारा बनाई और पाली पोषी गई आर्य-सस्थाओ को आर्य समाज की जीवन धारा से अलग होने की अनुमति नही दी जा सकती। वे किसी प्रबन्ध कारिणी सभा की निजी सम्पत्ति नही, सम्पूर्ण आर्य समाज की सम्पत्ति है। उन्हे उनके अध्यापको तथा विद्यार्थियो की आर्य समाज के आदर्शों से अनुप्राणित करने की बहुत आवश्यकता है। यह आर्यसमाज के लिए जीवन मरण का प्रश्न है। आदरणीय स्वामी श्रद्धानन्द महात्मा हसराज प मेहर चन्द तथा महात्मा आ देवराज जी के खून पसीने से सिंचित सस्थाए आर्य समाज के आदर्श वातावरण और जीवन से काट कर अलग नहीं की जा सकती। वर्तमान अवस्था मे यह सस्थाए आर्य समाज स अलग एक बनावटी सा जीवन गुजार रही हैं। इनको आर्य समाज की मुख्य जीवन धारा से लाने के लिए अच्छा सघर्ष करना होगा।

आजकल जो उथल पुथल चल रही है, इसका परिणाम दूरगामी है। सम्पूर्ण भारत के राष्ट्रीय जीवन को अधिक शान्त और सुसमृद्ध बनाने मे आर्य समाज को अपना योगदान अवश्य देना है। यह प्रान्त क किसी अन्य वर्ग के साथ सघर्ष मे नही आना चाहता पर प्रान्त मे घृणा और हिंसा की आग धधकती रहे यह भी नही देख सकता। प्रान्त का जीवन समाज के सभी वर्गों के लिए विकास और समृद्धि का साधन बने इस उद्देश्य से, अपने स्वरूप की दृढ और विकसित करते हुए राष्ट्रीय जीवन धारा से मिल कर भगीरथ प्रयत्न करना, यही आर्य समाज का पवित्र कर्तव्य है।

# आर्य माडल स्कूल का वार्षिक समारोह

आर्य माडल स्कूल शहीद भगतसिंह नगर जालन्धर का स्थापना दिवस 13 अप्रैल को बडे समारोह से मनाया गया। इस स्कूल को आरम्भ हुए दो वर्ष हो गए हैं। इस समारोह की अध्यक्षता श्री खुशीराम जी चावला ने की स्कूल के बच्चो ने वेद मन्त्रो का उच्चारण किया तथा आर्य समाज के नियम सुनाए। इस अवसर पर बच्चो को पारितोषिक दिए गए।

—मुलखराज आर्य प्रधान

## श्री मेलाराम भजनोपदेशक को श्रद्धांजलियां

आर्य प्रादेशिक सभा के पुराने भजनोपदेशक श्री मेलारामजी का निधन हो गया उनका अन्तिम शोक दिवस 20 4 84 को आर्य समाज बस्ती गुजा जालन्धर में मनाया गया, इस अवसर पर यज्ञ के उपरान्त कई विद्वानो तथा आर्य बन्धुओ ने उन्हे श्रद्धाजलि भेंट की।

श्री न ओम प्रकाश जी आर्य श्री प उमेश जी पुरोहित श्री यश जी एम एस ए श्री मनमोहन कालिया भू पू विधायक श्री जगदीश नारायण जी भू पू नगर पिता श्री रामलुभाया जी नन्दा श्री वेद प्रकाश महेन्द्र प्रधान श्री सुरेश कुमार जी श्री डा राम अवतारजी श्री विश्व प्रेम जी भजनोपदेशक प्रो शर्मा डी ए वी कालेज ने कालेज की ओर से श्री मेलाराम जी की धर्म पत्नी को 500) राशि भेंट की तथा प्रादेशिक सभा की ओर से 100 रुपए प्रति माह आजीवन सहायता भेजने की घोषणा की। कई संस्थाओ ने इस अवसर पर शोक सन्देश भेजे। इस अवसर पर नगर के बहुत से आर्य बन्धु उपस्थित थे।

## आर्यसमाज बड़ा बाजार पानीपत मे शताब्दी समारोह

जैसाकि सभी जानते है सामाजिक सुधार, धर्म प्रचार तथा सास्कृति गतिविधियो को अग्रसर करने मे आर्य समाज पानीपत का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। यहा पर अनेक शास्त्रार्थ सैद्धान्तिक चर्चाए तथा शुद्धि आन्दोलन की गतिविधिया निरन्तर समाज तथा जन साधारण में चेतना जाग्रत करती रही है। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज जैसे त्यागी तपस्वी सन्यासी अपने प्रवचनो से पानीपत की जनता को आर्य समाज के माध्यम से तृप्त कर चुके हैं। शास्त्रार्थ महारथी प रामचन्द्र देहलवी विद्वत शिरोमणी प देवेन्द्रनाथ शास्त्री तेजस्वी वक्ता प बुद्धदेव जी विद्यालकार जैसे देश के जाने माने विद्वान अपने प्रेरणाप्रद भाषणो से यहा की जनता के मन को मोहित कर चुके हैं।

हरियाणा के जाने माने वीतराग भक्त फूलसिंह जसी विभूति इसी समाज की देन है। इस आर्य समाज की स्थापना सन 1883 ई मे महर्षि दयानन्द सरस्वती के ही समय मे हो चुकी थी। प्रसिद्ध देशभक्त राष्टीय नेता ला देशबन्धु गुप्ता आर्य समाज पानीपत के प्राण रहे हैं। उनके समय मे इस समाज ने अद्भुत उन्नति की थी। यह समाज देश की अग्रणी समाजो मे मानी जाती रही है।

आगामी अक्तूबर की 6 तारीख से 14 तारीख तक इस समाज का शताब्दी समारोह बड़ धूमधाम से मनाया जा रहा है। जिसकी तैयारी अभी से प्रारम्भ हो गई है —सहदेव शर्मा मन्त्री

## आर्यसमाज विनयनगर (सरोजिनी नगर) नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव

11 व 12 मई 1984 को सरोजिनी नगर मार्कीट पार्क सैन्ट्रल बैंक के सामने बड समारोह पूर्वक मनाया जाएगा।

7 मई से 11 मई तक रात्रि 9 से 10 बजे पूज्य स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती वेद कथा करेंगे और स्वामीजी के नेतृत्व में प्रात काल 6 बजे से साढ 7 बजे तक अथर्व वेद महायज्ञ होगा। 12 मई रात्रि 8 से 10 बजे तक राम गोपाल शालवाले प्रधान सार्वदेशिक सभा की अध्यक्षता मे धर्म रक्षा महाभियान सम्मेलन होगी। जिसमें अनेक विद्वान पधार कर अपने विचार रखेंगे 13 मई को प्रात 8 से 10 बजे तक यज्ञ की पूर्णाहुति होगी।

## टंकारा उपदेशक विद्यालय में प्रवेश प्रारम्भ

महर्षि दयानन्द ट्रस्ट द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक विद्यालय विद्यार्थियो का प्रवेश 1 से 15 जुलाई तक खुला रहेगा। अध्ययन काल 4 वर्ष का है। जिसकी समाप्ति पर सिद्धान्ताचार्य का प्रमाण पत्र प्रदान किया जाता है। प्रवेश पाने के लिए 10वीं परीक्षा पास होना आवश्यक है। पत्र व्यवहार के लिए महर्षि दयानन्द उपदेशक विद्यालय टंकारा राजकोट (गुजरात) से सम्पर्क करें।

—रामनाथ सहगल मन्त्री

### वार्षिक निर्वाचन

आर्य समाज मलेरकोटला का वार्षिक चुनाव 3 अप्रैल को निम्न प्रकार से हुआ प्रधान श्री सतप्रकाश उप्पल उपप्रधान श्रीमती प्रेम लता मल्होत्रा श्रीमती कृष्णा सूद श्री हरिराम शर्मा, श्री जगदीश मोहन कौशल मन्त्री श्री रमेशचन्द्र कौशल उपमन्त्री श्री सुरेश कुमार, कोषाध्यक्ष श्री सीताराम, पुस्तकाध्यक्ष—श्री रोशन लाल जी गोयल।

—सत्यप्रकाश उप्पल प्रधान



श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जय हिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इस की स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

वर्ष 16 अंक 10, 10 आषाढ सम्वत् 2041, तदनुसार 24 जून 1984, दयानन्दाब्द 160 । एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपये

## क्रान्ति के अग्रदूत श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा (16)

# और अब इण्डियन होमरूल सोसायटी का गठन

—श्री वीरेन्द्रजी, प्रधान आर्य

श्याम जी कृष्ण वर्मा ने जब सोचा कि यह समय आ गया है कि अब इनके देशवासी अपनी प्रतिष्ठा, अपने सम्मान को सुरक्षित रखने के लिए अपनी आवाज उठाएं और उन्हें उन लोगों में पहुंचाएं जहां वह इस समय तक नहीं पहुंच रही थी और वहां बैठे लोग इन्हें सुनने को तैयार न थे तो उन्होंने लन्दन से 'इण्डियन सोशिओलोजिस्ट नाम' की साप्ताहिक पत्रिका निकाली। वह यह भी सोचते कि अंग्रेज के घर में बैठ कर ही उसे अपनी आवाज सुनाई जाएगी बेहतर है। इसलिए उन्होंने अपनी पत्रिका के प्रवेशांक में जो लिखा उससे पता चलता है कि उनका मस्तिष्क उस समय किस ढंग से काम कर रहा था और वह आगे किधर जाना चाहते थे।

अत पहले ही अंक में उन्होंने अपनी भावनाओं को निम्न शब्दों में व्यक्त किया।

'इंग्लैंड व भारत के सम्बन्ध एक ऐसा रूप धारण कर रहे हैं कि यह सख्त जरूरत है कि इंग्लैंड में भारत की भावनाओं को सही रूप से व्यक्त किया जाए और इस देश की जनता को यह बोध कराया जाए कि भारतीय जनता इनके बारे में क्या सोचती है। इससे पहले इस प्रकार का प्रयास नहीं किया गया जिसके माध्यम से अंग्रेज जनता के आगे भारत का सही चित्र रखा जाए। हमारा यह प्रयास होगा कि हम ग्रेट ब्रिटेन व आयरलैंड की जनता के दरवाजे में अपनी फरियाद पहुंचा सकें।'

लेकिन श्याम जी ने अपनी भावनाओं को और भी स्पष्ट रूप से आगे चल कर इस प्रकार व्यक्त किया।

"अत्याचार व अन्याय का विरोध न केवल उचित होता बल्कि कई बार अपने सम्मान व प्रतिष्ठा के लिए उसकी सुरक्षा जरूरी भी हो जाती है।"

इस तरह श्याम जी ने यह स्पष्ट कर दिया कि सदा अत्याचारी के विरुद्ध लड़ाई उचित होती है, वह अत्याचारी चाहे एक बादशाह हो या एक सरकार या कोई लोकतन्त्रीय संसद हो। यदि इन की ओर से अत्याचार व अन्याय होता है तो इस का विरोध होना ही चाहिए।

इन शब्दों में श्याम जी कृष्ण वर्मा ने न केवल अपने राजनीतिक जीवन दर्शन को स्पष्ट किया बल्कि एक तरह से भारत व इंग्लैंड के शासकों को भी चेतावनी दे दी कि एक नया संघर्ष शुरू होने वाला है। उन्हीं दिनों अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कई ऐसी घटनाएं हो रही थी जिन की प्रतिध्वनि सारे विश्व में सुनाई दे रही थी। भारत में भी उनका चर्चा हो रहा था और श्याम जी कृष्ण वर्मा ने भी इनका नोटिस लिया और इनके मूल में जो भावना काम कर रही थी उसे समझने का प्रयास किया। उन दिनों जापान व रूस में लड़ाई चल रही थी। रूस के मुकाबला में जापान एक बहुत छोटा सा देश था लेकिन वह उसका बड़ी बहादुरी से मुकाबला कर रहा था। धीरे-धीरे उसकी सेनाएं आगे बढ़ने लगी। इस का भारत के लोगों पर भी प्रभाव पड़ रहा था। वह देख रहे थे कि किस तरह एक छोटा सा देश अपने से बड़ी शक्ति का मुकाबला कर रहा है। यदि जापान रूस का मुकाबला कर सकता है तो भारत ब्रिटेन का क्यों नहीं कर सकता। इन्हीं दिनों चीन में जनमत का प्रभाव बढ़ रहा था और उसके क्रान्तिकारी आन्दोलन के कारण वह विदेशी हस्तक्षेप खत्म हो रहा था।

1905 में रूस में एक नई क्रान्ति आई। जब रूस में जार के महल के सामने एक भव्य प्रदर्शन हुआ। इसके बाद वहां प्रदर्शनों व हड़तालों का सिलसिला शुरू हो गया जो 1917 की रूसी क्रांति का पूर्वाभास बना।

ये वह परिस्थितियां थी उन में एक नई दुनिया करवट ले रही थी एक नई क्रान्ति का चित्र दिखाई दे रहा था। इन से फायदा उठाने के लिए और अपने देशवासियों को एक नई राह दिखाने के लिए श्यामजी कृष्ण वर्मा ने अपनी यह नई पत्रिका शुरू की। इसके प्रथम प्रकाशन पर श्याम जी को चारों ओर से बधाइयां मिलने लगी। कई लोगों ने न केवल उन्हें इस पत्रिका का चन्दा ही दिया बल्कि उनकी आर्थिक सहायता का विश्वास भी दिलाया। इस पत्रिका की सफलता का एक कारण यह भी था कि इसका सम्पादक एक ऐसा व्यक्ति था जिसने इंग्लैंड के सबसे बड़े विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त की थी। जो अंग्रेज को भी जानता था उसकी अंग्रेजी पर भी उसे पूर्ण अधिकार था। पहली बार किसी भारतीय ने अंग्रेजी में यह पत्रिका निकाली थी और इसमें वह अपने देश का दृष्टिकोण खुलकर पेश कर रहा था।

अपनी पत्रिका के दूसरे अंक में श्याम जी ने इस प्रश्न का उत्तर दिया कि भारत में नैतिक आचरण क्यों गिर रहा है। वह झूठ बोलने में हिचकिचाहट क्यों महसूस नहीं करते। धोखा देने में शर्म क्यों महसूस नहीं करते। किसी की पीठ में छुरा घोपना चाहे तो आसानी से घोप देते हैं। यह आरोप उन कुछ अंग्रेजों ने लगाए थे जो कुछ देर भारत में रहकर लौटे थे। उन्होंने इंग्लैंड के समाचारपत्रों में जो प्रतिक्रियाएं प्रकाशित कराई थी उनमें हमारे देश की जनता की एक बहुत घिनौनी तस्वीर पेश की गई थी। श्याम जी कृष्ण वर्मा ने अपनी पत्रिका में इन आरोपों का उत्तर देते हुए कहा कि आज उनके देशवासियों में जो गिरावट आई है इसके लिए अंग्रेज सरकार जिम्मेवार है। उसने भारतीयों पर जो अत्याचार किए हैं और जिस धोखा व फरेब से अपना शासन चलाया है इसका इसके सिवा कोई और परिणाम नहीं निकल सकता था। अंग्रेज ने भारत की जनता को लूटा है। अपने आपको बचाने के लिए यदि उस देश की जनता को किसी समय कुछ ऐसे भी ढंग अपनाने पड़े जो नैतिक दृष्टिकोण से वैध न भी हो तो इन के लिए इन्हें दोषी नहीं ठहराया जा सकता। इसका उत्तरदायित्व तो उन लोगों पर है जिन्होंने उन्हें यह सब कुछ करने पर विवश किया है। श्री श्याम जी ने अपने विचारों की पुष्टि में प्रसिद्ध अंग्रेज दार्शनिक हरबर्ट स्पेंसर के विचार भी प्रस्तुत किए तो उसने भारत की अंग्रेज सरकार के विरुद्ध पेश किए थे और जिस में अत्याचारों का उल्लेख किया गया था जो अंग्रेज ने भारत की जनता पर किए थे।

अपनी पत्रिका के माध्यम से अपने विचार ब्रिटेन की जनता के सामने रखने के बाद श्याम जी ने एक ऐसी संस्था गठित करने का फैसला किया जिस के माध्यम से वह अपने देश के लिए स्वतन्त्रता का वातावरण पैदा कर सकें। इस उद्देश्य को सामने रख कर श्यामजी ने 8 फरवरी 1905 को अपने मकान पर लन्दन में रहने वाले

(शेष पृष्ठ 8 पर)

# मै तुझे कैसे पुकारूं ?

ले —श्री यशपाल आर्य बन्धु आर्य निवास चन्द्र नगर मुरादाबाद

सुना है कि तुझ पुकारने पर तू अवश्यमेव सुनता है एव सहायता करता है। पर मैं कब से तझ पकार रहा हू तू मेरी टेर क्यो नही सुनता ? क्या मुझ से तुम्हें प्रीति नहीं या फिर मेरी पुकार तुझ तक पहुच नहीं पाती। पहुचे भी कैसे ? जब मैं पुकारने की विधि जानू तब न। लगता है जैसे पुकार के तौर तरीको से बेखबर मैं तुझ पुकारता गया। परिणाम जो होना था वही हुआ। जसे —

'रोज जाते हैं उनकी महफल में
फिर भी सामना नही होता

तुम ने कहा था कि नामी को नाम से पुकारो। और फिर तुमने निज नाम भी बता दिया था किन्तु मेरे मुख स तेरा निज नाम तो कभी निकला ही नही। सदा अट सट नामो से ही मैं तुझ पुकारता रहा। फिर तू सुनता तो कैसे ? और जब तू ने नहीं सुनी तो मैं तुझ कोसने लगा। तेरी अवमानना करने लगा और घोर नास्तिक बन गया। फिर दर दर की ठोकर खाने और दु ख उठाने के सिवा मेरे पास शेष बचा ही क्या ?

यह भी सुना है कि तू हृदय मन्दिर मे निवास करता है, किन्तु मैं तो सदा तुझ इधर उधर ही ढूढता रहा। मुझ क्या पता था कि तू मन मन्दिर मे विराज रहा है। मैंने अपने हृदय मे कभी झाक कर देखा ही नहीं। फिर मुलाकात होती तो कैसे ? और यदि कभी भूले से मैंन हृदय मन्दिर मे झाक भी लिया तो मैं तुझ पहचान ही नही पाया। पास रहते हुए भी तू मझ से दूर रहा और जल मे रहकर भी मैं प्यासा ही रहा। पास रहते हुए भी सर्वथा अपरिचित सर्वथा अनजान कैसी विडम्बना है ? वस्तुत

कौन कहता है मुलाकात नही होती
रोज मिलते हैं पर बात नही होती।

कितना नादान निकला मैं ? कितना अज्ञान कि कोई कल्पना भी नहीं कर सकता। दु ख है

आलाम दिल मे छिपा था मुझ
मालूम न था।
पर्दा गफलत का पडा था मझ मालूम
न था॥
मिस्ले आहू के मैं सरगर्दा फिरा
सहरा मे।
नाफ मे नाफा छिपा था मुझ मालूम
न था॥

कहते हैं कि भगवान केवल एक ही भाषा जनता है और वह भाषा है हृदय की भाषा। यदि उसे अपनी बात समानी है तो हृदय की भाषा बोलनी ही होगी। हृदय की भाषा बोलनी ही होगी। हृदय मैं जब व्यग्रता व्याकुलता उत्कण्ठा एव तडप होगी तो हृदय स्वत ही मुखरित हो उठेगा। कहते हैं परमात्मा केवल वही सुनता है जो हृदय बोलता है और यदि हृदय ही गू गा हो तो फिर परमात्मा सुनेगा ही क्या ? जब मेरा हृदय ही गू गा हो तो फिर उसे मैं अपनी बात सुनाऊ ही कैसे ? सन्त कवि दादू ठीक ही कहते हैं।

दादू पीड न उपजि न हम करि
पुकार ताते साहिब न मिला दादू
एती बार।

मैं तझ सदैव हृदय हीन शब्द सुनाता रहा जबकि तू शब्द हीन हृदय सुना करता है जो मेरे से बन न पाया। फिर बात कैसे होती मुलाकात कैसे होती ? यह तो मुझ ध्यान ही नहीं रहा कि तुझ सुनाने के लिए न लिए न तो सुन्दर शब्दो की आवश्यकता होती है न सुलसित भाषा की। बस हृदय मे व्यग्रता व्याकुलता उत्कण्ठा तडप तथा एक मिलन की चाह उत्पन्न करने की आवश्यकता होती है जो अपने से नहीं बन पाई। फिर मैं तेरे दर्शन कसे कर पाता ? पर नाथ

नही हू जानता भगवान विनय कैसे
सनाऊ मैं
विधि से सर्वथा अनभिज्ञ कहा से
सीख आऊ मैं ?

और सत्य तो यह है कि

शब्दऊरे सबदा नही है मझ को तुम
मेरे सबदे की लाज रखना।

प्रभ ! मेरे हृदय मे ऐसी तडप ऐसी व्यग्रता ऐसी उत्कण्ठा ऐसी लगन पैदा कर कि मेरा हृदय बोल उठे। और फिर मुझ ऐसी दृष्टि प्रदान कर कि मैं हृदय मन्दिर मे बठ तझ पहचान सक। प्रभ ऐसी कृपा करो कि मैं हृदय का काम कभी भी अपने होठो से न लू। जब तू अनबोले बोलो को ही जान लेता है तो फिर बोलने की आवश्यकता ही क्या है ? और फिर सत्य तो यह है कि

दिल की हर बात कही लफ्जो मे
होती है बया ?
हर अफसाना कही ममनूने बया
होता है ?

आओ प्रभु ! मेरे हृदय में समा जाओ मेरी आखो मे समा जाओ। अब तो यही कामना है यही इच्छा है यही विनती है यही प्रार्थना है।

बिरह कमण्डल कर लिए बैरागी दो नयन, मागे दरस मधुकरी छके रहैं दिन रैन

और प्रभु मैं तुझ से क्या मांगू ?
'तुझ से मागू मैं तुझ ही को कि
सब कुछ मिल जाए।
सौ सवालों से फकत यह इक सवाल
अच्छा है॥

इस लिए

"तमन्ना है कि हम तुम से तुम्ही
को माग लें साहिब।
हमारी आरजू तुम हो हमारा
मुद्दआ तुम हो॥

इसके अतिरिक्त और कुछ नही चाहिये।

'अनोखी तलब है अजब आरजू है,
तुम्हीं से तुम्हें मांगना चाहता हूं।

और प्रभु ! यह भी सुना है कि —

तुझे पसन्द कोई नही लगती चाह
न मालूम हो तुझ से उम्मीदवार
और
तुझ को पूजने की चाह लिये है किया
करता है
उसकी मिन्नत ही वह मन्जूर किया
करता है।
बारगाहे ईश के मखलूक न हो हरगिज,
तू तो इन्सान है, वह चींटी की सुना
करता है॥

—

# बाल प्रबोध गीत

ले —प झाजूराम जी शर्मा शास्त्री दिल्ली

न ईश्वर को मन से भुलाया करेंगे।
सदा सिर बडो को झुकाया करेंगे।
जगत के पिता से डरेंगे हमेशा।
कभी न किसी को सताया करेंगे।
बुरे बालको में कभी हम न बठ।
सदा अच्छी सगति मे आया करेंगे॥
न दिल से भी सोच किसी की बुराई।
भलाई में जीवन लगाया करेंगे॥
बुरी बात हम न किसी की सुनेंगे।
किसी को बुरी न सुनाया करेंगे॥
समझ कर महापाप कोई भी वस्तु।
कभी न किसी की चुराया करेंग॥
कभी मास मछली न अड छुएग।
सदा शाक भाजी ही खाया करेंग॥
सिनेमा के गन्दे न गाने गाने।
भजन देश भक्ति के गाया करेंग॥
चलग सदा धम की राह पर हम।
न दु ख मे कभी घबराया करेंग॥
गरीबो को कोई सतायेगा तो हम।
उसे मार कर के भगाया करेंग॥
हम भारत के बन कर बहादुर सिपाही।
दुश्मन के छक्के छुडाया करेंगे॥
भुला कर जो अपने को सोते ही रहते।
उन्हे जगा कर हम जगाया करेंगे।

—

# गुरु विरजानन्द स्मारक एव विद्यालय करतारपुर का वार्षिकोत्सव

सभी आर्य समाजो आर्य शिक्षण संस्थाओं को विदित हो कि श्री गुरु विरजानन्द स्मारक एव संस्कृत महाविद्यालय करतारपुर का वार्षिकोत्सव 23 सितम्बर 84 रविवार से 30 सितम्बर 84 रविवार तक होना निश्चित हुआ है। अत सभी आर्य समाजो तथा आर्य शिक्षण संस्थाओ से निवेदन है कि वे अपनी समाजो एव संस्थाओ के उत्सव इन तिथियो को छोडकर रखें तथा उक्त तिथियो में अपना सम्पूर्ण बल करतारपुर के उत्सव को सफल बनाने में लगायें। इस अवसर पर महात्मा दयानन्द जी कथा तथा कथा करेंगे।

—वयुभु न मित्तल मन्त्री
गुरु विरजानन्द स्मारक ट्रस्ट करतारपुर

सम्पादकीय—

# हिमाचल में आर्य समाज

हिमाचल जन संख्या के अनुसार एक बहुत छोटा प्रदेश है। इसकी सारी जनसंख्या 41 लाख के लगभग है परन्तु यह बहुत फैला हुआ है एक तरफ लाहौल स्पीति दूसरी तरफ किन्नौर तीसरी तरफ चम्बा चौथी तरफ सिरमौर और पांचवीं तरफ कांगड़ा। इस प्रकार यह कई बड़े बड़े प्रान्तों से भी बड़ा है। परन्तु जन-संख्या अधिक न होने के कारण यह अभी तक वह प्रगति नहीं कर सका जो उसे करनी चाहिए थी आर्थिक रूप से भी यह एक पिछड़ा हुआ प्रदेश है। न यहां कोई बहुत बड़ा उद्योग है और न कृषि के द्वारा इसकी आय का कोई विशेष साधन है। इन परिस्थितियों में यदि हिमाचल में आर्य समाज का अधिक प्रचार नहीं हुआ तो उसका कारण समझने में कोई कठिनाई न होनी चाहिए। परन्तु यह आर्थिक और सामाजिक रूप से एक पिछड़ा हुआ प्रान्त है इसलिए वहां आर्य समाज के प्रचार की अत्याधिक आवश्यकता है। इसलिए हिमाचल के कुछ आर्य समाजी समय समय पर अपने प्रदेश में आर्य समाज का प्रचार करने के लिए कोई न कोई ऐसी योजना बनाते रहते हैं जिसके द्वारा अपनी जनता का ध्यान आर्य समाज की ओर खींच सकें।

इसी प्रकार की एक योजना अभी थोड़ा ही समय हुआ जब बनाई गई थी। आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल और आर्य प्रादेशिक सभा की उपसभा ने मिलकर हिमाचल में महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी मनाने का फैसला किया था। इस समय हिमाचल की आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज हैं और प्रादेशिक सभा के उपप्रधान डी. ए. वी. कालेज कांगड़ा के प्राचार्य श्री रमेशचन्द्र जीवन हैं। इन दोनों के नेतृत्व में दोनों समाजों ने मिलकर पहली और दो और तीन जून को कांगड़ा में महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी का आयोजन किया था। इस अवसर पर पंजाब के भी कई भाई और बहिनें वहां पहुंचे थे। मैं स्वयं भी वहां गया था। मेरे साथ जालन्धर अमृतसर, दीनानगर पठानकोट नवांशहर और लुधियाना के कई भाई और बहिनें भी भारी संख्या में वहां गए थे। यह सम्मेलन पहली जून को प्रारम्भ हुआ तीन जून को सम्पन्न हुआ। इससे एक सप्ताह पहले श्री राजगुरु शर्मा ने यज्ञ आरम्भ कर दिया था जिसकी पूर्णाहुति तीन जून को प्रातः डाली गई थी। दो जून को दोपहर को शोभा यात्रा निकाली गई जो कांगड़ा के इतिहास में अपूर्व थी। उसे देखकर यह अनुमान लगाया जा सकता है। कि हिमाचल में आर्य समाज के लिए लोगों के दिल में बहुत श्रद्धा है केवल उसे संगठित करने की आवश्यकता है। इस शताब्दी सम्मेलन ने प्रचार को एक नई दिशा दी।। प्रायः हम अपने उत्सवों या सम्मेलनों में हिन्दी रक्षा गऊ रक्षा वेद प्रचार, राष्ट्र रक्षा इस प्रकार के सम्मेलन किया करते हैं। कांगड़ा के सम्मेलन में एक छोटा सम्मेलन वर्ण व्यवस्था पर विचार करने के लिए किया गया। एक सम्मेलन महर्षि दयानन्द को श्रद्धांजलि भेंट करने के लिए किया गया और एक सम्मेलन हिमाचल में आर्य समाज के प्रचार की स्थिति पर विचार करने के लिए किया गया। सारे शताब्दी सम्मेलन को देखकर हम यह तो नहीं कह सकते कि यह बहुत सफल रहा। यह अवश्य कहा जा सकता है कि हिमाचल की वर्तमान परिस्थितियों में यह सम्मेलन सफल था और इसके द्वारा कुछ न कुछ आर्य समाज का प्रचार हिमाचल में हो जाएगा। परन्तु इस दिशा में अभी बहुत कुछ करने की आवश्यकता है। हिमाचल के आर्य समाजियों को इस ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। कोई ऐसी योजना बनानी चाहिए जिससे हिमाचल के बड़े 2 नगरों में विशेषकर धर्मशाला पालमपुर नूरपुर शिमला और चम्बा जैसे स्थानों पर समय समय पर ऐसे सम्मेलन होते रहें उनके द्वारा आर्य समाज का प्रचार होता रहे। कांगड़ा सम्मेलन को जो भी सफलता हुई है उसके लिए मैं हिमाचल की आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुमेधानन्द जी उपप्रधान श्री पं. विद्याधर जी महामन्त्री श्री चमनलाल जी और प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री रमेशचन्द्र जीवन को बधाई देता हूं। जीवन जी ने कांगड़ा में इस सम्मेलन का प्रबन्ध करके अपनी कर्तव्य निष्ठा का जो प्रदर्शन किया है वह अत्यन्त सराहनीय है। इसमें उन्हें उनके कालेज के प्राध्यापकों का जो सहयोग मिला था वह भी प्रशंसनीय था।

3 जून को यह सम्मेलन समाप्त हुआ और हम जो पंजाब से आए हुए थे वहां से अपने घरों को वापस जाने के लिए चल पड़े। हमारा विचार था कि रात को नूरपुर रहेंगे और 4 जून को प्रातः वहां से प्रस्थान करेंगे। परन्तु 3 जून की रात्रि को हमें पता चल गया कि सारे पंजाब में कर्फ्यू लग गया है। इसलिए हमें नूरपुर में ही रुकना पड़ा हम वहां 3 जून से 13 जून तक रुके रहे। मेरे साथ बहन कमला आर्या, श्री योगेन्द्रपाल सेठ श्री ब्रह्मदत्त शर्मा और अमृतसर के श्री म. जगदीशराज, श्री रामरखा जी, श्री मंगाराम जी और दूसरे कई महानुभाव थे। हम सब मिलकर लगभग 30 भाई और बहिन थे। हम में से कुछ पी. डब्ल्यू. डी. रैस्ट हाउस में ठहरे और कुछ आर्य समाज मन्दिर में। हमने जो दस दिन नूरपुर में व्यतीत किए हैं, उन्हें हम कभी न भूल सकेंगे। नूरपुर के आर्य भाईयों और बहिनों और दूसरे कई महानुभावों ने हमारी जो सेवा की हमारा आदर और सम्मान किया उसके लिए हम उनका जितना भी धन्यवाद करें, कम है। यह कहना भी अत्योक्ति नहीं होगी कि हमने नूरपुर में पुराने आर्य समाज का एक नया रूप देखा है। नूरपुर निवासियों ने विशेषकर आर्य समाजियों ने हमारे लिए प्रत्येक प्रकार का आराम पहुंचाने में कोई कसर न रखी थी। हम जितने दिन वहां रहे एक दिन भी हमने अपने भोजन आदि का स्वयं प्रबन्ध न किया था। ऐसा प्रतीत होता था कि सारा नूरपुर ही हमें अपना अतिथि बनाना चाहता है। इन भाईयों में कितनी सच्ची सद्भावना उदारता और आर्य समाज का प्रेम है उसे देखकर कई बार यह भावना मन में उठती थी कि यदि सब आर्य समाजियों में यही आपस का भ्रातभाव पैदा हो जाए तो आर्य समाज का संगठन सबसे अधिक शक्तिशाली हो सकता है। हम वहां 10 दिन रहे और इन दिनों आर्य समाज की ओर से कई सभाएं की गईं जिसमें बहुत बड़ी संख्या में नूरपुर निवासी आया करते थे। इस प्रकार वहां रहने से जो भी लाभ उठाया जा सकता था, उठाया। मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं कि जो कुछ हमने नूरपुर में देखा है, उसके आधार पर हम यह कह सकते हैं कि हिमाचल में आर्य समाज का भविष्य बहुत ही उज्ज्वल है। इसकी तरफ कुछ ध्यान देने की आवश्यकता है। क्योंकि हिमाचल सामाजिक क्षेत्र में बहुत पिछड़ा हुआ है इसलिए आर्य समाज को इस दिशा में अधिक सक्रिय होने की आवश्यकता है।

हिमाचल में मुझे 10 दिन रहने का जो अवसर प्राप्त हुआ है मैं इसे अपना बड़ा सौभाग्य समझता हूं। हिमाचल के अपने आर्य भाईयों और बहिनों को यह विश्वास दिलाना चाहता हूं कि यद्यपि राजनैतिक आधार पर पंजाब और हिमाचल दो प्रान्त बन गए हैं परन्तु आर्य समाज दोनों में एक ऐसी कड़ी है जो इन्हें एक दूसरे से अलग नहीं होने देगी। हिमाचल पिछड़ा हुआ है। उसमें सामाजिक जागृति पैदा करने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल जो भी योजना बनाएगी, उसके लिए आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब उसे जो भी सहयोग दे सकेगी, अवश्य देगी। जब हिमाचल की अलग प्रतिनिधि सभा बनने लगी थी, मैंने उस समय भी कहा था कि यह पंजाब के साथ रहे तो दोनों के लिए लाभदायक रहेगा। मेरी बात किसी ने नहीं सुनी थी। अब उस पर कुछ कहने का कोई लाभ नहीं। वास्तविक स्थिति यह है कि हिमाचल की आर्य प्रतिनिधि सभा बन चुकी है। वह अपने साधनों के अनुसार काम कर रही है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब यह अपना कर्तव्य समझती है कि हिमाचल में आर्य समाज के प्रचार के लिए वह अपना जो भी सहयोग दे सकती है दे और मैं हिमाचल के आर्य भाईयों को यह विश्वास दिलाता हूं कि हम से जो कुछ भी हो सकेगा हम उनकी सहायता के लिए अवश्य करेंगे।

—वीरेन्द्र

# आतंकवादियों ने श्रीनगर में आर्यसमाज मंदिर जला डाला

## आर्य समाजे क्षतिपूर्ति की माग करे—वीरेन्द्र

जालन्धर विगत दिवस आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र ने एक ब्यान में कहा कि श्रीनगर के हजूरी बाग में एक बहुत पुराना आर्य समाज मन्दिर है यह सम्भवत महाराजा हरिसिंह से भी पहले का निर्मित है। इसी के साथ लड़कियों का एक स्कूल भी है। उसका प्रबन्ध भी आर्य समाज करती है। 6 और 7 जून की मध्य रात्रि को आतंकवादियों ने आर्य समाज भवन और इसी के साथ लड़कियों के स्कूल को आग लगा दी और यह सारी इमारत जलकर भस्मसात हो गई।

यद्यपि क्षति का ठीक अनुमान अभी नहीं लगाया जा सकता किन्तु यह लाखों से कम न होगा। जम्मू व काश्मीर का आर्य समाज किसी प्रकार की राजनीति में भाग नहीं लेता। फिर भी कुछ शरारती तत्वों ने आर्य समाज मन्दिर और उसके स्कूल को जलाकर राख कर दिया है।

मैं पंजाब की सब आर्य समाजों से प्रार्थना करता हूं कि वह रविवार 24 जून को अपने साप्ताहिक सत्संग में एक प्रस्ताव पास करके यह मांग करें कि इस क्षति की पूर्ति की जाए और आर्य समाज हजूरी बाग को इसका मुआवजा दिलाया जाए। इस सारी घटना की जांच कराई जाए और जो लोग इसके लिए उत्तरदायी हैं उन्हें दण्ड दिया जाए।

प्रस्ताव की एक प्रतिलिपि जम्मू कश्मीर के मुख्यमन्त्री डा. फारूख अब्दुल्ला और एक प्रति केन्द्रीय गृहमन्त्री को भेजने का भी निर्णय लिया गया है।

## बाल जगत्—

# बच्चों के समुचितपालन-पोषण के कुछ मनोवैज्ञानिक पहलू

ले —श्री जगदीश जगेश

आज कल हर अभिभावक के सामने सबसे बड़ी समस्या है कि बच्चे को उस रास्ते पर कैसे आगे बैठाया जाए जिस पर अभिभावक उसे ले जाना चाहते हैं। आप बच्चे को डाक्टर बनाना चाहें या इन्जीनियर व क्लर्क बनाना चाहें या उद्योगपति, मगर जब आप अपने काम में लौटते हैं या आपकी पत्नी को घर के काम काज से फुरसत मिलती है तो आपसे लड़के के गुणगान के लिए पड़ोसी उलाहने के तीरकमान लेकर हाजिर हो जाते हैं या कोई दुकानदार आपके सपूत का दावेदार बनकर हाजर उपस्थित हो जाता है। जब आप उसके स्कूल का परीक्षा फल देखते हैं तो आपको बुखार चढ़ आता है। जब आपको स्कूल से यह सूचना मिलती है कि बच्चा घर से तो निकला मगर स्कूल न पहुंचा तो आप की परेशानी का ठिकाना नहीं रहता। यह भी सोच लीजिए कि कल यह भी सूचना मिल सकती है कि बच्चे ने कहीं कोई हाथ की सफाई दिखाई है और लोग आपको देखकर इशारे करने लगे हैं और पीठ पीछे काना फूसी। यदि आप व्यापारी हैं तो यह भी हो सकता है कि अपनी दुकान के कैश बक्स से अथवा घर पर जब से कुछ गायब होने लगे। तस्वीर का दूसरा रुख यह भी हो सकता है कि बच्चा दूसरे बच्चे को मार पीट दे, जबरदस्ती सामान छीन कर सहपाठी को गिरा दे या घर के चीनी के बर्तन या फर्नीचर तोड़ने लग या बच्चा बहुत चुप रहता हो। सस्त अकेले पड़ा रहना पसन्द करता हो। बिना पूछे मनमाने घूमते रहना पसन्द करता हो या घर से भाग ही खड़ा हो। ऐसी परिस्थिति में आप क्या करेंगे? क्या आप यह पुरानी उक्ति दुहराकर बैठ जाएंगे कि आज कल के नए बच्चे बड़े उच्छृंखल हो गए हैं। अनुशासन नाम की वस्तु तो अब इतिहास में ही मिलेगी। सारे संसार में नई पीढ़ी को न जाने क्या हो गया है। बस ये तोड़ने फोड़ने पर उतारू हैं। मगर यह याद रखिए कि आपकी दलील एक दम खोखली है अब तक बराबर पुरानी पीढ़ी ने सदैव नेतृत्व प्रदान करके इस अभियोग की धज्जियां उड़ा दी हैं। मानव जीवन के हर क्षेत्र में यह बढ़ता ही आया है। खैर सारे जहां से आपका मामला बिल्कुल अलहदा है। चाहे जमाने के बच्चे कैसे हो आपको अपने बच्चे की फिक्र होनी चाहिए, यह गांठ बांध लीजिए कि आपके बच्चे के निर्माण में आपका हिस्सा अधिक है बच्चे का बहुत कम।

आप यह भली भान्ति हृदयंगम कर लीजिए कि आपका बच्चा वैसा ही है जैसा आपने उसे बनाया है अथवा जैसा आप उसे बनाना चाहते हैं। माता की अकाल मृत्यु अथवा बचपन में पिता की मृत्यु हो जाना, अनेक पारिवारिक अथवा शारीरिक व्याधियों अथवा भीषण दरिद्रता के मध्य पल कर भी संसार में महान विभूतियों ने सिद्धि प्राप्त की है। आप यह बात पूरी तरह दिमाग से निकाल दें कि बच्चा अपना भाग्य लेकर उत्पन्न होता है बल्कि दिमाग शरीफ में यह गांठ कसकर बांध लें कि मेहनत से ही इन्सान बुलन्द होता है। श्रम से ही जीवन सार्थक होता है। यदि आपका बच्चा आपके बताए रास्ते पर नहीं चलता तो अपना हृदय टटोलिए कि आपने जो रास्ता चुना है, क्या वह वाकई आप के बच्चे के लायक है। या आपका बच्चा ही उस रास्ते पर चलने लायक है? सवाल यह है कि आपको इस बात का किस हद तक है कि आप अपने बच्चे का भविष्य अपनी इज्जत का सवाल बनाकर हल करें। आप दुराग्रह से उसका भला नहीं कर सकते। यदि आपने जो रास्ता सोच रखा है वह उनकी मनोवृत्ति तथा क्षमता के अनुकूल नहीं है तो आप उसे उस ऊंचाई पर नहीं पहुंचा सकते जहां ले जाना चाहते हैं और सम्भव है कि उसे वहां भी न पहुंचने दें जहां वह स्वयं पहुंच सकता था। यह सोच लीजिए कि इस विशाल संसार में अनेकानेक सिद्धि क्षेत्र हैं। जहां सफलता आगे रहने वालों को मिलती है पीछे वाले छूट जाते हैं।

## चरित्र बल और आत्म विश्वास

आगे चलकर आप का बच्चा सफल हो, उसके लिए आवश्यक है कि उसके शिशुकाल में इसकी तैयारी करें। जीवन में सफलता के लिए चरित्र बल आवश्यक है। इसकी नींव शैशव में ही डालनी पड़ेगी। चारित्र समाज सम्मत मान्यताओं का आदर्श एवं मर्यादित अनुपालन है। चरित्र हीनता समाज विमुखता है। समाज विमुखता अपराध का आरम्भिक लक्षण है। शिशु में निर्भय तथा कुशल सामाजिकता की नींव भविष्य के विकास की पहली कड़ी है। पिछले दस वर्षों से मैं अपराध निरोध के क्षेत्र में कार्य कर रहा हूं। हजारों बच्चों की अपराध प्रक्रिया का विश्लेषण कर चुका हूं और मेरा यह आस्थापूर्ण निष्कर्ष है कि बच्चे के समाज विमुखता का प्रमुख कारण आत्म विश्वास तथा आत्म सम्मान का अभाव है। इसी प्रकार बच्चे के समाजीकरण का आधार है उसमें आत्म विश्वास तथा आत्म सम्मान उत्पन्न करना। ईश्वर की कृपा से मानवीय व्यक्तित्व का यह मौलिक ईंधन बच्चे में अभिभावक के लिए पूरित कर सकना सम्भव है, चाहे वह निर्धन हो अथवा सम्पन्न, नागरिक हो अथवा ग्रामीण शिक्षित हो अथवा अशिक्षित। बस उसे अपने उत्तरदायित्व को समझ लेना है और तदनुसार दृढ़तापूर्वक कार्यशील होना है।

## विश्वास व तर्क का समन्वय

पहले विश्वास को लीजिए। विश्वास और तर्क मनुष्य की सहज प्रवृत्ति है। विश्वास बाल्यकाल का सरल लक्षण है। विश्वास सुदृढ़ प्राचीर है तर्क पानी की रेखा। मन की शक्ति एवं शान्ति के लिए विश्वास तर्क से अधिक लाभप्रद है। बच्चा हर बात में विश्वास करना चाहता है। यहां तक कि आग और सांप को भी पकड़ लेना चाहता है। तर्क अथवा ज्ञान को उसमें इस प्रकार भरिए कि उसका अन्धविश्वास खत्म हो जाए विश्वास अक्षुण्ण बना रहे। यह याद रखिए कि बच्चे का आरम्भिक अनुभव बाद में उस का अवचेतन मन बन जाता है। मानसिक प्रवृत्तियां कहीं से टपकती नहीं। वही अनुभूतियां ही कालान्तर में अवचेतन मन बन जाती हैं। शिशु का विश्वास ही कुछ वर्षों में उसका आत्म विश्वास बन कर प्रकट होता है।

## बच्चे के सम्मुख आदर्श प्रस्तुत करें

बच्चा झूठ बोलना नहीं चाहता। आप उसके सामने दूसरों से झूठ बोलते हैं, झूठे काम करते हैं। झूठा व्यवहार करते हैं। वह आप पर विश्वास खो देता है। बाद में उसका आत्म विश्वास बढ़िया नहीं बन पाता है। आप उसे नितान्त अयोग्य, कोमल तथा बच्चा समझते रहते हैं। आप भूल करते हैं। याद रखिए, बच्चे में प्रकृति ने कहीं दृढ़ संकल्प शक्ति दी है। शुरू में उसे सच्चे स्नेह सहायता तथा देख रेख की जरूरत है। परन्तु जैसे-जैसे वह बड़ा होता है। आपको अपना दृष्टिकोण बदलना चाहिए। उस पर, उसकी क्षमता पर, उसकी निष्कपटता पर विश्वास करना चाहिए। आप को उसके ऊपर रौब जमाने की प्रवृत्ति समाप्त करनी चाहिए। उसके ऊपर से हाथ इस प्रकार खींचिए की उसकी सुरक्षा की हानि न हो और उसकी आत्म निर्भरता विकसित हो। घर में घूमने की स्वच्छन्दता दीजिए। उस के कपड़े आरामदेह होने चाहिए। उसके अपने साज सामान, पुस्तकें अथवा खिलौनों में अड़गेबाजी न करें। जो आप बच्चे से कहते हैं, जिस रूप में आप उसे देखना चाहते हैं। याद रखिए प्रारम्भिक काल में वह खुद आप को उसी रूप में देखना शुरू करता है। आप उस के सामने अपने क्रमानुसार अपना [illegible] रूप स्वाभाविक ढंग से प्रस्तुत कीजिए। एक ओर आपके ऊपर उसका अडिग विश्वास बना रहे अपनी कथनी करनी में सामंजस्य बना रहे दूसरी ओर उसे यह अनुभव हो कि उसके ऊपर आप का अटल विश्वास है। तभी बालक भयमुक्त एवं आत्म विश्वास युक्त नागरिक बन पाएगा।

## अहंभाव की समुचित तुष्टि अपेक्षित

आत्म विश्वास की इसी तस्वीर का दूसरा रुख है आत्म-सम्मान। हर बच्चे में एक अहं भाव है। जब यह पराकाष्ठा पर होता है तो वह समाज-विमुख होता है। इस से समाज त्रस्त होता है। परन्तु निजी जीवन के लिए यह सुर सरिता है जिससे जीवन की धरती शस्य श्यामला बनती है। यदि बाल्यकाल की प्रताड़ना से इस अहं भाव को कुचलने की कुचेष्टा की जाए तो जब तक चेतना है यह समाप्त नहीं होगा प्रच्छन्न रूप के विद्यमान रहेगा और बालक परले सिरे का अपराधी बन जाएगा। अभिभावक का यह कर्तव्य है कि बच्चे के इस अहं भाव का रचनात्मक विकास करें। उसे इस प्रकार नियमित ढंग से गतिशील करें [illegible] बालक समाजोपयोगी कार्यों में सफलता पाकर समाज से मान्यता तथा सम्मान पाने का अभिलाषी बन जाए। बच्चे के सामने दूसरे बच्चे की उतनी ही प्रशंसा करें जितने से उसे प्रेरणा मिले ईर्ष्या न उत्पन्न हो। अतिरंजित बात अविश्वास तथा विद्रोह उत्पन्न करेंगी। यह अच्छी तरह समझ लीजिए कि चाहे लड़का कितना ही बुरा हो उसके सम्मुख उसकी बुराई करके आप कभी भी अच्छे नतीजे हासिल नहीं कर सकते। कोई भी ऐसा काम न कीजिए जिससे उस का स्वाभिमान कम हो। उसके प्रति भूल कर भी घृणा तथा उपेक्षा न प्रकट कीजिए।

(शेष पृष्ठ 8 पर)

# "फैसला करो"

ले—श्री रणबीर जी भाटिया लुधियाना

फैसला करो इस शीर्षक से आर्य समाजो मे पुरोहितो की स्थिति पर श्री प रामनाथ जी महोपदेशक का एक लेख आर्य मर्यादा मे पूर्व प्रकाशित हुआ है उसकी पुष्टि मे श्री रणबीर जी भाटिया ने इसी शीर्षक से जो लेख लिखा है वह नीचे दिया जा रहा है। अगर कोई सज्जन इस लेख के उत्तर मे अपने विचार लिख कर हमे भजेगा तो उन्हे भी आर्य मर्यादा मे प्रकाशित कर दिया जाएगा।

—सह-सम्पादक

गत रविवार को घर मे पुराने आर्य ...के अक देख रहा था कि मेरी ऊपर लिखित शीर्षक के लेख पर दृष्टि पड़ी जो कि सभा के महा उपदेशक ...रामनाथ जी का लिखा हुआ था। मैं ...महोदय के विचारो से पूरी तरह सहमत हू अब तक हम फैसला नही करते ...पुरोहित का आर्य समाज मे क्या स्थान है ? वह नौकर है या कि आचार्य ...तक आर्य समाज की उन्नति नही हो ...गी, यहा तक कि कल्याण नही हो ...गा। वेदो मे सत्यार्थ प्रकाश म ज्ञान ...शिक्षा तथा यज्ञ करवाने वाले ...नो को विशेष श्रद्धा से उच्च स्थान ...गए हैं। साथ यह भी लिखा है कि ...भी यज्ञ बिना दक्षिणा दिए सफल ...हो सकता। पुरोहित अथवा ब्रह्मा ...हम धन देकर यदि उन्हे नौकर सम ...समझें तो यह हमारी भूल हा नही ...अत मूर्खपन है। हमारे कई अधिकारियो का यह मत है कि आर्य समाज पुरोहितो को प्रति मास वेतन देता है इस लिए वह वेतन धारी है (नौकर हैं) वेद इस विषय मे क्या कहते हैं यह जानना अति आवश्यक है।

प्रथम तो हमारे अधिकारियो के पास इतना समय ही नही कि वे वेदो का अध्ययन कर सके दूसरे अधिकाश हमारे अधिकारी हा ऐसे हैं जिन्हे सस्कृत तो क्या हिन्दी भी नही आती। महर्षि दयान द जी ने यजुर्वेद—भाषा भाष्य के सप्तदशोऽध्याय के 52वें मन्त्र वस्य कुर्मो—का भावार्थ करते हुए लिखा है। 'पुरोहित का यह काम है कि जिस से यजमान की उन्नति हो और जो जिस का जितना जैसा काम करे उस को उसी ढग से उतना ही नियम किया हुआ मासिक धन देना चाहिए सब विद्वान जन सब के प्रति सत्य का उपदेश करें और राजा भी सत्योपदेश करे। यहा पर महर्षि न पूर्णतया स्पष्ट कर दिया है कि पुरोहित को प्रतिमास उसकी जीविका के लिए धन देना अनिवार्य है पर तु उन्होने इस धन को वेतन नही कहा क्योकि वे पुरोहित का स्थान उत्तम समझते थे उन्होने आगे चल कर इसी अध्याये के 53 वें मन्त्र में तो बिल्कुल स्पष्ट कर दिया है उद्धृत्य विश्वे— आचार्य पुरोहित जिन को शिक्षा देवे व शिक्षा लेने वाले उनके सेवक हो। ॥53

तो अब आप ही निर्णय करें कि समाज मे पुरोहित की क्या स्थिति होनी चाहिए सेवक पुरोहित है या हम समय के चक्र के साथ परिस्थितिया बदलती हैं। समाज बदलता है, रहन सहन बदलता है वस्त्र बदलते हैं पर तु पदो की गरिमा नही बदलती। पिता पिता ही रहता है, माता माता ही रहती है गुरु गुरु है पुरोहित पुरोहित है, सेवक सेवक है। काल चक्र की परिस्थितियोके अनुसार पदो की क्रियाओ मे रहन सहन मे वेश भूषा मे अन्तर अवश्य आया है परन्तु मा यताओ म कदापि नही आर्य समाज के कुछ अधिकारी पुरोहित को समाज का वेतनधारी यानि कि उनके मतानुसार नौकर है ऐसी मान्यता देकर समाज कभी भी आगे नही बढ़ सकता जिस जिस पद की मा यताओ मे फर्क आया है वे गढ़ मे गिरे हैं उनका जीवन अन्धकार मय हो गया है चाहे वे पत्नी पति के पद हैं, पिता पुत्र के पद हैं या यजमान पुरोहित के पद हैं। मेरे अपने विचारो मे आर्य समाज की अवनति का एक मात्र कारण भी यही है कि समाजो को अच्छे पुरोहित नही मिल रहे तथा मिलेंगे भी कहा से और क्यो ? जबकि उनके यजमान उनको नौकर समझते हैं। आज वह समय नही रहा जबकि आर्य समाज के अधिकारी पुरोहित का सम्मान करते थे उन्हे आसन देते थे अपने आपको सेवक समझते थ। आज का प्रधान तो सर्वेसर्वा ? हुक्म चलाना ही उसका एक मात्र कर्तव्य है। जब यह स्थिति है तो आर्य समाज की उन्नति कहा। मैं किसी पर आक्षेप नहीं करना चाहता मैंने ऐसे भी अधिकारी देखे हैं जो अपना नाम तक नही लिख सकते। परन्तु हुक्म चलाने मे किसी डी सी से कम नही। वे विद्वान पुरोहित को नौकर समझते हैं क्योकि वे उनके प्रतिमास वेतन देते है महर्षि स्वामी दयानन्द के नाम लेने वाले बन्धुओ, महर्षि की शिक्षा पर ध्यान दो जिन्होने पुरोहित के पद को एक महान स्थान दिया है। वेतन तथा दक्षिणा का अन्तर तो परिस्थितियो का अन्तर है आज की आम भाषा मे जब कोई यज्ञ करवाना चाहता है तो उसका सबसे प्रथम यही प्रश्न होता है कि यज्ञ पर कितना खर्च आएगा और पुरोहित जी का क्या देना होगा कोई भी नही कहता कि दक्षिणा मैंने देनी है। यही परिभाषा आर्य समाज और पुरोहित की बन गई है हम दक्षिणा के रूप मे वेतन देने लगे हैं। तथा वेतन देकर सब मुख ही उनको नौकर समझने लगे है। आप ही अनुमान लगाए जहा ऐसी परिस्थिति होगी—कल्याण कैसे ? जरा उस दृश्य को तो सामने रखो वैसे तो हम पुरोहित को नौकर समझते हैं जब यज्ञ आरम्भ होता है तो हम नौकर के गले म हार डालते हैं उच्च स्थान देते है सेवक ऊपर बैठता है हम नीचे बैठते है नौकर हमे उपदेश देता है हम सुनते है क्या यह सब अजीब सा नही लगता ? नौकर और मालिक का रिश्ता तो कुछ और होता है स्वामी का स्थान सर्वथा ऊचा होता है नौकर कभी भी वेतन देने वाले से ऊपर नही बैठता। फिर ऐसा क्यो ? जिसका स्थान ऊचा है तथा हम स्वय उसको बेह स्थान देते है तो फिर उसके पद को ऊचा मानने को तय्यार क्यो नही ? सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोडने मे सर्वदा उद्यत रहना चाहिए। फिर आर्य समाज के इस नियम को हम क्यो भूल जाते है मैं एक आर्य समाजी परिवार से हू मुझ अच्छी प्रकार मे याद है मैं उस समय आर्यसमाज मे नहा जाता था। जब कभी भी आर्य समाज का पुरोहित हमारे घर आता था तो हम उसके पाव छू कर प्रणाम करते थ सयोग वश मैं आर्य समाज का प्रधान बन गया और जिस पुरोहित के मैं पाव छूता था वह समाज का पुरोहित था मेरे मन मे पुरोहित के प्रति वही श्रद्धा के भाव रहे और आज भी मैं उस पद को बहुत उच्च स्थान देता हू। इस तस्वीर के दूसरे रुख को सामने रखकर विचारो तो और भी अन्धेरा नजर आएगा। ससार का कोई भी ऐसा प्राणी नही जो अपना मान, सम्मान न चाहता हो। जिस को यह पता लग जाए या अनुभव होने लगे कि यहा पर उसका मान नही वह सम्मान नही जिसका वह हकदार है— लाचार तो वहा पर रह जाएगा परन्तु अपनी इच्छा से नही। हमारे पुरोहित समाजो मे ऐसी स्थिति मे लाचारी से तो चल रहे हैं परन्तु स्वेच्छा से नही प्रसन्नता से नही। तो आप ही बतलाए कि वे क्या अध्ययन करेंगे क्या हमे उपदेश करेंगे, जो पिछला पिटा ज्ञान उनके पास होगा उसे बेचते रहेगे जब वह भी समाप्त हो जाएगा यानि कि परिस्थितिया बदल जाएगी तो वे अपना बोरिया बिस्तरा उठा कर कही और चले जायेंगे इस पिटे हुए व्यापार को कौन फिर चलाएगा ? वे लोग तो त्याग क्या आयेंगे वे तो अपने परिवार सम्बन्धियो को भी यही सलाह देंगे कि उस की ओर मुह न करो। जहा तक आर्य समाजियो का सम्बन्ध है मेरी जानकारी म कोई भी ऐसा परिवार न होगा जिस ने अपने लडको या सम्बन्धियो के लडको को इस लाईन मे भेजा हो ? तो ऐसी स्थिति मे आर्य समाज का भविष्य क्या होगा अधिकारी तो केवल एक साल के लिए होते है जैसे भी हो, अगूठा छाप हो विद्वान हो या जैसे भी हो उन मे तो केवल एक गुण होना अनिवार्य है कि किस भांति उपस्थिति रजिस्टर अपने अनुसार बनाया जा सके और वह अधिकारी बन सकता है परन्तु पुरोहित या उपदेशक का पढा लिखा होना विद्वान होना सदाचारी तथा सुशील स्वभाव का होना अति आवश्यक है उसको पुस्तको का अध्ययन करना चाहिए। परिश्रमी होना चाहिए तपस्वी होना चाहिए और जब तक यह गुण नही होंगे वे पुरोहित या उपदेशक पद के योग्य नही हो सकते। जरा सोचो विचारो तथा फैसला करो। आर्य भाई जो लोग गुरुकुलो मे पढ कर अध्ययन व तपस्या की भट्टी मे तप कर हमारे समाजो मे उपदेशक या पुरोहित के पद पर आते है तो हमारा भी उनके प्रति कुछ कर्तव्य है कि उनका सम्मान करें उच्च स्थान दें जो महर्षि ने हमे बतलाया है त्रुटिया किस मे नही क्या अधिकारियो म नही हम मे नही सभी में कमिया हैं कमियो को ध्यान न देकर गुणो की ओर ध्यान देकर चलना चाहिए तभी हम इस गाडी को चला सकेंगे हमारे सिख भाई ग्रन्थियो का कितना सम्मान करते हैं यह किसी से भूला नही परन्तु हम पुरोहितो को उनकी जीविका के लिए कुछ धन देकर उनको नौकर समझने लगे ता यह हमारी बुद्धिमत्ता नही अपितु ओछापन है। हमारे दिलो मे यदि ऐसी धारणा होगी तो उनके किये हुए उपदेश उन को आसन पर बैठना उच्च स्थान देना एक ड्रामा होगा यज्ञ व्यर्थ होगा यज्ञ विफल होंगे, उपदेश अर्थहीन होंगे फिर आर्य समाज का कल्याण कहा ? ...

( शेष पृष्ठ 6 पर )

# भारतीय संस्कृति में अल्पना

ले—श्री प्रा रमाकान्त जी दीक्षित

रामायण और महाभारत काल से आज तक अल्पना का अस्तित्व भारतीय संस्कृति और समाज का दिग्दर्शन कराता हुआ इतिहास के पृष्ठो पर समुज्ज्वलता से अंकित है। भारतीय लोक कथाओ सामाजिक, जातीय एव राष्ट्रीय—सभी पर्वों मे इसकी महत्ता अंकित है। कथा हो या प्रवचन हवन वेदी हो या पूजा स्थल होली हो या दीवाली, पन्द्रह अगस्त हो या छब्बीस जनवरी, शादी विवाह हो या कोई अन्य उत्सव इन सब की अल्पना के अभाव में शोभा अधूरी है। अल्पना और रगोली एक दूसरे के पर्याय ही हैं।

अल्पना' की शैली, उसमें रगो का प्रयोग तथा आडी तिरछी रेखाए, त्रिभुज वृत्त, चतुर्भुज सम मानव पशु तथा अन्य प्राणियो आदि की विभिन्न आकृतिया विभिन्न जातियो एव परिवारो का प्रतिनिधित्व करती हैं।

अल्पना परिवार मे चित्रकला का ही एक अग बन गया है। इसके द्वारा धरातल तथा दीवारो पर मनोभावनाओ को सहज ही व्यक्त किया जा सकता है। इसके माध्यम से बच्चो के मन मे चित्र कला के प्रति रुचि उत्पन्न की जा सकती है। उन्हे राष्ट्रोत्थान मे सहयोगी अल्पनाओ के चित्राकन के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

प्राय विभिन्न भारतीय परिवारो मे अल्पना मे आटा चावल हल्दी आटे की चोकर गेहू दाल जौ मिट्टी तथा चना लकडी का बुरादा और पेस्टल के के रग आदि का प्रयोग किया जाता है। इस कार्य मे सुन्दरता और रोचकता लाने के लिए रग के स्थान पर कई रगो का प्रयोग किया जाता है।

अल्पना चाहे दीवार पर बनाई जाए अथवा धरती पर उसका आकार प्रकार पहले से ही निश्चित कर लेना चाहिए। इसके लिए धरातल भी समतल और साफ सुथरी होनी चाहिए उसको सफेद रग गोबर या किसी ... के रग म रगा जाना चाहिए। उस रगे हुए धरातल के सूखने पर निश्चित आकार को पैंसिल परकार या धागे की सहायता से धरातल पर अकित कर लेना चाहिए। और आवश्यकतानुसार रगो का चुनाव करके सावधानी पूर्वक अकित आकृति के रगो के प्रयोग करने से पूर्व उनमे गोद का घोल मिला लेना चाहिए जिससे रग पैरो से न चिपके और अल्पना भी न बिगडे।

अल्पना के लिए आटा परिवार मे रहता ही है। इसका प्रयोग सफेद रग के रूप मे किया जाता है। आटा चुटकी मे भर कर आकृति मे स्वेच्छानुसार पूरा जाता है। उसका भराव अच्छी प्रकार होने पर ही यह क्रिया बन्द करनी चाहिए। आडी तिरछी अथवा सीधी लकीर एव परकोटा (सीमा) बनाने मे भी इसका प्रयोग किया जाता है।

अल्पना के लिए चावल भी परिवार मे ही मिल जाता है। चावलो को रात्रि मे पानी मे भिगो दिया जाता है। प्रात उसे सिल बट्टे पर आटे जैसा पीस लिया जाता है। इसका प्रयोग सीक पर लिपटी हुई रुई के ब्रुश से दीवार की आकृतियो को उजागर करने के लिए किया जाता है। इसके लिए धरातल प्राय गोबर से लीप कर बनाई जाती है।

पिसी हुई हल्दी का प्रयोग भी अल्पना की पीले रग की आवश्यकता को पूरा करने का एक सुन्दर साधन है। है। इसके प्रयोग से भी आटे और चावल के समान कोई असुविधा नही होती। क्योकि हल्दी भी रसोई घर की मसालेदानी से सहज ही ली जा सकती है।

आटे की चोकर या छानस के लिए भी कही दूर नही भागना पडता। यह भी घर मे ही उपलब्ध हो जाती है। इसे इच्छानुसार रगो मे रग कर सुखा लिया जाता है। और अल्पना मे यथा स्थान इसका प्रयोग चुटकियो द्वारा बुरक या छिडक कर किया जाता है।

गेहू दाल चावल जौ का प्रयोग अल्पना मे नव प्राण फूक देता है। बारीक या मोटी जैसी भी आकृति हो उसके लिए अपनी सूझ बूझ से इनका प्रयोग किया जाता है। यदि किसी पक्षी की चोच या पजे बनाने हो तो चावल और जौ का प्रयोग उचित रहेगा। पेट तथा अन्य अगो को चित्रित करने के लिए दाल और गेहू का प्रयोग समीचीन है।

अल्पना मे पीले रग की पचडी तथा लाल गेरू मिट्टी का कलात्मक ढग से प्रयोग करके जहा उसकी शोभा को बढाया जाता है वहा चूना भी सफेद रग को प्रदर्शित करने के लिए कार्य मे लाया जाता है। इससे भी 'अल्पना उजागर हो उठती है।

लकडी का बुरादा भी अल्पना का एक अच्छा साधन है। इसे विभिन्न रगो मे रग कर सुखा लिया जाता है और फिर इसका प्रयोग विभिन्न आकृतियो में इच्छानुसार रगोली उत्पन्न करने के लिए किया जाता है।

पेस्टल के रगो का प्रयोग दीवार की अल्पना के लिए किया जाता है। ये रग बाजार से उपलब्ध किए जा सकते है। इन रगो का प्रयोग गाढे घोल के रूप मे किया जाता है। इनमे भी गोद का घोल मिला लेना चाहिए। फिर दीवार पर खीची गई आकृति मे इन्हें भरना चाहिए। यदि उसको और भी सुन्दर तथा रात को जगमगाने वाला बनाना हो तो गोद के घोल मे रुई और सीक के ब्रुश द्वारा बनाई गई आकृति को गीला करना चाहिए और फिर उस स्थान पर सोना अथवा चादी जैसे—'सबाक' का प्रयोग करना चाहिए। वह गोद वाले भाग पर चिपक जाएगा। इसे पाउडर के रूप में बाजार से खरीदा जा सकता है।

वास्तव मे भारतीय संस्कृति से 'अल्पना का परम्परागत गठबन्धन चला आ रहा है। परिवारो में मनोभावनाओ को व्यक्त करने का यह एक सुन्दर माध्यम है। सारे देश मे दीवाली के अवसर पर भी किसी न किसी रूप मे हर परिवार मे इसका चित्राकन होता है

## आर्य मर्यादा के पाठको की सेवा में

आर्य मर्यादा के पाठको को 10 जून और 17 जून के अक पढने के लिए नही मिल सके। सभी पाठको को विदित ही है कि गत दिनों पजाब मे कर्फ्यू लगा रहा। जिसके कारण प्रैस बन्द रही। डाक की व्यवस्था मे भी रुकावट रही। हमे इसका खेद है कि पाठको को आर्य मर्यादा पढने के लिए नही मिल सका है विवशता थी, इसलिए यह अक 10 17, 24 जून का सम्मिलित अक समझा जाए।

—सह सम्पादक

( 5 पृष्ठ का शेष)

यह प्रश्न एक समाज का नही जिला का नहीं प्रान्त का नही बल्कि भारतवर्ष ही क्या सारे ससार की समाजो का है यदि हम अपनी समाजो मे उपस्थिति चाहते हैं तो अच्छे पुरोहितो की आवश्यकता होगी अच्छे पुरोहित तभी मिलेंगे जब उनको सम्मान मिलेगा। इसलिए आर्यो जरा सोचो विचारो और फैसला करो कि समाज मे पुरोहित का क्या स्थान है ?

## आचार्य प्रियव्रत जी प्रधानमन्त्री को अपनी पुस्तक भेंट करते हुए

14 मई 1984 को आचार्य प्रियव्रत जी ने अपनी पुस्तक वेदो के राजनैतिक सिद्धान्त प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गान्धी को दिल्ली मे भेंट की। इस चित्र मे आचार्य जी पुस्तक भेंट करते हुए दिखाई दे रहे है और बहुत से आर्य बन्धु उनके साथ खडे हैं।

# हा ! आर्य वर्त्त देश अराजक देश क्यों बन गया ?

ले—श्री प रामनाथ जी सि विशारद, आर्य महोपदेशक

ओ३म्

प्रश्न—आप ने आर्य वर्त्त देश अराजक देश क्यों बन गया ? इस प्रश्न का उत्तर न देकर अराजक राष्ट्र के लक्षण बताये हैं। असल विषय छोड़ दिया है।

उत्तर—मैंने असल विषय छोड़ा नहीं है। इससे पूर्व यह बताना आवश्यक है कि मनु जी महाराज से लेकर आर्य सम्राट युधिष्ठिर तक सारे संसार पर आर्यों का राज रहा है इस देश का नाम आर्य वर्त्त था उस शासन से सब जनता सुखी थी इस लिए कि शासन पत्थर के कोयलो की भट्ठी की तरह तपता था तब कोई सोचता भी न था कि धर्म का मार्ग छोड़ अधर्म के मार्ग पर चला जाए। अब तो कुएं में ही भांग पड़ गई है। आर्य वर्त्त, देश की ऐसी दुरावस्था क्यों हो गई ? इस के लिए जिम्मेवार कौन है ? यही है न आप की शंका।

प्रश्नकर्ता—हां

उत्तर—इस का उत्तर सारा लेख समाप्त होने पर दिया जाएगा। मैंने देश की वर्तमान अवस्था तथा प्राचीन शासन पद्धति को अवलोकन करके यह परिणाम निकाला कि आर्य वर्त्त देश अराजक देश बन गया है अराजक राष्ट के लक्षण किए जाए ताकि पाठकों की सन्तुष्टि हो जाए और वह वर्तमान शासन को भी देख लें कि क्या 'आर्य वर्त्त, देश अराजक राष्ट्र नहीं है। अब असल विषय की ओर आइये।

अराजक राष्ट्र का सातवा लक्षण है कि कि अराजक राष्ट्र में राष्ट्र को उन्नति शील बनाने वाले उत्सव जिनमे नट नर्तक रूप मे भर कर अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं बढ़ने नही पाते हैं। तथा दूसरे राष्ट हितकारी सभ भी नहीं पनपने पाते हैं।

क्या राष्ट्र की अराजकता मे कोई कसर बाकी है ? उत्सव सम्मेलनो मे कविताए पढ़ी जाती हैं। भजन होते हैं, व्याख्यान होते हैं वक्ताओ द्वारा ऐसे विचार दिए जाते हैं जिससे राष्ट्र की उन्नति हो। पर अब दीवाली वसहरा शिवरात्रि राम नवमी कृष्णाष्टमी तथा दूसरे पर्व मनाए ही नहीं जाते मनाए जाते हैं तो मरे हुए मन से मनाए जाते हैं। पंजाब की जनता की विशेष रूपेण तथा सारे राष्ट्र की जनता की प्रसन्नता पर नजर लग गई है। अब जनता का यह विचार बन गया है कि जब तक शासन तथा उसकी पद्धति वैसी नहीं बनाई जाती जैसी कि प्राचीन काल मे थी तब तक मरे हुए मन जीवन नही हो सकते।

अराजक राष्ट मे बिना राजा के राज्य मे वादी और प्रतिवादी के विवाद का सन्तोषजनक निपटारा नही हो पाता अथवा व्यापारियो को लाभ नही होता। कथा सुनने की इच्छा वाले लोग कथा वाचक पौराणिको (पुराने इतिहासज्ञ) की कथाओ मे प्रसन्न नही होते।

जब न्याय करने वाले न्यायाधीश ही डरते हो वह न्याय क्या करेंगे ? अब बिना रिश्वत के कोई कार्य नही होता। कर्मचारी मुंह खोले बैठे हैं, मुंह मे टुकड़ा डाल दो काम करवा लो नहीं तो सन्तोष करो। डर कर या डराकर, रिश्वत देकर जो निर्णय होगा वह न्याय संगत न होगा। अराजक राष्ट मे खरीदो फरोख्त बन्द हो जाती है फिर व्यापारी को घाटा होना ही हुआ। कथा प्रचार सत्संग वहा हो सकते हैं जहा शान्ति हो। जहा लाइने उखाडी जा रही हो गाडियो का उल्टाया जा रहा हो स्टेशन जलाए जा रहे हों बम बरस रहे हो, गनें चल रही हो नंगी तलवारो का खुला प्रदर्शन हो वहा यह समझा जाए कोई शासन है ? अपने आप को धोखा देने वाली बात है।

'राजा रहित जन पद में सोने के आभूषणो से विभूषित हुई कुमारिया एक साथ मिलकर संध्या के समय उद्यानो मे क्रीडा करने के लिए नही जाती हैं। कुमारिया तो कुमारिया यात्रा करते हुए कुमार भी डरते है। संध्या का समय वह है जब कि अन्धेरे और रोशनी की सन्धी होती है पर यहा तो दिन दिहाड़े लूटा जाता है। बसो गाड़ियों से यात्रियो को निकाल कर मार देने की धमकी देकर कपड़ा ही छिन लिया जाता है। जो कुछ तुम्हारे पास है, यहा रख दो।

'बिना राजा के राज्य मे धनी लोग सुरक्षित नहीं रह पाता तथा कृषि और गोरक्षा से जीवन निर्वाह करने वाले वैश्य भी दरवाजा खोल कर नहीं सो पाते हैं।

आतंक वातावरण मे धनी तो डरते ही हैं गरीब मजदूर भी जो मजदूरी कर के पेट पालन करते हैं वह भी डरते हैं।

'राजा से रहितजन पद में कामी मनुष्य नारियो के साथ शीघ्र गामी वाहनो द्वारा वन विहार के लिए नहीं निकलते।

ऐसे अराजक राष्ट में पति के सामने पत्नी का अपहरण असम्भव बात नही है।

'जहा कोई राजा नही होता उस जनपद मे साठ वर्ष के पट्ठार हाथी घण्टे बांध कर सड़को पर नहीं घूमते।'

अराजकता के कारण ऐसा होता है।

बिना राजा के राज्य में धनुर्विद्या के अभ्यास काल मे निरन्तर लक्ष्य की ओर बाण चलाने वाले वीरो की प्रत्यंचा तथा करतलका शब्द नहीं सुनाई देता है।'

आतंक ऐसी ही वस्तु है जिस से धनुर्विद्या के सीखने वाले विद्यार्थी भी भय खाते हैं।

'राजा से रहित जनपद म दूर-दूर जाकर व्यापार करने वाले वणिक बेचने की बहुत सी वस्तुए साथ लेकर कुशल पूर्वक मार्ग मे नहीं जा सकते। एक बैसाख से लेकर जब अमृतसर में खून खराबा हुआ था अब तक पंजाब के व्यापार की बड़ी हानि हुई है। पंजाब से बाहर का व्यापारी पंजाब आने से डरता है। माल साथ लेकर इस लिए नहीं चलते कि लूट जाने का भय है। इस आतंक के कारण पंजाब पचास वर्ष पीछे जा पड़ा है। इस लेख में मैंने अराजकता के आठ लक्षण बताए हैं। यह लक्षण पूरी तरह अराजक राष्ट पर घटते हैं।

(क्रमश)

# भारत में आर्य लोग बाहर से नहीं आए

देहरादून, टैगोर कल्चरल सोसाइटी मे गत दिनो प्रसिद्ध आर्य विद्वान एव पत्रकार श्री देवदत्त बाली ने भाषण करते हुए सप्रमाण बताया कि लार्ड मैकाले, मैक्समूलर ग्रिफिथ आदि यूरोपीय विद्वानो का सुविचारित संकल्प था कि भारतीय धर्म को उखाड कर इसके स्थान पर ईसाईयत लानी है ताकि धर्मान्तरित लोगो को अंग्रेजी राज का निष्ठावान भक्त आसानी से बनाया जा सके। आपने मैकाले मैक्समूलर आदि द्वारा लिखित पत्रो को उद्धृत करके यह सिद्ध किया।

श्री बाली ने कहाकि इन यूरोपीय लोगो ने भारत सन्तान को आपस मे फाड़ने के लिए यह सिद्धान्त आविष्कृत किया कि आर्य लोग बाहर से आए थे और उन्होने यहा के मूल निवासियो के साथ युद्ध करके उन्हे दक्षिण की ओर खदेड़ दिया। आपने कहाकि कैम्ब्रिज इण्डियन हिस्ट्री के प्रकाशित होने से पूर्व लाखो वर्षों पुराने भारतीय साहित्य मे कहीं भी इस बात का संकेत मात्र भी नही मिलता। आपने शास्त्रीय व्याकरण शीय तथा ऐतिहासिक प्रमाणो से अकाटय रूप से सिद्ध किया कि आर्य शब्द गुण वाचक है न कि जाति-वाचक।

वेद के जिन मन्त्रो का उल्टा अनुवाद करके विदेशियो ने उनमे आर्य तथा आदिवासी युद्धो का कल्पित वर्णन किया है उन मन्त्रो मे से एक-एक का उल्लेख करके आपने बताया कि किसी मन्त्र मे आदिवासी शब्द है ही नही। इन मन्त्रों मे आकाशीय विद्युत और मेघो के प्राकृतिक संघर्ष का वर्णन है। इन मन्त्रों को देखकर कोई भी निष्पक्ष व्यक्ति विदेशियो द्वारा किए गए भ्रामक अनुवाद पर हंसे बिना नही रह सकता। वेद के किसी मन्त्र मे भी भारत तो क्या किसी भी देश विदेश का उल्लेख नहीं है और न हो ही सकता है। श्री बाली ने कहाकि जो लोग वेद मे इतिहास बताते हैं, उन्हे वेद की विषय वस्तु का ही ज्ञान नही है। दुर्भाग्य यह है कि जिन भारतीय लेखको ने कभी वेद पढ़ा ही नही, वे भी विदेशियो द्वारा लिखित पुस्तको की तोता रटन्त के आधार पर लिखते चले जाते हैं कि वेद मे यह लिखा है वह लिखा है वह लिखा है। उनके पास पाठको को देने के लिए अपना मौलिक कुछ भी नही होता।

—

# आचार्य क्षेम चन्द्र जी सुमन सम्मानित

सम्पूर्ण आर्य जगत को यह जान कर प्रसन्नता होगी कि आर्य समाज के प्रतिष्ठित साहित्य सेवी आचार्य क्षेम चन्द्र जी सुमन को राष्टपति जी ने पद्म श्री की उपाधि से विभूषित किया है आचार्य जी के इस सम्मान से सम्पूर्ण आर्य जगत् का गौरव बढ़ा है।

—मदन लाल आर्य मिढदवाह

वर्ष 16 अंक 12 24 आषाढ सम्वत् 2041, तदनुसार 8 जुलाई 1984 दयानन्दाब्द 160 । एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपये

[illegible]—

# मनुर्भव-मनुष्य बन

ले—श्री सुरेशचन्द्र वेदालंकार एम ए एल टी 9 ए ई 1
ओबरा मिर्जापुर

तन्तुं तन्वन् रजसो भानुमन्विहि ज्योतिष्मतः पथो रक्ष धिया कृतान् ।
अनुल्बणं वयत जोगुवामपो मनुर्भव जनया दैव्यं जनम् ॥
ऋ 10 53, 6

अर्थात् संसार का ताना बाना बुनता हुआ भी, प्रकाश का अनुसरण कर बुद्धि से बनाए हुए ज्योतिर्मय मार्गों की रक्षा कर, निरन्तर ज्ञान और कर्म का अनुष्ठान करने वालों के उलझन रहित कर्म को विस्तृत करो, मनुष्य बन और देवों के हितकारी बन को सन्तान को उत्पन्न कर।

आज संसार में कुछ लोग ईसाई बनने पर बल देते हैं कुछ बौद्ध बनने पर जोर देते हैं कुछ लोग जैन और कुछ लोग मुसलमान बनने पर बल देते हैं। कुछ लोग कुछ लोग बनाने के लिए प्रयत्न करते हैं परन्तु वेद की शिक्षा है। 'मनुर्भव मनुष्य बन।

मनुष्य शब्द का अर्थ है (मत्वा कर्माणि सीव्यति) जो विचार कर कर्म करें, [illegible] काम न करें। कर्म करने से पहले भली प्रकार विचार कि मेरे इस कर्म का क्या [illegible] होगा? इसका क्या प्रभाव होगा।

कौन मनुष्य है? एक बड़ा डाक्टर है। उसकी कोठी बंगले लोकप्रिय रेडियो टेलीविजन कई कई कारें उसकी कोठि के बाहर हैं। एक गरीब विधवा स्त्री अपने एक मात्र पुत्र के लिए उसे देखने को बुलाने आई। पुत्र बहुत अधिक बीमार था। पुत्र की मां ने अपने गहने आदि गिरवी रख कर किसी तरह पैसे इकट्ठे किए थे और डाक्टर की मनमानी फीस दे रही थी। डाक्टर उसके यहां जाने को तैयार हुआ। लेकिन पुत्र के यहां पहुंचने से पूर्व ही प्राण निकल गए और डाक्टर ने उसके दुख की बिना कल्पना किए अपनी फीस वसूल कर ली। क्या वह डाक्टर मनुष्य है।

दूसरी ओर अपने एकमात्र पुत्र को रुग्ण शय्या पर छोड कर चिकित्सक के पास ले जाने वाली स्त्री को बिलखता देख एक गरीब रिक्शे वाला अपना रिक्शा रोक कर उसके रोने का कारण जानकर उसे चिकित्सालय ले गया। उस का इलाज कराया आय की अपनी पूरी मजदूरी उसके लिए लगाई और बच्चे के ठीक होने ही उसे घर भी पहुंचा दिया और कहने पर भी कुछ पैसे नहीं लिए। वह उसका कोई सम्बन्धी न था। इसे क्या कहेंगे? इसे मनुष्य कहेंगे ऊपर वाले डाक्टर को नहीं। वेद कहता है

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षा महे।
य 36 18

सबको मित्र की स्नेहमयी आंख से देखो।

एक घटना सुनिए। एक भिखारी सवेरे के समय किसी के घर पर मांगने के लिए पहुंचा। उसकी आवाज सुनते ही मन से भयग्रस्त मालकिन ने कहा—

भगवान सवेरे सवेरे आकर मांगने लगा है भिखारी बोला—मां, कई दिन से खाने को नहीं मिला, कुछ खाने को दे दो मालकिन क्रोध में भरकर बोली मैं तुझ दूं। भिखारी के हाथ फैलाने पर मालकिन ने थूक दिया। भिखारी बोला—'मां यह क्या किया। नहीं देना था तो नहीं देती। पर यह क्यों थूक दिया! भिखारी की बात सुनकर उसने अपने पति को ललकारा। पति था कामी और क्रोधी। पत्नी का शब्द सुनते ही वह नीचे आया और उसे दो चार थप्पड़ लगा दिए ऊपर बैठी पत्नी हंसने लगी। उसने कहा तूने भगवान की रट लगा रखी थी अब कहां हैं तेरे भगवान्? एक तो धन का मद दूसरे शक्ति का मद तीसरे भिखारी को पीटने का नशा—नशे में जब वह ऊपर की सीढी पर पहुंचा तो लुढकता हुआ नीचे आ गिरा। सिर में चक्कर चोट आई टांग टूट गई। पत्नी नीचे दौड कर आई अब उसे भगवान की याद आई और उसने सोचा यह गरीब की आह है उस स्त्री पुरुष का कार्य मानवता के प्रतिकूल था। राक्षसी था। इसलिए वेद कहता है मनुर्भव जनय दैव्य जनम ऊपर के मन्त्र मे मनुष्य बनने के साधन भी बताए हैं। पहला साधन है तन्तु तन्वन रजसोभानमन्विह ससार का ताना बाना बुनता हुआ तू प्रकाश के पथ का अनुसरण कर। तमसो मा ज्योतिर्गमय हे प्रभु अन्धकार से हटा कर मुझ प्रकाश की ओर ले चल। अन्धकार को लाने वाली काम क्रोध मद लोभ ईर्ष्या द्वेष की प्रवृत्तियां हैं। इन से पागल होकर मनुष्य वेद के पथ का अनुसरण न कर। पशुता के मार्ग का अनुसरण करता है। मनुष्य बनने के लिए—

मैत्री करुणा मुदिता और उपेक्षा के भाव मन मे लाने होंगे।

मैत्री करुणा मुदितोपेक्षाणां सुख दुःख पुण्यापुण्य विषयाणां भावनातश्चित्त प्रसादनम्। समाधि पाद 33

सुखी पुरुषों के साथ मैत्री करने के अर्थात् दूसरों के सुख को देखकर सुखी होना दूसरों के दुख को देखकर दुखी होना और उसे दूर करने का प्रयत्न करना करुणा है। किसी को अच्छा काम करते देख उसे उत्साहित करना यह मुदिता है। पाप से घृणा करना पापी से नहीं यह उपेक्षा है। ऐसे मनुष्य मनुष्य होते हैं।

जब परमेश्वर ने सृष्टि का निर्माण किया और मनुष्य को बनाया तो उसे सच्चे अर्थों मे मनुष्य बनाने के लिए ज्ञान भी दिया। उसने जो संविधान बनाया वह वेद है वेद मे प्रभु की आज्ञाएं भरी हुई हैं वेद ने कहा मनुर्भव मनुष्य बन परन्तु क्या हम उस की आज्ञा का पालन करते हैं। आज तो यह अवस्था है—

इन्सान नहीं मिलता।
यह वह चीज है कि
देखी कहीं कहीं मैंने

यदि मनुष्य मे मनुष्यता नहीं तो वह पशु कहलाता पश्यति इति पशु। जो बिना विचारे ही काम कर वह पशु है

आदमी को आदमियत चाहिए बू नहीं चन्दन में तब वह चील है।

मनुष्य बनने के लिए वेद के उपदेशों मे कहा गया है

सहृदयं सामनस्यमविद्वेषं कृणोमि वः,
अन्यो अन्यमभिहर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या।
3 30 1

सहृदयता एक मित्रता एक मनस्कल पारस्परिक प्रेम निर्वैरता को हमे धारण करना होगा। परस्पर एक दूसरे के साथ प्रेम का व्यवहार करना होगा परमेश्वर कहता है कि तुम एक दूसरे से विद्वेष विरोध वैर करना छोड दो परस्पर प्रेम और प्रीति से व्यवहार करो

वाचं वदतु शान्तिवाम्।
अथर्व 3 30 2

शान्तिदायक वाणी बोलो।

मा स ग्रत ऋ 7 30 9

हिंसा मत करो।

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा। यजु 42 1

त्याग भाव से संसार की वस्तुओं का उपभोग करो।

मागृधः। यज 40 1

लालच मत करो

ऋतस्य पथा प्रेत। यज 7 45

सत्य के मार्ग पर चलो।

विद्वेषो वी नुदि। ऋ 6 10 7

द्वेष को हृदय से निकाल दो।

सखाय क्रतुमिच्छत ऋ 7 70

मित्रो कर्म करने की इच्छा करो।

इसी प्रकार के आदेश और जीवन निर्माण के मार्ग वेदों मे दिखाए एव बताए गए हैं। इनका पालन करें। यही जीवन का ध्येय है।

# वेद में राष्ट्र निर्माण

ले—श्री प धर्मदेव जी मनीषी गुरुकुल कालवा जीन्द

कई लोगो का विचार है कि वेद में राष्ट्र निर्माण की कल्पना है ही नहीं ऐसा कहने वाले वेद को पढ़ बिना ऐसा कहते है। वेद मे राष्ट्र कल्पना है और वह अत्यन्त उदात्त और ऊचे दर्जे की है। यजुर्वेद के दशम अध्याय के पहले चार मन्त्रो मे तो राष्ट्र की मानो झुहारसी है। यजुर्वेद 22।22में राष्ट्र में क्या क्या होना चाहिए, इसका सक्षिप्त किन्तु प्रभावशाली वर्णन है अथर्ववेद के बारहवे काड का पहला सूक्त मातृभूमि विषयक है। ऋग्वेद का 1।80 सूक्त स्वराज्य प्रचारक है। इन मन्त्रो में जो विचार तत्व हैं वे इतने गम्भीर और दिव्य भावो से भरे हैं कि उनके अनुसार आचरण से मानव समाज के सभी दुखो को मिटाया जा सकता है। ये सब उत्तम राष्ट्र की भावना के प्रचारक हैं। यथा— सा नो भूमि स्त्विषि बल राष्ट्र दधातूत्तमे अथर्व 12।18— 'वह हमारी भूमि मातृभूमि उत्तम राष्ट्र मे कान्ति और शक्ति धारण करे।' वेद काव्य है अत कविता की भाषा मे उपदेश करता है ' देशवासियो के स्थान मे भूमि मातृभूमि से कान्ति और शक्ति धारण करने की कामना की गई है। उस कान्ति और शक्ति के धारण का प्रयोजन उत्तम राष्ट्र है। राष्ट्र धारण करने के लिए बहुत बडा सामर्थ्य चाहिए।

## हमारा राजा —

पूर्वीरोजीयान तवसस्तवीयान् कृत ब्रह्म न्द्रो वृद्धमहा ।

राजा भव मधुन सोम्यस्य विश्वासा यत्पुरा दत्न मावत ॥

(ऋग्वेद 6।20।3)

1 तुवन—शत्रु नाशक । प्रजा रञ्जनात् राजा—प्रजाओं को प्रसन्न रखने वाले राजा का राज्यत्व है। प्रजा की प्रसन्नता तभी रह सकती है। जब वह अन्तरग और बहिरग शत्रुओ के उपद्रवों से रहित हो। 2 ओजीयान— दूसरो से अधिक ओजस्वी । यदि दूसरो से अधिक ओजस्वी न हो तो वह राज्य व्यवस्था स्थिर न कर सकेगा। 3— तवस स्तवीयान्—बलवान से भी बलवान्। ओज के लिए बल चाहिए। ओजस्वी होने के साथ सर्वाधिक शक्तिमान हो। 4 कृतब्रह्मा—अन्न अन्न ज्ञान का सचय करने वाला । राज्य में व्यवस्था के लिए जिन पदार्थों की आवश्यकता हो उनका सग्रह करने वाला हो। 5 वृद्धमहा—वृद्धो की पूजा करने वाला हो। इस क्रम से राष्ट्र में उसका शासन अक्षुण्ण बना रहता है। 6 विश्वासा पुरा दस्यु मावत—समस्त शत्रु नगरों को नष्ट करने वाली सेना का रक्षक हो अथात विजयिनी सेना का अधिपति हो। राजा भवन्मधुन सोम्यस्य शान्तिदायक मिठास का राजा होवे।

## स्वराज्यार्थ यत्न —

आ यद्वामीयचक्षसा मित्र वय च सूरय ।

व्यचिष्ठ बहुपाय्ये यतेमहि स्वराज्ये ॥

ऋग 5।66।6॥

हे (वयचक्षसा) प्राप्तव्य ज्ञान वाले (मित्र) प्रीतियुक्त स्त्री पुरुषो! (वाम्) आप दोनों के (सूरय) विद्वान (च) और (वयम) हम मिलकर (व्यचिष्ठ) अति विशाल (बहुपाय्ये) अनेको से रक्षणीय (स्वराज्ये) स्वराज्य मे (आयतेमहि) सब ओर से यत्न कर। इस मन्त्र मे मनन करने योग्य निर्देश —

1 स्वराज्य मे तथा स्वराज्य प्राप्ति के लिए विद्वानों का सहयोग अत्यन्त आवश्यक है। विद्वानों के बिना स्वराज्य का सम्भालना दुष्कर हो जाता है। 2 स्वराज्य 'बहुपाय्य' है अनेक जन मिलकर ही इसकी रक्षा कर सकते हैं। स्वराज्य तभी स्वराज्य हो सकता है जब सभी को यह प्रतीत हो कि यह अपना राज्य है। किसी एक का एक छत्र राज्य उसके लिए भले ही स्वराज्य नहीं हो सकता। स्वराज्य मे सभी 'स्वराज्य' का अनुभव करें। 3 स्वराज्य व्यचिष्ठ विशाल होना चाहिए। क्षुद्र स्वराज्य के अपहृत और नष्ट होने की सम्भावना का भय बना रहता है। विशाल स्वराज्य मे उसके रक्षक बहुत होगे। अत उसके विनाश की सम्भावना भी कम होती है। 4 स्वराज्य के लिए जब सबको ममता होगी तो सभी उसके लिए पुरुषार्थ करेंगे और सब प्रकार का पुरुषार्थ करेंगे।

स्वराज्य का महत्व ऋषि ने इन शब्दों मे लिखा है।

'कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मतमतान्तर के आग्रह रहित अपने और पराए का पक्षपात शून्य प्रजा पर पिता माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियो का राज्य भी सुखदायक नही।' (सत्यार्थप्रकाश)

आज और आज के ऋषि का भाव कितना महान् है। स्वराज्य की भावना का विरोध अस्वाभाविक है।

## झडा ऊचा रखो —

आदित्या रुद्रा वसव सुनीथा द्यावा क्षामा पृथिवी अन्तरिक्षम्।

सजोषसो यज्ञमवन्तु देवा ऊर्ध्वं कृण्वन्त्वध्वरस्य केतुम् ॥

(ऋग 3।8।8)

वेद कहता है। 'ऊर्ध्वं कृण्वन्त्वध्वरस्य केतुम'—यज्ञ का झण्डा ऊचा रखो। आर्यों के सभी कार्य यज्ञ से आरम्भ होते हैं। अत आर्यों का झण्डा यज्ञ का झण्डा है। उसे ऊचा ही रखना चाहिए, नीचे नहीं गिरने देना चाहिए। जाति ध्वजा की रक्षा किसी एक का नही वरन सबका काम है। इसी भाव से कहा सजोषसो यज्ञमवन्तु देवा -परोपकारी विद्वान तुल्य प्रीति वाले होकर यज्ञ की रक्षा करे। झण्डे की रक्षा, झण्डे को ऊचे बनाए रखना एक यज्ञ है ऐसा यज्ञ जिस पर समस्त जाति की आन, बान और शान अवलम्बित है। अत सभी देव प्रीति पूर्वक इसकी रक्षा करें। राष्ट्र रक्षक केवल यही देव नही है? देव का अर्थ है जीतने की इच्छा वाला। आर्य—देव भाव सदा विजिगीषा के रहे हैं। झण्डे की रक्षा में सम्मिलित होना चाहिए । आदित्य रुद्रावसव सुनीथा द्यावाक्षामा पृथिवि अन्तरिक्षम् आदित्य—नेता रुद्र—सैनिक वसु— धनिक भी पृथिवी और अन्तरिक्ष उत्तम नीति से रक्षा करें। ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र तथा राष्ट्र की समूची शक्ति राष्ट्र के झण्डे की मान की रक्षा रखे

## वैदिक राष्ट्रीय प्रार्थना

ओ३म् आब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्य शूरइषव्योऽतिव्याधी महारथो जायताम् । दोग्ध्री धेनु-र्वोढानड्वानाशु सप्ति पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठा सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम् । निकामे निकामे न पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधय पच्यन्तां योगक्षेमो न कल्पताम् ॥

(यजुर्वेद अध्याय 22। मन्त्र 22)

## इस मन्त्र का पद्यानुवाद

ब्रह्मन्! स्वराष्ट्र मे हों द्विज ब्रह्म तेजधारी।

क्षत्रिय महारथी हो, अरिदल विनाशकारी।1।

होवें दुधार गौवें, पशु अश्व आशुवाही आधार राष्ट्र की हो नारी सुभग सदा ही।2।

बलवान् सभ्य योद्धा, यजमान पुत्र होवें।

इच्छानुसार वर्षें पर्जन्य ताप धोवें।3।

फल फूल से लदी हो औषध अमोघ सारी।

हो योग क्षेमकारी, स्वाधीनता हमारी।4।

प्रत्येक राष्ट्रीय महत्वपूर्ण पर्व पर तथा विशेष अवसरो पर राष्ट्र की सुख समृद्धि की कामना के लिए प्रभु से उपयुक्तप्रार्थना करनी चाहिए।

# मन्दिर जलाने वालो को शीघ्र पकड़ा जाए

24 जून को साप्ताहिक सत्सग के उपरान्त आर्य समाज हबीब गज की यह बृह विशाल सभा श्रीनगर में आर्यसमाज मन्दिर हजूरी बाग आर्य कन्या पाठशाला तथा हनुमान मन्दिर को आतकवादियो और पाकिस्तान समर्थकों द्वारा आग लगाकर भस्म कर देने के कुकृत्य की घोर निन्दा करती है और भारत सरकार एव काश्मीर सरकार से अनुरोध करती है कि क्षति पहुचाने वाले तत्वों को शीघ्राति शीघ्र पकडा जावे ताकि सारे भारतवर्ष में फैले आर्य समाजियो और हिन्दुओं की बेचैनी दूर हो सके। यह सभा काश्मीर सरकार से अनुरोधप्रार्थना करती है कि इस क्षति का पूरा मुआवजा दिया जावे। यह भी पास हुआ कि इस प्रस्ताव की प्रति निम्नलिखित को भेजी जाए—

1 प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गान्धी।
2 गृहमन्त्री नई दिल्ली ।
3 राज्यपाल जम्मू काश्मीर सरकार
4 डो फारूक अब्दुल्ला मुख्यमन्त्री जम्मू-काश्मीर।

—वेद प्रकाश मन्त्री
आर्य समाज हबीब गंज श्रीनगर

# दुःख संवेदना सूचक सन्देश

हम सब आर्य समाज पटियाला के सत्सग मे उपस्थित भाईयों और बहिनों को पजाब की अशान्ति और अव्यवस्था को दूर करने के प्रयास में अपने देश के प्रति कर्तव्य पालन करते हुए शहीद होने वाले वीर सैनिको के प्रति तथा इस अवधि मे मारे गए निर्दोष व्यक्तियों के प्रति हम दुख भरे मन से हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं और परमात्मा से नतमस्तक हो प्रार्थना करते हैं कि वह उन दिवगत महान आत्माओं को स्वर्ग में शान्ति और सद्गति प्रदान करे और उनके वियोग दुख से परेशान सभी रिश्तेदारों, इष्ट मित्रों और परिचितो को इस महान् कष्ट को सहने की शक्ति और धीरज प्रदान करें। हम भी सबके सब इस दारुण दुख में समभागी हैं।

—मन्त्री आर्य समाज पटियाला

—

सम्पादकीय—

# आर्य समाज का वास्तविक लक्ष्य क्या है ?

## स्व-धर्म-या-स्वराज्य !

अब बोलो—

आर्य समाज के जीवन के 110 वर्षों की सबसे अधिक निराशाजनक स्थिति यदि कोई है, तो यह कि आज तक यह निर्णय नहीं लिया जा सका कि आर्य समाज का वास्तविक लक्ष्य क्या है ? धर्म और राजनीति यह दो प्रश्न समय समय पर आर्य समाज के सामने उठते रहते हैं। परन्तु हम यह फैसला नहीं कर सके कि आर्य समाज ने केवल धार्मिक क्षेत्र में काम करना है या राजनीतिक क्षेत्र में भी यह कुछ कर सकता है। यह उलझन उस समय से है जबसे महर्षि दयानन्द की अमर कृति सत्यार्थ प्रकाश में हमने एक समुल्लास राजनीति पर भी पढ़ना शुरू किया है। जिसका अभिप्राय मैं यह लेता हूं कि महर्षि यह भी चाहते थे कि आर्य समाज देश की राजनीतिक स्थिति पर भी समयानुसार विचार करता रहे। सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास में कई ऐसे सिद्धांत भी दिए गए हैं, यदि उन्हें ही लेकर आर्य समाज अपनी विचार धारा जनता तक पहुंचाने के लिए कोई आन्दोलन प्रारम्भ करता तो मेरा यह विश्वास है कि आर्य समाज की स्थिति बहुत अधिक सुदृढ़ हो जाती। पिछले 100 वर्षों से यह प्रश्न कई बार आर्य समाज के सामने आया है कि राजनीति में सक्रिय भाग लिया जाए या न। परन्तु इसके विषय में कभी भी कोई अन्तिम निर्णय नहीं लिया जा सका। इसलिए कई बार आर्य समाज के बड़े बड़े नेता देश की गम्भीर राजनैतिक समस्याओं के विषय में अपने विचार जनता के सामने रखते रहते हैं और लोग यह समझते हैं कि यह आर्य समाज का निश्चित मत है। हालांकि वह केवल कुछ व्यक्तियों का अपना निजी मत होता है। यह स्थिति सन्तोषजनक नहीं है। इससे आर्य समाज को भी कोई लाभ नहीं पहुंचता।

देश के एक विख्यात क्रान्तिकारी श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा का महर्षि दयानन्द सरस्वती के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध था। महर्षि के सुझाव पर ही श्याम जी कृष्ण वर्मा इंगलिस्तान गए थे। जब वे जाने लगे थे तो महर्षि ने उन्हें कहा था कि विदेश में रहते हुए स्व धर्म और स्वराज्य इन दो शब्दों को न भूलना। जिस का अभिप्राय सम्भवतः यह था कि महर्षि भी यह समझते थे कि धर्म की रक्षा के लिए राष्ट्र की रक्षा आवश्यक है और राष्ट्र की रक्षा के लिए धर्म की रक्षा आवश्यक है। उन्होंने श्याम जी कृष्ण वर्मा का ध्यान इन दोनों की तरफ दिलाया था और कहा था कि विदेश में रहते हुए भी वह न अपने धर्म को भूलें न अपने राष्ट्र को। स्पष्ट है कि महर्षि राजनीति को भी कम महत्व न देते थे। यदि उन का यह विचार होता कि आर्य समाज को राजनीति से पूर्णतया अलग रहना चाहिए तो वे सत्यार्थ प्रकाश में राजनीतिक सिद्धांतों की व्याख्या न करते या लिखित रूप में कहीं यह कह देते कि आर्य समाज राजनीति में कोई भाग न ले। आर्य समाज की स्थापना उन्होंने अपने ही जीवन में कर दी थी। उसके नियम भी उन्होंने बना दिए थे उनमें कई ऐसी बातें हैं जो बिना राजनीति के क्रियान्वित नहीं हो सकतीं। परन्तु पिछले 100 वर्षों में आर्य समाज इस उलझन प्रश्न के विषय में कोई निर्णय नहीं ले सका कि आर्य समाज को राजनीति में सक्रिय भाग लेना चाहिए या नहीं। कई बार यह प्रश्न भी उठा है कि जिस राजधर्म का सत्यार्थ प्रकाश में जिक्र आता है, वह क्यों न प्रारम्भ की जाए और क्यों न आर्य समाजी देश की राजनीति में सक्रिय भाग लेकर इसे अपनी विचार धारा के अनुसार चलाएं। इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि हमारे देश की राजनीति आज नैतिक रूप से इतनी गिर गई है कि उसका बहुत उलट प्रभाव देश पर पड़ रहा है। सबसे अधिक हानि हमें धर्म निरपेक्षता के सिद्धांत ने पहुंचाई है। इसी के आधार पर हमारे देश के कई नेता सब धर्म सम्भाव की बातें भी करने लगते हैं। उन्हें वोटों की आवश्यकता होती है। इसलिए वे सब धर्मों को एक ही स्तर पर रखते हैं। ताकि भिन्न-भिन्न धर्मों के अनुयायी उनका साथ देते रहें और चुनाव के समय उन्हें वोट मिलते रहें। सब धर्म सम्भाव वे ही लोग कह सकते हैं जिन्हें धर्म के विषय में कुछ भी पता नहीं। जिन्हें हम धर्म कहते हैं उनमें से कुछ वास्तव में धर्म नहीं हैं। भारत में कुछ ऐसी विचार धाराएं समय समय पर प्रचलित होती रही हैं जो एक दूसरे से बहुत भिन्न हैं। हिन्दू धर्म जैन धर्म और सिक्ख और बौद्ध ये सब हमारे ही देश में शुरू हुए। इसलिए इनमें कई बातों की समानता भी है। परन्तु हिन्दू धर्म या वैदिक धर्म और इस्लाम और ईसाइयत में बहुत अधिक मतभेद है। फिर भी कुछ व्यक्ति जब यह कहते हैं कि सब धर्म एक जैसे हैं तो इसे समझना कठिन हो जाता है। विशेष कर इस्लाम के कई सिद्धांतों को जब हम पढ़ते हैं तो उलझन पैदा हो जाती है। धर्म निरपेक्षता से प्रेरित होकर कुछ व्यक्ति यह ही कह देते हैं कि सब धर्म एक जैसे हैं। भगवान कृष्ण ने गीता में यह अवश्य कहा है कि मुझे प्राप्त करने के लिए लोग भिन्न भिन्न मार्ग अपनाते हैं। इसका यह अर्थ नहीं कि हिन्दू धर्म या वैदिक धर्म और इस्लाम इनका अन्तिम लक्ष्य एक ही है। हम कहते हैं कि ईश्वर सर्वव्यापक है अर्थात पत्ते पत्ते में भी वह समाए हुए हैं। परन्तु इस्लाम तो कहता है कि वे सातवें आसमान पर हैं। हम तो कोई सातवां आसमान नहीं मानते। ऐसी स्थिति में यह कैसे कहा जा सकता है कि सब धर्म एक समान हैं। वैदिक धर्म ने एक पत्नी से अधिक रखने की अनुमति नहीं है। इस्लाम में चार पत्नियों की भी अनुमति है। इसी प्रकार हिंसा और अहिंसा के प्रश्न पर भी वैदिक धर्म और इस्लाम में बहुत अन्तर है। फिर भी हमारे देश के कुछ नेता कह देते हैं कि सब धर्म सम्भाव। यह विचार सबसे पहले गांधी जी ने ही प्रस्तुत किए थे। वे अपनी प्रार्थना में जहां एक तरफ रघुपति राघव राजाराम का गीत गाया करते थे उसी के साथ अल्ला ईश्वर तेरे नाम भी लगा दिया था। वास्तविक स्थिति यह है कि गांधी जी के सिद्धांतों के लिए इस्लाम में कोई स्थान नहीं है। गांधी जी अहिंसा को बहुत अधिक महत्व देते थे। किसी भी स्थिति में वे हिंसा की अनुमति देने को तैयार न थे। एक बार उन्होंने यह भी कह दिया था कि यदि हिंसा के द्वारा उन्हें अपना देश स्वतन्त्र करवाना पड़ा तो वे यह न करवाएंगे। परन्तु इस्लाम तो बगैर हिंसा के चलता ही नहीं। बकरीद के समय लाखों बकरे मार दिए जाते हैं। इन्सान को मारना भी इस्लाम में कठिन नहीं है। जो कुछ इस्लामी देशों में होता रहता है हम रोज देखते हैं। ऐसी स्थिति में जब गांधीवादी व्यक्ति यह कहने लगते हैं कि सब धर्म सम्भाव तो उनके इस दृष्टिकोण को समझना कठिन हो जाता है। परन्तु राजनीति से प्रेरित हो कर कई आर्य समाजी भी इसी प्रकार की बातें करने लगते हैं। इस का एक कारण यह भी है कि आज तक आर्य समाज ने कभी बैठ कर गम्भीरता पूर्वक इस प्रश्न पर विचार नहीं किया कि उसका वास्तविक लक्ष्य क्या है ? यदि लक्ष्य निर्धारित हो जाए तो उसे प्राप्त करने का साधन भी निर्धारित किया जा सकता है। लोकमान्य तिलक और महात्मा गान्धी इन दोनों में इसी प्रश्न पर मतभेद रहा है। तिलक जी कहते थे कि वे बिना किसी कारण के हिंसा के पक्ष में नहीं हैं परन्तु इसी के साथ वे इस पक्ष में भी नहीं कि हिंसा किसी भी स्थिति में नहीं की जा सकती। दूसरी तरफ गान्धी जी कहते थे कि अहिंसा मनुष्य के जीवन का पहला और अन्तिम सिद्धान्त है इससे इधर उधर नहीं हुआ जा सकता। उन्होंने स्वाधीनता के लिए जो संघर्ष शुरू किया उसमें भी हिंसा को दूर रखने का प्रयास किया। परन्तु प्रत्येक व्यक्ति जानता है कि उनके आन्दोलन में भी कई बार हिंसा आ गई और उसका हमारे संघर्ष पर भी प्रभाव पड़ा। हिंसा अहिंसा और हिंसा या अहिंसा इसके विषय में भी आर्य समाज को अपना दृष्टिकोण स्पष्ट करना चाहिए। विशेषकर यह कि राजनीति में हिंसा की कहां तक अनुमति दी जा सकती है। यह सब प्रश्न इसलिए पैदा होते हैं कि आज हमारे देश में स्थिति इतनी बिगड़ती जा रही है कि कोई निश्चित दृष्टिकोण जनता के सामने नहीं रखा जा रहा। किसी राजनीतिक दल से यह आशा नहीं रखी जा सकती कि वह इस विषय में अपना दृष्टिकोण जनता के सामने रखे। यह काम केवल आर्य समाज कर सकता है लेकिन वह नहीं कर रहा। क्यों ? इसका उत्तर आगामी लेख में दूंगा।

(क्रमश)

—वीरेन्द्र

# दीर्घायु के लिए उपयोगी-प्राणायाम विधि

ले—स्व महात्मा नारायण स्वामी जी

(गताक से आगे)

## फफड़ मे शुद्ध वायु न पहुचने का परिणाम

यदि हृदय से रक्त शुद्ध होने के लिए फफड़ मे आये परन्तु श्वास के द्वारा पर्याप्त वायु फफड़ में न पहुचे अथवा सब कोषों (कणो) मे जहा रक्त पहुच चुका है शुद्ध वायु न पहुचे तो उसका परिणाम क्या होगा ? फफड़ में मुख्यत तीन भाग हैं (1) ऊपरी भाग जो ग्राम गर्दन तक है (2) मध्य भाग जो दोनो ओर हृदय के इधर उधर है (3) निम्न भाग जो 'डायाफ्राम (मांसपेशी) के ऊपर दोनो ओर है। साधारण रीति से जो श्वास लिया जाता है वह पूर्ण श्वास नही होता इसलिए फफड़ के सब भागो अथवा सब भागों के समस्त कोषो में नही पहुचता जब फेफड़ के ऊपरी भाग में श्वास द्वारा वायु नही पहुचता तो फफड़ का ऊपरी भाग रोगी होना शुरू होता है और उसके इस प्रकार अ_टिपूष हो जाने से एक रोग हो जाता है जिसे ट्यूबरक्यूलोसिस कहते हैं और जब इसी प्रकार फफड़ो के मध्य और निम्न भाग बेकार और अ_टिपूष होने लगते हैं तो उसके परिणाम मे खासी दमा निमोनिया जीर्ण ज्वरादि अनेक रोग जो फफड़ो से सम्बन्धित हैं होने लगते हैं। इस प्रकार पर्याप्त वायु फफड़ों में न पहुचने से जहा एक ओर फफड़ों से सम्बन्धित रोग उत्पन्न होते हैं तो—

## एक और भयकर परिणाम

दूसरी ओर उसका एक परिणाम यह होता है कि हृदय से रक्त जो शुद्ध होने के लिए फफड़ मे आता है वह बिना शुद्ध हुए ही हृदय मे वापस चला जाता है। हृदय भी उसे नही रोक सकता। वहा से वह धमनियो के द्वारा समस्त शरीर मे पहुचता है। इसका फल रक्त विकार होता है। रक्त के विकृत होने से मामूली रोग खाज (खुजली खारिश) से लेकर भयकर रोग कुष्ठ तक हो जाते हैं। इसलिए इन सब दुष्परिणामो से बचने के लिए आवश्यक है कि फफड़ वायु से पूरित होते रहें और कोई भी कण (कोष) उनका ऐसा न ही रहने पावे जहां वायु न पहुच सके। यही से प्राणायाम की जरूरत का सूत्रपात होता है

## प्राणायाम की आवश्यकता

प्राणायाम के द्वारा मनुष्य [illegible] भीतर जब वह श्वास रोक लेता है तब श्वास लेने की प्रबल इच्छा उत्पन्न हो जाती है—उसका फल यह होता है कि श्वास भीतर लेते समय श्वास वेग के साथ तब हवा या आधी के सदृश होकर फफड़ मे पहुचता है और जिस प्रकार आधी या तेज हवा नगर के कोने कोने मे प्रवेश करती है उसी प्रकार वेग के साथ श्वास के द्वारा भीतर लिया हुआ वायु फफड़े के एक एक कोष तक पहुच जाता है और उससे न तो फेफड़ो मे ही कोई खराबी होने पाती है और न रक्त ही मे विकार उत्पन्न होने पाता है। वस्तु देख लिया गया कि प्राणायाम शारीरिकोन्नति का हेतु ही नही किन्तु मुख्य हेतु है। इसलिए आवश्यक है कि प्राणायाम किया करे।

यह बात प्रकट हो जाने पर कि प्राणायाम मानसिकोन्नति के सिवाय शारीरिकोन्नति का भी साधन है प्राणायाम क्या है और किस प्रकार करना चाहिए यह जानने की स्वाभाविक इच्छा उत्पन्न होती है। परन्तु यह बतलाने से पहले कतिपय उन साधनो का यहा उल्लेख किया जाता है जिन पर अमल करने से अमुक रोग हो गया। परन्तु यह सब खराबियां [illegible] कुछ भी हुई हों प्राणायाम का परिणाम नहीं हो सकती किन्तु उन असावधानियों के फल हैं जो प्राणायाम करने में प्राणायाम करने वाले प्राय किया करते हैं। कोई क्रिया सफल नहीं हो सकती जब तक विधि पूर्वक नहीं की जावे। पथ्य के बिना जिस प्रकार चिकित्सा निष्फल सी होती है उसी प्रकार अविधि से किया हुआ प्राणायाम भी लाभदायक नहीं हो सकता। वस्तु उन साधनों को जानना आवश्यक है जिन्हे प्रयोग में लेने से वह परिस्थिति उपस्थित की जाती है जिसका होना प्राणायाम की सफलता के लिए आवश्यक है

## प्राणायाम के उपयोगी साधन

1 उनमे पहला साधन यह है कि अभ्यासी का मन शुद्ध हो मन के शुद्ध होने के लिए शुद्ध अन्न का सेवन करना आवश्यक है। शुद्ध अन्न, परिश्रम और ईमानदारी के कमाए हुए धन को कहते हैं छल और कपट से कमाया हुआ अन्न खाकर साधक सफलता प्राप्त नहीं कर सकता क्योंकि ऐसे अन्न के प्रयोग से सदैव हृदय मलिन रहता है।

3 यम और नियम का प्रतिदिन चिन्तन करना चाहिए और अपने किए हुए कर्मों में से जो काम इनके विरुद्ध हो उनसे हृदय में ग्लानि उत्पन्न होनी चाहिए और ऐसे कर्मों के छोड़ने का सर्वदा यत्न करते रहना चाहिए।

3 श्वास नाक से लेने का अभ्यास करना चाहिए। कोई-कोई पुरुष मुह से श्वास लिया करते हैं। यह अभ्यास हानिकारक है।

4 गहरा श्वास लेने की आदत डालनी चाहिए।

5 मुह ढककर किसी वस्त्र में भी नहीं सोना चाहिए। शुद्ध वायु श्वास के द्वारा फफड़ो तक पहुचाने के लिए कम से कम नाक सदैव खोले हुए भी खुली रखनी चाहिए।

6 प्राणायाम शुद्ध और शान्त स्थान में करना चाहिए जहां वायु में धूलि या धुआ आदि हानिकारक वस्तुएं न शामिल हों।

7 भोजन भूख से कुछ कम करना चाहिए जिससे अजीर्ण न होने पावे।

8 रोगी होने की दशा मे प्राणायाम प्रारम्भ न करना चाहिए। इन साधनों पर दृष्टि रखने और इनके अनुकूल चलने से हृदय में उस प्रकार के भाव जाग्रत हो जाते हैं जो प्राणायाम की सफलता के लिए आवश्यक हैं। इन साधनों में से कुछ की आवश्यक व्याख्या पुस्तक के अन्तिम अध्याय में कर दी गई है।

## प्राणायाम के मूल सिद्धान्त

पतञ्जलि मुनि ने योगदर्शन में यम नियम और आसन के सिद्ध कर लेने के बाद प्राणायाम का विधान किया है—इन तीन अगों में जहा एक ओर शारीरिकोन्नति होती है, वहीं दूसरी ओर मानसिकोन्नति के भी ये साधन हैं। यम नियम से मानसिकोन्नति होती है इसमें तो किसी को सन्देह हो सकता परन्तु आसन से किस प्रकार मानसिकोन्नति होती है इसमे किन्हीं-किन्हीं को सन्देह हो सकता है परन्तु योग दर्शन में स्पष्ट रीति में कह दिया गया है कि आसनों की सिद्धि से मनुष्य में वह योग्यता आ जाती है जिससे वह द्वन्द्वो (सरदी-गर्मी आदि) का सहन कर सकता है2 जब आसन की सिद्धि होने पर प्राणायाम के अभ्यास का आरंभ होता है।

## प्राणायाम क्या है ?

श्वास और प्रश्वास की गति रोकना प्राणायाम है। श्वास भीतर वायु के जाने और प्रश्वास भीतर से बाहर वायु निकलने को कहते हैं3। इनकी गति रोकने का मतलब यह है कि श्वास को भीतर ले जाकर ही रोक देना इसी प्रकार बाहर निकालकर ही रोक देना। प्राणायाम शब्द दो शब्दो का योग है। प्राण व आयाम प्राण श्वास और प्रश्वास का नाम है और आयाम का अर्थ है फैलाना अर्थात् श्वास प्रश्वास का निग्रह करके उनके रोकने की अवधि को बढ़ाना।

## प्राणायाम के भेद

प्राणायाम में तीन क्रियाए होती हैं —

(1) प्राण बाहर निकालना-इसको रेचक कहते हैं (2) प्राण का भीतर लेना इसका नाम पूरक है (3) प्राण जहां हो रोक देना—यह स्तम्भवृत्ति कहलाती है। यह प्राणायाम देश काल और संख्या के भेद से 3 प्रकार का है।4

(1) देशपरिदृष्ट—जिसमें चौड़ी दूर, अधिक दूर या अत्यन्त अधिक दूर का प्राण खींचा या फेंका जावे।

(2) कालपरिदृष्ट—एक दो या अधिक क्षणों तक प्राणों का बरतन फैलाना ठहराना।

(3) संख्या परिदृष्ट—एक, दो या तीन या अधिक बार प्राणों को फेंकना, भरना या ठहराना।

(4) प्राणायाम की चौथी क्रिया5 कुम्भक और स्तम्भवृत्ति नामक प्राणायाम में अन्तर यह है कि स्तम्भवृत्ति में तो प्राण बाहर या भीतर जिस किसी जगह हो वहां का वहा रोक दिया जाता है परन्तु कुम्भक में प्राण को बाहर या भीतर खींच कर रोका जाता है।

बस, प्राणायाम के मूल सिद्धान्त (या मूल क्रियाए) यही हैं और इन्हीं के आधार पर प्राणायाम के अनेक विभाग किये गये हैं और उपयोगिता की दृष्टि से इन विभक्त प्राणायामों को पृथक 2 ठहराया गया है। यह महर्षियो की अपूर्व शैली का फल है कि तीन सूत्रो में प्राणायाम की समस्त क्रियाए वर्णन कर दी गई हैं परन्तु इस विद्या व अप्रचलित हो जाने से देशवासी इस योग्य नहीं रहे कि इन्हीं सूत्रों को लक्ष्य में रखकर अभ्यास कर सकें अथवा इन पृष्ठों के लिखने की आवश्यकता ही नहीं थी। हम आगे बतलायेंगे कि किस प्रकार एक नए अभ्यासी को प्राणायाम का आरम्भ करना चाहिए। परन्तु पहले हम एक प्रश्न का उत्तर देना चाहते हैं कि मानसिकोन्नति की दृष्टि से प्राणायाम क्यों करना चाहिए।

---

1 योग साधनो की इसी के लिए आवश्यकता है चाहे उनके उद्देश्य केवल शारीरिकोन्नति हो अथवा शारीरिक और मानसिक दोनों।

2 ततो द्वन्द्वानभिघात ॥ (योग 2—48) अर्थात् उस आसन की सिद्धि से द्वन्द्वों की चोट नहीं लगती।

3 तस्मिन्सति श्वास प्रश्वासयोर्गति विच्छेद प्राणायाम (योग02 49) अर्थात् उस आसन के सिद्ध हो जाने पर श्वास और प्रश्वास की गति का रोकना प्राणायाम है।

4 स तु बाह्याभ्यन्तरस्तम्भवृत्ति देश काल संख्याभि परिदृष्टो दीर्घ सूक्ष्म यो 150 अर्थात् बाह्य व आभ्यन्तर स्तम्भवृत्ति भेद से तीन प्रकार का प्राणायाम देश काल और संख्या से देखा हुआ दीर्घ परन्तु सूक्ष्म होती है

5 बाह्याभ्यन्तरविषयाक्षेपी चतुर्थ। (योग 2151 अर्थात् बाह्य व भीतर आभ्यन्तर दोनों देशो में अक्षेप [illegible] अर्थात् जिसमें इन दोनों प्राणायामों (रेचक-पूरक) का परित्याग हो चौथा प्राणायाम है।

(क्रमश)

# आर्य समाज और आधुनिक प्रचार साधन

ले.—श्री योगेन्द्रपाल जी सेठ मन्त्री आर्य समाज अड्डा होशियारपुर जालन्धर

आर्य समाज के बहुत से पदाधिकारी लोग आर्य समाज के प्रचार के ढंग को समय के अनुसार बदलना नहीं चाहते। वह आज 1984 में भी उसी भांति आर्य समाज का प्रचार करना चाहते हैं जैसे वह के पूर्व 1884 में किया करते थे। संसार में सदैव से ही बुराई और अच्छाई का युद्ध चलता रहता है परन्तु बुराई का प्रचार करने वाले, अच्छे मनुष्य के दिल को लुभाने वाले अपने साधनों को अपना कर बुराई का प्रचार खूब फैलाते हैं और अच्छाई फैलाने वाले सत्य और असत्य के विवेक में ही फंसे रहने के कारण प्रचार में बुराई से हार जाते हैं।

आर्य समाज अपने धर्म स्थानों को उस प्रकार सुन्दर और आकर्षक नहीं बनाता जैसे दूसरे धर्म वाले बनाते हैं, या जो बुराई फैलाने वाले केन्द्र हैं जैसे सिनेमा हाल ड्रामैटिक स्टडियम क्लब डांसिंग तथा ब्यूटी सैन्टरज इत्यादि। वहां वे किस प्रकार लोगों के आकर्षण के लिए सब प्रकार के आधुनिक साधनों को अपनाते हैं।

आर्य समाज में वही 18वीं शताब्दी के बने हुए प्रचार केन्द्र लोगों के बैठने के लिए वही पुरानी फटी से दर दरियां और इसी प्रकार भोजनालय, वहीं रसोई घर के समान काली हुई तथा लोहे या मिट्टी के बने हुए यज्ञ कुण्ड दिखाई देते हैं। यदि कोई आर्य समाज अपने साधनों को जुटा कर अपने भवनों में कुछ नवीनता लाने के यत्न करते हैं तो उन पर कटाक्ष किए जाते हैं कि यह लोग वास्तव आर्य समाज के प्रचार का धन ईंट पत्थरों पर व्यय कर रहे हैं।

आर्य समाज में यह आम शिकायत की जाती है, कि हमारे नवयुवक वहां नहीं आते क्योंकि उन्हें वहां पर आधुनिक ढंग की कोई सुविधा नहीं मिलती उन्हें वहां पर ऐसा मनोरंजनक वातावरण भी नहीं मिलता जैसा दूसरे धर्म केन्द्रों में मिलता है, अर्थात् यदि तुम दैनिक श्रद्धापूर्वक समाज मन्दिर में आओगे और केवल चार आहुतियां यज्ञ कुण्ड में डाल कर चले जाओगे तो तुम्हारी मनोकामना पूरी हो जायगी, परीक्षा में पास हो जाओगे विवाह हो जाएगा, पुत्र-पौत्र प्राप्त होंगे, धन प्राप्त होगा, कारोबार या नौकरी मिलेगी या उस में वृद्धि होगी। परन्तु आर्य समाज में ऐसा प्रचार नहीं है, संसार का प्रत्येक साधारण बुद्धि का व्यक्ति एक हाथ से कुछ देकर दूसरे हाथ से लेना चाहता है वह श्रद्धा भक्ति तो करना चाहता है परन्तु वह इस ढंग से करना चाहता है जिससे उस को भौतिक आवश्यकताओं की प्राप्ति का कोई आश्वासन देने वाला हो मेरा अमुक काम नहीं हुआ परन्तु यदि मैं अमुक धर्म स्थान पर जाकर इतना प्रसाद चढ़ाऊं या इस ढंग से प्रार्थना करूं यज्ञ करूं तो मेरा काम अवश्य बन जायेगा परन्तु आर्य समाज में उसे कोई आश्वासन नहीं मिलता हालांकि काम का बनना व न बनना उसकी अपनी मेहनत पर निर्भर है परन्तु वह 'उस विश्वास के कारण, खूब मेहनत करता है जो उसे धर्म स्थान से मिला था जब उसे सफलता मिल जाती है तो धर्म के प्रति उस की श्रद्धा बढ़ जाती है और वह उस के लिये प्रचार करता है। क्या आर्य समाज इस को अपनायेगा?

एक सौ वर्ष के पश्चात भी आर्य समाज का प्रचारक उपदेशक तथा भजनोपदेशक उसी पुराने ढंग से उसी पुराने ढोलक और बाजे से 20 या 50 वृद्ध व्यक्तियों के सामने बैठा गला फाड़ फाड़ कर प्रचार करता दिखाई देता है। विचार वही हैं जो सब धर्म केन्द्रों में सुनाये जाते हैं और उन्हीं विचारों को एक कहानी का रूप देकर बड़ा सुन्दर वातावरण बना कर और बड़ सुन्दर और आकर्षक वेश भूषा में एक फिल्म निर्माता एक युवक और युवती से वह सब कहला जाता है, और इस सारे कार्य में अन्दाज को आकर्षित बनाने के लिए सब प्रकार के आधुनिक यन्त्रों का प्रयोग करता है तो साधारण जनता बच्चे वृद्ध युवक युवतियां उस फिल्म को देखने को भारी संख्या में जाते हैं। विचार वही हैं परन्तु उनको पेश करने का ढंग अलग-अलग है। यह ठीक है कि बहुत सी फिल्मों से कुछ ऐसे दृश्य भी होते हैं जिनको देखने से काम वासना की भावनायें जागृत होती हैं परन्तु कई लोग भावनाओं के कारण से स्वयं उन में फंस जाते हैं और कई उनसे शिक्षा ग्रहण करते हैं।

मेरा ऐसा विश्वास है, कि फिल्म लाईन या फिल्मी साधन बुरे नहीं यह एक प्रकार के बहुत बढ़िया साधन हैं, जिन्हें समाज को अपने प्रयोग में लाकर समाज का सुधार करना चाहिए।

हमारे समाज मन्दिर में एक उपदेशक गत समय उपदेश दे रहे थे, यह सब संसार मोहजाल में फंसा हुआ है, यह भौतिक मोहजाल जीवन का ध्येय नहीं है सांसारिक वस्तुओं में आसक्त न होकर अपना आत्मा की आवाज को सुनो मन और इन्द्रियों को आत्मा के अधीन करके अपने आप को कर्म बन्धन से मुक्त करो। आत्मा को परमात्मा से मिला कर उस परम आनन्द को प्राप्त करो। एक भजनोपदेशक गीत गा रहा था।

ज्ञान तराजू हाथ में लेकर इस
दुनिया को तोल।
बिन प्रभु ज्ञान विषय भोगों की
कीमत रत्त तू मोल॥

परन्तु आर्य समाज में सुनने वाले केवल 20 व्यक्ति थे और फिल्मी गानों की महफिल में सुनने वाले हजारों व्यक्ति होते हैं। क्या आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द जी ने आर्य समाज पर ऐसी कोई पाबन्दी लगाई हुई है कि मेरे पश्चात मेरे सब प्रचारक केवल उसी ढंग से प्रचार करें या यज्ञ कर जिस ढंग से मेरे युग में होता था। क्या आर्य समाज में ऐसे बुद्धि जीवी नहीं है जो इस बात पर पुनः विचार कर मेरा पक्का विश्वास है कि प्रचार के फिल्मी साधन बुरे नहीं हैं हां कुछ फिल्मों के हावभाव या कुछ दृश्य बुरे हो सकते हैं जिन्हें आर्य समाज को नहीं अपनाना चाहिए परन्तु आर्य समाज अपने वेद उपदेशों और वैदिक गीतों से कई प्रकार की फिल्में बना सकता है संसार भर की सब फिल्मों की कहानियों में कोई न कोई शिक्षा सुधार या जीवन की कोई भूल अवश्य होगी और उनका सम्बन्ध किसी न किसी वैदिक विचारधारा से अवश्य मिल जायेगा।

आर्य समाज ने लाखों बार कागज पर बार-बार यह शब्द लिखे 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम' और लाखों ने बार बार यह गीत गया।

हे प्रभु हम तुम से वह वर पायें।
सकल जगत को आर्य बनायें॥

परन्तु ऋषि का यह सपना कब और कैसे पूरा होगा संसार के प्रचारक तो हवाई जहाजों में घूम रहे हैं और आर्य समाज के प्रचारक धोती पकड़ सिर पर बिस्तर उठाये हाथ में छाता पकड़, पैदल बस स्टैंड की ओर जा रहे हैं। इस दौड़ को आर्य समाज कैसे जीत सकेगा। आर्य समाज के बुद्धिजीवियो! तुम जागो अपने बल का अनुमान लगाओ तुम्हारे पास इन फिल्म इण्डस्ट्री वालों से बहुत अधिक सम्पत्ति है वह बुराई का प्रचार करने के लिए देश के धनवानों से ब्याज पर ऋण लेकर धन कमाते हैं परन्तु आप न तो अच्छाई का प्रचार करना है सभ्यता और शुद्ध आहार और शुद्ध चरित्र का प्रचार करना है संसार आप के विचारों को ध्यान पूर्वक सुनेगा समझेगा अपनायेगा केवल तुम्हारे उद्यम करने की आवश्यकता है।

"यो जागार तमृचः कामयन्ते"

जो जागता है उसकी ही कामना पूरी होती है। वेद क्या क्या कहता है? इसे समझो जागो सावधान हो जाओ जो विवेकी पुरुष होते हैं उन्होंने तो ईश्वर के ज्ञान को ही फैलाना है। ध्यान रहे कि संसार के सब धर्मों ने अपने प्रचार के लिये फिल्मों के साधनों को भिन्न भिन्न रूपों में अपनाया है। आर्य समाज को अवश्य इस पर विचार करना चाहिये।

—

# स्वाधीनता का पुजारी महाराणा प्रताप

ले—श्री विपिन शर्मा, केन्द्रीय कार्यालय सचिव
युवा प्रताप मंच (रजि)

तीन ज्येष्ठ को जन्मे महाराणा प्रताप का नाम भारतवासियों के लिए सदैव प्रेरणा का स्रोत रहा है। यह महान वीर मेवाड़ के 53वें शासक महाराणा उदयसिंह का का सुपुत्र था। महाराणा उदयसिंह अपने पूर्वजों सांगा और कुम्भा की भांति वीर नहीं था अपितु विलासी था उसकी बीस शादियां हुईं और उनमें से 25 पुत्र और 20 पुत्रियां पैदा हुईं। इनमें से महाराणा प्रताप शक्तिसिंह और जगमाल प्रमुख थे।

मुगल अकबर की बहुत इच्छा थी कि वह मेवाड़ को अपने अधीन कर ले। कई बड़े 2 राजा-महाराजाओंने अकबर की अधीनता ही स्वीकार नहीं की थी, अपितु उसे अपनी लड़कियों के रिश्ते भी दिए थे राजा मानसिंह भी इन्हीं में से थे। इसके अतिरिक्त महाराणा प्रताप से नाराज होकर उनके भाई जगमाल और शक्तिसिंह भी अकबर से मिल गए। अकबर सम्पन्न था सेना और धन की उसे कमी न थी राष्ट्रघाती उसके साथ थे इन सबके बावजूद वह मेवाड़ के शेर महाराणा प्रताप को अपने अधीन नहीं कर सका। उसने कई हमले किए। कभी मानसिंह को भेजा और कभी सलीम को भाही की हल्दी घाटी में युद्ध भी अकबर को जीत नहीं दिला सका।

कई इतिहासकारों ने भी अकबर को महान बताया। जबकि वास्तव में अकबर नहीं महाराणा प्रताप महान् थे। "उदयपुर के जगदीश के मन्दिर से सन 1652 के एक शिला लेख से ज्ञात होता है कि हल्दी घाटी के युद्ध में महाराणा प्रताप की विजय हुई थी।

जब महाराणा प्रताप की मृत्यु के बाद उनका बेटा अमरसिंह राजसिंहासन पर बैठ तो उसके पश्चात सोलह सौ में अकबर ने अपने शहजादे सलीम को मेवाड़ में विशाल सेना सहित भेजते हुए कहा था—

शेखू (सलीम) मैं बड़ा हो चला हूं मरने से पहले यदि महाराणा को शिकस्त देखी जाती तो मैं—चैन से मरता। अब की बार कीका (महाराणा प्रताप) नहीं उसका बेटा है, मुझे उम्मीद है कि वह हमारी सेना के सामने टिक न पाएगा हमारी उम्मीद अब तो पूरी होगी।

परन्तु वीर बाप के वीर बेटे ने मुगल सेना के दांत खट्टे कर दिए और बिना जीते सलीम वापस आ गया। 1650 में अकबर बिमार हो गया और मेवाड़ विजय की लालसा हृदय के किसी कोने में समेटे इस संसार से ही चल बसा।

दानी भामाशाह और अकबर के सेनापति मिर्जाखां के साथ महाराणा बारे बात ही हुई। मिर्जा खा खानखान ने ससम्मान सन्धि का प्रस्ताव करना चाहा तो भामाशाह ने उसे कहा था कि मुझे दुःख है कि मैं आपका प्रस्ताव उस स्वाधीनता के पुजारी के सम्मुख नहीं रख सकू गा उसके बारे में तो कवियों ने कहा है—

अकबर पत्थर अनेक, के भूपत भेला किया।

हाथ न लागो हेक पारस राण प्रताप सी।

मिर्जा ने इसका अर्थ पूछा तो भामा शाह जी ने अर्थ बताया कि अकबर ने राजाओ रूपी कई पत्थर अपने यहां एकत्रित कर रखे हैं परन्तु पारस रूपी एक राणा प्रताप सिंह ही उसके हाथ नहीं आया।

मिर्जा ने कहा बहुत अच्छा लिखा है कुछ और कहे तो भामाशाह जी ने निम्न प्रकार कहा—

सुख हित स्याल हिन्दू समाज अकबर वश हुआ रोसीलो मृगराज

पजे न राण प्रताप सी।

गीदड़ रूपी हिन्दू समाज सुख के लिए अकबर के काबू मे हो गया परन्तु रोबीला सिंह रूपी राणा प्रतापसिंह उसके वश मे नही होता।

अकबर समद अथाह तिह डूबा हिन्दू तुरक मेवाड़ो तिण माह पौयण फूल प्रताप सी।

अर्थ अकबर रूपी अथाह समुद्र मे हिन्दू और मुसलमान डूब गए। किन्तु मेवाड़ का स्वामी महाराणा प्रताप कमल पुष्प सा उसके ऊपर शोभा दे रहा है।

कलपी अकबर काम गुण पु डीकार कोडिया मिलचर शायक माव

पड़ै न राण प्रताप सी।

अर्थात सर्प रूपी राजाओ को वश मे कर लेने पर भी अकबर का शरीर दुःख पाता है क्योंकि महाराणा प्रतापसिंह जैसा मणिधारी सर्प पिटारे मे नही आता।

प्रताप सारी आयु स्वाधीनता के लिए संघर्ष करते रहे। उनका कहना था कि प्रताप भी चाहे कट सकती है झुक नही सकती। ऐसी महान् आत्माओं का नाम ससार मे सदैव के लिए अमर हो जाता है।

—

# क्या काया-कल्प हो सकता है?

ले—श्री सत्य प्रकाश मिश्र आर्य समाज अशोक नगर कालोनी पीलीभीत

श्री मदन मोहन मालवीय जी, जिन्होंने काशी मे हिन्दू विश्वविद्यालय खोला उन्हें कौन नहीं जानता उनकी किसी महान योगी का दर्शन हुआ आध्यात्मिक व्याख्यान सुने, मालवीय जी ने पूछा, योगी जी क्या काया कल्प भी हो सकता है। उत्तर मिला क्यों नहीं मैं काया कल्प विधि जानने का इच्छुक हू, तब योगी ने मालवीय जी को योग विधि का उपदेश किया। योगी ने 6 माह निरन्तर योगाभ्यास कराया परिणाम स्वरूप उन के चेहरे पर तेज प्रकाशित होने लगा और शरीर में नवयुवकों जैसी स्फूर्ति आने लगी। चेहरे की झुर्रियां दूर होने लगीं। यह घटना उस समय के समाचार पत्रो मे प्रकाशित हुई, जिसको पढ़कर सभी भारतवासियो को आश्चर्य था, योगी ने कहा इस प्रकार मैं अपनी कई बार काया कल्प कर चुका हूं। जब तक योग की क्रियाओं का पूर्ण ज्ञान नहीं हो सकता है उस समय तक सफलता नहीं मिलती।

मेरे हृदय में भी काया कल्प के विषय मे सदा उत्सुकता रहती बहुत से स्थानों पर साधु सन्यासियों से मिला, पर काया कल्प का प्रश्न हल नहीं हुआ। सामवेद का स्वाध्याय करते हुए मुझे मन्त्र मिला, उस पर गम्भीर दृष्टि से विचार किया और अपने सकल्प को सफल बनाने का प्रयास करने लगा, यह मन्त्र आपके सामने इस प्रकार है—

सामवेद मन्त्र 849 कविनोमित्रा वरुणा तुविजाता उरुक्षया दक्ष दधाते अपसम।

पदार्थ—(मित्रा वरुण) प्राण और अपान (न) हमारे अन्दर (अपस) क्रिया शील (दक्ष) बल को (दधाते) धारण करते हैं (कवि) क्रान्तदर्शी है (तु विजाता) (तुवि=बहुत) (जाताविकास) यह जीवन का विकास करते है। (उरु क्षया) (उरी क्षयोपाध्या) परमात्मा के मिलन इन्हीं के द्वारा होता है।

भावार्थ—मित्र को प्राण कहते हैं इसकी व्युत्पत्ति—प्रमीते त्रायते मृत्यु से बचाता है—वरुण वारयति रोगों का निवारण करता है इन दोनों प्राणों की सिद्धी ही काया कल्प है इनके अभ्यास से साधक को कम निद्रा करता है परिश्रम से थकावट नहीं आती। वृद्धावस्था तक क्रियाशील बना रहता है स्मरण शक्ति नष्ट नहीं होती। सदा स्वस्थ बना रहता है। प्रभु के प्रति आस्था बनी रहती है यह सब आसन अभ्यास पर निर्भर है।

आपने सिक्खपाल बलन्त को देखा होगा जिनको आधुनिक भीम कहा जाता है वह शारीरिक शक्ति का प्रदर्शन करते हैं, वह स्वयं पर से ट्रैक्टर को उतारते पसली के बड़े पाट को सीने पर रखकर लोहे के घनों से तुड़वा डालना लोहे के सरियों को मोड़ देना बिजली के बल्ब हथेली से मसल कर चूर चूर कर देना जिनको देखकर मानव दंग रह जाता है यह प्राण शक्ति द्वारा स्थूल शरीर की आठ व शक्ति का प्रदर्शन है। इन क्रियाओं को दिखाते समय सिक्खपाल बलन्त प्राण को दीर्घ कर शक्ति को सम्मिलत कर लेते है।

शरीर के फेफड़ों में सात करोड़ कोष्ठ है। साधारण व्यक्ति श्वास क्रिया से दो करोड़ कोष्ठों को शुद्ध वायु से नहीं भोग पाता। पांच करोड़ कोष्ठ बन्द रहते है, जिनमें विषैली वायु धीरे 2 भरती रहती है, ज्यो ज्यों मनुष्य की आयु बढ़ती जाती है त्यों त्यों यह कोष्ठ खराब होने शुरू हो जाते हैं तीस या चालीस वर्ष की आयु तक 5 करोड़ कोष्ठ खराब हो जाते हैं, साठ सत्तर वर्ष की आयु तक सभी कोष्ठ खराब हो जाते हैं। इन्द्रियां जवाब दे बैठती हैं। शेष जीवन काटना कठिन हो जाता है। रात दिन यही प्रार्थना करता है। ईश्वर मुझे इस संसार से उठा ले।

काया कल्प चाहते हो तो 7 करोड़ कोष्ठ इन्द्रियां प्राणायाम के द्वारा खोलिये शुद्ध प्राणवायु दीजिये। परन्तु यह कार्य बहुत कठिन है। इसके योगाभ्यासियों से सहायता शिक्षा लेनी चाहिए। यही आत्मिक उन्नति का साधन है और मर्यादा-पालन का मूल मन्त्र है।

# गुरुकुल मुलताल में प्रवेश

प्रवेश 7 जुलाई से बनारस विश्व-विद्यालय की परीक्षाएं जो सरकार से मान्यता प्राप्त। अंग्रेजी, गणित इतिहास भूगोल विज्ञान, हिन्दी संस्कृत सभी आधुनिक विषय तथा वेद दर्शन, उपनिषद् व्याकरण प्राचीन विषय। योगासन प्राणायाम यज्ञ सन्ध्या व्यायाम अनिवार्य। आवास एवं भोजन का प्रबन्ध। योग्य छात्रों को पचास रुपए मासिक छात्रवृत्ति।

स्वामी आनन्द देव प्रबन्धक गुरुकुल मुलताल जिला मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)

# मानसिक रोग : एक तथ्य

## एक प्रामाणिक सर्वेक्षण के आधार पर—

किसी चिकित्सक से सलाह लेने वाले हर तीन में से एक रोगी मानसिक या मन या शारीरिक रोग से पीड़ित होता है। औषधि विज्ञान पर 'कॅकर्ट' से प्रकाशित होने वाले पत्र 'डाइग्नोस्टिक' ने इस गम्भीर तथ्य की ओर डाक्टरों का ध्यान आकर्षित किया है।

सात सहस्र रोगियों के एक सर्वेक्षण का उल्लेख करते हुए उस पत्र ने स्पष्ट किया है कि मानसिक रोग के कारणों में मुख्य पारिवारिक समस्याएं होती हैं। 28 प्रतिशत रोगियों में यही कारण पाया गया।

आर्थिक संकट से त्रास के कारण 20 प्रतिशत एकाकी जीवन से दुखी 14 प्रतिशत महत्वाकांक्षा एवं प्रशंसा की भूख से पीड़ित 11 प्रतिशत और 6 प्रतिशत आवास समस्याओं के फलस्वरूप मानसिक रोगों का शिकार होते हैं।

ऐसा माना जाता है कि मनोजात प्रक्रियाओं उन्माद व मन शारीरिक रोगों से पीड़ित केवल बीस प्रतिशत ही डाक्टर से सलाह लेते हैं।

हैस्सी नगर के एक सर्वेक्षण में यह बात खुलकर सामने आई है कि स्वयं को स्वस्थ सँभालने वाले लोगों में से 44 प्रतिशत सिरदर्द अनिद्रा या सदैव थके हारेपन के रोगों से ग्रस्त थे। इनमें से केवल 16 प्रतिशत ही डाक्टर के पास पहुंचे शेष ने या तो स्वयं ही अपना कोई उपचार कर लिया या चिकित्सा कराने का विचार ही नहीं किया।

उल्म विश्वविद्यालय में चिकित्सा समाज शास्त्र व समाज मनोविज्ञान के प्राध्यापक डा के बी टाल्के के अनुसार रोगियों का ऐसा मत बन गया है कि औषधियां केवल शारीरिक रोग ही दूर करती हैं अतः मानसिक रोगी प्रायः डाक्टर के पास फटकते ही नहीं हैं और कोई आते भी हैं तो उस समय तक रोग असाध्य हो जाता है।

डा टाल्के का दावा है कि रोगियों की सामाजिक परिस्थितियों पर विचार किए बिना उनके रोग का निदान और सही उपचार नहीं हो सकता। इसी कारण सामान्य चिकित्सक का चिकित्सा क्षेत्र ही बदल गया है।

डाक्टर को चाहिए कि रोगी के कष्ट और समस्याओं को गम्भीरता पूर्वक सुने उसे निदान अथवा उपचार करने की उतावली नहीं करनी चाहिए। रोगी का अपना ध्यान अपने सामाजिक संबंध की अवज्ञा करके केवल शारीरिक रोग पर ही केन्द्रित नहीं करने देना चाहिए।

टाल्के लिखते हैं कि डाक्टर एवं रोगी के बीच स्थिति पर की खोलकर हुई बातचीत बहुत हितकर सिद्ध होती है स्थिति कैसी भी हो खाने की गोलियां दे देने भर से ही मानसिक रोग का इलाज नहीं हो जाता।

टाल्के का कहना है कि सामान्य चिकित्सकों को व्यक्तिगत रोगियों की चिकित्सा करने के अतिरिक्त बीमारियां रोकने के कार्य में सहायक होने की दृष्टि से डाक्टर घर घर जाकर रोग निरोधक कार्यों में अन्य चिकित्सकों एवं स्वास्थ्य अधिकारियों को सहयोग देना चाहिए। व्यक्तियों की चिकित्सा के निजी सकुचित क्षेत्र से बाहर आकर उन्हें अस्पतालों, परामर्श केन्द्रों सामाजिक कार्यकर्ताओं मनोवैज्ञानिकों एवं मनश्चिकित्सकों को अपने ज्ञान और अनुभव का लाभ पहुंचाने की परमावश्यकता है।

# आर्यसमाज हजूरी बाग के मन्दिर की क्षति पूर्ति का सरकार मुआवजा दे

24 जून रविवार को आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना की साधारण सभा की बैठक में जम्मू काश्मीर श्रीनगर में सिख उग्रवादियों तथा पाक समर्थक तत्वों ने संयुक्त रूप से श्रीनगर में हजूरी बाग आर्य समाज मन्दिर इसकी आर्य कन्या पाठशाला तथा हनुमान मन्दिर को आग लगाकर हिन्दुओं विशेषकर आर्यों को जो दुख पहुंचाया है उसकी कड़ी निन्दा की गई है इस आगजनी से जो लगभग 50 लाख रुपए का नुकसान हुआ है। यह सभा प्रधानमन्त्री भारत सरकार तथा मुख्यमन्त्री जम्मू-काश्मीर सरकार से कड़ा अनुरोध करती है कि वे दोषियों को पकड़ कर उनको सख्त से सख्त दण्ड दें और आर्य समाज तथा हनुमान मन्दिर की जो क्षति हुई है उसका शीघ्र अति शीघ्र मुआवजा दिया जाए।

—सत्यपालचन्द्र मन्त्री

# वार्षिक निर्वाचन

दिनांक 24 6 84 को आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना का वार्षिक निर्वाचन किया गया जिसमें सर्वसम्मति से श्री देशराज जी मेहता को प्रधान चुना गया और उनको अन्य अधिकारी तथा अन्तरंग सदस्य नियुक्त करने का अधिकार दिया गया।

—

# अमेरिकन प्रोफेसर डा. जी. सी. मी. की वेद में अभिरुचि एवं इन्दौर आगमन

ऋग्वेद के कतिपय चुने हुए सूक्तों के मन्त्रों को स्वहस्त लेखन से सस्वर वैदिक लिपि में लिखकर उनको अंग्रेजी में अनुवादित कर एवं मन्त्र के भावों को प्रकट करने के लिए प्राकृतिक चित्रों के फोटो ग्राफ के साथ पुस्तक प्रकाशित करने वाले न्यूयार्क अमेरिका के कूपर यूनियन इन्जीनियरिंग संस्थान के प्राध्यापक प्रोफेसर जी सी मी पी एच डी भारत में आए हैं और जुलाई मास में फ्रांस प्रस्थान कर रहे हैं। वे फ्रांसीसी हैं। संस्कृत का भी उनका अध्ययन है। वेद विषय में तो उनकी अत्यधिक रुचि है।

वे पूर्व सूचनानुसार 20 जून को इन्दौर मुझ से मिलने आए और सारा दिन वेद की चर्चा में लगे रहे। वेद सम्बन्धी जो कार्य मैंने सन 1952 से 60 तक किए थे उनको उसने अवलोकन किया जिनमें प्रमुख रूप से यजुर्वेद अ 31 पुरुष सूक्त के प्रकृति विकृति पाठों का सस्वर लेखन यज्ञ क्रम संहिता की सस्वर हस्तलिखित प्रति की संहिता पदक्रमादि का लेखन व यज्ञी मन्त्र प्रकृति विकृति पाठ समलंकृत की हस्तलिखित प्रति एवं उन पाठों के भाव प्रदर्शनार्थ चित्र तथा गायत्री मन्त्र के अनेक प्रकार के कुण्डों के चित्रों को देखा।

सुप्रसिद्ध इन्स्टीटयूशन आफ इन्जीनियर्स इण्डिया संस्था द्वारा मुझे प्रदत्त प्रशस्ति पत्र को देखकर वे आश्चर्य से अति प्रसन्न हुए और उन्होंने उन लेखों की प्रतियां मांगी जो उक्त संस्था की पत्रिका में छपे थे। मैंने उन्हें उन लेखों की प्रतियों के अतिरिक्त यज्ञ सम्बन्धी मेरे अन्य लेख भी दिए। ये सब अंग्रेजी में अनुवादित थे। जब मेरी उनसे नासदीय सूक्त के पांचवें मन्त्र में उनके किए अर्थ में कि इस मन्त्र में अंक गणित है इसको किस आधार पर लिखा है तो उन्होंने उसका प्रदर्शन भी किया। इसी मन्त्र के आधार पर जब मैंने उन्हें रेखा—गणित और भौतिक मन्त्र का उल्लेख किया तो उन्होंने रेखा गणित के बारे में और मन्त्रों की जिज्ञासा प्रकट की।

इसी प्रकार मैंने अभी जो एक शोध पत्र जुलाई के प्रथम सप्ताह में रुड़की में होने वाली अखिल भारतीय ऊर्जा संसाधन गोष्ठी के लिए वेद और ऊर्जा के संसाधन तैयार करके भेजा है उसका भी परिचय दिया उसमें चर्चित विषयों में मन्त्र को गर्भीमित ऊर्जामय तत्व में परिवर्तन के मन्त्र का पट्रोलियम के विकल्प पदार्थ के प्रयोग से ऊर्जा की उत्पत्ति का मन्त्र बताया जिसे ज्ञात कर वेद का महत्व और अधिक उन्हें प्रतीत हुआ। वैदिक ऊर्जा के संसाधनों से पर्यावरण प्रदूषण की वृद्धि न होकर पर्यावरण शुद्ध तो होता ही है और सृष्टि के तत्वों में ऊर्जा का संसरण एवं वृद्धि भी होती है यह भी बताया।

श्री प्रो जी सी मी को यजुर्वेद के 40वें अध्याय के अन्तिम मन्त्र से पद विलोम रीति से पाठ सुनाया पुरुष सूक्त व गायत्री मन्त्र के भी पदक्रम जटादि पाठों का सस्वर हस्त स्वर प्रदर्शन सहित पाठ तथा गायत्रीमन्त्र के अनेक प्रकार के विलोम पाठों को सुनाया वे अति प्रसन्न हुए। अपने सस्वर पाठ के कैसेट तो वे पहले ही अमेरिका से मंगा चुके थे तथा उन्होंने नासदीय सूक्त के मन्त्रों पर निर्मित 24 स्लाईड भी भेजी थीं और नासदीय सूक्त के मन्त्रार्थ पर अंग्रेजी भाषा में निर्मित संगीत का कैसेट भी भेजा था। अतः उन्हें वेद मन्त्रों के सस्वर पाठ और वेद मन्त्रों का गायन से अनुसंधान में भी रुचि है। वे अपने साथ मेरे यहां से वैदिक सम्पदा के अंग्रेजी अनुवाद की टाईप की हुई प्रति भी ले गए हैं। मैंने उन्हें महर्षि दयानन्द कृत ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका को पढ़ने का परामर्श दिया,

—वीरसेन वेदश्रमी वेद सदन महारानी रोड इन्दौर मध्य प्रदेश

# अक्तूबर में अजमेर में ऋषि मेला

परोपकारिणी सभा के मन्त्री श्रीकरण शारदा ने सूचित किया है कि महर्षि स्वामी दयानन्द के एक सौ एक वें निर्वाण दिवस के अवसर पर 26 अक्तूबर से 29 अक्तूबर 84 तक अजमेर में ऋषि मेला आयोजित किया गया है।

यह मेला ऋषि उद्यान पुष्कर रोड अजमेर में होगा जिसमें स्वामी सत्यप्रकाश जी, स्वामी ओमानन्द जी महात्मा आर्य भिक्षु जी के प्रवचन होंगे तथा श्री देवराज व पन्नालाल जी पीयूष के भजन होंगे। 26 अक्तूबर से यज्ञ चार दिन तक चलेगा जिसके ब्रह्मा पण्डित विश्वमित्र जी मेधार्थी कुलपति गुरुकुल सिराद होंगे।

श्री शारदा ने यह जानकारी दी कि बाहर से आने वाले आर्य नर-नारियों के आवास व भोजन की व्यवस्था निःशुल्क ऋषि उद्यान में होगी।

—धर्मसिंह कोठारी

वर्ष 16 अंक 13 31 आषाढ़ सम्वत 2041 तदनुसार 15 जुलाई 1984 दयानन्दाब्द 160 । एक प्रति 0 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपये

वेदामृत—

# राष्ट्र भूमि मेरी माता और मैं उसका पुत्र हूं

यत् मध्यं पृथिवी यच्च नभ्यं यास्त ऊर्जस्तन्व संबभूवुः ।
तासु नो धेह्यभि नः पवस्व माता भूमि पुत्रो अहं पृथिव्या ।
पर्जन्य पिता स उ नः पिपर्तु । (अथर्व वेद)

(पृथिवि) हे मातृ भूमि (यत्) जो (ते) तेरी (मध्यम) मध्य भाग में उत्पन्न होने वाली वस्तुएं हैं। (यच्च) और जो (नभ्यम्) नाभि भाग में उत्पन्न होने वाली वस्तुएं हैं। (या) जो ऊर्जा अन्न रस आदि बल कारक पदार्थ (ते) तेरे (तन्व) शरीर से (संबभूव) उत्पन्न होते हैं (तासु) उन सब से (नः) हमें (धेहि) तू धारण कर अर्थात उन सबको हमें प्रदान कर (नः) हम (अभिपवस्व) तू पवित्र बना दे भूमि) तू भूमि (माता) मेरी माता है और (अहम्) मैं (पृथिव्या) इस भूमि का (पुत्र) पुत्र हूं (पर्जन्य) अन्न आदि को खूब उत्पन्न करने वाला (मेघ राजा अथवा परमात्मा (पिता) हमारा पालक पिता है (स) वह (उ) (नः) हमारी (पिपर्तु) पालना कर और हमें पूर्ण बनावे।

वेद के इस मन्त्र में स्पष्ट करके बताया गया है कि जिस भूमि (मिट्टी) से हमारा शरीर बनता है जिस पर हम रहते हैं। जिससे हमें सभी प्रकार के अन्न फल फूल औषधियां और नानाविध पदार्थ मिलते हैं। जिससे अन्न के साथ 2 अमृत मय जल भी मिलता है। जो हमें सोना चांदी तथा धन देती है। जो हमें धारण किए हुए है वह भूमि मेरी माता है और मैं उसका पुत्र हूं।

राष्ट्र भूमि को भी माता कहकर पुकारा गया है। माता निर्माता अर्थात निर्माण करने वाली माता है। इसीलिए जन्म देने वाली जननी भी सन्तान का निर्माण करने के कारण माता कहा जाता है। मां अपने बच्चे का पालन-पोषण करने में कोई कसर उठा नहीं रखती वह अपने बच्चे की सुख सुविधा का पूरा 2 ध्यान रखती है उसके लिए सभी प्रकार के सुख के साधन जुटाती है। इसी प्रकार से मातृ भूमि भी हमारे लिए सुख कारक सभी पदार्थ प्रदान करती है।

प्रत्येक पुत्र अपनी जन्म देने वाली मां की रक्षा भी करता है और उसकी सुख-सुविधा का ध्यान भी रखता है। अगर कोई दुष्ट प्रवृत्ति का व्यक्ति उस की मां और दुष्ट भावना से या उसको नुकसान पहुंचाने की भावना से उसकी तरफ देख लेता है तो वह उसकी आंख फोड़ देता है। अगर कोई दुष्ट उसको गाली निकाल दे तो वह उसकी जुबान को खींच लेता है। उसके हाथ पांव तोड़ देता है। उसे स्वयं भले ही कोई कष्ट हो जाए परन्तु वह अपनी मां को कोई कष्ट नहीं होने देता। वह पुत्र ही क्या है जिसके होते उसकी मां का कोई बाल बांका कर जाए। वह इस बात को समझता है वह मां का ऋणि है वह सारा जीवन भी उसकी सेवा के लिए लगा दे परन्तु वह उसका ऋण नहीं चुका सकता। मां तो मां ही है। पुत्र उसकी महानता को कम नहीं होने देता। वह उसको नुकसान पहुंचता हुआ नहीं देख सकता।

इसी प्रकार से वेद कहता है माता भूमि पुत्रो अहं पृथिव्या—भूमि मेरी माता है मैं उसका पुत्र हूं। पुत्र (अन्न) अन्न, रस, फल, बल आदि देने वाली राष्ट्र भूमि मेरी माता है अपनी जन्म देने वाली मां की तरह इस भूमि की भी हमें रक्षा करना व्रत लेना है। मेरी राष्ट्र भूमि रूपी माता की तरफ कोई दुष्ट अगर आंख लगाए हुए है तो मुझे उस की आंख फोड़ देनी चाहिए। कोई देश द्रोही गद्दार अथवा विदेशी दल मेरी मातृ भूमि का बाल बांका न कर सके। इसके लिए मुझे सतर्क रहना चाहिए। प्रत्येक राष्ट्र वासी के लिए वेद का ऐसा आदेश है जिस राष्ट्र की मिट्टी से मेरा शरीर बना उसकी रक्षा करना मेरा धर्म है।

गत दिनों कुछ गद्दार लोगों ने राष्ट्र वासी लोगों ने एक षड्यन्त्र रचकर विदेशी ताकतों से मिलकर राष्ट्र को नुकसान पहुंचाने का यत्न किया। मातृ भूमि के टुकड़े 2 करने चाहे। विदेशियों ने भी उसकी ओर बुरी आंख से देखा। परन्तु देश भक्तों की टोली आगे बढ़ी उन्होंने अपने प्राणों की भी चिन्ता नहीं की। राष्ट्र वासी बहुत मजबूत किला बना कर बैठ गए वह अपने ऊपर किए माता के अहसानों को भूल गए। स्वार्थ के वशीभूत होकर वह उदर की पूर्ति में रात दिन लगे हुए थे। विदेशों से सांठ गांठ करके हथियार हथियार इकट्ठे कर लिए। राष्ट्र भक्त तथा देश भक्तों को मारा जाने लगा सारे राष्ट्र में त्राहि 2 मच गई। सधवी पत्नियां का सिन्दूर पोंछा जाने लगा। बहिनों से भाई और माताओं से पुत्र छीने जाने लगे सारे राष्ट्र में अराजकता फैला दी गई।

देशभक्त वीरों से मां के सपूतों से यह देखा नहीं गया। वह अपनी जान हथेली पर रखकर मैदान में कूद पड़े। उन्हें अपने प्राणों की कोई चिन्ता नहीं थी। जब स्वर्ण मन्दिर में चारों ओर से गोलियां चल रही थी भारत मां के सपूत भारत माता की जय का उद्घोष करते हुए अपने सीने पर गोलियां खा रहे थे अपने कदम आगे बढ़ा रहे थे। अमृतसर में उन दिनों क्या हुआ यह सब जानते हैं मां के पुजारी शहीद हो गए परन्तु मां को आंच न आने दी अन्दर और बाहिर के शत्रुओं को दूर खदेड़ दिया। स्वार्थी लोगों के मनसूबे धरे धराए रह गए उन्हें पूरा न होने दिया।

मां की रक्षा के लिए मरने वाला पुत्र अमर शहीद है। वह बहुत महान है। उसने मां के प्रति अपने कर्त्तव्य को भली भांति समझा है और ठीक ढंग से निभाया है।

वेद का यह मन्त्र कितनी प्रेरणा देने वाला है कितना महत्वपूर्ण है। वेद का स्वाध्याय करने वाला वेद को पढ़ने वाला वेद को मानने वाला कभी भी अपने राष्ट्र से द्रोह नहीं कर सकता। वह कभी अपने देश से गद्दारी नहीं कर सकता इसलिए प्रत्येक वैदिक धर्मी (आर्य समाजी) आरम्भ से ही राष्ट्र का सेवक तथा देशभक्त है। स्वतन्त्रता संग्राम में इस मातृ भूमि की स्वतन्त्रता के लिए आर्य समाज ने सबसे अधिक शहीद दिए। इतिहास उनके बलिदानों से भरा पड़ा है।

आज भी भारत भूमि पर संकट के बादल मंडरा रहे हैं कुछ विदेशी ताकतें इसमें घुस पैठ कर रही हैं कुछ ऐसे लोग जिनका शरीर इसी राष्ट्र की मिट्टी से बना है अपने स्वार्थवश इसे हानि पहुंचाने की ताक में बैठे हैं।

मन्त्र में कहा है शरीर में नाभि स्थान का अपना विशेष महत्व होता है नाभि चक्र से सभी नाड़ियां जुड़ी होती हैं नाभि ठीक रहे तो शरीर ठीक काम करता है। एक और विशेष बात है जब मानव गर्भ में होता है तो वह खुराक मुंह से नहीं लेता। नाभि द्वारा ही खुराक लेता है जिससे सारा शरीर बनता चला जाता है। इसके साथ ही (यत मध्यं पृथिवी) मध्य भाग का ही ठीक रहना चाहिए अर्थात सभी अंतड़ियां मजबूत रहें तभी शरीर बल सकता है। बाहर से शरीर की सजावट भी करते रहें कपड़े भी बढ़िया सुन्दर पहनें भोजन भी पर्याप्त करें। परन्तु अगर अन्दर भाग (ऊर्जस्तन्व) शक्तिशाली नहीं मजबूत नहीं तो शरीर कमजोर हो जाएगा नष्ट हो जाएगा।

इसलिए राष्ट्र प्रेमियों को राष्ट्र को भी इसी प्रकार अन्दर से भी मजबूत बनाना होगा। अपने देश की सीमाओं की रक्षा तो मजबूती से हो रही है परन्तु अन्दर से (बीच में) रक्षा के साधन ढीले हैं। राष्ट्र की रक्षा तभी हो सकेगी जब वेद के अनुसार अन्दर का त्रुटि रहित और मजबूत बनाया जा सकेगा। इसके लिए सभी देश प्रेमी मिलकर प्रयत्न करें।

सम्पादकीय—

# आर्य समाज का वास्तविक लक्ष्य क्या है ? स्व-धर्म-या-स्वराज्य ! –2 या दोनों—

इस विषय पर आर्य मर्यादा के पिछले अंक में मैंने अपने जो विचार पाठकों के सामने रखे थे, उसका एक कारण यह था कि एक तरफ तो बार-बार यह कहा जाता है कि आर्य समाज का राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं, यह एक धार्मिक संस्था है। दूसरी ओर समय समय पर आर्यसमाज के नेता कई राजनीतिक समस्याओं के सम्बन्ध में देते रहते हैं, जो समाचार पत्रों में भी प्रकाशित होते रहते हैं। इसी कारण कई भ्रान्तियां पैदा होती रहती हैं और यह भी प्रश्न किया जाता है कि आर्य समाज का राजनीति से कोई सम्बन्ध है या नहीं ?

मेरी यह निश्चित धारणा है कि आर्य समाज को राजनैतिक समस्याओं के विषय में अपना एक निश्चित दृष्टिकोण समय-समय पर अपने देशवासियों के सामने रखना चाहिए। कई बार यह भी प्रश्न उठाया गया है कि आर्य समाज राजनीति में सक्रिय भाग ले या न ? इसके विषय में भी कोई निर्णय नहीं लिया जा सका इसका एक कारण यह भी है कि आर्य समाज के कई नेता कुछ राजनैतिक संस्थाओं से सम्बन्धित हैं। इसलिए वे कोई नया राजनैतिक दल खड़ा नहीं होने देते। पिछले चुनाव से पहले एक बार राष्ट्रीय स्तर पर राजार्य सभा प्रारम्भ करने का फैसला किया गया था परन्तु वह भी योजना सफल न हो सकी। हमने पंजाब में भी राजार्य सभा बनाने का फैसला किया था, परन्तु सार्वदेशिक सभा के नेताओं ने कहा कि ऐसा करना उचित नहीं है। इसलिए हम पंजाब में भी इस विषय में कुछ नहीं कर सके। हम जानते हैं कि पंजाब में सिखों का अकाली दल के रूप में एक संगठन है परन्तु हिन्दुओं का कोई संगठन नहीं। आर्य समाज चाहे तो अपना एक शक्तिशाली संगठन बना सकती है और पंजाब के बहुत से हिन्दू जो आर्य समाज के सदस्य नहीं हैं वे भी इसमें सम्मिलित हो जाएंगे, क्योंकि पंजाब के हिन्दू चाहते हैं कि उनका कोई अपना राजनैतिक संगठन हो। धर्म निरपेक्षता के आधार पर जो राजनैतिक दल खड़े किये हैं, वे हिन्दुओं के हितों की रक्षा नहीं कर सकते। इसलिए कई बार यह मांग की गई है कि यदि कोई और संस्था अपना राजनैतिक संगठन खड़ा नहीं कर सकती तो आर्य समाज को ही करना चाहिए। दूसरे कई प्रान्तों में भी यही स्थिति है। हिमाचल की आर्य प्रतिनिधिसभा के प्रधान श्री स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज ने भी इस विषय में मुझे कई बार लिखा है। हरियाणा एक ऐसा प्रान्त है जहां आर्य समाज का एक शक्तिशाली संगठन बन सकता है। यदि किसी कारण आर्य समाज सक्रिय राजनीति में भाग न भी लेना चाहे फिर भी वह अपनी विचारधारा अनुसार समय समय पर अपना दृष्टिकोण जनता के सामने रख कर देश की राजनीति पर प्रभावित हो सकता है और उसे एक नई दिशा दे सकता है। कई बार ऐसी समस्याएं हमारे सामने आती हैं, जिनमें आर्य समाज यदि सक्रिय रूप में कोई आन्दोलन प्रारम्भ करे तो उसका श्रेय उसे ही मिल सकता है। अभी पिछले वर्ष की ही बात है कि वनस्पति घी में गऊ चर्बी मिलाने का प्रश्न उठा था। सारे देश में उसके विरुद्ध शोर हुआ था। वह समय था जब आर्य समाज उसमें एक सक्रिय भाग ले सकता था। इसी प्रकार और भी कई समस्याएं उठती रहती हैं, जिनमें आर्य समाज अपनी आवाज उठा कर देश का नेतृत्व कर सकता है। परन्तु किसी न किसी कारण यह नहीं हो रहा। यह केवल इसलिए कि राजनीति के विषय में आर्य समाज की कोई निश्चित धारणा नहीं। केवल सार्वदेशिक सभा के नेता समय-समय पर उन समस्याओं के विषय में अपने वक्तव्य देते रहते हैं। यह भी देखा गया है कि कई विशेष समस्याओं की ओर कोई ध्यान नहीं दिया जाता। नेताओं की अपनी इच्छा पर निर्भर है। जब वे कोई वक्तव्य देना चाहें, दे दें। न देना चाहें न दें। देश में वर्तमान शासन प्रणाली चलनी चाहिए या इसके स्थान पर राष्ट्रपति द्वारा शासन चलाने की प्रणाली प्रारम्भ की जाए। इस प्रश्न पर सारे देश में एक बहुत बड़ा विवाद चल रहा है। और यह एक ऐसा प्रश्न है जिस पर गम्भीरतापूर्वक विचार करने की आवश्यकता है। इसके दोनों पक्षों के विरुद्ध भी कहा जा सकता है और पक्ष में भी। आर्य समाज ने आज तक कभी भी इस पर विचार नहीं किया। सारा देश इस प्रश्न के उत्तर से भरा पड़ा है कि देश का राजा किस प्रकार का होना चाहिए, उस कैसे निर्वाचित किया जाए प्रजा उसे हटा सकती है या नहीं ? स्वयं महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास में इसके विषय में बहुत कुछ लिखा है। परन्तु आर्य समाज ने इस विषय पर बैठ कर कभी विचार नहीं किया। यद्यपि सार्वदेशिक सभा के नेताओं ने राष्ट्रपति प्रणाली के पक्ष में अपना वक्तव्य दे दिया था वह क्यों दे दिया यह एक अलग बात है। परन्तु जब सार्वदेशिक सभा के अधिकारी किसी समस्या के विषय में अपने विचार जनता के सामने रखते हैं, तो समझा यह जाता है कि आर्य समाज के विचार हैं और आर्य समाज को उसका कुछ भी पता नहीं होता। यह स्थिति सन्तोषजनक नहीं है, इसी लिए मेरे विचार में यह आवश्यक है कि आर्य समाज एक बार यह फैसला करे कि उसका वास्तविक लक्ष्य क्या है ? उसने अपनी गतिविधियां केवल धार्मिक क्षेत्र तक ही सीमित रखनी हैं, या राजनैतिक क्षेत्र में भी उसने काम करना है यदि राजनैतिक क्षेत्र में करना है या राजनैतिक समस्याओं के विषय में उसके विचार जनता तक जाने हैं तो वे सोच विचार कर बाद ही सामने आने चाहिए और जब एक बार उनकी घोषणा कर दी जाए तो सारे आर्य समाज को एक ही आवाज से बोलना चाहिए। उसी स्थिति में हमारा संगठन प्रभावशाली बन सकेगा और उसका कुछ महत्व समझा जाएगा। आज तो आर्य समाज कहीं भी नहीं है। न राजनीति में और न धार्मिक क्षेत्र में।

—वीरेन्द्र

# आवश्यकता है एक पुरोहित की!

वैसे तो पंजाब की कई आर्य समाजों को उच्च कोटि के पुरोहितों की आवश्यकता रहती ही है। समय समय पर सभा के कार्यालय में ऐसे पत्र आते रहते हैं कि समाज को पुरोहित की आवश्यकता है। परन्तु कई बार ढूंढने से भी वे नहीं मिलते। आज पंजाब में हमें न तो अच्छे पुरोहित मिल रहे हैं न अच्छे उपदेशक मिल रहे हैं। यहां की आर्य समाजें तो फिर भी किसी न किसी प्रकार अपना काम चला लेती हैं। परन्तु विदेशों में जो आर्य समाजें हैं उनके लिए एक कठिनाई पैदा हो जाती है, इसलिए समय समय पर मुझे विदेशों से पत्र आते रहते हैं कि कोई पुरोहित भेजो। अभी थोड़ा ही समय हुआ जब मैंने डा० बधीराम जी शर्मा को नैरोबी भेजा था और वे वहां बहुत अच्छा काम कर रहे हैं। अब मुझे आर्य समाज दारास्सलाम (तन्जानिया) से एक पत्र आया है कि उन्हें भी पुरोहित की आवश्यकता है। जो पुरोहित वहां जाएगा, उसे लगभग तीन साढ़े तीन हजार मासिक की आय हो जाएगी। परन्तु उसके लिए यह आवश्यक है कि एक तो वे आर्य समाज के सिद्धान्तों को अच्छी प्रकार जानता हो। स्वयं भी कर्मकाण्डी हो और यज्ञ आदि करवा सके। अधिक तो नहीं परन्तु थोड़ी अंग्रेजी बोल सके। यह भी आवश्यक नहीं कि वह अंग्रेजी में उपदेश दे परन्तु किसी समय किसी से अंग्रेजी में बात करने की आवश्यकता पड़ तो वह कर सके। यदि कोई ऐसे भाई हों जो वहां जाना चाहते हो, वे मुझे पत्र लिखें जिसमें अपने विषय में सारी जानकारी दे दें। मैं वह पत्र आर्य समाज दारास्सलाम के प्रधान जी को भेज दूंगा। जो भी वहां जाएगा वह कम से कम दो वर्ष तो अवश्य वहां रहेगा। उसके पश्चात यदि आवश्यकता हो और वह रहना चाहे, तो उसके सेवा काल में वृद्धि भी हो सकती है। जो महानुभाव जाना चाहें इस सारी स्थिति पर विचार करके मेरे साथ पत्र व्यवहार कर लें। उनके जाने का प्रबन्ध कर दिया जाएगा।

# गुरुदत्त भवन लाहौर के चित्र की आवश्यकता है

लाहौर में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का कार्यालय गुरुदत्त भवन नाम के एक विशाल भवन में था। वहां से आते समय न तो कोई अपने साथ रिकार्ड ला सके और न ही पुस्तकालय की पुस्तकें। आर्य प्रतिनिधि सभा को नए सिरे से अपना कार्यालय बनाना पड़ा और धीरे धीरे हमने कुछ न कुछ बना लिया एक। संस्था को लाहौर के गुरुदत्त भवन के चित्र की आवश्यकता है। सभा कार्यालय में वह नहीं है। यदि किसी आर्य समाज या आर्य समाजी के पास कोई ऐसी पुस्तक हो, जिसमें वह चित्र हो या केवल चित्र हो और वह हमें दे सकें तो हम आभारी होंगे। यह भी हो सकता है कि उसकी एक प्रति बनवा कर असली चित्र उन्हें वापस कर दिया जाए। इसलिए जिन आर्य समाजों के पास कुछ पुराना साहित्य है उन्हें इसे देखकर गुरुदत्त भवन लाहौर का चित्र ढूंढने का प्रयास करना चाहिए। यदि वह मिल जाए और उसे हमें भेज दिया जाए तो हम उसकी प्रतियां बनवा कर असली चित्र वापस कर देंगे।

—वीरेन्द्र

# दीर्घायु के लिए उपयोगी-प्राणायाम विधि

ले—स्व महात्मा नारायण स्वामी जी

(गतांक से आगे)

## प्राणायाम का फल

प्राणायाम का फल यह है कि उसके अभ्यास से हृदय मे पड़ा हुआ तम का आवरण नष्ट हो जाता है।1 हृदय मे शुद्ध ज्ञान रहता है और रहना चाहिए परन्तु जब मनुष्य ऐसे काम करने लगता है जो काम, क्रोध लोभ और मोह से उत्पन्न होते हैं और जो तमोगुण की वृद्धि का फल कहलाते हैं तो वे कर्म हृदयस्थ शुद्ध ज्ञान रूपी प्रकाश को आवरण (परदा) होकर ढक लेते हैं। अब यह ढका हुआ प्रकाश किस प्रकार उभरे अथवा हृदय पर पड़ा हुआ और तम का परदा किस प्रकार उठ ? इसका साधन प्राणायाम का अभ्यास है। प्राणायाम के अभ्यास ही से उत्तरोत्तर अज्ञान तम का नाश और ज्ञान का प्रकाश बढ़ता जाता है 2 और जिस प्रकार अग्नि मे तपाने से स्वर्णादि धातुओ के मल नष्ट हो जाते हैं। 3 वैसे ही प्राणायाम से इन्द्रियो के दोष नष्ट हो जाते हैं।

## एक दूसरा फल

प्राणायाम का एक दूसरा फल यह होता है कि इस अभ्यास से मनुष्य मे धारणा (चित्त को एकाग्र करने) की योग्यता होती है। चित्त के एकाग्र होने से एक विद्यार्थी अपना पाठ सुगमता से समझ और याद कर सकता है।

एक वैज्ञानिक सूक्ष्म से सूक्ष्मतम तत्वो की परीक्षा करने मे समर्थ हो सकता है एक दार्शनिक परीक्षा के विषयो में प्रविष्ट होकर अध्यात्म जगत मे हीरा लगा सकता है। एक साधारण कारोबारी आदमी अपने उद्यम के छिपे से छिपे पहलुओं की जानकारी प्राप्त कर सकता है निदान यह लोक और परलोक सभी चित्त की एकाग्रता प्राणायाम के अभ्यास ही से प्राप्त की जाती है।

प्राणायाम के अनेक फल और अनेक लाभ हैं परन्तु उन सबको यदि मूल रूप मे कहा जाए तो उनका कथन उपयुक्त दो ही फलो के रूप मे होगा। अब हम प्रतिज्ञानुसार उस विधि का वर्णन करते हैं जिससे नए सीखने वालो को प्राणायाम का अभ्यास करना चाहिए।

प्राणायाम अनेक प्रकार से अनेक कार्यों की सिद्धि के लिए किए जाते हैं। यह बात पहले कही जा चुकी है।4 इस अध्याय में हम प्राणायामो मे से केवल उन्हीं प्राणायामों के अभ्यास की रीति बतलाएंगे जो आम तौर से सभी के लिए उपयोगी हो। ऐसे प्राणायामों की बात न कहेंगे जो योग के साधन की दृष्टि से ऊंची अवस्था प्राप्त कर लेने पर ही किए जाते है।

## पहला प्राणायाम

पद्मासन या किसी आसन से जिससे सुखपूर्वक उस समय तक (बिना आसन बदले) बैठ सको जितनी देर क्रिया करनी इष्ट है बैठ जाओ। इस प्रकार कि छाती गला और मस्तिष्क तीनो एक सीध में रहें और धीरे 2 नाक की राह से श्वास बाहर निकालो। (रेचक)।

1 और उसे बाहर ही रोक दो (बाह्यकुम्भक)।

2 जब अधिक देर बिना श्वास लिए न रह सको तो धीरे धीरे पूरक (श्वास भीतर खींचो) और अब श्वास को भीतर रोक दो (आभ्यन्तर कुम्भक)।

3 जब और अधिक समय 'कुम्भक (भीतर श्वास रोके रखना) न कर सको तो धीरे धीरे रेचक करो।

4 इसी प्रकार अनेक बार अभ्यास करो और प्रत्येक क्रिया के साथ सात सात महा व्याहृतियो (प्राणायाम मन्त्र) का मानसिक जप करते रहो। जिह्वा से काम लेने की जरूरत नहीं।

## फफड़ के समस्त कोषो मे वायु भरना दूसरा प्राणायाम

शान्ति से पद्मासन अथवा किसी आसन से जिसमे तुम सुखपूर्वक अन्त तक बैठ सको बैठ जाओ और नथनो से धीरे धीरे श्वास के द्वारा शुद्ध वायु भीतर की ओर खींचने लगो। पहले फफड़ के नीचे के भाग को भरो और प्रबल इच्छा रखो कि फफड़ का अधोभाग वायु से भर रहा है। इससे कुछ पेट फूलेगा। इसके बाद उसी श्वास से फफड़ के मध्य भाग मे वायु पहुंचाओ। इस क्रिया से तथा आगे की समस्त क्रियाओ के साथ इच्छाशक्ति को जोड़ते जाओ। इस क्रिया से पेट कुछ पिचकेगा और ऊपर छाती कुछ उभरेगी इसके बाद श्वास के तीसरे और अन्तिम भाग से फफड़ के ऊपरी भाग को भरो। इस क्रिया के प्रारम्भ करने से पहले कन्धो को कुछ ऊपर उठा लो। तीन क्रियाओं से पूरक पूरा होता है। इसके पूरा होने में लगभग आधा मिनट खर्च होता है।

2 इसके बाद कुम्भक करो। एक मिनट से कुछ अधिक अथवा कम से कम एक मिनट वायु को भीतर रोको। इसके साथ इच्छा यह होनी कि फेफड़े के समस्त कोष वायु से भर रहे हैं।

3 फिर रेचक करके वायु को बाहर निकालो।

## तीसरा सुखद प्राणायाम

प्राणायाम करने से थकान पैदा होती है उसे दूर करने के लिए। इसीलिए इस का नाम सुखद है।

1 प्राणायाम सख्या दो की भांति पूरक करो—

2, इसी प्रकार इच्छा शक्ति को जोड़ते हुए कुम्भक करो—

3 रेचक मुह से करो। मुह की स्थिति ऐसी करो जैसे सीटी बजाते हुए होती है और वेग से अधिक बाहर मे थोड़ा-थोड़ा श्वास बाहर फैंको। एक बार फैंकने के बाद कुछ रुक जाओ। इसी प्रकार कुछ रुक रुककर प्रत्येक बार बल पूर्वक श्वासों को बाहर फैंको।

## फेफड़ो के सिवा पेट और आंत को भी हवा से भरना चौथा प्राणायाम

1 बाया पैर दाहिनी जांघ पर रखो गर्दन और पीठ को सीधा खड़ा रखो। हथेलियो को घुटनो पर रखकर मुह बन्द कर लो।

2 दोनो नथनो से धीरे धीरे परन्तु शीघ्रता से पूरक करो और बिना कुम्भक किए ही रेचक करो

3 यह अभ्यास निरन्तर किए जाओ जब तक थक न जाओ अथवा पसीना न आने लगे।

4 अभ्यास करते समय दृष्टि नासिका के अग्र भाग पर रखो।

5 थक जाने पर दाहिने नथने से पूरक करके कुम्भक करो और फफड़ों को खूब वायु से भर लो। इसके बाद बाए नथुने से रेचक करके अभ्यास समाप्त कर दो। नोट—1 से 4 तक।

## समस्त शरीर को स्वस्थ रखने के लिए पाचवा प्राणायाम

1 बाई जंघा पर दाहिना पैर और दाहिनी जघा पर बायां पैर रखो और दाहिने हाथ से पीठ की ओर से दाहिने पैर के अंगूठे को और इसी प्रकार बाए हाथ से पैर के अगूठे को पकड़ो। यदि शरीर लचकीला और हलका न होने से अगूठे को हाथ से न पकड़ सको तो उन अगूठों की ओर अधिक से अधिक दूर जितना तुम्हारा हाथ जा सके ले जाओ और शरीर खूब अकड़ा और तना हुआ रखो।

2 प्राणायाम सं (1) की भांति पूरक कुम्भक और रेचक करो।

3 इतना अभ्यास करो कि शरीर के रोंगटे अच्छी तरह खड़े मालूम होने लगें।

(क्रमश)

---

1 ततः क्षीयते प्रकाशावरणम् ॥ (योग 2।52 अर्थात् उस (प्राणायाम साधन) से प्रकाश का आवरण क्षीण हो जाता है।

2 योगाङ्गानुष्ठानादशुद्धिक्षये ज्ञानदीप्तिराविवेकख्यातेः (योग 2।28) अर्थात् योग के आठ अंगों के अनुष्ठान से अशुद्धि के क्षय होने पर विवेक ख्याति (तत्वज्ञान) पर्यन्त ज्ञान का प्रकाश होता है।

3 यह्यन्ते ध्मायमानानां धातूनां हि यथा मलाः। तथेन्द्रियाणां दह्यन्ते दोषाः प्राणस्य निग्रहात्। (मनु 6।71) अर्थात् जैसे अग्नि मे तपाने से (सुवर्णादि) धातुओं का मल नष्ट हो जाता है उसी प्रकार प्राणायाम के अभ्यास से इन्द्रियो के दोष दूर हो जाते हैं।

4 किंच धारणासु च योग्यता मनसः (योग 2।53)

अर्थात् और प्राणायामों से (धारणा) चित्त की एकाग्रता मे मन की योग्यता होती है।

नोट—1 इस प्राणायाम मे रेचक पूरक और कुम्भक अर्थात प्राणायाम की प्रत्येक क्रिया करने का अभ्यास होता है। जिनसे आगे के प्राणायामों के करने की शक्ति मनुष्य मे आती है। इस प्राणायाम का अभ्यास इतना बढ़ाना चाहिए कि श्वास दो मिनट तक भीतर रुक सके। अधिक सामर्थ्य बढ़ाने से अधिक लाभ है परन्तु एक बात है जिसे ध्यान में रखना चाहिए कि श्वास दो मिनट तक भीतर रुक सके रोक चित्त परतन्त्र नही करना चाहिए अभ्यास से उत्तरोत्तर बाहर और भीतर दोनो ओर श्वास रोकने की अवधि स्वयमेव बढ़ती है।

नोट—2 अभ्यास काल में कई प्राणायाम एक साथ करने होंगे परन्तु लगातार नहीं किए जा सकते। एक प्राणायाम के बाद दो चार श्वास लेकर तब दूसरा इस प्रकार तीसरा और चौथा आदि करना चाहिए।

नोट 3 कोई और किसी प्रकार के प्राणायाम का अभ्यास करो। अन्त मे 'सुखद प्राणायाम को अवश्य कर लो। इससे आराम मिलता है और थकान दूर हो जाता है।

नोट—4 यह बात याद रखनी चाहिए कि जीवन तब तक नहीं पनपता जब तक उसका प्रत्येक कण आक्सीजन (ओषजन) के भीतर न घुस जावे। इसलिए आमाशय और आंतों में भी पर्याप्त मात्रा में वायु पहुंचना चाहिए।

# स्वयं आर्य बनों और दूसरों को बनाओ

लेखिका—आर्या मीरावति जी (आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर)

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् वेद माता का प्रत्येक मानव को यह आदेश है कि हे मेरे प्यारे पुत्र जहां तुम और काम करते हो वहां पर मेरी आज्ञा मानो वह यह कि सारे संसार का आर्य बनाने का काम करो। माता यह नहीं कहती कि तुम सारा दिन शारीरिक काम करते रहो या दिन रात्रि धनोपार्जन में लगे रहो। वह यह नहीं कहती कि तुम ताश खेलने या सिनेमा इत्यादि देखने मे लगे रहो। वेद की यह सूक्ति तो यही कह रही है कि तुम कुछ करो वह क्या करो धर्म का काम करो। संसार में जो अभाव तत्व बढ रहे हैं उनको मिटाने का प्रयास करो। जो लोग पाप कर रहे हैं उन्हे सन्मार्ग की ओर लगाओ। तुम ऐसा न करो कि केवल माला लेकर बैठ राम राम या ओम् ओम् का जप करते रहो और मनमें यह सोचो कि हमें क्या हमें तो केवल भगवान का भजन करना है दुनिया चाहे भाड़ में पड़ यह जो आपकी धारणा है यह अवैदिक है यह अच्छी नही है।

देखो कोई अन्धा मार्ग मे जा रहा हो और उसके आगे गढा हो। अब उसे तो दिखाई नहीं दे रहा वह चलता जा रहा है वह गढ मे गिर गया उसके चोट लगीं आप बैठ बैठ देख रहे हैं आपको यह भी ज्ञात था कि यह अन्धा है आपने सोचा कि हमे क्या गिरता है तो गिर जावे हमे क्या लेना है हमारा कौन सा रिश्तेदार है। परन्तु शास्त्र कहता है कि उस अन्ध को कष्ट हुआ उस पाप के भागीदार आप हैं।

इसी तरह से आपके आस पड़ोस मे या गली मुहल्ले मे रहने वाले लोग कुकर्म कर रहे हैं भाग लो चोर हैं जुआरी हैं मांसाहारी हैं झूठ कपट अथवा धोके से धन कमा रहे हैं तो आपने उनके समीप बैठकर कभी समझाने का प्रयास नहीं किया। उन्हें मार्ग निर्देश नही किया। पाप करने से रोका नही उन को यह बताया नही कि पाप क्या है पुण्य क्या है। पाप का फल कैसे कैसे मिलता है तो आप भी पाप के भागीदार बनेंगे। आप वेद शास्त्र पढे हुए हैं आप उन्हे क्यों नहीं समझाते कि झूठ बोलना पाप है चोरी करना बहुत बुरा काम है मांस भक्ष नहीं खाने चाहिये जीव हत्या करने से घोर पाप मिलता है इत्यादि-इत्यादि तो आप जब ही उन्हें प्यार से समझायेंगे तो उन में से कई ऐसे लोग होंगे जो आपकी बात को मान जायेंगे तब आप प्रफुल्लित तो होंगे ही फिर आप कहेंगे मैंने वेद की इस उत्तम सूक्ति का पालन किया है।

कृण्वन्तोविश्वमार्यम

मैंने विश्व के कुछ प्राणियो का सुधार किया है इसी प्रकार से आगे भी करता जाऊंगा। महर्षि दयानन्द ने आर्य की परिभाषा अपने लिखे कई ग्रन्थो मे की है। सत्यार्थ प्रकाश के स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश में महाराज जी लिखते हैं कि आर्य श्रेष्ठ और दस्यु दुष्ट मनुष्य को मानता हूं।

इस लिए पहले हम स्वयं आर्य बन फिर ही दूसरो को बना सकेंगे। जब तक हम श्रेष्ठ स्वभाव वाले नही बनते तब तक दूसरो पर हमारे कहने का प्रभाव नही पडता। स्वामी दयानन्द जी महाराज का लोगो पर क्यो इतना प्रभाव पडा क्योंकि उनका अपना जीवन बहुत ऊंचा था कौन सा ऐसा गुण है जो उनके भीतर नही था वह ममता की साक्षात मूर्ति थे। आर्याभिविनय के दोनों भागो के अन्त मे यह लिखते हैं।

श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्याणा महाविदुषां श्रीयुत विरजानन्द सरस्वती स्वामिनां शिष्येण दयानन्द सरस्वती स्वामिना विरचित आर्याभिविनये प्रथम प्रकाश सम्पूर्ण

इसी प्रकार संस्कार विधि सत्यार्थ प्रकाश के अन्त मे महर्षि देखो अपने को बड़ा न बताकर अपने गुरु जी को महत्व देते हैं। इन सब बातो से महर्षि जी की ममता का कितना परिचय मिलता है। इन ही गुणो के कारण वह महान बने। यह तो मैंने उनका केवल एक ही गुण लिखा उनमे तो ऐसे ऐसे अनेको ही गुण थे। शैव कितना था सारा जीवन संघर्ष में रहा और वह जूझते जूझते अन्त तक अपने जीवन रत्न को मंजिल पर ले गए। उन्होंने न मान की चिन्ता की और न ही अपमान की परवाह की परन्तु चलते रहे। एक दिन ऐसा आ गया कि उनको प्रत्येक क्षत्र मे सफलता प्राप्त हो गई। वह जो कुछ भी अपने जीवन मे चाहते थे जो जो भी सुधार करने की उनकी आकांक्षा थी वह उनके देखते देखते ही पूरी हो गई। लोग उनके विचारो को सुनकर ही दंग रह जाते थे। महाराज जी वह दीपक बनें उनका जीवन स्वयं भी प्रकाशित हुआ और सारे विश्व को भी प्रकाश देकर चले गये। उनके जीवन से एक नहीं अनेको लोगों ने प्रेरणा प्राप्त की।

महर्षि दयानन्द जब कलकत्ता गये तो परमहंस राम कृष्ण से भी उनकी भेंट हुई थी तब स्वामी विवेकानन्द अभी वीरेन्द्र ही थ 'लाईट आफ राम कृष्ण पुस्तक के लेखक के अनुसार उस समय दयानन्द के तेजस्वी मुख को देखकर वीरेन्द्र ने महर्षि की तरह अखण्ड ब्रह्मचर्य व्रत धारण करने का संकल्प किया। यह था स्वामी विवेकानन्द जी पर महर्षि का प्रथम प्रभाव।

स्वामी विवेकानन्द जी ने भी महर्षि दयानन्द की तरह मन्त्र मन्त्र नहीं फूका। उन्होने महर्षि दयानन्द की तरह गायत्री मन्त्र को ही महत्ता दी। श्री सुरेन्द्र लिखते हैं। जिन्होने स्वामी विवेकानन्द जी की जीवनी लिखी है। कि उन्होंने अपने शिष्यों और गुरु शिष्यो को गायत्री के जप का आदेश दिया।

श्री सुरेन्द्र ने और भी लिखा कि जब स्वामी विवेकानन्दके रूप मे आ गे थे तो उन्होंने महात्मा हंसराज जी से कहा था कि मेरे सारे गुरु भाई परमहंस राम कृष्ण को अवतार बनाना चाहते हैं लेकिन मैं अकेला इसके खिलाफ हूं। इस तरह महर्षि दयानन्द की तरह स्वामी विवेकानन्द भी ईश्वर का अवतार नहीं मानते थे।

महर्षि दयानन्द चमत्कारो को केवल ढोंग समझते थे और प्राकृतिक नियमो के विरुद्ध कोई बात नही मानते थे। एक बार स्वामी विवेकानन्द से एक माता ने कहाकि मेरे बच्चे को दमा है उसे आप ठीक कर द। स्वामी विवेकानन्द ने सरलता से जवाब दिया कि मैं किसी चमत्कार पर विश्वास नही करता।

श्री सुरेन्द्र ने लिखा कि एक बार स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि उनकी इच्छा यह थी कि कम से कम उनका मठ तो एक ऐसा हो जिसमे किसी की मूर्ति न हो। वे कहा करते थ कि ईश्वर और सत्य ही मेरी एक मात्र मान्यता है बाकी जो कुछ है वह केवल कूड़ा करकट है एक जगह उन्होने समझौता वाद और लीपापोती की कड़ी निन्दा की थी।

महर्षि दयानन्द ने डंके की चोट कहाकि जो यह कहते हैं कि ईश्वर ही सब कुछ करता है और मनुष्य का कुछ बस नही नितान्त गलत है। मनुष्य कर्म करने मे स्वतन्त्र है इसी तरह विवेकानन्द ने भी पुरुषार्थ और परमार्थ का समय समय पर बड़ा उपदेश दिया।

इन सब प्रमाणो से सिद्ध होता है कि स्वामी विवेकानन्द पर महर्षि दयानन्द के विचारों की कितनी छाप पड़ी हुई थी।

यह तो मैंने केवल एक ही संन्यासी की जीवन की कुछ बातें लिखी हैं ऐसे ही अनेकों साधु, सन्त, विद्वान शास्त्रार्थ महारथी सैकड़ों नही असंख्य संख्या में पैदा हुये? वह क्यो इसका सहज ही उत्तर है कि महर्षि जी स्वयं असली अर्थों में आर्य थे।

आज कल हम लोग भी अपने आप को आर्य कहते हैं परन्तु जो गुण हमारे मे होने चाहिये उनको यदि हम अन्तर्मुख होकर देख तो ज्ञात होगा कि हम बहुत सी बातो मे अधूरे हैं यह ठीक है कि हम महर्षि दयानन्द तो नही बन सकते हैं परन्तु जो काम करने को हमे हमारे देव दयानन्द बता गये है उन मे से यथा शक्ति तो हमे करने ही चाहिये तभी हम —

कृण्वन्तो विश्वमार्यम

यह वाक्य वेद की सूक्ति कहने के अधिकारी बन सकते हैं। केवल बातो मे कुछ नही होता काम तो करने से ही हुआ करता है। यह भी आवश्यक नही कि सब लोग वानप्रस्थ और संन्यास ही लेकर काम करें। क्योंकि प्रत्येक गृहस्थ की अपनी अपनी परिस्थिति है परन्तु गृहस्थ के काम करते हुये दिन मे कुछ समय वैदिक धर्म के प्रचार मे अवश्य लगायें प्रतिदिन प्रात काल उठकर आर्य समाज मे यज्ञ मे सम्मिलित हो जायें इसके साथ साथ दूसरे प्रचार यज्ञ भी करें। यदि दुकान का काम हो तब यदि दफ्तर मे जाना हो प्रत्यक व्यक्ति अपने पास आर्य समाज का साहित्य अवश्य रखें। वह प्रेम से पढने वाले लोगो को देव। जहां बाग मे भ्रमण करने प्रात काल या सायं काल जाय उन लोगो से आर्य सिद्धान्तो की चर्चा कर देखो थोड़ा थोड़ा करने से कितना आर्य समाज का काम हो सकता है।

दूसर जो लोग वानप्रस्थ मे दीक्षित हो चुके है। उनका यह काम नही कि वह आश्रम मे आकर बैठ जाय दोनो समय सत्संग सुन लिया और कुटी मे जाकर भोजन बनाया खाया विश्राम किया या फिर आस पडोस मे दो सखा मित्र बना लिये उन से कितनी कितनी देर बैठे गप्पे मारते रहे आज एक कुटी मे सबकी चाय है तो कल भोजन मे सबने बैठ कर दो घटा खराब कर दिया। यह कीमती समय इन बातो के लिये नहीं है यह तो काम गृहस्थी लोगो का है। इस आश्रम मे प्रत्येक सदस्य को चाहे महिला हो या पुरुष उन्हे यह सोचना चाहिये कि हम दीक्षित हो चुके हैं हमे अब क्या करना चाहिए। हमारे जो आस पास आश्रम मे और गृहस्थ लोग रहते हैं उनको मिल कर उनसे सम्पर्क करें उनके जो छोटे 2 बच्चे हैं उन्हे गायत्री मन्त्र का जप सिखा दें, ईश्वर एक है वह अवतार नही लेता उसकी कोई मूर्ति नही है वह शरीर धारण नही करता। अब हम अपनी मीठी 2 वाणी से उनकी चर्चा करेंगे तो अवश्य ही हम उनको आर्य बना सकेंगे।

(शेष पृष्ठ 8 पर)

# आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामन्त्री श्री रामचन्द्र जावेद का देहावसान

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामन्त्री श्री रामचन्द्र जी जावेद कुछ दिनों से बीमार चले आ रहे थे। आज 12 जुलाई 1984 को उनका अस्पताल में देहावसान हो गया। यह सूचना पाते ही सभा के सभी कार्यालय बन्द कर दिए गए।

श्री रामचन्द्र जी जावेद के चले जाने से सभा कार्यालय के कर्मचारियों को महान शोक हुआ।

## आर्यसमाज मण्डी बाग खजांचियां लुधियाना की ओर से रोष प्रस्ताव

24 6 84 को साप्ताहिक सत्संगोपरान्त हमारी समाज की विशेष बैठक में निम्नलिखित प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया गया—

प्रस्ताव—आर्य समाज मण्डी बाग खजांचियां में आयोजित यह विशाल सभा श्रीनगर में 6 और 7 जून की मध्य रात्रि को आतंकवादियों द्वारा प्राचीन आर्य समाज मन्दिर तथा समीपस्थ आर्य कन्या पाठशाला को आग लगा भस्म कर देने के कृत्य की घोर निन्दा करती है, और भारत सरकार तथा जम्मू कश्मीर सरकार से अनुरोध करती है कि इस क्षति की पूर्ति की जावे और आर्य समाज हजूरी बाग को इसका मुआवजा दिलाया जावे। इस सारी घटना की पूर्ण रूप से जांच करवाई जावे और दोषी पाए जाने वाले शरारती तत्वों को दण्ड दिया जाए।

—राजेश कुमार भारद्वाज मन्त्री

## आर्यसमाज भठिण्डा की ओर से रोष प्रस्ताव

आर्य समाज भठिण्डा का यह साप्ताहिक सत्संग श्रीनगर हजूरी बाग स्थित आर्य समाज मन्दिर एवं आर्य पुत्री पाठशाला को आतंकवादियों द्वारा इनके विशाल भवनों को आग लगाए जाने पर भारी रोष प्रकट करता है। क्षति का अनुमान लाखों में लगाया जाता है। जम्मू कश्मीर का आर्य समाज किसी प्रकार की राजनीति में भाग नहीं लेता फिर भी कुछ शरारती तत्वों ने आर्य समाज मन्दिर व उसके स्कूल को जला कर राख कर दिया। अतः यह समाज कश्मीर सरकार से मांग करता है कि हानि की क्षति पूर्ति अविलम्ब की जावे सारी घटना की जांच करवाई जावे। जो लोग इसके लिए उत्तरदायी हैं उनको दण्ड दिया जावे।

—बलीरचन्द

## आर्यसमाज फगवाड़ा का रोष प्रस्ताव

आर्य समाज गौशाला रोड फगवाड़ा के सभी सदस्यों को यह जानकर अत्यन्त दुःख और क्षोभ हुआ कि आतंकवादियों ने 6 और 7 जून की मध्य रात्रि को श्रीनगर में हजूरी बाग के आर्य समाज मन्दिर तथा साथ में लड़कियों के स्कूल में आग लगाकर लाखों रुपयों की सम्पत्ति नष्ट कर दी है। आर्य समाज फगवाड़ा के सदस्यों की 24 जून 1984 की विशेष बैठक में प्रस्तुत सर्वसम्मति से प्रस्ताव पास करके मांग की गई है कि आर्य समाज हजूरी बाग तथा लड़कियों के स्कूल को जो क्षति हुई है उसका मुआवजा दिलाया जाए और इस सारी घटना की जांच कराई जाए और जो लोग इसके लिए उत्तरदायी हैं उन्हें दण्ड दिया जाए।

=म हरिराम चोपड़ा



(2 पृष्ठ का शेष)

### स्वतन्त्र भारत में तीन सत्याग्रह नन्दलाल भी शामिल

यह देश के दुर्भाग्य से कांग्रेस की पक्षपातपूर्ण नीतियों के विरुद्ध स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भी अपनी ही सरकार के बाद भी अपनी ही सरकार के विरुद्ध सिखों को पंजाबी सूबा बनाने हिन्दी की सर्वथा उपेक्षा कर पंजाबी को ही प्रदेश शिक्षा का माध्यम और सरकारी भाषा बनाने के विरोध में हिन्दी सत्याग्रह करना पड़ा जिसमें पुलिस ने हिन्दुओं पर जमकर अत्याचार किए। पं नन्दलाल इसमें पूर्ण रूप से शामिल हुए। और महाशय कृष्ण और उनके सुपुत्र श्री वीरेन्द्र दोनों ने भी जेल यात्रा की। इसके बाद अखिल भारतीय गोरक्षा सत्याग्रह सन्त विनोबाजी के नेतृत्व में हुए इसमें लाखों नर-नारियों का विशाल जलूस और संसद भवन के बाहर भारी प्रदर्शन हुआ। इसमें आर्य समाज भी शामिल हुआ। संसद भवन के बाहर प्रदर्शनकारियों पर गोली चलाई, कुछ व्यक्ति हताहत भी हुए। प नन्दलाल जी करोल बाग क्षेत्र से इसमें शामिल हुए। गिरफ्तार हो तिहाड़ जेल में रखे गए। कांग्रेस राज में तीसरा सत्याग्रह सिखों के पंजाबी सूबा बनाने के विरोध में हिन्दी भाषी हरियाणा प्रान्त बनाना था। जिसकी राजधानी चण्डीगढ़ भी जो पंजाब की राजधानी भी है। प नन्दलाल ने इसमें भी उत्साह से भाग लिया। अन्य कई आर्य नेताओं के साथ हरियाणा प्रदेश तो पृथक बन गया पर इसकी कुछ समस्याओं का समाधान सिखों की हठधर्मिता से अभी तक नहीं हो सका है।

### उपदेशक कवि संगीतकार भजन पुस्तक रचयिता

आर्य समाज क्षेत्र में सफल उपदेशक होने के अतिरिक्त पण्डित जी सफल कवि और संगीतकार भी थे आपकी आर्य सिद्धान्तों पर आधारित और प्रकाशित भजन पुस्तकें भारत और भारत से बाहर दक्षिण पूर्व एशिया पश्चिम एशिया मारीशस फीजी टापू सहित मध्य अमेरिका के ट्रीनीडाड सुरीनाम, मैक्सिको अफ्रीका के विभिन्न देशों में रहने बसे लाखों धर्म प्रेमी भारतीयों में आशातीत लाभदायक और सफल हुईं।

### आर्य सामाजिक प्रकाशन—विदेश यात्रा

इसका एक लाभ यह भी हुआ है वानप्रस्थी जी को दक्षिण पूर्व एशिया से प्रचार के लिए निमन्त्रण आए। वहाँ की का विशेष ज्ञान न होते हुए भी आपकी यह यात्राएं सफल हुईं। इसके बाद उत्तर पश्चिम प्रदेशों की ओर नेपाल की भी यात्रा की। इन यात्राओं का आनन्दप्रद विवरण आपने भारत के पड़ौसी देश और समुद्र पार देशों में—इन दो पुस्तकों में किया। साथ ही आपने अपने और अन्य कवियों के गीतों का संग्रह गीत सागर तथा 3 4 अन्य पुस्तकों द्वारा प्रकाशित किया। आर्य समाज के प्रचार में आपके यह प्रकाशन पर्याप्त लाभदायक सिद्ध हुए हैं।

### करतारपुर में दण्डी विरजानन्द स्मारक

1965 में आर्य विद्वानों द्वारा विधिवत अनुष्ठित यजुर्वेद के पूर्ण यज्ञ के पश्चात नन्दलाल जी वानप्रस्थाश्रम में प्रविष्ट हुए। इसके बाद आपने शेष जीवन करतारपुर (जालन्धर) में जो दण्डी प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द जी महर्षि दयानन्द के गुरु की जन्म भूमि है—वहाँ उन का स्मारक संस्कृत महाविद्यालय आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के सहयोग से स्थापित करने में अर्पित कर दिया। यह संस्था अब सुचारु रूप से चल रही है।

### पत्नी पुत्र वियोग बुढ़ापे में

वृद्धावस्था में वानप्रस्थी को पत्नी वियोग सहना पड़ा। कुछ वर्ष बाद आप को सर्वाधिक दारुण वियोग अपने एक मात्र पुत्र दृढ़ और उत्साही आर्य श्री यशपाल तोमर एग्जेक्टिव इन्जीनियर नंगल भाखड़ा डैम का लगभग 50 वर्ष की आयु में ज्वर रोग से देहावसान हो गया वानप्रस्थी जी उस समय ज्वालापुर वानप्रस्थाश्रम में थे। यशपाल जी के रुग्ण होने का समाचार भेजा गया था और पण्डित जी वहाँ से तत्काल नंगल भाखड़ा पहुंचने के लिए तैयार भी हो गए पर 13 अप्रैल बैसाखी के मेले की भीड़ के हेतु इस वृद्ध को रेलगाड़ी ठीक समय पर न मिल सकी आप जब नंगल पहुंचे तब इकलौते पुत्र का दाह कर्म हो चुका था।

### नन्दलाल जी का देहावसान

अपने इस होनहार पुत्र के वियोग से वानप्रस्थी प नन्दलाल जी की कमर टूट गई और 13 जुलाई 1980 को वह दिवंगत हो गए आज की पीढ़ी इस एक निष्ठ और आर्य समाज के प्रति आजन्म अर्पित त्याग और सेवा की मूर्ति के रूप में इन्हें सदा स्मरण और इसका अनुकरण करेगी। ऐसी हमारी आशा है।

## गुरुकुल वृन्दावन में प्रवेश

जुलाई 84 से प्रारम्भ बी ए स्तर की निःशुल्क शिक्षा सादा भोजन नियमित दिनचर्या, उत्तम देख भाल के लिए प्रारम्भिक भोजन शुल्क 85 रुपये। 6 से 10 वर्ष के बालकों का प्रवेश गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन में दिलावें।

— योगेन्द्रसिंह स्नातक
एडवोकेट, मुजफ्फरनगर

# वेदों का जग में गान करो

ले—कवि श्री बनवारीलाल 'शादा' वैद्य दिल्ली

प्रातः समय नित उठ करके
तुम ईश्वर का गुण गान करो।
जिस प्रभु ने सौंपा मानवता का
तुम धर्म कर्म और दान करो।

संगत करो सत-पुरुषों की तुम
स्वाध्याय करो नित वेदों का
खोटे कर्मों भावों से बच
वेदों का जग में गान करो

आहार शुद्ध हो हो विचार शुद्ध
मद्य-मांस तम्बाकू छोड़ो तुम
नेक बनो डरो तुम पापों से
उत्तम कार्यों का ध्यान करो

कर्मों का फल मिलता अवश्य
जो कर्म करता है नेको बद
यदि जीवन सुखी बनाना है।
वेदों का अमृत पान करो।

दीन दुखियों की सेवा करना
प्राणी मात्र का धर्म है जो
भारत की मिट्टी से पनपा
सेवक वानी विद्वान करो।

प्रभु मात पिता है बन्धु सखा
सृष्टिकर्ता दुख हरता है
शादा जीवन सफल होगा
वेदों का जग मे गान करो।

## विदेशी आर्थिक सहायता पर पाबन्दियां

यह हर्ष का विषय है कि केन्द्र ने भारत देश की अनेक संस्थाओं को विदेशों से प्राप्त होने वाली राशियों पर कड़ी पाबन्दियां लगाने का निश्चय किया है। इस निश्चय के अनुसार ऐसे प्रबन्धक बोर्ड स्थापित किए जाएंगे जो इस बात पर निगाह रखेंगे कि शिक्षा समाज सेवा चिकित्सा आदि से सम्बन्धित कार्यक्रमों के लिए प्राप्त धन राशि का उपयोग उसी मद के लिए व्यय किया जा रहा है या नहीं जिसके लिए संस्था ने यह धन राशि प्राप्त की थी और उसका धर्मान्तरण जैसे कार्यों के लिए दुरुपयोग तो नहीं हो रहा है। इन प्रबन्धक बोर्डों में भी सरकारी प्रतिनिधि भी रहेंगे।

यह आशा की जाती है कि इन पाबन्दियों की विधिवत व्यवस्था के बाद ईसाई तथा मुस्लिम संस्थाओं को विदेशों से प्राप्त धन राशि का दुरुपयोग धर्मान्तरण जैसे अवांछ्य कार्यों के लिए करने का कोई भी अवसर नहीं मिलेगा और वे इस धन राशि का सदुपयोग रचनात्मक कार्यों के लिए ही करेंगे। कारण इन पाबन्दियों को सख्ती से लागू करने के बाद वे संस्थाएं इन राशियों का उपयोग शिक्षा चिकित्सा तथा अन्य सामाजिक सेवाओं के लिए ही करने को बाध्य हो जाएंगी।

सरकार की ताजा सूचनाओं के अनुसार इस समय 4000 के करीब संस्थाएं प्रति वर्ष 2000 करोड़ रुपयों के बराबर की धन राशि विदेशों से प्राप्त कर रही है इनमें सिख विद्यार्थी संघ अकाली एक्शन कमेटी तबलीग जमात अखिल भारतीय मजलिसे मुशावरात शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी जम्मू कश्मीर जमाते तुलबा मुस्लिम वोकाफ ट्रस्ट आदि का समावेश है। लेकिन इन संस्थाओं के अलावा भी अनेक ऐसी छोटी छोटी संस्थाएं हैं जिनका पता सरकार को नहीं है व अनेक बहानों से विदेशों से पर्याप्त धन राशि प्राप्त करती है। आशा है इस निश्चय के बाद द फारेन कन्ट्रीब्यूशन्स एक्ट में जो संशोधन होगा उनसे इन संस्थाओं की मनमानी करने की आजादी समाप्त हो जाएगी ये संस्थाएं यूरोपीय देश और मध्य पूर्व के अरब देशों से चोरी छिपे धन प्राप्त करती आ रही हैं और इस धन का उपयोग ईसाई धर्म तथा इस्लाम के प्रचार और धर्मान्तरण के कार्यक्रमों के लिए करती है। नवगठित प्रबन्धक बोर्डों के आ जाने के बाद विदेशी धनराशियों से लाभान्वित होने वाली सभी संस्थाओं की गतिविधियों पर नजर रखी जाएगी और उनके धर्मान्तरण जैसे घिनौने कृत्यों पर अंकुश लग सकेगा ऐसी पूरी आशा है।

(भारत कल्याण केन्द्र की ओर से)

## आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार लुधियाना का चुनाव

आर्य समाज साबुन बाजार (श्रद्धानन्द बाजार) लुधियाना का वार्षिक निर्वाचन 13 5 84 को सर्वसम्मति से सम्पन्न हुआ और डा रामस्वरूपजी निर्विरोध प्रधान चुने गए और उन्हे पूर्ण अधिकार दिए गए कि वह 1984 8 के लिए अधिकारी एवं अन्तरंग सदस्य घोषित करें। प्रधान जी ने निम्न कार्यकारिणी और अधिकारी वर्ग का चयन किया है—

प्रधान श्री रामस्वरूप वरिष्ठ उपप्रधान—डा एस बी बाधिया श्री सत्यपाल आनन्द प्रिं ओ पी टण्डन मन्त्री—श्री यशपाल बाधिया उपमन्त्री श्री धर्मपाल वकील श्री धनपतराय जी कोषाध्यक्ष—श्री जगदीश आर्य सहायक मा रामप्रकाश भारद्वाज पुस्तकाध्यक्ष—श्री रामधन आर्य सहायक श्री देवशरण सनी भण्डार प्रबन्धक—मा ओम प्रकाश शर्मा सहायक—श्री विजय कुमार मधा

कार्यकारिणी सदस्य—श्री राजाराम जी वैद्य कुन्दन लाल जी श्री ओमप्रकाश शास्त्री श्री वैद्य कृष्ण लाल बाधिया डा हाकिमसिंह महेश प्रिं वेद प्रकाश महेन्द्र मास्टर नारायण दास भाटिया श्री नरेन्द्र कुमार शर्मा श्री हंसराज

—यशपाल बाधिया मन्त्री

## आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार लुधियाना का चुनाव

आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार लुधियाना के प्रधान श्री देसराज जी मेहता ने निम्नलिखित अधिकारी एवं अन्तरंग सदस्य मनोनीत किए—

वरिष्ठ उपप्रधान—श्री महेन्द्रपाल शर्मा उपप्रधान—श्री रामजीदास जी श्री अयोध्या प्रकाशजी मल्होत्रा श्री बलवन्त राय जी सूद श्री राम प्यारेलाल जी मन्त्री—श्री मतवालचन्द जी उपमन्त्री—श्री कुलदीप राय प्रचार मन्त्री—श्री मास्टर रामप्रसाद जी उपमन्त्री—श्री सन्तकुमार जी श्री बलदेवराज जी सेठी कोषाध्यक्ष—श्री ओम प्रकाश जी उपकोषाध्यक्ष—श्री महेशलाल शर्मा पुस्तकाध्यक्ष श्री अवण कुमार जी उपपुस्तकाध्यक्ष श्री सुरेन्द्र कुमार जी अध्यक्ष आर्य वीर दल श्री अमरनाथ महाजन

अन्तरंग सदस्य श्री देवराज जी बत्तरा श्री राजेन्द्र कुमार जी दीवान श्री रणवीर जी भाटिया श्री नरेन्द्रसिंह जी भल्ला श्री मगलसैन जी वधवा श्री शान्तिदास जी भण्डारी श्री चन्दूलालजी बजाज श्री डा हरे कृष्ण जी।

रामप्रसाद प्रचार मन्त्री

## आर्यसमाज नगल टाऊनशिप का वार्षिक निर्वाचन

आर्य समाज नगल टाऊनशिप का वार्षिक निर्वाचन दिनांक 24 6 84 को निम्न प्रकार हुआ जिसमें वर्ष 1984 85 के लिए निम्न पदाधिकारी सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए—

प्रधान—सर्वश्री सुरेन्द्रकुमार राणा जी उपप्रधान—श्री मुलखराज जी शर्मा श्री दशनानन्द जी शर्मा श्री सुरेन्द्रपाल जी खन्ना श्री हंसराज जी कपूरिया मन्त्री—श्री ओमप्रकाश जी मगलानी जी उपमन्त्री—श्री सत्यपाल जी भाटिया श्री अविनाशचन्द्र जी मेहता श्री मनमोहन मित्तल जी प्रचार मन्त्री—श्री इन्द्र कुमार जी शर्मा कोषाध्यक्ष—श्री हरिमित्र जी शास्त्री पुस्तकाध्यक्ष श्री पूनचन्द्र जी बड़वाल सह पुस्तकाध्यक्ष श्री विक्रम महाजन जी तथा निरीक्षक श्री सुरेन्द्र मोहन जी आर्य।

इन्द्रकुमार शर्मा

## आर्यसमाज महर्षि दयानन्द मार्ग राजकोट के पदाधिकारी

आर्य समाज महर्षि दयानन्द मार्ग राजकोट का वार्षिक निर्वाचन निम्न प्रकार हुआ

प्रधान—श्री पोपटलाल प्रागजी भाई चौहान उपप्रधान—श्री माधवजी प्रेम जी भाई आर्य मन्त्री—श्री रमेशचन्द्र देवजी भाई आर्य सहमन्त्री—श्री माधसिंह प्रागजी भाई कमलीय कोषाध्यक्ष श्री अमृतलाल पोपटलाल आर्य

सदस्य—श्री मोतीराम प्रभुदास आर्य श्री हरीलाल ठाकरजी भाई श्री वल्लभ भाई लाधा भाई हिराणी श्री लालजी भाई भर भाई आर्य श्री गिरधर लाल परसोतम मकवाणा श्री वसन्तलाल रहु दोमल आर्य।

—मन्त्री आर्य समाज

## शहीद सैनिको को श्रद्धांजलि

— गत दिनों अमृतसर मे कार्यवाही के अन्तर्गत शहीद होने वाले सैनिकों को आर्यसमाज मेन बाजार पठानकोट के साप्ताहिक सत्संग में श्रद्धांजलि अर्पण की गई तथा उनकी आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना की गई

— जम्मू कश्मीर मे विशेष तौर पर आर्य समाज हजूरी बाग श्रीनगर को आग लगाने की घटना का सुनकर सभी सदस्यों को गहरा आघात पहुंचा। इस घटना की घोर निन्दा की गई तथा रोष पत्र भारत सरकार के राष्ट्रपति तथा मुख्यमन्त्री जम्मू कश्मीर को भेजा गया।

गत दिनों एक बस पठानकोट आर्य समाज से कांगड़ा के शताब्दी समारोह मे सम्मिलित होने के लिए गई। इसमें लगभग आर्य समाज के साठ स्त्री पुरुष सदस्य थे। यात्रा का आनन्द अनूठा ही था। ऋषि का गुणगान करते हुए तथा जयघोषों से हिमालय की भूमि को गुञ्जायमान करते हुए आर्य भक्तों का

यह काफिला तीन बजे पठानकोट पहुंचा। इस यात्रा की भूरि भूरि याद आज भी सदस्यों के मन मे है।

—प्रो स्वतन्त्र कुमार मन्त्री

## गोगा मेड़ी (राजस्थान) में वैदिक साधु आश्रम की स्थापना

दिनांक 30 मार्च से 3 अप्रैल तक गोगामेड़ी (राजस्थान) मे यजुर्वेद पारायण यज्ञ के अन्तर्गत सर्वत्यागी सन्त स्वामी सर्वानन्द जी महाराज द्वारा वैदिक साधु आश्रम की आधारशिला सम्पन्न हुई। इस उपलक्ष पर वेदज्ञ संन्यासी स्वामी ओमानन्द जी महाराज तथा पूज्य स्वामी ईशानन्द जी महाराज ने भी अपना आशीर्वाद प्रदान किया। इस शुभावसर पर निश्चय किया गया कि दिनांक 11 अगस्त 1984 से 10 सितम्बर 1984 तक यजुर्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन किया जाये अत तदनुकूल महात्मा आनन्द मुनि वानप्रस्थ के संरक्षण एवं आयोजन मे वेद प्रचार समिति गोगा मेड़ी (राजस्थान) की व्यवस्था मे यह पुण्य कार्य सम्पन्न होगा।

(शेष पृष्ठ का शेष)

फिर देखो हमारे आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर के समीप ही हरिद्वार है जहां बड़े भी लोग घूमते रहते हैं यहां पर आकर अपना वैदिक साहित्य बांटना चाहिए फिर दो चार व्यक्ति प्रतिदिन मिलकर जाएं वहां अकेला सा बैठ करके कुछ प्रभु भक्ति के गीत गायें कुछ समय ज्ञान चर्चा कर। हमारी पचपरी मे आर्य समाज ही यहां पर जाया कर इस प्रकार से अनेक काम हो सकते हैं थोड़ा करने से कितना ही काम हो सकता है हम सब मिलकर और विश्व की बात न भी कर सकें तो थोड़ लोगों को तो पहले आर्य बना सकते हैं इससे बहुत लाभ हो सकता है।

इसके बाद सन्यासाश्रम मे जब कोई जाता है तो उसके ऊपर बहुत उत्तर दायित्व आ जाता है। मैं उन लोगो को सन्यासी नहीं समझती जो केवल भगवे वस्त्र रंगकर समाज की सेवा तो कुछ करते नहीं केवल खाने पीने और लोगो से धन मांगने के लिए वस्त्र रंग लेते हैं ऐसे लोग इस महान आश्रम को बदनाम कर रहे हैं। मुझ इन लोगो से अत्यन्त घृणा है क्योंकि मैं स्वयं कमजोर हू यद्यपि मेरा स्वास्थ्य अच्छा नही रहता

तो भी आश्रम मे रहकर लेखन कार्य करती हू मेरी लिखी पुस्तक 50 हजार के लगभग वितरण हो चुकी हैं। फिर मैं यात्रा के कष्ट सहनकर प्रचार करती हू

## आर्यसमाज मालेर-कोटला में पारित प्रस्ताव

आर्य समाज मालेरकोटला की 24 6 84 को हुई सभा श्रीनगर में आर्य समाज मन्दिर एवं कन्या विद्यालय को उपद्रवियों द्वारा पहुंचाई गई क्षति के विरुद्ध रोष प्रकट करती है। जम्मू कश्मीर सरकार से अनुरोध प्रकट करती है कि भविष्य में ऐसी दुर्घटनाओं को होने से रोके।

इस तरह के व्यवहार से स्थानीय सदस्यों में बहुत रोष है यदि इस प्रवृत्ति को न रोका गया तो इसके विरोध स्वरूप बुरे परिणाम हो सकते हैं। सरकार इन दंगों मे हुई आर्य समाज की क्षति की पूर्ति करे। यह भी मांग करती है।

—सत्यप्रकाश प्रधान



श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा [illegible] प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा [illegible] जालन्धर से इस की स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

सम्पादकीय

# आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के नए पदाधिकारी

22 जुलाई 84 को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का वार्षिक अधिवेशन जालन्धर में हुआ था। जिन परिस्थितियों मे यह चुनाव हुआ है वह किसी से छिपी हुई नहीं है। चार बार इससे पहले हमने चुनाव करने का निश्चय किया था परन्तु अन्तिम समय में कुछ न कुछ गड़बड़ हो जाती थी। कभी कर्फ्यू लग जाता था कभी कहीं कोई झगड़ा हो जाता था। इसलिए चुनाव न हो सका। परम पिता परमात्मा की कृपा से इस बार हम अपना चुनाव करने में सफल हो गए। परन्तु इस बात का खेद प्राय सबको था कि पहली बार श्री रामचन्द्र जी जावेद इस अधिवेशन में न थे। किसी भी सभा या संस्था का काम किसी एक व्यक्ति के कारण रुक नहीं सकता। वे चले गए और हम सबने एक दिन जाना है। आर्य समाज का काम फिर भी चलता रहेगा परन्तु हमें उसका एक ऐसा ढांचा बना देना चाहिए कि कोई व्यक्ति चला जाए संस्था अपना काम करती रहे।

परन्तु कुछ व्यक्ति ऐसे भी होते है जिनका स्थान किसी दूसरे के लिए लेना कठिन हो जाता है। श्री रामचन्द्र जी जावेद भी ऐसे ही व्यक्तियो मे से थे। सभा ने मुझे प्रधान निर्वाचित करके यह अधिकार दे दिया कि मैं बाकी अधिकारियो को भी मनोनीत कर दू। जब मैं इस पर विचार करने लगा तो सबसे बड़ी कठिनाई महामन्त्री को मनोनीत करने के लिए हुई। ऐसे कई व्यक्ति हैं जिन्हे मैं महामन्त्री मनोनीत कर सकता था, परन्तु कई प्रकार की और कठिनाईयां सामने आ जाती हैं और मेरा यह विचार था कि महामन्त्री वही होना चाहिए जो सबको साथ ले कर चल सके और जिसके विषय में किसी प्रकार का मतभेद न हो। सारी स्थिति पर विचार करने के पश्चात मैंने बहन श्रीमती कमला जी आर्या को सभा का महामन्त्री नियुक्त किया है। इसके कई कारण हैं। एक तो यह है कि उनके विषय मे किसी प्रकार का कोई विवाद नहीं है। दूसरा यह कि वे आर्य समाज के लिए समय देती हैं। कोई उत्सव या कोई ऐसा सम्मेलन नहीं जहा उन्हे बुलाया जाए और वे न जाए। उन्हें वैदिक सिद्धान्तों का भी पूरा ज्ञान है। और फिर वे कम काजी भी हैं। सम्भवा हवन आदि में वे हम सबसे आगे हैं। इसके अतिरिक्त मैं यह भी अनुभव कर रहा था कि अब वे समय आ गया है जब हम अपनी बहनो को भी आगे लाए। यह समझ लेना कि केवल पुरुष ही काम कर सकते हैं महिलाओ के साथ अन्याय करना है। वह समय व्यतीत हो चुका है जब यह कहा जाता था कि महिलाएं ये काम नहीं कर सकतीं। मैं दूसरो के विषय मे तो कुछ नहीं कह सकता परन्तु आर्य समाज के विषय मे जरूर कह सकता हू कि आय समाज में जब कभी महिलाओं पर कोई उत्तरदायित्व डाला गया है उन्होंने उसे पूरा किया है। इसलिए सारी परिस्थितियों को देख कर मैंने यह निश्चय किया कि बहन कमला आर्या जी को ही इस बार सभा का महामन्त्री बनाया जाए। मुझे इस बात की भी खुशी है कि इस निर्णय का प्राय सब भाईयों ने स्वागत किया है।

दूसरी बहन जिनके जिम्मे मैंने कुछ काम लगाया है वे हैं श्रीमती पुष्पा महाजन। वे सभा के साहित्य विभाग की अधिष्ठाता बनाई गई हैं। इससे पहले वे एक कालेज की प्रिंसीपल भी रही हैं और पंजाब के जाने माने साहित्यकारों मे से है। इसलिए मै समझता हू कि वे इस दिशा में आर्य समाज को आगे लाने का प्रयास करेंगी। इनके अतिरिक्त श्रीमती शान्ति जी नन्दा दानप्रस्थ श्रीमती कांता गौड़ श्रीमती इन्दुपुरी, श्रीमती सुशीला भक्त, श्रीमती विद्यावती जी और श्रीमती सुशीला आर्य इनको भी सभा के सदस्य या विशेष निमन्त्रित रूप में मनोनीत किया गया है। जिन्हें पंजाब से सार्वदेशिक सभा के लिए मनोनीत किया गया है उनमें श्रीमती विजय लक्ष्मी शर्मा जी भी है। इस प्रकार मैंने इस बार यह प्रयास किया है कि पहले से अधिक महिलाओ को अन्तरंग सभा मे लाया जाए।

इनके अतिरिक्त चार उप प्रधान बनाए गए हैं श्री योगेन्द्रपाल जी सेठ श्री पं. हरवंश लाल जी शर्मा श्री महाशय जगदीशराय जी अमृतसर और डा के के चड्ढा। कई बार यह प्रश्न किया जाता है कि मेरे बाद सभा का प्रधान कौन बनेगा। चुनाव के समय भी मैंने यह प्रार्थना की थी कि अब किसी और को प्रधान बनाया जाए परन्तु यह प्रार्थना स्वीकार नहीं की गई और यह ही कहा गया कि वर्तमान परिस्थितियों में मेरा प्रधान रहना ही उचित है। परन्तु जो चार महानु भाव मैंने उपप्रधान बनाए हैं। उन चारो मे से कोई भी कल को सभा का प्रधान बन सकता है। चारों इस योग्य हैं कि वे सभा को चला सके। इसलिए मैं यह भी चाहता हू कि आगामी एक दो वर्ष मे सक्रिय रूप से कुछ काम करें ताकि अगले चुनाव में कोई नया व्यक्ति सभा का प्रधान बन सके।

श्रीमती कमला आर्या के अतिरिक्त चार मन्त्री भी बनाए गए हैं, श्री आशानन्द जी आर्य श्री सरदारी लाल जी आर्यरत्न श्री अश्विनी कुमार जी शर्मा एडवोकेट और प्रो स्वतन्त्र कुमार जी ये चारो ही बहुत लग्न से काम कर सकते हैं और मुझे विश्वास है कि वे करेंगे। इनके काम बांट दिए जाएंगे और उसके बाद मैं समझता हू कि सभा तीव्र गति से प्रगति कर सकेगी।

इस बार सभा के कोषाध्यक्ष श्री ब्रह्मदत्त जी शर्मा को बनाया गया है। वह रेल विभाग मे अकाऊंटस आफिसर थे अब वहा से रिटायर हो गए हैं। अकाऊंटस को अच्छी तरह जानते हैं इसलिए वे सभा की वित्तीय स्थिति को सुधार सकेंगे। उन्हे आर्य समाज मे बड़ी श्रद्धा है स्वाध्याय भी करते हैं। कर्म काण्डी भी हैं। श्री ऋषिपाल सिंह जी एडवोकेट को वेद प्रचार अधिष्ठाता बनाया गया है। यदि किसी व्यक्ति को आर्य समाज का दीवाना कहा जा सकता है तो वे ऋषिपाल सिंह हैं। नवयुवक हैं उनमे उत्साह भी है लग्न भी है और काम करने की शक्ति भी है। इसलिए मैं समझता हू कि इस विभाग मे जो शिथिलता आ गई है उसे सुधारने का प्रयास करेंगे।

श्री रामचन्द्र जी जावेद के जाने के पश्चात हमारे पास कोई शिक्षा विशेषज्ञ नहीं रहा था। जो इस दिशा में हमारा मार्ग दर्शन कर सकता हो। मुझे हार्दिक प्रसन्नता है कि इसके लिए श्री धर्मप्रकाश जी दत्त मिल गए हैं वे भी शिक्षा क्षेत्र मे उतने ही पुराने हैं जितने कि श्री जावेद जी थे। इसलिए मैं समझता हू कि हमारा यह विभाग भी अब सुरक्षित हो गया है।

श्री जयपाल भाटिया जी का नवयुवको के साथ सम्बन्ध रहता है इसलिए उन्हे आर्य वीर दल का अधिष्ठाता बनाया गया है ताकि वे पंजाब मे आर्य वीर दल का संगठन कर सकें।

जिस आधार पर नये अधिकारी मनोनीत किए गये हैं वे मैंने आर्य जगत के सामने रख दिए हैं। मैं यह तो नहीं कह सकता कि मैंने जो चयन किया है वह बिल्कुल ही ठीक है हो सकता है कि कुछ ऐसे महानुभाव रह गए हों जिन्हे कुछ अधिकारी बनाना चाहिये था परन्तु सभा के संविधान के अनुसार मेरे हाथ बन्धे हुए हैं इसलिये मैं इससे अधिक कुछ नही कर सकता था। इस बार हमारा यह प्रयास रहेगा कि जो जो अधिकारी बनाये गए हैं उनके जिम्मे कुछ न कुछ काम जरूर लगा दिया जाये ताकि सब मिलकर सभा को चलाएं। इतनी बड़ी संस्था को चलाना केवल प्रधान का ही काम नही जब तक सब सहयोगी मिल कर काम न करें संस्था नहीं चल सकती। आर्य समाज का काम बहुत ज्यादा है विशेषकर पंजाब में। मेरा यह विश्वास है कि जिन महानुभावो को सभा के अधिकारी या अन्तरंग सदस्य मनोनीत किया गया है वे सब अपनी-अपनी जिम्मेवारी और अपने अपने कर्त्तव्य को समझते हुए आने वाले समय मे सभा को आगे से आगे ले जाने का प्रयास करेंगे। मैं कई बार पहले भी कह चुका हू और अब फिर कह देना चाहता हू कि पंजाब मे सिवाये आर्य समाज के कोई ऐसी संस्था नही जो हिन्दुओ के हितो की रक्षा कर सके। इस समय तक हम मौन होकर पंजाब का तमाशा देखते रहे हैं अब हमे सक्रिय रूप से इस दिशा मे काम करना चाहिये। ताकि पंजाब की जनता को विशेषकर हिन्दुओ को आर्य समाज से जो आशाएं हैं वे पूरी हो सकें।

—वीरेन्द्र

# आर्य मर्यादा का श्रीकृष्ण जन्माष्टमी अंक

श्री कृष्णजी महाराज का जीवन एक महान जीवन है। प्रति वर्ष कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर उनके प्रेरणाप्रद जीवन को आर्य मर्यादा में दिया जाता है। उनका सारा ही जीवन महान प्रसंगों से भरा पड़ा है। वह एक महान योगी थे। इसीलिए उन्हे योगीराज श्री कृष्ण भी कहा जाता है। गीता मे उनका यह स्वरूप विशेष रूप मे सामने आता है इसलिए हमने अपने सभी लेखको से प्रार्थना की है कि वह अपनी रचनाएं इसी विषय पर भेजें ताकि आर्य समाज का जो श्री कृष्ण के जिस स्वरूप को मानता है वह जनता के सामने अच्छी तरह रखा जा सके। लेखक महानुभाव अपनी रचनाएं शीघ्र भेजें।

यह एक अमूल्य अंक होगा इसलिये पाठक महानुभाव पत्र लिख कर इस अंक की अपनी प्रतियां सुरक्षित करा लें।

## आर्य जगत् के विचारार्थ—

# 'ऋषि दयानन्द सरस्वती की फिल्म

ले — श्री सत्यप्रिय शास्त्री, एम ए साहित्याचार्य
दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय हिसार

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी पर कोई फिल्म बनाई जाए या न। इस विषय पर आर्य जगत मे बहुत मतभेद पाया जाता है। इसी प्रश्न का दृष्टिकोण आर्य समाज के विख्यात विद्वान और महोपदेशक श्री आचार्य सत्यप्रिय जी शास्त्री साहित्याचार्य प्राचार्य दयानन्द ब्रह्म विद्यालय हिसार इस लेख मे प्रस्तुत कर रहे है। इसके द्वारा वे एक दूसरा पक्ष आर्य जगत के सामने रख रहे हैं। हम इसे इसलिए प्रकाशित कर रहे हैं कि दोनो प्रकार के दृष्टिकोण जनता के सामने आ जायें। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब का इस फिल्म से कोई सम्बन्ध नही, परन्तु हमारी अवश्य धारणा है कि यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है, जिसके दोनो पक्ष जनता के सामने आ जाने चाहिए। इसलिए यह लेख प्रकाशित किया जा रहा है। यदि कोई महानुभाव इस समस्या का दूसरा पक्ष भी हमे भेजगे तो वह भी प्रकाशित कर दिया जायेगा। क्योकि हम चाहते हैं कि आर्य जनता दोनो पक्षो को सुन कर अपनी कोई अन्तिम सम्मति बना लें।

—सम्पादक

आजकल निर्माणाधीन महर्षि दयानन्द सरस्वती की फिल्म को लेकर आर्य जगत मे अच्छी खासी चर्चा है। इसी के सम्बन्ध मे आर्य नेताओ के विचारार्थ अपने विचार प्रस्तुत करने का दु साहस कर रहा हू। सम्भव है मेरे इन विचारो से मेरे कुछ परिचितो एव प्रमियो को ठस भी लगे। तथा कुछ लोग विरोधी भी हो जाए। परन्तु अपनी अन्तरात्मा की आवाज को अधिक देर तक दबाए रखने मे असमर्थ हू।

काव्य की एक विधा दृश्य काव्य भी है। जिसका सभी साहित्यो तथा भाषाओ मे अनूठा तथा अटल स्थान है। सस्कृत साहित्य मे तो इसका विस्तार अपने परमोत्कर्ष पर है। नाटक एव चम्पू इसी कोटि मे आते हैं। जिसका प्रयोजन जहा दर्शको का स्वस्थ एव सात्विक मनोरजन करना है वहा पूज्य पूर्वजो के उदात्त एव अनुकरणीय आदेशो पर चलने को प्रेरित करना भी है आज के फिल्मी उद्योग की प्रारम्भ एव पृष्ठ भूमि मे यही भावना कार्य कर रही थी। महर्षि स्वामी दयानन्द की फिल्म के निर्माण का विरोध कर क्या हम साहित्य के महत्वपूर्ण अग जो कि जीवन को श्रेष्ठ मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है की उपेक्षा तथा अवमानना नहीं कर रहे हैं? सामान्य लोगो को इसके द्वारा स्वस्थ सामग्री प्रदान कर उत्तम मार्ग पर चलने तथा श्रेष्ठ विचारो को अपनाने का मार्ग प्रशस्त व सरल किया जा सकता है। वैसे भी आधुनिक युग तथा वर्तमान जीवन मे फिल्मो के महत्व को नकारा नही जा सकता। जहा हम एक ओर स्वस्थ सामग्री प्रदान कर इस से सदुपयोग करने या लेने की बात करते है, वहा दूसरी ओर ऋषि दयानन्द जी जैसे महापुरुष के जीवन की जो मानवीय मूल्यो से भरपूर सामग्री है इसके माध्यम से देने का विरोध करते हैं। इस प्रकार हम स्वय भी अपने अन्तर्विरोध के शिकार हो जाते हैं। और देखा जाए तो फिल्म कौन सी अछूत की बीमारी है जिससे ऋषि दयानन्द जी जैसे व्यक्तित्व सम्बन्धित होते ही अदृश्य अग्राह्य धूमिल तथा सर्वथा ही अनाचारणीय हो जाता है? यह एक ध्रुव सत्य है कि आज नास्तिकता, कम्यूनिज्म मूर्ति पूजा तथा अन्य पाखण्ड जाल का जितना अधिक प्रचार उन फिल्मों मे किया उतना और किसी ने नहीं तो क्या इसके बदले हम सत्य आस्तिकता तथा महापुरुषो के उच्च आदर्शों के प्रचार एव प्रसार का साधन नही बना सकते, वैसे भी यह तो एक साधन है साध्य नहीं है। समय तथा परिस्थिति के अनुसार साधन अपनाने मे दोष नहीं है, जो समाज तथा परिस्थिति के अनुकूल उपलब्ध साधनों की उपेक्षा करता है। वह प्रचार क्षेत्र मे पिछड जाया करता है। प्रचार की वृद्धि के लिए केवल सिद्धातो की सत्यता काफी नही है। याद रखिए सत्य स्वय नहीं बढा करता, उसके प्रचारक और पक्षपाती यदि सबल, बुद्धिमान तथा समय अनुसार साधनो का प्रयोग किया करते हैं तो सत्य अच्छी तरह बढता है और नही तो भरे मैदान पिछडता और पिटता है। अत साधनो का महत्व है। इसलिए हमें इससे सकोच को दूर करके समय के तकाजे को दृष्टिगत करते हुए इस साधन के प्रयोग में सकोच नहीं करना चाहिए।

इस प्रसंग में फिल्म न बनाने के पक्ष में ऋषि दयानन्द के जो वचन उपस्थित किए जाते हैं उनके सम्बन्ध में इतना ही निवेदन है कि हमें ऋषि का वास्तविक अभिप्राय समझना चाहिए। ऋषि का मन्तव्य यह है कि किसी महापुरुष के जीवन को अयथार्थ रूप बढे रूप एव अश्लील रूप में उपस्थित न किया जावे। वहा यह अभिप्राय नहीं कि किसी महापुरुष के जीवन का अभिनय ही न किया जावे। मेरी तो ये समझ से बाहर है कि राम कृष्ण शकर शिव, शिवाजी, राणाप्रताप इत्यादि पूज्य पुरुषो के जीवन पर फिल्मे बनी हैं। परन्तु आर्य समाज के नेतृत्व वर्ग की ओर से इसका कोई विरोध नहीं हुआ है।

यदि ऋषि दयानन्द की दृष्टि मे उन महापुरुषो की फिल्मो पर मौन रूप मे हम अपनी स्वीकृति की मोहर लगा देते हैं। तब ऋषि दयानन्द की फिल्म का ही विरोध क्यो किया जाता है। क्या यह हमारी अन्य मजहबो के समान सकुचित मनोवृति का परिचायक नही है। जब हम ऋषि दयानन्द के जीवन के अनुकरण की बात करते हैं तो अभिनय द्वारा इसके समर्थन मे क्या आपत्ती है? और यदि ऋषि दयानन्द का जीवन आज के समाज के लिए सर्वथा ही आचरणातीत है मानो समाज के लिए उनके जीवन का क्या औचित्य है?

फिर हमारे प्रचारक मैजिक लैन्टेन से प्रचार करते हैं, जो कि फिल्म का आरम्भिक रूप है जिसमे ऋषि दयानन्द का जीवन दिखाते हैं। इसमे सशोधन कर फिल्म का रूप दे दिया जावे तो क्या आपत्ती है। सन 1975 में एक सक्षिप्त फिल्म ऋषि दयानन्द पर बन भी चुकी है। जो कई बार कई स्थानो पर प्रदर्शित भी की है। अब तक उस का विरोध नही है। फिर आज ऋषि जीवन पर विस्तार से फिल्म बनाने से कौन सा आकाश का पहाड टूटता है मैजिक लैन्टेन से प्रचार में कुत्सितता की झलक होती है तथा उपहास्य जन की प्रवृत्तियों के कलीरता को नहीं समझते हैं वे भी ऋषि दयानन्द आर्य समाज एव उनके मन्तव्यों से परिचित हो जाते हैं। परन्तु आज तक मैजिक लैन्टेन का विरोध नही हुआ बल्कि प्रतिनिधि सभाओं के प्रचारक उससे प्रचार करते हैं। सार्वदेशिक में उसके प्रचार के विज्ञापन भी छपते रहे। फिर आज ऋषि दयानन्द की फिल्म के विरोध की तुक क्या है?

हा। यह सत्य है कि चलचित्र देव ऋषि का पार्ट अदा न करे। परन्तु फिल्म ही न बने यह क्या तुक है। आर्य जगत मे जो व्यक्ति अपने आचरण की स्वच्छता की दृष्टि से ऋषि के सर्वाधिक समीप समझता हो वह ऋषि का पार्ट अदा कर ले और दूसरी बात यह कि ऋषि की फिल्म का विरोध कर कही हम मतान्धता के बोझ मे फंस कर कला तथा विज्ञान के विरोध तो नही कर रहे जैसे मध्यकाल मे इसाई जगत् मे मतान्ध के बोझ मे विज्ञान का विरोध किया और वर्तमान में मुस्लिम जगत् मूर्ति पूजा के नाम पर हजरत महम्मद के चित्र निर्माण का विरोध कर चित्रकला जैसी वैज्ञानिक एव उपयोगी कला का विरोध कर रहा है। कहीं हम भी तो उसी इतिहास की पुनरावृत्ति नहीं कर रहे।

अत लेखक का मत है कि ऋषि दयानन्द के जीवन पर फिल्म बननी ही चाहिए। हा! बनाते समय यह ध्यान रखें की कहीं फिल्म मे अश्लीलता अपढ़ता तथा अवास्तविकता न हो। इस प्रकार छानबीन कर बनाई गई फिल्म ऋषि के वास्तविक चरित्र व मन्तव्यो को जनता मे अच्छे रूप मे उपस्थित कर सकेगी। निश्चय है कि उससे ऋषि के मन्तव्यों तथा जीवन का जनता में अधिकाधिक प्रचार ही होगा। अत ऋषि की फिल्म बनाने में कोई आपत्ति नहीं।

—

## आर्य कालेज महिला विभाग की ओर से शोक सम्वेदना

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के स्वनामधन्य महासचिव दीक्षितों आर्य शिक्षण सस्थाओं के कर्णधार और व्यक्ति के रूप मे सौजन्य सहृदता व अनथक परिश्रम कीप्रति मूर्ति श्रद्धेय रामचन्द्रजी जावेद का शरीर शान्त होने का समाचार पाकर अन्य अनेक बन्धुओं की तरह आर्य कालेज लुधियाणा का महिला विभाग शोकाकुल है।

अपने सगठन कौशल तथा लेखनी के माध्यम से मान्य जावेद जी ने अपने पार्थिव जीवन के अन्तिम क्षण तक भारतीय समाज की जो सेवा की, श्रद्धेय वीरेन्द्र जी के सक्रिय सहयोगी के रूप में उन्होंने जो भूमिका निभाई, वह अपना उदाहरण आप है। इस तरह की महान् विभूति के हमारे बीच न रहने से एक ऐसा अभाव पैदा हुआ है जो न केवल पारिवारिक स्तर पर बल्कि सामाजिक स्तर पर भी बराबर चुभता रहेगा। दिवगत दिवंगत के लिए श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए हमारी परम पिता परमात्मा से यही प्रार्थना है कि जावेद जी के बन्धु बान्धवों को उनका विछोह सहने की शक्ति दे और साथ हमें उनके अभाव की पूर्ति के लिए सफलता प्रदान करें।

—[illegible] शर्मा प्रभारी

# हा ! आर्यवर्त्त देश अराजक देश क्यों बन गया 2

ले —श्री रामनाथ जी सि विशारद महोपदेशक

15 अराजक देश का पन्द्रहवा लक्षण यह है कि बिना राजा के राज्य मे लोग अलकारों से विभूषित हो हृष्ट पुष्ट उत्तम घोडों तथा रथों द्वारा सहसा यात्रा नहीं करते हैं। क्योंकि उन्हें लुटेरो का भय बना रहता है।

देश की वर्तमान अवस्था ऐसी ही है अकाल भय का शासन है।

16 राजा से रहित राज्य में शास्त्रो के विशिष्ट विद्वान मनुष्य वनों उपवनो मे शास्त्रो की व्याख्या करते हुए नही ठहर पाते हैं। यह भी ऐसे कार्य शान्ति वातावरण मे ही कर सकते हैं।

17 जहा अराजकता फैल जाती है उस जनपद मे मन को वश मे रखने वाले लोग देवताओ की पूजा के लिए फल मिठाई और दक्षिणा की व्यवस्था नही करते।

18 जिस जनपद मे कोई राजा नही होता है वहां चन्दन और अगर का लेप लगाए हुए राजकुमार बसन्त ऋतु के खिले हुए वृक्षो की भान्ति शोभा नही पाते हैं।

19 जैसे जल के बिना नदिया घास के बिना वन और ग्वालो के बिना गौओ की शोभा नहीं होती उसी प्रकार राजा के बिना राज्य शोभा नहीं पाता है।

20 जब ध्वज रथ का ज्ञान कराता है और धूम अग्नि का बोधक होता है उसी प्रकार राज काज देखने वाले हम लोगों के अधिकार को प्रकाशित करने वाले जो महाराज थे यहा से देव लोक को चले गए।

21 राजा के न रहने पर राज्य मे किसी भी मनुष्य की कोई भी वस्तु अपनी नहीं रह जाती (जैसे मत्स्य एक दूसरे को खा जाते हैं) उसी प्रकार अराजक देश के लोग सदा एक दूसरे को खाते लूटते खसोटते रहते हैं।

22 जो वेद शास्त्रों की तथा अपनी अपनी जाति के लिए नियत वर्णाश्रम की मर्यादा को भंग करने के नास्तिक मनुष्य पहले राज दण्ड से पीड़ित रह कर दबे रहते थे वे भी अब राजा के न रहने से निशंक होकर अपना प्रभुत्व प्रकट करेंगे।

23 जैसे दृष्टि सदा ही शरीर के हित में प्रवृत्त होती है उसी प्रकार राजा राज्य के भीतर सत्य और धर्म का प्रवर्तक होता है।

24 राजा ही सत्य और धर्म है। राजा ही कुलवानों का कुल है, राजा ही माता और पिता तथा राजा ही मनुष्यो का हित करने वाला है।

25 राजा अपने महान चरित्र के द्वारा यम कुबेर इन्द्र और महाबली वरुण से भी बढ जाते हैं। यम राज केवल दण्ड देते हैं कुबेर केवल धन देते हैं इन्द्र केवल पालन करते हैं और वरुण केवल सदाचार मे नियन्त्रित करते हैं। परन्तु एक श्रेष्ठ राजा मे चारो गुण मौजूद होते हैं। अत वह इनसे बढ जाता है।

26 यदि ससार मे भले बुरे का विभाग करने वाला राजा न हो तो यह सारा जगत अन्धकार से आच्छन्न सा हो जाए कुछ भी सूझने न पड़े।

27 वसिष्ठ जी ! जैसे उमडता हुआ समुद्र अपनी तट भूमि तक पहुचकर उससे आगे नही बढता उसी प्रकार हम सब लोग महाराज के जीवन काल मे भी आपकी ही बात का उल्लघन नही करते थे।

28 अत विप्रवर इस समय हमारे व्यवहार को देखकर तथा राजा के अभाव मे जगल बने हुए — — — करके आप ही किसी इक्ष्वाकु वशी राज कुमार को अथवा दूसरे किसी योग्य पुरुष को राजा के पद पर अभिषिक्त कीजिए। मैं यह समझता हू कि राज पुरोहितो न महर्षि वसिष्ठ को जो अराजकता के लक्षण बताए हैं वह बहुत कम बताए हैं। पजाब में 1978 से आज तक जो कुछ हुआ इन अराजकता के लक्षणो से कही अधिक है। ऐसा लगता था कि यहा किसी का भी राज नहीं है। विचार भिन्नता के कारण लोगों को चुन चुनकर मारा गया बैंक लूटे गए बच्चो को मारा गया। स्त्रियों को मारा गया, कालेजो स्कूलो, कार्यालयो को आग लगाई गई बसो मे छाट छाट कर यात्रियों को नीचे उतार कर गोली से उड़ाया गया, स्टेशन जलाए गए गाड़ियों को बम से उड़ा कर गाड़ियो को उलटाया गया जो कुछ हुआ वह इस छोटे से लेख मे समा नही सकता। परन्तु फिर भी मैं भारत सरकार का धन्यवाद करता हू कि उन्होंने अति होने पर ही सही परिस्थिति को सम्भाल लिया है। मैं इस बात से हैरान था कि जिस सरकार के पास हवाई जहाज, एटम बम तोपें टैंक आदि हों और जिसके पास ऐसी सेना हो जिसने 1971 में हिन्द पाक की जंग में 93 हजार पाकिस्तानी सैनिको को बिना शर्त कर दिल्ली और तिहाड़ जेल में बन्द कर दिया था फिर वह सरकार चुप चाप क्यो बैठी है जबकि सिर से ऊपर पानी गुजर रहा हो। इस चुप्पी का एक कारण बाहर की शक्ल पकडी भी है। वह अन्दर ही अन्दर सरकार को बदनाम करते रहते थे यह हो जाएगा वह हो जाएगा। अति सबल सब कुछ था टाईमबम बन गया। निकट था कि रोगी का दम निकल जाता तब सेना के बहादुरों को यह काम सौंपा गया। उनके लिए यह कुछ भी बात नही थी। जो सेना मुकाबला में दूसरे देश की सेना और हथियारो से टक्कर ले सकती हो उनके लिए यह मुट्ठी भर लोग क्या अर्थ रखते थे? सेना के जो वीर जवान वीर गति को प्राप्त हुए। मेरी सम्मति मे इसके दो कारण थे 1 धर्म स्थान को बचाना। 2 यह जान कारी न होना कि नीचे से और इधर उधर से गोलियो की बौछार। मैं भारत सरकार तथा सेना के वीर जवानो का धन्यवाद करता हू कि अराजकता दूर हो रही है।

—

## आर्य समाज बस्ती मिट्ठू का वार्षिक चुनाव

जालन्धर विगत जून मास मे आर्य समाज बस्ती मिट्ठू शास्त्री नगर जालन्धर का वार्षिक निर्वाचन सर्वसम्मति से श्री रामलुभाया नन्दा की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ—

प्रधान—श्री रामलुभाया नन्दा जी उपप्रधान—श्री शीतलदास भाटिया श्री शिवनन्द भाटिया श्री त्रिलोकनाथ महामन्त्री—श्री किशोरीलाल भाला मन्त्री—श्री मनोहरलाल सेठी श्री प्रेम नाथ अरोडा कोषाध्यक्ष—श्री हरिचन्द भाटिया पुस्तकाध्यक्ष—श्री भारतभूषण नन्दा स्टोरकीपर—श्री मोहनलाल।

### नि शुल्क अस्पताल खोला जाएगा

जालन्धर विगत मास आर्य समाज बस्ती मिट्ठू शास्त्री नगर की वार्षिक साधारण सभा प्रधान श्री रामलुभायानन्दा की अध्यक्षता मे हुई। इस अवसर पर आर्य समाज भवन में एक नि शुल्क अस्पताल की स्थापना किया जाना स्वीकार हुआ। अस्पताल से पहले एक डिस्पेंसरी फिर पाच बिस्तर का अस्पताल बनाया जाएगा। इसमे एक एम. बी. डाक्टर होगे इससे इस भाग के लोगो की बहुत सेवा होगी यह अस्पताल डा धनराज गग के पूज्य दादा श्री रतनलाल जी की स्मृति मे बनाया जाएगा इस अस्पताल मे लगभग तीन लाख रुपया व्यय होगा

वार्षिक चुनाव के बाद दो गरीब कन्याओ को समाज की ओर से दो सिलाई मशीन दी गई। उल्लेखनीय है कि इसी समाज मे महर्षि दयानन्द नि शुल्क सिलाई स्कूल खुला हुआ है जोकि बहुत सफलता से चल रहा है।

—

## स्त्री आर्य समाज श्रद्धानन्द बाजार लुधियाना के समाचार

### वेद प्रचार सप्ताह

स्त्री आर्य समाज श्रद्धानन्द बाजार की ओर से 13 अगस्त से 19 अगस्त तक वेद सप्ताह मनाया जा रहा ? जिसमे स्वामी सच्चिदानन्द जी (अमृतसर) की की प्रभावशाली कथा होगी।

### पारिवारिक सत्सग

प्रति माह भाति की 16 7 84 को श्रीमती विद्यावती जी मैनन के गृह पाक लेन सिविल लाईन लुधियाना मे पारिवारिक सत्सग सम्पन्न हुआ। यज्ञ के उपरान्त प्रभावशाली शिक्षाप्रद भजन हुए तथा श्रीमती कमला आर्या प्रधाना का प्रभावशाली उपदेश हुआ जिसका सभी बहिनो पर अच्छा प्रभाव पडा। यजमान परिवार को आर्य साहित्य बाटा गया। इस सत्संग में जो दान प्राप्त हुआ। वह सैनिक शहीद फण्ड के लिए दिल्ली भेज दिया गया। सभी आई हुई बहिनो का जलपान द्वारा स्वागत किया गया।

### सैनिक सहायता फण्ड के लिए दान

स्त्री आर्य समाज श्रद्धानन्द बाजार की ओर से 2600 रुपए सैनिक सहायता फण्ड के लिए आर्मी वाईस वैलफेयर एसोसिएशन मार्फत एडजुटैंट जनरल आर्मी हैड क्वाटर साउथ ब्लाक नई दिल्ली को भेजा गया। इस राशि मे 1100 रु की राशि श्रीमती यशवती भल्ला उप मन्त्राणी जी ने दी है।

1 एक प्रस्ताव के द्वारा सैनिक कार्यवाही की सराहना करते हुए प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी का धन्यवाद किया और परमात्मा से उनकी दीर्घायु के लिए प्रार्थना की। उन्होने समय पर कार्यवाही करके पजाब को बचा लिया।

2 एक शोक प्रस्ताव श्री रामचन्द्र जी जावेद महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की असमय मृत्यु पर हार्दिक दुःख के साथ पारित किया गया। दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना की गई।

# राष्ट्र का उत्थान कौन कर सकता है ?

ले.—श्री सुरेश चन्द्र त्यागी प्रिंसीपल—विज्ञान महाविद्यालय, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

चरित्र के विकास के लिए इच्छा शक्ति का होना बहुत आवश्यक है। जो व्यक्ति ढुल-मुल होता है, उसमें इच्छा शक्ति का अभाव होता है। अत वह दुर्बल चरित्र होता है। जो एक निश्चय करके उस पर दृढ नही रह सकता, जो प्रत्येक नवीन मत को ग्रहण कर लेता है, जिसका कोई स्थाई सिद्धांत नही जिसकी अपनी रुचि नही, उसके पास चरित्र का अभाव ही समझना चाहिए। ऐसे पुरुष भले अथवा बुरे किसी भी प्रकार के बड़े कार्य को करने मे असमर्थ होते हैं। उनसे समाज का हित तो क्या होगा, वे अपना ही कल्याण नही कर सकते। एक चरित्रवान् व्यक्ति के लिए दृढ इच्छा शक्ति की सख्त जरूरत है।

बालको को अपना निश्चय स्वयं करने देना चाहिए। जो लोग बालको को आत्म निर्णय का मौका नही देते, जरा सी भी कठिनाई आने पर उनकी सहायता करने को उतावले हो जाते हैं, वे उनके चरित्र विकास में सबसे बड़े बाधक हैं।

हठधर्मी भी दृढ इच्छा का ही एक स्वरूप है किन्तु हमारा उद्देश्य हठधर्मी को प्रोत्साहित करने का नहीं है। हमारा अभिप्राय उन हालात से है जहा पर या तो व्यक्ति कुछ निश्चय कर ही नहीं पाता और या अपनी इच्छा की दुर्बलता के कारण, झूठे दबाव मे पडकर अपना इरादा बदल देता है। लज्जा के कारण अथवा हीनता की भावना से, जो अपने निश्चय पर स्थिर नहीं रह सकता उसका व्यक्तित्व तथा चरित्र व्यर्थ है। वह कल क्या करेगा, कोई कह सकता। उस के चरित्र मे स्थायित्व नही, और स्थायित्व ही चरित्र की विशेषता है। जो चरित्रवान होता है वह अपने उचित निश्चय पर डटना जानता है। इस डटे रहने मे इच्छा शक्ति से ही सहायता मिलती है। कवि ने ठीक ही कहा है कि—

प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः ।
प्रारभ्य विघ्नविहता विरमन्ति मध्याः ॥
विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः ।
प्रारभ्य चोत्तमजना न परित्यजन्ति ॥

संसार मे तीन प्रकार के व्यक्ति होते हैं—उत्तम, मध्यम और निम्न। निम्न व्यक्ति विघ्नो के भय से किसी काम को प्रारम्भ ही नही करते। मध्यम प्रकार के व्यक्ति काम का प्रारम्भ तो कर देते हैं परन्तु विघ्न आने पर उस कार्य को बीच मे ही छोड देते हैं। उत्तम श्रेणी के व्यक्ति काम को प्रारम्भ करके तब तक नही छोड़ते जब तक कार्य सिद्धि नहीं हो जाती।

उत्तम प्रकार के व्यक्तियो की इच्छा शक्ति प्रबल होती है। इस इच्छा शक्ति के आधार पर ही वे संसार मे महान काम कर जाते हैं और अमर हो जाते हैं।

इच्छा शक्ति एक बहुत बड़ी ताकत है। अंग्रेजी मे एक कहावत प्रसिद्ध है—'जहा इच्छा होती है वहा राह निकल ही आती है।' जिस परिस्थिति में बहुत बड़ी शारीरिक शक्ति से सम्पन्न किन्तु दुर्बल इच्छा के व्यक्ति घबरा जाते हैं वहा इच्छा शक्ति के प्रभाव से ही शरीर दुर्बल पुरुष स्थिर अचल होकर खड़ा रहता है। महाराणा प्रताप, वीर शिवा जी, स्वामी दयानन्द, महात्मा गांधी नेता जी सुभाष, आदि इच्छा शक्ति के आधार पर महान काम करके इतिहास मे अपना नाम अमर कर गए हैं। बिना दवा के ही, केवल इच्छा के जोर से अनेक लोग कठिन रोगों तक से मुक्त होते देखे गए हैं।

यह इच्छा शक्ति है क्या ? यह मनुष्य की कोई मूल शक्ति है अथवा इस का जन्म अकस्मात हो जाता है और प्रबल विपत्तियो से टकराने की विलक्षण शक्ति इस मे कहा से आ जाती है ?

जीवन मे अनेक अवसर आते हैं जब हमारे सामने निर्णय लेना कठिन हो जाता है और हमे कोई एक मार्ग चुनना होता है। हम तब एक अनिश्चय की दशा मे होते हैं। क्या करें, क्या न करें यह हमारी समझ में नहीं आता। हम सोचते हैं विचारते हैं, सभी प्रकार की युक्तियो का सहारा लेते हैं और तब अन्तर्द्वन्द्व के पश्चात किसी एक निश्चय पर पहुचते हैं। यह निर्णय हमारी इच्छा शक्ति करती है।

युद्ध के लिए तैयार अर्जुन के सम्मुख एक बार ऐसा ही संकट उपस्थित हुआ था। उसके सम्मुख प्रश्न था कि वह धर्म युद्ध करके आत्मीयो की हत्या करे अथवा आत्मीयता के मोह में पड कर अपने कर्त्तव्य से विमुख हो जाए। योगी समझा पथिक प्रवर कृष्ण से उपदेश लिया और अन्त मे अन्तर्द्वन्द्व के बाद यह निश्चय किया कि मैं युद्ध मे भाग लेकर क्षात्र धर्म का निर्वाह करूगा। इस निर्णय में यह "मैं" शब्द विशेष महत्व का है। इस निर्णय की प्रेरणा तथा उसकी कार्यान्वित करने की प्रबल शक्ति इस "मैं" में ही छिपी हुई है, अर्जुन की इच्छा शक्ति का सम्पूर्ण रहस्य इस "मैं" में ही निहित है।

'मैं' कौन ? अर्जुन, क्षत्रिय शिरोमणि जगत विख्यात क्षात्र धर्म विवेक सम्पन्न ज्ञानी अर्जुन यह महान लज्जा की बात होगी कि साधारण मनुष्यों की दुर्बलता अर्जुन के आचरण मे भी प्रकट हो। नहीं ऐसा कभी नहीं होगा। मैं क्षात्र धर्म पालन अवश्य करूगा, उसके लिए मुझे कुछ भी क्यो न बर्दाश्त करना पडे। यह मैं अर्जुन के समस्त व्यक्तित्व का, चरित्र का द्योतक है। इसमे उसका सम्पूर्ण अतीत भविष्य की समस्त सम्भावनाए एकत्र हो गई हैं। यह उसका आदर्श 'स्व' है जो अनिश्चय की दशा मे अभी भांति स्पष्ट नहीं हो सका था। अतएव इच्छा शक्ति, चरित्र का बल है और इसी से किसी का व्यक्तित्व निखरता है।

सुन्दर चरित्र के लिए इच्छा शक्ति की बहुत जरूरत है। जो व्यक्ति दृढ निश्चय नहीं कर पाता, जो अपने किसी काम पर डट नहीं पाता, उसका व्यक्तित्व प्रभावहीन होता है तथा चरित्र दुर्बल होता है। मनुष्य का विगत जीवन एव भावी योजनाए जिस "आदर्श स्व" को बताती है इच्छा शक्ति उसी की प्रबल प्रेरणा को कहते हैं। शिक्षको को को चाहिए कि बालको को आत्म निश्चय का अवसर दे, जिससे उनकी इच्छा शक्ति दृढ हो सके। यथाक्रम, प्रकृति वातावरण सभी का हाथ चरित्र निर्माण में होता है और उन पर शिक्षकों का कोई नियन्त्रण नही होता। किन्तु तब भी छात्रों की इच्छा शक्ति को बढाने के लिए जो भी कुछ कर सकते हैं, उन्हें लगन तथा ईमानदारी से करना चाहिए। चरित्रवान व्यक्तियो पर ही किसी देश का भविष्य निर्भर करता है और चरित्र का निर्माण बहुत कुछ शिक्षकों के हाथ में होता है।

आज देश के नवयुवक विज्ञान इन्जीनियरिंग, कृषि आदि क्षेत्रों में उन्नति कर रहे हैं परन्तु दुर्भाग्यवश चारों ओर भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी और बेईमानी का राज है। देश तेजी से पतन की ओर जा रहा है। उसका एक मात्र कारण यही है कि नवयुवको के चरित्र निर्माण की ओर किसी का ध्यान नही। हम एक ऐसा देश बना रहे हैं जिसकी नींव रेत के ढेर पर खड़ी है और यह नींव कभी भी बुरी तरह ढह सकती है।

एक अंग्रेजी कहावत है कि—'जब किसी का धन नष्ट हो जाए तो समझो कि कुछ नष्ट नहीं हुआ। जब स्वास्थ्य नष्ट हो जाए तो समझो कि कुछ नष्ट हो गया और जब चरित्र नष्ट हो जाए तो समझो कि सब कुछ नष्ट हो गया। अत आज देश के गिरते हुए नैतिक स्तर को उठाने के लिए बालको का उच्च चरित्रवान बनना परमावश्यक है और यह तभी सम्भव है जबकि माता पिता तथा प्रत्येक गुरु बालकों की इच्छा शक्ति को दृढ करें, क्योंकि बिना दृढ इच्छा शक्ति के उच्च चरित्र बन ही नहीं सकता और चरित्रवान व्यक्ति ही किसी राष्ट्र का उत्थान कर सकता है।

---

## आर्य समाज हबीबगंज (अमरपुरा) लुधियाना की ओर से श्रद्धांजलि

आर्य समाज हबीब गंज (अमरपुरा) लुधियाना की एक विशेष बैठक 15-7 84 को हुई। जिसमें आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामन्त्री श्री रामचन्द्र जी जावेद की अकाल मृत्यु पर अत्यन्त दुःख प्रकट किया गया और प्रभु से प्रार्थना की गई कि दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे और दुःखद परिवार को धैर्य प्रदान करे।

—वेदप्रकाश
मन्त्री आर्य समाज हबीब गंज
लुधियाना

# आर्य समाजों की ओर से श्री रामचन्द्र जावेद को श्रद्धांजलियाँ तथा शोक संवेदना

## आर्य समाज नवां शहर (जालन्धर) की ओर से शोक प्रस्ताव

आज दिनांक 15-7-84 को आर्य समाज नवांशहर के साप्ताहिक सत्संग में श्री जावेद जी की मृत्यु पर दुःख प्रकट किया कि यह न पूरा होने वाला घाटा है। प्रभु उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें। संतप्त परिवार एवं मित्रों सम्बन्धियों से हार्दिक सहानुभूति सहित।

—वेद प्रकाश सलिल
मन्त्री आर्य समाज नवां शहर

## आर्य समाज तलवाड़ा की ओर से श्रद्धांजलि

सम्पादक महोदय जी!

यह जानकर अति दुःख हुआ कि हमारी प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामन्त्री मान्यवर जावेद जी हम से सदा के लिए जुदा हो गए हैं इसलिए आर्य समाज तलवाड़ा की ओर से उन्हें श्रद्धांजलि भेंट की गई है। उन्होंने आर्य समाज को जो योगदान दिया। आर्य समाज उनके ऋण को नहीं चुका सकता। और जितनी देर उन्होंने आर्य समाज की सेवा की है बहुत ही ईमानदारी और लगन से की। जिसके लिए आर्य समाज सदा उनका आभारी रहेगा।

आर्य समाज से एक महान् सेवक जो चुका है जिसकी कमी को पूरा करना आसान काम नहीं है।

यह तो ईश्वर की व्यवस्था है जिसने आना है उसने एक दिन जाना है। आर्य समाज तलवाड़ा टाऊनशिप परमात्मा से यह प्रार्थना करती है कि ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे और उनके परिवार वालों को धैर्य दे जिससे वह इस सदमें को शक्ति से सहन कर सके और उन्हीं तरह धर्म के रास्ते पर चलें।

—मनोहरलाल आर्य
आर्य समाज तलवाड़ा टाऊनशिप
होशियारपुर

## आर्य समाज फगवाड़ा की श्रद्धांजलि

15-7-84 रविवार के दिन आर्य समाज बांसाला रोड फगवाड़ा के सदस्यों की यह सभा प्रसिद्ध विद्याविद् आर्य समाज के प्रख्यात नेता उच्चकोटि के लेखक एवं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामन्त्री स्वर्गीय श्री रामचन्द्र जी जावेद के असामयिक निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करती है और ईश्वर से प्रार्थना करती है कि वह दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शान्ति प्रदान करे तथा उनके वियोग दुःख सन्तप्त परिवार को असह्य दुःख सहन करने की शक्ति दे।

—मालक हरिदास जी,
प्रधान आर्य समाज बांसाला रोड फगवाड़ा

## आर्य समाज ऋषि कुञ्ज पक्का बाग जालन्धर की श्रद्धांजलि

आर्य समाज ऋषि कुञ्ज पक्का बाग जालन्धर में रविवार 15-7-84 को प्रातः यज्ञ के पश्चात् एक शोक सभा हुई जिसमें आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामन्त्री श्री रामचन्द्र जी जावेद को श्रद्धांजलि भेंट की गई तथा शोक प्रस्ताव पारित किया गया। श्री जावेद जी जालन्धर के नहीं, सारे पंजाब के नेता थे, उन्होंने कई आर्य संस्थाओं का संचालन किया और कई पुस्तकें लिखी। उनके चले जाने से आर्य समाज की जो क्षति हुई है वह सम्भव पूरी न हो सके।

परमात्मा से उनकी सद्गति और उनके परिवार को इस असह्य दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की गई।

---

## आर्य हायर सैकेण्डरी स्कूल लुधियाना की ओर से शोक संवेदना

आर्य हायर सैकेण्डरी स्कूल लुधियाना के अध्यापक वर्ग की यह असाधारण सभा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामन्त्री श्री रामचन्द्र जी जावेद के आकस्मिक निधन पर हार्दिक शोक व्यक्त करती है।

स्वर्गीय जावेद जी एक सच्चे कर्म योगी प्रख्यात बहु समाज सेवी कर्तव्य निष्ठ अनुभवी लेखक गम्भीर विचारक मधुर एवं मित भाषी तथा सरलता के प्रतीक थे। उनकी समाज तथा शिक्षा क्षेत्र की अमूल्य सेवाएं चिरस्मरणीय रहेंगी। वस्तुतः वे स्वयं एक संस्था थे। उनके आकस्मिक देहावसान से आर्य जगत को होने वाली महती क्षति की पूर्ति सर्वथा असम्भव है।

सर्व शक्तिमान परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं उनके शोकाकुल तथा सन्तप्त परिवार को इस असह्य दुःख को सहने की क्षमता प्रदान करें।

हम हैं शोक सन्तप्त—

—ओम प्रकाश टण्डन
प्रिंसिपल तथा अध्यापक वर्ग, आर्य हायर सैकेण्डरी स्कूल लुधियाना।

## भारतीय स्टेट बैंक की ओर से श्री जावेद जी को श्रद्धांजलि

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामन्त्री श्री रामचन्द्रजी जावेद के असामयिक देहावसान पर शोक प्रकट करने के लिए भारतीय स्टेट बैंक आफ इण्डिया, इण्डस्ट्रियल डिवैल्पमेंट कालोनी जालन्धर के स्टाफ की ओर से एक शोक सभा 17-7-84 को हुई, जिसमें निम्न प्रस्ताव पारित किया गया।

हमें यह जानकर हार्दिक दुःख और शोक हुआ है कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामन्त्री श्री रामचन्द्र जी जावेद का निधन हो गया है। उनके परिवार तथा मित्रजनों के साथ हम अपनी हार्दिक सम्वेदना प्रकट करते हैं। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति दे और परिजनों को सामर्थ्य दे कि इस अपूरणीय क्षति का सहन कर सकें।

—मैनेजर

## श्री जावेद जी सदा याद आते रहेंगे

मान्यवर श्री रामचन्द्र जी जावेद आर्य जगत में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामन्त्री के रूप में जाने जाते थे आज हमारे बीच नहीं रहे। वह स्थूल शरीर सहित तो हम में नहीं हैं पर उनके कार्य-कलाप आज ही नहीं अपितु आने वाले बहुत ही लम्बे समय तक हम लोगों में उनको जीवित रखेंगे। उनमें आर्य समाज का कार्य अथक कर्मठता से करने की भावना इतनी प्रबल थी जैसे एक सात्विक वृत्ति वाला व्यक्ति अपने ऊपर कोई भी किसी प्रकार का ऋण नहीं रहने देता और हर समय उसे चुका कर मुक्त होना चाहता है ठीक इसी प्रकार श्री जावेद जी ने अपने ऊपर आर्य समाज एवं मानवता का ऋण समझा और अपना ध्येय बना लिया कि इसे चुकाना है और अपनी आयु का अधिक भाग इसी हेतु व्यतीत किया। आज भी हम में ऐसे बहुत से व्यक्ति हैं जिनका उनके साथ सम्पर्क बहुत थोड़ समय से रहा है। पर उनके सरल स्वभाव मधुर वाणी और निःस्वार्थ व्यवहार के कारण यह सभी अनुभव करते हैं कि नामालूम काफी लम्बे समय से हमारे साथ रहने वाला मित्र हमें छोड़कर कहा चला गया और जो लोग वास्तव में उनके साथ काफी लम्बे समय तक रहे, उनकी स्थिति उस सर्वहितैषी विभूति के बिछुड़ जाने से क्या होगी, अनुमान करना कठिन नहीं है।

श्री जावेद जी ने मानवता की सेवा का पुनीत काम और आर्य समाज का सेवक बनकर धर्म की भावना जो अपने अन्दर इस जीवन में मात्र पैदा ही नहीं किया, अपितु उसके अनुरूप काम भी किया, उसके परिणाम स्वरूप मुक्ति सम्पन्न हैं पर यदि पुनर्जन्म भी हो तो निःसन्देह उनका अगला जन्म इससे भी उत्कृष्ट होगा ताकि वह इस भावना को आगे लेजाकर मुक्ति धाम की ओर अग्रसर हो सकें ऐसा हम सबका विश्वास है। इस जगत् में उनके निधन से हुए रिक्त स्थान की पूर्ति सम्भव नहीं है।

हम सब परम पिता [illegible] प्रार्थना करते हैं कि हमें सो[illegible] हम उनके अधूरे कार्यों को पूरा [illegible] ही हमें और सभी परिजनों को [illegible] आकस्मिक दारुण दुःख और वज्रपात के आघात का सहन करने का साहस प्रदान करें।

—सहायक शर्मा मन्त्री
आर्य समाज गोबिन्दगढ़ जालन्धर

## जावेद जी का अभाव सभा को खटकता रहेगा

यह श्री डी आर्य सर्ल्ज कालेज जालन्धर छावनी की शोक सभा श्री रामचन्द्र जी जावेद के आकस्मिक देहावसान पर अतीव दुःख प्रकट करती है। उनके निधन से इस संस्था को जिस अभाव का सामना करना पड़ेगा, उसकी पूर्ति होनी असम्भव है। इस संस्था को आरम्भ करने में तथा इसकी प्रगति में उन्होंने जो निःस्वार्थ योगदान दिया है, वह चिरस्मरणीय है। वे एक सच्चे समाज सेवी सदाचारी कर्तव्यनिष्ठ धर्म परायण तथा महान विद्वान थे। हम प्रभु से विनम्र प्रार्थना करते हैं कि उस महान आत्मा को सद्गति प्रदान करे और शोक सन्तप्त पारिवारिक जनों को इस वियोग को सहन करने के लिए शक्ति और सामर्थ्य दे।

शोक सन्तप्त
प्राचार्य तथा प्राध्यापिका वर्ग श्री डी
आर्य गर्ल्ज कालेज जालन्धर छावनी

---

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

## विशेष आमन्त्रित

श्री डा ज्ञान चन्द जी जालन्धर, श्री गेशन लाल जी कपूरथला श्री बलभद्र कुमार जी मल्होत्रा पटियाला, श्रीमती सुशीला भगत जालन्धर श्रीमती विद्यावती जी आर्य लुधियाना श्री देवराज जी मैहता लुधियाना, श्रीमती सुशीला आर्य लुधियाना श्री ओम प्रकाश जी पासी लुधियाना, श्री डा कैलाश नाथ भारद्वाज फगवाड़ा श्री मुनि चेतन देव जी रामपुरा।

## सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधिसभा नई दिल्ली के लिए प्रतिनिधि

श्री वीरेन्द्र जी, श्रीमती कमला आर्य सभामहामन्त्री श्री चौ ऋषि पाल सिंह जी एडवोकेट जालन्धर, श्री सरदारी लाल जी आर्य रत्न जालन्धर, श्री जगदीश राज जी अमृतसर, श्री योगेन्द्र पाल जी सेठ जालन्धर श्री चौ हरचन्द जी एडवोकेट हाईकोर्ट चण्डीगढ़ श्री मास्टर हरिराम जी चोपड़ा फगवाड़ा श्री दीवान राजेन्द्र कुमार जी लुधियाना श्री अमृत लाल अजाज एडवोकेट जालन्धर श्री प्रो स्वतन्त्र कुमार जी पठानकोट श्रीमती विजय लक्ष्मी जी जालन्धर, श्री वेद प्रकाश जी शरीफ नवांशहर श्री हरबन्स लाल शर्मा जालन्धर श्री रामचन्द्र जी आर्य फिरोजपुर छावनी।

# देश की स्वाधीनता की रक्षा के लिए आर्य समाज बड़े से बड़ा बलिदान देने को तैयार

## 22 7 84 को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की साधारण सभा में पारित प्रस्ताव

पंजाब में पिछले तीन वर्षों में जो स्थिति उत्पन्न कर दी गई है आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की दृष्टि मे वह अत्यन्त निराशाजनक और चिन्तनीय है। एक धर्म युद्ध की आड में अत्यन्त निकृष्ट प्रकार की उग्रवादिता और साम्प्रदायिकता को इस राज्य में फैलाने का प्रयास किया गया है। पूर्णतया निर्दोष व्यक्तियो की हत्या की गई है मन्दिरों को अपवित्र किया गया है। बैंक लूटे गये हैं। और हिन्दुओं और सिखो दोनो की धार्मिक भावनाओ से खिलवाड़ किया गया है और यह सब कुछ राजनैतिक उद्देश्यो की पूर्ति के लिए किया गया है। इसमें अकाली नेताओ ने न केवल अपना समर्थन दिया उन्होंने इसमे अपना पूरा सहयोग भी दिया है और धीरे धीरे स्थिति ने पंजाब में कुछ ऐसा रूप धारण कर लिया था कि केन्द्रीय सरकार को कानून और व्यवस्था की सुरक्षा के लिए पंजाब मे सेना को बुलाना पड़ा।

3 जून 1984 और उसके पश्चात पंजाब में विशेष कर अमृतसर में जो कुछ हुआ है उसे दोहराने की आवश्यकता नहीं क्योकि सब लोग जानते हैं कि क्या हुआ है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब अपने सिख भाईयो की भावनाओ का आदर करती है और यह भी जानती है कि उन्हे अपने धर्म धार्मिक परम्पराओ और गुरुद्वारो के लिए अगाध श्रद्धा है। परन्तु इसी के साथ हम उन सब घटनाओ को भी नही भूल सकते जो 3 जून *1984* से पहले पंजाब में हुई थी। उन के पश्चात प्रधानमन्त्री के पास कोई और विकल्प इस के सिवाये न रहा था कि वे निर्दोष जनता के माल व जान की सुरक्षा के लिए सेना को बुलाएं। उस समय हमारे देश की एकता और संगठन के लिए भी एक बहुत बड़ा संकट पैदा हो गया था। उन परिस्थितियों में हमारी सेना ने भी युद्ध किया और अपने कर्तव्य को पूरा करते हुए, जिस संयम और अनुशासन से काम लिया है वह अत्यन्त सराहनीय है। कई सैनिकों ने इसमें प्राण भी दे दिये। हम उन सब को प्रणाम करते हैं। क्योकि उन्होंने एक धार्मिक स्थान की पवित्रता की रक्षा के लिए अपना बलिदान दिया था।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का यह भी निश्चित मत है कि अब समय आ गया है जब कि पंजाब राज्य में स्थिति को सामान्य बनाने का पूरा प्रयास होना चाहिए। हिन्दुओं और सिखों ने उसी प्रकार भविष्य मे भी भाई भाई की तरह रहना है जिस प्रकार कि वे इससे पहले रहते रहे हैं। ऐसी स्थिति को फिर से लाने के लिए कोई व्यक्ति या कोई राजनैतिक दल जो भी प्रयत्न करेगा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब उसका स्वागत करेगी। यह सभा एक बार फिर यह घोषणा कर देना चाहती है कि वह अपने देश की स्वाधीनता एकता और प्रभुसत्ता की सुरक्षा के लिए कटिबद्ध रही है और भविष्य में भी रहेगी। इसके लिए यह आर्य समाज की अपना पूरा सहयोग पहले भी देती रही है और भविष्य में भी देती रहेगी। आर्यसमाज ने देश की स्वतन्त्रता के संग्राम में अपना प्रमुख योगदान दिया था। उसके लिए लाखो आर्य समाजियों ने अपना बलिदान भी किया था। इसलिए आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब किसी भी स्थिति मे यह सहन नहीं कर सकती कि देश की स्वाधीनता एकता और प्रभुसत्ता पर किसी भी प्रकार की कोई आंच आये। उसके लिए बड़े से बड़ा जो भी बलिदान करना पड़ेगा आर्य समाज वह करेगी। इसी के साथ यह सभा अपने सिख भाईयो से यह निवेदन करना चाहती है कि जीओ और जीने दो की भावना से प्रेरित हो कर वे पंजाब मे शान्ति और विश्वास के साथ रहें ताकि पंजाब के जिस गौरव और ख्याति को पिछले 3 वर्षों में आघात पहुंचा है उसे हम सब मिलकर एक बार फिर पुनर्जीवित कर सकें।

# श्री जावेद जी के चले जाने से आर्य समाज को महती क्षति पहुंची

## (22 7 84 को साधारण सभा मे पारित शोक प्रस्ताव)

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के शतपथ महात्मा श्री महर्षि दयानन्द के परम भक्त आर्य समाज के अनथक निस्वार्थ और कर्मठ नेता शिक्षा विशेषज्ञ लेखनी और वाणी के धनी श्री रामचन्द्र जावेद के देहान्त के साथ आर्य जगत में एक ऐसा स्थान खाली हुआ है जिसे भरना अत्यन्त कठिन हो जाएगा। श्री जावेद ने अपना जीवन आर्य समाज की सेवा के लिए अर्पित कर रखा था। जब तक वे जीवित रहे उनके जीवन का एक एक क्षण आर्य समाज और उससे सम्बन्धित संस्थाओ की सेवा मे ही लगा रहता था। उनमे शालीनता कर्तव्य परायणता सहनशीलता और समाज सेवा की जो भावना थी उसने उन्हे आर्य जगत के नेताओ की अग्रिम श्रेणी मे लाकर खड़ा कर दिया था। अमर शहीद प लेखराम जी ने अपने देहान्त से पहले यह वसीयत की थी कि उनके पश्चात साहित्य निर्माण का काम बन्द नही होना चाहिए श्री रामचन्द्र जी जावेद ने श्री प लेखराम जी के इस आदेश को क्रियान्वित करने के लिए अपना सारा जीवन इस में लगा दिया था। उन्होंने बहुत कम उपदेशक विद्यालय लाहौर मे रहते हुए सिखा था और उसी के अनुसार उन्होंने अपने जीवन को बनाया था समय समय पर आर्य समाज के सामने जो समस्याएं पैदा होती रहती थी उनका वे बड़ी सुन्दर ढंग से समाधान ढूंढने का प्रयास किया करते थे। वे अपने आप को समझौतावादी कहते थे। और कई बार यह भी कहा करते थे कि वे नहीं चाहते कि आर्य समाज मे किसी भी प्रकार का मतभेद या झगड़ा पैदा हो। जब भी कभी कोई ऐसी स्थिति आई उन्होंने अपनी कार्यकुशलता से उसे निपटा दिया। यही उनकी लोकप्रियता का एक रहस्य था।

इस मे सन्देह नही कि उनके जाने से आर्य समाज को बहुत ही अधिक क्षति पहुंची है। उन जैसे कर्मठ और निस्वार्थ व्यक्ति आज कल मिलने कठिन हैं। फिर भी हम सब का यह कर्तव्य हो जाता है कि जिस काम को हमारे भाई अधूरा छोड़ गये हैं उसे हम उनके बाद पूरा करने का प्रयास करें। वे आर्य समाज के दीवाने थे। इसलिए आर्यसमाज के संगठन को शक्तिशाली बनाना ही उन्हे हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी। परम पिता परमात्मा से यही प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को वे सद्गति प्रदान करें उनके परिवार और उनके सम्बन्धियो को यह शक्ति दें कि वे इस वियोग को सहन कर सकें और आर्यसमाजियों में यह भावना पैदा करें कि जिस उद्देश्य और जिस लक्ष्य को सामने रखकर श्री रामचन्द्र जी जावेद ने अपना सारा जीवन व्यतीत किया था उस लक्ष्य और उस उद्देश्य को हम सब पूरा कर सकें।

# पंजाब की हिंसक घटनाओ में उग्रवादियो द्वारा मारे गए शहीदों के प्रति शोक संवेदना

पिछले तीन वर्षों मे अकाली धर्म युद्ध के नाम पर जो स्थिति पैदा कर दी गई है उसने पंजाब का सारा वातावरण ही दूषित कर दिया है। राजनैतिक समस्याओ के समाधान के लिए अहिंसा और शान्तिमय साधन अपनाये जायें तो उस पर किसी को कोई आपत्ति नही होती। जिस देश मे प्रजातन्त्र राज्य प्रणाली हो वहां कई बार आपस मे कई प्रकार के मतभेद उत्पन्न हो जाते हैं उन्हें यदि आपस की बातचीत और सद्भावना के वातावरण मे सुलझाने का प्रयास किया जाए तो उसका कोई न कोई परिणाम निकल आता है। परन्तु जब हिंसा के द्वारा समस्याओ का समाधान ढूंढने का प्रयास किया जाए तो उसका परिणाम अत्यन्त भयानक और हानिकारक होता है। यही कुछ हम पंजाब में पिछले तीन वर्ष से देख रहे हैं।

कुछ व्यक्तियो ने हिंसा के द्वारा निहत्थे लोगो की हत्याएं करनी प्रारम्भ कर दीं और पिछले 3 वर्षों मे 400 से अधिक व्यक्ति मार दिये गए। उनमे से कई ऐसे भी थे जिनका पंजाब के सार्वजनिक जीवन में एक विशेष स्थान था उनकी हत्या ने प्रत्येक व्यक्ति को यह सोचने पर विवश कर दिया कि हम एक सभ्य समाज मे रह रहे हैं या यहां जंगल का राज है जहां जिसे जो मारना चाहे मार सकता है। सबसे पहले निरंकारी प्रमुख बाबा गुरबचन सिंह उनके पश्चात् लाला जगतनारायण फिर डी आई जी पुलिस श्री ए एस अटवाल उनके बाद श्री हरबंस लाल खन्ना फिर डा विश्वनाथ तिवारी उनके पश्चात अकालतख्त के भूतपूर्व जत्थेदार श्री प्रतापसिंह और फिर हिन्द समाचार के सम्पादक श्री रमेशचन्द्र और अन्त मे श्री ओमप्रकाश बग्गा प्रिंसिपल डी ए वी हायर सैकण्डरी स्कूल होशियारपुर इनके अतिरिक्त और भी कई महानुभावो को गोली का निशाना बनाया गया है। इन प्रमुख व्यक्तियो को मार कर पंजाब के सार्वजनिक जीवन में एक ऐसा आतंक पैदा कर दिया गया कि जिसने पंजाब की सारी व्यवस्था को ही छिन्न भिन्न करके रख दिया है। श्री रमेशचन्द्र की हत्या विशेषकर दुखदायी थी। अभी उनकी आयु भी बहुत नही थी और उनका किसी के साथ कोई द्वेष भी न था। जहां तक सम्भव हो सकता था वे अपने समाचार पत्रों द्वारा पंजाब के भिन्न-भिन्न वर्गों में मैत्री भ्रातृ भाव की भावना पैदा करने का प्रयास किया करते थे। उनके विरुद्ध यदि कुछ लोगो को कोई आपत्ति हो सकती थी, तो केवल यह है कि वे अकाली राजनीति से सहमत न थे। उसे वे अपने देश और समाज के लिए हानिकारक समझते थे। इसलिए कई बार उस पर ऐसी टिप्पणी भी किया करते थे, जिसे अकाली सहन न करते थे। परन्तु क्या राजनैतिक मतभेद के कारण किसी व्यक्ति की जीवनलीला

(शेष पृष्ठ 8 पर)

## सम्पादकीय

# पंजाब में आर्यसमाज के संगठन की आवश्यकता

29 जुलाई को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की नई अन्तरंग सभा का अधिवेशन जालन्धर में हुआ था। उसमें जो महानुभाव सम्मिलित हुए थे वे सब पंजाब की भिन्न भिन्न समस्याओं पर विचार करते रहे और प्राय सबका यह निश्चित मत था कि पंजाब में आर्य समाज का संगठन अधिक शक्तिशाली होना चाहिए। इसके बिना पंजाब के अल्पसंख्यक हिन्दू सदा ही संकट में रहेंगे क्योंकि आर्य समाज ही केवल एक ऐसी संस्था है जो हिन्दुओं के हितों की रक्षा कर सकती है। भिन्न भिन्न सदस्यों ने अपने-अपने विचार रखे और कुछ समितियां भी बना दी गईं जो काम को आगे चलाएंगी।

सबसे बड़ा प्रश्न यही था कि आर्य समाज का संगठन कैसे किया जाए। इस विषय में कई सुझाव दिए गए। सबसे पहला यह कि आर्य समाजों के साप्ताहिक सत्संग पहले की तरह ही नियमित होने चाहिए और कोई भी आर्य समाज ऐसा नहीं रहना चाहिए जिसका साप्ताहिक सत्संग न हो। साप्ताहिक सत्संग पर किसी ऐसे विद्वान को अवश्य बुलाया जाए जो धार्मिक और सामाजिक समस्याओं पर अपने विचार सत्संगियों के सामने रख सकें। यह आवश्यक नहीं कि वे आर्य समाज का उपदेशक हो या आर्य समाज का सदस्य हो। कोई भी व्यक्ति जो आर्य समाज की विचारधारा से सहमत हो और जिसने स्वाध्याय किया हो वे अपने विचार रखना चाहें तो हमें उनके विचार अवश्य सुनने चाहिए। प्राय देखा गया है कि स्कूलों और कालेजों में कई ऐसे अध्यापक मिल जाते हैं, जो कुछ न कुछ पढ़ते लिखते रहते हैं। वे भी बहुत अच्छे व्याख्यान दे सकते हैं, उन्हें भी निमन्त्रित किया जा सकता है। उसका एक परिणाम यह भी होगा कि वे व्यक्ति आर्य समाज के सदस्य तो नहीं हैं, परन्तु कभी-कभी आर्य समाज के सत्संग में आकर अपने विचार देते रहते हैं, धीरे धीरे वे भी आर्य समाज के समीप आ जाएंगे और इस प्रकार हमारा क्षेत्र बढ़ता जाएगा।

इस बात पर भी जोर दिया गया है कि आर्य समाजों के अधिकारी और सदस्य दोनों नित्य प्रति अपने घरों में प्रातः और सायं हवन अवश्य करें। मुसलमान जहां भी हो नमाज अवश्य पढ़ते हैं सिक्ख जहां भी हों गुरुद्वारों में अवश्य जाते हैं। मुसलमानों को तो कई बार रेल के प्लेटफार्म पर नमाज पढ़ते भी देखा जा सकता है। यदि आर्य समाजी भी नित्य प्रति अपने घरों में यज्ञ प्रारम्भ कर दें तो उसका भी प्रभाव बहुत अच्छा रहेगा। मुझे यह कहने में हार्दिक प्रसन्नता है कि इस बार आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सभा के जो अधिकारी बनाये गये हैं उनमें से कई ऐसे हैं जो स्वयं भी नित्य प्रति हवन सन्ध्या करते हैं और कई ऐसे हैं जो इस का प्रयास करते रहते हैं कि जगह जगह यज्ञ करवाये जायें। हमारी नई महामन्त्री बहन श्रीमती कमला आर्या हमारे कोषाध्यक्ष श्री पं. ब्रह्मदत्त जी शर्मा, हमारे उपप्रधान श्री योगेन्द्रपाल सेठ और दूसरे उपप्रधान श्री पं. हरवंशलाल जी शर्मा ये सब इस दिशा में बहुत सक्रिय रहते हैं। दूसरे भी कई सदस्य हैं, जो प्रातः और सायं हवन अवश्य करते हैं। उन्हें अपनी अपनी समाजों में भी अपने बाकी सदस्यों का ध्यान इस ओर दिलाना चाहिए।

तीसरी चीज जिसकी ओर ध्यान दिलाया गया है वह ये कि जिस प्रकार आज से 50-60 वर्ष पहले के आर्य समाजी एक दूसरे के सहायक रहते थे, उसी प्रकार हमें भी अब एक दूसरे के सहायक बनना चाहिए। प्रत्येक आर्य समाजी को दूसरे आर्य समाजी के सुख में सुखी और दुःख में दुःखी होना चाहिए। यदि हम अपने संगठन को इस प्रकार शक्तिशाली बना दें तो हम दूसरे हिन्दू भाईयों के सहायक भी बन सकेंगे। हमें अपना क्षेत्र बढ़ा कर यज्ञ करना चाहिए ताकि हम अपने देश और समाज की सेवा कर सकें।

एक शिकायत यह भी की गई थी कि हमारी शिक्षा संस्थाओं में आर्य समाज का प्रचार नहीं होता। यदि हम अपने बच्चों को वहीं से वैदिक शिक्षा देनी प्रारम्भ करें तो बड़े होकर वे भी आर्य समाज की सेवा कर सकते हैं। इसमें सन्देह नहीं कि यह शिकायत बहुत कुछ ठीक है। शीघ्र ही आर्य शिक्षा परिषद की एक बैठक बुलाई जाएगी, जहां अपनी शिक्षा संस्थाओं में हम अपना प्रचार कैसे करें, इस पर विचार किया जाएगा और कोई न कोई नई ऐसी योजना बनाई जाएगी, जिस के द्वारा इन संस्थाओं में भी हम नया वातावरण पैदा कर सकें। इस बार वेद प्रचार के अधिष्ठाता श्री पं. महेन्द्रनाथ सिंह जी को बनाया गया है वह इस दिशा में बहुत कुछ कर सकते हैं। प्रातः और सायं हवन यज्ञ भी करते हैं और वेद पाठ भी करते हैं। इसलिए वे इस सम्बन्ध में यदि कोई योजना बनायें और आर्य समाजों के सामने रखें और उसे क्रियान्वित करने का प्रयास किया जाए, तो हम बहुत कुछ कर सकते हैं।

इस बार यह भी फैसला किया गया है कि न्यायसभा और राजार्यसभा का गठन भी किया जाए। आर्य समाजों के जो झगड़े हैं सभा के अधिकारी उन्हें स्वयं सुलझाने का प्रयास न करें वे न्यायसभा के हवाले कर दिये जायें। देखा गया है कि जब सभा के अधिकारी इन झगड़ों में पड़ते हैं तो उनके कारण कई नई उलझनें पैदा हो जाती हैं, यदि कोई ऐसी सभा बन जाए जो निष्पक्ष रूप से इनका फैसला कर सके, तो आर्यसमाज को उससे भी बहुत लाभ पहुंचेगा। इसी प्रकार राजार्यसभा को प्रारम्भ करने का भी निश्चय लिया गया है। हम पंजाब की राजनीति में कोई सक्रिय भाग लेना नहीं चाहते। चुनाव के समय अपने कोई प्रत्याशी भी खड़ा करना नहीं चाहते। न हम मन्त्री मण्डल में अपने लिए स्थान चाहते हैं परन्तु यह अवश्य होना चाहिए कि आर्य समाज का राजनैतिक महत्व अवश्य बढ़ना चाहिए। यह तभी स्थिति में सम्भव है यदि आर्यसमाज का संगठित वोट एक ही तरफ पड़े। चुनाव से पहले आर्यसमाज के प्रतिनिधि बैठ कर यह निश्चय ले लें कि कौन कौन से ऐसे उम्मीदवार हैं जिन्हें लोकसभा या विधानसभा में भेजा जाये। वे हमारे हितों की रक्षा कर सकते हैं और वोट सिर्फ उन्हें ही डाला जाये तो इसका परिणाम यह होगा कि राजनैतिक दल आर्य समाज का सहयोग लेने का प्रयास करेंगे। यह एक ऐसा प्रश्न है जिस पर गम्भीरता पूर्वक विचार करने की आवश्यकता है। अन्तरंगसभा ने यह निश्चय किया है कि शीघ्र ही पंजाब की आर्यसमाजों के प्रतिनिधियों की एक बैठक बुलाई जाये जिसमें इस समस्या पर भी विचार किया जाये। यह बिल्कुल स्पष्ट है कि आर्यसमाज अब आंखें और कान बन्द कर के नहीं बैठ सकता, वह अपनी आवाज उठाना चाहता है और उठायेगा।

मेरा पंजाब के आर्य बहनों और भाईयों से यह निवेदन है कि वे भी अपने सुझाव हमें भेजें। हम चाहते हैं कि अब पंजाब का सारा आर्यसमाज एक बार फिर सक्रिय हो जायें। आप जो सुझाव हमें भेजेंगे हम उस पर अवश्य विचार करेंगे और जो सुझाव आर्य समाज के हित में समझे जायेंगे, वे हम सब आर्य समाजों को भेजेंगे। नये चुनाव का एक परिणाम अब यह भी होगा कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का कार्यालय पहले से अधिक सक्रिय हो जायेगा। सभा की महामन्त्री श्रीमती कमला जी आर्या अब पंजाब की आर्यसमाजों को जाकर स्वयं देखा करेंगी दूसरे अधिकारी भी यथासम्भव बाहर जाने का प्रयास करेंगे। हम चाहते हैं कि पंजाब में आर्यसमाज को नया रूप दिया जाये। इसमें सारी आर्य जनता के सहयोग की आवश्यकता है जो मेरा विश्वास है कि हमें मिलता रहेगा।

—वीरेन्द्र

# धन्यवाद

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान चुने जाने पर मुझे कई पत्र आए हैं। जो नई अन्तरंग सभा इस बार बनाई गई है उस पर भी आर्य जनता ने बधाई दी है धन्यवाद भी किया है। पहली बार एक बहन को हमने महामन्त्री बनाया है। इस प्रकार आर्य समाज में एक नया युग शुरू हो रहा है जहां महिलाओं को पहले से अधिक महत्व दिया जाएगा। जो अधिकारी बनाए गए हैं उनके जिम्मे भी काम लगा दिए हैं। इसलिए इस बार यह आशा है कि सभा का काम पहले से अधिक होगा। जिन भाइयों और बहनों ने मुझे बधाई के पत्र लिखे हैं मैं उन सबका धन्यवाद करता हूं। परन्तु इसी के साथ उन सब से और उनके द्वारा दूसरे आर्य भाइयों और बहनों से यह निवेदन अवश्य करना चाहता हूं कि आर्य समाज का काम केवल सभा के अधिकारियों का नहीं और न केवल सभा के अन्तरंग सभा के सदस्यों का है, यह सब का है। जब तक हम मिलकर काम न करेंगे उस समय तक आर्य समाज की वह शक्ति नहीं बन सकती जो हम चाहते हैं। मुझे इस बात का दुःख अवश्य है कि मैं कई और बहनों और भाइयों को अन्तरंग सभा का सदस्य नहीं बना सका। विधान के अनुसार मैं जो कुछ कर सकता था मैंने किया है। मैं विधान से बाहर न जा सकता था। इसलिए मैं यह जानता हूं कि कई भाइयों को निराशा भी हुई है। उनसे मेरा यही निवेदन है कि हम सब ने मिलकर काम करना है कोई अधिकारी बने या न बने इसमें अधिक अन्तर नहीं पड़ता। वास्तविक कर्त्तव्य हमारा काम करने का है। मैं चाहता हूं कि पंजाब की प्रत्येक आर्य समाज अब सक्रिय हो जाए और हमारे आर्य समाज मन्दिर हमारी धार्मिक और सामाजिक गतिविधियों के केन्द्र बन जाएं यदि आर्य समाजों के अधिकारी इस ओर ध्यान दें और आर्य समाज के प्रति अपने कर्त्तव्य को पूरा करने का प्रयास करें तो हम बहुत कुछ कर सकते हैं। जिन भाईयों और बहनों के पत्र मुझे मिले हैं उन सबका एक बार फिर धन्यवाद करता हूं।

—वीरेन्द्र

# वैदिक साहित्य में विश्व-बन्धुत्व की परिकल्पना

ले श्री विजय कुमार शर्मा एम ए पुरोहित आर्य समाज
मेन बाजार पठानकोट

वैदिक साहित्य की एक अनोखी विशेषता यह है कि मानव मात्र के लिए कल्याण की भावना को अग्रसर करता है संकीर्ण स्वार्थ को ही मानव जीवन का चरम पुरुषार्थ मानने वाले पाश्चात्य देशों के साहित्य में जो एकाकिता विद्यमान है वह वैदिक साहित्य को स्पर्श नहीं करती। कारण इसका स्पष्ट है— साहित्य संस्कृति का अग्रदूत है साहित्य संस्कृति का वाहन है। या साहित्य संस्कृति का दर्पण है। समाज की भावना को दर्पणवत प्रतिबिम्बित करने वाला साहित्य कितना भी अ दर्शवादी हो वह वास्तविकता का चित्रण किए बिना नहीं रह सकता। उसकी व्याप्ति राष्ट्र की परिधि के द्वारा नियन्त्रित होती है। वह उस देश के मनुष्यों में परिव्याप्त भावना को सर्वथा उन्मूलन करने की क्षमता नहीं रखता पश्चिम के देश संकीर्ण राष्ट्रीयता की भावना से जकड़े हुए हैं। अत उनके साहित्य में उस संकीर्णता का का ही परिचय हमें कदम कदम पर मिलता है। वहां के साहित्यक अपने राष्ट्र की चार दिवारी के भीतर अपने को सीमित रखते हैं। इसलिए उनकी वाणी राष्ट्रीयता के परिवेश में ही बन्धी रहती है। इसके विपरीत संस्कृत के

संकीर्णता को अपने नजदीक फटकने नहीं देते। फलत वैदिक साहित्य विश्वबन्धुत्व की भावना से सर्वथा ओत प्रोत है।

वैदिक प्रार्थना में समष्टि भावना का पूर्ण साम्राज्य विराजमान है। वैदिक ऋषि व्यष्टि कल्याण के लिए भगवान से प्रार्थना नहीं करता प्रत्युत वह समग्र समष्टि के मंगल के लिए आशीर्वाद चाहता है। वह व्यक्ति तथा समाज से ऊपर उठकर समस्त विश्व के सुख समृद्धि तथा मंगल के निमित्त ही प्रार्थना करता है। विश्व शान्ति और विश्व बन्धुत्व की उदात्त भावना से ओत प्रोत वैदिक मन्त्रों में मानवमात्र में परस्पर सौहार्द मैत्री तथा सहानुभूति की भावना की उपलब्धि नितान्त स्वाभाविक है

मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि
समीक्षे।
मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे॥

मैं मित्र की दृष्टि से सब प्राणियों को देखूं हम सब लोग मित्र की दृष्टि से परस्पर में एक दूसरे को देखें। मानव मात्र का कर्तव्य होना चाहिए कि वह एक दूसरे की सर्वथा रक्षा तथा सहायता करे। केवल अपने ही स्वार्थ में उसे संलग्न नहीं होना चाहिए। इस भाव को प्रकट करता हुआ ऋग्वेद का निम्नलिखित मन्त्र कहता है—

पुमान पुमांस परिपातु विश्वत।
ऋग्वेद।

वैदिक ऋषि भगवान से प्रार्थना करता है कि वह मानवमात्र के लिए सुमति सद्भावना धारण करे। उन प्राणियों के लिए नहीं जिन्हें वह देखता है प्रत्युत उनके लिए भी जो उसकी दृष्टि से ओझल हैं और जिन्हें वह नहीं देखता इस आशय का दिग्दर्शन अथर्ववेद के निम्नलिखित में मन्त्र करवाया गया है—

यांश्च पश्यामि यांश्च न।
तेषु मा सुमतिं कृधि

कितनी उदार भावना है यह। सामान्यत हम उन्हीं की कल्याण की कामना करते हैं जिन्हें हम अपनी आंखों से देखते हैं परन्तु वैदिक ऋषि यहीं तक अपनी प्रार्थना को सीमित नहीं रखता प्रत्युत वह अखिल विश्व के अदृष्ट प्राणियों के प्रति भी वह भावना रखने की विनम्र प्रार्थना करता है। ... अथर्ववेद में विशिष्ट सूक्त है—जिनकी संज्ञा है सामनस्य सूक्त या संगठन सूक्त है इनमें विशेष रूप से विश्व कल्याण की भावना परिव्याप्त है इस विषय के कुछ मन्त्र इस प्रकार हैं—

सं गच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि
जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे सं ...
उपासते॥

इस मन्त्र का तात्पर्य बड़ा गम्भीर है। हे मनुष्यो जैसे सनातन से विद्यमान दिव्य शक्तियों से सम्पन्न सूर्य चन्द्रादि देव परस्पर अविरोध भाव से प्रेम से अपने कार्यों को करते हैं ऐसे ही तुम भी समष्टि भावना से प्रेरित होकर एक साथ कार्यों में प्रवृत्त हो ऐक्यमत्य होकर परस्पर सद्भाव से रहो। ऋग्वेद का अन्तिम मन्त्र भी इसी भावना को अग्रसर करता है—

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि
वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः
सुसहासति॥

मानवों को सम्बद्ध कर इस मन्त्र का द्रष्टा आंगिरस संवनन ऋषि का क्या ... निहित है। वह कहते हैं कि मानवों की आकूति चित्त-वृत्ति हृदय तथा मन सब समान हो। तभी विश्व के प्राणी परस्पर सौहार्द से मिल कर रह सकते हैं। अत ऋषि केवल अपने वैयक्तिक मंगल के लिए भगवान से प्रार्थना नहीं करता प्रत्युत वह प्राणिमात्र के हित का प्रार्थी है।

अयं निजः परो वेति गणना
लघुचेतसाम्।
उदार चरितानां तु वसुधैव
कुटुम्बकम्॥

यह अपना है और यह पराया है ऐसी गणना क्षुद्रचित्त वाले मनुष्यों की है। उदार चरित वाले जनों की दृष्टि में तो यह समस्त वसुधा ही एक कुटुम्ब है। विश्व भावना की अभिव्यक्ति इससे बढ़ कर और सुन्दर शब्दों में नहीं की जा सकती। इस श्लोक के तात्पर्य के भीतर एक गहरी अनुभूति है। आजकल यातायात की सुविधा से यदि एक देश का मानव दूसरे देश के मानव के प्रति आत्मीयता के पाश में बद्ध हो कर आकृष्ट होता है तो इसे हम समझ सकते हैं परन्तु आश्चर्य तो इस का है कि ऐसी सुविधाओं से विरहित प्राचीन काल में भारत के निवासी विश्व बन्धुत्व की भावना में विश्वास ही नहीं करते थे अपितु अपने दैनिक जीवन उसका में व्यवहार भी करते थे।

भारत के निवासी आर्यजन का जीवन विश्वबन्धुत्व का व्यवहारिक पक्ष प्रस्तुत करता है। प्रत्येक गृहस्थ बलि वैश्वदेव के अनुष्ठान के उपरान्त ही स्वयं भोजन करता है। यह बलि विश्व के समस्त देवताओं के लिए अन्न द्वारा तृप्ति की साधिका नहीं है प्रत्युत पशु पक्षी आदि को भी भोजनार्थ अन्न देने की विधान यहां पाया जाता है। इससे प्रत्येक मानव संसार के समस्त प्राणियों के साथ अपना सम्पर्क स्थापित कर विश्वबन्धुत्व की साकार उपासना करता है विश्व के समस्त प्राणी परम पिता परमात्मा की सन्तान हैं इस रहस्य ... दशा में उनमें पारस्परिक बन्धुत्व की ... हमारे संस्कृत के ... वह भावना बड़ी स्फुटता से अपनी अभिव्यक्ति पा रही है। इसलिए प्रत्येक धार्मिक अनुष्ठान की समाप्ति पर साधक पुरुष अपना आदर्श इस प्रसिद्ध श्लोक के द्वारा प्रकट करता है—

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु
निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्
दु:ख भाग् भवेत॥

इस विश्व में सब प्राणी सुखी हों सब रोग रहित हों सब प्राणी कल्याण की उपलब्धि कर कोई प्राणी दुःख का भागी न हो। प्राणी मात्र को आपस में बन्धुता की महनीय भावना में ओत प्रोत होना चाहिए। मानव मात्र के लिए आदर्श भावना से ओत प्रोत होने के लिए निम्नलिखित मन्त्र संदेश दे रहा है—

सहृदयं सांमनस्यमविद्वेषं कृणोमि
वः।
अन्यो अन्यमभिहर्यत वत्सं जातम्
इवाघ्न्या॥

मानवों के परस्पर सौहार्द सहानुभूति तथा मैत्री को मानव समाज के लिए आदर्श बतलाने वाला एक नितान्त स्मरणीय मन्त्र है जिसके भावों को समझना तथा अपने जीवन में उतारना संसार के प्राणियों का कल्याण साधक है।

इस प्रकार वैदिक साहित्य का जब हम अवलोकन करते हैं तो इन साहित्यों में सर्वत्र विश्वबन्धुत्व की परिकल्पना का साक्षात्कार करते हैं। आओ हम सब वैदिक साहित्य का स्वाध्याय कर और उससे प्रेरणा लेकर अपने जीवन का विश्व बन्धुत्व की भावना से ओत प्रोत कर ताकि वसुधैव कुटुम्बकम यह महान वाक्य सार्थक बने।

## स्वास्थ्य सुधा--

# मोटापा धुमेह पर नियन्त्रण पाइए

श्री डा सत्यदेव आर्य, एन बी 161 बापू नगर जयपुर

मोटापा सामान्यतया शरीर मे अधिक चर्बी वाहा कोशिकाओ के जमाव से होता है। पुरुषो व महिलाओ मे औसतन यह क्रमिक'ए क्रमश 15 प्रतिशत व 25 प्रतिशत होती है। इस परिमाण मे यह हितकर सिद्ध होती हैं। उपयुक्त ऊर्जा उत्पादित करती हैं, शारीरिक ऊष्मा ताप-युक्ततम बनाए रखती है तथा महत्वपूर्ण आतरिक अवयवो के चारो ओर परिधि परत बना कर उनको सुरक्षित रखती हैं। लेकिन औसत से अधिक की वृद्धि जहा स्थूलता पैदा करती है वहा शारीरिक वजन मे वृद्धि, शारीरिक क्षमता एव चुस्ती में कमी हृदय यकृत गुर्दो एव रक्त परि सचरण तन्त्र के कार्य भार मे वृद्धि रक्तचाप, एव रक्त कोलेस्ट्राल मे वृद्धि जिससे रक्त धमनियो की क्रमश क्षति और कालान्तर मे 'हार्ट अटैक व स्ट्रोक पक्षाघात जैसी घटनाओ की सम्भावना मे वृद्धि करती है। स्थूलकाय शरीर निश्चय यथोचित स्फूर्ति के अभाव म आकस्मिक दुर्घटनाओ का शिकार भी यदा कदा हो हो जाता है।

साधारणतया मोटापा यदि किसी रोग विशेष के कारण न हो तो उसका निराकरण आहारीय सुव्यवस्था और उपयुक्त व्यायाम से सफलतापूर्वक किया जा सकता है। यही उपाय मधुमेह की स्थिति को भी यदि अधिक बढाव लिए हुए न हो तो नियन्त्रित करने मे पूर्णतया सफल सिद्ध होते हैं।

आहारीय व्यवस्था—औसतन एक साधारण कामकाजी पुरुष एव महिला को क्रमश 2400 व 1900 कैलोरीज की दैनिक आवश्यकता होती है। मोटापा कम करने के लिए इनमें अपेक्षित कमी करनी होती है। एक ग्राम चर्बी कम करने के लिए लगभग 1 कैलोरीज की कमी करनी होगी। यदि एक माह मे 2 किलो ग्राम=2000 ग्राम वजन की कमी करनी है तो दैनिक खुराक में 600 कैलोरीज की कमी करनी होगी यथा—600—9×30=1998 या 2000 ग्राम। यह कमी किसी भी प्रकार से कोई असुविधा जनक नही होगी। 2400 कैलोरीज प्रतिदिन की प्राप्ति के लिए लगभग 400 ग्राम, दालें 70 ग्राम, हरे पत्तेवाली सब्जिया 100 ग्राम फलवाली तथा अन्य सब्जिया, क्रमश 75 ग्राम दूध—दही 250 ग्राम, मौसमी फल 30 ग्राम घी, मक्खन तेल आदि 35 ग्राम और शक्कर, गुड आदि 30 ग्राम की आवश्यकता होगी। 600 कैलोरीज कम करने के लिए हमें अनाज 50 ग्राम फलवाली व अन्य सब्जिया क्रमश 45 व 25 ग्राम दूध दही 50 ग्राम मक्खन घी तेल आदि 20 ग्राम और शक्कर गुड 20 ग्राम की कमी करनी होगी। वसायुक्त पदार्थों मे केवल शुद्ध वनस्पति तेल ही का प्रयोग लगभग 15 ग्राम तक करना श्रेयस्कर होगा। कितना वजन कम करना है इसका अनुमान प्रामाणिक कद वजन सारणी से लगा कर जितने समय मे कम करना है उसी के हिसाब से हमे उपयुक्त भोजनीय व्यवस्था करनी होगी।

उपयुक्त दैनिक खुराक मे हमे ऐसे पदार्थों को भी सम्मिलित करना होगा [illegible] खुराक की मात्रा मे यथोचित वृद्धि करके क्षुधा तृप्ति मे अवश्य सहायक हो सके तथा अन्य भी कई महत्वपूर्ण चयापचयी प्रक्रियाओ मे हितकर सिद्ध हो सकें। यह पदार्थ हैं—चापड या चोकर और सेल्यूलोज रेशदार तत्व जिसे हम आज की तथाकथित सभ्यता के दिखावे मे आकर व्यर्थ मे फैंक देते हैं। यह पदार्थ वसा व कार्बोहाइड्रेट के पचित अंशो को देर तक अपने साथ आंतो मे रोक रखते हैं। जिससे इनका अवशोषण विलम्ब से हो पाता है और इस कारण यह रक्त कोलेस्ट्राल व रक्त शर्करा की मात्रा को नियन्त्रित रखने मे अत्यन्त सहायक सिद्ध होते हैं। हाल ही मे केनटकी विश्व विद्यालय यू एस ए के डा जेम्स एन्डरसन व साथियों मे तथा टोरेन्टो विश्वविद्यालय कैनेडा के डा जन एन काई मे अपने प्रयोगो मे यह सिद्ध किया है कि उपयुक्त परिमाण में चापड व सेल्यूलोज के साथ कार्बोहाइड्रेट प्रधान खुराक जिसमे कुल कैलोरीज का 70 प्रतिशत भाग कार्बोहाइड्रेट से प्राप्त होता हो मोटापा निवारण तथा मधुमेह नियन्त्रण मे अति ही हितकर होती है। इससे रक्त शर्करा मे इतनी कमी हो जाती है कि 30 45 यूनिटस दैनिक इन्सुलिन की जगह कालान्तर में केवल आधा या तीसरी मात्रा की ही आवश्यकता रह जाती है। मधुमेह की स्थिति यदि अधिक बढ़ाव लिए हुए न हो तो इन्सुलिन या अन्य खाने की दवाईयों की आवश्यकता ही नहीं रहे। हा नियमित व्यायाम अवश्य करते रहना होगा। भारत मे भी पोषणीय संस्थानो मे यह प्रयोग हाल ही मे किए गए हैं। जिनमें यह सिद्ध हो पाया है कि चापड व सेल्यूलोज युक्त कार्बोहाइड्रेट प्रधान खुराक न केवल मोटापे तथा मधुमेह को नियन्त्रित करती है बल्कि हृदय एव रक्त परि सचारण तन्त्र को समुचित पुष्ट करती है। कोष्ठ बद्धता को भी दूर करती है।

चापड के लिए हाथ का पिसा गेहू की ज्वार बाजरा आदि का अनछना आटा या चक्की का मोटा पिसा अनछना आटा उत्तम होता है। ऐसे मिश्रित आटे की रोटी जिसमे कुछ बेसन भी मिला हो अति ही उत्तम होती है। हाथ का कुटा चावल या उसना चावल उत्तम रहता है मधुमेह मे इन दिनो कार्बोहाइड्रेट प्रधान खुराक मे चावल व आलू (छिलके सहित) के प्रयोग मे उदारता बरती जाने लगी है। दलिया सत्तु व अंकुर निकले अनाज भी चोकर की अच्छी प्राप्ति कराते हैं। अंकुर निकले अनाज मे विटामिन बी वर्ग व सी पर्याप्त मात्रा मे प्राप्त हो जाते हैं जो मोटापा निवारण और मधुमेह [illegible] काफी हितकर होते हैं। [illegible] दाल—छिलके तथा सभी अनावश्यक एमा इनो एसिडस प्रचुर मात्रा मे प्राप्त करा देती है। सेल्यूलोज की पर्याप्त प्राप्ति हरे पत्तेवाली सब्जियां तथा मटर सेम लौकी तोरी कटहल, भिन्डी गोभी ब्रोकली, प्याज टमाटर मूली, गाजर ककड़ी सलाद आदि से प्राप्त हो जाती है। जहा तक हो इन्हे छिलके सहित ही और कच्ची खाने योग्य को कच्ची ही काम मे लाना हित कर होता है। फलो मे सेब (छिलके सहित) सन्तरा नाशपाती मौसमी, जामुन आलूबुखारा तरबूज रेशेयुक्त आम आदि मे बहुतायतता से प्राप्त होता है। मोटापा निवारण हेतु नीबू व आंवला का प्रचुर प्रयोग अत्यन्त ही हितकर होता है।

मोटापा कम करने तथा मधुमेह को नियन्त्रित रखने मे भी मक्खन मलाई, आईसक्रीम केक, पेस्टी चाकलेट तथा ससोधित सीलबन्द डिब्बे मे तैयार की गई खाद्य सामग्री का प्रयोग नही करना चाहिए। शक्कर गुड शहद गन्ने का रस व अन्य मिष्ट पेय पदार्थों का प्रयोग यथासाध्य वर्जित ही रखना होगा। शर्कराओ की अपेक्षित मात्रा कार्बोहाइड्रेट खाद्य पदार्थों मे नैसर्गिक रूप मे उपयुक्त खुराक मे स्वत ही मिल जाती है।

व्यायाम—मोटापा निवारण हेतु प्रतिदिन 4 5 किलो मीटर का चुस्त भ्रमण या दौड साइकिल या घुडसवारी लगभग आध घन्टे की तैराकी या यथा समय स्किपिङ्ग तथा नियोजित आसन अवश्य करने चाहिए। मधुमेह नियन्त्रण [illegible] नियोजित सूक्ष्म व्यायाम व आसन करना समचित होगा।

—

## हो रहा वीरान है अब

रचयिता—श्री कवि बनवारीलाल शादा वैद्य दिल्ली

हो रहा वीरान है अब, देश का सारा चमन।
रात दिन अब कत्ल होते, मिट गया चैनो अमन॥

चांदनी भी कांपती है मातमी माहौल से।
क्या खबर थी देश मे आएगा ऐसा भी दिन॥

स त भी करवा रहे हैं गुरु की बाणी को भुला।
प्रेम प्यार मिट गया है चारो तरफ लागी अग्नि॥

देश की अब पुण्य भूमि, रग रही है खून से।
लूट मार गोली चले, बढ़ रहा इतना दमन॥

अपनो का ही खून अब अपने जन ही कर रहे।
धर्म कर्म भूल बैठ भूले हैं प्रभु का भजन॥

'बादा फिर कैसे चलेगा, देश का यह कारवा।
सम्प्रदायिकता की बढी, देश मे इतनी घुटन॥

—

# आर्य विद्या परिषद् पंजाब द्वारा आयोजित धर्म शिक्षा

## परीक्षाओ के परिणाम

इस वर्ष आर्य विद्या परिषद पंजाब द्वारा आयोजित धर्म प्रवेशिका धर्माधिकारी एव धर्म ज्ञानी परीक्षाओ मे उत्तीर्ण होने वाले छात्र एवम छात्राओं के रोल न नीचे दिए जा रहे हैं । इस बार धर्म प्रवेशिका का परिणाम 90 60 प्रतिशत धर्माधिकारी परीक्षा का परिणाम 66 63 प्रतिशत तथा धर्म ज्ञानी परीक्षा का परिणाम 60 46 प्रतिशत रहा है । तीनो परीक्षाओ मे सर्वप्रथम द्वितीय एव तृतीय आने वाले परीक्षार्थियो का विवरण निम्न प्रकार है —

### धर्म प्रवेशिका परीक्षा

| स्थान | रोल न | परीक्षार्थी व स्कूल | प्राप्तांक |
|---|---|---|---|
| प्रथम | 223 | कु सन्तोष सुपुत्री श्री सरमुख सिंह वैदिक गर्ल्ज हाई स्कूल मनी माजरा । | 80 |
| द्वितीय | 713 | राजेन्द्र मोहन सुपुत्र श्री वेद प्रकाश, आर्य हाई स्कूल बस्ती गुजा जालन्धर । | 78 |
| तृतीय | 131 | अनुपम सुपुत्री श्री वरिन्द्र कुमार, शिव देवी गर्ल्ज हाई स्कूल जालन्धर । | 77 |

### धर्माधिकारी परीक्षा

| स्थान | रोल न | परीक्षार्थी व स्कूल | प्राप्तांक |
|---|---|---|---|
| प्रथम | 1513 | कु नीनू सुपुत्री श्री कृष्ण कुमार आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल, भटिंडा । | 108 |
| द्वितीय | 1902 | कु सोनिया सुपुत्री श्री मदन लाल, आर्य गर्ल्ज हा सैकेण्डरी स्कूल पठानकोट । | 105 |
| तृतीय | 1082 | कु मोनिका रानी सुपुत्री श्री कृष्ण चन्द, एस एन आर्य हाई स्कूल तपा । | 105 |

### धर्म ज्ञानी परीक्षा

| स्थान | रोल न | परीक्षार्थी व स्कूल | प्राप्तांक |
|---|---|---|---|
| प्रथम | 3003 | सतीशकौर सुपुत्री श्री हरजीत सिंह, शिव देवी गर्ल्ज हाई स्कूल जाल धर । | 110 |
| द्वितीय | 3607 | कु सीमा सुपुत्री श्री कुलभूषण के एल आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल जालन्धर छावनी । | 108 |
| तृतीय | 3075 | कु अमीता शर्मा सुपुत्री श्री वेद प्रकाश, वैदिक गर्ल्ज हाई स्कूल मनी माजरा । | 106 |

समस्त परीक्षाओ मे सर्व प्रथम द्वितीय व तृतीय आए परीक्षार्थियो को पारितोषिक दिया जाएगा ।

प्रस्तोता
आर्य विद्या परिषद
पंजाब

### धर्म प्रवेशिका परीक्षा मे उत्तीर्ण परीक्षार्थी

1 से 6 8 से 47, 49 से 73 75 से 80 85 92, 94 से 98 100 101 103 105 106 108 से 114 116 से 119, 121 से 128 130 से 144 146 149 से 159, 161 से 165 167 168 170 से 291 293 स 296 298 से 348 350 से 371, 373 से 389 391 से 418 420 से 446, 448 से 454 456 से 458, 461 से 463 465 467 468 470 से 472, 474 से 478, 480 से 483 485, 487 से 500, 502 से 529, 531 से 538, 540 से 551, 553 से 557 559, 561, 562 564 से 570, 572 से 577, 579 से 584, 586 से 591 से 593 594, 600 से 602 604 से 616, 618 से 689 691 से 702, 705 से 707 709 से 717, 720 721, 723 से 734 तक ।

### धर्माधिकारी परीक्षा मे उत्तीर्ण परीक्षार्थी

1001 से 16 18 19, 22 24 28 से 34 36 से 41 43 से 53 55 से 59 91 से 11000 1102 से 5 8 10 से 12, 15 से 23 25 27 29 से 37 39 41 से 43, 46 47, 62 70 72, 74, 77 से 1209 1202 से 5, 8 से 25 27 से 30, 32 से 41, 43 से 61 63 से 1322, 24 से 52, 54 से 66, 68 से 71 73 से 76 78 80 से 83, 85,86 88 से 90 93 से 98 1400 1401 3, 4, 7 से 27, 29 से 36, 38, 39 44 46 से 49 51 52 54 से 57 59 से 68 75 से 77 83 84 87, 89 91 93 96 98 99 1502 4 7 से 9 11 13 15 से 21 26 29, 34 35, 38 से 53 55 से 58, 60, 62, 63, 65 से 67, 69 से 71, 73, 75 से 79, 81 से 83, 85 स 87, 89 से 96, 98 से 1600, 1602, 4 से 6, 8 से 16, 18 से 22, 24, 50, 52, 59, 64, 69, 77, 83, 88, 1704, 15 20, 23 से 27, 29, 30, 33 से 36, 38 से 40, 42, 46 47, 49 से 51 स 61,63,64, 66 68 69 78 85 86 89 92, 1812 14, 18 19 28 32 44, 50 53 61 63 79 से 83 85 से 92 95 से 1959 61 से 75 77 से 92 94 से 98 तक ।

### धर्म ज्ञानी परीक्षा मे उत्तीर्ण परीक्षार्थी

3001 से 3 5 से 14, 16 से 18 20 स 22 24 से 32 34 से 42 44 से 51 53 से 61 63 से 66 68 से 3127 29 से 64 66 68 70 72 77 से 82 84 से 86 90 92 93 3200 3 4 6 से 9 11 12 14 से 16 18 19 23 30 32 34 से 36 38 40 41 43 49 से 71 73 74 76 से 80 85 86 88 90 से 92 95 97 से 3303 6 7 9 से 12 14 17 से 22 24 से 27 29 से 32 34 से 26 39 से 45 49 से 54 56 58 61 से 68 74 75 77 से 83 87 से 89 91 से 94 3446 54 55 57 65 68 75 76 93 95 96 99 3500 2 से 4 6 8 9 11 13 से 15 17 19 21 22 24 26 28 29 31 36 37 58 60 67 69 78 79 84 88 91 96 से 3603 5 से 10 12 14 स 19 21 25 27 28 31 33 से 46 49 50 52 54 55 57 स 90 92 ।

---

## आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द अमृतसर की ओर से जावेद जी को श्रद्धांजलि

13 7 84 की प्रात जैसे ही समाचार पत्र पर दृष्टि पड़ी और समाचार पढ़ा कि प्रि श्री राम चन्द्र जावेद इस संसार से सदा के लिए विदा हो गये हैं । हृदय स्तब्ध रह गया काश यह झूठ ही होता परन्तु नियति को कौन टाल सकता है ?

तत्काल प्रधान श्री सुभाष जी भाटिया से सम्पर्क करके आर्य समाज में शोक सभा का आयोजन किया गया । जिसमें प्रो ओम प्रकाश वेद संरक्षक श्री ओंकार नाथ बहल मैनेजर वैदिक कन्या हायर सैकण्डरी स्कूल, श्री यशपाल ढोलरा, अधिष्ठाता आर्य वीर दल व सभी ने दिवगत आत्मा को भाव भीनी श्रद्धांजलियां अर्पित की, व उनके परिवारजनों के साथ हार्दिक सहानुभूति प्रकट की ।

वीरेन्द्र-देवगन
महामन्त्री

# स्वर्गीय श्री रामचन्द्र जी आवेद को श्रद्धांजलियां

## आर्य समाज भटिंडा (पंजाब) की ओर से शोक संवेदना

श्री राम चन्द्र जी आवेद महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के निधन का शोक समाचार 'प्रताप' मे पढ़ कर अत्यन्त दुःख हुआ श्री आवेद साहिब बहुत ही शरीफ-मिलनसार योग्य व्यक्ति थे उनके निधन से सारे आर्य जगत को भारी क्षति हुई है आर्य समाज के लिये तो उन्होंने अपना जीवन समर्पित कर दिया था ऐसे विद्वानो तथा निष्काम कार्यकर्ताओ का जैसे अभाव ही होता जा रहा है।

मैं आर्य समाज भटिंडा आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल भटिंडा तथा अन्य आर्य संस्थाओ की ओर से प्रभु से प्रार्थना करता हू कि उनकी दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें और उनके प्रियजनो को यह सदमा सहने की शक्ति दे।

कृष्ण कुमार
भटिंडा

## आर्य समाज बरनाला का शोक प्रस्ताव

आर्य समाज बरनाला की कार्यकारिणी की बैठक श्री ओम प्रकाश जी गुप्ता की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुई। जिसमें आर्य प्रतिनिधिसभा के महामन्त्री श्री राम चन्द्र जी आवेद के आकस्मिक निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया गया। उनकी सभा के प्रति सेवाओ की प्रशंसा की गई, तथा परम पिता परमेश्वर से प्रार्थना की गई कि वे उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें और उनके परिवार जनो को यह असहनीय दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

तमसुखराम
मन्त्री

## आर्य महिला कालेज दीनानगर की ओर से शोक प्रस्ताव

शान्ति देवी आर्य महिला कालेज दीनानगर के प्रधानाचार्या एवं प्राध्यापक वर्ग तथा कर्मचारियों की सभा मे श्री रामचन्द्र आवेद जी महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के दुःखद और आकस्मिक निधन पर हार्दिक शोक प्रकट किया गया। श्री आवेद जी का व्यक्तित्व बहुमुखी और अत्यन्त प्रभावशाली था। सभी सदस्यों ने उनके निधन पर श्रद्धांजलियां अर्पित की। और प्रभु से उनकी दिवंगत आत्मा के लिए शान्ति की प्रार्थना की। हम सब उन के परिवार के प्रति हार्दिक सम्वेदना प्रकट करते हैं।

प्रधानाचार्या, प्राध्यापक
एवं
कर्मचारी वर्ग

## आर्य समाज, मण्डी बाग बजांचियां लुधियाना का शोक प्रस्ताव

"आर्य समाज मण्डी बाग बजांचियां लुधियाना में आयोजित यह विशेषसभा आर्य प्रतिनिधिसभा पंजाब के महामन्त्री श्री राम चन्द्र आवेद के देहावसान पर गहरा दुःख तथा हार्दिक संवेदना प्रकट करती है। आवेद जी एक आदर्श शिक्षक प्रसिद्ध लेखक महान विद्वान विनम्र प्रकृति आदि गुणों के कारण अत्यन्त लोकप्रिय थे। उनके निधन से आर्य समाज के क्षेत्र मे हुए रिक्त स्थान की पूर्ति यदि असम्भव नही तो कठिन अवश्य है।

यह सभा उस परमपिता सर्व शक्तिमान परमात्मा से प्रार्थना करती है कि वह दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें तथा उनके परिवार के सदस्यो व निकट सम्बन्धियो तथा मित्रो को यह असहनीय दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

राजेश कुमार
महामन्त्री

## स्त्री आर्य समाज गुरदासपुर की ओर से शोक प्रस्ताव

श्री राम चन्द्र आवेद जी के अकस्मात निधन पर स्त्री आर्य समाज गुरदासपुर के सदस्यो को गहरा आघात पहुंचा है। स्त्री आर्य समाज ने शनिवार दिनांक 14 7-84 को एक शोकसभा करके उनके प्रति अपना गहरा शोक व्यक्त किया है। सभी बहनो ने उन्हे भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। और एक शोक प्रस्ताव द्वारा प्रभु से प्रार्थना की कि उनकी आत्मा को शांति प्राप्त हो और उनके परिवार के सदस्यो को प्रभु यह सदमा सहने की शक्ति प्रदान करें।

## आर्य समाज कोटकपूरा की ओर से शोक प्रस्ताव

आज आर्य मर्यादा मे दुःखदायी समाचार पढ़ कर अत्यन्त दुःख हुआ कि हमारे सभामन्त्री श्री आवेद जी हमारे मध्य नहीं रहे। अत कोट कपूरा आर्य समाज की ओर से उनके परिवार व आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियो को सहानुभूति भेज रहे हैं।

परमपिता परमात्मा उन की आत्मा को शान्ति प्रदान करें। और परिवार को यह कष्ट सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

महिन्द्र पाल मन्त्री

## आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार लुधियान की ओर से शोक प्रस्ताव

आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना की साप्ताहिक सत्संग की यह सभा श्री राम चन्द्र जी आवेद महामन्त्री आर्य प्रतिनिधिसभा पंजाब, आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता तथा वैदिक धर्म के सम्पादक, के निधन पर अतिशोक प्रकट करती है। परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे। तथा उनके पुत्रो व निकट सम्बन्धियो और मित्रजनो को यह दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करें। प्रभु दिवंगत आत्मा के पीछे घर मे हर प्रकार की सुख और शान्ति बनाए रखें।

मतवाल चन्द मन्त्री

## वैद्य ओमप्रकाश इन्दु (फगवाडा) की ओर से श्रद्धांजलि

अपने आदरणीय एवं बन्धु श्री आवेद जी के अकास्मिक स्वर्गवास का समाचार पढ़कर सभी बन्धुओ को बहुत ही कष्ट हुआ है।

वह एक कर्तव्य निष्ठ कर्मठ एवं योग्य पुरुष थे जिनकी सामाजिक सेवाएं कभी भुलायी नहीं जा सकती है।

ईश्वर के विधि विधान को बदला नहीं जा सकता है भगवान से प्रार्थना है कि वह उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे एवं हम सबको उनका वियोग सहन करने की शक्ति दे।

## विश्व वेद परिषद् चण्डीगढ की ओर से शोक प्रस्ताव

दिनांक 13 7 84 को विश्व वेद परिषद के सार्वजनिक आयोजन आषाढ़ पूर्णिमा (व्यास पूजा) के अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामन्त्री अनुपम कर्मठ कार्यकर्ता और विक्टर हाई स्कूल जालन्धर छावनी के भूतपूर्व प्रिंसिपल वैदिक धर्म उर्दू (हिन्दी के सम्पादक श्री राम चन्द्र आवेद के देहान्त पर अत्यन्त दुःख शोक प्रगट करते हुए उनकी आर्य समाज, प्रतिनिधिसभा पंजाब और अन्य तथा प्यारे वैदिक धर्म सम्बन्धी शानदार सेवाओ पर प्रकाश डालते हुए परिवार से सहानुभूति तथा दिवंगतात्मा के लिए शान्ति की प्रार्थना की गई।

आशु राम आर्य मन्त्री

## प. आशु राम आर्य चण्डीगढ की श्रद्धांजलि

प्यारे आदरणीय आर्य समाजी नेता साधू चरित्र, विद्वान लेखक, अनेक भाषाओ के ज्ञाता और अनेक सभा समाज संस्थाओ को केवल अपनी जीवनी शक्ति से चला रहे स्व प्रि राम चन्द्र आवेद जी के शान्ति यज्ञ मे शामिल नही हो सका। पता उस समय लगा श्री वीरेन्द्र जी के लेख से जबकि रविवार 15-7 84 को साढ़े बज चुके थे। क्या करता सिवाय पश्चात और पछतावे के। ऐसे बेमिसाल कर्मठ आर्य समाजी सादगी शराफत और पवित्रता की मूर्ति प्रि आवेद जैसे को आर्य प्रतिनिधिसभा पंजाब और सम्पूर्ण आर्य समाज इस युग में कहां पा सकता है? शत-शत बार श्रद्धांजलि अर्पित है।

## सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल जी शालवाले की श्रद्धांजलि

मैं आर्य समाज के कार्य मे कलकत्ता गया हुआ था। वहा से कल वापस लौटने पर पता चला कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मन्त्री श्री राम चन्द्र जी आवेद का देहावसान हो गया है। उनका निधन का समाचार जानकर हम सब को अपार दुःख हुआ।

श्री आवेद जी अभी 65 वर्ष के थे। जीवन भर के तजुर्बे के आधार पर आर्य समाज की सेवा मे रत थे। वैदिक धर्म और इसके सिद्धातो पर उनकी गहरी आस्था थी कर्मठ कार्यकर्ता और गहन अध्ययन के धनी थे।

श्री आवेद जी सरल मिलनसार व स्वभाव के बहुत मृदु थे। आर्यसमाज में मिल कर काम करने की उनकी प्रवृत्ति की आज बहुत बड़ी आवश्यकता है।

उनके निधन से आर्य प्रतिनिधिसभा पंजाब को जो क्षति हुई है वह पूरी नहीं हो सकेगी। उनका निधन सम्पूर्ण आर्य समाज की गहरी क्षति है। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधिसभा तथा हम सब की संवेदनाएं उनके परिवार के साथ हैं।

## स. बलवन्त सिंह की श्रद्धांजलि

स्वामी स्वतन्त्रानन्द स्मारक ट्रस्ट माहा (लुधियाना) के उपप्रधान स. बलवन्त सिंह जी ने स्व राम चन्द्र आवेद को श्रद्धांजलि भेंट करते हुए कहा-कि इस महान व्यक्ति के चले जाने का हम बहुत दुःख है। परमात्मा उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

## गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार की ओर से श्रद्धांजलि

आर्य प्रतिनिधिसभा पंजाब के मन्त्री श्री रामचन्द्र आवेद के अकस्मात निधन का समाचार पढ़कर अत्यन्त खेद हुआ। गुरुकुल वासियो की ओर से परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा उनके परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

(कैप्टन देवराज)
सह. मुख्याधिष्ठाता

## एन डी. विक्टर स्कूल की ओर से श्रद्धांजलि

एन डी विक्टर हा से स्कूल मैनेजिंग सोसाइटी जालन्धर छावनी की यह शोकसभा श्री राम चन्द्र जी आवेद भूतपूर्व प्रिंसिपल के आकस्मिक दुःखद निधन पर हार्दिक शोक व्यक्त करती है। कमेटी को श्री आवेदजी के वियोग से एक ऐसी क्षति पहुंची है जिसकी पूर्ति असंभव है वे एक समर्पित कार्यकर्ता, उच्चकोटि के लेखक थे परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वे उनकी आत्मा को शान्ति दे और उनके परिवार का यह असहनीय वियोग को सहने की शक्ति प्रदान करे।

बलदेव राज तलवाड़
हैडमास्टर

## देवराज गर्ल्ज हाई स्कूल जालन्धर की ओर से शोक प्रस्ताव

श्री रामचन्द्र जावेद जी के अचानक निधन पर हम सब के दिल को गहरा आघात लगा। जिसका सहन करना असम्भव है।

श्री राम चन्द्र जी जावेद जोकि आर्य जगत के एक सुदृढ़ आधार स्तम्भ थे। जिन्होंने अपने जीवनकाल में आर्य समाज को एक नया मार्ग दर्शन दिया उनके बल से आर्य समाज के प्रति एक नई ज्योति जगमगाती थी। शिक्षा क्षेत्र में उनके द्वारा किए गए कार्य के लिए समाज सदैव ऋणी रहेगा उनके निधन से जो अभाव समाज को प्राप्त हुआ है उसकी क्षतिपूर्ति असम्भव है। उस महान आत्मा के चरणों में हमारी श्रद्धांजलि समर्पित है। भगवान उन्हें शान्ति प्रदान करें और उनके परिवार को इस असहनीय दुःख को सहन करने की शक्ति दें।

सारा स्टाफ तथा सभी छात्राएं उनके लिए हार्दिक शोक व्यक्त करती हैं सब ने विद्यालय के प्रांगण में मौन रख कर उनके चरणों में भावभीनी श्रद्धांजलि समर्पित की।

सन्तोष सूरी प्रिंसिपल

## आर्य समाज दीवानहाल दिल्ली की ओर से शोक प्रस्ताव

आर्य समाज दीवान हाल की यह महतिसभा आर्य प्रतिनिधिसभा पंजाब के मन्त्री श्री रामचन्द्र जावेद के निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करती है। श्री जावेद जी आर्य समाज के कर्मनिष्ठ व्यक्तियों में से थे। उनके निधन से आर्य समाज की अपार क्षति हुई है

यह सभा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि उनकी दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें उनके शोक सन्तप्त परिवार व इष्ट मित्रों को इस महान वेदना को सहन करने की शक्ति दे।

## आर्य वानप्रस्थ आश्रम गुरुकुल भठिंडा में शोक प्रस्ताव

हवन यज्ञ वेद कथा के पश्चात श्री रामचन्द्र जावेद महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के निधन पर परम पिता परमात्मा से प्रार्थना की गई कि उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे और उनके परिवार को उनके वियोग से जो दुःख कष्ट हुआ है उसे सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

## आर्य समाज श्रद्धानन्द बाजार लुधियाना की ओर से शोक प्रस्ताव

आर्य समाज साबुन बाजार (लुधियाना) में 15 7 84 को रविवारीय साप्ताहिक सत्संग में विशेष रूप से आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामन्त्री प्रिंसीपल राम चन्द्र जावेद जी के 12 जुलाई 1984 के आकस्मिक निधन पर शोक प्रस्ताव पारित किया गया और सभी उपस्थित आर्यजनों ने गायत्री मन्त्र के उच्चारण के साथ खड़े होकर शोक सन्तप्त परिवार के प्रति सहानुभूति एवं दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए परम पिता परमेश्वर से जावेद जी की आत्मिक शान्ति के लिए प्रार्थना की।

## आर्य समाज शक्ति नगर अमृतसर की ओर से प्रस्ताव

आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री राम चन्द्र जी जावेद के निधन के बारे जानकर अत्यन्त दुःख हुआ। वे आर्य समाज के कुशल तथा कर्मठ नेता थे। परमात्मा उनकी आत्मा को शान्ति तथा सद्गति प्रदान करें उनके परिवार को इस वियोग का दुःख सहने की शक्ति प्रदान करें।

## श्री परमानन्द जी वानप्रस्थी की ओर से श्रद्धांजलि

श्री राम चन्द्र जी जावेद की मृत्यु का समाचार सुनकर बहुत दुःख हुआ। प्रभु उनके शोक-सन्तप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें और उस पवित्र आत्मा को सद्गति प्रदान करें।

(5 पृष्ठ का शेष)

उठा दिया जाए। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब उस मनोवृत्ति को निन्दनीय समझती है और उसे घृणा की दृष्टि से देखती है जिससे प्रभावित हो कर कुछ व्यक्तियों ने निहत्थे और निर्दोष लोगों पर गोलियां चलाई थी।

आर्य प्रतिनिधिसभा पंजाब अपने आप को इन आदर्शों की पूर्ति के लिए समर्पित करती है और जो महानुभाव इस संसार से चले गए हैं उनकी सद्गति के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है और उनके परिवारों को अपनी सहानुभूति और सान्त्वना भेजती है।



श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जय हिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर से इस की स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

2

# योगीराज श्री कृष्ण की महानता

1. वह एक सच्चे स्नेही, मधुर भाषी और दूसरों के मन को मोह लेने वाले थे, वह गोकुल के लोगों से तो प्यार करते ही थे परन्तु वहां की गऊओं से भी उनका पूर्ण स्नेह था।
2. वह एक सच्चे मित्र थे जिनके पास निर्धन मित्र सुदामा पहुंच कर धनी बन गया और अर्जुन जिनकी मित्रता से महाभारत के युद्ध का महान् विजेता बना।
3. वह लोक नायक नेता थे गोकुल में सभी गोपों, यादवों और पाण्डवो का उन्होंने कुशल नेतृत्व किया।
4. वह महान् संगीतज्ञ थे। जब वह मुरली की धुन बजाते थे तो उसे सुन कर गौवें अपना चारा खाना बन्द कर देती थी और सभी गोकुल निवासी उनकी ओर खिचे चले आते थे।
5. वह एक सच्चे आस्तिक थे दोनो समय सन्ध्या वन्दना किया करते थे।
6. वह असहायों के सहायक और दुष्टों का नाश करने वाले थे।
7. वह वेद शास्त्रों के ज्ञाता थे और महान् योगी थे।
8. वह बहुत विनम्र और वृद्धो तथा विद्वानो का आदर मान करने वाले थे। पाण्डवों के राजसूय यज्ञ में उन्होने ब्राह्मणों के पांव धोने का कार्य स्वेच्छा से लिया। युधिष्ठिर, कुन्ती, और दूसरे सभी वृद्धो के मिलने पर वह उनके चरण स्पर्श करते थे।
9. वह एक महान् उपदेष्टा थे। गीता-ज्ञान उनका महान् उपदेश है जिसने निराश और हताश अर्जुन की धमनियो में फिर से रक्त का सचार कर दिया।
10. वह एक महान् शक्तिशाली योद्धा थे, युद्ध विद्या के पूर्ण ज्ञाता थे कंस आदि दुष्टों का वध उन्होने बड़ी बुद्धिमत्ता से किया।
11. वह महान् नीतिवान् थे। महाभारत के युद्ध मे चारों तरफ उनकी बुद्धिमत्ता और रणनीति का ही चमत्कार दिखाई पड़ता है।
12. वह निर्लोभी थे। काम, क्रोध, लोभ, मोह अहंकार उन्हें छू तक नहीं पाए। कंस को मार कर भी वह मथुरा के स्वयं राजा नही बने।
13. वह शराब पीने और जूआ खेलने के प्रबल विरोधी थे उन्होंने यादवों को शराब पीने और पाण्डवों को जुआ खेलने के कारण फटकार दी।
14. वह महान् तपस्वी थे सन्तान प्राप्ति के लिए उन्होंने 12 वर्ष तप किया।

—धर्मदेवार्य

सम्पादकीय-

# योगेश्वर कृष्ण और आर्यसमाज

हमारे देश में कई ऐसे महापुरुष हुए हैं जिन पर कि हम गर्व कर सकते हैं। श्री कृष्णचन्द्र जी महाराज उनमें एक थे। यदि हम गम्भीरता पूर्वक विचार करें तो श्रीराम और श्री कृष्ण ऐसे दो महापुरुष हैं, जिनके गिर्द हमारी सारी संस्कृति घूमती है। भगवान् कृष्ण ने गीता के द्वारा जिन सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया था, सारे संसार ने उनकी प्रशंसा की है। महाभारत के युद्ध में भी भगवान् कृष्ण ने अपना रचनात्मक योगदान दिया था। उन्होंने उस युद्ध को रुकवाने का पूरा प्रयत्न किया, परन्तु जब उन्होने देखा कि दुर्योधन उनकी कोई बात नहीं सुनता तो यह समझ कर कि सच्चाई पाण्डवों के साथ है, उन्होने पाण्डवों को उस युद्ध में विजयी करवा दिया। इस प्रकार भारत की एकता और अखण्डता की सुरक्षा कर ली। उन्होंने अर्जुन के सारथी बनकर जिस नीति निपुणता से काम लिया, उसी के कारण पाण्डव अन्त में विजयी हुए थे। भगवान् कृष्ण के चरित्र का महर्षि दयानन्द पर भी बहुत अधिक प्रभाव था। इसीलिए उन्होने श्री कृष्ण के सम्बन्ध में लिखा था—

"श्री कृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है। उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषों के सदृश है, जिसमे कोई भी अधर्म का आचरण श्री कृष्णजी ने जन्मसे मरण पर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो, ऐसा नही लिखा।" इससे हम अनुमान लगा सकते हैं कि महर्षि दयानन्द सरस्वती की श्री कृष्ण के विषय में क्या भावना थी और इससे हम यह भी समझ सकते है कि आर्य समाज को श्री कृष्ण को किस रूप में देखना चाहिए।

परन्तु हम इस दु:खद और लज्जाजनक वास्तविक स्थिति से इन्कार नहीं कर सकते कि हमारे ही देश में कुछ व्यक्ति श्री कृष्ण का एक विकृत रूप समय-समय पर प्रस्तुत करते रहते हैं। अधिकतर उन्हें मथुरा, वृन्दावन की गोपियों के साथ खेलते हुए, रासलीला करते हुए,, स्नान करती हुई गोपियों के कपड़े चुराते हुए दिखाया जाता है। मेरे विचार में श्री कृष्ण के साथ इससे बड़ा अन्याय और

कोई नहीं हो सकता। एक तरफ स्थिति यह है कि यदि कोई व्यक्ति हजरत मुहम्मद का चित्र भी बना दे, तो मुसलमान उसका सिर काटने को तैयार हो जाते हैं और हमारी यह स्थिति है कि हम स्वय ही अपने एक महापुरुष को चरित्र-हीन दिखाते हैं। कोई और सस्था इस स्थिति को सहन करे या न करे आर्य समाज को इसे किसी भी प्रकार सहन नही करना चाहिए। समाज सुधार के आन्दोलन मे आर्य समाज सदा ही अग्रणी रहा है। कोई कारण नहीं कि वह भगवान् कृष्ण के साथ उनके ही देशवासी जो अन्याय कर रहे है, उसके विरुद्ध आर्य समाज एक अभियान प्रारम्भ न करे। विशेषकर आज की देश की परिस्थितियो मे यह और भी आवश्यक हो जाता है कि श्री कृष्ण को गोपी वल्लभ या गोपियो के साथ रास-लीला करते हुए न दिखाया जाए परन्तु योगेश्वर कृष्ण, कर्मयोगी कृष्ण, राज-नीतिक कृष्ण, गोपाल कृष्ण और इस प्रकार उनके वे रूप जनता के सामने आने चाहिए, जिनसे हमे कुछ प्रेरणा मिलें और हम अपने इस महापुरुष पर गर्व कर सकें। प्राय देखा गया है कि कई स्थानो मे ऐसे चित्र लगे होते हैं, जिनमे श्री कृष्ण को गोपियो के कपड़े चुराते हुए दिखाया जाता है। क्यो न आर्य समाज ऐसे चित्रो के विरुद्ध एक अभियान प्रारम्भ करे। आर्य समाजो और आर्य समाजियो का यह कर्त्तव्य है कि जहा-जहा वे ऐसे चित्र देखें, उन्हे वहा से हटवा दें। जिस व्यक्ति ने अपने मकान या अपनी दुकान पर ऐसे चित्र लगाए हो, उससे कहा जाए कि वह उन्हे उतार दे। कोई न माने तो उससे प्रार्थना की जाए और धीरे-धीरे एक ऐसा शक्तिशाली अभियान प्रारम्भ किया जाए कि भगवान् श्री कृष्ण को केवल योगीराज कृष्ण या गोपाल कृष्ण के रूप मे ही ससार के सामने प्रस्तुत किया जाए। भगवान् कृष्ण की महानता को हम नही समझ रहे, वे बहुत ही उच्चकोटि के व्यक्ति थे। आर्य समाज उन्हे ईश्वर का अवतार तो नही मानता, परन्तु एक महान् पुरुष या आदर्श पुरुष तो मानता है और जब आर्य समाज के प्रवर्तक ने श्री कृष्ण के विषय मे यह सब कुछ लिख दिया तो कोई कारण नही कि आर्य समाज श्री कृष्ण का वही रूप जनता के सामने न रखे जिसके विषय मे महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश मे यह सब कुछ लिखा है। इसलिए श्री कृष्ण जन्माष्टमी को मनाते समय आर्य समाजियो को समस्या के इस पक्ष को सामने रखकर अपने देशवासियो को बताना चाहिए कि भगवान् कृष्ण कितने महान् थे, योगीराज थे, गीताकार थे, गऊ की रक्षा और पालन करने वाले थे। हमे भी उनके जीवन से कुछ सीख कर उसके अनुसार अपने आपको ढालने का प्रयास करना चाहिए।

—वीरेन्द्र

# महान तपस्वी योगीराज श्री कृष्ण

ले.—श्रीमती कमला आर्या महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब

भगवान् श्री कृष्ण की पूजा यो तो सारे भारत वर्ष मे तथा देश विदेशो मे होती है। उनका जन्म दिन भाद्र मास की अष्टमी को सभी स्थानो पर बड समारोह से मनाया जाता है। ऐसा कौन भारतवासी होगा जो श्री कृष्ण जी महाराज के नाम को नही जानता। बाल-वृद्ध, स्त्री-पुरुष सभी उन्हे जानते हैं। उनके नाम पर बडी-2 रास लीलाए भी होती हैं। और बडे-2 कीर्तन भी होते हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम राम और योगीराज श्री कृष्ण भारतीय आकाश के चमकते हुए दो महान् सितारे हैं जो चारो ओर अपना प्रकाश फैला रह हैं। कई लोग तो इनकी पूजा भी करते हैं। वास्तव मे इनका जीवन महान् प्रेरणाओ से भरा हुआ है।

19 अगस्त को प्रतिवर्ष की भान्ति इस वर्ष भी कृष्ण जन्माष्टमी का पर्व मनाया जा रहा है। यह पर्व प्रेरणा देने वाले होते हैं। अगर इनसे प्रेरणा ली जाए तभी इन्हे मनाने का लाभ है। जन्माष्टमी पर्व को मनाते हुए हम योगीराज श्री कृष्ण जी के जीवन से शिक्षा ग्रहण करे। उनका जीवन प्रत्येक पक्ष से महान् था। चाहे वह बाल क्रीडा हो नीति हो, पराक्रम हो, या ज्ञानोपदेश, शासन हो या युद्ध हो, उनके सभी कार्य महान् प्रेरणाओ से भरे पडे है।

वह महान् योगी थे क्योकि योगी ही सयमी होते हैं और श्री कृष्ण महाराज महान् सयमी थे। अपनी सभी इन्द्रियो पर उनका पूर्ण अधिकार था गृहस्थी होते हुए भी वह तपस्वी थे। सिद्ध सम्राक थे। उनकी धर्म पत्नी रुक्मिणी ने एक बार यह इच्छा प्रकट की कि मैं आप जैसा एक पुत्र चाहती हू। इसके उत्तर मे श्री कृष्ण महाराज ने कहा देवी इसके लिए तुम्हे भी तप करना होगा। हम 12 वर्ष तक ब्रह्मचर्य पूर्वक रह कर सयमी जीवन व्यतीत करे उसके पश्चात् जो सन्तान होगी वह आपकी इच्छा के अनुरूप होगी और उन्होने 12 वर्ष तक सन्तान

के लिए तप किया जिसके फलस्वरूप उन्हें एक पुत्र रत्न प्रद्युम्न प्राप्त हुआ था जो श्री कृष्ण जी महाराज की ही प्रति मूर्ति था।

इससे बढ़कर उनके तप का और कोई अनूठा उदाहरण क्या हो सकता है। जब कि उस काल में ऐसे गृहस्थी कम ही मिलते थे। उस समय भी राजाओं में विलासिता घर कर गई थी, लेकिन श्री कृष्णजी महाराज एक पत्निव्रती और सयमी गृहस्थी थे। उनके जीवन के साथ राधा को जोड़ना और उनकी 16 हजार रानियां बताना घोर अन्याय है।

उनका जीवन एक योगी का जीवन है। गीता के माध्यम से उन्होंने जो योग सम्बन्धित ज्ञान अर्जुन को युद्ध के मैदान में दिया वह भी उनका योगी होने का एक महान् प्रमाण है। जो योग के सम्बन्ध में जानता हो वह ही योग की बात कर सकता है।

आत्मा और परमात्मा का जो वर्णन उन्होंने गीता मे किया है वह एक योगी ही कर सकता। कितना सारगर्भित लिखा है—'इस आत्मा को न शस्त्र काट सकते हैं, न आग जला सकती है, न जल गला सकता है, न वायु सुखा सकती है। यह न कटने वाला, न जलने वाला, न गलने वाला और न सूखने वाला है यह नित्य, स्थिर, अचल और सनातन है। आत्मोत्थान के लिए मानव को निरन्तर कार्य करना चाहिए।' वह काम, क्रोध और लोभ इन तीनों को नरक का द्वार बताते हैं जो आत्मा का विकास रोक देते हैं। उन्होंने गीता में शारीरिक तप, वाणी के तप और मन के तप का भी कई श्लोकों मे वर्णन किया है। यह सभी बातें उनका योगी होने का ही प्रमाण हैं।

उनकी तीव्र बुद्धि शारीरिक पराक्रम, गूढ़ नीति और यथायोग्य वर्ताव भी उनके योगी होने का प्रमाण हैं। प्राणायाम के द्वारा व्यक्ति जब अपनी शक्ति का संग्रह करके किसी शत्रु पर प्रहार करता है तो वह बड़े से बड़े बलवान् पहलवान को भी धराशायी कर देता है। कंस के चाणूर और मुष्टिक महाबली पहलवानों को अखाड़े में पराजित ही नहीं करना, बल्कि उन्हें मौत के घाट उतार देना श्री कृष्ण महाराज का यह पराक्रम कितना महान् है। यह शक्ति ब्रह्मचर्य योग और तप की ही है। उन्होंने जीवन में प्रत्येक कार्य बुद्धि पूर्वक किया है। आततायी कंस व जरासन्ध से लेकर जितने भी दुष्टों का उन्होंने नाश कराया है उस सब में उनकी बुद्धि का चमत्कार ही दिखाई पड़ता है. संयमी और योगाभ्यासी की बुद्धि ही ऐसी तीव्र हो सकती है. व्यभिचारी और कामी की नहीं।

श्री कृष्ण जी महाराज एक महान् योगी व तपस्वी थे। उनको आर रसिक माखन चोर व गोपियों के साथ नाचने वाला बताना घोर पाप है। उनकी तपस्या को कलंकित करना है। आर्य समाज उस महामानव के ऊपर इस प्रकार का कलंक लगाना सहन नहीं करता। आर्य समाज के प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द जी महाराज ने सत्यार्थ प्रकाश मे श्री कृष्ण जी की महिमा का गान गाते हुए लिखा है—"देखो श्री कृष्ण का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है। उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषों के सदृश है। जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्री कृष्ण जी ने जन्म से मरण पर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो ऐसा नहीं लिखा।"

आर्य बन्धुओं महर्षि दयानन्द जी की दृष्टि में योगीराज श्री कृष्ण का कितना मान था यह ऊपर लिखे शब्दों से जाना जा सकता है। हम भी उनकी धवल कीर्ति को चारो ओर फैलाएं यह हमारा भी कर्त्तव्य हो जाता है।

पुराणों में लिखी गलत बातो को लेकर जो अपमान इस महान् पुरुष का किया जाता है उसका निराकरण करें। उनका प्रमाणिक जीवन चरित्र महाभारत से ही लिया जा सकता है और उसी का प्रचार और प्रसार करना चाहिए। महर्षि व्यास जी ने ही इस महापुरुष के जीवन पर ठीक और पूर्ण प्रकाश डाला है।

आओ जन्माष्टमी के इस पवित्र पर्व पर सर्व गुण सम्पन्न इस महा मानव का सच्चा चरित्र और स्वरूप सर्वसाधारण तक पहुंचाने का व्रत लें। ताकि इस महामानव के सम्बन्ध में जो गलत धारणाएं समाज में फैली हुई है उन्हे दूर किया जा सके।

---

# ऋषि दयानन्द तथा भगवान् श्री कृष्ण

ले —श्री सत्यदेव जी विद्यालकार शान्ति सदन 145-4 सेंट्रल-टाऊन जालन्धर

ऋषि दयानन्द ने भारतीय सत्य सनातन धर्म का रूप प्रत्यक्ष किया। वेदो पर आधारित उस रूप का मन्थन किया, मनन किया, उसे सवारा तथा सारी आयु उसका ही प्रचार किया। उस सत्य सनातन धर्म के अन्तर्गत धर्मग्रन्थ है सिद्धान्त हैं, जीवन का प्रत्येक रूप है, जातीय जीवन है और जातीय जीवन के घटक महापुरुषो की एक बडी लम्बी परम्परा है। उस महान् परम्परा के मूर्धन्य भगवान् राम और भगवान् कृष्ण है। यह हो ही नही सकता था कि ऋषि दयानन्द भगवान् कृष्ण के सम्बन्ध मे अपने विचार प्रकट न करते।

भगवान् कृष्ण का नाम हिन्दू मानस मे पूर्ण रूप से व्याप्त है। उनका जीवन जन्म से लेकर निर्वाण तक बहुत अधिक लौकिक तथा अलौकिक घटनाओ द्वारा बुना गया है। न जाने कितने चम-त्कारिक प्रसगो की उद्भावना हो चुकी है और अभी हो रही है। हिन्दी महाकवि श्री मैथिलीशरण गुप्त के अनुसार—

*'हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता।'*

भगवान् राम और कृष्ण अनन्त है और उनके जीवन प्रसग भी अनन्त है।

इन सबसे ऊपर श्री कृष्ण भगवान् स्वयम् और उनकी गीता—

गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यै शास्त्र विस्तरै या स्वय पद्मनाभस्य मुख पद्मात् विनि सृता।

इन गगन चुम्बी ऊचाईयो को पहुच चुकी है। भारतीय साहित्य का कोई

अंग, काव्य, नाटक, गद्य, पद्य ऐसा नहीं जो भगवान् कृष्ण से अनुप्राणित न हो।

ऋषि दयानन्दवस्तुत. ऋषि थे, लगातार सत्य दर्शन केलिए प्रयत्नशील रहे। उनकी श्रद्धा का केन्द्र केवल भगवान् वाणी वेद थे। इसके अतिरिक्त सबको, शास्त्रों को, सिद्धान्तों को, क्रिया-कलापो को और युग पुरुषों के जीवनों को वे तर्क की कसौटी से परखते थे। परमात्मा ही उनके लिए एक जगन्नियन्ता और सृष्टा था, शेष सब जीवात्मा अल्पज्ञ तथा मर्यादित शक्तियों के स्वामी थे।

ऋषि दयानन्द के पास समय नहीं था कि वे एक-एक महापुरुष के जीवन का ऊहा—पोह करते। उन्होंने तो अपना सूक्ष्म दृष्टिकोण सब महापुरुषों के विषय में दे दिया है और पल्वविन करने का कार्य आर्यजनों के लिए छोड़ दिया है।

भगवान् कृष्ण के भक्तों में कोई जन्म लीला के चमत्कारों पर मुग्ध है, कोई बाल गोपाल की खेलो का रहस्य खोजता है, कोई रास और महारास की विवेचना करता हुआ गोपिका नृत्य का अन्वेषण कर रहा है और कोई गीता योग के चक्रव्यूह में मुग्ध होकर भटक रहा है। पर ऋषि की दिव्य दृष्टि ने कृष्ण के विलक्षण शौर्य सम्पन्न और राजनीति निष्णान्त राष्ट्र पुरुष रूप को परखा और देखा।

जैसे चाणक्य ने वृषलचन्द्र गुप्त का विकास कर एक विशाल भारतीय राष्ट्र का निर्माण कर दिया था जिसकी सीमाए नर्मदा से कन्धार तक विस्तृत थी, ठीक इसी प्रकार भगवान् कृष्ण एक विलक्षण राष्ट्र पुरुष थे। उन्होंने पांच पाण्डवो का का विकास किया। क्षय रोग ग्रस्त पिता की वन भ्रमण के समय मृत्यु हो गई। माद्री पति के साथ सती हो गई। माता कुन्ती को लेकर लगभग अनाथ पाण्डु पुत्र जब हस्तिनापुर पहुंचे तो धृतराष्ट्र राजा थे और उनका विस्तृत परिवार राज्य का आनन्द ले रहा था। राज्य र वैभव को सरलता से कौन छोड़ता है।

अपने आप आपद् ग्रस्त, मथुरा छोड़ कर द्वारिका से भी आगे समुद्र मे, भेंट द्वारिका में बसे हुए कृष्ण ने लगभग एक सहस्र मील दूर हस्तिनापुर मे राजनीति का वह चक्र चलाया कि वही पाण्डु पुत्र एक महान् राष्ट्र के अधिनायक बन गए। सम्पूर्ण महाभारत युद्ध में कृष्ण ने कहीं शस्त्र नही उठाया। युद्ध के बाद अश्वमेध यज्ञ में आसाम से लेकर गांधार तक के राज वंशों को एक सूत्र में गूंथ कर- महा भारत की विशाल कल्पना साकार कर दी गई।

इस विशाल राष्ट्र निर्माण के कार्य का आधार केवल कृष्ण थे "भ्रामयन् सर्वभूतानि यन्त्रारूढ़ानि मायया।" शेष भीष्मपितामह से लेकर शकुनि तक सब

उनके हाथ की कठपुतलिया थे । सम्पूर्ण महाभारत का आधार कृष्ण है । भगवान् का अवतार कृष्ण नही, चमत्कारो से, दैवी मायाओ से घिरा कृष्ण नही, अपितु अपूर्व राजनीति, राष्ट्रनीति, धर्मनीति के पारगत राष्ट्र पुरुष भगवान् कृष्ण ।

ऋषि की दिव्य दृष्टि के सामने भगवान् कृष्ण का यह दिव्य रूप था । इस विशुद्ध, दिव्य रूप का साक्षात्कार ऋषि ने किस प्रकार किया ? सैकडो वर्षो से प्रचलित, बीसियो भक्त परम्पराओ के आधारभूत सौंदर्य पूर्ण, रहस्यपूर्ण, लीलामय, चमत्कार रूपो के सघन बन मे । ऋषि ने इस राष्ट्र-पुरुष रूप का दर्शन कैसे किया यह अपने आप मे एक चमत्कार है ।

गुरु विरजानन्द से प्राप्त आर्ष-अनार्ष साहित्य के रहस्य ने ऋषि को प्रारम्भ मे ही 'भागवत' से अलग कर दिया । कृष्ण साहित्य यद्यपि बहुत विस्तृत है पर मुख्यत प्राचीन तीन ग्रन्थ है । भागवत, महाभारत और उसका ही एक अश गीता । इन तीनो की परख ऋषि के शब्दो मे देखिए । सत्यार्थ प्रकाश के 11वे समुल्लास मे यह प्रसग है —

1 देखो श्री कृष्ण जी का इतिहास महाभारत मे अत्युत्तम है । उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषों के सदृश है । जिसमे कोई अधर्म का आचरण श्री कृष्ण जी ने जन्म से मरण पर्यन्त कुछ भी किया हो ऐसा नही लिखा और इस भागवत वाले ने अनुचित मनमाने दोष लगाए हैं । '

2 जो यह भागवत' न होता तो श्री कृष्ण जी के सदृश महात्माओ की झूठी निन्दा क्यो कर होती ?

3 जब सम्वत् 1914 के वष मे तोपो को मार मन्दिर मूर्तिया उडा दी थी तब मूर्ति कहा गई थी ? प्रत्युत बार्घेर लोगो ने जितनी वीरता की और बडे शत्रुओ को मारा, परन्तु मूर्ति एक मक्खी की टाग न तोड सकी । जो श्री कृष्ण सदृश कोई होता तो इनके धुर्रे उडा देता और ये भागते फिरते ।

भागवत् का अनार्ष ग्रन्थ के रूप मे विरोध तो ऋषि दयानन्द ने गुरु विरजानन्द जी से विद्याध्ययन समाप्त कर प्रचार कार्य मे आते ही प्रारम्भ कर दिया था, 1965 मे ऋषि मथुरा से आगरा । आगरा से धौलपुर तथा धौलपर से ग्वालियर पहुचे । वहा के महाराज ने राजधानी मे भागवत सप्ताह धूम-धाम से मनाने का प्रबन्ध किया था । राजा के भेजे हुए राज-पुरुषो ने जब ऋषि से भागवत सप्ताह का माहात्म्य पूछा तो उत्तर मिला—

'सिवाय दु ख उठाने और कष्ट पाने के और कोई फल नही चाहे करके देख लो ।"

इस प्रकार भागवत मे वर्णन किए भगवान् कृष्ण के जीवनाश पर तो ऋषि की प्रारम्भ से ही पूर्ण अनास्था थी, यह स्पष्ट है । गीता तथा महाभारत के प्रति भी ऋषि का क्या दृष्टिकोण था, इसे जाने बिना भगवान् कृष्ण का ऋषि अनुमोदित रूप नही स्पष्ट हो सकता । (क्रमश )

# गीता में कर्म-योग

## ले.—श्री द्वारकानाथ वासुदेव फगवाड़ा

श्री मद्भागवत गीता का यह निर्विवाद मत है कि कर्म करना ही है। इस संसार में रहते हुए कर्म से छुटकारा नही मिल सकता "नहि देहभृता शक्यं सक्तुम् कर्माण्यशेषत:" अत. कर्म से अलिप्त रहने के लिए निष्काम भाव से कर्म करना चाहिए। मनुष्य काम करे पर फल परमात्मा पर छोड़ दे—कर्म करना तेरा अधिकार, फल ईश्वर है देवन हार। गीता में इसे कर्म-योग कहा गया है। कर्मयोग की प्रवृति पैदा करना अथवा निष्काम भाव से कर्म करने का स्वभाव बनाना तथा समत्वभाव उत्पन्न करना सुगम कार्य नही है। निष्काम भाव से काम करने का स्वभाव बनाने के लिए गीता में तीन उपाय बताए हैं।

पहला उपाय है कि मनुष्य जो काम करे यज्ञरूप भावना से करे। अभिप्राय यह कि जीवन के प्रत्येक कार्य को परमात्मा के अर्पण कर दे। साधारण रूप में हवन करने को यज्ञ कहते हैं। परन्तु गीता केवल इसको ही यज्ञ नही मानती। हवन या अग्निहोत्र भी एक प्रकार का यज्ञ है। इससे देवता सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी, जल,वायु आदि की पूजा होती है। और देवता यज्ञ करने वाले को खुश रखते हैं। "इष्टान्भोगाव हि वो देवा दास्यन्ते यज्ञभाविता" यज्ञ कोई विशेष कर्म नही है। यज्ञ कर्म करते समय एक प्रकार की भावना को कहते है। नित्य नैमित्तिक और काम्य सब काम यज्ञ के रूप मे करें। अथवा यह समझें कि जो काम मैं कर रहा हूँ वह अधिकतर संसार के लाभ के लिए होवे। मेरा लाभ अंशमात्र होवे।

निष्काम भाव की भावना बनाने के लिए दूसरा उपाय योग साधना है। इससे बुद्धि निर्मल, स्थिर अथवा विकसित हो जाती है और मनुष्य स्थितप्रज्ञ व स्थितधीर होकर धर्म-अधर्म में अन्तर जानने लगता है और तदनुसार अपना व्यवहार ठीक कर लेता है। और प्रत्येक कार्य को सकुशलता से करता है। ऐसी स्थिति और समत्व बुद्धि प्राप्ति के लिए योग क्रियाएं आवश्यक हैं। विस्तार से

इनका वर्णन ऋषि पतञ्जली के योगशास्त्र मे है। इनको सक्षप से गीता मे अध्याय 6 के 11, 12, 13 श्लोको मे ऐसा समझाया है। शुद्ध भूमिमे कुशा मगछाला और वस्त्र बिछा हो उपरोपरि जिसके ऐसे,अपने आसान को न अति ऊचा, न अति नीचा स्थिर स्थापन करके उस आसन पर बैठ कर मन का एकाग्र करके चित और इन्द्रियो की क्रियाओ को वश मे करके अन्तकरण की शद्धि के लिए योग का अभ्यास करे आदि।

तीसरा उपाय है भक्ति का मार्ग। मार्ग का अथ है परमात्मा के चिन्तन द्वारा उससे युक्त होने की विधि। पूजा पाठ इसी श्रेणी मे आ जाते है। परमात्मा मे चित्त लगाने के लिए परमात्मा का समग्र रूप मन मे स्पष्ट होना चाहिए। इसको समझाने के लिए विराट रप अथवा विश्व रूप का वणन किया है और उसके गुणो को अलकृत रूप मे सक्षप से। इस रूप से परमात्मा का सामर्थ्य प्रभाव और महत्व बताया है। भक्त परमात्मा को एकरस व सर्वव्यापक समझते हैं। भक्ति ज्ञान विज्ञान वाला होता है। भक्ति करने मे चित की वृत्तिया शान्त हो जाती हैं। कम-अकर्म और विकर्म म भेद पता लग जाता है। बुद्धि निर्मल हो जाती है। हर्ष शोकादि विकारो से रहित हो जाता है। त्याग की भावना पैदा हो जाती है। फलस्वरूप भक्त निष्कामी बन जाता है।

श्री कृष्ण महाराज का कोटि कोटि धन्यवाद जिन्होने अर्जुन के प्रति कमयोग का उपदेश देकर सारे ससार को कार्य, व्यवहार का सुमार्ग दर्शाया है।

---

यतो धर्मस्तत कृष्णो यत कृष्णस्ततो जय

जिधर धम है उधर श्री कृष्ण है, जिधर श्री कृष्ण है उधर ही विजय है। (महा भीष्म पर्व 43—60)

—गुरु द्रोणाचार्य

---

# कृष्ण ! कृष्णाष्टमी तुम्हारी हम मना गुण-गान गायें

ले. श्री नरेशकुमार शास्त्री व्याकरणाचार्य श्री गुरु विरजानन्द
वैदिक सस्कृत महाविद्यालय करतारपुर जि जालन्धर(पजाब)

कृष्ण-जन्माष्टमी मनोहर, याद यमुना तीर आता ।
याद मथुरा वन व गौवे, श्री-यशोदा क्षीर आता ।।
बसरी माधुर्य-भेरी और वाणी शूरता मय,
दव के प्रति देव व्यवहृत दुष्ट के प्रति क्रूरतामय ।
ओज बाहू दण्ड म था तज मस्तक पर चमकता ।
पद्म पावन पाद मे था और मुख मे थी सरसता ।।
नमन मे थी दिव्य दृष्टि उभय कर मे वीरता थी ।
कर्ण, श्रुति-आलोकमय थे और मन मे धीरता थी ।।
धर्म उन्नायक तुम्ही थे सत्य परिचायक तुम्ही थ ।
शोक मे जब मग्न अर्जुन शुभ दिशा दायक तुम्ही थे ।।
कौन जन है ? जिन मनो मे कृष्ण ! तेरा ध्यान ना है ?
कौन हृत्पट आज जिसमे पूर्ण श्रद्धा मान ना है ?
कौन कहदो आज जग मे, गा रहा तव गान ना है ?
कौन वाणी आज जिसमे कृष्ण ! तेरा नाम ना है ?
भक्त गौ रक्षक । सुरक्षक । एक ईश्वर के पुजारी ।
योग मे जब बैठ जाते ओ३म मे मारे उडारी ।।
ऊर्ध्वरेता । श्रेष्ठ योगी । हे इतिवृत्त वर्णकश्चन ।
आज जन-जन कर रहा है जन्म को कर याद वन्दन ।।
कृष्ण ! कर आकृष्ट कर जन-जन, कृष्ण साधक कर गए थे ।
गीत गीता मे तुम्ही तो उपनिषद् के भर गए थे ।।
आप गीता का मुनीश्वर ज्ञान अनुपम दे गए थे ।
जन्म से निज भारतम् को भान अनुपम दे गए थे ।
कृष्ण कृष्णाष्टमी तुम्हारी, हम मना गुण-गान गाये ।
कृष्ण ! पुरुषोत्तम ! 'नरेश्वर ! हम सदा सम्मान गाए ।।

# मानवता के उद्धारक श्रीकृष्ण

ले श्रीमती सुशीला जी भगत (मन्त्राणि स्त्री आर्य समाज)
अन्तरग सदस्य आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब

द्वापर युग के अन्त मे भारत के भाग्यकाश पर अविद्या एवम् अन्धकार की घनघोर घटाए छाई हुई थी । भारत अनेक छोटे-छोटे राज्यो मे विभक्त था । देश मे सवत्र असन्तोष की लहर थी त्राहि 2 मच चुकी थी । राजा अत्याचारी व प्रजा शोषक थे । कस ने अपने पिता उग्रसेन को जेल मे बन्दी बनाया हुआ था । जरासन्ध व शिशुपाल जैसे अन्यायी राजाओ ने प्रजा को सतस्त किया हुआ था । विश्व अशान्त था । ऐसे भीषण समय मे ऐसे शक्तिसम्पन्न और नीतिज्ञ पुरुष की आवश्यकता थी जो इस दुदशा मे सबका सहायक होकर विश्व को व्यवस्थित कर सके ।

मानवता के उद्धार के लिए भाद्रकृष्णाष्टमी बुद्धवार की निशा मे (रात्रि मे) अन्धकार को चीरती हुई अपने आलोक से दिशाओ को आलोकित करती हुई रात को श्री कृष्ण ने मथुरा मे जन्म लिया । श्रीकृष्ण गोकुल के ग्राम्य वातावरण मे पलने लगे और शुक्लपक्ष के चन्द्रमा की भाति बढने लगे ।

वैदिक सस्कारो का बडा महत्व है । श्री वसुदेव ने अपने पुरोहित गर्गाचार्य द्वारा वेदोक्त विधि से बलराम व श्री कृष्ण दोनो का यज्ञोपवीत सस्कार कराया दोनो द्विजत्व को प्राप्त हुए ।

जब श्री कृष्ण स्नातक हुए तो उनके पराक्रम और कीर्ति के समाचार मथुरा मे कस को मिले तो वह व्याकुल हो उठा उसने श्री कृष्ण को धोखे से मारना चाहा किन्तु उसे मूह की खानी पडी व कस के प्राण पखेरू उड गए । विजय माला भगवान कृष्ण के गले मे पडी । सबसे पहला काम उन्होने यह किया अपने नाना उग्रसेन को कारावास से छुडवाया व सिंहासन पर बैठाया ।

भगवान कृष्ण के स्नातक होने के पश्चात् यह प्रथम विजय थी जिसमे उन्हे पूण सफलता मिली । उन्होने नष्ट हुए सघ की पुन स्थापना की और यादवो की खोई हुई स्वतन्त्रता पुन प्राप्त करा दी ।

विदंभ देश के राजा भीष्मक बड़े कुलीन और बलशाली थे उनकी पुत्री रुक्मिणी कृष्ण के गुणो पर मुग्ध थी तथा तन मन से उन्हे प्रेम करती थी । द्वारिका मे वैदिक विधि से श्री कृष्ण का रुक्मिणी से पाणिग्रहण सस्कार सम्पन्न हुआ ।

विवाह हो गया पति पत्नी आनन्द पूर्वक रहने लगे । एक दिन रुक्मिणी ने सन्तान की इच्छा प्रकट की । दोनो ने बारह वर्ष तक कठोर ब्रह्मचर्य का पालन करके पुत्ररत्न प्राप्त किया जिसका नाम प्रद्युम्न रखा गया । जो रग रूप शील सदाचार विद्यादि मे कृष्ण के तुल्य ही था । श्रीकृष्ण को इस पर इतना गर्व था कि वह उसे सुत कहा करते थे ।

श्री कृष्ण कितने तपस्वी, सयमी एवम् सदाचारी थे वह ऊपर सिद्ध हो चुका है क्योकि बारह वर्ष को कठोर तपस्या के पश्चात् प्रद्युम्मन उत्पन्न हुआ । क्या ऐसा पतस्वी और सदाचारी व्यक्ति गोपियो के पीछे भाग सकता है ? कभी नही । श्री कृष्ण वेदो के प्रकाण्ड पण्डित थे और वेद मे लिखा है ।

उभे धुरौ वह्निरापिब्द मानोऽन्तर्योनेव चरति द्विजानि '

ऋ 10।101।11

दो धुरो का भार उठाने वाला घोडा जैसे हिनहिनाता हुआ भागता है दो स्त्रियो वाले पुरुष की भी ऐसी ही दुर्दशा होती है ।

श्री कृष्ण एक आदर्श महामानव व नेता थे, वे जानते थे कि श्रेष्ठ पुरुष जैसा आचरण करते हैं लोग भी वैसा व्यवहार करते हैं । अत वे ऐसा जघन्य पाप और अन्याय आचरण कैसे कर सकत थे ।

पुराण के लेखको ने श्री कृष्ण के ऊपर बहुविवाह और गोपियो के साथ विषय भोग करने का दोषारोपण किया है । उन्होने यहा तक दोष लगाया है कि श्री कृष्ण तो साक्षात जार, दुष्ट तथा अति लम्पट थे । कृष्ण चोर और व्यभिचारियो मे शिरोमणि थे ।

कवि सूरदास ने भी ब्रह्मवैवर्त के आधार पर राधा के परकीय रूप की कल्पना की ।

सूरदास जी द्वारा राधा के प्रथम मिलन का चित्रण देखिए...
बूझत श्याम कौन तू गोरी ।

कहा रहति काकी तू बेटी, देखी नही कबहु ब्रज खोरी ।
काह को हम ब्रज तन आवति, खेलत रहत अपनी पौरी ।
सुनत रहति स्रवननि नन्द ढोटा, करत रहत माखन दधिचोरी ।
तुम्हारो कहा चोरि हम लैहे, खेलन चली सग मिली जोरी ।
'सूरदास' प्रभु रसिक शिरोमणि, बातन भुरइ राधिका भोरी ।

इन कवियो की चचल लेखनी की करामात देखकर आश्चर्य होना है इनकी कविताए पढ कर लज्जा आती है और यह विश्वास नही होता कि इन्हे गा-गा कर भक्त लोग हरि प्रेम म विभोर हो जाते होगे ।

पौराणियो के अनुसार राधा कृष्ण की पत्नी है । आ श राधा के बिना कृष्ण की कल्पना भी नही हो सक्ती ।

राधा तो कृष्ण की मामी थी । ओ कृष्ण भक्तो ! राधा कृष्ण कह कर कृष्ण का उपहास मन करो ।

महाभारत मे भगवान कृष्ण का जीवन अनेक पहलुओ से चित्रित है परन्तु उसमे भी कही राधा के नाम की गन्ध नही है ।

और तो और श्रीमद्भागवत तक मे राधा का नाम नही है । हा ब्रह्मवैवर्त मे कृष्ण के साथ राधा की चर्चा साधारणतया की गई है परन्तु पीछे भक्त कवियो ने कृष्ण का जो चरित्र लिखा है उसमे उन्होने अपने मन के घोडे दौडाए है । यह उनकी कपोल कल्पना है । इसका ऐतिहासिक महत्व नही ।

न तो कृष्ण गोपियो से व्यभिचार करते थे । न राधा के साथ उनका अश्लील सम्बन्ध था न ही उनकी 16000 रानिया थी । रुक्मणि केवलमात्र रुक्मिणि ही श्री कृष्ण की धर्मपत्नी थी वही उनकी गृहलक्ष्मी थी ।

# योगीराज कृष्ण

ले—श्री स्वय प्रकाश मिश्र अशोक नगर कलौनी पीलीभीत

कृष्ण विद्या अध्ययन करने सान्दीपन ऋषि के आश्रम पर पहुचे उसका प्रमाण (छान्दोग्य) मे पाया जाता है।

'स घोषागिरस कृष्णाय देवकी पुत्राय प्राहूस अ पपास अभवन

(भावाथ) घोषागिरस वश मे ऋषि (सा दीपन) ने देवका के पुत्र कृष्ण को विद्या अध्ययन कराया। भागवत स्क ध 10 अ 7 श्लाक 3 मे कृष्ण की ब्रह्म उपासना और अग्निहोत्र करने का वणन है।

अथाप्लुतो म्भस्यामल यथाविधि ।
क्रिया कलाप परिधाय वाससी ।।
चकार स ध्यापगमगादि मत्तमो ।
हुतानलो ब्रह्म जजाप वाग्यत ।।

(भावाथ) कृष्ण न निमल जल से स्नान करके, फिर यथाविधि चादर ओढ धोती को पहिना सन्ध्या कर, मौन होकर ब्रह्मजजाप' गायत्री का जाप किया (हुतोनलो) अग्नि मे आहुतिया दी अर्थात हवन किया।

मुनि के आश्रम पर प्राण 'विद्या सीखी जिसम श रीरिक आत्मिक बल प्राप्त किया। उनके जीवन की घटना है। गहस्थी जीवन व्यतीत करते हुए रुक्मिणी ने एक दिन स तान उत्पत्ति की चर्चा की। कृष्ण ने मुस्करा कर कहा। रुक्मिणी बारह वष आप तपस्या करो और बारह वप मै। इस साधना के पश्चात दोनो ने प्रद्युम्न जसा र न पाया जिसने महाभारत के यद्ध मे प्रलय मचा दी। स्पष्ट है कि बारह वष तपस्या करना भोगवादी पुरुष का काम नही। क्योकि काम वासना म फसने वाला योगी नहा बना करता। यह योग साधना का अनूठा प्रमाण है।

कस ने कृष्ण और बलराम का मारने के लिए महायज्ञ का योजना बना कर दोनो भाइयो को गोकुल से बुलाया। अक्रूर को कस की इस योजना का

पता चला । दुखित होकर गोकुल पहुंचा और सारी बात कंस की कृष्ण को बताकर लौट आया ।

दोनों भाई [illegible] से अभिनन्दित होते हुए निडर बढ़ते चले । कंस ने एक धनुष मार्ग में लटका दिया था जिसकी प्रत्यंचा बड़े-बड़े वीर न चढ़ा पाते थे । दोनों भाइयों को आते समय मार्ग में धनुष लटका मिला । बलराम ने धनुष को देखते ही कहा—कृष्ण ! यह कंस द्वारा तुम्हारी परीक्षा है । यह कहते ही कृष्ण की त्योरी बदल गई । दोनो बाहुओं से उस धनुष के दो टुकड़े कर दिए । यह सूचना पाते ही कंस का हृदय दहल उठा ।

दरवाजे पर खूनी हाथी खड़ा था । वह हाथी दोनो भाईयो की तरफ लपका । हाथी का इरादा समझ उसे मार गिराया । फिर दोनो भाई अखाड़े की तरफ चले । मुष्टक और चाणूर लंगोटे और जांघिया बांधे और मल्ल युद्ध को खड़े हुए थे । चाणुर कृष्ण से । मुष्टक बलदेव से भिड़ पड़े दोनो को मार गिराया । शल और तत्सम यह दृश्य देख कर भाग खड़े हुए । कंस यह दशा देख मन मे क्रोधित होकर, नंगी तलवार खींच कृष्ण की तरफ बढ़ा । कृष्ण के तेज को देख कर उसके पैर लड़खड़ा गए । कृष्ण ने बड़े साहस से उसकी तलवार छीन कर उसका अन्त कर दिया । माता पिता को कारावास से निकाल उनके सशोक हृदय को अशोक करा दिया , और मथुरा के सिंहासन पर महाराज उग्रसेन को बिठा दिया किसी कवि ने कहा—

जुलम की टहनी कभी फलती नही । नाव कागज की सदा चलती नहीं ।

योग दर्शन मे लिखा—'ब्रह्मचर्य प्रतिष्ठायाम वीर्य लाभ

इस आधार को लेकर कृष्ण बलराम ने ब्रह्मचर्य की साधना को प्रमाणित कर दिया । ब्रह्मचर्य ही योग की सीढ़ी है । महाभारत की घटना है—

प्रात काल का समय है भगवान भास्कर की लालिमा फैल रही है । कौरवो और पाण्डवों की सेनाएं कुरुक्षेत्र मे एक दूसरे के समक्ष उत्तेजना युक्त खड़ी हैं । विजय प्राप्त की कामना से मोर्चों का गठन हो चुका है । महारथी अस्त्रों-शस्त्रों से सुसज्जित हैं । इतने मे अभी बाजा बजा । सारथी कृष्ण महारथी अर्जुन का रथ लेकर आए जिस पर भगवा ध्वज लहरें ले रहा था । जो दुष्ट और आतता-यियों का दमन करने का प्रतीक था । गीता के भीषण आंगन में कर्तव्य पालन की प्रेरणा दे रहा था ।

अर्जुन ने अपने सखा सारथी कृष्ण को दोनो सेनाओं के बीच रथ खड़ा करने का इशारा किया। जिससे वह पक्ष और विपक्षियों के महारथियो को जान सके। अर्जुन ने अपने वृद्ध पितामह भीष्म गुरु द्रोणाचार्य, भाइयो और सखाओ को देखा देखते ही पसीना-पसीना हो गया जिसका चित्रण गीता ने किया है।

दृष्टवेमं स्वजनं कृष्ण युयुत्सु समुपस्थितम्।
सीदन्तिमम गात्राणि मुख च परिशुष्यति ॥

अर्जुन ने कहा—हे केशव इन सबको मार कर इस राज्य को लेकर क्या करूंगा।

गीता मे आगे कहा—

न कांक्षे विजयं कृष्ण न च राज्यं सुखानि च।
किं नो राज्येन गोविन्द किं भोगै जीवितेन वा ॥

अर्जुन विवेकी एवं तार्किक था। उसने सोचा युद्ध का परिणाम वंश का नाश है। मर्य्यादाए सब समाप्त हो जाएगी। समाज में अव्यवस्थाए फैल जाएगी। इसलिए गुरुओ को मारना महापाप है। यह सोच कर कर्तव्य विमूढ़ हो गया। कृष्ण ने देखा अर्जुन मोह और अविवेक के कारण क्षात्र धर्म से गिरा जाता है। रिश्ते और नातो को सत्य समझ बैठा है। गीता में आगे लिखा—

अशोच्यानन्वशोच त्वं प्रज्ञावादांश्च भाषसे।
गतासूनगतासूंश्च नानुशोचन्ति पण्डिता ॥

(भावार्थ)—अर्जुन मूर्खों वाली बात कह कर अपने को बुद्धिमान समझता है जो प्राण गया सो गया उसका शोक कैसा।

अर्जुन तुम संसार की वास्तविकता को समझो। दो तत्व हैं एक आत्मा दूसरा अनात्मा। दोनो को ज्ञान की कसौटी पर कसो जो नाशवान है उसका सहारा न लो। गुरु पितामह, भाई, सखा यह सब नष्ट होने वाले हैं। युद्ध के समय रिश्ते और नातो को छोड़, गीता ने कहा—

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावक।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुत ॥

कृष्ण ने इस श्लोक द्वारा अर्जुन की जीवात्मा की नित्यता पर प्रकाश डाला और साथ ही कर्म करने की प्रेरणा दी। क्योंकि कर्म करने से सिद्धि

प्राप्त होती है पर वह कर्म ज्ञान पूर्वक हो। इस समय क्षात्र धर्म का पालन करते हुए आततायियों का नाश कर कायरता को छोड़। अर्जुन यह उपदेश सुन कर बोला—गीता में कहा—

नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाच्युत ।
स्थितोऽस्मिगत संदेहः करिष्यसे वचन तव ॥

हे कृष्ण आपकी कृपा से मेरा मोह नष्ट हो गया—क्षात्र धर्म का पालन करूंगा आततायियों को वध करने वाला वचन पूरा करूंगा।

कृष्ण के उपदेशो से पता चलता है कि वह अपने समय के नीतिज्ञ, विद्वान, शूरवीर, महाभारत के विजेता, अपने वंश के चमकते सूर्य अपने समय के देवता, राजर्षि, योगीराज थे—व्यासमुनि ने गीता मे स्पष्ट कहा—

यत्र योगेश्वर कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धर ।
तत्र श्री विजयोभूति ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥

—

# योगेश्वर ! तुमको नमस्कार

ले. श्री उत्तमचन्द जी शरर पानीपत

योगेश्वर ! तुम को नमस्कार
शत-शत कोटि मस्तक नत हो।
करते हैं वन्दन बारम्बार। योगेश्वर
ओ महापुरुष देवत्व मूर्ति
ओ नीति कुशल, ओ सत्य मूर्ति
ओ चक्र सुदर्शन के चालक
तुम से ही सम्भव यज्ञ पूर्ति
वीणा वादक, गोपाल बाल निज आततायियों के मृत्यु द्वार। योगेश्वर—
तुम तुङ्ग हिमालय शृंग तुल्य
निज गौरव गरिमा मे महान्
तुम हिम कण सम पावन पवित्र
तुम निर्मल आशीर्षो समान
तुम महाक्रांति के अग्रदूत
तुम विश्व शान्ति के सूत्रधार
योगेश्वर तुम को नमस्कार।

# श्री कृष्ण चरित्र का महत्व

## ले. श्री डा. भवानीलाल जी भारतीय चण्डीगढ़

मनुष्य अपनी विविध प्रवृत्तियों को सर्वोच्च सोपन पर पहुंचा कर किस प्रकार एक साधारण व्यक्ति से महा मानव एवं युग पुरुष के उच्च पद पर प्रतिष्ठित हो सकता है, इसका श्रेष्ठ उदाहरण कृष्ण का जीवन है। कारागार की विवशतापूर्ण परिस्थितियो में जन्म लेकर भी कोई मनुष्य ससार का महतम नेता बन सकता है, यह कृष्ण का चरित्र देखने से स्वत ही विदित हो जाता है। बंकिम के अनुसार श्री कृष्ण ने अपनी ज्ञानार्जनी, कार्यकारिणी तथा लोकरंजनी तीनो प्रकार की प्रवृत्तियो को विकास की चरम सीमा तक पहुचा दिया था, तभी उनके लिये यह सम्भव हो सका कि वे अपने समय के महान् राजनीतिज्ञ और समाज-व्यवस्थापक के गौरवान्वित पद पर आसीन हो सके।

बाल्यावस्था से लेकर जीवन के अन्तिम क्षण पर्यन्त कृष्ण उन्नति के पथ पर अग्रसर होते रहे। धर्म के अनुसार लोगो को स्व-कर्त्तव्य-पालन-हेतु प्रेरित करना ही उनके जीवन का एकमात्र उद्देश्य रहा। वे स्वयं धर्म में अनन्य निष्ठा रखने वाले और उसके वास्तविक रहस्य को जानकर उसका उपदेश देने वाले महान् धर्मोपदेष्टा थे। ऋषि दयानन्द ने तो यहा तक कह दिया था कि श्री कृष्ण ने जन्म से लेकर मरण-पर्यन्त कुछ भी बुरा काम नही किया। यह सब कुछ धर्म पालन के कारण ही सम्भव हुआ। इसीलिये महा भारतकार को लिखना पड़ा .—

यतो धर्मस्ततः कृष्णो यत. कृष्णस्ततो जय.

"जहां कृष्ण हैं वहां धर्म है और जहां धर्म है वहां जय है।" संजय ने भी इसी प्रकार की बात "गीता" का उपसहार करते हुए कही थी :—

यत्र योगेश्वर कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।<br>
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥

जहां योगेश्वर कृष्ण और गाण्डीवधारी अर्जुन हैं वही श्री है वहीं विजय है। अधिक क्या कहें, वही ऐश्वर्य और ध्रुव नीति है।' ये उक्तियां कृष्ण को ईश्वर का अवतार मानकर नही कहीं गई हैं। यदि ऐसा होता तो इनका कुछ भी मूल्य न होता। ये कृष्ण की सर्वोपरि मानवी भावनाओ को ही प्रकाशित करती हैं जिनके चरम परिष्कार के कारण कृष्ण साधारण मनुष्य की कोटि से उठाकर महापुरुषो की श्रेणी में आये, योगेश्वर और पुरुषोत्तम बने।

बाल्यकाल से ही देखिये। एक दृढ़ विचार वाले, पुष्ट शरीर वाले और स्वस्थ मन तथा सकल्पनिष्ट आत्मा वाले ब्रह्मचारी मे जो जो विशेषताए होनी चाहिए वे हमे कृष्ण मे मिलती हैं। उनका शारीरिक बल अतुलनीय है जिससे उन्होंने बाल्यकाल मे ही अनेक त्रासदायक एव हिंसक ज तुओ का बध किया। समय आने पर उन्होंने युद्ध कौशल और रणनीति का सागोपाग अध्ययन किया। युद्ध नीति के वे कितने प्रकाण्ड पण्डित थे यह तो इसी से ज्ञात हो जाएगा कि अर्जुन और सात्यकि जैसे वीर उनके शिष्य थे जिनको उन्होंने युद्ध विद्या सिखाई थी। गदा-युद्ध के वे अच्छे ज्ञाता थे। निर्भयता और चातुर्य के वे आकार थे।

शारीरिक बल के अतिरिक्त उनका शास्त्रीय ज्ञान भी बढा चढ़ा था। वे वेदो और वेदागो के अनुपम ज्ञाता थे यह भीष्म की उक्ति से सिद्ध हो चुका है। साथ ही वे सगीत, चिकित्सा शास्त्र अश्व परिचर्या आदि नाना लौकिक विद्याओ के भी पडित थे। उत्तरा के मृतप्राय बालक (परीक्षित) को जीवन प्रदान करना, मुरली-वादन से जड चेतन को विमुग्ध कर देना तथा अर्जुन के सारथि बन कर भयकर युद्ध क्षेत्र मे अपने रथी की रक्षा करना आदि उदाहरण इन बातो को सिद्ध करने के लिये उपस्थित किये जा सकते हैं। शारीरिक बल और मानसिक शक्तियो का चरम विकास तो उन्होंने किया ही था, आचार की दृष्टि से उनकी बराबरी कोई सम-कालीन पुरुष नहीं कर सकता था। वे महान सदाचारी तथा शीलवान थे। माता पिता की आज्ञा का पालन करने तथा गुरुजनो के प्रति पूज्य भाव रखने की भावना को उन्होंने कभी विस्मृत नहीं किया। वे मादक द्रव्यो अथवा द्यूत क्रीडा जैसे व्यसनो से सदा दूर रहे यहा तक उन्होंने समय-समय पर यादवो मे यह आदेश प्रचारित किये थे कि यदि कोई व्यक्ति मदिरा पीता हुआ पाया जाएगा तो राज्य की ओर से दण्डनीय होगा। ब्रह्मचर्य और सयम की दृष्टि से कहा जा सकता है कि एक पत्नी व्रत का दृढता से पालन करते हुए भी उन्होंने सपत्नीक बारह वर्ष तक दृढ ब्रह्मचर्य धारण किया। तदनन्तर उनके प्रद्युम्न जैसा पुत्र हुआ जो रूप, गुण

और सदाचार मे सर्वथा अपने पिता के ही अनुरूप था। यह खेद की बात है कि पुराणकारो और कवियो ने कृष्ण के इस उज्ज्वल पहलू को सर्वथा विस्मृत कर दिया और उन्हे कामी, लम्पट, कुटिल तथा युद्ध लिप्सु के रूप मे चित्रित किया।

श्री कृष्ण सन्ध्योपासना तथा अग्निहोत्र आदि दैनिक कर्त्तव्यो का पालन करने मे कभी प्रमाद नही करते थे। "महाभारत" मे स्थान-स्थान पर उनकी इस प्रकार की दिनचर्या के उल्लेख मिलते हैं। दुर्योधन से सन्धि वार्ता के लिये जाते हुए मार्ग मे जब जब प्रात और साय समय उपस्थिति होता है, कृष्ण सन्ध्या और अग्निहोत्र करना नही भूलते। "महाभारत" मे लिखा है —

प्रातरुत्थाय कृष्णस्तु कृतवान् सर्वमाह्निकम्।
ब्राह्मणैरभ्यनुज्ञात प्रययौ नगर प्रति ॥

'प्रात काल उठ कर कृष्ण ने आन्हिक (सन्ध्या-हवन आदि) सब क्रियाये की पुन ब्राह्मणो से आज्ञा लेकर नगर की ओर प्रस्थान किया"। इसी प्रकार का एक अन्य उल्लेख है —

कृत्वा पौर्वान्हिक कृत्य स्नात शुचिरलकृत।
उपतस्थे विवस्वन्त पावक च जनार्दन ॥

"फिर उन्होने पवित्र वस्त्र भूषणो से अलकृत हो सन्ध्या-वदन परमात्मा का उपस्थान एव अग्निहोत्र आदि पूर्वान्हकृत्य सम्पन्न किये।"

अब इसे विडम्बना के अतिरिक्त और क्या कहा जाये कि नित्य सन्ध्या-योग (ब्रह्म यज्ञ) के द्वारा सच्चिदानन्द परमात्मा की पूजा करने वाले देवयज्ञ-रूपी अग्निहोत्र के द्वारा देवताओ का भजन करने वाले आर्योचित मर्यादाओ के पालक एव रक्षक आदर्श महापुरुष कृष्ण को साक्षात् ईश्वर कह दिया जाए।

कृष्ण-चरित्र की सर्वोपरि विशेषता उनकी राजनैतिक विलक्षणता और नीतिज्ञता है। राजनीति के प्रति उनका यह अनुराग किसी स्वार्थ-भावना से प्रेरित नही था और न ही उनकी राजनैतिक विचारधारा किसी सकुचित राष्ट्रवाद के घेरे मे आबद्ध थी। उस युग मे तो आज जैसा राष्ट्रवाद जन्मा ही नही था। कृष्ण का राष्ट्रवाद तो लोक-कल्याण, जन हित तथा सब प्रकार की अराजकता, अन्याय, तथा शोषण की प्रवृत्ति को समाप्त कर धर्म राज्य की सस्थापना के लक्ष्य को लेकर ही चला था। सम्पूर्ण मानव जाति ही नहीं, अपितु प्राणिमात्र के कल्याण के भाव को लेकर ही उन्होने राजनीति के क्षेत्र मे प्रवेश किया था।

सर्वप्रथम उनकी दृष्टि अपने जन्म स्थान मथुरा जनपद के स्वेच्छाचारी, एकतन्त्रात्मक शासन के प्रतिनिधि अत्याचारी शासक कस के ऊपर गई। उन्होंने पारिवारिक और वैयक्तिक सम्बन्धों का विचार न करते हुए जनता के हित को सर्वोपरि समझा और कस के विनाश मे ही सबके कल्याण को देखा। कस की मृत्यु के पश्चात् ही मथुरा वासियो को अपनी सर्वांगीण उन्नति करने का अवसर मिला। कृष्ण का एक कार्य अभी पूरा ही नही हुआ था। जरासध के आक्रमणो का सिल-सिला आरम्भ हो गया। कस के मारे जाने से जरासध ने यह तो अनुमान लगा लिया था कि अब अधिक दिनो तक आर्यावर्त में अत्याचार, अनाचार तथा स्वेच्छा-चार नही चल सकेगा, क्योंकि कृष्ण के रूप मे एक ऐसी शक्ति का उदय हो चुका है जो सदाचार, धार्मिकता, मर्यादा-पालन तथा जनहित को ही महत्व देती है। कस भी तो आखिर जरासध का ही जामाता तथा उसी की नीतियो का अनुगामी था। कस वध की घटना मे जरासध ने अपनी दुर्नीति तथा षडयन्त्र प्रवृत्ति की ही पराजय देखी। वह तुरन्त मथुरा पर चढ दौडा और एक बार नही, सत्रह बार आक्रमण किये। कृष्ण के अपूर्व रणचातुर्य तथा उनके सफल नेतृत्व मे यादवो ने जरासध की सेना के दात खट्टे कर दिये, परन्तु जब कृष्ण ने ही यह समझ लिया कि शूरसेन प्रदेश सुरक्षा की दृष्टि मे उत्तम नही है तो उन्होने यादव जाति के निवास के लिये द्वारिका जैसे भौगोलिक दृष्टि से सुदृढ आवास स्थान को ढूंढ निकाला और उसे ही यादवो की राजधानी बनाया।

जरासध के सेनापति शिशुपाल ने युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ के प्रसग मे कृष्ण को प्रथम अर्घ्य देने के प्रस्ताव को लेकर विवाद खडा किया तथा यज्ञ ध्वस करके कृष्ण के धर्मराज सस्थापन के महत् लक्ष्य की पूर्ति मे बाधक बना। उस समय कृष्ण ने ही शिशुपाल का वध किया और इस प्रकार 'विनाशाय च दुष्कृताम्'' से सकेतित दुष्ट जनो के विनाश रूपी महायज्ञ मे एक और आहुति प्रदान की। जरा-सध को समाप्त करने का अवसर तो इससे पूर्व ही उपस्थित हो गया था। 86 राजाओ को कैद कर तथा इन अभागे राजाओ की सख्या 100 हो जाने पर रुद्र के सम्मुख उनकी बलि कर देने का जो पैशाचिक विचार जरासध ने कर रखा था उसे सहन करना कृष्ण जैसे धर्मात्मा एव करुणाशील पुरुष के लिए असम्भव ही था। इस दुष्कृत्य को पूरा करने का विचार रखने के कारण जरासंध अपने अत्या-चारो की चरम सीमा तक पहुचा चुका था और अब उसे अधिक सहन करना सम्भव नहीं था। मनुष्य जाति का ऐसा शत्रु जरासध भी कृष्ण की नीतिमत्ता

तथा भीम के शौर्य से मारा गया। न तो युद्ध ही हुआ और न अनावश्यक रक्तपात।

"महा भारत" के युद्ध में भीष्म, द्रोण, कर्ण, शल्य, दुर्योधन आदि कौरव पक्ष के सभी महारथी वीरों का एक-एक कर अन्त हुआ और इस प्रकार युधिष्ठिर के धर्म राज्य संस्थापन रूपी महायज्ञ की पूर्णाहुति हुई। इस महत् कार्य की सिद्धि में कृष्ण का योगदान तो सर्वोपरि था। कृष्ण की इस अपूर्व नीतिज्ञता, रण-चातुरी तथा व्यवहार-कुशलता को ठीक-ठीक न समझ कर उन पर युद्ध लिप्सु होने का आरोप लगाना अथवा समस्त देश को युद्ध की भयंकर एवं विनाशकारी ज्वालाओ में झोंक कर स्वयं तमाशा देखने वाला बताना, सर्वथा अनुचित है। कृष्ण ने यथा शक्ति युद्ध का विरोध किया, यह हम महा भारतीय युद्ध की आलोचना के प्रसंग में देख चुके हैं। उन्होंने न तो युद्ध को राष्ट्रीय समस्याओ के समाधान का एकमात्र अतः अनिवार्य उपाय माना और न उसमें कूद पड़ने के लिये किसी को उत्साहित ही किया। यहां तक कि वैयक्तिक माना-पमान भी परवाह किये बिना वे स्वयं पाण्डवों की ओर से सधि-प्रस्ताव लेकर हस्तिनापुर गये। यह सत्य है कि इस लक्ष्य को वे पूरा करने में असफल रहे, परन्तु इसमें ससार को यह तो ज्ञात हो ही गया कि महात्मा कृष्ण शान्ति स्थापना के लिये कितने उत्सुक थे तथा युद्ध के कितने विरोधी थे। उन्होने स्वयं कहा था कि वे पृथिवी को युद्ध की महाविभीषिका से बचा देखना चाहते हैं।

यह ठीक है कि दुर्योधन ने अपने दुष्ट स्वभाव तथा कुटिल प्रकृति के कारण उनकी बात नहीं मानी, फलतः युद्ध भी अपरिहार्य हो गया, परन्तु लोगों पर यह भी अप्रकट नहीं रहा कि पाण्डवों का पक्ष सत्य, न्याय और धर्म का पक्ष था तथा कौरव असत्य. अन्याय और अधर्म का आचरण कर रहे थे। संसार के लोगो को सत्य और न्याय का वास्तविक ज्ञान कराने में ही कृष्ण की अपूर्व दूरदर्शिता तथा मेधा का परिचय मिलता है। युद्ध होना ही है, जब यह निश्चित हो गया तो कृष्ण की विचारधारा भी इसी के अनुसार बन गई। उन्होंने अत्याचार के शमन दुष्टों को दण्ड देने के लिये किये जाने वाले युद्ध को क्षत्रिय वर्ण के लिये स्वर्ग का खुला हुआ द्वार बताया तथा अर्जुन को यह निश्चय करा दिया कि आततायियों को मार डालना ही धर्म है। रणक्षेत्र में उपस्थित होते ही अर्जुन में जिन भावों का संचार हुआ उन्हें अनार्यजुष्ट, अस्वर्ग्य और अकीर्तिकर बताते हुए कृष्ण ने अर्जुन को विजयशील होकर युद्ध करने की प्रेरणा दी। वास्तव में क्षात्र धर्म का

यही प्रकृत रूप था जिसे कृष्ण ने अपनी ओजस्वी वाणी तथा प्रभाविष्णु शैली मे उपस्थित किया। आज हजारो वर्ष व्यतीत हो जाने पर भी कृष्ण की वह ओजस्विनी शिक्षा जन-मन की निराशा, ग्लानि तथा दौर्बल्य को दूर करती हैं एव कर्तव्य पालन के लिये उठने की प्रेरणा देती है।

यह है कृष्ण की राजनीतिज्ञता का किन्चित् दिग्दर्शन। उन्होने अपने जीवन मे जहा अनेक राष्ट्रीय एव अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्नो को सुलझाते का प्रयास किया, वहा उन्होंने सामाजिक समस्याओ की भी अवहेलना नही की। कृष्ण वर्णाश्रम धर्म के प्रबल पोषक और शास्त्रीय मर्यादाओ के कट्टर समर्थक थे। उन्होने स्वय गीता' मे वर्णाश्रम धर्म का विधान करते हुए वर्णों को गुण एव कर्मों पर आधारित बताया है। उनके अनुसार जो व्यक्ति शास्त्र विधि को छोड कर मनमाना स्वेच्छाचार करता है उसे न तो सिद्धि ही प्राप्त होती है और न परलोक मे उत्तम गति। परन्तु इससे यह सिद्ध नहीं होता कि वे किसी प्रकार की सामाजिक सकीर्णता अथवा कट्टरता के पोषक थे। अनुदारता, गतानुगतिकता तथा रूढिवादिता के वे प्रबल विरोधी थे। उनकी सामाजिक धारणायें उदारतापूर्ण तथा नीतियुक्त थी। उन्होने सदा दलित, पीडित एव शोषित वर्ग का ही साथ दिया। विदुर जैसे धर्मात्मा उन सम्मान के पात्र रहे। नारी वर्ग के प्रति उनकी महती श्रद्धा थी। कुन्ती, गाधारी, देवकी, आदि पूजनीय गरीयसी महिलाओ के प्रति उनके मन मे सदा आदर, समान तथा श्रद्धा का भाव रहा। सुभद्रा तथा द्रौपदी आदि कनिष्ठा देवियो के प्रति उनका स्नेह सदा बना रहा। वे मानते थे कि मातृ शक्ति का यथोचित सम्मान होने से ही देश की भावी सन्तान मे श्रेष्ठ गुणो का सचार होगा।

कृष्ण के व्यक्तित्व के इन पहलुओ की समीक्षा कर लेने के पश्चात भी उनके चरित्र के उस महान् एव उदात्त पक्ष की ओर ध्यान देना अनावश्यक है जिसके कारण वे आध्यात्मिक जगत् के सर्वोत्कृष्ट उपदेष्टा समझे गये और योगेश्वरो मे उनकी परिगणना हुई। वे आज भी कोटि-कोटि जनो की प्रेरणा, श्रद्धा, तथा निष्ठा के पात्र बने हुए हैं। कृष्ण राजनीतिज्ञ थे, धर्मोपदेशक तथा धर्म-सस्थापक भी थे। वे समाज-सशोधक तथा नूतन क्रान्ति-विधायक भी थे, किन्तु मूलत मे योगी तथा अध्यात्म-साधना के पथिक थे। उन्होने जल मे रहने वाले कमल की भांति ससार मे रहते हुए, सासारिक वासनाओ से निर्लिप्त रह कर कर्तव्य की भावना से आचरण करने के योग की शिक्षा दी।

वे ज्ञान और कर्म के समन्वय के पक्षपाती थे। साथ ही, उपासना योग का भी समर्थन करते थे। ज्ञान, कर्म और उपासना का सामञ्जस्य ही आर्य चिंतन की विशेषता है और यह समन्वय-भावना ही कृष्ण के व्यक्तित्व मे साकार हो उठी थी। कृष्ण स्वय सच्चिदानन्द ब्रह्म के परम-उपासक थे और इस सर्वोच्च तत्व का साक्षात्कार कर लेने के पश्चात् भी वे लोक-मार्ग से च्युत होना अनुचित मानते थे। "गीता" में उन्होंने यह स्पष्ट कहा कि पूर्णकाम व्यक्ति के लिये यों तो कुछ भी करना शेष नही रहता, किन्तु लोक यात्रा निर्वाह की दृष्टि से उन्हे भी आर्योचित मर्यादाओ का पालन करना ही पडता है। इस प्रकार उन्होने कालान्तर मे प्रवर्तित श्रमणवाद प्रतिपादित निवृत्ति मार्ग का एकान्तत अनुसरण करने को अनुचित बताया। कृष्ण के दर्शन का यही चरम तत्व है और लौकिक सफलता का भी यही रहस्य है।

जीवन की इन विविधतापूर्ण एव सर्वांगीण प्रवृत्तियो का समन्वित अनुशीलन एव परिष्कार ही कृष्ण चरित्र की विशिष्टता है। यही कारण है कि कृष्ण जैसा व्यक्ति इस देश मे ही नही बल्कि ससार मे भी कदाचित ही जन्मा हो। आर्य-मर्यादाओ के अप्रतिम रक्षक राम से उनके विविध रगोवाले व्यक्तित्व की तुलना अवश्य की जा सकती है, परन्तु दोनो के युग तथा जीवन की अन्य परिस्थितियो मे मौलिक अन्तर था। राम स्वय आदर्श राजा थे किन्तु कृष्ण को आदर्श राज्य सस्थापन का कार्य स्वय करना पडा। कृष्ण तो राजाओ के निर्माता, परन्तु स्वय राजसा से दूर रहने वाले साम्राज्य सस्थापक थे। राम के समक्ष वैसी कठिनाइया नही आई जिनसे कृष्ण को जूझना पडा। अत किसी भी दृष्टि से क्यो न देखा जाए, कृष्ण का चरित्र एव व्यक्तित्व भूमण्डल मे अद्वितीय ही माना जाएगा।

---

मायावी मायया वध्य सत्यमेतद् युधिष्ठिर।

—हे युधिष्ठिर ! छली को छल से मार गिराना चाहिए, यह सत्य ही है। (महाभारत)

—श्री कृष्ण जी महाराज

वयं हि शक्ता धर्मस्य रक्षणे धर्म चारिण

धर्म का प्रचार करने वाले हम धर्म की रक्षा मे सन्नद्ध एव समर्थ हैं।

(महा सभा पर्व 22 10)

—श्री कृष्ण जी महाराज

## एक विश्लेषणीय चरित्र--

# लोक नायक श्री कृष्ण

ले.—श्रीमती पुष्पा महाजन सभा पुस्तकाध्यक्ष (गुरदासपुर)

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन——गीता मे निष्काम कर्म का सन्देश देने वाले योगेश्वर श्री कृष्ण का चरित्र अनेक विरोधा-भासो से भरा है। यो तो भारत की इस पुण्य भू पर अनेक महापुरुषो और मनीषियो ने जन्म लेकर इसे कृतार्थ किया किन्तु उसमे दो युग पुरुष ऐसे हुए जिन्हें आगे चल कर जन मानस में भगवान की संज्ञा दी। वे हैं श्री राम और श्री कृष्ण। उनमे श्री राम की कथा तो अत्यन्त सरल और किसी प्रकार के विरोधाभास वहाँ नही मिलते क्योंकि श्री राम चरित्र की स्थापना महर्षि बाल्मीकि ने ही आदर्श के उस उच्च धरातल पर कर दी है कि नीचे देखने का कोई अवसर नही। तदुपरान्त पौराणिक युग के अनुसार सन्त तुलसीदास ने भी उन्हे इस ऊचाई पर रखा कि विपरीत रूप मे देखने का प्रश्न ही नहीं उठता। किन्तु श्री कृष्ण का चरित्र अधिक विस्तृत और नाटकीय घटनाओ से भरपूर है और उनके दो रूप हमारे सामने प्रस्तुत होते हैं, लोक रजक और लोक रक्षक। गोकुल मे व्यतीत उनका जीवन एक प्रकार से लोक रजक कहा जा सकता है चाहे वहा भी लोक रक्षा के कुछ संकेत मिलते हैं जैसे पूतना वध, इन्द्र से गोपो की रक्षा और कालिया नाग को नथना या नियन्त्रित करना, पर अधिकतर इन्हें इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है कि यह बातें लौकिक न रह अलौकिक हो जाती हैं। इतना छोटा सा बालक यह सब कैसे कर सकता है ? हमे यह नही भूलना चाहिए कि इसी बीच कृष्ण सदीपन गुरु के यहा शस्त्र-शास्त्र की शिक्षा भी प्राप्त करते रहे थे। उनके ऐसे वीरता पूर्ण कर्मों को सुनकर ही कस को सन्देह हुआ था कि ऐसा अपूर्व बालक कृष्ण हो सकता है और तभी उसने अक्रूर को उन्हे मथुरा लाने के लिए भेजा था। जिसके आगमन से सारा गोकुल परेशान हो उठा था। कस का अत्याचार तब सीमा से अधिक बढ़ चुका था।

गोकुल में रहते हुए श्री कृष्ण चरित्र का दूसरा रूप भी मिलता है। वह है उनका संगीतमय और रसिक रूप। संगीत के वे साकार रूप थे। ऐसा वर्णन आता है कि मुरली की धुन सुन कर गायें चरना छोड़ कर भागी आती थी। गोपिया विवश होकर घर का काम काज दधि मथना छोड़ देती थीं। इससे सिद्ध होता है कि वे संगीत मे मर्मज्ञ थे और इस कला मे ऐसी शक्ति मानते थे कि सुनने वाले बेसुध हो जायें, मुग्ध हो जायें किन्तु गोपियो के साथ जिस रसिकता का सम्बन्ध उनसे जोड़ा जाता है वह अत्यन्त शंका पूर्ण है। कृष्ण अभी किशोरा-वस्था मे थे जब कंस ने उन्हे बुलवाया था। तब जिस रास इत्यादि का चित्रण हमें मिलता है उससे यह तो समझा जा सकता है कि जिस प्रकार आज भी वन वासियो मे विशेष नृत्य आयोजन लडके लडकिया परस्पर करते हैं, वह कुछ ऐसा ही होता होगा और श्री कृष्ण उन नृत्यो मे पारंगत होगे किन्तु आगे भक्त कवियो ने उनका गोपियो के साथ जिस प्रकार सम्बन्ध जोड़ा। वह बुद्धि मानने को प्रस्तुत नही होती। कुछ लोगो का यह भी कथन है कि यह तो एक प्रतीकात्मक चित्रण है। श्री कृष्ण परमात्मा और गोपिया आत्माओ का रूप है। ईश्वर एक होते हुए भी सभी आत्माओ से सम्बन्धित है इसी प्रकार हर गोपी को कृष्ण अपने संग नजर आते हैं और वे उससे एक रूप हो जाना चाहती हैं। बड़ा अच्छा रूपक है किन्तु बड़ो के लिए। किन्तु बच्चे तो जब ऐसे चित्र देखते हैं तो प्रश्न करते है। यह कैसे भगवान है जो इतनी स्त्रियो को साथ लिए रहते हैं। फिर वे राधा को अपनी उत्सुकता का विषय बना लेते है कि वह कौन है, जिसका नाम सदा 2 के लिए उनके साथ जुड़ गया है। यदि उन्हें बताया जाए कि वह उनके बाल्यकाल की सखी थी जो उनके पीछे दीवानी हो गई थी और उसका प्रेम इतना दिव्य था कि स्वयं श्री कृष्ण ने उसे वरदान दिया था कि उसका नाम सदा उनके साथ स्मरण किया जाएगा। कुछ इतिहासकार तो राधा का लौकिक चरित्र ही नही मानते उनके अनुसार 'राधा' आराधना और भक्ति की प्रतीक हैं और प्रकृति स्वरूप हैं। यदि श्री कृष्ण भगवान हैं तो राधा प्रकृति है। अत यह एक विवादास्पद चरित्र है क्योकि श्री कृष्ण की आठ पटरानियां मानी जाती हैं इनमे रुक्मिणी और सत्यभामा प्रधान है। यह जान कर भी बाल पीढ़ी चक्कर मे पड जाती है। श्री राम ने एक पत्नी का आदर्श सभी के सम्मुख प्रस्तुत किया और आज भी एक पत्नी का युग चल रहा है तो स्वाभाविक है कि वह चरित्र नई पीढ़ी को अपने अधिक निकट लगता है। जब मैं कालेज मे पढ़ाती थी तब भी छात्राओं के समक्ष इस तथ्य को स्पष्ट करना पड़ता था कि रामायण और महा-

भारत के युग मे बड़ा अन्तर था। यो तो वीर पूजा प्रत्येक युग मे होती रही है, महाभारत मे यह कुछ अधिक देखने मे मिलती है। लडकियो को स्वयवर का अधिकार था और वे किसी भी नपु सक कायर प्रवचक राजा के स्थान पर उस राज-पुत्र को महत्व देती थी जो अधिक गुणवान वीर योद्धा और लोक विख्यात हो। रुक्मिणी का विवाह इसी का उदाहरण है। उसने शिशुपाल जैसे उद्दण्ड राजा को छोडकर श्री कृष्ण को स्वय विवाह का सन्देश भेजा और इस उद्देश्य के लिए श्री कृष्ण को रुक्मिणी का अपहरण करना पडा। इसीलिए महा भारत काल मे बहु पत्नी प्रथा बहुतायत से मिलती है। यह सब उस समय के अनुसार पौरुष मे आता है।

श्री कृष्ण मल्ल युद्ध व अन्य प्रकार की युद्ध कलाओ मे बाल्यकाल से ही प्रशिक्षित हो चुके थे इसी से वे चाणूर और मुष्टिक जैसे मल्लो को पराजित कर सके जिन पर कस को बड़ा मान था। बड चातुर्य से उन्होने कस का वध करके अपने नाना उग्रसेन को मुक्त किया और उन्हे ही मथुरा का राजा प्रदान किया कस वध के उपरान्त श्री कृष्ण का समस्त चरित्र लोक नायक के रूप मे उपलब्ध होता है। उनमे वे सभी गुण थ जो किसी भी श्रेष्ठ लोक नायक मे होने चाहिए। वे श्रेष्ठ योद्धा, योगेश्वर नीति कुशल और प्रत्येक विद्या से पारगत थे। यही कारण है कि वे युग पुरुष कहलाए अनाचार एव अत्याचार का नाश करना, न्याय एव शान्ति का पक्ष लेना उनके जीवन का लक्ष्य था। वे एक श्रेष्ठ मित्र थे और इस मैत्री को निभाने के लिए उन्होने दीन हीन सुदामा के चावल खाए और दुर्योधन के राजसी भोजन को त्याग कर विदुर का साग खाया। जहा भी अत्याचार और शोषण को वे देखते किसी न किसी ढग से उसे नष्ट करने पर तुल जाते थे। कस के ससुर जरा सन्ध ने अनेक राजाओ व राज कन्याओ को अपनी कैद मे डाल कर तग कर रखा था। जब महाराज युधिष्ठिर ने राज सूर्य यज्ञ करने का विचार किया तब सर्व प्रथम श्री कृष्ण ने उसे ही पराजित करने का प्रस्ताव रखा। और इसके लिए वे अर्जुन व भीम के साथ ब्राह्मण वेष धारण करके वहा गए। उनका मत था कि जहा दोनो पक्षो की शक्ति समान हो वहा वही जीतता है जो चतुराई से काम लेता है। जरासन्ध ने मल्ल युद्ध के लिए भीम को चुना था। दोनों का बल समान था किन्तु जरासन्ध जब थक गया तो श्री कृष्ण ने रहस्यमय शब्दो में कहा भीम थके हुए शत्रु को सताना नही चाहिए। और भीम ने उस की रीढ़ की हड्डी तोडकर उसका प्राणांत कर

कर दिया। यद्यपि कृष्ण की बुद्धि द्वारा ही सब राजा मुक्त हुए थे फिर भी उन्होंने उन्हें युधिष्ठिर की ही अधीनता स्वीकार करने को कहा। वे चाहते तो सभी राजाओ को अपने अधीन कर सकते थे किन्तु परमयोगी श्री कृष्ण ऐसे भौतिक प्रलोभनों से बहुत दूर थे।

श्री कृष्ण की श्रेष्ठता इस बात से भी प्रमाणित होती है कि राज-सूय यज्ञ में जब अन्य सभी लोग अपने लिए श्रेष्ठ से श्रेष्ठ कार्य लेने के इच्छुक थे वहां श्री कृष्ण ने ब्राह्मणों के पांव धोने का दायित्व लिया। इससे बढ़ कर विनम्रता क्या हो सकती है ?

तभी राज-सूय यज्ञ में ही एक प्रश्न पैदा हुआ कि सर्व प्रथम पूजा का अर्घ्य किसे समर्पित किया जाए और युधिष्ठिर ने यह निर्णय भीष्म पितामह पर छोड़ दिया। तब पितामह ने कहा बुद्धि, बल, पराक्रम नीति में कृष्ण ही यहां सबसे महान् है। यह सुन कर शिशुपाल भड़क उठा। उसने श्री कृष्ण के लिए कई अप शब्द कहे और श्री कृष्ण चुप-चाप सुनते रहे शान्त भाव से। पराकाष्ठा हो जाने पर इतना ही कहा—'शिशुपाल एक बार मैंने तुम्हारी मां को तुम्हारे सौ अपराध क्षमा करने का वचन दिया था। वह वचन अपनी सीमा लांघ गया है। और उन्होने तत्काल सुदर्शन चक्र से उसका सिर काट डाला। ऐसे पराक्रमी व्यक्ति थे श्री कृष्ण।

श्री कृष्ण के जीवन के दो अन्य प्रसंग तो उनके व्यक्तित्व के श्रेष्ठतम रूप को स्पष्ट करते हैं। पहला तो कौरवों की सभा में शान्तिदूत बन कर जाना एक ओर महाभारत की तैयारियां हो रही थी। दोनों पक्ष एक दूसरे से बढ़ कर युद्ध सामग्री जुटाने में व्यस्त थे और श्री कृष्ण को शान्ति की चिन्ता खाए जा रही थी। युद्ध की विभीषिका से वे परिचित थे। महाभारत का अर्थ था एक प्रकार से सर्वनाश, आर्या वर्त का पतन और देश का धूमिल भविष्य। भारत ने उस काल में ज्ञान-विज्ञान दोनो क्षेत्रों में चरमोन्नति प्राप्त कर रखी थी। जिसके पीछे कई वर्षों की खोज, श्रम और लग्न का रहस्य छिपा था। वह सब नष्ट हो जाएगा अत: जैसे भी हो सके इस भयावह युद्ध को रोकने का प्रयास करना ही होगा। पाण्डव भी बड़े शान्तिप्रिय थे अत: थोड़ा ही लेकर सन्तोष कर लेना चाहते थे। उनके लिए तो श्री कृष्ण का परामर्श ही सब कुछ था पर वे यह नहीं चाहते थे कि उनके लिए श्री कृष्ण किसी भी प्रकार का अपमान सहें। पाण्डव जानते थे कि जिन कौरवों ने उन्हें प्रारम्भ से ही न्याय नहीं दिया वे अब क्या देंगे। उन्होने अपनी बागडोर श्री कृष्ण के हाथों में सौंप रखी थी। फिर भी श्री कृष्ण का

"विचार था कि अन्तिम प्रयास कर ही लेना चाहिए क्योंकि मेरे शान्ति प्रयत्नों के कारण लोक में मेरी निन्दा तो न होगी। बाकी रहे दुर्योधन के कुचक्र सो अपनी रक्षा करने में मैं स्वयं सक्षम हूं।

श्री कृष्ण के हस्तिनापुर आने का समाचार जानकर दुर्योधन के मन में सचमुच कुनीति आ गई। उसने सोचा यदि श्री कृष्ण को कैद कर लिया जाए तो पाण्डव युद्ध कर ही नहीं सकते। पर दूत का कार्य तो अभी शेष था। भरी सभा में धृतराष्ट्र, भीष्म आदि सभी ने कृष्ण के शान्ति सन्देश का समर्थन किया। फिर भी दुर्योधन को किसी प्रकार समझा न सके। तब उसने कर्ण, शकुनि और दुःशासन को साथ लेकर कृष्ण को बन्दी करने की ठानी। कहते हैं कि तब भी कृष्ण ने अपने विराट् स्वरूप का प्रदर्शन किया। विराट् स्वरूप से तात्पर्य उनकी योगपूर्ण आत्म-शक्ति का प्रदर्शन था और उस तेजस्वी रूप के समक्ष सभी जैसे ठगे से रह गए और श्री कृष्ण सबको अभिभूत करते हुए सभा से निकल गए।

अब श्री कृष्ण के व्यक्तित्व का महानतम प्रसंग आता है वह है उनका गीता ज्ञान। अपनी दार्शनिकता के कारण गीता देश में ही नहीं विदेशों में भी लोकप्रिय हो रही है। इसमें श्री कृष्ण ने जीवन के गूढ़ रहस्यों को बड़े ही सुन्दर ढंग से प्रतिपादित किया है। इसे उपनिषदों का सार भी कहा गया है। कुरुक्षेत्र में अर्जुन जब मोह ग्रस्त हो जाता है। अपने समक्ष सभी बन्धु बान्धवों और गुरु जनों को देखता है तो वह समस्त अत्याचारों को भूल कर विचलित हो जाता है, गाण्डीव फेंक कर हताश हो बैठ जाता है तब श्री कृष्ण उसका मोह भंग करने के लिए आत्मा की अमरता का उपदेश देते हैं। मेरे विचार में द्वितीय अध्याय ही गीता के प्राण हैं। शेष तो उसी की व्यवस्था मात्र है। आत्मा के विषय में वे कहते हैं—
'न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे' यह आत्मा किसी युग व काल में न जन्म लेता है न मरता है तथा यह न होकर भी होने वाला है यह तो नित्य शाश्वत और पुरातन है। शरीर के नष्ट होने पर भी यह नहीं मरता।

जो कुछ सुख-दुख, रोग-शोक हैं शरीर को होते हैं आत्मा को व्याप्त नहीं होते। शरीर के मरने पर उसे जला देते हैं वह राख हो जाता है किन्तु आत्मा—————————————

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः

इस आत्मा को न तो शस्त्र काट सकते हैं। न अग्नि जला सकती है, न जल

भिगोने में समर्थ है, न पवन में इतनी शक्ति है जो इसे सुखा सके । अरे अर्जुन ! यह तो अछेद्य है, अभेद्य है । अदाह्य है अशोष्य है । यह तो नित्य अचल स्थिर और सार्वकालिक है। इस सम्बन्ध में और पद भी लिखे गये हैं पर इस अमर आत्मा की इससे अच्छी व्याख्या क्या हो सकती है ? मनुष्य जिस शरीर के प्रति इतना मोह ग्रस्त है उसका मूल्य तो शून्य है। वास्तविक तत्व तो आत्मा है जो कर्म करने के लिए मानव शरीर धारण कर संसार में आती है। अत: विभिन्न प्रकार के कर्त्तव्य निभाते हुए निष्काम कर्म करो, फल की इच्छा मत करो। तब प्रश्न उठता है कि यह तो कोई सरल कार्य नहीं। कौन मनुष्य इतना ऊंचा उठ सकता है जो फल की इच्छा ही न करे, यहां मरते दम तक मनुष्य किसी न किसी कामना में बन्धा रहता है। इसका समाधान भी श्री कृष्ण ने दूसरे अध्याय में ही स्थित प्रज्ञ के लक्षण बता कर किया है। वही मनुष्य इस उच्च स्थिति को प्राप्त कर सकता है—

दु:खेष्वनुद्विग्नमना: सुखेषु विगत स्पृह: ।
वीत राग भय क्रोध: स्थितधीर्मुनिरुच्यते ।

जो व्यक्ति दु:ख मे उद्विग्न मन नही होता और सुख में जिसकी लालसा नहीं रहती सुख और आनन्द के क्षणों मे भी जो निस्पृह रहता है। राग, भय, क्रोध से भी विरक्त रहता है उसे ही स्थित प्रज्ञ कहा जा सकता है न वह दु:ख में दु:खी और सुख में उछल कूद करता है वही व्यक्ति स्थिर बुद्धि है।

कितनी ऊंची बात है। मनस्विता की चरम सीमा, संयम का अनुपम रूप। वरन् सांसारिक प्राणी तो दु:ख मे इतने दु:खी कि कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य भूल जाएं और सुख और आनन्द के क्षणों में इतने प्रफुल्ल और अहम्‌युक्त कि सद् और असद् का भेद ही न रख सके।

बुद्धि और मेधा ही मानव मस्तिष्क की संचालिका है इसका परिचय भी गीता के द्वितीय अध्याय में मिल जाता है। गायत्री महामन्त्र में भी तो बुद्धि का कितना महत्व है; तनिक निम्नलिखित श्लोक में देखिये—

क्रोधाद्भवति संमोह: संमोहात्स्मृति विभ्रम: ।
स्मृति भ्रंशाद् बुद्धिनाशो, बुद्धिनाशात् प्रणश्यति ।

क्रोध से मोह की उत्पत्ति होती है, मोह मनुष्य को अविवेकी बना देता है। अविवेक आ जाए तो स्मृति भ्रम के गर्त में फंस जाती है। स्मृति भ्रंश से बुद्धि का नाश होना निश्चित है और जिसकी बुद्धि नष्ट हो जाती है वह स्वयं नाश को प्राप्त होता है अर्थात् लक्ष्य से गिर जाता है।

इसी अध्याय के अन्त मे कहा गया है जो पुरुष समस्त कामनाओ को त्याग कर मोह और अहंकार हीन हो जाता है उसे ही परम शान्ति प्राप्त होती है।

इस सब विश्लेषण के उपरान्त प्रश्न यह उपस्थित होता है कि जो महा-पुरुष अपने युग का निर्माता, लोक नायक, परम योगी और तात्त्विक ज्ञान का स्वामी हो तथा अपने समय का सबसे बड़ा राजनीतिज्ञ हो उसके एक ही रूप को जन मानस में अधिक क्यो उभारा गया है। जीवन के कुछ वर्षों को छोड़कर श्री कृष्ण का समस्त जीवन लोकार्पण और कर्म का सन्देश वाहक है।

हमारे पौराणिको ने भावावेश मे आकर केवल उनके लोक रंजक रूप का प्रचार एव प्रसार किया। भक्ति काल मे इसे विशेष महत्व प्राप्त हुआ और इस की जो अभिव्यक्ति हुई वह अधिकतर गीतो के माध्यम से हुई और रामायण जैसा कोई महाकाव्य श्री कृष्ण के लोक रक्षक रूप को लेकर नही लिखा गया। किसी भी पर्व व त्यौहर का मनाना किसी भी जाति की सांस्कृतिक परम्पराओ को जीवित रखता है। पर परम्पराओं के नाम पर किसी महापुरुष के चरित्र के साथ अन्याय न हो, यह भी सोचने वाली बात है। श्री कृष्ण के साथ ऐसा ही हुआ है और यह सब कृपा भक्ति काल के अन्तिम तथा रीति काल के कवियो की है, जिन्होने इतने श्रेष्ट महापुरुष को केवल गोपियो के साथ रमण करने वाला नायक बनाकर रख दिया था, भक्ति के नाम पर उनके बचपन को कुछ अलौकिक कल्पनाए प्रस्तुत करके जनता को उनके वास्तविक स्वरूप को समझने से वंचित रखा। आवश्यकता इस बात की है हम अपने महापुरुषो के जीवन चरित्रो को ठीक से अध्ययन करें और जनता के समक्ष प्रस्तुत करने का प्रयास करें, श्री कृष्ण ने निष्काम कर्म का उद्घोष किया है वह मानव जीवन को अर्जुन की भान्ति हताश और किंकर्तव्य विमूढ होने से बचाता है।

जन्माष्टमी के पर्व पर उस युग निर्माता को हमारा शत् शत् प्रणाम।

---

निर्ममो निरहंकार स शान्तिमधि गच्छति।

जो व्यक्ति अहंकार और ममता (मोह) का परित्याग कर देता है। वह परम शान्ति को प्राप्त करता है। (गीता, 2-71)

—श्री कृष्ण जी महाराज

# योगीराज श्री कृष्ण

ले.—श्री धर्मवीर जी विद्यालकार, 5 अशोक नगर पीलिभीत

श्री कृष्ण जी महाराज के जीवन, चरित्र कर्म और स्वभाव के विषय मे जितना कहा जाए थोडा है। सूर्य को दीपक दिखाने के समान है। कितने ही विद्वान् ऋषि, सन्त एव आप्त जन उनके प्रति अपनी श्रद्धाजलिया अर्पित करते आए हैं। आज भी जनसाधारण उनके प्रति अपार श्रद्धा से नतमस्तक है। कुछ अति श्रद्धालुओ ने उन्हे "ईश्वर" ही स्वीकार कर लिया है। इस 'स्वीकार" से उनके प्रति अपार श्रद्धा होती है। परन्तु उनसे उत्साह और स्फूर्ति प्राप्त नही नही होती। घोर सकट के समय जनमानस गीता से प्रेरणा तो पाता है, परन्तु यह जानकर कि वे ईश्वर थे अतुल सम्पत्ति और सामर्थ्य वाले थे, हम मनुष्य मे उतना सामर्थ्य एव बुद्धि सम्भव नही, यह सोच कर पुरुषार्थ के प्रति उदासीन हो जाता है। अगर श्री कृष्ण को महापुरुष माना जाए, जो अपने पूर्व जन्म सचित सस्कारो से और इस जन्म मे किए तप, साधना, एव एक निष्ठा से विशिष्ट गुणो को अर्जित कर लिया है, तो अन्य लोग भी अर्जित कर सकते हैं। फिर हर मनुष्य भी चाहेगा कि वह भी श्री कृष्ण के समान पराक्रमी, शूरवीर, निर्भीक योद्धा एव चतुर, नीति निपुण, राजनीतिज्ञ और तपस्वी, विद्वान्, सत्या-सत्य का विवेकी बन सकता है। भारतीय श्रद्धालुओ ने उन्हे जहा एक ओर ईश्वर ही मान लिया है, वहा उनके नाम के साथ अनेको कुकृत्य, असम्भव लीलाए जोड दी हैं, जिससे अन्य देशीय जन उन्हे लम्पट तथा ठग समझने लगे हैं। महर्षि दयानन्द ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के 11 वे सम्मुल्लास मे, भागवत समीक्षा प्रकरण मे, बडे दुखी मन से लिखा है —

"श्री कृष्ण जी का इतिहास महाभारत मे अत्युत्तम है। उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्त-पुरुषो के सदृश है। जिस मे कोई अधर्म का आचरण, श्री कृष्ण जी के जन्म से मरण-पर्यन्त, बुरा काम कुछ भी किया हो, ऐसा नही मिलता। इस भागवत वाले ने अनुचित, मनमाने दोष लगाए हैं। दूध, दही, मक्खनादि की चोरी, कुब्जादासी से समागम, पर-स्त्रियो से रास-मण्डल-क्रीडादि

मिथ्या दोष श्री कृष्ण जी पर लगाए हैं। इनको पढ़-पढ़ा, सुन-सुना के अन्य मत वाले श्री कृष्ण जी की बहुत सी निन्दा करते हैं। जो यह भागवत न होता, तो श्री कृष्ण जी के सदृश महात्माओं की झूठी निन्दा क्यों कर होती ?"

सोमनाथ मन्दिर के ध्वस्त होने के प्रकरण में अपने मन का दुःख और क्षोभ महर्षि दयानन्द निम्न प्रकार व्यक्त करते हैं —

"अगर श्री कृष्ण सदृश कोई राजा होता तो इनके (अंग्रेजों के) धुर्रे उड़ा देता और ये भागते फिरते।"

धृतराष्ट्र का सूचना एवं प्रसारण मन्त्री संजय, श्री कृष्ण के प्रति श्रद्धांजलि में कहता है —

यत्र योगेश्वर कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धर ।
तत्र श्री विजयो भूति ध्रुवा नीति मतिमर्म ॥

इसके समक्ष आधुनिक अन्ध श्रद्धालुओं की श्रद्धांजलि कितनी कुत्सित है।

श्री कृष्ण जी के जन्म के समय आर्यावर्त की अवस्था बहुत गिर चुकी थी। स्वार्थ, अविवेक दुर्व्यसनों का प्रबल प्रभावी हो गया था। परस्पर प्रेम, निःस्वार्थ जन सेवा, कर्त्तव्य पालन लुप्त हो चुका था। कंस शिशुपाल और दुर्योधन जैसे राज्य लोभी स्वार्थी, दम्भी ईर्ष्यालु अनेको छोटे-2 राजा स्वतन्त्र हो गए थे। शस्त्र एवं शास्त्र विद्याओं में पारंगत होते हुए भी मद्यपान, द्यूत क्रीड़ा आदि दुर्व्यसनों में मस्त थे। उस समय कोई चक्रवर्ती राजा न था जो सब को एक सूत्र में पिरोए रखता।

मगध—नरेश जरासन्ध अपने पिता को बंदी बना सिंहासनारूढ़ हुआ। चेदिराज शिशुपाल ईर्ष्यालु था। आसाम नृपति नरकासुर कुमारी सुन्दरियों को बन्दी बना दुराचार करता था। मथुरा के कंस की राज्य लोलुपता चरम सीमा पर थी। कुन्ती के पुत्र की उत्पत्ति द्रोपदी के पांच पति लाक्षागृह षड्यन्त्र, द्यूत क्रीड़ा, द्रोपदी चीरहरण आदि चरित्र पतन के ज्वलन्त उदाहरण हैं। द्रोणाचार्य कौरवों के वेतन भोगी थे। द्रोपदी चीर हरण के समय उनकी शिराओं में खून का उफान नहीं उठा।

वेद के पठन-पाठन की रुचि भी कम हो गई थी। भीष्म पितामह जैसा तपस्वी ब्रह्मचारी, परम ज्ञानी वेदाध्ययन न कर पाए। शूद्र और नारियों को हीन समझा जाने लगा। द्रोणाचार्य ने एकलव्य को, शूद्र होने के कारण, शिक्षा न दी। धर्म का ह्रास और अधर्म की विजय सर्वत्र दीखती थी। ऐसे समय किसी, पराक्रमी, धर्मात्मा, नीतिज्ञ और स्थितप्रज्ञ पुरुष की आवश्यकता थी। इसी को

सम्भवत दृष्टि मे रखते हुए गीता में श्री कृष्ण ने कहा है —

यदा यदा हि धर्मस्य, ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य, तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥

(अर्थ—जब जब धर्म का पराभव और अधर्म की विजय होती है, तो मैं अथवा मुझ जैसे लोग इस भूमि पर जन्म लेते हैं)

अंग्रेजो के शासन काल में राम प्रसाद "बिस्मिल' आदि अनेकों बलिदानियो ने फांसी के तख्ते पर झूलने से पूर्व, इसी प्रकार की इच्छा व्यक्त की थी कि हम अगले जन्म में फिर किसी भारतीय मा की कोख से जन्म लेंगे और अंग्रेजों को भगाने एव भारत को स्वतन्त्र कराने मे पुन अपना बलिदान देंगे । यही बात ऊपर के श्लोक मे श्री कृष्ण ने कही है ।

श्री कृष्ण के जन्म की घटना भी ध्यान देने योग्य है । आज से 5290 वर्ष पूर्व भाद्रपद बदी अष्टमी बुधवार रोहिणी नक्षत्र मे शूरसेन (कस) की । राजधानी के कारागार मे उनका जन्म हुआ था । कस के अत्याचारो के विरोधियो का अग्रणी, उसका बहनोई(चचेरा)वसुदेव था । उसे मारना असम्भव समझ,कस ने उसे नजरबन्द कर दिया । उसकी छ सन्तानो को जन्मते मार डाला । सातवें की गर्भ मे मृत्यु हो गई । आठवा (श्री कृष्ण) के जन्म के समय वर्षा हो रही थी । ठण्डी हवा के झोको में पहरेदार सो गए । वसुदेव कृष्ण को गोकुल मे नन्द के पास छोड़ उसकी नवजात कन्या को ले आए । कस ने इसका वध कर दिया और श्री कृष्ण भाग्यशाली थे जो बच गए ।

कालिय अजगर का वध गदर्भराज धेनुक का बलराम द्वारा वध, कस द्वारा भेजी गई पूतना राक्षसी और मधासुर का वध, चाणूर और मुष्टिक का मल्लयुद्ध मे वध मस्त हाथी का वध और अन्त मे कस के वध से श्री कृष्ण और बलराम के पराक्रम एव चातुर्य का यश चारो दिशाओं मे फैल गया । सान्दीपन ऋषि के आश्रम मे शास्त्र और योग की शिक्षा पुन 70 वर्ष की आयु मे काम्यक बन में ज्ञानाध्ययन और योगाभ्यास, कौरवो और पाण्डवो को मिलाने का प्रयत्न, महाभारत के युद्ध मे निपुणता और नीतिज्ञता का परिचय देते हुए 120 वर्ष की आयु मे, वन मे, बलराम ने योग द्वारा अपने प्राणो का विसर्जन किया और श्री कृष्ण जब समाधि मे लीन थे । तो भ्रमवश शिकारी के बाण से स्वर्ग सिधारे ।

इस प्रकार लोक कल्याण-चिन्तक, विद्वान् धर्मात्मा, नीतिज्ञ, योगीराज, तत्वदर्शी की जीवन-लीला जन्म भर पाप से संघर्ष करते हुए और धर्म की स्थापना करते हुए समाप्त हुई ।

## योग दर्शन शास्त्र का ज्ञान और तदनुरूप आचरण

श्री कृष्ण योगीराज थे। उनके चरित्र और गुण स्वभाव के अध्ययन से चित्त आनन्दित होता है। हम सबका हृदय अनायास ही उन्हे योगीराज स्वीकार करता है। परन्तु मात्र श्रद्धातिरेक से उन्हे योगीराज मान लेना अपना स्वभाव नही है।

योगी किसे कहे। अतीत में इस विषय मे क्या मान्यता थी ? हम लोग योगी पुरुष को बड़ आश्चर्य से देखते हैं समझते हैं कि उसमे अद्भुत विलक्षणतायें होनी चाहिए। इसी प्रकार अर्जुन ने भी श्री कृष्ण से पूछा—

स्थित प्रज्ञस्य का भाषा समाधिस्थस्य केशव।
स्थित धी किं प्रभाषत, किमासीत व्रजेत किम॥'

अर्थात उसका उठना बैठना बोल-चाल सामान्य लोगो से भिन्न होगी। वह भूत प्रेतो को भगा देगा। वर्तमान भूत, भविष्य तीनो कालो का ज्ञाता होगा। प्राणायाम द्वारा कई दिन भूमि मे बन्द रह सकता होगा। अदभुत विचित्र असम्भव कार्य करने मे सामर्थ्यवान होगा। परन्तु ऐसा होता नही। अणिम्य आदि आठ सिद्धिया प्राणायाम व योगाभ्यास द्वारा अगर कोई अभ्यास कर लें तो उसका प्रदर्शन नही होना चाहिए।

## योग के आठ अंग है—

*यम-नियम आसन प्राणायाम प्रत्याहार धारणा ध्यान समाधयोऽष्टावङ्गानि,*
29 सूत्र द्वितीय पाद योगदर्शन।

आज कल यम नियमो और प्राणाम से समाधि तक के समस्त अंगो को छोड़, मात्र आसनो को ही योग समझने लगे हैं। क्योकि आज का योगी वही सिखाता है कोई कोई नाम मात्र के प्राणायाम के अभ्यास का प्रशिक्षण देकर पूजे जा रहे हैं प्रत्याहार धारणा ध्यान समाधि का उन्हे लेशमात्र भी ज्ञान नही। श्री कृष्ण योग के मर्म को जानते थे। उसे जीवन का अंग बना चुके थे। वह स्थित प्रज्ञ समाधिस्थ पुरुष के बारे मे सविस्तार बताते हैं—वह मनोगत सभी कामनाओ का त्याग कर अपने आप मे सन्तुष्ट रहता है। 2 वह दुखो मे उद्विग्न नही होता। सुखों के प्रति उत्साही नहीं होता। राग (द्वेष) भय क्रोध से ऊपर उठ जाता है। 2-56

" वह अनासक्त होता है। शुभ को प्राप्त कर विशेष प्रसन्न नहीं होता और अशुभ को पाकर द्वेष नहीं करता 2-57—गीता

जैसे कछुआ अपने अंगो को अपने अन्दर समेट लेता है वैसे ही वह योगी

(स्थित प्रज्ञ) व्यक्ति इन्द्रियार्थों से अपनी इन्द्रियों को अलग कर अन्त: मे समाविष्ट जाता है। 2-58 —गीता

परमात्मा का साक्षात् कर विषयो मे रुचि ही समाप्त हो जाती है। 2-59

विपयो के ध्यान से क्रमश आसक्ति, काम, क्रोध, लोभ मोह, स्मृति भ्रश, बुद्धि नाश और अन्त मे सर्वनाश होता है। 2-62-63

जो राग, द्वेष से रहित होकर इन्द्रियो को आत्मा के अधीन कर सासारिक कार्य कर्त्तव्य समझकर करता है। वही आनन्द (प्रसाद) को प्राप्त होता है उसके सभी दु ख नष्ट होते हैं। वह प्रसन्न रहता है। उसी की बुद्धि स्थिर रहती है।

2-64-65

निर्भय, निरहकारी होकर वही शान्ति को प्राप्त करता है। 2 71

यही ब्राह्मी स्थिति निर्वाण काम की है। 2-72

पातञ्जल योग दर्शन का प्रारम्भिक (द्वितीय) सूत्र यही है —

योगश्चित्तवृत्ति निरोध ।

अर्थात् मन की समस्त प्रकार की वृत्तियो—राग-द्वेष, क्रोध, लोभ, मोह मद, मत्सर पर नियन्त्रण ही का नाम योग है। अगला सूत्र है—

तदा द्रष्टु स्वरूपेऽवस्थानम् ।

जब मन की समस्त वृत्तियो पर नियन्त्रण करेंगे तो आत्मा अपने स्वरूप मे स्थित हो जाता है। अर्थात् त्रिगुणातीत हो जाता है।

ये ही बातें ऊपर के श्लोको मे गीता मे स्पष्ट की हैं।

शरीर और आत्मा के भेद को स्पष्ट करने वाले श्लोक अध्याय दो के 17 से 34 तक है ।

योग के विषय मे श्री कृष्ण जी का अभिप्राय है कि मनुष्य सासारिक कर्म कर्त्तव्य भावना से, आसक्ति को त्याग कर सिद्धि असिद्धि मे समभाव रखता हुआ, कर्म करे तो वह योग ही है। 2 48। कर्म फल का त्याग करे। 2-47। कर्म को कुशलता पूर्वक करना ही योग है। 2 50

18वें अध्याय मे सन्यास और त्याग को स्पष्ट किया है।

काम्याना कर्मणा न्यास, सन्यास कवयो विदु ।
सर्व कर्म फल त्याग, प्राहुस्त्याग विचक्षण ।

इच्छित कर्मों का त्याग, (न कि शास्त्र प्रतिपादित कर्त्तव्यो का) का नाम सन्यास है। समस्त कर्मों के सभी प्रकार के फलों का त्याग 'त्याग' है। सन्यास

आचरण में कर्मातीत-कौशल छूटने अथवा कर्तव्यों का प्रतीक है—छोड़ दिया जाता है । फल इच्छा का त्याग अत्यन्त कठिन है । दर्शन शास्त्रों में पराकाष्ठा बताई है कि मोक्ष प्राप्ति की इच्छा का भी त्याग करने पर 'निःश्रेयसाधिगम' होता है ।

जिस प्रकार पातञ्जल योग दर्शन में 'योगश्चित्तवृत्ति निरोधः' का विस्तार है, उसी प्रकार गीता भी चित्तवृत्तियों के नियन्त्रण का विस्तार है । चित्तवृत्ति नियन्त्रण के लिए आत्म और आत्म तत्त्वों का सम्यक ज्ञान आवश्यक है । ऐसा ही गीता में उपदेश और योग दर्शन का विषय है ।

अतः श्री कृष्ण योगेश्वर थे, उन्हें योगदर्शन का गहरा ज्ञान था ज्ञान इतना अधिक आत्मसात् था कि उस ज्ञान को वे अत्यन्त सरल भाषा, हृदयग्राही शैली में बता कर दूसरे को भी स्पष्ट ज्ञान दे पाते थे । तभी अर्जुन समस्त संशयों को छोड़कर उठ खड़ा हुआ और तुरन्त संजय के मुख से निकला—'यत्र योगेश्वर कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः । तत्र श्री विजयो भूति ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ।

**योगी का चरित्र**—संसार में दिखाई देता है कि योगदर्शन के पारगत विद्वान् क्रियात्मक योग से कोसों दूर हैं । जो विरला क्रियात्मक योगी होता है वह दर्शन शास्त्र से सर्वथा अनभिज्ञ होता है । गृह त्याग के समय महर्षि दयानन्द (मूल शंकर) को यजुर्वेद कण्ठस्थ था । योग विद्या सीखने के लिए गुरु को ढूंढते रहे । जिससे जो कुछ मिला, श्रद्धा से ग्रहण किया । पूर्ण योगाभ्यास हो जाने पर भी शान्ति, सन्तोष, आनन्द न मिला । परम पूज्य गुरु विरजानन्द के चरणों में विद्या पाकर आत्म ज्ञान के चक्षु खुले । सन्तोष शान्ति, आनन्द मिला । समाधि का अभूतपूर्व आनन्द मिला । इसी प्रकार गुरु सदीपनिकाश्यप के आश्रम में प्रारम्भिक ज्ञान और योग विद्या पाई फिर संसार के कार्य क्षेत्र में अनुभव प्राप्त किए । 70 वर्ष की आयु में काम्यक वन में पुनः योगाभ्यास किया । उनके कर्म कौशल के प्रमाण स्वरूप कुछ घटनाएं उद्धृत करनी आवश्यक हैं ।

प्रथम—महाभारत का युद्ध समुपस्थित है दोनों सेनाएं तैयार हैं और उस समय अर्जुन का विषाद श्री कृष्ण प्रहसन्निव (हंसते हुए) दूर कर देते हैं । उस परिस्थिति में स्वयं न घबड़ाना और अर्जुन को खड़ा कर देना योगी का ही चमत्कार है ।

द्वितीय—युद्ध से पूर्व युधिष्ठिर रथ को छोड़ कौरवों की ओर जाने लगे,

हैं। सब चिन्तित हैं। श्री कृष्ण मुस्करा रहे हैं, वे जानते हैं कि युधिष्ठिर क्यो भाग रहा है, युधिष्ठिर लौटते हैं तो प्रसन्न हैं, कहते हैं विजय हमारी है, उन्होंने भीष्म पितामह, द्रोणाचार्य और कृपाचार्य के पास जाकर आशीर्वाद पा लिया है।

तृतीय—घटोत्कच ने कौरवों मे प्रलय उपस्थित कर दी है, विवश होकर कर्ण ने अमोघ शक्ति से उसका वध कर दिया है, पाण्डवों मे गहरा शोक छाया है, पर श्री कृष्ण प्रसन्न हैं, उन्होने बताया कि अब अर्जुन को कोई नहीं मार सकता। जो अमोघ शक्ति (अस्त्र) कर्ण के पास अर्जुन के वध के लिए सुरक्षित थी, वह अब कर्ण के पास नही रही, वह घटोत्कच के लिए प्रयुक्त करनी पडी, तब पाण्डवो को शान्ति मिली।

चतुर्थ—श्री कृष्ण विदुर के घर भोजन कर कौरवो के पास युद्ध न करने की सलाह देने गए, श्री कृष्ण को समाप्त करने का यह सुअवसर था, उन्हे (विषमय) भोजन कराने का आग्रह किया गया, श्री कृष्ण अविचल हो कहते हैं—चार अवस्थाओ मे भोजन किया जाता है। प्रथम भूख होने पर। मैं भूखा नहीं। अभी 2 भोजन कर आया हू। द्वितीय-भोजन मित्र के घर किया जाता है। तुम मित्र नही, तृतीय-आपत्ति मे किया जाता है। मुझ पर कोई आपत्ति नही, चतुर्थ-डर कर दबाव से किया जाता है। मैं तुम से डरता नही। यह निर्विवाद मनस्थिति और व्यवसायात्मिक बुद्धि योगी की ही हो सकती है, अब घेर लिए गए और निकलने का मार्ग नही मिला तो योग द्वारा प्राप्त सम्मोहक शक्ति से सबको मूर्छित कर चले आए।

ज्ञान से, कर्म से चरित्र (गुण और स्वभाव) से योगस्थ श्री कृष्ण परमोत्कृष्ट योगीराज थे। उन्हे शत् शत् प्रणाम है।

---

**कृष्ण के प्रति—**

सप्त शिशु वध कर चुकी थी, क्रूरता अहमन्य,
देवकी वसुदेव-सा, दुखिया नहीं था अन्य,

कन्स कारा मे पडी दृढ बेडियो के बीच,
मुक्ति को जिसने जना, उस देवकी को धन्य।

—[illegible] सिंह भदौरिया, "सौमित्र"

# योगीराज श्री कृष्ण जी महाराज

ले. श्री पं. सत्यपाल जी पथिक अमृतसर

देव तुल्य महापुरुष श्री कृष्ण जी महाराज थे ।
परम ईश्वर भक्त थे और परम योगीराज थे ।
देवकी माता, पिता वसुदेव जी के लाल थे ।
दुष्टनाशक धर्म रक्षक सर्व प्रिय गोपाल थे ।
कष्ट निर्धन दीन दुखियो के सदा हरते रहे ।
त्याग कर हर स्वार्थ पर उपकार ही करते रहे ।
जन्म से अन्तिम समय तक पाप से ओझल रहे ।
इसलिए आपाद मस्तक विमल और निर्मल रहे ।
जिन्दगी भर मे नही दुष्कर्म कोई भी किया ।
है महाभारत के अन्दर व्यास जी ने लिख दिया ।
हर समय ही एकता थी मन वचन व्यवहार मे ।
अमर गीता ज्ञान देकर छा गए ससार मे ।
इनको बचपन से मिली शिक्षा थी वैदिक ज्ञान की ।
दिल मे रहती भावना ससार के कल्याण की ।
शस्त्रविद्या मे निपुण बलवान और गुणवान थे ।
राजनीति धर्मनीति मे कुशल विद्वान थे ।
जिनके ऊचे कर्म से भारत का ऊचा नाम है ।
उनके पद चिन्हो पे चलना अब हमारा काम है ।
प्रेरणाप्रद मार्ग दर्शक अद्वितीय चरित्र है ।
कृष्ण का इतिहास सूरज के समान पवित्र है ।
उन्नति के शिखर पर श्री कृष्ण सम चढते रहे ।
"पथिक" वैदिक धर्म पथ पर पग सदा बढते रहे ।

# समत्वं योग उच्यते (गीता)

ले.—श्री उत्तम चन्द जी शरर् एम. ए. पानीपत

मनुष्य के पास परमेश्वर द्वारा प्रदत्त मन की विचित्र शक्ति है। इसके बिना कोई इन्द्रिय कार्य नही कर सकती, यज्ञ तप, दान सब इसकी उपयुक्त अवस्था पर आधारित हैं। और तो और मानव का सुख-दुःख इस मन के आधार पर आधारित है। ऐश्वर्यों से भरा घर भी मन के अशान्त होने पर काटने को दौड़ता है और दुःखो से भरा वनवास भी मन के शान्त होने पर सुख की वर्षा करता है। दुर्योधन ऐश्वर्य मे पल कर भी पाण्डवो की ईर्ष्या मे रातो की नींद खो बैठता है, महाराणा प्रताप राज्य को छोड वनो में घास की रोटी खाकर भी हर्षित है। यह सब मन की लीला ही तो है। अत यह स्पष्ट है कि मानसिक शान्ति वस्तुत शान्ति का कारण है। परन्तु कठिनाई यह है कि मन इतना शक्तिशाली होते हुए भी अत्यन्त चचल है अर्जुन के शब्दो मे इसका वश मे लाना वायोरिव सुदुष्करम्' कठिन है। परन्तु इसके बिना मनुष्य की शान्ति और सुख का उपाय भी तो नही हमने कई बार देखा कि बिखरी शक्तिया बलवती होकर कार्य करने में सक्षम न हो सकी, मन की शक्ति भी चचलता मे अपना महत्व खो देती है, अत सुख से अथवा ईश्वर से योग (मेल) के लिए मन की वृत्तियो का वशीकरण आवश्यक ही नही अनिवार्य है। पातञ्जलि मुनि योग की परिभाषा मे यही कहते हैं ? योग चित्तवृत्ति निरोध योगी भाग्यशाली होता है चित की वृत्तियो पर इसका अधिकार होता है परिणाम स्वरूप वह रेगिस्तान मे भी कमल खिला सकता है। ससार की कोई परिस्थिति उसे अशान्त नही कर पाती। वह सर्दी-गर्मी दोनो का आनन्द लेता है। "दुःखेष्वनुद्विग्नमना सुखेषु विगत् स्पृह।' योगी की यह अवस्था मन की चचलता पर अधिकार पाने पर प्राप्त होती है। श्री कृष्ण योग के इस महत्व को इन शब्दो मे कहते हैं-

'तपस्विभ्यो अधिको योगी ज्ञानिभ्यो अपिमतोऽधिक।'
कर्मिभ्यश्चाधिको योगी, तस्माद्योगी भवार्जुन। (गीता 6-16)-

तपस्वी, ज्ञानी, कर्मठ इन सबसे योगी का स्थान ऊंचा है। सच तो यह है

कि यदि व्यक्ति योगी नहीं होगा तो उसका तप, ज्ञान सफल हो ही नहीं पाता, सब कर्मों में कुशलता तो योग से ही सम्भव है।

एक बात और की आज तक जो यह भ्रमात चल रहा है कि मन को वश मे लाना तो असम्भव है, यह कथन उन लोगो का है जो इस मार्ग पर भाषण तो देते हैं परन्तु जो पथ पर चल नहीं पाये। श्री कृष्ण योगेश्वर के उनका कथन है कि कार्य कठिन तो है परन्तु असम्भव नही।

"असंशय महाबाहो मनो दुर्निग्रह चलन्। अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते' कार्य कठिन अवश्य है, परन्तु अभ्यास तथा वैराग्य लक्ष्य सिद्धि में अचूक साधन हैं। अभ्यास भी दीर्घ काल 'नैरन्तर सत्कार सेवितो' चिरकाल तक श्रद्धापूर्वक, निरन्तर साधना से साधक सफलहोता है। और श्रीकृष्ण ही नहीं,समस्त योगियो का यह विचार तो सर्वथा सत्य है कि व्यक्ति सांसारिक वासनाओं से विरक्त हो, नहीं तो कामनाओं का दास योग की सिद्धि नही कर सकता।

'प्रजहाति यदा कामान सर्वान् पार्थमनोगतान्। आत्मन्येवात्मना: तुष्ट. तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठता।' कामनाओं की दासता से मुक्ति ही योग का साधन है, मन: शान्ति का साधन है। कामनाएं चाहे कैसी हैं दासता तो दासता ही है ? जंजीर लोहे की भी बान्धेगी और सोने की जंजीर भी बन्धन ही तो है ? वेद ने इसे अपने अन्दाज से कहा है 'हिरण्मयेन पात्रेण सत्य स्याहितं मुखम्' सत्य का मुख चमकीले पात्र से ढका हुआ है जिसकी दृष्टि कामनाओ की इस चमक-दमक से परे जा सकती है वह सत्य के दर्शन कर सकता है। यही बात श्री कृष्ण कहते है 'य सर्वत्रानभिस्ने-हस्तत् तत् प्राप्य शुभाशुभ। नाभिनन्दति न द्वेष्टि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता।

मन जहां जहां कामना का दास है साधक को वहा वहा से उसे हटाना है।

यतो यतो निश्चरति मनश्चचलमस्थिरम्।

ततस्ततो नियम्यैतदात्मन्येव वश नयेत।

गीता में मन की चंचलता के दो रूप स्पष्ट हैं कामनाओं में आसक्ति तथा कामना पूर्ति में फल की आशा। आसक्त इतना होता है कि सौ बार गिरता है, चोट खा जाता है परन्तु रथ के थके घोड़े के समान कामना की आसक्ति का चाबुक खाकर फिर दौड़ता है। फल अवश्यमेव क्या है और फलाशा से इस प्रकार त्रस्त कि आशा पूर्ति न होने पर नास्तिकता तक स्वीकार। श्री कृष्ण इसका सुगम मार्ग देते हैं, यह नहीं कि कर्म करना छोड़ दो, कर्म तो नहीं छूट सकता, भोजन-छादन भी तो कर्म से सम्भव है हां, कर्म के दोनों बन्धन की गांठें खोल

दीजिए, आसक्ति को सर्वथा त्याग, फलाशा से मुक्त होकर कर्त्तव्य पालन की दृष्टि से किया गया कर्म योगी का महत्व प्रदान करता है। इसी का ही श्री कृष्ण निष्काम कर्म कहते हैं कामनाओ की वासना (आसक्ति फलाशा) से मुक्ति योग का प्रमुख साधन है। ऐसा व्यक्ति सब कुछ करके भी कर्म बन्धन से स्वतन्त्र होता है। यही है कृष्ण का कर्म योग।

एक प्रश्न फिर भी आगता है कि यदि कामनाओं से विरक्ति ले भी ली जाए तो भी उनकी वासना तो मन मे रहेगी और यह जड़ की भी कोपल और फिर वृक्ष का रूप ले सकती है। कृष्ण जी इसका भी उपाय बताते हैं।

विषया विनिवर्तन्ते निराहारस्य देहिना।
रसवर्ज रसोऽप्यस्य पर दृष्ट्वा निवर्तते।

परमेश्वर की भक्ति स्वय को उस के अर्पित करना इन वासनाओ से भी मुक्ति का परम साधन है वैसे भी मनुष्य की योग मार्ग मे रुचि ईश कृपा से ही सम्भव है। अन्त मे हम श्री कृष्ण के शब्दो मे कह सकते हैं? इसे योगेश्वर का सन्देश समझिए।

योगस्थ कुरु कर्माणि सग त्यक्त्वा धनजय।
सिद्ध्यसिद्ध्यो समो भूत्वा समत्व योग उच्यते।

---

# श्रीकृष्ण, गीता और योग

ले—श्री प्रा रमाकान्त दीक्षित (भिवानी)

---

आज से लगभग पाच हजार वर्ष पूर्व भाद्रपद में योगीराज श्री कृष्ण का जन्म तात्कालिक मोहाछन्न एव तमाच्छादित अकर्मण्य देश मे एक अपूर्व सुखद घटना थी। वे मानव नही मानवेतर थे। उनके मानवीय गुणो की चरमोत्कर्षता ही इसका प्रमुख कारण था। इसलिए आज भी हम योगीराज कृष्ण का नाम गौरव के साथ लेते हैं। भारतीय सस्कृति के तो जैसे ये प्राण ही हैं।

भीष्म पितामह ने श्रीकृष्ण की प्रशंसा करते हुए कहा है—

'वेद-वेदांग-विज्ञान बलं चाप्यधिकं तथा।
नृणां लोके हि कोऽन्योऽस्ति विशिष्टः केशवादृते ॥

दानं दाक्ष्यं श्रुतं शौर्यं ह्री कीर्तिर्बुद्धिरुत्तमा ।
सन्नतिः श्रीर्धृतिस्तुष्टिः पुष्टिश्च नियताच्युते ॥
तमिमे गुण सम्पन्न आर्यं च पितरं गुरुम् ।
अर्घ्यमर्चितम चाहि सर्वे सङ्क्षन्तुमर्हथ ॥
ऋत्विग्गुरुस्तथाचार्य , स्नातको नृपति प्रिय ।
सर्वमेतद्धृषी केश , तस्मादभ्यर्चितोऽच्युत ॥

अर्थात्—इनमें वेद वेदांगो का ज्ञान तो है, बल भी सबसे अधिक है । श्री कृष्ण के सिवाय ससार के मनुष्यो मे दूसरा कौन सबसे बढ कर है ?

हवन, दक्षता शास्त्रज्ञान, शौर्य, लज्जा, कीर्ति, उत्तम बुद्धि, विनय श्री, धृति तुष्टि और पुष्टि ये सभी सद्गुण श्री कृष्ण मे सर्वदा विद्यमान हैं ।

श्री अर्घ्य पाने के सर्वथा योग्य और पूजनीय है । उन सकल गुण सम्पन्न श्रेष्ठ पिता और गुरु श्री कृष्ण जी की हम लोगो ने पूजा की है । अत सब राजा लोग इसके लिए हमको क्षमा करें ।

यह तो रही श्री कृष्ण की महानता की बात—अब जरा उनके द्वारा मोहग्रस्त अर्जुन को दिए गए उपदेश पर भी जिसे 'गीता' की सज्ञा दी गई है; दृष्टिपात कर लिया जाए तो अनुचित न होगा क्योंकि दोनो एक दूसरे के पर्याय बन गए हैं, दोनो का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है। यह इसलिए भी कहना उचित है कि उनकी कथनी और करनी मे कोई अन्तर न था। जो कुछ उन्होने 'गीता' में कहा, उसे जीवन मे चरितार्थ करके भी दिखाया ।

'गीता' के विषय में श्री वेद व्यास जी ने 'महाभारत' में कहा है—

"गीता सुगीता कर्त्तव्या किमन्यै शास्त्र विस्तरैः ।
या स्वयं पद्मनाभस्य, मुखपद्माद्विनि सृता ॥"

अर्थात्—गीता, सुगीता करने योग्य है, गीता को भली प्रकार पढ कर अर्थ और भाव सहित अन्त करण में धारण कर लेना मुख्य कर्त्तव्य है जोकि स्वयं श्री कृष्ण जी महाराज के मुखारविन्द से निकली हुई है, फिर अन्य शास्त्रों के विस्तार से क्या प्रयोजन ।

ऐसा कहना समीचीन ही है । वस्तुत आप्त पुरुषों के वचन भी आप्त ही होते हैं ।

यों तो 'गीता' में विविध विषयो का सहज ही समावेश हुआ है । किन्तु इसमें मुख्य रूप से परमात्मा की प्राप्ति के लिए योग के मार्ग पर चलने का निर्देश किया गया है ।

श्री कृष्ण जी ने सभी जाति धर्म, सम्प्रदाय एवं विभिन्न वर्गों के लोगों को बिना किसी भेदभाव के बिना किसी फल की कामना किए, शुभ कर्म करने की प्रेरणा दी है। इन कर्मों को सम्पन्न करने के लिए योग के दो मार्ग सुझाए हैं—

(1) सांख्य योग

(2) कर्म योग

## 1. सांख्य योग—

सम्पूर्ण पदार्थ (चर-अचर) मृगतृष्णा के जल की भांति अथवा स्वप्न जगत् के समान मायामय होने से माया के कार्य रूप समूचे गुण ही गुणों मे बरतते हैं—ऐसे समझ कर मन, इन्द्रियों और शरीर द्वारा होने वाले सम्पूर्ण कर्मों के कर्तापन के अभिमान से रहित होना और सर्वव्यापी सच्चिदानन्दघन परमात्मा के स्वरूप मे एकीभाव से नित्य स्थित रहते हुए एक सच्चिदानन्दघन प्रभु के सिवाय अन्य किसी के भी अस्तित्व का भाव न रहना ही सांख्य योग का साधन है जैसा कि गीता के अध्याय पाच के आठवें तथा नवें श्लोक से स्पष्ट है—

"नैव किंचित्करोमीति, युक्तो मन्यते तत्त्ववित् ।
पश्यञ्शृण्वन्स्पृशञ्जिघ्रन्नश्नन्गच्छन्स्वपञ्श्वसन् ॥

(अ. 5, श्लो. 4)

प्रलपन्विसृजन्गृह्णन्नुन्मिषन्निमिषन्नपि ।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेषु वर्तन्त इति धारयन् ॥

(अ 5 श्लो 8)

अर्थात—हे अर्जुन ! तत्व को जानने वाला सांख्य योगी तो देखता हुआ, सुनता हुआ, स्पर्श करता हुआ, सूंघता हुआ, भोजन करता हुआ, गमन करता हुआ, सोता हुआ, श्वास लेता हुआ, बोलता हुआ, त्यागता हुआ, ग्रहण करता हुआ तथा आखों को खोलता और मींचता हुआ कि भी सब इन्द्रिया अपने-अपने अर्थों में बर्त रही हैं, इस प्रकार समझता हुआ निःसंदेह ऐसे माने कि मैं कुछ भी नहीं करता हू। उसका ध्यान केवल एक प्रभु में रहे।

## 2. कर्मयोग

इसमें बतलाया गया है कि सब कुछ भगवान का समझकर यह मानते हुए "मेरा मुझ में कुछ नहीं, जो कुछ है सो तोर" सिद्धि-असिद्धि में समत्व भाव रखते आसक्ति और फल की इच्छा को छोड़ कर भगवत आज्ञानुसार केवल भगवान के ही लिए सब कार्यों का आचरण करना और श्रद्धा भक्तिपूर्वक मन, वाणी और

शरीर से सब प्रकार भगवान के शरण होकर नाम गुण और प्रभाव सहित उनके स्वरूप का निरन्तर चिन्तन करना ही निष्काम कर्मयोग का साधन है। जैसा कि गीता के अध्याय दो के अड़तालीसवें, अध्याय पांच के दसवें और अध्याय छः के सतालीसवें श्लोक में स्पष्ट किया गया है—

योगस्थ कुरु कर्माणि सग त्यक्त्वा धनजय ।
सिद्धयसिद्धयो समो भूत्वा समत्वयोग उच्यते ॥
(आ 2 श्लो 48)

अर्थात—हे धनजय ! आसक्ति को त्याग कर तथा सिद्धि और असिद्धि मे समान बुद्धि वाला हो कर योग मे स्थित हुआ, कर्मों को कर यह समत्व भाव ही योग नाम से कहा जाता है।

ब्रह्मण्याधाय कर्माणि सग,
त्यक्त्वा करोति य ।
लिप्यते न स पापेन,
पद्‌मपत्रमिवाम्भसा ॥
(अ 5 श्लो 10)

अर्थात—हे अर्जुन देहाभिमानियो द्वारा यह साधन होना कठिन है और निष्काम कर्मयोग सुगम है क्योकि जो पुरुष सब कर्मों को परमात्मा मे अर्पण कर के और आसक्ति को त्यागकर करता है, वह पुरुष जल मे कमल के पत्ते के सदृश पाप से लिपायमान नही होता।

योगिनामपि सर्वेषा मद्‌गतेनान्तरात्मना ।
श्रद्धावान्भजते यो मा स मे युक्ततमो मत ॥
(अ. 6 श्लो 47)

अर्थात—हे प्यारे ! सम्पूर्ण योगियो मे भी श्रद्धावान योगी मेरे में लगे हुए अन्तरात्मा से मेरे को निरन्तर भजता है, वह योगी मुझे परमश्रेष्ठ मान्य है।

योग के इन दो मार्गों के सम्बन्ध मे कुछ प्रश्न प्राय उठते रहते हैं—जैसे—क्या सांख्य योग की साधना केवल सन्यासियों का ही अधिकार है? क्या कर्मयोग केवल गृहस्थियों को ही अपनाना चाहिए और क्या दोनों मार्गों को एक साथ अपनाया जा सकता है? आदि।

इन प्रश्नों के उत्तर में [illegible] यही कहा जा सकता है कि सांख्य योग के मार्ग को भी सभी अपना सकते हैं—परन्तु इसके साथ शर्त यही है कि इस मार्ग पर चलने वाला व्यक्ति देहाभिमान से रहित, सहज स्वभाव और निर्विकार हो। तभी वह इस मार्ग पर सफलता पूर्वक चल सकता है। इसीलिए कुछ लोग इस मार्ग को सन्यासियो के लिए मान बैठे हैं।

दूसरा मार्ग कर्मयोग का है, जो पूर्वापेक्षा सरल और सुगम है। अत गृहस्थाश्रम मे रहते हुए भी इसे निभाया जा सकता है। इसे निष्काम कर्मयोग ही जानना चाहिए। इसकी सुगमता के कारण ही गीता मे श्री कृष्ण ने स्थान-स्थान पर अर्जुन के प्रति कहा है-तू निरन्तर प्रभु का चिन्तन करता हुआ निष्काम कर्मयोग का आचरण कर।

और अन्त मे प्रश्न यह रह जाता है कि क्या योग के दोनो मार्गों को ग्रहण कर लिया जाए।

ऐसा करना सर्वथा अनुचित है जैसाकि कहा भी गया है— आधी छोड सारी को धावै। आधी मिले न सारी पावै।

अथवा

'एक म्यान में दो खड्ग, देखा सुना न कान। और भी—

'दुविधा से दोनो गए, माया मिली न राम।

अत योग के किसी भी एक मार्ग को अपनाना ही हर प्रकार से श्रेयस्कर है। वह मार्ग कोई सा भी हो सकता है। परन्तु विधि विधानुसार ही वह मार्ग अपनाया जाना चाहिए।

---

## योगीराज कृष्ण के प्रति—

जुल्मो की कारा मे जन्मे, मुक्ति लिए जन-जन की,
दैत्यो का संहार बन गयी, क्रीडाएं बचपन की,
गोकुल मे किनके कि ढह गया, क्रूर कंस का शासन
नहीं फूल फल सकी, कामना किसी पूतना मन की।

भूतल पर आगमन तुम्हारा, लाया नूतन जीवन
योग बासुरी की मधु ध्वनि मे गूंजा जग का मधुबन,
ऐसा जादू डाला तुमने, ब्रज के जन जीवन पर,
अब तक तुम्हें पुकार रहा है, फिर आओ मनमोहन,

—लाखनसिंह भदौरिया सौमित्र

# कृष्ण का नाम जगमें गुंजायेंगे

ले. श्री छजूरामजी शर्मा शास्त्री दिल्ली

कृष्ण का नाम जग में गुंजाएंगे हम।
आज उनका जन्म दिन मनाएंगे हम॥
अमर जिनकी गीता को सब जानते हैं।
यह उपदेश उनका सभी मानते हैं॥
सार गीता का सबको बताएंगे हम॥ कृष्ण का—
आत्मा यह अमर है निराकार है।
देह नश्वर है केवल यही सार है॥
ले के फिर जन्म धरती पै आएंगे हम॥ कृष्ण का—
कर्म अच्छा बुरा कोई जैसा करे।
ईश के न्याय से फल भी वैसा भरे॥
सत्य मारग पै भूलों को लाएंगे हम॥ कृष्ण का—
धर्म रक्षा के हित जिनका आना हुआ।
नाश अधरम के हित जिनका आना हुआ॥
उनका सन्देश घर-घर सुनाएंगे हम॥ कृष्ण का
कृष्ण बोले हे अर्जुन! सुनो ध्यान से।
कर्मयोगी बनो आप सत ज्ञान से॥
बच्चे-बच्चे को अर्जुन बनाएंगे हम॥ कृष्ण का—

## जो कृष्ण न आते तो

कृष्ण जो न आते पापी कंस को पछार कर,
वसुदेव देवकी को जेल से छुड़ाता कौन।
सच्ची मित्रता दिखाय रंक से राजा बने
दीन सुदामा की दीनता को मिटाता कौन॥
दुशासन दुर्योधन शिशुपाल आततायियों,
की करनी का फल उनको चखाता कौन॥
"छजूराम' पार्थ के बहाने महाभारत में,
गीता के सुखद सन्देश को सुनाता कौन॥

जालन्धर प्रिंटिंग प्रैस, नेहरू गार्डन रोड जालन्धर।

# आर्य समाज के नियम

1. सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।
2. ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान् न्यायकारी दयालु, अजन्मा: अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
3. वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।
4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार कर करने चाहिएं।
6. ससार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना है।
7. सब से प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिये।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये।
9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहना चाहिये किन्तु सब की उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये।
10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिये और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

---

**आर्य मर्यादा का अंक 18, 4 भाद्रपद सम्वत् 2041 तदानुसार 19 अगस्त 1984 का कृष्ण जन्माष्टमी विशेषांक**

## देवराज गर्ल्ज हाई स्कूल जालन्धर की ओर से शोक प्रस्ताव

श्री रामचन्द्र जावेद जी के अचानक निधन पर हम सब के दिल को गहरा आघात लगा। जिसका सहन करना असम्भव है।

श्री राम चन्द्र जी जालन्धर कि आर्य भवन के एक सुदृढ़ आधार स्तम्भ थे। जिन्होने अपने जीवन में आर्य समाज को एक नया मार्ग दर्शन दिया। उनके मन में आर्य समाज के प्रति एक नई ज्योति जगमग थी। शिक्षा क्षेत्र में उनके द्वारा किए गए कार्य के लिए समाज सदैव ऋणी रहेगा। उनके निधन से जो अभाव समाज को प्राप्त हुआ है उसकी क्षतिपूर्ति असम्भव है। उस महान आत्मा के चरणो मे हमारी श्रद्धाजलि समर्पित है। भगवान उन्हे शांति प्रदान करे और उनके परिवार को इस असहनीय दुख को सहन करने की शक्ति दें।

सारा स्टाफ तथा सभी छात्राएं उनके लिए हार्दिक शोक व्यक्त करती है। सब ने विद्यालय के प्रागण मे मौन रख कर उनके चरणो मे भावभीनी श्रद्धाजलि समर्पित की।

सन्तोष सूरी प्रिंसिपल

## आर्य समाज दीवानहाल दिल्ली की ओर से शोक प्रस्ताव

आर्य समाज दीवान हाल की यह महतिसभा आर्य प्रतिनिधिसभा पजाब के मन्त्री श्री रामचन्द्र जावेद के निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करती है। श्री जावेद जी आर्य समाज के कर्मनिष्ठ व्यक्तियों मे मे थे। उनके निधन से आर्य समाज की अपूर्व क्षति हुई है।

यह सभा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि उनकी दिवगत आत्मा को सदगति प्रदान करे उनके सन्तप्त परिवार व इष्ट मित्रो को महान वेदना को सहन करने की शक्ति दे।

## आर्य वानप्रस्थ आश्रम गुरुकुल भठिंडा में शोक प्रस्ताव

हवन यज्ञ वेद कथा के पश्चात् रामचन्द्र जावेद महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के निधन पर परम पिता परमात्मा से प्रार्थना की गई कि उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे और उनके परिवार को उनके वियोग से जो कष्ट हुआ है उसे सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

## आर्य समाज श्रद्धानन्द बाजार लुधियाना की ओर से शोक प्रस्ताव

आर्य समाज साबुन बाजार (लुधियाना) मे 15 7 84 को रविवारीय साप्ताहिक सत्संग मे विशेष रूप से आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के महामन्त्री प्रिंसीपल राम चन्द्र जावेद जी के 12 जुलाई 1984 के आकस्मिक निधन पर शोक प्रस्ताव पारित किया गया और सभी...

## श्री परमानन्द जी वानप्रस्थी की ओर से श्रद्धाजलि

श्री राम चन्द्र जी जावेद की मृत्यु का समाचार सुनकर बहुत दुःख हुआ। प्रभु उनके शोक सन्तप्त परिवार को धैर्य प्रदान कर और उस पवित्र आत्मा को सदगति प्रदान करें।

(5 पृष्ठ का शेष)

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रेस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर से इस की स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टैलीफोन न 74250

(पंजि. न. पी. जे. एल. 55)

वष 16 अक 20 18 भाद्रपद सम्वत् 2041, तदनुसार 2 सितम्बर 1984, दयानन्दाब्द 160 । एक प्रति 40 पैस (वार्षिक शुल्क 20 रुपय

## अध्यात्म—सुधा

# प्रभु प्राप्ति कैसे हो ?

ल —श्री ब्र जगन्नाथ जी (वेद मन्दिर गुरुकुल कागडी)

जीवमात्र ही प्र रित और प्रवृत्त है कर्म मे—क्यो ? दु ख निवत्ति और सुख प्राप्ति की कामना ही से । लौकिक तथा पारलौकिक समस्त व्यापार=अर्थ-कम-साधनाए । सब ही का एक मात्र उद्देश्य है सुख प्राप्ति । जनसाधारण तो दु ख निवत्ति को ही मुख समझते है इसलिए वे शारीरक आवश्यकताओ तथा न्यून ताओ की पूर्ति को ही इतिश्री समझते है और दिन रात इन्ही मे रत रहते हुए सन्तुष्ट बने रहन है। ये दयनीय जन वास्तविक सुख वा आनन्द की ओर देख ही नही पाते । उसके दशन ही नही कर पाते । इसी कारण उनके कष्टो का अत्यन्ताभावनाश हो ही नही पाता और निरन्तर प्रय नशील रहते हुए भी । कोल्हू के बैल को तरह दिन रात चलन हुए भी वहा के वहीं बने रहते हैं । अर्थात दु खी ही बन रहते है ।

जैस एक यात्री अपना बोरिया बिस्तर आदि सिर या कन्धो पर उठाए बद्रीनाथ की पवतीय यात्रा पर जा रहा हो । माग मे आने वाले किसी पडाव वा चोटनी पर आकर जब अपना भार उतार कर रख देता है । उस समय भार उतर जाने स प्राप्त होने वाली विश्रान्ति सुख स वह कछ आश्वस्त तो हो जाता है पर इतने से ही उसकी क्षुधा पिपासा निवत नही हो जाती । क्षुधा पिपासा निवृत्ति के लिए तो उसे भोजन सामग्री जुटाने का तथा उसे पकाने का श्रम पृथक से करना होगा । तभी अगली यात्रा के लिए शरीर सशक्त बनेगा । इसके विपरीत पडाव पर पडे रहने से तो व्याकुलता बढगी ही। ठीक इसी प्रकार लौकिक तथा मान सिक सदव्यवहार से इन्द्रियदमन तथा सयम से कुछ सीमा तक कष्ट घट तो जाएगा और सुखानुभूति भी होगी । परन्तु स्मरण रहे । यह सुख तो दु ख निवृत्ति का है । किसी उपलब्धि का नही । पर हा यह अत्यन्त दुख-निवत्ति के लिए साधन भूत सहायक अवश्य बन सकता है । बिना सदाचार सदव्यवहार के सुख पाने की योग्यता मनुष्य मे नही आती यह सत्य है ।

ऋषियो ने इस सदाचार और सद व्यवहार को यम नियमो का रूप देकर इन्हे समाधियो का बहिरग बाह्य साधन माना है । पूर्वारूप माना है । क्योकि यम नियम मनुष्य के बाह्य मोर व्यवहार के नियामक तथा शोधक होकर आन्तरिक अन्तःकरण की शद्धि करने के आधार बनत है । और अन्तरग साधन धारणा ध्यानादि अन्त करण मे घुसी अशुद्धि का । कुवासनाओ को । दर्शाकर उनकी निवत्ति के लिए प्रेरित करत है । जब तक चित्त समाहित शान्त एकाग्र तथा निश्चय नही होता उसमे निहित गहरे म पडी कव म नाए प्रतीत ही नही होती । व हटा तो आत्मा को आवत्त किए हुए है । जैसे किसी जलाशय मे उठती तरग उसम पडी मोहर को नही दीखन देती । इन्हा वासनाओ की निवत्ति क लिए जहा—आ अग्नेनय सुपथा राये म न मन्त्र स पथ प्रवणन की प्रार्थना की जाती है वहा अन्त मे—युयोध्यस्मन जुहुराणम एन से स्पष्ट कर दिया गया है कि चित्तगत वासनाओ को नष्ट करो तब कल्याण होगा । इस प्रकार समाहित-चित्त के द्वारा ही चित्त मे व्याप्त सूक्ष्म राग का प्रत्यक्ष होता है, तभी हृदय ग्रन्थि खुलती है, अर्थात 'ऋतम्भराप्रज्ञा' की प्राप्ति निर्विचार समाधि द्वारा हो कर प्रकृति पुरुष विवक करके जब स्व स्पस्थिति होने लगती है तभी आत्मा के भोजन स्वरूप आन द की अनुभूति होती है । परन्तु इस अवस्था म भी यतकिचित क्षोभ बना रहता है । विषय भोगो की बनी पूव स्मृति कभी कभी जागकर चित्त को क्षुब्ध कर दिया करती है । तो बताया है कि —

'विषयाविनिवतन्ते निराहारस्य देहिन ।
रसवज रसोऽप्यस्य परम दृष्टवा निवतते ।।
—गीता 2 59

अर्थात बाह्य तपश्चरण उपवास आदि से क्षीण बने देह की प्रवत्ति विषयो की ओर नही होती—नही होगी परन्तु विषयो मे बनी अनुपम बुद्धि प्रकृति पुरुष विवेक हो जाने पर भी उनकी स्मति बनी रहती है ।

अनेक अल्पज्ञ अज्ञ अबोध व्यक्ति तो जगत की इस प्रत्यक्ष अवस्था 'जाग्रत क मख के अतिरिक्त अन्य आत्मसत्ता को न जानते न मानते ही हैं वे केवल निज देह तथा मन की कामनाओ उदर पति और प्राणतप्ति को ही निज लक्ष्य मान बठ है और कछ एक विलासिताए धनाकर कछ कामनाए हटाकर जड वतन जगत की थोडा बहुत सवा कर दन मात्र मे अपना श्रेय समझत है अन्य इस व्यष्टि जगत देह क सूत्रधार जीवा मा त व स अनभिज्ञ है—और सदा अनभिज्ञ ही रहत है क्योकि निज धारण क अन सार वे 'पुरुषाथ नहीं करत इसलिए उन्हे आत्मा का साक्षा कार नहा होता

देहादि स भिन्न अन्य कोई चेतन सत्ता आ मा तथा परमा मा नही है एसा धारणा मिथ्य तथा बालोचित है । जैसे कि बालकपन म बहलाने और युवावस्था के योग्य बनाने के लिए शिक्षा देने के भाव से बालको को अनेक प्रकार के खिलौने दिये जाते हैं, बालक भी उन खिलौनो को सत्य-नित्य रहने वाले समझ कर अपना सवस्व मान कर खिलौने के बिगडने टूटने फूटने पर अति दु खी होते है रोते पीटते हैं और जब तक कि नया न मिल जाए उनके मुख पर प्रसन्नता आती ही नही । पर न यौवन के पदापण करते ही वे बालक अपन खिलौने भाई बहनो और मित्रो को बाट कर प्रसन्न होते है ऐसे बालबद्धि अज्ञ मनुष्य निज अबोध के कारण इस जगत के प्रपच को ही सत्य स्थिर शाश्वत मानकर खिलौनो के समान इन स्त्री पत्र मित्र, बन्धु बान्धवो तथा इन स सारिक पदार्थों मे ही बालकवत बने रहते है ऐसी अवस्था मे वे इससे उच्च किसी अवस्था का विचार तक नही कर पाते। ऐसे ही व्यक्तियो को चेतावनी देते हुए यमाचार्य ने कठोपनिषद म कहा है—

न साम्पराय प्रतिभाति बाल प्रमाद न विनमोहन मूढम । अय लोको नास्ति न पर इति मानी पुन पुनवश मापद्यते म ।। (कठो 2 2) भाव स्पष्ट है कि बाल बद्धि जन साधारण जो पर माथ मे श्रद्धा न रखकर लौकिक धन धान्य मे ही जुटे रहत है व जन्म मरण के चक्र मे फस कष्ट भोगत रहते हैं अत आप्त वचन पर श्रद्धा करके तथा निजी अनुभव करके यह निश्चय कर लेना चाहिए कि इस देह से भिन्न एक चेतन सत्ता इसमे विद्यमान है उसका यथावत ज्ञान हो जाने म दु खदायी अज्ञान की निवत्ति तथा सुखद आत्मा की प्राप्ति हो जाती है ।

कष्ट मात्र दो कारणो से उपजता है और उनके नष्ट हो जाने पर स्वत नष्ट हो जाता है जैसे जड के सूख जाने पर पत्त फल और फल सभी गिर पडते हैं । प्रथम कारण है अहकार अस्मिता अर्थात यह देह ही आत्मा है इस से भिन्न अन्य कोई आत्मा नही एसा जानना और मानना, दूसरा है ममता आसक्ति अर्थात देह की पूर्णता का पूर्ण करने वाले तथा प्राण को तप्त करन वाले साधनो को भी अपना मानना तथा वैसा ही आचरण भी करना । ये दोष ज्ञान की न्यूनता—तमस् से उत्पन्न होते और सत्य प्रकाश वा ज्ञान से नष्ट हो जाते है ।

(शेष पृष्ठ 5 पर,

# महर्षि दयानन्द की जीवनी पर फिल्म

ले. श्री कृष्णदत्त एम. ए. बी. एड, भूतपूर्व प्रिंसिपल, हिन्दी महाविद्यालय हैदराबाद

आज कल महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन पर निर्माणाधीन फिल्म को ले कर आर्य समाज के पत्रो मे काफी चर्चा हो रही है। फिल्म के बनाने के विरोध मे काफी लिखा गया है। और रोकने का प्रयत्न भी हो रहा है। मैं फिल्म बनाने के पक्ष मे अपने विचार चितको और विद्वानो के विचारार्थ प्रस्तुत करन जा रहा हू। फिल्म, प्रचार का एक प्रबल साधन है। सीखने, ज्ञान वृद्धि करने तथा अपनी बात के प्रचार और प्रसार के लिए दृश्य तथा श्रव्य साधनो का प्रयोग बहुत आवश्यक है। फिल्मे इन दोनो साधनो को प्रभावकारी ढग से काम मे लाकर जनता की ज्ञान वृद्धि मे बहुत सहायक सिद्ध हुई हैं। मैं एक उदाहरण प्रस्तुत करना चाहता हू। मेरी एक पुत्री केनेडा के टारण्टो शहर मे रहती है। उसके दो पुत्र है। दोनो वही जन्मे, वही वे अभी भी स्कूल मे पढ रहे है। उन्हे भारत के बारे मे अधिक जानकारी नही है। उन्होने महात्मा गाधी पर बनी फिल्म देखी दो तीन बार देखी। उनके मन पर गाधी जी के जीवन की छाप ऐसी पडी कि बडा लडका जो हाई स्कूल का छात्र है कह उठा 'क्या गान्धी जी इतने महान थ ? उसने अपने मा बाप से कहा—'मैं पुन—पुन गान्धी जी की फिल्म देखूगा। शिक्षा शास्त्र का यह सिद्धान्त है कि सीखने मे हमारी जितनी अधिक इन्द्रिया कार्यरत होती हैं, उतना ही अधिक हम आसानी से सीख सकते हैं और सीखी हुई बात उतनी ही अधिक दृढ-मन्त हो जाती है। गाधी जी पर बनी फिल्म से करोडो व्यक्तियो ने उस महापुरुष के सम्बन्ध मे जाना और उनके जीवन के महान् कार्यों को पहचाना। महर्षि के जीवन पर बनी फिल्म से करोडो व्यक्तियो को उस महापुरुष के आदर्श जीवन और उनके कार्यों का परिचय प्राप्त होगा और दर्शको के मनो पर उस की छाप और प्रभाव अधिक समय तक बना रहेगा, क्योकि सीखने और जानने मे श्रव्य साधन की अपेक्षा दृश्य साधन अधिक स्थायी और प्रबल होता है। यहा दोनो साधन एक साथ काम मे लाये जा रहे हैं।

कुछ वक्तव्यो और लेखो मे इस बात का उल्लेख किया गया है कि महर्षि ने नाटक का विरोध किया है। महर्षि जब कर्णवास गये थे तब वहा का ठाकुर महर्षि से लडने के उद्देश्य से ही आया था। महर्षि की जीवनी मे उदण्ड स्वभाव के उस ठाकुर के साथ महर्षि की चर्चा का विवरण मिलता है। उस समय महर्षि के ये शब्द "तुम कैसे क्षत्रिय हो जो रामलीला मे लौडो का स्वाग भरवा महापुरुषो की नकल उतरवा उनको नचवाते हो अगर तुम्हारी मा बेटी को कोई नचावे तो कैसा बुरा मानो।" (हर बिलास शारदा कृत जीवन चरित्र पृ 51 प्राय इस बात को सिद्ध करने के लिए कि स्वामी जी नाटक आदि के घोर विरोधी थ, उद्धृत किये जाते है। वस्तुत यह प्रसग महर्षि के जीवन पर बनने वाली फिल्म के प्रसग पर ठीक नही उतरती। फिल्म के निर्माण मे महर्षि या किसी अन्य व्यक्ति का अभिनय करना भडुओ का या लौंडो का नाच नही है। विशेष रूप से कृष्ण लीला मे भगवान कृष्ण को ले कर उनके जो भद्द रूप प्रस्तुत किये जाते हैं उनसे कोई आदर्श उपस्थित नही होता। अत एसे प्रकरणो को फिल्म के लिए किये जाने वाले सात्विक कलात्मक अभिनय की समता मे रखना घोर अन्याय है और अपने कला प्रेम तथा कलात्मक दृष्टिकोण को विकृत रूप म प्रस्तुत करने के समान है।

बम्बई की घटना है। स्वामी जी महाराज से हरिशचन्द्र चिन्तामणि ने उन के फोटो लेने की अनुमति मागी, तो स्वामी जी ने यह आपत्ति की कि लोग उनकी प्रतिमा की पूजा करने लग जाएगे। किसी तरह फोटो तो लिया गया किन्तु महर्षि ने आदेश दिया 'आर्य मन्दिर मे उनका फोटो न रखा जाए। तदनुकूल आर्य समाज बम्बई मे उनका आदेश प्रतिपालित होता है। (देवन्द्रनाथ मुखोपाध्याय कृत जीवन चरित पृ 335) इस घटना के उद्धरण का उद्देश्य यह बतलाना है कि स्वामी जी महाराज की इस इच्छा के विरुद्ध क्या सभी आर्य समाज मन्दिरो मे उनका चित्र नही है ? जो लोग आज स्वामी जी महाराज की जीवनी पर बनने वाली फिल्म पर आपत्ति कर रहे हैं, वे सभी—अप बाद को छोड कर सिनेमा देखते ही हैं।

वैज्ञानिक प्रगति के साथ अपने कार्य के प्रचार-प्रसार में आधुनिकतम साधनो का प्रयोग करना उचित और आवश्यक है। 29 जुलाई 84 के आर्य मर्यादा जालन्धर के पृ 4 पर इसी विषय पर प सत्यमित्र शास्त्री का एक विचार पूर्ण लेख प्रकाशित हुआ है। लेख मे शास्त्री जी ने फिल्म निर्माण कार्य की सम्पुष्टि की है। हमने मैजिक लैण्टर्न के द्वारा प्रचार को अपनाया। हमने लाउड स्पीकर को अपनाया। आज आर्य समाज के भजनो के कैसेट बन रहे हैं बिक रहे हैं और लोग लाभान्वित हो रहे हैं। हमारा विचार है कि यदि कैसेट और टेप रिकार्डिंग का आविष्कार बहुत पहले हुआ होता तो क्या हम महर्षि, प लेख राम जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी स्वामी दर्शनानन्द जी प रामचन्द्र जी देहलवी प धर्मभिक्षु तथा अन्य विद्वानों की वाणी को आज सुन नही सकते थे ? यदि स्वामी जी महाराज की जीवनी पर फिल्म बन गयी तो करोडो लोगो को महर्षि की जीवनी का पता चल जाएगा और वे उस महापुरुष की जीवनी से प्रेरणा प्राप्त करेगे। इससे जहा आर्य समाज के सिद्धान्तो का प्रचार प्रसार होगा वहा करोडो लोग महर्षि के जीवन के मार्मिक, हृदयस्पर्शी और अत्यन्त प्रेरक प्रसंगों को प्रत्यक्ष देख कर जिन्हें वे अब तक केवल सुनते और पढते थे अत्यधिक प्रभावित होंगे। शिवरात्रि की चूहे वाली घटना का दृश्य, दण्डी स्वामी विरजानन्द जी के शिष्य के रूप में रहने, पढने और एक बार दण्डित होने, प्रचार कार्य मे लोगो के हाथो पीडित होने ईंट, पत्थर खाने आदि के दृश्य, पान मे विष देने और अपराधी को यह कह कर, 'मैं ससार को कैद कराने नही छुडाने आया हू' मुक्त करवाने का दृश्य कर्णवास के दम्भी ठाकुर की तलवार को तोडने का दृश्य देश की दीन-हीन दशा पर आंसू बहाने का दृश्य लार्ड नार्थ ब्रुक वायसराय से कलकत्ते मे मिल कर उसे टका सा जवाब देने और अपने ही हत्यारे को धन देकर बचाने का दृश्य वस्तुत स्वामी भक्त आर्य समाजियो को ही नही जो आर्य समाज से दूर हैं और महर्षि की जीवनी से अपरिचित हैं उन्हे भी प्रभावित करेंगे। इस बात की अवश्य सावधानी होनी चाहिए कि स्वामी जी का अभिनय करने वाले और निर्देशक पूर्णत सिद्धहस्त और अपनी-अपनी कला मे निपुण हो। मेरी राय मे इस फिल्म का विरोध न किया जाए तो ही अच्छा है। हम फिल्म की सफलता की कामना करते हैं।

## लुधियाना में वेद सप्ताह

स्त्री आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार (साबुन बाजार) लुधियाना मे वेद सप्ताह 13 अगस्त से 19 अगस्त तक समारोह पूर्वक मनाया गया। 15 अगस्त को स्वतन्त्रता दिवस और 19 अगस्त को जन्माष्टमी का पर्व भी मनाया गया। स्वतन्त्र दिवस के कार्यक्रम मे आर्य कन्या हायर सैकण्डरी स्कूल की छात्राओ ने मनोरम कार्यक्रम प्रस्तुत किया। कथा श्री स्वामी सच्चिदानन्द जी सरस्वती करते रहे और भजन श्री विजयानन्द जी गायक फिरोजपुर के हुए। कथा और भजनो का आर्य जनता पर बहुत प्रभाव पडा। 19 8 84 रविवार को यज्ञ की पूर्णाहुति हुई। इस एक सप्ताह के यज्ञ म 50 महानुभाव यजमान बने। इसी दिन जन्माष्टमी का पर्व मनाते हुए योगेश्वर श्री कृष्ण जी के जीवन पर प्रकाश डाला गया।

—

## सत्संगति एवं उत्तम गृहस्थ

आर्य समाज मेरठ शहर के साप्ताहिक सत्सग मे दिनाक 12 8-84 को प्रात साढ आठ बजे उपदेश करते हुए महात्मा अमर स्वामी जी ने सत्सग की महिमा पर प्रकाश डालते हुए सब को साप्ताहिक सत्सग मे आने की प्रेरणा की। उन्होने बताया बडे लोग सत्सग मे आते है तो छोटो को प्रेरणा मिलती है। इसलिए महात्मा हसराज जी उनके सुपुत्र बलराज जी एव प्रिंसीपल दीवान चन्द जी ठीक समय से साप्ताहिक सत्सग म आया करते थ।

अन्त मे स्वामी जी ने गृहस्थाश्रम को स्वर्गआश्रम बतलाते हुए कहा कि वास्तव मे वही गृहस्थ स्वर्ग है। जहा नित्य प्रति अतिथियो का शुभागमन एव सम्मान होता है, जहा पर सन्ध्या हवन आदि होते हैं, जहा पर वेद का स्वाध्याय होता है और जिस घर मे छोटे सदैव बडो का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं।

इसलिए सभी को सत्सगति द्वारा गृहस्थ उत्तम और स्वर्ग बनाना चाहिए।

## दहेज रहित अन्तर्जातीय विवाह

आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग नई दिल्ली में दहेज रहित अन्तर्जातीय विवाह एक विशेष उपलब्धि है। विश्व हिन्दू परिषद तथा सक्रिय सदस्य आर्य समाज की प्रेरणा एव आर्थिक सहयोग से यह कार्य सुचारू रूप से चल रहा है। जिसे आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का सरक्षण भी प्राप्त है। योग्य वर वधू की जानकारी प्राप्त करने के लिए कार्यालय मे नाम पजीकृत करावें। (रविवार छोडकर) समय साय 5 बजे से 7 बजे तक।

—डा मदनपाल वर्मा अधिष्ठाता अन्तर्जातीय विवाह विभाग

सम्पादकीय—

# आज आवश्यकता है वेद के प्रचार की

आज के युग में किसी भी वस्तु या किसी भी संस्था की वृद्धि व सफलता उसके प्रचार पर निर्भर है। आज प्रचार का युग है। लोग अपनी वस्तुओं व संस्थाओं के प्रचार के लिए रेडियो—टैलिविजन अखबार और दूसरे पोस्टरो आदि का सहारा लेते हैं। जिसका जितना प्रचार अधिक होता है वह वस्तु उतनी ही लोकप्रिय व सर्व प्रिय बन जाती है। हम देख रहे हैं। साधारण मत भी प्रचार के द्वारा आज बहुत आगे बढ गए हैं। उनकी उपस्थिति आज हजारों में हो रही है। परन्तु हम प्रचार के क्षेत्र मे कुछ पिछडे हुए से नजर आ रहे हैं।

पाकिस्तान बनने से पहले आर्य समाज का बहुत प्रचार था। आर्य समाज गलि-2 मोहल्ले-2 और घर-2 तक पहुचता चला जा रहा था। बडे बडे जज बैरिस्टर, वकील और धनी मानी लोगो से लेकर एक निर्धन गरीब जिसे उस जमाने मे अछूत समझा जाता था सब इसके प्रचार से प्रभावित थे सब इसकी ओर खिचे चले आ रहे थे। जो एक बार आर्य समाज के प्रभाव मे आ जाता था वह आर्य समाज का होकर रह जाता था। उसके हृदय मे आर्य समाज की वह छाप बैठे जाती थी जो प्रयत्न करने पर भी या किसी प्रकार की यातनाए देने पर भी नहीं निकल पाती थी।

महान् क्रान्तिकारी रामप्रसाद बिस्मिल को एक बार उनके पिता जी ने कह दिया था कि तुम्हे आर्य समाज छोडनी होगी नहीं तो इस घर को छोडना होगा। रामप्रसाद ने दो मिन्ट में निर्णय कर लिया और कहा पिता जी घर छोड सकता हू परन्तु आर्य समाज नहीं छोड सकता और रामप्रसाद सचमुच ही घर छोड कर चल दिए।

यह एक ही उदाहरण नहीं ऐसे अनेको उदाहरण हैं जिनसे पता चलता है कि आर्य समाज के प्रचार का कितना प्रभाव था। महर्षि के दीवानो ने अपने जीवन को हसते-हसते देश जाति और समाज की भेन्ट चढा दिया। परन्तु किसी कवि ने कहा है—

> बडे शौक से सुन रहा था जमाना।
> हम ही सो गए दास्ता कहते कहते ॥

हम स्वीकार करते हैं कि आज हमारे प्रचार मे कमी आ गई है। जो प्रचार और प्रसार आर्य समाज का पहले था वह अब कम हो गया है इसी कारण से हमे कई बार चिन्तित होना पडता है। यह स्थिति चिन्ताजनक है।

'वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है वेद का पढना पढाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है' इस नियम का पालन करना सब आर्य बन्धुओ और बहनो के लिए जरूरी है। सब सत्य विद्याओ के भण्डार वेद का आज देश मे वह प्रचार और प्रचार नही हो सका जो होना चाहिए था। वेद का प्रचार और प्रसार केवल आर्य समाज ही कर सकता है। वैसे हमारे सनातन धर्मी भाई भी वेद को मानते हैं परन्तु उनके द्वारा वेद का ठीक प्रचार नही हो सकता क्योंकि वह कुछ मन्त्रो के अर्थों का अनर्थ कर देते हैं। जिस से उसका ठीक से स्वरूप वह जनता के सामने नहीं रख सकते। आर्य समाज रख सकता है क्योकि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेद मन्त्रो के ठीक अर्थ करके इस संस्था को दिए हैं और वेद के प्रचार और प्रसार के लिए ही आर्य समाज की स्थापना की है। ससार की तथा समाज की प्रत्येक समस्या का हल वेद मे है। वेद प्रचार से देश जाति और समाज के सामने उठने वाली सभी समस्याए स्वयमेव हल हो जाती हैं। वेद विश्व बन्धुत्व का पाठ पढाते हैं 'वसुधैव कुटुम्बकं' कह कर वेद ने देश—विदेश, जाति पाति, ऊंच-नीच के सब भेदभाव नष्ट कर दिए हैं।

ससार के सभी लोगो की एक ही जाति है और वह है मानव जाति। वेद के अनुसार हमारी एक ही माता है और एक ही पिता है। हम सब एक परम-पिता की सन्तान हैं। जैसे गाए, भैंस, घोडा आदि सभी पशुओ की जातिया हैं। सभी गायों की एक जाति है चाहे वह किसी भी प्रान्त व देश मे जन्मी हो, सभी घोडों की एक जाति घोडा जाति है। रग-भेद गुणो आदि से उनमे कुछ भेद है। परन्तु जाति तो एक ही है। ऐसे ही देश—विदेश मे पैदा होने के कारण और जलवायु के द्वारा मानव जाति में भी गुण, रूप रग मे भेद है। थोडा बहुत रूप-रग मे भेद प्रत्येक देश व प्रान्त मे भी है। परन्तु पजाबी, हरियाणवी, बगाली बिहारी भारतीय, अमरिकन, चीनी, जापानी आदि मानवो मे रग-भेद होते हुए भी एक ही जाति सब की मानव ही है। यह पाठ कौन पढाता है केवल आर्य समाज। वह भी वेद के आधार पर। हिन्दू, सिख, इसाई मुसलमान सभी मानवो की एक ही मानव जाति है।

किसी ने सर पर केस रख लिए, किसी ने कटवा दिए, किसी ने दाढी बढा ली, किसी ने कटवा दी, किसी ने मूछे रख ली किसी ने बीच मे से कटवा दी किसी ने सफाचट करा दी। इस से मानव मानव से बदल कर कुछ और बनने वाला नही हैं। यह सब बाह्य चिन्ह हैं मानव फिर भी मानव ही रहता है।

सभी मानव एक ही ढग से पैदा होते हैं एक ही स्थान से गर्भ से बाहिर आते हैं हिन्दू किसी और जगह से पैदा होता हो और सिख, इसाई, मुसलमान व दूसरी जातियों वाले किसी और तरह से पैदा होते हो ऐसा नही। जन्म और मृत्यु सभी मानवो की एक ही जैसी है। इसलिए इस एकता का प्रचार करना अति आवश्यक है। हम सब एक हैं हम सब की एक ही जाति है इस सम्बन्ध मे ठीक-2 बताना अति आवश्यक है। और यह प्रचार भी आर्य समाज के सिवाय और कोई नही कर सकता। महर्षि दयानन्द के आने से पहले यहा जातिवाद के नाम पर देश मे फूट डाल कर अग्रेज अपना उल्लू सीधा कर रहे थे। इसलिए उन्होने डट कर इसके विरुद्ध आवाज उठाई। परन्तु अब भी आजाद भारत मे कुछ विघटनकारी देश मे स्थिति को बिगाड रहे हैं।

आज जातिवाद का सहारा लेकर कई लोग देश मे विघटन पैदा कर रहे हैं। अगर वेद का प्रचार और प्रसार अपने देश मे बढ जाए तो इन विघटनकारी तत्वो की एक दिन भी दाल न गले और देश मे शान्ति स्थापित हो जाए।

आज रेडियो, टैलिविजन और दूसरे साधनो से छोटे छोटे मतो का तो प्रचार हो रहा है। कुछ पौराणिक मत का भी प्रचार हो रहा है। सिख मत का भी प्रचार हो रहा है। परन्तु वेद का प्रचार बिलकुल नहीं हो रहा। न ही कोई आर्य सस्था, प्रतिनिधि सभा सार्वदेशिक सभा व कोई आर्य बन्धु इसके लिए आवाज उठा रहा है। अगर यही स्थिति रही तो हम प्रचार के क्षेत्र में बिलकुल पिछड जाएगे।

आज आवश्यकता है आर्य समाज और वेद के प्रचार की ताकि देश मे जो विघटनकारी तत्व पैदा हो गए हैं और जो वातावरण उन्होने देश मे बना दिया है उसे सम्भाला जा सके। आर्य समाज ही आज देश को बचा सकता है। क्योकि प्रत्येक आर्य समाजी को अपने देश से प्रेम है और वह अपने देश की उन्नति चाहता है। निस्वार्थ भाव से आर्य बन्धु देश सेवा व देश रक्षा के लिए आगे आए और वेद के प्रचार और प्रसार को जन-जन तक पहुचाने का प्रण लें।

—सह-सम्पादक

# यज्ञ द्वारा प्रचार अभियान

हमारी यह प्रबल इच्छा है। कि पजाब मे वेद का और यज्ञो का अधिक से अधिक प्रचार और प्रसार हो। पजाब के प्रसिद्ध वयोवृद्ध नेता दयानन्द मठ दीनानगर के सचालक महान् तपस्वी स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने सभा की प्रार्थना पर यज्ञ के लिए सितम्बर मास मे विद्यालय के ब्रह्मचारियो को और योग्य विद्वानो को दयानन्द मठ दीनानगर से भेजना स्वीकार कर लिया है। हम चाहते हैं। प्रत्येक नगर मे बडे बडे यज्ञ हो और उनमे सभी लोगो को आमन्त्रित किया जाए। क्योकि यज्ञ मे आहुति देने के लिए सभी आ सकते हैं और यज्ञ के प्रति सभी की श्रद्धा है चाहे वह आर्य समाजी हो, सनातन धर्मी हो या सिख तथा दूसरे कोई भी भाई हो।

इस लिए आर्य समाजो के अधिकारियो से प्रार्थना है कि वह सभा को शीघ्र सूचित करें कि किन किन तिथियो मे यज्ञ करने के लिए इन विद्वानो को आपकी आर्य समाज मे भेजा जाए।

यज्ञ का प्रचार और प्रसार करना प्रत्येक आर्य भाई व बहिन का कर्त्तव्य है। बडे 2 यज्ञ घरो, मोहल्लो और सार्वजनिक स्थानो पर होने चाहिए। यह कार्य तभी सफल होगा जब सभी आर्य बन्धु इस कार्य मे सभा को अपना पूरा-2 सहयोग देंगे।

—कमला आर्या
सभा महामन्त्री

# आर्यसमाज और पंजाब समस्या

ले —प्रा. श्री भद्रसेन जी होशियारपुर

आर्य समाज का प्रादुर्भाव मानव जाति के कल्याण के लिए ही हुआ और यही आर्यसमाज का उद्देश्य है। आर्य समाज की दृष्टि से सारे मनुष्यो की एक ही मानव जाति है। किसी परिवार, कुल, क्षेत्र विशेष मे जन्म लेने से या किसी भाषा, धर्म से सम्बद्ध होने मात्र से कोई ऊचा या नीचा नही हो जाता। अपितु व्यक्ति की योग्यता, गुण और कर्म के आधार पर उस का समाज मे स्थान तथा प्रतिष्ठा निश्चित होती है।

आर्य समाज के छटे नियम मे स्पष्ट शब्दो मे सकेत है कि ससार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है। केवल परिवार कुल, ग्राम नगर, प्रदेश, देश विशेष का नही अपितु सारे ससार का भला करना और वह शारीरिक और सामाजिक रूप से। अपने इस उद्देश्य को सामने रखकर ही आर्य समाज न व्यक्ति के जीवन और मानव समाज के भले के लिए सभी पहलुओ का सदा ध्यान रखा और सभी क्षेत्रो मे प्रयास किया। वह एक ईश्वर की भावना की बात हो या मानव जाति की एकता की अथवा धर्म के सही रूप की। इस प्रकार धार्मिक भावनाओ के साथ सामाजिक सम्बन्धो और शारीरिक जरूरतो के बारे मे भी आर्य समाज ने अभूतपूर्व कार्य किया है।

ससार के इतिहास की यह एक अनोखी बात है कि भारतीय धर्म सस्थाओ मे से भारत का आर्य समाज ही एक ऐसा है जो 'ससार का उपकार करना इस उद्देश्य को रखते हुए भी अपने साप्ताहिक सत्सगो,' पर्वों और वार्षिक समारोहो मे बडे स्वाभिमान के साथ उच्च स्वर मे भारत माता की जय का घोष करता है। क्योकि आर्य समाज के प्रत्येक सदस्य ने अपने आप को जहा वैदिक धर्म से सम्बद्ध किया वहा उसने यह अनुभव भी किया, कि मैं भारत का नागरिक हू और भारतभू से प्राप्त हुए अन्न, जल आदि से मेरे शरीर का पालन पोषण होता है। अत उस के प्रति भी मेरा कर्त्तव्य है। इसी राष्ट्रीय भावना मे भर कर आर्य समाज ने जहा अपने सत्सगो मे भारत माता की जय का घोष किया वहा तात्कालिक हजारो आर्यों ने भारतीय स्वाधीनता सग्राम के सत्याग्रहो मे बढ-चढ कर भाग लिया और सैकडो ने क्रान्तिकारी बनकर जान की बाजी लगाई। स्वाधीनता सग्राम की तरह जब भी जिस चीज की जरूरत हुई, उस के लिए भारत का आर्यसमाज आगे आया। वह गोहत्या की बात हो या हरिजन समस्या या धर्मान्तरण की हर समस्या और आवश्यकता पर आर्य समाज ने आगे आकर कार्य किया, क्योकि आर्य समाज ने सदा जीवन तथा समाज के सर्वांगीण रूप को सामने रखा है। जैसे भवन केवल दिवारो, छत, फर्श आदि का नाम नही अपितु इन सब के समुच्चय का नाम ही भवन है या साइकल, रथ, कार किसी एक पुर्जे का नाम नही अपितु सभी पुर्जों के साझे रूप का नाम होता है। ऐसे ही जीवन और समाज भी सामूहिक रूप का नाम है। इसी लिए आर्य समाज ने सदा इन के सामूहिक रूपो की दृष्टि से विविध क्षेत्रो मे कार्य किया है। आर्य समाज जैसे जीवन और समाज की दूसरी समस्याओ की ओर ध्यान देता है ऐसे ही उसने पजाब समस्या के सम्बन्ध मे भी आवाज उठाई है।

पजाब की समस्या वैसे तो किसी से छिपी हुई नही है कि किस तरह हत्या लूटपाट, आगजनी और धमकियो का दौर चला कर सारे पजाब मे भय तथा आतक का वातावरण बना दिया। जिस से सभी तरह का कारोबार ठप्प हो गया। वस्तुत पजाब की मल समस्या ही यह है कि यहा वर्ग विशेष से भेदभाव का शोर मचाकर ईर्ष्या द्वेष घृणा की आग फैला दी गई। यह बीमारी केवल पजाब की ही नही सारे भारत की है। इसी लिए यदाकदा परस्पर दगे और झगडे होते रहते हैं। इसी तरह की परिस्थितियो को सामने रख कर आर्य समाज अपने नवम नियम के माध्यम से सब को सन्देश देता है सब से प्रीति-पूर्वक व्यवहार करना चाहिए और हर प्रकार का इसके लिए प्रयास भी करता है।

सब मे अधिक सोचने वाली बात यह है कि आज भारत मे प्रजातन्त्र है, अत सभी भारतीयो को समान रूप से समता, सुरक्षा, स्वतन्त्रता और न्याय प्राप्त होता है। प्रत्येक भारत मे रहने वाला यह अनुभव करता है कि दूसरे नागरिको की तरह उसे भी हर अधिकार प्राप्त है। इसी लिए सभी धर्मों के अपने अपने सगठन हैं और वे सब अपने समारोह आयोजित करते हैं। यही स्थिति राजनीतिक दलो की भी है। पुनरपि यदि कोई यह कहता है कि हमारे वर्ग से भेदभाव हो रहा है तो भारत मे रहने वाले सभी अपने चारो ओर देख रहे हैं कि कहा किस के साथ कैसा व्यवहार हो रहा है। वस्तुत तथाकथित अल्पसख्यको को विशेष सुविधायें दी जा रही हैं।

जहा तक बेकारी शोषण की छूट पुट घटनाओ की बात है, वह सब के लिए एक समान सी समस्या है। वर्ग विशेष को सामने रखकर कोई एक तरफा वाली बात नही है।

अत आज केवल पजाब में ही नही, अपितु सारे भारत मे भेदभाव के नाम पर ईर्ष्या, द्वेष, घृणा की घिनौनी चालें चल कर ये अलगाववादी अपनी गद्दिया पक्की करने का प्रयास कर रहे हैं। इन परिस्थितियो मे आर्य समाज सभी देश प्रेमियो से आग्रह पूर्वक अनुरोध करता है कि वे जनता की एकता और देश की अखण्डता, प्रभु सत्ता का ध्यान रखते हुए सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य व्यवहार करें, जिस मे सब को सब से सुख लाभ मिले और देश का सौभाग्य बढे।

# किस से डरें और किस से न डरें

ले —श्री रामनाथ सि. विशारद आर्य महोपदेशक

ससार में ऐसे भी लोग हैं जो डरते रहते हैं या किसी से भी नही डरते। यह दोनो अवस्थाए ठीक नही हैं। डरना भी चाहिए और नही भी डरना चाहिए। किससे डरना चाहिए और किससे नही डरना चाहिए यह बहुत कम लोगो को पता है। इस रहस्य को खोलने की आवश्यकता है। इसके लिए अथर्व वेद 19-17-6 मन्त्र द्वारा हमारा पथ प्रदर्शन करता है वह मन्त्र निम्न है —

अभय मित्रादभयममित्रादभय ज्ञाता
दभय परोक्षात्।
अभय नक्तमभय दिवा न सर्वा आशा
मममित्र भवन्तु ॥

शब्दार्थ—हे जगत्पते! हमे (मित्रात्) मित्र से (अभयम्) भय न हो। (अमित्रात्) शत्रु से (अभयम) भय न हो। (ज्ञातात्) जाने हुए पदार्थ से (अभयम्) भय न हो। (परोक्षात्) न जाने हुए पदार्थ से (अभयम्) भय न हो। (न) हमे (नक्तम) रात्रि मे (अभयम्) भय न हो। (दिवा) दिन मे (अभयम) भय न हो। (सर्वा) सब (आशा) दिशाए (मम मित्रम्) मेरी मित्र (भवन्तु) हो।

व्याख्या—प्रश्न-इस मन्त्र पर मैंने विचार किया पर रहस्य समझ में न आया बार बार विचार करने पर भी न आया, इसका रहस्य समझाने की कृपा करें।

उत्तर—वेद ईश्वर की वाणी है, कई ऐसे विद्वान् भी हैं, जिनकी लिखी या बताई हुई बात शीघ्र समझ मे नही आती। ईश्वर साधारण व्यक्तियो जैसा थोड़ा ही है? वेदों के अन्दर कई शब्द ऐसे आ जाते हैं जो शीघ्र समझ मे नहीं आते, बुद्धि पर दबाव डालने पर समझ मे आ जाए आ जाए न आए तो न भी आए।

मित्रादभयम्—हे जगत्पते। हमें (मित्रात्) मित्र से (अभयम्) भय न हो। इन शब्दो का आशय बिल्कुल स्पष्ट है। हम अपने शत्रु से डरें तो डरें पर अपने मित्र से तो डरना नही चाहिए क्योकि वह मित्र है।

प्रश्न—कई ऐसे लोग भी ससार मे हैं जो मित्र बन कर हानि कर देते हैं।

उत्तर—जो मित्र बनकर धोखा कर जाते हैं वह ऊपर से मित्र होते हैं वास्तविक मित्र नही होते। वह धोखेबाज हैं ठग हैं। मित्र परम सहायक होता है, आपत्ति मे दुख बाटता है। हा—इतना अवश्य है कि मित्र बनाते समय परख कर लेनी चाहिए। धीरज धर्म मित्र और नारी आपत काल परखिय चारी। अत मित्र से डरने की आवश्यकता नही है।

(अमित्रात्) शत्रु से (अभयम्) भय न हो।

प्रश्न—यह बात तो समझ मे आई कि मित्र को देखकर डरना नही चाहिए बल्कि प्रसन्न होना चाहिए वही बात शत्रु के लिए भी कहीं कह दी कि शत्रु से भी डरना नही चाहिए। शत्रु से प्रत्यक व्यक्ति डरता है।

उत्तर—शत्रु से इसलिए डरना नही चाहिए क्योकि वह शत्रु है। डरने की बजाए खम ठोक कर मुकाबला करना चाहिए। कोई धोखेबाज ऊपर से मित्र बन कर हानि कर जाए तो कर जाए परन्तु शत्रु तो प्रत्यक्ष है।

(ज्ञातात्) जाने हुए पदार्थ से। (अभयम्) भय न हो।

प्रश्न—जाने हुए पदार्थ से भय न हो। इसको और स्पष्ट करने की कृपा करें।

उत्तर—जिन वस्तुओ को ज्ञान इन्द्रियो से प्रत्यक्ष जान लिया इससे डरने की आवश्यकता शेष नही रहती।

(परोक्षात्) न जाने हुए पदार्थ से (अभयम्) भय न हो।

प्रश्न—न जाने हुए पदार्थ से तो भय होता ही है।

उत्तर—न जाने हुए पदार्थ को जान लेना चाहिए उस की परख करनी चाहिए डरने से तो काम बिगड़ जाता है। जिस

(शेष पृष्ठ 6 पर)

# प्रभु प्राप्ति कैसे हो

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

मन उत्पन्न होता है अपने मूल कारण अस्मिता' या 'अहकार' से और चित्त अपने मूल कारण 'महत्' या महान् से, चित्तवृत्तियो को बाहर ससार मे फैलाने वाला है 'मन', मन के विस्तार से यह भाव पुष्ट होता है जो कष्ट का वर्धक है। इसके विपरीत यदि इन दोनो को, जो बाहर जाने से ज्ञान को घटाते और अज्ञान को बढ़ा कर कष्ट उत्पन्न करते हैं। ध्यान-समाधि द्वारा आत्म-चिन्तन में लगा दिया जाए—विलीन कर दिया जाए तो उस विलीनता से कष्टो के मूलकारण—सस्कारो का, वासनाओ का नाश होकर आन्तरिक सुख-आनन्द तथा अपूर्व शान्ति का उद्भव होता है। एक सागर-सा उमड पडता है।

यह पुरुष जब अपने अस्तित्व-आधार स्वरूप 'चेतना' मे स्थित हो जाता है उसी समय इस मे भगवान् को पा लेने की योग्यता आती है। और एक बार भगवान् का सस्पर्श-सान्निध्य पा लेने पर यह सुई के समान बना ईशरूप चुम्बक से ऐसा जा चिपकता है कि तदनन्तर इस का प्रत्येक क्षण उस सर्वशक्तिमान सर्वज्ञ जगदाधार और ससृति के सूत्रधार की स्मृति-तल्लीनता मे ही व्यतीत होता है।

प्रारम्भिक अवस्था मे तो धारणा ध्यान के द्वारा ही इस वृत्ति को दृढ करना पडता है कि—मैं चेतन आत्मा अमृत-पुत्र हू। ज्ञान सम्पन्न तथा देह-प्राण-इन्द्रिय तथा मन आदि से तथा दृश्य से तथा दृश्य जगत् से सर्वथा भिन्न तथा पृथक् हू। यह समग्र दृश्य उस भगवान् तक पहुचाने का साधन है (भोगापवर्गार्थं दृश्यम् 2 17), (योग) धीरे-धीरे यह चिन्तन बढने लगेगा और उसी तन्मयता मे आत्म-विस्मृति होने लगेगी (इस अवस्था मे अतिसावधान रहने की आवश्यकता होती है कि कहीं मन निद्रा की ओर न चला जाए), तब उस विस्मृति मे प्रवेश करते हुए भी यदि विचारधारा। धारणा दृढ रही तो अपूर्व शान्ति का उद्भव होकर आन्तरिक अनुभव होने लगते हैं—यह समाधि की अवस्था होती है।

ब्रह्मयज्ञ या सन्ध्या द्वारा भगवान् की उपासना करने वाले यदि मन्त्रार्थों-आध्यात्मिक-अर्थों का यथाविधि सहारा लेकर इसमे तन्मय होने का प्रयत्न करेंगे तो उन्हे उपर्युक्त चिन्तन में शीघ्र सफलता मिल सकती है। क्योकि सन्ध्या के पूर्वमन्त्रों पर विचार तथा उच्चारण करने से इन्द्रियो के दोष नष्ट होने लगते हैं जिससे अन्त करण निर्मल होता चला जाता है। अघमर्षण के द्वारा स्थूल पाप-प्रवृत्ति नष्ट होने लगती है और आगे मनसा परिक्रमा-मन्त्रों द्वारा भीतर बाहर व्यापक-न्यायकारी। सर्वज्ञ ईश की उपस्थिति का दर्शन करके। कष्टो के मूल कारण पापों की प्रवृत्ति हो जाती है और यही से कष्टो की निवृत्ति होगी। होती जाएगी। इस प्रकार हमारे कर्मकाण्ड का उद्देश्य भी पूर्ण हो जायेगा—इसमे सन्देह नही।

इसके आग फिर समाधि-गत विचार-धारा स्वत बढने लगेगी और चित्त मे उठने वाले अनेक प्रश्नो-तर्कों आशकाओ का। कि—यह शासिका शक्ति जगत् का निर्माण कैसे करती है? पालन-पोषण तथा ससार का क्या रूप होता है? कर्म फल कैसे देती है? इसका आदि अन्त क्यो नहीं? हम इसकी आधीनता मे क्यो रहे? इत्यादि प्रश्नो के उत्तर तथा समाधान। उसी सर्वज्ञ शक्ति से अनुशासित बनी योगज-प्रज्ञा द्वारा उपासक को मिलता रहता है। और जो कुछ इस स्थूल बुद्धि से नही विचारा जा सकता तथा इसमे नही घुस पाता वह समग्र बाह्य तथा आन्तरिक सृष्टि का रहस्य स्पष्ट सम्मुख आने लगेगा। पूर्वापर सृष्टि नियमो का आभास मिलेगा। अधिक क्या। वह सब दुष्प्राप्य प्राप्त हो कर रहेगा जिसकी कल्पना भी नही की जा सकती। इस सबको वेद स्वत कह रहा है कि—'यस्मिनृच सामयजूषियस्मिन प्रतिष्ठिता रथनाभाविवार। यस्मिश्चित्तं सर्वमोत प्रजाना तन्मे मन शिवसकल्पमस्तु॥' यहा आकर ज्ञान पूर्ण हो गया। तम अज्ञान अन्धकार का नाम भी नही रहा। कर्त्तव्य की इतिश्री-समाप्ति हो गई। ज्ञातव्य जान लिया अब आदित्य समज्ञानोदय से अन्धकार आदि सब भय भाग गए प्रकाश के अतिरिक्त अब यहा और कुछ है ही नही—इद श्रेष्ठ ज्योतिषा ज्योतिरागात चित्र प्रकेतोऽजनिष्ट विभुता।

यथा प्रसुता सवितु सवाय राज्याघसे योनि मारैक॥ यहा ज्ञानकाण्ड भी पूर्ण हुआ अब केवल उपासना शेष रही है तो अब जबकि कर्म का कोई बधन ही नहीं रहा। दुख का कारण ही मिट चुका। सृष्टि का रहस्य भी खुल चुका। तो कोई भी क्रिया-कर्म-आचरण सृष्टि नियम के विरुद्ध होगा ही कैसे? और क्यो? सकल्प-विकल्प तो रहे ही नही। वे तो वैतरणी मे पीछे बहा चुके। अब तो अपने स्वाभाविक शुद्ध-बुद्ध निरजन रूप को प्राप्त होकर अपनी जगदम्बा की गोद मे बेधड़क होकर आ बैठ हैं—सर्वाङ्गीण-समर्पण 'आत्म दान करके सर्वमेध यज्ञ पूर्ण हुआ। अब जननी जाने और उसका काम।

यहा तक पहुचने के लिए किसी कवि ने इशारा किया है कि —

'निकल ही जायेगी इक रोज हसरते पाबोस।
पडे रहो दरे जाना पै सग दर की तरह॥

अर्थात् चरण स्पर्श करना चाहते हो अपनी माता या मक्का के तो उसके द्वार पर पाषाण के समान आ पडो—पडे रहो, आगे की अवस्था स्वय वेद्य है, वर्णनरहित है। वे धन्य हैं जिन्हे ऐसी द्वन्द्वातीत अवस्था जीवन मे ही मिल जाये।

योऽक्षरातदक्षर विदित्वाऽस्माल्लोकात् प्रैतिस ब्राह्मण। बृहदारण्यक।

—

# आचार्य गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार १९८५

ज्ञातव्य है कि सघड विद्यासभा ट्रस्ट जयपुर द्वारा निर्धारित 1200 रु का आचार्य गोवर्धनशास्त्री पुरस्कार प्रतिवर्ष गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय द्वारा दिया जाता है। गत चार वर्षों मे यह पुरस्कार क्रमश प्रो राम प्रसाद वेदालकार आचार्य एव उप-कुलपति, गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय डा. भवानी लाल भारतीय, अध्यक्ष महर्षि दयानन्द अनुसधान पीठ पजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ तथा सयुक्त मन्त्री परोपकारिणी सभा अजमेर, श्री विश्वनाथ विद्यालकार एव आचार्य सत्यकाम विद्यालकार को वेद प्रचार तथा सामाजिक सेवाओ के लिए प्रदान किया गया।

## चयन सम्बन्धी नियम

1 आचार्य गोवर्धनशास्त्री पुरस्कार उन्हीं सज्जनो एव सभाओ को दिया जा सकेगा जो वेद उपनिषद दर्शनशास्त्र आदि आर्ष साहित्य का प्रचार एव प्रसार जनसामान्य तक करे।

2, उक्त विषय पर शोध करने वाले व्यक्ति सस्थान भी उक्त पुरस्कार पाने के अधिकारी हो सकते है।

3 उक्त विषयो पर सगीत काव्य तथा नाटक रचकर अथवा नाटक को रगमच पर दिखलाने वाले व्यक्ति या नाटक मण्डली भी इस पुरस्कार के लिए आमन्त्रित किए जा सकते हैं।

4 उक्त विषयो पर आकाशवाणी या दूरदर्शन पर प्रचार एव नाटक आदि के माध्यम से जनसामान्य को उदात्त वैदिक भावना से आप्लावित करने वाले व्यक्ति या सस्था को उक्त पुरस्कार पाने हेतु सम्मिलित किया जा सकेगा।

5 उक्त विषयो या ग्राम-ग्राम मे जाकर मैजिक लालटेन पुतली प्रदर्शन अथवा भजनो द्वारा प्रचार करने वाले व्यक्ति या मण्डली। सभा भी उक्त पुरस्कार पाने हेतु प्रार्थी हो सकते हैं। हो सकती हैं।

6 आधुनिक युग मे विज्ञान और आध्यात्मिकता का समन्वय करने हेतु अथवा सतुलित व्यक्तित्व के विकास हेतु योग की उपयोगिता सम्बन्धी सरल साहित्य जो सामान्य जनमानस को प्रभावित कर सके लिखने अथवा प्रकाशित करने वाले व्यक्ति सभा और प्रकाशक आदि को भी पुरस्कार पाने वालो मे सम्मिलित किया जा सकता है।

7 उक्त पुरस्कार चयन नियमो को परिवर्तित एव परिवर्धित करने का अधिकार सघड विद्यासभा ट्रस्ट जयपुर को होगा।

आपसे निवेदन है कि यदि आपकी दृष्टि मे कोई महानुभाव अथवा सस्था आगामी वर्ष के लिए इस पुरस्कार के योग्य हो तो उसका पूर्ण विवरण पत्र निम्न पतो पर 31-10-1984 तक भेजने की कृपा करे।

1 श्रीमती सावित्री कथूरिया, उप-सचिव सघड विद्यासभा ट्रस्ट, सी 211ए ज्ञान मार्ग तिलकनगर जयपुर।

2 श्री वीरेन्द्र अरोडा, कुल सचिव गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार।

## विवरण पत्र—

नाम पता आयु योग्यता, प्रकाशित कृतिया पुस्तका की विधा पुस्तको का प्रतिपाद्य प्रकाशन वर्ष, प्रकाशक का नाम तथा पता वेद प्रचार मे किए गए कार्यो का विवरण, आर्य समाज के प्रचार प्रसार मे की गई सेवाए, यदि किसी अन्य सस्था द्वारा सम्मानित किए गए हो तो उसका विवरण प्रस्तावित कृति पूर्व पुरस्कृत हुई है या नही यदि हुई है तो उसका विवरण

कृपया चुनी हुई पुस्तको की एक प्रति श्रीमती सावित्री कथूरिया उप-सचिव सघड विद्यासभा ट्रस्ट सी-211ए ज्ञान मार्ग तिलकनगर जयपुर तथा 3 प्रतिया श्री वीरेन्द्र अरोडा कुल सचिव, गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय को प्रेषित करने का कष्ट करें।

—

# व्याख्यान माला—क्षमा प्रभाव

अनुवादक—श्री सुखदेव राज शास्त्री, स अधिष्ठाता श्री गुरु विरजानन्द वैदिक सस्कृत महाविद्यालय करतारपुर (पजाब)

**स्वामी अच्युतानन्द जी सरस्वती ने व्याख्यान माला नाम से एक सस्कृत श्लोको मे मूलरूप मे महान् ग्रन्थ लिखा था जिसमे उन्होने प्रत्येक विषय को लेकर अनेको अमूल्य श्लोको आदि को सग्रहीत किया है। यह ग्रन्थ मूलरूप मे प्राप्त था हमारी इच्छा है कि आर्य मर्यादा के पाठक इसे पढ कर लाभ उठाए इस लिए प सुखदेव जी शास्त्री स. अधिष्ठाता गुरुविरजानन्द वैदिक सस्कृत महाविद्यालय करतारपुर जालन्धर ने जो इस का अनुवाद हिन्दी मे किया है वह श्लोको सहित क्रमश आर्य मर्यादा मे प्रकाशित किया जा रहा है।**

**क्षमा प्रभाव**—इस शीर्षक से स्वामी अच्युतानन्द जी ने वेद, उपनिषद स्मृति, महाभारत, रामायण और पुराण आदि अनेक धर्म ग्रन्थो के अमूल्य श्लोको मे क्षमा से उत्पन्न प्रभाव उसका तेज और क्षमा का आसरा लेकर मनुष्य अपने जीवन मे कितना सफलता की ओर बढता है यह सब कुछ दर्शाया है। आर्य मर्यादा के पाठक इसका रसास्वादन कर सुखद आनन्द प्राप्त करें।

क्षमा शस्त्र करे यस्य दुर्जन किं करिष्यति।
अतृण पतिता वह्नि स्वयमेवोपशाम्यति॥

क्षमा रूपी शस्त्र जिसके हाथ मे है उसका दुर्जन क्या करेगा। क्योकि तिनको से रहित स्थान पर पडी हुई अग्नि अपने आप शान्त हो जाती है।

क्षमा बलमशक्ताना शक्ताना भूषण क्षमा।
क्षमा वशीकृतिर्लोके क्षमया किन्न साध्यते॥2॥

क्षमा कमजोर मनुष्यो का बल है शक्तिशाली पुरुषो के लिए भूषण है तथा इस संसार मे क्षमा वशीकरण मन्त्र है अथवा क्षमा द्वारा क्या नही किया जाता अर्थात क्षमा सब सिद्धियो का मूल है।

नरस्याभरण रूप रूपस्याभरण गुण।
गुणस्याभरण ज्ञान ज्ञानस्याभरण क्षमा॥3॥

मनष्य का आभूषण रूप है, रूप का आभूषण गुण है। गुण का आभूषण ज्ञान है, और ज्ञान का आभूषण क्षमा है।

क्षमा शत्रौ च मित्रे च यतीनामेव भूषणम।
अपराधिषु सत्वेषु नृपाणा सैव दूषणम॥4॥

जो क्षमा शत्रु और मित्र को क्षमा करने पर साधुओ का भूषण है वही क्षमा अपराधी जीवो के क्षमा करने पर राजाओ के लिए दूषण बन जाता है।

यदि न स्युर्मनुष्येषु क्षमिण पृथिवीसमा।
न स्यात्सन्धिर्मनुष्याणा क्रोध मूलो ही विग्रह॥5॥

यदि मनुष्यो मे पृथ्वी के समान क्षमा शीलता न हो तो लोगो मे कभी मेल जोल न रहे क्योकि लडाई की जड क्रोध होता है।

क्षुधासम नास्ति शरीर पीडन चिन्तासम नास्ति शरीर शोषणम्।
विद्यासम नास्ति शरीरभूषण क्षमासम नास्ति शरीररक्षणम॥6॥

भूख के समान शरीर का पीडा देने वाला कोई और नही चिन्ता के समान शरीर को सुखाने वाला कोई नही विद्या के समान शरीर का भूषण कोई नही और क्षमा के समान शरीर की रक्षा करने वाला कोई नही।

य परेषा नरो नित्यमतिवादास्तितिक्षते।
देव यानि विजानीहि तेन सब मिद जितम॥7॥

हे देव यानि! जो दूसरे लोगो द्वारा की गई अतिभ्य निन्दा का नित्य सहन करता है तो समझ लो कि उसने सब जगत् जीत लिया है।

य सधारयते मन्यु योऽतिवादास्तितिक्षते।
यश्च तप्तोऽप्यतप्त स्यात दृढ सोऽर्थस्य भाजनम॥8॥

जो मनुष्य मन्यु—विवेक युक्त क्रोध तो रखता है पर अतिवादो को सहन करता है वह सताया हुआ भी नही तपता तथा इस प्रकार वह अवश्यमेव अर्थ (धन) का पात्र होता है।

क्रोधो मूलमनर्थानां क्रोध ससार बर्द्धन।
धर्मक्षयकर क्रोधस्तस्मात्क्रोध विवर्जयेत्॥9॥

क्रोध अनर्थों का मूल है, क्रोध ही सांसारिक कार्यों का बढाने वाला है और क्रोध ही धर्म का क्षय—विनाश करने वाला है इसलिए क्रोध को त्याग देना चाहिए।

क्रोधस्य कालकूटस्य विद्यते महदन्तरम्।
स्वाश्रय दहति क्रोध कालकूटो न चाश्रयम्॥10॥

क्रोध और जहर मे बडा अन्तर है क्योकि क्रोध तो अपना आश्रय भी जला डालता है। परन्तु कालकूट—जहर अपने आश्रय को नहीं जलाता अर्थात् क्रोध तो जिस पर क्रोध किया जाए तथा जो क्रोध करे दोनो को जला डालता है परन्तु विष केवल विष के खाने वाले पर ही प्रभावकारी होता है न कि विषदाता पर।

उत्तमे तु क्षण कोपो मध्यमे घटिकाद्वयम्।
अधमे स्यादहोरात्र चाण्डाले मरणान्तिक॥11॥

उत्तम व्यक्ति मे क्षण भर का क्रोध होता है, मध्यम मे दो घडियो तक का नीच मे रात दिन का क्रोध होता है और चाण्डाल मे मरने तक क्रोध रहता है।

क्रोधो नाशयते धैर्य क्रोधो नाशयते श्रुतम।
क्रोधो नाशयते सर्व नास्ति क्रोधसमो रिपु॥12॥

क्रोध धैर्य को नष्ट करता है और क्रोध ज्ञान को नष्ट करता है। तथा वह क्रोध सब को नष्ट करता है अत क्रोध के समान कोई शत्रु नहीं।

यस्तु क्रोध समुत्पन्न प्रज्ञया प्रतिबाधते।
तेजस्विनन्त विद्वासो मन्यन्ते तत्वदर्शिन॥13॥

जो पैदा हुए क्रोध को अपनी बुद्धि से रोक देता है तत्व दर्शी विद्वान ऐसे क्रोधजयी मनुष्य को तेजस्वी मानते हैं।

विपाके दुख कामस्य नाधुना सर्वदेहिनाम्।
विपाकेऽप्यधुना क्रोध सर्वदा दुखद स्मृत॥14॥

देहधारियो को काम—इच्छा के विपाक मे उतना दुख नहीं होता किन्तु क्रोध के परिपक्व हो जाने पर क्रोध ही सदा दुख देने वाला होता है ऐसा माना गया है।

जायते यत्र स क्रोधस्तन्दहेदेषु सर्वत।
विषयञ्च क्वचित्क्रोध सफलो निर्दहेदयम्॥15॥

जिस शरीर में यह क्रोध पैदा होता होता है उस को यह चारों ओर से जला देता है। यह क्रोध अपने आश्रयभूत विषय को भी भस्मसात् करने मे सफल हो जाता है।

(क्रमश)

( 4 पृष्ठ का शेष )

दरिया के जल का पता नहीं है उसका पता करो तब प्रवेश करो।

(न) हमे (न क्तम)रात्रि मे (अभयम्) भय न हो।

प्रश्न—रात्रि से तो डर लगता ही है रात्रि मे ठीक ज्ञान नही हो सकता क्योकि अन्धेरा होता है।

उत्तर—रात्रि से भी डरना चाहिए बल्कि रात्रि मे वस्तु को जानने का यत्न करना चाहिए रात्रि को भी तो कल कारखाने फैक्टरिया चलती रहती हैं।

(दिवा) दिन मे (अभयम्) भय न हो। दिन मे सूर्य का प्रकाश होता है अत सब वस्तुए ज्यो की त्यों नजर आती है अत डरने की कोई आवश्यकता नही है।

(सर्वा) सब (आशा) दिशाए (मम मित्रम्) मेरी मित्र (भवन्तु हो।

प्रश्न—सब दिशाए मित्र कैसे बन सकती हैं? प्रत्येक व्यक्ति के मित्र भी होता है और शत्रु भी सब, नहीं सब मित्र भी नहीं।

उत्तर—जो व्यक्ति बुद्धिमान है, और जिनको व्यवहारिक ज्ञान है जो यथा योग्य व्यवहार करना जानता है ससार मे रहते हुए उसे कोई हानि नहीं होती वह अपनी चतुराई बुद्धिमता से कठिन समस्या का समाधान कर लेता है। जो बुद्धिमान नही होता उसे यही पता नहीं लगता कि मेरा मित्र कौन है और शत्रु कौन है। वह अपना ही नुकसान कर लेता है ससार के अन्दर जी कर तो सभी चले जाते हैं परन्तु कइयो का जीवन होता है और कई ऐसे भी है जो अपने जीवन मे फस रहते हैं। अथर्व वेद के इस मन्त्र को गहराई से विचार करने की आवश्यकता है और फिर आचरण करने की आवश्यकता है। इससे हमारा जीवन सफल बनेगा। शत्रुओ से हमें कोई हानि उठानी नही पडेगी मित्रो से हमें लाभ होगा सफल जीवन जीवन का यही सर्वोत्तम मार्ग हैं परमात्मा हमारा पिता है माता है। बन्धु है और मित्र है। वह सदा हमारा कल्याण चाहता है सृष्टि बना कर उसका ज्ञान भी वेद द्वारा करवा दिया। यदि हम न वेद को पढ़ें न सुनें और न आचरण करें इस में दोष हमारा है इसकी हानि भी हमें ही उठानी पडेगी। 'प्रभो सब दिशाए मेरी मित्र बन जाए।

—

# आजादी, पूर्ण आजादी

ले श्री बलभद्र कुमार जी हूजा, कुलपति गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

आजादी क्या आई है सभी आजाद होना चाहते हैं। पूर्णत आजाद किसी प्रकार का सयम, नियम अपने ऊपर नही लगाते। जगल में स्वछन्द जन्तु की तरह समाज मे विचरना चाहते हैं। जो चाहे कर। जिसको चाहे लूटें चाहे जिस कर्सी पर जा बैठें। जिसको चाहें जहा वे सक नौकरी दें। जिससे जो चाहे दाम वसूल करें। चाहे तो क्लास मे जाय चाहे तो न जाय। चाहे तो पढाय चाहे न पढाय और चाहे तो पढें और चाहे न पढें। परीक्षा मे नकल करने की छूट हो। तत्पश्चात परीक्षक को डरा धमका कर या लल्लाचप्पो करके चाहे जितने अक प्राप्त कर ल। जैसा चाहे बिल बनाय। बिना किसी के चैक के चाहेगे कि पास हो जाए। आप हम पर अविश्वास करते हैं? हमने तो हस्ताक्षर कर दिए हैं हम जिम्मेवार हैं। तो फिर आपको काऊटर साइन करने मे क्या आपत्ति है? आप खामखा एकाउण्ट आफिसर को दिखना कर न केवल मामला लम्बा करगे, मुझ भी उनके यहा कई चक्कर लगाने पडगे। एकाउण्ट आफिसर भी ऐसे मिलगे जो बिना चक्कर कटवाए बिल पास नही करगे। आखिर इस बीमारी का इलाज है क्या? क्या सब चलता है कहकर इसे चलने दिया जाए?

जहा ऐसा चलता है वहा समाज समाज न रहकर जगल बन जाता है जहा बडा जानवर छोटे जानवर को खाता है जबरदस्त कमजोर पर जुल्म करता है।

स्वामी दयानन्द ने कहा, मद वह जो साधु गरीब को शैतान अमीर से, सात्विक मनुष्य का तामसिक दानव से अच्छे शहरी को दुष्ट दस्यु से बचाए चाहे दुष्ट दस्यु कितना ही ताकतवर क्यो न हो। ऐसे व्यक्तियो के कधो पर समाज खडा रह सकता है। ऐसे ही व्यक्ति धार्मिक कहलाते हैं।

धर्म वह है जो समाज को धारण करे। शास्त्रकारो ने धर्म के दस लक्षण गिनाए हैं—धृति, क्षमा दम अस्तेय शौच, इन्द्रियनिग्रह धी, विद्या सत्य तथा अक्रोध।

वास्तव मे इन्ही गुणो पर समाज की आधारशिला प्रतिष्ठित है। जितनी मात्रा मे समाज मे रहने वाले व्यक्तियो का आचरण इन गुणो पर आधारित होगा उतनी ही समाज की जडें मजबूत होगी और उतनी ही मात्रा मे व्यक्ति सुख, शान्ति और समृद्धि के भागी होगे।

समाज के स्थायित्व के लिए समाज मे व्यक्ति की उन्नति के लिए यम नियम का पालन अत्यावश्यक है। यम पाच हैं इन्हे गाधी जी ने पच महाव्रत कहा था अहिंसा सत्य ब्रह्मचर्य अस्तेय अपरिग्रह नियम भी पाच है—शौच सन्तोष, तप स्वाध्याय ईशप्रणिधान।

ठीक है इनको धारण करना आसान नही है लेकिन लक्ष्य सुनिश्चित हो ध्येय स्पष्ट हो तो साधक साधना करते करते लक्ष्य की ओर अग्रसर होता ही है। इसमे तो दो राय नही हो सकती कि यही सन्मार्ग है सुपथ है—अन्य नही।

आर्य समाज स्त्री शिक्षा के कार्यक्रम मे भी अग्रणी था लेकिन तब जब आर्य समाजी सच्चे अर्थ मे आर्य थे।

बाल विवाह बन्द हो स्त्री शिक्षा भरपूर हो तो राष्ट्र क्यो न मजबूत होगा? लेकिन इस कार्यक्रम मे आर्य समाज तभी योगदान दे सकेगा जब सभी सभासद ऋषि दयानन्द के आदेशानुसार अपनी आय का शताश समाज को चन्दा दें जिससे समाज सक्षम होकर अच्छे वेतन पर विद्वान पुरोहित नियोजित करें और आधुनिक ढग से प्रचार प्रसार के कार्यक्रम मे अग्रसर हो। अन्यथा अन्य सस्थाए आगे बढगी, और आर्य समाज देखता रह जायगा। भारत का काम तो होगा ही।

## आवश्यकता है

आवश्यकता है गुरुकुल कांगडी विद्यालय के छात्रावास के लिए चार अधिष्ठाताओ की जो सेवा निवृत किन्तु स्वस्थ हो। आर्य विचारो का होना आवश्यक है। प्रार्थी व्यक्तिगत रूप से भेंट करें अथवा पत्र व्यवहार करें।

—सत्यकाम विद्यालकार आचार्य गुरुकुल कांगडी हरिद्वार

# आर्य समाज शहीद भगतसिंह नगर जालन्धर मे जन्माष्टमी पर्व

आर्य समाज शहीद भगतसिंह नगर मे आर्य प्रतिनिधि के आदेशानुसार कृष्ण जन्माष्टमी बडी धूमधाम से मनाई गई यज्ञ के पश्चात श्री कृष्ण के जीवन पर प्रकाश डाला गया। जिसमे आर्य माडल स्कूल के सारे बच्चो तथा सारे स्टाफ ने भाग लिया जिसमे बच्चो ने वेद मन्त्र तथा आर्य समाज के नियम जबानी सुनाये। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के वेद प्रचार अधिष्ठाता श्री चौधरी ऋषिपाल सिंह जी पधारे और उन्होने श्रीकृष्ण के जीवन पर प्रकाश डाला और अन्त मे अधिष्ठाता जी ने उन बच्चो को जिन्होने जबानी आर्य समाज के नियम सुनाए थे उन को 50 रुपया का इनाम दिया। हमारी कालोनी मे सत्यार्थ प्रकाश की परीक्षाए जिन्होने दी थी श्री चौधरी साहिब के कर कमलो से उन्हे प्रमाण पत्र दिए गए।

—मूलखराज आर्य
प्रधान

# आर्य समाज बस्ती मिट्ठू जालन्धर मे समारोह

आर्य समाज बस्ती मिठू जालन्धर मे 15 8 84 को स्वतन्त्रता दिवस मनाया गया जिसकी अध्यक्षता श्री नखराज जी गुप्ता ने की। इस अवसर पर स्थानीय विधायक श्री यश जी ने ध्वजारोहण किया। आर्य कन्या हाई स्कूल तथा आर्य हाई स्कूल बस्ती गुजा के बच्चो ने राष्ट्र भक्ति के गीत गाए। श्री शिवलाल जी भाटिया श्रीमती हष अरोडा श्री राम कुमार जी शर्मा श्री विपन कुमार शर्मा प्रतिष्ठित महानुभावो ने इस समारोह मे भाग लिया।

19 8 84 को रात्रि 8 से 10 बजे तक जन्माष्टमी पर्व मनाया गया। इस अवसर पर श्री प रामनाथ जी सि वि ने योगेश्वर श्री कृष्ण जी के जीवन पर प्रकाश डाला।

—रामलुभाया न श
प्रधान

# आर्य समाज बस्ती गुजां जालन्धर मे वेद प्रचार

आर्य समाज बस्ती गुजा जालन्धर मे रक्षा बन्धन 11 अगस्त से 19 अगस्त जन्माष्टमी तक वेद सप्ताह मनाया गया इस अवसर पर भिन्न भिन्न विद्वानो श्री प धर्मदेव जी आर श्री प रामनाथ सि वि श्री प सत्यन्द्र जी विद्यालकार के प्रवचन हुए। रक्षा बन्धन तथा जन्माष्टमी पर्व बडे समारोह मे मनाए गए।

# मेरठ मे चिकित्सा शिविर

आर्य समाज मेरठ शहर की ओर से एक विशाल निशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर दिनाक 31 अक्तूबर से 1 2 3 4 नवम्बर 984 को शर्मा स्मारक मदान मे आयोजित किया जाएगा। जिस मे आख नाक गला कान के आप्रेशन होगे जनता जनार्दन से प्रार्थना है कि सहयोग दे कर कृतार्थ करे।

मन्त्री

## जालन्धर छावनी में जन्माष्टमी पर्व

आर्य समाज जालन्धर छावनी मे 19 तथा 20 अगस्त को दो दिन जन्माष्टमी का पर्व मनाया गया। इस अवसर पर श्री प. धर्मदेव जी आर्य श्री प तिलक राज जी शास्त्री, श्री प रामनाथ जी सि वि, श्री प रामनाथ जी शास्त्री भजनोपदेशक इन विद्वानो ने योगेश्वर श्री कृष्ण जी महाराज के जीवन पर प्रकाश डाला जिसका जनता पर बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ा।

## आर्य समाज तिलक नगर नई दिल्ली का वार्षिक चुनाव

22 जुलाई 1984 को सम्पन्न हुआ जिसमे सर्व सम्मति से 1984-85 के लिए निम्न अधिकारी चुने गए।

श्री वीर भान जी वीर-प्रधान।

श्री जगदीश नागपाल—मन्त्री

श्री हरदेव ग्रोवर जी—कोषाध्यक्ष

—जगदीश नागपाल मन्त्री

## आर्य समाज श्रद्धानन्द नगर पलवल का चुनाव

आर्य समाज श्रद्धानन्द नगर, पलवल के वर्ष 1984-85 के लिए चुनाव श्रद्धेय स्वामी जीवनानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता मे सर्वसम्मिति से सम्पन्न हुए। निम्नलिखित अधिकारी मनोनीत हुए—

सरक्षक—दीवान उत्तम चन्द, श्री धर्मचन्द चन्द जी गाधी, श्री लोकू राम। प्रधान—श्री आजी राम जी आर्य, उप-प्रधान—श्री लाल चन्द जी सचदेवा श्री हरलम्स लाल सरदाना मन्त्री—श्री अजीत कुमार आर्य उपमन्त्री—श्री हेमराज आर्य, श्री हंसराज सरदाना कोषाध्यक्ष—श्री बिशन दास तनेजा, आडीटर—श्री बीरभान जी आर्य, विद्यालय मैनेजर—श्री तारा चन्द जी बवासरा। विद्यालय कोषाध्यक्ष—श्री सत्यपाल आर्य एम ए

—

## आ. स. खिलौड़ी गेट पटियाला का चुनाव

आर्य समाज खिलौड़ी गेट पटियाला का चुनाव इस प्रकार हुआ—

प्रधान—श्री शिव ओ३म् जी गुप्ता, उपप्रधान—मास्टर देवदत्त जी, मन्त्री—डा रामलक्ष्मण दास कोषाध्यक्ष—श्री रतनचन्द जी।

—डा. रामलक्ष्मण दास मन्त्री

## आर्य समाज मानसा का चुनाव

आर्य समाज मानसा (भटिंडा) का वार्षिक चुनाव श्री निरजन लाल जी के निवास स्थान पर श्री शिवचन्द जी की अध्यक्षता मे हुआ। जिसमे सर्वसम्मति से निम्नलिखित सभासद् चुने गए—

सरपरस्त—श्री शिवचन्द जी आर्य, प्रधान—श्री रोशन लाल जी आर्य, मन्त्री—श्री वेदप्रकाश जी आर्य, मैनेजर—श्री निरजन लाल जी आर्य, कोषाध्यक्ष—श्री हंसराज जी आर्य।

## आर्यसमाज नवांशहर में वेद सप्ताह मनाया गया

आर्य समाज नवांशहर [illegible] रक्षा बन्धन का [illegible] एवं उल्लास से [illegible]। [illegible] के साथ आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के आदेश अनुसार 11 अगस्त से प्रति दिन प्रात 7 से साढे आठ बजे तक हवन यज्ञ तथा वेद प्रवचन का कार्यक्रम आरम्भ किया गया जो कि श्री कृष्ण जन्माष्टमी 19 अगस्त रविवार तक मनाया गया। उपस्थिति बहुत अच्छी रही और आत्मिक प्रभाव भी रहा। डावा आर्य हाई स्कूल, बच्छोवाली आर्य पुत्री पाठशाला, आर्य बाल विद्या मन्दिर के बच्चो ने भी भाग लिया और बच्चों ने कविता एव भाषण भी दिए।

—वेदप्रकाश सरीन प्रधान

—



श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर से इस की स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

वर्ष 16 अंक 21, 25 भाद्रपद सम्वत् 2041, तदनुसार 9 सितम्बर 1984, दयानन्दाब्द 160 । एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपये


## वेदामृत

# सहस्रायुः सुकृतश्चरेयम्


ले.—डा. मुंशीराम जी शर्मा कानपुर


जीवन प्रिय है सभी को प्रिय है। मृत्यु से सभी घबराते हैं। सबकी आकांक्षा मृत्यु को धकेलने परे फेंकने की होती है। "परं मृत्यो मृत्यु ।" तू हट, परेहि-दूर भाग। 'मा न प्रजां रीरिषो मोत वीरान्—हमारी सन्तान और वीरो को तू मत मार, उन्हें जीवित रहने दे। 'मा तन्तुश्छेदि वयतो धियं मे,,—मैं जो कर्म कर रहा हूं जिस धी-धारणा का ताना-बाना बुन रहा हूं, उसे तू छिन्न,भिन्न मत कर। "मा मात्रा शारि अपस पुर ऋतो"—समय से पूर्व ही तू कर्म की मात्रा को नष्ट मत कर।

मृत्यु का आगमन अवश्यम्भावी है, फिर भी हम उसे सद्विधानो द्वारा दूर कर सकते हैं। वेद कहता है—'देवा न आयु प्रतिरन्तु जीवसे,—देव हमारी आयु को लम्बी कर दें। 'मृत्यो पद योपयन्तो यदैत द्राघीय आयु प्रतिरंदधाना' मृत्यु के पैर को हटाते हुए आगे बढ़ो और दीर्घ विस्तृत आयु को धारण करो। आप्यायमाना प्रजया धनेन शुद्धा पूता भवत यज्ञियास'—प्रजा, पुत्र-पौत्रादि से सम्पन्न और धन से परिपूर्ण होते हुए तुम शुद्ध पवित्र और यज्ञिय जीवन व्यतीत करो।

मानव जीवन कम से कम सौ वर्ष चल सकता है पर वेद सहस्रायु का भी संकेत देता है। शत वर्ष और सौ से भी अधिक वर्षों तक अदीन जीवन जीने की प्रेरणा वेद ने दी है। 'अन्त मृत्यु दधता पर्वतेन'—मृत्यु को पर्वत से कुचलकर अन्दर दबा दो। ऐसा कथन जीवन की उद्दाम भावना से भरा हुआ है। "पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति—पुत्र पिता [illegible]ए, तब तक तो आयु चलनी ही चाहिए। उसका [illegible] से ही [illegible] का [illegible] नहीं है। [illegible]

जीवसे व'—प्रभु ने तुम्हे जीवन के लिए दीर्घ आयु दी है। 'सर्वमायु नयतु जीवनाय'—जीवन के लिए पूर्ण आयु भोगो—'विश्वमायुर्व्यश्नुतम्।'

शतायु या सहस्रायु आशा से ओत-प्रोत शब्द हैं, पर वेद इस आशा के साथ एक निर्देश भी दे रहा है कि जियो तो, पर सुकृत् अर्थात् शोभनकर्मा बनकर जियो, जीवन है ही शुभ कर्म करने के लिए। 'मा न निद्रा ईशत मोत जल्पि'—जीवन को निद्रा-तन्द्रा या जल्प गल्प मे ही व्यतीत मत करो। कर्म, सुन्दर कर्म ही जीवन भर चलने चाहिए। तभी हम 'सोमस्य विश्वह प्रियास'—प्रभु के प्यारे बन सकेंगे। पिता को सुन्दर चरित्र, शोभन आचरण, पवित्र कर्म करने वाला ही पुत्र प्यारा होता है। पुण्य कर्म यश देते हैं। अपने पुत्र को यशस्वी तथा ओजस्वी देखकर पिता प्रसन्न होता है। हम सुकृत् बनें तो, यशस्वी भी होगे। हम शरीर से शुद्ध हों, मन से निर्मल हो और बुद्धि से पवित्र हो तो, हमारा वर्च—तेज—भर्ग प्रदीप्त होगा और उस से दुर्गुण, दुष्कृत एवं दुर्भावनाएं सब के सब दग्ध हो जाएंगे। हमारा जीवन वस्तुत जीवन होगा। मारक मृत्यु का फिर कोई भी प्रभाव हम पर नही पड़ेगा।

'ऋतस्य पन्था न तरन्ति दुष्कृत', दुष्कृती ऋत के पथ को पार नहीं कर पाते। यह समग्र संसार ऋत का पथ है। जहां देखो, वहीं ऋत क्रियाशील है। ऋत सत्य नियम है। सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी, पवन—सब इस ऋत का पालन कर रहे हैं। ऋत धर्म है, जो समस्त विश्व को धारण कर रहा है। यदि हम मानव इस ऋत के साथ समस्वर होकर चलें [illegible] स्वर मे स्वर मिला कर हम दुष्कृती नहीं कहलाएंगे।

ऋत का तन्तु ही जगत् मे फैला है इसके अनुवर्ती होकर ही हम इसे चीर कर पार हो सकते हैं। यदि हम विपरीत पथ पर चलें तो, स्वर—भंग होते ही हम भ्रष्ट मार्ग पर चल पड़ेंगे और फिर, न जानें कब तक इस भवाटवी मे भटकते फिरेंगे। साम्राज्य मे सम्राट की आज्ञा के अनुवर्ती जन सुप्रजा बनते हैं और प्रतिगामी जन सम्राट के कोप-भाजन होते हैं। एक आर्य हैं तो दूसरे दस्यु। दस्यु कारागार मे डाले जाते हैं और आर्य धर्म के पालक बन कर शोभन जीवन व्यतीत करते हैं।

ऋ. 10-5-6 के अनुसार शोभन जीवन की सात मर्यादाएं हैं। यास्क ने निरुक्त 6-27 के भाष्य मे इनके नाम दिए हैं—चोरी, पर—शैया पर चढ़ना अर्थात् व्यभिचार, ब्रह्म-हत्या अर्थात् ब्राह्मण या ज्ञान की हत्या, भ्रूण हत्या-सुरापान, सतत दुष्कर्म और पाप मे झूठ बोलना। मर्यादा-उल्लंघन के इन रूपो में से एक भी यदि हुआ तो, मनुष्य पापी होता है। मर्यादा मर्त्य मनुष्यो द्वारा ग्रहण की जाती है—मृत्यु से हटने के लिए और अमरत्व की प्राप्ति के लिए। मर्यादा का पालन शोभनकर्मा बनना है। जो शोभन, भद्र या शुभ की कामना नही करता, वह मनुष्य नहीं है।

भद्र की उपलब्धि के लिए तप और दीक्षा प्रमुख साधन है। किसी कर्म की दीक्षा लेकर उसमे जुट जाना चाहिए। फलाकांक्षा-रहित अनासक्त होकर स्वकर्तव्य का पालन करते रहना ही तप है। दीक्षा मे ऋत वाणी सत्य व्यवहार और श्रद्धा का समावेश है। उग्र ऋत, बृहत् सत्य दीक्षा से पूर्व इसीलिए आते हैं। जिसमे ऋत और सत्य नही, वह दीक्षा का अधिकारी ही नही है। श्रद्धा मे भी ऋत या सत्य को ही धारण करना पड़ता है। दीक्षा और तप से संयुक्त जीवन ही यज्ञिय जीवन है। यज्ञिमान पथ शुद्ध और शुचि शरीर एवं मन के साथ ही बोध देता है। श्रम और तप यज्ञिय जीवन की पहचान हैं। वेद कहता है—

'य: [illegible] तपसो [illegible]
[illegible] समानजे।

सोम यस्य [illegible] केवल तस्मै
ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नम ।।

ज्येष्ठ ब्रह्म सूक्त के मन्त्र यदि इस व्यष्टि पुरुष ब्रह्म के अन्दर साकार हो उठें तो, जीवन सार्थक हो जाए। ज्येष्ठ ब्रह्म की रुच शोभा या कान्ति सूर्य को प्राप्त है। यदि हम इसका अनुवर्तन करें तो, दिव्यता हमारे वश मे आ जाएगी—हम दिव्य बन जाएंगे। देवहिति, दिव्य पथ, दैवी विभूति जहां है, वहीं ब्रह्म कान्ति है।

ब्रह्मचारी के लिए समिधा, मेखला, श्रम और तप साधन हैं जिनके सम्पादन मे वह लोको को तृप्त करता है। ये उसे मृत्यु के पाशो से मुक्ति देने वाले हैं। लोको की तृप्ति और मुक्ति की प्राप्ति मे तप, श्रम और मेखला तीनो रहते हैं, परन्तु समिधा जहां लोक तृप्ति-दायिनी है वहीं ब्रह्म मुक्ति मे सहायक है। समिधा मे ब्रह्मचारी का जीवन दोनो के लिए है।

सहस्रायु और सुकृत दोनो के लिए ब्रह्मचर्य-आश्रम आधार-शिला है। अन्य आश्रमो मे प्रवेश उसके पश्चात् ही होता है। आधार-शिला दृढ़ है तो जीवन-भवन भी भद्र शोभन और मंगलमय होगा। सुकृतियां शोभन कर्मो का सम्पादन और दीर्घायु तक तपस्या का साधन ब्रह्म के साथ सायुज्य की सिद्धि कराने वाली हैं। ब्रह्म ज्ञान है और सर्व ज्ञानमयो हि स—परब्रह्म सर्व ज्ञानमय है जिसकी अनुभूति मानव-जीवन का अन्तिम लक्ष्य है।

यदि इन तत्वो को आश्रमो के संगठन के परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो मेखला ब्रह्मचर्य का, समिधा गृहस्थाश्रम का, श्रम और तप वानप्रस्थ का तथा ज्ञान सन्यासाश्रम का प्रतीक बन जाएगा। वैसे चारो तत्व चारो आश्रमो के लिए हैं। कोई आश्रम एकान्त रूप से इनसे पृथक् नही रह सकता पर विशिष्टता की दृष्टि से प्रतीक का महत्व अपेक्षणीय है। सहस्रायु और सुकृत दोनो ही लक्ष्य-प्राप्ति के लिए अनिवार्य हैं। साधना दीर्घायु (स तु दीर्घकाल नैरन्तर्य सत्कारा सेवितो दृढ भूमि) तथा भद्र कर्म [illegible] पर आधारित है। साध्य [illegible] इसी साधना द्वारा स[illegible]

# आर्य समाज को नया मोड़ देना आवश्यक है

ले —डा सत्यव्रत सिद्धान्तालकार, डब्ल्यू-77 ए, ग्रेटर कैलाश नई दिल्ली—48

कुछ दिन हुए मैंने आर्य समाजिक पत्रो में एक लेख लिखा था जिसका शीर्षक था—'गुरुकुल को नया मोड देना आवश्यक है । मैं उन लोगो में से हू जो इतिहास के अध्ययन से समझ गया हू कि प्रत्येक सस्था अपने समय की उपज होती है, जिस समय काई सस्था जन्म लेती है वह उस समय की परिस्थितियो की प्रतिक्रिया के रूप मे उत्पन्न होती है । परिस्थितिया बदल जायें तो उस सस्था को परिवर्तित परिस्थितियो के अनुसार बदल जाना चाहिए, नही बदलेगी तो वह इतिहास की वस्तु हो जाएगी, परन्तु जीवन की कशमकश मे वह अपने पूव रूप मे जीवित नही रहेगी । गुरुकुल के विषय मे मैंने अपने इस मत को अभि-व्यक्त किया है, आय समाज के विषय मे भी मेरा यही मत है । गुरुकुल के विषय मे मैंन जो कुछ लिखा उसके सम्ब ध मे कटटरपन्थियो को छोड कर खुले दिमाग के आय समाजियो तथा अधिकाश गरुकुल के स्नातको के मेरे पास जो पत्र आए तथा आते आ रहे हैं उनमे मेरे विचारो के साथ सहमति प्रकट की गई है, मुझ निश्चय है कि आय समाज के विषय मे भी अधिकास आय सम जियो की मेरे विचारो के साथ सहमति ही होगी ।

प्रारम्भ काल से आय समाज रूपी वृक्ष की दो शाखाओ ने जन्म लिया । एक शाखा का नाम रखा गया गुरुकुल शाखा, दूसरी शाखा का नाम रखा गया कालेज शाखा । इन दो शाखाओ के नाम से दो पार्टिया बन गई गुरुकुल पार्टी तथा कालेज पार्टी । इन दोनो के अपने-अपने नेता थे । गुरुकुल पार्टी के नेता थे महात्मा मु शीराम कालेज पार्टी के नेता थे महात्मा ह सराज । जिस काल मे इन दोनो शाखाओ का जन्म हुआ, दोनो खूब फली फूली, दोनो ने एक दूसरे से बढकर काम किया । प्रत्येक शहर मे इन दोनो पार्टियो की आय समाजे बनी । गुरुकुल पार्टी की आय समाज कालेज पार्टी की आय समाज । दोनो के अलग-अलग जलसे होते थे, बच्छोवाली आय समाज का जलसा और अनारकली आय समाज का जलसा । जनता भी दो भागो मे नेता भी दो भागो मे बटी थी, उप देशक भी दो भागो मे नेता भी दो भागो मे, समाज मन्दिर भी दो भागो म ।

आर्य समाज के इन दो भागो मे बटने का मूल कारण क्या था ? कहते हैं कि एक पार्टी कालेज की दूसरी पार्टी गुरुकुल पार्टी थी कालेज पार्टी मास खाने वालो की पार्टी समझी जाती थी, गुरुकुल पार्टी मासाहारी न हो कर शाकाहारी पार्टी थी इसीलिए घास-पार्टी कही जाती थी । इस दृष्टि से आधारभूत बातें दो रह जाती हैं शिक्षा के क्षत्र मे प्रचलित शिक्षा पद्धति के अनुसार स्कूल कालेज खोलना कालेज पार्टी का काम था, गुरुकुल तथा सस्कृत के विद्यालय खोलना गुरुकुल पार्टी का काम था । खान पान के क्षत्र मे मासाहार की छूट देना कालेज पार्टी का काम था । मासाहार का निषेध तथा शाकाहार को सिद्धान्त का रूप देना गुरुकुल पार्टी का काम था ।

परन्तु किसी सस्था का दो भागो म बट जाना तो मूल सिद्धान्तो के भेद पर निभर होना चाहिए । आय समाज के मूल सिद्धान्त तो दस हैं । उन मे न कही गुरुकुल का नाम आता है न कालेज का न कही शाकाहार का नाम आता है न मासाहार का । अगर ये दोनो बाते आय समाज के लिए आधारभूत होती तो इन दस मे इनकी कही न-कही तो छाया होती कोई इशारा होता । ऐसी कोई बात ता आय समाज के दस मूल सिद्धान्तो मे नही है । हा दस मूल सिद्धान्तो को दोनो पार्टिया मानती हैं, उनमे न गुरुकुल पार्टी का कोई मतभेद है न कालेज पार्टी का मतभेद है । जिन बातो मे मतभेद है और जिसके आधार पार्टिया बनी, बनने के बाद चल रही है वे आय समाज के मूल सिद्धान्त नही हैं । फिर यह द्वैत क्यो हैं आय समाज मे दो पार्टिया बन रहने का क्या यौक्तिक सामजस्य जस्टिफिकेशन है ?

जहा तक शिक्षा का प्रश्न है दोनो पार्टिया एक दूसरे के इतने निकट आ गई हैं कि इन दानो मे भेद कर सकना कठिन है । गुरुकुल पार्टी ने कालेज खोल दिए है, गुरुकुल को ही कालेज बना दिया है कालेज तो क्या यूनिवर्सिटी बना दिया है । गुरुकुल पार्टी जगह जगह कालेज खोल रही है और कालेज-पार्टी से आग बढने के सपने ले रही है । कालेज पार्टी ने विश्वेश्वरानन्द विद्यापीठ खोला और उपदेशक विद्यालय चलाने शुरू कर दिए है । ऋषि दयानन्द के जन्म स्थान टकारा मे तो कालेज पार्टी के दिग्गज कायकर्ता श्री रामनाथ सहगल वहां के महामन्त्री हैं, उस गुरुकुल जैसी संस्था के महामन्त्री जिसके आचार्य थे गुरुकुल कांगड़ी के वरिष्ठ स्नातक श्री सत्यदेव विद्यालंकार । गुरुकुल पार्टी कालेज मे और कालेज पार्टी गुरुकुल पार्टी मे विलीन होती जा रही है । अभी हाल मे ह सराज कालेज में एक समारोह हुआ था जिसमें वैदिक-साहित्य की प्रगति के लिए विचार हुआ ।

एक पोलैंड के प्रोफैसर ने 50 लाख रुपया कालेज पार्टी के नेता के पास इस लिए भेजा कि वे सस्कृत-वाङ्मय के एक विशाल ग्रन्थ का निर्माण करें । कहने को यह काम गुरुकुल का था परन्तु इसको प्रगति दी कालेज पार्टी के सगठन ने । कहा रहा गुरुकुल पार्टी तथा कालेज पार्टी का शिक्षा पर आधारित मतभेद । यहा तो गगा-जमना का सगम हो गया ।

बाकी रही मास-शाक की बात । मैं गुरुकुल पार्टी के ऐसे सदस्यो को जानता हू जो घर मे आमलेट बनवाते और प्रति दिन नाश्ते मे खाते हैं । ऐसे भी इस पार्टी के सदस्य देखे जो सभाओ के प्रधान तथा मन्त्री हैं, परन्तु जिन्हे सामिष भोजन खाने मे कोई ऐतराज नही । इसी प्रकार मैं कई ऐसे कालेज पार्टी के सदस्यो को जानता हू जो न आमलेट खाते हैं न भोजन मे मासाहार को स्थान देते हैं कटटर निरामिष भोजी हैं । इस स्थान पर किसी का नाम लेना उचित नही है । परन्तु जैसी मेरी जानकारी है ऐसी ही अन्य कई व्यक्तियो की होगी । मैं मास भोजन को बुरा समझता हू । और मास-भोजी के साथ बैठकर खाना भी नही खा सकता उबकाई आ जाती हैं । बर्नडशा निरामिष भोजी थे । जब किसी ने उनसे पूछा कि वे मास भोजन क्यो नही करते तो उन्होने उत्तर दिया कि वे अपने पेट को मुर्दों की कब्र नही बनाना चाहते । जैम्स विलियम ने अपने ग्रन्थ वैराइटीज आफ रिलीजियन्स एक्पीरियसिज मे लिखा है कि बूचड़-खाने शहरो के भीतर नही यूरोप मे भी शहरो के बाहर बनाए जाते हैं क्योकि प्राणी का वध देखना और मृत प्राणी को खा लेना घृणित एव पाशविक मनो-वृत्ति का सूचक है । यह सब तो ठीक है परन्तु आय समाज की स्थापना के सौ साल बीत जाने पर ऐसी स्थिति आ गई है कि अनेक कालेज पार्टी के लोग निरा-मिष भोजी हैं, और अनेक गुरुकुल पार्टी के लोग सामिष भोजी हैं । कहने का अभिप्राय यह है कि वर्तमान सामाजिक स्थिति मे शाक भोजी तथा मास भोजी का भेद सिद्धान्त वैय क्तिक रूप धारण कर गया है एक तरह से व्यक्ति व्यक्ति का यह भेद मिट गया है । निरामिष भोजी कालेज पार्टी में देखे जाते हैं, सामिष भोजी गुरुकुल पार्टी तथा कालेज पार्टी का भेद नहीं रहा, वहा घास पार्टी और मास पार्टी का भेद भी नहीं रहा । कांग्रेस के लोग महात्मा गांधी का नाम लेकर शपथ खाते हैं, जवाहर लाल नेहरू तथा इन्दिरा गांधी सभी जीव दया की घोषणा करते और अपने को अहिंसा के उपासक कहते हैं, परन्तु ये सब सामिष भोजी हैं ।

इसका मतलब यह नहीं कि मैं मास-भोजियो की वकालत करता हू । मैं तो प्रस्तुत सामाजिक स्थिति पर द्रष्टा की हैसियत से विचार कर रहा हू । हमारे जो आधार भूत सिद्धान्त हैं उन्ही पर हमे दृढ धारणा लेकर डटे रहना है, अन्यथा जो वर्तमान स्थिति उत्पन्न की गई है उसे अगर हम सुधार नही सकते तो इस वस्तु स्थिति को अनिवार्यत स्वीकार करना होगा । हमारा पुराना इतिहास जो रहा हो वह इतिहास का अग बन गया, अब तो जो स्थिति चल रही है उसे मानकर चलना होगा ।

स्थिति ऐसी उत्पन्न हो गई है कि तथाकथित कालेज पार्टी मे ऐसे लोग हैं जो गुरुकुल शिक्षा पद्धति के पृष्ठ पोषक हैं तथाकथित गुरुकुल पार्टी मे ऐसे लोग हैं जो कालेज शिक्षा प्रणाली को अपना रहे हैं, इसी प्रकार तथाकथित कालेज पार्टी मे ऐसे लोग हैं जो कटटर निरामिष भोजी हैं एव तथाकथित गुरुकुल पार्टी मे ऐसे लोग हैं जो नाश्ते मे आमलेट तथा भोजन मे मास खाने मे ऐतराज नही करते । ऐसी स्थिति मे मेरा यह कहना असगत न होगा कि समय आ गया है जबकि हमे भिन्न भिन्न पार्टियो का नाम मिटा देना होगा और सभी को मिलकर एक धारा मे मिल जाना होगा ।

जिस दिशा मे, मैं विचार कर रहा हू उसमें सबसे टेढी खीर मास-भक्षण की है । यद्यपि गुरुकुल पार्टी के इने-गिने सदस्य मासाहार करते हो तो भी सिद्धान्त रूप में इस विषय पर वे कोई समझौता नही कर सकते । मैं भी नही कर सकता, परन्तु फिर भी मासाहार के प्रश्न पर दो दृष्टियों से विचार किया जा सकता है । एक है धार्मिक दृष्टि दूसरी है स्वास्थ्य की दृष्टि । धार्मिक दृष्टि से देखा जाए तो मासाहार पाप है क्योकि इसमें जीव हत्या होती है, हिंसा होती है । परन्तु पाप की दृष्टि से हिंसा को पाप को सम्पूर्ण शृंखला से अलग नहीं किया जा सकता पाप की शृंखला है—हिंसा असत्य स्तेय, अब्रह्मचर्य तथा परिग्रह । केवल जीव हत्या ही पाप नहीं है, असत्य-भाषण भी उतना ही पाप है । दूसरे की वस

(शेष पृष्ठ 7 पर)

**सम्पादकीय—**

# आर्य समाज और राजनीति

आर्य समाज को राजनीति मे सक्रिय भाग लेना चाहिए या नहीं ? इस विषय पर पिछले लगभग 50 वर्षों से विचार चल रहा है परन्तु आज तक उसका कोई निर्णय नही लिया जा सका। भारत के स्वाधीनता सग्राम में आर्य समाजियो ने अपना जो योगदान दिया था वह हमारे इतिहास में स्वर्णमय अक्षरों में लिखा जाएगा, परन्तु उसका श्रेय आर्य समाज को नहीं मिलेगा। व्यक्तिगत रूप से कुछ व्यक्तियो ने जो कुछ किया है उसका श्रेय अधिकतर उन राजनैतिक दलो को मिला है जिनके वह सदस्य थे। यदि किसी प्रकार से इसका श्रेय आर्य समाज को मिल सकता तो आज स्थिति कुछ और ही होती। जिन आर्य समाजियों ने स्वाधीनता सग्राम मे बढ़ चढ़कर भाग लिया था वह प्राय सब महर्षि दयानन्द सरस्वती के इस विचार से प्रभावित हुए थे 'कि विदेशियो का राज्य चाहे कितना अच्छा क्यों न हो फिर भी वह स्वराज्य के बराबर नही हो सकता। हमारे देश के एक क्रान्तिकारी श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा का महर्षि दयानन्द जी से विशेष सम्बन्ध था। महर्षि ने ही उन्हे इग्लैंड मे और शिक्षा प्राप्त करने के लिए भेजा था और जब वह जाने लगे थे तो महर्षि ने उन्हे दो मन्त्र दिए थे और कहा था कि स्वधर्म और स्वराज्य के लिए अपना बाकी का जीवन समर्पित कर दें। इससे यह तो पता चल जाता है कि महर्षि के सामने भी दो बड़े आदर्श थे। धर्म की रक्षा और राष्ट्र की रक्षा। आज भी देश की जो परिस्थितिया हैं उनमे धर्म और राष्ट्र दोनों की रक्षा की आवश्यकता है।

प्रश्न पैदा होगा कि यदि धर्म और राष्ट्र की रक्षा करनी है तो उसमे आर्य समाज का क्या योगदान रहेगा ? मैं इसे देश का दुर्भाग्य समझता हू कि आर्य समाज सक्रिय राजनीति से दूर रहा है। आज सिखो का भी राजनैतिक दल है और मुसलमानो का भी मुसलमानो के राजनैतिक दल मुस्लिम लीग ने उनके लिए पाकिस्तान ले लिया है और सिखो का राजनैतिक दल उनके लिए खालिस्तान माग कर रहा है। हिन्दुओ का कोई ऐसा राजनैतिक दल नही है जो उनके हितो की रक्षा कर सके। आज के राजनैतिक दल धर्म निरपेक्षता मे विश्वास रखते हैं उन्हे इस बात की चिन्ता नही, कि हमारा धर्म रहता है या नही। हिन्दुओ के भी समय समय पर कुछ राजनैतिक दल बनाए गए हैं। पहले हिन्दू महासभा बनाई गई और बाद में जनसघ दोनो ही समाप्त हो गए और अब सारे देश मे हिन्दुओ का कोई भी राजनैतिक दल नही है जो उनके हितो की रक्षा कर सके।

वास्तविक स्थिति यह है कि हिन्दुओ मे आर्य समाज को छोड़कर और कोई सस्था ऐसी नही जिसे स्वधर्म और स्वराज्य की चिन्ता हो। धर्म की दुहाई देने वाली तो कई सस्थाए हैं परन्तु धर्म पर कोई सकट आ जाए तो उस समय धर्म की रक्षा के लिए मैदान मे निकल कर कोई सस्था या कोई दल तैयार नही होता। जो राजनैतिक दल इस समय हमे सामने दिखाई दे रहे हैं उनमे से कोई भी हिन्दुओ के पक्ष मे आवाज उठाने को तैयार नही। इसका यह परिणाम है कि हिन्दुओ के देश मे ही हिन्दुओ का महत्व कम हो रहा है।

इन परिस्थितियो मे क्या आर्य समाज हाथ पर हाथ रखे बैठ रहेगा और उन विघटनकारी शक्तियो के विरुद्ध कोई पग नही उठाएगा। जो आज हमारे धर्म और राष्ट्र के लिए एक बहुत बड़ा सकट पैदा कर रही हैं। मेरी तो यह भी धारणा है कि आर्यसमाज एक राष्ट्रीय सस्था होते हुए भी अपने देश और धर्म के प्रति अपने कर्तव्य को पूरा नही कर रही। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज को केवल सन्ध्या या हवन करने के लिए ही स्थापित नही किया था अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के छटे समुल्लास में यदि उन्होने राजनीति के विषय मे इतना कुछ लिखा था तो इसलिए नही कि वह एक पुस्तक के अन्दर बन्द पड़ा रहे और आर्य समाज उसे एक क्रियात्मिक रूप देने के लिए कोई सक्रिय पग न उठाए।

मैं यह जानता हू कि यह प्रश्न बहुत जटिल है और आर्य समाजियो मे इसके विषय मे मतभेद भी हैं परन्तु आज तक उस मतभेद को मिटाने के लिए कुछ भी नही किया गया। यदि आर्य समाज ने राजनीति में सक्रिय भाग लेना है तो उसके कई रूप हो सकते हैं। वह क्या हो, इसके विषय मे कोई अन्तिम निर्णय उसी स्थिति में लिया जा सकता, जबकि इस पर बैठकर विचार किया जाए कि देश की वर्तमान परिस्थितियो मे आर्य समाज को क्या करना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति जानता है कि करोड़ो रुपया प्रतिवर्ष इस्लामी देशों से भारत के इस्लामीकरण के लिए आते हैं। अभी एक मास ही हुआ है जब देहली मे पन्द्रह करोड़ की लागत से एक इस्लामी केन्द्र बनाने के लिए एक भवन की आधारशिला रखी गई है। हमारे भू पू उपराष्ट्रपति श्री हिदायतुल्ला उसके अध्यक्ष होंगे। इसी से हम अनुमान लगा सकते हैं कि परिस्थितिया क्या रूप धारण कर रही हैं।

मैं समझता हू अब वह समय आ गया है जब आर्य समाज को भी इस विषय पर गम्भीरता पूर्वक विचार करना चाहिए कि उसे सक्रिय राजनीति मे भाग लेना चाहिए या नही ? अगर लेना है तो किस रूप मे ? हमे यह स्वीकार करना पड़ता कि देश की परिस्थितिया दिन-प्रतिदिन बिगड़ती जा रही हैं। क्या आर्यसमाज का इन परिस्थितियोमे कोई कर्तव्य नही है ? यह एक ऐसा ज्वलन्त प्रश्न है जो केवल सारा हिन्दू समाज ही नहीं सारा देश पूछ रहा है। क्या आर्य समाज इसका कोई उत्तर न देगा ?

# करनाल में महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी समारोह

5 6 7 अक्तूबर 1984 को करनाल मे महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी समारोह मनाया जा रहा है। इसकी तैयारिया अभी से शुरू हो गई हैं और इसके अधिकारी हरियाणा, पजाब और देहली तथा दूसरे प्रान्तो मे जाकर आर्य जनता को इस सम्मेलन मे पहुचने के लिए प्रेरित कर रहे है। पजाब और हरियाणा का विशेष सम्बन्ध है यद्यपि आज हरियाणा एक अलग प्रान्त बन गया है फिर भी कल तो यह पजाब का ही एक भाग था। इसलिए पजाब और हरियाणा का एक अटूट सम्बन्ध है। पिछले तीन वर्षों मे पजाब मे जो कुछ हुआ उसमे हमें सबसे अधिक सहानुभूति हरियाणा से ही मिली है और उसके कारण पजाब और हरियाणा एक दूसरे के और भी समीप आ गए हैं इन परिस्थितियो मे पजाब के आर्य समाजियो का यह कर्तव्य हो जाता है कि वह 5, 6, 7 अक्तूबर को करनाल मे होने वाले बलिदान शताब्दी समारोह को सफल बनाने के लिए अपना पूरा योगदान दें। पजाब से अधिक से अधिक आर्य समाजियो को करनाल पहुचना चाहिए। मैं तो यह कहूगा कि पजाब की प्रत्येक आर्य समाज के प्रतिनिधि जिनमे महिलाए भी शामिल हैं अधिक से अधिक सख्या मे वहा पहुचे। इस शताब्दी समारोह मे देश के कई प्रसिद्ध आर्य समाजी नेता वहा आएगे। उनके विचार सुनने का भी हमे अवसर मिलेगा। इसलिए पजाब के आर्य समाजियो को अभी से करनाल जाने की तैयारी शुरू कर देनी चाहिए।

—वीरेन्द्र
सभा प्रधान

# आर्य मर्यादा के दीपावली विशेषांक के लिए आर्डर भेजे

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब से सम्बन्धित सभी आर्य समाजो के अधिकारियो से प्रार्थना है कि वह दीपावली (महर्षि दयानन्द बलिदान अक) विशेषाक का आर्डर शीघ्र भेजें। यह अक भी कृष्ण जन्माष्टमी अक की तरह बड़ा आकर्षक और प्रभावशाली विशेषाक होगा। इसका एक 2 लफ्ज़ बड़ा मूल्यवान होगा। जिसकी हमने अभी से तैयारी आरम्भ कर दी है। इस अक का मूल्य लागत मात्र दो रुपए होगा।

हम चाहते हैं कि यह अक अधिक से अधिक आर्य बन्धुओ तक पहुचे। यह उसी अवस्था मे हो सकता है अगर सभी आर्य समाजें इस अक का अभी से आर्डर भेजकर अपनी अधिक से अधिक प्रतिया सुरक्षित करा ले। कोई भी आर्य समाज ऐसी न रहनी चाहिए जो इस अक का कम से कम 100 प्रतिया न मगाए। हम आपके आर्डर की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

—कमला आर्या
सभा महामन्त्री

# आर्यसमाज और हिन्दी भाषा

ले.—प्रा. भद्रसेन जी, होशियारपुर

आर्य समाज की विधिवत् स्थापना 1875 मे महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भारत की महानगरी बम्बई में की थी। महर्षि जन्मना गुजराती थे और उनकी सारी शिक्षा-दीक्षा संस्कृत भाषा में हुई थी। आरम्भ में महर्षि संस्कृत मे ही भाषण और लेखन किया करते थे। प्रचार करते हुए महर्षि जब कलकत्ता पधारे और वहा भी संस्कृत मे ही भाषण दिए, जिनका अनुवाद दूसरे विद्वान करते थे। बाबू केशवचन्द्र सेन की प्रेरणा पर महर्षि ने यह अनुभव किया कि साधारण जनता तक अपने विचार पहुचाने के लिए हिन्दी भाषा को अपनाना चाहिए। अपने भाषणो का अनुवाद करने वालो की होशियारी का जब महर्षि को पता चला तो हिन्दी अपनाने की भावना और भी बलवती हुई। इसके पश्चात् भारत और भारतीय जनता की एकता की दृष्टि से महर्षि ने हिन्दी भाषा को अपनाया और अपने सारे ग्रन्थ हिन्दी और संस्कृत भाषा मे लिखे। महर्षि ने हिन्दी और संस्कृत को अन्य भाषाओ से पहले सीखने का संकेत किया है।

महर्षि की इन भावनाओ और देश की एकता का ध्यान रखते हुए आर्य समाज ने हिन्दी भाषा के प्रचार का भरपूर प्रयास किया। न केवल अपने मौखिक प्रचार लेखन कार्य पत्र-पत्रिकाओ और दूसरे साहित्य के माध्यम से हिन्दी को हर प्रकार से बढावा दिया। इसके साथ अपनी शिक्षण संस्थाओ मे भी हिन्दी भाषा के शिक्षण की विशेष व्यवस्था की, इस प्रकार अपने पिछले इतिहास मे आर्य समाज हिन्दी भाषा के प्रचारक सहायक और सरक्षक के रूप मे सामने आया।

अन्य प्रान्तो की आर्य समाजो की की तरह पजाब के आर्य समाज के अधिकारियो और सदस्यो ने अपनी स्थानीय भाषा उर्दू और पजाबी के साथ हिन्दी भाषा को भी अपनाया। पजाब के आर्य समाज ने हिन्दी को आर्य समाज के सिद्धान्त के अनुसार जहा अपनाया वहा अपने आपको भारत राष्ट्र का नागरिक समझते हुए भी भारत की राष्ट्र भाषा हिन्दी को महत्व दिया। क्योकि वे पजाब तक अपने आपको सीमित नही रखना चाहते उनकी दृष्टि मे जैसे पजाब भारत का एक प्रदेश है ऐसे ही और भी भारत के अग हैं अत अपने आपको सारे देश के साथ जोडने के लिए उन्होने अपने देश की साझी भाषा हिन्दी को भी अपनाया।

हिन्दी भाषा का जन्म भारत भू पर संस्कृत प्राकृत, पाली अपभ्रंश भाषाओं के पश्चात् आज से एक हजार वर्ष पूर्व हुआ था। इस जन्म समय मे हजारो भक्तो सन्तो, कवियो तथा लेखको ने हर विधा के साहित्य से इसे भरपूर बनाया। ब्रज-अवधि के अपने पूर्व रूपो को निखारती सम्भालती हुई आधुनिक हिन्दी विशेष रूप से अठारहवी शताब्दी के अन्तिम वर्षो मे सामने आई। उन्नीसवीं शताब्दी मे विशेषत सामने आए विद्या एव विज्ञान के नवजागरण को लेकर हिन्दी भारतीय जन-जन तक पहुची। तब भारत छोटे छोटे राज्यो से एक विशाल राष्ट्र के रूप मे सामने आया था। और सेना प्रशासन सम्पर्क तथा यातायात के सामूहिक रूपो के कारण एक साझी भाषा की जरूरत हुई समय की माग को पूरा करती हुई हिन्दी साहित्यिक भाषा के साथ देश की एक साझी भाषा के रूप मे भी रूपान्तरित हुई। उन दिनो जनता की भाषा सम्बन्धी हर अपेक्षा को हिन्दी ने पूर्ण किया।

हिन्दी भाषा संस्कृत भाषा की बेटी है। जोकि जनता और देश के इतिहास साहित्य और भावनाओ से जहा जुडी हुई है वहा वह समृद्ध और सशक्त भाषा भी है। भाषा विशेषज्ञो की यह दृढ धारणा है हिन्दी इतनी समृद्ध और सशक्त है कि इसमे नवीनतम विषयो के नए से नए साहित्य को सरलता सरसता और सहजता से रचा जा सकता है। हिन्दी भारत के प्राचीन साहित्य के भावो से भरपूर तथा भारतीय धरती की उपज है।

हिन्दी भाषा के इस व्यापक रूप को सामने रखकर पजाब के आर्य समाज ने पजाबी के साथ हिन्दी को विशेष महत्व दिया। वह केवल पजाबी तक सीमित नही होना चाहता। केवल पजाबी तक सीमित होने का अर्थ है केवल पजाब तक सीमित रहना पजाब के बारे मे ही सोचना। यदि पजाब मे रहने से केवल पजाबी को ही अपनाना चाहिए तो दूसरे प्रान्तो मे रहने वालो को वहा की स्थानीय भाषा को अपनाना चाहिए। इस प्रकार सब अपनी अपनी भाषा मे ही सीमित होकर रह सकते है। वस्तुत सारे भारत की जनता की एकता और देश की अखण्डता के लिए सभी भारतीयो को राष्ट्र भाषा हिन्दी को विशेष महत्व देना चाहिए। क्योंकि सेना प्रशासन यातायात व्यापार पर्यटन आदि की दृष्टि से अधिकतम भारतीयों को प्राय एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश में जाना होता है। ऐसी स्थिति में एक राष्ट्र भाषा हिन्दी से ही आपस का कार्य और एकता की अनुभूति की जा सकती है।

अत पजाब का आर्य समाज क्षेत्र विशेष या वर्ग विशेष तक सीमित न रह कर सारे भारत और सभी भारतीयों से सम्पर्क करने के लिए पजाबी के साथ-साथ हिन्दी को राष्ट्र भाषा के रूप में विशेष महत्व देता है। हा! पजाब या किसी क्षेत्र तक सीमित रहने वाले सगठनो को पजाब के आर्य समाज को केवल अपने चश्मे से ही नही देखना चाहिए। उसको भी अपनी तरह अपनी धार्मिक भाषा की स्वतन्त्रता के साथ राष्ट्रीयता की स्वतन्त्रता देनी चाहिए।

यह सत्य है कि आर्य समाज का मान्य साहित्य संस्कृत और हिन्दी भाषा में है। आर्य समाज एक प्रचारक संगठन है, अत जिन व्यक्तियों में वह प्रचार करना चाहता है। प्रचार की दृष्टि से उनकी भाषा को भी अपनाना होगा। आज आर्य समाज एशिया द्वीप के साथ यूरोप अमेरिका अफ्रीका आदि द्वीपो में भी प्रतिष्ठित है, अत वहा के सदस्यों को संस्कृत हिन्दी के साथ वहा की भाषा को भी साथ लेकर चलना होगा। इसी व्यापक दृष्टिकोण से पजाब का आर्य समाज स्थानीय भाषा पजाबी के साथ धार्मिक भाषा और राष्ट्र भाषा के नाते नाते हिन्दी को महत्व देता है।

—

## आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द अमृतसर में सिलाई स्कूल प्रारम्भ

गत दिनों आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द अमृतसर मे सिलाई कढाई स्कूल खोला गया। समाज ने स्त्री शिक्षा क्षेत्र मे स्वामी दयानन्द जी सरस्वती के दिखाए मार्ग पर चलते हुए एक नए मील पत्थर की नींव रखी है। आर्य निशुल्क सिलाई—कढाई स्कूल खोला है। यह प्रशिक्षण एक साल का होगा। तत्पश्चात् प्रमाण पत्र दिए जायेंगे। अच्छे अक प्राप्त करने वाली लडकियों को पारितोषिक वितरण किए जाएगे।

उद्घाटन की रस्म श्री सुरेन्द्र सेठ जी ने की। इस अवसर पर नगर के प्रमुख नागरिक व पच्चीस विद्यार्थी कन्याए। महिलाए उपस्थित थी। श्री ओ३म् प्रकाश वैद्य सरक्षक जी ने घोषणा की कि यह दस्तकारी का स्कूल महिलाओ को अपने पैरो पर खडा होने के लिए सेवा कार्य करता रहेगा। और गरीब व विधवाओ को प्रशिक्षण के पश्चात मुफ्त सिलाई मशीनें आर्य समाज की ओर से दी जाएगी।

इसके पश्चात् सभी उपस्थित सज्जनो का जल-पान करवाया गया।

—वीरेन्द्र देवगण
महामन्त्री

## जिला आर्य सभा लुधियाना का वार्षिक चुनाव

जिला आर्य सभा लुधियाना का वार्षिक चुनाव 198-84 का सर्व सम्मति से हुआ। श्री महेन्द्र पाल जी वर्मा प्रधान चुने गए और उन्हे शेष अधिकारी मनोनीत करने का अधिकार दिया गया उन्होने निम्न अधिकारी मनोनीत किए।

प्रधान—श्री महेन्द्र पाल वर्मा,

उप प्रधान—श्रीमती कमला आर्या श्रीमती कैलाश राणी खुल्लर, डा सत्यभूषण बागिया।

महा मन्त्री—आशानन्द आर्या।

मन्त्री—सर्व श्री मूल चन्द भारद्वाज नन्दलाल आहुजा।

प्रचार मन्त्री—श्री मा रामप्रसाद,

कोषाध्यक्ष—श्री ओ३म प्रकाश पासी। सहायक कोषाध्यक्ष—श्री विजय कुमार सरीन।

—आशानन्द आर्य
महा मन्त्री

—

## अढाई लाख रुपए दान

कुछ दिन पूर्व उग्रवादियो द्वारा देवकी आर्य पुत्री पाठशाला एव आर्य समाज हजूरी बाग (श्रीनगर) को जलाकर राख कर दिया था। इसके लिए डी ए वी कालेज मैनेजिंग कमेटी द्वारा अढाई लाख रुपए का ड्राफ्ट भेज दिया गया। यह आर्य जगत् के सूचनार्थ लिखा जा रहा है। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के साप्ताहिक पत्र "आर्य जगत्' में भी इस सम्बन्ध में अपील प्रकाशित हुई है। सब आर्य समाजी उपरोक्त संस्थाओ के लिए अधिक से अधिक राशि देने की कृपा करें। ताकि इस पाठशाला एवं आर्य समाज का पुनर्निर्माण कार्य किया जा सके।

—रामनाथ सहगल
सभा-मन्त्री

# आर्य समाज के 10 नियम "कण्ठस्थ अभियान"

—चौ. ऋषिपाल सिंह, एडवोकेट, अधिष्ठाता
"वेद प्रचार" पंजाब

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने जीवन काल के पश्चात् प्राचीन "वैदिक धर्म" के पुनर्जागरण के कार्य का विश्व में प्रचार और प्रसार बनाए रखने हेतु, सन् 1875 में आर्य समाज को जन्म दिया।

आर्य समाज कोई 'धर्म नहीं है वरन् श्रेष्ठ पुरुषो की संस्था है 'वैदिक धर्म' का प्रचार करती है, और सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर द्वारा दिए गए वेद ज्ञान का सुव्यवस्थित ढग से ससार के मनुष्य मात्र मे वेदानुकूल आचरण करने और कराने पर बल देती है। आर्य समाज अब एक विशाल अन्तर्राष्ट्रीय सगठन बन कर अति सफलता से अपना कर्त्तव्य निभा रही है।

इस कार्य में और अधिक प्रगति देने हेतु इस के 10 नियमों को कण्ठस्थ करने का वेद प्रचार विभाग ने नया अभियान आरम्भ किया है जो इस वर्ष के वेद सप्ताह अथवा चौमासे (चतुर्मास) का मुख्य अग है।

यह 10 नियम प्रत्येक व्यक्ति घण्टे 2 घण्टे मे मुह जबानी याद (कण्ठस्थ) कर सकता है। यह नियम इतने पूर्ण हैं कि व्यक्ति' और समाज को आस्तिक, भावनाओ से ओत-प्रोत कर, प्रत्येक क्षण, प्रत्येक कार्य मे दिशा निर्देश दे कर घर और बाहर शान्ति और सुख का वातावरण उत्पन्न कर देते हैं। प्रत्येक परिवार व सस्थान समृद्ध व स्वर्ग समान बन जाता है तो देश-देशान्तर भी सुखी होकर विश्व शान्ति का अनुभव करने लगेंगे प्राणी मात्र सुखी होगा। अन्तिम लक्ष्य 'मुक्ति' (अर्थात् दु खो से छुटकारा) प्राप्त करना सरल हो जाएगा।

यह नियम उस रेलवे लाईन' की भाति हैं जिस पर व्यक्ति नि सकोच बिना किसी 'भय अथवा दुर्घटना के सही दिशा की ओर स्वयमेव चलता चला जाता है। इन नियमो को कण्ठस्थ कर के प्रत्येक क्षण अपना जीवन-आचरण तदानुकूल बना लिया जाने मे आसानी और सुगमता हो जाएगी और सुख शान्ति और आनन्द की प्राप्ति होने लगेगी। 'कण्ठस्थ' नियम प्रत्येक अवस्था मे जागरूक रहेंगे और ध्यान रखेंगे कि इस 'लाईन' की कोई भी 'फिश-पलेट' अथवा पटड़ी ढीली न हो और न उखड़ने पाये। यह नियम जीवन को स्वच्छ और पुरुषार्थी बना देते हैं। अत प्रत्येक शिक्षण सस्था परिवार व व्यक्ति अपने आधीनस्थ व्यक्तियो (बच्चे बूढे, स्त्री, जवान) को यह 10 नियम जो बड़े सरल हैं। कण्ठस्थ करने और कराने मे योगदान दे। जहा तक हो सके इन नियमो को अपने कार्यालयो मे, सस्थानों मे घरो मे अर्थात् सभी स्थानोमे शीशे मे मढवाकर या अपने मेज के शीशे के नीचे किसी भान्ति भी, रखें ताकि हमे सदैव स्मरण भी रहे और हमारा दैनिक जीवन इन के दिशा निर्देशन मे भी रहे।

उत्साही और सम्पन्न जन स्थान-स्थान पर लकड़ी, पत्थर लोहे इत्यादि के बोर्डों पर मोटे मोटे अक्षरों में यह 10 नियम लिखवा कर सार्वजनिक स्थानो में लगवा कर पुण्य के भागी बन सकते हैं। कोई भी हमारे पजाब का ऐसा व्यक्ति न हो जिसे यह मानवता के 10 नियम कण्ठस्थ न हो। यह आर्य समाज के 10 नियम क्रियात्मिक जीवन हेतु वेदो का निचोड़ कहा जा सकते हैं। इस अमृत पान से सुख समृद्धि निश्चित है। जग मे वेद प्रचार का सुगम साधन है।

सभी आर्य जन (स्त्री-पुरुष) आर्य परिवार, आर्य समाजें व इन की शिक्षण संस्थाए इन 10 नियमो को कण्ठस्थ करने मे अग्रणी हो ताकि जब कभी भी आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारी किसी आर्य समाज, आर्य परिवार अथवा आर्य संस्था में आ कर किसी से भी कोई सा नियम भी मुह जबानी सुनने को कहे तो उन्हें प्रसन्नता हो कि यह कण्ठस्थ अभियान पूर्ण रूपेण सफल है। पजाब के वातावरण को इस बारे से गुन्जायेमान कर दें। समय की भी यही पुकार है कि इस शुभ कार्य की ओर सब का ध्यान आकृष्ट कर लें।

आर्य समाज के इन 10 नियमो पर स्थान स्थान पर भाषण, गोष्ठियां लेखों व मौखिक प्रचार की भरमार कर अपनी क्रियाशीलता का परिचय दें। आईये इस शुभ कार्य मे हम सब एक दूसरे से आगे बढें और इन 10 नियमो को जो सार्वभौमिक हैं। आज ही कण्ठस्थ कर के औरो को भी प्रेरणा दें। इन की दैनिक जीवन में उपादेयता बरतें और बरतायें।

यह आर्य समाज के नियम नीचे दिए जा रहे हैं ताकि सभी इन्हे कण्ठस्थ कर सकें।

## आर्य समाज के नियम

1. सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।
2. ईश्वर, सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार सर्वशक्तिमान् न्यायकारी दयालु अजन्मा, अनन्त निर्विकार अनादि अनुपम सर्वाधार सर्वेश्वर सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी अजर अमर अभय नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
3. वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है। वेद का पढना-पढाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।
4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोडने मे सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।
6. ससार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है। अर्थात् शारीरिक, आत्मिक, और सामाजिक उन्नति करना।
7. सब से प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिए।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
9. प्रत्यक को अपनी ही उन्नति मे सन्तुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति मे अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
10. सब मनुष्यो को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने मे परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम मे सब स्वतन्त्र रहे।

14 सितम्बर के हिन्दी दिवस पर—

# हिन्दी राष्ट्र का गौरव है

आज सारे भारत मे हिन्दी ही एक ऐसी भाषा है जो सम्पर्क भाषा हो सकती है। भारत के प्रत्येक प्रदेश म रहने वाला प्रत्येक व्यक्ति हिन्दी को कुछ न कुछ अवश्य समझता है। रेडियो सिनेमा टेलिविजन पर जो कुछ भी हिन्दी मे दिया जाता है। उसे सभी समझते है। इससे हिन्दी का बहुत प्रचार हो रहा है। परन्तु फिर भी कई प्रदेशो मे कुछ तग दिल लोग हैं जो हिन्दी का विरोध करते रहते हैं और हिन्दी की कभी-2 बहुत अवहेलना भी कर जाते है।

पजाब मे सरकारी तौर पर पजाबी को ही महत्व दिया जा रहा है। सभी सरकारी कार्यालय व स्कूलो आदि मे हिन्दी को वह स्थान नही दिया जा रहा जो उसे देना चाहिए यह सकीर्णता है। हम पजाबी के विरोधी नही हैं। परन्तु यह अवश्य चाहते है कि पजाब मे हिन्दी की भी अवहेलना न की जाए।

देखा गया है कई बार तो हम स्वय भी हिन्दी को वह महत्व नही देते जो हमे देना चाहिए। जब कोई पत्र-व्यवहार करना हो तो हम पता अग्रेजी मे लिख देते हैं। चाहे अन्दर सारा पत्र हिन्दी मे ही क्यो न लिखा हो। जब हम कोई विवाह आदि का निमन्त्रण पत्र छपवाने लगते हैं तो वह भी अग्रेजी मे छपवाना ही अपनी शान समझते हैं। मेरा ऐसे बहुत स परिवारो से सम्पर्क रहता है, मैं उनसे पूछता भी हू कि आपने कार्ड हिन्दी म न छपवा कर अग्रेजी मे क्यो छपवाया, तो उनका उत्तर होता है, पण्डित जी आज कल लडके पढे लिखे है और वह अग्रेजी मे कार्ड छपवाना अपनी शान समझते है। हम उन्हे रोक भी नही सकते क्योकि बच्चो की बात माननी पडती है। यह कई आर्य बन्धुओ का उत्तर होता है। लेकिन यह सब बहाने बाजी है। वास्तव मे हमारा हिन्दी से प्रेम नही है। जिन को हिन्दी भाषा से प्रेम है वह हिन्दी मे ही अपने निमन्त्रण पत्र छपवाते है वह किसी लडके व पुत्र आदि के कहने मे नही आते।

इसलिए यदि हम सारे देश को एकता के सूत्र मे बाधना चाहते हैं, यदि हम भारत को विश्व अग्रणी बनाना चाहते हैं और यदि हम सम्मान पूर्वक जीना चाहते हैं तो हमे हिन्दी को अपनाना चाहिए।

हिन्दी भाषा राष्ट्र का गौरव है अब उसमे सभी प्रकार का साहित्य सृजन किया जा रहा है और उसकी वृद्धि और समृद्धि मे हम सबको सहयोग देना चाहिए।

—धर्मदेवार्य

# अजमेर–दर्शन

ले—श्री अमरनाथ जी आर्य एम ए तलवाडा

( 26 अगस्त से आगे )

वह आयताकार वृहद पण्डाल 750 मीटर लम्बा और 500 मीटर चौड़ा बना था। जिसमे नीचे दरिया बिछाकर लगभग छ लाख लोगो के सुविधापूर्वक बैठने की व्यवस्था थी। इतने बड़े मण्डल को प्रथम बार देखने से विस्मय हो जाता है। परन्तु इससे पूर्व कि हम सभा का कार्यक्रम सुनने के लिए अन्दर प्रविष्ट हो, पाठको को यहा इस बलिदान शताब्दी समारोह की परम समग्रता से परिचित कराना अनिवार्य समझता हू—

इस सद्य सम्पन्न महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी समारोह की विशालता का अनुमान इस तथ्य से लगाना सुगम रहेगा कि यह विश्वस्तरीय भव्य आयोजन तीन नवम्बर से छ नवम्बर 1983 तक होता रहा। मुख्य मच पर तीन-तीन घण्टे की प्रतिदिन तीन तीन बैठकें सम्पन्न होती रहीं। इतना ही नही बल्कि इसके साथ साथ विभिन्न स्थानीय मचो पर विविध गूढ विषयो एव ज्वलन्त सामाजिक समस्याओ पर पृथक पृथक भी दा दो, तीन-तीन बैठक आयोजित होती रही और इन सभी बैठको मे प्राय बीसियो विद्वान वक्ता अपने गवेषणात्मक विचार प्रस्तुत करते रहे जो देश विदेश के विविधस्तरीय अर्थात 9 वर्ष से 90 वर्ष तक की आयु सीमा के स्त्री पुरुष दोनो थे। वे विद्वान वक्ता सभी आश्रमो से सम्बन्धित अर्थात ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ व सन्यासी थे। तथा विभिन्न व्यवसाय सेवी अर्थात प्रसिद्ध राजनेता ख्याति प्राप्त शिक्षणालयो के योग्य व प्रतिष्ठित अधिकारी विद्वान धार्मिक व सामाजिक विज्ञ, नेता होनहार विद्यार्थी योग्य वकील व विज्ञान विशेषज्ञ आदि सभी थे। न केवल इतना परन्तु इसके साथ ही ऋषि उद्यान मे एक मास पूर्व से आरम्भिक हवन-यज्ञ का आयोजन भी अनवरत रूप से चल रहा था जहा प्रतिदिन सहस्रो धर्म सेवी आहुतिया डालते थे। यह भी उसी कार्यक्रम का प्रधान अग था।

इसलिए महान यज्ञ समारोह का प्रत्यक्ष दर्शन व स्वानुभूत दृश्य वर्णन प्रस्तुत करने से पूर्व मै प्रबुद्ध पाठको को यह स्पष्ट कर देना चाहता हू कि इतने वक्ताओ के व्यक्तिगत विचारो को पूर्णत ग्रहण कर पाना किसी के लिए भी टेढी खीर हो सकता है। परन्तु फिर भी मैं प्रेरणा स्वरूप मे वक्ताओ की भावनाओ आशा-आकाक्षाओ व सन्देशो के समग्र प्रभाव रूप का जितना भी अधिग्रहणानुभव मे कर पाया हू वह आप महानुभावो के समक्ष सादर प्रस्तुत है। आशा है आप इस पर हसेंगे नही, बल्कि उत्साहित ही करेंगे, क्योकि इस किंचित प्रयास से विगत शताब्दी समारोह मे सम्मिलित न हो पाने वाले आर्य बन्धुओ को इससे इसकी कुछ जानकारी प्राप्त होने की विनम्र आशा अवश्य की जा सकती है। क्योकि मेरा निज विचार यह है कि—

मति अति नीच ऊचि रुचि आछी
चहिय अमिअ जग जुरई न छाछी।
छमिहि सज्जन मोरि ढिठाई,
सुनिहहिं बालवचन मन लाई।
जो बालक कह तोतरि बाता
सुनहि मुदित मन पितु अरु माता।

अत आशा है इन तोतली बातो मे से पाठक महोदय अपने प्रयोजन की बातें स्वय चुन लेंगे।

अब प्रथम सभा—उदघाटन समारोह, तिथि 3 11 1983। समय प्रात आठ बजे।

तो आईये अब पण्डाल मे प्रवेश करते हैं—

मण्डप मे प्रविष्ट होते ही हम अपने सामने दो मच पाते हैं। दायी ओर विशिष्ट उदघाटन मच सज्जित है, तथा बायी ओर सामान्य वक्ताओ के बैठने और गायन का मच है। मचो की पृष्ठ भूमि के मध्य मे महर्षि दयानन्द का एक चित्र सुशोभित है जिसका आकार लगभग तीन मीटर लम्बा चौडा है। जिसे प्राय एक किलो मीटर की दूरी से भी स्पष्ट देखा जा सकता है। उस विशाल चित्र की दायी ओर क्रमश महात्मा आनन्द स्वामी भाई परमानन्द गुरुदत्त विद्यार्थी छत्रपति शिवाजी तथा स्वामी प्रभु आश्रित जी—जिनकी सौम्य आकृति गुरुदेव, टैगोर से बहुत मिलती है—कि कुछ छोटे आकार के भव्य चित्र शोभित हैं, और बायी ओर क्रमश स्वामी श्रद्धानन्द महात्मा हसराज आर्य मुसाफिर प लेखराम स्वामी दर्शनानन्द, महाराणा प्रताप, स्वामी वेदानन्द तीर्थ तथा विभिन्न प्रमुख आर्य विद्वानो व स्वाधीनता सेनानियो के बडे बडे, दर्शनीय चित्र सुशोभित हैं। उपस्थिति इतनी है कि हम कठिनता से मच के समीप अपने लिए समुचित स्थान प्राप्त कर पाते हैं।

तब समारोह उद्घाटनार्थ प्रधान मन्त्री, इन्दिरा गान्धी पधारती हैं और तालियों की गड़गड़ाहट मे उन्हें माल्यार्पण किया जाता है।

समारोह का समारम्भ साम्प्रदायिक सद्भावनानुरूप हिन्दू मुस्लिम व इसाई, उन तीन युवतियो द्वारा ईश्वरीय वन्दना व वेद ऋचाओ के सस्वर सामूहिक गान से होता है।

अब प्रधानमन्त्री उद्घाटन भाषण प्रारम्भ करती हैं। उनके भाषण की विषय-विभाजन सुविधार्थ, हम, पूर्वार्ध व उत्तरार्ध इन दो भागो मे विभक्त कर सकते हैं।

पूर्वार्ध मे उन्होने महर्षि के चरणों मे अपनी भाव भीनी श्रद्धाजलि अर्पित की है तथा उत्तरार्ध के विचारो पर एक कुशल राज नेतानुरूप, राजनैतिक रग हावी हो गया है। अत मेरी कथन सीमा उनके भाषण का पूर्वार्ध ही है, जिसका भावानुवाद इस भान्ति हैं —

सर्व प्रथम उन्होंने महर्षि दयानन्द को न केवल भारत का बल्कि, सारे विश्व का एक जाज्वल्यमान नक्षत्र बताते हुए उनके चरण कमलो मे अपनी भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए कहा कि वे उन महापुरुषो मे से थे, जिन्होने अपने जीवन काल मे सकीर्ण विचारधाराओ का कड़ा विरोध सहकर भी समाज मे व्याप्त न्यूनताओ व बुराइयो को दूर करने का आजीवन भरसक प्रयत्न किया।

उन्होने कहा कि महर्षि एक युग-प्रवर्त्तक महापुरुष थे, जिन्होने देश को जागृत करने के साथ, उसे उसकी विस्तृत भीतरी शक्ति का ज्ञान भी कराया। अत उन्होने जो दिव्य सन्देश समस्त ससार व मानवता हित दिया उसकी आवश्यकता आज पहले से भी कहीं अधिक है। क्योकि वह मानव-मात्र की समानता मे विश्वास रखते थे, और यह उनकी समाज सुधार योजना का मुख्य सूत्र था। अत आज भी इसी प्रगतिशील भावना की आवश्यकता है, क्योकि देश मे भीतरी व बाहरी तौर पर विरोधी विचारधाराओ का आक्रमण हो रहा है। इस भुलावे मे यदि देश के धर्म और जातिया विभक्त हो गई तो अज्ञानता और अहकार बढ़गा, जिससे देश की आन्तरिक शक्ति क्षीण हो जाएगी। इतना ही नही बल्कि देश की उन्नति और शाति व सुरक्षा के मार्ग मे जो आन्तरिक व बाह्य खतरे हमारे सामने आ रहे हैं उन्हे हम सहनशीलता, दूर दृष्टि, बराबरी परस्पर सद्भावना बड़े परिश्रम, अन्तर्राष्ट्रीय भाई चारे, दृढ़ सकल्प और अदम्य साहस के अचूक हथियारों से ही निरस्त कर सकते हैं—और यही वे सफल हथियार हैं जो महर्षि दयानन्द से हमें विरासत मे मिले हैं।

तब उन्होने अपने विचारों को वर्तमान भयावह समस्याओ के सन्दर्भ में, विज्ञान व तकनीकी योग्यताओ के विकास पर केन्द्रित करते हुए कहा कि धर्म व विज्ञान दोनो ही का उद्देश्य सत्य की खोज करना है। वैज्ञानिक उत्कर्ष व तकनीकी जानकारी ने जहा मनुष्य को सुख सुविधाए प्रदान की हैं वहां उसका शारीरिक व मानसिक विकास भी किया है। परन्तु सबसे जरूरी बात यह है कि हम आध्यात्मिकता के माध्यम से अपनी कला व सस्कृति की रक्षा करते हुए अपने चरित्र को भी ऊचा बनाए।

उन्होंने पुन जोर देकर कहा कि यदि हम सब मिलकर काम करने का दृढ सकल्प धारण करें उस सकल्प को अपने जीवन में ढालकर चरितार्थ कर सकें तो अपने इन महापुरुषो की जयन्तियो व शताब्दी समारोह मनाने का वास्तविक लाभ जन जन को हो सकता है। क्योकि महापुरुष प्रकाश पुञ्ज शक्ति भण्डार व प्रेरणा स्रोत हुआ करते हैं। अत उनकी शिक्षाओ व निर्दिष्ट नियमो पर हम जितना भी चल पायें देश, जाति और मानवता का उतना ही भला हो सकता है।

उन्होने विगत इतिहास के उज्ज्वल पृष्ठो की ओर सकेत करते हुए कहा कि 1924 मे महर्षि दयानन्द की जन्म शती के शुभवसर पर स्वय महात्मा गान्धी ने कहा था कि स्वामी दयानन्द की महान् उपलब्धियो से भी उनका चरित्र महानतर था। इसीलिए उनके शुभ नाम के साथ महर्षि के साथ-साथ सरस्वती भी जुड़ा।

अपने भाषण के पूर्वार्ध के अन्त में प्रधानमन्त्री ने गर्ज कर कहा कि भारत का अपना एक महान् जातीय चरित्र है और यदि उसने उसके बल पर समस्त ससार मे सदैव अहिंसा सत्य, भ्रातृभाव समानता वसुधैव कुटुम्बकम् सत्यमेव जयते और सर्वभूतेषु आत्मवत् का दिव्य सन्देश दिया है और आज भी दे रहा है तो इसके पीछे महर्षि दयानन्द ऐसे युग पुरुषो के अमर सन्देश व परम-बलिदानो की बलवती प्रेरणा काम कर रही है तथा विश्व आज भी अपने मार्ग दर्शन के लिए भारत की ओर आशा व जिज्ञासा भरी दृष्टि से देख रहा है। अत हमे आज अपने महापुरुषो के सन्देशो को लेकर उसका मार्ग दर्शन करना है—हम तभी दयानन्द के सच्चे अनुयायी कहला सकते हैं और अन्त मे उन्होंने देशवासियों का आह्वान करते हुए कहा कि देश की प्रगति और ऊचे आदर्श अक्षुण्ण रखे जायें क्योकि महर्षि का यही सन्देश है।

(क्रमश)

# एक प्रश्न—और उसका उत्तर

ले.—श्री पं. रामनाथ सि. विशारद, आर्य महोपदेशक

प्रश्न यह था कि आर्य वर्त देश अराजक देश क्यूं बन गया ? जब राजा या सरकार तेजहीन हो जाती है या हो जाता है तो राष्ट्र मे अराजकता फैल जाती है। अराजक राष्ट्र ऐसा ही होता है, जैसाकि पिछले तीन लेखो में बताया जा चुका है। अराजक राष्ट्र मे यथा बड़ी चिड़िया से छोटी चिड़िया भयभीत रहती है ठीक उसी प्रकार कमजोर लोग अत्याचारियो से डरे सहमे रहते हैं। महर्षि वाल्मीकि ने जब अराजकता के ये लक्षण लिखे थे उस से आज सौ गुणा अधिक अराजकता है। वास्तविकता यह है कि शासन किसी एक व्यक्ति का नहीं होता बल्कि भय का शासन होता है। एक युवति बाजार मे से गुजरती है, उसको बेटी बहिन की दृष्टि से देखने वाले बहुत कम मिलेंगे, पर कुदृष्टि से देखने वालो को पता है कि यदि हमने इस युवती को ऊगली लगाई पहले तो यही जूतो से मुरम्मत करेगी, पुन लोग इकट्ठे हो जाए गे वह मारेंगे, फिर थाने ले जाया जाएगा पुलिस बल निकालेगी अन्त मे अभियोग चलेगा और न्यायालय दण्ड देगा।

हमारी सरकार के पास बहादुर सेना भी है तोपें, टैंक, स्टेनगनें आदि हथियार भी हैं भले व्यक्ति तो पहले भी सन्मार्ग पर है परन्तु अत्याचारियो पर कोई प्रभाव नही है। यही कारण है कि मिल्ट्री ऐक्शन भी हो लिया अपराध बिलकुल बन्द नहीं हुए, हो रहे हैं पहले से कम हो रहे हैं।

### तीन प्रकार का भय

वैदिक जमाने मे तीन प्रकार के भय से लोग अपराध करने से डरते थे।

1, पहला भय ईश्वर का था कि परमेश्वर सर्वव्यापक है, सर्वान्तर्यामी है, सर्वज्ञ है। वह हमारे इरादे को भी जानता है। मन मे बुरा विचार लाना भी पाप है। उसका भी फल मिलता है। अब कहते हैं कि ईश्वर है ही नही।

2 भय था समाज का, अपराध करेंगे तो लोग क्या कहेंगे ? कुकर्म करने पर लानत भेजेंगे, पंचायत में बुलाया जाएगा। बाइकाट होगा या पचायत दण्ड देगी। समाज पहले हुक्का पानी का दण्ड दिया करती थी। यदि आज किसी को हुक्का पानी से वञ्चित किया जाए तो अपराधी कहता है कि नलका घर है हुक्का सिग्रेट भी है। कर लो जो कुछ करना है।

3 तीसरा भय राजा का होता था। राजा का तेज ऐसा होता था, जैसा कि सूर्य यथा सूर्य के सामने हम एक मिन्ट भी आखें खोल कर नही देख सकते वैसा ही राजा का तेज होता था। ऐसे राज्य मे धर्मात्मा लोग तो सुख से रहते थे, सदा प्रसन्न रहते थे, चेहरे ऐसे जैसे गुलाब का फूल मुस्कराता है वैसे ही लोग मुस्कराते रहते थे कोई उदास रोता हुआ नजर नही आता था।

विश्व भर के अन्दर बहुत सी सरकारें हैं परन्तु एक भी सरकार ऐसी नही है कि जिस के पास इतनी पुलिस या फौज हो कि प्रत्येक परिवार की रक्षा के लिए उसके द्वार पर पुलिस या फौज का आदमी खड़ा कर दिया जाए।

प्राचीन काल मे मनुस्मृति का विधान चलता था सख्त से सख्त दण्ड दिया जाता था। जिस अङ्ग से कोई अपराधी कुचेष्टा करता था वही अङ्ग काट दिया जाता था। व्यभिचारी को सब के सामने लोहे के पलङ्ग पर डाल कर आग से भस्म कर दिया जाता था। व्यभिचारिणी स्त्री को कुत्तो से फड़वाया जाता था।

इस्लामी देशो मे यही विधान चलता है। परन्तु उसकी बुनियाद ठीक नही है वह यह दण्ड उसको देते हैं जो कुरआन अथवा मुहम्मद को न माने, परन्तु प्राचीनकाल मे यह दण्ड अपराधी के लिए होता था। अपराधी को दण्ड अवश्य ही मिलता था यह नही कि छूट जाए। पंजाब मे जो कुछ हुआ उसको मैं दोहराना नही चाहता। पहले लिख चुका हू सब के सामने हुआ है और हो रहा है परन्तु किसी अपराधी को कोई दण्ड नही मिला। शिक्षा दायक दण्ड अपराधियो को मिलते, और सब के सामने मिलते तो और लोग कानो को हाथ लगाते यह अपराध नही करना, नहीं तो यही दण्ड हमे मिलेगा।

सविधान कुछ कहता है परन्तु हमारे मन्त्री महोदय उसकी भी अवहेलना कर देते हैं। उदाहरण के लिए, पिछले दिनो यह सर्व विदित है कि अकाली नेताओ ने भारत के सविधान को फाड़ा उनको अन्दर किया गया। जनता का विचार था कि अब सविधान का अपमान करने वालों को विधानानुसार दण्ड मिलेगा। परन्तु शोक है कि कुछ ही दिनो के पश्चात् सविधान का अपमान करने वालों को छोड़ दिया गया। अराजकता यूं फैलती है जबकि अपराधी को दण्ड न मिले। अपराधी को दण्ड न देने से राजा का तेज नष्ट हो जाता है। मैं सरकार से पूछना चाहता हू यदि सविधान का अपमान करने वालो को छोड ही देना था तो पकड़ा ही क्यो था ? राजा को चाहिए था कि सविधान का स्वय पालन करें और लोगो से कराए। किसी को कोई भी अधिकार नहीं है कि अपनी मनमानी करे। अकालियो की अनुचित मागें मान-मानकर उनको इतना सिर चढाया कि उतारने मुश्किल हो रहे हैं। उनके हौसले इतने बढ गए कि निहत्थे लोगो को क्या कुछ समझना था सरकार से सीधी टक्कर लेने के लिए खम्भ ठोक कर खड़े हो गए। पाकिस्तान, चीन, अमरीका से साज-बाज खालिस्तान की अपनी सरकार आदि सब कुछ तैयार कर लिए। मैं अपनी सरकार से यह प्रार्थना करता चाहता हू। कि किसी सरकार के पास इतनी शक्ति नही कि प्रत्येक व्यक्ति के लिए गनमैन का प्रबन्ध कर सके। राजा अथवा सरकार के तेज से प्रभाव से, भय से लोग डरा करते हैं। यह अपराध होते ही क्यो हैं इसलिए कि सरकार तेजहीन हो गई है राजा का तेज तब नष्ट होता है जबकि राजा न्याय का मार्ग छोड अनुचित मागें मानने लग जाए। हमारे अकाली बन्धु कहते हैं कि साढे नाल वितकरा हो रहा है। अरे! जिनके साथ वितकरा हो रहा है वह तो चुप हैं। तुम वैसे ही शोर मचा रहे हो। यह अराजकता तब दूर होगी जबकि सरकार सविधान का स्वय पालन करे और औरो से कराए। 2 कोई अपराधी जिसने जिस प्रकार का अपराध किया है दण्ड मिले और ऐसा दण्ड मिले कि देखने वाले कानो को हाथ लगाए और कहे कि भारत मे सरकार नाम की भी कोई चीज है ? वरन अराजकता अवश्य रहेगी।

—

(2 पृष्ठ का शेष)

चुरा लेना भी उतना ही पाप है पर-स्त्री या सहवास भी उतना ही पाप है। पाप का इतना विस्तृत अर्थ है फिर सिर्फ हिंसा को लेकर ही दो पार्टिया क्यो बने। मास भक्षण की दूसरी दृष्टि है-स्वास्थ्य मास-भक्षण से बीसियो तरह की बीमारिया होती है। स्वास्थ्य के लिए यह अहितकर है। प्राणी के शरीर मे मे हर समय पसीने के जरिए विष निकल रहा है। प्राणी को मारते ही वह विष जहा का तहा रुक जाता है और भोजन मे आमिष भोजी उसी विष को खाता है जिससे अनेक रोग उत्पन्न हो जाते हैं। स्वास्थ्य के विषय मे यह सब कुछ जानकर अगर कोई अपने स्वास्थ्य को बिगाड़ने पर तुला हुआ है चाहे वह कालेज पार्टी का हो, चाहे गुरुकुल पार्टी का, तो यह उसकी अपनी जिम्मेवारी है। यह स्वास्थ्य का प्रश्न तो हो सकता है, पार्टीबाजी का नही। मैं यह मानता हू कि मास भक्षण के पाप होने के सम्बन्ध मे पाप होने की बात सिर्फ हिंसा तक परिमित नही है, इसमे असत्य भाषण पर द्रव्यापहरण, व्यभिचार आदि सब आ जाते हैं और इन सबका विरोध केवल गुरुकुल पार्टी ही नही करेगी कालेज पार्टी भी एक समान करेगी। पाप के क्षेत्र को हिंसा तक परिमित नही रखना होगा। इसका विस्तृत अर्थ करना होगा, वह विस्तृत अर्थ गुरुकुल पार्टी, कालेज पार्टी सब पर लागू होगा। यह युक्तियुक्त नही होगा कि झूठ आदि पर धार्मिक प्रतिबन्ध लागू न हो, सिर्फ हिंसा या मास भक्षण पर लागू हो।

ऊपर जो कुछ लिखा गया है उसका अभिप्राय यह है कि कालेज पार्टी और गुरुकुल पार्टी एव मास पार्टी और घास पार्टी का भेद मिट गया है, यह भेद इतिहास की वस्तु रह गया है और अब इन दोनो को एक होकर भावी इतिहास का निर्माण करना है। इसी को मैं आर्य समाज को नया मोड़ देना कहता हू। इस नए मोड़ मे सबको एक जुट होकर जगह-जगह स्कूल कालेज-गुरुकुल खोलने होंगे, और अहिंसा को ही धर्म का अंग मानकर उसे सीमा मे बाधना न होगा, परन्तु अहिंसा के साथ सत्य, अस्तेय ब्रह्मचर्य तथा अपरिग्रह को भी एक समान धर्म का अग मानना होगा। ऐसा जब होगा तब न कालेज पार्टी रहेगी न गुरुकुल पार्टी रहेगी न मास पार्टी रहेगी न घास पार्टी रहेगी। सब पार्टिया विलुप्त होकर एक आर्य समाज पार्टी ही रह जाएगी देखना यह है कि आर्य समाज को यह नया मोड़ कब और कौन देता है।

—

## यज्ञ से अद्भुत वर्षा

पलवल। आर्य समाज श्रद्धानन्द नगर, पलवल मे स्वामी जीवनानन्द जी सरस्वती के ब्रह्मत्व मे वर्षा के लिए 20-8-84 से 26-8-84 तक एक सप्ताह का यजुर्वेद पारायण यज्ञ रचाया गया। परम पिता परमात्मा की असीम कृपा से इन्द्र देव प्रसन्न हुए तथा वर्षा की अद्भुत झड़ी लगा दी जिसकी कि अत्यन्त आवश्यकता थी। पूर्णाहुति मे नगर के सैकड़ो नर-नारियो ने शुद्ध मेवो आदि की आहुति दी।

—अजीत कुमार आर्य

# आर्य समाज अड्डा होशियारपुर जालन्धर का वार्षिक चुनाव

आर्य समाज अड्डा होशियारपुर जालन्धर की साधारण सभा की वार्षिक बैठक रविवार 19-8-84 को साय 4 बजे समाज प्रधान की अध्यक्षता में हुई जिस में सर्व सम्मति से 1984-85 के लिए निम्नलिखित अधिकारी सर्व सम्मति से निर्वाचित हुए।

1- सर्व श्री योगेन्द्रपाल सेठ-प्रधान, डा. दीवान चन्द-मन्त्री, रजिन्द्र अग्रवाल-कोषाध्यक्ष।

उप प्रधान—प्रि. अमृत लाल खन्ना, उप मन्त्री—सोहन लाल सेठ, पुस्तकाध्यक्ष—हंसराज मगो, लेखा निरीक्षक—सुदर्शन लाल आनन्द, अन्तरंग सदस्य प्रकाश चन्द कालड़ा, कुन्दन लाल, चन्दू लाल, सुभाष सहगल, रामनाथ यादव।

2; आर्य समाज स्कूल समिति तथा शिक्षा प्रचार समिति—सर्व श्री—योगेन्द्र सेठ, डा. दीवान चन्द, राजेन्द्र अग्रवाल, रामनाथ यादव, सेठ चन्दू लाल, प्रिंसीपल अमृत लाल खन्ना, हंसराज शर्मा, मदन लाल सेठ, प्रकाश चन्द कालड़ा, सुदर्शन लाल आनन्द, हंसराज मगो, वीरेन्द्र सभरवाल एडवोकेट, ऋषि पाल सिंह एडवोकेट, भगवान दास मुंशी।

3. सम्भू राम द्वारा हायर सै. स्कूल प्रबन्धकर्तृ उप-सभा—सर्व श्री योगेन्द्र पाल सेठ, डा. दीवान चन्द, राजेन्द्र अग्रवाल, रामनाथ यादव, प्रकाश चन्द कालड़ा, दुनीचन्द थापर, नवल किशोर सेठ, हंसराज शर्मा, कुन्दन लाल अग्रवाल, सुभाष सहगल, प्रि. अमृत लाल खन्ना।

शिक्षा विशेषज्ञ—प्रो. सत्यपाल धीर, वीरेन्द्र सभरवाल एडवोकेट, दो अध्यापक प्रतिनिधि तथा एक शिक्षा विभाग का सदस्य।

—योगेन्द्र पाल सेठ प्रधान

# वैदिक साधनाश्रम गुरदासपुर का उत्सव

वैदिक साधनाश्रम गुरदासपुर का वार्षिकोत्सव 16 से 23 सितम्बर तक श्री स्वामी सत्यप्रकाशानन्द जी की अध्यक्षता मे हो रहा है। इस अवसर पर यजुर्वेद पारायण यज्ञ होगा। पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी महाराज, आचार्य सत्यप्रिय जी (हिसार) श्री पं. बलराज जी गायक श्री प. सत्यपाल जी पथिक, प. राम निवास जी शास्त्री, श्री प. विजय कुमार जी शास्त्री, प्रि. अश्विनी कुमार जी, माता शान्तिनन्दा, के प्रवचन व उपदेश होंगे।

—विजय कुमार शास्त्री

# लुधियाना में कृष्ण जन्माष्टमी

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना में कृष्ण जन्माष्टमी का पर्व 19-8-84 को बड़ी धूम-धाम से मनाया गया। प्रातः बृहद यज्ञ पर्व पद्धति के अनुसार किया गया। उसके बाद पं. सुरेन्द्र कुमार जी शास्त्री, पं. वेद प्रकाश जी शास्त्री, रणवीर जी भाटिया, प्रधान देव राज जी मेहता ने श्री कृष्ण के जीवन पर अपने विचार रखे। काफी संख्या में भाईयों और बहनों ने हिस्सा लिया और श्री कृष्ण के गुणों को धारण करने का संकल्प लिया।

—मतवाल चन्द मन्त्री

# अमृतसर में दो इसाई परिवारों की शुद्धि

26-8-84 रविवार को आर्य समाज, बाजार श्रद्धानन्द अमृतसर दो ईसाई परिवारों का शुद्धिकरण श्री डा. राधा राम जी शर्मा मन्त्री आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द ने किया। इस अवसर पर नगर के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। श्री मिहाल चन्द जी चौधरी, कैशियर वाल्मीकि सभा व उप प्रधान आर्यसमाज बाजार श्रद्धानन्द अमृतसर ने इस कार्यक्रम का आयोजन किया।

माननीय प्रो. ओ३म् प्रकाश जी वैद संरक्षक महोदय ने शुद्ध हुए महानुभावों को वैदिक साहित्य निःशुल्क भेंट किया और वैदिक धर्म व स्वामी दयानन्द जी की जीवनी पर प्रकाश डाला और उनको आशीर्वाद दिया। और कहा कि शुद्धिकरण में हमारी समाज अग्रसर रहेगी सभी उपस्थित महोदय को यज्ञ शेष बांटा गया।

—वीरेन्द्र देवगन



श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर से इस की स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

# वैदिक शिष्टाचार— पारिवारिक परिधि में

ले.—श्री डा. सत्यदेव जी आर्य एस बी 161
बापू नगर जयपुर

शिष्टाचार का सीधा सा अर्थ है अच्छा आचार। अच्छा व्यवहार। सुशीलता व शालीनता का व्यवहार। ऐसा व्यवहार जिसमें कोई कटुता न हो। विद्वेष व वैमनस्य न हो तथा व्यक्ति एक दूसरे की ओर आकर्षित होता हो।

परिवार व समाज के सदस्यो का ऐसा व्यवहार उस परिवार व समाज को शिष्टता का श्रेय प्राप्त कराता है। परिवार मे ऐसा व्यवहार जहा पारिवारिक परम्पराओ एव स्वस्थ मान्यताओ पर आधारित होता है वहा समाज में समय 2 पर निर्धारित व्यवस्थाओ पर यही व्यवस्थाएं शिष्टाचार की पृष्ठभूमि बनाती हैं। उदाहरणार्थ सामाजिक व्यवस्था में विवाहित युवक युवती पति-पत्नी के रूप मे साथ-2 कहीं भी आवें जावें कोई उगली नहीं उठाता लेकिन वही युगल यदि अविवाहित स्थिति मे साथ-2 घूमे फिरें तो समाज उनके इस व्यवहार को अशिष्टता की ही संज्ञा देगा।

हो सकता है सामाजिक व्यवस्थाए जो समय-2 पर निर्धारित की जाती हैं, वैदिक मान्यताओ पर आधारित न हो जैसे किसी समय नारी को 'नरकस्य द्वार' बताया गया व शूद्र तथा नारी को वेदाध्ययन के अधिकारो से वंचित रखा गया। स्त्री शूद्रो न धीयतामिति श्रुते जन्मना जात पात के बन्धनो मे 'नौचर दस चूल्हे' की भ्रामिक प्रथाओ से पारिवारिक व सामाजिक एकता का विघटन किया गया। छुआ-छूत की पराकाष्ठा मे शूद्र को गले मे घण्टी बाधने को बाध्य किया गया। बाल विवाह, अनमेल विवाह विधवा विवाह निषेध, औसर मौसर, श्राद्ध तर्पण, तथा यज्ञ याग जैसे धार्मिक अनुष्ठानो मे पशुबलि और नरबलि तक की सामाजिक व्यवस्थाए निश्चय ही अवैदिक रही हैं। खेद है कि आज भी कुछ वर्ग के लोग उनमे से कतिपय व्यवस्थाओ पर अमल करते हैं जो अवाञ्छनीय हैं। अहितकर हैं। अत शिष्टाचार पर यत्किञ्चित विचार करते समय हमें वैदिक मान्यताओ पर ही विशेष ध्यान देना होगा।

पारिवारिक परिधि मे शिष्टाचार की शिक्षा-दीक्षा बालकपन ही मे प्रमुखता से माता-पिता व घर व बड़े बुजुर्ग—पिताअमो द्वारा दी जाती है। तदनन्तर—गुरु, आचार्य व आर्य जनों द्वारा। चू कि बच्चे स्वाभाविकतया बड़ो के आचरण का अनुसरण करते हैं अत यह आवश्यक है कि इनका आचरण सर्वथ अनुकरणीय हो। पारिवारिक सदस्यो का आपसी सम्बन्ध विविध रिश्तो मे जुड़ा होता है। पति-पत्नी, माता-पिता पुत्र-पुत्री, भाई-बहिन, सास बहू, देवर-भाभी आदि सभी सम्बन्ध आपस मे बड़ी घनिष्टता के हैं और अपने-2 दायरे में अत्यन्त स्नेह, सम्पन्न, शालीनता एव सद्भावना के व्यवहार की अपेक्षा रखते हैं। सब को एक दूसरे के साथ इन्ही दायरो मे यथायोग्य शिष्ट व्यवहार करना होता है। यही शिष्ट व्यवहार बालको किशोरो व युवको के लिए अनुकरणीय बनता है।

हमारे पितरजन एव आप्त महानुभावो ने समय-2 पर वैदिक मान्यताओ पर आधारित आचार-व्यवहार के जो नीति नियम निर्धारित किए हैं वह सार्वभौम हैं। सर्वकालिक हैं। जाति देश काल और समय की सीमा से रहित सब अवस्थाओ मे अनुशीलन योग्य महाव्रत हैं—'जातिदेशकालसमयानवच्छिन्ना सार्वभौमामहाव्रतम्॥ (यो द 2-31)। यह महाव्रत हैं पाच यम और पाच नियम यम हैं—अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह नियम हैं। शौच सन्तोष तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान। (यो द 2-30-32) यम प्रमुखता से समाज मे अन्यो के साथ व्यवहार की नीति निर्धारित करते हैं जब कि नियम अपने ही व्यक्तित्व को निखारने मे साधक सिद्ध होते हैं। पूर्ण निष्ठा के साथ इनका परिवार व समाज में अनुष्ठान होते रहने से बालको किशोरो व युवको को शिष्टाचार की समुचित सीख मिल पाती है। वेद का आदेश है कि —

अनुव्रत पितु पुत्रा माता
भवतु संमना।
जाया पत्ये मधुमती वाच वदतु
शान्तिवाम्॥ अथर्व 3 30-2

(अनुव्रत पितु पुत्रो) पुत्र-बालक-पिता का अनुव्रत बने, पिता के अनुकूल आचरण वाला आज्ञाकारी बने (माता भवतु समना माता का सम्मान करने वाला हो (जायापत्ये मधुमतीम्) पत्नी-पति के साथ प्रीतिपूर्वक माधुर्यमय व्यवहार करे (वाच वदतु शान्तिवाम्) तथा मीठी वाणी ही बोले ताकि घर में सदा शान्ति का वातावरण बना रहे।

पुत्र पिता का अनुव्रती बने इसके लिए यह आवश्यक है कि पिता अपना उत्कृष्ट अनुकरणीय आचरण ही प्रस्तुत करे, लेकिन कभी कभी अनजाने में कोई गलती हो ही जाती है जैसे कोई सज्जन मिलने आए और कदाचित पिता उनसे मिलना न चाहे तब यदि वह पुत्र को यह कहला दे कि "कह दो घर पर नहीं हू" तो स्पष्ट है पिता ने बालक को झूठ बोलने का आदेश दिया। बालक के मानस पर इसका प्रतिकूल प्रभाव अवश्य ही पड़ेगा और सम्भव है वह भी कालान्तर मे झूठ बोलने का आदी हो जाए।

माता के साथ बालक को सम्मना होने का वेद आदेश दे रहा है। सम्मना अर्थात् माता के मन का सा, माता का मन और उसका मन एक हो मा की इच्छा हो, उसकी इच्छा के विरुद्ध वह कोई काम न करे, लेकिन यदि विवाह योग्य होने पर मा उसे बाध्य करे कि उसके पसन्द की अमुक लड़की से उसका विवाह तभी हो सकता है जब लड़की वाले अमुक राशी का दहेज दें, तो निश्चय है कि लड़के के मन में मा के इस आदेश के प्रति अवज्ञा ही उत्पन्न होगी और वह इस आदेश की अवहेलना करें। उस स्थिति में वह मा का समना रह नहीं पाएगा। स्पष्ट है बालक माता-पिता के अनुकूल आचारण व आदेश का ही अनुसरण करे—प्रतिकूल का नही।

माता-पिता, पति पत्नी के रूप मे कैसा व्यवहार करते हैं, कैसा आपसी सम्बन्ध बनाये रखते हैं यह पारिवारिक शिष्टाचार का अच्छा मापदण्ड बनता है और उसका सन्तान पर भारी प्रभाव पड़ता है। माता-पिता, पति-पत्नी के रूप मे कितना घनिष्ट एव स्वास्थ्य सम्बन्ध बनाए रखें इस बारे मे वेद कैसी विलक्षण व्यवस्था कर रहा है कि-

समञ्जन्तु विश्वे देवा समापो
हृदयानि नौ।
स मातरिश्वा सधाता समुदेष्ट्री
दधातु नौ॥ ऋ 10 85-47

समञ्जन्तु विश्वे देवा विवाह के समय विवाह मण्डप से पति-पत्नी घोषणा करते हैं कि हे! समस्त उपस्थित विद्वतवर्ग आप यह अच्छी तरह जान लें कि—

समापो हृदयानि नौ—हम दोनों के हृदय जल के समान एक हुए हैं, घुल-मिल कर एक रूप तथा एक रस हुए हैं। और एक रूप व एक रस ही बने रहेंगे। दो अलग-2 जल मिलते हैं तो एक रूप हो जाते हैं, इन्हे फिर अलग नही किया जा सकता। मिलने पर वह अपने अपने गुण-दोष एक दूसरे को देकर एक-रस हो जाते हैं जैसे ठण्डा व गर्म जल मिलने पर कुनकुना तथा मिष्ट व क्षारीय जल मध्यम स्वाद का हो जाता है इसी प्रकार हमारे हृदय-मन-एक-रूप एक-रस व जल ही के समान शान्त शीतल व पवित्र बने रहेंगे। जल के उदाहरण से सब अन्य उदाहरणों से घोषणा करवाता है कि—

संमातरिश्वा—जो वायु जिस प्रकार मिल कर एक हो जातें हैं इसी प्रकार हम दोनों के प्राण भी एक हो गए हैं। दो शरीर एक प्राण हो गए हैं। प्राण शारीरिक शक्ति का संचार करते हैं। जीवन के प्रमुख आधार बनते हैं। प्राणों की अधिक धकधक या अव्यवस्था जीवन समाप्ति की घण्टी बजाने लगती है अत प्राण सर्वाधिक प्रिय होते हैं। पति-पत्नी के एक प्राण हो जाने पर परस्पर प्रिय होने और एक दूसरे के शक्ति संवर्द्धक व साधक बनाने की यह अनुपम घोषणा है।

सधाता—जिस प्रकार प्रभु सृष्टि का सृजन करके उसे भलिभाति धारण करता है और नियमबद्ध संचालित करता है उसी प्रकार हम भी एक-दूसरे को धारण करते हैं और नियमबद्ध रह कर गृहस्थ की गाड़ी चलाते रहने की घोषणा करते हैं।

समुदेष्ट्री दधातु नौ—जैसे उपदेशक श्रोताओं के प्रति अत्यन्त प्रीति और आत्मीयता का भाव रखते हुए उन्हे कल्याणकारी उपदेश देता है और श्रोता पूर्ण तन्मयता से उसे सुनते हैं उसकी शिक्षाओं को ग्रहण करते हैं और उसके अनुसार आचरण करके कृतकृत्य होते हैं उसी प्रकार हम पति पत्नी भी एक दूसरे के कथन को सप्रेम अङ्गीकृत करने और उसके अनुसार आचरण करते रहने की घोषणा करते हैं।

कैसी उत्कृष्ट वैदिक व्यवस्था है यह पति-पत्नी के पारस्परिक सम्बन्धों की। ऐसे आदर्श सम्बन्ध निश्चय ही परिवार व समाज के लिए सुखदाता होते ही हैं, उत्कृष्ट शिष्टाचार का भी परिचय देते हैं, तथा सन्तान के लिए अनुकरणीय होते हैं, लेकिन विपरीत उसके आजकल प्राय पति-पत्नी में मतभेद मनमुटाव, तनाव बात-बात में वाद विवाद और लड़ाई झगड़े होते देखे जाते हैं। कारण है ना समझी, शिष्टाचारी शिक्षा की कमी अहम्भाव, मिथ्याभिमान, स्वार्थ, अविश्वास व एक दूसरे पर अपने व्यक्तित्व का प्रभुत्व जताने का भाव तथा अपने अधिकारों की मांग का आग्रह वस्तुत आदर्श दाम्पत्य सम्बन्ध में यह सब कार्य के विकल्प हैं। न कोई बड़ा न छोटा। दोनों ही के समान स्तर व अधिकार होते हैं। अपने अधिकारों की मांग के स्थान पर उनके त्याग व प्रदान की भावना ही हितकर होती है। मान सम्मान व अधिकार स्वत ही मिले जाते हैं।

( शेष पृष्ठ 7 पर )

## सम्पादकीय—

# पंजाब की वर्तमान परिस्थितियों में आर्यसमाज क्या करे?

पंजाब की परिस्थितियां अभी सुधरने मे नही आ रही। यह भी कहना कठिन है कि अभी इनके सुधार होने में कितना समय लगेगा। अब यह स्पष्ट होता जा रहा है कि जो कुछ पंजाब मे हो रहा है उसके पीछे कुछ विदेशी शक्तियां भी काम कर रही हैं। अमेरिका, बर्तानिया, कैनेडा और पाकिस्तान यह चारों शक्तियां मिलकर भारत में ऐसा विघटन पैदा करने का प्रयास कर रही हैं जिसके द्वारा भारत के कुछ और टुकडे हो जाए। जो लोग खालिस्तान की बात कर रहे हैं वह केवल विदेशी शक्तियो के इशारो पर ही नाच रहे हैं या हम यह कह सकते हैं कि यह विदेशी शक्तियां भारत के इन विघटनकारी तत्वो को प्रोत्साहन देने के लिए यह सब कुछ कर रही हैं। इस समस्या को हम किसी भी दृष्टिकोण से देखें, यह बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है कि पंजाब मे जो कुछ हो रहा है वह थोड़े से व्यक्तियो का ही काम नही, इसके पीछे एक बहुत बड़ा अन्तर्राष्ट्रीय षडयन्त्र है। हम उसकी किसी भी स्थिति मे अवहेलना नही कर सकते। इसलिए आर्य समाज का उत्तरदायित्व बहुत बढ़ जाता है। यही एक ऐसी संस्था है जिसने सदा ही प्रत्येक समस्या को राष्ट्रीय दृष्टिकोण से देखा। वैसे तो हमारे देश मे और भी कई धार्मिक संस्थाएं हैं। आर्य समाज का एक विशेष महत्व है। यह धार्मिक संस्था तो है ही परन्तु देश की राजनीतिक और सामाजिक समस्याओं की भी यह कभी अवहेलना नहीं करती और जब उन पर विचार करने लगती है तो राष्ट्रीय दृष्टिकोण से ही सोचती है। आर्य समाज किसी भी स्थिति में साम्प्रदायिकता का पोषण नहीं कर सकती। यह इसलिए कि आर्य समाज का आधार वेद हैं और वेद किसी एक देश या सम्प्रदाय के लिए नही बनाए गए थे। यह तो मनुष्य मात्र की सम्पत्ति है। इस्लाम केवल मुसलमानो की बात करता है, ईसाईयत केवल ईसाईयो की बात करता है। सिख धर्म केवल उन व्यक्तियो के विषय मे ही सोचता है जो दसों गुरुओं मे श्रद्धा रखते हैं। वैदिक धर्म ही ऐसा धर्म है जो सारे मनुष्य मात्र के लिए है। यह हिन्दू सिख मुसलमान के भेदभाव को नही जानता इसे चिन्ता है तो मानव मात्र की। इसलिए आर्य समाज कभी साम्प्रदायिक दृष्टिकोण से नही सोच सकता। यही कारण है कि जो परिस्थितियां आज हमारे देश में और विशेषकर पंजाब मे पैदा हो गई हैं, आर्य समाज उन्हे साम्प्रदायिक दृष्टिकोण से नही देखता। उसके सामने विशुद्ध राष्ट्रीय दृष्टिकोण है। उसी के आधार पर पंजाब की समस्या पर विचार करने के पश्चात आर्य समाज इस परिणाम पर पहुंचता है कि जो कुछ किया जा रहा है वह हमारे देश से और हमारे राष्ट्र से द्रोह है। जो लोग आज खालिस्तान की बोली बोल रहे हैं वह उसी मनोवृत्ति के शिकार हो रहे हैं जिस मनोवृत्ति ने पाकिस्तान बनवाया था। किसी को इस भ्रांति मे न रहना चाहिए कि पंजाब की समस्या केवल चण्डीगढ या नहरी पानी की समस्या है। अकालियो का उग्र युद्ध बीडी सिगरेट की बिक्री पर प्रतिबन्ध लगाने की मांग से प्रारम्भ हुआ था। उसके पश्चात चण्डीगढ और नहरी पानी का प्रश्न उठा दिया गया। फिर यह कहने लगे कि पंजाब की नई सीमा बन्दी होनी चाहिए और जो पंजाबी बोली वाले क्षेत्र हरियाणा मे रह गए हैं वह पंजाब को मिलने चाहिए। अभी यह आन्दोलन चल ही रहा था कि विधान मे संशोधन की मांग कर दी गई। इसी के साथ 2 गोलियां भी चलने लगीं, बम भी फटने लगे और अब तो यह स्पष्ट हो गया है कि यह सब कुछ बाहिर की कुछ शक्तियां करा रही थीं। इसलिए पंजाब की समस्या को हिन्दू-सिख की समस्या नही कहना चाहिए। यह एक अन्तर्राष्ट्रीय षड्यन्त्र है। इसलिए आर्य समाज का उत्तरदायित्व और भी बढ़ जाता है। इस पर हमें बड़ी गम्भीरता से विचार करना चाहिए और आर्य समाज को अपने उत्तरदायित्व को समझते हुए जो कुछ करना चाहिए उस पर विचार करके आर्य जनता के सामने रखना चाहिए और आर्य जनता को उसे अपने देशवासियो के सामने भी रखना चाहिए। समस्या क्या है और इसका समाधान क्या है? इसके विषय मे आगामी अंक में अपने विचार पाठकों के सामने रखूंगा।

—वीरेन्द्र

# करतारपुर पहुंचो

श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय करतारपुर का वार्षिकोत्सव फिर आ गया है। यह 23 सितम्बर से 30 सितम्बर तक चलेगा। 23 सितम्बर से यजुर्वेद पारायण यज्ञ प्रारम्भ होगा। जिसकी पूर्णाहुति 30 सितम्बर प्रातः 9 बजे डाली जाएगी। इस यज्ञ के ब्रह्मा पूज्य महात्मा दयानन्द जी होंगे। इसके अतिरिक्त 29 और 30 सितम्बर को कई सम्मेलन भी होंगे जिनमे श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज श्री आचार्य सत्यकाम जी वेदालंकार, श्री पृथ्वीराज जी शास्त्री बहिन कमला जी आर्या और दूसरे कई प्रतिष्ठित व्यक्ति अपने विचार जनता के सामने रखेंगे। इसके अतिरिक्त इस विद्यालय के ब्रह्मचारी शारीरिक व्यायाम का प्रदर्शन करेंगे और अपना बौद्धिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत करेंगे।

पंजाब की आर्य जनता से मेरा सविनय निवेदन है कि वह अधिक से अधिक संख्या मे इस अवसर पर विशेषकर 29 और 30 सितम्बर को करतारपुर पहुंचे। यह विद्यालय आर्य जनता का विद्यालय है और पंजाब की विकट परिस्थितियो के होते हुए भी यह दिन-प्रतिदिन प्रगति कर रहा है। हम सब का यह कर्तव्य है कि हम इस संस्था के अधिकारियो, इसके अध्यापकों और ब्रह्मचारियों को जितना भी प्रोत्साहन दे सकते हैं दें। इसलिए हमे अधिक से अधिक संख्या में करतारपुर पहुंचना चाहिए।

—वीरेन्द्र

# श्री स्वामी सच्चिदानन्द जी सरस्वती का सभा को सहयोग

श्री स्वामी सच्चिदानन्द जी सरस्वती अमृतसर वाले जिनका पहला नाम श्री मथुरादासजी वानप्रस्थी था ने सभा की प्रार्थना पर सारा अक्तूबर और नवम्बर मास के पहले दो सप्ताह अवैतनिक रूप मे सभा को देने स्वीकार कर लिए हैं। उनका प्रथम अक्तूबर से 7 अक्तूबर तक आर्य समाज कपूरथला का कार्यक्रम बना हुआ है। शेष सप्ताहों के भी कार्यक्रम बनाए जा रहे हैं। जो भी आर्य समाजें उन्हे अपनी समाज मे प्रचारार्थ बुलाना चाहें वह शीघ्र ही सभा को पत्र लिखें ताकि स्वामी महाराज से उनकी समाज मे पधारने की प्रार्थना की जा सके।

—कमला आर्या सभा महामन्त्री

# सभा महामन्त्री श्रीमती कमला आर्या का लुधियाना में भव्य स्वागत : 5100 रुपए की थैली भेंट की गई

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की महामन्त्री श्रीमती कमला आर्या का जिला आर्य सभा लुधियाना की ओर से 9-9-84 रविवार को आर्य समाज दयानन्द बाजार लुधियाना में भव्य स्वागत किया गया। नगर की सभी आर्य समाजों व स्त्री आर्य समाजो तथा शिक्षण संस्थाओं ने इस समारोह मे भाग लिया। भारी संख्या मे आर्य भाई बहिन वहां उपस्थित थे।

यह स्वागत समारोह श्रीमती कमला आर्या के आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामन्त्री बनने के उपलक्ष मे किया गया। इस अवसर पर उपस्थित सभी आर्य बन्धुओं ने बहिन कमला जी आर्या को सभा के कार्यों मे पूरा 2 सहयोग देने का आश्वासन दिया जिला सभा के प्रधान श्री महेन्द्रलालजी वर्मा द्वारा इस अवसर पर महामन्त्री कमला आर्या का स्वागत करते हुए उन्हे आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के भवन निर्माण के लिए 5100 रुपए की थैली भेंट की गई। अन्त मे श्री आशानन्द जी आर्य, श्री कुलवन्तराय जी सूद और श्री अयोध्या प्रसाद जी मल्होत्रा ने स्वागत किया।

—आशानन्द आर्य जिला आर्य सभा लुधियाना

# अजमेर—दर्शन

ले.—श्री अमरनाथ जी आर्य एम. ए. तलवाड़ा

( 16 सितम्बर से आगे )

तदनन्तर अपने भाषण के उत्तरार्द्ध मे उन्होने कुशल नेता सुलभ दक्षता से राजनैतिक पुट देते हुए अन्य भी बहुत-सी बातें कहीं, व जिन सकटपूर्ण समस्याओ से देश आज, दो-चार हो रहा है उनकी ओर सकेत करते हुए उन्होंने कहा—कि आज सगठन व एकजुटता ही एक ऐसी शक्ति है, जिससे हम किसी भी स्थिति का सामना कर सकते हैं।

शेष बातो को यहा उद्धृत करना विषयान्तर होगा, इसलिए उन्हे यहा नही दिया जा रहा है। क्योकि अधिकतर पाठको ने उस भव्य कार्यक्रम को समाचार पत्रो मे पढा, रेडियो पर सुना और टेलीविजन पर देखा भी होगा।

उपरोक्त विचार हमारी माननीय प्रधानमन्त्री के हैं, जो उन्होने वहा अपनी विशिष्ट शैली और राजनैतिक भाषा मे प्रस्तुत किए। मैंने उन्हे क्रमबद्ध तथा साहित्यिक भाषा मे पाठको के समक्ष प्रस्तुत करने का मात्र प्रयास किया है।

प्रधान मन्त्री के भाषण परिसमापन पर (उन्हे शताब्दी समारोह के अध्यक्ष, स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती द्वारा परोपकारिणी सभा द्वारा-नव-प्रकाशित दुर्लभ ग्रन्थ दयानन्द ग्रन्थ माला जिसमें ऋषि प्रणीत क्रमश सस्कार विधि, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, भ्रमोच्छेदन, भ्रान्ति निवारण, व्यवहार भानु, पच-महा यज्ञविधि, आर्योद्देश्य रत्नमाला, गो-करुणानिधि तथा स्वीकार पत्र, य नौ ग्रन्थ सकलित हैं) भेंट किया गया और इसके साथ ही उन्हे महर्षि की जीवनी और स्मारिका भी भेंट की गई।

तदोपरान्त सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान लाला रामगोपाल जी शालवाले ने अपने विद्वतापूर्ण व प्रौढ विचार व्यक्त करते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द ज्ञान के जलते हुए एक विराट् दीपक थे, जिन्होने अपनी अपूर्व साधना लौ से हजारो दीपक प्रज्जवलित किए, जो अनन्त काल तक जलते रहकर विश्व को प्रकाशमान करते रहेगे।

उन्होने इस शुभवसर पर यह घोषणा भी की कि आर्य समाज अग्रेजो के विरुद्ध 1857 मे भारत की प्रथम क्रान्ति के दौरान महर्षि दयानन्द की भूमिका पर शोध करेगा। क्योकि 1856 से 1860 तक के अपने अज्ञात वास काल का उन्होने अपने किसी भी ग्रन्थ मे कोई उल्लेख नही किया। अत यह जानना आवश्यक है कि महर्षि ने अपने सोद्देश्य व सतत्-साधनारत जीवन के वे चार वर्ष कहा और क्या करते हुए बिताए।

उन्होंने प्रधानमन्त्री से यह अनुरोध भी किया कि 1985 मे मनाई जाने वाली राष्ट्रीय कांग्रेस की शताब्दी के अवसर पर प्रकाशित कांग्रेस के इतिहास मे आर्य समाज का इतिहास भी सम्मिलित किया जाए क्योकि आर्य समाज ने ही सर्वप्रथम देश का आजादी का नारा दिया था।

अपने भाषण के अन्त मे उन्होने आर्य जगत् को उसके स्वतन्त्रता सघर्ष में गौरवमय इतिहास का स्मरण दिलाते हुए उसे विघटनकारी तत्वो के विरुद्ध सघर्ष मे सरकार को भरपूर सहयोग देने का आह्वान भी किया।

तत्पश्चात्, देश-विदेश से आए आर्य समुदाय का स्वागत करते और उनका आभार व्यक्त करते हुए शताब्दी समारोह समिति के कार्यकारी प्रधान प्रो शेरसिंह ने कहा कि महर्षि दयानन्द भारत मे राजनैतिक व सामाजिक क्रान्ति के अग्रदूत थे, उन्होने ससार के समक्ष रूढिवाद व अन्धविश्वास के विरुद्ध सघर्ष का शखनाद किया और स्त्री शिक्षा फैलाने छुआछूत मिटाने व दलितोत्थान के लिए मार्ग प्रशस्त कर मानव समानता व भलाई का एक नया दर्शन ससार के समक्ष रखा। उन्होने आगे कहा कि महान् समाज सुधारक देव दयानन्द प्रथम राष्ट्रवादी महापुरुष थे, जिन्होने देशवासियो मे राष्ट्रीय चैतन्य का सूत्रपात किया।

अन्त मे उन्होंने राष्ट्रीय एकता पर बल देते हुए आर्यजनो से राष्ट्रीय एकता के किसी भी खतरे के विरुद्ध सदैव कटिबद्ध व एकजुट रहने का आह्वान करते हुए अपने विचारो को विराम दिया।

तदनन्तर स्वामी ओमानन्द सरस्वती का आशीर्वादात्मक सक्षिप्त अध्यक्षीय भाषण हुआ और उस दिन की प्रथम सभा अपने भव्य परिसमापन की अन्तिम सीढी पर पहुचती है।

अब तक प्रधानमन्त्री की सवारी धीरे-धीरे—भारी भीड को चीरती हुई, घूघरा हैलीपैड की ओर अग्रसर हो चुकी थी, जहा पर सैनिक हैलीकाप्टर उन की प्रतीक्षा कर रहा था। उसमें बैठते ही, उपविमान शनै शनै (ऊपर उठता हुआ) आकार में क्रमश छोटा होता गया और फिर वह एक छोटे से बिन्दु में परिणत हो जाता है और अन्त में वह बिन्दु भी अन्तर्लीन व्योम की गहन नीलिमा में समाहित हो जाता है।

अब विचार प्रवाह थमता है और मैं मंच की ओर देखता हू। श्रोतागण अपने स्थानों से उठते हैं। इस भाविक शताब्दी समारोह के प्रथम दिन की यह प्रथम बैठक अपने पर्यवसान में समाहित हो जाती है।

तब समय की ओर ध्यान देने से ज्ञात हुआ कि मध्यान्ह के डेढ़ बज चुके हैं और पेट मे चूहे दण्ड पेल रहे हैं। अत हम भी लम्बे पग भरते भोजनालय की ओर सरक जाते हैं।

शाम अढाई बजे—

दूसरी सभा, महिला सम्मेलन।

इस सभा का शुभारम्भ, आर्य गुरुकुल पोरबन्दर की छात्राओं द्वारा प्रस्तुत वेदगान से होता है। लगभग दस बालिकाए जिनकी आयु नौ से ग्यारह वर्ष तक की थी, अपने विद्यालय की विशिष्ट परिभूषा मे सज्जित मच पर प्रस्तुत होती हैं तथा अत्यन्त सुरीले स्वर मे वेद ऋचा का ससकैत गायन करती हैं फिर प्रार्थना व तदोपरान्त निम्नलिखित गीत पक्तियो द्वारा ऋषिवर को अपने श्रद्धा सुमन समर्पित करती है—

मेरा लीजो प्रणाम ऋषिराज दयानन्द,<br>ऋषिराज दयानन्द ऋषिराज दयानन्द।<br>तुमको शत् शत् प्रणाम, ऋषिराज<br>दयानन्द।

दीप-शिखा सम सुन्दर व हृष्ट-पुष्ट उन बालिकाओ की गायन-कला, स्वर-साधना ऋचाओ का शुद्ध उच्चारण व भावों को प्रदर्शित करने की सकेत-कला अपने मे एक बेजोड दृश्य प्रस्तुत करती है, जिससे सभी श्रोता झूम उठते हैं।

तदनन्तर उनमे से एक बालिका ने बड़े आकर्षक व प्रभावशाली ढग से, उत्साहवर्धक शब्दावली मे गुरुकुल शिक्षा प्रणाली पर विचार व्यक्त करते हुए कहा कि इस शिक्षा पद्धति द्वारा छात्रो में बुद्धि विकास के साथ-साथ आत्म विस्तार, शारीरिक, सबलता, मानसिक सन्तुलनता व अदभुत साहस की अभिवृद्धि भी होती हैं। इतना ही नही बल्कि उनमे समन्वयात्मकता व सर्वागीण का भी समुचित विकास होता है। जिससे उसमे आज के सघर्षपूर्ण ससार में सफलतापूर्वक जीने की योग्यता व क्षमता उत्पन्न हो जाती है। यह क्रियात्मक रूप से सिद्ध हो चुका है।

उसने पुन कहा कि मर्यादा पुरुषोत्तम राम के युग से भी बहुत पहले से लेकर, योगीराज कृष्ण के युग से बहुत बाद तक आर्यावर्त के पावन वातावरण में इसी शिक्षा पद्धति की सुमधुर गूज गूंजती रही है, जिसने भारत को राम व कृष्ण जैसे युग पुरुष दिये।

परन्तु बाद में यह अमूल्य धरोहर अज्ञानकाली वश भारत के हाथो से खिसक गई, और इससे देश को जो हानि हुई उसका गवाह हमारी दासता का लम्बा इतिहास है।

परन्तु सौभाग्य ही था कि प्राचीन भारतीय सभ्यता के प्रबलतम जिज्ञासक महर्षि दयानन्द ने सहस्रो वर्षों से खोयी उस सम्पत्ति को खोज निकाला और उसे पुन भारत के हाथों सौपते हुए आर्यावर्त में गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली का पुन-स्थापन करके संसार का बड़ा भारी उपकार किया है। अन्त मे अग्नि शिखा-सम प्रचण्ड उस बालिका ने जोर से ऋषिवर की जय-ध्वनि के साथ अपने विचारो को विराम दिया।

इससे सभी श्रोता बड़े प्रभावित हुए और करतल ध्वनि से अपनी श्रद्धा व प्रसन्नता प्रकट की।

अब उस सभा की विशिष्ट अतिथि श्रीमती कमला शिक्षा मन्त्री राजस्थान जो उनके कथनानुसार आर्य परिवार की एक उच्च शिक्षा प्राप्त कन्या है, ने नारी का समाज मे स्थान व आधुनिक युग में नारी शिक्षा की अनिवार्यता पर सुचारु व प्रभावशाली ढग से अपने विचार व्यक्त किये। जिनका अनुवाद इस भान्ति है—

उन्होंने अपने भाषण का समारम्भ भगवान् मनु के इस वाक्य, उद्बोधन से किया कि—

'यत्र नार्यास्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता।'

उन्होने कहा कि सामाजिक परिस्थितियो वश महाभारत के पश्चात् तथा महर्षि दयानन्द से पूर्व तक, पुरुष प्रधान भारतीय समाज ने नारी जाति के समस्त अधिकार निलम्बित कर दिए थे और बात यहा तक पहुच गयी थी कि शिक्षा प्राप्ति, विचार अभिव्यक्ति व अपना स्वतन्त्र अस्तित्व तक स्वीकार करने जैसे उसके मौलिक अधिकार भी उससे छिन गए थे तथा उसे अपनी चल-सम्पत्ति स्वरूप समझा जाता था। अत नारी जाति की दयनीय स्थिति का कच्चा चिट्ठा पेश करते हुए उन्होंने अपना व्यक्तिगत अनुभव सुनाते हुए कहा कि वह राजस्थान प्रान्त के सर्वाधिक पिछड़े जिला झुनझुनु की निवासिनी हैं। 1936-37 के लगभग उनके पिता के उन्हे जब पाठशाला भेजने का निश्चय किया तो सारे गाव ने इसका विरोध किया और इसे अपने गाव के लिए हास्यास्पद व लज्जाजनक करार दिया। उन्होंने फिर बताया कि सौभाग्य से उनके पिता जी स्वयं आर्य समाजी विचारों से प्रभावित थे, इसलिए उन्होंने अपनी बिरादरी व गांव के कड़े विरोध की ओर ध्यान न देते हुए अपनी बालिका की शिक्षा को जारी रखा।

(क्रमश:)

# गाँधी दर्शन में ब्रह्मचर्य का आदर्श

ले.—डा. श्री दीनानाथ शर्मा, मुख्याध्यापक गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय हरिद्वार, सहारनपुर

ब्रह्मचर्य की महिमा सभी धर्म ग्रन्थो में गाई जाती है। ब्रह्मचर्य का अर्थ है—ऐसे मार्ग पर चलना जिससे मनुष्य शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक, सभी दृष्टियो से महान् बन सके। गांधी जी के अनुसार ब्रह्मचर्य साधु और गृहस्थ दोनो के लिए ही अत्यन्त महत्व का विषय है। गांधी जी ने लिखा है—मन, वाणी और काया से सम्पूर्ण इन्द्रियो का सदा सब विषयो में संयम ब्रह्मचर्य है, ब्रह्मचर्य का अर्थ शारीरिक संयम मात्र नही है बल्कि उसका अर्थ है—सम्पूर्ण इन्द्रियो पर पूर्ण अधिकार और मनसा, वाचा कर्मणा, काम-वासना का परित्याग। इस रूप मे वह आत्म साक्षात्कार या ब्रह्म प्राप्ति का सीधा और सच्चा मार्ग है।

डा मगलदेव शास्त्री के अनुसार—ब्रह्मचर्य शब्द का अर्थ है—वेदाध्याय, ब्रह्मचारी का अर्थ है—वेद पाठी तथा ब्रह्मचर्याश्रम का अर्थ है—वेदाध्ययन करने के लिए आचार्य कुल में निवास।

भारत मे दर्शन के सबसे महत्त्वपूर्ण एव मूलभूत साध्य के रूप मे धर्म अर्थ, काम और मोक्ष पुरुषार्थ चतुष्टय की प्राप्ति के लिए चतुराश्रम व्यवस्था या ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एव सन्यास आश्रमो द्वारा मानव जीवन को व्यवस्थित रीति से व्यतीत करते हुए 'जीवेम् शरद शतम् शृणुयाम् शरद शतम्' का आदर्श रखा गया है। ब्रह्मचर्य शब्द का सीधा अर्थ है—ब्रह्म प्राप्ति के लिए चर्या। डा मगलदेव शास्त्री के अनुसार समस्त सृष्टि के मूल कारण ब्रह्म या ज्ञान रूप वेद की प्राप्ति के उद्देश्य से व्रत ग्रहण करना ब्रह्मचर्य है। आचार्य विनोबा के अनुसार ब्रह्मचर्य का अर्थ ब्रह्म की खोज मे अपना जीवनक्रम रखना या सबसे विशाल ध्येय परमेश्वर का साक्षात्कार करना है।

वेदों में ब्रह्मचारी शब्द का अर्थ इस प्रकार मिलता है—सायणाचार्य के अनुसार वेदात्मक ब्रह्म का अध्ययन करने का आचरण जिसका है, उसे ब्रह्मचारी कहते हैं ब्रह्मचारी ब्रह्मणि वेदात्मके अध्येतव्ये चरितु शील यस्य स: ।

पतञ्जलि ने 'ब्रह्मचर्येन्द्रिय संयम' कहकर शारीरिक संयम की बात कही है, [illegible] में सत्य, तप, भूत दया एव इन्द्रिय-निरोध रूप ब्रह्म की चर्चा पाई जाती है। [illegible] की खोज के हेतु सम्यक् ज्ञान दर्शन चरित्रात्मक मार्ग को ब्रह्मचर्य कहा है। बौद्ध पिटको मे ब्रह्मचर्य शब्द तीन अर्थों मे प्रयुक्त हुआ है—बौद्ध धर्म मे वास। निर्वाण प्राप्ति के हेतु चर्या अथवा मैथुन विरमण। छान्दोग्य उपनिषद् के अनुसार 25 वर्ष पर्यन्त ब्रह्मचर्य व्रत पालन कनिष्ठ ब्रह्मचर्य 44 वर्ष तक मध्यम ब्रह्मचर्य एव 48 वर्ष तक उत्तम ब्रह्मचर्य कहलाता है। हमारे समक्ष आजन्म एव अखण्ड ब्रह्मचारियो के आदर्श भी उपस्थित है जैसे शुकदेव, भीष्मपितामह शकराचार्य, विवेकानन्द, दयानन्द आदि।

महात्मा गांधी ने वैवाहिक ब्रह्मचर्य के आदर्श को रखते हुए कहा है कि सर्व प्रथम मनुष्य को नैष्ठिक ब्रह्मचारी बनने के का आदर्श रखना चाहिए परन्तु यदि विवाह करना ही पड़े तो पति-पत्नी तक ही प्रेम का सीमित न रखकर उसे सर्वव्यापक बना देना चाहिए। यदि एक पुरुष अपना समस्त प्रेम अपनी पत्नी को सौंप दे तो वह अकिंचन हो जाएगा, 'वसुधैव कुटुम्बकम्' को मनसा, वाचा, कर्मणा वह नही अपना सकता। अत ब्रह्मचारी को जिसने सत्य का वरण किया है, विवाह नही करना चाहिए। यदि वह किसी और वस्तु की उपासना करता है, भले ही पत्नी या पति की उपासना हो, वह व्यभिचारी बन जाता है। अत अहिंसा या सर्वव्यापी प्रेम व्रत लेने वाले के लिए विवाह उचित नही है।

जिस प्रकार मुर्दे को छूकर हम जरा भी प्रभावित न्ही होते, वैसा ही परम सुन्दरी नारी के स्पर्श से भी जब हम मे कोई विकार पैदा न हो, तब ही अपने को सच्चा ब्रह्मचारी मानना चाहिए। इतना ही नही, महात्मा गांधी ने उसे ब्रह्मचर्य माना ही नही जिसमें स्त्री स्पर्श तक वर्जित है। निर्विकार सम्बन्ध एक शैय्या शयन एकान्त मे अकेला स्त्री के साथ निवास आदि गांधी के जीवन मे चलते रहे और ऐसी बातों के प्रति उन्होने कोई कट्टर आग्रह भी नही दिखलाया है, यदि इन बातो को जरा भी महत्व उन्होने दिया है तो सिर्फ यहीं तक जब तक कि साधक को अभ्यास न हो जाए और उसके अन्दर से मोह भाव बिल्कुल नष्ट न हो जाए।

ब्रह्मचर्य के स्थायित्व का एक उपाय उपवास भी है। उपवास का अर्थ है—'उप समीपे वास' यानि ईश्वर के समीप निवास। मन ही इसका मूलाधार है। उपवास वही कर सकता है जिसका मन निर्विकार हो। विकारयुक्त मन षट्रस भोजन के सपने देखा करता है। जैसे भोजन इन्द्रियों को मिलता है, तदनुसार विचार भी बदला करते हैं। उपवास से मन में स्वभावत पवित्र विचार उत्पन्न होते हैं। अत. संयम की ओर पवित्र मन को निराहार बल स्फूर्ति विचारो मे दृढ़ता, रोग, शोक से मुक्ति देता है। जैसे-जैसे मन निर्विकार होता जाता है, शरीर स्वस्थ एव तेजोमय होता जाता है। गांधी जी ने पुस्तकीय ज्ञान की अपेक्षा चरित्र गठन को अधिक महत्व दिया है। श्रवण कुमार की कथा ने गांधी जी को मा-बाप की सेवा के लिए प्रेरित किया, जिसे उन्होंने सेवा का एक अग माना। गांधी जी ने शुकदेव को आदर्श ब्रह्मचारी माना। उनकी स्थिति को प्राप्त करना अपना लक्ष्य बनाया। अर्थात् पुरुषार्थ होते हुए भी वीर्यवान् होते हुए भी नपुंसकता की प्राप्ति। उनका विश्वास था कि—स्वय उन्हे इस आदर्श की सिद्धि हो चुकी है और भारतीय संस्कृति मे द्विलिंग मानसिकता की चरम प्राप्ति की प्रमाण परीक्षा के लिए उन्होने लगभग 78 वर्ष की आयु मे अन्तिम और बड़े प्रयोग किए। कुछ आलोचको ने महात्मा गांधी के ब्रह्मचर्य विषयक प्रयोगों पर आक्षेप किया है। मनुष्य ईश्वर नहीं है, मनुष्य में कुछ दुर्बलताए है और रहेंगी ही। महात्मा गांधी की महानता है कि उन्होंने अपनी सभी कमजोरियो को स्पष्ट रूप से बताया और उनसे ऊपर उठ गए। तभी तो वे इतने महान् हो सके और ससार के सामने आदर्श रख सके। शायद ही कोई व्यक्ति होगा जो अपनी अन्तरात्मा को इतने स्पष्ट रूप से खोल सके। यह स्पष्टवादिता उनके नैतिक चरित्र की महत्ता को प्रदर्शित करती है। उनका चरित्र एव मनोबल इतना ऊंचा था कि उन्होने अपनी सभी अपूर्णताओ को अस्पष्ट रूप से बिना दुराव-छिपाव के या बिना हिचकिचाहट के जनता के समक्ष रख दिया। परन्तु साधारण जनता उनके अत्युच्च आदर्श को सही रूप मे नही समझ पाती। अत तत्पश्चात् महात्मा पर अब्रह्मचर्य का आरोप उचित नही। वृद्धावस्था मे साधारण व्यक्तियो मे भी सम विकार नही होते और महात्मा गांधी तो जितेन्द्रियता के प्रतीक ही थे। वह साधारण कोटि के साधक नही थे और उनके ब्रह्मचर्य का आदर्श सामान्य स्तर के विधि निषेधो से बहुत ऊपर था।

—

( प्रथम पृष्ठ का शेष )

इच्छा शक्ति हो। इस योग्यता के साथ अगर लौह दण्ड भी हमारे हाथ मे हो तो एक राष्ट्र क्या, सारी पृथ्वी को हम भय मुक्त कर सकते हैं।

छत्रपति शिवा जी ने जब अपने पराक्रम और शौर्य द्वारा राज्य का निर्माण कर लिया तो वे अपने गुरु सन्त रामदास के पास गए और सभी राज्य उनके चरणो पर न्यौछावर कर दिया। शिवा जी को एक टक रामदासजी ने देखा और कहा मुझे राज्य नहीं चाहिए। तुम्हारे जैसे वीर एक सौ एक शिवा मुझे चाहिये निर्माण के स्थान पर अब राज्य की रक्षा की बारी है क्या इसकी रक्षा मैं करू, स्वस्थ शरीर मे ही स्वस्थ आत्मा रहता है। स्वस्थ आत्मा रक्षा का पहला पाया है। प्रजा के मजबूत शरीर राज्य की अभेद्य दीवारें होती हैं। शिवा जाओ, अपनी प्रजा को देह धर्म सिखाओ—देह के प्रति हमारी उपेक्षा बहुत अधिक हो चुकी है, यही हमारे पतन का मूल कारण है।

एक दिन स्वामी विवेकानन्द से कुछ नवयुवकों ने दिव्य जीवन का सही मार्ग पूछा। स्वामी विवेकानन्द ने कहा—तुम्हारा धर्म है बलवान् बनना। यह मिलेगा अखाड़ो मे खेल के मैदानो मे, पहाड़ो और नदियों की खतरनाक छातियो में आज हमें अर्जुन चाहिए जो शक्ति की उपासना करे, जो दुर्जनो और दुष्टो से इस भूमि को मुक्त करे। नवयुवको का स्वधर्म सदैव बल की पूजा करना रहा है। बलवान बनो, यही मेरा गुरु मन्त्र है।

1905 ई मे जापान ने रूस को जो पराजय दी वह एशिया की यूरोप पर विजय थी। लोकमान्य तिलक ने उस समय जो शब्द कहे थे वे प्रत्येक नवयुवक के लिए ध्यान देने योग्य है। उन्होने कहा छोटे से जापान ने विशाल रूस को पछाड़ दिया। जानते हो, इसका रहस्य क्या है? जापान के नवयुवको ने बल की उपासना की है। बल ही सारी सिद्धियो की कुंजी है। बलहीन कही कुछ भी नही कर सकता है। जिस शरीर की नसो मे गर्म-गर्म खून दौड़ता है, वह शरीर कभी गुलाम नही बनाया जा सकता। शरीर पहला धर्म है। बैल का पेट ही आंधियां सह सकता है। बल का उपासक सिंह ही निर्भय विचर सकता है। आओ, इन मुलायम हड्डियो मे फौलाद भरो, इन रूखे चेहरो पर सुर्खी लाओ। आज कुछ भी ऐसे नवजवान मुझे मिल जाए तो स्वराज्य मेरी मुट्ठी मे है।'

( क्रमश )

# साहित्य द्वारा आर्य समाज के प्रचार की योजना

ले —डा सत्यव्रत जी सिद्धान्तालकार

आर्य समाज को तीव्रगति देने के लिए इतना ही आवश्यक नहीं है कि हम अपनी गतिविधियो को साप्ताहिक सत्सगो तक ही सीमित रखें, यह भी आवश्यक है कि हम एसे कदम उठाए ताकि समाज का साहित्य घर-घर मे मौजूद हो ताकि समय मिलने पर या समय निकाल कर गृहस्थी लोग स्वय तथा उनके पुत्र-पुत्रिया एव मित्रगण उस साहित्य से लाभ उठा सकें। सत्सगो मे कई आते हैं, कई नही आते। इसके अतिरिक्त हमे सिर्फ आर्य समाज के सदस्यो तक ही अपने को सीमित नही रखना सभी के यहा पहुचना है। उत्तम साहित्य का चुनाव भी हर कोई नही कर सकता न हर कोई धार्मिक तथा सामाजिक साहित्य की खोज मे मारा फिरता है। कई लोग पूछा करते हैं कि कौन सा ग्रन्थ पढें। जो सस्था अपना प्रचार करती है वह सत्सग क अलावा अपना साहित्य घर घर पहुचाने का भी प्रयत्न करती है। ईसाइयो ने इस दिशा मे बहुत प्रगति की है। कई आय समाजो ने अपने यहा आर्य साहित्य की बिक्री का भी प्रबन्ध किया हुआ है। दीवान हाल आय समाज के हाल मे सावदेशिक सभा ने अपने सम्पूण साहित्य की बिक्री का प्रबन्ध किया है परन्तु सावदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित साहित्य के अलावा अन्य व्यक्तियो तथा सस्थाओ ने भी अत्यन्त उच्चकोटि का आय सामाजिक तथा वैदिक साहित्य प्रकाशित किया है जिसका महत्व बहुत अधिक है। इसी प्रकार कई आर्य समाजे सिफ पुस्तकालय खोलकर ही सन्तुष्ट नही क्योकि पुस्तकालय का समय सबको अनुकल नही पडता। उनका अपना बिक्री विभाग भी है परन्तु उसमे भी आय समाज का उच्च कोटि का साहित्य है यह सन्देहास्पद है। आर्य समाज फिलहाल बिक्री विभाग को विस्तृत योजना को चलाने मे कदम नही बढा सकती क्योकि बिक्री विभाग खोल देने की योजना मे बहुत अधिक व्यय तथा प्रबन्ध करने की आवश्यकता है। अनेक आर्य समाजो ने पुस्तकालय तो खोले हैं परन्तु उनका कुछ उपयोग नही हुआ न हो रहा है। जमाना ऐसा है कि लोग घर बैठ सब काम चाहते हैं। इन सब बातो को दृष्टि मे रखते हुए मैं समझता हू कि निम्न योजना को आधार बनाकर काम शुरू कर देना उचित होगा।

हमारे साहित्य को दो भागो मे बाटा जा सकता है। एक साहित्य ट्रैक्टों के रूप मे है। आर्य समाज की विचार धारा पर सैकडो ट्रैक्ट छपे हुए हैं। इनको चुनकर और यह देखकर कि कौन से समयानुकूल हैं उन्हें हमे घर घर मुफ्त पहुचाना चाहिए जैसा ईसाई लोग करते हैं। दूसरा साहित्य वह है जो उच्चकोटि का है जिसे मुफ्त नही बाटा जा सकता परन्तु जो आय समाज की निधि है जिसमे वेद उपनिषद गीता इनके भाष्य तथा वैदिक विचारो को स्पष्ट करने वाले ग्रन्थ आदि आते हैं जिनका व्यक्ति घर बैठे स्वाध्याय कर सकता है। ऐसे ग्रन्थ, उर्दू, हिन्दी तथा अग्रेजी मे हो सकते हैं। इनका अनेक व्यक्तियो को पता तक नही है।

लघु तथा बृहद दोनो प्रकार के आय साहित्य का प्रचार करने के उद्देश्य से निम्न योजना के प्रत्येक आय समाज क्रियान्वित कर सकती है। किस प्रकार क्रियान्वित कर सकती है—इस सम्बन्ध मे निम्न बातो पर विचार किया जा सकता है—

1 उक्त उद्देश्य को क्रियान्वित करने के लिए प्रत्येक आय समाज ट्रैक्ट तथा उच्चकोटि के आय साहित्य की सूची बनाकर प्रचार काय तथा स्वाध्याय के योग्य पुस्तको का घर घर पहुचाने की व्यवस्था करे।

2 इस उद्देश्य से कुछ विद्वानो की एक उपसमिति नियुक्त की जाए जो इस सूची को तैयार करे। इस उपसमिति के कोई एक विद्वान सयोजक नियुक्त किए जाए जो इस सम्बन्ध मे सब कायवाही करे। उपयुक्त यह होगा कि स्थानीय आय समाज के पुरोहित यह काय करे या विद्वानो से सम्पर्क स्थापित कर इस सूची को तैयार करें।

विद्वानो की उक्त सूची मे कुछ औ सज्जन बढाना उचित समझा जाए तो बढा लिए जाए। हर हालत मे इस समिति मे एसे स्थानीय विद्वानो का रखा जाए जो स्वय स्वाध्यायशील हो या अन्य विद्वानो से इस दिशा मे सम्पर्क स्थापित कर सकें।

3 यह व्यवस्था शीघ्रातिशीघ्र क्रियान्वित की जानी चाहिए।

4 फिलहाल ट्रैक्टो को आर्यसमाज अपने दाम से खरीदे या प्रकाशित करे और अन्य उच्चकोटि की पुस्तको को प्रकाशकों तथा लेखकों से एक मास के उधार पर लेने का प्रयत्न करे। प्रयत्न किया जाए कि यह धनराशि दान के रूप मे किसी सज्जन से प्राप्त कर ली जाए अगर दान रूप मे नहीं प्राप्त होती तो भी आर्य समाज के फण्ड से इतनी या जितनी उचित समझी जाए, जो 50 रु प्रति मास से कम नही हो ट्रैक्टों के वितरण मे व्यय की जाए।

5 जिन विशिष्ट पुस्तको को घर-घर पहुचाने की योजना बनानी हो, उनके लेखको तथा प्रकाशको से सयोजक महोदय सम्बन्ध स्थापित करके यह निश्चय करें कि वे प्रचारार्थ अपनी पुस्तको पर ज्यादा से ज्यादा कमीशन देंगे। प्रयत्न किया जाए कि 30 प्रतिशत पर पुस्तकें एक मास के उधार पर प्राप्त की जाए। इस सम्बन्ध मे अन्तिम निश्चय उपसमिति पर छोड दिया जाए।

6 शुरू शुरू मे ट्रैक्टो के अलावा शेष सिर्फ उन पुस्तको का चयन कर जो उधार मिल सक उनसे काय प्रारम्भ किया जाए। धीरे धीरे उपयुक्त पुस्तको की सख्या बढाई जाए और उन्हे घर-घर पहुचाया जाए।

7 आर्य समाज के सेवक के पास चन्दा एकत्रित करने के काम के अलावा समय पर्याप्त रहता है। इस साहित्य को घर-घर ले जाकर दिखलाना और जो जो खरीदना चाहे उन्हें पुस्तकें देने का काम आय समाज का सेवक करे। साहित्य सम्पर्क का यह कार्य सिर्फ आर्य समाजी घरानों में ही नहीं जहां तक सम्भव हो ज्यादा से ज्यादा घरानों में सपर्क स्थापित किया जाए।

8, पुस्तकों को संभाल कर रखने की जिम्मेवारी आर्य समाज के सेवक की रहे जहा सेवक न हो वहा आर्य समाज का पुस्तकालयाध्यक्ष यह सेवा कार्य करे।

9 अगर आर्य समाज का सेवक यह कार्य करे तो जो बिक्री हो उसका 15 प्रतिशत आर्य समाज के सेवक को दिया जाए ताकि वह इस कार्य को रुचिपूर्वक करे।

10 जब कार्य बढ जाए तब इस कार्य को स्थिर रूप देने के लिए नवीन योजना बनाई जाए।

11 इस योजना को क्रियान्वित करने के लिए मिलने तथा पत्र व्यवहारादि मे सयोजक का जो व्यय करना हो उनके लिए 50 रु अन्तरग सभा द्वारा स्वीकृत किया जायें।

—

## आर्य समाज बंगा में वेद प्रचार

आय समाज बगा (जालन्धर) मे 26 अगस्त से 2 सितम्बर तक बड उत्साह से वेद सप्ताह मनाया गया। इस मे इलाके के लोगो ने भी भाग लिया कथा व यज्ञ श्री प रामनाथ जी सि वि महोपदेशक द्वारा कराया गया। समीप के गाव खान-खाना में और बगे के स्कूलो में भी पण्डित जी वेद प्रचार करते रहे। प्रचार का अच्छा प्रभाव रहा।

—खचीलाल मन्त्री

—

## मा. रामप्रसाद आर्य के पौत्र का मुंडन संस्कार

जिलाआर्य सभा लुधियाना के प्रचार मन्त्री श्री मास्टर रामप्रसाद के सुपुत्र श्री बलदेवजी के लडके तथा लडकी के मुडन सस्कार उनके निवास स्थान पर बड समारोह से वैदिक रीति से किए गए। इस अवसर पर श्री मास्टर जी ने 501) रुपए का दान रायकोट के एक निर्धन हरिजन श्री साधुराम जी की सुपुत्री के विवाह के लिए दिया तथा 200 रुपए अन्य स्थानो के लिए दान दिया। इस अवसर पर लुधियाना के प्रतिष्ठित सज्जन तथा मित्र और अन्य बन्धु भारी सख्या मे वहा उपस्थित थे।

—

## वैदिक शिष्टाचार पारिवारिक परिधि में

( 2 पृष्ठ का शेष )

आज की विषम आर्थिक परिस्थितियों में पति-पत्नी दोनों ही को अर्थोपार्जन में संलग्न रहना पड़ता है। कुछ सीमा तक यह आवश्यक है। लेकिन यह भी सच है कि इस स्थिति में घर की देख-भाल ठीक से हो नहीं पाती। घर-नौकरों पास-पड़ोसियों या संयुक्त परिवार में बड़े बूढ़ों के भरोसे छोड़ना पड़ता है। बड़े बूढ़े अधिकांश शारीरिक लाचारी के कारण अपनी स्वत ही देख-भाल भी ठीक से कर नहीं पाते। घर की देखभाल क्या कर सकते हैं माता-पिता का अधिकांश समय घर से बाहर व्यतीत होने में सन्तान को जो अपेक्षित मातृत्व स्नेह सम्पन्न लालन-पालन एवं विकास का सुयोग मिलना चाहिए, वह मिल नहीं पाता। माता का गुरुतम दायित्व सन्तान की शिक्षा दीक्षा का है। माता ही सन्तान की यथार्थ निर्मात्री होती है। लेकिन घर के बाहर की व्यस्तता में वह इस दायित्व को ठीक से निभा नहीं पाती। परिणाम दु:खद होता है। समाज मे अशिष्टता अनैतिकता व अन्याय का वातावरण बढ़ता है। अत माता के रूप मे गृहपत्नी का कार्यक्षेत्र घर ही है, घर से बाहर नहीं। बाहरी क्षेत्र मे निकलने पर गृह पत्नियां समानाधिकार की भी मांग करती हैं। कैसे समानाधिकार ? पगार, पद पदोन्नति, प्रतिष्ठा आदि के या समाज सभा-सोसायटी में स्वतन्त्रता स्वच्छन्दता एवं स्वेच्छाचारिता के ? वैदिक सभ्यता मे तो महिलाओं को समानाधिकार ही नहीं उससे भी कहीं अधिक वरीयता के अधिकार दिए गए हैं। स्वयंवर से स्वत अपने जीवन साथी को चुनने अर्धांगिनि के रूप में पति की अपूर्णता को पूर्ण करते गृहस्वामिनी के रूप मे घर की सम्राज्ञी बनने तथा गृहस्थ रूपी यज्ञस्थली मे ब्रह्मा पद सुशोभित करने के अधिकार दिए गए हैं, 'स्त्रीहि ब्रह्मा बभूविथ ऋ 8-33 9 अर्थात स्त्री गृहस्वामिनी ही गृहस्थ रूपी यज्ञ की ब्रह्मा होती है। गृह यज्ञ की ब्रह्मा होने से वह समाज और राष्ट्र रूपी यज्ञ की भी ब्रह्मा बनती है। इससे अधिक और क्या अधिकार चाहिए।

गृहस्वामिनी को स्वत ही सूझ-बूझ के साथ गृहस्थ की आवश्यकताओं को यथा *शीघ्र कम करके अर्थोपार्जन के निमित्त घर से बाहर न रहकर घर ही के क्षेत्र को सम्भालना श्रेयस्कर होता है वेद इस दिशा मे आदेश देता है कि—

प्रबुध्यस्व सुबुधा बुध्यमाना दीर्घायुत्वाय शतशारदाय गृहान् गच्छ गृहपत्नी यथा सो दीर्घ त आयु सविता कृणोतु।
अथर्व 14-2-75

अर्थात् (शतशारदाय दीर्घायुत्वाय) सौ वर्ष तक की दीर्घ आयु जीने के लिए (सुबुधा बुध्यमाना) उत्तम बुद्धियुक्त सज्ञान होकर हे गृहपत्नी ! (प्रबुध्यस्व) तू श्रेष्ठ ज्ञान प्राप्त कर और उत्तम कर्त्तव्य व्यवहार को जान, तथा (गृहान् गच्छ) तू घरों को जा, घरों को प्राप्त हो घर गृहस्थी की सम्यक् देख-भाल कर (यथा ते दीर्घं त आयु सविता कृणोतु) इसी में प्रभु तेरी दीर्घ आयु की कामना को पूर्ण करें तथा गृहस्थ तेरे देख रेख मे सुख समृद्धि से सदा आनन्दित रहे।

गृहस्थ की देख-भाल में गृहपत्नी को परिवार के छोटे बड़े सभी सदस्यों का पूरा ध्यान रखना होता है तथा यथायोग्य ममता, स्नेह प्रेम प्रीति और आदर सम्मान का व्यवहार करना होता है। इसके लिए भी वेद निर्देश दे रहा है कि—

स्योना भव श्वसुरेभ्य स्योना पत्ये गृहेभ्य।
स्योनास्यै सर्वस्यै विशे स्योना पुष्टायैषा भव। अथर्व 14 2 27

अर्थात् हे गृहपत्नी ! तू घर के बड़े बुजुर्ग-सास श्वसुरादि को सुख देने वाली हो। पति को सुख देने वाली हो। घर के अन्य पारिवारिक सदस्यों को सुख देने वाली हो। (सर्वस्यै विशे स्योना) घर के सभी प्रजाजन बाल गोपाल व भृत्यादि के लिए सुखदायिनी हो तथा इन सबको यथेष्ठ पुष्टी करने वाली हो। बहुत बड़े अधिकार व दायित्व दिये गये हैं गृहपत्नी को, लेकिन इसके लिए यह भी आवश्यक है कि परिवार के सभी सदस्य गृहपत्नी को इतना स्नेह सम्मान दें कि वह गृह सम्राज्ञी हो बनी रहे।

परिवार मे बच्चे भी होते हैं चाहे वह बाल्यावस्था के हों या किशोरावस्था के। इनमे पारस्परिक व्यवहार जितना प्रेम-प्रीति सदभाव व सहयोग का होगा उतना ही उक्त परिवार सुसकृत एवं शिष्टाचारी होने का प्रमाण प्रस्तुत करेगा तथा प्रतिष्ठा अर्जित करेगा। वेद इस दिशा मे आदेश देता है कि—

मा भ्राता भ्रातर द्विक्षन्मा स्वसारमुत स्वसा।
सम्यञ्च सव्रता भूत्वा वाच वदत भद्रया। अथर्व 3 30-3

अर्थात् भाई भाई से द्वेष न करे, बहिन बहिन से द्वेष न करे बहिन भाई से या भाई बहिन से द्वेष न करे। सभी एकमत सहृदयी होकर अच्छे नियम अनुशासन व अनुष्ठान के व्रती होकर [illegible]र वाणी बोलें।

[illegible] 2 बातो पर लड़ाई [illegible] है। घर ही के बच्चों में [illegible] के बच्चों से भी। उसमें [illegible]-पिता भी उलझ जाते हैं। परिणाम दु:खद ही होता है। ऐसे झगड़े बहुधा अनुदार वृत्ति के कारण होते हैं—जैसे घर में कोई नया खिलौना लाया गया या मिठाई का पैकेट। सभी बच्चे यदि उसे हथियाने की पहल करें तो निश्चय ही झगड़ा होगा लेकिन सभी पहले दूसरे को देने की उदारता बर्ते तो झगड़ा होगा ही नहीं। ऐसी 'इदन्न मम' की उदार भावना बच्चों में प्रारम्भ से ही पनपानी चाहिए।

इस प्रकार पारिवारिक परिधि में वैदिक शिष्टाचार के इस महत्व को समझते हुए सभी सम्बन्धित महानुभाव यदि आचरण करें तो निश्चय ही पारिवारिक वातावरण सदा स्वास्थ्य शालीन सुखद एव सराहनीय बना रहे जो अन्यों के लिए यथार्थ मे अनुकरणीय हो। परिवार से ही समुदाय व समाज बनता है। पारिवारिक शिष्टता का प्रभाव समाज पर स्वाभाविकतया पड़ता ही है।

सामाजिक परिधि में वैदिक शिष्टाचार का कैसा विधान है इस पर भी किंचित विचार अगले लेख में प्रस्तुत किए जाएंगे।

—

## नारी जगत्-

# पत्नी के कर्त्तव्य

ले—श्री सुरेन्द्र मोहन सुनील विद्यावाचस्पति

1 अपव्यय न करे। व्यय (खर्च) को आय (आमदनी) से कम रखें। यह सबसे आवश्यक बात है। यही सबसे बड़ा गुण है।

2 पति को व्यर्थ वस्तुएं लाने के लिए न कहे। अपनी पूंजी देखें।

3 मीठा बोलने वाली अर्थात् मधुर भाषिणी हो। सोचकर बोले।

4 मुख पर सदा मुस्कान झलकती रहे। खुला माथा रखें।

5 घर की सारी वस्तुओं का और कमरों को स्वच्छ रखें।

6 सारे पदार्थों को भली भान्ति सम्भाल रखती हुई किसी प्रकार की हानि न होने दें। हर चीज रखने का स्थान स्थिर करें ताकि आवश्यकता पड़ने पर वह वस्तु झट मिल जाए।

7 वेश भूषा तथा बनाव—शृंगार मे सादा रहने का यत्न करें।

8 गृह कार्यों को विशेषतया रसोई के कार्य को भली भान्ति सम्भाले। स्वयं ही रसोई का काम करे या करावे।

9 आलसी और निठल्ला न बने। कार्य कुशलता से सभी कर्त्तव्य सुष्ठु रूप से निभाए।

10, निन्दा चुगली से बचें। न किसी की निन्दा करें न सुने।

11 ज्योतिषियो जादू-टोना देने वालों के पास जाकर धन नष्ट न करे। पति को ही सच्चा गुरु जानकर किसी और को गुरु न बनाए। जादू टोने वाले दुष्ट लोग होते हैं।

12 बच्चों का पालन-पोषण भली-भान्ति करें। उनको महान् बनावे।

13, घर से बाहर व्यर्थ घूमने का स्वभाव न बनावे।

14 अड़ोस-पड़ोस से प्रेम भरा सराहनीय व्यवहार रखें

15, स्त्री जीवन का सबसे बड़ा गुण है मितव्ययी होना और सादा जीवन व्यतीत करना। इन गुणों के होने से शेष गुण स्वभावत ही प्राप्त हो जाते हैं, इन दोनो को सबसे पहले धारण करें।

### चगी पत्नी

होवे ओह ता अकल ते समझ वाली,
अच्छा चित्त नवी वस्त दी शर्म होवे।
करे पति दे नाल प्यार सच्चा
सेवा जिसो करनी जिस दा कर्म होवे।
खिड़ी रहे गुलाब दे फुल वांगू,
बाझा मन्ने जबान दी नर्म होवे।
घर दे कम्मा विच भी आ सुच्चज होवे
उच्चा ख्याल नाले सुच्चा धर्म होवे।
जिसदे पास होवे ऐसी इस्त्री दा,
ओथे रेह दी बाकी दस्सो थोड़ कीए।
जिस मद नू जुड़ अजेही नारी,
दस्सो ओस नू स्वग दी लोड़ कीए।

—

# श्री गुरुविरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय करतारपुर के उत्सव का कार्यक्रम

पूज्य महात्मा दयानन्द जी तपोवन देहरादून की अध्यक्षता मे 23 सितम्बर रविवार साम 5 बजे से प्रारम्भ होगा। वेद पाठ श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय करतारपुर के ब्रह्मचारी करेंगे। यज्ञ के पश्चात वेद प्रवचन तथा संगीत का कार्यक्रम प ज्योति स्वरूपजी भजनोपदेशक करेंगे।

पूर्णाहुति—30 सितबर को प्रात 9 बजे होगी।

प्रतिदिन—यज्ञ प्रात 6-30 से 6 30 बजे तक। यज्ञ साय 4 30 से 9-30 बजे तक हुआ करेगा।

शनिवार 29 सितबर 1984 प्रात 6-30 से 8-30 तक यज्ञ ब्रह्मा—पूज्य महात्मा दयानन्द जी तपोवन 8 30 से 9-30 तक प्रातराश। 9-30 से 10-10 तक भजन प ज्योति स्वरूप जी।

महिला सम्मेलन—10 10 से एक बजे तक। विषय—राष्ट्रीय एकता मे नारी की भूमिका। संयोजिका—बहन कमला जी आर्या, महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब अध्यक्ष—प्रि, कु, कमला जी सन्ना हसराज महिला महाविद्यालय जालन्धर। मंगल-गायन—हसराज महिला महाविद्यालय की छात्राओं द्वारा। विशेष कार्यक्रम—(30 मिनट)—आर्य कन्या पाठशाला करतारपुर की छात्राए।

मुख्यवक्ता—प्रि सन्तोष जी सूरी, देवराज गर्ल्ज हायर सैकेण्डरी स्कूल जालन्धर शहर। प्रि कान्ता जी सूरी, आर्य गर्ल्ज हायर सैकेण्डरी स्कूल लुधियाना प्रि स्वदेश जी महलावत, डी ए वी महिला कालेज अमृतसर। प्रो लक्ष्मी कान्ता जी चावला अमृतसर। माता रामप्यारीजी प्रधाना स धर्म स्त्री सत्सग सभा करतारपुर।

ध्वजारोहण—2 30 से 3 बजे तक पूज्यपाद स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के कर कमलो द्वारा। 3 से 3 30 बजे तक संगीत—प ज्योति स्वरूप जी भजनोपदेशक। 3 30 से 4-15 बजे तक प्रवचन-महात्मा दयानन्द जी देहरादून। शोभायात्रा—मध्यान्होत्तर 4 15 स्मारक भवन से आरम्भ होगी।

शनिवार 29 सितबर रात्रि कार्यक्रम—(8 से 10 बजे तक) 8 से 8-30 तक भजन—प ज्योति स्वरूप जी मानकपुर। 8-30 से 9 15 तक प्रवचन—श्री पृथ्वीराज जी शास्त्री, 9-15 से 10 बजे तक प्रवचन—प सत्यकाम जी विद्यालकार।

रविवार 30 सितबर 1984।

पूर्णाहुति—प्रात 9 बजे यजुर्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति।

9 से 9 30 तक प्रातराश।

श्रद्धांजलि सम्मेलन—9-30 बजे से 11 बजे तक।

अध्यक्ष—श्री वीरेन्द्र जी एम ए कुलाधिपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार।

विविध आर्य विद्वानों तथा सामाजिक कार्यकर्ताओ द्वारा दण्डी गुरु विरजानन्द जी को श्रद्धाजलिया प्रस्तुत की जाए गी।

विद्यालय कार्यक्रम—11 से 2 बजे तक श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय का बौद्धिक सास्कृतिक एव शारीरिक कार्यक्रम तथा पारितोषिक वितरण समारोह प सत्यकाम जी वेदालकार उपकुलपति आचार्य गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार की अध्यक्षता में होगा।

विशेष—बौद्धिक एव सास्कृतिक कार्यक्रम—ब्रह्मचारियो के संगीत वेद पाठ, सवाद, श्लोक पाठ, भाषण, अन्ताक्षरी आदि गुरुकुल के आचार्य श्री नरेश कुमार जी शास्त्री व्याकरणाचार्य के नेतृत्व में तथा शारीरिक प्रदर्शन विविध व्यायाम आसन स्तूप, आग के गोले में से निकलना, [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] आदि गुरुकुल के [illegible] अधिष्ठाता श्री सुखदेवराज जी शास्त्री [illegible] के नेतृत्व में होगा

भोजन—2 से 3 बजे तक।

दृष्टिकोण की [illegible] [illegible]—[illegible] से 5 बजे तक।

विशेष—ऋतु अनुसार बिस्तर साथ लाएं। भोजन तथा आवास की व्यवस्था स्मारक समिति ट्रस्ट की ओर से होगी।

## आर्यसमाज दानापुर का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज दानापुर का वार्षिकोत्सव डी ए वी हाई स्कूल दानापुर में 27 से 30 सितबर तक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर यज्ञ तथा आर्य विद्वानों के विविध विषयों पर सारगर्भित व्याख्यान उपदेश और भजन होंगे। आर्य बन्धुओं से अनुरोध प्रार्थना है कि समय पर समारोह में पधार कर महोत्सव को सफल बनाए। —[illegible] प्रसाद मन्त्री

टेलीफोन न. 74250 (रजि. न. पी. जे. एल 55,

वर्ष 16 अंक 27 15 आश्विन सम्वत 2041 तदनुसार 30 सितम्बर 1984 दयानन्दाब्द 160 । एक प्रति 40 पैस (वार्षिक शुल्क 20 रुपय

इतिहास के जरोखे से—

# गुरु विरजानन्द और उनका स्मारक

ले —श्री नरेशकुमार जी शास्त्री व्याकरणाचार्य प्राचार्य श्री गुरु विरजानन्द वदिक सस्कृत महाविद्यालय करतारपुर (जालन्धर)

भारत मां के सच्चे सपूत, अवधुत समाज सुधारक कूबतो के सहारे वेदो द्धारक प्रात स्मरणीय महर्षि दयानन्द सरस्वती के नाम से आज कौन परिचित नही ? सारा सृष्टि मण्डल एक दूसरे पर ही निभर है। भगवान दयानन्द को भी कोई अज्ञान सागर से पार उतारने वाला देवता था जिस ज्ञान के भण्डार व्याकरण क सूय को हम प्रज्ञाचक्षु दण्डी महर्षि विरजानन्द के नाम से स्मरण करते है। वही है वह देवना जिसने मूलशकर को वास्तविक शकर तक पहुचने का ज्ञान प्रदान किया जिसने उसे दयानन्द से वास्तविक दयानन्द बना दिया जिसने वेदाथ करन की कुञ्जी प्रदान की। आईए उस महर्षि की स्मृति मे स्थापित गुरु विरजानन्द स्मारक तथा गुरु विरजानन्द वैदिक सस्कृत महाविद्यालय के सक्षिप्त परिचय का अवलोकन करें।

दण्डी महर्षि विरजानन्द के ज म स्थान बारे सभी विद्वान एक मत हैं कि उन्होने वेई नदी के समीप गगापर नामक ग्राम के श्री नारायणदत्त भारद्वाज के गृह मे सन 1/78 ई मे जन्म लेकर माता सरस्वती देवी की गोद को अलकृत किया था। गगापुर ग्राम मे प्राय बाढ आ जाया करती थी अत श्री नारायणदत्त ने अपना स्थायी अ वास स्थान करतारपुर को ही बना रखा था। गगापुर में तो उनकी कृषि योग्य भूमि ही थी जहा पर कि देर सवेर ठहरन क लिए उनक नाम मात्र को घर थ।

स्वामी विरजान द जी 90 वर्ष की आयु मे कृष्णात्रयोदशी के दिन सोमवार 14 सितम्बर 1868 को अपना नश्वर देह त्याग कर इहलोक से प्रयाण कर गए थ।

आश्चर्य ही समझिए कि बहुत वर्षो तक तो विरजानन्द जी की ओर किसी का ध्यान भी नहीं गया। अन्तत वह शुभ दिन भी आया और लाहौर निवासी श्री महाशय बद्रीनाथ जी वैद्य क मिशनरी के हृदय म परमश्वर ने प्रेरणा प्रदान की। जोकि सन 1956 म फलीभूत हुई।

इस काय के लिए आपन अपनी पुण्य सम्पत्ति मे से 52000 (बावन हजार) रुपए प्रदान किए और श्री स्वामी आत्मानन्द जी सरस्वती प्रधान आय प्रतिनिधि सभा पजाब के कर-कमलो द्वारा 24 फाल्गुण स 2021 तदनुसार 10 मार्च 1956 को दण्डी महर्षि गुरु विरजानन्द सरस्वती जी की स्मृति में स्मारक की पुण्य आधार शिला रख दी गई जो 24 भाद्रपद स 2021 (तदनुसार 6 सितम्बर 19-6 क विशाल भवन हाल कमरा) मात्र पूण होकर श्री स्वामी ज्ञानानन्द जी वैदिक मिशनरी भूतपूर्व मेहता जैमिनी के कर कमलो द्वारा उदघाटन का पात्र बना।

1959 मे आय प्रतिनिधि सभा पजाब की 000/ की राशि के सहयोग से बाबू चरणदास जी आय समाज करतारपुर की देख रेख म आय समाज ने अपने प्रयत्न से एक हार्स पावर की मोटर पानी क लिए तथा मुख्य द्वार पर लोहे का गट भी लगवा दिया।

1962 मे श्री [illegible] लाल जी मेहता सतनाम फर्नीचर करतारपुर श्री विद्यासागर जी जीमान के आम त्रण पर पूज्य पाद महात्मा प्रभु आश्रित जी महाराज पधारे तथा अपूर्व स्मारक भवन मे यजुर्वेद का पारायण यज्ञ कराया। करतारपुर का जन समुदाय अभिलाषा तो करता रहा कि यह स्मारक किसी प्रकार पूर्ण हो जाए परन्तु इसके पास वे साधन विद्यमान न थे कि जिसस इस विषय मे प्रगति कर सके।

चार वर्ष बाद 1966 मे पुन भाग्योदय हुआ हुआ जब बाबू बिहारी लाल जी न महात्मा प्रभु आश्रित जी से चारो वेदो का पारायण यज्ञ करवाया। जोकि एक फरवरी मे आरम्भ होकर 28 फरवरी को पूर्ण हुआ।

इसी मध्य 16 फरवरी 1966 की रात्री मे महात्मा प्रभु आश्रित जी महाराज की अध्यक्षता मे एक सभा आयोजित की गयी। ट्रस्टीशिप शुल्क 250 रुपए निश्चित हुआ बहुत से सदस्य बने। 23 अगस्त 1966 को जालन्धर के सुयोग्य वकील श्री मूलचन्द जी ने ट्रस्ट के पजीकरण काय को बिना कोई शुल्क लिए नियमानसार सम्पन्न करा दिया। उस समय ट्रस्ट के 80 के लगभग सदस्य बने। वतमान मे सदस्यो की सख्या 175 से भी ऊपर है।

लगभग 1966 मे ही श्रीमती माता शान्तिदेवी जी धम पत्नी श्री चिरञ्जीलाल जी प्रेम करतारपर न भरसक प्रयास कर अपनी सात्विक 1000 रुपए की धनराशि के सहयोग से अपनी ही देख रेख मे स्मारक भवन म नलका (ट्यबवैल) भी लगवा दिया।

दुर्भाग्य से 16 माच 1967 को महात्मा प्रभु आश्रित जी महाराज पर लोक सिधार गए। स्मारक के सचालन का काय समिति ने स्वामी विद्यानन्द जी महाराज तथा उपसचालक का काय पूज्य महात्मा आनन्द भिक्षु जी पर डाला यज्ञ प्रेमी महात्मा प्रभुआश्रित जी की स्मृति मे यज्ञशाला के निर्माण का योजना बनाई। जिसके लिए सवप्रथम 5000

(शेष पृ 2 पर)

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

# गुरु विरजानन्द और उनका स्मारक

रुपए की राशि श्रीमती सुशीलादेवी जी सुपुत्री श्री बाबू बिहारीलाल करतारपुर ने दी।

अगस्त 1969 में श्री प य भगत गिरधारीलाल जी की देख रेख में यज्ञशाला का ढांचा तैयार हो गया।

महात्मा प्रभु आश्रित जी के स्मरण में ही जनवरी 1969 से एक धर्मार्थ होम्योपैथिक औषधालय श्री ना विद्याधर पुरी के नेतृत्व में निःशुल्क चिकित्सा करता रहा। श्री ना विद्याधर पुरी के साथ ही बन्द हो गया।

दण्डी विरजानन्द का निर्वाण कृष्णा त्रयोदशी सोमवार सवत 1925 तदनुसार 14 सितम्बर 1868 को हुआ। अत 1968 में निर्वाण शताब्दी मनाने का विचार हुआ जो सफल न हो सका तथा निर्वाण शताब्दी का पूर्वोत्सव बड़ी धूमधाम से 5 10 69 से 12 10 69 तक करतारपुर में सार्वदेशिक सभा के सहयोग से मनाया गया। इस अवसर ब्रह्मचारी श्री गुरुचरणदास जी जिज्ञासु ने स्मारक भवन तथा यज्ञशाला की आपूर्ति का विचार प्रकट किया। अन्धे को क्या चाहिए दो आंखें समिति पहले ही ऐसे देवता की प्रतीक्षा में थी और कार्यारम्भ हो गया। दो मास के अल्प समय में ही स्मारक भवन की फर्श पर मार्बल चिप्स बिछ गई। दीवारों पर पलस्तर करवाया गया। यज्ञशाला का फर्श भी मार्बल चिप्स से सज गया। चारों ओर लोहे की जाली के साथ मिलते जुलते दरवाजे भी लग गए सारा भवन श्री ब्रह्मचारी जी की कृपा से चमक उठा।

श्री जिज्ञासु जी के छोटे भाई श्री बैजनाथ जी गुप्ता तथा श्री प्रकाशचन्द्र जी बाहरी जालन्धर ने भी इस कार्य में सहयोग प्रदान किया। इस फर्श पर लगभग 3 000 रुपए का खर्च हुआ।

इसके पश्चात एक कमरा श्री दयानन्द जी मुंजाल मार्फत हीरो साईकल लुधियाना की स्मृति में 1970 में तैयार हुआ।

20 9 70 से 27 9 70 तक गुरु विरजानन्द निर्वाण शताब्दी का समारोह बड़े उत्साह एवम उल्लास से मनाया गया जिसमें पंजाब भर के पत्रकारों नेताओं आर्य समाज की उज्ज्वल विभूतियों तथा समस्त भारत के आर्यजनों ने गुरु विरजानन्द के चरणों में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। इस समारोह के दृश्यों की मनोहरता तथा शोभा अपूर्व थी। शताब्दी के आयोजन में सर्वाधिक हाथ पूज्यपाद स्वामी विज्ञानानन्द जी सरस्वती तथा स्व प नन्दलाल जी वानप्रस्थी का रहा है

इस शताब्दी महोत्सव पर ही 17 9 70 को श्रीयुत प ब्रह्मदेव जी विद्यालंकार द्वारा गुरु विरजानन्द संस्कृत महाविद्यालय का उद्घाटन कराया गया। जिसके लिए पंजाब राज्य के वित्त मन्त्री ने 10 000 रुपए की राशि राज्यकोष से सहायता के रूप में दी। इस विद्यालय का कालान्तर में महाविद्यालय का रूप दे दिया गया, जो सुखदेवराज जी विद्यावाचस्पति की व्यवस्था में तथा श्री नरेश कुमार जी शास्त्री व्याकरणाचार्य के नेतृत्व में प्रगति पथ पर आरूढ है। जिसके मुख्य संचालक स्वर्गीय श्री स्वामी विज्ञानानन्द जी सरस्वती का आशीर्वाद तथा स्मारक के अन्य अधिकारी वर्ग एवं विद्यालय में कार्यरत अध्यापकों तथा कर्मचारियों का सहयोग निरन्तर प्राप्त है।

ही वस्तुत स्मारक की उन्नति है। इस कार्यकाल में विद्यालय ने अपूर्व उन्नति की।

विद्यालय में छात्रों की संख्या में वृद्धि हुई। शारीरिक शिक्षा का विशेष प्रबन्ध हुआ। छात्रों की संख्या के साथ कर्मचारी वर्ग भी बढ़ता गया। छात्रों के योग्यता स्तर भी उन्नत हुए।

आपके कार्यकाल में ब्रह्मचारियों के विद्यालय के वार्षिकोत्सव पर बौद्धिक एवं शारीरिक कार्यक्रम भी प्रदर्शित होने लगे। इससे पूर्व छात्रों का कोई विशेष कार्यक्रम उत्सव पर नहीं होता था। इन कार्यक्रमों का काफी सीमा तक श्रेय हम तात्कालिक आचार्य प हुकमचन्द जी निर्मुक्त तथा श्री सुखदेवराज जी शास्त्री स अधिष्ठाता को दे सकते हैं जिनके सहयोग एवं परिश्रम से छात्रों के कार्यक्रम तैयार करवाए जाते रहे।

श्री गुरु विरजानन्द स्मारक समिति ट्रस्ट करतारपुर का विशाल भवन

गुरु विरजानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह के उपलक्ष्य में डाक तार विभाग की ओर से 14 सितम्बर 197 को अनुप्रस्थ आकार की एक डाक टिकट भी जारी की गई जिसके मध्य में स्व श्री विरजानन्द जी को आसन मुद्रा में दर्शाया गया है। 20 पैसे की इस डाक टिकट की मुद्रण संख्या 30 लाख थी।

1973 में श्री साईं दास जी भण्डारी के पश्चात स्मारक के मन्त्री एक निष्ठावान धार्मिक वृत्ति दानवीर व्यक्ति श्री चतुर्भुज जी मित्तल बने। तथा प्रधान पद पर यश प्रेमी शान्त स्वभाव श्री सेठ शिवचन्द जी अग्रवाल ही सुशोभित रहे। कोषाध्यक्ष श्री ला यशपाल जी तथा विद्यालय के अधिष्ठाता श्री रामचन्द्र जी आनन्द रहे। 1973 में सवसम्मति से यही अधिकारी वर्ग कार्यरत है। सम्प्रति अधिष्ठाता पद पर श्री आनन्द जी के पश्चात चौ ऋषिपालसिंह जी एडवोकेट नियुक्त हुए।

स्मारक के अन्तर्गत विद्यालय के प्रारम्भ हो जाने पर विद्यालय की उन्नति

समय 2 पर पंजाब एवं उसके बाहिर की आर्य समाजों पर भी छात्रों के कार्यक्रमों का प्रभावशाली प्रदर्शन होता रहा, आर्य समाज के शताब्दी आदि विशेष उत्सवों में सामायतया भाग लेने के लिए भी ब्रह्मचारी बाहर जाते रहे तथा प्रतियोगिताओं में भाग लेकर शील्डें जीतीं।

अध्यापन की व्यवस्था ने सुचारु रूप धारण किया जिसके कारण विद्यालय का वार्षिक परिणाम उत्तरोत्तर उन्नत होता गया। आपके कार्यकाल में विद्यालय को महाविद्यालय का रूप दिया गया।

श्री सुखदेवजी के अतुल परिश्रम तथा दृढ संकल्प से 29 10 77 को गुरुकुल में दीपावली के पर्व निर्माण पर गऊशाला की स्थापना हुई 19 7 में विधिवत गऊओं के लिए स्मारक भूमि की पश्चिम दिशा में गऊशाला का निर्माण लगभग 15000 रुपए की राशि से कराया गया पुनरपि अभी गऊओं के लिए शैड की आवश्यकता थी। विद्यालय की आर्थिक

स्थिति को सन्तुलित रखने में योगदान दे

आचार्य नरेशकुमार जी शास्त्री

श्री शिवलाल जी बासल का भी काफी आर्थिक सहयोग रहा। दुःख है कि आज वे हमारे मध्य नहीं हैं। परन्तु उनके परोपकारी समाज सेवी कार्य सदैव उन की याद दिलाते रहेंगे। अब उनके पश्चात उन्हीं के सुयोग्य सुपुत्र श्री जगदीश राय जी बासल अपने पूज्य पिता के चरण चिन्हों पर चलते हुए विद्यालय की हर प्रकार से सेवा एवं सहयोग करते रहे हैं।

श्री सुखदेवराज जी शास्त्री का योगदान आर्थिक व्यवस्था की उन्नति में निरन्तर प्रशंसनीय है। आप ही अपनी प्रेरणा से एवं सच्ची लगन से नई नई योजनाओं द्वारा विद्यालय की आर्थिक स्थिति का सन्तुलन बनाए हुए हैं।

अधिष्ठाता पद पर कार्य करते हुए स्वर्गीय पण्डित नन्दलाल जी वानप्रस्थी विद्यालय के वार्षिक उत्सव आयोजनों में सफलता पूर्वक कार्य करते रहे। आप अन्तिम समय तक विद्यालय की सेवा करते हुए 13 अप्रैल रविवार 1980 को

(शेष पृष्ठ 7 पर)

# आजादी जन्नत है-गुलामी "दोजख"

## —स्वामी विरजानन्द जी

ले.—श्री कृष्णदत्त जी भू पू प्रिंसिपल हिन्दी महाविद्यालय हैदराबाद

गुरु-शिष्य की इतिहास प्रसिद्ध परम्परा मे बहुत से नाम से उभरते हैं। चन्द्रगुप्त-चाणक्य, शिवाजी समर्थ रामदास, विवेकानन्द-रामकृष्ण परमहस की गुरु-शिष्य परम्पराए काफी प्रसिद्ध हैं। चन्द्रगुप्त मौर्य, शिवाजी महाराज और स्वामी विवेकानन्द ने अपने पीछे जो प्रबल कीर्ति छोडी है उसमें उनके गुरुओ की प्रेरणा, शिक्षा, मार्गदर्शन कितना कारणी भूत हुआ है, इसका नाप-जोख कठिन है। परन्तु इतना अवश्य कहा जा सकता है कि इन महापुरुषो को यदि इन के गुरुओ की शिक्षा दीक्षा मे अनुप्राणीत और अनुप्रेरित न किया होता तो स्थिति कुछ और ही होती। ऐसी ही गुरु शिष्य परम्परा मे महर्षि दयानन्द और दण्डी स्वामी विरजानन्द भी हैं।

गुरु विरजानन्द जी महाराज का चरित्र और उनकी शिक्षा-दीक्षा का गम्भीर भाव महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचारो और कार्यों पर पडा है। श्री गुरु विरजानन्द जी का जन्म सन् 1779 मे पजाब के एक ग्राम गगापुर मे हुआ था, जो करतारपुर नगर के पास था। उनके मूल नाम का पता अब तक नहीं चल सका। दुर्भाग्य से पाच वर्ष की आयु मे ही चेचक के कारण वे नेत्रहीन हो गए और आठ वर्ष की आयु मे मा-बाप की मृत्यु हो गयी। उनका एक ही सहारा था और वह बडे भाई और भौजाई का किन्तु उनके दुर्व्यवहार ने 12 वर्ष की आयु में अन्धे बालक से घर और गाव छुडवा दिया बुराई मे भी भलाई की भान्ति भाई-भौजाई की कठोरता ने भारत को एक अन्तर्मुखी वीतरागी सन्यासी दिया। जिसकी परिणति मे हमें महर्षि दयानन्द जैसे महान् व्यक्तित्व की उपलब्धि हुई।

उन दिनो पजाब में सिखो मुसलमानों का सघर्ष चल रहा था अत शान्ति का अभाव अच्छे मार्गों का अभाव, यातायात के साधनो का अभाव, सुरक्षा का अभाव, सबसे बढकर नेत्रो का अभाव किन्तु एक बालक सदा सर्वदा के लिए घर त्याग कर निकल पडा। तीन वर्ष मे ऋषिकेश पहुचा। तीन वर्ष के बाद वहा से निकल हरिद्वार कनखल पहुचा वही पर अठारह वर्ष की आयु में एक परम विद्वान् स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती से सन्यास लिया और उनसे विद्या भी सीखी। वहा से निकल कर सन्यासियो की प्रचलित परिपाटी के अनुसार गगा तट पर तीन वर्ष तक विचरण करते रहे और किसी तरह वाराणसी पहुचे। यहा प विद्याधर से पढते रहे। वहा से गया, कलकत्ता, गगा सागर होते हुए लौटकर एटा जिला के सोरो (सूकर क्षेत्र) पहुचे। वहा अलवर नरेश से भेट हुई और उनके आग्रह पर उन्हे पढाने के लिए अलवर गए। अलवर नरेश के सामने स्वामीजी ने एक शर्त रखी थी कि पढाई किसी दिन भी खण्डित न हो। किन्तु एक दिन ऐसा हुआ कि महाराजा विनयसिंह किसी प्रशासकीय कार्य मे अथवा राग रग मे व्यस्त होने के कारण पढने के लिए न आ सके। नियम-भग हो गया। स्वामी विरजानन्द जी अपने एक भक्त को लेकर निकल गये। महाराज ने जाकर बहुत विनय की, किन्तु सब कुछ निष्फल। स्वामी जी ने कहा, हमने सोरो मे ही कह दिया था कि त्यागी तथा भोगी का सग नहीं निभ सकता।

अलवर से सोरो और वहा से मथुरा चले गये यही पर अन्त तक रहे। घर से निकलने से पूर्व ही उनकी पढाई प्रारम्भ हो चुकी थी। घर छोडने से पूर्व उन्होंने व्याकरण सीखना शुरू कर दिया था। विभिन्न स्थानो पर रहकर वे पढते और पढाते रहे। स्वामी पूर्णानन्द जी ने हरिद्वार कनखल मे अष्टाध्यायी की ओर उन्हे प्रेरित किया धीरे धीरे उन्होने व्याकरण, ग्रन्थो का वहिष्कार करके केवल अष्टाध्यायी को पढाना आरम्भ किया। मथुरा मे निवास आरम्भ करने से पूर्व उन्हे किसी बात की न्यूनता, अपूर्णता असमाधान का अनुभव हो रहा था उनकी प्रकाश शून्य आखें किसी चीज की तलाश मे थी, वे विद्यार्थियो को पढाते थे परन्तु उन्हे अपने कार्य से सन्तोष न था। अन्तत वह दिन आ गया, जब स्वामी दयानन्द ने गुरु विरजानन्द का द्वार खटखटाया। उन्हे जिस शिष्य की तलाश और आवश्यकता थी, वह मिल गया। अन्धे को लाठी मिल गई।

स्वामी विरजानन्द जी की एक विलक्षणता यह थी कि उनकी स्मरण-शक्ति बहुत तीव्र थी। यही कारण है कि विविध ग्रन्थ उन्हे कण्ठस्थ थे। दूसरी विशेषता यह थी कि उनका उच्चारण सुस्पष्ट और मधुर था। भडियाघाट मे वे गगा मे ठहर कर विष्णु स्तोत्र का सस्वर पाठ कर रहे थे। अलवर के महाराजा ने यह सुना तो वे बहुत प्रभावित हुए और स्वामी जी को साग्रह अलवर ले गए। स्वामी जी मे अलौकिक प्रतिभा, विलक्षण बुद्धि, अगाध शास्त्र-गरिमा और गम्भीर पाण्डित्य था। वे बहुत सत्यवादी, स्पष्ट वक्ता और हाजिर जवाब थे। 12 वर्ष की आयु मे दोनो आखो से अन्धे बालक का ऋषिकेश जाने का लक्ष्य बनाकर घर से निकल जाना यह घटना स्वामीजी के साहस, दृढ निश्चय और निर्भयता को स्पष्ट करती है।

उनके जीवनकाल मे 1857 का प्रथम स्वाधीनता सघर्ष और बाद म भारतीय जनता और देशभक्तो पर अग्रेजो द्वारा पाशविक अत्याचार हुआ था उसको स्वामी जी ने देखा नही था तो सुना अवश्य था। उसका उनके मन मे मस्तिष्क पर प्रभाव पडा था। वे इस दिशा मे कुछ करना चाहते थे पर नेत्र हीनता ने उन्हे विवश कर दिया था। उनकी यह भावना उस समय फूट पडी जब स्वामी दयानन्द ने गुरुदक्षिणा मे लौंग अर्पण किए थ। तब स्वामी विरजानन्द ने कहा था वैदिक धर्म, वेद तथा आर्ष ग्रन्थों का पुन प्रचार करके उनका उद्धार करो। बहुत बडा दायित्व गुरु ने शिष्य को सौपा था। वैदिक धर्म के प्रचार के अन्तर्गत देश का सम्पूर्ण कल्याण अर्थात धार्मिक सामाजिक और राष्ट्रीय कल्याण निहित था। यहा दो कार्यों की झाकी दी जाती है। जिनसे गुरु शिष्य की कार्य-प्रणाली मे साम्य और विचारो मे एक-रूपता का परिचय मिलता है।

सन् 1859 ई के नवम्बर के अन्त मे तत्कालीन गवर्नर जनरल लार्ड कैनिंग ने भारतीयो का मन जीतने के लिए आगरा मे एक दरबार आयोजित किया था। उस दरबार का समाचार पाकर स्वामी विरजानन्दजी ने मथुरा मे जयपुर के महाराजा सवाई रामसिंह के सामने यह प्रस्ताव रखा था। मैं एक सार्वभौम सभा की आयोजना लेकर आपके पास आया हू। उसमे समस्त प्रदेशो के विद्वानो को आमन्त्रित कीजिए। आप सब राजाओ को भी आमन्त्रित कीजिए। मैं इस सभा मे सब विद्वानो और राजाओ के समक्ष ग्रन्थ मर्याद स्थापित करूगा।

किन्तु वचन देकर भी महाराजा ने इस ओर ध्यान न दिया। इस सम्बन्ध म स्वामी जी ने महाराजा को एक विस्तृत पत्र भी लिखा था। यह प्रयत्न भी निष्फल हुआ। इस घटना के 18 वर्ष बाद 1877 मे उनके शिष्य महर्षि दयानन्द जी ने चादपुर और दिल्ली मे भारत के कल्याण के उद्देश्य से ऐसे ही दो आयोजन किए थे। प्रयत्न साम्य का कैसा अद्भुत उदाहरण है।

दूसरा उदाहरण सन् 1856 में स्वामी विरजानन्द जी का मथुरा नगरी मे राजसी स्वागत हुआ। उसमें हिन्दू मुसलमान सभी एकत्रित थे। उस पचायत सभा मे नाना साहब पेशवा को और अजीमुल्ला खा और शहशाह बहादुर शाह का शहजादा भी सम्मिलित था। इसका पूर्ण विवरण मीर मुश्ताक मिरासी ने उर्दू भाषा मे लिख रखा था। वह मूल लेख उपलब्ध हुआ है। उसी आधार पर 1857 के गदर से एक वर्ष पूर्व 1856 मे स्वामी विरजानन्द जी द्वारा दिए हुए भाषण का वह महत्वपूर्ण भाव यहा उद्धृत किया जा रहा है जो विचार महर्षि दयानन्द द्वारा बाद मे चलकर सत्यार्थ प्रकाश मे लिखे गये थे। गुरु शिष्य का विचार साम्य विचारणीय है स्वामी विरजानन्द जी ने अपने भाषण मे कहा था—'आजादी जन्नत है और गुलामी दोजख है। अपने मुलक की हकूमत गैर मुल्क की हकूमत के मुकाबले मे हजार दर्जे बहतर है। दूसरो की गुलामी हमेशा व इज्जती और बेशरमी का बायस है—मगर हुकमरा कौम खासकर फरगी जिस मुल्क मे हुकूमत करते हैं उस मुल्क के बाशिदो के साथ इन्सानियत का बरताव नही करते हम यहा महर्षि दयानन्द जी के कुछ वाक्यो को सत्यार्थ प्रकाश के 8 वें समुल्लास से उद्धृत करते हैं। 'कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मतमतान्तर के आग्रह रहित, अपने और पराए का पक्षपात शून्य, प्रजा पर पिता माता के समान न्याय और दया के साथ विदेशियो का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नही है।

गुरु विरजानन्द जी ने गुरु दक्षिणा मे शिष्य से यही मागा था। (1) देश का उपकार करो। (2) सत्य शास्त्रो का उद्धार करो। (3) मतमतान्तरो की अविद्या को मिटाओ और (4) वैदिक-धर्म का प्रचार करो। (प लेखराम द्वारा लिखित जीवन चरित्र (पृ 47)। 89 वर्ष की आयु मे सन 1868 ई, मे स्वामी विरजानन्द जी महाराज ने शरीर त्याग किया। गुरु के निधन का समाचार सुनकर महर्षि दयानन्द जी ने कहा था, 'आज व्याकरण का सूर्य अस्त हो गया।'

—

# आर्य समाज बस्ती मिट्ठू में वेद प्रचार

आर्य समाज बस्ती मिट्ठू जालन्धर मे 10 से 16 सितबर तक वेद प्रचार का आयोजन रखा गया। दयानन्द मठ दीनानगर के ब्रह्मचारी श्री धर्मचन्द जी शास्त्री तथा श्री प्रकाशचन्द्र जी शास्त्री आर्य समाज तथा परिवारो मे यज्ञ व प्रचार करते रहे। जनता पर उनका अच्छा प्रभाव रहा।

—

# श्री गुरु विरजानन्द स्मारक समिति ट्रस्ट एवं श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय करतारपुर की वर्ष १९८३–८४ की गतिविधियां

श्री गुरु विरजान द स्मारक भवन का शिलान्यास 10 मार्च 1956 को तथा विधिवत ट्रस्ट का निर्माण एव पञ्जीकरण 1966 मे हुआ। गुरु विरजानन्द जी के शताब्दी वर्ष 19 0 मे श्री गुरु विरजानन्द वैदिक सस्कृत महाविद्यालय की स्थापना हुई। वर्ष 1979 तक विद्यालय का परीक्षा सम्बन्ध श्रीमद् दयानन्द आर्ष विद्या पीठ गुरुकुल झज्जर रोहतक से था परन्तु कुछ न्यूनताओ को देखने हुए वर्ष 1980 से इस विद्यालय को गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार के साथ जोड दिया गया, जिसे 1983 मे विश्वविद्यालय ने स्थायी मान्यता प्रदान कर दी।

## शिक्षा क्षेत्र मे प्रगति

वर्ष 83-84 मे विद्यार्थियो की कुल संख्या 55 रही जिसमे गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय की विद्याधिकारी परीक्षा मे 7 छात्र तथा पजाब विश्वविद्यालय की शास्त्री परीक्षा मे 2 छात्र सम्मिलित हुए केवल विद्याधिकारी परीक्षा मे एक-छात्र अनुत्तीर्ण रहा। शेष सभी छात्र द्वितीय श्रेणी मे उत्तीर्ण हुए। शास्त्री परीक्षा का परिणाम अभी घोषित नही हुआ।

इस वर्ष स छात्रो के उज्ज्वल भविष्य तथा हिन्दी टाईपिस्टो की कमी को देखते हुए ट्रस्ट ने हिन्दी टकण कला विद्यालय का भी शुभारम्भ कर दिया है।

## भवन निर्माण मे—

गत वर्ष की भान्ति इस वर्ष भी भवन निर्माण का कार्य सारा वर्ष चलता रहा मध्य म धनाभाव स बहुत सी कठिनाईया अवश्य आई परन्तु दानी महानुभावो के सहयोग तथा परम प्रभु की कृपा से सभी कार्य ठीक चलते रहे।

वर्ष 1982 मे 3 कमरे एक स्टोर तथा लगभग 80 फुट लम्बा 8 फुट चौडा बरामदा डाला गया था गत वर्ष तीन नये कमरे और शुरू कर दिए गए थे जिनका निर्माण कार्य इस वर्ष पूरा हो गया, पिछले वर्ष बने कमरो के पलस्तर तथा खिडकी दरवाजे भी लगवा दिए गए।

गत वर्षो मे क्रमश जिन 5 कमरो के दानी महानुभावो ने विद्यालय के श्रेणी कक्ष बनवाने मे आर्थिक सहयोग प्रदान किया। उनकी सूची इस प्रकार है—

1 श्री दयानन्द जी मुञ्जाल की स्मृति मे हीरो साईकिल परिवार लुधियाना 2 श्री देसराज जी महता लुधियाना ने अपने सुपुत्र श्री राकेश जी महता की मधुर स्मृति मे तथा श्रीमती राजकुमारी महता ने अपने स्वर्गीय पति श्री चन्द्रप्रकाश जी महता की स्मृति मे, 3 श्रीमती सुशीला जी सोबती फगवाडा ने अपने पुत्रों के सहयोग से अपने स्वर्गीय पति श्री सरदारीलाल जी सोबती फगवाडा की स्मृति मे, 4 श्रीमती विद्यावती जी ने अपने पूज्य पति स्वर्गीय श्री कुन्दनलाल जी पैंगडाईज हौजरी लुधियाना वालो की स्मृति में 5, श्रीमती शान्तिदेवी जी कनोडा एव उनके पति श्री हसराज जी कनोडा जम्मू तवी ने धर्मार्थ बनवाया।

सम्प्रति वर्ष 83-84 मे जिन महानुभावो का कमरे बनवाने मे सहयोग प्राप्त हुआ है धन्यवाद सहित उनके नाम नीचे दिए जा रहे हैं। 1 श्री यशफूल चन्द जी अग्रवाल एव उनका परिवार (कोषाध्यक्ष गुरुकुल करतारपुर) अपने पूज्य पिता श्री लाला गुज्जरमल जी की पुण्य स्मृति मे एक कमरा बनवाया। 2 श्रीमती कैलाशवती जी पुरी देहली ने एक कमरा धर्मार्थ बनवाया। 3 एक कमरे के लिए माडर्न कन्स्ट्रक्शन कम्पनी भटिण्डा की ओर से 1100 रुपये नकद तथा लगभग 10 हजार ईंटे प्राप्त हुई। 4 श्री जे,-पी गर्ग आबुदाबी 5000 रुपए। श्रीमती लाजवन्ती जी जोशी लुधियाना 4200) रुपये। श्रीमती शान्तिदेवी जी सूद एव श्री चन्द्रपाल जी सूद होशियारपुर 5000 रुपये।

## भोजनशाला का पुनर्निर्माण

स्मारक भवन के आस-पास के क्षेत्र का तल ऊचा हो जाने से पानी का निकास नही हो पाता था, अत भोजनशाला को सुन्दर रूप देने तथा ऊचा करने के लिए काफी व्यय करके इसका पुनर्निर्माण कराया गया तथा साथ के स्टोर का फर्श भी ऊचा कराकर दीवारो पलस्तर पुन करवा दिए गए। भोजनशाला की छत को लगभग साढे चार फुट ऊचा उठाया गया।

## भोजनशाला के पात्र भण्डार मे वृद्धि

1 101 भोजनथाल दान म प्राप्त हुए 2 एक 22 लीटर का कुक्कर। 3 एक बडा पीतल का पतीला व 2 स्टील के जग, 4 एक मध्यम आकार की पीतल की कडाही।

## गऊशाला का बरामदा

गऊओ की सख्या मे वृद्धि हो जाने म उनके आवास एव धूप, तपत, वर्षा, गर्मी सर्दी से बचाव हेतु लगभग 100 × 13 फुट का विशाल बरामदा डाला गया, जिसके व्यय की पूर्ति के लिए दानी महानुभावों से आर्थिक सहयोग की अपेक्षा है।

## गऊओ मे वृद्धि एव ह्रास

गत वर्ष के उत्सव पर 2 गऊवें सहसा रोग ग्रस्त हो गई, परन्तु डाक्टरी चिकित्सा करते हुए भी हम उन्हे बचा नही पाए इसी न्यूनता की पूर्ति मे हमे दान स्वरूप जो गऊए प्राप्त हुई उनका सधन्यवाद नामाकन हम नीचे कर रहे है

1 श्रीमती लीलावती जी जालन्धर छावनी धर्मपत्नी श्री स्व डा भगवानदास जी की स्मृति मे बच्छे सहित काली गाए प्राप्त। 2 श्रीमती शकुन्तला देवी जी मित्तल जालन्धर द्वारा विलायती बच्छी सहित एक गाय प्राप्त। 3 श्रीमती रमेश रानी द्वारा श्री नोबतराम जी कालिया की स्मृति मे एक देसी गाय बच्छी सहित प्राप्त। 4 एक ऐसी गाय बच्छे सहित, रामरखी महाजन जालन्धर की ओर से 5 एक विलायती गाय दवीदास गोपालकृष्ण पुरी परिवार मोगा की ओर से।

## पण्डाल क्षेत्र मे फर्श

गत वर्ष उत्सव पर स्मारक के अधिकारियों ने आवश्यकतानुरूप पण्डाल क्षेत्र के फर्श हेतु अधिक सहायता की माग की थी। जिसके फलस्वरूप श्री हरिचन्द्र जी बजाज कपूरथला वालो ने अपने परिवार की ओर से 10 000 रुपये का पुण्य दान दिया। परन्तु हमे खेद है कि गऊशाला के बरामदे पर अधिक व्यय हो जाने से हम इस वर्ष उक्त फर्श को न डलवा सके, एतदर्थ हम दानी महानुभाव से क्षमा चाहते हैं और विश्वास दिलाते हैं कि वर्ष 84-85 मे यह कार्य अवश्यमेव पूर्ण हो जाएगा।

## नलके की पुनः मुरम्मत

श्री विजय कुमार जी गोयल मोगा के 501 रुपये के सहयोग से नलके को पुन पाईप आदि जोडकर नये स्थान पर नलका लगवाया गया।

## शोक सम्वेदना

वर्ष 83-84 मे स्मारक एव विद्यालय से घनिष्ठ सम्बन्ध रखते हुए जो निरन्तर स्मारक एव विद्यालय की प्रगति में सहायक रहे ऐसे कुछ सज्जन इस ससार से अपनी इहलीला समाप्त कर परलोक सिधार गए, उन सभी पुण्य दिवगतात्माओ के परिवारो के साथ हार्दिक सहानुभूति व्यक्त करते हुए तथा उनकी आत्मा की सद्गति के लिए प्रभु से प्रार्थना करते हुए भरे मन से उनके नाम नीचे दे रहे है—

1 प्रि श्री रामचन्द्र जी जावद, अधिष्ठाता विद्यालय। 2 प्रो श्री राजाराम जी सोनी समराला 3 श्रीमती शान्तिदेवी जी ताई करतारपुर, 4 श्री कुन्दनलाल जी उप्पल रैय्या मण्डी, 5 श्री लाला छागाराम जी सहारनपुर, 6 श्री शिवलाल जी भाटिया जालन्धर शहर

## कृतज्ञता प्रकाशन

यह विद्यालय एक सार्वजनिक परन्तु विशिष्ट सस्कृत शिक्षण संस्थान है। वह प्रत्येक व्यक्ति हमारे धन्यवाद का पात्र है जोकि आत्मिक, शारीरिक अथवा आर्थिक रूप में इस विद्यालय की सहायता करता है।

फिर भी कुछ विशेष सगठन या व्यक्ति विशेष जिनके नाम आगे लिए जाए गे उनके प्रति हम हार्दिक धन्यवाद अभिव्यक्त करते हैं—

सर्वप्रथम—भारतीय विकास परिषद् जालन्धर का धन्यवाद करते हैं जोकि प्रतिवर्ष छात्रवृत्ति रूप मे हमारे छात्रो को सहायता प्रदान करता रहा। इस वर्ष भी 20) प्रति छात्र की दर से हमारे 6 छात्रो को छात्रवृत्ति इस परिषद् द्वारा प्रदान की गई।

प्रतिवर्ष उत्सव पर लगर का सुप्रबन्ध करने वाले उत्साही नवयुवक श्री श्रीकृष्ण जी बासल करतारपुर तथा उनके समस्त सहयोगियो का जोकि उन्हे इस कार्य में सहायता देते हैं का भी हम हार्दिक धन्यवाद करते हैं।

मोगा के श्री जगदीश जी बासल जोकि प्रति वर्ष मोगा तथा श्री यमुनादास जी सुलतानपुर (कपूरथला) से गेहू, चावल इकट्ठा करवा कर लगर खर्च की पूर्ति करवाते हैं का भी हम धन्यवाद करते हैं।

विद्यालय के सहायक अधिष्ठाता श्री सुखदेवराज जी शास्त्री विद्यावाचस्पति भी विशेष धन्यवाद के पात्र हैं जिनके विशेष श्रम, प्रेरणा, योजना प्रयत्न, उत्साह तथा कर्मठता से विद्यालय का आर्थिक एव प्रशासनिक ढाचा सुदृढ रहता है। उनके सहयोगी आचार्य श्री नरेश कुमार जी शास्त्री तथा अन्य अध्यापको का भी हम हृदय से धन्यवाद करते हैं जिनके प्रयत्नो से शैक्षणिक विभाग सुचारू एव व्यवस्थित रहता है।

उन सभी दानी महानुभावो का भी धन्यवाद करते हैं जोकि हमे स्मारिका मे विज्ञापन देकर मासिक या वार्षिक दान देकर विद्यालय का व्यय वहन करने में आर्थिक सहायता प्रदान करते हैं या एतदर्थ दान एकत्रित करते व करवाते हैं,

श्री गुरु विरजानन्द स्मारक समिति ट्रस्ट करतारपुर के प्रधान श्री सेठ शिवचन्द जी अग्रवाल तथा कोषाध्यक्ष श्री यशफूलचन्द जी अग्रवाल उपमन्त्री श्री ज्ञानी गुरदयालसिंह जी आर्य, श्री देवराज जी खुल्लर तथा उपप्रधान बहिन कमला जी आर्या उपकोषाध्यक्ष श्री रामलुभाया जी नन्दा तथा समिति के शेष दूसरे समस्त अन्तरग सदस्यो, विशेष आमन्त्रित सदस्या तथा साधारण सदस्यो के प्रति हम हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करते हैं जोकि प्रत्येक दिशा मे विद्यालय को प्रगति की ओर अग्रसर करने में सहायक रहते हैं।

—चतुर्भुज मित्तल मन्त्री

सम्पादकीय—

# पंजाब की वर्तमान परिस्थि-तियों में आर्यसमाज क्या करे-2

इस विषय पर आर्य मर्यादा के पिछले अंक में पंजाब की वर्तमान परिस्थितियों पर अपने विचार पाठकों के सामने रखते हुए मैंने लिखा था कि पंजाब में जो कुछ हुआ है वह वास्तव में एक अन्तर्राष्ट्रीय षड्यन्त्र है। हम जानते हैं कि आज कल बड़े 2 देश उन देशों में विघटन पैदा करने का प्रयास करते रहते हैं जिनके साथ उन्हें कुछ मतभेद होता है या जो उनकी अन्तर्राष्ट्रीय नीति के अनुसार चलने को तैयार नहीं होते। भारत जब से स्वतन्त्र हुआ है उसने एक स्वतन्त्र विदेश नीति अपनाई है जिसे कुछ देशों ने पसन्द नहीं किया। इसलिए वह समय 2 पर भारत में ऐसी परिस्थितियां पैदा करने का प्रयत्न करते रहे हैं जिनके कारण भारत विवश होकर उन देशों का आधिपत्य स्वीकार करने को तैयार हो जाए। अमेरिका विशेष रूप से इस दिशा में ऐसी नीति अपनाता रहा है जिसके कारण हमारे लिए कई प्रकार की कठिनाईयां पैदा होती रही हैं। कश्मीर की समस्या पर उसने बहुत समय तक पाकिस्तान का समर्थन किया था और यह उसके प्रोत्साहन का ही परिणाम था कि पाकिस्तान दो बार हमारे साथ लड़ने को तैयार हो गया। यह तो भारत की अपनी शक्ति थी और उसके बहादुर सैनिक थे जिन्होंने अमेरिका और पाकिस्तान का षड्यन्त्र सफल नहीं होने दिया, बरन जो कुछ वह कर रहे थे अगर उसमें उन्हें सफलता हो जाती तो सम्भव है हमारे देश का एक और बटवारा हो जाता।

अब एक बार फिर वही पुराना इतिहास दोहराया जा रहा है। पंजाब में कुछ व्यक्तियों के दिमाग में यह ख्याल बैठ गया है कि जिस प्रकार मुसलमानों ने लड़कर पाकिस्तान बनवा लिया है, इसी प्रकार क्यों न सिख भी खालिस्तान बनवा लें। जब हम 1947 में आजाद हुए थे तो उसके पश्चात् कुछ अकाली नेताओं ने यह कहा था कि मुसलमानों को पाकिस्तान मिल गया, हिन्दुओं को हिन्दुस्तान हमें क्या मिला? इस प्रकार की बात वही व्यक्ति कह सकते हैं जो इस देश को अपना न समझते हों जिसे अपने इस देश पर गर्व हो वह यह नहीं कह सकता कि हमें क्या मिला? यह उसी प्रवृत्ति के व्यक्ति कह सकते हैं जिनके दिमाग में यह भावना हो कि भारत उनका देश नहीं है। जब अमेरिका और पाकिस्तान जैसे देशों को यह पता चल गया कि भारत में कुछ ऐसे लोग हैं जो इस देश को अपना नहीं मानते या अपने लिए एक पृथक् स्वतन्त्र देश चाहते हैं, तो उन्होंने ऐसे व्यक्तियों को प्रोत्साहन देना प्रारम्भ कर दिया। उसी के साथ खालिस्तान आन्दोलन का प्रादुर्भाव हुआ। उसके पश्चात् विशेषकर पिछले तीन वर्षों में पंजाब में क्या कुछ हुआ है इसे फिर दोहराने की आवश्यकता नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति जानता है कि पंजाब में जो आग लगी है वह किसने लगाई है और क्यों लगाई है।

यह है स्थिति जिस पर आर्य समाज को गम्भीरता पूर्वक विचार करना चाहिए। आर्य समाज का इस विषय में, मैं एक विशेष उत्तरदायित्व समझता हूं। इसलिए कि आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज का आधार ही देशभक्ति और देश प्रेम बनाया था। उन्होंने ही सबसे पहले यह कहा था कि दूसरों का राज्य चाहे कितना ही अच्छा क्यों न हो, वह स्वराज्य से अच्छा नहीं हो सकता। स्वराज्य का मन्त्र अपने देशवासियों को सबसे पहले देने वाले महर्षि दयानन्द सरस्वती ही थे। जिन व्यक्तियों ने उनके महान शिष्य श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा का जीवन चरित्र पढ़ा है, वह जानते हैं कि श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा को इंग्लिस्तान भेजने वाले महर्षि दयानन्द ही थे और जब श्याम जी जाने लगे तो महर्षि ने उनसे कहा कि दो मन्त्रों को न भूलना एक स्वधर्म और दूसरा स्वराज्य। इन दोनों की रक्षा के लिए अपने आपको तैयार करना। हम यह भी जानते हैं कि स्वाधीनता के संग्राम में आर्य समाजियों ने बड़ी भारी संख्या में अपना बलिदान दिया था। रामप्रसाद बिस्मिल, भगतसिंह और सुखदेव जैसे फांसी पर चढ़ने वाले नवयुवक आर्य समाजी परिवारों में आए थे। इसलिए देश की स्वाधीनता के सम्बन्ध में आर्य समाज ने अपना विशेष योगदान दिया था। ऐसी स्थिति में जब कुछ तत्व देश में विघटन के द्वारा हमारी स्वाधीनता के लिए नया संकट पैदा करने का प्रयास कर रहे हों तो आर्य समाज ऐसे समय में हाथ पर हाथ रख कर कैसे बैठ सकता है। आर्य समाज का इतिहास शहीदों का इतिहास है। सिक्खों ने अपने धर्म की रक्षा के लिए कई शहीद पैदा किए, परन्तु हिन्दुओं में केवल आर्य समाज ही है जिसने धर्म की रक्षा के लिए शहीद पैदा किए। महर्षि दयानन्द सरस्वती के स्वधर्म और स्वराज्य के मन्त्र को क्रियान्वित करने के लिए आर्य समाज ने समय 2 पर जो पग उठाए हैं वह हमारे इतिहास में लिखे जा चुके हैं। ऐसी स्थिति में जब हमारे देश पर एक नया संकट आ रहा है, आर्य समाज का फिर से यह कर्त्तव्य हो जाता है कि वह स्वधर्म और स्वराष्ट्र की रक्षा के लिए फिर से कटिबद्ध हो जाए। प्रश्न किया जाएगा कि वर्तमान परिस्थितियों में आर्य समाज को क्या करना चाहिए? इस पर गम्भीरता पूर्वक विचार करने की आवश्यकता है। परन्तु सबसे पहले हमारे लिए यह आवश्यक है कि हम अपने अन्दर आर्यत्व की भावना पैदा करें। आर्य और हिन्दू इस शब्द पर कई बार विवाद भी चल पड़ता है। मेरे विचार में आज इसमें पड़ने की आवश्यकता नहीं, पंजाब में विघटनकारी तत्व जो कुछ कर रहे हैं यदि वह सफल हो जाते हैं तो यहां न आर्य रहेंगे न हिन्दू रहेंगे। इसलिए उन सब व्यक्तियों को जो वेदों को अपने धर्म का आधार मानते हैं और जिन्हें अपनी प्राचीन संस्कृति पर गर्व है अपने आपको वह आर्य कहें या हिन्दू कहें, उन सब को मिलकर वर्तमान परिस्थितियों का मुकाबला करना चाहिए। यह हम कैसे कर सकते हैं इसके विषय में आगामी अंक में अपने विचार पाठकों के सामने रखूंगा।

—वीरेन्द्र

# गुरुवर श्री विरजानन्द जी के चरणों में

29 30 सितम्बर को करतारपुर में गुरु विरजानन्द स्मारक में बृहद् सम्मेलन हो रहा है, आर्य समाज के इतिहास में गुरुवर विरजानन्द का एक विशेष स्थान है। हम सब महर्षि दयानन्द को याद करते हैं क्योंकि उन्होंने आर्य समाज की स्थापना की थी, हम यह नहीं भूल सकते कि दयानन्द, दयानन्द न बन सकते, यदि विरजानन्द न होते। महर्षि दयानन्द जो कुछ भी बने थे अपने गुरु के चरणों में बैठकर बने थे। इस आधार पर वेदों को पुनर्जीवित करने वाले वास्तव में गुरुवर विरजानन्द जी महाराज थे। महर्षि दयानन्द जी ने तीन वर्ष उनके चरणों में बैठकर जो शिक्षा प्राप्त की थी उसका यह परिणाम था कि उन्होंने सारे देश में घूम घूमकर जनता को यह आह्वान किया था कि 'चलो वेदों की तरफ'। इसलिए आज यदि संसार वेदों की महानता को स्वीकार करता है तो वह केवल महर्षि दयानन्द के कारण। लेकिन महर्षि दयानन्द ने भी जो कुछ किया, वह गुरुवर विरजानन्द जी के आदेश पर किया। आज तो योरुप के बड़े 2 विद्वान् भी यह मानते हैं कि संसार के पुस्तकालय में वेद सबसे पुराने ग्रन्थ हैं। इससे हम वेदों के महत्त्व को समझ सकते हैं जिस युग में वेद लिखे गए थे, उस युग में न कोई हिन्दू था न मुसलमान था। न कोई ईसाई था न कोई सिख था। केवल मनुष्य ही इस संसार में रहते थे। देशकाल या धर्म जाति के आधार पर उनमें कोई भेदभाव न था। इसलिए वेद सारे मनुष्य मात्र के लिए ही बनाए गए थे। मनुष्य परम पिता परमात्मा की सबसे सुन्दर और महत्वपूर्ण रचना है। मनुष्य को बनाने के पश्चात् उन्होंने सोचा कि उसके जीवन की कोई व्यवस्था भी तो होनी चाहिए। इसे कैसे पता चलेगा कि इसने अपना जीवन किस प्रकार व्यतीत करना है कई प्रकार की कठिनाईयां समय 2 पर इसके रास्ते में खड़ी होती रहेंगी, उन्हें कैसे हटाया जाए, यह मनुष्य को कौन बताएगा। इस उद्देश्य को सामने रखकर मनुष्य मात्र के लिए वेदों का निर्माण किया गया। यही कारण था कि प्राचीन काल काल में वेदों के अतिरिक्त संसार के सामने और कोई धार्मिक ग्रन्थ न था। कुरान तो 1500 वर्ष पहले ही लिखा गया था और बाईबिल को लिखे गये अभी दो हजार वर्ष भी नहीं हुए वेद उनसे हजारों वर्ष पहले लिखे गये थे पांच हजार वर्ष पहले जो गीता लिखी गई थी वेद उससे भी पुराने हैं। परन्तु हम उन्हें भूल गए थे। गुरुवर श्री स्वामी विरजानन्द जी महाराज ने महर्षि दयानन्द के द्वारा हमें वेदों की याद दिलाई।

इसलिए हम पर उनका जो ऋण है उसके महत्व की हम अवहेलना नहीं कर सकते। संसार में वही जाति जीवित रह सकती है जो अपने महापुरुषों को याद करके समय पर उनके दिए हुए सन्देश को समझती है और उसके अनुसार अपने जीवन को बनाती रहती है। गुरुवर विरजानन्द जी का यही सन्देश है और वह दो अक्षरों का 'वेद'। उनके चरणों में श्रद्धांजलि भेंट करने का एक ही मार्ग है कि हम अधिक से अधिक वेदों का प्रचार करें। इसीलिए महर्षि दयानन्द ने कहा था—'वेद का पढ़ना-पढ़ाना सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

—वीरेन्द्र

# संस्कार और जीवन मूल्य

ले.—श्री जगदीश विद्यालंकार पुस्तकालयाध्यक्ष, गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार

जीवन मूल्यो का आरोपण एव सस्कारो का अनवरत प्रवाह एक दूसरे के अनुपूरक हैं। जीवन की सार्थकता नैतिक मूल्यो की स्थापना मे है तथा नैतिक मूल्यो का सृजन श्रेष्ठ सस्कारो के सतत आरोपण से ही सम्भव है। भारतीय ऋषियो की मान्यता के अनुसार अक्षर ज्ञान की शिक्षा ही केवल शिक्षा नहीं, बल्कि सही शिक्षा तो मलिन सस्कार धोकर एव उच्च सस्कार सतत आरोपित करने की प्रक्रिया है। तथा सस्कारो के इस आरोप प्रत्यारोपण का क्रम ही अनवरत शिक्षा का आधार है।। प्राचीन ऋषियो का शिक्षा सम्बन्धी दृष्टिकोण अत्यन्त व्यापक है जिसमे प्रौढ अवस्था मे तोते की तरह रटते-रटाते अक्षर ज्ञान की सीख को प्रौढ शिक्षा का जामा नही पहनाया गया, बल्कि कोटि कोटि प्राणियो के अलग अलग पारिवारिक एव आर्थिक स्तर होते हुए भी उनमे श्रेष्ठ ज्ञानार्जन की इच्छाओ तथा तथा सद्वृत्तियों का विकास करने के प्रवाह का नाम शिक्षित किया जाना है।

आज शिक्षा की ज्वलत समस्याओ के मध्य यदि हम प्राचीन ऋषियो की जीवन शैली पर विचार करें तो हमे शिक्षा का एक ही ध्येय सर्वत्र दृष्टिगोचर होगा, वह है मानव का सस्कारो द्वारा निर्माण। यह सस्कार देना ही शिक्षित किया जाना है। सस्कार देने का यह सिलसिला जन्म से पूर्व ही प्रारम्भ हो जाता है।

मानव जीवन को सर्वांग रूप से परिष्कृत करने के लिए देश के शिक्षा मनीषियो के सामने एक शताब्दी पूर्व ऋषि दयानन्द ने एक अनूठा तरीका प्रस्तुत किया। ऋषि दयानन्द ने सस्कार विधि मे मानवीय जीवन को परिष्कृत करने हेतु षोडश सस्कारो की विवेचना की, ऋषि दयानन्द ने यह मान्यता प्रस्तुत की कि जीव के गर्भ मे आते ही माता-पिता को अच्छे सस्कारो मे उसको लपेटने की व्यवस्था कर लेनी चाहिए।

वैदिक सस्कृति के दृष्टिकोण मे साक्षरता या निरक्षरता का अर्थ बडे व्यापक स्तर पर समझा जाना चाहिए। निरक्षरता से अभिप्राय केवल वर्ण माला के अक्षरो को समझाना या जानना ही नहीं, बल्कि असस्कारी होना भी है। अत प्राचीन जीवन प्रणाली मे यदि कोई बालक इन सस्कारो से रहित हो तो उस की सस्कारहीन निरक्षरता को दूर करने हेतु समय-समय पर किये जाने वाले सस्कार उसे शिक्षित किये जाने का आह्वान करते हैं।

वैदिक सस्कृति के दृष्टिकोण से शिक्षित मानव सस्कारो से शिक्षित होता है, उसकी बौद्धिक क्षमता का विकास तर्क एव आचरण से सम्पन्न होता है। उसके जीवन की शैली निस्वार्थ कर्म से ओत-प्रोत होती है। उसका कृतित्व एव व्यक्तित्व अनुकरणीय होता है।

आज जब हम व्यापक रूप से जन-जन को शिक्षित करने का अभियान चला रहे हैं वहा यदि हम इस महान कार्यक्रम को सम्पन्न करने मे भारतीय जीवन प्रणाली मे समाहित षोडश सस्कारो का अर्थ समझ सकें तो मानव की सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था का चित्र हमारी आखो के सामने उपस्थित हो सकेगा।

वैदिक सस्कृति के अनुसार सस्कार का अर्थ है, किसी वस्तु के रूप को बदल देना, उसे नया रूप देना। वैदिक सस्कृति मे मानव को शनै शनै शिक्षित करने के लिए 16 बार परीक्षा लिए जाने का विधान है। जैसे सुनार अशुद्ध सोने को अग्नि मे डालकर उसका सस्कार करता है उसी प्रकार बालक के उत्पन्न होते ही उसे सस्कारो की भट्ठी मे डाल कर उसकी दुष्प्रवृत्तियो को निकाल कर सद्गुणो के सस्कारो से सस्कृत किया जाना ही उसे सही मायने मे शिक्षित किया जाना है।

जीवन पर्यन्त शिक्षा व्यवस्था—सस्कार पद्धति की व्यवस्था के द्वारा छोटे से जीवन मे बालक को शिक्षित किये जाने का सिलसिला होता है जो जीवन पर्यन्त चलता रहता है। इस सस्कार पर सार्वजनिक रूप से वेद मन्त्रो के द्वारा उपस्थित भद्रजनो के मध्य मे व्यक्ति को अपने सकल्प दोहराने पडते हैं, नई चुनौतियो का सामना करने हेतु प्रतिज्ञाबद्ध होना पडता है तथा लोक मगल की कामना का अभीष्ट वन लेकर जन समुदाय को यह विश्वास दिलाता है कि उसकी शिक्षा की सार्थकता आचरण प्रधान है। अग्नि की साक्षी लेते हुये सस्कार मे आये वेद-मन्त्रो के द्वारा उसका सकल्प विचार एव आचरण झिलमिलाता है। सस्कारो के माध्यम के द्वारा सार्वजनिक रूप से इस प्रकार सम्पन्न हुई परीक्षाए जीवन को सार्थक करती हैं।

मानवीय आनुवशिकी—मानव को शिक्षित करने की जो वैदिक परम्परा थी वह वैदिक सस्कारों की थी। मानव के रूपान्तरण की वैज्ञानिक प्रक्रिया को यदि अनुवशिकी अभियान्त्रिकी कहा जा सकता है तो वैदिक विचार धारा की व्यवस्था को मानवीय अभियान्त्रिकी कहा जा सकता है जीन्स के बदलने की अपेक्षा सस्कारो का बदलना अधिक आसान है। जीन्स का बदलना कृत्रिम रूप में प्रयोगशाला मे ही सम्भव है लेकिन सस्कारो को बदलना तो वैदिक जीवन मे अपने हाथो में ही है।

जातकर्म सस्कार—इस सस्कार मे जन्म लेते ही बच्चे की जीभ पर स्वर्ण की शलाखा को शहद में लगाकर 'ओ३म्' लिखा जाता है और उसके कानो में 'वेदोऽसि' कहा जाता है और साथ ही 'अश्मा भव' परशु भव, का उच्चारण किया जाता है। इन वाक्यो में बालक की आध्यात्मिक, मानसिक तथा शारीरिक तीनो प्रकार की उन्नति का निर्देश है। ये सस्कार माता-पिता पर डाले जाते हैं जो सार्वजनिक रूप से यह घोषित करने पर बाध्य हैं कि बच्चे को सस्कारित करने की सम्पूर्ण जिम्मेदारी उनकी है।

असली समस्या मानव निर्माण—आज ससार मे भ्रष्टाचार उन लोगो से नहीं फैल रहा, जिनके पास खाने को रोटी नहीं, पहनने को कपडा नहीं, रहने को मकान नही। भ्रष्टाचार उन लोगो से फैल रहा है, जिनके पास सब कुछ है, इसलिये यह समझना कि मूल समस्या रोटी, कपडे की है, बेबुनियाद है। आज सबसे बडे कार्यक्रम की आवश्यकता है मानव को मानव बनाने की। वैदिक पद्धति का प्रधान ध्येय मनुष्य की भौतिक आवश्यकताओ की पूर्ति के साथ ऐसी योजना को हाथ मे लेना था जिससे नव-मानव का निर्माण हो सके। यह योजना थी—सुसस्कृत मानव बनाना। यही शिक्षा का प्रधान ध्येय होना चाहिए।

नामकरण सस्कार—जातकर्म के समय बालक के माता-पिता उसको सस्कृत करने का जहा बीडा उठाते हैं वहा नामकरण के समय मे वे अपने सकल्प को क्रियात्मक रूप देते हैं। नाम रखने का अर्थ जीवन मे सदा के लिए जाने-अनजाने मैं माता-पिता अपनी आकाक्षा नाम के द्वारा सस्कार स्थापित करने का प्रयत्न करते हैं। नामकरण सस्कार शब्द का अर्थ ही है जिसमे कोई अभिप्राय निहित हो। इसी प्रकार निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूडाकर्म और कर्णवेध सस्कार उसके शारीरिक स्वास्थ्य को दृष्टि मे रखकर किए जाते हैं। इन चारो सस्कारो को करने का अभिप्राय है कि माता पिता के सामने लगातार सन्तान को वास्तविक मानव बनाने की योजना सामने रहे।

उपनयन तथा वेदारम्भ—वैदिक सस्कृति के जीवन के कार्यक्रम में आचार्य का विशिष्ठ स्थान है। बालक इस सस्कार के माध्यम द्वारा योग्य आचार्य को जीवन के मूल्यो को समझने हेतु सौपा जाता है। शिष्य गुरु को कहता है- ब्रह्मचर्यमागाम् उपमानयस्व मैं ब्रह्मचर्य धारण करने के लिए आपके पास आया हू। मुझे अपने निकट रखिए। एक ईसाई धर्म गुरु का कथन इस परिप्रेक्ष्य मे कितना सत्य है कि अपने बच्चे को पाच वर्ष तक मेरे पास रहने दो, बाद में वापस ले लो, परन्तु मुझ से हटकर भी वह जन्म-भर मेरा होकर रहेगा। यह सस्कारो का ही विलक्षण प्रभाव है।

समावर्तन, गृहस्थ, वानप्रस्थ, सन्यास तथा अन्त्येष्टि जितने 16 सस्कार हैं उनमे 11 सस्कार तो 6 7 वर्ष की आयु तक ही समाप्त हो जाते हैं। फिर भी यदि इन सस्कारो से बालक रहित हो गया तो इन सस्कारों द्वारा पुन उसे शिक्षित किये जाने का सिलसिला प्रारम्भ किया जाता है। यही अग्नि की साक्षी उसके जीवन को सामने ला देती है। यही वैदिक दृष्टि कोण से अनवरत शिक्षा का स्वरूप है। क्रान्ति का गुरु मन्त्र इन सस्कारो में छिपा हुआ है। आज के युवको का 16 सस्कारो की भट्ठी मे डाल दो, 20-25 वर्ष में सारा ससार बदल जाएगा।

सस्कारो की भट्ठी मे विद्यमान जीवन का स्वरूप ही कुछ और होता है। जीवन की सार्थकता को समझने मे मानव की प्रवृत्तिया एव आकाक्षाओं का पुरजोर आग्रह होता है। स्वभाव की यह सहज प्रवृत्तिया एक दो दिन मे नही बनती, बल्कि जन्म-जन्मान्तर के अपूर्व सस्कारो से स्वभाव एव आदतो का निर्माण होता है। जीवन मूल्यो के स्पन्दन को समझने वाले ऐसे जीवन के सगीत में हृत्तत्रियो की आवाज भी मनोहर एव प्रकाश देने वाली होती है। यजुर्वेद प्रथम अध्याय के अठारहवें मन्त्र मे मानव को इन जीवन मूल्यो से अलकृत होने के लिए कहा गया है। देखिए यह मन्त्र कहता है—सूर्य किरणो के सदृश तप स्वय को तपाना चाहिए, जीवन को तप समझा जाए तथा तपस्वी जीवन ही जीवन के प्रयोजन को पूरा कर सकता है।

( शेष पृष्ठ 8 पर )

# गुरु विरजानन्द स्मारक (ट्रस्ट) वैदिक संस्कृत महाविद्यालय करतारपुर (जालन्धर) की झलकियाँ

गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय करतारपुर (जालन्धर) निरन्तर उन्नति की ओर बढ़ रहा है। अब इसका विशाल भवन, सुन्दर गोशाला और इसके होनहार ब्रह्मचारी इसकी उन्नति के प्रतीक हैं। विद्यालय को गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से मान्यता प्राप्त है। विद्यालय में ब्रह्मचारियों के भोजन और रहन सहन की उत्तम व्यवस्था है। पढ़ाई के साथ बच्चों को शारीरिक और बौद्धिक शिक्षा भी दी जाती है। इसके आचार्य श्री नरेशकुमार जी शास्त्री तथा मुख्य अधिष्ठाता श्री सुखदेवराज जी शास्त्री और इस विद्यालय के मन्त्री श्री ... मित्तलजी तथा प्रधान श्री सेठ ... दजी अग्रवाल और अन्य कार्यकर्ता तथा सहयोगी ... तथा बहिन इसे उन्नति के शिखर पर ले जाने का प्रयत्न कर रहे हैं।

## विद्यालय के ब्रह्मचारियो के कार्यक्रमो की झलकिया

विद्यालय की मह मा प्रभ आश्रित यज्ञशाला

गुरुकुल के ब्रह्मचारी कण्ठ कप से लोहे का सरिया मोड़ते हुए

गुरुकुल के ब्रह्मचारी लोहे के सरिये को बाजू पर चूड़िया बनाते हुए।

गुरुकुल के ब्रह्मचारी स्तूप का प्रदर्शन करते हुए

( ? पृष्ठ का शेष )

अपर ... को प्राप्त ... ।

1978 में गुरु विरजानन्द के 200 वर्षीय जन्म समारोह का गुरुकुल के वार्षिक उत्सव पर शुभारम्भ हुआ जिसका 1978 में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के सहयोग से 16 सितम्बर से 23 सितम्बर तक समापन समारोह मनाया गया जो पूर्णतया सफल रहा। इस समापन समारोह की अभूतपूर्व विशेषता यह है कि इसमें किसी भी राजनैतिक नेता को आमन्त्रित नही किया गया।

विगत 4 वर्षों से अर्थात वर्ष 1980 से इस विद्यालय का परीक्षा सम्बन्ध गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार से कर लिया गया है जो कि गत वर्ष स्थायी मान्यता को प्राप्त हो गया है। आशा है भविष्य में यह विद्यालय पूर्व वर्षों की अपेक्षा अधिक उन्नति कर विश्वविद्यालय की शाखाओं में विशिष्ट स्थान प्राप्त करेगा।

## आर्यसमाज बंगा रोड फगवाड़ा में प्रचार

आर्य समाज बंगा रोड फगवाड़ा मे 11 से 16 सितम्बर तक दयानन्द मठ दीनानगर के ब्रह्मचारी श्री रामानन्द जी शास्त्री तथा श्री महादेव जी शास्त्री ने वेद प्रचार किया। प्रातः यज्ञ के पश्चात उपदेश तथा भजन होते रहे। परिवारो में भी यज्ञ रखे गए। आर्य समाज के सदस्यो व अधिकारियो ने बहुत उत्साह दिखाते हुए इस कार्यक्रम को सम्पन्न किया।

---

1 सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते है उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।

टेलीफोन न. 74250 (रजि. न. पी. जे. एल. 55)

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

# आर्य मर्यादा

जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 16 अंक 30, 25 कार्तिक सम्वत् 2041, तदनुसार 11 नवम्बर 1984, दयानन्दाब्द 160 । एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपए

## उपासना योग क्यों करें ?

ले—श्री ब्र आचार्य आर्य नरेशजी वैदिक प्रवक्ता

1 इससे मनुष्य स्वस्थ सुन्दर सबल सरल निर्भीक व सब कठिन से कठिन कार्यों में सफलता प्राप्त करता है। (योगदर्शन)

2 बिना शुद्ध कर्म और परमेश्वर की उपासना के मृत्यु दुःख से पार कोई नहीं होता। (सप्तम् समु स प्र )

3, क्योंकि उत्तम (उपासनादि) कर्म करने से मनुष्यों मे उत्तम जन्म और मुक्ति में महा कल्प पर्यन्त जन्म मरण दुःखों से रहित होकर आनन्द में रहता है (नवम समु, सत्यार्थ प्रकाश)

4 जो आकाश के समान व्यापक सब देवो का देव परमेश्वर है उसको जो मनुष्य न मानते और उसका ध्यान नही करते वे नास्तिक मन्दमति सदा दुःख सागर मे डूबे ही रहते हैं।

5 ईश्वर का ध्यान यह पूर्ण विद्या है। यह सारी विद्याओ का मूल है। जिस देश मे इस विद्या का ह्रास होने से उस देश को दुर्दशा आ घेरती है (ऋषि के पूना प्रवचन)।

6 जिस राज्य मे मनुष्य लोग अच्छी प्रकार ईश्वर को जानते हैं वही देश सुख युक्त होता है।

(ऋ भा, भूमिका)

7 (गृहस्थजन) एक कोश वा कोश एकान्त जगल मे जा के योगाभ्यास की रीति से परमेश्वर की उपासना कर सूर्योदय पर्यन्त अथवा घड़ी या आध घड़ी दिन चढ़े तक घर में आ के सन्ध्योपासना यज्ञादि काम प्रतिदिन नियम से करें।

(सस्कार विधि गृ प्र )

8 वह उपासना मात्र दुष्ट मनुष्य को सिद्ध नहीं होता क्योंकि जब तक मनुष्य दुष्ट कामो से अलग होकर अपने मन को शान्त और आत्मा को पुरुषार्थी नहीं करता तब तक कितना पढ़े व सुने, उसको परमेश्वर की प्राप्ति कभी नहीं हो सकती।

9 जैसे शीत से आतुर पुरुष का अग्नि के पास जाने से शीत निवृत हो जाता है वैसे परमेश्वर के समीप प्राप्त होने से सब दोष दुःख छूट कर परमेश्वर के गुण कर्म स्वभाव के सदृश जीवात्मा के गुण-कर्म स्वभाव पवित्र हो जाते हैं। इसलिए परमेश्वर की स्तुति प्रार्थना और उपासना अवश्य करनी चाहिए। इससे इसका फल पृथक होगा परन्तु आत्मा का बल इतना बढ़ेगा कि) वह पर्वत के समान दुःख प्राप्त होने पर भी न घबरायेगा और सबको सहन कर सकेगा। क्या यह छोटी बात है ? और जो परमेश्वर की स्तुति प्रार्थना और उपासना नही करता वह कृतघ्न और महामूर्ख भी होता है।

(सप्तम समु सत्यार्थ प्रकाश)

10 क्योंकि जिस परमात्मा ने इस जगत् के सब पदार्थ जीवो को सुख के लिए दे रखे हैं उसका गुणगान भूल जाना ईश्वर ही को न मानना कृतघ्नता और मूर्खता है।

11 जब मनुष्य को ज्ञान होता है तब वह ठीक-ठीक जानता है कि मैंने अनेक बार जन्म-मरण को प्राप्त होकर नाना प्रकार के हजारो गर्भाशयो का सेवन किया। अनेक प्रकार के भोजन किए अनेक माताओ के स्तनो का दुग्ध पिया अनेक माता पिता और सुहृदो को देखा मैंने सब मे नीचे सुख इत्यादि नाना प्रकार की पीडाओ से युक्त होके अनेक जन्म धारण किए।

(ऋ भा भूमिका)

12 परन्तु अब इन महादुःखो से तभी छूटूगा कि जब परमेश्वर में पूर्ण प्रेम और उसकी आज्ञा का पालन करूगा नही तो इस जन्म मरण रूप दुःख सागर के पार जाना कभी नहीं हो सकता जो केवल भाण्ड के समान परमेश्वर के गुण कीर्तन करता जाता और अपना चरित्र नही सुधारता उसका स्तुति करना व्यर्थ है।

(ऋ भाष्य भूमिका)

13 ईश्वर की स्तुति का फल यह है कि जैसे परमेश्वर के गुण हैं वैसे अपने गुण कर्म, स्वभाव (दयालु) समदर्शी न्यायकारी आनन्द स्वरूपादि भी करना।

(सत्यार्थ प्रकाश)

14 उपासना के द्वारा आत्मा मे सुख का प्रादुर्भाव होता है। इस उपाय को छोड़कर पाप नाश करने के लिए अन्य उपाय नहीं है। (ऋ पूना प्रवचन)

15 उपासना के द्वारा विवेक उत्पन्न होता है। विवेकी होने से क्षणिक वस्तुओ के शोक और आनन्द ये दोनो नहीं होते।

(ऋषि के पूना प्रवचन)

16 आत्मा मनुष्य में अद्भुत काम कर सकता है। ससार मे (ईश्वर से पृथ्वी तक) सभी पदार्थों के स्वरूप गुणो को जानकर मनुष्य अत्यन्त दूर के पदार्थों के दर्शन श्रवण आदि की शक्ति प्राप्त कर सकता है, जिसे प्राप्त करने में प्रायः असमर्थ रहता है। (ऋषि के पत्र व्यवहार)

17 इससे सब मनुष्यो को उचित है कि सब कामो मे इस काम को मुख्य जानकर पूर्वोक्त प्रात साय दोनों समयो मे जगदीश्वर की उपासना नित्य करते रहे। (पच महायज्ञ)

18 जिससे दुःख सागर से पार उतरें कि जो सत्य भाषण विद्या सत्संग, यमादि योगाभ्यास पुरुषार्थ विद्या दानादि शुभ कर्म हैं उसी को तीर्थ समझता हू। इतर जल स्थलादि को नही। (स प्र,)

19 जो मनुष्य नित्य प्रात और साय सन्ध्योपासना को नहीं करता उसको शूद्र के समान समझकर द्विजकुल (ब्राह्मण क्षत्रिय तथा वैश्य) से अलग करके शूद्र कुल मे रख देना चाहिए। (मनु)

20 इसी ससार मे जो नरक की शरीर एव कर्म रूपी औषधि रहते नरक (दुःख) को दूर नही करता। वह नरक की शरीर रूपी औषधि छूट जाने पर क्या करेगा ? (भोज)

21 जब तक यह शरीर स्वस्थ है, जब तक बुढापा दूर है जब तक इन्द्रियो मे शक्तिपूर्ण है और जब तक मृत्यु दूर है तब ही आत्म चिन्तन तथा ईशोपासना का समय है। नही तो घर को आग लगने पर कुआ खोदने से कुछ लाभ नहीं होगा,

(भर्तृ हरि)

ईश्वर की प्राप्ति ही जीवन का मुख्य उद्देश्य है और उसकी प्राप्ति के लिए बहुत परिश्रम करना पडता है और अधिक परिश्रम के लिए अधिक बल चाहिए। जीवन मे अधिक बल जवानी मे होता है। इसलिए ईश्वर की उपासना का सबसे अच्छा समय यौवन काल ही है न कि बुढापा।

नोट—विशेष जानकारी के लिए लेखक की पुस्तक योगपथ पढ़े—ध्यान रहे कि अण्डे मास शराब केक सिगरेट तम्बाकू चाय, काफी लाल मिर्च, प्याज, लहसुन गन्दे नावल अश्लील चलचित्रो मे स्वाद लेने वाला व्यक्ति इस उपासना योग मे सफल नहीं हो सकता, इस मार्ग पर केवल वही सयमी व्यक्ति सफल हो सकता है जो वेद मार्ग पर चलता हुआ शारीरिक आत्मिक एव राष्ट्रीय कल्याण के लिए ही खाता-पीता देखता-चलता व विश्राम करता है।

## एक मात्र ईश्वर की ही उपासना

अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो अर्चत । अर्चन्तु पुत्रका उत पुर न धृष्ण्वर्चत ॥

(अथर्व 20 92 5)

हे मेधा शक्ति के प्यारो ! शक्तिशाली ब्रह्म की अपने देह के समान अर्चना करो अच्छे प्रकार अर्चना करो और तुम्हारे छोटे छोटे पुत्र भी उसी ब्रह्म की अर्चना करें।

तमुष्टुहि यो अन्त सिन्धौ सूनु । सत्यस्य युवानमद्रोघवाच सुशेवम ॥

(6 1 2)

जो समुद्र के अन्दर है तथा जो सत्य का प्रेरक है बाल्य और जरा से रहित द्रोह शून्य वाणी वाले उस ही सुखदायक परमात्मा की तुम सब स्तुति किया करो।

मा चिदन्यद विशसत सखायो मा रिषण्यत ।

प्रभु कहते हैं कि हे मित्रो ! मुझे छोडकर किसी और की स्तुति कभी न करना और व्यर्थ ही कष्ट मत भोगना।

# महात्मा गांधी और स्वामी दयानन्द

ले.—श्री कमलकिशोर जी गोयका

क्या यह प्रकृति का संयोग मात्र था कि इस देश के दो महान् देशभक्त, समाज सुधारक चिन्तक एवं जन-नेता गुजरात के काठियावाड़ प्रदेश मे जन्मे तथा उन्होने एक ऐसी वैचारिक क्रान्ति उत्पन्न की जो मानव कल्याण का महत् उद्देश्य रखने के कारण देश की सीमाओ को लाघकर विश्व के विभिन्न देशो मे फैल गयी। ऐसे पहले देशभक्त, समाज सुधारक तथा जन-नेता थे स्वामी दयानन्द जिनका सन् 1824 मे काठियावाड़ के टकारा ग्राम मे जन्म हुआ तथा दूसरे महान् व्यक्ति थे, महात्मा गाधी जिनका स्वामी दयानन्द के जन्म के लगभग 45 वर्ष बाद राजकोट मे जन्म हुआ। स्वामी दयानन्द का जब सन् 1883 मे देहावसान हुआ, तब गाधी कुल 14 वर्ष के थे, लेकिन गाधी की इस किशोरावस्था तक आर्य समाज की स्थापना और 'सत्यार्थ प्रकाश' का प्रकाशन हो चुका था। गाधी एक वर्ष व्यतीत होने के बाद दूसरे वर्ष मे प्रवेश करते हुए धीरे-धीरे बड़े हो रहे थे, परन्तु स्वामी दयानन्द की तेजस्विता तथा आर्य समाज के सुधारवादी आन्दोलन के कारण यह तीव्रता से देश मे चारो ओर अपना प्रभाव उत्पन्न करता जा रहा था। गाधी इगलैंड से बैरिस्टरी पास करके भारत लौटे और मई 1893 मे एक बैरिस्टर की हैसियत से भारतीयो का मुकद्दमा लड़ने के लिए दक्षिण अफ्रीका पहुचे। दक्षिण अफ्रीका पहुचने के लगभग एक वर्ष उपरान्त उपलब्ध तथ्यो के अनुसार गाधी के मन मे आर्य धर्म तथा वेदो की रचना के सम्बन्ध मे जिज्ञासा उत्पन्न हुई। उन्होने जून 1894 से कुछ पहले रामचन्द्र भाई को एक धर्म सम्बन्धी प्रश्नावली भेजी थी जिसमे आर्य धर्म तथा वेद के सम्बन्ध मे ये प्रश्न भी पूछे गए थे। आर्य धर्म क्या है, क्या सब भारतीय धर्मों की उत्पत्ति वेदो से ही हुई है वेद किसने रचे, क्या वे अनादि हैं। यदि ऐसा हो तो अनादि का अर्थ क्या है ?

महात्मा गाधी के दक्षिण अफ्रीका पहुचने के कुछ वर्षों के उपरान्त ही आर्य समाज के अनेक विद्वान् प्रचारक देश की सीमाओ को लाघकर अन्य देशो मे बसे भारतीयो के बीच आर्य समाज का प्रचार-प्रसार करने के लिए निकल पड़े। इनमे से एक विद्वान् थे प्रोफेसर परमानन्द जी बाद मे भाई परमानन्द' के नाम से प्रसिद्ध हुए। प्रोफेसर परमानन्द उन दिनो ऐग्लो वैदिक कालेज मे प्रोफेसर थे और आर्य समाज की शिक्षाओ का प्रचार करने के उद्देश्य से जुलाई 1905 मे दक्षिण अफ्रीका पहुचे थे। महात्मा गाधी ने स्वय सनातनी होकर भी दक्षिण अफ्रीका मे उनका न केवल स्वागत किया, बल्कि उनके पक्ष मे 'इण्डियन ओपिनियन' मे 'प्रोफसर परमानन्द' शीर्षक से टिप्पणी लिखी और 28 अक्तूबर 1905 का जोहा निसबर्ग मे उन्हे मान-पत्र समर्पित किया। महात्मा गाधी ने 26 अगस्त 190ˢ को इण्डियन ओपिनियन मे प्रकाशित अपनी टिप्पणी में आर्य समाज के बारे मे लिखा, आर्य समाज भारत के किसी स्थापित रूढिगत धर्म का प्रतिनिधित्व नही करता। यदि हम यह कहे कि आर्य समाज एक ऐसी सस्था है जो अभी अपने अस्तित्व के लिए सघर्ष और नये अनुयायी बनानेके लिए उपयुक्त परिस्थिति तैयार कर रहा है तो इससे उसका यश कम नहीं होता। यह हिन्दू धर्म मे सुधार का प्रतीक है। महात्मा गाधी ने इसी टिप्पणी में प्रो. परमानन्द की प्रशसा मे लिखा इसने, आर्य समाज ने सच्चे देशभक्त और बहुत से आत्म त्यागी शिक्षक उत्पन्न किये हैं। कुछ महीने पूर्व भारत मे जो भयकर भूकम्प आया था उसमे भी आर्य समाज उत्तम कार्य कर चुका है। प्रोफेसर परमानन्द कार्यकर्त्ताओ के उसी समाज से सम्बन्धित हैं और इसलिए दक्षिण अफ्रीका के भारतीयो से उनको हार्दिक स्वागत पाने का हक है। निश्चय ही हम लोगों के बीच विद्वान् और सुसस्कृत भारतीय बहुत नही आ सकते। इसके पश्चात् 28 अक्तूबर 1905 को प्रो परमानन्द का जोहा निसबर्ग मे सार्वजनिक स्वागत किया और जो मान-पत्र दिया गया उस पर महात्मा गाधी के भी हस्ताक्षर थे।

महात्मा गाधी पर स्वामी दयानन्द के जीवन तथा चरित्र और आर्य समाज के निष्ठावान एव त्यागी कार्यकर्त्ताओ का गहरा प्रभाव पड़ा। गाधी सनातनी थे, लेकिन उन्होने आर्य समाज के सस्थापक स्वामी दयानन्द के महत्व एव प्रभाव को स्वीकार करने में कतई सकोच नहीं किया महात्मा गाधी ने 2 जनवरी 1916 को सूरत आर्य समाज के वार्षिकोत्सव में स्पष्ट शब्दो मे स्वीकार किया, आर्य समाज के सस्थापक स्वामी दयानन्द एक असाधारण पुरुष हुए हैं और उनका मुझ पर प्रभाव पड़ा है यह मुझे स्वीकार करना चाहिए। महात्मा गाधी को जब भी अवसर मिला, तब तब उन्होने स्वामी दयानन्द का गुणगान किया। उन्होंने स्वामी दयानन्द को 'महान् आध्यात्मिक गुरु (17 अप्रैल 1918) लाखों नर-नारियों के हृदयों पर प्रभाव तथा असख्य व्यक्तियों के चरित्र को गढ़ने वाले (22 दिसम्बर 1919) उच्चस्थान पर स्थित धर्म गुरु, (12 जनवरी 1920) धर्म को सुरक्षित रखकर बुरी रूढियो को तोड़ने एव धर्म की रक्षा करने वाले (30 जून 1929) बलवान् चरित्र एव महान् सेवक (8 अगस्त 1929) तथा हिन्दू धर्म के महानतम सुधारक (15 अक्तूबर 1933) के रूप में स्वीकार करते हुए उनके योगदान की सराहना की। महात्मा गाधी ने स्वामी दयानन्द को ईसामसीह, मुहम्मद, बुद्ध, नानक, कबीर, चैतन्य शकराचार्य, रामकृष्ण आदि की परम्परा मे रखकर देखा और लिखा कि ऐसे महापुरुष थे जिनके अवतरित होने से विश्व मे नैतिकता की वृद्धि हुई, धर्म रूढियो से मुक्त हुआ और उसकी सुगन्ध चारो ओर फैली। 10 जुलाई 1924 को 'यग इण्डिया' मे महात्मा गाधी ने स्वामी दयानन्द के योगदान का उल्लेख करते हुए लिखा, मैंने आर्य समाज के बारे मे जो राय प्रकाशित की है, उसके बावजूद मैं आर्य समाज के सस्थापक का एक नम्र प्रशसक होने का दावा करता हू। उन्होने हिन्दू समाज को भ्रष्ट करने वाली कितनी ही कुप्रथाओ की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट किया है। उन्होने सस्कृत विद्या के पठन-पाठन का शौक बढ़ाया। उन्होने अन्धविश्वास को ललकारा। उन्होंने अपने शुद्ध आचरण से अपने समाज के आचरण को ऊचा उठाया। उन्होंने निर्भयता सिखाई और कितने ही निराश युवको मे नई आशा का सचार किया। मैं उनकी राष्ट्र सेवा के अनेक कार्यों से भी बेखबर नहीं हू और 10 मार्च 1929 को रगून मे आर्य समाजियो के समक्ष गाधी ने स्वामी दयानन्द को राष्ट्र नायक के रूप मे प्रस्तुत करते हुए कहा—आर्य समाज और महर्षि दयानन्द ने हिन्दू समाज की जो सेवा की है वह सदा अमर रहेगी, महर्षि ने पुकार पुकार कर हिन्दू समाज के आगे ब्रह्मचर्य का मन्त्र रखा, भारतीय सस्कृति के प्रचार पर जोर दिया और वेदो के अभ्यास के महत्व की ओर सारे समाज का ध्यान खीचा। ऋषि की यह सेवा भूलने योग्य नही है, कोई उसे भूल नही सकता।

महात्मा गाधी द्वारा स्वामी दयानन्द की इन प्रशस्तियो से यह न समझ लेना चाहिए कि उन्होंने आर्य समाज उसके सस्थापक, उनकी महान् कृति 'सत्यार्थ प्रकाश' तथा आर्य समाजियो के क्रिया-कलापो पर आलोचनात्मक दृष्टि नहीं डाली। गाधी का यह स्वभाव था कि वे बुद्धि से सभी को तौलते थे और स्वामी दयानन्द की शिक्षा अनुसार सत्य के साथ असत्य को भी पहचानने की चेष्टा करते थे चाहे कोई उनके मत से सहमत हो या न हो। दक्षिण अफ्रीका से लौटने के बाद आर्य समाज और उसके तत्कालीन नेताओ से उनके गहरे सम्बन्ध बने। स्वामी श्रद्धानन्द के तो वे बड़े प्रशसक थे और उन्होने अपने दो बच्चों को गुरुकुल कागड़ी भेजा। जमनालाल बजाज के पुत्र प्रभुदास गाधी का जब अक्तूबर 1933 मे एक आर्य समाजी कुल की कन्या से विवाह हुआ तब भी उन्होने उसका हृदय से स्वागत किया। साथ ही देश के किसी भी भू-भाग से जब किसी आर्य समाजी सस्था ने अध्यक्षता, उद्घाटन आदि के लिए बुलाया और उन्होने उसे सहर्ष स्वीकार किया, लेकिन इस आत्मीयता से उनकी चिन्तन प्रक्रिया पर कोई असर नही पड़ा। आर्य समाज के अपने सम्बन्धो के आधार पर वे जि... निष्कर्ष पर पहुचे थे उनमे से कुछ आर्य समाजियो को प्रिय नहीं हो सकते थे। महात्मा गाधी ने कई बार इस वाद-विवाद से स्वय को बचा ले जाने का प्रयत्न भी किया। आर्य समाज को अधिक उपयोगी एव लोकप्रिय बनाने के के प्रश्न को 2 जनवरी 1916 को उन्होने यह कहकर टाल दिया कि मैं अपने गुरु गोखले के निर्देशानुसार किसी के साथ वाद-विवाद मे नही पड़ना चाहता और इसी प्रकार एक आर्य समाजी के आरोपो का 'यग इण्डिया' के 14 अक्तूबर 1926 के अक मे उत्तर देते हुए लिखा, स्वामी दयानन्द विषयक झगड़े मे मुझे नहीं पड़ना चाहिए। लेकिन महात्मा गाधी जैसाकि उनका स्वभाव था, अपने विचारो को अभिव्यक्त किए बगैर रह नहीं सकते थे, चाहे उनका कितना ही विरोध क्यो न हो।

महात्मा गाधी दक्षिण अफ्रीका के समय से ही आर्य समाज के सिद्धान्तो एव क्रिया-कलापो में कुछ कमिया देखते रहे थे और यदा कदा एक दो बातों का उल्लेख भी कर देते थे, लेकिन उन्होंने 'यग इंडिया' के 29 मई 1924 के अंक में हिन्दू, मुस्लिम तनाव, कारण उपचार लेख लिखकर पहली बार खुलकर आर्य समाज की आलोचना की। महात्मा गाधी की कुल आपत्तियों का सार था कि आर्य धर्म या 'आर्य समाज' से हिन्दू धर्म शब्द ज्यादा अच्छा है, आर्य समाज हिन्दू धर्म का ही अग है तथा असहिष्णुता, कटु वचन, चिड़चिड़ापन, वाद-विवाद स्वभाव, हिन्दू धर्म को सकुचित बनाने की चेष्टा, शुद्धि आदि आर्य समाज की ऐसी दुर्बलताए हैं जिन्हें दूर किया जाना आवश्यक है। महात्मा गाधी ने इस लेख में और अन्यत्र भी स्पष्ट रूप से कहा था कि वे एक मित्र और हितैषी के कारण

(शेष पृष्ठ 6 पर)

## सम्पादकीय—

# श्रीमती इन्दिरा गाँधी के बाद का भारत

स्वर्गीया प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी जी के देहान्त के साथ सारे देश की परिस्थितिया एक दम बदल गई हैं। हम इनके लिए तैयार न थे। स्वप्न मे भी कभी यह ख्याल न आ सकता था कि किसी दिन उनकी हत्या कर दी जाएगी। हमारी सस्कृति और हमारे धर्म मे सब से निकृष्ट काम एक नारी का अपमान या उसके साथ किसी प्रकार का दुर्व्यवहार समझा जाता है। हम तो उस सस्कृति पर गर्व करते हैं, जिसमे कहा जाता है कि 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' और आज स्थिति यह है कि हमारे ही देश मे एक नारी की जोकि हमारी प्रधानमन्त्री भी थी, हत्या कर दी गई है। इससे हम अनुमान लगा सकते हैं कि हम पतन के किस स्तर आ पहुचे हैं। वास्तविक स्थिति यह है कि हम ससार को मुह दिखाने के योग्य नही रहे। सब देशो मे आज यह चर्चा चल रही है कि श्रीमती इन्दिरा गाधी के साथ यह व्यवहार क्यो किया गया है।

अब उस पर अधिक समय व्यतीत करने से कोई लाभ न होगा। इन्दिराजी चली गई। उनका अन्तिम सस्कार हो गया। अस्थियो का चयन हो गया और अब उनकी अस्थिया हिमालय की बर्फानी चोटियो पर बिखेर दी जाएगी। अब जिस बात की आवश्यकता है वह यह सोचने की कि उनके बाद भारत कैसा बनेगा? उनके जीवन काल मे भी आर्य समाज को उनकी नीति से कई बातो मे मतभेद था। परन्तु हम यह जानते थे कि वे जो कुछ भी कर रही हैं अपने विचार के अनुसार अपने देश के हित मे हैं। अब जबकि वे नही रही और उनके स्थान पर उनका ही सुपुत्र, उनका उत्तराधिकारी बन गया है, तो यह सोचने की आवश्यकता है कि राजीव गाधी किस प्रकार का भारत बनाना चाहते हैं? उनके विषय मे एक कठिनाई यह भी है कि एक तो वे राजनीति मे बिल्कुल नये हैं। अभी तक उनकी कोई परिपक्व विचार धारा भी नही है। इसलिए यह मालूम नहीं कि वे क्या करना चाहते हैं। ऐसी स्थिति मे आर्य समाज जैसी सस्थाओ का यह कर्त्तव्य हो जाता है कि वे अपने विचार अपने नये प्रधानमन्त्री तक पहुचाए ताकि उन्हे पता चल जाए कि उनके देशवासी क्या चाहते हैं? देश का कोई भी नेता अपने विचार चाहे कैसे रखता हो वह कुछ न कुछ तो जनता के विचारो से प्रभावित होता ही है। इसलिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि और कोई बोले या न बोले, आर्य समाज अवश्य बोले। श्री राजीव गाधी का विरोध करने के लिए नही उनके रास्ता मे कोई रुकावट करने के लिए नही, बल्कि उनकी सहायता करने के लिए। इसी दृष्टिकोण से मैं यह लेख लिख रहा हू।

समस्याए हमारे सामने कई प्रकार की आएगी, परन्तु एक समस्या जिसके साथ आर्य समाज या दूसरी धार्मिक सस्थाओ का सीधा सम्बन्ध है वह यह धर्म निरपेक्षता का वास्तविक अभिप्राय क्या है? हम समझते हैं कि धर्म निरपेक्षता के नाम पर हमारे देश मे बहुत अनर्थ किया गया है आज तक यह पता नही है कि धर्म निरपेक्षता का वास्तविक अर्थ क्या है? इसकी बात तो बहुत होती है, लेकिन कभी किसी ने यह बताने का कष्ट नही किया कि इसका अर्थ क्या है? इसका एक परिणाम यह भी निकला है कि धर्म का महत्व कम हो रहा है। जो भी व्यक्ति अपने धर्म की बात करता है, उसे साम्प्रदायिक कह दिया जाता है और हमारे देश की राजनीति मे किसी भी व्यक्ति को बदनाम करने के लिए उसे साम्प्रदायिक कह दिया जाए, तो समझा जाता है कि यह एक बहुत बड़ा अपराधी है। जहा तक धर्म का सम्बन्ध है, न तो मुसलमान अपने धर्म की घोषणा करने से घबराते हैं न सिख और न ईसाई। पजाब मे हमारे अकाली मित्रो ने अपना जो धर्म युद्ध प्रारम्भ किया है, वह राजनैतिक स्वार्थ को पूरा करने के लिए धर्म के नाम पर प्रारम्भ किया गया है। फिर भी वे राजनीतिज्ञ नेता जो धर्म निरपेक्षता का दम भरते हैं, वे अकालियो का समर्थन तो करते हैं, परन्तु यदि कोई हिन्दू अपने धर्म की बात कर दे तो उसके विरुद्ध खडे हो जाते हैं। इसका एक परिणाम यह भी हो रहा है कि अब हिन्दुओ मे भी यह भावना पैदा होती जा रही है कि यदि दूसरे सम्प्रदाय अपने धर्म के लिए इतना कुछ करते हैं, तो हिन्दू क्यो न करें। एक नई जागृति हिन्दुओ मे आ रही है। यह केवल इसीलिए कि आज तक हमे यह नही पता चला कि धर्म निरपेक्षता कहा समाप्त होती है और साम्प्रदायिकता कहा शुरू होती है? कुछ लोग अपने स्वार्थ के लिए या अपने राजनैतिक व्यापार के लिए धर्म निरपेक्षता का सहारा लेते हैं। यह स्थिति अत्यन्त ही हानिकारक है।

**आर्य समाज को इस दिशा मे एक तो अपनी धारणा बिल्कुल स्पष्ट कर देनी चाहिए और दूसरा अपने धर्म का प्रचार पहले से अधिक कर देना चाहिए। हमे आर्य समाजी होने पर गर्व होना चाहिए और बिना किसी सकोच के कहना चाहिए कि हम आर्य समाजी है। जो दूसरे हिन्दू है सनातन धर्मी या जैनी या दूसरे और उन्हे भी बिना सकोच के यह कहना चाहिए कि वे हिन्दू है और उन्हे इस पर गर्व है। यदि कोई मुसलमान अपने आपको इस्लाम का समर्थक होने पर लज्जा अनुभव नही करता या सिख स्पष्ट रूप से अपने आपको सिख कहते है तो हम हिन्दू होने पर लज्जा क्यो अनुभव करे?**

यह इसलिए भी आवश्यक है कि अब हमारे इतिहास का एक नया युग शुरू हो रहा है। 1947 मे गान्धी युग समाप्त हुआ था, 1964 मे नेहरू युग समाप्त हुआ था और अब 1984 मे इन्दिरा युग समाप्त हुआ है अब देखना है कि अगला युग क्या बनता है। यह बहुत कुछ इस बात पर निर्भर है कि जनता क्या करती है और वह क्या चाहती? कोई भी शासन चाहे कितना शक्तिशाली क्यो न हो अधिक देर तक जनता की भावनाओ की अवहेलना नही कर सकता। श्रीमती इन्दिरा गाधी भी यह समझती थी कि हमारे देश की जनता पर धर्म का विशेष प्रभाव है। इसलिए जब कभी उन्हे अवसर मिलता था वह किसी न किसी मन्दिर मे जाया करती थी। लोग भी यह समझते थे कि वे मन्दिरो मे जाती हैं, इसलिए वे एक धर्म परायण महिला हैं। मेरा अपना तो यह विश्वास है कि जो व्यक्ति सब प्रकार के मन्दिरो मे जाता है उसका किसी भी मन्दिर पर विश्वास नही होता। धर्म निरपेक्षता का भी यही सबसे अधिक कमजोर पक्ष है। जो भी व्यक्ति यह कहता है कि सब धर्म एक जैसे हैं, उनमे कोई अन्तर नही उसका अर्थ यह है कि उसका कोई धर्म नही है। इसलिए धर्म के नाम पर वे जो कुछ कहना चाहे कह देते हैं। कुछ राजनैतिक नेता प्राय कहते रहते है कि सब धर्म सम्भाव अर्थात सब धर्म एक जैसे हैं। इस धारणा का कोई सिर पैर नही। सब धर्म एक जैसे कैसे हो सकते हैं। जबकि हम जानते है कि मुगल बादशाहो के राज मे हिन्दुओ के साथ क्या व्यवहार होता रहा है या ईसाई राज मे हमारे साथ क्या होता रहा है? मुस्लिम राज मे हिन्दू धर्म को समाप्त करने का भरसक प्रयास किया गया। आज यदि कोई कहे कि सब धर्म एक जैसे हैं तो वह जनता की आखो मे धूल झोक रहा है। प्रत्येक धर्म की अपनी अपनी जगह है। इसलिए इस बात की चिंता नही होनी चाहिए कि दूसरे मत क्या हैं और क्या होने चाहियें? हमे अपने धर्म की चिंता होनी चाहिए। उनके लिए हमारे दिल मे श्रद्धा होनी चाहिए और मान होना चाहिए। मैं समझता हू कि देश की इन नई परिस्थितियो मे आर्य समाज को धर्म रक्षा का एक अभियान प्रारम्भ करना चाहिए। और उसका एक लक्ष्य होना चाहिए कि वह व्यक्ति जो अपने आपको हिन्दू कहता है वह आर्य समाजी हो, सनातनधर्मी हो जैनी हो या कोई और उसे स्पष्ट शब्दो मे यह घोषणा करनी चाहिए कि हम हिन्दू हैं हमारा धर्म वैदिक धर्म है और इस लक्ष्य को सामने रख कर भारत का एक नया रूप ससार के सामने रखना चाहिए।

—वीरेन्द्र

# आचार्य प्रियव्रतजी वेदवाचस्पति

## जिनकी लेखनी और वाणी दोनों वेद धारा बहाती है

ले,—श्री डा रामनाथ जी वेदालकार

आचार्य जी आज कल आप क्या लिख रहे हैं ? मेरे इस प्रश्न के उत्तर मे आचाय प्रियव्रत वेद वाचस्पति ने बताया—डा सत्यकेतु जी जो आर्यसमाज का विस्तृत इतिहास लिख रहे हैं उसका एक खण्ड वद और दर्शन शास्त्र पर लिखा जाना है मैं उसी का विषयक भाग लिख रहा हू। आखो मे मोतिया उतरा हुआ है इस कारण स्वय तो नही लिख सकता बोलकर लिखा रहा हू। अब तो आचार्यजी की आखो का सफल आप्रेशन हो चुका है और वे स्वय भी लिख सकते हैं, पर उपर्युक्त वार्तालाप कुछ महीने पूर्व का है। इससे आचाय जी के अन्दर वेदो के काय के प्रति जो लग्न है उसका किंचित आभास मिल जाता है।

कुछ समय बाद पुन जब मैं स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती के साथ आचार्य जी के पास गया तब उनके 'वेदो के राजनीनिक सिद्धान्त' ग्रन्थ की चर्चा चल पडी। उन्होने बताया कि मेरे जीवन की चिर साध इस ग्रन्थ के छपने से पूरी हो गई है। ग्रन्थ मेरठ के मीनाक्षी प्रकाशन ने छपाया है तीन जिल्दो मे है, प्रकाशक ने अभी अभी मरे पास तीनो भागो की एक एक प्रति अवलोकनार्थ भेजी है। यह सूचना देते हुए बड चाव और उत्साह से उ होने ग्रन्थ के तीनो भाग दिखाए और तीनो भागो के प्रतिपादय विषय की रूप रेखा सक्षेप मे वर्णित की। इस समय उनकी आखो मे वह चमक दिखाई पड रही थी, जो कडे परिश्रम के बाद कार्य पूर्ण हो जान पर किसी कार्यकर्त्ता की आखो मे दिखाई देती है।

आचाय जी ने बताया कि वेदो के 'राजनीतिक सिद्धा त' ग्रन्थ उनकी अनेक वर्षों की तपस्या का फल है। गुरुकुल की वेद वाचस्पति परीक्षा मे उन्होने इस विषय पर दो सौ फुल स्केप पृष्ठो का एक शोध प्रबन्ध लिखा था। सन 1926 मे वेद वाचस्पति परीक्षा उत्तीर्ण करके आप आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब मे वेद-प्रचार विभ ग और दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय मे कार्य करने लगे और बाद मे उक्त महाविद्यालय के प्रधानाचाय नियुक्त हो गए। तभी से आपने वाचस्पति परीक्षा के लघुकाय शोध प्रबन्ध को एक विशालकाय ग्रन्थ के रूप मे परिणत करना आरम्भ कर दिया था। बाद मे गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के आचार्य वेद विभागाध्यक्ष तथा कुलपति पदो पर रहते हुए भी यथाशक्ति समय निकाल कर इस ग्रन्थ के प्रणयन मे तत्पर रहे और गुरुकुल के कुलपति पद से सेवा

निवृत होने के पश्चात सर्वात्मना इसकी पूर्ति मे जुट गए। मनु ने वेदो को राजनीति का भण्डार बताया है और ऋषि दयानन्द ने अपने वेद भाष्य मे एक विशाल मन्त्र राशि की राज विद्या परक व्याख्या की है इन्ही सकेतो को लेकर आप वेदो मे राजनीति के अनुसन्धान मे प्रवृत्त हुए जिसकी उपलब्धि यह ग्रन्थ है।

वेदो मे इतनी राजनीति है कि उस पर डिमाई आकार के छपे हुए 1500 पृष्ठो का एक विशाल ग्रन्थ लिखा जा सकता है, यह कभी कोई स्वप्न मे भी नही सोच सकता था। आचार्य प्रियव्रत ने यही सत्य कर दिखाया है। ऋग्वेद और अथववेद मे कुछ सूक्त स्पष्ट रूप से राजा राष्ट्र, सेना, युद्ध, राष्ट्र भूमि आदि से सम्बद्ध हैं। यजुर्वेद मे राजसूय यज्ञ आता है।। इसके अतिरिक्त पशु पालन कृषि व्यापार गृहाश्रम सामनस्य आदि से सम्बद्ध कुछ सामग्री राष्ट के सामाजिक जीवन का स्पष्टत व्याख्यान करती है। शेष सब सामग्री आचायजी ने सूक्ष्म पर्यवेक्षण करके वेदो से स्वय निकाली है। दयानन्द की वेदाथ पद्धति को अपनाने से ही यह सम्भव हो सकता है।

वैदिक देवो को विद्वानो ने विभिन्न क्षेत्रो मे घटाने का प्रयास किया है। प्राचीन भारतीय मनीषियो ने उन्हे मुख्यत अध्यात्म और प्राकृति क्षेत्र मे घटाया था। पाश्चा य विद्वानो ने प्राय प्राकृतिक-परक व्याख्याए की हैं। एक महाराष्ट्री विद्वान डाक्टर वी जी रैले ने अपनी वैदिक गाड्स' नामक पुस्तक मे यह दिखाया है कि वेद के इन्द्र, वरुण आदि देवता मानव शरीर के अन्दर विद्यमान विभिन्न अगो चक्रो और मर्मस्थलो के वाचक हैं। ब्रह्माण्ड के सब देव शरीर मे भी भिन्न-भिन्न रूपो मे अवस्थित हैं, यह स्थापना स्वय वेद, ब्राह्मण ग्रन्थ उपनिषद् आदि साहित्य मे भी मिलती है। आचार्य जी ने वैदिक देवो को राष्ट्र मे घटा कर दिखाया है। वैदिक देव मण्डल के अध्ययन से निकाले गये आपके परिणामो के आधार पर इन्द्र' समाट है विष्णु' प्रधानमन्त्री है अग्नि दूत विभाग का मन्त्री है अश्विनो परिवहन मन्त्री। इसी प्रकार वरुण पुलिस विभाग का मित्र जन मैत्री विभाग का सोम' न्याय विभाग का रुद्र प्रतिरक्षा विभाग का 'त्वष्टा' शिल्पकला और उद्योग धन्धो का पूषा अर्थ विभाग का 'सविता विधि मन्त्रालय का और सूय शिक्षा विभाग का मन्त्री है।

अथव वेद मे एक पर्णमणि सूक्त आता है, जिसके एक मन्त्र मे कहा गया है कि जो धोबी, बढई, लुहार तथा बुद्धिजीवी जन हैं उन्हे हे पर्णमणि तू मेरे अनुकूल कर। आचाय जी ने पणमणि को मत पत्र या सवरण पत्र मानकर सम्पूर्ण सूक्त की व्याख्या की है। आचार्य जी की स्थापना है कि वेद मे स्वेच्छाचारी एकतन्त्र राज्य की निन्दा की है तथा सघीय राज्य प्रणाली का समर्थन किया गया है। वेद मे समद के दोनो सदनो का नाम सभा और समिति है इनके सदस्य किन योग्यताओ वाले नर-नारी हो सकते हैं इसका विवरण भी वेद मे मिलता है।

ग्रन्थ मे प्रतिपादित विषयो को लम्बी सूची मे से कुछ विषय इस प्रकार हैं—प्रथम खण्ड 'सविधान काण्ड मे—राज्य सस्था का विकास, मातृ भूमि की भावना राजा चुनाव राजा के वैयक्तिक गुण, राजा का अभिषेक राज्यकाल चुनाव के लिए मतदान के अधिकारी, राजा के पदच्युत होने के अवसर राजनीति वाणी का स्वातन्त्र्य, स्त्रियो की राजनीतिक स्थिति ससद के दो सदन, मन्त्रिमण्डल न्याय विभाग आदि। द्वितीय खण्ड—अभ्युदय काण्ड मे राज्य की खानो का उपयोग नहरो की खुदाई खेती जगलो की रक्षा गाय आदि पशुओ का पालन यातायात के साधनो का विकास व्यापार उद्योग धधे वास्तु-कला स्वास्थ्य व्यवस्था शिक्षा प्रसार, अर्थ व्यवस्था आदि। तृतीय—श्रेष्ठ प्रतिरक्षा काण्ड' मे सेनाओ का सगठन, प्रशिक्षण, स्थल सेना, जल-सेना वायु सेना विविध शास्त्रास्त्र, रण नीति सेना व्यूह आदि। ग्रन्थ को पढने मे कही खींचतान प्रतीत नही होती है, ऐसा लगता है कि सब प्रतिपादित विषय स्वय वेद से निकलता जा रहा है, ग्रन्थ मे वेद के अध्ययन एव अनुसन्धान की एक नवीन दिशा सर्वत्र प्रतिपादित हो रही ?, जो निश्चय ही एक न एक दिन पाश्चात्य विचारको पर भी अपना प्रभाव छोडेगी।

आचार्य जी के पूर्व प्रकाशित ग्रन्थ 'वरुणकी नौका,वेद का राष्ट्रीय गीत वेदोद्यान के चुने हुए फूल और 'मेरा धर्म' सर्वविदित हैं जो सर्वसाधारण को वेद की ओर प्रेरित करने मे परम सहायक हुए हैं। अभी समर्पण शोध सस्थान की ओर से आपकी एक पुस्तक समाज का कायाकल्प प्रकाशित हुई है जिसमे आपके द्वारा लिखित कई उपयोगी निबन्ध हैं।

इस प्रकार लेखनी के द्वारा आपने जो वेद सेवा की है वही आपकी कीर्ति को चिरस्थायी करने के लिए पर्याप्त है, पर साथ ही आपके जीवन का एक दूसरा पहलु भी है, वह है वाणी द्वारा वेद की सेवा। कोई समय था जब हृष्ट-पुष्ट प्रभावोत्पादक शरीर और तेजस्वी चेहरे के साथ सभा मच पर खडे होकर वेद-मन्त्रो की ध्वनि गुजाते हुए किन्ही वैदिक विषयो पर जब आप ओजस्वी वाणी मे धारा प्रवाह व्याख्यान देत थे तब जनता भाव-विभोर हो उठती थी और सुनती अघाती नहीं थी। गुरुकुल कागडी के और पजाब भर की आर्य समाजो के उत्सवो पर यह नयनाभिराम दृश्य हर कोई देख सकता था। आज भी यद्यपि वृद्धावस्था के कारण आपके शरीर मे वैसा सामर्थ्य नहीं रहा है भाषणो द्वारा वेद सेवा मे आप पीछे नही हैं।

पानीपत के भाऊपुर नामक ग्राम मे जन्मा एक किसान बालक गुरुकुल कागडी के सस्थापक और सचालक प्राचीन शिक्षा प्रणाली के पुनरुद्धारक महात्मा मुन्शीराम के हाथो मे पडकर आचार्य रामदेव एव अन्य गुरुजनो की कृपा से वेदो का उदभट पण्डित बन गया जिसने अपने वैदुष्यपूर्ण ग्रन्थो को लिखने के लिए अनेक बार चारो वेदो का पारायण किया है। प्राचीन और नवीन दोनो प्रकार के वैदिक साहित्य के ग्रन्थो का मन्थन करके वेदो पर अधिकारपूर्वक लिखने और बोलने वाला यह महात्मा मनीषी उस समय पुलकित हो उठता है, जब किन्ही वैदिक रहस्यो को खोलने का अवसर पाता है और मन्यु से इसकी आखें चमक उठती हैं जब किसी कारण जन साधारण मे प्रचार पाई हुई वेदों के नाम से प्रचलित गलत धारणाओ का खण्डन करने मे इनकी वाणी प्रखर प्रहार करने लगती है।

अभी 1 आश्विन (11 सितम्बर) को आचार्य जी ने अपने जीवन के 79वें वर्ष मे पदापण किया है। इस अवसर पर हम वेदो के जागरूक प्रहरी कुशल वेदाध्यापक, कर्मठ वेद प्रचारक, विलक्षण लेखक, वेद प्रतिभा के अद्भुत धनी आचार्य जी का बार बार अभिनन्दन करते हैं और आपके चिरायु होने की कामना करते हुए आशा करते हैं कि भविष्य मे आपकी सधी हुई लेखनी से अन्य भी महत्वपूर्ण ग्रन्थ रत्न प्रसूत होते रहेंगे।

# परमात्मा ही की उपासना करनी योग्य है

ले.—श्री द्वारकानाथ वासुदेव फगवाडा

ऋषिवर दयानन्द ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में प्रभु के सौ नामो का वर्णन किया है। जो गुणवाचक कर्म-वाचक अथवा स्वभाव वाचक है। यजुर्वेद मे सक्षेप से ऐसा समझाया है ओ३म् तदेवाग्निस्तदादित्यस्तद्वायुस्तदु चन्द्रमा। तदेव शुक्र तद् ब्रह्मता आप स प्रजापति अर्थात् प्रजापति पुरुषही अग्नि नाम वालाहै उसीका नाम आदित्य है उसी को वायु और उसी का चन्द्रमा कहते हैं, शुक्र ब्रह्म और आप भी उसी के नाम हैं। इतने नाम सुनकर अनजान विस्मित होता है कि ऐसा नही हो सकता। परन्तु हैरानगी की कोई बात नही है। जैसे एक मनुष्य किसी का पुत्र होने से पुत्र भाई होने से भाई, पिता होने मे पिता, जामाता होने से जामाता आदि नामो से पुकारा जाता है। ऐसे ही सबकी उन्नति करने वाला होने से परमात्मा अग्नि है अखण्डनीय होने से वह आदित्य है, गतिदाता होने से वायु है, सबका आह्लाद का कारण होने का कारण होने से चन्द्रमा है इत्यादि। और यह सब नाम सार्थक हैं। भगवान को वेद मे पुरुनामन कहा है। एक सद्विप्रा बहुधा वदन्ति। भगवान के अनेक नाम होने मे कोई मतभेद नही। सर्ववेदवित् मुनि जी भी यही कहते हैं प्रणौसितार सर्वेषामणोर्यासम—। गीता पाठी भी जानते हैं कि कृष्ण व अर्जुन के कई गुण वाचक नाम हैं। व्यास मुनि ने विष्णु के सहस्र नाम समझाए हैं।

इन सब नामो मे से ओ३म् नाम सर्व उत्तम है। इसको परमात्मा का निजी नाम कहा जाता है, प्रणव, सर्ववेदेषु कठोपनिषिद मे लिखा है कि इस के उच्चारण से मनुष्य जो चाहे मिल सकता है।

एतत् एवाक्षर ब्रह्म ह्येतदेवाक्षर परम्।
एतत् एवाक्षर ज्ञात्वा यो यदिच्छति तस्य तत्।

श्रीमदभगवत्गीता मे भी इसी बात को दुहराया है कि परमात्मा मे दत्तचित्त होकर ओ३म के सतत् जाप से परमपद प्राप्त होता है।

महर्षि दयानन्द जी ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश मे 51 सिद्धान्तो का वर्णन किया है, यह सब वेदाधारित है। प्रथम सिद्धान्त है ईश्वर ब्रह्म को सबका निराकार सर्वव्यापक अजन्मा, कर्त्ता धर्त्ता वा सहर्त्ता मानना। जो कुछ मनुष्य को चाहिए उसी से मागना उसी से याचना करना। ईश्वर की भक्ति का सुगम मार्ग है ओ३म् का जाप वा ध्यान। कि ओम् की महत्ता को समझे और इसका प्रचार झण्डा लहराए और जनता को इस विषय से विचार प्रसार से अवगत करें कि ओम से सब विघ्नो का अभाव होता है और जीवात्मा के स्वरूप का ज्ञान होता है। इसके उच्चारण से मनुष्य आर्य ईश्वर पुत्र बनता है और अपना वा ससार का कल्याण करता है।

बाकी 50 सिद्धान्तो मे लिखा है कि मनुष्य सर्वदा सक्रिय रहे पुरुषार्थ वा परिश्रम मे जीवन व्यतीत करे प्यार प्रेम वा सद्भाव का व्यवहार करे। निःस्वार्थ काम करे, निर्भीक रहे। पौराणिक बुराईयो का विनाश करे। सम्प्रदायो और रूढ़िवाद का कभी समर्थन न करे। परमेश्वर पर जनता का विश्वास स्थिर करे,

श्री कृष्ण भी गीता मे उपदेश की समाप्ति पर इसी बात पर आग्रह करते हैं। सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेक शरण व्रज। अह त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुच।

तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नम।

—

# अस्थिरता पैदा करने वाली विभाजक शक्तियां देश में षड्यन्त्र रच रही है

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियो की एक बैठक 23-10 84 को सभा प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले की अध्यक्षता मे हुई। यह निश्चय हुआ कि निम्न वक्तव्य की एक प्रति समाचार पत्रो मे प्रकाशनार्थ भेजी जाए।

प्रस्ताव लगभग गत दस वर्षों से हमारे देश को छोटे छोटे टुकडो मे बाटने का षड्यन्त्र देश के शत्रुओ द्वारा किया जा रहा है। इस बात के पुष्ट प्रमाण हैं कि इन विभाजनकारी शक्तियो को कतिपय देशो से शस्त्रो का प्रशिक्षण तथा गोला बारूद की सप्लाई और धन मिल रहा है।

इस सभा के नेताओ ने न केवल इस देश के सब भागो मे ही नही अपितु अमेरिका इग्लैड और जर्मनी मे भी घूमकर देखा है और पाया है कि इस बारे मे गहरे षड्यन्त्र किए जा रहे हैं।

इस सम्बन्ध मे 17 अक्तूबर 1973 को अकाली सिखो ने आनन्दपुर साहब मे प्रस्ताव पास करके अपना ध्येय ऐसी परिस्थितियो का निर्माण घोषित किया था जिसके द्वारा सिखो की कौमी भावनाओ और आकाक्षाओ की पूरी अभिव्यक्ति हो सके। गत दस वर्षों मे इस ध्येय को पाने के लिए जो कुछ हुआ और अन्त मे सैनिक कार्यवाही करनी पडी, उसका भी अभीष्ट परिणाम नही निकला।

इसी प्रकार खाड़ी देशो द्वारा देश मे पहुचे धन से और धर्मान्तरण के द्वारा तथा साम्प्रदायिक दगो के माध्य से कट्टरमतवादी मुस्लिम इस देश का शासन अपने हाथ मे लेने के लिए बराबर दबाव डाल रहे हैं।

उत्तर-पूर्वी क्षेत्र मे जन-जातियाँ विद्रोह के लिए अधिक सगठित है। नागालैड और मिजोरम मे स्वायत राज्य बनाने की उनकी कार्यवाही तेजी पर है। वहा भी पजाब की भान्ति कठिन परिस्थितिया बन गई हैं। लाल डेगा द्वारा मिजोरम मे हिंसात्मक कार्यवाहियो को इकतरफा बन्द करके केन्द्रीय सरकार से बातचीत के लिए भारत आने का कदम इसी दिशा मे उठाया गया है। यह एक चतुरता पूर्ण सैनिक पग है। नागालैड की प्रतिबन्धित सरकार के तथाकथित राष्ट्रपति ब्रिगेडियर शिइन्या भारत वर्मा सीमा के उस पार से अपनी शत्रुतापूर्ण कार्यवाहियो का सचालन कर रहे हैं। वे भी केन्द्रीय सरकार से बातचीत करने के इच्छुक है।

पिछले अनुमानो के आधार पर हमे इन मामलो मे सावधानी बरतने की जरूरत है। क्षत्रीयता और अलगाववाद की प्रवृत्ति देश मे बढ़ रही है। 1847 48 मे जिस प्रकार हैदराबाद के निजाम ने प्रतिरक्षा सचार और विदेश नीति के अलावा अन्य विषयो पर भारत के साथ स्वाधीनता का प्रस्ताव रखा था वैसी ही माग देश मे अलग-अलग रूपो मे सिर उठा रही है। इन सबका कठोरता से दमन किया जाना चाहिए।

पाकिस्तान की भान्ति दक्षिण मे श्री लका विदेशी शक्तियो को आधार देकर भारत के विरोध मे कार्य कर रहा है इस प्रकार देश के चहु ओरसे हम लोग दुश्मनो से घिरे हुए है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का सुझाव है कि देश की समस्त राजनैतिक पार्टिया विरोधी एव शासक दल अपने मतभेदो को भुलाकर और एक जगह बैठकर इन मौजूदा परिस्थितियो पर देशभक्ति की भावना से विचार करें।

—रामगोपाल शालवाले

## आर्यसमाज बस्ती मिट्ठू जालन्धर में वेदप्रचार

आर्य समाज बस्ती मिट्ठू (शास्त्री नगर) जालन्धर मे दीपावली के शुभ अवसर पर 22 23 24 अक्तूबर को सभा के महोपदेशक श्री प रामनाथ जी सि वि कथा करते रहे और 26 27, 28, 29 अक्तूबर को श्री स्वामी सच्चिदानन्द सरस्वती अमृतसरी वेद कथा करते रहे। दोनो विद्वानो के प्रभावशाली प्रवचनो का जनता पर गहरा प्रभाव पडा आर्य जनता ने इस प्रचार कार्य मे पूर्ण सहयोग दिया।

—राम लुभाया नन्दा प्रधान

## ऋषि निर्वाण उत्सव

आर्य समाज भटिण्डा मे 24 अक्तूबर प्रात ऋषि निर्वाण उत्सव आर्य पत्र पद्धति के अनुसार यज्ञ हवन एव भजनो द्वारा आरम्भ हुआ, पश्चात महाशय निहालचन्द जी की अध्यक्षता मे सभा का आयोजन हुआ जिसमे आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल व आर्य माडल स्कूल की छात्राओ के सुन्दर प्रभावशाली भजन गीत एव व्याख्यान हुए श्री ओमप्रकाश आर्य व कृष्ण कुमार जी ने स्वामी जी के जीवन चरित्र पर प्रकाश डाला। 26 अक्तूबर 84 को प्रात काल श्री रामेश्वर प्रसाद जी शर्मा ने अपने सुपुत्र श्री कमलनयन के 13वा जन्म दिवस पर यज्ञ हवन कराया, श्री रामचन्द्र जी व श्री ओमप्रकाश जी आर्य ने समयानुसार भाषण दिए, महिलाओ ने अत्युत्तम भजन गाए। श्री शर्मा जी ने समाज को 51 रुपये दान दिया

## आर्यसमाज तिलकनगर नई दिल्ली का उत्सव

आर्य समाज तिलकनगर नई दिल्ली का उत्सव 11 से 18 नवम्बर तक मनाया जा रहा है। सामवेद पारायण यज्ञ श्री प यशपाल सुधाशु जी की अध्यक्षता मे प्रात 7-30 से 9 बजे तक प्रतिदिन होगा। श्री प कुन्नीलाल जी के भजन होगे। उत्सव मे श्री रामगोपाल जी शालवाले प्रधान सार्वदेशिक सभा श्री सूर्यदेव जी प्रधान दिल्ली सभा श्री रामलाल जी मल्होत्रा, श्री महाशय धर्मपाल जी महामन्त्री दिल्ली सभा पधार रहे हैं। —जगदीश नागपाल मन्त्री

# महर्षि दयानन्द फिल्म-निर्माण का विरोध क्यों ?

ले.—श्री योगेन्द्रपाल सेठ, उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब

महर्षि दयानन्द पर फिल्म बनाई जाए। इस विषय पर सारे आर्य जगत् मे एक तीव्र विवाद चल रहा है। श्री योगेन्द्रपाल सेठ ने उस विवाद का एक पक्ष इस लेख मे प्रस्तुत किया है। यदि कोई महानुभाव इस विवाद का दूसरा पक्ष प्रस्तुत करना चाहते हो तो वह भी प्रस्तुत कर सकेंगे। जहा त आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब का सम्बन्ध है। उसे वह निणय मान्य होगा जो इस विषय मे सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभा करेगी।

—सम्पादक

एक विज्ञापन जिसका शीर्षक है, 'महर्षि दयान-द फिल्म निर्माण विरोधी अभियान समिति मेरे पास "हुचा है जिसे पढकर मैं अपने माथे पर हाथ धर कर साचने लगा कि क्या आर्य समाज की यह फूट की बिमारी क्या इसको समाप्त करके ही छोडगी। उस विज्ञापन को पढ़ते ही मैं इस इस परिणाम पर पहुचा कि यह विरोध महर्षि दयानन्द की फिल्म का नही है, अपितु यह तो एक आर्य समाज के दो धडो की लड ई है। जिसमे एक ओर सावदेशिक सभा तथा उसके अधिकारी हैं और दूसरी ओर सार्वदेशि सभा मे जो विरोधी दल तथा महर्षि दयान-द की उत्तराधिकारिणी सभा अजमेर वाले हैं। गत वर्ष ऋषि निर्वाण शताब्दी पर भी इन दोनो गुटो का आपस मे शाब्दिक रूप मे समाचार पत्रों मे घमासान युद्ध हुआ था और अन्त मे सावदेशिक सभा को झुकना पडा और उत्तराधिकारिणी सभा वाले निर्वाण शताब्दि के कायक्रम को अजमेर उठाकर ले गए। यह उनकी सम्मिलित रूप मे प्रथम सफलता थी। कायक्रम सफल रहा या असफल रहा इसका निणय आयजन स्वय करें मैंने इस पर कोई राय नही देनी सावदेशिक सभा ने पाच करोड इकट्ठा करने की योजना बनाई थी, एसा मैंने सुना था। क्या इतना धन उत्तराधिकारिणी सभा वाले भी कर पाए थे या नही मेरी जहा तक जानकारी है वह तो इसके दसव भाग तक भी नही पहुच पाए, जो सस्था सितम्बर के अ त तक स्थान का ही निश्चित न कर सकी हो उसने धन एकत्र कब करना था वास्तव मे ऐसे पर्व सस्था मे जान डाल देते हैं। मेरा ऐसा विश्वास है कि यदि यह कायक्रम दिल्ली मे होता और सब मिलकर कार्य करते तो इतना धन एकत्र करना बिल्कुल साधारण बात थी। परन्तु आर्य समाज के कणधार उपदेश तो दते हैं सगच्छध्व सवदध्व परन्तु स्वय इसके बिल्कुल विपरीत चलते हैं। उस विज्ञापन मे जितने विद्वानो, स-यासियो तथा अन्य बुद्धिजीवियो के नाम लिखे हुए हैं, उन सबके आगे मेरा मस्तक झुकता है परन्तु जब मैं उनको आर्य समाज की इस फूट मे एक पक्ष के रूप मे उन्हे देखता हू तो मरे मन मे उन के लिए वह सम्मान और सत्कार एक घृणा के रूप मे बदल जाता है क्योकि यह आर्य समाज को फूट की हवा देते हैं अपने त्याग और तप से फूट को समाप्त करन का कोई यत्न नही करते अपितु एक शिरोमणि सभा जिसका विधान लोकतान्त्रिक है, उस विधान मे स्वय को न रखते हुए नियम पूर्वक चल रहे कार्य के विरुद्ध फूट की दीवार बनाकर खडे हो जाते है। जो किसी अधिकार पद पर बैठा हुआ नियम के विरुद्ध कार्य करता है आपको यह अधिकार है कि आप यत्न के द्वारा उसे उस अधिकार से उतार दें। उस का पूण यत्न करो विधान की धारा अनुसार कोई आर्य अधिकारी एक पद पर तीन वष से अधिक समय तक तभी रह सकता है यदि वह सवसम्मति से चुना जाए। अत जब आप स्वय ही अपनी शिरोमणि सभा के अधिकारियो को चुनते हैं मान्यता देते है तो फिर उनके निणय के विरुद्ध चलना क्या विद्वानो का धर्म है। जब अपने विधान मे हमने स्वय निश्चय किया है कि हमने हर निणय सभा मे बैठकर बहु पक्ष से करना है और कोई निणय हो गया तो उसका सामाजिक रूप मे विरोध करके सार आर्य समाज को बदनाम करने वाले क्या विद्वान हैं।

सर्व प्रथम तो यह प्रश्न है कि क्या आप सब विद्वान और स-यासीगण महाराज सावदेशिक सभा को अपनी नियम पूर्वक निर्वाचित शिरोमणि सभा मानते हो या नही ?

दूसरा प्रश्न है कि क्या भगवानदेव ने फिल्म बनाने से पूर्व सार्वदेशिक सभा से अनुमति ली थी या नही ली ? यदि नही ली तो यह सार्वदेशिक सभा का काम है कि उसके विरुद्ध अभियान चलाए, यदि ले ली है तो भाई धैर्य रखो फिल्म बनने के पश्चात् उसमे कोई भूल हुई तो उसको काटा जा सकता है और यदि वह बिल्कुल ही आर्य समाज के नियमो और सिद्धान्तो के विरुद्ध हुई तो वह फिल्म फेल हो जाएगी। भगवानदेव का धन बरबाद हो जाएगा और यदि हो सका तो इसके विरुद्ध न्यायालय मे भी कार्यवाही हो सकेगी। परन्तु इस समय यह अभियान क्या सावदेशिक सभा' के विरुद्ध है अथवा आर्य जगत के विरुद्ध है ?

किसी समाचार पत्र क निर्णय को लेकर उसके आधार पर अभियान चलाना भी बुद्धिमानो का काम नही है। विज्ञापन मे लिखा है—

महर्षि दयान-द की मान रक्षा की सबसे अधिक जिम्मेदारी स्वय महर्षि द्वारा नियुक्त अपनी उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा पर है।'

अरे, मेरे भाईयो, महर्षि दयानन्द ने यह सभा क्या आर्य समाज सगठन को तोडने के लिए बनाई थी उस समय प्रान्तीय सभाए नही थी। तब यह सभा बनाने की आवश्यकता पडी थी अब जब सारे देश मे प्रान्तीय सभाए बन चुकी है और प्रान्तीय सभाओ ने मिलकर सार्वदेशिक सभा को मा-यता दी है तो क्या यह सभा उससे ऊपर है या नीचे ? यही फूट के चिन्ह हैं यही अवनति के चिन्ह हैं। आर्य समाज अपने क्रियात्मिक कार्य को तो भूल गया है केवल मात्र सन्ध्या-हवन करने वाली एक सस्था बनकर रह गई है इसका काय क्षेत्र यही तक ही सीमित रह गया है। यही परोपकार का कृत्य है, यही समाज सुधार का कार्य है, यही वेद प्रचार का कार्य है। इसके अतिरिक्त और कोई गतिविधि शून्य के समान है।

महर्षि दयानन्द जी के जीवन की जो दो-तीन घटनाओ का वर्णन उस विज्ञापन मे भी दिया गया है। जिसमे महर्षि दयान-द ने राम लीला मे महापुरुषो के स्वरूप बनाकर देखने दिखाने की निन्दा की है। इसमे कोई दो मत नहीं हो सकते कि हमे अपने महापुरुषो का आदर और सम्मान करना चाहिए।

परन्तु विचारने की बात यह है कि महर्षि ने वह शब्द किस समय और कैसे वातावरण मे कहे थे और आज ससार और अपने समाज की क्या अवस्था है ? उस युग मे सब लोग बुराई का या अच्छाई का प्रचार केवल चिमटा, हरमोनियम इत्यादि के द्वारा स्टेज से किया करते थे या पुस्तको और समाचार पत्रो के द्वारा, परन्तु लगभग 50 60 वष पूव से प्रचार के साधन बदल गए हैं। बुराई फैलाने वालो ने उन साधनो को शीघ्र अपना लिया और धर्म का प्रचार करने वाले आपस मे लडते रहे, एक दूसरे को छुरा घोपते रहे, परन्तु बुराई को फैलते देखकर प्रचार के उस माध्यम को न अपनाकर केवल दान्त ही पीसते रहे।

उस विज्ञापन मे एक सत्य बात लिखी है कि नि सन्देह फिल्मे प्रचार का सशक्त माध्यम हैं, और मेरा ऐसा मत है कि यही एक मन्त्र है जो सारा आर्य समाज यदि अपना ले तो आर्य समाज ही एक ऐसी शक्ति है जो ससार मे फैली हुई बुराई के विरुद्ध लडाई लड सकती है। हे ससार के आर्य समाजी भाईयो 1875 से आपने शिक्षा के प्रचार के लिए गुरुकुल स्कूल, कालेज इत्यादि खोले, उनके माध्यम से जब तक देश स्वतन्त्र नही हुआ था तब तक धर्म शिक्षा के माध्यम से आर्य समाज के मन्तव्य का कुछ प्रचार था परन्तु जब से हमने 95 प्रतिशत सहायता के आधार पर अपनी यह शिक्षा सस्थाए सरकार के पास एक रूप मे धरोहर कर दी हैं तब से तो अपनी सस्थाओ मे आर्य समाज के प्रचार का तो भट्ठा ही बैठ गया है। इन शिक्षण सस्थाओ के स्टाफ मे से एक प्रतिशत भी ऐसे नही हैं जो आर्य समाजके सत्सगोमे, विशेष पर्वों पर समाजो मे जाते हो, फिर भला उन्हे आर्य समाज के मन्तव्यो का क्या ज्ञान हो सकता है और वह छात्रो को इस सम्बन्ध मे क्या जानकारी दे सकते हैं। उसका परिणाम यदि आपने जानना है तो किसी समय किसी स्कूल या कालेज के लिए किसी अध्यापक की नियुक्ति के लिए प्रबन्धकर्तृ सभा द्वारा जब उस पोस्ट के लिए आए हुए उम्मीदवार का इन्टरव्यू लिया जा रहा हो, उस समय यदि आप उनसे आर्य समाज के सम्बन्ध मे साधारण से प्रश्न भी पूछे कि आर्य समाज की स्थापना किसने की थी ? ऋषि दयानन्द कौन थे ? सत्यार्थ प्रकाश के सम्बन्ध म कोई जानकारी है। तो आपको पता चलेगा कि एक प्रतिशत भी इस सम्बन्ध मे साधारण सी जानकारी नहीं रखते परन्तु यदि आप उनसे फिल्मो के सम्बन्धी कोई प्रश्न पूछेंगे तो शत-प्रतिशत आपके प्रश्न के उत्तर अवश्य दगे और उसमे 90 प्रतिशत उत्तर ठीक होगा। यह मेरा प्रबन्धक होने के नाते, निजी अनुभव है। आपने अपने स्कूल तथा कालेज एक मिशनरी भावना से आरम्भ किए थे परन्तु यह भावना आप को आज के अध्यापको मे शायद ही किन्ही एक या दो मे दिखाई दे शेष आप को आय समाज के प्रचार मे कोई सहयोग नही देते अपितु उनके मन की यह प्रबल इच्छा है कि सरकार हमारे स्कूल तथा कालेजो को शीघ्र नैशनलाईज कर ले ताकि हम सरकारी मुलाजम के रूप मे रिटायड हो। यह भी मेरा अपना निजी अनुभव है। (क्रमश)

## आवश्यक सूचना

पाठक महानुभावो से निवेदन है कि 4 नवम्बर का प्रथम पृष्ठ वाला फार्म पहले छप चुका था, प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गान्धी के निधन के कारण रोकना पडा अत 4 नवम्बर के अंक को 11 नवम्बर, तदनुसार 27 कार्तिक का अंक 30 पढा जाए। —सम्पादक

# महर्षि दयानन्द सम्बन्धित फिल्म का निर्माण आवश्यक

ले.—श्री प. जगदीशचन्द्र 'वसु' आर्योपदेशक पानीपत

कुछ समय से आर्य जगत् मे यह विषय चर्चा का रहा है कि महर्षि दयानन्द की फिल्म बनाई जाए या नही। इस सम्बन्ध मे पक्ष विपक्ष के विचार आर्यसमाज के तथा अन्य पत्र-पत्रिकाओ मे पढता आ रहा हू। 29 जुलाई 84 रविवार के लोकप्रिय साप्ताहिक 'आर्य मर्यादा' मे आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् इतिहास कार श्री प सत्यप्रिय जी शास्त्री एम, ए आचार्य दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार का 'ऋषि दयानन्द सरस्वती' की फिल्म' नामक लेख पढने को मिला।

मेरे विचारो में इस वर्तमान समय मे वैदिक धर्म, आर्य समाज तथा महर्षि दयानन्द के विश्व कल्याणकारी मन्तव्य व सनातन परम्पराओ के प्रचार-प्रसार के लिए 19वीं शताब्दी के महान् क्रान्तिकारी, वेदोद्धारक, भारतीय स्वाधीनता संग्राम के प्रथम योद्धा, जगद्गुरु, महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज की फिल्म बनाना अत्यावश्यक है। मैं लेखक विद्वान् का धन्यवाद करता हू कि उन्होने ऋषि दयानन्द की फिल्म निर्माण का युक्तियुक्त समर्थन किया है। आर्य समाज की शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली ने भी उपरोक्त फिल्म निर्माण की अनुमति देकर सराहनीय पग उठाया है। कुछ गिने चुने लोग हैं जो स्वार्थवश महर्षि दयानन्द की फिल्म का विरोध कर रहे हैं। महर्षि दयानन्द द्वारा कहे व लिखित शब्दो को लेकर फिल्म का विरोध कर रहे हैं।

महर्षि ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है कि—5 वर्ष का लड़का, लड़कियों की पाठशाला में न जाए और 5 वर्ष की लड़की, लड़कों की पाठशाला मे न जाए, आर्य समाज के नेता अधिकारी महर्षि के इस आदेश का खुला विरोध कर रहे हैं। कोई सन्यासी या विद्वान् ऐसा नहीं जो सहशिक्षा का विरोध कर सके, और यह कहते हैं कि हमने ईसाईयों के मुकाबले में यह माडर्न स्कूल खोले हैं जिससे हमारी भावी सन्तति ईसाई न बन सके, परन्तु परिणाम बिल्कुल विपरीत निकल रहा है। हमारी सस्थाओं में ईसाईयत का प्रचार हो रहा है अण्डे-मास खाने का प्रचार, मम्मी, डैडी पापा, अंकल आदि ईसाई शब्दो हमारे बच्चो को सिखाये जा रहे हैं। आर्यसमाजी अनेक ऐसी सस्थाओ का सचालन कर रहे जहा लडके व लडकिया एकत्रित रूप से (सहशिक्षा के रूप मे) पढते हैं और पाश्चात्य शिक्षा का अनुमोदन कर महर्षि की शिक्षा प्रणाली का उल्लघन कर रहे हैं। महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश के पाचवें समुल्लास मे यह भी लिखा है कि—गृहस्थी 50 वर्ष पूर्ण कर वानप्रस्थी बने। कौन है जो 50 वर्ष पूर्ण कर वानप्रस्थी बन रहा है। आगे सन्यास विधि मे कहा गया है कि सन्यासी घर को त्याग कर परोपकार की भावनाओ से युक्त होकर राष्ट्र मे फैले अज्ञान, अन्धविश्वास, गुडडम पाखण्ड अविद्या आदि बुराईयो को ज्ञान रूपी सूर्य बनकर दूर करे, पुत्रैषणा, वित्तैषणा व लोकैषणा को त्यागकर वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार मे जीवन लगाता हुआ वैदिक धर्माचरण करे। आर्य जगत् मे कौन सन्यासी या वानप्रस्थी है जो अपने 2 कर्त्तव्य का पालन कर रहा है। बहुत से सन्यासी तो ऐसे हैं जो अपने 2 मठ बनाकर तथा अपनी 2 कोठियो मे ऐश व आराम से जीवन बिता रहे हैं। कोई बिरला ही होगा जो महर्षि के आदेश का पालन करता हो।

अत आज समय की माग है कि महर्षि दयानन्द के जीवन सम्बन्धित फिल्म बननी ही चाहिए। महर्षि की फिल्म बनाने मे कोई भी आपत्ति नहीं होनी चाहिए। मैं फिल्म निर्माता ससद सदस्य श्री भगवानदेव जी तथा भारत सरकार और अपनी प्रिय शिरोमणि सार्वदेशिक सभा दिल्ली को धन्यवाद देता हुआ, भारत सरकार से निवेदन करूगा कि शीघ्र ही महर्षि दयानन्द फिल्म का निर्माण कर जल्दी से जल्दी रिलीज करे। ताकि अधिक से अधिक ससार के लोगो को वैदिक धर्म, सस्कृति, सभ्यता एव विश्व कल्याणकारी वेद मार्ग का ज्ञान प्राप्त हो सके और वेद का मार्ग अपनाकर सुख-शान्ति और आनन्द का मार्ग ढूढ सकें।

—

# आह ! ठाकुर लाभ सिंह जी राठौर

यह समाचार बड़े दुख के साथ दिया जा रहा है कि माजरी (स्यालबा) ग्राम निवासी (जो कि जिला रोपड मे एक वेद भक्तो का ग्राम है) ऋषि दयानन्द और आर्य समाज के अनन्य भक्त, सामेश बनकर कार्य करने वाले ठा लाभसिंह जी 11 सितम्बर को हम सब से सदा के लिए जुदा हो गए हैं। श्री ठाकुर लाभ सिंह जी, श्री ठाकुर तालब सिंह जी जो कि माजरी के दृढ आर्य समाजी थे के भतीजे थे। उन्ही से ही ठा लाभ सिंह जी पर आर्य समाज का रग चढा। पहले ठाकुर तालब सिंह जी अकेले थे फिर एक की बजाए दो हो गए। पुन माजरी मे आर्य समाज का प्रचार आरम्भ हुआ। इस से कुछ और लोग भी आर्य समाज मे सम्मलित हो गए। आर्य समाज बनी उत्सव आरम्भ हो गए, मुझे स्मरण है कि उस समय बस यहा नही आती थी, बैलगाडी पर वह महानुभाव उपदेशको को कुराली से जो सात मील की दूरी पर है लाया करते थे और उत्सव की समाप्ति पर वहीं छोड कर आते थे। कोई उपदेशक ही रह गया हो तो रह गया हो वरना उस समय के सभी उपदेशक माजरी के उत्सवो पर पहुचे उत्सव यह परिवार अपने व्यय पर करवाता था। श्रोताओ मे से कोई सज्जन वेद प्रचार के लिए कुछ दे दे तो दे दे वरन् यह परिवार सारा व्यय सभा को धन श्रद्धा सहित अपने पास से ही देना था। उत्सव पर अपने सगे सम्बन्धियो को भी निमन्त्रित करते थे ताकि उन पर भी आर्य समाज का रग चढ जाए। सगे सम्बन्धियो का तीन दिन तक जब तक उत्सव रहता था सारा व्यय इन पर होना ही था। वह वेद प्रचार के लिए भी कुछ न कुछ दे आते थे।

इस परिवार ने ग्राम की आबादी मे आर्य समाज मन्दिर के लिए भूमि दी, जहा पर आर्य समाज मन्दिर बना हुआ है।

ठाकुर जी के सम्बन्ध मे थोडा सा ही लिखा है परन्तु बहुत कुछ और लिखा जा सकता है। उनका अन्तिम शोक दिवस 23 सितम्बर को मनाया इस अवसर पर उनके परिवार की ओर से 101 रु सभा के लिए दान दिया गया।

—रामनाथ सि वि आर्योपदेशक

# आर्य समाज रोपड़ का वार्षिक चुनाव

आर्य समाज रोपड का वार्षिक चुनाव 5-9-84 को 6-15 बजे साय काल आर्य समाज मन्दिर रोपड मे सम्पन्न हुआ। सर्व सम्मति से निम्नलिखित पदाधिकारी निर्वाचित हुए।

1 श्री रामलाल जी—प्रधान
2 श्री बाबू राम जी—उपप्रधान,
3 मास्टर गौरी शकर शर्मा जी मन्त्री।
4 श्री राम रक्खा जी उप-मन्त्री,
5, श्री सत्य भूषण जी कोषाध्यक्ष
6 श्री रविन्दर कुमार जी सदस्य
7 श्री मास्टर दिला राम जी,
8 श्री सत्य व्रत जी सदस्य
9 श्रीमती कुसम गुप्ता,
10 श्री प्रवीण कुमार,
11 श्री अमृत लाल जी
12 श्रीमती सन्तोष गुप्ता,
13 चौधरी बलदेव जी,
15 डा कृष्ण जी,

—गौरी शकर शर्मा
मन्त्री

—

वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है। वेद का पढना-पढाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोडने मे, सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

गगा मेला गढ मुक्तेश्वर मे
आर्य समाज का—

## प्रचार शिविर

रविवार 4 नवम्बर से बृहस्पतिवार 8 नवम्बर 1984 तक आयोजित किया गया है जिसमे —आर्य सम्मेलन, महिला सम्मेलन गोसवर्धन सम्मेलन —राष्ट्र सम्मेलन, मद्य निषेध सम्मेलन चरित्र निर्माण सम्मेलन एव हिन्दू एकता सम्मेलन का आयोजन किया गया है।

इस अवसर पर आर्य जगत् के प्रसिद्ध भजनोपदेशको विद्वानो एव सन्यासियो के उपदेश होगे।

प्रतिदिन प्रात सायं गुरुकुल प्रभात आश्रम भोलाझाल के ब्रह्मचारियो द्वारा यज्ञ शिविर मे आयजनो के निवास की भी समुचित व्यवस्था होगी। जो आर्य समाज अथवा आर्य परिवार विशेष रूप से निवास की व्यवस्था चाहे वे शिविर मे डेरे तथा छोलदारी आरक्षित (रिजर्व) करा सकते हैं। इसके लिए जिला मेरठ की आर्य समाजे श्री इन्द्रराज मन्त्री उपसभा द्वारा आर्य समाज मेरठ शहर से सम्पर्क करें तथा जिला गाजियाबाद की आर्य समाजें श्री विजय भूषण जी, मन्त्री उपसभा द्वारा आर्य समाज हापुड़ (गाजियाबाद) से सम्पर्क करें।

## श्री पं. आशुरामजी का महान् कार्य

श्री प आशुराम जी जहा एक कर्मवीर व्यक्ति हैं वहा महान स्वाध्याय शील भी हैं। श्री प जी ने ऋषि दयानन्द जी के भाष्यानुसार यजुर्वेद का उर्दू अनुवाद लिखा है अभी उसके प्रथम चार अध्यायो की जिल्द मेरे पास आई है उस को देखकर मैं इस कार्य की प्रशसा किये बिना नही रह सकता हू। यह अत्यावश्यक और सुन्दर काय है। कही 2 आवश्यकतानुसार अधिक व्याख्या भी की गई है।

मैं इस पवित्र काय के लिए श्री प आशुराम जी को बधाई और धन्यवाद देता हू तथा आर्यजनो से यह आशा करता हू कि इस ग्रन्थ का अधिक से अधिक प्रचार करेंगे। ऋग्वेद का उर्दू अनुवाद भी छपना आरम्भ हो गया है।

—अमर स्वामी सरस्वती
वेद मन्दिर विवेकानन्दनगर गाजियाबाद

—

## महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी दिसम्बर में

आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली 15 हनुमान रोड नई दिल्ली महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी दिसम्बर 1984 मे दिल्ली मे मनाने जा रही है। मेरी समस्त आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की आर्य समाजो आय सस्थाओ डी ए, वी पब्लिक स्कूलो हसराज स्कूलो आदि समस्त सस्थाओ से प्रार्थना है कि इस शताब्दी के लिए तन-मन-धन से सहयोग दें। इसका विस्तृत कार्यक्रम शीघ्र ही श्री सूर्यदेव जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा एव प्रो धर्मपाल जी मन्त्री द्वारा भिजवाया जाएगा।

दिल्ली मे आर्य समाजो द्वारा जो भी शोभा यात्रा निकाली जाती है, वह बडी सफल होती है। आपसे प्रार्थना है कि शोभा यात्रा मे अपने-अपने भाटो, ओम् के झण्डे लेकर सम्मिलित होवें।

—रामनाथ सहगल
मन्त्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा

—

## टंकारा ट्रस्ट के लिए छः हजार दान

नई दिल्ली—आर्य जनता को सूचित किया जाता है कि श्रीमती वीरादेवी मेहता धर्मपत्नी स्व श्री वी आर मेहता मैनेजिंग ट्रस्टी टकारा ट्रस्ट ने अपने अथक परिश्रम से 6000 रुपए का दान टकारा ट्रस्ट को दिया है। यह राशि मान्य माता जी न एक एक रुपया लोगो से एकत्र किया था। उन्होंने यह भी आश्वासन दिया कि आगामी वर्ष मे होने वाली रजत जयन्ती तक कम से कम 15000) रुपय एकत्र करके टकारा ट्रस्ट को भेजेंगी। —घनश्याम आर्य

## ६२वां वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज हनुमान रोड दिल्ली का 62वा वार्षिकोत्सव 7 से 14 अक्तूबर तक भव्य रूप से मनाया गया। जिसमे प्रतिदिन प्रात 7 से 8 30 बजे तक यजुर्वेद पारायण महायज्ञ होता रहा, इसके ब्रह्मा श्री प राजगुरु शर्मा थे। रात्रि प्रतिदिन राजगुरु शर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश का वेदोपदेश हुआ, 14 अक्तूबर को पूर्णाहुति के समय आचार्य रामप्रसाद जी वेदालकार उपकुलपति गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार उपस्थित थे।



श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रेस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर से इस की स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन नं. 74250 (रजि. न. पी. जे. एल. 55)

वर्ष 16 अंक 32, 11 मघर सम्वत् 2041, तदनुसार 25 नवम्बर 1984, दयानन्दाब्द 160 । एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपए

# आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित आर्य समाजों के अधिकारी महानुभावों की सेवा में

पंजाब में जो परिस्थितियां पैदा हो रही हैं आप उन से भली प्रकार परिचित हैं। ऐसे ही समय में किसी संस्था की परीक्षा होती है। आर्य समाज की कई बार परीक्षा हो चुकी है परन्तु फिर भी इन नई परिस्थितियों का मुकाबला करने के लिए हर समय तैयार रहना चाहिए। यह इसलिए भी आवश्यक है कि पंजाब में ऐसी कोई दूसरी संस्था नहीं, जो हिन्दुओं की सुरक्षा कर सके। इसलिए हम यह भी चाहते हैं कि आर्य समाज के संगठन को अधिक शक्तिशाली बनाने [illegible] किया जाए। इस विषय में हम आपके सामने दो सुझाव रखना चाहते हैं। आप से यह भी निवेदन है कि हमारे इस परिपत्र को आप अपने सदस्य महानुभावों तक पहुंचा दें। जब तक किसी संस्था के सब सदस्य [illegible] हो कर उसके संगठन में न लग जाएं, उस समय तक वह संस्था पूरी तरह संगठित नहीं हो सकती। इसलिए [illegible] हम आप से कह रहे हैं, हम चाहते हैं कि यह परिपत्र आर्य समाज के प्रत्येक व्यक्ति और सभासद् तक पहुंचे। आशा है आप हमारी इस प्रार्थना के अनुसार [illegible] कार्यवाही करेंगे।

इस समय आपके सामने दो सुझाव रखना चाहते हैं। पहला यह कि हमें पंजाब के आर्य समाजों की सदस्यता का अभियान प्रारम्भ करना चाहिए। पहली जनवरी 1985 को आपकी आर्य समाज के जितने सदस्य हों, उसके बाद [illegible] में आपको अपनी आर्य समाज के सदस्य बढ़ा के दोगुने बनाने चाहिए। क्या यह बता सकेंगे कि पहली जनवरी 1984 को प्रत्येक आर्य समाज के सदस्य कितने थे? और फिर पहली जुलाई 1985 को जब पुनः [illegible] सदस्यों की संख्या कितनी हो गई है? इस सम्बन्ध में दो और बातें आपके सामने रखना चाहते हैं। आर्य समाज के नियम या विधान [illegible] के अनुसार [illegible] सम्मिलित होते हैं। एक आर्य सदस्य और दूसरे आर्य सभासद। एक व्यक्ति जब आर्य सदस्य बनता है और दो वर्ष तक वह उस आर्य समाज का सदस्य रहे, और वह अपनी आय का शताश मासिक देता रहे तो वह 2 वर्ष के पश्चात् आर्य सभासद् बन जाता है और उसके पश्चात् ही आर्य समाज के चुनाव में मतदान का अधिकारी बन सकता है। प्रायः देखा गया है कई व्यक्ति आर्य समाज में सम्मिलित होने से घबराते हैं। वे समझते हैं कि आर्य समाज का सदस्य वही हो सकता है, जो प्रतिदिन हवन संध्या करता हो, आर्य समाज के सिद्धान्तों में विश्वास रखता हो वेद और दूसरे धार्मिक ग्रन्थों को समझ सकता हो और आर्य समाज के सिद्धान्तों में विश्वास रखता हो वेद और दूसरे धार्मिक ग्रन्थों को समझ सकता हो और आर्य समाज के जो दूसरे नियम हैं उन्हें पूरा कर सकता हो। हमारे विचार में ये कुछ भ्रान्तियां हैं। आर्य समाज का सदस्य बनने के लिए केवल यही आवश्यक समझा जाना चाहिए कि जो व्यक्ति आर्य समाज के 10 नियमों से सहमत हो, उसे आर्य समाज का सदस्य बना लिया जाए। उसके पश्चात् धीरे-धीरे उसे आर्य समाज के विषय में पूरी जानकारी देने का प्रयास किया जाए और 2 वर्षों में उसे इस योग्य बना दिया जाए कि वह आर्य समाज का सभासद् बन सके। कोई भी व्यक्ति जो किसी भी संस्था में सम्मिलित होता है तो पहले ही दिन वह उसके सारे सिद्धान्तों और कार्यक्रम को नहीं समझ सकता, विशेष कर आर्य समाज जैसी संस्था में, जहां प्रत्येक व्यक्ति से उच्चकोटि का धार्मिक और नैतिक स्तर अपेक्षित किया जाता हो। इसलिए कई व्यक्ति डर जाते हैं और आर्य समाज में नहीं आते। हमारा यह प्रस्ताव है कि पहली जनवरी 1985 से जो अभियान प्रारम्भ किया जाए, वह केवल आर्य समाज के सदस्य बनाने के लिए ही हो। हम अपनी सभा की ओर से आर्य समाज के 10 नियम प्रकाशित करवा रहे हैं। यह बहुत सुन्दर कागज पर सुन्दर छपाई में मिल सकेंगे। आप अपनी समाज के लिए जितने मंगवाना चाहें मंगवालें। यह नियम किसी भी व्यक्ति को पढ़ाए जा सकते हैं। वे ऐसे हैं जिन पर किसी को आपत्ति नहीं हो सकती। जो भी व्यक्ति उन से सहमत हो उसे कहा जाए कि वह आर्य समाज का सदस्य बन जाये और आर्य समाज का सदस्यता फार्म उसे भरने के लिए कहा जाए। जो व्यक्ति सदस्य बन जाए, फिर उसके साथ आगे सम्पर्क करने की आवश्यकता है। हमारा यह विश्वास है कि जहां तक आर्य समाज के 10 नियमों का सम्बन्ध है, उन पर किसी को आपत्ति नहीं हो सकती और उनके आधार पर कोई भी व्यक्ति आर्य समाज का सदस्य बनने से इन्कार नहीं कर सकेगा। इस प्रकार हम सदस्यता को बढ़ा कर अपने संगठन को शक्तिशाली बना सकते हैं।

दूसरी बात जो हम कहना चाहते हैं वह यह है कि आर्य समाज के नियमोपनियम के अनुसार प्रत्येक सदस्य को अपनी आय का शताश मासिक या वार्षिक अथवा 250 रुपए वार्षिक व अधिक धन समाज को देना चाहिए। हमने देखा है कि इस नियम का कोई भी पालन नहीं करता। आर्य समाजें अपने जो प्रतिनिधि सभा में भेजती हैं, उनमें प्रायः सबका चन्दा 12 रुपए वार्षिक लिखा होता है। [illegible] कुछ व्यक्ति [illegible] हो सकते हैं, जिनकी [illegible] से कम एक हजार रुपया है वे भी 12 रुपए वार्षिक समाज को देते हैं। क्या यह असत्य नहीं है और क्या यह आर्यसमाज के नियमों का उल्लंघन नहीं है? हम इस विवाद में पड़ना नहीं चाहते कि किसकी कितनी आय है? प्रत्येक सभासद् पर विश्वास करके वे जो कुछ दें उसे ले लेते हैं। मैं इसे आर्य समाज के साथ विश्वासघात समझता हूं। हमारे सिख भाई अपने गुरुद्वारों के लिए या अपनी सिंह सभाओं के लिए दिल खोलकर चन्दा भी देते हैं, दान भी देते हैं। दूसरी तरफ हमारी यह स्थिति है कि हम अपने नियमों का सर्वथा पालन नहीं [illegible]। यह स्थिति बहुत सन्तोषजनक नहीं है। हम आपको यह भी बता देना चाहते हैं कि भविष्य में सभा किसी भी ऐसे व्यक्ति का चन्दा 12 रुपए वार्षिक स्वीकार नहीं करेगी, जिसके विषय में यह स्पष्ट हो कि उसकी आय बहुत अधिक है। हम यह आप पर छोड़ते हैं और अपने सभासदों से कहें कि वे अपनी आर्य समाज को जो चन्दा देते हैं वह अपनी आय के अनुसार दें। जब एक आर्य समाज के सारे के सारे सभासद् 12 रुपए या एक जैसी आय लिख देते हैं, तो उससे स्पष्ट हो जाता है कि वह अपनी आय समाज को धोखा दे रहे हैं। आर्य समाज के सदस्यों से यह आशा नहीं की जाती कि वे अपनी आर्य समाज के साथ यह व्यवहार करें। जो चन्दा वे आर्यसमाज को देते हैं वह एक प्रकार का दान है। दान देने में तो किसी को कोई संकोच नहीं करना चाहिए। अपनी शक्ति के अनुसार जो जितना दे सकता है उसे उतना दान जरूर देना चाहिए। इस लिए हमारा आप से यह निवेदन है कि भविष्य में आप इस बात का पूरा ध्यान रखें कि आपके जो सभासद् हैं, वे नियमानुसार आपको चन्दा देते हैं और उसी के अनुसार आप सभा को भी दशांश देते हैं। 12 रुपए वार्षिक चन्दा देने वाली प्रथा लज्जाजनक है। यह समाप्त होनी चाहिए।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

# अजमेर—दर्शन

ले. श्री अमरनाथ जी आर्य एम. ए. तलवाड़ा

( 18 नवम्बर से आगे)

उन्होंने अभी पूर्व वक्ता विदुषी महिला वक्ताओं द्वारा व्यक्त विचारों को कृतज्ञता पूर्वक समेटते हुए कहा, कि संसार पर महर्षि दयानन्द के असंख्य उपकारों में से एक सर्वथा स्वतन्त्र विशिष्ट उपकारकारी स्वातन्त्र्य व नारी शिक्षा का है। क्योंकि उन्होंने ही सर्वप्रथम प्राचीन व अर्वाचीन सैंकड़ों धर्म गुरुओं चिन्तकों व समाज सुधारकों द्वारा समय-समय पर दी गयी नारी शिक्षा व स्वातन्त्र्य विरोधी व्यवस्थाओं का डटकर घोर प्रतिवाद किया और अपने अकाट्य तर्कों द्वारा यह सिद्ध किया कि वैदिक काल से लेकर महाभारत काल से भी बहुत बाद तक भारत में स्त्री शिक्षा व नारी स्वतन्त्र्य की समुचित सामाजिक व्यवस्था कायम थी।

उन्होंने आगे कहा कि महर्षि ने इस तथाकथित सामाजिक रिस्ते नासूर पर तर्क का तेज नश्तर चलाते हुए, इससे सम्बन्धित संसार से सर्वप्रथम यह प्रश्न किया कि समाज रूपी गाड़ी का स्त्री-वर्ग रूपी यह दूसरा पहिया यदि अशिक्षा वश विकृत व निर्बल होता तो हम भारत वासी अतीत मे विश्व के समक्ष सर्वाधिक उन्नति व उत्कृष्टतम सभ्यता व संस्कृति कैसे प्रस्तुत कर सकते थे ?

और उनके इस अकाट्य तर्क का कोई उत्तर न दे पाकर विरोधी संसार बगलें झांकने लगता है। अतः यह अत्युक्ति नहीं कि नारी जाति का भला, जितना देव दयानन्द कर पाए, उतना शायद ही कोई अन्य महापुरुष कर पाया हो।

परन्तु उन्होंने सखेद विशेषत नारी-श्रोताओं को सावधान करते हुए कहा कि ये विचार तस्वीर का केवल एक पहलू भी है और दूसरा पहलू भी है जो अधिक विचारणीय व मर्मान्तक है। उन्होंने दुःख-पूर्वक यह कहा कि कितनी भाग्य विडम्बना व लज्जा की बात है कि जो महापुरुष आयुपय त नारी जाति का भला सोचना चाहता और करता रहा हो उसी दिव्य तपस्वी को प्राण घातक कांच मिश्रित हलाहल भी एक नारी की प्रेरणा से दिया गया हो। उसके लिए इससे अधिक लज्जा व कृतघ्नता की बात और क्या हो सकती है। अत अपने उद्धारकर्त्ता के साथ ऐसा घणित व जघन्यता पूर्ण व्यवहार करने का अक्षम्य कलक भारतीय नारी के मस्तक पर आज भी ज्यों का त्यों विद्यमान है।

उन्होंने उपस्थित नारी समुदाय को आवेशपूर्वक सम्बोधित करते हुए कहा कि बहिनो यदि आप इस लज्जास्पद घोर कलंक-कालिमा को किसी सीमा तक पश्चातापानुरूप धोना चाहती हो तो आज आप 'नारी स्वातन्त्र्य' व 'विश्व कल्याण' के प्रति महर्षि के शेष कार्य को यथाशक्ति पूरा करने का दृढ़ संकल्प धारण कर समाज की प्रत्येक बुराई यथा अनपढ़ता भेद भाव ऊंच नीच छुआछूत, दहेज-प्रथा, अनमेल बाल-विवाह व बहु-विवाह आदि की भयकर कुरीतियो को जड़ से उखाड़ फैंकने का अटल व्रत लेकर आए और अपने अपने परिवेश मे इस स्तुत्य कार्य मे पूर्ण आत्म विश्वास के साथ जाए परन्तु यह एकांगिता होगी कि हम ऐसे मे हम पुरुष वर्ग से सहयोग न लें। बल्कि ऐसे मे हमे पुरुष वर्ग के साथ ताल-मेल स्थापित करके सम्मिलित रूप मे अपने कर्तव्य क्षेत्र मे उतरना होगा। बल्कि हमे पुरुषो से भी कही अधिक बढ चढ कर मानव कल्याण के कामो को स्वय अपने दृढ़ कन्धो पर लेना होगा। क्योंकि उपरोक्त समस्याए ही कुछ ऐसी हैं जो पुरुषो की अपेक्षा महिलाओ की पकड़ मे कहीं अधिक सुगमता से आ सकती हैं क्योंकि नारी पुरुषो की अपेक्षा जीवन-मर्म के अधिक निकट होती है। उसकी पहुच असाधारण होती है। वह उसकी नब्ज की बारीकियो को अधिक जान व अनुभव कर सकती है। सम्भवत इसी लिए प्रकृति ने नारी को पुरुष की अपेक्षा कहीं अधिक सम्वेदनशील बनाया है। अत इस ईश्वर प्रदत्त योग्यता का सदुपयोग आज उसे करना ही होगा।

उन्होंने आगे कहा कि यदि आज हम यहा से ऐसी उच्च प्रेरणा और सन्देश ले तथा कल्याण कार्य क्षेत्र मे उतरने का दृढ़ सकल्प धारण कर निकलें और फिर उस सकल्प को मनसा वाचा कर्मणा से चरितार्थ करने का भरसक प्रयत्न करें, तो मैं समझती हूं कि अपने महापुरुषो की ऐसी शताब्दी समारोह मनाने का क्रियात्मक लाभ ससार को, तभी हो सकता है।

अब उन्होंने श्रोताओ का ध्यान, आर्य कन्या गुरुकुल पोरबन्दर की ओर आकर्षित करते हुए, उत्साहपूर्वक कहा कि यह विद्यालय, प्रति वर्ष ऋषि मार्गानुसार [illegible] अनुसार शिक्षित व दीक्षित करके सैंकड़ों आर्य [illegible] देश को सौंप रहा है। और गुरुकुल [illegible] विधि विधानुसार दीक्षित ये स्नातिकाएं जब महर्षि के [illegible] सन्देश को ले कर अपने घर जाती हैं, तो [illegible] उन्हें भी एक आदर्श आर्य गृह व [illegible] आदर्श आर्य परिवार बना देती हैं।

अन्त में अपने भाषण को गौरवमय संस्पर्श देते हुए विदुषी वक्ता ने सर्वांगीण मानवीय विकास हेतु शिक्षा प्राप्ति की अनिवार्यता व उसके दिव्य गुणों की चर्चा करते हुए कहा कि आर्यावर्त में अनादि-काल से ही विद्या ज्ञान की महत्ता, पुरुष उपलब्धियों में सर्वोपरि माना जाता रहा है। क्योंकि विद्या ही मानव हृदय को चेतना का सन्देश देती है मन एव बुद्धि को सम्वेदना प्रदान करती है और अन्त में आत्मा का उन्मेष करती है। अत विद्या प्रसारार्थ 'गुजरात राज्यान्तर्गत कई अन्य गुरुकुलो के साथ साथ गुरुकुल पोरबन्दर भी ऐसा ही स्मरणीय कार्य सम्पन्न कर रहा है।

प्रिय पाठक वृन्द ! इस वक्ता के मुखारविन्द से गुजरात शब्द सुनकर तत्काल मेरे मन मे एक भाव जगा और उसके साथ ही स्मृति पटल पर गीत की यह पंक्ति गुनगुनाने लगी—

धन्य है मात तेरी—

धन्य सत्यार्थ प्रकाश तेरी—
धन्य है गुजरात तेरी।

मेरा मन 'गुजरात' शब्द पर केन्द्रित हो गया और यह भाव जगा कि जिस गुजरात प्रान्त के ऐसे आदर्श गुरुकुलो मे प्रति वर्ष सहस्रो आर्य कन्या रत्न दीप-शिखाएं वैदिक आचार सहितानुसार के दीक्षित, व विज्ञान शिक्षा प्रज्ज्वलित हो अज्ञानाधकार के उन्मूलन हेतु निकल रही है तो उस राज्य की सौभाग्य वृद्धि का अनुमान लगाना कठिन नहीं। मुझे लगा कि लगभग डेढ सौ वर्ष पूर्व गुजरात की जिस पवित्र भूमि ने देव दयानन्द जैसे समाज सुधारक महापुरुष को तथा उसी परम्परा में कुछ काल बाद राष्ट्रपिता—महात्मा गांधी व राष्ट्र निर्माता लौह पुरुष पटेल जैसे विश्व राजनायकों को जन्म देकर विश्व कल्यार्थ भारत मा की ओजस्वी गोद मे समर्पित करके शेष देश से बाजी मार ली थी उसी भान्ति उसने आज भी ऋषि सन्देश को देश देशान्तर मे सफलता पूर्वक फैलाने के प्रशसनीय कार्य मे अग्रणी रहकर 'गुजरात ने एक बार फिर बाजी मार ली है। इसमे कोई सन्देह नहीं।

सभा विसर्जित होते ही हम सभा-मण्डप से बाहर निकले। परन्तु बाहर आते ही एक अन्य उत्साहवर्द्धक दृश्य सामने आया। यहां विभिन्न प्रांतो के और [illegible] हुए [illegible] उपयुक्त व्याख्यान-[illegible] [illegible] पुस्तकें से [illegible] के मौ-गौ [illegible] की ओर [illegible] [illegible] के [illegible] के ये ऐसे [illegible] [illegible] यह [illegible] [illegible]

[illegible] यदि बौद्धिक उन्नति की एक झलक देखी है तो उससे बाहर शारीरिक उन्नति की उत्कृष्टता भी विद्यमान है।

यह फिर दर्शाता है कि आज देश को बौद्धिक व शारीरिक, इन दोनो बलों समुचित सन्तुलन ही की तो आवश्यकता है, जिसके समन्वय के बलबूते पर ही तो हमारी आन बान व शान आधारित है। और यदि यह चिरापेक्षित समन्वयात्मक सन्तुलन स्थापित हो जाए, जिसके लिए हम सदैव से प्रयत्नशील व आकांक्षा रहे हैं तो महर्षि के उस चिराकांक्षित स्वप्न को हम पूरा कर सकते हैं, जिसको घोषणा उन्होंने आर्य समाज के छठे नियम मे इस भान्ति की है कि 'ससार का उपकार करना, इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।'

प्रिय पाठक गण ! अब सर्दी की रात भीग रही थी, और हम थकान से शिथिल हो चुके थे। परन्तु मन और मस्तक नयी जानकारियो की प्रसन्नता से इतने भर चुके थे कि मित्रों के आग्रह पर उस दिन की देश-देशान्तर सम्मेलन' नामक तृतीय सभा के कार्यक्रम को छोड़ हम मीठी-मीठी निन्दिया का आनन्द लेने हेतु हम अपनी विश्राम स्थली की ओर आतुरता से लपक पड़े।

(क्रमश)

## शोक समाचार

आर्य समाज के प्रसिद्ध कार्यकर्ता श्री विशेश्वरनाथ जी की धर्म पत्नी का देहान्त होने पर यह समाज गहरा दुःख प्रकट करती है और परमात्मा से प्रार्थना करती है कि उनकी आत्मा को सदगति प्रदान करें और श्री विशेश्वरनाथ जी तथा उनके परिवार को सहन शक्ति दे।

—मुकन्द लाल आर्य-प्रधान
आर्य समाज शहीद भगतसिंह नगर
जालन्धर

## सम्पादकीय—

# महर्षि दयानन्द सरस्वती का नया जीवन चरित्र—2

इसी विषय पर मैंने आर्य मर्यादा के पिछले अंक में उस पुस्तक के विषय मे भी लिखा था जो डा भवानी लाल भारतीय ने लिखी है। महर्षि दयानन्द के विषय में कई व्यक्तियो ने बहुत कुछ लिखा है, परन्तु उनका कोई प्रमाणित जीवन चरित्र आज तक प्रकाशित नही हुआ। "नवजागरण के पुरोधा दयानन्द सरस्वती" के नाम से महर्षि का जो जीवन चरित्र डा भवानीलाल भारतीय ने प्रकाशित किया है, मेरे विचार में वह एक प्रमाणित जीवन चरित्र है। इसमे उन्होने न केवल महर्षि के जीवन के भिन्न 2 पक्ष पाठको के सामने रखे हैं अपितु बहुत कुछ उन भ्रान्तियो को भी दूर करने का प्रयास किया है, जो महर्षि के विषय में समय-समय पर उनके विरोधियो ने और कुछ दूसरे व्यक्तियो ने फैलाने का प्रयत्न किया है। अपने इस प्रयास के विषय मे डा भवानी लाल भारतीय ने जो कुछ लिखा है वह मैं नीचे उद्धृत करता हू—

'आर्य समाज जैसी प्रबुद्ध सस्था मे ऐसे विद्वानो, विचारको तथा चिन्तिको की कमी नही है जो यह अनुभव करते हैं कि दयानन्द को उनके सही रूप मे चित्रित किया जाना ही अपेक्षित है। दयानन्द सन्यासी थे। उन्होने चतुर्थ आश्रम की मर्यादाओं का आजीवन पालन किया था। देश धर्म समाज और विश्व मानव मे नवजागृति एव अभिनव चेतना का सचार करने के लिए वे जिस वैचारिक क्रान्ति का सूत्रपात करना चाहते थे, वे लोगो के मनो एव मस्तिष्को को प्रभावित करके ही लाई जा सकती थी। शासन सत्ता परिवर्तन के लिए उन्होंने स्वय कोई सक्रिय प्रयास किया था, ऐसा सोचने वाले दयानन्द की मन स्थिति उनके वैचारिक धरातल उनकी कार्य प्रणाली तथा उनके चिन्तन की प्रक्रिया से सर्वथा अपिरिचित ही मालूम होते हैं। ऐसे ही लोगो ने किसी प्रसग मे दयानन्द को श्वेताश्वारोही के रूप मे हाथ मे खड्ग लिए चित्रित किया है। मानो सारे फिरगी इसी सन्यासी की तलवार से मारे जाए गे और किसी अन्य प्रसग में इतिहास के तथ्यों को पूर्णतय विस्मृत कर कभी उन्हे मगल पाण्डे से भेंट करते तो कभी 1857 की हलचल के सभी महारथियो को एक साथ ही सम्बोधित करते दिखाने का उद्यत प्रयास किया है। ऐसे लोगो के लिए इतिहास के तथ्य भी मानो उनकी कल्पना के ही मुखापेक्षी होते हैं। ऐसी अनर्गल निस्सार और भ्रान्त कल्पनायें करते समय वे यह भूल जाते हैं कि इतिहास उनकी कोई निजी धरोहर नही है, जिसके साथ वे यथेच्छ बलात्कार करते रहे।'

इन परिस्थितियों मे डा भवानी लाल ने महर्षि दयानन्द का जीवन चरित्र क्यों लिखने का निश्चय किया है इसके विषय मे वे स्वय ही इन शब्दो मे बताते हैं।

'जब आर्य समाज की पत्र-पत्रिकाओ में यह सारे वाद-विवाद प्रस्तुत किए जा रहे थे, तब इस आशंका से कहीं निकट भविष्य मे अनर्गल लेखकों की यह दु साहस पूर्ण कल्पनाए दयानन्द चरित्र में आगे चलकर प्रविष्ट न हो जावे, मैंने दयानन्द चरित के पुन लेखन का संकल्प किया। इस ग्रन्थ का आधार भूत आलेख तो आज से लगभग 10 वर्ष पूर्व ही तैयार किया जा चुका था। किन्तु मैं उससे पूर्णतया सन्तुष्ट नहीं था। मेरे सामने कई समस्याए थीं। क्या दयानन्द के जीवन की स्थूल घटनाओं को कालक्रम से लिपिबद्ध कर देना ही पर्याप्त है, अथवा इन घटनाओं कार्यकलापों तथा क्रियाकलापों के पीछे चरित नायक की जो मूल सवेदनाए रही थीं उनका उद्घाटन करना भी आवश्यक है। अन्तत यही निश्चय किया कि घटनाओं का उल्लेख मात्र ही पर्याप्त नही है। उनसे प्रतिफलित होने वाली नायक की विचार सरणी उसका भाव समूह तथा अन्तत उसके विराट व्यक्तित्व को उभारने का प्रयास किया जाए।

और अन्त मे इस जीवन चरित की कतिपय विशेषताओ को उल्लेखित करते हुए डा भवानीलाल ने इन शब्दो मे अपनी भावना व्यक्त की है—

दयानन्द के जीवन चक्र का समग्र आलेखन करने के लिए यद्यपि यह लेख प लेखराम तथा प देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय के अन्वेषणो पर ही निर्भर रहा है तथापि विगत 50 वर्षों की अवधि मे इस महापुरुष के जीवन से सम्बन्धित अनेक नवीन तथ्य घटनाए तथा प्रसग जब जब और जिस प्रकार से उद्घाटित होते रहे हैं उन सब का समावेश ही इस जीवन चरित मे किया गया है। उदाहरणत दयानन्द की जन्म तिथि एव माता के नाम आदि की विवेचना के साथ साथ कर्णवास प्रसग कलकत्ता का प्रवास व श्री हेमचन्द्र चक्रवर्ती की दैनन्दनी के आधार पर चित्रण आर्य समाज बम्बई के साप्ताहिक अधिवेशनो मे स्वामी दयानन्द प्रदत्त प्रवचन आदि अनेक नूतन प्रसगो की उदभावना इस ग्रन्थ की एक प्रमुख विशेषता समझी जा सकती है। स्वामी दयानन्द जिन-जिन स्थानो पर गए, जिन ग्रामो, कस्बो तथा नगरो मे विश्राम किया उनके सही नाम देने क प्रयास भी इस ग्रन्थ की विशिष्टता कही जा सकती है।

और अन्त में डाक्टर भवानीलाल भारतीय अपने वक्तव्य को इन शब्दो के साथ समाप्त करते हैं—

'स्वामी दयानन्द के जीवन का सावधान पाठक यह अवश्य लक्षित करेगा कि इस ग्रन्थ मे जहा अनेक अन्यथा चर्चित, मिथ्या किवदन्तियो तथा प्रवादो और जन श्रुतियो के निराकरण का सफल प्रयास किया गया है वहा स्वामी दयानन्द को विष दिए जाने के प्रकरण की सारगर्भित छानबीन की गई है। इस प्रसग को जितने विस्तार से लिखा गया है, उतनी ही सूक्ष्मता से सभी सम्बन्धित उल्लेखों की गवेषणा एव मीमासा कर सुविचारित निष्कर्ष प्रस्तुत किए गए हैं। विष दान के प्रकरण की इतनी सतर्क एव सूक्ष्म मीमासा इससे पूर्व कभी नही की गई थी।

मैंने श्री डा भवानीलाल भारतीय के अपने ही शब्द यहा इसलिए उद्धृत किए हैं ताकि उनके इस ग्रन्थ का वास्तविक रूप आर्य जनता के सामने आ सके। कई बार जब दूसरे व्यक्ति किसी ग्रन्थ की समीक्षा करने लगते हैं तो वे लेखक के साथ अन्याय कर जाते हैं। मैं नही चाहता कि डाक्टर भवानीलाल के साथ कोई अन्याय हो। उन्होने इस पुस्तक को लिखने मे बहुत परिश्रम किया है। इसलिए जो कुछ उन्होने लिखा है कैसे लिखा है? क्यो लिखा है? यह सब मैंने आर्य जनता के सामने रख दिया है। हम डाक्टर भवानीलाल के कृतज्ञ हैं कि उन्होने इस पुस्तक के लिए इतना परिश्रम किया है। जैसाकि मैंने प्रारम्भ मे ही लिखा है, महर्षि दयानन्द का कोई प्रामाणिक जीवन चरित्र हमे नही मिल रहा था। डाक्टर भवानीलाल भारतीय द्वारा लिखित जीवन चरित्र के विषय मे यह अवश्य कहा जा सकता है कि यदि महर्षि का कोई प्रामाणिक जीवन चरित्र इस समय है तो वह डा भवानीलाल भारतीय का लिखित नव जागरण के पुरोधा दयानन्द सरस्वती है।' यह एक ऐसी पुस्तक है जो प्रत्येक आर्य समाज और आर्य समाजी को अपने पास भी रखनी चाहिए और दूसरो को भी पढानी चाहिए।

—वीरेन्द्र

## आर्य मर्यादा के ग्राहक महानुभावों की सेवा में

आर्य मर्यादा साप्ताहिक के दीपावली विशेषांक की पाठको ने बहुत सराहना की है। इस अक के सम्बन्ध मे तथा पूर्व कृष्ण जन्माष्टमी अक के सम्बन्ध में पाठको ने प्रशसनीय शब्द लिखे हैं, हम चाहते हैं कि आर्य मर्यादा निरन्तर इसी प्रकार उन्नति करता रहे। परन्तु यह इसके ग्राहक महानुभावो पर निर्भर करता है कि वह इसका शुल्क समय पर भेजें और अपने दूसरे इष्ट मित्रो को भी इसका ग्राहक बनाने का यत्न करें। हमारी सभी ग्राहक महानुभावो से प्रार्थना है कि अपना शुल्क समय पर भेजकर हमे अपना पूरा 2 सहयोग दें।

—सह-सम्पादक

# दयानन्द और लूथर, एक सरल अध्ययन

लेखक—श्री हरि ओ३म् जी सि. आचार्य, उपाचार्य उप. महा. वि. टंकारा—

### "परिस्थितिया ही विचारको की जननी होती हैं"

सम्भवत इसी उक्ति के अनुसार युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द और अपने समय के युग निर्माता मार्टिन लूथर या किसी अन्य विचारक का समुचित और सन्तुलित मूल्यांकन ऐतिहासिक परिस्थितियो के परिपेक्ष मे ही किया जा सकता है।

14 वी शताब्दी की उत्पत्ति मार्टिन लूथर और 14 वीं शताब्दी की उपज महर्षि दयानन्द सम्भवत एक ही समान हृदय लेकर ससार में प्रकट हुए थे। क्योकि दोनो का दृष्टिकोण प्रबल क्रान्तिकारी तथा कथित सडे-गले धर्मों के प्रति विद्रोही था। धार्मिकता की सडी गली कुरीतियो के विरोधाभास व धर्म के नाम पर अमानवीय कृत्यो को देख कर उन दोनो महान् समाज सुधारका ने जो भी महान् काय किया उसका तत्कालीन समाज पर इतना बडा प्रभाव पडा कि लोग यह मानने को मजबूर हो गए कि ये दोनो एक ही ऐतिहासिक वातावरण के उत्पादन थे। इतिहास इनका चिर साक्षी और चिर ऋणी भी रहेगा।

जिस तरह आजीवन आर्यावर्त की उन्नति एवम् सुधार के लिए महर्षि ने कुरीतियो के विरुद्ध विद्रोह का डका बजाया ठीक वैसे ही कैथोलिक चर्च की बर्बरता नृशसता एव अनैतिकता के विरुद्ध लूथर ने यावत जीवन बिगुल बजाया। जिसमे तथा कथित समस्त धार्मिक कुरीतियाँ जलकर भस्म हो गई। इन्हीं परम्पराओ और प्रमाणो के आधार पर सर्वांश मे सत्य न होते हुए भी लूथर व दयानन्द को समान समाज सुधारको की श्रेणी मे रखा जा सकता है।

जिस तरह 14 नवम्बर 1483 को जन्मे मार्टिन लूथर ने उस जमाने के यूरोप की सबसे बडी शक्ति होली रोमन इम्पायर जिसके सम्राट चार्ल्स पञ्चम थ के विरुद्ध 19 वी शताब्दी के पूर्वार्द्ध मे सघर्ष किया। इसी समय के यूरोपीय पूजीवाद के समर्थको मे अन्य महान विचारको कलाकारो जैसे लियोनार्डो दविंसी, ऐल्बरवट ज्यूरर आदि के साथ ही लूथर ने भी सामन्ती वैचारिकता के ऊपर कठोर प्रहार करके उसे सुधारने की कोशिश की ठीक उसी प्रकार शोषणरूप भयानक पूजीवाद के विरुद्ध 19 वीं सदी मे जन्मे ऋषि दयानन्द ने भी मनु महाराज की आर्थिक व्यवस्था को लेकर बडा कडा सघर्ष किया। वे वास्तविक पूजीवाद को जनसामान्य का शोषक न मान कर पोषक मानते थे।

इतिहासानुसार लूथर के समय मे कैथोलिक चर्च की जगह भ्रष्टाचार स्थली ने ले ली थी। चरित्र भ्रष्ट ऐलेक्जेण्डर बोजियो नामक पोप ने अपने भ्रष्ट पुत्र सीजर और पत्र भ्रष्ट पुत्री ल्यूक्रेजिया बोर्जियो के कारण खूब धन कमाया था। लेकिन लूथर के पादरी बनकर आने तक ये तीनों मर चुके थे। उसके उत्तराधिकारी जूलियस तथा लियोदस एवम् कैथोलिक चर्च पूजीवाद के द्वारा आयी हुई आर्थिक शक्ति रूप समस्याओ का सामना नही कर पा रहे थ। कहते हैं कि चर्च के खाली खजाने को भरने के लिए दस ने इन्डल्जेन्स का व्यापार करना प्रारम्भ किया जिसे देकर वह अपने भक्तो के नरक को कम करता था। लूथर भी महर्षि दयानन्द की तरह धर्म के नाम पर धार्मिक समुदाय मे व्याप्त इस प्रकार की जन पीडा व ठगी को सहन न कर सके उनका हृदय चीत्कार करने लगा। जिसके फलस्वरूप महर्षि दयानन्द पाखण्ड खण्डिनी की भाति विटेम बर्ग के चर्च पर उन्होंने (लूथर) इन्डल्जेन्स के कटु आलोचक एक 95 सूत्रीय कागज 31 अक्तूबर 1507 को चिपका दिया।

जिसके फलस्वरूप उन्हें बागी घोषित कर धर्म से बहिष्कृत कर दिया गया। परन्तु ऋषिवर की भाति अडिग लूथर ने भी अनेको अत्याचार तथा कथित धर्माधिकारियो के सह कभी ऊफ तक न की। उस समय सेक्सनी के राजा ने उनका साथ दिया जब चार्ल्स पञ्चम के आदेशानुसार वहा की ससद ने उनके अकाटय तर्कों के बाद भी उन्हें ईश्वर और मानव के प्रति बागी करार कर दिया। अब वह आडम्बर विरोधी दयानन्द की ही तरह शान्ति स्थापक पादरी लूथर की जगह बागी लूथर बन गए। उनके ऊपर अनेकों प्रतिबन्ध लगाए गए। जिसका उत्तरी जर्मनी की जनता ने विरोध किया। और सेक्सनी के राजा ने उन्हे वष्टि वर्ग मे शरण दी। वहा से उन्होंने सर्वसाधारण के लिए बिना अनुवादक के पढने पढाने के लिए लैटिन से जर्मन भाषा मे बाईबल का अनुवाद किया। इसी प्रोटस्ट के कारण जर्मनी छोटे-छोटे हजारो भागों में विभक्त हो गया। एवं कैथोलिक व प्रोटेस्ट शब्दो की लडाई न रह कर राजनैतिक आर्थिक हो गई जिसके परिणाम स्वरूप गिरजाघरों पर जबरदस्ती हमला करके अधिकार कर लिए गए। मजदूर अपने मालिकों के घरो मे हमले करने लगे और 29 वर्षों तक इस महान् सुधारक का दयानन्द की तरह अन्ध श्रद्धा आडम्बरवाद धार्मिक ठेकेदारी और सामाजिक धार्मिक राजनैतिक एवम् आर्थिक शोषण रूप कलङ्क को निष्कलङ्क रहकर धोने के बाद मे अन्त मे उसका 1546 में निधन हो गया।

महर्षि के प्रबल काशी शास्त्रार्थ व वेद मत मण्डन पाखण्ड खण्डन स्वरूप लाखो वर्षों से जन्म मत पोगा पन्थी निरकार ब्राह्मणो के अधिकार रूप त्रिपुर विजयी शकर की अन्ध विश्वासो की गढ काशी के जैसे अस्थि पञ्जर हिल गए थे। इसी प्रकार प्रोटैस्टेन्ट लूथर के आन्दोलन के परिणामत सैंकडो वर्षों का साम्राज्य होली रोमन इम्पायर भी पूरी तरह अन्दरूनी टकराव से जर्जर हो गया था। और दयानन्द की चुनौती के फलस्वरूप मठाधीशो की तरह लूथर के कारण पोप की भी विश्वव्यापी शक्ति और असीमित अधिकारो को चुनौती मिलने लगी थी। कैथोलिक और प्रोस्टेन्ट एक दूसरे की सडकों तक हत्यायें करने लगे थे। मार्टिन लूथर का आन्दोलन भी महर्षि दयानन्द की तरह धार्मिक कुरीतियो जिसका समर्थन तत्कालीन तथा कथित बड बड धर्म गुरु करते थे। अन्ध विश्वासो और भ्रष्टाचार के खिलाफ था। जिसके फलस्वरूप उसे काफी समर्थन मिला।

जिस तरह दयानन्द ने भारत की जर्जरित और मृत प्राय धर्म, समाज और शैक्षणिक व्यवसाय पर करारी चोट देकर व व्यवहार समर्थित एक नयी दिशा दी। ठीक वैसे ही 15 वीं शताब्दी की जर्जरित और भ्रष्ट यूरोपीय और ईसाई परम्परा को तोड कर पूजीवाद को वैचारिक स्तर तक लाने के लिए लूथर ने अपने तन मन और जीवन को अर्पण कर दिया और एक ऐसा नया मोड दिया जो कि बुद्धिशाली समाज को सतत प्रकाश प्रदान करेगा।

इन दोनों सुधारकों के चरित्र का तुलनात्मक अध्ययन करने से ऐसा लगता है कि लूथर का सघर्ष केवल पूजीवाद का असमर्थन और धार्मिक आडम्बर के विरोध स्वरूप ही था। जबकि दयानन्द के आन्दोलन का लक्ष्य सर्वतोमुखी था। चाह राजनीतिक हो या धार्मिक सामाजिक हो या शैक्षणिक सभी क्षेत्रों में ऋषि ने एक परिपूर्ण मानव के विकास में पूरा ध्यान दिया।

कुछ विचारक यह कहते हुए लूथर को अधिक श्रेय देते हैं कि उसने सभी कानून बनवाने के लिए राजाश्रय नहीं लिया था। जिससे लूथर का संघर्ष महर्षि दयानन्द की तुलना मे काफी सफल और सार्थक रहा। परन्तु प्रगतिशील सामाजिक आन्दोलन के कारण ही राजा राम मोहनराय, योगी अरविन्द घोष बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय, स्वामी दयानन्द का सुधार आन्दोलन और सिक्खी हुई सफल नीति को कभी सफलता नहीं मिली, क्योकि ये सब राजाश्रय की चाहना लेकर अग्रेजो के पिट्ठू बन गए। यहा तक कि स्वामी दयानन्द गोवध के विरुद्ध हस्ताक्षर अभियान अपने अन्तिम समय तक भी चलाने में व्यस्त थे। हालाकि दोनों के समय में पूजीवाद का ह्रास हो चुका था मेरे विचार से यह सोचना भी गलत है क्योकि तत्कालीन सरकार इन भारतीय सुधारकों की विचार धारा को समाज हितैषी मानते हुए भी अपना राज्य जमाने के लिए इन विचारो को कुचलने के लिए कटिबद्ध थी। जिसके फलस्वरूप ही उसने दयानन्द को बागी फकीर की सज्ञा दी थी। अग्रेज सरकार 1857 के सग्राम में आगे ही भाग लेने के कारण उत्तर प्रदेश और बिहार प्रदेश के देशभक्तों और जन सामान्यो को चक्कियारा बनाने पर तुली थी।

जिसके कारण हर तरह के दमनचक्र चलाए जा रहे थे। लूथर युग की तुलना मे अग्रेजों द्वारा लाया गया (ऋषिकालीन) पूजीवाद एक लुटेरे डाकू की तरह भारत की तरफ मुह फाडकर आया था। जिससे उसने सामन्तशाही को प्रोत्साहित किया। (स्वय अंग्रेजी राज्य भी साम्राज्यवाद पर आधारित था) जमीन की लगान (कर) की वसूली का ठेका सामन्तो और जमींदारो को देकर उसके कल तक के विश्व सिरमौर भारत को कबाडो का गरीबतम देश बना दिया, परन्तु इन सब ऐतिहासिक परिपेक्ष्य में देखने से लगता है कि लूथर और दयानन्द ने मतों और आडम्बरों से जकडी विश्व जनता को एक प्रगतिशील सामाजिक विचार धारा देकर समाज को एक नई दिशा दी। जिसके हेतु यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि जहां लूथर को, केवल आर्थिक सामाजिक और धार्मिक पक्ष का वरण करके सन्तोष करना पडा वहीं दयानन्द को मानव जीवन के प्रत्येक पक्ष की दृढता पूर्वक सिद्धि करने पर चतुर्दिक सफलता मिली। इन दोनों के उदय होने से अन्धकार में भटकी हुई विश्व जनता ने विश्व गगन पर प्रकाश की एक किरण देखी और उसका सहर्ष स्वागत किया। आज इ ग्लैंड के विद्वान् भी धर्म ग्रन्थों के अमर्यादित और बुद्धिक्रम के विरुद्ध बातों को अपने धर्म गुरुओं के साथ जोड़ने में हिचकिचा रहे हैं। यह इन दोनों महापुरुषों के अमर बलिदान का फल नहीं तो और क्या है?

—

# शताब्दी समारोह जो अनुकरणीय है

आर्य समाज (बड़ा बाजार) पानीपत को स्थापित हुए सौ वर्ष हो चुके हैं, यह बात समाचार पत्रों के माध्यम से सबको ज्ञात थी। प्रसन्नता का विषय है कि यथानिर्दिष्ट समय पर अपनी अनेक विशेषताओं के साथ आर्य समाज (बड़ा बाजार) पानीपत का शताब्दी समारोह बड़ी धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। आर्य समाज पानीपत का यह समारोह भावी शताब्दी आयोजकों के लिए एक प्रकाश स्तम्भ का काम करेगा। ऐसे अवसरों पर भीड़ इकट्ठी करने के लिए अथवा खुशामद व चापलूसी करने के लिए प्रायः किसी एक राजनीतिक नेता को आमन्त्रित कर उसके स्वागत का प्रदर्शन किया जाता है। परन्तु इस शताब्दी समारोह में ऐसा कुछ नहीं हुआ। किसी भी राजनीतिक नेता को आमन्त्रित नहीं किया गया ट्रकों में भर कर भीड़ इकट्ठी नहीं की गई, वर्दीधारी पुलिस व कर्मचारियों की जमात से धार्मिक मंच को सरकारी मंच बनाने का कोई प्रयत्न नहीं किया गया। यह जुलूस मिशनरी मय था लेकिन इस समारोह की कुछ अपनी ऐसी विशेषताएं थीं, जो आने वाले समारोह के लिए प्रेरणा का काम करेंगी।

रविवार 14-10 84 का वह दृश्य भव्य था, जबकि आर्य समाज के सम्पूर्ण भारत के उच्चस्तरीय विद्वानों को जिन्होंने अपना जीवन वैदिक साहित्य के निर्माण में झोंक दिया, सम्मानित किया गया। जन-समाज में विशाल मंच पर बैठे विद्वानों का श्रद्धा से फूल मालाओं के साथ स्वागत किया, प्रत्येक को 1500 रुपए व शाल, व पुस्तकें प्रशस्ति पत्र तथा आने-जाने का मार्ग व्यय दिया गया। यह सरकारी सम्मान नहीं था, अपितु हृदय से निकला हुआ श्रद्धा से समन्वित सम्मान था, जिस पर कृत्रिमता का किसी प्रकार का मुलम्मा चढ़ा हुआ नहीं था। आर्य समाज के अधिकारियों ने न केवल विद्वानों का सम्मान किया, अपितु उनका भी स्वागत किया जिन्हें देश भूल चुका था, लेकिन जिनके त्याग और तपस्या से आजादी का झण्डा ऊंचा रहा है।

शताब्दी समारोह का इतिहास कुछ ऐसी परम्पराओं का इतिहास है जिसकी लकीर से हटकर चलने का प्रयत्न आयोजक प्रायः नहीं किया करते। अग्नि प्रज्वलन व शोभा यात्रा का उल्लेख सभी में होता है, लेकिन इसका क्या विधान व रीति है यह है आम जनता अपरिचित ही है। समारोह के आयोजकों ने आम जनता की जानकारी के लिए अग्न्याधेय नवसस्येष्टि तथा पौर्णमा-सेष्टि यज्ञों को कराने की व्यवस्था की। इन यज्ञों को कराने के लिए दक्षिण के विद्वान् श्री रघुनाथ कृष्ण सैलूकर वाजपेयी को महाराष्ट्र से, श्री अग्निहोत्री रामानुज ताताचार्य कुम्भकोणम् को तामिलनाडु से, तथा प विश्वनाथ जी धौली को आन्ध्र प्रदेश से आमन्त्रित किया। इनकी देख-रेख में ये यज्ञ किए गए। इन विद्वानों के विचारों को जनता ने अपार श्रद्धा व शान्ति से सुना। यद्यपि वे भाषण संस्कृत भाषा में देते थे।

आर्य समाज की शताब्दियों व अन्य शताब्दियों के अवसरों पर स्मारिका निकालने की परम्परा भी है। जिसमें राजनीतिक नेताओं के सन्देश के साथ उनके चित्र कुछ स्थानीय पदाधिकारियों के चित्र व कुछ उनके फुलस्केप लेख होते हैं। शेष पन्ने एडवर्टाइजमेंट के होते हैं और इस प्रकार 150 पृष्ठ से 300 पृष्ठ तक की पत्रिका तैयार की जाती है जो अपनी आयु के छ महीने व्यतीत करने के उपरान्त रद्दी की टोकरी में डाली जाती है। आर्य समाज पानीपत ने इस दिशा में एक नई परम्परा स्थापित की है। स्मारिका के स्थान पर एक ग्रन्थ प्रकाशित किया है। धर्म और संस्कृति नाम इस के ग्रन्थ में वेद विषयक उच्चकोटि के विद्वानों के लेख हैं लेखों की विभिन्नता इसी से स्पष्ट होती है कि उसमें वैदिक गणित जैसे लेख पूर्ण व्यायामों के साथ हैं। इसके अतिरिक्त यह पुस्तक काव्यमय चित्रों व कविताओं के साथ एक एक पृथक् विशेषता की है, आर्य समाज ने यह पुस्तक अर्थ की दृष्टि से नहीं अपितु वैदिक साहित्य के प्रचार की दृष्टि से प्रकाशित की है।

इस आर्य समाज ने इस अवसर पर एक नए अध्याय का सूत्रपात भी किया है वैदिक साहित्य संसार की अनेक भाषाओं में प्रकाशित हुआ है, लेकिन किसी ने यह नहीं सोचा कि नेत्रहीनों के लिए भी इस साहित्य की आवश्यकता है। शताब्दी समारोह के अवसर पर आयोजकों ने ब्रेल-लिपि में आर्याभिविनय का प्रकाशन किया जो शीघ्र ही नेत्रहीनों के हाथों में पहुंच जाएगा।

हैदराबाद से आमन्त्रित सृष्टि विज्ञान की प्रदर्शनी भी दर्शनीय थी जिसमें वेदानुसार सृष्टि काल की गणना चित्रित की गई थी।

शराब बन्दी तथा गोहत्या सम्बन्धी प्रस्ताव पारित हुए तथा लोगों ने शराब न पीने व मांस न खाने का प्रण किया। शताब्दी समारोह में सम्मिलित विद्वानों की अनेक विषयों पर गोष्ठियां हुईं तथा विद्वत परिषद् नाम से एक परिषद् का गठन हुआ। स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती को सर्वसम्मति से इस परिषद का प्रधान मनोनीत किया गया।

—डा भीमसेन देव (पानीपत)

# आर्यसमाज को अपनी आय का 1 प्रतिशत अथवा अधिक तो क्यों?

ले —श्री रामस्वरूप जी (स्वाध्याय कुञ्ज) अजमेर

भारत में आर्य समाज के प्रान्तीय संगठन व विदेश में राष्ट्रीय संगठन प्राथमिक कम से कम अपनी आर्य समाजों से आय का 10 प्रतिशत लिया करते हैं। तथा सार्वदेशिक संगठन को 5 प्रतिशत दिया करते हैं। प्रान्तीय संगठनों की प्राथमिक आर्य समाजों से शिकायत रहती है कि प्राथमिक सभासदों के आय के अलावा अन्य आय (किराया आदि) का भाग नहीं मिलता। प्राथमिक आर्य समाजें परेशान हैं कि सभासद अपनी आय का 1 प्रतिशत नहीं देना चाहते हैं। बहुत थोड़े से ऐसे सभासद् हैं जोकि स्वेच्छा से एक प्रतिशत अथवा अधिक देते रहते हैं। अभी अधिक आर्य समाजें तो ऐसी ही हैं जिनके सारे अधिकारी भी 1 प्रतिशत नहीं देते हैं।

सभासदों में जहां तक प्रेरणा भरने की बात है यह कार्य तो पुरोहित एवं यति कर सकते हैं। संगठन या प्राथमिक समाज के अधिकारी तो व्यवस्था को इस प्रकार से करें कि 1 प्रतिशत मिल ही जावे वरन इससे भी अधिक मिले। प्राथमिक आर्य समाज में जो उपस्थिति पुस्तक हो इसमें भी निम्न सूचनाएं हों।

1 सभासद् बनने की तिथि।

2 नाम। इसके साथ वर्ण-व्यवसाय विद्या उपाधि आदि की पैतृक जानकारी रखें उपनाम नहीं हो।

3 पिता का नाम या पति अथवा पत्नी नाम।

3 स्वयं नाम 4 विवाहित स्त्री सभासद् है तो उसका वंश, पति का नहीं 5 व्यवसाय अपनी मेहनत की आय का साधन।

6 पूरा पता—जिससे चिट्ठी मिले साथ ही कोई घर पहुंचना चाहे तो पहुंच सके।

7 स्वअर्जित आय—अपने शारीरिक या बौद्धिक श्रम द्वारा प्राप्त आय तो एक भाग है। यदि मेहनत की कमाई से बचत होती है जो अधिकांश बैंक में जमा है तो उसका ब्याज भी, साथ ही कोई व्यक्ति अपनी मेहनत से कोई मकान बनाता है तो उसका भी किराया।

उपस्थित पत्रिका में दिनांक 1 से 31 तक संकलित होती है। अतः सभासद् अपने हस्ताक्षर जिस दिन आएगा उस दिन कर देगा। आय भरने का जो स्थान है उसमें भी सभासद् के हाथ की ही लिखावट होनी चाहिए। कोषकार 1 प्रतिशत आदि की रसीद अपने हाथ से बनावे। सभासद् स्वयं ही आय भरेगा तो अपने को अधिक उत्तरदायी मानेगा। आमदनी के लिए जो खाना : कालम है उसमें भी ये तीनों स्रोत लिखे जाएं गे। हर स्रोत से जो आय उस मास विशेष में होवे यह सभासद् द्वारा लिखी जाएगी।

बिना मेहनत की आय भी हो जाती है जैसे उपहार, मास, वर्ष में जो उपहार मिलते हैं यदि कुछ तो उनका भी संकेत हो। पिता या दादा आदि की ओर से मिला धन उसका ब्याज जायदाद व उसका किराया य तो उपहार हैं ही। उसकी पत्नी के अभिभावकों से किसी प्रसंग में उसको व कोई वस्तु मिले या धन सम्पत्ति आदि ये सब उपहार हैं ही। कारण इन की प्राप्ति में उसकी अपनी मेहनत तो कुछ है ही नहीं। ससुराल वालों से प्राप्ति चाहे विवाह के पूर्व या विवाह के समय अथवा विवाह के बाद में हो यह तो सारी उपहार है।

आर्य समाज वेद प्रतिपादित आश्रम पद्धति को स्वीकार करता है। किसी भी प्रकार का वंशगत या पैतृक अथवा श्रम हीन अधिकार वेदानुकूल नहीं हैं। आश्रम शब्द ही बताता है, सब ओर यानि 6 दिशाओं में जो है उसके लिए श्रम करना है। अतः आर्य सभासद् होने को सार्थक करना है तो पितृ वंश मातृवंश-पत्नी के माता पिता के वंश या अन्य किसी से किसी भी प्रकार का उपहार नहीं लिया जाए। उपहार से जो मासिक या वार्षिक आय है उसका एक प्रतिशत ही क्या वह तो पूरी ही आय समाज को दी जानी चाहिए। यदि सभासद् कहीं और लोक कल्याणकारी संस्थाओं का भी सदस्य है तो उपहार की आय में से उनको भी दे सकता है। परन्तु आर्य सभासद् के लिए योग्य तो यही है कि श्रम रहित पैतृक अधिकार आदि की आय स्वयं के उपभोग में नहीं ले।

ऐसा होने से आर्य समाजों की आय तेज गति से बढ़ जाएगी। 1 प्रतिशत आय देने से ही आर्य समाजों की आय अच्छी मात्रा में बढ़ सकेगी। आर्य समाज पर सबकी शारीरिक-आत्मिक सामाजिक उन्नति का दायित्व है, अतः विभिन्न प्रकार की व्याधियों को निर्मूल करने के लिए 1 प्रतिशत राशि तो बहुत कम पड़ती है।

भारत का उदाहरण लीजिए। यहां महाभारत के बाद पशु हिंसा नारी अपमान, दहेज, छुआ-छूत जातीय संकीर्णता धन को धर्म से बढ़कर मानना जीवित माता-पिता आदि की सेवा न करना

(शेष पृष्ठ 8 पर)

# षट् सम्पत्ति क्या है ?

ब्रह्म को खोजने से पूर्व जिज्ञासु मे गुण होने चाहिए। ऐसा शंकराचार्य व स्वामी दयानन्द जी दोनों ने कहा है। उनमे तीसरा गुण है—षट् सम्पत्ति ? षट् सम्पत्ति का अर्थ है छ प्रकार की सम्पत्ति। पहली सम्पत्ति ?—शम दूसरी दम, तीसरी तितिक्षा, चौथी उपरति, पाचवी श्रद्धा, छठी समाधान।

पहली सम्पत्ति का नाम है शम्—वह शक्ति जो मनुष्य को प्रत्येक दशा मे शान्त रखे। प्रत्येक दशा मे शान्त रहने के लिए मन को वश मे रखना अत्यावश्यक है। मन को वश रखने का साधन है—उनमे से पहला है—ससार की वास्तविकता को समझना आत्मा क्या है ? अनात्मा क्या है ? इस बात को जानना। दूसरा साधन है—अच्छे विचारो को जागाना। तीसरा है—त्याग। चौथा—ईश्वर को हर पल याद रखना। उसके नाम का जाप करना पाचवा साधन है—उत्तम अन्न का सेवन। छठा है—अपनी आवश्यकताओ को कम करना।

शम के गुण को उत्पन्न करने के लिए दूसरा उपाय है योग साधना योग का अर्थ है—आत्मा का परमात्मा से मिलना। योगासनो का नित्य नियम से अभ्यास करने से वे ध्यान में बैठने से मन शान्त होता है व मन वश मे रहता है—तीसरा साधन है—किसी व्यक्ति को, किसी वस्तु को बुरा न समझो। चौथा साधन है—प्राणायाम करना। अच्छी वस्तुओ के लिए इच्छा उत्पन्न करो व फिर एकान्त मे जाकर अभ्यास करो। मन को शान्त करने के लिए प्राणायाम एक उत्तम साधन है।

शम्—के पश्चात् दूसरी सम्पत्ति है दम् अर्थात्—इन्द्रियो का दमन करना उन्हे वश मे करना। इन्द्रिया दो प्रकार की हैं। एक वे जो बाहर का ज्ञान हमारे पास लाती हैं, दूसरी वे जिनसे हम कर्म करते है। बाहर की इन्द्रियो को वश मे करो अन्दर से ध्वनि आएगी। प्रत्येक इन्द्रिय को वश मे करने का प्रयत्न करो, ऐसा करने से दम नामक दूसरी सम्पत्ति प्राप्त होगी। दम के पश्चात तीसरी सम्पत्ति है—तितिक्षा। सहन करने की शक्ति। शोक दुख, राग, मानसिक आघात और कटु कड़वे वचन सहन करने की शक्ति। इन सबको सहन करना ही मनुष्य को मानव से महामानव बनाता है। मन की दशा ऐसी होनी चाहिए कि सुख हो या दुख, जो लक्ष्य अपने समक्ष रखा है उसे प्राप्त किये बिना पीछे न हटना पड़े।

तितिक्षा के पश्चात चौथी सम्पत्ति है—उपरति। इसका अर्थ है दुष्ट लोगो के सग से बचना। दुष्ट को सुधारने का प्रयत्न करना। यदि वह नहीं सुधरता तो उससे परे हट जाना।

उपरति के पश्चात् पाचवी सम्पत्ति है—श्रद्धा। श्रद्धा के बिना कोई कार्य नहीं बनता। यदि तुम्हे पथ-प्रदर्शक की आवश्यकता है तो पहले किसी व्यक्ति को अच्छी प्रकार जाच कर देख लो। उसके निकट कुछ समय रहकर देख लो, यदि जाच-पड़ताल मे उपयुक्त दिखाई देता है तो उसे गुरु मानकर उसके आदेशानुसार काम करो सफलता ही सफलता मिलेगी। उसमे पूरी श्रद्धा पूरा विश्वास करो व उसके कहे अनुसार चलते जाओ। जो कुछ कहता है उसे करते चले जाओ, उस पर दृढ विश्वास रखो। याद रखो विश्वास नहीं होगा। श्रद्धा नही होगी तो ठीक मार्ग दिखाने वाला भी तुम्हारे लिए कुछ नहीं कर पाएगा। श्रद्धा से ज्ञान मिलता है ज्ञान से शान्ति।

—और श्रद्धा के पश्चात् छठी सम्पति है—समाधान। मन को बाहर की ओर से हटाकर अन्दर की ओर एकाग्र कर देना। मन यदि बाहर की बातो मे लगा रहे तो अन्दर की बातें सोचना नही। केवल ज्ञान व केवल अभ्यास से एकाग्रता प्राप्त नही होती। एकाग्रता प्राप्त होती है ज्ञान व अभ्यास को मिला देने से बाहर की बातो से मन को हटा देना एकाग्र कर देना, ध्यान मग्न हो जाना। उसी से समाधान की यह सम्पति प्राप्त होती है।

(सकलन महात्मा आनन्द स्वामी के उपदेशो से)

## दीपावली विशेषांक बहुत सराहनीय व पठनीय है

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के साप्ताहिक मुख पत्र 'आर्य मर्यादा का 'दीपावली विशेषाक प्राप्त हुआ। विशेषाक वास्तव मे पठनीय एव सग्रहणीय था। सभी लेख सामयिक एव शिक्षाप्रद थे। जिनसे पढ़कर काफी ज्ञान वृद्धि हुई, विशेषाक मे सम्पादकीय लेख का तो अपना अलग ही महत्व रहा। वास्तव में इस पत्र के विशेषाक की काफी धूम रहती है।

यह विशेषाक भी अपनी उसी शान के अनुरूप निकला है। दीपावली विशेषाक की इस सफलता के लिए आप विशेष बधाई के पात्र हैं।

—राम कुमार
कुन्डागढ़ (सोनीपत)

# मुझे आर्य मर्यादा के महर्षि बलिदान विशेषांक से महान् प्रेरणा मिली

# सम्पादक के नाम पत्र

पूजनीय सम्पादक जी,
सादर प्रणाम।

आपके द्वारा कृपा पूर्वक प्रेषित 'आर्य मर्यादा' का दीपावली विशेषाक मानि महर्षि दयानन्द बलिदान विशेषाक पाया। 15 दिनो से अति ज्वरपीड़ित था। 104 डिग्री से कम बुखार कभी नहीं था। सदा मौत से जूझता तथा मृत्यु के बारे मे तरह तरह की धारणाए बनाता। सोचता, 'मृत्यु अनन्त अन्धकार का एक कष्टदायक सफर है। ज्वर घटकर 101 डिग्री हुआ। इसी बीच यह अक आ गया, पूरा अक पढ गया। अक पढने से जो बल मिला, उसी से लेखनी पकड आपको पत्र लिखने लगा।

मैं महर्षि दयानन्द स्वामी के हर विचार से प्रभावित हुआ। मैं इस विवाद में पड़ना नहीं चाहता कि गुरु उन्हे दण्ड देते थे या नही ? हा, गुरु का काम अच्छी सीख के लिए दण्ड देना है इतना जानता हू।

मैं विस्तार मे चला गया। इस अवस्था में इस पत्रिका के सम्पादकीय ने मुझ मे प्राण तत्व का सचार किया। मृत्यु के बारे में मेरी धारणाए बदल गयी। अब मृत्यु से डर नही लगता। मृत्यु का अर्थ पूर्णता से है। मृत्यु अन्धकार से प्रकाश की ओर जाना लगता है। चेतना प्रवाहित करने के इस स्तुत्य कार्य के लिए मैं आपका तथा आपकी पत्रिका का आभारी हू। अब हम भी—

जब से सुना है मरने का नाम जिन्दगी है,
सर पर कफन लपेटे कातिल को ढूढते हैं

आपका ही
चन्द्र भूषणसिंह 'चन्द्र' अध्यक्ष नूतन साहित्यकार परिषद् काटी मुजफ्फरपुर (बिहार)

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

हमने आपके सामने दो ऐसे सुझाव रखे हैं, जिन्हें क्रियान्वित करना आपके लिए कठिन न होना चाहिए। यदि आप चाहते हैं और आपकी आर्य समाज के सभासद् चाहते हैं कि आर्य समाज का प्रचार बढे और आर्य समाज का सगठन शक्तिशाली बनें तो उसके लिए उन्हे कुछ न कुछ तो त्याग करना पड़ेगा। केवल जबानी जमा खर्च करके आर्य समाज को नहीं चलाया जा सकता।

हम आपको यह भी याद दिलाना चाहते हैं कि आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के पिछले वार्षिक अधिवेशन मे सब आर्य समाजो के जिम्मे कुछ न कुछ राशि लगाई गई थी जो वेद प्रचार के लिए सभा को देनी है जिन-जिन आर्य समाजो ने वह राशि अभी तक सभा को नही दी उनसे प्रार्थना है कि वे भिजवा दें। हम फरवरी के पश्चात् आर्य समाजों मे वार्षिकोत्सव करने के लिए योजना बना रहे हैं उसके लिए हम बाहर से कुछ उच्चकोटि के उपदेशक महानुभाव भी बुलाए गे। जो-जो आर्य समाज फरवरी 85 से लेकर 15 जून 85 तक अपने वार्षिकोत्सव करना चाहती हैं उनसे निवेदन है कि वे हमे दिसम्बर के अन्त तक सूचित कर दें कि किस तिथि को वे अपने वार्षिकोत्सव करना चाहती हैं और क्या वे चाहती है कि हम उनके लिए उपदेशकों का प्रबन्ध करें। यदि यह सूचना हमें समय पर मिल जाए तो हम उच्चकोटि के उपदेशक और भजनीक बाहर से बुला लेंगे। पिछले कुछ समय से पंजाब में आर्य समाज का ठीक प्रकार से प्रचार नहीं हो सका। हम चाहते हैं कि 1985 में हम कुछ अधिक सक्रिय हो जाए और सब आर्य समाजें अपने अपने वार्षिकोत्सव करें। उसमे आप सभा का जो सहयोग चाहे वह हम आपको देने को तैयार हैं। परन्तु हमे समय पर पता चल जाना चाहिए कि आप क्या चाहते हैं ?

आशा है जो निवेदन इस परिपत्र मैं हमने किया है, आप उस पर गम्भीरतापूर्वक विचार करेंगे ताकि पजाब में आर्य समाज का सगठन शक्तिशाली और प्रभावशाली बनाया जा सके।

वीरेन्द्र
सभा प्रधान

कमला आर्या
सभा महामन्त्रिणी

# आर्यप्रतिनिधिसभा पंजाब के जिला प्रतिनिधियों तथा समाज के अधिकारियों से विशेष प्रार्थना

मैं सभा के जिला प्रतिनिधियो और विशेषकर उन सब आर्य समाजों के अधिकारियों जिनको कि रामार्य सभा के सदस्यो के नाम भेजने के लिए सभा कार्यालय से पत्र भेजे गए हैं प्रार्थना करता हू कि वह शीघ्र से शीघ्र परन्तु 26-11-84 तक रामार्य सभा के सदस्यो के नाम तथा उनके शुल्क सभा कार्यालय को भेज देवें ताकि रामार्य सभा की अगली कार्य विधि आरम्भ की जावे।

आपका सहयोगी
[illegible] [illegible] एडवोकेट
संयोजक रामार्य सभा पंजाब

# भिन्न-भिन्न आर्य समाजों के शोक प्रस्ताव

## प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गान्धी जी को श्रद्धाजलियाँ

### आर्य समाज फरीदकोट (पजाब) में शोक सभा

4-11-1984 ई० को आर्य समाज मन्दिर फरीदकोट (पंजाब) में साप्ताहिक सत्सग के पश्चात् आर्य समाज की मीटिंग श्री रामनारायण जी प्रधान की अध्यक्षता में हुई। जिसमें सर्व सम्मति से नीचे लिखा शोक प्रस्ताव पास किया गया।

इसमें कोई शक नहीं कि भारत का इतिहास शहीदों के खून से लिखा गया है। जब से देश की आजादी के पश्चात् राष्ट्रपिता महात्मा गान्धी की हत्या के पश्चात् जिस कायरता और बुजदिली के साथ प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गान्धी की निर्मम हत्या की गई, वह केवल एक जाति के लिए ही नहीं बल्कि पूर्ण देश के लिए महा कलक है। जिसकी कमी केवल भारत को ही नहीं बल्कि सारे ससार को महसूस हो रही है। श्रीमती गान्धी ऐसी शख्सीयत थी जिन्होंने अपना जीवन-केवल अपने देश के लिए ही नही बल्कि प्रत्येक भारतवासी के लिए बलिदान किया। ऐसी कायरता पूर्वक हत्या और खास तौर पर भारतीय नारी पर आक्रमण कार्य का जो गजब ढाया गया। इस से भी बढकर घिनौना और कायरता का कौन कार्य हो सकता है।

आज सिर्फ दिवंगत आत्मा के लिए हम इस सभा में केवल श्रद्धाजलि के सिवाय कुछ नहीं कह सकते। और परम पिता परमात्मा से सामूहिक प्रार्थना करते हैं, कि उनको अपने चर्ण कमलों में स्थान दें। और जो कार्य भार देश का अधूरा रह गया है, उसे पूर्ण करने का देश-वासियों को समर्थन दें।

—प्रधान

कलक तथा दुखदाई कृत्य है। हमारे देश की यह सदैव परम्परा रही है कि हम शान्ति और सहनशीलता के अनुगामी रहे हैं। केवल भारत में ही नहीं अपितु सारे विश्व में हमारी आँखें आज नीची हो गई हैं। जो देश सदैव ससार को शान्ति और सहनशीलता का उपदेश देता रहा उसी देश में ऐसी घटना हुई है। यह सभा परम-पिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि कुछ भूले भटके व्यक्तियो को सद्-बुद्धि प्रदान करें और दिवगत महान् आत्मा को सद्गति प्रदान करें। उनके सुपुत्र चिरञ्जीव श्री राजीव गान्धी प्रधान मन्त्री भारत सरकार तथा उन के समस्त परिवार को और सारे देश-वासियो को इस महान् वियोग भरे दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

—सतपाल चन्द मन्त्री

—

### जिला आर्य सभा सगरूर की ओर से शोक प्रस्ताव

जिला आर्य सभा सगरूर की एक आवश्यक बैठक आर्य समाज समाज धूरी में आज दोपहर दो बजे महात्मा प्रेम प्रकाश वानप्रस्थी की अध्यक्षता मे हुई जिसमे सर्व सम्मति से दो प्रस्ताव पास हुए—

#### प्रस्ताव

1, देश की महान् विभूति प्रधान-मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गान्धी पर कुछ देश-द्रोहियो द्वारा हत्या पर गहरा दुःख प्रकट किया गया तथा देश को एक चुनौती समझा गया। इतना अटल-अचल देश हित मे दृढ निश्चय वाला व्यक्ति मिलना कठिन है। इन्ही शब्दो के साथ उनको श्रद्धाजली अर्पित की गई। तथा प्रभो से प्रार्थना की गई कि देश को ऐसा ही मजबूत नेता दो। तथा प्रार्थना की गई कि उनके परिवार को सहन शक्ति का बल प्रदान करो, तथा दिवगत पुण्यात्मा को सद्गति एव शान्ति प्रदान करो।

2. भारत सरकार से माग की गई कि हमारे प्रधानमन्त्री की हत्या क्यो हुई ? किस लिए की ? और इस मे किस की साजिश है। पूरी पड़ताल करा कर ऐसा करने वालो सख्ती को से कुचल दिया जावे। ताकि भविष्य उज्ज्वल रहे।

—महात्मा प्रेम प्रकाश वानप्रस्थी धूरी, प्रधान जिला आर्य सभा सगरूर (पजाब)

### आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार लुधियाना मे शोक सभा

आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार लुधियाना के साप्ताहिक सत्सग की यह सभा महान भारत देश की महान् विभूति आदरणीय श्रीमती इन्दिरा गान्धी प्रधान-मन्त्री भारत सरकार की हत्या का जघन्य अपराध करने की कड़ी भर्त्सना करती है, इस अपराध की जितनी निन्दा की जाये कम है। हमारे देश के बड़े दुर्भाग्य की बात है जो इस महान् शक्ति की अपने ही देशवासी ने निर्मम हत्या कर दी। यह [illegible]

### आर्य समाज शहीद भगतसिह नगर की ओर से शोक प्रस्ताव

गुलशनराज आर्य प्रधान समाज शहीद भगतसिह नगर जालन्धर ने प्रधानमन्त्री इन्दिरा गान्धी की हत्या की सख्त निन्दा करते हुए कहा कि प्रधान मन्त्री की हत्या सोची समझी हुई गहरी साजिश है जिसमें वो उनके रक्षक थे वह भक्षक हो गए। प्रधान मन्त्री सारे भारत की माता थी और भारत तथा विश्व में एकता की पुजारी थी हमारी सरकार से अपील है कि वह इस हत्या की साजिश की पूरी-पूरी जाच कराए और इसमे जिस-जिस का हाथ हो, उसको कड़ी से कड़ी सजा दी जाए। अन्त में परमात्मा से यही प्रार्थना है कि श्रीमती इन्दिरा गाधी जी की आत्मा को सद्गति प्रदान करे।

ओम् सगच्छध्व स वदध्व स वो मनासि जानताम्, देवा भाग यथा पूर्वे स जानाना उपासते। ऋ० 10-161-2

अर्थ—हे मनुष्यो तुम मिलकर चलो और मिलकर बातचीत करो। मैं तुम्हे मिलकर चलने का उपदेश देता हू तुम अपने मनो को भी एक बनाओ और मैं तुमको पारस्परिक उपकार के लिए त्याग के जीवन में नियुक्त करता हू यह हमे परमात्मा उपदेश करता है यदि हम इस पर चलें तो आज ही शान्ति हो सकती है।

—

### फिरोजपुर मे श्रीमती इन्दिरा गाधी की आत्मिक शाति के लिए गायत्री यज्ञ सम्पन्न

रविवार 4-11 84 को प्रात आर्य समाज रानी का तालाब फिरोजपर मे चौक आर्य समाज और दोनो स्त्री समाजो की ओर से स्वर्गीय प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी की नृशस हत्या पर शोक सभा की गई। उच्च स्वर के आर्य बहिन-भाईयों ने दिवगत आत्मा को श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए परमात्मा से प्रार्थना की गई कि उनकी महान आत्मा को चिर-शान्ति प्रदान हो। दिवगत नेता की धार्मिक सामाजिक एवम् राजनैतिक उपलब्धियो की चर्चा की गई 11 11 84रविवार को उनकी आत्मिक शान्ति के लिए गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया गया।

—जगदीशचन्द्र आर्य प्रधान

### आर्य समाज धूरी की ओर से श्रद्धाजलि

स्वर्गीय प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी के मातम मे आर्य समाज धूरी के साप्ताहिक सत्सग को शोक सभा के रूप मे मनाया गया। जिसमें श्रीमती गाधी की हत्या की सर्वत्र निन्दा की गई और दिवगत नेता को भाव-भीनी श्रद्धाजलि अर्पित की गई।

आर्य जनो द्वारा प्रस्ताव पास करके सरकार से यह माग की गई कि श्रीमती गाधी की हत्या में वास्तविक रूप से हाथ किसका है ? यह जघन्य हत्या क्यो और किस उद्देश्य की पूर्ति के लिए की गई। इसकी पूर्ण रूप से छानबीन होनी चाहिए और देश की अखण्डता, एकता और भाईचारे को नुकसान पहुचाने वाले विघटनकारी व असमाजिक तत्त्वों को कुचल दिया जाए।

—सतीश आर्य मन्त्री

### श्रीमती इन्दिरा गांधी सदा अमर रहेंगी

#### स्त्री आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार (साबुन बाजार) लुधियाना की ओर से श्रद्धाजलि

स्त्री आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार लुधियाना के सत्सग मे भारत की प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी की हत्या पर गहरा शोक व्यक्त किया गया, वह एक निडर और उत्साही महिला थी, देश के नेतृत्व की उनमें पूर्ण क्षमता थी। उन्होने अपने जीवन काल मे देश, जाति और समाज की बहुत बड़ी सेवा की। एक महिला होते हुए वह कार्य करने मे किसी पुरुष से कम न थी। वह अपनी धुन की पक्की थी। जिस कार्य को वह ठीक समझती थी चाहे और लोग उसका विरोध ही क्यो न कर रहे हो, वह उसे कर-गुजरती थी। वह दृढ सकल्प वाली महिला थी। विगत 31 अक्तूबर को उन्हे हत्यारो ने सदा के लिए हम से छीन लिया। हमारी सभी बहिनो की परमात्मा से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे और हम सब देश-वासियो को उनके पद्-चिन्हो पर चलने की प्रेरणा व शक्ति दे।

—कमला आर्या-प्रधाना

टैलीफोन न. 74250 (रजि. न. पी. जे. एल. 55)

वर्ष 16 अंक 33, 18 मघर सम्वत् 2041, तदनुसार 2 दिसम्बर 1984, दयानन्दाब्द 160 । एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपए

# श्रीमती इन्दिरा गांधी ने भारत की एकता, स्वाधीनता, व प्रभुसत्ता की रक्षा के लिए अपना बलिदान दिया

## पंजाब की सब आर्य समाजें २ दिसम्बर को 'इन्दिरा स्मृति' दिवस मनाएं

**आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की अन्तरम सभा मे निम्नलिखित प्रस्ताव पारित किए हैं—**

भारत की भूतपूर्व प्रधानमन्त्री विख्यात राजनीतिज्ञ, अन्तर्राष्ट्रीय सम्मानित, मानव एकता व समता की समर्थक, भारत की अखण्डता स्वाधीनता व प्रभुसत्ता की संरक्षक श्रीमती इन्दिरा गांधी जी की निर्मम, नृशस और पाशविक हत्या ने केवल हमारे देश को ही नहीं सारे संसार को झकझोर कर रख दिया है। धर्म के नाम पर जिन्होने यह अक्षम्य घृणास्पद कुकर्म किया है इतिहास उन्हे कभी क्षमा न करेगा। यह हत्या सारे राष्ट्र के लिए एक चुनौती है। अपने अधिकारो की रक्षा के लिए संघर्ष करना प्रत्येक व्यक्ति का मौलिक अधिकार है, परन्तु किसी समस्या के समाधान के लिए हिंसा का प्रयोग लोकतन्त्र मे किसी भी स्थिति में सहन नहीं किया जा सकता। श्रीमती इन्दिरा गाधी ने इस प्रवृत्ति के आगे झुकने से इन्कार कर दिया था। इसलिए उनकी हत्या कर दी गई। इसी प्रकार उन व्यक्तियो की प्रतिक्रिया भी निन्दनीय है, जिन्होने इन्दिरा जी की हत्या पर हर्षोल्लास का प्रदर्शन किया है। आर्य समाज इस मनोवृत्ति को घृणा की दृष्टि से देखता है और इसकी निन्दा करता है और अपनी स्वर्गीया प्रधानमन्त्री को श्रद्धांजलि भेंट करते हुए यह सकल्प करता है कि भारत की स्वाधीनता, एकता व प्रभुसत्ता की रक्षा के लिए अपना बड़े से बड़ा बलिदान देने को तैयार रहेगा। यही इन्दिरा जी को हमारी वास्तविक श्रद्धाजलि होगी।

2 आर्य समाज के लिए यह भी दुख व चिन्ता का विषय है कि इन्दिरा जी की हत्या के पश्चात कई स्थानो पर हिन्दु और सिखो के साथ दुर्व्यवहार किया गया। आर्य समाज का यह निश्चित मत है कि हिंसा किसी भी स्थिति मे और किसी भी रूप मे आपस के मतभेद मे हिंसा का प्रयोग नहीं होना चाहिए। एक लोकतान्त्रिक शासन व्यवस्था मे हिंसा के लिए कोई स्थान नहीं है। हिंसा की प्रवृत्ति को दबाने के लिए हमारी सरकार जो भी पग उठाएगी, आर्य समाज उसमे अपना पूरा सहयोग देगा। इसी के साथ आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की अन्तरग सभा सब आर्य समाजों को आदेश देती है कि वे अपने सगठन को ऐसा शक्तिशाली बनाए कि हम अपनी रक्षा स्वय कर सकें। सरकार पर निर्भर रहना अपनी कमजोरी की निशानी है। प्रत्येक आर्य समाज अपने क्षेत्र में अपने सुरक्षा दल बनाए और अपनी रक्षा के लिए हर समय तैयार रहे। इसमें हरिजन भाईयो का सहयोग विशेष रूप से लिया जाए। उनकी रक्षा और उनका समर्थन भी हमारा एक विशेष कर्तव्य है।

सब आर्य समाजें रविवार 2 दिसम्बर को इन्दिरा स्मृति' दिवस मनाकर अपनी स्वर्गीया प्रधान मन्त्री को श्रद्धाजलि भेंट करे।

—

# जगत् कर्त्ता ही हमारा रक्षक है

तमीशान जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम् ।
पूषानो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥ यजु 25-18

(जगत तस्थुष पतिम) जगम तथा स्थावर के स्वामी (धिय जिन्वम्) बुद्धि के तृप्त करने वाले (तम् ईशानम्) उस जगत् के कर्ता ईश्वर को (वयम् अवसे हूमहे) हम सब रक्षा के लिए पुकारते हैं। हे परमेश्वर! आप (न पूषा) हमारे पुष्टिकर्ता हैं (यथा वेदसाम् वृध असत्) जैसे आप [illegible] धनो के बढाने वाले हैं वैसे ही (रक्षक असत) रक्षक भी हो (अदब्ध [illegible] पायु असत्) और निरालस्य होकर कल्याण के लिए हमारे पालन कर्ता हो।

इस मन्त्र मे सकल जगत् के उत्पादक ईश्वर से सबकी रक्षा के लिए प्रार्थना की गई है और बतलाया गया है कि वह चर अचर सबका स्वामी है और वही बुद्धियो को तृप्त करने वाला अनादि का वर्धक हमारा पोषक है। उससे प्रार्थना है कि वह सदा ही निरालस्य होकर कल्याण के लिए हम सबका रक्षक एव पालन कर्ता हो।

मन्त्र मे प्रयुक्त 'धिय जिन्वम पद बड़े महत्व के हैं। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका मे इनका अर्थ बुद्धेस्तृप्तिकर्ता अर्थात् बुद्धि के तृप्त करने वाले किए हैं। जब हम गम्भीरता से सृष्टि रचना पर विचार करते है तो सृष्टि रचयिता के माने बिना हमारी बुद्धि की तृप्ति नही होती। हक्सले, हेकल आदि अनेक विद्वानो ने सृष्टिकर्ता को माने बिना ही सृष्टि की पहेली को सुलझाने का अथक प्रयत्न किया और अनेक वैज्ञानिकवादो को जन्म दिया परन्तु उनके प्रयत्न सुलझाने के स्थान पर पहेली को और अधिक उलझाते ही रहे। अन्ततोगत्वा उनकी बुद्धि को भी सन्तोष न प्राप्त हो सका और उन्हे कहना पड़ा कि हमारे अनेको प्रयत्नो के करने पर भी सृष्टि की पहेली बिन सुलझी जैसी की तैसी रही।

हम देखते हैं कि सृष्टि के अदभुत पदार्थ अग्नि, सूर्य वायु चन्द्र विद्युत आदि नियमबद्ध हो अपने अपने कार्यों को कर रहे हैं और 'किंचिन्मात्र भी विचलित नही होते, साथ ही आबालवृद्ध के अनुभव मे आने वाली मौत भी बिना किसी भेदभाव के अपना कार्य कर रही है। इस सब के पीछे वही विश्वनियन्ता है उसके नियमो मे ये सब बधे हुए हैं। कठोपनिषद् मे कहा गया है—

भयादस्याग्निस्तपति भयात्तपति सूर्यः ।
भयादिन्द्रश्च वायुश्च मृत्युर्धावति पञ्चमः
(कठ 5-3)

इस प्रभु के भय से अग्नि और सूर्य तपते हैं तथा इसके ही भय से विद्युत, वायु और पांचवा मृत्यु दौड़ रहा है।

सृष्टि की अद्भुत रचना को देखते हुए हमे आस्तिक बुद्धि होना चाहिए और समझना चाहिए कि जगत्कर्ता ही हमारा सच्चा रक्षक है और उसी से हमे रक्षा की प्रार्थना करनी चाहिए।

(स्वाध्याय और प्रवचन से साभार)

# वैदिक ईश्वर का स्वरूप

ले—स्व श्री स्वामी धर्मानन्द जी विद्यामार्तण्ड

यदि वैदिक ईश्वरवाद के विषय में कोई एक ही मन्त्र उद्धृत करना हो जिसमे सागर को गागर मे भर दिया गया है तो वह निसन्देह यजु 40 8 है यहा—

स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरं शुद्धमपापविद्धम् ।
कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः ॥

इन शब्दो द्वारा बताया गया है कि ज्ञानी उस परमेश्वर को प्राप्त करता है जो सर्वशक्तिमय सर्वथा शरीर रहित नसनाडी के बन्धन से रहित निराकार निर्विकार शुद्ध पवित्र तथा सर्वथा पाप रहित है। वह सर्वज्ञ मन का भी साक्षी सर्वव्यापक स्वयम्भू है जो (शाश्वतीभ्य समाभ्य) अनादि जीव रूप प्रजाओ के कल्याणार्थ (याथातथ्यत) यथार्थ रूप से सब पदार्थो को बनाता और वेद द्वारा उनका उपदेश करता है। यहा शाश्वतीभ्य समाभ्य इन शब्दो मे अनादि नित्य जीवो की सत्ता और याथातथ्यत अर्थात व्यदधात जगत की यथार्थता (न कि 'ब्रह्म सत्य जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापर) इस अद्वैत वेदान्त सिद्धान्त सिद्धान्तानुसार उसका मिथ्यात्व) भी स्पष्ट है।

## जीवेश्वर भेद का अत्यन्त स्पष्ट प्रतिपादन

वेदो मे जीवेश्वर भेद का स्पष्ट प्रतिपादन सकडो मन्त्रो मे है क्योकि इस बात को सभी जानते हैं कि वेदो मे अधिकतर मन्त्र प्रार्थना के हैं और प्रार्थना उपास्य उपासक स्वामी सेवक, पिता पुत्र आदि का भेद मानकर ही सम्भव है। तथापि लेख के विस्तारभय से अभी निम्न निम्नलिखित अति स्पष्ट मन्त्रो का निर्देश मात्र ही पर्याप्त है जिनके अर्थ के विषय मे भी सन्देह का अवकाश नही यदि निष्पक्षपात दृष्टि से विचार किया जाए।

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समान वृक्ष परिषस्वजाते

तयोरन्य पिप्पल स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्यो अभिचाकशीति ॥ ऋ 161 20।

इस मन्त्र मे जीवात्मा और परमात्मा की दो पक्षियो से उपमा देते हुए [illegible] चेतन और नित्य होने के कारण सयोगी मित्र के समान होते हुए नित्यता की दृष्टि से समान प्रकृति रूप वृक्ष पर बैठते हैं यह कहा है कि (तयो) उन दोनो मे से एक कर्मानुसार (स्वादु पिप्पलम्) स्वादु वा अस्वादु फल भोग करता है और (अन्य) दूसरा कर्मफल का भोग न करता हुआ (अभि चाकशीति) सर्वज्ञ साक्षी बनकर जीवकृत कर्मों को चारो ओर से देखता है। इस प्रकार मन्त्र के शब्दो से जीवात्मा और परमात्मा का भेद स्पष्ट है।

स्वामी आत्मानन्द नामक प्रसिद्ध अद्वैतवादी विद्वान ने भी अस्यवामीय सूक्त (ऋ 1 164) की व्याख्या करते हुए इसी जीवात्म परमात्म भेद परक अर्थ को स्वीकार किया है यद्यपि अविद्या सिद्ध जीवम अनूद्य इत्यादि शब्द उन्होने अपनी ओर से जोड लिए जो अप्रामाणिक है। मन्त्र का भाष्य करते हुए वे लिखते है—

अतो ब्रह्मविद्यैवाश्रयणीया । सा चाविद्यासिद्ध जीवमनूद्य तदन्यथाप्रतिपादनममुखमभिप्राय जीव परमात्मानावाह, द्वौ सायुज्य अभ्युदयनि श्रेयस प्रधान बिभ्रतौ जीवपरमात्मानौ (सयुजा) अन्योन्य (सखाया) परस्परोपकारिणौ समान एक (वृक्ष) वश्चनीय देह (परिषस्वजाते) पारन [illegible] तयोमध्ये एकोजीव पिप्पलफलमम बहु [illegible]मपि कम फल स्वादुवत् अत्ति अन्य ) पर परमात्मा (अनश्नन) अभुञ्जानोपि अमित [illegible] प्रकाशने । कथमु जीव परतत्र प्रतिबन्धनीय [illegible] विवक्षनकाम । एकस्नयो कम फल तु भुक्त्वा चकाशते [illegible] परमा।

(स्वा आत्मानन्दकृत अस्यवामीय सूक्त भाष्य पृ 26)

[illegible] सायणाचाय ने [illegible] उपयुक्त प्रकार करते हुए अद्वैतवाद के पक्षपातवश निम्न टिप्पणी दी है जो सर्वथा अमान्य है। क्योकि मन्त्र के शब्दो से उसका कोई सम्बन्ध नही [illegible] है—

अय [illegible] चापद्य प्रवृत्त ।—अनेन वास्तवस्य [illegible] निरस्त । न च जीवस्य वस्तुत [illegible] कथ नीवबुद्धया ससारशोकादिनि [illegible] तयोर्भेदहेतुत्वात । तस्माद वस्तुत [illegible] भेदस्तु मोहकृत इति प्रमित्म। अनुभवदशाया लोककबुद्धया [illegible] परयोच्यते तयोरन्य इति । तस्मा [illegible] अभेदमुपजीव्य तयोरन्य इत्युक्तम् । इत्यादि ।

अर्थात इस मन्त्र मे औपाधिक भेद किन्तु वस्तु अभेद को मानकर तयो अन्य इत्यादि कहा है। यदि जीव वास्तव मे ईश्वर है तो ससार और शोक इत्यादि क्यो दिखाई देते हैं इस प्रश्न का उत्तर यह है कि यह सब मोह के कारण होता है, वास्तव मे जीव ईश्वर में कोई भेद नही । कल्पित लौकिक भेद मानकर तयोरन्य ऐसा मन्त्र मे कहा गया है।

मुण्डकोपनिषद मे उपर्युक्त वेद मन्त्र को उद्धृत करके इसकी व्याख्या रूप मे जो वचन दिया गया है वह भी इस प्रसग मे उल्लेखनीय है—

समाने वृक्ष पुरुषो निमग्नोऽनीशया शोचति मुह्यमान ।
जुष्ट यदा पश्यत्यन्यमीशम् अस्य महिमानमिति वीतशोक ॥
(मुण्डक उपनि 3 2)

अर्थात अनादि नित्य होने से अपने समान प्रकृति रूप वृक्ष मे फसा हुआ जीव शरीर इन्द्रिय मन आदि पर अपने स्वामित्व को खोकर मोह अज्ञानवश शोक करने लगता है। किन्तु जब वह अपने से भिन्न (अन्यम) (जुष्टम ईशम) अपने आनन्दमय प्रभो स्वामी ईश्वर के दर्शन करता है और उसकी महिमा का चिन्तन करता है तब वह शोक रहित हो जाता है।

यहा भी जीवेश्वर भेद का स्पष्ट प्रतिपादन है यद्यपि शकराचाय जी आदि ने उसे अवास्तविक बताने का प्रयत्न किया है।

(2) निम्न ऋग्वेद 10 82 6 के मन्त्र मे जीवेश्वर भेद का अति स्पष्ट प्रतिपादन है—

न त विदाथ य इमा जजानान्यद युष्माकमन्तर बभूव ।
नीहारेण प्रावृता जल्प्या चासुतृप उक्थशासश्चरन्ति ॥

अर्थात हे जीवो तुम उस परमात्मा को नही जानते जिसने इन सब पदार्थो को उत्पन्न किया है। वह ब्रह्म तुम जीवो से अन्यत) भिन्न किन्तु साथ ही (युष्माकम) अन्तर बभूव) तुम्हारे अन्दर विद्यमान है तम अज्ञानान्धकार से आवृत स्वार्थी तथा कपटी दम्भी होने के कारण उस सर्वव्यापक ब्रह्म को नही जानते ऐसा मन्त्र के उत्तरार्ध मे कहा गया है। इस प्रकार परमेश्वर का जीवो से और सासारिक पदार्थों से (जिनका) वह परमेश्वर उत्पादक है) भेद मन्त्र मे स्पष्टतया निरूपित किया गया है। यही मन्त्र यजुर्वेद 17 31 मे भी पाया जाता है। शतपथ [illegible] उपनिषद् मे—

य आत्मनि तिष्ठन्नात्मनोऽन्तरो यमात्मा न वेद यस्यात्मा शरीरम् ।
य आत्मनि तिष्ठन्नन्तरो यमयत्येष त आत्माऽन्तर्याम्यमृत

इत्यादि वचन इस मन्त्र के व्याख्यान रूप प्रतीत होते है जिनमे कहा गया है कि जो परमात्मा आत्मा के अन्दर रहता हुआ भी आत्मा से भिन्न है जिसको अज्ञानी आत्मा नहीं जानता आत्मा जिसके निवासार्थ मानो शरीर रूप है जो आत्मा में स्थित होकर सबको वश मे रखता है हे गार्गी ! वह तुम्हारा अन्तर्यामी अविनाशी परम आत्मा है। इस मन्त्र के अर्थ में भी सायणाचार्य उव्वट महीधरादि अद्वैतवादी आचार्यों को जो खींचातानी इसको जैसे तैसे करके अद्वैतवाद समर्थक बताने के लिए करनी पडी है उसका वर्णन लेख को लम्बा कर देगा।

(3) ऋ 8।96।6 का निम्न मन्त्र भी जीव ईश्वर और प्रकृति तथा प्रकृति से उत्पन्न जगत के भेद को स्पष्टतया प्रतिपादित करता है।

तमु ष्टवाम य इमा जजान विश्वा जाता यवराण्यस्मात ।
इन्द्रेण मित्र दिधिषेम गीर्भिरुपो नमोभिर्वृषभ विशेम ॥

इस मन्त्र मे कहा है कि हम (तम उ स्तवाम) उस ईश्वर की स्तुति (य इमा जजान) जिसने इन सब सूर्य दिपदार्थों को बनाया है (विश्वा जातानि अवराणि अस्मात ) ये उत्पन्न सब पदार्थ इस परमेश्वर की अपेक्षा बहुत ही हीन हैं। (इन्द्रेण) आत्मा के द्वारा हम (मित्रम दिधिषेम) सबके सच्चे मित्र परमेश्वर का ध्यान कर (नमोभि गीर्भि) नमस्कार युक्त वाणियो से (वृषभम ) सुखो के वर्षक परमात्मा के उपविशेम समीप बैठ जाए —उसकी सच्ची उपासना करें। इस मन्त्र द्वारा ब्रह्म जीव और जगत का भेद अत्यन्त स्पष्ट है।

(4) ऋ 8।95।3 के निम्न मन्त्र मे परमेश्वर को जीवरूप सनातन प्रजाओ का स्वामी बताया गया है जो उनके परस्पर भेद को स्पष्ट सिद्ध करता है।

त्व हि शश्वतीना पती राजा विशामसि ।

अर्थात हे परमेश्वर ! (त्व हि) तू ही निश्चय से (शश्वतीना प्रजानाम) जीवरूप नित्य प्रजाओ का (पति असि) स्वामी है।

(5) निम्न सुप्रसिद्ध मन्त्र भी जीवेश्वर भेद को अत्यन्त स्पष्टतया प्रमाणित करता है जहा भगवान से प्रार्थना की गई है कि—

इन्द्र क्रतु न आभर पिता पुत्रेभ्यो यथा ।
शिक्षा णो अस्मिन् पुरुहूत यामनि जीवा ज्योतिरशीमहि ॥
ऋग्वेद 7।32। 6 सामवेद म 259 ऐन्द्र पर्व

हे (इन्द्र) परमेश्वर पिता पुत्रेभ्य यथा) जिस प्रकार पिता पुत्रो को उत्तम ज्ञान प्रदान करता है इसी प्रकार तू (न)

(शेष पृष्ठ 7 पर)

## सम्पादकीय—

# तूफान के दौर से——पंजाब

अमर बलिदानी श्री पं. लेखराम जी ने यह वसीयत की थी कि उनके बाद आर्य समाज में साहित्य निर्माण का काम बन्द नहीं होना चाहिए। इससे उनका वास्तविक अभिप्राय क्या था? मेरे लिए उसके विषय में कुछ कहना कठिन है। वह आर्य समाज के साहित्य निर्माण को केवल आर्य समाज की समस्याओं तक ही सीमित रखना चाहते थे या देश की दूसरी समस्याओं पर भी आर्य समाज के दृष्टिकोण से अपने विचार प्रस्तुत करने के लिए आर्य समाजियों को एक प्रेरणा दे रहे थे। मेरे विचार में हम यदि श्री प. लेखराम की वसीयत के दूसरे पक्ष को देखें तो वह अधिक महत्वपूर्ण दिखाई देता है। यदि आर्य समाजी लेखक केवल आर्य समाज की समस्याओं के विषय में ही लिखेंगे तो उनका क्षेत्र बहुत सीमित हो जाएगा। आर्य समाज एक सार्वभौमिक संस्था है। कई व्यक्ति जिनका आर्य समाज से सीधा सम्पर्क नहीं है वह भी यह जानना चाहते हैं कि भिन्न 2 समस्याओं के विषय में आर्य समाज का दृष्टिकोण क्या है? आर्य समाज एक जनता का संगठन होते हुए भी बुद्धिजीवियों का संगठन है। जो व्यक्ति इसमें आता है या रहता है वह प्रत्येक प्रश्न को एक कसौटी पर परखता है। आँखें और कान बन्द करके कोई व्यक्ति किसी दूसरे के विचार सुनने को तैयार नहीं होता। सुनने के पश्चात् आर्य समाजी देखता है कि यह उसके सिद्धान्तों की कसौटी पर पूरे उतरते हैं या नहीं। उतरते हों तो उन्हें स्वीकार कर लेता है न उतरते हों तो उन्हें छोड़ देता है। यही कारण है कि आर्य समाज के सदस्यों की संख्या दूसरी कई इस प्रकार की संस्थाओं के सदस्यों से कम रहती है। उन संस्थाओं में गुरुडम अधिक चलता है और गुरुडम में कोई दलील या अपील नहीं चलती। जो गुरु ने कह दिया लोग उसे मान लेते हैं। आर्य समाज के आचार्य ने यह कहा था कि जो विचार वह हमें दे रहे हैं यह आवश्यक नहीं कि वह बिना सोचे-समझे उन्हें स्वीकार कर लें। जहां वह देखें कि जो कुछ सत्यार्थ प्रकाश में लिखा गया है वह उनकी कसौटी पर पूरा नहीं उतरता तो उन्हें उसे छोड़ने का अधिकार है, महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ने मनुष्य जीवन की कोई समस्या नहीं छोड़ी जिसके विषय में सत्यार्थ प्रकाश में न लिखा हो। उन्होंने दूसरे मतों पर टीका-टिप्पणी की तो वह भी इसी विचार से कि जो वास्तविक स्थिति है वह सबके सामने आ जाए। उसे कोई स्वीकार करे या न करे, यह उसका अपना काम है। जो लोग यह कहते हैं कि "सर्व धर्म सम्भाव हो" वह भूल जाते हैं कि कुरान में क्या लिखा है और बाईबिल में क्या लिखा है। फिर भी वह सर्व धर्म सम्भाव की बात करते है तो केवल इसलिए कि उन्हें यह पता ही नहीं कि धर्म क्या है? आर्य समाज का दृष्टि-कोण इससे बिल्कुल भिन्न है। वह प्रत्येक सिद्धान्त को और प्रत्येक विचार को सच्चाई की कसौटी पर परखता है। उस पर पूरा उतर जाए तो उसे स्वीकार करता है न उतरे तो फैंक देता है।

आर्य समाज का यह सौभाग्य है कि उसमें कई उच्चकोटि के लेखक और बुद्धिजीवी व्यक्ति हैं। उनमें कई तो विख्यात लेखक भी हैं। जब वह कोई पुस्तक लिखते हैं तो केवल पैसा कमाने के लिए नहीं, अपितु जिस विषय पर वह पुस्तक लिखते हैं उस विषय की वास्तविकता जनता के सामने लाने के लिए लिखते हैं। आर्य समाज के ऐसे ही लेखकों में एक वरिष्ठ पत्रकार श्री क्षितीश जी वेदालंकार भी हैं। देश की पत्रकारिता में उनका एक विशेष स्थान है और उन्होंने इस समय तक लगभग 20 पुस्तकें लिखी हैं। जो उनकी नई पुस्तक प्रकाशित हुई है उसका नाम है—"तूफान के दौर से...पंजाब"। इसमें उन्होंने केवल पंजाब की वर्तमान परिस्थितियां ही नहीं लिखीं अपितु इसका सारा इतिहास और इसकी पृष्ठ भूमि भी पाठकों के सामने रखी है। पंजाब की वर्तमान स्थिति पर इस प्रकार की पुस्तक इससे पहले जनता के सामने नहीं आई। मैं इसकी कुछ विशेषताएं आर्य मर्यादा के पाठकों के सामने रखना चाहता हूं परन्तु उसके लिए आगामी अंक की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।

—वीरेन्द्र

# इन्दिरा स्मृति दिवस

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सभा ने अपनी बैठक दिनांक 25 नवम्बर 84 को जो लुधियाना में हुई। श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या के विषय में एक प्रस्ताव पारित किया है जोकि आर्य मर्यादा के इसी अंक के प्रथम पृष्ठ पर प्रकाशित किया जा रहा है। मैं चाहूंगा कि रविवार दो दिसम्बर को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित सब आर्य समाजें उस दिन "इन्दिरा स्मृति दिवस" मनायें और जो प्रस्ताव सभा की अन्तरंग सभा ने पारित किया है वह वहां पढ़कर सुनाया जाए। सबसे बड़ी आवश्यकता आज इस बात की है कि देश में हिंसा का जो दौर शुरू हो गया है उसके विरुद्ध आर्य समाज एक अभियान प्रारम्भ करे। सरकार तो हिंसा को दबाने का प्रयास कर ही रही है। परन्तु यह केवल सरकार का ही काम नहीं है, प्रत्येक देश प्रेमी का कर्त्तव्य है। इस कार्य में आर्य समाज को जनता का नेतृत्व करना चाहिए। इसलिए यह प्रस्ताव पारित किया गया है। सब आर्य समाजों को इसका अधिक से अधिक प्रचार करना चाहिए।

—वीरेन्द्र

# लेखक महानुभावों की सेवा में

हमारी आर्य मर्यादा के लेखक महानुभावों की सेवा में प्रार्थना है कि वह अपने अमूल्य लेख अपनी प्यारी पत्रिका को निरन्तर भेजते रहें। यह पत्रिका आप महानुभावों के सहयोग से ही सारगर्भित और उपयोगी सामग्री से भरपूर अमूल्य लेखों द्वारा पाठकों की सेवा कर रही है। लेख समय पर भेजने का कष्ट करें और हमें अपना पूरा सहयोग दें।

गत दीपावली अंक में कई लेखकों के लेख हमें बहुत देर से मिले, जिसका हमें खेद है कि हम उस अंक में उनके लेख प्रकाशित नहीं कर सके। साधारण अंकों में हम समय 2 पर उन्हें प्रकाशित कर देंगे।

प्रकाशनार्थ सभी प्रकार की सामग्री भेजने वालों से हमारी यह प्रार्थना है कि लेख साफ 2 और एक तरफ लिखा हुआ हो। कोई कार्बन कापी भेजते समय उसे पढ़कर देख लिया जाए कि वह पढ़ा जा सकता है या नहीं। कई समाचार हम इसलिए नहीं प्रकाशित कर पाते क्योंकि वह कार्बन कापी इतनी भद्दी होती है कि उसे पढ़ा ही नहीं जा सकता। एक और भी निवेदन है कि वजन अधिक होने की सूरत में लिफाफे पर प्रैस मैटर और बुक पोस्ट लिखा हुआ होना चाहिए। लिफाफे खुले रखें और उसमें कोई और खत लिखकर न डालें, नहीं तो बैरिंग हो जाएगा, इस प्रकार 30 पैसे के टिकटों में आप हमारे पास अधिक से अधिक मैटर भेज सकते हैं।

—सह-सम्पादक

# आर्य मर्यादा के ग्राहकों की सेवा में निवेदन

आर्य मर्यादा साप्ताहिक के दीपावली विशेषांक की पाठकों ने बहुत सराहना की है। इस अंक के सम्बन्ध में तथा पूर्व कृष्ण जन्माष्टमी अंक के सम्बन्ध में पाठकों ने प्रशंसनीय शब्द लिखे हैं, हम चाहते हैं कि आर्य मर्यादा निरन्तर इसी प्रकार उन्नति करता रहे। परन्तु यह इसके ग्राहक महानुभावों पर निर्भर करता है कि वह इसका शुल्क समय पर भेजें और अपने दूसरे इष्ट मित्रों को भी इसका ग्राहक बनाने का यत्न करें। हमारी सभी ग्राहक महानुभावों से प्रार्थना है कि अपना शुल्क समय पर भेजकर हमें अपना पूरा 2 सहयोग दें।

—सह-सम्पादक

# मनुष्य की इच्छाएं
# पाश्चात्य और भारतीय विद्वानों की दृष्टि में

लेखक—श्री डा गणेश भारद्वाज एम. ए. पी. एच. डी.
प्राध्यापक साधु आश्रम, होशियारपुर

पाश्चात्य मनोवैज्ञानिको ने यह स्वीकार किया है कि मानव मन के अन्त प्रेरक स्रोत मूलभूत आवश्यकताए, मूल प्रवृत्यात्मक स प्रेरणाए, सवेग और भावनाए हैं प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक मरे के अनुसार आवश्यकता, प्रत्यक्षीकरण ज्ञान, सकल्प एव क्रिया का नियमन करने वाली मस्तिष्क की उस प्रेरक शक्ति की स्थानापन्न है जा प्रस्तुत अतृप्त स्थिति को एक निश्चित दिशा ,मे परिवर्तित कर देती है। प्रत्येक आवश्यकता एक विशेष भावना या सवेग से सचलित होती है। मरे बीस मुख्य आवश्यकताओ मे अपमान उपलब्धि, सम्बद्धता, आक्रमण, स्वायत्तता प्रतिकूल क्रिया, आत्म रक्षा भेद-ज्ञान, प्रभुत्व, प्रदर्शन, सुरक्षा, भीरुता, सहानुभूति, व्यवस्था क्रीडा, उपेक्षा, ऐन्द्रिकता, यौन-सम्बन्ध सेवा और ज्ञान की गणना करते हैं। इस प्रकार जैविक, व्यक्तिगत अनुभव एव परिवेश से निर्धारित होने वाली मूलभूत आवश्यकताए अत्यन्त जटिल एव विविध हैं। अब्राहम मासलो ने मुख्य आवश्यकताओ को उनके महत्व-क्रम से शरीर, सुरक्षा, राग, सम्मान, आत्मपूर्ति, ज्ञान और सौन्दर्य परक दृष्टि से सम्बन्धित सात वर्गों मे विभाजित किया है। इस तालिका मे यौन आवश्यकता का उल्लेख नही किया गया है क्योंकि इस जटिल प्रेरणा मे जैविक,प्रेम, सम्मान और आत्म पूर्ति आदि अनेक आवश्यकताओ का योग माना जाता है। इस मिश्रण को ध्यान मे न रख कर कुछ मनोवैज्ञानिक काम-भावना को प्रबलतम प्रेरणा सिद्ध करते हैं। नारमन एल, मन का विचार है कि भूख प्यास आदि की तृप्ति के समान काम वासना की भी तृप्ति होने लगे तो काम-वासना न तो प्रबलतम प्रेरणा प्रतीत होगी और न वह अधिकाश कुसुमायोजनो का ही उत्स रह जाएगी।

पाश्चात्य विद्वानो मे से फ्रायड और उसके अनुयायी एडलर एव युग आदि मनोविश्लेषको ने मन को विस्तार एव गहराई से समझने का स्तुत्य प्रयास किया है। जीवन की मूलभूत आवश्यकताओ के सम्बन्ध मे भी उनके तथा एडलर के भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण है, उनका उल्लेख इन मनोविश्लेषको की मनस्सम्बन्धी विचारधारा के विवेचन के पश्चात् किया जाएगा। फ्रायड ने पहले मन के चेतन, अवचेतन और अचेतन तीन विभाग किये थे। परन्तु विचारो की प्रौढावस्था मे उसने इन त्रिविध रूपो से इड अहं और पराहं के सिद्धान्त का विकास किया है। यद्यपि इनमे से प्रत्येक की अपनी कार्य प्रणाली है, तथापि ये तीनो परस्पर इनकी घनिष्ठता से सुगुफित हैं कि मनुष्य के व्यवहार मे इनके प्रभाव और देन का पृथक्करण करके मूल्याकन करना नितान्त कठिन है।

इड मानव के मन का मूल तत्व है। इसके अन्तर्गत मानव के मन की प्रत्येक जातीय एव जन्मजात विशेषता तथा मूल प्रवृत्ति सम्मिलित है दूसरे शब्दो मे यह प्रकृत काम-शक्ति और मानसिक शक्ति का अक्षय कोष है। इसी से अहं और पराहं अपनी कार्य-शक्ति ग्रहण करते हैं। इड आन्तरिक विषयीगत अनुभव का प्रतीक है। अत यह विषयगत वास्तविकता से दूर रहता है। इस के अन्तर्गत होने वाली मानसिक क्रियाए तर्क, औचित्य, नैतिकता एव समाज के विधि निषेधो से परिचालित न होकर उन्मुक्त एव स्वचालित होती हैं। अतएव इड ऐन्द्रिय क्षोभ या तनाव के प्रति असहनशील होता है। इन तनावो का बढ जाना सामान्यतया असुख एव तृप्ति द्वारा कम हो जाना सुख के रूप मे अनुभव किया जाता है। इसी तनाव की सद्य तुष्टि के लिए ऐन्द्रिय तृप्ति सिद्धान्त के अन्तर्गत इड की दो प्रक्रियाए हैं। पहली प्रतिवर्त या सहज क्रिया जन्मजात एव स्वत होती है जैसे छीकना। परन्तु दूसरी प्राथमिक प्रक्रिया द्वारा वाछित वस्तु एक स्मृति बिम्ब के रूप मे उपस्थित हो जाती है। इस स्मृति बिम्ब को इच्छापूर्ति कहा जाता है। अचेतन मन की दमित—जन्य भूख को खाने की वासनाए स्वप्न मे इसी प्रकार तुष्ट होती रहती है परन्तु य प्राथमिक प्रक्रिया द्वारा उद्भूत [illegible] भी वास्तविक प्रेरक को सन्तुष्ट करने मे असमर्थ रहते हैं। अत [illegible] के लिए अहं की आवश्यकता [illegible] है।

अहं सुख का पीछा करता है और पीडा का वर्जन करने की चेष्टा करता है। 2 परन्तु यह अयथार्थ वैयक्तिक पक्ष का परित्याग करके जीवन के यथार्थ एवं बाह्य जगत् के साथ वास्तविकता की ठोस भूमि पर अवतरित होता है। यह विषयी गत एव विषयगत वास्तविकता का सन्तुलन कर देता है। तार्किक शक्ति द्वारा निर्णय करके कार्य करना अहं का मुख्य लक्षण है। अहं इड का सगठित भाग है और इड अहं का शक्ति स्रोत है। इस प्रकार अहं इड को कुंठित नहीं करता अपितु परिवेश से सामजस्य स्थापित करके उसकी भाव प्रतिमाओ और उद्देश्यो को कार्यान्वित कर देता है। 3

पराहं परम्परागत मान-मूल्यो एव सामाजिक आदर्शों का आन्तरिक प्रतिनिधि है। यह करणीय एव अकरणीय का निर्णय समाज द्वारा स्वीकृत नैतिक आदर्शों के आधार पर करता है। पराहं के तीन मुख्य कार्य हैं। पहले यह इड की प्रकृत प्रेरणाओ पर प्रतिबन्ध लगाता है। मुख्य रूप से प्रतिबन्ध काम वासनात्मक एव आक्रामक प्रवृत्तियो पर होता है क्योंकि इन दो प्रवृत्तियो पर होता है क्योंकि इन दो प्रवृत्तियो का ही समाज द्वारा अधिकतर निषेध किया गया है। दूसरे अहं को यथार्थ की अपेक्षा नैतिक मूल्य एव आदर्शों के अपनाने को प्रोत्साहित करना और तीसरे, पूर्णता के लिए प्रयत्न करना इसके मुख्य कार्य हैं। इस प्रकार पराहं इड और अहं दोनो का विरोध करके अपने मानस बिम्ब के अनुसार विश्व का सचालन करता है और चाहता है, 4 फ्रायड ने इड को पूर्णतया अचेतन और अहं तथा पराहं को अंशत अचेतन माना है। 5

## मूलभूत आवश्यकताओ सम्बन्धी दृष्टिकोण—

यद्यपि मूल प्रवृत्तियो के स्वरूप एव सख्या के सम्बन्ध मे पाश्चात्य विद्वानो मे पर्याप्त मतभेद हैं किन्तु फ्रायड ने पहले एक मूल प्रवृत्ति मानी थी और उन्होने इस जीवन शक्ति का नाम लिबिडो रखा था। लिबिडो काम [illegible] काम वासना का ही दूसरा नाम है। बाद मे उन्होने एक और प्रवृत्ति मान ली, जिसे मृत्यु प्रवृत्ति का नाम दिया। उनके अनुसार प्रथम का उद्देश्य महत्वपूर्ण महान् इकाईयो को स्थापित करना है तथा दूसरे का उद्देश्य इस के विपरीत सम्बन्धो का नाश एव वस्तुओ को नष्ट करना है। 6

किन्तु दूसरे मनोवैज्ञानिक एडलर के इस दृष्टिकोण से सहमत नही हैं। उनका कहना है कि जीवन मे मुख्य प्रेरक शक्ति काम-लिप्सा (लिबिडो) नही बल्कि उत्कृष्टता और प्रभुत्व के लिए प्रयत्न करना है। उन्होने इस प्रवृत्ति को स्वाग्रह नाम दिया है। एडलर के अनुसार हर व्यक्ति प्रभुत्व और उत्कर्ष चाहता है और यदि वह किसी बात में अपने को हीन समझता है तो वह उसकी पूर्ति दूसरी दिशा में कर लेता है। 7

## भारतीय मनीषियो की दृष्टि मे एषणाएं तथा उनका परिष्कार या उदात्तीकरण

इससे पूर्व पाश्चात्य मनोवैज्ञानिको द्वारा प्रतिपादित आवश्यकताओ का वर्णन किया जा चुका है। आवश्यकताओ या कामना के स्थान पर वैदिक ऋषियो ने 'एषणा' शब्द का प्रयोग किया है। एषणा का अर्थ है—मनुष्य को प्रेरणा देने वाली मानसिक शक्ति अंग्रेजी मे एषणाओ को urges कहा जा सकता है।

भारतीय शास्त्रो ने भी फ्रायड के काम 'लिप्सा तथा एडलर के स्वाग्रह इन दोनो को जीवन मे प्रेरणा देने वाला स्रोत माना है, सिर्फ भिन्न भाषाओ का प्रयोग किया है। शास्त्रो मे 'लिबिडो' या 'सेक्स' की जगह 'काम' शब्द का प्रयोग हुआ है, सेल्फ-असर्शन की जगह अहंकार शब्द का प्रयोग हुआ है। इन दो एषणाओ के अतिरिक्त भारतीय शास्त्रो में एक तीसरी एषणा भी मानी गयी है जो पूर्वोक्त इन दो के समान जीवन मे प्रेरणा देने का स्रोत है, वह है—परिग्रहण एषणा' इन तीनो प्रेरको—तीनो आवेगो-तीनो एषणाओ से प्रभावित होकर यह मानव-जीवन चल रहा है। शास्त्रो में काम की एषणा को 'पुत्रैषणा' परिग्रहण की 'वित्तैषणा' तथा श्रेष्ठता-प्राप्ति या अहंकार की एषणा को 'लोकैषणा' कहा गया है।

एषणाए तो बरसात की बाढ की तरह हर व्यक्ति के भीतर उमडा करती हैं, इन्ही से मनुष्य परेशान रहता है। ये जहा मनुष्य के व्यवहार की प्रेरणा स्रोत हैं, वहा उसकी परेशानिया भी यही हैं पाश्चात्य मनोवैज्ञानिको की भाति वैदिक ऋषियों ने भी इन पर स्वतन्त्र एव विस्तृत चिन्तन किया है।

---

1 (थ्यो पृ 32, 33,)
2. आउटलाइन आफ साइको एनलिसिस (1949) पृ 17
3. थ्यो पृ 33, 34
4. वही 34, 35
5. मनो ना, पृ 137
6 आउट लाइन आफ साइको एनलिसिस, पृ. 20
7. एडलर—स्टडी आफ आरगान इनफिरिअरिटि एंड इट्स फ़िजिकल कम्पेन सेशन।

(क्रमश)

# गुरु-दक्षिणा में जीवन समर्पित

ले—श्री धर्मवीर जी विद्यालकार पीलीभीत

प्राचीन भारत में गुरु शिष्य सम्बन्ध की अदभुत परम्परा रही है। आज का शिष्य विद्यालयो मे फीस देता है और शिक्षा ग्रहण करता है। आज से लगभग 100 वर्ष पूर्व तक, भारत में शिष्य फीस नही देते थे। भिक्षा द्वारा अन्नादि लाकर दैनिक आवश्यकताए पूरी करते थे। शिक्षा समाप्ति पर अपने सामर्थ्य के आधार पर और गुरु महाराज की रुचि अथवा आवश्यकता के अनुसार स्वय ही निर्णय लेकर, गुरु के चरणो मे, अपनी श्रद्धा के सूचक के रूप मे कोई विशेष वस्तु अपण करते थे। उसे गुरु दक्षिणा के रूप मे जाना जाता है।

इसी परम्परा का निर्वाह करते हुए, स्वामी दयानन्द न अपने गुरु स्वामी विरजानन्द जी को दक्षिणा देने का निश्चय किया। गुरु दक्षिणा रूप मे दी जाने वाली वस्तु द्वारा गुरु को प्रसन्न करने के साथ-साथ गुरु महाराज को अचम्भित करने का भाव भी शिष्य के निमल हृदय मे रहा करता था। स्वामी दयानन्द के पास पार्थिव सम्पत्ति तो थी नही। अपनी दैनिक आवश्यकता—भोजन एव दीपक के लिए तेल—के लिये भी वे महाजनों की अनुकम्पा पर आश्रित थे। एक दयालु सज्जन से भिक्षा रूप लेकर स्वामी विरजानन्द जी की प्रिय वस्तु लौंग एक थाली मे सजा कर अत्यन्त श्रद्धा और भक्ति से आप्लावित होकर बाल ब्रह्मचारी स्वामी दयानन्द ने उसे गुरु चरणों मे अर्पित किया। लौंग की सुगन्ध कमरे को सुगन्धित कर रही थी। गुरु विरजानन्द प्रज्ञा चक्षु थे। परन्तु सुगन्ध से पहचान गए। दयानन्द से बोले—'वत्स दयानन्द! यह क्या लाए हो?

स्वामी दयानन्द ने निश्छल आनन्द से मुदित होकर कहा—गुरु जी थोडी सी लौंग है।

गुरु जी ने अपने को सयत रखते हुए कहा—'अच्छा! तो तुम इसे जुटाने मे ही पिछले तीन दिन से प्रयत्न कर रहे हो। बहुत अच्छा है। लौंग मुझ अत्यन्त प्रिय है। तुम ठीक समझ।

फिर थोडा रुक कर, और अधिक धीरे गम्भीर वाणी से बोले—तुमने मेरी रुचि को ठीक पहचाना। इस से अधिक मुझ चाहिए ही क्या? इस के लिए भी तुमने कितना श्रम किया है, इसे मैं अनुभव करता हू। परन्तु

थोडा रुक कर पुन बोले—'परन्तु मैं तुमसे कुछ और वस्तु दक्षिणा के रूप मे चाहता हू। और गुरु महाराज रुक गए।

इस समय स्वामी दयानन्द की बडी विचित्र अवस्था थी। गुरु को प्रसन्नता पूर्वक अचम्भित करने हेतु उसने लौंग का चयन किया था। बड श्रम, अनुनय विनय से भिक्षा से प्राप्त किया था। श्रम की चिन्ता नही। परन्तु प्रसन्नता के अनुमान का मिथ्या हो जाना अतीव कष्ट प्रद हो रहा था। और इस कल्पना से कि अब कौन सी वस्तु गुरु महाराज माग लगे स्वामी दयानन्द अपने शारीरिक सामर्थ्य बौद्धिक प्रतिभा और व्यावहारिक दक्षता की परीक्षा के लिए अपने को तैयार करने मे दृढता धारण करने का प्रयास कर रहे थे। नि शब्द, अवाक स्तम्भित होकर गुरु की ओर एकत्रित होकर ध्यान से सुनने लगे।

स्वामी विरजानन्द न अत्यन्त शान्त स्वर मे अपनी बात को आगे बढाया।—भारत ही नहीं विश्व भर का मानव अज्ञान अविद्या क घोर अन्धकार मे निमग्न हो अति कष्ट पा दुखी है। उस सुखी देखना चाहता हू। वे अपनी कुरीतियो—कुप्रथाओ की बेडिया झटके से तोड दें ज्ञान के विद्या के प्रखर प्रकाश मे उन्हे 'सत्य हस्तामलक क समान प्राप्त हो। वे सत्य असत्य, नित्य अनित्य सुख दुख राग द्वेष के प्रति विवेक ज्ञान पा ल, और नित्यानन्द मे आनन्दित रहें। यह काय वेद के सत्यार्थ प्रकाश से सम्भव है। वह तुमन पा लिया है। योग समाधि मे तुमन उस नित्यानन्द का अनुभव भी कर लिया है। ससार के मानव मात्र को वेद ज्ञान रूपी सूय की प्रखर किरणो का प्रकाश तुम्ही दे सकते हो। मानव की उन्नति के साथ ही जीव मात्र की स्थावर जगम की उन्नति आश्रित है। मैं चाहता हू कि जो विद्या अब तक तुमने अर्जित की है उसका प्रसार ससार भर मे ससार के जीवमात्र के लिये, करो।

इतना कह, गुरु विरजानन्द शान्त हो गए।

जैसे जैसे गुरु जी की वाणी आगे बढती जा रही थी स्वामी दयानन्द के चेहरे के भाव बदलते जा रहे थे वे जिस परीक्षा क लिए अपने को तैयार कर रहे थे अब उसकी आवश्यकता नहीं थी। वे प्रसन्न हो रहे थे। यह विद्या दान उनकी दृष्टि मे अत्यन्त सरल था वे प्रसन्न हो रहे थे। यह विद्या दान उनकी दृष्टि मे अत्यन्त सरल क्यो न जो कुछ पढा उसे पढा देना भी क्या कठिन है? फिर विद्या तो एक मात्र ऐसा धन है जो दान से बढता है।

गुरु विरजानन्द को अपनी प्रदत्त विद्या के लुप्त होने का भय तथा चिन्ता व्याप्त थी। कितने ही शिष्यो को उन्होने पढाया?। कोई शिष्य दयानन्द के समान मेधावी और पूर्ण शुद्ध ब्रह्मचारी एव पर हित चिन्ता व्यग्र नही मिला। इसे सच्चे शिव की खोज थी। वह इसने पा लिया है। समाधि मे उस नित्य शुद्ध, पवित्र, आनन्दमय ज्ञान स्वरूप के सान्निध्य मे परम पवित्र आनन्द का प्रसाद भी पा चुका है। यह सासारिक चिन्ताओ से विरक्त स्थिर समाधि मे आनन्दमग्न हो गया तो इस सत्य विद्या का प्रकाश और कौन फैलाएगा? क्या यह दीपक अपने प्रकाश से स्वय ही प्रकाशित रहेगा? ससार के दुखी जीव मात्र को गाढ अन्धकार से और कौन निकालेगा? अपनी आशाओ को मूतरूप देने मे समथ इस दयानन्द को वेद सूय के प्रकाश प्रसार मे लगाने का निश्चय कर गुरु ने दक्षिणा के रूप मे यह प्रस्ताव किया।

स्वामी दयानन्द पुलकित हो गुरु के चरणो मे गिर पडे। गुरु उससे वही प्रतिज्ञा करा रहे थे। जिसका उन्होने स्वय सकल्प किया था। गुरु शिष्य हृदय से एक जो थे। तब गुरु विरजानन्द ने गद गद हो आशीर्वाद का स्नेह भरा हाथ दयानन्द के सिर और पीठ पर फेरा और उन्हे उठाया।

इसी स्वामी दयानन्द ने जो सच्चे शिव को खोज लेने के उपरान्त गुरु-दक्षिणा को चुकाते चुकाते सत्य विद्याओ का प्रसार करने, सत्य के ग्रहण और असत्य के त्यागने मे सदा उद्यत, प्रीति-पूर्वक धर्मानुसार व्यवहार करने एक ही ईश्वर के सत्य स्वरूप की स्थापना करने, अपनी उन्नति में सन्तुष्ट न रहकर सबकी उन्नति मे अपनी उन्नति समझने मन वचन कर्म से एकनिष्ठ सत्यवादी ने अनेको कष्टो का महा विष पान किया परन्तु कभी भी डगमगाया नही। वेदो के सत्यार्थ प्रकाश के कारण अनुपमेय विद्या बल-बुद्धि से प्रदीप्त हो महर्षि कहलाया।

दीपावली की शुभ अमावस्या के दिन सायकाल 6 बजे सृष्टि रचयिता, एक मात्र परमपिता परमात्मा का वेद मन्त्रो से स्तवन कर, ओम का दीर्घ उच्चारण कर इस नश्वर शरीर को इसी ससार मे छोड अपनी पवित्र आत्मा को लेकर चला गया। ईश्वर की इच्छापूर्ति मे जीवन भर प्रयत्नशील रहा और अन्तिम समय भी 'ईश्वरेच्छा' उच्चारण कर ससार से विदा हो गया।

उस महर्षि दयानन्द को जो आयुभर गुरु दक्षिणा के चुकाने मे श्रद्धापूवक सतत प्रयत्नशील रहा शत शत प्रणाम है।

—

## आर्यसमाज स्वामी दयानन्द बाजार लुधियाना में वेद प्रचार

आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार लुधियाना का वेद सप्ताह गत दिनो बडी धूमधाम से मनाया गया। जिसमे यजुर्वेद पारायण यज्ञ किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा प हरिवशलाल जी महता वेद मनीषी लखनऊ थे साथ प, सुरेन्द्र कुमार जी शास्त्री वेद पाठ करते रहे और श्री श्रीरामनाथ जी यात्री भजनोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब क मधुर भजन होते रहे। 24-10 84 को ऋषि निर्वाण दिवस मनाया गया जिसमे अनेक वक्ताओ ने महर्षि के प्रति अपने 2 विचार रखे भारी सख्या मे भाई और बहिनो ने हिस्सा लिया। यज्ञ मे चालीस के करीब यजमान बने, 28 10 84 को प्रात 9 बजे यज्ञ की पूर्णाहुति डाली गई उसके बाद आर्य सस्थाओ के बच्चो का कायक्रम रखा गया उसके बाद मानव शरीर मे जीवात्मा का स्थान नामक पुस्तक का विमोचन किया जो आर्य युवक सभा ने प्रकाशित की है। अन्त मे प्रधानजी ने सब व धुओ का धन्यवाद किया तथा शान्ति पाठ के साथ कायक्रम सम्पन्न हुआ।

—मतवाल चन्द मन्त्री

# बम्बई में श्रीमती इन्दिरा गांधी को श्रद्धांजलियां

# वह एक साहसी महिला थी

## आर्य समाज सान्ताक्रुज बम्बई के तत्वावधान मे महामाननीया प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के आकस्मिक देहावसान पर आयोजित सार्वजनिक शोक सभा

राष्ट्र भक्त जनमानस की लोकप्रिय प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी की 31-10 84 को प्रात उनके अग रक्षक दल के सिपाहियो द्वारा की गई हत्या पर शोक सभा को सम्बोधित करते हुए बम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री ओंकारनाथ जी आर्य ने कहा आज हमारा देश श्रीमती इन्दिरा गाधी के देहावसान पर अपने को अनाथ अनुभव कर रहा है। जिन देशद्रोही तत्वो ने गत तीन वर्षों से देश की शान्ति को भग कर रखा है उनसे मुकाबला करने का साहस उस महान् देवी मे ही था। उन्होने मन्दिरो की पवित्रता को बनाए रखने के लिए समय पर उचित कार्यवाही करके देश की अखण्डता को बनाए रखा। किन्तु इन घिनौने तत्वों ने उनकी हत्या करके यह जाहिर कर दिया कि ये देश के टुकडे करना चाहते हैं।

आर्य समाज सान्ताक्रुज के प्रधान श्री देवेन्द्रकुमार कपूर ने अपनी श्रद्धाजलि देते हुए कहा कि श्रीमती इन्दिरा गाधी के देहावसान से किसी एक व्यक्ति या राष्ट्र की हानि नही हुई अपितु सारा विश्व उनके अभाव मे अपने आपको असहाय अनुभव कर रहा है। जिन साम्प्रदायिक तत्वो ने अपने स्वार्थ पूर्ति के लिए यह घृणित कार्य किया है उनके इरादे कभी पूरे नही हो सकते। परमात्मा हमे शक्ति दे कि हम उनके बताए मार्ग का अनुसरण करते हुए देश को आगे ले जाने मे समर्थ हो सके।

महामन्त्री कैप्टन देवरत्न आर्य ने कहा कि भारतीय सस्कृति का एक महत्व पूर्ण पहलू है कि—'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' जहा देवियो का मान होता है वहा देवताओ का वास होता है। वह परिवार देश, जाति और धर्म नष्ट हो जाते है जहा देवियो का अपमान होता है। एक राष्ट्र भक्त नारी की कुछ आतकवादियो ने हत्या कर अपने वीरता के इतिहास पर कालिख पोत दी है।

सभा मे निम्न शोक प्रस्ताव पारित हुआ—

'आर्य समाज सान्ताक्रुज बम्बई की यह सार्वजनिक सभा माननीया प्रधान-मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गान्धी के देहावसान पर हार्दिक शोक प्रकट करती है और उनकी स्मृति मे व्रत लेती है कि हम देश की अखण्डता के लिए उनके द्वारा दिखाए गये मार्ग का अनुसरण करेंगे।

परम पिता परमात्मा से करबद्ध प्रार्थना है कि दिवगत आत्मा को शान्ति एव सद्गति प्रदान करे, और हमे शक्ति दे कि हम आपकी भावनाओ के अनुरूप देश की समृद्धि और प्रगति मे सदा सहायक हो यह सभा माननीय राजीव गाधी एव उनके परिवार के प्रति गहरी सम्वेदना व्यक्त करती है और समस्त नागरिको से प्रार्थना करती है कि इस सकट की घडी मे उनका पूर्ण सहयोग कर राष्ट्र को मजबूत बनाए।

## आर्यसमाज काकड़वाडी बम्बई में शोक सभा

माननीय प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी के निधन पर आर्य समाज काकड़वाडी हाल मे बम्बई की समस्त आर्य समाजो की ओर से एक शोक सभा का आयोजन रविवार दिनाक 4-11 84 को साय 6 बजे किया गया। सभा की अध्यक्षता श्री भगवती प्रसाद जी गुप्ता ने की।

इस अवसर पर बम्बई की समस्त आर्य समाजो के प्रतिनिधि उपस्थित थे। समस्त आर्य समाजो की ओर से उनके प्रतिनिधियो ने श्रीमती इन्दिरा गाधी को भावभीनी श्रद्धाजलि दी। उत्तर भारत सभा के मन्त्री बाकेराम तिवारी ने भी अपनी सस्था की ओर से श्रद्धाजलि दी।

वक्ताओ ने कहा जो देशद्रोही हैं चाहे वह किसी भी समुदाय के हों उनका सामाजिक बहिष्कार करना चाहिए। आर्य समाज एव अन्य सस्थाओं को यह घोषणा करनी चाहिए कि पुलिस व सेना के लिए हमारे मन्दिरो के द्वार खुले हैं। वह जब चाहे मन्दिर की पवित्रता को बनाए रखते हुए उनकी तलाशी ले सकते हैं। ताकि यह पता चल सके कि हमारे मन्दिर गैर कानूनी कार्यों मे नही लगे हुए हैं।

श्रीमती गाधी पर भारत की महिला होने के नाते किए हत्या के प्रहार की सभी ने भर्त्सना की। इस अवसर पर एक शोक प्रस्ताव पारित किया गया।

## आ. स. मुहल्ला गोविन्दगढ़ जालन्धर की ओर से श्रीमती इन्दिरा गांधी को श्रद्धांजलि

आर्य समाज मुहल्ला गोविन्दगढ जालन्धर मे श्रीमती इन्दिरा गाधी जी भूतपूर्व प्रधानमन्त्री की 31 अक्तूबर को प्रात ही उन्ही के निवास स्थान पर उनके दो अग रक्षको द्वारा बेतहाशा गोलिया चलाकर निर्मम हत्या कर देने जैसे कुकृत्य की निन्दा करने एव अपने राष्ट्र की उदार कर्मठ, दूरदर्शी कुशल प्रशासक अनुभवी नेतृत्व के प्रति श्रद्धाजलि देने के लिए आज प्रात सत्सगोपरान्त शोक सभा की गई। विद्वान् वक्ताओ ने अपने देश की सर्वोच्च नारी की बर्बरता पूर्वक हत्या करने मे सलिप्त व्यक्तियो की घोर निन्दा की और अपनी भावभीनी श्रद्धाजलि रूधे कण्ठ से देते हुए श्रीमती इन्दिरा गाधी जी की राष्ट्र एकता, आत्म निर्भरता, स्वतन्त्रता समृद्धि आदि के लिए किए गए अथक परिश्रम और निरन्तर प्रयासो की सराहना की और उनके छोडे गए अधूरे कार्यों को पूरा करने का सकल्प लिया। जिससे कि वे सभी परम पिता परमात्मा से इन्दिरा जी की आत्मा को शान्ति प्रदान करने की प्रार्थना करने के अधिकारी बन सकें।

सभी उपस्थित महानुभावो ने सर्वसम्मति से राष्ट्र निर्माण के कार्यों को श्रीमती इन्दिरा गाधी जी की भावनानुरूप उनके द्वारा दर्शाए गए मार्ग पर साहस, निर्भयता, निष्ठा और सगठित रूप से चलते हुए पूरा करने का प्रण लेकर प्रधान-मन्त्री श्री राजीव गाधी जी को तटस्थ एव आश्वस्त रहने का अनुरोध किया।

निस्सकोच कहा गया कि आर्य समाज राष्ट्र निर्माण, मानव आचरण, समाज कल्याण के कार्यों मे सदैव से स्वयमेव लगा रहा है और ऐसे ही लगा रहेगा इसका इतिहास इन उद्देश्यो की पूर्ति अर्थ दिए गए बलिदानो से भरा पडा है। इस घोषणा को पुन दोहराते हुए कि आर्य समाज से सम्बन्धित हर व्यक्ति अपने जीवन के अन्तिम प्राण और शरीर के रक्त की आखरी बून्द तक देकर देश की अखण्डता और समृद्धि को बनाए रखेगा और विघटनकारी, अलगाववादी तत्वो के साथ लोहा लेने तक भी कटिबद्ध रहेगा। अन्य राष्ट्र मानव, समाज उत्थान प्रेमी जनता से आर्य समाज को यथोचित सहयोग देने की अपील की।

इस सभा मे सरकार से यह भी पुरजोर माग की गई कि इस जघन्य अपराध में दोषी व्यक्तियो, व्यक्ति समूहो या अन्य सम्बद्ध एजेंसियो से बडी सावधानी और कडाई से निपटा जाए और अपने देश मे या अन्यत्र बसने वाले भारतीयो के जान-माल की सुरक्षा और उनके भयमुक्त आवास का पूर्ण एव सुचारू प्रबन्ध किए जाए ताकि वह भारत देश की उन्नति में सदा समर्पित रहे।

ब्रह्मदत्त शर्मा मन्त्री

आर्य समाज मुहल्ला गोविन्दगढ जालन्धर

## स्त्री आर्य समाज ऋषि कुंज पक्का बाग जालन्धर की श्रद्धांजलि

स्त्री आर्य समाज ऋषि कुंज पक्का बाग की बहिनो ने प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी की हत्या की जोरदार शब्दों में निन्दा की, यज्ञ व प्रार्थना सभा के बाद बहिनों ने दो मिनट का मौन रखा और भावभीनी श्रद्धांजलियां दी गई बहिनो ने शोक सभा में बढ़ चढ़कर भाग लिया।

—कमला आर्या प्रधाना

# दिल्ली में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा तत्वावधान मे आर्य समाज दीवान हाल दिल्ली मे श्रीमती इन्दिरा गाधी जी की निर्मम हत्या पर आयोजित यज्ञ एव श्रद्धाजलि सभा मे बोलते हुए लोक सभा अध्यक्ष श्री बलराम जाखड ने कहा कि आज मच पर श्रीमती इन्दिरा गाधी की तसवीर जिस प्रकार रखी है यह एक दु खपूर्ण स्थिति है। यह विधि का विधान है या हमारे कर्मों का फल है। ऐसा लगता है कि जैसे सारे ससार का गति चक्र रुक गया है। वे भारतीयता का जीवन्त प्रमाण थी वे साक्षात भारत थी वे युग मानवी थी। आज वह घटना स्मरण आती है जब हरिदास जी का घोडा एक डाकू ने भिखारी बनकर चुराया था तब हरिदास ने कहा था कि भाई किसी को यह मत बताना कि तुमने यह घोडा दीन हीन भिखारी बनकर चुराया है नहीं तो जनता गरीबो पर विश्वास करना छोड देगी। आज यही तो हुआ। मेरा पजाब जहा लाजपतराय मदनलाल ढींगरा और भगतसिंह जैसे लोग हुए वहीं के आदमी ने यह जघन्य अपराध किया। इस कलक को हम अपने माथे से किस प्रकार धो सकेंगे। इसे तो धोना होगा शुद्ध आत्मा से, कर्म से और अपनी तपस्या से यह उदगार प्रकट करते हुए श्री जाखड भाव-विह्वल हो उठे और वस्तुत उनकी आखो मे आसू बहने लगे।

केन्द्रीय ऊर्जा मन्त्री श्री पी शिव शकर ने अपनी भाव-भीनी श्रद्धाजलि देते हुए पत्रकार पढे लिखे बुद्धिजीवियो से अनुरोध किया कि वे आत्म मन्थन और आत्म शोधन करते हुए ऐसे वातावरण का निर्माण करें जिससे लोगो मे आपसी भाईचारा, सद्भाव और शान्ति का वातावरण निर्मित हो सके। आज भी पत्रकारो के ऐसे लेख आते हैं जो एक प्रकार की आग भडका रहे हैं। हमारा प्रजातन्त्रवाद विकासशील प्रजातन्त्रवाद है और इसमे शुद्ध वातावरण का विशिष्ट महत्व है जिसे अगामी काल मे कोई ऐसी घटना न हो सके।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान लाला रामगोपाल शालवाले ने कहा कि अखण्डता, प्रभुसत्ता और राष्ट्र एकता के लिए इसकी सुख-समृद्धि के लिए उसने अपने आपको होम कर दिया, वह मरते मरते रक्त बीज के सिद्धान्त को साक्षात कर गई। सारा ससार उनके खून के हर कतरे से प्रेरणा लेकर जीवन्त हो उठा है। भारत माता का कोई भी बाल-बाका नहीं कर सकता।

आर्य जगत् के मूर्धन्य सन्यासी स्वामी सत्यप्रकाश ने सन् 1930 को इलाहाबाद की घटना का स्मरण करते हुए कहा कि श्रीमती गाधी ने भारत की राजनीति मे एक चमत्कार कर दिखाया है। वह प्रयाग की अपनी इन्दिरा एक इतिहास बन गयी है। समय आएगा तो बताएगा कि इन्दिरा ने वह कुछ किया जो और कोई दूसरा नही सकता। पूर्व ससद सदस्य श्री शिवकुमार शास्त्री ने ने कहा उस वीरागना के लिए इससे बढकर कोई मौत नही हो सकती थी कि वह देश के लिए बलिदान हो जाए।

दैनिक हिन्दुस्तान के सम्पादक यशस्वी पत्रकार श्री विनोद कुमार मिश्र न आज की घटनाओ का आकलन करन हुए श्रीमती इन्दिरा गाधी को भावभीनी श्रद्धाजलि दी और विश्वास प्रकट किया कि आगामी समय म हम सब मिलकर श्रीमती इन्दिरा गाधी के बताए हुए माग पर चलते हुए देश को ऊचा उठाए गे। और आपसी भाईचारे को बढाए गे।

नव भारत टाईम्स क प्रमुख सम्वाद दाता श्री दीवान द्वारिका खोसला ने श्रीमती इन्दिरा गाधी को राष्ट्र माता की उपाधि देते हुए अपनी श्रद्धाजलि अर्पित की।

इस श्रद्धाजलि सभा मे एक प्रस्ताव भी पारित किया गया है इस सभा मे यह माग की गया कि साम्प्रदायिक विद्वेष फैलाने वाली राजनैतिक सस्थाओ पर प्रतिबन्ध लगाया जाना चाहिए तथा उन सिख बुद्धिजीवियो की भत्सना की जानी चाहिए। जो कहते है कि स्वर्ण मन्दिर की कार्यवाही से सिखो की भावनाओ का भडकना स्वाभाविक था। अन्त मे दिल्ली सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव जी ने मान्य नेताओ और आर्य जनता को विश्वास दिलाया कि श्री राजीव के नेतृत्व म राष्ट्रोत्थान के कार्यों मे देश को सही दिशा प्रदान करन मे आर्य समाज सदा की भान्ति अपना कार्य करता रहेगा। इस अवसर पर चांदनी चौक क्षेत्र के पुलिस अधिकारियो [illegible] एस एच ओ और श्री एच, एल कपूर ए सी पी के जनता की जानमाल की रक्षा करने तथा धार्मिक स्थानो को कोई क्षति न पहुचने देने के लिए सराहना की गई। इस अवसर पर एक शोक प्रस्ताव भी पारित किया गया।

—धर्मपाल महामन्त्री

# वैदिक ईश्वर का स्वरूप

(2 पृष्ठ का शेष)

हमे (क्रतुम् आभर) उत्तम ज्ञान और बुद्धि दे। हे (पुरुहूत) अनेक भक्तो द्वारा पुकारे गए प्रभो! (अस्मिन् यामनि) इस ससार-मार्ग मे (न शिक्ष) तू हमे शिक्षा दे जिससे हम (जीवा) जीव (ज्योति अशीमहि) ज्ञान-ज्योति वा ज्योति स्वरूप तुझको प्राप्त करे।

श्री सायणाचार्य ने सामवेद सहिता म, 259 के भाष्य मे इस मन्त्र का इतना उत्तम व्याख्यान किया है कि उसे उदधृत करना उचित और आवश्यक प्रतीत होता है।

निरुक्त के प्रमाण से इन्द्र का अर्थ परमात्मा करते हुए वे लिखते हैं—

एवगुणविशिष्ट परमात्मन् ! त्व (क्रतुम) कर्म स्वविषयज्ञान वा (न) अस्मभ्यम् (आभार) आहर प्रयच्छेत्यथ, तत्र दृष्टान्त पिता पुत्रेभ्यो यथा लोके विद्या धन वा प्रयच्छति तथा (न) अस्मभ्य विद्या धन वा प्रयच्छ। हे (पुरुहूत) बहुभिराहूतेन्द्र! (यामनि) सर्वे प्राप्तव्येऽस्मिन प्रकृते ब्रह्मणि जीवा वय (ज्योति (अशीमहि) सेवेमहि॥

(श्री सायणाचार्यकृत सामवेद सहिताभाष्य जीवानन्द वि, सा सम्पादित कलकत्ता पृ 137)

माधव ने अपन सामवद भाष्य मे भी—

त्वदत्तया च प्रज्ञया जीवा — जीवन्तो वय (ज्योति) ज्ञानम् (अशीमहि) प्राप्नुयामेत्यथ (सामवेद सहिता सभाष्या ऐडयार पृ 190)

इस प्रकार लगभग उसी आशय का भाष्य किया है। मन्त्र के शब्द इतने अधिक स्पष्ट है और उनसे जीवो का परमेश्वर से भेद इतना अधिक व्यक्त है कि उससे कोई विद्वान् इन्कार कर ही नही सकता।

(6) ओ३म् क्रतो स्मर क्लिवे स्मर कृत — स्मर।

यजु अ 40 का यह मन्त्र भी (जो ईशोपनिषदमे ज्यो का त्यो पाया जाता है) इस प्रसङ्ग मे उल्लेखनीय है जहा स्पष्ट कहा है कि हे (क्रतो) कर्मशील जीव! तू (ओ३म स्मर) ओ पदवाच्य सर्वरक्षक परमेश्वर का स्मरण कर, (क्लिवे स्मर) शक्ति की प्राप्ति के लिए परमेश्वर का स्मरण कर और (कृतस्मर) अपने किये हुए को याद कर—आत्म-निरीक्षण कर। यहा भी जीवेश्वर भेद का स्पष्ट प्रतिपादन है। ऐसे ही—

युञ्जते मन उत युञ्जते धियो विप्रा
विप्रस्य बृहतो विपश्चित।
वि होत्रा दधे वयुनाविदेक इ मही
देवस्य सवितु परिष्टुति॥
यजु 11।4

यो नो दाता स न पिता महा उग्र
ईशानकृत। ऋ 8।52।5

यो भूतानामधिपतिर्यस्मिल्लोका
अधिश्रिता।
य ईशे महतो महान तेन गृह णामि
त्वामह मयि गृह णामि त्वामहम्।
यजु 20।32

सदसस्पतिमद्भुत प्रियमिन्द्रस्य
काम्यम्।
सनिं मेधामयासिषम। यजु, 32।14

इत्यादि हजारो मन्त्रो का जीवेश्वर भेद दिखाने के लिए उद्धरण किया जा सकता है। किन्तु लेख का कलेवर पहले ही बहुत अधिक बढ गया है अत उस विचार को किसी और अवसर के लिए छोडते हुए मैं इस लेख को यहीं समाप्त करता हू। सर्वव्यापक सर्वज्ञ, सर्व शक्तिमान एक परमेश्वर की उपासना और उसकी आज्ञानुसार शुभ कर्म करने से ही मनुष्य का कल्याण हो सकता है अन्यथा नही इस बात को हम कभी न भूलना चाहिए। वार्ल्स कोलमैन श्रीलगन, अर्नेस्ट वुड ब्राउन कौन्ट ब्जौर्नस्जर्ना इत्यादि पाश्चात्य विद्वानो दादाचानू जी इत्यादि पारसी और सर यामिन खा आदि मुसलमान विद्वानो ने वेदो मे एकेश्वरवाद का किस प्रकार प्रतिपादन किया है यह विषय भी पृथक लेख का विषय है।

## बाल विद्या मन्दिर नवांशहर के नए कमरो का उद्घाटन

शनिवार 17 नवम्बर को नवांशहर मे आर्य शिक्षण सस्थाओ की सबसे छोटी ईकाई आर्य बाल विद्या मन्दिर मे शिक्षण सस्थाओं के प्रधान प देवेन्द्र कुमार जी ने चार नए कमरो के ब्लाक का उदघाटन करके बाल विद्या मन्दिर की बडी आवश्यकता को पूरा किया। इस अवसर पर आर्य समाज के प्रधान श्री वेद प्रकाश जी सरीन ने हवन यज्ञ करवाया। तत्पश्चात विद्या मन्दिर के मैनेजर श्री सुरेन्द्र मोहन जी ने दृढ निश्चयपूर्वक कहा कि इस वर्ष के अन्त तक पाचवी से आठवीं तक के सभी छात्र-छात्राओ को तथा विद्या मन्दिर के सभी स्टाफ मैम्बरो को प्रार्थना मन्त्र एव सन्ध्या मन्त्र अवश्यमेव याद करवा दिए जाए गे उनकी इस सिंह गर्जना का हम स्वागत करते हैं एव बाकी सस्थाओ के प्रमुखो एव प्रबन्धको को उनका अनुकरण करने की प्रार्थना करते हैं।

—धर्म प्रकाशदत्त प्रस्तोता
आर्य विद्या परिषद पजाब

## प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तित्व

मानव एकता एव महर्षि दयानन्द नामक (अत्यन्त प्रेरणात्मक) पुस्तक के सुयोग्य लेखक स्वाध्यायशील चिन्तक मनीषी श्री रामस्वरूप जी के सम्पर्क मे आकर हमने अनुभव किया कि राष्ट्र वासियो को इनकी प्रतिभा का लाभ अवश्य उठाना चाहिए। हमारा विश्वास है अनेक प्रकार की वैयक्तिक पारिवारिक सामाजिक तथा राष्ट्रीय समस्याओ के निराकरण के लिए इनसे किया परामर्श लाभप्रद होगा।

विभिन्न सस्थाओ से सम्बन्धित सभासद, अधिकारी एव विद्यालयो के शिक्षक विद्यार्थी आदि इनके द्वारा प्रवचन प्रसारण भाषण, विचार गोष्ठियो तथा शिविरो के माध्यम से अवश्य लाभ उठाव। आर्ष ग्रन्थो पर आधारित इनके प्रसार भाषण समय समय पर शैक्षणिक सस्थानो मे होते रहते हैं। पुस्तको एव पत्र पत्रिकाओ के कुशल सम्पादक श्री रामस्वरूप जी गोकृषि आदि रक्षिणी सभा, महर्षि दयानन्द निर्वाण स्मारक न्यास अजमेर एव आर्यसमाज सगठन आदि उपकारी सस्थाओ से सम्बन्धित रहकर मानव सेवा का कार्य कर रहे हैं।

ऐसे बहुगुण सम्पन्न व्यक्ति बहुत कम हुआ करते हैं, हमे विश्वास है इनकी प्रतिभा से अधिकाधिक महानुभाव अवश्य ही लाभ उठाए गे। उत्सवो पर प्रवचन, शिविरो मे बौद्धिक प्रवचन देने के लिए इन्हे निमन्त्रित करते रहेंगे।

—प राजगुरु शर्मा मधु

## आर्यसमाज भटिंडा का वार्षिक चुनाव

प्रधान—श्री रोशनलाल जी, उप-प्रधान—श्री अमरनाथ जी, मन्त्री—श्री कृष्ण कुमार जी उपमन्त्री—श्री बिहारीलाल जी, कोषाध्यक्ष—श्रीमती कमला जी भाटिया लेखा निरीक्षक—श्री ओमप्रकाश जी मगला,

अन्तरग सदस्य—श्री बशीरचन्दजी, श्री सहायदत्त जी,

—कृष्णकुमार मन्त्री

## प्रान्तीय आर्य वीर महासम्मेलन १-२ दि. को गुड़गांव में

पलवल—आर्य वीर दल हरियाणा का प्रान्तीय महासम्मेलन जोकि कल 3-4 नवम्बर को होना निश्चित था तथा प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गान्धी की जघन्य एवम् निर्मम हत्या के शोक मे स्थगित कर दिया गया था अब राष्ट्रभक्ति मे बहु माननीय श्री ओमप्रकाश जी त्यागी महामन्त्री सार्वदेशिक आर्यसार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली की अध्यक्षता में आगामी 1 तथा 2 दिसम्बर दिन शनिवार एवम् रविवार को नगर गुडगाव मे होगा। इसमें एक हजार आर्य वीर पूर्ण गणवेश में भाग लेंगे। देश के मूर्धन्य युवक आर्य विद्वान भी सम्मेलन को सम्बोधित करेंगे।

## आर्य मर्यादा विज्ञापन देकर लाभ उठाएं




...मुद्रक द्वारा जयहिन्द प्रिन्टिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर से इस की स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

दूरभाष नं. 74230 (रजि. नं. पी. जे. एल. 55)

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

# आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 16 अंक 34 21 मघर सम्वत् 2041, तदनुसार 9 दिसम्बर 1984, दयानन्दाब्द 160 । एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपए

# वेदोपदेश का पालन करते हुये सत्य मार्ग पर चलें

ले —श्री प रामेश्वरदत्त शर्मा 3-विकास नगर भिवानी

वेद 'विद्' ज्ञाने धातु से निष्पन्न शब्द है। जिसका अर्थ है ज्ञान। वेद का [illegible] उस युग में हुआ था, जब न कोई हिन्दू था न मुसलमान था, अपितु एक [illegible] मानव था, अत: वेद किसी जाति विशेष अथवा किसी देश विशेष की बपौती नहीं। इसीलिए वेद को सर्वोत्तम ग्रन्थ कहा गया है। वैदिक शिक्षा से सभी धर्म, सभी सम्प्रदाय अनुप्राणित हैं। यही कारण है कि जहां विश्व की अनेक संस्कृतियां अस्त-व्यस्त हो गई वहां वैदिक संस्कृति आज भी उसी रूप में विद्यमान है। वेद समस्त मानव जाति की वह शाश्वत धरोहर है जो सार्वभौमिक एवं [illegible] है। वैदिक शिक्षा जीवन के सत्य एवं शाश्वत चिरन्तन मूल्यों की ओर अग्रसर होने के लिए मानव जाति को प्रेरित करती रही है जिसके मूल [illegible] का निरूपण इस प्रकार है—

## मिलकर चलो

[illegible] संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
[illegible] भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते।
ऋ. 10 19-1 2

हे मनुष्यो! तुम जीवन की यात्रा में मिलकर चलो। क्योंकि भौतिक एवं [illegible] कठिनाइयों से एक अकेला व्यक्ति [illegible] नहीं [illegible] और न ही अकेला [illegible] जीवन के लिए उपा-[illegible] वस्तुओं का बोझ [illegible] [illegible] मिलकर [illegible] [illegible] ही कठिनाइयों का समाधान होता है। मिलकर न बोलने के [illegible] और विवाद [illegible] है। [illegible] एक हो। [illegible] का [illegible] जो सुख-दुःख [illegible] करती है। [illegible]

## मिलकर बैठो

सगच्छध्वं संवदध्वं समिति समानी समान मन सह चित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये व समानेन वो हविषा जुहोमि। ऋ. 10-192 3

हे मनुष्यो! तुम्हारी मन्त्रणा तुम्हारी वार्ता, तुम्हारा विचार विनिमय समान हो। सभी के विचार सुनो और उन सभी विचारों का फिर समालोचन करो। तुम्हारी सभा, तुम्हारी परिषद्, तुम्हारी बैठकें संगठित हों। समाज का प्रमुख सूत्र मिलकर बैठना है, यह सभ्य और शिष्ट बनने के लिए प्रबलतम साधन है। तुम्हारे मन समान हों। मन उस वृत्ति का नाम है जो सुख-दुःख का अनुभव करती है। यदि दुःख एवं सुख किसी व्यक्ति विशेष के न रहकर समुदाय से सम्बन्धित हो जाते हैं, तब वे सहज सहन करने योग्य हो जाते हैं। तुम्हारा चित्त भी समान हो। चित्त उस मानसिक वृत्ति का नाम है, जो चिन्तन करती है, जो चिन्ता करती है। सामूहिक चिन्तन अधिक श्रेयस्कर है और किसी ठोस परिणाम पर पहुंचने वाला होता है। एक समान [illegible] मनुष्यों की पुन उद्-बोधित करती हुई कहती है कि मैं समान मन्त्र का अनुसरण करने का परामर्श देती हू और समन्वित उपभोग्य वस्तुओ से तुम्हारे लिए यज्ञ करती हू। अर्थात भौतिक सम्पत्तियो—अन्न जल तेज वायु आकाश और पृथिवी आदि सभी जीवनोपयोगी साधनो से तुम्हें भरपूर बनाती हू।

## मिलकर सोचो

समानी व आकूति समाना हृदयानि व
समानमस्तु वो मनो यथा व सुसहासति
ऋ 10-191-4

हे मनुष्यो! तुम्हारे भाव तुम्हारे आशय एक हों। भावानुकूल भाषा होती है। भाव भावानुकूल जीवन का उद्देश्य होता है। अत धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष सम्बन्धी तुम्हारे सभी अभिप्राय एक समान हों। तुम्हारे हृदय एक जैसे हो। हृदय कोमल भावनाओ सदाशयों, सदिच्छाओं एव सत् प्रेरणाओ का अधिष्ठान होता है। सत् सकल्प और दृढ़ निश्चय वाला हृदय ही जीवन के उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल होता है। तुम्हारा मन एक जैसा हो। मनन, चिन्तन, अनु भावन संवेदन ये सभी भाव एक जैसे हों क्योंकि जब तक ये भाव समरस में नहीं होंगे तब एक समाज की सत्ता तथा उस का अस्तित्व सुस्थिर नहीं रह सकता। प्राणि जगत् में सौमनस्य सौहार्द और विश्व बन्धुत्व की स्थापना के लिए कोमल भावों का समन्वय एवं सामञ्जस्य होना न केवल अनिवार्य है, अपितु अपरिहार्य भी है। अत ऐसा प्रयास करो कि तुम मिल जुल कर साथ रहो एक साथ विचारों और सोचो तभी तुम्हारा अस्तित्व रह सकता है।

## मंगलमय जीवन पाओ

भद्र कर्णेभि शृणुयाम देवा भद्र पश्येमाक्षभिर्यजत्रा।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायु। ऋ 1 89 8

हे पूजनीय देवो! तुम हमारे ऊपर ऐसी कृपा करो, जिससे हम कानों से कल्याणकारी और अधिकर बातें सुनें। कड़वी और बुरी बात सुनकर हृदय क्षुब्ध होता है। कोमल मधुर वातावरण को तनाव पूर्ण बनाता है। तनावपूर्ण जीवन में घुटन और कड़वाहट जन्म ले लेती है और फिर जीवन दूभर हो जाता है। हम अपनी आंखों से कल्याणकारी एवं मनोहारी दृश्यों को देखें। स्वस्थ, शान्त और सुखी जीवन के लिए स्वस्थ दृष्टि परमावश्यक है। स्वस्थ दृष्टि के लिए सुन्दर और सुखद वातावरण की आवश्यकता है। हम दिन रात देवों के गुणगान करते हुए अपने सुदृढ़ अगों वाले शरीरो को धारण करते हुए देवों द्वारा प्रदत्त अपनी मंगलमय आयु को प्राप्त करें। महापुरुषों द्वारा प्रदर्शित सन्मार्ग पर चलता हुआ व्यक्ति स्वस्थ तथा सुखद जीवन को प्राप्त करता है। यह तभी सम्भव है जब सम्पूर्ण विश्व में कोई भी ऐसा कार्य न किया जाए जो सुनने और देखने में बुरा हो। तभी मानव जीवन मंगलमय बन सकता है।

## मंगलमय राष्ट्रीय जीवन की कामना करो

आ ब्रह्मन ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्य शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायताम। दोग्ध्री धेनु र्वोढानड्वानाशु सप्ति पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठा सभेयो युवाऽस्य यजमानस्य वीरो जायताम्। निकामे निकामे न पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधय पच्यन्ता योगक्षेमो न कल्पताम।

यजुर्वेद 22 22

हे प्रभो! हमारे राष्ट्र में सुसंस्कृत बुद्धिजीवी वर्ग—अध्यापक आचार्य गुरु, धर्माचार्य पुरोहित लेखक कवि [illegible] वर्चस्व वाला अर्थात् अपने विषय का पूर्ण ज्ञाता, व्याख्याता और [illegible] अपने सदाचरण और सद्व्यवहार से सर्वसाधारण जनता को सन्मार्ग दिखाने वाला हो। हमारा राजनैतिक वर्ग अन्याय अत्याचार और भ्रष्टाचार के विरुद्ध डट कर खड़ा होने वाला हो। हमारा रक्षक सैनिक वर्ग अस्त्र-शस्त्र विद्या के प्रयोग में परम निपुण, शत्रुओं से देश की रक्षा करने में समर्थ और शूरवीर हो। हमारी गौएं दूध की नदियां बहाने वाली हों।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

# अजमेर—दर्शन

ले श्री अमरनाथ जी आर्य एम ए तलवाड़ा

( 25 नवम्बर से आगे)

प्रात आठ बजे।

प्रथम सभा—'श्रद्धाजलि सम्मेलन यद्यपि पहले दिन की थकान स्वरूप हम काफी शिथिलता अनुभव कर रहे थे, तथापि भूमि शयन की कृपा स्वरूप हम प्रातःकाल बजे ही जग गये। प्रभातकालीन शुभ बेला मे स्नानादि से निवृत व सुव्यवस्थित हो तथा प्रातराशोपरान्त हमारी टोली यथा समय पुन सभा मण्डप की ओर उन्मुख हो गयी। भीड स्वरूप यातायात अवरुद्ध होने के कारण हमे आभाग्यवश पद यात्रा का ही आश्रय लेना था। अतएव अनिवार्य रूप से अजमेर नगरी की छवि निहारते हुए प्रात साढे दस बजे पण्डाल मे प्रविष्ट हो, उस दिन की श्रद्धाजलि सम्मेलन नामक प्रथम सभा का रोचक कार्यक्रम देखने हेतु हम यथा स्थान आसन ग्रहण करते हैं जिसमे विश्व के बीसियो देशो के प्रतिनिधियो ने भाग लिया।

सभा का समारम्भ बम्बई की प्रसिद्ध आर्य गायका श्रीमती शिवराजवती द्वारा पहले सस्वर गायत्री मन्त्र फिर उसका भावानुवाद बड लोचदार स्वर में व प्रभावशाली मधुर संगीत के रूप मे प्रस्तुत किया गया। तदनन्तर उन्ही द्वारा निम्नलिखित प्रसिद्ध भजन बडे आकर्षक ढग से गाया गया —

चमकेंगे जब तलक ये, सूरज व चाद तारे।

हम हैं ऋषि दयानन्द, तब तक ऋणी तुम्हारे॥

यथा—

भारत की जब यह नैय्या, मझधार मे फसी थी।

तूने ही बन के खेवट, पहुंचा दिया किनारे॥

फिर इस संगीत श्रद्धा सुमन वृष्टि के पश्चात् आर्य कन्या गुरुकुल पोरबन्दर की बालिकाओ ने सवेत यह समूह गायन प्रस्तुत किया—

देखो स्वामी दयानन्द क्या कर गया।

गुलशनें हिन्द को जो हरा कर गया।

करते थे जो बुरा उनका भला कर गया,

देखो स्वामी दयानन्द क्या कर गया।

तदनन्तर भारतेतर देशों के प्रतिनिधियो द्वारा ऋषि चरणों मे अपने श्रद्धाजलि पुष्प अर्पित करने का रोचक कार्यक्रम आरम्भ हुआ—

(क) सर्वप्रथम डेन्मार्क के श्री सिनलीविन महोदय जिन्होंने हिन्दी के साथ-साथ चीनी व अरबी आदि भाषाए भी सीख रखी हैं तथा जिन्होंने भारत व भारतीयता के प्रति अपनी अगाध श्रद्धा-स्वरूप अपना भारतीय नाम प्रेमचन्द रखा है ने अपना लघु अभिभाषण-नमस्कार से प्रारम्भ किया—

उन्होने कहा कि उन्हें यहा जो आर्य समाजी विचार धारा के आदमी मिले हैं वे अच्छे लोग निकले हैं। जिससे स्पष्ट होता है कि दयानन्द एक महापुरुष थे। उन्होने आगे बतलाया कि जिस हिन्दी भाषा का प्रचार व समर्थन महर्षि दयानन्द ने किया था वह अब अमीर (समृद्ध) भाषा बन चुकी है। आज आवश्यकता है इसे प्रयोग करने की। उन्होने दुःख व्यक्त करते हुए कहा कि यह खेद की बात है कि यहा के लोग अंग्रेजी बोलना अधिक पसन्द करते हैं फिर अपने संक्षिप्त सम्भाषण का विराम देने से पहले उन्होने स्पष्ट किया कि उन्होंने हिन्दी मात्र प्रेम वश ही सीखी है।

(ख) तब चीन के डा लियो-यू नान जो पीकिंग विश्वविद्यालय मे हिन्दी के प्रोफेसर हैं, ने विचारात्मक व बडी रोचक श्रद्धाजलि अर्पित की।

उन्होंने कहा कि विदेशियो के लिए हिन्दी सीखना पहाड है या लोहे के चने चबाना है। लेकिन हमने फिर भी सीखने की कोशिश की। उन्होंने आगे बतलाया कि चीनी जनता स्वामी दयानन्द का बहुत सम्मान करती है क्योकि वह जानती है कि स्वामी दयानन्द ने गलत रीति-रिवाजो अन्धविश्वासो और मूर्ति पूजा का कड़ा विरोध किया, चरित्र निर्माण तथा विधवा विवाह आदि पर जोर दिया और सामाजिक शोषण तथा साम्राज्यवाद से डटकर टक्कर ली।

चीनी महोदय ने सगव आगे कहा कि जिन सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध, स्वामी जी ने मोर्चा लिया था वे चीन मे अब खत्म हो चुकी हैं। वहा हम सब भ्रातभाव से रहते और अपनी उत्पादन शक्ति बढाते हुए अपने नैतिक स्तर को ऊचा बनाने के लिए सदा तत्पर रहते हैं।

उन्होने फिर कहा कि उनसे कई भारतीय पूछते हैं कि क्या चीन मे आर्य समाज है। तो मेरा साफ जवाब होता है कि आर्य समाज मन्दिर के रूप मे तो वहा आर्य समाज नहीं है। परन्तु हमने स्वामी दयानन्द के विचारानुसार सामाजिक व्यवस्था स्थापित करके सारे देश को ही आर्य समाज बना दिया है।

अन्त में चीनी अतिथि ने कहा कि हमारा समाज 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय है। तथा 'सत्यमेव जयते' के साथ उन्होंने अपनी श्रद्धाजलि समाप्त की।

(ग) श्रीलंका-श्रीलका से बौद्ध भिक्षु रतनसार ने बडी भावनात्मक श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए कहा कि श्रीलंका में भारतीयता की प्रतिनिधि हिन्दी पढ़ाने के समुचित प्रबन्ध किए जा रहे हैं तथा कहा कि सास्कृतिक दृष्टि से भारत और श्रीलका एक ही देश हैं। उन्होने गौरवपूर्वक कहा कि वहां भी आर्य लोग ही रहते हैं जिनकी भाषा सिंहली है जो एक मिली-जुली भाषा है। प्राचीन सास्कृतिक एकता का उदाहरण देते हुए उन्होने आगे कहा कि ईसा से दो सौ वर्ष पूर्व बगाल मे विजय नामक हमारा एक पूर्वज तथा उसके पश्चात् उत्तरी भारत से भी बहुत से आर्य लोग वहा जा बसे और कालान्तर मे भी वही सिंहली बन गए। बाद में उनमें से कईओ ने बुद्धमत ग्रहण किया। तथापि हमारी जाति, धर्म व देश एक ही है। इस एकता की विधायका है हिन्दी और हिन्दी के प्रबलतम समर्थक हैं।

देव दयानन्द।

(घ) आस्ट्रेलिया—आस्ट्रेलिया के कैनबरा विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डा रिचर्ड बार्ज ने ऋषि चरणो में अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए कहा कि उक्त विश्वविद्यालय में देवनागरी लिपि मे हिन्दी की पढाई का श्रीगणेश 1971 मे हुआ, अब वहा एम ए पी-एच डी तक की हिन्दी पढ़ाई की समुचित व्यवस्था है। उन्होने पुलकित मन आगे बतलाया कि वहा पर भारतीय सभ्यता व संस्कृति के प्रति अगाध श्रद्धा भावना है। उन्होंने तब उक्त विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम का उल्लेख करते हुए कहा कि उधर वहां हिन्दी के अन्य मूर्धन्य मनीषियो की पुस्तकें पढाई जाती है वहा उनके साथ महर्षि दयानन्द की अन्य कृतियों के साथ-साथ सत्यार्थ प्रकाश का भी विशेष अध्ययन कराया जाता है।

(ङ) मारीशस—मारीशस के विद्वान् उपप्रधानमन्त्री श्री हरीश बुद्ध ने इस अवसर पर अपने प्रधानमन्त्री का श्रद्धाजलि सन्देश पढ़कर सुनाया। जिसमें उस महापुरुष को भावभरा पूर्वक श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए कहा गया था कि हम इस प्रश्न पर यदि हम शामिल नहीं जान पाए थे कि स्वामी दयानन्द क्या थे? क्योकि इसका लम्बा रास्ता होगा। परन्तु यदि हम इस भाति विचार करें कि स्वामी दयानन्द क्या नहीं थे? तो सम्भवत कुछ-कुछ उनके गुणगान हो सकती हैं। क्योंकि अद्भुत काम ऐसे पुरुष व विशेषताए ऐसी शैली को उनमें न हों, असम्भव दीख सकती हैं।

उन्होंने आगे कहा कि आर्य समाज एक अनवरत शैक्षणिक आन्दोलन है जिसने न केवल भारत बल्कि मारीशस सूरीनाम फिजी व कई अन्य अफ्रीकी देशो के साथ ही विश्व के सुदूर के अन्य देशों में भी न केवल आर्य संस्कृति को जीवित ही रखा, बल्कि उसके प्रसारण का भी सफल प्रयास किया है। यही कारण है कि महर्षि संसार भर की पिछडी जातियों व देशों को न केवल प्रेरणा देने वाले थे, प्रत्युत उस मार्ग पर स्वय चलकर उन्हें रास्ता बताने वाले भी थे। अत उन्होंने जो पवित्र ज्ञान धारा प्रवाहित की, उसकी शीतलता को कायम रखने हेतु मारीशस में वेदों, उपनिषदो, गीता तथा सत्यार्थ प्रकाश के पवित्र ज्ञान-सलिल की प्रच्छन्न पावन धारा बह रही है और मारीशस में स्थित आर्य समाज की चार सौ शाखाओ मे हिन्दी की समुचित शिक्षा भी दी जाती है।

इसके साथ ही उन्होंने मारीशस में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी व संस्कृत के विश्वविद्यालय स्थापित करने तथा विदेश स्थित भारतीयो में आत्म गौरव पैदा करने के लिए आर्य समाज के मंच से 'हिन्दुत्व अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित करने का भी प्रस्ताव किया। और अन्त में उन्होने अपनी श्रद्धाजलि महर्षि दयानन्द की जय, के साथ समाप्त की।

(च) तदोपरान्त डी ए. वी. कालेज चण्डीगढ़ में विद्यारत केनिया, नाईजीरिया, मलेशिया, युगांडा, जिम्बाबे तथा थाईलैंड से आए छात्रो के प्रतिनिधि मण्डल के एक सदस्य छात्र ने अपनी श्रद्धाजलि अंग्रेजी मे पढ़कर सुनायी। उनकी उस भावभीनी अंग्रेजी वार्ता का संक्षिप्त भावानुवाद इस भान्ति है—कि वे (छात्र) इस महान् समाज सुधारक व महान् ज्ञान विधायक के महान् कार्यों को जितना कि वे आज तक जान पाए हैं—से इतने प्रभावित हैं कि विदेशी होने के नाते अपनी समस्त सम्वेदनाए हिन्दी में पूर्णत व्यक्त न कर पाने के कारण ही वे आज अपने भावोद्गार अर्पित हेतु सुगम माध्यम अंग्रेजी में ही व्यक्त कर रहे हैं।

उन्होंने आगे कहा कि—हम विदेशी भारत मे आकर जिस स्नेह सिक्त-मिलतापूर्ण वातावरण में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं उसका श्रेय आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द को जाता है। जिन्होंने सारा संसार एक परिवार है का दिव्य स्वप्न देखा था और उस भव्य स्वप्न को साकार करने के लिए सारा जीवन समर्पित कर दिया था।

(क्रमश)

सम्पादकीय—

# तूफान के दौर से—पंजाब-2

पंजाब में पिछले तीन वर्षों में जो कुछ हुआ है। उसके विषय में कई पुस्तकें लिखी गई हैं। अधिकतर अंग्रेजी में। यदि मेरा अनुमान ठीक है तो जो पुस्तक श्री क्षितीश वेदालंकार ने लिखी है, वह हिन्दी में इस विषय पर पहली पुस्तक है। जो व्यक्ति अंग्रेजी में लिखते हैं उनमें प्राय वे भी होते हैं, जो पहले ही अपना एक निश्चित मत बना लेते हैं और उसके आधार पर पुस्तक लिखते हैं। क्षितीश जी ने जो पुस्तक लिखी है उसमें उन्होंने न केवल पंजाब की वर्तमान स्थिति पर अपने विचार प्रकट किये हैं, अपितु सिख पंथ का इतिहास और वर्तमान समय की पृष्ठ भूमि भी प्रस्तुत की है। इस पुस्तक का सब से बड़ा महत्त्व यह है कि इसे पढ़ने के पश्चात यह स्पष्ट रूप में पता चल जाता है कि जो कुछ आज कल पंजाब में हो रहा है और जो आंदोलन अकालियों ने प्रारम्भ किया था उसका कारण क्या था, उसका आधार क्या था और इस आन्दोलन के द्वारा अकाली क्या कुछ प्राप्त करना चाहते थे। क्षितीश जी ने सिख सम्प्रदाय का जो इतिहास दिया है और गुरु साहेबान ने समय समय पर अपने जो विचार प्रकट किये हैं उनसे पता चल जाता है कि किस प्रकार अकाली पथ भ्रष्ट हो गये हैं मैं चाहता हूं कि अधिक से अधिक व्यक्ति क्षितीश जी की इस पुस्तक को पढ़ें ताकि वर्तमान आंदोलन की सारी पृष्ठ भूमि का पता चल जाए और जो कुछ आज किया जा रहा है उसका कारण भी पता चल जाए।

एक बात पर क्षितीश जी ने अपनी पुस्तक में बहुत अधिक जोर दिया है, वह यह कि गुरु साहेबान हिन्दू धर्म के विरोधी न थे, अपितु उनमें से कईयों ने कई ऐसी बातें कहीं थीं, जो एक प्रकार से हमारा समर्थन करती थी गुरु गोविन्दसिंह जी ने नैना देवी में चार मास का एक यज्ञ करवाया था। यज्ञ का क्या महत्त्व है वह गुरु गोविन्द सिंह जी के शब्दों में पन्थ प्रकाश में प्रकाशित हुआ था वहां से क्षितीश जी ने अपनी पुस्तक में उद्धृत किया उसके अनुसार 'जो हमारे धर्म का सार है और नृप, मुनि अवतार जिस धर्म का पालन करते आए हैं उसी का पालन हम भी करना चाहते हैं जिससे सारी सृष्टि सुखी हो। एक तो आज कल सारी दुनिया पक रहा है, वर्षा ही नहीं रही। दूसरे देश भर में महामारी भी फैल रही है सीधे नर-नारी अपने धर्म को भी भूलते जा रहे हैं। सब लोग पाप कर्मों में फंसे हैं, इसलिए आ जाते हैं। यज्ञ हवन आदि जितने सुकृत हैं उन्हें कोई शुरू करने नहीं देते। हम जब यज्ञ हवन करेंगे, तब बादल खूब बरसेंगे। दुर्भिक्ष नष्ट होगा। खूब अन्न उपजेगा। धरती से नाना-रसों की वनस्पतियां पैदा होंगी। वायु स्वच्छ शुद्ध होगा और रोग-शोक सब दूर हो जायेंगे। अविद्या नष्ट होगी। शूर वीरता प्रकट होगी। जितने धर्मावलम्बी जन हैं, वे अब इस समय भेड़-बकरियों के समान कायर हो रहे हैं, वे इस दुर्बलता के कारण बलवान तुर्कों का मुकाबला नहीं कर पाते। जब इस यज्ञ की सुगन्धित पवन उन्हें लगेगी तब वे भी शेरों जैसे साहसी बन जायेंगे। उनमें शूरवीरता छा जाएगी और वे अपने पुरातन आर्य धर्म पर दृढ़ हो जायेंगे। उनके शरीर निरोग बनेंगे। सदा सुख देने वाली विद्या और ज्ञान उन्हें प्राप्त होगा। निर्भयता तथा अन्य दैवी गुण उनमें प्रकट होंगे, सब उनके बालक भी भाग्यवान होंगे और शीतला आदि रोग नष्ट हो जायेंगे। काम-क्रोध आदि जितनी आसुरी सम्पदा है वे यज्ञ हवन का देख कर ही कांपती हैं। जितने सत्य आदि उत्तम गुण हैं, और जिनका वेदों में वर्णन है वे सब निश्चित यज्ञ हवन करने से आचरण व्यवहार में आने लगते हैं।

इसी प्रकार 'नानक प्रकाश' में लिखा है कि गुरु नानक के समय मुगल सत्ता ने कैसा अन्धेर मचा रखा था, इसका वर्णन इस प्रकार किया गया है —

"हिन्दव देव मुगल पकाम, जालिम भये सभी बलवान्।
हिन्दुवन को दुख देत महान, देवन के मन्दिर बिरवान।"

यह पुस्तक लिख कर श्री क्षितीश वेदालंकार ने अपने देश और समाज की बड़ी भारी सेवा की है। मैं तो यह भी कहूंगा कि उन्होंने सिखों की बड़ी सेवा की है। क्योंकि सिखों में इस समय जो भ्रान्तियां हिन्दू धर्म और हिन्दू जाति के विरुद्ध में पैदा की जा रही हैं इस पुस्तक को पढ़ने के पश्चात वह भ्रान्तियां नहीं रह सकतीं। जैसे कि मैंने ऊपर लिखा है। वास्तविक स्थिति क्या है, इसका आज तक किसी ने पता लगाने का प्रयास नहीं किया। क्षितीश जी ने एक नई बात इस पुस्तक में हमारे सामने रखी है। वह यह कि सिख समाज में एक प्रकार का विरोधाभास उत्पन्न हो गया गुरु नानक के सिख धर्म और गुरु गोविन्द सिंह के खालसा पन्थ में क्या अन्तर है? इसे किसी ने समझने का प्रयास नहीं किया। गुरु नानक ने सिखों को भक्ति मार्ग पर डाला था। इसलिए उनका धर्म मूलत बाह्य धार्मिक चिन्हों के विरुद्ध है यहां तक कि शिखा और यज्ञोपवीत को भी वे महत्त्व नहीं देते। आरती और घण्टे घड़ियाल तथा तीर्थाटन और श्राद्ध तर्पण को भी धर्म का अंग नहीं मानते। दूसरी ओर जहां तक गुरु गोविन्दसिंह के खालसा पन्थ का सम्बन्ध है, गुरु जी ने अपने समय में मुगल बादशाहों के द्वारा हिन्दुओं पर जो अत्याचार हो रहे थे उसके विरुद्ध लड़ने के लिए खालसा पन्थ तैयार किया था। वे कुछ यह समझते थे कि केवल भक्ति मार्ग से काम न चलेगा। जिन के साथ हमारा मुकाबला है। वे हमारे धर्म को नष्ट करना चाहते हैं। इसीलिए उनके विरुद्ध तलवार उठाने की आवश्यकता है। उन्होंने जो कुछ भी किया था अपने धर्म की रक्षा के लिए ही किया था और उन्होंने जो खालसा पन्थ बनाया था उसमें उन्होंने पहले दिन पांच प्यारों को सम्मिलित किया था वे सब हिन्दू ही थे और यह सिर्फ इसलिए कि मुगल बादशाहों ने हिन्दुओं के विरुद्ध जो अभियान प्रारम्भ कर रखा था उसका उत्तर देने के लिए उस समय केवल हिन्दू ही थे क्योंकि खालसा पन्थ का जन्म न हुआ था। उस समय की क्या परिस्थितियां थी इसका वर्णन भी क्षितीश जी ने अपनी पुस्तक में किया है और इससे हम अनुमान लगा सकते हैं कि श्री गुरु गोविन्दसिंह जी को खालसा पन्थ क्यों प्रारम्भ करना पड़ा? उन दिनों फर्रुखसियर नाम का एक मुगल तानाशाह राजा राज्य किया करता था। उसने एक बार हिन्दुओं और सिखों के विरुद्ध जो आदेश जारी किया था उसमें लिखा गया था—

1 पंजाब का कोई हिन्दू लम्बे केश या दाढ़ी नहीं रख सकता। केश या दाढ़ी कटवाने से इन्कारी पर हिन्दू को तुरन्त जान से मारा जा सकेगा।

2 किसी सिख की सूचना देने पर 5 रुपये गिरफ्तारी में सहायता देने पर 15 रुपये सिर काट लाने पर 25 रुपये ईनाम दिया जाएगा।

3 इससे अधिक सेवा करने पर सहयोगियों को जागीरें दी जाएंगी।

4 किसी सिख को अपनी छत के नीचे शरण देने वाले को अपराधी माना जाएगा और वह कठोर दण्ड का भागी होगा।

यह थी वे परिस्थितियां जिनमें श्री गुरु गोविन्दसिंह जी ने खालसा पन्थ बनाया था। परन्तु आज हमारे कुछ भाई उसे दूसरी तरफ से जा रहे हैं। इसका कल को क्या परिणाम निकल सकता है, इसके विषय में क्षितीश जी ने जो कुछ लिखा है वह आगामी अंक में प्रस्तुत करूंगा।

—वीरेन्द्र

## आर्य मर्यादा की सर्वत्र सराहना

आर्य मर्यादा के (दीपावली) महर्षि दयानन्द बलिदान अंक की कई पाठकों और विद्वानों ने बड़ी सराहना की है। इस अंक में श्री स्वामी वेदानन्द जी सरस्वती का भी हम एक पत्र इस अंक की विशेषताओं के सम्बन्ध में प्रकाशित कर रहे हैं। इस अंक की सफलता के बाद अब हम आर्य मर्यादा का फरवरी 85 में (शिवरात्रि) ऋषि बोध विशेषांक प्रकाशित करेंगे। यह अंक दीपावली अंक से भी अधिक प्रभावशाली होगा और जो सामग्री हम इस अंक में देंगे वह पाठकों के लिए अत्यन्त नवीन होगी। इसकी तैयारी हमने अभी से आरम्भ कर दी है। दीपावली विशेषांक जितना छपा था उसके आर्डर उससे भी अधिक आ गए थे जिस से हम लगभग एक हजार प्रतियों के आर्डर पूरे करने में असमर्थ रहे। इस बार हमारी सभी ग्राहकों, आर्य संस्थाओं व आर्य समाजों के अधिकारियों से प्रार्थना है कि वह हमें आर्डर शीघ्र भेजें ताकि उतनी अधिक प्रतियां छपवा ली जाएं।

—कमला आर्या, महामन्त्री

# सम्पादक के नाम पत्र

## आर्य मर्यादा के दीपावली विशेषांक का एक २ लेख अत्यन्त महत्वपूर्ण व पठनीय है

श्रीमान् सम्पादक महोदय नमस्ते !

आर्य प्रतिनिधि सभा के साप्ताहिक पत्र आर्य मर्यादा' के दीपावली के अवसर पर प्रकाशित 'महर्षि दयानन्द बलिदान विशेषांक को पढ़कर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। उत्तम कागज पर सुन्दर छपाई के साथ प्रमुख विद्वानो के महत्वपूर्ण लेख प्रकाशित किए गए हैं। मैंने सभी लेख ध्यान पूर्वक पढ़े हैं, बहुत ही आनन्द आया डा सत्यदेव जी आर्य द्वारा लिखे गुरु विरजानन्द पर शिष्य दयानन्द का लाठी प्रहार करने और बार 2 उनकी ड्योढ़ी बन्द कर देने का आरोप कहा तक यथार्थ है ? शीर्षक के लेख से पाठको को अपनी प्रबल युक्तियों से यह विचारने पर विवश किया है कि गुरु और शिष्य दोनो ही असाधारण व्यक्तित्व के स्वामी, पारदर्शी विद्वान् शास्त्र तत्वमर्मज्ञ, पारस्परिक हृदयगत भावो से सुपरिचित, कर्तव्य-परायण एव व्यवहार कुशल सर्वदा निर्लिप्त परम हंस महात्मा होते हुए भी गुरु शिष्य पर साधारण सी भूल हो जाने पर इतना अधिक क्रूरता पूर्ण व्यवहार करते होगे। यह बात कोरी कपोल-कल्पित अथवा अतिशयोक्ति पूर्ण सुनकर लिखी हुई प्रतीत होती है। मुझे भी ये बातें सदा ही खटकती रही हैं। लेख विचारणीय है। प सत्यप्रिय जी (हिसार) का लेख 'महर्षि दयानन्द और समाजवाद' भी सामयिक एव पठनीय है। श्री प. वीरसेन जी वेदश्रमी ने अपने लेख अप्रतिम महर्षि दयानन्द में विस्तार से महर्षि की विभिन्न योग्यताओ भावनाओ तथा कार्यों का निरूपण सफलता पूर्वक किया है जैसे महान वैज्ञानिक, महान विश्वचिंतक, महान इन्जीनियर, महान यन्त्राविष्कर्ता महान् शिक्षक एवं महान् नर, सर्वोच्च आप्तवादी अक्षर तत्वदर्शी दिव्य चक्षु, प्रदाता सार्वभौम चक्रवर्ती साम्राज्य भावना प्रसारक महर्षि दयानन्द। विद्वान् लेखक के लेख को पढ़कर पाठक निसन्देह महर्षि के अप्रतिम स्वरूप को समझ सकेंगे और अनुभव करेंगे कि वास्तव में महर्षि दयानन्द एक असाधारण पुरुष थे।

श्री यशपाल जी आर्य बन्धु का लेख महर्षि दयानन्द और राष्ट्रवाद भी उत्तम एव पठनीय है। श्री आचार्य भद्रसेन जी का लेख पथ प्रदर्शक महर्षि दयानन्द' पाठको के लिए सर्वथा ज्ञान वर्धक है। तदनन्तर श्री प प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति अपने विशेष महत्वपूर्ण लेख शीर्षक महर्षि दयानन्द-एक मौलिक राजनैतिक विचारक मे गम्भीर तथ्यो का उद्घाटन करते हैं। महर्षि जिस प्रकार का प्रजातन्त्र शासन तन्त्र तथा निर्वाचन पद्धति चाहते थे और सम्पूर्ण भूमण्डल की चक्रवर्ती महाराज सभा की बात महर्षि ने अपनी मौलिक कही है। इस प्रकार नि सन्देह विश्व का विचार देने वाले महर्षि दयानन्द विश्व के सर्वप्रथम राजनैतिक विचारक हैं। यह इसी लेख से सम्यक स्पष्ट जाना जा सकता है। अन्त में श्री पं सुरेशचन्द्र जी वेदालंकार ने अपने विशिष्ट लेख 'महर्षि दयानन्द और महात्मा गांधी' लिखकर पाठको की अनेकधा भ्रान्तिया ही निर्मूल कर दी हैं। कुल मिलाकर यह 'महर्षि दयानन्द का बलिदान विशेषांक अत्यन्त महत्वपूर्ण पुस्तिका है। इसके लिए विद्वान लेखक एव आर्य प्रतिनिधि सभा दोनो का ही प्रयास प्रशंसनीय है। इसे प्रत्येक परिवार मे पहुचाने का प्रयास किया जा[ना] चाहिए। विशेषकर अन्य अवैदिक मतावलम्बियो को भी हस्तगत करानी चाहिए। इसका जितना प्रचार किया जाए उतना ही लाभकारी होगा।

—वेदानन्द सरस्वती वैदिक साधु आश्रम रोपड़ (पंजाब)

—



(४ पृष्ठ का शेष)

है। पढ़ना नहीं चाहते, पास होना चाहते हैं। पढ़ने के लिए अपने को अनुशासन में बांधना होगा, अनुशासन में रहने के लिए कोई तैयार नहीं। गुरुकुल शिक्षा पद्धति का मूल सिद्धान्त ही अनुशासनप्रियता है, और इसीलिए विद्यार्थी को 'शिष्य' संज्ञा दी गई है। जो विद्यार्थी जीवन में अनुशासन में रहना न सीखे वे समाज का अंग बनने पर क्योंकर अनुशासन में रह सकते हैं ? इसी कारण सम्पूर्ण समाज में अव्यवस्था मची हुई है।

(4) आश्रम—गुरुकुल शिक्षा पद्धति मे विद्यार्थी को गुरुकुलाश्रम में रहना होता है इसलिए इस पद्धति का चौथा शब्द है—आश्रम। वैदिक सस्कृति में मानव जीवन चार आश्रमो में बंटा हुआ है जिनके नाम हैं—ब्रह्मचर्याश्रम गृहस्थाश्रम वानप्रस्थाश्रम तथा संन्यासाश्रम विद्यार्थी का जीवन सबसे पहले आश्रम—ब्रह्मचर्याश्रम से प्रारम्भ होता है। वैसे तो जीवन के ये चार पड़ाव होते ही हैं, वैदिक सस्कृति ने इन्हे वैज्ञानिक रूप देने के लिए इन्हें चार आश्रमो में बांट दिया है। बालक पहले पढ़ता-लिखता है फिर जीवन सग्राम में उतर जाता है आजीविका के लिए कोई धन्धा करता है, फिर इस कशमकश से थक जाता है, आराम करता है जिसे हम रिटायर होना कहते हैं, अन्त मे सब तरफसे उपराम हो जाता है। जीवन के अवश्यम्भावी इन चार पड़ावों का नाम आश्रम व्यवस्था कहा गया है जिनमें पहला पड़ाव, पहला आश्रम ब्रह्मचर्याश्रम कहलाता है। आज ब्रह्मचर्य का लोग उपहास करते हैं, परन्तु जिन्होंने जीना सीखा है वे जानते हैं कि असली जीवन स्वस्थ जीवन ब्रह्मचर्य का जीवन ही है। गुरुकुल शिक्षा पद्धति का कहना तो यह है कि ब्रह्मचर्य और तप का जीवन बिताने से ही मृत्यु पर विजय पाई जा सकती है—ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमुपाघ्नत'।

इस प्रकार का ब्रह्मचर्य और तप का जीवन माता-पिता के साथ गृहस्थ मे रहते से नहीं बिताया जा सकता, ऐसा जीवन आश्रम में रहकर ही बिताया जा सकता है। अंग्रेजी में आश्रम को बोर्डिंग हाउस कह सकते हैं। आज कल के बोर्डिंग हाउस तथा गुरुकुल की आश्रम व्यवस्था में भेद यह है कि बोर्डिंग हाउस में छात्र जो कुछ खाना चाहे खा सकते हैं। मास-मच्छी लहसुन, प्याज मिर्च-मसालो में किसी प्रकार का नियन्त्रण नहीं अमीर-अमीरी खाना खायें गरीब-गरीबी खाना, इसके अतिरिक्त विद्यार्थियो तथा गुरुओं को एक ही बोर्डिंग हाउस में खाना आवश्यक नहीं। गुरुकुल शिक्षा पद्धति मे यहां खाने में सात्विकता आवश्यक है, वहां कुल की भावना होने के कारण गुरु-शिष्य का भी एक सा भोजन भी आवश्यक है। अगर कहें कि गुरुओं को इस पद्धति में शिष्यों के साथ बैठकर ही खाना चाहिए तो भी अत्युक्ति नहीं होगी, अन्यथा गुरु-शिष्य का एक साथ भोजना—'सह नौ अवतु सह नौ भुनक्तु—यह सब निरर्थक हो जाता है।

आश्रम व्यवस्था में सब ब्रह्मचारियों के एक साथ रहने के दो मुख्य लाभ हैं। पहला लाभ तो यह है कि सबकी दिनचर्या एक समान सूत्र में बंध जाती है। सब समय पर सोते हैं, समय पर जागते हैं समय पर स्नान, सन्ध्या, उपासना व्यायाम आदि करते हैं। समय पर तो करते ही हैं, आवश्यक दिनचर्या मे से किसी आईटम को छोड़ते भी नहीं। गुरुकुल शिक्षा पद्धति की यह देन जीवन को नियमित रखने मे बहुत सहायक है। आश्रम व्यवस्था का दूसरा लाभ यह है कि जब सब एक साथ रहते हैं तब ऊंच-नीच का भाव नहीं रहते, सब समान रूप से रहते हैं, भाई भाई की तरह। सार्वजनिक जीवन के लिए यह भावना अत्यन्त आवश्यक है, आज हमारा समाज जात पात मे बटा हुआ है। कोई ऊंची जात का है कोई नीची जात का। हम चुनाव भी जातों के आधार पर लड़ते हैं। निम्न कही जाने वाली जातियों के उद्धार के लिए मौइनोरिटी कमीशन बने हुए हैं पार्लियामेंट अधिनियम बने हुए हैं जिनसे ऊंच नीच का जाति का भेद मिटने के स्थान मे वह दृढ़ होता जा रहा है। जब भिन्न जाति का होने के कारण कुछ अधिकार विशेष मिलने लगें तब जाति भेद कैसे मिट सकता है। जातिगत भेदभाव को मिटाने के लिए तो शिक्षा पद्धति में आश्रम व्यवस्था को लाना अत्यावश्यक है।

हमने देखा कि मॉन्टेसरी शिक्षा पद्धति, प्रोजेक्ट शिक्षा पद्धति बुनियादी शिक्षा पद्धति की, तरह गुरुकुल शिक्षा पद्धति भी एक विशेष पद्धति है जिसकी अपनी ही कुछ विशेषताएं हैं और वे विशेषताएं 'कुल' 'गुरु' 'शिष्य' तथा आश्रम—इन शब्दो में अन्तर्निहित हैं। प्रश्न यह रह जाता है कि इन विशेषताओं को देश व्यापक बनाया जा सकता है या नहीं और अगर बनाया जा सकता है तो कैसे ?

(क्रमश)

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

समस्त राष्ट्र का भार वहन करने वाले बलवान् बैल हों। वायु वेग से शीघ्र दौड़ने वाले हमारे घोड़े हों। रूप शील, दया, दाक्षिण्यादि गुणों की खान तथा सुन्दर और सुडौल हमारे राष्ट्र की नारियां हों। हमारे पुत्र प्रत्येक क्षेत्र में विजय प्राप्त करने वाले, उत्तम सवारी वाले, विद्या-विनय आदि गुणो से सभा को सुशोभित करने वाले अपने वीर्य से आततायी और उग्रवादियों का दमन करने वाले हों। हमारी आवश्यकता, इच्छा तथा प्रार्थना के अनुरूप समय-समय पर बादल वर्षा करते रहें। जिससे कभी भी दुर्भिक्ष या अकाल पड़ने की सम्भावना ही न हो। हमारे लिए अनेक फलदार पेड़, पौधे, बेलें, फसलें तथा जड़ी बूटियां अपने आप पकती रहें। हमारे योग अर्थात् जो वस्तु हमें अभी तक उपलब्ध नहीं हुई है और क्षेम अर्थात् उपलब्ध वस्तु का संरक्षण रख-रखाव पूर्ण रूप से बराबर बना रहे।

# महर्षि दयानन्द पर फिल्म निर्माण

ले.—श्री धर्मदेवजी चक्रवर्ती 19 माडल बस्ती दिल्ली

आज कल आर्य सामाजिक क्षेत्रों में इस बात पर खूब ले-दे हो रही है कि महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के जीवन पर आधारित फिल्म बननी चाहिए या नहीं। इसके विरोध में जो मुख्य बात कही जा रही है वह यह है कि सत्यार्थ प्रकाश में महर्षि ने स्वय महापुरुषो के स्वाग रचने वालों को निन्दनीय कहा है क्योंकि यह स्वाग रचने वाले अधिकांश व्यक्ति चरित्रवान् नहीं होते और ऐसे चरित्रहीन व्यक्तियों द्वारा महापुरुषों का अभिनय करने से जन-साधारण पर महापुरुषों के प्रति कुप्रभाव पड़ता है। जिस काल में महर्षि ने यह विचार व्यक्त किए थे उस काल में ठीक थे किन्तु आज की परिस्थितियो में तर्क की कसौटी पर यह अवधारणा खरी नहीं उतरती। हजारो वर्षों से मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम भगवान् कृष्ण एव अन्य महापुरुषों की जीवनी पर आधारित नाटक जन-साधारण में से चुने गए अभिनेताओं द्वारा खेले जा रहे हैं। इन अभिनेताओ का अपना चरित्र किसी भी प्रकार से भगवान राम आदि महापुरुषों के उज्ज्वल चरित्र के समकक्ष नहीं था। अधिकांश मे ये नेता चरित्र भ्रष्ट थे। मांसाहारी थे। शराबी, लाखों भारतीयो ने ये नाटक और व फिल्में देखी होंगी किन्तु आज भी भगवान राम भगवान कृष्ण एव अन्य भारतीय महापुरुषो के अति उज्ज्वल चरित्र के आगे कोटि-कोटि जन श्रद्धा के सुमन चढ़ाते हैं और उनसे अपने जीवन को सन्मार्ग पर लाने की प्रेरणा का प्रसाद ग्रहण करते हैं। बल्कि कई बार तो स्वयं इन अभिनेताओं की ही जीवन दिशा प्रभावित हो जाती है और वे कुमार्ग से सन्मार्ग की ओर अग्रसर होने लगते हैं। जैसाकि आन्ध्र प्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री एन टी रामाराव के देवी-देवताओं का अनेक वर्षों तक अभिनय करते-करते अब शराब और मांस का सर्वथा त्याग कर दिया है और अधिकाधिक सात्विक जीवन बिताने का प्रयत्न करने लगे हैं।

अभी हाल ही मे भारत सरकार के सहयोग से बनी अंग्रेजी, हिन्दी फिल्म गाधी का नायक यूरोपीय संस्कारों से प्रभावित होने के कारण शराब और मांस का ही सेवन नहीं करता बल्कि उसके चरित्र में वे सब बातें देखने को मिलती हैं जिनके महात्मा गाधी कट्टर विरोधी रहे। ऐसे व्यक्ति द्वारा गांधी का अभिनय करने से क्या गाधी की महिमा कम हो गई? क्या वह फिल्म देखकर लाखों-करोड़ों व्यक्ति ऐसे नायक द्वारा गांधी का अभिनय किए जाने से गाधी के उज्ज्वल आदर्शों के विरोधी हो गये? कदापि नहीं। इसके विपरीत इस फिल्म से ससार भर में गाधी की विचारधारा से अपरिचित लोग प्रभावित हुए। गाधी के मन्तव्यो का अनुशीलन करने के लिए देश विदेश के लोगो ने महात्मा गाधी की आत्म कथा एव गाधी दर्शन पर लिखी गई अन्य पुस्तकें भारत से मगवाई हैं। लाखो की सख्या मे ये पुस्तकें हाथो हाथ बिक गई और यू गाधी के विचार ऐसे लाखो करोड़ों लोगो तक जा पहुंचे जिन्होने कभी गाधी का नाम तक न सुना था। एक ही फिल्मने वह चमत्कार कर दिखाया जो अनेक वर्षों तक पुस्तक विक्रताओ की अलमारियो में बद गाधी दर्शन पर लिखी पुस्तकें न कर पाई थी अहिंसा के अवतार महात्मा गाधी की फिल्म ने हजारो लाखो लोगो की जीवन दिशा ही बदल दी। गाधी के अहिंसावाद से प्रभावित हो एक अमरीकन युवती ने तो वहा के सैनिक विभाग से इस कारण सदा के लिए नाता तोड़ लिया कि गाधी की फिल्म देखने के बाद उसे हिंसा पर कतई विश्वास नहीं रहा।

महर्षि दयानन्द जैसा समाज सुधारक मानव मात्र से प्रेम करने वाला, मत-मतान्तरो में व्याप्त कुरीतियो एव पाखण्डो का निधड़क विरोधी, अखण्ड, ब्रह्मचर्य की आभा से दीप्त पददलितो का मसीहा पिछड़ों का सहारा, वेदो का अनन्य भक्त वैदिक सस्कृति का पुजारी एव देव वाणी सस्कृत का महान् पण्डित युगों के बाद कहीं पैदा होता है। महर्षि ने अपने मन्तव्यो के प्रचार-प्रसार के लिए आर्य समाज की स्थापना की थी। आर्य समाज की स्थापना करके महर्षि ने वैदिक धर्म को एक सार्वभौमिक धर्म के रूप में विश्व भर मे फैलाने की कल्पना की थी। आर्य समाज की स्थापना हुए आज एक सौ वर्ष हो चुके हैं किन्तु आर्य समाज के आदर्शों का प्रचार विश्व भर में तो क्या स्वय हमारे अपने देश भारत में भी कुछ इने गिने प्रदेशो तक सीमित है। अपने देश-भर मे ही एक तरफ हम अपने प्रदेशों में अपने नगरो में अपने नगरो के मुहल्लों तक में अब तक महर्षि की कल्पना को साकार नही कर पाए। आर्य समाज के सिद्धान्तो में वह सब कुछ है जिसको अपनाने से ससार भर को सच्चा सुख और मानसिक शान्ति प्राप्त हो सकती है किन्तु हमारे प्रचार माध्यम पुराने पड़ चुके हैं। वक्त का तकाजा है कि आर्य समाज के प्रचार और प्रसार के लिए और महर्षि दयानन्द की यश पताका ससार के कोने कोने तक पहुंचाने के लिए हम फिल्मों और टेलीविजन के माध्यम का अधिकाधिक प्रयोग करें। किन्तु आर्य समाज में ही कई महानुभाव अपनी कूप मण्डूक प्रवृति के कारण इसके प्रचार एव प्रसार मे बाधक हो रहे हैं।

ये बाजे गाजे और नगाड़े ये हाथी-घोड़ो के पीछे चलने वाली शोभा यात्राए ये मोटरो और जीपो पर सवार काफिले ये मोटरसाईकलो स्कूटरो और साईकिल सवारो के जलूस, और जलूसो मे आर्य समाज अमर रहे के, आकाश फोड़ नारे लगाने वाली बालक-बालिकाओ की लम्बी पक्तिया, ये वार्षिक उत्सवो के मेले और ये आठ दस बूढ़ों मे सीमित साप्ताहिक सत्सगों के झमेले, प्रचार प्रसार के ये सब माध्यम अब पुराने पड़ गए हैं। आर्य समाज की स्थापना के प्रथम चालीस वर्षों में प्रचार के ये माध्यम ठीक थे क्योकि उस काल के लिए ये उपयुक्त थे, नवीन थे, और सशक्त थे। आज हमे नवीनतम साधनो की आवश्यकता है। फिल्म निर्माण इस कार्य के लिए सर्वथा उपयुक्त एव सशक्त है।

जो लोग महर्षि दयानन्द की जीवनी पर आधारित फिल्म निर्माण का केवल इसलिए विरोध कर रहे हैं कि इस कार्य के लिए महर्षि दयानन्द जैसा ही कोई तेजस्वी प्रतिभा सम्पन्न एव बहुगुण सम्पन्न अभिनेता होना चाहिए उन्हे मैं कहना चाहूगा कि अभिनेता के मुखौटे की तरफ मत देखो। उस मखौटे के भीतर से निस्सृत होने वाली महर्षि दयानन्द की अमृत वाणी सुनाने वाले दिव्य दयानन्द के रूप की कल्पना करो। कीचड़ को मत देखो, कीचड़ मे उपजने वाले कमल को देखो। गन्ने के ऊपर के विकृत रूप को मत देखो गन्ने के भीतर के मधुर रस का पान करो। यदि हजारो सैंकड़ों वर्षों तक साधारणजनो द्वारा नाटकों में और अब फिल्मो मे महापुरुषो का अभिनय करने से उन महापुरुषो के जीवन के प्रति जन साधारण की श्रद्धा मे कोई कमी नही आ सकी तो किसी साधारण व्यक्ति द्वारा फिल्म मे महर्षि दयानन्द का अभिनय करने मात्र से दिव्य दयानन्द के धवल आचरण पर किसी भी प्रकार का दाग लगने की रचमात्र भी सम्भावना नहीं। इसके विपरीत ससार भर के कोटि-कोटि मनुष्य फिल्म के माध्यम से महर्षि के सन्देश से महर्षि के मन्तव्यो से और उस वैदिक सस्कृति से अवगत होंगे जिसके प्रसार की आशा से देश विदेश के अलौकिक मत मतान्तरो की अन्धेरी गलिया आलोकित हो उठेंगी और हर कोई दिव्य दयानन्द के चरणो मे शीश झुकाएगा।

—

## पुरोहित की आवश्यकता है :

आर्य समाज बैक फील्ड गज लुधियाना के लिए एक विद्वान् अनुभवी एव योग्य आर्य पुरोहित की आवश्यकता है। जो हवन-यज्ञ और वैदिक संस्कार करवाने में दक्ष हो और आर्य समाज के दैनिक तथा साप्ताहिक सत्सगों के अतिरिक्त पारिवारिक सत्सगो में भी व्याख्यान दे सकें वेतन 500 रुपए मासिक तक दिया जा सकेगा। आवास की व्यवस्था आर्य समाज भवन में निःशुल्क होगी। प्रार्थना पत्र आयु, अनुभव, शिक्षा, योग्यता के विवरण सहित निम्न पता पर भेजें—

—प्रधान आर्य समाज बैक फील्ड गज लुधियाना

# क्या परिवार नियोजन कार्यक्रम सिर्फ हिन्दुओं के लिए ही है ?

विश्व हिन्दू परिषद तिरुचरपल्ली की शाखा के सचिव श्री ई आर गोपालरत्नम ने पिछले दिनों सरकारी परिवार नियोजन कार्यक्रम के एक पहलू के बारे मे अपने जो विचार व्यक्त किए हैं वे यद्यपि काफी क्रान्तिकारी हैं तथापि इस बात को ध्यान मे रखते हुए कि हमारी केन्द्रीय सरकार सामने आए बिना कोई निश्चयात्मक निर्णय नहीं करती, हम उनके विचारो से सहमत हैं।

श्री गोपालरत्नम् ने इस कार्यक्रम के बारे में हिन्दुओ की इस चिन्ता को मुखर किया है कि सारे देश में सिर्फ हिन्दुओ से ही आशा क्यो की जाती है कि वे परिवार नियोजन कार्यक्रम को सफल बनायें और सिर्फ उन्ही को परिवार नियोजन कार्यक्रम का पालन करने के लिए क्यों बाध्य किया है। मुसलमानो और ईसाईयो को कम बच्चे पैदा करने के लिए मजबूर क्यो नहीं किया जाता। आगे चलकर उन्होंने हिन्दुओ को यह सलाह दी कि जब तक शासन इस कार्यक्रम के दायरे मे से ईसाईयों और मुसलमानो को बाहर जाने देने की इजाजत देता रहेगा तब तक हिन्दुओ को भी अधिक से अधिक बच्चे पैदा करके ईसाईयो और मुसलमानो की जनसंख्या मे वृद्धि करके अपना राज्य स्थापित करने की इन दोनो समुदायो की चाल को नाकाम करते रहना चाहिए। वस्तुत वे तिरुचरपल्ली में आयोजित दो दिवसीय सम्मेलन मे उपस्थित साधुओ सन्यासियो और मठाधिपतियो के इस बारे मे लिए गए उपरोक्त निश्चय के बारे मे ही पत्रकारो को बता रहे थे।

यद्यपि सरकार का यह दावा है कि कोई भी धर्म परिवार नियोजन कार्यक्रम की सफलता में बाधक नहीं बन रहा है तथापि इस बात का उसके पास कोई उत्तर नहीं है कि ईसाईयो की वार्षिक वृद्धि भारतीयों मे सबसे अधिक क्यो है। (1951 और 1971 में उनकी वृद्धि का औसत उच्चतम अर्थात् 32 प्रतिशत और देवबन्द स्थित संस्था ने आजादी के बाद परिवार नियोजन कार्यक्रम के प्रति मुसलमानों मे असहयोग की भावना जगानी क्यो आरम्भ कर दी थी वह दिल्ली के शाही इमाम के खिलाफ भी कोई कार्यवाही नहीं करती जो खुलेआम मुसलमानों से ज्यादा से ज्यादा बच्चे पैदा करने की अपील करते रहते हैं। जब तक परिवार नियोजन के बारे में सरकार अपनी दुरंगी नीति अपनाने से बाज नहीं आती, तब तक हिन्दुओ का भी परिवार-नियोजन कार्यक्रमों से अलग रहना ही उनके हित में होगा। -स्वाधीनता-पत्रक

# दिल्ली की आर्य महिला सभा में श्रीमती इन्दिरा गांधी को श्रद्धांजलि

दिल्ली प्रान्तीय आर्य महिला सभा दीवान हाल का यह विशाल शोक अधिवेशन मे सम्पूर्ण भारत की अनुपम लोकप्रिय नेता भूतपूर्व प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की नृशंस हत्या पर शोक व्यक्त करता है और इस जघन्य कार्य की कड़ी निन्दा करता है। भारत सरकार से यह अनुरोध करती है कि जिन लोगो ने यह घृणित कुकर्म किया है उन्हें अवश्य ही दण्डित किया जाए।

श्रीमती इन्दिरा गांधी ने देश की उन्नति राष्ट्रीय एकता अखण्डता शान्ति के लिए जो महान् कार्य किए वे सदा उन की याद दिलाते रहेंगे। राष्ट्र की बहुमुखी प्रगति और संयुक्त राष्ट्र संघ मे उनका सर्वोच्च स्थान उनकी अमर कीर्ति स्तम्भ रहेगा। श्रीमती इन्दिरा जी राष्ट्र की बेटी और राष्ट्र माता थी। वह तीसरी दुनिया की महान् महिलाओं, सारे विश्व को अपनी विलक्षण बुद्धि और सूझबूझ से एक सूत्र में पिरोए हुए थी। सदा समय की नब्ज पर हाथ रहा। घोर संकट आने पर भी चट्टान की तरह अटल रहीं। उनके 16 वर्षों के शासन काल में कई तूफानी घटनाएं हुई परन्तु समुद्र की तरह वे अविचल शान्त व गम्भीर रहीं।

महिला जगत् के लिए वह प्रेरणा स्रोत तथा कीर्ति स्तम्भ थी। महिला जगत् उन्हे सदा महान् आदर्श के रूप में स्मरण करता रहेगा। उनका राष्ट्र की अखण्डता के लिए यह बलिदान सदा-सदा अमर रहेगा।

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन न. 74250 (रजि. न. पी जे. एल. 55)

वर्ष 16 अंक 35 2 पौष सम्वत् 2041, तदनुसार 16 दिसम्बर 1984, दयानन्दाब्द 160 । एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपए

# अग्निदेव और उसका स्वरूप

ले—श्री सुरेशचन्द्र जी वेदालकार एम ए एल टी 9 ए ई 1
गोरखपुर मिर्जापुर

श्री सुरेशचन्द्र जी वेदालकार आर्य जगत के एक प्रसिद्ध लेखक हैं उनका एक-एक लेख वेद मन्त्रों पर आधारित होता है। उन्होंने अग्नि देव का स्वरूप वेद मन्त्रों के आधार पर इस लेख मे प्रतिपादित किया है। अग्नि शब्द को जितने अर्थों में वेद में प्रयुक्त किया है उसकी व्याख्या सुयोग्य लेखक ने इस लेख में किया है।

—सह-सम्पादक

अग्निदूत वृणीमहे होतार विश्ववेदसम्।
अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम्।

मन्त्र का भाव है हम देवदूत अग्नि को अपने सम्पूर्ण धन धान्य का उपभोग तथा दान करने वाला स्वीकार करते हैं। वह विश्व व्यापक है' विश्व का रहस्य जानता है। हमारा सम्पूर्ण धन उसी का है। इस यज्ञ का उत्तम संकल्प उत्तम ज्ञान लाभ उत्तम सम्पादन वही कर सकता है।

अग्नि का बहुत अधिक महत्व सासारिक वस्तुओं में तो विद्यमान है ही वेद मे भी अग्नि की महत्ता को बतलाया गया है। इस अग्नि की महत्ता का कारण यज्ञ है। अग्नि से ही यज्ञ होता है हवन होता है और अग्नि से ही हविष्य आदि भोज्य पदार्थ तैयार किए जाते हैं। यह अग्नि हमें तेज प्रकाश और उष्णता देता है जिससे संसार के सभी कार्य चलते हैं यह हमारा शरीर और विश्व इस अग्नि से ही स्थिर है। यदि अग्नि न रहे तो सारा विश्व विनष्ट हो जाए। ऋग्वेद का प्रथम सूक्त आग्नेय सूक्त है। इस सूक्त का देवता या प्रत्येक मन्त्रों में वर्णित विषय अग्नि है। इसका ऋषि मधुछन्दा है। महर्षि मन्त्रद्रष्टा को कहते हैं। पहला मन्त्र है—

अग्निमीळे पुरोहितम् यज्ञस्य देवमृत्विजम्
होतारं रत्नधातमम्॥

यज्ञ के पुरोहित देवों को बुलाने वाले ऋत्विक और रत्नधारी अग्नि की मैं स्तुति करता हू। यह अग्नि पुरोहित है। पुरोहित शब्द का अर्थ है अग्रणी। अग्नि क्या है? महर्षि यास्क लिखते हैं अग्नि कस्मात् अग्रणी भवति' अग्नि वह है जो सदा आगे चलता है। अग्र यज्ञेषु प्रणीयते' यज्ञों मे उसे आगे रखा जाता है अग्नि के बिना यज्ञ हो ही नहीं सकता। अब प्रश्न उत्पन्न होता है कि कोई जड पदार्थ स्वयं काम करने मे असमर्थ है। उसे काम मे लाने के लिए चेतन अधिष्ठाता की आवश्यकता है। इसीलिए महर्षि दयानन्द एवं प्राचीन ऋषि जड अग्नि के अतिरिक्त उनके अधिष्ठातृ रूप में अग्निदेव, वायुदेव आदि चेतन देवता भी मानते थे। इन देवताओ के अनेक नाम अवश्य है परन्तु सबके चेतन रूप होने से सामूहिक रूप से सब देव एक ही हैं और वे ही परमात्मा हैं। इसलिए अग्नि आदि परमात्मा के नाम हैं।

तदेवाग्निस्तदादित्यस्तद्वायु तद चन्द्रमा।
तदेवशुक्र तद् ब्रह्म स आप स प्रजापति॥

वह परमेश्वर ही अग्नि आदित्य, वायु, चन्द्रमा शुक्र ब्रह्म और आप कहा जाता है। उस चेतन अग्नि परमेश्वर का अपना नाम—मुख्य नाम 'ओ३म् है पर ज्ञानी जन उस एक ओ३म को अग्नि इन्द्र आदि अनेक नामों से पुकारते हैं। ऋग्वेद मण्डल 1 सू 164, 46 मन्त्र मे कहा है—

इन्द्र मित्र वरुणमग्निमाहुरथो दिव्य स सुपर्णो गरुत्मान
एक सद्विप्रा बहुधा वदन्त्यग्नि यम मातरिश्वानमाहु॥

अर्थात् ओ३म को ज्ञानी जन इन्द्र मित्र वरुण अग्नि यम मातरिश्वा— वायु आदि अनेक नामो से पुकारते हैं। कैवल्य उपनिषद् में कहा गया है—

स ब्रह्मा स विष्णु स रुद्रस्स शिवस्
सोऽक्षरस्स परम स्वराट।
स इन्द्रस्स कालाग्निस्स चन्द्रमा॥

सब जगत को बनाने से ब्रह्मा सर्वत्र व्यापक होने से 'विष्णु दुष्टो को दण्ड देने से रुद्र मगलमय और कल्याणकारक होने से शिव परमैश्वर्यवान होने से इन्द्र और काल का भी काल होने से 'कालाग्नि भगवान के ही नाम हैं। अग्नि के विषय में इस सूक्त मे कहा है—

अग्नि पूर्वेभिर्ऋषिभिरीड्यो नूतनैरुत।
स देवा एह वक्षति॥

प्राचीन ऋषियो ने जिनकी स्तुति की थी आधुनिक ऋषि जिनकी स्तुति करते हैं वे अग्निदेव इस यज्ञ में विद्वानो को-देवताओ को बुलावें।

उपत्वाग्ने दिवे दिवे दोषावस्तर्धिया वयम। नमो भरन्त एमसि ॥ 2 4

हे अग्नि देव! हम प्रतिदिन, दिन रात ज्ञान कर्म तथा ध्यान को साधन बनाकर अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति विनम्र भक्ति तथा शासन शक्ति की भेंट के लिए लिए तुम्हारे पास आते हैं और तुम्हें प्रणाम करते हैं। क्योंकि—

राजन्तमध्वराणा गोपामृतस्य दीदिविम
वर्धमान स्वे दमे।

अग्निदेव तुम प्रकाशक यज्ञ रक्षक, कर्म फल के द्योतक और यज्ञशाला मे बढनेवाली हो।

स न पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव।
सचस्वा न स्वस्तये।

जैसे पुत्र पिता को सरलता से पा जाता है उसी तरह हम भी तुम्हे पा सकें। हमारा मगल करने के लिए अग्नि देव हमारे पास निवास करे।

वास्तव मे भौतिक यज्ञ के लिए अग्नि की आवश्यकता है परन्तु यदि यह भौतिक यज्ञ हमारा यज्ञ या यज्ञ आन्तरिक यज्ञ न बना जीवन यज्ञ न बना तो बाह्य यज्ञ का बाह्य लाभ वायु शुद्धि आदि तो हो सकता है वास्तविक लाभ तो आन्तरिक यज्ञ बनने से ही होगा। भौतिक ससार के यज्ञ की सफलता इसी मे है कि वह इस विशाल आध्यात्मिक यज्ञ की सफलता का साधन बन जाए। भौतिक अग्निदेव अपनी ज्वालाओं की जीभ से जिस पदार्थ को स्वयं चाटता है खाता है उसे वह झट देवताओ के भोग की सामग्री बना देता है। अग्नि की ज्वालाए इस भावना का मूर्त उपदेश हैं। आध्यात्मिक अग्निदेव हमारे हृदय के आसन पर बैठा इसी यज्ञ भावना का उपदेश पुकार-पुकार कर हमारी देवपुरी के देवताओं के कानो मे पहुचा रहा है। वह उन्हे यज्ञ की ओर बुला रहा है।

एह्येहीति तमाहुतय सुवर्चस सूर्यस्य
रश्मिभिर्यजमान वहन्ति।
प्रिया वाचमभिवदन्त्योऽर्चयन्त्य एष व
पुण्य सुकृतो ब्रह्म लोक।

—मुण्डकोपनिषद 1 2 6

अग्नि मे प्रदत्त तेजोमयी आहुतियां सूर्य की रश्मियो के साथ यजमान को आइए आइए ऐसी मधुर एवं प्रिय वाणी बोलती हुई उसकी स्तुति करती हुई, उसे वहन करके ले जाती है और कहती हैं तुम्हारे सुकृत से यह पुण्य ब्रह्म लोक—मोक्ष पद तुम्हे प्राप्त हुआ है।

यज्ञ करने वाले को अग्नि शब्द का अर्थ समझना होगा। अग्नि का अर्थ है आग और आग का काम है आगे बढना, ऊपर उठना और मनुष्य के जीवन का ध्येय क्या है? यही आगे बढना ऊपर उठना।

अग्नि का गुण यह भी है कि आगे बढते हुए वह रुकावट और कठिनाइ की परवाह नही करती। उसमे जब तक दम नहीं चिन्ता नही रुकना नही ठहरना नहीं। जब तक आग है तब तक गर्मी जरूर। कहीं एक छोटी सी चिन्गारी भी रह जाए तो धीरे धीरे आगे बढकर वह महाप्रचण्ड ज्वाला बन जाती है। शहरों और जगलो को नष्ट कर सकती है। मेरे बन्धुओ यज्ञ की अग्नि की प्रेरणा है आगे बढो। गिर जाए तो चिन्ता की बात नहीं घबराओ नहीं रुको नहीं। उठो उठो, अपने लक्ष्य तक पहुचो—यह आग का गुण है। यही यज्ञाग्नि जीवन को कैसे आग बढाएगी देखिए। (क्रमश)

## मनुष्य की इच्छाएं

# पाश्चात्य और भारतीय विद्वानों की दृष्टि में

लेखक—श्री डा गणेश भारद्वाज एम ए पी एच डी
प्राध्यापक साधु आश्रम होशियारपुर

(2 दिसम्बर से आगे)

### पुत्रैषणा

फायड का कथन है कि जीवन मे मानसिक विकास का प्रारम्भ काम लिप्सा से होता है। बच्चा जन्मते ही कामी होता है। उनके मनोविश्लेषण के सिद्धान्त का आधार इड या लिबिडो है। इड या लिबिडो का आधारभूत भाव 'काम लिप्सा है। काम प्र रणा ही लिबिडो है।

वैदिक वाङमय मे काम के लिए लिखा है—कामो अग्र प्रथमम तस त्व मसि ज्यायान विश्वहा महान तस्मै ते काम नम इ करोमि। अर्थात् पहले पहल काम ही उत्पन्न हुआ इसीलिए काम सबसे बड़ा है, महान है, यह विश्व का सहार भी कर सकता है— विश्वहा है इसलिए हे काम! तुझ नमस्कार है। उपनिषद मे आया है सोऽकामयत अर्थात उसने कामना की। यह काम शब्द सेक्स का सूचक तो है ही। 'काम का अर्थ कामना करने के कारण इसका अर्थ सेक्स से कुछ अधिक भी है।

इस कामवासना के सम्बन्ध में पाश्चात्य मनोवैज्ञानिको का मत है कि समाज की धारणा सेक्स के विचारो को प्रकट रूप मे व्यक्त होन मे बाधा डालती है इसलिए ये विचार अचेतन मन में आ बैठते हैं जहा आखो से तो ओझल रहते हैं परन्तु मनुष्य के व्यवहार को प्रभावित करते रहते हैं। जितना सेक्स सम्बन्धी विचारो का दमन किया जाता है उतन ही वे भीतर क्रियाशील होते हैं और मनुष्य का मानसिक असन्तुलन बिगडने लगता है। मनुष्य के मन में तनाव रहने लगता है। मानसिक अस तुलन मानसिक अस्वास्थ्य क मुख्य कारण है सेक्स सम्ब धी विचारो का दमन ही है। तनाव या मानसिक अस्वास्थ्य मे मुक्ति प ने के दो माग हैं—

### इच्छा का सन्तुष्टि

जो लोग मना विश्लेषणवाद के जबरदस्त मा न उनका कहना है कि सेक्स के विच र क दमन करन के स्थान पर विषय भाग कर लने से मन म से तनाव दूर हो ज ता है और मानसिक अस्वास्थ्य नहीं रहता। इसी विचारधारा का परिणाम है कि आज का समाज सेक्स प्रधान होकर विषय भोग के पीछे दौडता जा रहा है। अतएव आज के युवक तन्त्रिका भग तथा यूरेस्थेनिया से पीडित हैं।

### इच्छा का उदात्तीकरण

सेक्स एक शक्ति है। वैदिक ऋषियो ने इस सेक्स शक्ति के उदातीकरण का रास्ता ढू ढ निकाला है। अत सेक्स का दमन करने के स्थान पर उसे पुत्र कामना या पुत्र एषणा की दिशा मे फरकर इस शक्ति का उदातीकरण कर दिया है।

भौतिकवादी दृष्टिकोण से विषय भोग मख्य है सन्तान आ जाना उसका आनुषगिक फल है अध्यात्मवादी दृष्टि कोण मे सन्तान का आगमन मुख्य है विषय भोग उसका साधन है अवान्तर प्रक्रिया है। स्त्री पुरुष जब गृहस्थाश्रम मे प्रवेश करते हैं तब विषय भोग की खातिर प्रवेश नहीं करते नव-मानव के निर्माण का ध्येय सामने रखकर सेक्स के जीवन का प्रारम्भ करते हैं। यह आध्या त्मिक दृष्टिकोण है यही वैदिक दृष्टि कोण है। इससे काम शक्ति का उदाती करण हो जाता है, दमन नहीं होता। अतएव इस एषणा को दारैषणा न कहकर पुत्रैषणा कहा है।

### वित्तैषणा

दूसरी एषणा जिसका जीवन मे गहरा प्रभाव है वित्तैषणा है। वित्त का अथ है धन। हर कोई धन पाने के लिए व्याकुल रहता है। विस्तृत अर्थो मे वित्तषणा का अथ है—परिग्रहण करना भौतिक पदार्थो के पीछे भागना और उनका सग्रह करना। वदिक विचार धारा के अनुसार यह एषणा भी मानव के व्यवहार को प्र रणा दने वाली मुख्य स्रोत है। भौतिक वादी लोग धन सग्रह करने मे सन्तोष मानते हैं। जबकि अपरिग्रह का विचार हमारे दशन शास्त्र की एक महान खोज है। जीवन का जो होने वाला अवश्यम्भावी अन्त है जो किसी क रोके रुक नही सकता, उसी को ध्यान मे रखकर बृहदा रण्यक उपनिषद मे याज्ञवल्क्य ने मैत्रयी को कहा था- अमृतत्वस्य तु नाशास्ति वित्तेन, जीवन की अमरता पूर्णता के लिए वित्त से धन धान्य से आशा करना व्यर्थ है। इसी दृष्टिकोण को ध्यान मे रखकर कठोपनिषद में नचिकेता ने यमाचार्य को कहा था—'न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्य' अर्थात मनुष्य ससार भर की दौलत पाकर भी तृप्त नही हो सकता। सच्चे अर्थों में अपरिग्रह वित्तैषणा का उदात्तीकरण ही है।

आज जैसे सारे समाज पर काम छाया हुआ है, वैसे ही वित्तैषणा—धन कमाने की इच्छा हर व्यक्ति पर छायी हुई है। वैदिक व्यवस्था मे धन कमाने के काम को सीमित कर दिया गया था इतना सीमित जिससे हर एक व्यक्ति व्यापारी या धन कमाने की मशीन नहीं बना था (जैसाकि आज बना हुआ है) उस व्यवस्था मे केवल वैश्य का काम धन कमाना था वह भी समाज के लिए धन कमाना था वह समाज के कमाए हुए धन का टस्टी था। गृहस्थी वैश्य के लिए कहा गया है।

> यथा नदी नदा सर्वे समुद्र यान्ति सस्थितिम।
> तथैवाश्रमिण सर्वे गृहस्थे यान्ति सस्थितिम्॥

जैसे नदी नालो का पानी समुद्र मे आ पडता है वैसे ब्रह्मचारी गृहस्थी वानप्रस्थी सन्यासी—ये सब लोग गृहस्थ वैश्य के द्वारा पालित पोषित होते हैं। गृहस्थी वैश्य जो धन कमाए उसे समाज के काम मे लगा दे। यह वैश्य के लिए वैदिक विचारधारा का आदेश है। इतना ही नही गहस्थी—वैश्य के लिए धन कमाने का भी समय तय था। जैसाकि मनुस्मृति में लिखा है—

> गृहस्थस्तु यदा पश्येत वली पलित मात्मन।
> अपत्यस्यैव चापत्य तदारण्य समा श्रयेत।

जब गहस्थी वैश्य यह देखे कि बाल पकने लगे हैं त्वचा मे झुरिया पडने लगी हैं पुत्र के पुत्र हो गया है, तब गृहस्थाश्रम को छोडकर वानप्रस्थी हो जाए। भारतीय मनीषियो ने इस हद तक वित्तैषणा' को सीमित कर दिया था बाध दिया था। वित्तषणा को भोग कर इस एषणा से स्वेच्छा से अलग हो जाने पर वह एषणा तृप्त भी हो जाती थी स्वेच्छा से छोड देने के कारण (यह एषणा) मनुष्य को व्याकुल भी नही करती थी।

### लोकैषणा

जैसे डा फायड काम लिप्सा को जीवन की मूल प्र रणा मानते थे। उससे भिन्न विख्यात मानस शास्त्री एडलर स्वाग्रह को जीवन का प्र रणा स्रोत सिद्ध करते हैं। उनके अनुसार हरेक बच्चे मे कुछ न कुछ हीनता छोटेपन का भाव बैठता है। इसे उसने हीनता की मनोग्रन्थि का नाम दिया है। परन्तु इस हीनता की मनोग्रन्थि के साथ-साथ उसका मुख्य प्र रणा स्रोत स्वाग्रह होता है। इस स्वाग्रह के लिए सांख्य शास्त्र में अहकार शब्द का प्रयोग हुआ है—'प्रकृतेमहान् महतोऽहकार' (प्रकृति से महत् और महत्तत्व से अहकार की उत्पत्ति होती है अहकार का अर्थ है, मैं पन, व्यक्तित्व एडलर का स्वाग्रह और सांख्य का अहकार—इन दोनो का एक ही अर्थ है। इसी स्वाग्रह अहकार के कारण मनुष्य अपनी हीनता को दूर करने का प्रयास किया करता है। मनुष्य छोटा नही कहलाना चाहता है, लोगो से वाह वाही लेना चाहता है यही लोकैषणा है।

वैदिक व्यवस्था के अनुसार लोकैषणा की सिद्धि मे आधार भूत जो दो मौलिक तत्व है वे हैं—त्याग और सेवा। त्याग अर्थात जो व्यक्ति सब कुछ त्याग देता था जिसका अपना कुछ नहीं रहता था वह जनता के सम्मान की पहली शर्त को पूरा करता था। किन्तु त्याग करना तो एक ऋणात्मक कृत्य है। इस ऋणात्मक कृत्य के साथ वह धनात्मक कृत्य भी करता था। धनात्मक कृत्य था—सेवा। अपनी सेवा को छोड कर वह समाज की सेवा में लग जाता था। ऐसा जीवन सन्यासी का जीवन था ऐसा व्यक्ति ही समाज मे सम्मान का अधिकारी था। फिर उसे सम्मान के पीछे भागना नही होता था सम्मान उसके पीछे भागता था। लोकैषणा के विषय मे यही वैदिक दृष्टिकोण है।

पश्चिम के मनोवैज्ञानिको ने डार्विन के विकासवाद से प्रेरणा लेकर मनोभावो की गवेषणा में मानव के अन्त प्र रक स्रोतो तथा अनसीखे जटिल विन्यासों को मूल प्रवृत्ति कहा है उनकी यह निश्चित धारणा है कि प्रवृत्तियो और उनसे सम्बन्धित सवेगो को निकाल देने पर मानव शरीर ईधन रहित इजन जैसा, मुख्य कमानी रहित घडी की भांति निश्चेष्ट एव जड हो जाएगा, ये जन्म-जात मनोभौतिक प्रवृत्तिया ही प्राणी को किसी निश्चित वस्तु को जानने एव उस वस्तु का ज्ञान प्राप्त करके उस वस्तु के किसी विशेष गुण से उत्पन्न भावात्मक उत्तेजना का अनुभव करने के लिए और विशेष ढग से क्रिया करने के लिए प्रेरित करती है उनके अनुसार मूल प्रवृत्तियो की सख्या चौदह है संस्कार युक्त आवश्यक भी संवेगो (विशिष्ट प्रकार के मनोविकार) की भांति मानव के अन्त प्र रक स्रोता

(शेष पृष्ठ 7 पर)

## सम्पादकीय—

# तूफान के दौर से—पंजाब-3

कई सिखों और दूसरे व्यक्तियों की ओर से आर्य समाज पर यह आक्षेप लगाया जाता है कि उसने सिखों को हिन्दुओं से अलग किया है। इस सम्बन्ध में जो कुछ तथाकथित प्रकाश में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने श्री गुरु नानकदेव और श्री गुरु गोविन्दसिंह जी के विषय में लिखा है उसका भी चर्चा होता है और कई लोग उसी को आधार बनाकर आर्य समाज पर यह आरोप लगाते हैं कि उसने हिन्दुओं और सिखों के बीच एक खाई पैदा की है। हमें श्री क्षितीश विद्यालंकार का आभारी होना चाहिए कि उन्होंने अपनी इस पुस्तक—तूफान के दौर से 'पंजाब' में इस षड्यन्त्र का अनावरण कर दिया है और कुछ ऐसे ऐतिहासिक तथ्य प्रस्तुत किये हैं जिन्हें पढ़कर पता चल जाता है कि वास्तविक स्थिति क्या है? अंग्रेज ने किस प्रकार हिन्दुओं और सिखों में फूट डालने का प्रयास किया था। इसका वर्णन करते हुए श्री क्षितीश जी ने लिखा है कि मैकालिफ नाम के एक आई सी एस अंग्रेज अधिकारी के जिम्मे यह काम लगाया गया था कि वह सिख धर्म का अनुसन्धान करके उसका इतिहास लिखे। इस पर उसने बहुत परिश्रम करके छ खण्डों में 'सिख धर्म' नाम का एक ग्रन्थ लिखा। सिख बुद्धिजीवी इसे सिख धर्म के इतिहास का सबसे प्रामाणिक शोध ग्रन्थ मानते हैं। इसी ग्रन्थ को पढ़ने के पश्चात एक सिख विद्वान् श्री काहनसिंह ने सबसे पहले 1878 में 'हम हिन्दू नहीं' नाम की एक पुस्तक लिखी थी। इसके पश्चात् उस समय की अंग्रेज सरकार की नीति में भी परिवर्तन आ गया था और उसकी ओर से सिखों को न केवल संरक्षण मिलने लगा अपितु प्रत्येक प्रकार का प्रोत्साहन भी दिया जाने लगा। एक अंग्रेज अधिकारी ने एक पत्रिका 'फोर्ट नाइटली रिव्यू' के सितम्बर 1923 के अंक में अपने एक लेख द्वारा प्रकाश डालते हुए लिखा था—

"गदर के तुरन्त पश्चात जब ब्रिटिश सेना में सिखों की अबाध भर्ती का सिलसिला चला तो अधिकारियों ने सिख धर्म की अनेक अच्छाइयों को ढूंढ निकाला। गुरु गोविन्दसिंह ने खालसा पन्थ का गठन करते समय जिन धर्म कायदों को अपनाया था उनका आज बन्द कर सिख रेजिमेंट में पालन होने लगा। प्रत्येक सिख सैनिक के साथ ऐसा व्यवहार होने लगा मानो वह एक साधारण किसान की अपेक्षा अधिक श्रेष्ठ है। उसे समझाया गया कि हिन्दुओं से उसका किंचित भी साम्य नहीं है अत उसे रेजिमेंट में अपनी मूल जाती को भुला देना चाहिए। प्रत्येक रेजिमेंट को एक ग्रन्थी दिया जाता था। उसकी देख रेख में नए रंगरूटों को बड़े गम्भीर वातावरण में विशुद्ध और पुरातन विधि से खालसा पन्थ की दीक्षा दी जाती थी। इस प्रकार पवित्र ग्रन्थ साहब के प्रति अत्यधिक श्रद्धा प्रदर्शित किया जाता था। जब ग्रन्थ साहब की सवारी निकलती थी तब सब अंग्रेज सैन्य अधिकारी सावधान की स्थिति में खड़े होकर ग्रन्थ साहब को सलामी देते थे। सिख सैनिकों का यह 'वाहेगुरु जी का खालसा वाहेगुरु जी की फतेह' के उच्चारण से अभिवादन करते थे। परिणामतः जब प्रत्येक सिख सैनिक सेना से निवृत्त होने पर अपने गाव लौटता था तो एक कट्टर सिख बनकर आता था और तत्पश्चात हिन्दू धर्म के स्खलनशील वातावरण से आवृत होने पर भी वह सिख धर्म की मशाल को प्रज्वलित रखता था।

जो कुछ ऊपर लिखा गया है उससे सारी स्थिति स्पष्ट हो जाती है विशेषकर यह कि सिखों को हिन्दुओं से अलग करने या दूर ले जाने का उत्तरदायित्व [illegible] पर है। इस सम्बन्ध में हमें यह भी न भूलना चाहिए कि 1857 के [illegible]

[illegible] सिखों का हो एक ऐसी [illegible] है जिस पर वह विश्वास कर सकता है। इसलिए सिखों को उभारने और उन्हें हिन्दुओं से दूर ले जाने का [illegible] आरम्भ [illegible] गया।

श्री क्षितीश विद्यालंकार ने अपनी पुस्तक में जो कुछ लिखा है उसमें न केवल पंजाब का [illegible] और वर्तमान इतिहास दिया है। इस पुस्तक को पढ़कर हम कुछ भविष्य के विषय में भी अनुमान लगा सकते हैं। यह एक ऐतिहासिक पुस्तक है जिसे पढ़ने के पश्चात पंजाब की वर्तमान स्थिति स्पष्ट हो जाती है और यह पता चल जाता है कि यहां जो कुछ हो रहा है वह क्यों हो रहा है?

इस क्रम माला के पहले लेख में मैंने लिखा था कि आर्य समाज में विद्वानों और उच्चकोटि के लेखकों की कमी नहीं है। परन्तु उनका वह आदर और सम्मान नहीं होता जो होना चाहिए। इसका एक कारण यह भी है कि आर्य समाज एक दिशाहीन संस्था बन गई है। इसका जो प्रचार हो रहा है वह भी किसी व्यवस्था के अनुसार नहीं हो रहा है। जो जिधर जा सकता है चला जाता है। इसलिए जनता पर वह प्रभाव नहीं पड़ रहा जो पड़ना चाहिए।

श्री क्षितीश विद्यालंकार ने आर्य समाज की, हिन्दू जाती की और अपने देश की बहुत बड़ी सेवा की है जो यह पुस्तक लिखी है। यह पुस्तक प्रत्येक पुस्तकालय में रखी जानी चाहिए और प्रत्येक जो व्यक्ति पंजाब की वर्तमान स्थितियों को समझना चाहता है उसे इस पुस्तक को अवश्य पढ़ना चाहिए।

—वीरेन्द्र

# संस्कृत सम्मेलन की तैयारी

ऐसा प्रतीत होता है कि पंजाब सरकार इस प्रान्त में संस्कृत का सर्वनाश करने पर तुली हुई है। बच्चों की शिक्षा के विषय में उसने जो नई नीति निश्चित की है उसमें संस्कृत के लिए कोई स्थान नहीं है। मैं इसे सारे हिन्दू जगत के लिए एक चुनौती समझता हूं। यदि संस्कृत ही न रहेगी तो हमारे धार्मिक ग्रन्थ कौन पढ़ेगा। किसी धर्म को समाप्त करने के लिए इससे अच्छा कोई और साधन नहीं हो सकता। अंग्रेज ने भी यही मार्ग अपनाया था। आर्य समाज इस स्थिति को सहन नहीं कर सकता। हम यह भी जानते हैं कि पंजाब में सनातन धर्मी और जैनी भी संस्कृत से उतना ही प्रेम करते हैं जितना कि हम करते हैं। संस्कृत समाप्त हो जाए तो उनके धार्मिक ग्रन्थ भी कोई नहीं पढ़ेगा। इस सारी गम्भीर स्थिति पर विचार करने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से शीघ्र ही एक संस्कृत सम्मेलन बुलाया जा रहा है जिस में वह सब व्यक्ति सम्मिलित होंगे जिन्हें संस्कृत की प्रगति में रुचि है। सभा का कार्यालय उन सब महानुभावों की एक सूचि बना रहा है जो संस्कृत पाठशालाओं में संस्कृत पढ़ा रहे हैं, आर्य समाजों के अधिकारी महानुभावों से मेरी यह प्रार्थना है कि उनके अपने-अपने क्षेत्र में जो भी संस्कृत के विद्वान रहते हों और जहां जहां संस्कृत की पाठशालाएं हों। उन सब के नाम और पते हमें भेजें ताकि हम उन सब को भी इस संस्कृत सम्मेलन में निमन्त्रित कर सकें।

इस सम्बन्ध में कुछ व्यक्तियों से पत्र व्यवहार किया जा रहा है यदि कुछ और भी सुझाव भेज दिए जाएं तो हम उनका भी स्वागत करेंगे।

—वीरेन्द्र

# गुरुकुल-शिक्षा-प्रणाली की देश-व्यापिकता

ले.—श्री सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार दिल्ली

(गतांक से आगे)

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के जिन मूल सिद्धान्तों का हमने पिछले लेख में उल्लेख किया, उनके विषय में पूछा जा सकता है कि आज के परिवेश में क्या वे व्यवहारिक हैं, या सिर्फ कपोलकल्पी हैं उन्हें क्रियान्वित नहीं किया जा सकता। आज का गुरु उन आदर्शों पर चलने के लिए तैयार नहीं है जो हमारे कथनानुसार गुरुकुल शिक्षा पद्धति में अन्तर्निहित हैं वह प्राचीन गुरुओं का सा तपस्यामय जीवन बिताना नहीं चाहता है। वह कहता है कि उसे तप नहीं करना दूसरों की तरह आराम की जिन्दगी बितानी है। उसे आराम का मकान चाहिए गर्मियों में एयर कण्डीशनर चाहिए सर्दियों में गीजर तथा हीटर चाहिए, आमोद-प्रमोद के लिए रेडियो तथा टेलीविजन चाहिए। इस सबके लिए उसका वेतन दिनों दिन बढ़ना चाहिए। जहां तक शिष्यों का सम्बन्ध है वे गुरु को न पिता समान समझते हैं न पिता का-सा उसे आदर दे सकते हैं। उनके लिए गुरु एक वेतन भोगी सेवक है जो वेतन पाने के लिए नौकरी करता है। प्राचीन काल की तरह वह अपने गुरु को गुरु मानकर वह सम्मान देने के लिए तैयार नहीं जो प्राचीन काल के शिष्य गुरुकुलों में रहते हुए अपने गुरुओं को दिया करते थे। जहां तक शिक्षा संस्था में कुल की भावना को अनुभव करने का सम्बन्ध है गुरु भी शिष्य भी, उसे एक टीचिंग शॉप ही समझते हैं और कुछ नहीं। वास्तव में हो भी यही रहा है। जितना बड़ा विद्यालय उतनी बड़ी फीस, पब्लिक स्कूलों में पढ़ाया तो वही जाता है जो अन्य साधारण स्कूलों में पढ़ाया जाता है, परन्तु पब्लिक स्कूल के नाम से उनमें फीस सैंकड़ो गुणा ज्यादा ली जाती है। पब्लिक स्कूल—यह एक चालू सिक्का हो गया है न इसमें पब्लिकपना रहा, न स्कूलपना रहा पब्लिक स्कूल यह नाम रख लिया ताकि दुगोड़ी-चुगुनी फीस वसूल की जा सके या बच्चों को अंग्रेजी रहन-सहन सिखा दिया जा सके।

जब देश में ऐसी स्थिति हो, तब गुरुकुल के उन आदर्शों को माना जिनका हमने पिछले लेख में उल्लेख किया है कहां तक समयानुकूल तथा व्यवहारिक है। हम यह मान कर चलते हैं कि वर्तमान परिस्थिति में ये सिद्धान्त सिद्धान्त बनकर रह जाएंगे इनको व्यापक रूप देना सम्भव नहीं है। इसका क्या अर्थ है? इसका यह अर्थ है कि हर स्कूल को हर कालेज को हर यूनीवर्सिटी को इन आदर्शों पर नहीं चलाया जा सकता, इसलिए नहीं चलाया जा सकता क्योंकि इन आदर्शों से ओत प्रोत इनमें रंगे हुए अध्यापक मिलने सम्भव नहीं हैं। अध्यापक तो वैसे ही मिलेंगे जैसे मिल रहे हैं। आजीविका के लिए अध्यापन कार्य करने वाले, बच्चों का जीवन बनाने के लिए तप-त्याग और तपस्या करने वाले नहीं। परिणाम यह होगा जो हो रहा है। मानव समाज में उस प्रकार के व्यक्तियों का प्रवेश नहीं हो रहा जिनमें मानवता के गुण हों जो सम्पूर्ण समाज को मानवीयता के गुणों से भर दें। मानव समाज वैसा ही बन सकता है जैसा शिक्षा जगत् उसे बनाएगा। अगर शिक्षा जगत् में आदर्शहीनता है तो मानव जगत् में आदर्श प्रियता कैसे हो सकती है।

परन्तु क्या इस चक्र को बदला नहीं जा सकता? क्या समाज में कुछ ऐसे इने-गिने भी व्यक्ति नहीं मिल सकते जो शिक्षा के उन सिद्धान्तों को क्रियात्मक रूप देना अपने जीवन का लक्ष्य समझें जिन सिद्धान्तों का हमने गुरुकुल नाम से उल्लेख किया है। संसार में भौतिकवादी भी हुए हैं, अध्यात्मवादी या आदर्शवादी भी हुए हैं यद्यपि भौतिकवादी ज्यादा तथा आदर्शवादी कम या इने गिने हुए हैं। विश्व में जितनी प्रगतिशील या आदर्शवादी विचार धाराएं उपजी हैं, आदर्शवाद के गंगोत्री के स्रोत से ही आगे बढ़कर गंगा का रूप धारण कर गई हैं। खद्दर क्या जरा सी बात है। महात्मा गांधी ने खद्दर को ही केन्द्र बनाकर देश की गरीबी दूर करने का आन्दोलन खड़ा कर दिया और सम्पूर्ण देश में खद्दर का आन्दोलन चल पड़ा जगह-जगह खद्दर भण्डार खुल गए और उन सबको एक सूत्र में बांधकर खद्दर तथा ग्रामोद्योग नाम की संस्था का जन्म हुआ। इस आन्दोलन में हजारों आदर्शवादियों ने जीवन खपा दिया और अब भी खपा रहे हैं। शिक्षा के क्षेत्र में कुछ इसी प्रकार का गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का आन्दोलन था।

शिक्षा किन्हीं आदर्शों को सामने रखकर दी जाती है। जब अंग्रेज लोग चाहते थे कि एक ऐसा वर्ग उत्पन्न हो जिसके द्वारा राज्य-काज में अंग्रेजों तथा जनता के बीच सम्पर्क स्थापित हो सके और शासन करने में सुविधा हो, तो मैकाले शिक्षा प्रणाली का सूत्रपात हुआ जिसका श्रेय मैकाले को है। मैकाले ने जिस शिक्षा प्रणाली का इस देश में प्रचलन किया उससे अंग्रेजों के पैर इस भूमि में जम गए, क्योंकि अंग्रेजी पढ़ लिखे को ही नौकरी मिल सकती थी अंग्रेजी शिक्षा से एक लाभ भी हुआ। अंग्रेजी के शिक्षित व्यक्तियों का आंग्ल-साहित्य के द्वारा पाश्चात्य जगत् के स्वतन्त्रता सम्बन्धी विचारों से सम्पर्क स्थापित हो गया, और अंग्रेजों के पांव जमने के साथ-साथ पाश्चात्य साहित्य के अध्ययन से उनके पांव उखाड़ने के आन्दोलन का भी सूत्रपात हो गया। शिक्षित व्यक्तियों में स्वतन्त्रता प्राप्ति की लालसा जग उठी। इस युग में अनेक आन्दोलनों का जन्म हुआ जिनमें से शिक्षा के क्षेत्र में जिस आन्दोलन ने जन्म लिया वह गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का आन्दोलन था। अंग्रेजों के सामने शिक्षा का उद्देश्य था अंग्रेजी जानने वाले बाबुओं की भर्ती जिससे अंग्रेजी शासन की नींव दृढ़ हो जाए और और शिक्षित जनता अपनी संस्कृति, अपने आदर्श संक्षेप में, अपनेपन को भूल जाए गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का आदर्श था कि ऐसे व्यक्ति तैयार किए किए जाएं जो प्राचीन वैदिक संस्कृति से ओत-प्रोत हों, भारतीय संस्कारों तथा आदर्शों को जीवन में घटाकर देश की स्वतन्त्रता के लिए अपने को सिपाही बना सकें। इस समय गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का जो आन्दोलन उठा वह देश के कोने-कोने में फैल गया। लक्ष्य यह था कि हमने अंग्रेजों के लिए नौकर नहीं पैदा करना, हमने ऐसा व्यक्ति पैदा करना है जो भारतीय आदर्शों को जीवन में उतार कर यहां की संस्कृति की और अन्ततोगत्वा भारत की स्वतन्त्रता की रक्षा कर सकें। इस शिक्षा प्रणाली के संचालकों ने यह समझ लिया था कि जिस प्रकार की बचपन में शिक्षा दी जाएगी उसी प्रकार के देश में नागरिक उत्पन्न होंगे।

इस प्रणाली का बीज महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश से था। परन्तु इसे मूर्त रूप दिया महात्मा मुन्शीराम जी ने। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का केन्द्र हरिद्वार के समीप रखा गया। जिस समय हरिद्वार के समीप कांगड़ी ग्राम में गुरुकुल की स्थापना हुई उस समय देश परतन्त्र था। और परतन्त्रता के युग की प्रतिक्रिया का रूप ही शिक्षा के क्षेत्र में गुरुकुल था। यद्यपि जिन सिद्धान्तों का उल्लेख हम पहले लेख में कर चुके हैं वे सिद्धान्त गुरुकुल के इतिहास में [illegible] रखे गये थे, इसलिये उन सिद्धान्तों के साथ-साथ परतन्त्रता के सूचक उन चिन्हों को मिटा देना भी इस संस्था का उद्देश्य था। [illegible] की जगह धोती और [illegible], गणित, ज्यामिति, ज्योतिषी आदि विषयों को अंग्रेजी के स्थान में हिन्दी में पढ़ाया जाने लगा, इन विषयों पर हिन्दी में ही पुस्तकें प्रकाशित की गईं। विद्यार्थियों को पुस्तकालयों, वीरगाथाओं आदि [illegible] गया। विद्यार्थियों की दिनचर्या ऐसी रखी गई जैसी सैनिकों की होती है। प्रातःकाल चार बजे उठ जाना, सन्ध्या-उपासना के बाद भिन्न-भिन्न प्रकार के योगासन करना, दण्ड-बैठक-व्यायाम-कुश्ती करना जिससे शरीर पुष्ट हो, सर्दी-गर्मी सहना जूता धारण न करना आदि दिनचर्या ऐसी रखी गई जिसे देखकर बरबस कोई कह देता था कि यहां तो सैनिक तैयार किए जाते हैं। एक दिन उत्तर प्रदेश के गृह सैक्रेटरी गुरुकुल पधारे। मैं उन्हें छोटे बच्चों के आश्रम में ले गया। वहां दैनिक दिनचर्या का बोर्ड टंगा था। उसमें प्रातः 4 बजे से रात्रि 8 बजे तक का सारा प्रोग्राम लिखा हुआ था। पन्द्रह मिनट तक वे उस प्रोग्राम को पढ़ते रहे बाद में बोले, आप जेल जीवन के लिए बच्चों को तैयार कर रहे हैं। सरकारी क्षेत्रों में प्रसिद्ध था कि गुरुकुल कांगड़ी में क्रान्ति के सैनिक तैयार किए जाते हैं। इसी किंवदन्ती को सुनकर लार्ड चैम्सफोर्ड, लार्ड चैम्सफोर्ड तथा [illegible] के प्रधानमन्त्री रैम्जे-मैक्डोनाल्ड गुरुकुल देखने के लिए आए थे। वे लोग चाहते थे कि गुरुकुल सरकारी मदद ले ले ताकि क्रान्तिकारियों का अड्डा गुरुकुल से उखाड़ दिया जाए। महात्मा मुन्शीराम जी ने सरकार के हाथों बिक जाना अस्वीकार कर दिया। ऐसा था गुरुकुल, और ऐसी थी गुरुकुल शिक्षा-पद्धति स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद देश का रूप-रंग बदल गया, स्वतन्त्रता प्राप्ति के रूप में देशवासियों का उद्देश्य बदल गया, उसके अनुकूल गुरुकुल शिक्षा पद्धति का सरकार से किसी प्रकार की सहायता न लेने की नीति भी बदल गई। सरकार अपनी भी सरकार चाहती थी कि गुरुकुल शिक्षा पद्धति के मूल सिद्धान्त बने रहें और उन्हें सफलता प्राप्ति के लिए गुरुकुल पद्धति के संचालकों के हाथ दृढ़ किए जाएं। दुःख की बात यह है कि सरकार ने जिस उद्देश्य से इसे आर्थिक सहायता देना शुरू किया उस उद्देश्य को क्रियात्मक रूप देने में हम सफल नहीं हुए। हम सफल नहीं हुए—इसका यह कारण नहीं था कि इसने सरकारी सहायता प्राप्त करना शुरू किया—हम इस कारण सफल नहीं हुए क्योंकि हम ही पैदाइश के कारण यह हुए। (क्रमशः)

# आर्य मर्यादा में छपे श्री योगेन्द्रपालजी सेठ के लेख १८ नवम्बर ८४ के उत्तर में महर्षि दयानन्द की फिल्म का विरोध किस लिए ?

ले.—श्री स्वामी सच्चिदानन्द जी सरस्वती अमृतसरी

*

श्री योगेन्द्रपाल सेठ ने अपने लेख में यह सिद्ध करने का यत्न किया है कि आर्य समाज या वैदिक धर्म के प्रचार के लिए नए-नए ढंग अपनाने चाहिए जिनमें एक फिल्म भी है। इस कारण इसका विरोध नहीं होना चाहिए, कुछ प्रमाण अर्थात् उदाहरण भी आपने दिए हैं।

यह उनका लेख 16 सितम्बर 1984 को आर्य मर्यादा में—'महर्षि दयानन्द फिल्म निर्माण विरोधी अभियान समिति' की ओर से आर्य मर्यादा में छपे लेख के उत्तर में है।

श्री सेठ जी ने लिखा है तथा—'नानक नाम जहाज है' का प्रमाण दिया है और कुछ मुसलमानों के भी उदाहरण दिए हैं कि टी वी पर अथवा फिल्म में वह अपने धर्म का प्रचार करते हैं।

क्या सेठ जी बता सकते हैं कि सिखो ने या मुसलमानो ने कभी कहीं किसी स्थान पर गुरु नानक या किसी गुरु का या मुसलमानो ने किसी पीर पैगम्बर का स्वांग बनाया है ऐसा कोई उदाहरण नहीं है, मुसलमान तो हजरत मुहम्मद की तस्वीर भी नहीं बनाते।

बहुत पुरानी बात है एक फिल्म में एक सिख की नकल बनी थी सिखों ने धरना [illegible] लेकर आ गए और जब तक फिल्म में वह भाग काटा नहीं गया फिल्म चलने ही न दी गई थी।

क्या हम भी अपने गुरु महर्षि स्वामी दयानन्द जी का इतना मान कर सकते हैं कि उनका स्वांग न बनने दें, हाँ, हम बनने का समर्थन कर रहे। यह अच्छी बात नहीं है।

आप सभी इसके समर्थक हैं अच्छी प्रकार समझ लें कि यह कोई सिद्धान्त का [illegible] नहीं है।

यदि हमारा [illegible] महापुरुषों के स्वांग बनाना होता तो हम रामलीला रासलीला आदि का खण्डन क्यों करते। महर्षि दयानन्द जी ने भी अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में स्वांग बनाने का खण्डन किया है—आप लिखते हैं—

रामलीला और रास मण्डल से रासलीला करवाते हैं। सीताराम और राधा कृष्ण नाच रहे हैं। राजा और महन्त आदि उनके सेवक आनन्द में बैठे हैं। सीताराम आदि नाच रहे हैं और पुजारी व महन्त की आज्ञा अर्थात् वहाँ पर उनकी सवारी बनाए बैठे हैं—और रास मण्डल और रामलीला के अन्त में सीता राम व राधा-कृष्ण से भीख मंगवाते हैं।—इत्यादि बातो को आप लोग विचार लीजिए कि कितने बड़े शोक की बात है भला कहो तो—सीता-रामादि ऐसे दरिद्र और भिक्षुक थे ? यह उनका उपहास, निन्दा नहीं तो और क्या है ? इस से अपने महापुरुषों की बड़ी निन्दा होती है।

महर्षि दयानन्द जी के इन शब्दों से सिद्ध होता है कि वह महापुरुषों का स्वांग बनाने के घोर विरोधी थे। इसलिए हमारा भी साधु समाज बल्कि आर्य सिद्धान्तों को जानने, मानने तथा समझने वालों की ओर से विरोध है कि महर्षि स्वामी दयानन्द जी का स्वांग कदापि नहीं बनाना चाहिए और फिर इससे आर्य समाज का प्रचार कैसे हो सकेगा। हाँ, महर्षि दयानन्द का उपहास तो अवश्य होगा और इसका एक घोर दुष्परिणाम भी निकलेगा, वह यह कि आज तक स्वामी दयानन्द की फिल्म नहीं बनी। 1975 में जो बनी थी वह भी उपहास ही था। परन्तु अब कुछ ऐसे आदमी निकल आयेंगे जो स्वामी जी को बदनाम करने वाली उल्ट-पुल्ट फिल्म बना देंगे। आप उसे रोक न सकेंगे। क्योंकि आपने फिल्म बनाकर उदाहरण पेश कर दिया—जैसे वेद विरुद्ध लेख 'सरिता' में कई निकल रहे हैं क्या किसी ने उसे रोका या उसका उत्तर दिया यदि दिया भी तो वह उन तक नहीं पहुंचा जहा तक 'सरिता' का पत्र पहुंचता है। जिस प्रकार श्री कृष्ण को कई फिल्मों में दिखाया जा रहा है। इसलिए दयानन्द फिल्म का विरोध उचित है। राजा कर्णसिंह की घटना तो मशहूर है, स्वामी दयानन्द उसकी राम-लीला-रासलीला देखने नहीं जाते थे। उसने तलवार का वार किया। तलवार तोड़ दी। परन्तु रामलीला देखने नहीं गए।

जो आर्य समाज या वैदिक धर्म के प्रचार की बात स्वामी दयानन्द की फिल्म से कही जाती है वह न ठीक है और यदि बने भी तो कौन देखेगा कितनी देर देखेगा। फिल्में तो कई-कई सप्ताह नहीं महीने चलती हैं। 1975 में दयानन्द की फिल्म बनी थी, अच्छी भी नहीं थी और कभी भी नहीं चली।

फिल्म द्वारा प्रचार चाहते हैं तो मैं बताता हूं, मैंने 50 वर्ष मैजिक लालटेन से प्रचार किया है अब सन्यास लेने पर उसे छोड़ा है। मैजिक लालटेन कोई सिनेमा नहीं, परन्तु उसे देखने वहा लोग (साधारण) और बच्चे आ जाते थे। मेरी इच्छा थी कि फिल्म बनाई जाए। परन्तु ऐसा नहीं जो आप समझ रहे हैं। चूंकि न तो मेरे पास रुपया था न साधन और आज तक मांगा मैंने किसी से है नहीं। इस कारण मैं सफल नहीं हो सका, यदि आप लोग फिल्म के शौकीन बनना चाहें तो आर्य समाज के सिद्धान्तों पर जोकि मनुष्य मात्र के लिए हैं बनावें।

वह इस प्रकार जैसे सरकार के (पब्लिक रिलेशन डिपार्टमैंट) वालो ने नैतिक शिक्षा की बना रखी है। रेल पर टिकट कैसे लेना, सड़क पर केले का छिल्का फैंकना गिराना आदि-आदि। वह केवल 15 से 30 मिनट की होती है। बार इस मे माता-पिता की सेवा करने वाला व हवन-यज्ञ के लाभ व न करने की हानियां इसमें हवन करने का ढंग आदि। यज्ञ बहुत सुन्दर ढंग से हो रहा हो। आचमन, अंग स्पर्श क्यों ? तीन समिधाए क्यो आदि-आदि।

निराकार, साकार, उपासना एक ओर सन्ध्या, स्वाध्याय, दूसरी ओर कीर्तन जगराते आदि। असली तीर्थ-नकली तीर्थ, सत्संग-कुसंग।

भक्ष्य-अभक्ष्य पदार्थ खाना नही खाना इसमे शराब, सिगरेट, मांस सभी आ सकते हैं।

सत्यार्थ प्रकाश के दूसरे तथा चौथे समुल्लास पर एक-एक घण्टे की दो फिल्में बन सकती हैं। यदि बनें तो आरम्भ में आर्य समाज का नाम वैदिक धर्म का नाम आयेगा।

यह 30 मिनट वाली तो हर सिनेमा मे शुरू होने से पहले दिखाई जावे इससे बड़ी यदि बनाई जावे तो एक उपदेशक प्रोजैक्टर लेकर समाज से बाहर नगर ग्राम में उत्सव पर सत्कार पर ले जावे, रात्रि को दिखावे।

एक बार बनने पर खर्च होगा फिर इस फिल्म से समाजो मे बाहर प्रचार होगा, रुपया आयेगा यह घाटे का सौदा नहीं है। यदि कर सकते हो तो ऐसा करो महर्षि दयानन्द का अपमान न करो,

मुझे फिल्म बनाने वालों से यह पूछना है कि क्या सिखो या अन्य मत वालो ने फिल्म बनाकर धर्म का प्रचार किया है या नहीं ? उनके प्रचार का ढंग आप से बिल्कुल भिन्न है, आप तो अर्थात् आर्य समाज सोया पड़ा है। सुनिए। सिखों का प्रचार गुरुवाणी रेडियो पर प्रात डेढ़ घण्टा, शाम 5 बजे आधा घण्टा एक घण्टा और इसके अतिरिक्त भी दिन में अधिक उनके ही गीत शब्द होते हैं। प्रात काल घर-घर में जपजी सुखमनी का पाठ होता है। उनके बच्चे भी गुरु-वाणी का पाठ करना जानते हैं। आप इसके मुकाबले में बताईए वेद तो दूर की बात सत्यार्थ प्रकाश घर में पढ़ा जाता है, मन्दिर में हररोज पाठ होता है सन्ध्या हवन घर में मेरे बच्चे प्रतिदिन करते हैं। रेडियो पर आपका कोई कार्य-क्रम होता है। दीवाली शिवरात्री को आपको 10 मिनट मिल जाते हैं इसके मुकाबले मे दूसरों के पर्व पर सारा दिन उनकी कथा वारता गीत गाए जाते हैं। मुसलमानो को एक पृथक् खास इंडिया रेडियो का शक्तिशाली रेडियो स्टेशन दिया है। जो उर्दू सर्विस के नाम से चलता है। उससे कभी न जयहिन्द न वन्देमातरम् कभी नहीं कहा जाता यह आकाशवाणी भी नहीं कहते। आल इण्डिया रेडियो की उर्दू सर्विस है' कहते हैं कव्वाली कवालियो द्वारा अपना सारा प्रचार कार्य करते हैं।

ईसाईयो को भी वैसे गुजरात, कश्मीर कर्नाटक मे एक घण्टा प्रति दिन मिलता है जो उस भाषा मे तथा हिन्दी में प्रचार करते हैं।

सनातन धर्म के भी कृष्ण, मीरा, सूरदास आदि तथा देवी की भेंट बड़े जोर-शोर से सुनाई जाती है।

मेरा प्रश्न है आपने अर्थात् आर्यसमाज ने इस प्रकार के प्रचार कार्य को क्यों नहीं अपनाया।

रविदास का, वाल्मीकि का, गुरुओं का पर्व, मुसलमानो का कोई उत्सव आ जाए सारा दिन रेडियो तथा टी. वी. पर प्रोग्राम प्रचार का चलता रहता है।

आप लोगो को फिल्म सूझती है यही खर्च ऐसे कामो पर करिए। जब तक इस प्रकार का आप कार्य नहीं कर पाते तब तक वैदिक धर्म के प्रचार के लिए घरो मे सप्ताह में एक बार अवश्य पारिवारिक सत्संग करिये उसमें ध्यान यह रखिए कि घर के सभी छोटे बड़े सदस्य यज्ञ में बैठें। इस का लाभ यह होगा कि बड़े लोग तो जो बनना था बन चुके, हमारी सन्तान में भी श्रद्धा पैदा होगी। लिखने को तो बहुत कुछ है परन्तु लेख लम्बा हो रहा है इसलिए यही समाप्त करके आप फिल्म के चाहने वालों से प्रार्थना करूंगा कि वह आर्य समाज के सिद्धान्त को समझने के लिए सत्यार्थ प्रकाश का स्वाध्याय करें।

## भारतीय संस्कृति का उपेक्षित प्रसंग—

# यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं

ले.—श्री धर्मवीर जी विद्यालंकार 5 अशोकनगर पीलीभीत

यज्ञोपवीत परम पवित्र वस्तु है। पर आप धारण नहीं कर रहे। इसे धारण करने में लज्जा अनुभव करते हैं। अन्य लोग जब इसे आपके कन्धे पर देखते हैं, तो आपका उपहास करते हैं। उपहास का पात्र बनने से अच्छा है कि इसे धारण ही न किया जाए, ऐसा आपने सोचा। शायद इसी कारण विवाह से दो दिन पूर्व ही यज्ञोपवीत संस्कार करने की प्रथा चल पड़ी है। फिर विवाह के बाद इसकी आवश्यकता नहीं समझी जाती। अतः आप इसे स्वयं ही अलग कर देते हैं। अगर आपको ज्ञात होता कि यह परम पवित्र वस्तु है तो आप इसके प्रति ऐसी उपेक्षा न करते। भारत का पुराना इतिहास कोई बताता नहीं, कब इस यज्ञोपवीत को न उतारने के कारण भारत के बालक तक शहीद हो गए। वीर बालक हकीकतराय, गुरु गोविन्दसिंह के दो सुपुत्र जोरावरसिंह और फतहसिंह के बलिदान की कहानी, यज्ञोपवीत की रक्षा की कहानी है।

जब आपका नन्हा-सा बालक विद्यालय जाने योग्य शरीर और बुद्धि प्राप्त कर लेता है तो आप अत्यन्त प्रसन्नता और उत्साह से उसे विद्यालय मे प्रविष्ट कराते हैं। आज से 100 वर्ष पूर्व तक विद्यालय प्रवेश के समय 'वेदारम्भ संस्कार' किया जाता था। उससे पूर्व उसी दिन अथवा दो एक दिन पूर्व 'उपनिषन-(यज्ञोपवीत) संस्कार होता था। उपनयन संस्कार मे यज्ञोपवीत ही धारण कराया जाता है। यज्ञ करने का अधिकार उस व्यक्ति को होता है जिसने यज्ञोपवीत धारण किया हो। विद्याध्ययन भी एक यज्ञ है। अत वेदारम्भ संस्कार से पूर्व ही उपनयन संस्कार का विधान है। ये समस्त कार्य यज्ञ हैं जिनमे निम्न तीन उपकर्म होते हैं—

1 देव पूजा 2 संगतिकरण और दान।

मनुष्य को प्रतिदिन पांच यज्ञ करने आवश्यक है। ये हैं—1 ब्रह्म यज्ञ-अर्थात ईश्वर की उपासना। इसके लिए उपयुक्त समय प्रात और सांय की दोनो सन्धि वेलाएं हैं। 2 देवयज्ञ—अर्थात अग्निहोत्र वेद मन्त्रों द्वारा अग्नि में घृत और शाकल्य की आहुति, भौतिक देवताओ के निमित्त दी जाती है। 3 पितृ यज्ञ—जीवित माता पिता, गुरु आदि आदरणीय पुरुषों की समुचित सेवा-सत्कार का विधान है। 4 बलिवैश्वदेव यज्ञ—अर्थात् रोगी, दुःखी आदि गरीब मनुष्यो, पशु, पक्षी, कीट आदि को प्रतिदिन अन्नदान करना। 5 अतिथि यज्ञ—समय-असमय गृहस्थ के द्वार पर आने वाले का यथोचित सत्कार करना। धार्मिक, शान्त, सत्योपदेशक, परोपकारी, पक्षपात रहित विद्वानो की अन्नादि से सेवा करना।

ये यज्ञ न तो कठिन हैं, न अधिक समय, न अधिक श्रम, न ही आडम्बर चाहते हैं। प्रतिदिन करने आवश्यक हैं, महत्वपूर्ण हैं इस कारण 'महायज्ञ कहाते हैं। इन दैनिक पांच महायज्ञो को करने का हमने व्रत लिया है इस तथ्य का सूचक यह यज्ञोपवीत है।

मनुष्य का स्वभाव है कि वह ऋण लेकर भूल जाता है। विशेषत उस ऋण को जिसे वापिस कोई न मांगे। इस ऋण को उतारना परम आवश्यक कर्तव्य हो जाता है। ऐसा ऋण न उतारा जाए तो बहुत भारी हो जाता है। उन ऋणो को हम स्मरण रखें भूलने न पावें, इस प्रयत्न हेतु यह यज्ञोपवीत धारण किया जाता है।

हमारे इस शरीर के निर्माण पूर्णत एवं पुष्टि के लिए माता ने सतर्कता पूर्वक महान तप और श्रम किया है। जन्म के उपरान्त भी प्रारम्भिक मासो मे अपने स्तन्य रूपी दूध एवं पवित्र भोजन से इसे पुष्ट किया है। जब तक यह शरीर विद्यमान है। परम पूज्या श्रद्धास्पदा माता की सतत भरपूर सेवा, श्रद्धा और तप से करना हमारा सब प्रथम कर्तव्य है। इस प्रथम ऋण से मुक्त होने का प्रयत्न हम कभी न भूलें। जवानी के अन्ध जोश और आवेश मे हम अपनी वृद्धा माता के प्रति अनुचित व्यवहार कर बैठते हैं। उस समय यह यज्ञोपवीत हमे अपने कर्तव्य का स्मरण कराते हुए पथ भ्रष्ट होने से बचाता है। यह यज्ञोपवीत हमारे कर्तव्य का स्मरण हमे तभी करा पाएगा, जब धारण किया होगा।

इसी प्रकार पिता ने शैशवावस्था से हमारा पालन-पोषण रक्षण निर्देशन-शिक्षण किया है। हमारे भविष्य निर्माण के प्रति सतत जागरूक रहकर तप किया है। अपने सुख-सुविधा की चिन्ता त्याग, हमारे सुख-सुविधा सम्पूर्ण है व्यय एवं व्यस्त रहे हैं। सन्तान के उत्तम नागरिक बन जाने की चिन्ता में [illegible] है। [illegible] शारीरिक, मानसिक एवं बौद्धिक सामर्थ्य से हम [illegible], [illegible] और कुशाग्र बुद्धि अर्जित कर [illegible] सम्पन्न [illegible]। [illegible] ही हम अपने शरीर में प्रवाहित हो रहे रक्त का श्रेय अपने पिता को स्मरण कर, घोषणा कर [illegible]। [illegible] का अवसर आने पर दूसरों को ललकारते हैं, तू नहीं जानता कि मेरी धमनियों में किस पिता का रक्त प्रवाहित हो रहा है, ऐसे श्रद्धेय पिता को सदा सत्कृत करते रहें, भूल से भी अपमानित न करें यह हमारा परम कर्तव्य है। पिता के वार्धक्य में उनकी शारीरिक निर्बलता एवं अस्वस्थता के कारण अथवा उनके चिड़-चिड़े स्वभाव के कारण अथवा उनके लगातार (हमारी दृष्टि मे अनावश्यक) उपदेशो से विचलित हो जाने पर हम उनका यथायोग्य सत्कार नही कर पाते। यही यज्ञोपवीत उस समय हमारे कर्तव्य का स्मरण कराता है। हम पथ-भ्रष्ट होने से बच जाते हैं। मनुष्य मात्र पर यह महान् ऋण तब तक है जब तक यह शरीर सक्रिय है। हम श्रद्धेय पिता के प्रति ऋण से मुक्त होने का प्रयास करते रहें।

जीवन मे आने वाली समस्त बाधाओ पर विजय पाने का, सफलताओ और उन्नतियों का श्रेय हम अपने बुद्धि चातुर्य को देते हैं। यह बुद्धि चातुर्य माता-पिता द्वारा प्रदत्त शिक्षा के उपरान्त आचार्य से मिला है। आचार्य सत्य विद्याओ का उपदेष्टा होने के साथ-साथ धर्मात्मा, जितेन्द्रिय, परोपकारी भी होता है। आचार्य के समीप निवास कर उनकी शिक्षाओ के अनुसार हमने अपना जीवन ढाला है। आचार्य ने मिथ्या एवं सत्य दोनों का आदेश कर विवेक उत्पन्न किया है। ताकि हम किसी के भ्रम जाल मे न फंस सकें। तेजस्वी, ओजस्वी पराक्रमी धैर्यशाली, विद्वान् हम आचार्य की कृपा से बन सुख समृद्धि सम्पन्न हुए हैं आचार्य का भी मनुष्य मात्र पर महान ऋण है। इन पुरुषो की श्रेष्ठता और श्रेष्ठतम श्रेणियो में गौतम, कणाद, पातञ्जलि, व्यास वाल्मीकि आदि वेद मन्त्रों का दर्शन करने वाले समस्त ऋषि भी सम्मिलित हैं। उनके द्वारा रचित ग्रन्थों मे संग्रहीत अपार विद्या से भी हम उपकृत हाते हैं। इनका ऋण ऋषि ऋण कहलाता है। [illegible] ऋषि ऋण [illegible] किये। यह यज्ञोपवीत हमें इंगित करता है।

भौतिक देवों—अग्नि, जल, वायु, [illegible], [illegible] आदि के द्वारा उपकार प्रति क्षण हमारे प्रति हो रहा है। [illegible] [illegible] होते हुए हमें दूषित भी कर रहे हैं। इनके ऋण से मुक्त होने के लिए दैनिक 'देवयज्ञ' अर्थात् अग्निहोत्र करना भी हमारा कर्तव्य है। इस ऋण को देव ऋण कहते हैं।

इन समस्त प्रकार के ऋणों को तीन ऋणों में समाहित किया गया है। वे हैं—1 पितृ ऋण, 2 देव ऋण, और 3 ऋषि ऋण। इन ऋणो से मुक्त होने हेतु ही पांच महायज्ञों का विधान है। पितृ, देव और ऋषि अपना ऋण वसूलने कभी नही आते। हमें स्वयं ही इससे मुक्त होने की चिन्ता करनी है। यज्ञोपवीत के तीन सूत्र, तीन ऋणों के प्रतीक हैं। इन ऋणों से मुक्त होने के लिए सदा प्रोत्साहित करने वाला यह यज्ञोपवीत आयुष्य, बल, तेज को बढ़ाने वाला परम पवित्र है। प्रमाण है—

> यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं,
> प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्।
> आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं,
> यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।

सेना की, पुलिस की विद्यालय के छात्रो की विशिष्ट वेश-भूषा होती है। जिसके द्वारा वे पहचाने जाते हैं। यज्ञोपवीत धारण करने वाला भी पहचान लिया जाता है कि यह व्यक्ति तीनों ऋणों से मुक्त होने के लिए संकल्पशील है। अर्थात् शुद्ध भारतीय है। भारतीय संस्कृति के प्रति श्रद्धावान् है। भारतीय संस्कृति का आदर करना लज्जा की बात नहीं है। अपितु गौरव की बात है। अत आप यज्ञोपवीत अवश्य धारण करें। अगर आपने अभी तक धारण नहीं किया तो शीघ्र ही विधिवत् धारण कर लें। आपके जीवन का हर क्षण उत्साहित, आनन्दित सफल काम और आनन्दमय बनेगा।

—

## यजुर्वेद का उर्दू अनुवाद सराहनीय कार्य है

मैंने माननीय श्री प आशुराम जी के द्वारा प्रकाशित यजुर्वेद के उर्दू अनुवाद को पढ़ा तो गद्-गद् प्रसन्न हुआ। बहुत बड़े परिश्रम पूर्वक यह कार्य सिद्ध किया जा रहा है। निश्चित है कि इससे उर्दू संसार को अपूर्व लाभ पहुंचेगा।

भारत-भर की उर्दू शिक्षित जनता इससे लाभान्वित होगी। इस जनता वेद को जानना चाह रही है। निश्चित उनकी प्यास के समाधानों यह उर्दू भाष्य अमृत का कार्य करेगा। ऐसा विश्वास है।

—[illegible]

# दक्षिण-पूर्वी एशिया की सांस्कृतिक तीर्थ यात्रा-2

ले.—श्री डा सत्यकेतु जी विद्यालकार

(गतांक से आगे)

लघु इन्डोनेशिया के समीप ही एक भव्य हिन्दू मन्दिर है इसमे सुदूर देश के हिन्दू किस ढंग से दैनिक प्रार्थना-उपासना करते हैं, इसे देखने का अवसर हमें इस मन्दिर में आकर प्राप्त हुआ। सायकाल का समय था। साठ से अधिक नर-नारी वहा उपस्थित थे। मन्दिर के प्रांगण में एक ऊचे चबूतरे पर सब बैठे हुए थे। हम भी एक ओर बैठ गए। प्रार्थना-उपासना प्रारम्भ हुई। ओ३म् भूर्भुव स्व के गायत्री मन्त्र के साथ सन्ध्या के मन्त्रो का उच्चारण प्रारम्भ हुआ। सब उपस्थित नर-नारियो ने समवेत स्वर मे वेद के मन्त्रों तथा पुराण महाभारत आदि के श्लोको से प्रार्थना-उपासना की। जकार्ता के हिन्दुओ की सन्ध्या के बाद हम सब ने महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा विहित विधि से सन्ध्या तथा प्रार्थना मन्त्रो का पाठ किया। कैसा अद्भुत दृश्य था। हम इन्डोनेशिया की भाषा नहीं समझते थे, और वहा के लोग हिन्दी से अनभिज्ञ थे पर हमें परस्पर जोड़ने वाली हम सब मे एकात्मता की भावना उत्पन्न करने वाली वेद शास्त्रो की वे धार्मिक और सांस्कृतिक परम्पराएं थीं, जिन्हे हमने समान रूप से विरासत मे प्राप्त किया था। ओम् के नाम गायत्री मन्त्र तथा वैदिक सूक्तो व महाभारत के श्लोको ने हमे इस ढंग से एक मजबूत सूत्र में बाध रखा था कि सैकडो वर्ष बीत जाने पर भी उसके सुदृढ बन्धन मे ढील नहीं आयी थी। श्री पृथ्वीराज इस अवसर पर हमारे साथ थे। वे भी अपने देश के हिन्दुओं के पूजा पाठ मे अन्य व्यक्तियो के समान ही भाग ले रहे थे। पार्लियामेंट के सदस्य होने के नाते उनमे अपने उच्च व श्रेष्ठ होने की भावना प्रादुर्भूत नहीं हुई थी। हमारे स्वागत में जकार्ता के हिन्दू मन्दिर में जलपान की भी व्यवस्था की गई थी। हमने अपने इन्डोनेशियन हिन्दू भाईयो के साथ बैठकर फल, मिष्ठान, चाय, दूध आदि ग्रहण किए। सब कोई यह अनुभव कर रहे थे, कि दो दूरवर्ती देशो के हिन्दू सैकड़ो वर्षों के पश्चात् आज फिर मिलकर एक साथ बैठे हैं। धर्म और संस्कृति की उनमें ऐसी एकात्मता है, जिसे न हजारों मीलो की दूरी विच्छिन्न कर सकी है और न सैकड़ो वर्षों का अन्तराल।

दो दिन जकार्ता का परिभ्रमण यूरोप, जापान आदि सब देशो से लाखो पर्यटक प्रति वर्ष लोग जकार्ता आते हैं। इन्डोनेशिया का एक अन्य द्वीप सुमात्रा है। जिसके शैलेन्द्र वशी राजा बौद्ध धर्म के अनुयायी थे इनकी राजधानी श्रीविजय थी, शैलेन्द्र राजा बड़े प्रतापी थे। अपनी शक्ति का विस्तार करते हुए आठवीं सदी मे उन्होने जावा को भी जीत लिया था। श्री विजय (सुमात्रा) के इन वैभव शाली बौद्ध सम्राटों ने ही जावा मे जकार्ता के समीप बोरोबदूर के महाचैत्य का निर्माण कराया था। यह महाचैत्य तो विशाल चबूतरो या चक्करो से मिलकर बना है जिनमे से प्रत्येक ऊपर का चक्कर अपने से नीचे वाले चक्कर की तुलना मे थोड़ा भीतर को ओर सिमटा हुआ है। नौ चक्करो या चबूतरो मे निचले छ समकोण चतुर्भुज के रूप मे हैं और ऊपर के शेष तीन चक्कर गोलाकार हैं। सबसे निचले चबूतरे या चक्कर की लम्बाई 400 फीट है, और सबसे ऊपर वाले की 90 फीट। महाचैत्य के चबूतरो की दीवारो पर रूपावलिया बनाई गई हैं जिनमे बुद्ध की जीवनी को प्रस्तरो पर उत्कीर्ण किया गया है। मूर्ति कला की दृष्टि से ये रूपावलिया अत्यन्त उत्कृष्ट हैं। इस प्रकार जो चित्रावलिया बोरोबदूर के महाचैत्य पर उत्कीर्ण हैं, उन्हे यदि एक साथ एक पंक्ति मे लगा दिया जाए, तो उनकी लम्बाई साढ़े तीन मील हो जाएगी। चित्रावलियो के बीच-बीच मे गवाक्ष बने है जिनमे से प्रत्येक मे ध्यानी बुद्धो की एक-एक मूर्ति प्रतिष्ठापित है। सारे महाचैत्य मे ऐसी 432 मूर्तिया हैं। हमारी मण्डली मे अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के चित्रकार श्री वेन्द्रे भी थे। वे इन मूर्तियो और रूपावलियो को देखकर इतने अभिभूत हो गए कि उन्हें न अपना ध्यान रहा और न समय का। वे एक-टक हो इस अदभुत महाचैत्य और उसकी उत्कृष्ट कला को देखते रह गए। (क्रमश)

(2 पृष्ठ का शेष)

मे विशिष्ट स्थान रखती है। इच्छाओ (आवश्यकताओ) का वर्गीकरण करते हुए जहा प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक मरे ने इन्हे बीस माना है वहा फ्रायड युग तथा एडलर काम लिप्सा (लिबिडो) तथा स्वाग्रह (सेल्फ असर्शन) को ही प्रमुख मानते हैं। भारतीय मनीषी तो पुत्रैषणा लोकैषणा तथा वित्तैषणा इन तीनो मे ही सभी आवश्यकताओं का समावेश कर देते हैं तथा साथ ही इनके उदात्तीकरण का मार्ग भी सुझाते हैं।

## भोपाल की गैस दुर्घटना में अनाथ हुए बच्चों की रक्षा

भोपाल गैस दुर्घटना मे हजारो व्यक्तियो की मृत्यु हो गई है और बहुत सारे बच्चे अनाथ हो गए हैं। इस दु खद स्थिति को देखते हुए आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग नई दिल्ली द्वारा सचालित फिरोजपुर आर्य अनाथालय 50 अनाथ बच्चो के भरण पोषण और शिक्षा का भार उठाने के लिए तैयार है। इस सम्बन्ध मे मध्य प्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री अर्जुनसिंह, प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी तथा भोपाल के अन्य स्थानीय अधिकारियो को तार द्वारा सूचित किया गया है। उक्त अधिकारियो की ओर से सूचना आने पर तुरन्त आवश्यक व्यवस्था कर दी जाएगी। भरण-पोषण और शिक्षा सब नि शुल्क होगा। आर्य अनाथालय महर्षि दयानन्द द्वारा 106 वर्ष पूर्व स्थापित किया गया था। इस समय अनाथालय मे 200 अनाथ बच्चो का उचित पालन-पोषण हो रहा है।

मेरी समस्त आर्य हिन्दू जनता से प्रार्थना है कि इस सम्बन्ध मे जो भी आर्थिक सहायता देना चाहे वे चैक-ड्राफ्ट अथवा मनीआर्डर द्वारा आर्य अनाथालय फिरोजपुर कैंट या आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग नई दिल्ली भेज सकते हैं।

—रामनाथ सहगल, मन्त्री
आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा,
मन्दिर मार्ग नई दिल्ली

## श्री दुर्गादास जी खन्ना का आकस्मिक निधन

आर्य समाज श्रद्धा नन्द बाजार (साबुन बाजार) लुधियाना मे साप्ताहिक सत्सग के पश्चात श्री दुर्गादास खन्ना जी के आकस्मिक निधन पर प्रधान डाक्टर रामस्वरूपजी ने एक शोक प्रस्ताव पेश किया और दिवगत खन्ना जी के प्रसग मे उनके जीवन पर प्रकाश डाला कि वह भारत के एक महान स्वतन्त्रता सेनानी और देशभक्त कर्मठ नेता थे। कई सदस्यों ने अपनी ओर से भावभीनी श्रद्धाजलिया अर्पित की। समाज के सभी सदस्यो ने दो मिनट खड़ होकर दिवगत आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना की और खन्ना परिवार के प्रति अपनी हार्दिक सम्वेदना प्रकट की।

—यशपाल बागिया मन्त्री

# हरियाणा प्रान्तीय आर्य वीर महासम्मेलन गुड़गांव सफलतापूर्वक सम्पन्न

आर्य वीर दल हरियाणा का आठवां प्रान्तीय महासम्मेलन 12 दिसम्बर को गुड़गांव में अभूतपूर्व सफलता के साथ सम्पन्न हो गया। इस सम्मेलन का उद्घाटन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री ओमप्रकाश जी त्यागी ने किया। नगर में लगभग एक हजार आर्य वीरों की रैली तथा भव्य शोभा यात्रा चिरस्मरणीय रहेगी।

आर्य वीर सम्मेलन का स्वागत भाषण श्री सत्यपाल जी आर्य गुड़गांव ने पढ़ा। उद्घाटन भाषण में माननीय त्यागी जी ने कहा कि आज राष्ट्र को चरित्रवान तथा धार्मिक युवकों की अत्यन्त आवश्यकता है। देश के उज्ज्वल भविष्य के लिए आर्य समाज आर्य वीर दल के महत्व को जानें। आर्य समाजों को 25 प्रतिशत बजट राशि आर्य वीर दल के निमित्त व्यय करनी चाहिए। तथा 25 प्रतिशत स्थान युवकों को देने चाहियें। आज भारत में सांस्कृतिक कार्यक्रम हो रहा है। इसे रोकना होगा। दहेज प्रथा छूतछात एवं जाति प्रथा को समाप्त करना होगा।

प्रो उत्तमचन्द शरर, संचालक, आर्य वीर दल हरियाणा ने कहा कि आर्य वीर दल का जन्म स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान के बाद हुआ था। रक्त सिंचित इस दल के अनुयायी अनुशासनप्रिय तथा देशभक्त बनें। आर्य वीर अपने क्षात्र बल से राष्ट्र की रक्षा करें।

माननीय प बाल दिवाकर जी हंस प्रधान सेनापति सार्वदेशिक आर्य वीर दल ने कहा कि ब्रह्म बल, क्षात्र बल, तथा सेवा बल का समन्वय ही आर्य वीर दल है। स्वतन्त्रता संग्राम आन्दोलन में आर्य वीरों का योगदान स्वर्णाक्षरों में लिखा हुआ है उन्हें आज की सामाजिक समस्याओं के निदान के लिए आगे आना चाहिए।

वेद सम्मेलन का संचालन स्वामी जीवानन्द जी सरस्वती ने किया। प शिवकुमार जी शास्त्री तथा प्रो राम विचार जी ने वेदों के महत्व पर प्रकाश डाला।

सम्मेलन का समापन राष्ट्र रक्षा सम्मेलन से हुआ, रामगोपालजी शालवाले प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि के ओजपूर्ण एवं प्रेरणादायक भाषण के साथ हुआ। उन्होंने सिखों को हिन्दुओं का अभिन्न अंग बताते हुए राष्ट्र की अखण्डता में विश्वास व्यक्त करते हुए उन्हें साम्प्रदायिक तत्वों तथा उग्रवादियों की देशद्रोही बातों से सावधान रहने की सलाह दी।

—सतीशकुमार आर्य महामन्त्री

# इन्दिरा गांधी 'स्मृति दिवस'

स्त्री आर्य समाज ऋषि कुल नक्का बाग जालन्धर की आर्य बहिनों ने स्वर्गीय श्रीमती इन्दिरा गांधी का 'स्मृति दिवस' मनाया। इसमें जिस तरीके से इन्दिरा गांधी की जोकि हिन्दू और सिख एकता में पूरा विश्वास रखती थी, कि निर्मम व नृशंस हत्या की गई, वह निन्दनीय है, उसने संसार को झकझोड़ कर रख दिया है। आर्य समाज हिंसा पर विश्वास नहीं करता, सभी बहिनों ने हिन्दू और सिख एकता पर बल दिया और ऐसे तत्वों को कि अखण्डता चाहते हैं उनसे सावधान रहने के लिए कहा गया। इन्दिरा गांधी की सेवाएं न सिर्फ भारत के लोग ही याद रखेंगे, विश्व में भी उन्हें याद किया जाएगा शान्ति पाठ के साथ सभा स्थगित कर दी गई।

—कमला आर्य प्रधाना

# महात्मा प्रेमप्रकाश द्वारा भटिण्डा में वेद प्रचार

श्री महात्मा प्रेम प्रकाश जी वानप्रस्थी पूरी निवासी ने 19 नवम्बर से 25 नवम्बर तक एक सप्ताह भटिण्डा शहर में विभिन्न आर्य संस्थाओं एवं आर्य परिवारों में [illegible] द्वारा [illegible] एवं प्रभावशाली व्याख्यानों द्वारा जनता को लाभान्वित किया, इसका विवरण निम्न है—

1. 19 नवम्बर से 25 नवम्बर तक श्री कबीरचन्द जी के [illegible] के निवास स्थान पर [illegible] 3 से 5 बजे तक [illegible] का कार्यक्रम रहा। 2. दो दिन [illegible] के [illegible] में [illegible], 3. आर्य कन्या हाई स्कूल में प्रातः 9 बजे से साढ़े दस बजे तक व्याख्यान। 4. महात्मा हंसराज हाई स्कूल में प्रवचन। 5 डी ए वी. कालेज में व्याख्यान। 6 25 नवम्बर रविवार के दिन प्रातः काल आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संग में बहुत सुन्दर प्रभावशाली व्याख्यान हुआ उपस्थिति बहुत अच्छी थी। 7. 25 नवम्बर सायं काल श्री कबीरचन्द जी के निवास स्थान पर अन्तिम दिन पूर्णाहुति की गई। इस अवसर पर श्री वानप्रस्थी जी ने यज्ञ की महिमा एवं विधि पर विशेष ध्यान दिलाया।

अन्त में आर्य समाज की तरफ से वानप्रस्थी जी का बहुत 2 धन्यवाद किया,

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक [illegible] प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य [illegible] जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन न. 74250 (रजि न पो जे एल 55)

वर्ष 16 अंक 36, 9 पौष सम्वत् 2041 तदनुसार 23 दिसम्बर 1984, दयानन्दाब्द 160 । एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपए

23 दिसम्बर को जिनका [illegible] दिवस है—

# शुद्धि आन्दोलन के सूत्राधार स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज

भारत के बहुत से हिन्दू जाति के [illegible] को मुसलमान [illegible] राजाओं की [illegible] ने जबरदस्ती मुसलमान बना लिया था। बाहिर से भारत में बहुत थोड़ से मुसलमान आए थे। परन्तु हिन्दू धर्म की [illegible] को जानते हुए मुसलमान राजाओं ने जिनमें औरंगजेब सबसे आगे [illegible] के [illegible] से डरा धमका [illegible] तलवार के जोर से एक बार [illegible] बना लिया फिर हिन्दू धर्म के ठेकेदारों ने उसे वापिस हिन्दू [illegible] नहीं लिया यह जानते थे जो एक बार मुसलमानों के पास बैठ [illegible] वह हिन्दू उससे घृणा करने लगे [illegible] वह कट्टर मुसलमान बन जाएगा। [illegible] जो मुसलमान बन गया और [illegible] फिर [illegible] चाहता था। [illegible] ने उसे स्वीकार नहीं किया इसी [illegible] होने के बाद [illegible] के जोर से मुसल[illegible]

[illegible]

शुद्धि की पताका हाथ में लिए हुए स्वामी श्रद्धानन्द जी

के [illegible] कर गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार की स्थापना कर दी और जो लोग यह समझते थे कि [illegible] मुन्शी राम क्या गुरुकुल बना लेगा, कौन ऐसे गुरुकुल [illegible] के लिए धन देगा और कौन [illegible] के लिए यहां अपने बच्चे भेजेगा। वह लोग [illegible] देख कर हैरान रह गए कि [illegible] का [illegible] मुन्शी राम अपनी [illegible] और अपने ही बच्चों को गुरुकुल में प्रविष्ट करके हरिद्वार को [illegible] फिर [illegible] था न धन [illegible] नहीं न विद्यार्थियों की और [illegible] वाले [illegible] आज वह गुरुकुल स्वामी श्रद्धानन्द जी के नाम को उज्ज्वल [illegible]

[illegible] गर्व गुरुकुल छोड़ [illegible] चल गया तब स्वामी जी ने महात्मा गान्धी जी के साथ मिल कर देश की आजादी के लिए काम करना प्रारम्भ कर दिया। वह आर्य समाज से बाहिर राजनैतिक और सामाजिक आन्दोलनों में भी भाग लेने लगे उनमें कार्य करने की इतनी असीम शक्ति और नेतृत्व करने का इतना स्वाभाविक गुण था कि वह शीघ्र ही अग्रगण्य नेताओं की पंक्ति में आ पहुंचे।

परन्तु शीघ्र ही उन्हें यह देख कर निराशा हुई कि महात्मा गान्धी जी की नीति कुछ मुस्लिम पोषक है। वह हिन्दू और मुसलमानों में एकता चाहते थे उनका विचार था कि हम मिल कर ही आजादी प्राप्त कर सकते हैं। इसी लिए वह दिल्ली की जामा मस्जिद में एकता का सन्देश देने के लिए गए। साथ ही उन्होंने मुसलमानों को बताया की तुम तो हमारे भाई ही हो जो किन्हीं कारणों [illegible] से बिछुड़ गए थे। अब [illegible] द्वार आप के लिए खुल [illegible] वापिस अपने धर्म में आ जाएं। आर्य समाज ने जो शुद्धि का आन्दोलन चलाया था स्वामी जी उसके भी प्रमुख नेता बन गए और उनके नेतृत्व में शुद्धि आन्दोलन चमक उठा और प्रबल वेग से चलने लगा।

इस आन्दोलन की देश में धूम मच गई। धड़ाधड़ मुसलमान हिन्दू बनने लगे। लाखों की संख्या में मूले मलकाने राजपूत मुसलमानों का जिनको किसी समय जबरदस्ती मुसलमान बना लिया गया था जो पुन हिन्दू धर्म में आना चाहते थे और हिन्दू उन्हें वापिस नहीं ले रहे थे [illegible] शुद्ध करके हिन्दू धर्म में वापिस लिया गया अनेकों और मुसलमानों को भी जो हिन्दू धर्म में प्रवेश करने के इच्छुक थे [illegible] शुद्ध करके वैदिक धर्म में प्रविष्ट किया जाने लगा।

स्वामी जी के इस आन्दोलन से कट्टर पन्थी मुसलमान तिलमिला उठे और स्वामी जी के घोर विरोधी हो गए। कट्टरपंथी मुसलमान अखबारों में स्वामी जी के विरुद्ध भड़काने वाले लेख लिखने लगे और उन्हें धमकी भरे पत्र आने लगे। इस प्रकार उनके विरुद्ध मस्जिदों में जोशीले भाषण दिए जाने लगे। जिससे एक मतान्ध मुसलमान अब्दुल रशीद नामक 23 दिसम्बर 1926 को उनके पास धर्म जिज्ञासा के बहाने आया और उनकी छाती में तीन गोलियां दाग दीं और स्वामी जी सदा सदा के लिए हम से विदा हो गए। इस प्रकार स्वामी जी ने शुद्धि का काम करते हुए अपना बलिदान दिया था, काश कि स्वामी जी को और समय शुद्धि करने के लिए मिल जाता तो कितने ही और बिछुड़े भाई इस्लाम को छोड़ कर हिन्दू धर्म को स्वीकार कर लेते।

# अजमेर—दर्शन

ले श्री अमरनाथ जी आर्य एम ए तलवाडा

( 9 नवम्बर से आगे)

अन्त में ऋषि चरणो मे नम्न करते हुए उन्होने कहा कि उन्हे इस बात की बडी प्रसन्नता है कि भारत आज ऋषि निर्दिष्ट मार्ग पर सफलतापूर्वक अग्रसर हो रहा है।

(क) नेपाल —नेपाल के एक छात्र प्रतिनिधि ने अपने श्रद्धा सुमन एक नव अन्दाज मे अर्पित करते हुए कहा कि हम अपना भला स्वय आप ही कर सकते हैं और उसका एक मात्र विश्वस्त मार्ग है—वैदिक विचारधारानुमोदित, आर्य समाज के नियमो का पालना क्योकि ये नियम एक ऐसे युगद्रष्टा ऋषि कोटि महापुरुष द्वारा निर्दिष्ट हैं, जिसकी कथनी और करनी म सामजस्य था।

अपने विचारो को अन्तिम रूप देते हुए उन्होने कहा कि महर्षि ने ऐसा कोई नियम विश्व को नही दिया जिस पर वह स्वय न चले हो अन्यथा जो जीवन में कार्यान्वित न किया जा सकता हो और यही असाधारण क्रियात्मकता मान वता को उनकी सबसे बडी देन है।

(ज तक चैकोसलवाकिया बैलजियम कैलिफोरनिया, गायना, फिजी बर्मा तथा हालैड के प्रतिनिधियो ने अपनी अपनी जो श्रद्धाजलिया ऋषि चरणो म अर्पित की उन्हे सार रूप मे इस भान्ति प्रस्तत किया जा सकता है—

उन्होने कहा कि बहुत देर पहले सबसाधारण हित हेतु महर्षि ने जो ज्ञान प्रदीप जलाया था उसकी लौ अब भारत क्षितिज को लाघ, सारे ससार मे विकीर्ण हो रही है। और इसका इससे बडा प्रमाण और क्या हो सकता है कि आज कितने ही वेद नुयायी एक ही प्रकार की वेदानुमोदित उपासना पद्धति मे विश्वास रखने वाले एक ही सन्ध्या पद्धति अनुगामी ओम के एक ही झण्डे तले, न केवल समस्त भारत बल्कि विश्व के प्राय पचास देशो के प्रतिनिधि महर्षि की इस कम स्थली तपोभमि व बलिदान भूमि के पवित्र अचल पर एक दूसरे के लिए आशा-उत्साह, भ्रातृभाव व परस्पर निस्वार्थ सेवाभाव से परिपूर्ण इतनी सख्या में एकत्रित हुए हैं।

परन्तु इस विराट आयोजन का लाभ ससार को तभी हो सकता है, जब हम सब यहा से जगदगुरु भारत का सर्वेसन्तु निरामया का परम सन्देश ले कर निज देश मे जायें तथा ऋषिवर के कल्याण काय को सवसाधारण की भलाई हेतु आगे बढाए।

(झ) दक्षिणी अफीका—दक्षिणी अफ्रीका के बीस सदस्यीय मण्डल क प्रतिनिधि श्री राम भ मे ने अपनी सक्षिप्त परन्तु स रगर्भित श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए स्पष्ट किया कि ऐसे कर्मशील महापुरुष को सच्चा श्रद्धाजलि अर्पित करने के अधिकारी हम तभी बन सकते हैं, जब हम अपनी कथनी व करनी में सामजस्य स्थापित कर सकें। यह इस लिये कि स्वामी दयानन्द की सब से बडी देन ससार को यही है कि उन्होने जो कछ भी कहा या लिखा उस पर वह स्वय भी आचरण करते रहे। इस लिय आज हमे यहा से यही प्रेरणा ले कर जाना है कि हम सभी अपना अपना जीवन कायशील व प्रेरणादायक बनाए जिसके लिए उस महापुरुष ने स्वय को समर्पित कर रखा था।

(ड) सुरिनाम—सुरिनाम टापू जो भारत से प्राय आठ हजार मील दूर है के प्रतिनिधि ने ऋषि चरणो मे अपनी श्रद्धा—सुमन—अर्पित करते हुए कहा कि उनके देश मे स्वामी दयानन्द का अद्वितीय सदेश ले कर आने वाले महापुरुषो मे सब प्रथम—पूज्यपाद महात्मा आनन्द स्वामी जी हैं। कई वर्ष पूर्व एक अपनी धर्म प्रचार यात्रा के दौरान उन्होने वहा जो वैदिक ज्ञान गगा प्रवाहित की उस द्वारा सिंचित होकर आज सारा देश अभिभूत व पवित्र हो रहा है।

अन्त मे उन्होने कहा कि हमारा अब यही प्रयत्न है कि उस ज्ञान गगा की स्वच्छता व शीतलता सारे देश को निरतर मिलती रहे। बस उस परोपकारी महात्मा को हमारी सब से बढिया श्रद्धाजलि—यही होगी।

(ढ) सीगापुर—सीगापुर के प्रतिनिधि ने अपनी श्रद्धा पुष्पाजलि एक सार गर्भित भारतीय सरीखे भजन द्वारा अर्पित की। जिसमे यशस्वी भारतीय वीरो और वैदिक सभ्यता का स्तवन बड़े ओजस्वी शब्दों मे किया गया है। यथा—

भगवान आर्यों को पहली मवन
मना है।
वैदिक धम की खातिर जितना
इन्हें सिखा है॥

● ● ●

ईश्वर है तो मानव आनन्द से
चरेगा।
भीष्म पितामह कह, अब मैं चाहू
तभी मरूंगा॥

यह देश धर्म व शक्ति का प्रतिनिधित्व करने वाला यह सन्ध्या भजन इतना जोशीला और इतने अच्छे ढग से गाया गया कि सभी श्रोता अभिभूत हो उठे और अपनी धमनियो में उत्साह की गर्मी अनुभव करने लगे थे।

विदेशी आर्य-बन्धुओ के इस सप्त रगी श्रद्धाजलि आयोजन के पश्चात अब भारतीय विद्वान भी अपना श्रद्धा-सुमन नाए महर्षि के चरण-सरोरुह में इस भान्ति अर्पित करते हैं —

(ठ) अजमेर—सर्व प्रथम अजमेर निवासी पादरी श्री और एस माथर, जिन्होने उनके कथनानुसार स्वतन्त्रता पूर्व कलकत्ता मे शिक्षा प्राप्त की थी, ने अपनी रोचक श्रद्धाजलि अर्पित करते और भारत व भारतीयता के प्रति अपनी अगाध श्रद्धा व्यक्त करते हुए कहा कि मैं विगत पचतालीस वर्षों से भारत मे रह रहा हू। अत 45 वर्षों से छोटे किसी भी भारतीय से मैं अधिक भारतीय हू।

उन्होंने [illegible] कहा कि मेरी [illegible] परन्तु दिल भारतीय है। उन्होंने उसी लौ में बहते हुए आगे कहा कि अब मैं जन्म से अग्रेज मर्जी से भारतीय और अभिमान से राजस्थानी हू। तथा अजमेर मेरे लिए सब से सुन्दर शहर है। अब मेरा मात्र लक्ष्य है भारत और भारतीयो की सेवा व उन्नति करना।'

प्रिय पाठक वृन्द ! इस स्नेहिल वृद्ध पादरी महोदय की प्रेमपूर्ण चमकीली आखो को लक्ष्य कर मुझे अपने बचपन मे व ललुलख-चपल भगिमा में अपने द्वारा गाए जाने वाले एक गीत की ये पक्तिया स्मरण हो आईं। क्योंकि इस रगीले पादरी महोदय का चुलबुला व्यक्तित्व इस गीत की निम्न पक्तियों में चरितार्थ होता दिखायी दिया कि—

मेरा जूता है जापानी, पतलून
इगलिस्तानी।
सिर पे लाल टोपी—रूसी, फिर
भी दिल है हिन्दोस्तानी॥

★ ★ ★

और ठीक भी यही है कि मनुष्य बाहर से चाहे जैसा भी हो, आन्तरिक रूप से, वा उसका वास्तविक स्वरूप है—उसे देश प्रेमी होना बहुत जरूरी है।

(ढ) अब सुरेन्द्र सिंह नामक स्वाधीनी वर्षीय भारतीय बालक ने ऋषि-चरणों में अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए, सक्षिप्त परन्तु प्रभावपूर्ण, प्रभावशाली व ओजस्वी भाषण दिया, जिससे श्रोता गण प्रसन्न व प्रभावित हुए। उसके इस प्रशसनीय कार्य के लिए उसे उसी समय पारितोषिक रूप में 866 रुपये की राशि एकत्रित हुई। तथा उक्त सभाध्यक्ष-राजस्थान के मुख्यमन्त्री ने वह राशि इस योग्य बालक को प्रदान की।

(ढ) अब भाषणो के नैरन्तर्य मे परिवतन हेतु श्री कृष्ण कुमार चौबे ने प्रसकेत निम्न गीत बड भावपूर्ण व सुमधुर स्वर मे प्रस्तुत किया। इस मे इतना समय बधा कि श्रोता भी झूम झूम कर उनके साथ गाने लगे—

स्वामी दयानन्द की जय जय कार
जय जय कार।
बन गये स्वामी जी जाति के
कणधार कणधार॥

(ण) गीत समाप्ति पर बडी देर तक करतल ध्वनि गूजती रही और उसके विलीन होते ही मच पर एक वृद्ध आर्य—नेता दिखायी दिए। उन्होने अपन श्रद्धा—पचम सिंह बचपन के एक अविस्मरणीय व मार्मिक सस्मरण सुनाते हुए अर्पण किये। उन्होने बडे विह्वलतापूर्वक कहा कि उनके निस्सतान ताया जो, जो एक कर्मठ आर्य समाजी व प्रमुख स्वतन्त्रता सेनानी थे ने अपने अन्तिम क्षणो मे उन्हें (वक्ता को) अपने पास बुलाकर कहा कि 'मेरी एक अन्तिम इच्छा पूछने पर मरणासन्न सच्चे भक्त वृद्ध ने नम् पूर्ण नेत्रो से निहारते हुए कहा कि "मैंने अंग्रेजी हुकमत के पाये हिलते तो देखे हैं पर गिरते नहीं देख पाया तुम उन्हें गिरा देना।

प्रिय पाठक वृन्द ! इस भान्ति उस वयोवृद्ध अनुरक्त देश भक्त ने देश भक्ति व पावन ऋषि सन्देश की उस अमूल्य धरोहर को एक होनहार ऋषि भक्त व कर्तव्यपरायण देश-प्रेमी युवक कार्य-कर्त्ता के कर्मशील सबल हाथों में सौंप कर शान्तिपूर्वक चिर निद्रा का वरण किया। अनन्य देश प्रेम की उस अभूतपूर्व झलक के साथ समय की माग व परिस्थितियों की नाजुकता की ओर सकेत करते हुए उक्त वक्ता महोदय ने आर्य जनों को सचेत करते हुए कहा कि "आज दयानन्द-दर्शन को वाणी मात्र में नहीं बल्कि उसकी अवाप्तता व समग्रता में ही सबका कल्याण है। परन्तु इस कल्याणकारी कार्य को करते हुए हमें धैर्य के साथ होश की कामना रखनी होगी, तभी अभीष्ट परिणाम की आशा की जा सकती है।"

—(क्रमशः)—

सम्पादकीय—

# अमर बलिदानी श्रद्धानन्द

आर्य समाज ने देश, जाति और समाज के लिए जितने शहीद दिए हैं उतने किसी और संस्था ने नहीं दिए। सर्वप्रथम इस समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने अपना बलिदान दिया और उसके बाद बलिदानों की एक शृंखला सी बन गई।

23 दिसम्बर 1926 को स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान भी इसी शृंखला की एक कड़ी बना महर्षि दयानन्द जी की तरह स्वामी श्रद्धानन्द जी भी बहुत दूरदर्शी थे वह भी दूर की बात को पहले ही भांप लेते थे। सन 1926 में जो शुद्धि का आन्दोलन उन्होंने चलाया था उसका कारण था सब को एकता के सूत्र में पिरोना। वह भी महर्षि दयानन्द की तरह सभी भारतीयों को एक मंच पर लाना चाहते थे, चाहे वह हिन्दू सिख मुस्लिम ईसाई कोई भी क्यों न हो। अंग्रेजों को इससे चिन्ता हुई और उसने भारतीयों में फूट डाल कर लड़ाना शुरू कर दिया। क्योंकि अगर 1926 में अब्दुल रशीद नाम का वह मतान्ध मुसलमान स्वामी जी महाराज को गोली न मारता और स्वामी जी को कुछ और समय इस शुद्धि के आन्दोलन को चलाने के लिए मिल जाता तो 1947 तक शायद भारत का नक्शा ही पलटा होता। पाकिस्तान का कहीं नामो निशान न होता। मुसलमान रहते भी तो बहुत थोड़ी संख्या में रहते। स्वामी जी की वाणी में इतना बल था कि एक बार जहां जाकर वह मुसलमानों को प्रेरणा देते थे लोग धड़ाधड़ अपने पुराने धर्म में आना आरम्भ कर रहे थे। परन्तु अंग्रेज इसे कब सहन कर सकता था। उसने 'फूट डालो और राज करो' की नीति को अपनाकर एकता की बात करने वाले महामानवों को अपने रास्ते से हटाने के लिए षडयन्त्र रचे। महर्षि दयानन्द जी सरस्वती भी इसी षडयन्त्र का शिकार हुए थे और स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज भी इसी की भेंट चढ़ गए अंग्रेज भारतीयों का संगठन देखना नहीं चाहता था इसलिए उसने हिन्दुओं में भी फूट डालने में कोई कसर नहीं रखी। वह सिखों को भी हिन्दुओं से अलग कर देना चाहता था। वह भारत को आजाद करने से पहले इसे तीन भागों में बांट देना चाहता था। परन्तु उसकी यह चाल कुछ बुद्धिजीवियों ने विफल कर दी। फिर भी वह पाकिस्तान बनवाकर जाते जाते भी भारत के दो टुकड़े करने में सफल हो ही गया।

स्वामी जी के बलिदान के बाद शुद्धि का आन्दोलन ढीला पड़ गया वह उस जोश से नहीं चल सका जिसमें वह चल रहा था। अगर तत्कालीन आर्य समाज के नेता और देश के बुद्धिजीवी लोग इस शुद्धि के आन्दोलन को और तेज कर देते और अंग्रेज तथा देशद्रोही तत्वों से सावधान होकर कार्य करते तो भारत अखण्ड ही रहता। इसके कोई टुकड़े न कर सकता। स्वार्थी लोगों ने हमेशा अपने स्वार्थ के लिए देश, जाति और समाज की महान हानि की है।

आर्य समाज शुद्धि का कार्य फिर भी कुछ न कुछ कर ही रहा है परन्तु इसमें सफलता तभी मिलती अगर सनातन धर्मी कहलाने वाले भाई भी इसे अपना लेते। सभी हिन्दू जातियां अपनी जाति के उन सभी लोगों को वापिस हिन्दू धर्म में ले लेती जिस जाति से निकलकर किसी समय वह विवशता वश मुसलमान बने थे। उस घृणा के वातावरण को फिर से प्यार में बदल देते जो किन्हीं स्वार्थी लोगों के द्वारा पैदा किया जा रहा था।

आज देश में फिर विघटनकारी शक्तियां सिर उठा रही हैं। वह फिर भारत के टुकड़े करा कर इसे कमजोर कर देना चाहती हैं। ऐसी अवस्था में आर्य समाज का कर्तव्य है कि वह आगे आकर जनता का मार्ग दर्शन करे। जिस प्रकार इस समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द जी ने और उनके बाद स्वामी श्रद्धानन्द जी ने संगठन के लिए महान कार्य किया। उसी प्रकार उनके बलिदान दिवस पर 23 दिसम्बर को हम भी यह प्रण लें कि देश में विघटनकारी तत्वों को पनपने नहीं दिया जाएगा और शुद्धि का कार्य बन्द नहीं होने दिया जाएगा। यह निरन्तर चलता रहेगा। यही उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

—सह-सम्पादक

# महिला जगत् की एक महान् विभूति चल बसी

जालन्धर के कन्या महा विद्यालय का नाम समस्त भारत में प्रसिद्ध है। उत्तरी भारत में यह स्त्री शिक्षा का पहला केन्द्र था जिसकी स्थापना श्री लाला देवराजजी ने की थी और जो प्रगति करते 2 एक महाविद्यालय का रूप धारण कर गया। कुमारी लज्जावती जी कन्या महा विद्यालय की प्रथम आचार्या थी। उन्होंने अपना सारा जीवन शिक्षा के लिए समर्पित कर दिया था। वह विद्यालय की आचार्या तो थी ही परन्तु साथ ही स्वतन्त्रता सेनानी भी थी। देश भक्ति के रंग में वह पूरी तरह रंगी हुई थी। महिला जगत में उनका नाम बड़ी श्रद्धा से लिया जाता है। इस समय उनकी आयु 90 वर्ष की थी और इन 90 वर्षों में सहस्रों लड़कियां उनसे पढ़कर गई हैं। उनकी शिष्याएं सारे भारत वर्ष में फैली हुई हैं और भारत से बाहर विदेशों में भी हैं। सारे पंजाब और पंजाब से बाहिर की लड़कियों के माता पिता भी यही चाहते थे कि उनकी लड़की कन्या महाविद्यालय जालन्धर में पढ़े। क्योंकि वह जानते थे कि उसकी आचार्या बहुत सुयोग्य धर्मात्मा, सादगी और शीलता की साक्षात मूर्ति है और बहुत सात्विक विचारों की है। जिसका जीवन तप और साधनामय है जिसका विद्यालय पर पूरा नियन्त्रण है। उनकी लड़कियां वहां शिक्षा प्राप्ति के साथ साथ उन आदर्शों को भी सीख कर आएंगी जो एक भारतीय महिला के लिए आवश्यक हैं। सुशीलता सादगी और विनम्रता जैसे आभूषण उन्हें उस विद्यालय में मिलेंगे। इस महाविद्यालय की इतनी धूम मची थी कि भारत से बाहिर विदेशों से भी लड़कियां यहां पढ़ने आती थी। माता पिता को पता था कि हमारी लड़की अपने घर से भी अधिक सुरक्षित इस विद्यालय में रहेगी।

आचार्या जी का विद्यालय में पूरा नियन्त्रण था कोई लड़की नंगा सिर परिसर में नहीं घूम सकती थी। वह कोई भड़कीली पोशाक पहनकर विद्यालय में नहीं आ सकती थी। वह प्रत्येक छात्रा का विद्यालय में प्रवेश के समय निरीक्षण करती थी कि वह किस वेश में विद्यालय में आई है।

वह प्रत्येक नियम का दृढ़ता से पालन करती थी और दूसरों से भी दृढ़ता से कराती थी। वह समय की बड़ी पाबन्द थी अपने समय को वह एक मिनट भी व्यर्थ नहीं जाने देती थी और चाहती थी कि उनकी सभी छात्राएं व सारा स्टाफ भी समय का पाबन्द हो। समय पर खाना समय पर सोना-उठना और नित्य कर्म करना आदि सब कार्य नियम से चलते रहते थे। इसीलिए अपनी इतनी लम्बी आयु में भी वह वृद्ध होते हुए भी अपने नित्य प्रति के कार्य स्वयं कर लेती थी। उनका विद्यालय में इतना प्रभाव था कि उनके सामने किसी को बोलने की हिम्मत नहीं होती थी। वह बाहिर से जितनी कठोर थी अन्दर से उतनी ही कोमल भी थी।

वह जीवन भर कुमारी रही लेकिन फिर भी वह अनेकों कन्याओं की माता थी। क्योंकि माता वही जो निर्माण करे। उन्होंने हजारों कन्याओं का निर्माण किया होगा। जन्म देने वाली तो केवल जननी होती है। निर्माण करने वाली ही माता कहलाती है

उत्तरी भारत की वह एक पहली महिला थी जिसने आधी शती से भी अधिक अध्यापन का कार्य किया। उन्होंने अपना सारा जीवन इस विद्यालय व आर्य समाज के लिए समर्पण कर दिया था और अंतिम समय तक विद्यालय की सेवा करती रही। उनकी किसी से उपमा नहीं दी जा सकती अपनी उपमा वह स्वयं ही थी। ऐसी देवी आज मिलनी कठिन है। प्रत्येक महिला को उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए। परमात्मा से प्रार्थना है कि वह उनका लगाया हुआ यह कन्या महा-महाविद्यालय का पौधा उसी प्रकार फलता फूलता रहे जैसा उनके काल में चलता रहा।

—सह सम्पादक

# नवाशहर में प्रान्तीय स्तर पर भाषण प्रतियोगिता

आर्य विद्या परिषद पंजाब जालन्धर के तत्वावधान में मंगलवार 8 जनवरी 1985 को डी.ए.वी. आर्य हायर सकेण्डरी स्कूल नवांशहर में प्रान्तीय भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। इस प्रतियोगिता में पंजाब प्रान्त के सभी आर्य स्कूल सादर आमन्त्रित हैं। सभा से सम्बन्धित तथा आर्य समाजों के अधीन चल रहे आर्य स्कूलों के प्रधानाचार्यों से अनुरोध है कि इस भाषण प्रतियोगिता में अपने स्कूल की टीम अवश्यमेव शामिल करवा कर कार्यक्रम को उत्साहवर्धक बनाने में सहयोग दें। अपनी टीम की नामावलि व्यवस्थापक आर्य विद्या परिषद् पंजाब को 5 जनवरी 85 से पूर्व भेजें। —(रजिस्ट्रार आर्य विद्या परिषद पंजाब)

# गुरुकुल-शिक्षा-प्रणाली की देश-व्यापिकता

ले.—श्री सत्यव्रत जी सिद्धान्तालकार दिल्ली

(गताक से आगे)

इसमे कोई सन्देह नही कि गुरुकुल शिक्षा पद्धति के जो आधार भूत सिद्धान्त हैं व शिक्षा क्षेत्र मे सर्वमान्य हैं, कोई उनसे इन्कार नही कर सकता। गुरु का अपने छात्रो को पुत्रवत् मानकर उनके साथ जीवन बिताना, सब छात्रो का एक साथ रहना, अपने को दूसरो के साथ भाई-भाई का सम्बन्ध रखना जैसा परिवार मे होता है ऊच-नीच का भेदभाव न होना, न जात-पात का भेदभाव होना, जल्दी सोना, जल्दी उठना, सन्ध्योपासना करना तपश्चर्या तथा ब्रह्मचर्य का जीवन बिताना, सात्विक भोजन करना और व्यायामादि से शरीर को हृष्ट पुष्ट बनाना कौन सी शिक्षा पद्धति है जो इन बातो को स्वीकार न करेगी। इसी का नाम आश्रम वास है, इसी का नाम गुरुकुल वास है। इसी शिक्षा पद्धति से मानव का, समाज का देश का और विश्व का निर्माण हो सकता है। आज समय आया है जब हम इस दिशा मे कदम बढा सकते हैं, परन्तु ऐसा करने के लिए हमे गुरुकुल-शिक्षा पद्धति की देश व्यापक योजना बनानी पडेगी।

गुरुकुल कागडी को विश्वविद्यालय की मान्यता प्राप्त हो चुकी है, परन्तु इसमे गुरुकुलीयता नही आयी। विश्वविद्यालय के छात्र साईकिलो पर चढकर बाहर से आते हैं और चढकर अपने-अपने घरो को चले जाते हैं। प्रोफसरो का भी यही हाल है। गुरुकुल मे जो क्वार्टर बने हुए हैं वे सस्ते हैं, इसलिए वे वहा रहते हैं, नही तो छात्रो के साथ उनका कोई नैत्यिक सम्बन्ध नही है। अन्य स्कूल, कालेजो की तरह वे पढाकर अपने घर जा बैठते हैं। रहना सहना उनका उसी तरह का है जैसा दूसरे अध्यापको का होता है। कोट, पतलून मे रहते और स्कूटरो पर चढकर आते-जाते हैं। तपश्चर्या किसी प्रकार का वातावरण नही है, वे गुरुकुल मे रहने वाले गुरु या आचार्य नहीं हैं, लेक्चरार, रीडर तथा प्राफेसर हैं कोई ऐसा कदम उठाना होगा ऐसी योजना बनानी होगी जिससे गुरुकुल विश्वविद्यालय वास्तविक अर्थों मे देश या विश्व व्यापी गुरुकुल पद्धति का प्रतीक बने। वह योजना क्या हो सकती है ?

गुरुकुल शिक्षा पद्धति का मूलाधार तो गुरुकुल कांगडी ही है। वर्तमान में कागडी को दो भागो मे बाटा जा सकता है। एक भाग तो वह है जो चालू पद्धति पर ही चल रहा है, दूसरा भाग वह है जिसमे गुरुकुल पद्धति के सिद्धान्त लागू हो रहे है या हो सकते हैं। दूसरे भाग को गुरुकुल कहकर हम प्राय पहले भाग के लिए ले रहे है। पहले भाग मे छात्रो की सख्या अधिक है, परन्तु वह नाम-मात्र का गुरुकुल है। दूसरे भाग मे छात्र सख्या कम है परन्तु यथार्थ मे वही गुरुकुल है। इस गडबड झाले मे से निकलने का उपाय यही है कि हम दूसरे भाग को इतना बढाए कि उस भाग मे पढने वाले छात्र ही पहले भाग मे प्रविष्ट हो और धीरे-धीरे स्थिति यह आ जाए कि पहले भाग मे सिर्फ गुरुकुल शिक्षा प्राप्त छात्र ही रह जाए ऐसे छात्र जिन्होने गुरुकुल के विद्यालय विभाग मे शुरू से शिक्षा प्राप्त की हो। गुरुकुल शिक्षा पद्धति को देश-व्यापी बनाने की पहली शर्त यह है कि गुरुकुल कागडी मे विद्यालय विभाग से विश्वविद्यालय विभाग तक वही छात्र भर जाए जो गुरुकुल शिक्षा पद्धति से पढ हो, जिनका सोना-जागना, खाना पीना, बोलना-चलना, वेश-भूषा, सब कुछ गुरुकुलीय हो। जब ऐसे छात्र ही गुरुकुल में रह जाएगे जो 6-7 वर्ष की आयु से गुरुकुल मे प्रविष्ट होकर शिक्षा-काल के अन्तिम समय तक गुरुकुल मे ही रहते हुए पूर्ण शिक्षा प्राप्त कर निकलेंगे तब गुरुकुल शिक्षा का असली शुद्ध रूप निखर कर उभरेगा।

जहा तक पुस्तक शिक्षा का प्रश्न है, हमे यह समझकर चलना चाहिए कि गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति वास्तव मे जीवन की पद्धति है। शिक्षा के क्षेत्र में हम जहा सस्कृत साहित्य, दर्शन तथा वेदादि प्राचीन ग्रन्थो एव उनकी रिसर्च पर विशेष ध्यान देते हैं, वहा पाश्चात्य विद्वानो को भी पाठ विधि मे स्थान देते हुए यह ध्यान मे रखते हैं कि हमारी शिक्षा गुरुकुलीय जीवन पद्धति को अपना मूल समझ और जीवन-निर्माण की उस दिशा को सर्वत्र मूर्धन्य समझे। गुरुकुल एक ऐसी सस्था बन जानी चाहिए जिसमें शिक्षा तथा जीवन के उन सिद्धान्तो को प्रधान स्थान दिया जाता हो जो व्यक्ति समाज, देश तथा विश्व के उन्नयन के लिए आवश्यक है। इसमें ऐसे ही कार्यकर्ताओ का सग्रह होना चाहिए जिनके जीवन मे ये मूल तत्व ओत-प्रोत हो, जिनका उल्लेख हम पहले कर चुके है। जब हम गुरुकुल विश्वविद्यालय को इस स्थिति मे ले आएगे तब अगला कदम उठाना होगा और वह कदम होगा गुरुकुल की जीवन प्रणाली को शिक्षा के क्षेत्र में सर्व व्यापी बना देना।

किसी सस्था के सर्वव्यापी होने के लिए उसकी जडो और शाखाओ का देश तथा विश्व के कोने-कोने में फैल जाना आवश्यक है। विश्व की बात तो पीछे आएगी, पहले इस जीवन प्रणाली के देश भर में फैल जाने की जरूरत है। गुरुकुल जीवन पद्धति का एक आन्दोलन है जिसका उद्देश्य उस मानव का निर्माण करना है जिस प्रकार का मानव हम समाज में, देश में और विश्व में देखना चाहते हैं, ऐसा मानव जो सब पतन के सब प्रलोभनो से मुक्त होकर शुद्ध मानव जीवन का निर्माण करे। इसके लिए नींव का काम गुरुकुल जीवन पद्धति के उन मूल तत्वो को उभारने से ही किया जा सकता है, अन्यथा शिक्षित होकर भी हम अशिक्षित ही रहेंगे। इस प्रकार की जीवन पद्धति को गुरुकुल विश्वविद्यालय मे केन्द्र बनाकर उसकी शाखाए हर शहर, हर राज्य मे खोलने की योजना को देशव्यापक रूप देने से ही यह नव-मानव का निर्माण हो सकता है। इन देश व्यापी गुरुकुलों मे जो गुरुकुल विश्वविद्यालय से सम्बद्ध हो, एक प्रकार से इस विश्वविद्यालय की शाखाओ मे क्या पढाया जाय वह सरकार के शिक्षा मन्त्रालय पर छोड देना चाहिए ताकि पुस्तकीय शिक्षा की दृष्टि से गुरुकुलीय विश्वविद्यालय तथा अन्य विश्वविद्यालयों में छात्रों का आदान-प्रदान तथा शैक्षणिक सम्पर्क बना रहे। देश की आवश्यकता पुस्तकीय शिक्षा के साथ-साथ गुरुकुलीय जीवन के सिद्धान्तों को व्यापक रूप देने की है। सिर्फ पुस्तकीय शिक्षा से जीवन नहीं बनता, पुस्तकीय शिक्षा के साथ साथ गुरुकुलीय जीवन की शिक्षा देने से ही जीवन बन सकता है इसलिए मैं कहता हू कि गुरुकुल शिक्षा पद्धति को जीवन की एक पद्धति है-देश व्यापी बनाने की आवश्यकता है।

---

# वो थे श्रद्धानन्द हमारे

ले.—श्री कवि बनवारीलाल 'शादाँ' वैद्य दिल्ली

सर्वस्व किया था अर्पण अपना।  
जिसने प्राण धर्म पर वारे।  
जिन देश धर्म की रक्षा की थी।  
वो थे श्रद्धानन्द हमारे।

मुनि तपस्वी सत्य वक्ता थे।  
देवों में वह देव थे नामी।  
कर्मठता साहस की मूरत।  
वेदो के विद्वान् थे स्वामी।

ओम् का झण्डा कर मे लेकर।  
जग मे फिर वेद प्रचार किया।  
पुन पुरातन पद्धति लाने को।  
गुरुकुल का फिर विस्तार किया।

वेद ज्ञान फैलाया जग में।  
पाखण्ड मतो को चूर किया।  
दीन-दुखी का दुख मिटाया।  
दुष्टो के मद को चूर किया।

जाति-पाति औ छूत-छात का,  
किया स्वामी ने बन्टा ढार।  
ईसाई, मुसलमा, बने हिन्दू।  
शुद्धी का जग मे किया प्रचार।

भारत के कण-कण मे 'शादाँ'  
इक लहर भरी बलिदानो की।  
आजादी का बिगुल बजा था।  
परवाह न की थी प्राणो की।

# स्वामी श्रद्धानन्द जी के अमृतमय उपदेश

प्यारे मित्रो ! उस परम पिता परमात्मा की अनुकूलता और उसकी आज्ञा का पालन क्या ही आन द दायक है ।—आओ हम सब मिलकर उस बलपति के द्वार पर चलें जिससे उससे बल प्र प्त करके हम इस योग्य हो जाए कि ससार मात्र की बुरी वासनाओं का मुकाबला करते हुए उस सबसे महा तेजस्वी और परम पिता की नित्य स्तुति कर सक और हमारे लिए सष्टि के सब पदाथ मुखदायी हो जाए ।

हे प्रिय बन्धु वग ! आओ ईश्वर की आ ज्ञा पालन करते हुए नि य प्रति सुगन्धि दायक अच्छे पुष्टिकारक और बुद्धिवधक पद र्थों मे अग्नि से हवन कर और वायु को इन गुणो से यक्त करके अपने श रीर को नीरोग रख सक जिससे धम अथ काम और मोक्ष की प्राप्ति म सगमता हो ।

(धर्मोपदेश पष्ठ 11)

प्यारे भ्रातगण ! आओ दोना समय नि य प्रति सन्ध्या करते हुए ईश्वर म प्रार्थना कर और उसकी सत्ता की दया से इस योग्य बनने का यत्न कर कि हमारे मन वाणी और कम सब सत्य ही हो सवदा सत्य का चि तन कर । वाणी द्वारा स य ही प्रकाशित कर और कर्मों मे स य का पालन कर ।

(धर्मोपदेश पष्ठ 14)

आओ सुख की अभिलाषा करने वालो परमा मा की आ ज्ञा मानते हुए शभ कम म प्रवत होवो । सदा भले पुरुषा की सगत करते हुए ईश्वरीय प्र रणा मे प्रवत होकर अविद्या का नाश और विद्या की वद्धि करो त कि परमानन्द की प्राप्ति हो । (धर्मोपदेश पष्ठ 17)

कौन मनुष्य है जो उस परमा मा की आज्ञा का उल्लघन करे और बरा व निकम्मा न बन जाए । यह शरीर व आ मा निकम्मा न रहना चाहिए गन्दा व अपवित्र न होना चाहिए । सत्य व सदाचार को कभी हाथ से न जान देना चाहिए क्योंकि आनन्द इसी मे है उस परमात्मा की इच्छा उसी मे है । सत्य माग का उपदेश यही है । यही स्वग धाम है । हे मनुष्य आओ ! और उस परमात्मा के इस उपदेश पर कटिबद्ध हो जाओ । (धर्मोपदेश पृष्ठ 20)

क्या तुम्हारे हृदय के अन्दर होते हुए घोर पाप करते हुए भी उस आ त्मिक सूय का चमत्कार दृष्टिगोचर हुआ है ? और क्या तुमने उस समय उस मागदशक परमात्मा से सहायता लेने का यत्न किया है । अगर नही तो तम से बढकर म द भाग्य कौन है ? किन्तु विनाश न होवे चमत्कार से फिर कभी तुम्हारा अन्तरात्मा प्रकाशित हो जाएगा । उस समय उस अवसर को न छोड़ते हुए अपितु बुद्धि के चक्षुओ को उस दृश्य के अ दर मग्न करके शान्त चित हो जाव ।

(धर्मोपदेश पष्ठ 24)

हे भ्रातृगण ! क्या उस परमेश्वर से विमुख होकर, उसे भूलकर क्या हम कभी भी अपने उद्देश्य को पूण कर सकते है ? सोचो और चेतो । अब तक हमने समय व्यर्थ गवाया है । अब तक हमने लक्ष्य को ध्यान मे न रखते हुए अ धेरे में हाथ पैर मार कर उन्हें घायल कर दिया है । जो शक्तिया हमे अपनी रक्षा के लिए मिली थी उन्हें अलग अपने नाश के लिए प्रयोग करते रहे हैं । अब भी समय है और सदा समय है क्योंकि सबका पिता मानुषिक निबलताओं से मुक्त न्याय दण्ड से दूर सदैव हम पर हाथ रखता है । बालक हो या युवा अथवा वद्ध प्रत्येक को समझ है कि हर समय अपने जीवन को पलट। देकर प्रभु की शरण मे आना पड क्योंकि वहा से किसी जिज्ञासी पुरुष को भी निराश लौटते हुए नहीं देखा ।

(धर्मोपदेश पृष्ठ 33)

क्या तुम सचमुच परमात्मा को सब व्यापक मानते हो ? अगर शुद्ध स्वभाव स्वरूप परमा मा को प्रत्येक स्थान पर उपस्थित होने को स्वीकार करते हुए भी तुम्हारा मन अशुद्ध है अगर उसमें काम, क्रोध लोभ मोह और अह कार के बुरे भाव अब तक उसमें उत्पन्न होते हैं यदि तुम अपनी वाणी से मिथ्या छल और व्यभिचार के शब्द निकाल सकते हो, अगर तुम अपने शरीर से बुरे कार्य कर सकते हो तो निश्चय जानो कि तुमने अब तक उसकी सर्व व्यापकता को अनुभव नही किया ।

(धर्मोपदेश पृष्ठ 36)

# आचार्या लज्जावती जी का देहावसान

कन्या महाविद्यालय जालन्धर की प्रथम आचाय कमारी लज्जावती का 14 सितम्बर 1984 को रात्रि लगभग 8 बजे दे वसान हो गया । 15 सितम्बर को साय 4 बजे उनका अन्त्येष्टि सस्कार किया गया । जिसमे जालन्धर तथा बाहिर से आए सकडो लोगो ने तथा कन्या महाविद्यालय के स्टाफ व छात्राओ न भाग लिया उनके शव को श्रद्धालुओ ने फल मालाओ से लाद दिया था ।

17 सितम्बर सोमवार को साय दो बजे से पाच बजे तक उनका अन्तिम शोक दिवस मनाया गया । इस अवसर पर वहद यज्ञ श्री प धमदेव जी सहायक अधिष्ठाता वेद प्रचार श्री नरेन्द्रकुमार जी शास्त्री आचाय गरुकुल करतारपु श्री प उमेश जी परोहित आय समाज माडल टाऊन जालन्धर ने करवाया इसके पश्चात श्रद्धाञ्जलि समारोह हुआ—जिसमे श्री चतुभ ज मित्तल उपाध्यक्ष आ य शिक्षा मण्डल प्रिंसिपल श्रीमती उमा दास जी प्राध्यापिका श्रीमती कपूर प्रा यापक श्री रामनाथ जी शर्मा भतपूव प्राध्यापक श्री शादील ल जी जोशी कमारी लता जी प्रिंसिपल ह सराज महिला महाविद्यालय ज ल धर श्रीमती मोहन जी प्रिंसिपल बी डी आय ग ज क लेज जाल धर छ वनी कुमारी बिमला छ बडा प्रिंसिपल ल लबहादुर शास्त्री म ज कालेज बरनाला श्री प्रिंसिपल क न्न विद्य मन्दिर लु धयाना श्री सुदेश नन्दा प्रिंसिपल दोआबा कालेज ज ल धर प्रसिद्ध पत्रकार श्री च द्रमोहन जी चेयरमैन वीर प्रताप जालन्धर श्री योगेन्द्र न मन प्र ध न आ म अडन हाशियार जाल धर श्री धमपाल जी सहगल एडवोकेट श्री रविन दा जी एडवोकेट और आचार्या लज्जावती जी के छोटे भाई श्री द द्रजी दुआ रि यड मक्कर याय धीश दिल्ली हाईकोर्ट तथा अ त मे श्री वीरेन्द्र जी सोढी कोषाध्यक्ष आय शिक्षा मण्डल जाल धर ने उन्हे भ वभ नी श्रद्धाञ्जलिया भेट की ।

# लूथर से भी महान् थे महर्षि दयानन्द सरस्वती

ले.—श्री यशपाल जी आर्य बन्धु, आर्य निवास
चन्द्र नगर मुरादाबाद

किसी विद्वान का यथार्थ कथन है कि—'महापुरुष होने का अर्थ गलत समझा जाना।' महापुरुषों को संसार प्राय गलत ही समझता आया है। उनके जीवन काल में तो लोग उन्हें प्राय पहचान ही नहीं पाते। महामानव दयानन्द इसके अपवाद नहीं थे। संसार ने उन्हें समझने में बहुत भूल की है और कर रहा है। इसी समझने में भूल के कारण ही लोग उन्हें प्राय कभी कुछ तो कभी कुछ कह दिया करते हैं और कभी किसी एक महापुरुष के समान बताने लगते हैं तो कभी किसी दूसरे के। कोई उन्हें दूसरा मार्टिन लूथर कहता है तो कोई दूसरा शकराचार्य। पायनियर 30 दिसम्बर 1879 के हवाले से दयानन्द चरित्र मे लिखा है कि-वह अकाट्य तर्क और अग्नि स्राविणी वाग्मिता के साथ द्वितीय लूथर के समान उन दूषणों के विरुद्ध प्रचार करना था जिन्होंने कालान्तर में पूर्व काल मे उच्च पवित्र धर्म को भारावनत और दूषित कर दिया था। (म दयानन्द चरित्र पृष्ठ 157 158) अग्र जी पढ़े लिखे लोग महर्षि दयानन्द की लूथर के साथ उपमा देने में अपनी कृतकार्यता समझते हैं किन्तु हमारी दृष्टि मे महर्षि दयानन्द को लूथर से उपमा देकर उनके व्यक्तित्व, कर्तृत्व एव उद्देश्य का अवमूल्यन करना है। यह सब महर्षि दयानन्द को ठीक से न समझने के कारण ही हो रहा है। आचार्य नरदेव शास्त्री ठीक ही लिखते हैं कि ससार चकित है कि उसने स्वामी दयानन्द को समझने मे इतनी भूल क्यो की? उस समय ससार यदि स्वामी दयानन्द को न समझ सका तो इतने आश्चर्य की बात नहीं है। सबसे बड़ा आश्चर्य यह है कि स्वामी दयानन्द के अनुयायी भी अब तक स्वामी जी के पूर्ण स्वरूप को नहीं समझ सके हैं।

(दयानन्द कोमेमोरेशन वाल्यूम पृष्ठ 386)

यद्यपि आचार्य नरदेव शास्त्री ने ये शब्द काफी पहले पूर्व ऋषि निर्वाण अर्द्ध शताब्दी के अवसर पर लिखे थे, पर लगता है कि ये शब्द आज के लिए लिखे गए हैं। यह सत्य है कि अधिकांश आर्यगण भी आज तक महर्षि को ठीक से समझ नहीं पाए। सत्य तो यह है कि क्षुद्र दृष्टि वाले हम लोग भला महर्षि का समग्र स्वरूप देख भी कैसे पाते। महर्षि के समग्र स्वरूप को न देख पाने के कारण हम कभी उनकी उपमा किसी एक से देने लगते हैं तो कभी किसी दूसरे से। पर वास्तविकता यह है कि महर्षि दयानन्द अपनी उपमा आप ही थे। हमें तो योगी राज अरविन्द के ये शब्द सारयुक्त प्रतीत होते हैं कि —

जहा तक लूथर और स्वामी दयानन्द का समन्वय है। महर्षि लूथर से अनेक अर्थों मे कहीं कहीं बढ़ चढ़कर हैं। इस सम्बन्ध मे लाला लाजपतराय का यथार्थ कथन है कि—लूथर को जर्मन की प्रसिद्ध कौसल ने बुलाया था कि वह अपने विश्वास का प्रमाण दे और अपने दोषों को दूर करे। वहा केवल जर्मन, रोमन कैथोलिक सम्प्रदाय के प्रतिनिधि थे और यहा सारी काशी थी और स्वामी दयानन्द आप (स्वय) चैलेंज देकर उनसे शास्त्रार्थ को गये थे। स्वामी दयानन्द भी अकेले थे और लूथर भी अकेला था। लूथर अपने डिफेन्स (बचाव) के लिए बुलाया गया था। स्वामी दयानन्द आप (स्वय) धावा करके मूर्ति पूजा की राजधानी पर गया था। आह! क्या ही दृश्य था। एक गुजराती ब्राह्मण सन्यासी जिस के सग न कोई मित्र था न कोई सेवक और न कोई सहायक था। तनतनहा अकेला लंगोटा, माथे भस्मी रमाये आसन पर बैठा हुआ परमात्मा के आश्रय काशी की सारी विद्वता और पौराणिक धर्म के समस्त आचार्यों का सामना करता रहा। सारे हिन्दू मत मतान्तर विद्या बल प्रताप आचार्य आदि अपने पूर्ण बल से सामने को निकलते हैं और परास्त होकर अपना सा मुख लिए लौटते हैं। (महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती और उनका काम पृष्ठ 166 167)।

लूथर और महर्षि दयानन्द के चिन्तन का मौलिक अन्तर यह है कि लूथर केवल अपने इर्द-गिर्द ही देखता था जबकि महर्षि चारों ओर बहुत दूर-दूर तक। तात्पर्य यह है कि लूथर ने केवल ईसाई धर्म की मिथ्या बातो की ही आलोचना की जबकि महर्षि दयानन्द ने सभी मत मतान्तरों की मिथ्या बातों का खण्डन किया था। फिर लूथर केवल एक पक्षीय सुधार चाहता था। जबकि महर्षि धार्मिक सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक आदि सभी क्षेत्रों मे। अत महर्षि दयानन्द को भारत का लूथर कहना उनका अवमूल्यन करना होगा। और फिर यदि किसी को कहना ही है तो लूथर को दूसरा दयानन्द कहा जा सकता है। तात्पर्य यह कि उपमान उपमेय से सदा उत्कृष्ट हुआ करता है। अत यदि हमें उपमा ही देनी है तो महर्षि से उपमा अन्य लोगो को दिया करें न कि महर्षि की अन्य लोगो से।

—

## बंबई में भी गोहत्या बंद हो

### प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी के नाम आर्य समाज सान्ताक्रुज बम्बई के महामन्त्री का पत्र

मान्यवर महोदय,

सादर नमस्ते!

निवेदन है कि आर्य समाज सान्ताक्रुज बम्बई के साप्ताहिक सत्सग रविवार दिनाक 25 11 84 की महती सभा अत्यन्त दुख के साथ यह पत्र तथा सलग्न प्रस्ताव आपकी सेवा मे प्रेषित करती है—

सम्पूर्ण भारत मे गोहत्या पर प्रतिबन्ध होने पर भी बम्बई महानगरी मे विधर्मियों द्वारा खुले आम अवैधानिक रूप से घर की छतो पर गोहत्या का [illegible] चलाकर हिन्दुओं की भावनाओं को भड़काने की कोशिश की जा रही है। माननीया स्वर्गीय प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी जी ने कहा था गाय इस देश की उन्नति का महत्वपूर्ण अंग है इसकी हत्या करने वालो को कड़ी सजा दी जायगी।

दैनिक अग्रजी समाचार पत्र मे दिनाक 24 11 84 का एक समाचार प्रकाशित हुआ है कि 5000 किलो गोमास अवैधानिक रूप मे काटकर म्युनिसिपल कार्पोरेशन के एक टक मे भरकर सप्लाई के लिए ले जाते हुए पकड़ा गया। इस समाचार पत्र की फोटो कापी पत्र के साथ सलग्न है। आप से प्रार्थना है कि आम [illegible] विरोधी इन विघटन [illegible] तत्वों के प्रति कड़ी से कड़ी [illegible] देकर स्थानीय [illegible] की भावनाओं को [illegible] होने से पूर्व शान्त करने का [illegible]

कप्तान देवरत्न आर्य महामन्त्री

दूरभाष : 74250                                   (रजि न पी जे एल. 55)

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

# आर्य मर्यादा

जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 16 अंक 32 24 पौष सम्वत् 2041 तदनुसार 13 जनवरी 1985 दयानन्दाब्द 160 । एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपए)

## जीवन में तप का महत्व

लेखक—पं श्री बिहारी लाल शास्त्री काव्यतीर्थ

पवित्रते विततं ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणि पर्येषि विश्वतः ।
अतप्ततनूर्न तदामो अश्नुते शृतास इद्वहन्तस्तत्समाशत ॥

संसार वास्तव मे ससार है। इसे व्यथ ही अज्ञानियों ने असार बता दिया, इस मे एक से एक सार पदार्थ भरे पड़े हैं। दिव्य रत्न दिव्य औषधियां अन्य अनेक अद्भुत चमत्कार दिखाने वाली जड़ी बूटियां और धातुयें इसी संसार में हैं। बिजली इसी संसार से निकली जो रात को दिन बना रही है और महीनों का काम मिनटों में कर डालती है। ऐक्सरे (सूर्य की किरण विशेष) इसी संसार का चमत्कार है जो शरीर के भीतर हड्डियों को प्रत्यक्ष दिखा देती है। सहस्रों रोगियों को इससे लाभ पहुंचता है। बिजली की चिकित्सा से भी रोगियों का अपार लाभ हुआ है। रेडियम जैसी धातु, जिसे पारसमणि ही कहना चाहिए इसी संसार की ही देन है। रेडियो यन्त्र कितना अद्भुत है जिसके कारण जहाजों में बैठे बैठे समुद्र के वक्ष स्थल पर ही स्थल वासियों से बातचीत करिये गाने का रस लीजिए, एक देश के व्याख्यान दाता के व्याख्यान दूसरे देश के देश मे अपने कमरे में बैठे बैठे सुनिए, हवाई जहाज में आकाश मे उड़ते उड़ते भूमि वालों से बातचीत करते रहिए। यह सब चमत्कार इसी संसार में से निकल पड़े यूरोप का सब विज्ञान वैभव इसी संसार में तो पहले छिपा पड़ा था। वैज्ञानिक लोग इस ऐश्वर्य को कहीं स्वर्ग से तो नहीं खोज लाये। इसी मिट्टी में से, जल में से, अग्नि वायु में से, यह दिव्य चमत्कार प्रकट हो गए। केवल पुरुषार्थ का फल है। मेहनत की, जान लड़ाई, बुद्धि को कष्ट दिया, इन्द्रियों को अकाम भोगों को चसा दिया तपस्या में जीवन लगा दिये, तब यह दिव्य चमत्कार देखने को मिले। जब तप किया तो प्रकृति देवी की इन दिव्य विभूतियों को पाया। बिना तप किए क्या पानी में से प्रकाश (विद्युत्) निकल सकता था। क्या यह बात समझ में आती थी कि पानी के गिरने में भी एक गुप्त शक्ति है जिससे बिजली मिल सकती है? पर आज बम्बई नगर को यही पानी के झरनों से प्राप्त हुई बिजली प्रकाश प्रदान कर रही है। अनेक कल कारखाने इसी की बदौलत चल रहे हैं। इस संसार में अनेक सार गुप्त हैं। तप करो प्रकट होंगे। उद्यम हीन बैठा रहे कुछ नहीं पाएगा। एक उर्दू कवि कहता है—

> हस्ती के समर में अगर ख्वाहिश है चमक जाओ।
> कच्चे न रहो बल्कि किसी रङ्ग मे पक जाओ।

जिस प्रकार भौतिक संसार मे अनेक गुप्त सार थे जो प्रकट हो गए और अभी हैं जिनकी प्राप्ति के लिए वैज्ञानिक तप कर रहे हैं ठीक इसी प्रकार आध्यात्मिक संसार मे भी अनेक गुप्त चमत्कार हैं जिनकी धुंधली छाया आज मैसमरेजिम हिप्नाटिज्म, प्लानचिट पर रूहों को बुलाना आदि क्रियाओं मे दीख पड़ती है। परन्तु इन कार्यों मे अभी इनके कर्ता ही भ्रान्ति के शिकार हैं। इनसे ऊपर काम है योग जिसके द्वारा आध्यात्मिक विभूतियों का दर्शन होता है। जब योग करता है तब—

> उघरहिं विमल विलोचन ही के।
> मिटहिं दोष दुख भव-रजनी के ॥

श्रुति तत्वज्ञ ब्रह्मनिष्ठ गुरु की सेवा रूप तप से मनको प्रकाश की ओर अन्तजगत की ओर ले जाने वाले अभ्यास रूप तप से इन्द्रियों द्वारा अन्तर्गमन करने वाली मनोवृत्तियों को रोक कर अन्तर्मुखी करने रूप तप से जब मनुष्य आभ्यन्तर दृष्टि को प्राप्त कर लेता है तब आध्यात्मिक विभूतियों के दर्शन पाता है। एक दो सिद्धियों से ही यदि वह कृतकृत्य हो गया तब तो गया बीता, और यदि यदि बराबर खोज करता चला गया और तप से न विचला तो पूर्ण विभूति तक परम ऐश्वर्य तक वहां तक कि जहां जाकर फिर कुछ शेष न रहे, पहुंच जाएगा। यही ब्रह्म तत्व है। उसी के लिए आस्तिक जगत् इच्छुक है। उसी की स्तुति प्रार्थना में धार्मिक संसार लीन है। ज्ञान अज्ञान युक्त किसी भी रीति से उसी की उपासना मे मतमतान्तरवादी बहे चले जा रहे हैं। अभिलाषा सबको है। नास्तिक भी 'निवृति चाहता है पूर्णता का अभिलाषी है। हां उसके पाने का उपाय उसका और है। वह बालू मे तेल ढूंढ रहा है। उसे भी उसकी तलाश है। वह नाश और परिवर्तनशील प्राकृत रूपों में विराम चाहता है जो अनहोनी बात है। विरति तो एकरस अखण्ड तत्व मे ही हो सकती है यह तो केवल ब्रह्म ही है। वह अरूप है इन्द्रियातीत है वाचामगोचर है इसलिए नास्तिक कहता है कि वह नहीं है। जल प्रपात मे विद्युत है आकाश में ईश्वर व्याप्त है परन्तु विज्ञानशून्य स्वल्पबुद्धि ग्रामीण कहेगा कि नहीं ऐसा नहीं है वैज्ञानिक तो प्रत्यक्ष कर चुका और उस तत्व को दिखा चुका है वह कैसे निषेध करे। इसी प्रकार ब्रह्मनिष्ठ ऋषियों ने ब्रह्म का साक्षात् किया और साक्षात्कार की योग्यता रखने वाले निर्मल हृदयों को, आस्था रखने वालों को उनका प्रत्यक्ष कराया भी परन्तु अविद्योपहत नेत्रों के लिए तो दर्शन कराना कठिन ही था। काव्य मे रस है, सहृदयों का उसका अनुभव होता है परन्तु काव्य वासनारहित जनों को नहीं। इसी प्रकार पिंड ब्रह्माण्ड सबमें रस रूप ब्रह्म (रसो वै सः) समाया हुआ है परन्तु उस को बिना तप के नहीं चखा जा सकता। यही बात वेद भगवान उपर्युक्त मन्त्र में बताते हैं—

(ब्रह्मणस्पते) हे वेद के पति प्रभो (ते) आपका (पवित्र) पवित्र ब्रह्मानन्द (विततं) सब जगह फैला हुआ है। प्रभु) आप सबके स्वामी (गात्राणि) शरीरों मे (विश्वतः) सब ओर (पर्येषि) व्यापक हो अर्थात हमारे शरीर मे आप सब जगह व्यापक हैं, घट घट में आपका आनन्द समाया हुआ है परन्तु—

(अतप्ततनूः) जिसने अपने शरीर को मन को बुद्धि को योगाग्नि मे नहीं तपाया और (आम) कच्चा है अभ्यास की अग्नि मे नहीं तपा है (न तदश्नुते) वह आपके उस पवित्र रसको नहीं चख सकता (शृतास इद्वहन्तस्तत्समाशत) ज्ञान तप याग्नि मे जो पक गए हैं वे ही उसे धारण करते हुए अच्छी प्रकार चखते हैं। ब्रह्मानन्द पवित्र है सर्वत्र फैला हुआ है हमारे शरीर में व्याप्त है पर हम उसे बिना तपके नहीं पा सकते। उपनिषद कहती है तपसा चीयते ब्रह्म (मुण्डक) ब्रह्म तप से चुना जाता है। कबीर साहब भी कहते हैं—

> हवस करे प्रिय मिलन की और सुख चाहे अंग।
> पीर सहे बिन पदमनी पूत न लेत उछंग ॥

अर्थात बिना कष्ट उठाए भगवान् से मिलना नहीं हो सकता। सूफी सरमद कहता है—

> उम्र बायद कि यार आयद ब किनार।
> ईं दौलते सरमद हमा कस रा न दिहन्द ॥

अर्थात ईश्वरीय सम्पत्ति हर किसी को नहीं मिल सकती। भगवान के दर्शन पाने को बहुत समय चाहिए।

> अनेकजन्मसंसिद्धस्ततो याति परां गतिम् (गीता)

अनेक जन्म सिद्धि करनी होती है तब परमगति मिलती है। साराश यही है कि बिना तप किये भगवान को नहीं पा सकते। परन्तु तप ज्ञानपूर्वक होना चाहिए। साधन वह जो साध्य तक पहुंचा दे। अगर साध्य तक नहीं पहुंचाता तो वह साधन व्यर्थ है और पहुंचने वाले मे, यदि साध्य का लक्ष्य नहीं है तब भी साधन व्यर्थ है। तप साधन है, ईश्वर प्राप्ति साध्य है इसलिए ईश्वर प्राप्ति को लक्ष्य करके तप किया जाए और तपकी वही विधि हो जो ईश्वर प्राप्ति मे साधक हो। अतः ज्ञानपूर्वक ही तप होना चाहिए एक मनुष्य चाहता है दूध लेना और सेवा

(शेष पृष्ठ 7 पर)

# आर्य समाज के शास्त्रार्थ महारथी—

# पं. मनसा राम वैदिक तोप

ले.—श्री डा. भवानीलाल भारतीय चण्डीगढ़

तथाकथित सनातन धर्मी विद्वानों के हठ एवं दुराग्रह दृष्टिकोण से लिखे गए वैदिक सिद्धान्तों के खण्डन परक ग्रन्थो का समुचित उत्तर देने की कला में प्रवीण प मनसाराम का जन्म 1890 ई मे हिसार जिले के हट्टावाला नगल ग्राम मे हुआ था इनके पिता का नाम लाला मकरदास था जो अग्रवाल वैश्य थे तथा व्यापार के द्वारा जीवन निर्वाह करते थे। मनसाराम की प्रारम्भिक शिक्षा ग्राम बामनवाला की प्राथमिक पाठशाला मे हुई। इस काल मे इन पर एक मुसलमान अध्यापक मु शी शमसुद्दीन का बड़ा भारी प्रभाव था। प्राइमरी शिक्षा को समाप्त करने के पश्चात् वे 1907 मे वे टोहाना के माध्यमिक स्कूल मे प्रविष्ट हुए परन्तु इसी समय पिता की मृत्यु हो जाने के कारण वे आगे नहीं पढ सके। आय समाज के प्रति उनका आकर्षण पटवारी रामप्रसाद नामक एक व्यक्ति के कारण हुआ जो इनके घर पर रहते थे तथा स्वय सदाचारी मृदुभाषी तथा लगनशील आय समाजी थे। प मनसाराम ने यह स्वीकार किया था कि आय समाज की ओर प्रेरित करने वाले व्यक्ति श्री राम प्रसाद जी ही थे। उ होने अपना प्रसिद्ध ग्रन्थ पौराणिक पोप पर वैदिक तोप उन्ही महाशय राम प्रसाद को समर्पित किया था।

जब वे अपने अध्ययन के प्रसग में टोहाना रहते थ, तभी से उनका आर्य समाजिक गतिविधियों से सम्पर्क बढ़ने लगा। 1908 मे इसी कस्बे मे आर्य समाज तथा सनातन धम के बीच एक प्रसिद्ध शास्त्रार्थ हुआ। इसमे आर्य समाज का प्रतिनिधित्व डी ए वी कालेज लाहौर के प्रो राजा राम ने किया था। तथा सनातन धर्म के प्रवक्ता प. लक्ष्मी नारायण थे। प मनसाराम ने अपने मित्रो सहित इस शास्त्राथ को तत्परता पूर्वक सुना और वे आर्य समाज के विद्वान् द्वारा प्रस्तुत की गई युक्तियो से अत्यधिक प्रभावित हुए।

मिडिल की परीक्षा देने के उपरान्त मनसाराम जी को सस्कृत पढने की धुन सवार हुई। इस सकल्प को पूरा करने की दृष्टि से वे हिसार की सनातन धम सस्कृत पाठशाला में प्रविष्ट हुए तथा वहा कतिपय वर्षों तक रह कर अध्ययन किया। हिसार से वे कनखल चले गए और भागीरथी पाठशाला में तीन चार वष तक पढते रहे। वहा भोजन की अव्यवस्था के कारण अध्ययन मे अधिक प्रगति नही हुई। गुरुकुल कागडी मे चपरासी का काय भी उन्होने कुछ काल तक किया। प्रयोजन यही था कि चप रासी के रूप मे जीविका निर्वाह भी होता रहेगा और सस्कृत पढने का सुयोग भी गुरुकुलीय वातावरण मे मिल जाएगा। प बुद्धदेव विद्यालकार उन दिनो गुरुकुल मे अध्यापन क ते थ। यह दुर्भाग्य ही था कि मनसाराम को आय समाज के विख्यात गुरुकुल मे भी पढने की सुविधा उपलब्ध नही हो सकी। अब वे गुरुकुल से निराश होकर काशी के लिए चल पड़।

काशी में यो तो सस्कृत पढने वाले छात्रो के लिए सैकडो अन्न क्षत्र खुले हुए हैं वहा विद्यार्थियो को नि शुल्क भोजन प्राप्त होता है। परन्तु विडम्बना यह थी कि जन्मना ब्राह्मण बालक ही क्षेत्रो मे भोजन पाने के अधिकारी समझे जाते थे। मनसाराम जन्मना वैश्य थे इसलिए भोजन की समुचित व्यवस्था न होने के कारण उन्हे कई दिनो तक निरन्तर उपवास करना पडता था। अब कि एक दिन भूख से अत्यन्त पीडित हो कर मनसाराम जगली बेरो को एकत्रित कर रहे थे, अचानक एक सेठ उधर आ निकले। उनके पूछने पर मनसाराम ने बताया कि सस्कृत पढने काशी आया हू परन्तु अन्न क्षत्रो मे ब्राह्मण कुलोत्पन्न न होने के कारण मुझ भोजन नही मिलता फलत क्षुधाशान्त करने के लिए बेर एकत्रित कर रहा हू। सेठ जी स्वय वैश्य थे। उन्हे यह जान कर बडी पीडा हुई कि भोजन के अभाव मे एक पठनार्थी छात्र इस प्रकार कष्ट पा रहा है। उन्होने मनसाराम को आदेश दिया कि वे अमुक अन्न क्षत्र मे भोजन कर लिया करें, वहा उन्हे कोई जाति के आधार पर भोजन करने से नही रोकेगा। इस प्रकार मनसा राम जी भोजन की कठिनाई से निश्चिन्त होकर अध्ययन मे लग गए। उन्होने विशारद की परीक्षा उत्तीर्ण की और विभिन्न शास्त्रो का दत्तचित होकर अध्ययन किया।

अध्ययन समाप्त कर प. मनसाराम प्रचार के क्षेत्र में अवतीर्ण हुए। प्रारम्भ में आर्य समाज सिरसा के माध्यम से वर्षों प्रचार करते रहे। पुन स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी की प्रेरणा से आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के उपदेशक बन गए। अब वे सर्वतोमुखीन प्रचार कार्य में कूद पडे। अपने उपदेशक जीवन के काल मे प मनसाराम ने अनेक शास्त्रार्थ किए तथा विरोधियों को पराजित किया। उनकी युक्तियो प्रमाणो तथा तर्क प्रणाली से बड़-बड महारथियों के छक्के छूट जाते थे। प मनसाराम आर्य समाज के प्रचारक शास्त्रार्थकर्ता तथा विद्वान् तो थे ही उन्होने देश के स्वाधीनता सग्राम मे भी सक्रिय रूप से भाग लिया 1922 मे कांग्रेस द्वारा चलाये गए आन्दोलन मे भाग लेने के कारण उन्हे कारावास का दण्ड झेलना पड़ा था। वे स्वदेशी वस्त्रो और स्वदेशी वस्तुओ का ही उपयोग करत थे। जून 1941 को बुढलाढा मण्डी जिला हिसार मे उनका निधन हो गया। पंडित मनसाराम के द्वारा किए गए कुछ शास्त्रार्थो का विव रण यहा दिया जाता है—

1 बरेटा मण्डी के निकट कुलरिया मे पौराणिक पंडित कालूराम से उनका शास्त्राथ पुराणो की शिक्षा विषय पर हुआ।

2 अम्बाला के केन्द्रीय कारागार में सनातनी पंडित ब्रह्मदत्त से नमस्ते पर शास्त्रार्थ किया।

3 जैतो मण्डी (नाभा) मे प लक्ष्मी चन्द कौल से विधवा विवाह पर सस्कृत मे शास्त्राथ किया।

4 प राजनारायण अरमान के साथ क्या अष्टादश पुराण वेदानुकूल हैं। विषय पर भटिण्डा मे शास्त्रार्थ हुआ। 1925 मे यह शास्त्राथ रावण जोगी के वेश मे शीर्षक से प्रकाशित भी हुआ।

5 सन 1931 मे जाखल मण्डी मे सनातनी प श्री कृष्ण शास्त्री से क्या ऋषि दयान द के ग्रन्थ वेद विरुद्ध हैं या 18 पुराण वेद विरुद्ध हैं। विषय पर शास्त्रार्थ हुआ इस शास्त्राथ का विवरण शास्त्राथ जाखल मण्डी शीर्षक से छपा। सनातन धर्म वालो ने इसका उत्तर प कु जलाल भारद्वाज इ दौर निवासी से सनातन धर्म विजय शीर्षक पुस्तक लिख कर प्रकाशित किया। इसके उत्तर मे प मनसा राम ने सनातन धम की मौत अर्थात पौराणिक पोप पर वैदिक तोप शीर्षक 1200 पृष्ठो की उर्दू पुस्तक लिखी।

6 अक्तूबर 1940 को संगरूर मे सनातनी पंडित अखिलानन्द से मूर्तिपूजा पर शास्त्राथ हुआ। दूसरे दिन जब मतक श्राद्ध पर शास्त्राथ हुआ तो सनातन धर्मी बन्धुओ ने पंडित मनसाराम पर पत्थरो की वृष्टि की। यह शास्त्राथ भी मुद्रित हो चुका है।

शास्त्रार्थों के अतिरिक्त पं मनसा राम ने साहित्य के माध्यम से भी वैदिक विचारधारा का प्रचार किया। उनका खण्डनात्मक साहित्य सशक्त तथा प्राण-वान है। उनके द्वारा रचित ग्रन्थो का विवरण इस प्रकार है—

## प्रारम्भिक लघु ग्रन्थ—

एक अन्य ट्रैक्ट

गुमराही के समुद्र मे रास्ती की किश्ती (असत्य सिन्धु मे सत्य नौका) सत्यार्थ प्रकाश का सार (उर्दू)

## पौराणिक पोप पर वैदिक-तोप

(सनातन धम की मौत) कुख्यात पौराणिक प कालूराम ने आर्य समाज की मौत नामक एक पुस्तक लिखी थी। इसी के उत्तर मे प मनसाराम ने उपर्युक्त ग्रन्थ लिखा जो 1200 पृष्ठो मे समाप्त हुआ है। इसमे मूर्ति पूजा, अवतार सिद्धान्त, साकारवाद मृतक श्राद्ध पुराण तीर्थ यात्रा जन्माधारित वर्ण व्यवस्था आदि सनातनी विचारधारा की की आलोचना तीखी खण्डनात्मक शैली मे की गई है।

चेतावनी प्रकाश— उर्दू प राजनारायण ने चेतावनी शीर्षक एक पुस्तक लिखी थी जिसमें उन्होंने कलियुग के समाप्त होने और सतयुग के प्रारम्भ होने की भविष्यवाणी की थी। इसी भ्रान्ति युक्त धारणा का खण्डन उक्त पुस्तक में किया गया है।

पौराणिक पोल प्रकाश—(भाग दो) पौराणिक पोप पर वैदिक तोप की ही शैली में लिखी गई 1300 पृष्ठो की यह पुस्तक आर्य साहित्य मन्दिर लाहौर से 1936 ई मे प्रकाशित हुई। पजाब सरकार ने इस पर प्रतिबन्ध लगा दिया था।

पौराणिक दम्भ पर वैदिक बम्ब— तथा कथित सनातन धर्मियो ने स्वामी दयान द के अमल धवल चरित्र को लांछित करने की दृष्टि से समय-समय पर अनेक भद्दी और आपत्तिजनक पुस्तकें लिखी थी। इन मे लायलपुर निवासी पंडित शम्भुदयाल लिखित लिखित तथा 1926 मे प्रकाशित दयानन्द भाव चित्रावली, माधवाचाय रचित दयानन्द के सिर पर बुद्धदेव का जूता 'प गोपाल मिश्र हरियाणवी लिखित कलियुग इस्लाम के लिबास मे अर्थात असली सत्यार्थ दयानन्द शिवपूजा और दयानन्द की तालीम, रामपूजा और शैतान की तालीम आदि मुख्य थी। प मनसाराम ने इन सभी पुस्तको का सम्मिलित उत्तर लिख कर प धर्म नारायण शर्मा के छद्मनाम से छपाया। इस बात की पुष्टि

(शेष पृष्ठ 8 पर)

## सम्पादकीय—

# नया वर्ष नई आशाएं

इसी स्तम्भ के पिछले लेख में मैंने उन समस्याओं के विषय में लिखा था, जो हमारे लिए पैदा हो रही हैं। अपने-घरों में बैठ कर हम चाहे कुछ कहें, स्थिति यह है कि आज आर्य समाज उतना शक्तिशाली नहीं रहा जितना कि वह पहले था। यदि आज भी ऐसे व्यक्ति मिल जाते हैं जिन के आर्य सिद्धान्तों के लिए श्रद्धा है, तो यह बहुत कुछ उस प्रचार का परिणाम है, जो आज से पच्चास वर्ष पहले आर्य समाज का होता रहा है। हम यह तो नहीं कह सकते कि आर्य समाज अब एक निर्जीव संस्था बन गई है, परन्तु उसकी यह स्थिति अवश्य है कि उसका संगठन पहले से बहुत कमजोर हो गया है और अब उसे उस स्तर के नेता और कार्यकर्ता नहीं मिलते, जो स्तर आज से 30-40 वर्ष पहले आर्य समाज का था। मैंने पिछले लेख में उन बड़े-2 विद्वानों और प्रकाण्ड पण्डितों के विषय में लिखा था जो आर्य समाज के प्रचार के लिए जब बाहर निकलते थे तो दुनिया उन के पीछे चलती थी। आज हमारे पास न तो उस स्तर के उपदेशक हैं और न भजनीक हैं। इसी के साथ यह भी एक वास्तविकता है कि आर्य समाज का संगठन कई कारणों से बहुत अधिक शिथिल हो गया है। हम किसी को कुछ कहने के योग्य नहीं रहे। 1975 में आर्य समाज की स्थापना शताब्दी मनाई गई थी और पिछले वर्ष महर्षि दयानन्द की निर्वाण शताब्दी मनाई गई। हमने बड़े-2 मेले तो कर लिए, लाखों लोग वहां इकट्ठे हो गए लेकिन क्या कोई नया सन्देश हमने जनता को दिया? क्या आज तक आर्य समाज के विद्वानों ने कहीं बैठ कर यह विचार किया है कि कौन सी नई समस्यायें हैं, जिनके कारण हम पीछे जा रहे हैं। यह समस्यायें केवल आर्य समाज के सामने नहीं सारे देश के सामने हैं। वही संस्था जीवित और सक्रिय समझी जा सकती है, जो दिन-प्रतिदिन की नई नई समस्याओं पर गम्भीरता से विचार करती रहती है और जनता का मार्ग प्रदर्शन करती रहती है। जब1975में देहली में आर्यसमाज की स्थापना शताब्दी मनाई गई थी उस समय भी जनता यह आशा रखती थी कि आर्य समाज के कर्णधार अपने देश-वासियों को कोई नया सन्देश देंगे। सारे देश से लाखों लोग देहली में इकट्ठे हुए और खाली हाथ चले गए। 10 वर्ष व्यतीत हो जाने के पश्चात जब गत वर्ष अजमेर में निर्वाण शताब्दी हुई, फिर भी लाखों लोग इसी आशा से वहां पहुंचे थे, परन्तु निराश हो कर वापस आए। ऐसा प्रतीत होता है कि अब आर्य समाज के पास कोई नया कार्यक्रम नहीं है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने 100 वर्ष पहले हमें जो कार्यक्रम दिया था, उस पर हम अब तक चलते आये थे। उसका परिणाम भी बहुत अच्छा निकला। देश में जो धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक जागृति आई है वह भी उसी का ही परिणाम है। परन्तु हम यह भूल जाते हैं कि जो कुछ बाकी दुनिया मे हो रहा है, उसका हमारे देश पर भी प्रभाव पड़ रहा है और उसके कारण कुछ नई समस्यायें हमारे सामने आ रही हैं। इन सब पर विचार करने की आवश्यकता है। कई समस्यायें ऐसी हैं, जिनके विषय मे आर्य समाज का अपना दृष्टिकोण है। शिक्षा प्रणाली के विषय में भी आर्य समाज का अपना दृष्टि-कोण है। जब श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने 1902 मे गुरुकुल की स्थापना की थी, तो उन्होंने केवल अपने देशवासियो को ही नही सारे संसार को यह बता दिया था कि शिक्षा के विषय में आर्य समाज का दृष्टिकोण बिल्कुल भिन्न है। इसी प्रकार स्त्री शिक्षा और नारी जाति के उद्धार के विषय मे भी आर्य समाज एक नया दृष्टिकोण दे सकता है। अभी थोड़ा समय हुआ जब आचार्य प्रिय व्रत जी ने वेदों के राजनैतिक सिद्धान्तो पर एक बहुत बड़ा ग्रन्थ प्रकाशित किया है। उसमें बहुत सी ऐसी बातें लिखी गई हैं जिन्हें हम अपने देशवासियो के सामने रख सकते हैं और हमारी राजनीति मे जो गतिरोध पैदा हो गया है, वह भी दूर हो सकता है। इस प्रकार सत्यार्थ प्रकाश में प्रत्येक उस समस्या के विषय में कुछ न कुछ लिखा गया है जो प्रतिदिन मनुष्य के जीवन में उस की परेशानी का कारण बनती है। महर्षि दयानन्द बहुत दूर द्रष्टा थे। मनुष्य जीवन के भिन्न-2 पक्ष उन के सामने आये थे और उनके विषय मे उन्होंने अपने-विचार भी दिए थे। उनके आधार पर भी हम बहुत कुछ अपने देशवासियों के सामने रख सकते हैं। परन्तु यह उसी स्थिति में सम्भव हो सकता है, यदि कभी आर्य समाज के नेता या बड़े-बड़े विद्वान् बैठकर इस पर विचार करें। मैं इसे आर्य समाज का ही नहीं अपने

( शेष पृष्ठ 4 पर )

# पंजाब संस्कृत सम्मेलन

पंजाब सरकार इस प्रान्त मे संस्कृत पर नई पाबंदियां लगाने और अन्त मे इसे इस प्रान्त में पूर्ण तौर पर समाप्त करने की जो योजना बना रही है इसका मैं इस से पूर्व उल्लेख कर चुका हूं। कहते हैं कि 'दूध का जला छाछ को फूंक-फूंक कर पीता है।' हिन्दी के बारे पंजाब सरकार की जो नीति है वह हम देख चुके हैं। प्रान्त के राज-प्रबन्ध में हिन्दी का जिस तरह से सफाया कर दिया गया वह हम अच्छी तरह जानते हैं। वही कुछ अब संस्कृत के साथ भी करने की तैयारी हो रही है। संस्कृत की इस प्रान्त के राज-प्रबन्ध में कोई आवश्यकता नहीं। वहां जो कुछ होता है, पंजाबी में होता है या अंग्रेजी मे। हिन्दी मे भी नहीं होता है। सरकार अंग्रेजी को सहन करने को तैयार है। हिन्दी को नहीं। इसमे सरकार का भी दोष नहीं। पंजाब के सभी दलों का इस मामला मे यही रवैया है कांग्रेस हो या अकाली हो, भारतीय जनता पार्टी हो या कम्युनिस्ट पार्टी हो, सब हिन्दी के विरोधी हैं। और हर समय उसके विरुद्ध डण्डा लिए फिरते हैं। आखिर वह उसे पंजाब के राज प्रबन्ध में खत्म करने मे सफल हो गए हैं। इसके बाद संस्कृत की बारी है। हिन्दी समाप्त हो चुकी है जब संस्कृत भी हो जाएगी तो उसके बाद क्या हालात पैदा होंगी इस का अनुमान लगाना कठिन नहीं। इन परिस्थितियो पर विचार करने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने संस्कृत के प्रेमियो का एक सम्मेलन करने का निर्णय किया है। लेकिन यह समस्या ऐसी नहीं जिसे अकेला आर्य समाज ही हल कर सके संस्कृत के प्रेमी सनातनधर्मियो में भी हैं, जैनियो मे भी हैं और सिखो मे भी हैं। इन सबको एक जगह बैठ करके इस समस्या पर सोचने की आवश्यकता है। इसलिए रविवार 20 जनवरी को जालन्धर मे पंजाब संस्कृत सम्मेलन करने का निर्णय किया गया है। इस की अध्यक्षता सनातन धर्म जगत् के प्रमुख नेता श्री महन्त रामप्रकाशदास जी करेंगे। और इसका उद्घाटन आर्य समाज के वीतराग सन्यासी श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज करेंगे। यह दोनो अपने-अपने संस्कृत विद्यालय चला रहे हैं। इन्हें मालूम है कि पंजाब में संस्कृत को जीवित रखने के लिए किस तरह की कठि-नाईयां पैदा हो सकती हैं। इनके अतिरिक्त और भी कई संस्कृत प्रेमियो को इस मे शामिल होने का निमन्त्रण दिया गया है। संस्कृत के एक बहुत बड़े विद्वान् श्री बशीर अहमद मयूख' को भी मैंने इस सम्मेलन मे शामिल होने के लिये विशेष निमन्त्रण दिया है। हमारा किसी के साथ कोई झगड़ा नही। हम केवल यह चाहते हैं कि पंजाब सरकार की नई योजना के अनुसार संस्कृत पर जो कुल्हाड़ा चलाया जाना है, वह बन्द किया जाए। संस्कृत का राजनीति से कोई सम्बन्ध नही है। लेकिन इस भाषा के महत्व से कोई इन्कार नही कर सकता। मुझे यह कहने मे भी कोई संकोच नही कि हमारे धर्म का आधार ही संस्कृत है। हमारे सभी धर्म ग्रन्थ संस्कृत में हैं। संस्कृत पर किसी तरह की कोई आंच हमारे धर्म पर सीधी आंच है अगर इसके धार्मिक महत्व की उपेक्षा कर दी जाए तो इसके राष्ट्रीय महत्व की अपेक्षा नही की जा सकती। दक्षिण भारत मे कुछ लोग हिन्दी के विरुद्ध हैं। लेकिन वह संस्कृत के पक्ष मे हैं। सारा दक्षिण भारत संस्कृत पढ़ता है। वहां आपको संस्कृत के बड़े-बड़े विद्वान् मिलेंगे। जब देश की राष्ट्र भाषा का निर्णय हो रहा था उस समय अगर हिन्दी की बजाए संस्कृत को राष्ट्र भाषा करार दिया जाता तो आज वह कठिनाई पैदा न होती जो हो रही है। जो हो चुका सो हो चुका। अब भी अगर हमने राष्ट्र की एकता को कायम रखना है तो संस्कृत को जिन्दा रखना पड़ेगा। इसलिए 20 जनवरी को जालन्धर में जो संस्कृत सम्मेलन हो रहा है उसके महत्व से इन्कार नही किया जा सकता। हम कोशिश कर रहे हैं कि जहां जहां भी संस्कृत प्रेमी बैठे हैं उन सबको इसका निमन्त्रण दिया जाए। फिर भी हो सकता है कि कुछ रह जाएं। उन सबसे मेरी यह प्रार्थना है कि वह भी इस सम्मेलन मे शामिल हों और एक ऐसा जनमत पैदा करें कि पंजाब सरकार संस्कृत पर वो पाबन्दी न लगा सके जिस पर कि वह विचार कर रही है। हमे अपने पिछले अनुभव से कुछ सबक लेना चाहिए। हिन्दी के समय हम एक षड्यन्त्र के शिकार हो गये थे जिसमे हमारे ही कई भाई शामिल थे राजनैतिक सत्ता के लिए उन्होंने हिन्दी का गला घोट दिया था। अब धीरे-धीरे जो हालात सामने आ रहे हैं उनसे पता चल जाता है कि हमने कितनी बड़ी गलती की थी। आज तो पंजाबी के दावेदार यह भी कहने लग गये हैं कि वह एक अलग कौम है। पंजाबी के दावेदारो मे तो हिन्दू भी शामिल हैं। क्या वह भी एक अलग कौम समझे जायेंगे। और क्या वह एक अलग कौम बनने को तैयार है? पिछली बातो को दोहराने से कोई लाभ न होगा। अब हमे आगे की तरफ सोचना चाहिए। इस लिए मैं कहता हूं कि हिन्दी के बाद अब पंजाब मे संस्कृत का गला घोटने की जो कोशिश हो रही है हमे अभी से उसके विरुद्ध अपनी आवाज बुलन्द करनी चाहिए ताकि जो गलती पहले हुई है वह अब न हो। इसलिए मैं पंजाब के संस्कृत प्रेमियो से कहना चाहता हूं कि 20 जनवरी के सम्मेलन मे वह अवश्य सम्मिलित हों।

—वीरेन्द्र

# आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित आर्य समाजों के अधिकारी महानुभावों की सेवा में

आपने समाचार पत्रो मे यह पढ लिया होगा कि पजाब सरकार सस्कृत के विषय मे एक ऐसी नीति अपना रही है जिसके द्वारा पजाब मे सस्कृत को बिल्कुल समाप्त कर दिया जाएगा। जो व्यवहार इससे पहले हिन्दी से किया गया है वही अब सस्कृत से होने लगा है। इस सारी स्थिति पर विचार करने की आवश्यकता है। आर्य समाज इस विषय मे मौन नही रह सकता। इसलिए इस गम्भीर स्थिति पर विचार करने के लिए रविवार 20 जनवरी 85 को प्रात 10 30 बजे जालन्धर मे दोआबा कालेज मे एक सस्कृत सम्मेलन बुलाया गया है। आपसे प्रार्थना है कि आप अपनी आर्य समाज के भी 2 प्रतिनिधि इस सम्मेलन मे अवश्य भेजें। आपके नगर में कोई और सस्कृत के विद्वान हो जिन्हे इसमे रुचि हो उन्हे भी सभा की ओर से निमन्त्रण दे दें। इस सम्मेलन की अध्यक्षता श्री महन्त रामप्रकाशदास जी करेंगे, और इसका उद्घाटन श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज करेंग। दोआबा कालेज शहर के अन्दर देवी तालाब मन्दिर के बिल्कुल सामने है। बस स्टैण्ड से रिक्शा के द्वारा आप वहा पहुच सकते हैं वैसे लोकल बस भी वहा बहुत जाती हैं इसलिए आपको कठिनाई न होगी। आशा है आपकी आर्य समाज के प्रतिनिधि भी इस सम्मेलन मे अवश्य आयग।

भवदीय

| | |
|---|---|
| वीरेन्द्र | कमला आर्या |
| प्रधान | महामन्त्री |

# आर्य बन्धु आर्य मर्यादा के लिए सहयोग दें

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की ओर से ऋषिबोधोत्सव (शिवरात्रि) के उपलक्ष मे आर्य मर्यादा साप्ताहिक का ऋषिबोध विशेषाक प्रकाशित हो रहा है। यह अक बडा प्रभावशाली और लगभग 170 मैगजीन साईज के पष्ठो पर होगा जिसका मूल्य लागत मात्र 3 रुपए रखा गया है। यह अक भारी सख्या मे प्रकाशित हो रहा है। जिसके लिए कछ आर्य बन्धओ ने हमे विज्ञापन भी भेजे हैं हमने एक पष्ट के विज्ञापन का केवल शल्क एक सौ रुपय रखा है। मेरी सभी आर्य बन्धुओ व आर्य समाजो के अधिकारी महानुभावो से प्रार्थना है कि वह इस अक के लिए अपनी ओर से या अपनी समाज की ओर से तथा अपने इष्ट मित्रो की ओर से विज्ञापन भिजवा कर सभा को अपना पवित्र सहयोग प्रदान करें।

गत ऋषि निर्वाण अक की सभी आर्य बन्धुओ न भूरि भूरि प्रशसा की थी सभी पाठको ने उसे सराहा था और कई आर्य बन्धुओ ने इस अक के लिए अपने विज्ञापन भी दिए थे। मैं उन सभी विज्ञापन दाताओ का धन्यवाद करती हू और उनसे फिर प्रार्थना करती हू कि यह सब ऋषि बोध विशेषाक के लिए भी अपना हम उसी प्रकार सहयोग द। यह अक गत अक से भी अधिक प्रभावशाली होगा।

ऋषि निर्वाण अक के बहुत से आडर हमें देरी से मिले थे जिसके कारण हम सैकडो अक माग के अनुसार नहीं भेज सके। इस लिए आर्य बहिने और भाई इस बार अपने आडर भी शीघ्र अतिशीघ्र सभा कार्यालय मे भेज दें ताकि उन सबके आडरो के अनुसार हम यह अक उतना अधिक छपवा सकें।

—कमला आर्या
महामन्त्री

# देशान्तर प्रचार के लिए प्रचारकों की आवश्यकता

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली ने देशान्तर प्रचार पर विशेष ध्यान देने का निश्चय किया है। पिछले सौ वर्षों के दौरान विश्व के अनेक देशो मे आर्य समाज का सन्देश पहुचा। मौरिशस ब्रिटिश गायना और ट्रिनिडाड जैसे देशों मे यह एक प्रमुख शक्ति के रूप मे उभरा विश्व के जिन देशों में अब तक आर्य समाज का सगठन कायम हो चुका है उसका श्रेय कुछ व्यक्तियों की स्वत प्रेरणा और भारत से गए विद्वान प्रचारकों की कठिन साधना को ही है। आर्य समाज ने इन देशो मे वैदिक धर्म के प्रचार के साथ ही सामाजिक क्रान्ति के आन्दोलन और राजनैतिक चेतना जगाने मे भी प्रमुख भूमिका अदा की। पर अब ऐसा अनुभव हो रहा है कि सैद्धा तिक प्रचार मद होता जा रहा है क्यों कि विश्व स्तर पर संगठित प्रयास की कमी रही। अभी तक विश्व के बहुत सीमित क्षेत्र में ही आर्य समाज का प्रचार हो पाया है इसे विश्वव्यापी बनाने की आवश्यकता है ताकि विश्व मानवता का कल्याण हो सके। अत एव हम ऐसे महानुभावों की जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं जो देशान्तर प्रचार के कार्य में अपना समय देने को तत्पर हो।

इच्छुक महानुभावो से निवेदन है कि वे इस विज्ञप्ति के सन्दर्भ में हम से पत्र व्यवहार करने का कष्ट करें। अपने पत्रोत्तर में वे अपनी आयु शैक्षणिक योग्यता, भाषाओ का ज्ञान धर्म प्रचार से सम्बन्ध प्रचार कार्य का अनुभव प्रकाशनो की सूची एवं अन्य आवश्यक जानकारियों का विवरण देने का कष्ट करें। अंग्रेजी भाषा का अच्छा ज्ञान अनिवार्य है। भारत अथवा देशान्तर के तीन ऐसे प्रमुख आर्य जनो का नाम और पता भी लिखें जो आपके कार्यों के विषय मे भली भांति जानते हों। यह भी सूचित करने का कष्ट करें कि वे कितना समय इस कार्य में दे सकते हैं। सभी महानुभावों को अपने प्रथम पत्र मे ही पूर्ण विवरण दे देना योग्य होगा। आशा है कि देशान्तर प्रचार मे सहयोग प्रदान करने हेतु आप अपना अमूल्य समय हमे प्रदान करेंगे।

—डा आनन्द प्रकाश सभा उपम त्री

( 3 पृष्ठ का शेष )

देश का भी दुर्भाग्य समझता हू कि इस आर्य समाज के नेता कभी इधर सोचते ही नहीं हैं। इसीलिए मैंने ऊपर लिखा है कि आर्य समाज स्थापना शताब्दी के 10 वर्ष व्यतीत हो जाने पर भी हम कोई नया कार्यक्रम न तो आर्य समाज के सामन रख सके हैं और न बाकी जनता के। यह केवल इसलिए कि किसी के पास इस पर विचार करने के लिए समय नहीं है। यह काम तो नेताओ का होता है वही नेतृत्व कर सकते हैं। परन्तु नेतृत्व भी वही कर सकता है जो पहले सारी समस्याओ को समझने का प्रयास करे। फिर उनका समाधान ढूढें और उसे अपने कार्यकर्त्ताओ के सामने रखें। 12 वर्ष के पश्चात हमारे देश में जनगणना होती है तो यह प्रश्न भी उठता है कि हम अपने आपको हिन्दू लिखवायें या न लिखवायें प्रश्न अवश्य उठता है परन्तु निर्णय कभी नहीं लिया गया कि हमे क्या करना चाहिए? उस समय यह कहा जाता है कि हमे आर्य लिखवाना चाहिए क्योकि हिन्दू शब्द हमारे इतिहास या शास्त्रो मे कही नही आया। हम वास्तव मे हिन्दू नहीं हैं, आर्य हैं। यदि यही स्थिति है तो क्या हमने कभी यह प्रचार किया है कि हमें क्यो आर्य लिखवाना चाहिए। जनगणना का समय आयेगा तो फिर यह प्रश्न उठगा और किसी परिणाम पर पहुचे बिना ही जनगणना समाप्त हो जाएगी और यह विवाद फिर भी बना रहेगा कि हम आर्य हैं या हिन्दू हैं।

मैंने यह सब इसलिए लिखा है कि मैं यह अनुभव करता हू कि आर्य समाज एक दिशाहीन सस्था बनती जा रही है और उसका जनसाधारण पर प्रभाव कम हो रहा है। यदि कभी हम यह फैसला कर ल कि जनगणना के समय हमने केवल आर्य लिखवाना है तो हमे पता चल जाएगा कि हमारी स्थिति क्या है। इसी प्रकार और भी कई ऐसी बातें हैं जिनके कारण आर्य समाज का महत्त्व कम हो रहा है। वास्तविक स्थिति आज यह है कि आर्य समाज आज किसी भी गिनती में नही है। यह क्यो? इस पर विचार करने की आवश्यकता है। हमें इस दिशा में क्या करना चाहिए? इस विषय में अगले अक में अपने विचार पाठको के सामने रखू गा।

—वीरेन्द्र

# आज हम कहाँ खड़े हैं ?

ले—श्री प सत्यदेव जी विद्यालकार शान्ति भवन
14514 सैण्ट्रल टाऊन जालन्धर

पिछले दिनों आर्य समाज के समाचार पत्रों में कुछ लेख आए हैं। इन से प्रतीत होता है कि पुराने माने गए बहुत से सिद्धान्तों तथा ऐतिहासिक तथ्यो पर पुर्नविचार हो रहा है अथवा इनका पुन मूल्याकन हो रहा है।

पहले कुछ सिद्धान्तो की बात की जाए।

11 नवम्बर 1984 के 'आय मर्यादा' पत्र में श्री योगेन्द्रपाल जी सेठ, उप-प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, पजाब, का एक लेख महर्षि दयानन्द फिल्म निर्माण विरोध क्यो शीर्षक से प्रकाशित हुआ है।

माननीय श्री सत्यव्रत जी सिद्धान्तालकार के अनेक लेख आर्य मर्यादा आर्य जगत् आदि में प्रकाशित हुए हैं। इन में गुरुकुल शिक्षा पद्धति के पाठय ग्रन्थ भाग तथा आश्रम भाग की अलग 2 कर इन के सापेक्ष महत्व को आकने का प्रयत्न है।

सुप्रसिद्ध आर्य सन्यासी श्री सत्य प्रकाश जी के 'आय जगत' में प्रकाशित लेख मे वेदो की अपौरुषयता के सम्बन्ध मे नया विचार दिया गया है तथा ऋषि निर्दिष्ट सृष्टि सवत तथा मन्वन्तर आदि के विषय मे भी कुछ विचार दिए गए हैं।

तथ्यों ऐतिहासिक तथ्यो पर भी पुनर्विचार हो रहा।

ऋषि दयानन्द की मृत्यु के सम्बन्ध में डा भवानी लाल भारतीय जी द्वारा यह स्थापना की गई है कि धौड मिश्र ने ही वस्तुत ऋषिवर को दूध में विष दिया। 1924 में हुए माथुरा शताब्दी सम्मेलन मे ऋषि भक्त महाराजा नाहर सिंह जी ने इसका प्रत्याख्यान किया था। धौड मिश्र महाराजा के पास ऋषिवर के देहान्त के बाद भी अनेक वर्ष रहा और महाराजा ने ही उसे ऋषिवर की सेवा के लिए नियुक्त किया था।

इस तथ्य को लेकर कुछ अन्य विद्वानो ने भी अपने विचार दिए हैं।

पिछले दिनो एक सज्जन ने आय जगत' मे एक टिप्पणी प्रकाशित करवाई थी, जिसमें यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया गया था कि आर्य मुसाफिर पण्डित लेखराम जी ने युव विरजानन्द के भक्त श्री नयनसुख जडिया के माध्यम से ऋषि दयानन्द के प्रति जो कुछ दण्ड आदि देने की घटनाएं वर्णित की हैं, वे ठीक नहीं।

एक और विवाद का विषय ऋषि दयानन्द का अपने जीवन मे दूसरी बार टकारा जाने के सम्बन्ध मे भी है।

सम्भवत विद्वानो मे यह आलोडन प्रत्यालोडन की परम्परा तो चलती ही रहेगी। इन सब विषयो पर एक साथ तो विचार करना सम्भव नहीं। अत पहले ऋषि दयानन्द पर फिल्म निर्माण की बात पर ही विचार किया जाए।

आय भाईयो की सेवा में यह सूचना भी देना ठीक होगा कि फिल्म निर्माण काय का कुछ प्रारम्भ भी हो गया है। 'धर्मयुग साप्ताहिक सचित्र पत्र में दो चित्र भी आ चुके हैं। फिल्म के हीरो ऋषि के साफा-चोले से सुसज्जित खडी मुद्रा मे तथा एक चित्र मे बठी मुद्रा मे।

वस्तुत इस आन्दोलन का प्रारम्भ तब हुआ जब दिल्ली मे एक सभा हुई। इस मे आय समाज के प्रसिद्ध अनेक संन्यासी तथा विद्वान उपस्थित थे। आन्दोलन के लिए एक समिति बनाई गई। प्रसिद्ध सन्यासी श्री विद्यानन्द जी सरस्वती उसके सयोजक नियत किए गए। इस समिति की ओर से यह कहा गया कि ऋषि दयानन्द ने कथवास मे स्पष्ट रूप से महापुरुषो के स्वाग भरने का विरोध किया था। उनके पत्रो से भी ऐसे नाटक आदि के प्रति उनका दृढ विरोध प्रगट होता है।

आचार्य प्रवर श्री विश्वश्रवा व्यास जी ने यह विचार एक लेख मे प्रगट किया है कि इस विवाद को सार्वदेशिक सभा के पास भेजा जाना चाहिए था। और प्रमुख सभा इसका निणय करती। परोपकारिणी सभा या अन्य किसी समिति का आन्दोलन चलाना ठीक न होगा।

इधर सेठ योगेन्द्र पाल जी, आचाय सत्यप्रिय जी तथा अन्य सज्जनो ने ऋषि पर फिल्म बनाने के औचित्य को सिद्ध करने का प्रयत्न किया है। मैं समझता हू कि श्री सेठ जी तथा अन्य सज्जन भी आय समाज की हित भावना से ही प्रेरित हैं तथा उनकी युक्तियो मे बल भी है। फिल्म या चलचित्र प्रचार का एक सशक्त साधन है। इसका प्रभाव बहुत व्यापक है। चलचित्रों के ही प्रभाव से हिन्दी का प्रवेश भारत भर में व्याप्त हो गया है। चित्रो द्वारा प्रशिक्षण बडा प्रभावी प्रशिक्षण है। कुछ लोगो का यह विचार है कि सम्भवत ऋषि दयानन्द को इस सशक्त माध्यम के विषय मे अधिक ज्ञान न था। इसलिए उन्होने इस का विरोध किया।

श्री योगेन्द्रपाल सेठ जी ने कधे पर बाजा उठाए, ग्राम ग्राम जा कर प्रचार करने वाले भजनोपदेशको की खिल्ली भी उडाई है।

मेरा नम्र निवेदन यह है कि विरोध और विवाद का क्षेत्र सकुचित हो जाए यदि यह समझ लिया जाए कि कोई भी सज्जन फिल्म या चलचित्र के महत्व को और इस बात को कि यह एक बहुत महत्वपूर्ण सशक्त प्रचार का माध्यम है मानने से इन्कार नही करते। यह भी कोई नही कहता कि आय विचारो पर आधारित फिल्मे न बनाई जाए। ऐसी फिल्मे तो बन रही हैं और बनेगी भी। आक्षेप तो केवल ऋषि दयानन्द के व्यक्तित्व को फिल्म द्वारा प्रगट करने पर है।

यदि हम यह स्पष्ट समझ लें कि फिल्म कोई विशुद्ध ऐतिहासिक चित्र नही होता। फिल्म मे व्यक्ति अथवा घटना को कल्पना का पुट दे कर आकषक और मनोरजक बना कर चित्र पट पर लाया जाता है। फिल्म इतिहास नही एक प्रकार का दृश्य काव्य है। उस मे तथ्य एक छोटा-सा भाग है। पात्रो के कल्पित रूप और कल्पित घटनाओ की उदभावना करके सजावट उत्पन्न करना ही महत्व की बात है। यही बात काव्य और नाटक मे भी होती है। जो भी महापुरुष एक बार काव्य-नाटक नौटकी आदि के काल्पनिक रूपो मे प्रवेश पा गया उसका चरित्र ऐतिहासिक न रह कर काल्पनिक हो जाता है। राम और कृष्ण का चरित्र इसका उत्कृष्ट उदाहरण है। धार्मिक पराण शास्त्र (मिथोलोजी) प्रत्येक धर्म का एक सुदर अग है। महारास मे गोपियो को आलिगन कर नृत्य करते हुए भगवान कृष्ण की बाकी छवि भक्तो को सदा लुभाती है। यदि दयानन्द भी कल्पना के पात्र बने तो गजर बालाओ के साथ डाडिया नृत्य करते हुए ऋषि की मनोरमा मूर्ति भी चित्रपट पर आ जाएगी।

फिल्म उद्योग के दो मुख्य लक्ष्य हैं। मनोरजन तथा अर्थ प्राप्ति। केवल लोगो को धर्म शिक्षा या आचार शिक्षा देने के लिए कोई लाखो रुपया खर्च कर फिल्म नहीं बनाता। मनोरजन द्वारा ही अर्थ प्राप्ति होती है। ऋषि के जीवन मे भी मनोरजन के अनेक साधन कलाकारो ने उपलब्ध कर लेने हैं। बहिन की मृत्यु के समय बालक मूलशकर नृत्य देखने गया हुआ था एक वेश्या ने श्रृगार द्वारा ऋषि को प्रलोभित करने का प्रयत्न किया था। अथवा विरोधियों द्वारा भेजी गई थी। जोधपुर दरबार का दृश्य भी मनोरजक होगा। जहा इतिहास सहायता न देगा कल्पना काम करेगी।

क्या ऋषि जीवन का यही रूप प्रचार का साधन बनेगा ?

आजकल कलेण्डरो द्वारा भी प्रचार हो रहा है। क्या उन पर ऋषि का ऐतिहासिक चित्र होता है। 90 प्रतिशत पर तो काल्पनिक चित्र होता है।

मूर्ति निर्माण भी तो कलात्मक प्रचार का एक साधन है। मूर्तिया और समाधिया आजकल का फशन हैं। मूर्ति पर हार भी चढते हैं पर कभी कभी मूह काला भी कर दिया जाता है। मूर्ति बनाने पर मूर्ति पूजा भी आवश्यक हो जाती है। ऋषि ने तो मूर्ति और समाधि बनाने का प्रबल विरोध किया था फिर भी कही कही ऋषि मूर्तिया बनी हैं। अन्य आय नेताओ की भी मूर्तिया बनी हैं।

फिल्म और उपन्यास का विषय जब ऋषि दयानन्द बन गए तो दयानन्द लीला भी होनी शुरू हो जाएगी।

महापुरुषो के इन्ही काल्पनिक रूपो के द्वारा इतिहास की हत्या होती है। इस दृष्टि से ऋषि का विरोध सच्चा था।

आजकल चुनाव के सम्बन्ध मे प्रबल प्रचार चल रहा है। फिल्म दूरदर्शन दूरभाष तथा समाचार पत्र इन सब साधनो के होते हुए भी विभिन्न दलो के नेता और उनके कायकर्ता दर दर घूम रहे हैं। अधिक से अधिक व्यक्तियो तक सम्पर्क चाहते हैं। व्यक्तिगत सम्पर्क प्रचार का सब से अच्छा साधन है। क्योकि यह सीधा और सरल है तथा अधिक प्रभावी है। अन्य साधन सीधे माध्यम नही हैं। जो आय समाजो के अधिकारी दुकानो तथा अपने अपने कार्यालयों मे बैठ कर चपरासियो तथा समाचार पत्रो द्वारा जनता से सम्पर्क चाहते हैं। वे कभी पूर्णतया सफल न होगे। ऋषि दयानन्द तथा आदि शकराचार्य जैसे प्रचारको ने देश भर मे कन्या कुमारी से हिमालय तक घूम घूम कर प्रचार किया केवल साहित्य द्वारा नही। वे इस व्यक्तिगत सम्पर्क के महत्व को जानते थे।

कधे पर बाजे और बिस्तर रख कर गाव गाव घूमने वाले श्री बस्तीराम जैसी भजनमण्डलियो ने ही हरियाणा को आय समाज का गढ बना दिया। पजाब मे शहरो को ही प्रचार के केन्द्र बनाने के कारण जमींदार वर्ग तथा उन पर आश्रित मजदूर वर्ग तक आय समाज का सन्देश नही पहुच पाया।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

# दक्षिण-पूर्वी एशिया की सांस्कृतिक तीर्थ यात्रा-4

ले.—श्री डा. सत्यकेतु जी विद्यालंकार

(गताक से आगे)

मध्य काल में इण्डोनेशिया के हिन्दू देवी-देवताओं की प्रतिमाओं को मन्दिरो में प्रतिष्ठापित कर उनकी पूजा करते थे पर वर्तमान समय में बाली के हिन्दुओं की पूजा पद्धति मे प्रतिमाओं या मूर्तियों की पूजा को स्थान प्राप्त नही है। वहा प्रत्येक परिवार के घर मे एक पूजा स्थल होता है। जिसके एक भाग को पद्मासन कहा जाता है। पद्मासन मे परिवार के लोग त्रिसन्ध्या के मन्त्र वेद शास्त्रों से लिए गए हैं, मन्त्रोच्चारण करने के पश्चात् ध्यान किया जाता है। इस यज्ञ के अतिरिक्त अन्य यज्ञ भी किए जाते हैं पर केवल विशेष अवसरो पर। पितरों की पूजा बाली मे प्रचलित है और परिवार के पूजा स्थल का अन्य भाग इन पूजा के लिए प्रयुक्त किया जाता है। परिवार के पूजा स्थलो के अतिरिक्त प्रत्येक ग्राम मे एक-एक केन्द्रीय पूजा स्थल या मन्दिर (जिसे बाली में 'पुर' कहते हैं) होता है। जो सार्वजनिक या सामूहिक पूजा के काम आता है। इसी प्रकार प्रत्येक जिले में एक-एक केन्द्रीय पूजा स्थल या 'पुर की सत्ता है और सम्पूर्ण बाली का एक सर्वोपरि या सार्वभौम मन्दिर है जिसे बेसाखी कहा जाता है। वह केवल बाली के हिन्दुओ का ही नहीं अपितु सम्पूर्ण इण्डोनेशिया के हिन्दुओ का सर्व प्रधान पुर है और यहा पूजा के लिए सारे देश के श्रद्धालु नर-नारियों का आगमन होता रहता है। विश्व हिन्दू परिषद् ने इसे विश्व भर के हिन्दुओ के लिए तीर्थ के रूप में स्वीकार कर लिया है और अब भारत के हिन्दुओ के लिए भी इसका वही महत्व हो गया है जो बदरीनाथ या रामेश्वरम् का है। यद्यपि बाली मे मूर्ति पूजा का प्रचलन नहीं है, पर कतिपय देव मूर्तिया अब भी वहा विद्यमान हैं और जनता इनके प्रति श्रद्धा भी रखती है। ऐसी एक प्रतिमा भगवती दुर्गा की है।

इण्डोनेशिया के हिन्दुओ का यह विश्वास है कि महर्षि अगस्त्य ने वहा आकर धर्म का प्रचार किया था। अगस्त्य के प्रति उनकी अगाध श्रद्धा है। हमने वह अगस्त्य गुफा भी देखी, जहां महर्षि ने तपस्या की थी और वहा रह उन्होंने धर्म की स्थापना की थी। अगस्त्य के पश्चात् महर्षि मार्कण्डेय इण्डोनेशिया गए थे। वहा के हिन्दू धर्म सस्थापक के रूप मे उनका भी अत्यधिक आदर करते हैं गुणवर्मा नामक एक अन्य आचार्य भी दक्षिण पूर्वी एशिया के क्षेत्र में धर्म प्रचार के लिए गए थे। बाली के लोग उन्हे भी सम्मान पूर्वक स्मरण करते हैं।

जनता के जीवन पर हिन्दू धर्म का क्या प्रभाव है। इस विषय मे श्री डाक्टर शर्मा ने हमे कुछ महत्वपूर्ण बातें बताई। शर्मा जी असम(भारत) की गोहाटी यूनिवर्सिटी मे सस्कृत विभाग के अध्यक्ष हैं और गत सवा साल से बाली की उदयन यूनिवर्सिटी मे डेपुटेशन पर आकर सस्कृत के प्रोफेसर पद पर कार्य कर रहे हैं। उन्हे इण्डोनेशियन भाषा का समुचित ज्ञान और बाली के जन-जीवन का उन्हे अच्छा परिचय है। उन्होंने हमें बताया कि सवा साल के बाली निवास मे चोरी कोई वारदात उनके सुनने मे नही आई। वहां के लोग आपस मे लड़ते-झगड़ते भी नहीं हैं। यदि किन्हीं की मोटर साईकिलें आपस में टकरा जाए और किसी को चोट भी लग जाए, पर वे लड़ने या एक दूसरे को दोष देने की बजाय मुस्कराते हुए 'ओम् स्वति कहकर अपने-अपने रास्ते पर चले जाते हैं। क्योकि वे कर्म फल पर विश्वास रखते हैं, अत मानते हैं कि जिसका दोष होगा उसे परमेश्वर कर्म फल देगा ही, परस्पर लड़ने से क्या लाभ। हिन्दू समाज का ऐसा ही उज्ज्वल रूप चीनी यात्री फाहियान ने भारत मे देखा था जब वह गुप्त वंश के शासनकाल मे भारत आया था। डा शर्मा के अनुसार हिन्दू धर्म से प्रभावित बाली के जन-जीवन का आज भी यही उज्ज्वल रूप है। बाली के हिन्दू जब परस्पर मिलते हैं तो ओम स्वस्ति अस्तु कहकर एक-दूसर का अभिवादन करत हैं, विद्वान व बड़े लोग आशीर्वाद देते हुए ओम दीर्घायुस्तु तथा 'ओ अविघ्नमस्तु' भी कहते हैं। वहा के जन-जीवन पर सस्कृत भाषा के इस प्रभाव को देख कर गौरव की अनुभूति होती है। केवल बाली मे ही नहीं अपितु अन्यत्र भी सस्कृत का यही प्रभाव विद्यमान है। वहा के होटलो के नाम स्वस्तिक' अम्बर स्वम और आर्य सवृक्ष हैं। एक बैंक का नाम यहां 'सर्वलोक' है। इण्डोनेशिया मे राजपथ की कपाल नगर सज्ञा है। वहां की भाषा में नगर का अर्थ है राज्य और सस्कृत में कपाल मूर्धा का पर्याय है। डेनपसार के हवाई अड्डे की दीवारों पर रामायण की कथा की रूपावलिया चित्रित हैं। बाली में प्रवेश करते ही यह अनुभव होने लगता है, कि हम 'आर्यावर्त' में आ गए हैं यहा का प्रत्येक व्यक्ति हिन्दू या आर्य है, और यहां बहुत से लोगों को गायत्री मन्त्र कण्ठस्थ है। इण्डोनीसिया में धर्म शिक्षा सबके लिए अनिवार्य है। हिन्दुओ को हिन्दू धर्म की शिक्षा अनिवार्य रूप से दी जाती है और उसमें उत्तीर्ण हुए बिना कोई छात्र ऊपर की कक्षा मे नही जा सकता। यही कारण है कि यहां के सब लोग अपने धर्म से पूर्ण परिचित हैं।

बाली के राज्यपाल भी मन्त्र हैं। हम उन से भेंट करने के लिए उत्सुक थे। अपने व्यस्त समय में से दस मिनट निकाल कर उन्होंने हमे से मिलना स्वीकार कर लिया। पर जब हम उनसे बात करने बैठ, तो समय का किसी को ध्यान नही रहा। एक घन्टे तक उनसे बातचीत होती रही। भारत की विद्वन्मण्डली से मिल कर उन्होने कहा कि सदियो के बाद भारत के इतने विद्वानों ने हमारे देश मे पदार्पण किया है। भारत से हजारो पर्यटक अमरिका, यूरोप जापान आदि जाते हैं, पर दक्षिण-पूर्वी एशिया के इस क्षत्र में भारतीय यात्रियो की यह पहली मण्डली आयी है। प्रकृति की रमणीयता की दृष्टि से यह देश अनुपम है। भारत के साथ हमारा सम्बन्ध हजारो साल पुराना है। हमारी और आपकी सास्कृतिक तथा धार्मिक परम्पराए एक हैं। इस दशा मे हमारे और आपके सम्बन्धो में वृद्धि होनी ही चाहिए। मुझे आशा है कि भविष्य में भी भारत के विद्वानो व यात्रियो की मडलिया बाली आती रहेंगी।

राज्यपाल महोदय के कार्यालय द्वारा हमारा आतिथ्य किया गया। और हमारे साथ फोटो भी खिचवाईं। जिस आत्मीयता के साथ श्री मन्त्र ने हम से भेंट की, उस से सब के हृदय गद् गद् हो गए।

उसी दिन सायकाल हिन्दू धर्म सस्थान में एक अन्य आयोजन हुआ, जिस मे स्वामी ओमानन्द सरस्वती के शिष्य ब्रह्मचारी राज वीर तथा ब्रह्मचारी विश्वानन्द देवकर्णी ने योगासनों का प्रदर्शन किया। ब्रह्मचर्य के पालन तथा योगाभ्यास से मनुष्य कितनी शक्ति प्राप्त कर सकता है जिससे कि लोहे की छड़ तक मोड़ी जा सकती है क्रियात्मक रूप से देख कर सब कोई आश्चर्य चकित रह गए। सस्थान के दो हजार के लगभग छात्रो तथा आचार्यों पर इस प्रदर्शन का बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। इण्डोनीसिया के हिन्दुओं की दृष्टि मे गगा-जल का बहुत महत्व है। वे उसे पवित्र मानते हैं। गगा के अतिरिक्त यमुना, नर्मदा गोदावरी आदि अन्य भारतीय नदिया भी उनकी दृष्टि में पवित्र हैं। वहा के हिन्दुओं को उपहार मे देने के लिए हम गगाजल साथ ले गए थे। उसे उन्होने कृतज्ञतापूर्वक स्वीकार किया।

बाली में हम उन आकर्षक पर्यटन-स्थलो के अवलोकन के लिए भी गए जिन्हे देखने के लिए विदेशी यात्रियो की वहा भीड़ लगी रहती है। पर हमारे लिए वहा का प्रधान आकर्षण वह वातावरण था जिस मे भारत की प्राचीन धार्मिक तथा सांस्कृतिक परम्पराए ओत प्रोत थी। हम वहां की भाषा नहीं जानते थे, और वहां के लोग हमारी भाषा नहीं समझते थे पर यह जानकर कि हम भी हिन्दू हैं, उनके मुख मण्डल पर आत्मीयता के जो भाव उजागर हो जाते थे उनके माधुर्य को शब्दो द्वारा प्रकट नही किया जा सकता।

---

# गुरुवर स्वामी विरजानन्द एवं शिष्य स्वामी दयानन्द

लेखक—श्री ब्रह्मदत्त जी,
बी।46 गणेश मार्ग, बापूनगर, जयपुर—302015

परमश्रद्धेय डा सत्यदेव जी आर्य का लेख, "गुरु विरजानन्द पर शिष्य दयानन्द को लाठी प्रहार करने और बार-2 डयोढी बन्द कर देने का आरोप कहा तक यथार्थ है ? उन्ही की कृपा से आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब (जालन्धर) के मुख पत्र 1984 के दीपावली विशेषाक में देखने को मिला। वास्तव मे हमारे लिए यह अत्यन्त खेद का विषय है कि हम महर्षि दयानन्द के जीवन के बारे मे अनेक बातो की तथ्यात्मक खोज नही कर पाए और अनेक बातें अभी भी विवादास्पद बनी हुई है। मै तो यहा तक कहूगा कि आय विद्वानो के लिए और बडी 2 सस्थाओ के लिए एक यह चैलेन्ज है। युग द्रष्टा महर्षि के सम्बन्ध मे भिन्न-भिन्न प्रकार की बातें सामने आती हैं और हम उनकी एक प्रमाणिक जीवनी भी अभी तक एक शताब्दी मे भी प्रकाशित नही कर पाए।

विद्वान् लेखक डा आर्य बहुत सी खोजपूर्ण बातें सामने लाए हैं उन्हे शत् शत् प्रणाम।

इन्हीं की प्रेरणा से मैंने अपनी स्वय की सग्रहित पुस्तकों को देखा। अनेक पुस्तको मे गुरु-शिष्य के सम्बन्ध के विषय मे कुछ नही मिला किन्तु दो अग्रेजी की पुस्तकों एव अन्य पुस्तिकाओ मे इस विषय में जो कुछ लिखा है पाठको के सत्या-सत्य निर्णय एव तथ्यात्मक खोज के लिए नीचे उल्लेख करता हू—

(1) अग्रेजी पुस्तक "स्वामी दयानन्द सरस्वती जी" जो 1971 में बी एम एम अल्हूवालिया द्वारा लिखित और नेशनल काउन्सिल आफ एज्यूकेशनल रीसर्चट्रेनिङ्ग द्वारा प्रकाशित के पृष्ठ 14 में लिखा है जिसका हिन्दी मे साराश यह है कि गुरु विरजानन्द के चरणो में बैठ कर बडी श्रद्धा एव निष्ठा से दयानन्द ने तीन वर्षों तक शिक्षा प्राप्त की। वे (दयानन्द) यमुना से जल लाते थे, गुरु जी के शरीर पर मालिश करते थे। और कमरे को साफ करते थे अर्थात् झाडू लगाते थे। बड परिश्रम का जीवन व्यतीत करते थे और मन्दिर के फर्श पर सोते थे तथा छोटी-छोटी भिक्षाओ से अपनी आवश्यकता पूरी करते थे।

(2) भारत सरकार के शिक्षा मत्रालय ने 1957 में एक बुक ट्रस्ट जिसका नाम नेशनल बुक ट्रस्ट" है कायम किया जिसके द्वारा 1970 मे प्रकाशित और श्री बी, के सिह द्वारा लिखित पुस्तक "स्वामी दयानन्द" के पृष्ठ 30 पर गुरु शिष्य का वर्णन करते हुए श्री सिह ने लिखा है कि बडी हिचकिचाहट के साथ स्वामी विरजानन्द ने दयानन्द को शिष्य बनाना स्वीकार किया और साथ ही अपने भोजन एव निवास का प्रबन्ध भी अपने आप करने के निर्देशन दिए। भाग्य से दयानन्द को श्री अमरलाल जोशी नाम का मथुरा मे ही गुजराती औचित्य ब्राह्मण मिल गया जिसने दयानन्द का अपने घर मे तीन वर्षो तक जब तक विद्याध्ययन के लिए वहा रहे भोजन कराया और निवास के लिए दयानन्द ने एक कमरा ले लिया जहा से यमुना का दृश्य देखा करते थे। यह कमरा एक मन्दिर परिसर में ही था।

श्री सिह ने इसी पुस्तक के पृष्ठ 31 मे लिखा है 'गुरु विरजानन्द बहुत कडा अनुशासन रखते थे। जो पढा दिया उसे कभी दोहराते नहीं थे। अत शिष्य को बडा ध्यान रख कर पढना पडता था'।

(नोट—उक्त पुस्तक भी अग्रेजी भाषा की है अत इसका साराश हिन्दी मे दिया गया है।

(3) आर्य समाज के सस्थापक युग-प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती की निर्वाण शताब्दी की स्मृति मे प्रकाशित पुस्तिका' ऋषि दयानन्द और उनकी मान्यताए' जिसे, 'सुरुचि प्रकाशन सस्थान, भोपाल (म प्र) ने प्रकाशित कराया है इसके पृष्ठ (5) पर लिखा है महर्षि दयानन्द गुरु के आश्रय को समझ कर कपटछल को छोड कर सरलता से गुरु आज्ञा का पालन करने लगा। पहर के तडके यमुना जल के कलशे लाकर गुरु को स्नान कराना अखण्डित ब्रह्मचर्य व्रत धारण करना और गुरु के दण्ड को औषधवत स्वीकार करना।

(4) श्री त्रिलोक चन्द आर्य द्वारा लिखित और गोविन्द राम हासानन्द नई सडक दिल्ली द्वारा 1956 मे प्रकाशित पुस्तिका 'महर्षि दयानन्द का जीवन-चरित्र' के पृष्ठ 17 गुरु की सेवा नामक शीर्षक मे लिखा है कि स्वामी विरजानन्द जी नित्य प्रति ताजे यमुना जल से स्नान किया करते थे। यमुना से जल लाने का काम दयानन्द को सौंपा गया था। स्वामी दयानन्द जी भी गुरु जी की सेवा में इतने दृढ थे कि सर्दी, गर्मी, आधी वर्षा कुछ भी हो कभी पानी लाने में न चूकते थे।

इसी पुस्तिका में आगे लिखा है, झाडू देने का काम—गुरु की कुटिया में झाडू देने का काम भी दयानन्द करते थे।

एक दिन जब दयानन्द झाडू दे चुके थे और कूडा इकट्ठा कर टोकरी की तलाश मे थे। दण्डी जी का पैर कूडे पर पड गया। दण्डी जी क्रुद्ध हुए और स्वामी दयानन्द को लात मारी। दयानन्द जी ने इस पर तनिक भी रोष न किया और थोडी देर बाद गुरु के पैर दबाने जा पहुचे और कहने लगे' स्वामीन मेरा शरीर तो तपस्या के कारण पत्थर सा हो गया है आप की टाग दुखती होगी।

(5) सबसे ज्यादा आश्चर्य की बात तो यह है कि आर्य समाज की शिरोमणी संस्था के मुख पत्र सार्वदेशिक साप्ताहिक के महर्षि दयानन्द जीवन विशेषाक (20 अगस्त 1967) के (पृष्ठ 1) महर्षि के जीवन पर एक दृष्टि स्वामी दयानन्द का (करक्टर) आचार पृष्ठ 2 में लिखा है, जहा उनके (स्वामी दयानन्द के) गुणों का वर्णन किया गया है स्वामी विरजानन्द की गालियो और उनकी मार की परवाह न कर निरन्तर विद्या प्राप्ति के लिए उनके पीछे लगा रहना उसी सुदाचार की पचम साक्षी थी।

अन्त मे निवेदन है कि मैं भी यथा शक्ति इस महत्वपूर्ण विषय मे अपनी खोज जारी रखूंगा और जो भी बातें सामने आवेगी आर्य जगत् को अवगत कराता रहूगा।

—

( 5 पृष्ठ का शेष )

वे आर्य नेता तथा अन्य सज्जन जो फिल्मो की लगड की बैसाखी द्वारा प्रचार की आशा रखते हैं क्यो नही देख पाते कि विदेश से आई एक देवी मदर टरेसा ने केवल दिव्य सेवा भावना द्वारा भारत भर के तथा ससार के अन्य देशो मे करूणा केन्द्रो का जाल बिछा दिया।

ईसाई पादरियों ने कुष्ट रोगियो की सेवा द्वारा धर्म प्रचार किया। वे यह भी नही देख पाते कि सिख भाईयो का प्रत्येक गुरुद्वारा प्रत्येक आए गए की सेवा द्वारा किस प्रकार आकर्षण का केन्द्र बन जाता है। ईमानदारी से जनता जनार्दन की सच्ची सेवा ही प्रचार का धर्म प्रचार का सब से बडा साधन है।

दिव्य दृष्टि सम्पन्न ऋषि वर दयानन्द ने जो बात कही थी कि रास मण्डलियो, लीला-पार्टियो द्वारा जो महापुरुषो के अनुकरण चित्र उपस्थित किए जाते हैं वे महापुरुषो के रूप को बिगाडने वाले होते हैं। यह बात सोलह आने ठीक थी। मूर्तियो और समाधियो द्वारा भी धर्म प्रचार कम होता है पाखण्ड-प्रचार अधिक होता है। पूज्य महात्मा गाधी जी की समाधि पर हाथ जोड कर प्रतिज्ञा करने वाले न जाने कितने लोगो को लोभ की आधी ने उडा दिया है।

फिल्म उद्योग के काम करने के इच्छुक आर्य भाईयो को आय समाज की या वेदो की विचार-धारा को लेकर कहानियो की फिल्मे बनाने से कोई नही रोकेगा। पर ऋषि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द या हसराज आदि महापुरुषो की जीवनियो को फिल्माने से इनका महत्व घटेगा ही बढेगा नही। इनका ऐतिहासिक रूप अवश्य बिगडेगा।

इस ही सम्बन्ध मे एक महत्वपूर्ण आधुनिक प्रसग की ओर भी ध्यान खीचना आवश्यक है। ससद के भीषण चुनाव सघर्ष मे अन्य सब अच्छे बुरे साधनो के साथ फिल्म-उद्योग का भी प्रयोग किया गया। 16 दिसम्बर 1984 के अग्रेजी पत्र इण्डियन एक्सप्रेस के अनुसार काग्रेस—ई तथा भाजपा पार्टी ने इसका मुख्य रूप से प्रयोग किया। इन्दिरा—काग्रेस ने रिडिफ्यूजन नामक सगठन द्वारा लगभग 90 करोड खर्च किया। दो फिल्मे बनाई गई एक श्रीमती इन्दिरा गाधी पर नाम मा' रखा गया। दूसरी राजीव गाधी पर, नाम रखा गया 'अमेठी का सूरज"। भाजपा दल ने श्री अटल बिहारी वाजपेयी पर फिल्म बनवाई दिखाया सगठन द्वारा। खर्च लगभग 20 लाख रुपया। इन फिल्मो की सैकडो प्रतिया प्रदर्शनार्थ देश भर मे भेजी गई एक प्रति का खर्च लगभग एक लाख।

पर क्या इन फिल्मो मे इन मान्य नेताओ के सही चित्र दे। बिल्कुल नहीं-काल्पनिक घटनाए-काल्पनिक भाव तथा काल्पनिक सौन्दर्य मय रूप।

इतने खर्च के करने पर भी दोनों पार्टियो को दर-दर पहुचने का—व्यक्तिगत रूप से प्रयास करना पडा।

क्या फिल्म प्रेमी ऋषि दयानन्द का भी काल्पनिक सुन्दर रूप जनता के सामने रखना चाहते हैं।

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

करता है घोडे की। उसके श्रम मे कमी नही परन्तु यह साधन साध्य के लिए ठीक नही। साध्य (दूध की प्राप्ति) के लिए उसे गौ की सेवा करनी चाहिए। एक मजदूर भी शारीरिक श्रम करता है और एक पहलवान भी। पहलवान का लक्ष्य है अपने शारीरिक अवयवो को पुष्ट करना, अत उसके अग पुष्ट और सुदृढ हो जाते है। मजदूर का लक्ष्य है मजदूरी पाना अत मजदूरी पा सकता है। इसलिए तप की विधि और लक्ष्य शास्त्रानुसार होना चाहिए। भारत मे स्त्रिया और साधु लोग कायक्लेश तो बहुत उठाते हैं परन्तु उसमे आत्मिक लाभ कुछ नही होता। कारण—विधि का ठीक न होना तपके वर्णन मे योगदर्शन भाष्यकर व्यास मुनि कहते है—तपो द्वन्द्वसहनम्, द्वन्द्व च जिघत्सापिपासे स्थानासने, काष्टमौनाकारमौन च, व्रतानि चैव यथायोग कृच्छ्र-चान्द्रायणसान्तपनादीनि।

भूख प्यास, स्थान, आसन, काष्ट के समान मौन रहना कृच्छ्रचान्द्रायण सान्तपन आदि व्रत तप हैं।

# वेद के सार्वभौम प्रचार के लिए अनुसंधान कार्य आवश्यक

ले.—श्री प. वीरसेन वेदश्रमी, वेदविज्ञानाचार्य.
वेद सदन, महारानी पथ, इन्दौर—452007,

## 1. आर्य समाज अपनी वर्तमान स्थिति पर विचार करे—

वैदिक धर्म की जय हो—आर्य समाज अमर रहे, यदि इन जय घोषो को सफल करना है तो सफलता के मार्ग का अनुसन्धान करना होगा। अवास्तविक आत्मख्याति के समाचार एव चित्रो को प्रकाशित करने से आर्य समाज की प्रगति अवरुद्ध ही नहीं अपितु विनष्ट हो गई है विद्वानो का अभाव दृष्टिगोचर हो रहा है। अब आर्य समाज के लिए विद्वान् वक्ता, अन्वेषणकर्ता, शास्त्रार्थकर्ता साहित्य रचने वाले' सम्पादक, कुरान, बाइबिल, जैनमत, पुराणमत के अध्ययनकर्ताओ का अभाव होता आ रहा है। आर्य समाजो में कार्य एव प्रगति के अभाव से तथा नवीन सदस्यता के अभाव मे बैंक खुलने लगे क्योकि हमारे पास कुछ कार्य करने को शेष नही रहा। हमने अपने आर्य मन्दिर अब शादी, विवाह गृह बना दिये। हमने जातीय सस्थाओ को राजनैतिक सस्थाओ को, उनके कार्यक्रमो को करने के लिए किराये पर कमरे दिये। कहीं पर छात्रावास के रूप मे छात्रो को रखकर केवल किराया लेना प्रारम्भ कर दिया और वे वहा अनैतिक कार्य करते हैं। तो हम उन्हे पृथक् भी नहीं कर सकते। आर्य समाज की इस दीन-हीन दशा पर विचारने का समय ही किसी के पास नही है।

## 2. नवीन चिन्तन आवश्यक है-

वेद को विश्वव्यापी बनाने के लिए और आर्य समाज मे नवजीवन प्रदान करने के लिए नए चिन्तन के साथ कार्यक्रम बनाना होगा। आज विज्ञान का युग है। डेढ़ शताब्दी पूर्व विज्ञान का उदय हुआ। वह पृथिवी पर व्याप्त हो गया। हमारे सारे व्यवहार और जीवन मे अभिन्न सहयोगी बन गया। वह हम से छूट नही सकता। वह पृथिवी के ऊपर, हमारे अन्तरिक्ष मण्डल मे भी मडरा रहा है। नित्य नये आविष्कार हो रहे हैं। हमारे पठन पाठन व्यवस्था में भी व्याप्त हो गया। आज हम विज्ञान के बिना जी नही सकते। कोई भी किसी धर्म, सम्प्रदाय मतमतान्तर का हो वह विज्ञान से, वैज्ञानिक सत्य से विमुख नहीं हो सकता। क्या वेद और वेद का विज्ञान विश्व के जीवन के साथ इस प्रकार अभिन्न रूपता को प्राप्त हो सकता है? 'उद्यमेन ही सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथे" प्रयत्न से, पुरुषार्थ से ही कर्म सिद्धि होती है। कृण्वन्तो विश्वमार्यम लक्ष्य घोषित कर के अकर्मण्य बनने से कुछ नही होगा। अकर्मण्यता भी अविद्या है। अन्धन्तम प्रविशन्ति, मन्त्र के अनुसार हमारी दशा महा अन्धकारमय है।

हम अपने लक्ष्य कृण्वन्तो विश्वमार्यम् को कभी भी प्राप्त नही कर सकते। वेद सब सत्य विद्याओ की पुस्तक है। यह आर्य समाज का प्रधान घोष है। अन्य किसी का नही अत आर्य समाज को सर्वाधिक प्रयत्न इस को सिद्ध करने और वेद के विज्ञान को विश्व व्यापी बनाने को करना ही पड़ेगा। इस निमित्त वेदानुसार विद्याओ की सूची तैयार करनी चाहिए। उनमे से कौन-कौन सी विद्याए आज प्रचलित हैं और कौन-कौन सी अभी प्रचलित नही है यह भी विभाग करना होगा अप्रचलित विद्याओ के अनुसन्धान और विकास का प्रयत्न करना होगा अर्थात् आर्य समाज को आर्य समाज की शिक्षण सस्थाओ मे अनुसन्धान कार्य को प्राथमिकता प्रदान करनी होगी और सैकड़ो ही नही हजारो विद्वानो को अनेक प्रकार से अनुसधान कार्य मे लगाना होगा। बड़े-बड़े जलूस, बड़े-बड़े मेले लगाना, बड़े-बड़े करोड़ो रुपए के अस्पताल खोलने की योजनाए, सगमरमर की विशाल बिल्डिंग बनाने 84 या शताधिक खम्बो की यज्ञशाला बनाने आदि कार्य केवल अविद्यात्मक है, जब तक वेद विद्याओ के अनुसन्धान की आत्मा की प्रतिष्ठा न हो।

## 3. वेद के अनुसन्धान कार्य को प्राथमिकता दें

इस महान्धकारमयी स्थिति से निकलने का एक मात्र उपाय है अनुसधान की दृष्टि, अनुसन्धान की वृत्ति और अनुसन्धान की सृष्टि। अनुसन्धान के बिना

## 4. अनुसन्धान से जीवन एव प्रगति की प्राप्ति

किसी भी कार्य मे अनुसन्धान से ही प्रगति होती है। जहा अनुसन्धान कार्य नही वहां प्रगति का अभाव ही रहेगा। प्रगति का अभाव ह्रास का ही परिचायक

है और कालान्तर मे वह सस्था काल कवलित ही हो जाती है। अत आर्य समाज में अनुसन्धान प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करना चाहिए। आर्य समाज के प्रारम्भिक काल में अनुसन्धान की कुछ प्रवृत्ति भी थी तब आर्य समाज जीवित जागृत परम तेजस्वी एव प्रगति पूर्ण सस्था मानी जाती थी। केवल सिद्धान्त मात्र मे विश्वास रखने से उन्नति नहीं होती है। जब तक उन सिद्धान्तो के प्रति अनुसन्धान न किया जावे।

## 5. अनुसन्धान का पथ प्रवर्तक महर्षि :

महर्षि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती ने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका मे यह प्रयत्न किया कि वेद मे विविध विद्याओ का अस्तित्व मूल रूप से है उन्ही विद्याओ का विकास और अनुसन्धान करने का प्रयत्न करना चाहिए। उसमे उन्होने बहुत प्रभावशाली रूप मे युक्ति प्रमाण पूर्वक तथा दृष्टान्तो सहित यज्ञ से वायुमण्डल की शुद्धि होती है और यह शुद्धि कार्य करना अनिवार्य है एव यज्ञ द्वारा ही समुचित रूप से सम्भव है यह प्रतिपादन किया है। एक समय था जब युक्ति प्रमाण से ही सब निर्णय मान्यता को प्राप्त होते थे।

परन्तु वर्तमान समय मे अनुसन्धान एव प्रयोग प्रदर्शन पूर्वक परिणाम प्रकट करने पर मान्यता प्राप्त होती है अन्यथा नहीं। अत यज्ञ के द्वारा वायु मण्डल मे किस-किस द्रव्य से क्या-क्या परिणाम प्रकट होते हैं और उनसे किस-किस प्रकार के प्रदूषणो का विनाश होता है एव कौन से गुणो की वृद्धि होती है तथा उनका शुभ प्रभाव प्राणी जगत पर वनस्पति पर क्या होता है। इसके अनुसन्धान व प्रयोग के लिए वैदिक विज्ञान प्रयोगशालाए विविध स्थानो पर सक्षम स्थापित करनी होगी।

## 6. याज्ञिक प्रभावो का विश्लेषण हो—

यज्ञ द्वारा अन्तरिक्षस्थजलो की शुद्धि होती है और उससे वृष्टिजल की वृद्धि होनी है ऐसा महर्षि के वेद भाष्य मे अनेक स्थानो पर लिखा है अत सामान्य वृष्टिजल और यज्ञ प्रभावित वृष्टि जलो का विश्लेषण करके दोनो की सामर्थ्य तथा उपयोगिता का प्रतिपादन करना होगा। यज्ञ प्रभावित वायुमण्डल, यज्ञ द्वारा सुसस्कृत भूप्रदेश यज्ञ द्वारा सुसस्कृत जल का कृषि पर क्या क्या प्रभाव पड़ता है तथा यज्ञ प्रभावहीन भूमि, जल, वायु की कृषि मे क्या-क्या अन्तर उत्पत्ति आदि पर होता है और आर्थिक दृष्टि से भी लाभालाभ पर क्या अन्तर होता है उसके परिणामों के विविध प्रकार से कृषकों को, कृषि वैज्ञानिकों को प्रकट करना और क्रियात्मक रूप से प्रयोग

प्रणाली का विकास देख होगा।

## 7. शिल्प कार्य को प्रोत्साहन प्रदान करे—

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने वेदो में जल, विद्युत, अग्नि के द्वारा अनेक कला कौशल विमानादि जो जल, स्थल और आकाश में चलने वाले हो, बनाने का लिखा है। शिल्प विद्या के प्रचार से सुख प्राप्ति का बार-बार उल्लेख किया अत विविध प्रकार के यन्त्रों के निर्माण का अनुसन्धानात्मक प्रयत्न करना चाहिए।

## 8. यन्त्र निर्माण एवं वनस्पति अनुसन्धान—

यजुर्वेद का उपवेद धनुर्वेद है तो शिल्प यन्त्रादि में अग्रसर होना चाहिए। भारद्वाज का विमान शास्त्र सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने प्रकाशित किया। यह बहुत ही प्रशसित कार्य किया। अत उसके आधार पर यन्त्रादि का निर्माण विमान आदि तथा उनके यन्त्रो का निर्माण का प्रयत्न करने में ही विश्व के वैज्ञानिक वेद के विज्ञान की ओर आकृष्ट हो सकेंगे। ऋग्वेद का उपवेद आयुर्वेद है। अनेक वृक्ष, वनस्पति औषधियों के नाम व गुणो का वर्णन ऋग्वेद, यजुर्वेद तथा अथर्ववेद में आते हैं। अनेक नाम वर्तमान समय में अप्रचलित भी हैं। उन के अनुसन्धान, उनके विशेष प्रभावशाली करने का, उन वनस्पतियों का उद्यान निर्माण तथा औषधियो के विविध प्रयोग और उनका प्राणियो पर प्रयोग करके उनकी उपकारिता प्रकट करने का प्रयत्न होना चाहिए।

## 9. वैदिक गणित कार्य मे प्रगति करें—

महर्षि ने गणित विद्या का मूल वेद है, यह ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका तथा वेद भाष्य में लिखा है। उतने मात्र से वेद की वर्तमान समय म उपयोगिता नही हो जाती है। वेद की ओर प्रवृत्ति सर्वसामान्यजनो की करने के लिए वेद के आधार पर गणित के अध्ययन की परिपाटी का स्वरूप अन्वेषित करना चाहिए, जो सुगम भी हो। इस बारे में श्री प. अयोध्याप्रसाद जी ने कुछ प्रदर्शन वैदिक गणित के किये थे, परन्तु वे अपर्याप्त थे। पुन पुरी के पूर्व शकराचार्य जी ने वैदिक गणित के प्रशिक्षण केन्द्रो द्वारा कार्य किया था। उ ने वैदिक मैथेमेटिक्स पुस्तक अग्रेजी में लिखी उस आधार पर आर्य सस्थाओ मे, गुरुकुलों एवं डी ए वी सस्थाओं मे प्रशिक्षण दिया जाता था तथा उसे व्यावहारिक बनाया था। उसे अमेरिका के शिक्षण सस्थाओं में मान्यता प्राप्त हुई। हमें भी उस आधार पर सामान्य एव उच्च गणित का अनुसन्धान

( शेष पृष्ठ 7 पर )

सम्पादकीय—

# नया वर्ष नई आशाएं—3

यदि हम नये वर्ष का नई आशाओं के साथ स्वागत करते हैं तो हमें यह भी सोचना पड़ेगा कि हमारी आशाएं हैं क्या ? यह स्पष्ट है कि एक आर्य समाजी या आर्य समाज की आशाएं यही सकती हैं कि आर्य समाज का पहले से भी अधिक प्रचार हो और अपने देश की जिस जनता तक आर्य समाज का सन्देश अभी तक नहीं पहुंचा उसे पहुंचाने की कोई योजना बनाई जाए। यह उद्देश्य और यह आशा कोई नई नहीं है बहुत देर से हम यही सोच रहे हैं कि आर्य समाज का अधिक से अधिक प्रचार कैसे हो सकता है ? 1975 में जब आर्य समाज की स्थापना शताब्दी मनाई गई थी उस समय भी यह प्रश्न हमारे सामने था। पिछले वर्ष जब ऋषि निर्वाण शताब्दी मनाई गई उस समय भी यह प्रश्न उठा था। इस पर विचार करने के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने एक समिति भी बनाई थी परन्तु आज तक हम कुछ भी नहीं कर पाए। ना तो 1975 की शताब्दी मे, न 1983 की निर्वाण शताब्दी मे आर्य समाज का कोई नया कार्यक्रम जनता के सामने रखा गया। जो समिति सार्वदेशिक सभा ने बनाई थी वह भी इस दिशा मे कुछ न कर सकी। इसके मैं दो ही कारण समझता हू या तो आर्य समाज के नेताओं के पास इस समस्या पर विचार करने के लिए समय ही नहीं है या उन्हे इस की कोई चिन्ता ही नहीं कि आर्य समाज आगे बढ़ता है या नही। कोई तो कारण होना चाहिए कि 110 वर्ष बीत जाने पर भी आर्य समाज कोई नया कार्यक्रम जनता के सामने नहीं रख सका। हम आज भी वही कार्यक्रम लेकर चलते हैं जिस पर की आज से साठ-सत्तर वर्ष पहले चला करते थे। वही पुराने किस्म के उत्सव पुराने ही गीत और पुराने ही किस्म के व्याख्यान। जहा तक सिद्धान्तो का सम्बन्ध है उनमे कोई परिवर्तन नहीं हो सकता परन्तु परिस्थितियो के अनुसार सिद्धान्तो को जनता के सामने पेश करने का नया ढंग तो सोचा जा सकता है। इस बात से कौन इन्कार कर सकता है कि आज प्रचार के कई नए नए साधन बन गए हैं। फिल्मों के द्वारा आर्य समाज का प्रचार होना चाहिए या नहीं ? इस विषय पर आर्य जगत् में तीव्र मतभेद है। उसे समाप्त करने का भी कोई प्रयास नही किया गया उसके दोनों पक्ष हैं। आवश्यकता इस बात की थी कि आर्य समाज का कोई विद्वत परिषद् बैठ कर इस पर विचार करता है। जो इसके विरोध में हैं उन्हे समझाने का प्रयास होता। जो इसके पक्ष में हैं उनसे अपने विचारो मे कुछ परिवर्तन करने के लिए कहा जाता। परन्तु इस तरफ भी किसी ने ध्यान नहीं दिया। इसका परिणाम यह है कि सारा आर्य जगत् इस प्रश्न पर दो भागो में बट गया है। फिल्मों के अतिरिक्त प्रचार के अब कई और भी साधन बन गए हैं। कुछ आर्य भाईयो ने अपने गीत और वेद मन्त्रादि कैसेटो मे बन्द करवाए हैं उनके द्वारा भी प्रचार हो सकता है। परन्तु अब यह धीरे-धीरे एक व्यापार बनता जा रहा है। कहने का अभिप्राय यह है कि जो परिस्थितिया आज से एक सौ वर्ष पहले थी आज वह बहुत कुछ बदल चुकी हैं। मैंने आर्य समाज के प्रचार का एक वह युग भी देखा जब आर्य समाज के बड़े-2 नेता बिना किसी लाऊडस्पीकर के बोला करते थे और हजारो व्यक्ति उनके व्याख्यान सुनने आया करते थे। आज लाऊडस्पीकर भी लग गए हैं परन्तु उस स्तर के व्याख्याता हमारे पास नहीं हैं।

इस लिए जब मैं यह कहता हू कि नई आशाओं के साथ हमें नए वर्ष का स्वागत करना चाहिए तो सबसे पहले यह आवश्यक है कि हमे यह पता हो कि आशाएं क्या हैं ? समस्याए क्या हैं और उनका समाधान क्या है ? इस बात से कोई भी इन्कार नही कर सकता कि सब से बड़ी समस्या हमारे सामने आज यह ही है कि आर्य समाज का प्रचार किस प्रकार पहले से अधिक हो सकता है। अपनी शिथिलता को स्वीकार करना कोई बुरी बात नही। हमें भी यह स्वीकार कर लेना चाहिए कि क्या कारण है कि आर्य समाज में शिथिलता आ रही है। जो संस्थाए उससे पीछे आरम्भ हुई थी वह उससे आगे निकल गई हैं यह क्यो ? इस पर गम्भीरता पूर्वक विचार करने की आवश्यकता है। इस एक समस्या के कई पक्ष हैं जो पाठको के सामने रखना चाहता हू। उसके लिए उन्हे आगामी अंक की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।

—वीरेन्द्र

# पंजाब संस्कृत सम्मेलन के विषय में

पाठकगण यह तो पढ़ ही चुके हैं कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में रविवार 20 जनवरी को जालन्धर मे पंजाब संस्कृत सम्मेलन किया जा रहा है। इसका वास्तविक उद्देश्य पंजाब सरकार की भाषा नीति के विरुद्ध अपनी आवाज उठाना है। पंजाब के सरकारी क्षेत्रो मे एक नई योजना बनाई जा रही है जिसके अनुसार पंजाब में संस्कृत धीरे-धीरे सरकारी स्कूलो में खत्म हो जाए। इस वक्त भी प्राय समाप्त ही है। केवल प्राईवेट स्कूलो में पढ़ाई जाती है। जो योजना सरकार बना रही है उसके पश्चात् पंजाब के सरकारी स्कूलो मे केवल तीन भाषाए रह जाएगी। पंजाबी हिन्दी और अंग्रेजी। संस्कृत के लिए कोई स्थान न रहेगा। एक प्रकार से संस्कृत हमारे स्कूलो में ऐसा विषय नही रहेगी जिसके आधार पर बच्चे अपनी परीक्षा मे कुछ अंक लेकर आगे बढ़ सकें। जिसे भी संस्कृत मे रुचि होगी वह प्राईवेट तौर पर पढ़ना चाहे तो पढ़ लें स्कूलो में उसकी पढ़ाई का कोई प्रबन्ध नहीं होगा।

यह एक ऐसी स्थिति है जिस पर गम्भीरता से विचार करने की आवश्यकता है। यह केवल आर्य समाज की ही समस्या नहीं है। यद्यपि आर्य समाज को संस्कृत मे बहुत अधिक रुचि है और आर्य समाज तो चाहता है कि इस देश का एक 2 बच्चा संस्कृत पढ़े। हम जानते हैं कि यह सम्भव नहीं परन्तु जो पढ़ना चाहते हैं सरकार उनकी पढ़ाई का प्रबन्ध क्यो न करे ? संस्कृत कोई विदेशी भाषा नहीं कि उसका नामो-निशान ही मिटा दिया जाए। इस सारी स्थिति पर विचार करने के लिए पंजाब के संस्कृत प्रेमियो का एक सम्मेलन 20 जनवरी को प्रात साढ़े 10 बजे दोआबा कालेज जालन्धर मे बुलाया गया है। क्योंकि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने इस दिशा में पहला कदम उठाया है इसलिए पंजाब के आर्य समाजियो का यह कर्तव्य हो जाता है कि वह इस सम्मेलन को सफल बनाने का पूरा प्रयत्न करें। सभा से सम्बन्धित सब आर्य समाजो के अधिकारियो को निमन्त्रण पत्र भेजे जा चुके हैं। जिन्हें न मिले हो वह भी अपना कर्तव्य समझ कर इस सम्मेलन मे अवश्य सम्मिलित हो। सनातन धर्म सभा के अधिकारी महानुभाव भी आ रहे हैं। इसीलिए मैं चाहता हू कि सभी आर्य समाजो के अधिकारी भी इस सम्मेलन में अवश्य आए। दोआबा कालेज देवी तालाब मन्दिर के बिल्कुल सामने है और यह दोनों जालन्धर की टाण्डा रोड पर हैं, वहा तक बसें भी चलती हैं इसलिए वहा पहुंचना कठिन न होगा।

—वीरेन्द्र

# महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी व्याख्यान माला

# दयानन्द, गांधी और मार्क्स

व्याख्याता—श्री डा प्रभाकर माचवे निदेशक भारतीय भाषा परिषद्, कलकत्ता

(गताक से आगे)

(2) स्वामी दयानन्द महान् सस्कृतज्ञ और वेद ज्ञाता थे। वे विद्वान् ही नहीं किन्तु एक अत्यन्त श्रेष्ठ पुरुष भी थे। वे परम हस के गुणो से विभूषित थे। उन्होने केवल एक ज्योतिर्मय निराकार परमेश्वर की आराधना करने की शिक्षा दी। हमारा स्वामी जी से घनिष्ठ सम्बन्ध था और हम उनका आदर करते थे वह ऐसे विद्वान् और श्रेष्ठ पुरुष थे कि अन्य मतावलम्बी भी उनका मान करते थे।

—सर सैयद अहमदखां

(3) महर्षि दयानन्द भारत माता के उन प्रसिद्ध और उच्च आत्माओ में से थे, जिनका नाम ससार के इतिहास में सदा चमकते हुए सितारो की तरह प्रकाशित रहेगा। वह भारत माता के उन सपूतों में थे जिनके व्यक्तित्व पर जितना भी अभिमान किया जाए थोडा है। नैपोलियन और सिकन्दर जैसे अनेक सम्राट् एव विजेता ससार मे हो चुके हैं, परन्तु महर्षि उन सबमें बढ़कर थे।

—खदीजा बेगम एम ए

(4) ईसाईयत और पश्चिमी सभ्यता के मुख्य हमले से भारतीयों को सावधान करने का सेहरा यदि किसी व्यक्ति के सिर पर बाधने का सौभाग्य प्राप्त हो तो स्वामी दयानन्द जी की ओर इशारा किया जा सकता है। 19वी सदी मे स्वामी दयानन्द जी ने भारत के लिए जो अमूल्य काम किया है, उससे हिन्दू जाति के साथ-साथ मुसलमानो तथा दूसरे धर्मावलम्बियो को भी बहुत लाभ पहुचा है।

—पीर मुहम्मद यूनिस

वस्तुत इन श्रद्धांजलियो के बाद इस गुरुकुल मे दयानन्द के जीवन और कार्य की विशेषताओ के बारे मे और कुछ कहना मेरे लिए सूर्य को दीपक दिखाने और उलटे बास बरेली जाय वाली लोकोक्ति का पुनरुच्चार होगा। परन्तु चू कि यह तुलनात्मक अध्ययन की पुस्तिका उन अनेक पाठको के पास भी जाएगी, जो आर्य समाज के अनुयायी नही होगे या जो महर्षि के जीवन के प्रमुख तथ्यो से अपरिचित होगे, इसलिए मैं जल्दी से उनके जीवन की रूप-रेखा और उनकी उपलब्धियो पर कुछ कहकर मुख्य विषय की ओर मुड़ूगा।

गुजरात मे काठियावाड मे मोरवी में एक शिव भक्त ब्राह्मण अम्बा शकर की सन्तान मूलशकर दयानन्द ने पाच वर्ष में विद्यारम्भ करके, चौदहवें वष मे सारा यजुर्वेद कठस्थ कर लिया। चौदहवे वष मे शिवरात्रि के जागरण मे शिव मदिर मे एक चुहिया को शिव मूर्ति पर चढकर नैवेद्य खाते देखकर दयानन्द के मन में शका जागी कि जो सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ शिव है क्या वह एक चुहिया को भी नहीं हटा सकता? मूर्ति पूजा से उनका विश्वास उठ गया। कालेरा में 1841 में उनकी बहन की हैजे से मृत्यु ने उनके मन मे वैराग्य उत्पन्न कर दिया। पिता ने अन्तर्मुखी पुत्र के विवाह की ठानी। पर वे घर छोडकर भाग गए। समर्थ रामदास स्वामी भी विवाह मण्डप से भाग गए थे। और उन्होने आजीवन ब्रह्मचर्य का व्रत ले लिया। अब वे 14 वर्षों तक हिमालय मे घूमते रहे। 1860 मे जब वे मथुरा मे पहुचे तो उन्हे प्रज्ञाचक्षु विरजानन्द गुरु के रूप मे मिले। उनके साथ ढाई वर्षों तक वे वेदाध्ययन करते रहे। नैष्ठिक सन्यासी बनकर उन्होने हरिद्वार के कुम्भ मेले मे पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराई और मूर्ति पूजा विरोध का प्रचार आरम्भ किया। 1869 मे काशी में गए और पण्डितो के साथ सस्कृत मे शास्त्रार्थ किया। यहीं पर केशवचन्द्र सेन नामक ब्राह्म समाज के नेता ने कहा कि सस्कृत मे शास्त्राथ न करके हिन्दी मे कीजिए। गुरु विरजानन्द ने 1863 मे उन्हे जो सन्देश दिया था कि प्राचीन वैदिक धम का ज्ञान मातृ भूमि मे फैलाओ। उसी को उन्होने अपना जीवन मन्त्र बना लिया।

1872 मे स्वामी दयानन्द कलकत्ता मे पहुचे। ब्राह्म समाजियों को लगा कि दयानन्द उनके अनुयायी बन जाए गे। पर ब्राह्म समाजी न आत्मा के पुनर्जन्म को न वेद की अन्तिम और प्रमाणातीत सत्ता को मानते थे। सो उन्होंने अपना धर्म चलाने का निश्चय किया। 1874 मे पहला आर्य समाज स्थापित हुआ। 1877 में वे पंजाब में गए। दो महीनो के भीतर लाहौर में उन्होंने आर्य समाज का सूत्रपात बनाया। उनके उपदेश उन तरुणो के मन मे बहुत अच्छा प्रभाव कर गए जो पश्चिमी शिक्षा से प्रभावित थे, और हिन्दू रूढ़िवादिता और अन्धविश्वासो को छोड़ना चाहते थे और साथ ही ईसाई नहीं बनना चाहते थे। 1878 मे दयानन्द मैडम ब्लैवत्स्की और कर्नल अलकाट नामक थियोसोफिकल सोसायटी के नेताओ के सम्पर्क में आये थे। पहले वह चाहते थे कि दयानन्द थियोसोफिस्टो के साथ मिल कर उनके कार्यक्रम का प्रचार करें, परन्तु वह नहीं हो सका।

दयानन्द अपना प्रचार कार्य ज्यो-ज्यों बढ़ाते गए उनका विरोध भी बढ़ता गया। उन्हें नदियों में डुबाकर मारने का प्रयत्न किया गया। काशी, लाहौर पूना में उन पर पत्थर फैंके गए। बाजारों में उन्हें अपमानित किया गया। पर उन्होंने किसी की परवाह नहीं की। उनका प्रभाव बढ़ता गया। वे अपने अमर ग्रन्थो का सत्यार्थ प्रकाश और सस्कार विधि ऋग्वेद भाष्य भूमिका और सातवें मण्डल तक ऋग्वेद का भाष्य और बाद में यजुर्वेद भाष्य आदि अनेक छोटे-बड़े ग्रन्थो का प्रणयन करते गए। स्कूल, कालेज, गुरुकुल, सस्कृत पाठशालाओं की स्थापना की। उन्होने विधवाश्रम भी स्थापित किए। 1883 मे उन्हे जोधपुर के महाराज ने बुलाया, जहा वे बीमार पड गए। एक मुस्लिम नर्तकी जो राजा की रखैल थी उसने अपने को अपमानित अनुभव कर एक रसोईए के हाथो कांच पीसकर भोजनार्थ देकर दयानन्द पर विष प्रयोग किया। महर्षि अक्तूबर 1883 में दिवगत हो गए।

उनके द्वारा प्रचारित दर्शन और समाज सुधार की निम्न दस विशेषताओ का लोहा जो आर्य समाजी नहीं भी हैं, वे भी मानते हैं।

(1) वेद ईश्वर प्रणीत हैं। उनके ज्ञान का सृष्टि प्रक्रिया से पूर्ण मेल है। वे स्वत प्रमाण हैं। दूसरे किसी भी ग्रन्थ के ज्ञान का सृष्टि की बातो से इतना मेल नही। वेद ही मानव समाज के वैज्ञानिक और पारमार्थिक विचारो के उद्गम हैं। वेदान्त ही श्रेष्ठतम दर्शन है।

(2) मूर्ति पूजा व्यर्थ है। पुरोहित अनुष्ठान झूठे हैं। अवतारवाद और तीर्थाटन की बातें केवल पौराणिक कपोल-कल्पना पर आधारित हैं। अठारह पुराण मूल्यवान् नही।

(3) जाति भेद एक कम वक्त है। गुण, कर्म विभाग ही जातियां हैं अन्यथा नहीं। अत मनुष्य मनुष्य में ऊँच-नीच का भेद करना यह अत्यन्त अवैदिक धारणा है।

(4) अन्य धर्मों का अवलम्बन करने वाले वैदिक धर्म को अपना सकते हैं। जो हिन्दू धर्म परिवर्तन से मुस्लिम, ईसाई या अन्य धर्मीय हुए हैं, वे पुन हिन्दू हो सकते हैं।

(5) स्त्रियों की जागृति के पक्ष में, दयानन्द द्वारा माता को प्रथम स्थान दिया गया (पिता को द्वितीय, आचार्य को तृतीय) उन्होंने बाल-विवाह विरोध, प्रीति विवाह प्रोत्साहन, विधवा पुनर्विवाह का समर्थन, कुछ विशेष परिस्थितियों में नियोग को भी मान्यता दी। शिक्षा के क्षेत्र में स्त्री और पुरुष में वे भेद नहीं करते थे।

(6) दयानन्द ने परदेश-पर्यटन को निषिद्ध नही माना। पश्चिमी के ज्ञान-विज्ञान का अध्ययन और परीक्षित करके वहा की अच्छी बातों को अपनाने पर बल दिया।

(7) पंच महा यज्ञ—सन्ध्या, नियमित वेद पठन।

देव यज्ञ—अग्नि की उपासना

पितृ यज्ञ—बड़ो की सेवा।

अतिथि यज्ञ—विद्वान्, अतिथि, को भोजन देना।

बलि यज्ञ—अन्न पशु अनाथ, पशु पक्षी को अन्न दान।

(8) शाकाहार और गो-रक्षा का महत्व। 'गो-करुणानिधि' ग्रन्थ मे इस पर विशेष आग्रह किया गया।

(9) योग के चमत्कार निरे तमाशे हैं। दयानन्द की ऐसे झूठे प्रचारक योगियो से अनास्था थी। 'पायानियर' के सम्पादक मि सिनेट को उन्होंने लिखा।

(10) छूआछूत न मानी जाए। अस्पृश्यता वेद सम्मत नही है।

महर्षि के विचार रत्नो में से यहां नौ वाक्य उन्ही के शब्दों में उद्धृत किए जा रहे हैं, जिससे उनके सिद्धान्तो की सर्व व्यापकता में सन्देह नही होगा।

(1) ईश्वर विश्वास—"मैंने इस धर्म कार्य का सर्वशक्तिमान् सत्य ग्राहक और न्याय सम्बन्धी परमात्मा के चरण में शीश धर उसी के सहाय के अवलम्बन से आरम्भ किया है।' (भ्रान्ति निवारण भूमिका)।

(2) जीवनोद्देश्य—'सुनने और प्रश्नोत्तर होने के पश्चात् सज्जनों को यही योग्य है कि सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करके स्वयं सदा आनन्दित होकर सबको आनन्दित किया करें। (ज्येष्ठ वदी 12-स. 1940, 2 जून 1883 का विज्ञापन)।

(क्रमश)

## आर्य समाज के शास्त्रार्थ महारथी—

# पं. बुद्धदेव जी मीरपुरी

ले.—श्री डा. भवानीलाल जी भारतीय चण्डीगढ़

उच्च कोटि के विद्वान् व्याख्याता, शास्त्रार्थी तथा लेखक प बुद्धदेव मीरपुरी का जन्म स 1956 वि. मे फिरोजपुर जिले के अमरपुर नामक ग्राम मे हुआ। इनके पिता का नाम श्रीरामशरण दास था। बुद्धदेव जी के पिता कट्टर मूर्तिपूजक तथा व्यवसाय से भी मन्दिर के पुजारी थे। इनके पिता की प्रबल इच्छा थी कि पुत्र भी उन्हीं का अनुसरण करते हुए पौराणिक मत का अनुयायी बने। परन्तु बुद्धदेव जी विद्याध्ययन के इच्छुक थे। उनके नाना प हरिदत्त जी सस्कृत के धुरन्धर विद्वान् थे। उनके पास सस्कृत के शास्त्र ग्रन्थो का एक विशाल संग्रह था। माता की प्रेरणा से बालक बुद्धदेव ने भी पुराणो के अध्याय कण्ठस्थ कर लिये। उन्हे देवी के भक्ति परक स्तोत्र भी सैंकडो की सख्या में याद थे। वे पूर्ण श्रद्धा के साथ व्रत आदि रखते तथा पौराणिक आस्थाओ का पालन करते।

बुद्धदेव के चाचा अवश्य आर्य समाजी बन गए थे। वे उन्हें पढने के लिए आर्य समाजी साहित्य देते और धार्मिक विषयो पर वार्तालाप तथा वादविवाद भी करते। धीरे-धीरे बुद्धदेव जी आर्य समाज की ओर झुकने लगे। स्वामी दयानन्द की शिक्षाओ की ओर आकृष्ट करने में उनके गुरु प चमननाथ जी का भी हाथ था। [illegible]गुरु जी संस्कृत के अद्वितीय विद्वान् तथा सारस्वत-चन्द्रिका आदि व्याकरण ग्रन्थो के अच्छे ज्ञाता थे। बुद्धदेव जी ने सस्कृत व्याकरण का प्रारम्भिक अध्ययन इन्ही से किया। प. चमननाथ को अपने जीवन काल मे स्वामी दयानन्द के दर्शन करने का सौभाग्य उस समय प्राप्त हुआ था, जब वे अमृतसर पधारे थे। स्वामी जी के कतिपय शिक्षाप्रद सस्मरण सुना कर प चमननाथ ने बुद्धदेव जी के मन मे भी स्वामी जी के प्रति तीव्र श्रद्धाभाव भर दिया। उनके हृदय मे यह धारणा भी बद्धमूल हो गई कि आर्ष ग्रन्थो का अध्ययन ही मनुष्य के लिए लाभप्रद है। आर्ष व्याकरण पढने की तीव्र लालसा बुद्धदेव जी को मथुरा खीच लाई, जहा जाकर उन्होने स्वामी विरजानन्द के शिष्य और महर्षि दयानन्द के सहाध्यायी प. बनवारी लाल चौबे से अष्टाध्यायी पढना आरम्भ किया। चौबे जी पण्डित बुद्धदेव को स्वामी दयानन्द के जीवनकाल के अनेक रोचक प्रसग सुनाया करते थे। अष्टाध्यायी का अध्ययन अभी चल ही रहा था कि बनवारी लाल चौबे का निधन हो गया। अब प. बुद्धदेव को अष्टाध्यायी पूरा करने की चिन्ता हुई और वे स्वामी दयानन्द के एक अन्य गुरुभाई के शिष्य प. बदरीदत्त जी के पास पहुचे। वहा रह कर उन्होने अष्टाध्यायी का अध्ययन पूरा किया तथा आर्य समाज के सिद्धान्तो को भी समग्र दृष्टि से समझा।

अष्टाध्यायी समाप्त करने के पश्चात् महाभाष्य तथा दर्शन शास्त्रो का अध्ययन करने के लिए बुद्धदेव वाराणसी चले गए वहा रह कर उन्होंने व्याकरण महाभाष्य के अतिरिक्त दर्शन शास्त्रो का विशुद्ध अध्ययन किया। शकराचार्य कृत वेदान्त सूत्र का भाष्य तथा उपनिषद ग्रन्थ भी पढे। इस अवधि मे प. बुद्धदेव को सस्कृत मे भाषण एव वार्तालाप करने तथा शास्त्रार्थ करने का भी चस्का लग गया और इन दोनो कलाओ मे पूर्ण व्युत्पन्न हो गये। शिक्षा समाप्त होने पर स्वामी दर्शनानन्द की प्रेरणा प्राप्त कर वे धर्म प्रचार के क्षेत्र मे उतर पडे। कालान्तर मे आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के उपदेशक बन कर कार्य करने लगे। भाई परमानन्द की प्रेरणा से प बुद्धदेव जी ने असहयोग आन्दोलन मे भी भाग लिया और खद्दर पहनने का व्रत धारण किया। स्वल्प काल के लिए आपने जलालपुर जट्टा के हाई स्कूल मे अध्यापक भी रहे। परन्तु शीघ्र ही आर्य समाज रावलपिण्डी मे पुरोहित बन गए। आर्य समाज मीरपुर मे भी आपने पौरोहित्य कार्य किया था।

प. बुद्धदेव जी के मीरपुरी नाम से विख्यात होने की भी विचित्र कथा है। जिस समय ये आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब में उपदेशक थे, उस समय प्रसिद्ध विद्वान् तथा वक्ता प. बुद्धदेव विद्यालकार भी सभा के उपदेशक थे। अब एक ही नाम के दो उपदेशको मे अन्तर करने के लिए आप पण्डित बुद्धदेव मीरपुरी कहलाने लगे क्योंकि सभा मे काम करते हुए भी महीने के 15 दिन आप आर्य समाज मीरपुर को पौरोहित्य कर्म के लिए देते थे। इस प्रकार अमरपुर ग्रामवासी होने पर भी वे मीरपुरी कहलाये।

अब प. बुद्धदेव मीरपुरी आर्य समाज के विख्यात उपदेशक, वक्ता, कथा वाचक तथा शास्त्रार्थ महारथी के रूप में प्रसिद्ध हुए। उन्होंने अपने जीवन काल में सैंकडों शास्त्रार्थ किये। प्राय सभी प्रसिद्ध पौराणिक पण्डितो को शास्त्रार्थ मे पराजित करने का उन्हे अवसर मिला था। प माधवाचार्य प अखिलानन्द, प श्री कृष्ण शास्त्री, प. कालूराम शास्त्री आदि सभी पौराणिक शास्त्रार्थ कर्ता उनके सम्मुख आकर पराभूत हुए। अम्बाले के जैन विद्वानो से भी उनका शास्त्रार्थ हुआ था। कालान्तर में आपने धर्म प्रचारार्थ पूर्वी अफ्रीका की भी यात्रा की। नेरोबी मे भी उनका प माधवाचार्य से शास्त्रार्थ हुआ, जो उन दिनो सनातन धर्म के प्रचार हेतु उस महाद्वीप मे आये हुए थे। विजय श्री मीरपुरी जी को ही मिली। हैदराबाद के आर्य सत्याग्रह मे भी वे सत्याग्रही के रूप में गये। उन्हें नौ मास का कारावास दण्ड मिला और वे गुलबर्गा जेल में रखे गए। यहा जेल मे रहते हुए भी उन्होने रामायण, महाभारत आदि आर्ष ग्रन्थों की कथा का क्रम जारी रखा।

प बुद्धदेव जी की स्मरण शक्ति अगाध थी। उन्हे सहस्रो की सख्या मे वेदमन्त्र, उपनिषद् महाभारत के श्लोक, पुराणो के पद्य, दर्शनों के सूत्र आदि याद थे। 28 अक्तूबर 1963 को दिल्ली में आप की मृत्यु हुई।

प बुद्धदेव जी मीरपुरी ने उच्चकोटि का साहित्य भी लिखा है। यथोपलब्ध विवरण इस प्रकार है —

1. षड्दर्शन समन्वय—प्रकाशक आर्य साहित्य विभाग, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा लाहौर।

2. सस्कार विधि व्याख्या—प्रकाशक आर्य साहित्य विभाग आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधिसभा लाहौर द्वितीय सस्करण सम्वत् 1994 वि।

3. मूर्तिपूजा मीमासा ,, ,, ,,

4 अवतारवाद मीमासा—प्रकाशक दयानन्द स्वाध्यायमण्डल लाहौर।

5 राधा स्वामी मतालोचन—

6 यथार्थ प्रकाश की हकीकत(उर्दू) राधा स्वामी मत के आचार्य श्री आनन्द स्वरूप जी लिखित पुस्तक यथार्थ प्रकाश का उत्तर।

प बुद्धदेव जी ने अनेक उपयोगी ट्रैक्ट भी लिखे जिनका विवरण इस प्रकार है।

1 विवाह संस्कार।
2 गर्भाधान और योनि सकोच।
3 माया का दूध
4. मृतक श्राद्ध खण्डन
5 वेद भाष्य
6 पुत्र परिवर्तन वैदिक है।
7 नियोग और पौराणिक धर्मी (उर्दू)।
8 पौराणिक ईश्वर की पडताल (उर्दू)

—

## भाषण प्रतियोगिता सम्पन्न

आर्य विद्या परिषद् पजाब द्वारा आयोजित भाषण प्रतियोगिता 8-1 85 को दोआबा आर्य हायर सैकण्डरी नवाशहर मे सफलता पूर्वक सम्पन्न हुई। इस द्वितीय प्रान्तीय भाषण प्रतियोगिता में लगभग 23 शिक्षण सस्थाओ की टीमो ने इसमे भाग लिया। इस प्रतियोगिता की अध्यक्षता श्रीमती कमला आर्या महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने की इस समारोह मे स्थानीय शिक्षण सस्थाओ की ओर से सभा महामन्त्री जी को अभिनन्दन पत्र तथा 3100 रुपए की थैली भेन्ट की गई। और कुछ पुराने कर्मठ आर्य समाजियो को भी सम्मानित किया गया।

बी. सी एम आर्य माडल स्कूल शास्त्री नगर लुधियाना की छात्राओ ने प्रथम चलविजयोपहार (शील्ड) जीता। इसके अतिरिक्त आर्य हाई स्कूल बस्ती गुजा जालन्धर के छात्र नरेश कुमार को प्रथम, निजी पुरस्कार, आर्य कन्या हाई स्कूल बस्ती नौ जालन्धर की छात्रा कु. भारती ने द्वितीय निजी पुरस्कार, गान्धी आर्य हाई स्कूल बरनाला के छात्र विजय भारती को तृतीय निजी पुरस्कार और लभूराम दोआबा हा ई स्कूल, जालन्धर के छात्र दिनेश मल्होत्रा को सात्वना पुरस्कार प्रदान किया गया। श्री ब्रह्मदत्त जी शर्मा सभा कोषाध्यक्ष तथा अन्य गणमान्य अतिथियो ने भी प्रतियोगिता मे भाग लेने वाले मेधावी प्रतियोगियो को नकद पुरस्कार देकर प्रोत्साहित किया। समस्त कार्यक्रम मनोरजक एव बडा ही उत्साहवर्धक रहा। प्रतियोगिता के अन्त मे मे श्रीमती कमला आर्या सभा महामन्त्री ने पुरस्कार विजेताओ को पुरस्कार तथा सभी प्रतियोगियो को प्रमाण-पत्र व वैदिक साहित्य प्रदान किया। तत्पश्चात् श्री सभा महामन्त्री जी ने स्थानीय शिक्षण सस्थाओ के अधिकारियो, प्रधानाचार्यों प्रि. तनेजा जी तथा रजिस्ट्रार महोदय आदि का उत्तम प्रबन्ध के लिए धन्यवाद किया।

———

# जी चाहता है तोड़ दूं शीशा फरेब का

ले—श्री वीरेन्द्र जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

पंजाब की वर्तमान परिस्थितियों में अकालियों का आनन्दपुर साहब का प्रस्ताव कई उलझनें पैदा कर रहा है। सबसे बड़ी यह कि प्राय हिन्दू और सिखों दोनों को यह पता नहीं कि आनन्दपुर साहब का प्रस्ताव है क्या ? इस सारी स्थिति को स्पष्ट करने के लिए यह लेख माला प्रारम्भ की गई है। आर्य जनता को भी यह पता होना चाहिए कि आनन्दपुर साहब का प्रस्ताव क्या है ? इसलिए यह लेख माला आर्य मर्यादा में भी प्रकाशित की जा रही है। यह सात लेख होंगे, जो क्रमश प्रकाशित किए जाएंगे।

—सम्पादक

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के कार्यकारी प्रधान सरदार प्रेमसिंह लालपुरा का कहना है कि जब तक सरकार आनन्दपुर साहब का प्रस्ताव पूरा नहीं करती, उसके साथ कोई बात नहीं हो सकती। मैं अकाली दल के इस अधिकार को स्वीकार करता हूं कि यदि वह आनन्दपुर साहब प्रस्ताव की मंजूरी के बगैर सरकार से बात नहीं करना चाहता तो न करे लेकिन इस स्थिति में अकालियों को उन लोगों के अधिकार को भी मानना होगा जो यह कहते हैं कि आनन्दपुर साहब प्रस्ताव के आधार पर कोई बात नहीं हो सकती। आनन्दपुर साहब का प्रस्ताव सबसे पहले 1963 में तैयार किया गया था। उस समय से लेकर आज तक अर्थात विगत 22 वर्षों में यह एक विवादास्पद प्रस्ताव बना रहा है। यदि गैर अकालियों की राय को अनदेखा कर भी दिया जाए तो भी यह पता नहीं चलता कि यह प्रस्ताव वास्तव में है क्या ? अकालियों में भी इसके बारे में मतभेद रहा है। हर अकाली नेता ने इसके बारे में अपनी बोली बोली है। सरदार कपूर सिंह ने कुछ कहा, डाक्टर भगत सिंह ने कुछ कहा। तलवण्डी अकाली दल ने कुछ कहा और अन्त में सन्त हरचन्द सिंह लौंगोवाल को अपने हस्ताक्षरों से यह बयान देना पड़ा कि यह प्रस्ताव है क्या ?

पाठकगण ! आप अनुमान लगा सकते हैं अकालियों की बुद्धि और विवेक का कि एक प्रस्ताव के आधार पर एक धर्मयुद्ध शुरू कर दिया गया है। इस के लिए हजारों लोगों को गिरफ्तार करा दिया, सैंकड़ों को मरवा दिया, ऐसे हालात पैदा कर दिए कि भारत सरकार को आखिर दरबार साहब में सैनिक कार्यवाई करनी पड़ी। इसके जवाब में देश की प्रधानमन्त्री की हत्या कर दी गई। इसका बदला लेने के लिए कुछ लोगों ने देश के विभिन्न भागों में कुछ ऐसी कार्यवाइयां की जो अत्यधिक खेदजनक थी और जिसका असर अभी तक लोगों पर है।

यह सब कुछ आनन्दपुर साहब प्रस्ताव के कारण हुआ है। यदि पहले इसके बारे में कोई सन्देह था तो वह लालपुरा के ब्यान के बाद खत्म हो जाना चाहिए। वह कहते हैं कि आनन्दपुर साहब प्रस्ताव के बगैर कोई बातचीत नहीं हो सकती। प्रथम तो उनसे यह पूछा जा सकता है कि जब वह आनन्दपुर साहब प्रस्ताव की बात करते हैं तो उनका अर्थ क्या है ? वह कपूर सिंह के आनन्दपुर साहब प्रस्ताव की बात कर रहे हैं तलवण्डी अकाली दल के प्रस्ताव की या लौंगोवाल के आनन्दपुर साहब प्रस्ताव की।

इससे पहले कि मैं आनन्दपुर साहब का इतिहास पेश करूं। मैं लालपुरा से एक साफ और सीधा सवाल करना चाहता हूं। वह कहते हैं कि आनन्दपुर साहब प्रस्ताव के बगैर सरकार से कोई बातचीत नहीं हो सकती। क्या उन्हें मालूम है कि प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी ने आनन्दपुर साहब के प्रस्ताव को अपना मुद्दा बनाया था। वह जगह जगह इस का उल्लेख करते थे और कहते थे कि आनन्दपुर साहब प्रस्ताव किसी सूरत में स्वीकार नहीं किया जा सकता। दूसरी ओर सिवाए अकालियों के किसी दूसरे ने इस प्रस्ताव के समर्थन में एक शब्द भी नहीं कहा। वह पार्टियां भी जो अकालियों के हक में हैं आनन्दपुर साहब के प्रस्ताव में समर्थन में कुछ कहने को तैयार नहीं हुई हैं। जनता पार्टी के अध्यक्ष श्री चन्द्रशेखर अपने चण्डीगढ़ के उम्मीदवार के पक्ष में अकाली दल का समर्थन करने तो पहुंच गए उन्हें भी यह साहस न हुआ कि आनन्दपुर साहब प्रस्ताव के हक में कुछ कहें। अब अकाली कहते हैं कि वह चन्द्रशेखर और राम जेठमलानी को पंजाब से लोकसभा के लिए खड़ा करेंगे। वह जरा करके तो देखें। फिर आनन्दपुर साहब प्रस्ताव बहस में आएगा। इस चुनाव में कांग्रेस को जो अभूतपूर्व सफलता मिली है वह सारे देश का आनन्दपुर साहब प्रस्ताव के विरुद्ध फतवा है। यदि राजीव गांधी ने भी आनन्दपुर साहब प्रस्ताव का उल्लेख न किया होता और कांग्रेस जीत जाती तो अकाली कह सकते थे कि आनन्दपुर साहब प्रस्ताव का इस चुनाव के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है। अब वह यह नहीं कह सकते। इसे वह स्वीकार करने को तैयार हों या न हों यह एक निर्विवाद सत्य है कि देश की 98 प्रतिशत जनता ने अपना फैसला आनन्दपुर साहब प्रस्ताव के विरुद्ध दिया है। सिखों की संख्या सारे देश में दो प्रतिशत है। यदि यह मान लिया जाए कि सभी सिख आनन्दपुर साहब प्रस्ताव के पक्ष में हैं जो कि वह नहीं हैं, तो भी बड़ी बहुसंख्या का फैसला इसके विरुद्ध है। पंजाब से बाहर रहने वाले सिखों को इस प्रस्ताव में कोई रुचि नहीं है। पंजाब में जो रहते हैं उनमें भी कांग्रेसी, कम्युनिस्ट नाम धारिए, राममंडिए, राधा स्वामी और अन्य तमाम सिख इसके विरुद्ध हैं, तो बाकी कितने हैं जो इसके हक में हैं और जिनके बल बोते पर लालपुरा कह रहे हैं कि आनन्दपुर साहब प्रस्ताव के बगैर कोई बात नहीं होगी।

प्रेमसिंह लालपुरा के बयान के कुछ अर्थ हैं तो यह कि सारा देश एक तरफ अकाली दल दूसरी तरफ। इसका क्या परिणाम निकल सकता है। इसे हर वह व्यक्ति समझ सकता है जिसके सिर में दिमाग है और वह सोच सकता है। आश्चर्य है कि अकालियों को यह क्यों समझ में नहीं आ रहा कि जो पग उन्होंने लिया इसका कोई वांछित परिणाम नहीं निकल सकता। अकालियों ने पंजाब को जिस दलदल में फंसा दिया है इससे निकलना अभी भी आसान नहीं है। लेकिन बात तो शुरू होनी चाहिए। राजीव गांधी ने पहला कदम उठा लिया है। तीन मन्त्रियों की जो कमेटी बनायी गई है वह पंजाब का कोई उचित समाधान निकाल पाएगी या नहीं इसके बारे अभी कुछ कहना कठिन है। मैं फिर कहता हूं कि यह आसान नहीं है लेकिन बात तो शुरू होनी चाहिए।

मैं अकालियों के साथ अन्याय नहीं चाहता। न मैं इनके रास्ते में कोई रुकावट पैदा करना चाहता हूं। मेरी यह हार्दिक कामना है कि वह बात के लिए तैयार हों ताकि पंजाब समस्या का कोई हल निकल सके। इनके लिए यह जरूरी है कि इन्हें पता हो कि आनन्दपुर साहब का प्रस्ताव क्या है। यह कहते हैं कि इसमें पृथकता की कोई बात नहीं मैं कहता हूं कि यह देश के एक और बटवारा की आधारशिला है। जब एक ही प्रश्न के दो परस्पर विरोधी उत्तर हों तो उसकी तह में जाने की जरूरत है। मैं भी आनन्दपुर साहब के प्रस्ताव की तह में जाना चाहता हूं ताकि अकालियों का पता चल सके कि यह प्रस्ताव है क्या ?

क्रमश

## वेद के सार्वभौम प्रचार के लिए अनुसधान कार्य आवश्यक

( 2 पृष्ठ का शेष )

करना चाहिए । जिससे वेद का प्रचार शिक्षण सस्थाओ में हो सके।

### 10. आर्य समाजो मे याज्ञिक चिकित्सा केन्द्र हो—

अनेकों आर्य समाजो में होम्योपैथिक या अन्य चिकित्सा की व्यवस्था है इससे तो यही प्रकट होता है कि हमारे यजन की उपयोगिता हमारे कार्यों के लिए नही है क्योकि हमार पास अब कुछ कार्य करने की योजना नही है। इससे वेद विद्या की उन्नति या प्रचार का क्या प्रयोजन । एक ओर यज्ञ से वायु मण्डल की शुद्धि रोगो के विनाश प्रतिपादन व्याख्यानो मे व लेखो से हम करे और दूसरी तरफ यज्ञ की विरोधी चिकित्सा प्रणालियो को प्रोत्साहन एव आश्रय दें ये परस्पर विरोधी कार्य नही होने चाहिए । हमे यज्ञ चिकित्सा प्रणाली से रोग निवारण के केन्द्र आर्य समाजो में खोलने चाहिए और उसके लिए वानप्रस्थो को पुरोहितो को प्रशिक्षित कर यज्ञ चिकित्सा को प्राथमिकता प्रदान करनी चाहिए कुशल वैद्य पचकर्म द्वारा रोगी के शरीर को शोधन कर औषधि देकर आरोग्यता प्रदान करना है । ये पचकर्म स्नेहन, स्वेतन, वमन विरेचन आदि स्वाभाविक रूप से यज्ञ मे होते हैं । शुद्ध भेषज वायु की प्राप्ति द्वारा अतिशीघ्र आरोग्यता प्राप्त होती है। इससे वेद की चिकित्सा क्षेत्र मे प्रतिष्ठा होगी और प्राणायाम स्वत होकर जीवन प्राप्ति होगी ।

### 11. सध्या योग द्वारा विश्व को योग प्रशिक्षण दे

महर्षि ने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका मे उपासना योग का प्रकरण बहुत सुन्दर लिखा है । इतने मात्र से उद्देश्य की पूर्ति नही होगी । आज ससार योग के लिए लालायित है । योगविद्या क्षेत्र की एक प्रमुख विद्या है । उसी के आधार पर पातञ्जल योगदर्शन है । आज अनेक अवैदिक वे विहीन लोगो के योग शिक्षण, आश्रम देश और विदेशो में खुले हुए हैं । परन्तु देश विदेशो मे स्थापित आर्य समाजो मे उपासना योग की उपेक्षा है । यदि किसी आर्य समाज मे किसी योगाभ्यास का शिक्षण होता है तो वह महर्षि द्वारा प्रतिपादित उपासना योग के आधार पर नही है । अत योग विद्या के अनुसन्धान तथा प्रशिक्षण केन्द्रों की स्थापना होनी चाहिए । उपासना योग का व्यावहारिक रूप वैदिक सध्या है । उसी के आधार पर मन्त्रपूर्वक अष्टाग योग की साधना का प्रयत्न करना चाहिए । तभी वेद का प्रचार होगा ।

### 12, वेद विद्याओ का भण्डार है—

यजुर्वेद अ 18 मे यज्ञेन कल्पन्ताम् के द्वारा ५00 से भी अधिक अनुसन्धान कार्यों की गणना है । यजुर्वेद अ 30 मे 50 से अधिक प्रकार की विद्या व कार्यों के कुशलो की गणना है । उनके प्रशिक्षण या उन विद्याओ के वैदिक दृष्टि से अनुसन्धान कार्य हो सकते हैं । यजुर्वेद अध्याय 16 मे 78 प्रकार के कार्यकुशलो को सत्कारयोग्य बताया है । उन कार्यों के अनुसन्धान कार्य हो सकते हैं । इसी प्रकार यजुर्वेद अध्याय 24 मे अनेक पशु पक्षी एव जलचरो के गुण धम उनके रगो के आधार पर एव अन्य प्रकार मे लिखे हैं । वह भी अनुसन्धान के काय हैं । वेद के दैवत तत्वो के आधार पर अनुसन्धान का महान क्षेत्र है । वेद मे विद्याओ का महान् सग्रह है । अनेक प्रकार के अनुसन्धान किय जा सकते हैं । अन्य कार्यों मे धन एव शक्ति का व्यय न करके वेद विद्याओ के अनुसन्धान मे अग्रसर होना चाहिए ।

—

## संकल्प

ले —डा. कमल पुजाणी जामनगर (गुजरात)

कही रुक पडे हम,
कभी थक गए हम,
हमारी रुकावट,
हमारी थकावट,
पावो की जजीर
बनने न पाई ।

रुक रुक कर फिर-फिर,
थक-थक कर गिर-गिर,
हम चलते रहेगे—
राही हैं
राह मे बढते रहेगे,
झुक न सकेंगे,
लडते रहेगे
उत्साही हैं
ऊचे चढते रहेगे ।

## भस्मासुर का आतंक

ले,—डा कमल पुजाणी जाम नगर (गुजरात)

काम चोरी, कर चोरी
लुका-छिपी छीना-झपटी आदि
दोष-दूषणो का
दानवीय धुआ
रोज-रोज
थोडा-थोडा
महानगरो की मिलो और कारखानो
की चिमनियो मे
जमता जाता है
जिसका राक्षसी वेग
धीरे-धीरे
बढता जाता है
और
जहरीले रजकण
घनीभूत होकर
कभी-कभी
भीषण विस्फोट मे
बदल जाते हैं
बाग-बगीच उजाड वीरान हो जाते हैं,
हाट बाजार गूगे बेजान दीखते हैं,
चौक-चबूतरे सुनसान सुप्त लगते हैं,
और
मानव
अपने द्वारा निर्मित
भस्मासुर के हाथो
भस्मीभूत हो जाते हैं ॥

## जीवन की सार्थकता

( प्रथम पृष्ठ का शेष )

सात्विक रग मे रगेगा यही उससे उपकार होता है । अत वह प्रकृति के दिये फल-फूलो को, मनुष्य के दिये हुए भोजन को, किसी प्रकार भी भगवान् के दिये हुए प्रसाद को व्यर्थ नही खोता । परन्तु जो एक दो जनो के ही करने योग्य दुराराध्य इस ब्रह्माराधन रूप तप को नही कर सकता, वह ससार की सेवा करे, ससार के प्रति अपने को उत्तरदायी समझ । वह कितना खाता है उसके भागोपभोग मे प्रकृति के कोष का कितना व्यय होता है और वह जगत् का उपकार कितना करता है यह हिसाब उस लगाना चाहिए और यदि इसमे उस के काम से उसका व्यय अधिक है तो वह पापी है । और यदि केवल खाता ही है और ससार का किञ्चिन्मात्र भी हित नही करता तो महापापी लुटेरा, अघस्वरूप है । आज हममे कितने ऐसे लुटेरे और महापापी हैं इसका विचार प्रत्यक मनुष्य अपने लिये स्वय करे । यदि अपने जीवन का विचार करें तो हम अपना जीवन सफल बना सकते हैं । प्रथम अपने को साधकर तब दूसरो की ओर आख उठाने का हमारा अधिकार है । वद ने तत्व की शिक्षा दे दी । अब हमारा काम है कि हमे जिस लिये यह जन्म मिला है उस उद्देश्य को सफल बनायें ।

## आर्य समाज चेम्बूर में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर आर्य समाज चेम्बूर मे बम्बई की सभी आर्य समाजो की ओर से रखे गये कार्यक्रम मे श्री आर्य नरेश जी व अन्य विद्वानो के ओजस्वी प्रवचन हुए।

श्री देवव्रत जी शास्त्री व सभा मन्त्री श्री ज्येष्ठ वर्मन जी के सहयोग से 23 दिसम्बर से 6 जनवरी तक कार्यक्रम किया गया।

न्यू बम्बई अणु शक्ति नगर, वाशी नाका, कोलाबा नेवी नगर, बान्द्रा माऊंट रोड चैम्बूर परिवारिक सत्सग, टेलीग्राफ कालोनी घाट कोपर मानेक हाल एस्टट, जीवन बीमा कालोनी मुलुण्ड अन्धेरी आ स शान्ताक्रुज तारापुर बस्ती तथा बम्बई के प्रसिद्ध षणमुखानन्द हाल मे ढाई हजार युवको व युवतियो के बीच वैदिक विषयो पर ओजस्वी प्रवचन हुए।

मन्त्री

## महर्षि पर फिल्म न बनाई जाए

आर्य समाज पूरी मे महाशय प्रेम प्रकाश वानप्रस्थी की अध्यक्षता मे एक सभा हुई जिसमे सर्व सम्मति से निम्न प्रस्ताव पारित हुआ—

**प्रस्ताव सख्या 42**

यह सभा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज जो भारत की धार्मिक और राजनैतिक क्रान्ति के अग्रदूत थे। उन पर बनाई जा रही फिल्म' का पुरजोर विरोध करती है। ऐसे उच्च और पवित्र जीवन वाले को सिनेमाओ मे दिखलाना भारतीय सस्कृति का अपमान है। अत इस कुकृत्य को तुरन्त रोका जाए।

—रामदेव बहल
प्रधान

## टकारा में योग शिविर

ऋषि जन्म, बोध भूमि में स्थापित 'म द स्मा ट्रस्ट टकारा, मे दिनाक 16,17 18 फरवरी 85 मे होने वाली रजतजयती व ऋषि बोधोत्सव के उपलक्ष्य मे आर्य युवको को दिशा बोध हेतु आर्य जगत के प्रख्यात् योगनिष्णात सन्यासी पूज्य स्वामी सत्यपति जी महाराज के द्वारा 9 फरवरी से 15 फरवरी 84 तक एक 'योग प्रशिक्षण शिविर' का आयोजन किया गया है।

इसमे सभी 18 वर्ष के ऊपर के युवक व आर्यजन प्रशिक्षित हो सकते है। प्रशिक्षणार्थियों से निवेदन है कि योग दर्शन की टीका, व्यवहारभानु, सत्यार्थप्रकाश तथा सन्ध्या की पुस्तक के साथ टकारा ट्रस्ट मे 8 फरवरी तक अवश्य पहुचे।

भोजन व आवास व्यवस्था ट्रस्ट द्वारा होगी। समय कम है अत शीघ्र ही प्रशिक्षणार्थी अपने आने की सूचना दे।

हरिओ३म् सिद्धान्ताचार्य उपाचार्य
महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट,
टकारा राजकोट (सौराष्ट्र)

## जिला सभा संगरूर का चुनाव

बरनाला—जिला सगरूर आर्य सभा का वार्षिक निर्वाचन गत दिवस आर्य समाज बरनाला मे सम्पन्न हुआ जिसमे जिला सगरूर की सभी आर्य समाजों ने भाग लिया। सर्व सम्मति से महाशय प्रेम प्रकाश को पुन प्रधान चुन लिया गया। शेष अधिकारी व सदस्य चुनने का अधिकार उन्हें दे दिया गया।

—रामसुख राम
मन्त्री
आ स बरनाला



श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रेस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन न. 74250 (रजि. न. पी. जे. एल. 55)

वर्ष 16 अंक 34 15 माघ सम्वत् 2041, तदनुसार 27 जनवरी 1985, दयानन्दाब्द 160 । एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपए

# पंजाब में संस्कृत की उपेक्षा सहन नहीं होगी

## सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी की चेतावनी

20 जनवरी को जालन्धर में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में एक संस्कृत सम्मेलन बुलाया गया। जिसमें पंजाब की संस्कृत संस्थाओं के आचार्य व दूसरे संस्कृत प्रेमी भारी संख्या में दोआबा कालेज जालन्धर में उपस्थित हुए। सभी शिक्षा केन्द्रों के प्रतिनिधियों ने पंजाब सरकार की नई शिक्षा नीति में संस्कृत की उपेक्षा की भारी भर्त्सना की। सम्मेलन में मांग की गई कि सरकार अपनी इस नीति में परिवर्तन करे और संस्कृत को स्कूलों में विशिष्ट विषय बनाए। इस सम्मेलन की अध्यक्षता महन्त रामप्रकाश दास जी ने की उद्घाटन पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने किया। सम्मेलन की कार्यवाही का संचालन श्री धर्मप्रकाश दत्त जी रजिस्ट्रार आर्य शिक्षा परिषद् पंजाब ने किया।

सम्मेलन में भाग लेने वाले प्रतिष्ठित व्यक्तियों में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र, सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष पं. मोहनलाल, पं. अमरनाथ शर्मा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की महामन्त्री बहिन कमला जी आर्या, सभा कोषाध्यक्ष श्री [illegible] जी शर्मा वेद प्रचार अधिष्ठाता, चौ. ऋषिपालसिंह जी एडवोकेट, श्री सेठ [illegible] जी, श्री सरदारीलाल जी सभा मन्त्री, श्री वेदप्रकाशजी सरीन आदि के अतिरिक्त जिन लोगो ने सम्मेलन को सम्बोधित किया वह थे—आचार्य विश्वबन्धु जी जालन्धर, प. मोहनलाल जी, गुरुकुल करतारपुर के बच्चे तथा आचार्य नरेश जी शास्त्री, प्रो रणदेव जी, श्री शम्भूनाथ जी कपूरथला, प्रि. श्रीमती गीता अरोड़ा नवांशहर प्रि एम. एल आर्य-लुधियाना आचार्य लक्ष्मी नारायण संस्कृत कालेज अमृतसर, प. सत्यदेव विद्यालंकार, श्री वेदप्रकाश जी महता पटियाला, श्री [illegible] जी शास्त्री जम्मू आदि ने अपने विचार रखे।

श्री वीरेन्द्र जी ने अपने भाषण में कहा कि पंजाब में संस्कृत से जो अन्याय किया जा रहा है वह कदापि सहन नहीं होगा। उन्होंने कहा देश के महान् नेताओं ने संस्कृत को भारत की आत्मा कहा है। राष्ट्र पिता महात्मा गांधी ने कहा था कि संस्कृत इस देश के हर बच्चा के लिए आवश्यक है। स्व प्रधानमन्त्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने कहा था कि अगर मुझ से पूछा जाए कि भारत की सबसे बड़ी निधि क्या है तो मेरा उत्तर होगा कि वह निधि संस्कृत है।

श्री वीरेन्द्र जी ने कहा पंजाब में अंग्रेजी तो चल सकती है और चल रही है किन्तु यहां हिन्दी के लिए कोई जगह नहीं और अब संस्कृत को भी निकाल बाहर किया जा रहा है।

स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए कहा कि संस्कृत का कोष विश्व में सबसे बड़ा है और संस्कृत मानव मात्र की भाषा है इसका अधिक प्रचार अब भारत में ही रह गया है किन्तु विश्व के अन्य देशों ने भी इसका महत्व स्वीकार किया गया है उन्होंने कहा संस्कृत सब भाषाओं की जननी है।

पं मोहनलाल ने कहा कि श्री वीरेन्द्र संस्कृत की बहाली और इसके विकास के लिए जो पग उठाए गे सनातन धर्म जगत् उसमें उनके साथ होगा। उन्होंने कहा इस प्रसंग में सरकार को पत्र लिख कर उसकी नीति स्पष्ट करवा लेनी चाहिए, उसकी रोशनी में अगला पग उठाया चाहिए।

सम्मेलन के अध्यक्ष महन्त रामप्रकाश दास ने कहा कि पंजाब में संस्कृत को समाप्त करना कोई राजनीतिक चाल हो सकती है। उन्होंने कहा कि सरकार को अपनी बात समझाने के लिए ए[illegible] अवसर आया है वह [illegible] भाषा है।

—

# 26 जनवरी का गणतन्त्र दिवस एक राष्ट्रीय पर्व

हमारे देश में कई धार्मिक व सांस्कृतिक पर्व मनाए जाते हैं। दशहरा, होली, दीपावली आदि पर्व ऐसे हैं जिन्हें चिरकाल से सारे भारत वर्ष में बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। परन्तु इसी के साथ ही इनके अतिरिक्त कुछ ऐसे पर्व भी मनाए जाते हैं जिनका अपना राष्ट्रीय महत्व है। वह हैं 15 अगस्त का स्वतन्त्रता दिवस और 26 जनवरी का गणतन्त्र दिवस। इन पर्वों का सम्बन्ध भी सारे राष्ट्र से है और यह भारत के प्रसिद्ध राष्ट्रीय उत्सव भी हैं। जो प्रति वर्ष बड़े समारोह से मनाए जाते हैं।

लाहौर में सन् 1929 में 26 जनवरी को कांग्रेस का एक अधिवेशन हुआ था जिसकी अध्यक्षता प. जवाहरलालजी नेहरू ने की थी। उन्होंने उस समय यह आदेश निकाला था कि 26 जनवरी के दिन भारतवासी राष्ट्रीय झण्डे के नीचे खड़े होकर प्रतिज्ञा करें कि हम भारत के लिए स्वाधीनता की मांग करेंगे और उसके लिए अन्तिम दम तक संघर्ष करेंगे तब से 26 जनवरी का पर्व प्रति वर्ष मनाने की परम्परा चल पड़ी। आजादी के बाद 26 जनवरी 1950 को प्रथम एवं अन्तिम गवर्नर जनरल श्री राजगोपालाचार्य ने नव निर्वाचित राष्ट्रपति डा राजेन्द्र प्रसाद को कार्य भार सौंपा और भारतीय गणतन्त्रात्मक लोकराज्य का अपना बनाया संविधान इसी पुण्य तिथि को लागू हुआ था।

इस प्रकार यह पर्व सन् 1929 से अर्थात् आजादी से लगभग 18 वर्ष पूर्व ही आरम्भ हो गया था परन्तु आजादी के पश्चात् अर्थात् सन् 1947 से यह पर्व और भी समारोह से मनाया जाने लगा और सन् 1950 में जो 26 जनवरी मनाई गई इससे इसका महत्व और भी बढ़ गया।

26 जनवरी से पूर्व ही राजधानी (दिल्ली) में इसकी चहल-पहल होनी आरम्भ हो जाती है, सभी प्रान्तों से लोग वहां पहुंचना आरम्भ हो जाते हैं। राजधानी के मुख्य बाजारों में जलूस निकाला जाता है और भारी प्रदर्शन किया जाता है इस समारोह की शोभा दर्शनीय होती है। इस वर्ष भी पूरी 2 तैयारियां की गई हैं और यह राष्ट्रीय पर्व बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है।

एक प्रश्न इस दिन हमारे सामने उठता है। क्या केवल यह प्रदर्शन और समारोह करने से ही यह पर्व मनाया जाना सफल है या इससे कुछ अधिक भी इस दिन करना चाहिए। इस पर्व के मनाए जाने का तभी लाभ है अगर इस दिन प्रत्येक भारतवासी अपने देश की स्वतन्त्रता रक्षा और सेवा का व्रत ले। अपने उन शहीदों को याद करें जिनके बलिदान से भारत को स्वतन्त्रता मिली। जैसे मकान की नींव के पत्थरों का अपना महत्व होता है उसी प्रकार आजादी रूपी भवन की नींव के वह दृढ़ पत्थर हैं जिन्होंने इसके लिए अपना सभी कुछ आहुत कर दिया था। उन्हें याद न करना एक कृतघ्नता होगी। आजादी के लिए हमने बहुत संघर्ष किया और उसी की यह 26 जनवरी हमें याद दिलाने प्रतिवर्ष आती है, किसी कवि ने कहा है—

यह छब्बीस जनवरी आकर कहती है
हर बार।
संघर्षों से ही मिलता है जीने का
अधिकार।
तम से क्या भूला है,
अपने जीवन का इतिहास।
कितना रक्त बहाकर
[illegible] उल्लास।
यह गणतन्त्र [illegible]
अपनी [illegible] गीत।
दुश्मन से प्रति [illegible] कर
[illegible] जीत।
हमने [illegible] अपने पैरों से अंगार।
शूलों से बिंध कर [illegible]
मिलता है फूलों का प्यार।

# महर्षि दयानन्द फिल्म का विरोध करने वाले अपने जीवन को देखें

ले.—श्री सोमनाथ मरवाह एडवोकेट नई दिल्ली

महर्षि दयानन्द पर फिल्म बनाई जाए या न। इस विषय पर आर्य समाज मे विवाद चल रहा है। "आय मर्यादा" मे इस समय तक पक्ष मे और विपक्ष मे दोनो दृष्टिकोण प्रकाशित किए गए हैं। आज सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष श्री सोमनाथ मरवाह एडवोकेट के विचार प्रकाशित किए जा रहे हैं।

—सम्पादक

यह बड़ी दुःखद बात है कि श्री शिव कुमार शास्त्री के स्तर के व्यक्ति जो सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा के लम्बे समय से सदस्य रहे हैं, यह प्रश्न उठाया है कि आचार्य भगवान देव महर्षि दयानन्द सरस्वती के ऊपर फिल्म क्यों बना रहे हैं। सार्वदेशिक सभा ने 1980 मे निर्णय लिया था कि महर्षि दयानन्द सरस्वती के ऊपर फिल्म बनाई जाए तथा 31-5-80 को हुए शर्तनामे के अनुसार श्री इन्द्र नैयर को 30,000 रुपया अग्रिम राशि भी दी गयी थी। श्री नैयर के फिल्म बनाने के कार्य मे सफलता न मिलने पर अब यह कार्य आचार्य भगवान देव ने प्रारम्भ कर दिया है। इस बात का विश्वास नही किया जा सकता कि प. शिव कुमार शास्त्री को इस तथ्य का पता नही था कि फिल्म के महूर्त के समय दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सरदारी लाल वर्मा के अतिरिक्त सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष श्री सोमनाथ मरवाह भी उपस्थित थे। सन् 1980 में श्री नैयर के साथ फिल्म बनाने सम्बन्धी शर्तनामे का प्रारूप तैयार करने का कार्य सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष (श्री मरवाह) को सौंपा गया था तथा उस पर सार्वदेशिक सभा की ओर से सभा प्रधान लाला रामगोपाल शालवाले ने हस्ताक्षर किये थे। उस समय उपदेशक, पण्डित प्रचारक श्री चन्द्रभानु जी भी उपस्थित थे। इस अवसर पर आर्य समाजो के प्रधान तथा पर्याप्त संख्या मे आर्य समाजी उपस्थित थे।

2. जिस भाषा में यह पत्र लिखा गया है वह केवल सही दिशा में कार्य करने के लिए आचार्य भगवान देव को ही चुनौति नहीं है बल्कि उन सब लोगो के ऊपर जो फिल्म के महूर्त समारोह मे उपस्थित थे, एक सीधा आक्रमण है। मैं केवल यह कह सकता हू कि आर्य समाज संस्थाओ की ओर से जितना सहयोग स्व. प. प्रकाश वीर जी शास्त्री और प. शिव कुमार जी शास्त्री को तथा अन्य नेताओ एव कार्यकर्ताओ को उस समय दिया गया था यदि उसका दस प्रतिशत भी आचार्य भगवान देव को दिया जाता तो आर्य समाज का उद्देश्य तथा कार्य कही अधिक लाभान्वित होता जितना कि स्व. प्रकाशवीर शास्त्री के समय हुआ था।

3 यह बड़ी दुःखद बात है कि पिछले इतने लम्बे समय तक आर्य समाज को यह समझाया जाता रहा है कि संसद भवन मे महर्षि दयानन्द का चित्र लगा हुआ है। मुझे अभी आचार्य भगवान देव जी के द्वारा पता लगा है कि संसद भवन मे आज तक महर्षि दयानन्द का चित्र नही लगा है।

4 1975 मे सूचना एव प्रसारण मन्त्रालय, भारत सरकार ने महर्षि दयानन्द के ऊपर एक डाकुमैन्टरी फिल्म बनाई थी। तत्कालीन मन्त्री श्री इन्द्र कुमार गुजराल के प्रयास एव सद्भाव की प्रत्येक उस व्यक्ति ने प्रशंसा की थी। जिसने भी उस फिल्म को विज्ञान भवन, नई दिल्ली मे आयोजित उद्घाटन समारोह मे देखा था। उसमे भी महर्षि दयानन्द सरस्वती के पात्र को एक जीवित व्यक्ति ने सक्रिय रूप प्रदान किया था तथा उस फिल्म की तीन प्रतियां सम्पूर्ण भारत वर्ष मे तथा विदेशो मे प्रचार प्रसार के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने खरीदी थी। यदि अब इस कार्य का विरोध किया जा रहा है तो यह उन कुछ निहित स्वार्थी व्यक्तियो की ओर से है जिनका आचार्य भगवान देव के स्तर तथा प्रसिद्धि को सहन नही कर सके। मैं मानता हू कि इस फिल्म के निर्माण मे विरोध स्पष्टत व्यक्तिगत प्रतिस्पर्धा के कारण है।

5, मुझे बताया गया है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती के ऊपर गुजरात सरकार ने एक फिल्म बनाई है जिसका कहीं भी और कभी भी विरोध नहीं किया गया।

6 क्या कोई इस बात को मानने से इन्कार करेगा कि गांधी फिल्म में महात्मा गांधी को सम्पूर्ण संसार के सामने लाकर खड़ा कर दिया है। एक भूला हुआ व्यक्ति आज फिर से सम्पूर्ण संसार मे प्रत्येक व्यक्ति की जबान पर है। क्या किसी ने इस बात को अनुभव किया है कि सन्तोषी माता फिल्म एक भूतपूर्व तस्कर की प्रेरणा से बनी है और उसकी पुत्री को सन्तोषी माता के पात्र के रूप में दिखाया गया है और बहुत सी हिन्दू देवीयों ने शुक्रवार को सन्तोषी मा का व्रत रखना आरम्भ कर दिया है क्योकि मुसलमानो के अनुसार शुक्रवार एक पवित्र दिन है। उस फिल्म के कारण ही आज सन्तोषी माता का नाम पहली पंक्ति मे है और जहा तक महर्षि दयानन्द सरस्वती का सम्बन्ध है उनके निर्वाण के 100 वर्ष के पश्चात् भी पाश्चात्य देशो मे उन्हे लोग नहीं जानते। दक्षिण भारत मे भी काफी क्षेत्रो मे उनका नाम नहीं सुना जाता। क्या वे लोग जिन्होने इस फिल्म का विरोध किया है, इस स्थिति से सन्तुष्ट हैं। मैं विश्वास करता हू कि इन लोगो ने इस बात का अनुभव नही किया कि इस फिल्म के प्रदर्शन से आर्य समाज और दयानन्द के सिद्धान्तो के प्रचार प्रसार को कितना योगदान मिलेगा तथा कितने सुपरिचित संवाद तथा भजन युवा लड़के लड़कियो के होठो पर सम्पूर्ण भारत मे फैल जायेंगे। मैं मानता हू कि आजकल यही प्रचार का सही माध्यम है।

7 यह कहा जाता है कि स्वामी जी रामलीला, नाटकों और स्वांग के विरुद्ध थे। मुझे विश्वास है कि यदि दयानन्द सरस्वती के सामने फिल्म उद्योग तथा दूरदर्शन का इतना विकास हुआ होता तो वे भी इसका विरोध न करके समर्थन ही करते। इसके अतिरिक्त आज वे लोग फिल्म निर्माण का विरोध कर रहे हैं जिन्होंने महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों का अपने जीवन में पालन नहीं किया। कितने विरोधियों ने अपने जीवन मे उनकी शिक्षाओं को शत प्रतिशत उतारा है। स्वामी दयानन्द के अनुसार वैवाहिक जीवन 50 वर्ष के पश्चात् वानप्रस्थ हो जाना चाहिए। इनमें से कितने लोगों ने 50 वर्ष के पश्चात् वानप्रस्थ ग्रहण किया है तथा कितनों ने 75 वर्ष के पश्चात् संन्यास आश्रम। कितनों ने अस्पृश्यता को दूर करने के लिए अन्तर्जातीय विवाह किए हैं। मैं जानता हू कि वह लोग अपने समुदाय से बाहर भी नहीं जा सके हैं। यह कहना व्यर्थ है कि कितने तथाकथित फिल्म विरोधियो ने अपने जीवन मे स्वामी जी की शिक्षाओ को क्रियान्वित किया है। स्वामी दयानन्द के अनुसार वह धन जो अन्जाने स्रोत से प्राप्त नहीं किया गया है, आर्य समाज के कार्यों में नहीं लगाया जाना चाहिए। वेदो के अंग्रेजी भाष्य के कार्य के लिए मोहन मेकिन ब्रेवरी की ओर से धन मिला है। क्या इनमें से कोई व्यक्ति इस बात को न्यायोचित ठहरा सकता है कि वह धन स्वामी दयानन्द के अनुसार लिया जाना ठीक है। क्या हमारे आर्य समाजी प्रवक्ता इस बात को सही मानते हैं पर मैं यह कहना चाहता हू कि परिवर्तित परिस्थितियो मे हम लम्बे समय तक सोए हुए नही रह सकते। क्या हम आज स्वामी दयानन्द के द्वारा निर्धारित वेश-भूषा मे बैठकर यज्ञ करते हैं। क्या हम उन समिधाओ का प्रयोग करते हैं जो महर्षि ने बताई थी। क्या हम अपने जीवन मे उन सब बातों को चरितार्थ करते हैं जो उन्होने बताई थी। क्या हमने अपने बच्चो का पोषण आर्य समाज के नियमो के अनुसार किया है और क्या वे आर्य समाज के मिशन को आगे ले जा सकेंगे।

क्या यह सत्य नही है कि आज हमारे कुछ व्यक्ति वानप्रस्थ एवं सन्यास ग्रहण करने के पश्चात् भी महर्षि द्वारा निर्दिष्ट सिद्धान्तविरुद्ध अपना जीवन व्यतीतकर रहे हैं अर्थात् उसी प्रकार अपने कारोबार मे लगे हैं और परिवारो मे ही रह रहे हैं। महर्षि ने तो कुछ ऐसे सिद्धान्त भी निर्धारित किए हैं। जिन पर इस युग में चलना न केवल कठिन है बल्कि असम्भव है जो आप सब जानते हैं।

8 फिल्म निर्माण के सम्बन्ध में पिछले कई दिन पूर्व कुछ परामर्श मिले हैं एक परामर्श पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने दिया है। उन्हें फिल्म के निर्माण में कोई आपत्ति नहीं है पर उन्होंने यह सलाह दी है कि जिस प्रकार गुरु नानक की फिल्म 'नानक नाम जहाज' में गुरु नानक के पात्र को किसी जीवित व्यक्ति द्वारा नहीं दिखाया गया बल्कि आवश्यक स्थानो पर एक बहुत बड़ी फोटो रखकर पीछे से उनकी वाणी को कहा गया है।

(क्रमशः)

## सम्पादकीय—

# संस्कृत सम्मेलन के फैसलें

बीस जनवरी को जालन्धर में जो प्रान्तीय संस्कृत सम्मेलन हुआ, वह प्रत्येक दृष्टिकोण से सफल रहा है। शायद यह पहली बार है जब पंजाब में संस्कृत के साथ जो दुर्व्यवहार हो रहा है, उसके बारे मे संस्कृत प्रेमियो ने बैठकर कुछ विचार विमर्श किया है। परिस्थितियों की विडम्बना देखिए कि जो भाषा सभी अन्य भाषाओं की जननी समझी जाती है आज उसका नामोनिशान मिटाने की कोशिश हो रही है। हमारी सरकार अपने इन दो नेताओं का बहुत जिक्र किया करती है। एक महात्मा गांधी और दूसरे पण्डित जवाहरलाल नेहरू। गांधी जी ने कहा था कि संस्कृत प्रत्येक बच्चे को अनिवार्य रूप से पढ़ाई जानी चाहिए। इसके बिना उसकी शिक्षा पूरी नहीं हो सकती। और पण्डित जवाहर लाल नेहरू ने कहा था कि संस्कृत हमारे पास एक ऐसा कोष है जिसमें हमारा गौरवमय अतीत छुपा हुआ है। इसलिए सस्कृत को बच्चों की शिक्षा का एक अनिवार्य अग बनाना चाहिए। आज हमारे देश मे जो लोग गांधी तथा जवाहरलाल के नाम पर शासन करते हैं वही सस्कृत की जड़ें काटने में लगे हुए हैं। हमारा इतिहास भी हमें यह बताता है कि हमारे जिन नेताओं ने संस्कृत के माध्यम से अपनी शिक्षा प्राप्त की थी वही आगे निकल गए। कोई उनमें से राष्ट्रपति बन गया, कोई प्रधानमन्त्री बन गया, यदि डा. राजेन्द्र प्रसाद तथा डा. राधाकृष्णन जैसे संस्कृत के विद्वान् राष्ट्रपति बन गए थे तो लालबहादुर शास्त्री जैसे प्रधानमन्त्री बन गए थे। पण्डित जवाहरलाल ने स्वय सस्कृत नहीं पढ़ी थी, लेकिन वह संस्कृत के बहुत बड़े प्रशंसक थे, क्योंकि उन्होने अपने देश का इतिहास पढ़ा था और वह जानते थे कि संस्कृत ने हमारे देश को बनाने में कितनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

20 जनवरी को जालन्धर में जो सम्मेलन हुआ है, उसमें पंजाब में संस्कृत के साथ जो सलूक हो रहा है उस पर विचार विमर्श किया गया शीघ्र ही पंजाब में अन्य राज्यों की तरह 10+2 की नई शिक्षा प्रणाली लागू होगी। इसके माध्यम से प्रत्येक विद्यार्थी को तीन भाषाएं पढ़नी पड़ेंगी, अन्य राज्यों में तो हिन्दी और अंग्रेजी के अतिरिक्त कोई उर्दू पढ़ना चाहे या संस्कृत पढ़ना चाहे तो सरकार उसका प्रबन्ध कर देती है। पंजाब में एक कठिनाई है कि हिन्दी और पंजाबी के अतिरिक्त तीसरी भाषा अंग्रेजी पढ़ाई जाएगी जिसका मतलब है कि संस्कृत के लिए कोई जगह नहीं होगी और यदि कोई पढ़ेगा भी तो संस्कृत के अंक उसके शेष अंकों में शामिल नहीं किए जाएंगे। जब एक भाषा के साथ यह सलूक हो तो उस भाषा को पढ़ाने वालों के साथ उससे बेहतर सलूक कैसे हो सकता है। इसलिए सरकारी स्कूलों में प्रथम तो संस्कृत के अध्यापक रखे ही नहीं जाते। रखे भी जाएं तो उन्हें वह वेतन अथवा अन्य सुविधाए नही मिलती जो दूसरों को मिलती हैं। पंजाब में 15-20 ऐसे प्राईवेट स्कूल हैं जहां संस्कृत पढाई जाती है। सरकार की ओर से उन्हें वह वित्तीय सहायता नहीं मिलती जो मिलनी चाहिए। यह सब कुछ इसलिए हो रहा है कि सरकार की नजर में संस्कृत का कोई मूल्य नही और यदि इस राज्य में वह बिल्कुल ही समाप्त हो जाए तो सरकार को उस का कोई खेद नहीं होगा। उसे समाप्त करने की ओर ही सरकार यह पग उठा रही है कि 10+2 वाली शिक्षा प्रणाली में संस्कृत की पढ़ाई लगभग समाप्त कर दी जाएगी।

इस वस्तुस्थिति पर विचार करने के लिए ही यह सम्मेलन बुलाया गया था। उसमें कई सुझाव दिए गए, और कई बहुत अच्छे भाषण भी दिए गए। जो कुछ वहां कहा गया उसका निष्कर्ष यही है कि अब वह समय आ गया है जबकि वे लोग जिन्हें अपने धर्म और संस्कृति के प्रति श्रद्धा है संस्कृत को बचाने के लिए कोई प्रभावी कार्यवाही करें। इस सम्मेलन में शामिल होने वाले बहनों तथा भाईयों की सर्वसम्मत राय थी कि पंजाब में हिन्दी तथा पजाबी के अतिरिक्त जो तीसरी भाषा अनिवार्य घोषित की जानी है वह संस्कृत होनी चाहिए। अंग्रेजी केवल उनके लिए आवश्यक है जिन्होंने सरकारी नौकरी करनी हो। यह भाषा स्कूल में भी पढ़ी जा सकती है, स्कूल से बाहर भी पढ़ी जा सकती है। सब बच्चों पर अंग्रेजी क्यों लादी जाए। इसलिए अब एक ऐसा आंदोलन चलाने की आवश्यकता है कि अंग्रेजी पढाई जा सके या नहीं, सस्कृत अवश्य पढ़ानी चाहिए और यदि नई योजना के अनुसार एक बच्चे के लिए तीन भाषाए पढनी आवश्यक होंगी तो वह हिन्दी, पंजाबी और संस्कृत होनी चाहियें। अंग्रेजी एक ऐच्छिक भाषा होनी चाहिए। उसका पढना आवश्यक नही है।

सम्मेलन के इस निर्णय को कार्यरूप देने के लिए एक समिति बना दी गई है जिनमें प्रमुख सस्कृत प्रेमियो को शामिल किया गया है। हमारी पहली कोशिश यह होगी कि सरकार से मिलकर इस समस्या का कोई समाधान ढूंढे। यदि उसमें हम सफल नही हुए तो उसके बारे सोचेंगे कि अगला कदम क्या उठाएं। यह बात बिल्कुल स्पष्ट है कि अब सस्कृत के साथ वह दुर्व्यवहार नही होने दिया जाएगा जो इस समय तक होता रहा है। देश की एकता तथा अखण्डता सस्कृत पर निर्भर करती है। यही एक कारण है जो उत्तरी भारत और दक्षिणी भारत के बीच एक कड़ी बन सकती है। इसलिए राष्ट्र के व्यापक हित को सामने रखते हुए भी यह आवश्यक है कि संस्कृत को दूसरी भाषाओ के स्तर पर रखा जाए। यह सम्मेलन इसी समस्या पर विचार करने के लिए बुलाया गया था। मुझे खुशी है कि इसका परिणाम अच्छा हो रहा है।

—वीरेन्द्र

# प्रसिद्ध शायर श्री मुजरिमजी दसूही चल बसे

आर्य जगत् को यह जानकर अति दुःख होगा कि उस्ताद मुजरिम दसूही का 16 1-85 को रात साढ़े सात बजे उनके निवास स्थान दसूहा में स्वर्गवास हो गया। वह पिछले छः वर्ष से अधरंग से पीडित थे। श्री हरबंसलाल जी मुजरिम दसूही पंजाब के एक प्रसिद्ध शायर रहे। उर्दू, पजाबी और हिन्दी तीनों भाषाओं में उन्होंने अनेक कविताओं की रचना की। उन्होने सारे पंजाब में शायर के रूप में प्रसिद्धि पाई। वह केवल शायर ही नही थे, एक अध्यापक भी थे। दसूहा के डी. ए. वी स्कूल में वह वर्षों अध्यापक रहे और वहीं से रिटायर्ड हुए थे। इसके अतिरिक्त उन्होने आर्य समाज के क्षेत्र में भी अपने महत्वपूर्ण कार्य से आर्य जगत् में विशेष नाम पैदा कर लिया था। पजाब का शायद ही कोई व्यक्ति ऐसा हो जो उन्हे न जानता हो।

दसूहा आर्य समाज की तथा शिक्षण सस्थाओ की उन्होने बड़ी सेवा की है। वह कई वर्ष तक आर्य समाज के प्रधान और समाज से सम्बन्धित दूसरी शिक्षण सस्थाओं के अधिकारी रहे, वह पजाब के उस प्रत्येक उत्सव पर सहर्ष जाते थे जहां से भी उन्हें निमन्त्रण मिलता था और अपनी वाणी से कविताओं के द्वारा वह जनता को प्रभावित कर लेते थे। उनका जीवन एक धार्मिक जीवन रहा है।

लगभग 6 वर्ष पूर्व वह अधरंग से पीडित हो गए, परन्तु फिर भी उन्होंने साहस न छोड़ा और एक भयंकर बीमारी से भी निरन्तर संघर्ष करते रहे। परन्तु अन्त में यह भयंकर रोग उनकी जान लेवा हो गया।

श्री मुजरिम जी के चले जाने से आर्य समाज की जो क्षति हुई है, शायद वह पूरी न हो सके। क्योंकि आर्य समाज के क्षेत्र ऐसे शायर कम ही मिलते हैं। हम आर्य मर्यादा परिवार और आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की ओर से उन्हें श्रद्धांजलि भेंट करते हैं और परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वह उस पवित्र आत्मा को सद्गति प्रदान करे तथा उनके सारे शोकाकुल परिवार को उनके इस वियोग को सहन करने की शक्ति दे।

—सह-सम्पादक

# जी चाहता है तोड़ दूं शीशा फरेब का--2

ले.—श्री वीरेन्द्र जी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

(गताक से आगे)

पजाब की वर्तमान स्थिति का सबसे निराशाजनक पहलू यह है कि अकाली, जोकि पजाब की समस्या को हल करने मे सबसे अधिक और सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं, वे ही एक ऐसा रवैया अपना रहे हैं कि समस्या हल न हो और जो आग जल रही है वह जलती रहे। इस बहस मे पडे बिना कि जो कुछ पजाब मे पिछले तीन-चार वर्ष मे हुआ है उसके लिए कौन जिम्मेवार है, इससे इन्कार नही किया जा सकता कि हालात इस सीमा तक बिगड गए हैं कि अगर उनका शीघ्र कोई हल तलाश न किया गया तो पजाब को ऐसी क्षति होगी जिसकी पूर्ति न होगी। पहले भी बहुत कुछ हो चुका है। अब तो हालात को बेहतर बनाने की जरूरत है। अकाली दल इसमे एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है लेकिन वह निभा नही रहा।

सरदार प्रेमसिंह लालपुरा ने अपने वक्तव्य मे दो बातें कही है। एक यह कि जब तक आनन्दपुर साहब का प्रस्ताव स्वीकार नही किया जाता उस समय तक कोई बात नही हो सकती। दूसरा यह कि सिखो के साथ जो व्यवहार किया गया है और इसमे सरकार ने जो भूमिका निभाई है उसके विरुद्ध वह सयुक्त राष्ट्र महासभा और दूसरी अन्तर्राष्ट्रीय सभाओ के समक्ष अपील करेंगे। साथ ही यह भी कहा है कि अकाली दल जरनैलसिंह भिंडरावाला के भतीजे जसबीरसिंह के मुकद्दमा की पैरवी भी करेगा। अभी तक उन्होने यह नही कहा कि श्रीमती इन्दिरा गाधी की हत्या के सम्बन्ध मे गिरफ्तार किए गए सतवन्तसिंह और अन्य व्यक्तियो की पैरवी भी करेगा। अकाली अगर जसबीरसिंह की पैरवी करने के लिए तैयार हो गए है तो बाकी क्या रह गया और इस मनोवृत्ति के व्यक्ति के साथ बात क्या हो सकती है। अकालियो से सबसे अधिक शिकायत राजीव गाधी को हो सकती है, जिसकी मा की बहुत ही बदरूनापूर्ण हत्या कर दी गई थी। लकिन वह तो हर रोज कह रहा है कि सिखो के साथ सम्मानजनक व्यवहार किया जाएगा और उनकी हर प्रकार से रक्षा की जाएगी। वे इस देश के सम्मानित नागरिक है। उन्होने देश के लिए स्वतन्त्रता प्राप्त करने और उसके नव-निर्माण मे भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसलिए उनकी हर शिकायत दूर करने की पूरी कोशिश की जाएगी।

लेकिन अकाली कहे जा रहे हैं कि वह अपनी शिकायत दुनिया के सामने रखेंगे। जब दो वर्ष हुए दिल्ली मे एशियाई खेलें हुई थी, उस समय भी अकालियो ने कहा था कि वे दिल्ली जाकर इन्दिरा सरकार को दुनिया के सामने बेनकाब करेंगे। उसका जो परिणाम निकला था वह भी हमारे सामने है। अब वे पुन कह रहे है कि वे सयुक्त राष्ट्र महा सभा मे जाएगे और दूसरी अन्तर्राष्ट्रीय अदालतो के सामने अपना पक्ष रखेंगे। उन्होने अभी तक यह नही समझा कि अगर आज कोई भी देश जसबीर सिंह को शरण देने को तैयार नही हुआ और उसने पहले जो सिख नौजवान विमान का अपहरण करके ले गए थे उन्हे दुबई की सरकार ने भारत सरकार के हवाले कर दिया था तो अब अगर अकाली सयुक्त राष्ट्र महा सभा मे पहुच जाए या किसी अन्तर्राष्ट्रीय अदालत का दरवाजा खटखटाए तो उनकी कौन सुनेगा। वे यह भी भूल रहे है कि इन्दिरा गाधी की हत्या ने हालात का रूप एकदम बदल दिया है। आज सारी दुनिया की हमदर्दी इन्दिरा के बेटे राजीव गाधी के साथ है। कोई दूसरी सरकार ऐसी कार्य वाही नही करेगी जो भारत के हित के विरुद्ध हो।

अकालियो को कौन समझाए कि बाहर की दुनिया आज उनकी कोई मदद नही सकती। अगर व सयुक्त राष्ट्र महासभा को अपील करना चाहते है तो करे लेकिन उनका बन बनाएगा कुछ नही, हा भारत सरकार से साथ उनका कोई फैसला न हो सकगा। इस कारण सिखो को जो नुकसान होगा उसका अनुमान लगाना कठिन नही। अकालियो के लिए जरूर कठिन है। इसके लिए कुछ सूझबूझ की जरूरत है।

असली प्रश्न तो फिर भी आनन्दपुर साहब का प्रस्ताव रह जाता है। मैंने गत सप्ताह लिखा था कि पहले यह निर्णय होना चाहिए कि आनन्दपुर साहब का कौन सा प्रस्ताव है। जिसके कि अकाली अपने आपको पाबन्द समझते है। अगर पाठक इसके इतिहास को समझ ले तो उन्हे पता चल जाएगा कि यह प्रस्ताव सिखो के साथ कितना बड़ा मजाक किया गया है। यह मै इसलिए कहता हू कि अलग-अलग समय पर विभिन्न अकाली नेताओ ने इस प्रस्ताव की अलग-अलग व्याख्या की है। इस समय तक पाच अकालियो का नाम इस प्रस्ताव के सम्बन्ध मे लिया जा रहा है। सरदार कपूरसिह, डाक्टर भगतसिह, सुरजीतसिंह बरनाला, गुरचरणसिह टोहरा और हरचन्दसिंह लौगोवाल। पाचो का दृष्टिकोण इसके सम्बन्ध मे अलग-अलग है सबसे अधिक खतरनाक गुरचरणसिंह टोहरा का है। जिसने अक्तूबर 1978 मे आल इण्डिया अकाली कान्फ्रेंस लुधियाना मे जो भाषण किया था उसने पहली बार इस प्रस्ताव को एक पृथकतावादी माग का रग दे दिया। आनन्दपुर साहब के प्रस्ताव का ख्याल सबसे पहले 1953 मे शुरू हुआ लेकिन 1963 मे जो अकाली कान्फ्रेंस हुई थी उसमे पहली बार यह माग की गई कि भारत के अन्दर सिखो के लिए एक अलग सूबा बनाया जाए इस कान्फ्रेंस का नाम जरनैल हरिसिंह नलवा कान्फ्रेंस रखा गया था। यह कान्फ्रेंस मास्टर तारासिंह द्वारा आयोजित की गयी थी और सरदार गुरनामसिंह ने इसमे एक अलग सूबा की माग भी की थी।

1968 म शिरोमणि अकाली दल ने बटाला मे अपना एक सम्मेलन किया। इसमे यह माग की गयी कि पजाब के बाहर जो पजाबी भाषी क्षेत्र रह गए है वह पजाब मे मिला दिए जाए। सरदार कपूरसिह ने इस प्रस्ताव का यह कहकर विरोध किया कि केवल पजाबी भाषी क्षेत्रो को पजाब मे मिला देने से काम न चलेगा, सिखो को तो एक 'होमलैंड' की जरूरत है। इसके लिए सघर्ष करना चाहिए, लेकिन उस समय तक कपूरसिंह का दृष्टिकोण भी साफ न था कि जो होमलैंड यह माग रहे हैं वह भारत के के अन्दर हो या बाहर।

चू कि अकालियो में इस सवाल पर मतभेद था इसलिए इस समस्या पर विचार करने के लिए और कोई स्पष्ट दृष्टिकोण पन्थ के सामने रखने के लिए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी की कार्यकारिणी ने 11 दिसम्बर 1972 को सरदार सुरजीतसिंह बरनाला की अध्यक्षता मे एक कमेटी गठित की ताकि वह सिख सगत के सामने एक सही दृष्टिकोण रखे जिसके आधार पर अकाली दल कोई सघर्ष शुरू कर सके। इस कमेटी मे गुरचरणसिंह टोहरा, जीवनसिंह उमरानगल सरदार बलवन्तसिंह, सरदार ज्ञानसिंह राड़ेवाला, प्रेमसिंह लालपुरा, जसविन्दर-सिंह बराड़ और अमरसिंह अम्बालवी को शामिल किया गया था। इस कमेटी ने जो प्रस्ताव तैयार किया वह ही 16 अक्तूबर 1973 को स्वीकार कर लिया गया और यही आनन्दपुर साहब प्रस्ताव के नाम से मशहूर हुआ। यह है क्या और इसमे किस तरह परिवर्तन किए गए, इस का उल्लेख आगामी अक मे करूगा।

## आर्य वीर की पहचान

जो दुखियो की सेवा में तन मन लगाये,<br>
जो बरबाद उजडे घरो को बसाये,<br>
जो औरो को सुख देके खुद दुख उठाये,<br>
समझ लो वही आर्य वीर हो तुम।

जो अन्याय के आगे झुकना न जाने,<br>
मुसीबत से डरकर जो छुपना न जाने,<br>
जो तूफान आधी मे रुकना न जाने<br>
समझ लो वही आर्य वीर हो तुम।

जो मृत्यु का भय अपने मन मे न लाये,<br>
धधकती ज्वाला मे जो कूद जाए,<br>
चकित कर दे दुनिया को वह कर दिखाये,<br>
समझ लो वही आर्य वीर हो तुम।

जो मैदा मे लाजपत बन के निकले,<br>
भगतसिंह, सुखदेव, दत्त बन के निकले,<br>
जो शेरो पर चढ़कर भरत बन के निकले,<br>
समझ लो वही आर्य वीर हो तुम।

जो ब्रह्मचर्य से अपना बल थाम रखे,<br>
जो पुरुषार्थ परमार्थ से काम रखे,<br>
जो रोशन दयानन्द का नाम रख,<br>
समझ लो वही आर्य वीर हो तुम।

# जीवनीय पर्यावरण का निर्माण

ले —श्री प वीरसेनजी वेदश्रमी वेद विज्ञानाचार्य वेद सदन महारानी पथ, इन्दौर

## श नो वात.पवताम्—

सुख एव जीवन देने वाली वायु सवत्र बहे (यजुर्वेद) 56-10

यदि सुखदायी जीवनप्रद वायु का पर्यावरण में अभाव हो जाएगा अथवा जीवनघाती तत्वो की पर्यावरण मे वृद्धि हो जायेगी तो जीवन क्षण भर भी नहीं रह सकता। भोपाल मे 3 दिसम्बर 1984 को हुए प्राण घातक विषाक्त पर्यावरण से एक विशाल क्षेत्र मे प्राणियो का मनुष्य, पशु पक्षियो का भयकर सहार कुछ ही काल मे हो गया और लाख से भी अधिक मनुष्यो को अनेक स्थानो के अस्पतालो मे चिकित्सा के लिए शरण लेनी पड़ी। इस भयकर म मृ लोला के समाचारो ने ससार के समस्त देशो को पर्यावरण की सुरक्षा के लिए चिन्तित कर दिया। यह विषाक्त प्रदूषण मानवकृत था। जिस गुप्त प्रयोजन के लिए था वह समस्त ससार को प्रकट हो गया। अब मृत्यु की सान्त्वना राशि चन्द चादी के टुकडो से चुकाई जाएगी। सहारकर्ता थोडी धनराशि मे दोष रहित, निष्कलक अदण्डनीय, दयावान तथा दानी मान लिए जावेग। सहारक प्रदूषण निमाण अक्षम्य अपराध है।

## 2 मा हिंसी पुरुष जगत्—

प्राणि जगत का विनाश मत करो।

(यजुर्वेद 16-3)

वेद का उपदेश अहिंसा का है—सब प्राणियो की रक्षा का है। परन्तु वतमान समय मे धनवान राष्ट्रो की दृष्टि मे गरीब एव निधन राष्ट्रो के मनुष्यो के जीवन का मूल्य च द चा दी के टुकडे मे परिवर्तित हो जाता है। समृद्ध राष्ट्रो ने कृमि कीट एव मनुष्यो के विनाश के लिए अनेक विषमय सहार कारक पदार्थ निर्मित करके वायु जल, पृथिवी, अन्नादि पदार्थो को न्यूनाधिक प्रमाण मे प्रदूषित किया है—क्योकि विनाश ही जीवन का लक्ष्य बन गया है परन्तु विषाक्त प्रदूषणो के दूर करने का प्रयत्न नही किया। जीवन प्रदान करने की योजना का सर्वथा अभाव दृष्टिगोचर हो रहा है। मनुष्यो मे मनुष्यत्व जागृत होना चाहिए।

## 3 श न इषिरो अभिवातुवात—

चारो ओर सुखदाता वायु का प्रवाह चले। (ऋग्वेद 7-35 4)

3 दिसम्बर 1984 की भोपाल की मृत्यु रात्रि से यह स्पष्ट परिणाम प्रकट हो गया कि हम अपने पर्यावरण को हिंसक प्रवृत्तियो के कारण विषमय बना रहे हैं—परन्तु इसके विपरीत अपने पर्यावरण को शुद्ध एव जीवनदायी बनाने का प्रयत्न नही कर रहे है। जिस प्रकार घातक पर्यावरण बनाने से ही बना उसी प्रकार जीवनदायी पर्यावरण भी बनाया जा सकता है। इस दिशा मे प्रयत्न प्रत्येक उद्योग प्रतिष्ठान फैक्ट्री, मिल, कारखानो को अनिवार्य रूप से अवश्य करना चाहिए। क्योकि इन्ही के द्वारा विविध प्रकार के प्रदूषणो की वृद्धि और प्रसार अहर्निश हो रहा है। धन से कही अधिक जीवन का मूल्य समझना चाहिए।

## 4. श न ओषधीर्वनिना भवन्तु-

वृक्ष वनस्पतिया का व य रूप हमे सुखकारी है—(ऋग्वेद 7 35 5)

वृक्ष वनस्पतियो का पर्यावरण हमारे लिए सुखदायी है। ऐसा वेद ने कहा क्योकि उनसे हमे जीवनदायी प्राण वायु प्राप्त होती है। ऋग्वेद मण्डल 10, सूक्त 186 के मन्त्र प्रथम मे इस रहस्य को और भी अच्छे रूप मे प्रकट किया गया है।

वहा कहा है—वात आवातु भेषज शभु मयोभु नोहृदे—प्रण अयू षि तारिष अर्थात औषध तत्वो से परिपूर्ण वायु हमारे चारो ओर बहे जो कि कल्याण करने वाली तथा सुख प्रदाता हमारे हृदय के लिए हो। वह भेषज गुण युक्त वायु आयु का विस्तार करे अर्थात् दीर्घ जीवन प्रदान करे। इस प्रकार वेद ने जीवन के लिए औषधि तत्वो से युक्त वायु मण्डल बनाने का उपदेश किया है। इसका निर्माण करना चाहिए।

## 5 औषधि तत्वो से युक्त वायु मडल बनाने का प्रकार—

नमो वृक्षभ्यो हरिकेशेभ्य यजुर्वेद 16 17

हरे-भरे वृक्ष प्रतिष्ठा योग्य हैं। अत प्रत्येक फैक्ट्री कारखाना, मिल, औद्योगिक प्रतिष्ठान के चारो ओर औषधि तत्व प्रधान, शोधक, सुगन्धित तथा जीवन प्रदाता वृक्ष वनस्पति, गुल्म एव लताओ का घना पर्यावरण बनाना आवश्यक है। इस निमित्त पीपल, बड गूलर आम बिल्व सिरस आवला, नीम पलाश निर्गुंडी हारशृंगार चम्पा, रात की रानी सदृश वन तथा तुलसी, दमनक मरुवा गुलाब चमेली मोगरा अपामार्ग ब्रम्ही, अतिबला, वावची नागदमनी सदृश क्षुद्रजाति की वनस्पतिया विष्णुकान्ता गिलोय आदि सदृश बेल व लताए लगानी चाहिए। इनसे भेषज वायु का प्रसारण पर्यावरण मे स्वत होता रहेगा। तथा जिन फैक्टी आदि के चारो ओर वृक्ष वनस्पतियो का पर्यावरण निर्माण सम्भव न हो वहा सख्या 6 से 9 मे निर्दिष्ट प्रयोग अवश्य करे। फैक्ट्री या कारखाना चलाना है तो वृक्ष वनस्पतियो को लगाने की पर्याप्त एव सुदृढ व्यवस्था करनी ही चाहिए तथा पर्यावरण शोधन की भी।

## 6 शम्वस्तु वायु—

निश्चय से सुखकारी वायु होनी चाहिए—(ऋग्वेद 7 35 9)

भेषज वायु मण्डल निर्माण का दूसरा प्रकार भी वर्णन बनाता है। यजुर्वेद अध्याय 3 के प्रथम मन्त्र मे कहा है—समिधाग्नि दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम। आस्मिन्हव्याजुहोतन। अर्थात यज्ञिय वृक्षो का छिलका चढी हुई समिधाओ से अग्नि को घृत की आहुतियो से प्रचण्ड करके उसमे हवि पदार्थो की आहुतिया प्रदान करो। इस प्रकार अग्नि के माध्यम से हव्य पदार्थो की आहुति की गन्ध एव धूम से वायु मण्डल तैयार होगा। इससे पर्यावरण शुद्ध होगा—जीवनप्रद वायु प्राप्त होगी। इसका निर्माण कार्य भी प्रत्येक फैक्ट्री कारखाने मे प्रतिदिन प्रात साय सूर्योदय एव सूर्यास्त समय करना अनिवार्य होना चाहिए। प्रति सौ वर्ग मीटर के क्षेत्रफल स्थान के प्रमाण से एक किलो द्रव्य पदार्थो की हवि देना अनिवार्य होना चाहिए।

## 7 शमु सन्तु यज्ञा—

यज्ञ हवन कल्याणकारी हो—

(ऋग्वेद 7 35 9)

यज्ञ हवन द्वारा सुखकारी वायु मण्डल का निर्माण निम्न प्रकार करे—

दो किलो आम, पीपल गूलर पलाश, बिल्व या शमी वृक्ष की छिलका चढी हुई समिधाओ मे कपूर तथा घृतादि से अच्छी प्रकार अग्नि को प्रचण्ड करके उस प्रचण्ड अग्नि मे 10 से 20 ग्राम हव्य पदार्थो की आहुति एक एक मिनट के अन्तर से देवे। हव्य पदार्थो मे 250 ग्राम गाय का शुद्ध गौ घृत प्रति एक किलो हव्य के मान से मिलाना चाहिए। यदि कभी परिस्थितिवश घृत न मिले तो तिलो का शुद्ध तेल मिलावे। हव्य पदार्थ मोटे मोटे कूट कर बहुत बारीक न करे। हव्य पदार्थो मे निम्न द्रव्य अवश्य ग्रहण करना चाहिए। गूगल 500 ग्राम चन्दन 200 ग्राम गिलोय 200 ग्राम नागर मोथा 200 ग्राम, बावची 100 ग्राम नागर 100 ग्राम, तिल 100 ग्राम जौ 100 ग्राम गुड या चीनी 200 ग्राम, लोबान 200 ग्राम बेल फल की गिरी 100 ग्राम—इस प्रमाण से हव्य द्रव्य बनावे। इसमे प्रदूषण दूर होने के साथ साथ औषधियुक्त, जीवनप्रद पर्यावरण का निर्माण होगा।

## 8 वात आ वातु भेषजम्—

भेषज वायु चारो ओर बहे—

(ऋग्वेद 10 186 1)

जिन स्थानो व नगरो मे युद्ध पर प्रतिदिन होने से यज्ञ हवन कार्य सम्भव नही है वहा पर सख्या 7 मे बताए हव्य द्रव्यो से निर्मित भेषज वायु के भरे गुब्बारो या भेषज वायु के भरे सिलेंडरो का भरकर रखे और प्रात साय उस भेषज वायु को गम का वायु मण्डल मे प्रसारित करे। इसमे पर्यावरण मे शुद्धि तथा जीवनप्रद वायु के निर्माण मे अच्छी सहायता होगी। विशिष्ट रोगो मे भी विशिष्ट यज्ञ धूम रोगी के कमरे मे करने से लाभ होगा।

## 9 श नो अग्निर्ज्योतिरनीकोअस्तु

अग्नि का प्रानि सुखकारी है

(ऋग्वेद 7-35-4)

जिन स्थानो मे धवा अग्नि प्रतिदिन प्रज्वलित स्थानो मे दूसरा प्रयोग अखण्ड ज्योति का करना लाभदायक है। मे घृत मे बनाए हवि द्रव्यो से शुद्ध घृत उत्पन्न कर उसका अखण्ड दीप स्थापित करे। इसमे भी वायु मण्डल मे किसी न किसी प्रमाण मे शोधन शक्ति की वृद्धि होगी तथा जीवनीय वायु के सचार मे कुछ सहायता मिलेगी।

—

# जालन्धर में मकर संक्रांति पर्व मनाया

आर्य समाज शहीद भगतसिंह नगर जालन्धर मे मकर सक्रांति का पर्व 14 1-85 सोमवार प्रात बडी धूमधाम से मनाया गया जिसमे आर्य माडल स्कूल तथा स्टाफ ने भी भाग लिया और बच्चो के वेद मन्त्र तथा भजन आदि हुए और आर्य समाज के प्रधान मुल्खराज आर्य ने मकर सक्रान्ति पर अपने विचार रखे और आर्य समाज के दस नियम ठीक सुनाने वाले बच्चो को ईनाम बांटा गया और अन्त मे शांति पाठ के पश्चात कार्यवाही समाप्त हुई और साथ ही आए हुए सब लोगो को यज्ञ शेष बांटा गया।

—रणजीत आर्य

मन्त्री आर्य समाज शहीद भगतसिंह नगर जालन्धर

—

# गुरुकुल शिल्प विद्यालय भठिण्डा के समाचार

आज से लगभग 60 वर्ष पूर्व श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के कर कमलो द्वारा इस गुरुकुल की स्थापना हुई थी। इस पुण्य कार्य के लिए भठिण्डा निवासी श्री ला. बेलामल रामजीदास ने एक विशाल भूमि दान में उसी समय दी थी और उसकी रजिस्ट्री बाकायदा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब लाहौर के नाम करवायी पहले इस भूमि में नहर का पानी नहीं लगता था बाद में प्रयत्न करने पर नहर का पानी भूमि के लिए मिल गया। आरम्भ में स्वामी विवेकानन्द जी महाराज के आचार्यत्व में गुरुकुल भठिण्डा भलिभांति चलता रहा। ब्रह्मचारियों के निवास के लिए डा. मथुरादास जी को मोगा, चौ. हरजी रामजी मलोट, चौ. मिड्डमल विधिचन्द एवं श्री बंसीलाल, कौर चन्द आदि दानि महानुभावों में अपने दान से पर्याप्त कमरे बनवा दिये, रसोई घर भी पृथक् बनवा दिया गया। इसके साथ ही एक यज्ञशाला का भी निर्माण आरम्भ किया लेकिन किन्ही कारणों से यज्ञशाला अधूरी पड़ी है। ब्रह्मचारियो के लिए जरूरी आवश्यकताओं के लिए मकान बना दिये गये।

इसके बाद श्री स्वामी वेदानन्द जी महाराज ने अपने कार्यकाल में तीन कमरों का ब्लाक धन संग्रह करके बनवाया। उनका विचार यहां पर एक अच्छी संस्था कायम करने का भी था दुर्भाग्य से आपका भी देहावसान हो गया और हाल कमरे की छत पड़नी रह गई।

उधर पंजाब व हरियाणा के दो भाग बन जाने से विद्यार्थियों का प्रविष्ट होना बन्द हो गया अधिकतर हरियाणा से विद्यार्थी आया करते थे। इस कारण गुरुकुल का कार्य बन्द हो गया। आर्य समाज भठिण्डा के श्री ला. रामजीदास जी चौ. मिड्डूमल जी श्री किशोरी लाल जी आदि उत्साही कार्यकर्ताओं के भी देहावसान से इस कार्य को महान् क्षति पहुंची। वर्तमान अधिकारियों ने भी गुरुकुल की भूमि एव मकानों की देखरेख जारी रखी है। हमारी शिरोमणी सभा ने भी समय-समय पर अपनी अमूल्य सहायता से इसे सुरक्षित रखा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने अब एक ट्यूबवैल लगवा दिया है। साथ में ऊबड़-खाबड़ जमीन में तीन हजार सफेदे के पेड़ लगवा दिये हैं कुछ समय बाद बहुत सुन्दर हरियाली नजर आने लगेगी। चार दिवारी भी करवा दी गई है।

अब यज्ञशाला की छत डलवानी शेष है—जिस पर दस हजार रुपया अनुमानित खर्च का है। जिसमें चार हजार रुपया प्राप्त हो गया है। इसी प्रकार हाल कमरे की छत पर एवं अन्य कार्यों पर 25 हजार रुपये सम्भावित खर्च की आशा है। यज्ञशाला निर्माण के लिए 3808 रुपए नकद प्राप्त हो चुका है। 1924 रुपये के वायदे का धन शेष है। हम सब दानी सज्जनो से प्रार्थना करेंगे कि वह यह धन राशि दान रूप में देने की कृपा करें। आपकी सेवा में मास्टर पूर्ण चन्द जी। वानप्रस्थी मुखतारे आम सभा इस निमित दान लेने आवेंगे आप यथा शक्ति उनको दान देने की कृपा करना रसीद लेते रहिए।

गुरुकुल भूमि में प्रवेश के लिए एक बड़ा द्वार (गेट) श्री स्वर्गीय इन्द्रसिंह जी चाय वालों ने बनवाया था जो कि अब गिर चुका है। अब पुन. श्री इन्द्रसिंह जी के सुपुत्रों श्री कृष्ण कुमार जी एव अन्य पुत्रो ने यह वायदा किया है कि यह बड़ा मुख्य द्वार हम अपने पास से धन देकर बनवा देंगे।

यज्ञशाला गुरुकुल भठिण्डा के निर्माण के निमित प्राप्त धन की सूची इस प्रकार है।

1100—00 महिला आर्य समाज भठिण्डा
251—00 श्री जगत् प्रकाश भठिण्डा
200—00 श्री जितेन्द्र कुमार एडवोकेट भठिण्डा
70—00 श्री प्रेम प्रकाश जी वानप्रस्थी पूरी
500—00 श्री विश्वनाथ ठेकेदार तथा
श्री जितेन्द्र जी द्वारा भठिण्डा
220—00 आर्य समाज गिदड़वाहा
131—00 मन्त्री आर्य समाज कोटकपूरा
110—00 श्री ला. कस्तूरचन्द फरीदकोट
55—00 श्री दर्शन कुमार फरीदकोट
130—00 श्री कौर चन्द वेद प्रकाश भठिण्डा
101—00 श्री डी वी, पासी मैनेजर स्टेट बैंक आफ इण्डिया भठिण्डा
60—00 श्री के. के. भार्गव भठिण्डा
60—00 श्री डा. रामलाल भठिण्डा
60—00 श्री चन्द्र लोक मोदी शो रूम भठिण्डा
60—00 श्री चिरञ्जी लाल शर्मा भठिण्डा
60—00 श्री फकीर चन्द गुप्ता भठिण्डा
55—00 श्रीमती जानकी देवी फरीदकोट
55—00 श्री सत्यदेव शर्मा फरीदकोट
110—00 श्री महेन्द्र गोयल फरीदकोट
120—00 श्री ला. हुनाराम भठिण्डा
300—00 श्री डा. मेलाराम जी भठिण्डा

3808—00

वायदे जो शेष हैं

301—00 श्री जितेन्द्र जी एडवोकेट
250—00 श्री यशपाल जी बरनाला
501—00 श्री भगवान दास जी रामामण्डी
501—00 श्री मा. पूर्ण चन्द जी
251—00 मि. भाटिया मुख्याध्यापिका आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल भठिण्डा
60—00 श्री रामचन्द्र मन्त्री आर्य समाज सिरकी बाजार
60—00 श्री रामेश्वर प्रसाद आर्य रेलवे कालोनी

1924—00

कुल योग 3808—00
1924—00

5722—00

—ओम् प्रकाश जी वानप्रस्थी
अधिष्ठाता गुरुकुल भठिण्डा

# अमेरिकी टेलीविजन पर भारत का अपमानजनक चित्र

नई दिल्ली विगत 8 जनवरी—अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति ने तीन जनवरी को अमेरिकी टेलीविजन पर दिखाए गए उस कार्यक्रम की कड़ी निन्दा की है जिसमें भारत को एक बटा हुआ हताश और मौत का देश बताया गया और हिन्दू धर्म के बारे में अपमानजनक टिप्पणियां की गईं। अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति की अध्यक्षा राकेशरानी ने आज यहां जारी एक वक्तव्य में भारत सरकार से मांग की है कि वह इस कार्यक्रम के प्रसारण पर अमेरिकी सरकार व अमेरिकी टेलीविजन से कड़ा विरोध प्रकट करे और उनसे सार्वजनिक रूप से क्षमा याचना करवाए।

वक्तव्य में उक्त दो घण्टे के कार्यक्रम को प्रसारित करने वाले अमेरिकी एवंजिलिकल संगठन व अन्य ईसाई मिशनरियों के भारत में कार्य करने पर रोक लगाने की मांग की गई है, क्योंकि ये दया और करुणा का ढोंग करके भोले-भाले भारतवासियों को छलते हैं, उन्हें ईसाई बनाते हैं और फिर विदेशों में जाकर भारत के विरुद्ध प्रचार करते हैं।

उल्लेखनीय है कि अमेरिकी एवंजिलिकल संगठन ने इस टेलीविजन कार्यक्रम में हिन्दू धर्म को पूर्वाग्रह ग्रस्त व कट्टर पन्थी बताते हुए हिन्दू धर्म की आलोचना की थी और भारतीय जनता को तकलीफों से उभारने के लिए ईसा के सन्देश की जरूरत बताई थी तथा दुनिया के मिशनों से इस बारे में भारत की सहायता करने के लिए कहा गया था।

अपने लम्बे वक्तव्य में पण्डिता राकेशरानी ने कहा है कि भारत को विदेशियों से शान्ति प्रेम और भाईचारा सीखने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि यह तो भारत की हवा पानी और मिट्टी का गुण है। उसके विपरीत ईसाई देशों को अवश्य राम, कृष्ण, गौतम, महावीर, दयानन्द व विवेकानन्द के सन्देश की जरूरत है, क्योंकि ईसाई देश मानव समाज के विनाश के कार्य में लगे हैं। इसलिए अमेरिकी एवंजिलिकल संगठन को चाहिए कि वह भारत के महापुरुषों का सन्देश अपनी जनता तक पहुंचायें।

# आर्यसमाज के तेजस्वीकरण के लिए कतिपय सुझाव

महर्षि दयानन्द सरस्वती के 101वें निर्वाण दिवस के उपलक्ष में ऋषि उद्यान पुष्कर रोड, अजमेर में श्रीमती परोपकारिणी सभा अजमेर द्वारा आयोजित ऋषि मेले के अवसर पर दिनांक 27 अक्तूबर 1984 तक हुई आर्य समाज कार्यकर्ता संगोष्ठी ने आर्य समाज के कार्य में बाधाए तथा निराकरण विषय पर गम्भीरता पूर्वक विचार विमर्श करके आर्य समाज के तेजस्वीकरण के लिए निम्न लिखित सुझाव प्रस्तुत किए—

1 आय सार्वदेशिक सभा, प्रादेशीय आर्य-प्रतिनिधि सभाए तथा श्रीमती परोपकारिणी सभा से अनुरोध है कि वे

(क) समस्त वैदिक सिद्धान्तों पर वैविध्यपूर्ण, अनुस्तरित रोचक आकर्षक तथा सस्ते साहित्य के प्रकाशन तथा पुनर्मुद्रण और इसी प्रकार के दृश्यश्रव्य उपकरणों के निर्माण एव विक्रय की व्यवस्था करें।

(ख) प्रयत्न करें कि दूरदर्शन तथा आकाशवाणी पर वैदिक विद्वानो के प्रवचन आदि प्रसारित किए जाया कर।

(ग) अपनी पत्रिकाओ का स्तर बढाए और दक्षिणा देकर विभिन्न योग्य विद्वानो से विभिन्न विषयों पर लेख आदि लिखवाकर प्रकाशित किया करें।

(घ) निम्नलिखित के शिक्षण प्रशिक्षण, पुन शिक्षण, अधिक अच्छी तैयारी, प्रसार विचार विमर्श के लिए कक्षाओ, सगोष्ठियो शिविरो का आयोजन किया करें।

1 वेद प्रवचनकर्ता, 2 भाषणकर्ता, 3 कथा वाचक, 4 पुरोहित, 5 ऋत्विज 6 भजनोपदेशक, 7, सम्पादक, 8 साहित्य लेखक, 9 दृश्य श्रव्य सामग्री प्रयोगकर्ता, 10 धर्म शिक्षक, 11 अध्यापक-प्राध्यापक, 12 उपदेशिकाए, 13, प्रादेशिक स्तर के पदाधिकारी, 14, सगठन, 15 समस्तकार्यकर्ता आदि।

2 जब तक अनुच्छेद सं. 1 में वर्णित सभाए प्रस्तावित कार्य आरम्भ नहीं करती, तब तक समर्थ समाज अपने-अपने आस-पास के आर्य समाजों के सहयोग से योजनाबद्ध रूप में साहित्य एक दृश्य श्रव्य सामग्री के निर्माण, विक्रय तथा वितरण का कार्य हाथ में ले ले।

3. सभी सभाएँ विद्वानो, भजनोपदेशको तथा प्रचारकों को प्रवचन आदि के लिए विषय दिया करें और उन्ही विद्वानों को प्रचारार्थ आमन्त्रित किया करें, जो दिए हुए विषयो पर भाषण आदि देने के लिए प्रस्तुत हो। उनमे भी प्रशिक्षितो को प्राथमिकता मिलनी चाहिए।

4 प्रत्येक समाज अपने विद्यालयो मे प्रार्थना तथा धर्म शिक्षण अवश्य चालू करें। यदि सरकारी अनुदान नियमबाधक बन, तो अनुदान के बिना ही काम चलाने का प्रयत्न करें।

5 प्रत्येक समाज अपने विद्यालयो के अध्यापक-अध्यापिकाओ के लिए समय समय पर सिद्धान्त विषयक सगोष्ठियो तथा कक्षाए चलाता रहे।

6 आर्य समाज का प्रत्येक सदस्य प्रतिवर्ष आर्य समाज की पत्रिकाओ के पाच ग्राहक अवश्य बनाए तथा कम से कम पच्चीस रुपए का साहित्य स्वय खरीदे अथवा अपने मित्रो को विक्रय कर दें।

7 प्रत्येक समाज अथवा समाज समूह अच्छी दक्षिणा देकर पुरोहित अवश्य रखे और उससे आशा करें कि वह आर्य समाज मन्दिर में अधिक से अधिक गति विधिया चलाए और उनका समायोजन करे।

8 प्रत्येक समाज प्रतिवर्ष वित्त के साथ-साथ कार्य का बजट भी बनाया करे जिसे वर्ष भर मे सभी सदस्य मिल बैठकर पूरा करने का प्रयत्न किया करे। इस बजट में महिलाओं तथा युवको के लिए विशेष कार्यक्रम अवश्य रखें।

9 प्रत्येक आर्य समाज अपने कार्य बजट मे दीवार लेखन को कार्यक्रम को अवश्य स्थान दे क्योंकि इससे सस्ता और सरल प्रचार साधन दूसरा नहीं हो सकता

10 आर्य समाज वर्ष में एक बार वार्षिकोत्सव न करके प्रति तीन मास बाद एक साप्ताहिक प्रचार कार्यक्रम रखा करें उनमें एक कार्यक्रम शंका-समाधान तथा तुलनात्मक धर्म चर्चा के लिए अवश्य हो।

11, आर्य समाजो को बुद्धिजीवी तथा सामाजिक रुचि सम्पन्न सेवा निवृत व्यक्तियो की सेवाओं का लाभ उठाना चाहिए। इससे कार्यकर्ताओ की कमी की समस्या हल हो सकेगी परन्तु ऐसे महोदयो और महोदयाओं को आर्य सभासद् तभी बनाना चाहिए जब वे वैदिक धर्म के सिद्धान्तों से सुपरिचित हो जाए और वैदिक आचार का पालन करने लगें।

12 आर्य समाज अपने पुरोहितो, विद्वानो तथा विदुषियो के साथ अत्यन्त सम्मान पूर्ण व्यवहार किया करे और उन के प्रशिक्षण आदि का व्यय स्वय उठाया करें। विद्वानों और विदुषियों को भी चाहिए कि वे निरन्तर आत्म विकास के पथ पर चलते हुए प्रचारक की भावना से कार्यरत रहे व्यवसायी की भावना से नहीं।

13 प्रत्येक समाज निर्वाचन के समय केवल कर्मठ एव निष्ठावान् महोदयों तथा महोदयाओ को ही पदाधिकारी चुने।

सयोजक सगोष्ठि

—भूदेव शास्त्री एम ए

## आर्य समाज अहमदगढ़ में धर्म प्रचार

आर्य समाज अहमदगढ मे सत्य सनातन वैदिक धर्म के प्रवक्ता प्रचारार्थ श्री उत्तम जी 'श्रेष्ठ' दिल्ली वाले पधारे हुए हैं और अब यह स्थाई रूप से यहीं रहेंगे और धर्म प्रचार काय करेंगे। इन्होंने अपना विवाह तथा अपनी बहिन व भाई का विवाह जात पात को त्याग कर बिना दहेज और बडे सादे ढग से किया है जो सराहनीय काय है।

आय बन्धु इनकी सेवाओ से लाभ उठावें।

—विजय कुमार
मन्त्री

## आ. स. नवांशहर में शोक प्रस्ताव

गत दिनो आय समाज नवांशहर की अन्तरग सभा में निम्न शोक प्रस्ताव पारित किया गया।

यह सभा श्री राजेन्द्र कुमार जी प्रेमी प्रचार मन्त्री आर्य समाज की पूज्य माता जी के निधनपर गहरा शोक व्यक्त करती है श्री प्रेमी जी को माता जी के निधन का बहुत गहरा आघात पहुचा है। प्रभु उन्हें तथा उनके परिवार को इस दुख के सहन करने की शक्ति प्रदान करे और दिवगतात्मा को सदगति प्रदान करे ऐसी सभी की परमात्मा से प्रार्थना है।

—धर्मप्रकाश दत्त मन्त्री

## वीर हकीकतराय बलिदान दिवस

आर्य समाज मन्दिर बाई ब्लाक सरोजनीनगर नई दिल्ली मे आयोजित किया गया है जिसमे पाचवी से बारहवीं श्रेणी तक के बच्चे भाग ले सकेंगे। प्रत्येक वक्ता बच्चे को 4 मिनट का समय दिया जाएगा। बच्चे धर्मवीर हकीकतराय के बलिदान सम्बन्धी गायन एव भाषण आदि का कार्यक्रम प्रस्तुत कर सकेंगे दोनों विषयों में प्रथम, द्वितीय एव तृतीय आने वाले बच्चो का पारितोषिक तथा अन्य सभी वक्ता बच्चो को भी उत्साहित करने के लिए स्वर्गीय श्री उत्तमचन्द की चोपड़ा कैपिटल सर्विसिज कम्पनी दरियागंज नई दिल्ली-2 परिवार की ओर से अपनी पूज्या माता स्वर्गीया श्रीमती पुरुषोत्तम देवी जी की पुण्य स्मृति मे पारितोषिक वितरण किए जाए गे।

माता-पिता तथा आचार्यगण भाग लेने के इच्छुक केवल एक छात्र-छात्रा का नाम 25 जनवरी 1985 तक प्रतियोगिता सयोजक श्री प. देवव्रत धर्मेन्दु धर्मोपदेशक 1954 कूचा दखिनीराय, दरियागंज नई दिल्ली-2 या मन्त्री हकीकत राय समिति आर्य समाज, सरोजिनीनगर, नई दिल्ली-23 के पते पर भेज देवें तथा बच्चों के उत्साह सम्बर्द्धनार्थ स्वय भी इष्ट मित्रों सहित बहुसंख्या में प्रतियोगिता के अवसर पर पधार कर पुण्य व यश के भागी बनें।

नोट—पूर्व वर्षों की भान्ति इस वर्ष भी हकीकतराय बलिदान दिवस प्रात साढे 8 से साढे 10 बजे तक मनाया जाएगा जिसमे अनेक आर्य नेता विद्वान् पधारेंगे। साढे ग्यारह बजे प्रीतिभोज होगा। सभी बहिन-भाईयो से प्रार्थना है कि अधिक से अधिक सख्या मे पधार कर धर्मवीर हकीकतराय को श्रद्धाजलि अर्पित करें और प्रीतिभोज में भाग लें।

-- देवव्रत धर्मेन्दु

## दिल्ली में महात्मा हंसराज दिवस

दिल्ली की समस्त आर्य समाजो डी ए वी, संस्थाओ हसराज पब्लिक स्कूलों एव अन्य आर्य संस्थाओं को सूचनार्थ लिख रहा हू कि इस वर्ष का महात्मा हसराज दिवस 21 अप्रैल 1985 को हर वर्ष की भान्ति प्रात 9 बजे से साढ़े बारह बजे तक तालकटोरा गार्डन के इन्डोर स्टेडियम मे समारोह पूर्वक मनाया जाएगा मेरी समस्त आर्य जनता से प्रार्थना है कि वे वे तिथियां अभी से अंकित कर लें और अपना कोई भी कार्यक्रम उपर्युक्त समय पर न रखें। तथा अधिक से अधिक सख्या मे इस समारोह में सम्मिलित होने की कृपा करें।

—रामनाथ सहगल मन्त्री

## आर्य समाज बस्ती मिट्ठू जालन्धर की गतिविधियां

प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी आर्य समाज बस्ती नगर बस्ती मिट्ठू जालन्धर मे लोहड़ी तथा मकर सक्रान्ति का उत्सव बड़े उत्साह से मनाया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के महोपदेशक श्री प रामनाथ जी सिद्धान्त शिरोमणि तथा श्री प रामनाथ की वाणी के मधुर प्रवचन एव भजन हुए। क्षेत्र निवासियों पर बहुत अच्छा प्रभाव रहा।

ऋषि बोधोत्सव 17 फरवरी को नगर निगम जालन्धर के आयुक्त श्री के सी शर्मा की अध्यक्षता मे होगा।

## लुधियानामें आर्य युवक सभा का कार्यक्रम

आपको यह जानकर अति प्रसन्नता होगी कि आर्य युवक सभा लुधियाना की ओर से रविवार 30-12-84 को प्रात- 11 बजे आर्य समाज, महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना में एक मनोरंजक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता श्रीमती भगवती जल्ला ने की। मुख्य अतिथि श्री ए एस, छाबड़ा डिप्टी रिजनल मैनेजर, न्यू बैंक आफ इण्डिया थे। इनके अतिरिक्त डा. जसबीरसिंह बहुगल, डा अनिल अग्रवाल, भी उपस्थित थे। इस समारोह के मुख्य वक्ता प्रोफेसर बालकृष्ण शर्मा जी थे।

इस अवसर पर स्कूलों के बच्चों ने राष्ट्रीय एकता पर रगारग कार्यक्रम पेश किया। आपस में सद्भावना एकता और भाईचारा बनाए रखने के लिए प्रीतिभोज का आयोजन भी किया गया। 'सम्मोना खेल' इस समारोह का मुख्य आकर्षण रहा। इसमें रामायण, वेद, गीता सम्बन्धित प्रश्नो पर चर्चा हुई, इसके निर्देशक डा. [illegible] शुक्ला थे।

—रोशनलाल शर्मा प्रधान



श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन नं. 74250 (रजि. न. पी. जे. एल. 55)

वर्ष 16 अंक 35, 22 माघ सम्वत् 2041, तदनुसार 3 फरवरी 1985, दयानन्दाब्द 160 । एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपए

## श्रुति-सुधा

# स्वर्ग का अधिकारी

लेखक—पं. श्री बिहारी लाल शास्त्री काव्यतीर्थ

नाकस्य पृष्ठे अधितिष्ठति श्रुत· यः पृणाति स ह देवेषु गच्छति ।
तस्मा आपोघृतमर्षन्ति सिन्धवस्तस्मा इय दक्षिणापिन्वते सदा ॥

॥ ऋ. म 1 सू 125 म 5 ॥

भगवान के प्रेम ही में सन्तुष्ट रहने वाले कुछ महापुरुषों को छोड़कर स्वर्ग की लालसा सब ही को लगी है। सब ही देशों के निवासी परलोक में स्वर्ग प्राप्ति की कांक्षा से अपने अपने विश्वास के अनुसार अनेक धार्मिक कृत्य करते हैं। यूरोप और अमरीका में जहां विज्ञान के सुख्य चमक के कोंधे चमक रहे हैं, वहां भी स्वर्ग की आशा का वह दीपक टिमटिमा रहा है। स्वर्ग के टिकट काटने के लिए ही तो यूरोप और अमरीका में हजारों चर्च रूप 'बुकिंग आफिस' खुले हुए हैं। बुद्धि की आंखों को बन्द किए हुए लाखों नर-नारी पादरियों के पीछे चले जा रहे हैं। इतनी विद्या और बुद्धि के रहते हुए भी योरुप और अमरीका में स्वर्ग लोलुप जनता आज भी वैसे ही हास्यास्पद रूप से पादरियों द्वारा ठगी जाती है जैसे कि अब से 3 सौ 4 सौ वर्ष पहले लूटी जाती थी। स्वर्ग में जाने के लिए ईश्वर के पुत्र महाप्रभु ईसामसीह की सिफारिश होनी आवश्यक है और पादरी ईसा के एजेन्ट हैं, इसलिए इनको भेंट पूजा आवश्यक है। फादर (पादरी), [illegible] ऐसे ऐसे विचारों से यूरोप भी वैसा ही पुरुतम [illegible] जैसा कि यहां के [illegible] और [illegible] हैं। यह तो [illegible] है। स्वर्ग के नाम पर जो चाहे सो [illegible] कीजिए। चाहे जैसी धर्म की दुकानें खोल ली जाए। मूक पशु-वध, मनुष्य बलि क्रूरता और कृतघ्नता से भरी गोहत्या यह सब काम स्वर्ग के लालच ही में मनुष्य ने किए और कर रहे हैं। एक स्वर्ग का प्रलोभन दिखाकर पापात्मा पुरुषों ने सैकड़ों देवियों का सतीत्व भ्रष्ट कर डाला।

कलेशकर तीर्थाटन, अज्ञानपूर्ण तप यह सब ढोंग मनुष्य स्वर्ग के लिए ही कर रहा है। यहूदी, ईसाई, मुसलमानी मत तो स्वर्ग भेजने की ही एजेन्सियां हैं और इनमें कामों की इतनी पूछ नहीं जितनी नामों की है। चाहे जैसे कर्म हो, मुसलमानों के विश्वास के अनुसार मोहम्मद साहब का मानना स्वर्ग के लिए आवश्यक है। दुराचारी मुसलमान या मोहम्मद का अनुयायी स्वर्ग का अधिकारी है। परन्तु सदाचारी से सदाचारी भी यदि मोहम्मद पर ईमान नहीं रखता तो स्वर्ग नहीं जा सकता। यही दशा ईसाईयों की भी है। प्रत्येक मत वाला अपने समूह के दुष्ट दुराचारियों को स्वर्गीय और अपने से इतर मनुष्यों को नारकीय मानता है और इस पक्षपात के कारण ही यह सब आपस में लड़ते हैं। बड़े बड़े बुरे से बुरे जघन्य कृत्य स्वर्ग की आशा में मतवालों ने किए हैं और कर रहे हैं। वेद भगवान् इन मोहग्रसितों को सुमार्ग दिखलाते हैं।

(य ! ) जो मनुष्य परिश्रम होता है, ईश्वर की भक्ति में पक जाता है, दीन-दुखी लोगों के लिए आश्रय हो जाता है (य) जो (पृणाति) अपने को पूर्ण करता है अपनी कमियों को दूर कर अपने को योग्य बनाता है, अपनी योग्यता से जगत् को पूर्ण करता है विश्व प्रेम से अपने को पूर्ण कर जगत् को प्रेम अमृत से तृप्त करता है, सबके उपकार में रत रहता है (स ह देवेषु गच्छति) वही ज्ञानियों की संगति में रहता जड़, देव, सूर्य, चन्द्र, जल, वायु आदि पदार्थों से सहयोग रखता है अर्थात् इनके प्रतिकूल नहीं चलता प्रकृतिक जीवन बिताता है, जिस प्रकार यह प्राकृतिक देव ईश्वरीय नियम में रहते हैं, इसी प्रकार नियमित जीवन बिताता है व जिस तरह सूर्य चन्द्र आदि देव जगत् का हित करते हैं इसी प्रकार सबका हित करता है वह मनुष्य (नाकस्य पृष्ठ) स्वर्ग के ऊपर (अधितिष्ठति) अधिकार पाता है सुख के सम्पूर्ण साधन उसे मिलते हैं। (तस्मैं) उसके लिए (सिन्धवा) नदियां (आपोघृतमर्षन्ति) घृत जीवन रूप जल, बहाती हैं। यह महावरा है जैसे कि भारत वर्ष में पहले दूध की नदियां बहती थी अर्थात् भारत खूब समृद्ध था। यहां भी तात्पर्य यह है कि उसके लिए जल भी घृत रूप हो जाता है। सकल प्राकृतिक पदार्थ आनन्ददायक होते हैं। (इय दक्षिणा) यह नियमित जीवन रूपी योग्यता (पिन्वते) सदा तृप्त करती है, उस मनुष्य को सब प्रकार से सुख देती है। जिस प्रकार गौ दूध देती है उसी प्रकार यह कामधेनु उसकी सब कामनाएं पूर्ण करती है। कैसा प्रत्यक्ष प्रमाण मिश्र उपदेश है। अपनी योग्यता ही से स्वर्ग मिलता है। जीवन को पवित्र बनाओ, जगत् का हित चाहो, ईश्वर की भक्ति में लगो, बस सचल स्वर्ग ही स्वर्ग है। सब प्रकृति कामधेनु है इस उपदेश में न नास्तिक को सन्देह है और न आस्तिक को इंकार करने की गुंजाइश है। मतवादियों का स्वर्ग और उसकी प्राप्ति के साधन परस्पर विरुद्ध हैं। कोई पुष्ट प्रमाण नहीं है। वैदिक स्वर्ग और उसके साधन प्रत्यक्ष हैं। चाहे किसी जाति, किसी मत का मनुष्य हो जो चाहे कर देखे, इसमें विवाद को स्थान नहीं। अपने जीवन को प्राकृति, पूर्ण ईश्वराश्रित दीन दुखियों के लिए सहारा बनाओ, सुखम करो। फिर देखो कैसा सुख और शान्ति मिलती है। अलौकिक दिव्य निर्वृति मिलेगी। यह है नकद उपदेश भगवती श्रुति का। जड़ देव जल अग्नि वायु, विद्युत आदि की संगति लगाती यूरोपवासियों ने जानी। देखिए कैसा स्वर्गीय ऐश्वर्य भोग रहे हैं। इन्द्रादि देवताओं के विमान और विलास वैभव जो कवि-कल्पित कथाओं में सुने जाते थे आज वहां प्रत्यक्ष देखे जाते हैं। यदि वे लोग चेतन देव, आध्यात्मिक ज्ञानियों का संग और प्राप्त कर लें और आसुरी वासना को छोड़ दें तो इहलोक और परजन्म में स्वर्गीय बन जायें। हमारे भारत ने तो मतवाद की मृगतृष्णा में सभी कुछ भुला दिया। केवल गुरु पैगम्बर और तीर्थों के भरोसे स्वर्ग पाना चाहते हैं। यदि भारतवासी वैदिक जीवन बनाएं तो यह जन्म और परजन्म दोनों इनके लिए स्वर्ग हो जाए।

—

## वेदोपदेश

त त्वा शोचिष्ठ दीदिवः
सुम्नाय नूनमीमहे सखिभ्य ।

ऋ 5-24-4

पदार्थ—हे (शोचिष्ठ) ज्योति स्वरूप वा पवित्र स्वरूप पवित्र करने वाले परमात्मन ! (दीदिव) प्रकाशमान (तमत्वा) उस सर्वत्र प्रसिद्ध आप से (सुम्नाय) अपने सुख के लिए (सखिभ्य) मित्रों के लिए (नूनम) अवश्य (ईमहे) याचना करते हैं।

भावार्थ—हे प्रकाश स्वरूप प्रकाश देने वाले पतितपावन जगदीश ! आप से अपने और अपने मित्रों और बान्धवों के सुख के लिए प्रार्थना करते हैं। हम सब आपके प्यारे पुत्र, आपकी भक्ति में तत्पर होते हुए इस लोक और परलोक में सदा सुखी रहें। हम पर ऐसी कृपा करो।

# प्रबल राष्ट्रीय समस्या—
# जातिवाद

ले.—श्री धर्मवीर जी विद्यालंकार अशोकनगर पोलीभीत

भारत में जातिवाद एक विषम समस्या बनी हुई है। इसका निवारण का उपाय सफल सिद्ध नही हो रहा है। कभी 'जाति' के नाम से हम संगठित होते थे, और आज हम विघटित हो रहे हैं। आज की चुनाव पद्धति में यह विष वृक्ष के समान पनप रहा है। गांव पंचायतो से लेकर लोक सभा चुनावो तक यह जातिवाद प्रमुख भूमिका निभा रहा है। इसके कारण जहा सरकार मे योग्य व्यक्ति नही आ पाते। वहां विघटन बढ़ रहा है। परस्पर प्रेम, सहानुभूति, सामजस्य के स्थान पर शत्रुता विद्वेष, विघटन दिखाई दे रहा है। लोक सभा के चुनाव हो गए। जन-साधारण की कामना है, सरकार अच्छा काम करे। लोकहित (मानव मात्र) के कल्याण को दृष्टि मे रखने वाले, नियमो एव अनुशासन मे रहने वाले, मन-वचन, कर्म से सत्य का पालन करने वाले, सत्य-सिद्धान्तो से विचलित न होने वाले व्यक्ति सरकार मे आ सकें। परन्तु आज ऐसा नही हो रहा। जातिवाद भी एक ज्वलन्त समस्या है, जो प्रबल बाधक है। इसके निवारण के उपाय ढूंढना, इस पर गम्भीरता पूर्वक विचार करना आज की प्रथम आवश्यकता है।

जाति जन्म से होती है। 'ज' अक्षर जन्म वाचक है जैसे अनुज, पकज आदि शब्दो मे है। 'जाति' का यथार्थवाची शब्द योनि है। मनुष्य, पशु-पक्षी, कीट आदि विभिन्न योनियां अथवा जातिया हैं। मनुष्य योनि है, 'मनुष्य जाति कहलाती है। इसी प्रकार पशु योनि पक्षी योनि आदि को पशु जाति, पक्षी जाति कहा जाता है।

पशु योनि(जाति) मे अनेक उपजातिया हैं। जैसे घोडा, गाय, भैस, बकरी भेड, कुत्ता, शेर, हाथी आदि। प्रत्येक उपजाति में अनन्त प्राणी इसी प्रकार पक्षी जाति (योनि) मे कौवा, कबूतर, गौरैया, तोना: तीतर, खजन, गरुड आदि अनेको उपजातियां है और-प्रत्येक उपजाति मे असख्य प्राणी हैं। परन्तु मनुष्य के साथ ऐसा नही है मनुष्य की अन्य उपजाति नही है। सम्भवत मनुष्य जाति (योनि) की श्रेष्ठता के कारण ऐसा हो।

मनुष्यो की विभिन्न जातिया हैं, ऐसा कहना अशुद्ध है। कही देश के कारण उनकी अलग जाति मान लेते हैं, जैसे अग्रेज, जर्मन आदि। कही व्यवसाय की दृष्टि से जैसे बढ़ई, लुहार, सुनार आदि, कही वर्ण की दृष्टि से, जैसे—ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि अलग जाति मान लेते हैं। यही सभी स्थानो पर जाति शब्द का प्रयोग गलत है। क्योंकि इनका जन्म से कोई सम्बन्ध नही। जन्म से सभी मनुष्य हैं। गुण, कर्म, स्वभाव भी सभी का एक-सा है, चाहे गुणो की मात्रा मे भारी अन्तर हो सकता है। भिन्न देश, भिन्न वर्ण, भिन्न व्यवसाय होते हुए भी सभी मनुष्य ही हैं। मननशील होने से मनुष्य कहलाता है। शरीर और आत्मा के भेद दर्शाने पर 'पुरुष' कहा जाता है। गाय, भैस या कौवा कबूतर की तरह मनुष्य की अनेक उपजातियां नही हैं।

द्विज—

शिक्षित और अशिक्षित मनुष्यो में महान् अन्तर है। शिक्षा पा लेने पर मनुष्य का दूसरा जन्म माना जाता है। तभी वह द्विज कहलाता है। शिक्षित मनुष्य को, अज्ञानान्धकार के हट जाने पर ससार कुछ और ही प्रतीत होता है। ज्ञान से प्रदीप्त बुद्धि के कारण उस की दृष्टि में प्रत्येक पदार्थ का स्वरूप ही बदल गया है। मनुष्य उन पदार्थों के तल तक पहुच उनके गुणो एव स्वरूप को समझ कर उनका सही उपयोग कर अपार आनन्द पाता है। अधिक गहराई तक जाने पर यह नित्य-अनित्य, सत्य-असत्य आदि भेद को समझ कर सुख प्राप्त करता है। दुःख से छुटकारा पाता है। अत उस विद्या का दूसरा नाम द्विज है। द्विजो को कर्म के अनुसार तीन श्रेणियो मे बाटा गया है। प्रथम वे है जो ज्ञान मात्र (ब्रह्म) के अर्जन मे ही मस्त रहते हैं। दूसरे वे हैं जो शारीरिक बल को महत्व देते हैं। परिवार एव राष्ट्र की दुष्टो से रक्षा करते हैं। तीसरे वे हैं जो धनोपार्जन कर परिवार एव राष्ट्र को उन्नत करते हैं ये सभी अपने कार्य मे विद्या (बुद्धि) का प्रयोग करते हैं। इन्हे ही क्रमश. ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य कहा गया है। जो व्यक्ति इन तीनो प्रकार के कार्यो मे अपनी बुद्धि नहीं लगा पाते अर्थात् जो विद्यार्जन नहीं कर पाए वे शूद्र कहलाते हैं। यह वर्ण भेद (या वर्ग भेद स्वाभाविक है। यह आज भी है। चाहे इन शब्दों (नामों) से नहीं पुकारते।

दलित—

शूद्र से जो अर्थ आज हम समझते हैं यह अर्थ वस्तुत: नहीं है अर्थात् मैला, साफ करने वाला। यह मैला साफ कराने का कार्य आज से कुछ सौ वर्ष पूर्व—दण्ड रूप में—कराया जाने लगा था। इनमें सभी वर्णों—ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य—के लोग सम्मिलित हैं, जिन्होंने हिन्दू राष्ट्र (धर्म) नहीं छोड़ा। इनको हरिजन नाम देकर भी हम इन्हें हिन्दू समाज में समान अधिकार (सम्मान) नहीं दे पाए। इनके लिए दलित नाम अधिक उपयुक्त है। ये आर्थिक, सामाजिक दृष्टि से पिछड़े है। जान-बूझकर दु.खी करने के लिए कभी यह घृणित काम इनसे कराया जाने लगा था।

गोत्र—

गगा और यमुना नदियो के उद्भव स्थलो को क्रमश: गगोत्री और जमनोत्री कहते है। मनुष्यो ने अपने किसी महान् व्यक्ति के नाम से इसे चालू किया ताकि आपस में एक दूसरे को पहचाना जा सके, जैसे कश्यप ऋषि के वशज अपना गोत्र 'कश्यप' बताते हैं।

वर्ग—जन्म से हम मनुष्य हैं। कर्म से वर्ण मिलता है। कर्म बदल जाने पर वर्ण बदल जाता है। जाति तो मनुष्य ही रहती है।

अधिकतर ऐसा देखा गया है कि माता-पिता के गुण बालक मे आते हैं। कभी कम और कभी अधिक। माता-पिता द्वारा बालक का शिक्षण-पालन ठीक रुचि से किया जाए तो वह माता-पिता के वर्ण को सरलता से अर्जित कर लेता है। कभी-कभी ऐसा नही भी होता। उच्च वर्ण के माता-पिता की सन्तान जब क्षुद्र कर्म करने लगे तो कर्मों के अनुसार निचला वर्ण प्राप्त करता है। इसी प्रकार क्षुद्र वर्णस्थ माता-पिता की सन्तान उत्तम गुण, कर्म, स्वभाव अर्जित कर लें तो उसे आचार्य उत्तम वर्ण देता है। वर्ण का निर्धारण आचार्य करता है। आचार्य वेद वेदांग (ज्ञान-विज्ञान) शास्त्रो शब्द अर्थ का पूरा ज्ञाता, धर्मात्मा, जितेन्द्रिय, पक्षपात रहित परोपकारी होता है, उसके द्वारा निर्धारित वर्ण कभी मिथ्या नहीं होता। उसने ब्रह्मचारी (बालक) को इस प्रकार धारण किया है जैसे माता गर्भ में बच्चे को धारण कर उसके हित की चिन्ता करती है। वेद मे कहा है—

1. आचार्यो ब्रह्मचारिण तिस्रो रात्रि: गर्भमाधत्ते।

आचार्य तीन प्रकार के अज्ञानों—भौतिक, दैविक, आध्यात्मिक, को दूर करता है। यही तीन रात्रियां हैं।

वर्णों को गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार अर्जित किया जाता है, इसमें मनुस्मृति के निम्न प्रमाण हैं—

1. स्वाध्यायेन जपै. होमै:, त्रैविद्येनेज्यया सुतै:।

महायज्ञैश्च यज्ञैश्च, ब्राह्मीयं क्रियते तनु:।

अर्थ—स्वाध्याय, जप, होम, तीन विद्याओं, इष्टि, यज्ञ, महायज्ञ करने से दुराचार छोड़, श्रेष्ठाचार करने पर यह शरीर ब्राह्मण का किया जाता है। अर्थात् मात्र ब्राह्मण के घर उत्पन्न होने से ब्राह्मीय नहीं होता।

2. शूद्रो ब्राह्मणतामेति; ब्राह्मणश्चैति शूद्रताम्।

क्षत्रियाज्जातमेवन्तु विद्याद्वैश्यात्तथैव च।

अर्थ—शूद्र कुल मे उत्पन्न होकर ब्राह्मण, क्षत्रिय या वैश्य के गुण-कर्म-स्वभाव को अर्जित करने से ब्राह्मणादि वर्ण प्राप्त करता है। इसी प्रकार ब्राह्मण, क्षत्रिय या वैश्य कुल मे उत्पन्न होने पर अगर शूद्रो के गुण-कर्म-स्वभाव अर्जित करेगा। तदनुसार वर्ण पाएगा।

आपस्तम्ब के सूत्रो पर भी ध्यान दें-

धर्मचर्यया जघन्यो वर्ण: पूर्वं पूर्वं वर्णमापद्यते।

अधर्मचर्यया पूर्वो वर्णो जघन्यं वर्णमापद्यते।

अर्थ—धर्माचरण से निकृष्ट वर्ण वाला व्यक्ति अपने मे उत्तम वर्ण प्राप्त करता है और अधर्माचरण से उत्तम वर्ण वाला मनुष्य निचले वर्ण को प्राप्त होता है।

चारो वर्णों के कर्त्तव्य कर्म और गुण निम्न हैं—

ब्राह्मण—अध्यापनमध्ययन, यजनं याजन तथा।
दान प्रतिग्रहं चैव, ब्राह्मणानाम-कल्पयत्। 1।
शमो दमस्तप. शौच, क्षान्तिरार्जवमेव च।
ज्ञान विज्ञानमास्तिक्य, ब्रह्मकर्म स्वभावजम्। 2। मनुस्मृति।

अर्थ—पढना-पढ़ाना, यज्ञ करना-कराना, दान देना व लेना, ये छ: कर्म हैं बुरे काम की इच्छा न करना, इन्द्रियो को अन्याय करने से रोकना, जितेन्द्रिय होना, शरीर बुद्धि को पवित्र रखना, द्वन्द्वों पर विजय पाना, सरलता, ज्ञान-विज्ञान का पढ़ना, आस्तिकता ये ब्राह्मण के गुण हैं—

अर्थात् जिनके ये गुण हैं—वे ब्राह्मण हैं।

क्षत्रिय—प्रजानां रक्षणं दानमिज्याध्ययनमेव च।
विषयेष्वप्रसक्तिश्च, क्षत्र कर्म स्वभावजम्। 1।
शौर्यम् तेजो धृतिर्दाक्ष्यम्, युद्धे चाप्यपलायनम्।
दानमीश्वरभावश्च, क्षत्रं कर्म स्वभावजम्। 2। मनु.

(शेष पृष्ठ 4 पर)

## सम्पादकीय—

# नया वर्ष नई आशाएं—4

कई बार आर्य समाज के प्रचार के लिए कोई नया सुझाव देने में सकोच होता है। हम सब ने अपने आप को एक ऐसे शिकजा में बांध लिया है कि उससे बाहिर हम निकलने की सोच ही नहीं सकते। इसलिए आज से 110 वर्ष पहले जिस चक्रव्यूह में चल रहे थे आज भी उसी में फसे हुए हैं। जब कोई व्यक्ति नया सुझाव देता है तो उस पर गम्भीरता पूर्वक विचार नही होता। केवल यह कह दिया जाता है कि यह जो कुछ कह रहा है वह आर्य समाज की मान्यताओं के विरुद्ध है। यदि कोई व्यक्ति सिद्धान्तों के विपरीत कोई बात कहे वह तो दोषी समझा जा सकता है। परन्तु यदि कोई ऐसी नई बात कहे जिससे प्रचार में वृद्धि हो या उसके लिए जनता में नया उत्साह पैदा हो, उसे दोषी ठहरा कर उसके विरुद्ध एक अभियान प्रारम्भ कर देना न्याय संगत नहीं, इसमें कोई बुद्धिमत्ता नहीं है।

आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान् और गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के विख्यात स्नातक श्री प. सत्यव्रत जी सिद्धान्तालकार ने एक बार बहुत बुद्धिमत्ता की बात कही थी। उन्होंने कहा था कि आर्य समाजियों ने अपने गिर्द एक लक्ष्मण रेखा खींच ली है। जिससे आगे वह समझते हैं कि उन्हें जाने का कोई अधिकार नहीं है। यह लक्ष्मण रेखा वह विचार हैं जो महर्षि दयानन्द जी ने अपने जीवन-काल में व्यक्त किए थे। जो कुछ उन्होने लिखा था या कहा था उसके द्वारा उन्होंने हमें एक रास्ता दिखाया था। आज तक हम उस पर चलते आ रहे हैं। इसी बीच सौ वर्ष व्यतीत हो गए हैं और इन सौ वर्षों में परिस्थितिया बहुत बदल गई हैं। कई ऐसी समस्याएं हमारे सामने आ खड़ी हुई हैं जो महर्षि दयानन्द जी के समय में न थी। उन्होंने कभी भी यह न कहा था कि उनके पश्चात् यदि कोई नई समस्या खड़ी हो तो उसका समाधान ढूढने का प्रयास न किया जाए। उन्होने हमें एक रास्ता दिखा दिया था और कह दिया था कि इस रास्ते पर चलते हुए तुम्हारे लिए जो कठिनाईयां पैदा हों उन पर स्वय विचार करो और जो उचित समझते हो वह करो, इसमें केवल एक ही बात का ध्यान रखो कि सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोडने के लिए सदा तत्पर रहो।"

महर्षि के इस स्वर्णमय सिद्धान्त को सामने रख कर हमें आज की समस्याओ पर विचार करना चाहिए। लेकिन कोई नहीं कर रहा। आर्य समाज के नेताओं के पास इतना समय ही नहीं कि वह सोचें कि महर्षि दयानन्द जी के जाने के बाद दुनिया कितनी बदल गई है। इन परिवर्तनशील परिस्थितियों में क्या हमें भी अपने प्रचार के लिए कोई नया रास्ता ढूढना चाहिए या नहीं। कई बार यह प्रश्न किया जाता है कि क्या कारण है अब लोग विशेष कर नवयुवक आर्य समाज में नहीं आते? उत्तर बिल्कुल स्पष्ट है कि जिस पुराने ढाचे को लेकर हम आज से एक सौ वर्ष पहले चले थे आज भी उसी पर चल रहे हैं। उसी प्रकार के उत्सव उसी प्रकार के गीत, उसी प्रकार के उपदेश, सब कुछ वैसे का वैसा ही चल रहा है। परन्तु हमारी प्रचार प्रणाली में अब वह आकर्षण नही रहा जो पहले हुआ करता था। जनता एक ही किस्म के पुराने भजन सुनते-सुनते थक गई हैं और एक ही प्रकार के विचार सुनते-सुनते थक गई है। कोई नई चीज नया विचार हम जनता के सामने नहीं रखते। महर्षि दयानन्द ने अपने समय मे स्त्री जाति से जो दुर्व्यवहार हो रहा था उसके विरुद्ध अपनी आवाज उठाई थी। आज उसका परिणाम है कि नारी जाति की पुरानी समस्याएं तो बहुत कुछ समाप्त हो गई हैं और नई अब सामने आ गई हैं। परन्तु हम अपने उपदेशों और व्याख्यानों में यही रट लगाते रहते हैं कि विधवा विवाह होना चाहिए या नही? इसी प्रकार अछूतोद्धार का प्रश्न है। गौ रक्षा और हिन्दी प्रचार का प्रश्न है। उत्तर भारत में हिन्दी प्रचार की इतनी आवश्यकता नहीं जितनी दक्षिण भारत में परन्तु हम वहां हिन्दी का इतना प्रचार नही कर रहे जितना कि उत्तर भारत में, कहने का अभिप्राय यह है कि पिछले एक सौ वर्षों मे परिस्थितियां बहुत बदल गई हैं इन परिस्थितियों में हमें भी बदलने की आवश्यकता है। आर्य समाज का आधुनीकरण होना चाहिए। वह क्या हो और कैसे हो, इस पर आगामी अक में अपने विचार पाठकों के सामने रखूगा।

—वीरेन्द्र

# आर्य मर्यादा का ऋषिबोध विशेषाँक

शिवरात्रि के पर्व पर हम आर्य मर्यादा का एक विशेषाक निकाल रहे हैं। यह नई प्रकार का अंक होगा। इसमें अधिकतर लेख उन महानुभावों के होंगे जो आज इस ससार में नहीं हैं और जिन्हें हम भूल गए हैं। इस अक के द्वारा हम उन सब आर्य समाज के पुराने महारथियो की स्मृति को एक बार फिर पुन. जीवित कर रहे हैं। जो संस्था अपने पुराने महारथियो को भूल जाती है उसका अपना महत्व भी धीरे-धीरे समाप्त हो जाता है। आर्य समाज अपने दिवगत नेताओ को भूलता जा रहा है। आर्य मर्यादा के द्वारा हम उन सबको फिर से आर्य जनता के सामने ला रहे है। यह विशेषांक जो लगभग 150 पृष्ठो का मैगजीन साईज का होगा। बहुत अच्छे कागज पर और सुन्दर रूप मे प्रकाशित किया जाएगा। इसका मूल्य केवल तीन रुपये रखा गया है ताकि इसके द्वारा अधिक से अधिक प्रचार हो सके।

आर्य समाजो के अधिकारियों से मेरी यह प्रार्थना है कि वह अधिक से अधिक संख्या में यह विशेषांक मगवाए और जितने मगवाने हो उसकी सूचना हमें 10 फरवरी से पूर्व अवश्य भेज दे। उसके पश्चात् अधिक सख्या में प्रकाशित करना कठिन होगा।

—वीरेन्द्र

# जालन्धर के एक आर्य स्कूल का सराहनीय योगदान

जालन्धर की बस्ती गुजां में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का एक आर्य स्कूल चल रहा है। इसमें बच्चों को वैदिक धर्म की शिक्षा भी दी जाती है, वहां प्रति सप्ताह हवन भी होता है बच्चे मिलकर गायत्री का पाठ प्रतिदिन करते हैं और उनमें अपने धर्म के लिए श्रद्धा की भावना भी पैदा की जाती है। पिछले दिनों मुझे उस स्कूल में जाने का एक अवसर मिला, उसके अनुशासन को देखकर और बच्चों की धर्म भावना को देखकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई। इस अवसर पर उस स्कूल की प्रबन्धकर्तृ सभा ने मुझे आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के लिए 5100 रुपये की थैली भी भेंट की। बहुत समय के पश्चात् यह पहला अवसर है कि हमारी किसी संस्था ने सभा के लिए इतना दान दिया है। इस स्कूल ने दूसरों के लिए भी एक बहुत अच्छा उदाहरण प्रस्तुत किया है। हमारी दूसरी शिक्षा संस्थाओं को भी इस स्कूल से प्रेरणा लेकर धर्म प्रचार के लिए अपना योगदान सभा को देना चाहिए। मैं इस स्कूल की प्रबन्धकर्तृ सभा के प्रधान श्री पं हरबंसलाल जी शर्मा, मन्त्री श्री सरदारीलाल जी आर्य रत्न, प्रधानाध्यापक श्री रामकुमार जी शर्मा और उनके सहयोगी अध्यापकों को बधाई देता हूं और उनका धन्यवाद करता हूं कि उनके स्कूल का इतना अच्छा प्रबन्ध है और वह अपनी सभा को अपने सामर्थ्य के अनुसार अपना सहयोग दे रहे हैं।

—वीरेन्द्र

# जी चाहता है तोड़ दूं शीशा फरेब का--3

ले—श्री वीरेन्द्र जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब

(गतांक से आगे)

आनन्दपुर साहब के प्रस्ताव ने अकालियो को जितना नुकसान पहुचाया है किसी और निर्णय ने नही। केवल अकालियो का ही नही सभी सिखो को। इसके कारण कई तरह की गलतफहमिया पैदा हो गई हैं। एक वर्ग अथवा सम्प्रदाय के रूप मे सिख देशभक्ति और राष्ट्रभक्ति मे किसी दूसरे से कम नही है कुछ अधिक ही होगे। स्वाधीनता सघर्ष मे जितने सिख फासी पर चढ़े हैं दूसरा कोई नहीं चढ़ा। सात समुन्दर पार अमेरिका जैसे देश मे जाकर गदर पार्टी के नाम पर उन्होने देश की स्वाधीनता का झण्डा ऊचा कर दिया था लाला हरदयाल ने गदर पार्टी की आधारशिला रखी थी लेकिन उनके विचारो को कार्य रूप देने वाले सिख ही थे। करतारसिंह सराभा जैसे नौजवान उनमे से ही थे।

कई बार हमारे अकाली सिख बड़े गर्व से कहा करते हैं कि स्वाधीनता सघर्षों मे सिखो ने बढ़ चढ़कर बलिदान दिए हैं, वे उन शहीदो के नाम तथा सख्या भी प्रकाशित किया करते हैं जो अपने देश के लिए कुरबान हो गए मैं उनके इस दावे को स्वीकार करता हू कि सिखो ने बहुत बड़ी सख्या मे स्वाधीनता सग्राम मे भाग लिया था। लेकिन अकालियो से स्पष्ट और सीधा प्रश्न करना चाहता हू कि क्या उन्होने कभी आनन्दपुर साहब के प्रस्ताव जैसा कोई प्रस्ताव भी पास किया था। वे कह सकते थे कि हमने देश की स्वाधीनता के लिए अपना सब कुछ कुर्बान कर दिया है। हमने खून दिया है अपनी जान दी है। हमे एक ऐसा देश चाहिए जहा खालसा जी दा बोल बाला हो जैसाकि आनन्दपुर साहब के प्रस्ताव मे माग की गई है। इन लोगो मे देशभक्ति की भावना कितनी कूट कूटकर भरी थी इसका अनुमान करतारसिंह सराभा के इन शब्दो से लगाया जा सकता है कि—

सेवा देश दी जिन्दड़िए बड़ी औखी
गल्ला करनिया ढर सुखालिया ने
जिना देश सेवा विच पैर पाया
ओना ढर मुसीबता झल्लिया ने

ऐसे थे वे लोग जिन्होने देश की स्वाधीनता के लिए सब कुछ न्योछावर कर दिया था। लेकिन उसके बदले मे कुछ नही मागा था। देश की स्वतन्त्रता के लिए तो अकाली भी लड़ते रहे हैं।

वास्तव मे अकाली दल की स्थापना ही इसलिए हुई थी। सिंह सभा तथा खालसा दिवान जैसी पार्टिया सिखो को अग्रेज के पास गिरवी रखने को तैयार नहीं थी। अकाली दल की स्थापना उनकी उन गतिविधियो की प्रतिक्रिया थी आज के अकालियो की सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि वे न तो अपना इतिहास पढ़ते है न अपना ग्रथ साहिब पढ़ते हैं। उन दोनो को पढ़ने के बाद कोई व्यक्ति पृथकतावादी प्रवृत्ति का शिकार नही हो सकता। अकालियो को श्रीमती इन्दिरा गान्धी से यह शिकायत थी कि उन्होने दरबार साहब मे सेना क्यो भेजी। प्रत्येक व्यक्ति जानता है कि इन्दिरा जी इस प्रकार का पग उठाने से पहले तीन वर्ष तक अकालियो से कहती रही थी कि दरबार साहब मे जो उग्रवादी घुसे हुए है उन्हे वहा से निकालो। जो हथियार वहा इकट्ठे किए जा रहे हैं उन्हे वहा से हटाओ। लोक सभा मे बार बार कहा गया कि कई लोग हत्या करके अथवा डाके डाल कर दरबार साहब मे छुप जाते हैं उन्हे वहा से हटाया जाए और दरबार साहब की पवित्रता को कायम रखा जाए। लेकिन न गुरचरणसिंह टोहरा और न हरचन्दसिंह लौंगोवाल कुछ सुनने को तैयार थे। दोनो यह कह दिया करते थे कि दरबार साहब मे ऐसा कोई व्यक्ति नही रहता लेकिन सैनिक कार्यवाही के दौरान वहा से जो कुछ निकला है उसके बारे मे प्रत्येक व्यक्ति जानता है। मैं उसे दोहराना नही चाहता इन्दिरा जी ने जो कार्यवाही की थी वह विवश होकर की थी और उन्होने बार बार यह कहा भी कि उन्हे दुखी मन से यह सब कुछ करना पड़ा है। इस पर भी उन्हे गोली मार दी गई और उनकी मौत पर मिठाईया बाटी गई। लेकिन जिन लोगो ने इन्दिरा जी के कहने पर भी दरबार साहब को खाली नही कराया था उन्हे आज तक कोई सजा नही दी गई।

मैंने अकालियो पर आरोप लगाया है कि वह अपने इतिहास को नही पढ़ते अन्यथा वह इन्दिरा गाधी के साथ वह सलूक न करते जो उन्होने किया है। शायद वह पुरानी ऐतिहासिक घटनाओ को सुनने को तैयार न हो लेकिन अपने दिल पर पत्थर रखकर उन्हे वे सुन लेनी चाहिए ताकि वे महसूस कर सकें कि इन्दिरा गाधी के साथ उन्होंने कितनी ज्यादती और इस देश पर कितना अत्याचार किया है। जिस इतिहास पर अकाली पर्दा डाल रहे हैं मैं उस पर्दे को उठाकर उन्हे बताना चाहता हू कि—

1 महाराजा रणजीतसिंह की मृत्यु के बाद जब अग्रेज ने पजाब पर अधिकार कर लिया था तो तत्कालीन गवर्नर लार्ड डलहौजी जब दरबार साहब देखने गया था तो उसने जूते नही उतारे थे। फिर भी उसका वहा स्वागत किया गया था और उस दिन दरबार साहब मे दीपमाला की गई थी। यह सब कुछ उसी समय किया था जबकि उससे पहले लार्ड डलहौजी यह घोषणा कर चुका था कि पजाब मे सिखो की राजनीतिक शक्ति को समाप्त करना उसका पहला काम है। फिर भी दरबार साहब मे उसका स्वागत किया गया और वह जूते पहन कर दरबार साहब मे गया था।

2 जलियावाला बाग मे निहत्थे लोगो पर गोली चलाने वाले जनरल डायर को दरबार साहब मे बुला कर सरोपा दिया गया था हालाकि उसकी गोलियो से सैंकड़ो सिख भी मारे गए थे।

3 हर मन्दिर साहब की चाबिया अग्रेजो को देने वाले भी सिख ही थे।

इस तरह की घटनाओ की प्रतिक्रिया अकाली दल की स्थापना के रूप में हमारे सामने आई थी। इससे पहले सिंह सभा और खालसा दिवान जैसी सस्थाए अग्रेज के जूते चाटा करती थी। सिख सगतें यह सहन न कर सकी और उन्होने अकाली दल की स्थापना का निर्णय किया। यही कारण है कि शुरू-शुरू मे सभी प्रमुख अकाली देशभक्त हुआ करते थे और उन्होने देश की स्वाधीनता के लिए बढ़-चढ़कर कुरबानिया दी थीं। बाबा खड़गसिंह, मास्टर तारासिंह जत्थेदार ऊधमसिंह नागोके, सरदार ईशर सिंह मझैल सरदार अमरसिंह झब्बाल और अन्य अकालियो ने स्वाधीनता सघर्ष में जो गौरवमय भूमिका अदा की थी उस पर हम जितना गर्व करें कम है।

पजाब के तीन प्रमुख कांग्रेसी नेता प्रतापसिंह कैरो दर्शनसिंह फेरूमान और ज्ञानी गुरमुखसिंह मुसाफिर, कांग्रेस मे शामिल होने से पहले अकाली ही थे। इन तीनो के साथ जेल मे कुछ समय बिताने का मुझे भी गौरव मिला था मैं जानता हू कि वह कितने उच्चकोटि के देशभक्त थे। उनमे से किसी ने भी कभी वे बातें नहीं की थीं जो आज के अकाली कर रहे हैं। उन लोगो को भी पता था कि आनन्दपुर साहब कहाँ है। वे वहा जाते भी रहे हैं। गुरुद्वारे मे मत्था भी टेका करते थे। लेकिन उन्होने कभी भी इस प्रकार का कोई प्रस्ताव पास नही किया था जैसा कि अकालियो ने किया है।

मैंने यह सब कुछ आज केवल इस लिए लिखा है कि अकाली कई बार यह दावा किया करते हैं कि उन्होने देश की स्वाधीनता के लिए बड़ी बड़ी कुरबानिया दी हैं। मैं यह प्रमाणित करना चाहता हू कि जिन्हे देश से प्यार था और जिन्होने इसकी स्वाधीनता के लिए कुरबानियां दी थी उन्हे वह बीमारी नही थी जो आज के अकालियो को है। (क्रमश)

( 2 पृष्ठ का शेष )

अर्थ—श्रेष्ठो का सत्कार और दुष्टो के तिरस्कार द्वारा न्याय पूर्वक प्रजा की रक्षा सुपात्रको दान अग्निहोत्रादि यज्ञ शास्त्रो का अध्ययन कर जितेन्द्रिय रहना,

शौर्य अर्थात सहस्र शत्रुओ से अकेला ही लड़ तेजस्वी धैर्यशाली राज्य प्रजा सम्बन्धी व्यवहार मे कुशल युद्ध से न भागने वाला, दानशीलता, आस्तिकता ये क्षत्रियो के स्वभाविक गुण कर्म हैं। अर्थात जिनमे ये गुण हैं वे क्षत्रिय हैं।

वैश्य—पशूनां रक्षणं दानमिज्याध्ययनमेव च। वणिक्पथं कुसीदं च वैश्यस्य कृषिरेव च।

अर्थ—पशु, रक्षण एवं सवर्धन, धनादि का दान अग्निहोत्रादि यज्ञ, शास्त्रो का अध्ययन व्यापार कुसीद अर्थात मूल से दुगुना न लेना कृषि ये गुण कर्म वैश्य के स्वाभाविक हैं। अर्थात जिनमे ये गुण हैं, वे वैश्य हैं।

शूद्र—एकमेव हि शूद्रस्य प्रभुः कर्म समादिशत्। एतेषामेव वर्णानां शुश्रूषामनसूयया।

अर्थ—निन्दादि को छोड़ ब्राह्मण क्षत्रिय एवं वैश्य की यथावत सेवा कर्म करना एक मात्र कर्म शूद्र है।

स्पष्ट है कि ब्राह्मणो को शिक्षा और धर्म का प्रचार कार्य देना, क्षत्रियों को शासन का अधिकार देना, वैश्यों को कृषि पशु पालन व्यापार का कार्य देना, और शूद्रो को सेवा का कर्तव्य सौंपना चाहिए।

सभी मनुष्यो को आचार्य द्वारा गर्भोचित वर्ण दिलाना फिर वर्णानुसार कर्म मे प्रवृत्त कराना शासन का कर्तव्य है। हम अभी तक अपने सिद्धान्तों आदर्शों के अनुकूल शिक्षा प्रारम्भ नहीं कर सके। भारतीयो को अभारतीय गुलाम बनाने वाली शिक्षा पद्धति अभी तक विद्यमान है परिणामत वर्ण-व्यवस्था लागू न हो सकी। अव्यवस्था, मनमानी अराजकता, भ्रष्टाचार बढ़ रहा है। अनधिकृत मनुष्य सत्ता प्राप्ति और व्यापार मे चोर अनुचित कार्य कर रहे हैं। शासन ने शासन छोड़ व्यापार करना आरम्भ कर दिया है। जातिवाद का विषैला प्रचार बढ़ रहा है। प्रजा (जनता) और राजा (राष्ट्रपति) दोनो दुखी हैं। यथोचित वर्ण व्यवस्था लागू होने पर विकृत जातिवाद तथा तदनुसार आरक्षण स्वयं समाप्त होगा। अपने कर्म मे प्रवृत्त जनता मे अनुशासन व्यवस्था सन्तोष, सुख-समृद्धि एवं शान्ति बढ़ेगी।

# महर्षि दयानन्द जी की फिल्म के विषय में

ले.—श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज अध्यक्ष वैदिक यति मण्डल (दीनानगर)

महर्षि दयानन्द महाराज की फिल्म बननी चाहिए या नही, कई मास से आर्य समाज मे इस बात की चर्चा चल रही है।

फिल्म बनाने के पक्ष मे कई लेखको ने लिखा है कि फिल्म बननी चाहिए, क्योकि इससे महर्षि के बताए सिद्धान्तो का प्रचार होगा। सहस्रो लोगो को महर्षि का काम तथा नाम सुनने को मिलेगा। रामलीला और कृष्णलीला से राम और कृष्ण के काम और नाम का परिचय जनता मे होता आ रहा है। अन्य भी कई पुरुषो की फिल्मे बनी हैं जिनसे जनता मे उनके विचारो का प्रचार होता है। महर्षि दयानन्दजीने महापुरुषोका वेश भरना जो पाप लिखा है यह पुरानी बात है। आज कल इसे मानना आवश्यक नही, इसलिए महर्षि की फिल्म बनाने मे कोई हानि नही। फिल्म के लोग कैसे भी हो, किन्तु वे बात तो महर्षि दयानन्द जी की ही कहेंगे। लोगो ने उनसे महर्षि के सिद्धान्त काम और गुणो को ही सुनना है। उन ऐक्टरो (अभिनेताओ को नहीं देखना कि वे कौन और कैसे हैं। कीचड मे कमल उत्पन्न होता है लोग कीचड को नहीं देखते कमल को देखते हैं, बडी प्रसन्नता से उसे ले लेते हैं। एक सज्जन ने यह भी लिखा है कि लोग अपनी मूढतावश फिल्म का विरोध कर रहे हैं। ये उपरोक्त युक्तिया फिल्म बनाने के पक्ष मे दी जा रही हैं।

फिल्म न बनाने के पक्ष मे—महर्षि दयानन्द जी ने मत मतान्तरो का बलपूर्वक बहुत कडे शब्दों म खण्डन किया है उस समय के वेद विरोधी किसी मत-मजहब को अछूता नहीं छोडा। गुरुडम, अन्ध विश्वास इस्लाम, ईसाईमत, बौद्ध, जैन तथा अन्य कई छोटे-छोटे मतो भागवत आदि पुराणो तथा पौराणिक मत का कठोर खण्डन किया है। मूर्ति पूजा को देश के अध-पतन का बहुत बडा कारण बताया है। अवतारवाद का खण्डन करके ईश्वर का अजन्मा निराकार सिद्ध किया है। पश्चिमीय देशीय मैक्समूलर महीधर तथा अन्य कई इसी प्रकार के वेद भाष्यों में दोष दिखाकर उनकी कडी आलोचना की है। सब भ्रम केन्द्रो, सब विश्वासों व्यवहार की सब दिखावे में पाप को ,धर्म समझकर किया जाता था। जिसका महर्षि ने अनेक बार दुखित हृदय से वर्णन तथा खण्डन किया है। इस प्रकार जिसकी उस समय अत्यन्त आवश्यकता थी और आज भी है। इस खण्डनात्मक कार्य के साथ महर्षि का विधानात्मक कार्य भी बहुत बडा है। जिसके लिए बहुत से ग्रन्थ लिखे हैं। वेद का पढना पढाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म बताया है। ऋषि के इस विधि और निषेध रूप कार्य को फिल्म मे कोई नही दिखा सकता। जिन लोगो ने यह लिखा है कि बडो का वेष भरना ऋषि ने पाप कहा है यह बात पुरानी है यह उनकी बहुत बडी भूल है। जोकि स्वाध्याय के अभाव के कारण उनसे हुई है। कोई भी स्वाध्याय शील आर्य ऐसा नही लिख सकता। वेद पुराने है, वेदाग उपनिषद पुराने हैं, दर्शन पुराने हैं ऋषियो की सभी बातें पुरानी हैं। ज्ञान और सत्य पुराना होने पर भी सदा नया रहता है। वेद ज्ञान ऋषि वचन आप्त पुरुषो का उपदेश कभी पुराना नही होता है। यदि पुराना होना किसी बात के छोडने मे हेतु हो सकता है तो आज से पहली सभी बातें सभी ग्रन्थ और इतिहास छोडना होगा। जोकि ऐसा करना सर्वथा बुद्धि विरुद्ध होगा।

—

## आर्यसमाज पठानकोट में मकर संक्रान्ति का पर्व मनाया गया

आर्य समाज मेन बाजार पठानकोट मे 7 जनवरी से 13 जनवरी तक लोहडी तथा मकर सक्रान्ति का पर्व बडी धूमधाम से मनाया गया। लगातार सात दिन विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया। कथा श्री विजय कुमार जी पुरोहित तथा भजन श्री ओमप्रकाश जी सगीताचार्य के हुए।

इस शुभ अवसर पर गरीब तथा जरूरतमन्द बच्चो के लिए 50 गर्म स्वैटर बांटे गए। —रा स्वतन्त्रकुमार



# सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधिसभा द्वारा स्वीकृत और प्रसारित आर्य पर्व सूची (1985)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा आर्य समाजो की सूचना के लिए स्वीकृत आर्य पर्वों की सूची प्रकाशित किया करती है। सन 1985 की सूची इस प्रकार है —

| क्र | पर्व | सौरतिथि | चन्द्रतिथि | अग्रेजी तिथि | दिन |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | मकर सक्रान्ति | 1 माघ 2041 | माघवदि 8 2041 | 14-1 1985 | सोमवार |
| 2 | बसन्त पचमी | 12 माघ 2041 | फा स 5-2041 | 26 1 1985 | शनिवार |
| 3 | सीताष्टमी | 1 फा 2041 | फा ब 8- 041 | 12-2 1985 | मगलवार |
| 4 | दयानन्द बोधरात्रि (शिवरात्रि) | 6 फा 2041 | फा व 13 2041 | 17 2 1985 | रविवार |
| 5 | वीर लेखराम तृतीया | 11 फा 2041 | फा सु 3 2041 | 22 2 1985 | शुक्रवार |
| 6 | नवसस्येष्टि (होली | 24 फा 2041 | फा सु 15 2041 | 6-3-1985 | बुधवार |
| 7 | नव सवत्सरोत्सव एव आर्य समाज स्थापना दिवस | 9 चैत्र 2041 | चैत्र शु 1-2042 | 22 3 1985 | शुक्रवार |
| 8 | रामनवमी | 17 चैत्र 2041 | चै सु 9 2042 | 30 3 1985 | शनिवार |
| 9 | हरि तृतीया | 5 श्रवण 2042 | श्रावण सु 3 2042 | 20 7 1985 | शनिवार |
| 10 | श्रावणी उपाकर्म | 14 भाद्रपद 2042 | श्रावण सु 15 2042 | 30 8 1985 | शुक्रवार |
| 11 | श्री कृष्ण जन्माष्टमी | 22 भाद्रपद 2042 | भाद्रपद वदि 8 2042 | 7 9 1985 | शनिवार |
| 12 | गुरु विरजानन्द दिवस | 23 आश्विन 2042 | आ. वदि 10 2042 | 9-10 1985 | बुधवार |
| 13 | विजय दशमी | 6 कातिक 2042 | आ सु 10 2042 | 22-10 1985 | मगलवार |
| 14 | महर्षि निर्वाण दिवस (दीपावली) | 27 कार्तिक 2042 | कार्तिक वदि 30 2042 | 12 11 1985 | मगलवार |
| 15 | श्रद्धानन्द बलिदान दिवस | 8 पौष 2042 | अगहन सु 12-2042 | 23 12 1985 | सोमवार |

टिप्पणी—1 इन पर्वों को वैदिक धर्म के प्रचार और वैदिक सस्कृति के प्रसार का महान साधन बनाना चाहिए।

2. देशी तिथियो के घट बढ हो जाने से अग्रेजी तारीख मे परिवर्तन हो सकता है।

ओमप्रकाश त्यागी
सभामन्त्री

# महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी व्याख्यान माला

# दयानन्द, गांधी और मार्क्स

व्याख्याता—श्री डा प्रभाकर माचवे निदेशक भारतीय भाषा परिषद्, कलकत्ता

(20 जनवरी से आगे)

3 अन्यायाचरण के साथ असहयोग-चाहे कोई हो जब तक मैं न्यायाचरण देखता हू, मेल करता हू और जब अन्यायाचरण प्रकट होता है फिर उससे मेल नही करता, इसमे कोई हरिश्चन्द्र हो व अन्य कोई हो (19 मार्च 1877 के कर्नल आल्काट के नाम लिखे पत्र से)

4 आर्यावर्त्त देश की स्वाभाविक सनातन विद्या सस्कृत ही है—उसी से देश का कल्याण होगा। अन्य भाषा से नही (सत्यार्थ प्रकाश प्रथम सस्करण की लिखित प्रति में चौदहवें समुल्लास का लेख।

5 स्वामी सेवक का पारस्परिक बर्ताव—स्वामी सेवक के साथ ऐसा बर्तें जैसा अपने हस्तपादादि अगो की रक्षा के लिए बरतते हैं। सेवक स्वामियो के लिए ऐसे बरते कि जैसे अन्न जल, वस्त्र और घर आदि शरीर की रक्षा के लिए होते हैं (व्यवहार भानु)

6 सार्वदेशिक भावना—यद्यपि मैं आर्यावर्त्त देश मे उत्पन्न हुआ और बसता हू तथापि जैसे इस देश के मत-मतान्तरो की झूठी बातो का पक्षपात न कर यथातथ्य प्रकाश करता हू वैसे ही दूसरे देशस्थ व मतोन्नति वालो के साथ भी बर्तता हू। जैसा स्वदेश वालो के साथ मनुष्योन्नति के विषय मे बर्तता हू वैसा विदेशियो के साथ भी तथा सब सज्जनो को भी बर्तना योग्य है।

(सत्यार्थ प्रकाश भूमिका)

7 मनुष्य—जो बलवान होकर निर्बलो की रक्षा करता है वही मनुष्य कहलाता है और जो स्वार्थवश होकर परहानि मात्र करता रहता है वह मानो पशुओ का भी बड़ा भाई है।

8 राज्य—इस परम्परा की सृष्टि मे अभिमानी अत्याचारी अविद्वान् लोगो का राज्य बहुत दिन नही चलता।

(सत्यार्थ प्रकाश 11)

9 दुख सागर—विद्वानो के विरोध से अविद्वानो मे विरोध बढ़कर अनेक विध दुख की वृद्धि और सुख की हानि होती है। इस हानि ने जो कि स्वार्थी मनुष्यों को प्रिय है सब मनुष्यो को दुख सागर मे डुबो दिया है।

दयानन्द के विचारो से जो सहमत नही थे उन्होने उनके विरोध मे बहुत-सी बाते बिना तथ्य या तर्क के आधार पर लिखी हैं। दयानन्द हर भारतवासी को शुद्ध और निर्मल चरित्र का सकल्पवान व्यक्ति बनाना चाहते थे। वे उसमे आत्म-शक्ति का विस्तार करना चाहते थे। अत उन्होने ईसाईमत का खण्डन किया, ईसाईमत आत्मा के पुनर्जन्म मे विश्वास नही करता। यदि पुनर्जन्म मे विश्वास नही करेंगे तो मनुष्य मे जो जन्मत विषमता पाई जाती है जो दुख मनुष्य को अकारण भोगने पड़ते है उनका अर्थ कैसे समझाया जाए? यदि पुनर्जन्म न हो तो ईश्वर को अन्यायी मानना होगा जो मनुष्यो मे विभेद पैदा करता है। जैसा ईसाई मानते हैं, वैसे पाप को क्षमा कर देने वाला परमात्मा हो तो वह दण्ड कभी देगा ही नही। मनुष्य बुरे कर्म करता है तो उसकी सजा उसे मिलनी ही चाहिए। अकेला ऋ स्ट मानव मात्र के पापो का भार अपने ऊपर कैसे ले सकेगा? ईसा का अपौरुषय जन्म ईसा का पानी पर चलना, पाच रोटिया से पाच हजार लोगो को खिलाना ऐसे चमत्कारो का भी महर्षि ने विरोध किया। वे मूर्तिपूजा मात्र के विरोधी थे। ईसा की प्रतिमा या सलीब या क्रास की पूजा को भी वे अन्ध श्रद्धा मानते थे। इस प्रकार से बुद्धिनिष्ठ वैज्ञानिक दृष्टि अपनाकर दयानन्द ने अन्य धर्मों की कट्टरता का विरोध किया।

इस्लाम पर दयानन्द का आक्षेप यह था कि अल्लाह यदि सर्व दयालु और प्राणी मात्र के प्रति कृपावत है तो फिर वह कुछ व्यक्ति विशेष या मिल्लत के बन्दो पर ही खास तौर से मेहरबान क्यो है? क्या ईश्वरीय करुणा या अल्लाह की रहम के दो हिस्से हो सकते हैं? यदि अल्लाह प्राणी मात्र के लिए दया रखता है तो पशु बलि का विधान क्यो धर्म-सम्मत है? काफिरो के प्रति जिहाद कैसे समर्थनीय है? चूकि कुरान मे ऐसा पक्षपात है तो वह ईश्वरीय वाणी कैसे हो सकती है, यह दयानन्द का प्रश्न है। बाईबल या कुरान को वे साक्षात्कार ग्रन्थ नही मानते। दोनो ग्रन्थो के चमत्कारो का वे खण्डन करते हैं।

बौद्ध, जैन और चार्वाक आदि नास्तिक मतो की भी दयानन्द ने आलोचना की है। निरीश्वरवाद का वे विरोध करते हैं। चार्वाक मत के बाद तो उसके जो उपपन्थ हुए हैं वे दयानन्द को मान्य नहीं हैं। धर्म मे ऐसे केवल प्रत्यक्ष प्रामाण्य केवल इस शरीर या ससार तक भौतिकवादी दृष्टि को सीमित रखना दयानन्द को स्वीकार नही। बौद्धो का 'सब्बा सखारा अनिच्चा' (सब सस्कार अनित्य हैं) यह जितना एकागी और त्रुटिपूर्ण दयानन्द को लगा वैसे ही चार्वाक वादियो का केवल इन्द्रिय सुख का समर्थन भी एकागी है। वस्तुत सुख दुख एक सापेक्ष और व्यामिश्र अनुभूति है।

उन्होने वेद के सही अर्थ न जानने से हिन्दुओं में भी कितने पन्थ-उपपन्थ होते गये और हिन्दुओ की एकता कैसे निर्बल होती गयी, इसे भी अपनी स्पष्टोक्ति से अधोरेखित किया है। दयानन्द सब प्रकार के मन्त्र गढ़ने वाले माला पूजने और तरह-तरह के वेष धारण करने वाले साधुओ की साधुता पर प्रश्नचिन्ह लगाते हैं। हिन्दू धर्म की अवनति का मुख्य कारण उसके ये स्वार्थी, अन्धश्रद्धा फैलाने वाले ढोंगी तथाकथित धर्म प्रचारक हैं। हिन्दू धर्म मे जो सुधारक पन्थ हुए जैसे ब्राह्म समाज या प्रार्थना समाज उनके विदेश के विचारो से आतंकित होने की आलोचना दयानन्द ने की है। दयानन्द के अनुसार ये लोग प्रच्छन्न ईसाई है और उनमे देशभक्ति की कमी है। वे खान पान विवाह आदि मे कोई नियम नही मानते, अत उनकी नैतिकता सुविधा भोगी है ऐसा दयानन्द का मत था।

महाभारत पूर्व वैदिक आर्य भारत को दयानन्द आदर्श समाज व्यवस्था मानते थे। तब आर्य शान्ति, समृद्धि और आस्था से भरे हुए थे। महाभारत के बाद बहुत सी बुराईया हिन्दू समाज मे आ गई। दयानन्द चार आश्रमो पर आधारित समाज व्यवस्था को मानते थे। वे चार पुरुषार्थों मे सयम और सन्तुलन पर बल देते थे। जाति प्रथा के आरम्भ मे वर्ण आदि का महत्व रहा हो, अब यह कहना कि ब्राह्मण मुख से पैदा हुआ शूद्र पैर से अर्थ शून्य है। मनुष्य का वर्ण आयु के 25 या 26वें वर्ष मे निश्चित करना चाहिए गुण कर्म के अनुसार। मनुष्यो में कुछ भेद तो ईश्वर निर्मित हैं, कुछ मनुष्य निर्मित। मनुष्य निर्मित भेद एकदम बेमानी हैं।

दयानन्द के स्पष्ट विचार थे कि किसी भी समाज मे आवश्यकता से अधिक धन जमा हो जाना सब तरह की ईर्ष्या, द्वेष लोभ-मोह और घृणा भेद का मूल है। पूजी ही विलासिता की जननी है। अत उसका समाज के सत्कार्य के लिए विनियोग आवश्यक है। दयानन्द विदेशी भाषा और विदेशी सत्ता के प्रखर विरोधी थे। वे चाहते थे कि वेदकालीन भारत का पुनराविर्भाव कार्य हो तो सब समस्याओ का निदान पाया जाए।

दयानन्द के निर्वाण के बाद एक शताब्दी बीत गई 1893 मे ही एग्लो-वैदिक कालेज, लाहौर के दो दलो मे मत-भेद आरम्भ हो गए। दयानन्द वैदिक शिक्षा और अनिवार्य सस्कृत के पक्ष मे थे। 1902 मे हरिद्वार म गुरुकुल स्थापित हुआ। बाद मे अग्रेजी भी शिक्षा का विषय बन गया। कई आर्य समाजी कालेज अन्य कालेजो की तरह उपाधि वितरण के केन्द्र मात्र बन गए। 1877 मे फिरोजपुर में पहला अनाथालय खोला गया अकाल के समय उसमे कई असहाय बालको को सुरक्षा मिली। 1905 मे कागड़ा पार्वत्य क्षेत्र म भूचाल आया। आर्य समाज ने बड़ा सेवा कार्य किया। आर्य समाज ने राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया। ब्रिटिश शासन के दमन का उसे शिकार होना पड़ा। आर्य समाज प्राचीन परम्परा को रखकर उसके साथ साथ भविष्य की ओर भी देखता था अध्यात्म और विज्ञान का समन्वय करना चाहता था जो बात पचास वर्ष बाद विनोबा भावे ने फिर से दुहराई। आर्य समाज ने देश मे कर्मण्यता की चेतना फैलाई। आत्मावलम्बन पर आग्रह रखा। अध्यवसाय मितव्यय दूरदर्शिता निष्ठा शीलता का जीवन मे मूल्यो की तरह प्रचार प्रसार किया। हिन्दू समाज के एक बड़े हिस्से को उत्तर भारत मे आर्यसमाज ने अनुशासनबद्ध किया। यह सारा श्रेय दयानन्द के विलक्षण व्यक्तित्व और नेतृत्व को जाता है।

ला लाजपतराय की आर्य समाज के इतिहास नामक पुस्तक की 1915 मे सिडने वेब ने भूमिका लिखी। उसमे दयानन्द को मार्टिन लूथर जैसा सुधारक और योरोपीय रिफार्मेशन के नेता की तरह इतिहास का शलाका पुरुष माना गया है। पाडय की पुस्तक दी आर्य समाज एण्ड इण्डियन नैशनेलिज्म मे दयानन्द की तुलना 'भारतीय एलिजाह या जौन दि बैप्टिस्ट' से की है, जो भारत को पुन अपने प्राचीन गौरवशाली सुवर्णयुग मे ले जाना चाहते हैं। वे वर्तमान को अतीत से अनुप्रेरित करना चाहते थे, दयानन्द की प्रेरणा से आर्य समाज ने अनेक श्रेष्ठ लेखक, इतिहासकार, देशभक्त, विद्वान् शिक्षा शास्त्री और सामाजिक कार्यकर्ता देश को दिए। (क्रमश)

# महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा रजत जयन्ती समारोह में सम्मिलित हों

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी 16-17-18 फरवरी 1985 तदनुसार शनि रवि, सोमवार को ऋषि जन्म स्थान टंकारा में ऋषि बोधोत्सव का विशाल समारोह होने जा रहा है।

इस वर्ष यह ऋषि मेला रजत जयन्ती के भव्य रूप में मनाया जाएगा। इस अवसर पर एक सप्ताह तक वेदपारायण यज्ञ होगा। देश-देशान्तर से पधारे आर्य विद्वान तथा कलाकार, ऋषि भक्त अपनी श्रद्धांजलि ऋषि के चरणों में अर्पित करेंगे। कन्या गुरुकुल बड़ौदा, पोरबन्दर जामनगर की कन्याएं टंकारा उपदेशक विद्यालय के विद्यार्थी तथा अन्य अनेक संस्थाओं के युवक भी समारोह के कार्यक्रमों में भाग लेंगे।

इस बार स्वामी सत्यपति जी महाराज की अध्यक्षता में ऋषि मेला से एक सप्ताह पूर्व योग शिक्षण शिविर का भी आयोजन किया गया है जोकि 10 फरवरी से 16 फरवरी 1985 तक चलेगा। जो सज्जन इसमें सम्मिलित होना चाहें वे तुरन्त उपरोक्त पते पर सूचित करें।

ऋषि मेले पर आवास—भोजन का पूर्ण प्रबन्ध टंकारा—ट्रस्ट की ओर से होगा।

ऋषि जन्म स्थान टंकारा की कुछ विशेष आवश्यकताएं भी हैं। पानी की भयंकर कमी, ऋषि जन्म गृह के मुख्य भाग का एक सेठ के व्यक्तिगत कब्जे में होना तथा टंकारा की संस्थाओं का अपेक्षित विकास।

आप से विनम्र निवेदन है कि आप टंकारा अवश्य पधारें और इस सारे कार्य को सुचारू रूप से चलाने के लिए अपना आर्थिक सहयोग भी दें। यह राशि आप क्रास चैक, क्रास बैंक ड्राफ्ट अथवा मनीआर्डर से टंकारा सहायक समिति के नाम से इसके कार्यालय आर्य समाज मन्दिर मन्दिर मार्ग नई दिल्ली—110001 के पते पर भिजवा सकते हैं।

आपसे सानुरोध प्रार्थना है कि अपनी ओर से अपनी आर्य समाज की ओर से अपनी स्त्री समाज की ओर से अपनी शिक्षण संस्थाओं की ओर से अधिक से अधिक राशि भेजें।

विशेष सूचना—टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि कर से मुक्त है।

निवेदक

श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा के अधिकारी तथा ट्रस्टीगण

# महर्षि दयानन्द पर फिल्म

चिरकाल से महर्षि पर फिल्म बनने की चर्चा चल रही है इस पर सेठ योगेन्द्रपाल आचार्य विश्वश्रवा व्यास वेदाचार्य, धर्मदेव जी चक्रवर्ती दिल्ली स्वामी वेदानन्द जी रोपड़ के लेख पढ़े केवल अखिल भारतीय यति मण्डल ही ने अपनी बैठकों में इस पर विचार किया है और फिल्म का विरोध किया है सारे देश की आर्य समाजों का यह दायित्व है कि वह महर्षि के मन्तव्य के विरुद्ध बनाई जा रही इस फिल्म का विरोध करें सारे देश की प्रतिनिधि सभाएं व शिरोमणी सभा सार्वदेशिक सभा अभी तक मूक बनी बैठी हैं फिल्म बनाने का उद्देश्य प्रचार आर्य समाज का है पर तु मूल उद्देश्य धन कमाना ही होता है हम देखते ही हैं कि ईसा मुहम्मद बुद्ध गुरु नानकदेव पर कोई फिल्म नहीं बनी परन्तु उनका प्रचार काफी है। रामायण महाभारत पर फिल्म बनी क्या हम कोई राम लक्ष्मण भरत कृष्ण पैदा कर सके। कोई माता सीता पैदा कर सके फिल्में तो मनोरंजन के लिए ही बनाई जाती हैं, 1920 से यह चल रही है परन्तु हमारा चरित्र 1920 से गिरता ही चला जा रहा है यह केवल डाके चोरी सब फिल्मों की उपज है फिल्मी संसार से नग्न आकर लोग राजनीति में आ रहे हैं। शराब मांस तो खान व सगत की रजा से छोड़ा जा सकता है। महात्मा गांधी की फिल्म से पहले ही महात्मा गांधी का नाम घर घर रोशन है यह उनके तप त्याग सत्य सादगी व अहिंसा के कारण हुआ है। महर्षि ने 59 वर्ष जीवन भर बड़ा कार्य किया वह समाज सुधारक मानव जाति के परमी मत मतान्तरों के खण्डन करने वाले मूर्ति पूजा का खण्डन करने वाले, ब्रह्मचर्य की प्रतिमा दलितों के पालक, वेद उद्धारक संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित राष्ट्र भाषा हिन्दी के पोषक मृतक श्राद्ध के खण्डन करने वाले थे। 11 12 13-14 समुल्लास में जो उनके खंडन की मुंह बोलती तस्वीर है क्या यह सब कुछ फिल्माया जा सकेगा। क्या इससे पौराणिक जगत में खलबली नहीं मचेगी जो खण्डन उनकी जान लेवा बना।

आज विज्ञान का युग है प्रचार के लिए नए साधन हैं क्या रेडियो टेलीविजन पर ब्राडकास्टिंग द्वारा प्रचार नहीं किया जा सकता। फिल्मी हीरो आम गृहस्थी व्यक्ति होते हैं ऋषियों मुनियों का स्वांग भरना उचित नहीं दीखता। क्या ईसाई, मुस्लिम, बौद्ध सिख अपने पूज्यों का स्वांग भरना पसन्द करेंगे? क्या आर्य समाज ही ऐसा रह गया है जो फिल्म [illegible] देश की समस्त आर्य समाजों से विनम्र निवेदन है कि वह इस फिल्म के बनने का घोर विरोध कर और अपनी समाज में प्रस्ताव पास करके केन्द्रीय सरकार को भेज और इस फिल्म का बायकाट करें।

—स्वामी मंत्री [illegible] दयानन्द मठ दीनानगर

# आचार्य गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार १९८५

वेद मार्तण्ड पं भगवद् दत्त वेदालंकार वेद विषयों के प्रकाण्ड विद्वान हैं। इनका सम्पूर्ण जीवन वैदिक चिन्तन एवं अध्ययन में समर्पित रहा है। आज भी पंडित जी नए नए विषयों के अनुसन्धान एवं प्रसार में दत्तचित्त होकर संलग्न हैं।

पण्डित जी का जन्म मेरठ जिले के ब्राह्मण परिवार में हुआ। आपने वेदालंकार तक की शिक्षा इसी विश्वविद्यालय में प्राप्त की। सन् 1935 में वेदालंकार की उपाधि प्राप्त करने के पश्चात् 6 7 वर्षों तक आप पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा में भी रहे। उन दिनों का स्मरण कर पण्डित जी श्रद्धेय श्री विश्वम्भरनाथ जी सभा उपप्रधान की स्मृति में श्रद्धा सुमन चढ़ाकर कहते हैं कि मेरे जीवन को प्रशस्त पथ की ओर मोड़ने में उनका बड़ा हाथ है।

सन 1942 में पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा से गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के वेदानुसन्धान विभाग में स्थानान्तरित होकर पधारे और 1976 तक गुरुकुल मातृभूमि की सेवा में अनेक पदों पर कार्य करते रहे। वेदों का गहन अध्ययन करते हुए आपने 12 अमूल्य रत्न विद्वत् समाज को दिए और इनके अतिरिक्त 6 7 पुस्तक अभी अप्रकाशित हैं। आपकी पुस्तकों में वैदिक साहित्य की जटिल एवं दुरूह कल्पनाओं को सुगम रूप से प्रस्तुत करने का गुण पाया जाता है। आपकी पुस्तकों पर कई पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। इसके अतिरिक्त विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में आपके उच्चकोटि के शोधपूर्ण लेख समय समय पर प्रकाशित होते रहते हैं। पण्डित जी हंसमुख शान्त व सरल स्वभाव के होने के कारण अजात शत्रु माने जाते हैं। वेद माता जी की निःस्वार्थ सेवा की आपने अभावग्रस्त होते हुए भी धनोपार्जन को महत्व नहीं दिया। ब्राह्मणेन निष्कारणो धर्म षडङ्गो वेदोऽध्येयश्च इस शास्त्र वचन को आपने जीवन में पूर्ण रूप से निभाया है।

शोध कार्य के साथ ही साथ आपने गुरुकुल पत्रिका के सम्पादन कार्य को भी 14 वर्षों तक कुशलता पूर्वक निभाया है। ऐसे त्यागी तपस्वी महापुरुष को सघड़ विद्या सभा ट्रस्ट जयपुर सम्मानित कर गौरव अनुभव करता है।

# लुधियाना का पारिवारिक सत्संग

स्त्री आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार लुधियाना का मासिक पारिवारिक सत्संग इस मास 13 तारीख रविवार मकर संक्रांति पर श्रीमती कौशल्या जी वर्मा (पुत्रवधू डा गज्जरमल) के गृह पर हुआ। उनके सुपुत्र श्री राजा जी सुपुत्री श्रीमती [illegible] जी मुख्य यजमान बने। इस परिवार ने यज्ञ में भाग लेकर बड़ी श्रद्धा से यज्ञ किया। यज्ञ श्रीमती कमला जी आर्य प्रधान समाज ने सम्पन्न कराया इस पवित्र पर्व के महत्व पर श्री वेदप्रकाश जी 3 स्त्री माडल टाउन लुधियाना ने बड़ी योग्यता से सरल शब्दों में प्रकाश डाला। परिवार को आर्य साहित्य एवं आर्य समाज के दस नियमों का सुन्दर कैलण्डर प्रदान भेंट किया गया। उपस्थिति अत्याधिक रही। सुन्दर भजनों से बहिनों ने सबका आनन्दित किया। परिवार ने सब आने वाली बहिनों का जलपान से सत्कार किया।

—निर्मला वेरी मन्त्राणी

# गौ माता की रक्षा की जाए

आर्य उपप्रतिनिधि सभा जिला मेरठ गाजियाबाद की एक बैठक जिसमे उत्तर प्रदेश से पधारे आर्य जगत् के अनेक गणमान्य प्रतिनिधि तथा आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान श्री इन्द्रराज जी भी उपस्थित थे इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की कि प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी ने अपने राष्ट्रीय प्रसारण मे भारतीय सास्कृतिक परम्पराओ को अक्षुण बनाये रखते हुए गगा की पवित्रता को बनाये रखने का सकल्प लिया है। सम्पूर्ण आर्य जगत् इस पुनीत सकल्प पर उनको हार्दिक बधाई देता है।

साथ ही उनसे निवेदन है कि गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित करें। क्योकि जहा इससे हमारी धार्मिक भावनाए जुडी हुई हैं वही गौ हमारी राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था मे भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। गाय जिनके खाकर सबको अमृत प्रदान कर सबका कल्याण करने वाली है।

भारत के अनेक महान् पुरुष महात्मा गाधी, आचार्य विनोबा भावे तथा महर्षि दयानन्द आदि ने गोमाता की रक्षा के लिए अपने प्राणो की आहुति दे दी। परन्तु गौ वध पहले से भी बहुत अधिक मात्रा मे हो रहा है।

अत, हम आशा करते हैं कि गोवध तथा गोमास के निर्यात को सम्पूर्ण देश मे पूर्णतया बन्द करने का साहसिक निर्णय ले। इसमे सम्पूर्ण आर्य जगत् आपके साथ है।

—इन्द्रराज मन्त्री

## शोक समाचार

गत दिनो आर्य समाज पठानकोट के प्रधान श्री लालचन्द के भतीजे श्री नरेश कुमार जी की एक सडक दुर्घटना मे मृत्यु हो गई।

आर्य समाज पठानकोट मे 20 1 85 को एक शोक सभा मे दिवगतात्मा को श्रद्धाजलि भेंट की गई और परमात्मा से प्रार्थना की गई कि वह शोक ग्रस्त परिवार को सान्त्वना व धैर्य प्रदान करे और उस पवित्र आत्मा को सदगति प्रदान करे।

—प्रो स्वतन्त्र कुमार
महामन्त्री

## श्री हरवंशलाल मुजरिम का देहावसान

आर्य समाज दसूहा श्री हरवंशलाल 'मुजरिम के देहावसान पर अत्यन्त शोक का प्रकटीकरण करता है। स्वामी दयानन्द के मन्तव्यो एव उद्देश्यो की पूर्ति हेतु उन के वचनो को उर्दू तथा पजाबी के माध्यम से पजाब के कोने-कोने मे पहुचाने वाले तथा आर्य समाज दसूहा के सस्थापक मन्त्री गण्डाराम के प्रमुख शिष्यो मे प्रथम चालीस वर्ष तक लगातार आर्य समाज दसूहा के सेवा मे एक अध्यापक के नाते और समाज के उच्च पदो पर विराजमान होकर आर्य पुत्री पाठशाला की स्थापना तथा आर्य सस्थाओ की स्थापना एव निर्माण कार्य में उनके योगदान को भुलाया नही जा सकता। उनका प्रथम पीढी के वरिष्ठ नेता के रूप में सदा नाम प्रकाशित रहेगा और उनके पूरे आर्य परिवार का योगदान अविस्मरणीय है।

साप्ताहिक सत्संग दो मिनट का मौन रखकर कार्यवाही शोक के रूप में चली और भगवान् से प्रार्थना की गई कि समाज के सभी सदस्यों तथा दसूहा के आर्य मुजरिम परिवार' को इस दारुण दुख के सहन करने की क्षमता सामर्थ्य प्रदान करे।

—अमरनाथ निराला
मन्त्री आर्य समाज दसूहा

## गुरु रविदास जन्म दिवस

आर्य समाज शास्त्री नगर बस्ती मिट्ठू जालन्धर में 5 फरवरी 85 मगलवार को गुरु रविदास जी का जन्म दिवस बडे समारोह के साथ मनाया जा रहा है, इसकी अध्यक्षता सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी करेंगे।

इस अवसर पर समस्त रविदासी भाईयो को सादर आमन्त्रित किया जा रहा है। इस दिन विशाल ऋषि लगर लगाया जाएगा। बडे 2 विद्वानो को बुलाया जा रहा है वे इस अवसर पर अपने विचार प्रकट करेंगे। 5 फरवरी को प्रात 8 बजे यज्ञ से शुरू होगा।

—रामलुभायानन्द प्रधान



श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन न. 7423।) (रजि. न. पो. जे. एल. 55)

वष 16 अक 36 28 माघ सम्वत् 2042 तदनुसार 10 फरवरो 1985, दयानन्दाब्द 160 । एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपए

# समय का महत्व

लेखक—म श्री बिहारी लाल शास्त्री काव्यतीर्थ

समय बडा अमूल्य है। खोया धन गये रत्न छुटा राज्य, बिछड बन्धु तक मिल सकते हैं परन्तु गया समय हाथ नही आता। परम अभागे है वे जो समय की कदर नही करते। समय चका और मनुष्य को असफलता ने फासा। फिर कोई उपाय होना कठिन ही है—

समय चूकि पुनि का पछिताने

समय की चूक ने राजाओ से राज-मुकुट छीन लिए, कीर्ति वन्तो की कीर्ति पता नीचे गिरा दी नेताओ का नेतृत्व धूल मे मिला दिया। समय बडा बलवान है। वाटरलू के युद्ध के समय फ्रास सम्राट नेपोलियन के सेनापति ने यदि सेना को कुछ देर विश्राम कराने का प्रमाद न किया होता तो इग्लैंड का सेनापति वैलिंगटन उससे प्रथम कायर टर बास' नगर पर अधिकार न कर पाता। इस मोर्चे के छिन जाने से नेपोलियन को पराजय का मुह देखना पडा। इसी प्रकार महाराणा सागा और भाऊ ने बाबर और अहमदशाह के मुका-बिले मे समय को सन्धि की बातो मे ब[illegible] कर हार खायी। शिवाजी समय का आदर करते थे अत विजयी हुए।

समय एव करोति बलाबलम्

उर्दू कवि मीर ने कहा है—

गैरते यूसुफ है यह वक्त अजीज,
मीर इसको रायगां खोता है क्यो ?

इसलिए उन्नति के इच्छको को, सफलता के अभिलाषियो को, कल्याण की कामना रखने वालो को चाहिए कि वह समय का आदर करें। कोई क्षण व्यथ न खोए। नीतिकार ने कहा है—

काव्य शास्त्र विनोदेन कालो गच्छति धीमताम्।
व्यसनेन च मूर्खाणा निद्रया कलेहन वा ॥

विद्वानो का समय सत्कवियो के काव्य रसपान से भावो को सरस बनाने मे बीतता है या शास्त्रो के अध्ययन द्वारा अपवर्ग पथ परिष्कृत करने मे जाता है। मूर्खों का समय सोने या लडाई झगडे परनिन्दा, पर पीडन, सुरा पान गणिका सवन जुआ आदि दुर्व्यसनो मे नष्ट होता है। कितना ही बडा आदमी क्यो न हो शिक्षित हो चाहे सभ्य कहाता हो वह मूर्ख ही है जो समय को व्यसनो मे बर्बाद करे। आज कल के शिक्षित तफरीह' (मनो विनोद) के बहाने से ही क्लबो मे जाकर व्यसन पूजा करते हैं, जुआ और शराब मे समय और धन दोनो को नष्ट कर डालते हैं। कोई कोई निठल्ले धनी जोकि दूसरो के श्रम से मौज उडाना अपना जन्म सिद्ध अधिकार समझ हुए हैं, रात दिन जुआ, शतरज शराब और नाच गाना आदि दुर्व्यसनो मे समय बरबाद करते रहते हैं और फिर कहते रहते हैं समय नही कटता। परन्तु ये कर्महीन अभागे यह नही समझते कि समय तो ससार के सकल प्राकृतिक पदार्थों को काटता है। उसे कौन काट सकता है ? समय को तुम नही काट सकते वही तुम्हे काट रहा है।

कालो न यातो वयमेव याता।
घडयाल ने बज करके यह कर दो है मनादी।
गरदू ने घडा उम्र का एक और घटा दी।

प्रति घण्टा प्रति मिनट आयु घट रही है। समय पूरा होते ही आत्मा से शरीर को साथन, मृत्यु छीन लेगी। समय रहते शुभ कर्म द्वारा मनुष्य इस शरीर से परलोक की पूजी सचित कर सकता है। जो आयु को दुर्वासना के चक्कर में पड बरबाद कर देते हैं वे भगवान द्वारा शापित हो दुख पाते हैं। दुष्कर्मों द्वारा जीवात्मा का निज गुण ज्ञान मन्द पड जाता है। दुर्वासना की धूलि से धूसरित ज्ञान दर्पण ब्रह्म के व्यापक विमल प्रकाश को ग्रहण नही कर पाता और उस प्रकाश के न पाने से अपूर्ण रहकर दुख पाता है 'अनीशया शोचति मुह्यमान'। शुभ कर्मों से ज्ञान-चक्षुओ की दर्शन शक्ति बढती है। ज्ञान व्यापक होता है। व्यापक ज्ञान विश्वप्रेम सद्विवेक सिखाता है। यही विवेक मोक्ष धाम मे सहायक होता है। दुष्कर्म कुवासनाए ज्ञान चक्षुओ को ढाप देती है जीव अज्ञानान्ध होकर कर्म क्षेत्र मे कदम कदम पर ठोकरे खाता, भूलो पर भूलें करता है। ईश्वरीय नियम ही ईश्वरीय शाप है। प्रकृति से भगवान ने ऐसे नियम निर्धारित कर दिए है कि जिनके कारण सुकर्मी जीव का ज्ञान विमल होता है और कुकर्मी का मलिन, मन्द बिल्कुल तिरोहित। जब जीव श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ, सद्गुरु के सत्सग से शास्त्र श्रवण और उत्तम उपदेशो के द्वारा कुप्रवृत्ति से बचने लगता है तो पुन ज्ञान नेत्र पाकर कृत-कृत्य हो जाता है। भगवती श्रुति ने पहेली के रूप मे यही कल्याणकारक उपदेश दिया है—

शत मेषान् वृक्ये चक्षदान-मृजाश्व त पितान्ध चकार।
तस्मा अक्षो नासत्या विचक्ष आधत्त दस्रा भिषजावनर्वन ।

ऋग मण्डल 1 सूक्त 116 मन्त्र 16

(शत मेषान) सौ मेषो को अर्थात आयु के बहुत से वर्षों या अनेक जन्मो को (वृक्ये) भेडिये के लिए अर्थात दुर्वासना [illegible] (चक्षदानम ऋजाश्वम) मारकर खिला देने वाले, नष्ट करने वाले (ऋजाश्वम) ऋजाश्व नामक ऋषि पुत्र को अर्थात चञ्चल इन्द्रिय वाले (तम) उस जीव को (पिता) पालनकर्ता परमात्मा ने (अन्धम) नेत्रहीन ज्ञानरहित (चकार) कर दिया है।

जाको राम परम दुख देही।
ताकी मती पहिले हर लेही।

(अनर्वन तस्मै) उस ज्ञानरहित जीव के लिए। (दस्राभिषजौ) दुखनाशक वैद्य अर्थात सुधारक। (नासत्या) नासिका से प्रकट होने वाले प्राण वायु या असत्य से रहित अध्यापक उपदेशको ने विचक्ष) बहुत अच्छा दिखाने वाले (अक्षौ) नेत्र आधत्तम, रख दिए अर्थात भगवान उस जीव की जोकि अपनी आयु के सौ वर्ष आयु का आनुपातिक प्रमाण दुर्वासना वृत्ति के लिए नष्ट कर देता है बुद्धि छीन लेते हैं ताकि वह उस बुद्धि का दुष्टता मे उपयोग न कर सके और उस बुद्धिहीन हृदये के अन्ध के लिए सच्चे अध्यापक और उपदेशक जब जीव उनकी स्तुति करे और सगति मे आवे उस समय आख देते हैं हृदय की खोलते हैं विवेक प्रदान करते हैं। इन्द्रियो के वश मे न रहने से पाप मे समय बिताया अत, इन्द्रियो के वैद्य प्राण वायु (क्योकि प्राणा-याम से मन और इन्द्रिया वश मे हो जाती है प्राणायाम करने से इन्द्रियों और मन को सुधार कर हृदय की आख खोल देते हैं। पापो के कारण मतिमन्द हुए मनुष्य को सद्गुरु की शरण में जाकर और प्राणायाम द्वारा मनो निरोध करके विवेक बुद्धि को जाग्रत करना चाहिए। बस, इससे दुर्वासना का क्षय होगा और ज्ञान के प्रकाश से अन्तर्यामी ब्रह्म को पहचान कर जीव कैवल्य लाभ करेगा।

वेद भगवान ने 'मेष शब्द द्वारा समय की सरलता को प्रकट किया है।

समय मेष के समान सरल है। तुम उससे चाहे जैसा काम लो, चाहे नष्ट करो चाहे काम मे लाओ।

चक्षदानम (हिंसक) कहकर समय नाश करने वाले को पापी और क्रूर बताया है ताकि समय के नाश से घृणा हो। ऐसे अनेक भाव व्यक्त करने के लिए भगवान ने पहेली द्वारा उपदेश दिया है। इस काव्य मे से अनेक अर्थ घटित हो सकते है। यह मन्त्र बहुत अवसरो पर लगाया जा सकता है। बहु भाव व्यापी होना काव्य की श्रेष्ठता है। नासत्यौ शब्द कैसा सुन्दर श्लिष्ट पद है। नासत्य—नासिका से प्रकट होने वाले प्राण। न—असत्य—असत्य से रहित वेद भगवान ने सत्सग और प्राणायाम द्वारा मनोनिरोध का कैसा अच्छा इलाज बताया है। कुसग और चञ्चलता द्वारा रोग (पाप रोग) हुआ उसका स्वाभाविक इलाज इन कारणो को दूर करना है। कैसी सुन्दर स्वाभाविक चिकित्सा है। वेद भगवान चेताते हैं समय [illegible] रोग करो।

# महर्षि दयानन्द फिल्म का विरोध करने वाले अपने जीवन को देखें

ले.—श्री सोमनाथ मरवाह एडवोकेट नई दिल्ली

(27 जनवरी से आगे)

इसी प्रकार की फिल्म दयानन्द के ऊपर बनाई जाए। मैंने ऐसी कोई फिल्म नही देखी और ऐसी फिल्म टी वी. पर भी नही दिखाई गई। मुझ यह पता नही है कि इन फिल्म विरोधियो का सही सिद्धान्त क्या है। क्या यह कभी सिनेमा देखने नही जाते। मैं 1958 से आज तक कभी फिल्म देखने नही गया हू। यह सुझाव विश्वसनीय होते हुए भी उचित नही है। उस फिल्म मे कुछ अविश्वसनीय चमत्कार दिखाए गए हैं। और ऐसा कोई चमत्कार हम स्वामी दयानन्द के लिए नही दिखा सकते उनके जीवन में जो भी है वह यथार्थ है। उस फिल्म मे दिखाया गया है कि गुरु नानक ने पहाडी के ऊपर हाथ रखा और वहा से एक फव्वारा निकलने लगा जिसे वह पजा साहिब कहते हैं। इसी प्रकार जब वे मक्का-मदीना गए उन्होने रीठे की कडवाहट को मीठे स्वाद मे बदल दिया। इस प्रकार की अनेको बाते हैं जो विश्वसनीय नही हैं। कई वष पहले सरदार खुशवन्तसिंह ने इलस्ट्रेटिड पत्रिका मे विस्तार मे इन बातो को दिया था। मेरा इस बात से कोई सम्बन्ध नही है कि गुरु नानक का पात्र किसी जीवित व्यक्ति को क्यो नही दिया गया। पर मैं इस बात का सशक्त विरोध करता हू कि किसी व्यक्ति के द्वारा यह पाठ करने की जगह किसी फोटो को रखा जाए तथा फोटो के पीछे कोई व्यक्ति बोले।

9 मैं, प शिव कुमार शास्त्री के पत्र की छव न के ऊपर कोई टिप्पणी नही करना चाहता पर मैं यह अवश्य कहना चाहूगा कि भारत वष का तथा ससार का जितना भ्रमण आचाय भगवानदेव ने किया है उतने करने का श्री शास्त्री जी का अवसर नही मिला तथा जितनी सफलता विश्व सिन्धी सम्मेलन आयोजित करने मे श्री भगवानदेव को मिली उतनी शायद हमे अजमेर मे निर्वाण शताब्दी करन मे भी नही मिली, विश्व सिन्धी सम्मलन मे राष्ट्रपति प्रधानमत्री तथा अन्य गणमान्य विशिष्ट अतिथि आए थे। यह कार्यक्रम उन्होने उस स्थान पर आयोजित किया जिसका किराया 2 लाख रुपये था। अजमेर मे सार्वदेशिक को छोडकर अन्य बहुत सी सस्थाए निर्वाण शताब्दी के कार्य मे सलग्न थी पर उन्हे वह सफलता नही मिली। आचार्य भगवानदेव जानते हैं कि विश्व सगठन क्या होता है। वह हम मे से किसी भी व्यक्ति की अपेक्षा ससार की बातो को अधिक समझते हैं। उदघाटन के समय ही उन्होने यह स्पष्ट घोषणा कर दी थी कि विश्व आय समाज सार्वदेशिक सभा की समानान्तर सभा नही है। वास्तव मे यह सार्वदेशिक सभा का एक अग होगी यदि कोई उस अवसर पर दिए गए भाषणो तथा प्रेस विज्ञप्तियो में निहितार्थ को नही समझ पाता है तो इसका दोष आचार्य भगवादेव तथा उनके साथियो को नही दिया जा सकता।

10 आर्य समाज के अधिकारियो का इसी मनोवृत्ति के कारण एक बहुत सुनहरी अवसर हाथ से निकल गया जब श्री पृथ्वीराज कपूर ने जो आर्य समाजी परिवार से थे महर्षि दयानन्द के ऊपर आय समाज सगठन से कोई भी पैसा लिए बिना फिल्म बनाने का प्रस्ताव रखा था।

11 सन 1975 मे क्या हुआ, इस के बारे मे बहुत कुछ कहा जाता है। तत्कालीन राष्ट्रपति के भाषण के पश्चात सार्वदेशिक सभा के सभी पदाधिकारी प्रधानमन्त्री और कोषाध्यक्ष तथा अन्य पण्डाल छोडकर चले गये थे और पण्डाल सविता बहिन के अधिकार मे रह गया था। वे गुजरात से एक गुजराती नाटक का मचन करने के लिए दल लेकर आई थी। यह सर्वविदित है कि उस समय एक वर्ग विशेष के द्वारा विरोध का हमे सामना करना पड़ा था। उन्होने स्वामी ओमानन्द के साथ हाथापाई भी की थी तथा शामियाने को जलाने की धमकी भी दी थी। यह वही लोग थे जिन्होने परेशानी खडी की थी और यह नाटक इसलिए नही दिखाया जा सका था क्योंकि वहा सगठन का कोई भी उत्तरदायी पदाधिकारी स्थिति पर काबू पाने के लिए उपस्थित नही था। इस बात को इस प्रकार चित्रित किया जाता है कि आर्य समाज में इस नाटक के प्रदर्शन के सम्बन्ध मे असन्तोष था। इन लोगो को शायद यह पता नही है कि डी ए वी प्रबन्धकर्त्री समिति के द्वारा चलाए जा रहे पब्लिक स्कूलो में आर्य समाज के उद्देश्यो का प्रचार करने के लिए किस तरह से प्रबंध किया जाता है।

12' स्वामी दयानन्द के ऊपर फिल्म निर्माण की फाईल लगभग 100 पृष्ठो मे है और फिल्म निर्माण का प्रस्ताव सर्व-सम्मति से उज्जैन मे 26 अप्रैल 1950 को पारित किया गया था। ऐसा ही एक प्रस्ताव उदयपुर मे भी किया था। जिस का प्रारम्भ में आचार्य विशुद्धानन्द श्री गौरीशकर कौशल, स्वामी ओमानन्द सरस्वती, श्रीमती कौशल्यादेवी और डा सुरेशचन्द्र शास्त्री तथा अन्य लोगो ने उत्साह पूर्वक विरोध किया था। उनके विरोध का मैंने (श्री सोमनाथ मरवाह) मेरी पत्नी श्रीमती शान्ति मरवाहा, प विशम्भरप्रसाद शर्मा, प दुर्गादास और श्री सरदारीलाल वर्मा ने सही उत्तर देते हुए फिल्म निर्माण का समर्थन किया था, दोनो पक्षो की बात सुनने के पश्चात यह सर्वसम्मत निर्णय लिया गया था कि श्री नैय्यर को 30,000 रुपए अग्रिम राशि दी जाए तथा सभा के कानूनी सलाहकार श्री सोमनाथ मरवाह द्वारा शर्तनामे (ऐग्रीमेंट) के प्रारूप का अनुमोदन प्राप्त कर लिया जाए और यही किया गया था।

13 इन 30,000 रुपय के अतिरिक्त उन्होने 6000 रुपये और लिये थे, यह रुपया सार्वदेशिक सभा से नही मिला था बल्कि उस फिल्म के निर्माण के लिए श्री वीरेन्द्र की सास जी के द्वारा मेरे माध्यम से चैक द्वारा दिया गया था। अब लगभग दो वर्ष की चुप्पी के पश्चात् इस बात की बिल्कुल आशा नहीं थी कि इस फिल्म निर्माण का कोई विरोध करेगा और प. शिवकुमार शास्त्री से तो इस बात की बिल्कुल आशा नही थी। इस फिल्म निर्माण के विरोध में एक पत्र नव-भारत टाईम्स में प्रकाशित हुआ था जिसको गलती से सार्वदेशिक सभा पत्र में भी प्रकाशित कर दिया गया था। जिसका अर्थ यह लिया गया होगा कि सम्भवतः सार्वदेशिक सभा भी फिल्म निर्माण के विरोध में है। सम्भवत इसी से प. शिव कुमार शास्त्री को ऐसा पत्र लिखने की प्रेरणा मिली होगी और दीनानगर आर्य समाज को भी इसके विरोध मे प्रस्ताव पारित करने की प्रेरणा हुई होगी। मैं मानता हू कि सही यह होगा कि इस फिल्म को जितना जल्दी हो सके उतना जल्दी पूरा कर दिया जाए। यह फिल्म स्वामी दयानन्द के विचारो का प्रचार प्रसार करने का एक सही माध्यम होगी। इससे आर्य समाज का नाम भी ससार के सामने आ जाएगा।

14. जिन लोगो ने यह विरोध किया है वे स्वामी दयानन्द द्वारा निर्धारित सिद्धान्तो को अपने जीवन मे चरितार्थ नहीं करते। हम मे से कितने व्यक्ति अपनी आय का दशाश अथवा वार्षिक 250 रुपये आर्य समाज को सदस्यता के रूप में देते हैं। हम मे से कितने आर्य समाज के साप्ताहिक सत्सगो मे जाते है और कितने दैनिक सध्या, हवन अपने घरों मे करते हैं। हम मे से कितनो के बच्चे आर्य समाज के कामो में रुचि लेते हैं। दूसरों की आलोचना करना आसान है पर जब बात हमारे ऊपर आती है तो पता चलता है कि विरोध करने वाले भी वास्तव मे सही सिद्धान्तो का पालन नहीं करते हैं। अत आर्य समाज के प्रचार प्रसार मे नवीनता एव प्रगति लाने के पक्ष मे नही हैं।

—

# आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित आर्य समाजों के अधिकारी महानुभावों की सेवा में

मान्यवर महोदय, सादर नमस्ते।

पिछले दिनों सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी, महामन्त्री श्रीमती कमला जी आर्या कोषाध्यक्ष श्री प ब्रह्मदत्त जी शर्मा और आर्य विद्या परिषद के प्रस्तोता श्री धर्म प्रकाश जी दत्त हम चारो बरनाला गए थे। वहां आर्य समाज की कई संस्थायें हैं। विशेषकर श्री लालबहादुर शास्त्री आर्य महिला कालेज, गांधी आर्य हाई स्कूल दयानन्द केन्द्रीय विद्या मन्दिर इन तीनों संस्थाओ की प्रगति और कार्य को देखकर हम सब बहुत प्रभावित हुए हैं। वहां आर्य समाज के अधिकारियो से बैठ कर बातचीत करने का समय भी हमें मिला था, उसके आधार पर कुछ सुझाव आपको दे रहे हैं, आप कृपया अपनी आर्य समाज की अन्तरग सभा और यदि सम्भव हो सके तो दूसरे सदस्य महानुभावो से परामर्श करके इस दिशा मे कोई सक्रिय और रचनात्मक कार्य करने का कष्ट करें।

1 17 फरवरी को शिवरात्रि है। इस बार सौभाग्य से यह रविवार को है। इसलिए प्रत्येक आर्य समाज को ऋषि बोधोत्सव बडे उत्साह के साथ मनाना चाहिए। केवल आर्य समाज मन्दिरो में यज्ञ करने और भाषण आदि कराना ही पर्याप्त न होगा। रचनात्मक कार्य भी करने की आवश्यकता है, इसलिए हमारा यह सुझाव है कि उस दिन प्रत्येक आर्य समाज अपने क्षेत्र के कुछ निर्धन और निस्सहाय व्यक्तियो की सहायता करे। जिन्हे कम्बल दिए जा सकते हैं, कम्बल दिए जाए। गर्म कपडे दे सकते हैं वे दिए जाए। ठण्ड कपड दिए जा सकते हैं वे दिए जाए। निर्धन विद्यार्थियो को पुस्तकें दी जा सकती हैं, वे दी जाए। जो बूढे हो गए हैं उनकी जो सहायता की जा सकती है वह करें। जहा-जहा सम्भव हो सिलाई मशीनें विधवाओ और असहाय महिलाओ को दी जाए। इस के अतिरिक्त कोई और भी रचनात्मक कार्य कर सकें तो वह भी करें। हम चाहते हैं कि आर्य समाज मन्दिरों से निकल कर जनता से सम्पर्क पैदा करें और जहा तक हो सके उनकी सेवा करे। इसी प्रकार हम आर्य समाज का सन्देश अधिक से अधिक व्यक्तियों तक पहुचा सकेंगे। आशा है इस दिशा मे आप आर्य समाज के कार्यक्रम को और भी अधिक फैलाने का प्रयास करेंगे।

(2) बरनाला में आर्य समाज के अधिकारियो से हमने यह प्रार्थना की थी कि जालन्धर मे सभा का जो भवन बन रहा है, उसके लिए वे बरनाला से कुछ धन एकत्रित कर के हमे दें। उसके साथ परामर्श के पश्चात यह निर्णय लिया गया है कि सभा के अधिकारी बरनाला जाएगे। वहा के स्थानीय आर्य समाजियो के साथ मिल कर सभा के भवन के लिए रुपया इकटठा करेंगे, जितना रुपया वहा इकटठा होगा, उसका 25 प्रतिशत आर्य समाज बरनाला को दे दिया जाएगा। 75 प्रतिशत आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब को मिल जाएगा। इस सम्बन्ध मे यह भी बता देना चाहते हैं कि पिछले एक वर्ष मे आर्य समाज बरनाला और वहा की शिक्षा संस्थाओ ने मिल कर 30 हजार के लगभग रुपया सभा को दिया है। इस बार वहा हम जब गए तो 7100 रुपया और भेंट किए गए। यदि बाकी आर्य समाजें भी आर्य समाज बरनाला की तरह सभा की सहायता करे तो सभा के भवन का निर्माण बहुत तेजी से हो सकता है।

(3) हमने आर्य समाज बरनाला के सामने यह सुझाव भी रखा है कि वहा एक सार्वजनिक यज्ञ किया जाए। हम प्राय आर्य समाज मन्दिरो के अन्दर यज्ञ करते हैं। अब समय आ गया है कि बाहर ऐसे यज्ञ किए जाए, जहा अधिक से अधिक व्यक्ति पहुच सके। वर्तमान परिस्थितियो मे आर्य समाज के प्रचार का यही एक साधन है। आर्य समाज शक्तिनगर अमृतसर प्रत्येक वर्ष अमृतसर मे इस प्रकार का एक बृहद यज्ञ करती है। और इस बार लुधियाना के आर्य समाजी भी एक बहुत बडे यज्ञ की योजना बना रहे हैं। आर्य समाज बरनाला भी इसके लिए तैयार हो गई है। बाकी आर्य समाजे भी यज्ञ करें, तो कुछ न कुछ आर्य समाज का प्रचार होगा। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ऐसे यज्ञ के लिए बाहर से कर्मकाण्डी पण्डितो को बुला देगी, परन्तु उसी स्थिति मे यदि दो मास पहले सभा को सूचित किया जाए।

(4) आर्य समाज बरनाला का एक बहुत पुराना इतिहास है। इस बार उसे सुनकर हमने उस आर्य समाज के अधिकारियो को यह सुझाव दिया है वे अपने आर्य समाज का इतिहास लिखवाए, ताकि आज से 60 70 वर्ष पहले जो सघर्ष आर्य समाजियो ने किया था, वह लिखित रूप मे सब के सामने आ सकें। हमारा यह सुझाव है कि जितनी पुरानी आर्य समाजे है वे सब अपना अपना इतिहास लिखवाए और उसे लिखवाने के बाद सभा को भेज दें। उसके आधार पर हम पजाब मे आर्य समाज का इतिहास लिखवाएगे। आशा है इसमे आपका सहयोग सभा को मिलेगा।

5 सभा का आर्य मर्यादा साप्ताहिक मुख पत्र आपको मिलता रहता है। हम चाहते हैं कि इसकी ग्राहक सख्या बढाई जाए। केवल 20 रुपये वार्षिक इसका चन्दा है। प्रत्येक आर्य समाज को यह प्रयत्न करना चाहिए कि अधिक से अधिक व्यक्ति इसके ग्राहक बनें। आपको सुनकर प्रसन्नता होगी कि इस बार आर्य मर्यादा का 'ऋषिबोध अक' 150 पृष्ठो का प्रकाशित हो रहा और उसकी केवल 3 रुपये एक प्रति की कीमत रखी गई है, इसमे आर्य समाज के दिवगत नेताओ के लेख दिए जाएगे। ताकि जिन्हे हम भूल चुके हैं, उन्हे उन लेखो के द्वारा फिर से हम याद कर सकें। आप से प्रार्थना है कि इस विशेषाक की अधिक से अधिक जितनी प्रतिया आप मगवा सकते हैं, मगवाए। ताकि इसके द्वारा आर्य समाज का प्रचार हो सके।

आशा है जो सुझाव हमने आपके सामने रखे हैं उन पर आप गम्भीरता-पूर्वक विचार करेंगे और उन्हें क्रियान्वित करने के लिए जो कुछ आप से हो सकता है आप करने का प्रयत्न करेंगे।

भवदीय

| वीरेन्द्र | कमला आर्या | ब्रह्मदत्त शर्मा | धर्मप्रकाश दत्ता |
|---|---|---|---|
| प्रधान | महामन्त्री | कोषाध्यक्ष | प्रस्तोता आर्य विद्या परिषद् पजाब |

# धन का लोभ अन्धा बना देता है

पाठकों ने समाचार पत्रो मे पढा होगा कि भारत के प्रतिष्ठित व्यक्ति कूमर नारायण और दूसरे जिम्मेदार अधिकारियो ने भारत के गुप्त भेद दूसरे देशों को पहुचाकर कितना घृणित कार्य किया है। धन एक ऐसी चीज है जिसे प्राप्त करने के लिए व्यक्ति अपने धर्म देश, जाति और यहा तक कि बन्धु-बान्धव तथा परिवार को भी दाव पर लगा देता है। धन प्राप्ति के लिए कूमर नारायण और दूसरे अधिकारियो ने देश के साथ कितनी बडी गद्दारी की है यह किसी से अब छिपी हुई नही रही। व्यक्ति समझता है जो वह पापाचार या चोरी कर रहा है उसे और कोई नही देख रहा है, वह लोगो को धोखा देकर अपना काम करता चला जाता है। लेकिन वह भूल जाता है कि एक दलने वाली सत्ता उसे जरूर देख रही है और एक दिन पापाचार व चोरी का भेद जरूर खुलकर रहेगा और वह जो आज आसमान मे चढा हुआ है एक दिन भूमि पर ऐसा पटक कर गिरा दिया जाएगा कि उसका कोई नाम तक लेने को तैयार न होगा और समाज उसे धिक्कारेगा।

आज जो बातें सामने आई हैं उनसे सारी स्थिति सामने है। धन के लोभ में व्यक्ति इतना अन्धा हो जाता है कि उसे कुछ दिखाई नहीं देता। देश के साथ गद्दारी करने वाले अन्य व्यक्तियो का भी यही हाल होगा। जो जासूसी काण्ड के अभियुक्तो का हो रहा है।

—सह-सम्पादक

# जी चाहता है तोड़ दूं शीशा फरेब का—4

ले.—श्री वीरेन्द्र जी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब

(गताक से आगे)

इस शृखला के पिछले लेख मे, मैंने नये और पुराने अकालियो मे अन्तर बताते हुए कहा था कि पुराने अकाली आम तौर पर देशभक्त रहे है। बाबा खडगसिह, मास्टर तारासिह, मुखेलसिह सब अकाली ही थे। सरदार प्रतापसिह कैरो, ज्ञानी गुरमुखसिह मुसाफिर और सरदार दर्शनसिह फेरूमान यह भी सारे अकाली दल की उपज थे। 1947 से पहले अकाली काग्रेस से कन्धे से कन्धा मिलाकर देश की आजादी की लडाई लडते रहे थे। जिस समय देश स्वाधीन होने लगा था, उस समय सिखो ने अकालियो के लिए अलग होमलैंड अवश्य मागा था, लेकिन जब उनके सामने यह प्रश्न आया कि वह भारत के साथ रहना चाहते हैं या पाकिस्तान के तो उन्होने भारत के साथ रहने का फैसला किया था। अकाली-सिखो के लिए कई प्रकार की सुविधाए तो मागते रहे लेकिन आनन्दपुर साहब जैसा प्रस्ताव उन्होने कभी पास नही किया था। 1956 मे जब पण्डित जवाहरलाल नेहरू और मास्टर तारासिह के बीच रिजनल फार्मूला के आधार पर फैसला हुआ था तो मास्टर जी ने यह लिखकर दिया था कि अकाली दल भविष्य मे सक्रिय राजनीति मे भाग नही लेगा। जब हम पुराने अकालियो की बात करते हैं तो सरदार स्वर्णसिह का नाम भी याद आ जाता है। वह 1947 मे पजाब विधान सभा मे जो अकाली पार्टी थी उस के नेता थे। बाद मे वह काग्रेस मे शामिल हो गए। और 1977 तक वह केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल मे रहे। ज्ञानी जैलसिह अकाली पार्टी मे कभी शामिल नही हुए, लेकिन वह प्रजा मण्डल मे बहु सक्रिय भाग लेते रहे हैं। महाराजा फरीदकोट के साथ उन्होने एक लम्बी लडाई लडी थी। और जहा तक गुरुवाणी को समझने व इसे सही ढग से प्रस्तुत करने का सम्बन्ध है। सिखो मे बहुत कम लोग इस स्तर के मिलेंगे। ज्ञानी जैलसिह कभी भी अकाली दल मे शामिल नही हुए, यद्यपि प्रमुख अकालियो के साथ उनके पारस्परिक सम्बन्ध रहे हैं।

पाठकगण! यह सब मैंने इसलिए लिखा ताकि नये व पुराने अकालियो से कुछ अन्तर पता चल सके। पुराने अकाली देशभक्त भी थे और देश सेवक भी। इसलिए मैंने लिखा है कि सिखो की बहुत बडी सख्या देश की वफादार रही है। कहते हैं एक मछली कई बार सारे तालाब को गन्दा कर देती है। यह ही हालत आज के अकालियो की हो रही है। कुछ अकालियो ने सारे पन्थ को बदनाम कर दिया है। धर्म युद्ध के नाम पर वह कुछ किया गया है जिसका परिणाम अन्तत इन्दिरा गाधी की हत्या के रूप मे हमारे सामने आया है। इन्दिरा की हत्या के बाद जो कुछ अन्य प्रदेशो मे हुआ है वह भी कम शर्मनाक नही था। सरदार प्रेमसिह लालपुरा कहते है कि इसकी जाच होनी चाहिए। मैं उनकी इस माग का समर्थन करता हू लेकिन साथ ही यह भी माग करता हू कि पजाब मे जो कुछ विगत साढे तीन वर्षों मे होता रहा है उसकी भी जाच होनी चाहिए ताकि दूध का दूध और पानी का पानी सामने आ जाए।

मैंने ऊपर धर्म युद्ध का उल्लेख किया है जिससे कारण इतनी तबाही मची हुई है। अकालियो ने धर्म युद्ध शुरू किया। इसलिए सन्त जरनैलसिह भिंडरावाला गुरुद्वारा दर्शन प्रकाश से उठकर गुरु नानक निवास मे आकर बैठ गया। गुरु नानक निवास से उठकर अकालतख्त मे चला गया। वही से उसकी तमाम गतिविधिया जारी रही जिनके कारण श्रीमती इन्दिरा गाधी को सैनिक कार्यवाही करनी पडी। इसकी प्रतिक्रिया इन्दिरा गाधी की हत्या के रूप मे सामने आयी। इंदिरा जी की हत्या ने वह खेदजनक घटनाए पेश की जो कई प्रदेशो मे देखने को मिली यदि हम तीन वर्ष के इस इतिहास को पढने की कोशिश करे तो इस परिणाम पर पहुचेंगे कि यह सिलसिला धर्म युद्ध से शुरू हुआ था और धर्म युद्ध की बुनियाद आनन्दपुर साहब प्रस्ताव था। आज यदि राजीव गाधी कह रहे हैं कि आनन्दपुर साहब के आधार पर कोई बातचीत नही होगी तो वह पूरी तरह औचित्य लिए है। यह प्रस्ताव विधिवत् रूप म 1973 मे पास किया गया। इससे पहले न तो धर्म युद्ध शुरू हुआ था और न सिगरेट और बीडी पर पाबन्दी की माग की गई थी। न ही नहरी पानी की समस्या सामने आई थी। 1977 से लेकर 1980 तक अढाई वर्ष तक पजाब मे अकाली जनता मन्त्रिमण्डल रहा। अकाली चाहते तो उस समय भी इस समस्या को हल कर सकते थे। हरियाणा मे चौधरी देवीलाल मुख्यमन्त्री थे। पजाब मे प्रकाशसिह बादल मुख्यमन्त्री थे। ये दोनो मिलकर सब कुछ कर सकते थे लेकिन किसी ने कुछ न किया। उस समय तक अकालियो को आनन्दपुर साहब प्रस्ताव याद न था लेकिन 1982 मे सन्त लौंगोवाल व भिंडरावाला के बीच नेतृत्व के लिए लडाई शुरू हो गई और उस समय आनन्दपुर साहब का प्रस्ताव भी जाग उठा। यह 1973 में पास हुआ था। पूरे दस वर्ष तक उसे किसी ने याद न किया और फिर केवल यह प्रस्ताव ही याद नही आया भारतीय सविधान की धारा 25 भी याद आ गई और उसे खत्म करने की माग शुरू की गई। इसके लिए अकाली नेताओ ने स्वय को गिरफ्तारी के लिए पेश करना शुरू कर दिया हमारे देश मे सविधान 1950 से लागू हुआ था। 1950 से लेकर 1984 तक अर्थात् 34 वर्ष अकालियो को यह पता ही नहीं चला कि कोई 25वी धारा भी है जो सिखो के खिलाफ है लेकिन इसे लेकर एक आन्दोलन शुरू हो गया। गुरचरणसिह टोहरा प्रकाशसिह बादल, सुरजीतसिह बरनाला सब बडे 2 नेता गिरफ्तार हो गए लेकिन 34 वर्ष बाद भी यह लोग खामोश बैठे रहे। धर्म युद्ध ने उन की सोयी हुई आत्मा को जगा दिया और वे लडने और मरने को तैयार हो गए।

मैंने ऊपर लिखा है कि विगत तीन वर्षों मे जो कुछ हुआ है, उसका आधार धर्म युद्ध था और धर्म युद्ध का आधार आनन्दपुर साहब प्रस्ताव था। इससे पहले कोई ऐसा आन्दोलन पजाब मे नही चला। 1950 से लेकर 1966 तक अकाली दल का सारा जोर पजाबी सूबा पर लगा रहा। पण्डित नेहरू, गोविन्दवल्लभपन्त व लालबहादुर शास्त्री कोई भी पजाबी सूबा मानने को तैयार न था। इंदिरा गाधी ने उसे मजूर कर लिया केवल इस ख्याल से कि यह अकालियो की अन्तिम माग है। इसके बाद वह कोई नई माग पेश न करेंगे। 1966 मे पजाबी सूबा अस्तित्व मे आया और 1969 मे उस प्रस्ताव पर बहस शुरू हो गई। जो 1973 मे आनन्दपुर साहब प्रस्ताव के रूप मे हमारे सामने आ गई। निष्कर्ष यह कि अकालियो की कोई ऐसी माग नही है जिसके बारे कहा जा सके कि यह आखरी है। 1949 मे सच्चर फार्मूला 1954 मे रिजनल फार्मूला, 1973 मे आनन्दपुर साहब का प्रस्ताव। प्रधानमन्त्री ने बुद्धिमता व विवेक से काम लिया, जो कह दिया कि आनन्दपुर साहब प्रस्ताव के आधार पर कोई बात नही हो सकती क्योंकि इस बात का कोई आश्वासन नही है कि सरकार यदि प्रस्ताव के आधार पर कोई बातचीत शुरू भी कर दे तो इस बीच अकाली कोई और माग नहीं पेश कर देंगे। इसलिए इस प्रस्ताव को समझने की जरूरत है। लेकिन इसके बारे मे यह पता नही चलता कि वह कौन सा आनन्दपुर साहब प्रस्ताव है जिस पर अकाली बातचीत करना चाहते है। 1969 वाला, 1973 वाला या फिर 1978 वाला। सरदार कपूरसिह वाला, गुरचरणसिह टोहरा वाला या लौंगोवाल वाला। कहावत प्रसिद्ध है एक माया के तीन नाम परसा, परसू परसराम। यह ही स्थिति आनन्दपुर साहब के प्रस्ताव की है

(क्रमश

## जिला गुरदासपुर की गतिविधियां

जिला आर्य सभा गुरदासपुर की एक विशेष बैठक 6 जनवरी 85 को आर्य समाज ओहरी चौक बटाला मे प्रधान श्री रामकिशन जी महाजन की अध्यक्षता मे हुई जिसमे निम्ननिखित निर्णय लिए गए।

1 जिला गुरदासपुर की सभी आर्य समाजो से प्रार्थना की गई कि आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की वेद प्रचार की राशि जिन्होने नही भेजी हो वह शीघ्र अति शीघ्र भेज दें।

2 आर्य समाजो मे विशेष यज्ञो का आयोजन किया जाए और उन यज्ञो मे सभी नगर निवासियो को आमन्त्रित किया जाए।

3 आर्य समाज बटाला की गतिविधियो को बढाने के लिए तथा स्थानीय विवादों को हल करने के लिए प्रो. स्वतन्त्र कुमारजी महामन्त्री जिला सभा को पूर्ण अधिकार दिए गए।

4 आर्य समाज धारीवाल बहरामपुर तथा भरता ग्राम में वेद प्रचार के लिए 24-25-26 मार्च की तिथिया निश्चित की गई।

—रामकिशन महाजन प्रधान

# धर्म प्रचार कैसे होता है ?

ले —श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज अध्यक्ष वैदिक यति मण्डल (दीनानगर)

समाचार पत्रो मे बहुत बार ऐस लेख पढने को मिलते हैं कि उपदेशक कैसा होना चाहिए। लोगो की सदा माग रही है कि उपदेशक आचार व्यवहार से बहुत पवित्र स्वाध्याय सन्ध्यादि नित्य कर्मो को करने वाला होना चाहिए और जिसके मन मे जीव मात्र के कल्याण की कामना बसी हो। धर्म एक पवित्र ज्ञान है पवित्र वस्तु का प्रदान जैसे मैले हाथो से नही किया जा सकता। ऐसे ही पवित्र ज्ञान पवित्र धम का उपदेश भी अपवित्र मन अपवित्र आत्मा से नही किया जा सकता पवित्र मन और पवित्र आत्मा मे एक विशेष बल होता है। जिससे उसकी वाणी दूसरो को प्रभावित करती है और कितने ही लोगो के जीवन बदल जाते हैं [illegible]षि ने भक्त अमीचन्द जी को इतना ही कहा था कि है तो तू हीरा किन्तु कीचड मे पडा है। यह सुनकर अमीचन्द सचमुच हीरा ही बन गया। यह था पवित्र मन आत्मा से निकली वाणी का जादू सा प्रभाव और भक्त अमीचन्द गाने लगा—

"तुम्हारी कृपा से जो आनन्द पाया
वाणी से आए वह क्योकर बताया।
गू गे की रसना के सदृश अमीचन्द,
कैसे बताए कि क्या रस उडाया।

पवित्र महात्माओ की सगति म आकर कितने ही बुरे लोग भले बन गए। इतिहास इसका साक्षी है। बौद्ध इतिहास मे अगु लीमाल डाकू का नाम प्रसिद्ध है जो बुद्ध के दशन करके उनका शिष्य बन गया मुगले डाकू ने पण्डित गणपति शर्मा का उपदेश सुनकर अपने सब दुष्कम छोड दिए। चरित्रवान ही दूसरो के चरित्र का निर्माण कर सकता है। जिसका अपना चरित्र दीपक बुझा है वह दूसरा का दीपक कैसे जलाएगा, फिल्म के नाचने गाने वाले लोगो के मन और ही बातो से भरे होते हैं। उन । मुख एक यन्त्र है मशीन है। उनके द्वारा दिया गया धर्मोपदेश श्रोताओ को प्रभावित नही कर सकता। यह एक खेल तमाशा ही बनकर रह जाता है। रामलीला को लोग सहस्रो वर्षो से देखते आ रहे हैं किन्तु राम लक्ष्मण और भरत के त्याग तथा स्नेह का अनुसरण श्रोताओ ने बिल्कुल नही किया, क्योंकि रामलीला एक खेल-तमाशा समझकर किया जाता है और उसके पात्र भी उस योग्यता के न होकर अयोग्य होते हैं। एक रामलीला दशक ने सुनाया कि रात्रि को जब रामलीला हो रही थी किसी ने अचानक पिछला पर्दा उठा दिया तो लोगो ने देखा कि जो लडका सीता बना हुआ है वह बीडी पी रहा था यह देखकर दशक हस पडे और किसीने कहा देखो यह सीता बीडी पी रही है यह सीता का कितना अपमान था इस प्रकार की अन्य भी बहुत सी अवाछनीय बात फिल्मो सिनेमो और लीलाओ मे होती है। जोकि महर्षि दयानन्द की फिल्म मे भी हो सकती है। जैसे महर्षि दयानन्द जी के विरोध मे बहुत सी बेहूदा गालियो और अपशब्दो से पूण पुस्तक लिखी गई है, इसी प्रकार इस फिल्म को देखकर महर्षि के विरोध म भी कोई फिल्म बना सकता है। जिसके द्वारा ऋषि दयानन्द के बताए सिद्धा तो का खण्डन होगा और ऋषि दयानन्द जी के नाम के साथ निन्दनीय बातो तथा कुवचनो को जोड देंगे। इस प्रकार विरोधी लोग महर्षि को बदनाम करेंगे। महर्षि की फिल्म बनान से महर्षि का यश घटेगा बढगा नही। बडो का वेष भरना महर्षि ने पाप बताया है। उसी ऋषि का वेश भरकर उस महापुरुष की बात का खण्डन किया जा रह है। यह एक दोहरा पाप है। जिसे महापाप कह सकते हैं। धम का प्रचार करते हुए ब्रह्मचारियो, गहस्थो वानप्रस्थो और सन्यासियो के कितने ही जीवन आहूत हुए हैं।

आय समाज के बडो ने गोलिया और छुरे तथा विष खा करके भी धम का प्रचार किया है। कितना मूल्यवान है वह धम जिसके प्रचार व रक्षा के लिए पूवजो के कितने ही जीवन बलिदान हुए धर्म समय 2 पर अपने प्रचारको, रक्षको और अपने श्रद्धालुओ से तप त्याग और जीवन बलिदान करने की माग करता चला आया है। जब 2 इस माग को पूरा किया गया तब तब धम की रक्षा हुई और धम फैला है। जीवन बलि की माग करने वाले धर्म का प्रचार फिल्मो और सिनेमो से नही किया जा सकता। उसका उपहास हो सकता है। मनुष्य मनुष्य के सम्पक मे आकर ही बदलते हैं किसी की काल्पनिक फोटो देखकर नही बदल सकते। सभी लोगो के घरो मे अनेक काल्पनिक चित्र टगे होते हैं। जिन का कोई विशेष परिणाम देखने मे नही आया। आर्यों क पवित्र वैदिक धर्म प्रचार के लिए फिल्म जैसे हय साधन को अपनाना उनका अपना अपमान भी है। इसका यह भी अथ होगा कि अब आय समाज के पास विद्वानो उपदेशको धर्म प्रचारको का सवथा अभाव हो गया है या आय समाज ने जिन साधनो द्वारा वैदिक धम का प्रचार किया थ। उनमे इसकी श्रद्धा नही रही। यह बड दु ख की बात है। मैंने सभाओ की सेवा मे कई बार लिखा है कि उचे स्तर का उपदेशक विद्यालय बनाया जाए और धर्म प्रचार के लिए देश देशान्तरो से उपदेशक धम प्रचार के लिए भेजे जाए। जिस पर आय सभाओ ने कोई ध्यान नही दिया। दूसरे मतो के प्रचारक पश्चिम पूव के सभी देशो मे भारत से गए हुए हैं और वहा अपने मता का प्रचार कर रहे हैं।

आय समाज का काय अपने देश मे भी सकुचित होता जा रहा है। आर्यो में जो थोडा श्रद्धा है उसे यह फिल्म समाप्त कर देगी। क्योकि फिल्म मनोरजन और धन बटोरने के लिए बनाइ जाती है इन दो मनोरजन और धन बटोरने) उद्दश्य की पूर्ति के लिए महर्षि के जीवन मे वे बातें भी डाल दी जाएगी। जिनसे उनके जीवन का महत्व और ऋषि के प्रति श्रद्धा घटेगी। महर्षि की यह फिल्म जो केवल धन कमाने के लिए बनाइ जा रही है महर्षि को फिल्म मे लाने के इस पाप और षडयन्त्र का प्रत्यक ऋषि दयानन्द के भक्त को पुरे बल म विरोध करना चाहिए।

—

# आर्यसमाज संगठन और पौरोहित्य अधिष्ठाता

सावदेशिक राष्ट्रीय प्रदेशो का आय प्रतिनिधि सभाओ मे वेद प्रचार अधिष्ठाता हुआ करता है। ठीक ऐसे ही पौरोहित्य अधिष्ठाता भी हर स्तर पर हो। सावदेशिक का पौरोहित्य अधिष्ठाता मचनाए प्रपन्न कर्ता रहे राष्ट्रीय पौरोहित्य अधिष्ठाताओ से उनका माग दशन भी करता रहे। इसी प्रकार से राष्ट्रीय पौरोहित्य अधिष्ठाता प्रदेश पौरो अधि जिला पौरोहित्य अधिष्ठाता किया करें। जिले स्तर पर जैसे पौरोहित्य अधिष्ठाता हो वाहा [illegible] प्राथमिक आय समाज मे पुरोहित हो।

सबकी त्रिविध शारीरिक आत्मिक सामाजिक। उन्नति करने की क्षमता उत्पन्न करना भी एक काय है पौरोहित्य अधिष्ठाता का। जिला पौरोहित्य अधिष्ठाता के आगे प्रखण्ड या कि नगरपालिका स्तर पर पौरोहित्य अधिष्ठाता बन सके तो बहुत अच्छा। अन्यथा तब तक जिला पौरोहित्य अधिष्ठाता प्राथमिक आय समाजो का क्षत्र 15 ग्राम पचायतो या नगर खण्ड तय कर दें। सरल योग के माध्यम से शारीरिक आत्मिक उन्नति तथा परिवार या कुटुम्ब मधुरता से सामाजिक उन्नति करने का सतत प्रयास पौरोहित्य अधिष्ठाता करें। गोष्ठी या शिविर कोई भी एक माध्यम बनाया जा सकता है इस काय के लिए।

आय समाज भवन मे जो पुरोहित सब आय सभासदो की परिवार पत्नी सन्तानें, गोष्ठी करावे ही नियमित रूप से आवश्यकतानुसार आय पत्नी, आय पुत्र या पुत्री इन की गोष्ठिया भी कराई जाव। अलग 2 तथा पूरे परिवार की सम्मिलित गोष्ठिया के अतिरिक्त पुरोहित हर सभासद के परिवार मे जाया करे। जहा सबकी सम्मिलित तथा व्यक्तिगत चर्चाओ के माध्यम मे पारिवारिक स्वास्थ्य वद्धन करें। ताकि सभासद के परिवारजनो मे परस्पर मित्रता मधुरता बढती रहे, और ये परस्पर व्यक्ति विकास करते रहें। यह काय इतना प्रभावशाली हो सकता है कि जो आय सभासद नही व भी परोहित आय को बुलाने लग।

पुरोहित हर सभासद की सन्तानो का पू । विवरण भी रखे ताकि आय पुत्र या पुत्री के विवाह सम्बधी माग दशन कर सके। काय का विवरण पुरोहित भेज, प्रखण्ड या जिला पौरोहित्य अधिष्ठाता को ऐसे ही प्रदेश राष्ट्र सावदशिक पौरोहित्य अधिष्ठाता को विवरण जाए। यदि कोइ सभा तैयार हो तो उस क्षत्र क पुरोहितो को प्रशिक्षित किया जा सकता है।

—रामस्वरूप गणश कुटीर गेन्दालाल माग अजमेर

# वे जा रहे हैं ?

ले —श्री सत्यदेव जी विद्यालकार शान्ति सदन 145-4 सेंट्रल टाऊन जालन्धर

पिछले कुछ मासो मे तीन दयानन्द के दीवाने चले गए। श्री रामचन्द्र जी जावेद चले गए, आदरणीय आचार्या लज्जावती जी चली गई, और अब ऋषि भक्त श्री हरबंसलाल मुजरिम जी चले गये।

ये वे गए जिनके जीवन मे ऋषि का कार्य ही मुख्य रूप से जीवन का मिशन था। उनका अपना कार्य भी न था।

श्री जावेद जी से अनेकों वर्ष 1947 से लेकर अनेको बार मिला। उनकी अपनी समस्याओ का अपनी घर-गृहस्थी का कभी उल्लेख ही नही हुआ इतना तक नही पता लगा उनकी कितनी सन्तान थी, बीमारी का भी थोड़ा उल्लेख हुआ सदा आर्य समाज की समस्याओ पर बात चली। आर्य समाज और आर्य संस्थाओ की समस्याओ का अन्त नही। वे न जाने प्रतिनिधि सभा से लेकर कितनी सस्थाओ से सम्बद्ध थे। सदा उनकी ही चर्चा, यही उनके जीवन का ध्येय था और संकल्प था।

श्रीमती आदरणीय आचार्या लज्जावती जी तो स्वय एक संस्था थी। उनका महाविद्यालय, उनका अपना प्रतिबिम्ब था। मुझ केवल एक वर्ष वहा काम करने का अवसर मिला। पर वह अनुभव दुर्लभ था। आचार्या जी का प्रभाव उन की सस्था मे ओत-प्रोत था। प्रति सोमवार का प्रातःकालीन राष्ट्र ध्वज का अभिवादन, प्रतिवर्ष नई आने वाली छात्राओ का स्वागत और प्रति वर्ष ही जाने वाली स्नातिकाओ का ज्योति समर्पण, सामान्य समारोहो के अतिरिक्त, वे तीन बहुत प्रभावी अनुभव थे।

आचार्या जी ने—जिन्हे बहिन जी सम्बोधन अधिक प्रिय था—यह उन्होंने मुझे टकारा भेजे एक पत्र मे लिखा था—ऋषि दयानन्द और महात्मा गांधी के आदर्शों का अपूर्व समन्वय था। पजाब केसरी लाला लाजपतराय जी की तो वे शिष्या ही थीं। आचार्या जी उन थोड़ी-सी आर्य समाज की विभूतियो मे से थीं जिनका अपने कार्य अपनी सस्था के अतिरिक्त और कोई स्वतन्त्र जीवन न था—एक पूर्णतया समर्पित जीवन।

और अब श्री हरबंसलाल जी मुजरिम चले गए, जिन्होंने अपनी भावना और आदर के फूल ऋषि चरणो मे अर्पित करना एक ध्येय बना लिया था आर्यसमाज का पंजाबी काव्य साहित्य बहुत उपेक्षित है सम्भवत काव्य साहित्य के किसी रूप मे भी आर्य समाज का अधिक महत्व नही। इस्लाम सिख धर्म तथा हिन्दू धर्म की अन्य शाखाओ मे काव्य साहित्य बहुत अधिक विकसित है।

श्री मुजरिम जी के पंजाबी गीत सामान्य जनता मे बहुत प्रिय हैं। जिस विध चाहो उस विध राखो उनका यह गीत टकारा आश्रम भजनावली मे सम्-हीन है।

जो जा रहे है या जो गये हैं। उन की आखो मे ऋषि दयानन्द के विचारो की ज्योति थी। हृदय मे गहरा आत्म विश्वास और सिद्धान्त विश्वास था। इसीलिए उनके हृदय कभी डगमगाए नही। उन्होने कभी क्या मिलता है इसका विचार नही किया, क्या दे सकते है सदा इसका ही ध्यान रखा।

इन विभूतियो से पहले जो ऋषि के दीवाने गए। उनका स्मरण कर रोमाच हो जाता है। इनमे व श्रद्धास्पद आचार्य प्रिंसिपल भी थे, जिनका ड्राईंग रूम तो होना ही न था ड्राईंग रूम मे भी एक तख्तपोश और दो लकड़ी की कुर्सियां होती थी। जो आने वालो का सत्कार भुने हुए आलुओ से करते थे। पर वे शिष्यों मे अपार श्रद्धा के पात्र थे।

जो आ रहे हैं उनकी आखो पर ऐनक है हृदय मे आर्थिक उन्नति की अपार लालसा है तथा चरण सदा उस गन्तव्य को ढूढने हैं जहा सब मुख सुविधाए हो।

सम्भवत इसमे काल का ही दोष है किसी व्यक्ति का नही। क्योकि कहा है—अर्थ कालस्य कारणम।

यदि ऋषि वेद व्यास की उक्ति को थोड़ा बदल कर कहे—

ऊर्ध्वबाहुर्विरौम्येष सर्वं एव न शृणोति माम। अर्थात् धर्मश्च कामश्च सोऽर्थ सवत सेव्यते।

वर्तमान युग के लिए यही आमद ठीक होगा।

—

# गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय करतारपुर (जालन्धर) में उत्तर भारत संस्कृत परिषद् की बैठक

जैसे कि आपको विदित है कि आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के तत्वावधान में दिनांक 20 जनवरी रविवार 1985 को एक संस्कृत सम्मेलन का आयोजन किया गया जो उत्साहजनक रहा। परन्तु हम अनुभव करते हैं कि संस्कृत के सार्वत्रिक विकास तथा उन्नति की परमावश्यकता है, इस विषय मे हम सभी संस्कृत प्रेमियों का जो संस्कृत विद्यालय चला रहे हैं अथवा अन्यत्र संस्कृत शिक्षण का कार्य कर रहे हैं, उत्तरदायित्व बढ़ जाता है।

राज्य सरकार से बातचीत तथा सरक्षण लेना तो मान्य श्री महन्त रामप्रकाशदास जी, श्री वीरेन्द्र जी श्री प मोहनलाल जी तथा अन्य महानुभाव जिनकी तदर्थ समिति बनी है, वह करेगी ही। हमारा उसमे पूर्ण सहयोग होगा। पुनरपि संस्कृत के विकास तथा उच्च स्तर पर अभिवृद्धि हेतु जब तक सगठित होकर गहन विचार विमर्श के पश्चात् कोई क्रियात्मक पग नही उठाया जाता, तब तक हमारे प्रयास पूर्ण नहीं हो पायेंगे अत इस दृष्टि मे हमने इस सभा का आयोजन श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय करतारपुर क भवन मे मध्याह्नोत्तर 2 बजे से 4 बजे तक 24 फरवरी रविवार 1985 को करने का निश्चय किया है।

विश्व हिन्दू परिषद् के प्रधान मान्य श्री महन्त रामप्रकाश दास जी ने इस सभा की अध्यक्षता करना स्वीकार कर लिया है। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी तथा सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान श्री प मोहनलाल जी भी अवश्य इस सभा मे पधारें तदर्थ सम्पर्क जारी है अन्य शिक्षण शास्त्रियों से भी इस सभा मे पधारने के लिए पत्र व्यवहार कर रहे हैं।

आप सब के साथ मिल बैठकर ही कोई क्रियात्मक पग उठाने मे हम समर्थ हो पाए गे। आपकी उपस्थिति तथा परिपक्व विचारो से हम सबको इस दिशा मे नया उत्साह तथा मार्ग दर्शन प्राप्त होगा, अत आपकी उपस्थिति इस सभा मे अत्यावश्यक है।

हम आपसे सानुरोध प्रार्थना करते हैं कि आप अपने संस्कृत प्रेमी मित्रो सहित इस सभा मे अवश्य सम्मिलित हो। हम आप सबको सादर आमन्त्रित करते हैं।

यदि आप अपना कोई विशेष सुझाव या विचार इस विषय मे पूर्व भेजना चाहे तो उपर्युक्त पते पर सहर्ष भेज सकते हैं, हम आपके सुझावो का स्वागत करेंगे।

—चतुर्भुज मित्तल सयोजक

—

# लुधियाना में सामवेद पारायण यज्ञ

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना मे साम वेद का पारायण यज्ञ श्रीमती लीलावती जी शर्मा द्वारा कराया गया। जिसका सारा व्यय यज्ञ का उन्होने अपनी ओर से किया। इस यज्ञ के ब्रह्मा प सुरेन्द्र कुमार जी शास्त्री थे जिन्होने विद्वतापूर्ण यज्ञ सम्पन्न कराया और विस्तार पूर्वक वेद मन्त्रो की व्याख्या करते रहे। श्रीमती शान्ता जी गौड भी वेद पाठ करती रही। 26-1-84 को बसन्त पंचमी का पर्व भी उत्साह पूर्वक मनाया गया जिसमे प रामनाथ जी सभा उपदेशक का सारगर्भित उपदेश हुआ अन्य बहिनो ने भी भजन गाए। शनि और रविवार आचार्य भद्रसेन जी होशियारपुर का मधुर उपदेश होता रहा रविवार 27-1-84 को प्रात यज्ञ की पूर्णाहुति डाली गई। जिसमे प्रात ही भारी सख्या में भाई और बहिनो ने हिस्सा लिया। सब ने आशीर्वाद के रूप में श्रीमती लीलावती जी की दीर्घ आयु की कामना की। अन्त मे शान्ति पाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

—माव लचन्द मन्त्री

# आर्य समाजों की सेवा में

समय समय पर आर्य शिक्षण सस्थाओ एव आर्यसमाजो की ओर से ऐसे पत्र आते हैं जिनमे सुयोग्य पुरोहित तथा धर्म शिक्षा अध्यापक की माग की जाती है। इसके साथ ही अनेक ऐसे सेवा निवृत्त आर्य विद्वानो और अध्यापको के भी इस आशय के पत्र आते रहते हैं कि सेवा निवृत्ति के उपरान्त वे आर्यसमाज की सेवा का कोई कार्य करना चाहते हैं जिससे उनके अनुभवो का लाभ समाज को मिल सके। हम दोनो प्रकार के आर्य बन्धुओ मे निवेदन करते हैं कि अपनी अपनी आवश्यकता के सम्बन्ध मे निम्न पते पर पत्र व्यवहार करने की कृपा करें—श्री प्रो रत्नसिंह, परामर्शदाता नैतिक शिक्षा डी ए वी कालेज मैनेजिंग कमेटी, चित्र गुप्त मार्ग नई दिल्ली 110055 निवेदक—रामनाथ सहगल मन्त्री, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मन्दिर मार्ग नई दिल्ली।

—

# महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी व्याख्यान माला

# दयानन्द, गांधी और मार्क्स

व्याख्याता—श्री डा प्रभाकर माचवे निदेशक भारतीय भाषा परिषद्, कलकत्ता

## महात्मा गाधी

(2 अक्तूबर 18 9 0 जनवरी 1984)

महर्षि दयानन्द और काल मार्क्स के बाद हम महात्मा गाधी की विचार धारा पर आते हैं। गाधी जी के जीवन और काय से हम सब इतने सुपरिचित हैं कि मैं उसके बारे मे और कुछ नही कहूगा। सीधे उनके विचार दर्शन की विशिष्टताओ पर आना चाहता हू। कहा जाता है कि मोहनदास गाधी जब अफीका से भारत मे आए तो एक आर्य समाज की सभा मे उन्हें महात्मा उपाधि दी गई। गुजरात मे सौराष्ट के पोरबन्दर के एक वैश्य परिवार मे उनका ज म हुआ था। जब वे हाई स्कूल में थे तब उनका एक तगडा और बहिर्मुखी मुस्लिम छात्र-बन्धु शेख ग्हताब पहला मित्र बना। पिता की मृत्यु 1887 मे हुई तब उनका विवाह उनकी उम्र से थोडी बडी कस्तूरबा से हो चुका था। एक राजचन्द्र कवि नामक जैन आशु कवि का गाधी के मन पर बडा प्रभाव पडा, जिनकी सन 1930 मे अकाल मृत्यु हो गई। गाधी जी के बचपन में और कोई बडे मित्र या ऐसी पुस्तकें जिसका उनके मन पर प्रभाव पडा हो उल्लेख नही मिलता। हां, 'सत्य हरिश्च द्र नाटक उन्होने जरूर लिखा। उनकी मा और उनकी पत्नी कस्तूरबा यही दो बड प्रभाव इ ग्लैंड जाने से पहले के मिलते हैं।

1888 मे गाधी साउद पटन, इग्लैंड मे वकील बनने के लिए, पानी के जहाज से गये। अग्रेजी भाषा उन्हे बहुत कठिन जान पडती थी। घर वाले भी बिलायत मे जाकर छोरा बिगड जाएगा इसी मत के थे। इग्लैंड मे उनका तीन वर्ष का निवास कई दृष्टियो से बहुत अर्थ पूर्ण था। यही उन्होने बाईबिल पढी। गीता का एडविन आरनाल्ड का अग्रेजी अनुवाद पढा। उनकी आत्म कथा मे वणन है कि उस समय के अग्रेजी परस्त भारतीय छात्रो की तरह उन्होने अपनी जीवन-पद्धति ढालने की कितनी कोशिश की—विलायती नाच सीखा फेंच सीखने की कोशिश की। पर सबसे विरक्ति होती गई। शाकाहारी सभा के मेम्बर बने सबसे अधिक प्रभाव रस्किन की अट्र दि लास्ट का पडा। भारतीय नताओ के इग्लैंड निवास और उस काय काल मे अग्रेजी सभ्यता के स्पश मे आन पर होने वाला मन का द्वन्द्व और अधिकाश विरक्ति के अनेक उदाहरण है। दयानन्द को छोडकर प्राय सभी भारतीय नताओ ने उन्नीसवी बीसवी सदी के नवजागरण काल मे विलायत की यात्रा की। तिलक गोखले, रवीन्द्रनाथ ठाकर अरवि द राजा राम मोहनराय केशवचन्द्र सेन विवेकानन्द, सावरकर एम एन राय राधाकृष्णन कृष्णमूर्ति इकबाल, कुमार स्वामी नेहरू किसी का भी नाम ल—उन पर विलायत का, या पश्चिम का अनुकूल, प्रतिकूल और अनुकल प्रतिकूल प्रभाव पडा है। यदि गाधी इग्लैंड न जाते और मैक्समूलर की पुस्तक 'हिन्दू धम से हमे क्या सीखना है? न पढते तो हिन्द स्वराज्य कैसे लिखते। रस्किन की पुस्तक का अनुवाद सर्वोदय कैसे करते। टालस्टाय से पत्र व्यवहार और थारो की पैसिव रेजिस्टेंट से प्रभावित नया सत्याग्रह का माग कैसे खोज निकालते।

गाधी जी के बारे मे और एक महत्वपूण बात हमे भूलनी नही चाहिए। वे बचपन से मुस्लिम सस्कृति के सम्पक मे आए। अप्रैल 1893 को वे दक्षिण अफीका मे डरबन मे एक मुस्लिम व्यापारी फम के वकील बनकर गए। वहा 1914 की जुलाई तक वे रहे। सेठ अब्दुल्ला के विरोधियो से गाधी जी ने समझौते के झगड निपटाने का माग सुझाया। दक्षिण अफीका मे काले गोरो का जातीय (एथनिक) विरोध—अहिनकुलवत विरोध—वे प्रत्यक्षदर्शी बनकर देख सके। तामिल कचुआ मजदूरों की हालत उन्होने देखी और शारीरिक दमन के वे शिकार बने। एक ओर जैन और ईसाई सस्कारो वाली अहिंसा दूसरी ओर ईसा यत और सभ्यता का नाम लेने वाली गोरी सरकार के साम्राज्यवादी और उपनिवेशवादी शोषण के पजे। मुह मे राम नाम बगल म छुरी। कई आतकवादी तो पश्चिम मे जाकर और अधिक विप्लवी हो गए। गाधी जी ने दूसरा और अधिक कठिन माग अपनाया। अफीका मे काले लोग रेल मे घोडा गाडी मे गोरो के साथ बैठ नही सकते थे। गाधी ने सोचा भारत मे हम अछूतो और दलितो के साथ कैसा व्यवहार करते हैं? क्या वह मानवीय है? जोहानस बग जात 'स्टेज कोच मे और टेन मे उन्हे अपमानित होना पडा। गाधी को गोखले और दादा भाई नौरोजी का आशीर्वाद मिला। आरम्भ से ही गाधी अनेक भाषा भाषियो अनेक प्रदेशो अनेक धम पन्थो के लोगो के सम्पक मे आए। काश ऐसा समन्वय और नेताओ के जीवन मे आता।

गाधी साप्ताहिक 'इण्डियन ओपीनियन पत्र निकालने लगे। पादरी हेनरी पोलक ने उन्हे रस्किन का अट्र दि लास्ट पढने को दिया। बोअर युद्ध मे 1899 से 1902 तक गाधी ने धम युद्ध के अनुसार अपना दक्षिण अफ्रीकी सत्याग्रह स्थगित किया। उन्होने एम्बुलेंस कोर में सहायता दी। जुलू विद्रोह (1906 से 1907) मे वालटियर बने। गाधी के जीवन मे चार बार ऐसा आशिक हिंसा का समर्थन मिलता है जबकि वे कट्टर अहिंसा के पुजारी थे। अहिंसा को ही ईश्वर मानते थे। एक तो बोअर युद्ध के समय दूसरी बार उन्होने सेना का समथन कश्मीर पर हमलावरो के आक्रमण के समय किया। उससे पहले बछड को साबरमती आश्रम मे गोली मार कर 'मर्सी किलिंग का उन्होने समथन किया और एपेंडिसाइटिस के आपरेशन मे शरीर पर शल्य क्रिया उन्होने होने दी यद्यपि वे चेचक का टीका लेने के विरुद्ध थे।

1915 मे गाधी भारत लौटे। शान्ति निकेतन मे गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर के वे और सी एफ एण्ड्रयूज अतिथि बने। बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी मे उन्होने महाराजाओ के गहने कपडो का मजाक उडाते हुए एक तीव भाषण दिया। राज कुमार शुक्ल नामक किसान ने गाधी को चम्पारण के निलहे मजदूरो की दुर्दशा देखने के लिए आग्रह किया। यही से 'सत्याग्रह की शुरूआत भारत मे हुई। पहले सत्याग्रह आन्दोलन की विशेषताए थी—पहले किसी भी अन्याय की पूरी जाच करना, किसानो के बच्चो के लिए स्कूल खोलना जो अन्याय कर रहे थे उन लोगो को भी कानून से सजा दिलवाना यानी दण्ड देने का अधिकार अपने हाथ मे न लेना। 1918 मे गाधी ने अहमदाबाद के तत् मिल मजदूरो के मामले मे मालिक और श्रमिको मे पच फैसले वाली बात समझौते से सुलह कराने की बात शुरू की। एरिकएरिकसन गाधीजी के पिता की मृत्यु का प्रसग और अहमदाबाद की हडताल को अपने गाधीज ट्रुथ मे बडा मनोवैज्ञानिक महत्व देते हैं। 1919 से गाधी राजनैतिक प्रश्नो मे पूरी तरह जुड गए। परन्तु रचनात्मक कायक्रम भी साथ साथ चलता रहा।

आचार जीवन का आचार वाली गाधी रवीन्द्र की इस उक्ति को अपने आटोग्राफ की तरह देते थे। उनका जीवन ही उनका पुस्तक थी। साबरमती और सेवाग्राम के आश्रमो मे गाधी जी ने ग्यारह व्रतो को अपने जीवन मे अपनाया और अपने अनुयायियो को भी उन्हे अपनाने को कहा—

> अहिंसा सत्य, अस्तेय ब्रह्मचय असग्रह शरीर श्रम अस्वाद, सवत्र भयवजन
> सवधर्मी, समानत्व स्वदेशी, स्पश भावना ही एकादश सेवावी नम्रत्वे दृढनिश्चये।

विनोबा भावे ने ... छन्द मे बाधे हैं। य अनुष्टुप आश्रम की सवेरे शाम की प्राथना के ... गाधी जी विचारो को बराबर विकासमान रखने गए। अपन आपको बदलते रहे। ... इग्लैंड मे थ्री पीस सूट पहनते ... युद्ध के समय सैनिक ... स्वय सेवक के नाते फिर दक्षिण अफीका मे कोट और पतलून फिर भारत मे ... अगरखा धोती, टोपी कुर्ता अन्त मे धोती और एक उत्तरीय (जाडे मे शाल) एक एक करके वे अपनी आवश्यकताए कम करते गए। अन्त मे भी नमक सत्याग्रह के समय नमक छोड दिया तो छोड ही दिया। बगाल मे फका पद्धति देखकर गाय का दूध छोड दिया तो बाद मे बकरी का दूध लेने लगे। गाधी का भोजन मे भी ... चावल ... प्रयोग चलता रहा। ममाले उन्होने छोड दिए। आजीवन उन्होने कोई सिगरेट नही खाई चाय काफी नही पी और व्यसन तो दूर की बात है। एक सादा झोपडी मे अपने हाथो से अपने वस्त्रो के लिए सूत कातते। और इतना बडा काय किया। उन्होने भारतीय किसानो के साथ अपने को एकाकार कर लिया।

(क्रमश)

## वेद प्रचार मण्डल लुधियाना की स्थापना

वैदिक सस्कृति के प्र मियो की एक बैठक 24 1 85 को हुई जिसम वेद प्रचार भारतीयता तथा राष्ट्रीय एकता पर विचार विमश किया गया। वेद प्रचार और युवा पीढी के चरित्र निर्माण एव उनमे राष्टीयता की भावना को जगाने के लिए वेद प्रचार मण्डल लुधियाना की स्थापना की गई। श्री रोशन लाल शर्मा को सवसम्मति से मण्डल का अध्यक्ष चना गया तथा उन्हे यह अधिकार दिए गए कि वह मण्डल की कायकारिणी का गठन करें तथा इसकी रूप रेखा तैयार करें।

यह भी निणय लिया गया कि शिव रात्रि के महा पव के अवसर पर एक आकषक टैक्ट छपवाया जाए या पत्रिका के माध्यम से राष्टीयता एव भारतीय सस्कृति का प्रचार किया जाए। इसके अतिरिक्त एक भजन मण्डली का प्रबन्ध भी किया जाएगा जो वेद प्रचार का काय करेगी।

श्री रोशनलाल शर्मा ने कहा कि राष्ट की एकता एव अखण्डता के लिए आवश्यक है कि लोगो मे साम्प्रदायिकता जातिवाद, भाषावाद व क्षत्रीय निष्ठा को समाप्त करके भारतीयता की भावना भरा जाए। उन्होने कहा कि मण्डल ऐसे भारत का निर्माण करने का प्रयत्न करेगा जहा अनेकता मे एकता की विशेषता का सही रूप दिया जा सके।

—

## आर्य साहित्यकारो की सेवा मे

डा सत्यकेतु जी विद्यालकार के तत्वावधान मे प्रकाशित होने वाले 7 खण्डो के आय समाज के इतिहास के चौथे खण्ड का लखन काय मेरे द्वारा किया जा रहा है। मुझ आय समाज के साहित्य एव साहित्यकारो का इतिहास लिखना है। अत आय समाज के सभी लेखको कवियो तथा साहित्यकार बन्धुओ से निवेदन है कि वे अपनी यथोपलब्ध रचनाए मुझ भेज द। यदि यह सम्भवत न हो तो अपना जीवनवत्त व साहित्यिक कृतियो का परिचय लिखकर निम्न पते पर भेज द।

डा भवानीलाल भारतीय कोठी न 3 जी सैक्टर 14 चण्डीगढ 160014

## महर्षि दयानन्द निः-शुल्क सिलाई स्कूल बंगा में खोला गया

आपको यह जानकर बडी खुशी होगी कि आय समाज बगा की ओर से आय समाज मन्दिर बगा में लडकियो को सिलाई सिखाने के लिए एक स्कूल खोला गया है। सिलाई सिखाने की कोई फीस नही ली जाएगी। सिलाई सिखाने वाली योग्य अध्यापिका तथा सिलाई मशीनो का अच्छा प्रबन्ध किया गया है। स्कूल का समय प्रात 10 वजे से साय 2 बजे तक है। सिलाई सीखने की इच्छुक लडकिया स्कूल म पहुच कर दाखला प्राप्त कर।

पिछले काफी समय से आय समाज बगा निधन विद्यार्थियो को वजीफ देता आ रहा है। वजीफ के चाहवान विद्यार्थी किसी भी रविवार प्रात 9 बजे मन्दिर पहुचकर प्रार्थना पत्र देकर लाभ उठा सकते हैं।

हम आशा करते हैं कि इलाके के सभी सज्जन हमेशा की तरह हमारा उत्साह बढाते रहेगे।

—शादीलाल मन्त्री

## आवश्यक सूचना

सब आर्य सज्जनों को सूचित किया जाता है कि आर्य समाज के इतिहास मे जितने भी शास्त्राथ किसी भी सम्प्रदाय मे हुए हो उनका सग्रह पूज्य अमर स्वामी जी महाराज द्वारा प्रकाशित किया जा रहा है।

अत किसी भी सज्जन के पास शास्त्राथ विषयक सामग्री किसी भी रूप मे हो वह निम्न पते पर 25 फरवरी तक शीघ्र ही भिजवाने की कृपा कर।

सहयोगियो का उल्लेख करते हुए नए ग्रन्थ मे उनका आभार प्रकट किया जाएगा।

आशा है आर्यजन अधिक से अधिक सामग्री भेजकर सहयोग देंगे। जिससे भावी पीढी अधिक से अधिक लाभ उठा सकेगी।

(यह ग्रन्थ छपने से पूर्व बुक करने पर आधे मूल्य मे दिया जाएगा)।

पता

शास्त्रार्थ सग्रह कार्यालय 1058,

विवेकानन्द नगर

गाजियाबाद उ, प्र)



श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रेस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के लिए प्रकाशित हुआ

साप्ताहिक आर्य मर्यादा जालन्धर

# दिवंगतात्माओं के श्रद्धापुष्प
# दिवंगत आचार्य के चरणों में

इस विशेषांक की एक विशेषता यह है कि इसमें अधिकतर आर्य समाज के दिवंगत महापुरुषों के लेख दिए गए हैं जो उन्होंने अपने जीवन काल में आर्य समाज और महर्षि दयानन्द के विषय में लिखे थे ! इन लेखों को पढ़कर महर्षि के प्रति इन दिवंगत आत्माओं की कुछ भावनाओं का अनुमान लग सकेगा।

आशा है पाठक गण हमारे इस प्रयास से लाभान्वित होकर आर्य समाज के अतीत का कुछ अनुमान लगा सकेंगे। यह पहला प्रयास है जिसके द्वारा आर्य समाज के उज्ज्वल अतीत को पुनर्जीवित करने का प्रयत्न किया गया।

— सम्पादक

इस अंक का मूल्य : 3 00 रुपये लागतमात्र

# जो जागत है सो पावत है जो सोवत है सो खोवत है

यह है शिवरात्रि का सन्देश, इतिहास साक्षी है कि मनुष्य के जीवन मे कई ऐसी घटनाए हो जाती हैं जिनकी तरफ उसका ध्यान नहीं जाता। जिनका चला जाता है और जो उस पर गम्भीरता पूर्वक विचार करते हैं, वह उसी में से कोई ऐसी शिक्षा प्राप्त कर लेते हैं जो आगे चलकर उनके लिए एक प्रकाश स्तम्भ का काम करती है। हम यह भी देखते हैं कि "जोत से जोत जगे" एक अकेला दीपक कई दूसरे दीपकों को जला देता है। पहले दीपक को जलाने केलिए दियासलाई की आवश्यकता जरूर पड़ती है और दियासलाई भी एक सघर्ष के बाद ही जलती है। केवल डिब्बी से निकाल लेने से वह नही जल जाती। उस मसाले के साथ रगड़ना पड़ता है जो उस डिब्बी के साथ लगा होता है। जब वह जल जाती है तो एक दीपक को भी जला देती है। वही दीपक फिर और सैकड़ों दीपकों को जला देता है और वह सब मिल कर अन्धकार में प्रकाश कर देते हैं।

यही कुछ उस शिवरात्रि की रात को हुआ था जब बालक मूलशंकर शिव की पूजा के लिए मन्दिर में गया था। वहां जो कुछ उसने देखा उसने उसकी आंखें खोल दी। जाग तो वह पहले ही रहा था। जागता न तो उस चूहे को न देख सकता जो शिव की मूर्ति पर चढ़ कर वहां भेंट की गई मिठाई को खा रहा था। बहुत देर तक मूलशंकर यह सब कुछ देखता रहा कि उसकी आन्तरिक आंखें खुली और उसने सोचा यदि यही शिव है तो क्या इसमें इतनी शक्ति भी नहीं कि इस चूहे को हटा सकें और फिर उसके अन्दर से ही यह आवाज आई, नहीं? यह वह शिव नहीं है जिसकी तुम पूजा कर रहे हो। यह एक बनावटी पत्थर की मूर्ति है। इसकी पूजा करके तुम्हें कुछ न मिलेगा कुछ प्राप्त करना चाहते हो तो असली शिव की पूजा करो। जब मूलशंकर के मन में यह विचार उठा तो साथ ही यह प्रश्न भी उठ गया कि वह असली शिव है कहां? इस प्रश्न ने मूलशंकर के मन मस्तिष्क में एक हलचल पैदा कर दी और वह असली शिव को ढूंढने के लिए निकल पड़े और उसी संघर्ष में वह मूलशंकर से दयानन्द बन गए।

मैंने ऊपर लिखा है कि दियासलाई भी उसी समय जलती है जब पहले वह कुछ संघर्ष करती है। वह एक दियासलाई कई दीपक जला देती है। इसी प्रकार मूलशंकर ने कुछ सघर्ष किया सच्चे शिव की तलाश में जगह-जगह भटकता फिरा और कुछ संघर्ष पश्चात् एक दीपक बन कर दयानन्द के रूप में हमारे सामने आया। यह वही दयानन्द महर्षि दयानन्द बन गए और फिर उन्होंने न जाने कितने दीपक जलाए होंगे आज हमारे देश में जो नव जागरण का युग प्रारम्भ हो चुका है। उसका सारा श्रेय महर्षि दयानन्द सरस्वती को ही जाता है जो कुछ वह आज से एक सौ वर्ष पहले कहते रहे हैं वही आज हमारे देश ने अपना लिया है। समाज

सुधार का जो बीड़ा महर्षि ने उठाया था वह बहुत कुछ पूरा हो गया है। स्वराज्य का नाद सब से पहले उन्होंने ही बजाया था। इसलिए पिछले एक सौ वर्षों का इतिहास एक प्रकार से महर्षि दयानन्द जी की गतिविधियों का इतिहास है हम आर्य समाजी उसके महत्त्व को नहीं समझते इसलिए उसका वह श्रेय महर्षि दयानन्द को नहीं देते जो उन्हें मिलना चाहिए। यह ठीक है कि महात्मा गान्धी जी तथा दूसरे राजनैतिक नेताओं ने देश की आजादी के लिए बहुत संघर्ष किया था, उन्हें भी इसका श्रेय मिलना चाहिए। क्योंकि उनमें से कईयों ने इसके लिए बहुत त्याग किया था परन्तु इतिहास को झुठलाया नहीं जा सकता और वह कह रहा है स्वराज्य का मार्ग दर्शन महर्षि दयानन्द जी ने ही किया था। दूसरे लोग तो उस मार्ग पर चलते हुए अपने निश्चित लक्ष्य तक पहुंच गए। आज कोई नहीं कहता कि महिलाओं को शिक्षा मिलनी चाहिए या नहीं। कोई नहीं कहता कि बाल विवाह उचित है या नहीं, कोई नहीं पूछता कि हिन्दी को देश की राष्ट्र भाषा क्यों बनाया गया। कोई नहीं कहता गो हत्या बन्द नहीं होनी चाहिए। आज हम बहुत कुछ कह सकते हैं। परन्तु सबसे पहले कहने वाले तो महर्षि दयानन्द ही थे आज सारा देश उन का अनुयायी है।

यह स्थिति कैसे पैदा हुई इसका उत्तर इस लेख के शीर्षक से हमें मिल जाता है। "जो जागत है सो पावत है।" महर्षि दयानन्द शिवरात्रि की रात को जागते रहे और उन्होंने बहुत कुछ प्राप्त कर लिया। वही उन्होंने आगे अपने देश वासियों को और उनके द्वारा संसार को दे दिया। जो परिस्थितयां आज देश में पैदा हो रही हैं उनकी भी यही मांग है हम जागते रहें क्योंकि :

जो जागत है सो पावत है।
जो सोवत है सो खोवत है।

वीरेन्द्र

# बोध के प्रति ऋषि का स्व कथन

मैं इस भय से न सोया कि मेरा उपवास निष्फल न हो जाए इसमे यह चमत्कार हुआ कि मन्दिर मे बिल से चूहे बाहर निकले और महादेव की पिण्डी के चारो तरफ फिरने लगे। पिण्डी पर जो चावल चढ़ाये हुए थे उन्हे ऊपर चढ कर खाने भी लगे। मैं जागता था इसलिए यह सब कौतुक देख रहा था। इससे एक दिन पहले शिवरात्रि की कथा मैं सुन ही चुका था उसमे शिव के भयानक गणो उसके

शिव पिण्डी के समक्ष मूलशकर

पाशुपत अस्त्र बैल की सवारी और उसके आश्चर्यमय सामर्थ्य के विषय मे बहुत सुन चुका था। इसलिए चूहों के इस खेल को देखकर मेरी लडकपन बुद्धि आश्चर्य मे पड गई और मैंने सोचा कि जो शिव अपने पाशुपत अस्त्र से बड बड द यो को मारता है क्या वह ऐसे तच्छ चूहो को भी अपने ऊपर से नही हटा सकता। इस प्रकार की बहुत सी शकाए मेरे मन मे उठने लगी। मैंने पिता जी को जगाकर पूछा कि यह महादेव इस छोट से चहे को नहीं हटा देते। पिता ने कहा कि तेरी बुद्धि बडी भ्रष्ट है यह तो केवल देवता की मूर्ति है। तब मैंने निश्चय किया कि जब मैं इसी त्रिशूलधारी शिव को प्रत्यक्ष देखूगा तब ही पूजा करूगा ऐसा निश्चय करके मैं घर को गया।

# अगर आज ऋषि आएं

## लेखक—स्व० श्री महाशय कृष्ण जी सचालक प्रताप जालन्धर

अगर आज ऋषि दयानन्द आए और मुझसे पूछें कि जो अमानत हम तुम्हे सौप गए थे, उसका तुमने क्या बनाया, हमने आर्य समाज का पौधा लगाया था, तुमने उसे पानी से सीचा या खून से या इसकी जडो मे रेत डाली, तो मैं क्या जवाब दू ? दर हकीकत यह सवाल मेरे लिए नही, बल्कि एक-एक आय के लिए है और आज जब कि हम ऋषि बोधोत्सव मना रहे हैं हमे अपने दिल से इस सवाल का जवाब लेना चाहिए। जवाब के दो पहलू हैं। एक उत्साह वर्द्धक और दूसरा उत्साह भग करने वाला। एक आशा जनक और दूसरा निराशा जनक। जहा तक ऋषि के सिद्धातो का सम्बन्ध है, ससार उनके सामने सिर झुका रहा है और वह फैल रहे हैं। हाल ही मे इत्तिला आई है कि दुनिया के एक बहुत बडे साईंसदान का देहान्त हो गया है। मरने से पहले वह वसीयत कर गए कि उन्हे दफन न किया जाए। बल्कि उनका दाहकर्म सस्कार किया जाए। चुनाचि ऐसा ही किया गया। उसी साईंसदान पर ही क्या मौकूफ है, तकरीबन हरेक साईंसदान की यही ख्वाहिश होती है कि उसे दफन न किया जाए बल्कि जलाया जाए। इन्ही दिनो एक और मशहूर आदमी का मजमून विलायत के अखबारात मे प्रकाशित हुआ है कि जिसमे उन्होने लाश के जलाने की तरीक को साइटीफिक करार दिया है और साथ ही यह भी लिखा है कि मुर्दों को दफन करने मे इस कदर जमीन तलफ होती है कि कोई जाति इस इतलाफ को बरदाश्त नही कर सकती। यह तो एक बात हुई मैं तो जिस भी क्षेत्र की तरफ नजर उठाता हू, ऋषि की विजय पताका लहराते हुए देखता हू। ऋषि ने अग्रेजी तरीका तालीम के खिलाफ आवाज उठाई। प्राचीन शिक्षा प्रणाली का आदर्श हमारे सामने रखा। आज हम क्या देखते हैं। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के बुनियादी असूल मौजूदा तरीका तालीम मे प्रवेश कर रहे हैं और मुल्क भर मे अमली तौर पर यही तरीका तालीम राइज हो रहा है यह दुरुस्त है कि प्राचीन शिक्षा प्रणाली के आदर्श तक पहुचने के लिए अभी बहुत बढने की जरुरत है। लेकिन यह बुनियादी असूल के बच्चे अपने माता पिता के नही बल्कि कौम की अमानत है अमली तौर पर तसलीम कर लिया गया है और यद्यपि प्राचीन शिक्षा प्रणाली की तरह इस वक्त बच्चे कतई तौर पर अपने आचार्य के हवाले नही कर दिए जाते तो भी राज्य पहले से ज्यादा उनकी उन्नति मे दिलचस्पी ले रहा है। गुरुकुलों मे राजा और रक एक ही सलूक के मुस्तहिक समझे जाते थे। गरीब और अमीर मे कोई भेद न था। जो कुछ अमीर के लडके को मिलता था वही गरीब के लडके को। इसलिए गुरुकुलो मे शिक्षा ग्रहण करते हुए निर्धन लडका किसी तरह खसारे (घाटा) मे न रहता था। आज यह नही। जिसका नतीजा यह है कि कौम का बडा हिस्सा दुनिया की जद्दोजहद के लिए तैयार नही हो रहा। गरीबो के बच्चे सेहत के लिहाज से कमजोर हैं। लालन पालन के लिए उन्हें पूरी खुराक नही मिलती उनके जिस्म लागिर होते हैं उनकी बीनाई कमजोर होती है जिससे न सिर्फ यह कि वह अपने भविष्य को उज्ज्वल नही बना सकते बल्कि जाति की सेवा मे वह भाग नही ले सकते जिसकी उनसे आशा

की जाती है। इससे न सिर्फ वह खसारा में रहते हैं, न सिर्फ उनके माता पिता खसारा में रहते हैं, बल्कि सारी की सारी जाति घाटे में रहती है माता पिता को दोष नहीं दे सकते क्योंकि उनके पास देने को कुछ नहीं। लेकिन जाति को कैसे क्षमा किया जा सकता है। गवर्नमेंट अपनी जिमेदारी को महसूस करने लगी है। चुनाचि जब से लार्ड लिनलिथगो हिन्दुस्तान के वायसराय होकर आए हैं। इस बात की तरफ खास ध्यान दिया जा रहा है कि बच्चों को ज्यादा दूध पिलाया जाए और चूंकि कई बच्चे खुद दूध पीने की हैसियत नहीं रखते, इसलिए म्यूनिसपल कमेटिया उनके लिए मुफ्त दूध मंजूर कर रही है इस दृष्टिकोण के परिवर्तन की तह में भी यही असूल काम कर रहा है कि बच्चे कौम के हैं। सिर्फ माता पिता के नही। देखा जाए तो प्राचीन प्रणाली के अनुसार अमली तौर पर सिर्फ छः या सात साल तक बच्चे अपने माता पिता के पास रहते थे। छैः सात बरस के होते ही राजा उनका चार्ज ले लेता था। तालीम न सिर्फ लाजमी थी बल्कि मुफ्त थी। न सिर्फ प्राइमरी बल्कि सारी की सारी। यूनीवर्सिटी तक की तालीम का खर्च सरकार अदा करती थी। इसलिए हरेक बच्चे को लाज़मी तौर पर गुरुकुल में जाना पड़ता और 25 वर्ष तक वहा रहना पड़ता था। गुरुकुल से वापस आकर लड़के पच्चीस वर्ष और लडकियां सोलह वर्ष की आयु में गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करती थी। हिदायत यह थी कि जिस वक्त लड़के के लड़का हो जाए, गृहस्थी वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश करे। इसके बाद उसका परिवार विस्तृत हो जाता है। सिर्फ उसके अपने बच्चे ही उसके बच्चे नहीं रहते बल्कि सारी जाति के बच्चे उसके बच्चे हो जाते हैं। वह सिर्फ अपने परिवार के लिए नहीं रहता बल्कि सारी जाति के लिए हो जाता है। इस तरह जहां तक बच्चो के लालनपालन का सवाल है, जहां तक बच्चों से प्रेम करने का ताल्लुक है, उसकी अवधि सिर्फ छैः सात साल है। यह क्यों? सिर्फ इसलिए कि बच्चे जाति के बच्चे हैं। किसी एक परिवार के नहीं। वह राष्ट्र के बच्चे हैं और राष्ट्र की सेवा के लिए उन्हें तैयार करना चाहिए। अगर इस असूल पर अमल नहीं किया जाता तो हमारा राष्ट्र दूसरे राष्ट्रों का मुकाबिला नहीं कर सकता। इस समय भी हम दूसरे राष्ट्रों से पीछे है तो इसीलिए कि हमने इस वक्त तक यह गुर नहीं सीखा कि हमारे बच्चे हमारे नहीं बल्कि राष्ट्र के बच्चे हैं।

कहां तक लिखूं जैसा कि मैंने कहा है मुझे तो जिन्दगी के हरेक विभाग में ऋषि के सिद्धान्तों की विजय नजर आती है। लेकिन क्या इस विजय का श्रेय हमें है? इसका जवाब हां में देते झिझक होती है। इसमें एक नहीं कि इब्तदाईअय्याम (प्रारम्भिक काल) में आर्य समाजिस्ट पुरुषों ने अपने फर्ज को निहायत खुशअस्लूबी से सरअंजाम दिया। मुखालफत के बावजूद उन्होने तरक्की की तरफ कदम बढ़ाया। मैदान के बाद मैदान सर किए और दुश्मनों तक से खिराजेतहसीन वसूल किया। लेकिन आज वह हालत नही। किसी वक्त एण्ड्रयूज जैक्सन डेविस ने कहा था कि "मैं हिन्दुस्तान मे एक आग रौशन देखता हूं। वह देश के चारों कोनों मे फैल रही है और मत मतान्तरों को खशोखाशाक (घासफूस) की तरह जला रही है। यह ऋषि के जीवन काल की बात है। क्या हम कह सकते है कि एण्ड्रयूज जैक्सन डेविस ने जो कुछ कहा था, वह अब भी दुरुस्त है? "रामचन्द्र का दर्शन" के शीर्षक में एक नजूम किताब बहुत अर्सा हुआ, शाया (प्रकाशित) हुई थी। एक लम्बे अर्से तक वह हिन्दुस्तान के लिए कौमी तराने की हैसियत अख्तियार किए रही। इसके अशियार (चौपाइया) एक एक हिन्दु बच्चे की जुबान पर थे। कोई पूछता है कि "अगर आज राम आएं" तो उनकी हालत क्या हो और खुद ही इसका जवाब देता है कि तुम उन्हें पुर अश्क (सजल-नेत्र) पाओगे। क्यों? इसलिए कि जिस-जिस चीज के लिए प्राचीन भारत रश्के बिना (स्पर्धा योग्य) समझा जाता था वह आज सबकी सब मफ़कूद (दृष्टि ओझल) हैं। उस समय भारत स्वतन्त्र था। आज वह प्रतन्त्र है। उस समय

(शेष पृष्ट 7 पर पढ़े)

# आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के वर्तमान अधिकारी तथा अन्तरंग सदस्य

## पदाधिकारी :—

1 श्री वीरेन्द्र जी सञ्चालक प्रताप व वीर प्रताप, नेहरू गार्डन रोड, जालन्धर-सभा प्रधान ।
2. श्री योगेन्द्र पाल मन्त्री आर्यसमाज अड्डा होशियारपुर, जालन्धर—सभा उपप्रधान ।
3 श्री पं० हरवंस लाल जी शर्मा, 406-एल माडल टाऊन, जालन्धर—सभा उपप्रधान ।
4 प० जगदीश राज जी प्रधान आर्यसमाज शक्ति नगर, अमृतसर—सभा उपप्रधान ।
5. श्री डा० के०के० पसरीचा, आदर्श नगर, जालन्धर—सभा उपप्रधान ।
6. श्रीमती कमला आर्या जी 350 गली सती सूदां, लुधियाना—सभा महामन्त्री ।
7 श्री आशानन्द जी आर्य 49।63 हरपाल नगर, लुधियाना—सभा मन्त्री ।
8. श्री सरदारी लाल जी आर्य रत्न आजाद सरजीकल वर्कस, भार्गव नगर, जालन्धर नगर सभा मन्त्री ।
9 श्री प्रो० स्वतन्त्र कुमार जी गाड़ी अहाता, पठानकोट—सभा मन्त्री ।
10 श्री प० अश्विनी कुमार शर्मा जी एडवोकेट, 1-कूल रोड, समीप रेडियो स्टेशन —सभा मन्त्री ।
11. श्री चौ० ऋषिपाल सिंह जी एडवोकेट, 2 अकुश, चौक नई कचहरी, जालन्धर —अधिष्ठाता वेद प्रचार ।
12 श्री यशपाल भाटिया, हैडमास्टर गान्धी आर्य हाई स्कूल, बरनाला (संगरूर)—अधिष्ठाता आर्य वीर दल ।
13. श्री प्रिंसीपल धर्म प्रकाश दत्त आदर्श बाल विद्या मन्दिर, नवां शहर दोआबा
—रजिस्ट्रार आर्य विद्या परिषद पंजाब
14. श्री ब्रह्मदत्त जी शर्मा 232-एफ, रेलवे कालोनी, जालन्धर सभा कोषाध्यक्ष ।
15. श्री पुष्पा महाजन रिटा० प्रिंसीपल जेलरोड, गुरदासपुर—अधिष्ठाता साहित्य विभाग ।

## अन्तरंग सदस्य :—

16 श्रीमती पं० देवेन्द्र कुमार जी, श्रीराम देवेन्द्र कुमार, अनाज मण्डी पुरानी, नवांशहर दोआबा ।
17 श्री अमृतलाल जी बजाज एडवोकेट ई-जे-933, मोहल्ला गोबिन्दगढ़, जालन्धर शहर ।
18 श्री रामलुभाया नन्दा जी, नन्दा जनरल स्टोर, मेन बाजार बस्ती गुजां, जालन्धर ।
19. श्री मास्टर हरिराम चोपड़ा लकड़ी का टाल, चौक नाई वाला, फगवाड़ा (पंजाब) ।
20. श्री कर्मचन्द जी शास्त्री आर्यसमाज मडा, जालन्धर ।
21. श्री वैद्य वेणीप्रसाद जी शास्त्री 650 मलेरकोटला हाऊस, लुधियाना ।
22. श्री महेन्द्रपाल वर्मा जी, थार्क होजरी सिविल लाइन्ज, लुधियाना ।
23 श्री वेदप्रकाश जी सरीन, मोहल्ला लालियां, नवां शहर दोआबा (जालन्धर) ।
24. श्री चौ० रूपचन्द जी एडवोकेट, कोठी न० 4 सैक्टर 9-ए, चण्डीगढ़ ।
25. श्री डा० सत्यभूषण वांधिया, पिण्डी स्ट्रीट, लुधियाना-8 ।
26. श्रीमती शान्ता नन्दा जी वानप्रस्थ कोल डिपो, रैस्ट हाऊस रोड गुरदासपुर ।
2 . डा० रामस्वरूप जी कैमिस्ट, पिण्डी स्ट्रीट, लुधियाना ।
28. श्रीमती शान्ता मोड़, स्त्री आर्यसमाज दयानन्द बाजार लुधियाना ।

## जिला प्रतिनिधि :—

1. श्री रामरखामल जी, आर्यसमाज शक्ति नगर, अमृतसर।
2. श्री रामचन्द्र जी आर्य, हिन्द क्लाथ मरचेण्ट मेन बाजार फिरोजपुर छावनी।
3. श्री कृष्ण कुमार जी, इन्द्र सिंह हजारा सिंह टी-मरचेण्ट भटिण्डा (भटिण्डा)।
4. श्रीमती इन्दु पुरी जी, मै० देवीदास गोपाल कृष्ण गांधी रोड, मोगा (फरीदकोट)।
5. श्री ओम प्रकाश जी इन्दु, हिन्द फार्मेसी गोशाला रोड, फगवाड़ा।
6. श्री विजय कुमार जी, मै० राज कुमार होल सेल क्लाथ मरचेण्ट, मेन बाजार अहमदगढ़ (संगरूर)।
7. श्री मनोहर लाल जी आर्यसमाज वेद मन्दिर, भार्गव नगर जालन्धर।
8. श्री प्रिंसीपल अश्विनी कुमार, स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी मेमोरियल कालेज दीना नगर (गुरदासपुर)
9. श्री ओम प्रकाश जी महेन्द्रु आर्यसमाज मोरिण्डा (रोपड़)
10. श्री दीवान राजेन्द्र कुमार, दीवान वाटिका, भारत नगर चौक लुधियाना।
11. श्री वेदप्रकाश जी बेदी, बेदी एण्ड कम्पनी रेलवे रोड, गढ़शंकर।
12. श्री वेदप्रकाश जी महता, प्लाट नं० 19 जगदीश आश्रम पटियाला।
13. श्री सन्तराम जी अग्रवाल—प्रधान आर्यसमाज सैक्टर 22 चण्डीगढ़।

---

ऋषि और विद्वान् नजर आते थे, आज उनकी कुटियायें खाली पड़ी हैं। उस समय आर्य जाति बलवती थी आज वह दूसरों के पांवो की ठोकर बनी हुई है। अगर कोई कवि इस किस्म की नज़्म (कविता) लिखे जिसमें ऋषि दयानन्द को आह्वान करे तो क्या वह उनकी वैसी ही हालत बयान न करेगा जैसी कि भगवान राम की की गई है।

इस समय आर्य समाज की हालत दूसरी सोसाइटियों से किसी तरह भी उन्नत नही, आगे नहीं, पीछे हो तो हो। ऋषि के उपदेश का सबसे बड़ा फल यह हुआ है कि आर्य जाति जो तम की अवस्था में मूर्छित पड़ी थी, उसमें राजसिक वृत्ति आ गई है। पहले वह बेहिस व बेहरकत थी। अब उसमे हरकत के आसार नजर आ रहे हैं। यह वृत्ति केवल आर्य समाज तक सीमित नही है बल्कि दुनिया के एक एक कोने में नजर आ रही है। इस हरकत के पैदा करने में दीगर अनासर का भी हाथ है। आर्य समाज का काम यह था और जिसे वही सरअंजाम दे सकता था कि वह 'रज' के साथ 'सत' का समावेश करता। वृत्ति तो पैदा करता किन्तु 'सात्विक'। हुआ क्या—'रज, के साथ 'तम' की आमेजिश हो गई। जिसका नतीजा यह है कि जिस हरकत ने संसार के कल्याण का हेतु बनना था, वह इसकी तबाही का बाइस (कारण) बन गई। आर्य समाज खुद भी 'रज' और तम की आमेजिश के असरात से महफूज नही रहा। इसमें भी वही झगड़े नजर आते हैं जो दूसरी सोसाइटियों में पाए जाते हैं जिसकी वजह से इसका काम रुक गया है। इसमे इतना "सिद्धान्तवाद" नहीं चलता जितना कि "जनवाद"। हम सिद्धान्तों पर बहस नही करते बल्कि जातियात (व्यक्तित्व) पर। हम यह नही सोचते कि सिद्धान्तों का प्रचार कैसे हो, बल्कि यह कि अमुक व्यक्ति को हम कैसे दबाएं और स्वयं उसकी चोट से कैसे बचें। आर्य समाज इस लिहाज से दूसरी सोसाइटियों से बुरा नहीं, वहां भी यही खराबिया मिलती हैं। लेकिन इससे आशा तो अच्छे होने की थी। इस लिहाज से यह आशा दुराशा मात्र सिद्ध हो रही है। और इसलिए इसकी तरक्की रुक रही है। ऋषि बोध पर्व के अवसर पर यह सोचना प्रत्येक आर्य का कर्त्तव्य है कि वह किस तरह आर्य समाज को झगड़ों से निकाल कर उन्नति के मार्ग पर अग्रसर कर सकता है।

(प्रकाश लाहौर के ऋषि अंक के आभार)

# स्वामी दयानन्द और आर्य समाज

## लेखक—स्वर्गीय श्री लाला लाजपत राय जी

स्वामी दयानन्द मेरे गुरु हैं मैंने ससार मे केवल उन्हीं को गुरु माना है वह मेरे धर्म के पिता हैं और आर्य समाज मेरी धर्म की माता है। इन दोनो की गोद मे मैंने परवरिश पाई और अपने दिल और दिमाग को ढाला। मुझ को अभिमान इस बात का है कि मेरा गुरु बड़ा आजाद मन का था उसने हम को आजादी से विचार करना, आजादी से बोलना और आजादी से अपने कर्त्तव्य पालन करना सिखाया मुझ को इस बात का भी गर्व है कि मेरी धर्म की माता ने मुझ को एक सस्था मे बद्ध होकर रहना सिखाया। एक ने आजादी प्रदान की तो दूसरे ने मुझ को डसिप्लिन का दान दिया। इसके बगैर न तो इन्सान अपना सुधार कर सकता है न किसी और का। आजादी और डसिप्लिन हर एक भले आदमी की जिन्दगी का आधार हैं। नवयुवक आजादी चाहते हैं परन्तु नियन्त्रण से घबराते हैं जब तक यह दोनो भाव उनके अन्दर अच्छे अनुपात से शामिल न हो जाए उनकी जिन्दगी मीठी और उपयोगी नही हो सकती। स्वामी जी महाराज ने हम को देश प्रेम का मीठा फल खिलाया। जाति सेवा और जाति भक्ति का बीज हमारे अन्दर बोया साथ ही हम को यह भी उपदेश किया कि हम अपने हृदय को विशाल और खुला रखें ताकि मनुष्य मात्र इस मे समा जाए। हमारी देश भक्ति धर्म के आधीन है। यौरपीन कौमो की तरह वह तग और तास्सब न होनी चाहिये। जब एक जर्मन निवासी यह कह कर पुकारता है कि उसे अपनी जन्म भूमि सब पदार्थों से प्यारी है तो वह कई बार अपने दिल को तग करके ससार मे नाना प्रकार के बखेडो की नींव रखता है और शिक्षा देता है कि मेरी कौम चाहे गलती पर हो तो भी उसकी भूल मुझे प्रिय है। इस मे यहा तक तो सच्चाई है कि भूलो के रहने पर भी हमे अपनी कौम प्रिय होनी चाहिए। जो व्यक्ति जितना अधिक निर्बल हो, कम समझ हो, पापी हो उतनी ही अधिक स्नेह की मात्रा उसमे होनी चाहिए परन्तु इसका यह अर्थ नही कि वस्तुत हमे, भूल, पाप अथवा अधर्म से भी प्रेम है। जैसे माता पिता को अपने छोटे बच्चे से अधिक प्रेम होता है और शरारत से उनके प्रेम का स्रोत बहता रहता है। इसी तरह हम को अपनी जाति और अपने देश से सदा प्रेम करना चाहिये और जाति की भूलो और शरारतो से हम को असली प्रेम मे कोई कमी नही करनी चाहिए परन्तु इसका अर्थ यह नही है कि हम जाति की भूलो और अधार्मिक कृत्यो को भी चाहने लगें। स्वामी जी महाराज ने हमको जाति सेवा का उपदेश दिया। हम चाहते हैं कि हमारा देश और हमारी जाति धर्म के रास्ते मे वृद्धि करे। धर्म से भाव यहा उन कुछ सिद्धान्तो से नही जिनका नाम मत है। धर्म शब्द उन गहरे और विशाल अर्थों मे लिया जाता है जो हमारे शास्त्रकारो ने इसके लिए नियत किए हैं। सिद्धान्तो को मानना और चीज है और धर्मात्मा बनना और चीज है जो केवल धर्म सिद्धान्तो के बोझ के नीचे दब कर अपने सिद्धान्तो के अभिमान पर धर्मात्मा बनने की चेष्टा करता है। वह जरूर ही धर्मात्मा नही बन जाता। धर्म का सम्बन्ध बहुत कुछ कर्म और आचरण से है न केवल शुष्क ज्ञान से। धर्मात्मा बनने के लिए एक खास तरह का दिल बनाना होता है जिसमे विशालता, दयालता, न्याय और भक्ति से मिली हुई हो।

# मूलशंकर दयानन्द

(लेखक स्वर्गीय श्री प० नरदेव जी शास्त्री, वेदतीर्थ)

दयावान् पुरुष प्राय दु खी रहते हैं, क्योकि वे दूसरो के दु खो को देख-देख कर दु खी होते हैं और उनके दु खो को दूर करने का प्रयास करते रहते हैं। अपना आनन्द छोड कर ऐसे दु खमय दया के कार्य मे आनन्द मानने वाले महापुरुष स्वामी दयानन्द हुए। इनका पहला नाम मूलशकर था। मूल कहते हैं जड को, जड से ही शकर सुधार करने वाला दयानन्द हुआ। इसलिए मूल शकर यह नाम भी बहुत ही ठीक था। मूल शकर दयानन्द ने जीर्ण भारत के उद्धार के लिए जो कुछ किया, उसके इतिहास को पच्चास वर्ष पश्चात् लिखने का समय आवेगा जबकि भारत वर्ष पूर्ण रूप से उनके मिशन को समझ जाएगा। अभी तो भारत वर्ष उनकी बात को पूणरूप से समझ भी नही सका। आज भारतीय नेता हिन्दी को राष्ट्रभाषा होने का मान देने लगे हैं। किन्तु आज से पचास वर्ष पूर्व ही मातृभाषा गुजराती होने पर भी अपने समस्त ग्रथो को हिन्दी मे लिख कर दयानन्द ने अपनी अपूर्व दूरदर्शिता का जो परिचय दिया है, उसका उदाहरण भारतीय रिफार्मरो मे शायद ही कही मिले।

महात्मा गाधी जी ने भारतीय सभ्यता को बहुत तक ही पीछे खैंचा है। राष्ट्रीय शिक्षा का तो प्रश्न अभी हल भी न हो सका। किन्तु स्वामी दयानन्द स्वशिक्षा, स्वभाषा, स्ववेश, स्वसभ्यता को स्वधर्म के अन्तर्गत लेकर भारतीय जनता का ठेठ वदो तक पीछे ले गए हैं। अभी इसके महत्व को लोग पूर्ण रूप से नहीं समझ सके हैं, किन्तु वह समय धीरे धीरे आता जाता है। स्वराज्य के प्रश्न को भी वे जिस प्रकार हल कर चुके हैं, उसका महत्व भी धीरे-धीरे लोगो की समझ में आवेगा। स्वामी दयानन्द का तप सफल होता जाता है और उनका मिशन आगे पैर बढ़ाता जाता है, चाहे उस मिशन का कार्य स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज के नाम पर नही हो रहा तथापि काम वही हो रहा है जिसको स्वामी जी चाहते थे और आर्यसमाज भी चाहता है। एक बार हमने लोकमान्य तिलक से पूछा कि भारत का भावी धर्म क्या होगा ? आपने उत्तर दिया कि रिफार्मड हिन्दूइज्म। सो लोकमान्य के कथानुसार बात तो ठीक बैठती जाती है। यह रिफार्मड हिन्दूइज्म क्या है ? आर्यसमाज का मिशन ही तो है।

आर्यसमाज की एकाध बात को छोड कर प्राय. सभी बातो को हिन्दू ग्रहण करते जा रहे हैं। उत्तरीय भारत की कथा तो जाने दीजिए दक्षिण भारत में भी बहुत परिवर्तन हो रहा है। दक्षिण भारत हिंदू धर्म का गढ है ! मुझे अपना देश छोडे लगभग 27-28 वर्ष हुए। इसमे मैं पाच बार दक्षिण गया और कर्नाटक, महाराष्ट्र, आन्ध्र आदि देशों मे भ्रमण किया, वह प्रचलित रीति की कट्टरताए नष्ट हो रही है। इसका साक्षात् श्रेय (Credit) स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज को भले ही न मिले किन्तु उत्तरीय भारत की लहरो का प्रभाव वहा तक अज्ञात रूप मे जा पहुचा है—इसमे सन्देह नहीं है। आर्यसमाज की छानबीन ने अन्य मतावलम्बियो मे छानबीन का भाव पैदा किया है और प्रत्येक सम्प्रदाय अपने को पूर्व की अपेक्षा अधिक युक्ति युक्त बनाने व उसको दृढ करने की चेष्टा कर रहा है। अग्रेजी शिक्षा व सभ्यता का भी कुछ भाव काम कर ही रहा है। इस प्रकार एक ओर से अग्रेजी सभ्यता शिक्षा, दीक्षा काम कर रही है, और दूसरी ओर आर्यसमाज की भट्टी काम कर रही है। दोनो के बीच मे अन्य सम्प्रदाय, मत, मताभास हैं, और आखों को चुधिया देने वाली मगरबी रोशनी और बदन को जबरदस्त सेक देकर पसीने से तर कर हलका कर देने वाली आर्यसमाज

की भट्टी की गरमी दोनों के बीच में ही है। बीच वालों की परीक्षा हो रही है और लोग उस अन्धी कर देने वाली रोशनी से इधर की गर्मी को अच्छा समझने लगे हैं। आर्यसमाज ने इस (Evolution) विकास द्वारा एक विचित्र (Revolution) उत्क्रान्ति मचा दी है, यह क्रान्ति और पच्चास वर्ष चलती रहेगी। यह सब कुछ हो रहा है और होकर रहेगा किन्तु स्वामी दयानन्द के अनुयायियों में भी कुछ त्रुटियां आ रही हैं। वह यह कि ये बातें तो प्राचीन समय की करते हैं किन्तु इनके ढंग सब नए होते जाते हैं—अंग्रेजी शिक्षा में लाखों रुपए लगाते जाते हैं और नाम वेदों का ले छोड़ते हैं। प्राचीन शिक्षा प्रणाली के लिए खोले हुए गुरुकुल और विद्यालयों में भी जैसी चाहिए वैसी सफलता नहीं हुई। न मिशनरी स्पिरिट के लोग ही पैदा हो रहे हैं और न वेदों की रक्षा ही ठीक रीति से हो रही है। हम लोग तार्किक तो बहुत हो गए परन्तु श्रद्धावान् नहीं बने। तर्क और श्रद्धा को न मिला सके। हमारी संख्या तो बहुत बढ़ती जाती है लेकिन गुणों में कमी हो चली है। इन सब कमियों को दूर करने की तरफ हम लोगों का ध्यान जाना चाहिए। हमारे इंस्टिच्यूशनों ने प्रचार के काम में बड़ी बाधायें डाल दी हैं। इसलिए जिस प्रकार, तपस्वी, मिशनरी स्पिरिट के लोग पैदा हों, ऐसा कोई प्रबन्ध करना चाहिए। सच्चे अर्थों में राज्यसभा, विद्यासभा और धर्मसभा बनानी चाहिए। जब हमारे आर्यों के ही लडके आर्य धर्म में विश्वास नहीं रखते तो अन्य क्योंकर हमारे पीछे चलेंगे इसका कारण यह है कि हम लोगों ने कह तो इतना डाला कि लोगों को याद भी न रहा और किया इतना थोड़ा कि लोगों के ध्यान में ही न बैठा। प्लेग के दिनों में लोगों की बिल्टियां घूस-घूस कर लोगों के प्राण बचाने वाले पंडित रलियाराम जैसे उपदेशक कहां मिलेंगे? हर समय कमर कस हथेली पर जान रख कर मानापमान का ध्यान छोड़ कर आर्य धर्म के प्रचार में लगने वाले पं० लेखराम कहां हैं? रात दिन आर्यसमाज की धुन में रहने वाले, समाज के लिए घर बार फूंकने वाले स्वा० दर्शनानन्द जैसे भी स्वामी कहां मिलेंगे? स्व० पं० तुलसीराम जैसे अपने ही हाथ से नोटिस चिपकाने वाले, अपने हाथ से झाड़ू देकर, धूनी रमाने वाले दृढ़व्रती, एक सहस्र आर्य पुरुष भी निःस्वार्थ भाव से आर्य धर्म के प्रचार का बीड़ा उठायें तो मैं समझूंगा कि शताब्दी सफल हुई। आर्यों को स्पष्ट जान लेना चाहिए कि यदि वे गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की रक्षा कर सकें, तो वेदों की रक्षा हो सकेगी। वेदों की रक्षा होगी, तो आर्यसमाज की रक्षा होगी। आर्यसमाज की रक्षा होगी, तो हिन्दुओं में प्राण रहेंगे और हिन्दू जाति सबल होगी। हिन्दू सबल होंगे, तो भारतवर्ष सबल होगा, तो संसार सुधरेगा और शान्तिमय धाम बनेगा। आर्यो! कहो क्या विचार है? स्वयं बच कर संसार को बचाओगे या स्वयं नष्ट होकर संसार को नष्ट करोगे? दरी बिछा कर स्वयं ही व्याख्यान द्वारा लोगों का ध्यान खेंचने वाले पंडित अब कहां हैं? पहले-पहले लोग प्रचार पर मरते थे। इसलिए ज्ञान का ध्यान नहीं था, केवल काम का ध्यान था। अब लोगों में ज्ञान घुस गई है, इसलिए काम कुछ नहीं हो रहा है। नाम घुस गया। इस लिए काम कहा—आपस का सारा झगड़ा शान और नाम के लिए हुआ है। इन सब दोषों को शीघ्र दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए। दयानन्द शताब्दि का महामहोत्सव शीघ्र होगा, उस पर वहां यदि हम सुमति से इस विषय में कुछ निर्णय कर सकें, तो मैं समझूंगा कि शताब्दि सफल हुई। उस अवसर पर यदि आर्यसमाज के नाम पर आपने इन बातों पर ध्यान नही दिया, तो आपका आर्यसमाज भी ब्रह्म समाज की तरह भारत वर्ष एक कोने में पड़ा रहेगा। आपकी गणना भी मतों में हो जायेगी और साल भर में एकाध उत्सव करा छोड़ना और कभी कहीं धूम मचाना इतना ही काम रह जाएगा। स्वामी दयानन्द की टोन में बोलने में शेखी समझते हो पर उतना तप विद्या, बल, आप में नहीं है। इसलिए उस टोन को छोड़ कर सच्ची लग्न से प्रेम की टोन में संसार को वश में करने की चेष्टा करो, नहीं तो आर्यों की गणना चारवाक मत के नास्तिकों में हो जायेगी।

जो आपको गाली दे उसका भला करो, उसका

भला चाहो। बदी का बदला नेकी से दो। धर्म के लिए हंसते-हंसते खाल छिलवाने के लिए तैयार रहो। संसार को अभय प्रदान करो, जो संसार आपकी ओर खिंचें। इस समय की हमारी रविश से संसार भयभीत हो रहा है, वह हमारी बातों से डरता है। इसलिए मित्र की दृष्टि से संसार का सुधार करो। एक बार सूर्य और वायु में आपस के बड़प्पन के लिए झगड़ा हुआ। वायु ने कहा मैं, बड़ा सूर्य ने कहा मैं बड़ा। अन्त मे यह निर्णय हुआ कि जो मार्ग में आने वाले मुसाफिर के कपड़े उतरवायेगा वही बड़ा।

वायु ने कहा यह कौन बड़ी बात है। चला एक दम अंधड़। वायु ने बहुत जोर बांधा किन्तु जिस-जिस तरह उसका जोर बढ़ा मुसाफिर अपने कपड़े दोनो हाथों से मजबूत पकड़ता गया—वायु हार गया लज्जित हुआ। मुसाफिर के कपड़े न उतार सका। अब सूर्य देवता की बारी आई। धीरे-धीरे किरणों को छोड़ता गया। शनैः शनैः गरम होता गया——मुसाफिर को गरमी लगने लगी। जब गरमी लगने लगी तब उसने अपने कपड़े उतारने प्रारम्भ किए और अन्त मे नंगा होकर धूप से बचने के लिए एक वृक्ष की छाया में जा बैठा। कहो—तुम संसार की बुराइयो को वायु के तरीके से छुड़ाना चाहते हो अथवा सूर्य के तरीके से।

जिस तरह काम कर रहे हो इससे मुसलमान ईसाई और अन्य धर्म वाले मुसाफिर की भांति अपने कपड़ों को मजबूती से पकड़ते जा रहे हैं। हिंदू भी आप से डरते हैं। काम आपका ही करेंगे, बात भी मान लेंगे किंतु रहेंगे आप से दूर। सब मुसलमानों अथवा ईसाइयों को एक दम आर्य बना डालने के स्वप्न को छोड़ दो। आपेक्षित शान्ति, श्रद्धा, दृढ़ अध्यवसाय—इन का अभ्यास करो। आत्मिक ज्योति की चमक दिखाओ—संसार आप पर मुग्ध होगा बस तर्क युग गया इस वायुवेग से अपना ही घर बरबाद हो रहा है न घर में आनन्द है न बाहर कड़वी किन्तु सच बात लिखने के लिए क्षमा चाहता हूं।

नोट—यह लेख सम्वत् 1981 में लिखा गया

---

ओ३म् अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्।
होतारम् रत्नधातमम्॥ ऋ० 1।1।1।

अग्निं। ईले। पुरोहितं यज्ञस्य। देवं ऋत्विजं। होतारं। ररत्नधातमम्।

(अग्नि) उस प्रकाशस्वरूप परमातमा की (ईले) मैं स्तुती करता हूं जो (पुरोहितं) सब का हितकारक (यज्ञस्य, देवं) यज्ञ का देव—पूज्यतम् (ऋत्विजं) सब ऋतुओं का नियामक (होतारं) सब पदार्थों का उत्पादक तथा संहारकर्त्ता और (रत्नधातमं) सूर्यादि प्रकाशक लोकों का धारक है।

हे सर्वहितकारक परमात्मन्! आप सब जगत् के हितसाधक तथा अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेध पर्य्यन्त सब वेदविहित कर्मों के स्वामी, प्राणीमात्र के कल्याणार्थ सब ऋतुओं को यथाक्रम लाने वाले, सृष्टि की आदि में जीवों के कर्मानुसार नानाविध पदार्थों को रचकर प्रलयकाल में लय करने वाले और सूर्य्य से पृथिवी पर्य्यन्त सम्पूर्ण लोकों के धारण करने वाले हैं।

(आर्याभिविनय) —महर्षि दयानन्द

# धन्य हो स्वामी दयानन्द

## (लेखक : स्व० डा० केशवदेव जी शास्त्री एम-डी)

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का स्थान धार्मिक जगत् मे कई एक प्रकार से उच्चतम है । धर्म धर्मान्तरो अथवा मतेमतान्तरो के नेताओ ने अपने धर्मों की नींव मनुष्यकृत लेखो, अनेक अनुभवो, एव अपने से पूर्व के मतमतान्तरो की उत्तम शिक्षाओ पर रखी है । विपरीत इसके महर्षि दयानन्द जी ने अपनी शिक्षा का आधार वेद पर रखा । उन्होने न किसी नवीन मत का चलाया, न कोई नवीन धर्म स्थापित किया और न ही किसी ज्ञान विज्ञान के वह प्रवर्तक हुए । वह एक आचार्य थे, जिनका धर्म वेद रूपी सूर्य को दिखाना था । सूर्य विद्यमान अवश्य था, परन्तु अज्ञानान्धकार से आच्छादित था । मतमतान्तरो के पारस्परिक द्वेषो ने सत्य के मुख को ही ढाप दिया था । आचार्य के हृदय मे मनुष्य-के लिए प्रेम का और उसी प्रेम से प्रेरित हो वह अन्धकार को हटाने और प्रकाश को दिखाने के हेतु स्पष्टवक्ता बने । उन्होने ससार के सामने वेदो की शिक्षाओ को उपस्थित किया । क्षण भर के लिए मान लो कि वेद अपौरुषेय नहीं, यह मान लो कि सृष्टि के आदि मे भारत वर्ष के ऋषि मुनियो ने अपने विचारो तथा विश्वासो को वेद के रूप मे सग्रहित किया । हा यह भी मान लो कि वर्तमान समय के विज्ञान की चर्चा भी वेद मे नही इन विषयो को मानते हुए हमे कल्पित हजारो वर्षों के बने वेद की शिक्षा का अन्य मतो और इहकालिक विज्ञान की शिक्षा से मुकाबला करना है । आओ, आज इस अक मे हम इस पर विचार करें ।

**सदाचार निर्माण—**

पाश्चात्य देशो मे ज्ञान, विज्ञान एव प्राकृतिक उन्नति के होने पर भी आज विद्वान् लोग गम्भीरता से विचार कर रहे हैं कि किस रीति से आने वाली सन्तानो को ऐसी शिक्षा दी जावे जिस से वह अपना तथा मनुष्यमात्र का कल्याण कर सकें । साथ ही विद्रोहो, क्लेशो और पारस्परिक द्वेषाग्नि को मिटा प्रेम से रहना सीख सकें । एक विद्वान् ने समग्र ईसाई जगत् को सम्बोधन कर कहा है—

"It is only by continuous training of the young in the Christian faith that those who were followers, would begin to have even a glimmer of the vision of universal righteousness "

अर्थात् .—ईसाइयत मे कुमारो की निरन्तर शिक्षा द्वारा ही हम उनके अनुयाइयो से आशा रख सकते है कि वह सार्वभौम धर्म की ज्योति की झलक को अनुभव कर सकें । वेदो के आचार्य भगवान् दयानन्द ने एक धर्म, एक प्रकार का आहार, व्यवहार और एक प्रकार के आचरणो के निमित गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का प्रचार किया और हिन्दू ईसाई, मुसलमानादि सज्ञाओ को मिटा वर्णाश्रम मर्यादा के स्थापनार्थ मनुष्य मात्र को वेदो का अधिकारी बतलाया ।

**विश्वास चर्चा –**

वर्तमान मतमतान्तरो की प्रणाली ने सभ्य जगत् मे बडा कुहराम मचा रखा है । एक परमात्मा

के उपासक होते हुए भी सभ्य मनुष्य उसके पुत्र पुत्रियो को केवल इसलिए शत्रु मान रहे हैं कि उनकी पूजा विधि भिन्न-२ है । बाल्यावस्था से भिन्नभिन्न संस्कारों की शिक्षा मिलती है और वही सस्कार हमारे विश्वास और जीवन का आधार बन जाते हैं। उन्ही की सुरक्षा के लिए हम लड़ते झगड़ते हैं। प्रतिवर्ष सहस्रों व्याख्यान होते और शतशः ग्रन्थ लिखे जाते हैं। बुद्धि अनुकूल, हो अथवा प्रतिकूल लाखों नहीं करोडो मनुष्य 6000 वर्षों की बनी सृष्टि, आदम और हव्वा युग्म का प्रथम परिवार होना, स्वर्ग और नरक, परमात्मा का चौथे अथवा सातवें आसमान के सिंहासन पर विराजमान होना, किसी पैगम्बर की सिफारिश कियामत, कबरो से उठना, फरिश्तो का हिसाब किताब आदि अंध परम्परा युक्त विश्वासो को मानते और उन अज्ञान युक्त विचारो को न मानने वालों को विरोधी अथवा शत्रु समझते हैं। वेद के अद्वितीय सूर्य महर्षि ने अपने ग्रन्थो के अनेक स्थलों पर लिखा है कि जब तक विज्ञान और वेद के प्रचार द्वारा पारस्परिक मतमतान्तरों के मिथ्या विचार नही मिटते, मनुष्यो मे परस्पर प्रीति और एकता का होना दुस्तर है। वेद सब के कल्याणार्थ एक धर्म, एक विज्ञान, एक सदाचार और एक सच्चे जीवन का उपदेश देते हैं जिससे मनुष्य कि सब के कल्याण मे अपना कल्याण माने।

**विज्ञान की दृष्टि में मतमतान्तर—**

पाश्चात्य देशों मे शताब्दियों पर्यन्त विज्ञान वादियों और ईसाइयो का झगड़ा होता रहा।

ईसाईमत के अनुयायी यत: शक्तिमान् थे, उन्होंने लाखों मनुष्यों को केवल इसलिए घायल किया कि वह विज्ञान की दृष्टि में उनके कल्पित विश्वासो को न मानते थे। ऐसे ही न्यूनाधिक अन्य मत-मतान्तरों के संचालकों ने सदाचारी और सत्यवादी मनुष्यों को अनेक कष्ट दिए हैं। आजकल दिनों दिन विज्ञान की वृद्धि हो रही है। वैज्ञानिक लोगों की गिरजों से उपरामता ने सर्वसाधारण को भी ईसाइयत के त्यागने पर उत्साहित किया है। गिरजे खाली होते जाते हैं और प्राय: विचार शील पादरी खुल्लम-खुल्ला इंजील की शिक्षा के विरुद्ध प्रचार करने लग गए हैं। Canon Barnes लण्डन के एक सुप्रसिद्ध पादरी ने कहा है : —

That modern science has professed by changed their view of the universe that man was the result of 100 million years of God's activity on earth.

अर्थात्—आजकल के विज्ञान ने संसार सम्बन्धी उनके विचारो मे परिवर्तन कर दिया है और यह कि मनुष्य परमात्मा की इस पृथ्वी पर रचना के दिन से दस करोड़ वर्षों से चला आता है, इसे भी मिथ्या सिद्ध कर दिया है। MC, Comle नामी एक प्रसिद्ध ग्लासकों के पादरी ने अपनी आवाज उठाई है—

In churches there must be liberty of interpretation in harmony with our better knowledge of divine revelation and of the growng spiritual insight of Christian man.

अर्थात्—गिरजो मे विज्ञानानुसार हमे परमात्मा के इलहाम पर विचार करने का अवकाश मिलना चाहिए और विकासानुसार ईसाईयो का सृष्टि आदि का ज्ञान बढ़ती हुई आत्मिक दृष्टि अनुकूल होना अभीष्ट है। आज चाहे वह वेदो को अपौरुषेय और सृष्टि के आदि मे प्रदत्त ज्ञान स्वीकार न करे, परन्तु ऐसे ही आज एक नही अनेकों मत विज्ञान की दृष्टि से भी खण्डित होते जा रहे हैं। विपरीत इसके वेद की समग्र शिक्षा बुद्धिपूर्वक है। उसमे विश्वास परिवर्तन के लिए स्थान ही नही। ज्यों-ज्यों विज्ञान की वृद्धि होगी, मत-मतान्तरों के कल्पित विश्वास भस्मसात् होते जायेंगे और वेदो की शिक्षा का विस्तार होता जायेगा। महर्षि के अद्वितीय पांडित्य को स्वतः ही जनता स्वीकार करती जायेगी।

**धर्म और विज्ञान में द्वैध नहीं—**

महर्षि का सब से बड़ा काम मनुष्य मात्र के

मस्तिष्क पर विजय पाना है। उन्होंने वेद सम्बन्धी जितनी वैज्ञानिक बातें बतलाई हैं, वह आज कल के विज्ञान के अनुकूल हैं।' उन की शिक्षा में धर्म और विज्ञान में पारस्परिक द्वेष नहीं। वह वेदों को परमात्मा का ज्ञान मानते हैं और मनुष्य मात्र को उस ज्ञान का अधिकारी समझते हैं। भूगोल की हदें, जातिभेद, मतमतान्तरों की पृथक्ता-कोई भी विषय ऐसा नहीं जो वेद की शिक्षा से एक मनुष्य को दूसरे मनुष्य से दूर हटा सके। परमात्मा के ज्ञान वेद अपने अन्दर सार्वभौम धर्म को धारण किए हैं, वर्तमान समय के संकुचित विचार वेद रूपी सूर्य को तमसाच्छादित अवश्यमेव कर रहे हैं परन्तु सौभाग्यवश विज्ञान की दिनों दिन वृद्धि प्रत्येक मतमतान्तर के अनुयाइयों को बाधित कर रही है कि वह अपने-अपने मत रूपी गृह के द्वारों और खिड़कियों को खोल दें ताकि प्रकाश का समावेश उनके अन्दर हो सके। वह स्वयं अर्थ परिवर्तन द्वारा अथवा आत्मिक बल से उन भ्रममूलक विश्वासों का खण्डनकर रहे हैं और वैज्ञानिक विचारों को अपने अन्दर स्थान दे रहे है। ज्यों-ज्यों विज्ञान को स्थान मिलता है, त्यों-त्यों वेद का प्रचार होता जाता है। आज चाहे अज्ञानान्धकार के कारण लोग महर्षि के उपकार को न माने परन्तु वह समय दूर नहीं जब विद्वान् और विशेष कर धार्मिक जगत् के नेता स्वामी दयानन्द सरस्वती को उच्चतम स्थान प्रदान करेंगे और मुक्त कण्ठ से कहेंगे 'धन्य हो स्वामी' जिन्होंने मानसिक दासत्व की बेडियों को तोड़ संसार भर को स्वतन्त्रता प्रदान की है।

नोट—(सम्वत् 1981 में लिखा गया लेख)

**अग्निना रयिमश्नवत्पोषमेव दिवे दिवे।**
**यशसं वीरवत्तमम् ॥ ऋ० ।1।1।1।3**

अग्निना। रयिं। अश्नवत्। पोषं। एव। दिवे। दिवे। यशसं। वीरवत्तमं।

(पोषं) आत्मा तथा शरीर की पुष्टि करने वाला (यशसं) सत्कीर्ति बढ़ाने वाला और (वीरवत्तमं) अत्यन्त वीर पुरुषों का उत्पन्न करने वाला (रयिं) धन (अग्निना, एवं) केवल परमात्मपरायण होने से ही (दिवे, दिवे) प्रतिदिन (अश्नवत्) प्राप्त होता है।

हे महादातः ईश्वर अग्ने! आप ऐसे कृपालु दयालु हैं कि जो पुरुष तन मन धन से आपकी भक्ति करता है उसको आप ऐसा धन प्रदान करते हैं जिससे न केवल आत्मिक और शरीरिक पुष्टि होती है किन्तु उत्तम कीर्ति बढ़ती और शौर्य्य धैर्य्य चातुर्य्य बल पराक्रम आदि शुभगुण सम्पन्न दृढ़ अंगी धर्मात्मा न्याययुक्त पुरुष उत्पन्न होकर लौकिक और पारलौकिक सब प्रकार के सुखों को प्राप्त कराते हैं, ऐसा उत्तम धन एक मात्र ब्रह्मचर्य्य व्रत है जिसकी पूर्ति केवल ईश्वर में सच्चा प्रेम होने से ही हो सकती है। अन्यथा नहीं, यह ब्रह्मचर्य्य ही है जिसका यथायोग्य पालन करने से उक्त सम्पूर्ण गुण प्राप्त हो सकते हैं अर्थात् ब्रह्मचर्य्य द्वारा ही सत्यविद्या का सम्पादन होता और उससे ज्ञान विज्ञान की प्राप्ति होकर लोक परलोक की सिद्धि होती है॥ (आर्याभिविनय)

—महर्षि दयानन्द

# दक्षिण भारत की हिन्दु जनता और आर्य समाज

(लेखक : स्व० पं० धर्मदेव सिद्धान्तालंकार, मंगलौर)

उत्तर भारत से जब कोई व्यक्ति प्रथमबार दक्षिण भारत मे आता है, तो वह इधर की भाषाओं रहन-सहन और रीति-रिवाजों को देख और सुन कर आश्चर्य से चकित हुए बिना नहीं रहता। कुछ काल तक इधर ही निवास करने पर वह हैरानगी दूर हो जाती है पर रीतिरिवाजों से ज्यों-ज्यो हम ज्यादह परिचित होते जाते हैं। त्यों-त्यो हमारे मन में आश्चर्य के स्थान पर कुछ दुःख और कभी-कभी साधारण अशिक्षित हिन्दु जनता के भी अन्दर प्रचलित अन्धविश्वास मूलक कु-प्रथाओ को देखकर मन्यु के भाव का उदय होने लगता है। इस लेख मे दिए हुए उदाहरणो से यह बात साफ हो जाएगी। क्रमशः हम ब्राह्मणों अब्राह्मणो और अछूत समझी जाने वाली जातियों की अवस्था का दिग्दर्शन करा कर, आर्य समाज दक्षिण भारत की हिन्दु जनता के लिए क्या कर सकता है इस पर संक्षेप से विचार करेंगे।

पिछले लगभग एक मास से मे बाढ़-पीडित दलित भाईयों की अवस्था देखने और सहायता पहुंचाने के कार्य पर मालाबार में हूं। यह लेख भी दक्षिण मालाबार के प्रसिद्ध नगर कालीकट में बैठा कर लिख रहा हूं। इसलिए सब से पूर्व मालाबार के संसार भर के ब्राह्मणों में अपने को सर्वोत्कृष्ट समझने वाले विष्णु के अवतार श्री ब्रह्मर्षि परशुराम और शिव के अवतार श्री शंकराचार्य जी के परम लाड़ले इन नम्बदरी ब्राह्मणों पर नजर जानी स्वाभाविक है। यह वही ब्राह्मण जाति है, जिसने मालाबार उपद्रव के समय जबरदस्ती मुसलमान बनाए हुए एक भी नम्बूदरी को किसी भी प्रायश्चित के साथ अपने अन्दर मिलाने से साफ इन्कार कर दिया था। यह वही जाति है, जिसने अभी हाल में ही वैकम सत्याग्रह में भाग लेने वाले श्रीयुत कृष्ण नीलकंठ नम्बूदरीपाद और अष्टपाद नम्बूदरी को जाति से बहिष्कृत कर दिया है। इन लोगों की पवित्रता इसी मे है कि वे, 8, 10 साल के अन्दर कन्याओं की और १६, १८ वर्ष के अन्दर पुरुषों की शादी करा दे। पर इस विवाह के विषय में भी एक बड़ा पवित्र नियम इस पवित्र जाति के अन्दर बहुत काल से चला आता है। वह यह कि केवल बड़े भाई को ही नियम पूर्वक अपनी जाति की कन्या से विवाह करने का अधिकार है, बाकी भाईयों को नायर नामक शूद्र जाति की स्त्रियों को खुल्लमखुल्ला (वेश्याओं की तरह) रखने की इजाजत होती है, जिस पर कोई आक्षेप नहीं कर सकता पर अन्य किसी का आयु भर विवाह नहीं हो सकता। पवित्र ब्राह्मण शूद्रों की छाया से भी अपने को भ्रष्ट समझते है पर अस्पृश्य जातियों के तो दर्शन से भी भ्रष्ट हो हो जाते हैं अतः उन में से कइयों को फर्लांग और कइयों को दो तीन फर्लांग की दूरी पर रहना ही चाहिए। ये ही अस्पृश्य जातियों के लोग जब ईसाई या मुसलमान हो जाते हैं तो उनकी सब अस्पृश्यता निकल जाती है। तब पवित्र ब्राह्मण भी उन्हें कुर्सियों पर बैठाते और उनसे हाथ मिलाने में गौरव समझते हैं। इसके जो अनेक उदाहरण मेरे सामने हैं, उनमें से दो तीन का यहां उल्लेख करता हूं।

1. मंगलौर में बासप्पा नाम के एक बिल्लायर नामक 'अस्पृश्य' जाति के मैजिस्ट्रेट सज्जन थे। वे एक दिन प्रातः कद्री मन्दिर के साथ के

तालाब में नहा लिए। मंगलौर भर के ब्राह्मणों में शोर मच गया। आन्दोलन यहां तक उठाया गया कि फिर मामला अदालत में पहुंचा और उन्हें ५० रु० जुर्माना किया गया। इस फैसले के दूसरे ही दिन वही सज्जन सपरिवार ईसाई मत में दीक्षित हो गए और फिर उन्होंने उसी तालाब में आ कर स्नान किया तब किसी ने कोई आपत्ति न उठाई मानो ईसाई मत ने उनकी अस्पृश्यता के सारे कलंक को धो डाला

2. अभी तक मैंने भी अन्य सज्जनों की तरह सुना ही था कि नायाड़ी नाम के अस्पृश्यों को दो तीन फर्लांग दूरी पर खड़े रह कर भीख के लिए शोर मचाना पड़ता है। अभी तक देखने का मौका न हुआ था किन्तु दो ही दिन हुए आर्य समाज रिलीफ सेन्टर में कार्य करते हुए मुझे तीन चार फर्लांग की दूरी पर से एक बड़ी कर्कश, पर करुणाजनक आवाज सुनने का अवसर हुआ। मालूम हुआ कि वे नायाड़ी जाति के लोग हैं, जो दो तीन फर्लांग के अन्दर नहीं आ सकते। उनके पास जा कर हमने यह भी पता लगाया कि वे गो मांस नहीं खाते। पर उनमें से अनेक अब मुसलमानी मत में मिल गए हैं और अब वे शहरों में आकर छोटा-मोटा व्यापार करते हैं और किसी को कोई आक्षेप नहीं होता।

3. वैकम में जो सत्याग्रह चल रहा है, उस के समय भी आश्चर्य से यही देखा गया कि अस्पृश्य जातियों के लोग जब तक हिन्दुमत में रहते हैं तब उन्हें मन्दिर के चारों ओर की सड़कों पर चलने से रोका जाता है और यह समझा जाता है कि उनके सड़कों पर चलने से भगवान् शिव की मूर्ति भ्रष्ट हो जायेगी, पर वे ही लोग जब ईसाइयत या इस्लाम में मिल जाते हैं, तो बड़े टीकाधारी पवित्र ब्राह्मण को भी उनके सड़कों पर चलने से कोई आक्षेप नहीं होता। जब इस विषय में प्रश्न किया जाता है, तो उत्तर यही मिलता है कि बहुत पुराने समय से यह प्रथा चली आ रही है।

ब्राह्मणों में अन्य सब तरह के दोष होते हुए भी मद्यमांसादि का प्रचार नहीं। अब्राह्मणों में ऐसे लोग बहुत अधिक संख्या में न मिलेंगे जो मद्य मांस और मछली का सेवन न करते हों। इनमें से कईयों के अन्दर तो ब्राह्मणमात्र से द्वेष का भाव भरा हुआ है पर ये जाति ब्राह्मणों की तरह समाज सुधार के विरोधी नहीं किसी-किसी जगह ये लोग वेद, संस्कृत तथा शास्त्रों के पूर्ण विरोधी पाए जाते हैं। क्योंकि इनका सम्बन्ध ब्राह्मणों से विशेष माना जाता है। स्वराज्यादि आन्दोलनों के भी वे इसलिए विरुद्ध हैं कि उन्हें स्वराज्य में ब्राह्मण-राज्य होने का डर है। ब्राह्मणों की अपेक्षा इन लोगों के आर्यसमाज में मिलने और पूर्ण सहानुभूति रखने की अधिक आशा है।

अस्पृश्यों की अवस्था के विषय में यहां अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं है। इन में भी अब अनेक सुशिक्षित वकील प्रोफेसर पत्र सम्पादकादि हैं पर उन्हें मन्दिरों के अन्दर अथवा उच्च जातियों के घरों इत्यादि में जाने का अधिकार नहीं। ऐसे अपमान को वे कैसे सह सकते हैं। इसलिए वे हिन्दु मत को छोड़ कर या तो दूसरे मतों की शरण में जाते हैं जहां उनकी सामाजिक स्थिति ऊंची हो जाती है और या अब कुछ बौद्ध मत मे गए हैं। मैंने अपने एक मित्र श्रीयुत बाल गोपालन् बी-ए. एल-एल बी० वकील चाव घाट से जो बौद्ध मत में दीक्षा ले चुके हैं, प्रश्न किया कि उन्होने किस कारण से आर्य-समाज की अपेक्षा कर (जो वर्तमान जाति-भेद का कट्टर विरोधी है) बौद्ध-मत को पसन्द् किया ? उत्तर यह मिला क्यो कि बहुत देर से सहते सहते अब अन्य हिन्दुओं का उन के प्रति व्यवहार असहनीय हो गया था। आर्य समाज के साथ भी वेद इत्यादि का नाम जुड़ा हुआ है, जो हिन्दुओं के धर्म ग्रन्थ हैं। उन्हें हिन्दु इस नाम मात्र से घृणा पैदा हो गई थी। अतः उन्होंने बौद्धमत की शरण ली। इन्हीं लोगों की अधिक संख्या को ईसाइयों ने उनकी आजीविका की समस्या को हल करके अपने मत में मिलाने का यत्न किया है। केवल दक्षिण कर्नाटक

में ही 10-12 वर्षों में 16 हजार के लगभग लोगों को नाम मात्र ईसाई बनाया है। साधारण तौर पर दलित जातियों के अन्दर सफाई का बिल्कुल अभाव और मद्य मांसादि का बहुत प्रचार पाया जाता है।

अब आर्यसमाज के सोती हुई हिन्दु जनता के प्रति कर्त्तव्य का थोड़ा-सा विचार करना है। मेरा अपना दृढ़ विचार है कि ईधर कुम्भकर्णी नीद में सोई हुई हिन्दु जनता को, जिसके अन्दर सिर्फ रीति-रिवाजों और तिलक छाप मुद्रा बगैरा बाहर के चिन्हों ने ही असली धर्म का स्थान ले लिया है, और जो धर्म के असली स्वरूप को जानने का कष्ट तक नहीं उठाते उन्हें आर्यसमाज ही जगा सकता है। जाति भेद और अछूतपन के भूत को दक्षिण लोगो के सिर से निकालना आर्यसमाज को छोड़ कर और किसी संस्था का काम नहीं। ब्राह्म समाज ने बहुत कुछ शास्त्रों के प्रति अनादर दृष्टि रख कर हिन्दु जनता से अपनी सहानुभूति को इतना दूर कर दिया है कि इधर के लोगप्राय' उसकी बात को सुनना तक नहीं चाहते। आर्यसमाज वेदादि में पूर्ण विश्वास प्रकट करते हुए प्राचीन आर्य सभ्यता और धर्म के नाम पर समाज सुधार करना चाहता है अतः शुरु में यद्यपि हिन्दु जनता उससे सहानुभूति प्रकट नही करती, तो भी धीरे-धीरे कुछ ही समय मे वह समझने लगती है कि हिन्दु मत को मृत्यु के मुख से बचाने का सामर्थ्य आर्यसमाज में ही है। चिरकाल से कर्त्तव्य विमुख हिन्दु जाति को आर्यसमाज ही जगा सकता है। मैंने ऐसे लोगों को जो आर्यसमाज के मूर्ति पूजादि विषयक सिद्धान्तों से बिलकुल सहमति नहीं रखते-आर्यसमाज के विषय मे यही विश्वास प्रकट करते हुए अनेक बार सुना है। आश्चर्य की बात यह है कि इधर सुशिक्षित लोग अपनी-अपनी जातियों के नेता होने के स्थान में उनके अशिक्षित समुदाय से अत्यन्त डरते हैं और इसलिए बड़ी कठिनता से कोई भी समाज सुधार विषयक कदम उठाने को तैयार नहीं होते हैं। ऐसे उदाहरण मेरी दृष्टि में हैं, जब कि पूर्व विचार शील एक विद्वान् सज्जन ने भी अपनी कन्याओं का विवाह 10-12 साल की आयु में 16-18 साल के लड़कों के साथ अत्यन्त अनिच्छा से करवा देने में अपने को बाधित समझा है अन्यथे वे इसकी सब बुराइयों को खूब अच्छी तरह से जानते हैं। ऐसे लोगों के अन्दर आत्मिक साहस पैदा करना आर्यसमाज का ही काम है।

गत तीन वर्षों से दक्षिण कर्नाटक में आर्य समाज की तरफ से वैदिक धर्म प्रचार का काम हो रहा है प्रारम्भ मे आर्यसमाज के साथ सर्वसाधारण हिन्दु जनता की कुछ भी सहानुभूति न थी। इतना ही नहीं कुछ लोगों का काम ही इसे झूठे मूठे तरीके से बदनाम करना था। जिस समय तक केवल धार्मिक विषयों में मत-भेद पर अधिक बल दिया जाता रहा, उस समय तक कुछ ऐसी ही अवस्था रही। धीरे-धीरे वह बात मुझे अनुभव होने लगी कि एक तो सब शक्तियां को इकट्ठा करके ईसाइयत का जोर ईधर कम करना चाहिए और दूसरा केवल दार्शनिक वा धार्मिक विषयों की अपेक्षा सामाजिक प्रचारों पर ही हमे ज्यादा जोर देना चाहिए। इसके अनुसार काम करने पर साधारण हिन्दु जनता की अपने कार्य के प्रति सहानुभूति को प्रतिदिन बढते हुए पाया। जब नाम मात्र 62 ईसाइयों को पुनः शुद्ध करके उनकी उन्नति के लिए कृषि व्यवसाय पाठशाला आदि का प्रबन्ध पिछले चार पांच मासों से प्रारम्भ किया और साथ ही हिन्दु जनता से अपनी कुम्भकर्णी निद्रा छोड़ने की प्रेरणा की तो उसे प्रतीत होने लगा कि कुछ भी क्यो न हो, आर्य समाज ही हमारी रक्षा कर सकता है। ईसाइयत के प्रभाव को कम करने की शक्ति आर्यसमाज में ही विशेष रूप से है। अब पिछले दिनों एक अत्यन्त प्रभावशाली विद्वान् श्री नारायण गुरु स्वामी से शुद्धि के पक्ष मे व्यवस्थापत्र ले लिया है, जिनकी आर्यसमाज के साथ इस आंदोलन को उठाने के कारण बडी सहानुभूति है। अब भी किन्हीं-किन्हीं पवित्र ब्राह्मण देवताओं की आर्यसमाज पर कोप दृष्टि जारी है पर सर्व साधारण की इसके साथ सहानुभूति पैदा होती जाती है। सर्वसाधारण हिन्दु जनता के अन्दर आर्यसमाज के कारण अब विशेष

आकृति के चिन्ह नजर आ रहे हैं यह सब भगवान् की दया है।

इधर दलितोद्धार का कार्य जितना ही अधिक आवश्यक है, उतना ही ज्यादा कठिन है इधर के अस्पृश्य लोगों की अवस्था इतनी अधिक गिरी हुई है कि उन्हें नाम मात्र का मनुष्य ही कहा जा सकता है। ऐसी हालत में अब स्थान-स्थान पर पाठशालाओं के साथ-साथ उपनिवेश बना कर उन्हें व्यवसाय के द्वारा इस योग्य न बना दिया जाए कि वे अपने तथा अपने परिवार के लिए पर्याप्त कमा सकें, तब तक केवल प्रचार से और शिक्षा से कुछ भी फायदा नहीं। उनकी सब तरह के मांस खाने और मद्य के प्रयोग की आदतें हम केवल इस तरह उपनिवेश बसा कर ही दूर कर सकते हैं और कोई तरीका नहीं है। पिछले चार महीनों से इसी तरीके पर मंगलौर से 32 मील की दूरी पर वेनूर नामक जगह पर (जो ईसाई लोगो का अड्डा रहा है) काम शुरू किया है, जिससे कुछ ही वर्षों में बहुत कुछ सुधार की आशा की जा सकती है पर ऐसे कामों के लिए बहुत अधिक धन की जरूरत है। जिन बालकों को हम आश्रम में रखेंगे, उनके लिए रहने तथा भोजन का खर्च हमें अपनी ही तरफ से करना होगा यद्यपि खेती इत्यादि की शिक्षा देकर और कातने, बुनने, रंगने वगैरह के व्यवसाय सिखा कर कुछ ही समय में उन्हें कमाने के लायक बना दिया जा सकेगा। मैं तो बहुत विचार करने पर इस परिणाम पर पहुंचा हूं कि रीति-रिवाजों की गुलामी ही सारी सामाजिक बुराइयों का मूल है। आर्य समाज की तरफ से 5, 6 पुस्तकें वैदिक धर्म के सम्बन्ध में कनाडी भाषा में निकल चुकी हैं, शेष भी धीरे-धीरे प्रकाशित होती रहेंगी। इस तरह से वैदिक धर्म के भावों का प्रचार होने से यह रीति-रिवाजों की गुलामी दूर होगी साथ ही वर्तमान समय में जो जीवन शून्यता पाई जाती है, वह वेदों की ओजस्वती शिक्षाओं से दूर हो कर दक्षिण भारत की हिन्दू जनता के अन्दर नया जीवन आ जाए, ऐसा मेरा विश्वास है। आचार्य ऋषि दयानन्द की दिवंगत पवित्र आत्मा उसके उच्च उद्देश्य को पूर्ण करने में हमें समर्थ बनाए यही मेरी हार्दिक प्रार्थना है।

नोट—यह लेख सम्वत 1981 में लिखा गया।

स्तुतिविषय—पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती।
यज्ञं वष्टु धिया वसुः॥ ऋ० 1।1।6।10

पावक। नः सरस्वती। वाजेभिः। वाजिनीवती। यज्ञं। वष्टु। धिया। वसुः।

हे परमेश्वर आपकी कृपा से (न) हमारी (सरस्वती) वाणी (पावका) पवित्र करने वाली हो और (वाजेभि) उत्तम अन्नादि के सेवन से (वाजिनीवती) बलवती होकर (धिया) विचारपूर्वक (वसुः) वर्तमान् हो और (यज्ञं) वेदोक्त कर्मों को (वष्टु) सब प्रजा के सन्मुख प्रकट करती रहे।

हे वाक्पते! सर्वविद्यामय परमात्मन्! आप ऐसी करें कि हम लोग सदा ऐसे उत्तम और सात्विक भोजनों का सेवन करते रहें जिनके प्रभाव से हमारी वाणी पवित्र तथा मधुर होकर सबको प्रसन्न करने वाली हो और सब प्रजा के सन्मुख वैदिक कर्मों का यथाविधि प्रकाश करती रहे। (आर्याभिविनय)

—महर्षि दयानन्द

# ऋषि के चरणों में भेंट

ले० : स्व० रायबहादुर पं० सीताराम जी एम.ए , एल एल.बी , एम.आई सी. लखनऊ

सम्पादक महाशय की कृपा से मुझे भी श्री स्वामी दयानन्द जी की अर्द्ध जन्मशताब्दी के शुभ अवसर पर उस पवित्र महान् आत्मा के चरणो मे दो चार अक्षर स्वरूप भेट चढाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, मैं सनातम धर्मावलम्बी एक रूप से मूर्तिपूजक हू इसी कारण चरणो मे भेट करता हू, किन्त सनातनी होते हुए भी मैं सदैव स्वामी जी का भक्त तथा गुणगायक हू। कारण जहा तक मेरा सम्बन्ध है स्पष्ट है। अगर कोई प्राणी प्यास से अति व्याकुल हो और उसको पानी मिल जावे तो पानी पिलाने वाले मे श्रद्धा उत्पन्न होती ही है। यदि कोई प्राणी भूख से व्याकुल हो और उसको आधार के लिए कुछ मिल जावे, तो ऐसे सज्जन के प्रति भक्ति का सचार होता ही है। अग्नि या जल शीत या वात से पीडित प्राणी को बचाने वाले मनुष्य के लिए हृदय गद्‌गद् होना आवश्यक ही है, जो कुष्टि सग्रहणी अथवा अन्य किसी भयावह रोग से मुक्ति दिलावे रोगी उसे हृदय से धन्यवाद देगा ही। इसलिए अगर मेरे यह भक्ति और श्रद्धा के भाव स्वामी जी की ओर हैं और यदि समस्त हिन्दू समाज का यह भाव स्वामी जी के प्रति हो, तो इसमे आश्चर्य की कौन बात है। 'तमसोमाज्योतिर्गमय' अन्धकार से निकल उजियारे की ओर जाने की अभिलाषा सब को प्रबल ही रहती है और परमेश्वर सर्वदानन्द से नित्य प्रार्थना करते हैं कि किसी प्रकार हम तीव्र तमसावृत दशा से निकल पुण्य पुनीत ज्योतिर्मय दशा मे पहुचे। मेरी सम्मत्ति मे ऐसे मार्ग दिखलाने वाले निर्भय निर्द्वन्द, समयोपयोगी देशोपयोगी महात्मा श्री स्वामी जी थे। कई वर्ष हुए मुझे एक ईसाई-आर्यसमाज शास्त्रार्थ मे सभापति का आसन ग्रहण करना पडा। जो कटाक्ष प्रमाणो का अवलम्ब लेकर ईसाई महोदय ने हिन्दु धर्म पर किए उनका उत्तर सरल प्रकार से सनातनी भाई नही दे सकता था। किन्तु आर्य समाजी महोदय ने न केवल उत्तर ही दिये परन्तु बाईबल मे से उद्धृत कर उनेक छिद्र निकाल छोडे। क्या इस साहस और बल के लिए स्वामी जी के अतिरिक्त और कोई सराहनीय है। श्री राममोहनराय, श्री केशवचन्द्र सेन, श्री रामकृष्ण परमहस तथा श्री विवेकानन्द भी हिन्दू धर्म के विशिष्ट सुधारको मे शिरोमणि हैं, परन्तु यह बात की रोग जीर्ण शरीर से निकाल उसमे अच्छा बल उत्पन्न कर देने का श्रेय महात्मा स्वामी दयानन्द जी को ही देना चाहिए। एक ईसाई महाशय से नैनीताल मे कई वर्ष हुए मुझे एकान्त मे कई घण्टे बातचीत का अवसर मिला। हम दोनो की मतो के विषय मे बातचीत चली। ईसाई जी तडफ कर बोले यदि तुम्हारा धर्म अच्छा है, तो उसको फैलाते क्यो नही ? क्यो हिन्दुशिक्षा प्रचार, रोगी सेवा, समाज सुधार, अछूत उद्धार मे ईसाइयो की तरह प्रवृत्त नही होते ? क्या श्रेष्टता है उस धर्म मे जिसके अनुयायी ईश्वर की सृष्टि को अच्छा करने के लिए कुछ न करें। बात ठीक थी, कलेजे को बीध गई। यह भी माना कि हम नि:सहाय धनहीन हैं, यह भी माना कि अग्रेजी शिक्षा से कुछ जागृति अवश्य हुई परन्तु न्याय और सत्य ने अवरोध किया और तुरन्त उत्तर दिया गया कि देख ना आर्यसमाजी सस्थाओ को जो पश्चिमोत्तरीय भारत मे मार्गदर्शक का काम कर रही हैं। क्या ऐसा उत्तर मैं या और कोई हिन्दू दे सकता था

यदि श्री स्वामी दयानन्द की सजीवनी बूटी ने मृतप्राय हिन्दु समाज मे जीवन उत्पन्न न किया होता। हिन्दु धर्म की और शाखाओ मे भी कुछ काल से जीवन के लक्षण दिखाई देने लगे हैं। क्या उसके लिए हम स्वामी दयानन्द जी की ओर उचित कृतज्ञता प्रकट करने से सकोच करें ? स्वामी जी का भी इस जीवन मे भाग है और बडा भाग है। मैं स्वामी जी की विद्वता, ब्रह्मचर्य निर्भयता, बुद्धिमत्ता का वर्णन नही करता और न उनके सिद्धान्तों की बात करता हू। जिसकी रही भावना जैसी प्रभु मूरति देखी तिन तैसी — मेरे मन मे जो स्वरूप सर्वोपरि है, इसका मैंने बखान कर दिया।

एक बात और है जिसके लिए मैं क्षमा मागता हू परन्तु ऐसे अवसर मे कहे बिना नही छोड सकता। आर्यसमाज मे अब शिथिलता है। आर्य समाज नये-नये मार्ग समाज सेवा के लिए नही निकाल रहा और न उनमे पूर्ववत् अग्रसर हो रहा है। आर्य समाज के शरीर मे तो कुछ काल से वात, पित्त कफ का मानो परस्पर सग्राम हो रहा है। आर्य समाज के लिए उचित है कि इस शताब्दी पर दयानन्द जी के जीवन को पूर्णतया स्मरण कर अपने शरीर को बलवान् करे और हिन्दु-समाज-सेवा के कठिन व्रत को न छोडे। अनेक विघ्न-बाधाए आ रही हैं और आवेंगी किन्तु "विघ्न · पुन· पुनरपि प्रतिहन्यमानाः प्रारभ्यत् बलाः न परित्यजन्ति। स्त्री शिक्षा आदि की ओर अब औरो को भी लगन है किन्तु हिन्दुरक्षा तथा हिन्दु-पुष्टि के अनेक साधन है, जिनके लिए आर्यसमाज ही उपयोगी है। स्वामी दयानन्द जी का जीवन चरित्र भली भाति दर्शाता है कि जिस प्रकार उद्योगिनपुरुषं सिंहमुपैति लक्ष्मीः। आर्य समाजी भाईयो को चाहिए कि इस को याद कर परमात्मा को सहायक जानते हुए, तन मन तथा धन से राम कृष्ण बुद्ध की जन्म भूमि पुण्य भारत देश के कल्याण के मुख्य साधन हिन्दु समाज सेवा मे दत्तचित हो॥

---

स्तु॰वि॰—तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियंजिन्वमवसे हूमहे वयम्।
पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये॥ 10॥ ऋ॰ 1।6।15।5

(वयं) हम लोग (अवसे) अपनी रक्षा के लिये (जगत, तस्थुष) चराचर जगत् के (ईशानं) नियन्ता (पतिं) स्वामी (धियं, जिन्वं) शुद्ध बुद्धि से जानने योग्य (तम्) परमात्मा का (हूमहे) आवाहन करते है (यथा) जैसे वह (वेदसां) विद्या आदि आत्मिक धनों की (वृधे) वृद्धि के लिये (अदब्धः) निरन्तर (पूषा, रक्षिता) पुष्टि और रक्षा करने वाला है वैसे ही (न) हमारे (स्वस्तये) स्वास्थ्य के लिये (पायु) रक्षा करने वाला हो।

हे सर्वाधीश ! आप जड़ चेतन सब जगत् के रचने वाले, सर्वविद्यामय, विज्ञान-स्वरूप बुद्धिप्रकाशक और सब के पोषक है, आप से प्रार्थना है कि जिस प्रकार आप विद्यादि उत्तम धन देकर सर्वदा हमारी रक्षा और पुष्टि करने में तत्पर रहते हैं उसी प्रकार हमारे स्वास्थ्य की भी रक्षा करें जिससे हम सदैव उत्तम कर्मों की उन्नति करते हुए आनन्दित रहें॥ (आर्याभिविनय)

—महर्षि दयानन्द

# ऋषि दयानन्द की पाठ-विधि

(लेखक स्व० श्री आचार्य रामदेव जी, गुरुकुल कांगडी)

अब जबकि दयानन्द जन्म शताब्दी सिर पर आन पहुची है यह आवश्यक है कि इस बात पर विचार किया जावे कि वर्तमान आर्यसमाज कहा तक उन उद्देश्यो को पूरा कर रहा है जिनको दृष्टि मे रख कर ऋषि ने उसकी नीव रखी थी।

## आर्य समाज और वेद

यह तो स्पष्ट ही है कि ऋषि दयानन्द वेद पर लट्टू थे। वेद के द्वारा ही वह ससार का उद्धार मानते थे। आर्यसमाज के नियमो मे भी वेद का पढना-पढाना और सुनना-सुनाना हर आर्य पुरुष का परम धर्म बतलाया गया है। ऋषि दयानन्द खूब जानते थे कि बिना वेद, वेदागो के और उपागो के और विशेष कर अष्टाध्यायी और महाभाष्य के वेद का समझना असम्भव है। इसलिए उन्होने बम्बई आर्यसमाज के नियम 16 मे यह रखा कि हर पुरुष आर्यसमाज के साथ वेदादि सत्य शास्त्रो के पढाने के लिए एक विद्यालय हो, शोक ! कि आर्यसमाज ने ऋषि के इस उद्देश्य की पूर्ति की ओर पर्याप्त ध्यान न दिया। इस उद्देश्य की पूर्ति को सामने रख कर डी० ए० वी० कालिज की स्थापना की गई किन्तु पीछे से इसका उद्देश्य बदल गया। फिर गुरुकुल खोला गया, जिसने बहुत अच्छी तरह से इस काम को पूरा किया किन्तु शोक कि गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के अनुयायियो मे से भी कई ऋषि की स्पिरिट को समझ न सके। एक पार्टी ऐसी पैदा हो गई, जो अष्टाध्यायी और महाभाष्य पर ही कुल्हाडा चलाने पर उद्यत हो गई। जिस कौमुदी को जूते लगा कर ही दयानन्द विरजानन्द से शिक्षा प्राप्त करने के योग्य हो सके, उसी कौमुदी को अष्टाध्यायी के स्थान मे पढाने के पक्षपाती दयानन्द के कुछ अनुयायी हो गए। वह यह भूल गए कि ऋषि बनने पर भी कौमुदी के सम्बन्ध मे दयानन्द की वही सम्मति थी, जो उन्होने गुरु विरजानन्द से ग्रहण की थी। इसलिए सत्यार्थ प्रकाश मे ऋषि लिखते है और जितनी बुद्धि इनके (अर्थात् अष्टाध्यायी और महाभाष्य के) पढने से तीन वर्षों मे होती है उतनी बुद्धि सारस्वत चान्द्रिका, कौमुदी, मनोरमा आदि के पढने मे 50 वर्षों मे भी नही हो सकती। क्योकि जो विषय महर्षि लोगो ने सहज से अपने ग्रन्थो मे प्रकाशित किया है, वैसा इन लोगो के कल्पित ग्रन्थो मे किस तरह हो सकता है ? महर्षि लोगो का आशय जहा तक हो सके वहा तक सुगम और जिस के ग्रहण करने मे समय थोडा लगे इस प्रकार का होता है और कनिष्टाशय लोगो की कामना ऐसी होती है कि जहा तक बने वहा तक कठिन रचना करनी। जिसको बडे परिश्रम से पढ कर अल्प लाभ उठा सके जैसे पहाड का खोदना, और कौडी का लाभ होना और आर्ष ग्रन्थो का पढना ऐसा है जैसा एक गोता लगाना और बहुमूल्य मोतियो का पाना।' ऋषि की यह सम्मति बहुत स्पष्ट शब्दो मे लिखी हुई है। इसके और अर्थ नही हो सकते। ऋषि ने अपना जीवन ही वेद के अवलोकन और भाष्य मे लगाया। किसी साधारण सस्कृत के पडित या कालिदास भवभूति के ग्रन्थो को पढ कर किसी डिग्री हासिल कर लेने वाले पडितभास की सम्मति के सामने कुछ भी सत्ता नही रखती। अष्टाध्यायी का स्थान कौमदी को देने के अर्थ जान बूझ कर वेद की पढाई को कठिन और नियमो से रहित कर देना है। ऋषि दयानन्द वेद के विषय मे इस समय सब से बढकर प्रमाण है,

तो मानना ही पड़ेगा कि जिस विद्यालय मे अष्टाध्यायी और महाभाष्य को हटाकर कौमुदी पढाई जायेगी वह विद्यालय वेदार्थ वृद्धि मे बाधक और ऋषि दयानन्द के मिशन की जड खोखली करने वाला समझा जायेगा । ऋषि दयानन्द की तो यह सम्मति थी किन्तु ऋषि के पीछे आर्यसमाज मे जिस किसी ने वेद का स्वाध्याय ऋषि के चरणो मे बैठ कर करने का प्रण किया उसने भी उनकी पुष्टि ही की । कौन नही जानता कि प० गुरुदत्त विद्यार्थी अष्टाध्यायी के लिए पागल थे और यदि वर्तमान गुरुकुल पार्टी की नीव गुरुदत्त ने रखी तो इस पार्टी का नाम यदि घास पार्टी (वेजीटेरियन पार्टी) रखा जा सकता है, तो अष्टाध्यायी पार्टी भी हो सकता है । क्योकि हसराज पार्टी और गुरुदत्त पार्टी के बीच मे विवादास्पद विषय यही थे एक मास भक्षण और दूसरा दयानन्द कालिज मे अष्टाध्यायी की पढाई । प० शिवशकर काव्यतीर्थ और प० तुलसी राम सामवेद भाष्यकार की भी यही सम्मति थी । इस समय आर्यसमाज मे वेद का स्वाध्याय करने वाले दो ही पडित हैं—एक प० क्षेमकरणदास त्रिवेदी और दूसरे पडित सातवलेकर जी । इन दोनो पडितो की सम्मति भी यही है कि व्याकरण के बिना वेदार्थ नही हो सकते और व्याकरण मे भी वह अष्टाध्यायी और महाभाष्य को ही अधिक पसन्द करते है । कई ऐसे लोग हैं जो यह समझते हैं कि व्याकरण विद्यार्थियो के मस्तिष्क पर असहनीय बोझ है और उसको पढाना ही नही चाहिए । ऐसे लोगो को अपनी सम्मति पर यह विचार करना चाहिए कि यदि विद्यार्थी को वेद पढने के लिए योग्य बनाना है, तो उसको व्याकरण अवश्य आना चाहिए । यूरोप मे सैकडो विद्वान् ऐसे हैं, जिनका मत है कि लातीनी और यूनानी विद्यार्थियो को अवश्य पढानी चाहिए क्योकि इनका व्याकरण दिमागी शासन के लिए आवश्यक है । यह सिद्धान्त तो निश्चित समझना चाहिए कि दिमागी शासन के लिए उच्चतम साधन जैसी अष्टाध्यायी है वैसी ससार की कोई भी और व्याकरण की पुस्तक नहीं । अस्तु, इस पार्टी को तो अधिक सफलता नही हुई क्योकि गुरुकुलो मे अष्टाध्यायी और महाभाष्य ये ही पढाए जाते हैं और इसकी स्कीम मे से व्याकरण को हटा सकने की शक्ति रखने वाले महापुरुष ने अभी पैदा होना है । किन्तु एक दूसरी पार्टी पैदा हुई है जिनको श्रद्धा के आधिक्य ने ही ऋषि की स्पिरिट को समझने नही दिया । सत्यार्थ प्रकाश मे ऋषि ने कुछ नियम बतलाए हैं जिनके आचरण करने से ही किसी ग्रन्थ के आशय को ठीक समझा जा सकता है, जो लोग इन नियमो को ताक मे रख ऋषि के भाव को समझने का यत्न न करके केवल उनके अक्षरो पर मर मिटना सीखे है, वे भी उनके साथ न्याय करते है । ऐसी श्रेणी मे उन सारे महानुभावो को रखता हू, जिनका यह मत है कि चू कि ऋषि ने इतिहास, भूगोल पदार्थ विद्यागणित की पूरी कोई स्कीम नहीं थी इस लिए गुरुकुलो मे यह विषय पढाने ही नही दिए जाए । इन लोगो से पहला प्रश्न यह है कि सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका और सस्कारविधि इत्यादि आर्षग्रन्थ गुरुकुलो की पाठविधि मे होने चाहिए व नही ? यदि होने चाहिए, तो क्यो ? इनका सिद्धान्त तो यह है कि स्वामी जी ने सत्यार्थ प्रकाश मे जिन ग्रन्थो की सूची दी है, उनके अतिरिक्त और कुछ न पढाना चाहिए । क्या ऋषि दयानन्द का अभिप्राय यह कभी हो सकता था कि ब्रह्मचारी ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका और सत्यार्थ प्रकाश से लाभ न उठावें ? क्या ब्रह्मचारियो को सन्ध्या सिखलाने के लिए 'पचमहायज्ञ विधि' पढानी होगी या नही ? और शान्ति पाठ और स्वस्तिवाचन सिखलाने के लिए सस्कार विधि पढानी होगी अथवा नही ? स्वामी जी की स्कीम मे तो इन दोनो पुस्तको का भी नाम नही । आर्य समाज के उपनियमो मे ऋषि दयानन्द ने लिखा है कि हर एक आर्यपुरुष को आर्यभाषा और सस्कृत अवश्य जाननी चाहिए । क्या गुरुकुल के आर्यविद्यार्थियो पर यह नियम नही लगता ? यदि लगता है तो ऋषि की आरम्भिक स्कीम मे तो आर्यभाषा की कोई पुस्तक नही लिखी । सत्यार्थ प्रकाश के दूसरे समुल्लास मे ऋषि लिखते हैं कि 'अब पाच-पाच वर्ष के

लडका-लडकी हो तब देवनागरी अक्षरो का अभ्यास करावें। इन्हें देशीय भाषाओ के अक्षरो का भी।' इस का मतलब साफ है कि बगाली, तामिल, गुजराती, लडके-लडकियो को आर्यभाषा के अतिरिक्त अपनी अपनी भाषा भी अवश्य सीखनी चाहिए केवल अक्षर ज्ञान सिखलाना व्यर्थ है, यदि उनको इस भाषा के साथ पढ सकने के योग्य न बनाना हो। हम पूछते हैं कि इन भाषाओ की पाठ्यपुस्तक के नाम तो ऋषि ने अपनी पाठविधि मे दिए ही नही फिर क्या अकथित ऋषि वाक्य को निरर्थक समझें और इस परिणाम पर पहुचें कि सयुक्त प्रान्त, पजाब, विहार और मध्य प्रदेश के भाग के अतिरिक्त शेष सब प्रान्तो के ब्रह्मचारियो को अपनी मातृभाषा भूल जानी चाहिए। अपनी पाठ विधि मे ऋषि लिखते हैं—

' दो वर्ष मे ज्योतिष शास्त्र, सूर्य सिद्धान्त इत्यादि जिन मे बीजगणित भूगोल, खगोल, और भूगर्भ विद्या है, उनको सीखें। यह विषय 16 वर्ष की पढाई के ब द पढना लिखा है। कौन नही जानता कि सूर्य सिद्धान्त के समझने के लिए ऊचे गणित को जानने की आवश्यकता है। क्या ऋषि का यह मतलब कभी हो सकता है कि 27 वर्ष का नवयुवक 100 तक गिनती शुरू करके दो वर्ष म यह सारी विद्या ए सीख लेगा और सूर्य सिद्धान्त को समझ लेगा ? इन सब बातो पर विचार करके यही परिणाम निकालना पडेगा कि ऋषि ने ऋषि-कृत ग्रन्थो को पढाने की विधि बतला दी। शेष-विषयो की स्कीम बनाने का कार्य उन विषयो के विशेषज्ञो पर ही छोड दिया जाए। हमारे लिए इतना ही पर्याप्त है कि ऋषि ने इन विषयो की पढाई का खण्डन नही किया। केवल यही नही किन्तु जो पाठविधि उन्होने सामने रक्खी उसकी पूर्ति के लिए भी यह जरूरी है कि विद्यार्थी गणित, साइंस इत्यादि विषयो के पण्डित हो। एक और बात भी है वह यह कि ऋषि ने जो पाठविधि सामने रक्खी वह सारी सब के लिए नही है, किन्तु केवल आदित्य ब्रह्मचारियो के लिए है देखो समय का विभाग कैसे किया गया है ?

| | |
|---|---|
| व्याकरण | 3 वर्ष |
| निरुक्त और छन्द | 1 वर्ष |
| मनुस्मृति, रामायण, महाभारत | 1 वर्ष |
| दर्शन और उपनिषद् | 2 वर्ष |
| वेद और ब्राह्मण | 6 वर्ष |
| सर्वयोग | 13 वर्ष |
| आयुर्वेद | 4 वर्ष |
| धनुर्वेद | 4 वर्ष |
| गन्धर्व वेद | — |
| अथर्व वेद | — |
| ज्योतिष | 2 वर्ष |
| हस्तक्रिया | — |
| नेत्रक्रिया | — |
| सर्वयोग | 23 वर्ष |

नोट —(इसका स्पष्ट अभिप्राय पुस्तको की पढाई है। विषय के लिए समय पृथक् है। धनुर्वेद मे भी 2 वर्ष क्रियात्मक के हैं।)

यह बात वर्णन करने योग्य है कि ऋषि ने गन्धर्व वेद (गान विद्या) अथर्ववेद, शिल्पविद्या, क्रिया कौशल और नानापदार्थों का निर्माण अर्थात् हस्तक्रिया और नेत्र क्रिया के लिए समय नही बतलाया। यह 12 वर्ष से कम नही हो सकता। इस प्रकार 35 वर्ष की पढाई यह हो गई। 5 वर्ष आरम्भ मे गणित, भूगोल, देशीय भाषा, इतिहास इत्यादि के सीखने मे लगेगे। इस प्रकार यदि 8 वर्ष का ब्रह्मचारी भी पढाई आरम्भ करे, तो 48 वर्ष की आयु मे वह सभी विद्या समाप्त करेगा। ऋषि ने जो लिखा है कि 21 वर्ष मे सारी पढाई समाप्त हो सकती है किन्तु जिन्होने 24 वर्ष की आयु तक ही ब्रह्मचारी रहना हो उनके लिए यह 48 वर्ष की पढाई का कोर्स कैसे लागू हो सकता है ? इन लोगो के विषय मे ऋषि लिखते हैं कि पुरुषो को व्याकरण और अपने व्यापार की विद्या विज्ञानिको को

अवश्य पढनी चाहिए और ब्रह्मचर्य की पढाई निम्न प्रकार होगी :—

| | |
|---|---|
| व्याकरण | 3 वर्ष |
| निरुक्त और छन्द | 1 वर्ष |
| मनुस्मृति, रामायण महाभारत | 1 वर्ष |
| दर्शन उपनिषद् | 2 वर्ष |
| वेद और ब्राह्मण | डेढ वर्ष |
| अन्य विषय | साढे 4 वर्ष |
| व्यवहार की विद्या | 4 वर्ष |
| सर्वयोग | 17 वर्ष |

इस प्रकार 8 वर्ष की आयु मे पढाई आरम्भ करने वाला विद्यार्थी 25 वर्ष की आयु मे स्नातक हो जायेगा । मनु महाराज ने लिखा है कि स्नातक को कम से कम एक वेद अवश्य आना चाहिए। चार वेदो (ब्राह्मणो सहित) के लिए ऋषि ने 6 वर्ष रक्खे है । इसलिए 1 वेद के लिए डेढ वर्ष होना चाहिए। व्यवहार की विद्या ब्राह्मण के लिए या तो आयुर्वेद या अध्यापन और या पुरोहिताई और उपदेश की हो सकती है। आयुर्वेद के लिए ऋषि ही ने 4 वर्ष बतलाए हैं। अध्यापक को ज्योतिष और नेत्र विद्या अवश्य आनी चाहिए । जिसमे 4 वर्ष लगेगें। यदि धनुर्वेद का अध्यापक बनना हो, तो उसको सीखने मे 4 वर्ष लगेंगे । यदि विद्यार्थियो को कोई दस्तकारी सिखलानी होगी, तो अथर्ववेद के सीखने मे 4 वर्ष लगेगें जिसने पुरोहित और उपदेशक बनना होगा, उसको भी गृह्यसूत्रो के पढने मे और ऋचादि की क्रियाओ को जानने मे 4 वर्ष लगेगे और क्षत्रियो के लिए व्यवहार विद्या और धनुर्वेद ही है। उसके सीखने के लिए 4 वर्ष लगते है और वैश्य को भी अर्थ और विशेष दस्तकारी सीखने मे 4 वर्ष और लगेगे। यदि इस प्रकार से हम ऋषि की पाठविधि को समझें तो इसका महत्त्व हमारे हृदय मे जम जाएगा।

नोट—यह लेख सम्वत् 1981 मे लिखा गया।

स्तु०विष०—वायवायाहि दर्शतेमेसोमा अरङ्कृता ।
तेषां पाहि श्रुधी हवम् ॥ 7 ॥ ऋ० 1 । 1 । 3 । 1 ।

वायो । आयाहि । दर्शत । इमे । सोमा: । अरङ्कृता. । तेषां । पाहि । श्रुधी । हवम् ।

(वायो) हे अनन्त बलयुक्त (दर्शत) हे दर्शनीय परमात्मन् ! (आयाहि) आप हमको प्राप्त हों (इमे, सोमा ) यह उत्तम-उत्तम रस जो (अरङ्कृता·) हमने भलेप्रकार सम्पादन किये है (तेषां) उनकी (पाहि) रक्षाकरें और (हवं) हमारी प्रार्थना को (श्रुधी) सुनें ॥

हे अनन्तबलयुक्त दर्शनीय परमात्मन् ! आप अपनी कृपा से हमारे हृदय में प्राप्त हों और जो उत्तम-उत्तम पदार्थ हमने यज्ञार्थ तैयार किये हैं उनकी आप रक्षा करें ताकि हमारा यज्ञ निर्विघ्न पूर्ण हो, हमारी इस प्रार्थना को कृपाकरके स्वीकार करें ॥ (आर्याभिविनय) —महर्षि दयानन्द

# ऋषि का चमत्कार

(लेखक : स्व० श्री पं० चमूपति जी एम. ए. आर्य सेवक)

मूर्खों मे धर्म का आधार चमत्कार होता है। ऐसा होना स्वाभिक है। धर्म इन्द्रिय ग्राह्य जगत् से ऊपर की ओर सकेत करता है। धर्म के मुख्य विषय आत्मा और परमात्मा हैं। कई मतों ने तो प्रकृति की सत्ता को ही स्वीकार नहीं किया। कईयों ने उसे क्षणभंगुर मान कर कोई विशेष मान की वस्तु नही रहने दिया। साधारण बुद्धि को भौतिक संसार से परे ले जाने के लिए अलौकिक चमत्कार दिखाने की आवश्यकता है। कोई परमात्मा को क्यों माने ? संसार के काम तो बिना परमात्मा के भी चलते प्रतीत हो ही रहे हैं। यदि मनुष्य किसी प्रकार भी सृष्टि नियम के बन्धन से मुक्त नहीं हो सका, तो इस नियम के ऊपर कोई नियामक है, यह मानना या न मानना बराबर है।

जब-जब कोई नए मत का प्रवर्तक आया, उससे चमत्कार मागा गया। परमात्मा से इस पुरुष का विशेष सम्बन्ध है, इसका क्या प्रमाण ? जो यह कहता है, वह परमात्मा की आज्ञा है—इसमे युक्ति ?

तमाशा यह है कि प्राय: धर्म के प्रवर्तकों ने आरम्भ में चमत्कार दिखाने से इन्कार किया है। धर्म के प्रवर्तक जादूगर न थे। वह मनुष्यों के लौकिक व्यवहारों का सुधार करना चाहते थे। उनके लिए संसार की रचना से बढ़ कर और चमत्कार न था। वह मनुष्य थे और मनुष्य रह कर ही मानव जाति का सुधार करना चाहते थे।

प्रभु ईसा से कहा गया चमत्कार दिखाओ मार्क की इंजील में आया है—

और फरीसी बाहर आए और उस (ईसा) से युक्ति प्रयुक्ति करने लगे। उनकी इच्छा थी कि उस से कोई आसमानी (अलौकिक) चमत्कार देखें। वह उसे प्रलोभन मे डालते थे।

और उसने अपनी आत्मा मे ठंडा सांस लिया और कहा, यह पीढी चमत्कार क्यो देखना चाहती है ? मैं तुम्हे सच कहता हू, इस पीढ़ी को चमत्कार नही दिखाया जायेगा।

वह उसे प्रलोभन मे डालना चाहते थे। यह शब्द विशेष ध्यान देने योग्य हैं। योगदर्शन में कई विभूतियो का वर्णन आया है। परन्तु दर्शनकार की स्पष्ट आज्ञा यह है कि यह विभूतिया आत्म विकास का फल है' यदि इन की प्रदर्शनी की जाए, तो आत्म-विकास रुक जाता है।

योगदर्शन की विभूतिया किसी पैगम्बर विशेष को नही मिलती, किन्तु जो भी पद्धति के अनुसार योग का साधन करता है, उसमे वह शक्तिया स्वयमेव पैदा हो जाती हैं। ऐसा होना सृष्टि के नियम के अन्तर्गत है।

कच्चे लोगों का प्रलोभन होता है कि अपने आत्म-विकास की प्रदर्शनी करें। इसी प्रलोभन की ओर मार्क ने संकेत किया है। महामुनि पतंजलि के नियमों का संस्कार अन्यदेशीय लेखकों के हृदयों में भी था – यह स्पष्ट है।

उपरोक्त घटना का वर्णन मैथ्यू ने भी किया है। उसमें प्रलोभन की संभावना नहीं उठाई गई। फरिसियों का आग्रह वही है उसी के उत्तर में प्रभु कहते हैं—

"दुष्ट और व्यभिचारी पीढ़ी चमत्कार चाहती है। इसे चमत्कार नही दिखाया जाएगा, सिवाय भविष्यवक्ता जोनास के चमत्कार के। (12.30)"

"क्योंकि जैसे जोनास 3 दिन और तीन रातें व्हेल मछली के पेट मे रहा था, वैसे ही पुरुष पुत्र तीन दिन और तीन राते पृथ्वी के हृदय (पेट) में रहेगा।"
(12.40)

चमत्कार दिखाने से इन्कार दोनों वृत्तान्तो मे समान है। मैथ्यू के कथनानुसार प्रभु ने एक चमत्कार की आशा दिलाई, और वह था प्रभु का तीन दिन और तीन रात पृथ्वी के पेट मे रहना। यह सकेत है प्रभु ईसा के सूली चढने के पीछे तीन दिन दबे रहने और इसके पश्चात् भूमि के गर्भ से निकल आने की ओर ईसाई प्रभु ईसा के पुनर्जीवित होने की कथा ऐसे ही मानते हैं। इसकी समीक्षा हम आगे चल कर करेंगे। यहां इतना निर्विवाद सिद्ध है कि ईसा इस एक चमत्कार के अतिरिक्त जो उनकी मृत्यु के पश्चात होना है और कोई अलौकिक चिन्ह दिखाने से इन्कार करते हैं। यही नही, वह चमत्कार मागने वालों को दुष्ट और व्यभिचारी भी कहते हैं।

रहा जोनास का उदाहरण। उस पर संत ल्यूक का कथन सुनिए—

"वह (ईसा) कहने लगा, यह दुष्ट पीढ़ी है कि चमत्कार चाहती है। इसे कोई चमत्कार न दिखाया जायेगा सिवाए भविष्यवक्ता जोनास के चमत्कार के।"
(11—29)

"क्योंकि जैसे निनवा के लोगों के लिए जोनास एक चिन्ह था, वैसे ही पुरुष-पुत्र इस पीढ़ी के लिए चमत्कार होगा। (11—30)

यहा न मछली के पेट की कथा है न भूमि के गर्भ की। इंजीलों का आपस का वृत्तान्त-भेद बता रहा है कि इंजीलों का अक्षर 2 सत्य मानने की आवश्यकता नहीं। चमत्कार जैसे विषय पर, जो इंजील-लेखकों को अत्यन्त प्रिय है, दो लेखकों का मौन धारण करना और केवल एक का बेपर की उड़ान बता रहा है कि चमत्कार में कोई जान नहीं। प्रभु ईसा का कथन साहित्य के नियमानुसार सुन्दर है। उसमें व्यंग्य है। हमें ल्यूक और मार्क के वृत्तान्तों में कोई भेद नही जान पड़ता। एक जगह कहा है— चमत्कार नहीं दिखाया जाएगा। दूसरी जगह चमत्कार मांगने वालों को दुष्ट कहा है। एक स्थान पर चमत्कार का वचन दिया है—वह यों कि जोनास निनेवा के लोगों के लिए चमत्कार था, वैसा मैं (ईसा) तुम्हारे लिए दूंगा। जोनास एक सुधारक था। सुधारक सब चमत्कारी होते हैं। जगत् एक ओर जाता है यह दूसरी ओर। इनका रहन सहन, भोजन छादन, स्वप्न जागरण, सब विलक्षण होता है। श्री कृष्ण ने कहा ही है—

या निशा सर्व भूताना तस्या जागर्तिसंयमी।
यस्या जागृति भूतानि सा निशा पश्यतो मुने:॥

साहित्य की रीति से यह कथन चमत्कार दिखाने से इन्कार करने का एक चमत्कार युक्त ढंग है और यदि ल्यूक और मैथ्यू को आगे पढ़ा जाए, तो स्पष्ट प्रतीत होता है कि वास्तव मे जोनास का चमत्कार उसका धर्म प्रचार था। यथा—

"निनेवा के लोग इस पीढ़ी के साथ न्याय में उठेंगे और इसे फटकारेंगे। क्योंकि वह जोनास के उपदेश से पछताए थे और जोनास से भी महान् व्यक्ति इस समय यहां हैं।"

(ल्यूक 11, 32, मैथ्यू 12.41)

दोनों के शब्द एक ही हैं। मैथ्यू को स्वयं प्रचार कोई चमत्कार प्रतीत नहीं हुआ। साहित्य की व्यंग्योक्ति उसे आती ही नहीं, इसलिए मछली और

भूमि के पेटों की कल्पित तुलना कर दी है। हमें इस सारे वृत्तांत में मछली और भूमि का पेट क्षेपक प्रतीत होते हैं। इस तुलना का न पीछे से जोड़ है न आगे से।

यदि चमत्कार मांगना दुष्टता है तो इस मांग को पूरा करना कहां की बुद्धिमत्ता है? बात यह है कि प्रभु ईसा को चमत्कारों में विश्वास न था।

अब जरा श्रीमान् मुहम्मद महोदय की बात भी लो। जब इन्होने मक्के मे धर्मप्रचार का बीड़ा उठाया तो इनसे भी चमत्कार मांगा गया। इनकी ओर से उत्तर परमात्मा ने दिया।

कुरान मे आया है—

"और वे कहते हैं, परमात्मा की ओर से उस (मुहम्मद) पर चमत्कार क्यो नही उतरते। कह, चमत्कार परमात्मा के पास हैं और मैं एक सीधा सादा चेतावनी देने वाला हू।" (कुरान 29—50)

"क्या यह उनके लिए पर्याप्त नही कि हमने तुझे पुस्तक दिया है, जो उन्हें सुनाया जाता है। निश्चय इसमे दया है और श्रद्धालुओं के लिए चेतावनी है।" (कुरान 29—50)

श्री मुहम्मद महोदय का चमत्कार दिखाने से इन्कार महामना ईसा के इन्कार से भी अधिक स्पष्ट है। इसमें सन्देह नही कि कुरान का यह अध्याय मक्का में उतरा था अर्थात् मुहम्मद महोदय के प्रचार के आरम्भिक दिनों मे।

यही बात श्री गुरुनानक के जीवन मे पाई जाती है विस्तारभय से हम उससे उद्धरण नही देते।

अचम्भा यह है कि जिस काम के करने से यह महामना सुधारक लोग अपने प्रचार के लिए आदिम काल में इन्कार करते हैं, वही कार्य समय बीतने पर स्वयं करने लग पड़ते हैं। इसमें दो सम्भावनाएं हो सकती हैं। एक यह कि समय उन्हें अधिक बुद्धिमान् बना देता है। अपने मत का एक बड़ा बखेड़ा सा खड़ा कर लेने से उन्हें सच की उतनी लगन नही रहती जितनी अपने मत की संस्था चलाने की। दुर्जनतोष न्याय से इन्हें झूठ-मूठ के चमत्कार दिखाने ही पड़ते हैं। जिन्हें उनका अपना हृदय साधारण बात मानता है, उन्हीं बातों को सामान्य लोगों को अपने साथ रखने के लिए अलौकिक चमत्कार बना कर दर्शा छोड़ते हैं। या यह महापुरुष तो अपना समय जैसे तैसे काट लेते हैं, परन्तु उनके अनुयायी दम नही लेते, जब तक अपने मत के प्रवर्त्तक को संसार से भिन्न कोई देव शक्ति सिद्ध न कर लें। महापुरुषों के जीते जी उनका अपना महत्त्व ही उनका महान् चमत्कार होता है। परन्तु अनुयायियों में वह महत्त्व तो पाया ही नही जाता है। हां मर चुके महापुरुष के जीवन पर अलौकिक घटनाओ के गिलाफ चढ़ाते जाते हैं जिससे उसकी मानुषीय महत्ता का नाश होकर भ्रमोत्पादक दैवी कथा शेष रह जाती है।

कुछ भी हो, मार्क के उपरिलिखित शब्दो की स्याही अभी सूखी न होगी कि ईसा के चमत्कारों का वर्णन आरम्भ हो जाता है। यथा—

"और (चमत्कार दिखाने से इन्कार करने से पीछे) वह उनसे चला गया और जहाज मे बैठ कर पुनः दूसरी ओर प्रस्थान किया।" (8—13)

"अब शिष्यो को रोटी लेना भूल गई थी। और जहाज मे उनके पास एक रोटी से अधिक न थी।" (8—14)

"और उसने उन्हे आज्ञा दी, देखो, फरीशियो के खमीर से और हरेड के खमीर से बचे रहो।" (8—15)

"और उन्होने आपस में वाद किया, यह इसलिए कहा है कि हमारे पास रोटी नही।" (8—16)

"और जब ईसा को पता लगा, उसने उनसे कहा, रोटी न होने के कारण का क्यों अनुमान करते हो? क्या तुम देखते नही? समझते नही। क्या तुम्हारे हृदय कठोर हो गए हैं?" (8—17)

"आंखें रखते हो और नही देखते? कान रखते हो और नहीं सुनते? क्या तुम्हें स्मरण नहीं?" (8—18)

"अब मैंने 5 रोटिया पांच सहस्त्र मनुष्यों में बांटी थी? तुमने टुकडों की कितनी रोटियां उठाई थी? वह बोले—बारह।" (8—19)

यही घटना मेथ्यू ने वर्णन की है और अन्त में कहा है—

"यह क्या बात है कि तुम समझते नहीं कि मैंने तुम्हें रोटी के सम्बन्ध में यह आज्ञा नहीं दी कि तुम फरीजियों और सद्दूसियों के खमीर से बचो।

तब वह समझे कि उस (ईसा) की आज्ञा रोटी के खमीर के विषय में न थी, किन्तु फरीजियों और सद्दूसियों के सिद्धान्तों के सम्बन्ध में थी।

(16—11 व —12)

पाठको ने देख लिया कि यहां खमीर से अभिप्राय आटे के खमीर से नहीं, किन्तु सिद्धान्तों के खमीर से है। नए युग के ईसाई इस से अनुमान करते हैं कि 5000 भूखो मे जो 5 रोटिया बाटी गई थी, वह भी आटे की नही, ज्ञान की रोटियां थी। भोजन शरीरिक के स्थान मे आत्मिक था। इंजील-लेखक ने अपनी सरल बुद्धि से आत्मिक को शरीरिक समझा और वर्णन कर दिया।

ईसा के अन्य चमत्कार उसका अन्धों, लूलों, कोढ़ियों इत्यादि को अच्छा करना है। इन पर इनसाइक्लोपीडिया बिब्लिका अर्थात् बाईबल के विश्वकोष में निम्नलिखित सम्मति प्रकाशित की गई है—

"वस्तुतः हमें यह निश्चय करना चाहिए कि कितने और किस प्रकार के रोगो का निवारण ईसा ने किया। हमे यह पूर्ण अधिकार है कि केवल उन्हीं रोग-निवृत्तियो को ऐतिहासिक समझें जो आजकल के वैद्य भी मानसिक विधियो से कर सकते हैं, जैसे विशेषतया मानसिक रोग। यह समझना कदापि कठिन नहीं कि ईसा के समकालीनो ने सम्भवतः उसके कई ऐसे कार्यों को देखा हो जिन्हें उन्होंने अलौकिक समझा हो और इससे प्रभु में सब अलौकिक शक्तियों की कल्पना करली हो। जैसे आजकल के लोगों को विवेक नहीं होता, उन्हें भी न हुआ हो कि कौन से रोग मानसिक विधियों से ठीक हो सकते हैं और कौन से नहीं, यह भी स्मरण रखना चाहिए कि रोग का निवारण संभवतः अस्थायी हुआ होगा। यदि रोग की फिर आवृति हुई होगी, तो चिकित्सा की शक्ति का दोष न समझा गया होगा।"

लेखक का विचार है कि यह रोग ही सम्भव है आत्मिक हों। (Enc. Bile col 1885) अन्धे का अभिप्राय है अन्धबुद्धि। लूले का अर्थ धर्मपंगु इत्यादि। इनकी चिकित्सा उपदेश द्वारा हुई होगी (Enc. Bile col. 1883)।

बाइबल के अकसर वृत्तांतों को यह महाशय कथानक मात्र मानते है। इंजीर के वृक्ष का सूखना क्या था? जाति का हत-भाग्य होना था इत्यादि।

इस अनुमान के लिए इस लेखक के पास युक्ति भी है इंजीर का पकना ईस्टर के दिनों में रख दिया है, जो कभी हो नही सकता।

(मार्क—11-12-14, 20-25)

ल्यूक 33-44 मार्क 15-33 मैथ्यू 27-45 में सूर्य ग्रहण का वर्णन है, जिसकी तिथि 14 या 15 बताई गई है और सूर्य ग्रहण प्रतिप्रदा को ही होता है।

प्रभु ईसा के जन्म और मृत्यु को भी चमत्कार का रूप दिया जाता है परन्तु अब बड़े-बड़े ईसाई मानने लगे है कि ईसा की माता मेरी और पिता जौजिफ थे। इसी इन्साइक्लोपीडिया के स्तंभ 33-44 पर यह विचार प्रकट किया है। मृत्यु की घटना पर विवाद है। कोई-कोई इसे आत्मिक दर्शन मानते हैं। परन्तु अभी एक पत्र हमारे हाथ आया है जो महात्मा ईसा की मृत्यु के सात वर्ष पीछे लिखा गया था। आशा है वह पत्र शीघ्र प्रकाशित होगा। उसमें बताया गया है कि ईसा सूली पर मरे ही न थे। जीते उतार लिए गए थे। उन्होंने छिप-छिप कर अपने शिष्यों को दर्शन दिए। इस विषय के उद्धरण हम फिर कभी पाठकों के सम्मुख रखेंगे।

यह हुई प्रभु ईसा के चमत्कारों की व्यवस्था अब मुहम्मद महोदय की ओर आइए। चमत्कार दिखाने में उनको केवल संकोच ही नहीं किन्तु स्पष्ट

नकार है। तो भी उन पर चमत्कार गढ दिए गए हैं। चाद को दो टुकडे करना इन का प्रसिद्धतम चमत्कार है। इसका वर्णन कुरान मे यो आया है—

"समय आ गया और चाद टुकडे-टुकडे हो गया।" (27 1)

"और यदि वे चमत्कार देखें तो वह मुह फेर लेते हैं और कहते हैं, क्षणिक जादू।"

(27—2)

चाद के टुकडे होने का प्रमाण कुरान को छोड कर कहीं और नही मिलता। अरब का अपना अलग चाद तो कोई है नही कि वह टुकडे हुआ हो और ससार ने उसे न देखा हो। मिर्जा कादियानी ने महाभारत के किसी आनन्द पर्व का हवाला दिया है कि वहा इस चमत्कार का वर्णन है, परन्तु महाभारत मे आनन्द पर्व नाम का कोई पर्व ही नही।

तो कुरआन मे इसका वर्णन कैसे हुआ? मौलाना मुहम्मद अली एम ए ने कुरान की एक नई टीका छपवाई है। वह लिखते हैं यह घटना ऐतिहासिक है क्योकि सब मुसलमानो ने इसे माना है। पर विज्ञान का मुह बन्द कैसे हो? मौलाना लिखते हैं—

"सम्भव है, यह विशेष प्रकार का चन्द्र ग्रहण हो, जिसमे चाद दो टुकडे हुआ प्रतीत होता हो, उस का आधा भाग काला हो और आधा चमकीला या चन्द्रलोक मे कोई बडा उपद्रव हुआ हो या कोई ऐसी असाधारण प्राकृतिक घटना हुई हो। यह भी स्मरण रखना चाहिए कि इस चमत्कार की विशेषता चमत्कार होने मे नहीं किन्तु उसके उस समय घटित होने मे है, जिसकी भविष्यवाणी सदेश हर न की थी। The Holy Quran पृष्ठ-1022 पाद टिप्पणी-2388।

चन्द्र टूटने का अर्थ यह भी दिया है कि बात प्रकट हो गई (दी अफेयर बिकेम मैनीफेस्ट) यह अर्थ ले लिए जाए, तो घटना हुई ही नही।

इन मौलाना से कम बुद्धिमान् टीकाकार इस घटना को भविष्यवाणी के रूप मे प्रगट करते हैं कि कयामत के दिन चान्द टूटेगा, अभी टूटा नही।

श्री मुहम्मद महोदय के और चमत्कार भी बताए जाते हैं परन्तु कुरान मे इसी एक का स्पष्ट वर्णन है। शेष कोई महत्त्वपूर्ण बात नही। हदीसो मे इनके लघुशका से रोग ठीक करने के किस्से हैं, परन्तु उन्हे श्रद्धालु भक्तो की भक्ति पूर्ण गप्प समझना चाहिए। यही अवस्था प्रभु ईसा के थूक से अन्धो को ठीक करने आदि सिद्धियो की है।

कुरान मे श्रीमान् मुहम्मद महोदय के तो नही, परन्तु सुधारको के चमत्कारो का वर्णन है। ईसा को कुमारी का पुत्र कहा गया है। उनके पानी पर चलने, मिट्टी से पक्षी बनाने, हवा मे उडने आदि का भी वर्णन है। पहले टीकाकार आखें मीचे हुए यह सब वृत्तान्त ऐतिहासिक मानते चले आए है परन्तु मौलाना मुहम्मद अली इसका अर्थ वह नही करते, जो ईसाई पादरी। मिट्टी मनुष्य का मूल है। उसका पक्षी बनना और हवा मे उडना ज्ञान के आकाश की सैर है। इत्यादि। (Holy कुरान पृष्ठ 156)

परमात्मा को मेरी न कहा, मुझे पुरुष ने नही छुआ तो परमात्मा ने कहा, अल्लाह बनाता है, जो चाहता है। (कुरान 3 -46)

इससे स्पष्ट है कि कुरान के लेखानुसार ईसा का जन्म कुमारी से हुआ। पर जब ईसाई ही इस असम्भव की सभावना स्वीकर नही करते तो मुसलमानो को क्या पडी है कि उनकी मुफ्त की वकालत करें। मौलाना लिखते हैं, परमात्मा के साथ बात करते समय मेरी कुमारी थी। उसके पीछे भी ऐसी रही हो, इस का क्या प्रमाण है?

(Holy कुरान पृष्ठ 156
पाद टिप्पणी 427)

मौलाना की इन युक्तियो को समझ सकना पाठको की बुद्धि पर निर्भर है। ईसाई पादरी इजीलो को अक्षरश सत्य नही मानते। प्रभु ईसा की भाषण-प्रणाली अलकार युक्त होती थी। इन अलकारो का गुह्य अर्थ न समझ कर इजील-कारो ने उनमे प्रक्षेप किया है। प्रभु के वचन और कथक्कडो के वचन जुड नही सके। खोटा खरा अलग किया जा सकता

है। हां! परखिए की आवश्यकता है। यह मत इस नए युग के ईसाई पादरियों का है।

श्रीयुत मुहम्मद के समय में इंजीलें प्रचलित थी। उनकी कथाएं ऐतिहासिक मानी जाती थीं। मुहम्मद महोदय ने उन्हें ज्यों का त्यों स्वीकार किया और कुरान में डाल दिया यह कथाएं इस्लाम की पूंजी नही हैं और इनसे पल्ला छुड़ा कर भी मुसलमान रह सकता है। कठिनाई यह है कि इनका समावेश कुरान में हो गया है और कुरान मुसलमानों की दृष्टि में नित्य ज्ञान है, इसका अक्षर-अक्षर सत्य है। मौलाना मुहम्मद अली वह स्वतन्त्रता नही वर्त सकते जो मौडर्निस्ट ईसाई वर्त सकते हैं। अलंकार कुरान की भाषा में दिखाते हैं। परन्तु ऐसा करने से साहित्य का खून हो जाता है। यदि मौडर्निस्टों की तरह यह भी कुरान लेखक की भूल स्वीकार कर सकते तो चमत्कार से शीघ्र छुट्टी होती। हां बड़ी सफाई से होती सरलता से होती।

कुछ हो, संसार का विश्वास चमत्कारों से हट गया है श्री मुहम्मद महोदय पर मौलाना मुहम्मद अली के लेखानुसार भी एक चमत्कार का भार अवश्य है, वह है भविष्य वाणी करने का, चन्द्र के टुकड़े करने में इस्लाम के प्रवर्तक का हाथ नहीं, उसके विषय मे भविष्य वाणी कर और उस भविष्यवाणी के पूरा उतरने में उसका महत्व अवश्य है।

भविष्य-वाणी का सिद्धान्त एक पृथक् सिद्धान्त है और उसकी विवेचना करने के लिए एक अलग लेख-लिखने की आवश्यकता है। यह सिद्धांत भी चमत्कार के विश्वास अवशिष्ट मात्र है मिर्जा गुलाम अहमद कादियानी का धार्मिक नेतृत्व उतना उनके प्रकाशित किए धार्मिक मन्तव्यों पर अवलंम्बित नहीं, जितना उनकी भविष्य-वाणियों पर, उन्होंने हकीकत उल-वही नामक पुस्तक की भूमिका में लिखा है कि बीते परमात्मा की साक्षी बिना इसके क्या हो सकती है कि मनुष्य का आन्तरिक सम्बन्ध उस सर्वज्ञ प्रभु से हो, जो उसे आने वाली घटनाओं का ठीक-ठीक पता दिया करे। मिर्जा गुलाम अहमद का इलहाम परमात्मा की यही भविष्यवक्तृताएं थीं। इन वक्तृताओं के विषय कुरान के कुछ अध्यायों और आयतों की तरह मीर्जा महाशय की घरेलू घटनाएं हैं। उनकी पूर्ति विचित्र ढंग से होती रही है। "पुत्री न पुत्रः" वाली ज्योतिषियों की घटनाओं पर घटती है।

समय आएगा जब मौलाना मुहम्मद अली या उनका कोई और धर्म भाई भविष्य-वाणी के सिद्धान्त से उतना ही दूर हो जायेगा जितना वह इस समय अन्य अलौकिक चमत्कारों के मानने से पृथक् हुए हैं।

यह एक भारी परिवर्तन है, जो संसार के धार्मिक विचारों मे आया है। इसमें सन्देह नहीं कि विज्ञान के नित नए आविष्कारो ने जिन से आकाश में उड़ना, समुद्र पर तैरना भूमिगर्भ में घुसना, दीवार पीछे की चीज देखना, हजार मील की बात केवल संकेतों से ही नहीं, किन्तु उन्ही शब्दों उन्ही ध्वनियों में सुनना इत्यादि-इत्यादि चमत्कार जो पहले परमात्मा के विशेष कृपा-पात्रों द्वारा ही सम्पादित हो सकते समझे जाते थे, आज धनवानों के धन से सहसा क्रय किए जा सकते हैं। प्रश्न उठता है -धन बड़ा कि धर्म ? अब यदि इस बड़प्पन की कसौटी उपरिकथित चमत्कार हों, तो धन द्वारा तो वह प्रत्यक्ष प्राप्त होते ही है, परन्तु धर्म द्वारा उनके सिद्ध होने में सन्देह है। इसलिए धर्म को अपने बड़प्पन के लिए कोई नया आधार ढूंढने की आवश्यकता हुई है।

वह नया या अत्यन्त पुराना आधार चमत्कार नहीं, आचार है। ऋषि दयानन्द का जीवन चमत्कारक जीवन है, ऋषि के विचार की दृष्टि से परमात्मा ने सृष्टि के आदि में अपना सन्देश सुनाना था, सो सुना दिया। चमत्कार हो लिया। अमैथुनी सृष्टि की आज आवश्यकता नहीं, नए सन्देश की भी आज आवश्यकता नहीं। सन्देश हूरों के ब्याह रचाने की एजेंसी परमात्मा के पास नहीं। आज तो परमात्मा के संसर्ग का फल आत्मिक आनन्द है, उसके ध्यान

से आन्तरिक शक्ति मिलती है। संसार के व्यवहारों में धीरता पूर्वक विचरने की शक्ति आती है। यह है जीते परमात्मा का अनुभव।

ऋषि दयानन्द से कहा गया कि यदि आप वेद का प्रमाण देना छोड़ दें और उसके स्थान में यह कह दिया करें कि परमात्मा ने मुझे ऐसा कहा है तो लोगों को श्रद्धा अधिक होगी।

ऋषि का उत्तर सोने के अक्षरों में लिखे जाने योग्य है। हंसे और कहां ........"सत्य का प्रचार झूठ से करूं?"

आज महात्मा गान्धी उपवास का सन्देश परमात्मा से पाते हैं, ऋषि ने सब सन्देश वेद से पाए। यही ऋषि का चमत्कार है। जिन ज्ञान चक्षु विहीनों को ईसा आंखें दे चुके थे, उन्हें ऋषि के उपदेश से फिर आंखें लेनी पड़ी। चांद तोड़ना अरबी नबी का चमत्कार था, ऋषि ने वह चमत्कार ही तोड दिया। आज मजहबों में घुड़दौर है। सब आचार को परम चमत्कार मान रहे हैं। इसमें दयानन्द का चमत्कारमय जीवन आदर्श है। उस आदर्श की ओर सारे सुधारकों का जीवन सरकाया जा रहा है।

यह है ऋषि दयानन्द का चमत्कार जीवन आदर्श है। उस आदर्श की ओर सारे सुधारकों का जीवन सरकाया जा रहा है।

यह है ऋषि दयानन्द का चमकीला चमत्कार जिस पर समस्त धार्मिक संसार मुग्ध है। इस चमत्कार के आगे सब चमत्कार चूर हैं। इस चमत्कार के साथ दयानन्द मनुष्य है और मनुष्यों में देवता है। परमात्मा का पुत्र भी है और पुरुष-पुत्र भी। दयानन्द के कोष में (सन आफ मैन) और (सन आफ गाड) पर्याय हैं। परमात्मा का सन्देश संसार को पहुंचा दिया है पर उसके लिए सात आसमानों पर नहीं उड़ा। परमात्मा मे और इसमे दो कदमों का भी अन्तर क्यों हो, तिलभर का भी अन्तर नहीं। स्वयं दयानन्द परमात्मा का चमत्कार है, जैसे जोनास निनेवा वालों के लिए चमत्कार था और ईसा जरुसलाम वालों के लिए।

इस चमत्कारी दयानन्द को नमस्कार उसके चमत्कारों को नमस्कार!! इस चमत्कार-शैली को नमस्कार!!!

कैसे प्यारे शब्द हैं 'सत्य का प्रचार झूठ से करूं?

मतो वालो! पढो और इस चमत्कार की चमक मे अपने मतों को चमका दो।

---

**स्तुति विषय—यदङ्ग दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि।**
**तवेत्तत्सत्यमङ्गिरः ॥6॥ ऋ 1।1।2।6॥**

(अङ्ग) हे बन्धु! (अग्ने) हे प्रकाशस्वरूप! (अङ्गिरः) हे प्राणप्रिय! (यत्, भद्रं) जो सुख (त्वं) आप (दाशुषे) आत्मसमर्पण करने वालों के लिये (करिष्यसि) प्रदान करते हैं (तत्) वह (तवेत्) आप का ही (सत्यं) सच्चा दान है।

हे परमात्मन्! जो आपको आत्मसमर्पण करताहै उसको आप एहिक तथा पारलौकिक दोनों प्रकार के सुख प्रदान करते हैं। हे प्राणप्रिय परमात्मन्! अपने भक्तों को परमानन्द देना आप ही का अटल नियम है॥ आर्याभिविनय

—महर्षि दयानन्द

# आर्य समाज के गत पच्चास वर्ष के काम पर एक दृष्टि

(लेखक : स्व० पण्डित भगवत् दत्त जी बी. ए., रिसर्च स्कालर)

1. संघ में शक्ति है। संस्था में बल है। यह सर्वव्यापी सत्यसिद्धान्त ऋषि दयानन्द सरस्वती के हृदय मे दिन प्रतिदिन अधिक प्रबल हो रहा था। तब विक्रम का संवत् 1931 था। मुम्बई के अनेक उदार चेता भक्तों ने भी ऋषिवर से यही प्रार्थना की। फलतः उसी संवत् में आर्यसमाज की स्थापना हुई। आज संवत् 1981 है। निश्चय ही आर्य-समाज स्थापित हुए पचास वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। ऐसे समय में इसके पिछले कार्य पर विचार करना अत्युचित होगा। इन अतीत वर्षों का इतिहास हमारी सफलताओं और त्रुटियों का इतिहास हमारे भावी कार्य के लिए अत्युपयोगी है।

आर्य समाज का छटा नियम है : संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है। अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना— गत पचास वर्षों मे हमने ससार में शरीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति की सीमा में कितना अन्तर उत्पन्न कर दिया। इसके देखने से ही आर्य-समाज के गत वर्षों का काम ज्ञात हो जायेगा। संसार की बात तो अभी बड़े दूर की है वह तो पहले ही अनेक बातों में हम से अधिक उन्नत है हां! आर्यावर्त में काम करते हुए जो परिवर्तन आर्यसमाज के काम से उत्पन्न हुए हैं, उनका अध्ययन आर्यसमाज के काम का वास्तविक पाठ है।

**शारीरिक उन्नति**

3. पुरातन आर्य दीर्घ जीवी थे। वे दृढ़काय और अतिबलवान् होते थे। उनकी सन्तान शनैः-शनैः इन गुणों से हीन होने लगी। पर जो हीनता गत सौ वर्ष में हुई वह शोचनीय थी। भगवान् दयानन्द ने इस हीनता के कारणों पर विचार किया। उन्होंने ब्रह्मचर्याभाव को इस का प्रधानांश पाया। इसके साथ आर्यों की व्यायाम से अप्रियता और इस देश में दुग्ध, घृत आदि पौष्टिक भोजनों का अभाव उन्हें बहुत खटका। उन्होंने पूर्वोक्त अभावों के निवृत्यर्थ अपना सिंह नाद किया। भगवान् का अनुकरण करते हुए आर्यसमाज ने भी बाल-विवाह के विरुद्ध और गौरक्षा के लिए अपना काम जारी रखा। और आज भारत के उन प्रान्तों में जहां आर्यसमाज का अधिक प्रचार है, कौन इसके हृदय ग्राह्य फलों को नहीं जानता।

(क) आर्यसमाज की ही कृपा से पंजाब के शिक्षित समाज और द्विजों में से बाल-विवाह दूर हो रहा है। 15 वर्ष की बात कौन कहे, बीस-बीस और बाईस-बाईस वर्ष की युवतियों के विवाह अब पंजाब में साधारण से जान पड़ने लगे है। अविवाहिता युवति कन्या को पितृ-गृह मे देख कर अब कोई विरला ही दान्तों तले अगुली दबाता है। इसके विपरीत अल्प वयस्का कन्याओं के विवाह पर घृणा प्रकट की जाती है। कान्याओं की ही बात नहीं, पुरुषों के ब्रह्मचर्य की ओर भी लोगों की दृष्टि आकृष्ट हो चुकी है। आज से 15 वर्ष पूर्व जहां प्रत्येक कालेज में सैंकड़ों विवाहित विद्यार्थी प्रविष्ट होते थे, वहां आज गिनती के दस बीस ही होते हैं। गुरुकुलों की देखा देखी अन्य मतस्थों ने भी वैसी ही संस्थायें बनाई हैं। गोरक्षा की ओर भी लोगों का ध्यान कितना खिंच रहा है। यहां एक बात से आर्यसमाज के प्रभाव का विशेष पता चलेगा। मद्रास, गुजरात, महाराष्ट्र और बंगाल में लोग दूध पीना भूल रहे हैं। साथ ही सर्वतोमान्य बन रही

है। पर पंजाब आदि स्थानों में जहां ऋषिवर की कृपा से लोगों को शारीरिक बल बढ़ाने की दिन रात शिक्षा मिल रही है वहां यह नूतन रोग यत्न करने पर भी अपना अधिकार बहुत नहीं बढ़ा सका।

(ख) इस सम्बन्ध मे एक बात है जिसकी ओर आर्य समाज ने भी अभी पूरा ध्यान देना आरम्भ नही किया। सैकडों ऐसे आर्य घर अब भी देखे जाते है, जहां अत्यन्त बुरे प्रकार का भोजन खाया जाता है व्यक्ति गत घर तो दूर रहे, अनेक आर्यसमाजो के उत्सवों पर भी देखा गया है कि उपदेशको को वह भोजन मिलता है, जो आर्यों के खाने योग्य ही नही होता। अतः शारीरिक उन्नति के मार्ग में जो यह भारी रुकावट है, उसे भी भावी काल में आर्यसमाज ने ही दूर करना है।

(ग) कोई दस वर्ष से पहले आर्यसमाज में एक हानि-कर प्रथा चल पड़ी थी। वह था कन्या पाठ-शालाओं में कन्याओं को यथार्थ शरीर संरक्षण के आदर्श से परे करना। आज ईश्वर-दया है, वे भाव पद्‌दलित किए गए हैं। आर्य महिलाओं ने भी स्व-कर्त्तव्य को बहुत कुछ समझ लिया है।

आत्मिक उन्नति

अपने प्रचार काल मे ऋषि दयानन्द सरस्वती ने एक विशेष ध्यान रखा था, उन्होंने आर्यसमाज में आत्मिक उन्नति की कोई दुकानदारी नहीं चलाई। राधा स्वामियो, देव समाजियों और कतिपय दूसरे गुरुओं की दुकानें आज अच्छे ढंग पर चल रही हैं। पर हैं ये अन्त मे दुकानें ही। इन दुकानों के मैनेजर, इन पंथों के गुरु हैं। आर्यसमाज में ईश्वर कृपा से यह मिथ्या-कारी गुरुडम नहीं चला। इसी कारण आर्यसमाज में जिस आत्मोन्नति की दीक्षा मिलती है, वह कुछ और है। यहां मनुष्य के मन को, सबल बुद्धि को प्रतिभा शालिनी, और आत्मा को निर्लेप बनाया जाता है। बुद्धि की दौड़ को पराकाष्ठा तक पहुंचाने का अवसर दिया जाता है। बुद्धि रहती भी सर्व-स्वतन्त्र है। अत: इन बातों के लिए जो भी उपाय हो सकते थे, वे सब इन पचास वर्षों में बर्ते गए हैं। उन्हीं का फल है कि आज निम्नलिखित परिवर्तन इस देश के प्रायः सभी भागों में दिखाई देते हैं ..........

(क) सब वर्णो की सन्ध्या एक है और लाखों नर-नारी प्रति सायं वा प्रात: अपनी सन्ध्या उपासते हैं। जड़-पदार्थो की पूजा धीरे-धीरे लुप्त हो रही है। इस विषय में गत अर्द्ध शताब्दी में आर्यसमाज ने आशातीत सफलता प्राप्त की है। वे लोग भी जो आर्य समाज से अपना सम्बन्ध अति घनिष्ठ नहीं बताते, इसी सन्ध्या को करते हैं।

(ख) अग्निहोत्र की प्रथा, जो बंग प्रान्त महाराष्ट्र मद्रास में ढूढें ही मिलेगी, पंजाब और संयुक्त प्रान्त में कैसी प्रिय बन रही है।

(ग) सहस्रो आर्य प्राणायाम आदि योग सम्बन्धी क्रियाओं के अनुष्ठान का प्रयास कर रहे हैं।

(घ) आर्य भाषा व संस्कृत का प्रचार आगे की अपेक्षा आज कितना अधिक है। वह पंजाब जहां आर्यभाषा मे दिये गए श्री स्वामी जी के व्याख्यानों को पूरा समझने वाले भी कम थे, आज सस्कृत प्रेमियों से भर रहा है।

(ङ) आर्य कन्या पाठशालाओ से सहस्रों ऐसी महिलाए निकल चुकी है जो श्रुति को पढ़ती हैं और विद्यामन्दिर में प्रविष्ट हो कर अपनी आत्माओं को सन्तुष्ट कर रही हैं।

(च) वेद, शास्त्र का प्रचार कितना बढ़ गया है, और तो और दर्शनों के व उपनिषदों के उर्दू में ही कितने संस्करण निकल चुके हैं, जो साहित्य आर्यसमाज द्वारा उत्पन्न हुआ है, उसमें अधिकांश यद्यपि उच्च कोटि का नही, तथापि समया-नुसार अपना काम दे ही रहा है। शास्त्रीय साहित्य की जितनी खपत आर्यसमाजियों में है, उतनी अन्यतर कहीं नहीं। स्वाध्याय पर निरन्तर बल दिए जाने से वेदों की ओर भी लोग आकृष्ट हो रहे हैं।

(छ) इस विषय में एक ही त्रुटि है, जो भविष्य

में पूर्ण होगी। वेदों के उच्च कक्षा के विद्वान् अभी दृष्टिगत नहीं होते। अनेकों विदेशियों ने जो वेद विरुद्ध सैकड़ों गम्भीर ग्रन्थ लिखे है, उनका यथार्थ उत्तर देने की चेष्टा नहीं की जा रही। जब ही यह काम यथोचित रीति से हो गया, तब ही सारा संसार वेद धर्म में प्रविष्ट होकर अपनी आत्मोन्नति कर सकेगा।

**सामाजिक उन्नति**

(5) कोई समाज त्यागी महात्माओं के बिना उन्नत समाज नहीं कहा जा सकता। त्यागी पुरुषों के बिना समाज ज्योतिहीन होता है। इस त्याग का जो आदर्श समाज ने उपस्थित किया है, वह भारत के दूसरे स्थलो में नहीं है। गत राजनैतिक आन्दोलन में भी कितने ही तपस्वी हृदयों ने गान्धी जी की शरण में आते हुए अपने-अपने काम छोड़ दिए। पर क्या उन्होंने अपनी सम्पत्ति भी देश के अर्पण की? नहीं-नहीं। राजनैतिक क्षेत्रों में अभी यह आदर्श ही उत्पन्न नहीं हुआ कि त्याग और धन का त्याग बहु-बल वर्धक है। यह सत्य है कि छोटे-छोटे बीसियों लोगों ने अपनी नौकरियां छोड़ दी, पर क्या बड़े वकीलो ने भी अपनी लाखो की सम्पत्ति दान करके देश-सेवा आरम्भ की दूसरी ओर आर्यसमाज को देखो। महात्मा मुन्शीराम और स्वामी दर्शनानन्द ने अपना सब कुछ स्वाहा करके आर्यसमाज के कार्यक्षेत्र में पदार्पण किया। पंडित गुरुदत्त ने जिन बड़ी नौकरियों को छोड़ा, उन्हें सदा ही ध्यान से परे रख कर कैसे सारा जीवन व्यतीत किया। महात्मा हंसराज का सदैव का निर्धनता का जीवन इस बात का ज्वलन्त दृष्टांत है? अधिक उदाहरण देने का स्थान नहीं। त्याग के विषय में जो सामाजिक परिवर्तन का भारी काम आर्यसमाज ने किया है वह इसी का भाग है।

(क) आर्यसमाज ने ही सार्वजनिक कामों के लिए दान की प्रणाली को बदला। दान के विषय में जितना विश्वास आर्यसमाज पर लोगों का है, उतना किस पर है? तनिक खिलाफत और 'तिलक स्वराज्य-फण्ड' की ओर ही देख लो। वहां रुपए का व्यय किस निर्दयता से हुआ। क्या आर्य समाज ने इस विषय में भारी काम नहीं किया?

(ख) आर्य समाज के काम को वर्षों हो चुके थे, पर तीन वर्ष पहले किसको ज्ञान था कि आर्यसमाज की विजय के दिन समीप आ रहे हैं। तत्काल शुद्धि का वह दौर चला कि नये आर्यों में सामाजिक बल का आविर्भाव सब को दिखाई देने लगा। सारे भारत में खलबली पड़ गई। गान्धी जी का धीर आत्मा भी हिल गया। उस हिले आत्मा ने जो अस्तव्यस्त लिखा उसे सब जानते ही हैं। वे हठी हैं। अपनी भूल को चाहे न मानें। कबूतर के आंख बन्द कर लेने से बिल्ली चली नहीं जाती। कबूतर खाया जाता है। गान्धी जी की भूल-भारी भूल-भूल ही है। अस्तु, शुद्धि अब चलेगी और आर्य धर्म का क्षेत्र विस्तृत करेगी।

(ग) अछूतोद्धार भी सारी आर्य जाति ने लगभग स्वीकार कर लिया है। ईश्वर करेगा, कि वाईकम का सत्याग्रह अभिमानी ब्राह्मणों के गढ़ों में से इस कुरीति को दूर कर देगा।

(घ) संस्थाओं का बनाना, सभाओं का बनाना, अन्तरंग सभाओं के उत्तरदायित्व का शिक्षण, यह आर्य समाज के काम से लोगो को अत्यधिक हुआ है।

(ङ) आर्यावर्त की दुर्भिक्ष और विपत्तियों में आर्यसमाज के सेवको ने सब से अग्रसर होकर काम किया है। आर्य जाति के अनाथों की रक्षा का काम भी आर्यसमाज के द्वारा ही इतनी सफलता से हो रहा है।

सामाजिक-उन्नति में आर्यसमाज ने और भी अनेक भारी काम किए हैं। शिक्षा विषयक काम तो आश्चर्य जनक है। और वस्तुतः आर्य समाज की अधिक दृष्टि रही भी सामाजिक सुधार की ओर ही है। उस में आर्यसमाज को पर्याप्त समय देना पड़ा है। विज्ञ पाठक स्वयं बहुत कुछ विचार सकते हैं। यहां तो किन्चितमात्र दर्शन कराना था।

ईश्वर करे, अगले पचास वर्षों में आर्यसमाज के पूर्वोक्त तीनों प्रधान काम सर्वव्यापी होकर कम से कम भारत को तो विशुद्ध आर्य बना दें।

# आर्य जनों से

(रचयिता—स्वर्गीय श्री प्रकाशचन्द्र कविरत्न अजमेर)

(जीवन भर आर्य समाज की सेवा मे निरत भारतमान्य कवि)

आर्य जनों ! है यही समय करना है जो कर जाओ।
तजो शिथिलता बाध कमर कर्त्तव्य क्षेत्र मे आओ ।।

हीन भावना तजो प्रथम, तुम बनो न हतोत्साही।
तुम ही बलिदानी वीरो के चरण-चिन्ह के राही ।।
कापी तुम से ब्रिटिश हकूमत, निष्ठुर निजामशाही।
आखिर तुम हो दयानन्द ऋषिवर के वीर सिपाही।

तुम समर्थ सब भाति शक्ति निज सदुपयोग मे लाओ।
आर्य जनो ! है यही समय करना है जो कर जाओ ।।

मिट जाये मदमान मूढ मतवालो मक्कारो के।
रहे न नामनिशान चोर, जारो के गद्दारो के ।।
टूटे दुर्ग पातकी, घातक ढोंगी अवतारो के।
धर्म राष्ट्र भाषा द्रोही दुर्जन गौ हत्यारो के ।।

होवें पस्त हौसले सारे ऐसी क्राति मचाओ।
आर्य जनो ! है यही समय करना है, जो कर जाओ ।।

प्रचारार्थ वेदो के देश विदेश विचरना होगा।
इसके हित जीना होगा, इसके हित मरना होगा ।।
द्वेष, कलह, कटुता विसार सब भाति सवरना होगा।
आर्य समाज समुन्नत सबको मिलकर करना होगा ।।

आर्य समाज गुणावलि गाथा बडे प्रेम से गाओ।
आर्य जनो ! है यही समय जो करना है कर जाओ ।।

आर्य समाज बिना शुचि वैदिक सत्यपथ कौन बताता।
कौन अविद्या, अघ, अधम चगुल से तुम्हे छुडाता ।।
राष्ट्रीयता सच्ची इसके बिना कौन सिखलाता।
आर्य समाज 'प्रकाश' तुम्हारी जीवन दात्री माता ।।

निज दुर्बलता से माता का गौरव नही गिराओ।
आर्य जनो ! है यही समय करना है जो कर जाओ ।।

चरण बढाओ निर्भय हो, ले ओ३म् पताका कर मे।
आर्य बनाओ सब जग को कर वेद कथा घर घर मे ।।
बोलो पूज्य धर्म वैदिक की जय जय ऊचे स्वर मे।
पावन आर्य समाज करे स्थापित हर ग्राम नगर मे ।।

तन, मन, धन से मिलकर आर्यसमाज शताब्दी मनाओ।
आर्य जनो ! है यही समय करना है जो कर जाओ ।।

# आर्य समाज का भूत और भविष्य

(लेखक : स्व० श्री पं० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति व्यवस्थापक "अर्जुन")

व्यक्तियों और जातियों का इतिहास मनोरंजन का उत्तम मसाला होने के साथ ही साथ ठीक रास्ता दिखाने का विश्वास योग्य साधन भी है। कई लोग इतिहास को केवल मनोरंजन के लिए पढ़ते हैं। और पढ़ कर भुला देते हैं। ऐसे भी लोग हैं जो इतिहास को धर्म शिक्षा मान कर पढ़ते हैं। पढ़ने वाले पर ही नहीं, कभी-कभी यह भेद इतिहास के प्रकार पर भी अवलम्बित रहता है। कई इतिहास मनोरंजकता की दृष्टि से इतने ऊंचे होते हैं कि उनके सामने उपन्यास मन्दम पड़ जाता है। उनकी मनोरंजकता इतनी खेंचने वाली होती है कि पढ़ने वाले की दृष्टि उस शिक्षा पर नहीं पड़ती जो इतिहास से प्राप्त होती है। कई इतिहास मनोरंजक नहीं होते, केवल शिक्षा दायक होते है। केवल दूरदर्शी और बारीक समझ के लोग ही उनसे लाभ उठा सकते हैं, इतिहास की दृष्टि से आदर्श वह हैं, जो मनोरंजक भी हैं, और शिक्षादायक भी हैं। व्यक्तियों के इतिहास ऐसे मिलते हैं, जो मनोरंजक हो परन्तु शिक्षादायक न हों और शिक्षादायक हों परन्तु मनोरंजक न हो। जातियों और संस्थाओं के इतिहास की यह विशेषता है कि उनमें प्रायः दोनों गुण रहते हैं। वह मनोरंजक भी होते हैं और शिक्षादायक भी होते हैं।

आर्यसमाज का इतिहास अभी बहुत लम्बा नहीं है परन्तु वह है खूब मनोरंजक। समीप की चीज इतनी फैली हुई दिखाई देती है कि उसकी व्यापक खासीयतों पर दृष्टि नहीं पड़ा करती। इस कारण आर्य समाज के इतिहास पर भी उतनी व्यापक दृष्टि नहीं पड़ रही है, जितनी पड़नी चाहिए। परन्तु जिस विद्यार्थी ने ध्यान से उसे पढ़ा है, वह निश्चय से कह सकता है कि इस नई लड़ाकू धार्मिक समाज का इतिहास ईसाइयत या इस्लाम से कम मनोरंजक या लाभदायक नहीं होगा। आर्यसमाज ने अपने जीवन के इस थोड़े समय में बहुत से उतार-चढाव देख लिए हैं, उसके कई इम्तिहान हो चुके हैं, उसे कई नाकामयाबियों और उनसे भी अधिक कामयाबियों के देखने का अवसर मिला है। उसके जीवन के इन थोड़े से वर्षों में युगपरिवर्तन हो गया है कोई लहर ऐसी नहीं चली, जिस पर आर्यसमाज ने प्रतिक्रिया न उत्पन्न की हो। कोई आन्दोलन ऐसा नही उठा, जिस पर आर्यसमाज का सिक्का न हो। यदि विस्तृत प्रभावों के कारण किसी संस्था जीवन शक्ति का अनुमान किया जा सकता है, तो आर्य समाज से अधिक जटिल, संस्था भारत वर्ष मे नही मिल सकती।

इतिहास की मनोरंजकता हमेशा पेचीदा और सन्दिग्ध समयो से बढ़ा करती है। ऐसे समय आ जाते हैं, जिन्हें सन्देह काल कहते है, जिनमें नायक जियेगा या मरेगा, यह संशय उत्पन्न हो जाते हैं। एक उल्टा पग भी विनाश की खाई में ले जाने का कारण बन सकता है। उपन्यास में, नाटक मे, इतिहास मे वही समय असली मनोरंजकता का होता है। जब नायक की जान पर आ बनती है तब पढ़ने वालों को मजा आता है आर्य समाज के इतिहास में कम से कम दो ऐसे सन्देह के क्षण आ चुके हैं। ऋषि दयानन्द की मृत्यु के समय पहला सन्देह का क्षण उपस्थित हुआ था। वह समय था, जबकि आर्य समाज का भविष्य जीवन निर्धारित होना था उस समय के सामने तीन रास्ते खुले थे। ऋषि की मृत्यु आकस्मिक हुई। मृत्यु के समय आर्य समाज के पास

न विद्वान थे, न मजबूत संगठन था, और न काफी संस्थाएं थी। विरोधी बहुत अधिक थे। सरकार सन्देह की दृष्टि से देखती थी, ईसाई पादरी जान के दुश्मन हो रहे थे। जिन लोगों की रोजी न रही थी, वह केवल मौका ताक रहे थे। इतने विरोधी और इतनी थोड़ी शक्ति वह तीन मार्ग निम्नलिखित थे—

1. आर्य समाज विरोधियों के सामने सिर झुका कर अपनी हस्ती को खो देता।
2. आपत्ति के समय अपने स्वतन्त्रता पूर्व संगठन को छोड़कर किसी एक व्यक्ति के गुरुडम में फंस जाता।
3. वह बहादुरी से विरोध का सामना करता और अपने प्रजातन्त्र के सिद्धान्त पर स्थिर रहता है।

ऐसे ही समयों पर परीक्षा हुआ करती है। समय के खतरों की अपेक्षा सिद्धान्तो का बल अधिक शक्तिशाली साबित हुआ। आर्य समाज ने तीसरा मार्ग चुना। वह छोटा सा मनुष्य समूह 30 करोड़ व्यक्तियो से टकराने के लिए तैयार हो गया।

दूसरा सन्देह क्षण तब उपस्थित हुआ, जब 1907 के आन्दोलन में ला॰ लाजपतराय को माडले भेजा गया और फिर पटियाले के आर्य पुरुषों पर राजद्रोह का मुकद्दमा चलाया गया। ब्रिटिश सरकार की सम्पूर्ण शक्ति आर्य समाज के विरोध मे खड़ी हुई थी। उस समय भी आर्य समाज डरकर हथियार रख सकता था। मानना पड़ेगा कि दो एक स्थान पर आर्य-समाज ने हथियार रख भी दिए परन्तु सामान्यतया उसने अपने आसन को नहीं डोलने दिया। उस सन्देह क्षण में भी आर्य समाज ने अपनी सत्ता को स्थिर रख कर सिद्ध कर दिया कि उसमें कुछ सच्चाई भी है।

भावों के उतार व चढ़ाव के बिना इतिहास का स्वाद नहीं आता। न उसमें मनोरंजकता आती है और न उससे कोई पाठ सीखा जाता है। आर्य समाज के इतिहास में भावों के उतराव चढ़ाव की कमी नहीं है। एक समय ईसाई पादरी आर्य समाज के जानी दुश्मन थे, दूसरे समय दिल्ली के सेण्टस्टीफस कालिज और गुरुकल कांगड़ी के बीच में एक पुल-सा बना हुआ प्रतीत होता था एक समय आर्यसमाज को राजद्रोही संस्था कहा जाता था, और दूसरे समय वायसराए महोदय अपनी इच्छा से गुरुकुल कांगडी में तशरीफ लाते हैं। एक बार प्रतीत हुआ कि घर की फूट ने आर्य समाज का सर्वनाश कर डाला, फिर देखा तो तन दो हिस्सों मे बंट कर वह और भी मजबूत हो उठा। एक दिन आर्य समाजी लोग कांग्रेस को घृणा के योग्य समझते थे, वह दिन भी आया जब पंजाब में आर्य समाजों के प्रधान ही प्राय: कांग्रेस कमेटियों के प्रधान बनाए गए। सारांश यह कि मनोरंजकता का दूसरा कारण भाव परिवर्तन भी आर्य समाज के इतिहास में खूब पाया जाता है।

आर्य समाज के आज तक के इतिहास मे प्रसन्नतादायक घटनायें भी हैं और दु:ख जनक घटनाएं भी हैं। उसमे सन्तोष के क्षण भी हैं और संताप की घड़ियां भी है। परन्तु सारे इतिहास का यदि कोई एक पाठ है, तो यह है कि आर्य समाज जिन असूलों के लिए खडा है, उनमें विघ्न बाधाओं को जीत लेने की शक्ति है। दूसरे शब्दों में कह सकते है कि आर्य समाज के संगठन में ऋषि दयानन्द का तपोबल कार्य कर रहा है।

भूतकाल का यह उपदेश है, भविष्य काल की यही आशा है। बाहर के शत्रु बढ़ सकते हैं अन्दर की फूट और अधिक प्रबल हो सकती है। कुछ समय के लिए भाव चन्द्रमा अस्त होता हुआ दिखाई दे सकता है परन्तु यदि इतिहास का उपदेश सत्य है, तो आर्य समाज का प्रभाव प्रतिदिन बढ़ता ही जायेगा। जिन सिद्धान्तों के लिए आर्य समाज लड़ता है, वह विजयी होंगे और आज के समालोचकों को कल ही भक्त बनना पड़ेगा।

नोट —यह लेख सम्वत् 1981 में लिखा गया था

# आर्यसमाज के 50 साल के जीवन पर एक दृष्टि

(लेखक स्व० श्री पूज्य नारायण स्वामी जी महाराज)

जीवन का चिन्ह यह है कि पिछले समय पर दृष्टि डाल कर आगे के लिए परिणाम निकाला जाए। यह सुनहरी नियम जहा और, जिस तरह से व्यक्ति के लिए है, उसी तरह से जाति या समाज पर भी लागू है। आर्यसमाज के 50 साल के जीवन का स्वाध्याय उसके आने वाले समय की बनावट को हमारे सामने उपस्थित कर रहा है। आर्यसमाज के जीवन मे श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती की जन्म शताब्दी का उत्सव मनाना एक असधारण घटना है। इसलिए इस असाधारण समय पर व्यक्ति और जाति दोनो को गम्भीरता से विचार करके आगे के लिए पाठ भी पढने चाहिए। इस समय हम केवल जातीय अवस्था पर ही एक दृष्टि डालना चाहते है।

**1 आर्यसमाज की स्थापना और आरम्भिक कार्य**

आर्यसमाज के प्रवर्तक ने अपनी जीवनी के 50 साल आगामी जीवन की तैयारी मे व्यतीत करके अपना काम आरम्भ किया। उनका काम केवल 10 साल तक चला। 10 साल के पीछे उनकी जीवनी का पर्दा गिर गया। उसके बाद आर्यसमाजो का अपने पाव पर खडे होने का अवसर आया। आर्यसमाज के प्रवर्तक ने आर्यसमाज की स्थापना की और प्रचार का काम बहुत तेजी से शुरू किया। इसी प्रचार के काम के साथ ही उन्होने लेख द्वारा प्रचार का काम भी जारी किया। अगर स्वामी जी आज लाहौर मे व्याख्यानो का क्रम जारी करते हैं, तो कल ही उन्हे जालन्धर शास्त्रार्थ के लिए जाना पडता है। आज अगर अनूपशहर मे शास्त्रार्थ करते हैं, तो कल दीनापुर की लम्बी यात्रा कर उन्हे वहा पर एक यज्ञ कराना पडता है। इसी उदाहरण से उनके काम का अनुमान लगाया जा सकता है जिसका बहुत अधिक भाग लम्बी-लम्बी यात्राओ मे प्रचार के काम के ही लिए व्यतीत हुआ। इस क्रियात्मक जीवन का प्रभाव उस समय के रहते हुए आर्यों पर असाधारण रीति से पडा। उस समय का बना हुआ हर एक आर्य सचमुच आर्य समाज का एक उपदेशक बना रहता

श्री नारायण स्वामी जी महाराज

था। उनमे बहुतो की यह अवस्था थी कि जिस दिन वह आर्यसमाज के प्रचार का कुछ काम नही कर लेते थे, तो उनके दिलो मे एक दर्द उठता था कि आज एक पवित्र कर्त्तव्य का पालन नही हुआ इस का परिणाम यह हुआ कि आर्यसमाज फैला और बिजली की तरह से चमकता हुआ फैला जिसने ससार की आखो मे चकाचौंध पैदा कर दिया। यदि 'ह्यूसन' आर्यसमाज को एक भट्ठी

बतलाने और कहने लगा, तो यह उसी अर्थ में है कि इसमें दुनियां के मत मतान्तर कूड़ाकरकट की तरह भस्म हो जाएंगे। दूसरी ओर मनुष्य गणना का सुपरिन्टेंडेंट उसकी 30 प्रतिशत उन्नति देख कर चकित रह गया और सरकार ने भी उसके इसी चौंका देने वाले प्रारम्भ को देख कर भूल से अपने लिए भय का कारण समझा और परिणाम यह कि इस साधारण उन्नति का न केवल प्रारम्भ हुआ प्रत्युत स्वामी जी की जीवनी के अन्तिम दिनों तक और कुछ समय तक उसके बाद भी कह सकते है कि उसी प्रचार ने आर्य समाज को इतना बढ़ाया कि जिस का उदाहरण ससार के इतिहास मे नही मिलता। आर्यसमाज के प्रवर्तक का प्रयास समाप्त हुआ और उन्होंने संसार से कूच करके परलोक का रास्ता लिया। उदयपुर के महाराणा श्री सज्जन सिंह जी के नेतृत्व में आर्यसमाज ने प्रचार की परम्परा को जारी रखा लेकिन स्वामी जी के वियोग ने आर्यों को दुःखी किया और दुःखित हृदय आर्यों ने अजमेर में इकट्ठे हो कर इस बात पर ध्यान दिया कि आगे के लिए क्या करना चाहिए। दो उपाये सोचे गए :—

1. हर एक सूबे मे प्रान्तीय प्रतिनिधि सभाए बनाई जावें और वे प्रचार के काम को हर एक प्रान्त में प्रचलित रखें।

2. स्वामी जी महाराज की यादगार मे एक कालिज बनाया जावे।

## 2. संस्था युग

इस उपाय ने आर्यसमाज के प्रचार युग को समाप्ति की ओर कर दिया और आर्यसमाज में एक बुरा युग प्रारम्भ हुआ, जिस को हम संस्था युग कह सकते है। इसी युग मे प्रतिनिधि सभाएं बनीं और प्रचार का काम भी चलता रहा लेकिन उसका झुकाव कमी की ओर हो गया। डी० ए०वी० कालेज लाहौर की नीव पड़ी और आर्यों के प्रयत्न कालिज के लिए धन एकत्रित करने में लगने लगे। संयुक्त प्रान्त से कुछ काल तक तो लाहौर के कालिज की ही सहायता होती रही। बाद में यहां के नेताओं ने यही उपाय सोचा कि इस प्रान्त मे एक पृथक् कालिज बनाया जावे। यहां भी इसी सोचे हुए कार्य के लिए धन एकत्रित होना आरम्भ हो गया। बात यहीं समाप्त नहीं हुई प्रत्युत और भी संस्थायें खोली जाने लगी। अनाथालयों की नींव पड़ी। बरेली, फीरोजपुर में अनाथालय खुले। कन्या पाठशालएं स्थापित हुई। पुत्रों के लिए संस्कृत की पाठशालाएं खोली गईं; विधवा आश्रम बने। डी० ए० वी० स्कूल की बुनियादें पड़ीं। अन्त में गुरुकुल की स्थापना हुई। इसी प्रकार से ये सस्थायें एक दो तक सीमित नही रहीं किन्तु इनकी संख्या हजारों तक पहुच गई। क्यों इतनी संस्थाएं खुल गई? इसका उत्तर, आवश्यकता ही कहा जा सकता है। जब आर्य जनता ने देखा कि स्कूल और कालिजों से संस्कृत भाषा और ब्रह्मचर्य की आवश्यकता पूरी नहीं हो सकती, तो गुरुकुलो के खोलने का विचार उठा और अनेक गुरुकुल खुल गए। जिसमे मुख्य कांगडी और वृन्दावन के गुरुकुल हैं। इस संस्था युग के अच्छे और बुरे दोनो पहलू हैं। अच्छे पहलू तो यह हैं कि इनसे ···· ···

1. शिक्षा का प्रचार हुआ। संस्कृत और आर्य भाषा के जानने और पढने की लोगों में रुचि बढी।

2. पुत्रों की शिक्षा के साथ कन्याओं की शिक्षा का भी प्रचार हुआ और 'स्त्री शूद्रो नाधीयाताम्' की पौराणिक श्रुति बिल्कुल दूर हो गई।

3. अनाथो की रक्षा होने और उनको ईसाई मुसलमानो के पंजे मे जाने से छुटकारा मिला।

4 विधवाओं की रक्षा हुई (चाहे उसको नाम मात्र की ही रक्षा कह सकते हैं।)

5. संस्कृत के अनेक विद्वान् तैयार हुए।

6. गुरुकुलों से अंग्रेजी के साथ संस्कृत जानने वाले विद्यार्थी भी निकले।

7. ब्रह्मचर्य की ओर नवयुवकों की प्रवृत्ति बढ़ी।

8. इन सब के साथ ही इन संस्थाओं के स्थापित करने और अपने ही प्रबन्ध के साथ चलाने से आर्यसमाज का देश मे मान बढ़ा ............... इत्यादि।

(3) दोनों युगों में क्या भेद हुआ ?

प्रचार युग में हर एक सभासद् को चाहे वह कितना ही छोटे दर्जे का क्यों न हो, कुछ न कुछ प्रचार का काम करना पड़ता था और उस समय कम से कम आक्षेपों से बचने के लिए ही उन्हें क्रियात्मक जीवन बनाना पड़ता था। एक उच्च पदाधिकारी रिश्वत लेने से बचता था। एक व्यापारी छल कपट का व्यवहार छोड़ने के लिए अपने को बाधित समझता था। एक वकील, एक डाक्टर, एवं दूसरे पेशों में उस समय जो भी आर्यसमाजी थे, वह उन स्थानों के दूसरे लोगों से अपने आप में विशेषता पैदा करने का यत्न करते थे। इसी तरह से उनमें क्रियात्मक जीवन था। और उसके बढ़ाने की ओर उनकी रुचि भी थी। यहां एक घटना का वर्णन कर देना शायद अनुचित न होगा। बिजनौर के जिले में एक पुलिस का चौकीदार रहता था। वह बिलकुल अनपढ़ था, किन्तु आर्यसमाज का पुजारी था। उठते बैठते उसे आर्यसमाज के प्रचार की धुन लगी रहती थी। उसे रात मे पहरा देना पड़ता था, लोगों को सावधान करने के लिए उसकी स्वर यह होती थी कि 5000 वर्ष के सोने वालो ! जागो। और रात भर पहरा देते समय वह इसी आवाज को गुंजाया करता था। दिन मे जब लोग उससे पूछते थे कि इस आवाज का क्या अभिप्राय है तो वह उन्हें सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने की सलाह दिया करता था और कही न कही से पुस्तक भी लाकर उन्हे दे दिया करता था। इसी तरह से उसने अपनी चौकीदारी की जीवनी में 4, 5 स्थानों पर आर्यसमाज स्थापित करवाई। प्रचार की धुन थी, जो हर आर्य में उस समय पाई जाती थी। संस्था-युग ने शोक है कि प्रचार की इस लग्न को आर्यों में कम कर दिया।

2. प्रचार युग में आर्यों की विशेषता यह थी कि क्रियात्मक जीवन के कारण से उनमें स्वतन्त्रता की स्पिरिट विद्यमान् थी और लोग उनके जीवन के प्रभाव से खिच कर उनकी स्वतन्त्रता पूर्ण विधि को सहन करने के लिए बाधित से होते थे। लेकिन संस्था युग में इसी बड़ाई में वस्तुतः कमी हुई।

3. संस्था-युग का सब से बढ़ कर ऐतिहासिक पहलू यह है कि संस्थाओं के लिए धन की बहुत आवश्यकता थी। इसलिए आर्यों को धनवानों का दरवाजा खटखटाना पड़ा। जहां पर प्रचार युग में वह चाहें कोई धनवान हो निर्धन जहां जो कमी देखते थे, स्पष्ट कह कर उसको छुड़वाने का यत्न करवाया करते थे, वहां अब धन लेने की आवश्यकता ने बड़े और धनियों की कमियों पर पर्दा डालने के लिए उनको बाधित किया। और धनियों की त्रुटियों को दूर करने के स्थान में अब उनके विरुद्ध मुंह खोलने से बन्द होना पड़ा।

धनियों को अब तक त्रुटियों के रखने पर भी केवल धन प्राप्ति के लालच से आर्य समाज के बड़े-बड़े पद देने पड़े। इसका परिणाम जहां यह हुआ कि आर्यों की स्वतन्त्रता मे वस्तुतः कमी हुई वहां दूसरा और बड़ा भयानक परिणाम यह निकला कि क्रियात्मक जीवन की रुचि और मान आर्यों मे कम होना शुरू हुआ। और उन्होने देखा कि जब हमारा प्रधान इतने गिरे काम कर सकता है, तो सामान्य सभासद् हो कर कुछ गिरे काम कर लेने से किसी को उनके विरुद्ध मुंह खोलने का अवसर कहां से मिल सकता है ? इसी तरह प्रचार युग के कारण से बड़ी विशेषता, चरित्र के मान को संस्था युग ने आकर खो नहीं दिया, तो कम से कम इतना कर दिया है कि जिसके होने न होने में कठिनता से विभेद किया जा सकता है।

संस्थाओं की आवश्यकताएं इतनी अधिक थी कि उनके लिए धन की पूर्ति करना आर्यसमाज की लगभग शक्ति से बाहर था। जिस संस्था में जाकर देखो वहां के संचालक आप को यह कहते हुए

सुनाई देवें कि धन की कमी से अमुक काम नहीं हो सका या अधूरा पड़ा है। संस्थाओ की इस लम्बी चौड़ी धन की भूख ने प्रचार की तरफ से आर्य समाजों को उदासीन कर दिया है और प्रचार की कमी से आर्यसमाज की उन्नति की प्रगति में भी कमी हो गई। प्रचार युग के बाद जो मनुष्य गणना हुई, उसमें आर्यों की संख्या में प्रतिशत तीस की उन्नति हुई। संस्था युग में इतनी वृद्धि फिर कभी नहीं हुई। वृद्धि अवश्य हुई और अच्छी होती रही लेकिन उतनी नहीं जितनी प्रचार युग के बाद हुई थी।

(4) आगे के लिए क्या करना चाहिए ?

दोनों युगों पर दृष्टि डालने से यह बात बहुत स्पष्ट दिखाई देने लगती है कि हम को वर्तमान प्रगति में परिवर्तन करना चाहिए। वह परिवर्तन क्या होना चाहिए। इसकी भी कुछ झलक आंखो के सामने आ जाती है। इसलिए इस 50 साल के अनुभव के बाद अब समय आ गया है कि हम को गम्भीरता से इस बात पर विचार करना चाहिए कि आर्यसमाजों की प्रगति में क्या परिवर्नन होना चाहिए। इसके सम्बन्ध में कुछ उपाय पेश किए जाते हैं ……

1. जिस प्रकार संस्थाएं बन चुकी हैं अब आर्यसमाजों को मिल कर दृढ निश्चय कर लेना चाहिए कि उनके अतिरिक्त अब कोई नई संस्थाएं नहीं खोली जायेगी।

2. जो संस्थाए बन चुकी हैं, उनके नियमों और प्रगति में कुछ इस प्रकार का फेर फार करना चाहिए कि जिससे वे आप अपना खर्च चलाने वाली (सैलफ स्पोरटिंग) हो जाएं और आर्यसमाजों पर उनके लिए धन जमा करने का उत्तरदायित्व न रहे।

3. आर्यसमाजो के पुरुषार्थ का मुख फिर प्रचार युग की ओर फेरना चाहिए। प्रचार के ढंगों में समय की प्रगति को ध्यान में रखते हुए अवश्य ही परिवर्तन करना चाहिए।

4. प्रचार के लिए जो पुरुषार्थ करने चाहिएं। वे तीन भागों में बंटने चाहिएं……

(क) पहला भाग इस काम में लगना चाहिए, जहां प्रतिनिधि सभाएं स्थापित हैं, वहां प्रचार की ओर अधिक ध्यान देवें। और खूब बल पूर्वक प्रचार करें और यत्न करें कि प्रत्येक स्थान पर एक-एक उपदेशक स्थिर रीति पर रहने लगे।

(ख) दूसरा भाग पुरुषार्थ का देश देशान्तर और द्वीपद्वीपान्तर मे प्रचार करने में लगना चाहिए। जहां प्रतिनिधि सभाएं नही है वहां भी प्रचार होना चाहिए और दूसरे देशों मे भी प्रचारार्थ मनुष्य जाने चाहिए।

(ग) पुरुषार्थ का तीसरा भाग लेख के काम मे लगना चाहिए। वेदों का सरल अनुवाद होना चाहिए और उसके भांति 2 के संस्करण छपने चाहिए जिससे लोगों का सम्बन्ध वैदिक शिक्षा से हो और वह स्वयं उनको पढ सके। दर्शन और उपनिषदों के भी अच्छे सर्वसाधारण को लाभ पहुंचाने वाले संस्करण तैयार होने चाहिएं। वैदिक धर्म सम्बन्धी अब तक छोटे बड़े ग्रन्थ हजारों की संख्या में छपने चाहिएं और विरोधियों के लेखों का भी उत्तर देना चाहिए। तात्पर्य, एक अच्छा पुस्तक प्रचार गृह (पब्लिशिंग हाऊस) स्थापित होना चाहिए, जिस मे अन्वेषण (रिसर्च) का भी काम हो।

5 क्रियात्मक जीवन के लिए विशेषतः प्रयास होना चाहिए। इसका सबसे अच्छा उपाय यह है कि आर्यसमाजों ने प्रारम्भ ही से जिस विषय की ओर बिलकुल ध्यान नही दिया है, उस आत्मिक शिक्षा का भी प्रचार होना चाहिए। इसका आवश्यक परिणाम यह होगा कि लोगों का ध्यान अपने चरित्र को अच्छा बनाने की ओर फिरेगा। यह कुछ उपाय पूरी जातीय अवस्था को ठीक करने के लिए सम्मुख रखे गए है। इसी प्रकार से वैयक्तिक जीवन को सुधारने के लिए भी विचार होना चाहिए और उसके ठीक करने के लिए भी आवश्यक उपाय करने चाहिएं।

——

# महर्षि के उपकार

## लेखक : स्व० पं० काशीराम जी, प्रधान पंजाब ब्रह्म समाज

स्वामी दयानन्द निस्सन्देह संस्कृत के असाधारण विद्वान थे। उन्होंने वेदों की सच्चाइयों और आर्यावर्त के पुराने ऋषियों, महर्षियों की बहुमूल्य बातों को इस ढंग से हमारे सामने रखा है कि वह अब किसी से छिपी नहीं रही। प्रत्युत पंजाब में विशेषत: और सामान्यत: हिन्दुस्थान के शेष प्रान्तों में वेदों के पढ़ने पढ़ाने और सुनने सुनाने के शौक के कारण से उनकी घर-घर चर्चा हो रही है। स्वामी जी के अन्दर देश-भक्ति और अपनी सोई हुई आर्य जाति को जगाने का जोश भी हद से ज्यादा है तथा इसके लिए उन्होंने सिर तोड़ यत्न किया। समाज सुधार का सहायक और मूर्ति पूजा और पोपलीला का विरोधी भी, अपने समय में उनसा कोई ही होगा और ब्राह्मणों के पोप जाल को जैसी हानि उन्होंने पहुंचाई है, उसका समय स्वयं साक्षी है। महर्षि दयानन्द जैसे शारीरिक बल में पूर्ण वैसे ही आत्मिक बल में भी पूर्ण थे और सबसे बड़ी बात यह है कि जिस साहस और धैर्य से वह अपने धार्मिक विचारों को प्रकट करते थे वह सच्चे महा-पुरुष नेता का ही काम है। वह सत्य का प्रचार करने तथा असत्य का नाश और खण्डन करने में मित्र या शत्रु के क्रोध की परवाह नहीं करते थे।

इस स्थान पर मैं पाठकों के लाभ के लिए एक अशुद्ध विचार को दूर करना चाहता हूं जो बहुत देर से फैला हुआ है और जिसको दूर करना एक निष्पक्ष-पात व्यक्ति का कर्त्तव्य होना चाहिए।

प्राय: कहा जाता है कि ऋषि दयानन्द जी को लाहौर में पंजाब ब्रह्म समाज के सभासदों ने निमन्त्रित किया था किन्तु कुछ ही दिनों बाद वे अपने अतिथि सेवा के कर्त्तव्य से विचलित हो गए और उनको अपने मकान में भी नहीं रहने दिया। किन्तु वस्तुत: बात यह है कि श्री स्वामी जी के रहने का प्रबन्ध ब्रह्म समाज की तरफ से दीवान रतनचन्द दाढ़ी वाले के बाग में किया गया था। जहां पर स्वामी जी को मिलने के लिए उनके प्रशंसक और मित्र तथा दूसरे सज्जन प्राय: आया करते थे। और उनसे वार्तालाप का लाभ उठाते थे। स्वामी जी के मूर्ति पूजा तथा पोपलीला के विरुद्ध खुल्लमखुल्ला निधड़क और अनथक प्रयत्न के कारण शीघ्र ही सनातनधर्मी भाइयों ने उनका विरोध करना शुरू कर दिया। इस विरोध ने एक यह रूप धारण किया कि बाग के प्रबन्धक और मालिकों को बाधित किया गया कि स्वामी जी को जो मूर्तिपूजा का बुरी तरह से खण्डन करते थे बाग में रहने की आज्ञा न दी जाए एवं जल्दी ही दिवंगत खान बहादुर डाक्टर रहीम खां के मकान पर स्वामी जी के रहने का प्रबन्ध किया गया। यहां पर भी ब्रह्म समाज ने उनके आराम के लिए यथाशक्ति यत्न किया। इस घटना से तात्कालीन मनुष्य अच्छी प्रकार परिचित है। और उनमें से लाहौर के एक प्रसिद्ध बुजुर्ग दिवंगत पंडित भानुदत्त ने एक समय पर इस बात को सर्वसाधारण में प्रकट भी किया था। और हमारे पूज्य और पुराने मित्र राय बहादुर ला० मूलराज साहिब एम. ए. रिटायर्ड जज भी इसका समर्थन करते हैं।

इस घटना के लिखने से मेरा अभिप्राय न केवल पंजाब ब्रह्म समाज की स्थिति को साफ करना ही है किन्तु यह घटना इस बात की साक्षी देती है कि स्वामी जी अपने उद्देश्य को पूरा करने में कभी दूसरों की प्रसन्नता व अप्रसन्नता का विचार न करते थे।

सच है, सारे महा पुरुष और जातियों को हिलाने और उन्हें गहरी नींद से जगाने वाले लोग, 'लोग क्या कहेंगे' के डर से ऊपर होते हैं।

स्वामी दयानन्द जी बाल-विवाह के विरोधी, ब्रह्मचर्य व सदाचार के आदर्श, सामाजिक सुधार के पक्षपाती, मूर्तिपूजा और पोपलीला के कट्टर विरोधी, संस्कृत के विद्वान् और प्रेमी, सोई जाति को जगाने वाले और जातीय संगठन के अवतार होने के कारण से ही नहीं किन्तु निराकार निर्विकार, सर्वाधार, "एकमेवाद्वितीय नास्ति ब्रह्म" की पूजा और उपासना के सच्चे प्रचारक और आर्यसमाज के प्रवर्तक होने के कारण से भी हम सब के हार्दिक धन्यवाद के पात्र हैं। आर्य समाज ने स्वामी जी के काम को अपना काम और उनके मिशन को अपना मिशन बना कर देश और जाति की सेवा करते हुए मुर्दा पंजाब में एक नई जीवनी शक्ति फूक दी है और आज स्वामी जी के उच्च आचार से प्रभावित होकर सैंकड़ों उच्च शिक्षा प्राप्त नवयुवक सांसारिक प्रलोभनों को लात मार कर जाति को उभारने और सुदृढ़ करने मे हर प्रकार का बलिदान करने को तैयार देखे जाते हैं। ये सब यत्न प्रशंसा करने योग्य हैं और उनके लिए मेरे दिल में गहरा मान्य तथा स्थान है किन्तु मैं इस समय अपने सारे आर्य भाईयों को बड़ी नम्रता से यह कहना चाहता हूं कि हिन्दु-मुसलिम मेल को बनाये रखने के लिए पक्षपात रहित साधनों और सहन शक्ति की बड़ी आवश्यकता है।

परमेश्वर हम सब के पिता है। उन्होंने अपनी सन्तान को उन्नत और उच्च से उच्च बनाने के लिए समय-समय पर देश-देश में भिन्न-भिन्न प्रकार के साधन पैदा किए हैं और सभी धर्म शास्त्र और सभी धर्मनेता और पथ प्रदर्शक हमारी भलाई में पथ प्रदर्शक होने के कारण से एक सी प्रतिष्ठा के पात्र हैं। यदि हम सब उनको अपनी सम्मिलित सम्पत्ति समझ उनके नाम से प्रेम करने वाले ही नहीं किन्तु सच्चे अर्थों में उनके अनुयायी हो सकें और उनकी विशेषताओं और सद्‌गुणो को अपने जीवनों में बटा लें, तो क्या ही अच्छा हो ? ताकि सब इस देश के रहने वाले हिन्दू-मुसलमान, बौद्ध और सिक्ख ईसाई, भाई-भाई बन कर रह सकें और स्वराज्य, जो आजकल हर हिन्दुस्तानी का उद्देश्य है जल्दी से जल्दी प्राप्त हो सके।

सच्चाई एक है, उसका स्रोत एक है और हम सब का उद्देश्य एक है।

## ऐ दुनिया बता इससे बढ़कर

ऐ दुनिया बता इससे बढ़कर, फिर और हकीकत क्या होगी।
जां देदी तलाशे हक के लिए, फिर और इबादत क्या होगी।
यूं तो हर रात की तारीकी, देती है पयाम उजाले का।
जिससे ये जहां पुर नूर हुआ, उस रात की कीमत क्या होगी।
खंजर भी दिखाये अपनों ने, जहरें भी पिलाई अपनों ने।
अपनों के ही एहसान, क्या कम हैं, गैरों से शिकायत क्या होगी।
औरों के लिए मरने वाले, मर कर भी हमेशा जीते हैं।
जिस मौत पे दुनिया रश्क करे, उस मौत की अजमत क्या होगी।
सदियों की खिजां के बाद खिला, इक फूल उसे भी तोड़ दिया।
कलियों के मसलने वालों से, फूलों की हिफाजत क्या होगी।

—पण्डित चमूपति जी द्वारा लिखित

# ऋषि दयानन्द और आर्य समाज का हिन्दु जाति पर उपकार

लेखक . स्व० श्रीमान् दुनीचन्द जी वकील, अम्बाला

ऋषि दयानन्द की जीवनी के भिन्न-भिन्न पहलू हैं, जिन पर भिन्न भिन्न पुस्तकें लिखी जा सकती हैं। मेरे लिए सम्भव नही कि समाचार पत्र लेख मे उनके किसी एक पहलू का भी विस्तार से वर्णन कर सकू। केवल एक विचार उनके और आर्यसमाज के सम्बन्ध मे प्रकट करना चाहता हू। जब कभी मैं अपने हिन्दू भाईयो को ऋषि दयानन्द या आर्यसमाज के विरुद्ध कुछ बुरा-भला कहते हुए देखता हू, तो मुझे अपने हिन्दू भाइयो के अज्ञान पर दु ख होता है। अगर श्री मद्-भगवद्गीता का यह वाक्य ठीक है कि—"यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत। अभ्युत्थानम् धर्मस्य तदात्मान सृजाम्यहम्। तो यह कहना अशुद्ध न होगा। कि हिन्दुओ की गिरावट ने ही ऋषि दयानन्द को पैदा किया। जहा ऋषि दयानन्द ने हिन्दओ के कई सिद्धान्तो से असहमति प्रकट की है, वहा उन्होने हर-एक पहलू से इस गिरी हुई जाति को उठाने का यत्न किया है। दिवगत ला० द्वारिकादास जी एम ए की साक्षी के आधार पर जिनको स्वामी दयानन्द जी से विचार परिवर्तन का प्राय अवसर मिला था, मैं कह सकता हू कि स्वामी जी के दिल मे सब से बडा भाव हिन्दू जाति से प्यार करने का था। यद्यपि स्वामी जी का मिशन ससार का सुधार करना था, लेकिन इसमे कोई सन्देह नही कि उनका तात्कालिक मुख्य उद्देश्य हिन्दूजाति का ही सुधार करना था। ऋषि दयानन्द ने वेदो के महत्त्व को पुनर्जीवित किया, शास्त्रो को उनका वास्तविक पद दिया, सस्कृत और आर्य भाषा की शिक्षा जिसके अन्दर वैदिक सभ्यता का भेद छिपा हुआ है, को फिर से जागृत किया। हिन्दुओ के अन्दर सगठन का भाव पैदा किया जो कि बिल्कुल लुप्त हो चुका था। दूसरे मतो के मुकाबले मे वैदिक धर्म की उच्चता को स्थिर किया। वर्णाश्रम धर्म को फिर से बतलाया। वैयक्तिक और सामाजिक जीवन के नियम बतलाए, जाति के बच्चो—अनाथ और विधवाओ को जाति का वास्तविक अग बताया और उनके लिए विधवाश्रम तथा अनाथालय खोले। देश भक्ति का भाव देश मे पैदा किया और स्वराज्य के महत्त्व को शास्त्रो द्वारा लोगो के सामने रखा। तात्पर्य कि जिस-जिस विधि से हिन्दू जाति ऊची हो सकती थी वे सब ढग बतलाए और अपनी जीवनी मे क्रियात्मक समय विभाग आर्यसमाज के रूप मे हिन्दू जाति के सामने रखा। गत 50 वर्ष के समय मे आर्यसमाज ने जो काम किया, वह किसी से छिपा हुआ नही। हर एक हिन्दू अपनी छाती पर हाथ रख कर कह सकता है कि क्या आर्यसमाज ने कोई ऐसा काम किया है, जिस की तह मे हिन्दू जाति की भलाई न हो? हर एक सच्चे आर्य समाजी के दिल मे हिन्दू जाति की भलाई का भाव विद्यमान न हो। छोटे-छोटे कस्बो और देहात मे आपको ऐसे आर्य लोग मिलेंगे, जो हर एक अवसर पर हिन्दू समाज की सेवा करने के लिए तैयार रहते हैं। पजाब और यू. पी मे जो शिक्षा का काम आर्यसमाज ने किया है, वह अत्यन्त शानदार चमत्कार है। दूसरी जातियों ने भी आर्यसमाज के उदाहरण से लाभ उठाया। हजारो की सख्या मे आर्यसमाज के शिक्षणालयो से पठित विद्यार्थी निकलते हैं। गुरुकुल कागडी और दयानन्द महाविद्यालय जातीय स्वाभिमान के प्रत्यक्ष उच्च उदाहरण है उनके आधीन सैकडो शिक्षणालय हिन्दुओ के लिए लाभदायक सिद्ध हो रहे हैं। अछूतपन को दूर करने का बोझ आर्यसमाज ने अपने ऊपर लिया हुआ है। हिन्दू धर्म को

# महर्षि दयानन्द ने कहा था–

1—यह बात अवश्य जाननी चाहिए कि जब गऊ आदि पशु रक्षित होके बहुत बढेंगे, तब कृषि आदि कर्म और दुग्ध घृत आदि की वृद्धि होकर सब मनुष्यादि को विविध सुख लाभ अवश्य होगा इसके बिना सब का हित सिद्ध होना सम्भव नही।

2 देखिये—एक गौ की रक्षा से लाखो मनुष्यादि को लाभ पहुचता, और जिसके मरने से उतने ही की हानि होती है ऐसे निकृष्ट कर्म के करने को आप्त विद्वान् कभी अच्छा न समझेगा।

3 सब सज्जनो को उचित है कि इस गोरक्षक धन आदि समुदाय पर स्वार्थ दृष्टि से हानी करना कभी मन से भी न विचारे किन्तु यथा शक्ति इसे व्यवहार की उन्नति मे तन, मन, धन से सदा परम प्रयत्न किया करे।

ध्यान देकर सुनिये कि जैसा दु ख सुख अपने को होता है वैसा हो औरो को भी समझा कीजिए और यह भी ध्यान मे रखिये कि वे पशु आदि और उनके स्वामी तथा खेती आदि कर्म करने वाले प्रजा के पशु आदि और मनुष्यो के अधिक पुरुषार्थ ही से राजा का ऐश्वर्य अधिक बढता और न्यून से नष्ट हो जाता है इसीलिए राजा प्रजा से कर लेता था कि उनकी रक्षा यथावत् करे, न कि राजा और प्रजा के जो सुख के कारण गाय आदि पशु है उनका नाश किया जावे। इसलिए आज तक जो हुआ सो हुआ, आगे आखें खोलकर सबके हानिकारक कर्मों को न कीजिए और न करनें दीजिये।

— गोकरुणा निधि' से

सार्वभौम बनाने का श्रेय केवल आर्यसमाज के ही अपने ऊपर है। जहा कही हिन्दुओ पर आपत्ति आती है। वहा आर्य समाजी छाती निकाल कर खडे हो जाते हैं। मैं हरएक हिन्दू, पुरुष और स्त्री से प्रार्थना करता हू कि किन्हीं धार्मिक विभेदो को छोड कर जिनमे आर्यसमाज और हिन्दू धर्म का मतभेद है स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज को इसी दृष्टि से देखें कि उनको हिन्दू जाति से किस तरह प्रेम है और उनके क्रियात्मक काम को देखें। मजहबी विभेदो के विषय मे मेरी भी यही राय है कि वे अधिकतर गौण हैं। हर एक धर्म को दो दृष्टियो से देखना चाहिए। एक यह कि उसके धार्मिक और आचार सम्बन्धी नियम कैसे हैं और दूसरा यह कि उसका क्रियात्मक प्रोग्राम क्या है? मेरी सम्मति मे इस कसौटी से हिन्दुस्तान के अन्दर कोई ऐसा धम नही जो आर्यसमाज से अधिक विशेषता अपने अन्दर रख सके। हम अन्त मे अपने हिन्दू भाईयो से अपील करते है कि आर्य-समाज के काम को अपना काम समझें और महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज के काम का विरोध करते हुए कृतघ्न न बनें। इतिशम् ॥

# श्रम बिना नास्ति महा फलोदय ॥

## लेखक—पूज्यपाद् स्व. श्री स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज

श्रम के बिना कोई भी कार्य सिद्ध नहीं होता है। श्रम के दो भेद हैं एक तो मस्तिष्क का जिस को विचार ज्ञान-विज्ञान कहते हैं—दूसरा शारीरिक श्रम जिसको प्रयत्न उद्योग पुरुषार्थ कहा जाता है जहां इन दोनों का समानाधिकरण हो जाता है वहां कार्य की सफलता में कोई संदेह नहीं रहता है। कर्म का फल कर्ता के अनुकूल हो जाने से उत्तरोत्तर कार्य करने में रुचि उत्साह और साहस जो कार्य सिद्धि के अङ्ग हैं उनका उदय होता जाता है। अर्थात् प्रत्येक प्रकार की सामग्री आ विराजमान होती है। अभ्युदय और मोक्ष लौकिक पारलौकि दोनों प्रकार के सुख इस ही नियम के आधीन हैं। ज्ञान और प्रयत्न आत्मा के स्वाभाविक गुण हैं इनके सबल हो जाने से सुख, दुःख, इच्छा द्वेष का यथार्थ स्वरूप समझ में आने लगता है, अन्यथा नहीं। विचार करने से पता चलता है कि प्रत्येक प्राणी को सुख की इच्छा है और दुःख से द्वेष है यह साधारण ज्ञान तो समान है परन्तु वास्तव में सुख जिसकी मुझे इच्छा है और दुःख जिससे मुझे ग्लानि है इसका कारण क्या है विशेष रूप से नहीं जानते हैं, ये ही कारण है कि, सुख की इच्छा में दुःख, उत्कर्ष में अपकर्ष उन्नति में अवनति का विकास होता जाता है, दुःख से मुक्त होना चाहते हैं उससे युक्त हैं, सुख के सहित होना चाहते हैं उससे रहित देखने में आते हैं। अतएव कारण की परीक्षा तो अवश्य ही होनी चाहिये कारण सदा सद्भाव में कार्य्य का होना और उसके अभाव में न होना निश्चित नियम है। यथार्थ सुख प्राप्ति का साधन ऐहिक हो या पारमार्थिक ज्ञान पूर्वक प्रयत्न ही है ज्ञान से वस्तु की पहचान और प्रयत्न से कारण को हटाना या हाथ में लाना होता है। इस नियम की व्याप्ति साधारण कार्यों से लेकर परमेश्वर प्राप्ति तक है। जहा ज्ञान और प्रयत्न का व्यधिकरण हो जाता है वहा सब छोटे बड़े कार्य विघ्न विहित हो जाते हैं पुनः दारिद्रबल बढ़ाता है, मनोराज्य सर उठाता है, वैमनस्य की धारा बड़े वेग से बहने लगती है, सब प्रकार की सुखकी सामग्री से च्युत होकर जनता आघात सहने लगती है। गुणों की हानि, व्यर्थ का अभिमान, कहीं झगड़ा और झमेंड़ा, इधर टटा उधर बखेड़ा, बढ़ता ही जाता है। कहने और करने में भेद परस्पर ग्लानि मे मान हानि द्वेष से क्लेश होता है। यह जानते हुये भी जो सावधान नही होते है, उन देशों और जातियों की यह दशा होती है जिनको अविद्या ने अपना अनुचर बनाया। इस के सामराज्य में तो बरबादी का नाम ही आबादी है। इसने ही आर्य समाज को भुलाया सन्मार्ग जो ऋषि ने दिखाया था उससे हटाया, आशा को निराशा ने आ दबाया। निराशा के पथ पर चलते हुए आशा का राग अलापने वाले तो बहुत देखने में आते हैं। परन्तु अपने को कुपथ से नहीं हटाते हैं। यही अविद्या का अनुशासन है इसी का नाम भूल है यही सब पापों का मूल है।

क्या आर्य समाज ने कभी विचारा है, (1) कि समाजो में परस्पर वैमनस्य का क्या कारण है। अकारण यह वैर क्यों बढ़ रहा है, या इसमें कोई स्वार्थ है। (2) प्रतिनिधि के आधीन जब अनेक

समाजें हैं। और उनमे दोषो का, अकर्मण्यता का जो प्रादुर्भाव होता चला आ रहा है। इनके दूर करने का उपाय कभी ध्यान मे आया है, यदि नही तो प्रतीत होता है कि जिस दोष से दूषित समाजें हैं उसी दोषो से दूषित प्रतिनिधि भी है। तो फिर जिम्मेवारी का क्या काम। (3) इस प्रकार के ढग को जो इस समय प्रचलित है, सन्तोष प्रद नही है। यह जानते हुये यदि अन्य मार्ग कोई हस्तगत नही आता है, तो विचार शील पुरुषो की कमी है, यह सिद्ध हो रहा है। (4) जब यह स्थिर सिद्धान्त है ? कि जब तक बुद्धिमान पुरुषो के हाथ मे कार्य नही आता है तब तक वह सबल, सशक्त, सरल, लाभ दायक यशोत्पादक नही होता है। आर्य्य समाज की दशा निहारने और विचारने से पाठक सोच सकते हैं कि इसके अधिकारी कैसे हैं भविष्य मे क्या परिणाम होगा विचार करेंगे। (5) सार्वदेशिक सभा—प्रतिनिधि सभा की बैठक तो कभी-कभी होती है। केवल उसका काम मीटिंग है, काम कुछ नही इधर-उधर की बातो मे ही समय बीत जाता है। यदि काम पर विचार होता तो पब्लिक के सामने आजाता आजतक कोई मार्ग हाथ नही आया है यह प्रकट हो रहा है।

(6) 55—वर्ष के लगभग वैदिक धर्म के प्रचार मे बीत गए इतना दीर्घ समय निकल जाने पर सस्कृत साहित्य मे किसी प्रकार की उन्नति नही हुई यह कितनी ग्लानि और हानिकर बात है। जिसको बातो से ही घर पूरा करने का स्वभाव हो जावेगा उसको सच्ची उन्नति से क्या काम। ऋषि का यह दृष्टान्त—जब तक चले तबतक ठीक लागू होता है।

(7) आर्य्य समाज मे हिन्दूपन दोष समा गया है। जब मनुष्य को अपनी हानि का ज्ञान नहीं रहता है तो वह हिन्दूपन दोष है। अपने लाभ हानि का ध्यान होना आर्य्यपन गुण, हिन्दू या आर्य्य कोई व्यक्ति या जाति नही है जो हानि लाभ विचार रहित है वह हिन्दू और जो इसके सहित है वह आर्य्य है। आर्य्यसमाज अब अपनी त्रुटियो को नही जानता या जानकर उनके दूर करने का यत्न नही करता या दूर करने की इच्छा-तो है परन्तु उपाय ध्यान मे नही आता है, तो ये ही तो हिन्दूपन है।

(8) आर्य्य लोग बिगड कर हिन्दू कैसे हो गये ? कर्त्तव्य के पालन मे लापरवाही करने से और व्यर्थ अभिमान मे आकर परस्पर के लडने से, यह दोष अब तक विद्यमान है, इसका निराकरण नहीं हो सका यही दोष आर्य्यसमाज मे जड पकड रहा है परन्तु यह असावधान है। ऋषि ने वैदिक धर्म का कच्चा चित्र या नक्शा तो बनादिया था और रग लगाने, सुन्दर और सुडौल चित्र बनाने का काम आर्य्य समाज को सौंपा था इसने प्रमाद वश जहा लाल रग करना था वहा हरा कर दिया, हरे के स्थान मे पीला रग, पीले के स्थान मे नीला रग कर दिया चित्र के स्वरूप मे जो विचित्रता, लावण्यता, आकर्षणता, स्वच्छता और पवित्रता आनी चाहिए थी वह न आकर बेडौल और कुरूप नजर आने लगा और वह कच्चा नकशा जो ऋषि ने बडे परिश्रम से तैय्यार किया था उन रगो मे लुप्त हो गया यही कारण है कि जो लोगो का झुकाव बडे वेग से आर्य्यसमाज की ओर था रुक गया इस विपरीतकारिता से आर्यसमाज के दृष्टिपथ मे अब यह बात आती ही नही। जो हो गया सो ठीक है वाली बात कर रहा है यही तो हिन्दूपन दोष है।

(9) आर्य्यसमाज ने अनेक कार्य किए जिन को करना ही चाहिए था उनमे से कुछ कार्य ऐसे हैं जिन पर आर्य्य समाज का श्रम और धन व्यय करने पर भी लाभ बहुत कम है परीक्षा से सिद्ध हो जाने पर, जानता हुआ, उन मे परिवर्तन करने या उनको हटाकर कार्यान्तर करने मे असमर्थ प्रतीत हो रहा है। बिना सस्कारो के कोई भी कार्य ठीक नहीं होता है, यह निर्विवाद प्रत्यक्ष सिद्ध सिद्धान्त है, इस ओर इसका ध्यान ही नही, कभी-कभी मिल कर ऐसा विचार तो करते हैं कि चलने दो, हटाने

या परिवर्तन करने में प्रभाव बिगड़ेगा, मेरे मित्र !
आन्तरिक दुर्बलता इस बाहरी बनावट से दूर न
होगी, इस हिन्दूपन के दूर करने का यत्न करो।

(10) ऐसा बनो परमेश्वर कृपा करे—
था विचित्र वह समय जब वेदो का विज्ञान था
अपने अपने कर्म मे हर एक बुद्धिमान था।
प्रसन्न रहते थे सदा चिन्ता कभी मन मे न थी
शुद्ध, रहते, नाम को भी मलिनता तन मे न थी।
सब का सब से प्रेम था मन मे कभी भीति न थी।
अन्याय के अनुरूप जग मे कोई भी रीति न थी॥
कर्तव्य पालन मे वे तत्पर नाम के आर्य न थे।
नाम के विपरीत वह करते कभी कार्य न थे॥
ईश की भक्ति मे नित्य उठ प्रातः होते थे मगन।
"सर्वदा" आनन्द हो परलोक करते थे गमन

यथामति तुक बन्दी है॥

आर्यसमाज को विचार से कार्य करना चाहिए और आने वाले दोषो को हटा कर सन्मार्ग मे आगे बढना चाहिए।

# गूंज रही टंकारे तेरी कानों में टंकार

गूंज रही, टकारे ! तेरी कानो मे टकार।
इन्द्र-धनुष पर चढती मौर्वी, पुलकित सुर-ससार।
हिलते ओठो पर मौर्वी के थमा सकल भू-भार॥
हृदय नाचते देव-गणो के जीभ मूर्त्त जयकार।
मथुरा मे गायत्रि-गर्भ से, सखि ! आजन्म कुमार॥

प्रकटे ऋषि गोवर्धन-गिरिधर "गो-करुणा निधि"-सार।
सुनी गई गो-गोप-गवालिन की फिर करुण पुकार।
दु शासन "औ" दुर्योधन मिल करते हाहाकार।
कापा काशी का त्रिशूल, जब सुनी वीर हुकार।

ककर, शकर-वेश भूल निज, "शिव, शिव" रहे पुकार।
भगे फणी तज चन्द्र-चूड, थी गद्गद् उमा निहार।
हटी मुण्ड-बाधा, मा सुत-मुख चूम-चूम बलिहार।
सारनाथ का जोगी जागा, जगे शाक्य अवतार॥

सौराष्ट्र की ज्वाला जागी, भगे मिस्र-मीनार।
यूनानी, रोमक औ' चीनी—'इक' सस्कृति-परिवार॥
भेट रहे इ्ूइड, इड्का, मय युग-युग के उपहार।
छिपी छुरी, गोली भागी—कह "कायर को धिक्कार"॥

प्रेम-बाहु बन बढ़ी झेपी इसलामी तलवार।
ठाम-ठाम टेसू बन फूला ऋषि-तन—अहो बहार॥
सिहर उठा सूलीवाला, सुन यह बलिदान-बिहार।
गूज रही, टकारे! तेरी कानो मे टकार॥

रचयिता—स्वर्गीय चमूपति, जी. एम. ए.

# ऋषि दयानन्द के साक्षात् दर्शन

लेखक

स्व० स्वामी अच्युतानन्द जी सरस्वती

सम्वत् 1927 मे जब मैं काशी मे पढता था। मैंने एक विद्वान् के पास एक लम्बा चौडा नागरी अक्षरो मे लिखा हुआ विज्ञापन देखा, जो हमारे महर्षि दयानन्द जी की ओर से बाटा गया था। उसमे लिखा था कि ऐ ! काशी के विद्वानो ! समझो और सोचो, तुम्हारी इस धूर्तता से क्या धर्म निर्णय हो सकेगा ? आओ जिसने मूर्ति पूजा विषय मे शास्त्रार्थ करना है कर लो। क्यो अज्ञानता मे पडे हो ? इस पाषाण पूजा से कुछ न निकलेगा।

एक दिन मैं घूमता हुआ उस आनन्द बाग मे चला गया जहा हमारे पूज्य स्वामी जी महाराज विराजमान थे, एक लकडी के तख्त पर चौकडी लगाकर केवल एक भगवा कोपीन पहने हुए थे। नीचे कई और सज्जन भी बैठे स्वामी जी से सस्कृत मे वार्तालाप कर रहे थे। मैंने उन के चरणो मे नमस्कार किया और बैठ गया। जब अन्य सज्जन चले गए तब स्वामी जी उठकर बाग मे टहलने लगे। मैं भी उनके पीछे हो लिया। तब मैंने स्वामी जी से प्रश्न किया, महाराज जीव का कल्याण कैसे हो ? वेद मन्त्र पढकर उत्तर दिया कि बिना ज्ञान और पवित्र आचरण के मुक्ति नही हो सकती। मैंने पूछा महाराज ! ज्ञान कैसे प्राप्त हो ? उत्तर मिला कि ज्ञानियो का सत्सग करने और विद्या पढने से। पाषाण पूजन आदि व्यर्थ कर्मों से न ज्ञान हो सकता है— न मोक्ष मिल सकता है। तुम अभी बालक हो खूब विद्याभ्यास करो, इन प्रश्नो के उत्तर को तुम स्वय समझ जाओगे। स्वामी जी महाराज को नमस्कार करके अपने ठिकाने चला आया। उस समय कहीं भी कोई आर्य समाज नही बना था। उन दिनो स्वामी जी महाराज ने एक सस्कृत पाठशाला स्थापित की थी। जिसमे काशी मे स्वर्गवासी महामहोपाध्याय शिवकुमार शास्त्री अध्यापक थे। स्वामी जी महाराज उनको तीस रुपये मासिक देते थे और एक साधु जवाहर दास जी 25) मासिक लेकर उस पाठशाला मे योग दर्शन आदि पढाते थे और तीसरे एक सन्यासी नागरी अध्यापक थे। इसी सन्यासी के पास कई मास तक मैं भी अष्टाध्यायी और योगदर्शन पढता रहा। इस पाठशाला मे स्वामी जी की ओर से विद्यार्थियो को पुस्तकें बिना मूल्य मिलती थी लगभग 100) मासिक का व्यय स्वामी जी महाराज करते थे।

इसके पश्चात् मैं कई बार स्वामी जी को मिला। दो बार सम्वत् 1936 विक्रमी के कुम्भ के अवसर पर शास्त्रार्थ भी सुना। इसी कुम्भ के मेले पर स्वामी जी महाराज नवीन मतो का ऐसा खण्डन करते थे कि लोग सुनकर आश्चर्य चकित रह जाते, सस्कृत धारा प्रवाह ऐसी सुन्दर थी कि वैसी सुनने मे फिर नही आयी। स्वामी जी के पास साधुओ और पण्डितो की भीड लगी रहती। एक दिन सब लोगो को स्वामी जी महाराज कह रहे थे कि वेद और उपनिषदादि आर्य ग्रन्थो मे कही भी मूर्ति पूजा का विधान नही, हा जो भागवत् और शिव पुराण आदि ग्रन्थ हैं उन मे है। यह भागवतादि महर्षि व्यास के नही, सम्प्रदायी लोगो के बनाये झूठे ग्रन्थ हैं। तुम लोग इस से भी एक कदम आगे बढ गये। भला कहो तो सही तुम लोग जो लकडी की ध्वजा बनाते, उसी को खूब फूलो के हारो से सजाते। उसको नमस्कार करते तथा उसके आगे शख घडियाल बजाते और नरसिंहे की धू धू से आसमान को गूञ्जाते हो यह लक्कड पूजा किस पुराण मे लिखी है स्वामी जी की वार्ता सुन कर सब साधु— ब्राह्मण कहते—भाई कहते तो ठीक है पर हम क्या करें ? सभी लोग करते है और हम भी करते हैं।

मैंने इस कुम्भ मे स्वामी जी से भेद अभेद विषय पर बहुत काल तक उत्तर—प्रश्न किए। मैं सत्य कहता हू कि ऐसा विद्वान् निर्भय सत्य वक्ता तेजस्वी— जितेन्द्रिय दूसरा कोई नही देखा। नवीन वेदान्त की समीक्षा जैसे स्वामी जी महाराज करते थे वैसी दूसरा कोई कहीं कर सकेगा। बडे-बडे नवीन आचार्य अपने-अपने समुदाय की बातें करते हैं किसी ने भी वेदो की ओर ध्यान नहीं दिया और इन महर्षि जी ने घर घर मे वेद फैलाए वेद के सहस्रो पुस्तक छप गए।

# ऋषि बोधोत्सव का मुख्य सन्देश

लेखक
स्व. श्री पं. धर्मदेव जी, विद्यामार्तण्ड,

पौराणिक भाई जिस पर्व को शिवरात्रि के नाम से मनाते हैं हम आर्य उसे ऋषि-बोधोत्सव के नाम से मनाते हैं क्योंकि उसी रात सम्वत् 1894 अथवा सन् 1838 में बालक मूलशंकर के सरल और पवित्र हृदय में इस बोध का उदय हुआ था कि उपास्य शंकर यह मूर्ति नहीं हो सकती जिस में एक चूहे को भी हटाने की शक्ति विद्यमान नहीं। उस सच्चे शिव की खोज में उन्होंने लगभग 25-30 वर्ष लगा दिए और योगाभ्यास तथा महर्षि विरजानन्द जी जैसे आदर्श गुरुओं की कृपा से उस पवित्र वैदिक ज्ञान को प्राप्त किया जिस से उन्हें मङ्गलमय शांतिमूल परमेश्वर के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान हो गया। तब उन्होंने

माचिदन्यद् वि शंसत सखायो मा रिषण्यत।
इन्द्रमित् स्तोतावृषणं सचासुते मुहुरुक्था
च शंसत ॥ साम 242

य एक इत् तमुष्टुहि कृष्टीनां विचर्षणि·।
पतिर्यज्ञे वृषक्रतु: ॥ ऋ० 6. 45. 16

दिव्यो गन्धर्वो भुवनस्य यस्यतिरेक एव
नमस्यो विक्ष्वीड्य: ॥ अथर्व 2. 2. 1

इत्यादि वेद मन्त्रों के आधार पर निम्न संदेश सारे जगत् के मनुष्यों के सामने रखा :

'हे मनुष्यों ! हम सब का जगदीश्वर ही एक मात्र उपास्य देव है जिसकी उपासना से पुष्टि, वृद्धि, कीर्ति और मोक्ष प्राप्त होता है और मृत्यु का भय नष्ट हो जाता है। अत: उस प्रभु को छोड़ कर अन्य की उपासना हम कभी न करें।"

यजु० 4। 26 के भाष्य में महर्षि ने बताया :—

जो सत्यभाव से परमेश्वर की उपासना करते और यथाशक्ति उसकी आज्ञा का पालन करते और सर्वोपरि सत्कार के योग्य परमात्मा को मानते हैं, उनको दयालु ईश्वर पापाचरण के मार्ग से पृथक् कर धर्मयुक्त मार्ग से चला के विज्ञान देकर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को सिद्ध करने के लिए समर्थ कर देता है।

ईश्वरोपासना का फल बताते हुए महर्षि ने सत्यार्थप्रकाश के सप्तम् समुल्लास में लिखा :—

"जैसे शीत से आतुर पुरुष का अग्नि के पास जाने से शीत निवृत्त हो जाता है, वैसे परमेश्वर के समीप प्राप्त होने से सब दोष, दु:ख छूट कर परमेश्वर के गुण, कर्म स्वभाव के सदृश जीवात्मा के गुण, कर्म, स्वभाव भी पवित्र हो जाते हैं। इसी लिए परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना भी अवश्य करनी चाहिए। इस से इसका फल पृथक् (उपर्युक्त) तो होगा ही, परन्तु आत्मा का बल इतना बढ़ेगा कि वह पर्वत के समान दु:ख तथा क्लेशो को सहन कर लेगा।

(सत्यार्थप्रकाश समु० 7)

हमे ऋषि-बोधोत्सव पर (जो इस वर्ष 17 फरवरी को पड़ता है) गम्भीरता से आत्मनिरीक्षण करते हुए देखना चाहिये कि क्या हम आर्य नर-नारियों ने महर्षि के इस ईश्वरोपासना के सन्देश का क्रियात्मक आचरण करके लाभ उठाया है ? केवल मूर्तिपूजा के त्याग से ही लाभ नहीं हो सकता (यद्यपि उसके त्याग की ही नहीं, औरों से त्याग कराने की भी अब बहुत अधिक आवश्यकता है), जब तक उसके साथ ईश्वरोपासना तथा वास्तविक संध्या (नाममात्र की वो मिन्टी संध्या नहीं) द्वारा हम अपने जीवनों को शान्ति, ज्ञान तथा आनन्द से भरपूर करने का प्रयत्न न करें। हम सब को ईश्वरोपासना में पर्याप्त समय देकर लाभ उठाना चाहिए। तभी हम अपने जीवनों को सच्चा आर्य जीवन बना सकेंगे।

# यूरोप के प्रसिद्ध विद्वान् श्री रोमा रौलां की दृष्टि में

# महर्षि दयानन्द

सिंह समान निर्भीक प्रकृति वाला यह महापुरुष उन व्यक्तियो मे था जिन्हे भारत का मूल्यांकन करते समय यूरोप भुलाने की चेष्टा करता हुआ भी भुला न सकेगा, क्योकि ऐसा करना उस (यूरोप) के लिये महगा सौदा सिद्ध होगा।

दयानन्द पाश्चात्य विचारो से विमोहित दार्शनिको के साथ समझौता करने वाले महानुभाव न थे।

उस (दयानन्द) पर विजय पाना असम्भव था क्योकि वे वैदिक वाङ्मय और सस्कृत के अनुपम भण्डार थे। उनके शब्दो की धधकती आग मे उनके विरोधियो का विरोध भस्मसात् हो जाया करता था। वे लोग जल की प्रबल बाढ के साथ दयानन्द की तुलना किया करते थे। शकराचार्य के पश्चात् दयानन्द जैसा वेदविद् भारत भूमि मे उत्पन्न नही हुआ।

दयानन्द की उग्र और प्रौढ शिक्षायें उसके देशवासियो की विचारधारा के अनुकूल थी और उन शिक्षाओ से भारतीय राष्ट्रीयता का सर्व प्रथम नवजागरण हुआ।

महान् वीर योद्धा दयानन्द का उत्साह पूर्वक स्वागत होने का कारण इस पृष्ठ भूमि के प्रकाश मे सहज ही मे समझ आ सकता है कि वे स्वय वेदो के उग्र प्रचारक थे और वेदो के प्रकाण्ड पण्डित और मर्मज्ञ थे, वे ऋषियो की परम्परा के अग थे और वीर भावना के साथ प्राचीन भारत के पवित्र ग्रन्थो को साथ लेकर कार्य क्षेत्र मे अवतीर्ण हुए थे। उन्होने अकेले भारत पर आक्रमण करने वालो के विरुद्ध मोर्चा लगाया।

दयानन्द ने अपने देश के प्राचीन व अर्वाचीन किसी भी निवासी को क्षमा नही किया जिसने किसी न किसी रुप मे उस भारत के 100 वर्ष से हुए पतन मे योग दिया था, जो किसी समय ससार का शिरमौर था।

यह सत्य है कि भारत के लिए वह एक दिन एक युग प्रवर्त्तक दिन था जब एक ब्राह्मण ने न केवल यह स्वीकार किया कि उस वेद ज्ञान पर मानवमात्र का अधिकार है जिनका पठन पाठन उन से पूर्व के कट्टर ब्राह्मणो ने निषिद्ध कर दिया था, अपितु इस बात पर भी बल दिया कि वेदो का पढना पढाना और सुनना सुनाना आर्यो का परम धर्म है।

दयानन्द ने भारत के निष्प्राण शरीर मे अपना अदम्य उत्साह, अपना दृढ निश्चयात्मक सकल्प और सिंह जैसा रक्त भर कर उसे सजीव किया। उसके शब्द वीरोचित शक्ति के साथ गूज गये।

सब से मुख्य बात यह है कि दयानन्द को अस्पृश्यो के साथ विद्यमान घृणित अन्याय सर्वथा असह्य था। उनके अधिकारो का इतनी उग्रता से अन्य किसी ने समर्थन नही किया। अस्पृश्य जन पूरी समानता के आधार पर आर्य समाज मे प्रविष्ट होते है।

वस्तुत, भारतीय राष्ट्रीय चेतना के पुनर्जन्म और जागरण मे जो इस समय इस देश मे अपने पूर्ण यौवन मे देख पड रही है, सबसे प्रबल प्रेरणा दयानन्द से प्राप्त हुई थी।

# वेदों की ओर चलो

## लेखक—स्वर्गीय श्री पं. मुनीश्वरदेव जी सिद्धान्त शिरोमणि, महोपदेशक

'वेदों की ओर चलो'—यह जगद्गुरु महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज का एक 'ओजस्वी नाद' था, जिसे आप समस्त संसार में गुंजाना चाहते व गूंजता देखना चाहते थे। आप का दृढ़ विश्वास था कि व्यष्टि व समष्टि का उद्धार व कल्याण हो सकता है तो केवल एक ही उपाय से, और वह है सर्व-साधारण का 'पुनः वेदो की ओर प्रवृत्त होना' जिसका स्पष्ट प्रमाण आप की लोक-प्रसिद्ध पुस्तक 'सत्यार्थ-प्रकाश' (बीसवी बार) मे पद-पद पर निम्न प्रकार मिलता है —

1. (प्र०) तुम्हारा मत क्या है? (उ०) वेद अर्थात् जो वेद मे करने और छोडने की शिक्षा है, उस-उस का हम यथावत् करना वा छोड़ना मानते है। जिस लिए वेद हम को मान्य है। इसलिए हमारा मत वेद है। ऐसा ही मान कर सब मनुष्यों को विशेषकर आर्यों को एकमत होकर रहना चाहिए। (पृष्ठ 44)

2. कोई किसी से पूछे कि तुम्हारा क्या मत है तो यही उत्तर देना चाहिए कि हमारा मत वेद है, अर्थात जो कुछ वेदो मे कहा है हम उसको मानते हैं। (पृष्ठ 131)

3. जिस देश मे यथायोग्य ब्रह्मचर्य, विद्या और वेदोक्त धर्म का प्रचार होता है, वही देश सौभाग्यवान होता है। (पृष्ठ 47)

4. ब्रह्मा से लेकर जैमिनि मुनि पर्यन्त का मत है कि वेद विरुद्ध को न मानना किन्तु वेदानुकूल का आचरण करना धर्म है। क्यों? वेद इस सत्यार्थ का प्रतिपादक है। (पृष्ठ 202)

5. (सिक्खों के प्रसंग में) इन सब ने भोजन का बखेड़ा बहुत-सा हटा दिया है, जैसे इसको हटाया वैसे विषयासक्ति, दुरभिमान को भी हटा कर वेद मत की उन्नति करें तो बहुत अच्छी बात हो। (पृष्ठ 234)

6. (दादुपन्थियों के प्रसंग में) अच्छा तो वेद है, जो पकडा जाए तो पकड़ो, नहीं तो सदा गोता खाते रहोगे। (पृष्ठ 234)

7. (जैनियों के प्रसंग मे) ऐसी ही लीला इन की वेद और ईश्वर को न मानने से हुई, अब भी सुख चाहें तो वेद और ईश्वर का आश्रय लेकर अपना जन्म सफल करे। (पृष्ठ 267)

पुनश्च—जो अविद्यादि दोषों से छूटना चाहो तो वेदादि सत्य शास्त्रों का आश्रय ले लो, क्यों भ्रम में पड़े-पड़े ठोकरें खाते हो। (पृष्ठ 275)

8. इसलिए मनुष्य-मात्र को वेदानुकूल चलना समुचित है। (पृष्ठ 264)

9. (नास्तिक मतों से) परन्तु शोक है चारवाक, आभाणक, बौद्ध और जैनियो पर, इन्होंने मूल चार वेदों की संहिताओं को भी न सुना और न किसी विद्वान् से पढ़ा, इस से नष्ट-भ्रष्ट बुद्धि होकर ऊट-पटांग वेदों की निन्दा करने लगे। (पृष्ठ 264)

10. (ब्रह्मसमाज से) भला वेदादि सत्य शास्त्रों के माने बिना तुम अपने वचनों की सत्यता और असत्यता की परीक्षा और आर्यावर्त्त की उन्नति भी कर सकते हो? (पृष्ठ 247)

पुनश्च—अब भी समझ कर वेदादि के मान्य से देशोन्नति करने लगो तो अच्छा है। (पृष्ठ 243)

11 (ईसाइयो से) अब तो इस जगली मत को छोडकर सुसभ्य धर्ममय वेदमत को स्वीकार करो, कि जिससे तुम्हारा कल्याण हो। (पृष्ठ 320)

12 (यवनो से) यदि तुम्हे सत्यमत के ग्रहण की इच्छा हो तो वैदिक मत को ग्रहण करो। (पृष्ठ 389)

पुनश्च—ऐसे मूढ व कल्पित मतो को छोड कर वेदोक्त सत्य मत स्वीकार करने योग्य सब मनुष्यो के लिए है। जिस आर्य अर्थात् श्रेष्ठ पुरुषो के मार्ग से चलना और दस्यु अर्थात् दुष्टो के मार्ग से अलग रहना लिखा है सर्वोत्तम है। (पृष्ठ 360)

पुनश्च—हा जो हम लाग वैदिक है वैसे तुम लोग भी वैदिक हो जाओ ता बुतपरस्ती आदि बुराइयो से बच सको, अन्यथा नही। (पृष्ठ 353)

## (महर्षि जी के अन्तिम हृदयोद्गार)

—परमात्मा सब के मन मे सत्य का अकुर डाले कि जिसमे सब मिथ्या मत शीघ्र ही प्रलय को प्राप्त हो। इसमे सब विद्वान् लोग विचार कर विरोध भाव को छोड कर आनन्द को बढावे। (पृष्ठ 174)

—सर्वशक्तिमान् परमात्मा एक मत मे प्रवृत्त होने का उत्साह सब मनुष्यो की आत्माओ मे प्रकाशित करे। (पृष्ठ 175)

—परमात्मा सब मनुष्यो पर कृपा करे कि सब के सब प्रीति, परस्पर मेल और एक दूसरे की उन्नति करने मे प्रवृत्त हो। जैसे मैं अपना व दूसरे मत-मतातरो का दोष पक्षपातरहित होकर प्रकाशित करता हू, इसी प्रकार यदि सब विद्वान् लोग करें तो क्या कठिनता है कि परस्पर का विरोध छूट मेल होकर आनन्द मे एक मत हो सत्य की प्राप्ति सिद्ध हो। (पृष्ठ 388)

उपरिलिखित महर्षि जी की पवित्र विचार-धारा को देख-सुन कर पढ कर कौन ऐसा व्यक्ति है जिसके हृदय से ऋषि के प्रति धन्यवाद, साधुवाद और कृतज्ञता के भाव न प्रकट होते हा। सचमुच महर्षि जी के हृदय मे वेद के प्रति गम्भीर आस्था थी। वह अ तस्तल से अभिलाषा रखते थे कि ससार के सभी मतावलम्बी नर नारी पक्षपात् रहित होकर परमेश्वरोक्त वेदोक्त धम म प्रवृत हो जावें। व वेदातिरिक्त मत के प्रचार को सहन न करते थे। वे अपने दिव्य नेत्रो से देख रहे थे कि देश व जाति के अध पतन का मूल कारण वेदो मे अप्रवृत्ति और वेदोक्त शिक्षा का अप्रचार है। अत हम आज के 'ऋषि बोधोत्सव' के पवित्र प्रचार को घर घर, ग्राम-ग्राम व नगर नगर मे फैला कर सब प्रकार की अवैदिक प्रवृत्तियो, नीतियो, रीतियो और आचार, विचार आदि को दूर करने व सुधार करने मे अग्रसर होंगे, ऐसा विश्वास है।

# महर्षि दयानन्द ने कहा था—

जैसे नदी और बडे बडे नद तब तक भ्रमते ही रहते हैं जब तक समुद्र को प्राप्त नही होते, वैसे गृहस्थ ही के आश्रम मे सब आश्रम स्थिर रहते हैं। बिना इस आश्रम के किसी आश्रम का कोई व्यवहार सिद्ध नहीं होता।

जिससे ब्रह्मचारी, वानप्रस्थ और सन्यासी तीनो आश्रमो को दान और अन्नादि देके प्रतिदिन गृहस्थ ही धारण करता है। इससे गृहस्थ ज्येष्ठाश्रम है अर्थात् सब व्यवहारो मे धुरन्धर कहाता है इसलिए जो मोक्ष और ससार के सुख की इच्छा करता हो वह प्रयत्न से गृहस्थाश्रम को धारण करे।

जो यह गृहस्थाश्रम न होता तो सन्तानोत्पत्ति के न होने से ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और सन्यासाश्रम कहाँ से हो सकते?

(स०प्र० चतुर्थ समु०)

# आर्य समाज प्रचारक संस्था है

## लेखक—स्वर्गीय स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज

महर्षि दयानन्द जी के प्रचार से पूर्व वैदिक धर्म का द्वार बन्द था। यही नहीं, कि जो वैदिक धर्मेतर मज़हब में उत्पन्न हुआ हो वह वैदिक धर्मी न बन सकता। अपितु जो वैदिक धर्म में उत्पन्न हो कर किसी कारणवश वैदिक धर्म से पृथक् हो जाय, वह भी पुनः वैदिक धर्मी न बन सकता था। अवस्था सर्वथा युक्ति विरुद्ध थी। क्योंकि उस समय के नेता जन्म से ही व्यवस्था करते थे। यदि वह इस पर विचारपूर्वक दृढ़ होते तो वैदिक धर्मेतर मजहब में उत्पन्न होने वालो को कह सकते थे कि जन्म जातव्यवस्था के कारण आप वैदिक धर्म में नहीं आ सकते हैं, किन्तु जो वैदिक धर्मी माता पिता से उत्पन्न व्यक्ति थे, उसी व्यवस्था के अनुसार वह भी कहीं चले जाएं, कुछ मान ले वैदिक धर्मी ही रहेंगे, यह बात युक्ति सिद्ध थी (उनके मतानुसार)। परन्तु इसे न मानकर उनकी व्यवस्था थी, इतर मज़हब मे उत्पन्न व्यक्ति वैदिक धर्मी नही हो सकता, किन्तु वैदिक धर्म मे उत्पन्न होने वाला वैदिक धर्म से बाहर जा सकता है। इसी व्यवस्थानुसार वैदिक धर्मियों से करोड़ों स्त्री पुरुष पृथक हो गए।

पटना वाले श्री मजहरुलहक जी ने किसी समय लिखा था कि मुसलमानों मे भारत से बाहर वाले देशों से आने वाले मुसलमानों की संख्या दस प्रतिशत से अधिक नहीं है, शेष 70 प्रतिशत मुसलमान भारतीय माता पिता की संन्तान है, ईसाइयों में तो यह अनुपात इससे भी कम है, क्योंकि मुसलमान जो राजा थे, वे भी बाहर से आकर भारतीय हो गए थे और अन्य व्यक्ति जो सेना में आए वे भी भारतीय होगए। उनके अतिरिक्त अनेक विदेशी आजीविकार्थ भारत आए और भारतीय हो गए। ईसाइयों की अवस्था ऐसी नही जो अंग्रेज राज्याधिकारी आए, वह राज्यकार्य से मुक्त होते ही अपने देश लौट गए। जो सैनिक थे वह भी अपने घर चले गए, इसी भांति व्यापारी वर्ग भी धन कमाकर भारत छोड़ गया, यदि भारत नहीं छोड़ा तो भी वह भारतीय नही बना, इस अवस्था को लक्ष्य करके किसी ने RICH (रिच) शब्द की व्युत्पत्ति की थी, ROB INDIA COME HOME अर्थात् लूटो इण्डिया (भारत) को आओ घर।

दूसरे वैदिक धर्म मे अनेक भेद उत्पन्न करके अछूतादि की कल्पना से जन्म से ही करोड़ों को पृथक कर दिया था। जिसका जन्म किसी अछूत कही जाने वाली बिरादरी मे हो गया. वह इस जन्म मे चाहे कितने ही अच्छे कर्म करता रहे, वह अछूत ही रहेगा, इसमें भी जन्म की व्यवस्था लागू होती थी। कर्म की भावना न थी।

इसके साथ-साथ जो अछूत न थे, वह भी एक दूसरे के हाथ से न जल लेकर पी सकते थे और न ही परस्पर भोजन बना हुआ खा सकते थे। इस भांति वैदिक धर्म में मिलने के साधनों का अभाव था और पृथक्करण भरपूर था। जिससे जाति मे दिन प्रतिदिन ह्रास हो रहा था और दूसरे मतावलम्बी आर्य जाति के मृत्यु के समय की गणना करके अनुमान लगा रहे थे। इतने वर्षों में आर्य जाति समाप्त हो जाएगी।

इसके अतिरिक्त गोरक्षक के स्थान में गोभक्षक

दल प्रबल था । प्रथम मुसलमान गोभक्षक आए, उन्होने आर्यों को पतित किया । पश्चात् ईसाइयो का प्रवेश हुआ, उन्होने गोभक्षक दल को बढाया, दोनो अपने अपने समय राजा या राज्याधिकारी थे और सब वैदिक धर्मियों को पतित करना पुण्य कार्य मानते थे । छल से, बल से, लोभ से, लालच से, काम से, दाम से क्रोध से, भय से, अर्थात् येन केन प्रकारेण मुसलमान, ईसाई बनाकर गोभक्षक बनाना दिन रात का काम था, और वैदिक धर्म के कर्णधार सन्यासी ब्राह्मण उदासीन होकर दिन बिता रहे थे । तब महर्षि ने इस दशा को बदलने के लिये जयघोष किया और स्वाराज्य प्राप्ति के लिये विदेशियो को ललकारा एव आर्य जाति को उभारा ।

आज हम स्वराज्य प्राप्त कर चुके हैं किन्तु दो कार्य अभी शेष है । गोरक्षा और वैदिक धर्म से जाने वाले द्वार को बन्द करना तथा आने वाले द्वार को खोलना ।

इस युद्ध के अग्रभाग मे अर्थात् शत्रु से सीधा मोरचा लेने का कार्य आर्य समाज पर है । गोरक्षा के विषय म अ र्यजनता आर्य समाज क साथ है किन्तु दूसरे युद्ध मे वह आशीर्वाद मात्र देगी । अन्य साधन भी देगी, किन्तु योद्धा का काम न करेगी ।

इस समय निम्न प्रदेशो मे गोवध बन्द है । यथा जम्मू काश्मीर, हिमाचल प्रदेश, पैप्सू, मध्य-भारत । पजाब मे और कही गोवध नही होता है, जिला गुडगावा की नूह फीरोजपुर झिरका की तहसील के कई ग्रामो मे होता है' (इसे बन्द करवाने का यत्न करना है) उत्तर प्रदेश, बिहार मे गोवध बन्दी का कानून बनने वाला है । देखें क्या बनता है । मध्य प्रदेश मे गौ बछडा, बछडी का वध नही होता है तो भी बैल मारा जाता है उसे भी बन्द करवाना है । अन्य प्रान्तो मे गोवध होता है उसे बन्द करवाना है ।

इसके अतिरिक्त बिछडे हुए आर्यों को पुन वैदिक धर्म की शरण मे लाना है । यह कार्य है जो इस समय आर्यसमाज के सन्मुख विशेष रूप से और आर्य जाति के सामने सामान्य रूप से है ।

महर्षि दयानन्द जी के लेखो मे इन कार्यों के करने का आदेश है । उन्होने अपने जीवन मे इन कार्यों को किया । इसलिये ऋषि बोध (शिवरात्रि) के दिन को मनाते हुए अ र्य समाज को उन कामो की ओर विशेष ध्यान दना चाहिये और आगामी कार्यक्रम मे इन कार्यों को स्थान मिलना चाहिये । और गोरक्षा तथा मिलाप रूप कार्य करने का प्रण करना चाहिये एव जब तक यह कार्य पूरा न हो जाए उस समय तक इस कार्य के करने मे ढील न आने देने का व्रत लेना चाहिये ।

## स्वर्गीय रवीन्द्र नाथ जी ठाकुर ने कहा था—

मेरा सादर प्रणाम हो उस महान् गुरु दयानन्द को, जिनकी दृष्टि ने भारत के अध्यात्मिक इतिहास मे सत्य और एकता को देखा और जिसके मन ने भारतीय जीवन के सब अगो को प्रदीप्त कर दिया । जिस गुरु का उद्देश्य भारत वर्ष को अविद्या, आलस्य और प्राचीन ऐतिहासिक तत्व के अज्ञान से मुक्त कर सत्य और पवित्रता की जागृति मे लाना था, उसे मेरा बारम्बार प्रणाम है । मै आधुनिक भारत के मार्ग-दर्शक उस दयानन्द को आदरपूर्वक श्रद्धाजलि देता हू, जिसने देश की पतितावस्था मे भी हिन्दुओ को प्रभु की भक्ति और मानव समाज की सेवा के सीधे व सच्चे मार्ग का दिग्दर्शन कराया ।"

# मुझे आर्य समाज बड़ा प्रिय है

## —महात्मा गांधी

आर्य समाज मे काम करने की बड़ी शक्ति है रिफार्म करने की जो कोशिश आर्य समाज ने की है वह भी कुछ कम नहीं और प्रशंसनीय है परन्तु मैं देखता हूं कि आर्य समाज में "टालरेशन" (सहन) की जरुरत है।

स्वामी दयानन्द जी एक भारी विद्वान् और सुधारक थे और देश की जरुरत के समय उन्होने घर के सुखों को छोड़ कर बहुत कष्ट उठाए। काठियावाड़ में माता पिता के साथ बच्चों का बड़ा भारी स्नेह होता है। और सोलह वर्ष के बच्चे के लिए यह बहुत ही कठिन है कि वह अपने माता पिता और सम्बन्धियो को छोड़ कर जंगल में भटकता फिरे परन्तु देश हित के लिए स्वामी दयानन्द जी घर से निकल गए। ऐसे व्यक्ति का यदि कोई भी आदमी अपमान करे तो मैं इसे पाप समझूंगा। लेकिन स्वामी दयानन्द के जीवन में भी जो "इन टालरेशन" मैं आर्य समाज में देख रहा हूं इस का बीज पाया जाता है परन्तु मैं गुरुओं के गुण ही ग्रहण करता हूं और दूसरी बातों को छोड़ देता हूं।

मेरे पिता जो मुझ को आध्यात्मिक धन दे गए है। जरुरी है कि मैं उसमें कुछ उन्नति करूं तब ही कुटुम्ब का, जाति का और देश का भला हो सकता है कमी करने से नहीं। आर्य समाज को भी चाहिए कि त्रुटियों को दूर करें।

मुझे आर्य समाज बड़ा प्रिय है। यह बुद्धि के प्रयोग से काम करता है और इसका काम देश के लिए लाभकारी है इसलिए यदि मैं कुछ दोष भी बताता तो इस का यही अर्थ है कि आर्य समाज और भी अधिक देश सेवा का कार्य करे जो कुछ मैंने कहा है इसी भाव से समझा जाए।

# शिवरात्रि सन्देश महान्

रचयिता –स्व. श्री पंडित धर्मदेव जी विद्या मार्तण्ड

शिवरात्रि सन्देश महान्—करो एक ईश्वर का ध्यान।
जो शंकर सुशान्ति का मूल, जो हरता है मन का धूल।
उसे भूलना भारी भूल, करो उसी का नित गुणगान।
सर्व व्यापक जो है नाथ, जो रहता है सब के साथ।
सब में देखो उसी का हाथ, होगा दुःखों का अवसान।
करो सदा उसी की ही पूजा, पूजा योग्य न कोई दूजा।
मूढ़ वही जिस उसे न बूझा, करो भक्ति का रस नित पान।
जो इक परमेश्वर को छोड़, ले न अन्य से नाता जोड़।
देता बन्धन उनके तोड़, वह शंकर आनन्द विधान।
सुनो वेद का यह सन्देश, फैलाओ फिर देश विदेश।
ध्याओ उसको जो परमेश, करो शान्ति शाश्वत सुख मान।

॥ ओ३म ॥

कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृध सखा ।
कया शसिष्ठया वृता ॥ यजु० 36।4॥

शब्दार्थ— उस प्रभू की लीला अपार है । उसके सम्बन्ध में कोई कुछ नहीं कह सकता कि वह कब क्या कर देवे ? वह प्राणीमात्र का सखा है । सब का भला चाहता है । वह सदा ऐश्वर्य सम्पन्न रहता है । उसके गुण कर्म स्वभाव अदभुत हैं । किस प्रकार समय पर वह अपने भक्तो की सहायता करता है इसका किसी को कुछ भी भेद नहीं है । किन्तु इतना जानते हैं कि उसकी सहायता से ही हम लोग धर्म अर्थ काम और मोक्ष मे प्रवृत्त होते हैं । वह समय पर शुभ कार्यों मे सब की प्रवृत्ति करता है ॥



## पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

आर्य मर्यादा का यह अक 36 37 दिनाक 17 तथा 24 फरवरी 1985 तदानुसार 6 तथा 13 फाल्गुण स० 2042 का सम्मलित अक होगा । 24 फरवरी का अक बन्द रहेगा ।

॥ ओ३म् ॥

ये पन्थानो बहवो देवयाना अन्तरा द्यावापृथिवी संचरन्ति ।
ते मा जुषन्तां पयसा घृतेन यथा क्रीत्वा धनमाहराणि ॥
अथर्व० 3।15।2।

शब्दार्थ—इस पृथिवीलोक और द्युलोक के मध्य में जो बहुत से व्यापार करने के उत्तमोत्तम तरीके वैश्य वर्ग के द्वारा व्यवहार में लाए जाते है, उन्हें अपना कर हम लोग दूध-घी आदि पुष्टि-कारक भोज्य पदार्थों से सदा सम्पन्न रहें। जिससे हमारे शरीर और बुद्धि सदा सुपुष्ट बने रहें। और हम लोग माल खरीद, और उसे बेच कर सम्पत्ति का संग्रह करते रहें। अर्थात् हमारे पास प्रचुर मात्रा में धन सदा बना रहे। इस कार्य में ईश्वर हमारी सदा सहायता करता रहे ॥

—महर्षि दयानन्द

॥ ओ३म् ॥

मातृमान् पितृमानाचार्य्यवान् पुरुषो वेद ॥ शतपथ ब्राह्मण ॥

अहोभाग्य उस मनुष्य का है कि जिसका जन्म धार्मिक विद्वान् माता पिता और आचार्य के सम्बन्ध में हो। क्योंकि इन तीनों ही की शिक्षा से मनुष्य उत्तम होता है। ये अपने सन्तान और विद्यार्थियों को अच्छी भाषा बोलने खाने, पीने, बैठने, उठने, वस्त्रधारण करने, माता पिता आदि के मान्य करने, उनके सामने यथेष्टाचारी न होने, विरुद्ध चेष्टा न करने आदि के लिए प्रयत्नों से नित्यप्रति उपदेश किया करें और जैसा-जैसा उसका सामर्थ्य बढ़ता जाए वैसी-वैसी उत्तम बातें सिखलाते जाएं। इसी प्रकार लड़के और लड़कियों की पांच व आठ वर्ष की अवस्था पर्यन्त माता पिता और इनके उपरान्त आचार्य की शिक्षा होनी चाहिए।

—महर्षि दयानन्द

✠ ✠ ✠

॥ ओ३म् ॥

'ईश्वर' कि जिसके ब्रह्म परमात्मादि नाम है, जो सच्चिदानन्दादि लक्षण-युक्त है। जिसके गुण, कर्म, स्वभाव पवित्र हैं, जो सर्वज्ञ, निराकार, सर्वव्यापक, अजन्मा, अनन्त, सर्वशक्तिमान्, दयालु न्यायकारी, सब सृष्टि का कर्त्ता, धर्त्ता, हर्त्ता, सब जीवो को कर्मानुसार सत्य न्याय से फल दाता आदि लक्षणयुक्त है उसी को परमेश्वर मानता हू।

—महिष दयानन्द

* * *

॥ ओ३म् ॥

सदसस्पतिमद्भुत प्रियमिन्द्रस्य काम्यम् ।
सनि मेधामयासिष स्वाहा ॥51॥ यजु 32 । 13

हे विद्यामय सभापते न्यायकारिन ! आप हमारी सभाओ के नियन्ता होकर सबको न्याय पथ पर चलायें । आप आश्चर्यस्वरूप तथा विचित्रशक्ति सम्पन्न हैं, आप ही जीवों की कामना को पूर्ण करने वाले तथा सम्पूर्ण पदार्थों के निधि हैं सो आप अपनी कृपा से हमको सब प्रकार का उत्तम धन, विद्या तथा सत्य धर्मादि को धारण कराने वाली बुद्धि दें, यह आप से हमारी विनयपूर्वक प्रार्थना है ॥
(आर्याभिविनय)

—महर्षि दयानन्द

✠ ✠ ✠

॥ ओ३म् ॥

उपहूता इह गाव उपहूता अजावय: । अथोऽन्नस्य कीलाल उपहूतो गृहेषु न: ।
क्षेमाय व: शान्त्यै प्रपद्ये शिवं शग्मं शंय्यो: शंय्यो: ॥ 49 । यजु० 3 । 43

हे परमपिता परमात्मन् ! आप अपनी कृपा से हमको शारीरिक तथा आत्मिक सुख प्राप्त करायें अर्थात् गाय, भेड़, बकरी और अश्वादि पशु तथा पुष्कल अन्न दें जो शारीरिक कुशलता देकर ब्रह्मज्ञान प्राप्ति द्वारा मुक्ति सुख का अधिकारी बनायें, यही आपसे प्रार्थना है ॥ (आर्याभिविनय)

—महर्षि दयानन्द

✠ ✠ ✠

॥ ओ३म् ॥

दृते दृंह मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम् ।
मित्रस्याऽहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ॥3॥

हे दुष्टस्वभावनाशक ! मैं दुष्टस्वभाव वाला न होऊं किन्तु ज्ञान तथा सत्यधर्म आदि शुभ गुणो से युक्त होऊं, हे परमैश्वर्य्यवान् परमात्मन् ! धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, तथा विज्ञानादि के दान से मुझको बढाओ, हे सर्वसुहृद् सर्वान्तर्यामिन् ! सब प्राणि मुझको मित्र की दृष्टि से देखें अर्थात् सब मेरे मित्र बन जायें, कोई मुझसे किंचिन्मात्र भी वैर न कर और मैं भी निर्वैर होकर सब चराचर जगत् को अपने प्राणों के तुल्य प्रिय जानू, या यो कहो कि सब देहधारी जीव परस्पर प्रेम से वर्ताव करें अन्याय से नहीं।
(आर्याभिविनय)

—महर्षि दयानन्द

✠ ✠ ✠

॥ ओ३म् ॥

स पूर्वया निविदा कव्यतायोरिमाः प्रजा अजनयन्मनूनाम् ।
विवस्वता चक्षसा द्यामपश्च देवा अग्नि धारयन् द्रविणोदाम् ।।42।।

ऋ 1 । 7 । 3 । 2

वह पूर्ण सनातन परमात्मा जो कवितादि गुणों का प्रकाश करने वाला और प्रकृति द्वारा सम्पूर्ण प्रजा को रचने वाला है उसी परमात्मा को विद्वान् लोग संस्कृत बुद्धि से धारण करते हैं ॥
(आर्याभिविनय)

—महर्षि दयानन्द

## ऋषि बोध (शिवरात्रि) के शुभ अवसर पर

हार्दिक शुभ कामनाओं के साथ

# बी. एल. एम. गर्ल्ज कालेज

## नवांशहर

अपनी पुत्रियों को उच्च शिक्षा दिलाने के लिए बी. एल. एम. गर्ल्ज कालेज नवांशहर में प्रवेश कराएं ।

## प्रिंसीपल गीता अनेजा

**पं. देवेन्द्र कुमार**
प्रधान

**जानकीदास एडवोकेट**
मन्त्री

॥ ओ३म ॥

तद् विष्णो परम पद सदा पश्यन्ति सूरय ।
दिवीव चक्षुराततम् । (यजुर्वेद—6-5)

मेधावी विद्यावान जन सर्वव्यापक परमेश्वर विष्णु के उस परम पद का सदा साक्षात्कार करते रहते है। जो आकाश मे अर्थात् सारे विश्व मे चक्षुरूप सूर्य के समान जाज्वल्यमान है। सूर्य चन्द्र आदि मे उसकी चमक है।

—महर्षि दयानन्द

॥ ओ३म ॥

उद्वय तम सस्परि स्व पश्यन्त उत्तरम् ।
देव देवत्रा सर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् ॥ (यजुर्वेद—अ-38 म-14)

हे परमेश्वर (तमसः परि-स्व ) सब अन्धकार से अलग। प्रकाश स्वरूप प्रलय के पीछे सदा वर्तमान (देव देवत्रा) देवो मे भी देव अर्थात् प्रकाश करने वालों मे प्रकाशक (सूर्यम्) चराचर के आत्मा (ज्योति उत्तमम्) ज्ञान स्वरूप और सबसे उत्तम आपको जान के (वयम् अगन्म) हम लोग, सत्य से प्राप्त हुए हैं। हमारी रक्षा करनी आपके हाथ मे है क्योकि हम लोग आपके शरण मे है।

—महर्षि दयानन्द

✠ ✠ ✠

॥ ओ३म् ॥

अतो देवा अवन्तु नो यतो विष्णुर्विचक्रमे ।
पृथिव्या सप्तधामभिः ॥ 11 ॥ (ऋ० 1 । 2 । 7 । 16 ॥)

हे सर्वव्यापक परमात्मन् ! जिस निष्कामभाव से आपने पृथिवी, जल, तेज, वायु, आकाश, सूर्य और चांद इन सात निवास स्थानों तथा गायत्री आदि सात छन्दों में विस्तृतविद्या से युक्त वेद को रचा है उसी निष्कामभाव से प्रेरित होकर विद्वान् लोग सब प्राणियों की रक्षा करें । (आर्याभिविनय)

—महर्षि दयानन्द

✠ ✠ ✠

॥ ओ३म् ॥

उर्ध्वो नः पाह्यंहसो निकेतुना विश्वं समत्रिणं दह ।
कृधी न ऊर्ध्वाञ्चरथाय जीवसे विदा देवेषु नो दुवः ॥16॥
(ऋ० 1 । 3 । 10 । 14 ॥)

हे सर्वोपरि विराजमान पर ब्रह्मन् ! आप सबसे उत्कृष्ट हो हमको भी उच्च बनावें, हे सर्वपाप-नाशक, ईश्वर ! हमको विविध विद्यादि दान देकर अविद्यादि महापापों से सदैव पृथक् रखें और इस सकल संसार का नित्य पालन कर रहे, हे स्वामिन् ! हे न्यायकारिन् ! जो कोई हम धार्मिकों से शत्रुता करता है उस को भस्मीभूत करें और विद्या, शौर्य्य, धैर्य्य, बल, पराक्रम, चातुर्य्य विविध धन, ऐश्वर्य्य, विनय, साम्राज्य, सम्मति सम्प्रीति तथा स्वदेशसुख सम्पादन आदि गुणों से युक्त करके हमको सब देहधारियों में उत्तम बनायें और सबसे अधिक आनन्दभोग करने, सब देशों में इच्छानुसार विचरने और आरोग्य देह, शुद्ध मानुषबल तथा विज्ञानादि की प्राप्ति के लिये हमको विद्वानों के मध्य प्रतिष्ठायुक्त करें ॥ (आर्याभिविनय)

— महर्षि दयानन्द

॥ ओ३म् ॥

न यस्य द्यावापृथिवी अनुव्यचो न सिन्धवो रजसो अन्तमानशु ।
नोत स्ववृष्टिं मदे अस्य युध्यत एको अन्यच्चकृषे विश्वमानुषक् ॥15॥
(ऋ० 1 । 4 । 14 । 14

हे परमैश्वर्य युक्त परमात्मन् ! आपकी व्याप्ति का परिमाण कोई नहीं कर सकता, आप सब में परिपूर्ण हैं तब भी सूर्य्य, पृथिवि, मध्यलोक तथा सर्वोपरि आकाश आपके अन्त को नहीं पाते, अन्तरिक्ष में जो सूक्ष्मभूत स्थित हैं वह तथा मेघ, बिजली आदि भी आपका अन्त नहीं पाते, इसलिये आप अलख अगोचर हैं, आपकी महिमा का न किसी ने अन्त पाया और न कोई अन्त पा सकेगा । (आर्याभिविनय)

—महर्षि दयानन्द

✠ ✠ ✠

॥ ओ३म् ॥

ऋजुनीती नो वरुणो मित्रो नयतु विद्वान् ।
अर्यमा देवैं सजोषा ॥ 18 ॥
(ऋ 1।6।9।1)

हे महाराजाधिराज ! आप हमको सरलशुद्ध नीति प्राप्त करावें आप सर्वोत्कृष्ट हैं हमको श्रेष्ठ विद्या और श्रेष्ठराज्य प्रदान करें, आप सबके मित्र हैं हमको भी सब का शुभचिन्तक बनावें, आप सर्वोत्कृष्ट विद्वान् हैं। हमको सत्यविद्या से युक्त करें आप यमराज हैं। अर्थात् प्रियाप्रिय का ध्यान छोड़ विचारपूर्वक संसारस्थ जीवों के पाप पुण्य की व्यवस्था करने वाले हैं हम को तत्सदृश बनावें जिससे हम विद्वानों तथा दिव्य गुणों के साथ प्रीति करने वाले होकर आप में रमण कर सकें और आपकी सेवा में सदा तत्पर रहें। हे कृपासिन्धो भगवन् ! आप हमारी सदा सहायता करते रहें जिससे हम सुनीतियुक्त होकर सुख से जीवन व्यतीत कर सकें ॥ (आर्याभिविनय)

—महर्षि दयानन्द

॥ ओ३म् ॥

स्थिरा वः सन्त्वायुधा पराणुदे वीळूउत प्रतिष्कभे ।
युष्माकमस्तु तविषी पनीयसी मा मर्त्यस्यमायिनः ॥ 22 ॥
ऋ 1 । 3 । 18 । 2 ॥

ईश्वर धार्मिक राजाओ को आशीर्वाद देता है कि तुम्हारे अग्नि आदि के संयोग से चलने वाले शतघ्नी = तोप और भुशुण्डी = बन्दूक आदि आग्नेयादि अस्त्र और अग्नि आदि के संयोग बिना ही शरीर बल से चलने वाले धनुष बाण (करवाल) = तलवार, (शक्ति) = बरछी आदि, शस्त्र शत्रुओं को परास्त करने तथा करने तथा रोकने के लिय स्थिर और दृढ़ होकर तुम्हारी सेना प्रशसनीय हो और अन्यायकारी अधर्मी पुरुषो की न हो जिससे दुष्ट लोग धार्मिकप्रजा को दु ख न देसकें ॥ (आर्याभिविनय)

—महर्षि दयानन्द

✠ ✠ ✠

॥ ओ३म् ॥

पराणुदस्व मघवन्नमित्रान्त्सुवेदा नो वसु कृधि ।
अस्माकं बोध्यविता महाधने भव वृध सखीनाम् ॥ 28 ॥
ऋ 5 । 3 । 21 । 25

हे परमपिता परमात्मन् ! आपसे सविनय प्रार्थना है कि आप हमारे सब प्रकार के शत्रुओं का संहार करके हमको अभय दान दें, सदा नीरोग रखकर धन धनधान्य से पूरित करें और सब प्रकार का ऐश्वर्य्य देकर हमारी तथा हमारे मित्रों की रक्षा करते रहें ॥ (आर्याभिविनय)

— महर्षि दयानन्द

✠ ✠ ✠

॥ ओ३म् ॥

शन्नो भग. शमु न. शंसो अस्तु शन्नः पुरन्धिः शमु सन्तु राय ।
शन्न: सत्यस्य सुयमस्य शंस शन्नो अर्यमा पुरुजातो अस्तु ॥ 25 ॥

ऋ. 5 । 3 । 2ऽ । 2

हे न्यायकारी ईश्वर ! आपका दिया हुआ ऐश्वर्य्य हमारे लिये सुखकारक हो और आपकी की हुई प्रशंसा हमारे लिये सदैव सुखकारी हो, ससार का धारण करने वाला आकाश, वायु, प्राण तथा धन यह सब आनन्ददायक हों, सत्यधर्म सुनियम और यह प्रशंसनीय गुण जो ससार में प्रसिद्ध हैं हमारे लिये शान्तिदायक हो और जो आप अनन्तसामर्थ्ययुक्त तथा सर्वत्र प्रकट हैं आप भी हमारे लिये कल्याणकारी हों ॥ (आर्याभिविनय)

—महर्षि दयानन्द

✠ ✠ ✠

॥ ओ३म् ॥

तन्न इन्द्रो वरुणो मित्रो अग्निराप ओषधीर्वनिनो जुषन्त।
शर्मन्त्स्याम मरुतामुपस्थे यूयं पात स्वस्तिभि सदा नः ॥27॥

ऋ 5 । 3 । 27 । 2›

हे भगवान् ! सूर्य्य, चन्द्रमा वायु, अग्नि, जल, ओषधी और वृक्षादि सब समस्त पदार्थ आपकी आज्ञा से सुख रूप होकर हमारा सदा सेवन करें, हे रक्षक ! प्राणादि पवनों की गोद में बैठे हुए हम लोग आपकी कृपा से सदा सुखी रहें और आप सब प्रकार हमारी रक्षा करते रहें। (आर्याभिविनय)

—महर्षि दयानन्द

✠ ✠ ✠

॥ ओ३म् ॥

ऋषिर्हि पूर्वजा अस्येक ईशान ओजसा ।
इन्द्र चोष्कूयसे वसु ॥ 28 ॥
ऋ. 5 । 8 । 17 । 41

हे ईश्वर ! आप सर्वज्ञ, सब जगत् के आदि कारण, अद्वितीय स्वामी तथा सब उत्तम धनों के दाता हैं और आप ही अपने सेवकों पर कृपादृष्टि रखने वाले हैं ॥ (आर्याभिविनय)

—महर्षि दयानन्द

✠ ✠ ✠

## ऋषि बोध (शिवरात्रि) के शुभ अवसर पर

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित

# मद्रास ज्युलर्स

## हीरा, स्वर्ण, रजत, आभूषणों के निर्माता एवं व्यापारी

# योगेन्द्र पाल सेठ एण्ड सन्ज़ (रजि०)

## (इम्पोटर्स एण्ड एक्सपोटर्स)

## भट्टन स्ट्रीट, जालन्धर शहर–144001

दूरभाष { कार्यालय : 73085
आवास : 75801

॥ ओ३म् ॥

नेह् भद्रं रक्षस्विने नावयै नोपया उत ।
गवे च भद्रं धेनवे वीराय च श्रवस्यतेऽनेहसो व ऊतय. सु ऊतयो व ऊतय· ॥29॥

ऋ 6 । 4 । 9 । 12

हे भगवन् ! पापी हिंसक तथा दुष्टात्माओं को इस ससार में कभी सुख न हो, धर्म से विरुद्ध चलने वालों तथा उनके सहायकों को भी कभी सुख न हो, धर्मप्रिय तथा देश हितैषी वीर पुरुषों को विद्या विज्ञान द्वारा स्थिरसुख प्राप्त हो और दूध देने वाले तथा अन्य प्रकार से लाभ पहुंचाने वाले पशुओं को भी आप सुखी रखें ॥ (आर्याभिविनय)

—महर्षि दयानन्द

॥ ओ३म् ॥

वैश्वानरस्य सुमतौ स्याम राजा ही क भुवनानामभिश्री ।
इतो जातो विश्वमिदं विचष्टे वैश्वानरो यतते सूर्य्येण ॥ 31 ॥
ऋ 1 । 7 । 6 । 1

हे मनुष्यो ! जो हम सबका नियन्ता, सब भुवनो का स्वामी, सबका सुखदाता तथा सौभाग्यकारक है वही संसारस्थ सब नरों का नेता=नायक तथा सूर्य्य का प्रकाशक है और उसी के सामर्थ्य से इस संसार की उत्पत्ति, स्थिति तथा प्रलय होती है, ऐसे परमात्मा की शुभ आज्ञा में हम सदा तत्पर रहें ॥ (आर्याभिविनय) —महर्षि दयानन्द

✠ ✠ ✠

॥ ओ३म् ॥

तन्तु तन्वन् रजसो भानुमन्विहि ज्योतिष्मत पथो रक्ष धिया कृतान् ।
अनुल्वणं वयत जोगुवामपो मनुर्भव जनया दैव्यं जनम् ॥ ऋ० 10 । 53 । 6 ॥

मानव जीवन ही एकमात्र वह जीवन है, जिसे प्राप्त कर सूर्य की भांति उत्तम कर्म करते हुए ऐहिक और पारलौकिक सुख प्राप्त किया जा सकता है। उत्तमोत्तम कर्म करने के लिये ही हमें यह शरीर मिला है। अपने पूर्वजों से विरासत मे प्राप्त सन्मार्ग पर चल कर उनकी दी हुई सद्‌गुणो की निधि की रक्षा करते हुए विवेक और कठोर परिश्रम द्वारा अपने मानव-जीवन को प्रशस्त कर दूसरों को भी सन्मार्ग पर चलाते रहना चाहिए। इसी मे मानव-जीवन की सफलता का रहस्य छिपा हुआ है। स्वयं विवेकी बनो, और दूसरो को भी विवेकी बनाओ।

॥ ओ३म् ॥

मेधां मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः ।
मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधां धाता ददातु मे स्वाहा ।

(यजुर्वेद—32 । 25)

हे सर्वोत्कृष्टेश्वर ! आप 'वरुण' वर (वरणीय) आनन्दस्वरूप हो कृपा से मुझको मेधा सर्वविद्यासम्पन्न बुद्धि दीजिए तथा 'अग्नि:' विज्ञानप्रद 'प्रजापति:' सब संसार के अधिष्ठाता पालक 'इन्द्र:' परमैश्वर्यवान् 'वायु:' 'विज्ञानवान् अनन्तबल' धाता' तथा सब जगत् का धारण और पोषण करने वाले आप मुझ को अत्युत्तम मेधा (बुद्धि) दीजिए । (आर्याभिविनय:)

(महर्षि दयानन्द)

✠ ✠ ✠

॥ ओ३म् ॥

तेजोऽसि तेजो मयि धेहि। वीर्यमसि वीर्यमयि धेहि।
बलमसि बलं मयि धेहि ओजोऽस्यो जो मयि धेहि।
मन्युरसि मन्युमयि धेहि।सहोसि सहो मयि धेहि।

यजुर्वेद १९। 9।

हे स्वप्रकाशक! अनन्त, तेज ! आप अविद्यान्धकार से रहित हो, किंच सत्य विज्ञान तेजस्वरूप हो, आप कृपा दृष्टि से मुझ में वही तेज धारण करो जिससे मैं निस्तेज, दीन और भीरु कहीं कभी न होऊं। हे अनन्तवीर्य परमात्मन् आप वीर्यस्वरूप हो, आप सर्वोत्तम बल स्थिर मुझ में भी रक्खें, हे अनन्त पराक्रम। आप ओज (पराक्रमस्वरूप) हो सो मुझ में भी उस पराक्रम को सदैव धारण करो, हे दुष्टानामुपरि क्रोधकृत्। मुझ में भी दुष्टों पर क्रोध धारण कराओ, हे अनन्त सहनस्वरूप। मुझ में भी आप सहनसामर्थ्य धारण करो अर्थात शरीर, इन्द्रिय, मन और आत्मा इनके तेज आदि गुण कभी मुझ में से दूर न हो, जिससे मैं आपकी भक्ति का स्थिर अनुष्ठान करूं और आपके अनुग्रह से संसार में भी सदा सुखी रहूं। (आर्याभिविनय)

—महर्षि दयानन्द

॥ ओ३म् ॥

आवदस्त्वं शकुने भद्रमावद तूष्णीमासीन सुमतिं चिकिद्धि न ।
यदुत्पतन् वदसि कर्करिर्यथा बृहद्वदेम विदथे सुवीरा ॥53॥

(ऋ० 2। 8। 12। 2 ॥)

परमगुरु परमात्मा विद्वान् धार्मिक पुरुषों को उपदेश करते हैं कि "हे विद्वानो ! आप लोग वेद द्वारा जो कुछ उपदेश करो मधुर वाणी से गम्भीरता युक्त बोलो, यदि कोई श्रोता किसी बात से रुष्ट होकर अपशब्द भी कहे तो उसको सहनकर वेदानुसार ही उपदेश करो अर्थात् जैसे युद्ध में सूरमा चोटें खाता हुआ भी पीछे नहीं हटता वैसे ही सत्योपदेष्टा को उपदेश करने से कदापि न रुकना चाहिये, चाहे कोई कैसा ही अपमान क्यों न करे" ॥ (आर्याभिविनय)

—महर्षि दयानन्द

✣ ✣ ✣

॥ ओ३म् ॥

गयस्फानो अमीवहा वसुवित्पुष्टिवर्द्धनः ।
सुमित्र सोम नो भव ॥ 38॥

(ऋ० 1 । 6 21 । 12)

हे परमात्मभक्त जीवो ! अपना जो इष्टदेव प्रजा और धन का दाता और स्वराज्य को बढ़ाने वाला तथा शारीरिक मानसिक रोगों का विनाश करने वाला, पृथिवी आदि सब वस्तुओं का जानने वाला अथवा विद्यादि उत्तम धनों का देने वाला, शरीर, इन्द्रिय मन और आत्मा को पुष्ट करने वाला सब का परममित्र है उसी से आओ हम सब मिलकर यह वर मांगे कि वह कृपा करके हमारा मित्र हो और हम सब के मित्र बनें । (आर्याभिविनय)

—महर्षि दयानन्द

✠ ✠ ✠

॥ ओ३म् ॥

तमीडत प्रथमं यज्ञसाधं विश आरीराहुतमृञ्जसानम् ।
ऊर्जः पुत्रं भरतं सृप्रदानुं देवा अग्निं धारयन् द्रविणोदाम् ॥40॥
(ऋ० 1 । 7 । 3 । 3)

जो परमात्मा सब जगत् का आदिकारण, वेदविहित कर्मों से प्राप्त होने योग्य, सबका अधिष्ठाता तथा पूजनीय है और जिसको विद्वान् लोग प्रकाश तथा नम्रता का देने वाला, जगत् का दुःख हर्त्ता, धारण पोषण कर्त्ता ज्ञान तथा क्रियाशक्ति आदि उत्तम पदार्थों का देने वाला मानते हैं उसी की सबको स्तुति करनी चाहिये अन्य की नहीं ॥ (आर्याभिविनय:)

—महर्षि दयानन्द

✠ ✠ ✠

॥ ओ३म् ॥

तमूतयो रणयञ्छूरसातौ त क्षेमस्य क्षितय कृण्वत त्राम् ।
स विश्वस्य करुणस्येशएको मरुत्वान्नो भवत्विन्द्र ऊती ॥41॥
(ऋ० 1 । 7 । 1 7 ॥)

हे परमात्मन ! हम लोग पापी दुष्ट पुरुषो के साथ युद्ध करने के लिए जाते हुए आपका चिन्तन करते हैं आप सब प्रकार की कुशलता करने वाले और अपने सेवकों के रक्षक हैं और आप ही सर्वैश्वर्य्यवान तथा सब इष्टफलों के दाता हैं कृपाकरके हमारी सेना के रक्षक हों जिससे आपकी आज्ञा के विरोधिजन किसी प्रकार भी हमारी हानि न करसकें किन्तु हम उनको जीतकर अत्याचार से रोक सकें। (आर्याभिविनय)

—महर्षि दयानन्द

।। ओ३म् ।।

सा मा सत्योक्ति: परिपातु विश्वतो द्यावा च यत्र ततनन्नहानि च ।
विश्वमन्यन्नि विशते यदेजति विश्वाहापो विश्वाहोदेति सूर्य: ।।47।।
(ऋ० 7 । 8 । 12 । 2 ।।)

हे सर्वाभिरक्षकेश्वर ! आपकी वेद रूप सत्य आज्ञा के पठन से हमारी संसार में सर्वथा रक्षा हो, अर्थात् हम दुष्ट कामों से सर्वदा पृथक् रहें, पुन: जिस दिव्य सृष्टि में आपने सूर्यादिकों को रात्रि दिवस आदि कालविभाग के निमित्त रचकर वर्तमान किया है उस सृष्टि में आप हमारा सब उपद्रवों से रक्षण करें ।। (आर्याभिविनय:)

—महर्षि दयानन्द

॥ ओ३म् ॥

उद्गातेव शकुने साम गायसि ब्रह्मपुत्र इवसवनेषु शंससि ।
वृषेव वाजी शिशुमतीरपीत्या सर्वतो न. शकुने भद्रमा वद
विश्वतो न: शकुने पुण्यमा वद ॥52॥ (ऋ. 2 । 8 । 12 । 2)

हे सर्वशक्तिमन् ! आप कृपाकरके हमको श्रद्धा भक्ति तथा शक्ति दें कि हम लोग ब्रह्मचर्याश्रम द्वारा नियमानुसार विद्याध्ययन करके यज्ञों में उद्गाता के समान सामगान करें। ब्रह्मा के समान चारों वेदों का उच्चारण करें, वृष की भांति बलवान् हो कर, सन्तानवान होकर विवाह करके गृहस्थाश्रम के नियमों को पालें और इसके पश्चात् वानप्रस्थाश्रम को धारण करके सर्वत्र भद्र वचन बोलें, वानप्रस्थ के पीछे सन्यास धारण करके आपके प्रकाशित किये हुए वेदों का सर्वत्र उपदेश करें ॥ (आर्याभिविनय)

महर्षि दयानन्द

✠ ✠ ✠

॥ ओ३म् ॥

तदेवाग्निस्तदादित्यस्तद्वायुस्तदु चन्द्रमा ।

तदेव शुक्रं तद्ब्रह्म ता आपः स प्रजापतिः ॥ 4 ॥

(यजु 32 । 1)

परमात्मा एक ही है परन्तु भिन्न भिन्न गुणों के कारण भिन्न भिन्न नामों से पुकारा जाता है, जैसे प्रकाशस्वरूप होने से अग्नि, नाश रहित होने से आदित्य, सब का जीवनदाता होने से वायु, आल्हादक होने से चन्द्रमा, अत्यन्त शक्तिमान् होने से शुक्र, सबसे बड़ा होने से ब्रह्म, सर्वत्र व्यापक होने से आपः और सब का स्वामी होने से प्रजापति कहाता है ॥ (आर्याभिविनय)

—महर्षि दयानन्द

✠ ✠ ✠

॥ ओ३म ॥

हिरण्यगर्भ समवर्त्ततांग्रे भूतस्य जात पतिरेक आसीत् ।
स दाधार पृथिवी द्यामुतेमा कस्मै देवाय हविषा विधम ॥20॥
(यजु 13 । 4 ॥)

जो परमात्मा सब का स्वामी और सब प्रकाशमान पदार्थों का आधार है वही सृष्टि से पूर्व वर्तमान था और वही अब पृथिवी और द्युलोक आदि सब लोको को धारण कर रहा है वही सुखस्वरूप और सब को सुख देने वाला है उसी की भक्ति तथा उपासना हम सब को करनी चाहिये अन्य की नही ॥ (आर्याभिविनय)

महर्षि दयानन्द

✠ ✠ ✠

॥ ओ३म् ॥

परीत्यं भूतानि परीत्य लोकान् परीत्य सर्वाः प्रदिशो दिशश्च ।
उपस्थाय प्रथमजामृतस्यात्मनात्मानमभि संविवेश ॥ 10 ॥

(यजु. 32 । 11)

प्रकृति से लेकर पृथिवी पर्य्यन्त सब संसार में तथा पूर्वादि दिशाओं और ईशानादि उपदिशाओं में, ऊपर नीचे सर्वत्र परमेश्वर व्याप्त होकर परिपूर्ण हो रहा है, एक अणुमात्र भी उससे अप्राप्त=खाली नहीं, प्रथम=मुख्य—प्राणी अपने आत्मा से अर्थात् अत्यन्त सत्याचरण, विद्या श्रद्धाभक्ति द्वारा सत्यस्वरूप परमात्मा को यथावत् जानता हुआ उसके परमानन्द स्वरूप में प्रवेश करता अर्थात् सब दुःखों से छूटकर परमानन्द को प्राप्त होता है ॥ (आर्याभिविनय:)

—महर्षि दयानन्द

॥ ओ३म् ॥

देवकृतस्यैनमोऽवयजनमसि । मनुष्यकृतस्यैनसोऽवयजनमसि ।
पितृकृतस्यैनसोऽवयजनमसि । आत्मकृतस्यैनसोऽवयजमनसि ।
एनस एनसोऽवयजमनसि । यच्चाहमेनो विद्वांश्चकार यच्चाविद्वांस्तस्य
सर्वस्यैनसोऽवयजनमसि ॥ 19 ॥

(यजु. 8 13 ॥)

हे परमात्मा ! आप सब पापों से नाश करने वाले हैं, वह पाप विद्वानों वा साधारण मनुष्यों के सम्बन्ध में, चाहे ज्ञानी अथवा आत्मा के सम्बन्ध में किये हों और चाहे जानकर अथवा न जानकर किये हों, उन सब पापों के नाशक आप ही हैं। ॥ (आर्याभिविनयः)

-- महर्षि दयानन्द

✠ ✠ ✠

॥ ओ३म् ॥

नाप्राप्यम भिवांछन्ति नष्ट नेच्छन्ति शोचितुम् ।
आपत्सु च न मुह्यन्ति नरा पण्डित बुद्धय ॥

जो मनुष्य प्राप्त होने के अयोग्य पदार्थों की कभी इच्छा नहीं करते अदृश्य व किसी पदार्थों के नष्ट भ्रष्ट हो जाने पर शोक करने की अभिलाषा नही करते और बड़े बड़े दु खों से युक्त व्यवहारो की प्राप्ति मे भी मूढ़ होकर नहीं घबराते हैं वे मनुष्य पण्डितो की बुद्धि से युक्त कहाते हैं। (व्यवहार भानु)

—महर्षि दयानन्द

✠ ✠ ✠

# स्व० श्री महाशय कुन्दन लाल जी आर्य

## की पावन स्मृति में

उनकी धर्म पत्नि

# विद्यावती जी आर्य पैराडाईज़ होज़री

## 617 हज़ूरी रोड़, लुधियाना

## की ओर से पुण्य पृष्ट

॥ ओ३म् ॥

या ते धामानि परमाणि यावमा या मध्यमा विश्वकर्मन्नुतेमा।
शिक्षा सखिभ्यो हविषि स्वधाव स्वय यजस्व तन्व वृधान

यजु 17।21

हे शुभगजधारक जगदुत्पादक परमात्मन ! आप हमारे शरीरो को अरोग रखकर आप ही हम को बुरे भले सब वास स्थानो और व्यवहारो का यथार्थ ज्ञान प्रदान करें जिससे हम उनसे लाभ ही उठावें हानि कभी न उठावें ॥

✠ ✠ ✠

## ऋषि बोध (शिवरात्रि) के शुभ अवसर पर

हार्दिक शुभ कामनाओ के साथ

# आर्य समाज माडल टाऊन

## पठानकोट

यह आर्य समाज निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर है
प्रति वर्ष उत्सव तथा सत्सग नियम से होते रहते है।
यह समाज समाजिक कार्य मे भी बढ चढ कर
भाग लेती है।

**राममूर्ति वर्मा**
प्रधान

**योगेन्द्र पाल**
मन्त्री

॥ ओ३म् ॥

अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मे राध्यताम्।
इदमहमनृतात्सत्यमुपैमि ॥ ।॥ यजु० 1 । 5

हे सच्चिदानन्द स्वयंप्रकाशस्वरूप ईश्वराग्ने ! मैं सत्यकथन, ब्रह्मचर्य्यं, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यासादि सत्य व्रतों को धारण करता हूं, सो आप कृपा करके इस व्रत को सम्यक् दृढ़ करायें ताकि मैं असत्यादि व्यवहारों को छोड़कर यथार्थ सत्यविद्या को प्राप्त करके आपको उपलब्ध कर सकूं ॥
(आर्याभिविनय)

—महर्षि दयानन्द

✠ ✠ ✠

॥ ओ३म् ॥

चतुः स्रक्तिर्नाभिर्ऋतस्य सप्रथा । स नो विश्वायुः सप्रथाः स न सर्वायुः सप्रथा. ।
अप द्वेषोऽअपह्वरोऽन्यव्रतस्य सश्चिम ॥ 41 ॥ य० 38 । 20 ।

हे महावैद्य=सर्वरोगनाशकेश्वर ! आपकी कृपा से मर्मस्थानरूप चार कोणों वाली नाभि सुखयुक्त होकर हमारी आयु बढ़े। जैसे आप सर्व सामर्थ्य से विस्तीर्ण हैं वैसे ही विस्तृत सुख युक्त आयु हमको दें। हे ईश ! हम आपकी कृपा से द्वेष तथा भय से रहित होकर आप से भिन्न किसी को भी ईश्वर न मानें, यही हमारी प्रार्थना स्वीकार हो ॥

—महर्षि दयानन्द

✠ ✠ ✠

॥ ओ३म् ॥

न तं विद्राथ य इमा जजानान्यद्युष्माकमन्तरं बभुव ।
नीहारेण प्रवृता जल्प्या चासुतृप उक्थशासश्चरन्ति ॥44॥

ऋ 17 । 31 ।

यद्यपि परमात्मा हम सब के हृदय में विद्यमान हैं तो भी हम उनको नहीं जानते, क्योंकि केवल बाहर के आडम्बरों में फसकर उनका यथार्थ ज्ञान प्राप्त करने का प्रयत्न नहीं करते, केवल वाद-विवाद करते रहते हैं वा कथनमात्र ही परमेश्वर का नाम लेते हुए केवल प्राण पोषण में लगे रहते हैं, सो हे भगवान् ! ऐसी कृपा करो, कि हम बाह्य आडम्बरों तथा वाद-विवाद को छोड़कर आप की भक्ति तन, मन, धन से करें और आपके नाम के महत्व अनुभव करते हुए तदनुसार जीवन बनावें ॥ (आर्याभिविनय)

—महर्षि दयानन्द

॥ ओ३म् ॥

अहानि शं भवन्तु नः। शं रात्रीः प्रतिधीयताम्।
शन्नइन्द्राग्नी भवतामवोभिः। शन्न इन्द्रावरुणा रातहव्या।
शन्न इन्द्रापूषणा वाजसातौ शमिन्द्रासोमा सुवितायशंयोः
॥23॥यजु.36।11

हे काल के स्वामिन् परमात्मन्! आप ऐसी कृपा करें कि हम को रात्रि दिन सदा ही सुख प्राप्त हो, हम कभी दुःखी न हों, सूर्य्य और अग्नि हमको किसी प्रकार से दुःखदायी न हों, किन्तु सब प्रकार से हमारी रक्षा ही करें, इसी प्रकार वायु और जल हमारे अनुकूल रह कर सदा हम को सुख देते रहें, बिजली तथा पृथ्वी भी सदा हमारे अनुकूल रहें और राजा प्रजा भी हमको सुखदायी हों, अर्थात् किसी से भी किसी प्रकार का दुःख हम को प्राप्त न हो, यही आप से प्रार्थना है॥ (आर्याभिविनय)

—महर्षि दयानन्द

॥ ओ३म् ॥

भद्रं कर्णेभि: श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्रा: ।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायु:
॥27॥यजु 25।21॥

हे देवेश्वर ! हम लोग कानों से सर्दव कल्याण को ही सुनें । हे यजनीयेश्वर ! हे यज्ञकर्त्तारो ! हम आंखों से कल्याण को ही सदा देखें । हे जगदीश्वर ! हमारे सब अंग और उपाङ्ग दृढ़ रहें जिससे हम लोग स्थिरता से आप की स्तुति और आज्ञा का पालन सदा करते रहें तथा हम लोग दृढ़ आत्मा, शरीर, इन्द्रियों को और विद्वानों की हितकारक आयु को विविध सुख पूर्वक प्राप्त हो ॥ (आर्याभिविनय)

—महर्षि दयानन्द

✠ ✠ ✠

# स्व० श्रीमती चन्नन देवी जी

जिनका देहान्त दिसम्बर 1965 मे हुआ था

## उनकी पावन स्मृति में

प्रयोजक :—

वीरेन्द्र (पुत्र) राज लक्ष्मी (पुत्र वधु) ललित मोहन (पौत्र) वीना मोहन (पौत्र वधु) चन्द्र मोहन (पौत्र) नीरजामोहन (पौत्र वधु) ।

॥ ओ३म् ॥

इदं मे ब्रह्म च क्षत्रं चोभे श्रियमश्नुताम् ।
मयि देवा दधतु श्रियमुत्तमां तस्यै ते स्वाहा ॥54॥ यजु 32 । 16

हे परमात्मन् ! कृपा करके ब्राह्मण वर्ण का विज्ञान और क्षत्रिय वर्ण की शूरवीरता यह दोनों उत्तम गुण हम को प्रदान करें और ऐसी कृपा करें कि हमारी इन्द्रियां शुभकर्मों में प्रवृत्त होकर हमारी शोभा को बढाने वाली हों, यह हमारी सच्चे हृदय से प्रार्थना है । (आर्याभिविनय)

—महर्षि दयानन्द

✠ ✠ ✠

॥ ओ३म् ॥

मेधां मे वरुणो ददातु मेधामग्नि प्रजापति ।
मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधां धाता ददातु मे स्वाहा ॥ 53 ॥ यजु 32 । 15

हे सर्वोत्कृष्टेश्वर ! आप आनन्दस्वरूप और आनन्ददाता हैं, विज्ञानमय और विज्ञानप्रद हैं, सब ससार के अधिष्ठाता और पालक हैं, परमैश्वर्य्यवान् और ऐश्वर्य्य दाता हैं, परमपवित्र और अनन्त बलवान् हैं, सब के धारण पोषण करने वाले हैं, कृपा करके हमको ऐसी बुद्धि दें कि जिस से हम सर्वविद्या सम्पन्न हों, यह हमारी बारम्बार प्रार्थना है । (आर्याभिविनय)

महर्षि दयानन्द

✠ ✠ ✠

॥ ओ३म् ॥

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् । पश्येम शरदः शतं
जीवेम शरदः शतं शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः
शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्
॥37॥,यजु.36।24

जो परमात्मा सर्वद्रष्टा, विद्वानों का हितकारी, सृष्टि से पूर्व वर्तमान् और सर्वव्यापक है उससे हमारी प्रार्थना है कि वह ऐसी कृपा करे कि हम लोग पूर्ण आयु को प्राप्त हों अर्थात् सौ वर्ष पर्यन्त जीवें, सौ वर्ष उसकी सुन्दर रचना का दृश्य देखें, सौ वर्ष उसकी स्तुति सुनें, सौ वर्ष उसके गुण गावें और दीनता से रहित होकर सौ वर्ष से अधिक भी इसी प्रकार जीवें ॥ (आर्याभिविनय)

—महर्षि दयानन्द

✠ ✠ ✠

# स्वर्गीय श्री महाशय कृष्ण जी

## संस्थापक दैनिक प्रताप व दैनिक वीर प्रताप

## जालन्धर तथा भूतपूर्व प्रधान

# आर्य प्रतिनिधि सभा [पंजाब]

## की पावन स्मृति में

प्रयोजक :- -

वीरेन्द्र (पुत्र) राज लक्ष्मी (पुत्र वधु) ललित मोहन (पौत्र)
वीना मोहन (पौत्र वधु) चन्द्र मोहन (पौत्र) नीरजा मोहन
(पौत्र वधु)

॥ ओ३म् ॥

जब मनुष्य धार्मिक होता है तब उसका विश्वास और मान्य शत्रु भी करते हैं और जब अधर्मी होता है तब उसका विश्वास और मान्य मित्र भी नहीं करते। इससे जो थोड़ी विद्या वा लोभो मनुष्य श्रेष्ठ शिक्षा पाकर, सुशील होता है उसका कोई भी कार्य नहीं बिगड़ता। इसलिए मैं मनुष्य को उत्तम शिक्षा के अर्थ सब वेदादि शास्त्र और सत्याचारी विद्वानों की रीतियुक्त इस 'व्यवहार भानु' ग्रन्थ को बनाकर प्रसिद्ध करता हूं कि जिसको देख-दिखा. पढ़-पढ़ाकर मनुष्य अपनी-अपनी सन्तान तथा विद्यार्थियों का आचार अत्युत्तम करें कि जिससे आप और वे सब दिन सुखी रहें।

—महर्षि दयानन्द

✠ ✠ ✠

॥ ओ३म् ॥

वयं जयेम त्वया युजा वृतमस्माकमशमुदवा भरे भरे।
अस्मभ्यमिन्द्र वरिवः सुगं कृधि प्रशत्रूणां मघवन्वृष्ण्या रुजः ॥43॥

ऋ 1।1।6।1।7।1

हे इन्द्र परमात्मन् ! ऐसी कृपा करो कि हम लोग सब दुष्टभावों को आपकी सहायता से जीतें, हे महाराजाधिराज ! कृपा करके दुष्टजनों के परिहार से भले प्रकार हमारी रक्षा करें, हे महाधनेश्वर ! हमारे शत्रुओं के बल पराक्रम को सर्वथा नष्ट करें और आपकी करुणा से हमारा राज्य और धन सदा वृद्धि को प्राप्त हो ॥ (आर्याभिविनय)

—महर्षि दयानन्द

॥ ओ३म् ॥

चारों "वेदों" (विद्या धर्मयुक्त ईश्वर प्रणीत संहिता मन्त्र भाग) को निर्भ्रान्त स्वतः प्रमाण मानता हूं, वे स्वयं प्रमाण रूप हैं कि जिनके प्रमाण होने में किसी अन्य ग्रंथ की अपेक्षा नही, जैसे सूर्य का प्रदीप अपने स्वरूप के स्वत: प्रकाशक और पृथिव्यादि के भी प्रकाशक होते हैं वैसे चारों वेद हैं और चारों वेदों के ब्राह्मण छ. अंग छ उपांग चार उपवेद और 1127 (ग्यारह सौ सत्ताईस) वेदों की शाखा जो कि वेदों के व्याख्यान रूप ब्रह्मादि महर्षियों के बनाये ग्रन्थ हैं उनको परत: प्रमाण अर्थात् वेदों के अनुकूल होने से प्रमाण और जो इनमें वेद विरुद्ध वचन हैं उनको अप्रमाण करता हूं।

—महर्षि दयानन्द

✠ ✠ ✠

॥ ओ३म् ॥

स वज्रभृद्दस्युहा भीम उग्रः सहस्रचेता शतनीथ ऋभ्वा ।
चम्रीषो न शवसा पाचञ्जन्यो मरुत्वान्नो भवत्विन्द्र ऊती ॥ 34 ॥

ऋ 1।7।10।12

हे दुष्टनाशक परमात्मन् ! आप अपने न्यायरूप वज्र से दुष्टों को भयानक और तीव्र दण्ड देने वाले हैं, हे अनन्त विद्या विज्ञान के प्रकाशक और असंख्यात पदार्थों के दाता ! आप अपने ही सामर्थ्य से प्राण आदि विविध वायुओं के उत्पादक और अत्यन्त सामर्थ्य युक्त हैं, अतएव आपसे प्रार्थना है कि आप हमारी सब प्रकार से रक्षा करें । (आर्याभिविनय)

—महर्षि दयानन्द

## ऋषि बोध (शिवरात्रि) के शुभ अवसर पर

हार्दिक शुभ कामनाओं के साथ

# डा. अमर नाथ शान्ति देवी खोसला ट्रस्ट

## नवां शहर (द्वाबा)

यह धर्मार्थ ट्रस्ट विद्यार्थियों, निर्धन तथा ज़रूरतमन्द व्यक्तियों और धार्मिक संस्थाओं की सहायता निरन्तर करता रहता है ।

दूरभाष : 29

**जितेन्द्रनाथ भल्ला–मन्त्री**

**कृष्ण कुमार खोसला**
प्रधान

**मदनलाल**
कोषाध्यक्ष

टेलोफोन न 74250 ( जि न पो जे एल 55)
वष 16 अक 38 25 फाल्गुण सम्वत 2042 तदनुसार 3 माच 1985, दयानन्दाब्द 160 । एक प्रति 40 पैस (वार्षिक शुल्क 20 रुपए

# अमर शहीद पंडित लेखराम जी आर्य पथिक

(स्वर्गीय स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज के शब्दो मे)

आर्य पथिक के आक्रमणो से यवन मत मंदिर को ढहता देख मुसलमानो ने उन पर मिर्जापुर अमृतसर लाहौर दिल्ली और बम्बई मे मुकद्दमे चलाए। इनमें से एक को छोडकर शेष उनको बिना बुलाये ही खारिज हो गए। जब मुसलमानो ने देखा कि यह तो इस्लाम को जड से उखाड फैंकना चाहता है कानून इसे रोकता नही तब उन लोगो ने आर्य पथिक को मार डालने का विचार किया। लेखराम को सचेत किया गया पर त उनके लिए भय नाम की कोई चीज ही नही थी, तो कौन सचेत करता और कौन रक्षा करता ?

फरवरी 1897 के मध्य एक काला, गठे हुए बदन का भयानक नाटा युवक पण्डित लेखराम का पता पूछता पूछता उनके निवास स्थान पर पहुचा और निवेदन किया कि वह दो वर्ष पहले हिन्दू था अब मुसलमान हो चुका है तथा पुन वैदिक धर्म म दीक्षित होना चाहता है। पण्डित जी तो इसके लिए सदा तैयार रहते थे उन्होने उसे बड़े प्रेम से बैठाया और आश्वासन दिया कि शुद्ध कर देंगे वह देखने मे बड़ा खूंखार और बेढब प्रतीत होता था दिन मे सदा पण्डित जी के म स्थान पर तु रात्रि को गायब रहता था। पण्डित जी ने कभी इसका निवास स्थानादि जानने की चेष्टा नही की। जो लोग मुहम्मदियो के कुचक्रों का ध्यान दिलाते हुए इससे सतर्क रहने की चेष्टा करने को कहते उन्हे पण्डित जी ही उलटा समझाते—भाई ! यह क्या कहते हो, यह तो बड़ा धर्मात्मा है। शुद्ध होने को आया है।

4 मार्च ... ईद का दिन था। पण्डित लेखराम के वध का इससे बढकर सुन्दर अवसर यवनो के लिए कौन सा हो सकता था ? उस दिन उस घातक ने लेखराम के निवास स्थान, प्रतिनिधि सभा के कार्यालय और स्टेशन पर कई चक्कर काटे। पण्डित जी बाहर गए थे वे 6 मार्च को आए। 6 मार्च को सवेरे भी वह खूंखार आया था पर न पण्डित नही आए थे। दोपहर को वह पण्डित जी के साथ सभा के कार्यालय मे गया उसने कम्बल ओढा हुआ था बार बार थूकता था और कांपता था पण्डित जी उसे डाक्टर के पास ले गए। डाक्टर ने कहा—बुखार नही खून मे जोश है यदि दर्द हो तो प्लास्टर लगा दिया जावे। घातक ने लगाने की नही, पीने की दवा मांगी। पण्डित जी ने भी सिफारिश कर दी। डाक्टर ने कहा शरबत पी लेवे। पण्डित जी ने रास्ते मे दुकान पर शरबत पिला दिया। यदि दवाई लगाई जाती तो उसी समय उसका कुचक्र पकडा जाता।

शाम को 6 बजे पण्डित जी घर पर अपने खुले बरामदे मे चारपाई पर बैठकर जीवन चरित्र सम्बन्धी कुछ काम करने लगे और घातक उनकी बाईं ओर कुर्सी पर बैठ गया माता जी रसोई मे थी। उनकी धर्म पत्नी दूसरे कमरे म पढ रही थी। पण्डित जी ने घातक को कहा भाई देर हो गई है तुम भी आराम करो परन्तु वह निश्चिन्त बैठा रहा 10 मिनट बाद माता जी ने चौके से आवाज दी—पुत्र लेखराम तेल नही आया पण्डित जी उस समय ऋषि दयानन्द का मृत्यु का अन्तिम दृश्य खींच रहे थे पत्र वहीं रख दिए और चारपाई पर से जिधर घातक बैठा था उधर मुंह कर आंख मूंद कर दोनो बाहुओ को ऊपर उठाकर अंगडाई लेते हुए कहा ओफ ओह मैं तो भूल गया।

अपने वक्षस्थल को फैलाकर आर्य पथिक उस अवस्था मे थे, जिस की घातक राह देख रहा था। फौरन हाथों मे उसने छुरी पेट के अन्दर इस प्रकार घुमा दी कि आंतें पेट से बाहर आए और अंतडियां बाहर निकल पडी।

आर्य पथिक इस पैशाचिक आक्रमण से किंचित भी विचलित न हुए। यदि उन्होने कुछ भी शोर किया होता उनके मुख से चीख ही

(शेष पृष्ठ 6 पर)

# जी चाहता है तोड़ दूं शीशा फरेब का--4

ले.—श्री वीरेन्द्र जी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

(10 फरवरी के अक से आगे)

इसमे अब निश्चित रूप मे कोई शक नहीं रहा कि आनन्दपुर साहब के प्रस्ताव ने हालात को बिगाडने मे एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। आज यह प्रस्ताव सारे देश में बहस का विषय बना हुआ है। प्रधानमन्त्री ने बार-बार और स्पष्ट शब्दो मे कह दिया है कि आनन्दपुर साहबके प्रस्ताव पर कोई बातचीत नही हो सकती, अन्य सभी पार्टिया कह चुकी हैं कि वह इस प्रस्ताव के पक्ष मे नही हैं। अकालियो मे भी एक वर्ग इस विचार का होता जा रहा है कि आनन्दपुर साहब प्रस्ताव को एक ओर रख देना चाहिए और इसे सरकार के साथ बातचीत का आधार नही बनाया जाना चाहिए। प्रधानमन्त्री ने यह सकेत भी दिया है कि इस प्रस्ताव पर अडिग रहने की बजाए अकाली यदि चाहे तो इस सरकारिया आयोग के सामने पेश कर दें, वह उस पर विचार करेगा यदि इसमे कोई ऐसी माग हो जो मजूर की जा सके तो उसे मान लेगा और जब वह माग सरकार के सामने आएगी तो सरकार भी इस पर विचार करेगी।

निष्कर्ष यह कि अकाली चाहे कितनी कोशिश करें यह प्रस्ताव धीरे-धीरे अपना महत्व खोता जा रहा है। अकालियो को इसम रुचि इसलिए भी है कि उसक साथ आनन्दपुर साहब का नाम जुडा है और इसलिए अकालियो के दिल मे इसके प्रति आदर भावना है लेकिन राजनीति मे सदा ही भावनाए नही काम करतीं। वहा ठोस यथार्थ पर चलना पडता है। इसलिए आनन्दपुर साहब का प्रस्ताव जैसा भी है इसके अनुसार ही चलना पडेगा। मैं चाहता हू कि पाठको को भी पता हो कि यह प्रस्ताव है क्या ? जो इतने बडे विवाद का विषय बन गया है। आज मैं इसका इतिहास पश करना चाहता हू कि पाठको को पता चल सके कि यह प्रस्ताव वास्तव मे है क्या ? कहा से चला और कहा तक पहुचा है ?

जुलाई 1965 मे लुधियाना मे एक अकाली कान्फ्रेंस हुई थी जिसमे भारतीय गणतन्त्र के अन्दर सिखो के लिए एक अलग प्रदेश मागा गया था। उस समय तक पजाबी सूबा कायम नही हुआ था। इसके लिए अभी आन्दोलन चल रहा था और यह माग भी इसी सम्बन्ध म थी। 1968 म बटाला मे एक कान्फ्रेंस हुई जिसमे यह माग की गई कि पजाबी भाषी इलाके भी पजाबी सूबे मे मिलाए जाए। उस समय तक पजाबी सूबा बन चुका था सरदार कपूरसिंह भतपूर्व आई सी एस अधिकारी जो कि अकाली दल का दिमाग समझे जाते थ, वह इसके विरुद्ध थे। उनकी माग थी कि सिखो के लिए एक अलग होमलैन्ड चाहिए। जहा इनका अपना शासन हो। कुछ पजाबी भाषी क्षेत्र मागने से यह उद्देश्य पूरा नही हो सकता। उन्हें भारत के अन्दर ही एक स्वायत्तता प्राप्त सिख होमलैण्ड के पक्ष मे थे। इसलिए उन्होने 1968 म बटाला कान्फ्रेंस के निर्णयो के विरुद्ध अपनी आवाज उठाई। चूकि अकालियो मे भावी कार्यक्रम के सम्बन्ध मे अधिक मतभेद थे। इसलिए सारे मामला पर विचार करने के लिए और अकालियो की मागो को एक राजनीतिक रूप देने के लिए 11 दिसम्बर 1972 को शिरोमणि अकाली दल ने सरदार सुरजीतसिंह बरनाला के नेतृत्व मे एक कमटी कायम की। जिसके सदस्य थे—सरदार गुरचरणसिंह टोहरा, जीवनसिंह उमरानागल डाक्टर भागसिंह सरदार बलवन्तसिंह, ज्ञानसिंह राडवाला प्रेमसिंह लालपुरा, जसविन्द्र सिंह बराड अमरसिंह अम्बालवी और मेजर जनरल गुरबख्शसिंह थ।

इस कमेटी ने 16-17 अक्तूबर 1973 को आनन्दपुर साहब मे अपनी रिपोर्ट अकाली दल के सामने पेश कर दी, जो स्वीकार कर ली गई। उसे ही आनन्दपुर साहब के प्रस्ताव का नाम दिया गया है। लेकिन यह वास्तविक रूप म कोई प्रस्ताव न था। यह एक कमेटी की सिफारिशें थी। उन्हे प्रस्ताव का रूप 28-29 अक्तूबर 1978 को लुधियाना की आल इण्डिया अकाली कान्फ्रेंस मे दिया गया। जत्थदार जगदेवसिंह तलवडी ने इस कान्फ्रेंस की अध्यक्षता की थी और सरदार गुरचरणसिंह टोहरा और सरदार प्रकाशसिंह बादल ने प्रस्ताव पेश किया और उसका अनुमोदन किया। वह ही बादमे आनन्दपुर साहबके असलीप्रस्ताव के रूप मे दुनिया के सामने आया। इसे शिरोमणि अकाली दल के सचिव ज्ञानी अजमेर सिंह ने प्रकाशित करके बाटा। इसके बाद इस प्रस्ताव पर बहस शुरू हुई। सरदार गुरचरणसिंह टोहरा ने इस समय जो वक्तव्य दिया उसने जलती पर तेल का काम किया। जो कुछ उन्होने इस समय कहा उसे कोई देशभक्त स्वीकार नही कर सकता। इसलिए उसके बाद यह प्रस्ताव एक बहस का विषय बन गया। लेकिन यह भी पता न चल रहा था कि यह प्रस्ताव वास्तव मे है क्या ? तलवडी अकाली दल इसे किसी और रूप मे पेश कर रहा था। लौगोवाल अकाली दल किसी और रूप मे। क्योकि इसके सम्बन्ध मे अकालियों मे ही जबरदस्त मतभेद था, इसलिए 23 अक्तूबर 1983 को सन्त हरचन्दसिंह लौगोवाल के हस्ताक्षर से आनन्दपुर साहब के प्रस्ताव का अग्रेजी मे अधिकृत अनुवाद प्रकाशित किया गया और इसमें लिखा गया कि चू कि आनन्दपुर साहब के प्रस्ताव के कई रूप पेश किए जा रहे हैं और उनके कारण से भ्रान्तिया पैदा हो रही हैं इसलिए असली आनन्दपुर साहब प्रस्ताव अग्रेजी मे पेश किया जा रहा है। ताकि कोई भ्रान्ति न पैदा हो। तलवडी अकाली दल को इससे भी मतभेद था। लेकिन चू कि सन्त हरचन्दसिंह लौगोवाल अकाली दल के प्रधान थे। इसलिए जो कुछ उन्होने पेश किया था उसे ही सही समझ लिया गया। पाठकगण ! मैंने कई बार लिखा है कि यह कौन सा प्रस्ताव है जिसे अधिकृत समझ लिया जाए। मैं भी शेष बहस सन्त लौगोवाल के प्रकाशित प्रस्ताव पर ही करूगा।

इस प्रस्ताव के चार हिस्से हैं। पहला वह है जिसमे धर्म प्रचार के लिए अकाली दल क्या करना चाहता है उसका उल्लेख है। दूसरे मे सिख गुरुद्वारो और ननकाना साहब इत्यादि सिख तीर्थ स्थानो का उल्लेख है। तीसरे मे इस बात पर जोर दिया गया है कि पन्थ का राजनीतिक लक्ष्य वह ही है जो श्री गुरु गोविन्दसिंह ने सिखो के सामने रखा है और जो सिख इतिहास मे बार बार सामने आता है। अर्थात खालसा जी का बोल-बाला और चौथे मे पन्थ की राजनीतिक माग पेश की गई है।

आनन्दपुर साहब के प्रस्ताव के सम्बन्ध में सबसे बडी कठिनाई यह है कि इसकी शब्दावली कई बार बदली गई है सन्त लौगोवाल ने जो प्रस्ताव प्रकाशित किया था वह उससे भिन्न था जो पहले प्रकाशित किया गया था। वह अधिक खतरनाक था। लेकिन मैं सन्त लौगोवाल के प्रकाशित प्रस्ताव को ही लेता हू। भारत सरकार ने पजाब के सम्बन्ध में जो 'श्वेत पत्र' प्रकाशित किया था, उसमें भी सन्त लौगोवाल के प्रस्ताव का उल्लेख है।

जहा तक इस प्रस्ताव मे धर्म प्रचार की बात है मैं इसके सम्बन्ध में कुछ कहना नहीं चाहता। सिखो को अपने धर्म के प्रचार का पूरा अधिकार है। इस पर कोई पाबन्दी नही लगाई जा सकती। अपने गुरुद्वारों का वे क्या और कैसे प्रबन्ध करना चाहते हैं, इसका फैसला करने का अधिकार भी उनका ही है। वास्तविक कठिनाई इस प्रस्ताव के उस हिस्सा से है जिसका राजनीतिक लक्ष्य है, इसमे उन्होने दो-तीन बातें ऐसी कहीं हैं जो आपत्तिजनक हैं। उदाहरण के तौर पर—

1. सिख एक अलग कौम है।

2, उन्हे एक ऐसा इलाका चाहिए जहाँ खालसा जी का बोल-बाला हो।

3 केन्द्र के पास केवल पांच विभाग—अर्थात् खजाना, विदेश, रक्षा, रेल और सचार रहने चाहिए। बाकी सब विभाग राज्य सरकारो के पास रहने चाहिए।

राज्य सरकार को यह अधिकार होना चाहिए कि वह अपने अधीन विभागो के लिए जो कानून बनाना चाहें बना लें।

राज्य सरकार को यह भी अधिकार होना चाहिए कि वह अपनी विदेश नीति का फैसला कर सकें।

सरदार गुरचरणसिंह टोहरा तो यहा तक चले गए थे कि राज्यो को भारत से अलग होने का अधिकार भी होना चाहिए।

पाठकगण ! मैंने आपके सामने आनन्दपुर साहब प्रस्ताव के विशेष पक्ष प्रस्तुत किए हैं। इनका स्पष्टीकरण आगामी लेख मे करूगा।

## सम्पादकीय—

# अमर शहीद की याद

मार्च का महीना आरम्भ होते ही धर्म वीर पण्डित लेखराम अमर शहीद की याद हमें एक दम आ जाती है। छ मार्च 1897 का वह दिन याद करके रोंगटे खड़े हो जाते हैं। जब शाम के छ: बजे एक धर्मान्ध मुसलमान ने उन पर आक्रमण करके उन्हें सदा के लिए अमर कर दिया।

यों तो दुनिया में पता नहीं कितने लोग आज तक पैदा हुए हैं और आगे भी होते रहेंगे। परन्तु जो देश, जाति, धर्म के लिए शहीद हुए हैं उन्हे संसार कभी नहीं भुला सकेगा। जो पैदा हुआ है वह एक दिन अवश्य मरेगा। यह परमात्मा का अटल नियम है। आज तक कोई ऐसा मानव पैदा नहीं हुआ है जो पैदा होने के बाद मरा न हो। 'मृत्युरीशे द्विपदां मृत्युरीशे चतुष्पदाम्' मृत्यु का शासन सभी प्राणियों पर है। मानव आदि दो पैरों वाले और पशु आदि चार पैरों वाले सभी पर उसका एक छत्र राज्य है। उससे न कोई आज तक बच सका है और न बच सकेगा। परन्तु जिस मानव ने जीवन धारण करके देश जाति और समाज की सेवा की है वह मर कर भी अमर हो गया है। पण्डित लेखराम जी भी उनमें से एक थे।

कौन जानता था एक छोटे से गाव सैय्यदपुर (तहसील चकवाल जिला जेहलम) मे पैदा होने वाला यह छोटा बालक जिसने प्रारम्भ मे केवल उर्दू और फारसी ही पढी हो वह इतना प्रसिद्ध विद्वान् और महान् व्यक्ति बन जाएगा। साथ ही पुलिस की सर्विस करने वाला सार्वेण्ट अपनी नौकरी को छोड़कर केवल धर्म का ही मार्ग अपना लेगा। मुन्शी कन्हैयालाल जी की पुस्तको को पढने से उनके जीवन का काटा ही बदल गया। वह आर्य समाज के प्रचार के लिए मैदान मे निकल पड़े। कौन ऐसा आर्य समाजी होगा जो अपने इस महान् शहीद को न जानता हो।

वैसे तो उन्होने जितने भी कार्य किये, बहुत सराहनीय हैं। वह प्रचार के कार्य में सबसे आगे वाली पंक्ति मे रहते थे। प्रचार के लिए वह न परिवार की चिन्ता करते थे और न स्वास्थ्य की ही। कहीं से भी उन्हे निमन्त्रण आ जाए कि वहा कुछ हिन्दू मुसलमान होने वाले हैं वह सभी काम छोड़कर वहा पहुच जाते थे, उनके शुद्धि के कार्य से मुसलमान उनके शत्रु बनते चले जा रहे थे। मुसलमानो के सारे साहित्य का उन्होने बड़ी गम्भीरता से अध्ययन किया हुआ था। उनके प्रश्नो का उत्तर शास्त्रार्थ मे बड़े-बड़े मुल्ला व काजी भी न दे सकते थे। वह उर्दू और फारसी के बहुत बड़े ज्ञाता थे।

पण्डित लेखराम जिनका नाम ही लेख से आरम्भ होता है। लेखनी और वाणी दोनो के धनी थे, उन्होने कई पुस्तकें लिखी—कुलियात आर्य मुसाफिर उनकी एक महान् रचना है। इसके अतिरिक्त उनकी और भी कई रचनाए हैं। वह चाहते थे कि आर्य समाज मे लेख का काम बन्द न हो। इसीलिए उन्होने अपना शरीर छोड़ने से पहले आर्यों को अपना अन्तिम सन्देश दिया था कि आर्य समाज मे लेख का कार्य निरन्तर चलता रहना चाहिए। यह कभी भी बन्द न होने पाए। वह समझते थे कि साहित्य प्रचार एक स्थाई प्रचार है। उपदेशक उपदेश देकर चला जाएगा पता नही फिर कब वह उस स्थान पर आ सकेगा। परन्तु साहित्य तो वहा सदा कायम रह सकता है। जो चाहे उससे लाभ उठा लें और जो चाहे उसे पढ लें। इसीलिए आर्य समाज मे अब तक साहित्य का प्रचार चल रहा है। यह ठीक है कि आज किन्ही कारणो से उसमे शिथिलता जरूर आ गई है परन्तु फिर भी यह कार्य बहुत हो रहा है। हा आर्य समाजियो मे आज स्वाध्याय की प्रवृत्ति वह नहीं रही जो होनी चाहिए थी। इसलिए साहित्य तो आज भी लिखा जा रहा है यह सब उस महान् बलिदानी की प्रेरणा का ही फल है परन्तु उसकी खपत कम हो रही है।

पण्डित लेखराम आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के महोपदेशक थे। इस सभा को गर्व है कि इसके पास ऐसे उच्च आदर्श के उपदेशक और प्रकाण्ड पण्डित हुआ करते थे। पण्डित जी ने महर्षि दयानन्द के बलिदान के बाद उनका जीवन लिखना आरम्भ किया और उसके लिए महीनो घूम-घूमकर सामग्री एकत्रित करते रहे। वह स्वामी जी का एक प्रमाणिक जीवन चरित्र लिखना चाहते थे। परन्तु हत्यारे ने उन्हें यह कार्य अधूरा छोड़ने पर विवश कर दिया।

छ मार्च को उनका बलिदान दिवस सभी आर्य समाजो मे मनाया जाएगा। परन्तु यह दिन मनाना तभी सफल होगा जब आर्य समाजी यह निश्चय करें कि वह बलिदान की भावना को कम न होने देंगे। आज हमारे अन्दर से बलिदान, त्याग, तप की भावना समाप्त होती जा रही है। आज चारो ओर स्वार्थ पनप रहा है। स्वार्थी लोग आगे आ गए हैं और सच्चे आर्य समाजी या कर्मठ कार्यकर्त्ता पीछे हट कर बैठ गए हैं। इसलिए आर्य समाज के काम मे शिथिलता आ रही है।

आज आर्य समाज को एक लेखराम नहीं अनेको लेखरामों की आवश्यकता है। देश मे अज्ञानता, अन्ध-श्रद्धा, अनाचार आदि वाद और मतो का बोल-बाला फिर बढता चला जा रहा है। इसे केवल आर्य समाज ही रोक सकता है और वह भी तब जब इसके पास लेखराम जैसे दीवाने हो। प्रचार करने के लिए जब चावा पायल आ रहे थे मगर गाड़ी न रुकी तो बिस्तर छाती से लगाकर छलाग लगा दी। मृत्यु की भी परवाह न की। बेटा बीमार है कोई चिन्ता नहीं इकलौता बेटा चल बसा, कोई चिन्ता नही, परन्तु प्रचार कार्य में कोई शिथिलता नहीं आई। वह तप, सरलता, सादगी के अवतार थे। अपनी धुन के पक्के थे। नियम से प्रभु भक्ति करने वाले प्रभु के अनन्य भक्त थे। वह भक्ति मे इतने तल्लीन हो जाते थे कि उस समय अपनी सुद्ध-बुद्ध ही भूल जाते थे। वह नियम से सन्ध्या करते थे। एक बार उन्हे सायकाल हाथ मुह आदि धोने के लिए पानी नहीं मिला लेकिन सन्ध्या का समय हो चुका था वह सन्ध्या करने बैठ गए। जब सन्ध्या समाप्त कर चुके तब एक व्यक्ति ने दिल्लगी मे पूछा—पण्डित जी क्या पेशावरी सन्ध्या कर चुके। पण्डित जी ने गम्भीर स्वर मे कहा—'तुम लोग पोप हो, जो बिना पानी लिए सन्ध्या (ब्रह्म यज्ञ) नहीं कर सकते। भोले भाई स्नान एक कर्म है हुआ व न हुआ, परन्तु सन्ध्या करना एक धर्म है उसका न करना पाप है।" इसलिए वह इस धर्म का सदा पालन करते थे।

छ मार्च का दिन महान् प्रेरणाओ से भरा हुआ दिन है इसे मनाते हुए आर्य बन्धु जहा अमर शहीद पण्डित लेखराम के गुणो का गान करे वहा उनके जीवन से प्रेरणा लेकर उन्ही की तरह आर्य समाज का कार्य करने का प्रण लें।

—सह-सम्पादक

# आर्य समाजों के अधिकारी महानुभावों से

पजाब की वर्तमान परिस्थितियो मे आर्य समाज के सामने जो कठिनाईया आ रही हैं आप उन्ह भली भान्ति जानते हैं। इसलिए सारी स्थिति पर गम्भीरता पूर्वक विचार करने की आवश्यकता है। अब यह निश्चय किया गया है कि शनिवार 9 मार्च और रविवार 10 मार्च दो दिन का एक शिविर नवाशहर में लगाया जाए। इन दो दिन मे हम सब आपस मे बैठकर सोचे कि पजाब की वर्तमान परिस्थितियो मे हमे क्या करना चाहिए। यह शिविर शनिवार 9 मार्च को प्रात 11 बजे के लगभग प्रारम्भ हो जाएगा और रविवार दस मार्च को 3 बजे से पहले समाप्त कर दिया जावेगा। 9 मार्च की रात को सब महानुभाव बहने और भाई नवाशहर मे ही रहेगे। नवाशहर की आर्य समाज ने इसका भोजन आदि का सारा उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेना स्वीकार कर लिया है। प्रत्येक आर्य समाज इस शिविर के लिए कम से कम 3 और अधिक से अधिक 5 प्रतिनिधि भेज सकती है। उनके नवाशहर मे पहुचने की स्वीकृति शीघ्र सभा को भेजें, ठहरने का प्रबन्ध आर्य कालेज नवाशहर मे किया जायेगा। इसलिए आप अपने समाज के प्रतिनिधियों के नाम सभा को अविलम्ब भेज दे।

कमला आर्या
महामन्त्री

# मेरी धार्मिक एवं साँस्कृतिक यात्रा

ले.—श्री डा, एच. पी. महत्ता आर्य वानप्रस्थाश्रम
ज्वालापुर (हरिद्वार)

ट्रैवल ट्रस्ट बी-24 निजामुद्दीन पूर्वी नई दिल्ली ने इस यात्रा का प्रबन्ध किया डा सत्यकेतु जी विद्यालंकार सेवा निवृत उपकुलपति गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार के परामर्श पर इस पार्टी मे 20 व्यक्ति थे। 12 पुरुष और 8 महिलायें प्राय सभी आर्य विचार के थे।

हम ?2-9-84 को प्रात 2-10 बजे पर जम्बो जैट एयर बस थाईलैंड एयर वेज द्वारा जिसमे 364 यात्रियो का स्थान था। 7-30 बजे प्रात बैंकाक पहुच गए। बहुत सुन्दर वायुयान था। होस्टेस सर्विस बहुत अच्छी थी। निरामिष भोजन अति सुन्दर और स्वादिष्ट था। एयर पोट पर स्थानीय आय समाज अधिकारियो ने हमारा स्वागत फूल मालाओ तथा जल-पान से किया और फोटो खीचे। उसके बाद डील्क्स बस हमे हमारे निवास स्थान मनोहार होटल मे ले गई। होटल एयर कण्डीशन्ज था। होटल अत्यन्त स्वच्छ और सेवा बहुत बढिया थी। 23-9 84 को आर्यसमाज बैंकाक न प्रात सत्सग मे आमन्त्रि किया वहा स्वागत हवन, भजन तथा प्रवचन हुए। दोपहर का भोजन भी कराया। 3 बजे बाद दोपहर सनातन धम मन्दिर जिसकी दीवार आय समाज भवन के साथ लगती थी के सत्सग मे आमन्त्रित किया, स्वागत और प्रवचन हुए। स्वामी ओमानन्द डा सत्यकेतु, मेरा और दो तीन साथियो के प्रवचन हुए। 24 9 84 को बस द्वारा शहर मे गोल्डन बुद्ध मन्दिर' देखने गए। बुद्ध मूर्ति 9 टन साना हीर मिले, सीमेंट से बनी हुई थी। उस मन्दिर के इर्द गिर्द 3 सौ छोटी कच्छ मूर्तिया जगले पर लगी था। शाम को रोज गार्डन थाईलैंड नाच गाना, हाथी खेल आदि देखे। बाद म पटाया समुद्र बीच (पैसफिक समुद्र) गए। रात वहा रायल गार्डन बीच रैस्ट्रा मे ठहरे।

25 9-84 प्रात पटाया स बस द्वारा बैंकाक हवाई अड्डे पर 9 30 पहुच गए और वायुयान द्वारा सिगापुर हवाई अड्डे पर सात 12 बजे पहुच गए। 8 30 रात को सिगापुर स वायुयान द्वारा 9 30 रात जकार्ता पहुच गए। यह इण्डोनेशिया की राजधानी है। वहा रात सवाग होटल मे ठहरे। 26 9-84 प्रात नैशनल पार्क मे मैंनोरेल' मे सैर की। दोपहर बाद शहर मे बस द्वारा घूमे। ट्रैवल मस्जिद देखी। जिस पर सरकार ने 2 करोड रुपय खर्च किया है। इस मस्जिद मे 20 हजार मुसलमान एक समय बैठकर नमाज पढ सकते है। उसका टावर 6763 फुट ऊंचा है। उसके समीप ही नैशनल इन्डीपैंडेंस मैमोरियल है जो डच सरकार को निकालने के बाद बनाया गया। यह 135 मीटर ऊंचा है। सोना जवाहारात के टुकडे मिले। इटालीयन सीमेंट से बना हुआ है।

27-9 84 प्रात जकार्ता हवाई अड्डा पर पहुच कर हवाई जहाज द्वारा योगयोकार्टा पहुच गए 28 9-84 वहा 'पुरी आस्था होटल, में रात रह कर 29 9-84 को हवाई अड्डा पर "बाली, पूर्वी जावा) पहुच गए। वहा बाली हिन्दू परिषद की ओर से भव्य स्वागत ढोल-ढमाके और बाली गर्ल्ज ने फूल-मालाओ और फूल गुलदस्तो द्वारा किया बस द्वारा डैनपसार (बाली राजधानी के होटल सैनूर बकलोज (इराया) मे निवास के लिए पहुच गए। 2-10 84 तक रहे उसी दिन दोपहर बाद डैनपसार से वायु-यान द्वारा सिगापुर पहुच गए वहा 5 10-84 तक थाईपान होटल मे रहकर उसी दिन सिगापुर से 4 बजे चलकर बैंकाक हवाई अड्डे पर हवाई जहाज बदल कर साढ़ 9 बजे रात को एयर बस द्वारा 6-10-84 प्रात 2 20 पर देहली पालम हवाई अड्डे पर पहुच गए। यहा से हमारे साथी अपने 2 गन्तव्य स्थान पर चले गए, इण्डोनेशिया की आबादी 15 करोड है। 90 प्रतिशत मुसलमान है। 10 प्रतिशत हिन्दू, ईसाई आद। बाली द्वीप की आबादी पाच सौ लाख है। जिसमे 90 प्रतिशत हिन्दू है और 10 प्रतिशत मुसल-मान ईसाई आदि। बाली द्वीप मे 344 मन्दिर हैं प्राय शिव मन्दिर है। बाली निवासी अभिवादन दोनो हाथ जोड कर ओम् स्वस्ति बोलकर करते है।

हिन्दू, मुसलमान शकल से पहचाने नही जाते। सबकी पोशाक पश्चिमी है। नर और नारी की। हसते चेहरे मुस्करा कर अभिवादन करते है सिर झुकाकर परदा बिल्कुल नही प्राकृतिक खूबसूरती वृक्ष, लताए, फूल, पक्षी रगदार) रगदार मकान, दुकानें, साफ सुथरी सडकें होटल रैस्ट्रा, मोटर, कार (फोक्स) थ्री व्हीलर्ज मैटाडोर, बसें, मोपैड, मोटर साईकिल टैक्सीज चलती हैं बिना हौरन बजाए एक दूसरे से पीछे। ओवर टेकिंग जुर्म है और जुर्माना उसी समय वसूल किया जाता था। मैंने कोई चेहरा उदासीन और रोता नही देखा कोई भिखारी नही देखा।

डैनपसार (बाली में) हमारी पार्टी को हिन्दू धर्म परिषद् इन्स्टीच्यूट' ने आमन्त्रित किया। डायरेक्टर जनरल ने अपने भाषण मे बाली हिस्ट्री और सस्कृति का ज्ञान कराया। हम में से तीन चार व्यक्तियो ने भाषण दिए। हमने उन्हे स्वामी ओमानन्द लिखित पुस्तके चारो वेद, सत्यार्थ प्रकाश, डा, सत्यकेतु लिखित पुस्तकें, आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर स मेरी पुस्तकें ट्रैक्ट आदि लायी हुई, यज्ञयोग ज्योतिआर्यसमाज सी-3 ब्लाक जनकपुरी नई दिल्ली की कुछ पुस्तके भेंट को गई। मेरे द्वारा योग आसन क्रियाओ की प्रदर्शनी ब्रह्मचारी राम अवतार गुरुकुल झज्जर (रोहतक) द्वारा कुछ छोटे छोटे भाषण दिए गए। इस इन्स्टीच्यूट मे 3000 विद्यार्थी पढते है और 35 अध्यापक निश्शुल्क पढाते है, एक प्रोफेसर मुकन्दा शर्मा गौहाटी विश्व-विद्यालय (आसाम) से दो वर्ष के लिए डेपूटेशन पर (भारतीय सरकार की ओर से आए हुए हैं) उन्होने भी भाषण हिन्दी मे दिया और हमारी पार्टी को एक दिन-रात का भोजन पका कर अपने परिवार सहित हमारे होटल म दिया। जो बहुत स्वादिष्ट था। बाली निवासी रामायण महाभारत अपनी बाली भाषा मे पढते हैं, उनको हिन्दी नही आती, परन्तु सस्कृत भाषा मे कुछ अक्षर बोलते हैं। आश्चर्य की बात यह है कि हिन्दू मुस्लिम झगडा कभी नही हुआ। सारे सैन्ट्रल पश्चिमी पूर्वी जावा मे तलाक दहेज की रस्म नही। एक मुसलमान 5 तक शादी कर सकता है परन्त पहली पत्नी की आज्ञा से, बालिग लडके लडकिया दूसरे धर्मावलम्बिय से बिना अपने मा-बाप की आज्ञा से शादी कर सकते हैं और मा बाप शादी मे अडचन नही डालते, मुसलमान औरत एक आदमी से अधिक शादी नही कर सकती।

शिक्षा—अनिवार्य सब लडके लडकियो के लिए हाई स्कूल तक निशुल्क केवल सरकारी स्कूल, कालेज हैं, हिन्दू, मुस्लिम, ईसाईयो के नही ?

पचशील—सच्चाईयो का उच्चारण प्रात, प्रार्थनामें सब स्कूलों, कालेजो में।

1, हम सब परमात्मा, अल्लाह, और गॉड, के बच्चे-बच्चीयां हैं।

2 हम इण्डोनेशियन, बालीनीज और थाईलैंडर्ज हैं।

3, हम हमेशा सत्य बोलेंगे।

4, हम चोरी नही करेंगे ?

5, हम कभी आपस मे झगडा नहीं करेंगे, इसी प्रार्थना कारण कभी कोमी झगडा नहीं होता और न ही चोरी होती है।

सिंगापुर एक होटल में 71 मजिलें हैं, दुनिया भर मे यह सब से ऊंचाई वाला होटल है, ड्यूटी फ्री एयर पोर्ट है।

3 सबसे बडी एयर पोर्ट दुनिया में टोकियो (जापान) के बाद, खूबसूरती और एशिया मे।

4 सन्तोषा द्वीप बहुत खूबसूरत।

5 सबसे बडी मर्चेंट शिपिंग एयर पोर्ट।

6, हीरे जवाहारात की फैक्टरी।

7 बोटैनीकल गार्डन खूबसूरत और बहुत बडा।

8 50 लाख आबादी अधिक मल-यालीज, चीनी बाकी भारती आदि।

भारती अधिकतर दक्षिण भारती कुछ यू पी और दूसरे प्रदेशो के।

9 आर्य समाज सिंगापुर के अधि-कारी हमे मिलने हमारे होटल (थाईपान मे आए थे, उनको एक विद्वान पुरोहित जिसकी आयु 50-60 वर्ष, अकेला रह सकता हो, वहा की सरकार पत्नी को वीजा नही देती। आवास, भोजन समाज की ओर से, 2000 रुपया मासिक वेतन संस्कार की दक्षिणा 100 रुपए पुरोहित की। आर्य समाज सब त्यौहार सनातन धर्मियो के साथ मिलकर मनाते है।

—

## लुधियाना में ऋषि बोधोत्सव संपन्न

17-2-85 रविवार आर्य समाज हबीब गज लुधियाना मे प्रात 8 बजे से साढ़े 11 बजे तक ऋषि बोधोत्सव बडे समारोह से मनाया गया, हवन-यज्ञ के पश्चात मा वेदप्रकाश जी ने प्रभु भक्ति के भजन सुनाए। महर्षि दयानन्द जी के जीवन के सम्बन्ध मे श्री आशानन्द जी आर्य मन्त्री आय प्रतिनिधि सभा पजाब, श्री अनिल आय, श्री ज्ञानचन्द भक्त ने प्रकाश डाला। स्कूल के गरीब बच्चो को पुस्तकें, कापिया बाटी गई। बच्चो ने सुन्दर कार्यक्रम पेश किया यज्ञ शेष सारा दिन बाटा जाता रहा।

—वेद प्रकाश मन्त्री

—

# आ. प्र. नि. सभा पंजाब की महामन्त्री श्रीमती कमला आर्या का अमृतसर में भव्य स्वागत

अमृतसर मे सभी आर्य समाजो की ओर से शिवरात्रि के अवसर पर 16-2-85 को एक विशाल शोभा यात्रा का आयोजन किया गया था, जिसमे अगवानी करने के लिए वे विशेष रूप से सभा महामन्त्री श्रीमती कमला आर्या आमन्त्रित की गई थी। सभी बाजार शाहियाना ढग से सजाए गए थे। सब समाजो ने शोभा यात्रा मे भाग लिया। शोभा यात्रा बड़ी प्रभावशाली रही।

शिवरात्रि (ऋषि बोध पर्व) के उपलक्ष में आर्य समाज शक्तिनगर अमृतसर मे वृहद् यज्ञ का कार्यक्रम चल रहा था, जिसकी पूर्णाहुति 17-2-85 को डाली गई। सभा महामन्त्री बहन कमला आर्या जी ने इस समारोह की भी अध्यक्षता की। इस अवसर पर उनका स्वागत करते हुए सभा के लिए उनको पाच हजार रुपये की थैली भेंट की गई।

उसी दिन श्रीमती कमला आर्या आर्य समाज नवाकोट (अमृतसर) मे भी पधार कर ऋषि बोधोत्सव मे सम्मिलित हुई और ओजस्वी भाषण दिया।

—सम्वाददाता

# आवश्यक सूचना

मास्टर पूर्णचन्द जी वानप्रस्थी, जो आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब (गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर) के मुखतारेआम हैं। उनके पास सभा की रसीद सख्या 951 से 1000 तक की एक रसीद बुक थी, वह उनके भ्रमण अथवा विश्राम काल मे उनसे कही गुम हो गई है। उस रसीद बुक की रसीदा की सख्या 951 से 964 तक की प्रयोग मे आ चुकी है रसीद सख्या 964 दिनाक 5 नवम्बर 1984 को काटी गई थी। शेष रसीदें सख्या 965 से 1000 तक की कोरी (अप्रयुक्त) हैं जिस आर्य समाज में वह रसीद बुक रह गई हो तो वहा के अधिकारियो तथा जिस किसी व्यक्ति को मिल गई हो, तो उनसे निवेदन है कि उस रसीद बुक को रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा सभा के महामन्त्री को उपरोक्त पते पर भेजने का कष्ट करे। आर्य समाजें तथा आर्य बन्धु और दानी महानुभाव अकित कर ले कि 5-11-84 के बाद काटी गई रसीदे सख्या 965 से 1000 तक की 30 रसीदे यदि कोई व्यक्ति काट कर राशि प्राप्त करेगा तो वह अवैध होगी, सभा पर इस का कोई उत्तरदायित्व न होगा।

ब्रह्मदत्त शर्मा
सभा कोषाध्यक्ष

कमला आर्या
सभा महामन्त्री

# ऋषि बोधोत्सव (शिवरात्रि)

आर्य समाज अड्डा होशियारपुर (स्वामी श्रद्धानन्द बाजार जालन्धर) मे 17 फरवरी 1985 को प्रात. 8 बजे से 12 बजे तक ऋषि बोधोत्सव (शिवरात्रि पर्व) के उपलक्ष मे बड़े समारोह से मनाया गया। सन्ध्या प्रार्थना के पश्चात् स्वस्ति यज्ञ सम्पन्न हुआ, जिसमे श्री सुभाष सहगल एम ए बी टी सपत्नी तथा श्री कुन्दनलाल अग्रवाल सपत्नी यजमान बने। स्वस्ति वाचन तथा शान्ति प्रकरण के मन्त्रो का पाठ अर्थ सहित किया गया। लब्भू राम दोआबा हायर सैकेण्डरी स्कूल के तथा दोआबा माडल गर्ल्ज हाई स्कूल के अध्यापक तथा छात्र और अन्य धार्मिक विचारधारा के सैकड़ो की सख्या मे आर्य बन्धुओ ने भाग लिया यज्ञ के पश्चात् स्कूल के छात्र तथा छात्राओ तथा प्रिंसिपल श्री अमृतलाल जी खन्ना, योगेन्द्रपाल सेठ प्रधान समाज, श्री ऋषिपालसिंह जी एडवोकेट, श्री प्रा. आनन्द सागर जी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती को बड़ी भावभीनी श्रद्धाञ्जलिया भेट की, सभा समाप्ति पर यज्ञ शेष बाटा गया।

—योगेन्द्रपाल सेठ प्रधान आर्य समाज

# गुरु रविदास जन्मोत्सव समारोह सम्पन्न

आर्य स शास्त्री नगर बस्ती मिट्ठू दिलबाग नगर जालन्धर मे आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के आदेशानुसार गुरु रविदास जी का जन्मोत्सव बड़े समारोह मे मनाया गया। प्रात 8 बजे यज्ञ सुयोग्य विद्वान् प. धर्मदेवार्य जी ने करवाया।

इस समारोह की अध्यक्षता श्री वीरेन्द्र जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब एव सचालक प्रताप व वीर प्रताप ने की। इस अवसर पर गुरु रविदास ट्रस्ट के प्रधान बाबू रामधन जी श्री लक्ष्मीनारायण जी महदीरत्ता आर्यसमाज दानिशमन्दा के प्रधान डा ज्ञानचन्द, जिला समाज कल्याण अधिकारी श्री भगवानदास आहूजा ने अपनी श्रद्धाजलि भेट की।

श्री वीरेन्द्र जी के कर-कमलो से निर्धन परिवारो को 5 कम्बल एक सिलाई मशीन वितरित की गई। यह 5 कम्बल आर्य जगत् के दानी आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के उपप्रधान श्री प्रो. हरवशलाल जी शर्मा की धर्म पत्नी श्रीमती राज शर्मा जी ने दान दिए और लगर के लिए भी 250 रुपए दिए।

आर्य कन्या हाई स्कूल बस्ती नौ की मुख्याध्यापिका श्रीमती हर्ष अरोड़ा जी एव उनका सारा स्टाफ, आर्य हाई स्कूल बस्ती गुजा का बैंड, उसके मुख्याध्यापक प. रामकुमार जी शर्मा, सरकारी हा. सै. स्कूल भार्गव नगर का बैंड मा. लालचन्द जी के नेतृत्व मे पहुचे।

आर्य कन्या हाई स्कूल की छात्राओ ने स्वागती गीत गाया। आर्य समाज द्वारा सचालित महर्षि दयानन्द नि शुल्क सिलाई स्कूल की कन्याओ ने भी गीत गाए एव आर्य समाज के 10 नियम भी सुनाए। मच सचालन मन्त्री श्री किशोरीलाल जी भोला ने किया। आर्य हाई स्कूल के छात्र श्रुति कान्त ने भजन गाया, इस अवसर पर स्त्री आर्य समाज बस्ती गुजा की प्रधान श्रीमती लक्ष्मी बहनजी तथा उनकी सहयोगी बहने भी पधारी श्री महेन्द्रपाल जी ने भी भजन गाए।

आर्य समाज के प्रधान श्री रामलुभाया नन्दा जी ने सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी का आभार प्रकट किया तथा बताया कि उनकी समाज शीघ्र ही 5 बिस्तरो का नि शुल्क चिकित्सालय शुरू कर रही है।

श्री वीरेन्द्र जी सभा प्रधान ने गुरु रविदास को श्रद्धाजलि भेट करते हुए कहा कि मानव जन्म से नही कर्म से महान् होता है और आर्य समाज गुरु रविदास और महर्षि बाल्मीकि का जन्मोत्सव मनाता है और उनके समारोह मे शामिल होता है गुरु रविदास के अनुयायियो ने श्री वीरेन्द्र जी का एव श्री नन्दा जी का हार्दिक आभार प्रकट किया कि उन्होने गुरु रविदास जी का जन्मोत्सव बहुत ही अच्छे एव प्रेरणादायक ढग से मनाया है।

—रामलुभाया नन्दा

# लुधियाना में सीताष्टमी का पर्व मनाया गया

स्त्री आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार लुधियाना मे 12 फरवरी को सीता अष्टमी का पर्व बड़ी धूम-धाम से मनाया गया। इस अवसर पर लुधियाना की सभी स्त्री समाजो की बहने सम्मिलित हुई, और यज्ञ मे सभी ने बढ चढकर भाग लिया स्त्री आर्य समाज माडल टाऊन की प्रधाना श्रीमती प्रकाशवती जी और मन्त्री श्रीमती सन्तोष रहेजा जी तथा स्त्री आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना की बहन श्रीमती जनकरानी जी मन्त्री श्रीमती पुष्पा जी गोगिया, कोषाध्यक्ष तथा स्त्री आर्य समाज फील्ड गज लुधियाना की बहन कृष्णा जी व बहन सुदेश जी स्त्री आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना की प्रधाना श्रीमती विद्यावती जी और एक अन्य बहन इस यज्ञ मे स सभी बहने यजमान बनी। यह पर्व साय अढाई बजे से साय साढ़े चार बजे तक मनाया गया।

कई बहनो ने अपने भजन रखे तथा आर्य गर्ल्ज हायर सैकेण्डरी स्कूल के बच्चो ने अपना मनमोहक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। सब यजमानो को आर्य साहित्य भेंट किया गया और बोलने वाले सभी बच्चो को पारितोषिक दिए गए। प्रसिद्ध विदुषी मीरायति जी आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर का माता सीता के जीवन पर बहुत प्रभावशाली उपदेश हुआ। कार्यक्रम हर प्रकार से सफल रहा।

अन्त मे यज्ञशेष वितरण किया।

—कमला आर्या महामन्त्री

# आर्यसमाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार (साबुन बाजार) लुधियाना में ऋषिबोधोत्सव

ऋषि बोधोत्सव आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार लुधियाना मे 17-2-85 को बडी धूमधाम से मनाया गया। जिस में आर्य जगत् के विद्वान डा बालकृष्ण जी पी एच डी प्रि एम एल' आनन्द, प्रो वेदव्रत विद्यालकार डा एस बी बागिया डी एस सी, श्री ज्ञान प्रकाश वर्मा श्री ज्ञानीराम शास्त्री, श्रीमती शान्ता गौड श्रीमती राजेश्वरी वर्मा, श्री विनोद बासल, श्री रामधन आर्य आदि विद्वानो ने अपने 2 विचार रखे।

कार्यक्रम बडा सफल रहा।

—यश बागिया मन्त्री

# आर्यसमाज मण्डी बाग खजांचियां लुधियाना में ऋषि बोधोत्सव समारोह सम्पन्न

17 फरवरी रविवार प्रात 8 बजे से 11 बजे तक ऋषि बोधोत्सव का पावन पर्व बड उत्साह पूर्वक आर्य समाज मण्डी बाग खजांचिया मे आयोजित किया गया हवन-यज्ञ के उपरा त भजन उपदेश तथा एम बी स्कूल के बालको द्वारा महर्षि दयानन्द जी के जीवन सम्बन्धी कार्यों का गुणगान किया गया। डा एम सी भारद्वाज प्रधान आयसमाज ने इस पव के महत्व पर प्रकाश डाला और महर्षि दयानन्द द्वारा हि दू जाति तथा समग्र देश पर किए गए उपकारो का वर्णन किया। इसके अतिरिक्त श्रीमती रमा शर्मा, श्रीमती दुर्गेश्वरी देवी तथा अन्य विद्वानों द्वारा महर्षि दयानन्द जी के जीवन पर प्रकाश डाला गया। अच्छा बोलने वाले छात्र-छात्राओ को दस दस रुपये प्रोत्साहित करने के लिए पारितो षिक दिए गए। 2 बजे तक यज्ञ शेष बाटा बाटा जात । रहा।

—राजेश भारद्वाज मन्त्री

—

**रजिस्ट्रेशन आफ न्यूज पपर सेंट्रल रूल 1965 के अनुसार स्वामित्व व अन्य विवरण व्यौरा—** फाम न 4 (रूल न 8)

साप्ताहिक आय मर्यादा जालन्धर

1 प्रकाशक का स्थान ———जालन्धर
2 प्रकाशन क्रम ———साप्ताहिक
3 मुद्रक का नाम ———वीरन्द्र एम ए
राष्टीयता ———भारतीय
पता ———साप्ताहिक आय मर्यादा द्वारा आव प्रतिनिधि सभा पजाब, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर।
4 प्रकाशक का नाम ———वीरेद्र एम ए
राष्टीयता ———भारतीय
पता ———साप्ताहिक आय मर्यादा आय प्रतिनिधि सभा पजाब जालन्धर।
सम्पादक का नाम ———वीरेन्द्र एम ए
राष्ट्रीयता ———भारतीय
पता ———द्वारा साप्ताहिक आय मर्यादा आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब जालन्धर।
6 उन व्यक्तियो के नाम व पते जो समाचार पत्र क स्वामी हो तथा जो समस्त पूजी क एक प्रतिशत से अधिक के साझदार या हिस्सेदार हो। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर

मैं वीरेद्र एम ए एतद द्वारा घोषित करता हू कि मेरी अधिकतम जानकारी और विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

ह—वीरेन्द्र
प्रकाशक
हिन्दी साप्ताहिक आर्य मर्यादा
जालन्धर।

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

निकली होती तो लोग दौड पडते और वह घातक पकडा जाता। परन्तु यहां भी उन्होने अटल धैर्य का परिचय दिया वे ऋषि का अन्तिम दर्शन उन्हें घातक को छोडने की प्रेरणा कर रहा था। पण्डित जी ने बायें हाथ से अतडिया सभाली और दायें हाथ से घातक से लडते-भिडते सीढी तक आ पहुचे और उसके हाथ से छुरी छीन ली। इतने मे लक्ष्मी देवी बाहर निकल आई और धर्मवीर को घातक के सभावित द्वितीय आक्रमण से बचा लिया। वह घातक खूनी आखो से उनके पीछे पुन दौडा कि धर्मवीर की माता जी ने उसके दोनो हाथ पकड लिए उस दुष्ट ने पास पडे बेलने को उठाकर उनको भी दो तीन चपेटें लगाई और हाथ छुडाकर भाग गया।

धर्मवीर को शीघ्र ही हस्पताल पहुचाया गया। छुरी लगने के पौने दो घण्टे पश्चात सिविल सजन डा पेरी साहब आए और दो घण्टो तक कटी हुई आतो को सीते रहे। उन्हे आश्चर्य था कि इतनी देर तक पुष्कल रक्त निकलने पर भी यह जीवित कैसे हैं? पण्डित जी इसी बीच मे गायत्री तथा विश्वानि देवसवित-दु रितानी परासुव। यद भद्र तन्न आसुव' मन्त्र का जप करते रहे।

पण्डित जी डढ बजे रात तक बराबर सचेत रहे। इस समय न उन्हे घर वालो की चिन्ता थी और न मृत्यु का भय। केवल परमात्मा का चिन्तन और उनके नाम का जप कर रहे थे। आय समाज को वे मृत्यु के समय भी नही भूले। गुरुवर दयानन्द के लगाए धर्म वृक्ष की चिन्ता उन्हे बनी रही। अपने सहयोगियो को वे अन्तिम सन्देश दे गए कि—

'आर्य समाज से लेख का काम बन्द नही होना चाहिए— रात के लग भग दो बजे पण्डित लेखराम सदा के लिए शान्ति की नीद सो गए।

सूर्य की किरणो के साथ ही यह शोक समाचार शहर में प्रसारित हो गया। उस समय लोगों को जो दु:ख हुआ वह वर्णनातीत है। महाशय की अर्थी तैयार की गई और उसे श्वेत सुमनों से ढाप दिया गया। उनका अन्तिम चित्र लेकर अर्थी उठाई गई। जब वह अनार-कली पहुची तब 20 सहस्र का जन-समूह साथ था। छतें देवियों के भार से झुकी जाती थी। ऐसा प्रतीत होता था कि शोक की मूर्तिमान सारा नगर बन उठा है पुष्पो की वर्षा से मार्ग ऐसा प्रतीत होता था कि इस दिव्यात्मा के स्वागत में किसी ने कुसुमों की सरणि निर्माण कर दी है। अर्थी पर जगह-जगह गुलाब जल के फव्वर बह रहे थे। वैराग्य के गाने गाते लोग अर्थी को ले श्मशान भूमि में पहुचे। चिता का चयन किया गया और उस लेखराम का शरीर, जिसकी वाणी और लेखनी ने मुसलमानो की आखों मे नींद को नहीं छोडा था। अब चिता की ज्वाला में था और देखते देखते भस्म की एक राशि मात्र अवशिष्ट रह गई।

लेखराम का जीवन त्यागमय और सरल था। वे सच्चाई और सदाचार की मूर्ति थे। अपनी प्रतिज्ञा पालन के पक्के थे। वे तेजस्वी और मन्युप्रवण थे। जहा कही भी उन्हे पता लगता कि आर्यसमाज पर किसी ने आक्षप किया है। वे तुरन्त उसका प्रतिवाद करते थे। आय सिद्धान्तो पर अटल विश्वास था। अकुतोभय होकर वे सवत्र विचरते थे। नई-नई बातो का पता लगाने मे उनकी रुचि अत्यधि वे ऊहावान् और वाग्मी थे। उनकी लेखनी बिना रुके स्वपक्ष का मण्डन और प्रतिपक्ष का खण्डन करती थी। वे आदर्श धर्म प्रचारक थे। उनकी आवश्यकता आज भी उसी प्रकार विद्यमान है और वैदिक धर्म पुकार कर कह रहा है— लेखराम कहा हो? आओ।

—

# पतझड़ और बसन्त

ले.—श्री प्रो वीरसेन जी अहलावत एम ए. डी. पी एड.

जब मरी खाल की सांसो से लोहा भी भस्म हो जाता है।
तेरा क्या होगा रे पतझड तु तो जिन्दो को खाता है।
बसन्त वही है जो आए और पतझड को ललकार करे।
बस अन्त करो यह रक्तपात न जाने कितने खून बहे।
या सिर पर भूत सवार कहीं से पतझड तूफा ले आया।
उसने आकर पल्लव दल को जी भर रौंदा और तडफाया।
की काई निराली ठाठ बाठ जो शीत लहर पर इठलाया।
बर्फीली चुभती हवावली सूरज का खौफ नही खाया।
बहुत हुआ सहार अरे अब मधु ऋतु की ललकार कहे।
बस अन्त करो ।

निर्मम कठोर हत्यारे पतझड क्यो मासूमों को मारा।
क्यो माताओ से बेटे छीने पत्नी से प्रीतम प्यारा।
क्यो जला-जलाकर प्राण लिए तूने नव-विकसित कलियो के।
पकडा, फूका, मारा कुचला चक्कर काटे सब गलियो के।
आन्धी, ओले, बर्फ धुन्द कोहरे ने कमी नही छोडी।
कुछ अन्धे, काणे बना दिए कुछ लगडे-लूले और कोढी।
सब भूल गए अनमोल वचन गुरुओ ने जो बारम्बार कहे।
बस अन्त करो ।

नहीं छिडकता नमक कभी भी बसन्त और के घावो पर।
आगे आकर रोक लगाता हमलावर के धावो पर।
बसन्त वही है जो औरो के घावो को सहलाता है।
मुर्झायो को प्राण दान दे खेतो मे लहलहाता है।
बसन्त वही जो कर-कमलो से औरो के आंसू पोछे।
नही छोडता दीन दुखी वह गली 2 कूचे-कूचे।
हिंसा पाप कलुषता को फासी के फन्दे लटका दे।
ना आंख उठाकर देख सके हिंसक को ऐसा झटका दे।
बसन्त वीर के हाथो के खाडे की तीखी धार कहे—
बस अन्त करो ।

हे बसन्त मुझे बतला दो ना तुम मुस्लिम-सिख या ईसाई।
चुप हो लगता है सैक्यूलर तुम हिन्दू भी ना हो भाई।
मजहब के ठेकेदारो को आज सन्देश यह दे दो।
भेद जो व्याप्त भारत मे उसे भेदो उसे भेदो।
मेरे बसन्त तुम समरस हो जो सब ही के हित आते हो।
तिनके-तिनके पत्ते-पत्ते को नव जीवन दे जाते हो।
सब दु खियो के आंसू पोछो मेरी 'यह करुण पुकार कहे-
मानव की तुलना पतझड से मैं कर बैठा मैं पाप किया।
तुम भी अपना मन साफ करो मैंने भी मन को साफ किया।

मानव पतझड नही हो सकता उसमे आत्मा रहती है।
अन्यायी अत्याचारी को बनने को मानव कहती है।
वेदो की अमर कहानी मे गुरु ग्रन्थ साहब की वाणी मे।
गौतम के अमर सन्देशो मे और गांधी जी के वेषो मे।
श्री महाभारत और गीता मे और रामायण और सीता मे।
है यही हिदायत हम सब को जीओ औरो को जीने दो।
रोको-रोको यह कुटिल प्रलय ललसाई शोणित पीने को।
तुम ठीक बसन्त की राह चलो मेरा हर पल हर बार कहे—
बस अन्त करो

नोट—प्यारे वीरो, प्यारी बहिनों, तुम बसन्त बनो।
दु ख दर्द हरो तुम सब जग के दु ख दर्दों का तुम अन्त बनो।

# आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना के सभासदों से एक मुलाकात

—श्री रोशनलाल शर्मा प्रधान आर्य युवक सभा लुधियाना
751 सिविल हस्पताल रोड लुधियाना

आज जब हम आर्य समाज के इतिहास का अवलोकन करते हैं तो ऐसा प्रतीत होता है कि लोगो की आर्य समाज के प्रति जो स्वस्थ दृष्टि थी वह आज अतीत की वस्तु हो गई है। यह बात तो नितान्त सत्य है कि आर्य समाज की जो स्थिति आज से पचास वर्ष पूर्व थी वह आज नही है। आज हमारा वैदिक धर्म के प्रचार की ओर ध्यान कम ही है यदि मैं यह कहू कि आर्य समाज के सिद्धान्तो मे निष्ठा रखने वालो को इस विषय मे कोई चिन्ता नही है तो कोई अतिशयोक्ति नही है। इसकी सबसे बडी जिम्मादारी आर्य समाज के नेताओ पर है कि वे संगठन को अधिक मजबूत बनाए तथा जो व्यक्ति निःस्वार्थ भाव से आर्य समाज की सेवा कर सकते हैं उन्हे पूर्ण प्रोत्साहन दिया जाए। इसके अतिरिक्त प्रचार के कार्य को मनोरंजक एवं उच्चकर्षक बनाया जाए ताकि जनता का झुकाव इस ओर हो। मैं यह समझता हू कि आर्य समाज के सिद्धान्तो मे हमारी वह निष्ठा स्वयं नही है जो दूसरे धर्मों के मानने वालो मे है। हम जब तक गम्भीर रूप से इस पर विचार विमर्श नही करते तब तक हम अपने लक्ष्य को प्राप्त करने मे असमर्थ रहेगे।

साप्ताहिक सत्संग के पश्चात जब सभासदो मे इस तरह की चर्चा हुई कि आज दैनिक साप्ताहिक सत्संगो मे वह उपस्थित नही है जो पहले हुआ करती थी तथा सत्संग का स्तर भी गिरता जा रहा है तो मन मे एक विचार उभरा कि आम सभासदो तथा सत्संग प्रेमियो से इस विषय मे विस्तार विमर्श किया जाए। आर्य युवक सभा लुधियाना के नवयुवको ने यह बीडा उठाया कि हर सभासद के घर जाकर उनसे साक्षात्कार किया जाए तथा उनसे सुझाव लिए जाए कि वह क्या चाहते हैं। हमने एक परिपत्र छपवाया तथा अपने साथियो सर्वश्री महेन्द्र प्रताप आर्य सुधीर भाटिया, सुरेश चड्ढा, अजय बंसल राजेन्द्र बत्रा यशपाल-आर्य के सहयोग से इस कार्य को आरम्भ कर दिया। अब तक जिन महानुभावो को हम मिल चुके हैं, उनके विचार मैं आर्य मर्यादा के पाठको तथा विशेष तौर पर आर्य समाज के अधिकारियो की सेवा मे रखना चाहता हू ताकि इस मे विशेष प्रयास किए जा सकें। मैं एक बात और कह देना चाहता हू कि जब आर्यसमाज के सभासद ही आर्य समाज के प्रचार से सन्तुष्ट नही हैं तथा वे समाज मे नही आते हैं तो क्या हम गैर आर्य समाजियो को आर्य समाज के निकट ला सकते हैं? इस बात का निर्णय पाठकगण आर्यसमाज महर्षि दयानन्द बाजार के सभासदो के विचारो के पढ़ने के पश्चात कर सकते हैं।

मैं सर्व प्रथम श्री नवनीतलाल जी ढींगरा से मिला, आप यज्ञ प्रेमी तथा आर्य समाज के अनन्य भक्त हैं। प्रतिदिन आप घर मे यज्ञ करते हैं आपके अनुसार यह सन्तोषजनक है किन्तु उत्साहवर्धक नही हैं। आपने कहा है कि आज समाज के अधिकारी सब साधारण से सम्पर्क नही करते हैं इसकी महती आवश्यकता है। सदस्यो के घर जाकर उनसे मेल जोल बढाया जाय। जो व्यक्ति समाज मे नए आए उनसे सम्पर्क स्थापित किया जाए, वक्ता बाहर से आना चाहिए तथा इसकी सूचना सभी सभासदो तक पहुचनी चाहिए।

इसके पश्चात मैं श्री ज्ञानचन्द जी आर्य जिनकी आयु 72 वर्ष है उनसे मिला। आप दैनिक सत्संग मे नियमित रूप से जाते है। आपके सुपुत्र श्री श्रवण-कुमार, अजय तथा राजेन्द्र जी आर्य समाज के कार्यों मे बढ चढकर भाग लेते हैं। आप सबसे यही बातचीत हुई तथा आप के अनुसार साप्ताहिक सत्संग काम चलाऊ है। आपके अनुसार हमे रविवार को रजिस्टर देखना चाहिए तथा जो सदस्य न आए उनसे सम्पर्क स्थापित किया जाए तथा आपसी सद्भावना को बढाया जाए। युवको को सेवा भाव का कार्य करना चाहिए। प्रचार का कार्य पुरुषार्थ द्वारा होना चाहिए। अधिकारियो को समय पर पधार कर दूसरो के लिए उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए। स्कूलो से सम्पर्क स्थापित किया जाना चाहिए तथा जो बच्चे आर्य समाज के कार्यक्रमो मे भाग ले उन्हे उत्साहित किया जाए।

## स्त्री आर्य समाज मोहल्ला गोविन्दगढ का वार्षिकोत्सव

आयसमाज मुह ल्ला गोवि दगढ जालन्धर मे बहिनो का ओर से वार्षिकोत्सव 4 फरवरी से 10 फरवरी तक मनाया गया। यजुर्वेद शतक यज्ञ पूरा सप्ताह किया गया। यज्ञ की ब्रह्मा मीरायत्ति जी आर्या थी। ब्रह्मचारी भीष्मदेव एव राजे द्र जी ने वेद मन्त्रो का उच्चारण अर्थ सहित बड अच्छे ढग से किया। 9 फरवरी शनिवार को महिला सम्मेलन की अध्यक्षता आर्या मीरायत्ति जी ने की। सम्मेलन मे प ओमप्रकाश जी आय श्री ब्रह्मचारी भीष्मदव जी श्री राजे द्र जी (दानानगर) श्रीमती कमला आर्या जी सभा महामन्त्री आचाय नरेश कुमार जी (करतारपु ) प शालिगराम जी पराशर एव भजनोपदेशक प सत्यपाल जी पथिक ने अपने विचार रखे। रविवार पूर्णाहुति के पश्चात ध्वजा रोहण बहिन श्रीमती कमला आर्या सभा महाम त्री (आय प्रतिनिधि सभा पजाब) के कर कमलो द्वारा किया गया। गोवि द गढ हाई स्कूल के छात्रो ने ध्वज गीत गाया। करतारपर गुरु विरजानन्द स्मारक के छात्रो ने भजन एव अपने विचार रखे, मध्या ह राष्ट एकता सम्मेलन की अध्यक्षता श्रीमती कमला आर्या जी सभा महाम त्री ने की। इसमे भी बड 2 विद्वानो ने अपने 2 विचार रखे उपस्थिति आशाजनक रही। 26 जनवरी 85 को वसन्तोत्सव भी बडी धूमधाम से मनाया गया। —कृष्णा कोछड म त्राणी

आय समाज मु गोविन्दगढ जाल धर

## शोक समाचार

मास्टर रामलुभाया जी भूतपूर्व म त्री आय समाज बस्ती गुजा जाल धर के नौजवान सुपुत्र की अचानक दुघटना होने से मत्यु हो गई। यह दुघटना टेलीफोन की मार से स्कूटर के फस जाने से हुई। इससे मास्टर जी को असहनीय आघात पहुचा है। आय समाज बस्ती गुजा उनके इस शोक मे सम्मिलित होती हुई भगवान से प्राथना करती है कि दिवगत आत्मा को सदगति प्रदान करे और श्री मास्टर रामलुभाया जी को तथा उनके परिवार को यह असहनीय आघात सहने की शक्ति प्रदान करे। —विपिन शर्मा उपम त्री

## लुधियाना में पारिवारिक सत्संग

स्त्री आय समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार लुधियाना की ओर से प्रति सक्रान्ति को जो यज्ञ होता है वह इस बार 13 2 85 श्रीमती सरस्वतीजी नैय्यर उपमन्त्री आय समाज के घर पर हुआ। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की महामन्त्री श्रीमती कमला आर्या ने बच्चो को कैसे सुसस्कृत बनाया जाए। इस विषय पर एक सारगर्भित उपदेश दिया जिसका सभी बहनों पर बहुत अच्छा प्रभाव पडा। अन्य बहनो ने भी अपने मनमोहक भजनो द्वारा आई हुई जनता को प्रभावित किया। यजमान परिवार को आय साहित्य भेंट किया गया और अन्त मे यज्ञशेष बाटा गया गया।

## आर्य समाज कालावाली को दान

आय समाज कालावाली के कोषाध्यक्ष श्री अमरनाथ जी ने अपने स्वर्गीय पिता श्री चाननराम जी गोयल के निमित्त अपने घर पर अन्तिम शोक दिवस पर हवन यज्ञ करवाया। जिसे श्री ओम प्रकाशजी वान प्रस्थी अधिष्ठाता आय वानप्रस्थ गुरुकुल भठिण्डा ने सम्प न करवाया। प्रवचन हुए दिवगत आत्मा की शान्ति के लिए प्राथना की गई। इस अवसर पर श्री अमरनाथजी ने 501 रुपए आय समाज कालावाली को दान दिए।

—ओमप्रकाश आर्य मन्त्री

## आवश्यक सूचना

वैदिक यति मण्डल की ओर से वैदिक सन्यास आश्रम गाजियाबाद में 16 मार्च से 31 मार्च 1984 तक स्वाध्याय सस्कृत शिक्षण शिविर लगाया जाएगा, अत सब मान्य इच्छुक यतियो (स यासी) व ब्रह्मचारी तथा वानप्रस्थियो) से प्रार्थना है कि समय पर पहुचकर अवश्य लाभ उठायें। सत्यार्थ प्रकाश सस्कार विधि आदि पुस्तकें कापी लेखनी तथा ऋतु अनुसार वस्त्र अपने साथ अवश्य लाव भोजन का प्रब ध आश्रम की ओर से होगा। —अध्यक्ष स्वामी सर्वानन्द

वैदिक यति मडल (दीनानगर) गुरदासपुर



श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रेस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन न. 74250 (रजि. नं. पो. जे. एल. 53)

16 अक 39, 27 फाल्गुन सम्वत् 2042, तदनुसार 10 मार्च 1985, दयानन्दाब्द 160। एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपए

त-नूतन-रमणीय—

# अग्नि देव

ले.—श्री धर्मवीर जी विद्यालकार

अग्नि पूर्वेभि ऋषिभिरीड्यो नूतनैरुत। स देवा एह वक्षति॥ ऋ 1-1-1-2।

अर्थ—हे अग्नि स्वरूपे ईश्वर! मन्त्रार्थ देखने वाले प्राचीन विद्वान् और नये विद्वान् अर्थात वेदार्थ पढ़ने वाले नवीन ब्रह्मचारी और हम लोग—चाहे विद्वान् अथवा मूढ—सब आपकी ही स्तुति करते हैं। सो स्तुति को प्राप्त हुए आप, हमारे एव समस्त जगत् के लिए दिव्य गुणो को अर्थात् विद्या, दया, तितिक्षा, जितेन्द्रियता को प्राप्त कराते हो। आप ही सबके इष्टदेव हो। हम आपकी बारम्बार स्तुति करते हैं।

—महर्षि दयानन्द

व्याख्यान—अग्र नयति इति अग्रणी अग्रणीर्हि अग्निर्भवति।

अर्थात् आगे ले जाने वाला अग्रणी होता है। अग्रणी को ही अग्नि कहते हैं आगे हो जाने का सामर्थ्य उसमे होता है, जिसके हाथ मे टार्च होता है, जो अन्धेरे मार्ग को किसी साधन से प्रकाशित कर सके या स्वय ही प्रकाश पुज हो प्रकाश स्वरूप हो। प्रकाश मे ही मार्ग दिखाई देगा। ऊबड खाबड, गढ, टीले, पत्थर-कक्कड काटो आदि से बचाकर ले जा सकेगा। मार्ग के अन्त मे पहुचा सुख-समृद्धि आनन्द और शान्ति दिला सकेगा थकान दूर होगी। न कि दुखो, दुर्गुणो से, दुर्व्यसनो से घिरा रहे और उनके शिकजो में जकडा जाता रहे। इसके साथ ही अग्रणी व्यक्ति मे इस प्रकार का ज्ञान भी हो कि वह हमे कहा लेजा रहे हैं, हमारा लक्ष्य क्या निर्धारित किया है और रास्ता कैसा है। तीसरी वस्तु अग्नि मे 'ताप होता है। इसे 'तप' भी कहते हैं। ताप अर्थात् गर्मी, तप अर्थात गर्मी धारण करने की सामर्थ्य। ताप के दो कारण हैं: गर्मी देना, ठण्ड दूर करना और जला देना। पापो को, बुराईयो को, दुर्गुण-दुर्व्यसनों को जलाकर भस्म कर देना, नाम-निशान मिटा देना, अस्तित्व समाप्त करना और पुष्पो को, सुगन्धित पदार्थों को जलाकर, विस्फोटक शक्ति से सूक्ष्म बना कर सारे वायु मण्डल को सुगन्धित कर देना, औषधियो को जलाकर सूक्ष्म रूप देकर वायु मण्डल को स्वास्थ्यवर्धक रोगनाशक बना देना, पुष्टिकारक और मिष्ठ पदार्थों को सूक्ष्म रूप देकर वायु मण्डल को पुष्टिकारक और मधुर बना देना। इससे अनायास, प्राकृतिक रूप से ही प्राणिमात्र नीरोग, पुष्ट और मिष्ट होता रहे। इसी कारण अग्निहोत्र का शाकल्य, सुगन्धित पुष्टिकारक मिष्ट पदार्थों और रोगनिवारक औषधियो से तैयार किया जाता है।

यह अग्नि ही है जो वायु को द्रव को ताप देकर स्थान बदलने के लिए विवश करती है। उसके स्थान पर दूसरी अपेक्षया सुगन्धित ठण्डी वायु या द्रव चला आता है। इस प्रकार शुद्ध और दूषित का प्रवाह प्रारम्भ हो जाता है। पवित्र (ठण्डा) आता है, अपवित्र (गर्म) चला जाता है। इसे आप पुण्य की (अपवित्र की) पाप पर (दूषित पर) विजय कह सकते हैं। इस प्रकार हम पाते हैं कि अग्रणी मे—अग्नि मे तीन गुण हैं—1, वह प्रकाश स्वरूप है, 2, वह ज्ञान स्वरूप है, और 3, वह तप स्वरूप है, परम पिता परमात्मा को अग्नि कहते है। उसमे उपरोक्त तीनो विद्यमान हैं।

पुरातन ऋषियो ने—मन्त्रद्रष्टा विद्वानों ने—उस परमेश्वर के अग्नि रूप को पहचाना, अनुभव किया, साक्षात्कार किया। उस 'अग्नि' के द्वारा उन्हे अपार विद्या मिली, अजस्र प्रकाश मिला और ताप मिला अर्थात कार्य करने की शक्ति क्षमता, उत्साह मिला। उससे वे लाभान्वित हुए, सुखी एव समृद्ध हुए, धन्य-धान्य से पूरित हुए, विलक्षण आनन्द तथा गहरी शान्ति पाई। उनकी भौतिक, दैविक एव आध्यात्मिक समस्त आवश्यकताए पूर्ण हुई। वे उस प्रभु की बारम्बार प्रतिदिन स्तुति करते, तल्लीन रहते।

नये ऋषि अर्थात् वेदाध्ययन मे रत-ब्रह्मचारी भी उस प्रभु के प्रति आस्थावान् हुए। पहले गुरु के मार्ग दर्शन से, फिर स्वय के चिन्तन-मनन अध्ययन और शोध से विविध अनुभूत इस आनन्द से प्रसन्न हुए। वे पाते है कि पुरातन ऋषियो के विचारो और उनके अनुभव में विरोध नही है, सामजस्य है। आज के वैज्ञानिक वेदाध्यायी दो समिधाओ से उत्पन्न अग्नि को देखता है। चूल्हे मे, हवन कुण्ड मे, लोहडी या होली के त्यौहार के अवसर पर चौराहे पर जल रही लकडियो के विशाल ढेर मे प्रज्जवलित अग्नि की लपेटो को देखता है। उसमे प्रकाश है। ताप है। यह अग्नि है। उसने यह भी जान लिया है कि इस ज्वाला मे कार्बन डाई आक्साईड गैस है। उसी की उपस्थिति से यह ज्वाला है। फिर वह देखता है उन लाल लाल अगारो को जिनमे लपट नही है परन्तु प्रकाश और ताप है। तो निश्चय करता है कि मात्र लपट (ज्वाला) ही अग्नि नही। फिर वह विद्युत को देखता है, इसमे भी प्रकाश और ताप है। यह भी अग्नि का एक भिन्न स्वरूप है। वह वैज्ञानिक नवीन ऋषि यह भी पाता है कि बिजली से मोटरे चलती हैं तो कारखाने की मशीनें चलने लगी, नलकूप से भूमि की गहराई मे पडा जल ऊपर आ गया। उसने यह भी पाया है कि पानी के प्रवाह से टरबाइन मे गति उत्पन्न करने पर विद्युत उत्पन्न होती है। विद्युत से लोहे का चुम्बक भी पैदा होता है। ताप से गति, गति से ताप (अग्नि) आपस मे बदल जाती है। सब शक्तिया ताप मे अथवा ताप अन्य शक्तियो के रूप मे बदलते हैं। तो मूल रूप मे एक ही शक्ति है जो ताप का उदय स्थान है वह अग्नि है।

जलती हुई लकडी की लपटो मे, लाल तपे अगारे मे (या लाल तपे लोहे मे) बल्ब के तारो मे प्रगट होने वाला प्रकाश या ताप, सभी अग्नि के विभिन्न स्वरूप हैं। इन सब मे विद्यमान अग्नि सबसे सूक्ष्म है। मन को ज्योतिषा ज्योति' अर्थात् प्रकाश का भी प्रकाशक, अत्यन्त सूक्ष्म है और कर्मशील है।

नूतन ऋषि—वेदाध्यायी विचारता है चिन्तन और मनन करता है। तीन पदार्थ नित्य है। ईश्वर, जीव और प्रकृति। यह ज्योति किसका गुण हो सकता है। प्रकृति जड है, अन्धकारमय है। ज्योति प्रकृति का गुण नही। जीव अल्पज्ञ है। अन्धकार से प्रकाश की ओर जाने का इच्छुक है। 'तमसो मा ज्योतिर्गमय।' यह ज्योति जीव (आत्मा) का गुण नहीं। यह ज्योति तप या ताप, ईश्वर का ही गुण है।

वैज्ञानिक नूतन ऋषि-का शोध जारी है। यह ज्योति ईश्वर का गुण है। ईश्वर ही ज्योति का स्रोत है, भण्डार है। भण्डार और स्रोत उससे भिन्न होता है, जिस वस्तु का भण्डार होता है या जो वस्तु स्रोत से प्रवाहित होती है। यहा तो ज्योति और ईश्वर मे भेद नही है। ज्योति ही ईश्वर है। ईश्वर ही ज्योति है, अर्थात् ईश्वर ज्योति स्वरूप है प्रकाश-स्वरूप है, अग्नि स्वरूप है अग्नि है। वह इस लक्ष्य मे आनन्द विभोर हो जाता है।

इस प्रकार जब नूतन ऋषि वैज्ञानिक अथवा योगी (वेदाध्यायी) भी उसी परिणाम पर पहुचता है। जिस परिणाम पर पुराने ऋषि पहुचे थे तो नये को तो अपार हर्ष होता ही है, पुरातन भी गद्गद् हो अनिर्वचनीय (जिस वाणी प्रसारण किया जा सके) आनन्द मे ध्यानस्थ मूक हो जाता है तब नये और पुराने का भेद नही रहता। अहंकार नही रहता। नया यह नही कहता कि पुराने का विचार बासी हो गया है, वर्तमान संसार प्रगति के पथ पर आगे निकल गया है, पुराना पिछड़ [illegible] है। वह (नूतन अनुभव करता [illegible] नए का आधार ही पुराना है हम दोनो एक ही जजीर की कडिया हैं।

(क्रमश)

# जी चाहता है तोड़ दूं शीशा फरेब का— 6

ले —श्री वीरेन्द्र जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब

(3 मार्च के अक से आगे)

पाठक वृन्द ! इस लड़ी के पिछले लेख मे मैंने आपके सामने आनन्दपुर साहब के प्रस्ताव का एक सक्षिप्त रेखाचित्र पेश किया था। अब विस्तार के साथ इसके कुछ पक्ष आपके समक्ष रखना चाहता हू। ताकि आपको पता चल सके कि न केवल भारत सरकार बल्कि सारे राजनीतिक दल इस प्रस्ताव के विरुद्ध क्यो हैं ?

सबसे पहला और सबसे महत्वपूर्ण मतभेद यह है कि आनन्दपुर साहब के प्रस्ताव में बार बार सिख कौम ((Sikh Nation) का उल्लेख किया गया है। इस प्रस्ताव में जो कुछ मागा गया है वह केवल सिख कौम के लिए ही मागा गया है। दूसरे शब्दो में अकाली समझते हैं कि पजाब मे केवल सिख रहते हैं या केवल उन्हे ही रहने का अधिकार है। इसलिए जो कुछ वह चाहते हैं केवल सिख कौम के लिए।

भारत सरकार यह स्वीकार करने को तैयार नहीं कि सिख एक अलग कौम है और पजाब में केवल सिख ही रहते हैं, इसलिए इस सूबा में केवल खालसा जी का बोलबाला होना चाहिए। अगर अकालियो के इस दृष्टिकोण को स्वीकार कर लिया जाए तो यह भी मानना पड़ेगा कि भारत एक ऐसा देश है जिसकी एक कौम या एक राष्ट्र नहीं है बल्कि जो कई राष्ट्रो या कौमो (Multi Nat onal) का देश है। इसमे हिन्दू कौम भी है सिख कौम भी है मुस्लिम कौम भी और ईसाई कौम भी। अगर यह बात मान ली जाए तो इस देश के न जाने कितने टकड होगे। अगर एक इलाका मे खालसा जी का बोलबाला होत है तो दूसरे सूबो म कही हिन्दुओ का बोलबाला होगा कही मसलमानो का और कही ईसाईयो का। और हर सम्प्रदाय के लोग अपने लिए एक अलग क्षत्र मागगे जहा उनका बोल बाला होगा।

अकालियो की सदा यह मश्किल रही है कि वह जल्दबाजी में बिना सोचे समझ कई बार माग पेश कर लेने है बाद मे उन्हे पता लगना है कि उन्होन गलती की है। अगर यह स्वीकार कर लिया जाए कि सिख एक अलग कौम है तो अगला प्रश्न यह पदा होगा कि पजाब मे अन्दर जो सिख रहने हैं वह किस कौम के होगे औ पजाब म रहने वाले हिन्दू क्या ह गे। [illegible] एक [illegible] र र है अगर पजाब को सिख कौम का सूबा समझा जाए तो उत्तर प्रदेश हिन्दू कौम का सूबा समझा जाएगा। वहा जो सिख कौम या मुस्लिम कौम के लोग रहते हैं उनका क्या बनेगा ? क्या पजाब मे रहने वाले हिन्दू और उत्तर प्रदेश मे रहने वाले मुसलमान या सिख भी वहा विदेशी समझ जाएगे ? एक प्रदेश में तीन कौमें रहे यह कैसे हो सकता है। यह खालसा जी के दिमाग में तो आ सकता है किसी और के नही।

यह है आनन्दपुर साहब प्रस्ताव से मूल मतभेद। यह सिलसिला यहीं समाप्त नही हो जाता। सिख कौम की रट लगाने के बाद अकाली यह भी मानते हैं कि जिस इलाका मे सिख कौम रहती हो उसे प्रभुसत्ता सम्पन्न ठहराया जाए। सिवाये चार या पाच विभागो के शष सभी विभागो मे इस क्षत्र की सरकार प्रभुसत्ता सम्पन्न हो। सुरक्षा वित्त, रेल सचार और विदेश विभाग यह तो केन्द्र के पास रह शष खालसा जी के पास रहे। केन्द्र इनमे कोई हस्तक्षप न करे और जो विभाग प्रदेश के पास हो उनके सम्बन्ध मे कानन बनाने का अधिकार भी राज्य सरकार के पास हो। केन्द्र इसमे हस्तक्षप न करे। अगर यह माग स्वीकार कर ली जाए तो केन्द्र कमजोर हो जाएगा और देश के दो या तीन बटवारे और भी सुगम हो जाएगे।

अकालियो के निमाण मे वस्तत क्या है वह प्रकट तो नही करते किन्त आनन्द पुर साहबके प्रस्ताव का पढकर पता चल जाता है। इसमे लिखा है कि भारत स [illegible] नीति ठीक नही है। स [illegible] पुनर्विचार करना चाहिए। और नई पजाब सरकार को यह अनुमति होनी चाहिए कि वह अपने पडोसी देशो के साथ विशेष उनके पडोसी सिखों के गुरुद्वारे हैं कोई समझौता कर सके। यह गुरुद्वारे तो पाकिस्तान मे ही हैं। सिख कौम की जो नई सरकार बनेगी वह पाकिस्तान के साथ भी समझौता कर सकेगी।

पाठक वृन्द ! मैंने जो कुछ ऊपर लिखा है उसके आधार पर कहा जा सकता है कि आनन्दपुर साहब के प्रस्ताव के अनुसार —

(1) भारत में कई कौमें आबाद हैं जिनमें सिख भी एक हैं।

(2) सिखों को एक ऐसा सूबा चाहिए जहा उनका बोलबाला हो यानि उनका वर्चस्व हो।

(3) केन्द्र के पास केवल चार विभाग रहने चाहिए। शेष सभी राज्य सरकार के पास रहने चाहिए और इनमें केन्द्र को दखल देने का कोई अधिकार न हो।

(4) जो विभाग राज्यो के पास होंगे उनके लिए कानून भी राज्य सरकार बनाएगी।

(5) उस राज्य सरकार को पडोसी देशो के साथ समझौता करने का अधिकार भी होना चाहिए।

जो कुछ ऊपर पेश किया गया है उससे यह अनुमान लगाना कठिन न होना चाहिए कि अकाली शुरू मे एक कमजोर केन्द्र और ताकतवर प्रदेश चाहते हैं। जिसमे खालसा जी का बोल बाला हो। किन्तु वह इसे वतमान पजाब तक ही सीमित नहीं रखना चाहते इस का क्षत्र भी बड़ा बनाना चाहते हैं आनन्दपुर साहब प्रस्ताव के अनुसार पजाब मे कुछ और क्षत्र भी शामिल करने चाहिए। उदाहरण के लिए डल्हौजी चण्डीगढ पजौर कालका, अम्बाला शहर, जगाधरी की सारी तहसील जिला करनाल का शाहाबाद ब्लाक हरियाणा की गुलहा तथा टोहाना तहसीलें, जिला हिसार की एक तहसील सिरसा और राजस्थान के जिला गगानगर की छ तहसील।

पाठक साक्षी हैं कि मैंने कई बार वीर प्रताप और प्रताप मे यह लिखा है कि चण्डीगढ के नाम पर जो लड़ाई लड़ी जा रही है वह केवल चण्डीगढ के लिए नहीं है। चण्डीगढ प्राप्त करने के बाद अकाली और कई क्षत्रों की माग पेश करेंगे। वह पुराना पजाब फिर स्थापित करना चाहते हैं किन्तु इस ढग से कि इसमें खालसा का बोलबाला हो। चण्डीगढ पहला पग है उसके बाद और भी कई कदम उठाए जा सकते हैं।

मैंने कई बार यह भी लिखा है कि आनन्दपुर साहब प्रस्ताव की व्याख्या बारे अकालियों में आपस में भी मतभेद रहा ?। भारत सरकार ने जो श्वेत-पत्र प्रकाशित किया था उसमें भी इसका उल्लेख आता है। श्री लोंगोवाल अकाली दल ने तो कहा था कि जो नया पजाब बनाया जाए, उसमें केन्द्र का कोई दखल न हो सिवाय सुरक्षा, विदेश, वित्त, रेल, और सचार विभाग के। किन्तु तलवण्डी अकाली दल ने यह माग की है कि आनन्दपुर साहब प्रस्ताव के आधार पर जो नया पजाब बनाया जाए उसे अपना सविधान बनाने का अधिकार भी होना चाहिए। आनन्दपुर साहब प्रस्ताव बारे सबसे बड़ी शिकायत यह है कि उसके माध्यम से अलगवाद की प्रवृत्ति का प्रचलन होता है। अगर यह प्रस्ताव मान लिया जाए तो एक और बटवारा की नींव रख दी जाएगी। अकाली इसका प्रतिवाद कर रहे हैं। उनकी कठिनाई यह है कि वह जो कुछ आज कहते हैं वह कल भूल जाते हैं। फिर वह एक जगह टिकते नही हैं। लोंगोवाल अकाली दल कुछ कहता है। तलवण्डी अकाली दल कुछ। इन दोनो से ऊपर एक और साहिब भी हैं वह हैं गुरचरणसिंह टोहरा। उन्होने इस प्रस्ताव बारे कुछ कहा है उसे सुनकर बरबस मुंह से निकल गया।

'जो बात की खुदा की कसम लाजवाब की।

टोहरा साहिब ने इस प्रस्ताव की जो व्याख्या की है उसका मुकाबला कोई भी नही कर सकता। वह क्या है ? यह आगामी लेख मे पेश करूगा।

## सम्पादकीय—

# नवाँशहर का शिविर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का एक अधिवेशन वर्ष भर में उस समय होता है जब अधिकारियो का चुनाव किया जाता है या सभा की आर्थिक स्थिति पर विचार किया जाता है बहुत कम समय हम इस बात पर लगाते हैं कि आर्य समाज की समस्याओ पर भी विचार करें, विशेष कर देश की वर्तमान परिस्थितियो मे आर्य समाज का क्या कर्त्तव्य है इस पर हम कभी विचार नही करते। हम लोग जो पंजाब मे रहते हैं हमारी स्थिति दूसरे प्रान्तो से भिन्न है इसलिए हमारे लिए यह और भी आवश्यक हो जाता है कि हम देखें कि जो कुछ हमारे चारो तरफ हो रहा है उसमे हमने क्या करना है। कुछ समय से मैं यह भी अनुभव कर रहा हू कि आर्य जनता मे कुछ शिथिलता आ रही है और वह पराकाष्ठा तक पहुची है। सभा के द्वारा भेजी गई विज्ञप्तियो का भी कई बार उत्तर नही दिया जाता। पंजाब मे आर्य समाज का यह परम सौभाग्य है कि इस बार उन्हे कुछ ऐसे अधिकारी मिल गए जो इसकी सेवा मे लगे रहते हैं। इस दिशा मे विशेषकर सभा की महामन्त्री बहन कमला आर्या और कोषाध्यक्ष श्री ब्रह्मदत्त जी शर्मा का योगदान सराहनीय है। पहली बार सभा को ऐसे अधिकारी मिले हैं जो अपना कुछ समय सभा के कार्यालय मे व्यतीत करते हैं। बहन कमला जी आर्या सप्ताह मे तीन चार दिन जालन्धर रहती हैं और तीन-चार दिन लुधियाना। श्री ब्रह्मदत्त जी शर्मा रेलवे की सेवा से मुक्त हो गए हैं इसलिए वह भी अपना बहुत समय कार्यालय मे व्यतीत करते हैं। इन दोनो के परिश्रम से सभा का भवन भी बन रहा है और कार्यालय मे भी कुछ सक्रियता दिखाई दे रही है। फिर भी यह दोनो निराश है क्योकि आर्य जनता का उन्हे वह सहयोग नहीं मिल रहा। जिसकी वह आशा रखते थे। आर्य समाजो के अधिकारी उनके पत्रो का भी उत्तर नही देते। इस प्रकार सभा का काम तो हो रहा है परन्तु वैसा नही जैसा कि होना चाहिए।

इस सारी स्थिति पर विचार करने के लिए 9 10 मार्च को नवाशहर दोआबा मे आर्य समाजो के अधिकारियो का एक शिविर लगाया जा रहा है जहा केवल इस बात पर विचार किया जाएगा कि पंजाब मे आर्य समाज के संगठन को किस प्रकार अधिक शक्तिशाली बनाया जा सकता है और हमारे सामने जो कठिनाईया समय 2 पर पैदा होती रहती हैं उन्हे दूर करने के लिए क्या उपाय किया जाए। हमे यह न भूलना चाहिए कि पंजाब मे आर्य समाज ही हिन्दुओ का एक मात्र संगठन है जो उनके अधिकारो की रक्षा कर सकता है। इसके अतिरिक्त और कोई संस्था दिखाई नही दे रही जो मैदान मे निकल कर हिन्दुओ के पक्ष मे आवाज उठा सके। हमारे सनातन धर्मी भाई मूर्ति की बहुत पूजा करते हैं परन्तु पिछले तीन वर्षों मे हमने देखा है कि उग्रवादी उनकी मूर्तियो को या तो तोड गए, या जला गए परन्तु हमारे सनातन धर्मी भाई उन्हे रोकने के लिए कुछ नही करते। आर्य समाजो के मन्दिर यदि सुरक्षित रहे हैं तो उसका एक कारण यह भी है कि उग्रवादी जानते है कि आर्य समाज एक जीवित और शक्तिशाली संस्था है। इसलिए वह इसके साथ छेडखानी नही करते। परन्तु यह स्थिति संतोषजनक नही। हमे अपने संगठन को प्रभावशाली बनाना है और उसमे जो शिथिलता पैदा हो रही है उसे दूर करने का कोई उपाय सोचना है। इसी उद्देश्य को सामने रख-कर यह शिविर किया जा रहा है। मैं नवाशहर के आर्य भाईयो और बहनो का हार्दिक धन्यवाद करता हू कि उन्होने यह बोझ अपने ऊपर लिया है। इसके बाद हमारी परीक्षा होगी कि हम कितनी संख्या मे वहा पहुचते हैं। मेरा पंजाब की आर्य समाजो के अधिकारियो से यह नम्र निवेदन है कि वह अधिक से अधिक संख्या मे वहा पहुचें ताकि हम अपनी समस्याओ का कोई समाधान ढूढ सकें।

—वीरेन्द्र

# आर्य समाज बरनाला का सराहनीय कार्य

23, 24 फरवरी को मैं तथा सभा की महामन्त्री बहिन कमला जी, सभा कोषाध्यक्ष श्री ब्रह्मदत्त शर्मा और आर्य विद्या परिषद् के प्रस्तोता धर्म प्रकाश जी दत्त बरनाला गए थे, वहा आर्य समाज की कई संस्थाए हैं उनमे एक लाल बहादुर शास्त्री आर्य महिला कालेज भी है। वहा एक नई यज्ञशाला बन रही है। मैंने उसका शिलान्यास करना था। इसके अतिरिक्त वहा एक बहुत बड़ा गान्धी आर्य हाई स्कूल भी है और दयानन्द केन्द्रीय विद्या मन्दिर भी है। इन सब संस्थाओ को देख कर हम सब को हार्दिक प्रसन्नता हुई। वास्तविक स्थिति तो यह है कि बरनाला में आर्य समाज का बोलबाला है। वहा के कर्मठ आर्य समाजी बन्धु समय-2 पर कुछ न कुछ करते रहते हैं। श्री यज्ञ भाटिया तो चलती फिरती आर्य समाज ही हैं। उनके जीवन का एक एक क्षण आर्य समाज की सेवा मे व्यतीत होता है। उनके सहयोग से अब वहा एक केन्द्रीय विद्या मन्दिर भी बन गया है जहा छोटे-छोटे बच्चो को शिक्षा दी जाती है। प्रि बहिन विमला छाबडा भी आर्य समाज की एक अनथक और अर्पित कार्य-कर्ता है। उन्होने अपने कालेज मे यज्ञशाला बनवाई है। इसी से हम अनुमान लगा सकते हैं कि आर्य समाज और उसके सिद्धान्तो के लिए उनके मन मे कितनी निष्ठा है।

इस अवसर पर वहा मुझे सभा के लिए 7100 रु की थैली भी दी गई इससे पहले वेद प्रचार और सभा के दूसरे कार्यों के लिए आर्य समाज बरनाला की ओर से कुछ न कुछ सभा को मिलता ही रहता है। सभा के भवन निर्माण के लिए भी इस समाज ने सहायता की है। इस प्रकार पिछले एक वर्ष मे बरनाला से हमे आर्य समाज के द्वारा लगभग 21280 रु प्राप्त हो चुका है। बरनाला के आर्य भाईयो ने मुझे यह आश्वासन भी दिया है कि यदि सभा के अधिकारी कुछ समय निकाल कर बरनाला आए तो वह सभा भवन निर्माण के लिए कुछ धन वहा से इकट्ठा करा देवेंगे। प्रि विमला छाबडा ने भी सभा के लिए कुछ धन देने का वायदा किया है। और वह मुझे बुला रही हैं कि वहा जाकर वह रुपया ले आऊ।

यह सब कुछ मैंने इसलिए लिखा है कि दूसरी आर्य समाजो को भी पता चले कि बरनाला वाले क्या कर रहे है इसी प्रकार यदि दूसरी आर्य समाज भी सभा की सहायता करे तो सभा की आर्थिक कठिनाई दूर हो सकती है। मैं बरनाला के सब आर्य भाईयो और बहनो का धन्यवाद करता हू कि वह अपने नगर मे आर्य समाज के प्रचार के लिए इतने सक्रिय हैं। विशेष रूप से समाज के प्रधान श्री ओम्प्रकाश जी गुप्ता का धन्यवाद करता हू उनके नेतृत्व मे आर्य समाज बरनाला बहुत प्रगति कर रही है जिन दिनो हम वहा गए थे तो बहन कमला आर्या जी ने वहा स्त्री आर्य समाज की भी विधिवत स्थापना की थी। मुझे आशा है अन्य आर्य समाजे भी इस आर्य समाज के कार्य से प्रेरणा लेंगी।

—वीरेन्द्र

# एक और साथी चला गया

जो भी इस संसार मे आता है, एक न एक दिन उसे जाना ही पड़ता है। यह जानते हुए भी जब कोई अपना निकट सम्बन्धी या साथी चला जाए तो उसका दुःख बहुत होता है। यह और भी अधिक हो जाता है यदि उसकी जगह लेने वाला कोई न मिले।

आर्यसमाज शक्ति नगर अमृतसर के प्रधान श्री जगदीश राज मेहरा उन व्यक्तियो मे से थे जिन पर हम गर्व कर सकते थे। परमात्मा ने उन्हे बहुत दिया था फिर भी वह अत्यन्त सादा जीवन व्यतीत करते थे और समाज सेवा मे अपना समय गुजारते थे। उनके पास आया कोई भी व्यक्ति कभी खाली हाथ नही जाता था। प्रत्येक व्यक्ति के साथ उनका मेल मिलाप था। किसी के साथ लड़ाई नही थी। कोई मतभेद नही था और हर समय आर्य समाज और उसके साथ समूची हिन्दू जाति की सेवा के लिए वह तैयार रहते थे। दिन रात काम करते करते उन्होने अपना स्वास्थ्य बिगाड लिया था। दो मास हुए जब उन्हे दिल का दौरा पड़ा। कुछ देर के बाद ठीक हो गए लेकिन फिर काम शुरू कर दिया। शिवरात्रि के दिन अमृतसर से जो जलूस निकाला उसे सफल बनाने के लिए उन्होने दिन रात एक कर दिया और वही मेहनत उन्हे ले गई। जब मैं कहता हू कि उनका स्थान लेने वाला मिलना कठिन है तो अकारण ही नही कहता। वास्तविकता यही है कि उनके जैसे मनुष्य आजकल कम मिलते हैं। लेकिन होता है वही जो परमात्मा को स्वीकार होता है। इसलिए हमे इसे भी सहन करना पडेगा। उन्हे यदि हम कोई सच्ची श्रद्धांजलि भेंट कर सकते हैं तो यही कि जो काम वे अधूरा छोड गए हैं, उसे पूरा करें और उनकी तरह देश धर्म और समाज की निष्काम सेवा करना सीखें।

—वीरेन्द्र

## महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी व्याख्यान माला

# दयानन्द, गांधी और मार्क्स

व्याख्याता—श्री डा. प्रभाकर माचवे निदेशक भारतीय भाषा परिषद्, कलकत्ता

### महात्मा गाधी

(10 फरवरी से आगे)

1931 मे जब रोम्या रोला गाधी से मिले तो उन्होने अपने एक मित्र को लिखा। उनका मन निरन्तर प्रयोग करता जाता है। उनकी कर्मण्यता मे एक सीधी रेखा नही होती। दस साल पहले उन्होने क्या कहा, उससे आज उन्हे जाचना ठीक नही होगा।' वे जब कहते थे कि—स्वराज्य' की लड़ाई और पाखाना सफाई मे सम्बन्ध है', तो वे सिर्फ चौकाने वाले शब्द मात्र नही थे। वे जीवन को एक समग्र इकाई की तरह मानकर चलते थे। उनके लिए शरीर, मन और आत्मा दस्त' 'दिल और दिमाग' (हेड, हार्ट एण्ड हैंड) तीन अलग-अलग चीजें नही थी। ज्ञान-भक्ति-कर्मयोग का समन्वय ही उनका सच्चा जीवनयोग था।

गाधी में पूर्व और पश्चिम की विचार धाराओ का विलक्षण मिश्रण मिलता है। दयानन्द पश्चिम-विरोधी थे धार्मिक दृष्टि से। वैदिक धर्म उनकी दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ था। इस्लाम और ईसाई धर्म का इसी कारण से खडन करते हैं। पर गाधी सर्व-धर्म समभाव लेकर चलते हैं। गाधी की दृष्टि मे मानव अपूर्ण है, उसके बनाए सब धर्म अपूर्ण हैं। यह हर्फे आखिर मानने वाले कट्टरपन्थी धर्मों के 'फण्डामेटलिज्म' का सीधा ज्वाब था। इस तरह का एकमात्र सत्य मेरे पास है, और सब विश्वास असत्य है, मानना अय्यातुला खोमेनी या हिटलर या तत्सम अविवेक पर आश्रित अनुदार विचारो को जन्म देता है।

यहा गाधी जी के राजनैतिक दर्शन के कुछ सिद्धान्तो को जानना जरूरी है। पाल पावर ने गाधी की 'राष्ट' सम्बधी विचारधारा का विश्लेषण इन शब्दो मे किया है कर्म या श्रम पृथ्वी और जीवन का नारी पक्ष गाधी जी के समाज दर्शन के तीन प्रधान प्रतीक हैं, (एस, एम नेहरू के जर्मन लेख, डाई सोजियालिडी इन स्टाटे गाधीज) यहा नारी तत्व से तात्पर्य है करुणा या समन्वय से। कभी-कभी गाधी राष्ट्र शब्द का प्रयोग समाज व्यवस्था के अर्थ मे करते थ। वे कभी कभी एक समान इतिहास और नियति वाली जनता की इकाई को राष्ट्र कहते थ विन्स्टन चर्चिल जैसे ब्रिटिश भारत मे अनेक भाषाओ, धर्मों, पन्थो के कारण कई राष्ट्र देखते थे पर गाधी सब भारतीयो को एक ही राष्ट्र का अग मानते थे, उनके निकट राष्ट्रीयता केवल राजनैतिक विचारधारा नही बल्कि भौगोलिक-सास्कृतिक अभिव्यजना थी।'

एक ओर उदारमतवादी यूरोपीय राजनीतिज्ञ हैं जो फ्रेंच राज्य-क्रान्ति के बाद जन-जन के 'स्वतन्त्रता' समता, बन्धुता के नारे का प्रधान मानते थे। दूसरी ओर इटली के ग्युसेपे मैजिनी का अन्तर्राष्ट्रीयता पर आधारित उत्तरदायित्व का सिद्धान्त था। आयरलैंड के डी वैलेरा के या जापानी राज भक्तिपूर्ण राष्ट्र प्रेम से गाधी का सिद्धान्त भिन्न था। एक ही देश मे अनेक सास्कृतिक इकाईयाँ होने पर भी उनका एक राष्ट्र बन सकता है वह बीसवी सदी की राष्ट्रीयता की कल्पना गान्धी जी को पसन्द थी। 'माडर्न रिव्यू के अक्तूबर 1953 क अक मे एण्टनी एलेनजिट्टम ने 'ग्युसेपे मैजिनी और महात्मा गाधी' के बीच मे तलना और समानता की चर्चा की है। गाधी ने 'इण्डियन ओपीनियन' के जून 27, 1908 के अक मे अमेरिका का उदाहरण देकर लिखा था कि वहा भी तो कई तरह के लोग कई धर्म, वर्ण-भाषाए बोलने वाले हैं जो सयुक्त राष्ट्र बन गए हैं। भारत के लिए वह क्यो सम्भव नही ? जब लार्ड बर्कनहेड मे कहा कि भारत राष्ट्र नही हैं तब 'यग इण्डिया' मे जुलाई 23, 1925 के अक ने गाधी जी ने साग्रह लिखा—'हमारी दृढ धारणा है कि सारे व्यवहारिक मामलो मे भारत एक राष्ट्र है।

सच्ची बात यह थी कि गाधी जी कभी भी केवल भौतिक जगत् उसके सैन्य, शस्त्र, सत्ता पर आधारित शक्तिशाली राष्ट्र तन्त्र मे विश्वास नही करते थे। उनके विचार से ऐसे राष्ट्र का कोई अर्थ नही था, जिसका आधार आध्यात्मिक न हो। जिसके पीछे परमात्मा का अधिष्ठान न हो। अत उनके विचार से आदर्श राज्य-राम-राज्य ही हो सकता था। वे विकेन्द्रीकरण वाले ग्राम-राज्य मे विश्वास नही करते थे। वे पूर्णत अराजकवाद में विश्वास नही करते थे। टालस्टाय की तरह वे राष्ट्रहीन अवस्था दुनिया में हो जाएगी ऐसा नही मानते थे। कम्युनिस्टो की तरह वे जन-जातियो पर आधारित छोटे-छोटे राष्ट्रो की आत्म स्वतन्त्रता वाली बात भी सही नही मानते थे। पी सी. जोशी न उनके इस सम्बन्ध मे विचार विनिमय प्यारे लाल की 'महात्मा गाधी—पूर्णाहुति' ग्रन्थ मे विस्तार से दिया गया है। वे प्राचीन धर्म राज्य के बदले प्रजा राज्य चाहते थे। वे राजा जैसे किसी एक व्यक्ति सस्था मे विश्वास नही करते थे। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय मे 1916 मे उनका राजाओ की वेश-भूषा पर कड़ा भाषण इसका प्रमाण है कि वे उस तरह के ऐश्वर्य-प्रदर्शन और सामन्ती वैभव विलास को गलत मानते थे।

गाधी धर्म सस्था और राष्ट्र सस्था के एकीकरण के विरोधी थे। पाप हो या दलाई लामा, गाधी यह मानने ने इन्कार करते थे कि राष्ट्र का सूत्र किसी धर्म प्रचारक के हाथो मे हो। यो गाधी महाभारत के इस वचन मे विश्वास करते थे। असाधुश्चैव पुरुषो लभते शीलम् एकदा।' (12-259 11) हर पापी को भविष्य मे सन्त बनने की आशा है। इस कारण से वे ईसाईयो के इस मत के बहुत निकट थे कि पाप से घृणा करो न कि पापी से, उनके लेखे राष्ट्र जैसी सस्था मे अपने आप कोई सदगुण या दुर्गुण नही छिपे हैं परन्तु उसके उपयोग पर यह निर्भर करता है कि क्या परिणाम निकलता है। यो राष्ट्र भी एक उपकरण मात्र है। मैक्स वेबर के कथन के बहुत करीब गाधी जी का यह मत विश्वास था कि 'राष्ट्र एक तान्त्रिक साधन मात्र है, वह अपने आप मे कोई मूल्य या साध्य नही।'

टी एच ग्रीन आदि पाश्चात्य नीतिशास्त्रज्ञ राष्ट्र की नैतिक जिम्मेदारी की बात करते हैं। पर गाधी जी राष्ट सस्था को ऐसी कोई इयत्ता या महत्ता नही देते। गाधी जी जन-साधारण मे विश्वास करते हैं और इस कारण से प्रत्येक व्यक्ति के अच्छे होने पर जोर देते हैं। वे नही मानते कि राष्ट्र जैसी कोई सत्ता दण्ड के सहारे मनुष्य मात्र को सुधार सकती है। वे इसी कारण से ग्राम पचायत से शुरू करना चाहते हैं। छोटी-छोटी इकाईयो से वे अपना आदर्श राज्य बनाते हैं। उनके लेखे सत्य और अहिंसा व्यक्तिमात्र का कर्तव्य और धर्म है। उसी मे से आगे चलकर राष्ट्र बनते है जो अच्छे और बुरे मार्गों का और नीतियों का अनुसरण करते हैं। इसलिए राष्ट्र सुधर सकते हैं। अच्छे या बुरे हो सकते हैं और यह सब व्यक्ति के सुधार पर निर्भर करता है।

गाधी जी का साम्यवाद के सम्बन्ध में क्या रुख था और साम्यवादी उन्हे क्या क्या समझते रहे, यह दर्शनीय है। गाधी जी ने गत महायुद्ध के समय जेल यात्रा मे कार्ल मार्क्स के 'दास कैपीटल और एगेल्स, लेनिन, स्तालिन आदि की कुछ किताबें पढी। परन्तु मार्क्सवादी पार्टियों के भारत मे और भारत के बाहर के कारनामों से वे बिल्कुल अनभिज्ञ रहे हो, ऐसा नहीं माना जा सकता। भारत की कम्युनिस्ट पार्टी भी कभी उन्हे ग्रामीण, प्रतिक्रियावादी, कभी पूजीवादियों का एजेन्ट और बाद मे महान् राष्ट्रीय नेता कहती रही।

गाधी जी 1917 वाली रूस की अक्तूबर क्रान्ति के बाद कम्युनिस्ट विचार धारा के प्रति दो तीन तरह के रुख रखते रहे एक तो उस साम्यवाद से भारत को कोई खतरा नहीं है। दूसरे सोवियत कम्युनिज्म के बारे में हम बहुत कम जानते है, तीसरे, कम्युनिज्म मे निहित हिंसा, नास्तिकता और वर्ग युद्ध के सिद्धान्त का विरोध। 1914 मे गाधी जी को सोवियत रूस से निमन्त्रण मिला था, वे यहा के स्वतन्त्रता आन्दोलन की सहायता करना चाहते थे। परन्तु गाधो जी ने उसे अस्वीकार कर दिया। 'यग इण्डिया' मे उन्होने लिखा, 'मुझे किसी भी प्रकार के हिंसक उद्देश्य के लिए उपयोग मे लाना असफल होगा। 1928 मे गाधी जी ने कहा, 'मैं स्वीकार करता हू कि मुझे बोल्शेविज्म का पूरा अर्थ समझने मे नही आया हैं। मुझे बताया गया है कि यह वाद वैयक्तिक सम्पत्ति का नाश चाहता है। अपरिग्रह के नैतिक आदर्श का अर्थ नीति के क्षेत्र मे प्रयोग ही शायद यह विचारधारा थी। यदि यही काम शान्ति-पूर्ण तरीकी से किया जाए तो वह आदर्श बात होगी, परन्तु जहा तक मैं जानता हू बोल्शेविक विचारधारा हिंसा शक्ति से परहेज नही करती। उलटे वैयक्तिक-सम्पत्ति के विनाश की पूरी अनुमति देती हैं। यदि यह सच है तो ऐसा बोल्शेविक राज अधिक समय तक नही सकेगा। मेरा दृढ विश्वास है कि हिंसा पर आधारित कोई भी चीज चिरस्थायी नहीं हो सकती, परन्तु इस विचारधारा के पीछे लेनिन जैसी महान् आत्माओ और अनेक नर-नारियो का त्याग और बलिदान है और वह व्यर्थ नही जाता।

(क्रमश)

# पहेली जीवन और मृत्यु की

ले —श्री यशपालजी आर्य बन्धु आर्य निवास चन्द्रनगर मुरादाबाद

अनादि काल से मानव जीवन और मृत्यु की पहेली को सुलझाने में लगा है। पर वह इसे सुलझा पाया है कि नहीं—यह कौन बता सकता है। न जाने जिन्दगी और मौत के कितने दस्तावेज वह लिख चुका है। पर फिर भी कुछ ऐसा लगता है कि जैसे अभी भी वह दास्ता अधूरी ही हो। न जाने वह इसे पूरा कर भी पाया कि नहीं? फिर भी इतना तो अवश्य है कि प्रत्येक दिन घटने वाला प्रत्येक जन्म तथा प्रत्येक मृत्यु मानव मस्तिष्क को कुछ न कुछ सोचने के लिए बाध्य कर ही देते हैं कि आने वाला कहा से आया और जाने वाला कहा चला गया? आश्चर्य तो यह है कि न तो आने वाला ही कोई कुछ बता के देता है और न ही जाने वाला। लगता है कि हर जन्म और हर मृत्यु मानव को चुनौती दे रहा हो कि अपनी बुद्धि पर गर्व करने वाले मानव यदि तुझ मे दम है तो पहेली को सुलझाओ। पर मानव है कि चुप चाप इस चुनौती को पिये चले जा रहा है मानो उसकी ऊहा ही कुण्ठित हो गई हो, उसका पौरुष ही क्षीण हो गया हो और मोहग्रस्त होकर इस पहेली को सुलझाने मे अपनी बेबसी प्रकट कर रहा हो। और समस्या वैसी की वैसी ही बनी है और शायद बनी भी रहे।

इस सब झमेले मे भी एक बात सत्य दिखाई देती है। वह यह कि ससार भर के प्राणी मृत्यु के साए तले जी रहे हैं। वेद भी मृत्युरीणे द्विपदा मृत्युरीणो चातुष्पदाम का उदबोध कर इसी तथ्य को प्रकट करता है। वस्तुत मृत्यु प्राणीमात्र पर शासन कर रहा है। मृत्यु के इस प्रबल शासन में प्राणी मात्र उससे त्रस्त है भय भीत हैं और उसके फौलादी पजो मे छूटना चाहते हैं। पर लाख हाथ पैर पटकने पर भी वह इसके लोहपाशो से बच नहीं पाते। कही कोई स्थान ऐसा नही जहा यह आकर न घर दबोचे। इसी भय से प्राणी त्रस्त हैं, भयभीत हैं। मृत्यु का भय प्राणी मात्र को मारे चले जा रहा है। वह उसे चैन से जीने भी नही देता। हर समय मृत्यु का खटका उसे लगा रहता है। न जाने किस क्षण किस स्थिति में आ दबोचे।

पता नहीं मृत्यु इतनी भयावह क्यो? जीवन इतना सुहावना क्यो है? क्या नही प्राणी मरने से क्यो घबराता है? उसे जीने की लालसा क्यो है? उसे जीवन से मोह क्यों है और मृत्यु से घृणा क्यो है? आखिर कोई बात तो अवश्यमेव ऐसी है कि जिसके कारण वह मरना नही चाहता? क्या मृत्यु वस्तुत दु खदाई है भयानक है एव कष्टदायक है? यही विचारणीय विषय है। क्योंकर महर्षि दयानन्द ने उल्लासपूर्वक मृत्यु का आलिंगन किया था? क्योंकि अनगित बलिदानी धर्म और देश की बलिवेदी पर हसते हसते चढ़ गए।

यदि मृत्यु भयानक होती तो महर्षि क्यो लिखते कि 'मृत्यु से डरना मूर्खों का काम है और फिर सन्त कवि कबीर क्यो लिखते कि—

जिस मरने से जग डरे,
मेरे मन आनन्द।
कब मरिये कब पाइये
पूरन परमानन्द।

और जब मृत्यु से डरना मूर्खता है तो फिर प्राणी मात्र उससे डर क्यो रहे है और यदि नहीं डरना चाहिए तो फिर डर लगता ही क्यो है और क्या इस डर से छुटकारा पाया जा सकता है कि नही (क्योकि मृत्यु से तो छुटकारा पाना असम्भव है)।

न जाने जन्म और मरण का यह सिलसिला कब से चलता चला आ रहा है और न जाने कब तक यू ही चलता भी रहेगा? किस की व्यवस्था से और कैसे हो रहा है यह सब? और क्या यह अति भयानक लगने वाली मृत्यु वस्तुत ऐसी ही भयानक है? क्या यह सर्वथा दुर्जेय है? क्या इस पर विजय नही पायी जा सकती? आखिर मननशील प्राणी होने के नाते मानव मे यह सब प्रश्न उठने स्वाभाविक ही हैं। वैसे न उठ तो किसी की मृत्यु को देखकर उठ सकते हैं। जैसे कि बालक मूलशकर के मन मे उसकी बहन की मृत्यु से उठ थे।

मननशील मानव प्राय सोचा करता है कि मैं कहा से आया और कहा जाना है मेरी जिन्दगी का लक्ष्य क्या है? क्या यह मृत्यु ही मेरी जीवन की अ तम साधना है? क्या यही मेरा ध्येय है। क्या इसके पश्चात जीवन का अ त है और यदि इतना सा ही जीवन है तो फिर मानव इसके लिए इतना बेचैन क्या है? बेताब क्यो है? और फिर यह मरना किसका है शरीर क या आत्मा का?

अनादि काल से मानव अपने अपने ढग से ऐसी समस्याओ पहेलियो पर विचार करता आया है और आज तक करता चला आ रहा है। जिसे सही हल मिल जाता है वह सन्तुष्ट हो जाता है और जिसे नही मिल पाता वह परेशान भटकता रहता है। पता नही उसन कैसी कैसी कितनी मा यताए घ रखी हैं मृत्यु के सम्बन्ध मे? न जाने उसने कैसे कैसे दृष्टिकोण अपना रखे हैं मृत्यु के सम्बन्ध मे? किन्तु इतना तो अवश्य है कि हमारी अधिकाश मान्यताए असत्य पर आधारित होती हैं। हम मृत्यु का जिस प्रकार का प्राय चित्रण करते हैं और जैसी कल्पनाए करते है वे यथार्थ से कोसो दूर होती हैं। यथार्थ विचारधारा है जो उच्च स्वर से उद्घोष करती प्रतीत होती है कि—मत डरो मत डरो, मृत्यु तुम्हारा कुछ नही बिगाड़ सकती।

मृत्यु के भय से छुटकारा कैसे पायें, इसे जानने के लिए हमे सर्वप्रथम मृत्यु के स्वरूप को समझना होगा। बिना इस के स्वरूप को जाने हम उसके भय से छुटकारा पा ही नहीं सकते और मृत्यु के भय से छुटकारा पाए बिना हमारा जीवन नीरस है। प्रत्येक क्षण भयभीत रहना भी कोई जीवन है? मृत्यु की आशका से जीवन जीना भी कोई जीना है? अत यह आवश्यक है कि हम मृत्यु के स्वरूप को ठीक से समझे। लेख के कलेवर को देखते हुए आगामी लेख मे मृत्यु के स्वरूप की विवेचना करेंगे

## एक सराहनीय और प्रेरणाप्रद कार्य

लुधियाना के श्री ओमप्रकाश जी प्रधान आर्य समाज फील्ड गज ने आर्य मर्यादा को अपना सहयोग देना स्वीकार किया है, उन्होंने अभी अभी 6 नये ग्राहक बनाकर एक बहुत प्रशसनीय कार्य किया है और भी ग्राहक बनाने का प्रयत्न कर रहे हैं। अगर इसी प्रकार से अन्य आर्य समाजो के अधिकारी भी पाच पाच दस दस ग्राहक बनाकर सभा को सहयोग दे तो आर्य मर्यादा म होने वाले घाटे को पूरा किया जा सकता है। मैं आशा करती हू कि अन्य भाई बहन भी श्री ओमप्रकाश जी से प्रेरणा लेकर आर्य मर्यादा के नये ग्राहक बनाकर हम अपना पूरा सहयोग देंगे।

—कमला आर्या महामन्त्री

## एक सराहनीय कदम

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के मुख पत्र आर्य मर्यादा का ऋषि बोध विशेषाक जो इस बार छापा गया है, एक बेहद सराहनीय कदम है। इसकी जितनी भी प्रशसा की जाए कम है। इसमे अधिकतर आर्य समाज के दिवगत महापुरुषो के लेख इस अक की एक विशेषता है। इस अक मे आर्य समाज के अतीत को पुनर्जीवित करने का जो प्रयास किया गया है उसके लिए मैं आर्य मर्यादा के इस अक को छापने मे सहायक व्यक्तियो को इस पत्र द्वारा बधाई देता हू और आशा करता हू कि भविष्य मे भी इसी तरह के प्रयासो द्वारा आर्य जगत को झझोड़ते रहगे।

—कमल किशोर मन्त्री आर्य समाज वेद मन्दिर,
भार्गव नगर जालन्धर

## ऋषि बोधोत्सव

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना में ऋषि बोधोत्सव (शिवरात्रि) का पर्व बड़ी श्रद्धा और उत्साहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर 15 से 17 फरवरी 85 तक तीन दिन साम वेदो के मन्त्रो द्वारा यज्ञ किया गया। जिसे पं. सुरेन्द्र कुमार जी तथा पं. जगदीशचन्द्र जी वसु पानीपत वालो सम्पन्न कराया। यज्ञ मे बहुत से आर्य भाई बहन और दम्पति यजमान बने। 17 फरवरी को विशेष कार्यक्रम था— जिसमे पं. जगदीश चन्द्र जी वसु पं. सुरेन्द्र कुमार जी शास्त्री तथा आर्य कन्या पाठशाला की कन्याओ तथा आर्य माडल स्कूल के बच्चो ने ऋषि महिमा गुणगान किया और बहुत से गणमान्य आर्य बन्धुओ ने भी अपने विचार रखे। उसके बाद दोपहर 1 बजे विशाल ऋषि लंगर का वितरण किया गया।

—मतवालचन्द मन्त्री

## ऋषि बोधोत्सव सम्पन्न

स्त्री आर्य समाज अड्डा होशियारपुर मे ऋषि बोधोत्सव के उपलक्ष मे महा गायत्री तथा चतर्वेद शतक यज्ञ 13 फरवरी से 20 फरवरी तक किया गया श्री म यन्देव जी विद्यालंकार और श्री पं. ओमप्रकाश जी के प्रवचन भी होते रहे। पूर्णाहुति आदरणीय बहन मीराजी यति (वानप्रस्थाश्रम) जी की प्रधानता मे हुई। श्री सीताराम जी मदनलाल जी (वानप्रस्थाश्रम) तथा बट राम जी के भजन हुए परे कार्यक्रम ने जनता को बहुत प्रभावित किया। श्री सालीगराम पराशर ने भी बड़ी विद्वता से यज्ञ सम्पन्न कराया।

शान्ति पाठ के उपरान्त जलपान के साथ यज्ञ सम्पन्न हुआ।

—डा विद्यावती

## भटिंडा मे शिवरात्रि पर्व मनाया गया

आर्य समाज मन्दिर मन्त्री (?) सिरकी बाजार भटिण्डा मे ऋषि बोधोत्सव शिवरात्रि का पर्व बड़े उत्साह एव धूम धाम से मनाया गया। 16 फरवरी 85 को शहर के मुख्य भागो मे प्रभात फेरी निकाली गई। 17 फरवरी को आर्य समाज मन्दिर मे बृहद् यज्ञ किया गया जिसमे 108 गायत्री मन्त्रो द्वारा आहुति दी गई। तत्पश्चात श्री रामानन्द व बजलाल शर्मा न शिवरात्रि के महान पर्व पर स्वामी दयानन्द के जीवन पर प्रकाश डाला। छोटी 2 बालिकाओ ने सुमधुर गीत गाए। इस अवसर पर प्रीति भोजन का भी सुन्दर आयोजन किया गया जिस मे लगभग 500 व्यक्तियो ने भोजन किया।

—रामचन्द मन्त्री

## आर्य समाज तपा में ऋषिबोधोत्सव सपन्न

स्थानीय आर्य समाज तपा की ओर से ऋषि बोधोत्सव बहुत धूमधाम के साथ मनाया गया। सर्वप्रथम श्री चन्द्रराम जी शास्त्री ने हवन यज्ञ कराया। तत्पश्चात सास्कृतिक कार्यक्रम एस एन हाई स्कूल आर्य महिला कालेज एव स्वामी श्रद्धानन्द माडल स्कूल के विद्यार्थियो ने ऋषि महिमा एव प्रभु भक्ति के मधुर गीत गाकर पेश किया। उसकी अध्यक्षता आर्य समाज के भतपूर्व प्रधान जी हरबसलाल जी ने की। आर्य समाज के प्रधान डा राजकुमार ने टक यूनियन तपा से 500 रुपये के तप्पड लेकर आर्य हाई स्कूल के मुख्याध्यापक को भेंट किए आर्य समाज के प्रधान डा राजकुमार ने अपनी तरफ से कार्यक्रम मे भाग लेने वाले विद्यार्थियो को 100 रुपये के ईनाम एव सभी विद्यार्थियो को 200 रुपये के लड्डू बांटे। इस सारे कार्यक्रम का सचालन आर्य समाज के मन्त्री श्री चन्द्रराम आर्य ने किया तथा तीनो शिक्षण संस्थाओ के स्टाफ प्रबन्धक समिति विद्यार्थीगण एव डा समूह ने अपना पूर्ण सहयोग दिया। तदनन्तर आर्य समाज तपा मे ही शहर के विशिष्ट व्यक्तियो एव सभी सदस्यो ने प्रीति भोज किया।

—चन्द्रराम आर्य मन्त्री

## शहीद भगतसिंह नगर जालधर मे ऋषि-बोधोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज शहीद भगतसिंह नगर मे 17 फरवरी रविवार प्रात 10 बजे से 12 बजे तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया जिसमे विशेष यज्ञ के पश्चात आर्य समाज के प्रधान श्री मूलखराज आर्य ने स्वामी दयानन्द जी के जीवन पर प्रकाश डाला और स्कूल के बच्चो ने वेद मन्त्रो का उच्चारण किया तथा आर्य समाज के नियम सुनाने वाले बच्चो को ईनाम दिया गया। आर्य माडल स्कूल का सारा स्टाफ तथा स्कूल के बच्चो ने भी भाग लिया उसके पश्चात आई हुई जनता का हलवा के यज्ञ शेष द्वारा स्वागत किया गया और शान्ति पाठ के पश्चात कार्यक्रम समाप्त हुई।

—रणजीत आर्य मन्त्री

## वार्षिक चुनाव

आर्य समाज शिलोडी गेट पटियाला का वार्षिक चुनाव निम्न प्रकार हुआ—

प्रधान—श्री देवदत्त साहिर मन्त्री डा रामलछमन दास कोषाध्यक्ष— श्रीमती कृष्णा जोशी।

## ऋषिबोधोत्सव

आर्य समाज रायकोट की ओर से आर्य समाज मे ऋषि बोध उत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। माननीय वैद्य धर्म प्रकाश जी ने ऋषि जीवन पर बहुत सुन्दर शब्दो मे प्रकाश डाला। श्री भीमसेन जी प्रधान आर्य समाज ने भजन सुनाया। श्री जयप्रकाश जो सह मन्त्री ने आने वाले सभी सज्जनो का धन्यवाद किया। आर्य समाज रायकोट की ओर से रायकोट के निकट झोरडा गाव मे ऋषि बोध उत्सव के पर्व पर पण्डित हरबन्सलाल जी के गृह पर पारिवारिक सत्सग हुआ। गाव के लोगो ने काफी दिलचस्पी दिखाई। हवन के साथ जानकर सभी बहुत प्रसन्न हुए। यह हवन श्री सतीश कुमार मन्त्री आर्य समाज रायकोट ने करवाया।

—सतीश कुमार मन्त्री

## ऋषि बोध उत्सव

स्थानीय आर्य समाज भवन अजमेर मे रविवार दिनाक 17 फरवरी 85 को ऋषि बोध दिवस समारोह पूर्वक श्री बुद्धि प्रकाश जी आर्य की अध्यक्षता मे मनाया गया। समारोह का शुभारम्भ बृहद यज्ञ के साथ श्री आचार्य गोविन्दसिंह के सयोजकत्व मे हुआ। समारोह मे डा बद्रीप्रसाद जी पचोली श्री देवरत्न जी आर्य श्री दत्तात्रेय जी आर्य प्रधान आर्य समाज अजमेर ने ऋषि दयानन्द जी के प्रेरणादायी जीवन पर अपने उद्गार व्यक्त किए। डी ए वी उ मा विद्यालय सुगन तामग स्कूल जियालाल आर्य कन्या स्कूल दयानन्द बाल सदन के बालक बालिकाओ के मधुर भजन हुए।

इस अवसर पर आर्य समाज अजमेर के प्रधान श्री दत्तात्रेय जी वाब्ले ने हिन्दू समाज की कुरीतियो को दूर करने का आह्वान किया।

अध्यक्षीय भाषण से श्री बुद्धिप्रकाश जी आर्य ने आमूमी काड की ओर इगित करते हुए युवको को आह्वान किया कि वे सच्चे अर्थो मे देशभक्त बन और स्वामी जी के बताए मार्ग दर्शन का अनुकरण कर। अन्त मे आर्य समाज के उपमन्त्री श्री गोविन्दसिंह जी ने आगन्तुक महानुभावो के प्रति आभार व्यक्त किया। अन्त मे प्रसाद वितरण के साथ समारोह का समापन हुआ।

—मन्त्री आर्य समाज

## आर्यसमाज फरीदकोट में वेद प्रचारकी धूम

आर्य समाज फरीदकोट मे दिनाक 18 फरवरी 85 को आर्य प्रतिनिधि सभा जालन्धर से श्री रामनाथ सिद्धान्त विशारद महोपदेशक पधारे। लगातार आठ दिन फरीदकोट मे ज्ञान की गगा बहती रही। इसी बीच आर्य घरो मे पारिवारिक सत्सग हुए, जिनमे सैकड़ो की उपस्थिति होती रही। जिसका बहुत ही अच्छा प्रभाव श्रोताओ पर पड़ा। इन्ही दिनो मे प्रात डी ए वी कन्या विद्यालय मे तीन दिन विशारद जी के प्रभावशाली उपदेश हुए। साथ के आस के पुरोहित श्री आर्य भवन बिप्पल सगीत विशारदके ओजीले एव अत्यन्त मनोहर भजन होते रहे, जिनसे श्रोताओ के मन झूमने लगे। इन सत्सगो मे सभी मतावलम्बियो ने बड़ी श्रद्धा पूर्वक भाग लिया।

इसमे पूर्व शिवरात्रि तथ ऋषि बोधोत्सव पर पं. धर्मवीर शास्त्री जी साधु आश्रम होशियारपुर का ऋषि जीवन पर बहुत ही ओजीला एव शिक्षाप्रद भाषण वद मन्त्रो द्वारा हुआ, श्रोताओ से आर्य समाज का हाल खचा खच भरा हुआ था सभी ने पं जी की भूरि भूरि प्रशसा की और भविष्य मे भी इसी प्रकार ऋषि बोधोत्सव मनाने का पं जी से आग्रह किया। साथ ही पं आर्य भूषण पिप्पल के सुरील कण्ठ से सुन्दर सुन्दर भजन हुए। जिनमे से एक भजन था——

पं पृथ्वीसिंह आजाद का बनाया हुआ ऐसी ऐसी हमारी कौन कौन पूछता बात इस भजन का बहुत ही प्रभाव श्रोताओ पर पड़ा।

—दर्शनलाल वर्मा

लुधियाना के प्रसिद्ध आर्य समाजी श्री देवराज जी बस्सर आर्य गर्ल्ज हायर सकण्डरी स्कूल की छात्रा कु कचन बाला को सत्य व भूषण की 1984 की परीक्षा मे प्रथम आने पर चांदी का मैडल भेंट करते हुए। साथ मे सभा की महामन्त्री कमला आर्या भी दिखाई दे रही हैं।

# ऋषि दयानन्द की फिल्म क्यों न बनें

ले.—श्री डा. सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार

मेरे एक मित्र ने मुझसे कहा कि आर्य समाजियों के साथ जब कोई बाहर का लड़ने को नहीं मिलता तब वे आपस में लड़ने लगते हैं। लड़ना उनकी नस-नस में भरा है। कोई जरूरी बातों पर ही नहीं, गैर जरूरी बातों पर भी उलझा करते हैं। वे कहने लगे—क्या मामूली-सी बात है। ऋषि दयानन्द की फिल्म बने या न बने—इस मामूली-सी बात पर आर्य समाज में दो दल हो गए हैं। एक दल ने सत्यार्थ प्रकाश का हवाला देना शुरू कर दिया है कि ऋषि ने किसी राजा को कहा था कि तुम्हें लज्जा नहीं आती कि रामलीला करके अपने पूर्वजों को अपने सामने हुड़दंग मचाते तथा श्री कृष्ण जी महाराज को गोपियों के साथ रास लीला करते देखते हो। महर्षि दयानन्द ने जो कुछ कहा था, सत्य कहा था, परन्तु महर्षि के जीवन की फिल्म बनाने से उस का दूर का भी सम्बन्ध नहीं है। मुझे कोई समझा नहीं सका कि इन दोनों बातों का आपसी क्या सम्बन्ध है। रामलीला में रावण के दस सिर दिखाए जाते हैं हनुमान जी की पूंछ दिखाई जाती है, बन्दरनुमा वानरों की सेना दिखाई जाती है, कृष्ण लीला में गोपियां दिखाई जाती हैं क्या महर्षि दयानन्द की फिल्म में ऐसा कुछ कल्पित कारनामा दिखलाया जाएगा या विधर्मियों से शास्त्रार्थ, शास्त्रार्थ में विजय, पाखण्ड खण्डिनी पताका का कुम्भ पर फहराना परिव्राजकाचार्य स्वामी विरजानन्द जी से अध्ययन, पोप मत खण्डन, चार घोड़ों की बग्घी को रोकना विश्व भर में वैदिक धर्म का प्रचार, आर्य समाज के दस नियमों की व्याख्या देश-विदेश में वैदिक धर्म का प्रचार—यह सब कुछ दिखलाया जाएगा, ऋषि दयानन्द की फिल्म बनने में आपत्ति कर्त्ताओं को क्या आपत्ति है? अगर यह आपत्ति है कि उसमें विधर्मियों से शास्त्रार्थ मत मतान्तर का खण्डन तपस्यामय जीवन ब्रह्मचर्य का उपदेश वेदों का महत्व आदि आर्य समाज का दृष्टिकोण कलात्मक ढंग से दिखलाया जाएगा तो जितनी जल्दी यह फिल्म बने उतना अच्छा। आर्य समाज का प्रचार पहले ही रुका पड़ा है, इस प्रकार की फिल्म बनने से आर्य समाज के विचारों में जो निष्प्राण हो गए हैं कुछ प्राण तो आएगा। फिल्म में कल्पित पात्रों के माध्यम से ऋषि का जीवन दिखलाना आर्य समाज के सिद्धान्तों के विरुद्ध कैसे हो सकता है? शायद आपत्तिकर्त्ता यह चाहते हैं कि ऋषि दयानन्द कूद आएं तभी उनको सन्तोष होगा।

वाल्मीकि ने रामायण लिखी, कालिदास ने रघुवंश लिखा, तुलसीदास ने हिन्दी रामायण लिखी—ये सब क्या रामलीलाएं थीं। समय समय पर साहित्य अपना नया-नया रूप निखारता है ऋषि दयानन्द ने वाल्मीकि की रामायण के विषय में तो यह नहीं कहा कि यह रामलीला है जिसे पढ़कर हमें लज्जित होना चाहिए। जब वाल्मीकि रामायण लिखी गई या तुलसी रामायण लिखी गई तब पात्र तो नहीं थे। राम, लक्ष्मण सीता भरत शत्रुघ्न आदि पात्र क्या मसखरे खिलाड़ी थे। आज रामायण के अवशेष इण्डोनेशिया में पाए जाते हैं जिन्हें देखकर हम अपने पूर्वजों के गौरव को याद कर भाव-विभोर हो जाते हैं। कौन कहेगा कि वाल्मीकि या तुलसीदास की रामायण नहीं पढ़नी चाहिए। ये अपने साहित्य की अमूल्य निधियां हैं। इनमें जो खोट भरा हो उसे छोड़ दो, जो खरापन हो उसे ग्रहण कर लो।

बेकार का तूफान मचा रखा है कि ऋषि दयानन्द की फिल्म नहीं बननी चाहिए और वह भी महर्षि दयानन्द का हवाला देकर। ऋषि दयानन्द के समय तो फिल्म बनना शुरू ही नहीं हुआ था। जिस बात की निन्दा उन्होंने की उसकी सब निन्दा करते हैं परन्तु आर्य समाज के विचारों का प्रचार करने के लिए भी फिल्म न बनाई जाए—यह दकियानुसी विचार है और इसका ऋषि दयानन्द की विचार धारा से कोई मेल नहीं है। हां अगर कोई ऋषि दयानन्द को पूंछ लगा देता है या उन्हें बन्दरों की तरह उछल-कूद करते दिखाता है या उनके दस पन्द्रह सिर दिखाता है तब जरूर आपत्ति की गुंजाइश है।

जीवन में जो घटनाएं होती हैं उन्हें कलाकार चित्रों में खींच देता है उसे आर्ट कहते हैं। उन घटनाओं को जो लेखक पुस्तक रूप में ले आता है उसे जीवन चरित्र कहते हैं इन घटनाओं को जो क्रिया में परिणत कर देता है उसकी कृति को सिनेमा कहते हैं। ऋषि दयानन्द के जीवन का ऐसा चल-चित्र बनने में किसी को क्या आपत्ति हो सकती है ऐसा चल-चित्र तो बनना ही चाहिए।

# सुश्री मीरायति जी का पंजाब में प्रचार कार्य का विवरण

1 दिनांक 6-2-85 को आर्य समाज गोविन्दगढ़ मोहल्ला जालन्धर शहर के वार्षिकोत्सव के उपलक्ष में आयोजित यज्ञ में ब्रह्मा के आसन पर विराजमान हुईं। वह यज्ञ और उत्सव 10 फरवरी तक निरन्तर चलता रहा और प्रतिदिन उनके उपदेशामृत की वर्षा होती रही। इसी सन्दर्भ में महिला सम्मेलन की अध्यक्षता को भी उन्होंने सुशोभित किया तत्पश्चात्—

2 दिनांक 11-2-85 को आर्य गर्ल्ज हा. सै. स्कूल लुधियाना में इनका प्रवचन हुआ जिससे कन्यायें लाभान्वित हुईं।

3 12-2-85 को स्त्री आर्यसमाज श्रद्धानन्द बाजार लुधियाना में मनाए गए सीताष्टमी के पर्व में सम्मिलित होकर महिलाओं को आदर्श नारी सीता माता के चरण चिन्हों पर चलने की प्रेरणा दी।

4 12 फरवरी को प्रातः आर्य समाज सिविल लाईन्ज लुधियाना में हो रहे यज्ञ में सम्मिलित हुईं। पूर्णाहुति की।

5 13 फरवरी 85 को वे दीनानगर पधारीं और 14 तथा 15 को दयानन्द मठ दीनानगर में भाषण दिए। तथा 14-2-85 को दोपहर को श्री जनकराज जी के परिवार में यज्ञ तथा सत्संग में भाग लिया और साहित्य वितरण प्रचार का एक सुअवसर मिला और इस का प्रभाव बहुत ही अच्छा रहा।

दिनांक 15 फरवरी का प्रातः दस बजे श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द स्मारक कालेज में छात्रों को उपदेश दिया और वहां भी आर्य साहित्य वितरण किया।

6 दिनांक 16-2-85 को जालन्धर में मोहल्ला गोविन्दगढ़ में श्री ओमप्रकाश जी पुरी के सुपुत्र गौरव के जन्म दिन के उपलक्ष में यज्ञ हवन और उपदेश हुआ। इस अवसर पर उपस्थिति बहुत अच्छी थी और इस प्रकार आर्य परिवारों की देवियां वहां उपस्थित थीं।

7 दिनांक 17-2-85 को प्रातः आर्य समाज माडल टाऊन लुधियाना में शिवरात्रि का उत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया जिसमें बड़े सारगर्भित शब्दों में यति जी ने महर्षि दयानन्द जी के जीवन पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि ऋषि का नाम प्रारम्भ में मूलशंकर था। पुनः शुद्ध चैतन्य ब्रह्मचारी के नाम से जाने गए। जो फिर महर्षि दयानन्द के नाम से जगत प्रसिद्ध हुए। इन तीनों नामों की व्याख्या करके उनकी सार्थकता पर प्रकाश डाला।

8 इसी प्रकार आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना में उनका मनोहर उपदेश हुआ जिसमें उन्होंने शिव के शब्दों की व्याख्या की, मन्त्रमुग्ध कर दिया।

9 दिनांक 18-2-85 को यति जी जलालाबाद पधारीं यहां उन्होंने महर्षि दयानन्द माडल स्कूल में भाषण दिया तथा प्राईमरी स्कूल में भी उनका प्रवचन हुआ जिससे बच्चों पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा।

—

# उड़ीसा में आर्य समाज द्वारा वस्त्र वितरण

आर्य यति मडल के सदस्य श्री महाशय प्रेम प्रकाश जी बहुत दयालु, परिश्रमी एव आर्य समाज के विशिष्ट स्मारक हैं। आप पूज्य स्वामी ओमानन्द जी की प्रेरणा एव स्वामी धर्मानन्द जी उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा प्रधान के आग्रह पर उड़ीसा के निर्धन लोगो को आर्य समाज की ओर आकृष्ट करने तथा उनकी सहायता के लिए २ हजार से अधिक वस्त्र लेकर गुरुकुल आश्रम आमसेना पधारे। अनेक स्थानो मे घूम घूम कर उपदेश एव वस्त्र वितरण किया। शेष आयोजन गुरुकुल आमसेना मे फरवरी को सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर ५00 से अधिक निर्धन लोगो को कपड़े दिये गए। उसमे बहुत से कपड़े गर्म भी थे। कार्यक्रम मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमन्त्री श्री पृथ्वीराज शास्त्री भी उपस्थित थे, श्री महाशय प्रेम प्रकाश जी एव शास्त्री जी ने आर्य समाज के सेवा कार्य का परिचय दिया तथा स्वामी धर्मानन्द जी ने दानो महानु भावों का स्वागत किया तथा गुरुकुल के मुख्याध्यापक ने धन्यवाद किया। इस अवसर पर गुरुकुल के प्रबन्ध समिति के अधिकारी भी उपस्थित थे।

—स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती
सभा प्रधान

# ऋषि बोधोत्सव

गिदड़बाहा—आर्य समाज गिदड़बाहा के तत्वावधान मे महर्षि बोध पर्व बड़ी धूम-धाम से मनाया गया। प्रभात फेरी के पश्चात् स्थानीय वाल्मीकि मुहल्ला में हवन यज्ञ किया गया। यज्ञ के समय श्री अशोक आर्य ने हरिजन भाईयो को यज्ञोपवीत देते हुए उन्हे समान स्तर प्रदान किया। श्री मदनलाल आर्य ने इतिहास व वेदो के प्रमाणो के आधार पर हरिजनो को अछूत नहीं अपितु जाति का एक आवश्यक अग सिद्ध किया तथा आर्य समाज की ओर से वाल्मीकि मन्दिर का निर्माण पूर्ण करने के लिए आर्थिक सहयोग के अतिरिक्त मन्दिर के लिए वाल्मीकि रामायण भी भेंट की।

इस मौके पर पिछले वर्ष की भांति से श्री धर्मपाल जी श्री ... रघुवीरसिंह जी आदि ने भी मधुर भजनों द्वारा सब को मन्त्र मुग्ध करते हुए जन-जागृति के लिए आर्य समाज के प्रति आभार प्रकट किया।

—अशोक आर्य प्रचार मन्त्री

# मोरिण्डा में सामवेद पारायण यज्ञ

मोरिण्डा, 19 फरवरी—आर्यसमाज मोरिण्डा की ओर से यहां सामवेद पारायण महायज्ञ आज यहां पूर्णाहुति के साथ वैदिक धर्म के नारो के साथ सम्पन्न हो गया इस यज्ञ में नगर के सैकड़ो नर-नारियो ने बढ़-चढ़कर उत्साह से भाग लिया, इस शुभ अवसर पर ऋषि बोध उपलक्ष मे एक बहुत बड़ा समागम भी किया गया जिसकी अध्यक्षता वेदो के प्रकाण्ड पण्डित श्री आशुराम जी आर्य चण्डीगढ़ ने की। महर्षि दयानन्द जी सरस्वती के महान् जीवन पर प्रकाश डाला गया और भजन हुए। इस शुभ अवसर पर ऋषि लंगर का भी आयोजन किया गया। जिला आर्य सभा रोपड़ प्रधान श्री ओमप्रकाश महेन्द्र ने कहा कि इसी प्रकार के महान् यज्ञ रोपड़ जिला के दूसरे नगरों में भी आयोजित किये जाएं गे।

# अश्लील फिल्मों पर प्रतिबन्ध लगे

इस समय अश्लील फिल्मों की बाढ़ सी आ गई है, जिनके प्रदर्शन ने समाज को दूषित करके रख दिया है। कुछ फिल्में केवल बालिगों के लिए होती हैं, लेकिन देखते हैं नाबालिग बच्चे भी। अधिकांश फिल्मों में नारी के नग्न व मांसल अगों का प्रदर्शन किया जाता है। बलात्कार दृश्यों आदि को चटपटा दिखाई जाती है, जिससे बच्चे, युवक, प्रौढ़ आयु के समस्त व्यक्तियों में कामुकता की बीभत्स भावना का सचार होता है। आज के युग मे अपहरण बलात्कार, चोरबाजारी हमारे समाज को फिल्मो से ही मिल रही है, यही कारण है कि समाज मे नैतिकता प्रेम, लज्जा, आदर जैसे मानवीय गुणो का लोप हो गया है।

—राधेश्याम आर्य सुलतानपुर

स्वास्थ्य के लिए गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी को औषधियों का सेवन करें

**शाखा कार्यालय**
63 गली राजा केदारनाथ चावड़ी
बाजार देहली—110006
दूरभाष—269838

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन न 74250 (रजि. न पो जे एल 55)

वर्ष 16 अक 40 4 चत्र सम्वत् 2042 तदनुसार 17 मार्च 1985, दयानन्दाब्द 160 । एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपए

# पंजाब में आर्यसमाज के संगठन को शक्तिशाली बनाया जाएगा

## नवाँशहर में आर्य समाजियो के शिविर का निर्णय : पजाब में आर्य समाज की आवाज को उन बहरे कानो तक पहुंचाया जाएगा—जो उसे सुनने को तैयार नहीं।

## पंजाब राजार्य सभा की विधिवत स्थापना

(आर्य मर्यादा के विशेष प्रतिनिधि द्वारा)

नवाशहर, 11 मार्च—आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब द्वारा आयोजित आर्य शिविर जो 9 10 मार्च को नवाशहर में दो दिन पजाब की आर्यसमाज की समस्याओ पर विचार करता रहा—अत्यन्त सफल रहा है इसमे पजाब की भिन्न भिन्न आर्य समाजों के जो प्रतिनिधि सम्मिलित हुए थे, उन्होने आर्य समाज की समस्याओ और उसके समाधान पर अपने अपने विचार रखे। इस सम्बन्ध मे लगभग पच्चास सुझाव पेश किए गए—सभा के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने कहा कि जो सुझाव दिए गए हैं वह पजाब की सब आर्य समाजों को भेजे जाएगे ताकि वह उन पर विचार करके सभा को अपनी प्रतिक्रिया भेजे। जो सुझाव सब आर्य समाजो को मान्य होगे—उन्हे अन्तिम स्वीकृति देने के लिए इसी प्रकार का एक और शिविर आयोजित किया जाएगा उसमे भी इन पर विचार किया जाएगा। इस प्रकार के शिविर करने का वास्तविक उद्देश्य यह है कि एक तो आर्य समाजियो का आपस का सम्पर्क बढ़े और दूसरा वह अपनी समस्याओ पर स्वय सोचना शुरू करे—

—सभा महामन्त्री श्रीमती कमला आर्या ने आर्य समाजियो से प्रार्थना की कि वह सभा द्वारा प्रकाशित साहित्य के प्रचार में सहयोग दें। [illegible] की सहायता शर्मा ने सभा की आर्थिक स्थिति पर प्रकाश डाला। आर्य विद्या परिषद के प्रस्तोता श्री धर्म प्रकाशदत्त ने सभा के अधीन चल रहीं शिक्षा सस्थाओ के विषय में अपने विचार रखे। सभा मन्त्री श्री सरदारीलाल ने पारिवारिक सत्सग शुरू करने पर जोर दिया—वेद प्रचार अधिष्ठाता श्री अहिपाल सिंह ने वेद प्रचार के महत्व पर प्रकाश डाला। राजार्य सभा के सयोजक श्री अमतलाल बजाज ने राजार्य सभा की आवश्यकता की तरफ ध्यान दिलाया। सभा के उपप्रधान सेठ योगेन्द्रपाल ने आर्य समाज मन्दिरों की सफाई और उनके आकर्षण पर जोर दिया।

इस अवसर पर निम्नलिखित प्रस्ताव पारित किए गए।

### पजाब राजार्य सभा द्वारा दिनाक 9 10 मार्च 1985 को नवाशहर मे आयोजित सम्मेलन मे पारित प्रस्ताव

1 पजाब मे पिछले 3 4 वर्षों से जो कुछ हो रहा है और उग्रवादी तत्वो ने जिस प्रकार सगठित होकर समय समय पर इस प्रदेश की शान्ति व्यवस्था को छिन्न भिन्न कर हिन्दुओ की जान व माल के लिए खतरा पैदा किया है उसे देखकर हम इस परिणाम पर पहुचे हैं कि जो कुछ किया जा रहा है वह कुछ बाहर की शक्तियो के इशारा पर और उनके समर्थन और सहयोग से हमारे देश की एकता और सगठन को छिन्न-भिन्न करने का प्रयास किया जा रहा है। अकाली दल का आनन्दपुर साहब का प्रस्ताव इसका स्पष्ट प्रमाण है कि यदि अकालियो का बस चले तो वे पजाब में किसी और को नहीं रहने देंगे। इस प्रस्ताव का आधार उनका यह निश्चित मत है कि पजाब को एक ऐसा भाग बनाया जाए जहा खालसा जी का बोल बाला हो—जिसका अभिप्राय यह है कि यहा कोई और नही रह सकता। यदि रहेगा तो अकाली साम्प्रदायिकता के अधीन रहेगा। इसी के साथ अकाली दल देश के विधान मे कुछ ऐसा सशोधन चाहता है जिससे केन्द्रीय सरकार के अधिकार कम हो और उसकी शक्ति मे शिथिलता आए। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए 3 4 वर्षो से उग्रवाद और आतकवाद का सहारा लिया गया है।

2 अकालियो की ओर से बार बार यह माग की जा रही है कि श्रीमती इन्दिरा गाधी की हत्या के बाद जो कुछ देहली और दूसरे स्थानो पर हुआ था उसकी न्यायिक जाच करवाई जाए यह सम्भव है या नही इसका निर्णय तो सरकार ही कर सकती है परन्तु यह सम्मेलन माग करता है कि यदि 31 अक्तूबर 1684 के बाद की घटनाओ की जाच होनी है, तो 31 अक्तूबर 84 से पहले जो कुछ पजाब मे होता रहा है उसकी जाच भी साथ ही होनी चाहिए। इन दोनो का आपस का गहरा सम्बन्ध है पजाब की घटनाओ की प्रतिक्रिया देहली या दूसरे स्थानो पर हुई थी।

3 पजाब राज्य आर्य सभा इस स्थिति को प्रत्येक देशभक्त के लिए एक चुनौती समझती है जो कुछ आज हो रहा है उसी प्रकार की परिस्थितियां 1947 में भी पैदा हुई थी। उसका परिणाम भी हमने देख लिया था। यह सभा सारे हिन्दू जगत को सावधान करना चाहती है कि यदि हमारे नेताओ ने इस बार भी इसी प्रकार की कमजोरी दिखाई जैसी कि 1947 मे दिखाई थी तो उसका परिणाम पहले से भी अधिक भयकर होगा आर्य समाज की यह निश्चित धारणा है देश की स्वाधीनता अखण्डता और प्रभुसत्ता के विषय मे किसी प्रकार का कोई समझौता नही हो सकता। इसलिए जो भी परिस्थितियां पैदा हो जाए उन का सामना करने के लिए हमे अपने आपको तयार रखना चाहिए। यह सम्मेलन पजाब के समस्त हिन्दू जगत विशेषकर आर्य जनता को आह्वान करता है कि अपने सगठन को शक्तिशाली बनाने के लिए निम्नलिखित पग उठाए जाए—

1 आर्यत्व और हिन्दुत्व की भावना प्रत्येक व्यक्ति के मन मे पैदा करने के लिए यह आन्दोलन किया जाए कि हम सब एक हैं।

2 अपने मन्दिरो और पूजा के स्थानो की पूरी तरह से रक्षा की जाए।

3 समय समय पर इन मन्दिरो में यज्ञ किए जाए ताकि यज्ञ से जो प्रेरणा मिल सकती है, वह मिलता रहे।

4 हमारे जितने महापुरुष हो चुके हैं उन सबकी स्मृति मे समय समय पर उत्सव और समारोह किए जाए।

5 हिन्दी का पढना पढाना और लिखना लिखाना प्रत्येक हिन्दू अपना धर्म समझ ले। भाषा के द्वारा ही किसी जाति मे सगठन की भावना पैदा होती है। इसलिए हमे न केवल हिन्दी को पढना और पढाना चाहिए अपितु उसका दैनिक व्यवहार में अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहिए। इसका यह अभिप्राय नहीं कि हम किसी दूसरी भाषा के विरोधी हैं। परन्तु हिन्दी हमारी राष्ट्र भाषा है

(शेष पृष्ठ 6 पर)

# जी चाहता है तोड़ दूं शीशा फरेब का—7

ले.—श्री वीरेन्द्र जी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

(10 मार्च के अंक से आगे)

आनन्दपुर साहब के प्रस्ताव के विरुद्ध सबसे बड़ी शिकायत यह है कि उसके माध्यम से विलगाववाद की भावना को बढ़ावा मिलता है। दोनो प्रकार की विलगता देश से भी और हिन्दुओ से भी। इसमे सिखो को एक अलग कौम प्रकट किया गया है। वह भी केवल धर्म के आधार पर। अगर अकालियो के इस दृष्टिकोण को स्वीकार कर लिया जाए तो हमारे देश मे न जाने कितनी कौमे हो जाएगी। अगर धर्म के आधार पर सिख एक अलग कौम बन सकते हैं तो हिन्दू या मुसलमान क्यो नही? अगर हिन्दू और सिख दो अलग अलग कौम हो जाए तो वह एक ही देश मे कैसे रह सकती हैं। मुहम्मद अली जिन्ना ने भी तो यही कहा था कि चूं कि मुसलमान एक अलग कौम है अत उनके लिए एक अलग देश की जरूरत है। इस तरह पाकिस्तान कायम हुआ था। अब आनन्दपुर साहब के प्रस्ताव के आधार पर खालिस्तान कायम हो सकता है।

अकाली इस दृष्टिकोण का प्रतिवाद करते हैं वह कहते है कि वह अलग होना नही चाहते। जो कुछ माग रहे हैं देश के सविधान के अन्तगत माग रहे हैं। केवल अपने लिए नही माग रहे, सबके लिए माग रहे हैं। विशेषतया जब वह यह कहते हैं कि केन्द्र के पास केवल चार या पाच विभाग रहने चाहिए, शेष सब राज्यो के पास रहे और राज्य सरकार को यह अधिकार हो कि वह अपने कानून बना सके तो यह अधिकार वह सब सूबो के लिए माग रहे हैं। इसलिए उन पर यह आरोप नही लग सकता कि वह अलगाववाद की मनोवृत्ति का प्रदर्शन कर रहे हैं।

अकालियो का यह उत्तर किसी को सन्तुष्ट नही कर सकता। एक तो इसलिए कि आनन्दपुर साहब के प्रस्ताव मे उन्होने अपने लिए एक ऐसा क्षेत्र मागा है जहा सिखो का बोल-बाला हो। इस क्षेत्र म सिखो के अतिरिक्त कुछ और लोग भी होग। उनकी क्या पोजीशन होगी? स्पष्ट है कि अकालियो क विचारानुसार वह दूसरे नम्बर के नागरिक होगे। ऐसी स्थिति मे वह वहा क्यो रहगे जब हिन्दू वहा से निकल जाएगे तो वह क्षेत्र अपने आप खालिस्तान बन जाएगा। अकालियो ने यह माग की है कि उन्हे अपने पड़ोसी देशो क साथ समझौता करने की अनुमति होनी चाहिए। और यह भी कि जो विभाग उनके पास होगे उनके लिए कानून बनान की भी अनुमति होनी चाहिए। अगर यह सब कुछ अलगाववाद की शुरूआत नही तो क्या है?

आज मैं पाठको के समक्ष अकाली नेताओ के वह बयान पेश करना चाहता हू जिन से पता चल जाए कि उनके इरादे क्या हैं। यह बयान किसी साधारण अकाली के पेश नही कर रहा बल्कि अकालियो के सरताज शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक समिति के प्रधान सरदार गुरचरणसिंह टोहरा के हैं। मेरे विचार में अकालियो बारे जितनी भ्रान्ति टोहरा ने फैलाई है किसी दूसरे ने नही। वह आनन्दपुर साहब प्रस्ताव बारे जो कुछ कहते रहे हैं वह आज पाठको के समक्ष पेश कर रहा हू।

यह 29 अक्तूबर 1978 की बात है। लुधियाना मे अ भा अकाली सम्मेलन मे आनन्दपुर साहब प्रस्ताव पेश किया गया। इस पर उस समय दो प्रतिष्ठित अकाली नेताओ ने भाषण दिए। सरदार गुरचरणसिंह टोहरा और श्री प्रकाशसिंह बादल ने। बाद मे ज्ञानी अजमेरसिंह सचिव शिरोमणि अकाली दल ने टोहरा साहब का भाषण प्रकाशित करके प्रसारित कर दिया। वही म आज पेश कर रहा हू। इससे यह स्पष्ट हो जाएगा कि अकालियो के दिल मे क्या है और उनकी जुबान पर क्या है। श्री टोहरा ने अपने भाषण मे जिन बातो पर बल दिया था वह यह थी—

1 वतमान शासन पद्धति विफल सिद्ध हुई है। इसके कारण केन्द्र आवश्यकता से अधिक मजबूत हो गया है। इस ढाचा मे परिवतन की जरूरत है। इस समय यह (Unitary) व्यवस्था है। इसकी जगह एक फैडरल व्यवस्था होनी चाहिए। जिसमें केन्द्र के पास बहुत कम अधिकार हों। और सब राज्यों को बराबर के अधिकार हो।

2 भारत एक ऐसा देश है जिसमें कई कौमें रहती हैं। इसलिए यह एक (Multi national देश है।

3 यह देश (Nations) कौमो (Nationalities) छोटी कौमों और (Minorities) अल्पमतो मे बटा हुआ है।

4, देश का हिन्दूकरण करने की बजाए इसका भारतीयकरण किया जाए। हो यह रहा है कि भारतीयकरण की बजाए हिन्दूकरण हो रहा है।

5 सिख एक कौम भी है और अल्पमत भी।

6 रूस मे राज्यो को अलग होने का अधिकार है। [illegible] भी बना सकते हैं और दूसरे देशों से स्वतंत्र रूप से [illegible] भी कर सकते हैं।

7 हमारे देश के सविधान मे लिखा जाना चाहिए कि यह देश (Multi national) देश है यानि इसमे कई कौमें रहती हैं।

8 राज्य सभा के सदस्य प्रत्येक चुनाव मे जनता द्वारा चुने जाए।

9 केन्द्र को राज्यो मे हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार न हो।

10, केन्द्र की पुलिस भी राज्यो मे कोई दखल न दे सके।

मैंने आपके सामने श्री टोहरा के भाषण का सक्षिप्त विवरण ही पेश किया है। इससे आप अनुमान लगा सकते हैं कि अकालियो का दिमाग किस तरह काम कर रहा है। सरदार गुरचरणसिंह टोहरा बारे स्वर्गीय साधूसिंह हमदर्द ने एक बार लिखा था कि टोहरा साहब का सिखो मे वही स्थान है जो ईसाईयो मे पोप का है। इससे हम अनुमान लगा सकते हैं कि अकाली किस ढग से सोच रहे हैं। टोहरा साहब के जिस भाषण के अश मैंने उद्धृत किये हैं यह आनन्दपुर साहब प्रस्ताव पेश करते हुए उन्होने दिया था।

पाठकवृन्द! मैंने जो कुछ इन लेखो में लिखा है उसके बाद यह स्पष्ट हो जाता है कि अकालियो के इरादे क्या हैं। अकालियो की सदा यह कठिनाई रही है कि वह कहते कुछ हैं और करते कुछ हैं। इसी के साथ यह भी देखा गया है कि वह पहले करके फिर सोचने लगते हैं। विगत तीन वर्ष में जो कुछ पजाब मे हुआ है वह न होता अगर अकाली सोच-समझकर चलते। इनका धर्म युद्ध बीड़ी सिगरेट पर प्रतिबन्ध लगाने की माग से शुरू हुआ था। पहले उन्होने अपनी 45 माग पत्र की थीं फिर वह कम करके 25 कर दी। अन्त मे केवल 5 रह गई। यह प्रस्ताव हाल के चुनाव मे एक जबरदस्त बहस का विषय बन गया था। राजीव गाधी ने इस पर इतना बल दिया कि सारे विपक्षी दलो को भी अपनी स्थिति स्पष्ट करनी पड़ी। हर पार्टी को इस प्रस्ताव से अपना कोई सम्बन्ध न होने की घोषणा करनी पड़ी। अब स्थिति यह है कि अगर सरकार इस प्रस्ताव बारे नर्म रवैया अपनाना भी चाहे तो नही अपना सकती।

जो कुछ मैंने ऊपर लिखा है उससे यह भी स्पष्ट हो जाता है कि आनन्दपुर साहब का प्रस्ताव देश के एक और बटवारा या खालिस्तान की नीव रखता है। जब अकाली यह कहते हैं कि सिख एक अलग कौम है और रूस के सविधान का उदाहरण देकर कहते हैं कि वहा सूबो को अलग होने का अधिकार है तो शेष क्या रह गया? इसके बाद कोई सरकार इस प्रस्ताव को कैसे स्वीकार कर सकती है। श्रीमती इन्दिरा गाधी ने पजाब का बटवारा करके और पजाबी सूबा स्थापित करके एक भूल की थी। उनका बेटा आनन्दपुर साहब के प्रस्ताव को स्वीकार करके खालिस्तान की नीव रखने की भूल नहीं करेगा।

सम्पादकीय—

# पंजाब में आर्य समाज की समस्याएं

आर्य समाज के लिए नित नई समस्याए पहले भी पैदा होती रही हैं वर्तमान समय मे भी हो रही हैं और भविष्य मे भी होती रहेंगी। प्रत्येक सक्रिय और जीती-जागती सस्था के सामने समस्याए आती ही रहती हैं। निर्जीव सस्थाओ के सामने कोई समस्या इसलिए पैदा नहीं होती कि न उन्हे अपनी चिन्ता होती है न दूसरो की। सारे ससार का उपकार करना और समाज का मुख्य उद्देश्य है ऐसी स्थिति मे यदि समय 2 पर उसके सामने समस्याए एक विकराल रूप धारण करके खडी हो जाती हैं तो उस पर किसी को आश्चर्य न होना चाहिए। आश्चर्य वहा होता है जहा समस्याए खडी हो, परन्तु उनके समाधान का कोई उपाय न किया जाए। जो सस्थाए हाथ पर हाथ रखे बैठी रहती हैं वह धीरे 2 अपना अस्तित्व समाप्त कर लेती हैं आर्य समाज नही चाहता कि आने वाला इतिहासकार उसके विषय मे भी यही कहे कि वह एक निर्जीव और निष्क्रिय सस्था थी। उसके सामने जो समस्याए आती थी वह उनकी तरफ से आखें मूद लेती थी और फिर एक ऐसा समय आया जबकि यही समस्याए आर्य समाज को खा गई और कही उसका नामोनिशान दिखाई न दिया।

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब अपने उत्तरदायित्व को समझती है। इसलिए समय 2 पर वह अपनी समस्याओ की ओर ध्यान देती रहती है। इसी लक्ष्य को सामने रखते हुए 9-10 मार्च को नवाशहर में पजाब के आर्य समाजियो का एक शिविर रखा गया था। यह दो दिन चलता रहा और इसमे पजाब के भिन्न 2 नगरो से आर्य समाजी वहा पहुचे और उन्होने सदभावना के वातावरण मे वह समस्याए सबके सामने रखी, जो उनकी सम्मति मे आर्य समाज के रास्ता एक बडी रुकावट पैदा कर रही हैं। इस वाद-विवाद मे लगभग तीस महानुभावो ने भाग लिया और जो सुझाव प्रस्तुत किए, उनकी सख्या लगभग 50 थी। सभा की ओर से इस शिविर की कार्यवाही प्रकाशित करके शीघ्र ही सब आर्य समाजो को भेज दी जाएगी। आर्य समाजो के अधिकारियो से मेरा यह निवेदन है कि वह अपनी 2 आर्य समाज की एक गोष्ठी करके इन सुझावो पर विचार करें और उनके सदस्यो की जो भी सम्मति हो, उसे सभा को लिखकर भेज दे। हम चाहते हैं कि इसी प्रकार का एक और शिविर तीन चार मास के पश्चात फिर आयोजित किया जाए और वहा कोई अन्तिम निर्णय लेकर यही सुझाव एक प्रस्ताव के रूप मे पारित किए जाए और उन्हे फिर सब आर्य समाजो को भेजा जाए, ताकि उनके अनुसार वह अपना आगामी कार्यक्रम बनाए।

जिन समस्याओ पर वहा विचार हुआ, उनमे एक यह भी थी कि हम यह तो कहते हैं कि यज्ञ करने चाहिए और उनका प्रचार भी करना चाहिए। परन्तु भिन्न 2 व्यक्ति और भिन्न सस्थाए, जो यज्ञ-प्रणाली प्रस्तुत करती है वह एक दूसरे से भिन्न हैं। इसका प्रभाव सर्वसाधारण पर अच्छा नही पडता। इसलिए यज्ञ किस प्रकार से किया जाए कौन 2 से मन्त्र पढे जाए और भी उसकी क्या प्रक्रिया होनी चाहिए। इन सब बातों पर विचार करके पजाब की आर्य समाजो की एक ही यज्ञ पद्धति प्रकाशित कराई जाए। सार्वदेशिक सभा की धर्मार्य सभा ने भी एक यज्ञ पद्धति प्रकाशित कराई हुई है। अधिकतर सदस्यो का यही विचार था कि उसे ही अपना लिया जाए तो अच्छा रहेगा। परन्तु इस विषय मे अन्तिम निर्णय लेने के लिए पाच महानुभावो की एक समिति बना दी गई है जो पजाब के आर्य समाजियो का मार्ग दर्शन करेगी। यह शिविर प्रत्येक रूप मे सफल रहा। यदि मेरा अनुमान गलत नही तो यह पहला शिविर है जिसमे कि पजाब के आर्य समाजियों ने बैठकर अपनी समस्याओ पर स्वय विचार किया है। सभा के अधिकारी यह चाहते हैं कि हम दूसरो की तरफ देखने की बजाए अपनी समस्याओं का समाधान ढूढने का स्वय प्रयास करें। इसका सबसे बडा लाभ यह होता है कि प्रत्येक व्यक्ति मे चिन्तन की भावना अधिक हो जाती है और जिनमें चिन्तन की भावना नही होती वह सक्रिय भी नही होते। जब हम दूसरो का सहारा लेते हैं तो अपने दिमाग पर ताला लगा देते हैं। दूसरे जो कुछ कहते हैं वही हम करते हैं। इसका परिणाम कोई बहुत अच्छा नहीं रहता। इसलिए इस शिविर के द्वारा एक नया परीक्षण किया गया है। आशा रखनी चाहिए कि इसका परिणाम बहुत अच्छा रहेगा और पजाब की आर्य समाजें अपनी समस्याओ का समाधान स्वय ढूढकर अपने सगठन को शक्तिशाली और प्रभावशाली बनाने का प्रयास करेंगी।

—वीरेन्द्र

# आर्य मर्यादा की ग्राहक संख्या में वृद्धि

आर्य मर्यादा आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब का मुख पत्र है। इसके सदस्य लगभग सभी प्रान्तो मे हैं कही अधिक कही कम। परन्तु पजाब मे सबसे अधिक हैं। फिर भी उतने नही हैं जितने हम चाहते हैं। अधिक ग्राहक सख्या न होने के कारण यह घाटे मे चल रहा है।

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की महामन्त्री श्रीमती कमला आर्या ने इसके ग्राहक बढाने का सकल्प लिया है। वह निरन्तर आर्य बन्धुओ को और बहिनो को इसके ग्राहक बनने के लिए प्रेरणा देती रहती हैं। अपने सम्पर्क मे आने वाले प्रत्येक भाई बहिन को वह ग्राहक बना रही हैं। कई अन्य बन्धु भी उनकी प्रेरणा से आर्य मर्यादा के नए ग्राहक बनाने मे हमे सहयोग दे रहे हैं। अगर इसी प्रकार सभा के अन्य अधिकारी भी इस ओर ध्यान दें तो आर्य मर्यादा की आशातीत ग्राहक सख्या बढ सकती है। लुधियाना में ग्राहको की सख्या बढती जा रही है। गत दिनो लगभग 40 नए ग्राहक लुधियाना से बनाए गए हैं। आर्य गर्ल्ज हायर सैकेण्डरी स्कूल की लगभग सभी अध्यापिकाए और आर्य कालेज महिला विभाग लुधियाना की प्राध्यापिकाए इसकी सदस्य बन चुकी हैं। आर्य हाई स्कूल बस्ती गुजा जालधर के भी 13 अध्यापक इसके ग्राहक हैं। इस प्रकार अगर सभी स्कूल कालेजो के अध्यापक और प्राध्यापक इसके ग्राहक बन जाए तो एक दम इसकी सख्या हजारो बढ सकती है।

हमारी आर्य मर्यादा के सभी प्रेमियो से प्रार्थना है कि वह अपनी इस पत्रिका को उन्नत करने के लिए इसके नए ग्राहक बनाकर सभा को अपना पूरा 2 सहयोग दें। हम सभी उन बन्धुओ के आभारी हैं जो हमे इसकी ग्राहक सख्या बढाने मे अपना सहयोग दे रहे हैं।

—सह-सम्पादक

# आर्यमर्यादा के लिए विज्ञापनो की आवश्यकता

कोई भी समाचार पत्र केवल अपने ग्राहको पर निर्भर रहकर अपना खर्चा पूरा नही कर सकता। उसे विज्ञापनो की आवश्यकता होती है और विज्ञापन ही उसके घाटे को पूरा किया करते है। आर्य मर्यादा की ग्राहक सख्या भले ही थोडी है परन्तु यह लगभग सारे देश मे जाता है। इसमे घाटा इसलिए होता है कि इसको विज्ञापन बहुत कम मिलते हैं। अगर हमारे ग्राहक महानुभाव और दूसरे व्यापारी व व्यवसायिक आर्य बन्धु इसके लिए विज्ञापन भेजें तो इस पत्र को बहुत उन्नत किया जा सकता है। ऋषि बोध अक के लिए आर्य बन्धुओ ने महान् सहयोग दिया है। हम सबके आभारी हैं। इस अक के लिए हमे एक सौ से भी अधिक विज्ञापन मिले। इसीलिए इतना बडा अक सभा प्रकाशित करने में सफल हुई। हम सभी आर्य बन्धुओ से प्रार्थना करते है कि वह साधारण अको के लिए भी विज्ञापन भेज कर इस पत्रिका [illegible]

—कमला आर्या -सभा महामन्त्री

# यति मण्डल बनाम नेता मण्डल

ले —श्री सत्यदेव विद्यालकार 145-4 सैन्ट्रल टाउन जालन्धर

महर्षि दयानन्द पर फिल्म बनाई जाए या न। इस विषय पर आर्य समाज मे विवाद चल रहा है। आर्य मर्यादा' मे इस समय तक पक्ष मे और विपक्ष मे दोनो दृष्टिकोण प्रकाशित किए गए है। इस लेख मे श्री प सत्यदेव जी विद्यालकार के विचार प्रकाशित किए जा रहे है। इसके उत्तर मे भी यदि कोई विद्वान् अपना लेख भेजेगा वह भी प्रकाशित कर दिया जाएगा। —सम्पादक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के माननीय अधिकारी श्री सोमनाथ मरवाहा जी एडवोकेट के दो लेख 'आर्य मर्यादा के 27 जनवरी तथा 10 फरवरी के अको मे प्रकाशित हुए हैं। इनका शीर्षक है 'महर्षि दयानन्द फिल्म का विरोध करने वाले अपने जीवन को देखें।'

शीर्षक के विषय मे तो मेरा इतना ही नम्र निवेदन है कि केवल विरोध करने वाले ही अपने जीवन को देखें ऐसा क्यो ? समर्थन करने वाले भी अपने जीवन को देखें सम्भवत दोनो मे बहुत अन्तर न होगा।

परन्तु श्री माननीय मरवाहा जी के लेखो से दयानन्द फिल्म सम्बन्धी विवाद का रूप अवश्य बदल गया है। यह स्पष्ट हो गया है कि दयानन्द सम्बन्धी फिल्म को सार्वदेशिक सभा के मान्य नेताओ का पूर्ण समर्थन है। वस्तुत दयानन्द फिल्म सम्बन्धी विचार सार्वदेशिक सभा का ही है। इतना ही नही यह भी स्पष्ट हो गया कि दिल्ली मे होने वाली शताब्दी के अवसर पर सुश्री सविता बेन द्वारा पोरबन्दर कन्या महाविद्यालय की छात्राओ ने जो दयानन्द नाटक खेलना था वह भी सार्वदेशिक सभा की सहमति से ही था। यह और बात है कि जनता के एक भाग के प्रबल विरोध के कारण वह नाटक न हो सका।

सिद्धात सम्बन्धी एक बात तो स्पष्ट हो गई कि सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा दयानन्द फिल्म तथा दयानन्द नाटक दोनो के ही पक्ष मे है।

इस से मान्य आचार्य प्रवर श्री विश्वश्रवा व्यास जी के लेख महर्षि फिल्म आर्यसमाज मे सुभद्रा हरण (आर्य मर्यादा 30 10 84 का निहितार्थ भी स्पष्ट हो गया। महाभारत मे सुभद्रा प्रसग मे कृष्ण चुप इसलिए थे क्योकि सुभद्रा हरण उन्ही के सुझाव से हुआ था। स्वय कृष्ण न भी रुक्मिणी हरण आदि अनेक हरण किए थे। सार्वदेशिक सभा इस लिए चुप थी क्योकि दयानन्द फिल्म उसकी सम्मति से बनी थी।

यह और बात है कि दयानन्द फिल्म के सम्बन्ध मे कभी सार्वदेशिक सभा की धर्मार्य समिति मे विचार हुआ था या नहीं। आचार्यवर अब धर्मार्य सभा का सुझाव दे रहे हैं। वह तो निरर्थक प्राय हैं। जब सार्वदेशिक सभा एक कदम उठा चुकी है तो फिर धर्मार्य सभा मे विचारार्थ वह बात कैसे आ सकती है।

अस्तु अब तो यह निश्चय हो ही गया कि सार्वदेशिक सभा दयानन्द फिल्म तथा दयानन्द नाटक के पक्ष मे है।

अब विचारणीय तो यह प्रश्न है कि क्या इसके बाद दयानन्द लीला दयानन्द नृत्य नाटिका खेलें। तथा दयानन्द नाटकीय का विरोध कैसे करेगी। और करेगी भी तो क्या वह इन प्रवृत्तियो को रोकने में समर्थ हो सकेगी। इतिहास साक्षी है कि कृष्ण के राम के ऐतिहासिक तथ्यात्मक जीवन का सत्यानाश इन लीलाओ ने किस प्रकार किया। यदि किसी का सन्देह हो तो भागवत दशम स्कन्ध मे रास प्रसग को देख लें, अष्ट छाप के नन्द दास महाकवि के राम प्रसग को देखने तथा महाकवि भवभूति के उत्तर राम-चरित्र मे अकित सीता राम के शृ गार चित्रो को देख लें। इस सारे विशाल साहित्य मे कृष्ण और राम ऐतिहासिक व्यक्ति रहे ही नही, काल्पनिक व्यक्ति बन गए।

और विशेष बात यह कि राम और कृष्ण की वीर मूर्ति की अपेक्षा लोकरजन तथा लोक रुचि के कारण यही शब्द गू जते रहे।

राधा-माधवयो जयन्ति यमुना
कूल रह केलय। (कृष्ण)
अविदित गत यामा रात्रिरेव
व्यरसीत। (राम)

और जब दयानन्द फिल्म बनेगी तो क्या श्रद्धानन्द फिल्म तथा हसराज फिल्म न बनेगी। स्कूलो और कालिजो के छात्र छात्रायें इन के नाटक न करेंगे।

नाटक लीला-नृत्य नाटिका इनका फिल्म से कोई भेद नही मौलिक भेद नहीं। फिल्म इन सबका पर्दे पर प्रदर्शित रूप है चित्रित रूप है। आर्य जनता को बार-बार सोचना होगा कि वह दयानन्द के जीवन और महत्व को किन के हाथो मे सौंप रही है।

गाधी फिल्म के प्रचार प्रसार से हर्षित लोगों को एक और समाचार प्रफुल्लित कर देगा। 'गाधी जीवन से दूसरो को प्रभावित करने वाले स्वय कितने प्रभावित हैं यह स्पष्ट होगा। श्री एटनबरी जिन्होंने गाधी फिल्म से करोडो रुपए कमाए तथा जिसने नायक के आधार ख्याति प्राप्त की कहते थे— 'महात्मा गाधी के विचारों को फिल्म के माध्यम से प्रस्तुत करने का मेरा जीवन स्वप्न पूरा हो गया। भारत सरकार ने उन्हे सहयोग दिया उसे भी करोडो का लाभ हुआ। पर गाधी के विचारों का प्रभाव देखिए। अब वे ही श्री एटनबरी एक नई फिल्म बना रहे हैं, नाम होगा 'कोरस लाइन। उसके लिए उसके विषय के लिए गीत-संगीत-नृत्य और सेकन के लिए सुन्दरियों के आवेदन मांगे गए। तीन हजार अर्जिया आईं। उनमे से 17 और फिर अन्त मे 9 को श्री एटनबरी ने पसन्द किया। उन सात के अर्धनग्न चित्रों के साथ श्री एटनबरी का चित्र विज्ञापन के लिए सब देशो को भेजा जा रहा है। सात सुन्दरिया तथा श्री एटनबरी कुटिल हास्य की मुद्रा मे हैं। सम्भवत गाधी जी की आत्मा समाधि मे पलसेटिया ले रही होगी। (पजाब केसरी 10-2-85 गाधी की गध)।

श्री माननीय सोमनाथ मरवाहा जी ने अपने 2 लेखो मे कुछ व्यक्तियो के सम्बन्ध मे भी कहा है। मेरा नम्र निवेदन है कि सिद्धात विवेचन के अवसर पर व्यक्ति विवेचन नहीं होना चाहिए। उनके इन शब्दो को मेरे जैसे सामान्य व्यक्ति के लिए समझना कठिन है। उन के शब्द है— यदि अब इस कार्य का विरोध किया जा रहा है तो वह उन कुछ निहित स्वार्थी व्यक्तियो की ओर से है जो आचार्य भगवान देव के स्तर तथा प्रसिद्धि को सहन नही कर सके। मैं मानता हू कि इस फिल्म के निर्माण मे विरोध स्पष्टत व्यक्तिगत प्रति स्पर्धा के कारण है।

इस बात पर विश्वास करना बहुत कठिन है कि वीतराग स्वा सर्वानन्द जी तथा विद्वान स्वा सत्यप्रकाश जी जैसे घर फूक तमाशा देखने वाले सयासी किसी व्यक्ति के स्तर तथा प्रसिद्धि को सहन नही कर सकते। पता नही वह आकाश को छूने वाला स्तर और भूमण्डल व्यापी कौन सी प्रसिद्धि है जिसका बीसियो आर्य विद्वान और सन्यासी सहन नही कर सकते।

यह कहना भी एक विचित्र बात है कि यदि कोई सभासद पूरा शातांश नहीं देता तो वह सिद्धान्त की बात ही नहीं कर सकते। कल कोई महापुरुष ? शराब की बोतल लेकर समाज मे घुसे चले आए। मेरे जैसा कोई मूर्ख उनको रोके तो वे उत्तर दे कि तुम्हारा रोकने का कोई हक नही, क्योकि शातांश नहीं देते।

मेरा निवेदन यह है कि प्रस्तुत विषय पर गुण-दोष विवेचन पूर्वक विचार होना चाहिए। यह तो विचार का विषय नहीं कि विरोध करने वाले पुरुष का अगला दात टूटा हुआ है या उसके कोट का रंग काला है।

ऐसा प्रतीत होता है कि आर्य समाज के कुछ महत्वपूर्ण नेता यति-मण्डल के विचारों से सहमत नहीं। इसका आभास वैदिक यति मण्डल द्वारा पारित प्रस्तावों से होता है।

1 आर्य समाज के मच पर सिनेमा के अभिनेता और अभिनेत्रियों का स्वागत आदि नही होना चाहिए। जहाँ हो वहा यतियो को नहीं जाना चाहिए।

2 आर्य समाज की जिन शिक्षा-सस्थाओ के साथ दयानन्द का नाम जुडा है और शिक्षा का माध्यम अग्रेजी है वहा हिन्दी सस्कृत को प्राथमिकता दी जाए। और सह-शिक्षा नही होनी चाहिए।

3 जिन आर्य समाज के समारोहो मे राजनीतिक नेताओ का अभिनन्दन स्वागत आदि किया जाए वहा यतियो को नहीं जाना चाहिए।

सब जानते ही हैं कि आर्य समाज की सस्थाओ मे सह शिक्षा भी है, समारोहो पर राजनीतिक नेताओ का अभिनन्दन स्वागत खूब जोर-शोर से होता है तथा सास्कृतिक कार्यक्रम भी होते हैं। नृत्य भी अनेक बार होता है। इन सब समारोहो में आर्य समाओ के अधिकारी, नेता भाग लेते हैं इनका सचालन भी करते हैं।

इस प्रकार यति समाज तथा नेता मण्डल की विचारधारा मे विभिन्नता स्पष्ट होती है।

प्रस्तुत विषय दयानन्द फिल्म मे भी यह भेद स्पष्ट दिखाई देता है। मैं समझता हू कि आर्य समाज का बहुत बडा बहुमत दयानन्द फिल्म द्वारा दयानन्द के ऐतिहासिक सत्य स्वरूप को विकृत करने के विरुद्ध है। अत हमारे मान्य नेताओ को इस विषय पर पुनर्विचार अवश्य करना चाहिए।

आर्य भाइयो की सूचना के लिए यह भी लिखना चाहता हू कि कांग्रेस (इ) के द्वारा बनवाई गई श्रीमती इन्दिरा गाधी तथा प्रधानमन्त्री श्री राजीव के कल्पित सुन्दर चित्र का प्रदर्शन करने वाली दो फिल्मो मा' तथा 'अमेठी दा सूरज' पर सवा करोड रुपया खर्च किया गया है। और पंजाब तथा पजाब से बाहर अराजकता मे मरने वालों के अनाथ परिवारो को पर्याप्त सहायता देने के लिए भी सरकार के पास पर्याप्त धन नही।

शायद फिल्म देखने से भूखों के पेट भर जाय बेसहारा लोगो को सहारा मिल जाए तथा अशिक्षितो और बीमारों की आशाए पूर्ण हो जायें।

# आर्य समाज का भावी कार्यक्रम

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने मानव मात्र के विचारो में क्रान्ति लाने के लिए आर्य समाज को एक सक्षम माध्यम बनाया। यो तो महर्षि के लेख के अनुसार उनके क्रान्तिकारी विचार ब्रह्मा से लेकर जैमिनी पर्यन्त के विचार ही है जिनका मूल आधार वेद ही हैं। आर्य जाति अपने प्राचीन गौरव को प्राप्त करे और मानव मात्र को जीवन की दिशा मिल सके, यह महर्षि की तीव्र अभिलाषा थी। गत सौ वर्षों के इतिहास में आर्य समाज ने मानव समाज के हित के लिए चतुर्मुखी विकास योजनाए बनायी, उन्हे क्रियान्वित भी किया। इससे बौद्धिक वर्ग विशेष रूप से प्रभावित हुआ। सभी को आगे बढ़ने की प्रेरणा भी प्राप्त हुई। परन्तु जीवन का चतुर्मुखी विकास कार्यक्रम शिथिल न हो जाए, आगे चलता रहे, इस दिशा मे विचार करना आज फिर आवश्यक है। इसी विचार से भविष्य में आर्य समाज के कार्यक्रमो की रूप रेखा मेरी दृष्टि मे निम्नोकित प्रकार से होनी चाहिए—

1, आर्य समाज के मन्दिर केवल बाह्य पूजा पद्धति के ही केन्द्र न बनें, अपितु उनमे आने वाला प्रत्येक व्यक्ति आत्मप्रेरणा, धार्मिक भावना और अन्तर्ज्योति को प्राप्त कर सके, व्यवस्था हो।

2. आर्य जाति की पूजा पद्धति मे 'यज्ञ' का विशेष स्थान है। वस्तुतया यज्ञ मानव जाति के सर्वकल्याण भाव का आदर्श कर्म है। इसकी प्रत्येक धार्मिक क्रिया को सत्य, श्रद्धा तथा भक्ति के साथ करने पर ही लाभ की आशा की जा सकती है। यदि थोडा ध्यान पूर्वक इसे किया जाए तो निश्चय ही धार्मिक भावना में वृद्धि होगी। उचित यही है कि केवल बाह्य कर्म न बनाकर जीवन मे इसी मूल भावना अर्थात् अनासक्ति—इद न मम की भावना को जीवन मे उतारा जाए।

3 वेदोपदेश—वेद ईश्वर की कल्याणी वाणी है जो मानव तथा मानव समाज मे जीवन की प्रत्येक अवस्था मे विचार देने मे समर्थ है। इसीलिए श्रद्धापूर्वक यज्ञ कर्म के अनन्तर ऋषि ने वेदोपदेश का होना आवश्यक बताया है। उचित तो है कि स्वाध्यायशील उपदेशक अपने चिन्तन के आधार पर अनुकूल भाषा मे अर्थात् देश की भाषा का ध्यान रखते हुए वेद प्रवचन करे। आर्य जन वेद का स्वाध्याय कर उसके प्रवचन का भी अभ्यास करें। आर्यजनों को, यदि यह सुविधा प्राप्त न हो सके, तो पुस्तक से ही वेद प्रवचन पढा जाए अथवा सुयोग्य विद्वानों के कैसेटो का सदुपयोग भी किया जाना लाभकारी हो सकता है। ध्यान रहे कि वेदोपदेश से पूर्व वातावरण को सात्विक बनाने के लिए अच्छे स्तर का धार्मिक सगीत भी आवश्यक है।

4 योग साधना—महर्षि दयानन्द ने तो बीज रूप मे सन्ध्या के मन्त्रों में योग करने का सकेत अथवा आदेश भी सकेत दिया है। उसका परम उद्देश्य जीवन मे अनासक्त होकर अन्तर्मुखी होते हुए आत्मा तथा परमात्मा का दर्शन लाभ है। योग साधना के लिए प्राणायाम, अर्थ सहित जप का अभ्यास और मन्त्रार्थ चिन्तन का अभ्यास आवश्यक है।

5. शिक्षण—प्रत्येक आर्य समाज को धर्म, सस्कृति सभ्यता और आत्मचिन्तन के विचारो का प्रसार करने के लिए शिक्षा को भी उसी दिशा मे ढालना चाहिए। शिक्षा ऐसी हो जिसके द्वारा नवयुवक तथा नवयुवतियो को भी भौतिक और आध्यात्मिक जीवन की शिक्षा आर्य समाज दे सके। शिक्षा एकागी न हो अर्थात् केवल मात्र अक्षर ज्ञान की शिक्षा अनिवार्य हो, जिससे वैदिक धर्म का अन्य धर्मों से तुलनात्मक परिचय प्राप्त हो।

6 नवयुवक तथा नवयुवतियो को आर्य समाज की ओर आकर्षित करने के लिए वैदिक धर्म के विषय म सवाद, भाषण और कविताओ आदि का कार्यक्रम देकर प्रोत्साहित करना चाहिए। साथ हो शारीरिक विकास के लिए व्यायाम आदि की रुचि का कार्यक्रम भी होना चाहिए और सभी प्रकार से ये नवयुवक अनुशासनप्रिय होते हुए धर्मप्रिय हो।

7 पिछडे वर्ग की सेवा प्रत्यक प्रान्त की प्रतिनिधि सभाए अपना कर्त्तव्य जाने कि उनके प्रान्त मे कम मे कम एक ऐसा सेवाश्रम' हो जिसमे जाति के उपेक्षित बच्चो का, युवा वर्ग को अथवा प्रौढ वर्ग को शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और कुटीर उद्योग के माध्यम से सहायता मिले। उनका जीवन स्तर गिरने न पाए अपितु उसमे निरन्तर उन्नति हो।

8. आर्य समाज के अधिकारियो मे आज सबसे बडी कमी यह है कि पुराने लोगो की भान्ति जन-सम्पर्क का कार्यक्रम लुप्त हो गया है, जिसके परिणामस्वरूप आर्य सदस्यो में सहानुभूति, स्नेह और हित की भावना नहीं रही। आवश्यक है कि इस कार्यक्रम को पुन शुरू किया जाए। कम से कम मास मे एक सप्ताह अथवा कुछ दिन जैसी जैसी भी सुविधा हो सभी सदस्यो के सुख दुख का पता और सहायता की आवश्यकता को जाना जाए, जिससे सभी आर्य सम्पर्क कार्यक्रम के द्वारा बृहद् परिवार का रूप ले सकें।

यदि उपरोक्त विचारो को भावी वर्षों मे सक्रिय रूप मे अपनाया जाए, तो मेरे विचार मे निश्चय ही आर्य समाजों की उन्नति होगी।

—ओमप्रकाश त्यागी

मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली

# दिल्ली में ऋषि बोधोत्सव

विगत मास फिरोजशाह कोटला के विस्तृत मैदान मे महर्षि दयानन्द का बोधोत्सव समारोह पूर्वक मनाया गया। प्रात 8 बजे हवन-यज्ञ के साथ कार्यवाही आरम्भ हुई और ध्वजारोहण बच्चो बूढो की दौड आदि योग प्रदर्शन भाषण प्रतियोगिता एव सास्कृतिक कार्यक्रम के पश्चात् 2 बजे से सार्वजनिक सभा आरम्भ हुई जिसकी अध्यक्षता प्रसिद्ध आर्य नेता श्री रामगोपाल शालवाले न की। मुख्य अतिथि श्री बलराम जाखड अध्यक्ष लोक सभा ने महर्षि को श्रद्धा सुमन भेट करते हुए कहा कि उन्होने भारत की जनता को जगाने के लिए नई चेतन्यता दी थी आदि सृष्टि के मानव धर्म वेद का अमृत पुन जनसाधारण को पिलाया था। उन्होने ही वेद वाणी सस्कृत पढने का पुन पाठ पढाया था और आज यदि मैं इस योग्य हुआ हू कि ससद मे शपथ सस्कृत मे लू तो उन्ही का प्रभाव है। सस्कृत के उत्थान के लिए यह आवश्यक है कि स्वय सस्कृत पढें और अपने बच्चो को सस्कृत पढाए। मेरी मान्यता है कि सस्कृत के प्रचार से दक्षिण भारत मे हमारे भाई हमारे अधिक निकट आ जाएगे तथा भाषाई झगडे समाप्त करने में हमे सहायता मिलेगी।

महर्षि के क्रान्तिकारी सन्देश की चर्चा करते हुए उन्होने कहा कि हमे भ्रष्टाचार रिश्वत, सामाजिक कुरीतियो, छूआछूत के कलक गोहत्या देश-द्रोहिता मद्यपान आदि के विरुद्ध शीघ्र आन्दोलन छेडना चाहिए। उन्होने विश्वास दिलाया कि गीता के पहले श्लोक के अनुरूप आप इसे धर्म सागर युद्ध स्तर पर बाहर से चलाए। ससद मे मुझ से जो कुछ हो सका अवश्य करूगा। हमे यह न भूलना चाहिए भारत भूमि जैसी भूमि ससार मे कहीं नही है। इसलिए अपने युवा प्रधानमन्त्री की आवाज मे आवाज मिलाकर तथा महर्षि दयानन्द से प्रेरणा लेकर इसकी एकता और अखण्डता की रक्षा के लिए अधिक उत्साह से कार्य करना चाहिए ताकि आर्यों की वह भूमि पुन प्राचीन गौरव के शिखर पर पहुच सके।

श्री पृथ्वीराज शास्त्री उपमन्त्री सार्वदेशिक सभा ने नागालैंड और उडीसा मे अपने कार्य की चर्चा करते हुए कहा कि ईसाई पानी के गिलास पर गरीब लोगो का ईमान लूट रहे हैं। अत सरकार को धर्मान्तरण रोकने का कानून बनाना चाहिए क्योकि इससे राष्ट्र द्रोह उत्पन्न हो रहा है।

श्री सच्चिदानन्द शास्त्री ने भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए कहा कि शिवजी ने तो एक बार जहर पिया था पर महर्षि दयानन्द ने 14 बार, इसलिए वे महादेवो के भी महादेव हैं। उन से प्रेरणा लेकर आर्य समाज कष्ट सहकर भी राष्ट्र के उत्थान के लिए अपना पूरा योगदान देगा। मध्य भारत के आर्य नेता प राजगुरु जी ने श्री जाखड जी को सस्कृत मे शपथ लेने पर आर्य जगत की ओर से हार्दिक बधाई दी और कहा कि सविधान के सव रक्षक के तौर पर वे भारत भर मे सस्कृत को अनिवार्य करा दे।

सभा मे श्री रामगोपाल जी ने पहले उनका स्वागत किया और फिर उन्हे विश्वास दिलाया कि महर्षि दयानन्द के मिशन के अनुयायी राष्ट्र की सेवा मे पहले की भान्ति तन-मन धन निछावर कर दे। सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री श्री ओम्प्रकाश त्यागी जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द ने 1857 की क्रान्ति का गुप्तरूपेण नेतृत्व किया था और उसके बाद गुरु विरजानन्द से दीक्षा लेकर राष्ट्र मे धर्म प्रेम और स्वराज्य प्राप्ति की ज्वाला उस समय जलाई थी जब भावी इण्डियननैशनल कांग्रेस का जन्म भी नहीं हुआ था।

—धर्मपाल मन्त्री

# गढ़शंकर में प्रिं. नन्दलाल आर्य सिलाई स्कूल खोला गया

आर्य समाज गढशकर की ओर से गढशकर मे लडकियो को सिलाई सिखाने के लिए एक स्कूल खोला गया। सिलाई सिखाने की कोई फीस नही ली जाएगी। स्कूल का समय साढे 9 बजे से 3 बजे रखा गया है पण्डित सरवनराम जी एम एल ए के कर कमलो के द्वारा 24 फरवरी 1985 को इस स्कूल का उदघाटन किया गया। यहा पाच सिलाई मशीनो का प्रबन्ध श्रीमती तेजकौर धर्मपत्नी श्री समलीराम जी किरपाल तथा बाकी दूसरे खर्च सहने का प्रबन्धक श्रीमती शीलारानी वेदी, धर्मपत्नी स्वर्गीय श्री परमेश्वरी दास वेदी ने करने का उत्तरदायित्व लिया है।

इस अवसर पर उपस्थित सज्जनो मे श्री समलीराम जी किरपाल गढशकर नगरपालिका प्रधान श्री गुरलालसिंह श्री हरबससिंह चमक, श्री अमरनाथ भाटिया, हकीम ओम्प्रकाश तथा ओमप्रकाश भट्टी (एम.सी) के नाम उल्लेखनीय हैं। हवन-यज्ञ के पश्चात् स्थानीय आर्य सस्थाओ के छात्र-छात्राओ द्वारा कविता भक्ति-गान प्रस्तुत किए गए।

# आर्य समाज के नियमों पर एक विहंगम दृष्टि

संसार मे तीन कर्तव्यो की पूर्ति के लिए प्राणी आया करता है। 1 अपने साथ क्या करना चाहिए। 2 दूसरो के साथ क्या करना चाहिए। 3 परमेश्वर के साथ क्या करना चाहिए?

आर्य समाज के दस नियम भी इन तीन कर्तव्यो का विधान करते हैं। पहले और दूसरे नियमो मे उस कर्तव्य का विधान है जो ईश्वर के सम्बन्ध मे पूरा करना चाहिए अर्थात् मनुष्य को यह विश्वास रखते हुए कि परमेश्वर जगत् का रचयिता और वेद का प्रकाशक है, उसकी ओर एक मात्र उसी ईश्वर की उपासना करनी चाहिए। आर्य समाज के तीसरे चौथे तथा पाचवे नियम उन कर्तव्यो को प्रकट करते हैं जो मनुष्य को अपने सम्बन्ध मे पूरे करने चाहिए। शेष पाच नियमो मे मानव के उन कर्तव्यो का विश्लेषण किया गया है। जो उसके अन्यो के प्रति होते हैं। भाव, भाषा तथा क्रम की दृष्टि से यह नियम अत्यन्त सुन्दर है। इनमे एक भी शब्द ऐसा नही जो घटाया-बढ़ाया अथवा स्थानान्तरित किया जा सके, वास्तविकता तो यह है कि यदि इन नियमो मे एक बिन्दु मात्र इधर का उधर कर दिया जाए तो सपूर्ण नक्शा ही बिगड़ जाएगा। इन नियमो द्वारा सत्य का स्रोत सत्य की उपासना सत्य का चिन्तन, सत्य का मानसिक ग्रहण तथा सत्य का क्रियात्मक व्यवहार इस प्रकार सत्य को सर्वांगीण शिक्षा देकर विश्व के उपकार विश्व प्रेम विश्व मे विद्या की वृद्धि तथा विश्व की उन्नति को ही व्यक्ति की उन्नति और फिर व्यक्ति पर विश्व के अधिकार की वृद्धि तथा विश्व की उन्नति को ही व्यक्ति की उन्नति और फिर व्यक्ति पर विश्व के अधिकार की सीमा इन विश्व व्यापक आदर्शों तथा मर्यादाओ का प्रतिपादन हुआ है।

सिद्धान्तो की दृष्टि से इन नियमो मे निम्नलिखित सकेत किया है—

1 प्रथम नियम मे त्रैतवाद का प्रतिपादन किया है।

2 दूसरे नियम मे अद्वैतवाद अवतारवाद, अनश्वरवाद तथा मूर्तिपूजा का खण्डन किया गया है।

3 तीसरे नियम मे वेद को ईश्वरीय ज्ञान बताकर उसके वातावरण मे जीवन व्यतीत करने पर बल दिया गया है।

4 चौथे नियम मे सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने मे सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

5 पाचवे नियम मे सब काम धर्मानुसार अर्थात सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।

6 छठे नियम मे वीर्य रक्षा तथा युक्त आहार विहार वर्ण व्यवस्था आत्मा की सत्ता पुनर्जन्म तथा मुक्ति इन सिद्धान्तो का प्रतिपादन किया गया है।

7 सातवें नियम मे यथा योग्य व्यवहार का प्रतिपादन किया गया है। वर्णाश्रम व्यवस्था उपयोगी पशुओ की रक्षा हिंसको के निग्रह तथा अहिंसा की ओर स्पष्ट निर्देश है।

8 आठवें नियम मे मुख्यत 16 सस्कारो और पाच महायज्ञो के अनुष्ठान और प्रकार की ओर सकेत ?।

9 प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिए। किन्तु सबकी उन्नति मे अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

10 सब मनुष्यो को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालन मे परतन्त्र रहना चाहिए और स्वतन्त्र हितकारी नियमो मे सब स्वतन्त्र रहे।

इन नियमो को स्वीकार करने का अर्थ है उसके भावो को स्वीकार करना। 5 मन्तव्यो मे मुख्यतया स्वीकार करने योग्य यही बातें हैं और यदि और विस्तार मे जाए तो 5 मन्तव्य भी पर्याप्त नहीं सिद्धान्तो का सग्रह सम्पूर्ण आर्य साहित्य से ही हो सकता है।

इन नियमो की एक मूल विशेषता यह है कि इनमे साम्प्रदायिकता छू तक नही गई और ये सम्पूर्ण मानव समाज के भले के लिए समस्त कालो और क्षत्रो के लिए अभिप्रेत है।

आर्य समाज का आस्तिकवाद उस प्रभु के चहु और गतिमान रहना है जो चेतन है, ज्ञानमय और आनन्द का भण्डार है। आर्य समाज का प्रभ अभाव से उत्कृष्ट की उत्पत्ति नही करता और न ससार उसमे ही निकलता है जो काय का व्यवहार ठीक हो वह धर्म कहलाता है अन्याय पक्षपात एव द्वेष रहित सत्य एव न्याय का आचरण धर्म माना जाता है। धर्म के दस लक्षणो को आर्य समाज धर्म की परिभाषा और स्वरूप मानता है।

मानव अल्पज्ञ है। एक मात्र परमात्मा ही सर्वज्ञ है। मानव को विचार एव कर्म की जहा स्वतन्त्रता दी गई है वहा अल्पज्ञता जनित भूलो एव निर्बलो के बचाव एव परिमार्जन के लिए तथा अधिकाधिक प्रकाश के लिए उसे ईश्वरीय ज्ञान वेद पर आश्रित रहने का भी परामर्श दिया गया है। इसलिए सत्य का ग्रहण असत्य का परित्याग करना विद्या का प्रकाश अविद्या का विनाश करना आवश्यक ठहराया गया।

अन्त मे यह कहना उचित होगा कि नियम सागर हैं। जिनमे सिद्धान्तो का सागर बन्द है। अधिक स्पष्ट कहना हो तो सिद्धान्तो के नाम लीजिए और उनको से की राय लेना हो तो नियमों को पर्याप्त समझें।

—डा. दीनानाथ शर्मा मुख्याध्यापक विद्यालय विभाग गुरुकुल कांगड़ी

—

# महर्षि दयानन्द सरस्वती फिल्म

महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन पर बनाई जा रही फिल्म के औचित्य अथवा अनौचित्य पर आर्य साप्ताहिको में आर्य विद्वानो एव हितचिन्तको के विचार पढ़ने को मिलते रहे हैं। इन सभी लेखो मे दिए गए तर्कों और युक्तियों से यही निष्कर्ष निकलता है कि फिल्म नही बननी चाहिए। फिल्म बनाने के पक्ष मे दिए गए विचार प्रभावित नहीं कर पाए। हम लोग आपस मे भी इस विषय मे चर्चा करते रहते हैं और स्वाभाविक प्रश्न होता है कि सार्वदेशिक सभा के प्रधान मौन क्यो हैं? मौन का अर्थ है कि उनकी स्वीकृति है। तब फिल्म बनकर रहेगी।

अब आदरणीय सोमनाथ जी मरवाह (सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष) के लेख से स्थिति स्पष्ट हुई है। प्रथम यह कि सन् 1975 मे गुजरात सरकार ने महर्षि दयानन्द पर फिल्म बनाई तो सभी आर्य प्रसन्न हुए। द्वितीय यह कि उस प्रसन्नता की लहर मे सन् 1980 मे सार्वदेशिक सभा की अन्तरग मे प्रस्ताव पारित कर उस पर कार्य प्रारम्भ कर दिया और अब आश्चर्य यह है कि उस बैठक मे उपस्थित महानुभाव इसका विरोध कर रहे हैं। अत किसी स्वार्थ की गन्ध आना स्वाभाविक है।

सम्भवत पारित प्रस्ताव की मर्यादा के कारण सार्वदेशिक सभा प्रधान तो मौन रहे। अन्य सदस्यो को न तो मौन रहना उचित है ही श्री मरवाहा जी के समान स्थिति स्पष्ट करना उचित है या सार्वदेशिक सभा की बैठक बुलाकर पुन इस विषय पर विचार करना चाहिए। न कि साप्ताहिक पत्रो मे विवाद को बढ़ावा देना चाहिए।

सम्भव है कि प्रस्ताव पारित करते समय कुछ मुख्य बातो पर विचार करना छूट गया हो अत मेरा सुझाव है कि सार्वदेशिक सभा के माननीय सदस्य, सभा प्रधान से निवेदन करके इस विषय मे पुन विचार हेतु बैठक बुलवा लें और अच्छी प्रकार विचार करें। फिर जो भी निश्चय हो उसे स्वीकार करें।

इसके साथ ही मेरा दूसरा सुझाव यह है कि दुबारा विचार करते समय इस बात की चिन्ता न करें कि इसके निर्माण पर कुछ लाख रुपया खर्च हो चुका है। अपरिहार्य कारणो से कई बार धन की हानि हो जाती है। इस धन हानि को भी उसी में सम्मिलित मान लिया जाए, अक्सर निर्णय विरोध मे जाता है। परन्तु निर्णय लेते समय महर्षि दयानन्द सरस्वती के दृष्टिकोण सिद्धान्तो का सर्वाधिक विचार रहे और कोई त्रुटि शेष न रहने पाए।

—धर्मवीर विद्यालंकार 5 अशोक नगर पीलीभीत 39

# ऋषि बोधोत्सव सम्पन्न

शिवरात्रि ऋषि बोधोत्सव 17 फरवरी 85 को आर्य समाज गढ़शकर की ओर से श्री परमेश्वरी दास वेदी आर्य स्कूल मे गढ़शकर मे, ऋषि बोधोत्सव बड़ी धूमधाम मे मनाया गया। इसी उपलक्ष मे हवन-यज्ञ किया गया। इसमे डी ए वी कालेज, हसराज आर्य स्कूल तथा अशोक बालवाड़ी स्कूल तथा नगर के प्रमुख सज्जन सम्मिलित हुए। छात्र-छात्राओ द्वारा भक्ति सगीत और छोटे 2 बच्चो द्वारा महर्षि दयानन्द जी के सम्बन्ध मे कविताए तथा भाषण प्रस्तुत किए गए।

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

उसे प्राथमिकता मिलनी चाहिए।

6, सस्कृत को शिक्षा व्यवस्था मे एक अनिवार्य विषय बनाया जाए।

7 हरिजन भाईयो के साथ मेल-मिलाप बढ़ाकर उनमे से यह भावना दूर कर देनी चाहिए कि वे हिन्दुओ से पृथक् हैं। महर्षि बाल्मीकि और गुरु रविदास के जन्मोत्सव मे विशेष रूप से सम्मिलित होना चाहिए।

8 जहा तक सम्भव हो सके अपनी सस्थाओ को सगठित किया जाए और उनको व्यायाम की शिक्षा दी जाए। आर्य समाजो मे आर्य युवक सभाए अवश्य प्रारम्भ की जाए।

9. प्रत्येक आर्य समाज अपने-अपने क्षेत्र मे आर्थिक रूप से पीड़ित जनता की अधिक से अधिक सहायता करें।

10 आर्य समाजो के अधिकारी यह प्रबन्ध करें कि आर्य समाज के मन्दिर अग्नियो के लिए सदा खुले रहे जो भी अतिथि आए उनकी सेवा की जाए।

तात्पर्य यह कि अपनी रक्षा के लिए हमें अपने आपको सगठित करना चाहिए, हम भारत सरकार के आभारी हैं कि उस ने पजाब मे स्थिति को सामान्य करने के लिए बहुत कुछ किया है। परन्तु हम यह अनुभव करते हैं कि जो कुछ हुआ है, वह पर्याप्त नहीं है। हमें बहुत कुछ स्वय करना पड़ेगा। इसके लिए हमें पूर्ण तैयारी करनी चाहिए। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब इस विषय मे आर्य जनता को अपना पूरा सहयोग देगी।

# आर्यसमाज लन्दन के समाचार

## सभा महामन्त्री के नाम पत्र

आदरणीय सभा महामन्त्री,
सादर नमस्ते।

आप द्वारा भेजी कुछ पुस्तकें तथा पत्र प्राप्त हुआ। धन्यवाद। हम दोनो मेरे पति जी तथा मैं इसके लिए अपना आभार प्रकट करते हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का ऐसा साहित्य प्रकाशन करना तथा प्रचारार्थ इस प्रकार वितरण करना सराहनीय है।

मेरे पास आर्य समाज लन्दन का पुस्तकालय विभाग है। जब भी समय मिला तो समाज की गतिविधियों द्वारा आपको सूचित करने का प्रयास करूंगी। इस समय ओ-आ क्से कार्य तथा समाज सेवाए कर रहा है मैं निम्नलिखित लेख के रूप में विवरण देती हू।

### आर्य समाज लन्दन के समाचार

प्रत्येक रविवार हमारा साप्ताहिक सत्सग बहुत ही सुचारू रूप से चल रहा है। यज्ञ प्रभी वेद सुधा भिन्न भिन्न व्यक्तियो के भाषण प्रभु भक्ति के भजन तथा हवन-यज्ञ मे सम्मिलित होने दूर-दूर से आते हैं। प्रत्येक सप्ताह रविवार को हिन्दी तीन अध्यापको द्वारा पढाई जा रही है तथा इसको सुचारू रूप से चलाने मे श्रीमती स्वतन्त्र गाबरी का बहुत बडा सहयोग है। बच्चो की आयु तथा हिन्दी भाषा की योग्यता को ध्यान मे रख तीन पृथक विभागो में बाटा हुआ है।

1 बच्चो यानि युवक तथा युवतियो को भारतीय साज सगीत तथा नृत्य का भी आयोजन है जिसके इन्चाज श्रीमान त्रिलोकनाथ गाबरी जी हैं। दो अध्यापिकाए भी समाज मे सप्ताह मे दो बार इस कार्य के लिए नियुक्त की गई हैं। बहुत से युवक एव युवतिया इसकी शिक्षा समाज मे ग्रहण कर रहे है।

इसके अतिरिक्त मास मे एक बार हमारे युवक युवतियो का प्रोग्राम भी आयोजित किया जा रहा है। पिछले तीन मास से इसका सफल बनाने मे हमारे योग्य तथा उत्साही महामन्त्री श्री राजेन्द्र कुमार ओबराय जी का हाथ है।

पुस्तकालय कार्य मे भी वृद्धि हुई तथा वद सम्बन्धित बच्चो तथा बडा के लिए हिन्दी तथा अंग्रेजी भाषा में पुस्तकें हैं तथा सदस्यों को पुस्तकें पढने इत्यादि की सुविधाए प्राप्त हैं।

समाज मे 405 आश्रयदाता (पैट्रनस) हैं जिनके नाम हाले के पतरो पर खुदाई करवा कर उनको पर लगवा समाज के महाकक्ष की शोभा बढा रहे हैं। इस सारे कार्य का खर्चा हमारे बर्षों से चले आ रहे बमोवृद्ध धरोहर रखने वाले ट्रस्टी श्री फकीरचन्द नायर जी ने दिया जिनके समाज तथा आश्रयदाता आभारी हैं।

समाज की यज्ञ हवन की समिति की अध्यक्षा श्रीमती सावित्री छाबडा की अध्यक्षता मे वेद सुधा मण्डल प्रत्येक मास मे एक बार प्रचार के लिए धर्म प्रेमी घरो मे हवन वद मन्त्रो की व्याख्या भजनो तथा सकीर्तन द्वारा समाज के लिए स धन तथा धन एकत्रित करने मे सलग्न है। इसका श्रेय श्रीमती सावित्री छाबडा जी को जाता है।

समाज के प्रधान तथा स्तम्भ हमारे प्रोफसर सुरेन्द्रनाथ भारद्वाज जी आदरणीय सुशोभित हैं समाज की सेवा मे इतने सलग्न हैं कि न सर्दी बर्फ पडने का ध्यान है न स्वास्थ्य की चिन्ता बस समाज की सेवा लक्ष्य बनाया लगता है। दूसरी समाजो में हिन्दी हिन्दु धर्म तथा विविध विषयो पर भाषण प्रचार तथा प्रसार करने की धुन मे लगे हैं। भारतीय संस्कृति द्वारा विभिन्न धार्मिक रीतियो द्वारा धन भी एकत्रित करते हैं। प्रोफसर भारद्वाज जी तो वास्तव मे बहुत ही बडी प्रशसा के पात्र हैं। मेरे मन मे ही नही बल्कि मेरे तो सम्पूर्ण परिवार के मन मे उनका बडा भारी मान है।

आर्य मर्यादा पत्रिका आर्य समाज लन्दन की पुस्तकालय के लिए भी प्रत्येक सप्ताह भेजने की कृपा करे। तथा एक वर्ष का कितना चन्दा बनता है। दूसरा आप बढिया हवन सामग्री 20 किलो समुद्री डाक द्वारा समाज के पता पर भिजवा पाए तो भी कृपा होगी तथा बिल मेरे नाम बनवा कर भेज देना ताकि मैं पैसे भेज पाऊ।

और 10 कापिया सिलप्सिस फाम सत्यार्थ प्रकाश। 2 पाफलेटर दी आर्य समाज एण्ड दी सिख 10 10 प्रतिया। 3 दी पोलिटीकल क्राईसिस इन दी पजाब की भी समाज के लिए 10 प्रतिया भेजने का प्रबन्ध करवा देना। बिल मेरे पास अलग अलग वस्तुओ के भी भिजवा देना तथा वस्तुए पाने पर ड्राफ्ट द्वारा पैसे भिजवा दिए जाए गे।

कष्ट के लिए—धन्यवाद।

सबको यथायोग्य प्रणाम। श्री नीरे न्द्र जी को हम सबकी विशेष नमस्ते तथा स्मरण दिलाना।

— शकुन्तला कोछड़, लायब्रेरियन आर्य समाज लन्दन 69 ए आरगमाल रोड वैस्ट इलिंग लन्दन डब्ल्यू—13 यू-के

# उड़ीसा में व्यापक शुद्धि समारोह

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी धर्मानन्द जी के आग्रह पर सार्वदेशिक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्रीमान रामगोपाल जी वानप्रस्थ ने शुद्धि समारोह मे भाग लेने के लिए श्री पृथ्वीराज जी शास्त्री उप मन्त्री को भेजा। श्री शास्त्री जी 8 फरवरी को गुरुकुल आश्रम आमसेना पहुचे। 9 फरवरी को प्रात गुरुकुल की गाडी मे यात्रा प्रारम्भ हुई। साथ मे महात्मा प्रेम प्रकाश जी धूरी (पजाब) स्वामी धर्मानन्द जी एव विशिकेसन जी शास्त्री सयुक्त मन्त्री उत्कल आर्य प्र ति सभा भी थे। मार्ग में गुरुकुल नसिहनाथ आर्य समाज भेवरिया आर्य समाज श्रद्धापालि, बनवास पालि गुरुदेन कम्पपालि आदि के सदस्यो ने सभी का भव्य स्वागत किया।

10 फरवरी को प्रात उत्साहमय वातावरण मे शुद्धि समारोह श्री विशिकेसन जी शास्त्री के पौरोहित्य मे प्रारम्भ हुआ श्री पृथ्वीराज जी शास्त्री ने शुद्धि होने वाले व्यक्तियो को नवीन वस्त्र प्रदान किए। श्री महात्मा प्रेमप्रकाश जी वानप्रस्थी ने दीक्षित होने वाले बन्धुओ को आशीर्वाद दिया। महात्मा जी 3 हजार से अधिक पुराने उपयोगी वस्त्र निर्धन व्यक्तियो मे बाटने के लिए उडीसा लाए थे। इस अवसर पर 11८ परिवारो के 500 से अधिक व्यक्ति पुन आर्य धर्म मे प्रविष्ट हुए। वैसे एक हजार व्यक्ति तैयार थे परन्तु स्वामी धर्मानन्द जी के अस्वस्थ हो जाने से सभी को एक स्थान पर लाने की व्यवस्था नही हो सकी। शेष व्यक्तियो को भी शीघ्र ही शुद्ध किया जाएगा।

इस कार्यक्रम का आयोजन उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी धर्मानन्द जी तथा उनके सहयोगियो के अनथक प्रबल एव सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के विशेष सहयोग से हुआ। साथ मे आर्य समाज सम्बलपुर आर्य प्रति सभा मध्य प्रदेश आर्य समाज रायपुर का सहयोग भी उल्लेखनीय रहा। इसकी व्यवस्था में श्री डा कृष्णदेव सारस्वत श्री भवानी शकर साहू एव सभा चन्द्र शास्त्री ने भी अच्छा प्रयत्न किया। इस अवसर पर श्री स्वामी ज्ञानानन्द जी उपस्थित थे।

# आर्य समाज पंचपुरी गढ़वाल का वार्षिक निर्वाचन

विगत फरवरी मास मे आर्य समाज पचपुरी का वार्षिक निर्वाचन निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ—

प्रधान—श्री शान्ति प्रकाश जी प्रेम उपप्रधान—श्री श्रीधर प्रसाद जी आजाद श्री चन्द्रलाल जी सह पत्र समिति दिल्ली, मन्त्री—श्री वासुदेव जी अध्यापक उप-मन्त्री—श्री गगा प्रसाद जी अध्यापक श्री विश्वबन्धु जी भास्कर सहायक समिति दिल्ली कोषाध्यक्ष—श्री बलवन्तसिंह जी सहायक कोषाध्यक्ष—श्री कालूराम जी पुस्तक लेखा निरीक्षक—श्री योगेश्वर जी कोहली।

—वासुदेव मन्त्री

# स्त्री आर्य समाज बरनाला का चुनाव

स्त्री आर्य समाज श्रद्धानन्द बाजार बरनाला का 4 2 85 को वार्षिक चुनाव निम्न प्रकार हुआ—

प्रधान—श्रीमती कमलेश गर्ग उप प्रधान—श्री श्रीमती अनीता चोपड़ा, श्रीमती कान्ता जौन्दल, मन्त्री—श्रीमती उर्मिला भाटिया, उपमन्त्री—कुमारी सुनीता जौन्दल, श्रीमती पदमा जौन्दल, कोषाध्यक्ष—श्रीमती सलोचना लेखा-निरीक्षक श्रीमती उर्मिला सिंगला सदस्य श्रीमती भारत मोदी श्रीमती किरण कपिल ड कन्र किरण।

## आर्य वानप्रस्थ आश्रम गुरुकुल भठिंडा

आर्य वानप्रस्थ आश्रम भठिंडा मे 12 2 84 को भगवती सीता माता का जन्म दिन मनाया गया।

17 2 85 को महर्षि दयानन्द बोधोत्सव मनाया गया। आर्य समाज सिरकी बाजार रेलवे रोड जड वाली गली भठिंडा से प्रात 5 बजे प्रभात फेरी की गई और ऋषि लंगर मे लगभग 500 स्त्री पुरुषो ने भोजन किया।

24 2 85 को श्री मेघराज जी गोयल प्रधान आर्य समाज बुढलाडा के घर मे पारिवारिक सत्संग किया गया। जिसमे ओमप्रकाश आर्य वानप्रस्थी भटिंडा को बुलाकर हवन यज्ञ एव प्रवचन कराया गया। 101 रुपये आर्य वानप्रस्थ आश्रम भठिंडा को दान मिला, स्त्री पुरुषो का जलपान से सत्कार किया गया। उपस्थिति अच्छी थी अच्छा प्रभाव पडा 11 से 17 मार्च तक बढलाडा मे वेद प्रचार हुआ।

## आर्य समाज फिल्लौर का वार्षिक निर्वाचन

आर्य समाज फिल्लौर का वार्षिक चुनाव 10 2 85 को प्रात आर्य समाज मन्दिर मे निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ—

प्रधान—श्री प्रमोद कुमार वसधरा उपप्रधान—श्री ज्ञानचन्द आर्य श्री मदन मोहन आर्य मन्त्री—श्री सुधीर कुमार आर्य, उपमन्त्री—श्री अश्विनी कुमार गुप्ता श्री हसराज, कोषाध्यक्ष—श्री सुभाष आर्य

अन्तरग सदस्य

श्री अमीरचन्द पासी श्री बलराज आर्य श्री कालूराम श्री राजेन्द्र पासी श्री सुरेन्द्र मल्होत्रा श्रीकृष्णचन्द्र नसु०रा श्री वेद कुमार भाटिया, श्री हेमन्तकुमार नैय्यर।

आर्य स्कूल

प्रधान—श्री प्रमोद कुमार वसधरा प्रबधक—श्री कालूराम मन्त्री—श्री राजेन्द्र पासी कोषाध्यक्ष—श्री सुभाष आर्य अन्तरग सदस्य—श्री शक्ति पासी श्री शशि जलोटा श्री सत्यानन्द अग्रवाल, श्री लक्ष्मामल भगी श्री रमेश कोछड श्री प्राणनाथ।

## लुधियाना में महाशय कृष्ण जी की पुण्य स्मृति मनाई गई

24 फरवरी 85 रविवार को आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार लुधियाना म दिवगत महान आर्य नेता महाशय कृष्ण जी की पुण्य तिथि दिवस मनाया गया। उनके जीवन के बारे मे वैद्य कुन्दनलाल जी डाक्टर रामस्वरूप तथा सत्यभूषण बांगिया जी श्री धर्मपाल शहीनजी ने अपने अपने विचार प्रकट किए और आर्य समाज की ओर से श्रद्धांजलि भेंट की गई। उनके बताए हुए रास्ते पर आर्य जगत उन्नति कर सकता है। आर्य जगत मे उनका नाम सदा सूर्य की तरह चमकता रहेगा।

—धर्मपाल

## दक्षिण गुजरात में वेद प्रचार की धूम

श्री वानप्रस्थी धीरू भाई जी के विशेष सहयोग से आर्य समाज कठोली को केन्द्र बनाकर 3 ब्रह्मचारीओर आचार्य नरेश जी ने 17 फरवरी से 27 फरवरी तक पुण्य कार्य के उपलक्ष में 18 ग्रामों 19 स्कूलो व कालेजों और परिवारों में यज्ञ सत्संग के कार्यक्रमों मे अपने ओजस्वी व्याख्यानो से हजारो व्यक्तियो में वैदिक धर्म, प्रचार व संस्कृति का ज्ञान प्रचार किया। आचार्य जी के साथ तीन ब्रह्मचारी और भी प्रचार में सहयोग कर रहे है।

—अनिरुद्ध नायक मन्त्री

## शोक समाचार

आर्य समाज सरहन्दी गेट पटियाला के कर्मठ कार्यकर्ता एव कोषाध्यक्ष श्री राम शरण वर्मा जी की पत्नी श्रीमती दयावन्ती, यज्ञ के पश्चात प्रार्थना करते हुए परम पिता परमात्मा को प्यारी हो गईं। यह यज्ञ उनके सुपुत्र श्री आर के वर्मा की वर्षी हेतु शान्ति यज्ञ किया गया था अन्त्येष्टि संस्कार डा कुन्दनलाल प्रधान आर्य समाज तथा श्री श्यामलाल आर्य ने करवाया। आर्य समाज मे 17 फरवरी को साप्ताहिक सत्संग के पश्चात दो मिनट का मौन रखा गया और शोक प्रस्ताव पारित किया गया।

—देवेन्द्र विद्यार्थी



श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जय हिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन नं. 7425। (रजि. नं. पी. जे. एल. 55)

वर्ष 16 अंक 41, 11 चैत्र सम्वत् 2042, तदनुसार 24 मार्च 1985, दयानन्दाब्द 160 । एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपए

## आर्य समाज का स्थापना दिवस

# नव-वर्ष विक्रमी सम्वत् 2042 का शुभारम्भ

प्रति वर्ष, चैत्र सुदि प्रतिपदा से विक्रमी सम्वत् (नव-वर्ष) आरम्भ होता है। इस वर्ष यह दिन 2 मार्च को आया है। अधिकतर लोग प्रथम जनवरी को नव-वर्ष मानते हैं और इसी दिन अपने मित्रों को बधाई आदि भेजते हैं। यह वर्ष अंग्रेजों का आरम्भ किया हुआ है। भारतीय विद्वान् सृष्टि सम्वत् व विक्रमी सम्वत् को ही मानते हैं।

चैत्र सुदी प्रतिपदा से विक्रमी सम्वत् 2042 और सृष्टि सम्वत 1**6085-3086 आरम्भ हुआ है। यही हमारा नव-वर्षारम्भ है। कई स्थानों पर प्रथम वैसाख से भी नव-वर्ष का प्रारम्भ माना जाता है। सारा व्यापारिक वर्ग प्रथम अप्रैल से अपने नए बही खाते बनाकर सिद्ध करता है कि उनका नव-वर्ष प्रथम जनवरी से नहीं, प्रथम अप्रैल से आरम्भ हुआ है। यह तिथि इन्होंने इसलिए निश्चित कर ली है कि देसी तिथियों में कई बार चैत्र सुदी प्रतिपदा पहले और कभी पीछे आती है क्योंकि [illegible] महीने का [illegible] वर्ष में प्रचलन हो गया है। इसलिए इसके लिए एक तिथि निश्चित सी कर ली गई। कई व्यापारी चैत्र सुदी प्रतिपदा को भी अपने बही-खाते लगाते हैं।

महर्षि दयानन्द जी महाराज ने भी इसी दिन को महत्व देते हुए चैत्र सुदी प्रतिपदा सम्वत् 1932 विक्रमी दिन बुधवार 10 अप्रैल 1875 को भारत की प्रसिद्ध समृद्धि शालिनी नगरी (मुम्बापुरी) बम्बई गिरगाव मे डा. मानिकचन्द जी की वाटिका मे आर्य समाज की स्थापना की थी। उस समय सर्वसम्मति से आर्य समाज के 28 नियम निर्धारित किए गए थे परन्तु आगे चलकर लाहौर आर्यसमाज की स्थापना के अवसर पर इन्ही 28 नियमो को संक्षिप्त रूप देकर 10 नियमो मे बदल दिया गया। आर्य समाज के यह नियम ऐसे हैं जिन पर किसी को भी कोई एतराज नही हो सकता। प्रत्येक बुद्धिमान व्यक्ति ने इन नियमो का स्वागत किया है और इन्हे स्वीकार कर आर्य समाज के सदस्य बने, आर्य समाज की स्थापना ऐसे सर्व व्यापक और सर्व-हितैषी नियमो पर हुई है कि ससार के सब राष्ट्रो और जातियो के निवासी उन पर चलकर सर्वथा अपनी उन्नति कर सकते हैं। इसके संस्थापक महर्षि दयानन्द जी ने इसमें अपने लिए कोई स्थान व पद नही रखा था। वह अपने आपको आर्य समाज का एक साधारण सदस्य समझते थे। एक बार लाहौर आर्य समाज ने जब उन्हे एक अधिवेशन का प्रधान पद स्वीकार करने की प्रार्थना की गई थी तो उन्होने यही उत्तर दिया था कि आपकी समाज के प्रधान विद्यमान हैं वही अपना कर्त्तव्य पालन करें एक साधारण सदस्य के रूप में, मैं भी आपके कार्य में योग दे सकता हू। महर्षि दयानन्द जी ने अपनी कोई गद्दी न बनाकर केवल आर्य समाज को ही अपना उत्तराधिकारी माना था। महर्षि को आर्य समाज से बहुत आशा थी। वह आर्य समाज के द्वारा ससार का उपकार करना और देश-देशान्तरो मे वैदिक धर्म का प्रचार करना चाहते थे। वह चाहते थे कि सत्य-सनातन वैदिक धर्म को और वेद के प्रचार को सारे ससार मे फैलाया जाए। वह जहा भारत मे फैले सभी अन्ध-विश्वासो और कुरीतियो को दूर करना करना चाहते थे वहा वह योरुप से आई पाश्चात्य सभ्यता की प्रबल आन्धी को वेद प्रचार की प्रबल शक्ति से उसे उड़ा लेजा कर तितर-बितर कर देना चाहते थे। वह देख रहे थे कि भारतीय जहा कुरीतियो और अन्ध विश्वासो मे फसे हैं वहा पाश्चात्य सभ्यता का अन्धानुकरण करते चले जा रहे हैं। उनकी वेशभूषा रहन-सहन बदल रहा है जो भारत में अंग्रेजी राज्य की जड़ें मजबूत कर देगा। इसलिए उन्होंने एक ईश्वर की पूजा, एक हिन्दी भाषा और स्वदेशी वस्तुओ के प्रयोग पर बल दिया जो भारतवासी लोभ-लालच देकर या डरा धमका कर, ईसाई व मुसलमान बना लिए गए थे उन्हें शुद्ध करके फिर हिन्दू धर्म का अंग बनाने के लिए एक अभियान प्रारम्भ किया। हमारे तथाकथित सनातन धर्मी भाईयों व पण्डे पुजारियो ने इसका विरोध भी डटकर किया परन्तु बुद्धिमान् लोगों पर इसका अच्छा प्रभाव पड़ा।

जो भाई हिन्दू धर्म को छोड़कर ईसाई या मुसलमान बन गए थे वह पुन. अपने धर्म मे वापिस आने लगे। यह ठीक है कि हमे इसका बहुत बड़ा मूल्य चुकाना पड़ा। क्योंकि अंग्रेज सरकार को यह महसूस होने लगा कि यदि हिन्दू धर्म का सगठन मजबूत हो गया तो वह एक शक्तिशाली रूप धारण कर लेगा और अंग्रेज सरकार की जड़ें हिला देंगे। हुआ भी यही विघटन का बीज बोने वाली अंग्रेज सरकार को एक दिन भारत से जाना पड़ा, परन्तु हमे इसका बहुत बड़ा मूल्य चुकाना पड़ा।

हमें आर्य समाज का स्थापना दिवस मनाते हुए महर्षि के अधूरे कार्यों को पूर्ण करने का व्रत लेना चाहिए। तभी हम उनके सच्चे अनुयायी कहला सकते हैं।

# 24 मार्च रविवार को अमर शहीद स. भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरु का बलिदान दिवस मनाया जाए

[illegible] मालूम है कि अमर [illegible] भगतसिंह, श्री सुखदेव और [illegible] का बलिदान दिवस 23 मार्च [illegible] 24 मार्च 85 को [illegible] बलिदान दिवस मनाया जाए। उस दिन सरदार भगतसिंह श्री सुखदेव और श्री राजगुरु की जीवनी के सम्बन्ध में लोगो को सारी जानकारी दी जाए और बताया जाए कि उन नवयुवकों ने अपने देश की स्वतन्त्रता के लिए कितना बड़ा बलिदान दिया था विशेषकर युवकों को उस दिन के समारोह में आमन्त्रित किया जाए और उन्हें प्रेरणा दी जाए कि वे भी भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरु के पदचिन्हो पर चलते हुए अपने देश के लिए बड़ा से बड़ा बलिदान देने को तैयार रहें। जिस बात की ओर जनता का विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है, वह यह कि भगतसिंह और सुखदेव दोनों ही आर्य समाजी परिवारों में पैदा हुए थे और आर्य समाज के संस्कारों के कारण ही वे अपने देश के लिए अपने जीवन को बलिदान देने को तैयार हो गए।

इससे पूर्व अंक मे [illegible] प्रकाशित किया गया था जो पंजाब आर्य सभा ने अपनी बैठक दिनांक 10 मार्च 85 को [illegible] में हुई थी मे पारित किया था। कृपया उस सारे प्रस्ताव को उस दिन सारी सभा में पढ़कर सुनाएं और उसमें जो सुझाव दिए गए हैं उन्हें क्रियान्वित करने के लिए अपनी आर्य समाज की ओर से सक्रिय पग उठाएं।

—कमला आर्य सभा महामन्त्री

# नित-नूतन-रमणीय—
# अग्नि देव

ले —श्री धर्मवीर जी विद्यालंकार

(10 मार्च से आगे)

इससे पहला मन्त्र ऋषियो तक ही सीमित नही है। जो भी अल्प ज्ञानी या निपट मूर्ख है, अथवा बुद्धिविहीन भोग योनि जैसे प्राणी (पशु एव पक्षी) है, अथवा जड़-प्राणी (औषधिया वनस्पतिया,) हैं। वे सब उस सर्व-व्यापक अचन्नियन्ता अग्नि स्वरूप ईश्वर का अनुभव करते है और आनन्दित रहते हैं। जब-जब जिस-जिस ने उसके अग्नि स्वरूप को समझा, पहचाना और अनुभव किया है वह सुखी, सम्पन्न और आनन्दित हुआ है चिन्ता रहित हुआ है। उसकी समस्त चिन्ताओ,—भरण-पोषण, रोटी-कपड़ा, मकान की आपूर्ति का दायित्व प्रभु ने-अग्नि ने—अपने ऊपर ले लिया है, ऐसा भान होने लगता है। ईश्वर के कर्म फल नियम से प्रत्येक प्राणी को उसके कर्मों के अनुसार ही भोग्य पदार्थ मिलते है। अग्नि स्वरूप प्रभु के जानने के अनन्तर प्राणी की प्रवृत्ति पुण्यमय कर्मों की ओर हो ही जाती है। प्राणी अपने कर्मों को उस अमृत अग्नि मे—सकल्प रूप है। आहुत कर देता है। 'इद अग्नये स्वाहा। फिर पल्ला झाड़ते हुए निश्चित मत से कहता है—'इदम् न मम्।' सर्वस्व समर्पण के बाद अब उसे कुछ पाने की कामना नही रहती। मात्र नित्य नैमित्तिक कर्त्तव्य सम्पादन की प्रवृत्ति शेष रहती है।

इस वेद मन्त्र का एक एक अक्षर सार्थक है। अर्थात् अग्नि स्वरूप ईश्वर को जानने वाले नय पुराने विद्वान् (ऋषि) मनुष्य, पशु, पक्षी सभी के कल्याण का भोग क्षेत्र का भरण-पोषण-चिन्तन का दायित्व वह अग्नि स्वय वहन करता है। अपूर्ण कामनाओ के कारण किए जाने वाले अनैतिक पाप कम का अवकाश नही रहता। आनन्द ही आनन्द का वातावरण रहता है। यह इस मन्त्र का आध्यात्मिक व्याख्यान है। आधिदैविक और आधि भौतिक व्याख्यान निम्न हैं।

अग्निदेव (आधिदैविक व्याख्यान)—

मन्त्रार्थ—इस अग्निदेव की स्तुति नये और पुराने ऋषि (वैज्ञानिक शोध-कर्त्ता) तो करते ही हैं जो अल्पज्ञ मनुष्य और बुद्धि शून्य प्राणी (पशु पक्षी) तथा जड़ प्राणी (औषधिया-वनस्पतिया) है, वे सभी उसकी प्रशसा करते है। जो भी अग्नि के गुणो को जान लेता है तदनुसार उसकी स्तुति करता है अर्थात् उसका प्रयोग करता है, वह सुखी, समृद्ध, शान्त और आनन्दित रहता है। अत उस दैविक अग्नि देव की सदा स्तुति करने से वह अग्निदेव सबका कल्याण करते हैं।

यह दैविक अग्निदेव तीन स्थानो—द्युलोक, अन्तरिक्षलोक और पृथिवी लोक में निवास करता है। क्रमश सूर्य विद्युत और अग्नि के रूप मे विद्यमान है। सूर्य, विद्युत अग्नि के गुण-कर्म—स्वभाव के विषय में पुरातन और नूतन वैज्ञानिक (मन्त्रद्रष्टा) नित्य परीक्षण कर रहे हैं। सूर्य के ताप प्रकाशसे औषधियो-वनस्पतियो मे परिपाक होता है। सर्व ऊर्जा के विभिन्न प्रयोग आज का वैज्ञानिक करने लगा है, पहले समझा जाता था कि पृथिवी स्थिर है सूय गति करता है। स्थान बदलता है, उदय और अस्त होना सूय की गति क कारण हैं। अन्वेषण पर बाद मे ज्ञात हुआ कि सूर्य गति नही करता, स्थिर है। पृथिवी गति करती है। लगभग 14 15 वष पूव ज्ञान हुआ कि सूर्य भी गति करता है। 20 वष मे लगभग एक इच आगे सरकता है। वृताकार गति के कारण उस के विभिन्न 2 भाग दिखाई देते हैं। यह आज का वैज्ञानिक अपने परीक्षणो से मान गया है। जबकि वेदज्ञ ऋषि ने सूर्य और पृथिवी दोनो को गतिशील माना है। गतिशीलता के कारण ही वष को सवत्सर कहते हैं। इस प्रकार नये और पुराने ऋषियो मे मतभेद नही अहकार नही, तिरस्कार नही। विकास के बढते कदम हैं।

सूय के ताप से मनुष्य भी लाभ उठाता है। सर्दियो मे धूप सेवन से शीत दूर करता है। गरीब लोग शीत निम्न ।र निवारण करते हैं—

प्रे वह्नि पृष्ठे भानु राशौ
जानुक समर्पित-जानु ।
एव शीत मया नीत,
जानु भानु कृशानुभि ।

अर्थात्—अग्नि को सामने से धूप को पीठ से, सेंक कर तथा रात्रि मे ठोडी को घुटनो मे टेक कर सर्दिया गुजारते हैं। शीत ऋतु मे पहरावा मे ऊनी वस्त्र और ग्रीष्म ऋतु मे सूती वस्त्र। एक निरोधक दूसरे ग्राहक। शीत और ग्रीष्म ऋतु के साथ पदार्थों मे भी गर्म-सर्द का विचार रहता है। नये-नये साधनों का शीत ऋतु (हिटर) और ग्रीष्म ऋतु (पखे आदि) के लिए आविष्कार हो रहा है। सूर्य और पृथिवी की गतियों के कारण ही ऋतुए बदलती हैं।

विद्युत पहले बादलो मे दिखाई दी। फिर द्रव बैटरियों का अविष्कार हुआ। उसके अनन्तर शुष्क सैलो का अविष्कार हुआ जल-प्रवाह से टरबाइन चलाकर विद्युत उत्पन्न की गई। फिर टरबाइन को कोयले के ताप से जल को वाष्प रूप देकर चलाया गया। अब जल प्रपात के अभाव मे भी विद्युत पा ली गई इस विद्युत के दैनिक सुख वृद्धि हेतु प्रयोग दिनो दिन बढ़ रहे हैं। ग्रीष्म ऋतु मे पखे से ठण्डक तथा शीत ऋतु मे हीटर से गर्मी लाई जाती है। मशीनो को चलाकर विभिन्न वस्तुओं का निर्माण किया जाता है। प्रकाश पाने के लिए बल्ब ट्यूब लाईट। ताप के लिए विविध उपकरण। शब्द ग्रहण करने के लिए रेडियो, ट्रांजिस्टर बने। चित्र देखने के लिए दूरदर्शन (टेली-विजन) यन्त्र बने। गति के लिए कार, बस, ट्रक, ट्रैक्टर आदि के डायनमो बने, नया आविष्कारक (ऋषि) पुराने आविष्कारक को दकियानूस, पिछड़ा कहकर तिरस्कार नही करता। अपितु एक शृखलाबद्ध विकास का अग मानता है।

इसी प्रकार पार्थिव अग्नि के उपयोग के विषय मे नित नये आविष्कार हो रहे हैं। लकडी उपले, कोयला मिट्टी का तल, पेटोल डीजल आदि नये 2 साधनो से उसे प्रगट किया जा रहा है। विभिन्न प्रकार से उसका उपयोग किया जा रहा है। हम प्रतिदिन सामान्य बात समझते रहे कि चूल्हे पर चढी दाल । ढक्कन गिर जाता है। भाप के दबाव को नियन्त्रित किया जाए तो कम अग्नि मे कम समय मे दाल आदि पदाथ सरलता से गल जाते हैं नरम पड जाते है। इसी सिद्धान्त पर प्रेशर कुकर का निर्माण हुआ। इससे गृहणियो का समय खर्च कठिनाई मे कमी आई। पहले भाप से रेल इजनो का निर्माण हुआ। तदुपरान्त उसी सिद्धान्त पर पेट्रोल को विद्युत तरग से जलाकर गैस बनाकर कार, बस, ट्रक ट्रैक्टर, मोटर साइकिलो का उपयोग सुख वर्द्धक हुआ। यात्रा, कृषि कार्य सुगम हुए। इसी की अगली कड़ी मे वायुयान बने उपग्रह बने। चाद शुक्र, मगल, बृहस्पति यहाँ तक पहुचे, उनके विषय के ज्ञान को बढाकर सुखी हो रहे हैं।

यह तो नये-पुराने ऋषियो की महिमा है। अज्ञानी पुरुष, पशु-पक्षी और और जिन्हें-वनस्पतियां भी पार्थिव अग्नि के गुण-कर्म-स्वभाव से लाभान्वित हो रहे हैं। अग्निहोत्र की अग्नि से (उसकी विस्फोटक शक्ति से) वायु, जल, पृथिवी, आकाश को शुद्ध, पवित्र, पुष्टिकारक और रोगनाशक बनाते हैं। यह हवि द्युलोक तक पहुँच कर प्रभावित करती है।

इस आधिदैविक अग्नि के विषय में जितना भी चिन्तन मनन अध्ययन किया, जाए, वह प्राणिमात्र के सुख और आनन्द को बढ़ाने वाला है। नए और पुराने ऋषियों (आविष्कारकों) के अहकार, तिरस्कार को नहीं, अपितु प्रसन्नता, परस्पर सहयोग, मैत्री को बढ़ाने वाला है इस आधिदैविक अग्नि की स्तुति सभी नए-पुराने ऋषि मूर्ख मनुष्य, पशु-पक्षी आदि करते हैं और लाभान्वित होते हैं। सब के योग क्षेम की पूर्ति अग्निदेव करते हैं। यह अग्निदेव नित नए और रमणीय हैं।

आधिभौतिक व्याख्यान—

प्राणी मात्र के शरीर में भी अग्निदेव महत्वपूर्ण कार्य करते हैं। शरीर का, स्वास्थ्य सूचक एक निश्चित तापमान है, इसके कम हो जाने पर शरीर में कम-जोरी और अधिक हो जाने पर बुखार होता है। दोनो ही अवस्थाओं मे शरीर अस्वस्थ माना जाता है। अर्थात् यथो-चित कार्य क्षमता नहीं रहती। शरीर के तापमान को स्थायी बनाए रखने के लिए विभिन्न आसन, प्राणायाम और औषधियों के नित नए अविष्कार किए जाते हैं।

शरीर में एक अग्नि और-भी है, जो अन्न को पचाने का काम करता है। इसके बन्द हो जाने पर भोजन बन्द हो जाता है। अनेको रोग शरीर मे प्रवेश पाते हैं। इसे नियन्त्रित करने के लिए आसन प्राणायाम, और नवीन औषधियो पर अनुसन्धान जारी है। यह अग्नि आवश्यकता से अधिक बढ़ भी जाता है तब मनुष्य खाता बहुत है परन्तु शरीर को कुछ लाभ नही होता। यह भी रोग-वर्धक है। उसके शमन के लिए भी उपाय हैं।

प्राण अपान, समान, उदान, व्यान-ये पांच मुख्य प्राण भी इस भौतिक अग्नि को प्रज्वलित नियन्त्रित करते हुए शरीर इन्द्रियों और मन को स्वस्थ रखते हैं।

इस शरीर मे एक अग्नि और है। वह है मन। यह 'ज्योतिषां ज्योति' है। इसका आकार ज्योति से भी सूक्ष्म है। प्रकाश की गति से भी अधिक गति इस की है। यह सोता नहीं। सदा जागता है, प्रभावी है, बलवान् है दृढ़ है। भड़क जाए तो छिपा नहीं सकते। चल पड़े तो रोक नहीं सकते। समुद्र में चल रही नाव को जैसे पवन बहाकर बलपूर्वक ले जाता है वैसे ही य मन मनुष्य को नचाता है नियन्त्रित हो तो आश्चर्यजनक काम करता है।

(क्रमश.)

सम्पादकीय—

# आर्य विद्या सभा का अधिवेशन

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की वो वह संस्थाएं हैं जिनके द्वारा शिक्षा संस्थाओं पर नियन्त्रण रखा जा सकता है। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, कन्या गुरुकुल देहरादून गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ और दूसरे कई गुरुकुलों के प्रबन्ध की देख-भाल के लिए आर्य विद्या सभा बनी हुई है और पंजाब में सभा के अधीन जितने कालिज और स्कूल हैं, उनके प्रबन्ध को देखने के लिए आर्य विद्या परिषद बनी हुई है। समय 2 पर इन दोनों के द्वारा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब अपनी शिक्षा संस्थाओं का नियन्त्रण करती रहती है। जहां तक गुरुकुलों का सम्बन्ध है उनका प्रबन्ध चलाने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा देहली और आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा का सहयोग लेने का प्रयास किया जाता है। यद्यपि यह सब संस्थाएं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अधीन हैं। और इनकी सारी सम्पत्ति भी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के नाम है फिर भी हमारा यह प्रयास रहता है कि इन संस्थाओं को चलाने में दूसरी सभाओं का जो सहयोग मिल सकता है वह लिया जाए। इसी सन्दर्भ में पिछले 16 17 मार्च को लुधियाना में आर्य विद्या सभा की एक बैठक का आयोजन किया गया था। इसमें पंजाब के अतिरिक्त देहली और हरियाणा के भी कई महानुभाव सम्मिलित हुए। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति कुलपति, गुरुकुल कांगड़ी के आचार्य गुरुकुल विश्वविद्यालय के कुल सचिव और विश्वविद्यालय के विजिटर भी इसमें सम्मिलित हुए। हरियाणा से कन्या गुरुकुल खानपुर के कुलपति आचार्य विश्वमित्र जी और श्री महेश्वर सिंह जी भी इसमें सम्मिलित हुए गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के आचार्य स्वामी शक्तिवेश किसी कारणवश न पहुंच सके परन्तु उन्होंने आर्य प्रतिनिधि सभा को अपने पूरे सहयोग का विश्वास दिलाया है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष माननीय श्री सोमनाथ जी मरवाह और देहली आर्य प्रतिनिधि सभा के भूतपूर्व प्रधान श्री सरदारीलाल जी वर्मा भी विशेष रूप से इस सभा में सम्मिलित होने के लिए आए थे। कन्या गुरुकुल देहरादून की आचार्या श्रीमती दमयन्ती कपूर ने भी इसमें सम्मिलित होकर गुरुकुल की समस्याओं के विषय में अपने विचार प्रस्तुत किए थे। कई बार यह कहा जाता है कि विद्या सभा में गुरुकुल के स्नातक नहीं बुलाए जाते। परन्तु इस बार गुरुकुल के तीन प्रसिद्ध स्नातक श्री पं० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार श्री आचार्य सत्यकाम जी और टंकारा के उपदेशक विद्यालय के भूतपूर्व आचार्य पं० सत्यदेव जी विद्यालंकार भी इस विद्या सभा में आए थे। आचार्या दमयन्ती कपूर भी गुरुकुल की स्नातिका हैं। गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी के व्यवसायाध्यक्ष श्री बलदेव आयुर्वेदालंकार भी गुरुकुल के स्नातक हैं। इनके अतिरिक्त आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के 15 में से 10 अधिकारी भी पहुंचे थे। लुधियाना के आर्य भाईयों और बहिनों ने मिलकर विद्या सभा के इस अधिवेशन को सफल बनाने में अपना दिन रात एक कर दिया। जो महानुभाव बाहिर से आए थे वह बहुत ही प्रभावित हुए। श्री पं० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार और श्री पं० सत्यकाम विद्यालंकार इन दोनों की जन्म भूमि लुधियाना है। इसलिए लुधियाना निवासियों ने इन्हें सम्मानित किया और इन दोनों के व्याख्यान सुनें। गुरुकुल के एक और स्नातक जो लुधियाना के रहने वाले हैं, श्री सत्यदेव जी भारद्वाज वेदालंकार। उन्हें भी निमन्त्रण दिया गया था। परन्तु उनका पासपोर्ट इंग्लैंड का है इसलिए बिना सरकार की अनुमति के वह पंजाब न पहुंच सके। परन्तु उन्होंने एक पत्र के द्वारा अपनी शुभ कामनाएं भेज दी और यह भी लिख दिया कि गुरुकुल की सेवा के लिए उनसे जो भी सहयोग मांगा जाएगा, वह देते रहेंगे।

मैंने यह सब कुछ केवल इसलिए लिखा है कि कुछ व्यक्ति यह भ्रान्ति पैदा कर रहे हैं कि जो विद्या सभा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा बुलाई जाती है वह वैधानिक नहीं है। जो कुछ मैंने ऊपर लिखा है उससे यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि विद्या सभा वही वैधानिक हो सकती है जो आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब बुलाएगी। गुरुकुलों की सारी सम्पत्ति आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के नाम है। इस सम्पत्ति की रक्षा करना पंजाब सभा का कर्तव्य है। वह अपने इस उत्तरदायित्व से मुक्त होकर आर्य जगत् से द्रोह करने को तैयार नहीं। गुरुकुल कांगड़ी और उसके सम्बन्धित संस्थाओं को चलाने वाले आर्य समाज के नेता प्रायः सब पंजाबी ही थे। गुरुकुल का एक एक पत्थर पंजाब सभा की कहानी बता रहा है। इन संस्थाओं को अपने खून-पसीना से सींचने वाले श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज श्री आचार्य रामदेव जी श्री पं० चमूपति जी श्री पं० विश्वम्भरनाथ जी श्री महाशय कृष्ण जी और दूसरे कई महानुभाव सब पंजाब से जाकर ही इन संस्थाओं की सेवा करते रहे हैं। यही कारण है कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब इन संस्थाओं के प्रति अपना विशेष उत्तरदायित्व समझती है। इसीलिए समय 2 पर सभा की ओर से विद्या सभा का अधिवेशन बुलाया जाता है। यद्यपि विधान के अनुसार विद्या सभा के सदस्य आज वही हैं जिनका आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब या इन गुरुकुलीय संस्थाओं के साथ सम्बन्ध है फिर भी हम इन संस्थाओं को केवल आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब तक सीमित रखना नहीं चाहते इनकी सफलता के लिए हमें जिसका भी सहयोग मिलेगा हम वह लेंगे। उसी के साथ इन संस्थाओं की सम्पत्ति की स्वामी होते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का जो दायित्व है वह उसे छोड़ने को तैयार नहीं। मेरा आर्य जनता से यह सविनय निवेदन है कि इन संस्थाओं की प्रगति के लिए वह जो भी सुझाव देना चाहें अवश्य दें। हम उनका स्वागत करेंगे और जहां तक सम्भव होगा उन्हें क्रियान्वित करने का प्रयास करेंगे। गुरुकुल कांगड़ी और उससे सम्बन्धित संस्थाएं सारे आर्य जगत की सांझी संस्थाएं हैं। केवल उनके प्रबन्ध को ठीक चलाने का उत्तरदायित्व पंजाब सभा पर है जिसे निभाने का हम प्रयास करते रहते हैं। इसमें हमें आर्य जगत के समर्थन सहयोग विश्वास और आशीर्वाद की आवश्यकता रहेगी।

—वीरेन्द्र

# दक्षिण अफ्रीका में आर्यसमाज

हम जो लोग भारत से बाहिर नहीं जाते उन्हें यह पता नहीं चलता कि दूसरे देशों में आर्य समाज का कितना प्रचार हो रहा है। कई बार उस प्रचार को देखकर जहां हर्ष और गर्व होता है वहां कुछ लज्जा भी अनुभव करते हैं कि हम उन लोगों से बहुत पीछे रह गए हैं। मुझे समय 2 पर दूसरे देशों में आर्य समाज की प्रगति के विषय में समाचार मिलते रहते हैं जिनसे मुझे पता चलता रहता है कि दूसरे देशों में हमारे आर्य भाई और हमारी बहिनें आर्य समाज के प्रचार के लिए क्या कुछ कर रहे हैं। इसी सन्दर्भ में मुझे एक पत्र दक्षिण अफ्रीका से प्राप्त हुआ है। 1975 में जब आर्य समाज की शताब्दी मनाई गई थी तो हमारे बहुत से भाई वहां से यहां आए थे। और उनमें से कुछ मुझे मिले भी थे। उनमें एक श्री भगवानदास बिठल भी थे। उनके पत्र मुझे आते रहते हैं और अब एक नया पत्र आया है।

कुछ दिन हुए हमने अपनी सभा की ओर से विदेशों में आर्य संस्थाओं को तथा आर्य समाजों को कुछ साहित्य भेजा था। दक्षिण अफ्रीका में भी कुछ व्यक्तियों को भेजा था उसी के सन्दर्भ में जो पत्र मुझे अब आया है उससे ऐसा पता चला कि पिछले दिनों आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका की रजत जयन्ती मनाई गई है। उस देश में आर्य समाज की कई संस्थाएं काम कर रही हैं। साप्ताहिक सत्संग भी होते हैं। यज्ञ भी होते रहते हैं। कई संस्थाएं भी वहां काम कर रही हैं वहां की आर्य प्रतिनिधि सभा ने कई भवन बना लिए हैं। उसका मुख्य कार्यालय दक्षिण अफ्रीका के एक प्रसिद्ध नगर डरबन में है और मुख्य कार्यालय के भवन का नाम वेद निकेतन है। बच्चों और बूढ़ों के लिए अलग 2 भवन बने हुए हैं। इसी के साथ महिलाओं के लिए भी बहुत कुछ किया जा रहा है। योग सिखाने के लिए भी प्रबन्ध किया गया है। जो साहित्य वहां से छपकर आता है उस पर अब भी यह लिखा होता है आर्य समाज अमर रहे

यह सब कुछ मैंने पंजाब के आर्य भाईयों और बहिनों को यह बताने के लिए लिखा है कि दूसरे देशों में भी आर्य समाज का प्रचार खूब हो रहा है। हमें उनके साथ अपना सम्पर्क रखना चाहिए। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने दूसरे देशों में जो प्रतिनिधि सभाएं या आर्य समाजें हैं उनमें कईयों के साथ अपना सम्पर्क बना लिया है। हम समय 2 पर उन्हें साहित्य भेजते रहते हैं, एक दो स्थानों पर हमने उपदेशक और पुरोहित भी भेजे हैं। इस प्रकार विशाल आर्य परिवार के साथ अपना सम्पर्क बनाने के लिए हम से जो कुछ हो सकता है हम करते हैं। इसलिए मैंने दक्षिण अफ्रीका में आर्य समाज का जो प्रचार हो रहा है उसके विषय में यह लेख लिखा है।

—वीरेन्द्र

# सत्यार्थ प्रकाश का प्रथम समुल्लास

ले.—श्री प्रा. भद्रसेन जी वेद दर्शनाचार्य होशियारपुर

महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन से परिचित पाठक अच्छी प्रकार से जानते हैं कि शिवरात्रि पर शिव मन्दिर मे घटित घटना के कारण मूलशकर के जीवन मे आमूल-चूल परिवर्तन प्रारम्भ हो गया। बहिन की मृत्यु के बाद चाचा की मौत से उभरे वैराग्य ने मूल की शिवदर्शन की चाहना को और भी अधिक प्रबल बना दिया। इसी की सिद्धि के लिए गुरु की खोज मे वे एक दिन घर से ही निकल गए। शिव का अर्थ है कल्याण, और शिव के जितने भी मृड,शर्व शम्भु आदि शब्द हैं वे भी इसी अर्थ को कहते हैं। अपने सारे जीवन की साधना और विविध शास्त्रो के स्वाध्याय से महर्षि ने जिस कल्याण कारक शिव को प्राप्त किया, वही सत्यार्थ प्रकाश के रूप मे ससार को प्राप्त हुआ। अतएव सत्यार्थ मे सर्वत्र जन कल्याण ही अपना उद्देश्य बताया है।

एक सामान्य पाठक जब द्वितीय समुल्लास आदि मे क्रमश शिशुपालन, शिक्षा, विवाह, विरक्त राजनीति, ईश्वर, सृष्टि, सदाचार आदि की जीवन से जुडी हुई चर्चा पढता है, तो बहुत कुछ समझ मे आ जाता है। पर दोबारा पढने पर भी वह प्रथम समुल्लास के सम्बन्ध में उलझन मे ही उलझा रह जाता है कि इस समुल्लास में इस प्रकार की चर्चा शुरू मे ही क्यो है? यह उलझन तब तक स्पष्ट नही हो सकती, जब तक किसी के सामने यह बात स्पष्ट नही होती, कि इस की पृष्ठ भूमि एक विशेष भावना है और वह है महर्षि की वेदो के प्रति अटूट श्रद्धा एव विश्वास। अत सत्यार्थ प्रकाश का प्रथम समुल्लास वेद की कुजी है।

इस समुल्लास को समझे बिना कोई पाठक वेदो की वर्णन पद्धति को हृदयगम नहीं कर सकता और वेदान्त दर्शन की प्रक्रिया से भी यही प्रमाणित होता है।

सत्यार्थ प्रकाश और महर्षि के जीवन से परिचित पाठक अच्छी प्रकार से जानते हैं कि महर्षि वेदो को ईश्वरीय ज्ञान तथा सब सत्य विद्याओ का पुस्तक मानते हैं। केवल वेद भाष्य मे ही नहीं, अपितु सत्यार्थ प्रकाश के कई सौ वाक्यो मे महर्षि दयानन्द की वेदो के प्रति दृढ श्रद्धा और अटूट विश्वास झलकता है। वस्तुत वेदो के प्रचार-प्रसार के लिए ही महर्षि ने आर्य समाज की स्थापना की थी।

यह एक सर्वमान्य बात है कि ससार के पुस्तकालय की वेद प्राचीनतम पुस्तकें हैं। जोकि भारतीय साहित्य, धर्म और जीवन के मूल आधार हैं। सारा भारतीय साहित्य बडे आदर के साथ वेदो को स्मरण करता है। न केवल सस्कृत साहित्य मे अपितु उस के आधार पर बने आधुनिक भारतीय भाषाओ के साहित्य में भी वेदो की चर्चा मिलती है, जैसे कि गुरुग्रन्थ मे केवल सौ से अधिक बार वेद का नाम ही नही आता है अपितु इसके साथ वेद की महिमा भी अनेक स्थानो पर मिलती है। सस्कृत का वैदिक वाङ्मय तो वेद के अन्त बाह्य स्वरूप को स्पष्ट करने के लिए ही बनाया गया है। भारतीय साहित्य की तरह भारतीय धर्म का भी सर्वस्व वेद ही हैं, क्योकि भारतीय धर्म का आचार और सिद्धान्तपक्ष जहा वेद के अनुरूप है वहा कर्मकाण्ड की पूजा यज्ञ सस्कार, व्रत वेदमन्त्रो द्वारा ही सम्पन्न होते हैं।

जब एक वेदप्रेमी वेद का अध्ययन करता है तो वह वेद पढ कर कई बार उलझन मे पड जाता है कि वेदो मे कही अग्नि को तो कही इन्द्र को लक्ष्य मे रखकर सैकडो मन्त्र आते हैं। किसी प्रकरण मे सोम को कही वरुण को सम्बोधित करके वर्णन किया गया है। अर्थात् वेदो मे अग्नि, इन्द्र आदि की ही स्तुति और वर्णन है। इनको देवता कहते हैं, इसी लिए यजुर्वेद का 'अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता वसवो देवता 1 -2 मन्त्र इस दृष्टि से बहुत ही प्रसिद्ध है। निरुक्त के दैवत काड मे देवता की परिभाषा बताने के बाद स्पष्ट शब्दो मे कहा है कि तिस्र एव देवता, अग्नि पृथिवीस्थान, वायुर्वा इन्द्रो वा अन्तरिक्ष स्थान, सूर्यो द्युस्थान 7,2 1

इतिहास की पुस्तको मे भी प्राय यही पढाया जाता है कि आर्य अनेक देवी, देवताओ को मानते थे और वेदो मे अग्नि, इन्द्र आदि की स्तुति भरी हुई है। ऐसी स्थिति मे वेद का पढने वाला असमजस मे पड जाता है और ऐसी कुजी ढूढना चाहता है जिससे वेद की वास्तविक स्थिति का पता चल सके।

इस प्रकार की उलझन मे उलझे हुए पाठको को वेद की कुजी सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास से प्राप्त हो सकती है। सत्यार्थ में कहा है, कि ईश्वर का मुख्य नाम ओम् है, जो कि व्याकरण और निरुक्त की प्रक्रिया के अनुसार पूर्णरूपेण ईश्वर का ही वाचक सिद्ध होता है। विस्तार के लिए लेखक कृत 'ओम् शब्द पर एक विचार' देखिए। ईश्वर के गुण कर्म और स्वभाव अनन्त हैं। अत अग्नि, इन्द्र, वरुण, सोम आदि अनेक ईश्वर के नाम हैं। शब्द निर्माण और उत्पत्ति के अनुसार अग्नि आदि नाम किस प्रकार ईश्वर के वाचक हैं। इसका सुन्दर विश्लेषण प्रथम समुल्लास मे किया गया है। ऋग्वेद का 'इन्द्र मित्र वरुणमग्निम 1,164,46 मन्त्र इस का स्पष्ट प्रमाण है इस मे निर्देश है कि 'एक सद् विप्रा बहुधा वदन्ति अर्थात् एक को ही बुद्धिमान् अनेक प्रकार नामो से कहते हैं। इसी मन्त्र मे उदाहरण रूपेण जो शब्द आए हैं, यही बात यजुर्वेद के तदेवाग्निस्तदादित्यस्तद्वायु —32,1 मन्त्र से भी पुष्ट होती है। महर्षि ने यहा 'सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति कठ 2,15 और मनुस्मृति के अनेक प्रमाण देकर इस ओर विशेष ध्यान आकर्षित किया है।

इसके साथ महर्षि ने यहा स्पष्ट शब्दो मे लिखा है कि अग्नि, सूर्य, सोम आदि वेदो मे जहा ईश्वर वाचक मिलते हैं, वहा भौतिक पदार्थों और जीव आदि के लिए भी आए है। वेद मे अग्नि, इन्द्र आदि कहा ईश्वर के वाचक हैं और कहा अन्य के वाचक हैं। इसका निर्णय वहा प्रकरण और विशेषण से ही होता है। अत: वेद को समझने की कुजी देते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास में लिखते हैं—

'क्योकि ओम् और अग्न्यादिनामो से मुख्य अर्थ से परमेश्वर का ही ग्रहण होता है। जैसे कि व्याकरण, निरुक्त, ब्राह्मण, सूत्रादि ऋषिमुनियो, के व्याख्यानो से परमेश्वर का ग्रहण देखने में आता है, वैसा ग्रहण करना सब को योग्य है। परन्तु "ओम" यह तो केवल परमात्मा का ही नाम है, और अग्नि आदि नामो से परमेश्वर के ग्रहण मे प्रकरण और विशेषण नियम कारक हैं। इस से क्या सिद्ध हुआ कि जहा-जहा स्तुति, प्रार्थना, उपासना, सर्वज्ञ, व्यापक, शुद्ध, सनातन और सृष्टि कर्ता आदि विशेषण लिखे हैं, वही-वही इन नामों से परमेश्वर का ग्रहण होता है।" स्वामी वेदानन्द सम्पादित समु 1,पृ 10-11

"जहा-जहा उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय, अल्पज्ञ, जड दृश्य आदि विशेषण भी लिखे हों वहा-वहा परमेश्वर का ग्रहण नहीं होता। वह उत्पत्ति आदि व्यवहारो से पृथक है।' 1 11

"और जहा-जहा इच्छा, द्वेष प्रयत्न, सुख, दुख और अल्पज्ञादि विशेषण हों वहा-वहा जीव का ग्रहण होता है। ऐसा सर्वत्र समझना चाहिए। क्योकि परमेश्वर का जन्म मरण कभी नहीं होता। इससे विराट आदि नाम और जन्मादि विशेषणों से जगत् के जड और जीवादि पदार्थों का ग्रहण करना उचित है।" 11

अत प्रथम समुल्लास की ये पक्तियां वेद को समझने के लिए कुजी का कार्य करती हैं। अत एव 'शन्नो मित्र श वरुण' मन्त्र से इस समुल्लास का प्रारम्भ है जिसमें अनेक नाम हैं।

# नव-वर्ष के शुभ अवसर पर बधाई

22 मार्च से नव-सम्वत् 2042 आरम्भ हो रहा है। इस शुभ अवसर पर हम अपने सभी पाठकों, आर्य बहिनों तथा भाईयों को हार्दिक बधाई देते हैं। हमारी मगल कामना है कि यह नव-वर्ष आर्य मर्यादा के सभी पाठको तथा आर्य बन्धुओं के लिए शुभ और मगलकारी हो। इस वर्ष में सभी नई उमगों को लेकर उत्साह के साथ अपने कर्तव्य पथ पर आगे बढें। एक-एक दिन, एक एक महीना, एक-एक वर्ष को मिलाकर जीवन बनता है और अगर हम जीवन में सभी दिन सभी महीने, सभी वर्ष सभी प्रकार की विघ्न-बाधाओ को पार करते हुए उस मंगलमय आनन्दघन प्रभु की तरफ बढते चले जाए तो यह जीवन की सार्थकता है।

जीवन को सफल और सुखी बनाने के लिए नव-चेतना और नव-उत्साह की आवश्यकता है नवीनता सभी को प्रिय लगती है। नव-वर्ष आकर हमे नवीनता का आभास कराता है। नव-चेतना देता है। नई उमगें देता है। हम चाहते हैं कि आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब से सम्बन्धित सभी आर्य समाजो के अधिकारियों के मन मे नव चेतना पैदा हो जाए और वह अपने कर्तव्य को समझते हुए वेद प्रचार मे जो शिथिलता सी आ गई है उसे दूर करने के लिए इस नव-वर्ष सम्वत् 2042 मे पूर्ण प्रयास करें और इस वर्ष सभी आर्य समाजो मे उत्सव हो, कथाए हों और बडे 2 यज्ञ हो ताकि वेद का प्रचार और प्रसार बढे। आज के दिन ही महर्षि दयानन्द जी ने सम्वत् 1932 मे बम्बई मे आर्य समाज की स्थापना की थी। यह दिन जहा नव-वर्ष का प्रतीक है वहा आर्य समाज का स्थापना दिवस भी है। सभी बन्धु व बहनें दृढता से आर्य समाज का कार्य करने का व्रत लें। हमारी हार्दिक शुभ कामनाए आपके साथ हैं।

—कमला आर्या—सभा महामन्त्री

# अमर शहीदों को याद आ

आज भारत देश आजाद है परन्तु यह आजादी हमने कैसे प्राप्त की इसका इतिहास रोंगटे खडे कर देने वाला है। आज का भारतीय नौजवान उन गुलामी के दिनो का अनुमान नही लगा सकता कि उन गुलामी की जंजीरों को तोडने के लिए भारत मा के अमर सपूतो ने कैसे हसते हसते फासी के फन्दो को चूमा था।

23 मार्च 1931 का वह दिन भारतवासी कभी न भुला सकेंगे जब

सरदार भगतसिंह

महान् क्रान्तिकारी भगतसिंह, राजगुरु सुखदेव इन तीनोको अग्रेज सरकार ने लाहौर की सैंट्रल जेल मे फासी पर लटका दिया था। साहसी युवको ने जल्लाद को फन्दा गले मे न डालने दिया स्वय अपने हाथो से निर्भीक होकर वन्दे मातरम का जयघोष करते हुए उसे अपने गले मे डाला।

सरदार भगतसिंह का जन्म एक आर्य समाजी परिवार मे हुआ। क्योंकि प्रत्येक आर्य समाजी अपने देश के प्रति अपने कर्तव्य को निभाने मे सदा तत्पर रहता था। इसलिए एक आर्य समाजी का पुत्र क्यो न देशभक्त होता। माता पिता के सस्कारो का प्रभाव बच्चो पर अवश्य पडता है। दादा ने बडे प्यार से भगतसिंह का यज्ञोपवीत सस्कार वैदिक रीति से करवाया था।

इन तीन शहीदो मे दो पजाब के थे भगतसिंह जी और सुखदेव। भगतसिंह जी का जीवन तो लोगो के सामने बहुत आया परन्तु श्री सुखदेव के बारे मे हमने अपेक्षा ही रखी। श्री सुखदेव का जन्म 16 मई 1907 को श्री रामलाल जी थापर के घर लुधियाना मे हुआ था। इनकी माता का नाम रल्ली देई था।

श्री राजगुरु

सुखदेव जी के पिता का देहावसान 1910 मे लायलपुर मे हो गया जहा वह अपना कारोबार किया करते थे। इस प्रकार सुखदेव जी का पालन पोषण इनके ताया श्री चिन्तराम जी द्वारा हुआ। श्री चिन्तराम जी एक महान देशभक्त थे और वैदिक धर्म के सच्चे अनुयायी थे। इन्हीं के सस्कार सुखदेवजी के जीवन पडे। ला चिन्तराम जी भी लुधियाना से लायलपुर मे ही आकर स्थाई रूप से रहने लग गए थे। इसके साथ ही सुखदेव जी की माता रल्ली देई भी बहुत धार्मिक विचार धारा की थी। वह घर के सभी बच्चो को राष्ट्र प्रेम और देश भक्ति की कहानिया सुनाया करती थी। इन कहानियो को सुखदेव बडे मनोयोग से सुना करता था। और सोचा करता था कि मैं भी बडा होकर वीर सिपाही और देश भक्त बनूगा सुखदेवजी को सबसे अधिक प्रभावित लक्ष्मीबाई महारानी झासी की जीवनी ने किया था। इसलिए जब उन्हे दोपावली पर मिठाई के लिए पैसे मिलते थे और बच्चे तो अपने पैसे खा लेते थे परन्तु सुखदेव जी महारानी झासी की तस्वीर खरीदकर ले आते और इस तस्वीर को पाकर उनकी छाती तन जाती और चेहरा चमक उठता।

सुखदेव जी ने मैट्रिक की परीक्षा सनातन धर्म हाई स्कूल लायलपुर से पास की थी। अग्रेज सरकार द्वारा इस स्कूल मे एक अग्रेजी फौजी अफसर को

श्री सुखदेव

नियुक्त किया गया था। उसने एक निश्चित परेड करने और सलामी देने की घोषणा कर दी। सुखदेव भी इस स्कूल का विद्यार्थी था। परन्तु इस वीर ने अग्रेज फौजी को सलाम करने से साफ इन्कार कर दिया।

मैट्रिक पास करने के बाद इनके ताया श्री चिन्तराम जी इन्हे डी ए वी कालेज लाहौर मे प्रवेश कराना चाहते थे। परन्तु सुखदेव जी लाला लाजपतराय जी द्वारा सस्थापित नैशनल कालेज मे प्रविष्ट हुए क्योकि इस कालेज का एक मात्र उद्देश्य था भावी पीढी को राष्ट्रीय नेतृत्व के लिए तैयार करना। जिसमे महान् क्रान्तिकारी भाई परमानन्द जी जैसे प्राध्यापक थे।

यहा लाहौर मे ही सुखदेव जी को सरदार भगतसिंह और भगवती चरण जैसे साथी मिल गए। इन तीनो मिलकर 1926 मे नौजवान सभा का गठन किया, और यहा से इनका क्रान्तिकारी जीवन आरम्भ हो गया।

राजगुरु महाराष्ट्र के रहने वाले थे इसका जन्म पूना मे 1909 मे हुआ था वह छत्रपति वशी राजगुरु परिवार के महाराष्ट्रीय ब्राह्मण थे। इनका पूरा नाम शिवराम हरिराज गुरु था। बचपन ही मे घर वालो से अनबन हो जाने के कारण वह भागकर बनारस आ गए थे और फिर उनके जीवन का अधिक समय काशी मे ही सस्कृत पढने लाठी कुश्ती आदि सीखने मे बीता। वह हिन्दी मराठी गुजराती और सस्कृत अच्छी तरह से जानते थे। अग्रेजी तो उन्होने आठ महीने मे ही सीख ली थी। आगे चलकर वह भी क्रान्तिकारी दल के सदस्य बन गए। यह बहुत साहसी युवक थे। प्रत्येक कार्य को करने के लिए सबसे आगे रहते थे कोई भी कार्य सगठन का हो वह उसे अपने ऊपर ले लेते थे। सरदार भगतसिंह हर काम मे इन्हे ही अपने साथ ले जाने का आग्रह करते थे। उन्होने केवल एक ही काम ऐसा किया था जिसमे राजगुरु जी उनके साथ न थे वह था असेबली मे बम फैंकना और राजगुरु जी इसी बात की अन्त तक भगतसिंह जी से शिकायत करते रहे। लेकिन फिर अन्त समय तक इन्होने एक दूसरे का साथ नही छोडा।

23 मार्च इन तीनो शहीदो का बलिदान दिवस है जिसे मनाते हुए हम भी देश सेवा का इन्ही की तरह व्रत ले तभी यह दिन मनाना सफल होगा।

धर्मदेवार्य

गुरु ग्रंथ साहब मे वेद महिमा विषय पर निबन्ध माला आरम्भ की जाए

## सभा प्रधान के नाम पत्र

आदरणीय श्री वीरेन्द्र जी

सप्रेम नमस्ते!

आशा है आप सपरिवार स्वस्थ व आनन्द प्रसन्न होंगे। यह सर्वविदित है कि आर्य समाज का उद्देश्य मनुष्य मात्र मे उचित मानसिक बौद्धिक व आध्यात्मिक परिवर्तन लाना है। पजाब की परिस्थितियों को ध्यान मे रखकर मेरा नम्र सुझाव है कि आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की ओर से निम्नलिखित विषय पर एक निबन्ध स्पर्धा आयोजित की जाए।

विषय—गुरु ग्रन्थ साहब मे वेद महिमा।

इस स्पर्धा मे कोई भी व्यक्ति भाग ले सकता है। निबन्ध की भाषा हिन्दी हो व प्रथम तीन निबन्धो को उचित व आकर्षक पारितोषिक दिया जाए।

आर्य मर्यादा का शिवरात्रि विशेषाक बहुत ही आकर्षक एव उत्साह वर्धक है। इसी प्रकार प्रतिनिधि सभा की ओर से दिवगत अनेक आर्य विद्वानो और सन्यासियो की अप्राप्य रचनाओ का पुन मुद्रण करवाया जाए। आशा है आप इन सुझावो पर तन्मयता से चिन्तन करेंगे।

—प्रा धर्मेन्द्र धीमा ओंकार कुज बारी बाग रोड बडोदरा

—

## आर्य समाज बैंकांक अधिकारियो का चुनाव

प्रधान—श्री सहदेव सिंह उप-प्रधान—श्री चन्द्रिका सिंह जी मन्त्री—सग्राम सिंह जी, उपमन्त्री—श्री दिनेश कुमार सिंह जी पुस्तकाध्यक्ष—श्री वेद प्रकाश मौर्य जी, उपपुस्तकाध्यक्ष—श्री यशवन्त सिंह जी, कोषाध्यक्ष श्री पलकधारी चन्द्र जी निरीक्षक—श्री नरसिंह शाही जी।

# मैंने भोपाल में क्या देखा ?

ले.—श्री प्रेमप्रकाश जी वानप्रस्थी आर्य कुटिया चूरी

मैं 24 जनवरी को आर्य समाज के निमन्त्रण पर भोपाल पहुचा। यह आर्य समाज स्वतन्त्रता सग्राम के वीर सेनानी श्री तान्या टोपे रोड पर स्थित है। मुझे दयानन्द चौक आर्य समाज भोपाल पहुचना चाहिए था परन्तु निमन्त्रण पत्र पर केवल आर्य समाज लिखित होने से उपरोक्त समाज मे पहुच गया इसे टी टी नगर की आर्य समाज कहते हैं।

यहा पर गैस काण्ड 2 दिसम्बर रात्रि 11-35 पर हुआ जिसका प्रभाव अर्थात गैस लीकेज साढे तीन घण्टे हुआ ठीक 3 बजे रात्रि मे ही उसे कण्ट्रोल कर लिया गया। इससे 2717 व्यक्तियो की जन हानि सरकार बता रही है परन्तु लापता होने वालो की सख्या पाच हजार है लापता का अर्थ भी मरना ही निश्चित है। ही ऐसा लगता है कि साढे तीन घण्टे मे 2717 लोग मरे हो, शेष 5 दिन बाद तक हस्पताल मे गैस की बीमारी से मरे होगे। डाक्टरो का कहना है कि इस गैस का प्रभाव गर्भवती माताओ के गर्भ पर होगा तथा बच्चे अन्ध, लूल पैदा हो सकते है।

यह कारखाना जो खेती वृक्षो पौधो आदि के कीडे मारने की इस जहरीली गैस से दवाईया तैयार करता है। इस कारखाने का नाम 'यूनियन कारबाईड' है। यह यू एस ए की कम्पनी है। इस गैस की लीकेज से वृक्षो की पत्तिया काली पड गई इससे कई वृक्षो पर 3 दिसम्बर को ही पतझड आ गई। मैं एक डायरी वाले को मिला उसने बताया कि मेरा सारा परिवार तथा मेरी 25 भैंसे उसी रात्रि मे समाप्त हो गई। केवल मैं ही बच पाया हू।

इस जहरीली गैस का प्रभाव पास मे ही बसे जयप्रकाश नगर पर हुआ, क्योंकि वायु का बहाव उस समय इस नगर की ओर था। शेष नगर पर प्रभाव कम, आतक अधिक था क्योकि इस नगर की जनसख्या 8 लाख के लगभग है तथा पानी के पीने का केवल मात्र एक ही साधन यहाँ का तालाब है। जिसकी लम्बाई इस समय 6 किलो मीटर तथा गहराई 50 फुट है, तथा वर्षा ऋतु मे इसकी लम्बाई 15 किलो मीटर हो जाती है। कहा जाता है कि यह तालाब राजा भोज ने बनवाया था तथा 'भोपाल' राजा भोज की राजधानी थी। लिखने का भाव यह है कि लोग पानी को भी जहरीला समझने लग गए। यह आतक का बहुत ... भोपाल ... पर स्थित है तथा जब वर्षा का अभाव हो जाता है, तो यहा पानी की समस्या पैदा हो जाती है। सरकार तालाब के पानी को ही फिल्टर करके मशीनो के द्वारा वाटर वर्कस मे भेजती है तथा फिर नगर को सप्लाई होता है।

गैस काण्ड मे त्राहिमाम त्राहिमाम और कराह रही मानवता को आश्रय देने के लिए आर्य समाज तात्या टोपे रोड पर स्थित आर्य समाज ने एक शिविर लगाया जो 4 दिसम्बर से 12 दिसम्बर 1984 तक लगा रहा था। जिसमे 255 व्यक्तियो ने सुख की सास ली। इस समाज की ओर से चाय दोनो समय भोजन एव अन्य सुविधाए प्रदान की गई तथा दूसरे लगे कैंपो को भी भोजन पहुचाया जाता रहा। इस शिविर को देखने मध्य प्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री अर्जुनसिंह जी एव उनकी धर्म पत्नी तथा राज्यपाल श्री शकर दयाल शर्मा भी पधारे थे। दोनो ने शिविर की व्यवस्था और सेवा की बहुत 2 प्रशसा की तथा आर्य समाज दयानन्द चौक से भारी मात्रा मे गरीबो को कपडा वितरण किया गया।

आर्य प्रतिनिधि राजस्थान के कोषाध्यक्ष हेतराम जी तथा श्री विद्यासागरजी शास्त्री प्रधान आर्य समाज दयानन्द मार्ग अलवर दोनो महानुभावो ने निराश्रितों के लिए 2000 रुपये दिये। तथा माता कौशल्यादेवी जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश व विदर्भ, कार्यालय नागपुर तथा मन्त्री श्री रमशचन्द्र जी आर्य भी साथ आए। लोगो को सान्त्वना दी तथा हर प्रकार से सहयोग का आश्वासन दिया और भोपाल के गजमन्त्री श्री तनवन्तसिंह जी से मिले, तथा उन्हे निराश्रितो बच्चो, विधवाओ को आश्रय देने के लिए सभा का दृष्टिकोण बताया तथा अपना सहयोग देने का वचन दिया।

गैस काण्ड से हुई भारी जन-हानि की कालोनियो मे सेवा एव सहयोग केन्द्र खोलने की योजना बनाई गई, तथा निश्चय किया गया, कि विधवाओं के लिए 'महिला सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र खोला जाए तथा खोल दिया गया। तुरन्त ही 5 सिलाई मशीनें आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान और तीन मशीनें आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश व विदर्भ नागपुर ने दी। यह सिलाई केन्द्र 8 मशीनों से 'जय प्रकाश' नगर में चल रहा है। इसमें 25 विधवाए अपना जीवन चलाने के लिए शिक्षण प्राप्त कर रही हैं। इसका संचालन दयानन्द सेवाश्रम संघ मध्य प्रदेश भोपाल की ओर से चल रहा है। इसके प्रधान श्री त्रिवेणी सहाय जी वानप्रस्थी तथा मन्त्री श्री रामकृष्ण जी बजाज हैं, जो दिन-रात लोगो की सेवा कर रहे हैं। आर्य समाज के प्रधान श्री दलबीरसिंह जी राघव तथा मन्त्री श्री राजेन्द्र जी अवस्थी हैं तथा पुरोहित श्री प. यमुना शकर शुक्ल शास्त्री हैं। जिन्होने इस जिम्मेदारी को निभाया तथा टी. टी रोड के अन्य बसे लोगो ने भी आर्यसमाज का बहुत साथ दिया।

जिन समाजो एव सस्थाओ ने और व्यक्तियो ने दान भेजना हो वह दयानन्द सेवाश्रम सघ (मध्य प्रदेश) भोपाल के पते से भेज सकते हैं। इस सघ के अधीन अन्य केन्द्र हैं—

1. बाल-विद्या केन्द्र 2 बाल निराश्रित केन्द्र, 3 अन्य लघु उद्योग, जो झोंपड़ियों मे ही चल सकें। 4. चिकित्सा केन्द्र,

पत्र-व्यवहार का पता—

श्री रामकृष्ण जी बजाज, मन्त्री दयानन्द सेवाश्रम संघ द्वारा आर्यसमाज तात्या टोपे रोड,या टी टी. रोड भोपाल (मध्य प्रदेश)

सारे नगर को मैंने घूम घूमकर खूब देखा है कई सस्थाओं ने एव कुछ लोगों ने भी यथाशक्ति निराश्रित लोगो की सहायता की है परन्तु सरकार तो बड़ी ही सहायता कर रही है परन्तु बच्चो को 'पिता बहिनों को 'भाई' और विधवाओ को पति न मिल सकेंगे। मैं भी उन्हे महात्मा हसराज आर्य ट्रस्ट आलम की ओर से चिकित्सा के लिए रुपए की सहायता भेज रहा हू।

—

# टंकारा का ऋषि मेला सम्पन्न

मूल शंकर देव दयानन्द की पवित्र जन्म भूमि टंकारा मे प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी ऋषि महोत्सव श्री म द स्मारक ट्रस्ट टंकारा के तत्वावधान मे 16 से 18 फरवरी 198५ को सोल्लास मनाया गया। ट्रस्ट की रजत जयन्ती ने इस महोत्सव पर चार चांद लगा दिए। परम्परागत ढंग से इस वर्ष 11 2 85 से 17-2 85 तक श्री प हरिओम सि आचार्य (उपाचार्य उप वि टंकारा) के ब्रह्मत्व में यजुर्वेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न हुआ देश में शान्ति तथा सद भावना और रजत जयन्ती के कारण इस वर्ष जम्मू कश्मीर से लेकर तमिलनाडु तक और द्वारिका से लेकर नागालैंड तक के ऋषि भक्तो के दर्शन हुए। गुजरात के लोगों का उत्साह और ऋषि भक्ति आश्चर्य जनक थी। आर्यों मे उत्साह और ऋषि प्रेम अविस्मरणीय था। अत इस उत्सव के कारण टंकारा जैसा पुनीत ग्राम भी अपनी सुन्दरता में चार चांद लगा रहा था। उत्सव के प्रथम दिन श्री म द स्मारक अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक, महाविद्यालय के विद्यार्थियो द्वारा सभी उपस्थित ऋषि भक्तो का स्वागत किया गया।

इस वर्ष यहा एक ओर श्री प आनन्दप्रिय जी (बड़ौदा) की अध्यक्षता एव श्री प हरिओम सि आचार्य के के सयोजकत्व मे अखिल गुजरात शिक्षण संस्थाओ के वाद विवाद (हिन्दी गुजराती) ...पाठ सस्कृत व्याख्यान प्रतियोगिता का आयोजन हुआ जिसमे उपदेशक विद्यालय टंकारा के विद्यार्थियो ने सभी प्रतियोगिताओमे प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त कर अचल वैजन्ती पुरस्कार उपदेशक महाविद्यालय को प्राप्त करवाया।

वहीं पर आर्य युवती परिषद दिल्ली उपदेशक महाविद्यालय टंकारा आर्य कन्या महाविद्यालय बड़ौदा व जामनगर के आर्य वीर दल टंकारा व धीराजा के आर्य वीर व वीरांगनाओ ने व्यायाम व सास्कृतिक कार्यक्रम मे भाग लेकर उत्सव की शोभा मे वृद्धि की। ...महात्मा आर्य भिक्षुजी ज्वालापुर हरिद्वार तथा ट्रस्ट के यशस्वी महामन्त्री श्री रामनाथ सहगलकी अपील पर आर्य नर नारियो ने श्रद्धा और प्रसन्नता पूर्वक दान दिया।

इस वर्ष आर्य प्रतिनिधि सभा गुजरात के महामन्त्री एव प्रसिद्ध उद्योगपति श्री रतनप्रकाश गुप्ता के कर कमलो द्वारा ध्वजारोहण सम्पन्न हुआ जिसके सयोजक श्री देवव्रत जी शास्त्री चैम्बूर बम्बई व ...राकेश कुमार सि आचार्य ...दिल्ली थे।

शोभा यात्रा टंकाराकी पवित्र गलियो से गुजरती हुई मुख्य बाजार ऋषि जन्म गृह ऋषि बोध मन्दिर होती हुई पन महालय मे समाप्त हुई।

इस वर्ष असंख्य ऋषि भक्तो ने शिवरात्रि की कृष्ण वर्णा रात्रि मे ऋषि को श्रद्धाञ्जलि दी। इस वर्ष ऋषि लगर की व्यवस्था भुज कच्छव घाटकोपर वालो ने करके ट्रस्ट को महान जवाबदारी से मुक्त किया। इसके लिए असंख्य आर्यजनो ने उनकी भूरि भूरि प्रशसा की।

यह कार्य श्री म द स्मारक ट्रस्ट के लिए एक महान वरदान सिद्ध हुआ जोकि ट्रस्ट के इतिहास मे स्वर्णाक्षरो मे लिखने योग्य है।

इस उत्सव की सम्पन्नता का सम्पूर्ण श्रेय ट्रस्ट के यशस्वी महाम श्री श्री रामनाथ सहगल एव मैनेजिंग ट्रस्टी श्री ओंकारनाथ जी मान बोरादेवी डा आर के पुन्नी श्री ध्यानपालसिहजी श्री बुद्धदेव जी भाई श्री कावगेला साहब श्री भगवान जी भाई (उपप्रधान आर्य समाज टंकारा) श्री हसमख भाई आदि महानुभावो को जाता है

इन्ही महानुभावो की प्रेरणा से अनेको ऋषि भक्तो ने अपने सात्विक दान से ट्रस्ट के कार्यों मे गति प्रदान की।

# द्वाबा आर्य हा. सै. स्कूल नवांशहर मे आर्य वीर दल की स्थापना

नवांशहर शिवरात्रि महोत्सव अर्थात ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर आर्य समाज नवांशहर मे द्वाबा आर्य हायर सैकेण्डरी स्कूल नवांशहर के प्रिंसिपल श्री हरबसलाल जी तनेजा ने सकल्प किया था कि अपने विद्यालय द्वाबा हायर स स्कूल मे शीघ्र आर्य वीर दल की स्थापना की जाएगी। क्योंकि सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी का इसी उद्देश्य का आदेश समाजो को गया था। कुछ दिनो मे ही द्वाबा आर्य हायर सै स्कूल मे इसकी विधिवत स्थापना कर दी गई है। इसके अधिकारी इस प्रकार हैं—

सरक्षक—श्री प्रि हरबसलाल जी तनेजा सचालक—श्री वीरेन्द्र।

विद्यालय मे आयोजित कुमार सभा की बैठक मे आर्य वीर दल के सदस्यो को प्रि हरबसलाल जी तनेजा द्वारा सम्मानित किया गया और उन्हे आर्य वीर के रूप मे अपने जीवन को ढालने की प्रेरणा की गई।

# देशान्तर प्रचार के लिए प्रचारको की आवश्यकता

उपरोक्त शीर्षक से एक विज्ञप्ति गत जनवरी मास मे आर्य समाज की पत्रिकाओं मे प्रकाशित की गई थी जिसके उत्तर में कुछ पत्र हमे प्राप्त हुए हैं। देशान्तर प्रचार के कार्य मे ऐसे उच्च शिक्षित सज्जनो को वरीयता दी जाएगी जो आर्य समाज के सगठन को शक्तिशाल बना सकें। इन प्रचारको को विदेशो की सामाजिक व राजनीतिक परिस्थितियो के अनुकूल प्रचार प्रणाली को अपनाते हुए आर्य समाज के सगठन को नई दिशा देना साप्ताहिक सत्सग और आर्य पर्व पद्धति का ज्ञान कराना आर्य वीर दल व महिला सगठन की नींव डालना आर्य साहित्य के स्वाध्याय की प्रेरणा देना आर्य शिक्षण संस्थाओ मे अध्यापको एव छात्र छात्राओ का वैदिक धर्म के मूल सिद्धान्तो का परिचय देना और समाचार पत्र रेडियो व टेलीविजन के माध्यम से जन सामान्य को आर्य समाज के सिद्धान्तो का ज्ञान कराना होगा। एक देश मे अथवा उस क्षेत्र मे कम से कम एक वर्ष का समय देना अपेक्षित है। सार्वदेशिक सभा अपने निर्देशन एव अनुशासन मे यह कार्य कराएगी। कालान्तर मे विश्व के सभी भागो मे आर्य समाज के कार्य का विस्तार करना देशान्तर की आर्य समाजो व प्रतिनिधि सभाओ मे निकट सम्बन्ध स्थापित करना तथा आर्य समाज के अनुकूल विश्व सस्थाओ मे अपने मन्तव्य को पहुंचाना हमारी दीर्घकालीन योजना का लक्ष्य है। इसकी प्रथम कड़ी के रूप मे कुछ योग्य आर्यजनो की सेवाए इस कार्य मे ली जाएगी।

इच्छुक महानुभावो को पत्र व्यवहार के लिए हम पुन आमन्त्रण दे रहे हैं अपने पत्रान्तर मे वे अपनी आयु शैक्षणिक योग्यता भाषाओ का ज्ञान आर्य समाज से सम्बद्ध प्रचार कार्य के अनुभव प्रकाशनो की सूची तथा अन्य आवश्यक जानकारियो का विवरण देने का कष्ट करें। अंग्रेजी भाषा का अच्छा ज्ञान अनिवार्य है। भारत अथवा देशान्तर के तीन ऐसे प्रमुख आर्यजनो का नाम और पता भी लिखें जो आपके कार्यों के विषय मे भली भांति जानते हो यह भी सूचित करने का कष्ट करें कि कितना समय इस कार्य मे दे सकते है। सभी महानुभावो को अपने प्रथम पत्र मे ही पूर्ण विवरण दे देना योग्य होगा। आशा है देशान्तर प्रचार मे सहयोग प्रदान करने हेतु इच्छुक महानुभाव अपना सहयोग प्रदान करेगे।

—डा आनन्द प्रकाश उपमन्त्री सभा
सयोजक देशान्तर प्रचार समिति
सार्वदेशिक सभा नई दिल्ली

# नारायण विहार में आर्य समाज मन्दिर का उद्घाटन

नई दिल्ली विगत 25 फरवरी नारायण विहार जी ब्लाक मे आर्य समाज के भवन का उद्घाटन करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने कहा कि आर्य समाज ने जन जागृति मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

उद्घाटन समारोह के अवसर पर विशाल शोभा यात्रा निकाली गई जिसमे दिल्ली की आर्य समाजो, स्त्री आर्य समाजो के अतिरिक्त केन्द्रीय आर्य युवक परिषद महदेव मल्होत्रा आर्य स्कूल कन्या गुरुकुल राजेन्द्रनगर टैगोर पब्लिक स्कूल ज्ञान मन्दिर स्कूल सरस्वती शिशु मन्दिर के छात्र छात्राओ ने सुन्दर व्यायाम प्रदर्शन किया। इस अवसर पर स्वामी विद्यानन्द जी ने ध्वजारोहण किया स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती व आर्य विद्वानो के प्रवचन हुए आर्यसमाज मन्दिर के भव्य हाल के लिए बलराज कपूर ने एक लाख रुपए तथा श्री लाजपतराय ग्रोवर ने 21000 रुपए दान देकर यज्ञशाला का निर्माण करवाया।

—चन्द्रमोहन आर्य

## आर्यसमाज बस्ती मिट्ठू जालन्धर की गतिविधियां

आर्य समाज शास्त्री नगर बस्ती मिट्ठू जालन्धर मे ऋषि बोधोत्सव बड़े समारोह के साथ मनाया गया इसकी अध्यक्षता श्री भगवानदास जी अहूजा जिला समाज कल्याण अधिकारी ने की यज्ञ तथा उपदेश वैदिक मिशनरी प सोहनलाल जी कालड़ा ने किया। महर्षि दयानन्द नि शुल्क सिलाई केन्द्र की लड़कियो ने ऋषि जीवनी सम्बन्धी गीत गाए और इस अवसर पर वेद प्रकाश आर्य श्री स ना जी मैनेजर स्टेट बैंक आफ इण्डिया तथा अन्य विद्वानो ने महर्षि को अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

श्री चरणदास जी बस्ती गुजा निवासी ने 5 कम्बल व एक मशीन श्री पूर्णचन्द सोंधी कपड़ा व्यापारी ने 10 कम्बल श्री मुकेश जी मलिक दशमेश रबड़ फैक्टरी ने 9 सूट और 11 सूट श्री वेदप्रकाश जी नैय्यर, नैय्यर रबड़ इण्डस्टीज तथा पाच सूट श्री वेद प्रकाश जी कपूर भतपूर्व नगर पिता बस्ती गुजा ने निर्धनो को दान दिए।

इस अवसर पर उपस्थित बहुत था हाल खचाखच भरा हुआ था। आर्य हाई स्कूल बस्ती गुजा और गवर्नमेंट हायर सकेण्डरी स्कूल भार्गव नगर के बैंड द्वारा मा लालचन्द जी के नेतृत्व मे अतिथियो का स्वागत किया। पूज्य बहन श [illegible] तदेवी इंग्लैंड निवासी ने इस अवसर पर आर्य समाज की गतिविधियो से प्रभावित होकर 30 पौण्ड मासिक आर्य समाज शास्त्री नगर बस्ती मिट्ठू को दान के रूप में भेजने का वचन दिया।

7 मार्च 85 को आर्य समाज मे अमर शहीद प लेखराम जी का दिवस मनाया गया। प सोहनलाल जी कालड़ा ने यज्ञ के बाद प लेखराम जी के जीवन पर प्रभावशाली एव सरल ढंग से प्रकाश डाला। श्रोता निवासी प लेखराम जी के बारे सुनकर बहुत प्रभावित हुए। उपस्थिति बहुत सराहनीय थी और कार्यक्रम बहुत सफल रहा।

यह समारोह आर्य समाज के सभी अधिकारियो एव सदस्यो तथा हित चिन्तकों के प्रयास से सफल रहा। मैं इन सब दानियो का बहुत 2 धन्यवाद करता हू।

—रामसुभाया न दा प्रधान
आर्य समाज शास्त्री नगर बस्ती मिट्ठू
जालन्धर

## दीनानगर मे लेखराम [illegible] दिवस मनाया गया

6 मार्च 85 को आर्य समाज दीनानगर मे अमर शहीद पण्डित लेखराम जी का बलिदान दिवस मनाया गया जिसमे पण्डित लेखराम जी के कार्यों पर प्रकाश डाला गया। प्रिंसिपल [illegible] जी ने कहा कि पण्डित जी अपने समय के अथक कार्यकर्त्ता थे ऐसे कार्यकर्त्ता अब मिलना कठिन हैं उन्हीं की कृपा से आर्य समाज रूपी वृक्ष पलकर बड़ा हुआ है अनुरुद्ध कुमार शास्त्री ने कहा कि मनुष्य को अपने जीवन का सुधार करना आवश्यक [illegible] की पण्डित जी की [illegible] [illegible] कि आर्य समाज के [illegible] [illegible] होवें। आर्य समाज के प्रत्येक कार्यकर्त्ता को निडरता तथा सदाचार जैसे गुणों से ओत-प्रोत होना चाहिए और पण्डित जी की आज्ञानुसार कि आर्य समाज से वेदप्रचार का काम बन्द नहीं होना चाहिए इसका भी प्रचार करना चाहिए और प्रत्येक आर्य समाजी को स्वाध्यायशील होना चाहिए। अन्त में डा हरिदास जी प्रधान आर्य समाज ने आए सज्जनों का धन्यवाद किया।





श्री [illegible] सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा [illegible] प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर में मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

वर्ष 16 अंक 49, 18 चैत्र सम्वत् 2042, तदनुसार 31 मार्च 1985, दयानन्दाब्द 160 । एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपए

## ३१ मार्च को राम नवमी का पर्व (श्रीराम का जन्म दिन) मनाएं

# महान् गुणों के भण्डार मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम

भारत वर्ष का इतिहास पुरातन काल से अपने उत्कृष्ट आदर्शों के कारण सारे विश्व के लिए अनुकरणीय रहा है। भारत भू पर बड़े 2 त्यागी तपस्वी ऋषि मुनि और धर्मात्मा राजा महाराजा हुए हैं। इसी पवित्र भूमि पर ही मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने जन्म लिया। वह गुण नायक थे और एक राष्ट्र पुरुष थे। उन्होंने राष्ट्र के सुनिर्माण के लिए महान कार्य किया। भारत वर्ष मे सुख और शान्ति स्थापित करने के लिए ऋषि-मुनियो की योजना अनुसार संगठनात्मक कार्य किए।

मर्यादा पुरुषोत्तम राम का जीवन महान् गुणो का भण्डार है जिधर से भी देखें वह महान प्रेरणाओं का देने वाला है। उनके जन्म दिन को मनाते हुए हम उनके गुणो का मान करें और उनके जीवन से प्रेरणा लें।

### राम एक सुपुत्र के रूप मे

राम एक आदर्श पुत्र थे। माता-पिता के आज्ञाकारी और उनका सम्मान करने वाले थे। पिता की आज्ञा उनके लिए शिरोधार्य थी। जब महारानी कैकेयी ने अपने दो वर महाराज दशरथ से मांग लिए एक में भरत को राज्य और दूसरे मे राम को 14 वर्ष का वनवास, तब महाराज दशरथ अपने मुंह से राम को वन की आज्ञा भी न दे सके थे। केवल कैकेयी ने बताया था कि मैंने तुम्हारे पिता से दो वचन मांग लिए हैं। उनकी आज्ञा है कि आप 14 वर्ष के लिए वन मे चले जाएं। राम पिता को नमस्कार करके वन जाने की तैयारी करने लगे। माता कौशल्या को पता चला कि ऐसी घटना घट गई है। राम को राजतिलक के स्थान पर वन में 14 वर्ष के लिए भेजा जा रहा है। जब राम माता कौशल्या के पास वन जाने की आज्ञा मांगने गए थे तो माता कौशल्या ने राम से कहा कि अगर वह तुम्हारे पिता हैं तो मैं भी तुम्हारी माता हूँ। माता का भी बेटे के ऊपर अधिकार होता है। मैं आज्ञा देती हूं कि तुम अयोध्या में ही रहोगे वन मे नहीं जाओगे तब राम ने जो अपनी माता को उत्तर दिया वह स्वर्णाक्षरो मे लिखने योग्य है, राम ने कहा महाराज दशरथ मेरे पिता और आपके पति हैं। पत्नी होने के नाते आप उनकी आज्ञा के विरुद्ध आदेश नही दे सकती। उनका आदेश जितना मुझ बेटे के लिए मानना आवश्यक है वहां पत्नी होने के नाते आपके लिए भी मानना आवश्यक है। जंगल के कष्टो की चिन्ता न करते हुए राम पिता के वचन को पूरा करने के लिए वन मे चले गए। अगर आज भी ऐसे ही आज्ञाकारी बेटे हो जाएं तो हमारे परिवार स्वर्ग बन जाएं।

### राम एक आदर्श भाई थे

कौन नही जानता कि राम अपने सभी भाईयो से बहुत स्नेह करते थे। जब उन्हे यह पता चला कि माता कैकेयी भरत को राज्य देना चाहती है तो उन्होने बड़ी प्रसन्नता व्यक्त की। लक्ष्मण अगर कुछ भरत के सम्बन्ध मे अनुचित शब्द बोलने लगा तो उसे चुप करा दिया कि भरत हमारा प्यारा भाई है उसके सम्बन्ध मे तुम्हारा ऐसा सोचना बहुत अनुचित है।

राम के वन जाने पर महाराज दशरथ का देहावसान हो गया। भरत को ननिहाल से लाया गया अन्त्येष्टि संस्कार के बाद भरत तीनो माताओ को और अयोध्या वासियो को साथ लेकर चित्रकूट के अन्दर राम को वापिस लाने के लिए पहुंचे। उस समय भी लक्ष्मण के विचार भरत के सम्बन्ध में अच्छे नही थे राम ने लक्ष्मण को समझाते हुए कहा— भरत हमे वापिस अयोध्या मे ले जाने के लिए आ रहा उसके मन मे कोई अपवित्र भावना नहीं आ सकती, क्योंकि वह हमारा भाई है। भरत के पहुंचते ही राम ने उसे अपनी छाती से लगा लिया। भरत राम के चरणो की तरफ बढ़ा था परन्तु राम ने उसे आलिंगन कर लिया। भरत ने आग्रह किया कि आप अयोध्या में वापिस चलो और राज्य को सम्भालो। परन्तु राम ने समझाते हुए कहा मैं पिताजी के वचनानुसार और अपनी प्रतिज्ञा अनुसार 14 वर्ष के बाद ही वापिस अयोध्या मे आऊंगा। भाईयो मे इतना प्यार और एक दूसरे के लिए त्याग था कि राज्य न भरत लेना चाहता है न राम लेना चाहता है। लक्ष्मण से तो राम का जो स्नेह था उसका तो वर्णन ही क्या करें। दोनो के अलग-अलग शरीर होते हुए भी दोनो की आत्मा एक ही थी। लक्ष्मण के मूर्छित हो जाने पर राम ने जो विलाप किया वह रामायण के पृष्ठो मे बन्धा हुआ है एक भाई दूसरे भाई के लिए अटूट स्नेह रखता था सचमुच राम एक आदर्श भाई थे।

### राम एक आदर्श मित्र थे

राम की मित्रता से रामायण के पृष्ठो की बड़ी शोभा बनी है। उन्होंने अपना मित्र जब सुग्रीव को बनाया तो उसे बाली को मार कर किष्किन्धा का राजा बना दिया। जब रावण का भाई विभीषण राम की शरण मे आ गया तो उसे अपना मित्र बना लिया। युद्ध मे रावण के मर जाने पर राम लंका का राज्य स्वयं ले सकते थे परन्तु राम ने ऐसा नही किया। लंका का राज्य अपने मित्र विभीषण को दे दिया। जो भी उनका मित्र बना वह बहुत महान बन गया। वह एक सच्चे मित्र थे अपने मित्र के लिए अपने प्राणो तक की भी चिन्ता नही करते थे। यदि आज भी हम रामायण से व राम के जीवन से शिक्षा लें तो मित्र एक सच्चा मित्र बन जाए कोई भी स्वार्थी मित्र न रहे।

### राम एक आदर्श पति थे

राम एक पत्नीव्रती थे और एक आदर्श पति थे। वन को चलते समय सीता भी वन मे साथ ही गई थी इसी से राम का जीवन एक आदर्श पति के रूप मे उभर कर सामने आया। उन्होने वन मे सीता जी को कभी भी किसी प्रकार का कष्ट न होने दिया। उनकी रक्षा भी जान से की। रावण के द्वारा उठाई जाने पर सीता की खोज मे दिन-रात एक कर दिया वह उसके वियोग मे भोजन तक भूल गए और विलाप करते रहे जब यह पता चला कि लंका का शक्तिशाली राजा सीता को उठाकर ले गया तो उस का नाश करने के लिए और सीता का उद्धार करने के लिए प्राणो की भी चिन्ता न करते हुए उससे युद्ध करने के लिए लंका मे पहुंच गए। अगर कोई और होता तो शायद यह कहता कि एक स्त्री के लिए इतना रक्तपात क्यो किया जाए जान को जोखम में क्यो डाला जाए। पिता दशरथ ने भी तो तीन विवाह कर लिए थे राम भी सीता को छुड़ाने की कोई चिन्ता न करते कोई और विवाह करा लेते परन्तु राम एक पत्नी व्रती थे। उन्होंने अपनी जान पर खेलकर सीता को रावण का वध करके उसकी जेल से उसे मुक्त कराया।

### राम एक आदर्श राजा थे

राम राज्य सारे संसार मे प्रसिद्ध है, महर्षि दयानन्द और महात्मा गांधी भी भारत मे राम राज्य का स्वप्न देखा करते कि भारत स्वतन्त्र हो, यहां अपना राज्य हो और ऐसा राज्य हो जैसा राम का राज्य था। सचमुच राम के राज्य के अन्दर कोई निर्धन नही था। कोई साधन हीन नही था, सभी खुशहाल थे, कोई चोर-जार और दुष्ट प्रवृति का व्यक्ति नहीं था। लोग अपने घरों को ताला नही लगाते थे। न्याय व्यवस्था बहुत उच्च थी। कोई रिश्वत या सिफारिश नही चलती थी। देश धन-धान्य से भरपूर रहता था। गरीब-अमीर, छोटे-बड़े का कोई भेदभाव नही था। जो गुण एक राजा में होने चाहिए वह सभी गुण राम के अन्दर [illegible] थे। वह वेश बदलकर

(शेष पृष्ठ 6 पर)

# व्याख्यान माला (स्वामी अच्युतानन्द)

# परमेश्वर प्रार्थनादि

अनुवादक—श्री सुखदेवराज शास्त्री विद्यावाचस्पति, श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय करतारपुर जालन्धर

सख्ये त इन्द्र वाजिनो मा भेम शवसस्पते ।
त्वामभिप्रणोनुमो जेतारमपराजितम् ।1।

हे (शवस पते इन्द्र) बलाधिपति परमैश्वर्य शालिन प्रभो ! (ते सख्ये) आपके सख्य-मित्रता मे हमे (वाजिन) जो बल प्राप्त हो जाता है उस कारण (माभेम) किसी से भी भयभीत न हों । (जेतारम) सर्व विजयी और (अपराजितम) किसी से भी पराजित न होने वाले (त्वाम) तुझ महापराक्रमी को (अभिप्रणोनुम:) हम सततक प्रकृष्टतया नमन करते है ।

लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः ।
येषा हृदिस्थो भगवान्मङ्गलायतनो हरि: ।2।

जिनके हृदय मे मगलमय भगवान निवास करते हैं अर्थात् जो लोग सच्चे हृदय से मगलमय प्रभु का आराधन एव प्रभु पर विश्वास रखते हैं उन्हीं को सदैव लाभ होता है, उन्ही की जीत होती है और उनकी पराजय भी कभी नहीं होती ।

सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममगलम् ।
येषा हृदिस्थो भगवान्मङ्गलायतनो हरि: ।3।

जिनके हृदय मे मङ्गलमय प्रभु का निवास होता है उन लोगो के सभी कार्य सदा मङ्गलमय होते हैं उनमे अमगल को अवकाश नही होता ।

अशुभानि निराचष्टे तनोति शुभसन्ततिम् ।
स्मृतिमात्रेण यत्पुंसा ब्रह्म तन्मगल विदु ।4।

जिस ब्रह्म के स्मरण मात्र से मनुष्यो के अशुभ का निराकरण तथा शुभ का विस्तार होता है वही मगलकारी ब्रह्म सबका जानने योग्य है ।

स्मृते· सकल कल्याण भाजन यस्य जायते ।
पुरुषस्तमज नित्य व्रजामि शरण हरिम् ।5।

जिसकी स्मृति से मनुष्य सब कल्याणो का पात्र बन जाता है मैं उस नित्य अजन्मा भगवान की शरण को प्राप्त होता हू ।

हिरण्मये परे कोशे विरज ब्रह्म निष्कलम् ।
तच्छुभ्रं ज्योतिषा ज्योतिस्तद्यदात्मविदो विदु ।6।

रजोगुण रहित निष्कलक जो ब्रह्म वह हिरण्मय कोष अर्थात् तेजोमय परम कोष में विराजमान है वह ज्योतियों मे शुभ्र ज्योति है । उस ब्रह्म को आत्म ज्ञानी ही जान पाते हैं ।

जगतां यदि नो कर्ता कुलालेन विना घट
चित्रकारं विना चित्र स्वत एव भवेत्तदा ।7।

ससार का यदि कोई रचयिता नही तो कुम्हार के बिना घड़ा, चित्रकार के बिना चित्र अपने आप ही बन जाए ।

श्लोक सार—

सृष्टि की रचना मे ईश्वर के कर्तृत्व को स्वीकार न करने वाले अनीश्वर-वादी को ईश्वरवादी का उत्तर है कि यदि जगत् की रचना मे कोई कर्ता नहीं और यह स्वय ही अणु-परमाणु सयोग से निर्मित हो गया हो तब तो बिना कुम्हार के घड़ा, बिना चित्रकार के चित्र भी स्वय ही बन जाना चाहिए, परन्तु लोक में ऐसा नहीं देखा जाता, अत· ससार की रचना भी स्वत न होकर परम अर्थात् ईश्वराधीन है और सर्व शक्ति सम्पन्न ईश्वर ही उसका रचयिता है ।

भयादस्याग्निस्तपति भयात्तपति सूर्य ।
भयादिन्द्रश्च वायुश्च मृत्युर्धावति पञ्चमः ।8।

इस परब्रह्म के भय-सामर्थ्य से ही अग्नि और सूर्य तपते हैं और इसी के भय से इन्द्र और वायु अपने-अपने कर्म मे तत्पर हैं तथा इसी के सामर्थ्य से पञ्च तत्वों से युक्त यह मरण धर्मा जीव भी गतिशील रहता है ।

एष सर्वेषु भूतेषु गूढात्मा न प्रकाशते ।
दृश्यते त्वग्र्यया बुद्ध्या सूक्ष्मया सूक्ष्मदर्शिभि: ।9।

यह गूढ परमात्म ज्ञान सब प्राणियों में प्रकाशित नहीं होता अपितु सूक्ष्म दृष्टि रखने वाले तथा तीव्र मेधा वाले जो लोग हैं उन्हीं के द्वारा उस प्रभु का साक्षात्कार किया जाता है ।

दिव्यो ह्यमूर्त: पुरुष: स बाह्याभ्यन्तरो ह्यज: ।
अप्राणो ह्यमना: शुभ्रो ह्यक्षरात्परत: पर: ।10।

निश्चय से वह दिव्य गुणों से युक्त परम पुरुष बाह्याभ्यन्तर सर्वत्र वर्तमान तथा अजन्मा है । वह प्राण तथा मन से भिन्न है और प्रकृति जीव से भी परे शुभ्र ज्योति वाला है ।

एतस्माज्जायते प्राणो मन: सर्वेन्द्रियाणि च ।
खं वायुर्ज्योतिराप: पृथिवी विश्वस्य धारिणी ।11।

इसी से प्राण मन और चक्षु आदि सब इन्द्रिया उत्पन्न होती हैं और इसी से जल वायु, आकाश, अग्नि तथा ससार को धारण करने वाली पृथ्वी उत्पन्न हुई है ।

य सर्वज्ञ: सर्वविद्यस्य ज्ञानमय तप: ।
तस्मादेतद् ब्रह्म नाम रूपमन्नं च जायते ।12)

जो सर्वज्ञ होने से सर्ववित कहलाता ? जिसका तप ज्ञानमय है, इसी कारण जिसे ब्रह्म कहा जाता है, उसी ब्रह्म से रूप तथा अन्न की उत्पत्ति होती है ।

सर्वभूतस्थमात्मान सर्वभूतानि चात्मनि ।
सपश्यन् ब्रह्म परम याति नान्येन हेतुना ।13।

जो मनुष्य सब प्राणियो मे एक तुल्य वर्तमान परमात्मा को तथा परमात्मा मे विदित समस्त प्राणि जगत् को देखता है अर्थात् प्राणि मात्र के प्रति सम्वेदनशील है, वही तत्वदर्शी उस पर ब्रह्म को जान पाता है, इसके अतिरिक्त परब्रह्म को जानने का कोई अन्य साधन नही है ।

स ब्रह्मा स शिव: सेन्द्र: सोऽक्षर. परम: स्वराट् ।
स एव विष्णु: स प्राण· स कालोग्नि. स चन्द्रमा: ।14।

वह एक परमेश्वर ही जगत् उत्पादक होने से ब्रह्मा, कल्याणकारी होने से शिव, परमैश्वर्य वाला होने से इन्द्र अविनाशी होने से अक्षर, सर्वत श्रेष्ठ होने से परम, स्वत प्रकाशमान होने से स्वराट्, सर्वत्र व्याप्त होने से विष्णु सर्वत्र सचरण करने वाला होने से प्राण, सभी प्राणियों का कुलपति होने से काल, तेज पुञ्ज होने से अग्नि तथा शीतलता का अगाध स्रोत होने से चन्द्रमा है, अर्थात् गुणानुरूप उस एक परमेश्वर के ही ब्रह्मादि अनेकानेक नाम प्रसिद्ध हैं ।

एतमेके वदन्त्यग्निं मनुमन्ये प्रजापतिम् ।
इन्द्रमेकेऽपरे प्राणमपरे ब्रह्म शाश्वतम् ।15।

इसी को कुछ लोग अग्नि कहते हैं, कुछ इसे प्रजापति मनु कहकर पुकारते हैं, दूसरे इसको इन्द्र एव कुछ लोग इसको प्राण शाश्वत ब्रह्म की सज्ञा देते हैं ।

यो देवोऽग्नौ योऽप्सु यो विश्व भुवनमाविवेश ।
य ओषधिषु यो वनस्पतिषु तस्मै देवाय नमो नम: ।16।

जो ईश्वर अग्नि और जल मे विद्यमान है, जो सम्पूर्ण भुवनों में व्याप्त है जो औषधियो मे तथा जो वनस्पतियो मे ओतप्रोत है, उस दिव्य देव को पुन:पुन: नमस्कार हो ।

(क्रमश)

सम्पादकीय—

# राम नवमी का सन्देश

हमारी सारी संस्कृति दो महापुरुषों के गिर्द घूमती है—मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् राम और योगीराज भगवान् कृष्ण। दोनों का हमारी संस्कृति में विशेष स्थान है। धर्म का वास्तविक स्वरूप देखना हो तो भगवान राम को देख लो। राजनीति का वास्तविक स्वरूप देखना हो तो भगवान कृष्ण को देख लो। श्री कृष्ण ने तो अपनी राजनीति को एक धार्मिक रूप दे दिया था। जब उन्होंने गीता में अर्जुन से कहा था कि अपने अधिकारों की रक्षा के लिए उसे क्यों लड़ना चाहिए, परन्तु भगवान् राम तो धर्म का विशुद्ध और बेदाग रूप थे। यह ही कारण है कि हजारों वर्ष व्यतीत हो जाने पर हम भगवान राम को स्मरण करते हैं। उनका नाम सुनते ही हमारा मस्तिष्क श्रद्धा से झुक जाता है और स्वतः मुख से निकलता है—न कोई ऐसा हुआ न होगा।

अब राम नवमी आ रही है इस दिन भगवान राम का जन्म हुआ था। राम नवमी और श्री कृष्ण जन्माष्टमी यह दो ऐसे पर्व हैं जो हमें पूर्ण श्रद्धा से मनाने चाहिए। हमें राम और कृष्ण पर गर्व है परन्तु हम इनकी पूजा तो करते हैं परन्तु इन्हें और इनके उपदेशों को समझने का प्रयास नहीं करते राम नाम का हमारी संस्कृति मे विशेष महत्व रखता है इसीलिए कोई बड़े से बड़ा शायर अपनी शायरी को राम और कृष्ण को अपने श्रद्धा सुमन प्रस्तुत किए बिना पूरी नहीं कर सकता। मुसलमान अपने धर्म के बड़े पाबन्द होते हैं परन्तु इनका सिर भी भगवान राम के आगे श्रद्धा से झुक जाता है। इकबाल ने भगवान राम को अपने श्रद्धा के पुष्प अर्पित करते हुए लिखा था—

है राम के वजूद पर हिन्दुस्तां को नाज, एहले नजर समझते हैं इसको इमाम हिन्द।
तलवार का धनी था सजायत मे मर्द था पाकीजगी मे जोशे मुहब्बत मे फर्द था।

और इसी अन्दाज मे एक और मुस्लिम शायरा सागर नजमी ने श्री राम के सम्बन्ध मे लिखा था—

दिल का त्यागी रूह का रसिया, खुद राजा और खुद ही प्रजा।
सबसे उल्फत करने वाला, कौल का सच्चा बात का पक्का,
एक अमर पैगामे मुहब्बत, सरतापा इलहामे मुहब्बत
ध्यान की गंगा इससे फूटी, ज्ञान की जमुना उससे फूटी
सच्चाई का परिचय था वह, प्रेम का बांका बालम था वह
रूप के इसके कौन आया था, कह दूंगा तो झगड़ा होगा
भारत प्यारा राज दुलारा कौशल्या की आंखों का तारा

शायर तो अपनी कल्पना की उड़ान मे कहीं से कहीं जा पहुंचता है। परन्तु श्री गुरु ग्रन्थ साहब तो जीवन की ठोस वास्तविकताओं पर आधारित है। इसके एक-एक पृष्ठ पर भगवान् राम का नाम पढ़ने को मिलता है और जब गुरु ग्रन्थ साहब में लिखा हो—

जपि-जपि राम नाम सुखु पावैगो जिनु-जिनु जपै तिथै सुखु पावै।
सति गुर सेवी समावैगे,

और फिर हम आगे चलकर पढ़ते हैं—

राम सिमर, राम सिमर इहै तेरे काजि है, माइआ को संगु तिआगि।
प्रभ जू की सरनी लाग, जगत सुख मानु मिथिआ,
झूठो सब साजू है।

श्री गुरु ग्रन्थ साहब मे राम का जितना उल्लेख आता है शायद ही किसी दूसरे धर्म ग्रन्थ मे आता हो। इससे भी हम अनुमान लगा सकते हैं कि हमारी संस्कृति में राम नाम का कितना महत्व है।

राम नवमी 30 मार्च को है अथवा 31 मार्च को यह भी एक बहस का विषय बन गयी है। इन दोनो में चाहे किसी दिन हो हमें पूर्ण श्रद्धा भाव से राम नवमी को मनाना चाहिए। आवश्यकता केवल यह नहीं कि इस दिन भगवान राम की पूजा की जाये अपितु यह कि हम यह भी समझने का प्रयास करें कि भगवान राम को मर्यादा पुरुषोत्तम क्यों कहते हैं? उनमें वह क्या विशेषताएं थी जिनके कारण वह हमारे लिए सम्माननीय हैं। हम राम नहीं बन सकते परन्तु उन्हें अपने मन मे बिठाकर उनके पदचिन्हों पर चलने का कुछ तो प्रयास कर सकते हैं। यह ही राम नवमी का सन्देश है जिस पर हम अमल कर सकते हैं।

—वीरेन्द्र

# क्या सभा का भवन अधूरा रहेगा ?

लगभग दो वर्ष से आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का नव-भवन बन रहा है। इसमें बाहिर की तरफ 12 दुकानें बन चुकी हैं तीन कमरे अतिथि भवन के बन चुके हैं। यज्ञशाला बनाई जा रही है। उसका नीचे का फर्श और दूसरा साज-सज्जा का कार्य शेष है। हम चाहते हैं यज्ञशाला बहुत सुन्दर बनाई जाए। उसके फर्श और सुन्दरता पर भी अभी काफी खर्च होना है। सभा कार्यालय के लिए कमरे तथा एक हाल कमरा बनना आवश्यक है। जब तक सभा का कार्यालय नहीं बनता तब तक सभी कार्य अधूरा सा लगता रहेगा। मैं मानती हूं कि आर्य जनता ने सभा भवन के निर्माण के लिए कुछ धन दिया है और उसी से यह इतना बड़ा कार्य कुछ हो सका है। परन्तु अभी हमें धन की अति आवश्यकता है।

हमने आर्य समाजो तथा आर्य बन्धुओं और दानी महानुभावों से कई बार अपील की है। क्योंकि यह कार्य दानी महानुभावों के सहयोग से ही हम कर पाएंगे। इस कार्य के लिए हजारो की नहीं, लाखों रुपयो की आवश्यकता है। दानी महानुभावो के लिए यह शुभ अवसर आया है कि वह अपने धन को इस पुण्य कार्य के लिए सभा को दें।

सभा कार्यालय के जो कमरे बनने हैं उनमे से यदि कोई दानी महानुभाव किसी की स्मृति मे कोई कमरा बनवाना चाहे तो उस पर उसके नाम का पत्थर लगाया जा सकता है। यज्ञशाला के लिए या हाल कमरे के लिए जो दानी महानुभाव हमे धन भेजेंगे उनके नाम भी नामपट पर लिखवा दिए जाएंगे, इस समय हमे तुरन्त यज्ञशाला के निर्माण के लिए धन की आवश्यकता है क्योंकि उसका कार्य अधूरा पड़ा है। यदि कुछेक यज्ञ प्रेमी अपनी आहुति इस यज्ञशाला निर्माण में डाल दें तो यह कार्य शीघ्र सम्पन्न हो सकता है।

मैं सभी स्त्री आर्य समाजो की बहनो से तथा आर्य समाजो के अधिकारियो से प्रार्थना करती हूं कि वह दिल खोल कर इस महान कार्य के लिए दान दें। प्रत्येक स्त्री समाज और पुरुष समाज कुछ न कुछ राशि अवश्य सभा को भेजे और प्रत्येक आर्य बन्धु व बहिनें जहां तक भी उन से हो सके इस पवित्र कार्य के लिए धन भेजें।

मैं कई बार विचार करती हूं कि क्या सभा भवन निर्माण का यह कार्य अधूरा रह जाएगा? मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह कार्य अवश्य सम्पूर्ण होगा। क्योंकि आर्य समाज मे दानी महानुभावो की कमी नहीं है। मुझे यह भी विश्वास है कि यदि किसी धनी मानी सज्जन ने इधर थोड़ा भी ध्यान दिया तो यह सम्पूर्ण कार्य शीघ्र सम्पन्न हो जाएगा।

इसलिए मैं सभी दानी महानुभावो से अपील करती हूं कि वह दिल खोलकर शीघ्रातिशीघ्र सभा को धन भेजें। जिन दानी महानुभावो ने हमे गत दिनो धन दिया उनके नामो की सूची भी हम आगामी अंक मे प्रकाशित कर रहे हैं।

—कमला आर्या—सभा महामन्त्री

# स्त्री आर्य समाज का सराहनीय कार्य

आर्य समाज स्थापना दिवस पर मुझे स्त्री आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार लुधियाना की ओर से निमन्त्रण आया था कि मैं उनके इस समारोह में भाग लूं। मुझे यह देखकर प्रसन्नता हुई कि इस समाज की बहिनों ने एक बृहद् यज्ञ का आयोजन किया जिसमे चार दम्पति जोड़ों को यजमान बनाया गया। यजमान बड़े शिक्षित और यज्ञ प्रेमी थे बड़ी श्रद्धा से उन्होंने यज्ञ किया। यज्ञ के उपरान्त आर्य गर्ल्स हा ई स्कूल की बच्चियों के प्रभावशाली भजन हुए और तदुपरान्त मैंने आर्य समाज की स्थापना और नव सवत्सर के महत्व पर प्रकाश डाला।

इस समारोह मे बड़ी 2 दूर से नगर के एक कोने से दूसरे कोने तक की आर्य बहिनें सैंकड़ो की संख्या में उपस्थित थीं। इस अवसर पर निर्धन बहिनों को पांच सूट और पांच शालें भेंट की गईं। सभी यजमानो को आर्य साहित्य भेंट किया। भजन गाने वाली सभी बच्चियों को पारितोषिक दिए गए।

यह एक सराहनीय कार्य है कि यह बहिनें केवल मौखिक प्रचार ही नहीं करती, केवल यज्ञ और सत्संग ही नहीं करती बल्कि [illegible] साहित्य भी बांटती हैं और निर्धन परिवारों की मदद [illegible] है। इस [illegible] से अन्य आर्य समाजों को भी प्रेरणा लेनी चाहिए

—सह-सम्पादक

# महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी व्याख्यान माला

# दयानन्द, गांधी और मार्क्स

व्याख्याता—श्री डा प्रभाकर माचवे निदेशक भारतीय भाषा परिषद् कलकत्ता

## महात्मा गांधी

(10 फरवरी से आगे)

एक वक्त बाद गांधी पर यह आरोप लगाया गया कि वे उस साम्राज्यवाद-विरोधी संघ के सदस्य हैं जिसका कम्यूनिस्टों ने नेतृत्व किया था। रोम्या रोला बाज में सवेरी, अलबर्ट आइन्स्टाइन मादाम सुबातसेन आदि इस संघ के विरोधी थे और उन्होंने गांधी जी पर यह आरोप लगाया। गांधी जी नहीं जानते थे कि इस संघ का मूल संचालन मास्को से चलता है। नेहरू भी इस संघ के सदस्य थे, 1930 तक। बाद मे उन्हें इस लीग एगेन्स्ट इम्पीरियलिज्म ने अपनी सदस्यता से वंचित कर दिया (नेहरू जी की बंच आफ ओल्ड लेटस प 114 तथा ब्रेचर की जीवनी के पृष्ठ 113 115)। 1930 के बाद तक गांधी जी साम्यवाद को ओर एक अदभुत रम्य दृष्टि से देखते थे। अपने आप को वे अहिंसक साम्यवादी मानते थे।

दूसरे महायुद्ध के आरम्भ मे गांधी जी कम्युनिस्ट कूटनीतिज्ञता से आगाह हुए। 1938 मे हिटलर और पश्चिम के जनतन्त्रों के बीच म्युनिख समझौते पर लिखते हुए गांधी ने सोवियत रूस के बारे मे लिखा कि—यहा का तानाशाह रक्त के समुद्र मे चलकर शान्ति का सपना देखता है। युद्ध शुरू होने पर एक वर्ष बाद 23 अगस्त 1939 को जर्मन सोवियत सन्धि को और पोलैंड या दोनो राष्ट्रो के आक्रमणो को उन्होंने दुखद बतलाया। फिर भी उन्हे कुछ आशा थी। जून 1941 के बाद सोवियत जर्मन सन्धि टटने पर गांधी को अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवाद उतना ही आक्षपाह लगा जितना नाजीवाद। 1944 मे गांधी जी ने भारतीय साम्यवादी दल के मन्त्री के साथ हुई चर्चा मे रूस के अवसरवाद और ब्रिटिश साम्राज्यवाद विरोध विस्मरण प्रश्न पर गांधी जी को लगी ठस उन्होंने व्यक्त की है। भारत जब गुलाम है तब गुलाम जनता का कैसा युद्ध ? गांधी ने पूछा। गांधी जी भारतीय साम्यवादी दल से इस प्रकार से दूर हटते गए और अपने जीवन के अन्त तक वे उसे क्षमा न कर सके। 1946 मे उन्होंने यहा तक लिखा कि भारतीय साम्यवादी अच्छे बुरे सत्य असत्य के बीच मे कोई भेदभाव नही करते। फिर भी व्यक्तिगत रूप से उन्होंने साम्यवादियो के हृदय परिवतन मे विश्वास नही छोड़ा। गांधी जी ने इटली के फासिस्टवाद और जर्मनी के नाजीवाद की जिन कारणो से बुराई की, ठीक वही दोष उन्हे साम्यवाद मे भी दिखाई दिए।

पचगनी मे जुलाई, 1946 के अन्तिम सप्ताह मे लुई फिशर की गांधी जी से जो बातचीत हुई जिसका ब्यौरा प्यारेलाल जी ने 4 8 1946 के हरिजन मे दिया था उससे यह पता चलता है।

गांधी जी ने कहा— हमारे समाजवादी भाईयो की त्याग और सेवा की भावना के लिए मेरे मन मे बहुत प्रशसा भावना है फिर भी मैंने उनके और मेरे तरीको से जो तीखा अन्तर है उसे कभी नही छिपाया है। वे तो स्पष्टत खुलेआम हिंसा मे विश्वास करते हैं और उसके साथ जो कुछ भी उसमे छिपा है उसमे भी। मैं अहिंसा मे पूरी तरह विश्वास करता हूं।

इससे चर्चा समाजवाद की ओर मुड़ी। फिशर ने बीच मे बात काटते हुए कहा तो वे भी समाजवादी हैं और आप भी हैं।

गांधी जी ने उत्तर दिया मैं हू, वे नही हैं। उनमे से बहुत से नही जन्मे थे तब का मैं समाजवादी हू। जोहान्सबर्ग मे एक कट्टर समाजवादी की नजर मे भी समाजवादी था। पर वह बात तो अब न यहा की है न वहा की। मेरी बात तो तब भी रहेगी जब समाजवाद भी नही रहेगा।

'आपके समाजवाद का क्या मतलब है ?

मेरे समाजवाद का अर्थ है अन्तिम व्यक्ति तक भी या सर्वोदय। मैं अधो बहरो और गूगों की राख पर नहीं खड़ा होना चाहता। उनके समाजवाद में, शायद इन लोगो के लिए कोई स्थान नहीं है। उनका एक मात्र उद्देश्य है भौतिक प्रगति। उदाहरणार्थ अमेरीका चाहता है कि हर नागरिक के पास एक कार हो जाए। मैं नही चाहता। मैं तो अपने व्यक्तित्व के पूरे विकास के साधन चाहता हू। यदि मैं चांद तक सीढ़िया बनाना चाहू तो उसकी मुझे स्वतन्त्रता होनी चाहिए, इसका मतलब यह नहीं है कि मैं ऐसा कुछ करना चाहता हू। उस तरह के समाजवाद में कोई व्यक्तिगत स्वतन्त्रता नहीं है। यहा तो तुम्हारे पास किसी चीज पर अधिकार नहीं। अपने शरीर पर भी नही।

मेरे और उनके समाजवाद में यह फर्क है। मेरे समाजवाद मे यह होगा कि सरकार किसी चीज पर कोई अधिकार या सत्ता नही रखेगी। रूस में तो राज्य ही सर्वसत्ताधारी है। वहा तो आप कोई गुनाह न करें तो भी मुमकिन है किसी भी समय आप गिरफ्तार हो सकते हैं। वहा आपको चाहे जहा भेज दे सकते हैं।

'क्या आपके आदर्श समाजवाद में, राज्य बच्चो को शिक्षित करने का यत्न नहीं करेगा ?

'सभी राज्य करते हैं। अमेरिका भी।

'तो अमेरिका रूस से बहुत भिन्न नहीं है।

असल मे आप तानाशाही के विरुद्ध हैं।

समाजवाद तो तानाशाही है या फिर आराम कुर्सी का दर्शनमात्र है।

ऐसी यह बातचीत चलती रही जिसमे गांधी जी ने समाजवाद और साम्यवाद के मिश्रण की भी बात की। लुई फिशर ने स्वीकार किया कि मार्क्स के मूल सिद्धान्तों को पहले लेनिन ने क्रान्ति द्वारा जमीन पर उतारा और बाद में स्तालिन ने और भी उन्हे विकृत कर दिया और इस प्रक्रिया मे मूल उद्देश्य से समाजवाद दूर दूर होता चला गया। ठीक जैसे धर्म अपने मूल स्थान से बदल कर रूढ़ियो से जुकड़ जाता है।

मानव समता की बात सभी करते हैं। पर क्या यह सम्भव है ? और सम्भव भी हो तो कहा तक ?

गांधी जी यन्त्रो के विरुद्ध थे ऐसा भी एक प्रवाद फैलाया गया है पर वे मोटर रेल, बड़ी टेलीफोन माइक्रोफोन, सीने की मशीन आदि का उपयोग करते थे। बाइसिकल के भी वे विरुद्ध नही थे। वस्तुत वे मशीन के गलत उपयोग के विरुद्ध थे। वे यान्त्रिकता के विरुद्ध थे। मैक्स वेबर ने अपने समाज शास्त्र के ग्रन्थो मे लिखा है कि काल मार्क्स अपने वर्ग विग्रह मिटाने के लिए व्यापक औद्योगिकरण के सिद्धान्त के प्रचार के जोश मे भूल गया कि यन्त्रो के साथ जो फुरसत आएगी जो इफरात से उत्पादन होगा उसमे मनुष्य कैसे अकेला पड़ता चला जाएगा ? यह आत्म निर्वासन उसके लिए शाप की तरह सिद्ध होगा और इसीलिए उन्होंने 'मनुष्य और मशीन के सिलसिले मे कहा था।

मैं तो बिना किसी हिचकिचाहट से दृढतापूर्वक कहूगा कि दुनिया में मास प्रोडक्शन विशाल परिमाण पर उत्पादनो का पागलपन ही आज की दुनिया के सारे सकटो का मूल है। यह भी मैं क्षण भर मान लू कि मशीन से सारी मानव जाति की सब जरूरतें पूरी की जा सकेंगी फिर भी उससे उत्पादन कुछ ही क्षत्रो में केन्द्रित हो जाएगा। और फिर वितरण को नियन्त्रित करने के लिए उलटे और व्यवस्था करनी पड़ेगी। यदि उत्पादन और वितरण अपने अपने क्षत्रो मे आवश्यकतानुसार स्वय नियन्त्रित होते चले तो फिर अप्रामाणिकता को और सटटेबाजी को प्रश्रय नही मिल सकेगा।

वस्तुत मनुष्य द्वारा मनुष्य का शोषण न हो यह सिद्धान्त अस्तेय व्रत पर निर्भर है। वेदो मे कहा गया है—

> मोघमन्नं विन्दते अप्रचेता, सत्यं ब्रवीमि वध इत्स तस्य।
> न अर्यमणं पुष्यति नो सखायं, केवलाघो भवति केवलादी॥

(अर्थ—संकुचित दृष्टि वाले मनुष्य को मिली हुई धन राशि व्यर्थ है। उसके घर मे यह राशि नही संचित है बल्कि उसका मरण संचित है। जो आई-बहुत को नही देता सुपात्र को नही देता और केवल अपने तक ही सेक पाता है, ऐसा आदमी पाप रूप है।

(क्रमश)

# मृत्यु स्वरूप विवेचन

ले,—श्री यशपाल आर्य बन्धु आर्य निवास चन्द्र नगर मुरादाबाद

अपने पूर्व लेख में हमने जीवन और मृत्यु की पहेली की चर्चा की थी और यह बताया था कि अनादि काल से मानव इस विचित्र पहेली को ढूंढने में लगा है और फिर भी वह सदैव मृत्यु से भयभीत रहता है। उसे सदैव यही आशंका रहती है कि न जाने किस समय मृत्यु आ दबोचे। वह भयातिरेक के कारण हम से कुछ भी नहीं पाता। और स्थिति यह है—

उसका जीना भी कोई जीना है
इसिके जिन्दगी ने जिनको मारा है।

तात्पर्य यह है कि हम जिन्दगी की हवस मे मरे जाते हैं। पर ऐसा क्यो? इसी लिए कि हमने जिन्दगी और मौत के स्वरूप को ठीक से समझा ही नही। अत आवश्यकता इस बात की है हम इनके स्वरूप को समझें। जीवन तो हमें दिखाई दे रहा है क्योंकि हम स्वय जीवित हैं किन्तु मृत्यु हमें दिखाई नही देती, क्योंकि मरने के उपरान्त कोई तो उस स्थिति के बारे मे कुछ बताने नहीं आता। हम दूसरो को मरता देखकर यह सोच लिया करते हैं किन्तु कोई अत्यन्त पीडादायक स्थिति होगी। पर वस्तुस्थिति क्या है आइए थोडा इस पर विचार करें।

वह मृत्यु कि जिसका नाम सुनते ही ही प्राणी काप उठता है सिहर उठता है, [illegible] हो जाता है, अन्तत है क्या? तो आइए। प्रथम भौतिकवादी दृष्टिकोण से भी इसकी विवेचना करे। पश्चात् आध्यात्मिक दृष्टिकोण से भी इसकी विवेचना करेंगे। भौतिकवादी मृत्यु की खोज उसके भौतिक कारणो में ही किया करते हैं। कुछ समय पूर्व तक यह लोग सास के रुक जाने अथवा हृदयगति बन्द हो जाने को मृत्यु कहा करते थे पर आज स्थिति इससे भिन्न है। भौतिकवादी हृदयगति को रुकना मृत्यु का लक्षण नही मानते इसे 'कार्डियक ऐरेस्ट' कहते हैं और मानते हैं कि मालिश या बिजली के झटके से रुका हुआ हृदय फिर से चलाया जा सकता है और इस प्रकार मृत्यु से बचा जा सकता है। इसी प्रकार सास का न चलना भी उनके लिए मृत्यु का द्योतक नहीं रहा। कृत्रिम स्वास यन्त्र से श्वसन क्रिया को फिर से चलाया जा सकता है। सम्प्रति डाक्टर मस्तिष्क की विद्युत तरगों के रुक जाने को मृत्यु का [illegible] मान रहे हैं। किन्तु साथ में वह भी कह रहे हैं कि निकट भविष्य मे रुके मस्तिष्क को भी फिर से चलाया जाना सम्भव हो सकता है। तात्पर्य यह कि भौतिकवादी लोग शरीर की ही किसी गडबडी या अक्रियाशीलता को ही मृत्यु समझते हैं। वे जिन्दगी और मौत की कुछ निम्न सी परिभाषा देते हैं। यथा—

जिन्दगी क्या है? अनासर की,
मुनासिब तरतीब।
मौत क्या है?
इन्ही अजजा का बिखर जाना।

पर वे यह भूल जाते हैं कि परमाणु की मुनासिब तरतीब (व्यवस्थित क्रम) स्वत तो हो नही जाता और न ही यह स्वत ही बिखर जाता है। जब वे इसे व्यवस्थित क्रम मानते हैं तो ऐसे व्यवस्थित क्रम देने वाला भी तो कोई होना चाहिए। कोई भी व्यवस्थित क्रम अपने आप नही हो जाया करता। अत यह दृष्टिकोण मान्य नहीं हो सकता।

आध्यात्मवादी मान्यता के अनुसार जीवन के सभी लक्षणो की परिसमाप्ति का नाम मृत्यु है। अर्थात मृत्यु जीवन के विपरीत अवस्था का नाम है अब यहा प्रश्न उठ सकता है कि यदि मृत्यु जीवन के विपरीत अवस्था का नाम है तो फिर जीवन क्या है? यह प्रारम्भ क्यो हुआ था और फिर समाप्त क्यो हो गया? फिर समाप्त हो जाने पर कहा विलीन हो गया, यह जीवन के उदय और विलय को क्रम कब से चल रहा है और कब तक चलता रहेगा? यह जीवन और मृत्यु की विचित्र पहेली जिसे हम करने मे मानव अनादि काल से एडी-चोटी का जोर लगा रहा है।

जब मृत्यु जीवन के सभी लक्षणो की परिसमाप्ति का नाम है तो फिर जीवन क्या है?

मृत्यु ही की भाति जीवन के लिए भी आध्यात्मवादी दृष्टिकोण भौतिकवादी दृष्टिकोण से सर्वथा भिन्न है। भौतिकवादी कतिपय भौतिक सम्मिश्रणो से जीवन की उत्पत्ति मानते है। पर आध्यात्मवादी इससे सन्तुष्ट नही होते। क्योंकि निरुद्देश्य सम्मिश्रणा का क्या प्रयोजन? आध्यात्मवादी जड, शरीर और चेतन आत्मा का ईश्वर की व्यवस्था से संयोग का नाम जीवन मानते और इन दोनो के ईश्वरीय व्यवस्था से वियोग को मृत्यु मानते हैं। तात्पर्य यह कि चेतन आत्मा का जड, शरीर के साथ संयोग होता है तो उसमें जीवन के लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं और जब वियोग हो जाता है तो जीवन के सभी लक्षण समाप्त हो जाते हैं और इस अवस्था का नाम मृत्यु है। यह है आध्यात्मवादी दृष्टिकोण मृत्यु और जीवन के सम्बन्ध मे। तात्पर्य यह है कि जीवन और मृत्यु की पहेली सुलझाने के लिए हमे तीन सत्ताओ—ईश्वर जीव और प्रकृति को स्वीकार करना ही पडेगा। यह तीनो तत्व अनादि हैं।

यह तो आप जान ही चुके हैं कि जड शरीर के साथ चेतन आत्मा के सयोग का नाम जीवन है और वियोग का नाम मृत्यु है पर यह सयोग वियोग स्वत अपने आप तो नही हो जाता। कोई तीसरी शक्ति ही जो इन से अधिक शक्तिशाली समर्थ तथा सर्वज्ञ है, वही इसकी व्यवस्था करती है। उसी की व्यवस्था से न चाहते हुए भी जीव को इस शरीर छोडने और फिर दूसरा शरीर धारण करने को बाध्य होना पडता है। जब जीव का ईश्वर की व्यवस्था से प्रकृति अन्य शरीर से सयोग होता है तो जड शरीर मे भी चेतना आ जाती?। यही जीवन के लक्षण हैं और जब शरीर से चेतन आत्मा ईश्वरीय व्यवस्था से निकल जाता है तो शरीर अवचेतन अवस्था मे आ जाता है। इसी का नाम मृत्यु है। स्पष्ट है कि जीवन और मृत्यु आत्मा और शरीर के सयोग और वियोग का ही सारा खेल है पर यह खेल कोई स्वेच्छा से नही खेला जाता। यदि स्वेच्छा से यह खेला जाता तो फिर वियोग होता ही नही। पर हम देखते हैं कि बरबस कोई शक्ति इसका वियोग भी करा देती है। उसी नियन्ता की व्यवस्था से जीव शरीर के सभी छिद्र खुले होने पर भी कही निकल कर भाग नही सकता और वियोग होने पर लाख उपाय करने पर भी इसमे एक क्षण को रुक नही सकता। यह उसी नियामक प्रभु की व्यवस्था एव अनन्त शक्ति रूपी पाश है जिनसे बधा जीव निकल कर भाग नही सकता।

अब हम पुन: मूल विषय पर आते है कि जिन्दगी क्या है और मृत्यु क्या है? सीधे साधे शब्दो मे कहना हो तो यही कहा जाएगा कि—

जिन्दगी जन्म और मृत्यु के बीच
की दूरी है,
जन्म लाचारी है मौत मजबूरी है

जिसे हम जन्म कहते है वह वस्तुत मृत्यु की ओर यात्रा की शुरूआत है। तनिक विचारे तो सही कि बालक के उत्पन्न होने के तुरन्त पश्चात उसकी भोली भाली ममतामयी मा पौराणिक मान्यतानुसार ज्योतिष से बालक की जन्म-पत्री बनवाती है और उससे पूछती है कि बालक कितना जीएगा। ऐसा पूछकर क्या वस्तुत वह ज्योतिषी से यह नहीं कह रही होती कि बालक कब मरेगा? जन्मते ही मृत्यु की आशका। इसीलिए [illegible] कि जन्म मृत्यु की ओर यात्रा का प्रारम्भ है यहा यह प्रश्न उठ सकता है कि यदि जन्म मृत्यु की ओर यात्रा की शुरूआत है तो फिर मृत्यु क्या है? निश्चय ही वह आगामी जीवन के लिए एक पारपत्र है। यदि जन्म के साथ मृत्यु जुडी है तो मृत्यु के साथ भी तो जन्म जुडा है। वस्तुत यह जन्म और मृत्यु एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। कोटन के शब्दो मे—What we call life is journey to death and what we call death is a pasport to life-

अर्थात जिसे हम जीवन कहते हैं वह मृत्यु की ओर यात्रा है और जिसे हम मृत्यु कहते हैं वह जीवन का पारपत्र है। इसी प्रकार डा [illegible] का भी कथन है। कि—अर्थात हमारा जन्म मृत्यु की शुरूआत के सिवा और कुछ भी नही जबकि डा स्वामी सत्य प्रकाश का कथन है कि —अर्थात मृत्यु दो जीवनो के बीच का द्वार है यानी वर्तमान और भावी जीवन के बीच का द्वार, और कविवर दिनकर के शब्दो मे कहना हो तो यही कहा जाएगा कि—

कफन और पोशाक छटी की दोनो
एक वसन हैं।
पता नही हम मरते हैं या जन्म
नया लेते हैं।

तात्पर्य यह कि जैसे आदि सदा अन्त से जुडा होता है। इसी प्रकार जन्म सदा मृत्यु से एव मृत्यु सदा जन्म से जुडी है। गीता मे कहा है कि—जातस्य ध्रुवो मृत्यु ध्रुव जन्म मृतस्य च। अर्थात जो उत्पन्न हुआ है उसकी मृत्यु निश्चित है और जो मृत्यु को प्राप्त हुआ है उसका जन्म निश्चित है। वस्तुत जन्म होना है जिन्दगी का सफर मौत बस रास्ता बदलती है।

# शान्ति कीजिए प्रभु! त्रिभुवन में

ले —श्री सुरेशचन्द्र जी वेदालकार, 9 ए ई ए. ओबरा मिर्जापुर

यतोयत समीहसे
ततो नो अभय कुरु।
श न करु प्रजाभ्य
अभय न पशुभ्य ।यजु 36 22

(यत यत) जहा जहा से तुम (समीहसे) सम्यक चेष्टा करते हो (तत) वहा से (न) हमे (अभय) अभय (कुरु) कर दो। (न) हमारी (प्रजाभ्य) प्रजाओ के लिए (श) कल्याण (कुरु) कर दो और (न) हमारे (पशुभ्य) पशुओ के लिए (अभय) अभय कर दो।

हम ससार मे पाप की ओर क्यो प्रवत होते हैं हम निबलो को क्यो सताते हैं? गरीबो पर क्यो अत्याचार करते हैं? पशुओ की क्यो हिंसा करते हैं? दूसरो की वस्तुओ का क्यो अपहरण करते हैं? क्योकि हमारे अन्त करण मे स्थित भय नामक शत्रु इन कार्यों को करने के लिए प्रेरणा देता है। उस समय इस भय की प्रेरणा से मनुष्य ईश्वर को भूल जाता है। उसे उसकी सर्वव्यापकता का अनुभव नही रहता और वह अपने को असहाय समझ कर उस मन से आता है बुरे और हीन काय भी करने प्रारम्भ कर देता है। इसीलिए याद रखो भय सहारक वस्तु है। यह किंकर्तव्य विमूढता निराशा और मृत्यु को जन्म देता है। भय ने कभी किसी की कोई सहायता नहीं की। परन्तु आप जरा विचार तो कीजिए कि भय का मूल्य क्या है? भय का वास्तव मे कोई अस्तित्व नही। कल्पना इसे जन्म देती है यह एक छाया है मस्तिष्क का एक रोग है। भय नाम का कोई व्यक्ति नहीं और न वह कोई शक्ति ही है। यदि इसके जीवन रस नामक प्रभाव के सामने घुटने न टेके जाय इसे अपने पर हावी होने मे इसकी सहायता न की जाए तो किसी को कोई हानि पहुचाने की इसमें शक्ति नही है। भय मस्तिष्क का कीडा है। भीरुता और निराशा का समागम भय को जन्म देता है। भय उस कायर शत्रु के समान है जो पीठ पर आक्रमण करता है। भयपूर्ण विचार शक्ति का नाश करते हैं। दया न्याय, सत्य और प्रेम को हम से दूर करते हैं। शान्ति एवं ईश्वर विश्वास का अपहरण करते हैं और जब सफलता आप से मिलना चाहती है यह आकर उसे दूर भगा देते हैं।

आईए! यदि आप सुख शान्ति, पवित्रता एव आनन्द की कामना करते हैं तो जिस शान्ति ने आपको जन्म दिया है जो अपने पाखो मे रोग मुक्ति और सफलता का रसायन लिए आपके चारो ओर उड रही है तैर रही है उससे प्रार्थना कर कि हे प्रभो! हे जगदीश्वर! तुम ऐसी कृपा करो कि हम सब प्राणी सदा सवत्र तुम्हारे ही समीहस की समीपता को अनुभव कर और हमारी प्रजाओ के लिए तुम ऐसा ही श करो हमारे पशुओ को और हमको भी तुम ऐसा ही परिपूर्ण अभय और शान्ति प्रदान करो। एक कवि ने कहा है

शान्ति कीजिए प्रभु त्रिभुवन मे
जल मे थल मे और गगन मे
अन्तरिक्ष मे अग्नि पवन में
औषधि वनस्पति वन उपवन मे
जीव मात्र के तन मे मन मे। शान्ति
ब्राह्मण के उपदेश वचन मे
क्षत्रिय के द्वारा हो रण मे,
वैश्य जनो के होवे धन मे
और शूद्र के हो चरण मे। शान्ति
शान्ति राष्ट्र निर्माण सृजन में
सकल विश्व में जड चेतन मे
नगर ग्राम मे और भवन मे
और जगती के हो कण कण मे।

—

## लुधियाना में गायत्री महायज्ञ

स्त्री आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना की ओर से गत दिनो समाज मे गायत्री महायज्ञ किया गया। इस यज्ञ मे देवियो ने बढ चढकर भाग लिया। इस अवसर पर भजन भी गायत्री के महत्व पर बोले गए। श्री प. निरञ्जनदेव जी इतिहास केसरी के दो व्याख्यान बहुत ही प्रभावशाली हुए। श्रीमती शान्ता अग्रवाल विद्यावती जी आर्य श्री मतवालचन्द जी मन्त्री श्रीमती शकुन्तला जी जत्था का विशेष योगदान रहा श्रीमती कमला जी आर्या ने और कुछ एक सुझाव दिए।

—शान्ता गौड
प्रधाना

# धर्म रत्न परीक्षा परिणाम

आर्य विद्या परिषद पजाब द्वारा आयोजित धर्म रत्न परीक्षा परिणाम नीचे दिया जा रहा है। इस परीक्षा में 62 20 प्रतिशत परीक्षार्थी उत्तीर्ण हुए हैं। इस बार धर्म रत्न परीक्षा मे प्रथम द्वितीय तथा तृतीय आने वाले परीक्षार्थियों का विवरण निम्न प्रकार है—

| स्थान | रोल न | नाम परीक्षार्थी एव कालेज | प्राप्तांक |
|---|---|---|---|
| प्रथम | 1054 | मीनाक्षी सुपुत्री श्री प्रकाश आर्य कालेज महिला विभाग लुधियाना | 107 |
| द्वितीय | 1031 | नवीता सुपुत्री श्री जगतराम जैन बी एल एम गर्ल्ज कालेज नवांशहर | 104 |
| तृतीय | 1029 | रजनी सुपुत्री श्री सुरेन्द्र कुमार बी एल एम गर्ल्ज कालेज नवांशहर | 103 |

धर्म रत्न परीक्षा मे मेधावी छात्राओ (प्रथम द्वितीय, तृतीय) को पारितोषिक दिया जाएगा।

उत्तीर्ण परीक्षार्थी

1001 से 1004 तक 7 9 से 20 तक 22 25 से 31 तक 33 से 40 तक 44 से 46 तक 48 49 54 55 60 63 66 72, 76 से 82 तक।

—धर्मप्रकाश दत्त रजिस्ट्रार

# आर्य मर्यादा के नए ग्राहक

आर्य मर्यादा के सदस्यो मे गत दिनो से वृद्धि होती जा रही है। सभा की महामन्त्री कमला जी आर्या इसके लिए बहुत प्रयास कर रही हैं। लुधियाना से निम्न नए सदस्य बने हैं—

1 श्री राजेन्द्र दीवान, श्री रामरत्न सोधी, श्री तिलकराज भाटिया, श्री देवराज जी खल्लर श्री विनोद कुमार जी श्री बाई के सोनी श्री एस के अरोडा, मै एलाईड एक्सपोटस श्री चन्द्र प्रकाश सभवाल श्री सुरेन्द्र कुमार ढींगरा उमावी सचदेवा मरीन इलैक्ट्रीकल ट्रेडिंग कम्पनी, श्रीमती सन्तोष वर्मा श्रीमती निमला भण्डारी कुमारी विमला सूद श्रीमती उषा दत्ता श्रीमती सुमन बाला श्रीमती राज जी स्याल श्रीमती सावित्री शर्मा, श्रीमती उषा सूरी श्रीमती शकुन्तला खुराना श्रीमती पुष्पा भटटारा, श्रीमती विनोद सोई श्रीमती स्नेह सूद श्रीमती विद्यावती पराशर श्रीमती तृप्ता वर्मा श्रीमती निर्मला बेरी श्रीमती इन्दु अग्रवाल श्री शिवदयाल जी 30 श्री करैतीलाल जी भाटिया।

## लुधियाना के आर्य परिवारो में यजुर्वेद पारायण यज्ञ

4 मार्च से 10 मार्च 85 तक लुधियाना के प्रतिष्ठित आर्य परिवारो मे यजुर्वेद पारायण यज्ञ हुआ, प्रात साय दोनो समय होता रहा। बृहस्पति प जगदीशराय जी आर्य का सारा परिवार बडी श्रद्धा से यज्ञ मे भाग लेता रहा। इस यज्ञ में श्री प रामधन जी आर्य श्री प रामनाथ जी सिद्धान्त विशारद, आर्य महोपदेशक, सभा मुहर्ति जगदीश जी आर्य, प रामकुमार जी शास्त्री, और श्री पन्नीलाल जी आर्य मधुर स्वर में प्रभु की अमृत वाणी का पाठ करते रहे।

10 मार्च को श्री प जगदीशराय जी आर्य की सुयोग्य सुपुत्री कुमारी अमृता का शुभ विवाह श्री प्रदीप कुमार जी सुपुत्र रणवीरसिंह अवर लुधियाना के साथ पूर्ण वैदिक रीति के साथ महोपदेशक श्री प रामनाथ सिद्धान्त विशारद ने प्रभावशाली ढग से रोचक व्याख्यान के साथ करवाया। जिसका बारात और स्थानीय जनता पर अनुपम प्रभाव पड़ा, सभा को 101 रुपये वेद प्रचार के लिए दान दिए। —मन्त्री आर्य समाज

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

जनता के दुःख सुख का पता करने स्वय बाहिर जाते थे। और जनता के सुख दुःख का पूरा 2 ध्यान रखते थे।

### वह महान् पराक्रमी थे

वह महान शक्तिशाली थे बाली वध और रावण वध के समय उनकी शक्ति का परिचय मिलता है। युद्ध के मैदान में कोई भी शत्रु उनके सामने टिक नहीं पाता था।

इस प्रकार राम महान् गुणों के भण्डारी थे और उसी प्रकार की मर्यादाओं का पालन करने वाले थे। उनका स्मरण दिन उनके उत्तम उनके चरित्र से तभी यह दिन मनाया सफल होगा।

—धर्म देवार्य

# विघटनकारी शक्तियों से देशवासी सावधान रहें

## श्री रामगोपाल शालवाले प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा और जन-सभा के प्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव का संयुक्त वक्तव्य

नई दिल्ली—अब समय आ गया है कि देश के शासक, आधे मन से नहीं अपितु पूरी ताकत लगाकर देश की विघातक शक्तियों का सफाया करने के लिए मजबूत कदम उठायें। पिछले दिनों जो कुछ पंजाब मे हुआ है और मौजूदा सरकार इस समस्या के हल करने की दिशा में सद्भावना पूर्ण जो कदम उठा रही है विघातक शक्तियां उसका लाभ उठा अपने ही संगठन को मजबूत करने मे लगे हुए हैं, निर्दोष व्यक्तियों को जेल से छोड़ने का हम विरोध नहीं करते हैं किन्तु ऐसे लोग जो पंजाब मे निरन्तर चल रहे हत्या काण्ड के लिए जिम्मेदार हैं उनको जेल से छोड़ना राजनीतिक बुद्धिमत्ता नहीं होगी। पंजाब के अकालियों को छोड़ना और हिन्दू नेताओं की रिहाई न करना, इसे हम पक्षपात पूर्ण समझते हैं। सरकार से हमारी अपील है कि पंजाब के हिन्दू नेताओ को छोड़ने के उपरान्त ही कोई वार्ता की जाए।

आन्ध्र प्रदेश मे भी अब पंजाब जैसे नाटक का आरम्भ हो चुका है। तेलगू देशम् पार्टी के उपाध्यक्ष ने हाल ही मे विधान परिषद् मे जो बयान दिया है, वह देश की अखण्डता के लिए खुली चुनौती है। उनका कहना है कि यदि देश का कोई राज्य अपने आपको मजबूत करने के लिए अलग होने की बात करता है तो उसमें आपत्ति जनक कुछ नहीं है। तेलगू देशम् पार्टी के अध्यक्ष अब अकालियों जैसी बात कर रहे हैं। उनका कहना है कि केन्द्र के अन्तर्गत विदेश विभाग, प्रतिरक्षा, संचार साधन और वित्त के अतिरिक्त अन्य मुद्दों में केन्द्र का दखल नहीं होना चाहिए। उनकी अन्य मांगें इस प्रकार हैं—

1 प्रान्तों मे राज्यपाल का पद समाप्त कर देना चाहिए।

2 प्रान्तों के मुख्यमन्त्री को प्रधानमन्त्री के नाम से सम्बोधित किया जाए।

इन्होंने अपनी मांगें पूरी न होने पर रक्त-पात की भी धमकी दे रखी है। तेलगू देशम् पक्ष के लोग अकालियों के समान केन्द्र से टकराव की नीतियां अपना रहे हैं।

स्व सरदार पटेल ने निजाम और उसके रजाकार समर्थक रजवी का इसलिए सफाया करवाया था कि वह भी अकालियों और तेलगू देशम् के नेताओं जैसी बातें कर रहे थे। निजाम और रजवी आजाद हैदराबाद के स्वप्न देख रहे थे। यही स्वप्न आज अकाली और तेलगू देशम् के पक्षधर देख रहे हैं।

श्री एन टी. रामाराव तेलगू देशम् दल के अध्यक्ष और आन्ध्र प्रदेश के मुख्यमन्त्री हैं। वह अब तक दो बार अमेरिका जाकर लौट चुके हैं अमेरिका मे नान रेजिडिन्शियल इण्डियन्स के प्रतिनिधियों तथा अन्य लोगों से उनके मिलने जुलने की बात उतनी साधारण नहीं है जितनी कि बताई जाती है।

पंजाब मे आपरेशन ब्लू स्टार के कदम उठाए जाने पर श्री रामाराव ने कटु आलोचना की थी।

यह प्रसन्नता की बात है कि तेलगू देशम पक्ष के उन प्रयत्नों का, जिनके द्वारा वह आन्ध्र प्रदेश को भावाई पागलपन का का केन्द्र बनाना चाहते हैं, तेलगाना वालो पर अभी कोई असर नहीं पड़ा है किन्तु रामाराव ने बड़ी सूझबूझ से काम लेकर जहां आर्थिक विकास की दृष्टि से तेलगाना वालों को नजर-अन्दाज किया है वहीं राजनीतिक सत्ता से भी उन्हे वंचित किया जा रहा है। तेलगाना मे चुनाव चाहे वह विधान सभाओ के लिए हो अथवा संसद के लिए अधिकाधिक आन्ध्र वालों को ही निर्वाचित कराया है। तलगाना वालो को इस की सुविधा नहीं दी गई। आन्ध्र के किसी सीट मे तेलगाना का कोई उम्मीदवार खड़ा भी नहीं किया गया। तेलगाना की जनता इस बात के लिए मजबूर हो रही है कि वह आन्दोलन करे ताकि तेलगाना को प्रशासनिक ईकाई मे एकत्रित रखा जा सके। आजाद हैदराबाद के विरुद्ध तेलगाना की जनता ने जैसी लड़ाई की है, देश के विघटनात्मक शक्तियो के विरुद्ध भी ऐसी लड़ाई करने की क्षमता रखती है।

यह दुःख की बात है कि केन्द्र आन्ध्र मे इन विघातक शक्तियों की गतिविधियो के बारे मे खतरे का सही अंदाज नही लगा पा रही है। हम प्रधानमन्त्री श्री राजीव गान्धी का धन्यवाद देते हैं कि वह इस बात को मानते हैं कि तेलगाना के साथ अन्याय हुआ ? । हम उनसे मांग करते हैं कि खतरा कितना भयानक है, उसकी जांच करावें और समय पर उसकी सफाई के लिए मजबूत कदम उठावें। सरकार द्वारा किसी भी खतरे के प्रति टालने की नीति भविष्य के लिए गम्भीर परिणाम पैदा कर सकता है।

इस सम्बन्ध मे हैदराबाद मे जनसभा ने 27-2-85 को उपरोक्त तथ्यो पर विस्तृत प्रकाश डाला था। जन सभा ने सरकार को 30 जून 1985 तक का समय दिया है। यदि तब तक कोई कार्यवाही नहीं की गई तो तेलगाना मे भारी आन्दोलन की तैयारियां हो रही है।

इस सम्बन्ध मे हमारा एक प्रतिनिधि मण्डल केन्द्रीय गृहमन्त्री श्री एस बी. चव्हाण तथा विरोधी दलो के नेता चौधरी चरणसिंह, श्री अटल बिहारी वाजपेयी और श्री चन्द्रशेखर आदि से भी मिल चुके हैं और उन्हे स्थिति से अवगत कराया जा चुका है। 2, अप्रैल 1985 को तेलगाना के पूरे जिले मे मुक्ति दिवस भी मनाया जा रहा है।

—

# आर्य समाज बनाया

ले.—श्री स्वामी स्वरूपानन्द जी सरस्वती अधिष्ठाता वेद प्रचार दिल्ली

गुजराती योगी टकारा से आया——

भूले हुए वेद पथ आकर सत्य मार्ग दरशाया।
ऐसी उल्टी रीत, धर्म-कर्म से न प्रीत
वेद गडरियों के गीत लोग कहते मिले।
चमन जो था बरबाद किया ऋषि ने आबाद।
बड़ी मुद्दतो के बाद पुष्प बाग मे खिले।
एक सौ दस वर्षों से पौधा लहर- लहर लहराया ।1।

फागुन की शिव रात, सारे देश में विख्यात,
लाई नूतन प्रभात ज्ञान-ज्योति जगी।
निकला पूर्णिमा का चन्द्र हुए तारागण मन्द,
आए ऋषि दयानन्द अंधियारी भगी।
विष पी पीकर वेदामृत का सबको पान कराया ।2।

जब थी वेद विद्या लोप, बढ़े पाखण्डी पोप,
अन्धकार घटा-टोप, भटके जहा के तहा।
रोये विधवा दीन नारी, प्रथा देश मे थी जारी
कन्या होते ही बिचारी मारी जाती थी यहा।
बालक, वृद्ध जनो के विवाह कुप्रथा को भग कराया ।3।

जगी ऋषि सन्तान, सभी हुए सावधान
मिटी ठगो की दुकान, बड़ी हलचल मची,
हुआ सत्य का प्रचार बही वेदामृत धार,
ईश लेता न अवतार, बात सबको जची।
जन-कल्याण हेतु ऋषिवर ने आर्य समाज बनाया । 4।
गुजराती योगी टकारा से आया।

—

# शुद्धि समाचार

दिनांक 9-3 85 को प्रातः 9 बजे यज्ञ हवन के पश्चात् आर्य कन्या गुरुकुल नरेला मे श्री मुख्त्यार खा पुत्र श्री बोधा गाव कुतलूपुर जिला सोनीपत ने सपरिवार स्वइच्छा से वैदिक धर्म की दीक्षा ली। यह शुद्धि हिन्दू शुद्धि संरक्षणीय समिति समालखा के महामन्त्री स्वामी सेवानन्द के प्रयत्नो से सम्पन्न हुई। श्री मुख्त्यार खा का नाम मुख्त्यार सिंह रखा गया। —ओमप्रकाश प्रधान

# स्त्री आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार (साबुन बाजार) लुधियाना में मासिक पारिवारिक सत्संग

इस मास का सक्रान्ति का 14 3 85 का सत्सग श्रीमती स्नेहलता जी सुद धम पत्नी श्री हरिचन्द जी सूद (सूद निवास) बी 1 (31 10 कृष्णपुरी लुधियाना मे हुआ । कुमारी स या जी आर्या ने बडी सु दरता एव श्रद्धा मे यज्ञ सम्पन्न कराया यजमान परिवार को स्त्री समाज की ओर से महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का चित्र एव आर्य साहित्य भेंट किया गया । श्रीमती विद्या वती जी शमा श्रीमती राजेश्वरी जी वर्मा तथा अन्य बहिना के उपदेशात्मक एव मनोहर भजनो का अनूठा हा आन द था । इस सत्सग मे उपस्थित बहिनो मे से एक बहिन नैरोबी अफ्रीका से तथा एक बहिन नोटिंघम (इगलैंड) से आई हुई थी उ होने भी भाग लिया तथा इस प्रचार क ढग की सराहना की । समाज की प्रधाना श्रीमती कमला जी आर्या ने वैदिक विनय के प्रथम चैत्र के उपलक्ष म लिए हुए गायत्री मन्त्र पर अपने विचार दिए तथा मन्त्र शब्दाय एव विनय पढ कर सुनाई । जल पान से सभी पधारी हुई बहिनो का स्वागत किया गया कायक्रम प्रत्येक दृष्टि से सफल रहा । परिवार ने सबका धन्यवाद किया ।

—निर्मला बेरी
मन्त्री

## पं. लेखराम बलिदान दिवस

आय समाज अबोहर के तत्वावधान मे अमर शहीद प लेखराम जी बलिदान दिवस डी, एस वैदिक हाई स्कूल के नव निर्मित सत्सग भवन मे समाज के सरक्षक वयोवृद्ध स्वतन्त्रता सेनानी श्री चांदीराम जी वर्मा की अध्यक्षता मे बडी धूमधाम से मनाया गया । यज्ञ के उपरान्त विभि न वक्ताओ तथा स्कूल की छात्राओ ने उनके जीवनके भिन्न भि न पहलुओ पर प्रकाश डाला । इस अवसर पर समाज के प्रधान श्री कुलवन्त रायजी झाब ने समाज को 500 रुपया दान एव छात्राओ को पारितोषिक दिया । अध्यक्षीय भाषण मे वर्माजी ने प जी के पद चिन्हो पर चलने के लिए सभी श्रोताओ को आह्वान किया एव शान्ति पाठ के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ ।

—

### ईसामसीह ईश्वर पुत्र नही आदि शीर्षक कर पत्रक पम्फलेट को

# आन्ध्र प्रदेश राज्य द्वारा जब्ती अनुचित

## मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश का वक्तव्य

श्री माणिकराव जी शास्त्री मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश ने एक वक्तव्य प्रसारित कर आन्ध्र प्रदेश राज्य द्वारा ईसामसीह ईश्वर पुत्र नही आदि शीषक के कर पत्रक की प्रति जब्त किए जाने की कायवाही के प्रति असन्तोष व्यक्त करते हुए इसे राज्य का अदूरदर्शिता का पग घोषित किया है । आपन वक्तव्य मे आग कहा है कि उक्त पत्रक के प्रकाशक मन्त्री आर्य समाज कीर्तन पल्ली (सिकन्दराबाद) अवश्य हैं किन्तु जो कुछ उक्त पम्फलेट में दर्शाया गया है वह मूलत ईसाई जगत् के माने व्यक्तियों के ही विचार हैं जो निसर्गत यथार्थ पर आधारित हैं । मूल को छोडकर उससे सम्बद्ध पम्फलेट को जब्त किया जाना कहां तक औचित्य रखता है, विचारको के समक्ष प्रश्न बन जाता है । आपने आन्ध्र प्रदेश राज्य से इस सम्बन्ध में उठाए गए पग पर पुनर्विचार का अनुरोध भी किया है ।

—सभा उपमन्त्री

—

## आर्य मर्यादा में विज्ञापन देकर लाभ उठाएं

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रेस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ ।

फोन नं. 74250 (रजि. नं. पी/जे. एल. 55)

वर्ष 16 अंक 50, 25 चैत्र सम्वत् 2042, तदनुसार 7 अप्रैल 1985, दयानन्दाब्द 160। एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपए

# हे आत्मन् ! तू व्रत पालक है

ले.—श्री सुरेशचन्द्र जी वेदालकार ओबरा मिर्जापुर

ओ३म् त्वमग्ने व्रतपा असि देव आ मर्त्येष्वा।
त्व यज्ञेषु ईड्य ॥ ऋ 8-11-1 यजु 4 16 18-59

हे (अग्ने) अग्नि के समान विश्व को प्रकाशित करने वाले जीवात्मा ! (त्व) तू (व्रतपा असि) व्रतो का पालक है (देव) तू देव है (आ) और (मर्त्येषु) हम मनुष्यो मे (आ) समन्तात समाया हुआ है (त्व) तू (यज्ञेषु) यज्ञो मे ईड्य ) पूजनीय है।

मनुष्य और प्राणियो मे निवास करने वाले हम आत्मा का स्वरूप निमल है विशुद्ध है। परन्तु मनुष्य अपने कर्मों के द्वारा इसे जैसा चाहे बना लेता है। 'स्वतन्त्र कर्ता' कर्ता स्वतन्त्र होता है और इसलिए वह हमे अच्छे या बुरे मार्ग की ओर भी ले जा सकता है। वैसे तो जीवात्मा प्रकाशशील है इसलिए इसे हम अग्न कहते हैं और इसको सचेत करते हैं। हे अग्ने ' तू व्रत पालक है तेरा तो व्रतो का पालन करना यह स्वाभाविक नियम है और इस ही गुण के कारण हम तुझ देवो की कोटि मे रखते हैं और तू देव हम मर्त्यों के अन्दर बैठा हुआ है। ऋग्वेद 8 58-2 मनुष्य की शक्ति का बोध कराते हुए वेद कहता है—'अकेली आग कितनी चमक से चमकती है ? अकेला सूर्य विश्व भर को प्रकाशित कर देता है ? अकेली ऊषा सब दृश्यमान वस्तुओ को चमका देती है अकेला परमेश्वर सर्वत्र व्यापक है। तू भी अकेला क्या नही कर सकता ?

अथर्व वेद 5 9-7 मन्त्र कहता है, मत समझो कि यह 4-5 फीट का छोटा शरीर भला क्या कर लेगा ? यह मेरी देखने में छोटी सी लगने वाली आत्मा शक्ति में छोटी नहीं, किन्तु सूर्य के बराबर है। मेरी प्राण शक्ति का अनुमान करना हो इस अपार वायु मण्डल से कर लो। मेरे शरीर के मध्य भाग की तुलना अन्तरिक्ष से कर सकोगे और यह मेरा छोटे से कद वाला शरीर देखने मे छोटा होता हुआ भी शक्ति मे छोटा नही किन्तु समूची पृथ्वी के बराबर है। मैं अविनश्वर हू, किसी के मारने पर मर नही सकता।

ऊपर का मन्त्र कहता है कि जब तुझ मे इतनी शक्ति है तू व्रत पालक है तेरा तो व्रतो का पालन करना यह स्वाभाविक नियम है और इस ही गुण के कारण हम तुझ देवो की कोटि मे रखते हुए और तू देव हम मर्त्यों मे आकर बैठा हुआ है। तुझ व्रत पालक के विद्यमान होने पर भी यदि हम व्रत पालक न बन सके, नियमो पर न चल सके तो यह हमारा कितना बडा दुर्भाग्य है। हमे तो व्रत पालन का तेरा यह नियम अपने मे स्थापित करना होगा। तू यज्ञो मे हमारा स्तुत्य है वह इसलिए कि तू व्रत पालक है और हमे भी व्रत पालक बना। आज हम तेरे इस व्रत स्वरूप को अनुभव कर रहे हैं और हमारी तुझ से यही प्रार्थना है कि हम भी तेरी तरह अपने मे एक सत्य अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह आदि यम तथा शौच सन्तोष, तप स्वाध्याय तथा ईश्वर प्रणिधान, इन नियमो के पालन का व्रत लें और तू हमे 'व्रतपा' बनने मे सहायता दें। सहायता देना तेरा कार्य है, क्योकि तू स्वयं व्रत पालक है। व्रत कहते हैं शुभ एव मगलमय कार्यों को करने का दृढ निश्चय। आइए, व्रतो को धारण करें।

# अपना निर्माण स्वयं करो

ले —श्री प बिहारी लाल जी शास्त्री काव्य तीर्थ

स्वय वाजिस्तन्व कल्पयस्व स्वय यजस्व स्वय जुषस्व।
महिमा तेऽन्येन न सन्नशे। यजु 23-15 ॥

(वाजिन् स्वय तन्व कल्पयस्व) हे ज्ञान क्रिया शक्ति सम्पन्न जीव स्वय अपने शरीर को समर्थ बना (स्वय यजस्व स्वय जुषस्व) स्वय यजन कर और स्वय ही प्रेम से उसका सेवन कर (ते महिमा अन्येन न सन्नशे) तेरी महिमा दूसरे से नही प्राप्त कराई जा सकती।

मन्त्र मे प्रभु आदेश देते हैं कि मनुष्य तू ज्ञान क्रिया और शक्ति से सुसम्पन्न है तू स्वय अपने शरीर का सम्यक निर्माण कर और स्वय देव पूजा सगति करण दान आदि शुभ कर्मो का अनुष्ठान कर स्वय प्रेम से उनके फलो का सेवन कर तुझ अपना महत्व दूसरे से नही प्राप्त हो सकता।

मनुष्य कर्म एव भोग योनि है। यह अपने कर्मों के अनुसार नाना प्रकार के भोगो को प्राप्त करता है। पशु आदि अन्य प्राणियो की अपेक्षा मनुष्य मे ज्ञान की विशेषता है और वह ज्ञान से अपने कर्त्तव्य कर्मों को समझ कर उनका भली प्रकार अनुष्ठान करता हुआ उन्नति की चरम सीमा को प्राप्त कर सकता है। मनुष्य उन्नति का स्वप्न ही देखता रहे और उसके लिए किसी प्रकार का प्रयत्न न करे तो वह कभी उन्नत नहीं हो सकता। उसकी उन्नति और अवनति उसी के करनी पर निर्भर है। मनुष्य कर्म करने मे स्वतन्त्र है परन्तु भोग भोगने मे परतन्त्र है इसलिए उसे अपने कर्मों को अच्छा बनाना चाहिए। बिना अच्छे कर्मों के अच्छे भोग नही प्राप्त होते। वह जैसा करेगा उसे वैसा अवश्य भोगना पडेगा। गीता का यही अमर सन्देश है 'अवश्यमेव भोक्तव्य कृत कर्म शुभाशुभम्' किया गया शुभ एव अशुभ कर्म अवश्य भोगना पडेगा। गीता के दूसरे सनातन सन्देश को हृदयगम कर लेना चाहिए कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन कर्म मे ही तेरा अधिकार है फलों मे कभी नहीं।

मन्त्र मे कहा गया है कि मनुष्य अपने महत्त्व को अपने द्वारा ही प्राप्त कर सकता है किसी दूसरे के द्वारा नहीं। मनुष्य ज्ञान और क्रिया से सम्पन्न है उसे इनका सही सही उपयोग करके अपने कर्म एव भोग साधन शरीर का भली प्रकार निर्माण करना चाहिए। शरीर के स्वस्थ एव पुष्ट होने पर ही मनुष्य भली प्रकार कार्य करने मे समर्थ होता है उसकी किसी भी प्रकार उपेक्षा नही करनी चाहिए। कहा भी है शरीरमाद्य खलु धर्म साधनम शरीर ही धर्म का मुख्य साधन है। शरीर को बलवान् एव नीरोग बना कर और साधनो को स्वय जुटा कर यज्ञादि श्रेष्ठतम कर्मों का अनुष्ठान श्रद्धा एव प्रेम से करना चाहिए। प्रेम एव श्रद्धा से किए गए कर्त्तव्य कर्मों के परिणाम मनुष्य की प्रगति के साधक होते है। उसमे कभी हीन भावना को नही आने देते। मनुष्य को चाहिए कि वह अपने कर्त्तव्य कर्मों का कभी भी त्याग न करे बल्कि उन से अपने जीवन पथ को सदा प्रशस्त बनाता रहे। वेद का आदेश है कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छत समा कर्मों को करता हुआ ही सौ वर्ष तक जीने की इच्छा कर मा गृध कस्य स्विद्धनम' किसी के धन पर गिद्ध दृष्टि मत लगा। ऋषियो ने सन्देश दिया 'चरैवेति चरैवेति' चलता चला जा। पुरुषार्थी होना ही पुरुष का पुरुषपन है। उद्धरेदात्मनात्मान नात्मानमवसादयेत अपने पुरुषार्थ से ही अपना उद्धार कर अपने आप को दु खी न बना। कृत मे दक्षिण हस्ते जयो मे सव्य आहित' कृत मेरे दाये हाथ मे और जय मेरे बाये हाथ मे निहित है। श्रुति की इस उत्साह वर्धक प्रेरणा से प्रेरित होकर स्वय ही अपने उत्थान के काम मे लग जाना चाहिए। मानव के भाग्य का निर्माण उसके अपने कर्मों से होता है। कर्म करने मे वह स्वतन्त्र है इसलिए उसे स्वय ही अपने महत्वशाली भाग्य का निर्माण करने के लिए अच्छे ही कार्य करने मे लग जाना चाहिए और उसे मन्त्र मे निर्दिष्ट इस सनातन सन्देश को कभी न भूलना चाहिए।

# व्याख्यान माला (स्वामी अच्युतानन्द)
# परमेश्वर सर्वभादि

अनुवादक—श्री सुखदेवराज शास्त्री विद्यावाचस्पति, श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय करतारपुर जालन्धर

(पताक से आगे)

अग्निर्मूर्द्धा चक्षुषी चन्द्रसूर्यौ दिश श्रोत्रे वाग्विवृताश्च वेदा:
वायु प्राणो हृदय विश्वमस्य पद्भ्या पृथिवी ह्येष
सर्वभूतान्तरात्मा ।17।

अग्नि जिसका सिर चन्द्र सूर्य जिसके नेत्र हैं दिशाए कान हैं विस्तृत वेद जिसकी वाणी है, वायु जिसके प्राण हैं सम्पूर्ण विश्व जिसका हृदय और पृथ्वी जिसके पाव हैं वह परमात्मा सब प्राणियो मे व्याप्त है।

अशब्दमस्पर्शम रूपमव्यय तथाऽरस नित्यम गन्धवच्च यत् ।
अनाद्यनन्त महत पर ध्रुव निचाय्यत मृत्युमुखात्प्रमुच्यते ।18।

वह अविनाशी ब्रह्म रूप रस, गन्ध तथा स्पर्श से रहित नित्य अनादि अनन्त तथा महान से भी महान है निश्चय ही मनुष्य उस ब्रह्म को पाकर मृत्यु के मुख से छूट जाता है।

एको वशी सर्वभूतान्तरात्मा एक रूप बहुधा य करोति ।
तमात्मस्थ येऽनुपश्यन्ति धीरास्तेषा सुख शाश्वत नेतरेषाम् ।19।

सभी प्राणियो के अन्त करण मे विराजमान समस्त ब्रह्माण्ड को अपने वश मे रखने वाला जो एक ही अविनाशी ब्रह्म है जो एक प्रकृति को अपने सामर्थ्य से अनेकधा चित्र विचित्र बनाता है उसी ब्रह्म को जो संयमशील योगी जन योग के सामर्थ्य से अपने आत्मा मे साक्षात हुआ जानते हैं उन्हे ही शाश्वत सुख की प्राप्ति होती है अन्यो को नही।

नित्यो नित्याना चेतनश्चेतनानामेको बहूना यो विदधातिकामान् ।
तमात्मस्थ येऽनुपश्यन्ति धीरास्तेषा शान्ति शश्वती नेतरेषाम ।20।

जो नित्यो मे नित्य चेतनो का भी चेतन समस्त जड चेतन का एक मात्र आश्रय रूप ब्रह्म है जो सभी की सर्वहितकारी कामनाओ को सर्वदा पूर्ण करता है। ऐसे दिव्य स्वरूप का साक्षात्कार करने वाले धैर्यशील मनीषी लोग ही शाश्वत शान्ति को प्राप्त होते हैं अन्य नही ।

य एकोऽवर्णो बहुधा शक्ति योगाद्वर्णाननेकान्निहितार्थो दधाति ।
विचैतिचान्ते विश्वमादौस देव स नोबुद्धया शुभया सयुनक्तु ।21।

जो वर्ण रहित एक ब्रह्म है, वही विशेष प्रयोजनवश अपने सामर्थ्य के योग से विविध प्रकार के वरेण्य पदार्थों को वर्ण प्रदान करता है जो इस सृष्टि के आदि और अन्त मे एक तुल्य स्वरूप वाला है वह दिव्य गुण सम्पन्न परम प्रभु हमे कल्याणकारी मेधा बुद्धि से युक्त करे।

अजामेका लोहितशुक्लकृष्णा बह्वी प्रजा सृजमाना सरूपा ।
अजोह्येको जुषमाणोऽनुशेते जहात्येना भुक्तभोगामजोऽन्य ।22।

समान रूप वाले बहुत से पदार्थों का सृजन करती हुई रजोगुण सत्वगुण तथा तमोगुण से युक्त एक अनादि तत्व प्रकृति को एक अज =अनादि जीव भोग करता हुआ (अज्ञानवशात) उसी मे निमग्न हो जाता है और इन दोनो से भिन्न जो तीसरा अनादि ब्रह्म है, वह जीव द्वारा भोगी गयी इस प्रकृति को त्याग देता है। अर्थात परब्रह्म परमात्मा प्रकृति के बन्धन से मुक्त रहता है वह इसमे बद्ध नही होता।

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समान वृक्ष परिषस्वजाते ।
तयोरन्य पिप्पल स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्यो अभिचाकशीति ।23।

इस श्लोक मे ब्रह्म, जीव तथा प्रकृति इन तीन अनादि तत्वो का अलकारिक वर्णन किया गया है। सम्यक सम्बन्ध रखने सखाभाव से वर्तमान ब्रह्म तथा जीव रूपी दो सुन्दर पक्षी, अनादि काल से समान [illegible] प्रकृति रूपी वृक्ष पर विराजमान हैं। उन दोनो ब्रह्म तथा जीव मे से एक जो जीव है वह इस प्रकृति रूपी वृक्ष के (प्रकृति जन्य पदार्थों का) स्वादु फलों का उपभोग और दूसरा भोग न करता हुआ जो ब्रह्म है वह उसे देखता है।

समाने वृक्षे पुरुषो निमग्नोऽनीशया शोचति मुह्यमान ।
जुष्ट यदा पश्यत्यन्यमीशमस्य महिमानमिति वीतशोक ।24।

इस प्रकृति रूपी वृक्ष के फलो को आस्वाद लेने मे निमग्न यह पुरुष (जीव) निरन्तर उसी मे मुग्ध होता हुआ शोक दुख को प्राप्त होता है परन्तु जैसे ही प्रकृति के पदार्थों से अलग होकर अनन्त महिमा वाले अपने भिन्न परमेश्वर को सख्य भाव से साक्षात करता है तब उसका शोक और मोह दूर हो जाता है।

यदा पश्य पश्यते रुक्मवर्ण कर्तारमीश पुरुष ब्रह्मयोनिम् ।
तदा विद्वान् पुण्यपापेविधूय निरञ्जन. परम साम्यमुपैति ।25।

जब यह जीव समस्त ब्रह्माण्ड के कर्ता ज्योतिर्मय परम पुरुष परब्रह्म का साक्षात कर लेता है तब वह ज्ञानी विद्वान होकर पुण्य और पापो को दूर करके विकार रहित होकर परब्रह्म की समता (सख्यभाव) को प्राप्त होता है।

बृहच्च तद्दिव्यमचिन्त्यरूप सूक्ष्माच्चतत्सूक्ष्मतर विभाति ।
दूरात्सुदूरे तदिहान्तिके च पश्यत्स्विहैवनिहित गुहायाम् ।26।

वह परमात्मा महान से भी महान अचिन्तनीय दिव्य रूप, सूक्ष्म से भी सूक्ष्म होकर प्रकाशमान है तथा वह दूर से भी दूर एव समीप से भी समीप है, वह हृदय रूपी गुहा मे व्याप्त है तत्वदर्शी इसका साक्षात यही करते है।

नायमात्मा बलहीनेन लभ्यो न च प्रमादात्तपसो वाप्यलिङ्गात् ।
एतैरुपायैर्यतत यस्तु विद्वांस्तस्यैष आत्मा विशते ब्रह्मधाम् ।27।

यह परमात्मा आत्म बल से हीन पुरुष के द्वारा प्राप्त होने योग्य नही है और न प्रमाद से न तप से और न ही भिक्षा सूत्रादि का त्याग कर चिह्न हीन सन्यासी बन जाने पर ही उस ब्रह्म की प्राप्ति होती है अपितु आत्म बल को समृद्ध करने वाले जप तप, योग साधनादि इन उपायो से जो विद्वान भगवद्भजन और अभ्यास करता है उस जीवात्मा का आत्मा ब्रह्मधाम अर्थात ब्रह्म ज्ञान व तत्व दर्शन में प्रवेश कर जाता है।

स एव काले भुवनस्यास्य गोप्ता विश्वाधिप सर्वभूतेषु गूढ ।
यस्मिनयुक्ता ब्रह्मर्षयोदेवताश्च तमेव ज्ञात्वा मृत्युपाशांश्छिनत्ति 2[illegible]

वे सर्वपालक प्रभु ही समय पर समस्त ब्रह्माण्ड की रक्षा करते हैं। वे ही सब के स्वामी हैं तथा सब जड चेतनो मे व्याप्त हैं। उस जिस परब्रह्म मे दिव्य गुण सम्पन्न ऋषि मुनि ध्यान धरते हैं उस निर्मुक्त ब्रह्म को जानकर ही मृत्यु के जाल को काटा जा सकता है।

यथोर्णनाभि सृजते गृह्णते च यथा पृथिव्यामोषधय सभवन्ति
यथा सत पुरुषक्तेशलोमानि तथाऽक्षरात्सभवतीह विश्वम् ।29।

अविनाशी ब्रह्म से सृष्टि उत्पत्ति के बारे इस मुण्डक वचन मे दर्शाया है कि जैसे मकडी स्वय अपने जाल को बनाती है तथा समयानुसार स्वय मे ही उस जाल को समेट लेती है वैसे ही भगवान अपने सामर्थ्य से सृष्टि का सृजन तथा सहार करते हैं। जैसे पृथिवी मे वनस्पतिया उत्पन्न होती हैं या सजीव पुरुष के शरीर मे केश और लोम उत्पन्न होते हैं वैसे ही उस अक्षर अविनाशी ब्रह्म से यह ब्रह्माण्ड प्रकट होता है।

स विश्व कृद्विश्व विदात्मयोनिर्ज्ञ कालकालो गुणी सर्वविद्य
प्रधान क्षत्रज्ञपतिर्गुणश ससार मोक्षस्थितिबन्ध हेतु 30।

जो परमेश्वर विश्व सृष्टा, विश्व ज्ञाता, स्वयम्भु ज्ञानवान् काल का काल अनन्त गुणो का धाम सर्वज्ञ प्रधान क्षेत्रपति प्रकृति तथा जीवो का स्वामी, सत्वगुण, रजोगुण तथा तमोगुण का स्वामी है वही परमात्मा ससार के मोक्ष सिद्धि और बन्धन मे कारण हैं।

(क्रमश)

सम्पादकीय—

# गुरुकुल कांगड़ी पहुंचो

पंजाब की आर्य जनता को यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार का दीक्षान्त समारोह के पूर्वस्थिति विश्व हरिद्वार का वार्षिकोत्सव इस बार 12, 13, 14 अप्रैल 1985 को हो रहा है। गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना में पंजाब के आर्य समाजियों का विशेष योगदान रहा है। श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज, श्री आचार्य रामदेव जी, श्री पं. विश्वम्भर-नाथ जी, श्री प. चमूपति जी, श्री महाशय कृष्ण जी, श्री लाला नारायण दत्त जी और कई महारथियों ने इस संस्था को खड़ा करने में जो परिश्रम किया था वह भी ही आर्य समाज के इतिहास का एक स्वर्णमय अध्याय रहेगा। दूर बैठे हम यह अनुमान नहीं लगा सकते की पंजाब की जनता ने इस गुरुकुल के लिए क्या किया यदि कोई पुराने गुरुकुल को जाकर देखे वहा श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने इसे प्रारम्भ किया था। जो छोटे बड़े भवन अब भी वहां रह गए हैं। उनका एक-एक पत्थर पंजाब की आर्य जनता की याद दिला रहा है। आज भी जो पत्थर वहा रह गए हैं उनमें कम से कम 90 प्रतिशत पंजाब के आर्यसमाजियो के हैं इसी से हम अनुमान लगा सकते हैं कि गुरुकुल को बनाने में पंजाब की आर्य समाजों ने कितना योगदान दिया था। जिन व्यक्तियो ने चालीस पच्चास वर्ष पहले गुरुकुल कांगड़ी के उत्सव देखे हैं वह जानते हैं कि इस उत्सव पर जाना प्रत्येक आर्यसमाजी तीर्थ यात्रा समझता था। हजारों की संख्या में वहा आर्यसमाजी पहुंचा करते थे और गुरुकुल का वार्षिकोत्सव एक मेला बन जाता था। कुछ समय के पश्चात् परिस्थितिया बदलनी शुरू हो गई और वहां जाने वालो की संख्या भी कम होनी शुरू हो गई। देश के विभाजन से पंजाब मे आर्य समाज को जो धक्का लगा था उसकी प्रतिक्रिया गुरुकुल पर भी हुई और धीरे-धीरे इसके उत्सव पर वह रौनक न रही जो पहले हुआ करती थी। आर्य जनता अपने इस तीर्थ को भूलती गई।

अब परिस्थितिया फिर बदल रही हैं हम यह कह सकते हैं कि गुरुकुल उस भंवर से निकल गया है जिसमें वह पिछले कुछ वर्षों से फंसा हुआ था। अब फिर अपने पांव पर खड़ा हो गया है और उसमें एक नए जीवन का संचार हो रहा है। परन्तु उसे फिर पुराना गुरुकुल बनाने के लिए अभी बहुत कुछ करना बाकी है। यह कोई एक व्यक्ति या संस्था नही कर सकती सारे आर्य जगत् को इसमे अपना सहयोग देना पड़ेगा और उसका एक अवसर अब आ रहा है। 12 13, 14 अप्रैल को गुरुकुल का वार्षिकोत्सव हो रहा है। मेरा पंजाब की आर्य जनता से यह निवेदन है कि वह अधिक से अधिक संख्या में इस अवसर पर वहा पहुंचें। आर्य मर्यादा के इसी अंक में उत्सव का विस्तृत कार्यक्रम प्रकाशित हो रहा है। इन दिनो मे वहा कई सम्मेलन होंगे। वेद सम्मेलन शिक्षा सम्मेलन, राष्ट्र निर्माण सम्मेलन और इनके अतिरिक्त गुरुकुल के नन्हे-मुन्ने बच्चे अपना सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत करेंगे। उनके इस कार्यक्रम को देख कर अनुमान लगाया जा सकता है कि गुरुकुल में बच्चों को किस प्रकार की शिक्षा दी जाती है। सरकारी और कई गैर सरकारी स्कूलो मे बच्चो को जो कुछ पढ़ाया जाता है उसके आधार पर वह अपना सांस्कृतिक कार्यक्रम बनाते हैं। गुरुकुल में जो शिक्षा दी जाती है वह इन राजकीय शिक्षा संस्थाओ से बिल्कुल भिन्न होती है। इस लिए गुरुकुल के बच्चों का सांस्कृतिक कार्यक्रम भी बिल्कुल भिन्न होता है, वहा हम केवल पढ़ना-पढ़ाना ही नहीं सिखाते अपितु प्रारम्भ से ही बच्चो को यह शिक्षा दी जाती है कि बड़े होकर उन्होंने अपने देश धर्म और समाज के लिए अपना कर्तव्य किस तरह पूरा करना है। सांस्कृतिक कार्यक्रम भी उसी के आधार पर बनाया जाता है।

इस लिए मेरा पंजाब के आर्य बन्धुओं से निवेदन है कि वह गुरुकुल कांगड़ी के प्रति अपने कर्तव्यों को समझते हुए और उन दिवंगत आत्माओं के प्रति जिन्होंने यह गुरुकुल बनाया था अपनी श्रद्धा का प्रदर्शन करने के लिए अधिक से अधिक संख्या में गुरुकुल के उत्सव पर पहुंचने का प्रयत्न करें। आर्य बन्धुओं को यह सुनकर हर्ष होगा कि वहां उनके आवास और भोजन आदि का प्रबन्ध भी पंजाब के आर्य समाजी स्वयं कर रहे हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उप-प्रधान पंडित हरवंसलाल जी शर्मा और अन्तरंग सभा के एक प्रतिष्ठित सदस्य और जवाहर समाज के कर्मठ कार्यकर्ता श्री वेद प्रकाश जी सरीन विशेष रूप से इस प्रबन्ध में रुचि ले रहे हैं। परन्तु यदि हमने वहा जाना है तो एक तीर्थ यात्रा की भावना से जाना है उसमें हम सबको अपना कर्तव्य पूरा करना है इसलिए पंजाब के प्रत्येक आर्य समाजी का यह कर्तव्य है कि वह हरिद्वार पहुंचे। 13 अप्रैल को बैसाखी का पर्व भी है। इन दिनो वहा एक बहुत बड़ा मेला भी लगता है जो वहा जाएगे उस मेले को भी देख सकेंगे। इसलिए अभी से जाने की तैयारी प्रारम्भ कर दें। कोई भी आर्य समाज ऐसा नही रहना चाहिए जिसके प्रतिनिधि इस अवसर पर वहा न पहुंचे।

—वीरेन्द्र

# फिरोजपुर में विश्व शान्ति यज्ञ

आर्य समाज लुधियाना रोड फिरोजपुर छावनी प्रतिवर्ष एक सार्वजनिक स्थान पर जहा सारे यज्ञ प्रेमी पहुंच सकें एक बृहद यज्ञ का आयोजन करता है। किसी उच्च कोटि के विद्वान् को इस यज्ञ के लिए बुलाया जाता है। इस बार तपोवन देहरादून से महात्मा दयानन्द जी वानप्रस्थी को इस यज्ञ की अध्यक्षता के लिए आमन्त्रित किया गया है। तथा और कई उच्च कोटि के विद्वान् भी बुलाए गए हैं। यह यज्ञ दो अप्रैल से पंजाब नैशनल बैंक फिरोजपुर छावनी के सामने श्री बलदेव राज जी खन्ना की कोठी के खुले मैदान मे आरम्भ हो चुका है और 7 अप्रैल को 12 बजे इसकी पूर्णाहुति होगी।

यज्ञ प्रचार का बहुत बड़ा साधन है। यज्ञ में वह लोग भी आ जाते हैं जो कभी आर्य समाज मे नही आते और न ही जो आर्य समाजी होते हैं। क्योंकि यज्ञ के प्रति सभी की श्रद्धा है। हमे इसी प्रकार के बड़-बड़ यज्ञ परिवारो मे या जहा सभी लोग आसानी से आ सके ऐसे स्थानो पर करने चाहिए। आर्य समाजो मे तो प्रतिदिन यज्ञ होते ही हैं परन्तु आर्य समाजो से बाहर भी हमे इस प्रकार के यज्ञ करने चाहिए हमारा प्रचार धीरे धीरे कम होता जा रहा है। हमे इसमें शिथिलता न आने देनी चाहिए। जिस प्रकार आर्य समाज फिरोजपुर छावनी के कार्यकर्ता श्री रामचन्द्र आर्य श्री मनोज कुमार और श्री देवराज दत्ता जी उत्साह से और अपने परिश्रम से अपनी आर्य समाज के दूसरे कार्यकर्ताओं के सहयोग से प्रतिवर्ष यह बृहद यज्ञ करते हैं उसी प्रकार अन्य आर्य समाजो के अधिकारियों को भी उन से प्रेरणा लेकर इस प्रकार के यज्ञ प्रत्येक नगर में करने चाहियें।

—कमला आर्या—सभा महामन्त्री

# महर्षि दयानन्द सरस्वती के इतिहास विषयक मन्तव्य और आर्य समाज

ले —श्री सत्यकेतु जी विद्यालकार

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने ग्रन्थों में जो अनेक इतिहास विषयक मन्तव्य प्रतिपादित किए है उनमें मुख्य निम्नलिखित हैं—

1 सृष्टि के प्रारम्भ से पाच सहस्र वर्ष पूर्व समय पर्यन्त पृथिवी पर आर्यों का सार्वभौम चक्रवर्ती राज्य रहा। यह दशा स्वायम्भव मनु से शुरू कर पाण्डव राजा युधिष्ठिर के समय तक रही।

2 जितनी भी विद्या, सस्कृति, विज्ञान व मत ससार मे फैले, वे सब आर्यावर्त (भारत) से ही प्रसारित हुए। प्राचीन समय में सर्वत्र वैदिक धर्म का प्रचार था या अन्य देशो के निवासी ऐसे मतो के अनुयायी थे, जिनका प्रादुर्भाव वैदिक धर्म से हुआ था।

3 महाभारत युद्ध व कौरव पाण्डवो का काल अब से लगभग पाच हजार वर्ष पूर्व था। स्वायम्भव मनु से युधिष्ठिर तक जो राजा भारत मे हुए, उनका इतिहास महाभारत आदि ग्रन्थो मे लिखा है। युधिष्ठिर के पश्चात् अनेक राजवशो ने भारत के विविध प्रदेशो पर राज्य किया। इनमे दिल्ली (इन्द्रप्रस्थ) के राजाओ की वशावली महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश मे दी है, जिसके अनुसार बारहवी सदी के अन्तिम भाग मे दिल्ली का राजा यशपाल था जिसे परास्त कर शहाबुद्दीन गौरी ने भारत में अपने प्रभुत्व का सूत्रपात किया था।

4 आधुनिक विद्वानो ने भारतीय इतिहास के जिस तिथि क्रम का प्रतिपादन किया है वह महर्षि को स्वीकार्य नही था। आधुनिक विद्वान वेदो की रचना काल 2000 से 1200 ई पूव तक मानते हैं। पर महर्षि वेदो को अपौरुषेय मानते थे। आधुनिक इतिहासकार जो महाभारत के काल को 1000 ई पूर्व के लगभग मानते हैं और राजा विक्रमादित्य के समय को जो पाचवी सदी ई मे मानते हैं, वह महर्षि को स्वीकार नहीं था।

5 प्राचीन आर्य सभ्यता की उन्नति के सर्वोच्च शिखर पर पहुचे हुए थे। मनुष्य की सभ्यता का आदि युग पाषाण युग था जबकि वह जगली और असभ्य जीवन व्यतीत करता था, धीरे-धीरे मनुष्य सभ्यता के मार्ग पर अग्रसर हुआ, यह मत महर्षि को स्वीकार्य नहीं था। सभ्यता और सस्कृति के क्षेत्र मे वे विकासवाद को नही मानते थे।

6 आर्यों का आदि निवास स्थान त्रिविस्टप (तिब्बत) था। वहा से आकर वे अन्यत्र बसे, 'आर्य' किसी जाति विशेष का नाम नही है और न ही इससे किसी नसल का बोध होता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेदो की अपौरुषेयता, एकेश्वरवाद षड्दर्शनो मे अविरोध राजधर्म आदि के सम्बन्ध मे जो मन्तव्य प्रतिपादित किए हैं उनकी पुष्टि के लिए आर्य समाज के विद्वानो ने पर्याप्त परिश्रम किया है पर उनके इतिहास विषयक मन्तव्यो के सत्यासत्य की जाच के लिए या उनके समर्थन में अभी तक कोई महत्वपूर्ण कार्य नही किया गया। केवल पण्डित भगवद्दत्त जी बी ए. रिसर्च स्कालर तथा आचार्य रामदेव जी ने इस दिशा मे कार्य किया था। आचार्य जी ने भारत का प्राचीन इतिहास तीन खण्डो मे लिखा था जो महर्षि के मन्तव्यो के पूर्णतया अनुरूप था। इस इतिहास के दो खण्डो के लिखने मे, मैंने भी आचार्य जी को सहयोग दिया था। पर गत पच्चास वर्षों मे न डी ए वी कालेजो ने इस सम्बन्ध मे कोई कार्य किया न गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय ने और न ही किसी आर्य प्रतिनिधि सभा व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने।

भारत के स्कूलो, कालेजो और यूनिवर्सिटियो मे भारत का जो इतिहास पढाया जाता है वह महर्षि के मन्तव्यो के अनुरूप नही है। आर्य समाज की शिक्षण सस्थाओ मे भी ऐसा ही इतिहास पढाया जाता है। इसका परिणाम यह है कि केवल उच्च शिक्षा प्राप्त लोगो मे ही नही अपितु (शिक्षा के व्यापक प्रसार के कारण) सर्वसाधारण जनता मे भी इतिहास विषयक की धारणाए बद्धमूल होती जाती हैं। जो महर्षि के मन्तव्यो के विरुद्ध हैं।

गत वर्षों मे विश्व के विविध देशो मे पुरातत्व सम्बन्धी जो खोज हुई हैं और प्राचीन साहित्यक जो विवेचनात्मक अध्ययन किया गया है उससे बहुत से ऐसे सकेत के प्रमाण उपलब्ध हुए हैं जो महर्षि के इतिहास विषयक मन्तव्यो की पुष्टि करते हैं उनसे ज्ञात होता है कि अत्यन्त प्राचीन काल मे ईजिप्त एशिया माईनर मध्य एशिया आदि सर्वत्र वैदिक धर्म का प्रभाव विद्यमान था और दक्षिण पूर्वी एशिया के देशो मे भी प्राचीन हिन्दू (आर्य) धर्म की

शेष पृष्ठ 5 पर

# गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का ८५वां वार्षिकोत्सव

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का वार्षिकोत्सव गत वर्षों की भान्ति इस वर्ष भी 9 अप्रैल से 14 अप्रैल 1985 तक बड़ी धूमधाम के साथ मनाया जा रहा है। इस अवसर पर वेद, शिक्षा, राष्ट्रीय निर्माण सम्मेलनों के साथ-साथ दीक्षान्त समारोह का भी आयोजन किया गया है। जिसमें उच्चकोटि के शिक्षा-शास्त्री राजनेता पधार रहे हैं। अतः आप इसमें सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं।

## कार्यक्रम

मगलवार 9 अप्रैल से रविवार 14 अप्रैल तक प्रतिदिन प्रातः 7-30 से 9 एव साय 4-30 से 6 बजे यजुर्वेद पारायण महायज्ञ।

ब्रह्मा—आचार्य रामप्रसाद वेदालकार। सयोजक—आचार्य सत्यकाम।

सह-सयोजक—डा जयदेव वेदालकार।

### शुक्रवार 12 अप्रैल 1985 प्रात:

7-30 से 9 बजे—यजुर्वेद पारायण महायज्ञ। 9 से 10 बजे—ध्वजारोहण—श्री वीरेन्द्र जी कुलाधिपति विश्वविद्यालय। 10 से 11 बजे—सगीत श्री राजीव तैलग एव विद्यालय के ब्रह्मचारियो द्वारा। सयोजक—श्री बलन्तकुमार शास्त्री 11 से 12-30 बजे—वेद सम्मेलन, अध्यक्ष—डा सत्यव्रत सिद्धान्तालकार, मुख्य-अतिथि—आचार्य प्रियव्रत जी, वेदवाचस्पति। वक्ता—डा जयदेव वेदालकार, डा विष्णुदत्त राकेश, डा, भारतभूषण, सयोजक—आचार्य रामप्रसाद वेदालकार, सह-सयोजक—डा सत्यव्रत राजेश।

मध्यान्ह—3 से 4 बजे—भजन—प सत्यपाल पथिक अमृतसर श्री ओम् प्रकाश वर्मा यमुना नगर, 4 से 5-30 बजे—विशेष व्याख्यान—1 आचार्य रामनाथ वेदालकार, 2. महात्मा आर्य भिक्षु जी, 3, डा सत्यकेतु विद्यालकार सयोजक—आचार्य रामप्रसाद वेदालकार, 5से 6 बजे— 70 वर्ष से अधिक आयु के स्नातको का अभिनन्दन।

रात्रि— 8 से 8-30 —भजन—स्वामी स्वरूपानन्द जी सरस्वती दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा। 8-30 से 9 30-उपदेश- स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती।

### शनिवार 13 अप्रैल 1985

7-30 से 9 बजे—यजुर्वेद पारायण महायज्ञ। 9 से 12 बजे—दीक्षान्त समारोह। अध्यक्ष—श्री वीरेन्द्र जी कुलाधिपति, मुख्य अतिथि—प सत्यदेव भारद्वाज वेदालकार, सयोजक— श्री वीरेन्द्र अरोडा कुलसचिव, सह सयोजक—डा श्याम नारायण सिंह उपकुल सचिव।

मध्यान्ह—3 से 3-30 बजे —भजन श्री ओम् प्रकाश यमुना नगर। 3-30 से 5 30 —शिक्षा सम्मेलन। अध्यक्ष—प्रो शेरसिंह प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा। उद्घाटन—डा सत्यव्रत सिद्धान्तालकार, वक्ता—आचार्य भगवानदेव भू पू सासद श्री सूर्यदेव प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री राजेश पायलट, श्री बाल हस दिवाकर, डा प्रशान्त वेदालकार, श्री सत्यदेव आर्य, श्री धर्मप्रकाश दत्तनवाबहर डा जयदेव वेदालकार। सयोजक—श्री विष्णुदत्त राकेश, सह-सयोजक—श्री ईश्वर भारद्वाज।

रात्रि—7-30 से 9-30 बजे—सास्कृतिक कार्यक्रम—(गुरुकुल विद्यालय के छात्रो द्वारा) अध्यक्ष—श्री सुधीर कुमार गुप्त, सयोजक—डा दीनानाथ।

### रविवार 14 अप्रैल 1985

7-30 से 9 बजे पूर्णाहुति यजुर्वेद पारायण महायज्ञ तथा वेदारम्भ सस्कार आचार्य सत्यकाम द्वारा 9 30 से 10 बजे—सगीत श्री राजीव तैलग 10 से 10-30—गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार वितरण।10-30 से 12-30 बजे—राष्ट्र निर्माण सम्मेलन। अध्यक्ष—श्री रामगोपाल शालवाले प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा। मुख्य अतिथि—श्री वीरेन्द्र प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब। उद्घाटन—श्री सोमनाथ एडवोकेट दिल्ली। वक्ता—श्री ओम्प्रकाश त्यागी महामन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली। प्रो, वेद प्रकाश शास्त्री। श्रीमती कमला आर्या महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब। चौ. महीपाल सिंह एडवोकेट जालन्धर। श्री सरदारीलाल वर्मा दिल्ली। डा भारतभूषण। प्रि सुरेशचन्द्र शास्त्री

मध्यान्होत्तर— 3-30 से 4-30 बजे—सगीत श्री ओम्प्रकाश यमुनानगर 4 30 से [illegible] बजे —व्यायाम सम्मेलन, अध्यक्ष—श्री पारस कुमार जैन उद्घाटन—आचार्य भगवान देव पूर्व सासद, सयोजक .डा दीनानाथ सह सयोजक—श्री कृष्ण कान्त शान्ति पाठ एव धन्यवाद

# आर्य-वर्त्त

रचयिता—कवि कस्तूर चन्दजी 'घनसार' कवि कुटीर पीपाड़शहर

(1)

आर्य मार्तण्ड देश-देव कथा अनुपम्,
वेदज्ञान जैसा बोध कहीं पावेगा ॥
ऋषीश्वर मुनीश्वर योगेश्वर वेद-वेत्ता,
कोविद-कलित अन्य देश मे कहावेगा ॥
यज्ञ-कर्म-क्रिया नित्य देव कर्म सुशोभित,
यजमान बैठ यज्ञ और कहीं पावेगा ॥
एक ही हमारा प्यारा-देश मे पावन प्रिय,
घनसार देश जैसा कहि भी रहावेगा ॥

(2)

ईश्वरीय ज्ञान ध्यान अष्टयोग अग ऐसा,
विधान बतावे आर्य देश बिन और ना ॥
विश्व के उत्थान हेतु समष्टि विचार ऐसा,
दयानन्द जैसा ऋषि ब्रह्मचारी और ना ॥
वेद विद्या सकल जहान के कल्याण हेतु,
बताते आदि से निःशेष बिन और ना ॥
ज्ञान औ विज्ञान-कर्म-धर्म घनसार प्रिय,
गौरव हमारा ज्ञान वेद बिन और ना ॥

(3)

मार्तण्ड है तो देश आर्यवर्त जान सत्य,
वेद मन्त्र है तो ऐसा मन्त्र नहीं जानिए ॥
ऋषिश्वर है तो ऐसा दयानन्द जैसा कोई,
वेद-वेत्ता है तो ऐसा ऋषी न बखानिए ॥
सादगी विशेष है तो चाणक्य मन्त्री की जैसी
नीतिज्ञ विशेष है तो विदुर को मानिए ॥
शस्त्र विद्याधारी-द्रोणाचार्य जैसा युद्ध नेता,
घनसार विश्व जीत वीर पहिचानिए ॥

(4)

शान्ति सुख होवे जब वेद नीति-रीति पर,
चलेंगे ससार जब वेद-धर्म धारेंगे ॥
नित्य-यज्ञ कर्म शुद्ध प्रथम आय उपस्थाय
बस यही धार नर जीवन को तारेंगे ॥
उज्ज्वल विज्ञान वेद भेद भ्रम विनाशक
समस्त विश्व के द्वारा ताप को निवारेंगे ॥
ऋषि दयानन्द देव बताया वैदिक-धर्म
घनसार चलें सद वेद को विचारेंगे ॥

---

4 पृष्ठ का शेष

सत्ता थी। विविध देशो में आर्य राजाओ के शासन के प्रमाण भी प्रकाश मे आए हैं पर महर्षि के मन्तव्यो के सत्यासत्य के निर्णय के लिए अभी बहुत खोज व परिश्रम की आवश्यकता है। यह कार्य विद्वानों की एक ऐसी मण्डली द्वारा किया जाना चाहिए जो जहा सस्कृत भाषा के पूर्णतया ज्ञाता तथा प्राचीन भारतीय साहित्य व इतिहास में पारगत हों वहा प्राय ही जिनमें से अनेक फ्रेंच, जर्मन, रूसी, चीनी व तिब्बती आदि भाषाए भी जानते हो और जिन्हे ईजिप्ट ग्रीस चीन एशिया माइनर ईरान आदि देशो के प्राचीन इतिहास की भी समुचित जानकारी हो। ऐसे विद्वानो द्वारा गम्भीर रूप से शोध के अनन्तर ही महर्षि के इतिहास विषयक मन्तव्यो की पुष्टि कर सकना सम्भव होगा। क्या कोई आर्य शिक्षण संस्था इस महत्वपूर्ण कार्य को अपने हाथ मे लेने को उद्यत है।

# उत्तर-पूर्वी राज्यों में विदेशी विध्वंसक तत्व सक्रिय

उत्तर पूर्वी राज्यो मे यू तो विदेशी विध्वसक तत्व आजादी से पहले से ही काफी सक्रिय थे, लेकिन इधर उनकी शरारती गतिविधिया और ज्यादा तेज हो गई हैं। इन्ही तत्वो की आर्थिक और सैनिक सहायता के बलबूते पर इतराने वाले विद्रोही नागाओं के 'कमाडर इन चीफ मेधा ने पिछले दिनो कोहिमा मे अपने गुप्त स्थान से दी गई भेंट मे एक अग्रेजी साप्ताहिक को हमारी आजादी की लड़ाई जारी है, और तब तक जारी रहेगी, जब तक हम आजाद नही हो जाते। हमने कभी नागालैंड को भारत का अग नहीं माना और न कभी मानेंगे।

भारत सैनिक नागालैंड में भी मौजूद हैं, और मिजोरम मे भी। लेकिन वे न इन दोनो राज्यो मे ध्वसात्मक गतिविधियो मे सलग्न विद्रोहियो का सफाया करने मे सफल हुए हैं, न स्थानीय लोगो का विश्वास पात्र बनने मे।

नागालैंड मे तो विद्रोही नेताओ ने, जो विदेशी विध्वसक तत्वो द्वारा स्थापित 'नेशनल सोशलिस्ट काऊसिल आफ नागालैंड के सदस्य हैं, कुछ समय पूर्व, नामथीलोक नामक स्थान में 20 भारतीय सैनिको की हत्या कर राज्य में आतक का वातावरण स्थापित कर दिया था। बाद मे उन्होने नोकोलो कोन्याक नामक कांग्रेसी एम एल ए की हत्या कर तथा आसाम राईफिल्स के तीन जवानो का सफाया कर, अरुणाचल प्रदेश के तिरप जिले मे भी आतक फैला दिया था। मणिपुर में बर्मा के गुप्त स्थानो मे छिपे विद्रोही समय समय पर, राज्य मे आ कर पीपुल्स लिबरेशन आर्मी (पी एल ए,) की गतिविधियो को तेज करते रहते हैं। इन विद्रोहियो से निपटने के लिए सुरक्षा सैनिको को चौबीसो घटे मुस्तैद रहना पड़ता है। सेना की एक गुप्त रिपोर्ट मे कहा गया है कि पी एल ए के नए नेता तेंबा सिंह ने, जिसे चीनियो ने ल्हासा (तिब्बत) में सैनिक प्रशिक्षण दिया था। अपनी भारत विरोधी गतिविधियो और कार्यवाहियो को एक नई गति प्रदान की है। त्रिपुरा मे में भी 'त्रिपुरा नैशनल वालन्टियस (टी एन, वी) ने जनवरी अक्तूबर 1984 की अवधि मे 60 व्यक्तियो की हत्या की, इन मे 20 भारतीय सैनिक थे।

सदा जीवत लाल
भारत कल्याण मच बम्बई

# दोराहा में वैदिक धर्म प्रचार

18 मार्च से 22 मार्च तक यहा पारिवारिक सत्सग श्री प रामनाथ जी सिद्धान्त मार्तण्ड महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब जालन्धर द्वारा होते रहे। श्री प रामनाथ जी ने बड़े युक्तियुक्त ढग से हवन की महानता पर प्रकाश डाला। 22 मार्च को आर्य पुत्री पाठशाला दोराहा मे आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया गया। हवन के पश्चात् श्री प जी ने आर्य समाज के कार्यो पर प्रकाश डाला। जिसका बहुत उत्तम प्रभाव पड़ा। 40 रुपए सभा को वेद प्रचार के लिए दिए गए।

— त्रिभुवन पति मन्त्री आर्य समाज दोराहा लुधियाना

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब द्वारा आयोजित आर्य समाजो के अधिकारियो के शिविर के अवसर पर नवाशहर मे यज्ञ करते हुए। चित्र मे समाजो के प्रतिनिधि तथा मच पर सभा की महामन्त्री कमला आर्या व श्री वेद प्रकाश जी सरीन दिखाई दे रहे हैं।

# महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी व्याख्यान माला

# दयानन्द, गांधी और मार्क्स

व्याख्याता—श्री डा. प्रभाकर माचवे निदेशक भारतीय भाषा परिषद्, कलकत्ता

महात्मा गांधी

(31 मार्च से आगे)

अर्थोत्पादन की प्रत्येक सीढ़ी के बारे में गांधी जी के विचार उपयोगी हो सकते हैं। उत्पादन वितरण, विनिमय उपभोग—सभी क्षत्रों मे। खेतो मे उपज की ही बात लें तो गाधी जी जीवनोपयोगी आवश्यक वस्तुओ की कृषि के पक्ष मे थे केवल नकद मुनाफा दिलाने वाली पैदावार या कैश क्राप के पक्ष में नही थे। तमाखू या अफीम की खेती मे ज्यादा मुनाफा होता है तो उसी को बो रहे हैं, चावल या गेहू के लिए विदेशो के आगे हाथ पसार रहे हैं यह बात गाधी जी पसन्द नही करते थे। गन्ने या कपास की उपज मे भी ध्यान विदेशी मुद्राजन पर रखने की बात उनकी समझ मे नही आती थी। कृषि मे वे आत्म निर्भरता को प्राथमिकता देना चाहते थे।

अन्न और वस्त्र मे स्वावलम्बन पर जोर देने से गाधी जी दस्तकारी या हस्तोद्योग का महत्व देते थे। वे तन्तुमिल व्यवसाय मे भी मालिक और मजदूर दोनो पक्षो मे परस्पर-सहयोग और परस्पर चर्चा से लाभ का वितरण चाहते थे। अहमदाबाद मे किए हुए ऐतिहासिक उपवास मे से विश्वस्त का सिद्धान्त उन्हे सूझा। वे मोढ बनिया जाति के थ इसलिए नहीं, पर सचमुच उनका विश्वास था कि जैसे कोई कारीगर एक विशेष गुण या कला मे निष्णात होता है वैसे ही व्यापारी व्यवसाय कला मे माहिर होता है। और उसके लिए उसे भी कारीगर जैसे पारिश्रमिक मिलता है वैसा पारिश्रमिक दिया जाना चाहिए।

'गाधी और मार्क्स नामक पुस्तिका (लेखक किशोरी लाल घ0 मशरूवाला) की भूमिका में विनोबा भावे ने इस ट्रस्टी या विश्वस्त वृत्ति की उत्पति का मूल स्रोत गीता को माना हैं। गीता मे बार-बार मनुष्य को ईश्वरार्पण बुद्धि से कर्म करने की प्रेरणा है। ऐसा कुशल कर्मयोग बन जाता है। इसी कम मे फलाकाक्षा छोडने की बात है। और मनुष्य वहा अन्तत ईश्वर के हाथो का एक उपकरण, एक 'निमित्तमात्र भव सव्यसाचिन् हो जाता हैं। प्रश्न इतना ही है कि अध्यात्म के क्षत्र मे जैसी कृष्णार्पणमस्तु' बुद्धि होती है, क्या व्यवसाय के क्षेत्र मे भी वैसा कुछ सम्भव है।

ऐसे अनेक उदाहरण द्रव्य के वर्जन करने वालो के मिलते है, जहा अर्जक को अर्जनके मार्ग या अर्जन की प्रक्रिया का पता नही। ऐसे भी उदाहरण है कि विलास की वस्तुओ के उत्पादक एकदम अविलासी है या व्यसन की वस्तुओ के उत्पादक स्वय निर्व्यसनी है। अत यह आवश्यक नहीं कि वस्तु की वस्तुमत्ता उसे बनाने वाले या उसे बेचने वाले के साथ चिपट कर ही चले।

भारत के धनिक वर्ग ने भी गाधी को समर्थन दिया जैसे दरिद्रनारायण ने। गाधी जी के अनुयायी कई परस्पर-विरोधी विचारधाराओ वाले थे क्रातिकारी आतकवादी भी थे, और लिबरल-नरमदल वाले भी। अर्थ-व्यवसाय और साम्यवाद समाजवाद के मामले मे भी उन के शिष्य एकमत नही रखते थे। मैं जब सन 40 मे सेवाग्राम म था तब आचार्य नरेन्द्र देव भी वहा स्वास्थ्य लाभ करने आये थे, सरदार पृथ्वीसिंह जैसे क्रान्तिकारी भी वहा थे। और सनातनी और आर्य समाजी शिया और सुन्नी दिगम्बर और श्वेताम्बर जैन बौद्ध और जैन बौद्ध महायानी और हीनयानी कैथोलिक और प्रोटेस्टण्ट रूढ़िवादी और आधुनिकताकी सब तरह के शिष्य गाधी जी के आस पास आन जुटे थे।

गाधी न अपने मन को मुक्त रखा था। चाहे अर्थ शास्त्र हो या राजनीति, धर्म अध्यात्म हो या नास्तिकता धर्म विशेष गाधी जी ने इन सब प्रश्नो पर बहुत गहराई से विचार और मनन किया था, एक निपुण भारतीय किसान या मजदूर की दृष्टि को अपना कर। कितना कुछ विदेशी विचारधाराओ में हमे ग्राह्य है, कितना हमारे अनुकूल है, इन सब बातों पर उन्होंने काफी ध्यान दिया था, ऐसालगता है। इसलिए उनकी बातें न केवल भारत मे कई वर्षों तक सही रहेंगी पर दुनिया के अन्य देशो को भी उनसे बहुत कुछ सीखने और ग्रहण करने योग्य मिलेगा, ऐसा भी कहा जा सकता है—अर्थात् उतनी ही मात्रा में जितनी [illegible] के और अन्य देशों के बीच आपसी परम्परा [illegible] है।

साम्य या समता अथवा एकरूपता का पर्यायवाची नहीं मान लेना चाहिए। जो बात अमेरिका के लिए उचित होगी, वह ज्यों की त्यों हर भारतीय के लिए भी होगी, यह मानना उतना ही अपूर्ण है जितना कि जो बात हर रूसी के लिए उचित होगी, वह ज्यो की त्यों हर भारतीय के लिए भी उचित होगी यह मानना। यह सीधी मान्यताएं मनुष्य स्वभाव के मानसिक और वह मनोविज्ञान पर आधारित हैं। मनुष्य अपने स्थान काल परिवेश की भौतिक उपज होता है उतना ही उसका चिन्तन भावना संस्कारो की उपज के साथ साथ उसके अपने परिवेश से जुड़े सम्बन्धों और [illegible] की अवस्थाओं पर निर्भर रहता है। एक आदिवासी या दुनिया की वैज्ञानिक [illegible] सुविधा एवं [illegible] का [illegible] नहीं अधिक [illegible] या [illegible] इन्सान हो सकता है और एक सारी सुख-सुविधाओं में पलने वाला वातानुकूलित [illegible] की अपेक्षा स्वार्थी और असत् प्रयोजनों से कर्म करने वाला हो सकता है। मनुष्य की अच्छाई-बुराई का मापदण्ड केवल उसके आस-पास के भौतिक साधनों की संख्या गुण-मान लेना मनुष्य के साथ अन्याय करना है। गांधी जी ने इस बात को अपने जीवन में चरित्र, क्रिया और प्रत्येक कर्म और वचन से उसे सिद्ध किया।

(क्रमश)

## श्री लाल बहादुर शास्त्री आर्य महिला कालेज बरनाला में संगीत प्रतियोगिता

श्री लाल बहादुर शास्त्री आर्य महिला कालेज बरनाला मे दिनांक 24 मार्च 85 को अन्त कालेज संगीत प्रतियोगिता हुई। इस समारोह की अध्यक्षता महन्त श्री कबीर दास जी (ठाकुर द्वारा रामाना, तपा) ने की। कालेज प्रबन्धक समिति के प्रधान श्री फकीर चन्द जी चोपड़ा ने उनका हार्दिक अभिनन्दन किया इस समारोह के अन्तर्गत समूहगान लोक गीत, गीत तथा वजन प्रतियोगिता करवाई गई। जिसका परिणाम इस प्रकार है

1 समूहगान

| | |
|---|---|
| आर्य महिला कालेज,बरनाला | प्रथम |
| एस डी कालेज,बरनाला | द्वितीय |
| एस डी कन्या महाविद्यालय, मानसा | तृतीय |

2 लोकगीत

| | |
|---|---|
| श्री नरेश कुमार एस डी एस गर्वनमैंट कालेज, सुनाम | प्रथम |
| श्री भजन सिंह देश भक्त कालेज बडदवाल (धूरी) | द्वितीय |
| श्री राजेन्द्र सिंह ढिल्लो एस डी कालेज बरनाला | तृतीय |

3 गीन-गजल

| | |
|---|---|
| कु वनिता, एस डी कालेज बरनाला | प्रथम |
| कु भूपिन्द्र कौर, एस डी कन्या महाविद्यालय मानसा | द्वितीय |
| श्री नरेश कुमार एस डी गर्वनमैंट कालेज सुनाम | तृतीय |

चल विजयोपहार एस डी कालेज बरनाला को मिला।

अध्यक्ष महोदय महन्त कबीर सिंह जी ने अपने कर-कमलो द्वारा विजेता छात्र तथा छात्राओ को पुरस्कार दिये तथा उन का उत्साह बढ़ाया। उन्होने कालेज को 5100रु0 दान दिए। इस के अतिरिक्त निम्नलिखित प्रतिष्ठित नागरिकों ने भी कालेज को दान दिए —

| | |
|---|---|
| 1 श्री विजय जैन | 501रु0 |
| 2 दी आयरन स्टील एण्ड हार्डवेयर | 201रु0 |
| 3 श्री छब्बू राम जी तपा | 501रु0 |
| 4 श्री सतपाल जी सराफ | 501रु0 |
| 5 श्री रघुबीर चन्द तपा | 501रु0 |

समारोह के अन्त मे कालेज की प्रधानाचार्य कु विमला छाबड़ा जी ने महन्त जी तथा अन्य अतिथियों का धन्यवाद किया। कु विमला छाबड़ा

# महर्षि पर फिल्म बनाना अनुचित ही नही अशोभनीय भी है

ले,—श्री यशपाल आर्य बन्धु आर्य निवास चन्द्र नगर मुरादाबाद

इधर एक लम्बे अर्से से आर्य समाज में इस बात पर विवाद चल रहा है कि महर्षि दयानन्द पर फिल्म बने या नहीं। हमारी दृष्टि में महर्षि पर फिल्म बनानी अनुचित ही नहीं अशोभनीय भी है। अनुचित इसलिए कि यह महर्षि की मान्यताओ के प्रतिकूल है। जो महर्षि आजीवन मिथ्या बातों के विरुद्ध प्रबल संघर्ष करता रहा है उसी के मिथ्या चित्र अब प्रदर्शित करने की योजना उन्ही के शिष्यो एव अनुयायियों द्वारा उचित हो भी कैसे सकता है। जिस स्वांग का विरोध महर्षि ने किया उसी के स्वांग रचाने की तैयारी और वह भी उसके अनुयायियो द्वारा कैसी विडम्बना है यह पता नही सत्य के ग्रहण करने और असत्य के त्यागने की प्रतिज्ञा करने वाले ये महानुभाव किस प्रकार का सत्य प्रदर्शित करना चाहते हैं ? कौन सा पात्र इसमे सत्य होगा, सभी कल्पित ही तो होंगे। फिर कल्पित पात्रो से जो कुछ भी बुलवाया जाएगा वह भी तो कल्पित ही होगा। किस मे होगा महर्षि जैसा तेज, कौन लाएगा वैसी सिंह गर्जना। कौन करेगा उस प्रबलता से असत्य का खण्डन, किस मे सत्य के मण्डन की वैसी सामर्थ्य [illegible] तो महर्षि ही था जिसमें कि [illegible] धकती आग निकला करती थी [illegible] को भस्मसात करने के लिए। यहा किस के हृदय से वैसी आग निकलने वाली है। यह रटे हुए डायलाग बोलने वाले क्या वैसी स्वाभाविकता ला सकेंगे उसमे इसलिए मै तो यही कहना चाहूंगा कि—

यह बहुरूपियापन छोड दो यारो—
नकल और असलियत को लोग अब पहचान लेते हैं।

महर्षि पर फिल्म बनानी इसलिए भी अनुचित है कि यदि एक बार फिल्म बनने की अनुमति आर्य समाज ने दे दी फिर विरोधी भी अपने ढग से फिल्म बनाने को स्वतन्त्र हो जाए गे। आप हजार काशी विजय की बात कहते रहे, हर बार धू ां के बहुमत के आधार पर पौराणिक अपनी जय-जयकार करते जब जाते हैं। सोच यदि किसी पौराणिक ने महर्षि के शास्त्रार्थ को लेकर किसी [illegible] नन्द आदि की फिल्म बना डाली [illegible] जिसमें महर्षि की पराजय पौराणिक मतानुसार दिखा डाली तो आर्य समाज को लेने के देने पड जाए गे। अत हम आर्य नेताओं से विनम्र प्रार्थना करेंगे कि महर्षि पर फिल्म बनाने की अनुमति किसी को भी कदापि न दी जाए। यह अत्यन्त गम्भीर प्रश्न है। इसे यू ही न टाल दिया जाए। अभी समय है, अब भी इसे रोका जा सकता है। प्रश्न यह नही किसी का फिल्म बनाने मे कितना रुपया खर्च हो चुका है, प्रश्न यह है कि क्या इससे महर्षि की जगह साई नही होगी। मैं तो इतना भी कहने को तैयार हू कि यदि आर्य नेता अपनी कुर्सी बचाने के लिए परस्पर मुकद्दमेबाजी कर सकते है तो क्या आर्य जनता महर्षि की शान को बचाने के लिए न्यायालय से स्टे नहीं ले सकती ?

यदि महर्षि पर कोई कल्पित फिल्म बन गई तो फिर प्रत्यक दीवार पर महर्षि का काल्पनिक चित्र सिनेमा वाला ही दिखाई देगा। जन-साधारण फिर यह भी नही समझ पाएगा कि असली चित्र कौन सा है और नकली सिनेमा वाला। अत इस अनर्थ को परम आवश्यक है। हम प्रबल शब्दो मे यह कहना चाहते हैं कि महर्षि पर फिल्म बनाना सर्वथा अनुचित है।

महर्षि पर फिल्म बनाई जानी अनुचित ही नही अशोभनीय है, अशोभनीय इसलिए कि आर्य समाज जैसी महान् संस्था को अपने संस्थापक महामानव दयानन्द के प्रचार के लिए किसी अशोभनीय घटिया सहारे का अवलम्बन शोभनीय नही। यह तो मिथ्यावादी लोग हैं कि जो अपने प्रचार के लिए किसी भी प्रकार के हथकण्डे को अपनाने मे नही सकुचाते। पर आर्य समाज जैसी महान् संस्था जिसने कभी भी इस प्रकार के घटिया हथकण्डे कभी नही अपनाए अब क्यो पथभ्रष्ट होने जा रहा है। यह तो मिथ्यावादियो का सिद्धान्त है कि साध्य साधनो के औचित्य को प्रभावित करता है। एण्ड जस्टीफाई दा मीन्स के सिद्धान्तो को आर्य समाज कदापि स्वीकार नही कर सकता। अपितु उसकी सदैव यही मान्यता रही है कि महान् साध्यो की प्राप्ति के लिए हमारे साधन भी महान ही होने चाहिए।

अबर मीन्स मस्ट बी ऐज ग्रेट ऐज अबर—इतिहास साक्षी है कि आर्यसमाज अपने उत्तम साध्यों की सिद्धि के लिए सदैव उत्तम साधनों का ही प्रयोग करता आया है फिर अब यह पतन क्यो ? चमत्कारो के सहारे कल के भगवान आज सारे विश्व मे छाने को उद्यत हो रहे हैं पर क्या कभी आर्य समाज ने चमत्कारो का सहारा लिया है इसीलिए न कि ये सब मिथ्या हैं। फिर अब स्वय उन्ही मिथ्या प्रपचो को क्यो अपनाने जा रहा है। आर्य समाज ने कभी असत्य का सहारा नही लिया। जबकि ईसाई मन्तपान्थ इजील के प्रचार मे असत्य का सहारा लेना बुरा नही समझते थे। लोगो ने उन से कहा कि असत्य का सहारा लेकर पापो के भागी क्यो बनते हो ? तो उसका उत्तर था कि यदि मेरे असत्य भाष्य से प्रभु के सत्य की महिमा अधिक बढती है तो इसमे मैं भी पापी क्याकर हो सकता हू पर आर्य समाज ऐसा नही कर सकता। महर्षि की महिमा को असत्य के आधार पर बढाना अनुचित ही नही सर्वथा अशोभनीय भी है। क्या आर्य समाज इस पर विचार करेगा ?

—

## आर्य समाज बुढलाडा में वेद कथा

आर्य समाज बुढलाडा मे 11 मार्च से 18 मार्च तक वेद कथा का आयोजन किया गया था। जिसमे आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रभावशाली वक्ता श्री प. निरञ्जनदेव जी इतिहास केसरी तथा श्री सीताराम जी आर्य भजनोपदेशक ने पधार कर अपने प्रवचनो तथा भजनो से जनता को बहुत प्रभावित किया। इस कथा मे भारी संख्या मे बहिनो भाईयो ने बड़े उत्साह से भाग लिया। प्रात के सत्सग परिवारो मे हुए और दोपहर बाद स्त्री सत्सग तथा रात्रि को वेद कथा का कार्यक्रम प्रतिदिन चलता रहा। श्री ओम् प्रकाश जी वानप्रस्थी के भी प्रवचन हुए।

इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब को वेद प्रचारार्थ 500 रुपए की राशि दी गई।

—मेघराज गोयल प्रधान

## फिरोजपुर में विश्व शान्ति साम वेद पारायण यज्ञ

सब यज्ञ प्रेमी भाई बहिनो को सहर्ष सूचित किया जाता है कि आर्य समाज लुधियाना रोड फिरोजपुर छावनी की ओर से 2 85 से 7 4 85 तक सामवेद पारायण यज्ञ श्री महात्मा दया नन्द जी वानप्रस्थी तपोवन देहरादून वालो की अध्यक्षता मे स त लाल रोड, पजाब नशनल बैंक फिरोजपर छावनी के सामने श्री बलदेवराज खन्ना जी की कोठी के बड मदान पर रचाया जा रहा है। जिसमे सुप्रसिद्ध श्री चैतन्य मुनि जी श्री शिवकान्त उपाध्याय जी राजेन्द्र जिज्ञासु जी इतिहास केसरी तथा सतपाल आय एवम विजय कमार आनन्द जनता के विशेष अनुराध पर पधार रहे हैं।

ध्वजारोहण श्री हरबसलाल जी ठकदार के कर कमलो द्वारा किया जाएगा।

(प्रतिदिन) समय प्रात 6 से 8 30 बजे तक।

दोपहर बाद 3 30 से 5 30 बजे तक। रात्रि 8 से 10 बजे तक (प्रवचन भजन)।

नोट—1, रविवार के दिन 7 4-85 प्रात 8 बजे यज्ञ प्रारम्भ होकर पूर्णाहुति 12 बजे होगी। तत्पश्चात् 1 बजे तक (महात्मा दयानन्द जी) सब को आशीर्वाद देंगे।

2 ऋषि लगर—1 बजे से 3 बजे तक।

प्रबन्धक
रामचन्द्र आय प्रधान

## वार्षिक निर्वाचन

गत दिनो स्त्री आय समाज मोगा का वार्षिक निर्वाचन निम्न प्रकार हुआ-

प्रधान—श्रीमती लीलावती जी, उपप्रधान —श्रीमती विद्यावती जी श्रीमती सरला जी मिगल, श्रीमती सरला जी थापर, मन्त्राणी—श्रीमती सुदेश बासल कोषाध्यक्ष श्रीमती शशी अग्रवाल सह कोषाध्यक्ष—कुमारी आय बालाजी उपम त्राणी—श्रीमती मधु सूद,

यज्ञ प्रबन्धक—श्रीमती सोमादेवीजी

—मन्त्राणी स्त्री आय समाज मोगा

## दीनानगर में आर्य समाज स्थापना दिवस

22-3-85 को आर्य समाज दीनानगर में आर्य समाज स्थापना दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया जिसमें निम्नलिखित महानुभावों ने भाग लिया। श्री सतीशचन्द्र जी वानप्रस्थी श्री पृथ्वीराज जी जिज्ञासु श्री विनय सिंह जी शास्त्री श्री रामनाथ जी सिद्धान्त विशारद तथा स्वामी सर्वानन्द जी महाराज प्रत्येक वक्ता ने इस बात पर विशेष बल दिया कि प्रत्येक आय समाजी को स्वाध्याय शील होना चाहिए जब से आर्यों ने पढ़ना छोड दिया, तब से ही आर्यों मे कुछ शिथिलता आई है आज आय समाज के सदस्य हिन्दी और सस्कृत कोजिसके लिए ऋषि दयानन्द ने आय समाज को स्थापना की थी को छोडकर अपने बच्चो को अग्रजी माध्यम से पढाना अधिक पसन्द करते हैं इस कुभावना को आर्यों को त्यागना चाहिए। नही ता वेद उपनिषद और दूसरे धम ग्रन्थ पढने वाला कोई नहीं मिलेगा। अन्त मे प्रधान डा हरिदास जी ने सभी का धन्यवाद किया।

—रघुनाथ सिंह मन्त्री

## लुधियाना में शहीदी दिवस मनाया गया

अमर शहीद भगतसिंह, राजगुरु सुखदेव का बलिदान दिवस तथा आर्य समाज स्थापना दिवस नव-वर्ष उत्सव बड़ी धूमधाम से आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार लु में मनाया गया था प्रेमियों ने शहीदो के चरणो मे श्रद्धा के फूल चढ़ाए और अपने विचार उनके जीवन के बारे मे दिए डा रामस्वरूप डा सत्यभूषण आदि श्री यशपाल वालिया प्रिंसिपल ओम प्रकाश टण्डन श्री ओमप्रकाश शास्त्री वैद्य कुन्दनलाल श्री रोशनलाल श्री रामधन जी, श्रीमती कान्ता तथा धर्मपाल भसीन ने शहीदों को श्रद्धाजलिया भेंट की। जिन्होने देश की स्वतन्त्रता के लिए हसते-हसते अपने अपने जीवन की आहुति दे दी। हम सबको उनका अनुकरण करना चाहिए।

—धर्मपाल मन्त्री



श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रेस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।